धर्म्मशास्त्र

अर्थात्

पुराना और नया धर्म्म नियम

ब्रिटिश एगड फ़ारेन् बाइबल सोसाइटी
इलाहाबाद
१९४७

HOLY BIBLE
IN HINDI

1940

8,700 Copies

Printed by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

पुराने और नये धर्म्म नियम

की पुस्तकों के नाम

और

उन का सूचीपत्र और पर्ब्बों की संख्या

पुराने नियम की पुस्तकें।

उत्पत्ति नाम पुस्तक।

(सृष्टि का वर्णन)

१. आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा। २ और पृथिवी सूनी और सुनसान पड़ी थी और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर ऊपर मण्डलाता था। ३ तब परमेश्वर ने कहा उजियाला हो सो उजियाला हो गया। ४ और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है और परमेश्वर ने उजियाले और अन्धियारे को अलग अलग किया। ५ और परमेश्वर ने उजियाले को दिन कहा और अन्धियारे को रात कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो एक दिन हो गया॥

६ फिर परमेश्वर ने कहा जल के बीच ऐसा एक अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाये। ७ सो परमेश्वर ने एक अन्तर करके उस के नीचे के जल और उस के ऊपर के जल को अलग अलग किया और वैसा ही हो गया। ८ और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो दूसरा दिन हो गया॥

९ फिर परमेश्वर ने कहा आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो और सूखी भूमि दिखाई दे और वैसा ही हो गया। १० और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथिवी कहा और जो जल इकट्ठा हुआ उस को उस ने समुद्र कहा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। ११ फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से हरी घास और बीजवाले छोटे छोटे पेड़ और फलदाई वृक्ष भी जो अपनी अपनी जाति के अनुसार फलें और जिन के बीज पृथिवी पर उन्हीं में हों उगें और वैसा ही हो गया। १२ सो पृथिवी से हरी घास और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है और फलदाई वृक्ष जिन के बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं सो उगे और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १३ और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो तीसरा दिन हो गया॥

१४ फिर परमेश्वर ने कहा दिन और रात अलग अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों और वे चिन्हों और नियत समयों और दिनों और बरसों के कारण हों। १५ और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथिवी पर प्रकाश देनेहारी भी ठहरें और वैसा ही हो गया। १६ सो परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं उन में से बड़ी ज्योति तो दिन पर प्रभुता करने के लिये और छोटी ज्योति रात पर प्रभुता करने के लिये और तारागण को भी बनाया। १७ और परमेश्वर ने उन को आकाश के अन्तर में इस लिये रक्खा कि वे पृथिवी पर प्रकाश दें। १८ और दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले और अन्धियारे को अलग अलग करें और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १९ और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो चौथा दिन हो गया॥

२० फिर परमेश्वर ने कहा जल जीते प्राणियों से बहुत ही भर जाए और पक्षी पृथिवी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें। २१ सो परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं को और उन सब जीते प्राणियों को भी सिरजा जो चलते हैं जिनसे जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के उड़नेहारे पक्षियों को भी सिरजा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। २२ और परमेश्वर ने यह कहके उन को आशिष दी कि फूलो फलो और समुद्र के जल में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें। २३ और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो पांचवां दिन हो गया॥

२४ फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से एक एक जाति के जीते प्राणी उत्पन्न हों अर्थात् घरैले पशु और रेंगनेहारे जन्तु और पृथिवी के बनैले पशु जाति जाति के अनुसार और वैसा ही हो गया। २५ सो परमेश्वर ने पृथिवी के जाति जाति के बनैले पशुओं को और जाति जाति के घरैले पशुओं को और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगनेहारे जन्तुओं को बनाया और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। २६ फिर परमेश्वर ने कहा हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और घरैले पशुओं और सारी पृथिवी पर और सब रेंगनेहारे जन्तुओं पर जो पृथिवी पर रेंगते हैं अधिकार रक्खें। २७ सो परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार सिरजा अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको सिरजा नर और नारी करके उस ने मनुष्यों को सिरजा। २८ और परमेश्वर ने उन को आशिष दी और उन से कहा फूलो फलो और पृथिवी में भर जाओ और उस को अपने वश में कर लो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और पृथिवी पर रेंगनेहारे सब जन्तुओं पर अधिकार रक्खो। २९ फिर परमेश्वर ने उन से कहा सुनो जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथिवी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं सो सब मैं ने तुम को दिये हैं वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं। ३० और जितने पृथिवी के पशु और आकाश के पक्षी और पृथिवी पर रेंगनेहारे जन्तु हैं जिन में जीवन का

प्राण है उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिये हैं और वैसा ही हो गया। ३१ और परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा तो क्या देखा कि वह बहुत ही अच्छा है और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो छठवां दिन हो गया॥

२. यों आकाश और पृथिवी और उन की सारी सेना का बनाना निपट गया। २ और परमेश्वर ने सातवें दिन अपना काम जो वह करता था निपटा दिया सो सातवें दिन उस ने अपने किये हुए सारे काम से विश्राम किया। ३ और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशिष दी और पवित्र ठहराया क्योंकि उस में उस ने सृष्टि के अपने सारे काम से विश्राम किया॥

(मनुष्य की उत्पत्ति)

४ आकाश और पृथिवी की उत्पत्ति का वृत्तान्त[१] यह है कि जब वे सिरजे गये अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथिवी और आकाश को बनाया। ५ तब मैदान का कोई झाड़ भूमि में न हुआ था और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथिवी पर जल न बरसाया था और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य न था। ६ तौ भी कुहरा पृथिवी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी। ७ और यहोवा परमेश्वर ने आदम[२] को भूमि की मिट्टी से रचा और उस के नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम[२] जीता प्राणी हुआ। ८ और यहोवा परमेश्वर ने पूरब ओर एदेन देश में एक बारी लगाई और वहां आदम[२] को जिसे उस ने रचा था रख दिया। ९ और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष जो देखने में मनोहर और जिन के फल खाने में अच्छे हैं उगाये और जीवन के वृक्ष को बारी के बीच में और भले बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। १० और उस बारी के सींचने के लिये एक महानद एदेन से निकलता था और वहां से आगे बहकर चार धार[३] हो गया। ११ पहिली धार का नाम पीशोन है यह वही है जो हवीला नाम सारे देश को जहां सोना मिलता है घेरे हुए है। १२ उस देश का सोना चोखा होता है और वहां मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं। १३ और दूसरी नदी का नाम गीहोन है यह वही है जो कूश सारे देश को घेरे हुए है। १४ और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है यह वही है जो अश्शूर की पूरब ओर बहती है और चौथी नदी का नाम फरात है। १५ जब यहोवा परमेश्वर ने आदम[२] को लेकर एदेन की बारी में रख दिया कि वह उस में काम करे और उस की रक्षा करे, १६ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम[२] को यह आज्ञा दी कि बारी के सब वृक्षों का फल तू बिना खटके खा सकता है। १७ पर भले बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उस का फल तू न खाना क्योंकि जिस दिन तू उस का फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा॥

१८ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा आदम[१] का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उस के लिये ऐसा एक सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए। १९ और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रचकर आदम[१] के पास ले आया कि देखे कि वह उन का क्या क्या नाम रक्खेगा और जिस जिस जाति प्राणी का जो जो नाम आदम[१] ने रक्खा सोई उस का नाम पड़ा। २० सो आदम[१] ने सब जाति के घरैले पशुओं और आकाश के पक्षियों और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रक्खे पर आदम के लिये ऐसा कोई सहायक न मिला जो उस से मेल खाए। २१ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम[१] को भारी नींद में डाल दिया और जब वह सो गया तब उस ने उस की एक पसुली निकालकर उस की सन्ती मांस भर दिया। २२ और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उसने आदम[१] में से निकाली थी स्त्री बना दिया और उस को आदम[१] के पास ले आये। २३ और आदम[१] ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है सो इस का नाम नारी होगा क्योंकि यह नर में से निकाली गई। २४ इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे। २५ और आदम[१] और उस की स्त्री दोनों नंगे तो थे पर लजाते न थे॥

(मनुष्य के पापी हो जाने का वर्णन)

३. यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाये थे सब में से सर्प धूर्त्त था और उस ने स्त्री से कहा क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस बारी के किसी वृक्ष का फल न खाना। २ स्त्री ने सर्प से कहा इस बारी के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। ३ पर जो वृक्ष बारी के बीच में है उस के फल के विषय परमेश्वर ने कहा कि तुम उस को न खाना न उस को छूना भी नहीं तो मर जाओगे। ४ तब सर्प ने स्त्री से कहा तुम निश्चय न मरोगे। ५ बरन परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उस का फल खाओ उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। ६ सो जब स्त्री को जान पड़ा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है तब उस ने उस

(१) मूल में. की वंशावली। (२) वा. मनुष्य। (३) मूल में. बढ़ के चार सिर।

(१) वा. मनुष्य।

में से तोड़कर खाया और अपने पति को दिया और उस
७ ने भी खाया । तब उन दोनों की आंखें खुल गई और
उन को ज्ञान पड़ा कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने अंजीर के
८ पत्ते जोड़ जोड़कर लंगोट बना लिये । पीछे यहोवा परमे-
श्वर जो सांझ के समय[१] बारी में फिरता था उस का
शब्द उन को सुन पड़ा और आदम और उस की स्त्री बारी
९ के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गये । तब
यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा तू कहां है ।
१० उस ने कहा मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया
११ क्योंकि मैं नंगा था इस लिये छिप गया । उस ने कहा
किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है जिस वृक्ष का फल
खाने को मैं ने तुझे बर्जा था क्या तू ने उस का फल खाया
१२ है । आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को
दिया उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया सो मैं ने खाया ।
१३ तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा तू ने यह क्या किया
है स्त्री ने कहा सर्प ने मुझे बहका दिया सो मैं ने खाया ।
१४ तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा तू ने जो यह किया
है इस लिये तू सब घरैले पशुओं और सब बनैले पशुओं
से अधिक स्रापित है तू पेट के बल चला करेगा और
१५ जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा । और मैं तेरे और इस स्त्री
के बीच में और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर
उपजाऊंगा वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उस
१६ की एड़ी को कुचल डालेगा । फिर स्त्री से उस ने कहा मैं
तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा
तू पीड़ित होकर बालक जनेगी और तेरी लालसा तेरे पति
१७ की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा । और
आदम से उस ने कहा तू ने जो अपनी स्त्री की सुनी
और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी
कि तू उसे न खाना उस को तू ने खाया है इस लिये
भूमि तेरे कारण स्रापित है तू उस की उपज जीवन
१८ भर दुःख के साथ खाया करेगा । और वह तेरे लिये कांटे
और ऊंटकटारे उगाएगी और तू खेत की उपज खाएगा ।
१९ और अपने माथे के पसीना गारे की रोटी तू खाया करेगा
और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा क्योंकि तू उसी में
से निकाला गया तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर
२० मिल जाएगा । और आदम ने अपनी स्त्री का नाम
हव्वा[२] रक्खा क्योंकि जितने मनुष्य जीते हैं उन सब की
२१ आदिमाता वही हुई । और यहोवा परमेश्वर ने आदम
और उस की स्त्री के लिये चमड़े के अंगरखे बनाकर उन
को पहिना दिये ॥
२२ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का

(१) मूल में. दिन की वायु में । (२) अर्थात् जीवन ।

ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है सो अब
ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल
भी तोड़के खाए और सदा जीता रहे । सो यहोवा २३
परमेश्वर ने उस को एदेन की बारी में से निकाल दिया
कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया[१]
गया था । आदम को तो उस ने बरबस निकाल दिया २४
और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये एदेन
की बारी की पूरब ओर करूबों को और चारों ओर घूमती
हुई ज्वालामय तलवार को भी ठहरा दिया ॥

(आदम के पुत्रों का वर्णन)

४. जब आदम ने अपनी स्त्री हव्वा से प्रसंग किया तब
वह गर्भवती होकर कैन को जनी और कहा
मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है । फिर वह २
उस के भाई हाबिल को भी जनी और हाबिल तो भेड़
बकरियों का चरवाहा हुआ पर कैन भूमि की खेती करने-
हारा हुआ, कुछ दिन बीते पर कैन यहोवा के पास भूमि ३
की उपज में से कुछ भेंट ले आया । और हाबिल भी ४
अपनी भेड़ बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट करके
ले आया और उन की चर्बी चढ़ाई तब यहोवा ने हाबिल
और उस की भेंट का तो मान किया । पर कैन और उस ५
की भेंट का उस ने मान न किया तब कैन अति क्रोधित
हुआ और उस के मुंह पर उदासी छा गई । तब यहोवा ६
ने कैन से कहा तू क्यों क्रोधित हुआ और तेरे मुंह पर
उदासी क्यों छा गई है । यदि तू भला करे तो क्या तेरी ७
भेंट ग्रहण न की जाएगी और यदि तू भला न करे तो पाप
द्वार पर दबका रहता है और उस की लालसा तेरी ओर
होगी और तू उस पर प्रभुता करेगा । पीछे कैन ने अपने ८
भाई हाबिल से कुछ कहा और जब वे मैदान में थे तब
कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़कर उसे घात किया ।
तब यहोवा ने कैन से पूछा तेरा भाई हाबिल कहां है उस ९
ने कहा मालूम नहीं क्या मैं अपने भाई का रखवाला
हूं । उस ने कहा तू ने क्या किया है तेरे भाई का लोहू १०
भूमि में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है ।
सो अब भूमि जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने ११
के लिये अपना मुंह पसारा है उस की ओर से तू स्रापित
है । चाहे तू भूमि पर खेती करे तौ भी उस की पूरी उपज १२
फिर तुझे न मिलेगी[२] और तू पृथिवी पर बहेतू और भगोड़ा
होगा । तब कैन ने यहोवा से कहा मेरा दण्ड सहने से[३] १३
बाहर है । देख तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से १४
बरबस निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की ओट रहूंगा और

(१) मूल में. लिया । (२) मूल में. वह तुझे फिर अपना बल न देगी । (३) वा. मेरा अधर्म्म क्षमा होने से ।

पृथिवी पर बहेतू और भगोड़ा रहूंगा और जो कोई मुझे १५ पाएगा सो मुझे घात करेगा। यहोवा ने उस से कहा इस कारण जो कोई कैन को घात करे उस से सात गुणा पलटा लिया जायगा। और यहोवा ने कैन के लिये एक चिह्न ठहराया न हो कि कोई उसे पाकर मारे॥

१६ तब कैन यहोवा के सन्मुख से निकल गया और नोद् १७ नाम देश में जो एदेन की पूरब ओर है रहने लगा। जब कैन ने अपनी स्त्री से प्रसंग किया तब वह गर्भवती होकर हनोक को जनी, फिर कैन एक नगर बसाने लगा और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रक्खा। १८ और हनोक से ईराद् जन्मा और ईराद् ने महूयाएल को जन्माया और महूयाएल ने मतूशाएल को और मतूशा- १९ एल ने लेमेक को जन्माया। और लेमेक ने दो स्त्रियां ब्याह लिईं जिन में से एक का नाम आदा और दूसरी का २० सिल्ला है। और आदा याबाल को जनी वह तम्बुओं में रहना और ढोरों का पालना इन दोनों रीतियों का चलाने- २१ हारा हुआ[1]। और उस के भाई का नाम यूबाल है वह वीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति २२ का चलानेहारा हुआ[2]। और सिल्ला भी तूबल्कैन नाम एक पुत्र जनी वह पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेहारा हुआ और तूबल्कैन की बहिन २३ नामा थी। और लेमेक ने अपनी स्त्रियों से कहा

हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो
हे लेमेक की स्त्रियो मेरी बात पर कान लगाओ
मैं ने एक पुरुष को जो मेरे चोट लगाता था
अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल करता था घात किया है।

२४ जब कैन का पलटा सातगुणा लिया जाएगा
तो लेमेक का सतहत्तरगुणा लिया जाएगा

२५ और आदम ने अपनी स्त्री से फिर प्रसंग किया और वह पुत्र जनी और उस का नाम यह कह के शेत रक्खा कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल की सन्ती जिस को कैन २६ ने घात किया एक और बंश ठहरा दिया है। और शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उस ने उस का नाम एनोश रक्खा उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे॥

(आदम की वंशावली)

५. आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य को सिरजा तब अपनी समानता २ ही में बनाया। नर और नारी करके उस ने मनुष्यों को सिरजा और उन्हें आशिष दी और उन की सृष्टि के दिन उन का नाम आदम[1] रक्खा। ३ जब आदम एक सौ तीस बरस का हुआ तब उस ने अपनी समानता में अपने स्वरूप के अनुसार एक पुत्र जन्माकर उस का नाम शेत रक्खा। ४ और शेत को जन्माने के पीछे आदम आठ सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ५ और आदम की सारी अवस्था नौ सौ तीस बरस की हुई तब वह मर गया॥

६ जब शेत एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस ने एनोश को जन्माया। ७ और एनोश को जन्माने के पीछे शेत आठ सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ८ और शेत की सारी अवस्था नौ सौ बारह बरस की हुई तब वह मर गया॥

९ जब एनोश नब्बे बरस का हुआ तब उस ने केनान को जन्माया। १० और केनान को जन्माने के पीछे एनोश आठ सौ पन्द्रह बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ११ और एनोश की सारी अवस्था नौ सौ पांच बरस की हुई तब वह मर गया॥

१२ जब केनान सत्तर बरस का हुआ तब उस ने महललेल को जन्माया। १३ और महललेल को जन्माने के पीछे केनान आठ सौ चालीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १४ और केनान की सारी अवस्था नौ सौ दस बरस की हुई तब वह मर गया॥

१५ जब महललेल पैंसठ बरस का हुआ तब उस ने येरेद को जन्माया। १६ और येरेद को जन्माने के पीछे महललेल आठ सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १७ और महललेल की सारी अवस्था आठ सौ पंचानवे बरस की हुई तब वह मर गया॥

१८ जब येरेद एक सौ बासठ बरस का हुआ तब उस ने हनोक को जन्माया। १९ और हनोक को जन्माने के पीछे येरेद आठ सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २० और येरेद की सारी अवस्था नौ सौ बासठ बरस की हुई तब वह मर गया॥

२१ जब हनोक पैंसठ बरस का हुआ तब उस ने मतूशेलह को जन्माया। २२ और मतूशेलह को जन्माने के पीछे हनोक तीन सौ बरस लों परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २३ और हनोक की सारी अवस्था तीन सौ पैंसठ बरस की हुई। २४ और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था फिर वह न रहा क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था। २५ जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी बरस का हुआ तब उस ने लेमेक को जन्माया। २६ और लेमेक को जन्माने के पीछे मतूशेलह

(१) मूल में. तंबु में रहनेहारों और ढोरों का पिता हुआ। (२) मूल में. वीणा और बांसुरी के सब पकड़नेहारों का पिता हुआ।

(१) वा. मनुष्य।

सात सौ बयासी बरस जीता रहा और उस के और भी
२७ बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और मतूशेलह की सारी अवस्था
नौ सौ उनहत्तर बरस की हुई तब वह मर गया॥
२८ जब लेमेक एक सौ बयासी बरस का हुआ तब उस
२९ ने एक पुत्र जन्माया। और यह कह कर उस का नाम
नूह रक्खा कि यहोवा ने जो पृथिवी को स्राप दिया है
उस के विषय यह लड़का हमारे काम में और उस कठिन
३० परिश्रम में जो हम करते हैं[1] हम को शांति देगा। और
नूह को जन्माने के पीछे लेमेक पांच सौ पंचानवे बरस
जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
३१ और लेमेक की सारी अवस्था सात सौ सतहत्तर बरस
की हुई तब वह मर गया॥
३२ और नूह पांच सौ बरस का हुआ और उस ने शेम
और हाम और येपेत को जन्माया था॥

(जलप्रलय का वर्णन)

६. फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत होने लगे और उन के बेटियां उत्पन्न हुईं,
२ तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा
कि वे सुन्दर हैं सो उन्हों ने जिस जिस को चाहा
३ उन को अपनी स्त्रियां बना लिया। और यहोवा ने कहा
मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा
क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है[2] उस का समय एक सौ
४ बीस बरस होगा। उन दिनों में पृथिवी पर नपील लोग
रहते थे और पीछे जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों
के पास जाते और वे उन के जन्माये पुत्र जनती थीं तब
वे पुत्र भी शूरवीर होते थे जिन की कीर्ति प्राचीनकाल
५ से बनी है। और यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई
पृथिवी पर बढ़ गई है और उन के मन के विचार में
६ जो कुछ उत्पन्न होता सो निरन्तर बुरा ही होता है। और
यहोवा पृथिवी पर मनुष्य को बनाने से पछताया और वह
७ मन में अति खेदित हुआ। सो यहोवा ने सोचा कि मैं
मनुष्य को जिसे मैं ने सिरजा है पृथिवी के ऊपर से मिटा
दूंगा क्या मनुष्य क्या पशु क्या रेंगनेहारे जन्तु क्या
आकाश के पक्षी सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उन के
८ बनाने से पछताता हूं। परन्तु यहोवा की अनुग्रह की
दृष्टि नूह पर बनी रही॥
९ नूह का वृत्तान्त[3] यह है। नूह धर्म्मी पुरुष और
अपने समय के लोगों में खरा था और नूह परमेश्वर ही
१० के साथ साथ चलता रहा। और नूह ने शेम और हाम
११ और येपेत नाम तीन पुत्रों को जन्माया। उस समय
पृथिवी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी और उपद्रव
१२ से भर गई थी। और परमेश्वर ने जो पृथिवी पर दृष्टि
की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है क्योंकि सब
प्राणियों ने पृथिवी पर अपनी अपनी चाल चलन बिगाड़
दी थी॥
१३ सो परमेश्वर ने नूह से कहा सब प्राणियों का अन्त
करना मेरे मन में आ गया है[1] क्योंकि उन के कारण
पृथिवी उपद्रव से भर गई है सो मैं उन को पृथिवी समेत
१४ नाश कर डालूंगा। सो तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक
जहाज बना ले उस में कोठरियां बनाना और भीतर बाहर
१५ उस पर राल लगाना। और इस ढब से उस को बनाना,
जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ चौड़ाई पचास हाथ और
१६ ऊंचाई तीस हाथ की हो। जहाज में एक खिड़की[2] बनाना
और इस के एक हाथ ऊपर उस की छत पाटना और
जहाज की एक अलंग में एक द्वार रखना और जहाज में
१७ पहिला दूसरा तीसरा खंड बनाना। और सुन मैं आप
पृथिवी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को जिन में
जीवन का आत्मा है आकाश के तले से नाश करने पर
१८ हूं पृथिवी पर जो जो हैं उन का तो प्राण छूटेगा। पर
तेरे संग मैं वाचा बांधता हूं सो तू अपने पुत्रों स्त्री और
१९ बहुओं समेत जहाज में जाना। और सब जीते प्राणियों में
से तू एक एक जाति के दो दो अर्थात् एक नर और एक
मादा जहाज में ले जाकर अपने साथ जिलाय रखना।
२० एक एक जाति के पक्षी और एक एक जाति के पशु और
एक एक जाति के भूमि पर रेंगनेहारे सब में से दो दो तेरे
२१ पास आएंगे कि तू उन को जिलाय रक्खे। और भांति
भांति का आहार जो कुछ खाया जाता है उस को तू लेके
अपने पास बटोर रखना सो तेरे और उन के भोजन के
२२ लिये होगा। परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार ही
नूह ने किया॥

७. और यहोवा ने नूह से कहा तू अपने सारे घराने समेत जहाज में जा क्योंकि मैं
ने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपने लेखे
२ धर्म्मी देखा है। सब जाति के शुद्ध पशुओं में से तो तू
सात सात अर्थात् नर और मादा लेना पर जो पशु शुद्ध
नहीं उन में से दो दो लेना अर्थात् नर और मादा और
आकाश के पक्षियों में से भी सात सात अर्थात् नर और
मादा लेना कि उन का वंश बचकर सारी पृथिवी के ऊपर
४ बना रहे। क्योंकि अब सात दिन और बीतने पर मैं पृथिवी
पर जल बरसाने लगूंगा और चालीस दिन और चालीस
रात लों उसे बरसाता रहूंगा और जितनी वस्तुएं मैं ने बनाईं

(१) मूल में. हमारे हाथ के कठिन परिश्रम में। (२) वा. वह भटक जाने से शरीर ही ठहरा। (३) मूल में. वंशावली।

(१) मूल में. अन्त मेरे साम्हने आ गया है। (२) मूल में. उजियाला।

५ सब को भूमि के ऊपर से मिटाऊंगा । यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया ॥

६ नूह की अवस्था के छः सौवें बरस में जलप्रलय ७ पृथिवी पर हुआ । नूह अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत ८ प्रलय के जल से बचने के लिये जहाज में गया । और शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के पशुओं में से और पक्षियों ९ और भूमि पर रेंगनेहारों में से भी, दो दो अर्थात् नर और मादा जहाज में नूह के पास गये जैसा कि परमे- १० श्वर ने नूह को आज्ञा दी थी । सात दिन पीछे प्रलय ११ का जल पृथिवी पर आने लगा । जब नूह की अवस्था के छः सौवें बरस के दूसरे महीने का सत्तरहवां दिन आया उसी दिन बड़े गहिरे समुद्र के सब सोते फूट १२ निकले और आकाश के झरोखे खुल गये । और वर्षा चालीस दिन और चालीस रात लों पृथिवी पर होती रही । १३ ठीक उसी दिन नूह अपने शेम हाम येपेत नाम पुत्रों १४ और अपनी स्त्री और तीनों बहुओं समेत, और उन के संग एक एक जाति के सब बनैले पशु और एक एक जाति के सब घरैले पशु और एक एक जाति के सब पृथिवी पर रेंगनेहारे और एक एक जाति के सब उड़ने- १५ हारे पक्षी जहाज में गये । जितने प्राणियों में जीवन का आत्मा था उन की सब जातियों में से दो दो नूह के पास १६ जहाज में गये । और जो गये सो परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सब जाति के प्राणियों में से नर और मादा गये । १७ तब यहोवा ने उस के पीछे द्वार मूंद दिया । और प्रलय पृथिवी पर चालीस दिन लों रहा और जब जल बढ़ने लगा तब उस से जहाज उभरने लगा यहां लों कि वह पृथिवी १८ पर से ऊंचा हो गया । और जल बढ़ते बढ़ते पृथिवी पर बहुत ही बढ़ गया और जहाज जल के ऊपर ऊपर तैरता १९ रहा । बरन जल पृथिवी पर अत्यन्त बढ़ गया यहां लों कि सारी धरती पर[1] जितने बड़े बड़े पहाड़ थे सब डूब २० गये । जल तो पन्द्रह हाथ ऊपर बढ़ गया और पहाड़ २१ डूब गये । और क्या पक्षी क्या घरैले पशु क्या बनैले पशु पृथिवी पर सब चलनेहारे प्राणी बरन जितने जन्तु पृथिवी में बहुतायत से भर गये थे उन सभों का और २२ सब मनुष्यों का प्राण भी छूट गया । जो जो स्थल पर थे उन में से जितनों के नथनों में जीवन के आत्मा का २३ श्वास था सब मर मिटे । और क्या मनुष्य क्या पशु क्या रेंगनेहारे जन्तु क्या आकाश के पक्षी जो जो भूमि पर थे सो सब पृथिवी पर से मिट गये केवल नूह और जितने २४ उस के संग जहाज में थे वे ही बच गये । और जल पृथिवी पर एक सौ पचास दिन लों बढ़ा रहा ॥

(१) मूल में. सारे आकाश के तले ।

८. और परमेश्वर ने नूह की और जितने बनैले पशु और घरैले पशु उस के संग जहाज में थे उन सभों की सुधि ली और परमेश्वर ने पृथिवी पर पवन बहाई तब जल घटने लगा । २ और गहिरे समुद्र के सोते और आकाश के झरोखे मूंद गये और उस से जो वर्षा होती थी सो थम गई । ३ और एक सौ पचास दिन के बीते पर जल पृथिवी पर से लगातार घटने लगा । ४ सातवें महीने के सत्तरहवें दिन को जहाज अरारात नाम पहाड़ पर टिक गया । ५ और जल दसवें महीने लों घटता चला गया सो दसवें महीने के पहिले दिन को पहाड़ों की चोटियां दिखाई दीं । ६ फिर चालीस दिन के पीछे नूह ने अपने बनाये हुए जहाज की खिड़की को खोलकर, ७ एक कौवा उड़ा दिया वह जब लों जल पृथिवी पर से सूख न गया तब लों इधर उधर फिरता रहा । ८ फिर उस ने अपने पास से एक कबूतरी को भी उड़ा दिया कि देखें कि जल भूमि पर से घट गया कि नहीं । ९ उस कबूतरी को जो अपने चंगुल के टेकने के लिये कोई स्थान न मिला सो वह उस के पास जहाज में लौट आई क्योंकि सारी पृथिवी के ऊपर जल ही जल रहा तब उस ने हाथ बढ़ाकर उसे अपने पास जहाज में रख लिया । १० तब और सात दिन लों ठहर कर उस ने उसी कबूतरी को जहाज में से फिर उड़ा दिया । ११ और कबूतरी सांझ के समय उस के पास आ गई और क्या देख पड़ा कि उस की चोंच में जलपाई का एक नया पत्ता है इस से नूह ने जान लिया कि जल पृथिवी पर घट गया है । १२ फिर उस ने और सात दिन ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया और वह उस के पास फिर कभी लौटकर न आई । १३ जब छः सौ बरस पूरे हुए तब दूसरे दिन[1] जल पृथिवी पर से सूख गया था तब नूह ने जहाज की छत खोलकर क्या देखा कि धरती सूख गई है । १४ और दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन को पृथिवी पूरी रीति से सूख गई ॥

१५, १६ तब परमेश्वर ने नूह से कहा, तू अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत जहाज में से निकल आ । १७ क्या पक्षी क्या पशु क्या सब भांति के रेंगनेहारे जन्तु जो पृथिवी पर रेंगते हैं जितने शरीरधारी जीवजन्तु तेरे संग हैं उन सब को अपने साथ निकाल ले आ कि पृथिवी पर उन से बहुत बच्चे उत्पन्न हों और वे फूलें फलें और पृथिवी पर फैल जाएं । १८ तब नूह और उस के पुत्र और स्त्री १९ बहुएं निकल आईं । और सब चौपाये रेंगनेहारे जन्तु और पक्षी और जितने जीवजंतु पृथिवी पर चलते फिरते हैं सो सब जाति जाति करके जहाज में से निकल आये । २० तब

(१) मूल में. छः सौ एक बरस के पहिले महीने के पहिले दिन ।

नूह ने यहोवा की एक वेदी बनाई और सब शुद्ध पशुओं और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ कुछ लेकर वेदी पर होम-
२१ बलि करके चढ़ाये। इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा कि मैं मनुष्य के कारण फिर भूमि को कभी श्राप न दूंगा यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता सो बुरा ही होता है तौ भी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है वैसा उन को फिर कभी न मारूंगा।
२२ अब से जब लों पृथिवी बनी रहेगी तब लों बोने और लवने के समय ठण्ड और तपन धूपकाल और शीतकाल दिन और रात निरन्तर होती चली जाएंगी ॥

९. फिर परमेश्वर ने नूह और उस के पुत्रों को यह आशिष दी कि फूलो फलो और बढ़ो और
२ पृथिवी में भर जाओ। और तुम्हारा डर और भय पृथिवी के सब पशुओं और आकाश के सब पक्षियों और भूमि पर के सब रेंगनेहारे जन्तुओं और समुद्र की सब मछलियों पर बना
३ रहेगा वे सब तुम्हारे वश में कर दिये जाते हैं। सब चलनेहारे जन्तु तुम्हारा आहार होंगे जैसा तुम को हरे हरे छोटे
४ पेड़ दिये थे वैसा ही अब सब कुछ देता हूं। पर मांस
५ को प्राण समेत अर्थात् लोहू समेत तुम न खाना। और निश्चय मैं तुम्हारे लोहू अर्थात् प्राण का पलटा लूंगा सब पशुओं और मनुष्यों दोनों से मैं उसे लूंगा मनुष्य के
६ प्राण का पलटा मैं एक एक के भाई बन्धु से लूंगा। जो कोई मनुष्य का लोहू बहाये उस का लोहू मनुष्य ही से बहाया जाए क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही
७ स्वरूप के अनुसार बनाया है। और तुम तो फूलो फलो और बढ़ो और पृथिवी में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर जाओ ॥

८ फिर परमेश्वर ने नूह और उस के पुत्रों से कहा,
९ सुनो मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पीछे जो तुम्हारा वंश
१० होगा उस के साथ भी वाचा बांधता हूं। और सब जीते प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं क्या पक्षी क्या घरैले पशु क्या पृथिवी के सब बनैले पशु पृथिवी के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं सब के साथ भी मेरी यह वाचा
११ बंधती है। और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरा करूंगा कि सब प्राणी फिर प्रलय के जल से नाश न होंगे और पृथिवी के नाश करने के लिये फिर जलप्रलय
१२ न होगा। फिर परमेश्वर ने कहा जो वाचा मैं तुम्हारे साथ और जितने जीते प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिये बांधता हूं उस का
१३ यह चिन्ह है कि मैं ने बादल में अपना धनुष रक्खा है वह मेरे और पृथिवी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा।
१४ और जब मैं पृथिवी पर बादल फैलाऊं तब बादल में धनुष
देख पड़ेगा। तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीते
१५ शरीरधारी प्राणियों के साथ बंधी है उस को मैं स्मरण करूंगा सो फिर ऐसा जलप्रलय न होगा। जिस से सब
१६ प्राणियों का विनाश हो। बादल में जो धनुष होगा सो मैं उसे देखके यह सदा की वाचा स्मरण करूंगा जो परमेश्वर के और पृथिवी पर के सब जीते शरीरधारी प्राणियों
१७ के बीच बन्धी है। फिर परमेश्वर ने नूह से कहा जो वाचा मैं ने पृथिवी भर के सब प्राणियों के साथ बांधी है उस का चिन्ह यही है ॥

१८ नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले सो शेम हाम और
१९ येपेत थे और हाम तो कनान का पिता हुआ। नूह के तीन पुत्र ये ही हैं और इन का वंश सारी पृथिवी पर फैल गया।

२० पीछे नूह किसनई करने लगा और उस ने दाख की
२१ बारी लगाई। और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ
२२ और अपने तंबू के भीतर नंगा हो गया। तब कनान के पिता हाम ने अपने पिता को नंगा देखा और बाहर
२३ आकर अपने दोनों भाइयों को बता दिया। तब शेम और येपेत दोनों ने कपड़ा लेकर अपने कन्धों पर रक्खा और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे तन को ढांप दिया और वे जो अपने मुख पीछे किये थे सो
२४ उन्हों ने अपने पिता को नंगा न देखा। जब नूह का नशा उतर गया तब उस ने जान लिया कि मेरे छोटे पुत्र ने मुझ से क्या किया है ॥

२५ सो उस ने कहा
कनान श्रापित हो
वह अपने भाईबन्धुओं के दासों का दास हो।
२६ फिर उस ने कहा
शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है
और कनान शेम[१] का दास होवे।
२७ परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए
और वह शेम के तंबुओं में बसे
और कनान उस का दास होवे।

२८ जलप्रलय के पीछे नूह साढ़े तीन सौ बरस जीता
२९ रहा। और नूह की सारी अवस्था साढ़े नौ सौ बरस की हुई तब वह मर गया ॥

(नूह की वंशावली)

१०. नूह के पुत्र जो शेम हाम और येपेत थे जलप्रलय के पीछे उनके पुत्र उत्पन्न हुए सो उन की वंशावली यह है ॥

२ येपेत के पुत्र गोमेर मागोग मादै यावान तूबल
३ मेशेक और तीरास हुए। और गोमेर के पुत्र अशकनज

(१) मूल में उस।

४ रीपत और तोगर्मा हुए। और यावान के वंश में एलीशा तर्शीश और कित्ती और दोदानी लोग हुए।
५ इन के वंश अन्यजातियों के द्वीपों के देशों में ऐसे बंट गये कि वे भिन्न भिन्न भाषाओं कुलों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

६ फिर हाम के पुत्र कूश मिस्र पूत और कनान
७ हुए। और कूश के पुत्र सबा हवीला सबता रामा और सबूतका हुए और रामा के पुत्र शबा और ददान हुए।
८ और कूश के वंश में निम्रोद भी हुआ पृथिवी पर
९ पहिला वीर वही हुआ। वह यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेहारा ठहरा इस से यह कहावत चली है, कि निम्रोद के समान यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी
१० शिकार खेलनेहारा। और उस के राज्य का आरम्भ शिनार देश में बाबेल और अक्कद और कलने हुआ।
११ उस देश से वह निकलकर अश्शूर को गया और नीनवे
१२ रहोबोतीर और कालह को, और नीनवे और कालह के बीच जो रेसेन है उसे भी बसाया बड़ा नगर यही
१३ है। और मिस्र के वंश में लूदी अनामी लहाबी
१४ नप्तूही। पत्रूसी कसलूही और कप्तोरी लोग हुए कसलूहियों में से तो पलिश्ती लोग निकले ॥

१५ फिर कनान के वंश में उस का जेठा सीदोन तब
१६, १७ हित्त, और यबूसी एमोरी गिर्गाशी, हिव्वी अर्की
१८ सीनी, अर्वदी समारी और हमाती लोग भी हुए और
१९ कनानियों के कुल पीछे ही फैल गये। और कनानियों का सिवाना सीदोन से लेकर गरार के मार्ग से होकर अज्जा लों और फिर सदोम अमोरा अदमा और सबो-
२० यीम के मार्ग से होकर लाशा लों हुआ। हाम के वंश में ही हुए और ये भिन्न भिन्न कुलों भाषाओं देशों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

२१ फिर शेम जो सब एबेरवंशियों का मूलपुरुष हुआ और येपेत का जेठा भाई था[१] उस के भी पुत्र उत्पन्न
२२ हुए। शेम के पुत्र एलाम अश्शूर अर्पक्षद् लूद और
२३ अराम हुए। और अराम के पुत्र ऊस हूल गेतेर और
२४ मश हुए। और अर्पक्षद् ने शेलह को और शेलह ने
२५ एबेर को जन्माया। और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए एक का नाम पेलेग इस कारण रक्खा गया कि उस के दिनों में पृथिवी बंट गई और उस के भाई का नाम
२६ योक्तान है। और योक्तान ने अल्मोदाद शेलेप हसर्मावेत
२७, २८ येरह। यदोराम ऊजाल दिक्ला, ओबाल अबीमाएल
२९ शबा, ओपीर हवीला और योबाब को जन्माया ये ही
३० सब योक्तान के पुत्र हुये। इनके रहने का स्थान मेशा से लेकर सपारा जो पूरब में एक पहाड़ है उस के मार्ग
३१ लों हुआ। शेम के पुत्र ये ही हुए और ये भिन्न भिन्न कुलों भाषाओं देशों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

३२ नूह के पुत्रों के कुल ये ही हैं और उन की जातियों के अनुसार उन की वंशावलियां ये ही हैं और जलप्रलय के पीछे पृथिवी भर की जातियां इन्हीं से होकर बंट गई ॥

(मनुष्य की भाषाओं में गड़बड़ पड़ने का वर्णन)

११. सारी पृथिवी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी। उस समय
२ लोग पूरब ओर चलते चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उस में बस गये। तब वे आपस में कहने लगे
३ आओ हम ईंटें बना बनाके भली भांति पकाएं सो उन के लिये ईंट पत्थरों का और मिट्टी का राल गारे का
४ काम देती थीं। फिर उन्हों ने कहा आओ हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें जिस की चोटी आकाश से बातें करे इस प्रकार से हम अपना नाम करें न हो कि हम को
५ सारी पृथिवी पर फैलना पड़े। जब आदमी नगर और गुम्मट बनाने लगे तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर
६ आया। और यहोवा ने कहा मैं क्या देखता हूं कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है और उन्हों ने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया सो अब जितना वे करने का यत्न करेंगे उस में से कुछ उन
७ के लिये अनहोना न होगा। सो आओ हम उतरके उन की भाषा में वहीं गड़बड़ डालें कि वे एक दूसरे की बोली
८ को न समझ सकें। सो यहोवा ने उन को वहां से सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया और उन्हों ने उस नगर का
९ बनाना छोड़ दिया। इस कारण उस नगर का नाम बाबेल[२] पड़ा क्योंकि सारी पृथिवी की भाषा में जो गड़बड़ है सो यहोवा ने वहीं डाली और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया ॥

(शेम की वंशावली)

१० शेम की वंशावली यह है। जलप्रलय के दो बरस पीछे जब शेम एक सौ बरस का हुआ तब उस ने
११ अर्पक्षद को जन्माया। और अर्पक्षद को जन्माने के पीछे शेम पांच सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई ॥

१२ जब अर्पक्षद पैंतीस बरस का हुआ तब उस ने
१३ शेलह को जन्माया। और शेलह को जन्माने के पीछे अर्पक्षद चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई ॥

(१) वा. जिसका बड़ा भाई येपत था।

(२) अर्थात्. गड़बड़।

१४ जब शेलह तीस बरस का हुआ तब उस ने एबेर को जन्माया । १५ और एबेर को जन्माने के पीछे शेलह चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१६ जब एबेर चौंतीस बरस का हुआ तब उस ने पेलेग को जन्माया । १७ और पेलेग के जन्माने के पीछे एबेर चार सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई ।

१८ जब पेलेग तीस बरस का हुआ तब उस ने रू को जन्माया । १९ और रू को जन्माने के पीछे पेलेग दो सौ नौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२० जब रू बत्तीस बरस का हुआ तब उस ने सरूग को जन्माया । २१ और सरूग को जन्माने के पीछे रू दो सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२२ जब सरूग तीस बरस का हुआ तब उस ने नाहोर को जन्माया । २३ और नाहोर के जन्माने के पीछे सरूग सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२४ जब नाहोर उनतीस बरस का हुआ तब उस ने तेरह को जन्माया । २५ और तेरह को जन्माने के पीछे नाहोर एक सौ उन्नीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई ॥

२६ जब तक तेरह सत्तर बरस का हुआ तब तक उस ने अब्राम नाहोर और हारान को जन्माया था ॥

२७ तेरह की यह वंशावली है कि तेरह ने अब्राम नाहोर और हारान को जन्माया और हारान ने लूत को जन्माया । २८ और हारान अपने पिता के साम्हने ही कसदियों के ऊर नाम नगर में जो उस की जन्मभूमि थी मर गया । २९ अब्राम और नाहोर ने स्त्रियां ब्याह लीं अब्राम की स्त्री का नाम तो सारै और नाहोर की स्त्री का नाम मिल्का है यह उस हारान की बेटी थी जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता था । ३० सारै तो बांझ थी उस के सन्तान न हुआ । ३१ और तेरह अपना पुत्र अब्राम और अपना पोता लूत जो हारान का पुत्र था और अपनी बहू सारै जो उस के पुत्र अब्राम की स्त्री थी इन सभों को लेकर कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला पर हारान नाम देश में पहुंचकर वहीं रहने लगा । ३२ जब तेरह दो सौ पांच बरस का हुआ तब वह हारान देश में मर गया ॥

(परमेश्वर की ओर से इब्राहीम के बुलाये जाने का वर्णन)

१२. **यहोवा** ने अब्राम से कहा अपने देश और अपनी जन्मभूमि और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा । २ और मैं तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा और तुझे आशिष दूंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू आशिष का मूल हो । ३ और जो तुझे आशीर्वाद दें उन्हें मैं आशिष दूंगा और जो तुझे कोसे उसे मैं स्राप दूंगा और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशिष पाएंगे । ४ यहोवा के इस कहे के अनुसार अब्राम चला और लूत भी उस के संग चला और जब अब्राम हारान देश से निकला तब वह पचहत्तर बरस का था । ५ सो अब्राम अपनी स्त्री सारै और अपने भतीजे लूत को और जो धन उन्हों ने इकट्ठा किया था और जो प्राणी उन्हों ने हारान में प्राप्त किये थे सब को लेकर कनान देश में जाने को निकल चला और वे कनान देश में आ भी गये । ६ उस देश के बीच से जाते जाते अब्राम शकेम का स्थान जहां मोरे का बांज वृक्ष है वहां लों पहुंच गया उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे । ७ तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर कहा यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा और उस ने वहां यहोवा की जिस ने उसे दर्शन दिया था एक वेदी बनाई । ८ फिर वहां से कूच करके वह उस पहाड़ पर आया जो बेतेल की पूरब ओर है और अपना तंबू उस स्थान में खड़ा किया जिस की पच्छिम ओर तो बेतेल और पूरब ओर ऐ है और वहां भी उस ने यहोवा की एक वेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना की । ९ और अब्राम दक्खिन देश की ओर कूच करके चलता गया ॥

१० और उस देश में अकाल पड़ा सो वहां जो भारी अकाल पड़ा इस लिये अब्राम मिस्र को चला कि वहां परदेशी होके रहे । ११ मिस्र के निकट पहुंचकर उस ने अपनी स्त्री सारै से कहा सुन मुझे मालूम है कि तू सुन्दरी स्त्री है । १२ इस कारण जब मिस्री तुझे देखेंगे तब कहेंगे यह उस की स्त्री है सो वे मुझ को तो मार डालेंगे पर तुझ को जीती रख लेंगे । १३ सो यह कहना कि मैं उस की बहिन हूं जिस से तेरे कारण मेरा भला होए और मेरा प्राण तेरे कारण बचे । १४ जब अब्राम मिस्र में आया तब मिस्रियों ने उस की स्त्री को देखा कि यह बहुत सुन्दरी है । १५ और फिरौन के हाकिमों ने उस को देखकर फिरौन के साम्हने उस की प्रशंसा की सो वह स्त्री फिरौन के घर में रक्खी गई । १६ और उस ने उस के कारण अब्राम की भलाई की सो उस को भेड़ बकरी गाय बैल गदहे दास दासियां गदहियां और ऊंट मिले । १७ तब यहोवा ने फिरौन और उस

के कराने पर अब्राम की स्त्री सारै के कारण बड़ी बड़ी १८ बिपत्तियां डालीं। सो फ़िरौन ने अब्राम के बुलवाकर कहा तू ने मुझ से क्या किया है तू ने मुझे क्यों नहीं १९ बताया कि यह मेरी स्त्री है। तू ने क्यों कहा कि यह मेरी बहिन है मैं ने उसे अपनी स्त्री कर लिया तो है पर २० अब अपनी स्त्री के लेकर चला जा। और फिरौन ने अपने जनों के उस के विषय में आज्ञा दी और उन्हों ने उस के और उस की स्त्री के उस सब समेत जो उस का था बिदा कर दिया॥

(इब्राहीम और लूत के अलग अलग होने का वर्णन)

१३. तब अब्राम अपनी स्त्री और अपनी सारी सम्पत्ति समेत लूत के भी संग लिये हुए मिस्र के छोड़ कर कनान के दक्खिन देश में आया। २ अब्राम भेड़ बकरी गाय बैल और सोने रूपे का बड़ा धनी ३ था। फिर वह दक्खिन देश से चल कर बेतेल के पास उसी स्थान के पहुंचा जहां उस का तंबू पहले पड़ा था ४ जो बेतेल और ऐ के बीच में है। वह उसी वेदी का स्थान है जो उस ने वहां पहले बनाई थी और वहां अब्राम ने ५ फिर यहोवा से प्रार्थना की। और लूत जो अब्राम के साथ चलता था उस के भी भेड़ बकरी गाय बैल और ६ तंबू थे। सो उस देश में उन दोनों की समाई न हो सकी कि वे इकट्ठे रहें क्योंकि उन के बहुत धन था यहां ७ तक कि वे इकट्ठे न रह सके। सो अब्राम और लूत की भेड़ बकरी और गाय बैल के चरवाहों में झगड़ा हुआ और उस समय कनानी और परिज्जी लोग उस देश में ८ रहते थे। तब अब्राम लूत से कहने लगा मेरे और तेरे बीच और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न ९ होने पाए क्योंकि हम लोग भाई-बंधु हैं। क्या सारा देश तेरे साम्हने नहीं सो मुझ से अलग हो। यदि तू बाईं ओर जाए तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा और यदि तू दहिनी १० ओर जाए तो मैं बाईं ओर जाऊंगा। तब लूत ने आंख उठाकर यर्दन नदी के पासवाली सारी तराई के देखा कि वह सब सिंची हुई है। जब लों यहोवा ने सदोम और अमोरा के नाश न किया था तब लों सोअर के मार्ग तक वह तराई यहोवा की बारी और मिस्र देश के ११ समान उपजाऊ थी। सो लूत अपने लिये यर्दन की सारी तराई के चुनके पूरब ओर चला और वे एक दूसरे से १२ अलग हो गये। अब्राम तो कनान देश में रहा पर लूत उस तराई के नगरों में रहने लगा और अपना तंबू १३ सदोम के निकट खड़ा किया। सदोम के लोग यहोवा १४ के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे। जब लूत अब्राम से अलग हो गया उस के पीछे यहोवा ने अब्राम से कहा आंख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम चारों ओर दृष्टि कर। क्योंकि जितनी भूमि १५ तुझे दिखाई देती है उस सब के मैं तुझे और तेरे वंश के युग युग के लिये दूंगा। और मैं तेरे वंश के पृथिवी १६ की धूल के किनकों की नाईं बहुत करूंगा, यहां लों कि जो कोई पृथिवी की धूल के किनकों के गिन सके वही तेरा वंश भी गिन सकेगा। उठ इस देश की लम्बाई और १७ चौड़ाई में चल फिर क्योंकि मैं उसे तुझी के दूंगा। इस १८ के पीछे अब्राम अपना तंबू उखाड़ के मम्रे के बांजों के बीच जो हेब्रोन में थे जाकर रहने लगा और वहां भी यहोवा की एक वेदी बनाई॥

(इब्राहीम के विजय और मेल्कीसेदेक के दर्शन देने का वर्णन)

१४. शिनार के राजा अम्रापेल और एल्लासार के राजा अर्योक और एलाम के राजा कदोर्लाओमेर और गोयीम के राजा तिदाल के दिनों में क्या हुआ कि, वे सदोम के राजा बेरा २ और अमोरा के राजा बिर्शा और अदमा के राजा शिनाब और सबोयीम के राजा शेमेबेर और बेला जो सोअर भी कहावता है उस के राजा के साथ लड़े। इन पांचों ने ३ सिद्दीम नाम तराई में जो खारे ताल के पास है एका किया। बारह बरस लों तो ये कदोर्लाओमेर के अधीन रहे ४ पर तेरहवें बरस में उस के विरुद्ध उठे। सो चौदहवें बरस ५ में कदोर्लाओमेर और उस के संगी राजा आये और अशतरोत्कर्नैम में रपाइयों के और हाम में जूजियों के और शावेकिर्यातैम में एमियों के, और सेईर नाम ६ पहाड़ में होरियों के मारते मारते उस एल्पारान लों जो जंगल के पास है पहुंच गये। वहां से वे घूमकर एन्मि- ७ शपात के आये जो कादेश भी कहावता है और अमा- लेकियों के सारे देश के और उन एमोरियों के भी जीत लिया जो हससोन्तामार में रहते थे। तब सदोम अमोरा ८ अदमा सबोयीम और बेला जो सोअर भी कहावता है इन के राजा निकले और सिद्दीम नाम तराई में उन के साथ युद्ध के लिये पांति बन्धाई। अर्थात् एलाम के राजा ९ कदोर्लाओमेर गोयीम के राजा तिदाल शिनार के राजा अम्रापेल और एल्लासार के राजा अर्योक इन चारों के विरुद्ध उन पांचों ने पांति बंधाई। सिद्दीम नाम १० तराई में जो लसार मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे सो सदोम और अमोरा के राजा भागते भागते उन में गिर पड़े और बाकी लोग पहाड़ पर भाग गये। तब वे सदोम ११ और अमोरा के सारे धन और भोजन वस्तुओं के लूटके चले गये। और अब्राम का भतीजा लूत जो सदोम १२ में रहता था उस के भी धन समेत वे लेकर चले गये।

१३ तब एक जन जो भागकर बच गया उस ने जाकर इब्री अब्राम को समाचार दिया अब्राम तो एमोरी मम्रे जो एश्कोल और आनेर का भाई था उस के बांज वृक्षों के बीच में रहता था और ये लोग अब्राम के संग वाचा १४ बांधे हुए थे। यह सुनके कि मेरा भतीजा बंधुआई में गया अब्राम ने अपने तीन सौ अठारह सीखे हुए दासों को जो उस के घर में उत्पन्न हुए थे हथियार बन्धा के १५ दान लों उन का पीछा किया, और अपने दासों के अलग अलग दल बान्धकर रात को उन पर लपककर उन को मार लिया और होबा लों जो दमिश्क की उत्तर ओर है १६ उन का पीछा किया। और वह सारे धन को और अपने भतीजे लूत और उस के धन को और स्त्रियों को और १७ सब बंधुओं को फेर ले आया। वह कदोर्लाओमेर और उस के संगी राजाओं को जीतकर लौटा आता था कि सदोम का राज शावे नाम तराई में जो राजा की १८ भी कहावती है उस के भेंट करने को आया। तब शालेम का राजा मेलकीसेदेक जो परमप्रधान ईश्वर का १९ याजक था सो रोटी और दाखमधु ले आया। और उस ने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से जो आकाश और पृथिवी का अधि-२० कारी है, तू धन्य हो। और धन्य है परमप्रधान ईश्वर जिस ने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। तब २१ अब्राम ने उस को सब का दशमांश दिया। तब सदोम के राजा ने अब्राम से कहा प्राणियों को तो मुझे दे और २२ धन को अपने पास रक्ख। अब्राम ने सदोम के राजा से कहा परमप्रधान ईश्वर यहोवा जो आकाश और पृथिवी २३ का अधिकारी है उस की मैं यह किरिया खाता हूं, कि जो कुछ तेरा है उस में से न तो मैं एक सूत और न जूती की बन्धनी न कोई और वस्तु लूंगा ऐसा न हो कि २४ तू कहने पाए कि अब्राम मेरे ही द्वारा धनी हुआ। पर जो कुछ इन जवानों ने खा लिया है और आनेर एश्कोल और मम्रे जो मेरे संग चले थे उन का भाग मैं फेर न दूंगा वे तो अपना अपना भाग ले रक्खें॥

(इब्राहीम के साथ यहोवा के वाचा बांधने का वर्णन)

१५. इन बातों के पीछे यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा कि हे अब्राम मत डर तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं। २ अब्राम ने कहा हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर होगा सो तू मुझे ३ क्या देगा। और अब्राम ने कहा मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया और क्या देखता हूं कि मेरे घर में उत्पन्न ४ हुआ एक जन मेरा वारिस होगा। तब यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि यह तेरा वारिस न होगा तेरा जो निज पुत्र होगा वही तेरा वारिस होगा। और ५ उस ने उस को बाहर ले जाके कहा आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन क्या तू उन को गिन सकता है फिर उस ने उस से कहा तेरा वंश ऐसा ही ६ होगा। उस ने यहोवा पर विश्वास किया और यहोवा ७ ने इस बात को उस के लेखे में धर्म गिना। और उस ने उस से कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कसदियों के ऊर नगर से बाहर ले आया कि तुझ को इस देश का ८ अधिकार दूं। उस ने कहा हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूं ९ कि मैं इस का अधिकारी हूंगा। यहोवा ने उस से कहा मेरे लिये तीन बरस की एक कलोर और तीन बरस की एक बकरी और तीन बरस का एक मेंढ़ा और एक १० पिण्डुक और पिण्डुकी का एक बच्चा ले। इन सभों को लेकर उस ने बीच बीच से दो दो टुकड़े कर दिया और टुकड़ों को आम्हने साम्हने रक्खा पर चिड़ियाओं को ११ उस ने दो दो टुकड़े न किया। और जब जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे तब तब अब्राम ने उन्हें उड़ा १२ दिया। जब सूर्य अस्त होने लगा तब अब्राम को भारी नींद आई और देखो अत्यन्त भय और महा अन्धकार १३ ने उसे छा लिया। तब यहोवा ने अब्राम से कहा यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराये देश में परदेशी होकर रहेंगे और उस देश के लोगों के दास हो जाएंगे और १४ वे उन को चार सौ बरस लों दुःख देंगे। फिर जिस जाति के वे दास होंगे उस को मैं दण्ड दूंगा और उस १५ के पीछे वे बड़ा धन लेकर निकल आएंगे। तू तो अपने पितरों में कुशल के साथ मिल जाएगा तुझे पूरे बुढ़ापे १६ में मिट्टी दी जाएगी। पर वे चौथी पीढ़ी में यहां फिर आएंगे क्योंकि अब लों एमोरियों का अधर्म्म पूरा नहीं १७ हुआ। जब सूर्य्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया तब एक धूआं उठती हुई अंगेठी और एक जलता हुआ पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के बीच १८ होकर निकल गया। उसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बान्धी, कि मिस्र के महानद से लेकर परात १९ नाम बड़े नद लों जितना देश है उसे, अर्थात् केनियों, २० कनिज्जियों, कद्मोनियों, हित्तियों, परिज्जियों, रपाइयों, २१ एमोरियों, कनानियों, गिर्गाशियों और यबूशियों का देश तेरे वंश को दिया है॥

(इश्माएल की उत्पत्ति का वर्णन)

१६. अब्राम की स्त्री सारै तो कोई सन्तान न जनी और उस के हागार नाम एक मिस्री लौंडी थी। सो सारै ने अब्राम से कहा सुन यहोवा २

तो मेरी कोख बन्द किये है सो मेरी लौंडी के पास आ क्या जानिये मेरा घर उस के द्वारा बस जाए । सारै की यह बात अब्राम ने मान ली । सो जब अब्राम को कनान देश में रहते दस बरस बीत चुके तब उस की स्त्री सारै ने अपनी मिस्री लौंडी हागार को लेकर अपने पति अब्राम को दिया कि वह उस की स्त्री हो । और वह हागार के पास गया और वह गर्भवती हुई और जब उस ने जाना कि मैं गर्भवती हूं, तब वह अपनी स्वामिनी को अपने लेखे में तुच्छ गिनने लगी । तब सारै ने अब्राम से कहा, जो मुझ पर उपद्रव हुआ सो तेरे ही सिर पर हो, मैं ने तो अपनी लौंडी को तेरी स्त्री कर दिया पर जब उस ने जाना कि मैं गर्भवती हूं तब वह मुझे तुच्छ गिनने लगी, सो यहोवा मेरे तेरे बीच में न्याय करे । अब्राम ने सारै से कहा सुन तेरी लौंडी तेरे वश में है जैसा तुझे भावे तैसा ही उस से कर । सो सारै उस को दुःख देने लगी और वह उस के साम्हने से भाग गई । तब यहोवा के दूत ने उस को जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर, कहा हे सारै की लौंडी हागार तू कहां से आती और कहां को जाती है, उस ने कहा मैं अपनी स्वामिनी सारै के साम्हने से भाग आई हूं । यहोवा के दूत ने उस से कहा अपनी स्वामिनी के पास लौटकर उस के दाब में रह । और यहोवा के दूत ने उस से कहा मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा बरन वह बहुतायत के मारे गिना भी न जाएगा । और यहोवा के दूत ने उस से कहा सुन तू गर्भवती है और पुत्र जनेगी सो उस का नाम इश्माएल[१] रखना क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख का हाल सुना है । और वह मनुष्य बनैले गदहे के समान रहेगा उस का हाथ सब के विरुद्ध उठेगा और सब के हाथ उस के विरुद्ध उठेंगे और वह अपने सब भाईबंधुओं के साम्हने बसा रहेगा । तब उस ने यहोवा का नाम जिस ने उस से बातें की थीं अत्ता-एलरोई[२] रखकर कहा कि क्या मैं यहां भी उस को जाते हुए देखने[३] पाई जो मेरा देखनेहारा है । इस कारण उस कूएं का नाम लहैरोई[४] कूआं पड़ा, वह तो कादेश और बेरेद के बीच है । सो हागार अब्राम का जन्माया एक पुत्र जनी और अब्राम ने अपने पुत्र का नाम जिसे हागार जनी इश्माएल रक्खा । जब हागार अब्राम के जन्माये इश्माएल को जनी उस समय अब्राम छियासी बरस का था ॥

(१) अर्थात् ईश्वर सुननेहारा । (२) अर्थात् तू सब्बदर्शी ईश्वर है । (३) मूल में उस के पीछे देखने । (४) अर्थात् जाते देखनेहारे का ।

(खतना की विधि के ठहरने का वर्णन और इसहाक की उत्पत्ति की प्रतिज्ञा)

१७. जब अब्राम निनानवे बरस का हो गया तब यहोवा उस को दर्शन देकर कहने लगा मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूं अपने को मेरे सन्मुख जानके चल[१] और खरा रह । और मैं तेरे साथ वाचा बान्धूंगा और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा । तब अब्राम मुंह के बल गिरा और परमेश्वर उस से यों बातें कहता गया, सुन मेरी वाचा जो तेरे साथ बन्धी रहेगी इस लिये तू जातियों के वृन्द का मूलपुरुष हो जाएगा । सो अब तेरा नाम अब्राम[२] न रहेगा तेरा नाम इब्राहीम[३] रक्खा गया है क्योंकि मैं तुझे जातियों के वृन्द का मूलपुरुष ठहरा देता हूं । और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे । और मैं तेरे साथ और तेरे पीछे पीढ़ी पीढ़ी लों तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा बांधता हूं कि मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा । और मैं तुझ को और तेरे पीछे तेरे वंश को भी यह सारा कनान देश जिस में तू परदेशी होकर रहता है इस रीति दूंगा कि वह युग युग उन की निज भूमि रहेगी और मैं उन का परमेश्वर रहूंगा । फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तू भी मेरे साथ बांधी हुई वाचा का पालन करना तू और तेरे पीछे तेरे वंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उस का पालन करें । मेरे साथ बांधी हुई जो वाचा तुझे और तेरे पीछे तेरे वंश को पालनी पड़ेगी सो यह है कि तुम में से एक एक पुरुष का खतना हो । तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना करा लेना जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है उस का यही चिन्ह होगा । पीढ़ी पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं जो घर में उत्पन्न हों वा पर-देशियों को रूपा देकर मोल लिये जाएं ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जाएं तब उन का खतना किया जाए। जो तेरे घर में उत्पन्न हो अथवा तेरे रूपे से मोल लिया जाए उस का खतना अवश्य ही किया जाए, सो मेरी वाचा जिस का चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग युग रहेगी । जो पुरुष खतनारहित रहे अर्थात् जिस की खलड़ी का खतना न हो वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए, क्योंकि उस ने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा को तोड़ दिया ॥

फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तेरी जो स्त्री सारै है उस को तू अब सारै न कहना उस का नाम सारा होगा । और मैं उस को आशिष दूंगा और तुझ को उस

(१) मूल में मेरे साम्हने चल । (२) अर्थात् उन्नत पिता । (३) अर्थात् बहुतों का पिता ।

के द्वारा एक पुत्र दूंगा और मैं उस को ऐसी आशिष दूंगा कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी और १७ उस के वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे। तब इब्राहीम मुंह के बल गिरकर हंसा और मन ही मन कहने लगा क्या सौ बरस के पुरुष के भी सन्तान होगा १८ और क्या सारा जो नब्बे बरस की है जनेगी। और इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे १९ यही बहुत है। परमेश्वर ने कहा निश्चय तेरी स्त्री सारा तेरा जन्माया एक पुत्र जनेगी और तू उस का नाम इसहाक रखना और मैं उस के साथ ऐसी वाचा बांधूंगा जो उस के पीछे उस के वंश के लिये युग युग की वाचा २० होगी। और इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी है मैं उसको भी आशिष देता हूं और उसे फुलाऊं फलाऊंगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूंगा उस से बारह प्रधान उत्पन्न होंगे और मैं उस से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा। २१ पर मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बांधूंगा जिसे सारा अगले बरस के इसी नियत समय में तेरा जन्माया २२ जनेगी। तब परमेश्वर ने इब्राहीम से बातें करनी बन्द २३ कीं और उस के पास से ऊपर चढ़ गया। तब इब्राहीम ने अपने पुत्र इश्माएल को और उस के घर में जितने उत्पन्न हुए थे और जितने उस के रुपैये से मोल लिये हुए थे, निदान उस के घर में जितने पुरुष थे उन सभों को लेके उसी दिन परमेश्वर के कहे के अनुसार उन की २४ खलड़ी का खतना किया। जब इब्राहीम की खलड़ी २५ का खतना हुआ तब वह निन्नानवे बरस का था। और जब उस के पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना हुआ २६ तब वह तेरह बरस का हुआ था। इब्राहीम और उस के पुत्र इश्माएल दोनों का खतना एक ही दिन में हुआ। २७ और उस के साथ ही उस के घर में जितने पुरुष थे क्या घर में उत्पन्न हुए क्या परदेशियों के हाथ से मोल लिये हुए सब का भी खतना हुआ॥

१८. इब्राहीम मम्रे के बांजों के बीच कड़े घाम के समय तंबू के द्वार पर बैठा हुआ था कि २ यहोवा ने उसे दर्शन दिया कि, उस ने आंख उठाकर दृष्टि की तो क्या देखा कि तीन पुरुष मेरे साम्हने खड़े हैं, सो यह देखकर वह उन से भेंट करने को तंबू के द्वार से ३ दौड़ा और भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहने लगा, हे प्रभु यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो अपने दास ४ के पास से चला न जा। थोड़ा सा जल लाया जाए और अपने पांव धोओ और इस वृक्ष के तले उठंग ५ जाओ। फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊं और उस से तुम अपने अपने जीव को ठण्डा करो तब उस के पीछे आगे चलो क्योंकि तुम अपने दास के पास इसी लिये आ गये हो। उन्हों ने कहा जैसा तू कहता है तैसा ही कर। ६ सो इब्राहीम ने तंबू में सारा के पास फुर्ती से जाकर कहा तीन सआ[1] मैदा फुर्ती से गून्ध और फुलके बना। फिर ७ इब्राहीम गाय बैल के झुण्ड में दौड़ा और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया और उस ने फुर्ती से उस को पकाया। तब उस ने मक्खन ८ और दूध और वह बछड़ा जो उस ने पकवाया था लेकर उन के आगे धर दिया और आप वृक्ष के तले उन के पास खड़ा रहा और वे खाने लगे। तब उन्हों ने उस से पूछा ९ तेरी स्त्री सारा कहां है उस ने कहा वह तो तंबू में है। उस ने कहा मैं वसन्त ऋतु में[2] निश्चय तेरे पास फिर १० आऊंगा तब तेरी स्त्री सारा पुत्र जनेगी। और सारा तंबू के द्वार पर जो इब्राहीम के पीछे था सुन रही थी। इब्रा- ११ हीम और सारा दोनों बहुत पुरनिये थे और सारा को स्त्री-धर्म बन्द हो गया था। सो सारा मन में हंस कर कहने १२ लगी मैं जो बूढ़ी हूं और मेरा पति भी बूढ़ा है तो क्या मुझे यह सुख होगा। तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा १३ सारा यह कहकर क्यों हंसी कि क्या मैं बुढ़िया होकर सच-मुच जनूंगी। क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है १४ नियत समय में अर्थात् वसन्त ऋतु में[2] मैं तेरे पास फिर आऊंगा और सारा पुत्र जनेगी। तब सारा डर के मारे १५ यह कहकर मुकर गई, कि मैं नहीं हंसी, उस ने कहा नहीं तू हंसी तो थी।

(सदोम आदि नगरों के विनाश का वर्णन)

फिर वे पुरुष वहां से चलकर सदोम की ओर ताकने १६ लगे और इब्राहीम उन्हें बिदा करने के लिए उन के संग संग चला। तब यहोवा ने कहा यह जो मैं करता हूं सो १७ क्या इब्राहीम से छिपा रक्खूं। इब्राहीम से तो निश्चय १८ एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी और पृथिवी की सारी जातियां उस के द्वारा आशिष पाएंगी। क्योंकि मैं १९ ने इसी मनसा से उस पर मन लगाया है कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उस के पीछे रह जाएंगे ऐसी आज्ञा दे कि वे यहोवा के मार्ग को धरे हुए धर्म और न्याय करते रहें इस लिये कि जो कुछ यहोवा ने इब्राहीम के विषय में कहा है उसे वह उस के लिए पूरा भी करे। फिर यहोवा ने कहा सदोम और अमोरा की चिल्लाहट जो २० बढ़ी और उन का पाप जो बहुत भारी हो गया है, इस २१ लिये मैं उतर कर देखूंगा कि उस की जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुंची है उन्होंने ठीक वैसा ही काम किया कि नहीं और न किया हो तो इसे मैं जानूंगा। सो वे पुरुष २२

(१) यह नपुआ विशेष है। (२) मूल में जीवन के समय में।

तो वहां से फिर के सदोम की ओर जाने लगे पर इब्रा-
२२ हीम यहोवा के आगे खड़ा रह गया। तब इब्राहीम
उस के समीप जाकर कहने लगा क्या तू सचमुच दुष्ट के
२४ संग धर्म्मी को भी मिटाएगा। क्या जानिये उस नगर में
पचास धर्मी हों तो क्या तू सचमुच उस स्थान को
मिटाएगा और उन पचास धर्म्मियों के कारण जो उस
२५ में हों न छोड़ेगा। इस प्रकार का काम करना तुझ से
दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्म्मी को भी मार डाले और
धर्म्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो यह तुझ से दूर
२६ रहे क्या सारी पृथिवी का न्यायी न्याय न करे। यहोवा ने
कहा यदि मुझे सदोम में पचास धर्म्मी मिलें तो उन के
२७ कारण उस सारे स्थान को छोड़ूंगा। फिर इब्राहीम ने
कहा हे प्रभु सुन मैं तो मिट्टी और राख हूं तौ भी मैं ने
२८ इतनी ढिठाई की कि तुझ से बातें करूं। क्या जानिये
उन पचास धर्मियों में पांच घट जाएं तो क्या तू पांच
ही के घटने के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा
उस ने कहा यदि मुझे उस में पैंतालीस भी मिलें तौ भी
२९ उस का नाश न करूंगा। फिर उस ने उस से यह भी
कहा क्या जानिये वहां चालीस मिलें उस ने कहा तो मैं
३० चालीस के कारण भी ऐसा न करूंगा। फिर उस ने कहा
हे प्रभु क्रोध न कर तो मैं कुछ और कहूं क्या जानिये
वहां तीस मिलें उस ने कहा यदि मुझे वहां तीस भी मिलें
३१ तौ भी ऐसा न करूंगा। फिर उस ने कहा हे प्रभु सुन
मैं ने इतनी ढिठाई तो की है कि तुझ से बातें करूं क्या
जानिये उस में बीस मिलें उस ने कहा मैं बीस के कारण
३२ भी उस का नाश न करूंगा। फिर उस ने कहा हे प्रभु
क्रोध न कर मैं एक ही बार और बोलूंगा क्या जानिये
उस में दस मिलें उस ने कहा तो मैं दस के कारण भी
३३ उस का नाश न करूंगा। जब यहोवा इब्राहीम से बातें
कर चुका तब चला गया और इब्राहीम अपने स्थान को
लौटा॥

१९. सांझ को वे दो दूत सदोम के पास आये और लूत सदोम के फाटक के पास
बैठा था सो उन को देखकर वह उन से भेंट करने को
उठा और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा,
२ हे मेरे प्रभुओ अपने दास के घर में पधारो और रात
बिताना और अपने पांव धोओ फिर भोर को उठकर
अपना मार्ग लेना उन्हों ने कहा सो नहीं हम चौक में
३ रात बिताएंगे। और उस ने उन को बहुत बिनती करके
दबाया सो वे उस के घर की ओर चलकर भीतर गये
और उस ने उन के लिये जेवनार की और बिन खमीर
की रोटियां बनवा कर उन को खिलाईं। उन के सो
४ जाने से पहले उस सदोम नगर के पुरुषों ने जवानों से
लेकर बूढ़ों तक वरन चारों ओर के सब लोगों ने आकर
५ उस घर को घेर लिया, और लूत को पुकार कर कहने
लगे जो पुरुष आज रात को तेरे पास आये वे कहां हैं
उन को हमारे पास बाहर ले आ कि हम उन से भोग
६ करें। तब लूत उन के पास द्वार के बाहर गया और किवाड़
७ को अपने पीछे बन्द करके कहा, हे मेरे भाइयो ऐसी
८ बुराई न करो। सुनो मेरे दो बेटियां हैं जिन्हों ने अब
लों पुरुष का मुंह नहीं देखा इच्छा हो तो मैं उन्हें
तुम्हारे पास बाहर ले आऊं और तुम को जैसा अच्छा
लगे तैसा व्यवहार उन से करो तो करो पर इन पुरुषों
से कुछ न करो क्योंकि ये मेरी छत के तले आये[1] हैं।
९ उन्होंने कहा हट जा फिर वे कहने लगे तू एक परदेशी
आया तो यहां रहने के लिये पर अब न्यायी भी बन
बैठा है सो अब हम उन से भी अधिक तेरे साथ बुराई
करेंगे और वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे और
१० किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आये। तब उन पाहुनों[2]
ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने पास घर में खींच लिया
११ और किवाड़ को बन्द कर दिया। और उन्हों ने छोटों
से ले बड़ों तक उन सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर
थे अन्धा कर दिया सो वे द्वार को टटोलते टटोलते थक
१२ गये। फिर उन पाहुनों[2] ने लूत से पूछा यहां तेरे और
कौन कौन हैं दामाद बेटे बेटियां वा नगर में तेरा जो
१३ कोई हो उन को लेकर इस स्थान से निकल जा। क्योंकि
हम यह स्थान नाश करने पर हैं इस लिये कि इस की
चिल्लाहट यहोवा के सन्मुख बढ़ गई है और यहोवा ने
१४ हमें इस का नाश करने के लिये भेज भी दिया है। तब
लूत ने निकलकर अपने दामादों को जिन के साथ उस
की बेटियों की सगाई हो गई थी समझा के कहा उठो
इस स्थान से निकल चलो क्योंकि यहोवा इस नगर
को नाश किया चाहता है। पर वह अपने दामादों के
१५ लेखे में ठट्ठा करनेहारा सा जान पड़ा। जब पह फटने
लगी तब दूतों ने यह कहके लूत से फुर्ती कराई कि चल
अपनी स्त्री और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा
नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म्म में भस्म हो जाएगा।
१६ पर वह बिलम्ब करता रहा सो यहोवा जो उस पर
कोमलता करता था इस से उन पुरुषों ने उस का हाथ
और उस की स्त्री और दोनों बेटियों के हाथ पकड़ लिये
और उस को निकालकर नगर के बाहर खड़ा कर
१७ दिया। और जब उन्हों ने उन को निकाला तब उस ने

(१) मूल में इस लिये आये। (२) मूल में मनुष्यों।

कहा अपना प्राण लेकर भाग जा पीछे की ओर न ताकना और तराई भर में न ठहरना पहाड़ पर भाग जाना नहीं १८ तो तू भस्म हो जाएगा। लूत ने उस से कहा हे प्रभु ऐसा १९ न कर। सुन तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है और तू ने इस में बड़ी कृपा दिखाई कि मेरे प्राण को बचाया है पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता कहीं ऐसा न हो कि यह बिपत्ति मुझ पर आ पड़े और मैं मर जाऊं। २० देख वह नगर ऐसा निकट है कि मैं वहां भाग सकता हूं और वह छोटा भी है मुझे वहीं भाग जाने दे क्योंकि वह २१ छोटा तो है और इस प्रकार मेरे प्राण की रक्षा हो। उस ने उस से कहा सुन मैं ने इस विषय में भी तेरी बिनती अंगीकार की है कि जिस नगर की चर्चा तू ने की है उस २२ को मैं न उलटूंगा। फुर्ती करके वहां भाग जा क्योंकि जब लों तू वहां न पहुंचे तब लों मैं कुछ न कर सकूंगा। २३ इसी कारण उस नगर का नाम सोअर[1] पड़ा। लूत के सोअर के निकट पहुंचते ही सूर्य्य पृथिवी पर उदय २४ हुआ। तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा २५ पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई, और उन नगरों और उस संपूर्ण तराई को नगरों के सब निवासियों २६ और भूमि की सारी उपज समेत उलट दिया। लूत की स्त्री ने उस के पीछे से दृष्टि फेरके ताका और वह लोन २७ का खंभा हो गई। भोर को इब्राहीम उठकर उस स्थान को २८ गया जहां वह यहोवा के सन्मुख खड़ा रहा था, और सदोम और अमोरा और उस तराई के सारे देश की ओर ताककर क्या देखा कि उस देश में से भट्ठी का सा २९ धूआं उठ रहा है। जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों का जिन में लूत रहता था उलट कर नाश करना चाहा तब उस ने इब्राहीम की सुधि करके लूत को तो उलटने से बचा दिया॥

३० लूत जो सोअर में रहते डरता था सो अपनी दोनों बेटियों समेत उस स्थान को छोड़कर पहाड़ पर चढ़ गया और वहां की एक गुफा में वह और उस की दोनों बेटियां ३१ रहने लगीं। तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा हमारा पिता बूढ़ा है और पृथिवी[2] भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो ३२ संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए। सो आ हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर उस के साथ सोएं और इसी रीति अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें। ३३ सो उन्हों ने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास सोई और उस को न तो उस के सोने के समय न ३४ उस के उठने के समय कुछ भी चेत था। दूसरे दिन

(१) अर्थात् छोटा। (२) वा देश।

बड़ी ने छोटी से कहा सुन कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई सो आज भी रात को हम उस को दाखमधु पिलाएं तब तू जाकर उस के साथ सो कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें। ३५ सो उन्हों ने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी बेटी जाकर उस के पास सोई पर उस को उस के भी सोने और उठने के समय चेत न था। ३६ इसी प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुई। ३७ और बड़ी एक पुत्र जनी और उस का नाम मोआब[1] रक्खा वह मोआब नाम जाति का जो आज लों है मूलपुरुष हुआ। ३८ और छोटी भी एक पुत्र जनी और उस का नाम बेनम्मी[2] रक्खा वह अम्मोन्‌वंशियों का जो आज लों हैं मूलपुरुष हुआ॥

(इसहाक की उत्पत्ति का वर्णन)

२०. फिर इब्राहीम वहां से कूच कर दक्खिन देश में आकर कादेश और शूर के बीच में ठहरा और गरार नगर में परदेशी २ होकर रहने लगा। और इब्राहीम अपनी स्त्री सारा के विषय में कहने लगा कि वह मेरी बहिन है सो गरार के राजा अबीमेलेक ने दूत भेजकर सारा को बुलवा लिया। ३ रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आकर कहा सुन जिन स्त्री को तू ने रक्ख लिया है उस के कारण ४ तू मुआ सा है क्योंकि वह सुहागिन है। अबीमेलेक तो उस के पास न गया था सो उस ने कहा हे प्रभु क्या तू ५ निर्दोष जाति का भी घात करेगा। क्या उसी ने मुझ से नहीं कहा कि वह मेरी बहिन है और उस स्त्री ने भी आप कहा कि वह मेरा भाई है मैं ने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से[3] यह काम ६ किया। परमेश्वर ने उस से स्वप्न में कहा हां मैं भी जानता हूं कि अपने मन की खराई से तू ने यह काम किया है और मैं ने तुझे रोक भी रक्खा कि तू मेरे विरुद्ध पाप न करे इसी कारण मैं ने तुझ को उसे छूने ७ नहीं दिया। सो अब उस पुरुष की स्त्री को उसे फेर दे क्योंकि वह नबी है और तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा पर यदि तू उस को न फेर दे तो जान रक्ख कि तू और तेरे जितने लोग हैं सब निश्चय मर ८ जाएंगे। बिहान को अबीमेलेक ने तड़के उठ कर अपने सब कर्म्मचारियों को बुलवाकर ये सब बातें सुनाईं और ९ वे निपट डर गये। तब अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलवाकर कहा तू ने हम से यह क्या किया है और मैं ने

(१) अर्थात् पिता का वीर्य्य। (२) अर्थात् मेरे कुटुम्बी का बेटा। (३) मूल में अपनी हथेलियों की निर्दोषता से।

तेरा क्या बिगाड़ा था कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है तू ने मुझ से जो काम किया है सो करने के योग्य न था । १० फिर अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा तू ने ऐसा क्या देखा कि यह काम किया है । ११ इब्राहीम ने कहा मैं ने तो यह सोचा था कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भय न होगा सो ये लोग मेरी स्त्री के कारण मेरा घात करेंगे । १२ और सचमुच वह मेरी बहिन है ही वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं सो वह मेरी स्त्री हो गई । १३ और जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर घूमने की आज्ञा दी तब मैं ने उस से कहा इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी कि हम दोनों जहां जहां जाएं वहां वहां तू मेरे विषय में कहना कि यह मेरा भाई है । १४ तब अबीमेलेक ने भेड़ बकरी गाय बैल और दास दासियां लेकर इब्राहीम को दीं और उस की स्त्री सारा को भी उसे फेर दिया । १५ और अबीमेलेक ने कहा देख मेरा देश तेरे साम्हने पड़ा है जहां तुझे भावे वहां बस । १६ और सारा से उस ने कहा सुन मैंने तेरे भाई को रूपे के हज़ार टुकड़े दिये हैं सुन तेरे सारे संगियों के साम्हने वही तेरी आंखों का पर्दा बनेगा और सभों के साम्हने तू ठीक होगी । १७ तब इब्राहीम ने यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा ने अबीमेलेक और उस की स्त्री और दासियों को चंगा किया और वे जनने लगीं । १८ क्योंकि यहोवा ने इब्राहीम की स्त्री सारा के कारण अबीमेलेक के घर की सब स्त्रियों की कोखों को पूरी रीति से बन्द कर दिया था ॥

२१. सो यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेके उस के साथ अपने बचन के अनुसार किया । २ अर्थात् सारा इब्राहीम से गर्भवती होकर उस के बुढ़ापे में उसी नियत समय पर जो परमेश्वर ने उस से ठहराया था एक पुत्र जनी । ३ और इब्राहीम ने अपने जन्माये उस पुत्र का नाम जिसे सारा जनी थी इसहाक[1] रक्खा । ४ और जब उस का पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ तब उस ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उस का खतना किया । ५ और जब इब्राहीम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ बरस का था । ६ उन दिनों सारा ने कहा परमेश्वर ने मुझे हंसमुख कर दिया है जो कोई सुने सो मेरे कारण हंसेगा । ७ फिर उस ने कहा कोई कभी इब्राहीम से न कह सकता था कि सारा लड़के को दूध पिलाएगी पर देखो मैं उस के बुढ़ापे में पुत्र जनी । ८ और वह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन इब्राहीम ने बड़ी जेवनार की । ९ तब सारा को मिस्री हागार का पुत्र जिसे वह इब्राहीम का जन्माया जनी थी हंसी करता हुआ देख पड़ा । १० सो उस ने इब्राहीम से कहा इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल दे क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होगा । ११ यह बात इब्राहीम को अपने पुत्र के कारण बहुत बुरी लगी । १२ तब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे जो बात सारा तुझ से कहे उसे मान क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा । १३ दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति उपजा तो दूंगा इस लिये कि वह तेरा वंश है । १४ सो इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठकर रोटी और पानी से भरी हुई चमड़े की एक थैली ले हागार को दी और उस के कंधे पर रक्खी और उस के लड़के को भी उसे देकर उस को बिदा किया सो वह चली गई और बेर्शेबा के जंगल में घूमने फिरने लगी । १५ जब थैली का जल चुक गया तब उस ने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया, १६ और आप उस से तीर भर के टप्पे पर दूर जाकर उस के साम्हने यह सोचकर बैठ गई कि मुझ को लड़के की मृत्यु देखनी न पड़े तब वह उस के साम्हने बैठी हुई चिल्ला चिल्लाके रोने लगी । १७ और परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी और उस के दूत ने स्वर्ग से हागार को पुकारके कहा हे हागार तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां तेरा लड़का है वहां से उस की बात परमेश्वर को सुन पड़ी है । १८ उठ अपने लड़के को उठाकर अपने हाथ से थांभ ले क्योंकि मैं उस से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा । १९ परमेश्वर ने उस की आंखें खोल दीं और उस को एक कूआं देख पड़ा सो उस ने जाकर थैली को जल से भरके लड़के को पिला दिया । २० और परमेश्वर उस लड़के के साथ रहा और जब वह बड़ा हुआ तब जंगल में रहते रहते धनुर्धारी हो गया । २१ वह तो पारान नाम जंगल में रहा करता था और उस की माता ने उस के लिये मिस्र देश से एक स्त्री मंगवाई ॥

२२ उन दिनों में अबीमेलेक अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर इब्राहीम से कहने लगा जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग रहता है । २३ सो अब मुझ से यहां परमेश्वर की इस विषय में किरिया खा कि मैं न तो तुझ से छल करूंगा और न कभी तेरे वंश से जैसी प्रीति से तू ने मेरे साथ बर्ताव किया है तैसी ही प्रीति मैं तुझ से और इस देश से जहां मैं परदेशी हूं २४ करूंगा । इब्राहीम ने कहा मैं किरिया खाऊंगा । २५ और

(१) अर्थात् हंसी ।

इब्राहीम ने अबीमेलेक को एक कूएं के विषय में जो अबीमेलेक के दासों ने बरीयाई से ले लिया था उलहना २६ दिया। तब अबीमेलेक ने कहा मैं नहीं जनता कि किस ने यह काम किया और तू ने भी मुझ को न जताया २७ था और न मैं ने आज तक यह सुना था। तब इब्राहीम ने भेड़ बकरी और गाय बैल लेकर अबीमेलेक को दिये २८ और उन दोनों ने आपस में वाचा बांधी। और इब्राहीम २९ ने भेड़ की सात बच्ची अलग कर रक्खीं। तब अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा इन सात बच्चियों का जो तू ने अलग ३० कर रक्खी हैं क्या प्रयोजन है। उस ने कहा तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जानकर मेरे हाथ से ३१ ले कि मैं ने यह कूआं खोदा है। उन दोनों ने जो उस स्थान में आपस में किरिया खाई इसी कारण उस का ३२ नाम बेर्शेबा[1] पड़ा। जब उन्हों ने बेर्शेबा में परस्पर वाचा बांधी तब अबीमेलेक और उस का सेनापति पीकोल ३३ उठकर पलिश्तियों के देश में लौट गये। और इब्राहीम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया और वहां यहोवा ३४ जो सनातन ईश्वर है उस से प्रार्थना की। और इब्राहीम पलिश्तियों के देश में परदेशी होकर बहुत दिन रहा॥

(इब्राहीम के परीक्षा में पड़ने का वर्णन)

२२. इन बातों के पीछे परमेश्वर ने इब्राहीम से यह कहकर उस की परीक्षा की कि हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा। उस ने कहा अपने २ पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते इसहाक को जिस से तू प्रेम रखता है संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा और वहां उस को एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे ३ बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा। सो इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठ अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली तब कूच करके उस स्थान की ओर चला जिस की चर्चा परमेश्वर ने उस से की थी। ४ तीसरे दिन इब्राहीम ने आंखें उठाकर उस स्थान को ५ दूर से देखा। और उस ने अपने सेवकों से कहा गदहे के पास यहीं ठहरे रहो यह लड़का और मैं वहां लों जाकर और दण्डवत् करके फिर तुम्हारे पास लौट आऊंगा। ६ सो इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी और आग और छुरी को अपने हाथ ७ में लिया और वे दोनों संग संग चले। इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा हे मेरे पिता उस ने कहा हे मेरे पुत्र क्या बात है[2] उस ने कहा देख आग और ८ लकड़ी तो हैं पर होमबलि के लिये भेड़ कहां है। इब्राहीम ने कहा हे मेरे पुत्र परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय ९ आप ही करेगा सो वे दोनों संग संग चले। और वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उस को बताया था पहुंचे तब इब्राहीम ने वहां वेदी बनाकर लकड़ी को चुन चुनकर रक्खा और अपने पुत्र इसहाक को बांध के वेदी १० पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। तब इब्राहीम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे। ११ तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उस को पुकारके कहा हे १२ इब्राहीम हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा[1]। उस ने कहा उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा और न उस से कुछ कर क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र बरन अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा इस से मैं अब १३ जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है। तब इब्राहीम ने आंखें उठाईं और क्या देखा कि मेरे पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ में बझा हुआ है सो इब्राहीम ने जाके उस मेढ़े को लिया और अपने पुत्र १४ की सन्ती होमबलि करके चढ़ाया। और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे[2] रक्खा इस के अनुसार आज लों भी कहा जाता है कि यहोवा के पहाड़ पर १५ उपाय किया जाएगा। फिर यहोवा के दूत ने दूसरी १६ बार स्वर्ग से इब्राहीम को पुकारके कहा, यहोवा की यह वाणी है कि मैं अपनी ही यह किरिया खाता हूं कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र बरन अपने एकलौते १७ पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं निश्चय तुझे आशिष दूंगा और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूंगा और तेरा वंश अपने शत्रुओं १८ के नगरों[3] का अधिकारी होगा। और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी १९ क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है। तब इब्राहीम अपने सेवकों के पास लौट आया और वे सब बेर्शेबा को संग संग गये और इब्राहीम बेर्शेबा में रहता रहा॥

२० इन बातों के पीछे इब्राहीम को यह सन्देश मिला कि मिल्का से तेरे भाई नाहोर के सन्तान जन्मे हैं। २१ मिल्का के पुत्र तो ये हुए अर्थात् उस का जेठा ऊस और ऊस का भाई बूज और कमूएल जो अराम का पिता हुआ। २२ फिर केसेद हजो पिल्दाश यिद्लाप और बतूएल। २३ इन आठों को मिल्का इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माये २४ जनी। और बतूएल ने रिबका को जन्माया। फिर नाहोर के रूमा नाम एक सुरैतिन भी थी जो तेबह गहम तहश और माका को जनी॥

(१) अर्थात् किरिया का कूआं। (२) मूल में मुझे देख।

(१) मूल में मुझे देख। (२) अर्थात् यहोवा उपाय करेगा। (३) मूल में फाटक।

(सारा की मृत्यु और अन्तक्रिया का वर्णन)

२३. सारा तो एक सौ सत्ताईस बरस की अवस्था को पहुंची और २ जब सारा की इतनी अवस्था हुई। तब वह किर्यतर्बा में मर गई यह तो कनान देश में है और हेब्रोन भी कहावता है सो इब्राहीम सारा के लिये रोने पीटने को वहां ३ गया। तब इब्राहीम अपने मुर्दे के पास से उठकर हित्तियों ४ से कहने लगा, मैं तुम्हारे बीच उपरी और परदेशी हूं मुझे अपने बीच में कबरिस्तान के लिये ऐसी भूमि दो जो मेरी निज की हो जाए कि मैं अपने मुर्दे को गाड़ के ५ अपनी आंख की ओट करूं। हित्तियों ने इब्राहीम से ६ कहा, हे हमारे प्रभु हमारी सुन तू तो हमारे बीच में बड़ा[१] प्रधान है सो हमारी कबरों में से जिस को तू चाहे उस में अपने मुर्दे को गाड़ हम में से कोई तुझे अपनी कबर के लेने से न रोकेगा कि तू अपने मुर्दे को उस में गाड़ने ७ न पाये। तब इब्राहीम उठ कर खड़ा हुआ और हित्तियों ८ के सन्मुख जो उस देश के निवासी थे दण्डवत् करके, कहा यदि तुम्हारी यह इच्छा हो कि मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं तो मेरी सुनकर सोहर ९ के पुत्र एप्रोन से मेरे लिये बिनती करो, कि वह अपनी मकपेलावाली गुफा जो उस की भूमि के सिवाने पर है मुझे दे दे और उस का पूरा दाम ले कि वह तुम्हारे बीच कबरिस्तान के लिये मेरी निज भूमि हो जाए। १० एप्रोन तो हित्तियों के बीच वहां बैठा हुआ था सो जितने हित्ती उस के नगर के फाटक होकर भीतर जाते थे उन ११ सभों के सुनते उस ने इब्राहीम को उत्तर दिया कि, हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं मेरी सुन वह भूमि मैं तुझे देता हूं और उसमें जो गुफा है वह भी मैं तुझे देता हूं अपने जातिभाइयों के सन्मुख मैं उसे तुझ को दिये देता हूं सो १२ अपने मुर्दे को कबर में रख। तब इब्राहीम ने उस देश १३ के निवासियों के साम्हने दण्डवत् की, और उन के सुनते एप्रोन से कहा यदि तू ऐसा चाहे तो मेरी सुन उस भूमि का जो दाम हो वह मैं देने चाहता हूं उसे मुझ से १४ ले ले तब मैं अपने मुर्दे को वहां गाड़ूंगा। एप्रोन ने १५ इब्राहीम को यह उत्तर दिया कि, हे मेरे प्रभु मेरी सुन उस भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल रूपा है पर मेरे और तेरे बीच में यह क्या है अपने मुर्दे को कबर में १६ रख। इब्राहीम ने एप्रोन की मानकर उस को उतना रुपया तौल दिया जितना उस ने हित्तियों के सुनते कहा था अर्थात् चार सौ ऐसे शेकेल जो व्योपारियों में चलते १७ थे। सो एप्रोन की भूमि जो मम्रे के सन्मुख की मकपेला में थी वह गुफा समेत और उन सब वृक्षों समेत भी जो उस में और उस के चारों ओर के सिवानों में थे, १८ जितने हित्ती उस के नगर के फाटक होकर भीतर जाते थे उन सभों के साम्हने इब्राहीम के अधिकार में पक्की १९ रीति से आ गई। इस के पीछे इब्राहीम ने अपनी स्त्री सारा को उस मकपेलावाली भूमि की गुफा में जो मम्रे के अर्थात् हेब्रोन के साम्हने कनान देश में है मिट्टी २० दी। और वह भूमि गुफा समेत हित्तियों की ओर से कबरिस्तान के लिये इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई॥

(१) मूल में परमेश्वर का।

(इसहाक के विवाह का वर्णन)

२४. इब्राहीम बूढ़ा बरन बहुत पुरनिया हो गया और यहोवा ने सब २ बातों में उस को आशिष दी थी। सो इब्राहीम ने अपने उस दास से जो उस के घर में पुरनिया और उस की सारी संपत्ति पर अधिकारी था कहा अपना हाथ मेरी ३ जांघ के नीचे रख, और मुझ से आकाश और पृथिवी के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में किरिया खा कि मैं तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिन के ४ बीच तू रहनेहारा है किसी को न ले आऊंगा। मैं तेरे देश में तेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर तेरे पुत्र इसहाक के लिये एक स्त्री ले आऊंगा। ५ दास ने उस से कहा क्या जानिये वह स्त्री इस देश में मेरे पीछे आने न चाहे तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहां से तू आया है ले जाना पड़ेगा। ६ इब्राहीम ने उस से कहा ७ चौकस रह मेरे पुत्र को वहां न ले जाना। स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिस ने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से ले आकर मुझ से किरिया खाकर कहा कि मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा सो तू मेरे पुत्र के लिये वहां से ८ एक स्त्री ले आएगा। और यदि वह स्त्री तेरे पीछे आने न चाहे तब तो तू मेरी इस किरिया से छूट जाएगा पर ९ मेरे पुत्र को वहां न ले जाना। तब उस दास ने अपने स्वामी इब्राहीम की जांघ के नीचे अपना हाथ रखकर १० उस से इसी विषय की किरिया खाई। तब वह दास अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट छांटकर उस के सब उत्तम उत्तम पदार्थों में से कुछ कुछ लेकर चला और अरम्नहरैम[१] में नाहोर ११ के नगर के पास पहुंचा। और उस ने ऊंटों को नगर के बाहर एक कूएं के पास बैठाया वह सांझ का समय था १२ जब स्त्रियां जल भरने के लिये निकलती हैं। सो वह

(१) अर्थात् दोआब में का अराम्।

कहने लगा हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा आज मेरे कार्य्य को सिद्ध कर और मेरे स्वामी इब्राहीम १३ से करुणा का व्यवहार कर। देख मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूं और नगरबासियों की बेटियां जल भरने १४ के लिये निकली आती हैं। सो ऐसा हो कि जिस कन्या से मैं कहूं कि अपना घड़ा मेरी ओर झुका कि मैं पीऊं और वह कहे कि ले पी ले पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी, सो वही हो जिसे तू अपने दास इसहाक के लिये ठहराया हो इसी रीति मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे १५ स्वामी से करुणा का व्यवहार किया है। वह कहता ही था कि रिबका जो इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी थी सो कन्धे पर घड़ा १६ लिये हुए निकली आई। वह अति सुन्दर और कुमारी थी और किसी पुरुष का मुंह न देखा था वह सोते के पास उतर गई और अपना घड़ा भर के फिर ऊपर आई। १७ तब वह दास उस से भेंट करने को दौड़ा और कहा अपने १८ घड़े में से तनिक पानी मुझे पिला दे। उस ने कहा हे मेरे प्रभु ले पी ले और उस ने फुर्ती से घड़ा उतारकर हाथ में लिये लिये उस को पिला १९ दिया जब वह उस को पिला चुकी तब कहा मैं तेरे ऊंटों के लिये भी पानी तब लों भरती रहूंगी जब लों वे २० पी न चुकें। तब वह फुर्ती से अपने घड़े का जल हौदे में उण्डेलकर फिर कूएं पर भरने को दौड़ गई और उस के २१ सब ऊंटों के लिये पानी भर दिया। और वह पुरुष उस की ओर चुपचाप अचंभे के साथ ताकता हुआ यह सोचता था कि यहोवा ने मेरी यात्रा को सुफल किया २२ है कि नहीं। जब ऊंट पी चुके तब उस पुरुष ने आध तोले का सोने का एक नत्थ निकालकर उस को दिया और दस तोले के सोने के कड़े उस के हाथों में पहिना २३ दिये, और पूछा तू किस की बेटी है यह मुझ को बता दे क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिये स्थान २४ है। उस ने उस को उत्तर दिया मैं तो नाहोर के जन्माये २५ मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं। फिर उस ने उस से कहा हमारे यहां पुआल और चारा बहुत है और टिकने २६ के लिये स्थान भी है। तब उस पुरुष ने सिर झुकाकर २७ यहोवा को दण्डवत् करके कहा, धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा कि उस ने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग से मेरे स्वामी के भाई-२८ बन्धुओं के घर पर पहुंचा दिया है। और उस कन्या ने दौड़कर अपनी माता के घर में यह सारा वृत्तान्त कह २९ सुनाया। तब लाबान जो रिबका का भाई था सो

बाहर सोते के निकट उस पुरुष के पास दौड़ा। और ३० जब उस ने वह नत्थ और अपनी बहिन रिबका के हाथों में वे कड़े भी देखे और उस की यह बात भी सुनी कि उस पुरुष ने मुझ से ऐसी ऐसी बातें कहीं तब उस पुरुष के पास गया और क्या देखा कि वह सोते के निकट ऊंटों के पास खड़ा है। उस ने कहा हे यहोवा ३१ की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ तू क्यों बाहर खड़ा है मैं ने घर को और ऊंटों के लिये भी स्थान तैयार किया है। और वह पुरुष घर में गया और लाबान ने ३२ ऊंटों की काठियां खोलकर पुआल और चारा दिया और उस के और उस के संगी जनों के पांव धोने को जल दिया। तब इब्राहीम के दास के आगे जलपान के लिये ३३ कुछ रक्खा गया पर उस ने कहा मैं जब लों अपना प्रयोजन न कह दूं तब लों कुछ न खाऊंगा लाबान ने कहा कह दे। तब उस ने कहा मैं तो इब्राहीम का दास हूं। ३४ और यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशिष दी है सो ३५ वह बढ़ गया है और उस ने उस को भेड़ बकरी गाय बैल सोना रूपा दास दासियां ऊंट और गदहे दिये हैं। और मेरे स्वामी की स्त्री सारा उस का जन्माया बुढ़ापे ३६ में एक पुत्र जनी और उस पुत्र को इब्राहीम ने अपना सब कुछ दिया है। और मेरे स्वामी ने मुझ से यह ३७ किरिया खिलाई कि मैं तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिन के देश में तू रहता है कोई स्त्री न ले आऊंगा। मैं तेरे पिता के घर और कुल के लोगों ३८ के पास जाकर तेरे पुत्र के लिए एक स्त्री ले आऊंगा। तब मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जानिये वह स्त्री मेरे ३९ पीछे न आए। उस ने मुझ से कहा यहोवा जिस के ४० साम्हने अपने को जानकर[१] मैं चलता आया हूं वह तेरे संग अपने दूत को भेजकर तेरी यात्रा को सुफल करेगा सो तू मेरे कुल और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले आ सकेगा। तू तब ही ४१ मेरी इस किरिया से छूटेगा जब मेरे कुल के लोगों के पास पहुंचेगा अर्थात् यदि वे तुझे कोई स्त्री न दें तो तू मेरी किरिया से छूटेगा। सो मैं आज उस सोते के ४२ निकट आकर कहने लगा हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा यदि तू मेरी इस यात्रा को सुफल करता हो, तो देख मैं जल के इस सोते के निकट ४३ खड़ा हूं सो ऐसा हो कि जो कुमारी जल भरने के लिये निकल आए और मैं उस से कहूं अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला, और वह मुझ से कहे पी ले ४४ और मैं तेरे ऊंटों के पीने के लिये भी भरूंगी वह वही

(१) मूल में जिस के साम्हने।

स्त्री हो जिस को तू ने मेरे स्वामी के पुत्र के लिये
४५ ठहराया हो। मैं मन ही मन यह कह ही रहा था कि
रिबका कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकल आई फिर वह
सोते के पास उतरके भरने लगी और मैं ने उस से
४६ कहा मुझे पिला दे। और उस ने फुर्ती से अपने घड़े
को कन्धे पर से उतारके कहा ले पी ले पीछे मैं तेरे
ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो मैं ने पी लिया और उस ने
४७ ऊंटों को भी पिला दिया। तब मैं ने उस से पूछा कि
तू किस की बेटी है और उस ने कहा मैं तो नाहोर के
जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं तब मैं ने
उस की नाक में वह नत्थ और उस के हाथों में वे कड़े
४८ पहिना दिये। फिर मैं ने सिर झुका कर यहोवा को
दण्डवत् किया और अपने स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर
यहोवा को धन्य कहा क्योंकि उस ने मुझे ठीक मार्ग
से पहुंचाया कि मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उस की
४९ भतीजी को ले जाऊं। सो अब यदि तुम मेरे स्वामी के
साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करने चाहते हो
तो मुझ से कहो और यदि न चाहते हो तौ भी मुझ से
५० कह दो कि मैं दहिनी ओर वा बाईं ओर फिरूं। तब
लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया यह बात यहोवा
की ओर से हुई है सो हम लोग तुझ से न तो भला
५१ कह सकते हैं न बुरा। देख रिबका तेरे साम्हने है उस
को ले जा और वह यहोवा के कहे के अनुसार तेरे
५२ स्वामी के पुत्र की स्त्री हो जाए। उन का यह वचन
सुनकर इब्राहीम के दास ने भूमि पर गिरके यहोवा
५३ को दण्डवत् किया। फिर उस दास ने सोने और रूपे
के गहने और वस्त्र निकालकर रिबका को दिये और
उस के भाई और माता को भी उसने अनमोल अनमोल
५४ वस्तुएं दीं। तब वह अपने संगी जनों समेत खाने
पीने लगा और रात वहीं बिताई और तड़के उठकर
कहा मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये बिदा
५५ करो। रिबका के भाई और माता ने कहा कन्या को
हमारे पास कुछ दिन अर्थात् कम से कम दस दिन
५६ रहने दे फिर उस के पीछे वह चली जाएगी। उस ने
उन से कहा यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सुफल किया
है सो तुम मुझे मत रोको अब मुझे बिदा कर दो कि
५७ मैं अपने स्वामी के पास जाऊं। उन्हों ने कहा हम
कन्या को बुलाकर पूछते हैं और देखेंगे कि वह क्या
५८ कहती है। सो उन्हों ने रिबका को बुलाकर उस से पूछा
क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी उस ने कहा
५९ हां मैं जाऊंगी। तब उन्हों ने अपनी बहिन रिबका
और उस की धाई और इब्राहीम के दास और उस के
जन सभों को बिदा किया। और उन्हों ने रिबका को ६०
आशीर्वाद देके कहा हे हमारी बहिन तू हजारों लाखों
की आदिमाता हो और तेरा वंश अपने बैरियों के
नगरों[१] का अधिकारी हो। इस पर रिबका अपनी सहे- ६१
लियों समेत चली और ऊंट पर चढ़के उस पुरुष के पीछे
हो ली सो वह दास रिबका को साथ लेकर चल
दिया। इसहाक जो दक्खिन देश में रहता था सो ६२
लहैरोई नाम कुएं से होकर चला आता था। और ६३
सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये
निकला था कि आंखें उठाकर क्या देखा कि ऊंट चले
आते हैं। और रिबका ने भी आंख उठाकर इसहाक ६४
को देखा और देखते ही ऊंट पर से उतर पड़ी। तब ६५
उस ने दास से पूछा जो पुरुष मैदान पर हम से मिलने
को चला आता है सो कौन है दास ने कहा वह तो
मेरा स्वामी है तब रिबका ने बुर्का लेकर अपने मुंह को
ढांप लिया। और उस दास ने इसहाक से अपना सारा ६६
वृत्तान्त वर्णन किया। तब इसहाक रिबका को अपनी ६७
माता सारा के तंबू में ले आया और उस को ब्याहकर
उस से प्रेम किया और इसहाक को माता की मृत्यु के
पीछे[२] शान्ति हुई॥

(इब्राहीम के उत्तरचरित्र और मृत्यु का वर्णन)

२५. इब्राहीम ने और एक स्त्री की जिस
का नाम कतूरा है। और २
वह उस के जन्माये जिम्रान योक्षान मदान मिद्यान
यिशबाक और शूह को जनी। और योक्षान ने शबा ३
और ददान को जन्माया और ददान के वंश में
अश्शूरी लतूशी और लुम्मी लोग उपजे। और मिद्यान ४
के पुत्र एपा एपेर हनोक अबीदा और एल्दा हुए
ये सब कतूरा के सन्तान हुए। इसहाक को तो ५
इब्राहीम ने अपना सब कुछ दिया, पर अपनी ६
सुरैतिनों के पुत्रों को कुछ कुछ देकर अपने जीते जी
अपने पुत्र इसहाक के पास से पूरब देश में भेज दिया।
इब्राहीम की सारी अवस्था एक सौ पचहत्तर बरस की ७
हुई। और इब्राहीम का दीर्घायु होने पर बरन पूरे बुढ़ापे ८
की अवस्था में प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में
जा मिला। और उस के पुत्र इसहाक और इश्माएल ने ९
उस को हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन की मम्रे के सन्मुख-
वाली भूमि में जो मकपेला की गुफा थी उस में मिट्टी
दी, अर्थात् जो भूमि इब्राहीम ने हित्तियों से मोल १०
ली थी उसी में इब्राहीम और उस की स्त्री सारा दोनों
को मिट्टी दी गई। इब्राहीम के मरने के पीछे परमेश्वर ११

(१) मूल में फाटक। (२) मूल में अपनी माता के पीछे।

ने उस के पुत्र इसहाक को जो लहैरोई नाम कूएं के पास रहता था आशिष दी ॥

(इश्माएल की वंशावली)

१२ इब्राहीम का पुत्र इश्माएल जिस को सारा की लौण्डी मिस्री हागार इब्राहीम का जन्माया जनी थी उस १३ की यह वंशावली है । इश्माएल के पुत्रों के नाम और वंशावली यह है अर्थात् इश्माएल का जेठा पुत्र तो १४ नबायोत फिर केदार अद्बेल मिबसाम । मिश्मा दूमा १५, १६ मस्सा, हदर तेमा यतूर नापीश और केदमा । इश्माएल के पुत्र ये ही हुए और इन्हीं के नामों के अनुसार इन के गांवों और छावनियों के नाम भी पड़े और ये ही १७ बारह अपने अपने कुल के प्रधान[1] हुए । इश्माएल की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस बरस की हुई तब उस का प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला । १८ और उस के वंश हवीला से शूर लों जो मिस्र के सन्मुख अश्शूर के मार्ग में है बस गये और उन का भाग उन के सब भाईबन्धुओं के सन्मुख पड़ा ॥

(इसहाक के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

१९ इब्राहीम के पुत्र इसहाक की वंशावली यह है २० इब्राहीम ने इसहाक को जन्माया । और इसहाक ने चालीस बरस का होकर रिबका को जो पद्दनराम[2] के वासी अरामी बतूएल की बेटी और अरामी लाबान की २१ बहिन थी ब्याह लिया । इसहाक की स्त्री जो बांझ थी सो उस ने उस के निमित्त यहोवा से बिनती की और यहोवा ने उस की बिनती सुनी सो उस की स्त्री रिबका गर्भवती २२ हुई । और लड़के उस के गर्भ में आपस में लिपटके एक दूसरे को मारने लगे तब उस ने कहा मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्यों जीती रहूंगी और वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई ।

२३ तब यहोवा ने उस से कहा

तेरे गर्भ में दो जातियां हैं

और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग अलग होंगे

और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा ।

२४ जब उस के जनने का समय आया तब क्या प्रगट २५ हुआ कि उस के गर्भ में जुड़ौरे बालक हैं । और पहिला जो निकला सो लाल निकला और उस का सारा शरीर कम्बल के समान रोंआर था सो उस का नाम एसाव[3] २६ रक्खा गया । पीछे उस का भाई अपने हाथ से एसाव

(१) मूल में अनुसार । (२) अर्थात् अराम का मैदान । (३) अर्थात् रोंआर ।

की एड़ी पकड़े हुए निकला और उस का नाम याकूब[1] रक्खा गया और जब रिबका उन को जनी तब इसहाक साठ बरस का हुआ था । फिर वे लड़के बढ़ने लगे और २७ एसाव तो बनवासी होकर चतुर शिकार खेलनेहारा हो गया पर याकूब सीधा मनुष्य था और तंबुओं में रहा करता था । और इसहाक जो एसाव के अहेर का मांस २८ खाया करता था इस लिये वह उस से प्रीति रखता था पर रिबका याकूब से प्रीति रखती थी ॥

याकूब भोजन के लिये कुछ सिझा रहा था और २९ एसाव मैदान से थका हुआ आया । तब एसाव ने याकूब ३० से कहा वह जो लाल वस्तु है उसी लाल वस्तु में से मुझे कुछ खिला क्योंकि मैं थका हूं । इसी कारण उस का नाम एदोम्[2] भी पड़ा । याकूब ने कहा अपना ३१ पहिलौठे का हक आज मेरे हाथ बेच दे । एसाव ने कहा ३२ देख मैं तो अभी मरने पर हूं सो पहिलौठे के हक से मेरा क्या लाभ होगा । याकूब ने कहा मुझ से अभी किरिया ३३ खा सो उस ने उस से किरिया खाई और अपना पहिलौठे का हक याकूब के हाथ बेच डाला । इस पर याकूब ने ३४ एसाव को रोटी और सिझाई हुई मसूर की दाल दी और उस ने खाया पिया तब उठकर चला गया यों एसाव ने अपना पहिलौठे का हक तुच्छ जाना ॥

(इसहाक का वृत्तान्त)

२६. और

उस देश में अकाल पड़ा वह उस पहिले अकाल से अलग था जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था । सो इसहाक गरार को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया । वहां २ यहोवा ने उस को दर्शन देकर कहा मिस्र में मत जा जो देश मैं तुझे बताऊँ उसी में रह । इसी देश में परदेशी ३ होकर रह और मैं तेरे संग रहूंगा और तुझे आशिष दूंगा और ये सब देश मैं तुझ को और तेरे वंश को दूंगा और जो किरिया मैं ने तेरे पिता इब्राहीम से खाई थी उसे मैं पूरी करूंगा । और मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण ४ के समान बहुत करूंगा और तेरे वंश को ये सब देश दूंगा और पृथिवी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी । क्योंकि इब्राहीम ने मेरी मानी ५ और जो मैं ने उसे सौंपा था उस को और मेरी आज्ञाओं विधियों और व्यवस्था को पाला । सो इसहाक गरार में ६ रह गया । जब उस स्थान के लोगों ने उस की स्त्री के ७ विषय में पूछा तब उस ने यह सोचकर कि यदि मैं उस को अपनी स्त्री कहूं तो यहां के लोग रिबका के कारण जो सुन्दरी है मुझ को मार डालेंगे उत्तर दिया वह तो

(१) अर्थात् अड़ङ्गा मारनेहारा । (२) अर्थात् लाल ।

८ मेरी बहिन है। जब उस को वहां रहते बहुत दिन बीत गये तब एक दिन पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से झांकके क्या देखा कि इसहाक अपनी स्त्री
९ रिबका के साथ क्रीड़ा कर रहा है। तब अबीमेलेक ने इसहाक को बुलवाकर कहा वह तो निश्चय तेरी स्त्री है फिर तू ने क्योंकर उस को अपनी बहिन कहा, इसहाक ने उत्तर दिया मैं ने सोचा था कि ऐसा न हो कि उस के
१० कारण मेरी मृत्यु हो। अबीमेलेक ने कहा तू ने हम से यह क्या किया था ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी स्त्री के साथ सहज से कुकर्म्म कर सकता और तू हम को पाप
११ में फंसाता। और अबीमेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी कि जो कोई उस पुरुष को वा उस की स्त्री
१२ को छूएगा सो निश्चय मार डाला जाएगा। फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया और उसी बरस में सौ गुणा फल पाया और यहोवा ने उस को आशिष
१३ दी। और वह बढ़ा और दिन दिन उस की बढ़ती होती
१४ चली गई यहां लों कि वह अति महान् हो गया। जब उस के भेड़ बकरी गाय बैल और बहुत से दास दासियां
१५ हुईं तब पलिश्ती उस से डाह करने लगे। सो जितने कुओं को उस के पिता इब्राहीम के दासों ने इब्राहीम के जीते जी खोदा था उन को पलिश्तियों ने मिट्टी से भर
१६ दिया। तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा हमारे पास से चला जा क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।
१७ सो इसहाक वहां से चला गया और गरार के नाले में
१८ अपना तम्बू खड़ा करके वहां रहने लगा। तब जो कुएं उस के पिता इब्राहीम के दिनों में खोदे गये थे और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियों से भर दिये गये थे उन को इसहाक ने फिर से खुदवाया और उन के वे ही
१९ नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे थे। फिर इसहाक के दासों को नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक
२० सोता मिला। तब गरारी चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा करके कहा कि यह जल हमारा है सो उस ने उस कुएं का नाम एसेक[1] रक्खा इस लिये कि वे उस
२१ से झगड़े थे। फिर उन्हों ने दूसरा कूआं खोदा और उन्हों ने उस के लिये भी झगड़ा किया सो उस ने उस का नाम
२२ सित्रा[2] रक्खा। तब उस ने वहां से कूच करके एक और कूआं खुदवाया और उस के लिये उन्हों ने झगड़ा न किया सो उस ने उस का नाम यह कहकर रहोबोत[3] रक्खा कि अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया
२३ है और हम इस देश में फूलें फलेंगे। वहां से वह बेर्शेबा
२४ को गया। और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और अपने दास इब्राहीम के कारण तुझे आशिष दूंगा और तेरा वंश बढ़ाऊंगा। तब उस ने
२५ वहां एक वेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना की और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया और वहां इसहाक के दासों ने एक कूआं खोदा। तब अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत
२६ और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर गरार से उस
२७ के पास गया। इसहाक ने उन से कहा तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था सो अब मेरे
२८ पास क्यों आये हो। उन्हों ने कहा हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है कि यहोवा तेरे संग रहता है सो हम ने सोचा कि तू जो यहोवा की ओर से धन्य है सो हमारे और तेरे बीच में किरिया खाई जाए और हम तुझ से इस विषय की
२९ बाचा बन्धाएं, कि जैसे तुम ने मुझे नहीं छूआ बरन् मेरे साथ निरी भलाई की है और मुझ को कुशल क्षेम से बिदा किया इस के अनुसार मैं भी तुम से कुछ बुराई न
३० करूंगा। तब उस ने उन की जेवनार की और उन्हों ने
३१ खाया पिया। बिहान को उन सभों ने तड़के उठकर आपस में किरिया खाई तब इसहाक ने उन को बिदा किया और वे कुशल क्षेम से उस के पास से चले गये।
३२ उसी दिन इसहाक के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुये कुएं का वृत्तान्त सुनाके कहा कि हम को जल का
३३ एक सोता मिला है। तब उस ने उस का नाम शिबा[4] रक्खा इसी कारण उस नगर का नाम आज लों बेर्शेबा[5] पड़ा है॥

३४ जब एसाव चालीस बरस का हुआ तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत और हित्ती एलोन की बेटी बाशमत
३५ को ब्याह लिया। और इन स्त्रियों के कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ॥

(याकूब और एसाव को आशीर्वाद मिलने का वर्णन)

२७ जब इसहाक बूढ़ा हो गया और उस की आंखें ऐसी धुन्धली पड़ गईं कि उस को सूझता न था तब उस ने अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर कहा हे मेरे पुत्र उस ने कहा क्या आज्ञा। उस
२ ने कहा सुन मैं तो बूढ़ा हो गया हूं और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होगा। सो अब तू अपना
३ तर्कश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा और मेरे लिये अहेर कर ले आ। तब मेरी रुचि के
४ अनुसार स्वादिष्ठ भोजन बनाकर मेरे पास ले आना कि मैं उसे खाकर मरने से पहले तुझे जी से आशीर्वाद दूं।
५ तब एसाव अहेर करने को मैदान में गया। जब इस-

(१) अर्थात् झगड़ा। (२) अर्थात् विरोध। (३) अर्थात् चौड़ा स्थान।
(४) अर्थात् किरिया। (५) अर्थात् किरिया का कूआं।

हाक एसाव से यह बात कह रहा था तब रिबका
६ सुन रही थी। सो उस ने अपने पुत्र याकूब से कहा
सुन मैं ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह
७ कहते सुना कि, तू मेरे लिये अहेर करके उस का
स्वादिष्ठ भोजन बना कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के
८ आगे मरने से पहिले आशीर्वाद दूं। सो अब हे मेरे
९ पुत्र मेरी सुन और मेरी यह आज्ञा मान कि, बकरियों के
पास जाकर बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ
और मैं तेरे पिता के लिये उस की रुचि के अनुसार उन
१० के मांस का स्वादिष्ठ भोजन बनाऊंगी। तब तू उस को
अपने पिता के पास ले जाना कि वह उसे खाकर मरने
११ से पहिले तुझ को आशीर्वाद दे। याकूब ने अपनी माता
रिबका से कहा सुन मेरा भाई एसाव तो रोंआर
१२ पुरुष है और मैं रोमहीन पुरुष हूं। क्या जानिये मेरा
पिता मुझे टटोलने लगे तो मैं उस के लेखे में ठग
ठहरूंगा और आशिष के बदले स्राप ही कमाऊंगा।
१३ उस की माता ने उस से कहा हे मेरे पुत्र स्राप तुझ पर
नहीं[1] मुझी पर पड़े तू केवल मेरी सुन और जाकर
१४ वे बच्चे मेरे पास ले आ। तब याकूब जाकर उन को अपनी
माता के पास ले आया और माता ने उस के पिता की
१५ रुचि के अनुसार स्वादिष्ठ भोजन बना दिया। तब
रिबका ने अपने पहिलौठे पुत्र एसाव के सुन्दर वस्त्र
जो उस के पास घर में थे लेकर अपने लहुरे पुत्र याकूब
१६ को पहिना दिये, और बकरियों के बच्चों की खालों को
उस के हाथों में और उस के चिकने गले में लपेट दिया।
१७ और वह स्वादिष्ठ भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी
१८ भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दी। सो वह अपने
पिता के पास गया और कहा हे मेरे पिता उस ने कहा
१९ क्या बात है[2] हे मेरे पुत्र तू कौन है। याकूब ने अपने
पिता से कहा मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूं मैं ने तेरी
आज्ञा के अनुसार किया है सो उठ और बैठकर मेरे अहेर
के मांस में से खा कि तू जी से मुझे आशीर्वाद दे।
२० इसहाक ने अपने पुत्र से कहा हे मेरे पुत्र क्या कारण है
कि वह तुझे ऐसे झट मिल गया उस ने उत्तर दिया यह
कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उस को मेरे साम्हने कर
२१ दिया। फिर इसहाक ने याकूब से कहा हे मेरे पुत्र निकट
आ मैं तुझे टटोलकर जानूं कि तू सचमुच मेरा पुत्र
२२ एसाव है वा नहीं। तब याकूब अपने पिता इसहाक के
निकट गया और उस ने उस को टटोलकर कहा बोल तो
याकूब का सा है पर हाथ एसाव ही के से जान पड़ते
२३ हैं। और उस ने उस को नहीं चीन्हा क्योंकि उस

(१) मूल में तेरा स्राप। (२) मूल में मुझे देख।

के हाथ उस के भाई एसाव के से रोंआर थे सो उस ने
उस को आशीर्वाद दिया। और उस ने पूछा क्या तू २४
सचमुच मेरा पुत्र ऐसाव है उस ने कहा हां मैं हूं। तब २५
उस ने कहा भोजन को मेरे निकट ले आ कि मैं तुझ
अपने पुत्र के अहेर के मांस में से खाकर तुझे जी से
आशीर्वाद दूं तब वह उस को उस के निकट ले आया
और उस ने खाया और वह उस के पास दाखमधु भी
लाया और उस ने पिया। तब उस के पिता इसहाक ने २६
उस से कहा हे मेरे पुत्र निकट आकर मुझे चूम। उस ने २७
निकट जाकर उस को चूमा और उस ने उस के वस्त्रों का
सुगन्ध पाकर उस को वह आशीर्वाद दिया कि

देख मेरे पुत्र का सुगन्ध जो
ऐसे खेत का सा है जिस पर यहोवा ने आशिष
दी हो।
सो परमेश्वर तुझे आकाश से ओस २८
और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज
और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु दे
राज्य राज्य के लोग तेरे अधीन हों २९
और देश देश के लोग तुझे दण्डवत करें
तू अपने भाइयों का स्वामी हो
और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत् करें
जो तुझे स्राप दें सो आप ही स्रापित हों
और जो तुझे आशीर्वाद दें सो आशिष पाएं॥

यह आशीर्वाद इसहाक याकूब को दे ही चुका और ३०
याकूब अपने पिता इसहाक के साम्हने से निकलता ही
था कि एसाव अहेर लेकर आ पहुंचा। तब वह भी ३१
स्वादिष्ठ भोजन बनाकर अपने पिता के पास ले आया
और उस से कहा हे मेरे पिता उठकर अपने पुत्र
के अहेर का मांस खा कि तू मुझे जी से आशीर्वाद
दे। उस के पिता इसहाक ने उस से पूछा तू कौन है उस ३२
ने कहा मैं तो तेरा जेठा पुत्र एसाव हूं। तब इसहाक ने ३३
अत्यन्त थर थर कांपते हुए कहा फिर वह कौन था जो
अहेर करके मेरे पास ले आया था और मैं ने तेरे आने
से पहिले सब में से कुछ कुछ खा लिया और उस को
आशीर्वाद दिया बरन उस को आशिष लगी भी रहेगी।
अपने पिता की यह बात सुनते ही एसाव ने अत्यन्त ३४
ऊंचे और दुःखभरे स्वर से चिल्लाकर अपने पिता से
कहा हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्वाद दे। उस ने ३५
कहा तेरा भाई धूर्त्तता से आया और तेरे विषय के
आशीर्वाद को लेके चला गया। उस ने कहा क्या उस का ३६
नाम याकूब यथार्थ नहीं रक्खा गया उस ने मुझे दो
बार अड़ंगा मारा मेरा पहिलौठे का हक तो उस ने ले

ही लिया था और अब देख उस ने मेरे विषय का आशीर्वाद भी ले लिया है फिर उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रक्खा है। ३७ इसहाक ने एसाव को उत्तर देकर कहा सुन मैं ने उस को तेरा स्वामी ठहराया और उस के सब भाइयों को उस के अधीन कर दिया और अनाज और नया दाखमधु देकर उस को पुष्ट किया है सो अब हे मेरे पुत्र मैं ३८ तेरे लिये क्या करूं। एसाव ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या तेरे मन में एक ही आशीर्वाद है, हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्वाद दे यों कहकर एसाव फूट ३९ फूटके रोया। उस के पिता इसहाक ने उस से कहा

सुन तेरा निवास उपजाऊ भूमि पर हो
और ऊपर से आकाश की ओस उस पर पड़े॥
४० और तू अपनी तलवार के बल से जीए
और अपने भाई के अधीन तो होए
पर जब तू स्वाधीन हो जाएगा
तब उस के जूए को अपने कन्धे[1] पर से तोड़ फेंके।

४१ एसाव ने जो याकूब से अपने पिता के दिये हुए आशीर्वाद के कारण बैर रक्खा सो उस ने सोचा कि मेरे पिता के अन्तकाल[2] का दिन निकट है तब मैं ४२ अपने भाई याकूब को घात करूंगा। जब रिबका को अपने पहिलौठे पुत्र एसाव की ये बातें बताई गईं तब उस ने अपने लहुरे पुत्र याकूब को बुला कर कहा सुन तेरा भाई एसाव तुझे घात करने के लिये अपने ४३ मन को धीरज दे रहा है। सो अब हे मेरे पुत्र मेरी सुन और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा। ४४ और थोड़े दिन लों अर्थात् जब लों तेरे भाई का ४५ क्रोध न उतरे तब लों उसी के पास रहना। फिर जब तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे और जो काम तू ने उस से किया है उस को वह भूल जाए तब मैं तुझे वहां से बुलवा भेजूंगी ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में मुझे तुम दोनों से रहित होना पड़े॥

४६ फिर रिबका ने इसहाक से कहा हित्ती लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूं सो यदि ऐसी हित्ती लड़कियों में से जैसी ये देशी लड़कियां हैं याकूब भी एक को कहीं ब्याह ले तो मेरे जीवन में क्या

२८. लाभ होगा। तब इसहाक ने याकूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया और आज्ञा दी कि तू किसी २ कनानी लड़की को न ब्याह लेना। पद्दनराम में अपने नाना बतूएल के घर जाकर वहां अपने मामा लाबान की एक बेटी को ब्याह लेना। ३ और सर्वशक्तिमान् ईश्वर तुझे आशिष दे और फुला फलाकर बढ़ाए और तू राज्य राज्य की मण्डली का मूल हो। ४ और वह तुझे और तेरे वंश को भी इब्राहीम की सी आशिष दे कि तू यह देश जिस में तू परदेशी होकर रहता है और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था उस का ५ अधिकारी हो जाए। और इसहाक ने याकूब को बिदा किया और वह पद्दनराम को अरामी बतूएल के उस पुत्र लाबान के पास चला जो याकूब और एसाव की माता ६ रिबका का भाई था। जब इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देकर पद्दनराम भेज दिया कि वह वहीं से स्त्री ब्याह लाए और उस को आशीर्वाद देने के समय यह आज्ञा भी दी कि तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना, ७ और याकूब माता पिता की मानकर पद्दनराम को चल ८ दिया, तब एसाव यह सब देख के और यह भी सोचकर कि कनानी लड़कियां मेरे पिता इसहाक को बुरी लगती ९ हैं, इब्राहीम के पुत्र इश्माएल के पास गया और इश्माएल की बेटी महलत को जो नबायोत की बहिन थी ब्याहकर अपनी स्त्रियों में मिला लिया॥

(याकूब के परदेश जाने का वर्णन)

१० सो याकूब बेर्शेबा से निकल कर हारान की ओर ११ चला। और उसने किसी स्थान में पहुंच कर रात वहीं बिताने का विचार किया क्योंकि सूर्य्य अस्त हो गया था सो उस ने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना उसीसा बनाकर रक्खा और उसी स्थान में १२ सो गया। तब उस ने स्वप्न में क्या देखा कि एक सीढ़ी पृथिवी पर खड़ी है और उस का सिरा स्वर्ग लों पहुंचा १३ और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं, और यहोवा उस के ऊपर खड़ा हो कर कहता है कि मैं यहोवा तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का भी परमेश्वर हूं, जिस भूमि पर तू पड़ा है उसे मैं तुझ को १४ और तेरे वंश को दूंगा। और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा और पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों ओर फैलता जाएगा और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथिवी के सारे कुल आशिष पाएंगे। १५ और सुन मैं तेरे संग रहूंगा और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा मैं अपने कहे हुए को जब लों पूरा न कर लूं १६ तब लों तुझ को न छोड़ूंगा। तब याकूब जाग उठा और कहने लगा निश्चय इस स्थान में यहोवा है और मैं १७ इस बात को न जानता था। और भय खाकर उस ने कहा यह स्थान क्या ही भयानक है, यह तो परमेश्वर

(१) मूल में अपनी गर्दन। (२) मूल में शोक।

के भवन के छोड़ और कुछ नहीं हो सकता, बरन यह १८ स्वर्ग का फाटक ही होगा। भोर को याकूब तड़के उठा और अपने उसीसे का पत्थर लेकर उस का खंभा खड़ा १९ किया और उस के सिरे पर तेल डाल दिया। और उस ने उस स्थान का नाम बेतेल[1] रक्खा, पर उस नगर २० का नाम पहिले लूज था। और याकूब ने यह मन्नत मानी कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे और मुझे खाने के लिये रोटी और पहि- २१ नने के लिये कपड़ा दे, और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं तो यहोवा मेरा परमेश्वर २२ ठहरेगा। और यह पत्थर जिस का मैं ने खंभा खड़ा किया है सो परमेश्वर का भवन ठहरेगा और जो कुछ तू मुझे दे उस का दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा॥

(याकूब के विवाहों और उस के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

२९. फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया और २ पूर्बियों के देश में आया। और उस ने दृष्टि करके क्या देखा कि मैदान में एक कूआं है और उस के पास भेड़ बकरियों के तीन झुण्ड बैठे हुए हैं क्योंकि जो पत्थर उस कूएं के मुंह पर धरा रहता था जिस में से झुण्डों को जल पिलाया जाता था वह ३ भारी था। जब जब सब झुण्ड वहां इकट्ठे होते तब तब चरवाहे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर से लुढ़काकर भेड़ बकरियों को पानी पिलाते और फिर पत्थर को कूएं ४ के मुंह पर ज्यों का त्यों कर देते थे। सो याकूब ने चरवाहों से पूछा हे मेरे भाइयो तुम कहां के हो उन्हों ने ५ कहा हम हारान के हैं। तब उस ने उन से पूछा क्या तुम नाहोर के पोते लाबान को जानते हो उन्हों ने ६ कहा हां हम उसे जानते हैं। फिर उस ने उन से पूछा क्या वह कुशल से है उन्हों ने कहा हां कुशल से तो है और वह देख उस की बेटी राहेल भेड़ बकरियों को ७ लिये हुए चली आती है। उस ने कहा देखो अभी तो दिन बहुत है पशुओं के इकट्ठे होने का समय नहीं सो भेड़ बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जाकर चराओ। ८ उन्हों ने कहा हम अभी ऐसा नहीं कर सकते जब सब झुण्ड इकट्ठे होते और पत्थर कूएं के मुंह पर से लुढ़काया जाता है तब हम भेड़ बकरियों ९ को पानी पिलाते हैं। उन की यह बातचीत हो ही रही थी कि राहेल जो पशु चराया करती थी सो अपने पिता की भेड़ बकरियों को लिये हुए आ १० गई। अपने मामा लाबान की बेटी राहेल को और उस

(१) अर्थात् ईश्वर का भवन।

की भेड़ बकरियों को भी देखकर याकूब ने निकट जा कूएं के मुंह पर से पत्थर को लुढ़काकर अपने मामा लाबान की भेड़ बकरियों को पिला दिया। ११ तब याकूब ने राहेल को चूमा और ऊंचे स्वर से रोया। १२ और याकूब ने राहेल को बता दिया कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूं अर्थात् रिबका का पुत्र हूं तब उस ने दौड़के अपने पिता से कह दिया। १३ अपने भांजे याकूब का समाचार पाते ही लाबान उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को गले लगाकर चूमा फिर अपने घर ले आया और याकूब ने लाबान से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया। १४ तब लाबान ने उस से कहा तू तो सचमुच मेरा हाड़ मांस है। और याकूब उस के साथ महीना भर रहा। १५ तब लाबान ने याकूब से कहा भाईबन्धु होने के कारण तो तुझ से सेंतमेंत सेवा कराना मुझे उचित नहीं है सो कह दे मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूं। १६ लाबान के दो बेटियां थीं जिन में से बड़ी का नाम लेआ और छोटी का राहेल है। १७ लेआ के तो धुन्धली आंखें थीं पर राहेल रूपवती और सुन्दर थी। १८ सो याकूब ने जो राहेल से प्रीति रखता था कहा मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिये सात बरस तेरी सेवा करूंगा। १९ लाबान ने कहा उसे पराये पुरुष को देने से तुझ को देना उत्तम होगा सो तू मेरे पास रह। २० सो याकूब ने राहेल के लिये सात बरस सेवा की और वे उस को राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े। २१ तब याकूब ने लाबान से कहा मेरी स्त्री मुझे दे और मैं उस के पास जाऊंगा क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है। २२ सो लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाकर इकट्ठा किया और उन की जेवनार की। २३ सांझ के समय वह अपनी बेटी लेआ को याकूब के पास ले गया और उस ने उस से प्रसंग किया। २४ और लाबान ने अपनी बेटी लेआ को उस की लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी जिल्पा दी। २५ भोर को मालूम हुआ कि यह तो लेआ है सो उस ने लाबान से कहा यह तू ने मुझ से क्या किया है मैं ने तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा की सो क्या राहेल के लिये नहीं की फिर तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया है। २६ लाबान ने कहा हमारे यहां ऐसी रीति नहीं कि जेठी से पहिले दूसरी का बिवाह कर दें। २७ इस का अठवारा तो पूरा कर फिर दूसरी भी तुझे इस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर और सात बरस लों करेगा। २८ सो याकूब ने ऐसा करके लेआ के अठवारे को पूरा किया तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल को भी दिया कि वह उस की स्त्री हो। २९ और लाबान ने अपनी बेटी राहेल की लौंडी होने के लिये

३० अपनी लोंडी बिल्हा को दिया । तब याकूब राहेल के पास भी गया और उस की प्रीति लेआ से अधिक उसी पर हुई और उस ने लाबान के साथ रहकर और भी सात बरस उस की सेवा की ॥

३१ जब यहोवा ने देखा कि लेआ अप्रिय हुई तब उस ने
३२ उस की कोख खोली पर राहेल बांझ रही । सो लेआ गर्भवती हुई और एक पुत्र जनी और यह कहकर उस का नाम रूबेन[१] रक्खा कि यहोवा ने जो मेरे दुःख पर दृष्टि की है, सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रक्खेगा ।
३३ फिर वह गर्भवती होकर एक पुत्र और जनी और बोली यह सुनके कि मैं अप्रिय हूं यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का नाम शिमोन[२] रक्खा ।
३४ फिर वह गर्भवती होकर एक पुत्र और जनी और कहा अब की बार तो मेरा पति मुझ से मिल जाएगा क्योंकि मैं उस के तीन पुत्र जनी हूं इस लिये उस
३५ का नाम लेवी[३] रक्खा गया । और फिर वह गर्भवती होकर एक और पुत्र जनी और कहा अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदा[४] रक्खा तब उस का जनना बन्द हो गया ॥

३०. जब राहेल ने देखा कि याकूब के मुझ से सन्तान नहीं होते तब वह अपनी बहिन से डाह करने लगी और याकूब से कहा मुझे लड़के दे
२ नहीं तो मर जाऊंगी । तब याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा क्या मैं परमेश्वर हूं तेरी कोख तो उसी ने
३ बन्द कर रक्खी है । राहेल ने कहा अच्छा मेरी लौंडी बिल्हा हाजिर है उसी के पास जा वह मेरे घुटनों पर
४ जनेगी और उस के द्वारा मेरा भी घर बसेगा । सो उस ने उसे अपनी लौंडी बिल्हा को दिया कि वह उस की
५ स्त्री हो और याकूब उस के पास गया । और बिल्हा गर्भ-
६ वती होकर याकूब का जन्माया एक पुत्र जनी । और राहेल ने कहा परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुन कर मुझे एक पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का
७ नाम दान[५] रक्खा । और राहेल की लौंडी बिल्हा फिर गर्भवती होकर याकूब का जन्माया एक पुत्र और जनी ।
८ तब राहेल ने कहा मैं ने अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई सो उस
९ ने उस का नाम नप्ताली[६] रक्खा । जब लेआ ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूं तब उस ने अपनी लौंडी जिल्पा को लेकर याकूब की स्त्री होने के लिये दे
१० दिया । और लेआ की लौंडी जिल्पा भी याकूब का
११ जन्माया एक पुत्र जनी । तब लेआ ने कहा अहो भाग्य
१२ सो उस ने उस का नाम गाद[७] रक्खा । फिर लेआ की लौंडी जिल्पा याकूब का जन्माया एक पुत्र और जनी ।
१३ तब लेआ ने कहा मैं धन्य हूं निश्चय स्त्रियां[८] मुझे धन्य
१४ कहेंगी सो उस ने उस का नाम आशेर[९] रक्खा । गोहूं की कटनी के दिनों में रूबेन को मैदान में दूदाफल मिले और वह उन को अपनी माता लेआ के पास ले गया तब राहेल ने लेआ से कहा अपने पुत्र के दूदाफलों
१५ में से कुछ मुझे दे । उस ने उस से कहा तू ने जो मेरे पति को ले लिया है सो क्या छोटी बात है अब क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती है राहेल ने कहा अच्छा तेरे पुत्र के दूदाफलों के पलटे में वह आज
१६ रात को तेरे संग सोएगा । सो सांझ को जब याकूब मैदान से आता था तब लेआ उस से भेंट करने को निकली और कहा तुझे मेरे ही पास आना होगा क्योंकि मैं ने अपने पुत्र के दूदाफल देकर तुझे सचमुच मोल
१७ लिया है तब वह उस रात को उसी के संग सोया । तब परमेश्वर ने लेआ की सुनी सो वह गर्भवती होकर
१८ याकूब का जन्माया पांचवां पुत्र जनी । तब लेआ ने कहा मैं ने जो अपने पति को अपनी लौंडी दी इस लिये परमेश्वर ने मुझे मेरी मजूरी दी है, सो उस ने उस
१९ का नाम इस्साकार[१०] रक्खा । और लेआ फिर गर्भवती
२० होकर याकूब का जन्माया छठवां पुत्र जनी । तब लेआ ने कहा परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान दिया है, अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा क्योंकि मैं उस के जन्माये छः पुत्र जनी हूं, सो उस ने उस का नाम
२१ जबूलून[११] रक्खा । पीछे उस के एक बेटी भी हुई और
२२ उस ने उस का नाम दीना रक्खा । और परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली और उस की सुनकर उस की
२३ कोख खोली । सो वह गर्भवती होकर एक पुत्र जनी और कहा परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया
२४ है । सो उस ने यह कहकर उस का नाम यूसुफ[१२] रक्खा कि परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा ॥

२५ जब राहेल यूसुफ को जनी तब याकूब ने लाबान से कहा मुझे बिदा कर कि मैं अपने देश और स्थान को
२६ जाऊं । मेरी स्त्रियां और मेरे लड़केबाले जिन के लिए मैं ने तेरी सेवा की है उन्हें मुझे दे कि मैं चला जाऊं तू
२७ तो जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की है । लाबान

(१) अर्थात् देखो बेटा । (२) अर्थात् सुन लेना । (३) अर्थात् जुटना । (४) अर्थात् जिस का धन्यवाद हुआ हो । (५) अर्थात् न्यायी । (६) अर्थात् मेरा मल्लयुद्ध ।

(७) अर्थात् सौभाग्य । (८) मूल में बेटियां । (९) अर्थात् धन्य । (१०) अर्थात् मजूरी में मिला । (११) अर्थात् निवास । (१२) अर्थात् वह दूर करता है । वा वह और भी देगा ।

ने उस से कहा यदि तेरी दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है तो रह जा क्योंकि मैं ने लक्षण से जान लिया है कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशिष दी है। २८ फिर उस ने कहा तू ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं और मैं उसे दूंगा। २९ उस ने उस से कहा तू जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे। ३० मेरे आने से पहले वे कितने थे और अब कितने हो गये हैं और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे तो आशिष दी है पर मैं अपने घर का काम कब करने पाऊंगा। ३१ उस ने फिर कहा मैं तुझे क्या दूं याकूब ने कहा तू मुझे कुछ न दे यदि तू मेरे लिये एक काम करे तो मैं फिर तेरी भेड़ बकरियों को चराऊंगा और उन की रक्षा करूंगा। ३२ मैं आज तेरी सब भेड़ बकरियों के बीच होकर निकलूंगा और जो भेड़ वा बकरी चित्तीवाली वा चित्कबरी हो और जो भेड़ काली हो और जो बकरी चित्कबरी वा चित्तीवाली हो उन्हें मैं अलग कर रक्खूंगा और मेरी मजूरी वे ही ठहरेंगी। ३३ और जब आगे को मेरी मजूरी की चर्चा तेरे साम्हने चले तब मेरे धर्म्म की यही साक्षी होगी अर्थात् बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चित्कबरी हो और भेड़ों में से जो कोई काली न हो सो यदि मेरे पास निकले तो चोरी की ठहरेगी। ३४ तब लाबान ने कहा तेरे कहने के अनुसार हो। ३५ सो उस ने उसी दिन सब धारीवाले और चित्कबरे बकरों और सब चित्तीवाली और चित्कबरी बकरियों को अर्थात् जितनियों में कुछ उजलापन था उन को और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया। ३६ और उस ने अपने और याकूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया सो याकूब लाबान की भेड़ बकरियों को चराने लगा। ३७ और याकूब ने चिनार और बादाम और अर्मोन वृक्षों की हरी हरी छड़ियां लेकर उन के छिलके कहीं कहीं छील के उन्हें गंडेरीदार बना दिया, ३८ और छीली हुई छड़ियों को भेड़ बकरियों के साम्हने उन के पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया और जब वे पीने के लिये आईं तब गाभिन हो गईं। ३९ और छड़ियों के साम्हने गाभिन होकर भेड़ बकरियां धारीवाले चित्तीवाले और चित्कबरे बच्चे जनीं। ४० तब याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग अलग किया और लाबान की भेड़ बकरियों के मुंह को चित्तीवाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया और अपने झुण्डों को उन से अलग रक्खा और लाबान की भेड़ बकरियों से मिलने न दिया। ४१ और जब जब बलवन्त भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब तो याकूब उन छड़ियों को कठौतों में उन के साम्हने रख देता था जिस से वे छड़ियों को देखती हुई गाभिन हो जाएं। ४२ पर जब निर्बल भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब वह उन्हें उन के आगे न रखता था इस से निर्बल निर्बल लाबान की रहीं और बलवन्त बलवन्त याकूब की हो गईं। ४३ सो वह पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया और उस के बहुत सी भेड़ बकरियां लौण्डियां दास ऊंट और गदहे हुए।

(याकूब के घर जाने का वर्णन)

३१. फिर लाबान के पुत्रों की ये बातें याकूब के सुनने में आईं कि याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है और हमारे पिता का जो धन था उसी से उस ने अपना यह सारा विभव कर लिया है। २ और याकूब लाबान की चेष्टा से भी ताड़ गया कि वह आगे की नाईं अब मुझे नहीं देखता। ३ तब यहोवा ने याकूब से कहा अपने पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा और मैं तेरे संग रहूंगा। ४ तब याकूब ने राहेल और लेआ को मैदान पर अपनी भेड़ बकरियों के पास बुलवा कर ५ कहा तुम्हारे पिता की चेष्टा से मुझे समझ पड़ता है कि वह तो मुझे आगे की नाईं अब नहीं देखता पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे संग रहा है। ६ और तुम भी जानती हो कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर की है। ७ और तुम्हारे पिता ने मुझ से छल करके मेरी मजूरी को दस बार बदल दिया परन्तु परमेश्वर ने उस को मेरी हानि करने नहीं दिया। ८ जब उस ने कहा कि चित्तीवाले बच्चे तेरी मजूरी ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां चित्तीवाले ही जनने लगीं और जब उस ने कहा कि धारीवाले बच्चे तेरी मजूरी ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां धारीवाले जनने लगीं। ९ इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे दिये। १० भेड़ बकरियों के गाभिन होने के समय मैं ने स्वप्न में क्या देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं सो धारीवाले चित्तीवाले और धब्बेवाले हैं। ११ और परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा हे याकूब मैं ने कहा क्या आज्ञा[१]। १२ उस ने कहा आंखें उठाकर उन सब बकरों को जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं देख कि वे धारीवाले चित्तीवाले और धब्बेवाले हैं क्योंकि जो कुछ लाबान तुझ से करता है सो मैं ने देखा है। १३ मैं उस बेतेल का ईश्वर हूं जहां तू ने एक खंभे पर तेल डाल दिया और मेरी मन्नत मानी थी अब चल इस देश से निकलकर अपनी जन्मभूमि को लौट जा। १४ तब राहेल और लेआ ने उस से कहा क्या हमारे पिता के घर में अब हमारा कुछ

(१) मूल में मुझे देख।

भाग वा अंश रहा है। क्या हम उस के लेखे में उपरी नहीं ठहरीं देख उस ने हम को तो बेच डाला और हमारे १६ रूपे को खा बैठा है। सो परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन ले लिया है सो हमारा और हमारे लड़केबालों का है अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है १७ सो कर। तब याकूब ने अपने लड़केबालों और स्त्रियों को १८ ऊंटों पर चढ़ाया, और जितने पशुओं को वह पद्दनराम में इकट्ठा करके धनाढ्य हो गया था सब को कनान में अपने पिता इसहाक के पास जाने की मनसा से साथ ले गया। १९ लाबान तो अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये चला गया था। और राहेल अपने पिता के गृहदेवताओं २० को चुरा ले गई। सो याकूब लाबान अरामी के पास से चोरी से चला गया अर्थात् उस को न बताया कि मैं २१ भागा जाता हूं। वह अपना सब कुछ लेकर भागा और महानद के पार उतरके अपना मुंह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर किया।

२२ तीसरे दिन लाबान को समाचार मिला कि याकूब २३ भाग गया है। सो उस ने अपने भाइयों को साथ लेकर उस का पीछा सात दिन तक किया और गिलाद के पहाड़ी देश २४ में उस को जा लिया। तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान के पास आकर कहा सावधान रह तू २५ याकूब से न तो भला कहना और न बुरा। और लाबान याकूब के पास पहुंच गया याकूब तो अपना तंबू गिलाद नाम पहाड़ी देश में खड़ा किये पड़ा था और लाबान ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तंबू उसी पहाड़ी २६ देश में खड़ा किया। तब लाबान याकूब से कहने लगा तू ने यह क्या किया कि मेरे पास से चोरी से चला आया और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया जैसा कोई युद्ध में २७ जीतकर बन्धुई करके ले जाए। तू क्यों चुपके से भाग आया और मुझ से बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया नहीं तो मैं तुझे आनन्द के साथ मृदंग और २८ वीणा बजवाते और गीत गवाते बिदा करता। तू ने तो मुझे अपने बेटे बेटियों को चूमने तक न दिया तू ने २९ मूर्खता की है। तुम लोगों की हानि करने की शक्ति मेरे हाथ में तो है पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझ से बीती हुई रात में कहा सावधान रह याकूब से न तो भला ३० कहना और न बुरा। भला तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होकर चला आया तो चला आया पर ३१ मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है। याकूब ने लाबान को उत्तर दिया मैं यह सोचकर डर गया था कि क्या जानिये लाबान अपनी बेटियों को मुझ से छीन ३२ ले। जिस किसी के पास तू अपने देवताओं को पाए सो जीता न बचेगा मेरे पास तेरा जो कुछ निकले सो भाई-बन्धुओं के साम्हने पहिचानकर ले ले। याकूब तो न जानता था कि राहेल गृहदेवताओं को चुरा ले आई है। ३३ यह सुनकर लाबान याकूब और लेआ और दोनों दासियों के तंबुओं में गया और कुछ न मिला तब लेआ के तंबू ३४ में से निकलकर राहेल के तंबू में गया। राहेल तो गृहदेवताओं को ऊंट की काठी में रख के उन पर बैठी थी सो लाबान ने उस के सारे तंबू में टटोलने पर भी उन्हें ३५ न पाया। राहेल ने अपने पिता से कहा हे मेरे प्रभु इस से अप्रसन्न न हो कि मैं तेरे साम्हने नहीं उठी क्योंकि मैं स्त्रीधर्म से हूं। सो उस के ढूंढ़ ढांढ़ करने पर भी गृह-३६ देवता उस को न मिले। तब याकूब क्रोधित होकर लाबान से झगड़ने लगा और कहा मेरा क्या अपराध है मेरा क्या पाप है कि तू ने इतना तेहा करके मेरा पीछा किया ३७ है। तू ने जो मेरी सारी सामग्री को टटोला सो तुझ को अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला। कुछ मिला हो तो उस को यहां अपने मेरे भाइयों के साम्हने रख दे और ३८ वे हम दोनों के बीच विचार करें। इन बीस बरसों से मैं तेरे पास रहता हूं इन में न तो तेरी भेड़ बकरियों के गर्भ ३९ गिरे और न तेरे मेढ़ों का मांस मैं ने कभी खाया। जो बनैले जन्तुओं से फाड़ा जाता उस को मैं तेरे पास न लाता था उस की हानि मैं ही उठाता था चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को तू मेरे ही हाथ से उस को भर ४० लेता था। मेरी तो यह दशा थी कि दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे सुखाये डालता था और नींद ४१ मेरी आंखों से भाग जाती थी। बीस बरस तक मैं तेरे घर में रहा चौदह बरस तो मैं ने तेरी दोनों बेटियों के लिये और छः बरस तेरी भेड़ बकरियों के लिये सेवा की और ४२ तू ने मेरी मजूरी को दस बार बदल डाला। मेरे पिता का परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर जिस का भय इसहाक भी मानता है सो यदि मेरी ओर न होता तो निश्चय तू अब मुझे छूछे हाथ जाने देता। मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती ४३ हुई रात में तुझे दपटा। लाबान ने याकूब से कहा ये बेटियां तो मेरी ही हैं और ये पुत्र भी मेरे ही हैं और ये भेड़ बकरियां भी मेरी ही हैं और जो कुछ तुझे देख पड़ता है सो सब मेरा ही है और अब मैं अपनी इन ४४ बेटियों वा इन के सन्तान से क्या कर सकता हूं। अब आ मैं और तू दोनों आपस में बाचा बांधें और वह मेरे ४५ और तेरे बीच साक्षी ठहरी रहे। तब याकूब ने एक पत्थर ४६ लेकर उस का खंभा खड़ा किया। तब याकूब ने अपने भाईबन्धुओं से कहा पत्थर बटोरो यह सुनकर उन्हों ने

पत्थर बटोर के एक ढेर लगाया और वहीं ढेर के पास
४७ उन्हों ने भोजन किया। उस ढेर का नाम लाबान
ने तो यगर्सहदूता[1] पर याकूब ने गलेद[2] रक्खा।
४८ लाबान ने जो कहा कि यह ढेर आज से मेरे और तेरे
बीच साक्षी रहेगा इसी कारण उस का नाम गलेद रक्खा
४९ गया, और मिजपा[3] भी क्योंकि उस ने कहा कि जब
हम एक दूसरे की आंखों की ओट रहें तब यहोवा हमारे
५० बीच में ताकता रहे। यदि तू मेरी बेटियों को दुःख दे
वा उन से अधिक और स्त्रियां ब्याह ले तो हमारे साथ
कोई मनुष्य तो न रहेगा पर देख मेरे तेरे बीच में पर-
५१ मेश्वर साक्षी रहेगा। फिर लाबान ने याकूब से कहा इस
ढेर को देख और इस खंभे को भी देख जिन को मैं ने
५२ अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। यह ढेर और
यह खंभा दोनों इस बात के साक्षी रहें कि हानि करने की
मनसा से न तो मैं इस ढेर को लांघकर तेरे पास जाऊं
न तू इस ढेर और इस खंभे को लांघकर मेरे पास
५३ आएगा। इब्राहीम और नाहोर और उन के पिता तीनों
का जो परमेश्वर है सो हम दोनों के बीच न्याय करे।
तब याकूब ने उस की किरिया खाई जिस का भय उस
५४ का पिता इसहाक मानता था। और याकूब ने उस पहाड़
पर मेलबलि चढ़ाया और अपने भाईबन्धुओं को भोजन
करने के लिये बुलाया सो उन्हों ने भोजन करके पहाड़
५५ पर रात बिताई। बिहान को लाबान तड़के उठ अपने
बेटे बेटियों को चूमकर और आशीर्वाद देकर चल दिया
और अपने स्थान को लौट गया। और याकूब ने भी

३२. अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे
२ आ मिले। उन को देखते ही याकूब ने कहा
यह तो परमेश्वर का दल है सो उस ने उस स्थान का
नाम महनैम[4] रक्खा॥

(याकूब के एसाव से मिलने और उस के इस्राएल नाम रखे जाने का वर्णन)

३ तब याकूब ने सेईर देश में अर्थात् एदोम देश में
अपने भाई एसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिये।
४ और उस ने उन्हें यह आज्ञा दी कि मेरे प्रभु एसाव से
यों कहना कि तेरा दास याकूब तुझ से यों कहता है कि
५ मैं लाबान के यहां परदेशी होकर अब लों रहा। और
मेरे गाय बैल गदहे भेड़ बकरियां और दास दासियां हो
गई हैं सो मैं ने अपने प्रभु के पास इस लिये संदेशा
६ भेजा है कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो। वे दूत
याकूब के पास लौटके कहने लगे, हम तेरे भाई एसाव
के पास गये थे और वह भी तुझ से भेंट करने को चार
७ सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है। तब याकूब
निपट डर गया और संकट में पड़ा और यह सोचकर
अपने संगवालों के और भेड़ बकरियों गाय बैलों और
८ ऊंटों के भी अलग अलग दो दल कर लिये, कि यदि
एसाव आकर पहिले दल को मारने लगे तो दूसरा दल
९ भागकर बचेगा। फिर याकूब ने कहा हे यहोवा हे मेरे
दादा इब्राहीम के परमेश्वर हे मेरे पिता इसहाक के पर-
मेश्वर तू ने तो मुझ से कहा कि अपने देश और जन्म-
१० भूमि में लौट जा और मैं तेरी भलाई करूंगा। तू ने जो
जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के
साथ किये हैं कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यर्दन
नदी के पार उतर आया सो अब मेरे दो दल हो गये हैं
तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं।
११ मेरी बिनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से
बचा, मैं तो उस से डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि वह
आकर मुझे और मा समेत लड़कों को भी मार डाले।
१२ तू ने तो कहा है कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूंगा और
तेरे वंश को समुद्र की बालू के किनकों के समान बहुत
१३ करूंगा जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जाते। और उस
ने उस दिन की रात वहीं बिताई और जो कुछ उस के
पास था उस में से अपने भाई एसाव की भेंट के लिये
१४ छांट छांटकर निकाला, अर्थात् दो सौ बकरियां और
१५ बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस मेढ़े, बच्चों समेत दूध
देती हुई तीस ऊंटनियां चालीस गायें दस बैल बीस गद-
१६ हियां और गदहियों के दस बच्चे। इन को उस ने झुण्ड
झुण्ड करके अपने दासों को सौंपकर उन से कहा मेरे
आगे बढ़ जाओ और झुण्डों के बीच बीच में अन्तर
१७ रक्खो। फिर उस ने अगले झुण्ड के रखवाले को यह
आज्ञा दी कि जब मेरा भाई एसाव तुझे मिले और पूछने
लगे कि तू किस का दास है और कहां जाता है और ये
१८ जो तेरे आगे हैं सो किस के हैं, तब कहना कि तेरे दास
याकूब के हैं, हे मेरे प्रभु एसाव ये भेंट के लिये तेरे
पास भेजे गये हैं और वह आप भी हमारे पीछे है।
१९ और उस ने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी बरन उन
सभों को जो झुण्डों के पीछे पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दी
कि जब एसाव तुम को मिले तब इसी प्रकार उस से
२० कहना। और यह भी कहना कि तेरा दास याकूब हमारे
पीछे है। क्योंकि उस ने सोचा था कि यह भेंट जो मेरे
आगे आगे जाती है, इस के द्वारा मैं उस के क्रोध को
शान्त करके तब उस का दर्शन करूंगा क्या जानिये
२१ वह मुझ से प्रसन्न हो। सो वह भेंट याकूब से पहिले पार
उतर गई और वह आप उस रात को छावनी में रहा॥

(१) अर्थात् अरामी भाषा में साक्षी का ढेर। (२) अर्थात् इब्रानी भाषा मे साक्षी का ढेर। (३) अर्थात् ताकने का स्थान। (४) अर्थात् दो दल।

२२ उसी रात को वह उठ अपनी दोनों स्त्रियों और
दोनों लौंडियों और ग्यारहों लड़कों को संग लेकर घाट
२३ से यब्बोक नदी के पार उतर गया । और उस ने उन्हें
उस नदी के पार उतार दिया वरन अपना सब कुछ
२४ उतार दिया । और याकूब आप अकेला रह गया तब
कोई पुरुष आकर पह फटने लों उस से मल्लयुद्ध करता
२५ रहा । जब उस ने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता
तब उस की जांघ की नस को छूआ सो याकूब की जांघ
२६ की नस उस से मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई । तब
उस ने कहा मुझे जाने दे क्योंकि पह फटती है याकूब ने
कहा, जब लों तू मुझे आशीर्वाद न दे तब लों मैं तुझे
२७ जाने न दूंगा । और उस ने याकूब से पूछा तेरा नाम क्या
२८ है उस ने कहा याकूब । उस ने कहा तेरा नाम अब
याकूब न रहेगा इस्राएल[१] रक्खा गया है क्योंकि तू
परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ
२९ है । याकूब ने कहा मुझे अपना नाम बता उस ने कहा
तू मेरा नाम क्यों पूछता है तब उस ने उस को वहीं
३० आशीर्वाद दिया । तब याकूब ने यह कह कर उस स्थान
का नाम पनीएल[२] रक्खा कि परमेश्वर को आम्हने
३१ साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है । पनूएल
के पास से चलते चलते याकूब को सूर्य्य उदय हो गया
३२ और वह जांघ से लंगड़ाता था । इस्राएली जो पशुओं की
जांघ की जोड़वाले जंघानस को आज के दिन लों नहीं
खाते इस का यही कारण है कि उस पुरुष ने याकूब की
जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ था ॥

३३. और याकूब ने आंखें उठाकर यह देखा कि एसाव चार सौ पुरुष
संग लिये हुए चला आता है तब उस ने लड़केवालों को
अलग अलग बांटकर लेआ और राहेल और दोनों
२ लौंडियों को सौंप दिया । और उस ने सब के आगे
लड़कों समेत लौंडियों को उस के पीछे लड़कों समेत
लेआ को और सब के पीछे राहेल और यूसुफ को रक्खा,
३ और आप उन सभों के आगे बढ़ा और सात बार भूमि
पर गिरके दण्डवत् की और अपने भाई के पास पहुंचा ।
४ तब एसाव उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को
हृदय में लगाकर गले से लिपट कर चूमा फिर वे दोनों
५ रो उठे । तब उस ने आंखें उठाकर स्त्रियों और लड़के-
वालों को देखा और पूछा ये जो तेरे साथ हैं सो कौन हैं
उस ने कहा ये तेरे दास के लड़के हैं जिन्हें परमेश्वर ने
६ अनुग्रह करके मुझ को दिया है । तब लड़कों समेत
७ लौंडियों ने निकट आकर दण्डवत् की । फिर लड़कों
समेत लेआ निकट आई और उन्हों ने भी दण्डवत् की
पीछे यूसुफ और राहेल ने भी निकट आकर दण्डवत् की ।
तब उस ने पूछा तेरा यह बड़ा दल जो मुझ को मिला ८
उस का क्या प्रयोजन है उस ने कहा यह कि मेरे प्रभु की
अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो । एसाव ने कहा हे मेरे भाई ९
मेरे पास तो बहुत है जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे ।
याकूब ने कहा नहीं नहीं यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो १०
तो मेरी भेंट ग्रहण कर क्योंकि मैं ने तेरा दर्शन पाकर
मानों परमेश्वर का दर्शन पाया है और तू मुझ से प्रसन्न
हुआ है । सो यह भेंट जो तुझे भेजी गई है ग्रहण कर ११
क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है और मेरे
पास बहुत है । जब उस ने उस को दबाया तब उस ने
उस को ग्रहण किया । फिर एसाव ने कहा आ हम बढ़ १२
चलें और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा । याकूब ने कहा १३
हे मेरे प्रभु तू जानता होगा कि मेरे साथ सुकुमार लड़के
और दूध देनेहारी भेड़ बकरियां और गायें हैं, यदि ऐसे
पशु एक दिन भी अधिक हांके जाएं तो सब के सब मर
जाएंगे । सो मेरा प्रभु अपने दास के आगे बढ़ जाए १४
और मैं इन पशुओं की गति अनुसार जो मेरे आगे हैं
और लड़केवालों की गति अनुसार भी धीरे धीरे चलकर
सेईर में अपने प्रभु के पास पहुंचूंगा । एसाव ने कहा तो १५
अपने संगवालों में से मैं कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं ।
उस ने कहा यह क्यों इतना ही बहुत है कि मेरे प्रभु की
अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे । तब एसाव ने उसी १६
दिन सेईर जाने को अपना मार्ग लिया । और याकूब १७
वहां से कूच करके सुक्कोत को गया और वहां अपने लिये
एक घर और पशुओं के लिये झोंपड़े बनाये इसी कारण
उस स्थान का नाम सुक्कोत[३] पड़ा ॥

और याकूब जो पद्दनराम से आया था सो कनान १८
देश के सकेम नगर के पास कुशल क्षेम से पहुंच कर
नगर के साम्हने डेरे खड़े किये । और भूमि के जिस १९
खण्ड पर उस ने अपना तंबू खड़ा किया उस को उस
ने शकेम के पिता हमोर के पुत्रों के हाथ से एक सौ
कसीतों[४] में मोल लिया । और वहां उस ने एक वेदी २०
बनाकर उस का नाम एलेलोहे इस्राएल[५] रक्खा ॥

(दीना के भ्रष्ट किये जाने का वर्णन)

३४. और लेआ की बेटी दीना जिसे वह याकूब की जन्माई जनी थी
उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली । तब २

(१) अर्थात् ईश्वर से युद्ध करनेहारा । (२) अर्थात् ईश्वर का मुख ।

(३) अर्थात् झोंपड़े । (४) इनका मूल्य संदिग्ध है ।
(५) अर्थात् ईश्वर इस्राएल का परमेश्वर ।

उस देश के प्रधान हिव्वी हमोर के पुत्र शकेम ने उसे देखा और उसे ले जाकर उस के साथ कुकर्म करके उस को ३ भ्रष्ट कर डाला। तब उस का जी याकूब की बेटी दीना से अटक गया और उस ने उस कन्या से प्रेम की बातें ४ करके उस को धीरज बन्धाया। और शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा मुझे इस लड़की को मेरी स्त्री होने ५ के लिये दिला दे। और याकूब ने सुना कि शकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है और उस के पुत्र उस समय पशुओं के संग मैदान में थे सो वह उन ६ के आने लों चुप रहा। और शकेम का पिता हमोर निकलकर याकूब से बातचीत करने को उस के पास ७ गया। और याकूब के पुत्र सुनते ही मैदान से निपट उदास और अति क्रोधित होकर आये क्योंकि शकेम ने जो याकूब की बेटी के साथ कुकर्म्म किया सो इस्राएल के घराने से मूर्खता का ऐसा काम किया था जिस का करना ८ अनुचित है। हमोर ने उन सभों से कहा मेरे पुत्र शकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है सो उसे उस की ९ स्त्री होने के लिये उस को दे दो। और हमारे साथ ब्याह किया करो अपनी बेटियां हम को दिया करो और हमारी १० बेटियों को आप लिया करो। और हमारे संग बसे रहो और यह देश तुम्हारे सामने पड़ा है इस में रहकर लेन ११ देन करो और इस की भूमि निज कर लिया करो। और शकेम ने भी दीना के पिता और भाइयों से कहा, यदि मुझ पर तुम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि हो तो जो कुछ १२ तुम मुझ से कहो सो मैं दूंगा। तुम मुझ से कितना ही मूल्य वा बदला क्यों न मांगो तौ भी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दूंगा इतना हो कि उस कन्या को स्त्री होने के १३ लिये मुझे दो। तब यह सोचकर कि शकेम ने हमारी बहिन दीना को अशुद्ध किया है याकूब के पुत्रों ने शकेम और उस के पिता हमोर को छल के साथ यह उत्तर दिया १४ कि, हम ऐसा काम नहीं कर सकते कि किसी खतनारहित पुरुष को अपनी बहिन दें क्योंकि इस से हमारी नाम- १५ धराई होगी। इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे कि हमारी नाईं तुम में से हर एक पुरुष का खतना किया १६ जाए। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें ब्याह देंगे और तुम्हारी बेटियां ब्याह लेंगे और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे और हम दोनों एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाएंगे। १७ पर यदि तुम हमारी मानकर अपना खतना न कराओ १८ तो हम अपनी लड़की को लेके चले जाएंगे। उन की इस बात पर हमोर और उस का पुत्र शकेम प्रसन्न हुए। १९ और वह जवान जो याकूब की बेटी को बहुत चाहता था इस से उस ने वैसा करने में विलम्ब न किया। वह तो अपने पिता के सारे घराने में से अधिक प्रतिष्ठित था। २० सो हमोर और उस का पुत्र शकेम अपने नगर के फाटक के निकट जाकर नगरवासियों को यों समझाने लगे कि, २१ वे मनुष्य तो हमारे संग मेल से रहने चाहते हैं सो उन्हें इस देश में रहके लेन देन करने दो देखो यह देश उन के लिये भी बहुत है फिर हम लोग उन की बेटियों को २२ ब्याह लें और अपनी बेटियों को उन्हें दिया करें। वे लोग केवल इस बात पर हमारे संग रहने और एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न हैं कि उन की नाईं २३ हमारे सब पुरुषों का भी खतना किया जाए। क्या उन की भेड़ बकरियां गाय बैल बरन उन के सारे पशु और धन संपत्ति हमारी न हो जाएगी इतना ही हो कि हम २४ लोग उन की मान लें तो वे हमारे संग रहेंगे। सो जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे उन सभों ने हमोर की और उस के पुत्र शकेम की मानी हर एक पुरुष का खतना किया गया जितने उस नगर के फाटक से निक- २५ लते थे। तीसरे दिन जब वे लोग पीड़ित पड़े थे तब शिमोन और लेवी नाम याकूब के दो पुत्रों ने जो दीना के भाई थे अपनी अपनी तलवार ले उस नगर में निध- २६ ड़क घुसकर सब पुरुषों को घात किया। और हमोर और उस के पुत्र शकेम को उन्हों ने तलवार से मार डाला २७ और दीना को शकेम के घर में से निकाल ले गये। और याकूब के पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़कर नगर को इस लिये लूट लिया कि उस में उन की बहिन अशुद्ध की २८ गई थी। वे भेड़ बकरी गाय बैल और गदहे और नगर २९ और मैदान में जितना धन था। उस सब को और उन के बाल बच्चों और स्त्रियों को भी हर ले गये बरन घर घर में ३० जो कुछ था उस को भी उन्हों ने लूट लिया। तब याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा तुम ने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के मन में मुझ से घिन कराई है[1] इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं[2] सो अब वे इकट्ठे होकर मुझ पर चढ़ेंगे और मुझे मार लेंगे सो मैं अपने घराने समेत ३१ सत्यानाश हो जाऊंगा। उन्हों ने कहा, क्या वह हमारी बहिन के साथ वेश्या की नाईं बर्ताव करे॥

(बिन्यामीन् की उत्पत्ति और राहेल की मृत्यु का वर्णन)

३५. तब परमेश्वर ने याकूब से कहा यहां से कूच करके बेतेल को जा और वहीं रह और वहां उस ईश्वर के लिये वेदी बना जिस ने तुझे

(१) मूल में परिज्जियों में मुझे दुर्गन्धित किया। (२) मूल में मैं थोड़े ही लोग हूं।

उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर
२ से भागा जाता था। तब याकूब ने अपने घराने से और
उन सब से भी जो उस के संग थे कहा तुम्हारे बीच में
जो पराये देवता हैं उन्हें निकाल फेंको और अपने अपने
३ को शुद्ध करो और अपने वस्त्र बदल डालो। और आओ
हम यहां से कूच करके बेतेल को जाएं वहां मैं उस
ईश्वर की एक वेदी बनाऊंगा जिस ने संकट के दिन मेरी
सुन ली और जिस मार्ग से मैं चलता था उस में मेरे संग
४ रहा। सो जितने पराये देवता उन के पास थे और जितने
कुण्डल उन के कानों में थे उन सभों को उन्हों ने याकूब
को दिया और उस ने उन को उस बांज वृक्ष के नीचे
५ जो शकेम के पास है गाड़ दिया। तब उन्हों ने कूच
कर दिया और उन के चारों ओर के नगर निवासियों
के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया कि
६ उन्हों ने याकूब के पुत्रों का पीछा न किया। सो याकूब
उन सब समेत जो उस के संग थे कनान देश के लूज
७ नगर को आया। वह नगर बेतेल भी कहावता है। वहां उस
ने एक वेदी बनाई और उस स्थान का नाम एलबेतेल[१]
रक्खा क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता
८ था तब परमेश्वर उस पर वहीं प्रकट हुआ था। और
रिबका की दूध पिलानेहारी धाई दबोरा मर गई और
बेतेल के नीचे बांज वृक्ष के तले उस को मिट्टी दी गई
और उस बांज का नाम अल्लोनबकूत[२] रक्खा गया॥

९ फिर याकूब के पद्दनराम से आने के पीछे परमेश्वर ने
१० दूसरी बार उस को दर्शन देकर आशिष दी। और पर-
मेश्वर ने उस से कहा अब लों तो तेरा नाम याकूब है पर
आगे को तेरा नाम याकूब न रहेगा तू इस्राएल कहाएगा
११ सो उस ने उस का नाम इस्राएल रक्खा। फिर परमेश्वर
ने उस से कहा मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूं तू फूले फले
और बढ़े और तुझ से एक जाति बरन जातियों की एक
मण्डली भी उत्पन्न होए और तेरे वंश में राजा उत्पन्न
१२ होएं। और जो देश मैं ने इब्राहीम और इसहाक को
दिया है वही देश तुझे देता हूं और तेरे पीछे तेरे वंश को
१३ भी दूंगा। तब परमेश्वर उस स्थान में जहां उस ने याकूब
१४ से बातें कीं उस के पास से ऊपर चढ़ गया। और जिस
स्थान में परमेश्वर ने याकूब से बातें कीं उसी में याकूब ने
पत्थर का खंभा खड़ा किया और उस पर अर्घ देकर तेल
१५ डाल दिया। और जहां परमेश्वर ने याकूब से बातें कीं
१६ उस स्थान का नाम उस ने बेतेल रक्खा। उन्हों ने बेतेल
से कूच किया और जब उन्हें एप्राता को पहुंचने में थोड़ी
ही दूर रह गया तब राहेल को जनने की बड़ी पीड़ें

(१) अर्थात् बेतेल का ईश्वर। (२) अर्थात् रुलाई का बांज।

आने लगीं। जब उस को बड़ी बड़ी पीड़ें उठती थीं तब १७
जनाई धाई ने उस से कहा मत डर अब की बेर भी तेरे
बेटा ही होगा। तब वह मर गई और प्राण निकलते १८
निकलते उस ने तो उस बेटे का नाम बेनोनी[३] रक्खा पर
उस के पिता ने उस का नाम बिन्यामीन[४] रक्खा। यों १९
राहेल मर गई और एप्राता अर्थात् बेतलेहेम के मार्ग में
उस को मिट्टी दी गई। और याकूब ने उस की कबर पर २०
एक खंभा खड़ा किया राहेल की कबर का वही खंभा
आज लों बना है। फिर इस्राएल ने कूच किया और २१
एदेर नाम गुम्मट के आगे बढ़ कर अपना तंबू खड़ा
किया। जब इस्राएल उस देश में बसा था तब एक दिन २२
रूबेन ने जाकर अपने पिता की सुरैतिन बिल्हा के साथ
कुकर्म्म किया और यह बात इस्राएल के सुनने में आई॥

याकूब के बारह पुत्र हुए। उन में से लेआ के तो २३
पुत्र ये हुए अर्थात् याकूब का जेठा रूबेन फिर शिमोन
लेवी यहूदा इस्साकार और जबूलून। और राहेल के पुत्र २४
ये हुए अर्थात् यूसुफ और बिन्यामीन। और राहेल की २५
लौंडी बिल्हा के पुत्र ये हुए अर्थात् दान और नप्ताली।
और लेआ की लौंडी जिल्पा के पुत्र ये हुए अर्थात् गाद २६
और आशेर याकूब के ये ही पुत्र हुए जो उस से पद्दन-
राम में जन्मे॥

और याकूब किर्यतर्बा अर्थात् हेब्रोन के पासवाले मम्रे २७
में अपने पिता इसहाक के पास आया और वहीं इब्राहीम
और इसहाक परदेशी होकर रहे थे। इसहाक की अवस्था २८
तो एक सौ अस्सी बरस की हुई। और इसहाक का २९
प्राण छूट गया और वह मर के अपने लोगों में जा मिला
वह बूढ़ा और बहुत दिनी था और उस के पुत्र एसाव
और याकूब ने उस को मिट्टी दी॥

(एसाव की वंशावली)

३६. एसाव जो एदोम भी कहावता है उस की
यह वंशावली है। एसाव ने तो २
कनानी लड़कियां ब्याह लीं अर्थात् हित्ती एलोन की
बेटी आदा को और ओहोलीबामा को जो अना की बेटी
और हिव्वी सिबोन की नतिनी थी। फिर उस ने इश्माएल ३
की बेटी बासमत को भी जो नबायोत की बहिन थी ब्याह
लिया। आदा तो एसाव के जन्माये एलीपज को और ४
बासमत् रूएल को जनी। और ओहोलीबामा यूश यालाम ५
और कोरह को जनी एसाव के ये ही पुत्र कनान देश में
जन्मे। और एसाव अपनी स्त्रियों और बेटे बेटियों और ६
घर के सब प्राणियों और अपनी भेड़ बकरी गाय बैल

(३) अर्थात् मेरा शोक मूल पुत्र। (४) अर्थात् दहिने हाथ का पुत्र।

आदि सब पशुओं निदान अपनी सारी सम्पत्ति को जो उस ने कनान देश में संचय की थी लेकर अपने भाई याकूब के पास से दूसरे देश को चला गया । ७ क्योंकि उन की संपत्ति इतनी हो गई थी कि वे एकट्ठे न रह सके और पशुओं की बहुतायत के मारे उस देश में जहां वे परदेशी होकर रहते थे उन की समाई न रही । ८ एसाव जो एदोम भी कहावता है सो सेईर नाम पहाड़ी देश में रहने लगा । ९ सेईर नाम पहाड़ी देश में रहनेहारे एदोमियों के मूल पुरुष एसाव की वंशावली यह है । १० एसाव के पुत्रों के नाम ये हैं अर्थात् एसाव की स्त्री आदा का पुत्र एलीपज और उसी एसाव की स्त्री बासमत का पुत्र रूएल । ११ और एलीपज के ये पुत्र हुए अर्थात् तेमान ओमार सपो गाताम और कनज । १२ और एसाव के पुत्र एलीपज के तिम्ना नाम एक सुरैतिन थी जो एलीपज के जन्माये अमालेक को जनी एसाव की स्त्री आदा के वंश में ये ही हुए । १३ और रूएल के ये पुत्र हुए अर्थात् नहत जेरह शम्मा और मिज्जा एसाव की स्त्री बासमत के वंश में ये ही हुए । १४ और ओहोलीबामा जो एसाव की स्त्री और सिबोन की नातनी और अना की बेटी थी उस के ये पुत्र हुए अर्थात् वह एसाव के जन्माये यूश यालाम और कोरह को जनी । १५ एसावबंशियों के अधिपति ये हुए अर्थात् एसाव के जेठे एलीपज के वंश में से तो तेमान अधिपति ओमार अधिपति सपो अधिपति कनज अधिपति, १६ कोरह अधिपति गाताम अधिपति अमालेक अधिपति एलीपजबंशियों में से एदोम देश में ये ही अधिपति हुए और ये ही आदा के वंश में हुए । १७ और एसाव के पुत्र रूएल के वंश में ये हुए अर्थात् नहत अधिपति जेरह अधिपति शम्मा अधिपति मिज्जा अधिपति रूएलबंशियों में से एदोम देश में ये ही अधिपति हुए और ये ही एसाव की स्त्री बासमत के वंश में हुए । १८ और एसाव की स्त्री ओहोलीबामा के वंश में ये हुए अर्थात् यूश अधिपति यालाम अधिपति कोरह अधिपति अना की बेटी ओहोलीबामा जो एसाव की स्त्री थी उस के वंश में ये ही हुए । १९ एसाव जो एदोम भी कहावता है उस के वंश ये ही हैं और उन के अधिपति भी ये ही हुए ॥

२० सेईर जो होरी नाम जाति का था उस के ये पुत्र उस देश में पहिले से रहते थे अर्थात् लोतान शोबाल शिबोन अना, २१ दीशोन एसेर और दीशान एदोम देश में सेईर के ये ही होरी जातिवाले अधिपति हुए । २२ और लोतान के पुत्र होरी और हेमाम हुए और लोतान की बहिन तिम्ना थी । २३ और शोबाल के ये पुत्र हुए अर्थात् आल्वान मानहत एबाल शपो और ओनाम । २४ और सिबोन के ये पुत्र हुए अर्थात् अय्या और अना यह वही अना है जिस को जंगल में अपने पिता सिबोन के गदहों को चराते चराते तप्तकुंड मिले । २५ और अना के दीशोन नाम पुत्र हुआ और उसी अना के ओहोलीबामा नाम बेटी हुई । २६ और दीशोन के ये पुत्र हुए अर्थात् हेमदान एश्बान यित्रान और करान । २७ एसेर के ये पुत्र हुए अर्थात् बिल्हान जावान और अकान । २८ दीशान के ये पुत्र हुए अर्थात् ऊस और अरान । २९ होरियों के अधिपति ये हुए अर्थात् लोतान अधिपति शोबाल अधिपति सिबोन अधिपति अना अधिपति, ३० दीशोन अधिपति एसेर अधिपति दीशान अधिपति सेईर देश में होरी जातिवाले ये ही अधिपति हुए ॥

३१ फिर जब इस्राएलियों पर किसी राजा ने राज्य न किया था तब भी एदोम के देश में ये राजा हुए अर्थात्, ३२ बोर के पुत्र बेला ने एदोम में राज्य किया और उस की राजधानी का नाम दिन्हाबा है । ३३ बेला के मरने पर बोस्रानिवासी जेरह का पुत्र योबाब उस के स्थान पर राजा हुआ । ३४ और योबाब के मरने पर तेमानियों के देश का निवासी हूशाम उस के स्थान पर राजा हुआ । ३५ फिर हूशाम के मरने पर बदद का पुत्र हदद उस के स्थान पर राजा हुआ, यह वही है जिस ने मिद्यानियों को मोआब के देश में मार लिया और उस की राजधानी का नाम अबीत है । ३६ और हदद के मरने पर मस्रेकावासी सम्ला उस के स्थान पर राजा हुआ । ३७ फिर सम्ला के मरने पर शाऊल जो महानद के तटवाले रहोबोत नगर का था सो उस के स्थान पर राजा हुआ । ३८ और शाऊल के मरने पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान उस के स्थान पर राजा हुआ । ३९ और अकबोर के पुत्र बाल्हानान के मरने पर हदर उस के स्थान पर राजा हुआ और उस की राजधानी का नाम पाऊ है और उस की स्त्री का नाम महेतबेल है जो मजाहाब की नतिनी और मत्रेद की बेटी थी । ४० फिर एसावबंशियों के अधिपतियों के कुलों और स्थानों के अनुसार उन के नाम ये हैं अर्थात् तिम्ना अधिपति अल्वा अधिपति यतेत अधिपति, ४१ ओहोलीबामा अधिपति एला अधिपति पीनोन अधिपति, ४२ कनज अधिपति तेमान अधिपति मिबसार अधिपति, ४३ मग्दीएल अधिपति ईराम अधिपति । एदोमबंशियों ने जो देश अपना कर लिया था उस के निवासस्थानों में उन के ये ही अधिपति हुए । और एदोमी जाति का मूलपुरुष एसाव है ॥

(यूसुफ के बेचे जाने का वर्णन)

३७. **याकूब** तो कनान देश में रहता था जहां उस का पिता परदेशी होकर रहा
२ था। और याकूब के वंश का वृत्तान्त[1] यह है कि यूसुफ सत्तरह बरस का होकर अपने भाइयों के संग भेड़ बकरियों को चराता था और वह लड़का जो अपने पिता की स्त्री बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था सो उन की बुराइयों का समाचार उन के पिता के पास
३ पहुंचाया करता था। याकूब अपने सब पुत्रों से बढ़के यूसुफ से प्रीति रखता था क्योंकि वह उस के बुढ़ापे का पुत्र था और उस ने उस के लिये रंगबिरंगा अंगरखा बन-
४ वाया। सो जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है तब उन्हों ने उस से बैर किया और उस के साथ मेल की बातें
५ न कर सकते थे। यूसुफ ने एक स्वप्न देखकर अपने भाइयों से उस का वर्णन किया तब उन्हों ने उस से और
६ भी बैर किया। उस ने उन से कहा जो स्वप्न मैं ने देखा
७ है सो सुनो। मानो हम लोग खेत में पूले बान्ध रहे हैं और मेरा पूला उठकर खड़ा हो गया तब तुम्हारे पूलों ने
८ मेरे पूले को घेर के उसे दण्डवत् किया। तब उस के भाइयों ने उस से कहा क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा वा सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा? सो उन्हों ने उस के स्वप्नों और उस की बातों के कारण उस से और
९ भी अधिक बैर किया। फिर उस ने एक और स्वप्न देखा और अपने भाइयों से उसका भी यों वर्णन किया कि सुनो मैं ने एक और स्वप्न देखा है कि सूर्य और चन्द्रमा और
१० ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं। यह स्वप्न उस ने अपने पिता और भाइयों से वर्णन किया तब उस के पिता ने उस को दपटके कहा यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब आकर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत् करेंगे।
११ उस के भाई तो उस से डाह रखते थे पर उस के पिता
१२ ने उस के उस वचन को स्मरण रक्खा। और उस के भाई अपने पिता की भेड़ बकरियों को चराने के लिये शकेम
१३ को गये। तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा तेरे भाई तो शकेम में चरा रहे होंगे सो आ मैं तुझे उन के पास भेजता हूं।
१४ उस ने कहा जो आज्ञा[2]। उस ने उस से कहा जा अपने भाइयों और भेड़ बकरियों का हाल देखकर मेरे पास समाचार ले आ सो उस ने उस को हेब्रोन की तराई में विदा कर दिया और वह जाकर शकेम के पास पहुंचा
था, कि किसी जन ने उस को मैदान में भ्रमते हुए पाकर
१५ उस से पूछा तू क्या ढूंढ़ता है। उस ने कहा मैं तो अपने
१६ भाइयों को ढूंढ़ता हूं मुझे बता कि वे कहां चरा रहे हैं।
१७ उस जन ने कहा वे तो यहां से चले गये हैं और मैं ने उन को यह कहते सुना कि आओ हम दोतान को चलें, सो यूसुफ अपने भाइयों के पास चला और उन्हें दोतान में पाया
१८ जब उन्हों ने उस को आते दूर से देखा तब उस के निकट आने से पहिले उसे मार डालने को युक्ति बिचारने लगे।
१९ और वे आपस में कहने लगे देखो वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है।
२० सो आओ हम उस को घात करके किसी गड़हे में डाल दें तब कहेंगे कि कोई दुष्ट जन्तु उस को खा गया फिर देखेंगे कि उस के स्वप्नों का क्या फल होगा।
२१ यह सुनके रूबेन ने उस को उन के हाथ से बचाने की मनसा से कहा हम उस को प्राण से तो न मारें।
२२ फिर रूबेन ने उन से कहा लोहू मत बहाओ उस को जंगल के इस गड़हे में डाल दो और उस पर हाथ मत उठाओ। वह उस को उन के हाथ से छुड़ाकर पिता के पास फिर पहुंचाना चाहता था।
२३ सो जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंच गया तब उन्हों ने उस का अंगरखा जो वह रंगबिरंगा पहिने था उतार लिया,
२४ और यूसुफ को उठाकर गड़हे में डाल दिया, गड़हा तो सूखा था उस में कुछ जल न था।
२५ तब वे रोटी खाने को बैठ गये और आंखें उठाकर देखा कि इश्माएलियों का एक दल ऊंटों पर सुगन्धद्रव्य बलसान और गन्धरस लादे हुए गिलाद से मिस्र को चला जा रहा है।
२६ तब यहूदा ने अपने भाइयों से कहा अपने भाई को घात करने और उस का खून छिपाने से क्या लाभ होगा।
२७ आओ हम उसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें और अपना हाथ उस पर न उठाएं क्योंकि वह हमारा भाई और हाड़ मांस ही है सो उस के भाइयों ने उस की मानी।
२८ तब मिद्यानी ब्योपारी उधर से होकर पहुंचे सो यूसुफ के भाइयों ने उस को उस गड़हे में से खींच के निकाला और इश्माएलियों के हाथ रूपे के बीस टुकड़ों में बेच दिया और वे यूसुफ को मिस्र में ले गये।
२९ और रूबेन ने गड़हे पर लौटकर क्या देखा, कि यूसुफ गड़हे में नहीं है सो उस ने अपने वस्त्र फाड़े।
३० और भाइयों के पास लौट कर कहा लड़का तो नहीं है, अब मैं किधर जाऊं।
३१ सो उन्हों ने यूसुफ का अंगरखा ले एक बकरे को मारके उस के लोहू में उसे बोड़ दिया।
३२ और उन्हों ने उस रंगबिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेजकर कहला दिया कि यह हम को मिला है सो देखकर पहिचान ले कि तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं।
३३ उस ने

(१) मूल में याकूब की वंशावली। (२) मूल में मुझे देख

उस को पहिचान लिया और कहा हां मेरे पुत्र ही का अंगरखा तो है किसी दुष्ट जन्तु ने उस को खा लिया
३४ होगा निःसन्देह यूसुफ फाड़ डाला गया है। सो याकूब ने अपने वस्त्र फाड़के कटि में टाट पहिना और अपने पुत्र के लिये बहुत दिन लों विलाप करता रहा।
३५ तब उस के सब बेटे बेटियों ने उस को शान्ति देने का यत्न किया पर उस को शान्ति नहीं आई और वह कहता रहा नहीं नहीं मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊंगा सो उस का पिता
३६ उस के लिये रोता रहा। और मिद्यानियों[१] ने यूसुफ को मिस्र में ले जाकर पोतीपर नाम फिरौन के एक हाकिम और जल्लादों के प्रधान के हाथ बेच डाला॥

(यहूदा के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

३८. उन्हीं दिनों में यहूदा अपने भाइयों के पास से चला गया और हीरा नाम एक अदुल्लामवासी पुरुष के पास डेरा किया।
२ वहां यहूदा ने शूआ नाम एक कनानी पुरुष की बेटी को
३ देखा और उस को ब्याहकर उस के पास गया। वह गर्भवती होकर एक पुत्र जनी और यहूदा ने उस का नाम
४ एर रक्खा। और वह फिर गर्भवती होकर एक पुत्र और
५ जनी और उस का नाम ओनान रक्खा। फिर वह एक पुत्र और जनी और उस का नाम शेला रक्खा और जिस समय वह इस को जनी उस समय यहूदा कजीब में
६ रहता था। और यहूदा ने तामार नाम एक स्त्री से
७ अपने जेठे एर का विवाह कर दिया। पर यहूदा का वह जेठा एर जो यहोवा के लेखे में दुष्ट था इस लिये यहोवा
८ ने उस को मार डाला। तब यहूदा ने ओनान से कहा अपनी भौजाई के पास जा और उस के साथ देवर का
९ धर्म्म करके अपने भाई के लिये सन्तान जन्मा। ओनान तो जानता था कि सन्तान मेरा न ठहरेगा सो जब वह अपनी भौजाई के पास गया तब उस ने भूमि पर स्खलित करके नाश किया न हो कि उस को अपने भाई
१० के लिये सन्तान उत्पन्न करे। यह जो काम उस ने किया सो यहोवा को बुरा लगा सो उस ने उस को भी
११ मार डाला। तब यहूदा ने इस डर के मारे कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों की नाईं शेला भी मरे अपनी बहू तामार से कहा जब लों मेरा पुत्र शेला समर्थ न हो तब लों अपने पिता के घर में विधवा ही बैठी रह, सो तामार
१२ जाकर अपने पिता के घर में बैठी रही। बहुत दिन के बीतने पर यहूदा की स्त्री जो शूआ की बेटी थी सो मर गई फिर यहूदा शोक से छूट कर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने
१३ के लिये गया। और तामार को यह समाचार मिला कि तेरा ससुर तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं
१४ कतराने के लिये जा रहा है। तब उस ने यह सोचकर कि शेला समर्थ तो हुआ पर मैं उस की स्त्री नहीं होने पाई अपना विधवापन का पहिरावा उतारा और बुर्का डालकर अपने को ढांप लिया और एनैम नगर के फाटक के पास जो तिम्ना के मार्ग में है जा बैठी।
१५ उस को देखकर यहूदा ने वेश्या समझा क्योंकि वह
१६ अपना मुंह ढांपे हुए थी। सो उस ने उसे अपनी बहू न जानकर मार्ग में उस की ओर फिर के कहा मुझे अपने पास आने दे, उस ने कहा मैं तुझ को अपने पास आने
१७ दूं तो तू मुझे क्या देगा। उस ने कहा मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा तब उस ने कहा भला उस के भेजने लों क्या तू हमारे पास कुछ
१८ बन्धक रख जाएगा। उस ने पूछा मैं कौन सा बन्धक तेरे पास रख जाऊं। उस ने कहा अपनी वह छाप और डोरी और अपने हाथ की छड़ी। तब उस ने उस को वे वस्तुएं दीं और उस के पास गया सो वह उस से
१९ गर्भवती हुई। तब वह उठकर चली गई और अपना बुर्का उतार के अपना विधवापन का पहिरावा फिर पहिने
२० रही। तब यहूदा ने बकरी का एक बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया, कि वह बन्धक को उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आये और उस को न पाकर,
२१ उस ने वहां के लोगों से पूछा कि वह देवदासी कहां है जो एनैम में मार्ग की एक ओर बैठी थी उन्हों ने कहा यहां
२२ तो कोई देवदासी न थी। सो उस ने यहूदा के पास लौटके कहा मुझे वह नहीं मिली बरन उस स्थान के लोगों ने
२३ कहा कि यहां तो कोई देवदासी न रही। तब यहूदा ने कहा अच्छा वह बन्धक उसी के पास रहने दे, नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएंगे, देख मैं ने बकरी का यह
२४ बच्चा भेज दिया पर वह तुझे नहीं मिली। तीन महीने के पीछे यहूदा को यह समाचार मिला कि तेरी बहू ने व्यभिचार किया, बरन वह व्यभिचार से गर्भवती भी हुई, तब यहूदा ने कहा उस को बाहर ले आओ कि वह जलाई
२५ जाए। जब उसे निकाल रहे थे तब उस ने अपने ससुर के पास कहला भेजा कि जिस पुरुष की ये वस्तुएं हैं उसी से मैं गर्भवती हूं, फिर उस ने यह भी कहलाया कि पहिचान तो सही कि यह छाप और डोरी और छड़ी
२६ किस की हैं। यहूदा ने उन्हें पहिचानकर कहा वह तो मुझ से कम दोषी है क्योंकि मैं ने उसे अपने पुत्र शेला

(१) मूल में मदानियों।

को न व्याह दिया। और उस ने उस से फिर कभी प्रसंग
२७ न किया। जब उस के जनने का समय आया तब क्या जान
२८ पड़ा कि उस के गर्भ में जुड़ौरे हैं। और जब वह जनने
लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया और जनाई
धाई ने लाल सूत लेकर उस के हाथ में यह कहती हुई
२९ बांध दिया है कि पहिले यही निकला। जब उस ने हाथ
समेट लिया तब उस का भाई निकल पड़ा और उस ने
कहा तू ने क्यों दरार कर लिया है इस कारण उस का
३० नाम पेरेस[१] रक्खा गया। पीछे उस का भाई भी निकला
जिस के हाथ में वह लाल सूत बन्धा था और उस का
नाम जेरह रक्खा गया॥

(यूसुफ के बन्दीगृह में पड़ने और उस से छूटने का वर्णन)

३९. जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया तब पोतीपर नाम एक मिस्री जो फिरौन का हाकिम और जल्लादों का प्रधान था उस ने उस को उस के ले आनेहारे इश्माएलियों के
२ हाथ से मोल लिया। जब यूसुफ अपने उस मिस्री स्वामी के घर में रहा तब यहोवा उस के संग रहा सो
३ वह भाग्यवान् पुरुष हो गया। और यूसुफ के स्वामी ने देखा कि यहोवा उस के संग रहता है और जो काम वह करता है उस को यहोवा उस के हाथ से सफल कर देता
४ है। तब उस को अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई और वह उस का टहलुआ ठहराया गया फिर उस ने उस को अपने घर का अधिकारी करके अपना सब कुछ उस के
५ हाथ में सौंप दिया। और जब से उस ने उस को अपने घर और अपने सब कुछ का अधिकारी किया तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशिष देने लगा और क्या घर में क्या मैदान में उस का जो
६ कुछ था सब पर यहोवा की आशिष होती थी। सो उस ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहां तक छोड़ दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड़ वह अपनी संपत्ति का हाल कुछ न जानता था और यूसुफ सुन्दर
७ और रूपवान् था। इन बातों के पीछे उस के स्वामी की स्त्री ने यूसुफ की ओर आंख लगाई और कहा मेरे साथ
८ सो। उस ने नकारके अपने स्वामी की स्त्री से कहा सुन जो कुछ इस घर में मेरे हाथ में है सो मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता और उस ने अपना सब कुछ मेरे
९ हाथ में सौंप दिया है। इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने तुझे छोड़ जो उस की स्त्री है मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा सो मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों कर बनूं। तौ भी वह दिन
१० दिन यूसुफ से बातें करती रही पर उस ने उस की न सुनी कि कहीं उस के पास लेटे वा उस के संग रहे।
११ एक दिन क्या हुआ कि वह अपना काम काज करने को घर में गया और घर के सेवकों में से कोई घर में
१२ न था। तब उस स्त्री ने उस का वस्त्र पकड़कर कहा मेरे साथ सो पर वह अपना वस्त्र उस के हाथ में छोड़कर
१३ भागा और बाहर निकल गया। यह देखकर कि वह अपना वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया,
१४ उस स्त्री ने अपने घर के सेवकों को बुलाकर कहा देखो वह एक इब्री मनुष्य को हम से ठठोली करने के लिये हमारे पास ले आया है, वह तो मेरे साथ सोने के मतलब से मेरे पास आया और मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला
१५ उठी। और मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनकर वह अपना वस्त्र मेरे
१६ पास छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया। और वह उस का वस्त्र उस के स्वामी के घर आने लों अपने
१७ पास रक्खे रही। तब उस ने उस से इस प्रकार की बातें कहीं कि वह इब्री दास जिस को तू हमारे पास ले आया है सो मुझ से ठठोली करने को मेरे पास आया
१८ था। और जब मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी तब वह
१९ अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर बाहर भाग गया। अपनी स्त्री की ये बातें सुनकर कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का।
२० और यूसुफ के स्वामी ने उस को पकड़ाकर एक गुम्मट में जहां राजा के बन्धुए बन्धे रहते थे डलवा दिया सो
२१ वह उस गुम्मट में रहने लगा। पर यहोवा यूसुफ के संग रहा और उस पर करुणा की और गुम्मट के दारोगा से उस पर अनुग्रह की दृष्टि कराई।
२२ बरन गुम्मट के दारोगा ने उन सब बन्धुओं को जो गुम्मट में थे यूसुफ के हाथ में सौंप दिया और जो जो काम वे वहां करते थे उन का करानेहारा वही होता था।
२३ गुम्मट के दारोगा के वश में जो कुछ था उस में से उस को कोई वस्तु देखनी न पड़ती थी क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ था और जो कुछ वह करता था यहोवा उस को सुफल कर देता था॥

४०. इन बातों के पीछे मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने
२ स्वामी का कुछ अपराध किया। तब फिरौन ने अपने उन दो हाकिमों पर अर्थात् पिलानेहारों के प्रधान और
३ पकानेहारों के प्रधान पर क्रोधित हो, उन्हें कैद कराके जल्लादों के प्रधान के घर में के उसी गुम्मट में जहां
४ यूसुफ बन्धुआ था डलवा दिया। तब जल्लादों के प्रधान ने

(१) अर्थात् टूट पड़ना।

उन को यूसुफ के हाथ सौंपा और वह उन की टहल करने
५ लगा, सो वे कुछ दिन लों बन्दीगृह में रहे। और मिस्र के
राजा का पिलानेहारा और पकानेहारा जो गुम्मट में
बन्धुए थे उन दोनों ने एक ही रात में अपने अपने
६ होनहार के अनुसार[१] स्वप्न देखा। बिहान को जब यूसुफ
उन के पास गया तब उन पर जो दृष्टि की तो क्या देखा
७ कि वे उदास हैं। सो उस ने फिरौन के उन हाकिमों
से जो उस के साथ उस के स्वामी के घरवाले बन्दीगृह
८ में थे पूछा कि आज तुम्हारे मुंह क्यों सूखे हैं। उन्हों ने
उस से कहा हम दोनों ने स्वप्न देखा है और उन के
फल का कोई कहनेहारा नहीं। यूसुफ ने उन से कहा
क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है
९ मुझे अपना अपना स्वप्न बताओ। तब पिलानेहारों
का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ को यों बताने लगा कि
मुझे स्वप्न में क्या देख पड़ा कि मेरे साम्हने एक
१० दाखलता है। और उस दाखलता में तीन डालियां
हैं और उस में मानो कलियां लगीं और वह फूलीं
११ और उस के गुच्छों में दाख लगकर पक गई। और
फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था सो मैं ने उन दाखों
को लेकर फिरौन के कटोरे में निचोड़ा और कटोरे को
१२ फिरौन के हाथ में दिया। यूसुफ ने उस से कहा इस
का फल यह है कि तीन डालियों का अर्थ तीन दिन हैं।
१३ सो तीन दिन के भीतर फिरौन तुझे बढ़ाकर[२] तेरे पद
पर फेर ठहराएगा और तू आगे की नाईं फिरौन का
पिलानेहारा होकर उस का कटोरा उस के हाथ में
१४ फिर दिया करेगा। सो जब तेरा भला होगा तब मुझे
अपने मन में रक्खे रहना और मुझ पर कृपा करके
फिरौन से मेरी चर्चा चलाना और इस घर से मुझे
१५ छुड़वा देना। क्योंकि सचमुच मैं इब्रियों के देश से
चुराया गया और यहां भी मैं ने कोई ऐसा काम नहीं
किया जिस के कारण मैं इस गड़हे में डाला जाऊं।
१६ यह देखकर कि उस स्वप्न का फल अच्छा निकला
पकानेहारों के प्रधान ने यूसुफ से कहा मैं ने भी
स्वप्न देखा है वह यह है कि मानो मेरे सिर पर सफेद
१७ रोटी की तीन टोकरियां हैं। और ऊपर की टोकरी में
फिरौन के लिये सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं
हैं और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन
१८ वस्तुओं को खा रहे हैं। यूसुफ ने कहा इस का
फल यह है कि तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन
१९ है। सो तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर कटवाकर[३]
तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा और पक्षी तेरे मांस को
२० खाएंगे। तीसरे दिन जो फिरौन का जन्मदिन था उस ने
अपने सब कर्म्मचारियों की जेवनार की और उन में से
पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान दोनों
२१ को बन्दीगृह से निकलवाया[४]। और पिलानेहारों के
प्रधान को तो पिलानेहारे का पद फेर दिया, सो वह
२२ कटोरे को फिरौन के हाथ में देने लगा। पर पकानेहारों
के प्रधान को उस ने टंगवा दिया जैसा कि यूसुफ ने
२३ उन के स्वप्नों का फल उन से कहा था। पर पिलानेहारों
के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रक्खा भूल ही गया॥

४१. पूरे

दो बरस के बीते पर फिरौन ने यह स्वप्न देखा कि मैं मानो नील नदी[५]
२ के तीर पर खड़ा हूं। और उस नदी में से सात सुन्दर
और मोटी मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने
३ लगीं। और क्या देखा कि उन के पीछे और सात गायें
जो कुरूप और डांगर हैं नदी से निकली आती हैं और
४ दूसरी गायों के निकट नदी के तीर पर खड़ी हुईं। तब
मानो इन कुरूप और डांगर गाय ने उन सात
सुन्दर और मोटी मोटी गायों को खा डाला। तब
५ फिरौन जाग उठा। फिर वह सो गया और दूसरा
स्वप्न देखा कि एक डंठी में से सात मोटी और
६ अच्छी अच्छी बालें निकली आती हैं। और क्या देखा
कि उन के पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से
७ मुरझाई हुई निकली आती हैं। और मानो इन पतली
बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों
को निगल लिया। तब फिरौन जागा और यह स्वप्न ही
८ था। भोर को फिरौन का मन व्याकुल हुआ और उस ने
मिस्र के सब ज्योतिषियों और पण्डितों को बुलवा भेजा
और उन को अपने स्वप्न को बताए पर उन में से कोई
९ उन का फल फिरौन से न कह सका। तब पिलानेहारों
का प्रधान फिरौन से बोल उठा कि मुझे आज के दिन
१० अपने अपराध चेत आते हैं। जब फिरौन अपने दासों
से क्रोधित हुआ था और मुझे और पकानेहारों के
प्रधान को कैद करा के जल्लादों के प्रधान के घरवाले
११ बंदीगृह में डाल दिया था, तब हम दोनों ने एक
ही रात में अपने अपने होनहार के अनुसार[६] स्वप्न
१२ देखा। और वहां हमारे साथ एक इब्री जवान
था जो जल्लादों के प्रधान का दास था, सो हम ने उस

(१) मूल में अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार। (२) मूल में सिर उठाके। (३) मूल में तेरा सिर तुझ पर से उठाके। (४) मूल में दोनों के सिर उठाये। (५) मूल में योर। (६) मूल में अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार।

को बताया और उस ने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा हम में से एक एक के स्वप्न का फल उस ने बता दिया। १३ और जैसा जैसा फल उस ने हम से कहा वैसा वैसा निकला भी अर्थात् मुझ को तो मेरा पद फिर मिला पर वह टांगा गया। १४ तब फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा और वह झटपट गड़हे से निकाला गया और बाल मुंडवा वस्त्र बदल के फिरौन के पास आया। १५ फिरौन ने यूसुफ से कहा मैं ने एक स्वप्न देखा और उस के फल का कहनेहारा कोई नहीं और मैं ने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न सुनते ही उस का फल कह सकता है। १६ यूसुफ ने फिरौन से कहा मैं तो कुछ नहीं कर सकता[1] परमेश्वर ही फिरौन के लिये मंगल का बखान कराए। १७ सो फिरौन यूसुफ से कहने लगा मैं ने अपने स्वप्न में क्या देखा कि मानो मैं नील नदी के तीर पर खड़ा हूं। १८ फिर क्या देखा कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं। १९ फिर क्या देखा कि उन के पीछे सात और गायें निकली आती हैं जो दुबली और बहुत कुरूप और डांगर हैं मैं ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं। २० और मानो इन डांगर और कुडौल गायों ने उन पहली सातों मोटी मोटी गायों को खा डाला। २१ और जब वे उन को खा गई थीं तब यह समझ न पड़ा कि वे उन को खा गई हैं क्योंकि उन का रूप पहिले के बराबर बुरा ही रहा तब मैं जाग उठा। २२ फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा कि मानो एक ही डंठी में सात अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकली आती हैं। २३ फिर क्या देखता हूं कि उन के पीछे और सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुर्झाई हुई निकलती हैं। २४ और मानो इन पतली बालों ने उन सात अच्छी अच्छी बालों को निगल लिया। इसे मैं ने ज्योतिषियों को बताया पर इस का समझानेहारा कोई नहीं मिला। २५ तब यूसुफ ने फिरौन से कहा फिरौन का स्वप्न एक ही है परमेश्वर जो काम किया चाहता है उस को उस ने फिरौन को जताया है। २६ वे सात अच्छी अच्छी गायें सात बरस हैं और वे सात अच्छी अच्छी बालें सात बरस हैं स्वप्न एक ही है। २७ फिर उन के पीछे जो डांगर और कुडौल गायें निकलीं और जो सात छूछी और पुरवाई से मुर्झाई हुई बालें हुईं वे अकाल के साथ बरस होंगे। २८ यह वही बात है जो मैं फिरौन से कह चुका हूं कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है सो उस ने फिरौन को दिखाया है। २९ सुन सारे मिस्र देश में बड़े सुकाल के सात बरस आनेहारे हैं। ३० और उन के पीछे अकाल के सात बरस आएंगे और मिस्र देश में वह सारा सुकाल बिसर जाएगा और अकाल से देश नाश होगा। ३१ और उस अकाल के कारण जो पीछे आएगा यह सुकाल देश में स्मरण न रहेगा क्योंकि अकाल अत्यन्त भारी होगा। ३२ और फिरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा इस का भेद यह है कि यह बात परमेश्वर की ओर से स्थिर की हुई है और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा। ३३ सो अब फिरौन किसी समझदार और बुद्धिमान् पुरुष की खोज करके उसे मिस्र देश पर प्रधान ठहराए। ३४ फिरौन यह करके देश पर अधिकारियों को ठहराए और जब लों सुकाल के सात बरस रहें तब लों मिस्र देश की उपज का पंचमांश लिया करे। ३५ वे इन अच्छे बरसों में सब प्रकार की भोजनवस्तु बटोर बटोरकर नगर नगर में अन्न की राशियां भोजन के लिए फिरौन के वश में करके उन की रक्षा करें। ३६ और वह भोजनवस्तु अकाल के उन सात बरसों के लिए जो मिस्र देश में आएंगे देश के भोजन के निमित्त रक्खी रहे जिस से देश उस अकाल से सत्यानाश न हो। ३७ यह बात फिरौन और उस के सारे कर्मचारियों को अच्छी लगी। ३८ सो फिरौन ने अपने कर्म्मचारियों से कहा इस पुरुष के समान क्या और कोई ऐसा मिलेगा कि परमेश्वर का आत्मा उस में रहता हो। ३९ फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है और तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नहीं, ४० इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी हो और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझ से बड़ा ठहरूंगा। ४१ फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा सुन मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहरा देता हूं। ४२ तब फिरौन ने अपने हाथ से अंगूठी निकालके यूसुफ के हाथ में पहिना दी और उस को सूक्ष्म सनी के वस्त्र पहिनवा दिये और उस के गले में सोने की गोप डाल दी, ४३ और उस को अपने दूसरे रथ पर चढ़वाया और लोग उस के आगे आगे यह पुकारते चले कि घुटने टेक घुटने टेक[2] सो उस ने उस को मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहराया। ४४ फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा फिरौन तो मैं हूं और सारे मिस्र देश में कोई तेरी आज्ञा बिना हाथ पांव न हिलाएगा। ४५ और फिरौन ने यूसुफ का नाम सापनत्पानेह[3] रक्खा और ओन नगर के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से उस का ब्याह करा दिया। और यूसुफ निकल कर मिस्र देश में घूमने फिरने लगा।

(१) मूल में मेरे बिना।

(२) मूल में अब्रेक। इस मिस्री शब्द का अर्थ निश्चित नहीं।
(३) इस मिस्री शब्द के अर्थ में संदेह है।

४६ जब यूसुफ मिस्र के राजा फ़िरौन के सन्मुख खड़ा हुआ तब वह तीस बरस का था, सो वह फ़िरौन के सन्मुख से निकल कर मिस्र के सारे देश में दौरा करने लगा। ४७ सुकाल के सातों बरसों में भूमि बहुतायत से अन्न[1] ४८ उपजाती रही। और यूसुफ उन सातों बरसों में सब प्रकार की भोजनवस्तुएं जो मिस्र देश में होती थीं बटोर बटोरके नगरों में रखता गया एक एक नगर के चारों ओर के खेतों की भोजनवस्तुओं को वह उसी नगर में ४९ संचय करता गया। सो यूसुफ ने अन्न को समुद्र की बालू के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि राशि करके रक्खा यहां लों कि उस ने उन का गिनना छोड़ दिया ५० क्योंकि वे असंख्य हो गईं। अकाल के प्रथम बरस के आने से पहले यूसुफ के दो पुत्र ओन के याजक ५१ पोतीपेरा की बेटी आसनत से जन्मे। और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहके मनश्शे[2] रक्खा कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश और मेरे पिता का ५२ सारा घराना बिसरवा दिया है। और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर एप्रैम[3] रक्खा कि मुझे दुःख भोगने ५३ के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है। और ५४ मिस्र देश के सुकाल के वे सात बरस निपट गये। और अकाल के सात बरस यूसुफ के कहेके अनुसार आने लगे और सब देशों में अकाल पड़ा पर सारे मिस्र देश ५५ में अन्न था। जब मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा तब प्रजा फ़िरौन से चिल्ला चिल्लाकर रोटी मांगने लगी और वह सब मिस्रियों से कहा करता था यूसुफ के पास ५६ जाओ और जो कुछ वह तुम से कहे वही करो। सो जब अकाल सारी पृथिवी पर फैल गया और मिस्र देश में भारी हो गया तब यूसुफ सब भण्डारों को खोल खोल के ५७ मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा। सो सारी पृथिवी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने को यूसुफ के पास आने लगे क्योंकि सारी पृथिवी पर भारी अकाल था॥

(यूसुफ के भाइयों के उस से मिलने का वर्णन)

४२. जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने पुत्रों से कहा तुम २ एक दूसरे का मुंह क्यों ताकते हो। फिर उस ने कहा मैं ने तो सुना है कि मिस्र में अन्न है, सो तुम लोग वहां जाकर हमारे लिये अन्न मोल ले आओ, कि हम मरें ३ नहीं, जीते रहें। सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने ४ के लिये मिस्र को गये। पर यूसुफ के भाई बिन्यामीन को याकूब ने यह सोचकर भाइयों के साथ भेजना नकारा कि कहीं ऐसा न हो कि उस पर कोई विपत्ति पड़े। सो ५ और और आनेहारों की भान्ति इस्राएल के पुत्र भी अन्न मोल लेने आये क्योंकि कनान देश में भी अकाल था। ६ यूसुफ तो मिस्र देश का अधिकारी था और उस देश के सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था सो जब यूसुफ के भाई आये तब भूमि पर मुंह के बल गिरके उस को दण्डवत् किया। ७ उन को देखकर यूसुफ ने पहिचान तो लिया पर उन के साम्हने अनजान बनके कठोरता के साथ उन से पूछा तुम कहां से आते हो, उन्हों ने कहा हम तो कनान देश से अन्न मोल लेने को आये हैं। ८ यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहिचान लिया पर उन्हों ने उस को न पहिचाना। ९ सो यूसुफ अपने वे स्वप्न स्मरण करके जो उस ने उन के विषय देखे थे उन से कहने लगा तुम भेदिये हो इस देश की दुर्दशा[4] को देखने के लिये आये हो। १० उन्हों ने उस से कहा नहीं नहीं हे प्रभु तेरे दास भोजनवस्तु मोल लेने को आये हैं। ११ हम सब एक ही पुरुष के पुत्र हैं, हम सीधे मनुष्य हैं तेरे दास भेदिये नहीं। १२ उस ने उन से कहा नहीं नहीं तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आये हो। १३ उन्हों ने कहा हम तेरे दास बारह भाई हैं और कनान देशवासी एक ही पुरुष के पुत्र हैं और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है और एक रहा नहीं। १४ यूसुफ ने उन से कहा मैं ने जो तुम से कहा कि तुम भेदिये हो, १५ सो इस रीति से तुम परखे जाओगे फ़िरौन के जीवन की सों जब लों तुम्हारा छोटा भाई यहां न आए तब लों तुम यहां से न निकलने पाओगे। १६ सो अपने में से एक को भेज दो कि वह तुम्हारे भाई को ले आए और तुम लोग बन्धुआई में रहोगे इस से तुम्हारी बातें परखी जाएंगी, कि तुम में सच्चाई है कि नहीं, न होने से फ़िरौन के जीवन की सों निश्चय तुम भेदिये ही ठहरोगे। १७ तब उस ने उन को तीन दिन लों बन्दीगृह में रक्खा। १८ तीसरे दिन यूसुफ ने उन से कहा एक काम करो तब जीते रहोगे क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूं। १९ यदि तुम सीधे मनुष्य हो तो तुम सब भाइयों में से एक जन इस बन्दीगृह में बन्धुआ रहे और तुम अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये अन्न ले जाओ। २० और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, यों तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी और तुम मार डाले न जाओगे। सो उन्हों ने वैसा ही किया। २१ तब उन्हों ने आपस में कहा निःसन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं कि जब उस ने हम से गिड़गिड़ाके बिनती की तब हम ने यह देखने पर भी

(१) मूल में मुट्ठी भर भरके। (२) अर्थात् बिसरवानेहारा। (३) अर्थात् अत्यन्त उपजाऊ।

(४) मूल में नंगेपन।

कि उस का जीव कैसे संकट में पड़ा है उस की न सुनी
२२ इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं। रूबेन ने उस से कहा क्या मैं ने तुम से न कहा था कि लड़के के अपराधी मत हो और तुम ने न सुना सो देखो अब
२३ उस के लोहू का पलटा दिया जाता है। यूसुफ की और उन की बातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती थी इस से उन को मालूम न था कि वह हमारी
२४ समझता है। और वह उन के पास से हटकर रोने लगा फिर उन के पास लौटकर और उन से बातचीत करके उन में से शिमोन को निकाला और उन के साम्हने
२५ बन्धुआ रक्खा। तब यूसुफ ने आज्ञा दी कि उन के बोरे अन्न से भरो और एक एक जन के बोरे में उस के रूपये को भी रख दो और उन को मार्ग के लिये सीधा
२६ दो सो उन के साथ ऐसा ही किया गया। तब वे अपना अन्न अपने गदहों पर लाद कर वहां से चल
२७ दिये। सराय में जब एक ने अपने गदहे को चारा देने के लिये अपना बोरा खोला तब उस का रूपया बोरे के
२८ मोहड़े पर रक्खा हुआ देख पड़ा। तब उस ने अपने भाइयों से कहा मेरा रूपया तो फेर दिया गया है देखो वह मेरे बोरे में है तब उन के जी में जी न रहा और वे एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे और बोले
२९ कि परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है। सो वे कनान देश में अपने पिता याकूब के पास आये और अपना
३० सारा वृत्तान्त उस से यों वर्णन किया कि जो पुरुष उस देश का स्वामी है उस ने हम से कठोरता के साथ
३१ बातें कीं और हम को देश के भेदिये ठहराया। तब
३२ हम ने उस से कहा हम सीधे लोग हैं, भेदिये नहीं। हम बारह भाई एक ही पुरुष के[1] पुत्र हैं, एक तो रहा नहीं और छोटा इस समय कनान देश में हमारे पिता के
३३ पास है। तब उस पुरुष ने जो उस देश का स्वामी है हम से कहा इसी से मैं जान लूंगा कि तुम सीधे मनुष्य हो अपने में से एक को मेरे पास छोड़के अपने
३४ घरवालों की भूख बुझाने के लिये कुछ ले जाओ। और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं सीधे लोग हो और तब मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें फेर दूंगा और तुम इस देश में लेन देन
३५ करने पाओगे। फिर जब वे अपने अपने बोरे से अन्न निकालने लगे तब क्या देखा कि एक एक जन के रूपये की थैली उसी के बोरे में रक्खी है सो रूपये की
३६ थैलियों को देखकर वे और उन का पिता डर गये। फिर उन के पिता याकूब ने उन से कहा मुझ को तुम ने निर्वंश किया देखो यूसुफ नहीं रहा और शिमोन भी नहीं आया और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाने चाहते हो ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं।
३७ रूबेन ने अपने पिता से कहा यदि मैं उस को तेरे पास न लाऊं तो मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना तू उस को मेरे हाथ में सौंप तो दे, मैं उसे तेरे पास फिर पहुंचा दूंगा।
३८ उस ने कहा मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जाएगा क्योंकि उस का भाई मर गया और वह अकेला रह गया सो जिस मार्ग से तुम जाओगे उस में यदि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा[2]।

४३. और

अकाल देश में और भारी हो गया।
२ सो जब वह अन्न जो वे मिस्र से ले आये चुक गया तब उन के पिता ने उन से कहा फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ।
३ तब यहूदा ने उस से कहा उस पुरुष ने हम से चिता चिताकर कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आए तो तुम मेरे सम्मुख न आने पाओगे।
४ सो यदि तू हमारे भाई को हमारे संग भेजे तब तो हम जाकर तेरे लिये भोजनवस्तु मोल ले आएंगे।
५ पर यदि तू उस को न भेजे तो हम न जाएंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न हो तो तुम मेरे सनमुख न आने पाओगे।
६ तब इस्राएल ने कहा तुम ने उस पुरुष को यह बताकर कि हमारा एक और भाई है क्यों मुझ से बुरा बर्ताव किया।
७ उन्हों ने कहा जब उस पुरुष ने हमारी और हमारे कुटुम्बियों की दशा को इस रीति पूछा कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारे कोई और भाई भी है तब हम ने इन प्रश्नों के अनुसार उस से वर्णन किया, फिर क्या हम कुछ भी जानते थे कि वह कहेगा अपने भाई को यहां ले आओ।
८ फिर यहूदा ने अपने पिता इस्राएल से कहा उस लड़के को मेरे संग भेज दे कि हम चले जाएं इस से हम और तू और हमारे बाल बच्चे मरने न पाएंगे जीते रहेंगे।
९ मैं उस का जामिन होता हूं मेरे ही हाथ से तू उस को फेर लेना यदि मैं उस को तेरे पास पहुंचाकर साम्हने न खड़ा कर दूं तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा।
१० यदि हम लोग विलम्ब न करते तो अब लों दूसरी बार लौटकर आ चुकते।
११ तब उन के पिता इस्राएल ने उन से कहा यदि सचमुच ऐसी ही बात है तो यह करो इस देश की उत्तम उत्तम वस्तुओं में से कुछ कुछ अपने बोरों में उस पुरुष के लिये भेंट ले

(१) मूल में अपने पिता के।

(२) मूल में तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक में शोक के साथ उतारोगे।

जाओ जैसे थोड़ा सा बलसान और थोड़ा सा मधु और कुछ सुगन्ध द्रव्य और गन्धरस पिस्ते और बादाम। १२ फिर अपने अपने साथ दूना रूपया ले जाओ जो रूपया तुम्हारे बोरों के मोहड़े पर फेर दिया गया उस को भी १३ लेते जाओ क्या जानिये यह भूल से हुआ हो। और अपने भाई को भी संग लेकर उस पुरुष के पास फिर १४ जाओ, और सर्वशक्तिमान् ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयालु करे कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन को भी आने दे और मैं निर्वंश हुआ तो हुआ॥

१५ तब उन मनुष्यों ने वह भेंट और दूना रूपया और बिन्यामीन को भी संग लेकर चल दिये और मिस्र में १६ पहुंचकर यूसुफ के साम्हने खड़े हुए। उन के साथ बिन्यामीन को देखकर यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा उन मनुष्यों को घर में पहुंचा और पशु मारके भोजन तैयार कर क्योंकि वे लोग दोपहर को मेरे संग १७ भोजन करेंगे। सो वह जन यूसुफ के कहने के अनुसार १८ करके उन पुरुषों को यूसुफ के घर में ले चला। वे जो यूसुफ के घर को पहुंचाये गये इस से डरकर कहने लगे जो रूपया पहिली बार हमारे बोरों में फेर दिया गया उसी के कारण हम भीतर पहुंचाये जाते हैं कि वह पुरुष हम पर टूट पड़े और दबाकर अपने दास बनाए और १९ हमारे गदहों को छीन ले। सो वे यूसुफ के घर के अधिकारी के निकट घर के द्वार पर जाकर यों कहने लगे कि, २० हे हमारे प्रभु हम पहिली बार अन्न मोल लेने को आये २१ थे, और जब हम ने सराय में पहुंचकर अपने बोरों को खोला तो क्या देखा कि एक एक जन का पूरा रूपया उस के बोरे के मोहड़े पर रक्खा है सो हम उस को २२ अपने साथ फिर लेते आये हैं। और दूसरा रूपया भी भोजनवस्तु मोल लेने को ले आये हैं हम नहीं जानते कि हमारा रूपया हमारे बोरों में किस ने रख दिया था। २३ उस ने कहा तुम्हारा कुशल हो मत डरो तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में धन दिया होगा तुम्हारा रूपया मुझ को तो मिल गया था और उस ने शिमोन को निकालकर उन २४ के संग कर दिया। तब उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ के घर में ले जाकर जल दिया और उन्हों ने अपने पांवों को धोया और उस ने उन के गदहों के लिये चारा २५ दिया। तब यह सुनके कि आज हम को यहीं भोजन करना होगा उन्हों ने यूसुफ के आने के समय लों अर्थात् २६ दोपहर लों उस भेंट को संजोय रक्खा। जब यूसुफ घर आया तब वे उस भेंट को जो उन के हाथ में थी उस के सम्मुख घर में ले गये और भूमि पर गिरके उस को दण्डवत् किया। उस ने उन का कुशल पूछा और कहा २७ क्या तुम्हारा वह बूढ़ा पिता जिस की तुम ने चर्चा की थी कुशल से है क्या वह अब लों जीता है। उन्हों ने २८ कहा हां तेरा दास हमारा पिता कुशल से है और अब लों जीता है तब उन्हों ने सिर झुकाकर फिर दण्डवत् की। तब उस ने आंखें उठा कर और अपने सगे भाई २९ बिन्यामीन को देखकर पूछा क्या तुम्हारा वह छोटा भाई जिस की चर्चा तुम ने मुझ से की थी यही है, फिर उस ने कहा, हे मेरे पुत्र परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करे। तब ३० अपने भाई के स्नेह से मन भर आने के कारण और यह सोचकर कि मैं कहां रोऊं यूसुफ फुर्ती से अपनी कोठरी में गया और वहां रो दिया। फिर अपना मुंह ३१ धोकर निकल आया और अपने को रोककर कहा भोजन परोसो। सो उन्हों ने उस के लिये तो अलग और भाइयों ३२ के लिये अलग और जो मिस्री उस के संग खाते थे उन के लिये अलग परोसा इसलिये कि मिस्री इब्रियों के साथ भोजन नहीं कर सकते बरन मिस्री ऐसा करने से घिन भी करते हैं। सो यूसुफ के भाई उस के साम्हने बड़े बड़े ३३ पहिले और छोटे छोटे पीछे अपनी अपनी अवस्था के अनुसार क्रम से बैठाये गये, यह देख वे बिस्मित होकर एक दूसरे की ओर ताकने लगे। तब यूसुफ अपने साम्हने ३४ से भोजन-वस्तुएं उठा उठाके उन के पास भेजने लगा और बिन्यामीन को अपने भाइयों से अधिक पचगुणी भोजनवस्तु मिली। और उन्हों ने उस के संग मन-माना पिया॥

४४. **तब** उस ने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी कि इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे और एक एक जन के रूपये को उस के बोरे के मोहड़े पर रख दे। २ और मेरा चान्दी का कटोरा छोटे के बोरे के मोहड़े पर उस के अन्न के रूपये के साथ रख दे। यूसुफ की इस आज्ञा ३ के अनुसार उस ने किया। बिहान को भोर होते ही वे ४ मनुष्य अपने गदहों समेत बिदा किये गये। वे नगर से निकले ही थे और दूर न जाने पाये थे कि यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा उन मनुष्यों का पीछा कर और उन को पाकर उन से कह, कि तुम ने भलाई ५ की सन्ती बुराई क्यों की है। क्या यह वह वस्तु नहीं जिस में मेरा स्वामी पीता है और जिस से वह शकुन भी बिचारा करता है तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया। ६ तब उस ने उन्हें जा लिया और ऐसी ही बातें उन से ७ कहीं। उन्हों ने उस से कहा, हे हमारे प्रभु, तू ऐसी बातें क्यों कहता है ऐसा काम करना तेरे दासों से दूर रहे।

८ देख जो रूपैया हमारे बोरों के मोहड़े पर निकला था जब हमने उस को कनान देश से ले आकर तुझे फेर दिया, तब भला तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चांदी ९ वा सोने की वस्तु क्योंकर चुरा सकते हैं। तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले वह मार डाला जाए १० और हम भी अपने उस प्रभु के दास हो जाएं। उस ने कहा तुम्हारा ही कहना सही जिस के पास वह निकले सो मेरा दास होगा और तुम लोग निरपराध ठहरोगे। ११ इस पर वे फुर्ती से अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर १२ रखकर उन्हें खोलने लगे। तब वह ढूढ़ने लगा और बड़े के बोरे से लेकर छोटे के बोरे लों खोज की और कटोरा १३ बिन्यामीन के बोरे में मिला। तब उन्हों ने अपने अपने वस्त्र फाड़े और अपना अपना गदहा लादकर नगर को १४ लौट गये। तब यहूदा और उस के भाई यूसुफ के घर पर पहुंचे और यूसुफ वहीं था सो वे उस के साम्हने भूमि १५ पर गिरे। यूसुफ ने उन से कहा तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है क्या तुम न जानते थे कि मुझ सा मनुष्य १६ शकुन बिचार सकता है। यहूदा ने कहा हम लोग अपने प्रभु से क्या कहें हम क्या कहकर अपने को निर्दोष ठहराएं, परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है हम और जिस के पास कटोरा निकाला वह भी हम सब के १७ सब अपने प्रभु के दास ही हैं। उस ने कहा ऐसा करना मुझ से दूर रहे जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ॥

१८ तब यहूदा उस के पास जाकर कहने लगा, हे मेरे प्रभु तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के तू तो १९ फिरौन के तुल्य है। मेरे प्रभु ने अपने दासों से पूछा था २० कि क्या तुम्हारे पिता वा भाई है। और हम ने अपने प्रभु से कहा हां हमारे बूढ़ा पिता तो है और उस के बुढ़ापे का एक छोटा सा बालक भी है और उस का भाई मर गया, सो वह अपनी माता का अकेला रह गया और २१ उस का पिता उस से स्नेह रखता है। तब तू ने अपने दासों से कहा था कि उस को मेरे पास ले आओ कि मैं २२ उस को देखूं। तब हम ने अपने प्रभु से कहा था कि वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता नहीं तो उस का २३ पिता मर जाएगा। और तू ने अपने दासों से कहा यदि तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे संग न आए तो तुम मेरे सम्मुख २४ फिर आने न पाओगे। सो जब हम अपने पिता तेरे दास के पास गये तब हम ने उस से अपने प्रभु की बातें कहीं। २५ तब हमारे पिता ने कहा फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ। २६ हम ने कहा हम नहीं जा सकते हां यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग रहे, तब हम जाएंगे क्योंकि यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग न रहे तो हम उस पुरुष के सन्मुख न जाने पाएंगे। २७ तब तेरे दास मेरे पिता ने हम से कहा तुम तो जानते हो कि २८ मेरी स्त्री दो पुत्र जनी। और उन में से एक तो मुझे छोड़ ही गया और मैं ने निश्चय कर लिया कि वह फाड़ डाला गया होगा और तब से मैं ने उस का मुंह न देख २९ पाया। सो यदि तुम इस को भी मेरी आंख की ओट ले जाओ और कोई विपत्ति इस पर पड़े तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में दुःख के साथ अधोलोक ३० में उतर जाऊंगा[1]। सो जब मैं अपने पिता तेरे दास के पास पहुंचूं और यह लड़का संग न रहे तब उस का ३१ प्राण जो इसी पर अटका रहता है, इस कारण वह देखके कि लड़का नहीं है वह तुरन्त ही मर जाएगा सो तेरे दासों के कारण तेरा दास हमारा पिता जो पक्के बालों की अवस्था का है सो शोक के साथ अधोलोक में ३२ उतर जाएगा[2]। फिर तेरा दास अपने पिता के यहां यह कहके इस लड़के का जामिन हुआ है कि यदि मैं इस को तेरे पास न पहुंचा दूं तो सदा के लिये तेरा अपराधी ३३ ठहरूंगा। सो अब तेरा दास इस लड़के की सन्ती अपने प्रभु का दास होकर रहने पाए और यह लड़का ३४ अपने भाइयों के संग जाने पाए। क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने पिता के पास जा सकूंगा ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा सो मुझे देखना पड़े॥

४५. तब यूसुफ उन सब के साम्हने जो उस के आस पास खड़े थे, अपने को और रोक न सका और पुकार के कहा मेरे आस पास से सब लोगों को बाहर कर दो। भाइयों के साम्हने अपने को प्रगट करने के समय यूसुफ के संग और कोई न रहा। २ तब वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा और मिस्रियों ने सुना और फिरौन के घर के लोगों को भी इस का समाचार मिला। ३ तब यूसुफ अपने भाइयों से कहने लगा, मैं यूसुफ हूं क्या मेरा पिता अब लों जीता है इस का उत्तर उस के भाई न दे सके क्योंकि वे उस के साम्हने घबरा गये थे। ४ फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मेरे निकट आओ यह सुनकर वे निकट गये फिर उस ने कहा मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं जिस को तुम ने मिस्र आनेहारों के हाथ बेच डाला

(१) मूल में तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक में दुःख के साथ उतारोगे।
(२) मूल में तेरे दास हमारे पिता के पक्के बाल शोक के साथ अधोलोक में उतारेंगे।

५ था। अब तुम लोग मत पछताओ और तुम ने जो मुझे यहां बेच डाला इस से उदास मत हो, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राण बचाने के लिये मुझे आगे से भेज दिया। ६ क्योंकि अब दो बरस से इस देश में अकाल है और अब पांच बरस और ऐसे ही होंगे कि उन में न तो हल ७ चलेगा और न अन्न काटा जायगा। सो परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये भेजा कि तुम पृथिवी पर बचे रहो और तुम्हारे प्राण बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। ८ इस रीति अब मुझ को यहां पर भेजनेहारे तुम नहीं परमेश्वर ही ठहरा और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा और उस के सारे घर का स्वामी और सारे मिस्र देश का ९ प्रभु ठहरा दिया है। सो शीघ्र मेरे पिता के पास जाकर कहो, तेरा पुत्र यूसुफ यों कहता है, कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है, सो तू मेरे पास बिना १० बिलम्ब किये चला आ। और तेरा निवास गोशेन देश में होगा और तू बेटे पोतों भेड़ बकरियों गाय बैलों और ११ अपने सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा। और अकाल के जो पांच बरस और होंगे उन में मैं वहीं तेरा पालन पोषण करूंगा ऐसा न हो कि तू और तेरा घराना बरन १२ जितने तेरे हैं सो भूखों मरें[1]। और तुम अपनी आंखों से देखते हो और मेरा भाई बिन्यामीन भी अपनी आंखों से देखता है कि जो हम से बातें कर रहा है सो यूसुफ १३ है। और तुम मेरे सब विभव का जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है उस सब का मेरे पिता से वर्णन १४ करना और वेग मेरे पिता को यहां ले आना। और वह अपने भाई बिन्यामीन के गले में लिपट कर रोया और १५ बिन्यामीन भी उस के गले में लिपटकर रोया। तब वह अपने सब भाइयों को चूमकर उन से मिलकर रोया और इस के पीछे उस के भाई उस से बातें करने लगे॥

१६ इस बात की चर्चा कि यूसुफ के भाई आये हैं फिरौन के भवन तक पहुंच गई और इस से फिरौन और उस के १७ कर्म्मचारी प्रसन्न हुए। सो फिरौन ने यूसुफ से कहा अपने भाइयों से कह कि एक काम करो, अपने पशुओं १८ को लादकर कनान देश में चले जाओ। और अपने पिता और अपने अपने घर के लोगों को लेकर मेरे पास आओ और मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम्हें दूंगा और तुम्हें देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने १९ को मिलेंगे। और तुझे आज्ञा मिली है, तुम एक काम करो मिस्र देश से अपने बालबच्चों और स्त्रियों के लिये २० गाड़ियां ले जाओ और अपने पिता को ले आओ। और अपनी सामग्री का मोह न करना, क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है सो तुम्हारा है। और २१ इस्राएल के पुत्रों ने वैसा ही किया। और यूसुफ ने फिरौन की मानके उन्हें गाड़ियां दीं और मार्ग के लिये सीधा भी दिया। उन में से एक एक जन को तो उस ने २२ एक एक जोड़ा वस्त्र दिया और बिन्यामीन को तीन सौ रूपे के टुकड़े और पांच जोड़े वस्त्र दिये। और अपने २३ पिता के पास उस ने जो भेजा वह यह है अर्थात् मिस्र की अच्छी वस्तुओं से लदे हुए दस गदहे और अन्न और रोटी और उस के पिता के मार्ग के लिये भोजनवस्तु से लदी हुई दस गदहियां। और उस ने अपने भाइयों को २४ बिदा किया और वे चल दिये और उस ने उन से कहा मार्ग में कहीं झगड़ा न करना। मिस्र से चल कर वे २५ कनान देश में अपने पिता याकूब के पास पहुंचे, और उस २६ से यह वर्णन किया कि यूसुफ अब लों जीता है और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है पर उस ने उन की प्रतीति न की और वह अपने आपे में न रहा। तब २७ उन्हों ने अपने पिता याकूब से यूसुफ की सारी बातें जो उस ने उन से कही थीं कह दीं और जब उस ने उन गाड़ियों को देखा जो यूसुफ ने उस के ले आने के लिये भेजीं तब उस का चित्त स्थिर हो गया। और इस्राएल २८ ने कहा बस मेरा पुत्र यूसुफ अब लों जीता है मैं अपनी मृत्यु से पहिले जाकर उसको देखूंगा[2]॥

(याकूब के सारे परिवार समेत मिस्र में बस जाने का वर्णन)

४६. तब इस्राएल अपना सब कुछ कूच करके बेर्शेबा को गया और वहां अपने पिता इसहाक के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाये। तब २ परमेश्वर ने इस्राएल से रात के दर्शन में कहा हे याकूब हे याकूब उस ने कहा क्या आज्ञा। उस ने कहा मैं ईश्वर ३ तेरे पिता का परमेश्वर हूं तू मिस्र में जाने से मत डर क्योंकि मैं तुझ से वहां एक बड़ी जाति उपजाऊंगा। मैं ४ तेरे संग संग मिस्र को चलता हूं और मैं तुझे वहां से फिर निश्चय ले आऊंगा और यूसुफ अपना हाथ तेरी आंखों पर लगाएगा। तब याकूब बेर्शेबा से चला और ५ इस्राएल के पुत्र अपने पिता याकूब और अपने बालबच्चों और स्त्रियों को उन गाड़ियों पर जो फिरौन ने उन के ले आने को भेजी थीं चढ़ाकर ले चले। और वे अपनी ६ भेड़ बकरी गाय बैल और कनान देश में अपने बटोरे हुए सारे धन को लेकर मिस्र में आये। और याकूब ७ अपने बेटे बेटियों पोते पोतियों निदान अपने वंश भर को अपने संग मिस्र में ले आया॥

याकूब के साथ जो इस्राएली अर्थात् उस के बेटे पोते ८

(१) मूल में निर्धन हो जाएं।

(२) मूल में मुझे देख।

आदि मिस्र में आये उन के नाम ये हैं याकूब का जेठा ९ तो रूबेन था। और रूबेन के पुत्र हनोक पललू हेस्रोन १० और कर्म्मी थे। और शिमोन के पुत्र यमूएल यामीन ओहद याकीन सोहर और एक कनानी स्त्री का जना हुआ ११ शाऊल भी था। और लेवी के पुत्र गेर्शोन कहात और १२ मरारी थे। और यहूदा के एर ओनान शेला पेरेश और जेरह नाम पुत्र हुए तो थे। पर एर और ओनान कनान देश में मर गये थे और पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल १३ थे। और इस्साकार के पुत्र तोला पुव्वा योब और १४ शिम्रोन थे। और जबूलून के पुत्र सेरेद एलोन और यह- १५ लेल थे। लेआ के पुत्र जिन्हें वह याकूब से पद्दनराम में जनी उन के बेटे पोते ये ही थे और इन से अधिक वह उस की जन्माई एक बेटी दीना को भी जनी यहां लों १६ तो याकूब के सब वंशवाले[१] तेंतीस प्राणी हुए। फिर गाद के पुत्र सिप्योन हाग्गी शूनी एसबोन एरी अरोदी १७ और अरेली थे। और आशेर के पुत्र यिम्ना यिश्वा यिस्वी और बरीआ थे और उन की बहिन सेरह थी और बरीआ १८ के पुत्र हेबेर और मल्कीएल थे। जिल्पा जिसे लाबान ने अपनी बेटी लेआ को दिया उस के बेटे पोते आदि ये ही थे सो उस के द्वारा याकूब के सोलह प्राणी जन्मे ॥

१९ फिर याकूब की स्त्री राहेल के पुत्र यूसुफ और बिन्यामीन २० थे। और मिस्र देश में ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत के जने यूसुफ के ये पुत्र जन्मे अर्थात् २१ मनश्शे और एप्रैम। और बिन्यामीन के पुत्र बेला बेकेर अश्बेल गेरा नामान एही रोश मुप्पीम हुप्पीम और २२ आर्द थे। राहेल के पुत्र जिन्हें वह याकूब से जनी उन के ये ही पुत्र थे उस के ये सब बेटे पोते चौदह प्राणी हुए। २३, २४ फिर दान का पुत्र हूशीम था। और नप्ताली के २५ पुत्र यहसेल गूनी सेसेर और शिल्लेम थे। बिल्हा जिसे लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया उस के बेटे पोते ये ही हैं उस के द्वारा याकूब के वंश में सात प्राणी हुए। २६ याकूब के निज वंश के जो प्राणी मिस्र में आये वे उस की बहुओं को छोड़ सब मिल कर छियासठ प्राणी २७ हुए। और यूसुफ के पुत्र जो मिस्र में उस के जन्मे सो दो प्राणी थे सो याकूब के घराने के जो प्राणी मिस्र में आये सो सब मिलकर सत्तर हुए ॥

२८ फिर उस ने यहूदा को अपने आगे यूसुफ के पास भेज दिया कि वह उस को गोशेन का मार्ग दिखाए २९ सो वे गोशेन देश में आये। तब यूसुफ अपना रथ जुतवाकर अपने पिता इस्राएल से भेंट करने के लिये गोशेन देश को गया और उस से भेंट करके उस के गले में लिपटा और कुछ देर लों उस के गले में लिपटा हुआ रोता रहा। ३० तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, मैं अब मरने से भी प्रसन्न हूं क्योंकि तुझे जीते जागते का मुंह देख चुका। ३१ तब यूसुफ ने अपने भाइयों से और अपने पिता के घराने से कहा मैं जाकर फिरौन को यह कहकर समाचार दूंगा कि मेरे भाई और मेरे पिता के सारे घराने के लोग जो कनान देश में रहते थे सो ३२ मेरे पास आ गये हैं। और वे लोग चरवाहे हैं क्योंकि वे पशुओं को पालते आये हैं सो वे अपनी भेड़ बकरी ३३ गाय बैल और जो कुछ उन का है सब ले आये हैं। जब फिरौन तुम को बुला के पूछे कि तुम्हारा उद्यम क्या है, ३४ तो कहना कि तेरे दास लड़कपन से लेकर आज लों पशुओं को पालते आये हैं बरन हमारे पुरखा भी ऐसा ही करते थे। इस से तुम गोशेन देश में रहोगे क्योंकि सब चरवाहों से मिस्री लोग घिन करते हैं ॥

४७. तब यूसुफ ने फिरौन के पास जाकर यह कहकर समाचार दिया कि मेरा पिता और मेरे भाई और उन की भेड़ बकरियां गाय बैल और जो कुछ उन का है सब कनान देश से आ गया है और २ अभी तो वे गोशेन देश में हैं। फिर उस ने अपने भाइयों में से पांच जन लेकर फिरौन के साम्हने खड़े ३ कर दिये। फिरौन ने उस के भाइयों से पूछा कि तुम्हारा उद्यम क्या है उन्हों ने फिरौन से कहा तेरे दास चरवाहे ४ हैं और हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे। फिर उन्हों ने फिरौन से कहा हम इस देश में परदेशी की भांति रहने के लिये आये हैं क्योंकि कनान देश में भारी अकाल होने के कारण तेरे दासों की भेड़ बकरियों के लिये चराई नहीं रही सो अपने दासों को गोशेन देश ५ में रहने दे। तब फिरौन ने यूसुफ से कहा तेरा पिता ६ और तेरे भाई तेरे पास आ गये हैं, और मिस्र देश तेरे साम्हने पड़ा है इस देश का जो सब से अच्छा भाग हो उस में अपने पिता और भाइयों को बसा दे अर्थात् वे गोशेन ही देश में रहें और यदि तू जानता हो कि उन में से परिश्रमी पुरुष हैं तो उन्हें मेरे पशुओं के अधि- ७ कारी ठहरा दे। तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब को ले आकर फिरौन के सम्मुख खड़ा किया और याकूब ८ ने फिरौन को आशीर्वाद दिया। तब फिरौन ने याकूब ९ से पूछा तेरी अवस्था कितने दिन की हुई है। याकूब ने फिरौन से कहा मैं तो एक सौ तीस बरस परदेशी होकर अपना जीवन बिता चुका हूं मेरे जीवन के दिन थोड़े और दुःख से भरे हुए भी थे और मेरे बापदादे परदेशी होकर जितने दिन लों जीते रहे उतने दिन का

---

(१) मूल में बेटे बेटियां।

१० मैं अभी नहीं हुआ । और याकूब फिरौन को आशीर्वाद
११ देकर उस के सन्मुख से चला गया । तब यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया और फिरौन की आज्ञा के अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में अर्थात् रामसेस नाम देश में भूमि देकर उन की
१२ निज कर दी । और यूसुफ अपने पिता का और अपने भाइयों का और पिता के सारे घराने का एक एक के बालबच्चों के घराने की गिनती के अनुसार भोजन दिला दिलाकर उन का पालन पोषण करने लगा ।

१३ और उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा क्योंकि अकाल बहुत भारी था और अकाल के कारण मिस्र
१४ और कनान दोनों देश अत्यन्त हार गये । और जितना रूपया मिस्र और कनान देश में था सब को यूसुफ ने उस अन्न की सन्ती जो उन के निवासी मोल लेते थे
१५ इकट्ठा करके फिरौन के भवन में पहुंचा दिया । सो जब मिस्र और कनान देश का रूपया चुक गया तब सब मिस्री यूसुफ के पास आ आकर कहने लगे हम को भोजन वस्तु दे, क्या हम रूपये के न रहने से तेरे रहते हुए मर
१६ जाएं । यूसुफ ने कहा जो रूपये न हों तो अपने पशु दे दो और मैं उन की सन्ती तुम्हें खाने को दूंगा ।
१७ तब वे अपने पशु यूसुफ के पास ले आये और यूसुफ उन को घोड़ों भेड़ बकरियों गाय बैलों और गदहों की सन्ती खाने को देने लगा, सो उस बरस में वह सब जाति के पशुओं की सन्ती भोजन देकर उन का पालन
१८ पोषण करता रहा । वह बरस तो यों कटा तब अगले बरस में उन्हों ने उस के पास आकर कहा हम अपने प्रभु से यह बात छिपा न रक्खेंगे कि हमारा रूपया चुक गया है और हमारे सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास आ चुके हैं सो अब हमारे प्रभु के साम्हने हमारे
१९ शरीर और भूमि छोड़कर और कुछ नहीं रहा । हम तेरे देखते क्यों मरें और हमारी भूमि क्यों उजड़ जाये हम को और हमारी भूमि को भोजनवस्तु की सन्ती मोल ले कि हम अपनी भूमि समेत फिरौन के दास हों और हम को बीज दे कि हम मरने न पाएं जीते रहें और
२० भूमि न उजड़े[१] । तब यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि को फिरौन के लिये मोल लिया क्योंकि उस कठिन अकाल के पड़ने से मिस्रियों को अपना अपना खेत बेच डालना
२१ पड़ा सो सारी भूमि फिरौन की हो गई । और एक सिवाने से लेकर दूसरे सिवाने लों सारे मिस्र देश में जो प्रजा रहती थी उस को उस ने नगरों में ले आकर बसा दिया ।
२२ पर याजकों की भूमि तो उस ने न मोल ली क्योंकि याजकों के लिये फिरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था और जो नित्य भोजन फिरौन उन को देता था वही वे खाते थे, इस कारण उन को अपनी भूमि
२३ बेचनी न पड़ी । तब यूसुफ ने प्रजा के लोगों से कहा सुनो मैं ने आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को भी फिरौन के लिये मोल लिया है देखो तुम्हारे लिये
२४ यहां बीज है इसे भूमि में बोओ । और जो कुछ उपजे उस का पंचमांश फिरौन को देना बाकी चार अंश तुम्हारे रहेंगे कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ और अपने अपने बालबच्चों और घर के और लोगों समेत खाया करो ।
२५ उन्हों ने कहा तू ने हम को जिलाय लिया है हमारे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे और हम फिरौन के
२६ दास होकर रहेंगे । सो यूसुफ ने मिस्र की भूमि के विषय में ऐसा नियम ठहराया जो आज के दिन लों चला आता है कि पंचमांश फिरौन को मिला करे केवल याजकों ही
२७ की भूमि फिरौन की नहीं हो गई । और इस्राएली मिस्र के गोशेन देश में रहने लगे और उस में की भूमि निज कर लेने लगे और फूले फले और अत्यन्त बढ़ गये ॥

[इस्राएल के आशीर्वादों और मृत्यु का वर्णन]

२८ मिस्र देश में याकूब सतरह बरस जीता रहा सो याकूब
२९ की सारी आयु एक सौ सैंतालीस बरस की हुई । जब इस्राएल के मरने का दिन निकट आ गया तब उस ने अपने पुत्र यूसुफ को बुलवाकर कहा यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रखकर किरिया खा कि मैं तेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम
३० करूंगा कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूंगा । जब तू अपने बापदादों के संग सो जाएगा तब मैं तुझे मिस्र से उठा ले जाकर उन्हीं के कबरिस्तान में रक्खूंगा, तब यूसुफ ने
३१ कहा मैं तेरे वचन के अनुसार करूंगा । फिर उस ने कहा मुझ से किरिया खा सो उस ने उस से किरिया खाई, तब इस्राएल ने खाट के सिरहाने की ओर सिर झुकाया ॥

४८.

इन बातों के पीछे किसी ने यूसुफ से कहा सुन तेरा पिता बीमार है तब वह मनश्शे और एप्रैम नाम अपने दोनों पुत्रों को संग लेकर उस के
२ पास चला । और किसी ने याकूब को बता दिया कि तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आ रहा है तब इस्राएल अपने को
३ सम्भालकर खाट पर बैठ गया । और याकूब ने यूसुफ से कहा सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने कनान देश के लूज नगर के
४ पास मुझे दर्शन देकर आशिष दी, और कहा सुन मैं तुझे फुला फलाकर बढ़ाऊंगा और तुझे राज्य राज्य की मंडली का मूल बनाऊंगा और तेरे पीछे तेरे वंश को यह देश ऐसा दूंगा कि वह सदा लों उस की निज भूमि रहेगी ।

(१) मूल में हम और हमारी भूमि क्यों मरे ।

५ और अब तेरे दोनों पुत्र जो मिस्र में मेरे आने से पहिले जन्मे सो मेरे ही ठहरेंगे अर्थात् जिस रीति रूबेन और शिमोन मेरे हैं उसी रीति एप्रैम और मनश्शे भी मेरे ६ ठहरेंगे। और उन के पीछे जो सन्तान तू जन्माएगा वह तेरे तो ठहरेंगे पर भाग पाने के समय वे अपने भाइयों ७ ही के वंश में गिने जावेंगे[1]। जब मैं पद्दान[2] से आता था तब एप्राता पहुंचने से थोड़ी ही दूर पहिले राहेल कनान देश में मार्ग में मेरे साम्हने मर गई और मैं ने उसे वहीं अर्थात् एप्राता जो बेतलेहेम भी कहावता है ८ उसी के मार्ग में मिट्टी दी। तब इस्राएल को यूसुफ के ९ पुत्र देख पड़े और उस ने पूछा ये कौन हैं। यूसुफ ने अपने पिता से कहा ये मेरे पुत्र हैं जो परमेश्वर ने मुझे यहां दिये हैं उस ने कहा उन को मेरे पास ले आ कि मैं १० उन्हें आशीर्वाद दूं। इस्राएल की आंखें बुढ़ापे के कारण धुन्धली हो गई थीं यहां लों कि उसे कम सूझता था सो यूसुफ उन्हें उस के पास ले गया और उस ने उन्हें चूम ११ कर गले लगा लिया। तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा मैं सोचता न था कि तेरा मुख फिर देखने पाऊंगा पर देख परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है। १२ तब यूसुफ ने उन्हें अपने घुटनों के बीच से हटाकर और १३ अपने मुंह के बल भूमि पर गिरके दण्डवत् की। तब यूसुफ ने उन दोनों को लेकर अर्थात् एप्रैम को अपने दहिने हाथ से कि वह इस्राएल के बाएं हाथ पड़े और मनश्शे को अपने बाएं हाथ से कि इस्राएल के दहिने १४ हाथ पड़े, उन्हें उस के पास ले गया। तब इस्राएल ने अपना दहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम के सिर पर जो लहुरा था और अपना बायां हाथ बढ़ाकर मनश्शे के सिर पर रख दिया उस ने तो जान बूझकर ऐसा किया नहीं तो १५ जेठा मनश्शे ही था। फिर उस ने यूसुफ को आशीर्वाद देकर कहा, परमेश्वर जिस के सन्मुख मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक अपने को जानकर[3] चलते थे और वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन लों मेरा १६ चरवाहा बना है, और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है वही अब इन लड़कों को आशिष दे और ये मेरे और मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक के १७ कहलाएं और पृथिवी में बहुतायत से बढ़ें। जब यूसुफ ने देखा कि मेरे पिता ने अपना दहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रक्खा है तब यह बात उस को बुरी लगी सो उस ने अपने पिता का हाथ इस मनसा से पकड़ लिया कि एप्रैम के सिर पर से उठाकर मनश्शे के सिर पर रख दे। १८ और यूसुफ ने अपने पिता से कहा हे पिता ऐसा नहीं क्योंकि जेठा यही है अपना दहिना हाथ इस के सिर पर १९ रख। उस के पिता ने नकारके कहा हे पुत्र मैं इस बात को भली भांति जानता हूं यद्यपि इस से भी मनुष्यों की एक मंडली उत्पन्न होगी और यह भी महान् हो जाएगा तौभी इस का छोटा भाई इस से अधिक महान् हो जाएगा और उस के वंश से बहुत सी जातियां निकलेंगी। २० फिर उस ने उसी दिन यह कहकर उन को आशीर्वाद दिया कि इस्राएली लोग तेरा नाम ले लेकर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे कि परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे के समान बना दे और उस ने मनश्शे से पहिले एप्रैम २१ का नाम लिया। तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा देख मैं तो मरता हूं परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुंचा देगा। २२ और मैं तुझ को तेरे भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता हूं जिस को मैं ने एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से ले लिया है॥

४९. फिर याकूब ने अपने पुत्रों को यह कहकर बुलाया कि इकट्ठे हो जाओ मैं तुम को बताऊंगा कि अन्त के दिनों में तुम पर क्या क्या २ बीतेगा। हे याकूब के पुत्रो इकट्ठे होकर सुनो अपने पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ।

३ हे रूबेन तू मेरा जेठा मेरा बल और मेरे पौरुष का
पहिला फल है,
प्रतिष्ठा का उत्तम भाग और शक्ति का भी उत्तम
भाग तू ही है।
४ तू जो जल की नाईं उबलनेहारा है इस लिये औरों
से श्रेष्ठ न ठहरेगा,
क्योंकि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा,
तब तू ने उस को अशुद्ध किया वह मेरे बिछौने पर
चढ़ गया॥
५ शिमोन और लेवी तो भाई भाई हैं,
उनकी तलवारें उपद्रव के हथियार हैं।
६ हे मेरे जीव उन के मर्म्म में न पड़,
हे मेरी महिमा उन की सभा में मत मिल
क्योंकि उन्हों ने कोप से मनुष्यों को घात किया
और अपनी ही इच्छा पर चल कर बैलों की खूंच
काटी है॥
७ धिक्कार उन के कोप को जो प्रचण्ड था,
और उन के रोष को जो निर्दय था मैं उन्हें याकूब
में अलग अलग
और इस्राएल में तित्तर बित्तर कर दूंगा॥

(१) मूल में भाइयों के धाम पर कहायेंगे। (२) अर्थात् पद्दनराम। (३) मूल में जिसके साम्हने मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक।

८ हे यहूदा तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे,
तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा
तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे ॥
९ यहूदा सिंह का डांवरू है।
हे मेरे पुत्र तू अहेर करके गुफा में गया है[१]
वह सिंह वा सिंहनी की नाईं दबकर बैठ गया
फिर कौन उस को छेड़ेगा ॥
१० जब लों शीलो न आए
तब लों न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा,
न उस के वंश से[२] व्यवस्था देनेहारा अलग होगा
और राज्य राज्य के लोग उस के अधीन हो जाएंगे ॥
११ वह अपने जवान गदहे को दाखलता में
और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बान्धा करेगा,
उस ने अपने वस्त्र दाखमधु में
और अपना पहिरावा दाखों के रस[३] में धोया है ॥
१२ उस की आंखें दाखमधु से चमकीली
और उस के दांत दूध से श्वेत होंगे ॥
१३ जबूलून समुद्र के तीर पर वास करेगा वह जहाजों के लिये बन्दर का काम देगा
और उस का परला भाग सीदोन के निकट पहुंचेगा ॥
१४ इस्साकार एक बड़ा और बलवन्त गदहा है
जो पशुओं के बाड़ों के बीच में दबका रहता है ॥
१५ उस ने एक विश्रामस्थान देखकर कि अच्छा है और एक देश कि मनोहर है
अपने कन्धे को बोझ उठाने के लिये झुकाया
और बेगारी में दास का सा काम करने लगा ॥
१६ दान इस्राएल का एक गोत्र होकर
अपने जातिभाइयों का न्याय करेगा ॥
१७ दान मार्ग में का एक सांप
और रास्ते में का एक नाग होगा,
जो घोड़े की नली को डंसता है,
जिस से उस का सवार पछाड़ खाकर गिर पड़ता है ॥
१८ हे यहोवा मैं तुझी से उद्धार पाने की बाट जोहता आया हूं ॥
१९ गाद पर एक दल चढ़ाई तो करेगा
पर वह उसी दल की पिछाड़ी पर छापा मारेगा ॥
२० आशेर से जो अन्न उत्पन्न होगा वह उत्तम होगा
और वह राजा के योग्य स्वादिष्ट भोजन दिया करेगा ॥
२१ नप्ताली एक छूटी हुई हरिणी है
वह सुन्दर बातें बोलता है ॥
२२ यूसुफ बलवन्त लता की एक शाखा[४] है
वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा[४] है
उस की डालियां[५] भीत पर से चढ़कर फैल जाती हैं।
२३ धनुर्धारियों ने उस को खेदित किया,
और उस पर तीर मारे और उस के पीछे पड़े हैं ॥
२४ पर उस का धनुष दृढ़ रहा
और उस की बांह और हाथ
याकूब के उसी शक्तिमान ईश्वर के हाथों के द्वारा फुर्तीले हुए,
जिस के पास से वह चरवाहा आएगा जो इस्राएल का पत्थर भी ठहरेगा ॥
२५ यह तेरे पिता के उस ईश्वर का काम है जो तेरी सहायता करेगा,
उस सर्वशक्तिमान् का जो तुझे
ऊपर से आकाश में की आशिषें,
और नीचे से गहिरे जल में की आशिषें,
और स्तनों और गर्भ की आशिषें देगा ॥
२६ तेरे पिता के आशीर्वाद,
मेरे पितरों के आशीर्वादों से अधिक बढ़ गये हैं
और सनातन पहाड़ियों की मनचाही वस्तुओं की नाई बने रहेंगे,
ये यूसुफ के सिर पर
जो अपने भाइयों में से न्यारा हुआ उसी के चोण्डे पर फलेंगे ॥
२७ बिन्यामीन फाड़नेहारा हुण्डार है,
सबेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा,
और सांझ को लूट बांट लेगा ॥

२८ इस्राएल के बारहों गोत्र ये ही हैं और उन के पिता ने जिस जिस वचन से उन को आशीर्वाद दिया सो ये ही हैं एक एक को उस के आशीर्वाद के अनुसार उस ने आशीर्वाद दिया। २९ तब उस ने यह कहकर उन को आज्ञा दी कि मैं अपने लोगों के साथ मिलने पर हूं सो मुझे हित्ती एप्रोन की भूमिवाली गुफा में मेरे बाप दादों के साथ मिट्टी देना, ३० अर्थात् उसी गुफा में जो कनान देश में मम्रे के साम्हनेवाली मकपेला की भूमि में है उस भूमि को तो इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इसी निमित्त मोल लिया था कि वह कबरिस्तान के लिये उस की निज भूमि हो। ३१ वहां इब्राहीम और उस की स्त्री सारा को मिट्टी दी गई और वहीं इसहाक और उस की

(१) मूल में अहेर से चढ़ गया है।
(२) मूल में उस के पैरों के बीच से। (३) मूल में लोहू।
(४) मूल में पुत्र। (५) मूल में बेटियां।

औ रिबका को भी मिट्टी दी गई और वहीं मैं ने लेआ
३१ को भी मिट्टी दी । वह भूमि और उस में की गुफा
३२ हित्तियों के हाथ से मोल ली गई । यह आज्ञा जब
३३ याकूब अपने पुत्रों को दे चुका तब अपने पांव खाट पर
समेट प्राण छोड़कर अपने लोगों में जा मिला । तब

१ ५०. युसुफ अपने पिता के मुंह पर गिरके रोया
२ और उसे चूमा । और यूसुफ ने उन वैद्यों
को जो उस के सेवक थे आज्ञा दी कि मेरे पिता की लोथ
में सुगन्धद्रव्य भरो सो वैद्यों ने इस्राएल की लोथ में
३ सुगन्धद्रव्य भर दिये । और उस के चालीस दिन पूरे हुए
क्योंकि जिन की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरे जाते हैं उन को
इतने ही दिन पूरे लगते हैं । और मिस्री लोग उस के
लिये सत्तर दिन लों रोते रहे ॥

४ जब उस के विलाप के दिन बीत गये तब यूसुफ
फिरौन के घराने के लोगों से कहने लगा यदि तुम्हारी
अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो मेरी यह बिनती फिरौन
५ को सुनाओ कि, मेरे पिता ने यह कहकर कि देख मैं
मरा चाहता हूं मुझे यह किरिया खिलाई कि जो कबर
तू ने अपने लिये कनान देश में खुदवाई है उसी में मैं
तुझे मिट्टी दूंगा सो अब मुझे वहां जाकर अपने पिता को
६ मिट्टी देने की आज्ञा दे, पीछे मैं लौट आऊंगा । तब
फिरौन ने कहा, जाकर अपने पिता की खिलाई हुई
७ किरिया के अनुसार उस को मिट्टी दे । सो यूसुफ अपने
पिता को मिट्टी देने के लिये चला और फिरौन के सब
कर्मचारी अर्थात् उस के भवन के पुरनिये और मिस्र देश
८ के सब पुरनिये उस के संग चले । और यूसुफ के घर के
सब लोग और उस के भाई और उस के पिता के घर के
सब लोग भी संग गये पर वे अपने बालबच्चों और भेड़
बकरियों और गाय बैलों को गोशेन देश में छोड़ गये ।
९ और उस के संग रथ और सवार गये, सो भीड़ बहुत भारी
१० हो गई । जब वे आताद के खलिहान लों जो यर्दन नदी
के पार है पहुंचे तब वहां अत्यन्त भारी बिलाप किया
और यूसुफ ने अपने पिता के लिये सात दिन का बिलाप
११ कराया । आताद के खलिहान में के बिलाप को देखकर
उस देश के निवासी कनानियों ने कहा यह तो मिस्रियों
का कोई भारी बिलाप होगा इसी कारण उस स्थान का
नाम आबेलमिस्रैम[१] पड़ा और वह यर्दन के पार है।
१२ और इस्राएल के पुत्रों ने उस से वही काम किया जिस
१३ की उस ने उन को आज्ञा दी थी । अर्थात् उन्हों ने उस
को कनान देश में ले जाकर मकपेला की उस भूमिवाली
गुफा में जो मम्रे के साम्हने है मिट्टी दी जिस को
इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इस निमित्त मोल
लिया था कि वह कबरिस्तान के लिये उस की निज
भूमि हो ॥

(यूसुफ का उत्तर चरित)

१४ अपने पिता को मिट्टी देकर यूसुफ अपने भाइयों
और उन सब समेत जो उस के पिता को मिट्टी देने के
१५ लिये उस के संग गये थे मिस्र में लौट आया । जब यूसुफ
के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया तब कहने
लगे क्या जानिये यूसुफ अब हमारे पीछे पड़े और जितनी
बुराई हम ने उस से की थी सब का पूरा पलटा हम से
१६ ले । सो उन्होंने यूसुफ के पास यह कहला भेजा कि तेरे
१७ पिता ने मरने से पहिले हमें यह आज्ञा दी थी कि, तुम
लोग यूसुफ से यों कहना कि हम बिनती करते हैं कि तू
अपने भाइयों के अपराध और पाप को क्षमा कर हम ने
तुझ से बुराई तो की थी पर अब अपने पिता के
परमेश्वर के दासों का अपराध क्षमा कर । उन की ये
१८ बातें सुनकर यूसुफ रो दिया । और उस के भाई आप भी
जाकर उस के साम्हने गिर पड़े और कहा देख हम तेरे
१९ दास हैं । यूसुफ ने उन से कहा मत डरो क्या मैं
२० परमेश्वर की जगह पर हूं । यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये
बुराई का बिचार किया था परन्तु परमेश्वर ने उसी बात
में भलाई का बिचार किया जिस से वह ऐसा करे जैसा
आज के दिन प्रगट है कि बहुत से लोगों के प्राण बचे
२१ हैं । सो अब मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालबच्चों
का पालन पोषण करता रहूंगा यों उस ने उन को
समझा बुझाकर शान्ति दी ॥

२२ और यूसुफ अपने पिता के घराने समेत मिस्र में
रहता रहा और यूसुफ एक सौ दस बरस जीता रहा ।
२३ और यूसुफ एप्रैम के परपोतों लों देखने पाया और
मनश्शे के पोते जो माकीर के पुत्र थे सो उत्पन्न होकर
२४ यूसुफ से गोद में लिये गये[२] । और यूसुफ ने अपने
भाइयों से कहा मैं तो मरा चाहता हूं परन्तु परमेश्वर
निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा और तुम्हें इस देश से
निकाल कर उस देश में पहुंचा देगा, जिस के देने की
उस ने इब्राहीम इसहाक और याकूब से किरिया खाई
२५ थी । फिर यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहकर कि परमेश्वर
निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा उन को इस विषय की
किरिया खिलाई कि हम तेरी हड्डियों को यहां से उस देश में
२६ ले जाएंगे । निदान यूसुफ एक सौ दस बरस का होकर
मर गया और उस की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरे गये और
वह लोथ मिस्र में एक संदूक में रक्खी गई ॥

(१) अर्थात् मिस्रियों का बिलाप ।

(२) मूल में यूसुफ के घुटनों पर जन्मे ।

निर्गमन नाम पुस्तक।

(मिस्र में इस्राएलियों की दुर्दशा)

१. याकूब के साथ उस के जो पुत्र अपने अपने घराने को लेकर मिस्र देश २ में आये उन के नाम ये हैं अर्थात्, रूबेन शिमोन लेवी ३,४ यहूदा, इस्साकार जबूलून बिन्यामीन, दान नप्ताली गाद ५ और आशेर। और यूसुफ तो मिस्र में पहिले ही आ चुका ६ था। याकूब के निज वंश के सब प्राणी सत्तर थे। और यूसुफ और उस के सब भाई और उस पीढ़ी के सारे लोग ७ मर गये। और इस्राएली फूले फले और बहुत अधिक होकर बढ़ गये और अत्यन्त सामर्थी हुए और देश उन से भर गया॥

८ मिस्र में एक नया राजा हुआ जो यूसुफ को न ९ जानता था। उस ने अपनी प्रजा से कहा, देखो इस्राएली १० हम से गिनती और सामर्थ्य में अधिक हो गये हैं। सो आओ हम उन के साथ चतुराई का बर्ताव करें ऐसा न हो कि जब वे बहुत हो जाएं तब यदि संग्राम आ पड़े तो हमारे बैरियों से मिल कर हम से लड़ें ११ और इस देश से निकल जाएं। सो उन्हों ने उन पर बेगारी करानेहारों को ठहराया जो उन पर भार डाल डालकर उन को दुःख दिया करें, सो उन्हों ने फिरौन के लिये पितोम और रामसेस नाम भंडारवाले नगरों को १२ बनाया। पर ज्यों ज्यों वे उन को दुःख देते गये त्यों त्यों वे बढ़ते और फैलते गये, सो वे इस्राएलियों से डर गये। १३ और मिस्रियों ने इस्राएलियों से कठोरता के साथ १४ सेवा कराई। और उन के जीवन को गारे ईंट और खेती के भांति भांति के काम की कठिन सेवा से भार सा[१] कर डाला जिस किसी काम में वे उन से सेवा कराते उस में कठोरता के साथ कराते थे॥

१५ शिप्रा और पूआ नाम दो इब्री जनाई धाइयों को १६ मिस्र के राजा ने आज्ञा दी कि, जब जब तुम इब्री स्त्रियों को जनने के समय जन्मने के पत्थरों पर बैठी देखो तब यदि बेटा हो तो उसे मार डालना और बेटी हो तो १७ जीती रहने देना। पर वे धाइयां परमेश्वर का भय मानती थीं सो मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर १८ लड़कों को भी जीते छोड़ देती थीं। तब मिस्र के राजा ने उन को बुलवाकर पूछा तुम जो लड़कों को जीते छोड़ देती हो सो ऐसा क्यों करती हो। १९ जनाई धाइयों ने फिरौन को उत्तर दिया कि इब्री स्त्रियां मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं वे ऐसी फुर्तीली हैं कि जनाई धाइयों के पहुंचने से पहिले ही जन बैठती हैं। २० सो परमेश्वर ने जनाई धाइयों के साथ भलाई की और वे लोग बढ़कर बहुत सामर्थी हुए। २१ और जनाई धाइयां जो परमेश्वर का भय मानती थीं इस कारण उस ने उन के घर बसाये[२]। २२ तब फिरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी कि इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील नदी[३] में डालना और सब बेटियों को जीती छोड़ना॥

(मूसा की उत्पत्ति और आदि चरित्र)

२. लेवी के घराने के एक पुरुष ने एक लेवी वंशिन को ब्याह लिया। २ और वह स्त्री गर्भिणी होकर बेटा जनी और यह देखकर कि यह बालक सुन्दर है उसे तीन महीने लों छिपा रक्खा। ३ जब वह उसे और छिपा न सकी तब उस के लिये सरकंडों की एक पिटारी ले उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगा कर उस में बालक को रखकर नील नदी[३] के तीर पर कांसों के बीच छोड़ आई। ४ उस बालक की बहिन दूर खड़ी रही कि देखे इसे क्या होगा। ५ तब फिरौन की बेटी नहाने के लिये नदी[३] के तीर आई और उस की सखियां नदी[३] के तीर तीर टहलने लगीं तब उस ने कांसों के बीच पिटारी को देखकर अपनी दासी को उसे ले आने के लिये भेजा। ६ तब उस ने उसे खोलकर देखा कि एक रोता हुआ बालक है तब उसे तरस आई और उस ने कहा यह तो किसी इब्री का बालक होगा। ७ तब बालक की बहिन ने फिरौन की बेटी से कहा, क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊं जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करे। ८ फिरौन की बेटी ने कहा जा तब लड़की जाकर बालक की माता को बुला ले आई। ९ फिरौन की बेटी ने उस से कहा, तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर और मैं तुझे मजूरी दूंगी तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी। १० जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे

(१) मूल में कड़ुवा।

(२) मूल में उन के लिये घर बनाये। (३) मूल में योर।

फ़िरौन की बेटी के पास ले गई और वह उस का बेटा ठहरा और उस ने यह कहकर उस का नाम मूसा[1] रक्खा कि मैं ने इस को जल से निकाल लिया ॥

११ इतने में मूसा बड़ा हुआ और बाहर अपने भाई बंधुओं के पास जाकर उन के भारों पर दृष्टि करने लगा। और उस ने देखा कि कोई मिस्री जन मेरे
१२ एक इब्री भाई को मार रहा है। सो जब उस ने इधर उधर देखा कि कोई नहीं है तब उस मिस्री को मार डालकर बालू में छिपा दिया ॥

१३ फिर दूसरे दिन बाहर जाकर उस ने देखा कि दो इब्री पुरुष आपस में मारपीट कर रहे हैं सो उस ने अपराधी से कहा तू अपने भाई को क्यों मारता है।
१४ उस ने कहा किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया जिस भांति तू ने मिस्री को घात किया क्या उसी भांति मुझे भी घात करना चाहता है। तब मूसा यह सोचकर डर गया कि निश्चय वह बात खुल
१५ गई है। जब फ़िरौन ने वह बात सुनी तब मूसा को घात कराने का यत्न किया तब मूसा फ़िरौन के साम्हने से भागा और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा। और
१६ वह वहां एक कूएं के पास बैठा था। मिद्यान याजक के सात बेटियां थीं और वे वहां आकर जल भरने लगीं कि कठौतों में भरके अपने पिता की भेड़बकरियों को
१७ पिलाएं। तब चरवाहे आकर उन को दुर्दुराने लगे तब मूसा ने खड़ा होकर उन की सहायता की
१८ और भेड़बकरियों को पानी पिलाया। सो जब वे अपने पिता रूएल के पास फिर आइं तब उस ने उन से पूछा क्या कारण है कि आज तुम ऐसी
१९ फ़ुर्ती से आई हो। उन्हों ने कहा एक मिस्री पुरुष ने हम को चरवाहों के हाथ से छुड़ाया और हमारे लिये
२० बहुत जल भरके भेड़बकरियों को पिलाया। तब उस ने अपनी बेटियों से कहा, वह पुरुष कहां है तुम उस को क्यों छोड़ आई हो, उस को बुला ले आओ कि वह
२१ भोजन करे। और मूसा उस पुरुष के साथ रहने को प्रसन्न हुआ और उस ने उसे अपनी बेटी सिप्पोरा को
२२ ब्याह दिया। और वह बेटा जनी तब मूसा ने यह कहकर कि मैं अन्य देश में परदेशी हुआ उस का नाम गेर्शोम[2] रक्खा ॥

(यहोवा के मूसा को दर्शन देकर फ़िरौन के पास भेजने का वर्णन)

२३ बहुत दिन बीतने पर मिस्र का राजा मर गया और इस्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी लम्बी सांस लेने लगे और पुकार उठे और उन की दोहाई जो कठिन
२४ सेवा के कारण हुई सो परमेश्वर लों पहुंची। और परमेश्वर ने उन का कराहना सुनकर अपनी वाचा जो उस ने इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ बांधी
२५ थी उस की सुधि ली। और परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि करके उन पर चित्त लगाया ॥

३. मूसा अपने ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़बकरियों को चराता था और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के
२ पर्वत के पास ले गया। और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लो में उस को दर्शन दिया और उस ने दृष्टि करके देखा कि झाड़ी जल
३ रही है पर भस्म नहीं होती। तब मूसा ने सोचा कि मैं उधर फिरके इस बड़े अचंभे को देखूंगा कि वह झाड़ी
४ क्यों नहीं जल जाती। जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उस को पुकारा कि हे मूसा हे मूसा, मूसा ने
५ कहा क्या आज्ञा[3]। उस ने कहा इधर पास मत आ और अपने पांवों से जूतियों को उतार दे क्योंकि जिस स्थान
६ पर तू खड़ा है सो पवित्र भूमि है। फिर उस ने कहा मैं तेरे पिता का परमेश्वर और इब्राहीम का परमेश्वर इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं, तब मूसा जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था सो
७ उस ने अपना मुंह ढांप लिया। फिर यहोवा ने कहा मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उन के दुःख को निश्चय देखा है और उन की जो चिल्लाहट परिश्रम करानेहारों के कारण होती है उस को भी मैं ने सुना है और
८ उन की पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है। सो अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं और उस देश से निकाल कर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती हैं अर्थात् कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोगों के स्थान
९ में पहुंचाऊं। सो अब सुन इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुन पड़ी है और मिस्रियों का उन पर अंधेर करना मुझे
१० देख पड़ा है। सो आ मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूं, कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले
११ आए। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा मैं कौन हूं जो फ़िरौन के पास जाऊं और इस्राएलियों को मिस्र से
१२ निकाल ले आऊं। उस ने कहा निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा और इस बात का कि तेरा भेजनेवाला मैं हूं तेरे

(१) अर्थात् जल से निकाला हुआ। (२) अर्थात् वहां परदेशी, वा, निकाला दिया जाना।

(३) मूल में मुझे देख।

लिये यह चिन्ह ठहरेगा कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे। १३ मूसा ने परमेश्वर से कहा जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उन से यह कहूं कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और वे मुझ से पूछें कि उस का क्या नाम है तब मैं उन को क्या बताऊं। १४ परमेश्वर ने मूसा से कहा मैं जो हूंगा सो हूंगा[१] फिर उस ने कहा तू इस्राएलियों से यह कहना कि जिस का नाम हूंगा[२] है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। १५ फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा कि तू इस्राएलियों से यों कहना कि तुम्हारे पितरों का परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर यहोवा उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है, देख सदा लों मेरा नाम यही रहेगा और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा। १६ जाकर इस्राएली पुरनियों को इकट्ठा कर और उन से कह कि तुम्हारे पितर इब्राहीम इसहाक और याकूब के परमेश्वर यहोवा ने मुझे दर्शन देकर यह कहा है कि मैं ने तुम पर और तुम से जो बर्ताव मिस्र में किया जाता है उस पर भी चित्त लगाया है। १७ और मैं ने ठाना है कि तुम को मिस्र के दुःख में से निकाल कर कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोगों के देश में ले चलूंगा जो ऐसा देश है कि उस में दूध और मधु की धारा बहती हैं। १८ तब वे तेरी मानेंगे और तू इस्राएली पुरनियों को संग ले मिस्र के राजा के पास जाकर उस से यों कहना कि इब्रियों के परमेश्वर यहोवा से हम लोगों की भेंट हुई है सो अब हम को तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान चढ़ाएं। १९ मैं जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा बरन बड़े बल से दबाये जाने पर भी जाने न देगा। २० सो मैं हाथ बढ़ाकर उन सब आश्चर्य्यकर्म्मों से जो मिस्र के बीच करूंगा उस देश को मारूंगा और उस के पीछे वह तुम को जाने देगा। २१ तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह कराऊंगा और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे। २२ बरन तुम्हारी एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन और अपने अपने घर की पाहुनी से सोने चान्दी के गहने और वस्त्र मांग लेगी और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिराना सो तुम मिस्रियों को लूटोगे।

४. १ तब मूसा ने उत्तर दिया कि वे मेरी प्रतीति न करेंगे और न मेरी सुनेंगे बरन कहेंगे कि यहोवा ने तुझ को दर्शन नहीं दिया। २ यहोवा ने उस से कहा तेरे हाथ में वह क्या है वह बोला लाठी। ३ उस ने कहा उसे भूमि पर डाल दे, जब उस ने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प्प बन गई और मूसा उस के साम्हने से भागा। ४ तब यहोवा ने मूसा से कहा हाथ बढ़ाकर उस की पूंछ पकड़ ले कि वे लोग प्रतीति करें कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम के परमेश्वर इसहाक के परमेश्वर और याकूब के परमेश्वर यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है। ५ जब उस ने हाथ बढ़ाकर उस को पकड़ा तब वह उस के हाथ में फिर लाठी बन गई। ६ फिर यहोवा ने उस से यह भी कहा कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप, सो उन से अपना हाथ छाती पर रखकर ढांपा, फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा कि मेरा हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया। ७ तब उस ने कहा अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढांप सो उस ने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांपा और जब उस ने उस को छाती पर से निकाला तो क्या देखा कि वह फिर सारी देह के समान हो गया। ८ तब यहोवा ने कहा यदि वे तेरी बात की प्रतीति न करें और पहिले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे। ९ और यदि वे इन दोनों चिन्हों की प्रतीति न करें और तेरी बात को न मानें तो तू नील नदी[३] से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना और जो जल तू नदी से निकालेगा सो सूखी भूमि पर लोहू बन जायगा। १० मूसा ने यहोवा से कहा हे मेरे प्रभु मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहिले था और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा, मैं तो मुंह और जीभ का भद्दा हूं। ११ यहोवा ने उस से कहा मनुष्य का मुंह किस ने बनाया है और मनुष्य को गूंगा वा बहिरा वा देखनेहारा वा अंधा मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है। १२ अब जा मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखाता जाऊंगा। १३ उस ने कहा हे मेरे प्रभु जिस को तू चाहे उसी के हाथ से भेज। १४ तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उस ने कहा क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है मुझे तो निश्चय है कि वह कहने में निपुण है और वह तेरी भेंट के लिये निकला आता भी है और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा। १५ सो तू उसे ये बातें सिखाना[४] और मैं उस के मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हें करना होगा

(१) कितने टीकाकार कहते हैं, मैं जो हूं सो हूं। (२) कितने टीकाकार कहते हैं मैं हूं।

(३) मूल में पार। (४) मूल में उस से बातें करना और उस के मुंह में ये बातें डालना।

१६ सो तुम को सिखाता जाऊंगा। और वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा वह तेरे लिये मुंह और तू उस
१७ के लिये परमेश्वर ठहरेगा। और तू इस लाठी को हाथ में लिये जा और ईसा से इन चिन्हों को दिखाना ॥
१८ तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा और कहा मुझे बिदा कर कि मैं मिस्र में रहनेहारे अपने भाइयों के पास जाकर देखूं कि वे अब लों जीते हैं वा नहीं; यित्रो ने
१९ कहा कुशल से जा। और यहोवा ने मिद्यान देश में मूसा से कहा मिस्र को लौट जा क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के
२० गाहक थे सो सब मर गये हैं। तब मूसा अपनी स्त्री और बेटों को गदहे पर चढ़ाकर मिस्र देश की ओर परमेश्वर
२१ की उस लाठी को हाथ में लिये हुए लौटा। और यहोवा ने मूसा से कहा जब तू मिस्र में पहुंचेगा तो सचेत होना कि जो चमत्कार मैं ने तेरे वश में किये हैं उन सभों को फिरौन के देखते करना, पर मैं उस के मन को हठीला करूंगा और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा।
२२ और तू फिरौन से कहना कि यहोवा यों कहता है, कि
२३ इस्राएल मेरा पुत्र बरन मेरा जेठा है। और मैं जो तुझ से कह चुका हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे और तू ने जो अब लों उसे जाने देने को नकारा है इस कारण मैं अब तेरे पुत्र बरन तेरे जेठे का घात
२४ करूंगा। मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेंट करके
२५ उसे मार डालना चाहा। तब सिप्पोरा ने चकमक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला और मूसा के पांवों पर यह कहकर फेंक दिया कि निश्चय तू लोहू
२६ बहानेहारा मेरा पति है। तब उस ने उस को छोड़ दिया और उसी समय खतने के कारण वह बोली, तू लोहू बहानेहारा पति है ॥

(मूसा के इस्राएलियों और फिरौन में भेंट करने का वर्णन)

२७ तब यहोवा ने हारून से कहा मूसा की भेंट करने को जंगल में जा सो वह जाकर परमेश्वर के पर्वत पर उस से
२८ मिला और उस को चूमा। तब मूसा ने हारून को बताया कि यहोवा ने क्या क्या बातें कहकर मुझ को भेजा है और कौन कौन चिन्ह दिखाने की आज्ञा मुझे दी है।
२९ सो मूसा और हारून ने जाकर इस्राएलियों के सब पुर-
३० नियों को इकट्ठा किया। और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही थीं सो सब हारून ने उन्हें सुनाई और लोगों के
३१ साम्हने वे चिन्ह भी दिखाये। और लोगों ने उन की प्रतीति की और यह सुनकर कि यहोवा ने इस्राएलियों की सुधि ली और हमारे दुःख पर दृष्टि की है उन्हों ने सिर झुकाकर दण्डवत् की।

१ **५**. इस के पीछे मूसा और हारून ने जाकर फिरौन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को
२ जाने दे कि वे जंगल में मेरे लिये पर्व करें। फिरौन ने कहा यहोवा कौन है जो मैं उस का वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूं, मैं न तो यहोवा को जानता और न इस्राए-
३ लियों को जाने दूंगा। उन्हों ने कहा इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेंट की है सो हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वह हम में मरी फैलाये वा तलवार
४ चलवाए। मिस्र के राजा ने उन से कहा, हे मूसा हे हारून तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाने चाहते हो, अपने अपने
५ काम पर जाओ। और फिरौन ने कहा सुनो, इस देश में वे लोग बहुत हो गये हैं फिर तुम उन को परिश्रम से
६ विश्राम दिलाना चाहते हो। और फिरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करानेहारों को जो लोगों के ऊपर थे और उन के
७ सरदारों को यह आज्ञा दी कि तुम जो अब लों ईंटें बनाने के लिये लोगों को पुआल दिया करते थे सो आगे को न देना, वे आप ही जा जाकर अपने अपने लिये पुआल
८ बटोरें। तौभी जितनी ईंटें अब लों उन्हें बनानी पड़ती थीं उतनी ही आगे को भी उन से बनवाना, ईंटों की गिनती कुछ भी न घटाना क्योंकि वे आलसी हैं इस कारण यह कहकर चिल्लाते हैं कि हम जाकर अपने परमेश्वर के
९ लिये बलिदान करें। उन मनुष्यों से और भी कठिन सेवा कराई जाए कि वे उस में परिश्रम करें और झूठी बातों
१० पर चित्त न लगाएं। तब लोगों के परिश्रम करानेहारों और सरदारों ने बाहर जाकर उन से कहा फिरौन यों
११ कहता है कि मैं तुम्हें पुआल नहीं देने का। तुम ही जाकर जहां कहीं पुआल मिले वहां से उस को बटोर ले आओ पर तुम्हारा काम कुछ भी न घटाया जाएगा।
१२ सो वे लोग सारे मिस्र देश में तितर बितर हुए कि पुआल
१३ की संती खूटी बटोरें। और परिश्रम करानेहारे यह कह कह कर उन से जल्दी कराते रहे कि जैसा तुम पुआल पाकर किया करते थे वैसा ही अपना दिन दिन का काम अब
१४ भी पूरा करो। और इस्राएलियों में के जिन सरदारों को फिरौन के परिश्रम करानेहारों ने उन के अधिकारी ठहराया था उन्हों ने मार खाई और उन से पूछा गया क्या कारण है कि तुम ने अपनी ठहराई हुई ईंटों की गिनती पहिले
१५ की नाईं कल और आज पूरी नहीं कराई। तब इस्राए- लियों के सरदारों ने जाकर फिरौन की दोहाई यह कहकर दी कि तू अपने दासों से ऐसा बर्ताव क्यों करता है।
१६ तेरे दासों को पुआल तो दिया नहीं जाता और वे हम से कहते रहते हैं ईंटें बनाओ ईंटें बनाओ, और तेरे दासों ने
१७ मार भी खाई है, पर दोष तेरे ही लोगों का है। फिरौन ने

कहा तुम आलसी हो, आलसी, इसी कारण कहते हो कि १८ हमें यहोवा के लिये बलि करने को जाने दे । सो अब जाकर काम करो और पुआल तुम को न दिया जाएगा १९ पर ईंटों की गिनती पूरी करनी पड़ेगी । अब इस्राएलियों के सरदारों ने यह बात सुनी कि तुम्हारी ईंटों की गिनती न घटेगी और दिन दिन उतना ही काम पूरा करना तब २० वे जान गये कि हमारे दुर्दिन आये । जब वे फ़िरौन के सम्मुख से निकले आते थे तब मूसा और हारून जो २१ उन की भेंट के लिये खड़े थे उन्हें मिले । और उन्हों ने मूसा और हारून से कहा, यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे क्योंकि तुम ने हम को फ़िरौन और उस के कर्म्मचारियों की दृष्टि में घिनौना[1] ठहरवाकर हमें घात २२ करने के लिये उन के हाथ में तलवार दे दी है । तब मूसा ने यहोवा के पास लौटकर कहा हे प्रभु तू ने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की और तू ने मुझे यहां २३ क्यों भेजा । जब से मैं तेरे नाम से बातें करने के लिये फ़िरौन के पास गया, तब से उस ने इस प्रजा से बुराई ही बुराई की है और तू ने अपनी प्रजा को कुछ भी नहीं छुड़ाया ।

१ ६. यहोवा ने मूसा से कहा अब तू देखेगा कि मैं फ़िरौन से क्या करूंगा जिस से वह उन को बरबस निकालेगा वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकाल देगा ॥

२ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं यहोवा हूं । ३ मैं अपने को सर्व्वशक्तिमान ईश्वर कहकर तो इब्राहीम इसहाक और याक़ूब को दर्शन देता था पर यहोवा नाम ४ से अपने को उन पर प्रगट न करता था । और मैं ने उन के साथ अपनी वाचा दृढ़ की है कि कनान देश जिस में ५ वे परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दूं । और इस्राएली जिन्हें मिस्री लोग दास करके रखते हैं उन का कराहना ६ भी सुनकर मैं ने अपनी वाचा की सुधि ली है । इस कारण तू इस्राएलियों से कह, कि मैं यहोवा हूं और तुम को मिस्रियों के भारों के नीचे से निकालूंगा और उन की सेवा से तुम को छुड़ाऊंगा और अपनी भुजा बढ़ाकर और ७ भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा । और मैं तुम को अपनी प्रजा होने के लिये अपना लूंगा और तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा और तुम जान लोगे कि यह जो हमें मिस्रियों के भारों के नीचे से निकालता है सो हमारा परमेश्वर यहोवा ८ है । और जिस देश के देने की किरिया[2] मैं ने इब्राहीम इसहाक और याक़ूब से खाई थी उसी में मैं तुम्हें ९ पहुंचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दूंगा मैं तो यहोवा हूं । ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को सुनाईं पर उन्हों ने मन की अधीरता और सेवा की कठिनता के मारे उस की न सुनी ॥

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू जाकर मिस्र के १०, ११ राजा फ़िरौन से कह कि इस्राएलियों को अपने देश में से जाने दे मूसा ने यहोवा से कहा देख इस्राएलियों ने मेरी १२ नहीं सुनी फिर फ़िरौन मुझ भद्दे बोलनेहारे[4] की क्योंकर सुनेगा । सो यहोवा ने मूसा और हारून को इस्राएलियों १३ और मिस्र के राजा फ़िरौन के लिये आज्ञा इस मानसा से दी कि वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले आएं ॥

उन के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये हैं । १४ इस्राएल के जेठे रूबेन के पुत्र हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी हुए इन्हीं से रूबेनवाले कुल निकले । और शिमोन १५ के पुत्र यमूएल यामीन ओहद याकिन और सोहर हुए और एक कनानी स्त्री का बेटा शाऊल भी हुआ, इन्हीं से शिमोनवाले कुल निकले । और लेवी के पुत्र जिन से १६ उन की वंशावली चली है उन के नाम ये हैं, अर्थात् गेर्शोन, कहात और मरारी । और लेवी की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस बरस की हुई । गेर्शोन के पुत्र जिन से उन १७ के कुल चले लिब्नी और शिमी हुए । और कहात के १८ पुत्र अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल हुए । और कहात की सारी अवस्था एक सौ तैंतीस बरस की हुई । और मरारी के पुत्र महली और मूशी हुए लेवीयों के कुल १९ जिन से उन की वंशावली चली ये ही हैं । अम्राम ने २० अपनी फूफी योकेबेद को ब्याह लिया और वह उस के जन्माये हारून और मूसा को जनी और अम्राम की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस बरस की हुई । और यिसहार के २१ पुत्र कोरह, नेपेग और जिक्री हुए । और उज्जीएल के २२ पुत्र मीशाएल एलसापान और सित्री हुए । और हारून २३ ने अम्मीनादाब की बेटी और नहशोन की बहिन एलीशेबा को ब्याह लिया और वह उस के जन्माये नादाब, अबीहू, एलाजार और ईतामार को जनी । और २४ कोरह के पुत्र अस्सीर एलकाना और अबीआसाप हुए, इन्हीं से कोरहियों के कुल निकले । और हारून के पुत्र २५ एलाजार ने पूतीएल की एक बेटी को ब्याह लिया और वह उस के जन्माए पीनहास को जनी कुल चलानेहारे लेवीयों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही हैं । ये वे ही हारून और मूसा हैं जिन को यहोवा ने यह २६ आज्ञा दी कि इस्राएलियों को दल दल करके मिस्र देश से निकाल ले आओ । ये वे ही मूसा और हारून हैं २७

(१) मूल में दुर्गन्धित । (२) मूल में को हाथ । (३) मूल में हाथ उठाया था ।

(४) मूल में खतनारहित होंठवाले ।

जिन्हों ने इस्राएलियों को मिस्र से निकालने की मनसा से मिस्र के राजा फ़िरौन से बात की थी॥

२८ जब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा से यह बात कही, २९ कि मैं तो यहोवा हूं सो जो कुछ मैं तुम से कहूंगा वह ३० सब मिस्र के राजा फ़िरौन से कहना, और मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया कि मैं तो बोलने में भद्दा हूं[१] सो फ़िरौन मेरी क्योंकर सुनेगा। तब यहोवा ने मूसा से

१ **७.** कहा सुन मैं तुझे फ़िरौन के लिये परमेश्वर सा ठहराता हूं और तेरा भाई हारून तेरा नबी ठहरेगा।
२ जो जो आज्ञा मैं तुझे दूं सो तू कहना और हारून उसे फ़िरौन से कहेगा, जिस से वह इस्राएलियों को अपने
३ देश से निकल जाने दे। और मैं फ़िरौन के मन को कठोर कर दूंगा और अपने चिन्ह और चमत्कार मिस्र
४ देश में बहुत से दिखाऊंगा। तौभी फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी
५ इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकालूंगा। और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ाकर इस्राएलियों को उन के बीच से निकालूंगा तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं।
६ तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार
७ ही किया। और जब मूसा और हारून फ़िरौन से बात करने लगे तब मूसा तो अस्सी बरस का और हारून तिरासी बरस का था॥

८ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से यों कहा कि
९ जब फ़िरौन तुम से कहे कि अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ तब तू हारून से कहना कि अपनी लाठी को लेकर फ़िरौन के साम्हने डाल दे कि वह अज-
१० गर बन जाए। सो मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया और जब हारून ने अपनी लाठी को फ़िरौन और उस के कर्म्मचारियों के साम्हने डाल दिया तब वह अजगर बन
११ गई। तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहों को बुलवाया और मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने तंत्र मंत्रों से वैसा
१२ ही किया। उन्हों ने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया और वे भी अजगर बन गई, पर हारून की लाठी
१३ उन की लाठियों को निगल गई। पर फ़िरौन का मन हठीला हो गया और यहोवा के कहे के अनुसार उस ने मूसा और हारून की मानने को नकारा॥

(मिस्रियों पर दस भारी विपत्तियों के पड़ने का वर्णन)

१४ तब यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन का मन कठोर
१५ हो गया है कि वह इस प्रजा को जाने नहीं देता। सो बिहान को फ़िरौन के पास जा वह तो जल की ओर बाहर आएगा और जो लाठी सर्प्प बन गई थी उस को हाथ में लिये हुए नील नदी[२] के तीर पर उस की भेंट के
१६ लिये खड़ा रहना। और उस से यों कहना कि इब्रियों के परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह कहने को तेरे पास भेजा कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगल में मेरी उपासना करें और अब लों तू ने मेरी नहीं मानी।
१७ यहोवा यों कहता है इसी से तू जानेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं, देख मैं अपने हाथ की लाठी को नील नदी[२] के जल पर मारूंगा तब वह लोहू बन जाएगा।
१८ और जो मछलियां नील नदी[२] में हैं वे मर जाएंगी और नील नदी[२] बसाने लगेगी और नदी[२] का पानी पीने
१९ को मिस्रियों का जी न चाहेगा। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून से कह कि अपनी लाठी लेकर मिस्र देश में जितना जल है अर्थात् उस की नदियां नहरें झीलें और पोखरे सब के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि वे लोहू बन जाएं और सारे मिस्र देश में के काठ और पत्थर
२० दोनों भान्ति के जलपात्रों में भी लोहू हो जाएगा। तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया अर्थात् उस ने लाठी को उठाकर फ़िरौन और उस के कर्म्मचारियों के देखते नील नदी[२] के जल पर मारा
२१ और जितना उस में जल था सब लोहू बन गया। और नील नदी[२] में जो मछलियां थीं सो मर गईं और नदी[२] बसाने लगी और मिस्री लोग नदी[२] का पानी न पी
२२ सके और सारे मिस्र देश में लोहू हो गया। तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र मंत्रों से वैसा ही किया और फ़िरौन का मन हठीला हो गया और यहोवा के कहे के
२३ अनुसार उस ने मूसा और हारून की न मानी। सो फ़िरौन इस पर भी चित्त न लगाकर और मुंह फेरके
२४ अपने घर गया। और सब मिस्री लोग पीने के पानी के लिये नील नदी[२] के आसपास खोदने लगे क्योंकि वे
२५ नदी[२] का जल न पी सकते थे। और जब यहोवा ने नील नदी[२] को मारा उस के पीछे सात दिन बीते।

१ **८.** तब यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन के पास जाकर कह यहोवा तुझ से यों कहता है कि मेरी प्रजा के
२ लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। और यदि तू उन्हें जाने न दे तो सुन मैं मेंढक भेजकर तेरे सारे
३ देश को हानि पहुंचाता हूं। और नील नदी[२] मेंढकों से भर जाएगी और वे तेरे भवन और शयन की कोठरी में और तेरे बिछौने पर और तेरे कर्म्मचारियों के घरों में और तेरी प्रजा पर बरन तेरे तन्दूरों और कठौतियों में भी

(१) मूल में खतनारहित होंठवाला हूं।

(२) मूल में योर।

४ चढ़ जाएंगे । और तुझ और तेरी प्रजा और तेरे कर्म्म-
५ चारियों सभों पर मेंढक चढ़ जाएंगे । फिर यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी कि हारून से कह कि नदियों नहरों और झीलों के ऊपर लाठी के साथ अपना हाथ बढ़ाकर मेंढकों को मिस्र देश पर चढ़ा ले आ ।
६ तब हारून ने मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और मेंढकों ने मिस्र देश पर चढ़कर उसे
७ छा लिया । और जादूगर भी अपने तंत्र मंत्रों से वैसा ही
८ मिस्र देश पर मेंढक चढ़ा ले आये । तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा यहोवा से बिनती करो कि वह मेंढकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे तब मैं तुम लोगों को जाने दूंगा कि तुम यहोवा के लिये
९ बलिदान करो । मूसा ने फिरौन से कहा इतनी बात पर तो मुझ पर तेरा घमंड रहे कि मैं तेरे और तेरे कर्म्मचारियों और प्रजा के निमित्त कब तक के लिये बिनती करूं कि यहोवा तेरे पास से और तेरे घरों में से मेंढकों को
१० दूर करे और वे केवल नील नदी[१] में पाये जाएं । उस ने कहा कल तक के लिये उस ने कहा तेरे वचन के अनुसार होगा जिस से तू जान ले कि हमारे परमेश्वर
११ यहोवा के तुल्य कोई नहीं है । सो मेंढक तेरे पास से और तेरे घरों में से और तेरे कर्म्मचारियों और प्रजा के पास
१२ से दूर होकर केवल नदी में रहेंगे । तब मूसा और हारून फिरौन के पास से निकल गये और मूसा ने उन मेंढकों के विषय यहोवा की दोहाई दी जो उस ने फिरौन पर
१३ भेजे थे । और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार किया
१४ सो मेंढक घरों और आंगनों और खेतों में मर गये । और लोगों ने इकट्ठे करके उन के ढेर लगा दिये, सो सारा
१५ देश बसाने लगा । जब फिरौन ने देखा कि आराम मिला तब यहोवा के कहे के अनुसार उस ने अपने मन को कठोर किया और उन की न सुनी ॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा हारून को आज्ञा दे कि तू अपनी लाठी बढ़ाकर भूमि की धूल पर मार कि
१७ वह मिस्र देश भर में कुटकियां बन जाए । सो उन्हों ने वैसा ही किया अर्थात् हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल पर मारा तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकी हो गईं बरन सारे मिस्र देश में भूमि
१८ की धूल कुटकी बन गई । तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र मंत्रों के बल से हम भी कुटकियां ले आएं पर यह उन से न हो सका और मनुष्यों और पशुओं
१९ दोनों पर कुटकियां बनी ही रहीं । तब जादूगरों ने फिरौन से कहा यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है[२] तो भी यहोवा के कहे के अनुसार फिरौन का मन हठीला हो गया और उस ने मूसा और हारून की न मानी ॥

२० फिर यहोवा ने मूसा से कहा बिहान को तड़के उठ कर फिरौन के साम्हने खड़ा होना वह तो जल की ओर आएगा और उस से कहना कि यहोवा तुझ से यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपा-
२१ सना करें । यदि तू मेरी प्रजा को जाने न देगा तो सुन मैं तुझ पर और तेरे कर्म्मचारियों और तेरी प्रजा पर और तेरे घरों में झुंड के झुंड डांस भेजूंगा सो मिस्रियों के घर और उन के रहने की भूमि भी डांसों से भर जाएगी ।
२२ उस दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरी प्रजा बसी है अलग करूंगा और उस में डांसों के झुंड न होंगे जिस से
२३ तू जान ले कि पृथिवी के बीच में ही यहोवा हूं । और मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊंगा यह
२४ चिन्ह कल होगा । और यहोवा ने योंही किया सो फिरौन के भवन और उस के कर्म्मचारियों के घरों में और सारे मिस्र देश में डांसों के झुंड के झुंड भर गये और डांसों
२५ के मारे वह देश नाश हुआ । तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा तुम जाकर अपने परमेश्वर के
२६ लिये इसी देश में बलिदान करो । मूसा ने कहा ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मिस्रियों की घिन की वस्तु बलि करेंगे सो यदि हम मिस्रियों के देखते उन की घिन की वस्तु बलि करें तो क्या
२७ वे हम को पत्थरवाह न करेंगे । हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जैसे वह
२८ हम से कहेगा वैसे ही बलिदान करेंगे । फिरौन ने कहा मैं तुम को जंगल में जाने दूंगा कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जंगल में बलिदान करो केवल बहुत दूर
२९ न जाना और मेरे लिये बिनती करो । सो मूसा ने कहा सुन मैं तेरे पास से बाहर जाकर यहोवा से बिनती करूंगा, कि डांसों के झुण्ड तेरे और तेरे कर्म्मचारियों और प्रजा के पास से कल ही दूर हों पर फिरौन आगे को कपट करके हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने देने में नाह न
३० करे । सो मूसा ने फिरौन के पास से बाहर जाकर यहोवा
३१ से बिनती की । और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डांसों के झुण्डों को फिरौन और उस के कर्म्मचारियों और उस की प्रजा से दूर किया यहां लों कि एक भी न
३२ रहा । तब फिरौन ने इस बार भी अपने मन को सुन्न किया और उन लोगों को जाने न दिया ॥

९. फिर यहोवा ने मूसा से कहा फिरौन के पास जाकर कह, कि इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों

(१) मूल में येर । (२) मूल में वह परमेश्वर की अंगुली है ।

२ जाने दे कि वे मेरी उपासना करें । और यदि तू उन्हें
३ जाने न दे और अब भी पकड़े रहे, तो सुन तेरे जो घोड़े
गदहे ऊंट गाय बैल भेड़ बकरी आदि पशु मैदान में हैं
उन पर यहोवा का हाथ ऐसा पड़ेगा कि बहुत भारी मरी
४ होगी । और यहोवा इस्राएलियों के पशुओं में और
मिस्रियों के पशुओं में ऐसा अन्तर करेगा, कि जो
५ इस्राएलियों के हैं उन में से कोई भी न मरेगा । फिर
यहोवा ने यह कहकर एक समय ठहराया कि मैं यह
६ काम इस देश में कल करूंगा । दूसरे दिन यहोवा ने
ऐसा ही किया और मिस्र के तो सब पशु मर गये पर
७ इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा । और फिरौन ने
लोगों को भेजा पर इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी
नहीं मरा था । तौ भी फिरौन का मन सुन्न हो गया
और उस ने उन लोगों को जाने न दिया ॥

८ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा भट्ठी में
से अपनी अपनी मुट्ठी भर राख लो और मूसा उसे फिरौन
९ के साम्हने आकाश की ओर छिटकाए । तब वह सूक्ष्म
धूल होकर सारे मिस्र देश में मनुष्यों और पशुओं दोनों
१० पर फफोलेवाले फोड़े बन जाएगी । सो वे भट्ठी में की
राख लेकर फिरौन के साम्हने खड़े हुए और मूसा ने
उसे आकाश की ओर छिटका दिया सो वह मनुष्यों
११ और पशुओं दोनों पर फफोलेवाले फोड़े बन गई । और
उन फोड़ों के कारण जादूगर मूसा के साम्हने खड़े न
रह सके, क्योंकि वे फोड़े जैसे सब मिस्रियों के वैसे ही
१२ जादूगरों के भी निकले थे । तब यहोवा ने फिरौन के
मन को हठीला कर दिया सो जैसा यहोवा ने मूसा से
कहा था उस ने उस की न सुनी ॥

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा बिहान को तड़के
उठकर फिरौन के साम्हने खड़ा हो और उस से कह
इब्रियों का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मेरी प्रजा
१४ के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें । नहीं तो
अब की बार मैं तुझ पर[१] और तेरे कर्म्मचारियों और तेरी
प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तियां डालूंगा इस लिये कि
तू जान ले कि सारी पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं है ।
१५ मैं ने अब हाथ बढ़ा कर तुझे और तेरी प्रजा को मरी से
मारा होता तो तू पृथिवी पर से सत्यानाश हो गया होता ।
१६ पर सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाये रक्खा है कि
तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊं और अपना नाम सारी
१७ पृथिवी पर प्रसिद्ध करूं । क्या तू अब भी मेरी प्रजा को
१८ बान्ध सा रोकता है कि उसे जाने न दे । सुन कल मैं इसी
समय ऐसे भारी भारी ओले बरसाऊंगा कि जिन के तुल्य

(१) मूल में तेरे हृदय पर ।

मिस्र की नेव पड़ने के दिन से ले अब लों कभी नहीं पड़े ।
सो अब लोगों को भेजकर अपने पशुओं को और मैदान १९
में तेरा जो कुछ है सब को फुर्ती से आड़ में करा ले नहीं
तो जितने मनुष्य वा पशु मैदान में रहें और घर में इकट्ठे
न किये जाएं उन पर ओले गिरेंगे और वे मर जाएंगे ।
सो फिरौन के कर्म्मचारियों में से जो लोग यहोवा के २०
वचन का भय मानते थे उन्हों ने तो अपने अपने सेवकों
और पशुओं को घर में हांक दिया । पर जिन्हों ने यहोवा २१
के वचन पर मन न लगाया उन्हों ने अपने सेवकों और
पशुओं को मैदान में रहने दिया ॥

तब यहोवा ने मूसा से कहा अपना हाथ आकाश २२
की ओर बढ़ा कि सारे मिस्र देश के मनुष्यों पशुओं और
खेतों की सारी उपज पर ओले गिरें । सो मूसा ने अपनी २३
लाठी को आकाश की ओर बढ़ाया और यहोवा गरजाने
और ओले बरसाने लगा और आग पृथिवी लों आती
रही, सो यहोवा ने मिस्र देश पर ओले गिराये । जो २४
ओले गिरते थे उन के साथ आग भी लिपटती जाती थी
और वे ओले ऐसे अत्यन्त भारी थे कि जब से मिस्र देश
बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे कभी न पड़े थे । सो २५
मिस्र भर के खेतों में क्या मनुष्य क्या पशु जितने थे सब
ओलों से मारे गये और ओलों से खेत की सारी उपज
मारी पड़ी और मैदान के सब वृक्ष भी टूट गये । केवल २६
गोशेन देश में जहां इस्राएली बसे थे ओले न गिरे । तब २७
फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवा भेजा और उन से
कहा कि इस बार तो मैं ने पाप किया है यहोवा धर्म्मी
है और मैं और मेरी प्रजा अधर्म्मी । परमेश्वर का गरजना २८
और ओले बरसाना तो बहुत हो गया, सो यहोवा से
बिनती करो तब मैं तुम लोगों को जाने दूंगा और तुम
आगे को न रोके जाओगे । मूसा ने उस से कहा नगर २९
से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊंगा तब
बादल का गरजना बन्द हो जाएगा और ओले फिर न
गिरेंगे इस से तू जान लेगा कि पृथिवी यहोवा ही की
है । तौ भी मैं जानता हूं कि न तो तू और न तेरे कर्म्मचारी ३०
यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे । सन और यव तो मारे ३१
पड़े क्योंकि यव की बालें निकल चुकी थीं और सन में
फूल लगे हुए थे । पर गोहूं और कठिया गोहूं जो बढ़े ३२
हुए न थे इस से वे मारे न गये । जब मूसा ने फिरौन के ३३
पास से नगर के बाहर निकलकर यहोवा की ओर हाथ
फैलाये तब बादल का गरजना और ओलों का बरसना
बन्द हुआ और फिर बहुत मेंह भूमि पर न पड़ा । यह देखकर ३४
कि मेंह और ओले और बादल का गरजना बन्द हो गया
फिरौन ने अपने कर्म्मचारियों समेत फिर अपने मन को

१५ कठोर करके पाप किया। और फरौन का मन हठीला हुआ और उस ने इस्राएलियों को जाने न दिया जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलाया था॥

१०. **फिर** यहोवा ने मूसा से कहा फिरौन के पास जा क्योंकि मैं ही ने उस के और उस के कर्म्मचारियों के मन को इस लिये कठोर कर दिया कि अपने वे चिन्ह उन के बीच २ दिखाऊं। और तुम लोग अपने बेटों पोतों से इस का वर्णन करो कि यहोवा ने मिस्रियों को कैसे ठट्ठों में उड़ाया और अपने क्या क्या चिन्ह उन के बीच प्रगट किये, जिस से तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। ३ तब मूसा और हारून ने फिरौन के पास जाकर कहा कि इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि मेरे आगे दबने को तू कब लों नकारता रहेगा मेरी प्रजा ४ के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें। यदि तू मेरी प्रजा को जाने देना नकारता रहे तो सुन कल ५ मैं तेरे देश में टिड्डियां ले आऊंगा। और वे धरती को ऐसा छा लेंगी कि वह देख न पड़ेगी और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है उस को वे चट कर जाएंगी और तुम्हारे जितने वृक्ष मैदान में लगे हैं उन को भी ६ वे चट कर जाएंगी। और वे तेरे और तेरे सारे कर्म्मचारियों निदान सारे मिस्रियों के घरों में भर जाएंगी इतनी टिड्डियां तेरे बापदादों ने वा उन के पुरखाओं ने जब से पृथिवी पर जन्मे तब से आज लों कभी न देखीं। ७ और वह मुंह फेरके फिरौन के पास से बाहर गया। तब फिरौन के कर्म्मचारी उस से कहने लगे वह जन कब लों हमारे लिये फन्दा बना रहेगा उन मनुष्यों को जाने दे कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करें क्या तू अब ८ लों नहीं जानता कि मिस्र भर नाश हो गया है। तब मूसा और हारून फिरौन के पास फिर बुला लिये गये और उस ने उन से कहा चले जाओ अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, पर जानेहारे कौन कौन हैं। ९ मूसा ने कहा हम तो बेटों बेटियों भेड़ बकरियों गाय बैलों सब समेत बरन बच्चों से बूढ़ों तक सब के सब १० जाएंगे क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्व करना है। उस ने उन से कहा यहोवा यों ही तुम्हारे संग रहे कि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने दूं देखो तुम बुराई ही की ११ कल्पना करते हो। नहीं ऐसा न होने पाएगा तुम पुरुष ही जाकर यहोवा की उपासना करो तुम यही तो मांगा करते थे। और वे फिरौन के पास से निकाल दिये गये॥

१२ तब यहोवा ने मूसा से कहा मिस्र देश के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि टिड्डियां मिस्र देश पर चढ़के भूमि का जितना अन्नादि ओलों से बचा है सब को चट कर जाएं। और मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के १३ ऊपर बढ़ाया तब यहोवा ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई बहाई और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई में टिड्डियां आईं। और टिड्डियों ने चढ़के मिस्र देश के १४ सारे स्थानों में बसेरा किया, उन का दल बहुत भारी था बरन न तो उन से पहिले ऐसी टिड्डियां आई थीं और न उन के पीछे ऐसी फिर आएंगी। वे तो सारी धरती पर १५ छा गईं यहां लों कि देश अंधेरा हो गया और उस का सारा अन्नादि और वृक्षों के सब फल निदान जो कुछ ओलों से बचा था सब को उन्हों ने चट कर लिया, यहां लों कि मिस्र देश भर में न तो किसी वृक्ष पर कुछ हरियाली रह गई और न खेत के किसी अन्नादि में। तब फिरौन ने फुर्ती से मूसा और हारून को बुलवाके १६ कहा, मैं ने तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है। सो अब की बार मेरा अपराध १७ क्षमा करो और अपने परमेश्वर यहोवा से बिनती करो कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे। तब १८ मूसा ने फिरौन के पास से निकल कर यहोवा से बिनती की। तब यहोवा ने उलटे बहुत प्रचण्ड पछुवां बहाकर १९ टिड्डियों को उड़ाकर लाल समुद्र में डाल दिया और मिस्र के किसी स्थान में एक भी टिड्डी न रह गई। तौ भी २० यहोवा ने फिरौन के मन को हठीला कर दिया इस से उस ने इस्राएलियों को जाने न दिया॥

फिर यहोवा ने मूसा से कहा अपना हाथ आकाश २१ की ओर बढ़ा कि मिस्र देश के ऊपर अन्धकार छा जाए ऐसा अन्धकार कि उस का स्पर्श तक हो सके। तब मूसा २२ ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया और सारे मिस्र देश में तीन दिन लों घोर अन्धकार छाया रहा। तीन २३ दिन लों न तो किसी ने किसी को देखा और न कोई अपने स्थान से उठा पर सारे इस्राएलियों के घरों में उजियाला रहा। तब फिरौन ने मूसा को बुलवाकर कहा २४ तुम लोग जाओ यहोवा की उपासना करो अपने बालकों को भी संग लिये जाओ केवल अपनी भेड़बकरी और गाय बैल को छोड़ जाओ। मूसा ने कहा तुझ को हमारे २५ हाथ मेलबलि और होमबलि के पशु भी देने पड़ेंगे जिन्हें हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये चढ़ाएं। सो हमारे २६ पशु भी हमारे संग जाएंगे उन का एक खुर लों न रह जाएगा क्योंकि उन्हीं में से हम को अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा और हम जब लों वहां न पहुंचें तब लों नहीं जानते कि क्या क्या

२७ लेकर यहोवा की उपासना करनी होगी। पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया इस से उस ने उन्हें
२८ जाने न दिया। सो फिरौन ने उस से कहा मेरे साम्हने से चला जा और सचेत रह मुझे अपना मुख फिर न दिखाना क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुंह दिखाए
२९ उसी दिन तू मारा जाएगा। मूसा ने कहा कि तू ने ठीक कहा है मैं तेरे मुंह को फिर कभी न देखूंगा॥

११. फिर यहोवा ने मूसा से कहा एक और विपत्ति मैं फिरौन और मिस्र देश पर डालता हूं उस के पीछे वह तुम लोगों को यहां से जाने देगा और जब वह जाने देगा तब तुम सभों को
२ निश्चय निकाल देगा। मेरी प्रजा को मेरी यह आज्ञा सुना कि एक एक पुरुष अपने अपने पड़ोसी और एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसन से सोने चांदी के गहने मांग ले। तब
३ यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया। इस से अधिक वह पुरुष मूसा मिस्र देश में फिरौन के कर्म्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान् था॥

४ फिर मूसा ने कहा यहोवा यों कहता है कि आधी रात
५ के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूंगा। तब मिस्र में सिंहासन पर विराजनेहारे फिरौन से लेकर चक्की पीसनेहारी दासी तक सब के पहिलौठे वरन पशुओं तक
६ के सब पहिलौठे मर जाएंगे। और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा यहां लों कि उस के समान न तो
७ कभी हुआ और न होगा। पर इस्राएलियों के विरुद्ध क्या मनुष्य क्या पशु किसी पर कोई कुत्ता भी न भौंकेगा जिस से तुम जान लो कि मिस्रियों और इस्राएलियों में
८ मैं यहोवा अन्तर करता हूं। तब तेरे ये सब कर्म्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत् करके यह कहेंगे कि अपने सब अनुचरों समेत निकल जा और उस के पीछे मैं निकल ही जाऊंगा। यह कह के मूसा भड़के हुए कोप के साथ फिरौन के पास से निकल गया॥

९ यहोवा ने तो मूसा से कह दिया था कि फिरौन तुम्हारी न सुनेगा क्योंकि मेरी इच्छा है कि मिस्र देश में
१० बहुत चमत्कार करूं। सो मूसा और हारून ने फिरौन के साम्हने ये सब चमत्कार किये पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया इस से उस ने इस्राएलियों को अपने देश से जाने न दिया॥

(फसह नाम पर्व्व का विधान और इस्राएलियों का कूच करना)

१२. फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और
२ हारून से कहा कि यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे अर्थात् बरस का
३ पहिला महीना यही ठहरे। इस्राएल की सारी मण्डली से यों कहो कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार घराने पीछे एक एक
४ मेम्ना ले रक्खो। और यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिये मनुष्य कम हों तो वह अपने सब से निकट रहनेहारे पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रक्खे तुम एक एक के खाने के
५ अनुसार मेम्ने का लेखा करना। तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और पहिले बरस का नर हो और उसे चाहे भेड़ों में से
६ लेना चाहे बकरियों में से। और इस महीने के चौदहवें दिन लों उसे रख छोड़ना और उस दिन गोधूलि के समय
७ इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें। तब वे उस के लोहू में से कुछ लेकर जिन घरों में मेम्ने को खाएंगे उन के द्वार के दोनों बाजुओं और चौखट के
८ सिरे पर लगाएं। और वे उस के मांस को उसी रात में आग से भूंजकर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के
९ साथ खाएं। उस को सिर पैर और अन्तरियों समेत आग में भूंजकर खाना कच्चा वा जल में कुछ भी
१० सिझाकर न खाना। और उस में से कुछ बिहान लों न रहने देना और यदि कुछ बिहान लों रह भी जाए तो
११ उसे आग में जला देना। और उस के खाने की यह विधि है कि कटि बांधे पांव में जूती पहिने और हाथ में लाठी लिये हुए उसे फुर्ती से खाना वह तो यहोवा का
१२ फसह[1] होगा। क्योंकि उस रात में मैं मिस्र देश के बीच होकर जाऊंगा और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु सब के पहिलौठों को मारूंगा और मिस्र के सारे देवताओं
१३ को भी मैं दण्ड दूंगा, मैं तो यहोवा हूं। और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लोहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुम को छोड़[2] जाऊंगा और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश
१४ न होगे। और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेहारा ठहरेगा और तुम उस को यहोवा के लिये पर्व्व करके मानना वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्व्व
१५ माना जाए। सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना उन में से पहिले ही दिन अपने अपने घर में से खमीर उठा डालना, वरन जो कोई पहिले दिन से लेकर सातवें दिन लों कोई खमीरी वस्तु खाए वह प्राणी इस्राएलियों
१६ में से नाश किया जाए। और पहिले दिन एक पवित्र सभा और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा करना उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए केवल जिस प्राणी

(१) अर्थात् लांघनपर्व्व। (२) मूल में लांघके।

१७ का जो खाना हो उस के काम करने की आज्ञा है । सो तुम बिन खमीर की रोटी का पर्ब मानना क्योंकि उसी दिन[1] मैं तुम को दल दल करके मिस्र देश से निकालूंगा इस कारण वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की
१८ विधि जानकर माना जाए । पहिले महीने के चौदहवें दिन की सांझ से लेकर इक्कीसवें दिन की सांझ लों तुम अख-
१९ मीरी रोटी खाया करना । सात दिन लों तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न रहे बरन जो कोई किसी खमीरी वस्तु को खाए चाहे वह देशी हो चाहे परदेशी वह प्राणी
२० इस्राएलियों की मण्डली से नाश किया जाए । कोई खमीरी वस्तु न खाना अपने सब घरों में बिन खमीर ही की रोटी खाया करना ॥

२१ तब मूसा ने इस्राएल के सब पुरनियों को बुलाकर कहा तुम अपने अपने कुल के अनुसार एक एक मेम्ना
२२ अलग कर रक्खो और फसह[2] का पशु बलि करना । और उस का लोहू जो तसले में होगा उस में जूफा का एक गुच्छा बोरकर उसी तसले में के लोहू से द्वार के चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं पर कुछ लगाना और
२३ भोर लों तुम में से कोई घर से बाहर न निकले । क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर मिस्रियों को मारता जाएगा सो जहां जहां वह चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं पर उस लोहू को देखे वहां वहां वह उस द्वार को छोड़ जाएगा और नाश करनेहारे को तुम्हारे घरों में मारने के
२४ लिये न जाने देगा । फिर तुम इस विधि को अपने और अपने वंश के लिये सदा की विधि जानकर माना करो ।
२५ जब तुम उस देश में जिसे यहोवा अपने कहे के अनुसार तुम को देगा प्रवेश करो तब यह काम किया करना ।
२६ और जब तुम्हारे लड़केबाले तुम से पूछें कि इस काम से
२७ तुम्हारा क्या प्रयोजन है, तब तुम उन को यह उत्तर देना कि यहोवा ने जो मिस्रियों के मारने के समय मिस्र में रहते हुए हम इस्राएलियों के घरों को छोड़के[3] हमारे घरों को बचाया, इसी कारण उस के फसह[2] का यह बलिदान किया जाता है तब लोगों ने सिर झुकाकर
२८ दण्डवत् की । और इस्राएलियों ने जाके जो आज्ञा यहोवा ने मूसा और हारून को दी थी उसी के अनुसार किया ॥

२९ आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर बिराजनेहारे फिरौन से लेकर गड़हे में पड़े हुए बन्धुए तक सब के पहिलौठों को बरन पशुओं तक के सब पहिलौठों
३० को मार डाला । और फिरौन रात ही को उठ बैठा और उस के सब कर्म्मचारी बरन सारे मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा हाहाकार मचा क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिस

(१) मूल में आज ही के दिन । (२) अर्थात् लांघनपर्ब । (३) मूल में लांघ ।

में कोई मरा न हो । तब फिरौन ने रात ही रात में मूसा ३१ और हारून को बुलवाकर कहा तुम इस्राएलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ और अपने कहे के अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो । अपने कहे के ३२ अनुसार अपनी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को साथ ले जाओ और मुझे आशीर्वाद दे जाओ । और मिस्री जो ३३ कहते थे कि हम तो सब मर मिटे हैं सो उन्हों ने इस्राएली लोगों को दबाके कहा कि देश से झटपट निकल जाओ । सो उन्हों ने अपने गूंधे गुन्धाये आटे को बिना खमीर ३४ दिये ही कठौतियों समेत कपड़ों में बान्धके अपने अपने कन्धे पर चढ़ा लिया । और इस्राएलियों ने मूसा के कहे ३५ के अनुसार मिस्रियों से सोने चांदी के गहने और वस्त्र मांग लिये । और यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा के ३६ लोगों पर ऐसा दयालु किया कि उन्हों ने जो जो मांगा सो सो दिया । सो इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया ॥

तब इस्राएली रामसेस से कूच करके सुक्कोत को ३७ चले और बालबच्चों को छोड़ वे कोई छः लाख पुरुष प्यादे थे । और उन के साथ मिली जुली हुई एक भीड़ ३८ गई और भेड़ बकरी गाय बैल बहुत से पशु भी साथ गये । सो जो गूंधा आटा वे मिस्र से साथ ले गये उस की ३९ उन्हों ने बिन खमीर दिये रोटियां बनाईं क्योंकि वे मिस्र से ऐसे बरबस निकाले गये कि बिलम्ब न कर सके और न मार्ग में खाने के लिये कुछ बना सके थे इसी से वह गूंधा आटा बिन खमीर का था । मिस्र में बसे हुए ४० इस्राएलियों को चार सौ तीस बरस बीत गये थे । और ४१ उन चार सौ तीस बरसों के बीते पर ठीक उसी दिन यहोवा की सारी सेना मिस्र देश से निकल गई । यहोवा ४२ जो इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल लाया इस कारण वह रात उस के निमित्त मानने के अति योग्य है यह यहोवा की वही रात है जिस का पीढ़ी पीढ़ी में मानना इस्राएलियों को अति अवश्य है ॥

फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा फसह[1] की ४३ विधि यह है कि कोई परदेशी उस में से न खाए । पर ४४ जो किसी का मोल लिया हुआ दास हो और तुम लोगों ने उस का खतना किया हो वह तो उस में से खा सकेगा । पर उपरी और मजूर उस में से न खाएं । ४५ उस का खाना एक ही एक घर में हो अर्थात् तुम उस के ४६ मांस में से कुछ घर से बाहर न ले जाना । और बलिपशु की कोई हड्डी न तोड़ना । फसह[1] का मानना इस्राएल ४७ की सारी मण्डली का कर्त्तव्य कर्म्म है । और यदि कोई ४८ परदेशी तुम लोगों के संग रहकर यहोवा के लिये फसह[1]

(१) अर्थात् लांघन पर्ब ।

को मानना चाहे तो वह अपने यहां के सब पुरुषों का खतना कराए तब वह समीप आकर उस को माने और वह तो देशी मनुष्य के बराबर ठहरे पर कोई खतनारहित

४९ पुरुष उस में से न खाने पाए। उस की व्यवस्था देशी और तुम्हारे बीच में रहनेहारे परदेशी दोनों के लिये एक

५० ही हो। यह आज्ञा जो यहोवा ने मूसा और हारून को

५१ दी उस के अनुसार सारे इस्राएलियों ने किया। और ठीक उसी दिन यहोवा इस्राएलियों को मिस्र देश से दल दल करके निकाल ले गया॥

२ **१३. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा कि क्या मनुष्य के क्या पशु के इस्राएलियों में जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे हों उन्हें मेरे लिये पवित्र मानना वह तो मेरा ही है॥

३ फिर मूसा ने लोगों से कहा इस दिन को स्मरण रक्खो जिस में तुम लोग दासत्व के घर अर्थात् मिस्र से निकल आये हो यहोवा तो तुम को वहां से अपने हाथ के बल से निकाल लाया, खमीरी रोटी न खाई जाए।

४ आबीब महीने के इसी दिन में तुम निकलने लगे हो।

५ सो जब यहोवा तुम को कनानी हित्ती एमोरी हिव्वी और यबूसी लोगों के देश में पहुंचाएगा जिस के तुम्हें देने की उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई थी और उस में दूध और मधु की धारा बहती हैं तब तुम इसी महीने में यह

६ काम करना। सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना

७ और सातवें दिन यहोवा के लिये पर्व मानना। इन सातों दिनों में अखमीरी रोटी खाई जाए बरन तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी न खमीर तुम्हारे पास देखने में आए।

८ और अगले समय[१] तुम अपने अपने बेटे को यह कहके समझा देना कि यह तो हम उसी काम के कारण करते हैं जो यहोवा ने हमारे मिस्र से निकल आने के समय हमारे

९ लिये किया था। फिर यह तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ पर की चिन्हानी और तुम्हारी भौंओं के बीच की स्मरण करानेहारी वस्तु का काम दे जिस से यहोवा की व्यवस्था तुम्हारे मुंह पर रहे क्योंकि यहोवा तुम्हें बलवन्त हाथ से मिस्र से

१० निकाल लाया है। इस कारण तुम इस विधि को बरस बरस नियत समय पर माना करना॥

११ फिर जब यहोवा उस किरिया के अनुसार जो उस ने तुम्हारे पितरों से और तुम से भी खाई है तुम्हें कना-

१२ नियों के देश में पहुंचाकर उस को तुम्हें देगा, तब तुम में से जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे हों उन को और तुम्हारे पशुओं में जो ऐसे हों उन को भी यहोवा के लिये अर्पण करना, नर तो यहोवा के हैं। और गदही

१३ के हर एक पहिलौठे की सन्ती मेम्ना देकर उस को छुड़ा लेना और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो तो उस का गला तोड़ देना पर अपने सब पहिलौठे पुत्रों को बदला देकर छुड़ा लेना। और आगे के दिनों में जब तुम्हारे

१४ बेटे तुम से पूछें कि यह क्या है, तो उन से कहना कि यहोवा हम लोगों को दासत्व के घर से अर्थात् मिस्र देश से हाथ के बल से निकाल लाया है। उस समय जब

१५ फिरौन कठोर होकर हमें छोड़ना नकारता था तब यहोवा ने मिस्र देश में मनुष्य से लेकर पशु लों सब के पहिलौठों को मार डाला इसी कारण पशुओं में से तो जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे नर हैं उन्हें हम यहोवा के लिये बलि करते हैं पर अपने सब पहिलौठे पुत्रों को हम बदला देकर छुड़ा लेते हैं। और यह तुम्हारे हाथों पर

१६ चिन्हानी सी और तुम्हारे भौंओं के बीच टीका सा ठहरे क्योंकि यहोवा हम लोगों को मिस्र से हाथ के बल से निकाल लाया है॥

१७ जब फिरौन ने लोगों को जाने दिया तब यद्यपि पलिश्तियों के देश होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था तौ भी परमेश्वर यह सोच के उन को उस मार्ग से न ले गया कि कहीं ऐसा न हो कि जब ये लोग लड़ाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएं। सो परमेश्वर उन

१८ को चक्कर खिलाकर लाल समुद्र के जंगल के मार्ग से ले चला। और इस्राएली पांति बांधे हुए मिस्र से चले गये।

१९ और मूसा यूसुफ की हड्डियों को साथ लेता गया क्योंकि यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहके कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा उन को इस विषय की दृढ़ किरिया खिलाई थी कि हम तेरी हड्डियों को अपने साथ यहां से ले

२० जाएंगे। फिर उन्हों ने सुक्कोत से कूच करके जंगल की

२१ छोर पर एताम में डेरा किया। और यहोवा उन्हें दिन को तो मार्ग दिखाने के लिये बादल के खंभे में और रात को उजियाला देने के लिये आग के खंभे में होकर उन के आगे आगे चला करता था कि वे रात और दिन दोनों

२२ में चल सकें। उस ने न तो बादल के खंभे को दिन में न आग के खंभे को रात में लोगों के आगे से हटाया॥

(इस्राएल के लाल समुद्र के पार जाने का वर्णन)

२ **१४. यहोवा** ने मूसा से कहा। इस्राएलियों को आज्ञा दे कि तुम फिरके मिगदोल और समुद्र के बीच पीहहीरोत के सन्मुख बालसपोन के साम्हने अपने डेरे खड़े करो उसी के

३ साम्हने समुद्र के तीर पर डेरे खड़े करो। तब फिरौन इस्राएलियों के विषय में सोचेगा कि वे देश में बझे हैं

(१) मूल में उस दिन।

४ जंगल के कारण फंस गये हैं । सो मैं फिरौन के मन को हठीला कर दूंगा और वह उन का पीछा करेगा, सो फिरौन और उस की सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं । और उन्हों ५ ने वैसा ही किया । जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गये, तब फिरौन और उस के कर्मचारियों का मन उन के विरुद्ध फिर गया और वे कहने लगे हम ने यह क्या किया कि इस्राएलियों ६ को अपनी सेवकाई से छुटकारा देकर जाने दिया । तब उस ने अपना रथ जुतवाया और अपनी सेना को संग ७ लिया । सो उस ने छः सौ अच्छे से अच्छे रथ बरन मिस्र ८ के सब रथ लिये और उन सभों पर सरदार बैठाये । और यहोवा ने मिस्र के राजा फिरौन के मन को हठीला कर दिया सो उस ने इस्राएलियों का पीछा किया और इस्राएली ९ तो बेखटके[1] निकले चले जाते थे । पर फिरौन के सब घोड़ों और रथों और सवारों समेत मिस्री सेना ने उन का पीछा करके उन्हें जो पीहहीरोत के पास बालसपोन के साम्हने समुद्र के तीर पर डेरे डाले पड़े थे जा लिया ।

१० जब फिरौन निकट आया तब इस्राएलियों ने आंखें उठाकर देखा कि मिस्री हमारा पीछा किये चले आते हैं और इस्राएलियों ने अति भय खाकर चिल्लाकर ११ यहोवा की दोहाई दी । और वे मूसा से कहने लगे क्या मिस्र में कबरें न थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये जंगल में ले आया है, तू ने हम से यह क्या किया कि १२ हम को मिस्र से निकाल लाया । क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते रहे, कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियों की सेवा करें । हमारे लिये जंगल में मरने से १३ मिस्रियों की सेवा करनी अच्छी थी । मूसा ने लोगों से कहा डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो उन को फिर कभी न देखोगे । १४ यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, सो तुम चुपचाप रहो ॥

१५ तब यहोवा ने मूसा से कहा तू क्यों मेरी दोहाई दे रहा है इस्राएलियों को आज्ञा दे कि यहां से कूच १६ करो । और तू अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा और वह दो भाग हो जायगा, तब इस्राएली समुद्र के बीच होकर स्थल ही स्थल चले जाएं । १७ और सुन मैं आप मिस्रियों के मन को हठीला करता हूं और वे उन का पीछा करके समुद्र में पैठेंगे तब फिरौन और उस की सारी सेना और रथों और सवारों के द्वारा मेरी १८ महिमा होगी । सो जब फिरौन और उस के रथों और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं । १९ तब परमेश्वर का दूत जो इस्राएली सेना के आगे आगे चला करता था, सो जाकर उन के पीछे हो गया और बादल का खंभा उन के आगे से हटकर उन के पीछे जा ठहरा । २० सो वह मिस्रियों की सेना और इस्राएलियों की सेना के बीच आ गया और बादल और अन्धकार तो हुआ तौ भी उस ने रात को प्रकाशित किया और वे रात भर एक दूसरे के पास न आये । २१ और मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई और समुद्र को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया कि उस के बीच सूखी भूमि हो गई । २२ तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल होकर चले और जल उनकी दहिनी और बाईं ओर भीत का काम देता था । २३ तब मिस्री अर्थात् फिरौन के सब घोड़े रथ और सवार उन का पीछा किये हुए समुद्र के बीच में चले गये । २४ और रात के पिछले पहर में यहोवा ने बादल और आग के खंभे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया । २५ और उस ने उन के रथों के पहियों को निकाल डाला सो उन का चलाना कठिन हो गया तब मिस्री आपस में कहने लगे आओ हम इस्राएलियों से भागें क्योंकि यहोवा उन की ओर से मिस्रियों के साथ लड़ता है ॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा कि जल मिस्रियों और उन के रथों और सवारों पर फिर बह आए । २७ तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और भोर होते होते क्या हुआ कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने बल पर आने लगा और मिस्री उस के उलटे भागने लगे पर यहोवा ने उन को समुद्र के बीच झटक दिया । २८ और जल पलटने से जितने रथ और सवार इस्राएलियों के पीछे समुद्र में आये थे सो सब बरन फिरौन की सारी सेना उस में डूब गई और उस में से एक भी न बचा । २९ पर इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल होकर चले गये और जल उन की दहिनी और बाईं दोनों ओर भीत का काम देता था । ३० सो यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वश से छुड़ाया और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के तीर पर मरे पड़े हुए देखा । ३१ और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना हाथ बलवन्त दिखाया उस को इस्राएलियों ने देखकर यहोवा का भय माना और यहोवा की और उस के दास मूसा की भी प्रतीति की ॥

१५. तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया । उन्हों ने कहा

(१) मूल में ऊंचे हाथ के साथ ।

मैं यहोवा का गीत गाऊंगा क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा;
घोड़ों समेत सवारों को उस ने समुद्र में डाल दिया है ॥
२ याह मेरा बल और भजन का विषय है
और वह मेरा उद्धार ठहर गया है,
मेरा ईश्वर वही है मैं उस की स्तुति करूंगा,
मेरे पितर का परमेश्वर वही है, मैं उस को सराहूंगा ।
३ यहोवा योद्धा है,
उस का नाम यहोवा ही है ॥
४ फिरौन के रथों और सेना को उस ने समुद्र में डाल दिया,
और उस के उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गये ॥
५ गहिरे जल ने उन्हें ढांप लिया,
वे पत्थर की नाईं गहिरे स्थानों में डूब गये ॥
६ हे यहोवा तेरा दहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ
हे यहोवा तेरा दहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है ॥
७ और तू अपने विरोधियों को अपने अति प्रताप से गिरा देता है ।
तू अपना कोप भड़काता और वे भूसे की नाईं भस्म हो जाते हैं ।
८ और तेरे नथनों की सांस से जल की राशि हो गई ॥
धाराएं ढेर की नाईं थंम गईं,
समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम गया ॥
९ शत्रु ने कहा था
मैं पीछा करूंगा मैं जा पकड़ूंगा, मैं लूट को बांट लूंगा
उन से मेरा जी भर जाएगा,
मैं अपनी तलवार खींचते ही अपने हाथ से उन को नाश कर डालूंगा ॥
१० तू ने अपने श्वास का पवन चलाया तब समुद्र ने उन को ढांप लिया ॥
वे महाजलराशि में सीसे की नाईं डूब गये ॥
११ हे यहोवा देवताओं में तेरे तुल्य कौन है,
तू तो पवित्रता के कारण प्रतापी और अपनी स्तुति करनेहारों के भय के योग्य
और आश्चर्यकर्म्म का कर्त्ता है ॥
१२ तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया है
पृथिवी उन को निगले जाती है ॥
१३ अपनी करुणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है,
अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवासस्थान को ले चला है ।
१४ देश देश के लोग सुनकर कांप उठेंगे
पलिश्तियों के मानों पीड़ें उठेंगी ॥
१५ तब एदोम के अधिपति भभर जाएंगे ।
मोआब के महाबलियों को थरथराहट पकड़ेगी
सब कनाननिवासी गल जाएंगे ॥
१६ उन में त्रास और घबराहट समाएगी
तेरी बांह के प्रताप से वे पत्थर की नाईं अनबोल हो जाएंगे,
तब लों हे यहोवा तेरी प्रजा के लोग पार होंगे
तब लों तेरी मोल ली हुई प्रजा के लोग पार हो जाएंगे ।
१७ तू उन्हें पहुंचाकर अपने निज भागवाले पहाड़ पर रोपेगा
यह वही स्थान है, हे यहोवा जिसे तू ने अपने निवास के लिये बनाया
और वही पवित्रस्थान है जिसे हे प्रभु तू ने आप ही स्थिर किया है ॥
१८ यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा ।

१९ यह गीत गाने का कारण यह है कि फिरौन के घोड़े रथों और सवारों समेत समुद्र के बीच में पैठ गये और यहोवा उन के ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया पर इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल होकर चले गये। २० और हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया और सब स्त्रियां डफ लिये नाचती हुई उस के पीछे हो लीं । २१ और मरियम उन के साथ यह टेक गाती गई कि ।
यहोवा का गीत गाओ क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है
घोड़ों समेत सवारों को उस ने समुद्र में डाल दिया है ॥

२२ तब मूसा ने इस्राएलियों को लाल समुद्र से कूच कराया और वे शूर नाम जंगल में निकल गये और जंगल में जाते हुए तीन दिन लों पानी न पाया । २३ फिर मारा नाम एक स्थान पर पहुंचकर वहां का पानी जो खारा था सो उसे न पी सके इस कारण उस स्थान का नाम मारा[1] पड़ा । २४ सो वे यह कहकर मूसा के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे कि हम क्या पीएं । २५ तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी और यहोवा ने उसे एक पेड़ बतला दिया जिसे जब उस ने पानी में डाला तब वह पानी मीठा हो गया । वहीं यहोवा ने उन के लिये एक विधि और नियम ठहराया और वहीं उस ने यह कहकर उन की परीक्षा की, २६ कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने और जो उस की दृष्टि में ठीक है वही करे और उस की आज्ञाओं पर कान लगाए और उस की सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों के उपजाये थे उन में से एक भी तेरे न उपजाऊंगा क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेहारा यहोवा हूं ॥

(१) अर्थात् खारा व कड़ुआ ।

(इस्राएलियों को आकाश से रोटी और चटान में से पानी मिलने का वर्णन)

२७ तब वे एलीम को आये जहां पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे और वहां उन्हों ने जल के पास डेरे खड़े किये।

१६. १ फिर एलीम से कूच करके इस्राएलियों की सारी मण्डली मिस्र देश से निकलने के महीने के दूसरे महीने के पंद्रहवें दिन को सीन नाम जंगल में जो एलीम और सीनै पर्वत के बीच में है २ आ पहुंची। जंगल में इस्राएलियों की सारी मंडली मूसा ३ और हारून के विरुद्ध कुड़कुड़ाई। और इस्राएली उन से कहने लगे कि जब हम मिस्र देश में मांस की हांडियों के पास बैठकर मनमाना भोजन खाते थे तब यदि हम यहोवा के हाथ से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था, पर तुम हम को इस जंगल में इस लिये निकाल ले आये हो कि ४ इस सारे समाज को भूखों मार डालो। तब यहोवा ने मूसा से कहा सुन, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजनवस्तु बरसाऊंगा और ये लोग दिन दिन बाहर जाकर दिन दिन का भोजन बटोरा करेंगे, इस से मैं उन की परीक्षा करूंगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि ५ नहीं। और छठवें दिन वह भोजन और दिनों से दूना होगा सो जो कुछ ये उस दिन बटोरें उसे तैयार कर ६ रक्खें। तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा, सांझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्र देश ७ से निकाल ले आया है वह यहोवा है। और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा। क्योंकि तुम यहोवा पर जो कुड़कुड़ाते हो उसे वह सुनता है और हम क्या हैं कि ८ तुम हम पर कुड़कुड़ाते हो। फिर मूसा ने कहा यह कब होगा जब यहोवा सांझ को तो तुम्हें खाने के लिये मांस और भोर को रोटी मनमानते देगा, क्योंकि तुम जो उस पर कुड़कुड़ाते हो उसे वह सुनता है और हम क्या हैं तुम्हारा ९ कुड़कुड़ाना हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है। फिर मूसा ने हारून से कहा इस्राएलियों की सारी मण्डली को आज्ञा दे कि यहोवा के साम्हने वरन उस के समीप आओ १० क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना है। हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली से ऐसी ही बातें कर रहा था कि उन्हों ने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा कि बादल ११ में यहोवा का तेज देख पड़ता है। तब यहोवा ने मूसा १२ से कहा इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना मैं ने सुना है सो उन से कह दे कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे और तुम यह १३ जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। सांझ को क्या हुआ, कि बटेरें आकर सारी छावनी पर बैठ गईं और १४ भोर को छावनी के चारों ओर ओस पड़ी। और जब ओस सूख[1] गई तो वे क्या देखते हैं कि जंगल की भूमि पर छोटे छोटे छिलके छोटाई में पाले के किनकों के समान पड़े हैं। १५ यह देखकर इस्राएली जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है सो आपस में कहने लगे यह तो मान[2] है तब मूसा ने उन से कहा, यह तो वही भोजनवस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है। १६ जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है कि तुम उस में से अपने अपने खाने के योग्य बटोरा करना अर्थात् अपने अपने प्राणियों की गिनती के अनुसार मनुष्य पीछे एक एक ओमेर बटोरना जिस के डेरे में जितने हों सो उन्हीं भर के लिये बटोरा करे। १७ सो इस्राएलियों ने वैसा ही किया १८ और किसी ने अधिक किसी ने थोड़ा बटोर लिया। और जब उन्हों ने उस को ओमेर से नापा, तब जिस के पास अधिक था उस के कुछ अधिक न रह गया और जिस के पास थोड़ा था उस को कुछ घटी न हुई, क्योंकि एक एक मनुष्य ने अपने खाने के योग्य ही बटोर लिया था। १९ फिर मूसा ने उन से कहा कोई इस में से कुछ बिहान लों न रख छोड़े। २० तौ भी उन्हों ने मूसा की न मानी, सो जब किसी किसी मनुष्य ने उस में से कुछ बिहान लों रख छोड़ा तब उस में कीड़े पड़ गये और वह बसाने लगा तब मूसा उन पर रिसियाया। २१ और उसे भोर भोर को वे अपने अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे और जब धूप कड़ी होती थी तब वह गल जाता था। २२ पर छठवें दिन उन्हों ने दूना अर्थात् मनुष्य पीछे दो दो ओमेर बटोर लिया और मण्डली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया। २३ उस ने उन से कहा यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल परमविश्राम अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा, सो तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ और जो सिझाना हो उसे सिझाओ और इस में से जितना बचे उसे बिहान के लिये रख छोड़ो। २४ जब उन्हों ने उस को मूसा की इस आज्ञा के अनुसार बिहान लों रख छोड़ा, तब न तो वह बसाया और न उस में कीड़े पड़े। २५ तब मूसा ने कहा आज उसी को खाओ क्योंकि आज जो यहोवा का विश्रामदिन है इस लिये आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा। २६ छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगे, पर सातवां दिन जो विश्राम का दिन है उस में वह न मिलेगा। २७ तौभी लोगों में से कोई कोई सातवें दिन बटोरने के लिये बाहर गये पर उन को कुछ न मिला। २८ तब यहोवा ने मूसा से कहा तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था का मानना कब लों नकारते रहोगे। २९ देखो यहोवा ने जो तुम को विश्राम का

(१) मूल में चढ़। (२) अर्थात् क्या वा क्या।

दिन दिया है इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है सो तुम अपने अपने यहां बैठे रहना ३० सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना। सो ३१ लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया। और इस्राएल के घरानेवालों ने उस वस्तु का नाम मान रक्खा और वह धनिया के समान श्वेत था और उस का स्वाद मधु के ३२ बने हुए पूए का सा था। फिर मूसा ने कहा, यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह है कि इस में से ओमेर भर अपने वंश की पीढ़ी पीढ़ी के लिये रख छोड़ो, जिस से वे जानें कि यहोवा हम को मिस्र देश से निकालकर जंगल में ३३ कैसी रोटी खिलाता था। तब मूसा ने हारून से कहा एक पात्र लेकर उस में ओमेर भर मान रख और उसे यहोवा के आगे धर दे, कि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये रक्खा ३४ रहे। सो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार हारून ने उस को साक्षीपत्र के आगे धर दिया ३५ कि वह वहीं रक्खा रहे। इस्राएली जब लों बसे हुए देश में न पहुंचे तब लों अर्थात् चालीस बरस लों मान को खाते रहे वे जब लों कनान देश के सिवाने पर न पहुंचे तब लों ३६ मान को खाते रहे। ओमेर तो एपा का दसवां भाग है॥

१७. फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल चली और यहोवा की आज्ञा के अनुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किये और वहां लोगों को पीने का पानी न मिला। २ सो वे मूसा से झगड़ा करके कहने लगे कि हमें पीने का पानी दे मूसा ने उन से कहा तुम मुझ से क्यों झगड़ते ३ हो और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो। फिर वहां लोगों को पानी की जो प्यास लगी सो वे यह कहकर मूसा पर कुड़कुड़ाये कि तू हमें लड़केबालों और पशुओं समेत ४ प्यासों मार डालने को मिस्र से क्यों ले आया है। तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी और कहा इन लोगों से मैं क्या करूं ये तो मुझे पत्थरवाह करने को तैयार ५ होने पर हैं। यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के पुरनियों में से किसी किसी को साथ ले अपनी उसी लाठी को जिस से तू ने नील नदी[१] को मारा था हाथ में लिये ६ हुए लोगों के आगे होकर चल। सुन मैं तेरे आगे जाके उधर होरेब पहाड़ की एक चटान पर खड़ा रहूंगा और तू उस चटान पर मारना तब उस में से पानी निकलेगा कि ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के पुरनियों के ७ देखते वैसा ही किया। और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा[२] और मरीबा[३] रक्खा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहां झगड़ा किया और यह कहकर यहोवा की परीक्षा भी की कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं॥

(अमालेकियों पर विजय)

८ तब अमालेकी आकर रपीदीम में इस्राएलियों से लड़ने ९ लगे। और मूसा ने यहोशू से कहा हमारे लिये कई एक पुरुषों को छांटकर निकल और अमालेकियों से लड़ और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हुए टीले की चोटी १० पर खड़ा रहूंगा। मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियों से लड़ने लगा और मूसा हारून और हूर टीले ११ की चोटी पर चढ़ गये। और जब तक मूसा अपना हाथ उठाये रहता तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था पर जब जब वह उसे नीचे करता तब तब अमालेक प्रबल होता था। १२ और जब मूसा के हाथ भर गये तब उन्हों ने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया और हारून और हूर एक एक अलंग में उस के हाथों को संभाले रहे, सो उस के हाथ सूर्य्य डूबने लों स्थिर रहे। १३ सो यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार १४ के बल से हरा दिया। तब यहोवा ने मूसा से कहा स्मरण के लिये इस बात को पुस्तक में लिख दे और यहोशू को सुना दे कि यहोवा अमालेक का स्मरण तक आकाश के १५ तले से पूरी रीति मिटा डालेगा। तब मूसा ने एक वेदी १६ बनाकर उस का नाम यहोवानिस्सी[५] रक्खा, और कहा याह के सिंहासन पर जो हाथ उठाया हुआ है इसलिये यहोवा की लड़ाई अमालेकियों से पीढ़ी पीढ़ी में बनी रहेगी॥

(मूसा के अपने ससुर से भेंट करने का वर्णन।)

१८. और मूसा के ससुर मिद्यान के याजक यित्रो ने यह सुना कि परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इस्राएल के लिये क्या क्या किया था अर्थात् यह कि किस रीति से यहोवा इस्राए-२ लियों को मिस्र से निकाल ले आया। तब मूसा के ससुर यित्रो मूसा की स्त्री सिप्पोरा को जो पहिले नैहर भेज दी ३ गई थी, और उस के दोनों बेटों को भी ले आया इन में से एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेर्शोम रक्खा था कि ४ मैं अन्यदेश में परदेशी हुआ हूं। और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर एलीएजेर[४] रक्खा कि मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरा सहायक होकर मुझे फिरौन की तलवार ५ से बचाया। मूसा की स्त्री और बेटों को उस का ससुर यित्रो संग लिये हुए उस के पास जंगल के उस स्थान में आया जहां उस का डेरा पड़ा था वह तो परमेश्वर के ६ पर्वत के पास है। और आकर उस ने मूसा के पास यह

(१) मूल में चोर। (२) अर्थात् परीक्षा। (३) अर्थात् झगड़ा।

(४) अर्थात् ईश्वर सहाय। (५) अर्थात् यहोवा मेरा झण्डा है।

कहला भेजा कि मैं तेरा ससुर यित्रो हूं और दोनों
७ बेटों समेत तेरी स्त्री को तेरे पास ले आया हूं। तब मूसा अपने ससुर की भेंट के लिये निकला और उस को दंडवत् करके चूमा और वे परस्पर कुशल क्षेम पूछते हुए डेरे
८ पर आ गये। वहां मूसा ने अपने ससुर से वर्णन किया कि यहोवा ने इस्राएलियों के निमित्त फिरौन और मिस्रियों से क्या क्या किया और इस्राएलियों ने मार्ग में क्या क्या कष्ट उठाया फिर यहोवा उन्हें कैसे कैसे छुड़ाता आया है।
९ तब यित्रो ने उस सारी भलाई के कारण जो यहोवा ने इस्राएलियों के साथ की थी कि उन्हें मिस्रियों के वश से
१० छुड़ाया था हुलसकर कहा धन्य है यहोवा जिस ने तुम को फिरौन और मिस्रियों के वश से छुड़ाया जिस ने तुम
११ लोगों को मिस्रियों की मुट्ठी में से छुड़ाया है। अब मैं ने जान लिया है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है बरन उस विषय में भी जिस में उन्हों ने इस्राएलियों से अभिमान
१२ किया था। तब मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाये और हारून इस्राएलियों के सब पुरनियों समेत मूसा के ससुर यित्रो के संग परमे-
१३ श्वर के आगे भोजन करने को आया। दूसरे दिन मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा और भोर से सांझ लों
१४ लोग मूसा के आसपास खड़े रहे। यह देखकर कि मूसा लोगों के लिये क्या क्या करता है उस के ससुर ने कहा यह क्या काम है जो तू लोगों के लिये करता है क्या कारण है कि तू अकेला बैठा रहता है और लोग भोर
१५ से सांझ लों तेरे आसपास खड़े रहते हैं। मूसा ने अपने ससुर से कहा इस का कारण यह है कि लोग मेरे पास
१६ परमेश्वर से पूछने आते हैं। जब जब उन का कोई मुकद्दमा होता है तब तब वे मेरे पास आते हैं और मैं उन के बीच न्याय करता और परमेश्वर की विधि और
१७ व्यवस्था उन्हें जताता हूं। मूसा के ससुर ने उस से कहा
१८ जो काम तू करता है वह अच्छा नहीं। और इस से तू क्या बरन ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय हार जाएंगे क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है तू इसे अकेला
१९ नहीं कर सकता। सो अब मेरी सुन ले मैं तुझ को सम्मति देता हूं और परमेश्वर तेरे संग रहे तू तो इन लोगों के लिये परमेश्वर के सन्मुख जाया कर और इन के
२० मुकद्दमों को परमेश्वर के पास तू पहुंचा दिया कर। इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके जिस मार्ग पर इन्हें चलना और जो काम इन्हें करना हो वह इन को जता
२१ दिया कर। फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों को छांट ले, जो गुणी और परमेश्वर का भय माननेहारे सच्चे और अन्याय के लाभ से घिन करनेहारे हों और उन को हजार हजार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस मनुष्यों
२२ पर प्रधान होने के लिये ठहरा दे। और वे सब समय इन लोगों का न्याय किया करें और सब बड़े बड़े मुकद्दमों को तो तेरे पास ले आया करें और छोटे छोटे मुकद्दमों का न्याय आप ही किया करें; तब तेरा बोझ हलका
२३ होगा क्योंकि इस बोझ को वे भी तेरे साथ उठाएंगे। यदि तू यह उपाय करे और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे तो तू ठहर सकेगा और ये सारे लोग अपने स्थान को
२४ कुशल से पहुंच सकेंगे। अपने ससुर की यह बात मान-
२५ कर मूसा ने उस के सब वचनों के अनुसार किया। सो उस ने सब इस्राएलियों में से गुणी गुणी पुरुष चुनकर उन्हें हजार हजार सौ सौ पचास पचास दस दस लोगों
२६ के ऊपर प्रधान ठहराया। और वे सब लोगों का न्याय करने लगे जो मुकद्दमा कठिन होता उसे तो वे मूसा के पास ले आते थे और सब छोटे मुकद्दमों का न्याय वे
२७ आप ही करते थे। और मूसा ने अपने ससुर को बिदा किया और उस ने अपने देश का मार्ग लिया॥

(सीनै पर्वत पर यहोवा के दर्शन देने का वर्णन)

१९. इस्राएलियों को मिस्र देश से निकले हुए जिस दिन तीन महीने बीत चुके उसी दिन वे सीनै के जंगल में
२ आये। और जब वे रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में आये तब उन्हों ने जंगल में डेरे खड़े किये और वहीं पर्वत के आगे इस्राएलियों ने छावनी की।
३ तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया और यहोवा ने पर्वत पर से उस को पुकारकर कहा याकूब के घराने से ऐसा कह और इस्राएलियों को मेरा यह
४ वचन सुना कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या क्या किया और तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों
५ पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं। सो अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे और मेरी वाचा को पालोगे तो सारे लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे सारी पृथिवी
६ तो मेरी है। और तुम मेरे लेखे याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी
७ हैं वे ये ही हैं। तब मूसा ने आकर लोगों के पुरनियों को बुलवाया और ये सब बातें जिन के कहने की आज्ञा
८ यहोवा ने उसे दी थी उन को समझा दीं। और सब लोग मिलकर बोल उठे जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम करेंगे। लोगों की यह बातें मूसा ने यहोवा को
९ सुनाईं। तब यहोवा ने मूसा से कहा सुन मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूं इस लिये कि जब

मैं तुझ से बातें करूं तब वे लोग सुनें और सदा तेरी प्रतीति करें । और मूसा ने यहोवा से लोगों की बातों
१० का वर्णन किया । तब यहोवा ने मूसा से कहा लोगों के पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना और वे
११ अपने वस्त्र धो लें । और वे तीसरे दिन लों तैयार हो रहें क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब लोगों के देखते सीनै
१२ पर्वत पर उतर आएगा । और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांध देना और उन से कहना कि तुम सचेत रहो कि पर्वत पर न चढ़ो और उस के सिवाने को भी न छूओ और जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार डाला
१३ जाए । उस को कोई हाथ से तो न छूए पर वह निश्चय पत्थरवाह किया जाए वा तीर से छेदा जाए चाहे पशु हो चाहे मनुष्य वह जीता न बचे । जब महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द देर लों सुनाई दे, तब लोग पर्वत के पास
१४ आएं । तब मूसा ने पर्वत पर से उतरकर लोगों के पास आकर उन को पवित्र कराया और उन्हों ने अपने वस्त्र
१५ धो लिये । और उस ने लोगों से कहा तीसरे दिन लों
१६ तैयार हो रहो स्त्री के पास न जाना । जब तीसरा दिन आया तब भोर होते होते बादल गरजने और बिजली चमकने लगी और पर्वत पर काली घटा छा गई, फिर नरसिंगे का शब्द बड़ा भारी हुआ और छावनी में जितने
१७ लोग थे सब कांप उठे । तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया और वे
१८ पर्वत के नीचे खड़े हुए । और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था सो सारा पर्वत धूएं से भर गया और उस का धूआं भट्ठे का सा उठ रहा था और सारा
१९ पर्वत बहुत कांप रहा था । फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया तब मूसा बोला और
२० परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उस को उत्तर दिया । और यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया सो मूसा ऊपर चढ़ गया ।
२१ तब यहोवा ने मूसा से कहा नीचे उतर के लोगों को चिता दे कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़के यहोवा के पास देखने को घुसें और उन में से बहुत नाश हो जाएं ।
२२ और याजक जो यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि यहोवा उन पर
२३ टूट पड़े । मूसा ने यहोवा से कहा वे लोग सीनै पर्वत पर नहीं चढ़ सकते तू ने तो आप हम को यह कहकर चिताया कि पर्वत के चारों ओर बाड़ा बांधकर उसे पवित्र
२४ रक्खो । यहोवा ने उस से कहा उतर तो जा और हारून समेत तू ऊपर आ पर याजक और साधारण लोग कहीं यहोवा के पास बाड़ा तोड़ के न चढ़ आएं न हो कि वह उन पर टूट पड़े । ये ही बातें मूसा ने लोगों के पास २५ उतर के उन को सुनाईं ।

(सारे इस्राएलियों को दस आज्ञाओं के सुनाये जाने का वर्णन)

२०. तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुझे २ दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है ॥

मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना ॥ ३

तू अपने लिये कोई मूर्त्ति खोदकर न बनाना न ४ किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में वा पृथिवी पर वा पृथिवी के जल में है । तू उन को दंडवत् न करना न उन ५ की उपसना करना क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेहारा ईश्वर हूं और जो मुझ से बैर रखते हैं उन के बेटों पोतों और परपोतों को भी पितरों का दंड दिया करता हूं, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं ६ को मानते हैं उन हजारों पर करुणा किया करता हूं ॥

अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ[१] न लेना क्योंकि जो ७ यहोवा का नाम व्यर्थ[१] ले वह उस को निर्दोष न ठहराएगा ॥

विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण ८ रखना । छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा काम ९ काज करना । पर सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के १० लिये विश्रामदिन है । उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना न तेरा बेटा न तेरी बेटी न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो । क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश ११ और पृथिवी और समुद्र और जो कुछ उन में है सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशिष दी और उस को पवित्र ठहराया ॥

अपने पिता और अपनी माता का आदर करना १२ जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन लों रहने पाए ॥

खून न करना ॥ १३

व्यभिचार न करना ॥ १४

चोरी न करना । १५

किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना ॥ १६

किसी के घर का लालच न करना न तो किसी की १७ स्त्री का लालच करना न किसी के दास दासी वा बैल गदहे का न किसी की किसी वस्तु का लालच करना ॥

और सब लोग गरजने और बिजली और नरसिंगे १८ के शब्द सुनते और धूआं उठते हुए पर्वत को देखते

(१) वा झूठी बात पर ।

रहे और देखके कांपकर दूर खड़े हो गये, और वे मूसा
१९ से कहने लगे तू ही हम से बातें कर तब तो हम सुन
सकेंगे परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे न हो कि हम
२० मर जाएं। मूसा ने लोगों से कहा डरो मत क्योंकि
परमेश्वर इस निमित्त आया है कि तुम्हारी परीक्षा करे
और उस का भय तुम्हारे मन में[1] बना रहे कि तुम पाप
२१ न करो। और वे लोग तो दूर खड़े रहे पर मूसा उस
घोर अंधकार के समीप गया जहां परमेश्वर था ॥

(मूसा से कही हुई यहोवा की व्यवस्था)

२२ तब यहोवा ने मूसा से कहा इस्राएलियों को मेरे
ये वचन सुना कि तुम लोगों ने तो आप देखा है कि
२३ मैं ने तुम्हारे साथ आकाश से बातें की हैं। तुम मेरे
साथी जानकर कुछ न बनाना अपने लिये चान्दी व
२४ सोने के देवताओं को न बनाना। मेरे लिये मिट्टी की
एक वेदी बनाना और अपनी भेड़ बकरियों और गाय
बैलों के होमबलि और मेलबलि उसी पर चढ़ाना। जहां
जहां मैं अपने नाम का स्मरण कराऊं वहां वहां मैं
२५ आकर तुम्हें आशिष दूंगा। और यदि तुम मेरे लिये
पत्थरों की वेदी बनाओ, तो तराशे हुए पत्थरों से न
बनाना क्योंकि जहां तुम ने उस पर अपना हथियार
२६ उठाया तहां वह अशुद्ध हुई। और मेरी वेदी पर सीढ़ी
से न चढ़ना न हो कि तेरा तन उस पर नंगा देख पड़े ॥

२१. फिर जो नियम तुझे उन को समझाने हैं सो ये हैं ॥

२ जब तुम कोई इब्री दास मोल लो तब वह छः बरस
लों सेवा करता रहे और सातवें बरस स्वाधीन होकर
३ सेंतमेंत चला जाए। यदि वह अकेला आया हो तो
अकेला ही चला जाए। और यदि स्त्री सहित आया हो
४ तो उस के साथ उस की स्त्री भी चली जाए। यदि उस
के स्वामी ने उस को स्त्री दी हो और वह उस के जन्माये
बेटे वा बेटियां जनी हो तो उस की स्त्री और बालक
५ उस स्वामी के रहें और वह अकेला चला जाए। पर
यदि वह दास दृढ़ता से कहे, कि मैं अपने स्वामी और
अपनी स्त्री बालकों से प्रेम रखता हूं, सो मैं स्वाधीन
६ होकर न चला जाऊंगा तो उस का स्वामी उस को
परमेश्वर[2] के पास ले चले फिर उस को द्वार के किवाड़
वा बाजू के पास ले आकर उस के कान में सुतारी से
छेद करे तब वह सदा उस की सेवा करता रहे ॥

७ यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिये बेच
८ डाले तो वह दासों की नाईं बाहर न जाए। यदि उस
का स्वामी उस को अपनी स्त्री करे और फिर उस से
प्रसन्न न रहे तो वह उसे दाम से छुड़ाई जाने दे उस का
विश्वासघात करने के पीछे उसे उपरी लोगों के हाथ
९ बेचने का उस को अधिकार न होगा। और यदि उस ने
उसे अपने बेटे को ब्याह दिया हो, तो उस से बेटी का
१० सा व्यवहार करे। चाहे वह दूसरी स्त्री कर ले तौ भी वह
११ उस का भोजन वस्त्र और संगति न घटाए। और यदि
वह इन तीन बातों में घटी करे तो वह स्त्री सेंतमेंत बिना
दाम चुके ही चली जाए ॥

१२ जो किसी मनुष्य को ऐसा मारे कि वह मर जाए
१३ वह निश्चय मार डाला जाए। यदि वह उस की घात में
न बैठा हो और परमेश्वर की इच्छा ही से वह उस के
हाथ में पड़ गया हो ऐसे मारनेवाले के भागने के निमित्त मैं
१४ तेरे लिये स्थान ठहराऊंगा। पर यदि कोई ढिठाई से
किसी पर चढ़ाई करके उसे छल से घात करे तो उस को
मार डालने के लिये मेरी वेदी के पास से भी ले जाना ॥

१५ जो अपने पिता वा माता को मारे पीटे सो निश्चय
मार डाला जाए ॥

१६ जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर
बेच डाले चाहे वह उस के यहां पाया जाए तो वह
निश्चय मार डाला जाए ॥

१७ जो अपने पिता वा माता को कोसे सो निश्चय मार
डाला जाए ॥

१८ यदि मनुष्य झगड़ते हों और एक दूसरे को पत्थर
वा मुक्के से ऐसा मारे कि वह मरे नहीं पर बिछौने पर
१९ पड़ा रहे, तो जब वह उठकर लाठी के सहारे से बाहर
चलने फिरने लगे तब वह मारनेहारा निर्दोष ठहरे उस
दशा में वह उस के पड़े रहने के समय की हानि तो भर
दे और उस को भला चंगा भी करा दे ॥

२० यदि कोई अपने दास वा दासी को सोंटे से ऐसा
मारे कि वह उस के मारने से मर जाए तब तो उस को
२१ निश्चय दण्ड दिया जाए। पर यदि वह दो एक दिन
जीता रहे तो उस के स्वामी को दण्ड न दिया जाए
क्योंकि वह दास उस का धन है ॥

२२ यदि मनुष्य आपस में मारपीट करके किसी गर्भिणी
स्त्री को ऐसी चोट पहुंचाएं कि उस का गर्भ गिर जाए
पर और कुछ हानि न हो तो मारनेहारे से उतना दण्ड
लिया जाए जितना उस स्त्री का पति विचारकों की
२३ सम्मति से ठहराए। पर यदि उस को और कुछ हानि
पहुंचे तो प्राण की सन्ती प्राण का, आंख की सन्ती
२४ आंख का, दांत की सन्ती दांत का, हाथ की सन्ती हाथ
का, पांव की सन्ती पांव का, दाग की सन्ती दाग का,
२५ घाव की सन्ती घाव का, मार की सन्ती मार का दण्ड हो ॥

(१) मूल में तुम्हारे साम्हने। (२) वा न्यायियों।

२६ जब कोई अपने दास वा दासी की आंख पर ऐसा मारे कि फूट जाए तो वह उस की आंख की सन्ती उसे २७ स्वाधीन करके जाने दे। और यदि वह अपने दास वा दासी को मारके उस का दांत तोड़ डाले तो वह उस के दांत की सन्ती उसे स्वाधीन करके जाने दे॥

२८ यदि बैल किसी पुरुष वा स्त्री को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए तो वह बैल तो निश्चय पत्थरवाह करके मार डाला जाए और उस का मांस खाया न जाए पर २९ बैल का स्वामी निर्दोष ठहरे। पर यदि उस बैल की पहिले से सींग मारने की बान पड़ी हो और उस के स्वामी ने जताये जाने पर भी उस को न बांध रक्खा हो और वह किसी पुरुष वा स्त्री को मार डाले तब तो वह बैल पत्थरवाह किया जाए और उस का स्वामी भी ३० मार डाला जाए। यदि उस पर छुड़ौती ठहराई जाए तो प्राण छुड़ाने को जो कुछ उस के लिये ठहराया जाए ३१ उसे उतना ही देना पड़ेगा। चाहे बैल ने किसी के बेटे को चाहे बेटी को मारा हो तौ भी इसी नियम के अनु-३२ सार उस के स्वामी से किया जाए। यदि बैल ने किसी दास वा दासी को सींग मारा हो तो बैल का स्वामी उस दास के स्वामी को तीस शेकेल रूपा दे और वह बैल पत्थरवाह किया जाए।

३३ यदि कोई मनुष्य गड़हा खोलकर वा खादकर उस को न ढांपे और उस में किसी का बैल वा गदहा गिर ३४ पड़े, तो जिस का वह गड़हा हो वह उस हानि को भर दे, वह पशु के स्वामी को उस का मोल दे और लोथ गड़हेवाले की ठहरे॥

३५ यदि किसी का बैल दूसरे के बैल को ऐसी चोट लगाए कि वह मर जाए तो वे दोनों मनुष्य जीते बैल को बेचकर उस का मोल आपस में आधा आधा बांट लें ३६ और लोथ को भी वैसा ही बांटें। पर यदि यह प्रगट हो कि उस बैल की पहिले से सींग मारने की बान पड़ी थी पर उस के स्वामी ने उसे बांध नहीं रक्खा तो निश्चय वह बैल की सन्ती बैल भर दे पर लोथ उसी की ठहरे॥

२२. यदि कोई मनुष्य बैल वा भेड़ वा बकरी चुराकर उस का घात करे वा बेच डाले तो वह बैल की सन्ती पांच बैल और भेड़ बकरी की २ सन्ती चार भेड़ बकरी भर दे। यदि चोर सेंध मारते हुए पकड़ा जाए और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर ३ जाए तो उस के खून का दोष न लगे। यदि सूर्य्य निकल चुके तो उस के खून का दोष लगे अवश्य है कि वह हानि को भर दे और यदि उस के पास कुछ न हो तो ४ वह चोरी के कारण बेचा जाए। यदि चुराया हुआ बैल वा गदहा वा भेड़ वा बकरी उस के हाथ में जीती पाई जाए तो वह उस का दूना भर दे॥

५ यदि कोई अपने पशु से किसी का खेत वा दाख की बारी चराए अर्थात् अपने पशु को ऐसा छोड़ दे कि वह पराए खेत को चर ले तो वह अपने खेत की और अपनी दाख की बारी की उत्तम से उत्तम उपज में से उस हानि को भर दे॥

६ यदि कोई आग बारे और वह कांटों में से लगे कि पूलों के ढेर वा अनाज वा खड़ा खेत जल जाए तो जिस ने आग बारी हो सो हानि को निश्चय भर दे॥

७ यदि कोई दूसरे को रुपए वा सामग्री की धरोहर धरे और वह उस के घर से चुराई जाए तो यदि चोर पकड़ा ८ जाए तो दूना उसी को भर देना पड़ेगा। और यदि चोर न पकड़ा जाए तो घर का स्वामी परमेश्वर[१] के पास लाया जाए कि निश्चय हो जाय कि उस ने अपने भाई-९ बंधु की संपत्ति पर हाथ लगाया है वा नहीं। अपराध चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़ वा बकरी चाहे वस्त्र चाहे किसी प्रकार की ऐसी खोई हुई वस्तु के विषय क्यों न लगाया जाए, जिसे दो जन अपनी अपनी कहते हों तो दोनों का मुकद्दमा परमेश्वर[१] के पास आए और जिस को परमेश्वर दोषी ठहराए[२] वह दूसरे को दूना भर दे॥

१० यदि कोई दूसरे को गदहा वा बैल वा भेड़ बकरी वा कोई और पशु रखने के लिये सौंपे और किसी के बिन देखे वह मर जाए वा चोट खाए वा हांक दिया जाए ११ तो उन दोनों के बीच यहोवा की किरिया खिलाई जाए कि मैं ने इस की संपत्ति पर हाथ नहीं लगाया तब संपत्ति का स्वामी इस को सच माने और दूसरे को उसे १२ कुछ भर देना न होगा। यदि वह सचमुच उस के यहां से चुराया गया हो तो वह उस के स्वामी को उसे भर दे। १३ और यदि वह फाड़ डाला गया हो तो वह फाड़े हुए को प्रमाण के लिये ले आये तब उसे उस को भर देना न पड़ेगा॥

१४ फिर यदि कोई दूसरे से पशु मांग लाए और उस के स्वामी के संग न रहते उस को चोट लगे वा वह मर जाए १५ तो वह निश्चय उस की हानि भर दे। यदि उस का स्वामी संग हो तो दूसरे को उस की हानि भरना न पड़े और यदि वह भाड़े का हो तो उस की हानि उस के भाड़े में आ गई॥

१६ यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिस के ब्याह की बात न लगी हो फुसलाकर उस के संग कुकर्म्म करे तो वह १७ निश्चय उस का मोल देके उसे ब्याह ले। पर यदि उस का पिता उसे देने को बिलकुल नाह करे तो कुकर्म्म करनेहारा कन्याओं के मोल की रीति के अनुसार रुपए तौल दे।

(१) वा न्यायियों। (२) वा न्यायी दोषी ठहराए।

१८ डाइन को जीती रहने न देना ॥
१९ जो कोई पशुगमन करे वह निश्चय मार डाला जाए ॥
२० जो कोई यहोवा को छोड़ किसी देवता के लिये
२१ बलि करे वह सत्यानाश किया जाए । और परदेशी को न सताना और न उस पर अंधेर करना क्योंकि मिस्र देश
२२ में तुम भी परदेशी थे । किसी विधवा वा बपमुए बालक
२३ को दुःख न देना । यदि तुम ऐसों को किसी प्रकार का दुःख दो और वे कुछ भी मेरी दोहाई दें तो मैं निश्चय
२४ उन की दोहाई सुनूंगा । तब मेरा कोप भड़केगा और मैं तुम को तलवार से मरवाऊंगा और तुम्हारी स्त्रियां विधवा और तुम्हारे बालक बपमुए हो जाएंगे ॥

२५ यदि तू मेरी प्रजा में से किसी दीन को जो तेरे पास रहता हो रुपए का ऋण दे, तो उस से महाजन की नाई
२६ ब्याज न लेना । यदि तू कभी अपने भाईबंधु के वस्त्र को बंधक करके रख भी ले, तो सूर्य्य के अस्त होने लों
२७ उस को फेर देना । क्योंकि वह उस का एक ही ओढ़ना है उस की देह का वही अकेला वस्त्र होगा, फिर वह किसे ओढ़ कर सोएगा, सो जब वह मेरी दोहाई देगा तब मैं उस की सुनूंगा क्योंकि मैं तो करुणामय हूं ।

२८ परमेश्वर[1] को न कोसना और न अपने लोगों के
२९ प्रधान को स्राप देना । अपने खेतों की उपज और फलों के रस में से कुछ मुझे देने में विलम्ब न करना । अपने
३० बेटों में से पहिलौठे को मुझे देना । वैसे ही अपनी गायों और भेड़ बकरियों के पहिलौठे भी देना, सात दिन लों तो बच्चा अपनी माता के संग रहे और आठवें दिन तू उसे
३१ मुझ को देना । और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होना इस कारण जो पशु मैदान में फाड़ा हुआ पड़ा मिले उस का मांस न खाना उस को कुत्तों के आगे फेंक देना ॥

२३.

झूठी बात न फैलाना, अन्यायी साक्षी होकर दुष्ट का साथ न देना । बुराई
२ करने के लिये न तो बहुतों के पीछे हो लेना और न उन के पीछे फिरके मुकद्दमे में न्याय बिगाड़ने को साक्षी देना ।
३ और कंगाल के मुकद्दमे में उस का भी पक्ष न करना ॥

४ यदि तेरे शत्रु का बैल वा गदहा भटकता हुआ तुझे
५ मिले तो उसे उस के पास अवश्य फेर ले आना । फिर यदि तू अपने बैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा हुआ देखे तो चाहे उस को उस के स्वामी के लिये छुड़ाना तेरा जी न चाहता हो तौ भी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ाना ॥

६ तेरे लोगों में से जो दरिद्र हो उस के मुकद्दमे में
७ न्याय न बिगाड़ना । झूठे मुकद्दमे से दूर रहना और निर्दोष और धर्म्मी को घात न करना क्योंकि मैं दुष्ट को
८ निर्दोष न ठहराऊंगा । घूस न लेना क्योंकि घूस देखनेहारों को भी अंधा कर देता और धर्मियों की बातें मोड़
९ देता है । परदेशी पर अंधेर न करना तुम तो परदेशी के मन की जानते हो क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे ॥

१० छः बरस तो अपनी भूमि में बोना और उस की
११ उपज इकट्ठी करना । पर सातवें बरस में उस को पड़ती रहने देना और वैसे ही छोड़ देना सो तेरे भाईबंधुओं में के दरिद्र लोग उस से खाने पाएं और जो कुछ उन से भी बचे वह बनैले पशुओं के खाने के काम आए । और अपनी दाख और जलपाई की बारियों को भी ऐसे ही
१२ करना । छः दिन तो अपना काम काज करना और सातवें दिन विश्राम करना, कि तेरे बैल और गदहे सुस्ताएं और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी भी अपना जी ठंढा कर
१३ सकें । और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है उस में सावधान रहना और दूसरे देवताओं के नाम की चर्चा न करना बरन वे तुम्हारे मुंह से भी निकलने न पाएं ॥

१४ बरस दिन में तीन बार मेरे लिये पर्व मानना ।
१५ अखमीरी रोटी का पर्व मानना उस में मेरी आज्ञा के अनुसार आबीब महीने के नियत समय पर सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आए । और मुझ को कोई छूछे हाथ अपना
१६ मुंह न दिखाए और जब तेरी कोई खेती की पहिली उपज तैयार हो तब कटनी का पर्व मानना और बरस के अन्त पर जब तू परिश्रम के फल बटोर के ढेर लगाए तब
१७ बटोरन का पर्व मानना । बरस दिन में तीनों बार तेरे सब पुरुष प्रभु यहोवा को अपना अपना मुंह दिखाएं ॥

१८ मेरे बलिपशु का लोहू खमीरी रोटी के संग न चढ़ाना और न मेरे पर्व के उत्तम बलिदान[2] में से कुछ
१९ बिहान लों रहने देना । अपनी भूमि की पहिली उपज का पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना । बकरी का बच्चा उस की माता के दूध में न सिझाना ॥

२० सुन, मैं एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया
२१ है उस में तुझे पहुंचाएगा । उस के साम्हने सावधान रहना और उस की मानना उस का विरोध न करना क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा इसलिये कि उस में
२२ मेरा नाम रहता है । और यदि तू सचमुच उस की माने और जो कुछ मैं कहूं वह करे तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु
२३ और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूंगा । इस रीति मेरा दूत तेरे आगे आगे चलकर तुझे एमोरी, हित्ती, परज्जी, कनानी,

(१) वा न्यायियों ।

(२) मूल में की चर्बी ।

हिव्वी और यबूसी लोगों के यहां पहुंचाएगा और मैं उन
२४ को सत्यानाश कर डालूंगा। उन के देवताओं को दंडवत्
न करना और न उन की उपासना करना न उन के
से काम करना वरन उन मूरतों को पूरी रीति से सत्यानाश
कर डालना और उन लोगों की लाठों को टुकड़े टुकड़े
२५ कर देना। और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना
करना तब वह तेरे अन्न जल पर आशिष देगा और तेरे
२६ बीच में से रोग दूर करूंगा। तेरे देश में न तो किसी का
गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी और तेरी आयु मैं
२७ पूरी करूंगा। जितने लोगों के बीच तू जाय उन सभों
के मन में मैं अपना भय पहिले से ऐसा समवा दूंगा कि
उन को व्याकुल कर दूंगा और मैं तुझे सब शत्रुओं की
२८ पीठ दिखाऊंगा। और मैं तुझ से पहिले बर्रों को भेजूंगा
जो हिव्वी, कनानी और हित्ती लोगों को तेरे साम्हने से
२९ भगाके दूर कर देंगी। मैं उन को तेरे आगे से एक ही
बरस में तो न निकाल दूंगा न हो कि देश उजाड़ हो
३० जाए और बनैले पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगें। जब
लों तू फूल फलकर देश को अपने अधिकार में न कर ले
तब लों मैं उन्हें तेरे आगे से थोड़ा थोड़ा करके निकालता
३१ रहूंगा। मैं लाल समुद्र से लेकर पलिश्तियों के समुद्र
लों और जंगल से लेकर महानद लों के देश को तेरा
कर दूंगा मैं उस देश के निवासियों को तेरे वश कर
दूंगा और तू उन्हें अपने साम्हने से बरबस निकालेगा।
३२ तू न तो उन से वाचा बांधना और न उन के देवताओं
३३ से। वे तेरे देश में रहने न पाएं न हो कि वे तुझ से
मेरे विरुद्ध पाप कराएं क्योंकि यदि तू उन के देवताओं
की उपासना करे तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा।

(यहोवा और इस्राएलियों के बीच वाचा बांधने का वर्णन)

२४. फिर उस ने मूसा से कहा तू हारून नादाब
अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर पुर-
नियों समेत यहोवा के पास ऊपर आकर दूर से दण्डवत्
२ करना। और केवल मूसा यहोवा के समीप आए, वे
समीप न आएं, दूसरे लोग उस के संग ऊपर न आएं।
३ तब मूसा ने लोगों के पास जाकर यहोवा की सब बातें
और सब नियम सुना दिये तब सब लोग एक स्वर से
बोल उठे कि जितनी बातें यहोवा ने कही हैं सब
४ हम मानेंगे। तब मूसा ने यहोवा के सब वचन लिख
दिये और बिहान को सवेरे उठकर पर्वत के नीचे एक
वेदी और इस्राएल के बारहों गोत्रों के अनुसार बारह
५ खंभे भी बनवाये। तब उस ने कई इस्राएली जवानों को
भेजा जिन्हों ने यहोवा के लिये होमबलि और बैलों के
६ मेलबलि चढ़ाये। और मूसा ने आधा लोहू तो लेकर
कटोरों में रक्खा और आधा वेदी पर छिड़क दिया। तब ७
वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़ सुनाया उसे
सुनकर उन्हों ने कहा जो कुछ यहोवा ने कहा है उस
सब को हम करेंगे और उस की आज्ञा मानेंगे। तब ८
मूसा ने लोहू को लेकर लोगों पर छिड़क दिया और उन
से कहा देखो यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा
ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बांधी है। तब मूसा, ९
हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर पुरनिये १०
ऊपर गये और इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया
और उस के चरणों के तले नीलमणि का चबूतरा सा
कुछ था जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था। और ११
उस ने इस्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया सो
उन्हों ने परमेश्वर का दर्शन किया और खाया पिया॥

तब यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड़ पर मेरे पास १२
चढ़कर वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियाएं और
अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूंगा कि तू उन
को सिखाए। सो मूसा यहोशू नाम अपने टहलुए समेत १३
परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया। और पुरनियों से वह १४
यह कह गया कि जब लों हम तुम्हारे पास फिर न आएं
तब लों तुम यहीं हमारी बाट जोहते रहो और सुनो
हारून और हूर तुम्हारे संग हैं सो यदि किसी का मुक-
द्दमा हो तो उन्हीं के पास जाए। तब मूसा पर्वत पर १५
चढ़ गया और बादल ने पर्वत को छा लिया। तब १६
यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया और वह
बादल उस पर छः दिन लों छाया रहा और सातवें दिन
उस ने मूसा को बादल के बीच से बुलाया। और १७
इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर
प्रचण्ड आग सा देख पड़ता था। सो मूसा बादल के १८
बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया और मूसा पर्वत
पर चालीस दिन और चालीस रात रहा॥

(सामान सहित पवित्र स्थान के बनाने की आज्ञाएं)

२५. यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों २
से यह कहना कि मेरे लिये भेंट
ली जाए, जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों
से मेरी भेंट लेना। और जिन वस्तुओं की भेंट उन से ३
लेनी है वे ये हैं अर्थात् सोना, चांदी, पीतल, नीले ४
बैजनी और लाही रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा,
बकरी का बाल, लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें ५
सूइसों की खालें, बबूल की लकड़ी, उजियाले के लिये ६
तेल अभिषेक के तेल के लिये और सुगन्धित धूप के लिये
सुगन्ध द्रव्य, एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी ७
पत्थर और जड़ने के लिये मणि। और वे मेरे लिये एक ८

९ पवित्रस्थान बनाएं कि मैं उन के बीच निवास करूं। जो कुछ मैं तुझे दिखाता हूं अर्थात् निवासस्थान और उस के सब सामान का नमूना उसी के समान तुम लोग उसे बनाना॥

१० बबूल की लकड़ी का एक संदूक बनाया जाए उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई और ऊंचाई डेढ़ ११ डेढ़ हाथ की हों। और उस को चोखे सोने से भीतर और बाहर मढ़वाना और संदूक के ऊपर चारों ओर सोने १२ की बाड़ बनवाना। और सोने के चार कड़े ढलवाकर उस के चारों पायों पर एक अलंग दो कड़े और दूसरी १३ अलंग भी दो कड़े लगवाना। फिर बबूल की लकड़ी के १४ डण्डे बनवाना और उन्हें भी सोने से मढ़वाना। और डण्डों को संदूक की दोनों अलंगों के कड़ों में डालना कि १५ उन के बल संदूक उठाया जाए। वे डण्डे संदूक के १६ कड़ों में लगे रहें और उस से अलग न किये जाएं। और १७ जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूंगा, उसे उसी संदूक में रखना। फिर चोखे सोने का एक प्रायश्चित्त का ढकना बनवाना, उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। १८ और सोना गढ़ाकर दो करूब बनवाकर प्रायश्चित्त के १९ ढकने के दोनों सिरों पर लगवाना। एक करूब तो एक सिरे और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर लगवाना और करूबों को और प्रायश्चित्त के ढकने को एक ही टुकड़े के बनाकर २० उस के दोनों सिरों पर लगवाना। और उन करूबों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बनें कि प्रायश्चित्त का ढकना उन से ढपा रहे और उन के मुख आम्हने साम्हने और २१ प्रायश्चित्त के ढकने की ओर रहें। और प्रायश्चित्त के ढकने को संदूक के ऊपर लगवाना और जो साक्षीपत्र मैं २२ तुझे दूंगा उसे संदूक के भीतर रखना। और मैं उस के ऊपर रहके[१] तुझ से मिला करूंगा और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएं मुझ को तुझे देनी होंगी उन सभों के विषय में प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से जो साक्षीपत्र के संदूक पर होंगे तुझ से वार्ता किया करूंगा॥

२३ फिर बबूल की लकड़ी की एक मेज बनवाना उस की लंबाई दो हाथ चौड़ाई एक हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ २४ की हो। उसे चोखे सोने से मढ़वाना और उस के चारों २५ ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। और उस के चारों ओर चार अंगुल चौड़ी एक पटरी बनवाना और इस २६ पटरी के चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। और सोने के चार कड़े बनवाकर मेज के उन चारों कोनों में २७ लगवाना जो उस के चारों पायों में होंगे। वे कड़े पटरी के पास ही हों और डंडों के घरों का काम दें कि मेज २८ उन्हीं के बल उठाई जाए। और डंडों को बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने से मढ़वाना और मेज उन्हीं से उठाई २९ जाए। और उस पर के परात और धूपदान और करवे ३० और उंडेलने के कटोरे सब चोखे सोने के बनवाना। और मेज पर तू मेरे आगे भेंट की रोटियां नित्य रखाना॥

३१ फिर चोखे सोने का एक दीवट बनवाना सोना गढ़ाकर वह दीवट पाये और डण्डी सहित बनाया जाए उस के ३२ पुष्पकोश गांठ और फूल सब एक ही टुकड़े के हों। और उस की अलंगों से छः डालियां निकलें तीन डालियां तो दीवट की एक अलंग से और तीन डालियां उस की दूसरी ३३ अलंग से निकलें। एक एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन तीन पुष्पकोश एक एक गांठ और एक एक फूल हों। दीवट से निकली हुई छहों डालियों का यही ३४ ढब हो। और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के सरीखे चार पुष्पकोश अपनी अपनी गांठ और फूल समेत ३५ हों। और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गांठ हो वे दीवट समेत ३६ एक ही टुकड़े के हों। उन की गांठें और डालियां सब दीवट समेत एक ही टुकड़ा हों चोखा सोना गढ़ाकर ३७ सारा दीवट एक ही टुकड़े का बनवाना। और सात दीपक बनवाना और दीपक बारे जाएं कि वे दीवट के ३८ साम्हने प्रकाश दें। और उस के गुलतराश और गुलदान ३९ सब चोखे सोने के हों। वह सब इस सारे सामान समेत ४० किक्कार भर चोखे सोने का बने। और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया जाता है॥

२६. फिर निवासस्थान के लिये दस पटों को बनवाना इन को बटी हुई सनीवाले और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का कढ़ाई के २ काम किये हुए करूबों के साथ बनवाना। एक एक पट की लंबाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो ३ सब पट एक ही नाप के हों। पांच पट एक दूसरे से जोड़े हुए हों और फिर जो पांच पट रहेंगे वे भी एक ४ दूसरे से जोड़े हुए हों। और जहां ये दोनों पट जोड़े जाएं वहां की दोनों छोरों पर नीली नीली फलियां लगवाना। ५ दोनों छोरों में पचास पचास फलियां ऐसे लगवाना कि वे ६ आम्हने साम्हने हों। और सोने के पचास अंकड़े बनवाना और पटों के पंखों को अंकड़ों के द्वारा एक दूसरे से ऐसा जुड़वाना कि निवासस्थान मिलकर एक ही हो ७ जाए। फिर निवास के ऊपर तंबू का काम देने के लिये ८ बकरी के बाल के ग्यारह पट बनवाना। एक एक पट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो ग्यारहों

(१) मूल में मैं वहां।

९ पट एक ही नाप के हों। और पांच पट अलग और फिर छः पट अलग जुड़वाना और छठवें पट के। तंबू के १० साम्हने मोड़वाना। और जहां पंचा और छक्का दोनों जोड़े जाएं वहां की दोनों छोरों में पचास पचास फलियां ११ लगवाना। और पीतल के पचास अंकड़े बनवाना और अंकड़ों के। फलियों में लगाकर तंबू के। ऐसा जुड़वाना १२ कि वह मिलकर एक ही हो जाए। और तंबू के पटों का लटका हुआ भाग अर्थात् जो आधा पट रहेगा वह निवास १३ की पिछली ओर लटका रहे। और तंबू के पटों की लंबाई में से हाथ भर इधर और हाथ भर उधर निवास के ढांपने के लिये उस की दोनों अलंगों पर लटका हुआ १४ रहे। फिर तंबू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का एक ओहार और उस के ऊपर सूइसों की खालों का भी एक ओहार बनवाना ॥

१५ फिर निवास के लिये बबूल की लकड़ी के तखते खड़े १६ रहने को बनवाना। एक एक तखते की लम्बाई दस हाथ १७ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। एक एक तखते में एक दूसरे से जोड़ी हुई दो दो चूलें हों, निवास के सब तखतों १८ को इसी भांति से बनवाना। और निवास के लिये जो तखते तू बनवाएगा उन में से बीस तखते तो दक्खिन ओर १९ के लिये हों। और बीसों तखतों के नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाना अर्थात् एक एक तखते के नीचे उस के २० चूलों के लिये दो दो कुर्सियां। और निवास की दूसरी २१ अलंग अर्थात् उत्तर ओर बीस तखते बनवाना। और उन के लिये चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाना अर्थात् २२ एक एक तखते के नीचे दो दो कुर्सियां हों। और निवास की पिछली अलंग अर्थात् पच्छिम ओर के लिये छः तखते २३ बनवाना। और पिछली अलंग में निवास के कोनों के २४ लिये दो तखते बनवाना। और ये नीचे से दो दो भाग के हों और दोनों भाग ऊपर के सिरे लों एक एक कड़े में मिलाये जाएं, दोनों तखतों का यही ढब हो, ये तो २५ दोनों कोनों के लिये हों। और आठ तखते हों और उन की चांदी की सोलह कुर्सियां हों अर्थात् एक एक तखते २६ के नीचे दो दो कुर्सियां हों। फिर बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनवाना अर्थात् निवास की एक अलंग के तखतों के २७ लिये पांच और निवास की दूसरी अलंग के तखतों के लिये पांच बेंड़े और निवास की जो अलंग पच्छिम ओर पिछले भाग में होगी उस के लिये पांच बेंड़े बनवाना। २८ और बीचवाला बेंड़ा जो तखतों के मध्य में होगा २९ वह तंबू के एक सिरे से दूसरे सिरे लों पहुंचे। फिर तखतों को सोने से मढ़वाना और उन के कड़े जो बेंड़ों के घरों का काम देंगे उन्हें भी सोने के बनवाना और बेंड़ों को ३० भी सोने से मढ़वाना। और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया जाता है ॥

३१ फिर नीले बैंजनी और लाही रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का एक बीचवाला पर्दा बनवाना ३२ वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ बने। और उस को सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खंभों पर लटकाना इन की अंकड़ियां सोने की हों और ये चांदी की चार कुर्सियों ३३ पर खड़ी रहें। और बीचवाले पर्दे को अंकड़ियों के नीचे लटकाकर उस की आड़ में साक्षीपत्र का संदूक भीतर लिवा ले जाना सो वह बीचवाला पर्दा तुम्हारे लिये पवित्रस्थान को परमपवित्रस्थान से अलग किये रहे। ३४ फिर परमपवित्रस्थान में साक्षीपत्र के संदूक पर प्रायश्चित्त ३५ के ढकने को रखना। और उस पर्दे के बाहर निवास की उत्तर अलंग मेज को रखना और उस की दक्खिन अलंग मेज ३६ के साम्हने दीवट को रखना। फिर तम्बू के द्वार के लिये नीले बैंजनी और लाही रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ एक पर्दा बनवाना। ३७ और इस पर्दे के लिये बबूल के पांच खंभे बनवाना और उन को सोने से मढ़वाना उन की अंकड़ियां सोने की हों और उन के लिये पीतल की पांच कुर्सियां ढलवाना ॥

२७. **फिर** वेदी को बबूल की लकड़ी की पांच हाथ लम्बी और पांच हाथ चौड़ी बनवाना, वेदी चौकोर हो और उस की ऊंचाई तीन हाथ २ की हो। और उस के चारों कोनों पर चार सींग बनवाना वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों और उसे पीतल से ३ मढ़वाना। और उस की राख उठाने के पात्र और फावड़ियां और कटोरे और कांटे और करछे बनवाना उस का यह सारा ४ सामान पीतल का बनवाना। और उस के लिये पीतल की जाली की एक झंझरी बनवाना और उस के चारों सिरों ५ में पीतल के चार कड़े लगवाना। और उस झंझरी को वेदी के चारों ओर की कंगनी के नीचे ऐसे लगवाना कि ६ वह वेदी की ऊंचाई के मध्य लों पहुंचे। और वेदी के लिये बबूल की लकड़ी के डंडे बनवाना और उन्हें पीतल ७ से मढ़वाना। और डंडे कड़ों में डाले जाएं कि जब जब ८ वेदी उठाई जाए तब वे उस की दोनों अलंगों पर रहें। वेदी को तख्तों से खोखली बनवाना जैसी वह इस पर्वत पर तुझे दिखाई जाती है वैसी ही बनाई जाए ॥

९ फिर निवास के आंगन को बनवाना उस की दक्खिन अलंग के लिये तो बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के सब पर्दों को मिलाकर उस की लम्बाई सौ हाथ की हो एक १० अलंग पर तो इतना ही हो। और उन के बीस खंभे बनें और इन के लिये पीतल की बीस कुर्सियां भी बनें

और खंभों की अंकड़ियां और उन के जोड़ने की छड़ें
११ चांदी की हों। और उसी भांति आंगन की उत्तर अलंग की लंबाई में भी सौ हाथ लंबे पर्दे हों और उन के भी बीस खंभे और इन के लिये भी पीतल की बीस कुर्सियां हों और उन खंभों की भी अंकड़ियां और छड़ें चांदी की
१२ हों। फिर आंगन की चौड़ाई में पच्छिम ओर पचास हाथ के पर्दे हों उन के खंभे दस और कुर्सियां भी दस हों।
१३ और पूरब अलंग पर भी आंगन की चौड़ाई पचास हाथ
१४ की हो। और आंगन के द्वार की एक ओर पन्द्रह हाथ के पर्दे हों और उन के खंभे तीन और कुर्सियां भी तीन
१५ हों। और द्वार की दूसरी ओर भी पंद्रह हाथ के पर्दे हों
१६ उन के भी खंभे तीन और कुर्सियां तीन हों। और आंगन के द्वार के लिये एक पर्दा बनवाना जो नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कारचोब का बनाया हुआ बीस हाथ का हो उस के
१७ खंभे चार और कुर्सियां भी चार हों। आंगन की चारों ओर के सब खंभे चांदी की छड़ों से जुड़े हुए हों उन की
१८ अंकड़ियां चांदी की और कुर्सियां पीतल की हों। आंगन की लंबाई सौ हाथ की और उस की चौड़ाई बराबर पचास हाथ और उस की कनात की ऊंचाई पांच हाथ की हो उस की कनात बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की बने
१९ और खंभों की कुर्सियां पीतल की हों। निवास के भांति भांति के बरतने का सब सामान और उस के सब खूंटे और आंगन के भी सब खूंटे पीतल ही के हों।

२० फिर तू इस्राएलियों को आज्ञा देना कि मेरे पास दीवट के लिये कूट के निकाला हुआ जलपाई का निर्म्मल
२१ तेल ले आना जिस से दीपक नित्य बरा[१] करे। मिलाप के तंबू में उस बीचवाले पर्दे से बाहर जो साक्षीपत्र के आगे होगा हारून और उस के पुत्र दीवट सांझ से भोर लों यहोवा के साम्हने सजा रक्खें यह इस्राएलियों के लिये पीढ़ी पीढ़ी लों सदा को विधि ठहरे॥

(याजकों के पवित्र वस्त्र बनाने और उन के संस्कार होने की आज्ञाएं)

२८. फिर तू इस्राएलियों में से अपने भाई हारून और नादाब अबीहू एलाजार और ईतामार नाम उस के पुत्रों को अपने समीप ले आना
२ कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। और तू अपने भाई हारून के लिये विभव और शोभा के निमित्त पवित्र
३ वस्त्र बनवाना। और जितनों के हृदय में बुद्धि है जिन को मैं ने बुद्धि देनेहारे आत्मा से परिपूर्ण किया है उन को तू हारून के वस्त्र बनाने की आज्ञा दे कि वह मेरे
४ निमित्त याजक का काम करने के लिये पवित्र बने। और जो वस्त्र उन्हें बनाने होंगे वे ये हैं अर्थात् चपरास एपोद बागा चारखाने का अंगरखा पगड़ी और फेंटा ये ही पवित्र वस्त्र तेरे भाई हारून और उस के पुत्रों के लिये बनाये जाएं कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। और
५ वे सोने और नीले और बैंजनी और लाही रंग का और सूक्ष्म सनी का कपड़ा लें॥

६ और वे एपोद को बनाएं वह सोने का और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बने, उस की बनावट कढ़ाई के काम की हो।
७ उस के दोनों सिरों में जोड़े हुए दोनों कंधों पर के बन्धन हों इसी भांति वह जोड़ा जाए।
८ और एपोद पर जो काढ़ा हुआ पटुका होगा उस की बनावट उसी के समान हो और वे दोनों बिना जोड़ के हों और सोने और नीले बैंजनी और लाही रंगवाले और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े के हों।
९ फिर दो सुलैमानी मणि लेकर उन पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना।
१० उन के नामों में से छः तो एक मणि पर और शेष छः नाम दूसरे मणि पर इस्राएल के पुत्रों की उत्पत्ति के अनुसार खुदवाना।
११ मणि खोदनेहारे के काम से जैसे छापा खोदा जाता है वैसे ही उन दो मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना और उन को सोने के खानों में जड़ाना।
१२ और दोनों मणियों को एपोद के कंधों पर लगवाना वे इस्राएलियों के निमित्त स्मरण करानेहारे मणि ठहरेंगे अर्थात् हारून उन के नाम यहोवा के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये उठाये रहे॥

१३, १४ फिर सोने के खाने बनवाना। और डोरियों की नाईं गूंथे हुए दो तोड़े चोखे सोने के बनवाना और गूंथे हुए तोड़ों को उन खानों में जड़ाना।
१५ फिर न्याय की चपरास को भी कढ़ाई के काम का बनवाना एपोद की नाईं सोने और नीले बैंजनी और लाही रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की उसे बनवाना।
१६ वह चौकोर और दोहरी हो और उस की लंबाई और चौड़ाई एक एक बित्ते की हो।
१७ और उस में चार पांति मणि जड़ाना, पहिली पांति में तो माणिक्य पद्मराग और लालड़ी हों।
१८ दूसरी पांति में मरकत नीलमणि और हीरा,
१९ तीसरी पांति में लशम सूर्य्यकांत और नीलम,
२० और चौथी पांति में फीरोजा सुलैमानी मणि और यशब हों ये सब सोने के खानों में जड़े जाएं।
२१ और इस्राएल के पुत्रों के जितने नाम हैं उतने मणि हों अर्थात् उन के नामों की गिनती के अनुसार बारह नाम खुदें बारहों गोत्रों में से एक एक का नाम एक एक मणि पर ऐसे खुदे जैसे छापा खोदा जाता है।
२२ फिर चपरास पर डोरियों की नाईं गूंथे हुए चोखे सोने

(१) मूल में चढ़ा।

२३ के तोड़े लगवाना । और चपरास में सोने की दो कड़ियां लगवाना और दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों २४ पर लगवाना । और सोने के दोनों गूंथे तोड़ों को उन दोनों कड़ियों में जो चपरास के सिरों पर होंगी लगवाना । २५ और गूंथे हुए दोनों तोड़ों के दोनों बाकी सिरों को दोनों खानों में जड़के एपोद के दोनों कंधों के बंधनों पर उस २६ के साम्हने लगवाना । फिर सोने की दो और कड़ियां बनवाकर चपरास के दोनों सिरों पर उस की उस कोर पर जो २७ एपोद की भीतरवार होगी लगवाना । फिर उन के सिवाय सोने की दो और कड़ियां बनवाकर एपोद के दोनों कंधों के बन्धनों पर नीचे से उस के साम्हने पर और उस के जोड़ के २८ पास एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगवाना । और चपरास अपनी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से बान्धी जाए इस रीति वह एपोद के काढ़े हुए पटुके पर बनी रहे और चपरास एपोद पर से अलग न २९ होने पाए । और जब जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब तब वह न्याय की चपरास पर अपने हृदय के ऊपर इस्राएलियों के नामों को उठाये रहे जिस से यहोवा ३० के साम्हने उन का स्मरण नित्य रहे । और तू न्याय की चपरास में ऊरीम[1] और तुम्मीम[2] को रखना और जब जब हारून यहोवा के साम्हने प्रवेश करे तब तब वे उस के हृदय के ऊपर हों सो हारून इस्राएलियों के न्यायपदार्थ को अपने हृदय के ऊपर यहोवा के साम्हने नित्य उठाये रहे ॥

३१ फिर एपोद के बागे को संपूर्ण नीले रंग का बन ३२ वाना । और उस की बनावट ऐसी हो कि उस के बीच में सिर डालने के लिये छेद हो और उस छेद की चारों ओर बखतर के छेद की सी एक बुनी हुई कोर हो कि ३३ वह फटने न पाए । और उस के नीचेवाले घेरे में चारों ओर नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के अनार बनवाना और उन के बीच बीच चारों ओर सोने की ३४ घंटियां लगवाना । अर्थात् एक सोने की घंटी और एक अनार फिर एक सोने की घंटी और एक अनार इसी ३५ रीति बागे के नीचेवाले घेरे में चारों ओर हो । और हारून उस बागे को सेवा टहल करने के समय पहिना करे कि जब जब वह पवित्रस्थान के भीतर यहोवा के साम्हने जाए वा बाहर निकले तब तब उस का शब्द सुनाई दे नहीं तो वह मर जाएगा ॥

३६ फिर चोखे सोने का एक टीका बनवाना और जैसे छापे में वैसे ही उस में ये अक्षर खोदे जाएं अर्थात् ३७ यहोवा के लिये पवित्र, और उसे नीले फीते पर बंधाना ३८ और वह पगड़ी के साम्हने पर रहे । सो वह हारून के माथे पर रहे इसलिए कि इस्राएली जो कुछ पवित्र ठहराएं अर्थात् जितनी पवित्र भेंट करें उन पवित्र वस्तुओं का दोष हारून उठाये रहे और वह नित्य उस के माथे पर रहे जिस से यहोवा उन से प्रसन्न रहे ॥

३९ और अंगरखे को सूक्ष्म सनी के कपड़े का और चारखानेवाला बुनाना और एक पगड़ी भी सूक्ष्म सनी के कपड़े की बनवाना और कारचोबी काम किया हुआ एक फेंटा भी बनवाना ॥

४० फिर हारून के पुत्रों के लिये भी अंगरखे और फेंटे और टोपियां बनवाना ये वस्त्र भी विभव और शोभा ४१ के लिये बनें । अपने भाई हारून और उस के पुत्रों को ये ही सब वस्त्र पहिनाकर उन का अभिषेक और संस्कार[3] करना और उन्हें पवित्र करना कि वे मेरे लिये याजक का ४२ काम करें । और उन के लिये सनी के कपड़े की जांघिया बनवाना जिन से उन का तन ढंपा रहे वे कटि से जांघ ४३ लों की हों । और जब जब हारून वा उस के पुत्र मिलापवाले तंबू में प्रवेश करें वा पवित्र स्थान में सेवा टहल करने को वेदी के पास जाएं तब तब वे उन जांघियों को पहिने रहें न हो कि वे दोष उठाकर मर जाएं यह हारून के लिये और उस के पीछे उस के वंश के लिये भी सदा की विधि ठहरे ॥

२९ **और** उन्हें पवित्र करने को जो काम तुझे उन से करना है कि वे मेरे लिये याजक का काम करें सो यह है कि एक निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष मेढ़े लेना । २ और अखमीरी रोटी और तेल से सने हुए मैदे के अखमीरी फुलके और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियां भी लेना ये सब गोहूं के मैदे के बनवाना । ३ इन को एक टोकरी में रखकर उस टोकरी को उस बछड़े और उन दोनों मेढ़ों समेत समीप ले आना । ४ फिर हारून और उस के पुत्रों को मिलापवाले तंबू के द्वार के समीप ले आकर जल से नहलाना । ५ तब उन वस्त्रों को लेकर हारून को अंगरखा और एपोद का बागा पहिनाना और एपोद और चपरास बांधना और एपोद का काढ़ा हुआ पटुका भी बांधना । ६ और उस के सिर पर पगड़ी को रखना और पगड़ी पर पवित्र मुकुट को रखना । ७ तब अभिषेक का तेल ले उस के सिर पर डाल कर उस का अभिषेक करना । ८ फिर उस के पुत्रों को समीप ले आकर उन को अंगरखे पहिनाना । ९ और उन के अर्थात् हारून और उस के पुत्रों के फेंटे बांधना और उन के सिर पर टोपियां रखना, जिस से

(१) अर्थात् ज्योतियां । (२) अर्थात् पूर्णताएं ।

(३) यहां और जहां कहीं याजकों के संस्कार वा याजकों के से संस्कार की चर्चा हो तहां जानो कि मूल का शब्दार्थ हाथ भर देना वा भर लेना है।

याजक के पद का उन के प्राप्त होना सदा की विधि ठहरे इसी प्रकार हारून और उस के पुत्रों का संस्कार
१० करना । और बछड़े को मिलापवाले तंबू के साम्हने समीप ले आना और हारून और उस के पुत्र बछड़े के सिर पर
११ अपने अपने हाथ टेकें । तब उस बछड़े को यहोवा के
१२ आगे मिलापवाले तंबू के द्वार पर बलि करना । और बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर अपनी उंगली से वेदी के सींगों पर लगाना और और सब लोहू को वेदी
१३ के पाये पर उंडेल देना । और जिस चरबी से अन्तरियां ढपी रहती हैं और जो झिल्ली कलेजे के ऊपर होती है उन दोनों को गुर्दों और उन पर की चरबी समेत लेकर सब
१४ को वेदी पर जलाना । और बछड़े का मांस और खाल और गोबर छावनी से बाहर आग में जला देना क्योंकि
१५ यह पापबलिपशु होगा । फिर एक मेढ़ा लेना और हारून और उस के पुत्र उस के सिर पर अपने अपने हाथ टेकें ।
१६ तब उस मेढ़े को बलि करना और उस का लोहू लेकर
१७ वेदी पर चारों ओर छिड़कना । और उस मेढ़े को टुकड़े टुकड़े काटना और उस की अन्तरियों और पैरों को धोकर
१८ उस के टुकड़ों और सिर के ऊपर रखना । तब उस सारे मेढ़े को वेदी पर जलाना वह तो यहोवा के लिये होमबलि होगा वह सुखदायक सुगंध और यहोवा के लिये हव्य[१]
१९ होगा । फिर दूसरे मेढ़े को लेना और हारून और उस के
२० पुत्र उस के सिर पर अपने अपने हाथ टेकें । तब उस मेढ़े को बलि करना और उस के लोहू में से कुछ लेकर हारून और उस के पुत्रों के दहिने कान के सिरे पर और उन के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाना
२१ और लोहू को वेदी पर चारों ओर छिड़क देना । फिर वेदी पर के लोहू और अभिषेक के तेल इन दोनों में से कुछ कुछ लेकर हारून और उस के वस्त्रों पर और उस के पुत्रों और उन के वस्त्रों पर भी छिड़क देना, तब वह अपने वस्त्रों समेत और उस के पुत्र भी अपने अपने वस्त्रों समेत
२२ पवित्र हो जाएंगे । तब मेढ़े को संस्कारवाला जानकर उस में से चरबी और मोटी पूंछ को और जिस चरबी से अन्तरियां ढपी रहती हैं उस को और कलेजे पर की झिल्ली को और चरबी समेत दोनों गुर्दों को और दहिने पुट्ठे को
२३ लेना । और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी होगी उस में से भी एक रोटी और तेल से सने हुए
२४ मैदे का एक फुलका और एक पपड़ी लेकर इन सभों को हारून और उस के पुत्रों के हाथों में रखकर हिलाये जाने
२५ की भेंट करके यहोवा के आगे हिलाना । तब उन वस्तुओं को उन के हाथों से लेकर होमबलि के ऊपर वेदी पर जला देना जिस से वे यहोवा के साम्हने चढ़कर सुखदायक सुगंध ठहरे, वह तो यहोवा के लिये हव्य होगी । फिर
२६ हारून के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उस की छाती को लेकर हिलाये जाने की भेंट करके यहोवा के आगे हिलाना
२७ और वह तेरा भाग ठहरेगा । और हारून और उस के पुत्रों के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उसमें से हिलाये जाने की भेंटवाली छाती जो हिलाई जाएगी और उठाये जाने की
२८ भेंटवाला पुट्ठा जो उठाया जाएगा इन दोनों को पवित्र ठहराना कि ये सदा की विधि की रीति पर इस्राएलियों की ओर से उस का और उस के पुत्रों का भाग ठहरें क्योंकि ये उठाये जाने की भेंटें ठहरी हैं, सो यह इस्राएलियों की ओर से उन के मेलबलियों में से यहोवा के लिये उठाये
२९ जाने की भेंट होगी । और हारून के जो पवित्र वस्त्र होंगे सो उस के पीछे उस के बेटे पोते आदि को मिलते रहें कि उन्हीं को पहिने हुए उन का अभिषेक और संस्कार किया
३० जाए । उस के पुत्रों में से जो उस के स्थान पर याजक होगा सो जब पवित्रस्थान में सेवा टहल करने को मिलाप-वाले तंबू में पहिले आए तब उन वस्त्रों को सात दिन लों
३१ पहिने रहे । फिर याजक के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उसे लेकर उस का मांस किसी पवित्र स्थान में सिझाना ।
३२ तब हारून अपने पुत्रों समेत उस मेढ़े का मांस और टोकरी की रोटी दोनों को मिलापवाले तंबू के द्वार पर
३३ खाए । और जिन पदार्थों से उन का संस्कार और उन्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा उन को वे तो खाएं परन्तु पराये कुल का कोई उन्हें न खाने पाए
३४ क्योंकि वे पवित्र होंगे । और यदि संस्कारवाले मांस वा रोटी में से कुछ बिहान लों बचा रहे तो उस बचे हुए को आग में जलाना वह खाया न जाए क्योंकि पवित्र होगा ।
३५ और मैं ने तुझे जो जो आज्ञा दी हैं उन सभों के अनुसार तू हारून और उस के पुत्रों से करना और सात दिन लों
३६ उन का संस्कार करते रहना, अर्थात् पापबलि का एक बछड़ा प्रायश्चित्त के लिये दिन दिन चढ़ाना और वेदी के लिये भी प्रायश्चित्त करके उस को पाप छुड़ाकर पावन करना और उसे पवित्र करने के लिये उस का अभिषेक
३७ करना । सात दिन लों वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र करना और वेदी परमपवित्र ठहरेगी और जो कुछ उस से छू जाएगा वह पवित्र ठहरेगा ॥

३८ जो तुझे वेदी पर नित्य चढ़वाना होगा वह यह है अर्थात् दिन दिन एक एक बरस के दो भेड़ी के बच्चे ।
३९ एक भेड़ के बच्चे को तो भोर के समय और दूसरे भेड़
४० के बच्चे को गोधूल के समय चढ़ाना । और एक भेड़ के बच्चे के संग हीन की चौथाई कूटके निकाले हुए तेल से

(१) अर्थात जो वस्तु अग्नि में झोंकके चढ़ाई जाए ।

सना हुआ एपा का दसवां भाग मैदा और अर्घ के लिये
४१ हीन की चौथाई दाखमधु देना। और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना और उस के साथ भोर के से अन्नबलि और अर्घ दोनों करना जिस से वह सुख-
४२ दायक सुगंध और यहोवा के लिये हव्य ठहरे। तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के आगे मिलापवाले तंबू के द्वार पर नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे यह वह स्थान है जिस में मैं तुम लोगों से इस लिये मिला करूंगा कि तुझ
४३ से बातें करूं। और मैं इस्राएलियों से वहीं मिला करूंगा
४४ और वह तंबू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा। और मैं मिलापवाले तंबू और वेदी को पवित्र करूंगा और हारून और उस के पुत्रों को भी पवित्र करूंगा कि वे मेरे लिये
४५ याजक का काम करें। और मैं इस्राएलियों के बीच
४६ निवास करूंगा और उन का परमेश्वर ठहरूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उन का वह परमेश्वर हूं जो उन को मिस्र देश से इस लिये निकाल लाया है कि उन के बीच निवास करें मैं तो उन का परमेश्वर यहोवा हूं॥

(भांति भांति की पवित्र वस्तुएं बनाने और भांति भांति की रीति चलाने की आज्ञाएं)

३०. फिर धूप जलाने के लिये बबूल की लकड़ी की
२ एक वेदी बनवाना। उस की लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो सो वह चौकोर हो और उस की ऊंचाई दो हाथ की हो और वह और उस
३ के सींग एक ही टुकड़ा हों। और इस वेदी के ऊपरवाले पल्ले और चारों ओर की अलंगों और सींगों को चोखे सोने से मढ़वाना और इस की चारों ओर सोने की एक
४ बाड़ बनवाना। और इस की बाड़ के नीचे इस के दोनों पल्लों पर सोने के दो दो कड़े बनवाकर इस के दोनों ओर लगवाना वे इस के उठाने के डण्डों के खानों का काम
५ दें। और डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने
६ से मढ़वाना। और इस को उस पर्दे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के संदूक के साम्हने होगा अर्थात् प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे रखना जो साक्षीपत्र के ऊपर होगा उसी
७ स्थान में मैं तुझ से मिला करूंगा। और इस वेदी पर हारून सुगन्धित धूप जलाया करे दिन दिन भोर को जब
८ वह दीपकों को ठीक करेगा तब वह धूप को जलाए। फिर गोधूलि के समय जब वह दीपकों को बारेगा[१] तब भी उसे तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के साम्हने नित्य धूप जान
९ के जलाए। इस वेदी पर तुम न तो और प्रकार का धूप और न होमबलि न अन्नबलि चढ़ाना और न इस पर अर्घ
१० देना। और हारून बरस दिन में एक बार इस के सींगों

(१) मूल में चढ़ाएगा।

पर प्रायश्चित्त करे तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में बरस दिन में एक बार प्रायश्चित्त के पापबलि के लोहू से इस पर प्रायश्चित्त किया जाए यह यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे॥

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, जब तू इस्रा- ११, १२ एलियों की गिनती लेने लगे तब वे गिनने के समय अपने अपने प्राण के लिये यहोवा को प्रायश्चित्त दें, न हो कि उस समय उन पर कोई विपत्ति पड़े। जितने लोग गिने जाएं[१] १३ वे पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से आधा शेकेल दें यह शेकेल तो बीस गेरा का होता है सो यहोवा की भेंट आधा शेकेल हो। बीस बरस के वा उस से अधिक १४ अवस्था के जो गिने जाएं[१] उन में से एक एक जन यहोवा की भेंट दे। जब तुम्हारे प्राणों के प्रायश्चित्त के १५ निमित्त यहोवा की भेंट दी जाए तब न तो धनी लोग आधे शेकेल से अधिक दें और न कंगाल लोग उस से कम दें। सो इस्राएलियों से प्रायश्चित्त का रुपए लेकर १६ मिलापवाले तंबू के काम के लिये देना जिस से वह यहोवा के साम्हने इस्राएलियों का स्मरणचिन्ह ठहरे और उन के प्राणों का भी प्रायश्चित्त हो॥

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, धोने के लिये पीतल १७, १८ की एक हौदी और उस का पाया पीतल का बनवाना और उसे मिलापवाले तंबू और वेदी के बीच में रखवाकर उस में जल भराना। और उस में हारून और उस के १९ पुत्र अपने अपने हाथ पांव धोया करें। जब जब वे २० मिलापवाले तंबू में प्रवेश करें तब तब वे हाथ पांव जल से धोएं, नहीं तो मर जाएंगे और जब जब वे वेदी के पास सेवा टहल करने अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने को आएं तब तब भी वे हाथ पांव धोएं, न हो कि मर जाएं। यह हारून और उस के पीढ़ी पीढ़ी के वंश के २१ लिये सदा की विधि ठहरे॥

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू मुख्य मुख्य २२, २३ सुगन्ध द्रव्य अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से पांच सौ शेकेल अपने आप निकला हुआ गंधरस और उस की आधी अर्थात् अढ़ाई सौ शेकेल सुगंधित दालचीनी और अढ़ाई सौ शेकेल सुगंधित बच और पांच सौ शेकेल २४ तज और एक हीन जलपाई का तेल लेकर उन से २५ अभिषेक का पवित्र तेल अर्थात् गंधी की रीति से बासा हुआ सुगंधित तेल बनवाना यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। और उस से मिलापवाले तंबू का और साक्षीपत्र २६ के संदूक का और सारे सामान समेत मेज का और २७ सामान समेत दीवट का और धूपवेदी का और सारे २८ सामान समेत होमवेदी का और पाये समेत हौदी का

(१) मूल में गिने हुओं के पास पार जाएं।

२९ अभिषेक करना। और उन को पवित्र करना कि वे परम-पवित्र ठहरें जो कुछ उन से छू जाएगा वह पवित्र ठहरे। ३० फिर पुत्रों सहित हारून का भी अभिषेक करना और यों उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने को पवित्र करना। ३१ और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल ३२ हो। वह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए और मिलावट में उस के सरीखा और कुछ न बनाना वह तो ३३ पवित्र होगा वह तुम्हारे लेखे पवित्र ठहरे। जो कोई उस के सरीखा कुछ बनाए वा जो कोई उस में से कुछ पराये कुलवाले पर लगाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए॥

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा बोल नखी और कुन्दरू ये सुगन्ध द्रव्य निर्मल लोबान समेत ले लेना तौल में ये सब ३५ एक समान हों। और इन का धूप अर्थात् लोन मिला कर गन्धी की रीति से बासा हुआ चोखा और पवित्र सुगन्ध ३६ द्रव्य बनवाना। फिर उस में से कुछ पीस कर बुकनी कर डालना तब उस में से कुछ मिलापवाले तंबू में साक्षीपत्र के आगे जहां पर मैं तुझ से मिला करूंगा वहां रखना ३७ वह तुम्हारे लेखे परमपवित्र ठहरे। और जो धूप तू बनवाएगा मिलावट में उस के सरीखा तुम लोग अपने लिये और कुछ न बनवाना वह तुम्हारे लेखे यहोवा के लिये पवित्र ३८ ठहरे। जो कोई सूंघने के लिये उस के सरीखा कुछ बनाए सो अपने लोगों में वह नाश किया जाए॥

२ **३१. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा, सुन मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है नाम लेकर बुलाता ३ हूं। और मैं उस को परमेश्वर के आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान और सब प्रकार के कार्य्यों की समझ ४ देनेहारा आत्मा है परिपूर्ण करता हूं जिस से वह हथौटी के कार्य्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भान्ति की ५ बनावट में अर्थात् सोने चाँदी और पीतल में और जड़ने के लिये मणि काटने में और लकड़ी के खोदने में काम ६ करे। और सुन मैं दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब को उस के संग कर देता हूं बरन जितने बुद्धिमान् हैं उन सभों के हृदय में मैं बुद्धि देता हूं कि जितनी बस्तुओं की आज्ञा मैं ने तुझे दी है उन सभों ७ को वे बनाएं अर्थात् मिलापवाला तंबू और साक्षीपत्र का सन्दूक और उस पर का प्रायश्चित्तवाला ढकना और ८ तंबू का सारा सामान और सामान सहित मेज और सारे ९ सामान समेत चोखे सोने की दीवट और धूपवेदी और १० सारे सामान सहित होमवेदी और पाये समेत हौदी और काढ़े हुए वस्त्र और हारून याजक के याजकवाले काम ११ के पवित्र वस्त्र और उस के पुत्रों के वस्त्र और अभिषेक का तेल और पवित्रस्थान के लिये सुगन्धित धूप इन सभों को वे उन सब आज्ञाओं के अनुसार बनाएं जो मैं ने तुझे दी हैं॥

१२, १३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू इस्राएलियों से यह भी कहना कि निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है जिस से तुम यह बात १४ जान रक्खो कि यहोवा हमारा पवित्र करनेहारा है। इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र ठहरा है जो उस को अपवित्र करे सो निश्चय मार डाला जाए, जो कोई उस दिन में कुछ कामकाज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए। १५ छः दिन तो काम काज किया जाए पर सातवां दिन परमविश्राम का दिन और यहोवा के लिये पवित्र है सो जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम काज करे वह १६ निश्चय मार डाला जाए। सो इस्राएली विश्रामदिन को माना करें बरन पीढ़ी पीढ़ी में उस को सदा की वाचा का १७ विषय जानकर माना करें। वह मेरे और इस्राएलियों के बीच सदा एक चिन्ह रहेगा क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथिवी को बनाया और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया॥

१८ जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका तब उस ने उस को अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देनेवाली पत्थर की दोनों पटियाएं दीं॥

(इस्राएलियों के मूर्तिपूजा में फंसने का वर्णन)

३२. जब लोगों ने देखा कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हुआ तब वे हारून के पास इकट्ठे होकर कहने लगे अब हमारे लिये देवता बना जो हमारे आगे आगे चले क्योंकि उस पुरुष मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया है न जानिये २ क्या हुआ। हारून ने उन से कहा तुम्हारी स्त्रियों और बेटे बेटियों के कानों में सोने की जो बालियां हैं उन्हें ३ तोड़कर उतारो और मेरे पास ले आओ। तब सब लोगों ने उन के कानों में की सोनेवाली बालियों को तोड़कर ४ उतारा और हारून के पास ले आये। और हारून ने उन्हें उन के हाथ से लिया और टांकी से गढ़ के एक बछड़ा ढालकर बनाया तब वे कहने लगे कि हे इस्राएल तेरा परमेश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है वह ५ यही है। यह देखके हारून ने उस के आगे एक वेदी बनवाई और यह प्रचारा कि कल यहोवा के लिये पर्ब्ब

६ होगा। सो दूसरे दिन लोगों ने तड़के उठकर होमबलि चढ़ाये और मेलबलि ले आये फिर बैठकर खाया पिया और उठकर खेलने लगे॥

७ तब यहोवा ने मूसा से कहा नीचे उतर जा क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल ले आया
८ है सो बिगड़ गये हैं। जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उन को दी थी उस को झटपट छोड़ कर उन्हों ने एक बछड़ा ढालकर बना लिया, फिर उस को दंडवत् किया और उस के लिये बलिदान भी चढ़ाया और यह कहा है कि हे इस्राएलियो तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र
९ देश से छुड़ा ले आया है सो यही है। फिर यहोवा ने मूसा से कहा मैं ने इन लोगों को देखा और सुना वे
१० हठीले हैं[1]। सो अब मुझे मत रोक मैं उन्हें भड़के कोप से भस्म कर दूं और तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊं।
११ तब मूसा अपने परमेश्वर यहोवा को यह कहके मनाने लगा कि हे यहोवा तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यों भड़का है जिसे तू बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र
१२ देश से निकाल लाया है। मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएं कि वह उन को बुरे अभिप्राय से अर्थात् पहाड़ों में घात करके धरती पर से मिटा डालने की मनसा से निकाल ले गया। तू अपने भड़के हुए कोप से फिर और अपनी
१३ प्रजा की ऐसी हानि से पछता। अपने दास इब्राहीम इसहाक और याकूब का स्मरण कर जिन से तू ने अपनी ही किरिया खाकर यह कहा था कि मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के तुल्य बहुत करूंगा और यह सारा देश जिस की मैं ने चर्चा की है तुम्हारे वंश को दूंगा
१४ कि वह उस का अधिकारी सदा लों रहे। तब यहोवा अपनी प्रजा की वह हानि करने से पछताया जो उस ने करने को कही थी॥

१५ तब मूसा फिरकर साक्षी की दोनों पटियाएं हाथ में लिये हुए पहाड़ से उतर चला उन पटियाओं के तो इधर और उधर दोनों अलंगों पर कुछ लिखा हुआ था।
१६ और वे पटियाएं परमेश्वर की बनाई हुई थीं और उन पर जो लिखा था वह परमेश्वर का खोदकर लिखा हुआ था॥

१७ जब यहोशू को लोगों के कोलाहल का शब्द सुन पड़ा तब उस ने मूसा से कहा छावनी से लड़ाई का सा
१८ शब्द सुनाई देता है। उस ने कहा वह जो शब्द है सो न तो जीतनेहारों का है और न हारनेहारों का मुझे तो
१९ गाने का शब्द सुन पड़ता है। छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और नाचना देख पड़ा तब मूसा का कोप भड़क उठा और उस ने पटियाओं को अपने हाथों
२० से पर्वत के तले पटककर तोड़ डाला। तब उस ने उन के बनाये हुए बछड़े को ले आग में डालके फूंक दिया और पीसकर चूर चूर कर डाला और जल के ऊपर फेंक
२१ दिया और इस्राएलियों को उसे पिलवा दिया। तब मूसा हारून से कहने लगा उन लोगों ने तुझ से क्या किया कि
२२ तू ने उन को इतने बड़े पाप में फंसाया। हारून ने उत्तर दिया मेरे प्रभु का कोप न भड़के तू तो उन लोगों को
२३ जानता ही है कि वे बुराई में मन लगाये रहते हैं। सो उन्हों ने मुझ से कहा था कि हमारे लिए देवता बनवा जो हमारे आगे आगे चलें क्योंकि उस पुरुष मूसा को जो हमें मिस्र देश से छुड़ा लाया है न जानिये क्या हुआ।
२४ तब मैं ने उन से कहा जिस जिस के पास सोने के गहने हों वे उन को तोड़के उतारें सो जब उन्हों ने उन्हें मुझ को दिया और मैं ने उन्हें आग में डाल दिया तब यह बछड़ा
२५ निकल पड़ा। हारून ने उन लोगों को ऐसा निरंकुश कर दिया था कि वे अपने विरोधियों के बीच उपहास[2] के
२६ योग्य हुए। सो उन को निरंकुश देखकर, मूसा ने छावनी के निकास पर खड़े होकर कहा जो कोई यहोवा की ओर का हो वह मेरे पास आए तब सारे लेवीय उस के पास
२७ इकट्ठे हुए। उस ने उन से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि अपनी अपनी जांघ पर तलवार लटकाकर छावनी के एक निकास से ले दूसरे निकास लों घूम घूमकर अपने अपने भाइयों संगियों और पड़ोसियों
२८ को घात करो। मूसा के इस वचन के अनुसार लेवीयों ने किया और उस दिन तीन हजार के अटकल लोग मारे
२९ गये। फिर मूसा ने कहा आज के दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का संस्कार करो[3] बरन अपने अपने बेटों और भाइयों के भी विरुद्ध होकर ऐसा करो जिस से
३० वह आज तुम को आशिष दे। दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा तुम ने बड़ा ही पाप किया है अब मैं यहोवा के पास चढ़ जाऊंगा क्या जानिये मैं तुम्हारे पाप का
३१ प्रायश्चित्त कर सकूं। सो मूसा यहोवा के पास फिर जाकर कहने लगा कि हाय हाय उन लोगों ने सोने का देवता
३२ बनवाकर बड़ा ही पाप किया है। तौ भी अब तू उन का पाप क्षमा करे—नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से
३३ मेरे नाम को काट दे[4]। यहोवा ने मूसा से कहा जिस ने मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में
३४ से काट दूंगा। अब तो तू जाकर उन लोगों को उस स्थान में ले चल जिस की चर्चा मैं ने तुझ से की थी देख मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा पर जिस दिन मैं

(१) मूल में कड़ी गर्दनवाले।
(२) मूल में फुसफुसाहट। (३) मूल में अपना हाथ भरो। (४) मूल में मुझी को मिटा।

दण्ड देने लगूं उस दिन उन को इस पाप का दण्ड
३५ दूंगा। और यहोवा ने उन लोगों पर विपत्ति डाली क्योंकि हारून के बनाये हुए बछड़े को उन्हीं ने बनवाया था॥

३३.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा तू उन लोगों को जिन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है संग लेकर उस देश को जा जिस के विषय में ने इब्राहीम इसहाक और याकूब से किरिया खाकर कहा था कि मैं
२ इसे तुम्हारे वंश को दूंगा। और मैं तेरे आगे आगे एक दूत को भेजूंगा और कनानी एमोरी हित्ती परिज्जी हिव्वी
३ और यबूसी लोगों को बरबस निकाल दूंगा। सो तुम लोग उस देश को जाओ जिस में दूध और मधु की धारा बहती हैं पर तुम जो हठीले हो इस कारण मैं तुम्हारे बीच में होके न चलूंगा ऐसा न हो कि मार्ग में तुम्हारा अन्त कर
४ डालूं। यह बुरा समाचार सुनकर वे लोग विलाप करने
५ लगे और कोई अपने गहने पहिने हुए न रहा। क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया था कि इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना कि तुम लोग तो हठीले हो जो मैं पल भर के लिये तुम्हारे बीच होकर चलूं तो तुम्हारा अन्त कर डालूंगा सो अब अपने अपने गहने अपने अंगों से उतार
६ दो कि मैं जानूं कि तुम से क्या करना चाहिये। तब इस्राएली होरेब पर्वत से लेकर आगे को अपने गहने उतारे रहे॥

(मूसा के इस्राएलियों के लिये पापमोचन मांगने का वर्णन)

७ मूसा तो तंबू को लेकर छावनी से बाहर बरन दूर खड़ा कराया करता था और उस को मिलापवाला तंबू कहता था और जो कोई यहोवा को ढूंढ़ता सो उस मिलापवाले तंबू के पास जो छावनी के बाहर था निकल
८ जाता था। और जब जब मूसा तंबू के पास जाता तब तब सब लोग उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते और जब लों मूसा उस तंबू में प्रवेश न करता तब लों
९ उस की ओर ताकते रहते थे। और जब मूसा उस तंबू में प्रवेश करता तब बादल का खंभा उतर के तंबू के द्वार पर ठहर जाता और यहोवा मूसा से बातें करने लगता
१० था। और सब लोग जब बादल के खंभे को तंबू के द्वार पर ठहरा देखते तब उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर
११ से दण्डवत् करते थे। और यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने साम्हने बातें करता था जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे और मूसा तो छावनी में फिर आता था पर यहोशू नाम एक जवान जो नून का पुत्र और मूसा का टहलुआ था सो तंबू में से न निकलता था॥
१२ और मूसा ने यहोवा से कहा सुन तू मुझ से कहता है कि इन लोगों को ले चल पर यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किस को भेजेगा तौ भी तू ने कहा है कि तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है[१] और तुझ पर मेरी अनुग्रह की दृष्टि
१३ है। सो अब यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो मुझे अपनी गति समझा दे जिस से जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे फिर इस
१४ की भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है। यहोवा ने
१५ कहा मैं आप चलूंगा[२] और तुझे विश्राम दूंगा। उस ने उस से कहा यदि तू आप[३] न चले तो हमें यहां से आगे
१६ न ले जा। यह कैसे जाना जाए कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है क्या इस से नहीं कि तू हमारे संग संग चले जिस से मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथिवी भर के सब लोगों से अलग ठहरें॥
१७ यहोवा ने मूसा से कहा मैं यह काम भी जिस की चर्चा तू ने की है करूंगा क्योंकि मेरी अनुग्रह की दृष्टि
१८ तुझ पर है और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है[४]। उस ने
१९ कहा मुझे अपना तेज दिखा दे। उस ने कहा मैं तेरे सन्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा[५] और तेरे सन्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा और जिस पर मैं अनुग्रह करने चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा और जिस पर दया करना चाहूं उसी पर दया करूंगा।
२० फिर उस ने कहा तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीता नहीं रह
२१ सकता। फिर यहोवा ने कहा सुन मेरे पास एक स्थान
२२ है सो तू उस चटान पर खड़ा हो। और जब लों मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे[६] तब लों मैं तुझे चटान के दरार मे रक्खूंगा और जब लों मैं तेरे साम्हने होकर न निकल जाऊं तब लों अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा।
२३ फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा पर मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा॥

३४.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ ले तब जो वचन उन पहिली पटियाओं पर लिखे थे जिन्हें तू ने तोड़ डाला वे ही वचन मैं उन
२ पटियाओं पर भी लिखूंगा। और बिहान को तैयार हो रहना और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उस की चोटी
३ पर मेरे साम्हने खड़ा होना। और तेरे संग कोई न चढ़ जाए बरन पर्वत भर पर कोई मनुष्य कहीं दिखाई न दे और न भेड़ बकरी गाय बैल भी पर्वत के आगे चरने

(१) मूल में मैं तुझे नाम से जानता हूं। (२) मूल में मेरा मुंह चलेगा। (३) मूल में तेरा मुंह। (४) मूल में मैं तुझे नाम से जानता हूं। (५) मूल में अपनी सारी भलाई तेरे साम्हने से चलाऊंगा। (६) मूल में मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे।

पाएं। ४ तब मूसा ने पहिली पटियाओं के समान दो और पटियाएं गढ़ीं और बिहान को सवेरे उठकर अपने हाथ में पत्थर की वे दो पटियाएं लेकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार सीनै पर्वत पर चढ़ गया। ५ तब यहोवा ने बादल में उतरके उस के संग वहां खड़ा होकर यहोवा नाम का प्रचार किया। ६ और यहोवा उस के साम्हने होकर यों प्रचार करता हुआ चला कि यहोवा यहोवा ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय और सत्य, ७ हजारों पीढ़ियों लों निरन्तर करुणा करनेहारा अधर्म्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेहारा है पर दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा वह पितरों के अधर्म्म का दण्ड उन के बेटों बरन पोतों और परपोतों को भी देनेहारा है। ८ तब मूसा ने फुर्ती कर पृथिवी की ओर झुककर दण्डवत् की। ९ और उस ने कहा हे प्रभु यदि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो प्रभु हम लोगों के बीच में होकर चले ये लोग हठीले तो हैं तौभी हमारे अधर्म्म और पाप को क्षमा कर और हमें अपना निज भाग मानके ग्रहण कर। १० उस ने कहा सुन मैं एक वाचा बांधता हूं तेरे सब लोगों के साम्हने मैं ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म करूंगा जैसे पृथिवी भर पर और सब जातियों में कभी नहीं हुए और वे सारे लोग जिन के बीच तू रहता है यहोवा के कार्य्य को देखेंगे क्योंकि जो मैं तुम लोगों से करने पर हूं वह भययोग्य काम है। ११ जो आज्ञा मैं आज तुम्हें देता हूं उसे तुम लोग मानना देखो मैं तुम्हारे आगे से एमोरी कनानी हित्ती परिज्जी हिव्वी और यबूसी लोगों को निकालता हूं। १२ सो सावधान रहना कि जिस देश में तू जानेवाला है उस के निवासियों से वाचा न बांधना न हो कि वह तेरे लिये फन्दा ठहरे। १३ बरन उन की वेदियों को गिरा देना उन की लाठों को तोड़ डालना और उन की अशेरा नाम मूर्त्तियों को काट डालना। १४ क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं है क्योंकि यहोवा जिस का नाम जलनशील है वह जल उठनेहारा ईश्वर है ही। १५ ऐसा न हो कि तू उस देश के निवासियों से वाचा बांधे और वे अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करे और उन के लिये बलिदान भी करें और कोई तुझे नेवता दे और तू भी उस के बलिपशु का प्रसाद खाए १६ और तू उन की बेटियों को अपने बेटों के लिये बरे और उन की बेटियां जो आप अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करती हैं तेरे बेटों से भी अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार कराएं। १७ तुम देवताओं की मूर्त्तियां ढालकर न बना लेना। १८ अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मानना उस में मेरी आज्ञा के अनुसार आबीब महीने के नियत समय पर सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना क्योंकि तू मिस्र से आबीब महीने में निकल आया। १९ हर एक पहिलौठा मेरा है और क्या बछड़ा क्या भेड़ा तेरे पशुओं में से जो नर पहिलौठे हों वे सब मेरे ही हैं। २० और गदही के पहिलौठे की सन्ती भेड़ा देकर उस को छुड़ाना यदि तू उसे छुड़ाना न चाहे तो उस की गर्दन तोड़ देना पर अपने सब पहिलौठे बेटों को बदला देकर छुड़ाना। मुझे कोई छूछे हाथ अपना मुंह न दिखाए। २१ छः दिन तो परिश्रम करना पर सातवें दिन विश्राम करना बरन हल जोतने और लवने के समय में भी विश्राम करना। २२ और तू अठवारों का पर्ब्ब मानना जो पहिले लवे हुए गेहूं का पर्ब्ब कहावता है और बरस के अन्त में बटोरन का भी पर्ब्ब मानना। २३ बरस दिन में तीन बार तेरे सब पुरुष इस्राएल के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपने मुंह दिखाएं। २४ मैं तो अन्यजातियों को तेरे आगे से निकालकर तेरे सिवानों को बढ़ाऊंगा और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपने मुंह दिखाने के लिये बरस दिन में तीन बार आया करे तब कोई तेरी भूमि का लालच न करेगा। २५ मेरे बलिदान के लोहू को खमीर सहित न चढ़ाना और न फसह के पर्ब्ब के बलिदान में से कुछ बिहान लों रहने देना। २६ अपनी भूमि की पहिली उपज का पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी के बच्चे को उस की मा के दूध में न सिझाना। २७ और यहोवा ने मूसा से कहा ये वचन लिख ले क्योंकि इन्हीं वचनों के अनुसार मैं तेरे और इस्राएल के साथ वाचा बांधता हूं। २८ मूसा तो वहां यहोवा के संग चालीस दिन रात रहा और तब लों न तो उस ने रोटी खाई न पानी पिया। और उस ने उन पटियाओं पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएं[1] लिख दीं॥

२९ जब मूसा साक्षी की दोनों पटियाएं हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतरा आता था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उस के चिहरे से किरणें[2] निकल रहीं थीं पर वह न जानता था कि मेरे चिहरे से किरणें[2] निकल रही हैं। ३० जब हारून और और सब इस्राएलियों ने मूसा को देखा कि उस के चिहरे से किरणें[2] निकलती हैं तब वे उस के पास जाने से डर गये। ३१ तब मूसा ने उन को बुलाया और हारून मण्डली के सारे प्रधानों समेत उस के पास आया और मूसा उन से बातें करने लगा। ३२ इस के पीछे सब इस्राएली पास आये और जितनी आज्ञाएं यहोवा ने सीनै पर्वत पर उस के साथ बात करने के

(१) मूल में वचन। (२) मूल में सींग।

समय दी थीं वे सब उस ने उन्हें बताई। जब मूसा उन से बात कर चुका तब अपने मुंह पर ओढ़ना डाल लिया। और जब जब मूसा भीतर यहोवा से बात करने को उस के साम्हने जाता तब तब वह उस ओढ़ने को निकलते समय लों उतारे हुए रहता था फिर बाहर आकर जो जो आज्ञा उसे मिलतीं उन्हें इस्राएलियों
३५ से कह देता था। सो इस्राएली मूसा का चिहरा देखते थे कि उस से किरणें[१] निकलती हैं और जब लों वह यहोवा से बात करने को भीतर न जाता तब लों वह उस ओढ़ने को डाले रहता था।

(सारे सामान समेत पवित्रस्थान और याजकों के वस्त्र बनाये जाने का वर्णन)

३५. मूसा ने इस्राएलियों की सारी मंडली इकट्ठी करके उन से कहा जिन
२ कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वे ये हैं। छः दिन तो काम काज किया जाए पर सातवां दिन तुम्हारे लेखे पवित्र और यहोवा के लिये परमविश्राम का दिन ठहरे उस में जो कोई काम काज करे वह मार डाला
३ जाए। वरन विश्राम के दिन तुम अपने अपने घरों में आग तक न बारना।
४ फिर मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहा
५ जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है। तुम्हारे पास से यहोवा के लिये भेंट ली जाए अर्थात् जितने अपनी इच्छा से देना चाहें वे यहोवा की भेंट करके ये वस्तुएं ले
६ आएं अर्थात सोना रूपा पीतल नीले बैंजनी और लाही रंग का कपड़ा सूक्ष्म सनी का कपड़ा बकरी का बाल,
७ लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें सूइसों की खालें
८ बबूल की लकड़ी उजियाला देने के लिये तेल अभिषेक
९ का तेल और धूप के लिये सुगंधद्रव्य, फिर एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि और जड़ने के लिये
१० मणि। और तुम में से जितनों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश है वे सब आकर जिस जिस वस्तु की आज्ञा यहोवा ने
११ दी है वे सब बनाएं। अर्थात् तंबू और ओहार समेत निवास और उस के अंकड़े तख्ते बेंड़े खंभे और कुर्सियां,
१२ फिर डण्डे समेत सन्दूक और प्रायश्चित्त का ढकना
१३ और बीचवाला पर्दा, डण्डों और सब सामान समेत मेज
१४ और भेंट की रोटियां, सामान और दीपकों समेत उजियाला
१५ देनेहारा दीवट और उजियाला देने के लिये तेल, डण्डों समेत धूपवेदी, अभिषेक का तेल सुगंधित धूप और
१६ निवास के द्वार का पर्दा, पीतल की झंझरी डण्डों आदि
१७ सारे सामान समेत होमवेदी पाये समेत हौदी, खंभों और उन की कुर्सियों समेत आंगन के पर्दे और आंगन के
१८ द्वार के पर्दे, निवास और आंगन दोनों के खूंटे और
१९ डोरियां, पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये काढ़े हुए वस्त्र और याजक का काम करने के लिये हारून याजक के पवित्र वस्त्र और उस के पुत्रों के वस्त्र भी॥
२० तब इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा के साम्हने
२१ से लौट गई। और जितनों को उत्साह हुआ और जितनों के मन[३] में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वे मिलापवाले तंबू के काम करने और उस की सारी सेवकाई और पवित्र वस्त्रों के बनाने के लिये यहोवा की भेंट ले आने लगे
२२ क्या स्त्री क्या पुरुष जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू नथुनी मुंदरी और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे इस भान्ति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेंट के देनेहारे थे वे सब उन
२३ को ले आये। और जिस जिस पुरुष के पास नीले बैंजनी वा लाही रंग का कपड़ा वा सूक्ष्म सनी का कपड़ा वा बकरी का बाल वा लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें
२४ वा सूइसों की खालें थीं वे उन्हें ले आये। फिर जितने चांदी वा पीतल की भेंट के देनेहारे थे वे यहोवा के लिये वैसी भेंट ले आये और जिस जिस के पास सेवकाई के किसी काम के लिये बबूल की लकड़ी थी वे उसे ले
२५ आये। और जितनी स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था, वे अपने हाथों से सूत कातकातकर नीले बैंजनी और लाही रंग के और सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत को ले
२६ आईं। और जितनी स्त्रियों के मन में ऐसी बुद्धि का
२७ प्रकाश था उन्हों ने बकरी के बाल भी काते। और प्रधान लोग एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि
२८ और जड़ने के लिये मणि और उजियाला देने और अभिषेक और धूप के लिये सुगंधद्रव्य और तेल ले आये।
२९ जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उस उस के लिये जो कुछ आवश्यक था उसे वे सब पुरुष और स्त्रियां ले आईं जिन के हृदय में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी। सो इस्राएली यहोवा के लिये अपनी ही इच्छा से भेंट ले आये॥
३० तब मूसा ने इस्राएलियों से कहा सुनो यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल को जो ऊरी का पुत्र और
३१ हूर का पोता है नाम लेकर बुलाया है। और उस ने उस को परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उस को ऐसी बुद्धि
३२ समझ और ज्ञान मिला है कि वह हथौटी की युक्तियां
३३ निकालकर सोने चांदी और पीतल में और जड़ने के

(१) मूल में सींग।

(२) मूल में जितनों को उन के मन ने उठाया। (३) मूल में आत्मा।

लिये मणि काटने में और लकड़ी के खोदने में बरन बुद्धि से सब भांति की निकाली हुई बनावट में काम कर सके। ३४ फिर यहोवा ने उस के मन में और दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब के मन में भी शिक्षा ३५ देने की शक्ति दी है। इन दोनों के हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है कि वे खोदने और गढ़ने और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े और सूक्ष्म सनी के कपड़े में काढ़ने और बुनने बरन सब प्रकार की बनावट में और बुद्धि से काम निकालने में सब भांति

१ **३६.** के काम करें। सो बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमान् जिन को यहोवा ने ऐसी बुद्धि और समझ दी हो कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्थान की सेवकाई के लिये सब प्रकार का काम करना जानें वे सब यह काम करें॥

२ तब मूसा ने बसलेल और ओहोलीआब और और सब बुद्धिमानों को जिन के हृदय में यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया था अर्थात् जिस जिस को पास आकर काम करने का उत्साह हुआ था[१] उन सभों को बुलवाया। ३ और इस्राएली जो जो भेंटें पवित्रस्थान की सेवकाई के काम और उस के बनाने के लिये ले आये थे उन्हें उन पुरुषों ने मूसा के हाथ से ले लिया। तब भी लोग भोर भोर ४ को उस के पास भेंट अपनी इच्छा से लाते रहे। सो जितने बुद्धिमान पवित्रस्थान का काम करते थे वे सब अपना ५ अपना काम छोड़ मूसा के पास आये और कहने लगे जिस काम के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है उस के लिये ६ जितना चाहिये उस से अधिक वे ले आये हैं। तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार कराया कि क्या पुरुष क्या स्त्री कोई पवित्रस्थान के लिये और भेंट न बना ७ लाए सो लोग और लाने से रोके गये। क्योंकि सब काम बनाने के लिये जितना सामान आवश्यक था उतना बरन उस से अधिक बनानेहारों के पास आ चुका था॥

८ सो काम करनेहारे जितने बुद्धिमान थे उन्हों ने निवास के लिये बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के दस पटों को काढ़े हुए करूबों ९ सहित बनाया। एक एक पट की लंबाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई सब पट एक ही नाप के बने। १० और उस ने पांच पट एक दूसरे से जोड़ दिये और फिर ११ दूसरे पांच पट भी एक दूसरे से जोड़ दिये। और जहां वे पट जोड़े गये वहां की दोनों छोरों पर उस ने नीली १२ नीली फलियां लगाईं उस ने दोनों छोरों में पचास पचास फलियां ऐसे लगाईं कि वे आम्हने साम्हने हुईं। १३ और उस ने सोने के पचास अंकड़े बनाये और उन के द्वारा पटों को एक दूसरे से ऐसा जोड़ा कि निवास मिलकर एक हो गया। १४ फिर निवास के ऊपर के तंबू के १५ लिये उस ने बकरी के बाल के ग्यारह पट बनाये। एक एक पट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई और ग्यारहों पट एक ही नाप के बने। १६ इन में से उस ने पांच पट अलग और छः पट अलग जोड़ दिये। १७ और जहां दोनो जोड़े गये वहां की छोरों में उस ने पचास १८ पचास फलियां लगाईं। और उस ने तंबू के जोड़ने के लिये पीतल के पचास अंकड़े बनाये जिस से वह एक हो १९ जाए। और उस ने तंबू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का एक ओहार और उस के ऊपर के लिये सूइसों की खालों का भी एक ओहार बनाया॥

२० फिर उस ने निवास के लिये बबूल की लकड़ी के तखतों २१ को खड़े रहने के लिये बनाया। एक एक तखते की लंबाई २२ दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई। एक एक तखते में एक दूसरी से जोड़ी हुई दो दो चूलें बनीं निवास के २३ सब तखतों के लिये उस ने इसी भांति बनाईं। और उस ने निवास के लिये तखतों को इस रीति से बनाया कि दक्खिन ओर बीस तखते लगे। २४ और इन बीसों तखतों के नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां अर्थात् एक एक तखते के नीचे उस की दो चूलों के लिये उस ने दो कुर्सियां २५ बनाईं। और निवास की दूसरी अलंग अर्थात् उत्तर ओर २६ के लिये भी उस ने बीस तखते बनाये। और इन के लिये भी उस ने चांदी की चालीस कुर्सियां अर्थात् एक २७ एक तखते के नीचे दो दो कुर्सियां बनाईं। और निवास की पिछली अलंग अर्थात् पच्छिम ओर के लिये उस ने २८ छः तखते बनाये। और पिछली अलंग में निवास के २९ कोनों के लिये उस ने दो तखते बनाये। और वे नीचे से दो दो भाग के बने और दोनों भाग ऊपर के सिरे लों एक एक कड़े में मिलाये गये उस ने दोनों कोनों के लिये ३० उन दोनों तखतों का ढब ऐसा ही बनाया। सो आठ तखते हुए और उन की चांदी की सोलह कुर्सियां हुईं अर्थात् एक एक तखते के नीचे दो दो कुर्सियां हुईं। ३१ फिर उस ने बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनाये अर्थात् निवास ३२ की एक अलंग के तखतों के लिये पांच बेंड़े और निवास की दूसरी अलंग के तखतों के लिये पांच बेंड़े और निवास की जो अलंग पच्छिम ओर पिछले भाग में थी उस के ३३ लिये भी पांच बनाये। और उस ने बीचवाले बेंड़े को तखतों के मध्य में तंबू के एक सिरे से दूसरे सिरे लों ३४ पहुंचने के लिये बनाया। और तखतों को उस ने सोने

(१) मूल में जिस को काम करने के लिये पास आने को उस के मन ने उठाया था।

से मढ़ा और बड़ों के घर का काम देनेहारे कड़ों को सोने के बनाया और बेंड़ों को भी सोने से मढ़ा ॥

३५ फिर उस ने नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का बीचवाला पर्दा बनाया वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ

३६ बना । और उस ने उस के लिये बबूल के चार खंभे बनाये और उन को सोने से मढ़ा उन की अंकाड़ियां सोने की बनीं और उस ने उन के लिये चांदी की चार कुर्सियां

३७ ढालीं । और उस ने तंबू के द्वार के लिये नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ पर्दा बनाया ।

३८ और उस ने अंकाड़ियां समेत उस के पांच खंभे भी बनाये और उन के सिरों और जोड़ने की छड़ों को सोने से मढ़ा और उन की पांच कुर्सियां पीतल की बनीं ॥

३७. फिर

बसलेल ने बबूल की लकड़ी के सन्दूक को बनाया उस की लंबाई अढ़ाई हाथ चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ की

२ हुई । और उस ने उस को भीतर बाहर चोखे सोने से मढ़ा

३ और उस के चारों ओर सोने की बाड़ बनाई । और उस के चारों पायों पर लगाने को उस ने सोने के चार कड़े ढाले दो कड़े एक अलंग और दो कड़े दूसरी अलंग पर लगे ।

४ फिर उस ने बबूल के डंडे बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा

५ और उन को सन्दूक की दोनों अलंगों के कड़ों में डाला

६ कि उन के बल सन्दूक उठाया जाए । फिर उस ने चोखे सोने के प्रायश्चित्तवाले ढकने को बनाया उस की लंबाई

७ अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई । और उस ने सोना गढ़कर दो करूब प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों

८ पर बनाये । एक करूब तो एक सिरे पर और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर बना, उस ने उन को प्रायश्चित्त के ढकने के साथ एक ही टुकड़े के और उस के दोनों सिरों पर बनाया ।

९ और करूबों के पंख ऊपर से फैले हुए बने और उन पंखों से प्रायश्चित्त का ढकना ढपा हुआ बना और उन के मुख आम्हने साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर किये हुए बने ।

१० फिर उस ने बबूल की लकड़ी की मेज को बनाया उस की लंबाई दो हाथ चौड़ाई एक हाथ और ऊंचाई

११ डेढ़ हाथ की हुई । और उस ने उस को चोखे सोने से मढ़ा और उस में चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई ।

१२ और उस ने उस के लिए चार अंगुल चौड़ी एक पटरी और इस पटरी के लिये चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई ।

१३ और उस ने मेज के लिये सोने के चार कड़े ढालकर उन चारों कोनों में लगाया जो उस के चारों पायों पर थे ।

१४ वे कड़े पटरी के पास मेज उठाने के डंडों के खानों का

काम देने को बने । और उस ने मेज उठाने के लिये डंडों

१५ को बबूल की लकड़ी के बनाया और सोने से मढ़ा । और

१६ उस ने मेज पर का सामान अर्थात् परात धूपदान कटोरे और उंडेलने के बर्तन सब चोखे सोने के बनाये ॥

१७ फिर उस ने चोखा सोना गढ़के पाये और डण्डी समेत दीवट को बनाया उस के पुष्पकोश गांठ और फूल सब एक ही टुकड़े के बने । और दीवट से निकली हुई

१८ छः डालियां बनीं तीन डालियां तो उस की एक अलंग से और तीन डालियां उस की दूसरी अलंग से निकली

१९ हुई बनीं । एक एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन तीन पुष्पकोश एक एक गांठ और एक एक फूल बना दीवट से निकली हुई उन छहों डालियों का यही

२० ढब हुआ । और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के सरीखे अपना अपना गांठ और फूल समेत चार पुष्पकोश

२१ बने और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गांठ दीवट के साथ एक

२२ ही टुकड़े की बनीं । गांठें और डालियां सब दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं सारा दीवट गढ़े हुए चोखे सोने का और एक ही टुकड़े का बना । और उस ने

२३ दीवट के सातों दीपक और गुलतराश और गुलदान

२४ चोखे सोने के बनाये । उस ने सारे सामान समेत दीवट को किक्कार भर सोने का बनाया ॥

२५ फिर उस ने धूपवेदी को बबूल की लकड़ी की बनाया उस की लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हुई वह चौकोर बनी और उस की ऊंचाई दो हाथ की हुई

२६ और उस के सींग उस के साथ बिना जोड़ के बने । और ऊपरवाले पल्लों और चारों ओर की अलंगों और सींगों समेत उस ने उस वेदी को चोखे सोने से मढ़ा और उस की चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई । और उस की बाड़ के

२७ नीचे उस के दोनों पल्लों पर उस ने सोने के दो कड़े बनाये

२८ जो उस के उठाने के डण्डों के खानों का काम दें । और डण्डों को उस ने बबूल की लकड़ी के बनाया और सोने

२९ से मढ़ा । और उस ने अभिषेक का पवित्र तेल और सुगंधद्रव्य का धूप गंधी की रीति से बासा हुआ बनाया ॥

३८. फिर

उस ने होमवेदी को भी बबूल की लकड़ी की बनाया उस की लंबाई पांच हाथ और चौड़ाई पांच हाथ की हुई इस प्रकार से

२ वह चौकोर बनी और ऊंचाई तीन हाथ की हुई । और उस ने उस के चारों कोनों पर उस के चार सींग बनाये वे उस के साथ बिना जोड़ के बने और उस ने उस को पीतल से मढ़ा ।

३ और उस ने वेदी का सारा सामान अर्थात् उस की हांड़ियों फावाड़ियों कटोरों कांटों और करछों को बनाया

४ उस का सारा सामान उस ने पीतल का बनाया। और वेदी के लिये उस के चारों ओर की कंगनी के तले उस ने पीतल की जाली की एक झंझरी बनाई वह नीचे से वेदी ५ की ऊंचाई के मध्य लों पहुंची। और उस ने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये चार कड़े ढाले जो डण्डों ६ के खानों का काम दें। फिर उस ने डण्डों को बबूल की ७ लकड़ी के बनाया और पीतल से मढ़ा। तब उस ने डण्डों को वेदी की अलंगों के कड़ों में वेदी के उठाने के लिये डाल दिया। वेदी को उस ने तखतों से खोखली बनाया॥

८ और उस ने हौदी और उस का पाया दोनों पीतल के बनाये वह उन सेवा करनेहारी स्त्रियों के दर्पणों के पीतल के बने जो मिलापवाले तंबू के द्वार पर सेवा करती थीं॥

९ फिर उस ने आंगन को बनाया दक्खिन अलंग के लिये आंगन के पर्दे बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के और १० सब मिलाकर सौ हाथ के बने। उन के बीस खंभे और इन की पीतल की बीस कुर्सियां बनीं और खंभों की ११ अंकड़ियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं। और उत्तर अलंग के लिये भी सौ हाथ के पर्दे बने उन के बीस खंभे और इन की पीतल की बीस कुर्सियां बनीं और खंभों १२ की अंकड़ियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं। और पच्छिम अलंग के लिये पचास हाथ के पर्दे बने उन के खंभे दस और कुर्सियां भी दस बनीं खंभों की अंकड़ियां १३ और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं। और पूरब अलंग १४ पचास हाथ की बनी। आंगन के द्वार के एक ओर के लिये पंद्रह हाथ के पर्दे बने और उन के खंभे तीन और १५ कुर्सियां भी तीन बनीं। और आंगन के द्वार के दूसरे ओर भी वैसा ही बना इधर और उधर पंद्रह पंद्रह हाथ के पर्दे बने उन के खंभे तीन तीन और इन की कुर्सियां १६ भी तीन तीन बनीं। चारों ओर आंगन के सब पर्दे सूक्ष्म १७ बटी हुई सनी के कपड़े के बने। और खंभों की कुर्सियां पीतल की और अंकड़ियां और छड़ चांदी की बनीं और उन के सिरे चांदी से मढ़े गये और आंगन के सब खंभे १८ चांदी की छड़ों से जोड़े गये। आंगन के द्वार का पर्दा कढ़ाई का काम किया हुआ नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बना और उस की लंबाई बीस हाथ की हुई और उस की चौड़ाई जो द्वार की ऊंचाई थी आंगन की १९ कनात के समान पांच हाथ की बनी। और उन के खंभे चार और खंभों की पीतलवाली कुर्सियां चार बनीं उन की अंकड़ियां चांदी की बनीं और उन के सिरे चांदी से मढ़े गये २० और उन की छड़ें चांदी की बनीं। और निवास के और आंगन के चारों ओर के सब खूंटे पीतल के बने॥

२१ साक्षीपत्र के निवास का सामान जो लेवीयों की सेवकाई के लिये बना और जिस की गिनती हारून याजक के पुत्र ईतामार के द्वारा मूसा के कहे से हुई उस का ब्योरा यह है। २२ जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उस को यहूदा के गोत्रवाले बसलेल ने जो हूर का पोता और ऊरी का पुत्र था बना दिया। २३ और उस के संग दान के गोत्रवाले अहीसामाक का पुत्र ओहोलीआब था जो खोदने और काढ़नेहारा और नीले बैंजनी और लाही रंग के और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कारचोब करनेहारा था।

२४ पवित्रस्थान के सारे काम में जो भेंट का सोना लगा वह उनतीस किक्कार और पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से सात सौ तीस शेकेल था। २५ और मण्डली के गिने हुए लोगों की भेंट की चांदी सौ किक्कार और पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से सत्तरह सौ पचहत्तर शेकेल थी। २६ अर्थात् जितने बीस बरसवाले और उस से अधिक अवस्थावाले होके गिने गये थे उन छः लाख साढ़े तीन हजार पचास पुरुषों में के एक एक जन की ओर से पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से आधा शेकेल जो एक बेका होता है मिला। २७ और वह सौ किक्कार चांदी पवित्रस्थान और बीचवाले पर्दे दोनों की कुर्सियों के ढालने में लग गई सौ किक्कार से सौ कुर्सियां बनीं एक एक कुर्सी एक किक्कार की बनी। २८ और सत्तरह सौ पचहत्तर शेकेल जो बच गये उन से खंभों की अंकड़ियां बनाई गईं और खंभों की चोटियां मढ़ी गईं और उन की छड़ें भी बनाई गईं। २९ और भेंट का पीतल सत्तर किक्कार और दो हजार चार सौ शेकेल था। ३० उस से मिलापवाले तंबू के द्वार की कुर्सियां और पीतल की वेदी पीतल की झंझरी और वेदी का सारा सामान ३१ और आंगन के चारों ओर की कुर्सियां और उस के द्वार की कुर्सियां और निवास और आंगन के चारों ओर के खूंटे भी बनाये गये॥

३९.

फिर उन्हों ने नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के पवित्रस्थान में की सेवकाई के लिये काढ़े हुए वस्त्र और हारून के लिये भी पवित्र वस्त्र बनाये जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी॥

२ और उस ने एपोद को सोने और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बनाया। ३ और उन्हों ने सोना पीट पीटकर उस के पत्तर बनाये फिर पत्तरों को काट काटकर तार बनाये और तारों को नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े में और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया। ४ एपोद के जोड़ने को उन्हों ने उस के

कंधों पर के बंधन बनाये वह तो अपने दोनों सिरों से ५ जोड़ा गया । और उस के कसने के लिये जो काढ़ा हुआ पटुका उस पर बना वह उस के साथ बिन जोड़ का और उसी की बनावट के अनुसार अर्थात् सोने और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बना जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

६ और उन्हों ने सुलैमान मणि काटकर उन में इस्राएल के पुत्रों के नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसे ही खोदे ७ और सोने के खानों में जड़ दिये । और उस ने उन को एपोद के कंधे के बंधनों पर लगाया जिस से इस्राएलियों के लिये स्मरण करानेहारे मणि ठहरें जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

८ और उस ने चपरास को एपोद की नाईं सोने की और नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े की और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की कढ़ाई का काम की ९ हुई बनाया । चपरास तो चौकोर बनी और उन्हों ने उस को दोहरी बनाया और वह दोहरी होकर एक बित्ता लंबी १० और एक बित्ता चौड़ी बनी । और उन्हों ने उस में चार पांति मणि जड़े पहिली पांति में तो माणिक्य पद्मराग ११ और लालड़ी जड़ीं । और दूसरी पांति में मरकत नील- १२ मणि और हीरा और तीसरी पांति में लशम सूर्य्यकान्त १३ और नीलम और चौथी पांति में फीरोजा सुलैमानी मणि और यशब जड़े ये सब अलग अलग सोने के १४ खानों में जड़े गये । और ये मणि इस्राएल के पुत्रों के नामों की गिनती के अनुसार बारह थे बारहों गोत्रों में से एक एक का नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसा १५ ही खोदा गया । और उन्हों ने चपरास पर डोरियों की १६ नाईं गूंथे हुए चोखे सोने के तोड़े बनाकर लगाये । फिर उन्हों ने सोने के दो खाने और सोने की दो कड़ियां बनाकर दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर १७ लगाया । तब उन्हों ने सोने के दोनों गूंथे हुए तोड़ों को १८ चपरास के सिरों पर की दोनों कड़ियों में लगाया । और गूंथे हुए दोनों तोड़ों के दोनों बाकी सिरों को उन्हों ने दोनों खानों में जड़ के एपोद के साम्हने पर दोनों कंधों १९ के बंधनों पर लगाया । और उन्हों ने सोने की और दो कड़ियां बनाकर चपरास के दोनों सिरों पर उस की उस २० कोर पर जो एपोद की भीतरवार थी लगाईं । और उन्हों ने सोने की दो और कड़ियां भी बनाकर एपोद के दोनों कंधों के बंधनों पर नीचे से उस के साम्हने और जोड़ के २१ पास एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगाईं । तब उन्हों ने चपरास को उस की कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से ऐसा बांधा कि वह एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर रहे और चपरास एपोद से अलग न होने पाए जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

फिर एपोद का बागा सम्पूर्ण नीले रंग का बनाया गया । २२ और उस की बनावट ऐसी हुई कि उस के बीच बखतर के २३ छेद के समान एक छेद बना और छेद के चारों ओर एक कोर बनी कि वह फटने न पाए । और उन्हों ने उस के नीचे २४ वाले घेरे में नीले बैंजनी और लाही रंग के कपड़े के अनार बनाये । और उन्हों ने चोखे सोने की घंटियां भी बनाकर २५ बागे के नीचेवाले घेरे के चारों ओर अनार के बीच बीच लगाईं । अर्थात् बागे के नीचेवाले घेरे की चारों ओर एक २६ सोने की घंटी और एक अनार फिर एक सोने की घंटी और एक अनार लगाया गया कि उन्हें पहिने हुए सेवा टहल करें जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

फिर उन्हों ने हारून और उस के पुत्रों के लिये बुनी २७ हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के अंगरखे और सूक्ष्म सनी के २८ कपड़े की पगड़ी और सूक्ष्म सनी के कपड़े की सुन्दर टोपियां और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की जांघिया । और २९ सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले बैंजनी और लाही रंग की कारचोबी काम का फेंटा इन सभों को बनाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

फिर उन्हों ने पवित्र मुकुट की पटरी को चोखे सोने ३० का बनाया और जैसे छापे में वैसे ही उस में ये अक्षर खोदे अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र । और उन्हों ने उस ३१ में नीला फीता लगाया जिस से वह ऊपर पगड़ी पर रहे जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

सो मिलापवाले तंबू के निवास का सब काम निपट ३२ गया और जिस जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी इस्राएलियों ने उसी के अनुसार किया ॥

तब वे निवास को मूसा के पास ले आये अर्थात् ३३ अंकड़ों तख्तों बेंड़ों खंभों कुर्सियों आदि सारे सामान समेत तंबू और लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का ३४ ओहार और सूइसों की खालों का ओहार और बीच का पर्दा, डण्डों सहित साक्षीपत्र का संदूक और प्रायश्चित्त ३५ का ढकना । सारे सामान समेत मेज और भेंट की रोटी ३६ सारे सामान सहित दीवट और उस की सजावट के दीपक ३७ और उजियाला देने के लिये तेल सोने की वेदी और ३८ अभिषेक का तेल और सुगंधित धूप और तम्बू के द्वार का पर्दा पीतल की झंझरी डण्डों और सारे सामान ३९ समेत पीतल की वेदी और पाये समेत हौदी, खंभों और ४० कुर्सियों समेत आंगन के पर्दे और आंगन के द्वार का पर्दा और डोरियां और खूंटे और मिलापवाले तंबू के निवास की सेवकाई का सारा सामान, पवित्रस्थान में ४१

सेवा टहल करने के लिये काढ़े हुए वस्त्र और हारून याजक के पवित्र वस्त्र और उस के पुत्रों के वस्त्र जिन्हें ४२ पहिने हुए वे याजक का काम करें। जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थीं उन सब के अनुसार इस्राए- ४३ लियों ने यह सब काम किया। तब मूसा ने सारे काम पर दृष्टि करके देखा कि इन्हों ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया है और मूसा ने उन को आशीर्वाद दिया॥

(यहोवा के निवास के खड़े किये जाने और उस की प्रतिष्ठा होने का वर्णन)

२ **४०. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा पहिले महीने के पहिले दिन को तू मिलापवाले ३ तंबू के निवास को खड़ा करा देना। और उस में साक्षी-पत्र के संदूक को रखकर बीचवाले पर्दे की ओट में करा ४ देना। और मेज को भीतर ले जाकर जो कुछ उस पर सजाना है सो सजवाना तब दीवट को भीतर ले जाके ५ उस के दीपकों को बार देना। और साक्षीपत्र के संदूक के साम्हने सोने की वेदी को जो धूप के लिये है उन्हें ६ रखना और निवास के द्वार के पर्दे को लगा देना। और मिलापवाले तंबू के निवास के द्वार के साम्हने होमवेदी ७ को रखना। और मिलापवाले तंबू और वेदी के बीच ८ हौदी को रखके उस में जल भरना। और चारों ओर के आंगन की कनात को खड़ा करना और उस आंगन के ९ द्वार पर पर्दे को लटका देना। और अभिषेक का तेल लेकर निवास को और जो कुछ उस में होगा सब का अभिषेक करना और सारे सामान समेत उस को पवित्र १० करना सो वह पवित्र ठहरेगा। और सब सामान समेत होमवेदी का अभिषेक करके उस को पवित्र करना सो ११ वह परमपवित्र ठहरेगी। और पाये समेत हौदी का भी १२ अभिषेक करके उसे पवित्र करना। और हारून और उस के पुत्रों को मिलापवाले तंबू के द्वार पर ले जाकर जल १३ से नहलाना। और हारून को पवित्र वस्त्र पहिनाना और उस का अभिषेक करके उस को पवित्र करना कि वह १४ मेरे लिये याजक का काम करे। और उस के पुत्रों को १५ ले जाकर अंगरखे पहिनाना। और जैसे तू उन के पिता का अभिषेक करे वैसे ही उन का भी अभिषेक करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें और उन का अभिषेक उन की पीढ़ी पीढ़ी के लिये उन के सदा के याजकपद १६ का चिह्न ठहरेगा। और मूसा ने यों किया कि जो जो आज्ञा यहोवा ने उस को दी थी उस के अनुसार उस ने किया॥

१७ और दूसरे बरस के पहिले महीने के पहिले दिन को १८ निवास खड़ा किया गया। और मूसा ने निवास को खड़ा कराया और उस की कुर्सियां धर उस के तख्ते लगाके उन में बेंड़े डाले और उस के खंभों को खड़ा किया। १९ और उस ने निवास के ऊपर तंबू को फैलवाया फिर तंबू के ऊपरवार उस के ओहार को लगाया जैसे कि यहोवा २० ने मूसा को आज्ञा दी थी। और उस ने साक्षीपत्र को लेके संदूक में रक्खा और संदूक में डण्डों को लगाके २१ उस के ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को धरा। और उस ने संदूक को निवास में पहुंचवाया और बीचवाले पर्दे को लटकवाके साक्षीपत्र के संदूक को उस की ओट में किया २२ जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। और उस ने मिलापवाले तंबू में निवास की उत्तर अलंग पर बीच के २३ पर्दे से बाहर मेज को लगवाया। और उस पर उस ने यहोवा के सन्मुख रोटी सजाकर रक्खी जैसे कि यहोवा ने २४ मूसा को आज्ञा दी थी। और उस ने मिलापवाले तंबू में मेज के साम्हने निवास की दक्खिन अलंग पर दीवट २५ को रक्खा। और उस ने दीपकों को यहोवा के सन्मुख बार दिया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २६ और उस ने मिलापवाले तंबू में बीच के पर्दे के साम्हने २७ सोने की वेदी को रक्खा। और उस ने उस पर सुगंधित धूप जलाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २८ और उस ने निवास के द्वार पर पर्दे को लगाया। २९ और मिलापवाले तंबू के निवास के द्वार पर होमवेदी को रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि को चढ़ाया जैसे ३० कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। और उस ने मिलापवाले तंबू और वेदी के बीच हौदी को रखकर उस ३१ में धोने के लिये जल डाला। और मूसा और हारून और उस के पुत्रों ने उस में अपने अपने हाथ पांव धोये। ३२ और जब जब वे मिलापवाले तंबू में वा वेदी के पास जाते तब तब वे हाथ पांव धोते थे जैसे कि यहोवा ने मूसा ३३ को आज्ञा दी थी। और उस ने निवास के चारों ओर और वेदी के आसपास आंगन की कनात को खड़ा कराया और आंगन के द्वार के पर्दे को लटका दिया। यों मूसा ने सब काम को निपटा दिया॥

३४ तब बादल मिलापवाले तंबू पर छा गया और यहोवा ३५ का तेज निवासस्थान में भर गया। और बादल जो मिलापवाले तंबू पर ठहर गया और यहोवा का तेज जो निवासस्थान में भर गया इस कारण मूसा उस में प्रवेश ३६ न कर सका। और इस्राएलियों की सारी यात्रा में ऐसा होता था कि जब जब वह बादल निवास के ऊपर से उठ ३७ जाता तब तब वे कूच करते थे। और यदि वह न उठता तो जिस दिन लों वह न उठता उस दिन लों वे कूच न ३८ करते थे। इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी॥

लैव्यव्यवस्था नाम पुस्तक।

(होमबलि की विधि)

१. यहोवा ने मिलापवाले तंबू में से मूसा को २ बुलाकर उस से कहा इस्राएलियों से कह कि तुम में से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिये पशु का चढ़ावा चढ़ाए तो उस का बलिपशु गायबैलों वा भेड़बकरियों (इन) में से एक का हो॥

३ यदि वह गायबैलों में से होमबलि करे तो निर्दोष नर मिलापवाले तंबू के द्वार पर चढ़ाए कि यहोवा उसे ग्रहण ४ करे। और वह अपना हाथ होमबलिपशु के सिर पर टेके और वह उस के लिये प्रायश्चित्त करने को ग्रहण किया ५ जाएगा। तब वह उस बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे लोहू को समीप ले जाकर उस वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें जो ६ मिलापवाले तंबू के द्वार पर है। फिर वह होमबलिपशु ७ की खाल निकालकर उस पशु के टुकड़े टुकड़े करे। तब हारून याजक के पुत्र वेदी पर आग रक्खें और आग ८ पर लकड़ी सजाकर धरें। और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे सिर और चरबी समेत पशु के टुकड़ों को उस लकड़ी पर जो वेदी की आग पर होगी सजाकर धरें। ९ और वह उस की अन्तरियों और पैरों को जल से धोए तब याजक सब को वेदी पर जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे॥

१० और यदि वह भेड़ों वा बकरों में का होमबलि चढ़ाए ११ तो निर्दोष नर को चढ़ाए। और वह उस को यहोवा के आगे वेदी की उत्तरवाली अलंग पर बलि करे और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उस के लोहू को वेदी की चारों १२ अलंगों पर छिड़कें। और वह उस को टुकड़े टुकड़े करे और सिर और चरबी को अलग करे और याजक इन सब को उस लकड़ी पर सजाके धरे जो वेदी की आग १३ पर होगी। और वह उस की अन्तरियों और पैरों को जल से धोए और याजक सब को समीप ले जाकर वेदी पर जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे॥

१४ और यदि वह यहोवा के लिये पक्षियों में का होमबलि १५ चढ़ाए तो पिंडुकों वा कबूतरों का चढ़ावा चढ़ाए। याजक उस को वेदी के समीप ले जाकर उस का गला मरोड़के सिर को धड़ से अलग करे और वेदी पर जलाए और उस का सारा लोहू उस वेदी की अलंग पर गिराया जाए १६ और वह उस का ओझ मल सहित निकालकर वेदी की पूरब ओर राख डालने के स्थान पर फेंक दे। और वह १७ उस को पंखों के बीच से फाड़े पर अलग अलग न करे और याजक उस को वेदी पर उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर होगी जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे॥

(अन्नबलि की विधि)

२. और जब कोई यहोवा के लिये अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाना चाहे तो वह २ मैदा चढ़ाए और उस पर तेल डाल लोबान रक्खे। और वह उस को हारून के पुत्रों के पास जो याजक हैं ले जाए और अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से अपनी मुट्ठी भर निकाले और लोबान सारा निकाल ले और याजक उन्हें स्मरण दिलानेहारे भाग के लिये वेदी पर जलाए कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला ३ हव्य ठहरे। और अन्नबलि में से जो बचा रहे सो हारून और उस के पुत्रों का ठहरे वह यहोवा के हव्यों में की परमपवित्र वस्तु होगी॥

४ और जब तू तंदूर में पकाया हुआ चढ़ावा अन्नबलि करके चढ़ाए तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे के फुलकों वा तेल से चुपड़ी हुई बिन अखमीरी पपड़ियों का ५ हो। और यदि तेरा चढ़ावा तवे पर पकाया हुआ अन्नबलि ६ हो तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे का हो। उस को टुकड़े टुकड़े करके उस पर तेल डालना वह अन्नबलि ७ हो जाएगा। और यदि तेरा चढ़ावा कड़ाही में पकाया हुआ अन्नबलि हो तो वह भी तेल समेत मैदे का हो। ८ और जो अन्नबलि इन वस्तुओं में से किसी का बना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना और जब वह याजक के पास लाया जाए तब याजक उसे वेदी के समीप ले ९ जाए और याजक अन्नबलि में से स्मरण दिलानेहारा भाग निकालकर वेदी पर जलाए कि वह यहोवा के लिये १० सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे। और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हारून और उस के पुत्रों का ठहरे वह यहोवा के हव्यों में की परमपवित्र वस्तु होगी। कोई ११ अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढ़ाओ खमीर के साथ बनाया न जाए न तो खमीर को हव्य करके यहोवा

१२ के लिये जलाना और न मधु को। उन्हें पहिली उपज का चढ़ावा करके यहोवा के लिये चढ़ाना पर वे सुखदायक १३ सुगंधवाली वस्तुएं करके वेदी पर चढ़ाये न जाएं। फिर अपने सब अन्नबलियों को लोना करना और अपना कोई अन्नबलि अपने परमेश्वर के साथ बंधी हुई वाचा के लोन से रहित होने न देना अपने सब चढ़ावों के साथ लोन भी चढ़ाना॥

१४ और यदि तू यहोवा के लिये पहिली उपज का अन्नबलि चढ़ाए तो अपनी पहिली उपज के अन्नबलि के लिये आग से झुलसाई हुई हरी हरी बालें अर्थात् हरी १५ हरी बालों का मींजके निकाला हुआ अन्न चढ़ाना। उस पर तेल डालना और लोबान रखना वह अन्नबलि हो १६ जाएगा। और याजक उस में के मींजके निकाले हुए अन्न और उस पर के तेल में से कुछ और उस पर का सारा लोबान स्मरण दिलानेहारा भाग करके जलाए कि वह यहोवा के लिये हव्य ठहरे॥

(मेलबलि की विधि)

३. और यदि उस का चढ़ावा मेलबलि का हो यदि वह गायबैलों में से चढ़ाए तो चाहे वह पशु नर हो चाहे मादी पर जो निर्दोष हो २ उसी को वह यहोवा के आगे चढ़ाए। और वह अपने चढ़ावे के सिर पर हाथ टेके और उस को मिलापवाले तंबू के द्वार पर बलि करे और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उस के लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें। ३ और वह मेलबलि में से यहोवा के लिये हव्य चढ़ाए अर्थात् जिस चरबी से अन्तरियां ढपी रहती हैं और जो ४ चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को ५ वह अलग करे। और हारून के पुत्र इन को वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जो आग की लकड़ी पर होगा जलाएं कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगंधवाला हव्य ठहरे॥

६ और यदि यहोवा के मेलबलि के लिये उस का चढ़ावा भेड़बकरियों में से हो तो चाहे वह नर हो चाहे ७ मादी पर जो निर्दोष हो उसी को वह चढ़ाए। यदि वह भेड़ का बच्चा चढ़ाता हो तो वह उस को यहोवा के ८ साम्हने चढ़ाए। और वह अपने चढ़ावे के सिर पर हाथ टेके और उस को मिलापवाले तंबू के आगे बलि करे और हारून के पुत्र उस के लोहू को वेदी की चारों ९ अलंगों पर छिड़कें। और मेलबलि में से वह चरबी को यहोवा के लिये हव्य करके चढ़ाए अर्थात् उस की चरबी भरी मोटी पूंछ को वह रीढ़ के पास से अलग करे और जिस चरबी से अन्तरियां ढपी रहती हैं और जो चरबी १० उन में लिपटी रहती है वह भी और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को भी ११ वह अलग करे। और याजक इन्हें वेदी पर जलाए कि यह यहोवा के लिये हव्यरूपी भोजन ठहरे॥

१२ और यदि वह बकरा वा बकरी चढ़ाए तो वह उस १३ को यहोवा के साम्हने चढ़ाए। और वह उस के सिर पर हाथ टेककर उस को मिलापवाले तंबू के आगे बलि करे और हारून के पुत्र उस के लोहू को वेदी की चारों १४ अलंगों पर छिड़कें। और वह उस में से अपना चढ़ावा यहोवा के लिये हव्य करके चढ़ाए अर्थात् जिस चरबी से अन्तरियां ढंपी रहती हैं और जो चरबी उन में लिपटी १५ रहती है वह भी और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन सभों को वह अलग करे। और १६ याजक इन्हें वेदी पर जलाए यह तो हव्यरूपी भोजन और सुखदायक सुगंध ठहरेगा क्योंकि सारी चरबी यहोवा १७ की है। यह तुम्हारे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे कि तुम न तो कुछ चरबी खाओ और न कुछ लोहू॥

(पापबलि की विधि)

४. फिर यहोवा ने मूसा से कहा २ इस्राएलियों से यह कह कि यदि कोई मनुष्य उन कामों में से जो यहोवा ने बरजे हैं कोई काम भूल से करके पापी हो जाए ३ और यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे जिस से प्रजा को दोष लगे तो अपने पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके ४ चढ़ाए। और वह उस बछड़े को मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के आगे ले जाकर उस के सिर पर हाथ टेके और बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे। ५ और अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर मिलापवाले ६ तंबू में ले जाए। और याजक लोहू में अंगुली बोरे और उस में से कुछ लेकर पवित्रस्थान के बीचवाले पर्दे के ७ आगे यहोवा के साम्हने सात बार छिड़के। और याजक उस लोहू में से कुछ और लेकर सुगंधित धूप की वेदी के सींगों पर जो मिलापवाले तंबू में है यहोवा के साम्हने लगाए फिर बछड़े के और सब लोहू को मिलापवाले तंबू के द्वार पर की होमवेदी के पाये पर उंडेले। ८ फिर वह पापबलि के बछड़े की सब चरबी को उस से अलग करे अर्थात् जिस चरबी से अन्तरियां ढंपी रहती हैं और जितनी चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी और ९

दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली इन १० सभों को वह ऐसे अलग करे, जैसे मेलबलिवाले चढ़ावे के बछड़े से अलग किये जाएंगे और याजक इन को ११ होमवेदी पर जलाए। और बछड़े की खाल पांव सिर १२ अन्तड़ियां गोबर और सारा मांस, निदान समूचा बछड़ा वह छावनी से बाहर शुद्ध स्थान में जहां राख डाली जाएगी ले जाकर लकड़ी पर आग में जलाए जहां राख डाली जाएगी वहीं वह जलाया जाए॥

१३ और यदि इस्राएल की सारी मण्डली भूल में पड़के पाप करे और वह बात उस के अनजान में तो रहे तौ भी वह यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध कुछ करके १४ दोषी हो, तो जब उस का किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तब मण्डली एक बछड़े को पापबलि करके चढ़ाए। १५ वह उसे मिलापवाले तंबू के आगे ले जाए, और मण्डली के पुरनिये अपने अपने हाथों को बछड़े के सिर पर यहोवा के आगे टेकें और वह बछड़ा यहोवा के साम्हने १६ बलि किया जाए। और अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू १७ में से कुछ मिलापवाले तंबू में ले जाए। और याजक लोहू में अंगुली बोरकर बीचवाले पर्दे के आगे यहोवा १८ के साम्हने छिड़के और जो वेदी यहोवा के आगे मिलापवाले तंबू में है उस के सींगों पर वह कुछ लोहू लगाए और सब लोहू को मिलापवाले तंबू के द्वार पर की १९ होमवेदी के पाये पर उंडेले। और वह बछड़े की सारी २० चरबी निकाल कर वेदी पर जलाए। और जैसे पापबलि के बछड़े से करना है वैसे ही इस से भी करे इस भांति याजक इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त करे तब उन का २१ वह पाप क्षमा किया जाएगा। और वह बछड़े को छावनी से बाहर ले जाकर उसी भांति जलाए जैसे उसे पहिले बछड़े को जलाना है यह तो मण्डली के निमित्त पापबलि ठहरेगा॥

२२ जब कोई प्रधान पुरुष पाप करके अर्थात् अपने परमेश्वर यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध भूल से कुछ २३ करके दोषी हो, और उस का पाप उस पर प्रगट हो जाए, २४ तो वह एक निर्दोष बकरा चढ़ावा करके ले आए और बकरे के सिर पर हाथ टेके और बकरे को वहां बलि करे जहां होमबलिपशु यहोवा के आगे बलि किया जाएगा २५ यह तो पापबलि ठहरेगा। और याजक अपनी अंगुली से पापबलिपशु के लोहू में से कुछ लेकर होमवेदी के सींगों पर लगाए और उस का लोहू होमवेदी के पाये पर २६ उंडेले। और वह उस की सारी चरबी को मेलबलि की चरबी की नाईं वेदी पर जलाए और याजक उस के पाप के विषय में प्रायश्चित्त करे तब वह क्षमा किया जाएगा॥

२७ और यदि साधारण लोगों में से कोई भूल से पाप करे अर्थात् यहोवा का वर्जा हुआ कोई काम करके दोषी २८ हो, और उस का वह पाप उस पर प्रगट हो जाए तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी चढ़ावा करके ले २९ आए। और वह पापबलिपशु के सिर पर हाथ टेके और ३० होमबलि के स्थान पर पापबलिपशु को बलि करे। और याजक उस के लोहू में से अपनी अंगुली से कुछ लेकर होमवेदी के सींगों पर लगाए और उस के सब लोहू को ३१ उसी वेदी के पाये पर उंडेले। और वह उस की सब चरबी को मेलबलिपशु की चरबी की नाईं अलग करे, तब याजक उस को वेदी पर यहोवा के निमित्त सुखदायक सुगंध करके जलाए और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह क्षमा किया जाएगा॥

३२ और यदि वह पापबलि के लिये एक भेड़ी का बच्चा ३३ चढ़ावा करके ले आए तो वह निर्दोष मादी न हो। और वह पापबलिपशु के सिर पर हाथ टेके और उस को पापबलि करके वहां बलि करे जहां होमबलिपशु बलि किया जाएगा। ३४ और याजक अपनी अंगुली से पापबलि के लोहू में से कुछ लेकर होमवेदी के सींगों पर लगाए और उस के और सब ३५ लोहू को वेदी के पाये पर उंडेले। और वह उस की सब चरबी को मेलबलिवाले भेड़ के बच्चे की चरबी की नाईं अलग करे और याजक उसे वेदी पर यहोवा के हव्यों के ऊपर जलाए और याजक उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया जाएगा॥

(दोषबलि की विधि)

५. और यदि कोई साक्षी होकर ऐसा पाप करे कि सौंह खिलाकर यों पूछने पर भी कि क्या तू ने यह सुना वा जानता है बात प्रगट न करे तो उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा। २ और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को अनजान में छुए तो चाहे वह अशुद्ध बनैले पशु की चाहे अशुद्ध घरैले पशु की चाहे अशुद्ध रेंगनेहारे जीवजन्तु की लोथ हो तो वह अशुद्ध होकर दोषी ठहरेगा। ३ और यदि कोई जन मनुष्य की किसी अशुद्ध वस्तु को अनजान में छुए चाहे वह अशुद्ध वस्तु किसी प्रकार की क्यों न हो जिस से लोग अशुद्ध होते हैं तो जब वह उसे जान लेगा तब दोषी ठहरेगा। ४ और यदि कोई अनजान में बुरा व भला करने को बिना सोचे समझे सौंह खाए, चाहे वह किसी प्रकार की बात बिना सोचे विचारे किये सौंह खाकर कहे तो जान लेने के पीछे वह ऐसी किसी बात में दोषी

ठहरेगा। और जब वह ऐसी किसी बात में दोषी हो तब जिस विषय में उस ने पाप किया हो उस को वह मान ले। और वह यहोवा के लिये अपना दोषबलि ले आए अर्थात् उस पाप के कारण वह एक भेड़ वा बकरी पापबलि करके ले आए तब याजक उस पाप के विषय उस के लिये प्रायश्चित्त करे। और यदि उसे भेड़ वा बकरी देने का सामर्थ्य न हो तो अपने पाप के कारण दो पिंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे दोषबलि करके यहोवा के पास ले आए उन में से एक तो पापबलि और दूसरा होमबलि ठहरे। और वह उन को याजक के पास ले आए और याजक पापबलिवाले को पहिले चढ़ाए, और उस का सिर गले से मरोड़ डाले पर अलग न करे। और वह पापबलिपशु के लोहू में से कुछ वेदी की अलंग पर छिड़के और जो लोहू बचा रहे वह वेदी के पाये पर गिराया जाए वह तो पापबलि ठहरेगा। और दूसरे पक्षी को वह विधि के अनुसार होमबलि करे और याजक उस के पाप का प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया जाएगा॥

११ और यदि वह दो पिंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे भी न दे सके तो वह अपने पाप के कारण अपना चढ़ावा एपा का दसवां भाग मैदा पापबलि करके ले आए उस पर न तो वह तेल डाले न लोबान रक्खे क्योंकि वह पापबलि होगा। वह उस को याजक के पास ले जाए और याजक उस में से अपनी मुट्ठी भर स्मरण दिलानेहारा भाग जानकर वेदी पर यहोवा के हव्यों के ऊपर जलाए वह तो पापबलि ठहरेगा। और इन बातों में से किसी बात के विषय में जो कोई पाप करे याजक उस का प्रायश्चित्त करे और वह पाप क्षमा किया जाएगा। और इस पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष की नाईं याजक का ठहरे॥

१४,१५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, यदि कोई यहोवा की पवित्र की हुई वस्तुओं के विषय में भूल से विश्वासघात करके पापी ठहरे तो वह यहोवा के पास एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके ले आए, उस का दाम पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से उतने शेकेल रुपए का हो जितने याजक ठहराए। और जिस पवित्र वस्तु के विषय उस ने पाप किया हो उस को वह पांचवां भाग बढ़ाकर भर दे और याजक को दे और याजक दोषबलि का मेढ़ा चढ़ा कर उस के लिये प्रायश्चित्त करे तब उस का पाप क्षमा किया जाएगा॥

१७ और यदि कोई ऐसा पाप करे कि यहोवा का वर्जा हुआ कोई काम करे तो चाहे वह उस के अनजान में भी हुआ हो तौ भी वह दोषी ठहरेगा और उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा। सो वह एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए और याजक उस के लिये उस की उस भूल का जो उस ने अनजाने की हो प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा की जाएगी। यह दोषबलि ठहरे क्योंकि वह मनुष्य निःसन्देह यहोवा का दोषी ठहरेगा॥

६. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, यदि कोई यहोवा का विश्वासघात करके पापी ठहरे जैसा कि धरोहर वा लेनदेन वा लूट के विषय में अपने भाई को छले वा उस पर अंधेर करे, वा पड़ी हुई वस्तु को पाकर उस के विषय झूठ बोले और झूठी किरिया भी खाए, ऐसी कोई बात क्यों न हो जिसे करके मनुष्य पापी होते हैं, तो जब वह ऐसा पाप करके दोषी हो जाए, तब चाहे कोई वस्तु हो जो उस ने लूट वा अंधेर करके वा धरोहर वा पड़ी पाई हो चाहे कोई वस्तु क्यों न हो जिस के विषय में उस ने झूठी किरिया खाई हो तो वह उस को पूरा करके और पांचवां भाग बढ़ाकर भर दे जिस दिन वह दोषी ठहरे, उसी दिन वह उस वस्तु को उस के स्वामी को दे। और वह यहोवा के लिये अपना दोषबलि भी ले आए अर्थात् एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए। और याजक उस के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे और जो कोई काम करके वह दोषी हो गया होगा वह क्षमा किया जाएगा॥

(भांति भांति के बलिदानों की विधि)

८, ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून और उस के पुत्रों को आज्ञा देकर यह कह कि होमबलि की व्यवस्था यह है अर्थात् होमबलि ईंधन के ऊपर रात भर भोर लों वेदी पर पड़ा रहे और वेदी की आग वेदी पर जलती रहे। और याजक अपने सनी के वस्त्र और अपने तन पर अपनी सनी की जांघिया पहिनकर होमबलि की राख जो आग के भस्म करने से वेदी पर रह जाए उसे उठाकर वेदी के पास रक्खे। तब वह अपने ये वस्त्र उतारकर दूसरे वस्त्र पहिनकर राख को छावनी से बाहर किसी शुद्ध स्थान पर ले जाए। और वेदी की आग वेदी पर जलती रहे वह बुझने न पाए और भोर भोर को याजक उस पर लकड़ी जलाकर उस पर होमबलि के टुकड़ों को सजाकर धर दे और उस के ऊपर मेलबलियों की चरबी को जलाए। वेदी पर आग लगातार जलती रहे वह कभी बुझने न पाए॥

१४ अन्नबलि की व्यवस्था यह है कि हारून के पुत्र उस को यहोवा के साम्हने वेदी के आगे समीप ले आएं। और वह अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से मुट्ठी भर

और उस पर का सारा लोबान उठाकर अन्नबलि के स्मरण दिलानेहारे इस भाग को यहोवा के लिये सुख-
१६ दायक सुगंध करके वेदी पर जलाए। और उस में से जो बचा रहे उसे हारून और उस के पुत्र खाएं, वह बिना खमीर पवित्र स्थान में खाया जाए अर्थात् वे
१७ मिलापवाले तंबू के आंगन में उसे खाएं। वह खमीर के साथ पकाया न जाय क्योंकि मैं ने अपने हव्यों में से उस को उन का निज भाग होने के लिये उन्हें दिया है सो जैसा पापबलि और दोषबलि परमपवित्र हैं वैसा
१८ ही वह भी है। हारून के वंश में के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के हव्यों में से यह उन का हक सदा लों बना रहे जो कोई उन हव्यों को छूए वह पवित्र ठहरे॥

१९, २० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, जिस दिन हारून अभिषिक्त हो उस दिन वह अपने पुत्रों समेत यहोवा को यह चढ़ावा चढ़ाए अर्थात् एपा का दसवां भाग मैदा नित्य अन्नबलि करके चढ़ाए उस में से आधा तो भोर
२१ को और आधा सांझ को चढ़ाए। वह तवे पर तेल के साथ पकाया जाए जब वह तेल से तर हो जाए तब उसे ले आना इस अन्नबलि के पके हुए टुकड़े यहोवा
२२ के लिये सुखदायक सुगन्ध करके चढ़ाना। और उस के पुत्रों में से जो उस के याजकपद पर अभिषिक्त होगा वह भी उसे चढ़ाया करे यह सदा की विधि
२३ है कि वह यहोवा के लिये संपूर्ण जलाया जाए। बरन याजक के सब अन्नबलि संपूर्ण जलाये जाएं वे खाए न जाएं॥

२४, २५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून और उस के पुत्रों से यह कह कि पापबलि की व्यवस्था यह है अर्थात् जिस स्थान में होमबलिपशु बलि किया जाएगा उसी में पापबलिपशु भी यहोवा के साम्हने बलि किया
२६ जाए वह परमपवित्र है। और जो याजक पापबलि का चढ़ानेहारा हो सो उसे खाए वह पवित्र स्थान में अर्थात्
२७ वह मिलापवाले तंबू के आंगन में खाया जाए। जो कुछ उस के मांस से छू जाए वह पवित्र ठहरे और यदि उस के लोहू के छींटे किसी वस्त्र पर पड़ें तो जिस पर उस के
२८ छींटे पड़े हों उस को किसी पवित्र स्थान में धोना। और यदि वह मिट्टी के पात्र में सिझाया गया हो तब तो वह पात्र तोड़ा जाए पर जो वह पीतल के पात्र में सिझाया गया हो तो वह मांजा और जल से धोया जाए।
२९ याजकों में के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं क्योंकि
३० वह परमपवित्र ठहरा। पर जिस पापबलिपशु के लोहू में से कुछ मिलापवाले तंबू के भीतर पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने को पहुंचाया जाए उस का मांस खाया न जाए वह आग में जलाया जाए॥

७ फिर दोषबलि की व्यवस्था यह है। वह
२ परमपवित्र ठहरे। जिस स्थान पर होमबलिपशु को बलि करेंगे उसी पर दोषबलिपशु को भी बलि करें और उस के लोहू को याजक वेदी पर चारों
३ ओर छिड़के। और वह उस में की सब चरबी को चढ़ाए अर्थात् मोटी पूंछ और जिस चरबी से अन्तड़ियां ढपी
४ रहती हैं वह भी, और दोनों गुर्दे और जो चरबी उन के ऊपर और लंक के पास रहती है और गुर्दों समेत कलेजे
५ के ऊपर की झिल्ली इन सभों को वह अलग करे। और याजक इन्हें वेदी पर यहोवा के लिए हव्य करके जलाए
६ सो वह दोषबलि ठहरेगा। याजकों में के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं वह किसी पवित्र स्थान में खाया जाए
७ क्योंकि वह परमपवित्र है। जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है उन दोनों की एक ही व्यवस्था है जो याजक उन बलियों को चढ़ा के प्रायश्चित्त करे व उसी
८ के ठहरें। और जो याजक किसी के होमबलि को चढ़ाए
९ उस होमबलिपशु की खाल उसी याजक की ठहरे। और तंदूर में वा कढ़ाही में वा तवे पर पके हुए सब अन्नबलि
१० चढ़ानेहारे याजक ही के ठहरें। और सब अन्नबलि चाहे तेल से सने हुए हों चाहे रूखे वे हारून के सब पुत्रों के ठहरें व एक समान उन सभों को मिलें॥

११ और मेलबलि जिसे कोई यहोवा के लिये चढ़ाए उस
१२ की व्यवस्था यह है। यदि वह उसे धन्यवाद के लिये चढ़ाए तो धन्यवादबलि के साथ तेल से सने हुए अखमीरी फुलके और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियां और तेल
१३ से सने हुए मैदे के तेल से तर फुलके चढ़ाए। और वह अपने धन्यवादवाले मेलबलि के साथ अखमीरी रोटियां
१४ भी चढ़ाए। और ऐसे एक एक चढ़ावे में से वह एक एक रोटी यहोवा को उठाई हुई भेंट करके चढ़ाए वह
१५ मेलबलि के लोहू के छिड़कनेहारे याजक की ठहरे। और उस के धन्यवादवाले मेलबलि का मांस चढ़ाने के दिन ही खाया जाए उस में से वह बिहान लों कुछ रहने न
१६ दे। पर यदि उस के बलिदान का चढ़ावा मन्नत का वा स्वेच्छा का हो तो उस बलिदान को जिस दिन वह चढ़ाए उस दिन वह खाया जाए और उस में से जो बचा रहे
१७ वह दूसरे दिन भी खाया जाए। पर जो कुछ बलिदान के मांस में से तीसरे दिन लों रह जाए वह आग में
१८ जलाया जाए। और उस के मेलबलि के मांस में से यदि कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए तो वह ग्रहण न किया जाएगा और न लेखे में गिना जाएगा वह घिनौना ठहरेगा

और जो प्राणी उस में से खाए उसे अपने अधर्म्म का
१९ भार उठाना पड़ेगा। फिर जो मांस किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह खाया न जाए वह आग में जलाया जाए।
२० फिर मेलबलि का मांस जितने शुद्ध हों वे तो खाएं, पर जो प्राणी अशुद्ध होकर यहोवा के मेलबलि के मांस में से कुछ
२१ खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए। और यदि कोई प्राणी कोई अशुद्ध वस्तु छूकर यहोवा के मेलबलि-पशु के मांस में से खाए तो वह भी अपने लोगों में से नाश किया जाए चाहे वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु वा अशुद्ध पशु चाहे कोई भी अशुद्ध और घिनोनी वस्तु हो॥

२२, २३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से यों कह कि तुम लोग न तो बैल की कुछ चरबी खाना
२४ और न भेड़ वा बकरी की। और जो पशु आप से मरे और जो दूसरे पशु से फाड़ा जाए उस की चरबी से कोई और काम करना तो करना पर उसे किसी प्रकार से
२५ खाना नहीं। जो प्राणी ऐसे पशु की चरबी खाए जिस में से लोग कुछ यहोवा के लिये हव्य करके चढ़ाया करते हैं वह खानेहारा अपने लोगों में से नाश किया जाए।
२६ और तुम अपने किसी घर में किसी भांति का लोहू चाहे
२७ पक्षी चाहे पशु का हो न खाना। हर एक प्राणी जो किसी भांति का लोहू खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए॥

२८, २९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से यों कह कि जो यहोवा के लिये मेलबलि चढ़ाए वह उसी
३० मेलबलि में से यहोवा के पास चढ़ावा ले आए। वह अपने ही हाथों से यहोवा के हव्य को अर्थात् छाती समेत चरबी को ले आए कि छाती हिलाने की भेंट करके
३१ यहोवा के साम्हने हिलाई जाए। और याजक चरबी को तो वेदी पर जलाए पर छाती हारून और उस के पुत्रों की
३२ ठहरे। फिर तुम अपने मेलबलियों में से दाहिनी जांघ को
३३ भी उठाई हुई भेंट करके याजक को देना। हारून के पुत्रों में से जो मेलबलि के लोहू और चरबी को चढ़ाए
३४ दाहिनी जांघ उसी का भाग ठहरे। क्योंकि इस्राएलियों के मेलबलियों में से मैं हिलाई हुई भेंटवाली छाती और उठाई हुई भेंटवाली जांघ उन से लेकर हारून याजक और उस के पुत्रों को दे देता हूं कि वे दोनों इस्राएलियों की ओर से सदा के लिये उन का हक़ ठहरें॥

३५ जिस दिन हारून और उस के पुत्र यहोवा के याजक होने के लिये समीप किये गये उसी दिन यहोवा के हव्यों में
३६ से उन का यही अभिषेकवाला भाग ठहरा, अर्थात् जिस दिन यहोवा ने उन का अभिषेक कराया उसी दिन उस ने आज्ञा दी कि उन को इस्राएलियों की ओर से ये ही भाग मिला करें। सो उन की पीढ़ी पीढ़ी के लिये उन
३७ का यही हक़ ठहरा॥ होमबलि और अन्नबलि और पापबलि और दोषबलि और याजकों के संस्कारवाले बलि
३८ और मेलबलि की व्यवस्था यही है। जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या क्या चढ़ावे चढ़ाएं तब उस ने उन को यही व्यवस्था दी॥

(याजकों के संस्कार का वर्णन)

२ **८. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा, तू हारून और उस के पुत्रों के वस्त्रों और अभिषेक के तेल और पापबलि के बछड़े और दोनों मेढ़ों और अखमीरी
३ रोटी की टोकरी सहित, मिलापवाले तंबू के द्वार पर ले
४ आ और वहीं सारी मण्डली को इकट्ठा कर। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया और मण्डली
५ मिलापवाले तंबू के द्वार पर इकट्ठी हुई। तब मूसा ने मण्डली से कहा जो काम करने की आज्ञा यहोवा ने दी
६ है वह यह है। फिर मूसा ने हारून और उस के पुत्रों
७ को समीप ले जाकर जल से नहलाया। तब उस ने उस को अंगरखा पहिनाकर फेटा बांधकर बागा पहिना दिया और एपोद लगाकर एपोद के काढ़े हुए पटुके से एपोद
८ को बांधकर कस दिया। और उस ने उस के चपरास
९ लगाकर चपरास में ऊरीम और तुम्मीम रख दिये। तब उस ने उस के सिर पर पगड़ी को बांधकर पगड़ी के साम्हने पर सोने के टीके को अर्थात् पवित्र मुकुट को लगाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
१० तब मूसा ने अभिषेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उस में था उस सब का भी अभिषेक करके उन्हें
११ पवित्र किया। और उस तेल में से कुछ उस ने वेदी पर सात बार छिड़का और सारे सामान समेत वेदी का और पाये समेत हौदी का अभिषेक करके उन्हें पवित्र
१२ किया। और उस ने अभिषेक के तेल में से कुछ हारून के सिर पर डालकर उस का अभिषेक करके उसे
१३ पवित्र किया। फिर मूसा ने हारून के पुत्रों को समीप ले आ अंगरखे पहिनाकर फेंटे बांधके उन के सिर पर टोपी दीं जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
१४ तब वह पापबलिवाले बछड़े को समीप ले गया और हारून और उस के पुत्रों ने अपने अपने हाथ पापबलिवाले बछड़े के सिर पर टेके।
१५ तब वह बलि किया गया और मूसा ने लोहू को लेकर उंगली से वेदी के चारों सींगों पर लगाकर पावन किया और लोहू को वेदी के पाये पर उंडेल दिया और उस के लिये प्रायश्चित्त करके उस को पवित्र किया।
१६ और मूसा ने अन्तरियों पर की

सब चरबी और कलेजे पर की झिल्ली और चरबी समेत १७ दोनों गुर्दों को लेकर वेदी पर जलाया। और बछड़े में से जो कुछ रह गया उस को अर्थात् गोबर समेत उस की खाल और मांस को उस ने छावनी से बाहर आग में जलाया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। १८ फिर वह होमबलिवाले मेढ़े को समीप ले गया और हारून और उस के पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर १९ टेके। तब वह बलि किया गया और मूसा ने उस का २० लोहू वेदी पर चारों ओर छिड़का। तब मेढ़ा टुकड़े टुकड़े किया गया और मूसा ने सिर और चरबी समेत टुकड़ों २१ को जलाया। तब अन्तड़ियां और पांव जल से धोये गये और मूसा ने सम्पूर्ण मेढ़े को वेदी पर जलाया और वह सुखदायक सुगंध देनेहारा होमबलि और यहोवा के लिये हव्य हो गया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी २२ थी। फिर वह दूसरे मेढ़े को जो संस्कारवाला मेढ़ा था समीप ले गया और हारून और उस के पुत्रों ने अपने २३ अपने हाथ मेढ़े के सिर पर टेके। तब वह बलि किया गया और मूसा ने उस के लोहू में से कुछ लेकर हारून के दाहिने कान के सिरे पर और उस के दाहिने हाथ २४ और दाहिने पांव के अंगूठों पर लगाया। और वह हारून के पुत्रों को समीप ले गया और लोहू में से कुछ एक एक के दाहिने कान के सिरे पर और दाहिने हाथ और दाहिने पांव के अंगूठों पर लगाया और मूसा ने लोहू को २५ वेदी पर चारों ओर छिड़का। और उस ने चरबी और मोटी पूंछ और अन्तड़ियों पर की सब चरबी और कलेजे पर की झिल्ली समेत दोनों गुर्दे और दाहिनी जांघ ये सब २६ लेकर अलग रक्खे, और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी थी उस में से एक रोटी और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका और एक पपड़ी लेकर २७ चरबी और दाहिनी जांघ पर रख दी, और ये सारी वस्तुएं हारून और उस के पुत्रों के हाथों पर धर दीं और हिलाई २८ हुई भेंट होने के लिये यहोवा के आगे हिलवाईं। और मूसा ने इन को उन के हाथ पर से लेकर वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया वह सुखदायक सुगंध देनेहारी संस्कार- २९ वाली भेंट और यहोवा के लिये हव्य हुआ। तब मूसा ने छाती को लेकर हिलाई हुई भेंट होने के लिये यहोवा के आगे हिलाया और संस्कारवाले मेढ़े में से मूसा का भाग यही ठहरा जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ३० और मूसा ने अभिषेक के तेल और वेदी पर के लोहू दोनों में से कुछ कुछ लेकर हारून और उस के वस्त्रों पर और उस के पुत्रों और उन के वस्त्रों पर भी छिड़का और उस ने वस्त्रों समेत हारून को और वस्त्रों समेत उस के पुत्रों को भी पवित्र किया। ३१ और मूसा ने हारून और उस के पुत्रों से कहा मांस को मिलापवाले तंबू के द्वार पर सिझाओ और उस रोटी समेत जो संस्कारवाली टोकरी में है वहीं खाओ जैसे मैं ने आज्ञा दी कि हारून और उस के पुत्र उसे खाएं। ३२ और मांस और रोटी में से जो बचा रहे उसे आग में जलाना। ३३ और जब लों तुम्हारे संस्कार के दिन पूरे न हों तब लों अर्थात् सात दिन लों मिलापवाले तंबू के द्वार के बाहर न जाना क्योंकि वह सात दिन लों तुम्हारा संस्कार करता रहेगा। ३४ जैसे आज किया गया वैसे ही यहोवा ने करने की आज्ञा दी है कि तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए। ३५ सो तुम मिलापवाले तंबू के द्वार पर सात दिन लों दिन रात ठहरके यहोवा की आज्ञा को मानते रहो न हो कि मर जाओ क्योंकि ऐसी आज्ञा मुझे दी गई है। ३६ यहोवा की इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उस ने मूसा के द्वारा दी थी हारून और उस के पुत्रों ने किया॥

९. आठवें दिन मूसा ने हारून और उस के पुत्रों को और इस्राएली पुरनियों को २ बुलवाकर, हारून से कहा पापबलि के लिये एक निर्दोष बछड़ा और होमबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा लेकर ३ यहोवा के साम्हने चढ़ा। और इस्राएलियों से यह कह कि तुम पापबलि के लिये एक बकरा और होमबलि के लिये एक बछड़ा और एक भेड़ का बच्चा लो वे दोनों ४ बरस दिन के और वे निर्दोष हों। और यहोवा के साम्हने मेलबलि करने को एक बैल और एक मेढ़ा और तेल से सने हुए मैदे का एक अन्नबलि भी लो क्योंकि आज ५ यहोवा तुम को दर्शन देगा। सो जिस जिस वस्तु की आज्ञा मूसा ने दी उन सब को वे मिलापवाले तंबू के आगे ले गये और सारी मण्डली समीप जाकर यहोवा के ६ साम्हने खड़ी हुई। तब मूसा ने कहा यहोवा ने तुम्हारे करने के लिये जिस काम की आज्ञा दी है सो यह है ७ और यहोवा का तेज तुम को देख पड़ेगा। और मूसा ने हारून से कहा यहोवा की आज्ञा के अनुसार वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि और होमबलि को चढ़ा के अपने और सारे लोगों के लिये प्रायश्चित्त कर और लोगों के चढ़ावे को भी चढ़ाके उन के लिये प्रायश्चित्त कर। ८ सो हारून ने वेदी के समीप जाकर अपने पापबलिवाले ९ बछड़े को बलि किया। और हारून के पुत्र लोहू को उस के पास ले गये तब उस ने अपनी अंगुली को लोहू में बोरकर लोहू को वेदी के सींगों पर लगाया और लोहू को १० वेदी के पाये पर उंडेल दिया। और पापबलि में की चरबी और गुर्दों और कलेजे पर की झिल्ली को उस ने

वेदी पर जलाया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी । ११ और मांस और खाल को उस ने छावनी से बाहर आग १२ में जलाया । तब होमबलिपशु बलि किया गया और हारून के पुत्रों ने लोहू को उस के हाथ में दिया और १३ उस ने उस को वेदी पर चारों ओर छिड़का । तब उन्हों ने होमबलिपशु टुकड़ा टुकड़ा करके सिर समेत उस के हाथ में दिया और उस ने उन को वेदी पर जलाया । १४ और उस ने अन्तड़ियों और पावों को धोकर वेदी पर १५ होमबलि के ऊपर जलाया । और उस ने लोगों के चढ़ावे को समीप ले जाकर उस पापबलिवाले बकरे को जो उन के लिये था बलि किया और पहिले के समान उसे भी १६ पापबलि करके चढ़ाया । और उस ने होमबलि को भी १७ समीप ले जाकर विधि के अनुसार चढ़ाया । और अन्नबलि को भी समीप ले जाकर उस में से मुट्ठी भर वेदी पर जलाया यह भोरवाले होमबलि के सिवाय चढ़ाया गया । १८ और बैल और मेढ़ा अर्थात् जो मेलबलिपशु लोगों के लिये थे वे भी बलि किये गये और हारून के पुत्रों ने लोहू को उस के हाथ में दिया और उस ने उस को वेदी पर १९ चारों ओर छिड़का । और उन्हों ने बैल की चरबी को और मेढ़े में से मोटी पूंछ को और जिस चरबी से अन्तड़ियां ढपी रहती हैं उस को और गुर्दों समेत कलेजे पर २० की झिल्ली को उस के हाथ में दिया । और उन्हों ने चरबी को छातियों पर रक्खा और उस ने चरबी को वेदी पर २१ जलाया । पर छातियों और दहिनी जांघ को हारून ने मूसा की आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेंट के लिये २२ यहोवा के साम्हने हिलाया । तब हारून ने लोगों की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें आशीर्वाद दिया और जहां उस ने पापबलि होमबलि और मेलबलियों को चढ़ाया २३ वहां से वह उतर आया । तब मूसा और हारून मिलापवाले तंबू में गये और निकलकर लोगों को आशीर्वाद २४ दिया तब यहोवा का तेज सब लोगों को देख पड़ा । और यहोवा के साम्हने से आग निकल कर चरबी समेत होमबलि को वेदी पर भस्म कर गई, इसे देखकर सब लोगों ने जयजयकार किया और अपने अपने मुंह के बल गिरे ॥

(नादाब और अबीहू के भस्म होने का वर्णन)

१०. तब नादाब और अबीहू नाम हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान ले उन में ऊपरी आग जिस की आज्ञा यहोवा ने न दी थी रखकर उस पर धूप दिया और उस आग को यहोवा के २ साम्हने ले गये । तब यहोवा के साम्हने से आग ने निकलकर उन को भस्म कर दिया और वे यहोवा के साम्हने मर गये । ३ तब मूसा हारून से बोला यह वही है जो यहोवा ने कहा था कि मैं अपने समीप आनेहारों के बीच पवित्र ठहराया जाऊंगा और सारे लोगों के साम्हने महिमा पाऊंगा और हारून चुप रहा । ४ तब मूसा ने मीशाएल और एलसापान को जो हारून के चचा उज्जीएल के पुत्र थे बुलाकर कहा निकट आओ और अपने भतीजों को पवित्रस्थान के आगे से उठाकर छावनी से बाहर ले जाओ । ५ मूसा की इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उन को अंगरखों सहित उठाकर छावनी से बाहर ले गये । ६ तब मूसा ने हारून से और उस के पुत्र एलाजार और ईतामार से कहा तुम लोग अपने सिरों के बाल मत बिखराओ और न अपने वस्त्रों को फाड़ो न हो कि तुम भी मर जाओ और सारी मंडली पर उस का कोप भड़के पर इस्राएल के सब घराने के लोग जो तुम्हारे भाईबंधु हैं वे तो यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें । ७ और तुम लोग मिलापवाले तंबू के द्वार के बाहर न जाना न हो कि तुम मर जाओ क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है । मूसा के इस वचन के अनुसार उन्हों ने किया ॥

८. ९ फिर यहोवा ने हारून से कहा कि, जब जब तू वा तेरे पुत्र मिलापवाले तंबू में आए तब तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पिये हो न और किसी प्रकार का मद्य न हो कि मर जाओ तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह विधि ठहरी रहे १० जिस से तुम पवित्र अपवित्र में और शुद्ध अशुद्ध में अन्तर कर सको, ११ और इस्राएलियों को वे सब विधियां सिखा सको जो यहोवा ने उन को मूसा से सुनवा दी हैं ॥

१२ फिर मूसा ने हारून से और उस के बचे हुए दोनों पुत्र ईतामार और एलाजार से भी कहा यहोवा के हव्यों में से जो अन्नबलि बचा है उसे लेकर वेदी के पास बिना खमीर खाओ क्योंकि वह परमपवित्र है । १३ सो तुम उसे किसी पवित्र स्थान में खाओ वह तो यहोवा के हव्यों में से तेरा और तेरे पुत्रों का हक़ है मैं ने ऐसी ही आज्ञा पाई है । १४ और हिलाई हुई भेंट की छाती और उठाई हुई भेंट की जांघ को तुम लोग अर्थात् तू और तेरे बेटे बेटियां सब किसी शुद्ध स्थान में खाओ क्योंकि वे इस्राएलियों के मेलबलियों में से तुझे और तेरे लड़केवालों का हक़ करके दी गई हैं । १५ चरबी के हव्यों समेत जो उठाई हुई जांघ और हिलाई हुई छाती यहोवा के साम्हने हिलाने के लिये आया करेंगी ये भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सदा को विधि की रीति से तेरे और तेरे लड़केवालों के होंगे ॥

१६ और मूसा ने पापबलिवाले बकरे की जो ढूंढ़ ढांढ़ की तो क्या पाया कि वह जलाया गया है सो एलाजार और ईतामार जो हारून के पुत्र बचे थे उन से वह कोप १७ करके कहने लगा, पापबलि जो परमपवित्र है और यहोवा ने जो उस को तुम्हें इस लिये दिया है कि तुम मण्डली के अधर्म्म का भार उठाकर उस के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करो सो उस का मांस तुम ने पवित्र- १८ स्थान में क्यों नहीं खाया। देखो उस का लोहू पवित्र-स्थान के भीतर तो लाया न गया निस्सन्देह उचित था कि तुम मेरी आज्ञा के अनुसार उस के मांस को पवित्र- १९ स्थान में खाते। इस का उत्तर हारून ने मूसा को यों दिया कि देख आज ही के दिन उन्हों ने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के साम्हने चढ़ाया फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियां आ पड़ी हैं सो यदि मैं ने आज पाप-बलि को खाया होता तो क्या यह यहोवा के लेखे में २० अच्छा ठहरता। जब मूसा ने यह सुना तब वह उस के लेखे में अच्छा ठहरा ॥

(शुद्ध अशुद्ध मांस की विधि)

११. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से २ कहा, इस्राएलियों से कहो कि जितने पशु पृथिवी पर हैं उन सभों में से तुम इन जीव- ३ धारियों का मांस खा सकते हो। पशुओं में से जितने चिरे वा फटे खुरवाले होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें ४ खा सकते हो। पर पागुर करनेहारों वा फटे खुरवालों में से इन पशुओं को न खाना अर्थात् ऊंट जो पागुर तो करता है पर चिरे खुर का नहीं होता इस लिये वह ५ तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है। और शापान जो पागुर तो करता पर चिरे खुर का नहीं होता वह भी तुम्हारे लिये ६ अशुद्ध है। और खरहा जो पागुर तो करता है पर चिरे खुर का नहीं होता इस लिये वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध ७ है। और सूअर जो चिरे अर्थात् फटे खुरवाला होता तो है पर पागुर नहीं करता इस लिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ८ है। इन के मांस में से कुछ न खाना वरन इन की लोथ को छूना भी नहीं ये तो तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

९ फिर जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो अर्थात् समुद्र वा नदियों के रहनेहारों में से जितनों के पंख और चोये होते हैं उन्हें खा सकते हो। १० और जलचारी प्राणियों में से जितने जीवधारी बिना पंख और चोये के समुद्र वा नदियों में रहते हैं वे सब तुम्हारे ११ लिये घिनौने हैं। वे तुम्हारे लेखे घिनौने ठहरें तुम उन के मांस में से कुछ न खाना और उन की लोथों को घिनौनी जानना। जल में जिस किसी जन्तु के पंख और १२ चोये नहीं होते वह तुम्हारे लिये घिनौना है ॥

फिर पक्षियों में से इन को घिनौना जानना ये घिनौने १३ होने के कारण खाए न जाएं अर्थात् उकाब हड़फोड़ कुरर, शाही और भांति भांति की चील, और भांति १४, १५ भांति के सब काग, शुतुर्मुर्ग तखमास जलकुक्कुट और १६ भांति भांति के बाज, हवासिल हाड़गील उल्लू, राजहंस १७ धनेश गिद्ध, लगलग भांति भांति के बगुले टिटीहरी १८, १९ और चमगीदड़ ॥

जितने पंखवाले चार पांवों के बल चलते हैं वे सब २० तुम्हारे लिये घिनौने हैं। पर रेंगनेहारे और पंखवाले जो २१ चार पांवों के बल चलते हैं जिन के भूमि पर फांदने को टांगें होती हैं उन को तो खा सकते हो। वे ये हैं अर्थात् २२ भांति भांति की टिड्डी भांति भांति के फनगे भांति भांति के हर्गोल और भांति भांति के हागाब। पर और सब २३ रेंगनेहारे पंखवाले जो चार पांववाले होते हैं वे तुम्हारे लिये घिनौने हैं ॥

और इन के कारण तुम अशुद्ध ठहरोगे जिस किसी २४ से इन की लोथ छू जाए वह सांझ लों अशुद्ध ठहरे। और जो कोई इन की लोथ में का कुछ भी उठाए वह २५ अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे। फिर जितने २६ पशु चिरे खुरवाले होते हैं पर न तो बिलकुल फटे खुर-वाले न पागुर करनेहारे हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरे। और चार पांव के २७ बल चलनेहारों में से जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन की लोथ छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे। और जो कोई उन की लोथ २८ उठाए वह अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

और जो पृथिवी पर रेंगते हैं उन में से ये रेंगनेहारे २९ तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं अर्थात् नेउला चूहा और भांति भांति के गोह, और छिपकली मगर टिकटिक सांडा और ३० गिरगिटान। सब रेंगनेहारों में से ये ही तुम्हारे लिये ३१ अशुद्ध हैं जो कोई इन की लोथ छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे। और इन में से किसी की लोथ जिस किसी ३२ वस्तु पर पड़ जाए वह भी अशुद्ध ठहरे चाहे वह काठ का कोई पात्र हो चाहे वस्त्र चाहे खाल चाहे बोरा चाहे किसी काम का कैसा ही पात्रादि क्यों न हो वह जल में डाला जाए और सांझ लों अशुद्ध रहे तब शुद्ध ठहरे। और मिट्टी का कोई पात्र हो जिस में इन जन्तुओं में से ३३ कोई पड़े तो उस पात्र में जो कुछ हो वह अशुद्ध ठहरे और पात्र को तुम तोड़ डालना। उस में जो खाने के ३४

योग्य भोजन हो जिस में पानी का छुआव हो वह सब अशुद्ध ठहरे फिर यदि ऐसे पात्र में पीने के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे। ३५ और यदि इन की लोथ में का कुछ तंदूर वा चूल्हे पर पड़े तो वह भी अशुद्ध ठहरे और तोड़ डाला जाए क्योंकि वह अशुद्ध हो जाएगा वह तुम्हारे लेखे भी अशुद्ध ठहरे। ३६ पर सोता वा तालाब जिस में जल इकट्ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे पर जो कोई इन की लोथ को छूए वह अशुद्ध ठहरे। ३७ और यदि इन की लोथ में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो बोने के लिये हो पड़े तो वह बीज शुद्ध रहे। ३८ पर यदि बीज पर जल डाला गया हो और पीछे लोथ में का कुछ उस पर पड़ जाए तो वह तुम्हारे लेखे अशुद्ध ठहरे॥

३९ फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा तुम को दी गई है यदि उन में से कोई पशु मरे तो जो कोई उस की लोथ छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे। ४० और उस की लोथ में से जो कोई कुछ खाए सो अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे और जो कोई उस की लोथ उठाए वह भी अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे। ४१ और सब प्रकार के पृथिवी पर रेंगनेहारे घिनौने हैं वे खाए न जाएं। ४२ पृथिवी पर सब रेंगनेहारों में से जितने पेट वा चार पांवों के बल चलते हैं वा अधिक पांववाले होते हैं उन्हें तुम न खाना क्योंकि वे घिनौने हैं। ४३ तुम किसी प्रकार के रेंगनेहारे जन्तु के द्वारा अपने आप को घिनौना न करना और न उन के द्वारा अपने को अशुद्ध करके अशुद्ध ठहरना। ४४ क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं इस कारण अपने को पवित्र करके पवित्र बने रहो क्योंकि मैं पवित्र हूं इस लिये तुम किसी प्रकार के रेंगनेहारे जन्तु के द्वारा जो पृथिवी पर चलता है अपने आप को अशुद्ध न करना। ४५ क्योंकि मैं वह यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्र देश से इस लिये ले आया है कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरे इस कारण तुम पवित्र रहो क्योंकि मैं पवित्र हूं॥

४६ पशुओं पक्षियों और सब जलचारी प्राणियों और पृथिवी पर सब रेंगनेहारे प्राणियों के विषय में यही व्यवस्था है, ४७ कि शुद्ध अशुद्ध और भक्ष्य अभक्ष्य जीवधारियों में भेद किया जाए॥

(प्रसूता के विषय की विधि)

१२. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह कि जो स्त्री गर्भिणी हो कर लड़का जने उस को सात दिन की अशुद्धता लगे अर्थात् जैसे वह ऋतुमती हो कर अशुद्ध रहा करती है वैसे ही वह जनने पर भी अशुद्ध रहे। ३ और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। ४ फिर वह स्त्री अपने शुद्ध करनेहारे रुधिर में तेंतीस दिन रहे और जब लों उस के शुद्ध हो जाने के दिन पूरे न हों तब लों वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छूए और न पवित्रस्थान में प्रवेश करे। ५ और यदि वह लड़की जने तो उस को ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे और फिर छियासठ दिन लों अपने शुद्ध करनेहारे रुधिर में रहे। ६ और जब उस के शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों तब चाहे वह बेटा जनी हो चाहे बेटी वह होमबलि के लिये बरस दिन का भेड़ी का बच्चा और पापबलि के लिये कबूतरी का एक बच्चा वा पिंडुकी मिलापवाले तंबू के द्वार पर याजक के पास ले जाए। ७ तब याजक उस को यहोवा के साम्हने चढ़ाके उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह अपने रुधिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी। जो स्त्री लड़का वा लड़की जने उस की यही व्यवस्था है। ८ और यदि उसे भेड़ वा बकरी देने की पूंजी न हो तो दो पिंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह शुद्ध ठहरेगी॥

(कोढ़ की विधि)

१३. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ जब किसी मनुष्य के चाम में सूजन वा पपड़ी वा फूल हो और इस से उस के चाम में कोढ़ की व्याधि सा कुछ देख पड़े तो वह हारून याजक के पास वा उस के पुत्र जो याजक उन में से किसी के पास पहुंचाया जाए। ३ तब याजक उस के चाम की व्याधि को देखे और यदि उस व्याधि के स्थान के रोएं उजले हो गये हों और वह व्याधि चाम से गहिरी देख पड़े तो वह जान ले कि कोढ़ की व्याधि है सो याजक उस मनुष्य को देखकर उस को अशुद्ध ठहराए। ४ और यदि वह फूल उस के चाम में उजला हो तो पर चाम से गहिरा न देख पड़े और न उस में के रोएं उजले हो गये हों तो याजक उस को सात दिन लों बन्द कर रक्खे। ५ और सातवें दिन याजक उस को देखे और यदि वह व्याधि जैसी की तैसी बनी रहे और उस के चाम में फैली न हो तो याजक उस को और भी सात दिन लों बन्द कर रक्खे। ६ और सातवें दिन याजक उस को फिर देखे और यदि देख पड़े कि व्याधि की चमक कम हुई और व्याधि चाम में नहीं फैली तो याजक उस को शुद्ध ठहराए उस के तो चाम में पपड़ी ठहरेगी सो वह अपने वस्त्र धोकर शुद्ध ठहरे। ७ और यदि उस के पीछे कि वह शुद्ध ठहरने के लिये याजक को दिखाया जाए उस की पपड़ी चाम में

बहुत फैल जाए तो वह फिर याजक को दिखाया जाए। ८ और यदि याजक को देख पड़े कि पपड़ी चाम में फैल गई है तो वह उस को अशुद्ध ठहराए, कोढ़ ही तो है॥

९ यदि कोढ़ की सी व्याधि किसी मनुष्य के हो तो वह १० याजक के पास पहुंचाया जाए। और याजक उस को देखे और यदि वह सूजन उस के चाम में उजली हो और उस के कारण रोएं भी उजले हो गये हों और उस सूजन में ११ बिना चाम का मांस हो तो याजक जाने कि उस के चाम में पुराना कोढ़ है सो वह उस को अशुद्ध ठहराए १२ और बन्द न रक्खे वह तो अशुद्ध है। और यदि कोढ़ किसी के चाम में फूटकर यहां लों फैल जाए कि जहां कहीं याजक देखे व्याधिमान के सिख से तलुवे लों कोढ़ १३ ने सारे चाम को छा लिया हो तो याजक देखे और यदि कोढ़ ने उस के सारे शरीर को छा लिया हो तो वह उस व्याधिमान को शुद्ध ठहराए उस का शरीर जो बिलकुल उजला हो गया होगा सो वह शुद्ध ही ठहरे। १४ पर जब उस में चामहीन मांस देख पड़े तब तो वह १५ अशुद्ध ठहरे। और याजक चामहीन मांस को देखकर उस को अशुद्ध ठहराए क्योंकि वैसा चामहीन मांस अशुद्ध १६ ही होता है उस में कोढ़ लगा रहता है। पर यदि वह चामहीन मांस फिरकर उजला हो जाए तो वह मनुष्य १७ याजक के पास जाए। तब याजक उस को देखे और यदि वह व्याधि फिरकर उजली हो गई हो तो याजक व्याधिमान को शुद्ध जान कर शुद्ध ही ठहराए॥

१८ फिर यदि किसी के चाम में फोड़ा होकर चंगा हो १९ गया हो और फोड़े के स्थान में उजली सी सूजन वा लाली लिये हुए उजला फूल हो तो वह याजक को दिखाया २० जाए। सो याजक उस सूजन को देखे और यदि वह चाम से गहिरा देख पड़े और उस के रोएं भी उजले हो गये हों तो याजक यह जानकर उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए कि यह फोड़े में से फूटी हुई कोढ़ की व्याधि है। २१ और यदि याजक देखे कि उस में उजले रोए नहीं हैं और वह चाम से गहिरी नहीं और उस की चमक कम हुई है तो याजक उस मनुष्य को सात दिन लों बन्द कर २२ रक्खे। और यदि वह व्याधि तब लों चाम में सचमुच फैल जाए तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए वह २३ व्याधि तो है। पर यदि वह फूल न फैले अपने स्थान ही पर बना रहे तो वह फोड़े का दाग है याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए॥

२४ फिर यदि किसी के चाम में जलने का घाव हो और उस जलने के घाव में चामहीन फूल लाली लिये हुए २५ उजला वा उजला ही हो जाए तो याजक उस को देखे और यदि उस फूल में के रोएं उजले हो गये हों और वह चाम से गहिरा देख पड़े तो उस को जलने के दाग में से फूटा हुआ कोढ़ है याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए क्योंकि उस में कोढ़ की व्याधि ठहरेगी। २६ और यदि याजक देखे कि फूल में उजले रोएं नहीं और न वह चाम से कुछ गहिरा है और उस की चमक कम हुई है तो वह उस को सात दिन लों बन्द कर रखे। २७ और सातवें दिन याजक उस को देखे और यदि वह चाम में फैल गई हो तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए, उस को कोढ़ की व्याधि है। २८ पर यदि वह फूल चाम में न फैला अपने स्थान ही पर बना हो और उस की चमक कम हुई हो तो वह जलने की सूजन है याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए क्योंकि उस में जलने का दाग है॥

२९ फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के सिर पर वा पुरुष ३० की दाढ़ी में व्याधि हो तो याजक व्याधि को देखे और यदि वह चाम से गहरी देख पड़े और उस में भूरे भूरे पतले बाल हों तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए वह व्याधि सेंहुआं अर्थात् सिर वा डाढ़ी का कोढ़ है। ३१ और यदि याजक सेंहुएं की व्याधि को देखे कि वह चाम से गहरी नहीं है और उस में काले काले बाल नहीं हैं तो वह सेंहुए के व्याधिमान को सात दिन लों बन्द कर ३२ रक्खे। और सातवें दिन याजक व्याधि को देखे तब यदि वह सेंहुआं फैला न हो और उस में भूरे भूरे बाल न हों ३३ और सेंहुआं चाम से गहिरा न देख पड़े तो वह मनुष्य मूड़ा तो जाए पर जहां सेंहुआं हो वहां न मूड़ा जाए और याजक उस सेंहुएवाले को और भी सात दिन लों ३४ बन्द कर रक्खे। और सातवें दिन याजक सेंहुए को देखे और यदि वह सेंहुआं चाम में फैला न हो और चाम से गहिरा न देख पड़े तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध ३५ ठहराए और वह अपने वस्त्र धोके शुद्ध ठहरे। और यदि उस के शुद्ध ठहरने के पीछे सेंहुआं चाम में कुछ भी ३६ फैले तो याजक उस को देखे और यदि वह चाम में फैला हो तो याजक यह भूरे बाल न ढूंढ़े वह मनुष्य ३७ अशुद्ध है। पर यदि उस की दृष्टि में वह सेंहुआं जैसे का तैसा बना हो और उस में काले काले बाल जमे हों तो वह जाने कि सेंहुआं चंगा हो गया है और वह मनुष्य शुद्ध है सो याजक उस को शुद्ध ही ठहराए॥

३८ फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के चाम में उजले ३९ फूल हों तो याजक देखे और यदि उस के चाम में वे फूल कम उजले हों तो वह जाने कि उस को चाम में निकली हुई चाई ही हुई है वह मनुष्य शुद्ध ठहरे॥

४० फिर जिस के सिर के बाल झड़ गये हों तो जानना

४१ कि वह चन्दुला तो है पर शुद्ध ही है। और जिस के सिर के आगे के बाल झड़ गये हों तो वह माथे का चन्दुला ४२ तो है पर शुद्ध ही है। पर यदि चन्दुले सिर व चन्दुले माथे पर लाली लिये हुए उजली व्याधि हो तो जानना कि वह उस के चन्दुले सिर वा चन्दुले माथे पर निकला ४३ हुआ कोढ़ है। सो याजक उस को देखे और यदि व्याधि की सूजन उस के चन्दुले सिर व चन्दुले माथे पर ऐसी लाली लिये हुए उजली हो जैसा चाम के कोढ़ में होता ४४ है तो वह कोढ़ी और अशुद्ध है सो याजक उस को अवश्य अशुद्ध ठहराए उस के सिर की व्याधि है॥

४५ और जिस में वह व्याधि हो उस कोढ़ी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे रहें और वह अपने ऊपरवाले ४६ होंठ को ढांपे हुए अशुद्ध अशुद्ध यों पुकारा करे। जितने दिन लों वह व्याधि उस में रहे उतने दिन लों वह जो अशुद्ध रहेगा इस लिये अशुद्ध ठहरा भी रहे सो वह अकेला रहा करे उस के रहने का स्थान छावनी से बाहर हो॥

४७ फिर जिस वस्त्र में कोढ़ की व्याधि हो चाहे वह वस्त्र ४८ ऊन का हो चाहे सनी का वह व्याधि चाहे उस सनी वा ऊन के वस्त्र के ताने में हो चाहे बाने में वा वह व्याधि ४९ चमड़े में व चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में हो यदि वह व्याधि किसी वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में वा चमड़े में वा चमड़े की किसी वस्तु में हरी सी वा लाल सी हो तो जानना कि वह कोढ़ की व्याधि है और वह ५० याजक को दिखाई जाए। और याजक व्याधि को देखे और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन बन्द कर रक्खे। ५१ और सातवें दिन वह उस व्याधि को देखे और यदि वह वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में वा चमड़े में वा चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में फैल गई हो तो जानना कि व्याधि गलित कोढ़ है इस लिये वह वस्तु चाहे कैसे ही ५२ काम क्यों न आती हो तो भी अशुद्ध ठहरेगी। सो वह उस वस्त्र को जिस के ताने वा बाने में वह व्याधि हो चाहे वह ऊन का हो चाहे सनी का वा उस चमड़े की वस्तु को जलाए वह व्याधि गलित कोढ़ की है वह वस्तु आग ५३ में जलाई जाए। और यदि याजक देखे कि वह व्याधि उस वस्त्र के ताने वा बाने में वा चमड़े की उस वस्तु में ५४ नहीं फैली तो जिस वस्तु में व्याधि हो उस के धोने की आज्ञा दे। तब उसे और भी सात दिन लों बन्द कर ५५ रक्खे। और उस के धोने के पीछे याजक उस को देखे और यदि व्याधि का न तो रंग बदला हो और न व्याधि फैली हो तो जानना कि वह अशुद्ध है उसे आग में जलाना क्योंकि चाहे वह व्याधि भीतर चाहे ऊपरवार की ५६ हो तो भी वह कटाव ठहरेगा। और यदि याजक देखे कि उस के धोने के पीछे व्याधि की चमक कम हुई तो वह उस को वस्त्र के चाहे ताने चाहे बाने में से वा चमड़े में से फाड़ के निकाले। ५७ और यदि वह व्याधि तब भी उस वस्त्र के ताने वा बाने में वा चमड़े की उस वस्तु में देख पड़े तो जानना कि वह फूट के निकली हुई व्याधि है और जिस में वह व्याधि हो उसे आग में जलाना। ५८ और यदि उस वस्त्र से जिस के ताने वा बाने में व्याधि हो वा चमड़े की जो वस्तु हो उस में जब धोई जाए तब व्याधि जाती रही हो तो वह दूसरी बार धुल कर शुद्ध ठहरे। ५९ ऊन व सनी के वस्त्र में के ताने वा बाने में वा चमड़े की किसी वस्तु में जो कोढ़ की व्याधि हो उस के शुद्ध अशुद्ध ठहराने की यही व्यवस्था है॥

१४.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ कोढ़ी के शुद्ध ठहराने की यह व्यवस्था है कि वह याजक के पास पहुंचाया जाए। ३ और याजक छावनी के बाहर जाए और याजक उस कोढ़ी को देखे ४ और यदि उस की कोढ़ की व्याधि चंगी हुई हो तो याजक आज्ञा दे कि शुद्ध ठहरनेहारे के लिये दो शुद्ध और जीते पक्षी देवदारु की लकड़ी लाही रंग का कपड़ा और जूफा ये सब लिये जाएं। ५ और याजक आज्ञा दे कि एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलि ६ किया जाए। तब वह जीते पक्षी को देवदारु की लकड़ी लाही के रंग के कपड़े और जूफा इन सभों समेत लेकर एक संग उस पक्षी के लोहू में जो बहते हुए जल के ऊपर ७ बलि किया जाएगा बोर दे और कोढ़ से शुद्ध ठहरनेहारे पर सात बार छिड़ककर उस को शुद्ध ठहराए तब उस ८ जीते हुए पक्षी को मैदान में छोड़ दे। और शुद्ध ठहरनेहारा अपने वस्त्रों को धो सब बाल मुंड़ाकर जल से स्नान करे तब वह शुद्ध ठहरे और उस के पीछे वह छावनी में तो आने पाए पर सात दिन लों अपने डेरे से बाहर रहे। ९ और सातवें दिन वह सिर डाढ़ी और भौंहों के सब बाल मुंड़ाए वरन सब अंग मुण्डन कराए और अपने वस्त्रों को धोए और जल से स्नान करे तब वह शुद्ध ठहरेगा। १० और आठवें दिन वह दो निर्दोष भेड़ के बच्चे और वरस दिन की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवें अंश मैदा और लोग भर तेल लाए। ११ और शुद्ध ठहरानेहारा याजक इन वस्तुओं समेत उस शुद्ध ठहरनेहारे मनुष्य को यहोवा के सन्मुख मिलापवाले तंबू के द्वार १२ पर खड़ा करे। तब याजक एक भेड़ का बच्चा लेकर दोषबलि के लिये उसे और उस लोग भर तेल को समीप लाए और इन दोनों को हिलाने की भेंट करके यहोवा

१३ के साम्हने हिलाए। और वह उस भेड़ के बच्चे को उसी स्थान में जहां वह पापबलि और होमबलि पशुओं को बलि किया करेगा अर्थात् पवित्रस्थान में बलि करे क्योंकि जैसा पापबलि याजक का ठहरेगा वैसा ही दोषबलि भी उसी का
१४ ठहरेगा वह परमपवित्र है। तब याजक दोषबलि के लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों
१५ पर लगाए। और याजक उस लोग भर तेल में से कुछ
१६ लेकर अपने बायें हाथ की हथेली पर डाले। और याजक अपने दहिने हाथ की अंगुली को अपनी बाईं हथेली पर के तेल में बोरके उस तेल में से कुछ अपनी अंगुली से
१७ यहोवा के सन्मुख सात बार छिड़के। और जो तेल उस की हथेली पर रह जाएगा याजक उस में से कुछ शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर दोषबलि के लोहू
१८ के ऊपर लगाए। और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उस को वह शुद्ध ठहरनेहारे के सिर पर डाल दे और याजक उस के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त
१९ करे। और याजक पापबलि को भी चढ़ाके उस के लिये जो अपनी अशुद्धता से शुद्ध ठहरनेहारा हो प्रायश्चित्त
२० करे और उस के पीछे होमबलिपशु को बलि करके अन्नबलि समेत वेदी पर चढ़ाए सो याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह शुद्ध ठहरेगा॥

२१ पर यदि वह दरिद्र हो और इतना लाने को उस की पूंजी न हो तो वह अपना प्रायश्चित्त कराने के लिये हिलाने को एक भेड़ का बच्चा दोषबलि के लिये और तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके
२२ और लोग भर तेल लाये और दो पिंडुक या कबूतरी के दो बच्चे लाए जैसे कि वह ला सके और इन में से एक
२३ तो पापबलि और दूसरा होमबलि हो। और आठवें दिन वह इन सभों को अपने शुद्ध ठहरने के लिये मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के सन्मुख याजक के पास ले आए।
२४ तब याजक उस लोग भर तेल और दोषबलिवाले भेड़ के बच्चे को लेकर हिलाने की भेंट करके यहोवा के
२५ साम्हने हिलाए। फिर दोषबलिवाला भेड़ का बच्चा बलि किया जाए और याजक उस के लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाए।
२६ फिर याजक उस तेल में से कुछ अपने बायें हाथ की
२७ हथेली पर डालकर अपने दहिने हाथ की अंगुली से अपनी बाईं हथेली पर के तेल में से कुछ यहोवा के
२८ सन्मुख सात बार छिड़के। फिर याजक अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ शुद्ध ठहरनेहारे के दहिने कान के सिरे पर और उस के दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर दोषबलि के लोहू के स्थान पर लगाए। और जो तेल
२९ याजक की हथेली पर रह जाए उसे वह शुद्ध ठहरनेहारे के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करने को उस के
३० सिर पर डाल दे। तब वह पिंडुकों वा कबूतरी के बच्चों
३१ में से जो वह ला सका हो एक को चढ़ाए। अर्थात् जो पक्षी वह ला सका हो उन में से वह एक को पापबलि करके और अन्नबलि समेत दूसरे को होमबलि करके चढ़ाए इस रीति याजक शुद्ध ठहरनेहारे के लिये यहोवा
३२ के साम्हने प्रायश्चित्त करे। जिसे कोढ़ की व्याधि हुई हो और उस के इतनी पूंजी न हो कि शुद्ध ठहरने की सामग्री को ला सके उस के लिये यही व्यवस्था है॥

३३, ३४ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, जब तुम लोग कनान देश में पहुंचो जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के लिये तुम्हें देता हूं उस समय यदि मैं कोढ़ की
३५ व्याधि तुम्हारे अधिकार के किसी घर में दिखाऊं तो जिस का वह घर हो सो आकर याजक को यों बता दे कि मुझे ऐसा देख पड़ता है कि घर में मानो कोई व्याधि है।
३६ तब याजक आज्ञा दे कि उस घर में व्याधि देखने के लिये मेरे जाने से पहिले उसे खाली करो ऐसा न हो कि जो कुछ घर में हो वह सब अशुद्ध ठहरे और पीछे याजक
३७ घर देखने को भीतर जाए। तब वह उस व्याधि को देखे और यदि वह व्याधि घर की भीतों पर हरी हरी सी वा लाल लाल सी मानो खुदी हुई लकीरों के रूप में हो और
३८ ये लकीरें भीत में गहिरी देख पड़ती हों तो याजक घर से बाहर द्वार पर जाकर घर को सात दिन लों बन्द कर
३९ रक्खे। और सातवें दिन याजक आकर देखे और यदि वह
४० व्याधि घर की भीतों पर फैल गई हो तो याजक आज्ञा दे कि जिन पत्थरों को व्याधि है उन्हें निकाल कर नगर से
४१ बाहर किसी अशुद्ध स्थान में फेंक दो। और वह घर के भीतर भीतर चारों ओर खुरचवा दे और वह खुरचन
४२ नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में डाली जाय। और लोग दूसरे पत्थर लेकर पहिले पत्थरों के स्थान में लगाएं
४३ और याजक दूसरा गारा लेकर घर पर फेरे। और यदि पत्थरों के निकाले जाने और घर के खुरचे और लेसे जाने
४४ के पीछे वह व्याधि फिर घर में फूट निकले तो याजक आकर देखे और यदि वह व्याधि घर में फैल गई हो तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है वह अशुद्ध है।
४५ और वह सब गारे समेत पत्थर लकड़ी बरन सारे घर को खुदवा कर गिरा दे और उन सब वस्तुओं को उठवा कर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान पर फेंकवा दे।

४६ और जब लों वह घर बन्द रहे तब लों यदि कोई उस में ४७ जाए तो वह सांझ लों अशुद्ध रहे। और जो कोई उस घर में सोए वह अपने वस्त्रों को धोए और जो कोई उस ४८ घर में खाना खाए वह भी अपने वस्त्रों को धोए। और यदि याजक आकर देखे कि जब से घर लेसा गया तब से उस में व्याधि नहीं फैली तो यह जानकर कि वह व्याधि ४९ दूर हो गई है घर को शुद्ध ठहराए। और वह घर को पाप छुड़ाके पावन करने के लिये दो पक्षी देवदारु की ५० लकड़ी लाही रङ्ग का कपड़ा और जूफा लिवा लाए और एक पक्षी को बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में ५१ बलि करे। तब वह देवदारु की लकड़ी लाही रङ्ग के कपड़े और जूफा इन सभों समेत जीते हुए पक्षी को लेकर बलि किये हुए पक्षी के लोहू में और बहते हुए जल में बोर दे ५२ और उन से घर पर सात बेर छिड़के। और वह पक्षी के लोहू और बहते हुए जल और जीते हुए पक्षी और देवदारु की लकड़ी और जूफा और लाही रङ्ग के कपड़े के ५३ द्वारा घर को पाप छुड़ाके पावन करे। तब वह जीते हुए पक्षी को नगर से बाहर मैदान में छोड़ दे इसी रीति से वह घर के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह शुद्ध ठहरेगा॥

५४, ५५ सब भांति के कोढ़ की व्याधि और सेहुएं, और ५६ वस्त्र और घर के कोढ़, और सूजन और पपड़ी और ५७ फूल के विषय में, शुद्ध अशुद्ध ठहराने की शिक्षा की व्यवस्था यही है। सारे कोढ़ की व्यवस्था यही है॥

(ऐसे लोगों की विधि जिन के प्रमेह हो)

१५. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ इस्राएलियों से यों कहो कि जिस जिस पुरुष के प्रमेह हो वह उस कारण अशुद्ध ठहरे। ३ और चाहे बहता रहे चाहे बहना बन्द भी हो तो भी उस ४ की अशुद्धता ठहरेगी। जिस के प्रमेह हो वह जिस जिस बिछौने पर लेटे वह अशुद्ध ठहरे और जिस जिस वस्तु ५ पर वह बैठे वह भी अशुद्ध ठहरे। और जो कोई उस के बिछौने को छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से ६ स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध ठहरा रहे। और जिस के प्रमेह हो वह जिस वस्तु पर बैठा हो उस पर जो कोई बैठे वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और ७ सांझ लों अशुद्ध ठहरा रहे। और जिस के प्रमेह हो उस से जो कोई छू जाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से ८ स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे। और जिस के प्रमेह हो वह यदि किसी शुद्ध मनुष्य पर थूके तो वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों ९ अशुद्ध रहे। और जिस के प्रमेह हो वह सवारी की जिस १० वस्तु पर बैठे वह अशुद्ध ठहरे। और जो कोई किसी वस्तु को जो उस के नीचे रही हो छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे और जो कोई ऐसी किसी वस्तु को उठाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे। ११ और जिस के प्रमेह हो वह जिस किसी को बिन हाथ धोए छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे। १२ और जिस के प्रमेह हो वह मिट्टी के जिस किसी पात्र को छूए वह तोड़ डाला जाए और काठ के सब प्रकार के पात्र जल से धोये जाएं। १३ फिर जिस के प्रमेह हो वह जब अपने रोग से चंगा हो जाए तब से शुद्ध ठहरने के सात दिन गिन ले और उन के बीतने पर अपने वस्त्रों को धोकर बहते हुए जल से स्नान करे तब वह शुद्ध ठहरेगा। १४ और आठवें दिन वह दो पिण्डुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के सन्मुख जाकर उन्हें याजक को दे। १५ तब याजक उन में से एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि करके चढ़ाए और याजक उस के लिए उस के प्रमेह के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे॥

१६ फिर यदि किसी पुरुष का वीर्य्य स्खलित हो जाए तो वह अपने सारे शरीर को जल से धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे। १७ और जिस किसी वस्त्र वा चमड़े पर वह वीर्य्य पड़े वह जल से धोया जाए और सांझ लों अशुद्ध रहे। १८ और जब कोई पुरुष स्त्री से प्रसंग करे तो वे दोनों जल से स्नान करें और सांझ लों अशुद्ध रहें॥

१९ फिर जब कोई स्त्री ऋतुमती हो तो वह सात दिन लों अशुद्ध ठहरी रहे और जो कोई उस को छूए वह सांझ लों अशुद्ध रहे। २० और जब लों वह अशुद्ध रहे तब लों जिस जिस वस्तु पर वह लेटे और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे सब अशुद्ध ठहरें। २१ और जो कोई उस के बिछौने को छूए वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे। २२ और जो कोई किसी वस्तु को छूए जिस पर वह बैठी हो वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे। २३ और यदि बिछौने वा और किसी वस्तु पर जिस पर वह बैठी हो छूने के समय उस का रुधिर लगा हो तो छूनेहारा सांझ लों अशुद्ध रहे। २४ और यदि कोई पुरुष उस से प्रसंग करे और उस का रुधिर उस के लग जाए तो वह पुरुष सात दिन लों अशुद्ध रहे और जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब अशुद्ध ठहरें॥

२५ फिर यदि कोई स्त्री अपने ऋतु के योग्य समय को छोड़ बहुत दिन रजस्वला रहे वा उस योग्य समय से अधिक ऋतुमती रहे तो जब लों वह ऐसी रहे तब लों वह अशुद्ध

२६ ठहरी रहे। उस के ऋतुमती रहने के सब दिनों में जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब उस के रजसवाले बिछौने के समान ठहरें और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे भी उस के ऋतुमती रहने के योग्य दिनों की नाई अशुद्ध २७ ठहरें। और जो कोई उन वस्तुओं को छूए वह अशुद्ध ठहरे सो वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे २८ और सांझ लों अशुद्ध रहे। और जब वह स्त्री अपने ऋतु से शुद्ध हो जाए तब से वह सात दिन गिन ले २९ और उन के बीतने पर वह शुद्ध ठहरे। फिर आठवें दिन वह दो पिडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले ३० तम्बू के द्वार पर याजक के पास जाए। तब याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि करके चढ़ाए और याजक उस के लिये उस के रजस की अशुद्धता के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे॥

३१ इस प्रकार से तुम इस्राएलियों को उन की अशुद्धता से न्यारे कर रक्खो कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो उन के बीच है अशुद्ध करके अपनी अशुद्धता में फंसे हुए मर जाएं॥

३२ जिस के प्रमेह हो और जो पुरुष वीर्य स्खलित होने ३३ से अशुद्ध हो और जो स्त्री ऋतुमती हो और क्या पुरुष क्या स्त्री जिस किसी के धातुरोग हो और जो पुरुष अशुद्ध स्त्री से प्रसंग करे इन सभों की यही व्यवस्था है॥

(प्रायश्चित्त के दिन का आचार)

१६. जब हारून के दो पुत्र यहोवा के साम्हने समीप जाकर मर गये उस के पीछे यहोवा ने मूसा से बातें कीं। और यहोवा २ ने मूसा से कहा, अपने भाई हारून से कह कि सन्दूक के ऊपर के प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे बीचवाले पर्दे की आड़ में के पवित्रस्थान में हर एक समय तो प्रवेश न करना नहीं तो मर जाएगा क्योंकि मैं प्रायश्चित्तवाले ३ ढकने के ऊपर बादल में दिखाई दूंगा। और जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से करे अर्थात् पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये ४ एक मेढ़े को लेकर आए। वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा और अपने तन पर सनी के कपड़े की जांघिया पहिने और सनी के कपड़े की पेटी और सनी के कपड़े की पगड़ी भी बांधे हुए प्रवेश करे ये जो पवित्र वस्त्र हैं ५ सो वह जल से स्नान करके इन्हें पहिनकर आए। फिर वह इस्राएलियों की मण्डली के पास से पापबलि के लिये ६ दो बकरे और होमबलि के लिये एक मेढ़ा ले। और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा चढ़ाकर अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे। और वह दोनों बकरों को लेकर मिलापवाले तम्बू ७ के द्वार पर यहोवा के साम्हने खड़ा करे। और हारून ८ दोनों बकरों पर चिट्ठी डाले एक चिट्ठी तो यहोवा के लिये और एक अजाजेल के लिये डाली जाए। और जिस ९ बकरे पर यहोवा के लिये चिट्ठी निकले उस को तो हारून समीप ले आ पापबलि करके चढ़ाए। पर जिस बकरे पर १० अजाजेल के लिये चिट्ठी निकले वह यहोवा के साम्हने जीता खड़ा किया जाए कि उस से प्रायश्चित्त किया जाए और वह अजाजेल के लिये जंगल में छोड़ा जाए। और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये ११ होगा समीप ले आए और उस को बलि करके अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे। और जो वेदी १२ यहोवा के सन्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को लेकर और अपनी दोनो मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप से भरके वह बीचवाले पर्दे के भीतर ले आकर यहोवा के सन्मुख आग पर धूप दे कि १३ धूप का धूआं साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने पर छा जाए नहीं तो वह मर जाएगा। तब वह बछड़े १४ के लोहू में से कुछ लेकर पूरब की ओर प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर उंगली से छिड़के और फिर उस लोहू में से कुछ उंगली के द्वारा उस ढकने के साम्हने भी सात बार छिड़क दे। फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो १५ साधारण लोगों के लिये होगा बलि करके उस के लोहू को बीचवाले पर्दे की आड़ में ले आए और जैसे उस को बछड़े के लोहू से करना है वैसे ही वह बकरे के लोहू से भी करे अर्थात् उस को प्रायश्चित्त के ढकने पर और उस के साम्हने भी छिड़के। और वह इस्राएलियों की भान्ति १६ भान्ति की अशुद्धता और अपराधों और उन के सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त करे और मिलापवाला तंबू जो उन के संग उन की भान्ति भान्ति की अशुद्धता के बीच रहता है[१] उस के लिये भी वह वैसा ही करे। और जब हारून प्रायश्चित्त करने के लिये १७ पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब से जब लों वह अपने और अपने घराने और इस्राएल की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करके बाहर न निकले तब लों और कोई मनुष्य मिलापवाले तंबू में न रहे। फिर वह निकलकर उस वेदी १८ के पास जो यहोवा के साम्हने है जाकर उस के लिये प्रायश्चित्त करे अर्थात् बछड़े के लोहू और बकरे के लोहू दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए और लोहू में से कुछ अपनी उंगली के द्वारा १९

(१) मूल में वास किये रहता है।

सात बार उस पर छिड़क कर उसे इस्राएलियों की भांति २० भांति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे। और जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तंबू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुके तब जीते हुए बकरे को समीप ले २१ आए। और हारून अपने दोनों हाथों को जीते हुए बकरे पर टेककर इस्राएलियों के सब अधर्म्म के कामों और उन के सब अपराधों निदान उन के सारे पापों को अंगीकार करे और उन को बकरे के सिर पर उतारे फिर उस को किसी ठहराये हुए मनुष्य के हाथ जङ्गल में भेज के छुड़ा २२ दे। और वह बकरा अपने पर लदे हुए उन के सब अधर्म्म के कामों को किसी निराले देश में उठा ले जाए २३ और वह मनुष्य बकरे को जङ्गल में छोड़ आए। तब हारून मिलापवाले तम्बू में आए और जो सनी के वस्त्र पहिने हुए वह पवित्रस्थान में प्रवेश करे उन्हें उतारके २४ वहीं रख दे। फिर वह किसी पवित्र स्थान में जल से स्नान कर अपने निज वस्त्र पहिन बाहर जाकर अपने होमबलि और साधारण लोगों के होमबलि को चढ़ाकर २५ अपने और साधारण लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे। और २६ पापबलि की चरबी को वह वेदी पर जलाए। और जो मनुष्य बकरे को अजाजेल के लिये छोड़ आए वह अपने वस्त्रों को धोए और जल से स्नान करे और पीछे वह २७ छावनी में आने पाए। और पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिन का लोहू पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने के लिये पहुंचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर पहुंचाये जाएं और उन की खाल मांस और २८ गोबर आग में जलाए जाएं। और जो उन को जलाए वह अपने वस्त्रों को धोए और जल से स्नान करे और पीछे छावनी में आने पाए॥

२९ और तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि ठहरे कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और उस दिन चाहे तुम्हारे निज देश का कोई हो चाहे तुम्हारे बीच रहनेहारा कोई परदेशी हो ३० कोई किसी प्रकार का काम काज न करे। क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा वरन तुम अपने सब पापों से यहोवा के ३१ साम्हने शुद्ध ठहरोगे। यह तुम्हारे लिये परमविश्राम का दिन ठहरे और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दुःख ३२ देना यह सदा की विधि है। और अपने पिता के स्थान पर याजक ठहरने के लिये जिस का अभिषेक और संस्कार किया जाए वह भी प्रायश्चित्त किया करे अर्थात् ३३ सनी के पवित्र वस्त्रों को पहिनकर पवित्रस्थान और मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त करे और याजकों के और मण्डली के सब लोगों के लिये भी ३४ प्रायश्चित्त करे। और यह तुम्हारे लिये सदा की विधि ठहरे कि इस्राएलियों के लिये बरस दिन में एक बार तुम्हारे सारे पापों का प्रायश्चित्त किया जाए। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी थी हारून ने किया॥

(बलिदान केवल पवित्र तम्बू के साम्हने करने की आज्ञा)

१७.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून २ और उस के पुत्रों से और सारे इस्राएलियों से कह कि यहोवा ने यह आज्ञा दी है कि, ३ इस्राएल के घराने में से कोई मनुष्य हो जो बैल वा भेड़ के बच्चे वा बकरी को चाहे छावनी में चाहे छावनी से ४ बाहर घात करके मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के निवास के साम्हने यहोवा के लिये चढ़ाने के निमित्त न ले जाए तो उस मनुष्य को लोहू बहाने का दोष लगेगा और वह मनुष्य जो लोहू बहानेहारा ठहरेगा ५ सो वह अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए। इस विधि का यह कारण है कि इस्राएली जो अपने बलिपशुओं को खुले मैदान में बलि करते हैं वे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास यहोवा के लिये ले जाकर उसी के लिये मेलबलि करके बलि किया करें। ६ और याजक लोहू को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा की वेदी के ऊपर छिड़के और चरबी को उस के लिये सुखदायक सुगन्ध करके जलाए। ७ और वे जो बकरों के पूजक[1] होकर व्यभिचार करते हैं वे फिर अपने बलिपशुओं को उन के लिये बलि न करें। तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे॥

८ सो तू उन से कह कि इस्राएल के घराने के लोगों में से वा उन के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई ९ मनुष्य क्यों न हो जो होमबलि वा मेलबलि चढ़ाए और उस को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के लिये चढ़ाने को न ले आए वह मनुष्य अपने लोगों में से नाश किया जाए॥

(लोहू की पवित्रता)

१० फिर इस्राएल के घराने के लोगों में से वा उन के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो किसी प्रकार का लोहू खाए मैं उस लोहू खानेहारे के विमुख होकर उस को उस के लोगों के बीच से नाश ११ कर डालूंगा। क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है और उस को मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से

(१) मूल में के पीछे।

१२ प्रायश्चित्त होता है । इस कारण मैं इस्राएलियों से कहता हूं कि तुम में से कोई प्राणी लोहू न खाए और जो परदेशी तुम्हारे बीच रहे वह भी लोहू न खाए ॥

१३ सो इस्राएलियों में से वा उन के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो अहेर करके खाने के योग्य पशु वा पक्षी को पकड़े वह उस के लोहू को उण्डेलकर धूलि से ढांपे । १४ क्योंकि सब प्राणियों का प्राण जो है उन का लोहू ही उन का प्राण ठहरा है इसी से मैं इस्राएलियों से कहता हूं कि किसी प्रकार के प्राणी के लोहू को तुम न खाना क्योंकि सब प्राणियों का प्राण उन का लोहू ही है उस को जो कोई खाए वह नाश किया जाए । १५ और देशी हो वा परदेशी हो जो किसी लोथ वा फाड़े हुए पशु का मांस खाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे तब वह शुद्ध ठहरेगा । १६ और यदि वह उन को न धोए और न स्नान करे तो उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा ॥

(भांति भांति के घिनौने कामों का निषेध)

१८. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कहो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । ३ मिस्र देश के कामों के अनुसार जिस में तुम रहते थे न करना और कनान देश के कामों के अनुसार जहां मैं तुम्हें ले चलता हूं न करना और न उन देशों की विधियों पर चलना । ४ मेरे ही नियमों को मानना और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन पर चलना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । ५ सो तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को मानना जो मनुष्य उन को माने वह उन के कारण जीता रहेगा मैं तो यहोवा हूं । ६ तुम में से कोई अपनी किसी निकट कुटुम्बिन का तन उघाड़ने को उस के पास न जाए मैं तो यहोवा हूं । ७ अपनी माता का तन जो तुम्हारे पिता का तन है न उघाड़ना वह तो तुम्हारी माता है सो तुम उस का तन न उघाड़ना । ८ अपनी सौतेली माता का भी तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे पिता ही का तन है । ९ अपनी बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली हो चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर उस का तन न उघाड़ना । १० अपनी पोती वा अपनी नतिनी का तन न उघाड़ना उन की देह तो मानों तुम्हारी ही है । ११ तुम्हारी सौतेली बहिन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई वह तुम्हारी बहिन है इस कारण उस का तन न उघाड़ना । १२ अपनी फूफी का तन न उघाड़ना, वह तो तुम्हारे पिता की निकट कुटुम्बिन है । १३ अपनी मौसी का तन न उघाड़ना क्योंकि वह तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिन है । १४ अपने चचा का तन न उघाड़ना अर्थात् उस की स्त्री के पास न जाना वह तो तुम्हारी चची है । १५ अपनी बहू का तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे बेटे की स्त्री है सो तुम उस का तन न उघाड़ना । १६ अपनी भौजी का तन न उघाड़ना वह तो तुम्हारे भाई ही का तन है । १७ किसी स्त्री और उस की बेटी दोनों का तन न उघाड़ना और उस की पोती को वा उस की नतिनी को अपनी स्त्री करके उस का तन न उघाड़ना वे तो निकट कुटुम्बिनें हैं सो ऐसा करना महापाप है । १८ और अपनी स्त्री की बहिन को भी अपनी स्त्री करके उस की सौत न करना कि पहिली के जीते जी उस का तन भी उघाड़े । १९ फिर जब लों कोई स्त्री अपने ऋतु के कारण अशुद्ध रहे तब लों उस के पास उस का तन उघाड़ने को न जाना । २० फिर अपने भाईबन्धु की स्त्री से कुकर्म्म करके अशुद्ध न हो जाना । २१ और अपने सन्तान में से किसी को मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना और न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र ठहराना मैं तो यहोवा हूं । २२ स्त्रीगमन की रीति पुरुषगमन न करना वह तो घिनौना काम है । २३ किसी जाति के पशु के साथ पशुगमन करके अशुद्ध न हो जाना और न कोई स्त्री पशु के साम्हने इस लिये खड़ी हो कि उस के संग कुकर्म्म करे यह तो उलटी बात है ॥

२४ ऐसा ऐसा कोई काम करके अशुद्ध न हो जाना क्योंकि जिन जातियों को मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूं वे ऐसे ऐसे काम करके अशुद्ध हो गई हैं । २५ और उन का देश भी अशुद्ध हुआ इस कारण मैं उस पर उस के अधर्म्म का दण्ड देता हूं और वह देश अपने निवासियों को उगल देता है । २६ इस कारण तुम लोग मेरी विधियों और नियमों को मानना और चाहे देशी चाहे तुम्हारे बीच रहनेहारा परदेशी तुम में से कोई ऐसा घिनौना काम न करे । २७ क्योंकि ऐसे सब घिनौने कामों को उस देश के मनुष्य जो तुम से पहिले उस में रहते हैं वे करते आये हैं इस से वह देश अशुद्ध हो गया है । २८ सो ऐसा न हो कि जिस रीति जो जाति तुम से पहिले उस देश में रहती है उस को वह उगल देता है उसी रीति जब तुम उस को अशुद्ध करो तो वह तुम को भी उगल दे । २९ जितने ऐसा कोई घिनौना काम करें वे सब प्राणी अपने लोगों में से नाश किये जाएं । ३० यह जो आज्ञा मैं ने मानने को दी है उसे तुम मानना और जो घिनौनी रीतियां तुम से पहिले प्रचलित हैं उन में से किसी पर न चलना और न उन के कारण अशुद्ध हो जाना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥

(भांति भांति का आचार)

२ **१६. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राए-
लियों की सारी मण्डली से कहो
कि तुम पवित्र रहना क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
३ पवित्र हूं । तुम अपनी अपनी माता और अपने अपने
पिता का भय मानना और मेरे विश्रामदिनों को पालना
४ मैं त तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । तुम मूरतों की ओर
न फिरना और देवताओं की प्रतिमाएं ढाल कर न बना
५ लेना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । जब तुम यहोवा
के लिये मेलबलि करो तब बलि ऐसा करना कि मैं तुम से
६ प्रसन्न होऊं । उस का मांस बलि करने के दिन और दूसरे
दिन खाया जाए पर तीसरे दिन लों जो रह जाए वह
७ आग में जलाया जाए । और यदि उस में से कुछ भी
तीसरे दिन खाया जाए तो यह घिनौना ठहरेगा और
८ ग्रहण न किया जाएगा । और उस का खानेहारा जो
यहोवा के पवित्र पदार्थ को अपवित्र ठहराएगा इस से
उस को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा और वह
प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाएगा ॥

९ फिर जब तुम अपने देश के खेत काटो तब अपने
खेत के कोनों को बिलकुल तो न काटना और काटे
१० हुए खेत की सिला बिनाई न करना । और अपनी दाख
की बारी को निझाड़के न बिन लेना और अपनी दाख
की बारी के झड़े हुए अंगूरों को न बटोरना उन्हें दीन
और परदेशी लोगों के लिये छोड़ देना मैं तो तुम्हारा
११ परमेश्वर यहोवा हूं । तुम चोरी न करना और एक
१२ दूसरे से न कपट करना न झूठ बोलना । तुम मेरे नाम
की झूठी किरिया खाके अपने परमेश्वर का नाम
१३ अपवित्र न ठहराना मैं तो यहोवा हूं । एक दूसरे पर अंधेर
न करना और न एक दूसरे को लूट लेना और मजूर
की मजूरी तेरे पास रात भर बिहान लों न रहने पाए ।
१४ बहिरे को न कोसना और न अंधे के आगे ठोकर रखना
और अपने परमेश्वर का भय मानना मैं तो यहोवा हूं ।
१५ न्याय में कुटिलता न करना और न तो कंगाल का पक्ष
करना न बड़े मनुष्यों का मुंह देखा विचार करना एक
१६ दूसरे का न्याय धर्म्म से करना । लुतरे बनके अपने
लोगों में न फिरा करना और एक दूसरे के लोहू बहाने
१७ की मनसा से खड़ा न होना मैं तो यहोवा हूं । अपने मन
में एक दूसरे से बैर न रखना उस को अवश्य डांटना
नहीं तो उस के पाप का भार तुझ को उठाना पड़ेगा ।
१८ पलटा न लेना और न अपने जातिभाइयों से बैर रक्खे
रहना बरन एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना मैं
तो यहोवा हूं । तुम मेरी विधियों को मानना । अपने १९
पशुओं को भिन्न जाति के पशुओं से जोड़ियाने न देना
अपने खेत में दो प्रकार के बीज इकट्ठे न बोना और
सनी और ऊन की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहि-
नना । फिर कोई स्त्री दासी हो और उस की मंगनी २०
किसी पुरुष से हुई हो पर वह न तो दाम से न सेंतमेंत
स्वाधीन की गई हो उस से यदि कोई कुकर्म्म करे तो
उन दोनों को दण्ड तो मिले पर उस स्त्री के स्वाधीन न
होने के कारण वे मार न डाले जाएं । पर वह पुरुष २१
मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के पास एक मेढ़ा
दोषबलि के लिये ले आए । और याजक उस के किये २२
हुए पाप के कारण दोषबलि के मेढ़े के द्वारा उस के लिये
यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे तब उस का किया हुआ
पाप क्षमा किया जाएगा । फिर जब तुम कनान देश में २३
पहुंच कर किसी प्रकार के फल के वृक्ष लगाओ तो उन
के फल तीन बरस लों तुम्हारे लेखे मानो खतनारहित
ठहरे रहें सो उन में से कुछ न खाया जाए । और चौथे २४
बरस में उन के सब फल यहोवा की स्तुति करने के लिये
पवित्र ठहरें । तब पांचवें बरस में तुम उन के फल खाना २५
इस लिये कि उन से तुम को बहुत फल मिलें मैं तो
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । तुम लोहू लगा हुआ कुछ २६
मांस न खाना और न टोना करना न शुभ अशुभ मुहूर्तों
को मानना । अपने सिर में घेरा रख कर न मुड़ाना न २७
अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालना । मुर्दों के कारण २८
अपने शरीर को कुछ न चीरना न उस में छाप लगाना
मैं तो यहोवा हूं । अपनी बेटियों को वेश्या बना कर २९
अपवित्र न करना ऐसा न हो कि देश वेश्यागमन के
कारण महापाप से भर जाए । मेरे विश्रामदिनों को माना ३०
करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना मैं तो यहोवा
हूं । ओझाओं और भूत साधनेवालों की ओर न फिरना ३१
और ऐसों की खोज करके उन के कारण अशुद्ध न हो
जाना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । पक्के बालवाले ३२
के साम्हने उठ खड़े होना और बूढ़े का आदरमान करना
और अपने परमेश्वर का भय मानना मैं तो यहोवा हूं ।
और यदि कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे ३३
तो उस को दुःख न देना । जो परदेशी तुम्हारे संग रहे ३४
वह तुम्हारे लेखे में देशी के समान हो बरन उस से अपने
ही समान प्रेम रखना क्योंकि तुम मिस्र देश में परदेशी थे
मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । न्याय में परिमाण में ३५
तौल में नाप में कुटिलता न करना । सच्चा तराजू धर्म्म ३६
के बटखरे सच्चा एपा और धर्म्म का हीन तुम्हारे पास
रहें मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम को

२७ मिस्र देश से निकाल ले आया है । सो तुम मेरी सब विधियों और सब नियमों को मानते हुए पालन करो मैं तो यहोवा हूं ॥

(प्राणदण्ड के योग्य भांति भांति के पापों का वर्णन)

२ **२०. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि इस्राएलियों में से वा इस्राएलियों के बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई क्यों न हो जो अपनी कोई सन्तान मोलेक को बलि करे वह निश्चय मार डाला जाए साधारण लोग उस पर ३ पत्थरवाह करें । और मैं भी उस मनुष्य के विरुद्ध होकर उस को उस के लोगों में से इस कारण नाश करूंगा कि उस ने अपनी सन्तान मोलेक को देकर मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ४ ठहराया । और यदि किसी के अपनी सन्तान मोलेक को बलि करने पर साधारण लोग उस के विषय आनाकानी ५ करें और उस को न मार डालें तो मैं आप उस मनुष्य और उस के घराने के विरुद्ध होकर उस को और जितने उस के पीछे होकर मोलेक के साथ व्यभिचार करें उन सभों को भी उन के लोगों के बीच से नाश करूंगा । ६ फिर जो प्राणी ओझाओं वा भूतसाधनावालों की ओर फिरके और उन के पीछे होकर व्यभिचारी बने मैं उस प्राणी के विरुद्ध होकर उस को उस के लोगों के बीच में ७ से नाश करूंगा । तुम अपने को पवित्र करके पवित्र बने ८ रहो क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं । और मेरी विधियों को चौकसी करके मानना मैं तो तुम्हारा पवित्र ९ करनेहारा यहोवा हूं । कोई क्यों न हो जो अपने पिता वा माता को कोसे वह निश्चय मार डाला जाए वह जो अपने पिता वा माता का कोसनेहारा ठहरेगा इस से उस का १० खून उसी के सिर पर पड़ेगा । फिर यदि कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे तो जिस ने किसी दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो वह व्यभिचारी और वह ११ व्यभिचारिन दोनों निश्चय मार डाले जाएं । और यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ सोए वह जो अपने पिता ही का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा सो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएं उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा । १२ और यदि कोई अपनी पतोहू के साथ सोए तो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएं क्योंकि वे उलटा काम करनेहारे १३ ठहरेंगे और उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा । और यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरुष से प्रसंग करे तो वे दोनों जो घिनौना काम करनेहारे ठहरेंगे इस से वे निश्चय मार डाले जाएं उन का खून उन्हीं के सिर पर १४ पड़ेगा । और यदि कोई किसी स्त्री और उस की माता दोनों को रक्खे तो यह महापाप है सो वह पुरुष और वे स्त्रियां तीनों के तीनों आग में जलाये जाएं जिस से तुम्हारे बीच महापाप न हो । १५ फिर यदि कोई पुरुष पशुगामी हो तो पुरुष और पशु दोनों निश्चय मार डाले जाएं । १६ और यदि कोई स्त्री पशु के पास जाकर उस के संग कुकर्म्म करे तो तू उस स्त्री और पशु दोनों को घात करना वे निश्चय मार डाले जाएं उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा । १७ और यदि कोई अपनी बहिन को चाहे उस की सगी बहिन हो चाहे सौतेली अपनी स्त्री बनाकर उस का तन देखे और उस की बहिन भी उस का तन देखे तो यह निन्दित बात है सो वे दोनों अपने जातिभाइयों की आंखों के साम्हने नाश किये जाएं वह जो अपनी बहिन का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा उसे अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा । १८ फिर यदि कोई पुरुष किसी ऋतुमती स्त्री के संग सोकर उस का तन उघाड़े तो वह पुरुष जो उस के रुधिर के सोते का उघाड़नेहारा ठहरेगा और वह स्त्री जो अपने रुधिर के सोते की उघारनेहारी ठहरेगी इस कारण वे दोनों अपने लोगों के बीच से नाश किये जाएं । १९ और अपनी मौसी वा फूफी का तन न उघाड़ना क्योंकि जो उसे उघारे वह अपनी निकट कुटुम्बिन को नंगा करता है सो उन दोनों को अपने अधर्म्म का भार उठाना पड़ेगा । २० और यदि कोई अपनी चाची के संग सोए तो वह अपने चचा का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा सो वे दोनों अपने पाप के भार को उठाके निर्वंश मर जाएं । २१ और यदि कोई अपनी भौजी वा भयहू को अपनी स्त्री बनाए तो इसे घिनौना काम जानना वह अपने भाई का तन उघाड़नेहारा ठहरेगा सो वे दोनों निर्वंश रहेंगे ॥

२२ तुम मेरी सब विधियों और मेरे सब नियमों को चौकसी करके मानना न हो कि जिस देश में मैं तुम्हें लिये जाता हूं वह तुम को उगल दे । २३ और जिस जाति के लोगों को मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूं उस की रीतियों पर न चलना क्योंकि उन लोगों ने जो ये सब कुकर्म्म किये इसी से मेरा जी उन से मिचला उठा है । २४ और मैं तुम लोगों से कहता हूं कि तुम तो उन की भूमि के अधिकारी होगे और मैं वह देश जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम्हारे अधिकार में कर दूंगा मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जिस ने तुम को देश देश के लोगों से अलग किया है । २५ इस कारण तुम शुद्ध अशुद्ध पशुओं और शुद्ध अशुद्ध पक्षियों में भेद करना और कोई पशु वा पक्षी वा किसी प्रकार का भूमि पर रेंगनेहारा जीवजन्तु क्यों न हो जिस को मैं ने तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहराकर बरजा है उस से अपने आप को

२६ घिनौना न करना। और तुम मेरे लिये पवित्र बने रहो क्योंकि मैं यहोवा पवित्र हूं और मैं ने तुम को देश देश के लोगों से इस लिये अलग किया है कि तुम मेरे ही बने रहो॥

२७ यदि कोई पुरुष वा स्त्री ओझाई वा भूत की साधना करे तो वह निश्चय मार डाला जाए ऐसों पर पत्थरवाह किया जाए उन का खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा॥

(याजकों के लिये विशेष विशेष विधियां)

२१.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा हारून के पुत्र जो याजक हैं उन से कह कि तुम्हारे लोगों में से कोई मरे तो उस के कारण २ तुम में से कोई अपने को अशुद्ध न करे। अपने निकट कुटुम्बियों अर्थात् अपनी माता वा पिता वा बेटे वा बेटी ३ वा भाई के लिये वा अपनी कुंवारी बहिन जिस का विवाह न हुआ हो जो उस की समीपिन है उन के लिये वह अपने ४ को अशुद्ध कर सकता पर याजक जो अपने लोगों में प्रधान है इस से वह अपने को ऐसा अशुद्ध न करे कि ५ अपने को अपवित्र कर डाले। सो वे न तो अपने सिर मुंड़ाएं न अपने गाल के बालों को और न अपना शरीर ६ चीरें। वे अपने परमेश्वर के लिये पवित्र रहें और अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराएं क्योंकि वे यहोवा के हव्य को जो उन के परमेश्वर का भोजन है चढ़ाया ७ करते हैं इस कारण वे पवित्र रहें। वे वेश्या वा भ्रष्टा को ब्याह न लें और न त्यागी हुई को ब्याह लें क्योंकि ८ याजक अपने परमेश्वर के लिये पवित्र होता है। सो तू उस को पवित्र जान क्योंकि वह तेरे परमेश्वर का भोजन चढ़ाया करता है सो वह तेरे लेखे में पवित्र ठहरे क्योंकि मैं यहोवा जो तुम को पवित्र करता हूं सो पवित्र हूं। ९ और यदि किसी याजक की बेटी वेश्या होकर अपने को अपवित्र करे तो वह जो अपने पिता को अपवित्र ठहराएगी सो वह आग में जलाई जाए॥

१० और जो अपने भाइयों में से महायाजक हो जिस के सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया और उस का संस्कार इस लिये हुआ हो कि वह पवित्र वस्त्रों को पहिनने पाए वह न तो अपने सिर के बाल बिखराए और न ११ अपने वस्त्र फाड़े। और न वह किसी लोथ के पास जाए वरन अपने पिता वा माता के कारण भी अपने को १२ अशुद्ध न करे। और वह पवित्रस्थान से बाहर निकले भी नहीं न हो कि अपने परमेश्वर के पवित्रस्थान को अपवित्र ठहराए क्योंकि वह अपने परमेश्वर के अभिषेक का तेलरूपी मुकुट धारण[१] किये हुए है मैं तो यहोवा हूं। १३ और वह कुंवारी ही स्त्री को ब्याहे। जो विधवा १४ वा त्यागी हुई वा भ्रष्ट वा वेश्या हो ऐसी किसी को वह न ब्याहे वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी कुंवारी कन्या को ब्याहे। १५ और वह अपने वीर्य्य को अपने लोगों में अपवित्र न करे क्योंकि मैं उस का पवित्र करनेहारा यहोवा हूं॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७ हारून से कह कि तेरे वंश की पीढ़ी पीढ़ी में जिस किसी के कोई दोष हो वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने को समीप न आए। १८ कोई क्यों न हो जिस के दोष हो वह समीप न आए चाहे वह अंधा हो चाहे लंगड़ा चाहे नकचपटा हो १९ चाहे उस के कुछ अधिक अंग हो, वा उस का पांव वा २० हाथ टूटा हो, वा वह कुबड़ा वा बौना हो वा उस की आंख में दोष हो वा उस मनुष्य के चाई वा खुजली हो २१ वा उस के अंड पिचके हों। हारून याजक के वंश में से जिस किसी के कोई भी दोष हो वह यहोवा के हव्य चढ़ाने को समीप न आए वह जो दोषयुक्त है इस से वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने को समीप न आए। २२ वह अपने परमेश्वर के पवित्र और परमपवित्र दोनों प्रकार के भोजन को खाए तो खाए, २३ पर उस के जो दोष है इस से वह न तो बीचवाले पर्दे के पास भीतर आये और न वेदी के समीप न हो कि वह मेरे पवित्रस्थानों को अपवित्र करे मैं तो उन का पवित्र करनेहारा यहोवा हूं। २४ सो मूसा ने हारून और उस के पुत्रों को वरन सारे इस्राएलियों को यह बातें कह सुनाईं॥

२२.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ हारून और उस के पुत्रों से कह कि इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं से जो वे मेरे लिये पवित्र करें न्यारे रहो न हो कि मेरा पवित्र नाम तुम्हारे द्वारा अपवित्र ठहरे मैं तो यहोवा हूं। ३ और उन से कह कि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे वंश में से जो कोई अपनी अशुद्धता रहते हुए उन पवित्र की हुई वस्तुओं के पास जाए जिन्हें इस्राएली यहोवा के लिये पवित्र करें वह प्राणी मेरे साम्हने से नाश किया जाए मैं तो यहोवा हूं। ४ हारून के वंश में से कोई क्यों न हो जो कोढ़ी हो वा उस के प्रमेह हो वह मनुष्य जब लों शुद्ध न हो जाए तब लों पवित्र की हुई वस्तुओं में से कुछ न खाए। और जो लोथ के कारण अशुद्ध हुआ हो वा जिस का वीर्य्य स्खलित हुआ हो ऐसे मनुष्य को जो कोई छूए, ५ और जो कोई किसी ऐसे रेंगनेहारे जन्तु को छूए जिस से लोग अशुद्ध होते हैं वा किसी ऐसे मनुष्य को छूए जिस में किसी प्रकार की अशुद्धता

(१) वा का तेल जो उस के न्यारे किये जाने का चिन्ह है उसे।

६ हो, जो प्राणी इन में से किसी को छूए वह सांझ लों अशुद्ध ठहरा रहे और तब लों पवित्र वस्तुओं में से न ७ खाए जब लों वह जल से स्नान न करे। तब सूर्य्य अस्त होने पर वह शुद्ध ठहरेगा और उस के पीछे पवित्र वस्तुओं में से खा सकेगा क्योंकि उस का भोजन वही ८ है। जो जन्तु आप से मरा वा पशु से फाड़ा गया हो उस के खाने से वह अपने को अशुद्ध न करे मैं तो ९ यहोवा हूं। सो याजक लोग मेरी सौंपी हुई वस्तुओं की रक्षा करें न हो कि वे उन को अपवित्र करके पाप का भार उठाएं और इस कारण मर जाएं मैं तो उन का पवित्र १० करनेहारा यहोवा हूं। पराये कुल का जन किसी पवित्र वस्तु को न खाए बरन चाहे वह याजक का पाहुन व मजूर ११ हो तो भी वह उसे न खाए। पर यदि याजक किसी प्राणी को रूपया देकर मोल ले तो वह प्राणी उस में से खाए और जो याजक के घर में उत्पन्न हुए हों वे भी उस के १२ भोजन में से खाएं। और यदि याजक की बेटी पराये कुल के किसी पुरुष से ब्याही गई हो तो वह भेंट की हुई १३ पवित्र वस्तुओं में से न खाए। पर यदि याजक की बेटी विधवा वा त्यागी हुई हो और उस के सन्तान न हो और वह अपनी बाल्यावस्था की रीति के अनुसार अपने पिता के घर में रहती हो तो वह अपने पिता के भोजन में से १४ खाए पर पराये कुल का कोई उस में से न खाए। और यदि कोई मनुष्य किसी पवित्र वस्तु में से कुछ भूल से खाए तो वह उस का पांचवा भाग बढ़ाकर उसे याजक को भर दे। १५ और वे इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को जिन्हें वे यहोवा के लिये चढ़ाएं अपवित्र न करें। वे उन को १६ अपनी पवित्र वस्तुओं में से खिलाकर उन से अपराध का दोष न उठवाएं मैं उन का पवित्र करनेहारा यहोवा हूं॥

१७, १८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून और उस के पुत्रों से और सारे इस्राएलियों से समझाकर कह कि इस्राएल के घराने वा इस्राएलियों में रहनेहारे परदेशियों में से कोई क्यों न हो जो मन्नत वा स्वेच्छाबलि करके १९ यहोवा को कोई होमबलि चढ़ाए, तो तुम्हारे ग्रहणयोग्य ठहरनेके लिये बैलों वा भेड़ों वा बकरियों में से २० निर्दोष नर चढ़ाया जाए। जिस में कोई भी दोष हो उसे न चढ़ाना क्योंकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहणयोग्य न २१ ठहरेगा। और कोई हो जो बैलों वा भेड़ बकरियों में से विशेष वस्तु संकल्प करने को वा स्वेच्छाबलि के लिये यहोवा को मेल बलि चढ़ाए तो ग्रहण होने के लिये अवश्य है कि वह निर्दोष हो उस में कोई भी दोष २२ न हो। जो अन्धा वा अंग का टूटा वा लूला हो वा उस में रसौली वा खौरा वा खुजली हो ऐसों को यहोवा के लिये न चढ़ाना उन को वेदी पर यहोवा का हव्य करके न चढ़ाना। २३ जिस किसी बैल वा भेड़े वा बकरे का कोई अंग अधिक वा कम हो उस को स्वेच्छाबलि करके चढ़ाना तो चढ़ाना पर मन्नत पूरी करने के लिये वह ग्रहण न होगा। २४ जिस के अंड दबे वा कुचले वा टूटे वा कट गये हों उस को यहोवा के लिये न चढ़ाना अपने देश में ऐसा काम न २५ करना। फिर इन में से किसी को तुम अपने परमेश्वर का भोजन जानकर किसी परदेशी से लेकर न चढ़ाना क्योंकि उन में उन का बिगाड़ होगा उन में दोष होगा इस लिये वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होंगे॥

२६, २७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, जब बछड़ा वा भेड़ वा बकरी का बच्चा उत्पन्न हो तो वह सात दिन लों अपनी मा के साथ रहे फिर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्यवाले चढ़ावे के लिये ग्रहणयोग्य २८ ठहरेगा। चाहे गाय चाहे भेड़ी वा बकरी हो उस को और उस के बच्चे को एक ही दिन में बलि न करना। २९ और जब तुम यहोवा के लिये धन्यवाद का मेलबलि करो तो उसे इस प्रकार से करना कि ग्रहणयोग्य ठहरे। ३० वह उसी दिन खाया जाए उस में से कुछ भी बिहान लों ३१ रहने न पाए मैं तो यहोवा हूं। और तुम मेरी आज्ञाओं ३२ को चौकसी करके मानना मैं तो यहोवा हूं। और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न ठहराना क्योंकि मैं अपने को इस्राएलियों के बीच अवश्य ही पवित्र ठहराऊंगा मैं तो ३३ तुम्हारा पवित्र करनेहारा यहोवा हूं, जो तुम को मिस्र देश से तुम्हारा परमेश्वर होने के लिये निकाल ले आया है मैं तो यहोवा हूं॥

(बरस भर के नियत तिहवारों की विधियां)

२३. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि यहोवा के नियत २ समय जिन में तुम को पवित्र सभाओं का प्रचार करना होगा मेरे वे नियत समय ये हैं। ३ छः दिन तो कामकाज किया जाए पर सातवां दिन परमविश्राम का और पवित्र सभा का दिन है उस में किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए वह तुम्हारे सब घरों में यहोवा का विश्रामदिन ठहरे॥

४ फिर यहोवा के नियत समय जिन में से एक एक के ठहराये हुए समय में तुम्हें पवित्र सभा का प्रचार करना होगा सो ये हैं। ५ पहिले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय यहोवा का फसह हुआ करे। ६ और उसी महीने के पंद्रहवें दिन को यहोवा के लिये अखमीरी रोटी का पर्व्व हुआ करे उस में तुम सात दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना। ७ उन में से पहिले दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो और उस दिन परिश्रम का कोई काम न

८ करना । और सातों दिन तुम यहोवा को हव्य चढ़ाया करना और सातवें दिन पवित्र सभा हो उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना ॥

६, १० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि जब तुम उस देश में पहुंचो जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उस में के खेत काटो तब अपने अपने पक्के खेत की पहिली उपज का पूला याजक के पास ले आया ११ करना । और वह उस पूले को यहोवा के साम्हने हिलाए कि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण किया जाए वह उसे विश्राम- १२ दिन के दूसरे दिन हिलाए । और जिस दिन तुम पूले को हिलवाओ उसी दिन बरस दिन का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के लिये होमबलि करके चढ़ाना । और उस १३ के साथ का अन्नबलि एपा के दो दसवें अंश तेल से सने हुए मैदे का हो वह सुखदायक सुगंध के लिये यहोवा का हव्य हो और उस के साथ का अर्घहीन भर १४ की चौथाई दाखमधु हो । और जब लों तुम इस चढ़ावे को अपने परमेश्वर के पास न ले आओ उस दिन लों नये खेत में से न तो रोटी खाना न भूना हुआ अन्न न हरी बालें यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरों में सदा की विधि ठहरे ॥

१५ फिर उस विश्रामदिन के दूसरे दिन से अर्थात् जिस दिन तुम हिलाई जानेहारी भेंट के पूले को लोगे उस १६ दिन से पूरे सात विश्रामदिन गिन लेना । सातवें विश्राम- दिन के दूसरे दिन लों पचास दिन गिनना और पचासवें १७ दिन यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाना । तुम अपने घरों में से एपा के दो दसवें अंश मैदे की दो रोटियां हिलाने की भेंट के लिये ले आना वे खमीर के साथ पकाई जाएं और यहोवा के लिये पहिली उपज ठहरें । १८ और उस रोटी के संग बरस दिन के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे और एक बछड़ा और दो मेढ़े चढ़ाना वे अपने अपने साथ के अन्नबलि और अर्घ समेत यहोवा के लिये होमबलि करके चढ़ाए जाएं अर्थात् वे यहोवा के १९ लिये सुखदायक सुगन्ध देनेहारा हव्य ठहरें । फिर पाप- बलि के लिये एक बकरा और मेलबलि के लिये बरस दिन २० के दो भेड़ के बच्चे चढ़ाना । तब याजक उन को पहिली उपज की रोटी समेत यहोवा के साम्हने हिलाने की भेंट करके हिलाए और इन रोटियों के संग वे दो भेड़ के बच्चे भी हिलाये जाएं वे यहोवा के लिये पवित्र और याजक २१ का भाग ठहरें । और तुम उसी दिन यह प्रचार करना कि आज हमारी एक पवित्र सभा होगी और परिश्रम का कोई काम न करना यह तुम्हारे सारे घरों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे ॥

२२ जब तुम अपने देश में के खेत काटो तब अपने खेत के कोनों को पूरी रीति से न काटना और खेत का सिला न बिन लेना उसे दीनहीन और परदेशी के लिये छोड़ देना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ॥

२३, २४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि सातवें महीने के पहिले दिन को तुम्हारे लिये परमविश्राम हो उस में स्मरण दिलाने को नरसिंगे फूंके २५ जाएं और एक पवित्र सभा हो । उस दिन तुम परिश्रम का कोई काम न करना और यहोवा के लिये एक हव्य चढ़ाना ॥

२६, २७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, उसी सातवें महीने का दसवां दिन प्रायश्चित्त का दिन माना जाए वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन ठहरे और उस में तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और यहोवा का हव्य २८ चढ़ाना । उस दिन तुम किसी प्रकार का कामकाज न करना क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन ठहरा है जिस में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने तुम्हारे लिये २९ प्रायश्चित्त किया जाएगा । सो जो कोई प्राणी उस दिन दुःख न सहे वह अपने लोगों में से नाश किया जाए । ३० और कोई प्राणी हो जो उस दिन किसी प्रकार का काम- काज करे उस प्राणी को मैं उस के लोगों के बीच में से ३१ नाश कर डालूंगा । तुम किसी प्रकार का कामकाज न करना यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरों में सदा ३२ की विधि ठहरे । वह दिन तुम्हारे लिये परमविश्राम का हो सो उस में तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और उस महीने के नवें दिन की सांझ से लेकर दूसरी सांझ लों अपना विश्रामदिन माना करना ॥

३३, ३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि उसी सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से सात दिन लों यहोवा के लिये झोंपड़ियों का पर्व रहा करे । ३५ पहिले दिन पवित्र सभा हो उस में परिश्रम का कोई ३६ काम न करना । सातों दिन यहोवा के लिये हव्य चढ़ाया करना फिर आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाना वह महासभा का दिन हो और उस में परिश्रम का कोई काम न करना ॥

३७ यहोवा के नियत समय ये ही हैं इन में तुम हव्य अर्थात् होमबलि अन्नबलि मेलबलि और अर्घ एक एक के अपने अपने दिन में यहोवा को चढ़ाने के लिये पवित्र ३८ सभा का प्रचार करना । इन सभों से अधिक यहोवा के विश्रामदिनों को मानना और अपनी भेंटों और सब मन्नतों और स्वेच्छाबलियों को जो यहोवा के लिये करोगे चढ़ाया करना ॥

३९ फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को जब तुम देश

की उपज को इकट्ठा कर चुको तब सात दिन लों यहोवा का पर्व मानना पहिले दिन परमविश्राम हो और आठवें
४० दिन परमविश्राम हो। और पहिले दिन तुम अच्छे अच्छे वृक्षों की उपज और खजूर के पत्ते और घने वृक्षों की डालियां और नालों में के मजनू को लेकर अपने परमे-
४१ श्वर यहोवा के साम्हने सात दिन आनन्द करना। और बरस बरस सात दिन लों यहोवा के लिये यह पर्व माना करना यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे कि
४२ सातवें महीने में यह पर्व माना जाए। सात दिन लों तुम झोंपड़ियों में रहा करना अर्थात् जितने जन्म के इस्राएली
४३ हैं वे सब के सब झोंपड़ियों में रहें, इस लिये कि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लोग जान रक्खें कि जब यहोवा हम इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाले लाता था तब उस ने उन को झोंपड़ियों में टिकाया था मैं तो तुम्हारा परमेश्वर
४४ यहोवा हूं। और मूसा ने इस्राएलियों को यहोवा के नियत समय कह सुनाये ॥

(पवित्र दीपकों और रोटियों की विधि)

२४. फिर

यहोवा ने मूसा से कहा।
२ इस्राएलियों को यह आज्ञा दे कि मेरे पास उजियाला देने के लिये जलपाई का कूट के निकाला हुआ निर्मल तेल ले आना कि दीपक नित्य
३ बरा करें[1]। हारून उस को मिलापवाले तंबू में साक्षीपत्र के बीचवाले पर्दे से बाहर यहोवा के साम्हने नित्य सांझ से भोर लों सजा रक्खे यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के
४ लिये सदा की विधि ठहरे। वह दीपकों के स्वच्छ दीवट पर यहोवा के साम्हने नित्य सजाया करे ॥
५ और तू मैदा लेकर बारह रोटियां पकवाना एक
६ एक रोटी में एपा के दो दसवां अंश मैदा हो। तब उन की दो पांति[2] करके एक एक पांति में[3] छः छः रोटियां
७ स्वच्छ मेज पर यहोवा के साम्हने धरना। और एक पांति पर[4] चोखा लोबान रखना कि वह रोटी पर स्मरण
८ दिलानेहारी वस्तु और यहोवा के लिये हव्य हो। एक एक विश्रामदिन को वह उसे नित्य यहोवा के सन्मुख क्रम से रक्खा करे यह सदा की वाचा की रीति इस्राए-
९ लियों की ओर से हुआ करे। और वह हारून और उस के पुत्रों की ठहरे और वे उस को किसी पवित्र स्थान में खाएं क्योंकि वह यहोवा के हव्यों में से सदा की विधि के अनुसार हारून के लिये परमपवित्र वस्तु ठहरी है ॥

(यहोवा की निन्दा आदि प्राणदण्ड योग्य पापों की व्यवस्था)

१० उन दिनों में किसी इस्राएली स्त्री का बेटा जिस का पिता मिस्री पुरुष था इस्राएलियों के बीच चला गया और वह इस्राएलिन का बेटा और एक इस्राएली पुरुष
११ छावनी के बीच आपस में मारपीट करने लगे। और वह इस्राएलिन का बेटा यहोवा के नाम की निन्दा करके कोसने लगा यह सुनके लोग उस को मूसा के पास ले गये। उस की माता का नाम शलोमीत था जो दान के गोत्र
१२ के दिब्री की बेटी थी। उन्हों ने उस को हवालात में बन्द किया इस लिये कि यहोवा के आज्ञा देने से इस बात का विचार किया जाए ॥
१३, १४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग उस कोसनेहारे को छावनी से बाहर लिवा ले जाओ और जितनों ने वह निन्दा सुनी हो वे सब अपने अपने हाथ उस के सिर पर टेकें तब सारी मण्डली के लोग उस पर
१५ पत्थरवाह करें। और तू इस्राएलियों से कह कि कोई क्यों न हो जो अपने परमेश्वर को कोसे उसे अपने पाप का
१६ भार उठाना पड़ेगा। यहोवा के नाम की निन्दा करनेहारा निश्चय मार डाला जाए सारी मण्डली के लोग निश्चय उस पर पत्थरवाह करें चाहे देशी हो चाहे परदेशी यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार
१७ डाला जाए। फिर जो कोई किसी मनुष्य को प्राण
१८ से मारे वह निश्चय मार डाला जाए। और जो कोई किसी घरैले पशु को प्राण से मारे वह उसे भर दे अर्थात्
१९ प्राणी की सन्ती प्राणी दे। फिर यदि कोई किसी दूसरे को चोट पहुंचाए[5] तो जैसा उस ने किया हो वैसा ही उस
२० से किया जाए। अर्थात् अंग भंग करने की सन्ती अंग भंग किया जाए आंख की सन्ती आंख दांत की सन्ती दांत जैसी चोट जिस ने किसी को पहुंचाई हो वैसी ही उस
२१ को भी पहुंचाई जाए। और पशु का मार डालनेहारा उस को भर दे पर मनुष्य का मार डालनेहारा मार डाला
२२ जाए। तुम्हारा नियम एक ही हो जैसा देशी के लिये वैसा ही परदेशी के लिये भी हो मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
२३ हूं। और मूसा ने इस्राएलियों को यही समझाया तब उन्हों ने उस कोसनेहारे को छावनी से बाहर ले जाकर उस पर पत्थरवाह किया और इस्राएलियों ने वैसा ही किया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

(सातवें बरस और पचासवें बरस के विश्राम कालों की विधि)

२५. फिर

यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह २

(१) मूल में चढ़ाया जाया करें। (२) वा के दो ढेर। (३) वा एक एक ढेर में। (४) वा एक एक ढेर पर।

(५) मूल में यदि कोई अपने भाई बन्धु में दोष दे।

कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देता हूं तब ३ भूमि को यहोवा के लिये विश्राम मिला करे। छः बरस तो अपना अपना खेत बोया करना और छहों बरस अपनी अपनी दाख की बारी छांट छांटकर देश की उपज ४ इकट्ठी किया करना। पर सातवें बरस भूमि को यहोवा के लिये परमविश्रामकाल मिला करे उस में न तो अपना ५ खेत बोना न अपनी दाख की बारी छांटना। जो कुछ काटे हुये खेत में अपने आप से उगे उसे न काटना और अपनी बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों को न तोड़ना क्योंकि वह भूमि के लिये परमविश्राम का बरस होगा। ६ और भूमि के विश्रामकाल ही की उपज से तुम्हारा और तुम्हारे दास दासी का और तुम्हारे साथ रहनेहारे मजूरों ७ और परदेशियों का भी भोजन मिलेगा। और तुम्हारे पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु हों उन का भी भोजन भूमि की सब उपज से होगा॥

८ और सात विश्रामवर्ष अर्थात् सातगुना सात बरस गिन लेना सातों विश्रामवर्षों का यह समय उंचास बरस ९ होगा। तब सातवें महीने के दसवें दिन को अर्थात प्रायश्चित्त के दिन जयजयकार के महाशब्द का नरसिंगा १० अपने सारे देश में सब कहीं फुकवाना। और उस पचासवें बरस को पवित्र करके मानना और देश के सारे निवासियों के लिये छुटकारे का प्रचार करना वह बरस तुम्हारे यहां जुबली[१] कहलाए उस में तुम अपनी अपनी निज भूमि और अपने अपने घराने में लौटने पाओगे। ११ तुम्हारे यहां वह पचासवां बरस जुबली का बरस कहलाए उस में तुम न बोना और जो अपने आप उगे उसे भी न काटना और न बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों १२ को तोड़ना। क्योंकि वह जो जुबली का बरस होगा वह तुम्हारे लेखे पवित्र ठहरे तुम उस की उपज खेत ही में से १३ ले लेके खाना। इस जुबली के बरस में तुम अपनी अपनी १४ निज भूमि को लौटने पाओगे। और यदि तुम अपने भाईबन्धु के हाथ कुछ बेचो वा अपने भाईबन्धु से कुछ मोल लो तो तुम एक दूसरे पर अंधेर न करना। १५ जुबली[१] के पीछे जितने बरस बीते हों उन की गिनती के अनुसार दाम ठहराके एक दूसरे से मोल लेना और बाकी बरसों की उपज के अनुसार वह तेरे हाथ बेचे। १६ जितने बरस और रहें उतना ही दाम बढ़ाना और जितने बरस कम रहें उतना ही दाम घटाना क्योंकि बरसों की १७ उपज जितनी हो उतनी ही वह तेरे हाथ बेचेगा। और तुम अपने अपने भाईबन्धु पर अंधेर न करना अपने परमेश्वर का भय मानना मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। सो तुम मेरी विधियों को मानना और मेरे नियमों १८ पर चौकसी करके चलना क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे। और भूमि अपनी उपज उप- १९ जाया करेगी और तुम पेट भर खाया करोगे और उस देश में निडर बसे रहोगे। और यदि तुम कहो कि सातवें २० बरस में हम क्या खाएंगे न तो हम बोएंगे न अपने खेत की उपज इकट्ठी करेंगे, तो जानो कि मैं तुम को छठवें २१ बरस में ऐसी आशिष दूंगा[२] कि भूमि की उपज तीन बरस लों काम आएगी। सो तुम आठवें बरस में बोओगे और २२ पुरानी उपज में से खाते रहोगे बरन नवें बरस की उपज जब लों न मिले तब लों तुम पुरानी उपज में से खाते रहोगे। भूमि सदा के लिये तो बेची न जाए क्योंकि भूमि २३ मेरी है और उस में तुम परदेशी और उपरी होगे। सो २४ तुम अपने भाग के सारे देश में भूमि को छूट जाने देना॥

यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल होकर अपनी निज २५ भूमि में से कुछ बेच डाले तो उस के कुटुम्बियों में से जो सब से निकट हो वह आकर अपने भाईबन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले। और यदि किसी मनुष्य के २६ लिये कोई छुड़ानेहारा न हो और इतना कमाए कि आप ही अपने भाग को छुड़ा सके, तो वह उस के २७ बिकने के समय से बरसों की गिनती करके बाकी बरसों की उपज का दाम उस को जिस ने उसे मोल लिया हो फेर दे तब वह अपनी निज भूमि को फिर पाए। पर यदि २८ उस के इतनी पूंजी न हो कि उसे फिर अपनी कर ले तो उस की बेची हुई भूमि जुबली[३] के बरस लों मोल लेनेहारे के हाथ में रहे और जुबली[३] के बरस में छूट जाए तब वह मनुष्य अपनी निज भूमि को फिर पाए॥

फिर यदि कोई मनुष्य शहरपनाहवाले नगर में २९ बसने का घर बेचे तो वह बेचने के पीछे बरस दिन लों उसे छुड़ा सकेगा अर्थात् पूरे बरस लों तो उस मनुष्य को छुड़ाने का अधिकार रहेगा। पर यदि वह बरस दिन ३० के पूरे होने लों न छुड़ाया जाए तो वह घर जो शहरपनाहवाले नगर में हो मोल लेनेहारे का बना रहे और पीढ़ी पीढ़ी में उसी के वंश का रहे और जुबली[३] के बरस में भी न छूटे। पर बिना शहरपनाह के गांवों के ३१ घर तो देश के खेतों के समान गिने जाएं सो उन का छुड़ाना हो सकेगा और वे जुबली[३] के बरस में छूट जाएं। और लेवीयों के निज भाग के नगरों के जो घर ३२

(१) अर्थात नरसिंगे का शब्द।

(२) मूल में अपनी आशिष को आज्ञा दूंगा।
(३) अर्थात महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

३३ हों उन को लेवीय जब चाहें तब छुड़ाएं । और यदि कोई लेवीय अपना भाग न छुड़ाए तो वह बेचा हुआ घर जो उस के भाग के नगर में हो जुबली[1] के बरस में छूट जाए क्योंकि इस्राएलियों के बीच लेवीयों का भाग ३४ उन के नगरों के घर ही ठहरे हैं। और उन के नगरों की चारों ओर की चराई की भूमि बेची न जाए क्योंकि वह उन का सदा का भाग होगा ॥

३५ फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल हो जाए और उस का हाथ तेरे साम्हने दब जाए तो उस को संभालना वह परदेशी वा उपरी की नाईं तेरे संग जीता रहे। ३६ उस से ब्याज वा बढ़ती न लेना अपने परमेश्वर का भय मानना जिस से तेरा ऐसा भाईबन्धु तेरे संग जीता ३७ रहे। उस को ब्याज पर रूपया न देना और न उस को ३८ भोजनवस्तु बढ़ती के लालच से देना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम्हें कनान् देश देने और तुम्हारा परमेश्वर ठहरने की मनसा से तुम को मिस्र देश से निकाल लाया है॥

३९ फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु तेरे साम्हने कंगाल हो कर अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले तो उस से दास ४० की सी सेवा न कराना। वह तेरे संग मजूर वा उपरी की नाईं रहे और जुबली[1] के बरस लों तेरे संग रह कर सेवा ४१ करता रहे। तब वह बालबच्चों समेत तेरे पास से निकल जाए और अपने कुटुंब में और अपने पितरों की निज ४२ भूमि में लौट जाए। क्योंकि वे मेरे ही दास हैं जिन को मैं मिस्र देश से निकाल लाया हूं सो वे दास की रीति न ४३ बेचे जाएं। उस पर कठोरता से अधिकार न जताना ४४ अपने परमेश्वर का भय मानना। तेरे जो दास दासियां हों सो तुम्हारी चारों ओर की जातियों में से हों और दास ४५ और दासियां उन्हीं में से मोल लेना। और जो उपरी लोग तुम्हारे बीच में परदेशी होकर रहेंगे उन में से और उन के घरानों में से भी जो तुम्हारे आस पास हों जिन्हें वे तुम्हारे देश में जन्माएं तुम दास दासी मोल लो तो ४६ लो कि वे तुम्हारा भाग ठहरें। और तुम अपने पुत्रों को भी जो तुम्हारे पीछे होंगे उन के अधिकारी कर सकोगे और वे उन का भाग ठहरें उन में से तो सदा के दास ले सकोगे पर तुम्हारे भाईबन्धु जो इस्राएली हों उन पर अपना अधिकार कठोरता से न जताना॥

४७ फिर यदि तेरे साम्हने कोई परदेशी वा उपरी धनी हो जाए और उस के साम्हने तेरा भाई कंगाल होकर अपने आप को तेरे साम्हने उस परदेशी वा उपरी वा उस के वंश के हाथ बेच डाले, तो उस के बिकने के पीछे ४८ वह फिर छुड़ाया जा सकता उस के भाइयों में से कोई ४९ उस को छुड़ा सकता है। वा उस का चचा वा चचेरा भाई वरन उस के कुल में का कोई भी निकट कुटुम्बी उस को छुड़ा सकता है वा यदि उस के इतनी पूंजी हो जाए तो ५० वह आप ही अपने को छुड़ाए। वह मोल लेनेहारे के साथ अपने बिकने के बरस से जुबली[1] के बरस लों लेखा करे और उस के बेचने का दाम बरसों की गिनती के अनुसार ठहरे अर्थात् वह दाम मजूर के दिनों के समान ५१ ठहराया जाए। यदि जुबली[1] के बहुत बरस रह जाएं तो जितने रूपयों से वह मोल लिया गया हो उन में से वह ५२ अपने छुड़ाने का दाम उतने बरसों के अनुसार फेर दे। और यदि जुबली[1] के बरस के थोड़े बरस रहें तो भी वह अपने स्वामी के साथ लेखा करके अपने छुड़ाने का दाम ५३ उतने ही बरसों के अनुसार फेर दे। वह अपने स्वामी के संग बरस बरस के मजूर के समान रहे और उस का स्वामी उस पर तेरे साम्हने कठोरता से अधिकार न जताने ५४ पाए। और यदि वह ऐसी रीति किसी से न छुड़ाया जाए तो वह जुबली[1] के बरस में अपने बालबच्चों समेत छूट ५५ जाए। क्योंकि इस्राएली मेरे ही दास हैं वे मिस्र देश से मेरे निकाले हुए दास हैं मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

(धर्म्म अधर्म्म के फल)

२६.

तुम मूरत न बना लेना और न कोई खुदी हुई मूर्ति वा लाट खड़ी कर लेना और न अपने देश में दण्डवत करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापन करना क्योंकि मैं तुम्हारा २ परमेश्वर यहोवा हूं। मेरे विश्रामदिनों का पालन करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना मैं तो यहोवा हूं॥

३ यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं ४ को चौकसी करके माना करो, तो मैं तुम्हारे लिये समय समय पर मेंह बरसाऊंगा और भूमि अपनी उपज उपजाएगी और मैदान के वृक्ष अपने अपने फल दिया करेंगे। ५ तुम दाख तोड़ने के समय लों दावनी करते रहोगे और बोने के समय लों दाख तोड़ते रहोगे और तुम मनमानी ६ रोटी खाओगे और अपने देश में निडर बसे रहोगे। और मैं तुम्हारे देश में चैन दूंगा और जब तुम लेटोगे तब तुम्हारा कोई डरानेहारा न होगा और मैं उस देश में दुष्ट जन्तुओं को न रहने दूंगा और तलवार तुम्हारे देश ७ में न चलेगी। और तुम अपने शत्रुओं को खदेड़ोगे और ८ वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। वरन तुम में से पांच

(१) अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे और तुम्हारे शत्रु तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। और ९ मैं तुम्हारी ओर कृपादृष्टि करके तुम को फुलाऊं फलाऊंगा और बढ़ाऊंगा और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूरी १० करूंगा। और तुम रक्खे हुए पुराने अनाज को खाओगे ११ और नये के रहते भी पुराने को निकालोगे। और मैं तुम्हारे बीच अपना निवासस्थान ठहरा रक्खूंगा और १२ मेरा जी तुम से घिन न करेगा। और मैं तुम्हारे बीच चला फिरा करूंगा और तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा और १३ तुम मेरी प्रजा ठहरोगे। मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम को मिस्र देश से इस लिये निकाल लाया है कि तुम मिस्रियों के दास न रहो और मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़के तुम को सीधा खड़ा कर चलाया है॥

१४ और यदि तुम मेरी न सुनो और इन सब आज्ञाओं १५ को न मानो, और मेरी विधियों को निकम्मा जानो और तुम्हारा जी मेरे नियमों से घिन करे और तुम मेरी सब १६ आज्ञाओं को न मानो बरन मेरी वाचा को तोड़ो, तो मैं तुम से यह करूंगा अर्थात् मैं तुम को भभराऊंगा और क्षयीरोग और ज्वर से पीड़ित करूंगा और इन के कारण तुम्हारी आंखें धुन्धली और तुम्हारा मन अति उदास होगा और तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ होगा क्योंकि तुम्हारे १७ शत्रु उस की उपज खा लेंगे। फिर मैं तुम्हारे विरुद्ध हूंगा और तुम अपने शत्रुओं से हारोगे और तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार जताएंगे बरन जब कोई तुम को १८ खदेड़ता न हो तब भी तुम भागोगे। और यदि तुम इन बातों पर भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे पापों के कारण १९ तुम्हें सातगुणी ताड़ना और भी दूंगा। और मैं तुम्हारे बल का घमण्ड तोड़ूंगा और तुम्हारे लिये आकाश को मानो लोहे का और तुम्हारी भूमि को मानो पीतल की २० बना दूंगा। सो तुम्हारा बल अकारथ गंवाया जाएगा क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी उपज न उपजाएगी और २१ देश के वृक्ष अपने फल न फलेंगे। और यदि तुम मेरे विरुद्ध चलते रहो और मेरी सुनना नकारो तो मैं तुम्हारे पापों के अनुसार सातगुणा तुम को और भी मारूंगा। २२ और मैं तुम्हारे बीच बनैले पशु भेजूंगा जो तुम को निर्वंश करेंगे और तुम्हारे घरैले पशुओं को नाश कर डालेंगे और तुम्हारी गिनती घटाएंगे जिस से तुम्हारी २३ सड़कें सूनी पड़ जाएंगी। फिर यदि तुम इन बातों पर भी मेरी ताड़ना से न सुधरो और मेरे विरुद्ध चलते ही २४ रहो, तो मैं आप तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा और तुम्हारे पापों २५ के कारण मैं आप ही तुम को सातगुणा मारूंगा। सो मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा जिस से वाचा तोड़ने का पलटा लिया जाएगा और जब तुम अपने नगरों में इकट्ठे होगे तब मैं तुम्हारे बीच मरी फैलाऊंगा और तुम अपने शत्रुओं के वश में पड़ जाओगे। जब मैं तुम्हारे २६ लिये अन्न के आधार को दूर कर डालूंगा तब दस स्त्रियां तुम्हारी रोटी एक ही तंदूर में पकाकर तौल तौलकर बांट देंगी सो तुम खाकर भी तृप्त न होगे॥

फिर यदि तुम इस पर भी मेरी न सुनो बरन मेरे २७ विरुद्ध चलते ही रहो, तो मैं जलकर तुम्हारे विरुद्ध २८ चलूंगा और तुम्हारे पापों के कारण मैं आप ही तुम को सातगुणी ताड़ना दूंगा। और तुम को अपने बेटों और २९ बेटियों का मांस खाना पड़ेगा। और मैं तुम्हारे पूजा के ३० ऊंचे स्थानों को ढा दूंगा और तुम्हारी सूर्य्य की प्रतिमाएं तोड़ डालूंगा और तुम्हारी लोथों को तुम्हारी तोड़ी हुई मूरतों पर फेंक दूंगा और मेरा जी तुम से घिनचला जाएगा। और मैं तुम्हारे नगरों को उजाड़ दूंगा और तुम्हारे पवित्र- ३१ स्थानों को सूना कर दूंगा और तुम्हारा सुखदायक सुगंध ग्रहण न करूंगा। और मैं आप ही तुम्हारा देश सूना ३२ कर दूंगा और तुम्हारे शत्रु जो उस में बस जाएंगे सो उस के कारण चकित होंगे। और मैं तुम को जाति ३३ जाति के बीच तितर बितर करूंगा और तुम्हारे पीछे तलवार खींचकर चलाऊंगा और तुम्हारा देश सूना होगा और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे। तब जितने दिन ३४ वह देश सूना पड़ा रहेगा और तुम अपने शत्रुओं के देश में रहोगे उतने दिन वह अपने विश्रामकालों को भोगता रहेगा तब वह देश विश्राम पाएगा अर्थात् अपने विश्रामकालों को भोगता रहेगा। बरन जितने दिन वह ३५ सूना पड़ा रहेगा उतने दिन उस को विश्राम रहेगा अर्थात् जो विश्राम उस को तुम्हारे वहां बसे रहने के समय तुम्हारे विश्रामकालों में न मिलेगा वह उस को तब मिलेगा। और ३६ तुम में से जो बच रहेंगे उन के हृदय में मैं उन के शत्रुओं के देशों में कदराई डालूंगा और वे पत्ते के खड़कने से भी भाग जाएंगे बरन वे ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागे और किसी के बिना पीछा किये भी वे गिर पड़ेंगे। और जब कोई पीछा करनेहारा न हो ३७ तब भी मानो तलवार के भय से वे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिरते जाएंगे और तुम को अपने शत्रुओं के साम्हने ठहरने की कुछ शक्ति न होगी। तब तुम जाति ३८ जाति के बीच पहुंचकर नाश हो जाओगे और तुम्हारे शत्रुओं की भूमि तुम को खा जाएगी। और तुम में से ३९ जो बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं के देशों में अपने अधर्म्म के कारण गल जाएंगे और अपने पुरखाओं के अधर्म्म के कामों के कारण भी वे उन्हीं की नाईं

४० गल जाएंगे। तब वे अपने और अपने पितरों के अधर्म्म को मान लेंगे अर्थात् उस विश्वासघात को जो वे मेरा करेंगे और यह भी मान लेंगे कि हम जो यहोवा ४१ के विरुद्ध चले, इसी कारण वह हमारे विरुद्ध चलकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है यों उस समय उन का खतना रहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय ४२ अपने अधर्म्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे। तब जो वाचा मैं ने याकूब के संग बांधी थी उस की मैं सुधि लूंगा और जो वाचा मैं ने इसहाक से और जो वाचा मैं ने इब्राहीम से बांधी थी उन की भी सुधि लूंगा ४३ और देश की भी मैं सुधि लूंगा। देश उन से रहित होकर सूना पड़ा रहेगा और उन के बिना सूना रहकर अपने विश्रामकालों को भोगता रहेगा और वे लोग अपने अधर्म्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे इस कारण कि उन्हों ने मेरे नियमों को निकम्मा ठहराया और उन के ४४ जी ने मेरी विधियों से घिन की थी। इस पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे तब मैं उन को ऐसा निकम्मा न ठहराऊंगा और न उन से ऐसी घिन करूंगा कि उन का अन्त कर डालूं वा अपनी उस वाचा को तोड़ूं जो मैं ने उन से बान्धी है क्योंकि मैं उन का ४५ परमेश्वर यहोवा हूं। सो मैं उन के हित के लिये उन के उन पितरों से बान्धी हुई वाचा की सुधि लूंगा जिन्हें मैं मिस्र देश से जाति जाति के साम्हने निकाल लाया हूं कि उन का परमेश्वर ठहरूं मैं तो यहोवा हूं॥

४६ जो जो विधि और नियम और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत के पास मूसा के द्वारा ठहराई वे ये ही हैं॥

(विशेष संकल्प की विधि)

२ **२७. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से यह कह कि जब कोई विशेष संकल्प माने तो एक तो संकल्प किये हुए प्राणी तेरे ३ ठहराने के अनुसार यहोवा के ठहरेंगे। अर्थात् यदि वह बीस बरस वा उस से अधिक और साठ बरस से कम अवस्था का पुरुष हो तो उस के लिये पवित्रस्थान के शेकेल ४ के लेखे पचास शेकेल का रुपया ठहरे। और यदि वह स्त्री ५ हो तो तीस शेकेल ठहरे। फिर उस की अवस्था पांच बरस वा उस से अधिक और बीस बरस से कम की हो तो लड़के के लिये तो बीस शेकेल और लड़की के लिये ६ दस शेकेल ठहरे। और यदि उस की अवस्था एक महीने वा उस से अधिक और पांच बरस से कम की हो तो लड़के के लिये तो पांच और लड़की के लिये तीन शेकेल ठहरे। ७ फिर यदि उस की अवस्था साठ बरस की वा उस से अधिक हो तो यदि पुरुष हो तो उस के लिये पंद्रह शेकेल और स्त्री हो तो दस शेकेल ठहरे। पर यदि कोई इतना ८ कंगाल हो कि याजक का ठहराया हुआ दाम न दे सके तो वह याजक के साम्हने खड़ा किया जाए और याजक उस की पूंजी ठहराए अर्थात् जितना संकल्प करनेहारे से हो सके याजक उसी के अनुसार ठहराए॥

फिर जिन पशुओं में से लोग यहोवा को चढ़ावा ९ चढ़ाते हैं यदि ऐसों में से कोई संकल्प किया जाए तो जो पशु कोई यहोवा को दे वह पवित्र ही ठहरे। वह १० उसे किसी प्रकार से न बदले न तो वह बुरे की सन्ती अच्छा न अच्छे की सन्ती बुरा दे और यदि वह उस पशु की सन्ती दूसरा पशु दे तो वह और उस का बदला दोनों पवित्र ठहरें। और जिन पशुओं में से लोग यहोवा ११ के लिये चढ़ावा नहीं चढ़ाते ऐसों में से यदि वह हो तो वह उस को याजक के साम्हने खड़ा कर दे। तब याजक १२ पशु के गुण अवगुण दोनों विचार के उस का मोल ठहराए और जितना याजक ठहराए उस का मोल उतना ही ठहरे। और यदि संकल्प करनेहारा उसे किसी प्रकार से १३ छुड़ाना चाहे तो जो मोल याजक ने ठहराया हो उसे वह पांचवां भाग बढ़ाकर दे॥

फिर यदि कोई अपना घर यहोवा के लिये पवित्र १४ ठहराकर संकल्प करे तो याजक उस के गुण अवगुण दोनों विचार के उस का मोल ठहराए और जितना याजक ठहराए उस का मोल उतना ही ठहरे। और यदि घर का १५ पवित्र करनेहारा उसे छुड़ाना चाहे तो जितना रुपया याजक ने उस का मोल ठहराया हो उतना वह पांचवां भाग बढ़ाके दे तब घर उसी का रहे॥

फिर यदि कोई अपनी निज भूमि का कोई भाग १६ यहोवा के लिये पवित्र ठहराना चाहे तो उस का मोल इस के अनुसार ठहरे कि उस में कितना बीज पड़ेगा जितनी भूमि में होमेर भर जौ पड़े उतनी का मोल पचास शेकेल ठहरे। यदि वह अपना खेत जुबली[1] के बरस ही १७ में पवित्र ठहराए तो उस का दाम तेरे ठहराने के अनुसार ठहरे। और यदि वह अपना खेत जुबली[1] के बरस के १८ पीछे पवित्र ठहराए तो जितने बरस दूसरे जुबली[1] के बरस के बाकी रहें उन्हीं के अनुसार याजक उस के लिये रुपए का लेखा करे तब जितना लेखे में आए उतना याजक के ठहराने से कम हो। और यदि खेत का पवित्र १९ ठहरानेहारा उसे छुड़ाना चाहे तो जो दाम याजक ने ठहराया हो उसे वह पांचवां भाग बढ़ाकर दे तब खेत

(१) अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

२० उसी का रहे। और यदि वह खेत को छुड़ाना न चाहे वा उस ने उस को दूसरे के हाथ बेचा हो तो खेत आगे को कभी २१ न छुड़ाया जाए। बरन जब वह खेत जुबली[1] के बरस में छूटे तब पूरी रीति अर्पण किये हुए खेत की नाईं यहोवा के लिये पवित्र ठहरे अर्थात वह याजक की निज भूमि २२ हो जाए। फिर यदि कोई अपना एक मोल लिया हुआ खेत जो उस की निज भूमि के खेतों में का न हो यहोवा २३ के लिये पवित्र ठहराए, तो याजक जुबली[1] के बरस लों का लेखा करके उस मनुष्य के लिये जितना ठहराए उतना २४ वह यहोवा के लिये पवित्र जानकर उसी दिन दे। और जुबली[1] के बरस में वह खेत उसी के अधिकार में फिर आए जिस से वह मोल लिया गया हो अर्थात जिस की २५ वह निज भूमि हो उसी की फिर हो जाए। और जिस जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए उस का मोल पवित्रस्थान ही के शेकेल के लेखे से ठहरे शेकेल बीस गेरा का ठहरे॥

२६ पर घरैले पशुओं का पहिलौठा जो यहोवा का पहिलौठा ठहरा है उस को तो कोई पवित्र न ठहराए चाहे वह बछड़ा हो चाहे भेड़ वा बकरी का बच्चा वह २७ यहोवा का है ही। पर यदि वह अशुद्ध पशु का हो तो उस का पवित्र ठहरानेहारा उस को याजक के ठहराये हुए मोल के अनुसार उस का पांचवां भाग और बढ़ाकर छुड़ा सकता है और यदि वह न छुड़ाया जाए तो याजक के ठहराये हुए मोल पर बेचा जाए॥

२८ पर अपनी सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई यहोवा के लिये अर्पण करे चाहे मनुष्य हो चाहे पशु चाहे उस की निज भूमि का खेत हो ऐसी कोई अर्पण की हुई वस्तु न तो बेची और न छुड़ाई जाए जो कुछ अर्पण किया जाए सो यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे। २९ मनुष्यों में से जो कोई अर्पण किया जाए वह छुड़ाया न जाए निश्चय मार डाला जाए॥

३० फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल वह यहोवा का है ही वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। ३१ यदि कोई अपने दशमांश में से कुछ छुड़ाना चाहे तो पांचवां भाग बढ़ाकर उस को छुड़ाए। ३२ और गाय बैल और भेड़ बकरियां निदान जो जो पशु गिनने के लिये लाठी के तले निकल जानेहारे हैं उन का दशमांश अर्थात् दस दस पीछे एक एक पशु यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। ३३ कोई उस के गुण अवगुण न विचारे और न उस को बदल ले और यदि कोई उस को बदल भी ले तो वह और उस का बदला दोनों पवित्र ठहरें और वह कभी छुड़ाया न जाए॥

३४ जो आज्ञाएं यहोवा ने इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत के पास मूसा को दीं वे ये ही हैं॥

(१) अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

गिनती नाम पुस्तक।

(इस्राएलियों की गिनती)

१. **इस्राएलियों** के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे बरस के दूसरे महीने के पहिले दिन को यहोवा ने सीनै के जंगल में मिलापवाले २ तंबू में मूसा से कहा, इस्राएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार एक एक पुरुष ३ की गिनती नाम ले लेके कर। जितने इस्राएली बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था के होने के कारण युद्ध करने के योग्य हों उन सभों को उन के दलों के अनुसार तू ४ और हारून गिन लो। और तुम्हारे साथ एक एक गोत्र का एक एक पुरुष भी हो जो अपने पितरों के घराने का ५ मुख्य पुरुष हो। तुम्हारे उन साथियों के नाम ये हैं अर्थात् रूबेन गोत्र में से शदेऊर का पुत्र एलीसूर। ६ शिमोन गोत्र में से सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल। ७ यहूदा गोत्र में से अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन। ८ इस्साकार गोत्र में से सूआर का पुत्र नतनेल। ९ जबूलून गोत्र में से हेलोन का पुत्र एलीआब। १० यूसुफवंशियों में से ये हैं अर्थात एप्रैम गोत्र में से अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा और मनश्शे गोत्र में से पदासूर का पुत्र गम्लीएल। ११ बिन्यामीन गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदान। १२ दान गोत्र में से अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर। १३ आशेर गोत्र में से ओक्रान का पुत्र पगीएल। १४ गाद गोत्र में से दूएल का पुत्र एल्यासाप। १५ नप्ताली गोत्र में से एनान का पुत्र अहीरा। १६ मण्डली में से जो पुरुष अपने

अपने पितरों के गोत्रों के प्रधान होकर बुलाये गये वे ये ही हैं और ये इस्राएलियों के हजारों[1] में मुख्य पुरुष थे। १७ सो जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उन को १८ लिये हुए, मूसा और हारून ने दूसरे महीने के पहिले दिन को सारी मण्डली इकट्ठी की तब इस्राएलियों ने अपने अपने कुल और अपने अपने पितर के घराने के अनुसार बीस बरस वा उस से अधिक अवस्थावालों के नामों की गिनती कराके अपनी अपनी वंशावली लिखाई। १९ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी उसी के अनुसार उस ने सीनै के जंगल में उन को गिन लिया॥

२० इस्राएल का पहिलौठा जो रूबेन था उस के वंश के लोग अर्थात् अपने अपने कुल और अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार जितने पुरुष बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे २१ सब अपने अपने नाम से गिने गये। और रूबेन गोत्र के गिने हुए लोग साढ़े छियालीस हजार ठहरे॥

२२ शिमोन के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने पुरुष बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध २३ करने के योग्य थे वे सब अपने नाम से गिने गये। और शिमोन गोत्र के गिने हुए लोग उनसठ हजार तीन सौ ठहरे॥

२४ गाद के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य २५ थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। और गाद गोत्र के गिने हुए लोग पैंतालीस हजार साढ़े छः सौ ठहरे॥

२६ यहूदा के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य २७ थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। और यहूदा गोत्र के गिने हुए लोग चौहत्तर हजार छः सौ ठहरे॥

२८ इस्साकार के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। २९ और इस्साकार गोत्र के गिने हुए लोग चौवन हजार चार सौ ठहरे॥

३० जबूलून के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। ३१ और जबूलून गोत्र के गिने हुए लोग सत्तावन हजार चार सौ ठहरे॥

३२ यूसुफ के वंश में से एप्रैम के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम ३३ से गिने गये। और एप्रैम गोत्र के गिने हुए लोग साढ़े चालीस हजार ठहरे॥

३४ मनश्शे के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। ३५ और मनश्शे गोत्र के गिने हुए लोग बत्तीस हजार दो सौ ठहरे॥

३६ बिन्यामीन के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने ३७ गये। और बिन्यामीन गोत्र के गिने हुए लोग पैंतीस हजार चार सौ ठहरे॥

३८ दान के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। ३९ और दान गोत्र के गिने हुए लोग बासठ हजार सात सौ ठहरे॥

४० आशेर के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के योग्य ४१ थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। और आशेर गोत्र के गिने हुए लोग साढ़े एकतालीस हजार ठहरे॥

४२ नताली के वंश के लोग अर्थात् अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार जितने बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के कारण युद्ध करने के ४३ योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गये। और नताली गोत्र के गिने हुए लोग तिरपन हजार चार सौ ठहरे॥

४४ मूसा और हारून और इस्राएल के बारहों प्रधान जो अपने अपने पितरों के घराने के प्रधान थे उन सभों ४५ ने जिन्हें गिन लिया वे इतने ही ठहरे। सो जितने इस्राएली बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था होने के

(१) वा कुलों।

कारण इस्राएलियों में से युद्ध करने के योग्य होकर अपने
४६ पितरों के घरानों के अनुसार गिन गये, वे सब गिने हुए लोग मिलकर छः लाख तीन हजार साढ़े पांच सौ ठहरे ॥

४७ इन में लेवीय अपने पितरों के गोत्र के अनुसार न
४८ गिने गये। क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था,
४९ केवल लेवीय गोत्र की गिनती इस्राएलियों के बीच न
५० लेना। पर लेवीयों को साक्षीपत्र के निवास पर और उस के सारे सामान पर निदान जो कुछ उस से सम्बन्ध रखता है उस पर अधिकारी ठहराना सारे सामान समेत निवास को वे ही उठाया करें और उस में सेवा टहल वे ही किया करें और अपने डेरे उस की चारों ओर वे ही खड़े किया
५१ करें। और जब जब निवास का कूच हो तब तब लेवीय उस को गिरा दें और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब तब लेवीय उस को खड़ा करें और यदि कोई
५२ दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए। और इस्राएली अपना अपना डेरा अपनी अपनी छावनी में
५३ और अपने अपने झंडे के पास खड़ा किया करें। पर लेवीय अपने डेरे साक्षीपत्र के निवास ही की चारों ओर खड़े किया करें न हो कि इस्राएलियों की मंडली पर कोप भड़के और लेवीय साक्षीपत्र के निवास की रक्षा किया
५४ करें। ये जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दीं इस्राएलियों ने उन के अनुसार किया ॥

(इस्राएलियों की छावनी का क्रम)

२ **२. फिर** यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, इस्राएली मिलापवाले तंबू की चारों ओर और उस के साम्हने अपने अपने झंडे और अपने अपने पितरों के घराने के निशान के पास
३ डेरे खड़े करें। और जो पूरब दिशा जहां सूर्योदय होता है उस की ओर अपने अपने दलों के अनुसार डेरे खड़े किया करें वे यहूदा की छावनीवाले झंडे के लोग हों और उन का प्रधान अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन हो।
४ और उन के दल के गिने हुए लोग चौहत्तर हजार छः
५ सौ हैं। उन के पास जो डेरे खड़े किया करें वे इस्साकार के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान सूआर का पुत्र
६ नतनेल हो। और उन के दल के गिने हुए लोग चौवन
७ हजार चार सौ हैं। इन के पास जबूलून के गोत्रवाले रहें
८ और उन का प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब हो। और उन के दल के गिने हुए लोग सत्तावन हजार चार सौ
९ हैं। इस रीति यहूदा की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर एक लाख छियासी हजार चार सौ हैं पहिले ये ही कूच किया करें ॥

१० दक्खिन अलंग पर रूबेन की छावनीवाले झंडे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें और उन का
११ प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर हो। और उन के दल के
१२ गिने हुए लोग साढ़े छियालीस हजार हैं। उन के पास जो डेरे खड़े किया करें सो शिमोन के गोत्रवाले हों और
१३ उन का प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल हो। और उन के दल के गिने हुए लोग उनसठ हजार तीन सौ
१४ हैं। फिर गाद के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान रूएल
१५ का पुत्र एल्यासाप हो। और उन के दल के गिने हुए
१६ लोग पैंतालीस हजार साढ़े छः सौ हैं। रूबेन की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर डेढ़ लाख एक हजार साढ़े चार सौ हैं दूसरा कूच इन का हो ॥

१७ उन के पीछे और सब छावनियों के बीचोंबीच लेवीयों की छावनी समेत मिलापवाले तंबू का कूच हुआ करे जिस क्रम से वे डेरे खड़े करें उसी क्रम से वे अपने अपने स्थान पर अपने अपने झंडे के पास होकर कूच किया करें ॥

१८ पच्छिम अलंग पर एप्रैम की छावनीवाले झंडे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें और उन का प्रधान
१९ अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा हो। और उन के दल के
२० गिने हुए लोग साढ़े चालीस हजार हैं। उन के पास मनश्शे के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान पदासूर का
२१ पुत्र गम्लीएल हो। और उन के दल के गिने हुए लोग
२२ बत्तीस हजार दो सौ हैं। फिर बिन्यामीन के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान हो।
२३ और उन के दल के गिने हुए लोग पैंतीस हजार चार
२४ सौ हैं। एप्रैम की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर एक लाख आठ हजार एक सौ पुरुष हैं तीसरा कूच इनका हो ॥

२५ उत्तर अलंग पर दान की छावनीवाले झंडे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें और उन का प्रधान
२६ अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर हो। और उन के दल के
२७ गिने हुए लोग बासठ हजार सात सौ हैं। उन के पास जो डेरे खड़े करें वे आशेर के गोत्रवाले हों और उन का
२८ प्रधान ओक्रान का पुत्र पगीएल हो। और उन के दल के
२९ गिने हुए लोग साढ़े इकतालीस हजार हैं। फिर नप्ताली के गोत्रवाले हों और उन का प्रधान एनान का पुत्र
३० अहीरा हो। और उन के दल के गिने हुए लोग तिरपन
३१ हजार चार सौ हैं। दान की छावनी में जितने गिने गये वे सब मिलकर डेढ़ लाख सात हजार छः सौ हैं ये अपने अपने झंडे के पास होकर सब से पीछे कूच किया करें ॥

२ इस्राएलियों में से जो अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार गिने गये वे ये ही हैं और सब छावनियों के जितने लोग अपने अपने दलों के अनुसार गिने गये वे सब मिलकर छः लाख तीन हजार साढ़े पांच सौ ठहरे। ३३ पर यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी उस के अनुसार ३४ लेवीय तो इस्राएलियों में गिने न गये। और जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी इस्राएली उस उस के अनुसार अपने अपने कुल और अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार अपने अपने झंडे के पास डेरे खड़े करते और कूच भी करते थे॥

(पहिलौठों की सन्ती लेवीयों का यहोवा से ग्रहण किया जाना)

३. जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से बातें कीं उस समय हारून और मूसा की यह वंशावली थी। हारून के पुत्रों के नाम ये हैं नादाब जो उस का जेठा था और अबीहू एलाजार ३ और ईतामार। हारून के पुत्र जो अभिषिक्त याजक थे और उन का संस्कार याजक का काम करने के लिये हुआ ४ उन के नाम ये ही हैं। नादाब और अबीहू तो जिस समय सीनै के जंगल में यहोवा के सन्मुख उपरी आग ले गये उस समय यहोवा के साम्हने निपुत्र ही मर गये पर एलाजार और ईतामार अपने पिता हारून के साम्हने याजक का काम करते रहे॥

५, ६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा लेवी गोत्रवालों को समीप ले आकर हारून याजक के साम्हने खड़ा कर ७ कि वे उस की सेवा टहल करें। और जो कुछ उस की ओर से और सारी मंडली की ओर से उन्हें सौंपा जाए उस की रक्षा वे मिलापवाले तंबू के साम्हने करें कि वे ८ निवास की सेवा करें। वे मिलापवाले तंबू के सब सामान की और इस्राएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी रक्षा ९ करें कि वे निवास की सेवा करें। और तू लेवीयों को हारून और उस के पुत्रों को दे दे और वे इस्राएलियों की ओर से हारून को संपूर्ण रीति से अर्पण किये हुए हों। १० और हारून और उस के पुत्रों को याजक के पद पर ठहरा रख और वे अपने याजकपद की रक्षा किया करें और यदि दूसरा मनुष्य समीप आए तो वह मार डाला जाए॥

११, १२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, सुन इस्राएली स्त्रियों के सब पहिलौठों की सन्ती मैं इस्राएलियों में से १३ लेवीयों को ले लेता हूं सो लेवीय मेरे ही ठहरेंगे। सब पहिलौठे मेरे हैं क्योंकि जिस दिन मैं ने मिस्र देश में के सब पहिलौठों को मारा उसी दिन मैं ने क्या मनुष्य क्या पशु इस्राएलियों के सब पहिलौठों को अपने लिये पवित्र ठहराया सो वे मेरे ही ठहरेंगे मैं तो यहोवा हूं॥

१४ फिर यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, १५ लेवीयों में से जितने पुरुष एक महीने वा उस से अधिक अवस्था के हों उन को उन के पितरों के घरानों और उन के कुलों के अनुसार गिन ले। १६ यह आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे के अनुसार उनको गिन लिया। १७ लेवी के पुत्रों के नाम ये हैं अर्थात् गेर्शोन कहात और मरारी। १८ और गेर्शोन के पुत्र जिन से उस के कुल चले उन के नाम ये हैं अर्थात् लिब्नी और शिमी। १९ कहात के पुत्र जिन से उस के कुल चले ये हैं अर्थात् अम्राम यिसहार हेब्रोन और उज्जीएल। २० और मरारी के पुत्र जिन से उन के कुल चले ये हैं अर्थात् महली और मूशी ये लेवीयों के कुल अपने पितरों के घरानों के अनुसार हैं॥

२१ गेर्शोन से लिब्नीयों और शिमीयों के कुल चले गेर्शोनवंशियों के कुल ये ही हैं। २२ इन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन सभों की गिनती साढ़े सात हजार ठहरी। २३ गेर्शोनवाले कुल निवास के पीछे पच्छिम ओर अपने डेरे डाला करें। २४ और गेर्शोनियों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान लाएल का पुत्र एल्यासाप हो। २५ और मिलापवाले तंबू की जो वस्तुएं गेर्शोनवंशियों को सौंपी जाएं वे ये हों अर्थात् निवास और तंबू और उस का ओहार और मिलापवाले तंबू के द्वार का पर्दा २६ और जो आंगन निवास और वेदी की चारों ओर है उस के पर्दे और उस के द्वार का पर्दा और उस में बरतने की सब डोरियां॥

२७ फिर कहात से अम्रामियों यिसहारियों हेब्रोनियों और उज्जीएलियों के कुल चले कहातियों के कुल ये ही हैं। २८ उन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन की गिनती आठ हजार छः सौ ठहरी। २९ वे पवित्र स्थान की रक्षा करनेहारे ठहरे। कहातियों के कुल निवास की उस अलंग पर अपने डेरे डाला करें जो दक्खिन ओर है। ३० और कहातवाले कुलों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान उज्जीएल का पुत्र एलीसापान हो। ३१ और जो वस्तुएं उन को सौंपी जाएं वे संदूक मेज दीवट वेदियां और पवित्रस्थान का वह सामान जिस से सेवा टहल होती है और पर्दा निदान पवित्रस्थान में बरतने का सारा सामान हो। ३२ और लेवीयों के प्रधानों का प्रधान हारून याजक का पुत्र एलाजार हो और जो लोग पवित्रस्थान की सौंपी हुई वस्तुओं की रक्षा करेंगे उन पर वही मुखिया ठहरे॥

३३ फिर मरारी से महलीयों और मूशीयों के कुल चले मरारी के कुल ये ही हैं। ३४ इन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन सभों

३५ की गिनती छ: हजार दो सौ ठहरी। और मरारी के कुलों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान अबीहैल का पुत्र सूरीएल हो ये लोग निवास की उत्तर ओर अपने डेरे खड़े ३६ करें। और जो वस्तुएं मरारीवंशियों को सौंपी जाएं कि वे उन की रक्षा करें वे निवास के तख्ते बेंड़े खंभे कुर्सियां और सारा सामान निदान जो कुछ उस के बर-३७ तने में काम आए, और चारों ओर के आंगन के खंभे ३८ और उन की कुर्सियां खूंटे और डोरियां हों। और जो मिलापवाले तंबू के साम्हने अर्थात् निवास के साम्हने पूरब ओर जहां सूर्योदय होता है अपने डेरे डाला करें वे मूसा और पुत्रों सहित हारून हों और पवित्रस्थान जो इस्राएलियों को सौंपा गया उस की रखवाली वे ही किया करें और दूसरा जो कोई उस के समीप आए वह मार ३९ डाला जाए। यहोवा की यही आज्ञा पाके एक महीने की वा उस से अधिक अवस्थावाले जितने लेवीय पुरुषों को मूसा और हारून ने उन के कुलों के अनुसार गिन लिया वे सब के सब बाईस हजार ठहरे ॥

४० फिर यहोवा ने मूसा से कहा इस्राएलियों के जितने पहिलौठे पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से ४१ अधिक है उन सभों को नाम ले लेके गिन ले। और मेरे लिये इस्राएलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवीयों को और इस्राएलियों के पशुओं के सब पहिलौठों की ४२ सन्ती लेवीयों के पशुओं को ले मैं तो यहोवा हूं। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने इस्राएलियों के सब ४३ पहिलौठों को गिन लिया। और सब पहिलौठे पुरुष जिन की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन के नामों की गिनती बाईस हजार दो सौ तिहत्तर ठहरी ॥

४४, ४५ तब यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवीयों को और उन के पशुओं की सन्ती लेवीयों के पशुओं को ले सो लेवीय मेरे ही ठहरें ४६ मैं तो यहोवा हूं। और इस्राएलियों के पहिलौठों में से जो दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवीयों से अधिक हैं उन के ४७ छुड़ाने के लिये, पुरुष पीछे पांच शेकेल ले वे पवित्रस्थान-४८ वाले अर्थात् बीस गेरा का शेकेल हो। और जो रुपया उन अधिक पहिलौठों की छुड़ौती का होगा उसे हारून ४९ और उस के पुत्रों को देना। सो जो इस्राएली पहिलौठे लेवीयों के द्वारा छुड़ाये हुओं से अधिक थे उन के हाथ ५० से मूसा ने छुड़ौती का रुपया लिया। सो एक हजार तीन सौ पैंसठ पवित्रस्थानवाले शेकेल रुपया ठहरा। ५१ और यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने छुड़ाये हुओं का रुपया हारून और उस के पुत्रों को दिया ॥

(लेवीयों के कर्तव्य कर्म्म)

४. फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा २ लेवीयों में से कहातियों की उन के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिनती करो ३ अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावालों की सेना में जितने मिलापवाले तंबू में कामकाज ४ करने को भरती हैं। मिलापवाले तंबू में परमपवित्र वस्तुओं के विषय कहातियों की यह सेवकाई ठहरे ५ अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब तब हारून और उस के पुत्र भीतर आकर बीचवाले पर्दे को उतारके ६ उस से साक्षीपत्र के सन्दूक को ढांप दें। तब वे उस पर सूइसों की खालों का ओहार डालें और इस के ऊपर संपूर्ण नीले रंग का कपड़ा डालें और सन्दूक में डन्डों ७ को लगाए। फिर भेंटवाली रोटी की मेज पर नीला कपड़ा बिछा कर उस पर परातों धूपदानों करवों और उंडेलने के कटोरों को रक्खें और नित्य की रोटी भी उस ८ पर हो। तब वे उन पर लाही रङ्ग का कपड़ा बिछाकर उस को सूइसों की खालों के ओहार से ढांपें और मेज ९ के डन्डों को लगा दें। फिर वे नीले रङ्ग का कपड़ा लेकर दीपकों गुलतराशों और गुलदानों समेत उजियाला देनेहारे दीवट को और उस के सब तेल के पात्रों को १० जिन से उस की सेवा टहल होती है ढांपें। तब वे सारे सामान समेत दीवट को सूइसों की खालों के ओहार के ११ भीतर रखकर डन्डे पर धर दें। फिर वे सोने की वेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाकर उस को सूइसों की खालों के १२ ओहार से ढांपें और उस के डन्डों को लगा दें। तब वे सेवा टहल के सारे सामान को ले जिस से पवित्रस्थान में सेवा टहल होती है नीले कपड़े के भीतर रख कर सूइसों की खालों के ओहार से ढांपें और डन्डे पर धर १३ दें। फिर वे वेदी पर से सब राख उठा कर वेदी पर १४ बैंजनी रङ्ग का कपड़ा बिछाएं। तब जिस सामान से वेदी पर की सेवा टहल होती है वह सब अर्थात् उस के करछे कांटे फावड़ियां और कटोरे आदि वेदी का सारा सामान उस पर रक्खें और उस के ऊपर सूइसों की खालों का ओहार बिछाकर वेदी में डन्डों को लगाएं। १५ और जब हारून और उस के पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान और उस के सारे सामान को ढांप चुकें तब उस के पीछे कहाती उस के उठाने के लिये आएं पर किसी पवित्र वस्तु को न छूएं न हो कि मर जाएं कहातियों का भार मिलापवाले तम्बू की ये ही १६ वस्तुएं ठहरें। और जो वस्तुएं हारून के पुत्र एलाजार को सौंपी जाएं वे ये हैं अर्थात् उजियाला देने के लिये

तेल और सुगन्धित धूप और नित्य अन्नबलि और अभिषेक का तेल और सारे निवास और उस में की सब वस्तुओं और पवित्रस्थान और उस के सारे सामान की रक्षा ॥

१७, १८ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, कहातियों के कुलों के गोत्रियों को लेवीयों में से नाश न होने
१९ देना। उन के साथ ऐसा करो कि जब वे परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएं तब न मरें पर जीते रहें अर्थात् हारून और उस के पुत्र भीतर आकर एक एक के लिये
२० उस की सेवकाई और उस का भार ठहराएं। और वे पवित्र वस्तुओं के देखने को क्षण भर के लिये भी भीतर आने न पाएं न हो कि मर जाएं ॥

२१, २२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, गेर्शोनियों की भी गिनती उन के पितरों के घरानों और कुलों के अनुसार
२३ कर। तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावाले जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने को सेना में
२४ भरती हों उन सभों को गिन ले। सेवा करने और भार उठाने में गेर्शोनियों के कुलवालों की यह सेवकाई हो
२५ अर्थात् वे निवास के पटों और मिलापवाले तम्बू और उस के ओहार और इस के ऊपरवाले सूइसों की खालों
२६ के ओहार और मिलापवाले तम्बू के द्वार के पर्दे, और निवास और वेदी की चारों ओर के आंगन के पर्दों और आंगन के द्वार के पर्दे और उन की डोरियों और उन में बरतने के सारे सामान इन सभों को वे उठाया करें और इन वस्तुओं से जितना काम हो वह सब उन की सेवकाई
२७ में आए। और गेर्शोनियों के वंश की सारी सेवकाई हारून और उस के पुत्रों के कहे से हुआ करे अर्थात् जो कुछ उन को उठाना और जो जो सेवकाई उन को करनी हो उन का सारा भार तुम ही उन्हें सौंपा करो। मिलापवाले
२८ तम्बू में गेर्शोनियों के कुलों की यही सेवकाई ठहरे और उन पर हारून याजक का पुत्र ईतामार अधिकार रक्खे ॥

२९ फिर मरारीयों को भी तू उन के कुलों और पितरों के
३० घरानों के अनुसार गिन ले। तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावाले जितने मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को सेना में भरती हों उन सभों को गिन ले।
३१ और मिलापवाले तंबू में की जिन वस्तुओं के उठाने की सेवकाई उन को मिले वे ये हों अर्थात् निवास के तख्ते
३२ बेंड़े खम्भे और कुर्सियां, और चारों ओर के आंगन के खम्भे और इन की कुर्सियां खूंटे डोरियां और भांति भांति के बरतने का सारा सामान। और जो जो सामान ढोने के लिये उन को सौंपा जाए उस में से एक एक वस्तु का
३३ नाम लेकर तुम गिन दो। मरारीयों के कुलों की सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय करनी होगी वह यही है वह हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में रहे ॥

३४ सो मूसा और हारून और मण्डली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को उन के कुलों और पितरों के घरानों
३५ के अनुसार, तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्था के जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने
३६ को सेना में भरती हुए थे उन सभों को गिना। और जो अपने अपने कुल के अनुसार गिने गये वे दो हजार साढ़े
३७ सात सौ ठहरे। कहातियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गये वे इतने ही ठहरे। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी उस के अनुसार मूसा और हारून ने इन को गिन लिया ॥

३८ और गेर्शोनियों में से जो अपने कुलों और पितरों के
३९ घरानों के अनुसार गिने गये, अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्था के जो मिलापवाले
४० तम्बू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, उन की गिनती उन के कुलों और पितरों के घरानों के
४१ अनुसार दो हजार छः सौ तीस ठहरी। गेर्शोनियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तंबू में सेवा करनेवाले गिने गये वे इतने ही ठहरे। यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हारून ने इन को गिन लिया ॥

४२ फिर मरारीयों के कुलों में से जो अपने कुलों और
४३ पितरों के घरानों के अनुसार गिने गये, अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्था के जो मिलापवाले
४४ तंबू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, उन की गिनती उन के कुलों के अनुसार तीन हजार दो सौ
४५ ठहरी। मरारीयों के कुलों में से जिन को मूसा और हारून ने यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली गिन लिया वे इतने ही ठहरे ॥

४६ लेवीयों में से जिन को मूसा और हारून और इस्राएली प्रधानों ने उन के कुलों और पितरों के घरानों के
४७ अनुसार गिन लिया, अर्थात् तीस बरस से लेकर पचास बरस लों की अवस्थावाले जितने मिलापवाले तंबू की सेवकाई करने और बोझ उठाने का काम करने को
४८ हाजिर होनेहारे थे, उन सभों की गिनती आठ हजार
४९ पांच सौ अस्सी ठहरी। ये अपनी अपनी सेवा और बोझ ढोने के अनुसार यहोवा के कहे से मूसा के द्वारा गिने गये। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार वे उस से गिने गये ॥

(कोढ़ी आदि अशुद्ध लोगों का बाहर कर दिया जाना)

५. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्रा-
२ एलियों को आज्ञा दे कि तुम सब

कोढ़ियों को और जितनों के प्रमेह हो और जितने लोथ के कारण अशुद्ध हों उन सभों को छावनी से निकाल ३ दो। ऐसों को चाहे पुरुष हों चाहे स्त्री छावनी से निकाल कर बाहर कर दो न हो कि तुम्हारी छावनी जिस के बीच मैं निवास करता हूं उन के कारण ४ अशुद्ध हो। और इस्राएलियों ने वैसा ही किया अर्थात् ऐसे लोगों को छावनी से निकाल बाहर कर दिया जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था इस्राएलियों ने वैसा ही किया॥

(दोषों की हानि भरने की विधि)

५, ६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष वा स्त्री कोई ऐसा पाप करके जो लोग किया करते हैं यहोवा का विश्वासघात करे और ७ वह प्राणी दोषी हो, तब वह अपना किया हुआ पाप मान ले और पूरे मूल में पांचवां अंश बढ़ाकर अपने दोष के बदले में उसी को दे जिस के विषय दोषी हुआ ८ हो। पर यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला भर दिया जाए तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर दिया जाए वह याजक का ठहरे वह उस प्रायश्चित्तवाले मेढ़े से अधिक हो जिस से उस ९ के लिये प्रायश्चित्त किया जाए। और जितनी पवित्र की हुई वस्तुएं इस्राएली उठाई हुई भेंट करके याजक के १० पास लाएं सो उसी की ठहरें। सब मनुष्यों की पवित्र की हुई वस्तुएं उसी की ठहरें कोई जो कुछ याजक को दे वह उस का ठहरे॥

(पति के अपनी स्त्री पर जलने की व्यवस्था)

११, १२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि यदि किसी मनुष्य की स्त्री कुचाल चलकर[1] उस का १३ विश्वासघात करे, और कोई पुरुष उस के साथ कुकर्म्म करे पर यह बात उस के पति से छिपी हो और खुली न हो और वह अशुद्ध हो गई पर न तो उस के विरुद्ध कोई साक्षी हो और न वह कुकर्म्म करते पकड़ी गई हो १४ और उस के पति के मन में जलन उत्पन्न हो अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो वा उस के मन में जलन उत्पन्न हो अर्थात् वह अपनी १५ स्त्री पर जलने लगे पर वह अशुद्ध न हुई हो, तो वह पुरुष अपनी स्त्री को याजक के पास ले जाए और उस के लिये एपा का दसवां अंश जव का मैदा चढ़ावा करके ले आए पर उस पर न तेल डाले न लोबान रक्खे क्योंकि वह जलनवाला और स्मरण दिलानेहारा अर्थात् अधर्म्म का स्मरण करानेहारा अन्नबलि होगा। तब १६ याजक उस स्त्री को समीप ले जाकर यहोवा के साम्हने खड़ी करे। और याजक मिट्टी के पात्र में पवित्र जल ले १७ और निवासस्थान की भूमि पर की धूलि में से कुछ लेकर उस जल में डाल दे। तब याजक उस स्त्री को यहोवा १८ के साम्हने खड़ी करके उस के सिर के बाल बिखराए और स्मरण दिलानेहारे अन्नबलि को जो जलनवाला है उस के हाथों पर धर दे और अपने हाथ में याजक कड़वा जल लिये रहे जो स्राप लगने का कारण होगा। तब याजक स्त्री को किरिया धराकर कहे कि यदि किसी १९ पुरुष ने तुझ से कुकर्म्म न किया हो और तू पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध न हो गई हो तो तू इस कड़ुवे जल के गुण से जो स्राप का कारण होता है बची रहे। पर यदि तू अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर २० फिरके अशुद्ध हुई हो और तेरे पति को छोड़ किसी दूसरे पुरुष ने तुझ से प्रसंग किया हो, और याजक उसे स्राप २१ देनेहारी किरिया धराकर कहे यहोवा तेरी जांघ सड़ाए और तेरा पेट फुलाए और लोग तेरा नाम लेकर स्राप और धिक्कार[1] दिया करें। अर्थात् वह जल जो स्राप २२ का कारण होता है तेरी अन्तड़ियों में जाकर तेरे पेट को फुलाए और तेरी जांघ को सड़ा दे। तब वह स्त्री कहे आमेन आमेन। तब याजक स्राप के ये शब्द पुस्तक में २३ लिखकर उस कड़वे जल से मिटाके, उस स्त्री को वह २४ कड़वा जल पिलाए जो स्राप का कारण होता है सो वह जल जो स्राप का कारण होगा उस स्त्री के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा। और याजक स्त्री के हाथ में से २५ जलनवाले अन्नबलि को ले यहोवा के आगे हिलाकर वेदी के समीप पहुंचाए। और याजक उस अन्नबलि में से उस २६ का स्मरण दिलानेहारा भाग अर्थात् मुट्ठी भर लेकर वेदी पर जलाए और उस के पीछे स्त्री को वह जल पिलाए। और जब वह उसे वह जल पिला चुके तब यदि वह २७ अशुद्ध हुई और अपने पति का विश्वासघात किया हो तो वह जल जो स्राप का कारण होता है सो उस स्त्री के पेट में जाकर कड़ुआ हो जाएगा और उस का पेट फूलेगा और उस की जांघ सड़ जाएगी और उस स्त्री का नाम उस के लोगों के बीच स्राप में लिया जाएगा। पर २८ यदि वह स्त्री अशुद्ध न हुई शुद्ध ही हो तो वह निर्दोष ठहरेगी और गर्भिणी हो सकेगी। जलन की व्यवस्था यही २९ है चाहे कोई स्त्री अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हो, चाहे पुरुष के मन में जलन उत्पन्न हो ३०

(१) मूल में हटके।

(१) मूल में किरिया।

और वह अपनी स्त्री पर जलने लगे तो वह उस को यहोवा के सन्मुख खड़ी कर दे और याजक उस पर यह सारी व्यवस्था पूरी करे। ३१ तब पुरुष अधर्म्म से बचा रहेगा और स्त्री अपने अधर्म्म का बोझ आप उठाएगी॥

(नाजीरों की व्यवस्था)

६. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष वा स्त्री नाजीर[१] की मन्नत अर्थात् अपने को यहोवा के लिये न्यारा करने की विशेष मन्नत माने, ३ तब वह दाखमधु आदि मदिरा से न्यारा रहे वह न दाखमधु का न और मदिरा का सिरका पीए और न दाख का कुछ रस भी पीए बरन दाख न खाए चाहे हरी हो चाहे सूखी। ४ जितने दिन वह न्यारा रहे उतने दिन लों वह बीज से ले छिलके लों जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है उस में से कुछ न खाए। ५ फिर जितने दिन उस ने न्यारे रहने की मन्नत मानी हो उतने दिन लों वह अपने सिर पर छुरा न फिराए और जब लों वे दिन पूरे न हों जिन में वह यहोवा के लिये न्यारा रहे तब लों वह पवित्र ठहरेगा और अपने सिर के बालों को बढ़ाये रहे। ६ जितने दिन वह यहोवा के लिये न्यारा रहे उतने दिन लों किसी लोथ के पास न जाए। ७ चाहे उस का पिता वा माता वा भाई वा बहिन भी मरे तौभी वह उन के कारण अशुद्ध न हो क्योंकि उस के अपने परमेश्वर के लिये न्यारे रहने का चिन्ह[२] उस के सिर पर होगा। ८ अपने न्यारे रहने के सारे दिनों में वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरा रहे। ९ और यदि कोई उस के पास अचानक मर जाए और उस के न्यारे रहने का जो चिन्ह[३] उस के सिर पर होगा वह अशुद्ध हो जाए तो वह शुद्ध होने के दिन अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुड़ाए। १० और आठवें दिन वह दो पिंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे मिलापवाले तंबू के द्वार पर याजक के पास ले जाए। ११ और याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि कर के उस के लिये प्रायश्चित्त करे क्योंकि वह लोथ के कारण पापी ठहरा है और याजक उसी दिन उस का सिर फिर पवित्र करे। १२ और वह अपने न्यारे रहने के दिनों को फिर यहोवा के लिये न्यारे ठहराए और बरस दिन का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि करके ले आए और जो दिन इस से पहिले बीत गये हों वे व्यर्थ गिने जाएं क्योंकि उस के न्यारे रहने का चिन्ह[४] अशुद्ध हो गया॥

१३ फिर जब नाजीर के न्यारे रहने के दिन पूरे हों उस समय के लिये उस की यह व्यवस्था है अर्थात् वह मिलापवाले तंबू के द्वार पर पहुंचाया जाए। १४ और वह यहोवा के लिए होमबलि करके बरस दिन का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा पापबलि करके और बरस दिन की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची और मेलबलि करके निर्दोष मेढ़ा, १५ और अखमीरी रोटियों की एक टोकरी अर्थात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियां और उन बलियों के अन्नबलि और अर्घ ये सब चढ़ावे समीप ले जाए। १६ इन सब को याजक यहोवा के साम्हने पहुंचाकर उस के पापबलि और होमबलि को चढ़ाए, १७ और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत मेढ़े को यहोवा के लिये मेलबलि करके और उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्घ को भी चढ़ाए। १८ तब नाजीर अपने न्यारे रहने के चिन्हवाले[५] सिर को मिलापवाले तंबू के द्वार पर मुण्डाकर अपने बालों को उस आग पर डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी। १९ फिर जब नाजीर अपने न्यारे रहने के चिन्हवाले[५] सिर को मुण्डा चुके तब याजक मेढ़े का सिझा हुआ कन्धा और टोकरी में से एक अखमीरी रोटी और एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाजीर के हाथों पर धर दे। २० और याजक इन को हिलाने की भेंट करके यहोवा के साम्हने हिलाए हिलाई हुई छाती और उठाई हुई जांघ समेत ये भी याजक के लिये पवित्र ठहरें। इस के पीछे वह नाजीर दाखमधु पी सकेगा। २१ नाजीर की मन्नत की और जो चढ़ावा उस को अपने न्यारे होने के कारण यहोवा के लिये चढ़ाना होगा उस की भी यही व्यवस्था है। जो चढ़ावा वह अपनी पूंजी के अनुसार चढ़ा सके उस से अधिक जैसी मन्नत उस ने मानी हो वैसे ही अपने न्यारे रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना होगा॥

(याजकों के आशीर्वाद देने की रीति)

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३ हारून और उस के पुत्रों से कह कि तुम इस्राएलियों को इन वचनों से आशीर्वाद दिया करना कि॥

२४ यहोवा तुझे आशिष दे और तेरी रक्षा करे॥

२५ यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए और तुझ पर अनुग्रह करे॥

२६ यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे और तुझे शांति दे॥

२७ इस रीति वे इस्राएलियों को मेरे[६] ठहराएं और मैं आप उन्हें आशिष दिया करूंगा॥

---

(१) अर्थात् न्यारा किया हुआ। (२) वा उस के परमेश्वर का मुकुट। (३) वा उस का जो मुकुट। (४) वा उस का मुकुट।

(५) वा अपने मुकुटवाले। (६) मूल में और वे मेरा नाम इस्राएलियों पर धरें।

(वेदी के अभिषेक के उत्सव की भेंटें)

७. फिर जब मूसा निवास को खड़ा कर चुका और सारे सामान समेत उस का अभिषेक करके उस को पवित्र किया और सारे सामान २ समेत वेदी का भी अभिषेक करके उसे पवित्र किया, तब इस्राएल के प्रधान जो अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और गोत्रों के भी प्रधान होकर गिनती लेने ३ के काम पर ठहरे थे, वे यहोवा के साम्हने भेंट ले आये और उन की भेंट छः छाई हुई गाड़ियां और बारह बैल थे अर्थात् दो दो प्रधान पीछे तो एक एक गाड़ी और एक एक प्रधान पीछे एक एक बैल इन्हें वे निवास के ४ साम्हने यहोवा के समीप ले गये। तब यहोवा ने मूसा से ५ कहा, उन वस्तुओं को उन से ले ले कि मिलापवाले तंबू के बरतने में लगें सो तू उन्हें लेवीयों के एक एक कुल की ६ विशेष सेवकाई के अनुसार उन को दे दे। सो मूसा ने वे सब गाड़ियां और बैल लेकर लेवीयों को दे दिये। ७ गेर्शोनियों को तो उन की सेवकाई के अनुसार उस ने ८ दो गाड़ियां और चार बैल दिये। और मरारीयों को उन की सेवकाई के अनुसार उस ने चार गाड़ियां और आठ बैल दिये ये सब हारून याजक के पुत्र ईतामार के ९ अधिकार में किये गये। और कहातियों को उस ने कुछ न दिया क्योंकि उन के लिये पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई थी कि वे उन को कन्धों पर उठा लें॥

१० फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ तब प्रधान उस के संस्कार की भेंट वेदी के साम्हने समीप ले जाने लगे। ११ तब यहोवा ने मूसा से कहा वेदी के संस्कार के लिये प्रधान लोग अपनी अपनी भेंट अपने अपने नियत दिन पर ले आएं॥

१२ सो जो पुरुष पहिले दिन अपनी भेंट ले गया वह यहूदा गोत्रवाले अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन १३ था। उस की भेंट यह थी अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। १४ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, १५ होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन १६ का एक भेड़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक बकरा, १७ और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे अम्मीनादाब के पुत्र नहशोन की यही भेंट थी॥

१८ दूसरे दिन इस्साकार का प्रधान सूआर का पुत्र १९ नतनेल भेंट ले आया। वह यह थी अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए २० थे। फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक २१ धूपदान, होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और २२ बरस दिन का एक भेड़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक २३ बकरा, और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे सूआर के पुत्र नतनेल की यही भेंट थी॥

२४ तीसरे दिन जबूलूनियों का प्रधान हेलोन का पुत्र २५ एलीआब यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। २६ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, २७ होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन २८ का एक भेड़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक बकरा, २९ और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे हेलोन के पुत्र एलीआब की यही भेंट थी॥

३० चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान शदेऊर का पुत्र ३१ एलीसूर यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। ३२ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, ३३ होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन ३४ का एक भेड़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक बकरा, ३५ और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे शदेऊर के पुत्र एलीसूर की यही भेंट थी॥

३६ पांचवें दिन शिमोनियों का प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र ३७ शलूमीएल यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। ३८ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, ३९ होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन ४० का एक भेड़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक बकरा, ४१ और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच भेड़ी के बच्चे सूरीशद्दै के पुत्र शलूमीएल की यही भेंट थी॥

४२ छठवें दिन गादियों का प्रधान दूएल का पुत्र ४३ एल्यासाप यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। ४४ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, ४५ होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन ४६ का एक मेढ़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक बकरा, ४७ और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच मेढ़ी के बच्चे दूएल के पुत्र एल्यासाप की यही भेंट थी ॥

४८ सातवें दिन एप्रैमियों का प्रधान अम्मीहूद का ४९ पुत्र एलीशामा यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थान-वाले शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए ५० थे। फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक ५१ धूपदान, होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और ५२ बरस दिन का एक मेढ़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक ५३ बकरा, और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच मेढ़ी के बच्चे अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा की यही भेंट थी ॥

५४ आठवें दिन मनश्शेइयों का प्रधान पदासूर का पुत्र ५५ गम्लीएल यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के ५६ लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। फिर धूप से भरा ५७ हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक मेढ़ी का बच्चा। ५८,५९ पापबलि के लिये एक बकरा, और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच मेढ़ी के बच्चे पदासूर के पुत्र गम्लीएल की यही भेंट थी ॥

६० नवें दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोनी का पुत्र ६१ अबीदान यह भेंट ले आया। अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। ६२ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, ६३ होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन ६४ का एक मेढ़ी का बच्चा, पापबलि के लिये एक बकरा, ६५ और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच मेढ़ी के बच्चे गिदोनी के पुत्र अबीदान की यही भेंट थी ॥

६६ दसवें दिन दानियों का प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र ६७ अहीएजेर यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। ६८ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, ६९ होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन ७० का एक मेढ़ी का बच्चा। पापबलि के लिये एक बकरा, ७१ और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच मेढ़ी के बच्चे अम्मीशद्दै के पुत्र अहीएजेर की यही भेंट थी ॥

७२ ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान का पुत्र ७३ पगीएल यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। ७४ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूप- ७५ दान, होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और ७६ बरस दिन का एक मेढ़ी का बच्चा, पापबलि के लिये ७७ एक बकरा, और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच मेढ़ी के बच्चे ओक्रान के पुत्र पगीएल की यही भेंट थी ॥

७८ बारहवें दिन नप्तालियों का प्रधान एनान का पुत्र ७९ अहीरा यह भेंट ले आया, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे। ८० फिर धूप से भरा ८१ हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान, होमबलि के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस दिन का एक मेढ़ी का बच्चा, ८२,८३ पापबलि के लिये एक बकरा, और मेलबलि के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे और बरस बरस दिन के पांच मेढ़ी के बच्चे एनान के पुत्र अहीरा की यही भेंट थी ॥

८४ वेदी के अभिषेक के समय इस्राएल के प्रधानों की ओर से उस के संस्कार की भेंट यही हुई अर्थात् चांदी के बारह परात चांदी के बारह कटोरे और सोने के ८५ बारह धूपदान। एक एक चांदी का परात एक सौ तीस शेकेल का और एक एक चांदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था सो पवित्रस्थान के शेकेल के लेखे से ये सब ८६ चांदी के पात्र दो हजार चार सौ शेकेल के थे। फिर धूप से भरे हुए सोने के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान

के शेकेल के लेखे से दस दस शेकेल के थे वे सब धूप-
८७ दान एक सौ बीस शेकेल सोने के थे । फिर होमबलि के
लिये सब मिला कर बारह बछड़े बारह मेढ़े और बरस
बरस दिन के बारह भेड़ी के बच्चे अपने अपने अन्नबलि
८८ समेत थे फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे । और
मेलबलि के लिये सब मिला कर चौबीस बैल साठ मेढ़े
साठ बकरे और बरस बरस दिन के साठ भेड़ी के बच्चे थे
वेदी के अभिषेक होने के पीछे उस के संस्कार की भेंट
८९ यही हुई । और जब मूसा यहोवा से बातें करने को
मिलापवाले तंबू में गया तब उस को उस की वाणी
सुन पड़ी जो साक्षीपत्र के संदूक पर के प्रायश्चित्त के
ढकने के ऊपर से दोनों करूबों के बीच में से उस के
साथ बातें कर रहा था सो यहोवा ने उस से बातें कीं ॥

(दीवट के बारने की रीति)

८. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून
२ को समझा कर यह कह कि जब
जब तू दीपकों को बारे तब तब सातों दीपक दीवट
३ के साम्हने को प्रकाश दें । तब हारून वैसा ही करने
लगा अर्थात् जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी उस के
अनुसार उस ने दीपकों को बारा कि वे दीवट के साम्हने
४ को प्रकाश दें और दीवट की बनावट यह थी अर्थात्
यह पाये से ले फूलों तक गढ़े हुए सोने का बनाया
गया । जो नमूना यहोवा ने मूसा को दिखाया था उसी
के अनुसार उस ने दीवट को बनवाया ॥

(लेवीयों के नियुक्त होने का वर्णन)

५, ६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों के बीच
७ में से लेवीयों को लेकर शुद्ध कर । उन्हें शुद्ध करने के
लिये तू ऐसा कर कि उन पर पाप छुड़ा के पावन करने-
वाला जल छिड़क दे फिर वे सर्वाङ्ग मुण्डन कराएं और
८ वस्त्र धोएं और वे अपने को शुद्ध करें । तब वे तेल से
सने हुए मैदे के अन्नबलि समेत एक बछड़ा ले लें और
९ तू पापबलि के लिये एक और बछड़ा लेना । और तू
लेवीयों को मिलापवाले तम्बू के साम्हने समीप पहुंचाना
और इस्राएलियों की सारी मण्डली को इकट्ठा करना ।
१० तब तू लेवीयों को यहोवा के साम्हने समीप ले आना
११ और इस्राएली अपने अपने हाथ उन पर टेकें । तब
हारून लेवीयों को यहोवा के साम्हने इस्राएलियों की
ओर से हिलाई हुई भेंट करके अर्पण करे कि वे यहोवा
१२ की सेवा करनेहारे ठहरें । और लेवीय अपने अपने
हाथ उन बछड़ों के सिरों पर टेकें, तब तू लेवीयों के
लिये प्रायश्चित्त करने को एक बछड़ा पापबलि और दूसरा
१३ होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाना । और लेवीयों
को हारून और उस के पुत्रों के साम्हने खड़ा करना, कि
वे यहोवा को हिलाई हुई भेंट जान के अर्पण किये जाएं
१४ और उन्हें इस्राएलियों में से अलग करना, सो वे मेरे ही
१५ ठहरेंगे । और जब तू लेवीयों को शुद्ध करके हिलाई हुई
भेंट जानकर अर्पण कर चुके उस के पीछे वे मिलापवाले
१६ तम्बू संबन्धी सेवा करने को आया करें । क्योंकि वे
इस्राएलियों में से मुझे पूरी रीति से अर्पण किये हुए हैं
मैं ने उन को सब इस्राएलियों में से एक एक स्त्री के
१७ पहिलौठे की सन्ती अपना कर लिया है । इस्राएलियों के
पहिलौठे चाहे मनुष्य के हों चाहे पशु के सब मेरे हैं
क्योंकि मैं ने उन्हें उस समय अपने लिये पवित्र ठहराया
१८ जब मिस्र देश में के सारे पहिलौठों को मार डाला । और
मैं ने इस्राएलियों के सारे पहिलौठों के बदले लेवीयों को
१९ लिया है । उन्हें लेके मैं ने हारून और उस के पुत्रों को
इस्राएलियों में से दान करके दे दिया है कि वे मिलाप-
वाले तंबू में इस्राएलियों के निमित्त सेवकाई और प्राय-
श्चित्त किया करें न हो कि जब इस्राएली पवित्रस्थान के
२० समीप आएं तब उन पर कोई महाविपत्ति पड़े । लेवीयों
के विषय यहोवा की यह आज्ञा पाकर मूसा और हारून
और इस्राएलियों की सारी मण्डली ने उन से ठीक ऐसा
२१ ही किया । लेवीयों ने तो अपने को पाप छुड़ाके पावन
किया और अपने वस्त्रों को धो डाला और हारून ने उन्हें
यहोवा के साम्हने हिलाई हुई भेंट जानके अर्पण किया
और उन्हें शुद्ध करने को उन के लिये प्रायश्चित्त किया ।
२२ और उस के पीछे लेवीय हारून और उस के पुत्रों
के साम्हने मिलापवाले तंबू में की अपनी अपनी सेवकाई
करने को गये और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को लेवीयों के
विषय दी थी उस के अनुसार वे उनसे बर्ताव करने लगे ॥
२३, २४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, जो लेवीयों को
करना है वह यह है कि पचीस बरस की अवस्था से वे
मिलापवाले तंबू संबन्धी सेवा में लगे रहने को आने लगें ।
२५ और पचास बरस की अवस्था से वे उस सेवा में लगे रहने
२६ से छूट कर आगे को न करें । पर वे अपने भाईबन्धुओं
के साथ मिलापवाले तंबू के पास रक्षा का काम किया
करें और किसी प्रकार की सेवकाई न करें लेवीयों को
जो जो काम सौंपे जाएं उन के विषय ऐसा ही करना ॥

(दूसरी बार फसह का माना जाना और सदा के लिये फसह की विधि)

९. इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के
दूसरे बरस के पहिले महीने
२ में यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, इस्राएली
३ फसह नाम पर्व को उस के नियत समय पर मानें । अर्थात्
इसी महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय तुम

लाग उसे सब विधियों और नियमों के अनुसार मानना।
४ तब मूसा ने इस्राएलियों से फसह मानने को कह दिया।
५ सो उन्हों ने पहिले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय सीनै के जंगल में फसह को माना और जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दीं उन्हीं के अनुसार इस्रा-
६ एलियों ने किया। पर कितने लोग किसी मनुष्य की लोथ के द्वारा अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह को न मान सके सो वे उसी दिन मूसा और हारून के साम्हने
७ समीप जाकर, मूसा से कहने लगे हम लोग एक मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध हैं पर हम काहे को रुके रहें कि और इस्राएलियों के संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय
८ पर न चढ़ाएं। मूसा ने उन से कहा ठहरे रहो मैं जान लूं कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है॥

९, १० यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि चाहे तुम लोग चाहे तुम्हारे वंश में से कोई किसी लोथ के कारण अशुद्ध हो वा दूर की यात्रा पर हो तौ भी वह
११ यहोवा के लिये फसह को माने। वे उसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय मानें और फसह के बलिपशु के मांस को अखमीरी रोटी और कड़ुवे सागपात
१२ के साथ खाएं, और उस में से कुछ भी बिहान लों रख न छोड़ें और न उस की कोई हड्डी तोड़ें वे उस पर्व को
१३ फसह की सारी विधियों के अनुसार मानें। पर जो मनुष्य शुद्ध हो और यात्रा पर न हो पर फसह के पर्व को न माने वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए उस मनुष्य को यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर न ले आने के कारण अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा।
१४ और यदि कोई परदेशी तुम्हारे साथ रहकर चाहे कि यहोवा के लिये फसह माने तो वह उस की विधि और नियम के अनुसार उस को माने देशी परदेशी दोनों के लिये तुम्हारी एक ही विधि हो॥

(इस्राएलियों की यात्रा की रीति)

१५ जिस दिन निवास जो साक्षी का तंबू भी कहावता है खड़ा किया गया उस दिन बादल उस पर छा गया और सांझ को वह निवास पर आग सा देख पड़ा और भोर
१६ लों दिखाई देता था। और नित्य ऐसा हुआ करता था अर्थात् दिन को वह बादल और रात को आग सा कुछ उस पर
१७ छा जाया करता था। और जब जब वह बादल तंबू पर से उठाया जाता तब तब इस्राएली कूच करते थे और जहां कहीं बादल ठहर जाता वहीं इस्राएली अपने डेरे
१८ खड़े करते थे। यहोवा के कहे से इस्राएली कूच करते और यहोवा के कहे से वे डेरे खड़े भी करते थे और जितने दिन लों वह बादल निवास पर ठहरा रहता उतने दिन लों वे डेरे डाले पड़े रहते थे। और जब जब बादल बहुत
१९ दिन निवास पर छाया रहता तब तब इस्राएली यहोवा की आज्ञा मानते हुए कूच न करते थे। और कभी कभी वह
२० बादल थोड़े ही दिन लों निवास पर रहता तब वे यहोवा के कहे से डेरे डाले पड़े रहते थे और फिर यहोवा के कहे से कूच करते थे। और कभी कभी बादल केवल सांझ से
२१ भोर लों रहता और जब भोर को वह उठ जाता था तब वे कूच करते थे और यदि वह रात दिन बराबर रहता तो जब बादल उठ जाता तब ही वे कूच करते थे। वह
२२ बादल चाहे दो दिन चाहे एक महीना चाहे बरस भर जब लों निवास पर ठहरा रहता तब लों इस्राएली अपने डेरों में रहते और कूच न करते थे। पर जब वह उठ जाता तब वे कूच करते थे। यहोवा के कहे से वे अपने डेरे खड़े
२३ करते और यहोवा के कहे से वे कूच करते थे जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता उस को वे माना करते थे॥

(चांदी की तुरहियों के बनाने और बरतने की विधि)

१०. **फिर** यहोवा ने मूसा से कहा, चांदी की
२ दो तुरही गढ़ाके बनवा ले वे तुझे मण्डली के बुलाने और छावनियों के कूच करने में काम
३ आएं। और जब वे दोनों फूंकी जाएं तब सारी मण्डली
४ मिलापवाले तंबू के द्वार पर तेरे पास इकट्ठी हो। और यदि एक ही तुरही फूंकी जाए तो प्रधान लोग जो इस्राएल के हजारों के मुख्य पुरुष हैं तेरे पास इकट्ठे हो जाएं।
५ जब तुम लोग सांस बांधकर फूंको तो पूरब दिशा की
६ छावनियों का कूच हो। और जब तुम दूसरी बेर सांस बांधकर फूंको तब दक्खिन दिशा की छावनियों का कूच हो उन के कूच करने के लिये वे सांस बांधकर फूंकें।
७ और जब लोगों को इकट्ठा करके सभा करनी हो तब भी
८ फूंकना पर सांस बांधकर नहीं। और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उन तुरहियों को फूंका करें यह बात तुम्हारी
९ पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे। और जब तुम अपने देश में किसी सतानेहारे बैरी से लड़ने को निकलो तब तुरहियों को सांस बांधकर फूंकना तब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा और तुम अपने
१० शत्रुओं से बचाये जाओगे। और अपने आनन्द के दिन में और अपने नियत पर्वों में और महीनों के आदि में अपने होमबलियों और मेलबलियों के साथ उन तुरहियों को फूंकना इस से तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

(इस्राएलियों का सीनै पर्वत से प्रस्थान करना)

११ दूसरे बरस के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल
१२ साक्षी के निवास पर से उठाया गया। तब इस्राएली सीनै

के जंगल में से निकलकर कूच करने लगे और बादल
१२ पारान नाम जंगल में ठहर गया। उन का कूच यहोवा
की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी थी
१४ आरंभ हुआ। पहिले तो यहूदियों की छावनी के झंडे
का कूच हुआ और वे दल दल होकर चले और उन का
१५ सेनापति अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था। और
इस्साकारियों के गोत्र का सेनापति सूआर का पुत्र
१६ नतनेल था। और जबूलूनियों के गोत्र का सेनापति हेलोन
१७ का पुत्र एलीआब था। तब निवास उतारा गया और
गेर्शोनियों और मरारीयों ने निवास को उठाये हुए कूच
१८ किया फिर रूबेन की छावनी के झंडे का कूच हुआ और
वे भी दल दल होकर चले और उन का सेनापति शदेऊर
१९ का पुत्र एलीसूर था। और शिमोनियों के गोत्र का
२० सेनापति सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल था। और गादियों
२१ के गोत्र का सेनापति दूएल का पुत्र एल्यासाप था। तब
कहातियों ने पवित्र वस्तुओं को उठाये हुए कूच किया
और उन के पहुंचने लों गेर्शोनियों और मरारीयों ने निवास
२२ को खड़ा किया। फिर एप्रैमियों की छावनी के झंडे का
कूच हुआ और वे भी दल दल होकर चले और उन का
२३ सेनापति अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा था। और मन-
श्शेइयों के गोत्र का सेनापति पदासूर का पुत्र गम्लीएल
२४ था। और बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी
२५ का पुत्र अबीदान था। फिर दानियों की छावनी जो सब
छावनियों के पीछे थी उस के झंडे का कूच हुआ और वे
भी दल दल होकर चले और उन का सेनापति अम्मीशद्दै
२६ का पुत्र अहीएजेर था। और आशेरियों के गोत्र का
२७ सेनापति ओक्रान का पुत्र पगीएल था। और नप्तालीयों
के गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा था।
२८ इस्राएलियों के कूच दल बांध के ऐसे ही होते थे॥
२९ और मूसा ने अपने ससुर रूएल मिद्यानी के पुत्र होबाब
से कहा हम लोग उस स्थान की यात्रा करते हैं जिस के
विषय यहोवा ने कहा है कि मैं उसे तुम को दूंगा सो तू भी
हमारे संग चल और हम तेरी भलाई करेंगे क्योंकि यहोवा
३० ने इस्राएल के विषय भला ही कहा है। होबाब ने उस से
कहा मैं न जाऊंगा मैं अपने देश और कुटुम्बियों में लौट
३१ जाऊंगा। फिर मूसा ने कहा हम को न छोड़ क्योंकि हमें
जंगल में कहां कहां डेरा खड़ा करना चाहिये यह तुझे तो
३२ मालूम होगा तू हमारे लिये आंखों का काम देना। और
यदि तू हमारे संग चले तो निश्चय जो भलाई यहोवा
हम से करे उसी के अनुसार हम भी तुझ से करेंगे॥
३३ सो इस्राएलियों ने यहोवा के पर्वत से कूच करके
तीन दिन की यात्रा की और उन तीनों दिनों के भाग
में यहोवा की वाचा का संदूक उन के लिये विश्राम का
स्थान ढूंढ़ता हुआ उन के आगे आगे चलता रहा।
३४ और जब वे छावनी के स्थान से कूच करते तब दिन भर
३५ यहोवा का बादल उन के ऊपर छाया रहता था। और
जब जब संदूक का कूच होता तब तब मूसा यह कहा
करता था कि हे यहोवा उठ और तेरे शत्रु तितर बितर
३६ हों और तेरे बैरी तेरे साम्हने से भाग जाएं। और जब जब
वह ठहर जाता तब तब मूसा कहा करता था कि हे यहोवा
इस्राएल के हजारों हजार के बीच लौटकर आ॥

(इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना और इस का दण्ड भोगना)

११. फिर वे लोग कुड़कुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे सो यहोवा
ने सुना और उस का कोप भड़का और यहोवा की ओर से
आग उन में जल उठी और जो छावनी के किनारे पर
२ थे उन को भस्म कर डाला। तब लोग मूसा के पास
जाकर चिल्लाये और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की तब
३ वह आग बुझ गई। सो उस स्थान का नाम तबेरा[२] पड़ा
क्योंकि यहोवा की ओर से आग उन में जली थी॥
४ फिर जो मिली जुली भीड़ उन के साथ थी वह
अति तृष्णा करने लगी और इस्राएली भी फिर रोने और
यह कहने लगे कि हमें मांस खाने को कौन देगा।
५ हमें वे मछलियां तो सुधि आती हैं जो हम मिस्र में
सेंतमेंत खाया करते थे और वे खीरे और खरबूजे और
६ गन्दने और प्याज और लहसुन भी। पर अब हमारा जी
ऊब गया है यहां इस मान को छोड़ और कुछ देख नहीं
७ पड़ता। मान तो धनिये के समान था और उस का रंग
८ मोती का सा था। लोग इधर उधर जा उसे बटोरके
चक्की में पीसते वा ओखली में कूटते थे फिर तसले में
सिझाते और उस के फुलके बनाते थे और उस का स्वाद
९ तेल में बने हुए पूए का सा था। और रात को जब
छावनी में ओस पड़ती तब उस के साथ मान भी पड़ता
१० था। जब घराने घराने के लोग अपने अपने डेरे के
द्वार पर रोते रहे तब यहोवा का कोप बहुत भड़का
११ और मूसा ने भी सुनकर बुरा माना। सो मूसा ने
यहोवा से कहा तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों
करता है और क्या कारण है कि मैं ने तेरी दृष्टि में
अनुग्रह नहीं पाया कि तू ने इन सारे लोगों का भार
१२ मुझ पर डाला है। क्या ये सारे लोग मेरे ही कोख में
पड़े थे क्या मैं ही उन को जना कि तू मुझ से कहे कि

(१) मूल में उन्हों।

(२) अर्थात् जलन।

जैसे पिता दूधपिउवे बालक को अपनी गोद में उठाये हुए चलता है वैसे ही तू इन को उठाये हुए उस देश को ले जा जिस के देने की मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई थी। १३ मुझे इतना मांस कहां से मिले कि इन सब लोगों को दूं ये तो यह कह कर मेरे पास रो रहे हैं कि तू हमें मांस १४ खाने को दे। मैं इन सब लोगों का भार अकेला नहीं १५ संभाल सकता क्योंकि यह मेरे लिये बहुत भारी है। सो जो तू मेरे साथ ऐसा व्यवहार करने चाहता हो तो तेरा इतना अनुग्रह मुझ पर हो कि मुझे मार डाल कि मुझे अपनी दुर्दशा देखनी न पड़े॥

१६ यहोवा ने मूसा से कहा इस्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे कर जिन को तू जानता हो कि वे प्रजा में के पुरनिये और उन के सरदार हैं और मिलापवाले तंबू के पास ले आ कि वे तेरे साथ यहां खड़े १७ हों। तब मैं उतरके वहां तुझ से बातें करूंगा और जो आत्मा तुझ पर है उस में से लेकर उन में समवाऊंगा सो वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाये रहेंगे और तुझे १८ उस को अकेले उठाना न पड़ेगा। और लोगों से कह कल के लिये अपने को पवित्र कर रक्खो तब मांस खाने को मिलेगा क्योंकि तुम यहोवा के सुनते यह कहकर रोये हो कि हमें मांस खाने को कौन देगा हम मिस्र ही में भले १९ थे सो यहोवा तुम को मांस खाने को देगा। तुम एक दिन वा दो वा पांच वा दस वा बीस दिन उसे न खाओगे। २० पर महीने भर उसे खाते रहोगे जब लों वह तुम्हारे नथनों से न निकले और तुम को घिनौना न लगे क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे बीच में है तुच्छ जाना और उस के साम्हने यह कह कर रोये हो कि हम मिस्र से २१ काहे को निकले। मूसा ने कहा जिन लोगों के बीच में हूं उन में से छः लाख तो प्यादे ही हैं और तू ने कहा है कि मांस मैं उन्हें इतना दूंगा कि वे महीने भर उसे खाते रहेंगे। २२ क्या ये सब भेड़ बकरी गाय बैल उन के लिये मारे जाएं कि उन को मांस मिले वा क्या समुद्र की सब मछलियां उन के लिये इकट्ठी की जाएं कि उन को मांस मिले॥

२३ यहोवा ने मूसा से कहा क्या यहोवा की बांह छोटी हो गई है अब तू देखेगा कि मेरा वचन तेरे लिये पूरा २४ होगा कि नहीं। तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाईं और उन के पुरनियों में से सत्तर पुरुष इकट्ठे करके तंबू के चारों ओर खड़े किये। २५ तब यहोवा ने बादल में उतरके मूसा से बातें कीं और जो आत्मा उस पर था उस में से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया और जब वह आत्मा उन पर ठहर गया तब वे नबूवत करने लगे पर फिर कभी न की। २६ पर दो मनुष्य छावनी में रह गये थे जिन में से एक का नाम एलदाद और दूसरे का नाम मेदाद था उन पर भी आत्मा ठहरा वे लिखे हुओं में के थे पर तंबू के पास न गये थे सो वे छावनी में नबूवत करने लगे। २७ तब किसी जवान ने दौड़ के मूसा को बतलाया कि एलदाद और मेदाद छावनी में नबूवत कर रहे हैं। २८ तब नून का पुत्र यहोशू जो मूसा का टहलुआ और उस के बड़े बड़े वीरों में से था[१] उस ने मूसा से कहा हे मेरे स्वामी मूसा उन को बरज। २९ मूसा ने उस से कहा क्या तू मेरे कारण जलता है आहा कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता। ३० तब मूसा इस्राएल के पुरनियों समेत छावनी में चला गया। ३१ तब यहोवा की ओर से एक बयार उठकर समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उस के चारों ओर इतनी इतनी ले आई कि वे इधर उधर एक दिन के मार्ग लों और भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊंचे पर रहीं। ३२ सो लोग उठकर उस दिन दिन भर रात भर और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे जिस ने कम से कम बटोरा उस ने दस होमेर बटोरा और उन्हों ने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया। ३३ मांस उन के मुंह ही में था और वे उसे चाबने न पाये थे कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा और उस ने उन को बहुत बड़ी मार से मारा। ३४ और उस स्थान का नाम किब्रोथत्तावा[२] पड़ा क्योंकि जिन लोगों ने तृष्णा की थी उन को वहां मिट्टी दी गई। ३५ फिर इस्राएली किब्रोथत्तावा से कूच करके हसेरोत में पहुंचे और वहीं रहे॥

(मूसा की श्रेष्ठता का प्रमाण)

१२.

मूसा ने तो एक कूशी स्त्री को ब्याह लिया था सो मरियम और हारून उस की उस ब्याहिता कूशिन के कारण उस की निन्दा २ करने लगे। उन्हों ने कहा क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं क्या उस ने हम से भी बातें नहीं कीं। उन की यह बात यहोवा ने सुनी। ३ मूसा तो पृथिवी भर के रहनेहारे सारे मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र ४ था। सो यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और मरियम से कहा तुम तीनों मिलापवाले तंबू के पास निकल आओ तब वे तीनों निकल आये। ५ तब यहोवा ने बादल के खंभे में उतर कर तंबू के द्वार पर खड़ा होकर हारून और मरियम को बुलाया सो वे दोनों उस के पास ६ निकल गये। तब यहोवा ने कहा मेरी बातें सुनो यदि तुम में कोई नबी हो तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के

(१) मूल में उस के चुने हुओं में से। (२) अर्थात् तृष्णा की कबरें।

द्वारा अपने को प्रगट करूंगा वा स्वप्न में उस से बातें
७ करूंगा । पर मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है, वह तो मेरे
८ सारे घराने में विश्वासयोग्य है । उस से मैं गुप्त रीति से
नहीं पर आम्हने साम्हने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता
हूं और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है सो तुम
९ मेरे दास मूसा की निन्दा करते क्यों न डरे । तब यहोवा
१० का कोप उन पर भड़का और वह चला गया । तब वह
बादल तंबू पर से उठ गया और मरियम कोढ़ से हिम
के समान श्वेत हो गई और हारून ने मरियम की ओर
११ दृष्टि की और देखा कि वह कोढ़िन हो गई है । तब
हारून मूसा से कहने लगा हे मेरे प्रभु हम दोनों ने जो
मूर्खता की बरन पाप भी किया यह पाप हम पर न
१२ लगने दे । उस को मरे हुए के समान न रहने दे जिस
की देह अपनी मा के पेट से निकलते ही अधगली हो ।
१३ सो मूसा ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी कि हे
१४ ईश्वर कृपाकर और उस को चंगा कर । यहोवा ने
मूसा से कहा यदि उस का पिता उस के मुंह पर थूकता
तो क्या सात दिन लों उस को लाज न रहती सो वह
सात दिन लों छावनी से बाहर बन्द रहे उस के पीछे वह
१५ फिर भीतर आने पाए । सो मरियम सात दिन लों छावनी
से बाहर बन्द रही और जब लों मरियम फिर आने न
१६ पाई तब लों लोगों ने कूच न किया । उस के पीछे
उन्हों ने हसेरोत से कूच करके पारान नाम जंगल में
अपने डेरे खड़े किये ॥

(इस्राएलियों के कनान देश में जाने से नाह करने
और इस के दंड पाने का वर्णन)

१३. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, कनान
२ देश जिसे मैं इस्राएलियों को
देता हूं उस का भेद लेने के लिये कितने पुरुषों को भेज
वे उन के पितरों के एक एक गोत्र का एक एक प्रधान
३ पुरुष हो । यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे
पुरुषों को पारान जंगल से भेज दिया जो सब के सब
४ इस्राएलियों के प्रधान थे । उन के नाम ये हैं अर्थात् रूबेन
५ गोत्र में से जक्कूर का पुत्र शम्मू । शिमोन गोत्र में से
६ होरी का पुत्र शापात । यहूदा गोत्र में से यपुन्ने का पुत्र
७ कालेब । इस्साकार गोत्र में से योसेप का पुत्र यिगाल ।
८, ९ एप्रैम गोत्र में से नून का पुत्र होशे । बिन्यामीन गोत्र में
१० से रापू का पुत्र पलती । जबूलून गोत्र में से सोदी का पुत्र
११ गद्दीएल । यूसुफ वंशियों में के मनश्शे गोत्र में से सूसी का
१२ पुत्र गद्दी । दान गोत्र में से गमल्ली का पुत्र अम्मीएल ।
१३, १४ आशेर गोत्र में से मीकाएल का पुत्र सतूर । नप्ताली
१५ गोत्र में से वोप्सी का पुत्र नहबी । गाद गोत्र में से माकी
का पुत्र गूएल । जो पुरुष मूसा ने देश के भेद लेने को १६
भेजे उन के नाम ये ही हैं और नून के पुत्र होशे का नाम
उस ने यहोशू रक्खा । उन को कनान देश के भेद लेने १७
को भेजते समय मूसा ने कहा इधर से अर्थात् दक्षिण
देश होकर जाओ और पहाड़ी देश में जाकर, सारे देश १८
को देख लो कि कैसा है और उस में बसे हुए लोगों को
भी देखो कि वे बलवान् हैं वा निर्बल थोड़े हैं वा बहुत ।
और जिस देश में वे बसे हुए हैं सो कैसा है अच्छा वा १९
बुरा और वे कैसी कैसी बस्तियों में बसे हुए हैं तंबू-
वालियों में कि गढ़वालियों में । और वह देश कैसा है २०
उपजाऊ वा बंजर और उस में वृक्ष हैं वा नहीं और तुम
हियाव बांधे चलो और उस देश की उपज में से कुछ लेते
भी आना । वह समय पहिली पक्की दाखों का था । सो २१
वे चल दिये और सीन नाम जंगल से ले रहोब लों जो
हमात के मार्ग में है सारे देश का भेद लिया । सो वे २२
दक्षिण देश होकर चले और हेब्रोन लों गये वहां अहीमन
शेशै और तल्मै नाम अनाकवंशी रहते थे । हेब्रोन तो
मिस्र के सोअन से सात बरस पहिले बसाया गया था ।
तब वे एशकोल नाम नाले लों गये और वहां से एक २३
डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ ली और दो मनुष्य उसे
एक लाठी पर लटकाये हुए उठा ले गये और वे अनारों
और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले गये । इस्राएली २४
जो वहां से वह दाखों का गुच्छा तोड़ ले आये इस
कारण उस स्थान का नाम एशकोल[१] नाला रक्खा
गया । चालीस दिन के पीछे वे उस देश का भेद लेकर २५
लौट आये, और पारान जंगल के कादेश नाम स्थान में २६
मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली के
पास पहुंचे और उन को और सारी मण्डली को संदेश
दिया और उस देश के फल उन को दिखाये । उन्हों ने २७
मूसा से यह कहकर वर्णन किया कि जिस देश में तू ने
हम को भेजा था उस में हम गये उस में सचमुच दूध
और मधु की धाराएं बहती हैं और उस की उपज में से
यही है । पर उस देश के निवासी बलवान हैं और उस २८
के नगर गढ़वाले और बहुत बड़े हैं और फिर हम ने वहां
अनाकवंशियों को भी देखा । दक्षिण देश में तो अमालेकी २९
बसे हुए हैं और पहाड़ी देश में हित्ती यबूसी और
एमोरी रहते हैं और समुद्र के तीर तीर और यर्दन नदी
के तीर तीर कनानी बसे हुए हैं । पर कालेब ने मूसा के ३०
साम्हने प्रजा के लोग को चुप कराने की मनसा से
कहा हम अभी चढ़के उस देश को अपना कर लें क्योंकि
निःसंदेह हम में ऐसा करने की शक्ति है । पर जो पुरुष ३१

(१) अर्थात् दाखों का गुच्छा ।

उस के संग गये थे उन्हों ने कहा उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है क्योंकि वे हम से बलवान् हैं। ३२ बरन उन्हों ने इस्राएलियों के साम्हने उस देश की जिस का भेद उन्हों ने लिया था यह कहकर निन्दा भी की कि वह देश जिस का भेद लेने को हम गये थे ऐसा है जो अपने निवासियों को निगल जाता है और जितने पुरुष हम ने उस में देखे सो सब के सब बड़े डील डाल के हैं। ३३ फिर हम ने वहां नपीलों को अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा और हम अपने लेखे में फंगे के समान ठहरे और ऐसे ही उन के भी लेखे में॥

१४. **तब** सारी मण्डली चिल्ला उठी और रात को वे लोग रोते रहे। २ और सब इस्राएली मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने लगे और सारी मण्डली उन से कहने लगी कि भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते वा इस जंगल में मर जाते। ३ और यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है हमारी स्त्रियां और बालबच्चे तो लूट में चले जाएंगे क्या मिस्र में लौट जाना हमारे लिये अच्छा न होगा। ४ फिर वे आपस में कहने लगे आओ हम किसी को अपना प्रधान ठहराके मिस्र को लौट जाएं। ५ सो मूसा और हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली के साम्हने मुंह के बल गिरे। ६ और नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब जो देश के भेद लेनेहारों में से थे सो अपने अपने ७ वस्त्र फाड़कर, इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे जिस देश का भेद लेने को हम इधर उधर घूम कर आये हैं सो अत्यन्त उत्तम देश है। ८ यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो तो हम को उस देश में जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं पहुंचाकर उस को हमें देगा। ९ इतना हो कि तुम यहोवा के विरुद्ध दंगा न करो और न उस देश के लोगों से डरो क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे छाया उन के ऊपर से हट गई है और यहोवा हमारे संग है उन से न डरो। १० तब सारी मण्डली उन पर पत्थरवाह करने को बोल उठी। तब यहोवा का तेज मिलापवाले तंबू में सब इस्राएलियों को दिखाई दिया॥

११ तब यहोवा ने मूसा से कहा वे लोग कब लों मेरा तिरस्कार करते रहेंगे और मेरे सब आश्चर्यकर्म्म देखने पर १२ भी कब लों मुझ पर विश्वास न करेंगे। मैं उन्हें मरी से मारूंगा और उन के निज भाग उन को न दूंगा और तुझ से एक जाति उपजाऊंगा जो उन से बड़ी और बलवन्त होगी। १३ मूसा ने यहोवा से कहा तब तो मिस्री जिन के बीच से तू अपना सामर्थ्य दिखाकर इन लोगों को निकाल ले आया है १४ सो इसे सुनकर, इस देश के निवासियों से कहेंगे। उन्हों ने तो यह सुना होगा कि यहोवा उन लोगों के बीच रहता और प्रत्यक्ष दिखाई देता और तेरा बादल उन के ऊपर ठहरा रहता है और दिन को बादल के खंभे में और रात को आग के खंभे में होकर उन के आगे आगे चला करता है। १५ सो यदि तू इन लोगों को एक ही बार में मार डाले तो जिन जातियों ने तेरी कीर्त्ति सुनी है सो कहेंगी कि, १६ यहोवा उन लोगों को उस देश में जिसे उस ने उन्हें देने की किरिया खाई थी पहुंचा न सका इस कारण उस ने उन्हें जंगल में घात कर डाला है। १७ सो अब प्रभु के सामर्थ्य की महिमा तेरे इस कहने के अनुसार हो कि, १८ यहोवा कोप करने में धीरजवन्त अति करुणामय और अधर्म्म और अपराध का क्षमा करनेहारा है वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा और पितरों के अधर्म्म का दण्ड उन के बेटों और पोतों और परपोतों को देनेहारा है। १९ अब इन लोगों के अधर्म्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार और जैसे तू मिस्र से ले यहां लों क्षमा करता आया है वैसे ही इसे क्षमा कर। २० यहोवा ने कहा तेरी बात के अनुसार मैं क्षमा तो करता हूं। २१ पर मेरे जीवन की सोंह सचमुच सारी पृथिवी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी। २२ उन सब लोगों ने जो मेरी महिमा और मिस्र और जंगल में मेरे किये हुए आश्चर्य कर्म्म देखने पर भी अब दस बेर मेरी परीक्षा की और मेरी बातें नहीं मानीं, २३ इस लिये जिस देश के विषय मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई उस को वे कभी देखने न पाएंगे अर्थात् जितनों ने मेरा तिरस्कार किया है उन में से कोई भी उसे देखने न पाएगा। २४ पर इस कारण से कि मेरे दास कालेब के साथ और ही आत्मा है और वह पूरी रीति से मेरे पीछे हो लिया है मैं उस को उस देश में जिस में वह हो आया है पहुंचाऊंगा और उस का वंश उस देश का अधिकारी होगा। २५ अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं सो कल तुम घूम कर कूच करो और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २७ यह बुरी मण्डली मुझ पर कुड़कुड़ाती रहती है उस को मैं कब लों सहता रहूं इस्राएली जो मुझ पर कुड़कुड़ाते रहते हैं उन का यह कुड़कुड़ाना मैं ने तो सुना है। २८ सो उन से कह कि यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह जो बात तुम ने मेरे सुनते कही है निःसंदेह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ करूंगा। २९ तुम्हारी लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी और तुम सब में से बीस बरस की वा उस से अधिक अवस्था के जितने गिने गये थे

३० और मुझ पर कुड़कुड़ाये हैं, उन में से यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा जिस के विषय मैं ने किरिया खाई[१]
३१ कि तुम को उस में बसाऊंगा। पर तुम्हारे बालबच्चे जिन के विषय तुम ने कहा है कि ये लूट में चले जाएंगे उन को मैं उस देश में पहुंचा दूंगा और व उस देश को
३२ जान लेंगे जिस को तुम ने तुच्छ जाना है। पर तुम लोगों
३३ की लोथें इस जंगल में पड़ी रहेंगी। और जब लों तुम्हारी लोथें जंगल में न गल जाएं तब लों अर्थात् चालीस बरस लों तुम्हारे लड़केबाले जंगल में तुम्हारे व्यभिचार
३४ का फल भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे। जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे अर्थात् चालीस दिन उन की गिनती के अनुसार दिन पीछे एक बरस अर्थात् चालीस बरस लों तुम अपने अधर्म्म का दण्ड उठाये रहोगे और जान
३५ लोगे कि मेरा नटना क्या है। मैं यहोवा यह कह चुका हूं कि इस बुरी मण्डली के लोग जो मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं इसी जंगल में मर मिटेंगे और निःसन्देह ऐसा ही करूंगा
३६ भी। तब जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश के भेद लेने के लिये भेजा था और उन्हों ने लौट कर उस देश की नामधराई करके सारी मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिये उसकाया
३७ था, उस देश की वे नामधराई करनेहारे पुरुष यहोवा के
३८ मारने से उस के साम्हने मर गये। पर देश के भेद लेनेहारे पुरुषों में से नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र
३९ कालेब जीते रहे। तब मूसा ने ये बातें सब इस्राएलियों
४० को कह सुनाईं और वे बहुत विलाप करने लगे। और वे बिहान को सबेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे कि हम ने पाप किया है पर अब तैयार हैं और उस स्थान को जाएंगे जिस के विषय यहोवा ने
४१ वचन दिया था। तब मूसा ने कहा तुम यहोवा की आज्ञा
४२ का उल्लंघन क्यों करते हो यह सुफल न होगा। यहोवा तुम्हारे बीच नहीं है सो मत चढ़ो नहीं तो शत्रुओं से
४३ हार जाओगे। वहां तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं सो तुम तलवार से मारे जाओगे तुम यहोवा को छोड़ कर फिर गये हो इस लिये वह तुम्हारे संग न रहेगा।
४४ पर वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये पर यहोवा की वाचा का संदूक और मूसा छावनी के बीच
४५ से न हटे। तब उस पहाड़ पर रहनेहारे अमालेकी और कनानी उतरके होर्मा लों उन्हें घात करते गये॥

(अन्नबलियों और अर्घों की विधि)

१ **१५. फिर** यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि जब तुम
२ अपने निवास के देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देता हूं, और
३ यहोवा के लिये क्या होमबलि क्या मेलबलि कोई हव्य चढ़ावो चाहे वह विशेष मन्नत पूरी करने का हो चाहे स्वेच्छाबलि का हो चाहे तुम्हारे नियत समयों में का हो कि वह चाहे गाय बैल चाहे भेड़ बकरियों में का हो जिस से
४ यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध हो, तब उस होमबलि वा मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे पीछे यहोवा के लिये चौथाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, और चौथाई हीन दाखमधु अर्घ करके
५ देना। और मेढ़े पीछे तिहाई हीन तेल से सना हुआ एपा
६ का दो दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, और उस
७ का अर्घ यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा तिहाई हीन
८ दाखमधु देना। और जब तू यहोवा को होमबलि वा किसी विशेष मन्नत पूरी करने के लिये बलि वा मेलबलि करके
९ बछड़ा चढ़ाए, तब बछड़े का चढ़ानेहारा उस के संग आध हीन तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवां अंश मैदा
१० अन्नबलि करके चढ़ाए। और उसका अर्घ आध हीन दाखमधु चढ़ाए वह यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा
११ हव्य होगा। एक एक बछड़े वा मेढ़े वा भेड़ के बच्चे वा
१२ बकरी के बच्चे के साथ इसी रीति चढ़ाया जाए। तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो उसी गिनती के अनुसार
१३ एक एक के साथ ऐसा किया करना। जितने देशी हों सो यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हव्य चढ़ाते समय ये
१४ काम इसी रीति से किया करें। और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो वा तुम्हारी किसी पीढ़ी में तुम्हारे बीच कोई रहनेहारा हो और वह यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हव्य चढ़ाना चाहे तो जैसे तुम करोगे
१५ वैसे हो वह भी करे। मण्डली के लिये अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेहारे परदेशी दोनों के लिये एक ही विधि हो तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे कि जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लेखे
१६ ठहरता है। तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेहारे परदेशियों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम हो॥

१७, १८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना कि जब तुम उस देश में पहुंचो जहां मैं
१९ तुम को लिये जाता हूं, और उस देश की उपज का अन्न खाओ तब यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट चढ़ाया करो।
२० अपने पहिले गूंधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढ़ाना जैसे तुम खलियान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उस को भी उठाया
२१ करना। अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने पहिले गूंधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया करना॥

(१) मूल में हाथ उठाया।

(अनजाने और जान बूझ के किये हुए पापों का भेद)

२२ फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से २३ करो, अर्थात् जिन्हें यहोवा ने मूसा के द्वारा तुम को दिया जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा और आगे की तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में उस दिन से उस ने जितनी आज्ञाएं २४ दी हैं, तब यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिन जाने हुआ हो तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा होमबलि करके एक बछड़ा और उस के संग नियम के अनुसार उस का अन्नबलि और अर्घ २५ चढ़ाए और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए। तब याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करे और उन को क्षमा की जायगी क्योंकि उन का पाप भूल से हुआ और उन्हों ने अपनी भूल के लिये अपना चढ़ावा अर्थात् यहोवा के लिये हव्य और अपना पापबलि उस के २६ साम्हने चढ़ाया। सो इस्राएलियों की सारी मण्डली का और उस के बीच रहनेवाले परदेशी का भी वह पाप क्षमा किया जाएगा क्योंकि वह सब लोगों के अनजान में २७ हुआ। फिर यदि कोई प्राणी भूल से पाप करे तो वह २८ बरस दिन की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए। और याजक भूल से पाप करनेहारे प्राणी के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे सो इस प्रायश्चित्त के कारण उस का २९ वह पाप क्षमा किया जाएगा। जो कोई भूल से कुछ करे चाहे वह इस्राएलियों में देशी हो चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर रहता हो सब के लिये तुम्हारी एक ही ३० व्यवस्था हो। पर क्या देशी क्या परदेशी जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे सो यहोवा का अनादर करनेहारा ठहरेगा और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया ३१ जाए। वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता और उस की आज्ञा का टालनेहारा है इस लिये वह प्राणी निश्चय नाश किया जाए उस का अधर्म्म उसी के सिर पड़ेगा॥

३२ जब इस्राएली जंगल में रहते थे तब किसी विश्राम-३३ दिन में एक मनुष्य लकड़ी बीनता हुआ मिला। सो जिन को वह लकड़ी बीनता हुआ मिला वे उस को मूसा और ३४ हारून और सारी मण्डली के पास ले गये। उन्हों ने उस को हवालात में रक्खा क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना ३५ चाहिये सो प्रगट नहीं किया गया था। तब यहोवा ने मूसा से कहा वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पत्थरवाह ३६ करें। सो सारी मण्डली के लोगों ने उस को छावनी से बाहर ले जाकर पत्थरवाह किया और वह मर गया जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी॥

३७,३८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह कि अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने वस्त्रों के कोर पर झालर लगाया करना और एक एक कोर की झालर पर ३९ एक नीला फीता लगाया करना। और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे कि जब जब उसे देखो तब तब यहोवा की सारी आज्ञाएं तुम को स्मरण आएं जिस से उन को मानो और इस रीति तुम आगे को अपने अपने मन और अपनी अपनी दृष्टि के वश होके व्यभिचारिन की ४० नाईं ऐसे न फिरा करो जैसे अब लों फिरते आये हो, पर तुम यहोवा की सब आज्ञाओं को स्मरण करके मानो और ४१ अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बने रहो। मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया है, कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

(कोरह दातान और अबीराम का मचाया हुआ बलवा)

१६. **कोरह** जो लेवी का परपोता कहात का पोता और यिसहार का पुत्र था वह एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम और पेलेत २ के पुत्र ओन इन तीनों रूबेनियों से मिलकर, मण्डली के अढ़ाई सौ प्रधान जो सभासद और नामी थे उन को संग ३ लिया। और वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए और उन से कहने लगे तुम बस करो क्योंकि सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है और यहोवा उन के बीच रहता है सो तुम यहोवा की मण्डली से ऊंचे पदवाले ४ क्यों बन बैठे हो। यह सुनकर मूसा अपने मुंह के बल ५ गिरा। फिर उस ने कोरह और उस की सारी मण्डली से कहा बिहान को यहोवा जता देगा कि मेरा कौन है और पवित्र कौन है और उस को अपने समीप बुला लेगा जिस को वह आप चुन ले उसी को अपने समीप बुला भी ६ लेगा। हे कोरह तू अपनी सारी मण्डली समेत यह कर ७ अर्थात् तुम धूपदान ठीक करो। और कल उन में आग रखकर यहोवा के साम्हने धूप देना तब जिस को यहोवा चुन ले वही पवित्र ठहरेगा हे लेवीयो तुम ही बस करो। ८, ९ फिर मूसा ने कोरह से कहा हे लेवीयो सुनो। क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है कि इस्राएल के परमेश्वर ने तुम को इस्राएल की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवकाई करने और मण्डली के साम्हने खड़े होकर उस १० की भी सेवा टहल करने को अपने समीप बुला लिया, और तुझे और तेरे सब लेवीय भाइयों को भी अपने समीप बुला ११ लिया है फिर तुम याजक पद के भी खोजी हो। और इसी कारण तू ने अपनी सारी मण्डली को यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी किया है। हारून क्या है कि तुम उस पर कुड़कुड़ाते १२ हो। तब मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम

को बुलवा भेजा और उन्हों ने कहा हम तेरे पास नहीं
१३ आने के। क्या यह एक छोटी बात है कि तू हम को ऐसे
देश से जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं इस
लिये निकाल लाया है कि हम जंगल में मार डाले फिर
१४ क्या तू हमारे ऊपर प्रधान भी बन बैठा है। फिर तू हमें
ऐसे देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं नहीं
ले आया और न हमें खेतों और दाख की बारियों के
अधिकारी किया क्या तू इन लोगों की आंखों में धूलि[१]
१५ डालेगा हम नहीं आने के। तब मूसा का कोप बहुत
भड़क उठा और उस ने यहोवा से कहा उन लोगों की
भेंट की ओर दृष्टि न कर मैं ने तो उन से एक गदहा
नहीं लिया और न उन में से किसी की हानि की है।
१६ तब मूसा ने कोरह से कहा कल तू अपनी सारी मण्डली
को साथ लेकर हारून के साथ यहोवा के साम्हने हाजिर
१७ होना। और तुम सब अपना अपना धूपदान लेकर उन
में धूप देना फिर अपना अपना धूपदान जो सब समेत
अढ़ाई सौ होंगे यहोवा के साम्हने ले जाना विशेष करके
१८ तू और हारून अपना अपना धूपदान ले जाना। सो उन्हों
ने अपना अपना धूपदान ले उन में आग रख उन पर
धूप दिया और मूसा और हारून के साथ मिलापवाले तंबू
१९ के द्वार पर खड़े हुए। और कोरह ने सारी मण्डली को उन
के विरुद्ध मिलापवाले तंबू के द्वार पर इकट्ठा कर लिया
तब यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया॥
२०, २१ तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, उस
मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ कि मैं उन्हें पल
२२ भर में भस्म कर डालूं। तब वे मुंह के बल गिरके कहने
लगे हे ईश्वर हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर
एक पुरुष पाप करे तो क्या तू सारी मण्डली पर भी कोप
२३, २४ करेगा। यहोवा ने मूसा से कहा, मण्डली के लोगों से
कह कि कोरह दातान और अबीराम के घरों के आसपास
२५ से हट जाओ। तब मूसा उठकर दातान और अबीराम
के पास गया और इस्राएलियों के पुरनिये उस के पीछे
२६ हो लिये। उस ने मण्डली के लोगों से कहा तुम उन दुष्ट
मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ और उन की कोई
वस्तु न छूओ न हो कि तुम भी उन के सब पापों में
२७ फंस के मिट जाओ। सो वे कोरह दातान और अबीराम
के घरों के आसपास से हट गये पर दातान और अबीराम
निकलकर अपनी स्त्रियों बेटों और बालबच्चों समेत अपने
२८ अपने डेरे के द्वार पर खड़े हुए। तब मूसा ने कहा इस
से तुम जान लोगे कि मैं ने ये सब काम अपने मन से
२९ नहीं यहोवा ही की ओर से किये। यदि उन मनुष्यों की

(१) मूल में आंखें फोड़।

मृत्यु और सब मनुष्यों की सी हो और उन का दण्ड और
सब मनुष्यों का सा हो तब जानो कि मैं यहोवा का भेजा
३० नहीं हूं। पर यदि यहोवा अपनी अपूर्व्व शक्ति प्रगट करे[१]
और पृथिवी अपना मुंह पसारकर उन को और उन का
सब कुछ निगल ले और जीते जी अधोलोक में जा पड़ें
तो समझ लो कि उन मनुष्यों ने यहोवा का तिरस्कार
३१ किया है। वह ये सब बातें कह ही चुका था कि उन
३२ लोगों के पांव तले की भूमि फट गई। और पृथिवी ने
मुंह पसारकर उन को और उन के घरों और कोरह के
यहां के सब मनुष्यों और उन की सारी संपत्ति को भी निगल
३३ लिया। वे और जितने उन के यहां के थे सो जीते ही
अधोलोक में जा पड़े और पृथिवी ने उन को ढांप लिया
३४ और वे मण्डली के बीच में से नाश हुए। और जितने
इस्राएली उन के चारों ओर थे सो उन का चिल्लाना सुन
यह कहते हुए भाग गये कि कहीं पृथिवी हम को भी न
३५ निगल ले। तब यहोवा के पास से आग निकली और
उन अढ़ाई सौ धूप चढ़ानेहारों को भस्म कर डाला॥

३६, ३७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, हारून याजक के पुत्र
एलाजार से कह कि उन धूपदानों को आग में से उठा
ले और आग को उधर छितरा दे क्योंकि वे पवित्र हैं।
३८ जिन्हों ने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि की है उन
के धूपदानों के पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने को बनाए
जाएं क्योंकि वे उन्हें यहोवा के साम्हने ले आये तो थे
इस से वे पवित्र ठहरे हैं इस रीति वे इस्राएलियों के
३९ लिये चिन्हानी हो जाएंगे। सो एलाजार याजक ने उन
पीतल के धूपदानों को जिन में उन जले हुए मनुष्यों ने
धूप चढ़ाया था लेकर उनके पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने
४० के लिये बनवा दिये, कि इस्राएलियों को इस बात का
स्मरण रहे कि कोई दूसरा जो हारून के वंश का न हो
यहोवा के साम्हने धूप चढ़ाने को समीप न जाए न हो
कि वह भी कोरह और उस की मण्डली के समान नाश
हो जाए जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उस को आज्ञा
दी थी॥

४१ दूसरे दिन इस्राएलियों की सारी मण्डली यह कहकर
मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने लगी कि यहोवा की प्रजा
४२ को तुम ने मार डाला है। और जब मण्डली के लोग मूसा
और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए तब उन्हों ने मिलापवाले
तंबू की ओर दृष्टि की और देखा कि बादल ने उसे छा
४३ लिया और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है। तब मूसा और
४४ हारून मिलापवाले तंबू के साम्हने गये। तब यहोवा ने मूसा
से कहा तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से उठ जाओ

(१) मूल में यहोवा सृष्टि सिरजे।

४५ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूं, तब वे मुंह के ४६ बल गिरे। और मूसा ने हारून से कहा धूपदान को ले उस में वेदी पर से आग रख उस पर धूप दे मण्डली के पास फुरती से जाकर उस के लिये प्रायश्चित्त कर क्योंकि यहोवा का कोप भड़का है[१] मरी फैलने लगी ४७ है। मूसा की आज्ञा के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा गया और यह देखकर कि लोगों में मरी फैलने लगी है उस ने धूप धरके लोगों के ४८ लिये प्रायश्चित्त किया। वह तो मरे और जीते हुओं के ४९ बीच खड़ा हुआ सो मरी थम गई। और जो कोरह के संग भागी होकर मर गये थे उन्हें छोड़ जो लोग इस ५० मरी से मर गये सो चौदह हजार सात सौ थे। जब मरी थम गई तब हारून मिलापवाले तंबू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया॥

(याजकों और लेवीयों की मर्य्यादा और कर्तव्य कर्म्म)

१७. तब यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से बातें करके उन के पितरों के घरानों के अनुसार उन के सब प्रधानों के पास से एक एक छड़ी ले और उन बारह छड़ियों में से एक एक पर ३ एक एक के मूल पुरुष का नाम लिख। और लेवीयों की छड़ी पर हारून का नाम लिख क्योंकि इस्राएलियों के पितरों के घरानों के एक एक मुख्य पुरुष की एक एक ४ छड़ी होगी। और उन छड़ियों को मिलापवाले तंबू में साक्षीपत्र के आगे जहां मैं तुम लोगों से मिला करता हूं ५ रख दे। और जिस पुरुष को मैं चुनूंगा उस की छड़ी कलियाएगी और इस्राएली जो तुम पर कुड़कुड़ाते हैं ६ यह कुड़कुड़ाना मैं अपने पर से दूर करूंगा। सो मूसा ने इस्राएलियों से यह बात कही और उन के सब प्रधानों ने अपने अपने लिये अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार एक एक छड़ी दी सो बारह छड़ी हुई और ७ उन की छड़ियों में हारून की भी छड़ी थी। उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तंबू में यहोवा के साम्हने रख ८ दिया। दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तंबू में गया तो क्या देखा कि हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये थी कलियाई अर्थात् उस में कलियां लगीं और ९ फूल भी फूले और बादाम पके हैं। सो मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के साम्हने से निकाल सब इस्राएलियों के पास ले गया और उन्हों ने अपनी अपनी छड़ी १० पहिचान कर ले ली। फिर यहोवा ने मूसा से कहा हारून की छड़ी को साक्षीपत्र के साम्हने फिर धर कि यह उन दंगैतों के लिए चिन्हानी होने को रक्खी रहे कि तू उन का कुड़कुड़ाना मुझ पर से दूर करके आगे को रोक रक्खे, न हो कि वे मर जाएं। ११ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही मूसा ने किया॥

१२ तब इस्राएली मूसा से कहने लगे देख हमारा प्राण निकल गया हम नाश हुए हम सब के सब नाश १३ हुए। जो कोई यहोवा के निवास के समीप जाता सो मारा जाता है क्या हम सब मर के अन्त हो जाएंगे॥

१८. फिर यहोवा ने हारून से कहा पवित्रस्थान में के अधर्म्म का भार तू ही अपने पुत्रों और अपने पिता के घराने समेत उठाना और अपने याजककर्म्म के अधर्म्म का भार भी तू ही अपने पुत्रों २ समेत उठाना। और लेवी का गोत्र अर्थात् तेरे मूलपुरुष के गोत्रवाले जो तेरे भाई हैं उन को भी अपने साथ समीप ले आ और वे तुझ से मिल जाएं और तेरी सेवा टहल किया करें पर साक्षीपत्र के तंबू के साम्हने तू और ३ तेरे पुत्र आया करें। जो तुझे सौंपा गया है उस की और सारे तंबू की भी वे रक्षा किया करें पर पवित्रस्थान के पात्रों के और वेदी के समीप न आएं न हो कि वे और ४ तुम लोग भी मर जाओ। सो वे तुझ से मिल जाएं और मिलापवाले तंबू में की सारी सेवकाई की वस्तुओं की रक्षा किया करें पर जो तेरे कुल का न हो, सो तुम ५ लोगों के समीप न आने पाए। और पवित्रस्थान और वेदी की रखवाली तुम ही किया करो जिस से इस्राएलियों ६ पर फिर कोप न भड़के। पर मैं ने आप तुम्हारे लेवीय भाइयों को इस्राएलियों के बीच से ले लिया है और वे मिलापवाले तंबू की सेवा करने के लिये तुम को और यहोवा ७ को भी दिये गये हैं। पर वेदी की और बीचवाले पर्दे के भीतर की बातों की सेवकाई के लिये तू और तेरे पुत्र अपने याजकपद की रक्षा करना सो तुम ही सेवा किया करना क्योंकि मैं तुम्हें याजकपद की सेवकाई दान करता हूं और जो तेरे कुल का न हो सो यदि समीप आए तो मार डाला जाए॥

८ फिर यहोवा ने हारून से कहा सुन मैं आप तुझ को उठाई हुई भेंटें सौंप देता हूं अर्थात् इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुएं जितनी हों उन्हें मैं तेरा अभिषेकवाला भाग जानकर तुझे और तेरे पुत्रों को सदा का हक करके दे ९ देता हूं। जो परमपवित्र वस्तुएं आग में होम न की जाएंगी सो तेरी ठहरें अर्थात् इस्राएलियों के सब चढ़ावों में से उन के सब अन्नबलि सब पापबलि और सब दोषबलि जो वे मुझ को दें सो तेरे और तेरे पुत्रों के लिये परमपवित्र १० ठहरें। उन को परमपवित्र वस्तु जानकर खाया करना उन को हर एक पुरुष खा सकता है वे तेरे लिये पवित्र

(१) मूल में यहोवा के सम्मुख से क्रोध निकला है।

११ हैं। फिर ये वस्तुएं भी तेरी ठहरें अर्थात् जितनी भेंटें इस्राएली हिलाने के लिये दें उन को मैं तुझे और तेरे बेटे बेटियों को सदा का हक करके दे देता हूं तेरे घराने में
१२ जितने शुद्ध हों सो उन्हें खा सकेंगे। फिर उत्तम से उत्तम टटका तेल और उत्तम से उत्तम नया दाखमधु और गोहूं अर्थात् इन में की जो पहिली उपज वे यहोवा को
१३ दें सो मैं तुझ को देता हूं। उन के देश की सब प्रकार की पहिली पहिली उपज जो वे यहोवा के लिये ले आएं सो तेरी ठहरें तेरे घराने में जितने शुद्ध हों सो उन्हें
१४ खा सकेंगे। इस्राएलियों में जो कुछ अर्पण किया जाए
१५ वह भी तेरा ठहरे। सब प्राणियों में से जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे हों जिन्हें लोग यहोवा के लिये चढ़ाएं चाहे मनुष्य के चाहे पशु के पहिलौठे हों सो सब तेरे ठहरें पर मनुष्यों और अशुद्ध पशुओं के पहिलौठों
१६ को दाम लेकर छोड़ देना। और जिन्हें छुड़ाना हो जब वे महीने भर के हों तब उन के लिये अपने ठहराये हुए मोल के अनुसार अर्थात् पवित्रस्थान के बीस गेरा के
१७ शेकेल के लेखे से पांच शेकेल लेके उन्हें छोड़ना। पर गाय वा भेड़ी वा बकरी के पहिलौठे को न छोड़ना वे तो पवित्र हैं उन के लोहू को वेदी पर छिड़क देना और उन की चरबी को हव्य करके जलाना जिस से यहोवा
१८ के लिये सुखदायक सुगन्ध हो। पर उन का मांस तेरा ठहरे हिलाई हुई छाती और दाहिनी जांघ का नाईं वह
१९ भी तेरा ठहरे। सो पवित्र वस्तुओं की जितनी भेंटें इस्राएली यहोवा को दें उन सभों को मैं तुझे और तेरे बेटे बेटियों को सदा का हक करके दे देता हूं यह तो तेरे और तेरे वंश के लिये यहोवा की[१] सदा की लोनवाली वाचा ठहरी है।
२० फिर यहोवा ने हारून से कहा इस्राएलियों के देश में तेरा कोई भाग न होगा और न उन के बीच तेरा कोई अंश होगा उन के बीच तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूं॥
२१ फिर मिलापवाले तंबू की जो सेवा लेवीय करते हैं उस के बदले मैं उन को इस्राएलियों का सब दशमांश
२२ उन का निज भाग कर देता हूं। और आगे को इस्राएली मिलापवाले तंबू के समीप न आएं न हो कि उन को
२३ पाप लगे और वे मर जाएं। पर लेवीय मिलापवाले तंबू की सेवा किया करें और उन के अधर्म्म का भार वे ही उठाया करें यह तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि ठहरे और इस्राएलियों के बीच उन का कोई निज भाग
२४ न हो। क्योंकि इस्राएली जो दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेंट करके देंगे उसे मैं लेवीयों को निज भाग करके देता हूं इस कारण मैं ने उन के विषय कहा है कि इस्राएलियों के बीच कोई भाग उन को न मिले॥

२५, २६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू लेवीयों से कह कि जब जब तुम इस्राएलियों के हाथ से वह दशमांश लो जिसे यहोवा तुम को तुम्हारा निज भाग करके उन से दिलाता है तब तब उस में से यहोवा के लिये एक उठाई हुई
२७ भेंट करके दशमांश का दशमांश देना। और तुम्हारी उठाई हुई भेंट तुम्हारे हित के लिये ऐसी गिनी जाएगी जैसा खलिहान में का अन्न वा रसकुंड में का दाखरस गिना जाता
२८ है। इस रीति तुम भी अपने सब दशमांशों में से जो इस्राएलियों की ओर से लेओ यहोवा को एक उठाई हुई भेंट देना और यहोवा की यह उठाई हुई भेंट हारून याजक
२९ को दिया करना। जितने दान तुम पाओ उन में से हर एक का उत्तम से उत्तम भाग जो पवित्र ठहरा है सो उसे
३० यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट करके पूरी पूरी देना। इस लिये तू लेवीयों से कह कि जब तुम उस में का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो तब यह तुम्हारे लिये खलिहान में के अन्न और रसकुंड के रस के तुल्य गिना जाएगा।
३१ और उस को तुम अपने घरानों समेत सब स्थानों में खा सकते हो क्योंकि मिलापवाले तंबू की जो सेवा तुम करोगे
३२ उस का यह बदला ठहरा है। और जब तुम उस का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो तब उस के कारण तुम को पाप न लगेगा पर इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र न करना न हो कि तुम मर जाओ॥

(लोथ आदि का स्पर्शजन्य अशुद्धता के निवारण का उपाय)

१९. **फिर** यहोवा ने मूसा और हारून से
२ कहा, व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा देता है सो यह है कि तू इस्राएलियों से कह कि मेरे पास एक लाल निर्दोष कलोर ले आओ जिस में कोई भी दोष न हो और जिस पर जूआ कभी
३ न रक्खा गया हो। तब उसे एलाजार याजक को दो और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए और कोई उस
४ को उस के साम्हने बलि करे। तब एलाजार याजक अपनी अंगुली से उस का कुछ लोहू लेकर मिलापवाले
५ तंबू के साम्हने की ओर सात बार छिड़के दे। तब कोई उस कलोर की खाल मांस लोहू और गोबर समेत उस
६ के साम्हने जलाए। और याजक देवदारु की लकड़ी जूफा और लाही रंग का कपड़ा लेकर उस आग में
७ जिस में कलोर जलती हो डाल दे। तब वह अपने वस्त्र धोए और स्नान करे इस के पीछे छावनी में तो
८ आए पर सांझ लों अशुद्ध रहे। और जो मनुष्य उस को जलाए वह भी जल से अपने वस्त्र धोए और

(१) मूल में के साम्हने।

९ स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहे। फिर कोई शुद्ध पुरुष उस कलोर की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े और वह राख इस्राएलियों की मण्डली के लिये अशुद्धता से छुड़ानेहारे जल १० के लिये रक्खी रहे वह तो पापबलि होगी। और जो मनुष्य कलोर की राख बटोरे सो अपने वस्त्र धोए और सांझ लों अशुद्ध रहे। और यह इस्राएलियों के लिये और उन के बीच रहनेहारे परदेशियों के लिये भी ११ सदा की विधि ठहरे। जो किसी मनुष्य की लोथ छुए सो १२ सात दिन लों अशुद्ध रहे। ऐसा मनुष्य तीसरे दिन उस जल से अपने को पाप छुड़ाकर पावन करे और सातवें दिन शुद्ध ठहरे पर यदि वह तीसरे दिन अपने को पाप छुड़ाकर १३ पावन न करे तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा। जो कोई किसी मनुष्य की लोथ छूकर अपने को पाप छुड़ाकर पावन न करे वह यहोवा के निवासस्थान का अशुद्ध करनेहारा ठहरेगा और वह प्राणी इस्राएल में से नाश किया जाए अशुद्धता से छुड़ानेहारा जल जो उस पर न छिड़का गया इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा उस की १४ अशुद्धता उस में बनी रहेगी। यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए तो व्यवस्था यह है कि जितने उस डेरे में रहें वा उस १५ में जाएं सो सब सात दिन लों अशुद्ध रहें। और हर एक खुला हुआ पात्र जिस पर कोई ढकना लगा न हो सो १६ अशुद्ध ठहरे। और जो कोई मैदान में तलवार के मारे हुए को वा अपनी मृत्यु से मरे हुए को वा मनुष्य की हड्डी को वा किसी कबर को छूए सो सात दिन लों अशुद्ध १७ रहे। अशुद्ध मनुष्य के लिये जलाये हुए पापबलि की राख में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल १८ डाला जाए। तब कोई शुद्ध मनुष्य जूफा ले उस जल में बोर के जल को उस डेरे पर और जितने पात्र और मनुष्य उस में हों उन पर छिड़के और हड्डी के वा मारे हुए के वा अपनी मृत्यु से मरे हुए के वा कबर के छूनेहारे पर छिड़के। १९ वह शुद्ध पुरुष तीसरे दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के और सातवें दिन वह उस को पाप छुड़ाकर पावन करे तब वह अपने वस्त्रों को धोकर और २० जल में स्नान करके सांझ को शुद्ध ठहरे। और जो कोई अशुद्ध होकर अपने को पाप छुड़ा कर पावन न कराए वह प्राणी जो यहोवा के पवित्र स्थान का अशुद्ध करनेहारा ठहरेगा इस कारण मण्डली के बीच में से नाश किया जाए अशुद्धता से छुड़ानेहारा जल जो उस पर न छिड़का गया इस से वह अशुद्ध ठहरेगा। और यह उन के लिये २१ सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुड़ानेहारा जल छिड़के सो अपने वस्त्रों को धोए और जिस जन से अशुद्धता से छुड़ानेहारा जल छू जाए वह भी सांझ लों २२ अशुद्ध रहे। और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छुए सो भी अशुद्ध ठहरे और जो प्राणी उस वस्तु को छुए सो भी सांझ लों अशुद्ध रहे॥

(मूसा और हारून का पाप और उस पाप का दंड)

२०. पहिले महीने में सारी इस्राएली मण्डली के लोग सीन नाम जंगल में आ गये और कादेश में रहने लगे और वहां मरियम मर गई २ और वहीं उस को मिट्टी दी गई। वहां मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला सो वे मूसा और हारून के विरुद्ध ३ इकट्ठे हुए। और लोग यह कह कर मूसा से झगड़ने लगे कि भला होता कि हम उस समय मर गये होते जब हमारे ४ भाई यहोवा के साम्हने मर गये। और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आये हो कि हम अपने ५ पशुओं समेत यहां मर जाएं। और तुम ने हम को मिस्र से क्यों निकाल कर इस बुरे स्थान में पहुंचाया है यहां तो बीज वा अंजीर वा दाखलता वा अनार कुछ नहीं है ६ वरन पीने को कुछ पानी भी नहीं है। तब मूसा और हारून मण्डली के साम्हने से मिलापवाले तंबू के द्वार पर जाकर अपने मुंह के बल गिरे और यहोवा का तेज उन ७, ८ को दिखाई दिया। तब यहोवा ने मूसा से कहा, लाठी को ले और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उन के देखते उस ढांग से बातें कर तब वह अपना जल देगी इस प्रकार से तू ढांग में से उन के लिये जल निकाल कर मण्डली के लोगों और उन के ९ पशुओं को पिला। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार १० मूसा ने उस के साम्हने से लाठी को ले लिया। और मूसा और हारून ने मण्डली को उस ढांग के साम्हने इकट्ठा किया तब मूसा ने उन से कहा हे दंगैतो सुनो क्या हम को इस ढांग में से तुम्हारे लिये जल निकालना ११ होगा। तब मूसा ने हाथ उठा कर लाठी ढांग पर दो बार मारी और उस में से बहुत पानी फूट निकला और मण्डली १२ के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे। पर मूसा और हारून से यहोवा ने कहा तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया इसलिये तुम इस मण्डली को उस देश में १३ पहुंचाने न पाओगे जिसे मैं ने उन्हें दिया है। उस सोते का नाम मरीबा पड़ा क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा से झगड़ा किया और वह उन के बीच पवित्र ठहराया गया॥

(एदोमियों का इस्राएलियों को अपने पास होकर चलने से बरजना)

१४ फिर मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे कि तेरा भाई इस्राएल यों कहता है कि हम पर जो

१५ जो क्लेश पड़े हैं सो तू जानता होगा। अर्थात् यह कि हमारे पुरखा मिस्र में गये थे और हम मिस्र में बहुत दिन रहे और मिस्रियों ने हमारे पुरखाओं के साथ और हमारे १६ साथ भी बुरा बर्ताव किया। पर जब हम ने यहोवा की दोहाई दी तब उस ने हमारी सुनी और एक दूत को भेजकर हमें मिस्र से निकाल ले आया है सो अब हम कादेश १७ नगर में हैं जो तेरे सिवाने ही पर है। सो हमें अपने देश में होकर जाने दे हम किसी खेत वा दाख की बारी से होकर न चलेंगे और कूओं का पानी न पीएंगे सड़क सड़क होकर चले जाएंगे और जब लों तेरे देश से बाहर न हो १८ जाएं तब लों न दहिने न बाएं मुड़ेंगे। पर एदोमियों ने उस के पास कहला भेजा कि तू मेरे देश होकर मत जा नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा साम्हना करने को १९ निकलूंगा। इस्राएलियों ने उस के पास फिर कहला भेजा हम सड़क ही सड़क चलेंगे और यदि मैं और मेरे पशु तेरा पानी पीएं तो उस का दाम दूंगा मुझ को और २० कुछ नहीं केवल पांव पांव निकल जाने दे। उस ने कहा तू आने न पाएगा और एदोम बड़ी सेना लेकर भुजबल २१ से उस का साम्हना करने को निकल आया। यों एदोम ने इस्राएल को अपने देश के भीतर होकर जाने देने से नाह किया सो इस्राएल उस की ओर से मुड़ गया॥

(हारून की मृत्यु)

२२ तब इस्राएलियों की सारी मण्डली कादेश से कूच २३ करके होर नाम पहाड़ के पास आ गई। और एदोम देश के सिवाने पर होर पहाड़ में यहोवा ने मूसा और हारून से २४ कहा, हारून अपने लोगों में जा मिलेगा क्योंकि तुम दोनों ने जो मरीबा नाम सोते पर मेरा कहा छोड़कर मुझ से बलवा किया इस कारण वह उस देश में जाने २५ न पाएगा जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है। सो तू हारून और उस के पुत्र एलाजार को होर पहाड़ पर ले २६ चल। और हारून के वस्त्र उतार के उस के पुत्र एलाजार को पहिना तब हारून वहीं मरके अपने लोगों में जा मिलेगा। २७ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया और वे २८ सारी मण्डली के देखते होर पहाड़ पर चढ़ गये। तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारके उस के पुत्र एलाजार को पहिनाये और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया तब २९ मूसा और एलाजार पहाड़ पर से उतर आये। और जब इस्राएल की सारी मण्डली ने देखा कि हारून का प्राण छूट गया है तब इस्राएल के सब घराने के लोग उस के लिये तीस दिन लों रोते रहे॥

(कनानी राजा पर जय)

२१. तब अराद का कनानी राजा जो दक्खिन देश में रहता था यह सुनकर कि जिस मार्ग से वे भेदिये आये थे उसी मार्ग से अब इस्राएली आ रहे हैं इस्राएल से लड़ा और उन में से कितनों को बंधुआ कर लिया। २ तब इस्राएल ने यहोवा से यह कहकर मन्नत मानी कि यदि तू सचमुच उन लोगों को मेरे वश में कर दे तो मैं उन के नगरों ३ को सत्यानाश करूंगा। इस्राएल की यह बात सुनकर यहोवा ने कनानियों को उन के वश में कर दिया सो उन्हों ने उन के नगरों समेत उन को भी सत्यानाश किया इस से उस स्थान का नाम होर्मा[१] रक्खा गया॥

(पीतल का बना हुआ सर्प)

४ फिर उन्हों ने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया इसलिये कि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएं। और लोगों का मन मार्ग के कारण ५ बहुत अधीर हो गया। सो वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे और मूसा से कहा तुम लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आये हो यहां न तो रोटी है और न पानी और हमारा जी इस निकम्मी रोटी ६ से मिचलाता है। सो यहोवा ने उन लोगों में तेज विष वाले[२] सांप भेजे जो उन को डंसने लगे और बहुत से ७ इस्राएली मर गये। तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे हम ने पाप किया है कि हम ने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं यहोवा से प्रार्थना कर कि वह सांपों को हम से दूर करे। तब मूसा ने उन के लिये प्रार्थना ८ की। यहोवा ने मूसा से कहा एक तेज विषवाले[२] सांप की प्रतिमा बनवाकर खंभे पर लटका तब जो सांप से ९ डंसा हुआ उस को देख ले सो जीता बचेगा। सो मूसा ने पीतल का एक सांप बनवाकर खंभे पर लटकाया तब सांप के डंसे हुए जिस जिस ने उस पीतल के सांप की १० ओर निहारा सो सो जीता बच गया। फिर इस्राएलियों ११ ने कूच करके ओबोत में डेरे डाले। और ओबोत से कूच करके अबारीम नाम डीहों में डेरे डाले जो पूरब की ओर १२ मोआब के साम्हने के जंगल में हैं। वहां से कूच करके उन्हों ने जेरेद नाम नाले में डेरे डाले। १३ वहां से कूच करके उन्हों ने अर्नोन नदी जो जंगल में बहती और एमोरियों के देश से निकली है उस की परली ओर डेरे खड़े किये क्योंकि अर्नोन मोआबियों और एमोरियों के बीच होकर मोआब देश का सिवाना ठहरी है। १४ इस

(१) अर्थात् सत्यानाश। (२) मूल में जलते हुए।

कारण यहोवा के संग्राम नाम पुस्तक में यों लिखा है कि
सूपा में वाहेब
और अर्नोन के नाले
१५ और उन नालों की ढाल
जिस की ढाल आर नाम वासस्थान की ओर है
और जो मोआब के सिवाने पर है[१]।

१६ फिर वहां से कूच करके वे बेर लों गये वहां वही कूआं है जिस के विषय यहोवा ने मूसा से कहा था कि उन लोगों को इकट्ठा कर और मैं उन्हें पानी दूंगा॥

१७ उस समय इस्राएल ने यह गीत गाया कि
हे कूए उबल आ उस कूए के विषय गाओ
१८ जिस को हाकिमों ने खोदा
और इस्राएल के रईसों ने
अपने सोंटों और लाठियों से खोद लिया॥

१९ फिर वे जंगल से मत्ताना लों और मत्ताना से
२० नहलीएल लों और नहलीएल से बामोत लों और बामोत से कूच करके उस तराई लों जो मोआब के मैदान में है और पिसगा के उस सिरे लों भी जो यशीमोन की ओर झुका है पहुंच गये॥

(सीहोन और ओग नाम राजाओं का पराजय और उन का देश इस्राएलियों के वश में आना)

२१ तब इस्राएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के
२२ पास दूतों से यह कहला भेजा कि, हमें अपने देश में होकर चलने दे हम मुड़कर किसी खेत वा दाख की बारी में तो न जाएंगे न किसी कूए का पानी पीएंगे और जब लों तेरे देश से बाहर न हो जाएं तब लों सड़क ही
२३ से चले जाएंगे। तौभी सीहोन ने इस्राएल को अपने देश से होकर चलने न दिया बरन अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इस्राएल का साम्हना करने को जंगल में
२४ निकल आया और यहस को आकर उन से लड़ा। तब इस्राएलियों ने उस को तलवार से मार लिया और अर्नोन से यब्बोक नदी लों जो अम्मोनियों का सिवाना था उस
२५ के देश के अधिकारी हो गये। अम्मोनियों का सिवाना तो दृढ़ था। सो इस्राएल ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया और उन में अर्थात् हेशबोन और उस के आसपास के
२६ नगरों में रहने लगे। हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन का नगर था उस ने मोआब के अगले राजा से लड़के
२७ उस का सारा देश अर्नोन लों उस के हाथ से छीन लिया था। इस कारण गूढ़ बात के कहनेहारे कहते हैं कि
हेशबोन में आओ
सीहोन का नगर बसे और दृढ़ किया जाए

(१) मूल में उठंगी है।

२८ क्योंकि हेशबोन से आग
अर्थात् सीहोन के नगर से लौ निकली
जिस से मुआब देश का आर नगर
और अर्नोन के ऊंचे स्थानों के स्वामी भस्म हुए॥
२९ हे मोआब तुझ पर हाय
कमोश देवता की प्रजा नाश हुई
उस ने अपने बेटों को भगेड़ू
और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन की
बंधुई कर दिया॥
३० हम ने उन्हें गिरा दिया है हेशबोन दीबोन लों भी
नाश हुआ है
और हम ने नोपह लों
मेदबा लों भी उजाड़ दिया है॥

३१,३२ सो इस्राएल एमोरियों के देश में रहने लगा। तब मूसा ने याजेर नगर का भेद लेने को भेजा और उन्हों ने उस के गांवों को ले लिया और वहां के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया।
३३ तब वे मुड़के बाशान के मार्ग से जाने लगे और बाशान के राजा ओग ने उन का साम्हना किया अर्थात् लड़ने को अपनी सारी सेना समेत
३४ एद्रेई में निकल आया। तब यहोवा ने मूसा से कहा उस से मत डर क्योंकि मैं उस को सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूं और जैसा तू ने एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन से किया है वैसा ही उस से भी करना।
३५ सो उन्हों ने उस को और उस के पुत्रों और सारी प्रजा को यहां लों मारा कि उस का कोई भी बचा न रहा और वे उस के देश के अधिकारी हो गये।

२२.

१ तब इस्राएलियों ने कूच करके यरीहो के पास की यर्दन नदी के इस पार मोआब के अराबा में डेरे खड़े किये॥

(बिलाम का चरित्र)

२ और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा कि इस्राएल
३ ने एमोरियों से क्या क्या किया है। सो मोआब यह जानकर कि इस्राएली बहुत हैं उन लोगों से निपट डर गया बरन मोआब इस्राएलियों के कारण अति व्याकुल हुआ।
४ सो मोआबियों ने मिद्यानी पुरनियों से कहा अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को ऐसे चट कर जाएगा जैसे बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है और उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा
५ था। और इस ने पतोर नगर को जो महानद के तीर पर बोर के पुत्र बिलाम के जातिभाइयों की भूमि में है उसी बिलाम के पास दूत भेजे जो यह कह कर उसे बुला लाए कि सुन एक दल मिस्र से निकल आया है और भूमि उन से ढंक गई है और अब वे मेरे साम्हने ठहरे हैं।

६ सो आ और उन लोगों को मेरे निमित्त स्राप दे, क्योंकि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं क्या जाने मुझे इतनी शक्ति हो कि हम उन को जीत सकें और मैं उन्हें अपने देश से बरबस निकाल सकूं यह तो मैं ने जान लिया है कि जिस को तू आशीर्वाद दे सो धन्य होता है ७ और जिस को तू स्राप दे वह स्रापित होता है। सो मोआबी और मिद्यानी पुरनिये भावी कहने की दक्षिणा लेकर चले और बिलाम के पास पहुंचकर बालाक की ८ बातें कह सुनाई। उस ने उन से कहा आज रात को यहां टिको और जो बात यहोवा मुझ से कहे उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूंगा सो मोआब के हाकिम ९ बिलाम के यहां ठहर गये। तब परमेश्वर ने बिलाम के १० पास आकर पूछा कि तेरे यहां ये पुरुष कौन हैं। बिलाम ने परमेश्वर से कहा सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा ११ बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है कि, सुन जो दल मिस्र से निकल आया है उस से भूमि ढंप गई है सो आकर मेरे लिये उन्हें कोस क्या जाने मैं उन से लड़ १२ कर उनको बरबस निकाल सकूं। परमेश्वर ने बिलाम से कहा तू इन के संग मत जा उन लोगों को स्राप मत दे १३ क्योंकि वे आशिष के भागी हो चुके हैं। भोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से कहा अपने देश चले जाओ क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देता। १४ तब मोआबी हाकिम चल दिये और बालाक के पास जाकर कहा बिलाम ने हमारे साथ आने को नाह किया है। १५ इस पर बालाक ने फिर और हाकिम भेजे जो पहिलों से १६ प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे। उन्हों ने बिलाम के पास आकर कहा सिप्पोर का पुत्र बालाक यों कहता है कि मेरे पास आने से किसी कारण नाह न कर। १७ क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा और जो कुछ तू मुझ से कहे सोई मैं करूंगा सो आ और उन लोगों १८ को मेरे निमित्त कोस। बिलाम ने बालाक के कर्म्मचारियों को उत्तर दिया कि चाहे बालाक अपने घर को सोने चांदी से भरके मुझे दे दे तौभी मैं अपने परमेश्वर यहोवा १९ के कहे से कुछ घट बढ़ न कर सकूंगा। सो अब तुम लोग आज रात को यहां टिके रहो और मैं जान लूं कि यहोवा २० मुझ से और क्या कहेगा। रात में परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर कहा वे पुरुष जो तुझे बुलाने आये हैं सो उठकर उन के संग जा पर जो बात मैं तुझ से कहूंगा २१ उसी के अनुसार करना। तब बिलाम भोर को उठ अपनी गदही पर काठी बांधकर मोआबी हाकिमों के संग चला। २२ उस के चलने से परमेश्वर का कोप भड़क उठा और यहोवा का दूत उस का बिरोध करने को मार्ग में खड़ा हुआ। वह अपनी गदही पर चढ़ा हुआ जा रहा था और उस के संग उस के दो सेवक थे। और गदही को यहोवा २३ का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा देख पड़ा, तब गदही मार्ग से हटकर खेत में गई सो बिलाम ने गदही को मारा कि वह मार्ग पर फिर चले। २४ तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच की गली में जिस के दोनों ओर बारी की भीत थी खड़ा हुआ। २५ यहोवा के दूत को देखकर गदही भीत से ऐसी सट गई कि बिलाम का पांव भीत से दब गया सो उस ने उस को २६ फिर मारा। तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकेत स्थान पर खड़ा हुआ जहां न तो दहिनी ओर हटने की २७ जगह थी और न बाईं। वहां यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये ही बैठ गई इस से बिलाम का २८ कोप भड़क उठा और उस ने गदही को लाठी मारी। तब यहोवा ने गदही का मुंह खोल दिया और वह बिलाम से कहने लगी मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे तीन २९ बार मारा। बिलाम ने गदही से कहा यह कि तू ने मुझ से नटखटी की सो यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो ३० मैं तुझे अभी मार डालता। गदही ने बिलाम से कहा क्या मैं तेरी वही गदही नहीं जिस पर तू जन्म से आज लों चढ़ता आया है क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी ३१ वह बोला नहीं। तब यहोवा ने बिलाम की आंखें खोलीं और उस को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा देख पड़ा तब वह झुक गया और मुंह ३२ के बल गिरके दण्डवत् की। यहोवा के दूत ने उस से कहा तू ने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा सुन तेरा बिरोध करने को मैं ही आया हूं इसलिये कि तू ३३ मेरे साम्हने उलटी चाल चलता है। और यह गदही मुझे देखकर मेरे साम्हने से तीन बार हट गई जो वह मेरे साम्हने से हट न जाती तो निःसंदेह मैं अब लों तुझे तो ३४ मार डालता पर उस को जीती छोड़ देता। तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा मैं ने पाप किया है मैं जानता न था कि तू मेरा साम्हना करने को मार्ग में खड़ा है सो यदि अब तुझे बुरा लगता हो तो मैं लौट जाऊंगा। ३५ यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा इन पुरुषों के संग जा तौभी केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूंगा सो ३६ बिलाम बालाक के हाकिमों के संग चला। यह सुनकर कि बिलाम आ गया बालाक उस की अगुवानी करने को मोआब के उस नगर लों जो उस देश के अर्नोनवाले सिवाने ३७ पर है गया। बालाक ने बिलाम से कहा क्या मैं ने तुझे यत्न से बुला न भेजा था फिर तू क्यों मेरे पास न आया था क्या मैं सचमुच तेरी प्रतिष्ठा नहीं कर सकता।

३८ बिलाम ने बालाक से कहा देख मैं तेरे पास आया हूं पर अब क्या मुझे कुछ भी कहने की शक्ति है जो बात
३९ परमेश्वर मुझे सिखाएगा वही बात मैं कहूंगा । तब बिलाम बालाक के संग संग चला और वे किर्य्यथूसोत
४० तक आये । और बालाक ने बैल और भेड़ बकरियां को बलि किया और बिलाम और उस के साथ के हाकिमों के
४१ पास भेजा । बिहान को बालाक बिलाम को बालू के ऊंचे स्थानों पर चढ़ा ले गया और वहां से उस को सब इस्राएली लोग देख पड़े ।

२३.

१ तब बिलाम ने बालाक से कहा यहां पर मेरे लिये सात वेदियां बनवा और इसी स्थान पर सात बछड़े और सात मेढ़े
२ तैयार कर । तब बालाक ने बिलाम के कहने के अनुसार किया और बालाक और बिलाम ने मिलकर एक एक
३ वेदी पर एक एक बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया । फिर बिलाम ने बालाक से कहा तू अपने होमबलि के पास खड़ा रह और मैं जाऊंगा क्या जानिये यहोवा मुझ से भेंट करने को आए और जो कुछ वह मुझे दिखाए सो मैं तुझ
४ को बताऊंगा सो वह एक मुण्डे पहाड़ पर गया । और परमेश्वर बिलाम से मिला और बिलाम ने उस से कहा मैं ने सात वेदियां तैयार कीं और एक एक वेदी पर एक एक
५ बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया है । यहोवा ने बिलाम को एक बात सिखाकर कहा बालाक के पास लौटकर यों
६ कहना । सो वह उस के पास लौट गया और वह सारे मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा
७ था । तब बिलाम अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा

बालाक ने मुझे आराम से अर्थात् मोआब के राजा
ने मुझे पूरब के पहाड़ों से बुलवा भेजा ।
आ मेरे लिये याकूब को स्राप दे
आ इस्राएल को धमकी दे ॥
८ पर जिन्हें ईश्वर ने नहीं कोसा उन्हें मैं कैसे कोसूं
और जिन्हें यहोवा ने धमकी नहीं दी उन्हें मैं
धमकी कैसे दूं ॥
९ चट्टानों की चोटी पर से वे मुझे देख पड़ते हैं
पहाड़ियों पर से मैं उन को देखता हूं
वह ऐसी जाति है जो अकेली बसी रहेगी
और अन्यजातियों से अलग गिनी जाएगी ॥
१० याकूब के धूलि के किनके कौन गिन सके वा
इस्राएल की चौथाई की गिनती कौन ले सके
मेरी मृत्यु धर्म्मियों की सी
और मेरा अन्त उन्हीं का सा हो ॥

११ तब बालाक ने बिलाम से कहा तू ने मुझ से क्या किया है मैं ने तो तुझे अपने शत्रुओं के कोसने को बुलवाया था पर तू ने उन्हें आशिष ही आशिष दी है ।
१२ उस ने कहा जो बात यहोवा मुझे सिखाए क्या मुझे सावधानी से उसी को बोलना न चाहिये ।
१३ बालाक ने उस से कहा मेरे संग दूसरे स्थान पर चल जहां से वे तुझे देख पड़ेंगे तू उन सभों को तो नहीं केवल बाहरवालों को देख
१४ सकेगा वहां से उन्हें मेरे लिए कोसना । सो वह उस को सोपीम नाम मैदान में पिसगा के सिरे पर ले गया और वहां
१५ सात वेदियां बनवाकर एक एक पर एक एक बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया । तब बिलाम ने बालाक से कहा अपने होमबलि के पास यहीं खड़ा रह और मैं उधर जाकर
१६ यहोवा से भेंट करूं । और यहोवा ने बिलाम से भेंट कर उस को एक बात सिखाकर कहा कि बालाक के पास
१७ लौटकर यों कहना । सो वह उस के पास गया और मोआबी हाकिमों समेत बालाक अपने होमबलि के पास खड़ा था और बालाक ने पूछा कि यहोवा ने क्या कहा
१८ है । बिलाम अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा

हे बालाक मन लगाकर[१] सुन
हे सिप्पोर के पुत्र मेरी बात पर कान लगा ॥
१९ ईश्वर तो मनुष्य नहीं है कि झूठ बोले
और न वह आदमी है कि पछताए
क्या वह कहकर न करे,
क्या वह वचन देकर पूरा न करे ॥
२० देख आशीर्वाद ही देने की मैं ने आज्ञा पाई
बरन वह आशीष दे चुका है और मैं उसे नहीं पलट
सकता ॥
२१ उस ने याकूब में अनर्थ नहीं पाया
और न इस्राएल में अन्याय देखा है
उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग है
और उस में राजा की सी ललकार होती है ॥
२२ उस को मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिये आता है
वह तो बनैले बैल का सा बल रखता है ॥
२३ निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता
और न इस्राएल पर भावी कहना
समय पर तो याकूब और इस्राएल के विषय यह
कहा जाएगा
कि ईश्वर ने क्या ही काम किया है ॥
२४ सुन वह दल सिंहिनी की नाईं उठेगा
और सिंह की नाईं खड़ा होगा
वह जब लों अहेर को न खाए
और मारे हुओं के लोहू को न पीए
तब लों फिर न लेटेगा ॥

(१) मूल में उठकर ।

२५ तब बालाक ने बिलाम से कहा उन को न तो
२६ कोसना और न आशिष देना। बिलाम ने बालाक से कहा क्या मैं ने तुझ से यह बात न कही थी कि जो कुछ
२७ यहोवा मुझ से कहे वही मुझे करना पड़ेगा। बालाक ने बिलाम से कहा चल मैं तुझ को एक और स्थान पर ले चलता हूं क्या जानिये कि परमेश्वर की इच्छा हो कि
२८ तू वहां से उन्हें मेरे लिये कोसे। सो बालाक बिलाम को पोर के सिरे ले गया जो यशीमोन देश की ओर झुका
२९ है। और बिलाम ने बालाक से कहा यहां पर मेरे लिये सात वेदियां बनवा और यहां सात बछड़े और सात मेढ़े
३० तैयार कर। बिलाम के कहे के अनुसार करके बालाक ने एक एक वेदी पर एक एक बछड़ा और एक एक मेढ़ा चढ़ाया।

२४.

१ यह देखकर कि यहोवा इस्राएल को आशिष ही दिलाना चाहता है बिलाम पहिले की नाई शकुन देखने को न गया पर अपना मुंह
२ जंगल की ओर किया। जब बिलाम ने आंखें उठाई तब इस्राएलियों को गोत्र गोत्र करके टिके हुए देखा और
३ परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। तब वह अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा कि

बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है
जिस पुरुष की आंखें मून्दी थीं उसी की यह वाणी है॥
४ ईश्वर के वचनों का सुननेहारा
जो गिरके खुली हुई आंखों से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है
उसी की यह वाणी है कि
५ हे याकूब तेरे डेरे
और हे इस्राएल तेरे निवासस्थान क्या ही मनभावने हैं॥
६ वे तो नालों की नाईं
और नदी के तीर पर की बारियों के समान फैले हुए हैं
जैसे कि यहोवा के लगाये हुए अगर के वृक्ष और
जल के निकट के देवदारु॥
७ उस के डोलों से जल उमण्डा करेगा
और उस का बीज बहुतेरे जलभरे खेतों में पड़ेगा
और उस का राजा अगाग से महान होगा
और उस का राज्य बढ़ता जाएगा॥
८ उस को मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिये आता है
वह तो बनैले बैल का सा बल रखता है
जाति जाति के लोग जो उस के द्रोही हैं उन को
वह खा जाएगा
और उन की हड्डियों को टुकड़े टुकड़े करेगा
और अपने तीरों से उन को बेधेगा।
९ वह दबका वह सिंह वा सिंहनी की नाईं लेट गया है
उस को कौन छेड़े
जो कोई तुझे आशीर्वाद दे सो आशिष पाए
और जो कोई तुझे स्राप दे सो स्रापित हो॥

१० तब बालाक का कोप बिलाम पर भड़क उठा और उस ने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम से कहा मैं ने तुझे अपने शत्रुओं के कोसने को बुलवाया पर तू ने तीन
११ बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है। सो अब अपने स्थान पर भाग जा मैं ने कहा तो था तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा पर अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से
१२ रोक रक्खा है। बिलाम ने बालाक से कहा जो दूत तू ने मेरे पास भेजे थे क्या मैं ने उन से भी न कहा था
१३ कि चाहे बालाक अपने घर को सोने चांदी से भरके मुझे दे तौभी मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूं न बुरा जो यहोवा कहे
१४ वही मैं कहूंगा। सो अब सुन मैं अपने लोगों के पास जाता तो हूं पर पहिले मैं तुझे चिता देता हूं कि अन्त के दिनों में वे लोग तेरी प्रजा से क्या क्या करेंगे।
१५ फिर वह अपनी गूढ़ बात उठाकर कहने लगा कि

बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है
जिस पुरुष की आंखें मून्दी थीं उसी की यह वाणी है।
१६ ईश्वर के वचनों का सुननेहारा
और परमप्रधान के ज्ञान का जाननेहारा
जो गिरके खुली हुई आंखों से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है
उसी की यह वाणी है कि
१७ मैं उस को देखूंगा तो सही पर अभी नहीं
मैं उस को निहारूंगा तो सही पर समीप होके नहीं
याकूब में से एक तारा उदय होगा
और इस्राएल में से एक दण्ड उठेगा
जो मोआब की अलंगों को चूर कर देगा
और सब दंगैतों को गिरा देगा।
१८ तब एदोम और सेईर भी जो उस के शत्रु हैं
सो उस के वश में पड़ेंगे
और तब लों इस्राएल वीरता दिखाता जाएगा।
१९ और याकूब में से एक प्रभुता करेगा
और नगर में से बचे हुओं को भी नाश करेगा॥
२० फिर उस ने अमालेक पर दृष्टि करके अपनी गूढ़
बात उठाकर कहा
अमालेक अन्यजातियों में श्रेष्ठ तो था
पर उस का अन्त विनाश ही होगा॥
२१ फिर उस ने केनियों पर दृष्टि करके अपनी गूढ़ बात
उठाकर कहा

तेरा निवासस्थान अति दृढ़ तो है
और तेरा बसेरा ढांग में तो है।

२२ तौभी केन उजड़ जाएगा।
और अन्त में अश्शूर तुझे बंधुआई में ले जाएगा॥

२३ फिर उस ने अपनी गूढ़ बात उठाकर कहा हाय जब ईश्वर यह करेगा तब कौन जीता बचेगा॥

२४ परन्तु कित्तियों के पास से जहाजवाले आकर अश्शूर को और एबेर को भी दुःख देंगे और अन्त में उस का भी विनाश हो जाएगा॥

२५ तब बिलाम चल दिया और अपने स्थान पर लौट गया और बालाक ने भी अपना मार्ग लिया॥

(इस्राएलियों का वेश्यागमन और उस का दण्ड)

२५ इस्राएली शित्तीम में रहते थे और लोग मोआबी लड़कियों

२ के संग कुकर्म्म करने लगे। और जब उन स्त्रियों ने उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता दिया तब वे लोग खाकर उन के देवताओं को दण्डवत् करने लगे।

३ सो इस्राएल पोर के बाल देवता के संग मिल गया तब

४ यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़का। और यहोवा ने मूसा से कहा प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिये धूप में लटका दे जिस से मेरा भड़का हुआ

५ कोप इस्राएल पर से दूर हो जाए। सो मूसा ने इस्राएली न्यायियों से कहा तुम्हारे जो जो अधीन लोग पोर के बाल के संग मिल गये हैं उन्हें घात करो॥

६ और देखो एक इस्राएली पुरुष मूसा और मिलापवाले तंबू के द्वार के आगे रोते हुए इस्राएलियों की सारी मण्डली के देखते एक मिद्यानी स्त्री को अपने भाइयों के

७ पास ले आया है। इसे देखकर एलाजार का पुत्र पीनहास जो हारून याजक का पोता था उस ने मण्डली में

८ से उठ हाथ में बरछी ली, और उस इस्राएली पुरुष के डेरे में जाने पर वह भी गया और उस पुरुष और उस स्त्री दोनों के पेट में बर्छी बेध दी इस पर इस्राएलियों

९ में जो मरी फैल गई थी सो थम गई। और मरी से चौबीस हजार मनुष्य मर गये थे॥

१०, ११ तब यहोवा ने मूसा से कहा, हारून याजक का पोता एलाजार का पुत्र पीनहास जिसे इस्राएलियों के बीच मेरी सी जलन उठी उस ने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहां तक दूर किया है कि मैं ने जल कर उन का अन्त

१२ नहीं कर डाला। इसलिये कह कि मैं उस से शांति की

१३ वाचा बांधता हूं[१], और वह उस के लिये और उस के पीछे उस के वंश के लिये सदा के याजकपद की वाचा होगी क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी

१४ और उस ने इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया। जो इस्राएली पुरुष मिद्यानी स्त्री के संग मारा गया उस का नाम जिम्री था वह सालू का पुत्र और शिमोनियों में से अपने

१५ पितरों के घराने का प्रधान था। और जो मिद्यानी स्त्री मारी गई उस का नाम कोजबी था वह सूर की बेटी थी जो मिद्यानी पितरों के एक घराने के लोगों का प्रधान था॥

१६, १७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, मिद्यानियों को

१८ सताना और उन्हें मारना। क्योंकि पोर के विषय और कोजबी के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं। कोजबी तो एक मिद्यानी प्रधान की बेटी और मिद्यानियों की जाति बहिन थी और मरी के दिन में पोर के मामले में मारी गई॥

(इस्राएलियों की गिनती दूसरी बार लिये जाने का वर्णन)

२६. फिर यहोवा ने मूसा और एलाजार नाम हारून याजक के पुत्र से कहा,

२ इस्राएलियों की सारी मण्डली में जितने बीस बरस के वा उस से अधिक अवस्था के होने से इस्राएलियों के बीच युद्ध करने के योग्य हैं उन के पितरों के घरानों के अनुसार

३ उन सभों की गिनती करो। सो मूसा और एलाजार याजक ने यरीहो के पास यर्दन नदी के तीर पर मोआब

४ के अराबा में उन से समझाके कहा, बीस बरस के और उस से अधिक अवस्था के लोगों की गिनती लो। जैसे कि यहोवा ने मूसा और इस्राएलियों को मिस्र देश से निकल आने के समय आज्ञा दी थी॥

५ रूबेन जो इस्राएल का जेठा था उस के ये पुत्र थे अर्थात् हनोक जिस से हनोकियों का कुल पल्लू जिस से

६ पल्लूइयों का कुल, हेस्रोन जिस से हेस्रोनियों का कुल

७ और कर्म्मी जिस से कर्म्मियों का कुल चला। रूबेनवाले कुल ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो तैंतालीस

८ हजार सात सौ तीस पुरुष ठहरे। और पल्लू का पुत्र

९ एलीआब था। और एलीआब के पुत्र नमूएल दातान और अबीराम थे ये वेही दातान और अबीराम हैं जो सभासद थे और जिस समय कोरह की मण्डली यहोवा से झगड़ी उस समय उस मण्डली में मिल कर वे भी मूसा

१० और हारून से झगड़े। और जब उन अढ़ाई सौ मनुष्यों के आग में भस्म हो जाने से वह मण्डली मिट गई उसी समय पृथिवी ने मुंह खोल कर कोरह समेत इन को भी

११ निगल लिया सो वे एक दृष्टान्त ठहर गये। पर कोरह के पुत्र तो न मरे थे॥

१२ शिमोन के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् नमूएल जिस से नमूएलियों का कुल यामीन

---

(१) मूल में मैं उसे अपना शांतिवाली वाचा देता हूं।

जिस से यामीनियों का कुल याकीन जिस से याकीनियों
१३ का कुल, जेरह जिस से जेरहियों का कुल और शाऊल
१४ जिस से शाऊलियों का कुल चला। शिमोनवाले कुल ये ही थे इन में से बाईस हजार दो सौ गिने गये॥

१५ गाद के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् सपोन जिस से सपोनियों का कुल हाग्गी जिस से हाग्गीयों का कुल शूनी जिस से शूनीयों का कुल,
१६ ओजनी जिस से ओजनीयों का कुल एरी जिस से एरीयों
१७ का कुल, अरोद जिस से अरोदियों का कुल और अरेली
१८ जिस से अरेलीयों का कुल चला। गाद के वंश के कुल ये ही थे इन में से साढ़े चालीस हजार पुरुष गिने गये॥

१९ यहूदा के एर और ओनान नाम पुत्र तो हुए पर व
२० कनान देश में मर गये। सो यहूदा के जिन पुत्रों से उन के कुल निकले वे ये थे अर्थात् शेला जिस से शेलियों का कुल पेरेस जिस से पेरेसियों का कुल और जेरह जिस से
२१ जेरहियों का कुल चला। और पेरेस के पुत्र ये थे अर्थात् हेस्रोन जिस से हेस्रोनियों का कुल और हामूल जिस से
२२ हामूलियों का कुल चला। यहूदियों के कुल ये ही थे इन में से साढ़े छिहत्तर हजार पुरुष गिने गये॥

२३ इस्साकार के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् तोला जिस से तोलियों का कुल पुव्वा जिस से
२४ पुव्वियों का कुल, याशूब जिस से याशूबियों का कुल
२५ और शिम्रोन जिस से शिम्रोनियों का कुल चला। इस्साकारियों के कुल ये ही थे इन में से चौंसठ हजार तीन सौ पुरुष गिने गये॥

२६ जबूलून के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् सेरेद जिस से सेरेदियों का कुल एलोन जिस से एलोनियों का कुल और यहलेल जिस से यहलेलियों का
२७ कुल चला। जबूलूनियों के कुल ये ही थे इन में से साढ़े साठ हजार पुरुष गिने गये॥

२८ यूसुफ के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो मनश्शे
२९ और एप्रैम थे। मनश्शे के पुत्र ये थे अर्थात् माकीर जिस से माकीरियों का कुल चला और माकीर से गिलाद भी जन्मा और गिलाद से गिलादियों का कुल चला।
३० गिलाद के तो पुत्र ये थे अर्थात् ईएजेर जिस से ईएजेरियों
३१ का कुल हेलेक जिस से हेलेकियों का कुल, अस्रीएल जिस से अस्रीएलियों का कुल शेकेम जिस से शेकेमियों
३२ का कुल, शमीदा जिस से शमीदियों का कुल और हेपेर
३३ जिस से हेपेरियों का कुल चला। और हेपेर के पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं केवल बेटियां हुई इन बेटियों के नाम
३४ महला नोआ होग्ला मिल्का और तिर्सा हैं। मनश्शे-वाले कुल ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो बावन हजार सात सौ पुरुष ठहरे॥

३५ एप्रैम के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् शूतेलह जिस से शूतेलहियों का कुल बेकेर जिस से बेकेरियों का कुल और तहन जिस से तहनियों का कुल
३६ चला। और शूतेलह के यह पुत्र हुआ अर्थात् एरान जिस
३७ से एरानियों का कुल चला। एप्रैमियों के कुल ये ही थे इन में से साढ़े बत्तीस हजार पुरुष गिने गये। अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के वंश के लोग ये ही थे॥

३८ बिन्यामीन के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् बेला जिस से बेलियों का कुल अशबेल जिस से अशबेलियों का कुल अहीराम जिस से अहीरामियों का कुल,
३९ शपूपाम जिस से शपूपामियों का कुल
४० और हूपाम जिस से हूपामियों का कुल चला। और बेला के पुत्र अर्द और नामान थे सो अर्द से तो अर्दियों का
४१ कुल और नामान से नामानियों का कुल चला। अपने कुलों के अनुसार बिन्यामीनी ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो पैंतालीस हजार छः सौ पुरुष ठहरे॥

४२ दान के पुत्र जिस से उन का कुल निकला ये थे अर्थात् शूहाम जिस से शूहामियों का कुल चला दानवाला
४३ कुल यही था। शूहामियों में से जो गिने गये उन के कुल में चौंसठ हजार चार सौ पुरुष ठहरे॥

४४ आशेर के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् यिम्ना जिस से यिम्नियों का कुल यिश्वी जिस से यिश्वीयों का कुल और बरीआ जिस से बरीइयों का कुल
४५ चला। फिर बरीआ के ये पुत्र हुए अर्थात् हेबेर जिस से हेबेरियों का कुल और मल्कीएल जिस से मल्कीएलियों
४६ का कुल चला। और आशेर की बेटी का नाम सेरह है।
४७ आशेरियों के कुल ये ही थे इन में से तिर्पन हजार चार सौ पुरुष गिने गये॥

४८ नप्ताली के पुत्र जिन से उन के कुल निकले सो ये थे अर्थात् यहसेल जिस से यहसेलियों का कुल गूनी जिस
४९ से गूनियों का कुल, येसेर जिस से येसेरियों का कुल और
५० शिल्लेम जिस से शिल्लेमियों का कुल चला। अपने कुलों के अनुसार नप्ताली के कुल ये ही थे और इन में से जो गिने गये सो पैंतालीस हजार चार सौ पुरुष॥

५१ सब इस्राएलियों में से जो गिने गये थे सो ये ही थे अर्थात् छः लाख एक हजार सात सौ तीस पुरुष ठहरे॥

५२, ५३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इन्हीं के बीच इन की गिनती के अनुसार देश बंटकर इन का भाग हो
५४ जाए। अर्थात् अधिकवालों को अधिक भाग और कम वालों को कम भाग देना एक एक गोत्र का उस का

भाग उस के गिने हुए लोगों के अनुसार दिया जाए। ५५ तौभी देश चिट्ठी डालकर बांटा जाए इस्राएलियों के पितरों के एक एक गोत्र का नाम जैसे जैसे निकले वैसे वैसे वे ५६ अपना अपना भाग पाएं। चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो जो जो भाग बंट जाएं सो चिट्ठी डालकर बांटे जाएं॥

५७ फिर लेवीयों में से जो अपने कुलों के अनुसार गिने गये सो ये हैं अर्थात् गेर्शोनियों से निकला हुआ गेर्शोनियों का कुल कहात से निकला हुआ कहातियों का कुल और ५८ मरारी से निकला हुआ मरारियों का कुल। लेवीयों के कुल ये हैं अर्थात् लिब्नीयों का हेब्रानियों का महलीयों का मूशीयों का और कोरहियों का कुल और कहात से ५९ अम्राम जन्मा। और अम्राम की स्त्री का नाम योकेबेद है वह लेवी के बंश की थी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में जन्मी थी और वह अम्राम के जन्माये हारून और मूसा और उन की बहिन मरियम को भी जनी। ६० और हारून के नादाब अबीहू एलाजार और ईतामार ६१ जन्मे। नादाब और अबीहू तो उस समय मर गये थे जब ६२ वे यहोवा के साम्हने उपरी आग ले गये थे। सब लेवीयों में से जो गिने गये अर्थात् जितने पुरुष एक महीने के वा उस से अधिक अवस्था के थे सो तेईस हजार थे वे इस्राएलियों के बीच इस लिये न गिने गये कि उन को उन के बीच देश का कोई भाग न दिया गया॥

६३ मूसा और एलाजार याजक जिन्हों ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर इस्राएलियों को गिन लिया उन के गिने हुए लोग इतने ६४ ही ठहरे। पर जिन इस्राएलियों को मूसा और हारून याजक ने सीनै के जंगल में गिना था उन में से एक भी ६५ पुरुष इस समय के गिने हुओं में न रहा। क्योंकि यहोवा ने उन के विषय कहा था कि वे निश्चय जंगल में मर जाएंगे सो यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ उन में से एक पुरुष भी बचा न रहा॥

(सलोफाद की बेटियां की बिनती)

२७. तब यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में से सलोफाद जो हेपेर का पुत्र गिलाद का पोता और मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता था उस की बेटियां जिन के नाम महला नोआ १ होग्ला मिल्का और तीर्सा हैं सो पास आईं। और वे मूसा और एलाजार याजक और प्रधानों और सारी मण्डली के साम्हने मिलापवाले तंबू के द्वार पर खड़ी होकर कहने ३ लगीं, हमारा पिता जंगल में मर गया पर वह उस मण्डली में का न था जो कोरह की मण्डली के संग होकर यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी हुई थी वह अपने ही पाप के कारण मरा और उस के कोई पुत्र न हुआ। सो हमारे पिता का ४ नाम उस के कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए हमारे चचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे। उन की यह बिनती मूसा ने यहोवा को सुनाई। ५ यहोवा ने मूसा से कहा, सलोफाद की बेटियां ठीक ६, ७ कहती हैं सो तू उन के चचाओं के बीच उन को भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे अर्थात् उन के पिता का भाग उन के हाथ सौंप दे। और इस्राएलियों से ८ यह कह कि यदि कोई मनुष्य निपुत्र मरे तो उस का भाग उस की बेटी के हाथ सौंपना। और यदि उस के कोई ९ बेटी भी न हो तो उस का भाग उसके भाइयों को देना। और यदि उस के भाई भी न हो तो उस का भाग उस १० के चचाओं को देना। और यदि उस के चचा भी न हों तो उस के कुल में से उस का जो कुटुम्बी सब से समीप ११ हो उस को उस का भाग देना कि वह उस का अधिकारी हो। इस्राएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरे जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी॥

(यहोशू के मूसा के स्थान पर ठहराये जाने का वर्णन)

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस अबारीम नाम पर्वत १२ पर चढ़ के उस देश को देख ले जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है। और जब तू उस को देख लेगा तब १३ अपने भाई हारून की नाईं तू भी अपने लोगों में जा मिलेगा, क्योंकि सीन नाम जंगल में तुम दोनों ने मण्डली १४ के झगड़ने के समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझ से बलवा किया और मुझे सोते के पास उन की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया। (यह मरीबा नाम सोता है जो सीन नाम जंगल में के कादेश में है)। मूसा ने यहोवा से कहा, १५ यहोवा जो सारे प्राणियों के आत्माओं का परमेश्वर है १६ सो इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरुष को ठहरा दे, जो उन के साम्हने आया जाया करे और उन का १७ निकालने पैठानेहारा हो जिस से यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़ बकरियों के समान न हो। यहोवा १८ ने मूसा से कहा तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ टेक वह तो ऐसा पुरुष है जिस में मेरा आत्मा बसा है। और उस को एलाजार याजक के और सारी मण्डली १९ के साम्हने खड़ा करके उन के साम्हने उसे आज्ञा दे। और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे इसलिये कि इस्राएलियों २० की सारी मण्डली उस की माना करे। और वह २१ एलाजार याजक के साम्हने खड़ा हुआ करे और एलाजार

उस के लिये यहोवा से ऊरीम नाम न्याय के द्वारा पूछा करे और वह इस्राएलियों की सारी मण्डली समेत उस के कहे से जाया करे और उसी के कहे से लौट आया भी करे । २२ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने यहोशू को ले एलाजार याजक और सारी मण्डली के साम्हने २३ खड़ा करके, उस पर हाथ टेके और उस को आज्ञा दी जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था ॥

(नियत नियत समयों के विशेष विशेष बलिदान)

२८. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों को यह आज्ञा सुना कि मेरा चढ़ावा अर्थात् मुझे सुखदायक सुगंध देनेहारा मेरा हव्यरूपी भोजन तुम लोग मेरे लिये उस के नियत समयों पर ३ चढ़ाने का स्मरण रखना । और तू उन से कह कि जो जो तुम्हें यहोवा के लिये चढ़ाना होगा सो ये हैं अर्थात् नित्य होमबलि के लिये दिन दिन एक एक बरस के दो ४ निर्दोष भेड़ी के बच्चे । एक बच्चे को भोर को और दूसरे ५ को गोधूलि के समय चढ़ाना । और भेड़ के बच्चे पीछे एक चौथाई हीन कूटके निकाले हुए तेल से सने हुए ६ एपा के दसवें अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना । यह नित्य होमबलि है जो सीनै पर्वत पर यहोवा का सुखदायक ७ सुगंधवाला हव्य होने के लिये ठहराया गया । और उस का अर्घ एक एक भेड़ के बच्चे के संग एक चौथाई हीन हो मदिरा का यह अर्घ यहोवा के लिये पवित्रस्थान ८ में देना । और दूसरे बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना अन्नबलि और अर्घ समेत भोर के होमबलि की नाईं उसे यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हव्य करके चढ़ाना ॥

९ फिर विश्रामदिन को बरस बरस दिन के दो निर्दोष भेड़ के बच्चे और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का दो दसवां अंश मैदा अर्घ समेत चढ़ाना । १० नित्य होमबलि और उस के अर्घ से अधिक एक एक विश्रामदिन का यही होमबलि ठहरा है ॥

११ फिर अपने एक एक महीने के आदि में यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना अर्थात् दो बछड़े एक मेढ़ा और १२ बरस बरस दिन के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे । और बछड़े पीछे तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवां अंश मैदा और उस एक मेढ़े के साथ तेल से सना एपा का १३ दो दसवां अंश मैदा, और भेड़ के बच्चे पीछे तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा उन सभों को अन्नबलि करके चढ़ाना वह सुखदायक सुगंध देनेहारा १४ होमबलि और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा । और उन के साथ ये अर्घ हों अर्थात् बछड़े पीछे आध हीन मेढ़े के साथ तिहाई हीन और भेड़ के बच्चे पीछे चौथाई हीन दाखमधु दिया जाए बरस के सब महीनों में से एक एक महीने का यही होमबलि ठहरे । १५ और एक बकरा पापबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया जाय यह नित्य होमबलि और उस के अर्घ से अधिक चढ़ाया जाए ॥

१६ फिर पहिले महीने के चौदहवें दिन को यहोवा का फसह हुआ करे । १७ और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को पर्व लगा करे सात दिन लों अखमीरी रोटी खाई जाए । १८ पहिले दिन पवित्र सभा हो और उस दिन परिश्रम का कोई काम न किया जाए । १९ उस में तुम यहोवा के लिये एक हव्य अर्थात् होमबलि चढ़ाना सो दो बछड़े एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात भेड़ के बच्चे हों ये सब निर्दोष हों । २० और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश २१ और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश मैदा हो । और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश चढ़ाना । २२ और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो । २३ भोर का होमबलि जो नित्य होमबलि ठहरा है उस से अधिक इन को चढ़ाना । २४ इस रीति से तुम उन सातों दिनों में भी हव्यवाला भोजन चढ़ाना जो यहोवा को सुखदायक सुगंध देनेहारा हो यह नित्य होमबलि और उस के अर्घ से अधिक चढ़ाया जाए । २५ और सातवें दिन भी तुम्हारी पवित्र सभा हो और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना ॥

२६ फिर पहिली उपज के दिन में जब तुम अपने अठवारे नाम पर्व में यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाओगे तब भी तुम्हारी पवित्र सभा हो और परिश्रम का कोई काम न करना । २७ और एक होमबलि चढ़ाना जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध हो अर्थात् दो बछड़े एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात भेड़ के बच्चे । २८ और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश और मेढ़े के संग २९ एपा का दो दसवां अंश, और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना । ३० और एक बकरा भी चढ़ाना जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो । ३१ ये सब निर्दोष हों और नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक इस को भी चढ़ाना ॥

२९. फिर सातवें महीने के पहिले दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो परिश्रम का कोई काम न करना वह तुम्हारे लिये जयजयकार का नरसिंगा फूंकने का दिन ठहरा है । २ तुम होमबलि चढ़ाना जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध हो अर्थात् एक

बछड़ा एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात निर्दोष ३ भेड़ के बच्चे। और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवां ४ अंश और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश, और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का ५ दसवां अंश मैदा चढ़ाना। और एक बकरा भी पापबलि कर ६ के चढ़ाना जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो। इन सभों से अधिक नये चांद का होमबलि और उस का अन्नबलि और नित्य होमबलि और उस का अन्नबलि और उन सभों के अर्घ भी उन के नियम के अनुसार सुखदायक सुगंध देनेहारा यहोवा का हव्य करके चढ़ाना॥

७ फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और ८ किसी प्रकार का कामकाज न करना। और यहोवा के लिये सुखदायक सुगंध देने को होमबलि अर्थात् एक बछड़ा एक मेढ़ा और बरस बरस दिन के सात भेड़ के बच्चे चढ़ाना ९ ये सब निर्दोष हों। और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवां १० अंश मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां ११ अंश मैदा चढ़ाना। और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये सब प्रायश्चित्त के पापबलि और नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि से और उन सभों के अर्घों से अधिक चढ़ाये जाएं॥

१२ फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो और उस में परिश्रम का कोई काम न करना और सात दिन लों यहोवा के लिये पर्व मानना। १३ तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेहारा हव्य करके चढ़ाना अर्थात् तेरह बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन के चौदह भेड़ के बच्चे ये सब निर्दोष हों। १४ और उन का अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो अर्थात् तेरहों बछड़ों में से एक एक बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश दोनों मेढ़ों में से एक एक मेढ़े पीछे १५ एपा का दो दसवां अंश, और चौदहों भेड़ के बच्चों में से १६ बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश मैदा, और पापबलि के लिये एक बकरा चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं॥

१७ दूसरे दिन बारह बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस १८ दिन के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना। और बछड़ों मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार १९ चढ़ाना। और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाए जाएं॥

तीसरे दिन ग्यारह बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस २० दिन के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना, और बछड़ों २१ मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना। और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये २२ नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं॥

चौथे दिन दस बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन २३ के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना। बछड़ों मेढ़ों और २४ भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना। और २५ पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं॥

पांचवें दिन नौ बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन २६ के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना। और बछड़ों मेढ़ों २७ और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना। और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य २८ होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं॥

छठवें दिन आठ बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन २९ के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना। और बछड़े मेढ़ों और ३० भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना। और ३१ पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ायें जाएं॥

सातवें दिन सात बछड़े दो मेढ़े और बरस बरस दिन ३२ के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना। और बछड़ों मेढ़ों और ३३ भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना। और ३४ पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जाएं॥

आठवें दिन तुम्हारी एक महासभा हो उस में ३५ परिश्रम का कोई काम न करना। और उस में होमबलि ३६ यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेहारा हव्य करके चढ़ाना वह एक बछड़े एक मेढ़े और बरस बरस दिन के सात निर्दोष भेड़ के बच्चों का हो। बछड़े मेढ़े और भेड़ ३७ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उन की गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना। और ३८

पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना ये नित्य होमबलि और उस के अन्नबलि और अर्घ से अधिक चढ़ाये जायें॥

३९ अपनी मन्नतों और स्वेच्छाबलियों से अधिक अपने अपने नियत समयों में ये ही होमबलि अन्नबलि अर्घ और

४० मेलबलि यहोवा के लिये चढ़ाना। यह सारी आज्ञा जो यहोवा ने मूसा को दी सो उस ने इस्राएलियों को सुनाई॥

(मन्नत मानने की विधि)

३०. फिर मूसा ने इस्राएली गोत्रों के मुख्य मुख्य पुरुषों से कहा यहोवा ने

२ यह आज्ञा दी है कि, जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने वा अपने आप को वाचा से बांधने के लिये किरिया खाए, तो वह अपना वचन न टाले जो कुछ उस के मुंह

३ से निकला हो उस के अनुसार वह करे। और जब कोई स्त्री अपनी कुंवार अवस्था में अपने पिता के घर रहते

४ यहोवा की मन्नत माने वा अपने को वाचा से बांधे, तो यदि उस का पिता उस की मन्नत वा उस का वह वचन सुन कर जिस से उस ने अपने आप को बांधा हो उस से कुछ न कहे तब तो उस की सब मन्नतें स्थिर बनी रहें और कोई बंधन क्यों न हो जिस से उस ने अपने आप

५ को बांधा हो वह भी स्थिर रहे। पर यदि उस का पिता उस की सुनके उसी दिन को उस को बरजे तो उस की मन्नतें वा और प्रकार के बंधन जिन से उस ने अपने आप को बांधा हो उन में से एक भी स्थिर न रहे और यहोवा यह जान कर कि उस स्त्री के पिता ने उसे बरज दिया है

६ उस का यह पाप क्षमा करेगा। फिर यदि वह पति के अधीन हो और मन्नत माने वा बिना सोच विचार किये

७ ऐसा कुछ कहे जिस से वह बंधन में पड़े। और यदि उस का पति सुन कर उस दिन उस से कुछ न कहे तब तो उस की मन्नतें स्थिर रहें और जिन बन्धनों से उस ने

८ अपने आप को बांधा हो सो स्थिर रहें। पर यदि उस का पति सुन कर उसी दिन उसे बरज दे तो जो मन्नत उस ने मानी और जो बात बिना सोच विचार किये कहने से उस ने अपने आप को वाचा से बांधा हो सो टूट जाएगी

९ और यहोवा उस स्त्री का पाप क्षमा करेगा। फिर विधवा वा त्यागी हुई स्त्री की मन्नत व किसी प्रकार की वाचा का बंधन क्यों न हो जिस से उस ने अपने आप को

१० बांधा हो सो स्थिर ही रहे। फिर यदि कोई स्त्री अपने पति के घर में रहते मन्नत माने वा किरिया खाकर अपने

११ आप को बांधे, और उस का पति सुन कर कुछ न कहे और न उसे बरज दे तब तो उस की सब मन्नतें स्थिर बनी रहें और हर एक बंधन क्यों न हो जिस से उस ने

१२ अपने आप को बांधा हो सो स्थिर रहे। पर यदि उस का पति उस की मन्नत आदि सुन कर उसी दिन पूरी रीति से तोड़ दे तो उस की मन्नतें आदि जो कुछ उस के मुंह से अपने बन्धन के विषय निकला हो उस में से एक बात भी स्थिर न रहे उस के पति ने सब तोड़ दिया है

१३ सो यहोवा उस स्त्री का वह पाप क्षमा करेगा। कोई भी मन्नत वा किरिया क्यों न हो जिस से उस स्त्री ने अपने जीव को दुःख देने की वाचा बांधी हो उस को उस का

१४ पति चाहे तो दृढ़ करे और चाहे तो तोड़े। अर्थात् यदि उस का पति दिन दिन उस से कुछ भी न कहे तो वह उस की सब मन्नत आदि बंधनों को जिन से वह बंधी हो दृढ़ कर देता है उस ने उन को दृढ़ किया है क्योंकि

१५ सुनने के दिन उस ने कुछ नहीं कहा। और यदि वह उन्हें सुन कर पीछे तोड़ दे तो अपनी स्त्री के अधर्म का

१६ भार वही उठाएगा। पति पत्नी के बीच और पिता और उस के घर में रहती हुई कुंवारी बेटी के बीच जिन विधियों की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी सो ये ही हैं॥

(मिद्यानियों से पलटा लेने का वर्णन)

३१. फिर यहोवा ने मूसा से कहा, मिद्यानियों

२ से इस्राएलियों का पलटा ले पीछे

३ तू अपने लोगों में जा मिलेगा। सो मूसा ने लोगों से कहा अपने में से पुरुषों को युद्ध के लिये हथियार बंधाओ कि वे

४ मिद्यानियों पर चढ़के उन से यहोवा का पलटा लें। इस्राएल के सब गोत्रों में से एक एक गोत्र के एक एक हजार

५ पुरुषों को युद्ध करने के लिये भेजो। सो इस्राएल के सब हजारों में से एक एक गोत्र के एक एक हजार पुरुष चुने गये

६ अर्थात् युद्ध के लिये हथियारबंद बारह हजार पुरुष। एक एक गोत्र में से उन हजार हजार पुरुषों को और एलाजार याजक के पुत्र पिनहास को मूसा ने युद्ध करने के लिये भेजा और उस के हाथ में पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियां थीं जो सांस बांध बांध कर फूंकी जाती थीं।

७ और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उस के अनुसार उन्हों ने मिद्यानियों से युद्ध करके सब पुरुषों को

८ घात किया। और दूसरे जूझे हुओं को छोड़ उन्हों ने एवी रेकेम सूर हूर और रेबा नाम मिद्यान के पांचों राजाओं को घात किया। और बोर के पुत्र बिलाम को

९ भी उन्हों ने तलवार से घात किया। और इस्राएलियों ने मिद्यानी स्त्रियों को बालबच्चों समेत बंधुई कर लिया और उन के गाय बैल भेड़ बकरी और उन की सारी

१० संपत्ति को लूट लिया, और उन के निवास के सब नगरों

११ और सब छावनियों को फूंक दिया। तब वे क्या मनुष्य क्या पशु सब बन्धुओं और सारी लूट पाट को लेकर,

१२ यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर मोआब के

अराबा में छावनी के निकट मूसा और एलाजार याजक
और इस्राएलियों की मंडली के पास आये ॥
१३ तब मूसा और एलाजार याजक और मण्डली के सब
प्रधान छावनी के बाहर उन की अगुवानी करने को निकले ।
१४ और मूसा सहस्रपति शतपति आदि सेनापतियों से जो
१५ युद्ध करके लौटे आते थे क्रोधित होकर, कहने लगा क्या
१६ तुम ने सब स्त्रियों को जीती छोड़ दिया । देखो बिलाम
की सम्मति से पोर के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का
विश्वासघात इन्हीं ने कराया और यहोवा की मण्डली में
१७ मरी फैली । सो अब बालबच्चों में से हर एक लड़के को
और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुंह देखा हो उन सभों
१८ को घात करो । पर जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुंह न
१९ देखा हो उन सभों को तुम अपने लिये जीती रक्खो । और
तुम लोग सात दिन लों छावनी के बाहर रहो और तुम
में से जितनों ने किसी प्राणी का घात किया और जितनों
ने किसी मरे हुए को छुआ हो सो सब अपने अपने बंधुओं
समेत तीसरे और सातवें दिनों में अपने अपने को पाप
२० छुड़ाकर पावन करें । और सब वस्त्रों और चमड़े की बनी
हुई सब वस्तुओं और बकरी के बालों की और लकड़ी की
२१ बनी हुई सब वस्तुओं को पावन कर लो । तब एलाजार
याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गये थे
कहा व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा
२२ को दी है सो यह है कि, सोना चांदी पीतल लोहा रांगा
और सीसा जो कुछ आग में ठहर सके उस को आग में
२३ डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा तौभी वह अशुद्धता से
छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए पर जो कुछ
२४ आग में न ठहर सके उसे जल में बोरो । और सातवें
दिन अपने वस्त्रों को धोना तब तुम शुद्ध ठहरोगे और
पीछे छावनी में आना ॥
२५, २६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, एलाजार याजक और
मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को साथ
२७ लेकर तू लूट के मनुष्यों और पशुओं की गिनती कर । तब
उन को आधा आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को
जो युद्ध करने को गये थे और दूसरा भाग मण्डली को
२८ दे । फिर जो सिपाही युद्ध करने को गये थे उन के आधे
में से यहोवा के लिये क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे
क्या भेड़ बकरियां पांच सौ पीछे एक को कर मानकर ले
२९ ले, और यहोवा की भेंट करके एलाजार याजक को दे दे ।
३० फिर इस्राएलियों के आधे में से क्या मनुष्य क्या गाय
बैल क्या गदहे क्या भेड़ बकरियां क्या किसी प्रकार का
पशु पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रख-
३१ वाली करनेहारे लेवीयों को दे । यहोवा की इस आज्ञा के

अनुसार जो उस ने मूसा को दी मूसा और एलाजार
याजक ने किया । और जो वस्तुएं सेना के पुरुषों ने ३२
अपने अपने लिये लूट ली थीं उन से अधिक की लूट यह
थी अर्थात् छः लाख पचहत्तर हजार भेड़ बकरी, बहत्तर ३३
हजार गाय बैल, इकसठ हजार गदहे, और मनुष्यों ३४, ३५
में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुंह न देखा था सो सब
बत्तीस हजार थीं । और इस का आधा अर्थात् उन का ३६
भाग जो युद्ध करने को गये थे उस में भेड़ बकरियां तीन
लाख साढ़े सैंतीस हजार, जिन में से पौने सात सौ भेड़ ३७
बकरियां यहोवा का कर ठहरीं, और गाय बैल छत्तीस ३८
हजार जिन में से बहत्तर यहोवा का कर ठहरे, और गदहे ३९
साढ़े तीस हजार जिन में से इकसठ यहोवा का कर ठहरे,
और मनुष्य सोलह हजार जिन में से बत्तीस प्राणी यहोवा ४०
का कर ठहरे । इस कर को जो यहोवा की भेंट थी मूसा ४१
ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलाजार याजक को
दिया । और इस्राएलियों की मण्डली का आधा तीन लाख ४२
साढ़े सैंतीस हजार भेड़ बकरियां, छत्तीस हजार गाय ४३
बैल, साढ़े तीस हजार गदहे, और सोलह हजार ४४, ४५
मनुष्य हुआ । सो इस आधे में से जिसे मूसा ने युद्ध ४६
करनेहारे पुरुषों के पास से अलग किया था यहोवा की
आज्ञा के अनुसार, मूसा ने क्या मनुष्य क्या पशु पचास ४७
पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेहारे
लेवीयों को दिया । तब सहस्रपति शतपति आदि जो ४८
सरदार सेना के हजारों के ऊपर ठहरे थे सो मूसा के पास
आकर कहने लगे, जो सिपाही हमारे अधीन थे उन की ४९
तेरे दासों ने गिनती ली और उन में से एक भी नहीं
घटा । सो पायजेब कड़े मुंदरियां बालियां बाजूबन्द सोने के ५०
जो गहने जिस ने पाया है उन को हम यहोवा के साम्हने
अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की
भेंट करके ले आये हैं । तब मूसा और एलाजार याजक ५१
ने उन से वे सब सोने के नकाशीदार गहने ले लिये ।
और सहस्रपतियों और शतपतियों ने जो भेंट का सोना ५२
यहोवा की भेंट करके दिया सो सब का सब सोलह
हजार साढ़े सात सौ शेकेल का था । योद्धाओं ने तो ५३
अपने अपने लिये लूट ली थी । यह सोना मूसा ५४
और एलाजार याजक ने सहस्रपतियों और शतपतियों से
लेकर मिलापवाले तंबू में पहुंचा दिया कि इस्राएलियों के
लिये यहोवा के साम्हने स्मरण दिलानेहारी वस्तु ठहरे ॥

(अढ़ाई गोत्र के इस्राएलियों को यर्दन के इसी
पार भाग मिलने का वर्णन)

३२. रूबेनियों और गादियों के पास बहुत
ही ढोर थे सो जब उन्हों ने

याजेर और गिलाद देशों को देखकर विचारा कि यह
२ ढोरों के योग्य देश है, तब मूसा और एलाजार याजक
और मण्डली के प्रधानों के पास जाकर कहने लगे,
३ अतारोत दीबान याजेर निम्रा हेशबोन एलाले सबाम
४ नबो और बोन नगरों का देश, जिस को यहोवा ने
इस्राएल की मण्डली से जितवाया है सो ढोरों के योग्य
५ है और तेरे दासों के पास ढोर हैं। फिर उन्हों ने कहा
यदि तेरा अनुग्रह तेरे दासों पर हो तो यह देश तेरे दासों
को मिले कि उन की निज भूमि हो हमें यर्दन पार न ले
६ चल। मूसा ने गादियों और रूबेनियों से कहा जब तुम्हारे
भाई युद्ध करने को जाएंगे तब क्या तुम यहीं बैठे रहोगे।
७ और इस्राएलियों से भी उस पार के देश जाने के विषय
जो यहोवा ने उन्हें दिया है तुम क्यों नाह कराते हो।
८ जब मैं ने तुम्हारे बापदादों को कादेशबर्ने से कनान देश
देखने के लिये भेजा तब उन्हों ने भी ऐसा ही किया था।
९ अर्थात् जब उन्हों ने एशकोल नाम नाले लों पहुंचकर
देश को देखा तब इस्राएलियों से उस देश के विषय
१० जो यहोवा ने उन्हें दिया था नाह करा दिया। सो उस
समय यहोवा ने कोप करके यह किरिया खाई कि,
११ निःसन्देह जो मनुष्य मिस्र से निकल आये हैं उन में से
जितने बीस बरस के वा उस से अधिक अवस्था के हैं सो
उस देश को देखने न पाएंगे जिस के देने की किरिया
मैं ने इब्राहीम इसहाक और याकूब से खाई है क्योंकि वे
१२ मेरे पीछे पूरी रीति से नहीं हो लिये। पर यपुन्ने कनजी
का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू ये दोनों जो मेरे
१३ पीछे पूरी रीति से हो लिये हैं ये तो उसे देखने पाएंगे। सो
यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का और जब लों उस
पीढ़ी के सब लोगों का अंत न हुआ जिन्हों ने यहोवा के
लेखे बुरा किया था तब लों अर्थात् चालीस बरस लों वह
१४ उन्हें जंगल में मारे मारे फिराता रहा। और सुनो तुम
लोग उन पापियों के बच्चे होकर इसी लिये अपने बाप-
दादों के स्थान पर प्रगट हुए हो कि इस्राएल के विरुद्ध
१५ यहोवा के भड़के हुए कोप को और भी भड़काओ। यदि
तुम उस के पीछे चलने से फिर जाओ तो वह फिर हम
सभों को जंगल में छोड़ देगा सो तुम इन सारे लोगों को
१६ नाश कराओगे। तब उन्हों ने मूसा के और निकट आकर
कहा हम अपने ढोरों के लिये यहीं सारे बनाएंगे और अपने
१७ बालबच्चों के लिये यहीं नगर बसाएंगे। पर हम आप इस्रा-
एलियों के आगे आगे हथियारबन्ध तब लों चलेंगे जब
लों उन को उन के स्थान में न पहुंचा दें पर हमारे
बालबच्चे इस देश के निवासियों के डर से गढ़वाले नगरों
१८ में रहेंगे। पर जब लों इस्राएली अपने अपने भाग के
अधिकारी न हों तब लों हम अपने घरों को न लौटेंगे।
१९ हम उन के साथ यर्दन पार वा कहीं आगे अपना भाग
न लेंगे क्योंकि हमारा भाग यर्दन के इसी पार पूरब ओर
२० मिला है। तब मूसा ने उन से कहा, यदि तुम ऐसा करो
अर्थात् यदि तुम यहोवा के आगे आगे युद्ध करने को हथि-
२१ यार बांधो, और हर एक हथियारबन्ध यर्दन के पार तब
लों चले जब लों यहोवा अपने आगे से अपने शत्रुओं को
२२ न निकाले, और देश यहोवा के वश में न आए, तो उस
के पीछे तुम यहां लौटोगे और यहोवा के और इस्राएल
के विषय निर्दोष ठहरोगे और यह देश यहोवा के लेखे में
२३ तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा। और यदि तुम ऐसा न करो
तो यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरोगे और जान रक्खो कि तुम
२४ को तुम्हारा पाप लगेगा। सो अपने बालबच्चों के लिये
नगर बसाओ और अपनी भेड़ बकरियों के लिये भेड़साले
बनाओ और जो तुम्हारे मुंह से निकला है सोई करो।
२५ तब गादियों और रूबेनियों ने मूसा से कहा, अपने प्रभु
२६ की आज्ञा के अनुसार तेरे दास करेंगे। हमारे बालबच्चे
स्त्रियां भेड़ बकरी आदि सब पशु तो यहीं गिलाद के
२७ नगरों में रहेंगे। पर अपने प्रभु के कहे के अनुसार तेरे
दास सब के सब युद्ध के लिये हथियारबंध यहोवा के आगे
२८ आगे लड़ने को पार जाएंगे। तब मूसा ने उन के विषय
में एलाजार याजक और नून के पुत्र यहोशू और
इस्राएलियों के गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य
२९ पुरुषों को यह आज्ञा दी कि, यदि सब गादी और रूबेनी
पुरुष युद्ध के लिये हथियारबंध तुम्हारे संग यर्दन पार जाएं
और देश तुम्हारे वश में आ जाए, तो गिलाद देश उन
३० की निज भूमि होने को उन्हें देना। पर यदि वे तुम्हारे
संग हथियारबंध पार न जाएं तो उन की निज भूमि तुम्हारे
३१ बीच कनान देश में ठहरे। तब गादी और रूबेनी बोल
उठे यहोवा ने जैसा तेरे दासों से कहलाया है वैसा ही हम
३२ करेंगे। हम हथियारबंध यहोवा के आगे आगे उस पार
कनान देश में जाएंगे पर हमारी निज भूमि यर्दन के इसी
पार ठहरे॥

३३ तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों को और
यूसुफ के पुत्र मनश्शे के आधे गोत्रियों को एमोरियों के
राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों के राज्यों
का देश नगरों और उन के आसपास की भूमि समेत
३४ दिया। तब गादियों ने दीबोन अतारोत अरोएर
३५, ३६ अत्रोत शोपान याजेर योगबहा, बेतनिम्रा और
बेथारान नाम नगरों को दृढ़ किया और उन में भेड़
३७ बकरियों के लिये भेड़साले बनाई। और रूबेनियों ने
३८ हेशबोन एलाले और किर्यातैम को, फिर नबो और

बालमोन के नाम बदलकर उन को और सिबमा को
दृढ़ किया। और उन्हों ने अपने दृढ़ किये हुए नगरों के
३९ और और नाम रक्खे। और मनश्शे के पुत्र माकीर के
वंशवालों ने गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया और
जो एमोरी उस में रहते थे उन को निकाल दिया।
४० तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश को गिलाद
४१ दे दिया सो वे उस में रहने लगे। और मनश्शेई याईर
ने जाकर गिलाद की कितनी बस्तियां ले लीं और उन के
४२ नाम हव्वोत्याईर[1] रक्खे। और नोवह ने जाकर गांवों
समेत कनात को ले लिया और उस का नाम अपने
नाम पर नोवह रक्खा॥

(इस्राएलियों के पड़ाव पड़ाव की नामावली)

३३. जब से इस्राएली मूसा और हारून की अगुवाई से[2] दल बांधकर
२ मिस्र देश से निकले तब से उन के ये पड़ाव हुए। मूसा
ने यहोवा से आज्ञा पाकर उन के कूच उन के पड़ावों के
३ अनुसार लिख दिये और वे ये हैं। पहिले महीने के
पन्द्रहवें दिन को उन्हों ने रामसेस से कूच किया।
फसह के दूसरे दिन इस्राएली सब मिस्रियों के देखते
४ बेखटके[3] निकल गये, जब कि मिस्री अपने सब पहिलौठों
को मिट्टी दे रहे थे जिन्हें यहोवा ने मारा था और उस
५ ने उन के देवताओं को भी दण्ड दिया था। इस्राएलियों
६ ने रामसेस से कूच करके सुक्कोत में डेरे डाले, और सुक्कोत
से कूच करके एताम में जो जंगल की छोर पर है डेरे
७ डाले। और एताम से कूच करके वे पीहहीरोत को मुड़
गये जो बालसपोन के साम्हने है और मिगदोल के
८ साम्हने डेरे खड़े किये। तब वे पीहहीरोत के साम्हने से
कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल में गये और एताम
नाम जंगल में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे
९ डाले। फिर मारा से कूच करके वे एलीम को गये और
एलीम में जल के बारह सोते और सत्तर खजूर के वृक्ष
१० मिले और उन्हों ने वहां डेरे खड़े किये। तब उन्हों ने
एलीम से कूच करके लाल समुद्र के तीर पर डेरे खड़े
११ किये, और लाल समुद्र से कूच करके सीन नाम जंगल
१२ में डेरे खड़े किये। फिर सीन नाम जंगल से कूच करके
१३ उन्हों ने दोपका में डेरा किया, और दोपका से कूच करके
१४ आलूश में डेरा किया, और आलूश से कूच करके रपी-
दीम में डेरा किया और वहां उन लोगों को पीने का
१५ पानी न मिला। फिर उन्हों ने रपीदीम से कूच करके
१६ सीनै के जंगल में डेरे डाले। और सीनै के जंगल से
कूच करके किब्रोथत्तावा में डेरा किया, और किब्रोथ- १७
त्तावा से कूच करके हसेरोत में डेरे डाले, और हसेरोत १८
से कूच करके रित्मा में डेरे डाले। फिर उन्हों ने रित्मा १९
से कूच करके रिम्मोनपेरेस में डेरे खड़े किये, और २०
रिम्मोनपेरेस से कूच करके लिब्ना में डेरे खड़े किये, और २१
लिब्ना से कूच करके रिस्सा में डेरे खड़े किये, और २२
रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा किया। और २३
कहेलाता से कूच करके शेपेर पर्वत के पास डेरा किया।
फिर उन्हों ने शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा २४
किया, और हरादा से कूच करके मखेलोत में डेरा किया, २५
और मखेलोत से कूच करके तहत में डेरे खड़े किये, २६
और तहत से कूच करके तेरह में डेरे डाले, और २७, २८
तेरह से कूच करके मित्का में डेरे डाले, फिर मित्का से २९
कूच करके उन्हों ने हशमोना में डेरे डाले, और हशमोना ३०
से कूच करके मोसेरोत में डेरे खड़े किये, और मोसेरोत ३१
से कूच करके याकानियों के बीच डेरा किया, और याका- ३२
नियों के बीच से कूच करके होर्हग्गिदगाद में डेरा किया,
और होर्हग्गिदगाद से कूच करके योतबाता में डेरा ३३
किया, और योतबाता से कूच करके अब्रोना में डेरे ३४
खड़े किये, और अब्रोना से कूच करके एस्योनगेबेर में ३५
डेरे खड़े किये, और एस्योनगेबेर से कूच करके उन्हों ने ३६
सीन नाम जंगल के कादेश में डेरा किया। फिर कादेश ३७
से कूच करके होर पर्वत के पास जो एदोम देश के
सिवाने पर है डेरे डाले। वहां इस्राएलियों के मिस्र देश ३८
से निकलने के चालीसवें बरस के पांचवें महीने के पहिले
दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर
पर्वत पर चढ़ा और वहां मर गया। और जब हारून ३९
होर पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेईस बरस का
था। और अराद का कनानी राजा जो कनान देश के ४०
दक्खिन भाग में रहता था उस ने इस्राएलियों के आने
का समाचार पाया। तब इस्राएलियों ने होर पर्वत से कूच ४१
करके सलमोना में डेरे डाले, और सलमोना से कूच ४२
करके पूनोन में डेरे डाले, और पूनोन से कूच करके ओबोत ४३
में डेरे डाले, और ओबोत से कूच करके अबारीम नाम ४४
डीहों में जो मोआब के सिवाने पर है डेरे डाले। तब ४५
उन डीहों से कूच करके उन्हों ने दीबोनगाद में डेरा
किया, और दीबोनगाद से कूच करके अल्मोनदिबलातैम ४६
में डेरा किया, और अल्मोनदिबलातैम से कूच करके ४७
उन्हों ने अबारीम नाम पहाड़ों में नबो के साम्हने डेरा
किया, फिर अबारीम पहाड़ों से कूच करके मोआब के ४८
अराबा में यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर डेरा
किया। और वे मोआब के अराबा में बेत्यशीमोत से ४९

(१) अर्थात् याईर की बस्तियां। (२) मूल में के हाथ से। (३) मूल में ऊंचे हाथ से।

लेकर आबेलशित्तीम लों यर्दन के तीर तीर डेरे डाले हुए रहे ॥

५० मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन
५१ नदी के तीर पर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों को समझा कर कह कि जब तुम यर्दन पार होकर कनान
५२ देश में पहुंचो, तब उस देश के निवासियों को उन के देश से निकाल देना और उन के सब नक्काशे पत्थरों को और ढली हुई मूर्त्तियों का नाश करना और उन के सब
५३ पूजा के ऊंचे स्थानों को ढा देना। और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उस में बसना क्योंकि मैं ने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उस के अधिकारी हो।
५४ और तुम उस देश को चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बांट लेना अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें अधिक और जो थोड़ेवाले हैं उन को थोड़ा भाग देना जिस कुल की चिट्ठी जिस स्थान के लिये निकले वही उस का भाग ठहरे अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना
५५ अपना भाग लेना। पर यदि तुम उस देश के निवासियों को न निकालो तो उन में से जिन को तुम उस में रहने दो सो मानो तुम्हारी आंखों में कांटे और तुम्हारे पांजरों में कीलें ठहरेंगे और वे उस देश में जहां तुम बसोगे
५६ तुम्हें संकट में डालेंगे। और उन से जैसा बताव करने की मनसा मैं ने की है वैसा तुम से करूंगा ॥

(कनान देश के सिवाने)

३४. फिर

यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों को यह आज्ञा
२ दे कि जो देश तुम्हारा भाग होगा वह तो चारों ओर के सिवाने तक का कनान देश है सो जब तुम कनान देश
३ में पहुंचो, तब तुम्हारा दक्खिनी प्रान्त सीन नाम जंगल से ले एदोम देश के किनारे किनारे होता हुआ चला जाए और तुम्हारा दक्खिनी सिवाना खारे ताल के सिरे
४ पर आरम्भ होकर पश्चिम और चले। वहां से तुम्हारा सिवाना अक्रब्बीम नाम चढ़ाई की दक्खिन ओर पहुंचकर मुड़े और सीन लों आए और कादेशबर्ने की दक्खिन ओर निकले और हसरद्दार तक बढ़के अस्मोन लों पहुंचे।
५ फिर वह सिवाना अस्मोन से घूमकर मिस्र के नाले लों पहुंचे और उस का अन्त समुद्र का तट ठहरे।
६ फिर पश्चिमी सिवाना महासमुद्र हो तुम्हारा पच्छिमी
७ सिवाना यही ठहरे। और तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यह हो अर्थात् तुम महासमुद्र से ले होर पर्वत लों सिवाना
८ बांधना। और होर पर्वत से हमात की घाटी लों
९ सिवाना बांधना और वह सदाद पर निकले। फिर वह सिवाना जिप्रोन लों पहुंचे और हसरेनान पर निकले तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यही ठहरे। फिर अपना पूरबी
१० सिवाना हसरेनान से शपाम लों बांधना। और वह
११ सिवाना शपाम से रिबला लों जो ऐन की पूरब ओर है नीचे को उतरते उतरते किन्नेरेत नाम ताल के पूरब तीर
१२ से लग जाए। और वह सिवाना यर्दन लों उतरके खारे ताल के तट पर निकले तुम्हारे देश के चारों सिवाने ये
१३ ही ठहरें। तब मूसा ने इस्राएलियों से फिर कहा जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर अधिकारी होगे और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को देने की आज्ञा दी
१४ है सो यही है। पर रूबेनियों और गादियों के गोत्री तो अपने अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना अपना भाग पा चुके हैं और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी
१५ अपना भाग पा चुके हैं। अर्थात् उन अढ़ाई गोत्रों के लोग यरीहो के पास की यर्दन के पार पूरब दिशा में जहां सूर्य्योदय होता है अपना अपना भाग पा चुके हैं ॥

१६, १७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा कि, जो पुरुष तुम लोगों के लिये उस देश को बांटेंगे उन के नाम ये हैं अर्थात् एलाजार याजक और नून का पुत्र यहोशू।
१८ और देश को बांटने के लिये एक एक गोत्र का एक एक
१९ प्रधान ठहराना। और इन पुरुषों के नाम ये हैं अर्थात्
२० यहूदागोत्री यपुन्ने का पुत्र कालेब, शिमोनगोत्री अम्मीहूद
२१ का पुत्र शमूएल, बिन्यामीनगोत्री किसलोन का पुत्र
२२ एलीदाद, दानियों के गोत्र का प्रधान योग्ली का पुत्र
२३ बुक्की, यूसुफियों में से मनश्शेइयों के गोत्र का प्रधान
२४ एपोद का पुत्र हन्नीएल, और एप्रैमियों के गोत्र का प्रधान
२५ शिप्तान का पुत्र कमूएल, जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान
२६ पर्नाक का पुत्र एलीसापान, इस्साकारियों के गोत्र का
२७ प्रधान अज्जान का पुत्र पलतीएल, आशेरियों के गोत्र
२८ का प्रधान शलोमी का पुत्र अहीहूद, और नप्तालीयों
२९ के गोत्र का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र पदहेल। जिन पुरुषों को यहोवा ने कनान देश को इस्राएलियों के लिये बांटने की आज्ञा दी सो ये ही हैं ॥

(लेवीयों के नगरों की और शरणनगरों की विधि)

३५. फिर

यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन
२ नदी के तीर पर मूसा से कहा, इस्राएलियों को आज्ञा दे कि तुम अपने अपने निज भाग की भूमि में से लेवीयों को रहने के लिये नगर देना और नगरों के
३ चारों ओर की चराइयां भी उन को देना। नगर तो उन के रहने के लिये और चराइयां उन के गाय बैल भेड़
४ बकरी आदि उन के सब पशुओं के लिये होंगी। और नगरों की चराइयां जिन्हें तुम लेवीयों को देगे सो एक

एक नगर की शहरपनाह से बाहर चारों ओर एक एक
५ हजार हाथ तक की हो। और नगर के बाहर पूरब दक्खिन पच्छिम और उत्तर अलंग दो दो हजार हाथ इस रीति से नापना कि नगर बीचोंबीच हो लेवीयों के
६ एक एक नगर की चराई इतनी ही भूमि की हो। और जो नगर तुम लेवीयों को देगे उन में से छः शरणनगर हों जिन्हें तुम को खूनी के भागने के लिये ठहराना होगा और उन से अधिक बयालीस नगर और भी देना।
७ जितने नगर तुम लेवीयों को दोगे सो सब अड़तालीस
८ हों और उन के साथ चराइयां देना। और जो नगर तुम इस्राएलियों की निज भूमि में से दो सो जिन के बहुत नगर हों उन से बहुत और जिन के थोड़े नगर हों उन से थोड़े लेकर देना सब अपने अपने नगरों में से लेवीयों को अपने ही अपने भाग के अनुसार दें॥

९, १० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह
११ कि जब तुम यर्दन पार होकर कनान देश में पहुंचो, तब ऐसे नगर ठहराना जो तुम्हारे लिये शरणनगर हों कि जो कोई किसी को भूल से मारके खूनी ठहरा हो सो वहां
१२ भाग जाए। वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेनेहारे से शरण लेने के काम आएंगे कि जब लों खूनी न्याय के लिये मण्डली के साम्हने खड़ा न हो तब लों वह न मार
१३ डाला जाए। और शरण के जो नगर तुम देगे सो छः
१४ हों। तीन नगर तो यर्दन के इस पार और तीन कनान
१५ देश में देना शरणनगर इतने ही रहें। ये छहों नगर इस्राएलियों के और उन के बीच रहनेहारे परदेशियों के लिये भी शरणस्थान ठहरें कि जो कोई किसी को भूल से मार
१६ डाले सो वहीं भाग जाए। पर यदि कोई किसी को लोहे के किसी हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए तो वह खूनी
१७ ठहरेगा और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए। और यदि कोई ऐसा पत्थर हाथ में लेकर जिस से कोई मर सकता है किसी को मारे और वह मर जाए तो वह भी
१८ खूनी ठहरेगा और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए। वा कोई हाथ में ऐसी लकड़ी लेकर जिस से कोई मर सकता है किसी को मारे और वह मर जाए तो वह भी खूनी
१९ ठहरेगा और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए। लोहू का पलटा लेनेहारा आप ही उस खूनी को मार डाले जब
२० ही मिले तब ही वह उसे मार डाले। और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे वा घात लगाकर कुछ उस पर
२१ ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए, वा शत्रुता से उस को अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए तो जिस ने मारा हो सो अवश्य मार डाला जाए वह खूनी ठहरेगा सो लोहू का पलटा लेनेहारा जब ही वह खूनी उसे मिल जाए तब ही उस को मार डाले।
२२ पर यदि कोई किसी को बिना सोचे और बिना शत्रुता रक्खे ढकेल दे वा बिना घात लगाये उस पर कुछ फेंक दे,
२३ वा ऐसा कोई पत्थर लेकर जिस से कोई मर सकता है दूसरे को बिन देखे उस पर फेंक दे और वह मर जाए पर वह न उस का शत्रु और न उस की हानि का खोजी रहा हो,
२४ तो मण्डली मारनेहारे और लोहू के पलटा लेनेहारे के बीच इन नियमों के अनुसार न्याय करे।
२५ और मण्डली उस खूनी को लोहू के पलटा लेनेहारे के हाथ से बचाकर उस शरणनगर में जहां वह पहिले भाग गया हो लौटा दे और जब लों पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ महायाजक न मर जाए तब लों वह वहीं रहे।
२६ पर यदि वह खूनी उस शरणनगर के सिवाने से जिस में वह भाग गया हो बाहर निकलकर और कहीं जाए,
२७ और लोहू का पलटा लेनेहारा उस को शरणनगर के सिवाने के बाहर कहीं पाकर मार डाले तो वह लोहू बहाने का दोषी न ठहरे।
२८ क्योंकि खूनी को महायाजक की मृत्यु लों शरणनगर में रहना चाहिये और महायाजक के मरने के पीछे वह अपनी निज भूमि को लौट सकेगा।
२९ तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सब रहने के स्थानों में न्याय की यह विधि ठहरी रहे।
३० और जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले सो साक्षियों के कहे पर मार डाला जाए पर एक ही साक्षी की साक्षी से कोई न मार डाला जाए।
३१ और जो खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उसे से प्राणदण्ड के बदले में जुरमाना न लेना वह अवश्य मार डाला जाए।
३२ और जो किसी शरणनगर में भागा हो उस के लिये भी इस मतलब से जुरमाना न लेना कि वह याजक के मरने से पहिले फिर अपने देश में रहने को लौटने पाए।
३३ सो जिस देश में तुम रहोगे उस को अशुद्ध न करना, खून से तो देश अशुद्ध हो जाता है और जिस देश में जब खून किया जाए तब केवल खूनी के लोहू बहाने ही से उस देश का प्रायश्चित्त हो सकता है।
३४ सो जिस देश में तुम रहनेहारे होगे उस के बीच मैं रहूंगा उस को अशुद्ध न करना मैं यहोवा तो इस्राएलियों के बीच रहता हूं॥

(गोत्र गोत्र के भाग में गड़बड़ पड़ने का निषेध।)

३६. फिर यूसुफियों के कुलों में से गिलाद जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था उस के वंश के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष मूसा के समीप जाकर उन प्रधानों के साम्हने जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे कहने लगे,
१ यहोवा ने हमारे प्रभु को आज्ञा दी थी कि इस्राएलियों को चिट्ठी डालकर देश बांट देना और फिर यहोवा की यह भी आज्ञा

हमारे प्रभु को मिले, कि हमारे सगोत्री सलोफाद का
३ भाग उस की बेटियों को देना। सो यदि वे इस्राएलियों के और किसी गोत्र के पुरुषों से ब्याही जाएं तो उन का भाग हमारे पितरों के भाग से छूट जाएगा और जिस गोत्र में वे ब्याही जाएं उसी गोत्र के भाग में मिल
४ जाएगा सो हमारा भाग घट जाएगा। और जब इस्राएलियों की जुबली¹ होगी तब जिस गोत्र में वे ब्याही जाएं उस के भाग में उन का भाग पक्की रीति से मिल जाएगा और वह हमारे पितरों के गोत्र के भाग से सदा
५ के लिये छूट जाएगा। तब यहोवा से आज्ञा पाकर मूसा ने इस्राएलियों से कहा यूसुफियों के गोत्री ठीक कहते हैं।
६ सलोफाद की बेटियों के विषय में यहोवा ने यह आज्ञा दी है कि जो वर जिस की दृष्टि में अच्छा लगे वह उसी से ब्याही जाए पर वे अपने मूलपुरुष ही के गोत्र
७ के कुल में ब्याही जाएं। और इस्राएलियों के किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में न मिलने पाए इस्राएली अपने अपने मूलपुरुष के गोत्र के भाग पर बने रहें।
८ और इस्राएलियों के किसी गोत्र में किसी की बेटी हो जो भाग पानेवाली हो सो अपने ही मूलपुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से ब्याही जाए इस लिये कि इस्राएली
९ अपने अपने मूलपुरुष के भाग के अधिकारी रहें। किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न पाए इस्राएलियों के एक एक गोत्र के लोग अपने अपने भाग
१० पर बने रहें। यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो उस ने
११ मूसा को दी सलोफाद की बेटियों ने किया। अर्थात् महला तिर्सा होग्ला मिलकह और नोआ जो सलोफाद की बेटियां थीं उन्हों ने अपने चचेरे भाइयों से ब्याह
१२ किया। वे यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में ब्याही गईं और उन का भाग उन के मूलपुरुष के कुल के गोत्र के अधिकार में बना रहा॥

१३ जो आज्ञाएं और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यर्दन नदी के तीर पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दिये सो ये ही हैं॥

(१) अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

व्यवस्थाविवरण नाम पुस्तक।

(पूर्व्व वृत्तान्त का विवरण)

१. जो बातें मूसा ने यर्दन के पार जंगल में अर्थात् सूप के साम्हने के अराबा में और पारान और तोपेल के बीच और लाबान हसेरोत और दीजाहाब में सारे इस्राएलियों से कहीं सो
२ ये हैं। होरेब से कादेशबर्ने तक सेईर पहाड़ का मार्ग
३ ग्यारह दिन का है। चालीसवें बरस के ग्यारहवें महीने के पहिले दिन को जो कुछ यहोवा ने मूसा को इस्राएलियों से कहने की आज्ञा दी थी उस के अनुसार मूसा उन
४ से ये बातें कहने लगा। अर्थात् जब मूसा ने एमोरियों के राजा हेश्बोनवासी सीहोन और बाशान के राजा
५ अश्तारोतवासी ओग को एद्रेई में मार डाला, उस के पीछे यर्दन के पार मोआब देश में वह व्यवस्था का
६ विवरण यों करने लगा कि, हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब के पास हम से कहा था कि तुम लोगों को इस
७ पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गये हैं। सो अब कूच करो और एमोरियों के पहाड़ी देश को और क्या अराबा में क्या पहाड़ों में क्या नीचे के देश में क्या दक्खिन देश में क्या समुद्र के तीर पर जितने लोग एमोरियों के पास रहते हैं उन के देश को अर्थात् लबानोन पर्वत लों और परात नाम महानद लों रहनेहारे कनानियों के देश को भी चले जाओ। सुनो मैं उस देश को
८ तुम्हारे साम्हने किये देता हूं सो जिस देश के विषय यहोवा ने इब्राहीम इसहाक और याकूब तुम्हारे पितरों से किरिया खाकर कहा था कि मैं इसे तुम को और तुम्हारे पीछे तुम्हारे वंश को दूंगा उस को अब जाकर
९ अपने अधिकार में कर लो। फिर उसी समय मैं ने तुम से कहा कि मैं तुम्हारा भार अकेला नहीं सह
१० सकता। क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहां लों बढ़ाया है कि तुम गिनती में आज आकाश के तारों
११ के समान हुए हो। तुम्हारे पितरों का परमेश्वर तुम को हजारगुणा और भी बढ़ाए और अपने वचन के अनुसार
१२ तुम को आशीष देता रहे। पर तुम्हारे जंजाल और भार और झगड़े रगड़े को मैं अकेला कहां तक सह सकता
१३ हूं। सो तुम अपने एक एक गोत्र में से बुद्धिमान और समझदार और प्रसिद्ध पुरुष चुन लो और मैं उन्हें तुम
१४ पर मुखिया करके ठहराऊंगा। इस के उत्तर में तुम ने मुझ से कहा जो कुछ तू हम से कहता है उस का करना

१५ अच्छा है। सो मैं ने तुम्हारे गोत्रों के मुख्य पुरुषों को जो बुद्धिमान् और प्रसिद्ध पुरुष थे चुनकर तुम पर मुखिया ठहराया अर्थात् हजार हजार सौ सौ पचास पचास और दस दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों के सरदार भी १६ ठहरा दिये। और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा दी कि तुम अपने भाइयों के बीच के मुकद्दमे सुना करो और उन के बीच और उन के पड़ोसवाले पर-१७ देशियों के बीच भी धर्म्म से न्याय किया करो। न्याय करते समय किसी का पक्ष न करना जैसे बड़े की वैसे ही छोटे मनुष्य की भी सुनना किसी का मुंह देखकर न डरना क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है और जो मुकद्दमा तुम्हारे लिये कठिन हो सो मेरे पास ले आना और १८ मैं उसे सुनूंगा। और मैं ने उसी समय तुम्हारे सारे कर्त्तव्य कर्म्म तुम को बता दिये।

१९ और हम होरेब से कूच करके अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उस सारे बड़े और भयानक जंगल में होकर चले जिसे तुम ने एमोरियों के पहाड़ी देश के २० मार्ग में देखा और हम कादेशबर्ने लों आये। वहां मैं ने तुम से कहा तुम एमोरियों के पहाड़ी देश लों आ गये हो २१ जिस को हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है। देखो उस देश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साम्हने किये देता है सो अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो और उसे अपने अधिकार में ले २२ लो न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो। सो तुम सब मेरे पास आकर कहने लगे हम अपने आगे पुरुषों को भेज देंगे जो उस देश का पता लगाकर हम को यह सन्देशा दें कि कौन से मार्ग होकर चलना और किस किस २३ नगर में प्रवेश करना पड़ेगा। इस बात से प्रसन्न होकर मैं ने तुम में से बारह पुरुष अर्थात् गोत्र पीछे एक पुरुष २४ चुन लिये। और वे पहाड़ पर चढ़ गये और एशकोल २५ नाम नाले को पहुंचकर उस देश का भेद लिया, और उस देश के फलों में से कुछ हाथ में लेकर हमारे पास आये और हम को यह सन्देशा दिया कि जो देश हमारा २६ परमेश्वर यहोवा हमें देता है सो अच्छा है। तौभी तुम ने वहां जाने से नाह किया बरन अपने परमेश्वर यहोवा २७ की आज्ञा के बिरुद्ध हो, अपने अपने डेरे में यह कह कर कुड़कुड़ाने लगे कि यहोवा हम से बैर रखता है इस कारण हम को मिस्र देश से निकाल ले आया है कि हम को २८ एमोरियों के बश में करके सत्यानाश कर डाले। हम किधर जाएं हमारे भाइयों ने यह कहके हमारे मन को कच्चा कर दिया है कि वहां के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं और वहां के नगर बड़े बड़े हैं और उन की शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं[१] और हम ने वहां अनाकवंशियों को २९ भी देखा है। मैं ने तुम से कहा उन के कारण त्रास मत ३० खाओ और न डरो। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है सो आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा जैसे कि उस ने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये किया। ३१ फिर तुम ने जंगल में भी देखा कि जिस रीति कोई पुरुष अपने लड़के को उठाये चलता है उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हम को इस स्थान पर पहुंचने लों उस ३२ सारे मार्ग में जिस से हम आये हैं उठाये रहा। इस बात पर भी तुम ने अपने उस परमेश्वर यहोवा पर विश्वास ३३ न किया, जो तुम्हारे आगे आगे इसलिये चलता रहा कि डेरे डालने का स्थान तुम्हारे लिये ढूंढे और रात को आग में और दिन को बादल में प्रगट होकर चलने का ३४ मार्ग दिखाए। सो तुम्हारी वे बातें सुनकर यहोवा का कोप भड़क उठा और उस ने यह किरिया खाई कि, ३५ निश्चय इस बुरी पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस अच्छे देश को देखने न पाएगा जिसे मैं ने उन के पितरों को ३६ देने की किरिया खाई थी। यपुन्ने का पुत्र कालेब ही उसे देखने पाएगा और जिस भूमि पर उस के पांव पड़े हैं उसे मैं उस को और उस के बंश को भी दूंगा क्योंकि ३७ वह मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिया है। और मुझ पर भी यहोवा तुम्हारे कारण कोपित हुआ और यह कहा कि तू ३८ भी वहां जाने न पाएगा। नून का पुत्र यहोशू जो तेरे साम्हने खड़ा रहता है वह तो वहां जाने पाएगा सो उस को हियाव बंधा क्योंकि उस देश को इस्राएलियों के ३९ अधिकार में वही कर देगा। फिर तुम्हारे बालबच्चे जिन के विषय में तुम कहते हो कि ये लूट में चले जाएंगे और तुम्हारे जो लड़केबाले अभी भले बुरे का भेद नहीं जानते वे वहां प्रवेश करेंगे और उन को मैं वह देश दूंगा और ४० वे उस के अधिकारी होंगे। पर तुम लोग घूम कर कूच करो और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल की ओर जाओ। ४१ तब तुम ने मुझ से कहा हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है अब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार चढ़के लड़ेंगे। सो तुम अपने अपने हथियार बांध कर पहाड़ पर बिना सोचे समझे चढ़ने को तैयार ४२ हो गये। तब यहोवा ने मुझ से कहा उन से कह दे कि तुम मत चढ़ो और न लड़ो क्योंकि मैं तुम्हारे बीच नहीं हूं कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने शत्रुओं से हार जाओ। ४३ यह बात मैं ने तुम से कह दी पर तुम ने न मानी बरन ढिठाई से यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन करके पहाड़ पर

(१) मूल में नगर बड़े और आकाश लों दृढ़ हैं।

४४ चढ़ गये । तब उस पहाड़ के निवासी एमोरियों ने तुम्हारा साम्हना करने के निकलकर मधुमक्खियों की नाईं तुम्हारा पीछा किया और सेईर देश के होर्मा लों तुम्हें
४५ मारते मारते चले आये । सो तुम लौटकर यहोवा के साम्हने रोने लगे पर यहोवा ने तुम्हारी न सुनी न
४६ तुम्हारी बातों पर कान लगाया । और तुम जितने दिन रहे उतने अर्थात् बहुत दिन कादेश में रहे ॥

२. तब उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मुझ को दी थी हम ने घूम कर कूच किया और लाल समुद्र के मार्ग के जंगल की ओर चले और बहुत दिन तक सेईर पहाड़ के बाहर बाहर चलते
२, ३ रहे । तब यहोवा ने मुझ से कहा, तुम लोगों को इस पहाड़ के बाहर बाहर चलते हुए बहुत दिन बीत गये अब
४ घूम कर उत्तर की ओर चलो । और तू प्रजा के लोगों को मेरी यह आज्ञा सुना कि तुम सेईर के निवासी अपने भाई एसावियों के सिवाने के पास होकर जाने पर हो और वे तुम से डर जाएंगे सो तुम बहुत चौकस रहो ।
५ उन्हें न छेड़ना क्योंकि उन के देश में से मैं तुम्हें पांव धरने का ठौर तक न दूंगा इस कारण से कि मैं ने सेईर
६ पर्वत एसावियों के अधिकार में कर दिया है । तुम उन से भोजन रुपये से मोल लेकर खा सकोगे और रुपया
७ देकर कूओं से पानी भरके पी सकोगे । क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सब कामों के विषय तुम्हें आशिष देता आया है इस भारी जंगल में तुम्हारा चलना फिरना वह जानता है इन चालीस बरसों में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग रहा है तुम को
८ कुछ घटी नहीं हुई । यों हम सेईर निवासी अपने भाई एसावियों के पास से होकर अराबा के मार्ग और एलत और एस्योनगेबेर को पीछे छोड़कर चले ॥

९ फिर हम मुड़कर मोआब के जंगल के मार्ग से होकर चले और यहोवा ने मुझ से कहा मोआबियों को न सताना और न लड़ने को छेड़ना क्योंकि मैं उन के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न कर दूंगा क्योंकि मैं ने आर
१० को लूतियों के अधिकार में किया है । अगले दिनों में वहां एमी लोग बसे हुए थे जो अनाकियों के समान
११ बलवन्त और लंबे लंबे और गिनती में बहुत थे । और अनाकियों की नाईं वे भी रपाई गिने जाते थे पर मोआबी
१२ उन्हें एमी कहते हैं । और अगले दिनों सेईर में होरी लोग बसे हुए थे पर एसावियों ने उन को उस देश से निकाल दिया और अपने साम्हने से नाश करके उन के स्थान पर आप बस गये जैसे कि इस्राएलियों ने यहोवा के दिये हुए अपने अधिकार के देश में किया । अब तुम लोग कूच
१३ करके जेरेद नदी के पार आओ सो हम जेरेद नदी के पार
१४ आये । और हमारे कादेशबर्ने को छोड़ने से लेकर जेरेद नदी के पार होने लों अड़तीस बरस बीत गये उस बीच में यहोवा की किरिया के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा
१५ छावनी में से नाश हो गये । जब लों वे नाश न हुए तब लों यहोवा का हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिये उन के विरुद्ध बढ़ा ही रहा ॥

१६ सो जब सब योद्धा मरते मरते लोगों के बीच में से नाश
१७, १८ हो गये, तब यहोवा ने मुझ से कहा, अब मोआब के सिवाने अर्थात् आर को लांघ । और जब तू अम्मो-
१९ नियों के साम्हने आकर उन के निकट पहुंचे तब उन को न सताना और न छेड़ना क्योंकि मैं अम्मोनियों के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न करूंगा क्योंकि मैं ने उसे लूतियों के अधिकार में कर दिया है । वह देश भी
२० रपाइयों का गिना जाता था क्योंकि अगले दिनों में रपाई जिन्हें अम्मोनी जमजुम्मी कहते थे सो वहां बसे
२१ हुए थे । वे भी अनाकियों के समान बलवान् और लंबे लंबे और गिनती में बहुत थे पर यहोवा ने उन को अम्मोनियों के साम्हने से नाश कर डाला और उन्हों ने उन को उस देश से निकाल दिया और उन के स्थान पर
२२ आप बस गये । जैसे कि उस ने सेईर के निवासी एसावियों के साम्हने से होरियों को नाश किया और उन्हों ने उन को उस देश से निकाल दिया और आज लों उन के स्थान
२३ पर वे आप बसे हैं । वैसा ही अव्वियों को जो अज्जा नगर लों गांवों में बसे हुए थे कप्तोरियों ने जो कप्तोर से निकले थे नाश किया और उन के स्थान पर आप बस
२४ गये । अब तुम लोग उठ कर कूच करो और अर्नोन के नाले के पार चलो सुन मैं देश समेत हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन को तेरे हाथ में कर देता हूं सो उस देश को अपने अधिकार में लेने का आरम्भ कर और उस
२५ राजा से युद्ध छेड़ दे । जितने लोग धरती भर पर[१] रहते हैं उन सभों के मन में मैं आज के दिन से तेरे कारण डर और थरथराहट समवाने लगूंगा सो वे तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे कांपेंगे और पीड़ित होंगे ॥

२६ सो मैं ने कदेमोत नाम जंगल से हेशबोन के राजा सीहोन के पास मेल की ये बातें कहने को दूत भेजे
२७ कि, मुझे अपने देश में होकर जाने दे मैं सड़क सड़क चला जाऊंगा दाहिने बाएं न मुड़ूंगा । रुपया
२८ लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देना कि मैं खाऊं और पानी

(१) मूल में आकाश के तले ।

भी रुपया लेकर मुझ को देना कि मैं पीऊं केवल मुझे २९ पांव पांव चले जाने दे। जैसा सेईर के निवासी एसावियों ने और आर के निवासी मोआबियों ने मुझ से किया वैसा ही तू भी मुझ से कर इस रीति मैं यर्दन पार होकर उस देश में पहुंचूंगा जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता ३० है। पर हेशबोन के राजा सीहोन ने हम को अपने देश में होकर चलने देने से नाह किया क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उस का चित्त कठोर और उस का मन मगरा कर दिया था इसलिये कि उस को तेरे हाथ में कर दे ३१ जैसा आज प्रगट है। और यहोवा ने मुझ से कहा सुन मैं देश समेत सीहोन को तेरे वश में कर देने पर हूं उस ३२ देश को अपने अधिकार में लेने का आरंभ कर। तब सीहोन अपनी सारी सेना समेत निकल आया और हमारा ३३ साम्हना करके युद्ध करने को यहस लों चढ़ आया। और हमारे परमेश्वर यहोवा ने उस को हम से हरा दिया और हम ने उस को पुत्रों और सारी सेना समेत मार ३४ लिया। और उसी समय हम ने उस के सारे नगर ले लिये और एक एक बसे हुए नगर का स्त्रियों और बालबच्चों ३५ समेत यहां लों सत्यानाश किया कि कोई न छूटा। पर पशुओं को हम ने अपना कर लिया और जीते हुए नगरों ३६ की लूट भी हम ने ले ली। अर्नोन के नाले की छोर वाले अरोएर नगर से लेकर और उस नाले में के नगर से लेकर गिलाद लों कोई नगर ऐसा ऊंचा न रहा जो हमारे साम्हने ठहर सकता, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ३७ ने सभों को हमारे वश कर दिया। पर तुम अम्मोनियों के देश के निकट बरन यब्बोक नदी के उस पार जितना देश है और पहाड़ी देश के नगर जहां जहां जाने से हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को बर्जा वहां न गये॥

३. तब

३. तब हम मुड़कर बाशान के मार्ग से चढ़ चले और बाशान का ओग नाम राजा अपनी सारी सेना समेत हमारा साम्हना २ करने को निकल आया कि एद्रेई में युद्ध करे। तब यहोवा ने मुझ से कहा उस से मत डर क्योंकि मैं उस को सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में किये देता हूं और जैसा तू ने हेशबोन के निवासी एमोरियों के राजा ३ सीहोन से किया है वैसा ही उस से भी करना। सो हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी सेना समेत बाशान के राजा ओग को भी हमारे हाथ में कर दिया और हम उस को यहां लों मारते रहे कि उस का कोई भी बचा न रहा। ४ उसी समय हम ने उस के सारे नगरों को ले लिया कोई ऐसा नगर न रहा जिसे हम ने उन से न ले लिया हो इस रीति अर्गोब का सारा देश जो बाशान में ओग के राज्य में था और उस में साठ नगर थे सो हमारे वश से ५ आ गया। ये सब नगर गढ़वाले थे और उन के ऊंची ऊंची शहरपनाह और फाटक और बेंड़े थे और इन को ६ छोड़ बिना शहरपनाह के भी बहुत से नगर थे। और जैसा हम ने हेशबोन के राजा सीहोन के नगरों से किया था वैसा ही हम ने इन नगरों से भी किया अर्थात् सब बसे हुए नगरों का स्त्रियों और बालबच्चों समेत सत्यानाश ७ कर डाला। पर सब घरैले पशु और नगरों की लूट हम ८ ने अपनी कर ली। यों हम ने उस समय यर्दन के इस पार रहनेहारे एमोरियों के दोनों राजाओं के हाथ से अर्नोन के नाले से लेकर हेर्मोन पर्वत तक का देश ले ९ लिया। हेर्मोन को सीदोनी लोग सिर्योन और एमोरी लोग १० सनीर कहते हैं। समथर देश के सब नगर और सारा गिलाद और सल्का और एद्रेई तक जो ओग के राज्य ११ के नगर थे सारा बाशान हमारे वश में आ गया। जो रपाई रह गये थे उन में से केवल बाशान का राजा ओग रह गया था उस की चारपाई जो लोहे की है सो तो अम्मोनियों के रब्बा नगर में पड़ी है, साधारण पुरुष के हाथ के लेखे से उस की लम्बाई नौ हाथ की और चौड़ाई चार हाथ १२ की है। जो देश हम ने उस समय अपने अधिकार में ले लिया सो यह है अर्थात् अर्नोन के नाले के किनारेवाले अरोएर नगर से ले सब नगरों समेत गिलाद के पहाड़ी देश का आधा भाग जिसे मैं ने रूबेनियों और गादियों १३ को दे दिया, और गिलाद का बचा हुआ भाग और सारा बाशान अर्थात् अर्गोब का सारा देश जो ओग के राज्य में था इन्हें मैं ने मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया। सारा १४ बाशान तो रपाइयों का देश कहलाता है। और मनश्शेई याईर ने गशूरियों और माकावासियों के सिवानों लों अर्गोब का सारा देश ले लिया और बाशान के नगरों का नाम अपने नाम पर हब्बोत्याईर[1] रक्खा और वही नाम १५ आज लों बना है। और मैं ने गिलाद देश माकीर को १६ दे दिया। और रूबेनियों और गादियों को मैं ने गिलाद से ले अर्नोन के नाले लों का देश दे दिया अर्थात् उस नाले का बीच उन का सिवाना ठहराया और यब्बोक नदी १७ लों जो अम्मोनियों का सिवाना है, और किन्नेरेत से ले पिसगा की सलामी के नीचे के अराबा के ताल लों जो खारा ताल भी कहावता है अराबा और यर्दन की पूरब ओर का सारा देश भी मैं ने उन्हीं को दे दिया॥

१८ और उस समय मैं ने तुम्हें यह आज्ञा दी कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह देश दिया है कि उसे

(१) अर्थात याईर की बस्तियां।

अपने अधिकार में रक्खो तुम सब योद्धा हथियारबंध
१८ होकर अपने भाई इस्राएलियों के आगे पार चलो। पर
तुम्हारी स्त्रियां और बालबच्चे और पशु जिन्हें मैं जानता
हूं कि बहुत से हैं सो सब तुम्हारे नगरों में जो मैं ने
२० तुम्हें दिये हैं रह जाएं। और जब यहोवा तुम्हारे भाइयों
को वैसा विश्राम दे जैसा कि उस ने तुम को दिया है
और वे उस देश के अधिकारी हो जाएं जो तुम्हारा परमे-
श्वर यहोवा उन्हें यर्दन पार देता है तब तुम भी अपने
अपने अधिकार की भूमि पर जो मैंने तुम्हें दी है लौटोगे।
२१ फिर मैं ने उसी समय यहोशू से चिताकर कहा, तू ने
अपनी आंखों से देखा है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने इन
दोनों राजाओं से क्या क्या किया है वैसा ही यहोवा उन
२२ सब राज्यों से करेगा जिन में तू पार होकर जाएगा। उन
से न डरना क्योंकि जो तुम्हारी ओर से लड़नेवाला है
सो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है॥

२३ उसी समय मैं ने यहोवा से गिड़गिड़ाकर बिनती
२४ की कि, हे प्रभु यहोवा तू अपने दास को अपनी महिमा
और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है स्वर्ग में और पृथिवी
पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से काम और पराक्रम के
२५ कर्म्म कर सके। सो मुझे पार जाने दे कि यर्दन पार के
उस उत्तम देश को अर्थात् उस उत्तम पहाड़ और लबा-
२६ नोन को भी देखने पाऊं। पर यहोवा तुम्हारे कारण मुझ
से रूठ गया और मेरी न सुनी बरन यहोवा ने मुझ से
कहा बस कर इस विषय में फिर कभी मुझ से बातें न
२७ करना। पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा और पूरब
पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों ओर दृष्टि करके उस देश
को देख ले क्योंकि तू इस यर्दन पार जाने न पाएगा।
२८ और यहोशू को आज्ञा दे और उसे हियाव बंधाकर दृढ़
कर, क्योंकि इन लोगों के आगे आगे वही पार जाएगा
और जो देश तू देखेगा उस को वही उन का निज भाग
२९ करा देगा। सो हम बेतपोर के साम्हने की तराई में रहे॥

(मूसा का उपदेश)

४. अब हे इस्राएल जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता
हूं उन्हें सुन लो इसलिये कि उन पर चलो जिस से तुम
जीते रहो और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर
यहोवा तुम्हें देता है उस में जाकर उस के अधिकारी हो
२ जाओ। जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो
कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम
३ मानना। तुम ने तो अपनी आंखों से देखा है कि पोर के
बाल के कारण यहोवा ने क्या क्या किया अर्थात् जितने
मनुष्य बालपोर के पीछे हो लिये थे उन सभों का तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच में से सत्यानाश कर
४ डाला। पर तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ साथ
५ बने रहे सो सब के सब आज जीते हो। सुन मैं ने तो
अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि
और नियम सिखाये हैं कि जिस देश के अधिकारी होने
६ जाते हो उस में तुम उन के अनुसार चलो। सो तुम उन
को धारण करना और मानना क्योंकि देश देश के लोगों
के लेखे तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी
अर्थात् वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे कि निश्चय
७ यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है। देखो कौन
ऐसी बड़ी जाति है जिस का देवता उस के ऐसे समीप
रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा जब कि हम उस
८ को पुकारते हैं। फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिस के
पास ऐसी धर्म्ममय विधि और नियम हों जैसी कि यह
९ सारी व्यवस्था जो मैं आज तुम को सुनाता हूं। केवल
यह अवश्य है कि तुम अपने विषय सचेत रहो और
अपने मन की बड़ी चौकसी करो न हो कि जो जो बातें
तुम ने अपनी आंखों से देखीं उन को बिसरा दो वा जीवन
भर में कभी अपने मन से उतरने दो बरन तुम उन्हें अपने
१० बेटों पोतों को जताया करना। विशेष करके उस दिन
की बातें जिस में तू होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा
के साम्हने खड़ा था जब यहोवा ने मुझ से कहा था कि
उन लोगों को मेरे पास इकट्ठा कर कि मैं उन्हें अपने
वचन सुनाऊं इसलिये कि वे सीखें कि जितने दिन
पृथिवी पर जीते रहें उतने दिन मेरा भय मानते रहें और
११ अपने लड़केबालों को भी सिखाएं। तब तुम समीप
जाकर उस पर्वत के नीचे खड़े हुए, उस पर्वत पर की लौ
आकाश लों पहुंचती थी और उस पर अन्धियारा और
१२ बादल और घोर अन्धकार छाया हुआ था। तब यहोवा ने
उस आग के बीच में से तुम से बातें कीं बातों का शब्द
तो तुम को सुन पड़ा पर रूप कुछ न देख पड़ा केवल
१३ शब्द ही सुन पड़ा। और उस ने तुम को अपनी वाचा के
दसों वचन बताकर उन के मानने की आज्ञा दी और
१४ उन्हें पत्थर की दो पटियाओं पर लिख दिया। और मुझ
को यहोवा ने उसी समय तुम्हें विधि और नियम सिखाने
की आज्ञा दी इसलिये कि जिस देश के अधिकारी होने
को तुम पार जाने पर हो उस में तुम उन को माना करो।
१५ सो तुम अपने विषय बहुत सचेत रहो क्योंकि जब
यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से
१६ बातें कीं तब तुम को कोई रूप न देख पड़ा। कहीं ऐसा
१७ न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के, चाहे

पृथिवी पर चलनेहारे किसी पशु चाहे आकाश में उड़ने-
१८ हारे किसी पक्षी के, चाहे भूमि पर रेंगनेहारे किसी जन्तु
चाहे पृथिवी के जल में[1] रहनेहारी किसी मछली के रूप
१९ की कोई मूर्ति खोद कर बनाओ, वा जब तुम आकाश
की ओर आंखें उठाकर सूर्य्य चंद्रमा तारों को अर्थात्
आकाश का सारा गण देखो तब बहक कर उन्हें दण्ड-
वत और उन की सेवा करने लगो जिन को तुम्हारे परमे-
श्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालों के लिये रक्खा[2]
२० है। और तुम को यहोवा लोहे के भट्ठे के सरीखे मिस्र देश
में निकाल ले आया है इसलिये कि तुम उस की प्रजारूपी
२१ निज भाग ठहरो जैसा आज प्रगट है। फिर तुम्हारे कारण
यहोवा ने मुझ से कोप करके यह किरिया खाई कि तू
यर्दन पार जाने न पाएगा और जो उत्तम देश इस्राएलियों
का परमेश्वर यहोवा उन्हें उन का निज भाग कर के देता
२२ है उस में तू प्रवेश करने न पाएगा। सो मुझे इसी देश
में मरना है मैं तो यर्दन पार नहीं जा सकता पर तुम
पार जाकर उस उत्तम देश के अधिकारी हो जाओगे।
२३ सो अपने विषय सचेत रहो न हो कि तुम उस वाचा को
बिसराकर जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से बांधी है
किसी वस्तु की मूर्त्ति खोदकर बनाओ जो तेरे परमेश्वर
२४ यहोवा ने तेरे लिये बरजी है। क्योंकि तेरा परमेश्वर
यहोवा भस्म करनेहारी आग सा जल उठनेहारा ईश्वर है॥

२५ यदि उस देश में रहते रहते बहुत दिन बीत जाने
पर और अपने बेटे पोते उत्पन्न होने पर तुम बिगड़कर
किसी वस्तु के रूप की मूर्त्ति खोद कर बनाओ और इस
रीति अपने परमेश्वर यहोवा के लेखे बुराई करके उसे
२६ रिसिया दो, तो मैं आज आकाश और पृथिवी को तुम्हारे
विरुद्ध साक्षी करके कहता हूं कि जिस देश के अधिकारी
होने के लिये तुम यर्दन पार जाने पर हो उस में से तुम
जल्दी बिल्कुल नाश हो जाओगे और बहुत दिन रहने न
२७ पाओगे वरन पूरी रीति से सत्यानाश हो जाओगे। और
यहोवा तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करेगा
और जिन जातियों के बीच यहोवा तुम को पहुंचाएगा उन
२८ में तुम थोड़े ही रह जाओगे। और वहां तुम मनुष्य के
बनाये हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे
२९ जो न देखते न सुनते न खाते न सूंघते हैं। पर वहां भी
यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ो तो उसे अपने
सारे मन और सारे जीव से पूछने पर वह तुम्हें मिलेगा।
३० अन्त के दिनों में जब तू संकट में पड़ेगा और ये सब
विपत्तियां तुझ पर आ पड़ेंगी तब तू अपने परमेश्वर यहोवा
की ओर फिरेगा और उस की मानने लगेगा। ३१ और तेरा
परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है वह तुझे धोखा न देगा
न नाश करेगा और जो वाचा उस ने तेरे पितरों से
किरिया खाकर बांधी है उस को न भूलेगा। ३२ देखो जब से
परमेश्वर ने मनुष्य को सिरजकर पृथिवी पर रक्खा तब
से लेकर तू अपने उत्पन्न होने के दिन लों की बातें पूछ
और आकाश की एक छोर से दूसरी छोर लों की बातें
पूछ क्या ऐसी बड़ी बात कभी हुई वा सुनने में आई है?
३३ क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की वाणी आग के बीच
में से आती हुई सुन कर जीती रही जैसे कि तू ने सुनी है?
३४ फिर क्या परमेश्वर ने और किसी जाति को दूसरी जाति के
बीच से निकालने को कमर बांधकर परीक्षा और चिन्ह
और चमत्कार और युद्ध और बली हाथ और बढ़ाई हुई
भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किये जैसे तुम्हारे परम-
श्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किये? ३५ यह सब तुझ
को दिखाया गया इसलिये कि तू जान रक्खे कि यहोवा
ही परमेश्वर है उस को छोड़ और कोई है ही नहीं।
३६ आकाश में से उस ने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे
शिक्षा दे और पृथिवी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग
दिखाई और उस के वचन आग के बीच में से आते तुझे
सुन पड़े। ३७ और उस ने जो तुम्हारे पितरों से प्रेम
रक्खा इस कारण उन के पीछे उन के वंश को चुन
लिया और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा
मिस्र में इस लिये निकाल लाया, ३८ कि तुझ से बड़ी और
सामर्थी जातियों को तेरे आगे से निकालकर तुझे उन के
देश में पहुंचाए और उसे तेरा निज भाग कर दे जैसा
आज के दिन देख पड़ता है। ३९ सो आज जान ले और अपने
मन में सोच भी रख कि ऊपर आकाश में और नीचे
पृथिवी पर यहोवा ही परमेश्वर है और कोई नहीं। ४० और तू
उस की विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे
सुनाता हूं माना इस लिये कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश
का भी भला हो और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे
देता है उस में तेरे दिन बहुत वरन अनन्त हों॥

४१ तब मूसा ने यर्दन के पार पूरब और तीन नगर
अलग किये, ४२ इसलिये कि जो कोई बिन जाने और
बिना पहले से बैर रक्खे अपने किसी भाई को मार डाले
सो उन में से किसी नगर में भाग जाए और भाग कर
जीता बचे ४३ अर्थात् रूबेनियों का बेसेर नगर जो जंगल
के समथर देश में है और गादियों के गिलाद का रामोत
और मनश्शेइयों के बाशान का गोलान॥

४४ फिर जो व्यवस्था मूसा ने इस्राएलियों को दी सो यह
है। ४५ ये वे ही चितौनियां और नियम हैं जिन्हें मूसा ने

(१) मूल में पृथिवी के नीचे जल में। (२) मूल में, बांट दिया।

इस्राएलियों को तब कह सुनाया जब वे मिस्र से निकले
४६ थे अर्थात् यर्दन के पार बेतपोर के साम्हने की तराई में एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के देश में जिस
४७ राजा को उन्हों ने मिस्र से निकलने के पीछे मारा, और उन्हों ने उस के देश को और बाशान के राजा ओग के देश को अपने वश में कर लिया। यर्दन के पार सूर्योदय की ओर रहनेहारे एमोरियों के राजाओं के ये देश थे।
४८ यह देश अर्नोन के नाले की छोरवाले अरोएर से ले
४९ सीओन जो हर्मोन भी कहावता है, उस पर्वत लों का सारा देश और पिसगा की ढलामी के नीचे के अराबा के ताल लों यर्दन पार पूरब ओर का सारा अराबा है॥

५. मूसा ने सारे इस्राएलियों को बुलवाकर कहा हे इस्राएलियो, जो जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूं सो सुनो इसलिये
२ कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा बान्धी।
३ इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं हम ही से
४ बन्धाया जो सब के सब आज यहां जीते हुए हैं। यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से
५ साम्हने साम्हने बातें कीं। उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े सो मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उस का वचन तुम्हें बताने को खड़ा रहा तब उस ने कहा,
६ तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से निकाल लाया है सो मैं हूं॥
७ मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना[१]॥
८ तू अपने लिये कोई मूर्त्ति खोदकर न बनाना न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में वा पृथिवी पर वा
९ पृथिवी के जल में[२] है। तू उन को दण्डवत् न करना न उन की उपासना करना क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेहारा ईश्वर हूं और जो मुझ से बैर रखते हैं उन के बेटों पोतों और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया
१० करता हूं, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हजारों पर करुणा किया करता हूं॥
११ अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ[३] ले वह उन को निर्दोष न ठहराएगा॥
१२ विश्रामदिन को मानकर पवित्र रखना जैसे तेरे परमे-
१३ श्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी। छः दिन तो परिश्रम
१४ करके अपना सारा कामकाज करना। पर सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है उस में न तू किसी भान्ति का कामकाज करना न तेरा बेटा न तेरी बेटी न तेरा दास न तेरी दासी न तेरा बैल न तेरा गदहा न तेरा कोई पशु न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो जिस से तेरा दास और तेरी दासी
१५ तेरी नाईं सुस्ताएं। और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है॥
१६ अपने पिता और अपनी माता का आदर करना जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन लों रहने पाए और तेरा भला हो॥
१७ खून न करना॥
१८ और व्यभिचार न करना॥
१९ और चोरी न करना॥
२० और किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना॥
२१ और न किसी की स्त्री का लालच करना और न किसी के घर का लालच करना न उस के खेत का न उस के दास का न उस की दासी का न उस के बैल गदहे का न उस की किसी वस्तु का लालच करना॥
२२ ये ही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर आग और बादल और घोर अन्धकार के बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकारके कहे और इस से अधिक और कुछ न कहा और उन्हें उस ने पत्थर की दो पटियाओं पर
२३ लिखकर मुझे दे दिया। जब पर्वत आग से जल रहा था और तुम ने उस शब्द को अन्धियारे के बीच में से आते सुना तब तुम और तुम्हारे गोत्रों के सब मुख्य
२४ मुख्य पुरुष और तुम्हारे पुरनिये मेरे पास आये। और तुम कहने लगे हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को अपना तेज और महिमा दिखाई है और हम ने उस का शब्द आग के बीच में से आते हुए सुना आज के दिन हम को जान पड़ा है कि परमेश्वर मनुष्य से बात करता है
२५ तौभी मनुष्य जीता रहता है। अब हम क्यों मर जाएं क्योंकि इस बड़ी आग से हम भस्म हो जाएंगे और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनें तो मर
२६ जाएंगे। सारे प्राणियों में से कौन ऐसा है जो हमारी नाईं जीवते और आग के बीच में से बोलते हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीता बचा हो। तू समीप जा २७

(१) वा मेरे साम्हने पराये देवताओं को न मानना।
(२) मूल में पृथिवी के नीचे के जल में।
(३) वा झूठी बात पर।

और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे सो सुन ले फिर जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे सो हम से कहना और २८ हम सुनकर उसे मानेंगे। जब तुम मुझ से ये बात कह रहे थे तब यहोवा ने सुना और उस ने मुझ से कहा कि इन लोगों ने जो जो बातें तुझ से कही हैं सो मैं ने सुनीं २९ इन्हों ने जो कुछ कहा सो भला कहा। भला होता कि उन का मन सदा ऐसा ही बना रहे कि मेरा भय मानते और मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें जिस से उन की ३० और उन के वंश की भलाई सदा लों बनी रहे। जाकर ३१ उन से कह कि अपने अपने डेरे में फिर जाओ। पर तू यहीं मेरे पास खड़ा होना और मैं वे सारी आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें तुझे उन को सिखाना होगा तुझ से कहूंगा इसलिये कि वे उन्हें उस देश में ३२ जिस का अधिकार मैं उन्हें देने पर हूं मानें। सो तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने में चौकसी ३३ करना, न तो दहिने मुड़ना और न बाएं। जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है उस सारे मार्ग पर चलते रहो इसलिये कि तुम जीते रहो और तुम्हारा भला हो और जिस देश के तुम अधिकारी होगे उस में तुम बहुत दिन लों बने रहो॥

६. यह वह आज्ञा और वे विधियां और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने इसलिये आज्ञा दी है कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसके अधिकारी होने को २ पार जाने पर हो, और तू और तेरा बेटा और तेरा पोता यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियों और आज्ञाओं पर जो मैं तुझे सुनाता हूं अपने जीवन भर ३ चलते रहें जिस से तू बहुत दिन लों बना रहे। सो हे इस्राएल सुन और ऐसा ही करने को चौकसी कर इसलिये कि तेरा भला हो और तेरे पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम बहुत हो जाओ॥

४ हे इस्राएल सुन यहोवा हमारा परमेश्वर है यहोवा ५ एक है। तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। ६ और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं सो तेरे ७ मन में बनी रहें। और तू इन्हें अपने लड़केवालों को समझाकर सिखाया करना और घर में बैठे मार्ग पर चलते ८ लेटते उठते इन की चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्हानी करके बांधना और ये तेरी आंखों के ९ बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना॥

और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुं- १० चाए जिस के विषय उस ने इब्राहीम इसहाक और याकूब नाम तेरे पितरों से तुझे देने की किरिया खाई और जब वह तुझ को बड़े बड़े और अच्छे नगर जो तू ने नहीं बनाये, और अच्छे अच्छे पदार्थों से भरे हुए घर जो तू ११ ने नहीं भरे और खुदे हुए कूएं जो तू ने नहीं खोदे और दाख की बारियां और जलपाई के वृक्ष जो तू ने नहीं लगाये ये सब वस्तुएं जब वह दे और तू खाके तृप्त हो, तब सचेत रहना न हो कि तू यहोवा को भूल जाए जो १२ तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना उसी की सेवा १३ करना और उसी के नाम की किरिया खाना। तुम पराये १४ देवताओं के अर्थात् अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना। क्योंकि तेरा परमेश्वर १५ यहोवा जो तेरे बीच है वह जल उठनेहारा ईश्वर है सो ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के और वह तुझ को पृथिवी पर से नाश कर डाले॥

तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना १६ जैसे कि तुम ने मस्सा में उस की परीक्षा की थी। अपने १७ परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं चितौनियों और विधियों को जो उस ने तुझ को दी हैं सावधानी से मानना। और जो काम यहोवा के लेखे में ठीक और अच्छा है १८ सोई किया करना इसलिये कि तेरा भला हो और जिस उत्तम देश के विषय यहोवा ने तेरे पितरों से किरिया खाई उस में तू प्रवेश करके उसका अधिकारी हो जाए, कि तेरे सब शत्रु तेरे साम्हने से धकियाए जाएं जैसे कि १९ यहोवा ने कहा था॥

फिर आगे को जब तेरा लड़का तुझ से पूछे कि ये २० चितौनियां और विधि और नियम जिन के मानने की आज्ञा हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है इन का प्रयोजन क्या है। तब अपने लड़के से कहना कि जब हम २१ मिस्र में फिरौन के दास थे तब यहोवा बलवन्त हाथ से हम को मिस्र में से निकाल लाया। और यहोवा ने हमारे २२ देखते मिस्र में फिरौन और उस के सारे घराने को दुःख देनेहारे बड़े बड़े चिन्ह और चमत्कार किये। और हम को २३ वह वहां से निकाल लाया इसलिये कि हमें इस देश में पहुंचाकर जिस के विषय उस ने हमारे पितरों से किरिया खाई थी इस को हमें दे। और यहोवा ने हमें ये सब २४ विधियां पालने की आज्ञा दी इसलिये कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें और इस रीति सब दिन

हमारा भला हो और वह हम को जीता रक्खे जैसे कि २५ आज है। और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में उस की आज्ञा के अनुसार इस सारी आज्ञा के मानने में चौकसी करें तो यह हमारे लिये धर्म्म ठहरेगा॥

७. फिर जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में जिस के अधिकारी होने को तू जाने पर है पहुंचाए और तेरे साम्हने से हित्ती गिर्गाशी एमोरी कनानी परिज्जी हिव्वी और यबूसी नाम बहुत सी जातियों को अर्थात् तुम से बड़ी और सामर्थी २ सातों जातियों को निकाल दे, और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुझ से हरवा दे और तू उन को जीते तब उन्हें पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना उन से न वाचा ३ बांधना और न उन पर दया करना। और न उन से ब्याह शादी करना न तो अपनी बेटी उन के बेटे को ब्याह देना और न उन की बेटी को अपने बेटे के लिये ब्याह ४ लेना। क्योंकि वह तेरे बेटे को मेरे पीछे चलने से बहकाएगी और दूसरे देवताओं की उपासना कराएगी और इस कारण यहोवा का कोप तुम पर भड़क उठेगा और ५ वह तुझ को शीघ्र सत्यानाश कर डालेगा। उन लोगों से ऐसा बर्ताव करना कि उन की वेदियों को ढा देना उन की लाठों को तोड़ डालना, उन की अशेरा नाम मूर्त्तियों को काट काट कर गिरा देना और उन की खुदी हुई ६ मूर्त्तियों को आग में जला देना। क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है यहोवा ने पृथिवी भर के सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उस की ७ प्रजा और निज धन ठहरे। यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया इस का कारण यह न था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे बरन तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे। ८ यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से और मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ा कर निकाल लिया इस का यही कारण था कि वह तुम से प्रेम रखता है और उस किरिया को भी पूरी करना चाहता ९ था जो उस ने तुम्हारे पितरों से खाई थी। सो जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है वह विश्वासयोग्य ईश्वर है और जो उस से प्रेम रखते और उस की आज्ञाएं मानते हैं उन के साथ वह हजार पीढ़ी लों अपनी १० वाचा पालता और उन पर करुणा करता रहता है, और जो उस से बैर रखते हैं वह उन के देखते उन से बदला लेकर नाश कर डालता है अपने बैरी के विषय वह विलम्ब न करेगा उस के देखते ही उस से बदला लेगा।

११ इसलिये इन आज्ञाओं विधियों और नियमों को जो मैं आज तुझे चिताता हूं मानने में चौकसी करना॥

१२ और तुम जो इन नियमों को सुनकर मानोगे और इन पर चलोगे तो तेरा परमेश्वर यहोवा भी उस करुणामय वाचा को पालेगा जो उस ने तेरे पितरों से किरिया १३ खाकर बांधी थी। और वह तुझ से प्रेम रक्खेगा और तुझे आशिष देगा और गिनती में बढ़ाएगा और जो देश उस ने तेरे पितरों से किरिया खाकर तुझ को देने कहा है उस में वह तेरी सन्तान पर और अन्न नये दाखमधु और टटके तेल आदि भूमि की उपज पर आशिष दिया करेगा और तेरी गाय बैल और भेड़ बकरियों की बढ़ती १४ करेगा। तू सब देशों के लोगों से अधिक धन्य होगा तेरे बीच में न पुरुष न स्त्री निर्वंश होगी और तेरे पशुओं १५ में भी ऐसा कोई न होगा। और यहोवा तुझ से सब प्रकार के रोग दूर करेगा और मिस्र की बुरी बुरी व्याधियां जिन्हें तू जानता है उन में से किसी को तेरे न उपजाएगा १६ तेरे सब बैरियों ही के उपजाएगा। और देश देश के जितने लोगों को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा तू उन सभों का सत्यानाश करना उन पर तरस की दृष्टि न करना न उन के देवताओं की उपासना १७ करना नहीं तो तू फन्दे में फंस जाएगा। यदि तू अपने मन में सोचे कि वे जातियां जो मुझ से अधिक हैं सो मैं १८ उन को क्योंकर देश से निकाल सकूं, तो भी उन से न डरना जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने फिरौन से और १९ सारे मिस्र से किया उसे भली भांति स्मरण रखना। जो बड़े बड़े परीक्षा के काम तू ने अपनी आंखों से देखे और जिन चिन्हों और चमत्कारों और जिस बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को निकाल लाया उन के अनुसार तेरा परमेश्वर यहोवा उन सब लोगों से भी जिन से तू डरता है २० करेगा। इस से अधिक तेरा परमेश्वर यहोवा उन के बीच बर्रें भी भेजेगा यहां लों कि उन में से जो बच कर छिप जाएंगे सो भी तेरे साम्हने से नाश हो जाएंगे। २१ उन से त्रास न खा क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे २२ बीच है और वह महान और भययोग्य ईश्वर है। तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तेरे आगे से धीरे धीरे निकाल देगा सो तू एक दम से उन का अन्त न कर २३ सकेगा नहीं तो बनैले पशु बढ़कर तेरी हानि करेंगे। तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा उन को तुझ से हरवा देगा और जब लों वे सत्यानाश न हो जाएं तब लों उन को अति २४ व्याकुल करता रहेगा। और वह उन के राजाओं को तेरे हाथ में करेगा और तू उन का नाम भी धरती पर

से[1] मिटा डालेगा उन में से कोई भी तेरे साम्हने खड़ा न रह सकेगा और अन्त में तू उन्हें सत्यानाश कर डालेगा। २५ उन के देवताओं की खुदी हुई मूर्त्तियां तुम आग में जला देना जो चान्दी वा सोना उन पर मढ़ा हो उस का लालच करके न ले लेना नहीं तो तू उस के कारण फंदे में फंसेगा क्योंकि ऐसी वस्तुएं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लेखे घिनौनी हैं। २६ और कोई घिनौनी वस्तु अपने घर में न ले आना नहीं तो तू भी उस के समान सत्यानाश की वस्तु ठहरेगा बरन उसे सत्यानाश की वस्तु जान कर उस से घिन ही घिन और बैर ही बैर रखना॥

८. जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों पर चलने की चौकसी करना इसलिये कि तुम जीते और बढ़ते रहो और जिस देश के विषय यहोवा ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है उस में जाकर उस के अधिकारी हो जाओ। २ और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा इन चालीस बरसों में तुझे सारे मार्ग में इसलिये ले आया है कि वह तुझे दीन बनाए और तेरी परीक्षा करके जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है और तू उस की आज्ञाओं को पालेगा वा ३ नहीं। उस ने तुझ को दीन बनाया और भूखा होने दिया फिर मान जिसे न तू न तेरे पुरखा जानते थे वही तुझ को खिलाया इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता जो जो वचन यहोवा के ४ मुंह से निकलते हैं उन से वह जीता है। इन चालीस बरसों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए और तेरे तन से नहीं ५ गिरे और न तेरे पांव फूले। फिर अपने मन में सोच कि जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता वैसे ही तेरा परमे-६ श्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता है। सो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उस के मार्गों ७ पर चलना और उस का भय मानना। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जाता है जो जल बहती हुई नदियों का और तराइयों और पहाड़ों ८ में निकलते हुए गहिरे गहिरे सोतों का देश है। फिर वह गोहूं जौ दाखलताओं अंजीरों और अनारों का देश है और तेलवाली जलपाई और मधु का भी देश है। ९ उस देश में अन्न की महंगी न होगी बरन उस में तुझे किसी पदार्थ की घटी न होगी वहां के पत्थर लोहे के हैं[2] और वहां के पहाड़ों में से तू ताम्बा खोद कर निकाल सकेगा। १० और तू पेट भर खाएगा और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उस ११ का धन्य मानेगा। सचेत रह न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को बिसरा कर उस की जो जो आज्ञा नियम और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उन का मानना छोड़ दे। १२ ऐसा न हो कि जब तू खाकर तृप्त हो और अच्छे अच्छे १३ घर बनाकर उन में बसे, और तेरी गाय बैलों और भेड़ बकरियों की बढ़ती हो और तेरा सोना चान्दी बरन तेरा १४ सब प्रकार का धन बढ़ जाए। तब तेरा मन फूल जाए और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है, १५ और उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है जहां तेज विषवाले[3] सर्प और बिच्छू हैं और बिना जल के सूखे देश में उस ने तेरे लिये चकमक की चटान से जल १६ निकाला, और तुझे जंगल में मान खिलाया जिसे तुम्हारे पुरखा न जानते थे इसलिये कि वह तुझे दीन बनाए और तेरी परीक्षा करके अन्त में तेरा भला ही १७ करे। और न हो कि तू सोचने लगे कि यह संपत्ति मेरे १८ ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई। पर तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना कि वही है जो तुझे संपत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य इसलिए देता है कि जो वाचा उस ने तेरे पितरों से किरिया खाकर बांधी १९ थी उस को पूरा करे जैसा आज प्रगट है। यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को बिसरा कर दूसरे देवताओं के पीछे हो ले और उन की उपासना और उन को दण्डवत् करे तो मैं आज तुम को चिता देता हूं कि तुम निःसंदेह नाश २० हो जाओगे। जिन जातियों को यहोवा तुम्हारे सन्मुख से नाश करने पर है उन्हीं की नाईं तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा को न मानने के कारण नाश हो जाओगे॥

९. हे इस्राएल सुन आज तू यर्दन पार इसलिये जानेवाला है कि ऐसी जातियों को जो तुझ से बड़ी और सामर्थी हैं और ऐसे बड़े नगरों को जिन की शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं[4] अपने अधिकार २ में ले। उन में बड़े बड़े और लम्बे लम्बे लोग अर्थात् अनाकवंशी रहते हैं जिन का हाल तू जानता है और उन के विषय तू ने यह सुना है कि अनाकवंशियों के साम्हने ३ कौन ठहर सकता है। सो आज यह जान रख कि जो तेरे आगे भस्म करनेहारी आग की नाईं पार जानेहारा है वह तेरा परमेश्वर यहोवा है और वह उन का सत्यानाश

(१) मूल में आकाश के तले से।
(२) मूल में जिस के पत्थर लोहा हैं।
(३) मूल में जलते हुए। (४) मूल में आकाश लों गढ़वाले नगरों को।

करेगा और तेरे साम्हने दबा देगा और तू यहोवा के कहे के अनुसार उन को उस देश से निकाल कर शीघ्र ४ नाश करेगा । जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे साम्हने से धकियाकर निकाल चुके तब यह न सोचना कि यहोवा मेरे धर्म्म के कारण मुझे इस देश का अधिकारी होने को ले आया है बरन उन जातियों की दुष्टता ही के कारण ५ यहोवा उन को तेरे साम्हने से निकालता है । तू जो उन के देश का अधिकारी होने को जाने पर है इस का कारण तेरा धर्म्म वा मन की सिधाई नहीं है तेरा परमेश्वर यहोवा जो उन जातियों को तेरे साम्हने से निकालता है इस का कारण उन की दुष्टता है और यह भी कि जो वचन उस ने इब्राहीम इसहाक और याकूब तेरे पितरों को किरिया खाकर दिया था उस को वह पूरा ६ करना चाहता है । सो यह जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझे वह अच्छा देश देता है कि तू उस का अधिकारी हो सो तेरे धर्म्म के कारण नहीं देता क्योंकि ७ तू तो हठीली[१] जाति है । इस बात का स्मरण कर और कभी न भूल कि जंगल में तू ने किस किस रीति अपने परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया बरन जिस दिन से तू मिस्र देश से निकला जब लों तुम इस स्थान पर न पहुंचे तब लों तुम यहोवा से बलवा ही बलवा करते ८ आये हो । फिर होरेब के पास भी तुम ने यहोवा को क्रोधित किया और वह कोप करके तुम्हें सत्यानाश करने ९ को उठा । जब मैं उस वाचा की पत्थर की पटियाओं को जो यहोवा ने तुम से बांधी थीं लेने के लिये पर्वत पर चढ़ गया तब चालीस दिन और चालीस रात पर्वत १० पर रहा मैं ने न तो रोटी खाई न पानी पिया । और यहोवा ने मुझे अपने ही हाथ[२] की लिखी हुई पत्थर की दोनों पटियाओं को सौंपा और जितने वचन यहोवा ने पर्वत पर आग के बीच में से सभा के दिन तुम से कहे ११ थे सो सब उन पर लिखे हुए थे । और चालीस दिन और चालीस रात के बीते पर यहोवा ने पत्थर की वे दो १२ वाचा की पटियाएं मुझे दीं । और यहोवा ने मुझ से कहा उठ यहां से झट नीचे जा क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिन को तू मिस्र से निकाल ले आया है सो बिगड़ गये हैं जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उन्हें दी थी उस को उन्हों ने झटपट छोड़ दिया है अर्थात् उन्हों ने १३ एक मूर्त्ति ढाल कर बना ली है । फिर यहोवा ने मुझ से कहा मैं ने उन लोगों को देखा कि वे हठीली जाति[३] १४ के हैं । सो अब मुझे मत रोक मैं उन्हें सत्यानाश करूं और धरती पर से[४] उन का नाम तक मिटा डालूं और उन से बढ़कर एक बड़ी और सामर्थी जाति तुझी से उत्पन्न करूं । तब मैं घूमकर पर्वत से उतर चला और १५ पर्वत आग से जल रहा था और मेरे दोनों हाथों में वाचा की दोनों पटियाएं थीं । और मैं ने देखा कि तुम १६ ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया और एक बछड़ा ढालकर बना लिया जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा यहोवा ने तुम को दी थी उस को तुम ने झटपट छोड़ दिया था । सो मैं ने दोनों पटियाओं को अपने दोनों हाथों से १७ लेकर फेंक दिया और वे तुम्हारे देखते टुकड़े टुकड़े हो गईं । तब तुम्हारे उस बड़े पाप के कारण जिसे करके १८ तुम ने यहोवा के लेखे में बुराई करने से उसे रिस दिलाई थी मैं यहोवा के साम्हने गिर पड़ा और पहिले की नाईं अर्थात् चालीस दिन और चालीस रात तक न तो रोटी खाई न पानी पिया । मैं तो यहोवा के उस कोप और १९ जलजलाहट से डरता था जिस से वह तुम्हें सत्यानाश करने को उठा था और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुन ली । और यहोवा हारून से इतना कोपित हुआ कि उसे २० भी सत्यानाश करने को उठा सो उसी समय मैं ने हारून के लिये भी प्रार्थना की । और मैं ने वह बछड़ा २१ जिसे बनाकर तुम पापी हुए थे ले आग में डालकर फूंक दिया और पीस पीसकर चूर चूर कर डाला और उस नदी में फेंक दिया जो पर्वत से उतरी थी । फिर तबेरा और २२ मस्सा और किब्रोतहत्तावा में भी तुम ने यहोवा को रिस दिलाई थी । फिर जब यहोवा ने तुम को कादेशबर्ने २३ से यह कह कर भेजा कि जाकर उस देश के जो मैं ने तुम्हें दिया है अधिकारी हो जाओ तब भी तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध बलवा किया और न तो उस का विश्वास किया न उस की बात मानी । बरन २४ जिस दिन से मैं तुम्हें जानता हूं उस दिन से तुम यहोवा से बलवा करते आये हो । सो मैं यहोवा के साम्हने २५ चालीस दिन और चालीस रात पड़ा रहा इस लिये कि यहोवा ने तुम्हें सत्यानाश करने को कहा था । और मैं २६ ने यहोवा से यह प्रार्थना की कि हे प्रभु यहोवा अपना प्रजारूपी निज भाग जिसे तू ने अपने प्रताप से छुड़ा लिया और बलवन्त हाथ बढ़ाकर मिस्र से निकाल लाया है उसे नाश न कर । अपने दास इब्राहीम इसहाक और २७ याकूब की सुधि कर और इन लोगों की कठोरता और दुष्टता और पाप पर चित्त न धर । न हो कि जिस देश २८ से तू हम को निकाल ले आया है उस के लोग यह कहने लगें कि यहोवा जो उन्हें उस देश में जिस के देने का

(१) मूल में कड़ी गर्दनवाला । (२) मूल में परमेश्वर की अंगुली । (३) मूल में कड़ी गर्दनवाले ।

(४) मूल में आकाश के तले से ।

वचन उन को दिया था पहुंचा न सका और उन से बैर भी रखता था इसी से उस ने उन्हें जंगल में निकालकर मार डाला है। ये तेरी प्रजा और निज भाग हैं और इन को तू अपने बड़े सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल ले आया है॥

२९

१०. उस समय यहोवा ने मुझ से कहा पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ ले और उन्हें लेकर मेरे पास पर्वत पर चढ़ आ और लकड़ी का एक संदूक बनवा ले। २ और मैं उन पटियाओं पर वे ही वचन लिखूंगा जो उन पहिली पटियाओं पर थे जिन्हें तू ने तोड़ डाला और तू उन्हें उस संदूक में रखना। ३ सो मैं ने बबूल की लकड़ी का एक संदूक बनवाया और पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ीं तब उन्हें हाथों में लिये हुए पर्वत पर चढ़ गया। ४ और जो दस वचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर आग के बीच में से तुम से कहे थे वे ही उस ने पहिलों के समान उन पटियाओं पर लिखे और उन को मुझे सौंप दिया। ५ तब मैं फिर पर्वत से उतर आया और पटियाओं को अपने बनवाये हुए संदूक में धर दिया और यहोवा की आज्ञा के अनुसार वे वहीं रक्खी हुई हैं। ६ तब इस्राएली याकानियों के कूओं से कूच करके मोसेरा लों आये वहां हारून मर गया और उस को वहीं मिट्टी दी गई और उस का पुत्र एलाजार उस के स्थान पर याजक का काम करने लगा। ७ वे वहां से कूच करके गुदगोदा को और गुदगोदा से योतबाता को जो जल बहती हुई नदियों का देश है पहुंचे। ८ उस समय यहोवा ने लेवी गोत्र को इस लिये अलग किया कि वे यहोवा की वाचा का संदूक उठाया करें और यहोवा के सन्मुख खड़े होकर उस की सेवाटहल किया करें और उस के नाम से आशीर्वाद दिया करें जैसे कि आज के दिन लों होता है। ९ इस कारण लेवीयों को अपने भाइयों के साथ कोई निज अंश वा भाग नहीं मिला यहोवा ही उन का निज भाग है जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उन से कहा था। १० मैं तो पहिले की नाईं उस पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुनी और तुझे नाश करने की मनसा छोड़ दी। ११ सो यहोवा ने मुझ से कहा तू इन लोगों की अगुवाई कर कि जिस देश के देने को मैं ने उन के पितरों से किरिया खाकर कहा था उस में वे जाकर उस को अपने अधिकार में कर लें॥

१२ और अब हे इस्राएल तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इस को छोड़ क्या चाहता है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने उस के सारे मार्गों पर चले उस से प्रेम रक्खे और अपने सारे मन और सारे जीव से उस की सेवा करे, १३ और यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उन को माने जिस से तेरा भला हो। १४ सुन स्वर्ग बरन सब से ऊंचा स्वर्ग भी और पृथिवी और उस में जो कुछ है सो सब तेरे परमेश्वर यहोवा ही का है। १५ तौभी यहोवा ने तेरे पितरों से स्नेह और प्रेम रक्खा और उन के पीछे तुम लोगों को जो उन के वंश हो सारे देशों के लोगों में से चुन लिया जैसा कि आज के दिन है। १६ सो अपने अपने हृदय का खतना करो और आगे को हठीले[१] न हो। १७ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु महान् पराक्रमी और भय-योग्य ईश्वर है जो किसी का पक्ष नहीं करता और न घूस लेता है। १८ वह बपमूए और विधवा का न्याय चुकाता और परदेशियों से प्रेम करके उन्हें भोजन और वस्त्र देता है। १९ सो तुम परदेशियों से प्रेम रखना क्योंकि तुम भी मिस्रदेश में परदेशी थे। २० अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना उसी की सेवा करना उसी के बने रहना और उसी के नाम की किरिया खाना। २१ वही तेरे स्तुति करने के योग्य है[२] और वही तेरा परमेश्वर है जिस ने तेरे साथ वे बड़े और भयानक काम किये हैं जिन्हें तू ने अपनी आंखों से देखा है। २२ तेरे पुरखा तो मिस्र जाने के समय सत्तर ही मनुष्य थे पर अब तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरी गिनती आकाश के तारों के समान बहुत कर दी है॥

११. सो तू अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना और जो कुछ उस ने तुझे सौंपा है उस का अर्थात् उस की विधियों नियमों और आज्ञाओं का नित्य पालन करना। २ सो तुम आज सोच रक्खो मैं तो तुम्हारे बालबच्चों से नहीं कहता जिन्हों ने न तो कुछ देखा और न जाना है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने क्या ताड़ना की और कैसी महिमा और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा दिखाई, ३ और मिस्र में वहां के राजा फ़िरौन को क्या क्या चिन्ह दिखाये और उस के सारे देश में क्या क्या काम किये, ४ और उस ने मिस्र की सेना के घोड़ों और रथों से क्या किया अर्थात् जब वे तुम्हारा पीछा किये हुए थे तब उस ने उन को लाल समुद्र में डुबोकर कैसे नाश कर डाला कि आज तक उन का पता नहीं, ५ और तुम्हारे इस स्थान में पहुंचने लों उस ने जंगल में तुम से क्या क्या किया, ६ और उस ने

(१) मूल में कड़ी गर्दनवाले। (२) मूल में, वही तेरी स्तुति है।

रूबेनी एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम से क्या क्या किया अर्थात् पृथिवी ने अपना मुंह पसारके उन को घरानों डेरों और सब अनुचरों समेत सब इस्राएलियों के
७ देखते[१] कैसे निगल लिया। पर यहोवा के इन सब बड़े
८ बड़े कामों को तुम ने अपनी आंखों से देखा है। इस कारण जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सभों को माना करना इसलिये कि तुम सामर्थी होकर उस देश में जिस के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो
९ प्रवेश करके उस के अधिकारी हो जाओ, और उस देश में बहुत दिन रहने पाओ जिसे तुम्हें और तुम्हारे वंश को देने की किरिया यहोवा ने तुम्हारे पितरों से खाई और उस
१० में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं। देखो जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो सो मिस्र देश के समान नहीं है, जहां से निकल आये हो जहां तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पांव
११ से बरहा बनाकर सींचते थे। पर जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो सो पहाड़ों और तराइयों का देश है और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है।
१२ वह ऐसा देश है जिस की तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है बरन बरस के आदि से ले अन्त लों तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर लगातार लगी रहती है॥
१३ और यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूं ध्यान से सुनकर अपने सारे मन और सारे जीव के साथ अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खे
१४ हुए उस की सेवा करते रहो, तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों की वर्षा को अपने अपने समय पर किया करूंगा जिस से तू अपना अन्न
१५ नया दाखमधु और टटका तेल संचय कर सकेगा। और मैं तेरे पशुओं के लिये तेरे मैदान में घास उपजाऊंगा और
१६ तू पेट भर भर खा सकेगा। सो अपने विषय सचेत रहो न हो कि तुम अपने मन में धोखा खाओ और बहक कर दूसरे देवताओं की उपासना और उन को दण्डवत् करने
१७ लगो, और यहोवा का कोप तुम पर भड़के और वह आकाश की वर्षा बन्द कर दे और भूमि अपनी उपज न दे और तुम उस उत्तम देश में से जो यहोवा तुम्हें देता है
१८ शीघ्र नाश हो जाओ। सो तुम मेरे ये वचन अपने अपने मन और जीव में धारण किये रहना और चिन्हानी करके अपने हाथों पर बांधना और वे तुम्हारी आंखों के बीच
१९ टीके का काम दें। और तुम घर में बैठे मार्ग पर चलते लेटते उठते इन की चर्चा करके अपने लड़केबालों को
२० सिखाया करना। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट
२१ के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना, इस लिये कि जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पितरों से किरिया खाकर कहा कि मैं उसे तुम्हें दूंगा उस में तुम्हारे और तुम्हारे लड़केबालों के दिन बहुत हों बरन जब लों पृथिवी के ऊपर का आकाश बना रहे तब लों वे भी बने
२२ रहें। सो यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो मैं तुम्हें सुनाता हूं पूरी चौकसी करके अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खो और उस के सारे मार्गों पर चलो
२३ और उस के बने रहो, तो यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे आगे से निकालेगा और तुम अपने से बड़ी और
२४ सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओगे। जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांव पड़ें वे सब तुम्हारे हो जाएंगे अर्थात् जंगल से लबानोन तक और परात नाम महानद से ले पश्चिम के समुद्र लों तुम्हारा सिवाना होगा।
२५ तुम्हारे साम्हने कोई भी खड़ा न रह सकेगा क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पांव पड़ें उस सब पर रहनेहारों के मन में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण डर और थरथराहट उपजाएगा॥
२६ सुनो मैं आज के दिन तुम को आशिष और स्राप
२७ दोनों दिखाता हूं। अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूं मानो
२८ तो तुम पर आशिष होगी। और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को न मानो और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज सुनाता हूं उसे छोड़कर दूसरे देवताओं के पीछे हो लो जिन्हें तुम नहीं जानते तो तुम पर स्राप पड़ेगा॥
२९ और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को उस देश में पहुंचाए जिस के अधिकारी होने को तू जाने पर है तब आशिष गरीज्जीम पर्वत पर से और स्राप एबाल
३० पर्वत पर से सुनाना[१]। क्या वे यर्दन के पार सूर्य्य के अस्त होने की ओर अराबा के निवासी कनानियों के देश में गिल्गाल के साम्हने मोरे के बांज वृक्षों के पास नहीं
३१ हैं। तुम तो यर्दन पार इसी लिये जाने पर हो कि जो देश तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उस के अधिकारी हो जाओ और तुम उस के अधिकारी होकर उस में
३२ बास करोगे। सो जितनी विधियां और नियम मैं आज तुम को सुनाता हूं उन सभों के मानने में चौकसी करना॥

१२. जो देश तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिकार में लेने को दिया है उस में जब लों तुम भूमि पर जीते रहो

(१) मूल में बीच में।

(१) मूल में पर्व्वत पर रखना।

तब लों इन विधियों और नियमों के मानने में चौकसी
२ करना। जिन जातियों के तुम अधिकारी होगे उन के लोग ऊंचे ऊंचे पहाड़ों वा टीलों पर वा किसी भांति के हरे वृक्ष के तले जितने स्थानों में अपने देवताओं की उपासना करते हैं उन सभों को तुम पूरी रीति से नाश कर
३ डालना। उन की वेदियों को ढा देना उन की लाठों को तोड़ डालना उन की अशेरा नाम मूर्त्तियों को आग में जला देना और उन के देवताओं की खुदी हुई मूर्त्तियों को काटकर गिरा देना कि उस देश में से उन के नाम
४ तक मिट जाएं। फिर जैसे वे करते हैं तुम अपने परमेश्वर
५ यहोवा के लिये वैसे न करना। वरन जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा कि वहां अपना नाम बनाये रक्खे उस के उसी निवासस्थान
६ के पास जाया करना। और वहीं तुम अपने होमबलि मेलबलि दशमांश और उठाई हुई भेंट और मन्नत की वस्तुएं और स्वेच्छाबलि और गायबैलों और भेड़बकरियों
७ के पहिलौठे ले जाया करना। और वहीं तुम अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने भोजन करना और अपने अपने घराने समेत उन सब कामों पर जिन में तुम ने हाथ लगाया हो और जिन पर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की
८ आशिष मिली हो आनन्द करना। जैसे हम आजकल यहां जो काम जिस को भावता है सोई करते हैं वैसे तुम
९ न करना। जो विश्रामस्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहां तुम अब लों तो नहीं पहुंचे।
१० पर जब तुम यर्दन पार जाकर उस देश में जिस के भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे
११ और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि मेलबलि दशमांश उठाई हुई भेंटें और मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएं जो तुम यहोवा के लिये संकल्प करोगे निदान जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उन सभों को
१२ वहीं ले जाया करना। और वहां तुम अपने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करना और जो लेवीय तुम्हारे फाटकों में रहे वह भी आनन्द करे क्योंकि उस का तुम्हारे संग कोई
१३ निज भाग वा अंश न होगा। सचेत रह कि तू अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न
१४ चढ़ाए। जो स्थान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वहीं अपने होमबलियों को चढ़ाया करना और जिस जिस काम की आज्ञा मैं तुझ को सुनाता हूं उस को वहीं करना।

१५ पर तू अपने सब फाटकों के भीतर अपने जी की इच्छा और अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आशिष के अनुसार पशु मारके खा सकेगा शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनों खा सकेंगे जैसे कि चिकारे और हरिण का मांस।
१६ पर उस का लोहू न खाना उसे जल की नाईं भूमि पर
१७ उंडेल देना। फिर अपने अन्न वा नये दाखमधु वा टटके तेल का दशमांश और अपने गायबैलों वा भेड़बकरियों के पहिलौठे और अपनी मन्नतों की कोई वस्तु और अपने स्वेच्छाबलि और उठाई हुई भेंटें अपने सब
१८ फाटकों के भीतर न खाना, उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उसी स्थान पर जिस को वह चुने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों के और जो लेवीय तेरे फाटकों के भीतर रहेंगे उन के साथ खाना और तू अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपने सब कामों पर जिन में
१९ हाथ लगाया हो आनन्द करना। सचेत रह कि जब लों तू भूमि पर जीता रहे तब लों लेवीयों को न छोड़ना॥

२० जब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तेरा देश बढ़ाए और तेरा जी मांस खाने चाहे और तू सोचने लगे कि मैं मांस खाऊंगा तब जो मांस तेरा जी
२१ चाहे सो खा सकेगा। जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाये रखने के लिये चुन ले वह यदि तुझ से बहुत दूर हो तो जो गाय बैल भेड़ बकरी यहोवा ने तुझे दी हों उन में से जो कुछ तेरा जी चाहे सो मेरी आज्ञा के अनुसार मार के अपने फाटकों के भीतर खा
२२ सकेगा। जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाया जाता है वैसे ही उन को भी खा सकेगा शुद्ध अशुद्ध दोनों
२३ प्रकार के मनुष्य उन का मांस खा सकेंगे। पर उन का लोहू किसी भांति न खाना क्योंकि लोहू जो है सो प्राण
२४ ही है और तू मांस के साथ प्राण न खाना। उस को न
२५ खाना उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल देना। तू उसे न खाना इस लिये कि वह काम करने से जो यहोवा के लेखे ठीक है तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला
२६ हो। पर जब तू कोई वस्तु पवित्र करे वा मन्नत माने तो ऐसी वस्तुएं लेकर उस स्थान को जाना जिस को यहोवा
२७ चुन लेगा। और वहां अपने होमबलियों के मांस और लोहू दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर चढ़ाना और मेलबलियों का लोहू उस की वेदी पर उंडेल कर उन
२८ का मांस खाना। इन बातों को जिन की आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूं चित्त लगा कर सुन कि जब तू वह काम करे जो तेरे परमेश्वर यहोवा के लेखे भला और ठीक है तब तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी सदा लों भला होता रहे॥

२९ जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को जिन का

अधिकारी होने को तू जाने पर है तेरे आगे से नाश करे और तू उन का अधिकारी होकर उन के देश में बस
१० जाए, तब सचेत रहना न हो कि उन के सत्यानाश होने के पीछे तू भी उन की नाईं फंस जाए अर्थात् यह कह कर उन के देवताओं को न पूछना कि उन जातियों के लोग अपने देवताओं की उपासना किस रीति करते थे मैं
११ भी वैसी ही करूंगा। तू अपने परमेश्वर यहोवा से ऐसा बरताव न करना क्योंकि जितने प्रकार के कामों से यहोवा घिन और बैर रखता है उन सभों को उन्हों ने अपने देवताओं के लिये किया है, बरन अपने बेटे बेटियों को भी वे अपने देवताओं के लिये होम करके जलाते हैं॥
१२ जितनी बातों की मैं तुम को आज्ञा देता हूं उन को चौकस होकर माना करना न तो उन में कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना॥

१३. यदि तेरे बीच कोई नबी वा स्वप्न देखनेहारा प्रगट होकर तुझे कोई
२ चिन्ह वा चमत्कार दिखाए, और जिस चिन्ह वा चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे कि आओ हम पराये देवताओं के पीछे होकर जो अब लों तुम्हारे अनजाने रहे
३ उन की उपासना करें सो पूरा हो जाए, तौ भी तू उस नबी वा स्वप्न देखनेहारे के वचन पर कान न धरना क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा इस लिये कि जान ले कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे
४ जीव के साथ प्रेम रखते हैं वा नहीं। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना और उस का भय मानना और उस की आज्ञाओं पर चलना और उस का वचन मानना
५ और उस की सेवा करना और उस के बने रहना। और ऐसा नबी वा स्वप्न देखनेहारा जो तुम को तुम्हारे उस परमेश्वर यहोवा से फेरके जिस ने तुम को मिस्र देश से निकाला और दासत्व के घर से छुड़ाया है तेरे उसी परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहनेहारा ठहरेगा इस कारण वह मार डाला जाए। इस रीति तू अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना॥
६ यदि तेरा सगा भाई वा बेटा वा बेटी वा तेरी अर्द्धांगिन[१] वा प्राणप्रिय तेरा कोई मित्र निराले में तुझ को यह कहकर फुसलाने लगे कि आओ हम दूसरे देवताओं
७ की उपासना करें जिन्हें न तू न तेरे पुरखा जानते थे, चाहे वे तुम्हारे निकट रहनेहारे आसपास के लोगों के चाहे पृथिवी की एक छोर से लेके दूसरे छोर लों दूर दूर रहनेहारों के
८ देवता हों, तो उस की न मानना बरन उस की न सुनना और न उस पर तरस खाना न कोमलता दिखाना न उस
९ को छिपा रखना। उस को अवश्य घात करना उस के घात करने में पहिले तेरा हाथ उठे पीछे सब लोगों के
१० हाथ उठें। उस पर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाए क्योंकि उस ने तुझ को तेरे उस परमेश्वर यहोवा की ओर से जो तुझ को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र
११ देश से निकाल लाया है बहकाने का यत्न किया है। और सारे इस्राएली सुनकर भय खाएंगे और ऐसा बुरा काम फिर तेरे बीच न करेंगे॥
१२ यदि तेरे किसी नगर के विषय जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे रहने के लिये देता है ऐसी बात तेरे सुनने में
१३ आए कि, कितने अधम पुरुषों ने तुम्हारे बीच में से निकलकर अपने नगर के निवासियों को यह कहकर बहका दिया है कि आओ हम दूसरे देवताओं की जो
१४ अब लों तुम्हारे अनजाने रहे उपासना करें, तो पूछपाछ करना और खोजना और भली भांति पता लगाना और जो यह बात सच हो और कुछ भी संदेह न रहे कि तेरे
१५ बीच ऐसा घिनौना काम किया जाता है, तो अवश्य उस नगर के निवासियों को तलवार से मार डालना और पशु आदि उस सब समेत जो उस में हो उस को तलवार से
१६ सत्यानाश करना। और उस में की सारी लूट चौक के बीच इकट्ठी कर उस नगर को लूट समेत अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मानों सर्व्वांग होम करके जलाना और
१७ वह सदा लों डीह रहे वह फिर बसाया न जाए। और कोई सत्यानाश की वस्तु तेरे हाथ न लगने पाए कि यहोवा अपने भड़के हुए कोप से शान्त होकर जैसा उस ने तेरे पितरों से किरिया खाई थी वैसा ही तुझ से दया का व्यवहार करे और दया करके तुझ को गिनती में बढ़ाए।
१८ यह तब होगा जब तू अपने परमेश्वर यहोवा की मानते हुए जितनी आज्ञाएं मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों को मानेगा और जो तेरे परमेश्वर यहोवा के लेखे में ठीक है सोई करेगा॥

१४. तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो सो मुए हुओं के कारण न तो अपना शरीर चीरना और न भौंहों के बाल मुंड़ाना[२]।
२ क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये एक पवित्र समाज है और यहोवा ने तुझ को पृथिवी भर के सब देशों के लोगों में से अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है॥

---

(१) मूल में तुम्हारी गोद की स्त्री।

(२) मूल में अपनी आंखों के बीच गजापन न करना।

३, ४ तू कोई घिनौनी वस्तु न खाना। जो पशु तुम खा सकते हो सो ये हैं अर्थात् गाय बैल भेड़ बकरी, ५ हरिण चिकारा यखमूर बनैली बकरी साबर नीलगाय ६ और बनैली भेड़। निदान पशुओं में से जितने पशु चिरे वा फटे खुरवाले और पागुर करनेवाले होते हैं उन का ७ मांस तुम खा सकते हो। पर पागुर करनेहारों वा चिरे खुरवालों में से इन पशुओं को अर्थात् ऊंट खरहा और शापान को न खाना क्योंकि ये पागुर तो करते पर चिरे ८ खुर के नहीं होते इस से वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। फिर सूअर जो चिरे खुर का तो होता है पर पागुर नहीं करता इस से वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है सो न तो इन का मांस खाना और न इन की लोथ छूना॥

९ फिर जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो अर्थात् जितनों के पंख और छिलके होते हैं। १० पर जितने बिना पंख और छिलके के होते हैं उन्हें तुम न खाना क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥

११ सब शुद्ध पक्षियों का मांस तो तुम खा सकते हो। १२ पर इन का मांस न खाना अर्थात् उकाब हड़फोड़ कुरर, १३, १४ गरुड़ चील और भांति भांति के शाही, और भांति १५ भांति के सब काग, शुतर्मुर्ग तहमास जलकुक्कुट और १६ भांति भांति के बाज, छोटा और बड़ा दोनों जाति का १७, १८ उल्लू और घुग्घू, धनेश गिद्ध हाड़गील, सारस भांति १९ भांति के बगुले नौवा और चमगीदड़, और जितने रेंगनेहारे पंखवाले हैं सो सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं वे २० खाए न जाएं। पर सब शुद्ध पंखवालों का मांस तुम खा सकते हो॥

२१ जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे तुम न खाना उसे अपने फाटकों के भीतर किसी परदेशी को खाने के लिये दे सकते हो वा किसी बिराने के हाथ बेच सकते हो पर तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र समाज है। बकरी का बच्चा उस की माता के दूध में न सिझाना॥

२२ बीज की सारी उपज में से जो बरस बरस खेत में २३ उपजे दशमांश अवश्य अलग करके रखना। और जिस स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उस में अपने अन्न नये दाखमधु और टटके तेल का दशमांश और अपने गाय बैलों और भेड़ बकरियों के पहिलौठे अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाया करना जिस से तुम उस का भय नित्य २४ मानना सीखोगे। पर यदि वह स्थान जिस को तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाये रखने के लिये चुन लेगा बहुत दूर हो और इस कारण वहां की यात्रा तेरे लिये इतनी लम्बी हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आशिष से मिली हुई वस्तुएं वहां न ले जा सके, तो २५ उसे बेचके रुपये को बांध हाथ में लिये हुए उस स्थान पर जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा। और २६ वहां गायबैल वा भेड़बकरी वा दाखमधु वा मदिरा वा किसी भांति की वस्तु क्यों न हो जो तेरा जी चाहे सो उसी रुपये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाकर आनन्द करना। २७ और अपने फाटकों के भीतर के लेवीय को न छोड़ना क्योंकि तेरे साथ उस का कोई भाग वा अंश न होगा॥

२८ तीन तीन बरस के बीते पर तीसरे[1] बरस की उपज का सारा दशमांश निकाल कर अपने फाटकों के भीतर २९ इकट्ठा कर रखना। तब लेवीय जिस का तेरे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा वह और जो परदेशी और बपमूए और विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर हों वे भी आकर पेट भर खाएं जिस से तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशिष दे॥

१५. सात सात बरस के बीते पर उगाही २ छोड़ देना, अर्थात् जिस किसी ऋण देनेहारे ने अपने पड़ोसी को कुछ उधार दिया हो सो उस की उगाही छोड़ दे और अपने पड़ोसी वा भाई से उस को बरबस न भरवा ले क्योंकि यहोवा के नाम ३ से उगाही छोड़ देने का प्रचार हुआ है। बिराने मनुष्य से तू उसे बरबस भरवा सकता है पर जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उस को तू बिना भरवाये छोड़ देना। ४ तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेगा क्योंकि जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है कि तू उस का अधिकारी हो उस में वह तुझे बहुत ही आशिष ५ देगा। इतना हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने और इस सारी आज्ञा के जो मैं आज ६ तुझे सुनाता हूं मानने में चौकसी करे। तब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे आशिष देगा और तू बहुत जातियों को उधार देगा पर तुझे उधार लेना न पड़ेगा और तू बहुत जातियों पर प्रभुता करेगा पर वे तेरे ऊपर प्रभुता करने न पाएंगी॥

७ जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस के किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयों में से कोई तेरे पास दरिद्र हो तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हृदय कठोर करना न अपनी मुट्ठी कड़ी ८ करना। जिस वस्तु की घटी उस को हो उस का जितना प्रयोजन हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उस ९ को उधार देना। सचेत रह कि तेरे मन में ऐसी अधम

(१) मूल में उस।

चिन्ता न समाए कि सातवां बरस जिस में उगाही छोड़ देना होगा सो निकट है और अपनी दृष्टि तू अपने उस दरिद्र भाई की ओर से क्रूर करके उसे कुछ देने से नाह करे और वह तेरे विरुद्ध यहोवा की दोहाई दे और यह तेरे लिये पाप ठहरे । १० तू उस को अवश्य देना और उसे देते समय तेरे मन को बुरा न लगे क्योंकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में जिन में तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशिष देगा । ११ तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाये जाएंगे इसलिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं कि तू अपने देश में के अपने दीन दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना ॥

१२ यदि तेरा कोई भाईबन्धु अर्थात् कोई इब्री वा इब्रिन तेरे हाथ बिके और वह छः बरस तेरी सेवा कर चुके तो सातवें बरस उस को अपने पास से स्वाधीन करके जाने देना । १३ और जब तू उस को स्वाधीन करके अपने पास से जाने दे तब उसे छूछे हाथ जाने न देना । १४ बरन अपनी भेड़ बकरियों और खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में से उस को बहुतायत से देना तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशिष दी हो उस के अनुसार उसे देना । १५ और इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में दास था और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूं । १६ और यदि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता और तेरे संग आनन्द से रहता हो और इस कारण तुझ से कहने लगे कि मैं तेरे पास से न जाऊंगा, १७ तो सुतारी लेकर उस का कान किवाड़ पर लगाकर छेदना तब वह सदा लों तेरा दास बना रहेगा । और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना । १८ जब तू उस को अपने पास से स्वाधीन करके जाने दे तब उसे छोड़ देना तुझ को कठिन न जान पड़े क्योंकि उस ने छः बरस दो मजूरों के बराबर तेरी सेवा की है और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामों में तुझ को आशिष देगा ॥

१९ तेरी गायों और भेड़बकरियों के जितने पहिलौठे नर हों उन सभों को अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र रखना अपनी गायों के पहिलौठे से कोई काम न लेना और न अपनी भेड़बकरियों के पहिलौठे की ऊन कतरना । २० उस स्थान पर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा तू यहोवा के साम्हने अपने अपने घराने समेत बरस बरस उस का मांस खाना । २१ पर यदि उस में किसी प्रकार का दोष हो जैसे वह लंगड़ा वा अंधा हो वा उस में किसी ही प्रकार की बुराई का दोष हो तो उसे अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलि न करना । २२ उस को अपने फाटकों के भीतर खाना शुद्ध अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाते हैं वैसे ही उस का भी खा सकेंगे । २३ पर उस का लोहू न खाना उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल देना ॥

१६. आबीब महीने को स्मरण करके अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह नाम पर्व मानना क्योंकि आबीब महीने में तेरा परमेश्वर यहोवा रात को तुझे मिस्र से निकाल लाया । २ सो जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने को चुन लेगा वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये भेड़बकरियां और गाय बैल फसह करके बलि करना । ३ उस के संग कोई खमीरी वस्तु न खाना सात दिन लों अखमीरी रोटी जो दुःख की रोटी है खाया करना क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली करके निकला था इस रीति तुझ को मिस्र देश से निकलने का दिन जीवन भर स्मरण रहेगा । ४ सात दिन लों तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीर देखने में भी न आए और जो पशु तू पहिले दिन की सांझ को बलि करे उस के मांस में से कुछ बिहान लों रहने न पाए । ५ फसह को अपने किसी फाटक के भीतर जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे बलि न करना । ६ जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिये चुन ले केवल वहीं बरस के उसी समय जिस में तू मिस्र से निकला था अर्थात् सूरज डूबने पर संध्याकाल को फसह का पशुबलि करना । ७ तब उस का मांस उसी स्थान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले भूंजकर खाना फिर बिहान को उठकर अपने अपने डेरे को लौट जाना । ८ छः दिन लों अखमीरी रोटी खाया करना और सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये महासभा हो उस दिन किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए ॥

९ फिर जब तू खेत में हंसुआ लगाने लगे तब से आरंभ करके सात अठवारे गिनना । १० तब अपने परमेश्वर यहोवा की आशिष के अनुसार उस के लिये स्वेच्छाबलि देकर अठवारों नाम पर्व मानना । ११ और उस स्थान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले अपने अपने बेटे बेटियों दास दासियों समेत तू और तेरे फाटकों के भीतर जो लेवीय हों और जो जो परदेशी और बपमूए और विधवाएं तेरे बीच में हों सो सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करें । १२ और स्मरण रखना कि तू भी मिस्र में दास था इस लिये इन विधियों के पालन करने में चौकसी करना ॥

१३ जब तू अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में

से सब कुछ इकट्ठा कर चुके तब झोंपड़ियों नाम पर्व सात
१४ दिन मानते रहना । और अपने इस पर्व में अपने अपने
बेटे बेटियों दास दासियों समेत तू और जो लेवीय और
परदेशी और बपमूए और विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर
१५ हों सो भी आनन्द करें । जो स्थान यहोवा चुन ले उस
में तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये सात दिन लों पर्व
मानते रहना इस कारण कि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी
सारी बढ़ती में और तेरे सब कामों में तुझ को आशिष
१६ देगा तू आनन्द ही करना । बरस दिन में तीन बार अर्थात्
अखमीरी रोटी के पर्व और अठवारों के पर्व और झोंपड़ियों
के पर्व इन तीनों पर्वों में तुझ में से सब पुरुष अपने
परमेश्वर यहोवा के साम्हने उस स्थान में जो वह चुन
लेगा जाएं और देखो छूछे हाथ यहोवा के साम्हने कोई न
१७ जाए । सब पुरुष अपनी अपनी पूंजी और उस आशिष के
अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझको दी हो दिया करें ॥

१८ अपने एक एक गोत्र में से अपने सब फाटकों के
भीतर जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है न्यायी
और सरदार ठहरा लेना जो लोगों का न्याय धर्म्म से
१९ किया करें । न्याय न बिगाड़ना पक्षपात न करना और घूस
न लेना क्योंकि घूस बुद्धिमान् की आंखें अंधी कर देती
२० और धर्मियों की बातें उलट देती है । धर्म्म ही धर्म्म का
पीछा पकड़े रहना इसलिये कि तू जीता रहे और जो देश
तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस का अधिकारी
बना रहे ॥

२१ तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो वेदी बनाएगा
उस के पास किसी प्रकार की लकड़ी की बनी हुई
२२ अशेरा न थापना । और न कोई लाठ खड़ी करना
क्योंकि उस से तेरा परमेश्वर यहोवा घिन करता है ॥

१७. अपने परमेश्वर यहोवा के लिये कोई ऐसी गाय वा बैल वा भेड़बकरी
बलि न करना जिस में दोष वा किसी प्रकार की खोटाई
हो क्योंकि ऐसा करना तेरे परमेश्वर यहोवा को घिनौना
लगता है ॥

२ जो फाटक तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है यदि
उन में से किसी में कोई पुरुष वा स्त्री ऐसी पाई जाय कि
जिस ने तेरे परमेश्वर यहोवा की वाचा तोड़कर ऐसा
३ काम किया हो जो उस के लेखे में बुरा है, अर्थात् मेरी
आज्ञा उल्लंघन करके पराये देवताओं की वा सूर्य्य वा
चंद्रमा वा आकाश के गण में से किसी की उपासना वा
४ उन को दण्डवत् किया हो, और यह बात तुझे बतलाई
जाए और तेरे सुनने में आए तब भली भांति पूछपाछ
करना और यदि यह बात सच ठहरे कि निश्चय इस्राएल
५ में ऐसा घिनौना काम किया गया है, तो जिस पुरुष
वा स्त्री ने ऐसा बुरा काम किया हो उस पुरुष वा स्त्री
को बाहर अपने फाटकों के पास ले जाकर ऐसा पत्थर-
६ वाह करना कि वह मर जाए । जो प्राणदण्ड के योग्य
ठहरे सो एक ही साक्षी के कहे से न मार डाला जाए
७ दो वा तीन साक्षियों के कहे से मार डाला जाए । उस के
मार डालने के लिये सब से पहिले साक्षियों के हाथ और
उन के पीछे सब लोगों के हाथ उस पर उठें । इसी
रीति से ऐसी बुराई को अपने बीच से दूर करना ॥

८ यदि तेरे फाटकों के भीतर कोई झगड़े की बात
हो अर्थात् आपस के खून वा विवाद वा मारपीट का
कोई मुकद्दमा उठे और उस का न्याय करना तेरे लिये
कठिन जान पड़े तो उस स्थान को जाकर जो तेरा
९ परमेश्वर यहोवा चुन लेगा, लेवीय याजकों के पास और
उन दिनों के न्यायी के पास जाकर पूछना कि वे तुम को
१० न्याय की बात बतलाएं । और न्याय की जैसी बात उस
स्थान के लोग जो यहोवा चुन लेगा तुझे बता दें उस के
अनुसार करना और जो व्यवस्था वे तुझे दें उस के
११ अनुसार चलने में चौकसी करना । व्यवस्था की जो बात वे
तुझे बतलाएं और न्याय की जो बात वे तुझ से कहें उसी
के अनुसार करना जो बात वे तुझ को बताएं उस से
१२ न तो दहिने मुड़ना न बाएं । और जो मनुष्य अभिमान
करके उस याजक की जो वहां तेरे परमेश्वर यहोवा की
सेवा टहल करने को हाजिर रहेगा न माने वा उस
न्यायी की न सुने वह मनुष्य मार डाला जाए । सो तुम
१३ इस्राएल में से बुराई को दूर करना । इस से सब लोग
सुनकर भय खाएंगे और फिर अभिमान न करेंगे ॥

१४ जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझे देता है और उस का अधिकारी हो और
उस में बसकर कहने लगे कि चारों ओर की सब जातियों
१५ की नाईं मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊंगा, तब जिस
को तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले अवश्य उसी को राजा
ठहराना, अपने भाइयों ही में से किसी को अपने ऊपर
राजा ठहराना किसी बिराने को जो तेरा भाई न हो तू
१६ अपने ऊपर ठहरा नहीं सकता । और वह बहुत घोड़े न
रक्खे और न इस मनसा से अपनी प्रजा के लोगों को
मिस्र में भेजे कि बहुत घोड़े लें क्योंकि यहोवा ने तुम से
१७ कहा है कि तुम उस मार्ग से कभी न लौटना । और वह
बहुत स्त्रियां न करे न हो कि उस का मन यहोवा से
फिर जाए और न वह अपना सोना रूपा बहुत बढ़ाए ।
१८ और जब वह राजगद्दी पर विराजे तब इसी व्यवस्था की
पुस्तक जो लेवीय याजकों के पास रहेगी उस की वह

१९ अपने लिये एक नकल कर ले। और वह उसे अपने पास रक्खे और अपने जीवन भर उस को पढ़ा करे इस लिये कि वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना और इस व्यवस्था और इन विधियों की सारी बातों के मानने में

२० चौकसी करना सीखे, जिस से वह घमण्ड करके अपने भाइयों को तुच्छ न जाने और आज्ञा से न तो दहिने मुड़े न बाएं इस लिये कि वह और उस के वंश के लोग इस्राएलियों के बीच बहुत दिन लों राज्य करते रहें॥

१८. लेवीय

लेवीय याजकों का वरन सारे लेवीय गोत्रियों का इस्राएलियों के संग कोई भाग वा अंश न हो उन का भोजन हव्य और

२ यहोवा का दिया हुआ भाग हो। उन का अपने भाइयों के बीच कोई भाग न हो क्योंकि अपने कहे के अनुसार

३ यहोवा उन का निज भाग ठहरा। और चाहे गायबैल चाहे भेड़बकरी का मेलबलि हो उस के करनेहारे लोगों की ओर से याजकों का हक यह हो कि वे उस का कांधा

४ दोनों गाल और झोझ याजक को दें। तू उस को अपनी पहिली उपज का अन्न नया दाखमधु और टटका तेल

५ और अपनी भेड़ों की पहिली कतरी हुई ऊन देना। क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे सब गोत्रियों में से उसी को चुन लिया है कि वह और उस के वंश सदा लों उस के नाम से सेवा टहल करने को हाजिर हुआ करें॥

६ फिर यदि कोई लेवीय इस्राएल के फाटकों में से किसी से जहां वह परदेशी की नाईं रहता हो अपने मन की बड़ी अभिलाषा से उस स्थान पर जाए जिसे यहोवा

७ चुन लेगा, तो अपने सब लेवीय भाइयों की नाईं जो वहां अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने हाजिर होंगे वह

८ भी उस के नाम से सेवा टहल करे। और अपने पितरों के भाग के मोल को छोड़ उस को भोजन का भाग भी उन के समान मिला करे॥

९ जब तू उस देश में पहुंचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है तब वहां की जातियों के अनुसार घिनौने

१० काम करने को न सीखना। तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे वा बेटी को आग में होम करके चढ़ानेहारा वा भावी कहनेहारा वा शुभ अशुभ मुहूर्त्तों का माननेहारा

११ वा टोन्हा वा तान्त्रिक, वा बाजीगर वा ओझों से पूछनेहारा वा भूत साधनेवाला वा भूतों का जगानेहारा

१२ हो। क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते सो सब यहोवा को घिनौने लगते हैं और ऐसे घिनौने कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उन को तेरे साम्हने से निकालने

१३ पर है। तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर खड़ा रहना।

१४ वे जातियां जिन का अधिकारी तू होने पर है शुभ अशुभ मुहूर्त्तों के माननेहारों और भावी कहनेहारों की सुना करती हैं पर तुझ को तेरे परमेश्वर यहोवा ने ऐसा करने

१५ नहीं दिया। तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच से अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उठाएगा उसी

१६ की तुम सुनना। यह तेरी उस बिनती के अनुसार होगा जो तू ने होरेब पहाड़ के पास सभा के दिन अपने परमेश्वर यहोवा से की थी कि मुझे न तो अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनना और न वह बड़ी आग

१७ फिर देखनी पड़े नहीं तो मर जाऊंगा। तब यहोवा ने

१८ मुझ से कहा था इन्हों ने जो कहा सो अच्छा कहा। सो मैं उन के लिये उन के भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उठाऊंगा और अपने वचन उसे सिखाऊंगा सो जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वह उसे उन को

१९ कह सुनाएगा। और जो मनुष्य मेरे वह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा न माने उस से मैं इस का लेखा लूंगा।

२० पर जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहे जिस की आज्ञा मैं ने उसे न दी हो वा पराये देवताओं के नाम से कुछ कहे वह नबी मार डाला जाए।

२१ और यदि तू यह सन्देह करे कि जो वचन यहोवा ने नहीं

२२ कहा उस को हम किस रीति से पहिचान सकें, तो जान रख कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए तो वह ऐसा वचन ठहरेगा जो यहोवा ने नहीं कहा उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है तू उस से भय न खाना॥

१९. जब

जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को नाश करे जिन का देश वह तुझे देता है और तू उन के देश का अधिकारी होके उन

२ के नगरों और घरों में रहने लगे, तब अपने देश के बीच जिस का अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे कर देता

३ है तीन नगर अलग कर देना। उन के मार्ग सुधारे रखना और अपने देश के जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे भाग करके देता है तीन अंश करना इस लिये कि हर

४ एक खूनी वहीं भाग जाए। और जो खूनी वहां भाग कर अपने प्राण बचाए सो इस प्रकार का हो कि वह किसी से बिना पहिले बैर रक्खे उस को बिना जाने बूझे

५ मार डाले। जैसा कोई किसी के संग लकड़ी काटने को जंगल में जाए और वृक्ष काटने को कुल्हाड़ी हाथ से उठाये पर कुल्हाड़ी बेंट से निकल कर उस भाई को ऐसा लगे कि वह मर जाए तो वह उन

६ नगरों में से किसी में भाग कर जीता बचे। ऐसा न

हो कि मार्ग की लम्बाई के कारण खून का पलटा लेनेहारा मन जलने के समय उस का पीछा करके उस को जा ले और मार डाले यद्यपि वह प्राणदण्ड के योग्य नहीं क्योंकि उस से बैर न रखता था । ७ सो मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं कि अपने लिये तीन नगर अलग कर रखना । ८ और यदि तेरा परमेश्वर यहोवा उस किरिया के अनुसार जो उस ने तेरे पितरों से खाई थी तेरे सिवानों को बढ़ाकर वह सारा देश तुझे दे जिस के देने का वचन उस ने तेरे पितरों को दिया था यदि तू इन सब आज्ञाओं के मानने में जिन्हें मैं आज तुझ को सुनाता हूं चौकसी करे और अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खे और सदा ९ उस के मार्गों पर चलता रहे, तो इन तीन नगरों से अधिक १० और भी तीन नगर अलग कर देना, इसलिये कि तेरे उस देश में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके देता है किसी निर्दोष का खून न हो और उस का ११ दोष तुझ पर न लगे । पर यदि कोई किसी से बैर रख कर उस की घात में लगे और उस पर लपक कर उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए और फिर उन नगरों में से किसी १२ में भाग जाए, तो उस के नगर के पुरनिये किसी को भेज कर उस को वहां से मंगाकर खून के पलटा लेनेहारे के १३ हाथ में दे दें कि वह मार डाला जाए । उस पर तरस न खाना निर्दोष के खून का दोष इस्राएल से दूर करना जिस से तुम्हारा भला हो ॥

१४ जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है उस का जो भाग तुझे मिलेगा उस में किसी का सिवाना जिसे अगले लोगों ने ठहराया हो न हटाना ॥

१५ किसी मनुष्य के विरुद्ध किसी प्रकार के अधर्म वा पाप के विषय में चाहे उस का पाप कैसा ही क्यों न हो एक ही जन की साक्षी न सुनना दो वा तीन साक्षियों १६ के कहने से बात पक्की ठहरे । यदि कोई अंधेर करनेहारा साक्षी किसी के विरुद्ध यहोवा से फिर जाने की साक्षी १७ देने को खड़ा हो, तो वे दोनों मनुष्य जिन के बीच ऐसा मुकद्दमा उठा हो यहोवा के सन्मुख अर्थात् उन दिनों के १८ याजकों और न्यायियों के सामहने खड़े किये जाएं । तब न्यायी भली भांति पूछपाछ करें और यदि यह ठहरे कि वह झूठा साक्षी है और अपने भाई के विरुद्ध झूठी साक्षी १९ दी है, तो जैसी हानि उस ने अपने भाई की करानी की युक्ति की हो वैसी ही तुम उस की करना इसी रीति अपने २० बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना । और दूसरे लोग सुन कर डरेंगे और आगे को तेरे बीच ऐसा बुरा काम २१ न करेंगे । और तू तरस न खाना प्राण की सन्ती प्राण का आंख की सन्ती आंख का दांत की सन्ती दांत का हाथ की सन्ती हाथ का पांव की सन्ती पांव का दण्ड देना ॥

२०. जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए और घोड़े रथ और अपने से अधिक सेना को देखे तब उन से न डरना तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ को मिस्र देश से निकाल ले २ आया है वह तेरे संग रहेगा । और जब तुम युद्ध करने को शत्रुओं के निकट जाओ तब याजक सेना के पास ३ आकर कहे, हे इस्राएलियो सुनो आज तुम अपने शत्रुओं से युद्ध करने को निकट आये हो तुम्हारा मन कच्चा न हो तुम मत डरो और न थरथरो और न उन के साम्हने त्रास ४ खाओ । क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने और तुम्हें बचाने को तुम्हारे संग संग ५ चलता है । फिर सरदार सिपाहियों से कहें कि तुम में से जिस किसी ने नया घर बनाया हो और उस में प्रवेश न किया हो वह अपने घर को लौट जाए न हो कि वह ६ युद्ध में मर जाए और दूसरा उस में प्रवेश करे । और जिस किसी ने दाख की बारी लगाई हो पर उस के फल न खाए हों वह अपने घर को लौट जाए न हो कि वह ७ संग्राम में जूझ जाए और दूसरा उस के फल खाए । फिर जिस किसी ने किसी स्त्री से ब्याह की बात लगाई हो पर उस को ब्याह न लाया हो वह अपने घर को लौट जाए न हो कि वह युद्ध में जूझ जाए और दूसरा उस को ८ ब्याह ले । इस से अधिक सरदार सिपाहियों से यह भी कहें कि जो डरपोक और कच्चे मन का हो वह अपने घर को लौट जाए न हो कि उस की देखादेखी उस के ९ भाइयों का भी हियाव टूट जाए । और जब प्रधान सिपाहियों से यह कह चुकें तब उन पर प्रधानता करने के लिये सेनापतियों को ठहराएं ॥

१० जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उस के निकट ११ जाए तब उस से सन्धि करने का प्रचार करना । और यदि वह सन्धि करना अंगीकार करे और तेरे लिये उस के फाटक खुलें तब जितने उस में हों सो सब तेरे अधीन १२ होकर तेरे बेगार करनेहारे ठहरें । पर यदि वे तुझ से सन्धि न करें पर तुम से लड़ने चाहें तो उस नगर को १३ घेर लेना । और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में कर दे तब उस में के सब पुरुषों को तलवार से मार १४ डालना । पर स्त्रियां बालबच्चे पशु आदि जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिये रख लेना और तेरे शत्रुओं की जो लूट तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में १५ लाना । इस प्रकार उन नगरों से करना जो तुझ से बहुत दूर हैं और इन जातियों के नगर नहीं हैं । १६ पर जो नगर

इन लोगों के हैं जिन का तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को अधिकारी करने पर उन में से किसी प्राणी को जीता १७ न छोड़ना, पर उन को अवश्य सत्यानाश करना अर्थात् हित्तियों एमोरियों कनानियों परिज्जियों हिव्वियों और यबूसियों को जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा १८ दी है, ऐसा न हो कि जितने घिनौने काम वे अपने देवताओं की सेवा में करते आये हैं उन कामों के अनुसार करना वे तुम को भी सिखाएं और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करो॥

१९ जब तू युद्ध करते हुए किसी नगर के ले लेने को उसे बहुत दिन लों घेरे रहे तब उस के वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नाश न करना क्योंकि उन के फल तेरे खाने के काम आएंगे सो उन्हें न काटना क्या मैदान के २० वृक्ष भी मनुष्य हैं कि तू उन को भी घेर रक्खे। पर जिन वृक्षों के विषय तू जाने कि इन के फल खाने के नहीं हैं उन को चाहे तो काटकर नाश करना और उस नगर के विरुद्ध तब लों धुस बांधे रहना जब लों वह तेरे बस में न आ जाए॥

२१. यदि उस देश के मैदान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है किसी मारे हुए की लोथ पड़ी हुई मिले और उस को २ किस ने मार डाला है यह जान न पड़े, तो तेरे पुरनिये और न्यायी निकलकर उस लोथ से चारों ओर के एक ३ एक नगर तक मापें। तब जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे उस के पुरनिये एक ऐसी कलोर ले रक्खें जिस से कुछ काम न लिया गया हो और जिस पर जुआ ४ कभी रक्खा न गया हो। तब उस नगर के पुरनिये उस कलोर को एक बारहमासी नदी की ऐसी तराई में जो न जोती न बोई गई हो ले जाएं और उसी तराई में उस ५ कलोर का गला तोड़ दें। और लेवीय याजक भी निकट आएं क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उन को चुन लिया है कि उस की सेवा टहल करें और उस के नाम से आशीर्वाद दिया करें और उन के कहे से हर एक झगड़े ६ और मारपीट के मुकद्दमे का निर्णय हो। फिर जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे उस के सब पुरनिये उस कलोर के ऊपर जिस का गला तराई में तोड़ा गया हो ७ अपने अपने हाथ धोकर, कहें यह खून हम से नहीं किया गया और न यह हमारी आंखों का देखा हुआ काम ८ है। सो हे यहोवा अपनी छुड़ाई हुई इस्राएली प्रजा का पाप ढांपकर निर्दोष के खून का पाप अपनी इस्राएली प्रजा के सिर पर से उतार। तब उस खून का दोष ९ उन के लिये ढांपा जाएगा। यों वह काम करके जो यहोवा के लेखे में ठीक है तू निर्दोष के खून का दोष अपने बीच में से दूर करना॥

१० जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे हाथ में कर दे और तू उन्हें ११ बंधुआ कर ले, तब यदि तू बंधुओं में किसी सुन्दर स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो जाए और उस को ब्याह लेने १२ चाहे, तो उसे अपने घर के भीतर ले आना और वह १३ अपना सिर मुंड़ाए नखून कटाए, अपने बन्धुआई के वस्त्र उतारके तेरे घर में महीने भर रहकर अपने माता पिता के लिये विलाप करती रहे उस के पीछे तू उस के पास १४ जाना और तू उस का पति और वह तेरी पत्नी हो। फिर यदि वह तुझ को अच्छी न लगे तो जहां वह जाना चाहे तहां उसे जाने देना उस को रुपया लेकर कहीं न बेचना और तू ने जो उस की पत ली इस कारण उस से जबर्दस्ती न करना॥

१५ यदि किसी पुरुष के दो स्त्रियां हों और उसे एक प्रिय दूसरी अप्रिय हो और प्रिया और अप्रिया दोनों स्त्रियां बेटे १६ जनें पर जेठा अप्रिया का हो, तो जब वह अपने पुत्रों को अपनी संपत्ति के भागी करे तब यदि अप्रिया का बेटा जो सचमुच जेठा है सो जीता हो तो वह प्रिया के बेटे को १७ जेठांस न दे सकेगा। वह यह जानकर कि अप्रिया का बेटा मेरे पौरुष का पहिला फल है और जेठे का हक उसी का है उसी को अपनी सारी संपत्ति में से दो भाग देकर जेठांसी माने॥

१८ यदि किसी के हठीला और दंगैत बेटा हो जो अपने माता पिता की न माने वरन ताड़ना देने पर भी १९ उन की न सुने, तो उस के माता पिता उसे पकड़कर अपने नगर से बाहर फाटक के निकट नगर के पुरनियों के पास २० ले जाएं। और वे नगर के पुरनियों से कहें हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है यह हमारी नहीं सुनता यह उड़ाऊ २१ और पियक्कड़ है। तब उस नगर के सब पुरुष उस को पत्थरवाह करके मार डालें यों तू अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना और सारे इस्राएली सुनकर भय खाएंगे॥

२२ फिर यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हो और वह मार डाला जाए और तू उस की लोथ वृक्ष पर लटका २३ दे, तो वह रात को वृक्ष पर टंगी न रहे अवश्य उसी दिन उसे मिट्टी देना क्योंकि जो लटकाया गया हो सो परमेश्वर से स्रापित ठहरता है जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके देता है उस की भूमि अशुद्ध न करना॥

२२. तू अपने भाई के गायबैल वा भेड़बकरी को भटकी हुई देखकर अनदेखी न करना उस को अवश्य उस के पास पहुंचा देना।

२ पर यदि तेरा वह भाई निकट न रहता हो वा तू उसे न जानता हो तो उस पशु को अपने घर के भीतर ले आना और जब लों तेरा वह भाई उस को न ढूंढ़े तब लों वह तेरे पास रहे और जब वह उसे ढूंढ़े तब उस ३ को दे देना। और उस के गदहे वा वस्त्र के विषय बरन उस की कोई वस्तु क्यों न हो जो उस से खो गई हो और तुझ को मिले उस के विषय भी ऐसा ही करना तू देखी अनदेखी न करना॥

४ तू अपने भाई के गदहे वा बैल को मार्ग पर गिरा हुआ देखकर अनदेखी न करना उस के उठाने में अवश्य उस की सहायता करना॥

५ कोई स्त्री पुरुष का पहिरावा न पहिने और न कोई पुरुष स्त्री का पहिरावा पहिने क्योंकि ऐसे कामों के सब करनेहारे तेरे परमेश्वर यहोवा को घिनौने लगते हैं॥

६ यदि वृक्ष वा भूमि पर तेरे साम्हने मार्ग में किसी चिड़िया का घोंसला मिले चाहे उस में बच्चे हों चाहे अण्डे और उन बच्चों वा अण्डों पर उन की मा बैठी हुई ७ हो तो बच्चों समेत मा को न लेना। बच्चों को अपने लिये ले तो ले पर मा को अवश्य छोड़ देना इस लिये कि तेरा भला हो और तेरे दिन बहुत हों॥

८ जब तू नया घर बनाए तब उस की छत पर आड़ के लिये मुण्डेर बनाना ऐसा न हो कि कोई छत पर से गिर पड़े और तू अपने घराने पर खून का दोष लगाए। ९ अपनी दाख की बारी में दो प्रकार के बीज न बोना, न हो कि उस की सारी उपज अर्थात् तेरा बोया हुआ बीज १० और दाख की बारी की उपज दोनों पवित्र ठहरें। बैल ११ और गदहा दोनों संग जोतकर हल न चलाना। ऊन और सनी की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना॥

१२ अपने ओढ़ने के चारों ओर की कोर पर झालर लगाया करना॥

१३ यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याहे और उस के १४ पास जाने के समय वह उस को अप्रिय लगे, और वह उस स्त्री की नामधराई करे और यह कहकर उस पर कुकर्म्म का दोष लगाए कि इस स्त्री को मैं ने ब्याहा और जब उस से संगति की तब उस में कुंवारी रहने के लक्षण १५ न पाए, तो उस कन्या के माता पिता उस के कुंवारीपन के चिन्ह लेकर नगर के पुरनियों के पास फाटक के बाहर १६ जाएं। और उस कन्या का पिता पुरनियों से कहे मैं ने अपनी बेटी इस पुरुष को ब्याह दी और वह उस को १७ अप्रिय लगती, और वह तो यह कहकर उस पर कुकर्म्म का दोष लगाता है कि मैं ने तेरी बेटी में कुंवारीपन के लक्षण नहीं पाये पर मेरी बेटी के कुंवारीपन के चिन्ह ये हैं तब उस के माता पिता नगर के पुरनियों के साम्हने उस चद्दर को फैलाएं। १८ तब नगर के पुरनिये उस १९ पुरुष को पकड़ कर ताड़ना दें, और उस पर सौ शेकेल रूपे का दण्ड भी लगातार उस कन्या के पिता को दें इसलिये कि उस ने एक इस्राएली कन्या की नामधराई की है और वह उसी की स्त्री बनी रहे और वह जीवन भर उस स्त्री को त्यागने न पाए। २० पर यदि उस कन्या के कुंवारीपन के चिन्ह पाये न जाएं और उस पुरुष की २१ बात सच ठहरे, तो वे उस कन्या को उस के पिता के घर के द्वार पर ले जाएं और उस नगर के पुरुष उसको पत्थरवाह करके मार डालें उस ने तो अपने पिता के घर में वेश्या का काम करके मूढ़ता की है यों तू अपने बीच से ऐसी बुराई को दूर करना॥

२२ यदि कोई पुरुष दूसरे पुरुष की ब्याही हुई स्त्री के संग सोता हुआ पकड़ा जाए तो जो पुरुष उस स्त्री के संग सोया हो सो और वह स्त्री दोनों मार डाले जाएं। यों तू ऐसी बुराई को इस्राएल में से दूर करना॥

२३ यदि किसी कुंवारी कन्या के ब्याह की बात लगी हो और कोई दूसरा पुरुष उसे नगर में पाकर उस से २४ कुकर्म्म करे, तो तुम उन दोनों को उस नगर के फाटक के बाहर ले जाकर उन को पत्थरवाह करके मार डालना उस कन्या को तो इस लिये कि वह नगर में रहते भी नहीं चिल्लाई और उस पुरुष को इस कारण कि उस ने अपने पड़ोसी की स्त्री की पत ली है। यों तू अपने बीच से ऐसी बुराई को दूर करना॥

२५ पर यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिस के ब्याह की बात लगी हो मैदान में पाकर बरबस उस से कुकर्म्म करे तो केवल वह पुरुष मार डाला जाए जिस ने उस से २६ कुकर्म्म किया हो, और उस कन्या से कुछ न करना उस कन्या में प्राणदण्ड के योग पाप नहीं क्योंकि जैसे कोई अपने पड़ोसी पर चढ़ाई करके उसे मार डाले वैसी ही २७ यह बात भी ठहरेगी, कि उस पुरुष ने उस कन्या को मैदान में पाया और वह चिल्लाई तो सही पर उस को कोई बचानेहारा न मिला॥

२८ यदि किसी पुरुष को कोई कुंवारी कन्या मिले जिस के ब्याह की बात न लगी हो और वह उसे पकड़कर उस २९ के साथ कुकर्म्म करे और वे पकड़े जाएं, तो जिस पुरुष ने उस से कुकर्म्म किया हो सो उस कन्या के पिता को पचास शेकेल रूपा दे और वह उसी की स्त्री हो उस ने उस की पत ली इस कारण वह जीवन भर उसे न त्यागने पाए॥

३० कोई अपनी सौतेली माता को अपनी स्त्री न बनाए वह अपने पिता का ओढ़ना न उघारे॥

२३. जिस के अण्ड कुचले गये वा लिंग काट डाला गया हो सो यहोवा की सभा में न आने पाए॥

२ कोई विजन्मा यहोवा की सभा में न आने पाए वरन दस पीढ़ी लों उस के वंश का कोई यहोवा की सभा में न आने पाए॥

३ कोई अम्मोनी वा मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए उन की दसवीं पीढ़ी लों का कोई यहोवा की ४ सभा में कभी न आने पाए, इस कारण से कि जब तुम मिस्र से निकल कर आते थे तब उन्हों ने अन्न जल लेकर मार्ग में तुम से भेंट न की और यह भी कि उन्हों ने अरम्नहरैम देश के पतोर नगरवाले बोर के पुत्र बिलाम ५ को तुझे स्राप देने के लिये दक्षिणा दी। पर तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे बिलाम की न सुनी वरन तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त उस के स्राप को आशिष से पलट दिया इस लिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रेम रखता था। ६ तू जीवन भर उन का कुशल और भलाई कभी न चाहना॥

७ किसी एदोमी से घिन न करना क्योंकि वह तेरा भाई है किसी मिस्री से भी घिन न करना क्योंकि उस के ८ देश में तू परदेशी होकर रहा था। उन के जो परपोते उत्पन्न हों वे यहोवा की सभा में आने पाएं॥

९ जब तू शत्रुओं से लड़ने को जाकर छावनी डाले १० तब सब प्रकार की बुरी बातों से बचा रहना। यदि तेरे बीच कोई पुरुष उस अशुद्धता से जो रात को आप से आप हुआ करती है अशुद्ध हुआ हो तो वह छावनी से ११ बाहर जाए और छावनी के भीतर न आए। पर सांझ से कुछ पहिले वह स्नान करे और जब सूर्य्य डूब जाए तब १२ छावनी में आए। छावनी के बाहर तेरे दिशा फिरने का एक स्थान हुआ करे और वहीं दिशा फिरने को जाया १३ करना। और तेरे पास के हथियारों में एक खनती भी रहे और जब तू दिशा फिरने को बैठे तब उस से खोदकर १४ अपने मल को ढांप देना। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हरवाने को तेरी छावनी के बीच घूमता रहेगा इस लिये तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिये न हो कि वह तेरे बीच कोई लज्जा की वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए॥

१५ जो दास अपने स्वामी के पास से भागकर तेरी शरण ले उस को उस के स्वामी के हाथ न पकड़ देना। १६ वह तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में तेरे संग रहने पाए और तू उस पर अंधेर न करना॥

१७ इस्राएली स्त्रियों में से कोई देवदासी न हो और न इस्राएलियों में से कोई पुरुष ऐसा बुरा काम करनेहारा हो। वेश्यापन की कमाई वा कुत्ते की कमाई कोई मन्नत १८ पूरी करने के लिये अपने परमेश्वर यहोवा के घर में न ले आए क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा को ये दोनों की दोनों कमाई घिनौनी लगती हैं॥

अपने किसी भाई को ब्याज पर ऋण न देना, चाहे १९ रुपया हो चाहे भोजनवस्तु हो चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर दी जाती है उसे ब्याजू न देना। बिराने को २० ब्याज पर ऋण दो तो दो पर अपने किसी भाई से ऐसा न करना जिस से जिस देश का अधिकारी होने को तू जाने पर है वहां जिस जिस काम में अपना हाथ लगाए उन सभों में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे आशिष दे॥

जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मन्नत माने २१ तो उस के पूरी करने में विलम्ब न करना क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा और विलम्ब करने से तुझ को पाप लगेगा। पर यदि तू मन्नत २२ न माने तो तुझ को पाप न लगेगा। जो कुछ तेरे मुंह २३ से निकले उस के पूरा करने में चौकसी करना तू अपने मुंह से वचन देकर अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर यहोवा की जैसी मन्नत माने वैसी ही उसे पूरा करना॥

जब तू किसी दूसरे की दाख की बारी में जाए तब २४ पेट भर मनमानते दाख खा तो खा पर अपने पात्र में कुछ न रखना। और जब तू किसी दूसरे के खड़े खेत में २५ जाए तब तू हाथ से बालें तोड़ सकता है पर किसी दूसरे के खड़े खेत पर हंसुआ न लगाना॥

२४. यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले और पीछे उस में कुछ लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न हो तो वह उस के लिये त्यागपत्र लिख उसके हाथ में देकर उस को अपने घर से निकाल दे। और जब वह उस के घर से निकल जाए २ तब दूसरे पुरुष की हो सकती है। पर यदि वह उस दूसरे ३ पुरुष को भी अप्रिय लगे और वह उस के लिये त्यागपत्र लिख उस के हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे वा वह दूसरा पुरुष जिस ने उस को अपनी स्त्री कर लिया हो मर जाए, तो उस का पहिला पति जिस ने उस ४ को निकाल दिया हो उस के अशुद्ध होने के पीछे उसे अपनी स्त्री न करने पाए क्योंकि यह यहोवा को घिनौना लगता है। यों तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना[१]॥

जो पुरुष हाल का ब्याहा हुआ हो वह सेना के ५

(१) मूल में देश से पाप न कराना।

जाय न जाए और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए वह बरस दिन लौं अपने घर में अवकाश से रहकर अपनी ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे ।
६ कोई मनुष्य चक्की को वा उस के ऊपर के पाट को बंधक न रक्खे क्योंकि वह तो प्राण ही बंधक रखना है ॥

७ यदि कोई अपने किसी इस्राएली भाई को दास बनाने वा बेच डालने की मनसा से चुराता हुआ पकड़ा जाए तो ऐसा चोर मार डाला जाए यों ऐसी बुराई को अपने बीच में से दूर करना ॥

८ कोढ़ की व्याधि के विषय चौकस रहना और जो कुछ लेवीय याजक तुम्हें सिखाएं उसी के अनुसार यत्न से करने में चौकसी करना जैसी आज्ञा मैं ने उन को दी है वैसा करने में चौकसी करना ।
९ स्मरण रक्खो कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के पीछे मार्ग में मरियम से क्या किया ॥

१० जब तू अपने किसी भाई को कुछ उधार दे, तब बंधक की वस्तु लेने को उस के घर के भीतर न घुसना ।
११ तू बाहर खड़ा रहना और जिस को तू उधार देता हो वही बंधक को तेरे पास बाहर ले आए ।
१२ और यदि वह मनुष्य कंगाल हो तो उस का बंधक अपने पास रक्खे हुए न सोना ।
१३ सूर्य्य डूबते डूबते उसे वह बंधक अवश्य फेर देना इस लिये कि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सोए और तुझे आशीर्वाद दे और यह तेरे परमेश्वर यहोवा के लेखे धर्म्म का काम ठहरेगा ॥

१४ कोई मजूर जो दीन और कंगाल हो चाहे वह तेरे भाइयों में से चाहे तेरे देश के फाटकों के भीतर रहनेहारे परदेशियों में से हो उस पर अंधेर न करना ।
१५ यह जानकर कि वह दीन है और उस का मन मजूरी में लगा रहता है मजूरी करने ही के दिन सूर्य्य डूबने से पहिले तू उस की मजूरी देना न हो कि वह तेरे कारण यहोवा की दोहाई दे और तुझे पाप लगे ॥

१६ पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए ॥

१७ किसी परदेशी मनुष्य वा बपमूए बालक का न्याय न बिगाड़ना और न किसी विधवा के कपड़े को बंधक रखना ।
१८ और इस को स्मरण रखना कि तू मिस्र में दास था और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहां से छुड़ा लाया इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं ॥

१९ जब तू अपने पक्के खेत को काटे और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए तो उसे लेने को फिर न जाना वह परदेशी बपमूए और विधवा के लिये पड़ा रहे इस लिये कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझ को आशिष दे ।
२० जब तू अपने जलपाई के वृक्ष को झाड़े तब डालियों को दूसरी बार न झाड़ना वह परदेशी बपमूए और विधवा के लिये रह जाए ।
२१ जब तू अपनी दाख की बारी के फल तोड़े तो पीछे छूटे हुओं को न लेना वह परदेशी बपमूए और विधवा के लिये रह जाए ।
२२ और इस को स्मरण रखना कि तू मिस्र देश में दास था इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं ॥

२५.

यदि मनुष्यों के बीच कोई झगड़ा हो और वे न्याय चुकवाने को न्याइयों के पास जाएं और वे उन का न्याय करें तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएं ।
२ और यदि दोषी मार खाने के योग्य ठहरे तो न्यायी उस को गिरवा अपने साम्हने जैसा उस का दोष हो उस के अनुसार कोड़े गिन गिनकर लगवाए ।
३ वह उसे चालीस कोड़े तक लगवा सकता है, इस से अधिक नहीं लगवा सकता ऐसा न हो कि इस से अधिक बहुत मार खिलवाने से तेरा भाई तेरे लेखे तुच्छ ठहरे ॥

४ दांवते समय बैल का मुंह न बांधना ॥

५ जब कई भाई संग रहते हों और उन में से एक निपुत्र मर जाए तो उस की स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया जाए उस के पति का भाई उस के पास जाकर उसे अपनी स्त्री कर ले और उस से पति के भाई का धर्म्म पालन करे ।
६ और जो पहिला बेटा वह स्त्री जने वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे इस लिये कि उस का नाम इस्राएल में से मिट न जाए ।
७ यदि उस स्त्री के पति के भाई को उसे ब्याहना न भाए तो वह स्त्री नगर के फाटक पर पुरनियों के पास जाकर कहे कि मेरे पति के भाई ने अपने भाई का नाम इस्राएल में बनाये रखने से नाह किया है और मुझ से पति के भाई का धर्म्म पालना नहीं चाहता ।
८ तब उस नगर के पुरनिये उस पुरुष को बुलवाकर उस को समझाएं और यदि वह अपनी बात पर खड़ा रहकर कहे मुझे इस को ब्याहना नहीं भावता,
९ तो उस के भाई की स्त्री पुरनियों के साम्हने उस के पास जाकर उस के पांव से जूती उतारे और उस के मुंह पर थूक दे और कहे जो पुरुष अपने भाई के वंश को चलाने न चाहे उस से यों ही किया जाएगा ।
१० तब इस्राएल में उस पुरुष का यह नाम पड़ेगा अर्थात् जूती उतारे हुए पुरुष का घराना ॥

११ यदि दो पुरुष आपस में मारपीट करते हों और उन में से एक की स्त्री अपने पति को मारनेहारे के हाथ से छुड़ाने के लिये पास जा अपना हाथ बढ़ाकर उस के

११ गुप्त अंग को पकड़े, तो उस स्त्री का हाथ काट डालना उस पर तरस न खाना ॥

१३ अपनी थैली में भांति भांति के अर्थात् घटती
१४ बढ़ती बटखरे न रखना। अपने घर में भांति भांति के
१५ अर्थात् घटती बढ़ती नपुए न रखना। तेरे बटखरे और नपुए पूरे पूरे और धर्म्म के हों इस लिये कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरे बहुत दिन
१६ हों। क्योंकि ऐसे कामों में जितने कुटिलता करते हैं सो सब तेरे परमेश्वर यहोवा को घिनौने लगते हैं ॥

१७ स्मरण रख कि जब तू मिस्र से निकलकर आता
१८ था तब अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया। अर्थात् वह जो परमेश्वर का भय न मानता था इस से उस ने मार्ग में जब तू थका मांदा था तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सब से पीछे थे उन सभों को
१९ मारा। सो जब तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जो वह तेरा भाग करके तेरे अधिकार में कर देता है तुझे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दे तब अमालेक का नाम तक धरती पर से[१] मिटा डालना इसे न भूलना ॥

२६. फिर जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके तुझे देता है और उस का अधिकारी होकर
२ उस में बस जाए, तब जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस की भूमि की भांति भांति की जो पहिली उपज तू अपने घर लाएगा उस में से कुछ टोकरी में लेकर उस स्थान पर जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का
३ निवास करने को चुन ले। और उन दिनों के याजक के पास जाकर यह कहना कि मैं आज तेरे परमेश्वर यहोवा के साम्हने निवेदन करता हूं कि यहोवा ने हम लोगों को जिस देश के देने की हमारे पितरों से किरिया खाई थी
४ उस में मैं आ गया हूं। तब याजक तेरे हाथ से वह टोकरी लेकर तेरे परमेश्वर यहोवा की वेदी के साम्हने धर दे।
५ तब तू अपने परमेश्वर यहोवा से यों कहना कि मेरा मूल पुरुष नाश होने के निकट एक अरामी मनुष्य था और वह अपने छोटे से परिवार समेत मिस्र को गया और वहां परदेशी होकर रहा और वहां उस से एक बड़ी और सामर्थी और बहुत मनुष्यों से भरी हुई जाति उत्पन्न हुई।
६ और मिस्रियों ने हम लोगों से बुरा बर्त्ताव किया और
७ हमें दुख दिया और हम से कठिन सेवा कराई। पर हम ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी और यहोवा ने हमारी सुनकर हमारे दुख श्रम और अंधेर पर दृष्टि की। और यहोवा बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई
८ भुजा से अति भयानक चिन्ह और चमत्कार करके हम को
९ मिस्र से निकाल लाया, और हमें इस स्थान पर पहुंचाकर यह देश जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती
१० हैं दे दिया है। सो अब हे यहोवा देख जो भूमि तू ने मुझे दी है उस की पहली उपज मैं तेरे पास ले आया हूं। तब तू उसे अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने रखना
११ और यहोवा को दण्डवत् करना। और जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे और तेरे घराने को दे उन के कारण तू लेवीयों और अपने बीच रहनेहारे परदेशियों सहित आनन्द करना ॥

१२ तीसरे बरस जो दशमांश देने का बरस ठहरा है जब तू अपनी सब भांति की बढ़ती के दशमांश को निकाल चुके तब उसे लेवीय परदेशी बपमूए और विधवा को देना कि वे तेरे फाटकों के भीतर खाकर तृप्त हों।
१३ और तू अपने परमेश्वर यहोवा से कहना, कि मैं ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार पवित्र ठहराई हुई वस्तुओं को अपने घर से निकाला और लेवीय परदेशी बपमूए और विधवा को दे दिया है तेरी किसी आज्ञा को मैं ने न तो
१४ टाला है न बिसराया। उन वस्तुओं में से मैं ने शोक के समय नहीं खाया और न उन में से कोई वस्तु अशुद्धता की दशा में घर से निकाली और न कुछ शोक करनेवालों को[२] दिया मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा की सुन ली मैं
१५ ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया है। तू स्वर्ग में से जो तेरा पवित्र धाम है दृष्टि करके अपनी प्रजा इस्राएल को आशिष दे और इस दूध और मधु की धाराओं के देश की भूमि पर आशिष दे जो तू ने हमारे पितरों से खाई हुई किरिया के अनुसार हमें दिया है ॥

१६ आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को इन्हीं विधियों और नियमों के मानने की आज्ञा देता है सो अपने सारे मन और सारे जीव से इन के मानने में चौकसी
१७ करना। तू ने तो आज यहोवा को अपना परमेश्वर मानकर यह वचन दिया है कि मैं तेरे बनाये हुए मार्गों पर चलूंगा और तेरी विधियों आज्ञाओं और नियमों को
१८ माना करूंगा और तेरी सुना करूंगा। और यहोवा ने भी आज तुझ को अपने वचन के अनुसार अपना प्रजा रूपी निज धन माना है कि तू उस की सब आज्ञाओं को
१९ माना करे, और कि वह अपनी बनाई हुई सब जातियों

(१) मूल में आकाश के तले से।

(२) मूल में मुर्दे के लिये।

से अधिक प्रशंसा नाम और शोभा के विषय तुझ को श्रेष्ठ करे और तू उस के कहे के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे ॥

(आशिष और स्राप)

२७. फिर इस्राएल के पुरनियों समेत मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी कि जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सब २ को मानना। और जब तुम यर्दन पार होके उस देश में पहुंचो जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है तब बड़े बड़े पत्थर खड़े कर लेना और उन पर चूना पोतना। ३ और पार होने के पीछे उन पर इस व्यवस्था के सारे वचनों को लिखना इसलिये कि जो देश तेरे पितरों का परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे देता है और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं उस देश में तू ४ जाने पाए। फिर जिन पत्थरों के विषय मैं ने आज आज्ञा दी है उन्हें तुम यर्दन के पार होकर एबाल पहाड़ पर खड़ा ५ करना और उन पर चूना पोतना। और वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पत्थरों की एक वेदी बनाना ६ उन पर कोई लोखर न चलाना। अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी अनगढ़े पत्थरों की बनाकर उन पर उस के लिये ७ होमबलि चढ़ाना। और वहीं मेलबलि भी चढ़ाकर भोजन करना और अपने परमेश्वर यहोवा के सन्मुख ८ आनन्द करना। और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के सारे वचनों को साफ साफ लिख देना ॥

९ फिर मूसा और लेवीय याजकों ने सारे इस्राएलियों से यह भी कहा कि हे इस्राएल चुप रहकर सुन आज के दिन तू अपने परमेश्वर यहोवा की प्रजा हो गया है। १० सो अपने परमेश्वर यहोवा की मानना और उस की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उन को पूरा करना ॥

११ फिर उसी दिन मूसा ने प्रजा के लोगों को यह १२ आज्ञा दी कि, जब तुम यर्दन पार हो आओ तब शिमोन लेवी यहूदा इस्साकार यूसफ और बिन्यामीन ये गिरिज्जीम पहाड़ पर खड़े होकर आशीर्वाद सुनाएं। १३ और रूबेन गाद आशेर जबूलून दान और नसाली ये १४ एबाल पहाड़ पर खड़े होके स्राप सुनाएं। तब लेवीय लोग सब इस्राएली पुरुषों से पुकारके कहें ॥

१५ स्रापित हो वह मनुष्य जो कोई मूर्त्ति कारीगर से खुदवाकर वा ढलवाकर निराले स्थान थापे क्योंकि यह यहोवा को घिनौना लगता है। तब सब लोग कहें आमेन ॥

१६ स्रापित हो वह जो अपने पिता वा माता को तुच्छ जाने। तब सब लोग कहें आमेन ॥

१७ स्रापित हो वह जो किसी दूसरे के सिवाने को हटाए। तब सब लोग कहें आमेन ॥

१८ स्रापित हो वह जो अंधे को मार्ग से भटका दे। तब सब लोग कहें आमेन ॥

१९ स्रापित हो वह जो परदेशी अपमूए वा विधवा का न्याय बिगाड़े। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२० स्रापित हो वह जो अपनी सौतेली माता से कुकर्म्म करे क्योंकि वह अपने पिता का ओढ़ना उघारता है। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२१ स्रापित हो वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म्म करे। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२२ स्रापित हो वह जो अपनी बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली उस से कुकर्म्म करे। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२३ स्रापित हो वह जो अपनी सास के संग कुकर्म्म करे। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२४ स्रापित हो वह जो किसी को छिपकर मारे। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२५ स्रापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के लिये धन ले। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२६ स्रापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा न करे। तब सब लोग कहें आमेन ॥

२८. यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं जो मैं आज तुझे सुनाता हूं चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उस की सुने तो वह तुझे पृथिवी की सब जातियों में श्रेष्ठ २ करेगा। फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ३ ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे। धन्य हो तू नगर ४ में धन्य हो तू खेत में, धन्य हो तेरी सन्तान और तेरी भूमि की उपज और गाय और भेड़बकरी आदि पशुओं के ५,६ बच्चे, धन्य हो तेरी टोकरी और तेरी कठौती, धन्य हो ७ तू भीतर आते धन्य हो तू बाहर जाते। यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे सो तुझ से हार जाएंगे वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे पर तेरे ८ साम्हने से सात मार्ग होकर भाग जाएंगे। तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशिष देगा सो जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में वह तुझे आशिष देगा। ९ यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उस के मार्गों पर चले तो वह अपनी किरिया के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर

१० रक्खेगा। सो पृथिवी के देश देश के लोग यह देख कर
११ कि तू यहोवा का कहलाता है[१] तुझ से डर जाएंगे। और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पितरों से किरिया खाकर तुझ को देने कहा था उस में वह तेरे सन्तान भूमि की उपज और पशुओं की बढ़ती करके तेरी भलाई
१२ करेगा। यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा और तेरे सारे कामों पर आशिष देगा सो तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा पर किसी से तुझे उधार लेना
१३ न पड़ेगा। और यहोवा तुझ को पूंछ नहीं सिर ही ठहराएगा और तू नीचे नहीं ऊपर ही रहेगा यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं तू
१४ उन के मानने में मन लगाकर चौकसी करे, और जिन वचनों की मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं उन में से किसी से दहिने वा बाएं मुड़के पराये देवताओं के पीछे न हो ले और न उन की सेवा करे॥

१५ परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की न सुने और उस की सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज तुझे सुनाता हूं चौकसी न करे तो ये सब
१६ स्राप तुझ पर पड़ेंगे। अर्थात् स्रापित हो तू नगर में स्रापित
१७ हो तू खेत में। स्रापित हो तेरी टोकरी और तेरी
१८ कठौती। स्रापित हो तेरी सन्तान और भूमि की उपज और
१९ गायों और भेड़ बकरियों के बच्चे। स्रापित हो तू भीतर
२० आते और स्रापित हो तू बाहर जाते। फिर जिस जिस काम में तू हाथ लगाए उस में यहोवा तब लों तुझ को स्राप देता और भयातुर करता और धमकी देता रहेगा जब लों तू न मिट जाए और शीघ्र नाश न हो जाए इस कारण कि तू यहोवा को त्यागकर दुष्ट काम करेगा।
२१ यहोवा ऐसा करेगा कि मरी तुझ में फैलकर तब लों लगी[२] रहेगी जब लों जिस भूमि के अधिकारी होने को
२२ तू जाता है उस पर से तेरा अन्त न हो जाए। यहोवा तुझ को क्षयरोग से और ज्वर और दाह और बड़ी जलन से और तलवार और झुलस और गेरूई से मारेगा और ये तब लों तेरा पीछा किये रहेंगे जब लों तू सत्यानाश न
२३ हो जाए। और तेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल का और
२४ तेरे पांव के तले भूमि लोहे की हो जाएगी। यहोवा तेरे देश में पानी के बदले बालू और धूलि बरसाएगा वह आकाश से तुझ पर यहां लों बरसेगी कि तू सत्यानाश
२५ हो जाएगा। यहोवा तुझ को शत्रुओं से हरवाएगा और तू एक मार्ग से उन का साम्हना करने को जाएगा पर

(१) मूल में यहोवा का नाम तुझ पर पुकारा गया है।
(२) मूल में चिमटी।

सात मार्ग होकर उन के साम्हने से भाग जाएगा और पृथ्वी के सब राज्यों में मारा मारा फिरेगा। और तेरी
२६ लोथ आकाश के भांति भांति के पक्षियों और धरती के पशुओं का आहार होगी और उन का कोई हांकनेहारा
२७ न होगा। यहोवा तुझ को मिस्र के से फोड़े और बवासीर दाद और खुजली से ऐसा पीड़ित करेगा कि तू चंगा न
२८ हो सकेगा। यहोवा तुझे बौरहा और अंधा कर देगा
२९ और तेरे मन को अति घबरा देगा। और जैसे अंधा अंधियारे में टटोलता है वैसे ही तू दिन दुपहरी को टटोलता फिरेगा और तेरे काम काज सुफल न होंगे और सब दिन तू केवल अंधेर सहता और लुटता ही रहेगा
३० और तेरा कोई छुड़ानेहारा न होगा। तू स्त्री से ब्याह की बात लगाएगा पर दूसरा पुरुष उस को भ्रष्ट करेगा घर तू बनाएगा पर उस में बसने न पाएगा दाख की बारी
३१ तू लगाएगा पर उस के फल खाने न पाएगा। तेरा बैल तेरे देखते मारा जाएगा और तू उस का मांस खाने न पाएगा तेरा गदहा तेरी आंख के साम्हने लूट में चला जाएगा और तुझे फिर न मिलेगा तेरी भेड़ बकरियां तेरे शत्रुओं के हाथ लग जाएंगी और तेरी ओर से उन का
३२ कोई छुड़ानेहारा न होगा। तेरे बेटे बेटियां दूसरे देश के लोगों के हाथ लग जाएंगी और उन के लिये चाव से देखते देखते तेरी आंखें रह जाएंगी और तेरा कुछ बस न
३३ चलेगा। तेरी भूमि की उपज और तेरी सारी कमाई एक अनजाने देश के लोग खा जाएंगे और सब दिन तू केवल
३४ अंधेर सहता और पीसा जाता रहेगा, यहां लों कि तू उन बातों के मारे जो अपनी आंखों से देखेगा बौरहा
३५ हो जाएगा। यहोवा तेरे घुटनों और टांगों में बरन नख[१] से सिख लों भी असाध्य फोड़े निकालकर तुझ को पीड़ित
३६ करेगा। यहोवा तुझ को उस राजा समेत जिस को तू अपने ऊपर ठहराएगा तेरी और तेरे पितरों की अनजानी एक जाति के बीच पहुंचाएगा और उस के बीच रहकर तू काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना
३७ करेगा। और उन सब जातियों में जिन के बीच यहोवा तुझ को पहुंचाएगा लोग तुझे देख कर चकित होने का
३८ और दृष्टान्त और स्राप का कारण मानेंगे। तू खेत में बीज तो बहुत से ले जाएगा पर उपज थोड़े ही बटोरेगा क्योंकि टिड्डियां उसे खा जाएंगी।
३९ तू दाख की बारियां लगाकर उन में काम तो करेगा पर उन की दाख का मधु पीने न पाएगा बरन फल भी तोड़ने न
४० पाएगा क्योंकि कीड़े उन को खा जाएंगी। तेरे सारे देश में जलपाई के वृक्ष तो होंगे पर उन का तेल तू अपने

(१) मूल में पांव के तलुवे।

४१ शरीर में लगाने न पाएगा क्योंकि वे झड़ जाएंगी । तेरे बेटे बेटियां तो उत्पन्न होंगी पर तेरे रहेंगी नहीं क्योंकि वे ४२ बन्धुआई में चले जाएंगे । तेरे सारे वृक्ष और तेरी भूमि ४३ की उपज टिड्डियां खा जाएंगी । जो परदेशी तेरे बीच रहेगा सो तुझ से बढ़ता जाएगा और तू आप घटता ४४ चला जाएगा । वह तुझ को उधार देगा पर तू उस को उधार न दे सकेगा वह तो सिर और तू पूंछ ठहरेगा । ४५ तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आज्ञाओं और विधियों के मानने को उस की न सुनेगा इस कारण ये सब स्राप तुझ पर आ पड़ेंगे और तेरे पीछे पड़े रहेंगे और तुझ को पकड़ेंगे और अन्त में तू नाश हो जाएगा । ४६ और वे तुझ पर और तेरे वंश पर सदा लों बने रह कर ४७ चिह्न और चमत्कार ठहरेंगे, तू जो सब पदार्थ की बहुतायत होने पर आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपने ४८ परमेश्वर यहोवा की सेवा न करता रहेगा, इस कारण तुझ को भूखा प्यासा नंगा और सब पदार्थों से रहित होकर अपने उन शत्रुओं की सेवा करनी पड़ेगी जिन्हें यहोवा तेरे विरुद्ध भेजेगा और जब लों तू नाश न हो जाए तब लों वह तेरी गर्दन पर लोहे का जूआ डाल ४९ रक्खेगा । यहोवा तेरे विरुद्ध दूर से बरन पृथिवी की छोर से वेग उड़नेहारे उकाब सी एक जाति को चढ़ा लाएगा ५० जिस की भाषा तू न समझेगा । उस जाति के लोगों की चेष्टा क्रूर होगी वे न तो बूढ़ों का मुंह देखकर आदर ५१ करेंगे न बालकों पर दया करेंगे । और वे तेरे पशुओं के बच्चे और भूमि की उपज यहां लों खा जाएंगे कि तू नाश हो जाएगा और वे तेरे लिये न अन्न न नया दाखमधु न टटका तेल न बछड़े न मेम्ने छोड़ेंगे यहां लों कि तू नाश ५२ हो जाएगा । और वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिये हुए सारे देश के सब फाटकों के भीतर तुझे घेर रक्खेंगे वे तेरे सब फाटकों के भीतर तुझे तब तक घेरेंगे जब तक तेरे सारे देश में तेरी ऊंची ऊंची और दृढ़ शहरपनाहें ५३ जिन का तू भरोसा करेगा न गिर जाएं । तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझ को डालेंगे तू अपने निज जन्माये बेटे बेटियां जिन्हें तेरा पर- ५४ मेश्वर यहोवा तुझ को देगा उन का मांस खाएगा । बरन तुझ में जो पुरुष कोमल और अति सुकुमार हो वह भी अपने भाई और अपनी प्राणप्यारी और अपने बचे हुए ५५ बालकों को क्रूर दृष्टि से देखेगा, और वह उन में से किसी को भी अपने बालकों के मांस में से जो वह आप खाएगा कुछ न देगा क्योंकि घिर जाने और उस सकेती में जिस में तेरे शत्रु तेरे सारे फाटकों के भीतर तुझे घेर के ५६ डालेंगे उस के पास कुछ न रहेगा । और तुझ में जो स्त्री यहां लों कोमल और सुकुमार हो कि सुकुमारपन और कोमलता के मारे भूमि पर पांव धरते भी डरती हो वह भी अपने प्राणप्रिय पति और बेटे और बेटी को, अपनी ५७ खेरी बरन अपने जने हुए बच्चों को क्रूर दृष्टि से देखेगी क्योंकि घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझे तेरे फाटकों के भीतर घेरके डालेंगे वह सब वस्तुओं की घटी के मारे उन्हें छिपके खाएगी । यदि ५८ इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालने में जो इस पुस्तक में लिखे हैं चौकसी करके उस आदरयोग्य और भययोग्य नाम का जो तेरे परमेश्वर यहोवा का है भय न माने, तो ५९ यहोवा तुझ को और तेरे वंश को अनोखे अनोखे दण्ड देगा वे दुष्ट और बहुत दिन रहनेहारे रोग और भारी भारी दण्ड होंगे । और वह मिस्र के उन सब रोगों को ६० फिर तेरे लगा देगा जिन से तू भय खाता था और वे तेरे लगे रहेंगे । बरन जितने रोग आदि दण्ड इस व्यवस्था ६१ की पुस्तक में नहीं लिखे हैं उन सभों को भी यहोवा तुझ को यहां लों लगा देगा कि तू सत्यानाश हो जाएगा । और तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की न मानेगा इस ६२ कारण आकाश के तारों के समान अनगिनित होने की सन्ती तुझ में से थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे । और जैसे ६३ अब यहोवा को तुम्हारी भलाई और बढ़ती करने से हर्ष होता है वैसे ही तब उस को तुम्हें नाश बरन सत्यानाश करने से हर्ष होगा और जिस भूमि के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे । और ६४ यहोवा तुझ को पृथिवी की इस छोर से ले उस छोर लों के सब देशों के लोगों में तितर बितर करेगा और वहां रहके तू अपने और अपने पुरखाओं के अनजाने काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा । और ६५ उन जातियों में तू कभी चैन न पायेगा न तेरे पांव को ठिकाना मिलेगा क्योंकि वहां यहोवा ऐसा करेगा कि तेरा हृदय कांपता रहेगा और तेरी आंखें धुन्धली पड़ जाएंगी और तेरा मन कलपता रहेगा । और तुझ को जीवन का ६६ नित्य सन्देह रहेगा और तू दिन रात थरथराता रहेगा और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा । तेरे मन में जो त्रास ६७ बना रहेगा और तेरी आंखों को जो कुछ दीखता रहेगा उस के कारण तू भोर को आह मारके कहेगा कि सांझ कब होगी और सांझ को आह मारके कहेगा कि भोर कब होगा । और यहोवा तुझ को नावों पर चढ़ाकर मिस्र में ६८ उस मार्ग से लौटा देगा जिस के विषय में ने तुझ से कहा था कि वह फिर तेरे देखने में न आएगा और वहां तुम अपने शत्रुओं के हाथ दास दासी होने के लिये बिकाऊ तो रहोगे पर तुम्हारा कोई गाहक न होगा ॥

२९. जिस वाचा के इस्राएलियों से बांधने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को मोआब के देश में दी उस के ये ही वचन हैं जो वाचा उस ने उन से होरेब पहाड़ पर बांधी थी उस से यह अलग है ॥

२ फिर मूसा ने सब इस्राएलियों को बुलाकर कहा जो कुछ यहोवा ने मिस्र देश में तुम्हारे देखते फ़िरौन और उस के सब कर्म्मचारियों और उस के सारे देश से ३ किया सो तुम ने देखा है। वे बड़े बड़े परीक्षा के काम और चिह्न और बड़े बड़े चमत्कार तेरी आंखों के साम्हने ४ हुए, पर यहोवा ने आज लों तुम को न तो समझने की बुद्धि और न देखने की आंखें न सुनने के कान दिये हैं। ५ मैं तो तुम को जंगल में चालीस बरस लिये फिरा और न तुम्हारे वस्त्र पुराने हो तुम्हारे तन पर न तेरी जूतियां तेरे ६ पैरों में पुरानी पड़ीं। रोटी जो तुम नहीं खाने पाये और दाखमधु और मदिरा जो तुम नहीं पीने पाये सो इस लिये हुआ कि तुम जानो कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर ७ हूं। और जब तुम इस स्थान पर आये तब हेशबोन का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग ये दोनों युद्ध के लिये हमारा साम्हना करने को निकल आये और हम ८ ने उन को जीत कर, उन का देश ले लिया और रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को निज ९ भाग करके दे दिया। सो इस वाचा की बातों का पालन करो इसलिये कि जो कुछ करो सो सुफल हो ॥

१० आज क्या पुरनिये क्या सरदार तुम्हारे मुख्य मुख्य ११ पुरुष क्या गोत्र गोत्र के तुम सब इस्राएली पुरुष क्या तुम्हारे बालबच्चे और स्त्रियां क्या लकड़हारे क्या पनभरे क्या तेरी छावनी में रहनेहारे परदेशी तुम सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने इसलिये खड़े हुए १२ हो, कि जो वाचा तेरा परमेश्वर यहोवा आज तुझ से बांधता है और जो किरिया वह आज तुझ को खिलाता १३ है उस में तू साझी हो जाए, इसलिये कि उस वचन के अनुसार जो उस ने तुझ को दिया और उस किरिया के अनुसार जो उस ने इब्राहीम इसहाक और याकूब तेरे पितरों से खाई थी वह आज तुझ को अपनी प्रजा १४ ठहराए और आप तेरा परमेश्वर ठहरे। फिर मैं इस १५ वाचा और इस किरिया में केवल तुम को नहीं पर उन को भी जो आज हमारे संग यहां हमारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े हैं और जो आज यहां हमारे संग नहीं १६ हैं उन में साझी करता हूं। तुम जानते हो कि जब हम मिस्र देश में रहते थे और जब मार्ग में की जातियों के १७ बीच बीच होकर आते थे, तब तुम ने उन की कैसी कैसी घिनौनी वस्तुएं और काठ पत्थर चांदी सोने की कैसी १८ मूरतें देखीं। सो ऐसा न हो कि तुम लोगों में ऐसा कोई पुरुष वा स्त्री वा कुल वा गोत्र भर के लोग हों जिन का मन आज हमारे परमेश्वर यहोवा से फिरे कि जाकर उन जातियों के देवताओं की उपासना करें फिर ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच ऐसी कोई जड़ हो जिस से विष वा कड़ुआ १९ बीज अंकुरा हो, और ऐसा मनुष्य इस स्राप के वचन सुनकर अपने को आशीर्वाद के योग्य माने और यह सोचे कि चाहे मैं अपने मन के हठ पर चलूं और तृप्त होकर प्यास को मिटा डालूं[१] तौभी मेरा कुशल होगा। २० यहोवा उस का पाप क्षमा करने से नाह करेगा बरन तब यहोवा के कोप और जलन का धुंआ उस को छा देगा और जितने स्राप इस पुस्तक में लिखे हैं वे सब उस पर आ पड़ेंगे और यहोवा उस का नाम धरती पर से[२] मिटा २१ देगा। और व्यवस्था की इस पुस्तक में जिस वाचा की चर्चा है उस के सब स्रापों के अनुसार यहोवा उस को इस्राएल के सब गोत्रों में से हानि के लिये अलगाएगा। २२ सो होनहारी पीढ़ियों में तुम्हारे वंश के लोग जो तुम्हारे पीछे उत्पन्न होंगे और बिराने मनुष्य भी जो दूर देश से आएंगे वे उस देश की विपत्तियां और उस में यहोवा के २३ फैलाये हुए रोग देख कर, और यह भी देखकर कि इस की सब भूमि गंधक और लोन से भर गई और यहां लों जल गई है कि इस में न कुछ बोया जाता न कुछ जमता न घास उगती है बरन सदोम और अमोरा अदमा और सबोयीम के समान हो गया है जिन्हें यहोवा २४ ने कोप और जलजलाहट करके उलट दिया था, और सब जातियों के लोग पूछेंगे यहोवा ने इस देश से ऐसा क्यों किया और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण २५ है। तब लोग यह उत्तर देंगे कि उन के पितरों के परमेश्वर यहोवा ने जो वाचा उन के साथ मिस्र देश से २६ निकालने के समय बांधी थी उस को उन्हों ने तोड़ा, और पराये देवताओं की उपासना की जिन्हें वे पहिले न २७ जानते थे और यहोवा ने उन को नहीं दिया था, सो यहोवा का कोप इस देश पर भड़क उठा कि पुस्तक में २८ लिखे हुए सब स्राप इस पर आ पड़ें। और यहोवा ने कोप जलजलाहट और बड़ा ही क्रोध करके उन्हें उन के देश में से उखाड़ दूसरे देश में फेंक दिया जैसा आज प्रगट है ॥

२९ गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं पर जो प्रगट की गई हैं सो सदा लों हमारे और हमारे

(१) वा प्यास पर मतवालापन को बढ़ाऊं वा प्यासे और तृप्त दोनों को मिटा डालूं।

(२) मूल में आकाश के तले से।

वंश के वश में रहेंगी इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएं ॥

३०. फिर जब आशिष और स्राप की ये सब बातें जो मैं ने तुझ को कह सुनाई हैं तुझ पर घटें और तू उन सब जातियों के बीच रहकर जहां तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बरबस २ पहुंचाएगा इन बातों को चेत करे, और अपनी सन्तान सहित अपने सारे मन और सारे जीव से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिर के उस के पास आए और इन सब आज्ञाओं के अनुसार जो मैं आज तुझे सुनाता हूं उस ३ की माने, तब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बंधुआई से लौटा ले आएगा और तुझ पर दया करके उन सब देशों के लोगों में से जिन के बीच वह तुझ को तितर बितर ४ कर देगा फिर इकट्ठा करेगा। चाहे धरती[१] की छोर लों तेरा बरबस पहुंचाया जाना हो तौभी तेरा परमेश्वर ५ यहोवा तुझ को वहां से ले आके इकट्ठा करेगा। और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उसी देश में पहुंचाएगा जिस के तेरे पुरखा अधिकारी हुए थे और तू फिर उस का अधिकारी होगा और वह तेरी भलाई करेगा और तुझ को ६ तेरे पुरखाओं से भी गिनती में अधिक बढ़ाएगा। और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे जीव के साथ प्रेम रक्खे जिस से तू जीता ७ रहेगा। और तेरा परमेश्वर यहोवा ये सब स्राप की बातें तेरे शत्रुओं पर जो तुझ से बैर करके तेरे पीछे पड़ेंगे घटा- ८ एगा। और तू फिरके यहोवा की सुनेगा और इन सब आज्ञाओं को मानेगा जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं। ९ और यहोवा तेरी भलाई के लिये तेरे सब कामों में और तेरी सन्तान और पशुओं के बच्चों और भूमि की उपज में तेरी बढ़ती करेगा क्योंकि यहोवा फिर तेरे ऊपर भलाई के लिये वैसा आनन्द करेगा जैसा उस ने तेरे पितरों के ऊपर किया १० था। क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सुनकर उस की आज्ञाओं और विधियों को जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हैं माना करेगा और अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने सारे मन और सारे जीव से फिरेगा ॥

११ देखो यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं सो १२ न तो तेरे लिये अनोखी और न दूर है। न तो यह आकाश में है कि तू कहे कौन हमारे लिये आकाश में चढ़ उसे हमारे पास ले आए और हम को सुनाए कि १३ हम उसे मानें। और न यह समुद्र पार है कि तू कहे कौन हमारे लिये समुद्र पार जा उसे हमारे पास ले आए और हम को सुनाए कि हम उसे मानें। पर यह वचन १४ तेरे बहुत निकट बरन तेरे मुंह और मन ही में है सो तू इस पर चल सकता है ॥

सुन आज मैं ने तुझ को जीवन और मरण हानि १५ और लाभ दिखाया है। कैसे कि मैं आज तुझे आज्ञा १६ देता हूं कि अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना और उस के मार्गों पर चलना और उस की आज्ञाओं विधियों और नियमों को मानना इसलिये कि तू जीता रहे और बढ़ता जाए और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जिस का अधिकारी होने को तू जाने पर है तुझे आशिष दे। पर यदि तेरा मन फिर जाए और तू न सुने और बहक १७ कर पराये देवताओं को दण्डवत् और उन की उपासना करने लगे, तो मैं तुम्हें आज यह जताता हूं कि तुम १८ निःसंदेह नाश हो जाओगे जिस देश का अधिकारी होने को तू यर्दन पार जाने पर है उस देश में तुम बहुत दिन रहने न पाओगे। मैं आज आकाश और पृथिवी दोनों १९ को तुम्हारे साम्हने इस बात के साक्षी करता हूं कि मैं ने जीवन और मरण आशिष और स्राप तुझ को दिखा दिये हैं सो जीवन ही को अपना ले कि तू और तेरा वंश दोनों जीते रहें। सो अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना २० और उसकी मानना और उस का बना रहना क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घजीविता यही है और ऐसा करने से जो देश यहोवा ने इब्राहीम इसहाक और याकूब तेरे पितरों को किरिया खाकर देने कहा था उस देश में तू बसा रहेगा ॥

(मूसा का प्रसिद्ध गीत)

३१. ये ही बातें मूसा ने सब इस्राएलियों से जाकर कहीं। और उस ने उन से २ यह भी कहा कि आज मैं एक सौ बीस बरस का हुआ हूं और अब मैं आने जाने न पाऊंगा क्योंकि यहोवा ने मुझ से कहा है कि तू इस यर्दन पार जाने न पाएगा। तेरे ३ आगे पार जानेहारा तेरा परमेश्वर यहोवा है वह उन जातियों को तेरे साम्हने से नाश करेगा और तू उन के देश का अधिकारी होगा और यहोवा के कहे के अनुसार यहोशू तेरे आगे पार जाएगा। और जैसे यहोवा ने ४ एमोरियों के राजा सीहोन और ओग और उन के देश को नाश किया वैसे ही वह उन सब जातियों से भी करेगा। और जब यहोवा उन को तुम से हरवा देगा तब ५ तुम उन सारी आज्ञाओं के अनुसार उन से करना जो मैं ने तुम को सुनाई हैं। हियाव बांधो और दृढ़ हो ६ उन से न तो डरो और न त्रास खाओ क्योंकि तेरे संग

(१) मूल में आकाश।

चलनेहारा तेरा परमेश्वर यहोवा है वह तुझ को धोखा
७ न देगा और न छोड़ेगा। तब मूसा ने यहोशू को बुला
कर सब इस्राएलियों के सन्मुख कहा हियाव बांध और
दृढ़ हो क्योंकि इन लोगों के संग उस देश में जिसे
यहोवा ने इनके पितरों से किरिया खाकर देने को कहा
८ था तू जाएगा और तू उसे इन का भाग कर देगा। और
तेरे आगे आगे चलनेहारा यहोवा है वह तेरे संग रहेगा
और न तो तुझे धोखा देगा न छोड़ देगा सो मत डर
और तेरा मन कच्चा न हो॥

९ फिर मूसा ने यही व्यवस्था लिखकर लेवीय याजकों
को जो यहोवा की वाचा के सन्दूक उठानेहारे थे और
१० इस्राएल के सब पुरनियों को सौंप दी। तब मूसा ने उन
को आज्ञा दी कि सात सात बरस के बीते पर अर्थात्
उगाही न होने के बरस के झोंपड़ीवाले पर्व में जब सब
११ इस्राएली तेरे परमेश्वर यहोवा को उस स्थान पर जिसे
वह चुन लेगा हाजिर होने के लिये आएं तब यह व्यवस्था
१२ सब इस्राएलियों को पढ़कर सुनाना। क्या पुरुष क्या स्त्री
क्या बालक क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर के परदेशी
सब लोगों को इकट्ठा करना कि वे सुनकर सीखें और
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मान कर इस व्यवस्था
१३ के सारे वचनों के पालन करने में चौकसी करें, और
उन के लड़केवाले जिन्हों ने ये बातें नहीं सुनीं वे भी
सुनकर सीखें कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय तब
लों मानते रहें जब लों तुम उस देश में जीते रहो जिस
के अधिकारी होने को तुम यर्दन पार जाने पर हो॥

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा तेरे मरने का दिन
निकट है सो यहोशू को बुलवा और तुम दोनों मिलाप-
वाले तम्बू में आकर हाजिर हो कि मैं उस को आज्ञा
दूं। सो मूसा और यहोशू जाकर मिलापवाले तम्बू में
१५ हाजिर हुए। तब यहोवा ने उस तंबू में बादल के खंभे
में होकर दर्शन किया और बादल का खंभा तंबू के द्वार
१६ पर ठहर गया। तब यहोवा ने मूसा से कहा तू तो अपने
पुरखाओं के संग सो जाने पर है और ये लोग उठकर उस
देश के बिराने देवताओं के पीछे जिन के बीच वे जाकर
रहेंगे व्यभिचारिन की नाईं हो लेंगे और मुझे त्यागकर
१७ उस वाचा को जो मैं ने उन से बांधी है तोड़ेंगे। उस
समय मेरा कोप इन पर भड़केगा और मैं भी इन्हें त्याग
कर इन से अपना मुंह छिपा लूंगा सो ये आहार हो
जाएंगे और बहुत सी विपत्तियां और क्लेश इन पर आ
पड़ेंगे यहां लों कि ये उस समय कहेंगे क्या ये विपत्तियां
हम पर इस कारण आ नहीं पड़ीं कि हमारा परमेश्वर
१८ हमारे बीच नहीं रहा। उस समय मैं उन सब बुराइयों
के कारण जो ये पराये देवताओं की ओर फिरके करेंगे
निःसन्देह उन से अपना मुंह छिपा लूंगा। सो अब तुम १९
यह गीत लिख लो और तू इसे इस्राएलियों को सिखाकर
कंठ करा दे इसलिये कि यह गीत उन के विरुद्ध मेरा
साक्षी ठहरे। जब मैं इन को उस देश में पहुंचाऊंगा जिसे २०
देने की मैं ने इन के पितरों से किरिया खाई और जिस
में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं और खाते खाते इन
का पेट भर जाएगा और ये हृष्टपुष्ट हो जाएंगे तब ये
पराये देवताओं की ओर फिरके उन की उपासना करने
लगेंगे और मेरा तिरस्कार करके मेरी वाचा को तोड़
देंगे। वरन अभी जब मैं इन्हें उस देश में जिस के विषय २१
मैंने किरिया खाई है पहुंचा नहीं चुका मुझे मालूम है
कि ये क्या क्या कल्पना कर रहे हैं सो जब बहुत सी
विपत्तियां और क्लेश इन पर आ पड़ेंगे तब यह गीत इन
पर साक्षी देगा क्योंकि यह इन के वंश को न बिसर
जाएगा। सो मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इस्रा- २२
एलियों को सिखाया। और उस ने नून के पुत्र यहोशू २३
को यह आज्ञा दी कि हियाव बांध और दृढ़ हो क्योंकि
इस्राएलियों को उस देश में जिसे उन्हें देने को मैं ने उन
से किरिया खाई है तू पहुंचाएगा और मैं आप तेरे संग
रहूंगा॥

जब मूसा इस व्यवस्था के वचन आदि से अन्त लों २४
पुस्तक में लिख चुका, तब उस ने यहोवा के सन्दूक २५
उठानेहारे लेवीयों को आज्ञा दी कि, व्यवस्था की इस २६
पुस्तक को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा के
सन्दूक के पास रख दो कि यह वहां तुझ पर साक्षी देती
रहे। क्योंकि बलवा तेरा बलवा और हठ मुझे मालूम २७
है देखो मेरे जीते और संग रहते भी तुम यहोवा से बलवा
करते आये हो फिर मेरे मरने के पीछे क्यों न करोगे।
सो अपने गोत्रों के सब पुरनियों को और अपने सरदारों २८
को मेरे पास इकट्ठे करो कि मैं उन को ये वचन सुनाकर
उन के विरुद्ध आकाश और पृथिवी दोनों को साक्षी
करूं। क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरे मरने के पीछे तुम २९
बिलकुल बिगड़ जाओगे और जिस मार्ग में चलने की
आज्ञा मैं ने तुम को सुनाई है उस को तुम छोड़ दोगे और
अन्त के दिनों में जब तुम वह काम करके जो यहोवा
के लेखे बुरा है अपनी बनाई हुई वस्तुओं के पूजने से
उस को रिस दिलाओगे तब तुम पर विपत्ति आ पड़ेगी॥

तब मूसा ने इस्राएल की सारी सभा को इस गीत ३०
के वचन आदि से अन्त लों सुनाये॥

३२. हे आकाश कान लगा कि मैं बोलूं
और हे पृथिवी मेरे मुंह की बातें सुन ॥
२ मेरा उपदेश मेंह की नाईं बरसेगा और मेरी बातें
ओस की नाईं टपकेंगी
जैसे कि हरी घास पर झीसी
और पौधों पर झाड़ियां ॥
३ मैं तो यहोवा नाम का प्रचार करूंगा तुम अपने
परमेश्वर की महिमा को मानो ॥
४ वह चटान है उस का काम खरा है
और उस की सारी गति न्याय की है वह सच्चा
ईश्वर है उस में कुटिलता नहीं वह धर्म्मी और
सीधा है ॥
५ पर इस जाति[१] के लोग टेढ़े और तिर्छे हैं
ये बिगड़ गये थे उस के पुत्र नहीं यह उन का
कलंक है ॥
६ हे मूढ़ और निर्बुद्धि लोगो
क्या तुम यहोवा को यह बदला देते हो
क्या वह तेरा पिता नहीं है जिस ने तुझ को
मोल लिया है ?
उस ने तुझ को बनाया और स्थिर भी किया है ॥
७ प्राचीनकाल के दिनों को स्मरण कर
पीढ़ी पीढ़ी के बरसों को बिचारो
अपने बाप से पूछ और वह तुझे बताएगा
अपने पुरनियों से और वे तुझ से कह देंगे ॥
८ जब परमप्रधान ने एक एक जाति का निज निज
भाग बांट दिया
और आदमियों को अलग अलग बसाया
तब उस ने देश देश के लोगों के सिवाने
इस्राएलियों की गिनती बिचार के ठहराये ॥
९ क्योंकि यहोवा का अंश उस की प्रजा है
याकूब उस का नपा हुआ निज भाग है ॥
१० उस ने उस को जंगल में
और सुनसान और गरजनेहारों से भरी हुई मरु-
भूमि में पाया
उस ने उस के चारों ओर रहकर उस की
सुधि रक्खी
और अपनी आंख की पुतली की नाईं उस की
रक्षा की ॥
११ जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर
अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है

(१) मूल में पीढ़ी।

वैसे ही उस ने अपने पंख फैलाकर
उस को अपने परों पर उठा लिया ॥
१२ यहोवा अकेला ही उस की अगुवाई करता रहा
और उस के संग कोई पराया देवता न था ॥
१३ उस ने उस को पृथिवी के ऊंचे ऊंचे स्थानों
पर सवार करा
खेतों की उपज खिलाई
उस ने उसे ढांग में से मधु
और चकमक की चटान में से तेल चाटने दिया ॥
१४ गायों का दही और भेड़बकरियों का दूध
मेम्नों की चर्बी
बकरे और बाशान की जाति के मेंढ़े
और गोहूं का उत्तम से उत्तम हीर भी
और तू दाखरस का मधु पिया करता था ॥
१५ परन्तु यशूरून मोटा होकर लात मारने लगा
तू मोटा और हृष्टपुष्ट हो गया और चर्बी से छा गया
तब उस ने अपने कर्ता ईश्वर को तजा,
और अपने उद्धारमूल चटान को तुच्छ जाना ॥
१६ उन्हों ने पराये देवताओं को मानकर उस में जलन
उपजाई
और घिनौने काम करके उस को रिस दिलाई ॥
१७ उन्हों ने पिशाचों के लिये बलि चढ़ाये जो ईश्वर
न थे
और उन के अनजाने देवता थे
वे नये देवता थे जो थोड़े ही दिन से प्रकट हुए थे
और जिन का भय उन के पुरखा न मानते थे ॥
१८ जिस चटान से तू उत्पन्न हुआ उस को
तू ने बिसराया
और ईश्वर जिस से तेरी उत्पत्ति हुई उस को तू
भूल गया है ॥
१९ इसे देखकर यहोवा ने उन्हें तुच्छ जाना
इस कारण कि उस के बेटे बेटियों ने रिस
दिलाई थी ॥
२० तब उस ने कहा मैं उन से अपना मुख
छिपा लूंगा
और देखूंगा उन का कैसा अन्त होगा
क्योंकि इस जाति[२] के लोग बहुत टेढ़े हैं
और धोखा देनेहारे पुत्र हैं ॥
२१ उन्हों ने ऐसी वस्तु मानकर जो ईश्वर नहीं है मुझ
में जलन उपजाई

(२) मूल में पीढ़ी।

और अपनी व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस
दिलाई
सो मैं भी उन के द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं हैं उन
के मन में जलन उपजाऊंगा
और एक मूढ़ जाति के द्वारा उन्हें रिस दिलाऊंगा ॥

२२ क्योंकि मेरे कोप की आग जल उठी है
और अधोलोक के तल तक जलती पहुंचेगी
और उस से अपनी उपज समेत पृथिवी भस्म
हो जाएगी
और पहाड़ों की नेवें भी उस से जल जाएंगी ॥

२३ मैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति डालूंगा
उन पर मैं अपने सब तीर छोड़ूंगा ॥

२४ वे भूख से दुबले हो जाएंगे और अंगारों से
और कठिन महारोगों से ग्रस जाएंगे
मैं उन पर पशुओं के दान्त लगवाऊंगा
और धूलि पर रेंगनेहारे सर्पों का विष ॥

२५ बाहर वे तलवार से मरेंगे
और भीतर भय से
क्या कुमार क्या कुमारी
क्या दूधपिउवा बच्चा क्या पक्के बालवाला
वे मारे जाएंगे।

२६ मैं ने कहा था कि मैं उन को दूर तक तितर
बितर करूंगा
और मनुष्यों में से उन का स्मरण मिटा दूंगा ॥

२७ पर मैं शत्रुओं के छेड़ने से डरता हूं
ऐसा न हो कि द्रोही इस को उलटा समझकर
कहने लगें कि हम अपने ही बाहुबल से
प्रबल हुए
और यह सब यहोवा से नहीं हुआ ॥

२८ यह जाति युक्तिहीन तो है
और इन में समझ है ही नहीं ॥

२९ भला होता कि ये बुद्धिमान् होकर इस को समझ
लेते
और अपने अंत का विचार करते ॥

३० यदि उन की चटान उन को न बेचती
और यहोवा उन को औरों के हाथ में न कर देता
तो यह क्योंकर हो सकता कि उन के हजार का
पीछा एक करे
और उन के दस हजार को दो भगाएं ॥

३१ क्योंकि जैसी हमारी चटान है वैसी उन की चटान
नहीं है
यह हमारे शत्रुओं का भी विचार है।

३२ उनकी दाखलता सदोम की दाखलता से निकली
और अमोरा की दाख की बारियों में की है
उन की दाख विषभरी
और उन के गुच्छे कड़ुवे हैं ॥

३३ उन का दाखमधु सांपों का सा विष और काले
नागों का सा हलाहल है ॥

३४ क्या यह बात मेरे मन में संचित
और मेरे भंडारों में मुहरबन्द नहीं है ॥

३५ पलटा लेना और बदला देना मेरा ही काम है
यह उन के पांव फिसलने के समय प्रगट होगा
क्योंकि उन की विपत्ति का दिन निकट है और
जो दुःख उन पर पड़नेहारे हैं सो शीघ्र आ
रहे हैं ॥

३६ क्योंकि जब यहोवा देखेगा कि मेरी प्रजा की शक्ति
जाती रही
और क्या बन्धुआ क्या स्वाधीन उन में कोई बचा
नहीं रहा
तब वह उन का विचार करेगा
और अपने दासों के विषय पछताएगा ॥

३७ तब वह कहेगा उन के देवता कहां रहे
अर्थात् जिस चटान की शरण वे लेते थे ॥

३८ जो उन के बलियों की चर्बी खाते
और उन के तपावनों का दाखमधु पीते थे वे
क्या हो गये
वे उठकर तुम्हारी सहायता करें
और तुम्हारी आड़ हों ॥

३९ अब देखो कि मैं ही हूं
और मेरे संग कोई देवता नहीं
मैं मार डालता और मैं जिलाता भी हूं
मैं घायल करता और मैं चंगा भी करता हूं
और मेरे हाथ से कोई नहीं छुड़ा सकता ॥

४० मैं अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर कहता हूं
अपने सनातन जीवन की सौंह

४१ यदि मैं बिजली की तलवार पर सान धरकर
लपकाऊं
और अपना हाथ न्याय करने में लगाऊं
तो अपने द्रोहियों से पलटा लूंगा
और अपने बैरियों को बदला दूंगा ॥

४२ मैं अपने तीरों को लोहू से मतवाला करूंगा
और मेरी तलवार मांस खाएगी
वह मारे हुओं और बन्धुओं का लोहू
और शत्रुओं के प्रधानों के सिर का मांस होगा ॥

४३ हे अन्यजातियो उस की प्रजा के कारण जयजयकार करो
क्योंकि वह अपने दासों के लोहू बहाने का पलटा लेगा
और अपने द्रोहियों को बदला देगा
और अपने देश और अपनी प्रजा का पाप ढांप देगा।

४४ इस गीत के सब वचन मूसा ने नून के पुत्र होशे
४५ समेत आकर लोगों को सुनाये। जब मूसा ये सब वचन
४६ सब इस्राएलियों से कह चुका, तब उस ने उन से कहा कि जितनी बातें मैं आज तुम से चिताकर कहता हूं उन सब पर अपना अपना मन लगाओ और उन के अर्थात् इस व्यवस्था की सारी बातों के मानने में चौकसी करने
४७ की आज्ञा अपने लड़केबालों को दो। क्योंकि यह तुम्हारे लिये व्यर्थ काम नहीं तुम्हारा जीवन ही है और ऐसा करने से उस देश में तुम्हारे दिन बहुत होंगे जिस के अधिकारी होने को तुम यर्दन पार जाने पर हो॥

४८, ४९ फिर उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा, उस अबारीम पहाड़ की नबो नाम चोटी पर जो मोआब देश में यरीहो के साम्हने है चढ़कर कनान देश जिसे मैं इस्राएलियों की निज भूमि कर देता हूं उस को देख ले।
५० तब जैसा तेरा भाई हारून होर पहाड़ पर मरके अपने लोगों में मिल गया वैसा ही तू इस पहाड़ पर चढ़कर
५१ मरेगा और अपने लोगों में मिल जाएगा। इस का कारण यह है कि सीन जंगल में कादेश के मरीबा नाम सोते पर तुम दोनों ने मेरा अपराध किया कैसे कि इस्राएलियों
५२ के बीच मुझे पवित्र न ठहराया। सो वह देश जो मैं इस्राएलियों को देता हूं तू साम्हने देखेगा पर वहां जाने न पाएगा॥

(मूसा का इस्राएलियों को दिया हुआ आशीर्वाद)

३३. जो

आशीर्वाद परमेश्वर के जन मूसा ने मरने से पहिले इस्राएलियों को दिया सो यह है॥

१ उस ने कहा
यहोवा सीनै से आया
और सेईर से उन के लिये उदय हुआ
उस ने पारान पर्वत पर से अपना तेज दिखाया
और लाखों पवित्रों के बीच से आया
उस के दहिने हाथ से उन की ओर आग निकली॥

३ वह देश देश के लोगों से भी प्रेम रखता है।
पर तेरे सब पवित्र लोग तेरे हाथ में हैं
वे तेरे पांवों के पास बैठे रहते हैं
एक एक तेरे वचनों में से पाता है॥

४ मूसा ने हमें व्यवस्था दी
यह याकूब की मंडली का निज भाग ठहरी॥

५ जब प्रजा के मुख्य मुख्य पुरुष
और इस्राएल के गोत्री एक संग होकर इकट्ठे हुए
तब वह यशूरून में राजा ठहरा॥

६ रूबेन न मरे जीता रहे
पर उस के यहां के मनुष्य थोड़े हों॥

७ और यहूदा पर यह आशीर्वाद हुआ मूसा ने कहा
हे यहोवा यहूदा की सुन
और उसे उस के लोगों के पास पहुंचा
वह उन के लिये हाथ से लड़ा
और तू उस के द्रोहियों के विरुद्ध उस की सहायता कर॥

८ फिर लेवी के विषय उस ने कहा
तेरे तुम्मीम और ऊरीम तेरे भक्त के पास रहें जिस को तू ने मस्सा में परख लिया
और मरीबा नाम सोते पर उस से वादविवाद किया॥

९ उस ने तो अपने माता पिता के विषय कहा मैं उन को नहीं जानता
और न तो अपने भाइयों को अपने मान लिया
न अपने पुत्रों को पहिचाना
पर उन्हों ने तेरी बातें मानीं
और तेरी वाचा पाली है॥

१० वे याकूब को तेरे नियम
और इस्राएल को तेरी व्यवस्था सिखाएंगे
और तेरे सूंघने को धूप
और तेरी वेदी पर सर्वाङ्ग पशु को होमबलि करेंगे॥

११ हे यहोवा उस की संपत्ति पर आशिष दे
और उस के हाथ के काम से प्रसन्न हो
उस के विरोधियों और बैरियों की कमर पर ऐसा मार कि वे फिर न उठ सकें॥

१२ फिर उस ने बिन्यामीन के विषय में कहा
यहोवा का वह प्रिय जन उस के पास निडर वास करेगा
और वह दिन भर उस पर छाया करेगा
और वह उस के कंधों के बीच रहा करेगा॥

१३ फिर यूसफ के विषय में उस ने कहा
इस का देश यहोवा से आशिष पाए
अर्थात् आकाश के अनमोल पदार्थ और ओस
और नीचे पड़ा हुआ गहिरा जल

१४ और जो अनमोल पदार्थ सूर्य्य के उपजाये
प्राप्त होते
और जो अनमोल पदार्थ चंद्रमा के उगाये उगते हैं
१५ और प्राचीन पहाड़ों के उत्तम पदार्थ
और सनातन पहाड़ियों के अनमोल पदार्थ
१६ और पृथिवी और जो अनमोल पदार्थ उस में भरे हैं
और जो झाड़ी में रहा था उस की प्रसन्नता
इन सभों के विषय यूसफ के सिर पर
अर्थात् उसी के चोंटे पर जो अपने भाइयों से
न्यारा हुआ था आशिष ही आशिष फले ॥
१७ वह प्रतापी है मानों गाय का पहिलौठा है
और उस के सींग बनैले बैल के से हैं
उन से वह देश देश के लोगों को वरन पृथिवी
की छोर लों के सब मनुष्यों को धकियाएगा
वे एप्रैम के लाखों
और मनश्शे के हजारों हैं ॥
१८ फिर जबूलून के विषय उस ने कहा
हे जबूलून तू निकलते समय
और हे इस्साकार तू अपने डेरों में आनन्द करे ॥
१९ वे देश देश के लोगों को पहाड़ पर बुलाएंगे
वे वहां धर्म्म से यज्ञ करेंगे
क्योंकि वे समुद्र का धन
और वालू में छिपे हुए अनमोल पदार्थ भोगेंगे ॥
२० फिर गाद के विषय उस ने कहा
धन्य वह है जो गाद को बढ़ाता है
गाद तो सिंहनी के समान रहता
और बांह को सिर के चोंटे सहित फाड़
डालता है ॥
२१ और उस ने पहिला अंश तो अपने लिये चुन लिया
क्योंकि वहां रईस के योग्य भाग रक्खा हुआ था
सो उस ने प्रजा के मुख्य मुख्य पुरुषों के संग आकर
यहोवा का ठहराया हुआ धर्म्म
और इस्राएल के साथ होकर उसके नियम माने ॥
२२ फिर दान के विषय उस ने कहा
दान तो बाशान से कूदनेहारा सिंह का डांवरू है ॥
२३ फिर नप्ताली के विषय उस ने कहा
हे नप्ताली तू जो यहोवा की प्रसन्नता से तृप्त
और उस की आशिष से भरपूर है
तू पच्छिम और दक्खिन के देश का अधिकारी
होए ॥
२४ फिर आशेर के विषय उस ने कहा
आशेर पुत्रों के विषय आशिष पाए
वह अपने भाइयों में प्रिय रहे
और अपना पांव तेल में बोरा करे ॥
२५ तेरे बेंड़े लोहे और पीतल के होएं
और तू अपने जीवन भर चैन से रहे[१] ॥
२६ हे यशूरून ईश्वर के तुल्य कोई नहीं है
वह तेरी सहायता करने को आकाश पर
और अपना प्रताप दिखाता हुआ आकाशमण्डल
पर सवार होकर चलता है ॥
२७ अनादि परमेश्वर तेरा धाम है
और तेरे नीचे सनातन भुजाएं हैं
वह शत्रुओं को तेरे साम्हने से निकाल देता
और कहता है सत्यानाश कर ॥
२८ सो इस्राएल निडर बसा रहता है
अन्न और नये दाखमधु के देश में
याकूब का सोता अकेला ही रहता है
और उस के ऊपर के आकाश से ओस पड़ा करती है ॥
२९ हे इस्राएल तू क्या ही धन्य है
हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा तेरे तुल्य कौन है।
वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल
और तेरे प्रताप के लिये तलवार है
सो तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे
और तू उन के ऊंचे स्थानों को रौंदेगा ॥

(मूसा की मृत्यु)

३४. फिर मूसा मोआब के अराबा से नबो पहाड़ पर जो पिसगा का एक चोटी और यरीहो के साम्हने है चढ़ गया और यहोवा ने उस को दान लों का गिलाद नाम सारा देश, २ और नप्ताली का सारा देश और एप्रैम और मनश्शे का देश और पच्छिम के समुद्र लों का यहूदा का सारा देश, ३ और दक्खिन देश और सोअर लों की यरीहो नाम खजूरवाले नगर की तराई यह सब दिखाया। ४ तब यहोवा ने उस से कहा जिस देश के विषय में ने इब्राहीम इसहाक और याकूब से किरिया खाकर कहा था कि मैं इसे तेरे वंश को दूंगा वह यही है मैं ने इस को तुझे साक्षात् दिखा दिया है पर तू पार होकर वहां न जाने पाएगा। ५ सो यहोवा के कहेके अनुसार उस का दास मूसा वहीं मोआब के देश में मर गया। ६ और उस ने उसे मोआब के देश में बेतपोर के साम्हने एक तराई में मिट्टी दी और आज के दिन लों कोई नहीं जानता कि

(१) मूल में जैसे तेरे दिन वैसा तेरा चैन।

७ उस की कबर कहां है। मूसा मरने के समय एक सौ बीस बरस का था पर न तो उस की आंखें धुन्धली पड़ीं ८ और न उस का पौरुष घटा था। और इस्राएली मोआब के अराबा में मूसा के लिये तीस दिन रोते रहे तब मूसा ९ के लिये रोने और विलाप करने के दिन पूरे हुए। और नून का पुत्र यहोशू बुद्धि देनेहारे आत्मा से परिपूर्ण था क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर टेके थे सो इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी १० उस की मानते रहे। और मूसा के तुल्य इस्राएल में और कोई नबी नहीं उठा कि यहोवा ने उस से साम्हने साम्हने बातें कीं[१], और उस को यहोवा ने फिरौन ११ और उस के सब कर्म्मचारियों के साम्हने और उस के सारे देश में सब चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा, और उस ने सारे इस्राएलियों की दृष्टि में बलवन्त हाथ १२ और बड़ा भय दिखाया॥

(१) मूल में उस को साम्हने साम्हने जाना।

यहोशू नाम पुस्तक।

(यहोशू का हियाव बंधाया जाना)

१. **यहोवा** के दास मूसा के मरने के पीछे यहोवा ने उस के टहलुए यहोशू २ से जो नून का पुत्र था कहा, मेरा दास मूसा मर गया है सो अब तू कमर बांध और इस सारी प्रजा समेत यर्दन पार होकर उस देश को जा जो मैं इसे अर्थात् ३ इस्राएलियों को देता हूं। उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे ४ वे सब मैं तुम्हें दे देता हूं। जंगल और उस लबानोन से ले परात महानद लों और सूर्य्यास्त की ओर महासमुद्र ५ लों हित्तियों का सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा। तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने ठहर न सकेगा जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे भी संग रहूंगा न तो मैं तुझे धोखा दूंगा और न तुझ को छोड़ दूंगा। ६ सो हियाव बांधकर दृढ़ हो क्योंकि जिस देश के देने की किरिया मैं ने इन लोगों के पितरों से खाई थी उस ७ के अधिकारी तू इन्हें करेगा। इतना हो कि तू हियाव बांधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उस सब के अनुसार करने में चौकसी करना और उस से न तो दहिने मुड़ना और न बाएं इस से जहां जहां तू जाए वहां वहां तेरा काम सुफल होगा। ८ व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरे[१] इस में दिन रात ध्यान दिये रहना इसलिये कि जो कुछ

(१) मूल में पुस्तक तेरे मुंह से न हटे।

उस में लिखा है उस के अनुसार करने की तू चौकसी करे क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सुफल होंगे और तू सुभागी होगा। क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी हियाव ९ बांधकर दृढ़ हो त्रास न खा और तेरा मन कच्चा न हो क्योंकि जहां जहां तू जाए वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा॥

(अढ़ाई गोत्रों का आज्ञा मानना)

तब यहोशू ने प्रजा के सरदारों को यह आज्ञा दी कि, १० छावनी में इधर उधर जाकर प्रजा के लोगों को यह ११ आज्ञा दो कि अपने अपने लिये भोजन तैयार कर रक्खो क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम उस यर्दन पार उतरके वह देश अपने अधिकार में लेने को जाओगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे अधिकार में किये देता है॥

फिर यहोशू ने रूबेनियों गादियों और मनश्शे के १२ आधे गोत्र के लोगों से कहा, जो बात यहोवा के दास १३ मूसा ने तुम से कही थी कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विश्राम देता है और यही देश तुम्हें देगा उस की सुधि करो। तुम्हारी स्त्रियां बालबच्चे और पशु तो इस देश में १४ रहें जो मूसा ने तुम्हें यर्दन के इसी पार दिया पर तुम जो शूरवीर हो सो पांति बांधे हुए अपने भाइयों के आगे आगे पार उतर चलो और उन की सहायता करो। और जब १५ यहोवा उन को ऐसा विश्राम देगा जैसा वह तुम्हें दे चुका है और वे भी तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के दिये हुए देश के अधिकारी हो जाएंगे तब तुम अपने अधिकार के देश में जो यहोवा के दास मूसा ने यर्दन के इस पार सूर्य्योदय

की ओर तुम्हें दिया है लौटकर इस के अधिकारी होगे। १६ तब उन्हों ने यहोशू को उत्तर दिया कि जो कुछ तू ने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे और जहां कहीं तू १७ हमें भेजे वहां हम जाएंगे। जैसे हम सब बातों में मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी माना करेंगे इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के संग रहता था वैसे १८ ही तेरे संग भी रहे। कोई क्यों न हो जो तेरे विरुद्ध बलवा करे और जितनी आज्ञाएं तू दे उन को न माने वह मार डाला जाएगा पर तू दृढ़ और हियाव बांधे रह॥

(यरीहो का भेद लिया जाना)

२. तब नून के पुत्र यहोशू ने दो भेदियों को शित्तीम से चुपके भेज दिया और उन से कहा जाकर उस देश और यरीहो को देखो सो वे चल दिये और राहाब नाम किसी वेश्या के घर में जाकर सो २ गये। तब किसी ने यरीहो के राजा से कहा आज की रात कई एक इस्राएली हमारे देश का भेद लेने को यहां आये ३ हैं। तब यरीहो के राजा ने राहाब के पास यों कहला भेजा कि जो पुरुष तेरे यहां आये हैं उन्हें बाहर ले आ क्योंकि ४ वे सारे देश का भेद लेने को आये हैं। उस स्त्री ने दोनों पुरुषों को छिपा रक्खा और यों कहा कि मेरे पास कई ५ पुरुष आये तो थे पर मैं नहीं जानती कहां के हैं। और जब अंधेरा हुआ और फाटक बन्द होने लगा तब वे निकल गये मुझे मालूम नहीं कि वे कहां गये तुम फुर्ती करके ६ उन का पीछा करो तो उन्हें जा लोगे। उस ने उन को घर की छत पर चढ़ा ले जाकर सनई में छिपा दिया था ७ जो उस ने छत पर सजा रक्खी थी। वे पुरुष तो यर्दन का मार्ग ले उन की खोज में घाट लों चले गये और ज्यों खोजनेहारे फाटक से निकले त्यों ही फाटक बन्द किया ८ गया। और ये लेटने न पाये कि वह स्त्री छत पर इन के ९ पास जाकर इन पुरुषों से कहने लगी, मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है और तुम्हारा त्रास हम लोगों के मन में समाया है और इस देश के सब १० निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं[१]। क्योंकि हम ने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र का जल सुखा दिया और तुम लोगों ने सीहोन और ओग नाम यर्दन पार रहनेहारे एमोरियों के दोनों राजाओं का सत्यानाश कर डाला है। ११ और यह सुनते ही हमारा मन पिघल गया और तुम्हारे कारण किसी के जी में जी न रहा क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश में और नीचे की पृथिवी में परमेश्वर है। सो अब मैं ने जो तुम पर दया की है इस १२ लिये मुझ से यहोवा की किरिया खाओ कि हम भी तेरे पिता के घराने पर दया करेंगे (और इस की सच्ची चिन्हानी मुझे दो) और हम तेरे माता पिता भाइयों और बहिनों को १३ और उन के जितने हैं उन सभों को भी जीते रख छोड़ेंगे और तुम सभों का प्राण मरने से बचाएंगे। तब उन १४ पुरुषों ने उस से कहा यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट न करे तो तुम्हारे प्राण के बदले हमारा प्राण जाए और जब यहोवा हम को यह देश देगा तब हम तेरे साथ कृपा और सच्चाई से बर्ताव करेंगे। तब राहाब जिस का १५ घर शहरपनाह पर बना था और वह वहीं रहती थी उस ने उन को खिड़की से रस्सी के बल उतारके नगर के बाहर कर दिया। और उस ने उन से कहा पहाड़ को चले १६ जाओ ऐसा न हो कि खोजनेहारे तुम को पाएं सो जब लों तुम्हारे खोजनेहारे लौट न आएं तब लों अर्थात् तीन दिन वहीं छिपे रहना उस के पीछे अपना मार्ग लेना। उन्हों ने उस से कहा जो किरिया तू ने हम को खिलाई १७ है उस के विषय हम तो निर्दोष रहेंगे। सुन जब हम १८ लोग इस देश में आएंगे तब जिस खिड़की से तू ने हम को उतारा है उस में यही लाही रंग के सूत की डोरी बांध देना और अपने माता पिता भाइयों बरन अपने पिता के सारे घराने को इसी घर में अपने पास इकट्ठा कर रखना। तब जो कोई तेरे घर के द्वार से बाहर निकले उस के १९ खून का दोष उसी के सिर पड़ेगा और हम निर्दोष ठहरेंगे पर यदि तेरे संग घर में रहते हुए किसी पर किसी का हाथ पड़े तो उस के खून का दोष हमारे सिर पड़ेगा। फिर यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट करे तो जो २० किरिया तू ने हम को खिलाई है उस से हम निर्बन्ध ठहरेंगे। उस ने कहा तुम्हारे वचनों के अनुसार हो २१ तब उस ने उन को बिदा किया और वे चले गये और उस ने लाही रंग की डोरी को खिड़की में बांध दिया। और वे जाकर पहाड़ पर पहुंचे और वहां खोजनेहारों २२ के लौटने लों अर्थात् तीन दिन रहे और खोजनेहारे उन को सारे मार्ग में ढूंढ़ते रहे और कहीं न पाया। सो उन २३ दोनों पुरुषों ने पहाड़ से उतर पार जा नून के पुत्र यहोशू के पास पहुंचकर जो कुछ उन पर बीता था उस का बखान किया। और उन्हों ने यहोशू से कहा निःसंदेह २४ यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है फिर इस के सिवाय उस के सारे निवासी हमारे कारण घबरा रहे हैं[२]॥

(१) मूल में पिघल गये।

(२) मूल में पिघल गये।

(इस्राएलियों का यर्दन पार उतर जाना)

३. निदान को यहोशू सबेरे उठा और सब इस्राएलियों को साथ ले शित्तीम से कूच कर यर्दन के तीर आया और वे पार उतरने से २ पहिले वहीं टिक गये। तीन दिन के बीते पर सरदारों ने ३ छावनी के बीच जाकर, प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी कि जब तुम को अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा का सन्दूक और उसे उठाये हुए लेवीय याजक भी देख पड़ें तब अपने स्थान से कूच करके उस के पीछे पीछे चलना। ४ पर उस के और तुम्हारे बीच में दो हजार हाथ के अटकल अन्तर रहे तुम सन्दूक के निकट न जाना कि तुम देख सको कि किस मार्ग से चलना होगा क्योंकि अब लों ५ तुम उस मार्ग पर होकर नहीं चले। फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा अपने अपने को पवित्र कर रक्खो क्योंकि ६ कल यहोवा तुम्हारे बीच आश्चर्य्यकर्म्म करेगा। तब यहोशू ने याजकों से कहा वाचा का सन्दूक उठाकर प्रजा के आगे ७ आगे चलो। सो वे वाचा के सन्दूक उठाकर आगे आगे चले। तब यहोवा ने यहोशू से कहा आज के दिन से मैं सब इस्राएलियों के सन्मुख तेरी बड़ाई करने का आरंभ करूंगा जिस से वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के संग रहता ८ था वैसे ही मैं तेरे संग भी हूं। सो तू वाचा के संदूक के उठानेहारे याजकों को यह आज्ञा दे कि जब तुम यर्दन के जल के किनारे पर पहुंचो तब यर्दन में खड़े रहना॥

९ तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा पास आकर अपने १० परमेश्वर यहोवा के वचन सुनो। फिर यहोशू कहने लगा इस से तुम जान लोगे कि जीता हुआ ईश्वर तुम्हारे बीच है और वह तुम्हारे साम्हने से निःसंदेह कनानियों हित्तियों हिव्वियों परिज्जियों गिर्गाशियों एमोरियों और यबूसियों ११ को उन के देश में से निकाल देगा। सुनो पृथिवी भर के प्रभु की वाचा का संदूक तुम्हारे आगे आगे यर्दन के बीच १२ जाने पर है। सो अब इस्राएल के गोत्रों में से बारह पुरुषों १३ को चुन लो वे एक एक गोत्र में से एक पुरुष हों। और जिस समय पृथिवी भर के प्रभु यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे याजकों के पांव यर्दन के जल में पड़ेंगे उस समय यर्दन का ऊपर से बहता हुआ जल थम जाएगा १४ और ढेर होकर ठहरा रहेगा। सो जब प्रजा के लोगों ने अपने डेरों से यर्दन पार जाने को कूच किया और याजक वाचा का संदूक उठाए हुए प्रजा के आगे आगे चले, १५ और संदूक के उठानेहारे यर्दन पर पहुंचे और संदूक के उठानेहारे याजकों के पांव यर्दन के तीर के जल में डूब गये (यर्दन का जल तो कटनी के समय के सब दिन कड़ारों के ऊपर ऊपर बहा करता है), तब जो जल ऊपर की ओर से १६ बहा आता था सो बहुत दूर अर्थात् आदाम नगर के पास जो सारतान के निकट है रुककर एक ढेर हो गया और भीत सा उठा रहा और जो जल अराबा का ताल जो खारा ताल भी कहावता है उस की ओर बहा जाता था सो पूरी रीति से सूख गया और प्रजा के लोग यरीहो के १७ साम्हने पार उतर गये। सो याजक यहोवा की वाचा का संदूक उठाए हुए यर्दन के बीचोंबीच पहुंचकर स्थल पर स्थिर खड़े रहे और सब इस्राएली स्थल ही स्थल पार उतरते रहे निदान उस सारी जाति के लोग यर्दन पार हो चुके॥

४. जब उस सारी जाति के लोग यर्दन पार उतर चुके तब यहोवा ने यहोशू से २ कहा, प्रजा में से बारह पुरुष अर्थात् गोत्र पीछे एक एक ३ पुरुष को चुनकर, यह आज्ञा दे कि तुम यर्दन के बीच में जहां याजक लोग पांव धरे थे वहां से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो और जहां आज की ४ रात पड़ाव होगा वहीं उन को रख देना। तब यहोशू ने उन बारह पुरुषों को जिन्हें उस ने इस्राएलियों के एक एक गोत्र में से छांटकर ठहरा रक्खा था बुलवाकर कहा, ५ तुम अपने परमेश्वर यहोवा के संदूक के आगे यर्दन के बीच में जाकर इस्राएलियों के गोत्रों की गिनती के अनुसार एक एक पत्थर उठाकर अपने अपने कन्धे पर रक्खो, ६ जिस से यह तुम लोगों के बीच चिन्हानी ठहरे और आगे को जब तुम्हारे बेटे यह पूछें कि इन पत्थरों का क्या प्रयो- ७ जन है, तब तुम उन्हें यह उत्तर दो कि यर्दन का जल यहोवा की वाचा के संदूक के साम्हने से दो भाग हो गया जब वह यर्दन पार आता था तब यर्दन का जल दो भाग हो गया। सो वे पत्थर इस्राएलियों को सदा के लिये ८ स्मरण दिलानेहारे रहेंगे। यहोशू की इस आज्ञा के अनुसार इस्राएलियों ने किया जैसा यहोवा ने यहोशू से कहा था वैसा ही उन्हों ने इस्राएली गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह पत्थर यर्दन के बीच में से उठा लिये और ९ उन को अपने साथ ले जाकर पड़ाव में रख दिया। और यर्दन के बीच जहां याजक वाचा के संदूक को उठाये हुए अपने पांव धरे थे वहां यहोशू ने बारह पत्थर खड़े १० कराये वे आज लों वहीं पाये जाते हैं। और याजक संदूक उठाये हुए तब लों यर्दन के बीच खड़े रहे जब लों वे सब बातें पूरी न हो चुकीं जिन्हें यहोवा ने यहोशू को लोगों से कहने की आज्ञा दी थी तब सब लोग फुर्ती ११ से पार उतर गये। और जब सब लोग पार उतर चुके तब याजक और यहोवा का संदूक भी उन के देखते पार १२ उतरे। और रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे गोत्र के

लोग मूसा के कहे के अनुसार इस्राएलियों के आगे पांति
१३ बांधे हुए पार गये । अर्थात् कोई चालीस हजार पुरुष युद्ध के हथियार बांधे हुए संग्राम करने को यहोवा के साम्हने पार उतरके यरीहो के पास के अराबा में पहुंचे ।
१४ उस दिन यहोवा ने सब इस्राएलियों के साम्हने यहोशू की महिमा बढ़ाई सो जैसे वे मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोशू का भी भय उस के जीवन भर मानते रहे ॥
१५, १६ यहोवा ने यहोशू से कहा कि, साक्षी का संदूक उठानेहारे याजकों को आज्ञा दे कि, यर्दन में से निकल
१७ आओ । सो यहोशू ने याजकों को आज्ञा दी कि यर्दन में
१८ से निकल आओ । और ज्यों यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे याजक यर्दन के बीच में से निकल आये और उन के पांव स्थल पर पड़े त्यों ही यर्दन का जल अपने स्थान पर आया और पहिले की नाईं कड़ारों के ऊपर
१९ फिर बहने लगा । पहिले महीने के दसवें दिन को प्रजा के लोगों ने यर्दन में से निकलकर यरीहो के पूरबी
२० सिवाने पर गिलगाल में अपने डेरे डाले । और जो बारह पत्थर यर्दन में से निकाले गये थे उन को यहोशू ने गिल-
२१ गाल में खड़े किया । तब उस ने इस्राएलियों से कहा आगे को जब तुम्हारे लड़केबाले अपने अपने पिता से
२२ यह पूछें कि इन पत्थरों का क्या प्रयोजन है, तब तुम यह कहकर उन को जताना कि इस्राएली यर्दन के पार
२३ स्थल ही स्थल चले आये थे । कैसे कि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक हमारे साम्हने से हटाकर सुखा रक्खा था तैसे ही उस ने यर्दन का भी जल तुम्हारे पार हो जाने तक तुम्हारे साम्हने से
२४ हटाकर सुखा रक्खा, इसलिये कि पृथिवी के सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है और तुम सब दिन अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो ॥

(इस्राएलियों का खतना किया जाना और फसह मानना)

५. जब यर्दन की पच्छिम ओर रहनेहारे एमोरियों के सब राजाओं ने और समुद्र के पास रहनेहारे कनानियों के सब राजाओं ने यह सुना कि यहोवा ने इस्राएलियों के पार होने लों उन के साम्हने से यर्दन का जल हटाकर सुखा रक्खा है तब इस्राएलियों के डर के मारे उन का मन घबरा[१] गया और उन के जी में जी न रहा ॥

२ उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा चकमक की छुरियां बनवाकर दूसरी बार इस्राएलियों का खतना करा

(१) मूल में गल ।

दे । सो यहोशू ने चकमक की छुरियां बनवाकर खल- ३
हिर्बा नाम टीले पर इस्राएलियों का खतना कराया । और ४
यहोशू ने जो खतना कराया इस का कारण यह है कि जितने युद्ध के योग्य पुरुष मिस्र से निकले थे सो सब
मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में मर गये थे । जो ५
पुरुष मिस्र से निकले थे उन सब का तो खतना हो चुका था पर जितने उन के मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में उत्पन्न हुए उन में से किसी का खतना न हुआ
था । इस्राएली तो चालीस बरस लों जंगल में फिरते रहे ६
जब लों उस सारी जाति के लोग अर्थात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से निकले थे वे नाश न हुए क्योंकि उन्हों ने यहोवा की न मानी थी सो यहोवा ने किरिया खाकर उन से कहा था कि जो देश मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाकर तुम्हें देने को कहा था और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं वह देश मैं तुम को
नहीं दिखाने का । सो उन लोगों के पुत्र जिन को यहोवा ७
ने उन के स्थान पर उत्पन्न किया था उन का खतना यहोशू ने कराया क्योंकि मार्ग में उन के खतना न होने
के कारण वे खतनारहित थे । और जब उस सारी जाति ८
के लोगों का खतना हो चुका तब वे चंगे हो जाने लों
अपने अपने स्थान पर छावनी में रहे । तब यहोवा ने ९
यहोशू से कहा तुम्हारी जो नामधराई मिस्रियों में हुई उसे मैं ने आज दूर की है[२] इस कारण उस स्थान का नाम आज के दिन लों गिलगाल[२] पड़ा है ॥

सो इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले हुए रहे और १०
उन्हों ने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी को सांझ
के समय फसह माना । और फसह के दूसरे दिन ठीक ११
उसी दिन वे उस देश की उपज में से अखमीरी रोटी
और भुना हुआ दाना खाने लगे । और जिस दिन वे १२
उस देश की उपज में से खाने लगे उसी दिन के बिहान को मान बन्द हो गया और इस्राएलियों को आगे फिर कभी मान न मिला सो उस बरस में वे कनान देश की उपज में से खाते थे ॥

(यरीहो का ले लिया जाना)

जब यहोशू यरीहो के पास था तब उस ने जो आंख १३
उठाई तो क्या देखा कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष साम्हने खड़ा है सो यहोशू ने पास जाकर पूछा क्या तू हमारी ओर का है वा हमारे बैरियों
की ओर का । उस ने उत्तर दिया कि नहीं मैं यहोवा १४
की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूं तब यहोशू ने

(१) मूल में लुढ़का दी है । (२) अर्थात् लुढ़कना ।

पृथिवी पर मुंह के बल गिरके दण्डवत कर उस से कहा
१५ अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है । यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा अपनी जूती पांव से उतार डाल क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है सो पवित्र है तब यहोशू ने वैसा ही किया ॥

६. यरीहो के सब फाटक इस्राएलियों के डर के मारे लगातार बन्द रहे और कोई बाहर
२ भीतर जाने आने न पाता था । फिर यहोवा ने यहोशू से कहा सुन मैं यरीहो को उस के राजा और शूरवीरों
३ समेत तेरे बश में कर देता हूं । सो तुम में जितने योद्धा हैं वे उस नगर के चारों ओर एक बार घूम आएं
४ और छः दिन तक ऐसा ही किया करना । और सात याजक संदूक के आगे आगे जुबली के सात नरसिंगे लिये हुए चलें । फिर सातवें दिन तुम नगर के चारों ओर सात बार घूमना और याजक भी नरसिंगे फूंकते चलें ।
५ और जब वे जुबली के नरसिंगे देर लों फूंकते रहें तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें तब नगर की शहरपनाह नेव से गिर जाएगी
६ और सब लोग अपने अपने साम्हने चढ़ जाएं । सो नून के पुत्र यहोशू ने याजकों को बुलवा कर कहा वाचा के संदूक को उठा लो और सात याजक यहोवा के संदूक के
७ आगे आगे जुबली के सात नरसिंगे लिये चलें । फिर उस ने लोगों से कहा आगे बढ़ कर नगर के चारों ओर घूम आओ और हथियारबन्ध पुरुष यहोवा के संदूक के
८ आगे आगे चलें । ज्यों यहोशू ये बातें लोगों से कह चुका त्यों ही वे सात याजक जो यहोवा के साम्हने सात नरसिंगे लिये हुए थे वे नरसिंगे फूंकते हुए चले और यहोवा की वाचा का संदूक उन के पीछे पीछे चला ।
९ और नरसिंगे फूंकनेहारे याजकों के आगे आगे वे हथियारबन्ध पुरुष चले और पीछेवाले संदूक के पीछे पीछे
१० चले और याजक नरसिंगे फूंकते हुए चले । और यहोशू ने लोगों को आज्ञा दी कि जब लों मैं तुम्हें जयजयकार करने की आज्ञा न दूं तब लों जयजयकार न करो और न तुम्हारा कोई शब्द सुनने में आए न कोई बात तुम्हारे मुंह से निकलने पाए आज्ञा पाते ही जयजयकार करना ।
११ सो यहोवा का संदूक एक बार नगर के चारों ओर घूम आया तब वे छावनी में आकर वहीं टिके ॥

१२ बिहान को यहोशू सबेरे उठा और याजकों ने
१३ यहोवा का संदूक उठा लिया । और वे ही सात याजक जुबली के सात नरसिंगे लिये यहोवा के संदूक के आगे आगे फूंकते हुए चले और उन के आगे हथियारबन्ध पुरुष चले और पीछेवाले यहोवा के संदूक के पीछे पीछे चले और याजक नरसिंगे फूंकते चले गये ।
१४ सो वे दूसरे दिन भी एक बार नगर के चारों ओर घूम कर छावनी में लौट आये और ऐसा ही उन्हों ने छः दिन किया ।
१५ फिर सातवें दिन वे भोर को बड़े तड़के उठकर उसी रीति से नगर के चारों ओर सात बार घूम आये केवल उसी दिन वे सात बार घूमे ।
१६ तब सातवीं बार जब याजक नरसिंगे फूंकते थे तब यहोशू ने लोगों से कहा जयजयकार करो क्योंकि यहोवा ने वह नगर तुम्हें दे दिया है ।
१७ और नगर और जो कुछ उस में है यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगा केवल राहाब वेश्या और जितने उस के घर में हों वे जीते रहेंगे क्योंकि उस ने हमारे भेजे हुए दूतों को छिपा रक्खा था ।
१८ और तुम अर्पण की वस्तुओं से बड़ी सावधानी करके अलग रहो ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर पीछे उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो और इस भान्ति इस्राएली छावनी को भी अर्पण की वस्तु बनाकर उसे कष्ट में डालो ।
१९ सब चान्दी सोना और जो पात्र पीतल और लोहे के हैं सो यहोवा के लिये पवित्र ठहर के उसी के भण्डार में रक्खे जाएं ।
२० तब लोगों ने जयजयकार किया और याजक नरसिंगे फूंकते रहे और जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुनकर फिर बड़ी ही ध्वनि से जयजयकार किया तब शहरपनाह नेव से गिर पड़ी और लोग अपने अपने साम्हने से उस नगर में चढ़ गये और नगर को ले लिया
२१ और क्या पुरुष क्या स्त्री क्या जवान क्या बूढ़े बरन बैल भेड़ बकरी गदहे जितने नगर में थे उन सभों को उन्हों ने अर्पण की वस्तु जान कर तलवार से मार डाला ।
२२ तब यहोशू ने उन दोनों पुरुषों से जो उस देश का भेद लेने गये थे कहा अपनी किरिया के अनुसार उस वेश्या के घर में जाकर उस को और जो उस के पास हों उन्हें भी निकाल ले आओ ।
२३ सो वे जवान भेदिये भीतर जाकर राहाब को और उस के माता पिता भाइयों और सब को जो उस के यहां रहते थे बरन उस के सब कुटुम्बियों को निकाल लाये और इस्राएल की छावनी से बाहर बैठा दिया ।
२४ तब उन्हों ने नगर को और जो कुछ उस में था सब को आग लगाकर फूंक दिया केवल चान्दी सोना और जो पात्र पीतल और लोहे के थे उन को उन्हों ने यहोवा के भवन के भण्डार में रख दिया ।
२५ और यहोशू ने राहाब वेश्या और उस के पिता के घराने को बरन उस के सब लोगों को जीते छोड़ दिया और आज लों उस का वंश इस्राएलियों के बीच में रहता है क्योंकि जो दूत यहोशू ने यरीहो के भेद लेने को भेजे थे उन को उस ने छिपा रक्खा था ।
२६ फिर उसी समय यहोशू ने इस्राएलियों को यह

किरिया धराई कि जो मनुष्य उठ कर यह नगर यरीहो बसा दे वह यहोवा की ओर से स्रापित हो जब वह उस की नेव डालेगा तब तो उस का जेठा बेटा मरेगा और जब वह उस के फाटक खड़े करेगा तब उस का लहुरा मर जाएगा[१] । २७ सो यहोवा यहोशू के संग रहा और यहोशू की कीर्त्ति उस सारे देश में फैल गई ॥

(आकान का पाप)

७. पर इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय विश्वासघात किया अर्थात् यहूदा गोत्र का आकान जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था उस ने अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लिया इस से यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा ॥

२ और यहोशू ने यरीहो से ऐ नाम नगर के पास जो बेतावेन से लगा हुआ बेतेल की पूरब ओर है कितने पुरुषों को यह कह कर भेजा कि जाकर देश का भेद ले आओ सो उन पुरुषों ने जाकर ऐ का भेद लिया । ३ और उन्हों ने यहोशू के पास लौटकर कहा सब लोग वहां न जाएं कोई दो वा तीन हजार पुरुष जाकर ऐ को जीत सकते हैं सब लोगों को वहां जाने का कष्ट न दे क्योंकि वे लोग थोड़े ही हैं । ४ सो कोई तीन हजार पुरुष वहां गये पर ऐ के रहनेहारों के साम्हने से भाग आये । ५ तब ऐ के रहनेहारों ने उन में से कोई छत्तीस पुरुष मार डाले और अपने फाटक से शबारीम लों उन का पीछा करके उतराई में उन को मारते गये सो लोगों का मन घबराकर[२] जल सा बन गया । ६ और यहोशू ने अपने वस्त्र फाड़े और वह और इस्राएली पुरनिये यहोवा के संदूक के साम्हने मुंह के बल गिरके पृथिवी पर सांझ लों पड़े रहे और उन्होंने अपने अपने सिर पर धूल डाली । ७ और यहोशू ने कहा हाय प्रभु यहोवा तू अपनी इस प्रजा को यर्दन पार क्यों ले आया है जिस से हमें एमोरियों के वश में कराके नाश करे भला होता कि हम संतोष करके यर्दन के उस पार रह जाते । ८ हाय प्रभु मैं क्या कहूं जब इस्राएलियों ने अपने शत्रुओं को पीठ दिखाई है । ९ क्योंकि कनानी बरन इस देश के सब निवासी यह सुनकर हम को घेर लेंगे और हमारा नाम पृथिवी पर से मिटा डालेंगे फिर तू अपने बड़े नाम के लिये क्या करेगा । १० यहोवा ने यहोशू से कहा उठ जा तू क्यों इस भान्ति मुंह के बल पृथिवी पर पड़ा है । ११ इस्राएलियों ने पाप किया है और जो वाचा मैं ने उन से अपने साथ बन्धाई थी उस को उन्होंने तोड़ दिया है उन्हों ने अर्पण की वस्तुओं में से ले लिया बरन चोरी भी की और छल करके उस को अपने सामान में रख लिया है । १२ इस कारण इस्राएली अपने शत्रुओं के साम्हने खड़े नहीं रह सकते वे अपने शत्रुओं को पीठ दिखाते हैं इसलिये कि वे आप अर्पण की वस्तु बन गये हैं और यदि तुम अपने बीच में से अर्पण की वस्तु को सत्यानाश न कर डालो तो मैं आगे को तुम्हारे संग न रहूंगा । १३ उठ प्रजा के लोगों को पवित्र कर उन से कह कि बिहान लों अपने अपने को पवित्र कर रक्खो क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल तेरे बीच अर्पण की कोई वस्तु है सो जब लों अर्पण की वस्तु को अपने बीच में से दूर न करे तब लों तू अपने शत्रुओं के साम्हने खड़ा न रह सकेगा । १४ सो बिहान को तुम गोत्र गोत्र करके समीप खड़े किये जाओगे और जिस गोत्र के नाम पर चिट्ठी निकले[३] सो कुल कुल करके पास किया जाएगा और जिस कुल के नाम पर चिट्ठी निकले[४] सो घराना घराना करके पास किया जाएगा फिर जिस घराने के नाम पर चिट्ठी निकले[५] सो एक एक पुरुष करके पास किया जाएगा । १५ तब जो पुरुष अर्पण की वस्तु रक्खे हुए पकड़ा जाएगा सो उस समेत जो उस का हो आग में डालकर जलाया जाएगा क्योंकि उस ने यहोवा की वाचा को तोड़ा और इस्राएल में मूढ़ता की है ॥

१६ बिहान को यहोशू सवेरे उठ इस्राएलियों को गोत्र गोत्र करके समीप लिवा ले गया और चिट्ठी यहूदा के गोत्र के नाम पर निकली[६] । १७ तब उस ने यहूदा के कुल कुल समीप किये और चिट्ठी जेरहवंशियों के कुल के नाम पर निकली[७] फिर जेरहवंशियों का कुल पुरुष पुरुष करके समीप किया और चिट्ठी जब्दी के नाम पर निकली[८] । १८ तब उस ने उस का घराना पुरुष पुरुष करके समीप किया और यहूदा गोत्र का आकान जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था उसी के नाम पर चिट्ठी निकली[९] । १९ तब यहोशू आकान से कहने लगा हे मेरे बेटे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का मान करके उस के आगे अंगीकार कर और जो कुछ तूने किया

(१) मूल में वह अपने जेठे के बदले में उस की नेव डालेगा और अपने लहुरे के बदले में उस के फाटक खड़े करेगा ।
(२) मूल में गलकर ।

(३) मूल में जो गोत्र यहोवा पकड़ेगा ।
(४) मूल में जो कुल यहोवा पकड़ेगा । (५) मूल में जो घराना यहोवा पकड़ेगा । (६) मूल में यहूदा का गोत्र पकड़ा गया । (७) मूल में जेरहवंशियों का कुल पकड़ा गया । (८) मूल में जब्दी पकड़ा गया । (९) मूल में वह पकड़ा गया ।

हो सो मुझ को बता और मुझ से कुछ न छिपा।
२० आकान ने यहोशू को उत्तर दिया कि सचमुच मैं ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है
२१ और यों यों किया है। जब मुझे लूट में शिनार देश का एक सुन्दर ओढ़ना दो सौ शेकेल चान्दी और पचास शेकेल सोने की एक ईंट देख पड़ी तब मैं ने उन का लालच करके उन्हें रख लिया वे मेरे डेरे के बीच भूमि में
२२ गड़े हैं और सब के नीचे चान्दी है। सो यहोशू ने दूत भेजे और वे उस डेरे को दौड़े गये और क्या देखा कि वे वस्तुएं उस के डेरे में गड़ी हैं और सब के नीचे चान्दी
२३ है। उन को उन्हों ने डेरे के बीच से निकालकर यहोशू और सब इस्राएलियों के पास ले आकर यहोवा के साम्हने
२४ धर दिया। तब सब इस्राएलियों समेत यहोशू जेरहवंशी आकान को और उस चान्दी और ओढ़ने और सोने की ईंट को और उस के बेटे बेटियों को और उस के बैलों गदहों और भेड़ बकरियों को और उस के डेरे को निदान जो कुछ उस का था उस सब को आकोर नाम तराई में
२५ ले गया। तब यहोशू ने उस से कहा तू ने हमें क्यों कष्ट दिया है आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा इस पर सब इस्राएलियों ने उस पर पत्थरवाह किया और उन को आग में डालकर जलाया और उन के ऊपर पत्थर डाल
२६ दिये। और उन्हों ने उस के ऊपर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज लों बना है तब यहोवा का भड़का हुआ कोप शान्त हो गया। इस कारण उस स्थान का नाम आज लों आकोर[१] तराई पड़ा है॥

(ऐ नगर का ले लिया जाना)

८. तब यहोवा ने यहोशू से कहा मत डर और तेरा मन कच्चा न हो कमर बान्धकर सब योद्धाओं को साथ ले ऐ पर चढ़ाई कर क्योंकि मैं ने ऐ के राजा को प्रजा नगर और देश समेत
२ तेरे वश में कर दिया है। और जैसा तू ने यरीहो और उस के राजा से किया वैसा ही ऐ और उस के राजा से भी करना केवल तुम पशुओं समेत उस की लूट तो अपने लिये ले सकोगे उस नगर के पीछे की ओर से घात
३ लगा। सो यहोशू ने सब योद्धाओं समेत ऐ पर चढ़ाई करने की तैयारी की और यहोशू ने तीस हजार पुरुषों को जो बड़े बड़े वीर थे चुनकर रात को आज्ञा देकर भेजा
४ कि, सुनो तुम उस नगर के पीछे की ओर घात लगाये बैठे रहना नगर से बहुत दूर न जाना और सब के सब तैयार
५ रहना। और मैं अपने सब साथियों समेत उस नगर के निकट जाऊंगा और जब वे पहिले की नाईं हमारा साम्हना करने को निकलें तब हम उन के आगे से
६ भागेंगे। तब वे यह सोचकर कि वे पहिले की भांति हमारे साम्हने से भागे जाते हैं हमारा पीछा करेंगे सो हम उन के साम्हने से भागकर उन्हें नगर से दूर खींच ले
७ आएंगे। तब तुम घात से उठकर नगर को अपना कर लेना देखो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उस को तुम्हारे हाथ
८ में कर देगा। और जब नगर को ले लो तब उस में आग लगाकर फूंक देना यहोवा की आज्ञा के अनुसार करना
९ सुनो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है। तब यहोशू ने उन को भेज दिया और वे घात में बैठने को चले गये और बेतेल और ऐ के बीच ऐ की पच्छिम ओर बैठे रहे पर यहोशू उस रात लोगों के बीच टिका रहा॥

१० बिहान को यहोशू सबेरे उठ लोगों की गिनती लेकर इस्राएली पुरनियों समेत लोगों के आगे आगे ऐ
११ की ओर चला। और उस के संग के सब योद्धा चढ़ गये और ऐ नगर के निकट पहुंचकर उस के साम्हने उत्तर ओर डेरे डाले और उन के और ऐ के बीच एक तराई थी।
१२ तब उस ने कोई पांच हजार पुरुष चुनकर बेतेल और ऐ के बीच नगर की पच्छिम ओर घात लगाने को ठहरा दिया।
१३ और जब लोगों ने नगर की उत्तर ओर की सारी सेना को और उस की पच्छिम ओर घात में बैठे हुओं को भी ठहरा
१४ दिया तब यहोशू उसी रात तराई के बीच गया। जब ऐ के राजा ने यह देखा तब वे फुर्ती करके सबेरे उठे और राजा अपनी सारी प्रजा को ले इस्राएलियों के साम्हने उन से लड़ने को निकलकर ठहराये हुए स्थान पर जो अराबा के साम्हने है पहुंचा और वह न जानता था कि
१५ नगर की पिछली ओर लोग घात लगाये बैठे हैं। तब यहोशू और सब इस्राएली उन से हार सी मान कर
१६ जंगल का मार्ग ले भाग चले। तब नगर में के सब लोग इस्राएलियों का पीछा करने को पुकार पुकार के बुलाये गये सो वे यहोशू का पीछा करते हुए नगर से दूर खींचे
१७ गये। और न ऐ में न बेतेल में कोई पुरुष रह गया जो इस्राएलियों का पीछा करने को न गया हो और उन्हों ने नगर को खुला हुआ छोड़कर इस्राएलियों का पीछा
१८ किया। तब यहोवा ने यहोशू से कहा अपने हाथ का बर्छा ऐ की ओर बढ़ा क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूंगा सो यहोशू ने अपने हाथ के बर्छे को नगर की ओर बढ़ाया।
१९ उस के हाथ बढ़ाते ही जो लोग घात में बैठे थे सो झट अपने स्थान से उठे और दौड़ दौड़ नगर में घुस कर उस
२० को ले लिया और झट उस में आग लगा दी। जब ऐ के पुरुषों ने पीछे की ओर दृष्टि की तो क्या देखा कि नगर का धूंआ आकाश की ओर उठ रहा और उन्हें न

(१) अर्थात् कष्ट देना।

तो इधर भागने की शक्ति रही और न उधर और जो लोग जंगल की ओर भागे जाते थे सो फिरके अपने २१ खदेड़नेहारों पर टूट पड़े। जब यहोशू और सब इस्राएलियों ने देखा कि घातियों ने नगर को ले लिया और उस का धूंआं उठ रहा है तब घूमकर ऐ के पुरुषों को मारने २२ लगे। और उन का साम्हना करने को दूसरे भी नगर से निकल आये सो वे इस्राएलियों के बीच में पड़ गये कुछ इस्राएली तो उन के आगे और कुछ उन के पीछे थे सो उन्हों ने उन को यहां तक मार डाला कि उन में से न तो २३ कोई बचने और न भागने पाया। और ऐ के राजा को वे २४ जीता पकड़कर यहोशू के पास ले आये। और जब इस्राएली ऐ के सब निवासियों को मैदान में अर्थात् उस जंगल में जहां उन्हों ने उन का पीछा किया था घात कर चुके और वे सब तलवार से मारे गये यहां लों कि उन का अन्त ही हो गया तब सब इस्राएलियों ने ऐ को २५ लौट कर उसे तलवार से मारा। और स्त्री पुरुष सब मिलाकर जो उस दिन मारे पड़े सो बारह हजार थे और २६ ऐ के सब पुरुष इतने ही थे। क्योंकि जब लों यहोशू ने ऐ के सब निवासियों को सत्यानाश न कर डाला तब लों उस ने अपना हाथ जिस से बर्छा बढ़ाया था फिर २७ न खींचा। केवल यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोशू को दी थी इस्राएलियों ने पशु आदि नगर २८ की लूट अपनी कर ली। तब यहोशू ने ऐ को फुंकवा दिया और उसे सदा के लिये डीह कर दिया सो वह आज लों २९ उजाड़ पड़ा है। और ऐ के राजा को उस ने सांझ तलक वृक्ष पर लटका रक्खा और सूर्य्य डूबते डूबते यहोशू की आज्ञा से उस की लोथ वृक्ष पर से उतार के नगर के फाटक के साम्हने डाल दी गई और उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया गया जो आज लों बना है॥

(आशीर्वाद और स्राप का सुनाया जाना)

३० तब यहोशू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के ३१ लिये एबाल पर्वत पर एक वेदी बनवाई। जैसा यहोवा के दास मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी और जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उस ने समूचे पत्थरों की एक वेदी बनवाई जिस पर लोखर चलाया न गया था। और उस पर उन्हों ने यहोवा के ३२ लिये होमबलि चढ़ाये और मेलबलि किये। उसी स्थान पर यहोशू ने इस्राएलियों के साम्हने उन पत्थरों के ऊपर मूसा की व्यवस्था जो उस ने लिखी थी उस की नकल ३३ कराई। और क्या देशी क्या परदेशी सारे इस्राएली अपने पुरनियों सरदारों और न्यायियों समेत यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेहारे लेवीय याजकों के साम्हने उस संदूक के इधर उधर खड़े हुए अर्थात् आधे लोग तो गिरिज्जीम पर्वत के और आधे एबाल पर्वत के साम्हने खड़े हुए जैसा कि यहोवा के दास मूसा ने पहिले से आज्ञा दी थी कि इस्राएली प्रजा को आशीर्वाद दिये जाएं। उस ३४ के पीछे उस ने क्या आशिष के क्या स्राप के व्यवस्था के सारे वचन जैसे जैसे व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हुए हैं वैसे वैसे पढ़ पढ़कर सुनवा दिये। जितनी बातों की मूसा ३५ ने आज्ञा दी थी उन में से कोई ऐसी बात न रह गई जो यहोशू ने इस्राएल की सारी सभा और स्त्रियों और बालबच्चों और उन के बीच रहते हुए[१] परदेशी लोगों के साम्हने भी पढ़कर न सुनवाई हो॥

(गिबोनियों का छल)

९. यह सुनकर हित्ती एमोरी कनानी परिज्जी हिव्वी और यबूसी जितने राजा यर्दन के इस पार पहाड़ी देश में और नीचे के देश में और लबानोन के साम्हने के महासागर के तीर रहते थे, वे १ एक मन होकर यहोशू और इस्राएलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए॥

जब गिबोन के निवासियों ने सुना कि यहोशू ने यरीहो ३ और ऐ से क्या क्या किया है, तब उन्हों ने छल किया ४ और राजदूतों का भेष बनाकर अपने गदहों पर पुराने बोरे और पुराने फटे जोड़े हुए मदिरा के कुप्पे लादकर, अपने पांवों में पुरानी गांठी हुई जूतियां और तन में ५ पुराने वस्त्र पहिने अपने भोजन के लिये सूखी और फफूंदी लगी हुई रोटी ले ली। सो वे गिलगाल की ६ छावनी में यहोशू के पास जाकर उस से और इस्राएली पुरुषों से कहने लगे हम दूर देश से आये हैं सो अब हम से वाचा बांधो। इस्राएली पुरुषों ने उन हिव्वियों से ७ कहा क्या जाने तुम हमारे बीच बसे हो फिर हम तुम से वाचा कैसे बांधें। उन्हों ने यहोशू से कहा हम तेरे दास ८ हैं यहोशू ने उन से कहा तुम कौन हो और कहां से आते हो। उन्हों ने उस से कहा तेरे दास बहुत दूर के ९ देश से तेरे परमेश्वर यहोवा का नाम सुनकर आये हैं क्योंकि हम ने यह सब सुना है अर्थात् उस की कीर्ति और जो कुछ उस ने मिस्र में किया, और जो कुछ १० उस ने एमोरियों के दोनों राजाओं से किया जो यर्दन के उस पार रहते थे अर्थात् हेश्बोन के राजा सीहोन से और बाशान के राजा ओग से जो अशतारोत में था। सो ११ हमारे यहां के पुरनियों ने और हमारे देश के सब निवासियों ने हम से कहा कि मार्ग के लिये अपने साथ भोजनवस्तु लेकर उन से मिलने को जाओ और

(१) मूल में चलते हुए।

उन से कहना कि हम तुम्हारे दास हैं सो अब हम से
१२ वाचा बांधो। जिस दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले उस दिन तो हम ने अपने अपने घर से यह रोटी टटकी लिई थी पर अब देखो यह सूख गई और इस में
१३ फफूंदी लग गई है। फिर ये जो मदिरा के कुप्पे हम ने भर लिये सो तब तो नये थे पर देखो अब ये फटे हुए हैं और हमारे ये वस्त्र और जूतियां बड़ी दूर की यात्रा के
१४ कारण पुरानी हो गई हैं। तब उन पुरुषों ने यहोवा से बिना सलाह लिये उन के भोजन में से कुछ ग्रहण
१५ किया। सो यहोशू ने उन से मेल करके उन से यह वाचा बान्धी कि तुम को जीते छोड़ेंगे और मण्डली के
१६ प्रधानों ने उन से किरिया भी खाई। उन के साथ वाचा बान्धने के तीन दिन पीछे उन को यह समाचार मिला कि वे हमारे पड़ोस के लोग हैं और हमारे बीच बसे हैं।
१७ सो इस्राएली कूच करके तीसरे दिन उन के नगरों को जिन के नाम गिबोन कपीरा बेरोत और किर्यत्यारीम्
१८ हैं पहुंच गये। और इस्राएलियों ने उन को न मारा क्योंकि मण्डली के प्रधानों ने उन के संग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की किरिया खाई थी सो सारी मण्डली
१९ के लोग प्रधानों के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे। तब सब प्रधानों ने सारी मण्डली से कहा हम ने उन से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की किरिया खाई है सो अब उन को
२० छू नहीं सकते। हम उन से यह करेंगे कि उस किरिया के अनुसार हम उन को जीते छोड़ देंगे नहीं तो हमारी
२१ खाई हुई किरिया के कारण हम पर क्रोध पड़ेगा। फिर प्रधानों ने उन से कहा वे जीते छोड़े जाएं। सो प्रधानों के इस वचन के अनुसार वे सारी मण्डली के लिये
२२ लकड़हारे और पनिहारे हो गये। फिर यहोशू ने उन को बुलवाकर कहा तुम तो हमारे बीच रहनेहारे हो फिर तुम ने हम से यह कहकर क्यों छल किया है कि हम
२३ तुम से बहुत दूर रहते हैं। सो अब तुम स्रापित हो और तुम में से ऐसा कोई न रहेगा जो दास अर्थात् मेरे परमेश्वर के भवन के लिये लकड़हारा और पनिहारा न
२४ हो। उन्हों ने यहोशू से कहा तेरे दासों को यह निश्चय बतलाया गया था कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने अपने दास मूसा को आज्ञा दिई थी कि तुम को वह सारा देश दे और उस के सारे निवासियों को तुम्हारे साम्हने से नाश करे सो हम ने तुम लोगों के कारण अपने जीवन
२५ के बड़े डर में आकर ऐसा काम किया। और अब हम तेरे वश में हैं जैसा बर्ताव तुझे भला और ठीक जान
२६ पड़े वैसा ही हम से कर। सो उस ने उन से वैसा ही किया और उन्हें इस्राएलियों के हाथ से ऐसा बचाया

कि वे उन्हें घात करने न पाये, पर यहोशू ने उसी दिन २७ उन को मण्डली के लिये और जो स्थान यहोवा चुन ले उस में उस की वेदी के लिये लकड़हारे और पनिहारे करके ठहरा दिया। सो आज लों वे वैसे ही रहते हैं॥

(कनान के दक्खिनी भाग का जीता जाना)

१०. जब यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले लिया और उस को सत्यानाश कर डाला है और जैसा उस ने यरीहो और उस के राजा से किया था वैसा ही ऐ और उस के राजा से भी किया है और यह भी सुना कि गिबोन के निवासियों ने इस्राएलियों से मेल किया
२ और उन के बीच रहने लगे हैं, तब वे निपट डर गये क्योंकि गिबोन बड़ा नगर वरन राजनगर के तुल्य था और
३ ऐ से बड़ा है और उस के सब निवासी शूरवीर थे। सो यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम यर्मूत के राजा पिराम लाकीश के राजा यापी और
४ एग्लोन के राजा दबीर के पास यों कहला भेजा कि, मेरे पास आकर मेरी सहायता करो हम गिबोन को मार लें क्योंकि उस ने यहोशू और इस्राएलियों से मेल किया है।
५ सो यरूशलेम हेब्रोन यर्मूत लाकीश और एग्लोन के पांचों एमोरी राजा अपनी अपनी सारी सेना लेकर इकट्ठे हो चढ़ गये और गिबोन के साम्हने डेरे डालकर उस से
६ लड़ने लगे। तब गिबोन के निवासियों ने गिलगाल की छावनी में यहोशू के पास यों कहला भेजा कि अपने दासों से तू हाथ न उठा फुर्ती से हमारे पास आकर हमें बचा और हमारी सहायता कर क्योंकि पहाड़ पर बसे हुए एमोरियों के सब राजा हमारे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं।
७ सो यहोशू सारे योद्धाओं और सब शूरवीरों को संग लेके
८ गिलगाल से उधर गया[१]। और यहोवा ने यहोशू से कहा उन से मत डर क्योंकि मैं ने उन को तेरे हाथ में कर दिया है उन में से एक पुरुष भी तेरे साम्हने खड़ा न रह
९ सकेगा। सो यहोशू रातोंरात गिलगाल से जाकर एका-
१० एक उन पर टूट पड़ा। तब यहोवा ने ऐसा किया कि वे इस्राएलियों से घबरा गये और इस्राएलियों ने गिबोन के पास उन्हें बड़ी मार से मारा और बेथोरोन के चढ़ाव पर उन का पीछा करके अजेका और मक्केदा लों उन्हें
११ मारते गये। फिर जब वे इस्राएलियों के साम्हने से भाग-कर बेथोरोन की उतराई पर आए तब अजेका पहुंचने लों यहोवा ने आकाश से बड़े बड़े पत्थर उन पर गिराये और वे मर गये। जो ओलों से मारे गये सो इस्राएलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थे॥

(१) मूल में चढ़ा।

१२ उस समय अर्थात् जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया उस दिन यहोशू ने यहोवा से इस्राएलियों के देखते यों कहा

हे सूर्य्य तू गिबोन पर
और हे चन्द्रमा तू अय्यालोन की तराई के ऊपर ठहरा रह॥

१३ सो सूर्य्य तब लों थंभा रहा और चंद्रमा तब लों ठहरा रहा[१]
जब लों उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं से पलटा न लिया

यह बात याशार नाम पुस्तक में लिखी हुई है कि सूर्य्य आकाशमण्डल के बीच ठहरा रहा और कोई चार पहर के १४ लगभग न डूबा। न तो उस से पहिले कोई ऐसा दिन हुआ न उस के पीछे जिस में यहोवा ने किसी पुरुष की सुनी हो यहोवा तो इस्राएल की ओर लड़ता था॥

१५ तब यहोशू सारे इस्राएलियों समेत गिलगाल की छावनी को लौट गया॥

१६ और वे पांचों राजा भागकर मक्केदा के पास की १७ गुफा में छिप गये। तब यहोशू को यह समाचार मिला कि पांचों राजा हमें मक्केदा के पास की गुफा में छिपे हुए १८ मिले हैं। यहोशू ने कहा गुफा के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर लुढ़काकर उन की चौकी देने के लिये मनुष्यों को उस के १९ पास बैठा दो। पर तुम मत ठहरो अपने शत्रुओं का पीछा करके उन में से पीछेवालों को मार डालो उन्हें अपने अपने नगर में पैठने न दो क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर २० यहोवा ने उन को तुम्हारे हाथ में कर दिया है। जब यहोशू और इस्राएली उन्हें बड़ी मार से मार के नाश कर चुके और उन में से जो बच गये सो अपने अपने गढ़- २१ वाले नगर में घुस गये, तब सब लोग मक्केदा की छावनी को यहोशू के पास कुशलक्षेम से लौट आये और इस्राएलियों के विरुद्ध किसी ने जीभ तक न हिलाई[२]। २२ तब यहोशू ने आज्ञा दिई कि गुफा का मुंह खोलकर उन २३ पांचों राजाओं को मेरे पास निकाल ले आओ। उन्हों ने ऐसा ही किया और यरूशलेम हेब्रोन यर्मूत लाकीश और एग्लोन के उन पांचों राजाओं को गुफा में से उस २४ के पास निकाल ले आये। जब वे उन राजाओं को यहोशू के पास निकाल ले आये तब यहोशू ने इस्राएल के सब पुरुषों को बुलाकर अपने साथ चलनेहारे योद्धाओं के प्रधानों से कहा निकट आकर अपने अपने पांव इन राजाओं की गर्दनों पर धरो सो उन्हों ने निकट जाकर

(१) मूल में चुप हो गया।
(२) मूल में सान न चढ़ाई।

२५ अपने अपने पांव उन की गर्दनों पर धर दिये। तब यहोशू ने उन से कहा डरो मत और न तुम्हारा मन कच्चा हो हियाव बांधकर दृढ़ हो क्योंकि यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं से जिन से तुम लड़नेवाले हो ऐसा ही करेगा। २६ इस के पीछे यहोशू ने उन को मरवा डाला और पांच वृक्षों पर लटकाया और वे सांझ लों उन वृक्षों पर लटके २७ रहे। सूर्य्य डूबते डूबते यहोशू से आज्ञा पाकर लोगों ने उन्हें उन वृक्षों पर से उतार के उसी गुफा में जहां छिप गये थे डाल दिया और उस गुफा के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर दे दिये वे आज लों वहीं धरे हुए हैं॥

२८ उसी दिन यहोशू ने मक्केदा को ले लिया और उस को तलवार से मारा और उस के राजा को सत्यानाश किया और जितने प्राणी उस में थे उन सभों में से किसी को जीता न छोड़ा और जैसा उस ने यरीहो के राजा से किया था वैसा ही मक्केदा के राजा से भी किया॥

२९ तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत मक्केदा से ३० चलकर लिब्ना को गया और लिब्ना से लड़ा। और यहोवा ने उस को भी राजा समेत इस्राएलियों के हाथ कर दिया और यहोशू ने उस को और उस में के सब प्राणियों को तलवार से मारा और उस में किसी को जीता न छोड़ा और उस के राजा से वैसा ही किया जैसा उस ने यरीहो के राजा से किया था॥

३१ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत लिब्ना से चलकर लाकीश को गया और उस के विरुद्ध छावनी ३२ डालकर लड़ा। और यहोवा ने लाकीश को इस्राएल के हाथ में कर दिया सो दूसरे दिन उस ने उस को ले लिया और जैसा उस ने लिब्ना में के सब प्राणियों को तलवार से मारा वैसा ही उस ने लाकीश से भी किया॥

३३ तब गेजेर का राजा होराम लाकीश की सहायता करने को चढ़ आया और यहोशू ने प्रजा समेत उस को भी ऐसा मारा कि उस के लिये किसी को जीता न छोड़ा॥

३४ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत लाकीश से चलकर एग्लोन को गया और उस के विरुद्ध छावनी ३५ डालकर लड़ने लगा। और उसी दिन उन्हों ने उस को ले लिया और उस को तलवार से मारा और उसी दिन जैसा उस ने लाकीश में के सब प्राणियों को सत्यानाश कर डाला था वैसा ही उस ने एग्लोन से भी किया॥

३६ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत एग्लोन से चल- ३७ कर हेब्रोन को गया और उस से लड़ने लगा। और उन्हों ने उसे ले लिया और उस को और उस के राजा और सब गांवों को और उन में के सब प्राणियों को तलवार से मारा जैसा यहोशू ने एग्लोन से किया था वैसा ही

उस ने हेब्रोन में भी किसी को जीता न छोड़ा उस ने उस को और उस में के सब प्राणियों को सत्यानाश कर डाला ॥

३८ तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत घूमकर दबीर को ३९ गया और उस से लड़ने लगा, और राजा समेत उसे और उस के सब गांवों को ले लिया और उन्हों ने उन को तलवार से मार लिया और जितने प्राणी उन में थे सब को सत्यानाश कर डाला, किसी को जीता न छोड़ा जैसा यहोशू ने हेब्रोन और लिब्ना और उस के राजा से किया था वैसा ही उस ने दबीर और उस के राजा से भी किया।

४० सो यहोशू ने उस सारे देश को अर्थात् पहाड़ी देश दक्खिन देश नीचे के देश और ढालू देश को उन के सब राजाओं समेत मारा और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किसी को जीता न छोड़ा बरन ४१ जितने प्राणी थे सभों को सत्यानाश कर डाला। सो यहोशू ने कादेशबर्ने से ले अज्जा लों और गिबोन तक ४२ के सारे गोशेन देश के लोगों को मारा। इन सब राजाओं को उन के देशों समेत यहोशू ने एक ही समय में ले लिया क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएलियों ४३ की ओर से लड़ता था। तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत गिलगाल की छावनी में लौट आया ॥

(कनान के उत्तरीय भाग का जीता जाना)

११. यह सुनकर हासोर के राजा याबीन ने मादोन के राजा योबाब और २ शिम्रोन और अक्षाप के राजाओं को, और जो जो राजा उत्तर की ओर पहाड़ी देश में और किन्नेरेत की दक्खिन के अराबा में और नीचे के देश में और पच्छिम ओर दोर ३ के ऊंचे देश में रहते थे। उन को और पूरब पच्छिम दोनों ओर रहनेहारे कनानियों और एमोरियों हित्तियों परिज्जियों और पहाड़ी यबूसियों और मिस्पा देश में हेर्मोन ४ पहाड़ के नीचे रहनेहारे हिव्वियों को बुलवा भेजा। और वे अपनी अपनी सेना समेत जो समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान बहुत थीं निकल आये और उन के ५ साथ बहुत ही घोड़े और रथ भी थे, तब ये सब राजा संमति करके इकट्ठे हुए और इस्राएलियों से लड़ने को मेरोम नाम ताल के पास आकर एक संग छावनी डाली।

६ सो यहोवा ने यहोशू से कहा उन से मत डर क्योंकि कल इसी समय मैं उन सभों को इस्राएलियों के वश करके मरवा डालूंगा तब तू उन के घोड़ों के सुम की ७ नस कटवाना और उन के रथ भस्म कर देना। सो यहोशू सब योद्धाओं समेत मेरोम नाम ताल के पास ८ अचानक पहुंचकर उन पर टूट पड़ा। और यहोवा ने उन को इस्राएलियों के हाथ कर दिया सो उन्हों ने उन्हें मार लिया और बड़े नगर सीदोन और मिस्रपोतमैम लों और पूरब ओर मिस्पे के मैदान लों उन का पीछा किया और उन को मारा और उन में से किसी को जीता न ९ छोड़ा। तब यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन से किया अर्थात् उन के घोड़ों के सुम की नस कटवाई और उन के रथ भस्म कर दिये ॥

१० उस समय यहोशू ने घूमकर हासोर को जो पहिले उन सब राज्यों में मुख्य नगर था ले लिया और उस के ११ राजा को तलवार से मार डाला। और जितने प्राणी उस में थे उन सभों को उन्हों ने तलवार से मारकर सत्यानाश किया और किसी प्राणी को जीता न छोड़ा और हासोर को यहोशू ने आग लगाकर फुंकवा दिया। १२ और उन सारे नगरों को उन के सब राजाओं समेत यहोशू ने ले लिया और यहोवा के दास मूसा की आज्ञा के अनुसार उन को तलवार से मारकर सत्यानाश किया। १३ पर हासोर को छोड़कर जिसे यहोशू ने फुंकवा दिया इस्राएल ने और किसी नगर को जो अपने टीले पर १४ बसा था न फूंका। और इन नगरों के पशु और इन की सारी लूट को इस्राएलियों ने अपना लिया पर मनुष्यों को उन्हों ने तलवार से मार डाला यहां लों कि उन को सत्यानाश कर डाला और एक भी प्राणी को जीता न १५ छोड़ा। जो आज्ञा यहोवा ने अपने दास मूसा को दी थी उस के अनुसार मूसा ने यहोशू को आज्ञा दी थी और वैसा ही यहोशू ने किया भी जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थीं उन में से यहोशू ने कोई भी पूरी किये बिना न छोड़ी ॥

(समस्त कनान का राजाओं समेत जीता जाना)

१६ सो यहोशू ने उस सारे देश को अर्थात् पहाड़ी देश और सारे दक्खिन देश और सारे गोशेन देश और नीचे के देश अराबा और इस्राएल के पहाड़ी देश और उस के नीचे- १७ वाले देश को, हालाक नाम पहाड़ से ले जो सेईर की चढ़ाई पर है बालगाद लों जो लबानोन के मैदान में हेर्मोन पर्वत के नीचे है जितना देश है उस सब को ले लिया और उन देशों के सारे राजाओं को पकड़कर मार १८ डाला। उन सब राजाओं से युद्ध करते करते यहोशू को १९ बहुत दिन लगे। गिबोन के निवासी हिव्वियों को छोड़ और किसी नगर के लोगों ने इस्राएलियों से मेल न किया २० और सब नगरों को उन्हों ने लड़ लड़कर ले लिया। क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी थी उन पर कुछ दया न करे बरन सत्यानाश कर डाले इस कारण उस ने

उन के मन ऐसे हठीले कर दिये कि उन्हों ने इस्राएलियों का साम्हना करके उन से युद्ध किया ॥

२१ उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन दबीर अनाब बरन यहूदा और इस्राएल दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेहारे अनाकियों को नाश किया यहोशू
२२ ने नगरों समेत उन्हें सत्यानाश कर डाला। इस्राएलियों के देश में कोई अनाकी न रह गया केवल अज्जा गत और
२३ अशदोद में कोई कोई रह गये। सो जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया और उसे इस्राएल के गोत्रों और कुलों के अनुसार भाग करके उन्हें दे दिया। और देश को लड़ाई से शान्ति मिली ॥

१२.

यर्दन पार सूर्योदय की ओर अर्थात् अर्नोन नाले से ले हेर्मोन पर्वत लों के देश और सारे पूर्वी अराबा के जिन राजाओं को इस्राएलियों ने मारके देश को अपने अधिकार में कर
२ लिया था ये हैं, एमोरियों का हेशबोनवासी राजा सीहोन जो अर्नोन नाले के किनारे के अरोएर से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर यब्बोक नदी लों
३ जो अम्मोनियों का सिवाना है आधे गिलाद पर, और किन्नेरेत नाम ताल से ले बेत्यशीमोत से होकर अराबा के ताल लों जो खारा ताल भी कहावता है पूरब ओर के अराबा और दक्खिन ओर पिसगा की सलामी के नीचे
४ नीचे के देश पर प्रभुता रखता था। फिर बचे हुए रपाइयों में से बाशान के राजा ओग का देश था जो
५ अशतारोत और एद्रेई में रहा करता था, और हेर्मोन पर्वत सलका और गशूरियों और माकियों के सिवाने लों सारे बाशान में और हेशबोन के राजा सीहोन के सिवाने
६ लों आधे गिलाद में भी प्रभुता करता था। इस्राएलियों और यहोवा के दास मूसा ने इन को मार लिया और यहोवा के दास मूसा ने इन का देश रूबेनियों और गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को दे दिया ॥

७ और यर्दन की पश्चिम ओर लबानोन के मैदान में के बालगाद से ले सेईर की चढ़ाई में के हालाक पहाड़ लों के देश के जिन राजाओं को यहोशू और इस्राएलियों ने मारके उन का देश इस्राएलियों को गोत्रों और कुलों
८ के अनुसार भाग करके दे दिया सो ये हैं, हित्ती और एमोरी और कनानी और परिज्जी और हिव्वी और यबूसी जो पहाड़ी देश में और नीचे के देश में और अराबा में और ढालू देश में और जंगल में और दक्खिन देश में
९ रहते थे। एक यरीहो का राजा एक बेतेल के पास के ऐ
१० का राजा, एक यरूशलेम का राजा एक हेब्रोन का
११, १२ राजा, एक यर्मूत का राजा एक लाकीश का राजा एक एग्लोन का राजा एक गेजेर का राजा, एक दबीर का १३
राजा एक गेदेर का राजा, एक होर्मा का राजा एक १४
अराद का राजा, एक लिब्ना का राजा एक १५
अदुल्लाम का राजा, एक मक्केदा का राजा एक बेतेल १६
का राजा, एक तप्पूह का राजा एक हेपेर का राजा, १७
एक अपेक का राजा एक लश्शारोन का राजा, एक १८, १९
मादोन का राजा एक हासोर का राजा, एक शिम्रोन्मरोन २०
का राजा, एक अक्षाप का राजा, एक तानाक का राजा, २१
एक मगिद्दो का राजा, एक केदेश का राजा एक कर्मेल २२
में के योकनाम का राजा, एक दोर नाम ऊंचे देश में २३
के दोर का राजा एक गिलगाल में के गोयीम का राजा,
एक तिर्सा का राजा है सो सब राजा इकतीस हुए ॥ २४

(कनान का इस्राएली गोत्र गोत्र में बांटा जाना)

१३.

यहोशू बूढ़ा और बहुत दिनी हो गया और यहोवा ने उस से कहा तू बूढ़ा और बहुत दिनी हो गया है और बहुत देश रह गये हैं जो इस्राएल के अधिकार में नहीं आये। ये देश रह २
गये अर्थात् पलिश्तियों का सारा प्रान्त और सारे गशूरी।
मिस्र के आगे की शीहोर से ले उत्तर ओर एक्रोन के ३
सिवाने लों जो कनानियों का भाग गिना जाता है और पलिश्तियों के पांचों सरदार अर्थात् अज्जा अशदोद अशकलोन गत और एक्रोन के लोग और दक्खिन ओर अव्वी भी, फिर अपेक और एमोरियों के सिवाने ४
लों कनानियों का सारा देश और सीदोनियों का मारा नाम देश, फिर गबालियों का देश और सूर्योदय की ५
ओर हेर्मोन पर्वत के नीचे के बालगाद से ले हमात की घाटी लों सारा लबानोन, फिर लबानोन से ले मिस्रपोतमैम ६
तक सीदोनियों के पहाड़ी देश के निवासी इन को मैं इस्राएलियों के साम्हने से निकाल दूंगा इतना हो कि तू मेरी आज्ञा के अनुसार चिट्ठी डाल डाल उन का देश इस्राएल का भाग कर दे। सो अब इस देश को नवों ७
गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र को उन का भाग होने के लिये बांट दे ॥

इस के साथ रूबेनियों और गादियों को तो वह ८
भाग मिल चुका था जो मूसा ने उन्हें यर्दन की पूरब ओर ऐसा दिया था जैसा यहोवा के दास मूसा ने उन्हें
दिया था, अर्थात् अर्नोन नाम नाले के किनारे के ९
अरोएर से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर दीबोन लों मेदबा के पास का सारा चौरस देश,
और अम्मोनियों के सिवाने लों हेशबोन में विराजनेहारे १०
एमोरियों के राजा सीहोन के सारे नगर, और गिलाद ११

देश और गशूरियों और माकाथियों का सिवाना और
१२ सारा हेर्मोन पर्वत और सल्का लों सारा बाशान, फिर
आशतारोत और एद्रेई में बिराजनेहारे उस ओग का
सारा राज्य जो रपाइयों में से अकेला बच गया था
इन्हीं को मूसा ने मार लिया और उन की प्रजा को उस
१३ देश से निकाल दिया था। पर इस्राएलियों ने गशूरियों
और माकियों को उन के देश से न निकाला सो गशूरी
और माकी इस्राएलियों के बीच आज लों रहते हैं।
१४ और लेवी के गोत्रियों को उस ने कोई भाग न दिया
क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के कहे के अनुसार
उसी के हव्य उन के भाग ठहरे हैं॥

१५ मूसा ने रूबेन के गोत्र को उन के कुलों के अनुसार
१६ दिया, अर्थात् अर्नोन नाम नाले के किनारे के अरोएर
से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर
१७ मेदबा के पास का सारा चौरस देश, फिर चौरस देश में का
हेशबोन और उस के सब गांव फिर दीबोन बामोतबाल
१८,१९ बेतबाल्मोन, यहसा कदेमोत मेपात, किर्यातैम सिबमा
२० और तराई में के पहाड़ पर बसा हुआ सेरेथश्शहर, बेतपोर
२१ पिसगा की सलामी औ बेत्यशीमोत, निदान चौरस देश
में बसे हुए हेशबोन में विराजनेहारे एमोरियों के उस
राजा सीहोन के राज्य के सारे नगर जिसे मूसा ने मार
लिया था। मूसा ने एवी रेकेम सूर हूर और रेबा नाम
मिद्यान के प्रधानों को भी मार लिया जो सीहोन के
ठहराये हुए हाकिम और उसी देश के निवासी थे।
२२ और इस्राएलियों ने उन के और मारे हुओं के साथ
बोर के पुत्र भावी कहनेहारे बिलाम को भी तलवार से
२३ मार डाला। और रूबेनियों का सिवाना यर्दन का तीर
ठहरा। रूबेनियों का भाग उन के कुलों के अनुसार
नगरों और गांवों समेत यही ठहरा॥

२४ फिर मूसा ने गाद के गोत्रियों को भी कुलों के
२५ अनुसार भाग दिया। सो यह ठहरा अर्थात् याजेर आदि
गिलाद के सारे नगर और रब्बा के साम्हने के अरोएर
२६ लों अम्मोनियों का आधा देश, और हेशबोन से
रामतमिस्पे और बतोनीम् लों और महनैम से दबीर के
२७ सिवाने लों, और तराई में बेथारम बेथ्निम्रा सुक्कोत
और सापोन और हेश्बोन के राजा सीहोन के राज्य के
बाकी भाग और किन्नेरेत नाम ताल के सिरे लों यर्दन
की पूरब ओर का वह देश जिस का सिवाना यर्दन है।
२८ गादियों का भाग उन के कुलों के अनुसार नगरों और
गांवों समेत यही ठहरा॥

२९ फिर मूसा ने मनश्शे के आधे गोत्रियों को भी
भाग दिया वह मनश्शेइयों के आधे गोत्र का भाग उन के
कुलों के अनुसार ठहरा। सो यह है अर्थात् महनैम से ३०
ले बाशान के राजा ओग के राज्य का सारा देश और
बाशान में बसी हुई याईर की साठों बस्तियां, और ३१
गिलाद का आधा भाग और अश्तारोत और एद्रेई जो
बाशान में ओग के राज्य के नगर थे ये मनश्शे के पुत्र
माकीर के वंश का अर्थात् माकीर के आधे वंश का
भाग कुलों के अनुसार ठहरे।

जो भाग मूसा ने मोआब के अराबा में यरीहो के ३२
पास के यर्दन की पूरब ओर बांट दिये सो ये ही हैं।
पर लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया ३३
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा ही अपने कहे के अनुसार
उन का भाग ठहरा॥

१४. जो भाग इस्राएलियों ने कनान देश में
पाए जिन्हें एलाजार याजक और नून
के पुत्र यहोशू और इस्राएली गोत्रों के पितरों के घरानों
के मुख्य मुख्य पुरुषों ने उन को दिया वे ये हैं। जो २
आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा साढ़े नौ गोत्रों के लिये
दी थी उस के अनुसार उन के भाग चिट्ठी डाल डाल
कर दिये गये। मूसा ने तो अढ़ाई गोत्रों के भाग यर्दन ३
पार दिये थे पर लेवीयों को उस ने उन के बीच कोई
भाग न दिया था। यूसफ के वंश के तो दो गोत्र हो ४
गये थे अर्थात् मनश्शे और एप्रैम और उस देश में
लेवीयों को कुछ भाग न दिया गया केवल रहने के नगर
और पशु आदि धन रखने को चराइयां उन को मिलीं।
जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उस के अनुसार ५
इस्राएलियों ने किया और उन्हों ने देश को बांट लिया॥

यहूदी यहोशू के पास गिलगाल में आये और ६
कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब ने उस से कहा तू जानता
होगा कि यहोवा ने कादेशबर्ने में परमेश्वर के जन मूसा
से मेरे तेरे विषय क्या कहा था। जब यहोवा के दास ७
मूसा ने मुझे इस देश का भेद लेने को कादेशबर्ने से
भेजा तब मैं चालीस बरस का था और मैं सच्चे मन
से[1] उस के पास सन्देश ले आया। और मेरे साथी जो ८
मेरे संग गये थे उन्हों ने तो प्रजा के लोगों का मन
निराश कर दिया[2] पर मैं अपने परमेश्वर यहोवा के
पीछे पूरी रीति से हो लिया। सो उस दिन मूसा ने ९
किरिया खाकर मुझ से कहा कि तू जो पूरी रीति से मेरे
परमेश्वर यहोवा के पीछे हो लिया है इस कारण

(१) मूल में जैसा मेरे मन के साथ था वैसा ही।
(२) मूल में गला दिया।

निःसन्देह जिस भूमि पर तू अपने पांव धर आया है वह
१० सदा के लिये तेरा और तेरे वंश का भाग होगी। और
अब देख जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था
तब से जो पैंतालीस बरस बीते हैं जिन में इस्राएली
जंगल में घूमते फिरते रहे उन में यहोवा ने अपने कहे
के अनुसार मुझे जीता रक्खा है और अब मैं पचासी
११ बरस का हुआ हूं। जितना बल मूसा के भेजने के
दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है युद्ध
करने वा भीतर बाहर आने जाने के लिये जितना उस
समय मुझ में सामर्थ्य था उतना ही अब भी मुझ में
१२ सामर्थ्य है। सो अब वह पर्वत मुझे दे जिस की चर्चा
यहोवा ने उस दिन की थी तू ने तो उस दिन सुना
होगा कि उस में अनाकवंशी रहते हैं और बड़े बड़े
गढ़वाले नगर भी हैं पर क्या जाने यहोवा मेरे संग रहे
और उस के कहे के अनुसार मैं उन्हें उन के देश से
१३ निकाल दूं। तब यहोशू ने उस को आशीर्वाद दिया और
१४ हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग कर दिया। इस
कारण हेब्रोन कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग आज
लों बना है क्योंकि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के पीछे
१५ पूरी रीति से हो लिया था। अगले समय में तो हेब्रोन
का नाम किर्यतर्बा था यह अर्बा अनाकियों में सब से बड़ा
पुरुष था। और उस देश को लड़ाई से शान्ति मिली॥

१५. यहूदियों के गोत्र का भाग उन के कुलों के अनुसार चिट्ठी
डालने से एदोम के सिवाने लों और दक्खिन ओर सीन
२ के जंगल लों जो दक्खिनी सिवाने पर है ठहरा। उन के
भाग का दक्खिनी सिवाना खारे ताल के उस सिरेवाले
कोल से आरम्भ हुआ जो दक्खिन की ओर बढ़ा है।
३ और वह अक्रब्बीम नाम चढ़ाई की दक्खिन ओर से
निकल सीन होते हुए कादेशबर्ने की दक्खिन ओर को
चढ़ गया फिर हेस्रोन के पास हो अद्दार को चढ़ कर
४ कर्काआ की ओर मुड़ गया। वहां से अस्मोन होते हुए
वह मिस्र के नाले पर निकला और उस सिवाने का
अन्त समुद्र हुआ तुम्हारा दक्खिनी सिवाना यही
५ होगा। फिर पूरबी सिवाना यर्दन के मुहाने तक खारा
ताल ही ठहरा और उत्तर दिशा का सिवाना यर्दन के
मुहाने के पास के ताल के कोल से आरंभ करके,
६ बेथाग्ला को चढ़ बेतराबा की उत्तर ओर होकर
७ रूबेनी बोहनवाले नाम पत्थर लों चढ़ गया। और वही
सिवाना आकोर नाम तराई से दबीर की ओर चढ़ गया
और उत्तर होते हुए गिलगाल की ओर झुका जो नाले
की दक्खिन ओर की अदुम्मीम की चढ़ाई के साम्हने है
वहां से वह एनशेमेश नाम सोते के पास पहुंचकर एन-
८ रोगेल पर निकला। फिर वही सिवाना हिन्नोम के पुत्र
की तराई से होकर यबूस[1] जो यरूशलेम कहावता है
उस की दक्खिन अलंग से चढ़ते हुए उस पहाड़ की
चोटी पर पहुंचा जो पच्छिम ओर हिन्नोम की तराई के
साम्हने और रपाईम की तराई के उत्तरवाले सिरे पर है।
९ फिर वही सिवाना उस पहाड़ की चोटी से नेप्तोह नाम सोते
को चला गया और एप्रोन पहाड़ के नगरों पर निकला
फिर वहां से बाला को जो किर्यत्यारीम भी कहावता है
१० पहुंचा। फिर वह बाला से पच्छिम ओर मुड़कर सेईर
पहाड़ लों पहुंचा और यारीम पहाड़ जो कसालोन भी
कहावता है उस की उत्तरवाली अलंग से होकर बेतशेमेश
११ को उतर गया और वहां से तिम्ना पर निकला। वहां से
वह सिवाना एक्रोन की उत्तरीय अलंग के पास होते हुए
शिक्करोन को गया और बाला पहाड़ होकर यब्नेल पर
निकला और उस सिवाने का अन्त समुद्र का तीर हुआ।
१२ और पच्छिम का सिवाना महासमुद्र का तीर ठहरा।
यहूदियों को जो भाग उन के कुलों के अनुसार मिला
उस की चारों ओर का सिवाना यही हुआ॥

१३ और यपुन्ने के पुत्र कालेब को उस ने यहोवा की
आज्ञा के अनुसार यहूदियों के बीच भाग दिया अर्थात्
किर्यतर्बा जो हेब्रोन भी कहलाता है वह अर्बा अनाक का
१४ पिता था। और कालेब ने वहां से शेशै अहीमन और
१५ तल्मै नाम अनाक के तीनों पुत्रों को निकाल दिया। फिर
वहां से वह दबीर के निवासियों पर चढ़ गया अगले
१६ समय तो दबीर का नाम किर्यत्सेपेर था। और कालेब ने
कहा जो किर्यत्सेपेर को मार के ले ले उसे मैं अपनी बेटी
१७ अकसा को ब्याह दूंगा। सो कालेब के भाई ओत्नीएल
कनजी ने उसे ले लिया और उस ने उसे अपनी बेटी
१८ अकसा को ब्याह दिया। और जब वह उस के पास आई
तब उस ने उस को पिता से कुछ भूमि मांगने को उभारा
फिर वह अपने गदहे पर से उतर पड़ी और कालेब ने
१९ उस से पूछा तू क्या चाहती है। वह बोली मुझे आशी-
र्वाद दे तू ने मुझे दक्खिन देश में की कुछ भूमि तो दी
है मुझे जल के सोते भी दे सो उस ने ऊपरला और
निचला दोनों सोते उसे दिये॥

२० यहूदियों के गोत्र का भाग तो उन के कुलों के
अनुसार यही ठहरा॥

२१ और यहूदियों के गोत्र के किनारेवाले नगर दक्खिन
देश में एदोम के सिवाने की ओर ये हैं अर्थात् कबसेल
२२, २३ एदेर यागूर, कीना दीमोना अदादा, केदेश

(१) मूल में यबूसी।

२४, २५ हासोर यिलान, जीप तेलेम बालोत, हासोहदत्ता
२६ करिय्योथेस्रोन जो हासोर भी कहावता है, अमाम शमा
२७, २८ मोलादा, हसर्गद्दा हेशमोन बेतपालेत, हसर्शूआल
२९, ३० बेर्शेबा बिज्योत्या, बाला इय्यीम एसेम, एलतोलद
३१, ३२ कसील होर्मा, सिकलग मदमन्ना सनसन्ना, लबाओत शिल्हीम ऐन और रिम्मोन ये सब नगर उन्तीस हैं और इन के गांव भी हैं॥
३३ और नीचे के देश में ये हैं अर्थात् एशताओल
३४, ३५ सोरा अशना, जानोह एनगन्नीम तप्पूह एनाम, यर्मूत
३६ अदुल्लाम सोको अजेका, शारैम अदीतैम गदेरा और गदेरोतैम ये सब चौदह नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
३७, ३८ फिर सनान हदाशा मिगदलगाद, दिलान
३९, ४० मिस्पे योक्तेल, लाकीश बोस्कत एग्लोन, कब्बोन
४१ लहमास कितलीश, गदेरोत बेतदागोन नामा और मक्केदा ये सोलह नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
४२, ४३ फिर लिब्ना ऐतेर आशान, यिप्ताह अशना नसीब,
४४ कीला अकजीब और मारेशा ये नव नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
४५, ४६ फिर नगरों और गांवों समेत एक्रोन, और एक्रोन से ले समुद्र लों अपने अपने गांवों समेत जितने नगर अशदोद की अलंग पर हैं॥
४७ फिर अपने अपने नगरों और गांवों समेत अशदोद और अज्जा वरन मिस्र के नाले तक और महासमुद्र के तीर लों जितने नगर हैं॥
४८ और पहाड़ी देश में ये हैं अर्थात् शामीर यत्तीर
४९ सोको, दन्ना किर्यत्सन्ना जो दबीर भी कहावता है,
५०, ५१ अनाब एशतमो आनीम, गोशेन होलोन और गीलो ये ग्यारह नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
५२, ५३ फिर अराब दूमा एशान, यानीम बेतप्पूह
५४ अपेका, हुमता किर्यतर्बा जो हेब्रोन भी कहावता है और सीओर ये नव नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
५५, ५६ फिर माओन कर्मेल जीप यूता, यिज्रेल योकदाम
५७ जानोह, कैन गिबा और तिम्ना ये दस नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
५८, ५९ फिर हलहूल बेतसूर गदोर, मरात बेतनोत और एलतकोन ये छः नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
६० फिर किर्यतबाल जो किर्यत्यारीम भी कहावता और रब्बा ये दो नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥
६१ और जंगल में ये नगर हैं अर्थात् बेतराबा मिद्दीन
६२ सकाका, निबशान लोनवाला नगर और एनगदी ये छः नगर हैं और इन के गांव भी हैं॥

यरूशलेम के निवासी यबूसियों को यहूदी न निकाल ६३ सके सो आज के दिन लों यबूसी यहूदियों के संग यरूशलेम में रहते हैं॥

१६.

फिर यूसुफ की सन्तान का भाग चिट्ठी डालने से ठहराया गया उन का सिवाना यरीहो के पास की यर्दन नदी से अर्थात् पूरब ओर यरीहो के जल से आरंभ होकर उस पहाड़ी देश होते हुए जो जंगल में है बेतेल को पहुंचा। वहां से वह २ लूज लों पहुंचा और एरेकियों के सिवाने होते हुए अतारोत पर जा निकला, और पच्छिम ओर यपलेतियों ३ के सिवाने उतरके फिर नीचेवाले बेथोरोन के सिवाने होके गेजेर को पहुंचा और समुद्र पर निकला। सो मनश्शे ४ और एप्रैम नाम यूसुफ के दोनों पुत्रों की सन्तान ने अपना अपना भाग लिया। एप्रैमियों का सिवाना उन ५ के कुलों के अनुसार यह ठहरा अर्थात् उन के भाग का सिवाना पूरब से आरंभ होकर अत्रोतदार से होते हुए ऊपरले बेथोरोन लों पहुंचा। और उत्तरी सिवाना पच्छिम ६ ओर के मिकमतात से आरंभ होकर पूरब ओर मुड़कर तानतशीलो को पहुंचा और उस के पास से होते हुए यानोह लों पहुंचा। फिर यानोह से वह अतारोत और ७ नारा को उतरता हुआ यरीहो के पास हो कर यर्दन पर निकला। फिर वही सिवाना तप्पूह से निकल कर और ८ पच्छिम ओर जाकर काना के नाले तक होकर समुद्र पर निकला। एप्रैमियों के गोत्र का भाग उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा। और मनश्शेइयों के भाग के बीच ९ भी कई एक[1] नगर अपने अपने गांवों समेत एप्रैमियों के लिये अलग किये गये। पर जो कनानी गेजेर में बसे १० थे उन को एप्रैमियों ने वहां से न निकाला सो वे कनानी उन के बीच आज के दिन लों बसे हैं और बेगारी में दास का सा काम करते हैं॥

१७.

फिर यूसुफ के जेठे मनश्शे के गोत्र का भाग चिट्ठी डालने से यह ठहरा। मनश्शे का जेठा गिलाद का पिता माकीर जो योद्धा था इस कारण उस के वंश को गिलाद और बाशान मिला। सो यह भाग दूसरे मनश्शेइयों के लिये उन के कुलों २ के अनुसार ठहरा अर्थात् अबीएजेर हेलेक असीएल शेकेम हेपेर और शमीदा जो अपने अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश में के पुरुष थे उन के अलग अलग वंशों के लिये ठहरा। पर हेपेर जो गिलाद का ३

(१) मूल में सब।

पुत्र माकीर का पोता और मनश्शे का परपोता था उस के पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं बेटियां ही हुई और उन के नाम महला नोआ होग्ला मिलका और तिर्सा हैं। ४ सो वे एलाजार याजक नून के पुत्र यहोशू और प्रधानों के पास जाकर कहने लगीं यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी कि वह हम को हमारे भाइयों के बीच भाग दे। सो यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्हें उन के ५ चचाओं के बीच भाग दिया। सो मनश्शे को यर्दन पार गिलाद देश और बाशान को छोड़ दस भाग मिले। ६ क्योंकि मनश्शेइयों के बीच मनश्शेई स्त्रियों को भी भाग मिला और दूसरे मनश्शेइयों को गिलाद देश मिला। ७ और मनश्शे का सिवाना आशेर से ले मिकमतात लों पहुंचा जो शकेम के साम्हने है फिर वह दक्खिन ओर ८ बढ़कर एनतप्पूह के निवासियों तक पहुंचा। तप्पूह की भूमि तो मनश्शे को मिली पर तप्पूह नगर जो मनश्शे ९ के सिवाने पर बसा है, सो एप्रैमियों का ठहरा। फिर वहां से वह सिवाना काना के नाले तक उतर के उस की दक्खिन ओर तक पहुंच गया ये नगर यद्यपि मनश्शे के नगरों के बीच में थे तौभी एप्रैम के ठहरे और मनश्शे का सिवाना उस नाले की उत्तर ओर से जाकर समुद्र १० पर निकला। दक्खिन ओर का देश तो एप्रैम को और उत्तर ओर का मनश्शे को मिला और उस का सिवाना समुद्र ठहरा और वे उत्तर ओर आशेर से और पूरब ओर ११ इस्साकार से लगे। और मनश्शे को इस्साकार और आशेर अपने अपने नगरों समेत बेतशान यिबलाम और अपने नगरों समेत दोर के निवासी और अपने नगरों समेत एनदोर के निवासी और अपने नगरों समेत तानाक के निवासी और अपने नगरों समेत मगिद्दो के निवासी १२ ये तीनों ऊंचे स्थानों पर बसे हैं। पर मनश्शेई उन नगरों के निवासियों को उन में से न निकाल सके सो वे १३ कनानी उस देश में बरियाई से बसे रहे। तौभी जब इस्राएली सामर्थी हो गये तब कनानियों से बेगारी तो कराने लगे पर उन को पूरी रीति से निकाल न दिया॥

१४ यूसुफ की सन्तान यहोशू से कहने लगी हम तो गिनती में बहुत हैं क्योंकि अब लों यहोवा हमें आशिष देता आया है फिर तू ने हमारे भाग के लिये चिट्ठी डाल १५ कर क्यों एक ही अंश दिया है। यहोशू ने उन से कहा यदि तुम गिनती में बहुत हो और एप्रैम का पहाड़ी देश तुम्हारे लिये छोटा हो तो परिज्जयों और रपाइयों का देश १६ जो बन है उस में जाकर पेड़ों को काट डालो। यूसुफ की सन्तान ने कहा वह पहाड़ी देश हमारे लिये छोटा है और क्या बेतसान और उस के नगरों में रहनेहारे क्या यिज्रेल की तराई में रहनेहारे जितने कनानी नीचे के देश में रहते हैं उन सभों के पास लोहे के रथ हैं। फिर १७ यहोशू ने क्या एप्रैमी क्या मनश्शेई अर्थात् यूसुफ के सारे घराने से कहा हां तुम लोग तो गिनती में बहुत हो और तुम्हारा बड़ा सामर्थ्य भी है सो तुम को केवल एक ही भाग न मिलेगा। पहाड़ी देश भी तुम्हारा हो जाएगा १८ वह बन तो है पर उस के पेड़ काट डालो तब उस के आस पास का देश भी तुम्हारा हो जाएगा क्योंकि चाहे कनानी सामर्थी हों और उन के पास लोहे के रथ भी हों तौभी तुम उन्हें वहां से निकाल सकोगे॥

१८. फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली ने शीलो में इकट्ठी होकर वहां मिलापवाले तंबू को खड़ा किया क्योंकि देश उन के वश में आ गया था। और इस्राएलियों में से सात गोत्रों के २ लोग अपना अपना भाग बिना पाये रह गये थे। सो ३ यहोशू ने इस्राएलियों से कहा जो देश तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है उसे अपने अधिकार में कर लेने में तुम कब लों ढिलाई करते रहोगे। अब ४ गोत्र पीछे तीन मनुष्य ठहरा लो और मैं उन्हें इस लिये भेजूंगा कि वे चलकर देश में घूमें फिरें और अपने अपने गोत्र के भाग के प्रयोजन के अनुसार उस का हाल लिख लिखकर मेरे पास लौट आएं। और वे देश के सात भाग ५ लिखें यहूदी तो दक्खिन ओर अपने भाग में और यूसुफ के घराने के लोग उत्तर ओर अपने भाग में रहें। और ६ लेवीयों का तुम्हारे बीच कोई भाग न होगा क्योंकि यहोवा का दिया हुआ याजकपद ही उन का भाग है और गाद रूबेन और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग यर्दन की पूरब ओर यहोवा के दास मूसा का दिया हुआ अपना अपना भाग पा चुके हैं। और तुम देश के सात भाग ७ लिखकर मेरे पास ले आओ और मैं यहां तुम्हारे लिये अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने चिट्ठी डालूंगा। सो ८ वे पुरुष उठकर चल दिये और जो उस देश का हाल लिखने को चले उन्हें यहोशू ने यह आज्ञा दी कि जाकर देश में घूमो फिरो और उस का हाल लिखकर मेरे पास लौट आओ और मैं यहां शीलो में यहोवा के साम्हने तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूंगा। सो वे पुरुष चल दिये और उस ९ देश में घूमे और उस के नगरों के सात भाग कर उन का हाल पुस्तक में लिखकर शीलो की छावनी में यहोशू के पास आये। तब यहोशू ने शीलो में यहोवा के साम्हने १० उन के लिये चिट्ठियां डालीं और वहीं यहोशू ने इस्राएलियों को उन के भागों के अनुसार देश बांट दिया॥

और बिन्यामीनियों के गोत्र की चिट्ठी उन के कुलों ११

के अनुसार निकली और उन का भाग यहूदियों और
१२ यूसुफियों के बीच पड़ा। सो उन का उत्तरी सिवाना
यर्दन से आरंभ हुआ और यरीहो की उत्तर अलंग से
चढ़ते हुए पच्छिम ओर पहाड़ी देश में होकर बेतावेन के
१३ जंगल में निकला। वहां से वह लूज को पहुंचा जो बेतेल
भी कहावता है और लूज की दक्खिन अलंग से होते हुए
निचले बेथोरोन की दक्खिन ओर के पहाड़ के पास हो
१४ अत्रोतद्दार को उतर गया। फिर पच्छिमी सिवाना मुड़के
बेथोरोन के साम्हने और उस की दक्खिन ओर के पहाड़
से होते हुए किर्यतबाल नाम यहूदियों के एक नगर पर
निकला जो किर्यत्यारीम भी कहावता है पच्छिम का
१५ सिवाना यही ठहरा। फिर दक्खिन अलंग का सिवाना
पच्छिम से आरंभ कर किर्यत्यारीम के सिरे से निकल कर
१६ नेप्तोह के सोते पर पहुंचा, और उस पहाड़ के सिरे पर
उतरा जो हिन्नोम के पुत्र की तराई के साम्हने और
रपाईम नाम तराई की उत्तर ओर है वहां से वह हिन्नोम
की तराई में अर्थात् यबूस की दक्खिन अलंग होकर
१७ एनरोगेल को उतरा। वहां से वह उत्तर ओर मुड़कर
एनशेमेश को निकल उस गलीलोत की ओर गया जो
अदुम्मीम की चढ़ाई के साम्हने है फिर वहां से वह
१८ रूबेन के पुत्र बोहन के पत्थर को उतर गया। वहां से
वह उत्तर ओर जाकर अराबा के साम्हने के पहाड़ की
१९ अलंग से होते हुए अराबा को उतरा। वहां से वह
सिवाना बेथोग्ला की उत्तर अलंग से जाकर खारे ताल
की उत्तर ओर के कोल में यर्दन के मुहाने पर[१] निकला
२० दक्खिन का सिवाना यही ठहरा। और पूरब ओर का
सिवाना यर्दन ही ठहरा। बिन्यामीनियों का भाग चारों
ओर के सिवानों सहित उन के कुलों के अनुसार यही
२१ ठहरा। और बिन्यामीनियों के गोत्र को उन के कुलों के
अनुसार ये नगर मिले अर्थात यरीहो बेथोग्ला एमेक्कसीस,
२२,२३ बेतराबा समारैम बेतेल, अव्वीम पारा ओप्रा,
२४ कपरम्मोनी ओप्नी और गेबा ये बारह नगर और इन के
२५,२६ गांव मिले। फिर गिबोन रामा बेरोत, मिस्पे
२७,२८ कपीरा मोसा, रेकेम यिर्पेल तरला, सेला एलेप
यबूस जो यरूशलेम भी कहावता है गिबत और किर्यत
२९ ये चौदह नगर और इन के गांव उन्हें मिले। बिन्यामीनियों
का भाग उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा॥

१९. **दूसरी** चिट्ठी शिमोन के नाम पर अर्थात् शिमोनियों के कुलों
के अनुसार उन के गोत्र के नाम पर निकली और उन
का भाग यहूदियों के भाग के बीच ठहरा। उन के भाग २
में ये नगर हैं अर्थात् बेर्शेबा शेबा मोलादा, हसर्शूआल ३
बाला एसेम, एलतोलद बतूल होर्मा, सिक्लग बेत्मर्काबोत ४,५
हसर्शूसा, बेतलबाओत और शारूहेन ये तेरह नगर और ६
इन के गांव उन्हें मिले। फिर ऐन रिम्मोन एतेर और ७
आशान ये चार नगर गांवों समेत, और बालत्बेर जो ८
दक्खिन देश का रामा भी कहावता है उस लों इन
नगरों के चारों ओर के सब गांव भी उन्हें मिले। शिमोनियों
के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यही
ठहरा। शिमोनियों का भाग तो यहूदियों के अंश में से ९
दिया गया क्योंकि यहूदियों का भाग उन के लिये बहुत
था इस कारण शिमोनियों का भाग उन्हीं के भाग के
बीच ठहरा॥

तीसरी चिट्ठी जबूलूनियों के कुलों के अनुसार उन के १०
नाम पर निकली और उन के भाग का सिवाना सारीद
तक पहुंचा। और उन का सिवाना पच्छिम और मरला ११
को चढ़कर दब्बेशेत को पहुंचा और योकनाम के साम्हने
के नाले लों पहुंच गया। फिर सारीद से वह सूर्य्योदय १२
की ओर मुड़कर किसलोत्ताबोर के सिवाने लों पहुंचा और
वहां से बढ़ते बढ़ते दाबरत में निकला और यापी की ओर
चढ़ा। वहां से वह पूरब और आगे बढ़कर गथेपेर और १३
इत्कासीन को गया और उस रिम्मोन में निकला जो नेआ
से लगा है। वहां से वह सिवाना उस की उत्तर ओर १४
मुड़कर हन्नातोन पर पहुंचा और यिप्तहेल की तराई में
निकला। कत्तात नहलाल शिम्रोन यिदला और बेतलेहेम १५
ये बारह नगर उन के गांवों समेत उसी भाग के ठहरे।
जबूलूनियों का भाग उन के कुलों के अनुसार यही ठहरा १६
और उस में अपने अपने गांवों समेत ये ही नगर हैं॥

चौथी चिट्ठी इस्साकारियों के कुलों के अनुसार उन १७
के नाम पर निकली। और उन का सिवाना यिज्रेल १८
कसुल्लोत शूनेम, हपारैम शीओन अनाहरत, रब्बीत १९,२०
किश्योन एबेस, रेमेत एनगन्नीम एनहद्दा और बेत्पस्सेस २१
तक पहुंचा। फिर वह सिवाना ताबोरशहसूमा और २२
बेतशेमेश लों पहुंचा और उन का सिवाना यर्दन नदी
पर निकला सो उन को सोलह नगर अपने अपने गांवों
समेत मिले। कुलों के अनुसार इस्साकारियों के गोत्र का २३
भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा॥

पांचवीं चिट्ठी आशेरियों के गोत्र के कुलों के अनुसार २४
उन के नाम पर निकली। उन के सिवाने में हेल्कत २५
हली बेतेन अक्षाप, अलम्मेल्लेक अमाद और मिशाल २६
थे और वह पच्छिम ओर कर्म्मेल लों और शीहोर्लिब्नात
लों पहुंचा। फिर वह सूर्य्योदय की ओर मुड़कर बेतदागोन २७

(१) मूल में दक्खिनी सिरे पर।

को गया और जबूलून के भाग लों और यिसहेल की तराई से उत्तर ओर होकर बेतेमेक और नीएल लों पहुंचा
२८ और उत्तर ओर जाकर काबूल पर निकला। और वह एब्रोन रहोब हम्मोन और काना से होकर बड़े सीदोन
२९ को पहुंचा। वहां से वह सिवाना मुड़कर रामा से होते हुए सोर नाम गढ़वाले नगर लों चला गया फिर सिवाना होसा की ओर मुड़कर और अकजीब के पास के देश में
३० होकर समुद्र पर निकला। उम्मा अपेक और रहोब भी उन के भाग में ठहरे सो बाईस नगर अपने अपने गांवों
३१ समेत उनको मिले। कुलों के अनुसार आशेरियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा॥

३२ छठवीं चिट्ठी नप्तालीयों के कुलों के अनुसार उन
३३ के नाम पर निकली। और उन का सिवाना हेलेप से और सानन्नीम में के बांज वृक्ष से अदामीनेकेब और यब्नेल से होकर और लक्कूम को जाकर यर्दन पर निकला।
३४ वहां से वह सिवाना पच्छिम ओर मुड़कर अजनोत्ताबोर को गया और वहां से हुक्कोक को गया और दक्खिन ओर जबूलून के भाग लों और पच्छिम ओर आशेर के भाग लों और सूर्योदय की ओर यहूदा के भाग
३५ के पास की यर्दन नदी पर पहुंचा। और उन के गढ़वाले नगर ये हैं अर्थात् सिद्दीम सेर हम्मत रक्कत
३६,३७ किन्नेरेत, अदामा रामा हासोर, केदेश एद्रेई
३८ एन्हासेर, यिरोन, मिगदलेल, होरेम, बेतनात और बेतशेमेश ये उन्नीस नगर गांवों समेत उन को मिले।
३९ कुलों के अनुसार नप्तालीयों के गोत्र का भाग नगरों और उन के गांवों समेत यही ठहरा॥

४० सातवीं चिट्ठी कुलों के अनुसार दानियों के गोत्र
४१ के नाम पर निकली। और उन के भाग के सिवाने में
४२ सोरा एश्ताओल ईरशेमेश, शालब्बीन अय्यालोन
४३,४४ यितला, एलोन तिम्ना एक्रोन, एलतके गिब्बतोन
४५,४६ बालात, यहूद बनेबरक गत्रिम्मोन, मेयर्कोन और रक्कोन ठहरे और यापो के साम्हने का सिवाना भी उन का
४७ था। और दानियों का भाग इस से[1] अधिक हो गया अर्थात् दानी लेशेम पर चढ़कर उस से लड़े और उसे लेकर तलवार से मार लिया और उस को अपने अधिकार में करके उस में बस गये और अपने मूलपुरुष के नाम पर
४८ लेशेम का नाम दान रक्खा। कुलों के अनुसार दानियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा॥

४९ जब देश का सिवानों के अनुसार बांटा जाना निपट गया तब इस्राएलियों ने नून के पुत्र यहोशू को
५० भी अपने बीच में एक भाग दिया। यहोवा के कहे के अनुसार उन्हों ने उस को उस का मांगा हुआ नगर दिया यह एप्रैम के पहाड़ी देश में का तिम्नत्सेरह है और वह उस नगर को बसाकर उस में रहने लगा॥

५१ जो जो भाग एलाजार याजक और नून के पुत्र यहोशू और इस्राएलियों के गोत्रों के घरानों के पितरों के मुख्य मुख्य पुरुषों ने शीलो में मिलापवाले तंबू के द्वार पर यहोवा के साम्हने चिट्ठी डाल डालके बांट दिये सो ये ही हैं निदान उन्हों ने देश बांटना निपटा दिया॥

(शरण नगरों का ठहराया जाना)

२०. फिर यहोवा ने यहोशू से कहा,
२ इस्राएलियों से यह कह कि मैं ने मूसा के द्वारा तुम से शरण नगरों की जो चर्चा की थी
३ उस के अनुसार उन को ठहरा लो, जिस से जो कोई भूल से बिन जाने किसी को मार डाले वह उन में से किसी में भाग जाए सो वे नगर खून के पलटा लेनेहारे से बचने
४ के लिए तुम्हारे शरणस्थान ठहरें। वह उन नगरों में से किसी को भाग जाय और उस नगर के फाटक में खड़ा होकर उस के पुरनियों को अपना मुकद्दमा कह सुनाए और वे उस को अपने नगर में अपने पास टिका लें और उसे कोई स्थान दें, जिस में वह उन के साथ रहे।
५ और यदि खून का पलटा लेनेहारा उस का पीछा करे तो वे यह जानकर कि उस ने अपने पड़ोसी को बिन जाने और पहिले उस से बिन बैर रक्खे मारा उस खूनी
६ को उस के हाथ में न दें। और जब लों वह मण्डली के साम्हने न्याय के लिये खड़ा न हो और जब लों उन दिनों का महायाजक न मर जाए तब लों वह उसी नगर में रहे उस के पीछे वह खूनी अपने नगर को लौटकर जिस से वह भाग आया हो अपने घर में फिर
७ रहने पाए। सो उन्हों ने नप्ताली के पहाड़ी देश में गालील के केदेश को और एप्रैम के पहाड़ी देश में शकेम को और यहूदा के पहाड़ी देश में किर्यतर्बा को
८ जो हेब्रोन भी कहावता है पवित्र ठहराया। और यरीहो के पास के यर्दन की पूरब ओर उन्हों ने रूबेन के गोत्र के भाग में बेसेर को जो जंगल में चौरस भूमि पर बसा है और गाद के गोत्र के भाग में गिलाद के रामोत को और मनश्शे के गोत्र के भाग में बाशान के गोलान को
९ ठहराया। सारे इस्राएलियों के लिये और उन से बीच रहनेहारे परदेशियों के लिये भी जो नगर इस मनसा से ठहराये गये कि जो कोई किसी प्राणी को भूल से मार डाले सो उन में से किसी में भाग जाए और जब लों न्याय के लिये मण्डली के साम्हने खड़ा न हो तब लों खून का पलटा लेनेहारा उसे मार डालने न पाए, सो ये ही हैं॥

(१) मूल में उन से।

(लेवीयों को बसने के नगरों का दिया जाना)

२१. तब लेवीयों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष एलाजार याजक और नून के पुत्र यहोशू और इस्राएली गोत्रों के पितरों २ के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों के पास आकर, कनान देश के शीलो नगर में कहने लगे यहोवा ने मूसा से हमें बसने के लिये नगर और हमारे पशुओं के लिये उन्हीं ३ नगरों की चराइयां भी देने की आज्ञा दिलाई थी। सो इस्राएलियों ने यहोवा के कहे के अनुसार अपने अपने भाग में से लेवीयों को चराइयों समेत ये नगर दिये॥

४ कहातियों के कुलों के नाम पर चिट्ठी निकली सो लेवीयों में से हारून याजक के वंश को यहूदी शिमोन और बिन्यामीन के गोत्रों के भागों में से तेरह नगर मिले॥

५ और बाकी कहातियों को एप्रैम के गोत्र के कुलों और दान के गोत्र और मनश्शे के आधे गोत्र के भागों में से चिट्ठी डाल डालकर दस नगर दिये गये॥

६ और गेर्शोनियों को इस्साकार के गोत्र के कुलों और आशेर और नप्ताली के गोत्रों के भागों में से और मनश्शे के उस आधे गोत्र के भागों में से भी जो बाशान में था चिट्ठी डाल डालकर तेरह नगर दिये गये॥

७ और कुलों के अनुसार मरारीयों को रूबेन गाद और जबूलून के गोत्रों के भागों में से बारह नगर दिये गये॥

८ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा से दिलाई थी उस के अनुसार इस्राएलियों ने लेवीयों को चराइयों समेत ये ९ नगर चिट्ठी डाल डालकर दिये। उन्हों ने यहूदियों और शिमोनियों के गोत्रों के भागों में से ये नगर जिन के नाम १० लिखे हैं दिये। ये नगर लेवीय कहाती कुलों में से हारून के वंश के लिये थे क्योंकि पहिली चिट्ठी उन्हीं के ११ नाम पर निकली थी। अर्थात् उन्हों ने उन को यहूदा के पहाड़ी देश में चारों ओर की चराइयों समेत किर्यतर्बा नगर दे दिया जो अनाक के पिता अर्बा के नाम पर कहलाया १२ और हेब्रोन भी कहावता है, पर उस नगर के खेत और उस के गांव उन्हों ने यपुन्ने के पुत्र कालेब को उस की १३ निज भूमि करके दे दिये। सो उन्हों ने हारून याजक के वंश को चराइयों समेत खूनी के शरण के नगर हेब्रोन १४ और अपनी अपनी चराइयों समेत लिब्ना, यत्तीर एश- १५,१६ तमो, होलोन दबीर, ऐन युत्ता और बेतशेमेश दिये सो उन दोनों गोत्रों के भागों में से नव नगर दिये गये। १७ और बिन्यामीन के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत ये चार नगर दिये गये अर्थात् गिबोन गेबा, अनातोत और अल्मोन, सो हारूनवंशी याजकों को १८,१९ तेरह नगर और उन की चराइयां मिलीं॥

२० फिर बाकी कहाती लेवीयों के कुलों के भाग के नगर चिट्ठी डाल डालकर एप्रैम के गोत्र के भाग में से दिये २१ गये। अर्थात् उन को चराइयों समेत एप्रैम के पहाड़ी देश में खूनी के शरण लेने का शकेम नगर दिया गया २२ फिर अपनी अपनी चराइयों समेत गेजेर, किबसैम और २३ बेथोरोन ये चार नगर दिये गये। और दान के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत एलतके २४ गिब्बतोन, अय्यालोन और गत्रिम्मोन ये चार नगर दिये २५ गये। और मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत तानाक और गत्रिम्मोन ये दो नगर २६ दिये गये। सो बाकी कहातियों के कुलों के सब नगर चराइयों समेत दस ठहरे॥

२७ फिर लेवीयों के कुलों में के गेर्शोनियों को मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण का नगर बाशान का गोलान और बेश- २८ तरा ये दो नगर दिये गये। और इस्साकार के गोत्र के भाग २९ में से अपनी अपनी चराइयों समेत किश्योन दाबरत, यर्मूत ३० और एनगन्नीम ये चार नगर दिये गये। और आशेर के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत ३१ मिशाल अब्दोन, हेल्कात और रहोब ये चार नगर दिये ३२ गये। और नप्ताली के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण का नगर गालील का केदेश फिर हम्मोतदोर और कर्तान ये तीन नगर दिये ३३ गये। गेर्शोनियों के कुलों के अनुसार उन के सब नगर अपनी अपनी चराइयों समेत ठहरे॥

३४ फिर बाकी लेवीयों अर्थात् मरारीयों के कुलों को जबूलून के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों ३५ समेत योक्नाम कर्ता, दिम्ना और नहलाल ये चार नगर ३६ दिये गये। और रूबेन के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी ३७ चराइयों समेत बेसेर यहसा, कदेमोत और मेपात ये चार ३८ नगर दिये गये। और गाद के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण का नगर गिलाद में का ३९ रामोत फिर महनैम, हेशबोन और याजेर जो सब मिला- ४० कर चार नगर हैं दिये गये। लेवीयों के बाकी कुलों अर्थात् मरारीयों के कुलों के अनुसार उन के सब नगर ये ही ठहरे सो उन को बारह नगर चिट्ठी डाल डालकर दिये गये॥

४१ इस्राएलियों की निज भूमि के बीच लेवीयों के सब नगर अपनी अपनी चराइयों समेत अड़तालीस ४२ ठहरे। ये सब नगर अपने अपने चारों ओर की चराइयों के साथ ठहरे इन सब नगरों की यही दशा थी॥

४३ यों यहोवा ने इस्राएलियों को वह सारा देश दिया जिसे उस ने उन के पितरों को किरिया खाकर देने कहा था और वे उस के अधिकारी होकर उस में बस
४४ गये। और यहोवा ने उन सब बातों के अनुसार जो उस ने उन के पितरों से किरिया खाकर कही थीं उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया और उन के शत्रुओं में से कोई भी उन के साम्हने खड़ा न रहा यहोवा ने उन सभों को
४५ उन के वश में कर दिया। जितनी भलाई की बातें यहोवा ने इस्राएल के घराने से कही थीं उन में से कोई बात न छूटी सब की सब पूरी हुईं॥

२२.

उस समय यहोशू ने रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों
२ को बुलवा कर कहा, जो जो आज्ञा यहोवा के दास मूसा ने तुम्हें दी थीं सो सब तुम ने मानी हैं और जो जो आज्ञा मैं ने तुम्हें दी हैं उन सभों को भी तुम ने
३ माना है। आज के दिन लों यह जो बहुत समय बीता है इस में तुम ने अपने भाइयों को कभी नहीं त्यागा अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा तुम ने चौकसी से मानी
४ है। और अब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयों को अपने वचन के अनुसार विश्राम दिया है सो अब तुम लौट के अपने अपने डेरों को और अपनी निज भूमि में जिसे यहोवा के दास मूसा ने यर्दन पार तुम्हें दिया चले
५ जाओ। इतना हो कि इस में पूरी चौकसी करना कि जो आज्ञा और व्यवस्था यहोवा के दास मूसा ने तुम को दी उस को मान कर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रक्खो उस के सारे मार्गों पर चलो उस की आज्ञाएं मानो उस की भक्ति में लवलीन रहो और अपने सारे मन और सारे
६ जीव से उस की सेवा करो। तब यहोशू ने उन्हें अशीर्वाद देकर बिदा किया और वे अपने अपने डेरे को चले॥
७ मनश्शे के आधे गोत्रियों को मूसा ने बाशान में भाग दिया था पर दूसरे आधे गोत्र को यहोशू ने उन के भाइयों के बीच यर्दन की पच्छिम ओर भाग दिया। उन को जब यहोशू ने बिदा किया कि अपने अपने डेरे को जाएं तब
८ इन्हें आशीर्वाद देकर कहा, बहुत से पशु और चांदी सोना पीतल लोहा और बहुत से वस्त्र और बहुत धन संपत्ति लिये हुए अपने अपने डेरे को लौट जाओ और अपने शत्रुओं के यहां की लूट अपने भाइयों के संग बांट लेना॥
९ तब रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे गोत्री इस्राएलियों के पास से अर्थात् कनान देश के शीलो नगर से अपनी गिलाद नाम निज भूमि में जो मूसा से दिलाई हुई यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन की निज भूमि हो गई थी जाने की मनसा से लौट गये। और
१० जब रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे गोत्री यर्दन की उस तराई में पहुंचे जो कनान देश में है तब उन्हों ने वहां
११ देखने के योग्य एक बड़ी वेदी बनाई। तब इस का समाचार इस्राएलियों के सुनने में आया कि रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने कनान देश के साम्हने यर्दन की तराई में अर्थात् उस के उस पार जो
१२ इस्राएलियों का है एक वेदी बनाई है। जब इस्राएलियों ने यह सुना तब इस्राएलियों की सारी मण्डली उन से लड़ने के लिये चढ़ाई करने को शीलो में इकट्ठी हुई॥
१३ तब इस्राएलियों ने रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों के पास गिलाद देश में एलाजार याजक के
१४ पुत्र पीनहास को, और उस के संग दस प्रधानों को अर्थात् इस्राएल के एक एक गोत्र में से पितरों के घरानों के एक एक प्रधान को भेजा और वे इस्राएल के हजारों
१५ में अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे। सो वे गिलाद देश में रूबेनियों गादियों और मनश्शे के
१६ आधे गोत्रियों के पास जाकर कहने लगे, यहोवा की सारी मण्डली यों कहती है कि यह क्या विश्वासघात है जो तुम ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का किया है। आज जो तुम ने एक वेदी बना ली है इस में तुम ने उस के पीछे चलना छोड़कर उस के विरुद्ध बलवा किया
१७ है। देखो पोर के विषय का अधर्म्म यद्यपि यहोवा की मण्डली को भारी दण्ड मिला तौ भी आज के दिन लों हम उस अधर्म्म से शुद्ध नहीं हुए क्या वह तुम्हारे लेखे
१८ ऐसा थोड़ा है, कि आज तुम यहोवा के पीछे चलना छोड़ देते हो। आज तुम यहोवा से फिर जाते और कल वह
१९ इस्राएल की सारी मण्डली से क्रोधित होगा। पर यदि तुम्हारी निज भूमि अशुद्ध हो तो पार आकर यहोवा की निज भूमि में जहां यहोवा का निवास रहता है हम लोगों के बीच अपनी अपनी निज भूमि कर लो पर हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी को छोड़ और कोई वेदी बनाकर न तो यहोवा से फिर जाओ और न हम से।
२० देखो जब जेरही आकान ने अर्पण की हुई वस्तु के विषय विश्वासघात किया तब क्या यहोवा का इस्राएल की सारी मण्डली पर क्रोध न भड़का और उस पुरुष के अधर्म का प्राणदण्ड अकेले उसी को न मिला॥
२१ तब रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने इस्राएल के हजारों के मुख्य पुरुषों को यह उत्तर दिया
२२ कि, यहोवा जो ईश्वर बरन परमेश्वर है सोई ईश्वर परमेश्वर यहोवा इस को जानता है और इस्राएल भी इसे जान ले कि यदि यहोवा से फिरके वा उस का

विश्वासघात करके हम ने यह काम किया हो तो आज २३ हम न बचें। यदि हम ने वेदी को इसलिये बनाया हो कि यहोवा के पीछे चलना छोड़ें वा इसलिये कि उस पर होमबलि अन्नबलि वा मेलबलि चढ़ाएं तो यहोवा २४ आप इस का लेखा ले। हम ने इसी चिन्ता और मनसा से यह किया है कि क्या जाने आगे को तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से कहने लगे कि तुम को इस्राएल के २५ परमेश्वर यहोवा से क्या काम, हे रूबेनियो हे गादियो यहोवा ने जो हमारे तुम्हारे बीच में यर्दन का सिवाना कर दिया है सो यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं ऐसा कह कर तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान में से यहोवा का २६ भय छुड़ा दे। सो हम ने कहा आओ एक वेदी बना २७ लें वह होमबलि वा मेलबलि के लिये नहीं, पर इसलिये कि हमारे तुम्हारे और हमारे पीछे हमारे तुम्हारे वंश के बीच साक्षी का काम दे। इसलिये कि हम होमबलि मेलबलि और बलिदान चढ़ा कर यहोवा के सन्मुख उस की उपासना करें और आगे के समय तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से न कहने पाए कि यहोवा में तुम्हारा कोई भाग २८ नहीं। सो हम ने कहा जब वे लोग आगे के समय में हम से वा हमारे वंश से यों कहने लगें तब हम उन से कहेंगे कि यहोवा के वेदी के नमूने पर बनी हुई इस वेदी को देखो इसे हमारे पुरखाओं ने होमबलि वा मेलबलि के लिये नहीं बनाया पर इसलिये बनाया था कि हमारे तुम्हारे बीच २९ साक्षी का काम दे। यह हम से दूर रहे कि यहोवा से फिरके आज उस के पीछे चलना छोड़ें और अपने परमेश्वर यहोवा की उस वेदी को छोड़ जो उस के निवास के साम्हने है होमबलि अन्नबलि वा मेलबलि के लिये दूसरी वेदी बनाएं॥

३० रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों की इन बातों को सुन कर पीनहास याजक और उस के संगी मण्डली के प्रधान जो इस्राएल के हजारों के मुख्य ३१ पुरुष थे सो प्रसन्न हुए। और एलाजार याजक के पुत्र पीनहास ने रूबेनियों गादियों और मनश्शेइयों से कहा तुम ने जो यहोवा का ऐसा विश्वासघात नहीं किया इस से हम को आज निश्चय हुआ है कि यहोवा हमारे बीच है सो तुम लोगों ने इस्राएलियों को यहोवा के हाथ से ३२ बचाया है। तब एलाजार याजक का पुत्र पीनहास प्रधानों समेत रूबेनियों और गादियों के पास से गिलाद से कनान देश में इस्राएलियों के पास लौट गया और यह वृत्तान्त ३३ उन को कह सुनाया। तब इस्राएली प्रसन्न हुए और परमेश्वर को धन्य कहा और रूबेनियों और गादियों से लड़ने और उन के रहने का देश उजाड़ने के लिये ३४ चढ़ाई करने की चर्चा फिर न की। और रूबेनियों और गादियों ने यह कहकर कि यह वेदी हमारे और उन के बीच इस बात की साक्षी ठहरी है कि यहोवा ही परमेश्वर है उस वेदी का नाम एद[१] रक्खा॥

(यहोशू के पिछले उपदेश)

२३.

इस के बहुत दिन पीछे जब यहोवा ने इस्राएलियों को उन के चारों ओर के शत्रुओं से विश्राम दिया और यहोशू बूढ़ा और बहुत २ दिनी हुआ था, तब यहोशू सब इस्राएलियों को अर्थात् पुरनियों मुख्य पुरुषों न्याइयों और सरदारों को बुलवा कर कहने लगा मैं तो बूढ़ा और बहुत दिनी हो गया हूं। ३ और तुम ने देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियों से क्या क्या किया है क्योंकि जो तुम्हारी ओर लड़ता आया है सो तुम्हारा ४ परमेश्वर यहोवा है। देखो मैं ने इन बची हुई जातियों को चिट्ठी डाल डालकर तुम्हारे गोत्रों का भाग कर दिया है और यर्दन से लेकर सूर्य्यास्त की ओर के बड़े समुद्र लों रहनेहारी उन सब जातियों को भी ऐसा ही किया है ५ जिन को मैं ने काट डाला है। और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन को तुम्हारे साम्हने से धकियाकर उन के देश से निकाल देगा और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उन के देश के अधिकारी हो जाओगे। ६ सो बहुत हियाव बान्धकर जो कुछ मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उस के करने में चौकसी करना ७ उस से न तो दहिने मुड़ना और न बाएं। ये जो जातियां तुम्हारे बीच रह गई हैं इन के बीच न जाना इन के देवताओं के नामों की चर्चा तक न करना न उन की किरिया खिलाना न उन की उपासना न उन को दण्डवत् ८ करना। परन्तु जैसे आज के दिन लों तुम अपने परमेश्वर ९ यहोवा की भक्ति में लवलीन रहते हो वैसे ही रहा करना। यहोवा ने तुम्हारे साम्हने से बड़ी बड़ी और बलवन्त जातियां निकाली हैं और तुम्हारे साम्हने आज १० के दिन लों कोई ठहर नहीं सका। तुम में से एक मनुष्य हजार मनुष्यों को भगाएगा क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता ११ है। सो अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने की पूरी १२ चौकसी करना। क्योंकि यदि तुम किसी रीति यहोवा से फिरकर इन जातियों के बाकी लोगों से मिलने लगो जो तुम्हारे बीच बचे हुए रहते हैं और इन से ब्याह शादी १३ करके इन के साथ समधियाना करो, तो निश्चय जानो कि आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन जातियों को तुम्हारे साम्हने से न निकालेगा और ये तुम्हारे लिये जाल

(१) अर्थात् साक्षी।

और फंदे और तुम्हारे पांजरों के लिये कोड़े और तुम्हारी आंखों में कांटे ठहरेंगी और अन्त में तुम इस अच्छी भूमि पर से जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है
१४ नाश हो जाओगे। सुनो मैं तो अब सब संसारियों[१] की गति पर जानेहारा हूं और तुम सब अपने अपने हृदय और मन में जानते हो कि जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय कहीं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही वे सब की सब तुम पर घट गई
१५ हैं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही। सो जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की कही हुई सब भलाई की बातें तुम पर घटी हैं वैसे ही यहोवा विपत्ति की सब बातें भी तुम पर घटाते घटाते तुम को इस अच्छी भूमि पर से जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है सत्यानाश
१६ कर डालेगा। जब तुम उस वाचा को जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को आज्ञा देकर अपने साथ बन्धाया है उल्लंघन करके पराये देवताओं की उपासना और उन को दण्डवत् करने लगो तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा और तुम इस अच्छे देश में से जिसे उस ने तुम को दिया है वेग नाश हो जाओगे॥

२४. फिर यहोशू ने इस्राएल के सब गोत्रियों को शकेम में इकट्ठा किया और इस्राएल के पुरनियों मुख्य पुरुषों न्यायियों और सरदारों को बुलवाया और वे परमेश्वर के साम्हने
२ हाजिर हुए। तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि प्राचीन काल में इब्राहीम और नाहोर का पिता तेरह आदि तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे
३ देवताओं की उपासना करते थे। और मैं ने तुम्हारे मूलपुरुष इब्राहीम को महानद के उस पार से ले आकर कनान देश के सब स्थानों में फिराया और उस का वंश
४ बढ़ाया और उसे इसहाक को दिया। फिर मैं ने इसहाक को याकूब और एसाव को दिया और एसाव को मैं ने सेईर नाम पहाड़ी देश दिया कि वह उस का अधिकारी
५ हो पर याकूब बेटों पोतों समेत मिस्र को गया। फिर मैं ने मूसा और हारून को भेजकर उन सब कामों के द्वारा जो मैं ने मिस्र के बीच किये उस देश को मारा और पीछे
६ तुम को निकाल लाया। और मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र में से निकाल लाया और तुम समुद्र के पास पहुंचे और मिस्रियों ने रथ और सवारों को संग ले लाल समुद्र
७ लों तुम्हारा पीछा किया। और जब तुम ने यहोवा की दोहाई दी तब उस ने तुम लोगों और मिस्रियों के बीच अंधियारा कर दिया और उन पर समुद्र को बहाकर उन को डुबो दिया और जो कुछ मैं ने मिस्र में किया उसे तुम लोगों ने अपनी आंखों से देखा फिर तुम बहुत दिन
८ जङ्गल में रहे। पीछे मैं तुम को उन एमोरियों के देश में ले आया जो यर्दन के उस पार बसे थे और वे तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे बश में कर दिया सो तुम उन के देश के अधिकारी हो गये और मैं ने उन को
९ तुम्हारे साम्हने से सत्यानाश कर डाला। फिर मोआब के राजा सिप्पोर का पुत्र बालाक उठकर इस्राएल से लड़ा और तुम्हें स्राप देने के लिये बोर के पुत्र बिलाम
१० को बुलवा भेजा। पर मैं ने बिलाम की सुनने से नाह किया वह तुम को आशिष ही आशिष देता गया सो मैं
११ ने तुम को उस के हाथ से बचाया। तब तुम यर्दन पार होकर यरीहो के पास आये और जब यरीहो के लोग और एमोरी परिज्जी कनानी हित्ती गिर्गाशी हिव्वी और यबूसी तुम से लड़े तब मैं ने उन्हें तुम्हारे बश कर दिया।
१२ और मैं ने तुम्हारे आगे बरों को भेजा और उन्हों ने एमोरियों के दोनों राजाओं को तुम्हारे साम्हने से भगा दिया देखो यह तुम्हारी तलवार वा धनुष का काम नहीं
१३ हुआ। फिर मैं ने तुम्हें ऐसा देश दिया जिस में तू ने परिश्रम न किया था और ऐसे नगर भी दिये हैं जिन्हें तुम ने न बसाया था और तुम उन में बसे हो और जिन दाख और जलपाई की बारियों के फल तुम खाते हो
१४ उन्हें तुम ने न लगाया था। सो अब यहोवा का भय मानकर उस की सेवा खराई और सच्चाई से करो और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे उन्हें दूर करके यहोवा की
१५ सेवा करो। और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे तो आज चुन लो कि किस की सेवा करोगे चाहे उन देवताओं की जिन की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिन के देश में तुम रहते हो पर मैं तो घराने
१६ समेत यहोवा ही की सेवा करूंगा। तब लोगों ने उत्तर दिया यहोवा को त्यागकर दूसरे देवताओं की सेवा
१७ करनी यह हम से दूर रहे। क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा वही है जो हम को और हमारे पुरखाओं को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया और हमारे देखते बड़े बड़े आश्चर्य्यकर्म्म किये और जिस मार्ग पर और जितनी जातियों के बीच हम चले
१८ आते थे उन में हमारी रक्षा की, और हमारे साम्हने से इस देश में रहनेहारी एमोरी आदि सब

(१) मूल में सारी पृथिवी।

जातियों को निकाल दिया है सो हम भी यहोवा की सेवा करेंगे क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है। १९ यहोशू ने लोगों से कहा तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है वह जलन रखनेहारा ईश्वर है वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा न करेगा। २० यदि तुम यहोवा को त्यागकर बिराने देवताओं की सेवा करने लगो तो यद्यपि वह तुम्हारा भला करता आया है तौभी पीछे तुम्हारी हानि करेगा और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा। २१ लोगों ने यहोशू से कहा नहीं हम यहोवा ही की सेवा करेंगे। २२ यहोशू ने लोगों से कहा तुम आप ही अपने साक्षी हो कि तुम ने यहोवा की सेवा करनी अंगीकार कर ली है। उन्हों ने कहा हां हम साक्षी हैं। २३ यहोशू ने कहा अपने बीच के बिराने देवताओं को दूर करके अपना अपना मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लगाओ। २४ लोगों ने यहोशू से कहा हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही की सेवा करेंगे और उसी की बात मानेंगे। २५ तब यहोशू ने उसी दिन उन लोगों से वाचा बन्धाई और शकेम में उन के लिये विधि और नियम ठहराया॥

२६ यह सारा वृत्तान्त यहोशू ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया और एक बड़ा पत्थर चुनकर वहां उस बांजवृक्ष के तले खड़ा किया जो यहोवा के पवित्र स्थान में था। २७ तब यहोशू ने सब लोगों से कहा सुनो यह पत्थर हम लोगों का साक्षी रहेगा क्योंकि जितने वचन यहोवा ने हम से कहे हैं उन्हें इस ने सुना है सो यह तुम्हारा साक्षी रहेगा न हो कि तुम अपने परमेश्वर को मुकर जाओ। २८ तब यहोशू ने लोगों को अपने अपने निज भाग पर जाने के लिये बिदा किया॥

(यहोशू और एलाजार का मरना)

२९ इन बातों के पीछे यहोवा का दास नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस बरस का होकर मर गया। ३० और उस को तिम्नत्सेरह में जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है उसी के भाग में मिट्टी दी गई। ३१ और यहोशू के जीवन भर और जो पुरनिये यहोशू के मरने के पीछे जीते रहे और जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे काम किये थे उन के भी जीवन भर इस्राएली यहोवा की सेवा करते रहे। ३२ फिर यूसुफ की हड्डियां जिन्हें इस्राएली मिस्र से ले आये थे सो शकेम की भूमि के उस भाग में गाड़ी गईं जिसे याकूब ने शकेम के पिता हमोर से एक सौ कसीतों में मोल लिया था सो वह यूसुफ की सन्तान का निज भाग हो गया। ३३ फिर हारून का पुत्र एलाजार भी मर गया और उस को एप्रैम के पहाड़ी देश में की उस पहाड़ी पर मिट्टी दी गई जो उस के पुत्र पीनहास के नाम पर गिबत्पीनहास कहलाती है और उस को दी गई थी॥

न्यायियों का वृत्तान्त।

(कनानियों में से किसी किसी का नाश होना और किसी किसी का रह जाना)

१. यहोशू के मरने के पीछे इस्राएलियों ने यहोवा से पूछा कि कनानियों के विरुद्ध लड़ने को हमारी ओर से पहिले कौन चढ़ाई करेगा। २ यहोवा ने उत्तर दिया यहूदा चढ़ाई करेगा सुनो मैं ने इस देश को उस के हाथ में दे दिया है। ३ सो यहूदा ने अपने भाई शिमोन से कहा मेरे संग मेरे भाग में आ कि हम कनानियों से लड़ें और मैं भी तेरे भाग में जाऊंगा सो शीमोन उस के संग चला। ४ और यहूदा ने चढ़ाई की और यहोवा ने कनानियों और परिज्जियों को उस के हाथ में कर दिया सो उन्हों ने बेजेक में उन में से दस हजार पुरुष मार डाले। ५ और बेजेक में अदोनीबेजेक को पाकर वे उस से लड़े और कनानियों और परिज्जियों को मार डाला। ६ पर अदोनीबेजेक भागा तब उन्हों ने उस का पीछा करके उसे पकड़ लिया और उस के हाथ पांव के अंगूठे काट डाले। ७ तब अदोनीबेजेक ने कहा हाथ पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरी मेज के नीचे टुकड़े बीनते थे जैसा मैं ने किया था वैसा ही बदला परमेश्वर ने मुझे दिया है। तब वे उसे यरूशलेम को ले गये और वहां वह मर गया॥

८ और यहूदियों ने यरूशलेम से लड़कर उसे ले लिया और तलवार से उस के निवासियों को मार डाला और नगर को फूंक दिया। ९ और पीछे यहूदी पहाड़ी देश और दक्खिन देश और नीचे के देश में रहनेवाले कनानियों से लड़ने को गये। १० और यहूदा ने उन कनानियों पर चढ़ाई की जो हेब्रोन में रहते थे। हेब्रोन का नाम तो अगले समय में किर्यतर्बा था। और उन्हों ने शेशै

११ अहीमन और तल्मै को मार डाला। वहां से उस ने
आकर दबीर के निवासियों पर चढ़ाई की। दबीर का
१२ नाम तो अगले समय में किर्यत्सेपेर था। तब कालेब
ने कहा जो किर्यत्सेपेर को मारके ले ले उसे मैं अपनी
१३ बेटी अक्सा को ब्याह दूंगा। सो कालेब के छोटे भाई
कनजी ओत्नीएल ने उसे ले लिया और उस ने उसे
१४ अपनी बेटी अकसा को ब्याह दिया। और जब वह
ओत्नीएल के पास आई तब उस ने उस को पिता से कुछ
भूमि मांगने को उभारा फिर वह अपने गदहे पर से
उतरी तब कालेब ने उस से पूछा तू क्या चाहती है।
१५ वह उस से बोली मुझे आशीर्वाद दे तू ने मुझे दक्खिन
देश तो दिया है जल के सोते भी दे सो कालेब ने उस
को ऊपर और नीचे के दोनों सोते दिये॥

१६ और मूसा के साले एक केनी मनुष्य के सन्तान
यहूदी के संग खजूरवाले नगर से यहूदा के जंगल में
गये जो अराद के दक्खिन ओर है और जाकर इस्राएली
१७ लोगों के साथ रहने लगे। फिर यहूदा ने अपने भाई
शिमोन के संग जाकर सफत में रहनेहारे कनानियों को
मार लिया और उस नगर को सत्यानाश कर डाला सो
१८ उस नगर का नाम होर्मा[१] पड़ा। और यहूदा ने चारों
ओर की भूमि समेत अज़ा अश्कलोन और एक्रोन को
१९ ले लिया। और यहोवा यहूदा के साथ रहा सो उस ने
२० पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया। पर नीचान के
निवासियों के पास लोहे के रथ थे इसलिये वह उन्हें न
निकाल सका और उन्हों ने मूसा के कहे के अनुसार हेब्रोन
कालेब को दिया और उस ने वहां से अनाक के तीनों पुत्रों
२१ को निकाल दिया। और यरूशलेम में रहनेहारे यबूसियों
को बिन्यामीनियों ने न निकाला सो यबूसी आज के
दिन लों यरूशलेम में बिन्यामीनियों के संग रहते हैं॥

२२ फिर यूसुफ के घराने ने बेतेल पर चढ़ाई की और
२३ यहोवा उन के संग था। और यूसुफ के घराने ने बेतेल
२४ का भेद लेने को लोग भेजे। और उस नगर का नाम
अगले समय में लूज था। और पहरुओं ने एक मनुष्य
को उस नगर से निकलते हुए देखा और उस से कहा
नगर में जाने का मार्ग हमें दिखा और हम तुझ पर
२५ दया करेंगे। सो उस ने उन्हें नगर में जाने का मार्ग
दिखाया तब उन्हों ने नगर को तो तलवार से मारा पर
२६ उस मनुष्य को सारे घराने समेत छोड़ दिया। उस
मनुष्य ने हित्तियों के देश में जाकर एक नगर बसाया
और उस का नाम लूज रक्खा और आज के दिन लों
उस का नाम वही है॥

(१) अर्थात, सत्यानाश करना।

मनश्शे ने अपने अपने गांवों समेत बेतशान २७
तानाक दोर यिबलाम और मगिद्दो के निवासियों को न
निकाला सो कनानी बरियाई करके उस देश में बसे रहे।
पर जब इस्राएली सामर्थी हुए तब उन्हों ने कनानियों से २८
बेगारी कराई पर उन्हें पूरी रीति से न निकाला॥

और एप्रैम ने गेजेर में रहनेवाले कनानियों को न २९
निकाला सो कनानी गेजेर में उन के बीच बसे रहे॥

जबूलून ने कित्रोन और नहलोल के निवासियों को ३०
न निकाला सो कनानी उन के बीच बसे रहे और बेगारी
में रहे॥

आशेर ने अक्को सीदोन अहलाब अकजीब हेलबा ३१
अपीक और रहोब के निवासियों को न निकाला। सो ३२
आशेरी लोग देश के निवासी कनानियों के बीच में बस
गये क्योंकि उन्हों ने उन को न निकाला था॥

नप्ताली ने बेतशेमेश और बेतनात के निवासियों को ३३
न निकाला पर देश के निवासी कनानियों के बीच बस
गये तौभी बेतशेमेश और बेतनात के लोग उन की
बेगारी करते थे॥

और एमोरियों ने दानियों को पहाड़ी देश में भगा ३४
दिया और नीचान में आने न दिया। सो एमोरी बरियाई ३५
करके हेरेस नाम पहाड़ अय्यलोन और शालबीम में बसे
रहे तौभी यूसुफ का घराना यहां लों प्रबल हो गया कि
वे बेगारी करने लगे। और एमोरियों का देश अक्रब्बीम ३६
नाम चढ़ाई से और ढांग से ऊपर की ओर था॥

(इस्राएलियों का बिगड़ना और इस का दंड भोगना और फिर
पछताकर छुटकारा पाना)

२. और यहोवा का दूत गिलगाल से बोकीम
को जाकर कहने लगा कि मैं ने
तुम को मिस्र से ले आकर इस देश में पहुंचाया है
जिस के विषय मैं ने तुम्हारे पुरखाओं से किरिया खाई
थी और मैं ने कहा था कि जो बाचा मैं ने तुम से बांधी
है सो मैं कभी न तोड़ूंगा। सो तुम इस देश के निवासियों १
से बाचा न बांधना तुम उन की वेदियों को ढा देना
पर तुम ने मेरी बात नहीं मानी तुम ने ऐसा क्यों किया
है। सो मैं कहता हूं कि मैं उन लोगों को तुम्हारे साम्हने ३
से न निकालूंगा वे तुम्हारे पांजर में कांटे और उन के
देवता तुम्हारे लिये फंदे ठहरेंगे जब यहोवा के दूत ४
ने सारे इस्राएलियों से ये बातें कहीं तब वे लोग चिल्ला
चिल्लाकर रोने लगे। और उन्हों ने उस स्थान का नाम ५
बोकीम[१] रक्खा और वहां उन्हों ने यहोवा के लिये बलि
चढ़ाया॥

(१) अर्थात रोनेहारे।

६ जब यहोशू ने लोगों को बिदा किया तब इस्राएली देश को अपने अधिकार में कर लेने के लिये अपने अपने ७ निज भाग पर गये। और यहोशू के जीवन भर और उन पुरनियों के जीवन भर जो यहोशू के मरने के पीछे जीते रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे बड़े काम किये इस्राएली लोग यहोवा की ८ सेवा करते रहे। निदान यहोवा का दास नून का पुत्र ९ यहोशू एक सौ दस बरस का होकर मर गया। और उस को तिम्नथेरेस में जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है उसी के भाग में मिट्टी १० दी गई। और उस पीढ़ी के सब लोग भी अपने अपने पितरों में मिल गये तब उन के पीछे जो दूसरी पीढ़ी हुई उस के लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उस ने इस्राएल के लिये किया था॥

११ सो इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है और बाल नाम देवताओं की उपासना करने १२ लगे। वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था त्यागकर पराये देवताओं अर्थात् आसपास के लोगों के देवताओं के पीछे हो लिये और उन्हें दण्डवत् किया और यहोवा को रिस दिलाई। १३ वे यहोवा को त्याग करके बाल देवता और अशतोरेत १४ देवियों की उपासना करने लगे। सो यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा और उस ने उन को लुटेरों के हाथ में कर दिया जो उन्हें लूटने लगे और उस ने उन को चारों ओर के शत्रुओं के अधीन कर दिया और १५ वे फिर अपने शत्रुओं के साम्हने ठहर न सके। जहां कहीं वे बाहर जाते वहां यहोवा का हाथ उन की बुराई में लगा रहता था जैसे कि यहोवा ने उन से कहा था बरन यहोवा ने किरिया भी खाई थी सो वे बड़े संकट १६ में पड़ते थे। तौभी यहोवा उन के लिये न्यायी ठहराता १७ था जो उन्हें लूटनेहारों के हाथ से छुड़ाते थे। पर वे अपने न्यायियों की न मानते बरन व्यभिचारिन की नाईं पराये देवताओं के पीछे चलते और उन्हें दण्डवत् करते थे उन के पितर जो यहोवा की आज्ञाएं मानते थे उन की उस लीक को उन्हों ने शीघ्र ही छोड़ दिया और उन के १८ अनुसार न किया। और जब जब यहोवा उन के लिये न्यायी को ठहराता तब तब वह उस न्यायी के संग रहकर उस के जीवन भर उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता था क्योंकि यहोवा उन का कराहना जो अंधेर और उपद्रव करनेहारों के कारण होता था सुनकर पछताता था। १९ पर जब न्यायी मर जाता तब वे फिर पराये देवताओं के पीछे चलकर और उन की उपासना और उन्हें दण्डवत् करके अपने पुरखाओं से अधिक बिगड़ जाते और अपने बुरे कामों और हठीली चाल को न छोड़ते थे। २० सो यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा और उस ने कहा इस जाति ने उस वाचा को जो मैं ने उन के पितरों से बान्धी थी तोड़ दिया और मेरी नहीं मानी, २१ इस कारण जिन जातियों को यहोशू मरते समय छोड़ गया है उन में २२ से मैं अब किसी को उन के साम्हने से न निकालूंगा, जिस से उन के द्वारा मैं इस्राएलियों की परीक्षा करूं कि जैसे उन के पितर मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे ही ये भी चलेंगे कि नहीं। २३ सो यहोवा ने उन जातियों को एकाएक न निकाल कर रहने दिया और उस ने उन्हें यहोशू के वश में न कर दिया था॥

३. इस्राएलियों में से जितने कनान में की लड़ाइयों में भागी न हुए थे उन्हें परखने के लिये यहोवा ने इन जातियों को देश में २ इसलिये रहने दिया, कि पीढ़ी पीढ़ी के इस्राएलियों में से जो लड़ाई को पहिले न जानते थे वे सीखें और जान लें ३ अर्थात् पांचों सरदारों समेत पलिश्तियों और सब कनानियों और सीदोनियों और बालहेर्मोन नाम पहाड़ से ले हमात की ४ घाटी लों लबानोन पर्वत में रहनेहारे हिव्वियों को। ये इसलिये रहने पाये[१] कि इन के द्वारा इस्राएलियों की इस बात में परीक्षा हो कि जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा से उन के ५ पितरों को दिलाई थीं उन्हें वे मानेंगे वा नहीं। सो इस्राएली कनानियों हित्तियों एमोरियों परिज्जियों हिव्वियों ६ और यबूसियों के बीच में बस गये। तब वे उन की बेटियां ब्याह लेने और अपनी बेटियां उन के बेटों को ब्याह देने और उन के देवताओं की उपासना करने लगे॥

(ओत्नीएल का चरित्र)

७ सो इस्राएलियों ने वह किया जो यहोवा के लेखे में बुरा है और अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर बाल नाम देवताओं और अशेरा नाम देवियों की उपासना ८ करने लगे। तब यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का और उस ने उन को अरम्नहरैम के राजा कूशत्रिशातैम के अधीन कर दिया सो इस्राएली आठ बरस लों कूशत्रिशातैम के अधीन रहे। ९ तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी और उस ने इस्राएलियों के लिये कालेब के छोटे भाई ओत्नीएल नाम एक कनजी छुड़ानेहारे को ठहराया और उस ने उन को छुड़ाया। १० उस पर यहोवा का आत्मा आया और वह इस्राएलियों का न्यायी हो गया और लड़ने को निकला और यहोवा ने अराम के राजा

(१) मूल में हुए।

कूशन्रिशातैम को उस के हाथ कर दिया और वह
११ कूशन्रिशातैम पर प्रबल हुआ। तब चालीस बरस लों देश को शांति रही और कनजी ओत्नीएल मर गया॥

(एहूद का चरित्र)

१२ तब इस्राएली फिर वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है और यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल पर प्रबल किया क्योंकि उन्हों ने वह किया
१३ था जो यहोवा के लेखे में बुरा है। सो उस ने अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने पास इकट्ठा किया और जाकर इस्राएल को मार लिया और खजूरवाले
१४ नगर को अपने वश कर लिया। सो इस्राएली अठारह बरस लों मोआब के राजा एग्लोन के अधीन रहे।
१५ तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी और उस ने गेरा के पुत्र एहूद नाम एक बिन्यामीनी को उन का छुड़ानेहारा करके ठहराया वह बैंहत्था था। इस्राएलियों ने उसी के हाथ से मोआब के राजा एग्लोन के पास कुछ
१६ भेंट भेजी। एहूद ने हाथ भर लंबी एक दोधारी तलवार बनवाई थी और उस को अपने वस्त्र के नीचे दहिनी जांघ
१७ पर लटका लिया। तब वह उस भेंट को मोआब के राजा एग्लोन के पास जो बड़ा मोटा पुरुष था ले गया। जब वह
१८ भेंट को दे चुका तब भेंट के लानेहारों को बिदा किया। पर
१९ वह आप गिलगाल के निकट की खुदी हुई मूरतों के पास से लौट गया और एग्लोन के पास कहला भेजा कि हे राजा मुझे तुझ से एक भेद की बात कहनी है राजा ने कहा तनिक बाहर जाओ[१] तब जितने लोग उस के पास हाजिर थे सब
२० बाहर चले गये। तब एहूद उस के पास गया वह तो अपनी एक हवादार अटारी में अकेला बैठा था। एहूद ने कहा परमेश्वर की ओर से मुझे तुझ से एक बात
२१ कहनी है सो वह गद्दी पर से उठ खड़ा हुआ। तब एहूद ने अपना बायां हाथ बढ़ा अपनी दहिनी जांघ पर से
२२ तलवार खींचकर उस की तोंद में घुसेड़ दी, और फल के पीछे मूठ भी पैठ गई और फल चर्बी में घुसा रहा क्योंकि उस ने तलवार को उस की तोंद में से न निकाला
२३ बरन वह उस की पिछाड़ी निकल गई। तब एहूद छज्जे में निकलकर बाहर गया और अटारी के किवाड़ खींच
२४ उस को बंद करके ताला लगा दिया। उस के निकल जाते ही राजा[२] के दास आये तो क्या देखते हैं कि अटारी के किवाड़ों में ताला लगा है सो वे बोले निश्चय वह
२५ हवादार कोठरी में लघुशंका करता होगा। जब वे परखते परखते रह गये तब यह देखकर कि वह अटारी के किवाड़ नहीं खोलता कुंजी लेकर उन्हें खोला तो क्या देखा कि
२६ हमारा स्वामी भूमि पर मरा पड़ा है। जब तक वे बिलम्ब करते रहे तब तक वह भाग गया और खुदी हुई
२७ मूरतों की परली ओर होकर सीरा में जा बचा। वहां पहुंचकर उस ने एप्रैम के पहाड़ी देश में नरसिंगा फूंका तब इस्राएली उस के संग होकर पहाड़ी देश से उस के
२८ पीछे पीछे नीचे गये। और उस ने उन से कहा मेरे पीछे पीछे चले आओ क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे मोआबी शत्रुओं को तुम्हारे हाथ में कर दिया है सो उन्हों ने उस के पीछे पीछे जाके यर्दन के घाट को जो मोआब देश की
२९ ओर है ले लिया और किसी को उतरने न दिया। उस समय उन्हों ने कोई दस हजार मोआबियों को मार डाला जो सब के सब हृष्टपुष्ट और शूरवीर थे उन में से एक भी
३० न बचा। सो उस समय मोआब इस्राएल के हाथ तले दब गया तब अस्सी बरस लों देश को शान्ति रही॥

३१ उस के पीछे अनात का पुत्र शमगर हुआ उस ने छः सौ पलिश्ती पुरुषों को बैल के पैने से मार डाला सो वह भी इस्राएल का छुड़ानेहारा हुआ॥

(दबोरा और बाराक का चरित्र)

४. जब एहूद मर गया तब इस्राएली फिर वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में
२ बुरा है। सो यहोवा ने उन को हासोर में विराजनेहारे कनान के राजा याबीन के अधीन कर दिया जिस का सेनापति सीसरा था जो अन्यजातियों की हरोशेत का
३ निवासी था। तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी क्योंकि सीसरा के पास लोहे के नौ सौ रथ थे और वह इस्राएलियों पर बीस बरस लों बड़ा अन्धेर करता रहा॥

४ उस समय लप्पीदोत की स्त्री दबोरा जो नबिया थी
५ इस्राएलियों का न्याय करती थी। वह एप्रैम के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल के बीच दबोरा के खजूर के तले बैठा करती थी और इस्राएली उस के पास न्याय के लिये
६ आया करते थे। उस ने अबीनोअम के पुत्र बाराक को केदेश नताली में से बुलवाकर कहा क्या इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा नहीं दी कि तू जाकर ताबोर पहाड़ पर चढ़[२] और नतालियों और जबूलूनियों
७ में के दस हजार पुरुषों को संग ले जा। तब मैं याबीन के सेनापति सीसरा को रथों और भीड़भाड़ समेत कीशोन नदी लों तेरी ओर खींच ले आऊंगा और उस को तेरे
८ हाथ में कर दूंगा। बाराक ने उस से कहा जो तू मेरे संग
९ चले तो मैं जाऊंगा नहीं तो न जाऊंगा। उस ने कहा

(१) मूल में चुप रहो। (२) मूल में उस।

(२) मूल में खींच।

निःसन्देह मैं तेरे संग चलूंगी तौभी इस यात्रा से तेरी तो कुछ बड़ाई न होगी क्योंकि यहोवा सीसरा को एक स्त्री के अधीन कर देगा। तब दबोरा उठकर बाराक के १० संग केदेश को गई। तब बाराक ने जबूलून और नप्ताली के लोगों को केदेश में बुलवा लिया और उस के पीछे दस हजार पुरुष चढ़ गये और दबोरा उस के संग चढ़ ११ गई। हेबेर नाम केनी ने उन केनियों में से जो मूसा के साले होबाब के वंश थे अपने को अलग करके केदेश के पास के सानन्नीम में के बांजवृक्ष लों जाकर अपना डेरा १२ वहीं डाला था। जब सीसरा को यह समाचार मिला कि अबीनोअम का पुत्र बाराक ताबोर पहाड़ पर चढ़ १३ गया है, तब सीसरा ने अपने सब रथ जो लोहे के नौ सौ रथ थे और अपने संग की सारी सेना को अन्य- १४ जातियों के हरोशेत से कीशोन नदी पर बुलवाया। तब दबोरा ने बाराक से कहा उठ क्योंकि आज वह दिन है जिस में यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा क्या यहोवा तेरे आगे नहीं निकला है। सो बाराक और उस के पीछे पीछे दस हजार पुरुष ताबोर पहाड़ से उतर १५ पड़े। तब यहोवा ने सारे रथों बरन सारी सेना समेत सीसरा को तलवार से बाराक के साम्हने घबरा दिया और सीसरा रथ पर से उतरके पांव पांव भाग चला। १६ और बाराक ने अन्यजातियों के हरोशेत लों रथों और सेना का पीछा किया और तलवार से सीसरा की सारी सेना नाश की गई एक भी बचा न रहा॥

१७ पर सीसरा पांव पांव हेबेर केनी की स्त्री याएल के डेरे को भाग गया क्योंकि हासोर के राजा याबीन और १८ हेबेर केनी के बीच मेल था। तब याएल सीसरा की भेंट के लिये निकलकर उस से कहने लगी हे मेरे प्रभु आ मेरे पास आ और न डर सो वह उस के पास डेरे में गया १९ और उस ने उस के ऊपर कंबल डाल दिया। तब सीसरा ने उस से कहा मुझे प्यास लगी है सो मुझे थोड़ा पानी पिला सो उस ने दूध की कुप्पी खोलकर उसे दूध पिलाया २० और उस को ओढ़ा दिया। तब उस ने उस से कहा डेरे के द्वार पर खड़ी रह और यदि कोई आकर तुझ से पूछे २१ कि यहां कोई पुरुष है तब कहना कोई नहीं। पीछे हेबेर की स्त्री याएल ने डेरे की एक खूंटी और अपने हाथ में एक हथौड़ा ले दबे पांव उस के पास जाकर खूंटी को उस की कनपटी में ऐसा गाड़ दिया कि खूंटी भूमि में धंस गई वह तो थका था और उस को भारी नींद २२ लग गई थी सो वह मर गया। जब बाराक सीसरा का पीछा करता था तब याएल ने उस की भेंट के लिये निकलकर कहा इधर आ जिस का तू खोजी है उस को मैं तुझे दिखाऊंगी। सो वह उस के साथ गया तो क्या देखा कि सीसरा मरा पड़ा है और वह खूंटी उस की कनपटी में गड़ी है। सो परमेश्वर ने उस दिन कनान २३ के राजा याबीन को इस्राएलियों से दबवा दिया। और २४ इस्राएली कनान के राजा याबीन पर प्रबल होते गये यहां लों कि उन्हों ने कनान के राजा याबीन का नाश कर डाला॥

(दबोरा का गीत)

५. **उसी** दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत गाया कि।

इस्राएल में के अगुवों ने अगुवाई जो की और २
प्रजा अपनी ही इच्छा से जो भरती हुई थी इस
से यहोवा को धन्य कहो॥

हे राजाओ सुनो हे अधिपतियो कान लगाओ मैं ३
आप यहोवा के लिये गीत गाऊंगी
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का मैं भजन करूंगी॥

हे यहोवा जब तू सेईर से निकल चला ४
जब तू ने एदोम के देश से पयान किया
तब पृथिवी डोल उठी और आकाश टपकने लगा
बादल से भी जल टपकने लगा॥

यहोवा के प्रताप से पहाड़ ५
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के प्रताप से वह
सीनै पिघलकर बहने लगा॥

अनात के पुत्र शमगर के दिनों में ६
और याएल के दिनों में सड़कें सूनी पड़ी थीं
और बटोही पगडंडियों से चलते थे॥

जब लों मैं दबोरा न उठी ७
जब लों मैं इस्राएल में माता होकर न उठी
तब लों गांव सूने पड़े थे[१]॥

नये नये देवता माने गये— ८
उस समय फाटकों में लड़ाई होती थी
क्या चालीस हजार इस्राएलियों में भी
ढाल वा बर्छी कहीं देखने में आती थी॥

मेरा मन इस्राएल के हाकिमों की ओर लगा है ९
जो प्रजा के बीच अपनी ही इच्छा से भरती हुए
यहोवा को धन्य कहो॥

हे उजली गदहियों पर चढ़नेहारो १०
हे फर्शों पर बिराजनेहारो
हे मार्ग पर पैदल चलनेहारो ध्यान रक्खो॥

पनघटों के आस पास धनुर्धारियों की ११
बात के कारण

(१) वा इस्राएलियों में कोई प्रधान न रहा।

वहां यहोवा के धर्म्ममय कामों का
इस्राएल के दिहातियों के लिये उस के धर्म्ममय
कामों का बखान होता है
उस समय यहोवा की प्रजा के लोग फाटकों के
पास गये ॥
१२ जाग जाग हे दबोरा
जाग जाग गीत सुना
हे बाराक उठ हे अबीनोअम के पुत्र अपने
बंधुओं को बंधुआई में ले चल ॥
१३ उस समय थोड़े से[1] रईस प्रजा समेत उतर पड़े
यहोवा शूरवीरों के विरुद्ध[2] मेरे हित उतर
आया ॥
१४ एप्रैम में से वे आये जिन की जड़ अमालेक
में है
हे बिन्यामीन, तेरे पीछे तेरे दलों में
माकीर में से हाकिम और जबूलून में से सेनापति
का दण्ड लिये हुए उतरे ॥
१५ और इस्साकार के हाकिम दबोरा के संग
हुए
जैसा इस्साकार वैसा ही बाराक भी था
उस के पीछे लगे हुए वे तराई में झपटे गये
रूबेन की नदियों के पास
बड़े बड़े काम मन में ठाने गये ॥
१६ तू चरवाहों[3] का सीटी बजाना सुनने को
भेड़शालों के बीच क्यों बैठा रहा
रूबेन की नदियों के पास
बड़े बड़े काम सोचे गये ॥
१७ गिलाद यर्दन पार रह गया
और दान क्यों जहाजों में रहा
आशेर समुद्र के तीर पर बैठा रहा
और उस के कोलों के पास रह गया ॥
१८ जबूलून अपने प्राण पर खेलनेहारे लोग
ठहरे
नप्ताली भी देश के ऊंचे ऊंचे स्थानों पर वैसा ही
ठहरा
१९ राजा आकर लड़े
उस समय कनान के राजा
मगिद्दो के सोतों के पास तानाक में लड़े
पर रुपये का कुछ लाभ न पाया ॥
२० आकाश की ओर से भी लड़ाई हुई

(१) मूल में प्रजा के बचे हुए। (२) वा संग।
(३) मूल में भेड़ बकरियों के झुण्डों।

तारागणों ने अपने अपने मंडल से सीसरा से
लड़ाई की ॥
कीशोन नदी ने उन को बहा दिया
२१ उस प्राचीन नदी कीशोन नदी ने यह किया
हे मन हियाव बांधे आगे बढ़ ॥
२२ उस समय घोड़े अपने खुरों से टापने लगे
उन के बलवन्तों के कूदने से यह हुआ ॥
२३ यहोवा का दूत कहता है कि मेरोज को स्राप दो
उस के निवासियों को भारी स्राप दो
क्योंकि वे यहोवा की सहायता करने को
शूरवीरों के विरुद्ध यहोवा की सहायता करने
को न आये
२४ सब स्त्रियों में से केनी हेबेर की स्त्री
याएल धन्य ठहरेगी
डेरों में रहनेहारी सब स्त्रियों में से वह धन्य
ठहरेगी ॥
२५ सीसरा ने पानी मांगा उस ने दूध दिया
रईसों के योग्य बर्तन में वह मक्खन ले आई ॥
२६ उस ने अपना हाथ खूंटी की ओर
अपना दहिना हाथ बढ़ई के हथौड़े की ओर
बढ़ाया
और हथौड़े से सीसरा को मारा उस के सिर को
फोड़ डाला
और उस की कनपटी को वारपार छेद दिया ॥
२७ उस स्त्री के पांवों पर वह झुका वह गिरा वह पड़ा
रहा
उस स्त्री के पांवों पर वह झुका वह गिरा जहां
झुका वहीं मरा पड़ा रहा ॥
२८ खिड़की में से एक स्त्री झांककर चिल्लाई
सीसरा की माता ने झिलमिली की ओट से पुकारा कि
उस के रथ के आने में इतनी देर क्यों लगी
उस के रथों के पहियों को अबेर क्यों हुई है ॥
२९ उस की बुद्धिमान प्रतिष्ठित स्त्रियों ने उसे
उत्तर दिया
बरन उस ने अपने आप को यों उत्तर दिया कि
३० क्या उन्हों ने लूट पाकर बांट नहीं ली
क्या एक एक पुरुष को एक एक बरन दो दो
कुंवारियां
और सीसरा को रंगे हुए वस्त्र की लूट
बरन बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र की लूट।
और लूटे हुओं के गले में दोनों ओर बूटे काढ़े
हुए रंगीले वस्त्र नहीं मिले ॥

३१ हे यहोवा तेरे सारे शत्रु ऐसे ही नाश हो जाएं पर उस के प्रेमी लोग प्रताप के साथ उदय होते हुए सूर्य्य के समान तेजोमय हों ॥
फिर देश को चालीस बरस लों शान्ति रही ॥

(गिदोन का चरित्र)

६. तब इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है सो यहोवा ने उन्हें २ मिद्यानियों के वश में सात बरस कर रक्खा। और मिद्यानी इस्राएलियों पर प्रबल हो गये। मिद्यानियों के डर के मारे इस्राएलियों ने पहाड़ों में के गहिरे खड्डों और गुफाओं ३ और दुर्गों को अपने निवास बना लिये। और जब जब इस्राएली बीज बोते तब तब मिद्यानी और अमालेकी ४ और पूरबी लोग उन के विरुद्ध चढ़ाई करके, अज्जा लों छावनी डाल डालकर भूमि की उपज नाश कर डालते थे और इस्राएलियों के लिये न तो कुछ भोजनवस्तु छोड़ देते थे और न भेड़बकरी न गाय बैल न गदहा। ५ क्योंकि वे अपने पशुओं और डेरों को लिये हुए चढ़ाई करते और टिड्डियों के समान बहुत आते थे और उन के ऊंट भी अनगिनित थे और वे देश के उजाड़ने को उस ६ में आया करते थे। और मिद्यानियों के कारण इस्राएली बड़ी दुर्दशा में पड़े तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी ॥

७ जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों के कारण यहोवा ८ की दोहाई दी, तब यहोवा ने इस्राएलियों के पास एक नबी को भेजा जिस ने उन से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को मिस्र में से ले आया और दासत्व के घर से निकाल ले आया। ९ और मैं ने तुम को मिस्रियों के हाथ से बरन जितने तुम पर अंधेर करते थे उन सभों के हाथ से छुड़ाया और उन को तुम्हारे साम्हने से बरबस निकालकर उन का १० देश तुम्हें दे दिया। और मैं ने तुम से कहा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं एमोरी लोग जिन के देश में तुम रहते हो उन के देवताओं का भय न मानना पर तुम ने मेरी नहीं मानी ॥

११ फिर यहोवा का दूत आकर उस बांजवृक्ष के तले बैठ गया जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का था और उस का पुत्र गिदोन गेहूं इसलिये एक दाखरस के कुण्ड में झाड़ रहा था कि उसे मिद्यानियों से छिपा रक्खे। १२ उस को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा हे महावीर १३ यहोवा तेरे संग है। गिदोन ने उस से कहा हे मेरे प्रभु बिनती सुन यदि यहोवा हमारे संग होता तो हम पर यह सब विपत्ति क्यों पड़ती और जितने आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन हमारे पुरखा यह कहकर करते थे कि क्या यहोवा हम को मिस्र से छुड़ा नहीं लाया वे कहां रहे अब तो यहोवा ने हम को त्यागकर मिद्यानियों के हाथ कर दिया है। १४ तब यहोवा ने उस पर दृष्टि करके कहा अपनी इसी शक्ति पर जा और तू इस्राएलियों को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा। १५ उस ने कहा हे मेरे प्रभु बिनती सुन मैं इस्राएल को क्योंकर छुड़ाऊं देख मेरा कुल मनश्शे में सबसे कंगाल है फिर मैं अपने पिता के घराने में सब से छोटा हूं। १६ यहोवा ने उस से कहा निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा सो तू मिद्यानियों को ऐसा मार लेगा जैसा एक मनुष्य को। १७ गिदोन ने उस से कहा यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो मुझे इस का कोई चिन्ह दिखा कि तू ही मुझ से बात करता है। १८ जब लों मैं तेरे पास फिर आकर अपनी भेंट निकालकर तेरे साम्हने न रक्खूं तब लों यहां से न पधारना उस ने कहा मैं तेरे लौटने लों ठहरूंगा। १९ तब गिदोन ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक एपा मैदे की अखमीरी रोटियां तैयार कीं तब मांस को टोकरी में और जूस को तसले में रख बांजवृक्ष के तले उस के पास ले जाकर दिया। २० परमेश्वर के दूत ने उस से कहा मांस और अखमीरी रोटियों को लेकर इस चटान पर रख और जूस को उण्डेल दे। २१ सो उस ने ऐसा ही किया। तब यहोवा के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाकर मांस और अखमीरी रोटियों को छूआ और चटान से आग निकली जिस से मांस और अखमीरी रोटियां भस्म हो गईं तब यहोवा का दूत उस की दृष्टि से अन्तर्द्धान हो गया। २२ जब गिदोन ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था तब गिदोन कहने लगा हाय प्रभु यहोवा मैं ने तो यहोवा के दूत को साक्षात देखा है। २३ यहोवा ने उस से कहा तुझे शांति मिले मत डर तू न मरेगा। २४ सो गिदोन ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाकर उस का नाम यहोवाशालोम[१] रक्खा वह आज के दिन लों अबीएजेरियों के ओप्रा में बनी है ॥

२५ फिर उसी रात को यहोवा ने गिदोन से कहा अपने पिता का जवान बैल अर्थात् दूसरा सात बरस का बैल ले और बाल की जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे और जो अशेरा देवी उस के पास है उसे काट डाल, २६ और उस दृढ़ स्थान की चोटी पर ठहराई हुई रीति से अपने परमेश्वर यहोवा की एक वेदी बना तब उस दूसरे बैल को ले और उस अशेरा की लकड़ी जो तू काट डालेगा जलाकर होमबलि चढ़ा। २७ सो गिदोन ने अपने दस दास संग लेकर यहोवा के वचन के अनुसार

(१) अर्थात् यहोवा शान्ति [देनेहारा है]

किया पर अपने पिता के घराने और नगर के लोगों के डर के मारे वह काम दिन को न कर सका सो रात में २८ किया। बिहान को नगर के लोग सवेरे उठकर क्या देखते हैं कि बाल की वेदी गिरी पड़ी और उस के पास की अशेरा कटी पड़ी और दूसरा बैल बनाई हुई वेदी २९ पर चढ़ाया हुआ है। तब वे आपस में कहने लगे यह काम किस ने किया और पूछपाछ और ढूंढ़ ढांढ़ करके वे कहने लगे कि यह योआश के पुत्र गिदोन का काम है। ३० सो नगर के मनुष्यों ने योआश से कहा अपने पुत्र को बाहर ले आ कि मार डाला जाए क्योंकि उस ने बाल की वेदी को गिरा दिया और उस के पास की अशेरा ३१ को काट डाला है। योआश ने उन सभों से जो उस के साम्हने खड़े हुए थे कहा क्या तुम बाल के लिये वाद विवाद करोगे क्या तुम उसे बचाओगे जो कोई उस के लिये वाद विवाद करे सो मार डाला जाएगा बिहान लों ठहरे रहो तब लों यदि वह परमेश्वर हो तो जिस ने उस की वेदी गिराई उस से वह आप ही अपना वाद ३२ विवाद करे। सो उस दिन गिदोन का नाम यह कहकर यरुब्बाल[१] रक्खा गया कि इस ने जो बाल की वेदी गिराई है सो इस पर बाल ही वाद विवाद करे॥

३३ इस के पीछे सब मिद्यानी और अमालेकी और पूरबी इकट्ठे हुए और पार आकर यिज्रेल की ३४ तराई में डेरे डाले। तब यहोवा का आत्मा गिदोन में समाया[२] और उस ने नरसिंगा फूंका तब अबीएजेरी उस ३५ के पीछे इकट्ठे हुए। फिर उस ने सारे मनश्शे के यहां दूत भेजे और वे भी उस के पीछे इकट्ठे हुए और उस ने आशेर जबूलून और नप्ताली के यहां भी दूत भेजे तब ३६ वे भी उस से मिलने को चले आये। तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा यदि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल ३७ को मेरे द्वारा छुड़ाएगा, तो सुन मैं एक भेड़ी की ऊन खलिहान में रक्खूंगा और यदि ओस केवल उस ऊन पर पड़े और उसे छोड़ सारी भूमि सूखी रहे तो मैं जान लूंगा कि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल को मेरे ३८ द्वारा छुड़ाएगा। और ऐसा ही हुआ सो जब उस ने बिहान को सवेरे उठ उस ऊन को दबाकर उस में से ३९ ओस निचोड़ी तब एक कटोरा भर गया। फिर गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि मैं एक बार फिर कहूं तो तेरा कोप मुझ पर न भड़के मैं इस ऊन से एक बार और भी तेरी परीक्षा करूं अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रहे और ४० सारी भूमि पर ओस पड़े। उस रात को परमेश्वर ने ऐसा ही किया अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रही और सारी भूमि पर ओस पड़ी॥

(१) अर्थात् बाल वाद विवाद करे।
(२) मूल में आत्मा ने गिदोन को पहिन लिया।

७. तब गिदोन जो यरुब्बाल भी कहावता है और सब लोग जो उस के संग थे सवेरे उठे और हरोद नाम सोते के पास अपने डेरे खड़े किये और मिद्यानियों की छावनी उन की उत्तर ओर मोरे नाम पहाड़ी के पास तराई में पड़ी थी॥

२ तब यहोवा ने गिदोन से कहा जो लोग तेरे संग हैं सो इतने हैं कि मैं मिद्यानियों को उन के हाथ नहीं कर सकता नहीं तो इस्राएल यह कहकर मेरे विरुद्ध बड़ाई मारने लगेंगे कि मैं अपने ही भुजबल के द्वारा छूटा हूं। ३ सो तू जाकर लोगों को यह प्रचार करके सुना कि जो कोई डर के मारे थरथराता हो वह गिलाद पहाड़ से लौटकर चला जाए सो बाईस हजार लोग लौट गये और दस हजार रह गये॥

४ फिर यहोवा ने गिदोन से कहा अब भी लोग अधिक हैं उन्हें सोते के पास नीचे ले चल वहां मैं उन्हें तेरे लिये परखूंगा और जिस जिस के विषय मैं तुझ से कहूं कि यह तेरे संग चले वह तेरे संग चले और जिस जिस के विषय में कहूं कि यह तेरे संग न चले वह न ५ चले। सो वह उन को सोते के पास नीचे ले गया तब यहोवा ने गिदोन से कहा जितने कुत्ते की नाईं जीभ से पानी चपड़ चपड़ करके पीएं उन को अलग रख और ६ वैसा ही उन्हें भी जो घुटने टेककर पीएं। जिन्हों ने मुंह में हाथ लगा चपड़ चपड़ करके पिया उन की तो गिनती तीन सौ ठहरी और बाकी सब लोगों ने घुटने टेककर ७ पानी पिया। तब यहोवा ने गिदोन से कहा इन तीन सौ चपड़ चपड़ करके पीनेहारों के द्वारा मैं तुम को छुड़ाऊंगा और मिद्यानियों को तेरे हाथ में कर दूंगा और सब लोग ८ अपने अपने स्थान को चले जाएं। सो उन लोगों ने हाथ में सीधा और अपने नरसिंगे लिये और उस ने इस्राएल के सब पुरुषों को अपने अपने डेरे की ओर भेज दिया पर उन तीन सौ पुरुषों को अपने पास रख छोड़ा और मिद्यान की छावनी उस के नीचे तराई में पड़ी थी॥

९ उसी रात को यहोवा ने उस से कहा उठ छावनी पर चढ़ाई कर क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ कर देता हूं। १० पर यदि तू चढ़ाई करते डरता हो तो अपने सेवक पूरा ११ को संग ले छावनी के पास जाकर सुन, कि वे क्या क्या कह रहे हैं उस के पीछे तुझे उस छावनी पर चढ़ाई करने का हियाव बंधेगा। सो वह अपने सेवक पूरा को संग ले उन हथियारबन्धों के पास जो छावनी की छोर १२ पर थे उतर गया। मिद्यानी और अमालेकी और सब

पूरबी लोग तो टिड्डियों के समान बहुत से तराई में पड़े थे और उन के ऊंट समुद्रतीर का बालू के किनकों के समान
१३ गिनती से बाहर थे । जब गिदोन वहां आया तब एक जन अपने किसी संगी से अपना स्वप्न यों कह रहा था कि सुन मैं ने स्वप्न में क्या देखा है कि जो की एक रोटी लुढ़कते लुढ़कते मिद्यान की छावनी में आई और डेरे को ऐसा टक्कर मारा कि वह गिर गया और उस को ऐसा उलट
१४ दिया कि डेरा गिरा पड़ा रहा । उस के संगी ने उत्तर दिया यह योआश के पुत्र गिदोन नाम एक इस्राएली पुरुष की तलवार को छोड़ कुछ नहीं है उसी के हाथ में परमेश्वर ने मिद्यान को सारी छावनी समेत कर दिया है ॥

१५ उस स्वप्न का वर्णन और फल सुनकर गिदोन ने दण्डवत् की और इस्राएल की छावनी में लौटकर कहा उठो यहोवा ने मिद्यानी सेना को तुम्हारे वश में कर दिया
१६ है । तब उस ने उन तीन सौ पुरुषों के तीन गोल किये और एक एक पुरुष के हाथ में एक नरसिंगा और छूछा
१७ घड़ा और घड़ों के भीतर पलीते थे । फिर उस ने उन से कहा मुझे देखो और वैसा ही करो सुनो जब मैं उस छावनी की छोर पर पहुंचूं तब जैसा मैं करूं वैसा ही तुम भी
१८ करना । अर्थात् जब मैं और मेरे सब संगी नरसिंगा फूंकें तब तुम भी सारी छावनी के चारों ओर नरसिंगे फूंकना और यह कहना कि यहोवा के लिये और गिदोन के लिये ॥

१९ बीचवाले पहर के आदि में ज्योंही पहरुओं की बदली हो गई थी त्योंही गिदोन अपने संग के सौओं पुरुषों समेत छावनी की छोर पर गया और नरसिंगे को फूंक दिया
२० और अपने हाथ के घड़ों को तोड़ डाला । तब तीनों गोलों ने नरसिंगों को फूंक दिया और घड़ों को तोड़ डाला और अपने अपने बाएं हाथ में पलीता और दहिने हाथ में फूंकने को नरसिंगा लिये हुए यहोवा की तलवार गिदोन
२१ की तलवार ऐसा पुकारने लगे । तब वे छावनी के चारों ओर अपने अपने स्थान पर खड़े रहे तब सारी सेना के लोग दौड़ने लगे और उन्हों ने चिल्ला चिल्लाकर उन्हें भगा दिया ।
२२ और उन्हों ने तीनों सौ नरसिंगे फूंके और यहोवा ने एक एक पुरुष की तलवार उस के संगी पर और सारी सेना पर चलवाई सो सेना के लोग सरेरा की ओर बेतशित्ता लों और
२३ तब्बत के पास के आबेलमहोला लों भाग गये । तब इस्राएली पुरुष नप्ताली और आशेर और मनश्शे के सारे देश से
२४ इकट्ठे होकर मिद्यानियों के पीछे पड़े । और गिदोन ने एप्रैम के सब पहाड़ी देश में यह कहने को दूत भेज दिये कि मिद्यान के छेंकने को आओ और यर्दन नदी को बेतबारा लों उन से पहिले अपने वश कर लो । सो सब एप्रैमी पुरुषों ने इकट्ठे होकर यर्दन नदी को बेतबारा लों अपने वश कर
२५ लिया । और उन्हों ने ओरेब और जेब नाम मिद्यान के दो हाकिमों को पकड़ा और ओरेब को ओरेब नाम चटान पर और जेब को जेब नाम दाखरस के कुण्ड पर घात किया और वे मिद्यान के पीछे पड़े और ओरेब और जेब के सिर यर्दन के पार गिदोन के पास ले गये ।

८. तब एप्रैमी पुरुषों ने गिदोन से कहा तू ने हमारे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया है कि जब तू मिद्यान से लड़ने को चला तब हम को नहीं
२ बुलवाया सो वे उस से बड़ा झगड़ा मचाने लगे । उस ने उन से कहा तुम्हारे बराबर मैं ने अब क्या किया है क्या एप्रैम की छोड़ी हुई दाख भी अबीएजेर की सारी फसल
३ से अच्छी नहीं । तुम्हारे ही हाथों में परमेश्वर ने ओरेब और जेब नाम मिद्यान के हाकिमों को कर दिया सो तुम्हारे बराबर मैं क्या कर सका । जब उस ने यह बात कही तब उन का जी उस की ओर से ठंडा हो गया ॥

४ सो गिदोन और उस के संग के तीनों सौ पुरुष जो थके मान्दे थे पर तौभी खदेड़ते रहे यर्दन के तीर आकर
५ पार गये । तब उस ने सुक्कोत के लोगों से कहा मेरे पीछे इन आनेहारों को रोटियां दो क्योंकि ये थके मांदे हैं और मैं मिद्यान के जेबह और सल्मुन्ना नाम राजाओं का पीछा
६ किये जाता हूं । सुक्कोत के हाकिमों ने उत्तर दिया क्या जेबह और सल्मुन्ना तेरे हाथ में पड़ चुके हैं कि हम तेरी
७ सेना को रोटी दें । गिदोन ने कहा अब यहोवा जेबह और सल्मुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा तब मैं इस बात के कारण तुम को जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ों से
८ कूटूंगा । वहां से वह पनूएल को गया और वहां के लोगों[१] से ऐसी ही बात कही और पनूएल के लोगों ने सुक्कोत के
९ लोगों का सा उत्तर दिया । उस ने पनूएल के लोगों से कहा जब मैं कुशल से लौट आऊंगा तब इस गुम्मट को ढा दूंगा ॥

१० जेबह और सल्मुन्ना तो कर्कोर में थे और उन के साथ कोई पंद्रह हजार पुरुषों की सेना थी क्योंकि पूरबियों की सारी सेना में से उतने ही रह गये थे और जो मारे गये थे वे एक लाख बीस हजार हथियारबन्ध
११ थे । सो गिदोन ने नोबह और योग्बहा की पूरब ओर डेरों में रहनेहारों के मार्ग से चढ़कर उस सेना को जो

(१) मूल में उन ।

१२ निडर पड़ी थी मार लिया । और जब गोबा और सल्मुन्ना भागे तब उस ने उन का पीछा करके मिद्यानियों के उन दोनों राजाओं अर्थात् जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ लिया
१३ और सारी सेना को डरा दिया । और योआश का पुत्र
१४ गिदोन हेरेस नाम चढ़ाई पर से लड़ाई से लौटा[1], और सुक्कोत के एक जवान पुरुष को पकड़ कर उस से पूछा और उस ने सुक्कोत के सतहत्तरों हाकिमों और पुरनियों के पते
१५ लिखवाये । तब वह सुक्कोत के मनुष्यों के पास जाकर कहने लगा जेबह और सल्मुन्ना को देखो जिन के विषय तुम ने यह कहकर मुझे चिढ़ाया था कि क्या जेबह और सल्मुन्ना अभी तेरे हाथ में हैं कि हम तेरे थके मांदे जनों को रोटी
१६ दें । तब उस ने उस नगर के पुरनियों को पकड़ा और जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ लेकर सुक्कोत के पुरुषों को कुछ
१७ सिखाया । और उस ने पनूएल के गुम्मट को ढा दिया और
१८ उस नगर के मनुष्यों को घात किया । फिर उस ने जेबह और सल्मुन्ना से पूछा जो मनुष्य तुम ने ताबोर पर घात किये थे वे कैसे थे उन्हों ने उत्तर दिया जैसा तू वैसे ही वे भी थे
१९ अर्थात् एक एक का रूप राजकुमार का सा था । उस ने कहा वे तो मेरे भाई बरन मेरे सहोदर भाई थे यहोवा के जीवन की सोंह यदि तुम ने उन को जीते छोड़ा होता
२० तो मैं तुम को घात न करता । तब उस ने अपने जेठे पुत्र येतेर से कहा उठ कर इन्हें घात कर पर जवान ने अपनी तलवार न खींची क्योंकि वह तब तक लड़का ही था इस-
२१ लिये वह डर गया । तब जेबह और सल्मुन्ना ने कहा तू उठकर हम पर प्रहार कर क्योंकि जैसा पुरुष हो वैसा ही उस का पौरुष भी होगा । सो गिदोन ने उठकर जेबह और सल्मुन्ना को घात किया और उन के ऊंटों के गलों के चन्द्रहारों को ले लिया ॥

२२ तब इस्राएल के पुरुषों ने गिदोन से कहा तू हमारे ऊपर प्रभुता कर तू और तेरा पुत्र और पोता भी प्रभुता करे
२३ क्योंकि तू ने हम को मिद्यान के हाथ से छुड़ाया है । गिदोन ने उन से कहा मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूंगा और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता करे यहोवा ही तुम पर प्रभुता
२४ करेगा । फिर गिदोन ने उन से कहा मैं तुम से कुछ मांगता हूं अर्थात् तुम मुझ को अपनी अपनी लूट में के नत्थ दो । वे जो इश्माएली थे इस कारण उन के नत्थ
२५ सोने के थे । उन्हों ने कहा निश्चय हम देंगे सो उन्हों ने कपड़ा बिछा कर उस में अपनी अपनी लूट में के नत्थ डाल
२६ दिये । जो सोने के नत्थ उस ने मांग लिये उन का तौल एक हजार सात सौ शेकेल हुआ और उन को छोड़ चन्द्रहार झुमके और बैंगनी रंग के वस्त्र जो मिद्यानियों के राजा पहिने थे और उन के ऊंटों के गलों के कंठे थे । उन का
२७ गिदोन ने एक एपोद बनवा कर अपने ओप्रा नाम नगर में रक्खा और सब इस्राएल वहां व्यभिचारिन की नाईं उस के पीछे हो लिया और वह गिदोन और उस के
२८ घराने के लिये फन्दा ठहरा । सो मिद्यान इस्राएलियों से दब गया और फिर सिर न उठाया और गिदोन के जीवन भर अर्थात् चालीस बरस लों देश चैन से रहा ॥

२९ योआश का पुत्र यरुब्बाल तो जाकर अपने घर में
३० रहने लगा । और गिदोन के सत्तर बेटे उत्पन्न हुए क्योंकि
३१ उस के बहुत स्त्रियां थीं । और उस की जो एक सुरैतिन शकेम में रहती थी वह भी उस का जन्माया एक पुत्र जनी और गिदोन ने उस का नाम अबीमेलेक रक्खा ।
३२ निदान योआश का पुत्र गिदोन पूरे बुढ़ापे में मर गया और अबीएजेरियों के ओप्रा नाम गांव में उस के पिता योआश की कबर में उस को मिट्टी दी गई ॥

३३ गिदोन के मरते ही इस्राएली फिर गये और व्यभि-चारिन की नाईं बाल देवताओं के पीछे हो लिये और बाल-
३४ बरीत को अपना देवता मान लिया । और इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा को जिस ने उन की चारों ओर के सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया था स्मरण न रक्खा ।
३५ और न उन्हों ने यरुब्बाल अर्थात् गिदोन की उस सारी भलाई के अनुसार जो उस ने इस्राएलियों के साथ की थी उस के घराने को प्रीति दिखाई ॥

(अबीमेलेक का चरित्र)

९. यरुब्बाल का पुत्र अबीमेलेक शकेम को अपने मामाओं के पास जाकर उन से और अपने नाना के सारे घराने से यों कहने
२ लगा, शकेम के सब मनुष्यों से यह पूछो कि तुम्हारे लिये क्या भला है क्या यह कि यरुब्बाल के सत्तरों पुत्र तुम पर प्रभुता करें वा यह कि एक ही पुरुष तुम पर प्रभुता करे और यह भी स्मरण रक्खो कि मैं तुम्हारा
३ ही हाड़ मांस हूं । सो उस के मामाओं ने शकेम के सब मनुष्यों से ऐसी ही बातें कहीं और उन्हों ने यह सोच कर कि अबीमेलेक तो हमारा भाई है अपना मन उस
४ के पीछे लगा दिया । तब उन्हों ने बालबरीत के मन्दिर में से सत्तर टुकड़े रूपे उस को दिये और उन्हें लगा कर अबीमेलेक ने हलके हलके और लुच्चे जन रख
५ लिये जो उस के पीछे हो लिये । तब उस ने ओप्रा में

(१) वा सूर्य्य उदय न होने पाया कि योआश का पुत्र गिदोन लड़ाई से लौटा ।

अपने पिता के घर जाके अपने भाइयों को जो यरुब्बाल के सत्तर पुत्र थे एक ही पत्थर पर घात किया। पर यरुब्बाल का योताम नाम लहुरा पुत्र छिपकर बच गया॥

६ तब शकेम के सब मनुष्यों और बेतमिल्लो के सब लोगों ने इकट्ठे होकर शकेम में के खंभे के पासवाले बांजवृक्ष के पास अबीमेलेक को राजा किया। ७ इस का समाचार सुनकर योताम गरिज्जीम पहाड़ की चोटी पर जाकर खड़ा हुआ और ऊंचे स्वर से पुकारके कहने लगा हे शकेम के मनुष्यो मेरी सुनो इसलिये कि परमेश्वर भी तुम्हारी सुने। ८ सब वृक्ष किसी का अभिषेक करके अपने ऊपर राजा ठहराने को चले सो उन्हों ने जलपाई के वृक्ष से कहा तू हम पर राज्य कर। ९ जलपाई के वृक्ष ने कहा क्या मैं अपनी उस चिकनाहट को छोड़कर जिस से लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनों का आदर मान करते हैं वृक्षों का अधिकारी होकर इधर उधर डोलने को चलूं। १० तब वृक्षों ने अंजीर के वृक्ष से कहा तू आकर हम पर राज्य कर। ११ अंजीर के वृक्ष ने उन से कहा क्या मैं अपने मीठेपन और अपने अच्छे अच्छे फलों को छोड़ वृक्षों का अधिकारी होकर इधर उधर डोलने को चलूं। १२ फिर वृक्षों ने दाखलता से कहा तू आकर हम पर राज्य कर। १३ दाखलता ने उन से कहा क्या मैं अपने नये मधु को छोड़ जिस से परमेश्वर और मनुष्य दोनों को आनन्द होता है वृक्षों की अधिकारिन होकर इधर उधर डोलने को चलूं। १४ तब सब वृक्षों ने झड़बेड़ी से कहा तू आकर हम पर राज्य कर। १५ झड़बेड़ी ने उन वृक्षों से कहा यदि तुम अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक सच्चाई से करते हो तो आकर मेरी छांह में शरण लो और नहीं तो झड़बेड़ी से आग निकलेगी जिस से लबानोन के देवदारु भी भस्म हो जाएंगे। १६ सो अब यदि तुम ने सच्चाई और खराई से अबीमेलेक को राजा किया और यरुब्बाल और उस के घराने से भलाई की और उस से उस के काम के योग्य बर्ताव किया हो तो भला। १७ मेरा पिता तो तुम्हारे निमित्त लड़ा और अपने प्राण पर खेल कर तुम को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाया था। १८ पर तुम ने अब मेरे पिता के घराने के विरुद्ध उठकर उस के सत्तरों पुत्र एक ही पत्थर पर घात किये और उस की लौंडी के पुत्र अबीमेलेक को इसलिये शकेम के मनुष्यों के ऊपर राजा ठहराया है कि वह तुम्हारा भाई है। १९ सो यदि तुम लोगों ने आज के दिन यरुब्बाल और उस के घराने से सच्चाई और खराई से बर्ताव किया हो तो अबीमेलेक के कारण आनन्द करो और वह भी तुम्हारे कारण आनन्द करे। २० और नहीं तो अबीमेलेक से ऐसी आग निकले जिस से शकेम के मनुष्य और बेतमिल्लो भस्म हो जाएं और शकेम के मनुष्यों और बेतमिल्लो से ऐसी आग निकले जिस से अबीमेलेक भस्म हो जाए। २१ तब योताम भागा और अपने भाई अबीमेलेक के डर के मारे बेर को जाकर वहीं रहने लगा॥

२२ और अबीमेलेक इस्राएल के ऊपर तीन बरस हाकिम रहा। २३ तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के मनुष्यों के बीच एक बुरा आत्मा भेज दिया सो शकेम के मनुष्य अबीमेलेक का विश्वासघात करने लगे, २४ जिस से यरुब्बाल के सत्तरों पुत्रों पर किये हुए उपद्रव का फल भोगा जाए[१] और उन का खून उन के घात करनेहारे उन के भाई अबीमेलेक को और उस के अपने भाइयों के घात करने में उस की सहायता करनेहारे शकेम के मनुष्यों को भी लगे। २५ सो शकेम के मनुष्यों ने पहाड़ों की चोटियों पर उस के लिये घातुओं को बैठाया जो उस मार्ग से सब आने जानेहारों को लूटते थे और इस का समाचार अबीमेलेक को मिला॥

२६ तब एबेद का पुत्र गाल अपने भाइयों समेत शकेम में आया और शकेम के मनुष्यों ने उस का भरोसा किया। २७ और उन्हों ने मैदान में जाकर अपनी अपनी दाख की बारियों के फल तोड़े और उन का रस रौन्दा और स्तुति का बलिदान कर अपने देवता के मन्दिर में जाकर खाने पीने और अबीमेलेक को कोसने लगे। २८ तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा अबीमेलेक कौन है शकेम कौन है कि हम उस के अधीन रहें क्या वह यरुब्बाल का पुत्र नहीं क्या जबूल उस का नाइब नहीं शकेम के पिता हमोर के लोगों के तो अधीन हो पर हम उस के अधीन क्यों रहें। २९ और यह प्रजा मेरे बश में होती तो क्या ही भला होता तब तो मैं अबीमेलेक को दूर करता फिर उस ने अबीमेलेक से कहा अपनी सेना की गिनती बढ़ा कर निकल आ। ३० एबेद के पुत्र गाल की ये बातें सुन कर नगर के हाकिम जबूल का कोप भड़क उठा। ३१ और उस ने अबीमेलेक के पास छिपके[२] दूतों से कहला भेजा कि एबेद का पुत्र गाल और उस के भाई शकेम में आके नगरवालों को तेरा विरोध करने को उसकाते हैं। ३२ सो तू अपने संगवालों समेत रात को उठ कर मैदान में घात लगा। ३३ फिर बिहान को सवेरे सूर्य्य के निकलते ही उठ कर इस नगर पर चढ़ाई करना और जब वह अपने संगवालों समेत तेरा साम्हना करने को निकले तब जो कुछ तुझ से बन पड़े वही उस से करना॥

३४ तब अबीमेलेक और उस के संग के सब लोग रात

(१) मूल में उपद्रव आए।
(२) मूल में चतुराई से।

को उठ चार गोल बांध कर शकेम के विरुद्ध घात में ३५ बैठ गये। और एबेद का पुत्र गाल बाहर जाकर नगर के फाटक में खड़ा हुआ तब अबीमेलेक और उस के ३६ संगी घात छोड़कर उठ खड़े हुए। उन लोगों को देखकर गाल जबूल से कहने लगा देख पहाड़ों की चोटियों पर से लोग उतरे आते हैं जबूल ने उस से कहा वह तो पहाड़ों की छाया है जो तुझे मनुष्यों के समान ३७ देख पड़ती है। गाल ने फिर कहा देख लोग देश के बीचोंबीच होकर उतरे आते और एक गोल मोननीम ३८ नाम बांज वृक्ष के मार्ग से चला आता है। जबूल ने उस से कहा तेरी यह बात कहां रही कि अबीमेलेक कौन है कि हम उस के अधीन रहें ये तो वे ही लोग हैं जिन को तू ने निकम्मा जाना था सो अब निकलकर उन से ३९ लड़। सो गाल शकेम के पुरुषों का अगुआ हो बाहर ४० निकलकर अबीमेलेक से लड़ा। और अबीमेलेक ने उस को खदेड़ा और वह अबीमेलेक के साम्हने से भागा और नगर के फाटक लों पहुंचते पहुंचते बहुतेरे घायल ४१ होकर गिरे। तब अबीमेलेक अरूमा में रहने लगा और जबूल ने गाल और उस के भाइयों को निकाल दिया ४२ और शकेम में न रहने दिया। दूसरे दिन लोग मैदान में निकल गये और यह अबीमेलेक को बताया गया। ४३ और उस ने अपने जनों के तीन गोल बांधकर मैदान में घात लगाई और जब देखा कि लोग नगर से निकले आते हैं तब उन पर चढ़ाई करके उन्हें मार लिया। ४४ अबीमेलेक अपने संग के गोलों समेत आगे दौड़ कर नगर के फाटक पर खड़ा हो गया और दो गोलों ने उन सब लोगों पर धावा करके जो मैदान में थे उन्हें मार ४५ डाला। उसी दिन अबीमेलेक ने नगर से दिन भर लड़-कर उस को ले लिया और उस में के लोगों को घात करके नगर को ढा दिया और उस पर लोन छितरवा दिया॥

४६ यह सुनकर शकेम के गुम्मट के सब रहनेहारे ४७ एलबरीत के मन्दिर के गढ़ में जा घुसे। जब अबीमेलेक को यह समाचार मिला कि शकेम के गुम्मट के सब ४८ मनुष्य इकट्ठे हुए हैं, तब वह अपने सब संगियों समेत सलमोन नाम पहाड़ पर चढ़ गया और हाथ में कुल्हाड़ी ले पेड़ों में से एक डाली काटी और उसे उठा कर अपने कंधे पर रख ली और अपने संगवालों से कहा कि जैसा तुम ने मुझे करते देखा वैसा ही तुम भी झट करो। ४९ सो उन सब लोगों ने भी एक एक डाली काट ली और अबीमेलेक के पीछे हो उन को गढ़ पर डालकर गढ़[१] में आग लगाई सो शकेम के गुम्मट के सब स्त्रीपुरुष जो अटकल एक हजार थे मर गये॥

तब अबीमेलेक ने तेबेस को जा उस के साम्हने डेरे ५० खड़े करके उस को ले लिया। पर उस नगर के बीच ५१ एक दृढ़ गुम्मट था सो क्या स्त्री क्या पुरुष नगर के सब लोग भागकर उस में घुसे और उसे बन्द करके गुम्मट की छत पर चढ़ गये। तब अबीमेलेक गुम्मट के निकट ५२ जाकर उस के विरुद्ध लड़ने लगा और गुम्मट के द्वार लों गया कि उस में आग लगाए। तब किसी स्त्री ने चक्की ५३ का ऊपरला पाट अबीमेलेक के सिर पर डाल दिया और उस की खोपड़ी फट गई। सो उस ने झट अपने ५४ हथियारों के ढोनेहारे जवान को बुलाकर कहा अपनी तलवार खींचकर मुझे मार डाल ऐसा न हो कि लोग मेरे विषय कहने पाएं कि उस को एक स्त्री ने घात किया सो उस के जवान ने तलवार भोंक दी और वह मर गया। यह देखकर कि अबीमेलेक मर गया है इस्राएली ५५ अपने अपने स्थान को चले गये। सो जो दुष्ट काम ५६ अबीमेलेक ने अपने सत्तरों भाइयों को घात करके अपने पिता के साथ किया था उस को परमेश्वर ने उस के सिर पर लौटा दिया। और शकेम के पुरुषों के भी सब दुष्ट ५७ काम परमेश्वर ने उन के सिर पर लौटा दिये और यरुब्बाल के पुत्र योताम का स्नाप उन पर घट गया॥

(तोला और याईर के चरित्र)

१०. **अबीमेलेक** के पीछे इस्राएल के छुड़ाने के लिये तोला नाम एक इस्साकारी उठा वह दोदो का पोता और पूआ का पुत्र था और एप्रैम के पहाड़ी देश के शामीर नगर में रहता था। वह तेईस बरस लों इस्राएल का २ न्याय करता रहा तब मर गया और उस को शामीर में मिट्टी दी गई॥

उस के पीछे गिलादी याईर उठा वह बाईस बरस ३ लों इस्राएल का न्याय करता रहा। और उस के तीस ४ पुत्र थे जो गदहियों के तीस बच्चों पर सवार हुआ करते थे और उन के तीस नगर भी थे जो गिलाद देश में हैं और आज लों हव्वोत्याईर[२] कहलाते हैं। और याईर मर ५ गया और उस को कामोन में मिट्टी दी गई॥

तब इस्राएली फिर वह करने लगे जो यहोवा के ६ लेखे में बुरा है अर्थात् बाल देवताओं अश्तोरेत देवियों और आराम सीदोन मोआब अम्मोनियों और

(१) मूल में उन के ऊपर गढ़।

(२) अर्थात् याईर की बस्तियां।

पलिश्तियों के देवताओं की उपासना करने लगे और यहोवा को त्याग दिया और उस की उपासना न की। ७ सो यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़का और उस ने उन्हें पलिश्तियों और अम्मोनियों के अधीन कर दिया। ८ और उस बरस ये इस्राएलियों को पेरते और पीसते रहे बरन यर्दन पार एमोरियों के देश गिलाद में रहनेहारे सब इस्राएलियों पर अठारह बरस लों अंधेर करते रहे। ९ अम्मोनी यहूदा और बिन्यामीन से और एप्रैम के घराने से लड़ने को यर्दन पार जाते थे यहां लों कि इस्राएल बड़े संकट में पड़ा। १० तब इस्राएलियों ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी कि हम ने जो अपने परमेश्वर को त्यागकर बाल देवताओं की उपसना की है यह हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है। ११ यहोवा ने इस्राएलियों से कहा क्या मैं ने तुम को मिस्रियों एमोरियों अम्मोनियों और पलिश्तियों से न छुड़ाया था। १२ फिर जब सीदोनी और अमालेकी और माओनी लोगों ने तुम पर अंधेर किया और तुम ने मेरी दोहाई दी तब मैं ने तुम को उन के हाथ से भी छुड़ाया। १३ तौभी तुम ने मुझे त्यागकर पराये देवताओं की उपासना की है इसलिये मैं फिर तुम को न छुड़ाऊंगा। १४ जाओ अपने माने हुए देवताओं की दोहाई दो तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हें छुड़ाएं। १५ इस्राएलियों ने यहोवा से कहा हम ने पाप किया है सो जो कुछ तेरी दृष्टि में भला हो वही हम से कर पर अभी हमें छुड़ा। १६ तब वे बिराने देवताओं को अपने बीच से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे और वह इस्राएलियों के कष्ट के कारण खेदित हुआ॥

१७ तब अम्मोनियों ने इकट्ठे होकर गिलाद में अपने डेरे डाले और इस्राएलियों ने भी इकट्ठे होकर मिस्पा में अपने डेरे डाले। १८ तब गिलाद में के हाकिम एक दूसरे से कहने लगे कौन पुरुष अम्मोनियों से लड़ने का आरंभ करेगा वह गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा॥

११. **यिप्तह** नाम गिलादी बड़ा बीर था और वह वेश्या का बेटा था और २ गिलाद ने यिप्तह को जन्माया था। गिलाद की स्त्री के भी बेटे उत्पन्न हुए और जब वे बड़े हो गये तब यिप्तह को यह कहकर निकाल दिया कि तू जो बिरानी का बेटा है इस कारण हमारे पिता के घराने में भाग न पाएगा। ३ सो यिप्तह अपने भाइयों के पास से भागकर तोब देश में रहने लगा और यिप्तह के पास हलके हलके मनुष्य इकट्ठे हुए और उस के संग बाहर जाते थे॥

४ कितने दिन पीछे अम्मोनी इस्राएल से लड़ने लगे। ५ जब अम्मोनी इस्राएल से लड़ते थे तब गिलाद के पुरनिये यिप्तह को तोब देश से ले आने को गये ६ और यिप्तह से कहा चलकर हमारा प्रधान हो जा कि हम अम्मोनियों से लड़ सकें। ७ यिप्तह ने गिलाद के पुरनियों से कहा क्या तुम ने मुझ से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल न दिया था फिर अब संकट में पड़कर मेरे पास क्यों आये हो। ८ गिलाद के पुरनियों ने यिप्तह से कहा इस कारण हम अब तेरी ओर फिरे हैं कि तू हमारे संग चलकर अम्मोनियों से लड़े तब तू हमारी ओर से गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा। ९ यिप्तह ने गिलाद के पुरनियों से पूछा यदि तुम मुझे अम्मोनियों से लड़ने को फिर मेरे घर ले चलो और यहोवा उन्हें मेरे हाथ कर दे तो क्यों मैं तुम्हारा प्रधान ठहरूंगा। १० गिलाद के पुरनियों ने यिप्तह से कहा निश्चय हम तेरी इस बात के अनुसार करेंगे यहोवा हमारे तेरे बीच इन वचन का सुननेवाला है। ११ सो यिप्तह गिलाद के पुरनियों के संग चला और लोगों ने उस को अपने ऊपर मुख्य और प्रधान ठहराया और यिप्तह ने अपनी सारी बातें मिस्पा में यहोवा के सुनते कह दीं॥

१२ तब यिप्तह ने अम्मोनियों के राजा के पास दूतों से यह कहला भेजा कि तुझे मुझ से क्या काम कि तू मेरे देश में लड़ने को आया है। १३ अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह के दूतों से कहा कारण यह है कि जब इस्राएली मिस्र से आये तब अर्नोन से यब्बोक और यर्दन लों जो मेरा देश था उस को उन्हों ने छीन लिया सो अब उस को बिना झगड़ा किये फेर दे। १४ तब यिप्तह ने फिर अम्मोनियों के राजा के पास यह कहने को दूत भेजे कि, १५ यिप्तह तुझ से यों कहता है कि इस्राएल ने न तो मोआब का देश ले लिया और न अम्मोनियों का। १६ बरन जब वे मिस्र से निकले और इस्राएल जंगल में होते हुए लाल समुद्र तक चला और कादेश को आया, १७ तब इस्राएल ने एदोम के राजा के पास दूतों से यह कहला भेजा कि मुझे अपने देश में होकर जाने दे और एदोम के राजा ने उन की न मानी उसी रीति उस ने मोआब के राजा से भी कहला भेजा और उस ने भी न माना सो इस्राएल कादेश में रह गया। १८ तब उस ने जंगल में चलते चलते एदोम और मोआब दोनों देशों के बाहर बाहर घूमकर मोआब देश की पूरब ओर से आकर अर्नोन के इसी पार अपने डेरे डाले और मोआब के सिवाने के भीतर न गया क्योंकि मोआब का सिवाना अर्नोन था। १९ फिर इस्राएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास जो हेश्बोन का राजा था दूतों से यह कहला भेजा कि हमें अपने देश में

२० होकर हमारे स्थान को जाने दे। पर सीहोन ने इस्राएल का इतना बिश्वास न किया कि उसे अपने देश में होकर जाने दे बरन अपनी सारी प्रजा को इकट्ठी कर अपने
२१ डेरे यहस में खड़े करके इस्राएल से लड़ा। और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने सीहोन को सारी प्रजा समेत इस्राएल के हाथ में कर दिया और उन्हों ने उन को मार लिया सो इस्राएल उस देश के निवासी एमोरियों के सारे
२२ देश का अधिकारी हो गया। अर्थात् वह अर्नोन से यब्बोक लों और जंगल से ले यर्दन लों एमोरियों के
२३ सारे देश का अधिकारी हो गया। सो अब इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अपनी इस्राएली प्रजा के साम्हने से एमोरियों को उन के देश से निकाल दिया फिर क्या तू
२४ उस का अधिकारी होने पाएगा। क्या तू उस का अधिकारी न होगा जिस का तेरा कमोश देवता तुझे अधिकारी कर दे इसी प्रकार से जिन लोगों को हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे साम्हने से निकाले उन के देश के अधिकारी
२५ हम होंगे। फिर क्या तू मोआब के राजा सिप्पोर के पुत्र बालाक से कुछ अच्छा है क्या उस ने कभी इस्राएलियों से कुछ भी झगड़ा किया क्या वह उन से कभी लड़ा।
२६ जब कि इस्राएल हेश्बोन और उस के गांवों में और अरोएर और उस के गांवों में और अर्नोन के किनारे के सब नगरों में तीन सौ बरस से बसा है तो इतने दिनों
२७ में तुम लोगों ने उस को क्यों नहीं छुड़ा लिया। मैं ने तेरा अपराध नहीं किया तू ही मुझ से लड़ाई करके बुरा व्यवहार करता है सो यहोवा जो न्यायी है वह इस्राएलियों और अम्मोनियों के बीच आज न्याय करे।
२८ तौभी अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह की ये बातें न मानीं जिन को उस ने कहला भेजा था॥

२९ तब यहोवा का आत्मा यिप्तह पर आ गया और वह गिलाद और मनश्शे से होकर गिलाद के मिस्पे में आया और गिलाद के मिस्पे से होकर अम्मोनियों की
३० ओर चला। और यिप्तह ने यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी कि यदि तू निःसंदेह अम्मोनियों को मेरे हाथ कर
३१ दे, तो जब मैं कुशल के साथ अम्मोनियों से लौट आऊं तब जो कोई मेरी भेंट के लिये मेरे घर के द्वार से निकले वह यहोवा का ठहरेगा और मैं उसे होमबलि करके
३२ चढ़ाऊंगा। तब यिप्तह अम्मोनियों से लड़ने को उन की ओर गया और यहोवा ने उन को उस के हाथ में
३३ कर दिया। और वह अरोएर से ले मिन्नीत लों बरन आबेलकरामीम लों जीतते जीतते उन्हें बहुत बड़ी मार से मारता गया और अम्मोनी इस्राएलियों से दब गये॥

३४ जब यिप्तह मिस्पा को अपने घर आया तब उस की बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उस की भेंट के लिये निकल आई वह उस की एकलौती थी उस को छोड़
३५ उस के न बेटा था न बेटी। उस को देखते ही उस ने अपने कपड़े फाड़कर कहा हाय मेरी बेटी तू ने कमर तोड़ दी[१] और तू भी मेरे कष्ट देनेवालों में की हो गई है क्योंकि मैं ने यहोवा को वचन दिया है और उसे टाल
३६ नहीं सकता। उस ने उस से कहा हे मेरे पिता तू ने जो यहोवा को वचन दिया है सो जो बात तेरे मुंह से निकली है उसी के अनुसार मुझ से बर्ताव कर किस लिये कि यहोवा ने तेरे अम्मोनी शत्रुओं से तेरा पलटा लिया
३७ है। फिर उस ने अपने पिता से कहा मेरे लिये यह किया जाए कि दो महीने तक मुझे छोड़े रह कि मैं अपनी सहेलियों सहित जाकर पहाड़ों पर फिरती हुई अपने
३८ कुंवारपन पर रोती रहूं। उस ने कहा जा सो उस ने उसे दो महीने की छुट्टी दी सो वह अपनी सहेलियों सहित चली
३९ गई और पहाड़ों पर अपने कुंवारपन पर रोती रही। दो महीने के बीते पर वह अपने पिता के पास लौट आई और उस ने उस के विषय अपनी मानी हुई मन्नत को पूरी किया और उस कन्या ने पुरुष का मुंह कभी न देखा
४० था। सो इस्राएलियों में यह रीति चली कि इस्राएली स्त्रियां बरस बरस यिप्तह गिलादी की बेटी का यश गाने को बरस दिन में चार दिन जाया करती थीं॥

१२. तब एप्रैमी पुरुष इकट्ठे हो सापोन को जाकर यिप्तह से कहने लगे कि जब तू अम्मोनियों से लड़ने को गया तब हमें संग चलने को क्यों न बुलवाया हम तेरा घर तुझ समेत
२ जला देंगे। यिप्तह ने उन से कहा मेरा और मेरे लोगों का अम्मोनियों से बड़ा झगड़ा हुआ था और जब मैं ने तुम से सहायता मांगी तब तुम ने मुझे उन के हाथ से
३ नहीं बचाया। सो यह देखकर कि ये मुझे नहीं बचाते मैं अपना प्राण हथेली पर रखकर अम्मोनियों के विरुद्ध चला और यहोवा ने उन को मेरे हाथ में कर दिया फिर
४ तुम अब मुझ से लड़ने को क्यों चढ़ आये हो। तब यिप्तह गिलाद के सब पुरुषों को बटोरके एप्रैम से लड़ा और एप्रैम जो कहता था कि हे गिलादियो तुम तो एप्रैम और मनश्शे के बीच रहनेवाले एप्रैमियों के भगोड़े
५ हो सो गिलादियों ने उन को मार लिया। और गिलादियों ने यर्दन का घाट उन से पहिले अपने वश में कर लिया और जब कोई एप्रैमी भगोड़ा कहता कि मुझे पार जाने

(१) मूल में तू ने मुझे बहुत झुकाया है।

दी तब गिलाद के पुरुष उस से पूछते थे क्या तू एप्रैमी[१]
६ है और यदि वह कहता नहीं, तो वे उस से कहते अच्छा शिब्बोलेत कह और वह कहता सिब्बोलेत क्योंकि उस से वह ठीक बोला न जाता था तब वे उस को पकड़कर यर्दन के घाट पर मार डालते थे सो उस समय बयालीस हजार एप्रैमी मारे गये ॥

७ यिप्तह छः बरस लों इस्राएल का न्याय करता रहा तब यिप्तह गिलादी मर गया और उस को गिलाद के किसी नगर में[२] मिट्टी दी गई ॥

८ उस के पीछे बेतलेहेम का निवासी इबसान इस्रा-
९ एल का न्याय करने लगा। और उस के तीस बेटे हुए और उस ने अपनी तीस बेटियां बाहर ब्याह दीं और बाहर से अपने बेटों का ब्याह करके तीस बहू ले आया
१० और वह इस्राएल का न्याय सात बरस करता रहा। तब इबसान मर गया और उस को बेतलेहेम में मिट्टी दी गई ॥

११ उस के पीछे जबूलूनी एलोन इस्राएल का न्याय करने लगा और वह इस्राएल का न्याय दस बरस करता
१२ रहा। तब एलोन जबूलूनी मर गया और उस को जबूलून के देश के अय्यालोन में मिट्टी दी गई ॥

१३ उस के पीछे हिल्लेल का पुत्र पिरातोनी अब्दोन
१४ इस्राएल का न्याय करने लगा। और उस के चालीस बेटे और तीस पोते हुए जो गदहियों के सत्तर बच्चों पर सवार हुआ करते थे। वह आठ बरस लों इस्राएल का
१५ न्याय करता रहा। तब हिल्लेल का पुत्र पिरातोनी अब्दोन मर गया और उस को एप्रैम के देश के पिरातोन में जो अमालेकियों के पहाड़ी देश में है मिट्टी दी गई ॥

(शिमशोन का चरित्र)

१३. और इस्राएली फिर वह करने लगे जो यहोवा के लेखे में बुरा है सो यहोवा ने उन को पलिश्तियों के वश में चालीस बरस लों रक्खा ॥

२ दानियों के कुल का सोरावासी मानोह नाम एक पुरुष था जिस की स्त्री बांझ होने के कारण न जनी थी।
३ इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा सुन, तू बांझ होने के कारण नहीं जनी पर अब गर्भवती होकर
४ बेटा जनेगी। सो अब चौकस रह कि न तो तू दाखमधु वा और किसी भान्ति की मदिरा पिए और न कोई
५ अशुद्ध वस्तु खाए। क्योंकि तू गर्भवती हो कर एक बेटा जनेगी और उस के सिर पर छुरा न फिरे क्योंकि वह जन्म ही से परमेश्वर का नाजीर रहेगा और इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाने में वही हाथ लगा-
६ एगा। उस स्त्री ने अपने पति के पास आकर कहा परमेश्वर का एक जन मेरे पास आया था जिस का रूप परमेश्वर के दूत का सा अति भययोग्य था और मैं ने उस से न पूछा कि तू कहां का है और न उस ने मुझे अपना नाम
७ बताया। पर उस ने मुझ से कहा सुन तू गर्भवती होकर बेटा जनेगी सो अब न तो दाखमधु वा और किसी भान्ति की मदिरा पीना और न कोई अशुद्ध वस्तु खाना क्योंकि वह लड़का जन्म से मरण के दिन लों परमेश्वर का
८ नाजीर रहेगा। तब मानोह ने यहोवा से यह बिनती की कि हे प्रभु बिनती सुन परमेश्वर का वह जन जिसे तू ने भेजा था फिर हमारे पास आए और हमें सिखलाए कि जो बालक उत्पन्न होनेवाला है उस से हम क्या
९ क्या करें। मानोह की यह बात परमेश्वर ने सुन ली सो जब वह स्त्री मैदान में बैठी थी और उस का पति मानोह उस के संग न था तब परमेश्वर का वही दूत उस
१० के पास आया। सो उस स्त्री ने झट दौड़कर अपने पति को यह समाचार दिया कि जो पुरुष उस दिन मेरे पास
११ आया था उसी ने मुझे दर्शन दिया है। सो मानोह उठ कर अपनी स्त्री के पीछे चला और उस पुरुष के पास आकर पूछा कि क्या तू वही पुरुष है जिस ने इस स्त्री
१२ से बातें की थीं उस ने कहा मैं वही हूं। मानोह ने कहा अब तेरे वचन पूरे हो जाएं तो उस बालक से कैसा व्यवहार करना चाहिये और उस का क्या काम होगा।
१३ यहोवा के दूत ने मानोह से कहा जितनी वस्तुओं की चर्चा मैं ने इस स्त्री से की थी उन सब से यह परे
१४ रहे। यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न होती है न खाए और न दाखमधु वा और किसी भान्ति की मदिरा पीए और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए जो जो आज्ञा मैं ने
१५ इस को दी थी उसी को यह माने। मानोह ने यहोवा के दूत से कहा हम तुझ को बिलमाने पाएं कि तेरे लिये
१६ बकरी का एक बच्चा पकाकर तैयार करें। यहोवा के दूत ने मानोह से कहा चाहे तू मुझे बिलमा रक्खे पर मैं तेरे भोजन में से कुछ न खाऊंगा और यदि तू होमबलि करने चाहे तो यहोवा ही के लिये कर। मानोह तो न
१७ जानता था कि यह यहोवा का दूत है। मानोह ने यहोवा के दूत से कहा अपना नाम बता[३] इसलिये कि जब तेरी बातें पूरी हों तब हम तेरा आदरमान कर सकें।
१८ यहोवा के दूत ने उस से कहा मेरा नाम तो अद्भुत है
१९ सो तू उसे क्यों पूछता है। तब मानोह ने अन्नबलि

(१) मूल में एप्राती। (२) मूल में नगरों में।

(३) मूल में तेरा नाम क्या है।

समेत बकरी का एक बच्चा लेकर चटान पर यहोवा के लिये चढ़ाया तब उस दूत ने मानोह और उस की स्त्री के
२० देखते देखते अद्भुत काम किया । अर्थात् जब लौ उस वेदी पर से आकाश की ओर उठ रही थी तब यहोवा का दूत उस वेदी पर की लौ में होकर मानोह और उस की स्त्री के देखते देखते चढ़ गया सो वे भूमि पर मुंह के बल
२१ गिरे । पर यहोवा के दूत ने मानोह और उस की स्त्री को फिर कभी दर्शन न दिया । तब मानोह ने जान लिया
२२ कि वह यहोवा का दूत था । सो मानोह ने अपनी स्त्री से कहा हम निश्चय मर जाएंगे क्योंकि हम ने परमेश्वर
२३ का दर्शन पाया है । उस की स्त्री ने उस से कहा यदि यहोवा हमें मार डालना चाहता तो हमारे हाथ से होमबलि और अन्नबलि ग्रहण न करता और न वह ऐसी सब बातें हम को दिखाता और न वह इस समय हमें
२४ ऐसी बातें सुनाता । और वह स्त्री एक बेटा जनी और उस का नाम शिमशोन रक्खा और वह बालक बढ़ता
२५ गया और यहोवा उस को आशिष देता रहा । और यहोवा का आत्मा सोरा और एशताओल के बीच महनेदान[१] में उस को उभारने लगा ॥

१४. शिमशोन तिम्ना को गया और तिम्ना में एक पलिश्ती स्त्री को

२ देखा । सो उस ने जाकर अपने माता पिता से कहा तिम्ना में मैं ने एक पलिश्ती स्त्री को देखा है सो अब
३ तुम उस से मेरा ब्याह करा दो । उस के माता पिता ने उस से कहा क्या तेरे भाइयों की बेटियों में वा हमारे सब लोगों में कोई स्त्री नहीं है कि तू खतनाहीन पलिश्तियों में से स्त्री ब्याहने चाहता है । शिमशोन ने अपने पिता से कहा उसी से मेरा ब्याह करा दे क्योंकि मुझे वही
४ अच्छी लगती है । उस के माता पिता न जानते थे कि यह बात यहोवा की ओर से होती है कि वह पलिश्तियों के विरुद्ध दांव ढूंढ़ता है । उस समय तो पलिश्ती इस्राएल पर प्रभुता करते थे ॥

५ सो शिमशोन अपने माता पिता को संग ले तिम्ना को चल कर तिम्ना की दाखबारियों के पास पहुंचा,
६ वहां उस के साम्हने एक जवान सिंह गरजने लगा । तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा और यद्यपि उस के हाथ में कुछ न था तौभी उस ने उस को ऐसा फाड़ डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फाड़े । अपना यह काम
७ उस ने अपने पिता वा माता को न बतलाया । तब उस ने जाकर उस स्त्री से बातचीत की और वह शिमशोन
८ को अच्छी लगी । कुछ दिन बीते वह उसे लाने को लौट चला और उस सिंह की लोथ देखने के लिये मार्ग से मुड़ गया तो क्या देखा कि सिंह की लोथ में मधु-
९ मक्खियों का एक झुण्ड और मधु भी है । सो वह उस में से कुछ हाथ में लेकर खाते खाते अपने माता पिता के पास गया और उन को यह बिना बताये कि मैं ने इस को सिंह की लोथ में से निकाला है कुछ दिया और
१० उन्हों ने उसे खाया । तब उस का पिता उस स्त्री के यहां गया और शिमशोन ने जवानों की रीति के अनुसार वहां
११ जेवनार की । उस को देखकर वे उस के संग रहने के
१२ लिये तीस संगियों को ले आये । शिमशोन ने उन से कहा मैं तुम से एक पहेली कहता हूं यदि तुम इस जेवनार के सातों दिन के भीतर उसे बूझ कर अर्थ बतला दो तो मैं तुम को तीस कुरते और तीस जोड़े कपड़े
१३ दूंगा । और यदि तुम उसे न बतला सको तो तुम को मुझे तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने पड़ेंगे उन्हों ने
१४ उस से कहा अपनी पहेली कह कि हम उसे सुनें । उस ने उन से कहा

खानेहारे में से खाना
और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली । इस पहेली का अर्थ वे तीन दिन के भीतर न बता सके ।
१५ सातवें दिन उन्हों ने शिमशोन की स्त्री से कहा अपने पति को फुसला कि वह हमें पहेली का अर्थ बतलाए नहीं तो हम तुझे तेरे पिता के घर समेत आग में जलाएंगे क्या तुम लोगों ने हमारा धन लेने के लिये हमारा
१६ नेवता किया है क्या ऐसा नहीं है । सो शिमशोन की स्त्री यह कहकर उस के साम्हने रोने लगी कि तू तो मुझ से प्रेम नहीं बैर ही रखता है कि तू ने एक पहेली मेरी जाति के लोगों से तो कही है पर मुझ को उस का अर्थ नहीं बतलाया उस ने कहा मैं ने उसे अपनी माता व पिता को भी नहीं बतलाया फिर क्या मैं तुझ को बतला
१७ दूं । और जेवनार के सातों दिनों में वह स्त्री उस के साम्हने रोती रही और सातवें दिन जब उस ने उस को बहुत तंग किया तब उस ने उस को पहेली का अर्थ बतला दिया तब उस ने उसे अपनी जाति के लोगों को बतला दिया ।
१८ सो सातवें दिन सूर्य्य डूबने न पाया कि उस नगर के मनुष्यों ने शिमशोन से कहा मधु से अधिक क्या मीठा और सिंह से अधिक क्या बलवन्त है । उस ने उन से कहा

जो तुम मेरी कलोर को हल में न जोतते
तो मेरी पहेली को कभी न बूझते ॥

१९ तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा और उस ने आश्कलोन को जाकर वहां के तीस पुरुषों

(१) अर्थात् दान की छावनी ।

को मार डाला और उन का धन लूट कर तीस जोड़े कपड़ों को पहेली के बतानेहारों को दे दिया तब उस
१० का कोप भड़का और वह अपने पिता के घर गया । और शिमशोन की स्त्री उस के एक संगी को जिस से उस ने मित्र का सा बर्ताव किया था ब्याह दी गई ॥

१५. कितने दिन पीछे गेहूं की कटनी के दिनों में शिमशोन ने बकरी का एक बच्चा ले अपनी ससुराल जाकर कहा मैं अपनी स्त्री के पास कोठरी में जाऊंगा पर उस के ससुर ने उसे भीतर जाने से रोका ।
२ और उस के ससुर ने कहा मैं सचमुच यह जानता था कि तू उस से बैर ही रखता है सो मैं ने उसे तेरे संगी के ब्याह दिया क्या उस की छोटी बहिन उस से सुन्दर नहीं है उस
३ के बदले उसी को ब्याह ले । शिमशोन ने उन लोगों से कहा अब चाहे मैं पलिश्तियों की हानि भी करूं तौ भी उन
४ के विषय निर्दोष ठहरूंगा । सो शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमड़ी पकड़ीं और पलीते लेकर दो दो लोमड़ियों की पूंछ एक साथ बांधी और उन के बीच एक एक पलीता
५ बांधा । तब पलीतों को बारके उस ने लोमड़ियों को पलिश्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया और पूलियों के ढेर बरन खड़े खेत और जलपाई की बारियां भी जल गईं ।
६ सो पलिश्ती पूछने लगे यह किस ने किया है लोगों ने कहा उस तिम्नी के दामाद शिमशोन ने यह इस लिये किया कि उस के ससुर ने उस की स्त्री उस के संगी के ब्याह दी तब पलिश्तियों ने जाकर उस स्त्री और उस के पिता दोनो
७ को आग में जला दिया । शिमशोन ने उन से कहा तुम जो ऐसा काम करते हो सो मैं तुम से पलटा लेकर तब
८ ही चुप रहूंगा । सो उस ने उन को अति निठुरता के साथ[१] बड़ी मार से मार डाला तब जाकर एताम नाम ढांग की एक दरार में रहने लगा ॥
९ तब पलिश्तियों ने चढ़ाई करके यहूदा देश में डेरे
१० खड़े किये और लही में फैल गये । सो यहूदी मनुष्यों ने उन से पूछा तुम हम पर क्यों चढ़ाई करते हो उन्हों ने उत्तर दिया शिमशोन को बांधने के लिये चढ़ाई करते हैं कि जैसे उस ने हम से किया वैसे ही हम भी उस से
११ करें । सो तीन हजार यहूदी पुरुष एताम नाम ढांग की दरार को जाकर शिमशोन से कहने लगे क्या तू नहीं जानता कि पलिश्ती हम पर प्रभुता करते हैं फिर तू ने हम से ऐसा क्यों किया है उस ने उन से कहा जैसा उन्हों ने मुझ से किया था वैसा ही मैं ने भी उन से किया है ।
१२ उन्हों ने उस से कहा हम तुझे बांधकर पलिश्तियों के हाथ में कर देने के लिये आये हैं शिमशोन ने उन से कहा मुझ से यह किरिया खाओ कि हम आप तुझ पर प्रहार न
१३ करेंगे । उन्हों ने कहा ऐसा न होगा हम तुझे कसकर उन के हाथ में कर देंगे पर तुझे किसी रीति न मार डालेंगे सो वे उस को दो नई रस्सियों से बांधकर उस ढांक में से ले
१४ गये । वह लही तक आ गया था कि पलिश्ती उस को देख कर ललकारने लगे तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा और उस की बांहों की रस्सियां आग में जले हुए सन के समान हो गईं और उस के हाथों के बन्धन मानों
१५ गलकर टूट पड़े । तब उस को गदहे के जभड़े की एक नई हड्डी मिली और उस ने हाथ बढ़ा उसे लेकर एक हजार
१६ पुरुषों को मार डाला । तब शिमशोन ने कहा

गदहे के जभड़े की हड्डी से ढेर के ढेर
गदहे के जभड़े की हड्डी ही से मैं ने हजार पुरुषों को मार डाला ॥

१७ जब वह ऐसा कह चुका तब उस ने जभड़े की हड्डी फेंक
१८ दी और उस स्थान का नाम रामतलही[२] रक्खा गया । तब उस को बड़ी प्यास लगी और उस ने यहोवा को पुकारके कहा तू ने अपने दास से यह बड़ा छुटकारा कराया है फिर क्या मैं अब प्यासों मर के उन खतनाहीन लोगों के हाथ
१९ में पड़ूं । सो परमेश्वर ने लही में ओखली सा गढ़हा कर दिया और उस में से पानी निकलने लगा और जब शिमशोन ने पिया तब उस के जी में जी आया और वह फिर जी गया इस कारण उस सोते का नाम एनहक्कोरे[३] रक्खा गया
२० वह आज के दिन लों लही में है । शिमशोन तो पलिश्तियों के दिनों में बीस बरस लों इस्राएल का न्याय करता रहा ॥

१६. तब शिमशोन अज्जा के गया और वहां एक वेश्या के देखकर उस के पास
२ गया । जब अज्जियों को इस का समाचार मिला कि शिमशोन यहां आया है तब उन्हों ने उस को घेर लिया और रात भर नगर के फाटक पर उस की घात में लगे रहे और यह कहकर रात भर चुपचाप रहे कि बिहान को भोर होते ही
३ हम उस का घात करेंगे । पर शिमशोन आधी रात लों पड़ा रहकर आधी रात को उठ नगर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं को पकड़कर बेंड़ों समेत उखाड़ लिया और अपने कन्धों पर रखकर उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर ले गया जो हेब्रोन के सम्हने है ॥

(१) मूल में जांघ पर टांग ।

(२) अर्थात् जभड़े का टीला । (३) अर्थात् पुकारनेहारे का सोता ।

४ इस के पीछे वह सोरेक नाम नाले में रहनेवाली
५ दलीला नाम एक स्त्री से प्रीति करने लगा। सो पलिश्तियों के सरदारों ने उस स्त्री के पास जा के कहा तू उस को फुसला कर बूझ ले कि उस का बड़ा बल काहे से है और कौन उपाय करके हम उस पर ऐसे प्रबल हो सकें कि उसे बांध कर दबा रक्खें तब हम तुझे ग्यारह
६ ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी देंगे। तब दलीला ने शिमशोन से कहा मुझे बता दे कि तेरा बड़ा बल काहे से है और
७ किस रीति से कोई तुझे बांधकर दबा रख सके। शिमशोन ने उस से कहा यदि मैं सात ऐसी नई नई तांतों से बांधा जाऊं जो सुखाई न गई हों तो मेरा बल घट
८ जायगा और मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा। सो पलिश्तियों के सरदार दलीला के पास ऐसी नई नई सात तांतें ले गये जो सुखाई न गई थीं और उन से उस
९ ने शिमशोन को बांधा। उस के पास तो कुछ मनुष्य कोठरी में घात लगाये बैठे थे सो उस ने उस से कहा हे शिमशोन पलिश्ती तेरी घात में हैं तब उस ने तांतों को ऐसा तोड़ा जैसा सन का सूत आग से छूते ही टूट जाता
१० है और उस के बल का भेद न खुला। सो दलीला ने शिमशोन से कहा सुन तू ने तो मुझ से छल किया और झूठ कहा है अब मुझे बतला दे कि तू काहे से बंध सकता
११ है। उस ने उस से कहा यदि मैं ऐसी नई नई रस्सियों से जो किसी काम में न आई हों कसकर बांधा जाऊं तो मेरा बल घट जाएगा और मैं साधारण मनुष्य के समान हो
१२ जाऊंगा। सो दलीला ने नई नई रस्सियां लेकर और उस को बांध कर कहा हे शिमशोन पलिश्ती तेरी घात में हैं। कितने मनुष्य तो उस कोठरी में घात लगाये हुए थे। तब उस ने उन को सूत की नाई अपनी भुजाओं पर
१३ से तोड़ डाला। सो दलीला ने शिमशोन से कहा अब लों तू मुझ से छल करता और झूठ बोलता आया है सो मुझे बतला दे कि तू काहे से बंध सकता है उस ने कहा यदि तू मेरे सिर की सातों लटें ताने में बुने
१४ तो बन्ध सकूंगा। सो उस ने उसे खूंटी से जकड़ा तब उस से कहा हे शिमशोन पलिश्ती तेरी घात में हैं तब वह नींद से चौंक उठा और खूंटी को धरन में से उखाड़कर उसे
१५ ताने समेत ले गया। तब दलीला ने उस से कहा तेरा मन तो मुझ से नहीं लगा फिर तू क्यों कहता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं तू ने ये तीनों बार मुझ से छल किया और मुझे नहीं बताया कि तेरा बड़ा बल काहे से
१६ है। सो जब उस ने दिन दिन बातें करते करते उस को तंग किया और यहां लों हठ किया कि उस का दम नाक में
१७ हो गया, तब उस ने अपने मन का सारा भेद खोलकर उस से कहा मेरे सिर पर छुरा कभी नहीं फिरा क्योंकि मैं मा के पेट ही से परमेश्वर का नाजीर हूं यदि मैं मूड़ा जाऊं तो मेरा बल इतना घट जाएगा कि मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा।
१८ यह देखकर कि उस ने अपने मन का सारा भेद मुझ से कह दिया है दलीला ने पलिश्तियों के सरदारों के पास कहला भेजा कि अब की फिर आओ क्योंकि उस ने अपने मन का सब भेद मुझे बतला दिया है सो पलिश्तियों के सरदार हाथ में रुपया लिये हुए उस
१९ के पास गये। तब उस ने उस को अपने घुटनों पर सुला रक्खा और एक मनुष्य बुलवाकर उस के सिर की सातों लटें मुण्डवा डालीं और वह उस को दबाने लगी और
२० वह निर्बल हो गया। तब उस ने कहा हे शिमशोन पलिश्ती तेरी घात में हैं तब वह चौंककर सोचने लगा कि मैं पहिले की नाईं बाहर जाकर झटकूंगा वह तो न
२१ जानता था कि यहोवा मेरे पास से चला गया है। सो पलिश्तियों ने उस को पकड़कर उस की आंखें फोड़ डालीं और उसे अज्जा को ले जाके पीतल की बेड़ियों से जकड़ दिया और वह बन्दीगृह में चक्की पीसने लगा।
२२ उस के सिर के बाल मुण्ड जाने के पीछे फिर बढ़ने लगे॥
२३ तब पलिश्तियों के सरदार अपने दागोन नाम देवता के लिये बड़ा यज्ञ और आनन्द करने को यह कहकर इकट्ठे हुए कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे
२४ हाथ में कर दिया है। और जब लोगों ने उसे देखा तब यह कहकर अपने देवता की स्तुति की कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु और हमारे देश के नाश करनेहारे को जिस ने हम में से बहुतों को मार भी डाला हमारे हाथ में कर दिया
२५ है। जब उन का मन मगन हो गया तब उन्हों ने कहा शिमशोन को बुलवा लो कि वह हमारे लिये तमाशा करे सो शिमशोन बन्दीगृह में से बुलवाया गया और उन के लिए तमाशा करने लगा और खंभों के बीच खड़ा कर दिया
२६ गया। तब शिमशोन ने उस लड़के से जो उस का हाथ पकड़े था कहा मुझे उन खंभों को जिन से घर संभला हुआ है छूने दे कि मैं उन पर टेक लगाऊं।
२७ वह घर तो स्त्री पुरुषों से भरा हुआ था और पलिश्तियों के सब सरदार भी वहां थे और छत पर कोई तीन हजार स्त्री पुरुष थे जो शिमशोन को तमाशा करते हुए देख रहे थे।
२८ तब शिमशोन ने यह कह कर यहोवा की दोहाई दी कि हे प्रभु यहोवा मेरी सुधि ले हे परमेश्वर अब की बार मुझे बल दे कि मैं पलिश्तियों से अपनी दोनों आंखों का एक ही पलटा लूं।
२९ तब शिमशोन ने उन दोनों बीचवाले खंभों को जिन से घर संभला हुआ था पकड़कर एक पर दहिने हाथ से
३० और दूसरे पर बाएं हाथ से बल लगा दिया। और

शिमशोन ने कहा पलिश्तियों के संग मेरा प्राण भी जाए और वह अपना सारा बल करके झुका तब वह घर सब सरदारों और उस में के सारे लोगों पर गिर पड़ा। सो जिन को उस ने मरते समय मार डाला वे उन से भी अधिक थे जिन्हें उस ने जीते जी मार डाला था। ३१ तब उस के भाई और उस के पिता के सारे घराने के लोग आये और उसे उठाकर ले गये और सोरा और एश्ताओल के बीच उस के पिता मानोह की कबर में मिट्टी दी। उस ने तो इस्राएल का न्याय बीस बरस तक किया था॥

१७. **एप्रैम** के पहाड़ी देश में मीका नाम एक पुरुष था। २ उस ने अपनी माता से कहा जो ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी तुझ से ले लिये गये जिन के विषय तू ने मेरे सुनते भी स्राप दिया था वे मेरे पास हैं मैं ही ने उन को ले लिया था। उस की माता ने कहा मेरे बेटे पर यहोवा की ओर से आशिष होए। ३ जब उस ने वे ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी अपनी माता को फेर दिये तब माता ने कहा मैं अपनी ओर से अपने बेटे के लिये यह रुपया यहोवा को निश्चय अर्पण करती हूं कि उस से एक मूरत खोदकर और दूसरी ढालकर बनाई जाए सो अब मैं उसे तुझ को फेर देती हूं। ४ जब उस ने वह रुपया अपनी माता को फेर दिया तब माता ने दो सौ टुकड़े ढलवैये को दिये और उस ने उन से एक मूर्त्ति खोद कर और दूसरी ढालकर बनाई ५ और वे मीका के घर में रहीं। मीका के तो एक देवस्थान था सो उस ने एक एपोद और कई एक गृहदेवता बनवाये और अपने एक बेटे का संस्कार करके उसे अपना पुरोहित ६ ठहरा लिया। उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था॥

७ यहूदा के कुल का एक जवान लेवीय यहूदा के ८ बेतलेहेम में परदेशी होकर रहता था। वह यहूदा के बेतलेहेम नगर से इस लिये चला गया कि जहां कहीं स्थान मिले वहां मैं रहूं। चलते चलते वह एप्रैम के ९ पहाड़ी देश में मीका के घर पर आ निकला। मीका ने उस से पूछा तू कहां से आता है? उस ने कहा मैं तो यहूदा के बेतलेहेम से आया हुआ एक लेवीय हूं और इस लिये चला जाता हूं कि जहां कहीं ठिकाना मुझे मिले वहीं १० रहूं। मीका ने उस से कहा मेरे संग रहकर मेरे लिये पिता और पुरोहित बन और मैं तुझे बरस बरस दस टुकड़े रूपे और एक जोड़ा कपड़ा और भोजनवस्तु दिया ११ करूंगा सो वह लेवीय भीतर गया। और वह लेवीय उस पुरुष के संग रहने को प्रसन्न हुआ और वह जवान १२ उस के साथ बेटा सा रहा। सो मीका ने उस लेवीय का संस्कार किया और वह जवान उस का पुरोहित होकर मीका के घर में रहने लगा। १३ और मीका सोचता था कि अब मैं जानता हूं कि यहोवा मेरा भला करेगा क्योंकि मैं ने एक लेवीय को अपना पुरोहित कर रक्खा है॥

(दानियों के लैश को जीतकर उस में बस जाने की कथा)

१८. **उन** दिनों इस्राएलियों का कोई राजा न था और उन दिनों में दानियों के गोत्र के लोग रहने के लिये कोई भाग ढूंढ़ रहे थे क्योंकि इस्राएली गोत्रों के बीच उन का भाग उस समय लों न मिला था। २ सो दानियों ने अपने सारे कुल में से पांच शूरबीरों को सोरा और एश्ताओल से देश का भेद लेने और उस में ढूंढ़ ढांढ़ करने के लिये यह कहकर भेज दिया कि जाकर देश में ढूंढ़ ढांढ़ करो सो वे एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर तक जाकर वहां टिक गये। ३ जब वे मीका के घर के पास आये तब उस जवान लेवीय का बोल पहचाना सो वहां मुड़कर उस से पूछा तुझे यहां कौन ले आया और तू यहां क्या करता है और यहां तेरे पास क्या है। ४ उस ने उन से कहा मीका ने मुझ से ऐसा ऐसा व्यवहार किया है और मुझे नौकर रक्खा है और मैं उस का पुरोहित हो गया हूं। ५ उन्हों ने उस से कहा परमेश्वर से सलाह ले कि हम जान लें कि जो यात्रा हम करते हैं वह सुफल होगी वा नहीं। ६ पुरोहित ने उन से कहा कुशल से चले जाओ जो यात्रा तुम करते हो वह ठीक यहोवा के मते की है॥

७ सो वे पांच मनुष्य चल दिये और लैश को जाकर उस में के लोगों को देखा कि सीदोनियों की नाईं निडर बेखटके और शान्ति से रहते हैं और इस देश का कोई अधिकारी नहीं है जो उन्हें किसी काम में रोके[१] और वे सीदोनियों से दूर रहते हैं और दूसरे मनुष्यों से कुछ काम नहीं रखते। ८ तब वे सोरा और एश्ताओल को अपने भाइयों के पास गये और उन के भाइयों ने उन से पूछा तुम क्या समाचार ले आये हो। ९ उन्हों ने कहा आओ हम उन लोगों पर चढ़ाई करें क्योंकि हम ने उस देश को देखा कि वह बहुत ही अच्छा है सो तुम क्यों चुपचाप रहते हो वहां चलकर उस देश को अपने वश कर लेने में आलस न करो। १० वहां पहुंचकर तुम निडर रहते हुए लोगों को और लंबा चौड़ा देश पाओगे और परमेश्वर ने उसे तुम्हारे हाथ में दे दिया है वह ऐसा स्थान है जिस में पृथिवी भर के किसी पदार्थ की घटी नहीं है॥

११ सो वहां से अर्थात् सोरा और एश्ताओल से दानियों के कुल के छः सौ पुरुषों ने युद्ध के हथियार

(१) मूल में लजवाये।

१२ बांधे कूच किया। उन्हों ने जाकर यहूदा देश के किर्य्यत्यारीम नगर में डेरे खड़े किये इस कारण उस स्थान का नाम महनेदान[१] आज लों पड़ा है वह तो किर्य्यत्यारीम
१३ की पच्छिम ओर है। वहां से वे आगे बढ़कर एप्रैम के
१४ पहाड़ी देश में मीका के घर के पास आये। तब जो पांच मनुष्य लैश के देश का भेद लेने गये थे वे अपने भाइयों से कहने लगे क्या तुम जानते हो कि इन घरों में एक एपोद कई एक गृहदेवता एक खुदी और एक ढली
१५ हुई मूरत है सो अब सोचो कि क्या करना चाहिये। वे उधर मुड़कर उस जवान लेवीय के घर गये जो मीका
१६ का घर था और उस का कुशलक्षेम पूछा। और वे छः सौ दानी पुरुष फाटक में हथियार बांधे हुए खड़े रहे।
१७ और जो पांच मनुष्य देश का भेद लेने गये थे उन्हों ने वहां घुसकर उस खुदी हुई मूरत और एपोद और गृहदेवताओं और ढली हुई मूरत को ले लिया और वह पुरोहित फाटक में उन हथियार बांधे हुए छः सौ पुरुषों
१८ के संग खड़ा था। जब वे पांच मनुष्य मीका के घर में घुसकर खुदी हुई मूरत एपोद गृहदेवता और ढली हुई मूरत को ले आये तब पुरोहित ने उन से पूछा यह तुम
१९ क्या करते हो। उन्हों ने उस से कहा चुप रह अपने मुंह को हाथ से बन्द कर और हम लोगों के संग चलकर हमारे लिये पिता और पुरोहित बन तेरे लिये क्या अच्छा है यह कि एक ही मनुष्य के घराने का पुरोहित हो वा यह कि इस्राएलियों के एक गोत्र और कुल का पुरोहित हो।
२० तब पुरोहित प्रसन्न हुआ सो वह एपोद गृहदेवता और खुदी हुई मूरत को लेकर उन लोगों के संग चला गया।
२१ तब वे मुड़े और बालबच्चों पशुओं और सामान को अपने
२२ आगे करके चल दिये। जब वे मीका के घर से दूर निकल गये थे तब जो मनुष्य मीका के घर के पासवाले घरों में रहते थे उन्हों ने इकट्ठे होकर दानियों को जा
२३ लिया, और दानियों को पुकारा तब उन्हों ने मुंह फेरके मीका से कहा तुझे क्या हुआ कि तू इतना बड़ा दल
२४ लिये आता है[२]। उस ने कहा तुम तो मेरे बनवाये हुए देवताओं और पुरोहित को ले चले हो फिर मेरे क्या रह गया सो तुम मुझ से क्यों पूछते हो कि तुझे क्या हुआ
२५ है। दानियों ने उस से कहा तेरा बोल हम लोगों में सुनाई न दे कहीं ऐसा न हो कि क्रोधी जन तुम लोगों पर प्रहार करें और तू अपना और अपने घर के लोगों
२६ का भी प्राण खो दे। सो दानियों ने अपना मार्ग लिया और मीका यह देख कि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं फिरके अपने घर लौट गया। और वे मीका के बनवाये
२७ हुए पदार्थों और उस के पुरोहित को साथ ले लैश के पास आये जिस के लोग शांति से और बिना खटके रहते थे और उन्हों ने उन को तलवार से मार डाला और नगर
२८ को आग लगाकर फूंक दिया। और कोई बचानेहारा न था क्योंकि वह सीदोन से दूर था और वे और मनुष्यों से कुछ व्यवहार न रखते थे और वह बेत्रहोब की तराई में था। तब उन्हों ने नगर को दृढ़ किया और उस में
२९ रहने लगे। और उन्हों ने उस नगर का नाम इस्राएल के एक पुत्र अपने मूलपुरुष दान के नाम पर दान
३० रक्खा पर पहिले तो उस नगर का नाम लैश था। तब दानियों ने उस खुदी हुई मूरत को खड़ा कर लिया और देश की बंधुआई के समय लों योनातान जो गेर्शोम का पुत्र और मूसा[३] का पोता था वह और उस के वंश के
३१ लोग दान गोत्र के पुरोहित बने रहे। और जब लों परमेश्वर का भवन शीलो में बना रहा तब लों वे मीका की खुदवाई हुई मूरत को स्थापित किये रहे॥

(बिन्यामीनियों के पाप में बढ़े रहने और प्रायः नाश किये जाने की कथा)

१९. उन दिनों में जब इस्राएलियों का कोई राजा न था तब एक लेवीय पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर परदेशी होकर रहता था जिस ने यहूदा के बेतलेहेम में की एक सुरैतिन
२ रख ली थी। उस की सुरैतिन व्यभिचार करके यहूदा के बेतलेहेम को अपने पिता के घर चली गई और चार
३ महीने वहीं रही। तब उस का पति अपने साथ एक सेवक और दो गदहे लेकर चला और उस के यहां गया कि उसे समझा बुझाकर फेर ले आए। वह उसे अपने पिता के घर ले गई और उस जवान स्त्री का पिता उसे
४ देखकर उस की भेंट से आनन्दित हुआ। तब उस के ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने उसे बिनती करके दबाया सो वह उस के पास तीन दिन रहा सो वे वहां
५ खाते पीते टिके रहे। चौथे दिन जब वे भोर को सबेरे उठे और वह चलने को हुआ तब स्त्री के पिता ने अपने दामाद से कहा एक टुकड़ा रोटी खाकर अपना जी ठण्ढा
६ कर पीछे तुम लोग चले जाना। सो उन दोनों ने बैठकर संग संग खाया पिया फिर स्त्री के पिता ने उस पुरुष से कहा और एक रात टिके रहने को प्रसन्न हो आनन्द
७ कर। वह पुरुष बिदा होने को उठा पर उस के ससुर ने बिनती करके उसे दबाया सो उस ने फिर उस के
८ यहां रात बिताई। पांचवें दिन भोर को वह तो बिदा

(१) अर्थात् दान की छावनी।
(२) मूल में तू इकट्ठा हुआ है।
(३) वा मनश्शे।

होने को सबेरे उठा पर स्त्री के पिता ने कहा अपना जी ठंढा कर और तुम दोनों दिन ढलने लों बिलमे रहो सो ९ उन दोनों ने रोटी खाई। जब वह पुरुष अपनी सुरैतिन और सेवक समेत बिदा होने को उठा तब उस के ससुर अर्थात स्त्री के पिता ने उस से कहा देख दिन तो ढल चला है और सांझ होने पर है सो तुम लोग रात भर टिके रहो देख दिन तो डूबने पर है सो यहीं आनन्द करता हुआ रात बिता और बिहान को सबेरे उठकर १० अपना मार्ग लेना और अपने डेरे को चला जाना। पर उस पुरुष ने उस रात को टिकना न चाहा सो वह उठकर बिदा हुआ और काठी बांधे हुए दो गदहे और अपनी सुरैतिन संग लिये हुए यबूस के साम्हने लों जो यरूशलेम ११ कहावता है पहुंचा। वे यबूस के पास थे और दिन बहुत ढल गया था कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा आ हम १२ यबूसियों के इस नगर में मुड़कर टिकें। उस के स्वामी ने उस से कहा हम बिराने के नगर में जहां कोई इस्राएली १३ नहीं रहता न उतरेंगे गिबा तक बढ़ जाएंगे। फिर उस ने अपने सेवक से कहा आ हम उधर के स्थानों में से किसी के पास जाएं हम गिबा वा रामा में रात बिताएं। १४ सो वे आगे की ओर चले और उन के बिन्यामीन के गिबा के निकट पहुंचते पहुंचते सूर्य अस्त हो गया। १५ सो वे गिबा में टिकने के लिये उस की ओर मुड़ गये और वह भीतर जाकर उस नगर के चौक में बैठ गया क्योंकि किसी ने उन को अपने घर में न टिकाया। १६ तब एक बूढ़ा अपने खेत का काम सांझ को निपटा कर चला आया। वह तो एप्रैम के पहाड़ी देश का था और गिबा में परदेशी होकर रहता था पर उस स्थान के १७ लोग बिन्यामीनी थे। उस ने आंखें उठाकर उस यात्री को नगर के चौक में बैठा देखा और उस बूढ़े ने पूछा १८ तू किधर जाता और कहां से आता है। उस ने उस से कहा हम लोग तो यहूदा के बेतलेहेम से आकर एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर जाते हैं मैं तो वहां का हूं और यहूदा के बेतलेहेम लों गया था और यहोवा के भवन को १९ जाता हूं पर कोई मुझे अपने घर में नहीं टिकाता। हमारे पास तो गदहों के लिये पुआल और चारा भी है और मेरे और तेरी इस दासी और इस जवान के लिये भी जो तेरे दासों के संग है रोटी और दाखमधु भी है हमें किसी वस्तु २० की घटी नहीं है। बूढ़े ने कहा तेरा कल्याण हो तेरे प्रयोजन की सब वस्तुएं मेरे सिर हों पर रात को चौक में २१ न बिता। सो वह उस को अपने घर ले चला और गदहों २२ को चारा दिया तब वे पांव धोकर खाने पीने लगे। वे आनन्द कर रहे थे कि नगर के ओछों ने घर को घेर लिया और द्वार को खटखटा खटखटाकर घर के उस बूढ़े स्वामी से कहने लगे जो पुरुष तेरे घर में आया उसे बाहर ले आ २३ कि हम उस से भोग करें। घर का स्वामी उन के पास बाहर जाकर उन से कहने लगा नहीं नहीं हे मेरे भाइयो ऐसी बुराई न करो, यह पुरुष जो मेरे घर पर आया है २४ इस से ऐसी मूढ़ता का काम मत करो। देखो यहां मेरी कुंवारी बेटी है और उस पुरुष की सुरैतिन भी है उन को मैं बाहर ले आऊंगा और उन की पत लो तो लो और उन से तो जो चाहो सो करो पर इस पुरुष से ऐसी २५ मूढ़ता का काम मत करो। पर उन मनुष्यों ने उस की न मानी सो उस पुरुष ने अपनी सुरैतिन को पकड़कर उन के पास बाहर कर दिया और उन्हों ने उस से कुकर्म्म किया और रात भर भोर लों उस से लीला क्रीड़ा करते २६ रहे और पह फटते ही उसे छोड़ दिया। तब वह स्त्री पह फटते हुए जाके उस मनुष्य के घर के द्वार पर जिस में उस का पति था गिर गई और उजियाले के होने लों २७ वहीं पड़ी रही। सबेरे जब उस का पति उठ घर का द्वार खोल अपना मार्ग लेने को बाहर गया तो क्या देखा कि मेरी सुरैतिन घर के द्वार के पास डेवढ़ी पर हाथ फैलाये २८ हुए पड़ी है। उस ने उस से कहा उठ हम चलें जब कोई न बोला तब वह उस को गदहे पर लादकर अपने स्थान २९ को गया। जब वह अपने घर पहुंचा तब छूरी ले सुरैतिन को अंग अंग अलग करके काटा और उसे बारह टुकड़े ३० करके इस्राएल के सारे देश में भेज दिया। जितनों ने उसे देखा सो सब आपस में कहने लगे इस्राएलियों के मिस्र देश से चले आने के समय से लेकर आज के दिन लों ऐसा कुछ कभी नहीं हुआ और न देखा गया सो इस को सोचकर सम्मति करो और कहो॥

२०. तब दान से लेकर बेर्शेबा लों के सारे इस्राएली और गिलाद के लोग भी निकले और उन की मण्डली एक मत होकर मिस्पा में २ यहोवा के पास इकट्ठी हुई। और सारी प्रजा के प्रधान लोग बरन सब इस्राएली गोत्रों के लोग जो चार लाख तलवार चलानेहारे प्यादे थे परमेश्वर की प्रजा की सभा ३ में हाजिर हुए। बिन्यामीनियों ने तो सुना कि इस्राएली मिस्पा को आये हैं और इस्राएली पूछने लगे हम से ४ कहो यह बुराई कैसे हुई। उस मार डाली हुई स्त्री के लेवीय पति ने उत्तर दिया मैं अपनी सुरैतिन समेत ५ बिन्यामीन के गिबा में टिकने को गया था। तब गिबा के पुरुषों ने मुझ पर चढ़ाई की और रात के समय घर को घेरके मुझे घात करना चाहा और मेरी सुरैतिन से ६ इतना कुकर्म्म किया कि वह मर गई। सो मैं ने अपनी

सुरैतिन को लेकर टुकड़े टुकड़े किया और इस्राएलियों के भाग के सारे देश में भेज दिया उन्हों ने तो इस्राएल में
७ महापाप और मूढ़ता का काम किया है। सुनो हे इस्राएलियो
८ सब के सब यही बात करके सम्मति देो। तब सब लोग एक मन हो उठकर कहने लगे न तो हम में से कोई अपने डेरे जाएगा और न कोई अपने घर की ओर
९ मुड़ेगा। पर अब हम गिबा से यह करेंगे अर्थात् हम
१० चिट्ठी डाल डालकर उस पर चढ़ाई करेंगे। और हम सब इस्राएली गोत्रों में सो पुरुषों में से दस और हजार पुरुषों में से एक सौ और दस हजार में से एक हजार पुरुषों को ठहराएं कि वे सेना के लिये भोजनवस्तु पहुंचाएं इसलिए कि हम बिन्यामीन के गिबा में पहुंचकर उस को उस मूढ़ता का पूरा फल भुगता सकें जो उन्हों ने
११ इस्राएल में की है। तब सब इस्राएली पुरुष उस नगर के विरुद्ध एक पुरुष की नाईं जुटे हुए इकट्ठे हो गये॥
१२ और इस्राएली गोत्रियों ने बिन्यामीन के सारे गोत्रियों में कितने मनुष्य यह पूछने को भेजे कि यह
१३ क्या बुराई है जो तुम लोगों में की गई है। अब उन गिबावासी ओछों को हमारे हाथ कर देो कि हम उन को प्राण से मारके इस्राएल में से बुराई नाश करें। पर बिन्यामीनियों ने अपने भाई इस्राएलियों की मानने से
१४ नाह किया। और बिन्यामीनी अपने अपने नगर में से आकर गिबा में इस लिये इकट्ठे हुए कि इस्राएलियों से
१५ लड़ने को निकलें। और उसी दिन गिबावासी पुरुषों को छोड़ जिन की गिनती सात सौ चुने हुए पुरुष ठहरी और और नगरों से आये हुए तलवार चलानेहारे बिन्यामीनियों
१६ की गिनती छब्बीस हजार पुरुष ठहरी। इन सब लोगों में से सात सौ बैंहत्थे चुने हुए पुरुष थे जो सब के सब ऐसे थे कि गोफन से पत्थर मारने में बाल भर भी न चूकते
१७ थे। और बिन्यामीनियों को छोड़ इस्राएली पुरुष चार लाख तलवार चलानेहारे थे ये सब के सब योद्धा थे॥
१८ सो इस्राएली उठकर बेतेल को गये और यह कहकर परमेश्वर से सलाह ली और इस्राएलियों ने पूछा कि हम में से कौन बिन्यामीनियों से लड़ने को पहिले चढ़ाई करे यहोवा ने कहा यहूदा पहिले चढ़ाई करे।
१९ सो इस्राएलियों ने बिहान को उठकर गिबा के साम्हने
२० डेरे किये। और इस्राएली पुरुष बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल गये और इस्राएली पुरुषों ने उस से लड़ने
२१ को गिबा के विरुद्ध पांति बान्धी। तब बिन्यामीनियों ने गिबा से निकल उसी दिन बाईस हजार इस्राएली पुरुषों
२२ को मारके मिट्टी में मिला दिया। तौभी इस्राएली पुरुष लोगों ने हियाव बांधकर उसी स्थान में जहां उन्हों ने पहिले दिन पांति बांधी थी फिर पांति बांधी। और
२३ इस्राएली जाकर सांझ लों यहोवा के साम्हने रोते रहे और यह कहकर यहोवा से पूछा कि क्या हम अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को फिर पास जाएं यहोवा ने कहा हां उन पर चढ़ाई करो॥
२४ सो दूसरे दिन इस्राएली बिन्यामीनियों के निकट
२५ पहुंचे। तब बिन्यामीनियों ने दूसरे दिन उन का साम्हना करने को गिबा से निकलकर फिर अठारह हजार इस्राएली पुरुषों को मारके जो सब के सब तलवार चलानेहारे
२६ थे मिट्टी में मिला दिया। तब सब इस्राएली बरन सब लोग बेतेल को गये और रोते हुए यहोवा के साम्हने बैठे रहे और उस दिन सांझ लों उपवास किये रहे और
२७ यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाये। और इस्राएलियों ने यहोवा से सलाह ली। उस समय तो परमेश्वर
२८ की वाचा का संदूक वहीं था। और पीनहास जो हारून का पोता और एलाजार का पुत्र था उन दिनों उस के साम्हने हाजिर रहा करता था। सो उन्हों ने पूछा क्या मैं एक और बार अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल जाऊं वा उन को छोड़ूं यहोवा ने कहा चढ़ाई कर
२९ क्योंकि कल मैं उन को तेरे हाथ में कर दूंगा। तब इस्राएलियों ने गिबा के चारों ओर लोगों को घात में बैठाया॥
३० तीसरे दिन इस्राएलियों ने बिन्यामीनियों पर फिर चढ़ाई की और पहिले की नाईं गिबा के विरुद्ध पांति
३१ बांधी। सो बिन्यामीनी उन लोगों का साम्हना करने को निकले और नगर के पास से खींचे गये और जो दो सड़क एक बेतेल को और दूसरी गिबा को गई हैं उन में लोगों को पहिले की नाईं मारने लगे और मैदान में
३२ कोई तीस इस्राएली मारे गये। बिन्यामीनी कहने लगे वे पहिले की नाईं हम से मारे जाते हैं पर इस्राएलियों ने कहा हम भागकर उन को नगर में से सड़कों में खींच
३३ ले आएं। तब सब इस्राएली पुरुषों ने अपने स्थान से उठकर बालतामार में पांति बांधी और घात में बैठे हुए इस्राएली अपने स्थान से अर्थात् मारेगेबा से अचानक
३४ निकले। सो सारे इस्राएलियों में से छांटे हुए दस हजार पुरुष गिबा के साम्हने आये और लड़ाई कड़ी होने लगी पर वे न जानते थे कि हम पर विपत्ति अभी पड़ा चाहती
३५ है। सो यहोवा ने बिन्यामीनियों को इस्राएल से हरवा दिया और उस दिन इस्राएलियों ने पचीस हजार एक सौ बिन्यामीनी पुरुषों को नाश किया जो सब के सब तलवार चलानेहारे थे॥
३६ तब बिन्यामीनियों ने देखा कि हम हार गये और इस्राएली पुरुष उन घातुओं का भरोसा करके जिन्हें

उन्हों ने गिबा के पास बैठाया था बिन्यामीनियों के
३७ साम्हने से हट गये । पर घातू लोग फुर्ती करके गिबा
पर झपट गये और घातुओं ने आगे बढ़कर सारे नगर
३८ को तलवार से मारा । इस्राएली पुरुषों और घातुओं के
बीच तो यह चिह्न ठहराया गया था कि वे नगर में से
३९ बहुत बड़ा धूएं का खंभा उठाएं । इस्राएली पुरुष तो
लड़ाई में हटने लगे और बिन्यामीनियों ने यह कहकर
कि निश्चय वे पहिली लड़ाई की नाईं हम से हारे जाते हैं
इस्राएलियों को मार डालने लगे और तीस एक पुरुषों
४० को घात किया । पर जब वह धूएं का खंभा नगर में से
उठने लगा तब बिन्यामीनियों ने अपने पीछे जो दृष्टि की
तो क्या देखा कि नगर का नगर धूआं होकर आकाश
४१ की ओर उड़ रहा है । तब इस्राएली पुरुष घूमे और
बिन्यामीनी पुरुष यह देखकर घबरा गये कि हम पर
४२ विपत्ति आ पड़ी है । सो उन्हों ने इस्राएली पुरुषों को
पीठ दिखाकर जंगल का मार्ग लिया पर लड़ाई उन से
लगी ही रही और जो और नगरों में से आये थे उन को
४३ इस्राएली बीच में नाश करते गये । उन्हों ने बिन्यामीनियों
को घेर लिया उन्हों ने उन्हें खदेड़ा वे मनूहा में वरन
४४ गिबा की पूरब ओर तक उन्हें लताड़ते गये । और बिन्या-
मीनियों में से अठारह हजार पुरुष जो सब के सब शूर-
४५ वीर थे मारे गये । तब वे घूमकर जंगल में की रिम्मोन
नाम ढांग की ओर तो भाग गये पर इस्राएलियों ने उन में
से सड़कों में पांच हजार को बीनकर मार डाला फिर गिदोम
लों उन के पीछे पड़के उन में से दो हजार पुरुष मार
४६ डाले । सो बिन्यामीनियों में से जो उस दिन मारे गये वे
पचीस हजार तलवार चलानेहारे पुरुष थे और ये सब
४७ शूरवीर थे । पर छः सौ पुरुष घूमकर जंगल की ओर
भागे और रिम्मोन नाम ढांग में पहुंच गये और चार
४८ महीने वहीं रहे । तब इस्राएली पुरुष लौटकर बिन्यामीनियों
पर लपके और नगरों में क्या मनुष्य क्या पशु क्या जो कुछ
मिला सब को तलवार से नाश कर डाला और जितने
नगर उन्हें मिले उन सभों को आग लगाकर फूंक दिया ॥

२१. इस्राएली पुरुषों ने तो मिस्पा में किरिया खाकर कहा था
कि हम में से कोई अपनी बेटी किसी बिन्यामीनी को न
२ ब्याह देगा । सो वे बेतेल को जाकर सांझ लों परमेश्वर
३ के साम्हने बैठे रहे और फूट फूटकर बहुत रोते रहे, और
कहते थे हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा इस्राएल में
ऐसा क्यों होने पाया कि आज इस्राएल में एक गोत्र
४ की घटी हुई है । फिर दूसरे दिन उन्हों ने सबेरे उठ वहां
वेदी बनाकर होमबलि मेलबलि और चढ़ाये । ५ तब इस्राएली
पूछने लगे इस्राएल के सारे गोत्रों में से कौन है जो यहोवा
के पास सभा में न आया था । उन्हों ने तो भारी किरिया
खाकर कहा था कि जो कोई मिस्पा को यहोवा के पास
न आए वह निश्चय मार डाला जाएगा । ६ सो इस्राएली
अपने भाई बिन्यामीन के विषय यह कहकर पछताने
लगे कि आज इस्राएल में से एक गोत्र कट गया है ।
७ हम ने जो यहोवा की किरिया खाकर कहा है कि हम
उन्हें अपनी किसी बेटी को न ब्याह देंगे सो बचे हुओं
को स्त्रियां मिलने के लिये क्या करें । ८ जब उन्हों ने पूछा
इस्राएल के गोत्रों में से कौन है जो मिस्पा को यहोवा के
पास न आया था तब यह पाया गया कि गिलादी
याबेश से कोई छावनी में सभा को न आया था । ९ कैसे
कि जब लोगों की गिनती की गई तब यह जाना गया कि
गिलादी याबेश के निवासियों में से कोई यहां नहीं है ।
१० सो मण्डली ने बारह हजार शूरवीरों को वहां यह आज्ञा
देकर भेज दिया कि तुम जाकर स्त्रियों और बालबच्चों
समेत गिलादी याबेश को तलवार से नाश करो । ११ और
तुम्हें जो करना होगा सो यह है सब पुरुषों को और
जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुंह देखा हो उन को सत्या-
नाश कर डालना । १२ और उन्हें गिलादी याबेश के निवा-
सियों में से चार सौ जवान कुमारियां मिलीं जिन्हों ने
पुरुष का मुंह न देखा था और उन्हें वे शीलो को जो
कनान देश में है छावनी में ले आये ॥

१३ तब सारी मण्डली ने उन बिन्यामीनियों के पास जो
रिम्मोन नाम ढांग पर थे कहला भेजा और उन से संधि
का प्रचार कराया । १४ सो बिन्यामीन उसी समय लौट गया
और उन को वे स्त्रियां दी गईं जो गिलादी याबेश की
स्त्रियों में से जीती छोड़ी गईं तौभी वे उन के लिये थोड़ी
थीं । १५ सो लोग बिन्यामीन के विषय फिर यह कहके पछ-
ताये कि यहोवा ने इस्राएल के गोत्रों में घटी की है ॥

१६ सो मण्डली के पुरनियों ने कहा बिन्यामीनी स्त्रियां
जो नाश हुई हैं सो बचे हुए पुरुषों के लिये स्त्री पाने का
हम क्या उपाय करें । १७ फिर उन्हों ने कहा बचे हुए
बिन्यामीनियों के लिये कोई भाग चाहिये ऐसा न हो कि
इस्राएल में से एक गोत्र मिट जाए । १८ पर हम तो अपनी
किसी बेटी को उन्हें ब्याह नहीं दे सकते क्योंकि इस्राए-
लियों ने यह कहकर किरिया खाई है कि स्रापित हो वह
जो किसी बिन्यामीनी को अपनी लड़की ब्याह दे । १९ फिर
उन्हों ने कहा सुनो शीलो जो बेतेल की उत्तर ओर और
उस सड़क की पूरब ओर है जो बेतेल से शकेम को चली
गई है और लबोना की दक्खिन ओर है उस में बरस

२० बरस यहोवा का एक पर्व्व माना जाता है। सो उन्हों ने बिन्यामीनियों को यह आज्ञा दी कि तुम जाकर दाख २१ की बारियों के बीच घात लगाये बैठे रहो, और देखते रहो और यदि शीलो की लड़कियां नाचने को निकलें तो तुम दाख की बारियों से निकलकर शीलो की लड़कियों में से अपनी अपनी स्त्री को पकड़कर बिन्यामीन के देश २२ को चले जाना। और जब उन के पिता वा भाई हमारे पास झगड़ने को आएं तब हम उन से कहेंगे कि अनुग्रह करके उन को हमें दे दो क्योंकि लड़ाई के समय हम ने उन में से एक एक के लिये स्त्री न बचाई[1] और तुम लोगों ने तो उन को ब्याह नहीं दिया नहीं तो तुम अब दोषी ठहरते। सो बिन्यामीनियों ने ऐसा ही किया २३ अर्थात् उन्हों ने अपनी गिनती के अनुसार उन नाचनेहारियों में से पकड़कर स्त्रियां ले लीं तब अपने भाग को लौट गये और नगरों को बसाकर उन में रहने लगे। उसी समय इस्राएली वहां से चलकर अपने अपने गोत्र २४ और अपने अपने घराने को गये और वहां से वे अपने अपने निज भाग को गये। उन दिनों इस्राएलियों का २५ कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था॥

(१) मूल में ली।

रूत नाम पुस्तक।

१. जिन दिनों न्यायी लोग न्याय करते थे उन दिनों देश में अकाल पड़ा सो यहूदा के बेतलेहेम का एक पुरुष अपनी स्त्री और दोनों पुत्रों को संग लेकर मोआब के देश में परदेशी होकर २ रहने के लिये चला। उस पुरुष का नाम एलीमेलेक और उस की स्त्री का नाम नाओमी और उस के दो बेटों के नाम महलोन और किल्योन थे ये एप्राती अर्थात् यहूदा के बेतलेहेम के रहनेहारे थे और मोआब ३ के देश में आकर वहां रहे। और नाओमी का पति एलीमेलेक मर गया और नाओमी और उस के दोनों ४ पुत्र रह गये। और इन्हों ने एक एक मोआबिन ब्याह ली एक स्त्री का नाम तो ओर्पा और दूसरी का नाम ५ रूत था फिर वे वहां कोई दस बरस रहे। तब महलोन और किल्योन दोनों मर गये सो नाओमी अपने दोनों ६ पुत्रों और पति से रहित हो गई। तब वह मोआब के देश में यह सुनकर कि यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों की सुधि लेके उन्हें भोजनवस्तु दी है उस देश से अपनी ७ दोनों बहुओं समेत लौट जाने को चली। सो वह अपनी दोनों बहुओं समेत उस स्थान से जहां रहती थीं निकलीं और वे यहूदा देश को लौट जाने के मार्ग से चलीं। ८ तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा तुम अपने अपने मैके लौट जाओ और जैसे तुम ने उन से जो मर गये हैं और मुझ से भी प्रीति की है ऐसे ही यहोवा ९ तुम्हारे ऊपर कृपा करे। यहोवा ऐसा करे कि तुम फिर पति करके उन के घरों में विश्राम पाओ; तब उस ने उन को चूमा और वे चिल्ला चिल्लाकर रोने लगीं, और १० उस से कहा निश्चय हम तेरे संग तेरे लोगों के पास चलेंगी। नाओमी ने कहा हे मेरी बेटियो लौट जाओ ११ तुम काहे को मेरे संग चलोगी क्या मेरी कोख में और पुत्र हैं जो तुम्हारे पति हों। हे मेरी बेटियो लौटकर १२ चली जाओ क्योंकि मैं पति करने को बूढ़ी हूं और चाहे मैं कहती भी कि मुझे आशा है और आज की रात मेरे पति होता भी और मैं पुत्र भी जनती, तौभी क्या १३ तुम उन के सयाने होने लों आशा लगाये ठहरी रहतीं और उन के निमित्त पति करने से रुकी रहतीं हे मेरी बेटियो ऐसा न हो क्योंकि मेरा दुःख[1] तुम्हारे दुःख से बहुत बढ़कर है देखो यहोवा का हाथ मेरे विरुद्ध उठा है। तब वे फिर रो उठीं और ओर्पा ने तो १४ अपनी सास को चूमा पर रूत उस से अलग न हुई। सो उस ने कहा देख तेरी जिठानी[2] तो अपने लोगों १५ और अपने देवता के पास लौट गई है सो तू अपनी जिठानी[2] के पीछे लौट जा। रूत बोली तू मुझ से यह १६ बिनती न कर कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी तेरे लोग मेरे लोग होंगे और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा। जहां तू मरेगी वहां १७ मैं भी मरूंगी और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी यदि

(१) मूल में कड़वाहट। (२) वा देवरानी।

मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊं तो
१८ यहोवा मुझ से वैसा ही बरन उस से भी अधिक करे। जब
उस ने यह देखा कि वह मेरे संग चलने को स्थिर है तब
१९ उस ने उस से और बात न कही। सो वे दोनों चल दीं
और बेतलेहेम को पहुंचीं और उन के बेतलेहेम में पहुंचने
पर सारे नगर में उन के कारण धूम मची और स्त्रियां
२० कहने लगीं क्या यह नाओमी है। उस ने उन से
कहा मुझे नाओमी[1] न कहो मुझे मारा[2] कहो क्योंकि
२१ सर्वशक्तिमान् ने मुझ को बड़ा दुःख दिया[3] है। मैं भरी
पूरी चली गई थी पर यहोवा ने मुझे छूछी लौटाया है
सो जब कि यहोवा ही ने मेरे विरुद्ध साक्षी दी और
सर्वशक्तिमान् ने मुझे दुःख दिया है फिर तुम मुझे क्यों
२२ नाओमी कहती हो। सो नाओमी अपनी मोआबिन बहू
रूत समेत लौटी जो मोआब देश से लौट आई
और वे जौ कटने के आरंभ के समय बेतलेहेम में
पहुंचीं॥

२.

नाओमी के पति एलीमेलेक के कुल में उस का एक बड़ा धनी
२ कुटुंब था जिस का नाम बोअज था। और मोआबिन रूत
ने नाओमी से कहा मुझे किसी खेत में जाने दे कि जो मुझ
पर अनुग्रह की दृष्टि करे उस के पीछे पीछे मैं सिला
३ बीनती जाऊं उस ने कहा चली जा बेटी। सो वह जाकर
एक खेत में लवनेहारों के पीछे बीनने लगी और जिस
खेत में[4] वह संयोग से गई थी वह एलीमेलेक के कुटुम्बी
४ बोअज का था। और बोअज बेतलेहेम से आकर लव-
नेहारों से कहने लगा यहोवा तुम्हारे संग रहे और वे
५ उस से बोले यहोवा तुझे आशिष दे। तब बोअज ने अपने
उस सेवक से जो लवनेहारों के ऊपर ठहरा था पूछा वह
६ किस की कन्या है। जो सेवक लवनेहारों के ऊपर ठहरा
था उस ने उत्तर दिया वह मोआबिन कन्या है जो नाओमी
७ के संग मोआब देश से लौट आई है। उस ने
कहा था मुझे लवनेहारों के पीछे पीछे पूलों के बीच
बीनने और बालें बटोरने दे सो वह आई और भोर से अब
८ लों बनी है केवल थोड़ी बेर तक घर में रही थी। तब
बोअज ने रूत से कहा हे मेरी बेटी क्या तू सुनती है
किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना मेरी ही
९ दासियों के संग यहीं रहना। जिस खेत के वे लवती हों
उसी पर तेरा ध्यान बंधा रहे और उन्हीं के पीछे पीछे
चला करना क्या मैं ने जवानों को आज्ञा नहीं दी कि तुझ
से न बोलें और जब जब तुझे प्यास लगे तब तब तू बर-
तनों के पास जाकर जवानों का भरा हुआ पानी पीना।
१० तब वह भूमि लों झुककर मुंह के बल गिरी और उस से
कहने लगी क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर
११ अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है। बोअज ने उसे
उत्तर दिया जो कुछ तू ने पति मरने के पीछे अपनी सास
से किया है और तू किस रीति अपने माता पिता और जन्म-
भूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिन को पहिले
तू न जानती थी यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया गया
१२ है। यहोवा तेरी करनी का फल दे और इस्राएल का पर-
मेश्वर यहोवा जिस के पंखों तले तू शरण लेने आई है
१३ तुझे पूरा बदला दे। उस ने कहा हे मेरे प्रभु तेरे अनुग्रह
की दृष्टि मुझ पर बनी रहे क्योंकि यद्यपि मैं तेरी दासियों
में से किसी के भी बराबर नहीं हूं तौ भी तू ने अपनी दासी
के मन में पैठनेहारी बातें कहकर मुझे शान्ति दी है।
१४ फिर खाने के समय बोअज ने उस से कहा यहीं आकर
रोटी खा और अपना कौर सिरके में बोर। सो वह लव-
नेहारों के पास बैठ गई और उस ने उस को भुनी हुई
बालें दीं और वह खाकर तृप्त हुई बरन कुछ बचा भी रक्खा।
१५ जब वह बीनने को उठी तब बोअज ने अपने जवानों को
आज्ञा दी कि उस को पूलों के बीच बीच में भी बीनने दो
१६ और दोष मत लगाओ। बरन मुट्ठी भर जाने पर कुछ कुछ
निकाल कर गिरा भी दिया करो और उस के बीनने के
१७ लिये छोड़ दो और उसे घुड़को मत। सो वह सांझ लों खेत में
बीनती रही तब जो कुछ बीन चुकी उसे फटका और वह
१८ कोई एपा भर जौ निकला। तब वह उसे उठा कर नगर
में गई और उस की सास ने उस का बीना हुआ देखा और
जो कुछ उस ने तृप्त होकर बचाया था उस को उस ने
१९ निकालकर अपनी सास को दिया। उस की सास ने उस
से पूछा आज तू कहां बीनती और कहां काम करती थी, धन्य
वह हो जिस ने तेरी सुधि ली है तब उस ने अपनी सास
को बता दिया कि मैं ने किस के पास काम किया और
कहा कि जिस पुरुष के पास मैं ने आज काम किया उस
२० का नाम बोअज है। नाओमी ने अपनी बहू से कहा वह
यहोवा की ओर से आशिष पाए क्योंकि उस ने न तो
जीते हुओं पर से और न मरे हुओं पर से अपनी करुणा
हटाई फिर नाओमी ने उस से कहा वह पुरुष तो हमारा
एक कुटुंबी है बरन उन में से है जिन को हमारी भूमि
२१ छुड़ाने का अधिकार है। फिर रूत मोआबिन बोली उस ने
मुझ से यह भी कहा कि जब लों मेरे सेवक मेरी सारी

(१) अर्थात् मनोहर। (२) अर्थात् दुखियारी। मूल में कड़वी (३) मूल में मुझ से बहुत कड़वा व्यवहार किया। (४) मूल में जिस खेत के भाग में।

कटनी न कर चुकें तब लों उन्हीं के संग संग लगी रह।
१२ नाओमी ने अपनी बहू रूत से कहा मेरी बेटी यह अच्छा भी है कि तू उसी की दासियों के साथ साथ जाया करे और वे तुझ से दूसरे के खेत में न मिलें।
१३ सो रूत जौ और गेहूं दोनों की कटनी के अन्त लों बीनने के लिये बोअज की दासियों के साथ साथ लगी रही और अपनी सास के यहां रहती थी॥

३.

उस की सास नाओमी ने उस से कहा हे मेरी बेटी क्या मैं तेरे लिये ठौर न
२ ढूंढूं कि तेरा भला हो। अब जिस की दासियों के पास तू थी क्या वह बोअज हमारा कुटुम्बी नहीं है वह तो
३ आज रात को खलिहान में जौ ओसाएगा। सो तू स्नान कर तेल लगा वस्त्र पहिन कर खलिहान को जा पर जब लों वह पुरुष खा पी न चुके तब लों अपने को उस पर प्रगट
४ न करना। और जब वह लेट जाए तब तू उस के लेटने के स्थान को देख लेना फिर भीतर जा उस के पांव उघार के लेट जाना तब वही तुझे बतलाएगा कि तुझे क्या
५ करना चाहिये। उस ने उस से कहा जो कुछ तू कहती है
६ वह सब मैं करूंगी। सो वह खलिहान को गई और
७ अपनी सास की आज्ञा के अनुसार ही किया। जब बोअज खा पी चुका और उस का मन आनन्दित हुआ तब जाकर राशि के एक सिरे पर लेट गया सो वह चुप-
८ चाप गई और उस के पांव उघार के लेट गई। आधी रात को वह पुरुष चौंक पड़ा और आगे की ओर झुककर क्या
९ पाया कि मेरे पांवों के पास कोई स्त्री लेटी है। उस ने पूछा तू कौन है तब वह बोली मैं तो तेरी दासी रूत हूं सो तू अपनी दासी को अपनी चद्दर ओढ़ा दे क्योंकि
१० तू हमारी भूमि छुड़ानेहारा कुटुंबी है। उस ने कहा हे बेटी यहोवा की ओर से तुझ पर आशिष हो क्योंकि तू ने अपनी पिछली प्रीति पहिली से अधिक दिखाई कैसे कि तू क्या धनी क्या कंगाल किसी जवान के पीछे नहीं
११ लगी। सो अब हे मेरी बेटी मत डर जो कुछ तू कहे सो मैं तुझ से करूंगा क्योंकि मेरे नगर के सब लोग[१]
१२ जानते हैं कि तू भली स्त्री है। और अब सच तो है कि मैं छुड़ानेहारा कुटुंबी हूं तौभी एक और है जिसे मुझ
१३ से पहिले ही छुड़ाने का अधिकार है। सो रात भर ठहरी रह और सवेरे यदि वह तेरे लिये छुड़ानेहारे का काम करना चाहे तो अच्छा वही ऐसा करे पर यदि वह तेरे लिये छुड़ानेहारे का काम करने को प्रसन्न न हो तो यहोवा के जीवन की सौंह मैं ही वह काम करूंगा भोर लों
१४ लेटी रह। सो वह उस के पांवों के पास भोर लों लेटी रही और उस से पहिले कि कोई दूसरे को चीन्ह सके वह उठी और बोअज ने कहा कोई जानने न पाए कि
१५ खलिहान में कोई स्त्री आई थी। तब बोअज ने कहा जो चद्दर तू ओढ़े है उसे फैलाकर थांभ ले और जब उस ने उसे थांभा तब उस ने छः नपुए जौ नापकर उस को
१६ उठा दिया फिर वह नगर में चला गया। जब रूत अपनी सास के पास आई तब उस ने पूछा हे बेटी क्या हुआ[१] तब जो कुछ उस पुरुष ने उस से किया था वह सब उस
१७ ने उसे कह सुनाया। फिर उस ने कहा यह छः नपुए जौ उस ने यह कहकर मुझे दिया कि अपनी सास के पास
१८ छूछे हाथ मत जा। उस ने कहा हे मेरी बेटी जब लों तू न जाने कि इस बात का कैसा फल निकलेगा तब लों चुपचाप बैठी रह क्योंकि आज उस पुरुष को यह काम बिना निपटाये कल न पड़ेगी॥

४.

तब बोअज फाटक के पास जाकर बैठ गया और जिस छुड़ानेहारे कुटुम्बी की चर्चा बोअज ने की थी वह भी आ गया सो बोअज ने कहा हे फुलाने इधर आकर यहीं बैठ जा सो वह
१ उधर जाकर बैठ गया। तब उस ने नगर के दस पुरनियों
२ को बुलाकर कहा यहीं बैठ जाओ सो वे बैठ गये। तब
३ वह उस छुड़ानेहारे कुटुम्बी से कहने लगा नाओमी जो मोआब देश से लौट आई है वह हमारे भाई एलीमेलेक
४ की एक टुकड़ा भूमि बेचना चाहती है। सो मैं ने सोचा कि यह बात तुझ को जताकर कहूंगा कि तू उस को इन बैठे हुओं के साम्हने और मेरे लोगों के इन पुरनियों के साम्हने मोल ले सो यदि तू उस को छुड़ाना चाहे तो छुड़ा और यदि तू छुड़ाना न चाहे तो मुझे ऐसा ही बता दे कि मैं समझ लूं क्योंकि तुझे छोड़ उस के छुड़ाने का हक और किसी को नहीं है और तेरे पीछे मैं हूं उस
५ ने कहा मैं उसे छुड़ाऊंगा। फिर बोअज ने कहा जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले तब उसे रूत मोआबिन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा कि मरे हुए का नाम उस
६ के भाग में स्थिर कर दे। उस छुड़ानेहारे कुटुम्बी ने कहा मैं उस को छुड़ा नहीं सकता न हो कि मेरा निज भाग बिगड़ जाए सो मेरा छुड़ाने का हक तू ले ले क्योंकि
७ मुझ से वह छुड़ाया नहीं जाता। अगले दिनों इस्राएल में छुड़ाने और बदलने के विषय सब पक्का करने के लिये

(१) मूल में मेरे लोगों का सारा फाटक।

(१) मूल में तू कौन है।

यह व्यवहार था कि मनुष्य अपनी जूती उतारके दूसरे
८ को देता था। इस्राएल में गवाही इस रीति होती थी। सो
उस छुड़ानेहारे कुटुंबी ने बोअज से यह कहकर कि तू उसे
९ मोल ले अपनी जूती उतारी। सो बोअज ने पुरनियों और
सब लोगों से कहा तुम आज इस बात के साक्षी हो कि
जो कुछ एलीमेलेक का और जो कुछ किल्योन और
महलोन का था वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल
१० लेता हूं। फिर महलोन की स्त्री रूत मोआबिन को
भी मैं अपनी स्त्री करने के लिये इस मनसा से मोल
लेता हूं कि मरे हुए का नाम उस के निज भाग पर स्थिर
करूं न हो कि मरे हुए का नाम उस के भाइयों में से और
उस के स्थान के फाटक से मिट जाए तुम लोग आज
११ साक्षी ठहरे हो। तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्हों
ने और पुरनियों ने कहा हम साक्षी हैं यह जो स्त्री तेरे
घर में आती है उस को यहोवा इस्राएल के घराने की
दो उपजानेहारी राहेल और लेआ के समान करे और
तू एप्राता में वीरता करे और बेतलेहेम में तेरा बड़ा नाम
१२ हो। और जो सन्तान यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा
तुझे दे उस के कारण से तेरा घराना पेरेस का सा हो
१३ जाए जिस को तामार यहूदा का जन्माया जनी। तब
बोअज ने रूत को ब्याह लिया और वह उस की स्त्री हो
गई और जब उस ने उस से प्रसंग किया तब यहोवा की
दया से उस को गर्भ रहा और वह बेटा जनी। सो १४
स्त्रियों ने नाओमी से कहा यहोवा धन्य है कि जिस ने
तुझे आज छुड़ानेहारे कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा
इस्राएल में इस का बड़ा नाम हो। और यह तेरे १५
जी में जी ले आनेहारा और तेरा बुढ़ापे में पालनेहारा
हो क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रेम रखती और सात
बेटों से भी तेरे लिये श्रेष्ठ है उसी का यह बेटा है।
फिर नाओमी उस बच्चे को अपनी गोद में रखकर उस १६
की धाई का काम करने लगी। और उस की पड़ोसिनों १७
ने यह कहकर कि नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है
लड़के का नाम ओबेद रक्खा। यिशै का पिता और दाऊद
का दादा वही हुआ॥

पेरेस की यह वंशावली है अर्थात् पेरेस ने हेस्रोन १८
को, और हेस्रोन ने राम को और राम ने अम्मीनादाब १९
को, और अम्मीनादाब ने नहशोन को और नहशोन ने २०
सल्मोन को, और सल्मोन ने बोअज को और बोअज २१
ने ओबेद को, और ओबेद ने यिशै को और यिशै ने २२
दाऊद को जन्माया॥

(१) मूल में घर की बनानेहारी।

शमूएल नाम पहिली पुस्तक

(शमूएल के जन्म और लड़कपन का वर्णन)

१. **एप्रैम** के पहाड़ी देश के रामातैम-सोपीम नाम नगर का निवासी
एल्काना नाम एक पुरुष था वह एप्रैमी था और सूप के
पुत्र तोहू का परपोता एलीहू का पोता और यरोहाम
२ का पुत्र था। और उस के दो स्त्रियां थीं एक का तो
नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना था और पनिन्ना के तो
३ बालक हुए पर हन्ना के कोई बालक न हुआ। वह पुरुष
बरस बरस अपने नगर से सेनाओं के यहोवा को
दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में
जाता था और वहां होप्नी और पीनहास नाम एली के
४ दोनों पुत्र रहते थे जो यहोवा के याजक थे। और जब
जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता था तब तब वह अपनी
स्त्री पनिन्ना को और उस के सब बेटों बेटियों को दान
दिया करता था। पर हन्ना को वह दूना दान दिया ५
करता था क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता था तौभी
यहोवा ने उस की कोख बन्द कर रक्खी थी। पर उस ६
की सौत इस कारण से कि यहोवा ने उस की कोख बन्द
कर रक्खी थी उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती थी। और ७
वह तो बरस बरस ऐसा ही करता था और जब हन्ना
यहोवा के भवन को जाती थी तब पनिन्ना उस को चिढ़ाती
थी। सो वह रोई और खाना न खाया। सो उस के पति ८
एल्काना ने उस से कहा हे हन्ना तू क्यों रोती है और खाना
क्यों नहीं खाती और तेरा मन क्यों उदास है क्या तेरे लिये
मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूं। तब शीलो में खाने ९
और पीने के पीछे हन्ना उठी। और यहोवा के मन्दिर के
चौखट के एक बाजू के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा

१० हुआ था। और वह मन में व्याकुल[1] होकर यहोवा से
११ प्रार्थना करने और बिलक बिलक रोने लगी। और उस ने यह मन्नत मानी कि हे सेनाओं के यहोवा यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे और मेरी सुधि ले और अपनी दासी को भूल न जाए और अपनी दासी को पुत्र दे तो मैं उसे उस के जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूंगी और उस के सिर पर छुरा फिरने न
१२ पाएगा। जब वह यहोवा के साम्हने ऐसी प्रार्थना कर रही थी तब एली उस के मुंह की ओर ताक रहा था।
१३ हन्ना मन ही मन कह रही थी उस के होंठ तो हिलते थे पर उस का शब्द न सुन पड़ता था इसलिये एली ने
१४ समझा कि वह नशे में है। सो एली ने उस से कहा तू
१५ कब लों नशे में रहेगी अपना नशा उतार[2]। हन्ना ने कहा नहीं हे मेरे प्रभु मैं तो दुःखिन हूं मैं ने न तो दाखमधु पिया न मदिरा मैं ने अपने मन की बात खोल
१६ कर यहोवा से कही है[3]। अपनी दासी को ओछी स्त्री न जान जो कुछ मैं ने अब लों कहा है सो बहुत ही
१७ शोकित होने और चिढ़ाई जाने के कारण कहा है। एली ने कहा कुशल से चली जा इस्राएल का परमेश्वर तुझे
१८ मन चाहा वर दे। उस ने कहा तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए तब वह स्त्री चली गई और खाना खाया
१९ और उस का मुंह फिर उदास न रहा। बिहान को वे सवेरे उठ यहोवा को दण्डवत् करके रामा में अपने घर लौट गये और एल्काना ने अपनी स्त्री हन्ना से प्रसंग किया
२० और यहोवा ने उस की सुधि ली। सो हन्ना गर्भवती होकर समय पर पुत्र जनी और यों कहकर कि मैं ने इसे
२१ यहोवा से मांगा है उस का नाम शमूएल[4] रक्खा। फिर एल्काना अपने सारे घराने समेत यहोवा के साम्हने बरस बरस की मेलबलि चढ़ाने और अपनी मन्नत पूरी करने के
२२ लिये गया। पर हन्ना अपने पति से यह कहकर घर में रह गई[5] कि जब बालक का दूध छूट जाए तब मैं उस को ले जाऊंगी कि वह यहोवा को मुंह दिखाए और वहां
२३ सदा रहे। उस के पति एल्काना ने उस से कहा जो तुझे भला लगे वही कर जब लों तू उस का दूध न छुड़ाए तब लों यहीं ठहरी रह इतना हो कि यहोवा अपना वचन पूरा करे। सो वह स्त्री वहीं रही और अपने पुत्र के दूध
२४ छूटने के समय लों उस को पिलाती रही। जब उस ने उस का दूध छुड़ाया तब वह उस को संग ले चली और तीन बछड़े और एपा भर आटा और कुप्पी भर दाखमधु भी ले गई और उस को शीलो में यहोवा के भवन में पहुंचा दिया उस समय वह लड़का ही था। और उन्हों ने
२५ बछड़ा बलि करके बालक को एली के पास हाजिर कर
२६ दिया। तब हन्ना ने कहा हे मेरे प्रभु तेरे जीवन की सोंह हे मेरे प्रभु मैं वही स्त्री हूं जो तेरे पास यहीं खड़ी होकर
२७ यहोवा से प्रार्थना करती थी। यह वही बालक है जिस के लिये मैं ने प्रार्थना की थी और यहोवा ने मुझे मुंह
२८ मांगा वर दिया है। सो मैं भी इसे यहोवा को अर्पण कर देती हूं[6] कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे[7]। तब एल्काना ने वहीं यहोवा को दण्डवत् किया॥

२. और

हन्ना ने प्रार्थना करके कहा मेरा मन
यहोवा के कारण हुलसता है
मेरा सींग यहोवा के कारण ऊंचा हुआ है
मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया
क्योंकि मैं तेरे किये हुए उद्धार से आनन्दित हूं॥
२ यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं
क्योंकि तुझ को छोड़ कोई है ही नहीं
और हमारे परमेश्वर के समान कोई चटान
नहीं है॥
३ फूलकर अहंकार की और बातें मत करो
अन्धेर की बातें तुम्हारे मुंह से न निकलें
क्योंकि यहोवा ज्ञानी ईश्वर है
और उस के काम ठीक होते हैं[8]॥
४ शूरवीरों के धनुष टूट गये
और ठोकर खानेवालों की कटि में बल का फेंटा
कसा गया॥
५ जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के लिये मजूरी करनी
पड़ी,
जो भूखे थे वे फिर ऐसे न रहे
बरन जो बांझ थी वह सात जनी
और अनेक बालकों की माता सूख गई॥
६ यहोवा मारता और जिलाता भी है
अधोलोक में उतारता और उस से निकालता है[9]॥
७ यहोवा निर्धन करता है और धनी भी करता है
नीचा करता और ऊंचा भी करता है॥
८ वह कङ्गाल को धूलि में से उठाता

(१) मूल में कड़वी। (२) मूल में अपना दाखमधु अपने पर से दूर कर। (३) मूल में मैं ने अपना जीव यहोवा के साम्हने उण्डेल दिया। (४) अर्थात् ईश्वर का सुना हुआ। (५) मूल में न चढ़ गई।

(६) मूल में मैं ने इसे यहोवा का मांगा हुआ मान लिया।
(७) मूल में यहोवा ही का मांगा हुआ ठहरे।
(८) वा काम उस से तौले जाते हैं।
(९) मूल में और उस ने चढ़ाया।

और दरिद्र को घूरे पर से ऊंचा करता है
कि उन को रईसों के संग बिठाए
और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी करे
क्योंकि पृथिवी के खंभे यहोवा के हैं
और उस ने उन पर जगत को धरा है॥

९ वह अपने भक्तों के पांवों को संभाले रहेगा
पर दुष्ट अन्धियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे
क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा॥

१० यहोवा से झगड़नेहारे चकनाचूर होंगे
वह उन के विरुद्ध आकाश में बादल गरजाएगा
यहोवा पृथिवी की छोर तक न्याय करेगा
और अपने राजा को बल देगा
और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊंचा करेगा॥

११ तब एल्काना रामा को अपने घर चला गया और वह बालक एली याजक के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करने लगा॥

१२ एली के पुत्र तो ओछे थे वे यहोवा को न जानते थे। १३ और याजकों की रीति लोगों के साथ यह थी कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता तब याजक का सेवक मांस सिझाने के समय एक त्रिशूली कांटा हाथ में लिये हुए १४ आकर, उसे कड़ाही वा हांडी वा हंडे वा तसले के भीतर डालता था और जितना मांस कांटे में लग आता था उतना याजक आप लेता था। यों ही वे शीलो में सारे इस्राएलियों से किया करते थे जो वहां आते थे। १५ और चर्बी जलाने से पहिले भी याजक का सेवक आकर मेलबलि चढ़ानेहारे से कहता था कि भूनने के लिये याजक को मांस दे, वह तुझ से सिझाया हुआ नहीं कच्चा ही मांस लेगा। १६ और जब कोई उस से कहता कि निश्चय चर्बी अभी जलाई जायगी तब जितना तेरा जी चाहे उतना ले लेना तब वह कहता १७ था नहीं अभी दे नहीं तो मैं छीन लूंगा। सो उन जवानों का पाप यहोवा के लेखे बहुत भारी हुआ क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे॥

१८ शमूएल जो बालक था सनी का एपोद पहिने हुए १९ यहोवा के साम्हने सेवा टहल किया करता था। और उस की माता बरस बरस उस के लिये एक छोटा सा बागा बनाकर जब अपने पति के संग बरस बरस की मेलबलि चढ़ाने आती तब बागे को उस के पास लाया २० करती थी। और एली ने एल्काना और उस की स्त्री को आशीर्वाद देकर कहा यहोवा इस अर्पण किये हुए बालक की सन्ती जो उस को अर्पण किया गया है[१] तुझ को इस स्त्री से वंश दे। तब वे अपने यहां चले गये। २१ और यहोवा ने हन्ना की सुधि ली और वह गर्भवती हो होकर तीन बेटे और दो बेटी जनी। और शमूएल बालक यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया॥

२२ एली तो अति बूढ़ा हो गया था और उस ने सुना कि मेरे पुत्र सारे इस्राएल से कैसा कैसा व्यवहार करते हैं बरन मिलापवाले तंबू के द्वार पर सेवा करनेहारी स्त्रियों २३ के संग कुकर्म्म भी करते हैं। तब उस ने उन से कहा तुम ऐसे ऐसे काम क्यों करते हो मैं तो इन सारे लोगों २४ से तुम्हारे कुकर्म्मों की चर्चा सुना करता हूं। हे मेरे बेटो ऐसा न करो क्योंकि जो समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध २५ कराते हो। यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे तब तो परमेश्वर[२] उस का न्याय करेगा पर यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे तो उस के लिये कौन बिनती करेगा। तौभी उन्हों ने अपने पिता की बात न मानी क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की २६ थी। पर शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उस से प्रसन्न रहते थे॥

२७ और परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उस से कहने लगा यहोवा यों कहता है कि जब तेरे मूलपुरुष का घराना मिस्र में फिरौन के घराने के वश में २८ था तब क्या मैं उस पर निश्चय प्रगट न हुआ था। और मैं ने उसे इस्राएल के सारे गोत्रों में से इस लिये चुन लिया था कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ावे चढ़ाए और धूप जलाए और मेरे साम्हने एपोद पहिना करे और मैं ने तेरे मूलपुरुष के घराने को इस्राएलियों २९ के सारे हव्य दिये थे। सो मेरे मेलबलि और अन्नबलि जिन के मैं ने अपने धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है उन्हें तुम लोग क्यों पांव तले रौंदते हो और तू क्यों अपने पुत्रों का आदर मेरे आदर से अधिक करता है कि तुम लोग मेरी इस्राएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेंटें खा ३० खाके मोटे हो गये हो। इसलिये इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने कहा तो था कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरुष का घराना मेरे साम्हने सदा लों चला करेगा पर अब यहोवा की वाणी यह है कि यह बात मुझ से दूर हो क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उन का आदर करूंगा और जो मुझे तुच्छ जानें वे छोटे समझे ३१ जाएंगे। सुन वे दिन आते हैं कि मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुरुष के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूंगा ३२ कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा न रहेगा। इस्राएल का

(१) मूल में इस मांगी हुई वस्तु की सन्ती जो उस के निमित्त मांगी गई है।

(२) वा न्यायी।

कितना ही कल्याण क्यों न हो तौभी तुझे मेरे धाम का दुःख देख पड़ेगा और तेरे घराने में कोई बूढ़ा कभी न होगा। ३३ मैं तेरे कुल के सब किसी से तो अपनी वेदी की सेवा न छीनूंगा पर तौभी तेरी आंखें रह जाएंगी और तेरा मन शोकित होगा और जितने मनुष्य तेरे घर में उत्पन्न होंगे वे सब जवानी ही में मरेंगे। ३४ और मेरी इस बात का चिन्ह वह विपत्ति होगी जो होप्नी और पीनहास नाम तेरे दोनों पुत्रों पर पड़ेगी अर्थात् वे दोनों के दोनों एक ही दिन मरेंगे। ३५ और मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊंगा जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा और मैं उस का घर बसाऊंगा और स्थिर करूंगा[१] और वह मेरे अभिषिक्त के साम्हने सब दिन चला फिरा करेगा। ३६ और जो कोई तेरे घराने में बच रहेगा वह उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चान्दी के वा एक रोटी के लिये दण्डवत् करके कहेगा याजक के किसी काम में मुझे लगा कि मुझे एक टुकड़ा रोटी मिले॥

३. और वह बालक शमूएल एली के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करता था और उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था २ दर्शन कम मिलता था। एली की आंखें तो धुंधली होने लगी थीं और उसे न सूझ पड़ता था। ३ उस समय जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था और परमेश्वर का दीपक बुझा न था और शमूएल यहोवा के मन्दिर में जहां परमेश्वर का संदूक था लेटा था ४ तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा और उस ने कहा क्या आज्ञा। ५ तब उस ने एली के पास दौड़कर कहा क्या आज्ञा तू ने तो मुझे पुकारा वह बोला मैं ने नहीं पुकारा फिर जा लेट रह सो वह जाकर लेट गया। ६ तब यहोवा ने फिर पुकार के कहा हे शमूएल। सो शमूएल उठकर एली के पास गया और कहा क्या आज्ञा तू ने तो मुझे पुकारा है उस ने कहा हे मेरे बेटे मैं ने नहीं पुकारा फिर जा लेट रह। ७ उस समय लों तो शमूएल यहोवा को पहचानता न था और यहोवा का वचन उस पर प्रगट न हुआ था। ८ फिर तीसरी बार यहोवा ने शमूएल को पुकारा और वह उठके एली के पास गया और कहा क्या आज्ञा तू ने तो मुझे पुकारा है। तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा होगा। ९ सो एली ने शमूएल से कहा जा लेट रह और यदि वह तुझे फिर पुकारे तो कहना कि हे यहोवा कह क्योंकि तेरा दास सुनता है १० सो शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया। तब यहोवा आ खड़ा हुआ और पहिले की नाईं शमूएल शमूएल ऐसा पुकारा शमूएल ने कहा कह क्योंकि तेरा दास सुनता है। ११ यहोवा ने शमूएल से कहा सुन मैं इस्राएल में एक ऐसा काम करने पर हूं जिस के सारे सुननेहारे बड़े सन्नाटे में आ जाएंगे[२]। १२ उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब पूरा करूंगा जो मैं ने उस के घराने के विषय में कहा है मैं आरम्भ करूंगा और अन्त भी कर दूंगा। १३ मैं तो उस को यह कहकर जता चुका हूं कि मैं उस अधर्म्म का दण्ड जिसे तू जानता है तेरे घराने को सदा देता रहूंगा क्योंकि तेरे पुत्र आप स्रापित हुए हैं और तू ने उन्हें नहीं रोका। १४ इस कारण मैं ने एली के घराने के विषय यह किरिया खाई कि एली के घराने के अधर्म्म का प्रायश्चित्त न तो मेलबलि से कभी होगा न अन्नबलि से। १५ तब शमूएल भोर लों लेटा रहा और यहोवा के भवन के किवाड़ों को खोला। पर शमूएल एली को उस दर्शन की बातें बताने से डरता था। १६ सो एली ने शमूएल को पुकार कर कहा हे मेरे बेटे शमूएल वह बोला क्या आज्ञा। १७ उस ने कहा वह कौन सी बात है जो उस ने तुझ से कही उसे मुझ से न छिपा जो कुछ उस ने तुझ से कहा हो यदि तू उस में से कुछ भी मुझ से छिपाए तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही बरन उस से भी अधिक करे। १८ सो शमूएल ने उस को सारी बातें कह सुनाईं और कुछ न छिपा रक्खा। वह बोला वह तो यहोवा है जो कुछ वह भला जाने वही करे। १९ फिर शमूएल बड़ा होता गया और यहोवा उस के संग रहा और उस की कोई बात निष्फल होने[३] न दी। २० सो दान से ले बेर्शेबा लों रहनेहारे सारे इस्राएलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये ठहरा है। २१ और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया अर्थात् यहोवा ने अपने को शीलो में शमूएल पर प्रगट करके यहोवा का वचन सुनाया॥

(पवित्र संदूक की बन्धुआई और लौटाया जाना)

४. और शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुंचा। और इस्राएली पलिश्तियों से लड़ने को निकले और उन्हों ने तो एबेनेजेर के पास छावनी डाली और पलिश्तियों ने अपेक में छावनी डाली। २ तब पलिश्तियों ने इस्राएल के विरुद्ध पांति बांधी और जब लड़ाई बढ़ गई तब इस्राएल पलिश्तियों से हार गया और इन्हों ने कोई चार हजार इस्राएली सेना के पुरुषों को खेत ही पर मार डाला। ३ सो जब वे लोग छावनी में आये तब इस्राएल

(१) मूल में मैं उस के लिये एक स्थिर घर बनाऊंगा।

(२) मूल में उस के दोनों कान सनसनाएंगे।

(३) मूल में भूमि पर गिरने।

के पुरनिये कहने लगे यहोवा ने आज हमें पलिश्तियों से क्यों हरवा दिया है आओ हम यहोवा की वाचा का संदूक शीलो से मंगा ले आएं कि वह हमारे बीच में ४ आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए। सो लोगों ने शीलो में भेजकर वहां से करूबों के ऊपर बिराजनेहारे सेनाओं के यहोवा की वाचा का संदूक मंगा लिया। और परमेश्वर की वाचा के संदूक के साथ एली के दोनों पुत्र ५ होप्नी और पीनहास भी वहां थे। जब यहोवा की वाचा का संदूक छावनी में पहुंचा तब सारे इस्राएली इतने बल ६ से ललकार उठे कि भूमि गूंज उठी। इस ललकार का शब्द सुनकर पलिश्तियों ने पूछा इब्रियों की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण होगा। तब उन्हों ने जान लिया कि यहोवा का संदूक छावनी में आया है। ७ तब पलिश्ती डरकर कहने लगे उस छावनी में परमेश्वर आ गया है फिर उन्हों ने कहा हाय हम पर ऐसी बात पहिले ८ न हुई थी। हाय हम पर ऐसे प्रतापी देवताओं के हाथ से हम को कौन बचायेगा ये तो वे ही देवता हैं जिन्हों ने मिस्रियों पर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियां डाली ९ थीं। हे पलिश्तियो हियाव बांधो और पुरुषार्थ करो न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन रहे हैं वैसे तुम उन के १० अधीन हो जाओ पुरुषार्थ करके लड़ो। सो पलिश्ती लड़े और इस्राएली हारके अपने अपने डेरे को भागे और ऐसा अत्यन्त संहार हुआ कि तीस हजार इस्राएली पैदल ११ खेत रहे। और परमेश्वर का संदूक ले लिया गया और एली के दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास भी मारे गये। १२ तब एक बिन्यामीनी मनुष्य सेना में से दौड़कर उसी दिन कपड़े फाड़े सिर पर मिट्टी डाले हुए शीलो में पहुंचा। १३ उस के आते समय एली जिस का मन परमेश्वर के संदूक की चिन्ता से थरथरा रहा था सो मार्ग के किनारे कुर्सी पर बैठा बाट जोह रहा था और ज्योंही उस मनुष्य ने नगर में पहुंचकर यह समाचार दिया त्योंही सारा नगर १४ चिल्ला उठा। यह चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पूछा ऐसे हुल्लड़ मचने का क्या कारण है सो वह मनुष्य १५ झट जाकर एली को बताने लगा। एली तो अट्ठानवे बरस का था और उस की आंखें धुन्धली पड़ गई थीं १६ और उसे कुछ सूझता न था। उस मनुष्य ने एली से कहा, मैं वही हूं जो सेना से आया हूं और मैं सेना से आज भाग आया वह बोला हे मेरे बेटे क्या समाचार १७ है। उस समाचार देनेहारे ने उत्तर दिया कि इस्राएली पलिश्तियों के साम्हने से भाग गये हैं और लोगों का बड़ा संहार भी हुआ और तेरे दो पुत्र होप्नी और पीनहास मारे गये और परमेश्वर का संदूक भी छीन लिया गया १८ है। ज्योंही उस ने परमेश्वर के संदूक का नाम लिया त्योंही एली फाटक के पास कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा और बूढ़े और भारी होने के कारण उस की गर्दन टूट गई और वह मर गया। उस ने तो इस्राएलियों का न्याय चालीस बरस किया था। १९ उस की बहू पीनहास की स्त्री गर्भवती और जनने पर थी सो जब उस ने परमेश्वर के संदूक के छीन लिये जाने और अपने ससुर और पति के मरने का समाचार सुना तब उस को पीड़ें उठीं और २० वह दुहर गई और जनी। उस के मरते मरते उन स्त्रियों ने जो उस के आस पास खड़ी थीं उस से कहा मत डर क्योंकि तू पुत्र जनी है पर उस ने कुछ उत्तर न २१ दिया और न कुछ सुरत लगाई। और परमेश्वर के संदूक के छीन लिये जाने और अपने ससुर और पति के कारण उस ने यह कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद[१] रक्खा २२ कि इस्राएल में से महिमा उठ गई। फिर उस ने कहा इस्राएल में से महिमा उठ गई है क्योंकि परमेश्वर का संदूक छीन लिया गया है॥

५. और पलिश्तियों ने परमेश्वर का संदूक एबेनेजेर से उठाकर अशदोद में २ पहुंचा दिया। फिर पलिश्तियों ने परमेश्वर के संदूक को उठाकर दागोन के मन्दिर में पहुंचाकर दागोन के पास ३ धर दिया। बिहान को अशदोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा कि दागोन यहोवा के संदूक के साम्हने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है सो उन्हों ने दागोन को उठाकर ४ उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया। फिर बिहान को जब वे तड़के उठे तब क्या देखा कि दागोन यहोवा के संदूक के साम्हने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है और दागोन का सिर और दोनों हथेलियां डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं ५ निदान दागोन का केवल धड़ समूचा रह गया। इस कारण आज के दिन लों भी दागोन के पुजारी और जितने दागोन के मन्दिर में जाते हैं वे अशदोद में दागोन की डेवढ़ी पर पांव नहीं धरते॥

६ तब यहोवा का हाथ अशदोदियों के ऊपर भारी पड़ा और वह उन्हें नाश करने लगा और उस ने अशदोद और उस के आस पास के लोगों के गिलटियां ७ निकालीं। यह हाल देखकर अशदोद के लोगों ने कहा इस्राएल के देवता का संदूक हमारे साथ रहने न पाएगा क्योंकि उस का हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन ८ पर कठोरता के साथ पड़ा है। सो उन्हों ने पलिश्तियों के सब सरदारों को बुलवा भेजा और उन से पूछा हम इस्राएल के देवता के संदूक से क्या करें वे बोले इस्रा-

(१) अर्थात् महिमा जाती रही।

एल के देवता का संदूक घुमाकर गत नगर में पहुंचाया जाए, सो उन्हों ने इस्राएल के परमेश्वर के संदूक को घुमाकर गत में पहुंचा दिया। ९ जब वे उस को घुमाकर वहां पहुंचे उस के पीछे यहोवा का हाथ उस नगर के विरुद्ध उठा और उस में अत्यन्त बड़ी हलचल मची और उस ने छोटे से बड़े तक उस नगर के सब लोगों को मारा कि उन के गिलटियां निकलने लगीं। १० सो उन्हों ने परमेश्वर का संदूक एक्रोन को भेजा और ज्योंही परमेश्वर का संदूक एक्रोन में पहुंचा त्योंहीं एक्रोनी यह कहकर चिल्लाने लगे कि इस्राएल के देवता का संदूक घुमाकर हमारे पास इस लिये पहुंचाया गया है कि हम और हमारे लोगों को मार डाले। ११ सो उन्हों ने पलिश्तियों के सब सरदारों को इकट्ठा किया और उन से कहा इस्राएल के देवता के संदूक को निकाल दो कि वह अपने स्थान पर लौट जाए और न हम को न हमारे लोगों को मार डाले। उस सारे नगर में तो मृत्यु के भय की हलचल मच रही थी और परमेश्वर का हाथ वहां बहुत भारी पड़ा था। १२ और जो मनुष्य न मरे वे भी गिलटियों के मारे पड़े रहे सो नगर की चिल्लाहट आकाश लों पहुंची ॥

६. यहोवा का संदूक पलिश्तियों के देश में सात महीने लों रहा। २ तब पलिश्तियों ने याजकों और भावी कहनेहारों को बुला कर पूछा कि यहोवा के संदूक से हम क्या करें हमें बताओ कि क्या प्रायश्चित्त देकर हम उसे उस के स्थान पर भेजें। ३ वे बोले यदि तुम इस्राएल के देवता का संदूक वहां भेजो तो उसे वैसे ही न भेजना उस की हानि भरने के लिये अवश्य ही दोषबलि देना तब तुम चंगे हो जाओगे और यह प्रगट होगा कि उस का हाथ तुम पर से क्यों नहीं उठाया गया। ४ उन्हों ने पूछा हम उस की हानि भरने के लिये कौन सा दोषबलि दें। वे बोले पलिश्ती सरदारों की गिनती के अनुसार सोने की पांच गिलटियां और सोने के पांच चूहे क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदारों पर एक ही विपत्ति हुई। ५ सो तुम[1] अपनी गिलटियों और अपने देश के नाश करनेहारे चूहों की भी मूरतें बनाकर इस्राएल के देवता की महिमा मानो क्या जाने वह अपना हाथ तुम पर से और तुम्हारे देवताओं और देश पर से उठा ले। ६ तुम अपने मन क्यों ऐसे हठीले करोगे जैसे मिस्रियों और फिरौन ने अपने मन हठीले कर दिये थे जब उस ने उन के बीच अपनी इच्छा पूरी की तब क्या उन्हों ने उन को जाने न दिया और क्या वे चले न गये। ७ सो अब तुम एक नई गाड़ी और ऐसी दो दुधार गायें लो जो जूए तले न आई हों और उन गायों को उस गाड़ी में जोतकर उन के बच्चों को उनके पास से लेकर घर को लौटा दो। ८ तब यहोवा का संदूक लेकर गाड़ी पर धर दो और सोने की जो वस्तुएं तुम उस की हानि भरने के लिये दोषबलि की रीति से दोगे उन्हें दूसरे संदूक में धरके उस के पास में रख दो फिर उसे छोड़ कर चली जाने दो। ९ तब देखते रहो और यदि वह अपने देश के मार्ग से होकर बेतशेमेश को चले तो जानो कि हमारी यह बड़ी हानि उसी की ओर से हुई और नहीं तो हम को निश्चय होगा कि यह मार हम पर उस की ओर से नहीं संयोग ही से हुई। १० सो उन मनुष्यों ने वैसा ही किया अर्थात् दो दुधार गायें लेकर उस गाड़ी में जोतीं और उन के बच्चों को घर में बन्द कर दिया, ११ और यहोवा का संदूक और दूसरा संदूक और सोने के चूहों और अपनी गिलटियों की मूरतों को गाड़ी पर रख दिया। १२ तब गायों ने बेतशेमेश का सीधा मार्ग लिया वे सड़क ही सड़क बम्बाती हुई चली गई और न दहिने मुड़ीं न बायें और पलिश्तियों के सरदार उन के पीछे पीछे बेतशेमेश के सिवाने लों गये। १३ और बेतशेमेश के लोग तराई में गेहूं काट रहे थे और जब उन्हों ने आंखें उठाकर संदूक को देखा तब उस के देखने से आनन्दित हुए। १४ और गाड़ी यहोशू नाम एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहां ठहर गई जहां एक बड़ा पत्थर था तब उन्हों ने गाड़ी की लकड़ी को चीर गायों को होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया। १५ और लेवीयों ने यहोवा का संदूक उस संदूक समेत जो साथ था जिस में सोने की वस्तुएं थीं उतारके उस बड़े पत्थर पर धर दिया और बेतशेमेश के लोगों ने उसी दिन यहोवा के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाये। १६ यह देखकर पलिश्तियों के पांचों सरदार उसी दिन एक्रोन को लौट गये ॥

१७ जो सोने की गिलटियां पलिश्तियों ने यहोवा की हानि भरने के लिये दोषबलि करके दे दीं उन में से एक तो अशदोद की ओर से एक अज्जा एक अश्कलोन एक गत और एक एक्रोन की ओर से दी गई। १८ और सोने के चूहे क्या शहरपनाहवाले नगर क्या बिना शहरपनाह के गांव बरन जिस बड़े पत्थर पर यहोवा का संदूक धरा गया पलिश्तियों के पांचों सरदारों के वहां तक के भी अधिकार की सब बस्तियों की गिनती के अनुसार दिये गये। वह पत्थर तो आज लों बेतशेमेशी यहोशू के खेत में है। १९ फिर इस कारण से कि बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के संदूक के भीतर देखा उस ने उन में से सत्तर मनुष्य और फिर पचास हजार मनुष्य

(१) मूल में जब।

मारे सो लोगों ने इसलिये बिलाप किया कि यहोवा
२० ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था । सो बेतशेमेश के
लोग कहने लगे इस पवित्र परमेश्वर यहोवा के साम्हने
कौन खड़ा रह सकता है और वह हमारे पास से किस
२१ के पास चला जाए । तब उन्हों ने किर्यत्यारीम के निवा-
सियों के पास यों कहने को दूत भेजे कि पलिश्तियों ने
यहोवा का संदूक लौटा दिया है सो तुम आकर उसे अपने

१ **७.** पास ले जाओ। सो किर्यत्यारीम के लोगों ने जाकर
यहोवा के संदूक को उठाया और अबीनादाब के
घर में जो टीले पर बना था रक्खा और यहोवा के संदूक
की रक्षा करने के लिये अबीनादाब के पुत्र एलाजार को
पवित्र किया ॥

(शमूएल नबी और न्यायी के कार्य्य)

२ किर्यत्यारीम में रहते रहते संदूक को बहुत दिन हुए
अर्थात् बीस बरस बीत गये और इस्राएल का सारा घराना
३ विलाप करता हुआ यहोवा के पीछे चलने लगा। तब
शमूएल ने इस्राएल के सारे घराने से कहा यदि तुम
अपने सारे मन से यहोवा की ओर फिरे हो तो बिराने
देवताओं और अश्तोरेत देवियों को अपने बीच से दूर
करो और यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल
उसी की उपासना करो तब वह तुम्हें पलिश्तियों के हाथ
४ से छुड़ाएगा । सो इस्राएलियों ने बाल देवताओं और
अश्तोरेत देवियों को दूर किया और केवल यहोवा की
उपासना करने लगे ॥

५ फिर शमूएल ने कहा सब इस्राएलियों को मिस्पा
में इकट्ठे करो और मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना
६ करूंगा । सो वे मिस्पा में इकट्ठे हुए और जल भर के
यहोवा के साम्हने उंडेल दिया और उस दिन उपवास
करके वहां कहा कि हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया
है । और शमूएल ने मिस्पा में इस्राएलियों का न्याय
७ किया । जब पलिश्तियों ने सुना कि इस्राएली मिस्पा में
इकट्ठे हुए हैं तब उन के सरदारों ने इस्राएलियों पर
चढ़ाई की यह सुनकर इस्राएलियां ने पलिश्तियों से
८ भय खाया । और इस्राएलियों ने शमूएल से कहा हमारे
लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दोहाई देना न छोड़ कि
९ वह हम को पलिश्तियों के हाथ से बचाए । सो शमूएल
ने एक दूधपिउवा मेम्ना ले सर्वांग होमबलि करके यहोवा
को चढ़ाया और शमूएल ने इस्राएलियों के लिये यहोवा
की दोहाई दी और यहोवा ने उस की सुन ली ।
१० शमूएल होमबलि को चढ़ा रहा था कि पलिश्ती इस्राए-
लियों के संग लड़ने को निकट आ गये तब उसी दिन
यहोवा ने पलिश्तियों के ऊपर बादल को बड़े जोर से
गरजाकर उन्हें घबरा दिया सो वे इस्राएलियों से हार
गये । तब इस्राएली पुरुषों ने मिस्पा से निकलकर पलि- ११
श्तियों को खदेड़ा और उन्हें बेतकर के नीचे लों मारते
चले गये । तब शमूएल ने एक पत्थर लेकर मिस्पा १२
और शेन के बीच में खड़ा किया और यह कहकर उस
का नाम एबेनेजेर[१] रक्खा कि यहां लों तो यहोवा
ने हमारी सहायता की है । सो पलिश्ती दब गये और १३
इस्राएलियों के देश में फिर न आये और शमूएल के
जीवन भर यहोवा का हाथ पलिश्तियों के विरुद्ध बना
रहा । और एक्रोन और गत लों जितने नगर पलिश्तियों १४
ने इस्राएलियों के हाथ से छीन लिये थे वे फिर इस्राए-
लियों के वश में आये और उन का देश भी इस्राएलियों
ने पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाया । और इस्राएलियों
और एमोरियों के बीच भी सन्धि हो गई । और शमूएल १५
जीवन भर इस्राएलियों का न्याय करता रहा । वह बरस १६
बरस बेतेल और गिलगाल और मिस्पा में घूम घूमकर
उन सारे स्थानों में इस्राएलियों का न्याय करता
था । तब वह रामा में जहां उस का घर था १७
लौट आया और वहां भी इस्राएलियों का न्याय करता
था और वहां उस ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई ॥

(शाऊल को राजपद मिलना)

८. जब शमूएल बूढ़ा हुआ तब उस ने
अपने पुत्रों को इस्राएलियों पर
न्यायी ठहराया । उस के जेठे पुत्र का नाम योएल और २
दूसरे का नाम अबिय्याह था ये बेर्शेबा में न्याय करते थे।
पर उस के पुत्र उस की सी चाल न चले अर्थात् लालच ३
में आकर[२] घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे ॥

सो सब इस्राएली पुरनिये इकट्ठे होकर रामा में शमू- ४
एल के पास जाकर, उस से कहने लगे सुन तू तो बूढ़ा हुआ ५
और तेरे पुत्र तेरी सी चाल नहीं चलते अब हम पर न्याय
करने के लिये सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे
ऊपर राजा ठहरा दे । जो बात उन्हों ने कही कि हम पर ६
न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा ठहरा यह बात
शमूएल को बुरी लगी सो शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना
की । यहोवा ने शमूएल से कहा वे लोग जो कुछ तुझ ७
से कहें उसे सुन ले क्योंकि उन्हों ने तुझ को नहीं मुझी
को निकम्मा जाना कि मैं उन पर राज्य न करूं । जैसे ८
जैसे काम वे उस दिन से ले जब मैं ने उन्हें मिस्र से
निकाला था आज के दिन लों करते आये हैं कि मुझ
को त्यागकर पराये देवताओं की उपासना करते हैं वैसे

(१) अर्थात् सहायता का पत्थर ।
(२) मूल में लालच के पीछे मुड़के ।

९ ही वे तुझ से भी करते हैं। सो अब उन की बात मान पर उन्हें दृढ़ता से चिताकर उस राजा की चाल बतला दे जो उन पर राज्य करेगा ॥

१० सो शमूएल ने उन लोगों को जो उस से राजा
११ चाहते थे यहोवा की सारी बातें कह सुनाईं। और उस ने कहा जो राजा तुम पर राज्य करेगा उस की यह चाल होगी अर्थात् वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपने रथों और घोड़ों के काम पर ठहराएगा और वे उस के रथों के
१२ आगे आगे दौड़ा करेंगे। फिर वह हजार हजार और पचास पचास के प्रधान कर लेगा और कितनों से वह अपने हल जुतवाएगा और अपने खेत कटवाएगा और
१३ अपने युद्ध और रथों के हथियार बनवाएगा। फिर वह तुम्हारी बेटियों को लेकर उन से सुगन्धद्रव्य और रसोई
१४ और रोटियां बनवाएगा। फिर वह तुम्हारे खेतों और दाख और जलपाई की बारियों में से जो अच्छी से अच्छी हों उन्हें ले लेकर अपने कर्म्मचारियों को देगा।
१५ फिर वह तुम्हारे बीज और दाख की बारियों का दसवां अंश ले लेकर अपने हाकिमों और कर्म्मचारियों को देगा।
१६ फिर वह तुम्हारे दास दासियों को और तुम्हारे अच्छे से अच्छे जवानों को और तुम्हारे गदहों को भी लेकर अपने
१७ काम में लगाएगा। वह तुम्हारी भेड़ बकरियों का भी दसवां
१८ अंश लेगा निदान तुम लोग उस के दास बन जाओगे। और उस समय तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण हाय हाय करोगे पर यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा।
१९ तौभी उन लोगों ने शमूएल की बात मानने से नाह करके कहा नहीं हम निश्चय अपने ऊपर राजा ठहराएंगे,
२० इसलिये कि हम भी और सब जातियों के समान हो जाएं और हमारा राजा हमारा न्याय करे और हमारे आगे आगे चलकर हमारी ओर से लड़ाई किया करे।
२१ लोगों की ये सारी बातें सुनकर शमूएल ने यहोवा के
२२ कान में कह सुनाईं। यहोवा ने शमूएल से कहा उन की बात मान कर उन के लिये राजा ठहरा दे। सो शमूएल ने इस्राएली मनुष्यों से कहा तुम अपने अपने नगर को चले जाओ ॥

९. बिन्यामीन

के गोत्र का कीश नाम एक पुरुष था जो अपीह के पुत्र बकोरत का परपोता सरोर का पोता और अबीएल का पुत्र था। वह एक बिन्यामीनी पुरुष का पुत्र और बड़ा धनी
२ पुरुष था। उस के शाऊल नाम एक जवान पुत्र था जो सुन्दर था और इस्राएलियों में कोई उस से बढ़कर सुन्दर न था वह इतना लम्बा था कि दूसरे लोग उस के कांधे
३ ही लों होते थे। जब शाऊल के पिता कीश की गदहियां खो गईं तब कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा एक सेवक को अपने साथ ले जाकर गदहियों को ढूंढ़ ला। सो वह
४ एप्रैम के पहाड़ी देश और शलीशा देश होते हुए गया पर उन्हें न पाया तब वे शालीम नाम देश भी होकर गये और वहां भी न पाया फिर बिन्यामीन के देश में गये पर
५ गदहियां न मिलीं। जब वे सूप नाम देश में आये तब शाऊल ने अपने साथ के सेवक से कहा आ हम लौट चलें न हो कि मेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर हमारी
६ चिंता करने लगे। उस ने उस से कहा सुन उस नगर में परमेश्वर का एक जन है जिस का बड़ा आदरमान होता है और जो कुछ वह कहता वह हुए बिना नहीं रहता अब हम उधर चलें क्या जाने वह हम को हमारा मार्ग बताए
७ कि किधर जाएं। शाऊल ने अपने सेवक से कहा सुन यदि हम उस पुरुष के पास चलें तो उस के लिये क्या ले चलें देख हमारी थैलियों में की रोटी चुक गई और भेंट के योग्य कोई वस्तु नहीं जो हम परमेश्वर के उस जन
८ को दें हमारे पास क्या है। सेवक ने फिर शाऊल से कहा कि मेरे पास तो एक शेकेल चान्दी की चौथाई है वही मैं परमेश्वर के जन को दूंगा कि वह हम को बताए
९ कि किधर जाएं। अगले समय में तो इस्राएल में जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने जाता तब ऐसा कहता था कि चलो हम दर्शी के पास चलें क्योंकि जो आजकल नबी कहलाता है वह अगले समय दर्शी कहलाता था।
१० सो शाऊल ने अपने सेवक से कहा तू ने भला कहा है हम चलें सो वे उस नगर को चले जहां परमेश्वर का
११ जन था। उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते समय उन्हें कई एक लड़कियां मिलीं जो पानी भरने को निकली थीं सो
१२ उन्हों ने उन से पूछा क्या दर्शी यहां है। उन्हों ने उत्तर दिया कि है देखो वह तुम्हारे आगे है अब फुर्ती करो आज ऊंचे स्थान पर लोगों का यज्ञ है इसलिये वह आज
१३ नगर में आया है। ज्योंहीं तुम नगर में पहुंचो त्योंहीं वह तुम को ऊंचे स्थान पर खाने को जाने से पहिले मिलेगा क्योंकि जब लों वह न पहुंचे तब लों लोग भोजन न करेंगे इसलिये कि यज्ञ के विषय वही धन्यवाद करता उस के पीछे ही न्योतहरी भोजन करते हैं सो तुम अभी चढ़
१४ जाओ इसी बेला वह तुम्हें मिलेगा। सो वे नगर में चढ़ गये और ज्योंहीं नगर के भीतर पहुंच गये त्योंहीं शमूएल ऊंचे स्थान पर चढ़ने की मनसा से उन के साम्हने आ रहा था ॥

१५ शाऊल के आने से एक दिन पहिले यहोवा ने
१६ शमूएल को यह चिता रक्खा[१] था कि, कल इसी समय

(१) मूल में शमूएल का कान खोला।

मैं तेरे पास बिन्यामीन के देश से एक पुरुष को भेजूंगा उसी को तू मेरी इस्राएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने को अभिषेक करना और वह मेरी प्रजा को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाएगा क्योंकि मैं ने अपनी प्रजा पर कृपादृष्टि की है इसलिये कि उस की चिल्लाहट मेरे पास पहुंची है। १७ फिर जब शाऊल शमूएल को देख पड़ा तब यहोवा ने उस से कहा जिस पुरुष की चर्चा मैं ने तुझ से की थी वह यही है मेरी प्रजा पर यही अधिकार जमाएगा। १८ तब शाऊल फाटक में शमूएल के निकट जाकर कहने लगा मुझे बता कि दर्शी का घर कहां है। १९ उस ने कहा दर्शी तो मैं हूं मेरे आगे आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ जा आज मेरे साथ तुम्हारा भोजन होगा और बिहान को जो कुछ तेरे मन में हो उसे मैं तुझे बताकर बिदा करूंगा। २० और तेरी गदहियां जो तीन दिन हुए खो गई थीं उन की कुछ चिन्ता न कर क्योंकि वे मिल गईं और इस्राएल में जो कुछ मनभाऊ है वह किस का है क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे घराने का नहीं है। २१ शाऊल ने उत्तर देकर कहा क्या मैं बिन्यामीनी अर्थात् सब इस्राएली गोत्रों में से छोटे गोत्र का नहीं हूं और क्या मेरा कुल बिन्यामीन के गोत्र के सारे कुलों में से छोटा नहीं है सो तू मुझ से ऐसी बात क्यों कहता है। २२ तब शमूएल ने शाऊल और उस के सेवक को ले कोठरी में पहुंचाकर न्योतहरी जो कोई तीस जन थे उन की पांति के सिरे पर बैठा दिया। २३ फिर शमूएल ने रसोइये से कहा जो टुकड़ा मैं ने तुझे देकर अपने पास रख छोड़ने को कहा था उसे ले आ। २४ सो रसोइये ने जांघ को मांस समेत उठाकर शाऊल के आगे धर दिया तब शमूएल ने कहा जो रक्खा गया था उसे देख और अपने साम्हने धरके खा क्योंकि वह तेरे लिये इसी नियत समय लों जिस की चर्चा करके मैं ने लोगों को न्योता दिया रक्खा हुआ है। सो शाऊल ने उस दिन शमूएल के साथ भोजन किया। २५ तब वे ऊंचे स्थान से उतर कर नगर में आये और उस ने घर की छत पर शाऊल से बातें कीं। २६ बिहान को वे तड़के उठे और पह फटते फटते शमूएल ने शाऊल को छत पर बुलाकर कहा उठ मैं तुझ को बिदा करूंगा सो शाऊल उठा और वह और शमूएल दोनों बाहर निकल गये। २७ नगर के सिरे की उतराई पर चलते चलते शमूएल ने शाऊल से कहा अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे (सो वह बढ़ गया) पर तू अभी ठहरा रह मैं तुझे परमेश्वर का वचन सुनाऊंगा।

१०. १ तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उस के सिर पर उंडेला और उसे चूमकर कहा क्या इस का कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है। २ आज जब तू मेरे पास से चला जाएगा तब राहेल की कबर के पास जो बिन्यामीन के देश के सिवाने पर सेलसह में है दो जन तुझे मिलेंगे और कहेंगे कि जिन गदहियों को तू ढूंढ़ने गया था वे मिली हैं और सुन तेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर तुम्हारे कारण कुढ़ता हुआ कहता है कि मैं अपने पुत्र के लिये क्या करूं। ३ फिर वहां से आगे बढ़कर जब तू ताबोर के बांजवृक्ष के पास पहुंचेगा तब वहां तीन जन परमेश्वर के पास बेतेल को जाते हुए तुझे मिलेंगे जिन में से एक तो बकरी के तीन बच्चे और दूसरा तीन रोटी और तीसरा एक कुप्पा दाखमधु लिये हुए होगा। ४ और वे तेरा कुशल पूछेंगे और तुझे दो रोटी देंगे और तू उन्हें उन के हाथ से ले लेना। ५ इस के पीछे तू गिबा में पहुंचेगा जो परमेश्वर का कहावता है[१] जहां पलिश्तियों की चौकी है और जब तू वहां नगर में प्रवेश करे तब अपने आगे आगे सितार डफ बांसुली और बीणा बजवाते और नबूवत करते हुए नबियों का एक दल ऊंचे स्थान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा। ६ तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा और तू उन के साथ होकर नबूवत करने लगेगा और बदलकर और ही मनुष्य हो जाएगा। ७ और जब ये चिन्ह तुझे देख पड़ेंगे तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उस में लग जाना क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा। ८ और तू मुझ से पहिले गिलगाल को जाना और मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊंगा तू सात दिन लों मेरी बाट जोहते रहना तब मैं तेरे पास पहुंचकर तुझे बताऊंगा कि तुझ को क्या क्या करना है। ९ ज्योंहीं उस ने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी त्योंहीं परमेश्वर ने उस का मन बदल दिया और वे सब चिन्ह उसी दिन हुए॥

१० जब वे गिबा[२] में पहुंच गये तब नबियों का एक दल उस को मिला और परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा और वह उन के बीच नबूवत करने लगा। ११ जब उन सभों ने जो उसे पहिले से जानते थे यह देखा कि वह नबियों के बीच नबूवत कर रहा है तब आपस में कहने लगे कि कीश के पुत्र को यह क्या हुआ क्या शाऊल भी नबियों में का है। १२ वहां के एक मनुष्य ने उत्तर दिया भला उन का बाप कौन है इस पर यह कहावत चलने लगी कि क्या शाऊल भी नबियों में का है। १३ जब वह नबूवत कर चुका तब ऊंचे स्थान पर गया॥

(१) वा तू परमेश्वर की पहाड़ी को पहुंचेगा।
(२) वा पहाड़ी।

१४ तब शाऊल के चचा ने उस से और उस के सेवक से पूछा कि तुम कहां गये थे उस ने कहा हम तो गदहियों को ढूंढ़ने गये थे और जब हम ने देखा कि वे कहीं १५ नहीं मिलतीं तब शमूएल के पास गये। शाऊल के चचा ने कहा मुझे बतला दे कि शमूएल ने तुम से क्या १६ कहा। शाऊल ने अपने चचा से कहा कि उस ने हमें निश्चय करके बतलाया कि गदहियां मिल गईं पर जो बात शमूएल ने राज्य के विषय कही थी सो उस ने उस को न बताई॥

१७ तब शमूएल ने प्रजा के लोगों को मिस्पा में यहोवा १८ के पास बुलवाया। तब उस ने इस्राएलियों से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं तो इस्राएल को मिस्र देश से निकाल लाया और तुम को मिस्रियों के हाथ से और उन सब राज्यों के हाथ से जो १९ तुम पर अंधेर करते थे छुड़ाया है। पर तुम ने आज अपने परमेश्वर को जो सारी विपत्तियों और कष्टों से तुम्हारा छुड़ानेहारा है तुच्छ जाना और उस से कहा है कि हम पर राजा ठहरा दे। सो अब तुम गोत्र गोत्र और हजार हजार करके यहोवा के साम्हने खड़े हो जाओ। २० तब शमूएल सारे इस्राएली गोत्रियों को समीप लाया २१ और चिट्ठी बिन्यामीन के नाम पर निकली[1]। तब वह बिन्यामीन के गोत्र को कुल कुल करके समीप लाया और चिट्ठी मत्री के कुल के नाम पर निकली[2] फिर चिट्ठी कीश के पुत्र शाऊल के नाम पर निकली[3] और जब वह २२ खोजा गया तब न मिला। सो उन्हों ने फिर यहोवा से पूछा क्या यहां कोई और आनेहारा है यहोवा ने कहा हां २३ सुनो वह सामान के बीच छिपा हुआ है। तब वे दौड़कर उसे वहां से लाये और वह लोगों के बीच खड़ा हुआ और वह कांधे से सिर तक[4] सब लोगों से लंबा[5] था। २४ शमूएल ने सब लोगों से कहा क्या तुम ने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगों में कोई उस के बराबर नहीं तब सब लोग ललकार के बोल उठे राजा जीता रहे॥

२५ तब शमूएल ने लोगों से राजनीति का वर्णन किया और उसे पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे रख दिया। और शमूएल ने सब लोगों को अपने अपने घर २६ जाने को बिदा किया। और शाऊल गिबा को अपने घर चला गया और उस के साथ एक दल भी गया जिन के मन को परमेश्वर ने उभारा था। २७ पर कई ओछे लोगों ने कहा यह जन हमारा क्या उद्धार करेगा और उन्हों ने उस को तुच्छ जाना और उस के पास भेंट न लाये तौभी वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा[6]॥

(अम्मोनियों पर शाऊल की जय)

११. तब अम्मोनी नाहाश ने चढ़ाई करके गिलाद के याबेश के विरुद्ध छावनी डाली सो याबेश के सब पुरुषों ने नाहाश से कहा हम से वाचा बांध और हम तेरी अधीनता मान लेंगे। २ अम्मोनी नाहाश ने उन से कहा मैं तुम से वाचा इस शर्त पर बान्धूंगा कि मैं तुम सभों की दहिनी आंखें फोड़कर इसे सारे इस्राएल की नामधराई का कारण कर दूं। ३ याबेश के पुरनियों ने उस से कहा हमें सात दिन का अवकाश दे तब लों हम इस्राएल के सारे देश में दूत भेजेंगे और यदि हम को कोई बचानेहारा न मिले तो हम तेरे पास निकल आएंगे। ४ दूतों ने शाऊलवाले गिबा में आकर लोगों को यह संदेश सुनाया और सब लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे। ५ तब शाऊल ढोर के पीछे पीछे मैदान से चला आया और शाऊल ने पूछा लोगों को क्या हुआ कि वे रोते हैं सो याबेश के लोगों का संदेश उसे सुनाया गया, ६ यह संदेश सुनते ही शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा बल से उतरा और उस का कोप बहुत भड़क उठा। ७ सो उस ने एक जोड़ी बैल लेकर टुकड़े टुकड़े काटे और यह कहकर दूतों के हाथ से इस्राएल के सारे देश में भेज दिये कि जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न हो ले उस के बैलों से यों ही किया जाएगा तब यहोवा का भय लोगों में ऐसा समाया कि वे एक मन होकर[7] निकले। ८ तब उस ने उन्हें बेजेक में गिन लिया और इस्राएलियों के तीन लाख और यहूदियों के तीस हजार ठहरे। ९ और उन्हों ने उन दूतों से जो आये थे कहा तुम गिलाद में के याबेश के लोगों से यों कहो कि कल जिस समय घाम कड़ा होगा तब छुटकारा पाओगे सो दूतों ने जाकर याबेश के लोगों को संदेश दिया और वे आनन्दित हुए। १० सो याबेश के लोगों ने कहा कल हम तुम्हारे पास निकल आएंगे और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही हम से करना। ११ दूसरे दिन शाऊल ने लोगों के तीन दल किये और उन्हों ने रात के पिछले पहर में छावनी के बीच में आकर अम्मोनियों को मारा और घाम के कड़े होने के समय लों ऐसे मारते रहे कि जो बच निकले वे

(१) मूल में बिन्यामीन का गोत्र लिया गया।
(२) मूल में मत्री का कुल लिया गया। (३) मूल में कीश का पुत्र शाऊल लिया गया। (४) मूल में ऊपर। (५) मूल में सब लोग उस के कांधे लों थे।

(६) मूल में वह बहिरा सा हो गया।
(७) मूल में एक पुरुष के समान।

यहां लों तितर बितर हुए कि दो जन एक संग कहीं न
१२ रहे। तब लोग शमूएल से कहने लगे जिन मनुष्यों ने कहा था कि क्या शाऊल हम पर राज्य करे उन को लाओ
१३ कि हम उन्हें मार डालें। शाऊल ने कहा आज के दिन कोई मार डाला न जाएगा क्योंकि आज यहोवा ने इस्राएलियों को छुटकारा दिया है ॥

(सभा में शमूएल का उपदेश)

१४ तब शमूएल ने इस्राएलियों से कहा आओ हम गिलगाल को चलें और वहां राज्य को नये सिरे से
१५ स्थापित करें। सो सब लोग गिलगाल को चले और वहां उन्हों ने गिलगाल में यहोवा के साम्हने शाऊल को राजा बनाया और वहीं उन्हों ने यहोवा को मेलबलि चढ़ाये और वहीं शाऊल और सब इस्राएली लोगों ने अत्यन्त आनन्द किया ॥

१२. तब शमूएल ने सारे इस्राएलियों से कहा सुनो जो कुछ तुम ने मुझ से कहा था उसे मानकर मैं ने एक राजा तुम्हारे
२ ऊपर ठहराया है। और अब देखो वह राजा तुम्हारे साम्हने काम करता है[१] और मैं बूढ़ा हूं और मेरे बाल पक गये हैं और मेरे पुत्र तुम्हारे पास हैं और मैं लड़कपन से लेकर आज लों तुम्हारे साम्हने काम करता[२] रहा
३ हूं। मैं हाजिर हूं तुम यहोवा के साम्हने और उस के अभिषिक्त के सामने मुझ पर साक्षी दो कि मैं ने किस का बैल ले लिया वा किस का गदहा ले लिया वा किस पर अंधेर किया वा किस को पीसा वा किस के हाथ से अपनी आंखें बन्द करने के लिये घूस लिया बताओ और
४ मैं वह तुम को फेर दूंगा। वे बोले तू ने न तो हम पर अंधेर किया न हमें पीसा और न किसी के हाथ से कुछ
५ लिया है। उस ने उन से कहा आज के दिन यहोवा तुम्हारा साक्षी और उस का अभिषिक्त इस बात का साक्षी है कि मेरे यहां कुछ नहीं निकला वे बोले हां वह
६ साक्षी है। फिर शमूएल लोगों से कहने लगा जो मूसा और हारून को ठहराकर तुम्हारे पितरों को मिस्र देश से
७ निकाल लाया वह यहोवा है। सो अब तुम खड़े रहो और मैं यहोवा के साम्हने उस के सारे धर्म्म के कामों के विषय जिन्हें उस ने तुम्हारे साथ और तुम्हारे पितरों के
८ साथ किया है तुम्हारे साथ विचार करूंगा। याकूब मिस्र में गया और तुम्हारे पितरों ने यहोवा की दोहाई दी तब यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा और उन्हों ने तुम्हारे पितरों को मिस्र से निकाला और इस स्थान में
९ बसाया। फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गये तब उस ने हासोर के सेनापति सीसरा और पलिश्तियों और मोआब के राजा के अधीन कर दिया[३] और
१० वे उन से लड़े। तब उन्हों ने यहोवा की दोहाई देकर कहा हमने यहोवा को त्यागकर और बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों की उपासना करके पाप किया तो है पर अब तू हम को हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा
११ तब हम तेरी उपासना करेंगे। सो यहोवा ने यरुब्बाल बदान यिप्तह और शमूएल को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया और तुम निडर
१२ रहने लगे। पर जब तुम ने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश हम पर चढ़ाई करता है तब यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था तौभी तुम ने मुझ से कहा नहीं हम पर एक राजा राज्य
१३ करेगा। अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया और जिस के लिये तुम ने प्रार्थना की थी देखो यहोवा ने एक राजा तुम्हारे ऊपर कर दिया है।
१४ यदि तुम यहोवा का भय मानते उस की उपासना करते और उस की बात सुनते रहो और यहोवा की आज्ञा टाल उस से बलवा न करो और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है दोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे
१५ पीछे चलनेहारे हो यह तो भला होगा। पर यदि तुम यहोवा की बात न मानो और यहोवा की आज्ञा को टालकर उस से बलवा करो तो यहोवा का हाथ जैसे तुम्हारे पुरखाओं के विरुद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरुद्ध होगा।
१६ अब खड़े रहो और एक बड़ा काम देखो जो यहोवा
१७ तुम्हारी आंखों के साम्हने करने पर है। आज क्या गेहूं की कटनी नहीं हो रही मैं यहोवा को पुकारूंगा और वह बादल गरजाएगा और मेंह बरसाएगा तब तुम जानोगे और देखोगे कि हम ने राजा मांगकर यहोवा के लेखे बहुत
१८ बुराई की है। सो शमूएल ने यहोवा को पुकारा और यहोवा ने उसी दिन बादल गरजाया और मेंह बरसाया और सब लोग यहोवा से और शमूएल से निपट डर
१९ गये। सो सब लोगों ने शमूएल से कहा अपने दासों के निमित्त अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर कि हम मर न जाएं हम ने अपने सारे पापों से बढ़कर यह बुराई
२० की है कि राजा मांगा है। शमूएल ने लोगों से कहा डरो मत तुम ने तो यह सारी बुराई की है पर अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ो अपने सारे मन
२१ से उस की उपासना करो। और मत मुड़ो नहीं तो ऐसी

(१) मूल में तुम्हारे साम्हने चल फिर रहा है। (२) मूल में हमारे साम्हने चलता फिरता।

(३) मूल में के हाथ बेच डाला।

व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलोगे जिन से न कुछ लाभ न कुछ छुटकारा हो सकता है क्योंकि वे व्यर्थ ही हैं। २२ यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न त्यागेगा क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से २३ अपनी प्रजा बनाया है। फिर यह मुझ से दूर हो कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोड़कर यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरूं मैं तो तुम्हें अच्छा और सीधा मार्ग दिखाता २४ रहूंगा। इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो और सच्चाई से अपने सारे मन के साथ उस की उपासना करो और यह सोचो कि उस ने हमारे लिये कैसे २५ बड़े बड़े काम किये हैं। पर यदि तुम बुराई करते ही रहो तो तुम और तुम्हारा राजा दोनो के दोनों मिट जाओगे॥

(शाऊल राजा का पहिला अपराध और उस का फल)

१३. शाऊल[१] बरस का होकर राज्य करने लगा और उस ने २ इस्राएलियों पर दो[२] बरस लों राज्य किया। और शाऊल ने इस्राएलियों में से तीन हजार पुरुषों को चुन लिया और उन में से दो हजार शाऊल के साथ मिकमाश में और बेतेल के पहाड़ पर रहे और एक हजार योनातान के साथ बिन्यामीन के गिबा में रहे और दूसरे सब लोगों को उस ने अपने अपने डेरे जाने को बिदा ३ किया। तब योनातान ने पलिश्तियों की उस चौकी को जो गिबा में थी मार लिया और इस का समाचार पलिश्तियों के कान पड़ा तब शाऊल ने सारे देश में नरसिंगा ४ फुंकवाकर यह कहला भेजा कि इब्री लोग सुनें। और सब इस्राएलियों ने यह समाचार सुना कि शाऊल ने पलिश्तियों की चौकी को मारा है और यह भी कि पलिश्ती इस्राएल से घिन करने लगे हैं सो लोग शाऊल के पीछे चलकर गिलगाल में इकट्ठे हो गये॥

५ और पलिश्ती इस्राएल से लड़ने को इकट्ठे हो गये अर्थात् तीस हजार रथ और छः हजार सवार और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान बहुत से लोग इकट्ठे हुए और बेतावेन की पूरब ओर आ मिकमाश में छावनी ६ डाली। जब इस्राएली पुरुषों ने देखा कि हम सकेती में पड़े हैं (और सचमुच लोग संकट में पड़े थे) तब वे लोग गुफाओं झाड़ियों ढांगों गढ़ियों और गड़हों में जा छिपे। ७ और कितने इब्री यर्दन पार होकर गाद और गिलाद के देशों में चले गये पर शाऊल गिलगाल ही में रहा और सब लोग थरथराते हुए उस के पीछे हो लिये॥

८ वह शमूएल के ठहराये हुए समय अर्थात् सात दिन लों बाट जोहता रहा पर शमूएल गिलगाल में न आया और लोग उस के पास से इधर उधर होने लगे। ९ तब शाऊल ने कहा होमबलि और मेलबलि मेरे पास १० लाओ तब उस ने होमबलि को चढ़ाया। ज्योंहीं वह होमबलि को चढ़ा चुका त्योंहीं शमूएल आ गया और शाऊल उस से मिलने और नमस्कार करने को निकला। ११ शमूएल ने पूछा तूने क्या किया शाऊल ने कहा जब मैं ने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर हो चले हैं और तू ठहराये हुए दिनों के भीतर नहीं आया और पलिश्ती १२ मिकमाश में इकट्ठे हुए हैं, तब मैं ने सोचा कि पलिश्ती गिलगाल में मुझ पर अभी आ पड़ेंगे और मैं ने यहोवा से बिनती नहीं की सो मैं ने अपनी इच्छा न रहते भी १३ होमबलि चढ़ाया। शमूएल ने शाऊल से कहा तू ने मूर्खता का काम किया है तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राए- १४ लियों के ऊपर सदा स्थिर रखता। पर अब तेरा राज्य बना न रहेगा यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को ढूंढ़ लिया है जो उस के मन के अनुसार है और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है क्योंकि तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना॥

१५ तब शमूएल चल दिया और गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया और शाऊल ने अपने साथ के १६ लोगों को गिनकर कोई छः सौ पाये। और शाऊल और उस का पुत्र योनातान और जो लोग उन के साथ थे वे बिन्यामीन के गिबा में रहे और पलिश्ती मिकमाश में डेरे १७ डाले रहे। और पलिश्तियों की छावनी से नाश करने- हारे तीन गोल बांधकर निकले एक गोल ने शूआल १८ नाम देश की ओर फिरके ओप्रा का मार्ग लिया। एक और गोल ने मुड़कर बेथोरोन का मार्ग लिया और एक और गोल ने मुड़कर उस देश का मार्ग लिया जो सबोईम नाम तराई की ओर जंगल की तरफ है॥

१९ और इस्राएल के सारे देश में लोहार कहीं न मिलता था क्योंकि पलिश्तियों ने कहा था कि इब्री २० तलवार वा भाला बनाने न पाएं। सो सारे इस्राएली अपने अपने हल की फाल और फाल और कुल्हाड़ी और हंसुआ पैना करने के लिये पलिश्तियों के पास जाते थे। २१ और उन के हंसुओं फालों खेती के त्रिशूलों और २२ कुल्हाड़ियों की धारें और पैनों की नोकें भोथी रहीं। सो युद्ध के दिन शाऊल और योनातान के साथियों में से किसी के पास न तो तलवार थी न भाला केवल २३ शाऊल और उस के पुत्र योनातान के पास रहे। और

(१) जान पड़ता है कि यहां कोई संख्या छूट गई है।

(२) जान पड़ता है कि दो से अधिक कोई संख्या यहां छूट गई है यथा बत्तीस बयालीस इत्यादि।

पलिश्तियों की चौकी के सिपाही निकल कर मिकमाश की घाटी पर ठहरे ॥

(योनातान की जय और शाऊल का हठ)

१४. एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान ने अपने पिता से बिना कुछ कहे अपने हथियार ढोनेहारे जवान से कहा आ हम उधर २ पलिश्तियों की चौकी के पास चलें । शाऊल तो गिबा के सिरे पर मिग्रोन में के अनार के पेड़ तले टिका हुआ ३ था और उसके संग के लोग कोई छः सौ थे । और एली जो शीलो में यहोवा का याजक था उस के पुत्र पीनहास का पोता और ईकाबोद के भाई अहीतूब का पुत्र अहिय्याह भी एपोद पहिने हुए संग था । पर उन लोगों को ४ मालूम न था कि योनातान चला गया है । उन घाटियों के बीच जिन से होकर योनातान पलिश्तियों की चौकी को जाना चाहता था दोनों अलंगों पर एक एक नोकीली चटान थी एक चटान का नाम तो बोसेस और ५ दूसरी का नाम सेने था । एक चटान तो उत्तर की ओर मिकमाश के साम्हने और दूसरी दक्खिन की ओर गेबा ६ के साम्हने खड़ी है । सो योनातान ने अपने हथियार ढोनेहारे जवान से कहा आ हम उन खतनारहित लोगों की चौकी के पास जाएं क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे क्योंकि यहोवा को कुछ रोक नहीं कि चाहे बहुत लोगों के द्वारा चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा ७ दे । उस के हथियार ढोनेहारे ने उस से कहा जो कुछ तेरे मन में हो वही कर उधर चल मैं तेरी इच्छा के ८ अनुसार तेरे संग रहूंगा । योनातान ने कहा सुन हम ९ उन मनुष्यों के पास जाकर अपने को उन्हें दिखाएं । यदि वे हम से यों कहें कि हमारे आने लों ठहरे रहो तब तो हम उसी स्थान पर खड़े रहें और उन के पास न चढ़ें । १० पर यदि वे यह कहें कि हमारे पास चढ़ आओ तो हम यह जानकर चढ़ें कि यहोवा उन्हें हमारे हाथ कर देगा ११ हमारे लिये यही चिन्ह हो । सो उन दोनों ने अपने को पलिश्तियों की चौकी पर प्रगट किया तब पलिश्ती कहने लगे देखो इब्री लोग उन बिलों में से जहां वे छिप रहे १२ थे निकले आते हैं । फिर चौकी के लोगों ने योनातान और उस के हथियार ढोनेहारे से पुकार के कहा हमारे पास चढ़ आओ तब हम तुम को कुछ सिखाएंगे सो योनातान ने अपने हथियार ढोनेहारे से कहा मेरे पीछे पीछे चढ़ आ क्योंकि यहोवा उन्हें इस्राएलियों के हाथ १३ में कर देगा । सो योनातान अपने हाथों और पांवों के बल चढ़ गया और उस का हथियार ढोनेहारा भी उस के पीछे पीछे चढ़ गया और पलिश्ती योनातान के साम्हने गिरते गये और उस का हथियार ढोनेहारा उस के पीछे १४ पीछे उन्हें मारता गया । यह पहिला संहार जो योनातान और उस के हथियार ढोनेहारे से हुआ उस में आधे बीघे[1] भूमि में बीस एक पुरुष मारे गये । १५ और छावनी में और मैदान पर और उन सारे लोगों में थरथराहट हुई और चौकीवाले और नाश करनेहारे भी थरथराने लगे और भुईंडोल भी हुआ सो अत्यन्त बड़ी थरथराहट[2] हुई । १६ और बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहरुओं ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती[3] जाती है और वे लोग इधर उधर चले जाते हैं ॥

१७ तब शाऊल ने अपने साथ के लोगों से कहा अपनी गिनती करके देखो कि हमारे पास से कौन चला गया है उन्हों ने गिनकर देखा कि योनातान और उस का हथियार ढोनेहारा यहां नहीं हैं । १८ सो शाऊल ने अहिय्याह से कहा परमेश्वर का संदूक इधर ला । उस समय तो परमेश्वर का संदूक इस्राएलियों के साथ था । १९ शाऊल याजक से बातें कर रहा था कि पलिश्तियों की छावनी में का हुल्लड़ अधिक होता गया सो शाऊल ने याजक से कहा अपना हाथ खींच । २० तब शाऊल और उस के संग के सब लोग इकट्ठे होकर लड़ाई में गये वहां उन्हों ने क्या देखा कि एक एक पुरुष की तलवार अपने अपने साथी पर चल रही है और बहुत बड़ा कोलाहल मच रहा है । २१ और जो इब्री पहिले की नाईं पलिश्तियों की ओर के थे और उन के साथ चारों ओर से छावनी में गये थे वे भी शाऊल और योनातान के संग के इस्राएलियों में मिल गये । २२ और जितने इस्राएली पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश में छिप गये थे वे भी यह सुनकर कि पलिश्ती भागे जाते हैं लड़ाई में आ उन का पीछा करने में लग गये । २३ सो यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को छुटकारा दिया और लड़नेहारे बेतावेन की परली ओर लों चले गये । २४ पर इस्राएली पुरुष उस दिन तंग हुए क्योंकि शाऊल ने उन लोगों को किरिया धराकर कहा स्रापित हो वह जो सांझ से पहिले कुछ खाए इसी रीति मैं अपने शत्रुओं से पलटा ले सकूंगा । सो उन लोगों में से किसी ने कुछ भोजन न किया । २५ और सब लोग[4] किसी बन में पहुंचे जहां भूमि पर मधु पड़ा हुआ था । २६ सो जब लोग बन में आये तब क्या देखा कि मधु टपक रहा है तौभी किरिया के डर के मारे कोई अपना हाथ अपने मुंह तक न ले गया । २७ पर योनातान ने अपने पिता को लोगों को किरिया धराते न सुना था सो उस ने अपने हाथ की

(१) मूल में आधे बीघे की रेघारी । (२) मूल में परमेश्वर की थरथराहट । (३) मूल में गलती । (४) मूल में सारा देश ।

छड़ी की नोक बढ़ाकर मधु के छत्ते में बोरी और अपना हाथ अपने मुंह तक लगाया तब उस की आंखों से २८ सूझने लगा। तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा तेरे पिता ने लोगों को दृढ़ता से किरिया धराके कहा स्रापित हो वह जो आज कुछ खाए और लोग थके मान्दे थे। २९ योनातान ने कहा मेरे पिता ने लोगों को[1] कष्ट दिया है देखो मैं ने इस मधु को थोड़ा सा चक्खा और मुझे आंखों ३० से कैसा सूझने लगा। सो यदि आज लोग अपने शत्रुओं की लूट से जिसे उन्हों ने पाया मनमाना खाते तो कितना अच्छा होता अभी तो बहुत पलिश्ती मारे नहीं ३१ गये। उस दिन वे मिकमाश से लेकर अय्यालोन लों पलिश्तियों को मारते गये और लोग बहुत ही थक गये। ३२ सो वे लूट पर टूटे और भेड़ बकरी और गाय बैल और बछड़े ले भूमि पर मारके उन का मांस लोहू समेत खाने ३३ लगे। जब इस का समाचार शाऊल को मिला कि लोग लोहू समेत मांस खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हैं तब उस ने उन से कहा तुम ने तो विश्वासघात किया है ३४ अभी एक बड़ा पत्थर मेरे पास लुढ़का दो। फिर शाऊल ने कहा लोगों के बीच इधर उधर फिरके उन से कहो कि अपना अपना बैल और भेड़ शाऊल के पास ले आओ और वहीं बलि करके खाओ और लोहू समेत खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप न करो। सो सब लोगों ने उसी रात अपना अपना बैल ले जाकर वहीं बलि किया। ३५ तब शाऊल ने यहोवा की एक वेदी बनवाई वह तो पहिली वेदी है जो उस ने यहोवा के लिये बनवाई॥

३६ फिर शाऊल ने कहा हम इसी रात को पलिश्तियों का पीछा करके उन्हें भोर लों लूटते रहें और उन में से एक मनुष्य को भी जीता न छोड़ें उन्हों ने कहा जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर पर याजक ने कहा हम इधर ३७ परमेश्वर के समीप आएं। सो शाऊल ने परमेश्वर से पुछवाया कि क्या मैं पलिश्तियों का पीछा करूं क्या तू उन्हें इस्राएल के हाथ में कर देगा पर उसे उस दिन ३८ कुछ उत्तर न मिला। तब शाऊल ने कहा हे प्रजा के मुख्य लोगो इधर आकर बूझो और देखो कि आज पाप ३९ किस प्रकार से हुआ है। क्योंकि इस्राएल के छुड़ानेहारे यहोवा के जीवन की सोंह यदि वह पाप मेरे पुत्र योनातान से हुआ हो तौभी निश्चय वह मार डाला जाएगा पर ४० सब लोगों में से किसी ने उसे उत्तर न दिया। तब उस ने सारे इस्राएलियों से कहा तुम तो एक ओर हो और मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर होंगे लोगों ने शाऊल से कहा जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।

(१) मूल में देश को।

४१ तब शाऊल ने यहोवा से कहा हे इस्राएल के परमेश्वर सत्य बात बता[2] तब चिट्ठी योनातान और शाऊल के नाम ४२ पर निकली[3] और प्रजा बच गई। फिर शाऊल ने कहा मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम पर चिट्ठी डालो। तब ४३ चिट्ठी योनातान के नाम पर निकली[4]। तब शाऊल ने योनातान से कहा मुझे बता कि तू ने क्या किया है योनातान ने बताया और उस से कहा मैं ने अपने हाथ की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मधु चख तो लिया है ४४ और देख मुझे मरना है। शाऊल ने कहा परमेश्वर ऐसा ही करे बरन इस से अधिक भी करे हे योनातान ४५ तू निश्चय मारा जाएगा। पर लोगों ने शाऊल से कहा क्या योनातान मारा जाए जिस ने इस्राएलियों का ऐसा बड़ा छुटकारा किया है ऐसा न होगा यहोवा के जीवन की सोंह उस के सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा क्योंकि आज के दिन उस ने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है। सो प्रजा के लोगों ने ४६ योनातान को बचा लिया और वह मारा न गया। सो शाऊल पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट गया और पलिश्ती भी अपने स्थान को चले गये॥

४७ जब शाऊल इस्राएलियों के राज्य में स्थिर हो गया[5] तब वह मोआबी अम्मोनी एदोमी और पलिश्ती अपने चारों ओर के सब शत्रुओं से और सोबा के राजाओं से ४८ लड़ा और जहां जहां वह जाता वहां जय पाता था। फिर उस ने वीरता करके अमालेकियों को जीता और इस्राएलियों को लूटनेहारों के हाथ से छुड़ाया॥

४९ शाऊल के पुत्र योनातान यिशवी और मलकीश थे और उस की दो बेटियों के नाम ये थे बड़ी का नाम तो ५० मेरब और छोटी का नाम मीकल था। और शाऊल की स्त्री का नाम अहीनोअम था जो अहीमास की बेटी थी और उस के प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर था जो ५१ शाऊल के चचा नेर का पुत्र था। और शाऊल का पिता कीश था और अब्नेर का पिता नेर अबीएल का पुत्र था॥

५२ और शाऊल के जीवन भर पलिश्तियों से भारी लड़ाई होती रही सो जब जब शाऊल को कोई बीर वा अच्छा योद्धा देख पड़ा तब उस ने उसे अपने पास रख लिया॥

(शाऊल का दूसरा अपराध और उस का फल)

१५. शमूएल ने शाऊल से कहा यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा

(२) मूल में खराई दे। (३) मूल में योनातान और शाऊल पकड़े गये। (४) मूल में योनातान पकड़ा गया। (५) मूल में शाऊल ने इस्राएल पर राज्य ले लिया।

२ था सो अब यहोवा की बातें सुन ले। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मुझे चेत आता है कि अमालेकियों ने इस्राएलियों से क्या किया कि जब इस्राएली मिस्र से आ
३ रहे थे तब उन्हों ने मार्ग में उन का साम्हना किया। सो अब तू जाकर अमालेकियों को मार और जो कुछ उन का है उसे बिना कोमलता किये सत्यानाश कर क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बच्चा क्या दूधपिउवा क्या गाय बैल क्या भेड़ बकरी क्या ऊंट क्या गदहा सब को मार डाल॥
४ सो शाऊल ने लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया और उन्हें तलाईम में गिना और वे दो लाख प्यादे हुए और
५ दस हजार यहूदी भी थे। तब शाऊल ने अमालेक नगर के
६ पास जाकर एक नाले में घातुओं को बिठाया। और शाऊल ने केनियों से कहा कि वहां से हटो, अमालेकियों के बीच से निकल जाओ न हो कि मैं उन के साथ तुम्हारा भी अन्त कर डालूं तुम ने तो सब इस्राएलियों पर उन के मिस्र से आते समय प्रीति दिखाई थी।
७ सो केनी अमालेकियों के बीच से हट गये। तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर लों जो मिस्र के साम्हने है अमाले-
८ कियों का मारा, और उन के राजा अगाग को जीता पकड़ा और उस की सारी प्रजा को तलवार से सत्यानाश कर
९ डाला। परन्तु अगाग पर और अच्छी से अच्छी भेड़ बकरियों गाय बैलों मोटे पशुओं और मेम्नों और जो कुछ अच्छा था उस पर शाऊल और उस की प्रजा ने कोमलता की और उन्हें सत्यानाश करना न चाहा पर जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उस को उन्हों ने सत्यानाश किया॥
१० तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुंचा
११ कि, मैं शाऊल को राजा करके पछताता हूं क्योंकि उस ने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया और मेरी आज्ञाओं का नहीं माना। तब शमूएल का क्रोध भड़का और वह रात भर
१२ यहोवा की दोहाई देता रहा। बिहान को जब शमूएल शाऊल से भेंट करने के लिये सवेरे उठा तब शमूएल को यह बताया गया कि शाऊल कर्म्मेल को आया था और अपने लिये एक निशानी खड़ी की और घूमकर
१३ गिलगाल को चला गया है। तब शमूएल शाऊल के पास गया और शाऊल ने उस से कहा तुझे यहोवा की ओर से आशिष मिले मैं ने यहोवा की आज्ञा पूरी की
१४ है। शमूएल ने कहा फिर भेड़ बकरियों का यह मिमियाना और गाय बैलों का यह बंबाना जो मुझे सुनाई
१५ देता है सो क्यों हो रहा है। शाऊल ने कहा वे तो अमालेकियों के यहां से आये हैं अर्थात् प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि करने को छोड़ दिया और और सब को हम ने सत्यानाश किया है।
१६ शमूएल ने शाऊल से कहा रह जा जो बात यहोवा ने आज रात को मुझ से कही है वह मैं तुझ को बताता
१७ हूं वह बोला कह दे। शमूएल ने कहा जब तू अपने लेखे छोटा था तब क्या तू इस्राएली गोत्रियों का प्रधान न हो गया और क्या यहोवा ने इस्राएल पर राज्य
१८ करने को तेरा अभिषेक न किया। सो यहोवा ने तुझे यात्रा करने की आज्ञा दी और कहा जाकर उन पापी अमालेकियों को सत्यानाश कर और जब लों वे मिट न
१९ जाएं तब लों उन से लड़ता रह। फिर तू ने किस लिये यहोवा की वह बात टालकर लूट पर टूट के वह काम किया
२० जो यहोवा के लेखे बुरा है। शाऊल ने शमूएल से कहा निःसंदेह मैं यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला और अमालेकियों के राजा को ले आया हूं और अमालेकियों को सत्यानाश किया है।
२१ पर प्रजा के लोग लूट में से भेड़ बकरियों और गाय बैलों अर्थात् सत्यानाश होने की उत्तम उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले
२२ आये हैं। शमूएल ने कहा क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है सुन मानना तो बलि चढ़ाने से और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम
२३ है। देख बलवा करना और भावी कहनेहारों से पूछना एक ही समान पाप है और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना इसलिये उस ने तुझे राजा होने के लिये
२४ तुच्छ जाना है। शाऊल ने शमूएल से कहा मैं ने पाप किया है मैं ने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मान कर और उन की बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और
२५ तेरी बातों का उल्लंघन किया है। पर अब मेरे पाप को क्षमा कर और मेरे साथ लौट आ कि मैं यहोवा को
२६ दण्डवत् करूं। शमूएल ने शाऊल से कहा मैं तेरे साथ न लौटूंगा क्योंकि तू ने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है और यहोवा ने तुझे इस्राएल के राजा होने के लिये
२७ तुच्छ जाना है। तब शमूएल चले जाने को घूमा और शाऊल ने उस के बागे की छोर को पकड़ा और वह फट
२८ गया। तो शमूएल ने उस से कहा आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़ कर तुझ से छीन लिया और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है।
२९ और जो इस्राएल का बलमूल है वह न झूठ बोलने न पछताने का क्योंकि वह मनुष्य नहीं है कि पछताए।
३० उस ने कहा मैं ने पाप तो किया है तौभी मेरी प्रजा के

पुरनियों और इस्राएल के साम्हने मेरा आदर कर और मेरे साथ लौट कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् ३१ करूं। सो शमूएल लौटकर शाऊल के पीछे गया और शाऊल ने यहोवा को दण्डवत् की॥

३२ तब शमूएल ने कहा अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे पास ले आओ। सो अगाग आनन्द के साथ यह कहता हुआ उस के पास गया कि निश्चय मृत्यु का ३३ दुःख जाता रहा। शमूएल ने कहा जैसे स्त्रियां तेरी तलवार से निर्वंश हुई हैं वैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी तब शमूएल ने अगाग को गिलगाल में यहोवा के साम्हने टुकड़े टुकड़े किया॥

३४ तब शमूएल रामा को चला गया और शाऊल ३५ अपने नगर गिबा को अपने घर गया। और शमूएल ने अपने जीवन भर शाऊल से फिर भेंट न की क्योंकि शमूएल शाऊल के विषय विलाप करता रहा और यहोवा शाऊल को इस्राएल का राजा करके पछताता था॥

(दाऊद का राज्याभिषेक)

१६. और यहोवा ने शमूएल से कहा मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है सो तू कब लों उस के विषय विलाप करता रहेगा अपने सींग में तेल भरके चल मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं क्योंकि मैं ने उस के पुत्रों में से एक को राजा होने के २ लिये चुना है। शमूएल बोला मैं क्योंकर जा सकता हूं यदि शाऊल सुने तो मुझे घात करेगा यहोवा ने कहा एक बछिया साथ ले जाकर कहना कि मैं यहोवा के लिये ३ यज्ञ करने को आया हूं। और यज्ञ पर यिशै को न्योता देना तब मैं तुझे जता दूंगा कि तुझ को क्या करना है और जिस को मैं तुझे बताऊं उसी का मेरी ओर से ४ अभिषेक करना। सो शमूएल ने यहोवा के कहे के अनुसार किया और बेतलेहेम को गया। उस नगर के पुरनिये थरथराते हुए उस से मिलने को गये और कहने ५ लगे क्या तू मित्रभाव से आया है कि नहीं। उस ने कहा हां मित्रभाव से आया हूं मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूं तुम अपने अपने को पवित्र कर के मेरे साथ यज्ञ में आओ। तब उस ने यिशै और उस के ६ पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया। जब वे आये तब उस ने एलीआब पर दृष्टि करके सोचा कि निश्चय जो यहोवा के साम्हने है वही उस का अभिषिक्त ७ होगा। पर यहोवा ने शमूएल से कहा न तो उस के रूप पर दृष्टि कर और न उस के डील की ऊंचाई पर क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है मनुष्य तो बाहर का रूप देखता पर यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है। तब यिशै ने ८ अबीनादाब को बुलाकर शमूएल के साम्हने भेजा और उस ने कहा यहोवा ने इस को भी नहीं चुना। फिर ९ यिशै ने शम्मा को साम्हने भेजा और उस ने कहा यहोवा ने इस को भी नहीं चुना। योंहीं यिशै ने अपने सात १० पुत्रों को शमूएल के साम्हने भेजा और शमूएल यिशै से कहता गया यहोवा ने इसे नहीं चुना। तब शमूएल ११ ने यिशै से कहा क्या सब लड़के आ गये वह बोला नहीं लहुरा तो रह गया और वह भेड़ बकरियों को चरा रहा है। शमूएल ने यिशै से कहा उसे बुलवा भेज क्योंकि जब लों वह यहां न आए तब लों हम खाने को[१] न बैठेंगे। सो वह उसे बुलाकर भीतर ले आया उस के १२ तो लाली झलकती थी और उस की आंखें सुन्दर और उस का रूप सुडौल था। तब यहोवा ने कहा उठकर इस का अभिषेक कर यही है। सो शमूएल ने अपना १३ तेल का सींग लेकर उस के भाइयों के मध्य में उस का अभिषेक किया और उस दिन से लेकर आगे को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा तब शमूएल पधारा और रामा को चला गया॥

और यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया और १४ यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। सो शाऊल के कर्म्मचारियों ने उस से कहा सुन परमेश्वर १५ की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है। हमारा १६ प्रभु अपने कर्म्मचारियों को जो हाज़िर हैं आज्ञा दे कि वे किसी अच्छे बीणा बजानेहारे को ढूंढ़ ले आएं और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े तब वह अपने हाथ से बजाए और तू अच्छा हो जाए। शाऊल ने अपने कर्म्मचारियों से कहा अच्छा एक १७ उत्तम बजवैया देखो और उसे मेरे पास लाओ। तब १८ एक जवान ने उत्तर देके कहा सुन मैं ने बेतलेहेमी यिशै के एक पुत्र को देखा जो बीणा बजाना जानता है और वह वीर और योद्धा भी और बात करने में बुद्धिमान् और रूपवान् भी है और यहोवा उस के साथ रहता है। सो शाऊल ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा कि १९ अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़ बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे। तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ २० एक गदहा और कुप्पा भर दाखमधु और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया। सो दाऊद शाऊल के पास जाकर उस के २१ साम्हने हाज़िर रहने लगा और शाऊल उस से बहुत प्रीति

(१) मूल में हम चारों ओर।

करने लगा और वह उस का हथियार ढोनेहारा हो गया।
२२ तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा कि दाऊद को मेरे साम्हने हाजिर रहने दे क्योंकि मैं उस से बहुत
२३ प्रसन्न हूं। सो जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था तब तब दाऊद बीणा लेकर बजाता और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था और वह दुष्ट आत्मा उस पर से उतर जाता था॥

(दाऊद का गोल्यत को मार डालना)

१७. पलिश्तियों ने लड़ने के लिये अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया और यहूदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और
२ अजेका के बीच एपेसदम्मीम में डेरे डाले। और शाऊल और इस्राएली पुरुषों ने भी इकट्ठे होकर एला नाम तराई में डेरे डाले और लड़ाई के लिये पलिश्तियों में विरुद्ध पांति
३ बांधी। पलिश्ती तो एक ओर के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे और दोनों के बीच तराई
४ थी। तब पलिश्तियों की छावनी से एक वीर[१] गोल्यत नाम निकला जो गत नगर का था और उस के डील की
५ लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी। उस के सिर पर पीतल का टोप था और वह एक पत्तर का झिलम पहिने हुए था
६ जिस का तौल पांच हजार शेकेल पीतल का था। उस की टांगों पर पीतल के कवच थे और उस के कंधों के बीच
७ पीतल की सांग बन्धी थी। उस के भाले की छड़ जुलाहे के ढेंके के समान थी और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था और बड़ी ढाल लिये हुए एक जन उस के आगे
८ आगे चलता था। वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियों को ललकारके बोला तुम ने यहां आकर लड़ाई के लिये क्यों पांति बांधी है क्या मैं पलिश्ती नहीं हूं और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो अपने में से एक पुरुष चुनो कि वह मेरे
९ पास उतर आए। यदि वह मुझ से लड़कर मुझे मार सके तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे पर यदि मैं उस पर प्रबल होकर उसे मारूं तो तुम को हमारे अधीन
१० होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी। फिर वह पलिश्ती बोला मैं आज के दिन इस्राएली पांतियों को ललकारता हूं किसी पुरुष को मेरे पास भेजो[२] कि हम एक दूसरे से लड़ें।
११ उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और सारे इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया और वे निपट डर गये॥
१२ दाऊद तो यहूदा में के बेतलेहेम के उस एप्राती पुरुष का पुत्र था जिस का नाम यिशै था और उस के आठ पुत्र थे और वह पुरुष शाऊल के दिनों में बूढ़ा और
१३ निर्बल हो गया था। यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गये थे और उस के तीन पुत्रों के नाम जो लड़ने को गये थे ये थे अर्थात् जेठे का नाम एलीआब दूसरे का अबीनादाब और तीसरे का शम्मा
१४ है। और सब से छोटा दाऊद था और तीनों बड़े पुत्र
१५ शाऊल के पीछे होकर गये थे। और दाऊद बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़ बकरियां चराने को शाऊल के पास से आया जाया करता था॥
१६ वह पलिश्ती तो चालीस दिन लों सबेरे और सांझ
१७ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था। और यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा यह एपा भर चबैना और ये दस रोटियां लेकर छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़
१८ जा। और पनीर की ये दस टिकियां उन के सहस्रपति के लिये ले जा और अपने भाइयों का कुशल देखकर उन
१९ की कोई चिन्हानी ले आना। शाऊल और वे भाई और सारे इस्राएली पुरुष एला नाम तराई में पलिश्तियों से
२० लड़ रहे थे। सो दाऊद बिहान को सबेरे उठ भेड़ बकरियों को किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर वे वस्तुएं लेकर चला और जब सेना रणभूमि को जा रही और लड़ने को ललकार रही थी उसी समय वह गाड़ियों के
२१ पड़ाव पर पहुंचा। तब इस्राएलियों और पलिश्तियों ने अपनी अपनी सेना आम्हने साम्हने करके पांति बांधी।
२२ सो दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में छोड़ रणभूमि को दौड़ा और अपने भाइयों के पास
२३ जाकर उन का कुशलक्षेम पूछा। वह उन के साथ बातें कर रहा था कि पलिश्तियों की पांतियों में से वह वीर अर्थात् गतवासी गोल्यत नाम वह पलिश्ती चढ़ आया और पहिले की सी बातें कहने लगा और दाऊद ने उन्हें
२४ सुना। उस पुरुष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त
२५ भय खाकर उस के साम्हने से भागे। फिर इस्राएली पुरुष कहने लगे क्या तुम ने उस पुरुष को देखा है जो चढ़ा आ रहा है निश्चय वह इस्राएलियों को ललकारने को चढ़ा आता है सो जो कोई उसे मार डाले उस को राजा बहुत धन देगा और अपनी बेटी ब्याह देगा और उस के पिता के घराने को इस्राएल में स्वाधीन कर देगा।
२६ सो दाऊद ने उन पुरुषों से जो उस के आस पास खड़े थे पूछा कि जो उस पलिश्ती को मारके इस्राएलियों की नामधराई दूर करे उस के लिये क्या किया जाएगा वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवते परमेश्वर की
२७ सेना को ललकारे। तब लोगों ने उस से वैसी बातें कहीं अर्थात् कहा कि जो कोई उसे मारे उस से ऐसा ऐसा
२८ किया जाएगा। जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था तब उस का बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था और

(१) मूल में दोनों ओर का पुरुष। (२) मूल में मुझे दो।

एलीआब दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा तू यहां क्यों आया है और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किस के पास छोड़ आया है तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है तू तो लड़ाई
२९ देखने के लिये यहां आया है। दाऊद ने कहा मैं ने अब
३० क्या किया है वह तो निरी बात थी। तब उस ने उस के पास से मुंह फेरके दूसरे के सन्मुख होकर वैसी ही बात कही और लोगों ने उसे पहिले की नाईं उत्तर दिया।
३१ जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई तब शाऊल को भी
३२ सुनाई गईं और उस ने उसे बुलवा भेजा। तब दाऊद ने शाऊल से कहा किसी मनुष्य का मन उस के कारण कच्चा न हो तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा।
३३ शाऊल ने दाऊद से कहा तू जाकर उस पलिश्ती के विरुद्ध नहीं जा सकता क्योंकि तू तो लड़का है और वह
३४ लड़कपन ही से योद्धा है। दाऊद ने शाऊल से कहा तेरा दास अपने पिता की भेड़ बकरियां चराता था और जब कोई सिंह वा भालू आ झुंड में से मेम्ना उठा ले गया,
३५ तब मैं ने उस का पीछा करके उसे मारा और मेम्ने को उस के मुंह से छुड़ाया और जब उस ने मुझ पर चढ़ाई की तब मैं ने उस के केशर को पकड़कर उसे मार डाला।
३६ तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला और वह खतनारहित पलिश्ती उन के समान हो जाएगा क्योंकि उस ने जीवते परमेश्वर की सेना को ललकारा
३७ है। फिर दाऊद ने कहा यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा। शाऊल ने दाऊद से कहा जा
३८ यहोवा तेरे साथ रहे। तब शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहिनाये और पीतल का टोप उस के सिर पर रख
३९ दिया और झिलम उस को पहिनाया। और दाऊद ने उस की तलवार वस्त्र के ऊपर कसी और चलने का यत्न किया उस ने तो उन को न परखा था सो दाऊद ने शाऊल से कहा इन्हें पहिने हुए मुझ से चला नहीं जाता क्योंकि मैं ने नहीं परखा सो दाऊद ने उन्हें उतार
४० दिया। तब उस ने अपनी लाठी हाथ में ले नाले में से पांच चिकने पत्थर छांटकर अपनी चरवाही की थैली अर्थात् अपने झोले में रक्खे और अपना गोफन हाथ में
४१ लेकर पलिश्ती के निकट चला। और पलिश्ती चलते चलते दाऊद के निकट पहुंचने लगा और जो जन उस की बड़ी ढाल लिये था वह उस के आगे आगे चला।
४२ जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा तब उसे तुच्छ जाना क्योंकि वह लड़का ही था और उस के मुख
४३ में लाली झलकती थी और वह सुन्दर था। सो पलिश्ती ने दाऊद से कहा क्या मैं कुक्कुर हूं कि तू लाठियां लेकर मेरे पास आता है तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। फिर पलिश्ती ने ४४
दाऊद से कहा मेरे पास आ मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों और बनैले पशुओं को दे दूंगा। दाऊद ने पलिश्ती ४५
से कहा तू तो तलवार और भाला और सांग लिये हुए मेरे पास आता है पर मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है और उसी को तू ने ललकारा है। आज के दिन यहोवा ४६
तुझ को मेरे हाथ में कर देगा और मैं तुझ को मारूंगा और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूंगा और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना की लोथें आकाश के पक्षियों और पृथिवी के जीव जन्तुओं को दे दूंगा तब सारी पृथिवी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में परमेश्वर है। और यह ४७
सारी मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता। यह लड़ाई तो यहोवा की है और वह तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा। जब पलिश्ती ४८
उठकर दाऊद का साम्हना करने के लिये निकट आया तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का साम्हना करने के लिये फुर्ती से दौड़ा। फिर दाऊद ने अपनी थैली में ४९
हाथ डाल उस में से एक पत्थर ले गोफन में धर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उस के माथे के भीतर पैठ गया और वह भूमि पर मुंह के बल गिरा। यों दाऊद ५०
ने पलिश्ती पर गोफन और पत्थर ही द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला और दाऊद के हाथ में तलवार न थी।
तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हुआ और ५१
उस की तलवार पकड़कर मियान से खींची और उस को घात किया और उस का सिर उसी तलवार से काट डाला। यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गये।
इस पर इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे और ५२
गत[१] और एक्रोन के फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गये और घायल पलिश्ती शारैम के मार्ग में और गत और एक्रोन लों गिरते गये। तब इस्राएली पलिश्तियों ५३
का पीछा छोड़कर लौट आये और उन के डेरों को लूट लिया। और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले ५४
गया और उस के हथियार अपने डेरे में धर लिये॥

(शाऊल की शत्रुता का आरम्भ और बढ़ती)

जब शाऊल ने दाऊद को उस पलिश्ती का साम्हना ५५
करने के लिये जाते देखा तब उस ने अपने सेनापति अब्नेर से पूछा हे अब्नेर वह जवान किस का पुत्र है अब्नेर ने कहा हे राजा तेरे जीवन की सौंह मैं नहीं जानता। राजा ५६

(१) वा तराई।

५७ ने कहा तू पूछ ले कि वह जवान किस का पुत्र है। सो जब दाऊद पलिश्ती के मारके लौटा तब अब्नेर ने उसे पलिश्ती का सिर हाथ में लिये हुए शाऊल के साम्हने ५८ पहुंचाया। शाऊल ने उस से पूछा हे जवान तू किस का पुत्र है दाऊद ने कहा मैं तो तेरे दास बेतलेहेमी यिशै का पुत्र हूं॥

१ **१८.** जब वह शाऊल से बातें कर चुका तब योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया कि योनातान उसे अपने प्राण के बराबर २ प्यार करने लगा। और उस दिन से शाऊल ने उसे अपने पास रक्खा और पिता के घर के फिर लौटने न ३ दिया। तब योनातान ने दाऊद से वाचा बांधी क्योंकि वह उस को अपने प्राण के बराबर प्यार करता था। ४ और योनातान ने अपना बागा जो वह आप पहिने था उतारके उसे अपने वस्त्र समेत दाऊद को दिया बरन अपनी तलवार और धनुष और फेंटा भी उस को दे दिये। ५ और जहां कहीं शाऊल दाऊद को भेजता वहां वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था सो शाऊल ने उसे योद्धाओं का प्रधान किया और सारी प्रजा के लोग और शाऊल के कर्म्मचारी उस से प्रसन्न हुए॥

६ जब दाऊद उस पलिश्ती को मारके लौटा आता था और लोग आ रहे थे तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियों ने निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिये हुए आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई शाऊल राजा से भेंट की। और वे ७ स्त्रियां नाचती हुई एक दूसरी के साथ यह टेक गाती गईं कि

शाऊल ने तो हजारों को
पर दाऊद ने लाखों को मारा है॥

८ तब शाऊल अति क्रोधित हुआ और यह बात उस को बुरी लगी और वह कहने लगा उन्हों ने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे लिये हजारों ही कहे राज्य को छोड़ ९ उस को सब कुछ मिला है। सो उस दिन से आगे को शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा॥

१० दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर बल से उतरा और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा। दाऊद दिन दिन की नाईं बजा ११ रहा था और शाऊल के हाथ में भाला था। सो शाऊल ने यह सोचकर कि मैं ऐसा मारूंगा कि भाला दाऊद को बेधकर भीत में धस जाए भाले को चलाया पर दाऊद १२ उस के साम्हने से दे बार हट गया। फिर शाऊल दाऊद से डर गया क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ रहा और शाऊल १३ के पास से अलग हो गया था। सो शाऊल ने उस को अपने पास से अलग करके सहस्रपति किया और वह प्रजा १४ के साम्हने आया जाया करता था। और दाऊद अपनी सारी चाल में बुद्धिमानी दिखाता था और यहोवा उस के साथ रहता था। १५ सो जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान् है तब वह उस से डर गया। १६ पर इस्राएल और यहूदा के सारे लोग दाऊद से प्रेम रखते थे, क्योंकि वह उन के देखते आया जाया करता था॥

१७ और शाऊल ने यह सोचकर कि मेरा हाथ नहीं पलिश्तियों ही का हाथ दाऊद पर पड़े उस से कहा सुन मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब के तुझे ब्याह दूंगा इतना हो कि तू मेरे लिये बीरता करके यहोवा की ओर से लड़े। १८ दाऊद ने शाऊल से कहा मैं क्या हूं और मेरा जीवन क्या है और इस्राएल में मेरे पिता का कुल क्या है कि मैं राजा १९ का दामाद हो जाऊं। जब समय आ गया कि शाऊल की बेटी मेरब दाऊद से ब्याही जाए तब वह महोलाई २० अद्रीएल से ब्याही गई। और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी और जब इस बात का समा- २१ चार शाऊल के मिला तब वह प्रसन्न हुआ। शाऊल तो सोचता था कि वह उस के लिये फन्दा हो और पलिश्तियों का हाथ उस पर पड़े। सो शाऊल ने दाऊद से कहा अब की बार तो तू अवश्य ही[१] मेरा दामाद हो जाएगा। २२ फिर शाऊल ने अपने कर्म्मचारियों के आज्ञा दी कि दाऊद से छिपकर ऐसी बातें करो कि सुन राजा तुझ से प्रसन्न है और उस के सब कर्म्मचारी भी तुझ से प्रेम २३ रखते हैं सो अब तू राजा का दामाद हो जा। सो शाऊल के कर्म्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं पर दाऊद ने कहा मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूं फिर क्या २४ तुम्हारे लेखे राजा का दामाद होना छोटी बात है। जब शाऊल के कर्म्मचारियों ने उसे बताया कि दाऊद ने ऐसी २५ ऐसी बातें कहीं तब शाऊल ने कहा तुम दाऊद से यों कहो कि राजा कन्या का मोल तो कुछ नहीं चाहता केवल पलिश्तियों की एक सौ खलड़ियां चाहता है कि वह अपने शत्रुओं से पलटा ले। शाऊल की मनसा यह थी २६ कि पलिश्तियों से दाऊद के मरवा डालूं। जब उस के कर्म्मचारियों ने दाऊद के ये बातें बताईं तब वह राजा २७ का दामाद होने के प्रसन्न हुआ। जब ब्याह के दिन कुछ रह गये, तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला और पलिश्तियों के दे सौ पुरुषों के मारा तब दाऊद उन की खलड़ियों के ले आया और वे राजा के गिन गिन कर दी गईं इसलिये कि वह राजा का दामाद हो जाए सो शाऊल ने अपनी बेटी मीकल के उसे ब्याह २८ दिया। जब शाऊल ने देखा और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साथ है और मेरी बेटी मीकल उस से

(१) मूल में आज दूसरी रीति पर तू।

२९ प्रेम रखती है, तब शाऊल दाऊद से और भी डर गया और शाऊल सदा के लिये दाऊद का बैरी बन गया ॥

३० फिर पलिश्तियों के प्रधान निकल आये और जब जब वे निकल आये तब तब दाऊद ने शाऊल के और सब कर्म्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई इस से उस का नाम बहुत बड़ा हो गया ॥

१९. सो शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने सब कर्म्मचारियों से दाऊद को मार डालने की चर्चा की। पर शाऊल का पुत्र योनातान २ दाऊद से बहुत प्रसन्न था। सो योनातान ने दाऊद को बताया कि मेरा पिता तुझे मरवा डालना चाहता है सो तू बिहान को सावधान रहना और किसी गुप्त स्थान में बैठा ३ हुआ छिपा रहना। और मैं मैदान में जहां तू होगा वहां जा कर अपने पिता के पास खड़ा हूंगा और उस से तेरी चर्चा करूंगा और यदि मुझे कुछ मालूम हो तो तुझे बताऊंगा। ४ सो योनातान ने अपने पिता शाऊल से दाऊद की प्रशंसा करके उस से कहा कि हे राजा अपने दास दाऊद का अपराधी न हो क्योंकि उस ने तेरा कुछ अपराध नहीं ५ किया बरन उस के सब काम तेरे बहुत हित के हैं। उस ने अपने प्राण पर खेल कर उस पलिश्ती को मार डाला और यहोवा ने सारे इस्राएलियों की बड़ी जय कराई इसे देखकर तू आनन्दित हुआ था सो तू दाऊद को अकारण ६ मारके निर्दोष के खून का पापी क्यों बने। तब शाऊल ने योनातान की बात मान कर यह किरिया खाई कि यहोवा ७ के जीवन की सौंह दाऊद मार डाला न जाएगा। सो योनातान ने दाऊद को बुलाकर ये सारी बातें उस को बताईं फिर योनातान दाऊद को शाऊल के पास ले गया और वह पहिले की नाईं उस के साम्हने रहने लगा ॥

८ और फिर लड़ाई होने लगी और दाऊद जाकर पलिश्तियों से लड़ा और उन्हें बड़ी मार से मारा और ९ वे उस के साम्हने से भागे। और जब शाऊल हाथ में भाला लिये हुए अपने घर में बैठा था और दाऊद हाथ से बजा रहा था। तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट १० आत्मा शाऊल पर चढ़ा। और शाऊल ने चाहा कि दाऊद को ऐसा मारूं कि भाला उसे बेधते हुए भीत में धंस जाए पर दाऊद शाऊल के साम्हने से ऐसा बच गया कि भाला जाकर भीत ही में धस गया और दाऊद भागा ११ और उस रात को बच गया। सो शाऊल ने दाऊद के घर पर दूत इसलिये भेजे कि वे उस की घात में रहें और बिहान को उसे मार डालें सो दाऊद की स्त्री मीकल ने उसे यह कह कर जताया कि यदि तू इस रात को अपना प्राण न बचाए तो बिहान को मारा जाएगा। तब मीकल १२ ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया और वह भागकर बच निकला। तब मीकल ने गृहदेवताओं को ले चारपाई १३ पर लिटाया और बकरियों के रोएं की तकिया उस के सिरहाने पर रखकर उन को वस्त्र ओढ़ाये। जब शाऊल ने १४ दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे तब वह बोली वह तो बीमार है। तब शाऊल ने दूतों को दाऊद के १५ देखने के लिये भेजा और कहा उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे मार डालूं। जब दूत भीतर १६ गये तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर गृहदेवता पड़े हैं और सिरहाने पर बकरियों के रोएं की तकिया है। सो १७ शाऊल ने मीकल से कहा तू ने मुझे ऐसा धोखा क्यों दिया तू ने मेरे शत्रु को ऐसा क्यों जाने दिया कि वह बच निकला है। मीकल ने शाऊल से कहा उस ने मुझ से कहा कि मुझे जाने दे मैं तुझे क्यों मार डालूं ॥

सो दाऊद भागकर बच निकला और रामा में १८ शमूएल के पास पहुंचकर जो कुछ शाऊल ने उस से किया था सब उसे कह सुनाया सो वह और शमूएल जाकर नबायोत में रहने लगे। जब शाऊल को इस का १९ समाचार मिला कि दाऊद रामा में के नबायोत[२] में है, तब शाऊल ने दाऊद के पकड़ लाने के लिये दूत भेजे २० और जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते हुए और शमूएल को उन की प्रधानता करते हुए देखा तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा और वे भी नबूवत करने लगे। इस का समाचार पाकर शाऊल ने और दूत २१ भेजे और वे भी नबूवत करने लगे फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे और वे भी नबूवत करने लगे। तब वह आप २२ ही रामा को चला और उस बड़े गड़हे पर जो सेकू में है पहुंच कर पूछने लगा कि शमूएल और दाऊद कहां हैं किसी ने कहा वे तो रामा में के नबायोत[२] में हैं। सो वह उधर अर्थात् रामा के नबायोत[२] को चला और २३ परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा सो वह रामा के नबायोत[२] को पहुंचने लों नबूवत करता हुआ चला गया। और उस ने भी अपने वस्त्र उतारे और शमूएल के २४ साम्हने नबूवत करने लगा और भूमि पर गिरकर उस दिन दिन रात नङ्गा पड़ा रहा इस कारण से यह कहावत चली कि क्या शाऊल भी नबियों में का है ॥

(दाऊद का भागना और शाऊल के डर के मारे इधर उधर घूमना)

२०. फिर दाऊद रामा में के नबायोत[२] से भागा और योनातान के पास जाकर कहने लगा मैं ने क्या किया है मुझ से क्या

(१) मूल में अनमोल।

(२) अर्थात् कई वासस्थान।

पाप हुआ मैं ने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन अपराध
२ किया है कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है। उस ने
उस से कहा ऐसी बात नहीं है तू मारा न जाएगा सुन मेरा
पिता मुझ को बिना जताये न तो कोई बड़ा काम करता
है और न कोई छोटा फिर वह ऐसी बात को मुझ से क्यों
३ छिपायेगा ऐसी कोई बात नहीं है। फिर दाऊद ने किरिया
खाकर कहा तेरा पिता निश्चय जानता है कि तेरी अनु-
ग्रह की दृष्टि मुझ पर है सो वह सोचता होगा कि योना-
तान इस बात को न जानने पाए न हो कि वह खेदित
हो जाए पर यहोवा के जीवन की सौंह और तेरे जीवन
की सौंह निःसंदेह मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का
४ अन्तर है। योनातान ने दाऊद से कहा जो कुछ तेरा
५ जी चाहे वही मैं तेरे लिये करूंगा। दाऊद ने योनातान
से कहा सुन कल नया चांद होगा और मुझे उचित है
कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूं पर तू मुझे बिदा
६ कर और मैं परसों सांझ लों मैदान में छिपा रहूंगा। यदि
तेरा पिता मेरी कुछ चिंता करे तो कहना कि दाऊद ने
अपने नगर बेतलेहेम को शीघ्र जाने के लिये मुझ से
बिनती करके छुट्टी मांगी क्योंकि वहां उस के सारे कुल
७ के लिये बरस बरस का यज्ञ है। यदि वह यों कहे कि
अच्छा तब तो तेरे दास के लिये कुशल होगा पर यदि
उस का क्रोध बहुत भड़क उठे तो जान लेना कि उस ने
८ बुराई ठानी है। सो तू अपने दास से कृपा का व्यवहार
करना क्योंकि तू ने यहोवा की किरिया खिलाकर अपने दास
को अपने साथ वाचा बंधाई है पर यदि मुझ से कुछ
अपराध हुआ हो तो तू आप मुझे मार डाल तू मुझे
९ अपने पिता के पास क्यों पहुंचाए। योनातान ने कहा
ऐसी बात कभी न होगी यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे
पिता ने तुझ से बुराई करनी ठानी है तो क्या मैं तुझ
१० को न बताता। दाऊद ने योनातान से कहा यदि तेरा
पिता तुझ को कठोर उत्तर दे तो कौन मुझे बताएगा।
११ योनातान ने दाऊद से कहा चल हम मैदान को निकल
जाएं सो वे दोनों मैदान को चले गये॥

१२ तब योनातान दाऊद से कहने लगा इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा की सौंह जब मैं कल वा परसों इसी समय
अपने पिता का भेद पाऊं तब यदि दाऊद की भलाई
देखूं तो क्या मैं उसी समय तेरे पास दूत भेजकर तुझे न
१३ बताऊंगा। यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई करने का
हो और मैं तुझ पर यह प्रगट करके तुझे बिदा न करूं
कि तू कुशल के साथ चला जाए तो यहोवा योनातान
से ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे। और यहोवा
तेरे साथ वैसा ही रहे जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा।

और न केवल जब तक मैं जीता रहूं तब तक मुझ पर १४
यहोवा की सी कृपा ऐसा करना कि मैं न मरूं परन्तु मेरे
घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी न हटाना, वरन १५
जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथिवी पर से
नाश कर चुकेगा तब भी ऐसा न करना। इस प्रकार योना- १६
तान ने दाऊद के घराने से यह कहकर वाचा बन्धाई कि
यहोवा दाऊद के शत्रुओं से पलटा ले। और योनातान १७
दाऊद से प्रेम रखता था सो उस ने उस को फिर किरिया
खिलाई क्योंकि वह उस से अपने प्राण के बराबर प्रेम
रखता था। तब योनातान ने उस से कहा कल नया १८
चांद होगा और तेरी चिंता की जाएगी क्योंकि तेरी कुर्सी
खाली रहेगी। और तू तीन दिन के बीतने पर फुर्ती १९
करके आना और उस स्थान पर जाकर जहां तू उस काम
के दिन छिपा था एजेल नाम पत्थर के पास रहना। तब २०
मैं उस की अलंग मानो अपने किसी ठहराये हुए चिन्ह
पर तीन तीर चलाऊंगा। फिर मैं अपने छोकरे को यह २१
कह कर भेजूंगा कि जाकर तीरों को ढूंढ ले आ यदि मैं
उस छोकरे से साफ साफ कहूं कि देख तीर इधर तेरी
इस अलंग पर हैं तो तू उसे ले आ क्योंकि यहोवा के
जीवन की सौंह तेरे लिये कुशल को छोड़ और कुछ न
होगा। पर यदि मैं छोकरे से यों कहूं कि सुन तीर उधर २२
तेरे उस अलंग पर हैं तो तू चला जाना क्योंकि यहोवा
ने तुझे बिदा किया है। और उस बात के विषय जिस २३
की चर्चा मैं ने और तू ने आपस में की है यहोवा मेरे
तेरे बीच में सदा रहे॥

सो दाऊद मैदान में जा छिपा और जब नया चांद २४
हुआ तब राजा भोजन करने को बैठा। राजा तो पहिले २५
की नाईं अपने उस आसन पर बैठा जो भीत के पास था
और योनातान खड़ा हुआ और अब्नेर शाऊल के बगल
में बैठा पर दाऊद का स्थान खाली रहा। उस दिन तो २६
शाऊल यह सोचकर चुप रहा कि उस का कोई न कोई
कारण होगा, वह अशुद्ध होगा, निःसंदेह शुद्ध न होगा।
फिर नये चांद के दूसरे दिन को दाऊद का स्थान खाली २७
रहा सो शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से पूछा क्या
कारण है कि यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया
था और न आज आया है। योनातान ने शाऊल से २८
कहा दाऊद ने बेतलेहेम जाने के लिये मुझ से बिनती
करके छुट्टी मांगी, और कहा मुझे जाने दे क्योंकि उस २९
नगर में हमारे कुल का यज्ञ है और मेरे भाई ने मुझ को
वहां हाजिर होने की आज्ञा दी है सो अब यदि मुझ पर
तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो मुझे जाने दे कि मैं अपने
भाइयों से भेंट कर आऊं इसी कारण वह राजा की

३० भेज पर नहीं आया। तब शाऊल का कोप योनातान पर भड़क उठा और उस ने उस से कहा हे कुटिल दंगैतिन के पुत्र क्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन जो यिशै के पुत्र पर लगा है इस से तेरी आशा का टूटना और तेरी
३१ माता का अनादर ही होगा। क्योंकि जब लों यिशै का पुत्र भूमि पर जीता रहे तब लों न तू न तेरा राज्य स्थिर
३२ होगा सो अभी भेज कर उसे मेरे पास ला क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा। योनातान ने अपने पिता शाऊल को उत्तर देकर उस से कहा वह क्यों मारा जाय
३३ उस ने क्या किया है। तब शाऊल ने उस को मारने के लिये उस पर भाला चलाया इस से योनातान ने जान लिया कि मेरे पिता ने दाऊद को मार डालना ठान
३४ लिया है। सो योनातान कोप से जलता हुआ भेज पर से उठ गया और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया क्योंकि वह बहुत खेदित था कि मेरे पिता ने दाऊद का अनादर किया है॥

३५ बिहान को योनातान एक छोटा लड़का संग लिये हुए मैदान में दाऊद के साथ ठहराये हुए स्थान को
३६ गया। तब उस ने अपने छोकरे से कहा दौड़कर जो जो तीर मैं चलाऊं उन्हें ढूंढ़ ले आ। छोकरा दौड़ता ही था
३७ कि उस ने एक तीर उस के परे चलाया। जब छोकरा योनातान के चलाये तीर के स्थान पर पहुंचा तब योनातान ने उस के पीछे से पुकार के कहा तीर तो तेरी परली
३८ ओर है। फिर योनातान ने छोकरे के पीछे से पुकार के कहा बड़ी फुर्ती कर ठहर मत सो योनातान का छोकरा
३९ तीरों को बटोर के अपने स्वामी के पास ले आया। इस का भेद छोकरा तो कुछ न जानता था केवल योनातान
४० और दाऊद उस बात को जानते थे। और योनातान ने अपने हथियार अपने छोकरे को देकर कहा जा इन्हें नगर
४१ को पहुंचा। ज्योंहीं छोकरा चला गया त्योंहीं दाऊद दक्खिन दिशा की अलंग से निकला और भूमि पर औंधे मुंह गिर के तीन बार दण्डवत् की तब उन्हों ने एक दूसरे को चूमा और एक दूसरे के साथ रोए पर दाऊद का
४२ रोना अधिक था। तब योनातान ने दाऊद से कहा कुशल से चला जा क्योंकि हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहके यहोवा के नाम की किरिया खाई है कि यहोवा मेरे तेरे बीच और मेरे तेरे वंश के बीच सदा लों रहे। तब वह उठकर चला गया और योनातान नगर में गया॥

२१. और दाऊद नोब को अहीमेलेक याजक के पास आया और अहीमेलेक दाऊद से भेंट करने को थरथराता हुआ निकला और उस से पूछा क्या कारण है कि तू अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं। दाऊद ने अहीमेलेक याजक से कहा
२ राजा ने मुझे एक काम करने की आज्ञा देकर मुझ से कहा जिस काम को मैं तुझे भेजता और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूं वह किसी पर प्रकट न होने पाए और मैं ने जवानों को फलाने स्थान पर जाने को समझाया है। सो
३ अब तेरे हाथ में क्या है पांच रोटी वा जो कुछ मिले उसे मेरे हाथ में दे। याजक ने दाऊद से कहा मेरे पास साधा-
४ रण रोटी तो कुछ नहीं है केवल पवित्र रोटी है इतना हो कि वे जवान स्त्रियों से अलग रहे हों। दाऊद ने
५ याजक को उत्तर देकर उस से कहा सच है कि हम तीन दिन से स्त्रियों से अलग हैं फिर जब मैं निकल आया तब तो जवानों के बर्तन पवित्र थे यद्यपि यात्रा साधारण है सो आज उन के बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे। तब
६ याजक ने उस को पवित्र रोटी दी क्योंकि दूसरी रोटी वहां न थी केवल भेंट की रोटी थी जो यहोवा के सन्मुख से उठाई गई थी कि उस के उठा लेने के दिन गरम रोटी
७ रक्खी जाए। उसी दिन वहां दोएग नाम शाऊल का एक कर्म्मचारी यहोवा के आगे रुका हुआ था वह एदोमी और शाऊल के चरवाहों का मुखिया था। फिर
८ दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा क्या यहां तेरे पास कोई भाला वा तलवार नहीं है क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी थी कि मैं न तो अपनी तलवार साथ लाया हूं न अपना और कोई हथियार। याजक ने कहा हां
९ पलिश्ती गोल्यत जिसे तू ने एला तराई में घात किया उस की तलवार कपड़े में लपेटी हुई एपोद के पीछे धरी है यदि तू उसे लेना चाहे तो ले उसे छोड़ कोई और यहां नहीं है। दाऊद बोला उस के तुल्य कोई नहीं वही मुझे दे॥

१० तब दाऊद चला और उसी दिन शाऊल के डर के
११ मारे भागकर गत के राजा आकीश के पास गया। और आकीश के कर्म्मचारियों ने आकीश से कहा क्या वह उस देश का राजा दाऊद नहीं है क्या लोगों ने उसी के विषय नाचते नाचते एक दूसरे के साथ यह टेक न गाई थी कि

शाऊल ने हजारों को
और दाऊद ने लाखों को मारा है॥

१२ दाऊद ने ये बातें अपने मन में रक्खीं और गत के राजा
१३ आकीश से निपट डर गया। सो वह उन के साम्हने दूसरी चाल चला और उन के हाथ में पड़कर बौड़हा बन गया और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचने और
१४ अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा। तब आकीश ने अपने कर्म्मचारियों से कहा देखो वह जन तो बावला
१५ है तुम उसे मेरे पास क्यों लाये हो। क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी है कि तुम उस को मेरे साम्हने

बकवलापन करने के लिये लाये हो क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा॥

२२. सो दाऊद वहां से चला और अदुल्लाम की गुफा में पहुंचकर बच गया और यह सुनकर उस के भाई बरन उस के पिता का सारा घराना वहां उस के पास गया। २ और जितने संकट में पड़े और जितने ऋणी थे और जितने उदास थे वे सब उस के पास इकट्ठे हुए और वह उन का प्रधान हुआ और कोई चार सौ पुरुष उस के साथ हो गये॥

३ वहां से दाऊद ने मोआब के मिसपे को जाकर मोआब के राजा से कहा मेरे पिता को आकर अपने पास तब लों रहने दो जब लों कि मैं न जानूं कि परमेश्वर ४ मेरे लिये क्या करेगा। सो वह उन को मोआब के राजा के सम्मुख ले गया और जब लों दाऊद उस गढ़ में रहा ५ तब लों वे उस के पास रहे। फिर गाद नाम नबी ने दाऊद से कहा इस गढ़ में मत रह चल यहूदा के देश में जा सो दाऊद चलकर हेरेत के बन में गया॥

६ तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और उस के संगियों का पता लगा है। उस समय शाऊल गिबा के ऊंचे स्थान पर एक झाऊ के तले हाथ में अपना भाला लिये हुए बैठा था और उस के सब कर्म्मचारी उस के आसपास ७ खड़े थे। सो शाऊल अपने कर्म्मचारियों से जो उस के आसपास खड़े थे कहने लगा हे बिन्यामीनियो सुनो क्या यिशै का पुत्र तुम सभों को खेत और दाख की बारियां देगा क्या वह तुम सभों को सहस्रपति और शतपति ८ करेगा। तुम सभों ने मेरे विरुद्ध क्यों राजद्रोह की गोष्ठी की है और जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बांधी तब किसी ने मुझ पर प्रगट नहीं किया और तुम में से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर मुझ पर प्रगट नहीं किया कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्म्मचारी को मेरे विरुद्ध ऐसा घात लगाने को उभारा है जैसा आज कल लगाये हैं।

९ तब एदोमी दोएग ने जो शाऊल के सेवकों के ऊपर ठहराया गया था उत्तर देकर कहा मैंने तो यिशै के पुत्र को नोब में अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक के पास आते देखा। १० और उस ने उस के लिये यहोवा से पूछा और उसे भोजन वस्तु दी और पलिश्ती गोल्यत की तलवार भी ११ दी। सो राजा ने अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक याजक को और उस के पिता के सारे घराने को अर्थात् नोब में रहनेहारे याजकों को बुलवा भेजा और जब वे सब के सब १२ शाऊल राजा के पास आये तब शाऊल ने कहा, हे अही- १३ तूब के पुत्र सुन वह बोला हे प्रभु क्या आज्ञा। शाऊल ने उस से पूछा क्या कारण है कि तू और यिशै के पुत्र दोनों ने मेरे विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की है तू ने उसे रोटी और तलवार दी और उस के लिये परमेश्वर से पूछा भी जिस से वह मेरे विरुद्ध उठे और ऐसा घात लगाए जैसा आजकल लगाये है। १४ अहीमेलेक ने राजा को उत्तर देकर कहा तेरे सारे कर्म्मचारियों में दाऊद के तुल्य विश्वास-योग्य कौन है वह तो राजा का दामाद है और तेरी राजसभा में हाजिर हुआ करता और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है। १५ क्या मैं ने आज ही उस के लिये परमेश्वर से पूछना आरंभ किया है यह मुझ से दूर रहे राजा न तो अपने दास पर ऐसा कोई दोष लगाए न मेरे पिता के सारे घराने पर क्योंकि तेरा दास इस सारे बखेड़े के विषय कुछ भी[1] नहीं जानता। १६ राजा ने कहा हे अहीमेलेक तू और तेरे पिता का सारा घराना निश्चय मार डाला जाएगा। १७ फिर राजा ने उन पहरुओं से जो उस के आसपास खड़े थे कहा मुंह फेरके यहोवा के याजकों को मार डालो क्योंकि उन्हों ने भी दाऊद की सहायता की और उस का भागना जानने पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया। पर राजा के सेवक यहोवा के याजकों को मारने के लिये हाथ बढ़ाना न चाहते थे। १८ सो राजा ने दोएग से कहा तू मुंह फेरके याजकों को मार डाल तब एदोमी दोएग ने मुंह फेरा और उसी ने याजकों को मारा और उस दिन सनीवाला एपोद पहिने हुए पचासी पुरुषों को घात किया। १९ और याजकों के नगर नोब को उस ने स्त्रियों पुरुषों बालबच्चों दूधपिउवों बैलों गदहों और भेड़ बकरियों समेत तलवार से मारा। २० पर अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक का एब्यातार नाम एक पुत्र बच निकला और दाऊद के पास भाग गया। २१ तब एब्यातार ने दाऊद को बताया कि शाऊल ने यहोवा के याजकों को बध किया, २२ और दाऊद ने एब्यातार से कहा जिस दिन एदोमी दोएग वहां था उसी दिन मैं ने जान लिया कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा तेरे पिता के सारे घराने के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ। २३ तू मेरे साथ निडर रहा कर मेरे प्राण का गाहक तेरे प्राण का भी गाहक है पर मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी॥

२३. और दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर से लड़ रहे और खलिहानों को लूट रहे हैं। २ सो दाऊद ने यहोवा से पूछा कि क्या मैं जाकर पलिश्तियों को मारूं यहोवा ने दाऊद से कहा जा और पलिश्तियों को मारके कीला को बचा। ३ पर दाऊद के जनों ने उन से कहा हम तो इस यहूदा देश में भी डरते रहते हैं सो यदि हम

(१) मूल में छोटा और बड़ा।

कीला जाकर पलिश्तियों की सेना का साम्हना करें तो ४ बहुत अधिक डर में पड़ेंगे। सो दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा और यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा कमर बांधकर कीला को जा क्योंकि मैं पलिश्तियों को तेरे हाथ में कर ५ दूंगा। सो दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया और पलिश्तियों से लड़कर उन के पशुओं को हांक लाया और उन्हें बड़ी मार से मारा यों दाऊद ने कीला के ६ निवासियों को बचाया। जब अहीमेलेक का पुत्र एब्यातार दाऊद के पास कीला को भाग गया तब हाथ में एपोद लिये हुए गया था॥

७ तब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया है और शाऊल ने कहा परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया है वह तो फाटक और बेंड़ेवाले ८ नगर में घुसकर बन्द हो गया है। सो शाऊल ने अपनी सारी सेना को लड़ाई के लिये बुलवाया कि कीला को ९ जाकर दाऊद और उस के जनों को घेर ले। तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरी हानि की युक्ति कर रहा है सो उस ने एब्यातार याजक से कहा एपोद को १० निकट ले आ। तब दाऊद ने कहा हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल मेरे कारण कीला नगर नाश करने को आने चाहता है। ११ क्या कीला के लोग मुझे उस के वश में कर देंगे क्या जैसे तेरे दास ने सुना है वैसे ही शाऊल आएगा हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा अपने दास को यह बता। १२ यहोवा ने कहा हां वह आएगा। फिर दाऊद ने पूछा क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों को शाऊल के १३ वश में कर देंगे यहोवा ने कहा हां वे कर देंगे। तब दाऊद और उस के जन जो कोई छः सौ थे कीला से निकल गये और इधर उधर जहां कहीं जा सके वहां गये और जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकल भागा है तब उस ने वहां जाने की मनसा छोड़ दी॥

१४ सो दाऊद तो जंगल के गढ़ों में रहने लगा और पहाड़ी देश में के जीप नाम जंगल में रहा और शाऊल उसे दिन दिन ढूंढ़ता रहा परन्तु परमेश्वर १५ ने उसे उस के हाथ में न पड़ने दिया। और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में निकला और दाऊद जीप नाम जंगल के होरेश नाम स्थान में था, १६ कि शाऊल का पुत्र योनातान उठकर उस के पास होरेश में गया और परमेश्वर की चर्चा करके उस को हियाव १७ बंधाया[१]। उस ने उस से कहा मत डर क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा और तू ही इस्राएल का राजा होगा और मैं तेरे नीचे हूंगा और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है। तब उन दोनों ने १८ यहोवा की किरिया खाकर[२] आपस में वाचा बांधी, तब दाऊद होरेश में रह गया और योनातान अपने घर चला गया। तब जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर १९ कहने लगे दाऊद तो हमारे पास होरेश के गढ़ों में अर्थात् उस हकीला नाम पहाड़ी पर छिपा रहता है जो यशीमोन की दक्खिन ओर है। सो अब हे राजा तेरी जो २० इच्छा आने की है सो आ और उस को राजा के हाथ में पकड़वा देना हमारा काम होगा। शाऊल ने कहा यहोवा २१ की आशिष तुम पर हो क्योंकि तुम ने मुझ पर दया की है। तुम चलकर और भी निश्चय कर लो और २२ देख भालकर जान लो और उस के अड्डे का पता लगा लो और बूझो कि उस को वहां किस ने देखा है क्योंकि किसी ने मुझ से कहा है कि वह बड़ी चतुराई से काम करता है। सो जहां कहीं वह छिपा करता है उन सब २३ स्थानों को देख देखकर पहिचानो तब निश्चय करके मेरे पास लौट आना और मैं तुम्हारे साथ चलूंगा और यदि वह उस देश में कहीं भी हो तो मैं उसे यहूदा के हजारों में से ढूंढ़ निकालूंगा। सो वे चलकर शाऊल से पहिले २४ जीप को गये पर दाऊद अपने जनों समेत माओन नाम जंगल में चला गया था जो अराबा में यशीमोन की दक्खिन ओर है। सो शाऊल अपने जनों को साथ लेकर २५ उस की खोज में गया। इस का समाचार पाकर दाऊद ढांग पर से उतर के माओन जंगल में रहने लगा यह सुन शाऊल ने माओन जंगल में दाऊद का पीछा किया। शाऊल २६ तो पहाड़ की एक ओर और दाऊद अपने जनों समेत पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा था और दाऊद शाऊल के डर के मारे जल्दी जा रहा था और शाऊल अपने जनों समेत दाऊद और उस के जनों को पकड़ने के लिये घेरा चाहता था, कि एक दूत ने शाऊल के पास आकर कहा २७ फुर्ती से चला आ क्योंकि पलिश्तियों ने देश पर चढ़ाई की है। यह सुन शाऊल दाऊद का पीछा छोड़कर २८ पलिश्तियों का साम्हना करने को चला इस कारण उस स्थान का नाम सेलाहम्महलकोत[३] पड़ा। वहां से दाऊद २९ चढ़कर एनगदी के गढ़ों में रहने लगा॥

२४.

जब शाऊल पलिश्तियों का पीछा करके लौटा तब उस को यह समाचार मिला कि दाऊद एनगदी के जंगल में है। सो १ शाऊल सारे इस्राएलियों में से तीन हजार को छांटकर

(१) मूल में परमेश्वर ने उस के हाथ बली किये।

(२) मूल में यहोवा के साम्हने।

(३) अर्थात्, बच निकलने की ढांग।

दाऊद और उस के जनों को बनैले बकरों की चटानों पर
३ खोजने गया। जब वह मार्ग पर के भेड़सालों के पास पहुंचा जहां एक गुफा थी तब शाऊल दिशा फिरने को उस के भीतर गया और उसी गुफा के कोनों में दाऊद
४ और उस के जन बैठे हुए थे। तब दाऊद के जनों ने उस से कहा सुन आज वही दिन है जिस के विषय यहोवा ने तुझ से कहा था कि मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा कि तू उस से मनमाना कर ले। तब दाऊद ने उठकर
५ शाऊल के बागे की छोर को छिपकर काट लिया। इस के पीछे दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने से पछताया[१],
६ और अपने जनों से कहने लगा यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूं कि उस पर हाथ चलाऊं क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त
७ है। ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपने जनों को घुड़का और उन्हें शाऊल की कुछ हानि करने को उठने न दिया। फिर शाऊल उठकर गुफा से निकला और अपना
८ मार्ग लिया। उस के पीछे दाऊद भी उठकर गुफा से निकला और शाऊल को पीछे से पुकार के बोला हे मेरे प्रभु हे राजा। जब शाऊल ने फिरके देखा तब दाऊद ने
९ भूमि की ओर सिर झुकाकर दण्डवत् की। और दाऊद ने शाऊल से कहा जो मनुष्य कहते हैं कि दाऊद तेरी
१० हानि चाहता है उन की तू क्यों सुनता है। देख आज तू ने अपनी आंखों से देखा है कि यहोवा ने आज गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था और किसी किसी ने तो मुझ से तुझे मारने को कहा था पर मुझे तुझ पर तरस आया और मैं ने कहा मैं अपने प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा
११ क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है। फिर हे मेरे पिता देख अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख मैं ने तेरे बागे की छोर तो काट ली पर तुझे घात न किया इस से निश्चय करके जान ले कि मेरे मन[२] में कोई बुराई वा अपराध का सोच नहीं है और मैं ने तेरा कुछ अपराध नहीं किया पर तू मेरा प्राण लेने को मानो उस का
१२ अहेर करता रहता है। यहोवा मेरा तेरा विचार करे और यहोवा तुझ से मेरा पलटा ले पर मेरा हाथ तुझ
१३ पर न उठेगा। प्राचीनों के नीतिवचन के अनुसार दुष्टता दुष्टों से होती है पर मेरा हाथ तुझ पर न
१४ उठेगा। इस्राएल का राजा किस का पीछा करने को निकला है और किस के पीछे पड़ा है एक मरे कुत्ते के
१५ पीछे एक पिस्सू के पीछे। सो यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे और विचार करके मेरा मुकद्दमा लड़े और न्याय करके मुझे तेरे हाथ से बचाए।
१६ दाऊद शाऊल से ये बातें कही चुका था कि शाऊल ने कहा हे मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा बोल है तब
१७ शाऊल चिल्लाकर रोने लगा। फिर उस ने दाऊद से कहा तू मुझ से अधिक धर्म्मी है तू ने तो मेरे साथ
१८ भलाई की है पर मैं ने तेरे साथ बुराई की। और तू ने आज यह प्रगट किया है कि तू ने मेरे साथ भलाई की है कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर दिया तब तू
१९ ने मुझे घात न किया। भला क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से चले जाने देता है सो जो तू ने आज मेरे साथ किया है इस का अच्छा बदला यहोवा
२० तुझे दे। और अब मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में
२१ स्थिर होगा सो अब मुझ से यहोवा की किरिया खा कि मैं तेरे वंश को तेरे पीछे नाश न करूंगा और तेरे
२२ पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूंगा। सो दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही किरिया खाई। तब शाऊल अपने घर चला गया और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों को चढ़ गया॥

२५. और शमूएल मर गया और सारे इस्राएलियों ने इकट्ठे होकर उस के लिये छाती पीटी और उस के घर ही में जो रामा में था उस को मिट्टी दी। तब दाऊद चलकर पारान जंगल को चला गया॥

२ माओन में एक पुरुष रहता था जिस का माल कर्मेल में था और वह पुरुष बहुत बड़ा था और उस के तीन हजार भेड़ें और एक हजार बकरियां थीं और वह
३ अपनी भेड़ों का ऊन कतरा रहा था। उस पुरुष का नाम नाबाल और उस की स्त्री का नाम अबीगैल था स्त्री तो बुद्धिमान् और रूपवान् थी पर पुरुष कठोर और बुरे बुरे
४ काम करनेहारा था वह तो कालेबवंशी था। जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया कि नाबाल अपनी भेड़ों का
५ ऊन कतरा रहा है, तब दाऊद ने दस जवानों को वहां भेज दिया और दाऊद ने उन जवानों से कहा कि कर्मेल में नाबाल के पास जाकर मेरी ओर से उस का कुशलक्षेम
६ पूछो। और उस से यों कहो कि तू चिरंजीव रहे तेरा कल्याण रहे और तेरा घराना कल्याण से रहे और जो
७ कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे। मैं ने सुना है कि जो तू ऊन कतरा रहा है तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे और न तो हम ने उन की कुछ हानि की[३] न उन का
८ कुछ खोया गया। अपने जवानों से यह बात पूछ ले

(१) मूल में दाऊद के मन ने उसे मारा।
(२) मूल में हाथ।
(३) मूल में उन को लजवाया।

और वे तुझ को बताएंगे सो इन जवानों पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो हम तो आनन्द के समय में आये हैं सो जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे
९ दाऊद को दे। ऐसी ऐसी बातें दाऊद के जवान जा
१० उस के नाम से नाबाल को सुनाकर चुप रहे[1]। नाबाल ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उन से कहा दाऊद कौन है यिशै का पुत्र कौन है आज कल बहुत से दास
११ अपने अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं। क्या मैं अपनी रोटी पानी और जो पशु मैं ने अपने कतरनेहारों के लिये मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे दूं जिन को मैं
१२ नहीं जानता कि कहां के हैं। सो दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया और लौट कर उस को ये
१३ सारी बातें ज्यों की त्यों सुना दीं। तब दाऊद ने अपने जनों से कहा अपनी अपनी तलवार बांध लो सो उन्हों ने अपनी अपनी तलवार बांध ली और दाऊद ने भी अपनी तलवार बांध ली और कोई चार सौ पुरुष दाऊद के पीछे पीछे चले और दो सौ सामान के पास रह गये।
१४ पर एक सेवक ने नाबाल की स्त्री अबीगैल को बताया कि दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे और उस ने उन्हें ललकार दिया।
१५ पर वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे और जब तक हम मैदान में रहते हुए उन के साथ आया जाया करते थे तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई[2]
१६ न हमारा कुछ खोया गया। जब तक हम उन के साथ भेड़ बकरियां चराते रहे तब तक वे रात दिन हमारी
१७ आड़ बने रहे। सो अब सोच कर विचार कर कि क्या करना चाहिये क्योंकि उन्हों ने हमारे स्वामी की और उस के सारे घराने की हानि ठानी होगी वह तो ऐसा दुष्ट है
१८ कि उस से कोई बोल भी नहीं सकता। तब अबीगैल ने फुर्ती से दो सौ रोटी दो कुप्पी दाखमधु पांच भेड़ियों का मांस पांच सआ[3] भूना हुआ अनाज एक सौ गुच्छे किशमिश और अंजीरों की दो सौ टिकियां लेकर गदहों
१९ पर लदवाईं, और उस ने अपने जवानों से कहा तुम मेरे आगे आगे चलो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूं पर
२० उस ने अपने पति नाबाल से कुछ न कहा। वह गदहे पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी जाती थी कि दाऊद अपने जनों समेत उस के साम्हने उतरा आता
२१ था सो वह उन को मिली। दाऊद ने तो सोचा था कि मैं ने जो जंगल में उस के सारे माल की ऐसी रक्षा की कि उस का कुछ नहीं खो गया यह निःसंदेह व्यर्थ हुआ क्योंकि उस ने भलाई के पलटे मुझ से बुराई ही की है।
२२ यदि बिहान को उजियाले होने तक उस जन के सारे लोगों में से एक लड़के को भी मैं जीता छोड़ूं तो परमेश्वर मेरे सब शत्रुओं से ऐसा बरन इस से भी अधिक करे।
२३ दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके गदहे पर से उतर पड़ी और दाऊद के सन्मुख मुंह के बल भूमि पर गिरके
२४ दण्डवत् की। फिर वह उस के पांव पर गिरके कहने लगी हे मेरे प्रभु यह अपराध मेरे ही सिर पर हो तेरी दासी तुझ से कुछ कहने पाए और तू अपनी दासी की
२५ बातों को सुन ले। मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त न लगाए क्योंकि जैसा उस का नाम है वैसा वह आप है उस का नाम तो नाबाल[4] है और सचमुच उस में मूढ़ता पाई जाती है पर मुझ तेरी दासी ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तू ने भेजा था न देखा था। और
२६ अब हे मेरे प्रभु यहोवा के जीवन की सौंह और तेरे जीवन की सौंह कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना पलटा लेने से रोक रक्खा है इसलिये अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहनेहारे नाबाल
२७ ही के समान ठहरें। और अब यह भेंट जो तेरी दासी अपने प्रभु के पास लाई है उन जवानों को दी जाए
२८ जो मेरे प्रभु के साथ चलते हैं। अपनी दासी का अपराध क्षमा कर क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा इसलिये कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है और जन्म भर तुझ में कोई
२९ बुराई न पाई जाएगी। और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का गाहक होने को उठा है तौभी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बन्धा रहेगा और तेरे शत्रुओं के प्राण को
३० वह मानो गोफन में रखकर फेंक देगा। सो जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये वह सारी भलाई करेगा जो उस ने तेरे विषय में कही है और तुझे इस्राएल पर प्रधान
३१ करके ठहराएगा, तब तुझे इस कारण पछताना वा मेरे प्रभु को छाती धकधकाना न[5] पड़ेगा कि तू ने अकारण खून किया और मेरे प्रभु ने अपना पलटा आप लिया है फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी
३२ दासी को स्मरण करना। दाऊद ने अबीगैल से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है जिस ने आज के
३३ दिन तुझे मेरी भेंट के लिये भेजा है। और तेरा विवेक धन्य है और तू आप भी धन्य है कि तू ने मुझे आज

(१) मूल में विश्राम किया।
(२) मूल में न हम लजवाये गये।
(३) यह नपुए विशेष का नाम है।
(४) अर्थात् मूढ़।
(५) मूल में हृदय का ठोकर खाना न।

के दिन खून करने और अपना पलटा आप लेने ३४ से रोक लिया है। क्योंकि सचमुच इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिस ने मुझे तेरी हानि करने से रोका है उस के जीवन की सौंह यदि तू फुर्ती करके मुझ से भेंट करने को न आती तो निःसन्देह बिहान को उजियाले होने लों नाबाल का कोई लड़का भी न बचता। ३५ तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो वह उस के लिये लाई थी फिर उस से उस ने कहा अपने घर कुशल से जा सुन मैं ने तेरी बात मानी और तेरी बिनती अंगीकार की ३६ है। सो अबीगैल नाबाल के पास लौट गई और क्या देखती है कि वह घर में राजा की सी जेवनार कर रहा है और नाबाल का मन मगन है और वह नशे में अति चूर हो गया है सो उस ने भोर के उजियाले होने से ३७ पहिले उस से कुछ भी[1] न कहा। बिहान को जब नाबाल का नशा उतर गया तब उस की स्त्री ने उसे सारा हाल सुना दिया तब उस के मन का हियाव जाता ३८ रहा[2] और वह पत्थर सा सुन्न हो गया। और दस एक दिन के पीछे यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा कि वह मर ३९ गया। नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा धन्य है यहोवा जो नाबाल के साथ मेरी नामधराई का मुकद्दमा लड़ा और अपने दास को बुराई से रोक रक्खा और यहोवा ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर लौटा दिया है। तब दाऊद ने लोगों को अबीगैल के पास इसलिये भेजा कि वे उस से उस की स्त्री होने की ४० बातचीत करें। सो जब दाऊद के सेवक कर्मेल को अबीगैल के पास पहुंचे तब उस से कहने लगे दाऊद ने हमें तेरे पास इसलिये भेजा है कि तू उस की स्त्री बने। ४१ तब वह उठी और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण ४२ धोने के लिये लौंडी बने। तब अबीगैल फुर्ती से उठी और गदहे पर चढ़ी और उस की पांच सहेलियां उस के पीछे पीछे हो लीं और वह दाऊद के दूतों के पीछे पीछे ४३ गई और उस की स्त्री हो गई। और दाऊद ने यिज्रेल नगर की अहिनोअम को भी ब्याह लिया सो वे दोनों ४४ उस की स्त्रियां हुईं। पर शाऊल ने अपनी बेटी दाऊद की स्त्री मीकल को लैश के पुत्र गल्लीमवासी पलती को दे दिया था॥

२६. फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे क्या दाऊद उस हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन के साम्हने

(१) मूल में छोटा और बड़ा कुछ। (२) मूल में उस का हृदय उसके अन्तर में मर गया।

है छिपा नहीं रहता। तब शाऊल उठकर इस्राएल के २ तीन हजार छांटे हुए योद्धा संग लिये हुए गया कि दाऊद को जीप के जंगल में खोजे। और शाऊल ने अपनी ३ छावनी मार्ग के पास हकीला पहाड़ी पर जो यशीमोन के साम्हने है डाली पर दाऊद जंगल में रहा और उस ने जान लिया कि शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में आया है। सो दाऊद ने भेदियों को भेजकर निश्चय कर ४ लिया कि शाऊल सचमुच आ गया है। तब दाऊद उठ ५ उस स्थान पर गया जहां शाऊल पड़ा था और दाऊद ने उस स्थान को देखा जहां शाऊल अपने सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर समेत पड़ा था शाऊल तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था और उस के लोग उस के चारों ओर डेरे डाले हुए थे। सो दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक और ६ जरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै से कहा मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा अबीशै ने कहा तेरे साथ मैं चलूंगा। सो दाऊद और अबीशै रातों ७ रात उन लोगों के पास गये और क्या देखते हैं कि शाऊल गाड़ियों की आड़ में सोया हुआ पड़ा है और उस का भाला उस के सिर्हाने भूमि में गड़ा है और अब्नेर और और लोग उस के चारों ओर पड़े हुए हैं। तब अबीशै ने दाऊद से कहा परमेश्वर ने आज तेरे ८ शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है सो अब मैं उस को एक बार ऐसा मारूं कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धस जाए और मुझ को उसे दूसरी बार मारना न पड़ेगा। दाऊद ने अबीशै से कहा उसे नाश न कर क्योंकि यहोवा ९ के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता। फिर दाऊद ने कहा यहोवा के जीवन की सौंह १० यहोवा ही उस को मारेगा वा वह अपनी मृत्यु से मरेगा[3] वा वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा। यहोवा न ११ करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर बढ़ाऊं अब उस के सिर्हाने से भाला और पानी की झारी उठा ले और हम चले जाएं। तब दाऊद ने भाले और पानी १२ की झारी को शाऊल के सिर्हाने से उठा लिया और वे चले गये और किसी ने इसे न देखा और न जाना न कोई जागा क्योंकि वे सब इस कारण से सोते थे कि यहोवा की ओर से उन को भारी नींद पड़ गई थी। तब दाऊद परली ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी १३ पर खड़ा हुआ और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था। और दाऊद ने उन लोगों को और नेर के पुत्र अब्नेर को १४ पुकार के कहा हे अब्नेर क्या तू नहीं सुनता अब्नेर ने उत्तर देकर कहा तू कौन है जो राजा को पुकारता है।

(३) मूल में उस का दिन आएगा और वह मरेगा।

१५ दाऊद ने अब्नेर से कहा क्या तू पुरुष नहीं है इस्राएल में तेरे तुल्य कौन है तू ने अपने स्वामी राजा की चौकसी क्यों नहीं की एक जन तो तेरे स्वामी राजा को
१६ नाश करने घुसा था। जो काम तू ने किया है वह अच्छा नहीं यहोवा के जीवन की सोंह तुम लोग मार डालने के योग्य हो क्योंकि तुम ने अपने स्वामी यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं की और अब देख राजा का भाला और पानी की झारी जो उस के सिर्हाने थीं सो कहां
१७ हैं। तब शाऊल ने दाऊद का बोल पहिचानकर कहा हे मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा बोल है दाऊद ने
१८ कहा हां मेरे प्रभु राजा मेरा ही बोल है। फिर उस ने कहा मेरा प्रभु अपने दास का पीछा क्यों करता है मैं ने
१९ क्या किया है और मुझ से कौन सी बुराई हुई है[१]। अब मेरा प्रभु राजा अपने दास की बातें सुन ले। यदि यहोवा ने तुझे मेरे विरुद्ध उसकाया हो तब तो वह भेंट ग्रहण करे[२] पर यदि आदमियों ने ऐसा किया हो तो वे यहोवा की ओर से स्रापित हों क्योंकि उन्हों ने अब मुझे निकाल दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूं और उन्हों ने कहा है कि जा पराये देवताओं की उपासना कर।
२० सो अब मेरा लोहू यहोवा की आंखों की ओट में भूमि पर न बहने[३] पाए इस्राएल का राजा तो एक पिस्सू ढूंढने आया है जैसा कि कोई पहाड़ों पर तीतर का अहेर
२१ करे। शाऊल ने कहा मैं ने पाप किया है हे मेरे बेटे दाऊद लौट आ मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरा इस कारण मैं फिर तेरी कुछ हानि न करूंगा सुन मैं ने मूर्खता की और मुझ से बड़ी भूल हुई
२२ है। दाऊद ने उत्तर देकर कहा हे राजा भाले को देख
२३ कोई जवान इधर आकर इसे ले जाए। यहोवा एक एक को अपने अपने धर्म और सच्चाई का फल देगा देख आज यहोवा ने तुझ को मेरे हाथ में कर दिया था पर मैं ने यहोवा के अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाना
२४ न चाहा। सो जैसे तेरा प्राण आज मेरी दृष्टि में प्रिय[४] ठहरा वैसे ही मेरा प्राण भी यहोवा की दृष्टि में प्रिय
२५ ठहरे और वह मुझे सारी विपत्तियों से छुड़ाए। शाऊल ने दाऊद से कहा हे मेरे बेटे दाऊद तू धन्य है तू बड़े बड़े काम करेगा और तेरे काम सुफल होंगे। तब दाऊद ने अपना मार्ग लिया और शाऊल भी अपने स्थान को लौट गया॥

(१) मूल में मेरे हाथ में क्या बुराई है।
(२) मूल में सूंघे।
(३) मूल में गिरने।
(४) मूल में बड़ा।

(दाऊद का पलिश्तियों के यहां शरण लेना और शाऊल और योनातान का मारा जाना)

२७.

और दाऊद सोचने लगा अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नाश हो जाऊंगा सो मेरे लिये उत्तम यह है कि मैं पलिश्तियों के देश में भाग जाऊं तब शाऊल मेरे विषय निराश होगा और मुझे इस्राएल के देश के किसी भाग में फिर न ढूंढ़ेगा यों मैं उस के हाथ से बच निक-
२ लूंगा। सो दाऊद अपने छः सौ संगी पुरुषों को लेकर चला गया और गत के राजा माओक के पुत्र आकीश
३ के पास गया। और दाऊद और उस के जन अपने अपने परिवार समेत गत में आकीश के पास रहने लगे। दाऊद तो अपनी दो स्त्रियों के साथ अर्थात् यिज्रेली अहीनोअम और नाबाल की स्त्री कर्मेली
४ अबीगैल के साथ रहा। जब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद गत को भाग गया है तब उस ने उसे फिर कभी न ढूंढ़ा॥

५ दाऊद ने आकीश से कहा यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो देश की किसी बस्ती में मुझे स्थान दिला दे जहां मैं रहूं तेरा दास तेरे साथ राज-
६ धानी में क्यों रहे। सो आकीश ने उसे उसी दिन सिक्लग बस्ती दी इस कारण से सिक्लग आज के दिन लों यहूदा के राजाओं का बना है॥

७ पलिश्तियों के देश में रहते रहते दाऊद को एक
८ बरस चार महीने बीते। और दाऊद ने अपने जनों समेत जाकर गशूरियों गिर्जियों और अमालेकियों पर चढ़ाई की ये जातियां तो प्राचीन काल से उस देश में
९ रहती थीं जो शूर के मार्ग में मिस्र देश तक है। दाऊद ने उस देश को नाश किया और स्त्री पुरुष किसी को जीता न छोड़ा और भेड़ बकरी गाय बैल गदहे ऊंट और वस्त्र लेकर लौटा और आकीश के पास गया।
१० आकीश ने पूछा आज तुम ने चढ़ाई तो नहीं की दाऊद ने कहा हां यहूदा यरहमेलियों और केनियों की
११ दक्खिन दिशा में। दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी को जीता न छोड़ा कि उन्हें गत में पहुंचाएं उस ने सोचा था कि ऐसा न हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहें कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया है बरन जब से वह पलिश्तियों के देश में रहता है तब से उस का काम ऐसा ही
१२ है। सो आकीश ने दाऊद की बात सच मानकर कहा यह अपने इस्राएली लोगों को अति घिनौना लगा है सो यह सदा लों मेरा दास बना रहेगा॥

२८. उन दिनों में पलिश्तियों ने इस्राएल से लड़ने के लिये अपनी सेना इकट्ठी की और आकीश ने दाऊद से कहा निश्चय जान कि तुझे अपने जनों समेत मेरे साथ सेना में जाना २ होगा। दाऊद ने आकीश से कहा इस कारण तू जान लेगा कि तेरा दास क्या करेगा आकीश ने दाऊद से कहा इस कारण मैं तुझे अपने सिर का रक्षक सदा के लिये ठहराऊंगा॥

३ शमूएल तो मर गया था और सारे इस्राएलियों ने उस के विषय छाती पीटी और उस को उस के नगर रामा में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने ओझों और भूतसिद्धि करनेहारों को देश से निकाल दिया था॥

४ जब पलिश्ती इकट्ठे हुए तब शूनेम में छावनी डाली और शाऊल ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया और ५ उन्हों ने गिलबो में छावनी डाली। पलिश्तियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया और उस का मन अत्यन्त ६ थरथरा उठा। और जब शाऊल ने यहोवा से पूछा तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया और न ७ ऊरीम न नबियों के द्वारा। सो शाऊल ने अपने कर्म्मचारियों से कहा मेरे लिये किसी भूतसिद्धि करनेहारी को खोजो कि मैं उस के पास जाकर उस से पूछूं उस के कर्म्मचारियों ने उस से कहा एन्दोर में एक भूतसिद्धि ८ करनेहारी रहती है। तब शाऊल ने अपना भेष बदला और दूसरे कपड़े पहिनकर दो मनुष्य संग ले रातोंरात चलकर उस स्त्री के पास गया और कहा अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहवा और जिस का नाम मैं लूंगा ९ उसे बुला[१] ला। स्त्री ने उस से कहा तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है कि उस ने ओझों और भूतसिद्धि करनेहारों को देश से नाश किया है फिर तू मेरे प्राण के १० लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले। शाऊल ने यहोवा की किरिया खाकर उस से कहा यहोवा के जीवन ११ की सोंह इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा। स्त्री ने पूछा मैं तेरे लिये किस को बुलाऊं[२] उस ने कहा शमूएल १२ को मेरे लिये बुला[१]। जब स्त्री ने शमूएल को देखा तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई और शाऊल से कहा तू ने मुझे १३ क्यों धोखा दिया तू तो शाऊल है। राजा ने उस से कहा मत डर तुझे क्या देख पड़ता है स्त्री ने शाऊल से कहा मुझे एक देवता पृथिवी में से चढ़ता हुआ देख पड़ता १४ है। उस ने उस से पूछा उस का कैसा रूप है उस ने कहा एक बूढ़ा पुरुष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है सो शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है औंधे मुंह भूमि पर गिरके दण्डवत् की। १५ शमूएल ने शाऊल से पूछा तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है शाऊल ने कहा मैं बड़े संकट में पड़ा हूं कि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया और अब मुझे न तो नबियों के द्वारा उत्तर देता है और न स्वप्नों के सो मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं। १६ शमूएल ने कहा जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया तब तू मुझ से क्यों पूछता है। १७ यहोवा ने तो जैसे मुझ से कहवाया था वैसा ही उस से व्यवहार किया है अर्थात् उस ने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है। १८ तू ने जो यहोवा की न मानी और न अमालेकियों को उस के भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया। १९ फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा। २० तब शाऊल तुरन्त मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा और शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर गया उस ने सारे दिन और सारी रात को भोजन न किया था इस से उस में बल कुछ न रहा। २१ तब स्त्री शाऊल के पास गई और उस को अति व्याकुल देखकर उस से कहा सुन तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी और मैं ने अपने प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन लिया जो तू ने मुझ से कहे। २२ सो अब तू भी अपनी दासी की बात मान और मैं तेरे साम्हने एक टुकड़ा रोटी रक्खूं तू उसे खाना कि जब तू अपना मार्ग ले सके तब तुझे बल आ जाए। २३ उस ने नकारके कहा मैं न खाऊंगा पर उस के सेवकों और स्त्री ने मिलकर यहां लों उसे दबाया कि वह उन की बात मान भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया। २४ स्त्री के घर में तो एक तैयार किया हुआ बछड़ा था सो उस ने फुर्ती कर के उसे मारा फिर आटा लेकर गूंधा और अखमीरी रोटी बनाकर, २५ शाऊल और उस के सेवकों के आगे लाई और उन्हों ने खाया तब वे उठकर उसी रात चले गये॥

२९. पलिश्तियों ने अपनी सारी सेना को अपेक में इकट्ठा किया और इस्राएली यिज्रेल के निकट के सोते के पास डेरे डाले हुए थे। २ तब पलिश्तियों के सरदार अपने अपने सैकड़ों और हजारों समेत आगे बढ़ गये और सेना की पिछाड़ी में आकीश के साथ दाऊद भी अपने जनों समेत बढ़ गया। ३ सो पलिश्ती हाकिमों ने पूछा उन इब्रियों का यहां क्या काम है आकीश ने पलिश्ती सरदारों से कहा

(१) मूल में चढ़ा। (२) मूल में चढ़ाऊं।

क्या वह इस्राएल के राजा शाऊल का कर्म्मचारी दाऊद नहीं है जो क्या जाने कितने दिनों से बरन बरसों से मेरे साथ रहता है और जब से वह भाग आया तब से आज ४ तक मैं ने उस में कोई दोष नहीं पाया। तब पलिश्ती हाकिम उस से क्रोधित हुए और उस से कहा उस पुरुष को लौटा दे कि वह उस स्थान पर जाए जो तू ने उस के लिये ठहराया है वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा न हो कि वह लड़ाई में हमारा विरोधी बन जाए फिर वह अपने स्वामी से किस रीति से मेल करे क्या लोगों के ५ सिर कटवाकर न करेगा। क्या वह वही दाऊद नहीं है जिस के विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे कि

शाऊल ने हजारों को
पर दाऊद ने लाखों को मारा है॥

६ तब आकीश ने दाऊद को बुलाकर उस से कहा यहोवा के जीवन की सोंह तू तो सीधा है और सेना में तेरा मेरे संग आना जाना भी मुझे भावता है क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब से लेकर आज तक मैं ने तो तुझ में कोई बुराई नहीं पाई तौ भी सरदार लोग तुझे ७ नहीं चाहते। सो अब तू कुशल से लौट जा न हो कि ८ पलिश्ती सरदार तुझ से अप्रसन्न हों। दाऊद ने आकीश से कहा मैं ने क्या किया है और जब से मैं तेरे साम्हने आया तब से आज लों तू ने अपने दास में क्या पाया है कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊं। ९ आकीश ने दाऊद को उत्तर देकर कहा हां यह मुझे मालूम है तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा लगता है तौभी पलिश्ती हाकिमों ने कहा है कि १० वह हमारे संग लड़ाई में न जाने पाएगा। सो अब तू अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ आये हैं बिहान को तड़के उठना और तुम बिहान को तड़के उठ ११ कर उजियाला होते ही चले जाना। सो बिहान को दाऊद अपने जनों समेत तड़के उठकर पलिश्तियों के देश को लौट गया। और पलिश्ती यिज्रेल को चढ़ गये॥

३०. तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिकलग पहुंचा तब उन्हों ने क्या देखा कि अमालेकियों ने दक्खिन देश और सिकलग पर चढ़ाई की और सिकलग को मारके फूंक २ दिया, और उस में के स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे सब को बंधुआई में ले गये उन्हों ने किसी को मार तो ३ नहीं डाला सभों को लेकर अपना मार्ग लिया। सो जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुंचा तब नगर तो जला पड़ा था और स्त्रियां और बेटे बेटियां बंधुआई में चली गई थीं। सो दाऊद और वे लोग जो उस के साथ ४ थे चिल्लाकर इतना रोये कि फिर उन्हें रोने की शक्ति न रही। और दाऊद की दो स्त्रियां यिज्रेली अहीनोअम ५ और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल बन्धुआई में गई थीं। और दाऊद बड़े संकट में पड़ा क्योंकि लोग अपने ६ बेटों बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे पर दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके[१] हियाव बान्धा॥

७ तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र एब्यातार याजक से कहा एपोद को मेरे पास ला सो एब्यातार एपोद को ८ दाऊद के पास ले आया। और दाऊद ने यहोवा से पूछा क्या मैं इस दल का पीछा करूं क्या उस को जा पकड़ूंगा उस ने उस से कहा पीछा कर क्योंकि तू निश्चय उस को पकड़ेगा और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा ९ लाएगा। तब दाऊद अपने छः सौ साथी जनों को लेकर बसोर नाम नाले तक पहुंचा। वहां कुछ लोग छोड़े जाकर १० रह गए। दाऊद तो चार सौ पुरुषों समेत पीछा किये चला गया पर दो सौ जो ऐसे थक गये थे कि बसोर नाले के पार ११ न जा सके वहीं रहे। उन को एक मिस्री पुरुष मैदान में मिला सो उन्हों ने उसे दाऊद के पास ले जाकर रोटी दी १२ और उस ने उसे खाया तब उसे पानी पिलाया। फिर उन्हों ने उस को अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिश दिये और जब उस ने खाया तब उस के जी में जी आया उस ने तीन दिन और तीन रात से न तो १३ रोटी खाई न पानी पिया था। तब दाऊद ने उस से पूछा तू किस का जन है और कहां का है उस ने कहा मैं तो मिस्री जवान और एक अमालेकी मनुष्य का दास हूं और तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ा और मेरा स्वामी १४ मुझे छोड़ गया। हम लोगों ने करेतियों की दक्खिन दिशा में और यहूदा के देश में और कालेब की दक्खिन दिशा में चढ़ाई की और सिकलग को आग लगा कर १५ फूंक दिया था। दाऊद ने उस से पूछा क्या तू मुझे उस दल के पास पहुंचा देगा उस ने कहा मुझ से परमेश्वर की यह किरिया खा कि मैं तुझे न तो प्राण से मारूंगा और न तेरे स्वामी के हाथ कर दूंगा तब मैं तुझे उस दल १६ के पास पहुंचा दूंगा। जब उस ने उसे पहुंचाया तब देखने में क्या आया कि वे सारी भूमि पर छिड़के हुए खाते पीते और उस बड़ी लूट के कारण जो वे पलिश्तियों १७ के देश और यहूदा देश से लाये थे नाच रहे हैं। सो

(१) मूल में यहोवा में।

दाऊद उन्हें रात के पहिले पहर से लेकर दूसरे दिन की सांझ तक मारता रहा यहां लों कि चार सौ जवान छोड़ जो ऊंटों पर चढ़कर भाग गये उन में से एक भी मनुष्य १८ न बचा । और जो कुछ अमालेकी ले गये थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को १९ भी छुड़ा लिया । बरन उन के क्या छोटे क्या बड़े क्या बेटे क्या बेटियां क्या लूट का माल सब कुछ जो अमालेकी ले गये थे उस में से कोई वस्तु न रही जो उन को न २० मिली हो क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया । और दाऊद ने सब भेड़ बकरियां और गाय बैल भी लूट लिये और इन्हें लोग यह कहते हुये अपने ढोरों के आगे २१ हांकते गये कि यह दाऊद की लूट है । तब दाऊद उन दो सौ पुरुषों के पास आया जो ऐसे थक गये थे कि दाऊद के पीछे पीछे न जा सके थे और बसोर नाले के पास छोड़ दिये गये थे और वे दाऊद से और उस के संग के लोगों से मिलने को चले और दाऊद ने उन के २२ पास पहुंच कर उन का कुशल क्षेम पूछा । तब उन लोगों में से जो दाऊद के संग गये थे सब दुष्ट और ओछे लोगों ने कहा वे लोग हमारे साथ न चले थे इस कारण हम उन्हें अपने छुड़ाये हुए लूट के माल में से कुछ न देंगे केवल एक एक मनुष्य को उस की स्त्री और २३ बाल बच्चे देंगे कि वे उन्हें लेकर चले जाएं । पर दाऊद ने कहा हे मेरे भाइयो तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है और उस ने हमारी रक्षा की और उस दल को जिस ने हमारे ऊपर २४ चढ़ाई की थी हमारे हाथ में कर दिया है । और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा लड़ाई में जानेहारे का जैसा भाग हो सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही २५ भाग होगा दोनों एक ही समान भाग पाएंगे । और दाऊद ने इस्राएलियों के लिये ऐसी ही विधि और नियम ठहराया और वह उस दिन से लेकर आगे को बरन आज लों बना है ॥

२६ सिकलग में पहुंचकर दाऊद ने यहूदी पुरनियों के पास जो उस के मित्र थे लूट के माल में से कुछ कुछ भेजा और यह कहलाया कि यहोवा के शत्रुओं से ली २७ हुई लूट में से तुम्हारे लिये यह भेंट है । अर्थात् बेतेल २८ दक्खिन देश में के रामोत यत्तीर, अरोएर सिपमोत २९ एश्तमो, राकाल यरहमेलियों के नगरों केनियों के नगरों, ३०, ३१ होर्मा कोराशान अताक, हेब्रोन आदि जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों समेत फिरा करता था उन सब के पुरनियों के पास उस ने कुछ कुछ भेजा ॥

३१.

पलिश्ती तो इस्राएलियों से लड़े और इस्राएली पुरुष पलिश्तियों के साम्हने से भागे और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गये । २ और पलिश्ती शाऊल और उस के पुत्रों के पीछे लगे रहे और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातान ३ अबीनादाब और मल्कीश को मार डाला । और शाऊल के साथ लड़ाई और भारी होती गई और धनुर्धारियों ने उसे जा लिया और वह उन के कारण अत्यन्त ४ व्याकुल हो गया । तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेहारे से कहा अपनी तलवार खींचकर मेरे भोंक दे ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मेरे भोंक दें और मेरा ठट्ठा करें । पर उस के हथियार ढोनेहारे ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करना नकारा तब शाऊल ५ अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा । यह देख कर कि शाऊल मर गया उस का हथियार ढोनेहारा भी ६ अपनी तलवार पर आप गिरके उस के साथ मर गया । यों शाऊल और उस के तीनों पुत्र और उस का हथियार ढोनेहारा और उस के सारे जन उसी दिन एक संग मर ७ गये । यह देखकर कि इस्राएली पुरुष भाग गये और शाऊल और उस के पुत्र मर गये उस तराई की परली ओरवाले और यर्दन के पारवाले भी इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगर को छोड़ भाग गये और पलिश्ती आकर उन में रहने लगे ॥

८ दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आये तब उन को शाऊल और उस के तीनों पुत्र ९ गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए मिले । सो उन्हों ने शाऊल का सिर काटा और हथियार लूट लिये और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इसलिये भेजा कि उन के देवालयों और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार १० देते जाएं । तब उन्हों ने उस के हथियार तो आश्तोरेत नाम देवियों के मन्दिर में रक्खे और उस की लोथ ११ बेतशान की शहरपनाह में जड़ दी । जब गिलाद में के याबेश के निवासियों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल १२ से क्या क्या किया है तब सब शूरवीर चले और रातोंरात जाकर शाऊल और उस के पुत्रों की लोथें बेतशान की शहरपनाह पर से याबेस में ले आये और वहीं फूंक १३ दीं । तब उन्हों ने उन की हड्डियां लेकर याबेश में के झाऊ के नीचे गाड़ दीं और सात दिन का उपवास किया ॥

शमूएल नाम दूसरी पुस्तक।

(दाऊद का शाऊल के खून का दण्ड देना)

१. शाऊल के मरने के पीछे जब दाऊद अमालेकियों को मार के लौटा
२ और दाऊद को सिकलग में रहते दो दिन हो गये, तब तीसरे दिन छावनी में से शाऊल के पास से एक पुरुष कपड़े फाड़े सिर पर धूलि डाले हुए आया और जब वह दाऊद के पास पहुंचा तब भूमि पर गिर के दण्डवत्
३ की। दाऊद ने उस से पूछा तू कहां से आया है उस ने उस से कहा मैं इस्राएली छावनी में से बच
४ कर आया हूं। दाऊद ने उस से पूछा वहां क्या बात हुई मुझे बता उस ने कहा यह कि लोग रणभूमि छोड़कर भाग गये और बहुत लोग मारे गये और शाऊल और उस का पुत्र योनातान भी मारे गये हैं।
५ दाऊद ने उस समाचार देनेहारे जवान से पूछा कि तू कैसे जानता है कि शाऊल और उस का पुत्र योनातान
६ मर गये। समाचार देनेहारे जवान ने कहा संयोग से मैं गिलबो पहाड़ पर था तो क्या देखा कि शाऊल अपने भाले की टेक लगाये हुए है फिर मैं ने यह भी देखा कि उस का पीछा किये हुए रथ और सवार बड़े बेग से
७ दौड़े आते हैं। उस ने पीछे फिरके मुझे देखा और मुझे
८ पुकारा मैं ने कहा क्या आज्ञा। उस ने मुझ से पूछा तू
९ कौन है मैं ने उस से कहा मैं तो अमालेकी हूं। उस ने मुझ से कहा मेरे पास[१] खड़ा होकर मुझे मार डाल क्योंकि मेरा सिर तो घूमा जाता है पर प्राण नहीं
१० निकलता[२]। सो मैं ने यह निश्चय करके कि वह गिर जाने के पीछे नहीं बच सकता उस के पास[३] खड़े होकर उसे मार डाला और मैं उस के सिर का मुकुट और उस के हाथ का कंकन लेकर यहां अपने प्रभु के पास आया
११ हूं। तब दाऊद ने अपने कपड़े पकड़कर फाड़े और जितने पुरुष उस के संग थे उन्हों ने भी वैसा ही किया।
१२ और वे शाऊल और उस के पुत्र योनातान और यहोवा की प्रजा और इस्राएल के घराने के लिये छाती पीटने और रोने लगे और सांझ लों कुछ न खाया इस कारण कि वे तलवार से मारे गये थे।
१३ फिर दाऊद ने उस समाचार देनेहारे जवान से पूछा तू कहां का है उस ने कहा मैं तो परदेशी का बेटा अर्थात् अमालेकी हूं।
१४ दाऊद ने उस से कहा तू यहोवा के अभिषिक्त को नाश करने के लिये हाथ बढ़ाने से क्यों नहीं डरा।
१५ तब दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा निकट जाकर उस पर प्रहार कर। सो उस ने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया।
१६ और दाऊद ने उस से कहा तेरा खून तेरे ही सिर पर पड़े क्योंकि तू ने यह कहकर कि मैं ही ने यहोवा के अभिषिक्त को मार डाला अपने मुंह से अपने ही विरुद्ध साक्षी दी है॥

(शाऊल और योनातान के लिये दाऊद का बनाया हुआ विलापगीत)

१७ तब दाऊद ने शाऊल और उस के पुत्र योनातान
१८ के विषय यह विलापगीत बनाया, और यहूदियों को यह धनुष नाम गीत सिखाने की आज्ञा दी। यह याशार नाम पुस्तक में लिखा हुआ है॥

१९ हे इस्राएल तेरा शिरोमणि तेरे ऊंचे स्थानों पर मारा गया
शूरवीर क्योंकर गिर पड़े हैं।
२० गत में यह न बताओ
और न अश्कलोन की सड़कों में प्रचारो
न हो कि पलिश्ती स्त्रियां आनन्दित हों
न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियां हुलसने लगें।
२१ हे गिलबो पहाड़ो
तुम पर न ओस पड़े न बरषा हो न भेंट के योग्य उपजवाले खेत पाये जाएं
क्योंकि वहां शूरवीरों की ढालें अशुद्ध हो गईं
और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाये रह गई।
२२ जूझे हुओं के लोहू बहाने से और शूरवीरों की चर्बी खाने से
योनातान का धनुष लौट न जाता था
और न शाऊल की तलवार छूछी फिर आती थी।

(१) वा मुझ पर। (२) मूल में मेरा प्राण मुझ में अब लों समूचा है। (३) वा उस पर।

१३ शाऊल और योनातान जीते जी तो प्रिय और
मनभाऊ थे
और मृत्यु के समय अलग न हुए
वे उकाब से भी वेग चलनेहारे
और सिंह से अधिक पराक्रमी थे।
१४ हे इस्राएली स्त्रियो शाऊल के लिये रोओ
वह तो तुम्हें लाही रंग के वस्त्र पहिनाकर सुख
देता
और तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहि-
नाता था।
२५ युद्ध के बीच शूरबीर कैसे गिर गये
हे योनातान हे ऊंचे स्थानों पर जूझे हुए,
२६ हे मेरे भाई योनातान मैं तेरे कारण दुःख
में हूं
तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था
तेरा प्रेम मुझ पर अनूप
बरन स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था॥
२७ शूरबीर क्योंकर गिर गये
और युद्ध के हथियार कैसे नाश हो गये हैं।

(दाऊद के हेब्रोन में राज्य करने का वृत्तान्त)

२. इस के पीछे दाऊद ने यहोवा से पूछा कि क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं यहोवा ने उस से कहा हां जा दाऊद ने फिर पूछा २ किस नगर में जाऊं उस ने कहा हेब्रोन में। सो दाऊद यिज्रेली अहीनोअम और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबी- ३ गैल नाम अपनी दोनों स्त्रियों समेत वहां गया। और दाऊद अपने साथियों को भी एक एक के घराने समेत ४ वहां ले गया और वे हेब्रोन के गांवों में रहने लगे। और यहूदी लोग गये और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो॥

और दाऊद को यह समाचार मिला कि जिन्हों ने शाऊल को मिट्टी दी सो गिलाद के याबेश नगर के ५ लोग हैं। सो दाऊद ने दूतों से गिलाद के याबेश के लोगों के पास यह कहला भेजा यहोवा की आशिष तुम पर हो क्योंकि तुम ने अपने प्रभु शाऊल पर यह कृपा ६ करके उस को मिट्टी दी। सो अब यहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बर्त्ताव करे और मैं भी तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूंगा क्योंकि तुम ने यह काम ७ किया है। और अब हियाव बान्धो और पुरुषार्थ करो क्योंकि तुम्हारा प्रभु शाऊल मर गया और यहूदा के घराने ने अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक किया है॥

८ पर नेर का पुत्र अब्नेर जो शाऊल का प्रधान सेनापति था उस ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को संग ले ९ पार जाकर महनैम में पहुंचाया, और उसे गिलाद अशूरियों के देश यिज्रेल एप्रैम बिन्यामीन बरन सारे १० इस्राएल के देश पर राजा किया। शाऊल का पुत्र ईशबो- शेत चालीस बरस का था जब वह इस्राएल पर राज्य करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा पर ११ यहूदा का घराना दाऊद के पक्ष में रहा। और दाऊद के हेब्रोन में यहूदा के घराने पर राज्य करने का समय साढ़े सात बरस था॥

१२ और नेर का पुत्र अब्नेर और शाऊल के पुत्र १३ ईशबोशेत के जन महनैम से गिबोन को आये। तब सरूयाह का पुत्र योआब और दाऊद के जन हेब्रोन से निकलकर उन से गिबोन के पोखरे के पास मिले और १४ दोनों दल उस पोखरे की एक एक ओर बैठ गये। तब अब्नेर ने योआब से कहा जवान लोग उठकर हमारे १५ साम्हने खेलें योआब ने कहा अच्छा वे उठें। सो वे उठे और बिन्यामीन अर्थात् शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पक्ष के लिये बारह जन गिनकर निकले और दाऊद के जनों १६ में से भी बारह निकले। और उन्हों ने एक दूसरे का सिर पकड़कर अपनी अपनी तलवार एक दूसरे के पांजर में भोंक दी सो वे एक ही संग मरे इस से उस स्थान का १७ नाम हेल्कथस्सूरीम[१] पड़ा वह गिबोन में है। और उस दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ और अब्नेर और इस्राएल के १८ पुरुष दाऊद के जनों से हार गये। वहां तो योआब अबीशै और असाहेल नाम सरूयाह के तीनों पुत्र थे और असाहेल बनैले चिकारे के समान बेग दौड़नेहारा था। १९ सो असाहेल अब्नेर का पीछा करने लगा और उस का पीछा करते हुए न तो दहिनी ओर मुड़ा न बाईं ओर। २० अब्नेर ने पीछे फिरके पूछा क्या तू असाहेल है उस ने २१ कहा हां मैं वही हूं। अब्नेर ने उस से कहा चाहे दहिनी चाहे बाईं ओर मुड़ किसी जवान को पकड़कर उस का बकतर ले ले पर असाहेल ने उस का पीछा २२ छोड़ने से नाह किया। अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा मेरा पीछा छोड़ दे मुझ को क्यों तुझे मारके मिट्टी में मिला देना पड़े ऐसा करके मैं तेरे भाई योआब २३ को अपना मुख कैसे दिखाऊंगा। तौ भी उस ने हट जाने को नकारा सो अब्नेर ने अपने भाले की पिछाड़ी उस के पेट में ऐसे मारी कि भाला वारपार होकर पीछे निकला सो वह वहीं गिरके मर गया और जितने लोग उस स्थान पर आये जहां असाहेल गिर के मर गया सो

(१) अर्थात् छूरियों का खेत।

२४ सब खड़े रहे। पर योआब और अबीशै अब्नेर का पीछा किये रहे और सूर्य्य डूबते डूबते वे अम्मा नाम उस पहाड़ी लों पहुंचे जो गिबोन के जंगल के मार्ग में गीह २५ के साम्हने है। और बिन्यामीनी अब्नेर के पीछे होकर एक दल हो गये और एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए। २६ तब अब्नेर योआब को पुकारके कहने लगा, क्या तलवार सदा लों मारती रहे क्या तू नहीं जानता कि इस का फल दुःखदाई[१] होगा तू कब लों अपने लोगों को आज्ञा न २७ देगा कि अपने भाइयों का पीछा छोड़कर लौटो। योआब ने कहा परमेश्वर के जीवन की सोंह कि यदि तू न बोला होता तो निःसंदेह लोग सबेरे ही चले जाते और अपने २८ अपने भाई का पीछा न करते। तब योआब ने नरसिंगा फूंका और सब लोग ठहर गये और फिर इस्राएलियों २९ का पीछा न किया और लड़ाई फिर न की। और अब्नेर अपने जनों समेत उसी दिन रातोंरात अराबा से होकर गया और यर्दन के पार हो सारे बित्रोन देश होकर ३० महनैम में पहुंचा। और योआब अब्नेर का पीछा छोड़कर लौटा और जब उस ने सब लोगों को इकट्ठा किया तब क्या देखा कि दाऊद के जनों में से उन्नीस ३१ पुरुष और असाहेल भी नहीं हैं। पर दाऊद के जनों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर के जनों को ऐसा मारा कि ३२ उन में से तीन सौ साठ जन मर गये। और उन्हों ने असाहेल को उठाकर उस के पिता के कब्रिस्तान में जो बेतलेहेम में था मिट्टी दी तब योआब अपने जनों समेत रात भर चलकर पह फटते हेब्रोन में पहुंचा॥

३.

शाऊल के घराने और दाऊद के घराने के बीच बहुत दिन लों लड़ाई होती रही पर दाऊद प्रबल होता गया और शाऊल का घराना निर्बल पड़ता गया॥

२ और हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए। उस का जेठा बेटा अम्नोन था जो यिज्रेली अहीनोअम से जन्मा ३ था। और उस का दूसरा किलाब था जिस की मा कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल थी तीसरा अबशालोम जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माका से जन्मा था, ४ चौथा अदोनिय्याह जो हग्गीत से जन्मा था पांचवां ५ शपत्याह जिस की मा अबीतल थी, छठवां यित्राम जो एग्ला नाम दाऊद की स्त्री से जन्मा। हेब्रोन में दाऊद से ये ही उत्पन्न हुए॥

६ जब शाऊल और दाऊद दोनों के घरानों के बीच लड़ाई हो रही थी तब अब्नेर शाऊल के घराने की ७ सहायता में बल बढ़ाता गया। शाऊल के तो एक रखेली थी जिस का नाम रिस्पा था वह अय्या की बेटी थी और ईशबोशेत ने अब्नेर से पूछा तू मेरे पिता की ८ रखेली के पास क्यों गया। ईशबोशेत की बातों के कारण अब्नेर अति क्रोधित होकर कहने लगा क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं आज लों मैं तेरे पिता शाऊल के घराने और उस के भाइयों और मित्रों को प्रीति दिखाता आया हूं कि तुझे दाऊद के हाथ पड़ने नहीं दिया फिर तू अब मुझ पर उस स्त्री के विषय दोष लगाता है। ९ यदि मैं दाऊद के साथ ईश्वर की किरिया के अनुसार बर्ताव न करूं तो परमेश्वर अब्नेर से वैसा ही बरन उस से १० भी अधिक करे। अर्थात् मैं राज्य को शाऊल के घराने से छीनूंगा और दाऊद की राजगद्दी दान से लेकर बेर्शेबा लों इस्राएल और यहूदा के ऊपर स्थिर करूंगा। ११ और वह अब्नेर को कोई उत्तर न दे सका इसलिये कि वह उस से डरता था॥

१२ तब अब्नेर ने उस के नाम से दाऊद के पास दूतों से कहला भेजा कि देश किस का है और यह भी कहला भेजा कि तू मेरे साथ वाचा बांध और मैं तेरी सहायता करूंगा कि सारे इस्राएल के मन तेरी ओर फेर दूं। १३ दाऊद ने कहा भला मैं तेरे साथ वाचा तो बांधूंगा पर एक बात मैं तुझ से चाहता हूं कि जब तू मुझ से भेंट करने आए तब यदि तू पहिले शाऊल की बेटी १४ मीकल को न ले आए तो मुझ से भेंट न होगी। फिर दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूतों से यह कहला भेजा कि मेरी स्त्री मीकल जिसे मैं ने एक सौ पलिश्तियों की खलड़ियां देकर अपनी कर लिया था १५ उस को मुझे दे दे। सो ईशबोशेत ने लोगों को भेजकर उसे लैश के पुत्र पलतीएल के पास से छीन लिया। १६ और उस का पति उस के साथ चला और बहूरीम लों उस के पीछे रोता हुआ चला गया तब अब्नेर ने उस से कहा लौट जा सो वह लौट गया॥

१७ और अब्नेर ने इस्राएल के पुरनियों के संग इस प्रकार की बात चीत की कि पहिले तो तुम लोग चाहते १८ थे कि दाऊद हमारे ऊपर राजा हो। सो अब वैसा करो क्योंकि यहोवा ने दाऊद के विषय यह कहा है कि अपने दास दाऊद के द्वारा मैं अपनी प्रजा इस्राएल को पलिश्तियों बरन उन के सब शत्रुओं के हाथ से १९ छुड़ाऊंगा। फिर अब्नेर ने बिन्यामीन से भी बातें कीं फिर अब्नेर हेब्रोन को चला गया कि इस्राएल और बिन्यामीन के सारे घराने को जो कुछ अच्छा लगा सो २० दाऊद को सुनाए। सो अब्नेर बीस पुरुष संग लेकर हेब्रोन में आया और दाऊद ने उस के और उस के

(१) मूल में कड़वाहट।

२१ संगी पुरुषों के लिये जेवनार की । तब अब्नेर ने दाऊद से कहा मैं उठकर जाऊंगा और अपने प्रभु राजा के पास सब इस्राएल को इकट्ठा करूंगा कि वे तेरे साथ वाचा बांधें और तू अपनी इच्छा के अनुसार राज्य कर सके। सो दाऊद ने अब्नेर को बिदा किया और वह कुशल से

२२ चला गया । तब दाऊद के कई एक जन योआब समेत कहीं चढ़ाई करके[1] बहुत सी लूट लिये हुए आ गये और अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन में न था क्योंकि उस ने उस को बिदा कर दिया था और वह कुशल से

२३ चला गया था । जब योआब और उस के साथ की सारी सेना आई तब लोगों ने योआब को बताया कि नेर का पुत्र अब्नेर राजा के पास आया था और उस ने उस के बिदा कर दिया और वह कुशल से चला गया।

२४ सो योआब ने राजा के पास जाकर कहा तू ने यह क्या किया है अब्नेर जो तेरे पास आया था सो क्या कारण है कि तू ने उस को जाने दिया और वह चला

२५ गया है । तू नेर के पुत्र अब्नेर को जानता होगा कि वह तुझे धोखा देने और तेरे आने जाने और सारे

२६ काम का भेद लेने आया था। योआब ने दाऊद के पास से निकलकर दाऊद के अनजाने अब्नेर के पीछे दूत भेजे और वे उस को सीरा नाम कुण्ड से लौटा ले

२७ आये । जब अब्नेर हेब्रोन को लौट आया तब योआब उस से एकान्त में बातें करने के लिये उस को फाटक के भीतर अलग ले गया और वहां अपने भाई असाहेल के खून के पलटे में उस के पेट में ऐसा मारा कि वह मर

२८ गया । इस के पीछे जब दाऊद ने यह सुना तब कहा नेर के पुत्र अब्नेर के खून के विषय मैं अपनी प्रजा

२९ समेत यहोवा की दृष्टि में सदा निर्दोष रहूंगा। वह योआब और उस के पिता के सारे घराने को लगे और योआब के वंश में प्रमेह का रोगी और कोढ़ी और बैसाखी का टेक लगानेहारा और तलवार से खेत आने-

३० हारा और भूखों मरनेहारा सदा होते रहें । योआब और उस के भाई अबीशै ने अब्नेर को इस कारण घात किया कि उस ने उन के भाई असाहेल को गिबोन में लड़ाई के समय मार डाला था ॥

३१ तब दाऊद ने योआब और अपने सब संगी लोगों से कहा अपने वस्त्र फाड़ो और कमर में टाट बांधकर अब्नेर के आगे आगे चलो । और दाऊद राजा आप अर्थी के

३२ पीछे पीछे चला । सो अब्नेर को हेब्रोन में मिट्टी दी गई और राजा अब्नेर की कबर के पास फूट फूटकर रोया और सब लोग भी रोये । तब दाऊद ने अब्नेर के विषय यह

३३ विलापगीत बनाया कि ॥

क्या उचित था कि अब्नेर मूढ़ की नाईं मरे ॥

३४ न तो तेरे हाथ बांधे गये न तेरे पांवों में बेड़ियां डाली गईं

जैसे कोई कुटिल मनुष्यों से मारा जाए वैसे ही तू मारा गया ।

३५ तब सब लोग उस के विषय फिर रो उठे । तब सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आये पर दाऊद ने किरिया खाकर कहा यदि मैं सूर्य्य के अस्त होने से पहिले रोटी वा और कोई वस्तु खाऊं तो परमेश्वर मुझ

३६ से ऐसा ही बरन इस से भी अधिक करे। सब लोगों ने इस को जाना और इस से प्रसन्न हुए वैसे ही जो कुछ

३७ राजा करता था उस से सब लोग प्रसन्न होते थे । सो उन सब लोगों ने बरन सारे इस्राएल ने भी उसी दिन जान लिया कि नेर के पुत्र अबनेर का मार डाला जाना

३८ राजा की ओर से नहीं हुआ । और राजा ने अपने कर्म्म-चारियों से कहा क्या तुम लोग नहीं जानते कि इस्राएल में आज के दिन एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा

३९ है । और यद्यपि मैं अभिषिक्त राजा हूं तौ भी आज निर्बल हूं और वे सरूयाह के पुत्र मुझ से अधिक प्रचण्ड हैं पर यहोवा बुराई करनेहारे को उस की बुराई के अनुसार ही पलटा दे ॥

४.

जब शाऊल के पुत्र ने सुना कि अब्नेर हेब्रोन में मारा गया तब उस के हाथ ढीले पड़ गये और सब इस्राएली भी घबरा गये।

२ शाऊल के पुत्र के तो दो जन थे जो दलों के प्रधान थे एक का नाम बाना और दूसरे का नाम रेकाब था ये दोनों बेरोतवासी बिन्यामीनी रिम्मोन के पुत्र थे क्योंकि

३ बेरोत भी बिन्यामीन के भाग में गिना जाता है, और बेरोती लोग गित्तैम को भाग गये और आज के दिन लों वहीं परदेशी होकर रहते हैं ॥

४ शाऊल के पुत्र योनातान के एक लंगड़ा बेटा था। वह पांच बरस का हुआ कि यिज्रेल से शाऊल और योनातान का समाचार आया तब उस की धाई उसे उठा कर भागी और उस के उतावली से भागने के कारण वह गिर के लंगड़ा हो गया और उस का नाम मपीबोशेत था ॥

५ उस बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना जाकर कड़े घाम के समय ईशबोशेत के घर में जब वह दोपहर

६ को विश्राम कर रहा था घुस गये । सो वे गेहूं ले जाने के बहाने से घर के बीच घुस गये और उस के पेट में मारा

(१) मूल में दल से ।

७ तब रेकाब और उस का भाई बाना भाग निकले। जब वे घर में घुसे और वह सोने की कोठरी में चारपाई पर सोता था तब उन्हों ने उसे मार डाला और उस का सिर काट लिया और उस का सिर लेकर रातोंरात अराबा ८ के मार्ग से चले। और वे ईशबोशेत का सिर हेब्रोन में दाऊद के पास ले जाकर राजा से कहने लगे देख शाऊल जो तेरा शत्रु और तेरे प्राण का गाहक था उस के पुत्र ईशबोशेत का यह सिर है सो आज के दिन यहोवा ने शाऊल और उस के वंश से मेरे प्रभु राजा का ९ पलटा लिया है। दाऊद ने बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और उस के भाई बाना को उत्तर देकर उन से कहा यहोवा जो मेरे प्राण को सारी विपत्तियों से छुड़ाता १० आया है उस के जीवन की सोंह; जब किसी ने यह जानकर कि मैं शुभ समाचार देता हूं सिक्लग में मुझ को शाऊल के मरने का समाचार दिया तब मैं ने उस को पकड़ कर घात कराया सो उस को समाचार का यही ११ बदला मिला। फिर जब दुष्ट मनुष्यों ने एक निर्दोष मनुष्य को उसी के घर में बरन उस की चारपाई ही पर घात किया तो मैं अब अवश्य ही उस के खून का पलटा तुम १२ से लूंगा और तुम्हें धरती पर से नाश कर डालूंगा। सो दाऊद ने जवानों को आज्ञा दी और उन्हों ने उन को घात करके उन के हाथ पांव काट दिये और उन की लोथों को हेब्रोन के पोखरे के पास टांग दिया तब ईशबोशेत के सिर को उठाकर हेब्रोन में अब्नेर की कबर में गाड़ दिया॥

(दाऊद के यरूशलेम में राज्य करने का आरम्भ)

५. तब इस्राएल के सब गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे २ सुन हम लोग और तू एक ही हाड़ मांस हैं। फिर अगले दिनों में जब शाऊल हमारा राजा था तब भी इस्राएल का अगुवा तू ही था और यहोवा ने तुझ से कहा कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा और इस्राएल का ३ प्रधान तू ही होगा। सो सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन में राजा के पास आये और दाऊद राजा ने उन के साथ हेब्रोन में यहोवा के साम्हने वाचा बांधी और उन्हों ने इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक किया॥

४ दाऊद तीस बरस का होकर राज्य करने लगा ५ और चालीस बरस तक राज्य करता रहा। साढ़े सात बरस तक तो उस ने हेब्रोन में यहूदा पर राज्य किया और तेंतीस बरस तक यरूशलेम में सारे इस्राएल और ६ यहूदा पर राज्य किया। तब राजा ने अपने जनों को साथ लिये हुए यरूशलेम को जाकर यबूसियों पर चढ़ाई की जो उस देश के निवासी थे। उन्हों ने यह समझ कर कि दाऊद यहां पैठ न सकेगा उस से कहा जब लों तू अन्धों और लंगड़ों को दूर न करे तब लों यहां पैठने न पाएगा। ७ तौभी दाऊद ने सिय्योन नाम गढ़ को ले लिया वही दाऊदपुर भी कहावता है। ८ उस दिन दाऊद ने कहा जो कोई यबूसियों को मारने चाहे सो चाहिये कि मोहड़ी से होकर चढ़े और अन्धे और लंगड़े जिन से दाऊद जी से घिन करता है उन्हें मारे। इस से यह कहावत चली कि अन्धे और लंगड़े भवन में आने न पाएंगे। ९ और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा और उस का नाम दाऊदपुर रक्खा और दाऊद ने चारों ओर मिल्लो से लेकर भीतर की ओर शहरपनाह बनवाई। १० और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहता था॥

११ और सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत और देवदारु की लकड़ी और बढ़ई और राज भेजे और उन्हों ने दाऊद के लिये एक भवन बनाया। १२ और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्थिर किया और अपनी इस्राएली प्रजा के निमित्त मेरा राज्य बढ़ाया है॥

१३ जब दाऊद हेब्रोन से आया उस के पीछे उस ने यरूशलेम की और और रखेलियां रख लीं और स्त्रियां कर लीं और उस के और बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १४ उस के जो सन्तान यरूशलेम में उत्पन्न हुए उन के ये नाम हैं अर्थात् शम्मू शोबाब नातान सुलैमान, १५ यिभार एलीशू, १६ नेपेग यापी एलीशामा एल्यादा और एलीपेलेत॥

१७ जब पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ तब सब पलिश्ती दाऊद की खोज में निकले यह सुनकर दाऊद गढ़ में चला गया। १८ तब पलिश्ती आकर रपाईम नाम तराई में फैल गये। १९ सो दाऊद ने यहोवा से पूछा क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर देगा यहोवा ने दाऊद से कहा चढ़ाई कर क्योंकि मैं निश्चय पलिश्तियों को तेरे हाथ कर दूंगा। २० सो दाऊद बालपरासीम को गया और दाऊद ने उन्हें वहीं मारा तब उस ने कहा यहोवा मेरे साम्हने होकर मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पड़ा है इस कारण उस ने उस स्थान का नाम बालपरासीम[१] रक्खा। २१ वहां उन्हों ने अपनी मूरतों को छोड़ दिया और दाऊद और उस के जन उन्हें उठा ले गये॥

२२ फिर दूसरी बार पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम नाम तराई में फैल गये। २३ जब दाऊद ने यहोवा से पूछा

(१) अर्थात् टूट पड़ने का स्थान।

तब उस ने कहा चढ़ाई न कर उन के पीछे से घूमकर
२४ तूत वृक्षों के साम्हने से उन पर छापा मार। और जब
तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी
आहट तुझे सुन पड़े तब यह जानकर फुर्ती करना कि
यहोवा पलिश्तियों की सेना के मारने को मेरे आगे अभी
२५ पधारा है। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार करके दाऊद
गेबा से लेकर गेजेर लों पलिश्तियों को मारता गया॥

(पवित्र संदूक का यरूशलेम में पहुँचाया जाना)

६. फिर दाऊद ने एक और बार इस्राएल में से सब बड़े बीरों को
२ जो तीस हजार थे इकट्ठा किया। तब दाऊद और जितने
लोग उस के संग थे वे सब उठकर यहूदा के बाले नाम
स्थान से चले कि परमेश्वर का वह संदूक ले आएं जो
करूबों पर विराजनेहारे सेनाओं के यहोवा का कहावता
३ है[१]। सो उन्हों ने परमेश्वर का संदूक एक नई गाड़ी पर
चढ़ाकर टीले पर रहनेहारे अबीनादाब के घर से निकाला
और अबीनादाब के उज्जा और अह्यो नाम दो पुत्र उस
४ नई गाड़ी को हांकने लगे। सो उन्हों ने उस को परमेश्वर के संदूक समेत टीले पर रहनेहारे अबीनादाब के
घर से बाहर निकाला और अह्यो संदूक के आगे आगे
५ चला। और दाऊद और इस्राएल का सारा घराना
यहोवा के आगे सनौवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार
के बाजे और वीणा सारंगियां डफ डमरू झांझ बजाते
६ रहे। जब वे नाकोन के खलिहान तक आये तब उज्जा
ने अपना हाथ परमेश्वर के संदूक की ओर बढ़ाकर उसे
७ थाम लिया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई। तब यहोवा
का कोप उज्जा पर भड़क उठा और परमेश्वर ने उस के
दोष के कारण उस को वहां ऐसा मारा कि वह वहां
८ परमेश्वर के संदूक के पास मर गया। तब दाऊद
अप्रसन्न हुआ इसलिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा
था और उस ने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा[२] रक्खा
९ यह नाम आज के दिन लों पड़ा है। और उस दिन दाऊद
यहोवा से डरकर कहने लगा यहोवा का संदूक मेरे यहां
१० क्योंकर आए। सो दाऊद ने यहोवा के संदूक को अपने
यहां दाऊदपुर में पहुंचाना न चाहा पर गतवासी ओबेदे-
११ दोम के यहां पहुंचाया। और यहोवा का संदूक गती
ओबेदेदोम के घर में तीन महीने रहा और यहोवा ने
ओबेदेदोम और उस के सारे घराने को आशिष दी।
१२ तब दाऊद राजा को यह बताया गया कि यहोवा ने
ओबेदेदोम के घराने पर और जो कुछ उस का है उस पर
भी परमेश्वर के संदूक के कारण आशिष दी है सो
दाऊद ने जाकर परमेश्वर के संदूक को ओबेदेदोम के
घर से दाऊदपुर में आनन्द के साथ पहुंचा दिया। जब १३
यहोवा के संदूक के उठानेहारे छः कदम चल चुके तब
दाऊद ने एक बैल और एक पोसा हुआ बछड़ा बलि
कराया। और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए १४
यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा। सो दाऊद १५
और इस्राएल का सारा घराना यहोवा के संदूक को जय
जयकार करते और नरसिंगा फूंकते हुए ले चला। जब १६
यहोवा का संदूक दाऊदपुर में आ रहा था तब शाऊल
की बेटी मीकल ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा
को यहोवा के सम्मुख नाचते कूदते देखा और उसे मन
ही मन तुच्छ जाना। सो लोग यहोवा का संदूक भीतर १७
ले आये और उस के स्थान में अर्थात् उस तंबू में रक्खा
जो दाऊद ने उस के लिये खड़ा कराया था और दाऊद ने
यहोवा के सन्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाये। जब १८
दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका तब उस ने
सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया।
तब उस ने सारी प्रजा को अर्थात् क्या स्त्री क्या पुरुष १९
सारी इस्राएली भीड़ के लोगों को एक एक रोटी और
एक एक टुकड़ा मांस और किशमिश की एक एक
टिकिया बंटवा दी। तब प्रजा के सब लोग अपने अपने
घर चले गये। तब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद २०
देने के लिए लौटा और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद
से मिलने को निकलकर कहने लगी आज इस्राएल
का राजा जब अपना शरीर अपने कर्म्मचारियों की
लौंडियों के साम्हने ऐसा उघाड़े हुए था जैसा कोई
निकम्मा अपना तन उघारे रहता है तब क्या ही प्रतापी
देख पड़ता था। दाऊद ने मीकल से कहा यहोवा जिस २१
ने तेरे पिता और उस के सारे घराने की सन्ती मुझ को
चुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का प्रधान होने को ठहरा
दिया है उस के सन्मुख मैं ऐसा खेला और मैं यहोवा के
सन्मुख खेला करूंगा भी। और इस से भी मैं अधिक २२
तुच्छ बनूंगा और अपने लेखे नीच ठहरूंगा और जिन
लौंडियों की तू ने चर्चा की वे भी मेरा आदरमान
करेंगी। और शाऊल की बेटी मीकल के मरने के दिन २३
लों उस के कोई सन्तान न हुआ॥

(दाऊद का मन्दिर बनवाने की इच्छा करना और यहोवा का दाऊद के वंश में सनातन राज्य स्थिर करने का वचन देना)

७. जब राजा अपने भवन में रहता था
और यहोवा ने उस को उस के
चारों ओर के सब शत्रुओं से बिश्राम दिया था, तब २

(१) मूल में जिस पर नाम करूबों पर बिराजनेहारे सेनाओं के यहोवा का नाम पुकारा गया। (२) अर्थात् उज्जा पर टूट पड़ना।

राजा नातान नाम नबी से कहने लगा देख मैं तो देवदारु के बने हुए घर में रहता हूं परन्तु परमेश्वर का ३ संदूक तम्बू में रहता है। नातान ने राजा से कहा जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर क्योंकि यहोवा तेरे संग ४ है। उसी दिन रात को यहोवा का यह वचन नातान के ५ पास पहुंचा कि, जाकर मेरे दास दाऊद से कह यहोवा यों कहता है कि क्या तू मेरे निवास के लिये घर ६ बनवाएगा। जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाया आज के दिन लों मैं कभी घर में नहीं ७ रहा तंबू के निवास में आया जाया करता हूं। जहां जहां मैं ने सारे इस्राएलियों के बीच आया जाया किया, क्या मैं ने कहीं इस्राएल के किसी गोत्र से जिसे मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल की चरवाही करने को ठहराया हो ऐसी बात कभी कही कि तुम ने मेरे लिये देवदारु का घर क्यों ८ नहीं बनवाया। सो अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं ने तो तुझे भेड़साला से और भेड़बकरियों के पीछे पीछे फिरने से इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान ९ हो जाए। और जहां कहीं तू आया गया वहां वहां मैं तेरे संग रहा और तेरे सारे शत्रुओं को तेरे साम्हने से नाश किया है। फिर मैं तेरे नाम को पृथिवी पर के बड़े बड़े १० लोगों के नामों के समान बड़ा कर दूंगा। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उस को स्थिर करूंगा कि वह अपने ही स्थान में बसी रहेगी और कभी चलायमान न होगी और कुटिल लोग उसे फिर दुःख न देने पाएंगे जैसे कि पहिले दिनों में, ११ बरन उस समय से भी जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल के ऊपर न्यायी ठहराता था और मैं तुझे तेरे सारे शत्रुओं से विश्राम दूंगा। और यहोवा तुझे यह भी बताता है कि १२ यहोवा तेरा घर बनाये रक्खेगा[१]। जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा तब मैं तेरे निज वंश को[२] तेरे पीछे खड़ा करके उस के १३ राज्य को स्थिर करूंगा। मेरे नाम का घर वही बनवाएगा १४ और मैं उस की राजगद्दी को सदा लों स्थिर रक्खूंगा। मैं उस का पिता ठहरूंगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा यदि वह अधर्म्म करे तो मैं उसे मनुष्यों के योग्य दण्ड से और १५ आदमियों के योग्य मार से ताड़ना दूंगा। पर मेरी करुणा उस पर से ऐसे न हटेगी जैसे मैं ने शाऊल पर से हटा १६ कर उस को तेरे आगे से दूर किया। बरन तेरा घराना और तेरा राज्य तेरे साम्हने सदा अटल बना रहेगा तेरी गद्दी सदा लों बनी रहेगी। इन सब बातों और इस सारे दर्शन १७ के अनुसार नातान ने दाऊद को समझा दिया॥

तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सन्मुख १८ बैठा और कहने लगा हे प्रभु यहोवा मैं तो क्या कहूं और मेरा घराना क्या है कि तू ने मुझे यहां लों पहुंचा दिया है। पर तौभी हे प्रभु यहोवा यह तेरी दृष्टि में १९ छोटी सी बात हुई क्योंकि तू ने अपने दास के घराने के विषय आगे के बहुत दिनों तक की चर्चा की है। और हे प्रभु यहोवा यह तो मनुष्य का नियम है। दाऊद तुझ २० से और क्या कह सकता है हे प्रभु यहोवा तू तो अपने दास को जानता है। तू ने अपने वचन के निमित्त २१ और अपने ही मन के अनुसार यह सब बड़ा काम किया है कि तेरा दास उस को जान ले। इस कारण हे २२ यहोवा परमेश्वर तू महान् है क्योंकि जो कुछ हम ने अपने कानों से सुना है उस के अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं और न तुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है। फिर २३ तेरी प्रजा इस्राएल के भी तुल्य कौन है वह तो पृथिवी भर में एक ही जाति है। उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया इसलिये कि वह अपना नाम करे और तुम्हारे लिये बड़े बड़े काम करे और तू अपनी प्रजा के साम्हने जिसे तू ने मिस्री आदि जाति जाति के लोगों और उन के देवताओं से छुड़ा लिया अपने देश के लिये भयानक काम करे। और तू ने अपनी प्रजा इस्राएल २४ को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया और हे यहोवा तू आप उस का परमेश्वर ठहर गया। सो अब हे २५ यहोवा परमेश्वर तू ने जो वचन अपने दास के और उस के घराने के विषय दिया है उसे सदा के लिये स्थिर कर और अपने कहे के अनुसार ही कर। और लोग यह कर २६ तेरे नाम की महिमा सदा किया करें कि सेनाओं का यहोवा इस्राएल के ऊपर परमेश्वर है। और तेरे दास दाऊद का घराना तेरे साम्हने अटल रहे। क्योंकि हे २७ सेनाओं के यहोवा हे इस्राएल के परमेश्वर तू ने यह कह कर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाये रखूंगा[३] इस कारण तेरे दास को तुझ से यह प्रार्थना करने का हियाव हुआ है। और अब हे प्रभु यहोवा तू २८ ही परमेश्वर है और तेरे वचन सत्य ठहरते हैं और तू ने अपने दास को यह भलाई करने का वचन दिया है। सो २९ अब प्रसन्न होकर अपने दास के घराने पर ऐसी आशिष दे कि वह तेरे सम्मुख सदा लों बना रहे क्योंकि हे प्रभु यहोवा तू ने ऐसा ही कहा है और तेरे दास का घराना तुझ से आशिष पाकर सदा लों धन्य रहे॥

(१) मूल में तेरे लिये घर बनाएगा। (२) मूल में तेरे वंश को जो तेरी अन्तड़ियों से निकलेगा।

(३) मूल में तेरे लिये घर बनाऊंगा।

(दाऊद के विजयों का संक्षेप वर्णन)

८. इस के पीछे दाऊद ने पलिश्तियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया और दाऊद ने पलिश्तियों की राजधानी की प्रभुता[1] २ उन के हाथ से छीन ली। फिर उस ने मोआबियों को भी जीत उन को भूमि पर लिटा कर डोरी से मापा तब दो डोरी के लोग मापकर घात किये और डोरी भर के लोग जीते छोड़ दिये। तब मोआबी दाऊद के अधीन ३ होकर भेंट ले आने लगे। फिर जब सोबा का राजा रहोब का पुत्र हददेजेर महानद के पास अपना राज्य[2] फिर ज्यों का त्यों करने को जा रहा था तब दाऊद ने उस को ४ जीत लिया। और दाऊद ने उस से एक हजार सात सौ सवार और बीस हजार प्यादे छीन लिये और सब रथवाले घोड़ों के सुम की नस कटवाई पर एक सौ रथवाले घोड़े ५ बचा रक्खे। और जब दमिश्क के अरामी सोबा के राजा हददेजेर की सहायता करने को आये तब दाऊद ने अरा- ६ मियों में से बाईस हजार पुरुष मारे। तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में के सिपाहियों की चौकियां बैठाई सो अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहां जहां दाऊद जाता वहां वहां यहोवा उस को ७ जिताता था। और हददेजेर के कर्म्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम को ८ आया। और बेतह और बेरैतै नाम हददेजेर के नगरों ९ से दाऊद राजा बहुत ही पीतल ले आया। और जब हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर की १० सारी सेना को जीत लिया, तब तोई ने योराम नाम अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उस का कुशल क्षेम पूछने और उसे इसलिये बधाई देने को भेजा कि उस ने हददेजेर में लड़ करके उस को जीत लिया था क्योंकि हददेजेर तोई से लड़ा करता था। और योराम ११ चांदी सोने और पीतल के पात्र लिये हुए आया। इन को दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रक्खा और वैसा ही अपनी जीती हुई सब जातियों के सोने १२ चांदी से भी किया, अर्थात् अरामियों मोआबियों अम्मोनियों पलिश्तियों और अमालेकियों के सोने चांदी को और रहोब के पुत्र सोबा के राजा हददेजेर की लूट को १३ रक्खा। और जब दाऊद लोनवाली तराई में अठारह हजार अरामियों को मारके लौट आया तब उस का बड़ा नाम १४ हो गया। फिर उस ने एदोम में सिपाहियों की चौकियां बैठाई सारे एदोम में उस ने सिपाहियों की चौकियां बैठाई सो सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गये। और दाऊद जहां जहां जाता वहां वहां यहोवा उस को जिताता था॥

(दाऊद के कर्म्मचारियों की नामावली)

१५ दाऊद तो सारे इस्राएल पर राज्य करता था और दाऊद अपनी सारी प्रजा के साथ न्याय और धर्म्म के काम १६ करता था। और प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योआब था इतिहास का लिखनेहारा अहीलूद का पुत्र १७ यहोशापात था, प्रधान याजक अहीतूब का पुत्र सादोक १८ और एब्यातार का पुत्र अहीमेलेक थे, मंत्री सरायाह था करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बना- याह था और दाऊद के पुत्र भी मंत्री[3] थे॥

(मपीबोशेत का ऊंचा पद प्राप्त करना)

९. दाऊद ने पूछा क्या शाऊल के घराने में से कोई अब लों बचा है जिस १ को मैं योनातान के कारण प्रीति दिखाऊं। शाऊल के २ घराने का तो सीबा नाम एक कर्म्मचारी था वह दाऊद के पास बुलाया गया और जब राजा ने उस से पूछा क्या तू सीबा है तब उस ने कहा हां तेरा दास वही ३ है। राजा ने पूछा क्या शाऊल के घराने में से कोई अब लों बचा है जिस को मैं परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊं सीबा ने राजा से कहा हां योनातान का एक ४ बेटा तो है जो लंगड़ा है। राजा ने उस से पूछा वह कहां है सीबा ने राजा से कहा वह तो लोदबार नगर में ५ अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर में रहता है। सो राजा दाऊद ने दूत भेजकर उस को लोदबार से अम्मीएल के ६ पुत्र माकीर के घर से बुलवा लिया। जब मपीबोशेत जो योनातान का पुत्र और शाऊल का पोता था दाऊद के पास आया तब मुंह के बल गिरके दण्डवत् की। दाऊद ने कहा हे मपीबोशेत उस ने कहा तेरे दास को क्या ७ आज्ञा। दाऊद ने उस से कहा मत डर तेरे पिता योनातान के कारण मैं निश्चय तुझ को प्रीति दिखाऊंगा और तेरे दादा शाऊल की सारी भूमि तुझे फेर दूंगा और ८ तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया कर। उस ने दण्डवत् करके कहा तेरा दास क्या है कि तू मुझ ऐसे ९ मरे कुत्ते की ओर दृष्टि करे। तब राजा ने शाऊल के कर्म्मचारी सीबा को बुलवाकर उस से कहा जो कुछ शाऊल और उस के सारे घराने का था सो मैं ने तेरे १० स्वामी के पोते को दे दिया है। सो तू अपने बेटों और सेवकों समेत उस की भूमि पर खेती करके उस की उपज ले आया करना कि तेरे स्वामी के पोते को भोजन मिला

(१) मूल में पलिश्तियों की माता का बाग।
(२) मूल में हाथ।
(३) वा याजक।

करे पर तेरे स्वामी का पोता मपीबोशेत मेरी मेज पर
११ नित्य भोजन किया करेगा। सीबा के तो पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे। सीबा ने राजा से कहा मेरा प्रभु राजा अपने दास को जो जो आज्ञा दे उन सभों के अनुसार तेरा दास करेगा। दाऊद ने कहा मपीबोशेत राजकुमारों की नाईं मेरी मेज पर भोजन किया करे।
१२ मपीबोशेत के भी मीका नाम एक छोटा बेटा था और सीबा के घर में जितने रहते थे सो सब मपीबोशेत की
१३ सेवा करते थे। और मपीबोशेत यरूशलेम में रहता था क्योंकि वह राजा की मेज पर नित्य भोजन किया करता था और वह दोनों पांवों का पंगुला था॥

(अम्मोनियों के साथ युद्ध होने और दाऊद के पाप में फंसने का वर्णन)

१० इस के पीछे अम्मोनियों का राजा मर गया और उस का हानून नाम
२ पुत्र उस के स्थान पर राजा हुआ। तब दाऊद ने यह सोचा कि जैसे हानून के पिता नाहाश ने मुझ को प्रीति दिखाई थी वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति दिखाऊंगा सो दाऊद ने अपने कई कर्म्मचारियों को उस के पास उस के पिता के विषय शांति देने के लिये भेज दिया। और दाऊद के कर्म्मचारी अम्मोनियों के देश में आये।
३ पर अम्मोनियों के हाकिम अपने स्वामी हानून से कहने लगे दाऊद ने जो तेरे पास शांति देनेहारे भेजे हैं सो क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने की मनसा से भेजे हैं क्या दाऊद ने अपने कर्म्मचारियों को तेरे पास इसी मनसा से नहीं भेजा कि इस नगर में ढूंढ़ढांढ़
४ करके और इस का भेद लेकर इस को उलट दें। सो हानून ने दाऊद के कर्म्मचारियों को पकड़ा और उन की आधी आधी डाढ़ी मुड़वाकर और आधे वस्त्र अर्थात्
५ नितम्ब लों कटवा कर उन को जाने दिया। इस का समाचार पाकर दाऊद ने लोगों को उन से मिलने के लिये भेजा क्योंकि वे बहुत लजाते थे और राजा ने यह कहा कि जब लों तुम्हारी डाढ़ियां बढ़ न जाएं तब लों यरीहो
६ में ठहरे रहो तब लौट आना। जब अम्मोनियों ने देखा कि हम दाऊद को घिनौने लगे हैं तब अम्मोनियों ने बेत्रहोब और सोबा के बीस हजार अरामी प्यादों को और हजार पुरुषों समेत माका के राजा को और बारह
७ हजार तोबी पुरुषों को वेतन पर बुलवाया। यह सुनकर दाऊद ने योआब और शूरबीरों की सारी सेना को
८ भेजा। तब अम्मोनी निकले और फाटक ही के पास पांति बांधी और सोबा और रहोब के अरामी और तोब
९ और माका के पुरुष उन से न्यारे मैदान में थे। यह देखकर कि आगे पीछे दोनों ओर हमारे विरुद्ध पांति बन्धी है योआब ने सब बड़े बड़े इस्राएली बीरों में से कितनों को छांटकर अरामियों के साम्हने उन की पांति
१० बन्धाई, और और लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया और उस ने अम्मोनियों के साम्हने उन की पांति बन्धाई।
११ फिर उस ने कहा यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें तो तू मेरी सहायता करना और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगें तो मैं आकर तेरी सहायता करूंगा।
१२ तू हियाव बांध और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें और यहोवा जैसा उस को अच्छा लगे वैसा करे।
१३ तब योआब और जो लोग उस के साथ थे अरामियों से युद्ध करने को निकट गये और वे उस के साम्हने से भागे।
१४ यह देख कर कि अरामी भाग गये हैं अम्मोनी भी अबीशै के साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब अम्मोनियों के पास से लौटकर यरूशलेम को आया।
१५ फिर यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गये अरामी इकट्ठे हुए।
१६ और हददेजेर ने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियों को बुलवाया और वे हददेजेर के सेनापति शोबक को अपना प्रधान बनाकर हेलाम को आये।
१७ इस का समाचार पाकर दाऊद ने सारे इस्राएलियों को इकट्ठा किया और यर्दन के पार होकर हेलाम में पहुंचा तब अराम दाऊद के विरुद्ध पांति बांधकर उस से लड़ा।
१८ पर अरामी इस्राएलियों से भागे और दाऊद ने अरामियों में से सात सौ रथियों और चालीस हजार सवारों को मार डाला और उन के सेनापति शोबक को ऐसा घायल किया कि वह वहीं मर गया।
१९ यह देखकर कि हम इस्राएल से हार गये हैं जितने राजा हददेजेर के अधीन थे उन सभों ने इस्राएल के साथ संधि की और उस के अधीन हो गये। और अरामी अम्मोनियों की और सहायता करने से डर गये॥

११ फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं उस समय अर्थात् बरस के आरंभ में दाऊद ने योआब को और उस के संग अपने सेवकों और सारे इस्राएलियों को भेजा और उन्हों ने अम्मोनियों को नाश किया और रब्बा नगर को घेर लिया। पर दाऊद यरूशलेम में रह गया॥

२ सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था और छत पर से उस को एक स्त्री जो अति सुन्दर थी नहाती हुई देख पड़ी।
३ जब दाऊद ने भेज कर उस स्त्री को पुछवाया तब किसी ने कहा क्या यह एलीआम की बेटी और हित्ती ऊरिय्याह

४ की स्त्री बतशेबा नहीं है? तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया और वह दाऊद के पास आई और उस ने उस से प्रसंग किया वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी तब ५ वह अपने घर लौट गई। सो वह स्त्री गर्भवती हुई तब ६ दाऊद के पास कहला भेजा कि मुझे गर्भ है। सो दाऊद ने योआब के पास कहला भेजा कि हित्ती ऊरिय्याह को मेरे पास भेज तब योआब ने ऊरिय्याह को ७ दाऊद के पास भेज दिया। जब ऊरिय्याह उस के पास आया तब दाऊद ने उस से योआब और सेना का ८ कुशल क्षेम और युद्ध का हाल पूछा। तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा अपने घर जाकर अपने पांव धो सो ऊरिय्याह राजभवन से निकला और उस के पीछे राजा ९ के पास से कुछ इनाम भेजा गया। पर ऊरिय्याह अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट १० गया और अपने घर न गया। जब दाऊद को यह समाचार मिला कि ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा क्या तू यात्रा करके नहीं आया सो ११ अपने घर क्यों नहीं गया। ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा जब संदूक और इस्राएल और यहूदा झोंपड़ियों में रहते हैं और मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे किये हुए हैं तो क्या मैं घर जाकर खाऊं पीऊं और अपनी स्त्री के साथ सोऊं तेरे जीवन की सोंह और तेरे प्राण की सोंह कि मैं ऐसा काम नहीं करने का। १२ दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा आज यहीं रह और कल मैं तुझे बिदा करूंगा सो ऊरिय्याह उस दिन और दूसरे १३ दिन भी यरूशलेम में रहा। तब दाऊद ने उसे नेवता दिया और उस ने उस के साम्हने खाया पिया और उस ने उसे मतवाला किया और सांझ को वह अपने स्वामी के सेवकों के संग अपनी चारपाई पर सोने को १४ निकला पर अपने घर न गया। बिहान को दाऊद ने योआब के नाम पर एक चिट्ठी लिख कर ऊरिय्याह के १५ हाथ से भेज दी। उस चिट्ठी में यह लिखा था कि सब से घोर युद्ध के साम्हने ऊरिय्याह को ठहराओ तब उसे छोड़ कर लौट आओ कि वह घायल होकर मर जाए। १६ और योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख भाल कर जिस स्थान में वह जानता था कि बीर हैं उसी में १७ ऊरिय्याह को ठहरा दिया। तब नगर के पुरुषों ने निकल कर योआब से युद्ध किया और लोगों में से अर्थात् दाऊद के सेवकों में से कितने खेत आये और उन में हित्ती १८ ऊरिय्याह भी मर गया। तब योआब ने भेजकर दाऊद १९ को युद्ध का सारा हाल बताया, और दूत को आज्ञा दी कि जब तू युद्ध का सारा हाल राजा को बता चुके,

२० तब यदि राजा जलकर कहने लगे तुम लोग लड़ने को नगर के ऐसे निकट क्यों गये क्या तुम न जानते थे कि २१ वे शहरपनाह पर से तीर छोड़ेंगे। यरुब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को किस ने मार डाला? क्या एक स्त्री ने शहरपनाह पर चक्की का उपरला पाट उस पर ऐसा न डाला कि वह तेबेस में मर गया फिर तुम शहरपनाह के ऐसे निकट क्यों गये तो तू यों कहना कि तेरा दास २२ ऊरिय्याह हित्ती भी मर गया। सो दूत चल दिया और जाकर दाऊद से योआब की सारी बातें बर्णन कीं। २३ दूत ने दाऊद से कहा कि वे लोग हम पर प्रबल होकर मैदान में हमारे पास निकल आये फिर हम ने उन्हें फाटक २४ लों खदेड़ा। तब धनुर्धारियों ने शहरपनाह पर से तेरे जनों पर तीर छोड़े और राजा के कितने जन मर गये २५ और तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती भी मर गया। दाऊद ने दूत से कहा योआब से यों कहना कि इस बात के कारण उदास न हो क्योंकि तलवार जैसे इस को वैसे उस को नाश करती है सो तू नगर के विरुद्ध अधिक दृढ़ता से २६ लड़कर उसे उलट दे और तू उसे हियाव बंधाना। जब ऊरिय्याह की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया तब २७ वह अपने पति के लिये रोने पीटने लगी। और जब उस के विलाप के दिन बीत चुके तब दाऊद ने भेजकर उस को अपने घर में बुलवा रख लिया सो वह उस की स्त्री हो गई और बेटा जनी। पर यह काम जो दाऊद ने किया सो यहोवा को बुरा लगा॥

१२. सो यहोवा ने दाऊद के पास नातान को भेजा और वह उस के पास जाकर कहने लगा एक नगर में दो मनुष्य रहते थे जिन २ में से एक धनी और एक निर्धन था। धनी के पास तो ३ बहुत सी भेड़बकरियां और गाय बैल थे। पर निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ कुछ भी न था और उस को उस ने मोल लेकर जिलाया था और वह उस के यहां उस के बालबच्चों के साथ ही बढ़ी थी वह उस के टुकड़े में से खाती और उस के कटोरे में से पीती और उस की गोद में सोती थी और वह उस की बेटी सी बनी ४ थी। और धनी के पास एक बटोही आया और उस ने उस बटोही के लिये जो उस के पास आया था भोजन बनवाने को अपनी भेड़बकरियों वा गाय बैलों में से कुछ न लिया पर उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर उस जन के लिये जो उस के पास आया था भोजन बन- ५ वाया। तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का और उस ने नातान से कहा यहोवा के जीवन की सोंह जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया सो प्राणदण्ड के योग्य

६ है। और उस को वह भेड़ की बच्ची का चौगुणा भर देना होगा इसलिये उस ने ऐसा काम किया और कुछ दया नहीं की॥

७ तब नातान ने दाऊद से कहा तू ही वह मनुष्य है। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं ने तेरा अभिषेक कराके तुझे इस्राएल का राजा ठहराया ८ और मैं ने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया। फिर मैं ने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया और तेरे स्वामी की स्त्रियां तेरे भोग के लिये दीं और मैं ने इस्राएल और यहूदा का घराना तुझे दिया था और यदि यह थोड़ा ९ था तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देनेवाला था। तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उस के लेखे बुरा है हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात किया और उस की स्त्री को अपनी कर लिया है और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मार डाला १० है। सो अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी क्योंकि तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की ११ स्त्री को अपनी स्त्री कर लिया है। यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा और तेरी स्त्रियों को तेरे साम्हने लेकर दूसरे को दूंगा और वह दिन दुपहरी तेरी स्त्रियों से कुकर्म्म करेगा। १२ तू ने तो वह काम छिपाकर किया पर मैं यह काम सारे १३ इस्राएलियों के साम्हने दिनदुपहरी कराऊंगा। तब दाऊद ने नातान से कहा मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहा यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया १४ है तू न मरेगा। तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का वा बड़ा अवसर दिया है इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है सो १५ अवश्य ही मरेगा। तब नातान अपने घर चला गया॥

और जो बच्चा ऊरिय्याह की स्त्री दाऊद का जन्माया जनी थी वह यहोवा का मारा बहुत रोगी हो १६ गया। सो दाऊद उस लड़के के लिये परमेश्वर से बिनती करने लगा और उपवास किया और भीतर जाकर रात १७ भर भूमि पर पड़ा रहा। तब उस के घराने के पुरनिये उठकर उसे भूमि पर से उठाने के लिये उस के पास गये पर उस ने नाह की और उन के संग रोटी न खाई। १८ सातवें दिन बच्चा मर गया और दाऊद के कर्म्मचारी उस को बच्चे के मरने का समाचार देने से डरे उन्हों ने तो कहा था कि जब लों बच्चा जीता रहा तब लों उस ने हमारे समझाने पर मन न लगाया यदि हम उस को बच्चे के मर जाने का हाल सुनाएं तो वह बहुत ही १९ अधिक दुःखी होगा। अपने कर्म्मचारियों को आपस में फुसफुसाते देखकर दाऊद ने जान लिया कि बच्चा मर गया सो दाऊद ने अपने कर्म्मचारियों से पूछा क्या बच्चा मर गया? उन्हों ने कहा हां मर गया है। २० तब दाऊद ने भूमि पर से उठ नहा तेल लगा वस्त्र बदल यहोवा के भवन जाकर दण्डवत् की फिर अपने भवन में आया और उस के आज्ञा देने पर रोटी उस को परोसी गई और उस ने भोजन किया। २१ तब उस के कर्म्मचारियों ने उस से पूछा तू ने यह क्या काम किया है जब लों बच्चा जीता रहा तब लों तू उपवास करता हुआ रोता रहा पर ज्योंही बच्चा मर गया त्योंही तू उठकर भोजन करने लगा। २२ उस ने उत्तर दिया कि जब लों बच्चा जीता रहा तब लों तो मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा कि क्या जानिये यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीता रहे। २३ पर अब वह मर गया फिर मैं उपवास क्यों करूं क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूं मैं तो उस के पास जाऊंगा पर वह मेरे पास लौट न आएगा। २४ तब दाऊद ने अपनी स्त्री बतशेबा को शांति दी और उस के पास जाकर उस से प्रसंग किया और वह बेटा जनी और उस ने उस का नाम सुलैमान रक्खा और यहोवा ने उस से प्रेम रक्खा। २५ और उस ने नातान नबी के द्वारा भेज दिया और उस ने यहोवा के कारण उस का नाम यदीद्याह[१] रक्खा॥

२६ और योआब ने अम्मोनियों के रब्बा नगर से लड़कर २७ राजनगर को ले लिया। तब योआब ने दूतों से दाऊद के पास यह कहला भेजा कि मैं रब्बा से लड़ा और जलवाले २८ नगर को ले लिया है। सो अब रहे हुए लोगों को इकट्ठा करके नगर के विरुद्ध छावनी डालकर उसे भी ले ले ऐसा न हो कि मैं उसे ले लूं और वह मेरे नाम पर कहलाए[२]। २९ सो दाऊद सब लोगों को इकट्ठा करके रब्बा को गया और ३० उस से युद्ध करके उसे ले लिया। तब उस ने उन के राजा[३] का मुकुट जो तौल में किक्कार भर सोने का था और उस में मणि जड़े थे उस को उस के सिर पर से उतारा ३१ और वह दाऊद के सिर पर रक्खा गया। फिर उस ने उस नगर की बहुत ही लूट पाई। और उस ने उस के रहनेहारों को निकालकर आरों से दो दो टुकड़े कराया और लोहे के हेंगे उन पर फिरवाये और लोहे की कुल्हाड़ियों से उन्हें कटवाया और ईंट के पजावे पर से चलवाया[४] और अम्मोनियों के सब नगरों से भी उस ने वैसा ही किया। तब दाऊद सारे लोगों समेत यरूशलेम को लौट आया॥

(१) अर्थात् यहोवा का प्रिय।
(२) मूल में मेरा नाम उस पर पुकारा जावे। (३) वा मल्काम।
(४) वा आरों लोहे के हेंगों और लोहे की कुल्हाड़ियों के काम पर लगाया और उन से ईंट के पजावे में परिश्रम कराया।

(अम्नोन का कुकर्म्म करना और मार डाला जाना)

१३. इस के पीछे तामार नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहिन थी उस पर दाऊद का पुत्र अम्नोन मोहित हुआ। २ और अम्नोन अपनी बहिन तामार के कारण ऐसा विकल हो गया कि बीमार पड़ गया क्योंकि वह कुंवारी थी और उस के साथ कुछ करना अम्नोन को कठिन जान पड़ता ३ था। अम्नोन के योनादाब नाम एक मित्र था जो दाऊद के भाई शिमा का बेटा था और वह बड़ा चतुर था। ४ सो उस ने अम्नोन से कहा हे राजकुमार क्या कारण है कि तू दिन दिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा अम्नोन ने उस से कहा मैं तो अपने भाई अबशालोम की बहिन तामार पर मोहित हूं। ५ योनादाब ने उस से कहा अपने पलंग पर लेट कर बीमार बन और जब तेरा पिता तुझे देखने को आए तब उस से कहना मेरी बहिन तामार आकर मुझे रोटी खिलाए और भोजन को मेरे साम्हने बनाए कि मैं उस को देखकर ६ उस के हाथ से खाऊं। सो अम्नोन लेटकर बीमार बना और जब राजा उसे देखने आया तब अम्नोन ने राजा से कहा मेरी बहिन तामार आकर मेरे देखते दो पूरी ७ बनाए कि मैं उस के हाथ से खाऊं। सो दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह कहला भेजा कि अपने भाई अम्नोन ८ के घर जाकर उस के लिये भोजन बना। तब तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई और वह पड़ा हुआ था सो उस ने आटा लेकर गूंधा और उस के देखते पूरियां ९ बनाकर पकाई। तब उस ने थाल लेकर उन को उसे परोसा पर उस ने खाने से नाह की तब अम्नोन ने कहा मेरे आस पास से सब लोगों को निकाल दो तब सब लोग १० उस के पास से निकल गये। तब अम्नोन ने तामार से कहा भोजन को कोठरी में ले आ कि मैं तेरे हाथ से खाऊं सो तामार अपनी बनाई हुई पूरियों को उठाकर ११ अपने भाई अम्नोन के पास कोठरी में ले गई। जब वह उन को उस के खाने के लिये निकट ले गई तब उस ने उसे पकड़कर कहा हे मेरी बहिन आ मुझ से मिल। १२ उस ने कहा हे मेरे भाई ऐसा नहीं मुझे भ्रष्ट न कर क्योंकि इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं चाहिये ऐसी १३ मूढ़ता का काम न कर। और फिर मैं अपनी नामधराई लिये हुए कहां जाऊंगी और तू इस्राएलियों में एक मूढ़ गिना जाएगा सो राजा से बातचीत कर वह मुझ को १४ तुझे ब्याह देने से नाह न करेगा। पर उस ने उस की न सुनी पर उस से बलवान होने के कारण उस के साथ १५ कुकर्म्म करके उसे भ्रष्ट किया। तब अम्नोन उस से अत्यन्त बैर रखने लगा यहां लों कि यह बैर उस के पहिले मोह से बढ़कर हुआ सो अम्नोन ने उस से कहा उठकर १६ चली जा। उस ने कहा ऐसा नहीं क्योंकि यह बड़ा उपद्रव अर्थात मुझे निकाल देना उस पहिले से बढ़ कर है जो तू १७ ने मुझ से किया है। पर उस ने उस की न सुनी। तब उस ने अपने टहलुए जवान को बुलाकर कहा इस स्त्री को मेरे पास से बाहर निकाल दे और उस के पीछे १८ किवाड़ में चिटकनी लगा। वह तो रंगबिरंगी कुर्ती पहिने थी क्योंकि जो राजकुंवारियां कुंआरी रहती थीं सो ऐसे ही वस्त्र पहिनती थीं सो अम्नोन के टहलुए ने उसे बाहर निकालकर उस के पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दी। १९ तब तामार ने अपने सिर पर राख डाली और अपनी रंगबिरंगी कुर्ती को फाड़ डाला और सिर पर हाथ रक्खे २० चिल्लाती हुई चली गई। उस के भाई अबशालोम ने उस से पूछा क्या तेरा भाई अम्नोन तेरे साथ रहा है पर अब हे मेरी बहिन चुप रह वह तो तेरा भाई है इस बात की चिन्ता न कर। तब तामार अपने भाई अबशालोम के घर २१ में मन मारे बैठी रही। जब ये सारी बातें दाऊद राजा २२ के कान पड़ीं तब वह बहुत जल उठा। और अबशालोम ने अम्नोन से भला बुरा कुछ न कहा क्योंकि अम्नोन ने उस की बहिन तामार को भ्रष्ट किया था इस कारण अबशालोम उस से बैर रखता था॥

२३ दो बरस के बीतने पर अबशालोम ने एप्रैम निकट के बाल्हासोर में अपनी भेड़ों की ऊन कतराया और अबशा- २४ लोम ने सब राजकुमारों को नेवता दिया। वह राजा के पास जाकर कहने लगा बिनती यह है कि तेरे दास की भेड़ों की ऊन कतरी जाती है सो राजा अपने कर्म्मचारियों २५ समेत अपने दास के संग चले। राजा ने अबशालोम से कहा हे मेरे बेटे ऐसा नहीं हम सब न चलेंगे न हो कि तुझे अधिक कष्ट हो। तब अबशालोम ने उसे बिनती करके दबाया पर उस ने जाने को नकारा तौभी उसे २६ आशीर्वाद दिया। तब अबशालोम ने कहा यदि तू नहीं तो मेरे भाई अम्नोन को हमारे संग जाने दे। राजा ने २७ उस से पूछा वह तेरे संग क्यों चले। पर अबशालोम ने उसे ऐसा दबाया कि उस ने अम्नोन और सब राजकुमारों २८ को उस के साथ जाने दिया। और अबशालोम ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि सावधान रहो और जब अम्नोन दाखमधु पीकर नशे में आ जाए और मैं तुम से कहूं अम्नोन को मारो तब निडर होकर उस को मार डालना क्या इस आज्ञा का देनेहारा मैं नहीं हूं। हियाव बांध २९ कर पुरुषार्थ करना। सो अबशालोम के सेवकों ने अम्नोन से अबशालोम की आज्ञा के अनुसार किया। तब सब

राजकुमार उठ अपने अपने खच्चर पर चढ़कर भाग गये ।
३० वे मार्ग ही में थे कि दाऊद को यह हूहा सुन पड़ा कि अबशालोम ने सब राजकुमारों को मार डाला और उन
३१ में से एक भी नहीं बचा । सो दाऊद ने उठकर अपने वस्त्र फाड़े और भूमि पर गिर पड़ा और उस के सब
३२ कर्म्मचारी वस्त्र फाड़े हुए उस के पास खड़े रहे । तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनादाब ने कहा मेरा प्रभु यह न समझे कि सब जवान अर्थात् राजकुमार मार डाले गये हैं केवल अम्नोन मारा गया है क्योंकि जिस दिन उस ने अबशालोम की बहिन तामार को भ्रष्ट किया उसी दिन से अबशालोम की आज्ञा से ऐसी ही
३३ बात ठनी थी । सो अब मेरा प्रभु राजा अपने मन में यह समझ कर कि सब राजकुमार मर गये उदास न
३४ हो क्योंकि केवल अम्नोन ही मर गया है । इतने में अबशालोम भाग गया । और जो जवान पहरा देता था उस ने आंखें उठाकर देखा कि पीछे की ओर से पहाड़ के
३५ पास के मार्ग से बहुत लोग चले आते हैं । तब योनादाब ने राजा से कहा देख राजकुमार तो आ गये हैं जैसा तेरे
३६ दास ने कहा था वैसा ही हुआ । वह कह ही चुका था कि राजकुमार पहुंच गये और चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे और राजा भी अपने सब कर्म्मचारियों समेत बिलक बिलक
३७ रोने लगा । अबशालोम तो भाग कर गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के पास गया । और दाऊद अपने पुत्र के लिये दिन दिन बिलाप करता रहा ॥

(अबशालोम की राजद्रोह की गोष्ठी)

३८ जब अबशालोम भागकर गशूर को गया तब वहां
३९ तीन बरस रहा । और दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही क्योंकि अम्नोन जो मर गया था इस से उस ने उस के विषय शांति पाई ॥

१४. **और** सरूयाह का पुत्र योआब ताड़ गया कि राजा का मन अब
२ शालोम की ओर लगा है । सो योआब ने तको नगर में दूत भेजकर वहां से एक बुद्धिमान् स्त्री बुलवाई और उस से कहा शोक करनेवाली बन अर्थात् शोक का पहिरावा पहिन और तेल न लगा पर ऐसी स्त्री बन जो
३ बहुत दिन से मुए के लिये विलाप करती रही हो । तब राजा के पास जाकर ऐसी ऐसी बातें कहना । और योआब ने उस को जो कुछ कहना था सो सिखा
४ दिया । जब वह तकोइन राजा से बातें करने लगी तब मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहने लगी
५ राजा की दोहाई । राजा ने उस से पूछा तुझे क्या चाहिये उस ने कहा सचमुच मेरा पति मर गया और
६ मैं विधवा हो गई । और तेरी दासी के दो बेटे थे और उन दोनों ने मैदान में मारपीट की और उन का छुटानेहारा कोई न था, सो एक ने दूसरे को ऐसा मारा
७ कि वह मर गया । और सुन सारे कुल के लोग तेरी दासी के विरुद्ध उठकर यह कहते हैं कि जिस ने अपने भाई को घात किया उस को हमें सौंप दे कि उस के मारे हुए भाई के प्राण के पलटे में उस को प्राणदण्ड दें और वारिस को भी नाश करें सो वे मेरे अंगारे को जो बच गया है बुझाएंगे और मेरे पति का नाम और
८ सन्तान धरती पर से मिट एंगे । राजा ने स्त्री से कहा
९ अपने घर जा और मैं तेरे विषय आज्ञा दूंगा । तकोइन ने राजा से कहा हे मेरे प्रभु हे राजा दोष मुझी को और मेरे पिता के घराने ही को लगे और राजा अपनी
१० गद्दी समेत निर्दोष ठहरे । राजा ने कहा जो कोई तुझ से कुछ बोले उस को मेरे पास ला तब वह फिर
११ तुझे छूने न पाएगा । उस ने कहा राजा अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करे कि खून का पलटा लेनेहारा और नाश करने न पाए और मेरे बेटे का नाश न होने पाए । उस ने कहा यहोवा के जीवन की सोंह तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा ।
१२ स्त्री बोली तेरी दासी अपने प्रभु राजा से एक बात कहने
१३ पाए । उस ने कहा कहे जा । स्त्री कहने लगी फिर तू ने परमेश्वर की प्रजा की हानि के लिये ऐसी ही युक्ति क्यों की है राजा ने जो यह वचन कहा है इस से वह दोषी सा ठहरता है क्योंकि राजा अपने निकाले हुए को
१४ लौटा नहीं लाता । हम को तो मरना ही है और भूमि पर गिरे हुए जल के समान ठहरेंगे जो फिर उठाया नहीं जाता तौभी परमेश्वर प्राण नहीं लेता बरन ऐसी युक्ति करता है कि निकाला हुआ उस के पास से निकाला
१५ हुआ न रहे । और अब मैं जो अपने प्रभु राजा से यह बात कहने को आई हूं इस का कारण यह है कि लोगों ने मुझे डरा दिया था सो तेरी दासी ने सोचा कि मैं राजा से बोलूंगी क्या जानिये राजा अपनी दासी की
१६ बिनती को पूरी करे । निःसंदेह राजा सुनकर अपनी दासी को उस मनुष्य के हाथ से बचाएगा जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को परमेश्वर के भाग में से नाश
१७ करना चाहता है । सो तेरी दासी ने सोचा कि मेरे प्रभु राजा के वचन से शांति मिले क्योंकि मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के किसी दूत की नाईं भले बुरे का विवेक कर सकता है सो तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहे ।
१८ राजा ने उत्तर देकर उस स्त्री से कहा जो बात मैं तुझ से पूछता हूं सो मुझ से न छिपा । स्त्री ने कहा मेरा

१९ प्रभु राजा कहे जाए। राजा ने पूछा इस बात में क्या योआब तेरा संगी है। स्त्री ने उत्तर देकर कहा हे मेरे प्रभु हे राजा तेरे प्राण की सौंह कि जो कुछ मेरे प्रभु राजा ने कहा है उस से कोई न दहिनी ओर मुड़ सकता है न बाईं तेरे दास योआब ही ने मुझे आज्ञा दी और ये २० सब बातें उसी ने तेरी दासी को सिखाईं। तेरे दास योआब ने यह काम इस लिये किया कि बात का रंग बदले और मेरा प्रभु परमेश्वर के एक दूत के तुल्य बुद्धिमान् है यहां तक कि धरती पर जो कुछ होता है २१ उस सब को वह जानता है। तब राजा ने योआब से कहा सुन मैं ने यह बात मानी है सो जाकर अबशालोम २२ जवान को लौटा ला। तब योआब ने भूमि पर मुंह के बल गिर दण्डवत् कर राजा को आशीर्वाद दिया और योआब कहने लगा हे मेरे प्रभु हे राजा आज तेरा दास जान गया कि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है क्योंकि २३ राजा ने अपने दास की बिनती सुनी है। सो योआब उठकर गशूर को गया और अबशालोम को यरूशलेम २४ ले आया। तब राजा ने कहा वह अपने घर जाकर रहे और मेरा दर्शन न पाए। सो अबशालोम अपने घर जा रहा और राजा का दर्शन न पाया॥

२५ सारे इस्राएल में सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा योग्य अबशालोम के तुल्य और कोई न था बरन उस में २६ नख से सिख लों कुछ दोष न था। और वह बरसएं दिन अपना सिर मुंड़ाता था उस के बाल जो उस को भारी जान पड़ते थे इस कारण वह उसे मुंड़ाता था सो जब जब वह उसे मुंड़ाता तब तब अपने सिर के बाल तौल-कर राजा के तौल के अनुसार दो सौ शेकेल भर पाता २७ था। और अबशालोम के तीन बेटे और तामार नाम एक बेटी उत्पन्न हुई थी और यह रूपवती स्त्री थी॥

२८ सो अबशालोम राजा का दर्शन बिना पाये यरू-२९ शलेम में दो बरस रहा। तब अबशालोम ने योआब को बुलवा भेजा कि उसे राजा के पास भेजे पर योआब ने उस के पास आने से नाह की और उस ने उसे दूसरी बार ३० बुलवा भेजा पर तब भी उस ने आने से नाह की। तब उस ने अपने सेवकों से कहा सुनो योआब का एक खेत मेरी भूमि के निकट है और उस में उस का जव खड़ा है तुम जाकर उस में आग लगाओ। सो अबशालोम के ३१ सेवकों ने उस खेत में आग लगाई। तब योआब उठ अबशालोम के घर में उस के पास जाकर उस से पूछने लगा तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई है। ३२ अबशालोम ने योआब से कहा मैं ने तो तेरे पास यह कहला भेजा था कि यहां आ कि मैं तुझे राजा के पास यह कहने को भेजूं कि मैं गशूर से क्यों आया मैं अब लों वहां रहता तो अच्छा होता सो अब राजा मुझे दर्शन दे और यदि मैं दोषी हूं तो वह मुझे मार डाले। सो ३३ योआब ने राजा के पास जाकर उस को यह बात सुनाई और राजा ने अबशालोम को बुलवाया और वह उस के पास गया और उस के सन्मुख भूमि पर मुंह के बल गिर के दण्डवत् की और राजा ने अबशालोम को चूमा॥

१५.

इस के पीछे अबशालोम ने रथ और घोड़े और अपने आगे आगे दौड़नेवाले पचास मनुष्य रख लिये। फिर अबशालोम २ सबेरे उठकर फाटक के मार्ग के पास खड़ा हुआ करता था और जब जब कोई मुद्दई राजा के पास न्याय के लिये आता तब तब अबशालोम उस को पुकारके पूछता था तू किस नगर से आता है और वह कहता था कि तेरा दास इस्राएल के फुलाने गोत्र का है। तब अबशा- ३ लोम उस से कहता था कि सुन तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का है पर राजा की ओर से तेरी सुननेहारा कोई नहीं है। फिर अबशालोम यह भी कहा करता था ४ कि भला होता कि मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता कि जितने मुकद्दमावाले होते सो सब मेरे ही पास आते और मैं उन का न्याय चुकाता। फिर जब कोई उसे ५ दण्डवत् करने को निकट आता तब वह हाथ बढ़ाकर उस को पकड़के चूम लेता था। और जितने इस्राएली राजा ६ के पास अपना मुकद्दमा तै करने को आते उन सभों से अबशालोम ऐसा ही व्यवहार करता था सो अबशालोम ने इस्राएली मनुष्यों के मन को हर लिया॥

चार[1] बरस के बीते पर अबशालोम ने राजा से ७ कहा मुझे हेब्रोन जाकर अपनी उस मन्नत को पूरी करने दे जो मैं ने यहोवा की मानी है। तेरा दास तो जब ८ आराम के गशूर में रहता था तब यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम को लौटा ले जाए तो मैं यहोवा की उपासना करूंगा। राजा ने उस से कहा कुशलक्षेम से जा सो वह चलकर ९ हेब्रोन को गया। तब अबशालोम ने इस्राएल के सारे १० गोत्रों में यह कहने को भेदिये भेजे कि जब नरसिंगे का शब्द तुम को सुन पड़े तब कहना कि अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ। और अबशालोम के संग दो सौ नेव- ११ तहरी यरूशलेम से गये वे सीधे मन से उस का भेद बिना जाने गये। फिर जब अबशालोम का यज्ञ हुआ १२ तब उस ने गीलोवासी अहीतोपेल को जो दाऊद का

(१) वा चालीस।

मंत्री था बुलवा भेजा कि वह अपने नगर गीलो से आए। और राजद्रोह की गोष्ठी ने बल पकड़ा क्योंकि अबशालोम के पक्ष के लोग बढ़ते गये ॥

(दाऊद का भागना)

१३ तब किसी ने दाऊद के पास आकर यह समाचार दिया कि इस्राएली मनुष्यों के मन अबशालोम की ओर १४ हो गये हैं। तब दाऊद ने अपने सब कर्म्मचारियों से जो यरूशलेम में उस के संग थे कहा आओ हम भाग चलें नहीं तो हम में से कोई अबशालोम से न बचेगा सो फुर्ती करके चलो ऐसा न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ ले और हमारी हानि करे और इस नगर को तलवार १५ से मार ले। राजा के कर्म्मचारियों ने उस से कहा जैसा हमारा प्रभु राजा अच्छा जाने वैसा ही करने के लिये १६ तेरे दास तैयार हैं। तब राजा निकल गया और उस के पीछे उस का सारा घराना निकला और राजा दस रखेलियों को भवन की चौकसी करने के लिये छोड़ गया। १७ सो राजा निकल गया और उस के पीछे[1] सब लोग १८ निकले और वे बेतमेर्हक[2] में ठहर गये। और उस के सब कर्म्मचारी उस के पास से होकर आगे गये और सब करेती और सब पलेती और सब गती अर्थात् जो छः सौ पुरुष गत से उस के पीछे हो लिये थे सो सब राजा के १९ साम्हने होकर आगे चले। तब राजा ने गती इत्तै से पूछा हमारे संग तू क्यों चलता है लौटकर राजा के पास रह क्योंकि तू परदेशी और अपने देश से दूर है सो अपने स्थान को २० लौट जा, तू तो कल ही आया है क्या मैं आज तुझे अपने साथ मारा मारा फिराऊं मैं तो जहां जा सकूं वहां जाऊंगा तू लौट जा और अपने भाइयों को भी लौटा दे ईश्वर की २१ करुणा और सच्चाई तेरे संग रहे। इत्तै ने राजा को उत्तर देकर कहा यहोवा के जीवन की सोंह और मेरे प्रभु राजा के जीवन की सोंह जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहे चाहे मरने के लिये हो चाहे जीते रहने के लिये २२ उसी स्थान में तेरा दास रहेगा। तब दाऊद ने इत्तै से कहा पार चल सो गती इत्तै अपने सारे जनों और अपने २३ साथ के सब बाल बच्चों समेत पार हो गया। सब रहनेहारे[3] चिल्ला चिल्लाकर रो रहे थे और सब लोग पार हुए और राजा भी किद्रोन नाम नाले के पार हुआ और सब लोग नाले के पार जंगल के मार्ग की ओर पार २४ होकर चले। तब क्या देखने में आया कि सादोक भी और उस के संग सब लेवीय परमेश्वर की वाचा का संदूक उठाये हुए हैं और उन्हों ने परमेश्वर के संदूक को धर दिया तब एब्यातार चढ़ा और जब लों सब लोग नगर २५ से न निकले तब लों वहीं रहा। तब राजा ने सादोक से कहा परमेश्वर के संदूक को नगर में लौटा ले जा यदि यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो वह मुझे लौटाकर २६ उस को और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा। पर यदि वह मुझ से ऐसा कहे कि मैं तुझ से प्रसन्न नहीं तौ भी मैं हाजिर हूं जैसा उस को भाए वैसा ही वह मेरे २७ साथ बर्त्ताव करे। फिर राजा ने सादोक याजक से कहा क्या तू दर्शी नहीं है सो कुशलक्षेम से नगर में लौट जा और तेरा पुत्र अहीमास और एब्यातार का पुत्र योनातान २८ दोनों तुम्हारे संग लौटें। सुनो मैं जङ्गल के घाट के पास तब लों ठहरा रहूंगा जब लों तुम लोगों से मुझे हाल का २९ समाचार न मिले। सो सादोक और एब्यातार ने परमेश्वर के संदूक को यरूशलेम में लौटा दिया और आप वहीं रहे ॥

३० तब दाऊद जलपाइयों के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढांपे नंगे पांव रोता हुआ चढ़ने लगा और जितने लोग ३१ उस के संग थे सो भी सिर ढांपे रोते हुए चढ़ गये। तब दाऊद को यह समाचार मिला कि अबशालोम के संगी राजद्रोहियों के साथ अहीतोपेल है। दाऊद ने कहा हे यहोवा अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता की बना दे। ३२ जब दाऊद चोटी लों पहुंचा जहां परमेश्वर को दण्डवत् किया करते थे तब एरेकी हूशै अंगरखा फाड़े सिर पर ३३ मिट्टी डाले हुए उस से मिलने को आया। दाऊद ने उस से कहा यदि तू मेरे संग आगे जाए तब तो मेरे लिये भार ३४ ठहरेगा। पर यदि तू नगर को लौट कर अबशालोम से कहने लगे हे राजा मैं तेरा कर्म्मचारी हूंगा जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का कर्म्मचारी रहा वैसा ही अब तेरा हूंगा तो तू मेरे हित के लिये अहीतोपेल की सम्मति को निष्फल ३५ कर सकेगा। और क्या वहां तेरे संग सादोक और एब्यातार याजक न रहेंगे सो राजभवन में से जो हाल तुझे सुन पड़े उसे सादोक और एब्यातार याजकों को बताया ३६ करना। उन के साथ तो उन के दो पुत्र अर्थात् सादोक का पुत्र अहीमास और एब्यातार का पुत्र योनातान वहां रहेंगे सो जो समाचार तुम लोगों को मिले उसे मेरे पास ३७ उन्हीं के हाथ भेजा करना। सो दाऊद का मित्र हूशै नगर में गया और अबशालोम भी यरूशलेम में पहुंच गया ॥

१६. दाऊद चोटी पर से थोड़ी दूर बढ़ गया था कि मपीबोशेत का कर्म्मचारी सीबा एक जोड़ी जीन बांधे हुए गदहों पर दो

(१) मूल में उस के पांवों पर। (२) अर्थात् दूर आश्रम। (३) मूल में सारा देश।

रौ रोटी किशमिश की एक सौ टिकिया धूपकाल के फल की एक सौ टिकिया और कुप्पी भर दाखमधु लादे हुए
२ उस से आ मिला। राजा ने सीबा से पूछा इन से तेरा क्या प्रयोजन है सीबा ने कहा गदहे तो राजा के घराने की सवारी के लिये हैं और रोटी और धूपकाल के फल जवानों के खाने के लिये है और दाखमधु इसलिये है
३ कि जो कोई जंगल में थक जाए सो उसे पीए। राजा ने पूछा फिर तेरे स्वामी का बेटा कहां है सीबा ने राजा से कहा वह तो यह कहकर यरूशलेम में रह गया कि अब इस्राएल का घराना मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा।
४ राजा ने सीबा से कहा जो कुछ मपीबोशेत का था सो सब तुझे मिल गया सीबा ने कहा प्रणाम हे मेरे प्रभु हे राजा मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि बनी रहे॥

५ जब दाऊद राजा बहूरीम लों पहुंचा तब शाऊल का एक कुटुम्बी वहां से निकला वह गेरा का पुत्र शिमी
६ नाम था और वह कोसता हुआ चला आया, और दाऊद पर और दाऊद राजा के सब कर्म्मचारियों पर पत्थर फेंकने लगा और शूरवीरों समेत सब लोग उस की दहिनी बाईं
७ दोनों ओर थे। और शिमी कोसता हुआ यों बकता गया
८ कि रे खूनी रे ओछे निकल जा निकल जा। यहोवा ने तुझ से शाऊल के घराने के खून का पूरा पलटा लिया है जिस के स्थान पर तू राजा हुआ है। यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है और तू जो खूनी है
९ इस से तू अपनी बुराई में आप फंस गया। तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों कोसने पाए मुझे उधर जाकर उस
१० का सिर काटने दे। राजा ने कहा सरूयाह के बेटो मुझे तुम से क्या काम वह जो कोसता है और यहोवा ने जो उस से कहा है कि दाऊद को कोस सो उस से कौन
११ पूछ सकता है कि तू ने ऐसा क्यों किया। फिर दाऊद ने अबीशै और अपने सब कर्म्मचारियों से कहा जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण का खोजी है तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा क्यों न करे उस को रहने दो और कोसने
१२ दे। क्योंकि यहोवा ने उस से कहा है। क्या जानिये यहोवा इस उपद्रव पर जो मुझ पर हो रहा है दृष्टि करके
१३ आज के कोसने की सन्ती मुझे भला बदला दे। सो दाऊद अपने जनों समेत मार्ग में चला गया और शिमी उस के साम्हने के पहाड़ की अलंग पर से कोसता और उस पर पत्थर और धूलि फेंकता हुआ चला गया।
१४ निदान राजा अपने संग के सब लोगों समेत अपने ठिकाने पर थका हुआ पहुंचा और वहां सुस्ताया॥
१५ अबशालोम सब इस्राएली लोगों समेत यरूशलेम को आया और उस के संग अहीतोपेल भी आया।
१६ जब दाऊद का मित्र एरेकी हूशै अबशालोम के पास पहुंचा तब हूशै ने अबशालोम से कहा राजा जीता रहे
१७ राजा जीता रहे। अबशालोम ने उस से कहा क्या यह तेरी प्रीति है जो तू अपने मित्र से रखता है तू अपने
१८ मित्र के संग क्यों नहीं गया। हूशै ने अबशालोम से कहा ऐसा नहीं जिस को यहोवा और वे लोग क्या बरन सब इस्राएली लोग चाहें उसी का मैं हूं और उसी
१९ के संग मैं रहूंगा। और फिर मैं किस की सेवा करूं क्या उस के पुत्र के साम्हने रहकर सेवा न करूं जैसा मैं तेरे पिता के साम्हने रहकर सेवा करता था वैसा ही तेरे
२० साम्हने रहकर सेवा करूंगा। तब अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा तुम लोग अपनी सम्मति दो कि क्या
२१ करना चाहिये। अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा जिन रखेलियों को तेरा पिता भवन की चौकसी करने को छोड़ गया उन के पास तू जा और जब सब इस्राएली यह सुनेंगे कि अबशालोम का पिता उस से घिनाता है
२२ तब तेरे सब संगी हियाव बांधेंगे। सो उस के लिये भवन की छत के ऊपर एक तंबू खड़ा किया गया और अबशालोम सारे इस्राएल के देखते अपने पिता की रखेलियों के
२३ पास गया। उन दिनों जो सम्मति अहीतोपेल देता था सो ऐसी होती थी कि मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछ लेता था अहीतोपेल चाहे दाऊद को चाहे अबशालोम को जो जो सम्मति देता सो वैसी ही होती थी॥

१७. फिर अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा मुझे बारह हजार पुरुष छांटने दे और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद
२ का पीछा करूंगा। और जब वह थका और निर्बल होगा तब मैं उसे पकड़ूंगा और डराऊंगा और जितने लोग उस के साथ हैं सब भागेंगे और मैं राजा ही को
३ मारूंगा। और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊंगा जिस मनुष्य का तू खोजी है उस के मिलने से सारी प्रजा का मिलना हो जाएगा, सो सारी प्रजा कुशलक्षेम से रहेगी।
४ यह बात अबशालोम और सब इस्राएली पुरनियों को ठीक जची॥

५ फिर अबशालोम ने कहा एरेकी हूशै को भी बुला
६ ला और जो वह कहेगा हम उसे भी सुनें। जब हूशै अबशालोम के पास आया तब अबशालोम ने उस से कहा अहीतोपेल ने तो इस प्रकार की बात कही है क्या हम
७ उस की बात मानें कि नहीं जो नहीं तो तू कह दे। हूशै ने अबशालोम से कहा जो सम्मति अहीतोपेल ने इस
८ बार दी सो अच्छी नहीं। फिर हूशै ने कहा तू तो अपने

पिता और उस के जनों को जानता है कि वे शूरबीर हैं और बच्चा छीनी हुई रीछनी के समान क्रोधित होंगे और तेरा पिता योद्धा है और और लोगों के साथ रात नहीं
९ बिताता। इस समय तो वह किसी गढ़हे वा किसी ऐसे स्थान में छिपा होगा सो जब इन में से पहिले पहिल कोई कोई मारे जाएं तब इस के सब सुननेहारे कहने
१० लगेंगे कि अबशालोम के पक्षवाले हार गये। तब बीर का हृदय जो सिंह का सा हो उस का भी सारा हियाव छूट जाएगा सारा इस्राएल तो जानता है कि तेरा पिता
११ बीर है और उस के संगी बड़े योद्धा हैं। सो मेरी सम्मति यह है कि दान से ले बेर्शेबा लों रहनेहारे सारे इस्राएली तेरे पास समुद्रतीर की बालू के किनकों के समान इकट्ठे
१२ किये जाएं और तू आप ही[१] युद्ध को जाए। सो जब हम उस को किसी न किसी स्थान में जहां वह मिले जा पकड़ेंगे तब जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम उस पर टूट पड़ेंगे तब न तो वह बचेगा न उस के संगियों
१३ में से कोई बचेगा। और यदि वह किसी नगर में घुसा हो तो सब इस्राएली उस नगर के पास रस्सियां ले आएंगे और हम उसे नाले में खींचेंगे यहां तक कि उस का एक
१४ छोटा सा पत्थर न रह जाएगा। तब अबशालोम और सब इस्राएली पुरुषों ने कहा एरेकी हूशै की सम्मति अहीतोपेल की सम्मति से उत्तम है। यहोवा ने तो अहीतोपेल की अच्छी सम्मति निष्फल करने को ठाना था इसलिये कि वह अबशालोम ही पर विपत्ति डाले॥

१५ तब हूशै ने सादोक और एब्यातार याजकों से कहा अहीतोपेल ने तो अबशालोम और इस्राएली पुरनियों को इस इस प्रकार की सम्मति दी और मैं ने
१६ इस इस प्रकार की सम्मति दी है। सो अब फुर्ती कर दाऊद के पास कहला भेजो कि आज रात जंगली घाट के पास न ठहरना अवश्य पार ही हो जाना ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उस के संग हों सब नाश हो
१७ जाएं। योनातान और अहीमास एनरोगेल के पास ठहरे रहे और एक लौंडी जाकर उन्हें संदेशा दे आती थी और वे जाकर राजा दाऊद को संदेशा देते थे क्योंकि वे किसी
१८ के देखते नगर में न जा सकते थे। एक छोकरे ने तो उन्हें देखकर अबशालोम को बताया पर वे दोनों फुर्ती से चले गये और एक बहूरीमवासी मनुष्य के घर पहुंच-
१९ कर जिस के आंगन में कूआ था उस में उतर गये। तब उस की स्त्री ने कपड़ा लेकर कूएं के मुंह पर बिछाया और उस के ऊपर दला हुआ अन्न फैला दिया सो कुछ मालूम
२० न पड़ा। तब अबशालोम के सेवक उस घर में उस स्त्री के पास जाकर कहने लगे अहीमास और योनातान कहां हैं स्त्री ने उन से कहा वे तो उस छोटी नदी के पार गये। सो उन्हों ने उन्हें ढूंढा और न पाकर यरूशलेम
२१ को लौटे। जब वे चले गये तब ये कूएं में से निकले और जाकर दाऊद राजा को समाचार दिया और दाऊद से कहा तुम लोग चलो फुर्ती करके नदी के पार हो जाओ क्योंकि अहीतोपेल ने तुम्हारी हानि की ऐसी ऐसी
२२ सम्मति दी है। तब दाऊद अपने सब संगियों समेत उठ कर यर्दन पार हो गया और पह फटने लों उन में से एक
२३ भी न रह गया जो यर्दन के पार न हो गया हो। जब अहीतोपेल ने देखा कि मेरी सम्मति के अनुसार काम नहीं हुआ तब उस ने अपने गदहे पर काठी कसी और अपने नगर जाकर अपने घर में गया और अपने घराने के विषय जो जो आज्ञा देनी थी सो देकर अपने फांसी लगाई, सो वह मरा और अपने पिता के कब्रिस्तान में उसे मिट्टी दी गई॥

२४ दाऊद तो महनैम में पहुंचा। और अबशालोम
२५ सब इस्राएली पुरुषों समेत यर्दन के पार गया। और अबशालोम ने अमासा को योआब के स्थान पर प्रधान सेनापति ठहराया। यह अमासा एक पुरुष का पुत्र था जिस का नाम इस्राएली यित्रो था और इस ने योआब की माता सरूयाह की बहिन अबीगल नाम नाहाश की
२६ बेटी से प्रसंग किया था। और इस्राएलियों और अबशालोम ने गिलाद देश में छावनी डाली॥

२७ जब दाऊद महनैम में आया तब अम्मोनियों के रब्बा के निवासी नाहाश का पुत्र शोबी और लोदबरवासी अम्मीएल का पुत्र माकीर और रोगलीमवासी गिलादी
२८ बर्जिल्लै, चारपाइयां तसले मिट्टी के बर्तन गेहूं जव
२९ मैदा लोबिया मसूर चबेना, मधु मक्खन भेड़ बकरियां और गाय के दही का पनीर दाऊद और उस के संगियों के खाने को यह सोच कर ले आये कि जंगल में वे लोग भूखे थके प्यासे होंगे॥

१८.

तब दाऊद ने अपने संग के लोगों की गिनती ली और उन पर सहस्रपति
२ और शतपति ठहराये। फिर दाऊद ने लोगों की एक तिहाई तो योआब के और एक तिहाई सरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै के और एक तिहाई गती इत्तै के अधिकार में करके युद्ध में भेज दिया। और राजा ने
३ लोगों से कहा मैं भी अवश्य तुम्हारे साथ चलूंगा। लोगों ने कहा तू जाने न पाएगा क्योंकि चाहे हम भाग जाएं तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे वरन चाहे हम में से आधे मारे भी जाएं तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे

(१) मूल में तेरा मुख।

क्योंकि हमारे सरीखे दस हजार पुरुष हैं सो उत्तम यह है कि तू नगर में से हमारी सहायता करने के तैयार रहे। ४ राजा ने उन से कहा जो कुछ तुम्हें भाए सोई मैं करूंगा। सो राजा फाटक की एक ओर खड़ा रहा और सब लोग ५ सौ सौ और हजार हजार करके निकलने लगे। और राजा ने योआब अबीशै और इत्तै के आज्ञा दी कि मेरे निमित्त उस जवान अर्थात् अबशालोम से कोमलता करना। यह आज्ञा राजा ने अबशालोम के विषय सब प्रधानों को ६ सब लोगों के सुनते दी। सो लोग इस्राएल का साम्हना करने को मैदान में निकले और एप्रैम नाम बन में युद्ध ७ हुआ। वहां एस्राएली लोग दाऊद के जनों से हार गये और उस दिन ऐसा बड़ा संहार हुआ कि बीस हजार खेत ८ आये। और वहां युद्ध उस सारे देश में फैल गया और उस दिन जितने लोग तलवार से मारे गये उन से भी ९ अधिक बन के कारण मर गये। संयोग से अबशालोम और दाऊद के जनों की भेंट हो गई अबशालोम तो एक खच्चर पर चढ़ा हुआ जा रहा था कि खच्चर एक बड़े बांझ वृक्ष की घनी डालियों के नीचे से गया और उस का सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया और वह अधर में लटका रहा और उस का खच्चर निकल गया। १० इस को देखकर किसी मनुष्य ने योआब को बताया कि मैं ने अबशालोम के बांज वृक्ष में टंगा हुआ देखा। ११ योआब ने बतानेहारे से कहा तू ने यह देखा फिर क्यों उसे वहीं मारके भूमि पर न गिरा दिया तो मैं तुझे दस १२ टुकड़े चांदी और एक फेंटा देता। उस मनुष्य ने योआब से कहा चाहे मेरे हाथ में हजार टुकड़े चांदी तौलकर दिये जाएं तौभी राजकुमार के विरुद्ध हाथ न बढ़ाऊंगा क्योंकि हम लोगों के सुनते राजा ने तुझे और अबीशै और इत्तै के यह आज्ञा दी कि तुम में से कोई क्यों न हो उस १३ जवान अर्थात् अबशालोम के न छुए। नहीं तो यदि धोखा देकर उस का प्राण लेता तो तू आप मेरा विरोधी हो जाता क्योंकि राजा से कोई बात छिपी नहीं रहती। १४ योआब ने कहा मैं तेरे संग ऐसा ठहर नहीं सकता। सो उस ने तीन लकड़ी हाथ में लेकर अबशालोम के हृदय १५ में जो बांज वृक्ष में जीता लटका था गाड़ दी। तब योआब के दस हथियार ढोनेहारे जवानों ने अबशालोम १६ के घेर के ऐसा मारा कि वह मर गया। फिर योआब ने नरसिंगा फूंका और लोग इस्राएल का पीछा करने से १७ लौटे क्योंकि योआब प्रजा के बचाना चाहता था। तब लोगों ने अबशालोम को उतार के उस बन में के एक बड़े गड़हे में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया और सब इस्राएली अपने अपने डेरे के भाग गये। अपने जीते जी अबशालोम ने १८ यह सोचकर कि मेरे नाम का स्मरण करानेहारा कोई पुत्र मेरे नहीं है अपने लिये वह लाठ खड़ी कराई थी जो राजा की तराई में है और लाठ का अपना ही नाम रक्खा सो वह आज के दिन लों अबशालोम की लाठ कहलाती है॥

और सादोक के पुत्र अहीमास ने कहा मुझे दौड़ १९ कर राजा के यह समाचार देने दे कि यहोवा ने न्याय करके तुझे तेरे शत्रुओं के हाथ से बचाया है। योआब ने २० उस से कहा तू आज के दिन समाचार न दे दूसरे दिन समाचार देने पाएगा पर आज समाचार न दे इसलिये कि राजकुमार मर गया है। तब योआब ने एक कूशी २१ से कहा जो कुछ तू ने देखा है सो जाकर राजा के बता दे। सो वह कूशी योआब के दण्डवत् करके दौड़ा गया। फिर सादोक के पुत्र अहीमास ने दूसरी बार योआब से २२ कहा जो हो सो हो पर मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ जाने दे। योआब ने कहा हे मेरे बेटे तेरे समाचार का कुछ बदला न मिलेगा सो तू क्यों दौड़ जाने चाहता है। उस ने कहा यह जो हो सो हो पर मुझे दौड़ जाने दे २३ उस ने उस से कहा दौड़ तब अहीमास दौड़ा और तराई से होकर कूशी के आगे बढ़ गया॥

दाऊद तो दो फाटकों के बीच बैठा था कि पहरुआ २४ जो फाटक की छत से होकर शहरपनाह पर चढ़ गया था उस ने आंखें उठाकर क्या देखा कि एक मनुष्य अकेला दौड़ा आता है। जब पहरुए ने पुकारके राजा को यह २५ बता दिया तब राजा ने कहा यदि अकेला आता हो तो सन्देश लाता होगा। वह दौड़ते दौड़ते निकट आया। फिर पहरुए ने एक और मनुष्य के दौड़ते हुए देख २६ फाटक के रखवाले के पुकारके कहा सुन एक और मनुष्य अकेला दौड़ा आता है। राजा ने कहा वह भी सन्देश लाता होगा। पहरुए ने कहा मुझे तो ऐसा देख २७ पड़ता है कि पहिले का दौड़ना सादोक के पुत्र अहीमास का सा है राजा ने कहा वह तो भला मनुष्य है सो भला सन्देश लाता होगा। तब अहीमास ने पुकारके राजा से २८ कहा कल्याण फिर उस ने भूमि पर मुंह के बल गिर राजा के दण्डवत् करके कहा तेरा परमेश्वर यहोवा धन्य है जिस ने मेरे प्रभु राजा के विरुद्ध हाथ उठानेहारे मनुष्यों के तेरे वश कर दिया है। राजा ने पूछा क्या उस २९ जवान अबशालोम का कल्याण है अहीमास ने कहा जब योआब ने राजा के कर्म्मचारी के और तेरे दास को भेज दिया तब मुझे बड़ी भीड़ देख पड़ी पर मालूम न हुआ कि क्या हुआ था। राजा ने कहा हटकर यहीं ३० खड़ा रह सो वह हटकर खड़ा रहा। तब कूशी भी आ ३१

गया और कूशी कहने लगा मेरे प्रभु राजा के लिये समाचार है यहोवा ने आज न्याय करके तुझे उन सभों के हाथ से बचाया है जो तेरे विरुद्ध उठे थे। ३२ राजा ने कूशी से पूछा क्या वह जवान अर्थात् अबशालोम कल्याण से है कूशी ने कहा मेरे प्रभु राजा के शत्रु और जितने तेरी हानि के लिये उठे हैं उन की दशा उस जवान की सी हो। ३३ तब राजा बहुत घबराया और फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा और चलते चलते यों कहता गया कि हाय मेरे बेटे अबशालोम मेरे बेटे हाय मेरे बेटे अबशालोम भला होता कि मैं आप तेरी सन्ती मरता हाय अबशालोम मेरे बेटे मेरे बेटे॥

(दाऊद का यरूशलेम को लौटना)

१९.

तब योआब को यह समाचार मिला कि राजा अबशालोम के लिये २ रो रहा और विलाप कर रहा है। सो उस दिन का विजय सब लोगों की समझ में विलाप ही का कारण बन गया क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना कि राजा अपने ३ बेटे के लिये खेदित है। और उस दिन लोग ऐसा मुंह चुराकर नगर में घुसे जैसा लोग युद्ध से भाग आने से ४ लज्जित होकर मुंह चुराते हैं। और राजा मुंह ढांपे हुए चिल्ला चिल्लाकर पुकारता रहा कि हाय मेरे बेटे अबशा- ५ लोम हाय अबशालोम मेरे बेटे मेरे बेटे। सो योआब घर में राजा के पास जाकर कहने लगा तेरे कर्म्मचारियों ने आज के दिन तेरा और तेरे बेटों बेटियों का और तेरी स्त्रियों और रखेलियों का प्राण तो बचाया है पर तू ने ६ आज के दिन उन सभों का मुंह काला किया है। कैसे कि तू अपने बैरियों से प्रेम और अपने प्रेमियों से बैर रखता है। तू ने आज यह प्रगट किया कि तुझे हाकिमों और कर्म्मचारियों की कुछ चिन्ता नहीं बरन मैं ने आज जान लिया कि यदि हम सब आज मारे जाते और अब- ७ शालोम जीता रहता तो तू बहुत प्रसन्न होता। सो अब उठकर बाहर जा और अपने कर्म्मचारियों को शान्ति दे नहीं तो मैं यहोवा की किरिया खाकर कहता हूं कि यदि तू बाहर न जाए तो आज रात को एक मनुष्य भी तेरे संग न रहेगा और तेरे बचपन से लेकर अब लों जितनी विपत्तियां तुझ पर पड़ी हों उन सब से यह विपत्ति बड़ी ८ होगी। सो राजा उठकर फाटक में जा बैठा और जब सब लोगों को यह बताया गया कि राजा फाटक में बैठा है तब सब लोग राजा के साम्हने आये॥

और इस्राएली अपने अपने डेरे को भाग गये थे। ९ और इस्राएल के सब गोत्रों में सब लोग आपस में यह कहकर झगड़ते थे कि राजा ने हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से बचाया था और पलिश्तियों के हाथ से उसी ने हमें छुड़ाया पर अब वह अबशालोम के डर के मारे देश छोड़कर भाग गया। १० और अबशालोम जिस का हम ने अपना राजा होने को अभिषेक किया था सो युद्ध में मर गया है सो अब तुम क्यों चुप रहते और राजा को लौटा ले आने की चर्चा क्यों नहीं करते॥

११ तब राजा दाऊद ने सादोक और एब्यातार याजकों के पास कहला भेजा कि यहूदी पुरनियों से कहो कि तुम लोग राजा को भवन पहुंचाने के लिये सब से पीछे क्यों होते हो, जब कि सारे इस्राएल की बातचीत राजा के सुनने में आई है कि उस को भवन में पहुंचाएं। १२ तुम लोग तो मेरे भाई बरन हाड़ ही मांस हो सो तुम राजा को लौटाने में सब के पीछे क्यों होते हो। १३ फिर अमासा से यह कहो कि क्या तू मेरा हाड़ मांस नहीं है और यदि तू योआब के स्थान पर सदा के लिये सेनापति न ठहरे तो परमेश्वर मुझ से वैसा ही बरन उस से भी अधिक करे। १४ सो उस ने सब यहूदी पुरुषों के मन ऐसे अपनी ओर खींच लिया कि मानों एक ही पुरुष था और उन्हों ने राजा के पास कहला भेजा कि तू अपने सब कर्म्मचारियों को संग लेकर लौट आ। १५ सो राजा लौटकर यर्दन तक आ गया और यहूदी लोग गिलगाल गये कि उस से मिलकर उसे यर्दन पार ले आएं॥

१६ यहूदियों के संग गेरा का पुत्र बिन्यामीनी शिमी भी जो बहूरीमी था फुर्ती करके राजा दाऊद से भेंट करने को गया। १७ उस के संग हजार बिन्यामीनी पुरुष थे और शाऊल के घराने का कर्म्मचारी सीबा अपने पन्द्रहों पुत्रों और बीसों दासों समेत था और वे राजा के साम्हने यर्दन के पार पांव पांव उतर गये। १८ और एक बेड़ा राजा के परिवार को पार ले आने और जिस काम में वह उसे लगाने चाहे उसी में लगने के लिये पार गया। और जब राजा यर्दन पार जाने पर था तब गेरा का पुत्र शिमी उस के पांवों पर गिरके, १९ राजा से कहने लगा मेरा प्रभु मेरे दोष का लेखा न करे और जिस दिन मेरा प्रभु राजा यरूशलेम को छोड़ आया उस दिन तेरे दास ने जो कुटिल काम किया उसे ऐसा स्मरण न कर कि राजा उसे अपने ध्यान में रक्खे। २० क्योंकि तेरा दास जानता है कि मैं ने पाप किया सो देख आज अपने प्रभु राजा से भेंट करने के लिये यूसुफ के सारे घराने में से मैं ही पहिला आया हूं। २१ तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा शिमी ने जो यहोवा के अभिषिक्त को कोसा था इस कारण क्या उस को बध करना न चाहिये। २२ दाऊद ने कहा हे सरूयाह के बेटो मुझे तुम से क्या काम कि तुम आज मेरे

विरोधी ठहरे हो आज क्या इस्राएल में किसी को प्राणदण्ड मिलेगा क्या मैं नहीं जानता कि आज इस्राएल का राजा हुआ हूं। २३ फिर राजा ने शिमी से कहा तुझे प्राणदण्ड न मिलेगा और राजा ने उस से किरिया भी खाई॥

२४ तब शाऊल का पोता मपीबोशेत राजा से भेंट करने को आया उस ने राजा के चले जाने के दिन से उस के कुशलक्षेम से फिर आने के दिन लों न अपने पांवों के नखून काटे न अपनी डाढ़ी बनवाई और न अपने कपड़े धुलवाये थे। २५ सो जब यरूशलेमी राजा से मिलने को गये तब राजा ने उस से पूछा हे मपीबोशेत तू मेरे संग क्यों न गया था। २६ उस ने कहा हे मेरे प्रभु हे राजा मेरे कर्म्मचारी ने मुझे धोखा दिया था तेरा दास जो पंगु है इसलिये तेरे दास ने सोचा कि मैं गदहे पर काठी कसाकर उस पर चढ़ राजा के साथ चला जाऊंगा। २७ और मेरे कर्म्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के साम्हने मेरी चुगली खाई है पर मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के दूत के समान है सो जो कुछ तुझे भाए वही कर। २८ मेरे पिता का सारा घराना तेरी ओर से प्राणदण्ड के योग्य था पर तू ने अपने दास को अपनी मेज पर खानेहारों में गिना है मुझे क्या हक है कि मैं राजा की ओर दोहाई दूं। २९ राजा ने उस से कहा तू अपनी बात की चर्चा क्यों करता रहता है मेरी आज्ञा यह है कि उस भूमि को तू और सीबा दोनों आपस में बांट लो। ३० मपीबोशेत ने राजा से कहा मेरा प्रभु राजा जो कुशलक्षेम से अपने घर आया है इसलिये सीबा ही सब कुछ रक्खे॥

३१ तब गिलादी बर्जिल्लै रोगलीम से आया और राजा के यर्दन पार पहुंचाने को राजा के संग यर्दन पार गया। ३२ बर्जिल्लै तो बहुत पुरनिया अर्थात् अस्सी बरस का था और जब लों राजा महनैम में रहता था तब लों वह उस का पालन पोषण करता रहा क्योंकि वह बहुत धनी था। ३३ सो राजा ने बर्जिल्लै से कहा मेरे संग पार चल और मैं तुझे यरूशलेम में अपने पास रखकर तेरा पालन पोषण करूंगा। ३४ बर्जिल्लै ने राजा से कहा मुझे कितने दिन जीना है कि मैं राजा के संग यरूशलेम को जाऊं। ३५ आज मैं अस्सी बरस का हूं क्या मैं भले बुरे का विवेक कर सकता हूं क्या तेरा दास जो कुछ खाता पीता है उस का स्वाद पहिचान सकता क्या मुझे गानेहारों वा गानेहारियों का शब्द अब सुन पड़ता है सो तेरा दास अब अपने प्रभु राजा के लिये भार क्यों ठहरे। ३६ तेरा दास राजा के संग यर्दन पार ही तक जाएगा राजा इस का ऐसा बड़ा बदला मुझे क्यों दे। ३७ अपने दास को लौटने दे कि मैं अपने ही नगर में अपने माता पिता के कब्रिस्तान के पास मरूं पर तेरा दास किम्हाम हाजिर है मेरे प्रभु राजा के संग वह पार जाए और जैसा तुझे भाए वैसा ही उस से व्यवहार करना। ३८ राजा ने कहा हां किम्हाम मेरे संग पार चलेगा और जैसा तुझे भाए वैसा ही मैं उस से व्यवहार करूंगा बरन जो कुछ तू मुझ से चाहेगा सो मैं तेरे लिये करूंगा। ३९ तब सब लोग यर्दन पार गये और राजा भी पार हुआ तब राजा ने बर्जिल्लै को चूमकर आशीर्वाद दिया और वह अपने स्थान को लौट गया॥

(शेबा की राजद्रोह की गोष्ठी)

४० सो राजा गिल्गाल की ओर पार गया और उस के संग किम्हाम पार हुआ और सब यहूदी लोगों ने और आधे इस्राएली लोगों ने राजा को पार किया। ४१ तब सब इस्राएली पुरुष राजा के पास आये और राजा से कहने लगे क्या कारण है कि हमारे यहूदी भाई तुझे चोरी से ले आये और परिवार समेत राजा को और उस के सब जनों को भी यर्दन पार लाये हैं। ४२ सब यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों को उत्तर दिया कारण यह है कि राजा हमारे गोत्र का है सो तुम लोग इस बात से क्यों रूठ गये हो क्या हम ने राजा का दिया हुआ कुछ खाया वा उस ने हमें कुछ दान दिया है। ४३ इस्राएली पुरुषों ने यहूदी पुरुषों को उत्तर दिया राजा में दस अंश हमारे हैं और दाऊद में हमारा भाग तुम्हारे भाग से बड़ा है सो तुम ने हमें क्यों तुच्छ जाना क्या अपने राजा के लौटा ले आने की चर्चा पहिले हम ही ने न की थी। और यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों से अधिक कड़ी बातें कहीं॥

२०. **वहां** संयोग से शेबा नाम एक बिन्यामीनी ओछा था जो बिक्री का पुत्र था वह नरसिंगा फूंककर कहने लगा दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं और न यिशै के पुत्र में हमारा कोई भाग है हे इस्राएलियो अपने अपने डेरे को चले जाओ। २ सो सब इस्राएली पुरुष दाऊद के पीछे चलना छोड़कर बिक्री के पुत्र शेबा के पीछे हो लिये पर सब यहूदी पुरुष यर्दन से यरूशलेम लों अपने राजा के संग लगे रहे॥

३ तब दाऊद यरूशलेम को अपने भवन में आया और राजा ने उन दस रखेलियों को जिन्हें वह भवन की चौकसी करने को छोड़ गया था अलग एक घर में रक्खा और उन का पालन पोषण करता रहा पर उन से प्रसंग न किया सो वे अपनी अपनी मृत्यु के दिन लों विधवापन की सी दशा में जीती हुई बन्द रहीं॥

४ तब राजा ने अमासा से कहा यहूदी पुरुषों को तीन

दिन के भीतर मेरे पास बुला ला और तू भी यहां हाजिर
५ होना। सो अमासा यहूदियों को बुला लाने गया पर
६ उस के ठहराये हुए समय से अधिक रहा। सो दाऊद ने
अबीशै से कहा अब बिक्री का पुत्र शेबा अबशालोम से
भी हमारी अधिक हानि करेगा सो तू अपने प्रभु के
लोगों को लेकर उस का पीछा कर ऐसा न हो कि वह
७ गढ़वाले नगर पाकर हमारी दृष्टि से छिप जाए[१]। तब
योआब के जन और करेती और पलेती लोग और सारे
शूरवीर उस के पीछे हो लिये और बिक्री के पुत्र शेबा
८ का पीछा करने को यरूशलेम से निकले। वे गिबोन में
के भारी पत्थर के पास पहुंचे ही थे कि अमासा उन से
आ मिला। योआब तो योद्धा का वस्त्र फेंटे से कसे हुए
था और उस फेंटे में एक तलवार उस की कमर पर
अपनी मियान में बन्धी हुई थी और जब वह चला तब
९ वह निकलकर गिर पड़ी। सो योआब ने अमासा से
पूछा हे मेरे भाई क्या तू कुशल से है तब योआब ने
अपना दहिना हाथ बढ़ाकर अमासा को चूमने के लिये
१० उस की दाढ़ी पकड़ी। पर अमासा ने उस तलवार की
कुछ चिन्ता न की जो योआब के हाथ में थी सो उस
ने उसे अमासा के पेट में भोंककर उस की अन्तरियां
गिरा दीं और उस को दूसरी बार न मारा और वह
मरा। तब योआब और उस का भाई अबीशै बिक्री के
११ पुत्र शेबा का पीछा करने को चले। और उस के पास
योआब का एक जवान खड़ा होकर कहने लगा जो कोई
योआब के पक्ष और दाऊद की ओर का हो सो योआब
१२ के पीछे हो ले। अमासा तो सड़क के बीच अपने लोहू
में लोट रहा था सो जब उस मनुष्य ने देखा कि सब
लोग खड़े हो जाते हैं तब अमासा को सड़क पर से
मैदान में सरका दिया और जब देखा कि जितने उस के
पास आते सो खड़े हो जाते हैं तब उस के ऊपर एक
१३ कपड़ा डाल दिया। उस के सड़क पर से सरकाये जाने
पर सब लोग बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को
१४ योआब के पीछे हो लिये। और वह सब इस्राएली गोत्रों
में होकर आबेल और बेतमाका और बेरियों के सारे देश
तक पहुंचा और वे भी इकट्ठे होकर उस के पीछे हो
१५ लिये। तब उन्हों ने उस को बेत्माका के आबेल में घेर
लिया और नगर के साम्हने ऐसा धुस बांधा कि वह कोट
से सट गया और योआब के संग के सब लोग शहर-
१६ पनाह को गिराने के लिये धक्का देने लगे। तब एक
बुद्धिमान् स्त्री ने नगर में से पुकारा सुनो सुनो योआब
से कहो कि यहां आ एक स्त्री[२] तुझ से बातें करनी
१७ चाहती है। जब योआब उस के निकट गया तब स्त्री ने
पूछा क्या तू योआब है उस ने कहा हां मैं वही हूं फिर
उस ने उस से कहा अपनी दासी के वचन सुन उस ने
१८ कहा मैं तो सुन रहा हूं। वह कहने लगी प्राचीनकाल
में तो लोग कहा करते थे कि आबेल में पूछा जाए और
१९ इस रीति झगड़े को निपटा देते थे। मैं तो मेलमिलापवाले
और विश्वासयोग्य इस्राएलियों में से हूं पर तू एक
प्रधान नगर[३] नाश करने का यत्न करता है तू यहोवा
२० के भाग को क्यों निगल जाएगा। योआब ने उत्तर
देकर कहा यह मुझ से दूर हो दूर कि मैं निगल जाऊं
२१ वा नाश करूं। बात ऐसी नहीं है शेबा नाम एप्रैम के
पहाड़ी देश का एक पुरुष जो बिक्री का पुत्र है उस ने
दाऊद राजा के विरुद्ध हाथ उठाया है सो तुम लोग
केवल उसी को सौंप दो तब मैं नगर को छोड़कर चला
जाऊंगा। स्त्री ने योआब से कहा उस का सिर शहर-
२२ पनाह पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा। तब स्त्री
अपनी बुद्धिमानी से सब लोगों के पास गई सो उन्हों
ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काटकर योआब के पास
फेंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा फूंका और सब लोग
नगर के पास से फूट फाटकर अपने अपने डेरे को गये
और योआब यरूशलेम को राजा के पास लौट गया॥

२३ योआब तो सारी इस्राएली सेना के ऊपर रहा और
यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों के
२४ ऊपर था, और अदोराम बेगारों के ऊपर था और अही-
लूद का पुत्र यहोशापात इतिहास का लिखनेहारा था
और शवा मंत्री था और सादोक और एब्यातार याजक
थे और याईरी ईरा भी दाऊद का एक मंत्री था॥

(गिबोनियों का पलटा लिया जाना)

२१. दाऊद

के दिनों में बरस बरस तीन बरस तक अकाल हुआ सो दाऊद
ने यहोवा से प्रार्थना की[४]। यहोवा ने कहा यह शाऊल
और उस के खूनी घराने के कारण हुआ कि उस ने
२ गिबोनियों को मरवा डाला था। तब राजा ने गिबोनियों
को बुलाकर उन से बातें कीं। गिबोनी लोग तो इस्रा-
एलियों में से नहीं थे वे बचे हुए एमोरियों में से थे और
इस्राएलियों ने उन के साथ किरिया खाई थी पर शाऊल
को जो इस्राएलियों और यहूदियों के लिये जलन हुई थी
इस से उस ने उन्हें मार डालने के लिये यत्न किया था।

(१) मूल में हमारी आंख निकाले।

(२) मूल में मैं। (३) मूल में नगर और मा।

(४) मूल में यहोवा का दर्शन ढूंढा।

३ तब दाऊद ने गिबोनियों से पूछा मैं तुम्हारे लिये क्या करूं और क्या करके ऐसा प्रायश्चित्त करूं कि तुम यहोवा
४ के निज भाग को आशीर्वाद दे सको। गिबोनियों ने उस से कहा हमारे और शाऊल वा उस के घराने के बीच रुपैये पैसे[1] का कुछ झगड़ा नहीं और न हमारा काम है कि किसी इस्राएली को मार डालें। उस ने कहा जो कुछ
५ तुम कहो सो मैं तुम्हारे लिये करूंगा। उन्हों ने राजा से कहा जिस पुरुष ने हम को नाश कर दिया और हमारे विरुद्ध ऐसी युक्ति दी कि हम ऐसे सत्यानाश हो जाएं कि
६ इस्राएल के देश में आगे को न रह जाएं उस के वंश के सात जन हमें सौंप दिये जाएं और हम उन्हें यहोवा के लिये यहोवा के चुने हुए शाऊल की गिबा नाम बस्ती
७ में फांसी देंगे। राजा ने कहा मैं उन को सौंप दूंगा। पर दाऊद ने और शाऊल के पुत्र योनातान ने आपस में यहोवा की किरिया खाई थी इस कारण राजा ने योनातान के पुत्र मपीबोशेत को जो शाऊल का पोता था बचा
८ रक्खा। पर अर्मोनी और मपीबोशेत नाम अय्या की बेटी रिस्पा के दोनों पुत्र जो वह शाऊल के जन्माये जनी थी और शाऊल की बेटी मीकल के पांचों बेटे जो वह महोलावासी बर्जिल्लै के पुत्र अद्रीएल के जन्माये जनी थी
९ इन को राजा ने पकड़वाकर, गिबोनियों के हाथ सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के साम्हने फांसी दी और सातों एक साथ नाश हुए। उन का मार डाला जाना तो कटनी के पहिले दिनों अर्थात् जव की
१० कटनी के आरम्भ में हुआ। तब अय्या की बेटी रिस्पा ने टाट लेकर कटनी के आरम्भ से लेकर जब लों आकाश से उन पर अत्यन्त वृष्टि न पड़ी तब लों चटान पर उसे अपने नीचे बिछाये रही और न तो दिन में आकाश के पक्षियों को न रात में बनैले पशुओं को उन्हें छूने[2] दिया।
११ जब अय्या की बेटी शाऊल की रखेली रिस्पा के इस
१२ काम का समाचार दाऊद को मिला, तब दाऊद ने जाकर शाऊल और उस के पुत्र योनातान की हड्डियों को गिलादी याबेश के लोगों से ले लिया जिन्हों ने उन्हें बेतशान के उस चौक से चुरा लिया था जहां पलिश्तियों ने उन्हें उस दिन टांगा था जब पलिश्तियों ने शाऊल
१३ को गिल्बो पहाड़ पर मार डाला था। सो वह वहां से शाऊल और उस के पुत्र योनातान की हड्डियों को लिवा ले आया और फांसी पाये हुओं की हड्डियां भी इकट्ठी
१४ की गईं। और शाऊल और उस के पुत्र योनातान की हड्डियां बिन्यामीन के देश के जेला में शाऊल[3] के पिता कीश के कब्रिस्तान में गाड़ी गईं और दाऊद की सब आज्ञाओं के अनुसार काम हुआ और उस के पीछे परमेश्वर ने देश के लिये प्रार्थना सुन ली।

(दाऊद का पलिश्तियों पर विजय)

१५ पलिश्तियों ने इस्राएल से फिर युद्ध किया और दाऊद अपने जनों समेत जाकर पलिश्तियों से लड़ने
१६ लगा पर दाऊद थक गया। तब यिशबोबनोब जो रपाई के वंश का था और उस के भाले का फल तौल में तीन सौ शेकेल पीतल का था और वह नई तलवार[4] बांधे हुए
१७ था उस ने दाऊद को मारने को ठाना। पर सरूयाह के पुत्र अबीशै ने दाऊद की सहायता करके उस पलिश्ती को ऐसा मारा कि वह मर गया। तब दाऊद के जनों ने किरिया खाकर उस से कहा तू फिर हमारे संग युद्ध को जाने न पाएगा न हो कि तेरे मरने से इस्राएल का दिया बुझ जाए॥

१८ इस के पीछे पलिश्तियों के साथ गोब में फिर युद्ध हुआ उस समय हूशाई सिब्बकै ने रपाईवंशी सप को
१९ मारा। और गोब में पलिश्तियों के साथ फिर युद्ध हुआ उस में बेतलेहेमवासी यारयोरगीम के पुत्र एल्हनान ने गती गोल्यत को मार डाला जिस के बर्छे की छड़
२० कपड़े बुननेवाले के ढेके के समान थी। फिर गत में भी युद्ध हुआ और वहां एक बड़ी डील का रपाईवंशी पुरुष था जिस के एक एक हाथ पांव में छः छः अंगुली अर्थात्
२१ गिनती में चौबीस अंगुली थीं। जब उस ने इस्राएल को ललकारा तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र यहोनातान ने
२२ उसे मारा। ये ही चार गत में उस रपाई से उत्पन्न हुए थे और वे दाऊद और उस के जनों से मार डाले गये॥

(दाऊद का एक भजन)

२२. और

जिस समय यहोवा ने दाऊद को उस के सारे शत्रुओं और शाऊल के हाथ से बचाया था तब उस ने यहोवा के लिये इस गीत के वचन गाये, उस ने कहा

२ यहोवा मेरी ढांग और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेहारा
३ मेरा चटानरूपी परमेश्वर है जिस का मैं शरणागत हूं
मेरी ढाल मेरा बचानेहारा सींग मेरा ऊंचा गढ़
और मेरा शरणस्थान है॥
हे मेरे उद्धारकर्ता तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है॥
४ मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा
और अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा॥
५ मृत्यु के तरंग तो मेरे चारों ओर आये

(१) मूल में सोने चान्दी।
(२) मूल में उन पर विश्राम करने।
(३) मूल में उस।
(४) वा नये हथियार।

नीचपन की धाराओं ने मुझ को घबरा दिया था ॥
६ अधोलोक की रस्सियां मेरे चारों ओर थीं
मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने थे ॥
७ अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा
और अपने परमेश्वर को पुकारा
और उस ने मेरी बात को अपने मन्दिर में से सुना
और मेरी दोहाई उस के कानों पड़ी ॥
८ तब पृथिवी हिल गई और डोल उठी
और आकाश की नेवें कांपकर
बहुत ही हिल गईं
क्योंकि वह क्रोधित हुआ था ॥
९ उस के नथनों से धूंआ निकला
और उस के मुंह से आग निकलकर भस्म करने लगी
जिस से कोयले दहक उठे ॥
१० और वह स्वर्ग को नीचे करके उतर आया
और उस के पांवों तले घोर अन्धकार था ॥
११ और वह करूब पर चढ़ा हुआ उड़ा
और पवन के पंखों पर चढ़कर दिखाई दिया ॥
१२ और उस ने अपने चारों ओर के अंधियारे को मेघों[1] के समूह और आकाश की काली घटाओं को अपना मण्डप ठहराया ॥
१३ उस के सन्मुख की झलक से
कोयले दहक उठे ॥
१४ यहोवा आकाश में गरजा
और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई ॥
१५ उस ने तीर चला चलाकर मेरे शत्रुओं को[2] तितर बितर किया
और बिजली गिरागिराकर उन को घबरा दिया,
१६ तब समुद्र की थाह देख पड़ी
जगत की नेवें खुल गईं
यह तो यहोवा की डांट से
और उस के नथनों की सांस की झोंक से हुआ ॥
१७ उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थांम लिया
और गहरे में से खींच लिया ॥
१८ उस ने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से
मेरे बैरियों से जो मुझ से अधिक सामर्थी थे मुझे छुड़ाया ॥
१९ उन्हों ने मेरी विपत्ति के दिन मेरा साम्हना तो किया

(१) मूल में जलों। (२) मूल में उन को।

पर यहोवा मेरा आश्रय था ॥
२० और उस ने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहुंचाया।
उस ने मुझ को छुड़ाया क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था ॥
२१ यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म्म के अनुसार व्यवहार किया ॥
मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार उस ने मुझे बदला दिया ॥
२२ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा
और अपने परमेश्वर से फिरके दुष्ट न बना ॥
२३ उस के सारे नियम तो मेरे साम्हने बने रहे
और उस की विधियों से मैं हट न गया ॥
२४ और मैं उस के साथ खरा बना रहा
और अधर्म्म से अपने को बचाये रहा जिस में मेरे फंसने का डर था[3] ॥
२५ सो यहोवा ने मुझे मेरे धर्म्म के अनुसार बदला दिया
मेरी उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था ॥
२६ दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त दिखाता
खरे पुरुष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है ॥
२७ शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता
और टेढ़े के साथ तू तिरछा बनता है ॥
२८ और दीन लोगों को तो तू बचाता है
पर अभिमानियों पर दृष्टि करके उन्हें नीचा करता है ॥
२९ हे यहोवा तू ही मेरा दीपक है
और यहोवा मेरे अन्धियारे को दूर करके उजियाला कर देता है ॥
३० तेरी सहायता से मैं दल पर धावा करता
अपने परमेश्वर की सहायता से मैं शहरपनाह को लांघ जाता हूं ॥
३१ ईश्वर की गति खरी है यहोवा का वचन ताया हुआ है
वह अपने सब शरणागतों की ढाल ठहरा है
३२ यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है
हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चटान है ॥
३३ यह वही ईश्वर है जो मेरा अति दृढ़ स्थान ठहरा
वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग में लिये चलता है ॥

(३) मूल में अपने अधर्म से।

३४ वह मेरे पैरों को हरिणियों के से करता है और
मुझे ऊंचे स्थानों[१] पर खड़ा करता है ॥
३५ वह मुझे[२] युद्ध करना सिखाता है
मेरी बांहों से पीतल का धनुष नवता है ॥
३६ और तू ने मुझ को अपने बचाव की ढाल दी
और तेरी नम्रता मुझे बढ़ाती है।
३७ तू मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा करता है
और मेरे टखने नहीं डिगे ॥
३८ मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें सत्यानाश करूंगा
और जब लों उन का अन्त न करूं तब लों न फिरूंगा ॥
३९ और मैं ने उन का अन्त किया और उन्हें ऐसा मारा कि वे उठ न सकेंगे
वे मेरे पांवों के नीचे पड़े हैं ॥
४० और तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर बंधाई
और मेरे विरोधियों को मेरे तले दबा दिया ॥
४१ और तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे दिखाई
कि मैं अपने बैरियों को सत्यानाश करूं ॥
४२ उन्हों ने बाट तो जोही पर कोई बचानेहारा न मिला
उन्हों ने यहोवा की भी बाट जोही पर उस ने उन की न सुन ली ॥
४३ मैं ने उन को कूट कूट कर भूमि की धूलि के समान कर दिया
मैं ने उन्हें सड़कों की कीच की नाईं पटक कर फैलाया ॥
४४ फिर तू ने मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाकर अन्य जातियों का प्रधान होने को मेरी रक्षा की जिन लोगों को मैं न जानता था सो भी मेरे अधीन हो जाएंगे ॥
४५ परदेशी मेरी चापलूसी करेंगे
कान से सुनते ही वे मेरे वश में आएंगे ॥
४६ परदेशी मुर्झाएंगे
और अपने कोटों में से थरथराते हुए निकलेंगे ॥
४७ यहोवा जीता है और जो मेरी चटान ठहरा सो धन्य है
और परमेश्वर जो मेरे उद्धार के लिये चटान ठहरा उस की बड़ाई हो ॥
४८ धन्य है मेरा पलटा लेनेहारा ईश्वर
जो देश देश के लोगों को मेरे तले दबा देता है,
४९ और मुझे मेरे शत्रुओं के बीच से निकालता है
तू मुझे मेरे विरोधियों से ऊंचा करता है
और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ॥
५० इस कारण मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा
और तेरे नाम का भजन गाऊंगा ॥
५१ वह अपने ठहराये हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है
वह अपने अभिषिक्त दाऊद और उस के वंश पर युग युग करुणा करता रहेगा ॥

(दाऊद के जीवन के अन्तसमय के वचन)

२३.

दाऊद के पिछले वचन ये हैं
यिशै के पुत्र की यह वाणी है
उस पुरुष की वाणी है जो ऊंचे पर खड़ा किया गया
और याकूब के परमेश्वर का अभिषिक्त
और इस्राएल का मधुर भजन गानेहारा है ॥
२ यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला
और उसी का वचन मेरे मुंह में[३] आया ॥
३ इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है
इस्राएल की चटान ने मुझ से बातें की हैं कि
मनुष्यों में प्रभुता करनेहारा एक धर्मी होगा
जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा ॥
४ वह मानो भोर का प्रकाश होगा जब सूर्य्य निकलता है
ऐसा भोर जिस में बादल न हों
जैसा वर्षा के पीछे के निर्म्मल प्रकाश के कारण
भूमि से हरी हरी घास उगती है ॥
५ क्या मेरा घराना ईश्वर के लेखे में ऐसा नहीं है
उस ने तो मेरे साथ सदा की एक ऐसी वाचा बांधी है
जो सब बातों में ठीक की हुई और अटल भी है
क्योंकि चाहे वह उस को प्रकट न करे[४]
तौभी[५] मेरा सारा उद्धार और सारी अभिलाषा का विषय वही है ॥
६ पर ओछे सब के सब निकम्मी झाड़ियों के समान हैं जो हाथ से पकड़ी नहीं जातीं ॥

(१) मूल में मेरे ऊंचे स्थानों। (२) मूल में मेरे हाथ।

(३) मूल में मेरी जीभ पर। (४) मूल में न उगाए। वा सो क्या वह उस को न फंसाएगा। (५) वा इस कारण।

७ सो जो पुरुष उन को छूने चाहे
उसे लोहर और भाले की छड़ लिये[१] जाना पड़ता
है।
सो वे आग लगाकर अपने ही स्थान में भस्म
की जाती हैं॥

(दाऊद के बीरों की नामावली)

८ दाऊद के शूरबीरों के नाम ये हैं अर्थात् तहकमोनी योशेब्यश्शेबेत जो सरदारों में मुख्य था वह एस्नी अदीनो भी कहलाता था उस से एक ही समय में आठ सौ पुरुष ९ मार डाले गये। उस के पीछे अहोही दोदै का पुत्र एलाजार था वह उस समय दाऊद के संग के तीनों बीरों में से था जब उन्हों ने युद्ध के लिये बटुरे हुए पलिश्तियों को १० ललकारा और इस्राएली पुरुष चले गये थे। वह कमर बांधकर पलिश्तियों को तब लों मारता रहा जब लों उस का हाथ थक न गया और तलवार हाथ से चिपट न गई और उस दिन यहोवा ने बड़ा विजय किया और जो लोग उस के पीछे हो लिये उन को केवल लूटना ही रह ११ गया। उस के पीछे आगे नाम एक पहाड़ी का पुत्र शम्मा था। पलिश्तियों ने इकट्ठे होकर एक स्थान में दल बान्धा, जहां मसूर का एक खेत था और लोग उन के डर के मारे १२ भागे। तब उस ने खेत के बीच खड़े होकर उसे बचाया और पलिश्तियों को मार लिया और यहोवा ने बड़ा विजय १३ किया। फिर तीसों मुख्य सरदारों में से तीन जन कटनी के दिनों में दाऊद के पास अदुल्लाम नाम गुफा में आये और पलिश्तियों का दल रपाईम नाम तराई में छावनी १४ किये हुए था। उस समय दाऊद गढ़ में था और उस १५ समय पलिश्तियों की चौकी बेतलेहेम में थी। तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा कौन मुझे बेतलेहेम के १६ फाटक के पास के कूंए का पानी पिलाएगा। सो वे तीनों बीर पलिश्तियों की छावनी में टूट पड़े और बेतलेहेम के फाटक के कूंए से पानी भरके दाऊद के पास ले आये पर उस ने पीने से नाह की और यहोवा के साम्हने १७ अर्घ करके उण्डेलकर कहा, हे यहोवा मुझ से ऐसा करना दूर रहे क्या मैं उन मनुष्यों का लोहू पीऊं जो अपने प्राण पर खेलकर गये थे सो उस ने वह पानी पीने से नाह की। इन तीन बीरों ने तो ये ही काम १८ किये। और अबीशै जो सरूयाह के पुत्र योआब का भाई था वह तीनों में से मुख्य था। उस ने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला और तीनों में १९ नामी हो गया। क्या वह तीनों से अधिक प्रतिष्ठित न था और इसी से वह उन का प्रधान हो गया पर मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। फिर यहोयादा का २० पुत्र बनायाह था जो कबसेलवासी एक बड़े काम करनेहारे बीर का पुत्र था। उस ने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला और बरफ के समय उस ने एक गड़हे में उतरके एक सिंह को मार डाला। फिर उस ने एक २१ रूपवान् मिस्री पुरुष को मार डाला मिस्री तो हाथ में भाला लिये हुए था पर बनायाह एक लाठी ही लिये हुए उस के पास गया और मिस्री के हाथ से भाले को छीन कर उसी के भाले से उसे घात किया। ऐसे ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनों २२ बीरों में नामी हो गया। वह तीसों से अधिक प्रतिष्ठित २३ तो था पर मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। उस को दाऊद ने अपनी निज सभा का सभासद किया।

फिर तीसों में योआब का भाई असाहेल बेतलेहेमी २४ दोदो का पुत्र एल्हानान, हेरोदी शम्मा और एलीका, २५ पेलेती हेलेस तकोई इक्केश का पुत्र ईरा, अनातोती २६,२७ अबीएजेर हूशाई मबुन्ने अहोही सल्मोन नतोपाही महरै २८ एक और नतोपाई बाना का पुत्र हेलेब बिन्यामीनियों २९ के गिबा नगर के रीबै का पुत्र इत्तै, पिरातोनी बनायाह ३० गाश के नालों के पास रहनेहारा हिद्दै, अराबा का अबी- ३१ अल्बोन बहूरीमी अजमावेत शालबोनी एल्यहबा याशेन ३२ के वंश में से योनातान, हराड़ी शम्मा अरारी शारार का ३३ पुत्र अहीआम, अहसबै का पुत्र एलीपेलेत माका देश ३४ के एक जन का पुत्र गीलोई अहीतोपेल का पुत्र एलीआम, कर्म्मेली हेस्रो अराबी पारै, सोबाई नातान ३५,३६ का पुत्र यिगाल गादी बानी, अम्मोनी सेलेक बेरोती ३७ नहरै जो सरूयाह के पुत्र योआब का हथियार ढोनेहारा था, येतेरी ईरा और गारेब, और हित्ती ३८,३९ ऊरिय्याह था सब मिलाकर सैंतीस थे।

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना और इस पाप का दण्ड भोगना और पापमोचन पाना)

२४.

और यहोवा का कोप इस्राएलियों पर फिर भड़का और उस ने दाऊद को उन की हानि के लिये यह कहकर उभारा कि इस्राएल और यहूदा की गिनती ले। सो राजा ने योआब २ सेनापति से जो उस के पास था कहा तू दान से बेर्शेबा लों रहनेहारे सारे इस्राएली गोत्रों में इधर उधर घूम और तुम लोग प्रजा की गिनती लो कि मैं जान लूं कि प्रजा की कितनी गिनती है। योआब ने राजा से कहा प्रजा के ३ लोग कितने ही क्यों न हों तेरा परमेश्वर यहोवा उन

(१) मूल में से भरा।

को सौगुणा बढ़ा दे और मेरा प्रभु राजा इसे अपनी आंखों से देखने भी पाए पर हे मेरे प्रभु हे राजा यह बात तू क्यों चाहता है। तौभी राजा की आज्ञा योआब और सेनापतियों पर प्रबल हुई सो योआब और सेनापति राजा के सन्मुख से इस्राएली प्रजा की गिनती लेने को निकल गये। उन्हों ने यर्दन पार जाकर अरोएर नगर की दक्खिन ओर डेरे खड़े किये जो गाद के नाले के बीच है और याजेर की ओर है। तब वे गिलाद में और तहतीम्होदशी नाम देश में गये फिर दान्यान को गये और चक्कर लगाकर सीदोन में पहुंचे। तब वे सोर नाम दृढ़ गढ़ और हिव्वियों और कनानियों के सब नगरों में गये और उन्हों ने यहूदा देश की दक्खिन दिशा में बेर्शेबा में दौरा निपटाया। सो सारे देश में इधर उधर घूम घूमकर वे नौ महीने और बीस दिन के बीते पर यरूशलेम को आये। तब योआब ने प्रजा की गिनती का जोड़ राजा को सुनाया और तलवारिये योद्धा इस्राएल के तो आठ लाख और यहूदा के पांच लाख ठहरे॥

१० प्रजा की गिनती कराने के पीछे दाऊद का मन छिद गया और दाऊद ने यहोवा से कहा यह जो काम मैं ने किया सो बड़ा ही पाप है सो अब हे यहोवा अपने दास का अधर्म्म दूर कर क्योंकि मुझ से बड़ी मूर्खता ११ हुई। बिहान को जब दाऊद उठा तब यहोवा का यह वचन गाद नाम नबी के पास जो दाऊद का दर्शी था १२ पहुंचा कि, जाकर दाऊद से कह कि यहोवा यों कहता है कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूं उन में से १३ एक को चुन ले कि मैं उसे तुझ पर डालूं। सो गाद ने दाऊद के पास जाकर इस का समाचार दिया और उस से पूछा क्या तेरे देश में सात बरस का अकाल पड़े वा तीन महीने लों तेरे शत्रु तेरा पीछा करते रहें और तू उन से भागता रहे वा तेरे देश में तीन दिन लों मरी फैली रहे अब सोच विचार कर कि मैं अपने भेजनेहारे १४ को क्या उत्तर दूं। दाऊद ने गाद से कहा मैं बड़े संकट में पड़ा हूं हम यहोवा के हाथ में पड़ें क्योंकि उस की १५ दया बड़ी है पर मनुष्य के हाथ में मैं न पड़ूं। सो यहोवा इस्राएलियों में बिहान से ले ठहराये हुए समय तक मरी फैलाये रहा और दान से लेकर बेर्शेबा लों रहनेहारी प्रजा में से सत्तर हजार पुरुष मर गये। पर जब दूत ने १६ यरूशलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया तब यहोवा वह विपत्ति डालकर पछताया और प्रजा के नाश करनेहारे दूत से कहा बस कर अब अपना हाथ खींच। और यहोवा का दूत अरौना नाम एक यबूसी के खलिहान के पास था। सो जब प्रजा का नाश करनेहारा १७ दूत दाऊद को देख पड़ा तब उस ने यहोवा से कहा देख पाप तो मैं ही ने किया और कुटिलता मैं ही ने की है पर इन भेड़ों ने क्या किया है सो तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो॥

उसी दिन गाद ने दाऊद के पास आकर उस से १८ कहा जाकर अरौना यबूसी के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनवा। सो दाऊद यहोवा की आज्ञा के १९ अनुसार गाद का वह वचन मानकर वहां गया। तब २० अरौना ने दृष्टि कर दाऊद को कर्म्मचारियों समेत अपनी ओर आते देखा सो अरौना ने निकलकर भूमि पर मुंहके बल गिर राजा को दण्डवत् की। और अरौना ने कहा २१ मेरा प्रभु राजा अपने दास के पास क्यों पधारा है दाऊद ने कहा तुझ से यह खलिहान मोल लेने आया हूं कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊं इसलिये कि यह व्याधि प्रजा पर से दूर की जाए। अरौना ने दाऊद से कहा मेरा प्रभु २२ राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे सो लेकर चढ़ाए देख होमबलि के लिये तो बैल हैं और दांवने के हथियार और बैलों का सामान ईंधन का काम देंगे। यह सब अरौना ने राजा को दे दिया। फिर अरौना ने राजा से कहा २३ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रसन्न होए। राजा ने २४ अरौना से कहा ऐसा नहीं मैं ये वस्तुएं तुझ से अवश्य दाम देकर लूंगा मैं अपने परमेश्वर यहोवा को संतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का। सो दाऊद ने खलिहान और बैलों को चांदी के पचास शेकेल में मोल लिया। तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनवाकर २५ होमबलि और मेलबलि चढ़ाये और यहोवा ने देश के निमित्त बिनती सुन ली सो वह व्याधि इस्राएल पर से दूर हो गई॥

राजाओं का वृत्तान्त । पहिला भाग ।

(अदोनिय्याह की राजद्रोह की गोष्ठी और उस का तोड़ा जाना)

१ दाऊद राजा बूढ़ा बरन बहुत पुरनिया हुआ और यद्यपि उस को कपड़े २ ओढ़ाये जाते थे तौभी वह गर्माता न था। सो उस के कर्म्मचारियों ने उस से कहा हमारे प्रभु राजा के लिये कोई जवान कुंवारी खोजी जाए जो राजा के सन्मुख रहकर उस की टहलुइन हो और तेरे पास[१] लेटा करे कि ३ हमारा प्रभु राजा गर्माए। तब उन्हों ने सारे इस्राएली देश में सुन्दर कुंवारी खोजते खोजते अबीशग नाम एक ४ शूनेमिन को पाया और राजा के पास ले आये। वह कन्या बहुत ही सुन्दर थी और वह राजा की टहलुइन होकर उस की सेवा करती रही पर राजा ने उस से प्रसंग ५ न किया। तब हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह सिर ऊंचा करके कहने लगा कि मैं राजा हूंगा सो उस ने रथ और सवार और अपने आगे आगे दौड़ने को पचास पुरुष ६ रख लिये। उस के पिता ने तो जन्म से लेकर उसे कभी यह कहकर उदास न किया था कि तू ने ऐसा क्यों किया। वह बहुत रूपवान् था और अबशालोम के पीछे उस ७ का जन्म हुआ था। और उस ने सरूयाह के पुत्र योआब से और एब्यातार याजक से बातचीत की और ८ उन्हों ने उस के पीछे होकर उस की सहायता की। पर सादोक याजक यहोयादा का पुत्र बनायाह नातान नबी शिमी रेई और दाऊद के शूरवीरों ने अदोनिय्याह का ९ साथ न दिया। और अदोनिय्याह ने जोहेलेत नाम पत्थर के पास जो एनरोगेल के निकट है भेड़ बैल और तैयार किये हुए पशु बलि किये और अपने भाई सब राजकुमारों को और राजा के सब यहूदी कर्म्मचारियों को बुला १० लिया। पर नातान नबी और बनायाह और शूरवीरों को और अपने भाई सुलैमान को उस ने न बुलाया। ११ तब नातान ने सुलैमान की माता बतशेबा से कहा क्या तू ने सुना है कि हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह राजा बन १२ बैठा है और हमारा प्रभु दाऊद इसे नहीं जानता। सो अब आ मैं तुझे ऐसी सम्मति देता हूं जिस से तू अपना और अपने पुत्र सुलैमान का प्राण बचाए। १३ तू दाऊद राजा के पास जाकर उस से यों पूछ कि हे मेरे प्रभु हे राजा क्या तू ने किरिया खाकर अपनी दासी से नहीं कहा कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी राजगद्दी पर विराजेगा, फिर अदोनिय्याह क्यों राजा बन बैठा है। १४ और जब तू वहां राजा से ऐसी बातें करती रहेगी तब मैं तेरे पीछे आकर तेरी बातों को पुष्ट करूंगा। १५ तब बतशेबा राजा के पास कोठरी में गई राजा तो बहुत बूढ़ा था और उस की सेवा टहल शूनेमिन अबीशग करती थी। १६ सो बतशेबा ने झुककर राजा को दण्डवत् की और राजा ने पूछा तू क्या चाहती है। १७ उस ने उत्तर दिया हे मेरे प्रभु तू ने तो अपने परमेश्वर यहोवा की किरिया खाकर अपनी दासी से कहा था कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा। १८ अब देख अदोनिय्याह राजा बन बैठा है और अब लों मेरा प्रभु राजा इसे नहीं जानता। १९ और उस ने बहुत से बैल तैयार किये पशु और भेड़ें बलि कीं और सब राजकुमारों को और एब्यातार याजक और योआब सेनापति को बुलाया है पर तेरे दास सुलैमान को नहीं बुलाया। २० और हे मेरे प्रभु हे राजा सब इस्राएली तुझे ताक रहे हैं कि तू उन से कहे कि हमारे प्रभु राजा की गद्दी पर उस के पीछे कौन बैठेगा। २१ नहीं तो जब हमारा प्रभु राजा अपने पुरखाओं के संग सोएगा तब मैं और मेरा पुत्र सुलैमान दोनों अपराधी गिने जाएंगे। २२ यों बतशेबा राजा से बातें कर रही थी कि नातान नबी भी आया। २३ और राजा से कहा गया कि नातान नबी हाजिर है तब वह राजा के सन्मुख आया और मुंह के बल गिरके राजा को दण्डवत् की। २४ और नातान कहने लगा हे मेरे प्रभु हे राजा क्या तू ने कहा है कि अदोनिय्याह मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा। २५ देख उस ने आज नीचे जाकर बहुत से बैल तैयार किये हुए पशु और भेड़ें बलि की हैं और सब राजकुमारों और सेनापतियों को और एब्यातार याजक को भी बुला लिया है और वे उस के सन्मुख खाते पीते हुए कह रहे हैं कि अदोनिय्याह राजा जीता रहे। २६ पर

(१) मूल में तेरी गोद में।

मुझ तेरे दास को और सादोक याजक और यहोयादा के पुत्र बनायाह और तेरे दास सुलैमान को उस ने नहीं बुलाया। २७ क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से हुआ। तू ने तो अपने दास को यह न जताया है कि प्रभु राजा की गद्दी पर कौन उस के पीछे बिराजेगा। २८ दाऊद राजा ने कहा बतशेबा को मेरे पास बुला लाओ तब वह राजा के पास आकर उस के साम्हने खड़ी हुई। २९ राजा ने किरिया खाकर कहा यहोवा जो मेरा प्राण सब जोखिमों से बचाता आया है उस के जीवन की सौंह, ३० जैसा मैं ने तुझ से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की किरिया खाकर कहा था कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरे बदले मेरी गद्दी पर बिराजेगा वैसा ही मैं निश्चय आज के दिन करूंगा। ३१ तब बतशेबा ने भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा लों जीता रहे। ३२ तब दाऊद राजा ने कहा मेरे पास सादोक याजक नातान नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ सो वे राजा के साम्हने आये। ३३ राजा ने उन से कहा अपने प्रभु के कर्म्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ और गीहोन को ले जाओ। ३४ और वहां सादोक याजक और नातान नबी इस्राएल का राजा होने को उस का अभिषेक करें तब तुम सब नरसिंगा फूंककर कहना राजा सुलैमान जीता रहे। ३५ और तुम उस के पीछे पीछे इधर आना और वह आकर मेरे सिंहासन पर बिराजे क्योंकि मेरे बदले में वही राजा होगा और उसी को मैं ने इस्राएल और यहूदा का प्रधान होने को ठहराया है। ३६ तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने कहा आमेन मेरे प्रभु राजा का परमेश्वर यहोवा भी ऐसा ही कहे। ३७ जिस रीति यहोवा मेरे प्रभु राजा के संग रहा उसी रीति वह सुलैमान के भी संग रहे और उस का राज्य मेरे प्रभु दाऊद राजा के राज्य से भी अधिक बढ़ाए। ३८ सो सादोक याजक और नातान नबी और यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों को संग लिये हुए नीचे गये और सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाकर गीहोन को ले चले। ३९ तब सादोक याजक ने यहोवा के तम्बू में से तेल भरा हुआ सींग निकाला और सुलैमान का राज्याभिषेक किया और वे नरसिंगे फूंकने लगे और सब लोग बोल उठे राजा सुलैमान जीता रहे। ४० तब सब लोग उस के पीछे पीछे बांसुली बजाते और इतना बड़ा आनन्द करते हुए ऊपर गये कि उन की ध्वनि से पृथ्वी डोल उठी[१]। ४१ जब अदोनिय्याह और उस के सब नेवतहरी खा चुके थे तब यह ध्वनि उन को सुनाई पड़ी और योआब ने नरसिंगे का शब्द सुनकर पूछा नगर में हौरे का शब्द क्यों होता है। ४२ वह यह कहता ही था कि एब्यातार याजक का पुत्र योनातान आया और अदोनिय्याह ने उस से कहा भीतर आ तू तो भला मनुष्य है और भला[२] समाचार भी लाया होगा। ४३ योनातान ने अदोनिय्याह से कहा सचमुच हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा बना दिया। ४४ और राजा ने सादोक याजक नातान नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह और करेतियों और पलेतियों को उस के संग भेज दिया और उन्हों ने उस को राजा के खच्चर पर चढ़ाया। ४५ और सादोक याजक और नातान नबी ने गीहोन में उस का राज्याभिषेक किया है और वे वहां से ऐसा आनन्द करते हुए ऊपर गये हैं कि नगर में हौरा मचा जो शब्द तुम को सुन पड़ा सो वही है। ४६ और सुलैमान राजगद्दी पर बिराज भी रहा है। ४७ फिर राजा के कर्म्मचारी हमारे प्रभु दाऊद राजा को यह कहकर धन्य कहने आये कि तेरा परमेश्वर सुलैमान का नाम तेरे नाम से भी बड़ा करे और उस का राज्य तेरे राज्य से भी अधिक बढ़ाए और राजा ने अपने पलंग पर दण्डवत् की। ४८ फिर राजा ने यह भी कहा कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है जिस ने आज मेरे देखते एक को मेरी गद्दी पर विराजमान किया है। ४९ तब जितने नेवतहरी अदोनिय्याह के संग थे सो सब थरथरा गये और उठकर अपना अपना मार्ग लिया। ५० और अदोनिय्याह सुलैमान से डर कर उठा और जाकर वेदी के सींगों को पकड़ा। ५१ तब सुलैमान को यह समाचार मिला कि अदोनिय्याह सुलैमान राजा से ऐसा डर गया है कि उस ने वेदी के सींगों को यह कहकर पकड़ लिया है कि आज राजा सुलैमान किरिया खाए कि अपने दास को तलवार से न मार डालूंगा। ५२ सुलैमान ने कहा यदि वह भलमनसी दिखाए तो उस का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा पर यदि उस में दुष्टता पाई जाए तो वह मारा जाएगा। ५३ तब राजा सुलैमान ने कितनों को भेज दिया जो उस को वेदी के पास से उतार ले आये तब उस ने आकर राजा सुलैमान को दण्डवत् की और सुलैमान ने उस से कहा अपने घर चला जा॥

(दाऊद की मृत्यु और सुलैमान के राज्य का आरम्भ)

२. जब दाऊद के मरने का समय निकट आया तब उस ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा कि, २ मैं लोक की रीति पर कूच करनेवाला हूं सो

(१) मूल में फट गई।

(२) मूल में अच्छा।

३ तू हियाव बांधकर पुरुषार्थ दिखा। और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है उस की रक्षा करके उस के मार्गों पर चला कर और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है वैसा ही उस की विधियों आज्ञाओं और नियमों और चितौनियों को मानता रह जिस से जो कुछ तू करे
४ और जिधर तू फिरे उस में तू बुद्धि से काम करे, और जिस से यहोवा अपना वह वचन पूरा करे जो उस ने मेरे विषय कहा था कि यदि तेरे सन्तान अपनी चाल के विषय ऐसे सावधान रहें कि अपने सारे हृदय और सारे जीव से सच्चाई के साथ अपने को मेरे सन्मुख जानकर चलते रहें[१] तो इस्राएल की राजगद्दी पर विराजनेहारे
५ की तेरे कुल में घटी कभी न होगी। फिर तू आप जानता है कि सरूयाह के पुत्र योआब ने मुझ से क्या क्या किया अर्थात् उस ने नेर के पुत्र अब्नेर और येतेर के पुत्र अमासा इस्राएल के दो सेनापतियों से क्या किया उस ने उन दोनों को घात किया और मेल के समय युद्ध का लोहू बहाकर उस से अपनी कमर का
६ फेंटा और अपने पांवों की जूतियां भिगो दीं। सो तू अपनी बुद्धि के अनुसार करके उस पक्के बालवाले को
७ अधोलोक में शांति से उतरने न देना। फिर गिलादी बर्जिल्लै के पुत्रों पर कृपा रखना और वे तेरी मेज पर खानेहारों में रहें क्योंकि जब मैं तेरे भाई अबशालोम के साम्हने से भागा जाता था तब उन्हों ने मेरे पास
८ आकर वैसा ही किया था। फिर सुन तेरे पास बिन्यामीनी गेरा का पुत्र बहूरीमी शिमी रहता है जिस दिन मैं महनैम को जाता था उस दिन उस ने मुझे कड़ाई से कोसा था पर जब वह मेरी भेंट के लिये यर्दन को आया तब मैं ने उस से यहोवा की यह किरिया खाई कि मैं
९ तुझे तलवार से न मार डालूंगा। पर अब तू इसे निर्दोष न ठहराना तू तो बुद्धिमान् पुरुष है सो तुझे मालूम होगा कि उस से क्या करना चाहिये और उस पक्के बालवाले का लोहू बहाकर उसे अधोलोक में उतार
१० देना। तब दाऊद अपने पुरखाओं के संग सोया और
११ दाऊदपुर में उसे मिट्टी दी गई। दाऊद ने इस्राएल पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस तो उस ने हेब्रोन में और तेंतीस बरस यरूशलेम में राज्य किया था॥

१२ तब सुलैमान अपने पिता दाऊद की गद्दी पर
१३ विराजा और उस का राज्य बहुत दृढ़ हुआ। और हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह सुलैमान की माता बतशेबा के पास आया और बतशेबा ने पूछा क्या तू मित्रभाव
१४ से आता है उस ने उत्तर दिया हां मित्रभाव से। फिर वह कहने लगा मुझे तुझ से एक बात कहनी है उस ने
१५ कहा कह। उस ने कहा तुझे तो मालूम है कि राज्य मेरा हो गया था और सारे इस्राएली मेरी ओर रुख किये थे कि मैं राज्य करूं पर अब राज्य पलटकर मेरे भाई का हो गया है क्योंकि वह यहोवा की ओर से उस को मिला
१६ है। सो अब मैं तुझ से एक बात मांगता हूं मुझ से नाह
१७ न करना उस ने कहा कहे जा। उस ने कहा राजा सुलैमान तुझ से नाह न करेगा सो उस से कह कि वह
१८ मुझे शूनेमिन अबीशग को ब्याह दे। बतशेबा ने कहा
१९ अच्छा मैं तेरे लिये राजा से कहूंगी। सो बतशेबा अदोनिय्याह के लिए राजा सुलैमान से बातचीत करने को उस के पास गई और राजा उस की भेंट के लिये उठा और उसे दण्डवत् करके अपने सिंहासन पर बैठ गया फिर राजा ने अपनी माता के लिये एक सिंहासन धरा दिया और वह उस की दहिनी ओर बैठ गई। तब वह
२० कहने लगी मैं तुझ से एक छोटी सी बात मांगती हूं सो मुझ से नाह न करना राजा ने कहा हे माता मांग मैं तुझ
२१ से नाह न करूंगा। उस ने कहा वह शूनेमिन अबीशग
२२ तेरे भाई अदोनिय्याह को ब्याह दी जाए। राजा सुलैमान ने अपनी माता को उत्तर दिया तू अदोनिय्याह के लिये शूनेमिन अबीशग ही को क्यों मांगती है उस के लिये राज्य भी मांग क्योंकि वह तो मेरा बड़ा भाई है और उसी के लिये क्या एब्यातार याजक और सरूयाह के पुत्र
२३ योआब के लिये भी मांग। और राजा सुलैमान ने यहोवा की किरिया खाकर कहा यदि अदोनिय्याह ने यह बात अपने प्राण पर खेलकर न कही हो तो परमेश्वर मुझ से
२४ वैसा ही बरन उस से भी अधिक करे। अब यहोवा जिस ने मुझे स्थिर किया और मेरे पिता दाऊद की राजगद्दी पर विराजमान किया और अपने वचन के अनुसार मेरा घर बसाया है उस के जीवन की सौंह आज ही अदोनिय्याह
२५ मार डाला जाएगा। और राजा सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को भेज दिया और उस ने जाकर उस को
२६ ऐसा मारा कि वह मर गया। और एब्यातार याजक से राजा ने कहा अनातोत में अपनी भूमि को जा क्योंकि तू भी प्राण दण्ड के योग्य है आज के दिन तो मैं तुझे न मार डालूंगा क्योंकि तू मेरे पिता दाऊद के साम्हने प्रभु यहोवा का संदूक उठाया करता था और उन सब दुःखों में जो मेरे पिता पर
२७ पड़े थे तू भी दुःखी था। और सुलैमान ने एब्यातार को यहोवा के याजक होने के पद से उतार दिया इसलिये कि जो वचन यहोवा ने एली के वंश के विषय शीलो में
२८ कहा था सो पूरा हो जाए। और इस का समाचार योआब तक पहुंचा। योआब अबशालोम के पीछे तो न

(१) मूल में मेरे साम्हने चलते रहें।

फिरा था पर अदोनिय्याह के पीछे फिरा था। सो योआब यहोवा के तंबू को भाग गया और वेदी के सींगों को पकड़ २९ लिया। और राजा सुलैमान को यह समाचार मिला कि योआब यहोवा के तंबू को भाग गया है और वह वेदी के पास है सो सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को यह ३० कहकर भेज दिया कि तू जाकर उसे मार डाल। सो बनायाह ने यहोवा के तंबू पास जाकर उस से कहा राजा की यह आज्ञा है कि निकल आ उस ने कहा नहीं मैं यहीं मर जाऊंगा सो बनायाह ने लौटकर यह सन्देश राजा ३१ को दिया कि योआब ने मुझे यों ही उत्तर दिया। राजा ने उस से कहा उस के कहने के अनुसार उस को मार डाल और उसे मिट्टी दे ऐसा करके निर्दोषों का जो खून योआब ने किया है उस का दोष तू मुझ पर से और मेरे ३२ पिता के घराने पर से दूर करेगा। और यहोवा उस के सिर वह खून लौटा देगा उस ने तो मेरे पिता दाऊद के बिन जाने अपने से अधिक धर्म्मी और भले दो पुरुषों पर अर्थात् इस्राएल के प्रधान सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर और यहूदा के प्रधान सेनापति येतेर के पुत्र अमासा पर टूटकर उन ३३ को तलवार से मार डाला था। यों योआब के सिर पर और उस की सन्तान के सिर पर खून सदा लों रहेगा पर दाऊद और उस के वंश और उस के घराने और उस के राज्य ३४ पर[१] यहोवा की ओर से शांति सदा लों रहेगी। तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने जाकर योआब को मार डाला और उस को जंगल में उसी के घर में मिट्टी दी ३५ गई। तब राजा ने उस के स्थान पर यहोयादा के पुत्र बनायाह को प्रधान सेनापति ठहराया और एब्यातार के ३६ स्थान पर सादोक याजक को ठहराया। और राजा ने शिमी को बुलवा भेजा और उस से कहा तू यरूशलेम में अपना एक घर बनाकर वहीं रहना और नगर से ३७ बाहर कहीं न जाना। तू निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर किद्रोन नाले के पार उतरे उसी दिन तू निःसंदेह मार डाला जाएगा और तेरा लोहू तेरे ही सिर ३८ पर पड़ेगा। शिमी ने राजा से कहा बात अच्छी है जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है वैसा ही तेरा दास करेगा सो ३९ शिमी बहुत दिन यरूशलेम में रहा। पर तीन बरस के बीते पर शिमी के दो दास गत नगर के राजा माका के पुत्र आकीश के पास भाग गये और शिमी को यह ४० समाचार मिला कि तेरे दास गत में हैं। तब शिमी उठकर अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दास ढूंढने के लिये गत को आकीश के पास गया और अपने दासों को ४१ गत से ले आया। जब सुलैमान राजा को इस का समाचार मिला कि शिमी यरूशलेम से गत को गया ४२ और फिर लौट आया है तब उस ने शिमी को बुलवा भेजा और उस से कहा क्या मैं ने तुझे यहोवा की किरिया न खिलाई थी और तुझ से चिताकर न कहा था कि यह निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर कहीं चला जाए उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा और क्या तू ने मुझ से न कहा था कि जो बात ४३ मैं ने सुनी सो अच्छी है। फिर तू ने यहोवा की किरिया ४४ और मेरी दृढ़ आज्ञा क्यों नहीं मानी। और राजा ने शिमी से कहा कि तू आप ही अपने मन में उस सारी दुष्टता को जानता है जो तू ने मेरे पिता दाऊद से की ४५ थी सो यहोवा तेरे सिर पर तेरी दुष्टता लौटा देगा। पर राजा सुलैमान धन्य रहेगा और दाऊद का राज्य यहोवा ४६ के साम्हने सदा लों दृढ़ रहेगा। तब राजा ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को आज्ञा दी और उस ने बाहर जाकर उस को ऐसा मारा कि वह भी मर गया। और सुलैमान के हाथ में राज्य दृढ़ हो गया॥

३. फिर राजा सुलैमान मिस्र के राजा फिरौन की बेटी ब्याह कर उस का दामाद हो गया और उस को दाऊदपुर में ले आकर जब लों अपना भवन और यहोवा का भवन और यरूशलेम के चारों ओर शहरपनाह न बनवा चुका २ तब लों उस को वहीं रक्खा। क्योंकि प्रजा के लोग तो ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते थे उन दिनों तक यहोवा के नाम ३ का कोई भवन न बना था। और सुलैमान यहोवा से प्रेम रखता और अपने पिता दाऊद की विधियों पर चलता तो रहा पर वह ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था॥

४ और राजा गिबोन को बलि चढ़ाने गया क्योंकि मुख्य ऊंचा स्थान वही था सो वहां की वेदी पर सुलैमान ५ ने एक हजार होमबलि चढ़ाये। गिबोन में यहोवा ने रात को स्वप्न के द्वारा सुलैमान को दर्शन देकर कहा जो ६ कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं सो मांग। सुलैमान ने कहा तू अपने दास मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा इस कारण से कि वह अपने को तेरे सन्मुख जानकर तेरे साथ सच्चाई और धर्म्म और मन की सीधाई से चलता रहा और तू ने यहां तक उस पर करुणा की थी कि उसे उस की गद्दी पर बिराजनेहारा एक ७ पुत्र दिया है जैसा कि आज है। और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू ने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है पर मैं छोटा लड़का सा हूं जो ८ भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता। फिर तेरा दास

(१) मूल में उस की राजगद्दी पर।

तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगों के बीच है जिन
९ की गिनती बहुतायत के मारे नहीं होती। सो अपने
दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने
की ऐसी शक्ति[१] दे कि मैं भले बुरे का विवेक कर सकूं
क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय
१० कर सके। इस बात से प्रभु प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने
११ ऐसा वर मांगा। सो परमेश्वर ने उस से कहा इस-
लिये कि तू ने यह वर मांगा है और न तो दीर्घायु न
धन न अपने शत्रुओं का नाश मांगा पर समझने के
१२ विवेक का बर मांगा है सुन मैं तेरे वचन के अनुसार
करता हूं मैं तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूं
यहां लों कि तेरे समान न तो तुझ से पहिले कोई कभी
१३ हुआ और न तेरे पीछे कोई होगा। फिर जो तू ने नहीं
मांगा अर्थात् धन और महिमा सो भी मैं तुझे यहां लों
देता हूं कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न
१४ होगा। फिर यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मेरे
मार्गों में चलता हुआ मेरी विधियों और आज्ञाओं को
१५ मानता रहे तो मैं तेरी आयु बढ़ाऊंगा। तब सुलैमान
जाग उठा और देखा कि यह स्वप्न हुआ फिर वह यरू-
शलेम को गया और यहोवा की वाचा के संदूक के
साम्हने खड़ा होकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाये
और अपने सब कर्म्मचारियों के लिये जेवनार की॥

१६ उस समय दो वेश्याएं राजा के पास आकर उस के
१७ सन्मुख खड़ी हुईं। उन में से एक स्त्री कहने लगी हे
मेरे प्रभु मैं और यह स्त्री दोनों एक ही घर में रहती हैं
१८ और इस के संग घर में रहते मैं लड़का जनी। फिर
मेरे जनने के तीन दिन बीते पर यह स्त्री भी लड़का
जनी हम तो संग ही संग थीं हम दोनों को छोड़कर घर
१९ में और कोई न था। और रात में इस स्त्री का बालक
२० इस के नीचे दबकर मर गया। तब इस ने आधी रात
को उठकर जब तेरी दासी सो रही थी तब मेरा लड़का
मेरे पास से लेकर अपनी छाती में रक्खा और अपना
२१ मरा हुआ बालक मेरी छाती में लिटा दिया। भोर को
जब मैं अपना बालक दूध पिलाने को उठी तब उसे मरा
पाया पर भोर को मैं ने चित्त लगाकर यह देखा कि जो
२२ पुत्र मैं जनी थी सो यह नहीं है। तब दूसरी स्त्री ने कहा
नहीं जीता पुत्र मेरा है और मरा पुत्र तेरा है पर वह
कहती रही नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र और जीता मेरा
२३ पुत्र है यों वे राजा के साम्हने बातें करती रहीं। राजा
ने कहा एक तो कहती है जो जीता है सोई मेरा पुत्र
है और मरा तेरा पुत्र है और दूसरी कहती है नहीं जो
मरा है सोई तेरा पुत्र है और जो जीता है वह मेरा पुत्र
२४ है। फिर राजा ने कहा मेरे पास तलवार ले आओ सो
२५ एक तलवार राजा के साम्हने लाई गई। तब राजा
बोला जीते हुए बालक को दो टुकड़े करके आधा इस
२६ को आधा उस को दो। तब जीते हुए बालक की माता
का मन अपने बेटे के स्नेह से भर आया और उस ने
राजा से कहा हे मेरे प्रभु जीता हुआ बालक उसी को दे
पर उस को किसी भांति न मार। दूसरी स्त्री ने कहा
वह न तो मेरा हो न तेरा वह दो टुकड़े किया जाए।
२७ तब राजा ने कहा पहिली को जीता हुआ बालक दो
किसी भांति उस को न मारो क्योंकि उस की माता वही
२८ है। जो न्याय राजा ने चुकाया था उस का समाचार
सारे इस्राएल को मिला और उन्हों ने राजा का भय
माना क्योंकि उन्हों ने यह देखा कि उस के मन में
न्याय करने को परमेश्वर की बुद्धि है॥

(सुलैमान का राजप्रबन्ध और माहात्म्य)

४. राजा सुलैमान तो सारे इस्राएल के
२ ऊपर राजा हुआ था। और उस
के हाकिम ये थे अर्थात् सादोक का पुत्र अजर्याह याजक
शीशा के पुत्र एलीहोरेप और अहिय्याह प्रधान मन्त्री
३ थे। अहीलूद का पुत्र यहोशापात इतिहास का लेखक
४ था। फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह प्रधान सेनापति था
५ और सादोक और एब्यातार याजक थे। और नातान का
पुत्र अजर्याह भण्डारियों पर था और नातान का पुत्र
६ जाबूद याजक और राजा का मित्र भी था। और अही-
शार राजपरिवार के ऊपर था और अब्दा का पुत्र अदो-
७ नीराम बेगारों के ऊपर मुखिया था। और सुलैमान के
बारह भण्डारी थे जो सारे इस्राएलियों के अधिकारी
होकर राजा और उस के घराने के लिये भोजन का
प्रबन्ध करते थे एक एक पुरुष बरस दिन में अपने
८ अपने महीने में प्रबन्ध करता था। और उन के नाम ये
९ थे अर्थात् एप्रैम के पहाड़ी देश में बेन्हूर। और माकस
शाल्बीम बेतशेमेश और एलोनबेथानान में बेन्देकेर था।
१० अरुब्बोत में बेन्हेसेद जिस के अधिकार में सोको और
११ हेपेर का सारा देश था। दोर के सारे ऊंचे देश में बेन-
अबीनादाब जिस की स्त्री सुलैमान की बेटी तापत थी।
१२ और अहीलूद का पुत्र बाना जिस के अधिकार में तानाक
मगिद्दो और बेतशान का वह सारा देश था जो सारतान
के पास और यिज्रेल के नीचे और बेतशान से ले
आबेलमहोला लों अर्थात् योकमाम की परली ओर लों
१३ है। और गिलाद के रामोत में बेनगेबेर था इस के
अधिकार में मनश्शेई याईर के गिलाद के गांव थे अर्थात्

(१) मूल में सुननेहारा मन।

इसी के अधिकार में बाशान के अर्गोब का देश था जिस में शहरपनाह और पीतल के बेंड़ेवाले साठ बड़े बड़े नगर १४ थे। और इद्दो के पुत्र अहीनादाब के हाथ में महनैम था। १५ नप्ताली में अहीमास था जिस ने सुलैमान की बासमत १६ नाम बेटी को ब्याह लिया था। और आशेर और आलोत १७ में हूशै का पुत्र बाना, इस्साकार में पारुह का पुत्र १८ यहोशापात, और बिन्यामीन में एला का पुत्र शिमी था। १९ ऊरी का पुत्र गेबेर गिलाद में अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग के देश में था इस २० सारे देश में वही भण्डारी था। यहूदा और इस्राएल के लोग बहुत थे वे समुद्र के तीर पर की बालू के किनकों के समान बहुत थे और खाते पीते और आनन्द करते रहे॥

२१ सुलैमान तो महानद से ले पलिश्तियों के देश और मिस्र के सिवाने लों के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता करता था और उन के लोग सुलैमान के जीवन भर भेंट लाते २२ और उस के अधीन रहते थे। और सुलैमान की एक दिन की रसोई में इतना उठता था, अर्थात् तीस कोर मैदा साठ २३ कोर आटा, दस तैयार किये हुए बैल और चराइयों में से बीस बैल और सौ भेड़ बकरी और इन को छोड़ हरिन २४ चिकारे यखमूर और तैयार किए हुए पक्षी। क्योंकि महानद के इस पार के सारे देश पर अर्थात् तिप्सह से ले अज्जा लों जितने राजा थे उन सभों पर सुलैमान प्रभुता करता और अपने चारों ओर के सब रहनेहारों से २५ मेल रखता था। और दान से बेर्शेबा लों के सारे यहूदी और इस्राएली अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के २६ वृक्ष तले सुलैमान के जीवन भर निडर रहते थे। फिर उस के रथ के घोड़ों के लिये सुलैमान के चालीस हजार २७ थान थे और उस के बारह हजार सवार थे। और वे भण्डारी अपने अपने महीने में राजा सुलैमान के लिये और जितने उस की मेज पर आते थे उन सभों के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे किसी वस्तु की घटी होने न २८ पाती थी। और घोड़ों और वेग चलनेहारे घोड़ों के लिये जव और पुआल जहां प्रयोजन पड़ता था वहां आज्ञा के अनुसार एक एक जन पहुंचाया करता था॥

२९ और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी और उस की समझ बहुत ही बढ़ाई और उस के हृदय में समुद्र-तीर की बालू के किनकों के तुल्य अनगिनित गुण[१] दिये। ३० और सुलैमान की बुद्धि पूरब देश के सब निवासियों और ३१ मिस्रियों की भी सारी बुद्धि से बढ़कर थी। वह तो और सब मनुष्यों से बरन एतान एज्राही और हेमान और माहोल के पुत्र कलकोल और दर्दा से भी अधिक बुद्धिमान था और उस की कीर्त्ति चारों ओर की सब जातियों में फैल गई। उस ने तीन हजार नीतिवचन कहे और ३२ उस के एक हजार पांच गीत भी हैं। फिर उस ने लबानोन ३३ के देवदारुओं से लेकर भीत में से उगते हुए जूफा तक के सब पेड़ों की चर्चा और पशुओं पक्षियों रेंगनेहारे जन्तुओं और मछलियों की चर्चा की। और देश देश ३४ के लोग पृथिवी के सब राजाओं की ओर से जिन्हों ने सुलैमान की बुद्धि की कीर्त्ति सुनी थी उस की बुद्धि की बातें सुनने को आते थे॥

(१) मूल में हृदय की चौड़ाई।

(मन्दिर के बनने की तैयारी)

५. और सोर नगर के हीराम राजा ने अपने दूत सुलैमान के पास भेजे क्योंकि उस ने सुना था कि वह अभिषिक्त होकर अपने पिता के स्थान पर राजा हुआ है और दाऊद के जीवन भर हीराम उस का मित्र बना रहा। और सुलैमान ने २ हीराम के पास यों कहला भेजा कि, तुझे मालूम है कि मेरा ३ पिता दाऊद अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन इसलिये न बनवा सका कि वह चारों ओर लड़ाइयों में तब लों बझा रहा जब लों यहोवा ने उस के शत्रुओं को उस के पांव तले न कर दिया। पर अब मेरे परमेश्वर ४ यहोवा ने मुझे चारों ओर से विश्राम दिया और न तो कोई विरोधी है न कुछ विपत्ति देख पड़ती है। सो मैं ने ५ अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने को ठाना है अर्थात् उस बात के अनुसार जो यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कही थी कि तेरा पुत्र जिसे मैं तेरे स्थान में गद्दी पर बैठाऊंगा वही मेरे नाम का भवन बनवाएगा। सो अब तू मेरे लिये लबानोन पर से देवदारु ६ काटने की आज्ञा दे और मेरे दास तेरे दासों के संग रहेंगे और जो कुछ मजूरी तू ठहराए वही मैं तुझे तेरे दासों के लिये दूंगा तुझे मालूम तो है कि सीदोनियों के बराबर लकड़ी काटने का भेद हम लोगों में से कोई नहीं जानता। सुलैमान की ये बातें सुनकर हीराम बहुत ७ आनन्दित हुआ और कहा आज यहोवा धन्य है जिस ने दाऊद को उस बड़ी जाति पर राज्य करने के लिये एक बुद्धिमान् पुत्र दिया है। सो हीराम ने सुलैमान के पास ८ यों कहला भेजा कि जो तू ने मेरे पास कहला भेजा सो मेरी समझ में आ गया देवदारु और सनौवर की लकड़ी के विषय जो कुछ तू चाहे सो मैं करूंगा। मेरे दास लकड़ी ९ को लबानोन से समुद्र लों पहुंचाएंगे फिर मैं उन के बेड़े बनवाकर जो स्थान तू मेरे लिये ठहराए वहां समुद्र के मार्ग से उन को पहुंचवा दूंगा वहां मैं उन को खोलकर डलवा दूंगा और तू उन्हें ले लेना और तू मेरे

परिवार के लिये भोजन देकर मेरी भी इच्छा पूरी
१० करना। सो हीराम सुलैमान की सारी इच्छा के अनुसार
उस को देवदारु और सनौबर की लकड़ी देने लगा।
११ और सुलैमान ने हीराम के परिवार के खाने के लिये
उसे बीस हजार कोर गेहूं और बीस कोर पेरा हुआ तेल
दिया यों सुलैमान हीराम को बरस बरस दिया करता
१२ था। और यहोवा ने सुलैमान को अपने वचन के
अनुसार बुद्धि दी और हीराम और सुलैमान के बीच मेल
रहा बरन उन दोनों ने आपस में वाचा भी बांधी॥

१३ और राजा सुलैमान ने सारे इस्राएल में से तीस
१४ हजार पुरुष बेगारी लगाये, और उन्हें लबानोन पहाड़
पर पारी पारी करके महीने महीने दस हजार भेज दिया
एक महीना तो वे लबानोन पर और दो महीने घर पर
रहा करते थे और बेगारियों के ऊपर अदोनीराम ठहराया
१५ गया। और सुलैमान के सत्तर हजार बोझ ढोनेहारे और
पहाड़ पर अस्सी हजार वृक्ष काटनेहारे और पत्थर
१६ निकालनेहारे थे। इन को छोड़ सुलैमान के तीन हजार
१७ तीन सौ मुखिये थे जो काम करनेहारों के ऊपर थे। फिर
राजा की आज्ञा से बड़े बड़े अनमोल पत्थर इसलिये
खोदकर निकाले गये कि भवन की नेव गढ़े हुए पत्थरों
१८ से डाली जाए। और सुलैमान के कारीगरों और हीराम
के कारीगरों और गबालियों ने उन को गढ़ा और भवन
के बनाने के लिये लकड़ी और पत्थर तैयार किये॥

(मन्दिर आदि की बनावट)

६. इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने
के चार सौ अस्सीवें बरस
जो सुलैमान के इस्राएल पर राज्य करने का चौथा बरस
था उस जीव नाम दूसरे महीने में वह यहोवा का भवन
२ बनाने लगा। और जो भवन राजा सुलैमान ने यहोवा
के लिये बनाया उस की लंबाई साठ हाथ चौड़ाई बीस
३ हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की थी। और भवन के
मन्दिर के साम्हने के ओसारे की लंबाई बीस हाथ की
अर्थात् भवन की चौड़ाई के बराबर थी और ओसारे की
चौड़ाई जो भवन के साम्हने थी सो दस हाथ की थी।
४ फिर उस ने भवन में स्थिर झिलमिलीदार खिड़कियां
५ बनाईं। और उस ने भवन के आसपास की भीतों से
सटे हुए महलों को बनाया अर्थात् भवन के मन्दिर
और परमपवित्र स्थान दोनों भीतों के आसपास उस ने
६ कोठरियां बनाईं। सब से नीचेवाली महल की चौड़ाई
पांच हाथ और बीचवाली की छः हाथ और ऊपरवाली
की सात हाथ की हुई क्योंकि उस ने भवन के आसपास
भीत को बाहर की ओर कुर्सीदार बनाया इसलिये कि
कड़ियां भवन की भीतों में घुसेरी न जाएं। और बनते ७
समय भवन ऐसे पत्थरों का बनाया गया जो वहां ले
आने से पहिले गढ़कर ठीक किये गये थे और भवन के
बनते समय हथौड़े बसूली वा और किसी प्रकार के लोखर
का शब्द कभी सुनाई न पड़ा। बाहर की बीचवाली ८
कोठरियों का द्वार भवन की दहिनी अलंग में था और
लोग चक्करदार सीढ़ियों पर होकर बीचवाली कोठरियों
में जाते और उन से ऊपरवाली कोठरियों पर जाते थे।
उस ने भवन को बनाकर पूरा किया और उस की छत ९
देवदारु की कड़ियों और तख्तों से बनी। और सारे १०
भवन से लगी हुई जो महलें उस ने बनाईं सो पांच
पांच हाथ ऊंची थीं और वे देवदारु की कड़ियों के द्वारा
भवन से मिलाई गई थीं॥

तब यहोवा का यह वचन सुलैमान के पास पहुंचा ११
कि, यह भवन तो तू बना रहा है यदि तू मेरी विधियों १२
पर चलेगा और मेरे नियमों को मानेगा और मेरी सब
आज्ञाओं पर चलता हुआ उन्हें मानेगा तो जो वचन मैं
ने तेरे विषय तेरे पिता दाऊद को दिया उस को मैं पूरा
करूंगा। और मैं इस्राएलियों के बीच बास करूंगा और १३
अपनी इस्राएली प्रजा को न त्यागूंगा॥

सो सुलैमान ने भवन को बनाकर पूरा किया। १४
और उस ने भवन की भीतों पर भीतरवार देवदारु की १५
तखताबंदी की उस ने भवन के फरश से छत लों भीतों
में भीतरवार लकड़ी की तखताबंदी की और भवन के
फरस को उस ने सनौबर के तख्तों से बनाया। और १६
भवन की पिछली अलंग में भी उस ने बीस हाथ की
दूरी पर फरश से ले भीतों के ऊपर तक देवदारु की
तखताबंदी की इस प्रकार उस ने परमपवित्र स्थान के
लिये भवन की एक भीतरी कोठरी बनाई। और उस के १७
साम्हने की भवन अर्थात् मन्दिर की लम्बाई चालीस हाथ
की थी। और भवन की भीतों पर भीतरवार देवदारु १८
की लकड़ी की तखताबंदी थी और उस में इन्द्रायन
और खिले हुए फूल खुदे थे देवदारु ही देवदारु था
पत्थर कुछ न देख पड़ता था। भवन के भीतर उस ने १९
एक भीतरी कोठरी यहोवा की वाचा का संदूक रखने के
लिये तैयार की। और उस भीतरी कोठरी की लम्बाई २०
चौड़ाई और ऊंचाई बीस बीस हाथ की थी और उस ने
उस पर चोखा सोना मढ़ाया और वेदी की तखताबंदी
देवदारु से की। फिर सुलैमान ने भवन को भीतर २१
भीतर चोखे सोने से मढ़ाया और भीतरी कोठरी के
साम्हने सोने की सांकलें लगाईं और उस को भी सोने
से मढ़ाया। और उस ने सारे भवन को सोने से मढ़ाकर २२

उस का सारा काम निपटा दिया और भीतरी कोठरी की
२२ सारी वेदी को भी उस ने सोने से मढ़ाया। और भीतरी
२३ कोठरी में उस ने दस दस हाथ ऊंचे जलपाई की लकड़ी
२४ के दो करूब बना रक्खे। एक करूब का एक पंख पांच
हाथ का था और उस का दूसरा पंख पांच हाथ का था
एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे लों दस हाथ थे।
२५ और दूसरा करूब भी दस हाथ का था दोनों करूब एक
२६ ही नाप और एक ही आकार के थे। एक करूब की
ऊंचाई दस हाथ की और दूसरे की भी इतनी ही थी।
२७ और उस ने करूबों को भीतरवाले स्थान में धरवा दिया
और करूबों के पंख ऐसे फैले थे कि एक करूब का एक
पंख एक भीत से और दूसरे का दूसरा पंख दूसरी भीत
से लगा हुआ था फिर उन के दूसरे दो पंख भवन के
२८ बीच एक दूसरे से लगे हुए थे। और करूबों को उस ने
२९ सोने से मढ़ाया। और उस ने भवन की भीतों में बाहर
और भीतर चारों ओर करूब खजूर और खिले हुए फूल
३० खुदाये। और भवन के भीतर और बाहरवाले फरश उस
३१ ने सोने से मढ़ाये। और भीतरी कोठरी के द्वार पर उस
ने जलपाई की लकड़ी के किवाड़ लगाये चौखट के
सिरहाने और बाजुओं की लंबाई भवन की चौड़ाई का पांचवां
३२ भाग थी। दोनों किवाड़ जलपाई की लकड़ी के थे और
उस ने उन में करूब खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल
खुदवाये और सोने से मढ़ा और करूबों और खजूरों के
३३ ऊपर सोना चढ़ा दिया गया। इस रीति उस ने मन्दिर
के द्वार के लिये भी जलपाई की लकड़ी के चौखट के
बाजू बनाये और वह भवन की चौड़ाई की चौथाई थी।
३४ दोनों किवाड़ सनौबर की लकड़ी के थे जिन में से एक
किवाड़ के दो पल्ले थे और दूसरे किवाड़ के दो पल्ले
३५ थे जो पलटकर दुहर जाते थे। और उन पर भी उस ने
करूब खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदाये और
३६ खुदे हुए काम पर उस ने सोना मढ़ा। और उस ने भीतर-
वाले आंगन के घेरे को गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दे और
३७ एक परत देवदारु की कड़ियां लगा कर बनाया। चौथे बरस
के जीव नाम महीने में यहोवा के भवन की नेव डाली
३८ गई, और ग्यारहवें बरस बूल नाम आठवें महीने में वह
भवन उस सब समेत जो उस में उचित समझा गया बन चुका
इस रीति सुलैमान को उस के बनाने में सात बरस लगे॥

७. और सुलैमान ने अपने भवन को बनाया
और उस के पूरा करने में तेरह बरस
२ लगे। और उस ने लबानोनी वननाम भवन बनाया जिस
की लम्बाई सौ हाथ चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस
हाथ की थी वह तो देवदारु के खंभों की चार पांति पर
३ बना और खंभों पर देवदारु की कड़ियां धरी गईं। और
खंभों के ऊपर देवदारु की छतवाली पैंतालीस कोठरियां
४ अर्थात् एक एक महल में पन्द्रह कोठरियां बनीं। तीनों
महलों में कड़ियां धरी गईं और तीनों में खिड़कियां साम्हने
५ साम्हने बनीं। और सब द्वार और बाजुओं की कड़ियां भी
चौकोर थीं और तीनों महलों में खिड़कियां साम्हने साम्हने
६ बनीं। और उस ने एक खंभेवाला ओसारा भी बनाया
जिस की लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ की
थी और इन खंभों के साम्हने एक खंभेवाला ओसारा और
७ उस के साम्हने डेवढ़ी बनाई। फिर उस ने न्याय के सिंहा-
सन के लिये भी एक ओसारा बनाया जो न्याय का
ओसारा कहलाया और उस में एक फरश से दूसरे फरश
८ लों देवदारु की तखताबन्दी थी। और उसी के रहने का
भवन जो उस ओसारे के भीतर के एक और आंगन में
बना सो उसी ढब से बना। फिर उसी ओसारे के ढब से
सुलैमान ने फिरौन की बेटी के लिये जिस को उस ने ब्याह
९ लिया था एक और भवन बनाया। ये सब घर बाहर भीतर
नेव से मुंडेर लों ऐसे अनमोल और गढ़े हुए पत्थरों के
बने जो नापकर और आरों से चीरके तैयार किये गये थे
और बाहर के आंगन से ले बड़े आंगन तक लगाये गये।
१० उस की नेव तो बड़े मोल के बड़े बड़े अर्थात् दस दस और
११ आठ आठ हाथ के पत्थरों की डाली गई थी। और ऊपर भी
बड़े मोल के पत्थर थे जिन की नाप गढ़े हुए पत्थरों की सी
१२ थी और देवदारु की लकड़ी भी थी। और बड़े आंगन के
चारों ओर के घेरे में गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दे और देव-
दारु की कड़ियों का एक परत था जैसे कि यहोवा के भवन
के भीतरवाले आंगन और भवन के ओसारे में लगे थे॥

१३ फिर राजा सुलैमान ने सोर से हीराम को बुलवा
१४ भेजा। वह नप्ताली के गोत्र की किसी विधवा का बेटा
था और उस का पिता एक सोरवासी ठठेरा था और वह
पीतल की सब प्रकार की कारीगरी में पूरी बुद्धि निपुणता
और समझ रखता था, सो वह राजा सुलैमान के पास
१५ आकर उस का सारा काम करने लगा। उस ने पीतल
ढालकर अठारह अठारह हाथ ऊंचे दो खंभे बनाये और
१६ एक एक का घेरा बारह हाथ के सूत का था। और उस
ने खंभों के सिरों पर लगाने को पीतल ढालकर दो
कंगनी बनाईं एक एक कंगनी की ऊंचाई पांच पांच हाथ
१७ की थी। और खंभों के सिरों पर की कंगनियों के लिये
चारखाने की सात सात जालियां और सांकलों की सात
१८ सात झालरें बनीं। और उस ने खंभों को यों भी बनाया
कि खंभों[१] के सिरों पर की एक एक कंगनी के ढांपने को

(१) मूल में अनारों।

चारों ओर जालियों की एक एक पांति पर अनारों की
१९ दो पांति बनाईं। और जो कंगनियां ओसारों में खंभों के सिरों पर बनीं उन में चार चार हाथ ऊंचा सोसन फूल की
२० थीं। और एक एक खंभे के सिरे पर उस गोलाई के पास जो जाली से लगी थी एक और कंगनी बनी और एक एक कंगनी पर जो अनार चारों ओर पांति पांति करके
२१ बने सो दो सौ थे। इन खंभों को उस ने मन्दिर के ओसारे के पास खड़ा किया और दाहिनी ओर के खंभे को खड़ा करके उस का नाम याकीन[1] रक्खा फिर बाईं ओर के खंभे को खड़ा करके उस का नाम बोआज[2]
२२ रक्खा। और खंभों के सिरों पर सोसन फूल का काम बना
२३ खंभों का काम इसी रीति निपट गया। फिर उस ने एक ढाला हुआ गंगाल बनाया जो एक छोर से दूसरी छोर लों दस हाथ चौड़ा था उस का आकार गोल था और उस की ऊंचाई पांच हाथ की थी और उस के चारों
२४ ओर का घेर तीस हाथ के सूत का था। और उस के चारों ओर मोहड़े के नीचे एक एक हाथ में दस दस इन्द्रायन बने जो गंगाल को घेरे थीं जब वह ढाला गया
२५ तब ये इन्द्रायन भी दो पांति करके ढाले गये। और वह बारह बने हुए बैलों पर धरा गया जिन में से तीन उत्तर तीन पच्छिम तीन दक्खिन और तीन पूरब की ओर मुंह किये हुए थे और उन ही के ऊपर गंगाल था
२६ और उन सभों के पिछले अंग भीतरी पड़ते थे। और उस का दल चौवा भर का था और उस का मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाईं सोसन के फूलों के काम से
२७ बना था और उस में दो हजार बत समाता था। फिर उस ने पीतल के दस पाये बनाये एक एक पाये की लंबाई चार हाथ चौड़ाई भी चार हाथ और ऊंचाई तीन
२८ हाथ की थी। उन पायों की बनावट यों थी उन के पटरियां थीं और पटरियों के बीच बीच जोड़ भी
२९ थे। और जोड़ों के बीच बीच की पटरियों पर सिंह बैल और करूब बने और जोड़ों के ऊपर भी एक एक और पाया बना और सिंहों और बैलों के नीचे लटके
३० हुए हार बने। और एक एक पाये के लिये पीतल के चार पहिये और पीतल की धुरियां बनीं और एक एक के चारों कोनों से लगी ढलुवे कंधे भी ढालकर बनाये गये जो हौदी के नीचे तक पहुंचते थे और एक एक
३१ कंधे के पास हार थे। और हौदी का मोहड़ा जो पाये की कंगनी के भीतर और ऊपर भी था सो एक हाथ ऊंचा था और पाये का मोहड़ा जिस की चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी सो पाये की बनावट के समान गोल बना और

(१) अर्थात् वह स्थिर रक्खे। (२) अर्थात् उसी में बल।

पाये के उसी मोहड़े पर भी कुछ खुदा हुआ था और उन की पटरियां गोल नहीं चौकोर थीं। और चारों
३२ पहिये पटरियों के नीचे थे और एक एक पाये के पहियों में धुरियां भी थीं और एक एक पहिये की ऊंचाई डेढ़
३३ डेढ़ हाथ की थी। पहियों की बनावट रथ के पहिये की सी थी और उन की धुरियां पुट्ठियां आरे और नाभें सब
३४ ढाली हुई थीं। और एक एक पाये के चारों कोनों पर चार कंधे थे और कंधे और पाये दोनों एक ही टुकड़े
३५ के थे। और एक एक पाये के सिरे पर आध हाथ ऊंची चारों ओर गोलाई थी और पाये के सिरे पर की टेकें
३६ और पटरियां पाये से एक टुकड़े की थीं। और टेकों के पाटों और पटरियों पर जितनी जगह जिस पर थी उस में उस ने करूब और सिंह और खजूर के वृक्ष खोद कर भर दिये और चारों ओर हार भी बनाये।
३७ इसी ढब से उस ने दसों पायों को बनाया सभों का एक ही सांचा एक ही नाप और एक ही आकार था।
३८ और उस ने पीतल की दस हौदी बनाईं एक एक हौदी में चालीस चालीस बत समाता था और एक एक चार चार हाथ चौड़ी थीं और दसों पायों में से एक एक
३९ पर एक एक हौदी थी और उस ने पांच हौदी भवन की दक्खिन ओर और पांच उस की उत्तर ओर रख दीं और गंगाल को भवन की दहनी ओर अर्थात् पूरब
४० की ओर और दक्खिन के साम्हने धर दिया। और हीराम ने हौदियों[3] फावड़ियों और कटोरों को भी बनाया। सो हीराम ने राजा सुलैमान के लिये यहोवा के भवन में जितना काम करना था सो सब निपटा
४१ दिया, अर्थात् दो खंभे और उन कंगनियों की गोलाइयां जो दोनों खंभों के सिरे पर थीं और दोनों खंभों के सिरों पर की गोलाइयों के ढांपने को दो दो जालियां,
४२ और दोनों जालियों के लिये चार चार सौ अनार अर्थात् खंभों के सिरों पर जो गोलाइयां थीं उन के ढांपनेहारी
४३ एक एक जाली के लिये अनारों की दो दो पांति, दस
४४ पाये और इन पर की दस हौदी, एक गंगाल
४५ और उस के नीचे के बारह बैल, और हंडे फावड़ियां और कटोरे बने। ये सब पात्र जिन्हें हीराम ने यहोवा के भवन के निमित्त राजा सुलैमान के लिये बनाया सो झलकाये हुए पीतल के बने। राजा ने उन को यर्दन
४६ की तराई में अर्थात् सुक्कोत और सारतान के बीच की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढाला। और सुलैमान
४७ ने सब पात्रों को बहुत अधिक होने के कारण बिना तौले छोड़ दिया पीतल के तौल का कुछ लेखा न

(३) वा हंडों।

४८ हुआ। यहोवा के भवन के जितने पात्र थे सुलैमान ने सब बनाये अर्थात् सोने की वेदी और सोने की वह मेज ४९ जिस पर भेंट की रोटी रक्खी जाती थी, और चोखे सोने की दीवटें जो भीतरी कोठरी के आगे पांच तो दक्खिन ओर और पांच उत्तर ओर रक्खी गईं और सोने के फूल ५० दीपक और चिमटे, और चोखे सोने के तसले कैंचियां कटोरे धूपदान और करछे और भीतरवाला भवन जो परमपवित्र स्थान कहावता है और भवन जो मन्दिर कहावता है दोनों के किवाड़ों के लिये सोने के कब्जे ५१ बने। निदान जो जो काम राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये किया सो सब निपट गया। तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किये हुये सोने चांदी और पात्रों को भीतर पहुंचा कर यहोवा के भवन के भण्डारों में रख दिया॥

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

८. तब राजा सुलैमान ने इस्राएली पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुष जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के प्रधान थे उन को भी यरूशलेम में अपने पास इस मनसा से इकट्ठा किया कि वे यहोवा की वाचा का संदूक दाऊदपुर अर्थात् सिय्योन २ में ऊपर लिवा ले आए। सो सब इस्राएली पुरुष एतानीम नाम सातवें महीने के पर्व के समय राजा सुलैमान ३ के पास इकट्ठे हुए। जब सब इस्राएली पुरनिये आये ४ तब याजकों ने संदूक को उठा लिया। और यहोवा का संदूक और मिलाप का तंबू और जितने पवित्र पात्र उस तंबू में थे उन सभों को याजक और लेवीय लोग ऊपर ५ ले गये। और राजा सुलैमान और सारी इस्राएली मंडली जो उस के पास इकट्ठी हुई थी वे सब संदूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि कर रहे थे जिन की ६ गिनती किसी रीति से न हो सकती थी। तब याजकों ने यहोवा की वाचा का संदूक उस के स्थान को अर्थात् भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्थान है ७ पहुंचाकर करूबों के पङ्खों के तले रख दिया। करूब तो संदूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाये हुए थे कि वे ८ ऊपर से संदूक और उस के डंडों को ढांपे थे। डंडे तो ऐसे लम्बे थे कि उन के सिरे उस पवित्र स्थान से जो भीतरी कोठरी के साम्हने था देख पड़ते थे पर बाहर से तो वे ९ देख न पड़ते थे। वे आज के दिन लों वहीं हैं। संदूक में कुछ नहीं था उन दो पटियाओं को छोड़ जो मूसा ने होरेब में उस के भीतर उस समय रक्खीं जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने पर उन के साथ १० वाचा बांधी थी। जब याजक पवित्रस्थान से निकले तब यहोवा के भवन में बादल भर आया। और बादल ११ के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था॥

१२ तब सुलैमान कहने लगा यहोवा ने कहा था कि मैं १३ घोर अंधकार में वास किये रहूंगा। सचमुच मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान बरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है १४ जिस में तू युगयुग रहे। और राजा ने इस्राएल की सारी सभा की ओर मुंह फेरके उस को आशीर्वाद दिया १५ और सारी सभा खड़ी रही। और उस ने कहा धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिस ने अपने मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था और अपने हाथ से १६ उसे पूरा किया है कि, जिस दिन से मैं अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र से निकाल लाया तब से मैं ने किसी इस्राएली गोत्र का कोई नगर नहीं चुना जिस में मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए पर मैं ने दाऊद को चुन लिया कि वह मेरी प्रजा इस्राएल का अधिकारी १७ हो। मेरे पिता दाऊद की यह मनसा तो थी कि इस्राएल १८ के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं। पर यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा यह जो तेरी मनसा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं ऐसी १९ मनसा करके तू ने भला तो किया। तौ भी तू उस भवन को न बनाएगा तेरा जो निज पुत्र होगा वही मेरे नाम २० का भवन बनाएगा। यह जो वचन यहोवा ने कहा था उसे उस ने पूरा भी किया है और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर विराजता हूं और इस्राएल के परमेश्वर २१ यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया। और इस में मैं ने एक स्थान उस संदूक के लिये ठहराया है जिस में यहोवा की वह वाचा है जो उस ने हमारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकालने के समय उन से बांधी थी॥

२२ तब सुलैमान इस्राएल की सारी सभा के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ और अपने हाथ २३ स्वर्ग की ओर फैलाकर, कहा हे यहोवा हे इस्राएल के परमेश्वर तेरे समान न तो ऊपर स्वर्ग में और न नीचे पृथिवी पर कोई ईश्वर है तेरे जो दास अपने सारे मन से अपने को तेरे सन्मुख जानकर[१] चलते हैं उन के लिये तू अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहता २४ है। जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था उस का तू ने पालन किया है जैसा तू ने अपने मुंह से कहा था वैसा ही अपने हाथ से उस को पूरा किया है जैसा आज २५ है। सो अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा इस वचन

(१) मूल में तेरे साम्हने।

को भी पूरा कर जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था कि तेरे कुल में मेरे साम्हने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेहारे सदा बने रहेंगे इतना हो कि जैसे तू अपने को मेरे सम्मुख जानकर[१] चलता रहा वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चालचलन में ऐसी ही चौकसी करें। २६ सो अब हे इस्राएल के परमेश्वर अपना जो वचन तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था उसे सच्चा कर। २७ क्या परमेश्वर सचमुच पृथिवी पर वास करेगा स्वर्ग में बरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता फिर मेरे बनाये हुए इस भवन में क्योंकर समाएगा। २८ तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की ओर कान लगाकर मेरी चिल्लाहट और यह प्रार्थना सुन जो मैं आज तेरे साम्हने कर रहा हूं, २९ कि तेरी आंखें इस भवन की ओर अर्थात् इसी स्थान की ओर जिस के विषय तू ने कहा है कि मेरा नाम वहां रहेगा रात दिन खुली रहें और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे उसे तू सुन ले। ३० और तू अपने दास और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिस को वे इस स्थान की ओर गिड़गिड़ाके करें उसे सुनना स्वर्ग में जो तेरा निवासस्थान है सुन लेना और सुनकर क्षमा करना। ३१ जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे और उस को किरिया खिलाई जाए और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने किरिया खाए, ३२ तब तू स्वर्ग में सुनकर अर्थात् अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को दुष्ट ठहरा और उस की चाल उसी के सिर लौटा दे और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर उस के धर्म्म के अनुसार उस को फल देना। ३३ फिर जब तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम माने और इस भवन में तुझ से गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करे ३४ तब तू स्वर्ग में सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करना और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था। ३५ जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें और इस कारण आकाश बन्द हो जाए कि वर्षा न होए ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें और तू जो उन्हें दुःख देता है इस कारण अपने पाप से फिरें, ३६ तो तू स्वर्ग में सुनकर क्षमा करना अपने दासों अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को क्षमा करना तू जो उन को वह भला मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिये इसलिये अपने इस देश पर जो तू ने अपनी प्रजा का भाग कर दिया है पानी बरसा देना। ३७ जब इस

(१) मूल में तेरे साम्हने।

देश में काल वा मरी वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा उन के शत्रु उन के देश के फाटकों में उन्हें घेर रक्खें कोई विपत्ति वा रोग क्यों न हो, ३८ तब यदि कोई मनुष्य वा तेरी प्रजा इस्राएल अपने अपने मन का दुःख जान लें और गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाएं, ३९ तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में सुनकर क्षमा करना और काम करना और एक एक के मन की जानकर उस की सारी चाल के अनुसार उस को फल देना तू ही तो सारे आदमियों के मन की जाननेहारा है। ४० तब वे जितने दिन इस देश में रहें जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था उतने दिन लों तेरा भय मानते रहें। ४१ फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो जब वह तेरा नाम सुनकर दूर देश से आए, ४२ वह तो तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई बांह का समाचार पाए सो जब ऐसा कोई आकर इस भवन की ओर प्रार्थना करे, ४३ तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में सुने और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे उसी के अनुसार करना जिस से पृथिवी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय मानें और निश्चय करें कि यह भवन जिसे मैं ने बनाया है सो तेरा ही कहलाता है। ४४ जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे वहां अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएं और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है यहोवा से प्रार्थना करें, ४५ तब तू स्वर्ग में उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुने और उन का न्याय करे। ४६ निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है सो यदि ये भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे और वे उन को बंधुआ करके अपने देश को चाहे वह दूर हो चाहे निकट ले जाएं, ४७ तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें और फिरकर अपने बंधुआ करनेहारों के देश में तुझ से गिड़गिड़ाके कहें कि हम ने पाप किया और कुटिलता और दुष्टता की है, ४८ और यदि वे अपने उन शत्रुओं के देश में जो उन्हें बंधुआ करके ले गये हों अपने सारे मन और सारे जीव से तेरी ओर फिरें और अपने इस देश की ओर जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है तुझ से प्रार्थना करें, ४९ तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना और उन का न्याय करना, ५० और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध

करेंगे और जितने अपराध वे तेरे करेंगे सब को क्षमा करके उन के बंधुआ करनेहारों के मन में ऐसी दया ५१ उपजाना कि उन पर दया करें। क्योंकि वे तो तेरी प्रजा और तेरा निज भाग हैं जिन्हें तू लोहे के भट्ठे के बीच से ५२ अर्थात् मिस्र से निकाल लाया है। सो तेरी आंखें तेरे दास की गिड़गिड़ाहट और तेरी प्रजा इस्राएल की गिड़गिड़ाहट की ओर ऐसी खुली रहें कि जब जब वे तुझे ५३ पुकारें तब तब तू उन की सुने। क्योंकि हे प्रभु यहोवा अपने उस वचन के अनुसार जो तू ने हमारे पुरखाओं को मिस्र से निकालने के समय अपने दास मूसा के द्वारा दिया था तू ने इन लोगों को अपना निज भाग होने के लिये पृथिवी की सब जातियों से अलग किया है॥

५४ जब सुलैमान यहोवा से यह सब प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ कर चुका तब वह जो घुटने टेके आकाश की ओर हाथ फैलाये हुए था सो यहोवा की वेदी के ५५ साम्हने से उठा, और खड़ा हो सारी इस्राएली सभा को ५६ ऊंचे स्वर से यह कहकर आशीर्वाद दिया कि, धन्य है यहोवा जिस ने ठीक अपने कहे के अनुसार अपनी प्रजा इस्राएल को विश्राम दिया है जितनी भलाई की बातें उस ने अपने दास मूसा के द्वारा कही थीं उन में से एक ५७ भी बिना पूरी हुए नहीं रही। हमारा परमेश्वर यहोवा जैसे हमारे पुरखाओं के संग रहता था वैसे ही हमारे संग भी रहे वह हम को न त्यागे और न हम को छोड़ दे। ५८ वह हमारे मन अपनी ओर ऐसा फेर रक्खे कि हम उस के सारे मार्गों पर चला करें और उस की आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें उस ने हमारे पुरखाओं को ५९ दिया था माना करें। और मेरी ये बातें जिन करके मैं ने यहोवा के साम्हने बिनती की है सो दिन रात हमारे परमेश्वर यहोवा के मन में बनी रहें[१] और जैसा दिन दिन प्रयोजन हो वैसा ही वह अपने दास का और ६० अपनी प्रजा इस्राएल का न्याय किया करे, और इस से पृथिवी की सब जातियां यह जान लें कि यहोवा ही ६१ परमेश्वर है और कोई दूसरा नहीं। सो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा रहे कि आज की नाईं उस की विधियों पर चलते और ६२ उस की आज्ञाएं मानते रहो। तब राजा सारे इस्राएल ६३ समेत यहोवा के संमुख मेलबलि चढ़ाने लगा। और जो पशु सुलैमान ने मेलबलि करके यहोवा को चढ़ाये सो बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें थीं। इस रीति राजा ने सब इस्राएलियों समेत ६४ यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की। उस दिन राजा ने यहोवा के भवन के साम्हनेवाले आंगन के बीच भी एक स्थान पवित्र करके होमबलि अन्नबलि और मेलबलियों की चरबी वहीं चढ़ाई क्योंकि जो पीतल की वेदी यहोवा के साम्हने थी सो उन के लिये छोटी थी। और सुलैमान ६५ ने और उस के संग सारे इस्राएल की एक बड़ी सभा ने जो हमात की घाटी से ले मिस्र के नाले तक के सारे देश से इकट्ठी हुई थी दो अठवारे अर्थात् चौदह दिन तक हमारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने पर्व को माना। आठवें दिन ६६ उस ने प्रजा के लोगों को बिदा किया और वे राजा को धन्य धन्य कहकर उस सब भलाई के कारण जो यहोवा ने अपने दास दाऊद और अपनी प्रजा इस्राएल से की थी आनन्दित और मगन होकर अपने अपने डेरे को चले गये॥

९. जब सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका और जो कुछ उस ने करना चाहा था उसे कर चुका, तब यहोवा ने जैसे २ गिबोन में उस को दर्शन दिया था वैसे ही दूसरी बार भी उसे दर्शन दिया। और यहोवा ने उस से कहा जो ३ प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है उस को मैं ने सुना है यह जो भवन तू ने बनाया है उस में मैं ने अपना नाम सदा के लिये रखकर उसे पवित्र किया है और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगे। और यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मन की ४ खराई और सीधाई से अपने को मेरे साम्हने जानकर[२] चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे और मेरी विधियां और नियमों को मानता रहे तो मैं तेरा राज्य[३] इस्राएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर करूंगा, जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया ५ था कि तेरे कुल में इस्राएल की गद्दी पर विराजनेहारे सदा बने रहेंगे। पर यदि तुम लोग वा तुम्हारे वंश के ६ लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें और मेरी उन आज्ञाओं और विधियों को जो मैं ने तुम को दी हैं न मानें और जाकर पराये देवताओं की उपासना और उन्हें दण्डवत् करने लगें, तो मैं इस्राएल को इस देश में से जो मैं ७ ने उन को दिया है काट डालूंगा और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से उतार दूंगा और सब देशों के लोगों में इस्राएल की उपमा दी जाएगी और उस का दृष्टान्त चलेगा। और यह भवन जो ऊंचे पर रहेगा सो जो कोई इस के ८ पास होकर चलेगा वह चकित होगा और ताली बजाएगा और वे पूछेंगे कि यहोवा ने इस देश और इस भवन

(१) मूल में यहोवा के निकट रहें।

(२) मूल में मेरे साम्हने। (३) मूल में राजगद्दी।

९ के साथ क्यों ऐसा किया है, तब लोग कहेंगे कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा को जो उन के पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया था तजकर पराये देवताओं को पकड़ लिया और उन को दण्डवत् की और उन की उपासना की इस कारण यहोवा ने यह सब विपत्ति उन पर डाल दी ॥

१० सुलैमान को तो यहोवा के भवन और राजभवन ११ दोनों के बनाने में बीस बरस लगे। तब सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को जिस ने उस के मनमाने देवदारु और सनौबर की लकड़ी और सोना दिया था गालील देश के १२ बीस नगर दिये। जब हीराम ने सोर से जाकर उन नगरों को देखा जो सुलैमान ने उस को दिये थे तब वे उस को १३ अच्छे न लगे। सो उस ने कहा हे मेरे भाई ये क्या नगर तू ने मुझे दिये हैं। और उस ने उन का नाम कबूल देश १४ रक्खा और यही नाम आज के दिन लों पड़ा है। फिर हीराम ने राजा के पास साठ किक्कार सोना भेज दिया ॥

१५ राजा सुलैमान ने जो लोगों को बेगारी में रक्खा इस का प्रयोजन यह था कि यहोवा का और अपना भवन बनाये और मिल्लो और यरूशलेम की शहरपनाह और १६ हासोर मगिद्दो और गेजेर नगरों को दृढ़ करे। गेजेर पर तो मिस्र के राजा फिरौन ने चढ़ाई करके उसे ले लिया, और आग लगाकर फूंक दिया और उस नगर में रहनेहारे कनानियों को मार डालकर उसे अपनी बेटी सुलैमान १७ की रानी का निज भाग करके दिया था। सो गेजेर को १८ सुलैमान ने दृढ़ किया और नीचेवाले बेथोरोन, बालात और तामार को जो जंगल में हैं। ये तो देश में हैं। १९ फिर सुलैमान के जितने भण्डार के नगर थे और उस के रथों और सवारों के नगर उन को बरन जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम लबानोन और अपने राज्य के सारे देश में बनाना चाहा उस सब को उस ने दृढ़ किया। २० एमोरी हित्ती परिज्जी हिव्वी और यबूसी जो रह गये २१ थे जो इस्राएलियों में के न थे, उन के वंश जो उन के पीछे देश में रह गये और उन को इस्राएली सत्यानाश न कर सके उन को तो सुलैमान ने दास करके बेगारी में २२ रक्खा और आज लों उन की वही दशा है। पर इस्राएलियों में से सुलैमान ने किसी को दास न बनाया वे तो योद्धा और उस के कर्म्मचारी उस के हाकिम उस के सरदार और उस के रथों और सवारों के प्रधान हुए। २३ जो मुख्य हाकिम सुलैमान के कामों के ऊपर ठहरके काम करनेहारों पर प्रभुता करते थे सो पांच सौ २४ पचास थे। जब फिरौन की बेटी दाऊदपुर में से अपने उस भवन को आ गई जो उस ने उस के लिये बनाया था तब उस ने मिल्लो को बनाया। और सुलैमान उस वेदी २५ पर जो उस ने यहोवा के लिये बनायी थी बरस बरस में तीन बार होमबलि और मेलबलि चढ़ाया करता और साथ ही उस वेदी पर जो यहोवा के सन्मुख थी धूप जलाया करता था यों ही उस ने उस भवन को तैयार कर दिया ॥

(सुलैमान की धनसंपत्ति और व्योपार और शबा की रानी का आना)

फिर राजा सुलैमान ने एस्योनगेबेर में जो एदोम २६ देश में लाल समुद्र के तीर एलोत के पास है जहाज बनाये। और जहाजों में हीराम ने अपने अधिकार के २७ मल्लाहों को जो समुद्र के जानकार थे सुलैमान के सेवकों के संग भेज दिया। उन्हों ने ओपीर को जाकर वहां से २८ चार सौ बीस किक्कार सोना राजा सुलैमान को ला दिया ॥

१०.

जब शबा की रानी ने यहोवा के नाम के विषय सुलैमान की कीर्त्ति सुनी तब वह कठिन कठिन प्रश्नों से उस की परीक्षा करने को २ चली। वह तो बहुत भारी दल और मसालों और बहुत सोने और मणि से लदे ऊंट साथ लिये हुए यरूशलेम को आई और सुलैमान के पास पहुंचकर अपने मन की सारी बातों के विषय उस से बातें करने ३ लगी। सुलैमान ने उस के सब प्रश्नों का उत्तर दिया कोई बात राजा की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही[1] कि ४ वह उस को न बता सका। जब शबा की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धिमानी और उस का बनाया हुआ ५ भवन, और उस की मेज पर का भोजन देखा और उस के कर्म्मचारी किस रीति बैठते और उस के टहलुए किस रीति खड़े रहते और कैसे कैसे कपड़े पहिने रहते हैं और उस के पिलानेहारे कैसे हैं और वह कैसी चढ़ाई है जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता है यह सब जब उस ने देखा तब वह ६ चकित हो गई। सो उस ने राजा से कहा तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्त्ति मैं ने अपने देश में सुनी ७ सो सच ही है। पर जब लों मैं ने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा तब लों मैं ने उन बातों की प्रतीति न की पर इस का आधा भी मुझे न बताया गया था तेरी बुद्धिमानी और कल्याण उस कीर्त्ति से भी बढ़ ८ कर है जो मैं ने सुनी थी। धन्य हैं तेरे जन धन्य हैं तेरे ये सेवक जो नित्य तेरे सन्मुख हाजिर रहकर तेरी बुद्धि की ९ बातें सुनते हैं। धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे इस्राएल की राजगद्दी पर

(१) मूल में कोई बात राजा से न छिपी।

विराजमान किया यहोवा इस्राएल से सदा प्रेम रखता है इस कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म करने को राजा
१० कर दिया है। और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना बहुत सा सुगंधद्रव्य और मणि दिये जितना सुगंधद्रव्य शबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिया
११ उतना फिर कभी नहीं आया। फिर हीराम के जहाज भी जो ओपीर से सोना लाते थे सो बहुत सी चन्दन की
१२ लकड़ी और मणि भी लाये। और राजा ने चन्दन की लकड़ी के यहोवा के भवन और राजभवन के लिये जंगले और गानेहारों के लिये वीणाएं और सारंगियां बनवाई ऐसी चन्दन की लकड़ी आज लों फिर नहीं आई और न
१३ देख पड़ी है। और शबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उस की इच्छा के अनुसार उस को दिया फिर राजा सुलैमान ने उस को अपनी उदारता से बहुत कुछ दिया तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई॥

१४ जो सोना बरस दिन में सुलैमान के पास पहुंचा करता था उस का तौल छः सौ छियासठ किक्कार था।
१५ इस से अधिक सौदागरों से और ब्योपारियों के लेन देन से और दोगली जातियों के सब राजाओं और अपने देश
१६ के गवर्नरों से भी बहुत कुछ मिलता था। और राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनाई, एक
१७ एक ढाल में छः छः सौ शेकेल सोना लगा। फिर उस ने सोना गढ़ाकर तीन सौ छोटी ढालें भी बनाई एक एक छोटी ढाल में तीन माने सोना लगा और राजा ने उन
१८ को लबानोनी वन नाम भवन में रखवा दिया। और राजा ने हाथीदांत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और
१९ उत्तम कुन्दन से मढ़ाया। उस सिंहासन में छः सीढ़ियां थीं और सिंहासन का सिरहाना पिछाड़ी की ओर गोल था और बैठने के स्थान की दोनों अलग टेक लगी थीं और दोनों टेकों के पास एक एक सिंह खड़ा हुआ बना
२० था। और छहों सीढ़ियों की दोनों अलंग एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था सो बारह हुए किसी राज्य में ऐसा
२१ कभी न बना। और राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के थे और लबानोनी वन नाम भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के थे चांदी का कोई भी न था। सुलैमान
२२ के दिनों में उस का कुछ लेखा न था। क्योंकि समुद्र पर हीराम के जहाजों के साथ राजा भी तर्शीश के जहाज रखता था और तीन तीन बरस पीछे तर्शीश के जहाज
२३ सोना चांदी हाथीदांत बन्दर और मोर ले आते थे। सो राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथिवी के सब राजाओं
२४ से बढ़कर हो गया। और सारी पृथिवी के लोग उस की बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उस के मन में उपजाई थीं सुलैमान का दर्शन पाना चाहते थे। और
२५ वे बरस बरस अपनी अपनी भेंट अर्थात् चांदी और सोने के पात्र वस्त्र शस्त्र सुगंधद्रव्य घोड़े और खच्चर ले आते
२६ थे। और सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिये सो उस के चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार हुए और उन को उस ने रथों के नगरों में और यरूशलेम में
२७ राजा के पास ठहरा रक्खा। और राजा ने ऐसा किया कि यरूशलेम में चांदी का लेखा पत्थरों का सा और देवदारु का लेखा बहुतायत के कारण नीचे के देश के
२८ गूलरों का सा हो गया। और जो घोड़े सुलैमान रखता था सो मिस्र से आते थे और राजा के ब्योपारी उन्हें झुण्ड झुण्ड करके ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे।
२९ एक रथ तो छः सौ शेकेल चांदी पर और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर मिस्र से आता था और इसी दाम पर वे हित्तियों और अराम के सारे राजाओं के लिये भी ब्योपारियों के द्वारा आते थे॥

(सुलैमान का बिगाड़ और ईश्वर का कोप और सुलैमान की मृत्यु)

११. पर राजा सुलैमान फिरौन की बेटी और बहुतेरी और बिरानी स्त्रियों से जो मोआबी अम्मोनी एदोमी सीदोनी और हित्ती थीं
२ प्रीति करने लगा। वे उन जातियों की थीं जिन के विषय यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था कि तुम उन के बीच न जाना और न वे तुम्हारे बीच आने पाएं वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर निःसन्देह फेरेंगी
३ उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया। और उस के सात सौ रानियां और तीन सौ रखेलियां हो गई और उस की इन स्त्रियों ने उस का मन बहका दिया।
४ सो जब सुलैमान बूढ़ा हुआ तब उस की स्त्रियों ने उस का मन पराये देवताओं की ओर बहका दिया और उस का मन अपने पिता दाऊद की नाई अपने परमेश्वर
५ यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा। सुलैमान तो सीदोनियों की अश्तोरेत नाम देवी और अम्मोनियों के
६ मिल्कोम नाम घिनौने देवता के पीछे चला। और सुलैमान ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद की नाई पूरी रीति से न
७ चला। उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम के साम्हने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश नाम घिनौने देवता के लिये और अम्मोनियों के मोलेक नाम घिनौने देवता
८ के लिये एक एक ऊंचा स्थान बनाया। और अपनी सब बिरानी स्त्रियों के लिये भी जो अपने अपने देवताओं

को धूप जलाती और बलि करती थीं उस ने ऐसा ही किया ॥

९ सो यहोवा ने सुलैमान पर कोप किया क्योंकि उस का मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से फिर गया १० जिस ने दो बार उस को दर्शन दिया था। और उस ने इसी बात के विषय आज्ञा दी थी कि पराये देवताओं के पीछे न हो लेना तौभी उस ने यहोवा की आज्ञा ११ न मानी। और यहोवा ने सुलैमान से कहा तुझ से जो ऐसा ही काम हुआ है और मेरी बन्धाई हुई वाचा और दी हुई विधि तू ने नहीं पाली इस कारण मैं राज्य को निश्चय तुझ से छीनकर तेरे एक कर्म्मचारी को दूंगा। १२ तौभी तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे दिनों में तो ऐसा न करूंगा पर तेरे पुत्र के हाथ से राज्य छीन लूंगा। १३ परन्तु मैं सारा राज्य तो न छीन लूंगा पर अपने दास दाऊद के कारण और अपने चुने हुए यरूशलेम के कारण मैं तेरे पुत्र के हाथ में एक गोत्र छोड़ूंगा ॥

१४ सो यहोवा ने एदोमी हदद को जो एदोमी राज- १५ वंश का था सुलैमान का शत्रु कर दिया। और जब दाऊद एदोम में था और योआब सेनापति मारे हुओं १६ को मिट्टी देने गया, (योआब तो सारे इस्राएल समेत वहां छः महीने रहा था जब तक कि उस ने एदोम के १७ सब पुरुषों को नाश न किया था)। तब हदद जो छोटा लड़का था अपने पिता के कई एक एदोमी सेवकों के १८ संग मिस्र को जाने की मनसा से भागा। और वे मिद्यान से होकर पारान को आये और पारान में से कई पुरुषों को संग लेकर मिस्र में फिरौन राजा के पास गये और फिरौन ने उस को घर दिया और उस को भोजन मिलने १९ की आज्ञा दी और कुछ भूमि भी दी। और हदद पर फिरौन की बड़े अनुग्रह की दृष्टि हुई और उस ने उस को अपनी साली अर्थात् तहपनेस रानी की बहिन ब्याह दी। २० और तहपनेस की बहिन उस के जन्माये गनूबत को जनी और इस का दूध तहपनेस ने फिरौन के भवन में छुड़ाया तब गनूबत फिरौन के भवन में उसी के पुत्रों के बीच २१ रहा था। जब हदद ने मिस्र में रहते यह सुना कि दाऊद अपने पुरखाओं के संग सो गया और योआब सेनापति भी मर गया है तब उस ने फिरौन से कहा मुझे आज्ञा २२ दे कि मैं अपने देश को जाऊं। फिरौन ने उस से कहा क्यों मेरे यहां तुझे क्या घटी हुई कि तू अपने देश को चला जाने चाहता है उस ने उत्तर दिया कुछ नहीं हुई तौभी मुझे अवश्य जाने दे ॥

२३ फिर परमेश्वर ने उस का एक और शत्रु कर दिया अर्थात् एल्यादा के पुत्र रजोन को वह तो अपने स्वामी २४ सोबा के राजा हददेजेर के पास से भागा था, और जब दाऊद ने सोबा के जनों को घात किया तब रजोन अपने पास कई पुरुषों को इकट्ठे करके एक दल का प्रधान हो गया और वे दमिश्क को जाकर वहां रहने और उस का राज्य करने लगे। २५ और उस हानि को छोड़ जो हदद ने की रजोन भी सुलैमान के जीवन भर इस्राएल का शत्रु बना रहा और वह इस्राएल से घिन रखता हुआ अराम पर राज्य करता था ॥

२६ फिर नबात का और सरूआह नाम एक विधवा का पुत्र यारोबाम नाम एक एप्रैमी सरेदावासी जो सुलैमान का कर्म्मचारी था उस ने भी राजा के विरुद्ध सिर[1] उठाया। २७ उस के राजा के विरुद्ध सिर[1] उठाने का यह कारण हुआ कि सुलैमान मिल्लो को बना रहा और अपने पिता दाऊद के नगर के दरार बन्द कर रहा था। २८ यारोबाम बड़ा शूरवीर था और जब सुलैमान ने जवान को देखा कि यह कामकाजी है तब उस ने उस को यूसुफ के घराने के सब परिश्रम पर मुखिया ठहराया। २९ उन्हीं दिनों में यारोबाम यरूशलेम से निकलकर जा रहा था कि शीलोवासी अहिय्याह नबी नई चद्दर ओढ़े हुए मार्ग पर उस से मिला और केवल वे ही दोनों मैदान में थे। ३० और अहिय्याह ने अपनी उस नई चद्दर को ले लिया और उसे फाड़कर बारह टुकड़े कर दिये। ३१ तब उस ने यारोबाम से कहा दस टुकड़े ले ले क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सुन मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से छीन कर दस गोत्र तेरे हाथ कर दूंगा। ३२ पर मेरे दास दाऊद के कारण और यरूशलेम के कारण जो मैं ने इस्राएल के सारे गोत्रों में से चुना है उस का एक गोत्र बना रहेगा। ३३ इस का कारण यह है कि उन्हों ने मुझे त्याग कर सीदोनियों की देवी अश्तोरेत मोआबियों के देवता कमोश और अम्मोनियों के देवता मिल्कोम को दण्डवत् की और मेरे मार्गों पर नहीं चले और जो मेरी दृष्टि में ठीक है सो नहीं किया और मेरी विधियों और नियमों को नहीं पाला जैसे कि उस के पिता दाऊद ने किया। ३४ तौभी मैं उस के हाथ से सारा राज्य न ले लूंगा पर मेरा चुना हुआ दास दाऊद जो मेरी आज्ञाएं और विधियां पालता रहा उस के कारण मैं उस को जीवन भर प्रधान ठहराये रक्खूंगा। ३५ पर उस के पुत्र के हाथ से मैं राज्य अर्थात् दस गोत्र लेकर तुझे दे दूंगा। ३६ और उस के पुत्र को मैं एक गोत्र दूंगा इसलिये कि यरूशलेम नगर में जिसे अपना नाम रखने को मैं ने चुना है मेरे

(१) मूल में हाथ।

३७ दास दाऊद का मेरे साम्हने सदा दीपक बना रहे। पर तुझे मैं ठहरा लूंगा और तू अपनी इच्छा भर इस्राएल
३८ पर राज्य करेगा। और यदि तू मेरे दास दाऊद की नाईं मेरी सब आज्ञाएं माने और मेरे मार्गों पर चले और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है सोई करे और मेरी विधियां और आज्ञाएं मानता रहे तो मैं तेरे संग रहूंगा और जैसे मैं ने दाऊद का घराना बनाये रक्खा है वैसे ही तेरा भी घराना बनाये रक्खूंगा, और तेरे
३९ हाथ इस्राएल को दूंगा। इस पाप के कारण मैं दाऊद
४० के वंश को दुःख दूंगा तौभी सदा लों नहीं। और सुलैमान ने यारोबाम को मार डालना चाहा पर यारोबाम मिस्र में राजा शीशक के पास भाग गया और सुलैमान के मरने तक वहीं रहा॥

४१ सुलैमान की और सब बातें और उस के सारे काम और उस की बुद्धिमानी का वर्णन क्या सुलैमान के
४२ इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। सुलैमान को यरूशलेम में सारे इस्राएल पर राज्य करते हुए चालीस
४३ बरस बीते। और सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र रहबाम उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(इस्राएल के राज्य का दो भाग हो जाना)

१२. **रहबाम** तो शकेम को गया क्योंकि सारा इस्राएल उस को राजा
२ करने के लिये वहीं गया था। और नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना (वह तो तब तक मिस्र में रहता था क्योंकि यारोबाम सुलैमान राजा के डर के मारे भागकर
३ मिस्र में रहता था। और उन लोगों ने उस को बुलवा भेजा और यारोबाम और इस्राएल की सारी सभा रह-
४ बाम के पास जाकर यों कहने लगी कि, तेरे पिता ने जो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रक्खा था सो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को जो उस ने हम पर डाल रक्खा है कुछ हलका कर
५ तब हम तेरे अधीन रहेंगे। उस ने कहा अभी तो जाओ और तीन दिन पीछे मेरे पास फिर आना सो वे चले गये।
६ तब राजा रहबाम ने उन बूढ़ों से जो उस के पिता सुलैमान के जीवन भर उस के साम्हने हाजिर रहा करते थे सम्मति ली कि इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है इस में
७ तुम क्या सम्मति देते हो। उन्हों ने उस को यह उत्तर दिया कि यदि तू अभी प्रजा के लोगों का दास बनकर उन के अधीन हो और उन से मधुर बातें कहे तो वे सदा
८ लों तेरे अधीन बने रहेंगे। रहबाम ने उस सम्मति को छोड़ा जो बूढ़ों ने उस को दी थी और उन जवानों से सम्मति ली जो उस के संग बड़े हुए थे और उस के
९ सन्मुख हाजिर रहा करते थे। उन से उस ने पूछा मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूं इस में तुम क्या सम्मति देते हो उन्हों ने तो मुझ से कहा है कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर डाल रक्खा है उसे तू हलका
१० कर। जवानों ने जो उस के संग बड़े हुए थे उस को यह उत्तर दिया कि उन लोगों ने तुझ से कहा है कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया था पर तू उसे हमारे लिये हलका कर तू उन से यों कहना कि मेरी छिंगुलिया
११ मेरे पिता की कटि से भी मोटी ठहरेगी। मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रक्खा था उसे मैं और भी भारी करूंगा मेरा पिता तो तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था
१२ पर मैं बिच्छुओं से दूंगा। तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया था कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना वैसे ही यारोबाम और सारी प्रजा रहबाम के पास हाजिर हुई।
१३ तब राजा ने प्रजा से कड़ी बातें कीं और बूढ़ों की दी
१४ हुई सम्मति छोड़कर, जवानों की संमति के अनुसार उन से कहा कि मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया पर मैं उसे और भी भारी कर दूंगा मेरे पिता ने तो कोड़ों से तुम को ताड़ना दी पर मैं तुम को बिच्छुओं से ताड़ना
१५ दूंगा। सो राजा ने प्रजा की न मानी इस का कारण यह है कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा था उस को पूरा करने के
१६ लिये उस ने ऐसा ही ठहराया था। जब सारे इस्राएल ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता तब वे बोले[1] कि दाऊद के साथ हमारा क्या अंश हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं है इस्राएल अपने अपने डेरे को चले आओ अब हे दाऊद अपने ही घराने की चिन्ता कर।
१७ सो इस्राएल अपने अपने डेरे को चले गये। केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरों में बसे हुए थे उन पर रहबाम
१८ राज्य करता रहा। तब राजा रहबाम ने अदोराम को जो सब बेगारों पर अधिकारी था भेज दिया और सब इस्राएलियों ने उस को पत्थरवाह किया कि वह मर गया सो रहबाम फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर यरूशलेम को भाग
१९ गया। सो इस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया और
२० आज लों फिरा हुआ है। यह सुनकर कि यारोबाम लौट आया है सारे इस्राएल ने उस को मण्डली में बुलवा भेजकर सारे इस्राएल के ऊपर राजा किया और यहूदा के गोत्र को छोड़कर दाऊद के घराने से कोई मिला न रहा॥

२१ जब रहबाम यरूशलेम को आया तब उस ने यहूदा

(१) व में राजा को उत्तर दिया।

के सारे घराने को और बिन्यामीन के गोत्र को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे इकट्ठा किया इस लिये कि इस्राएल के घराने के साथ लड़ने से राज्य सुलैमान के पुत्र रहबाम के वश में फिर आए। २२ तब परमेश्वर का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह के पास पहुंचा २३ कि, यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम से और यहूदा और बिन्यामीन के सारे घरानों से और और सब लोगों से कह, २४ यहोवा यों कहता है कि अपने भाई इस्राएलियों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो तुम अपने अपने घर लौट जाओ क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है। यहोवा का यह वचन मानकर उन्हों ने उस के अनुसार लौट जाने को अपना अपना मार्ग लिया ॥

(यारोबाम का मूर्त्तिपूजा चलाना)

२५ तब यारोबाम एप्रैम के पहाड़ी देश के शकेम नगर को दृढ़ करके उस में रहने लगा फिर वहां से निकलकर पनूएल को भी दृढ़ किया। २६ तब यारोबाम सोचने लगा कि अब राज्य दाऊद के घराने का हो जाएगा। २७ यदि प्रजा के ये लोग यरूशलेम में बलि करने को जाएं तो उन का मन अपने स्वामी यहूदा के राजा रहबाम की ओर फिरेगा और वे मुझे घात करके यहूदा के राजा रहबाम के हो जाएंगे। २८ सो राजा ने सम्मति लेकर सोने के दो बछड़े बनाये और लोगों से कहा यरूशलेम को तो बहुत बेर गये हो सो हे इस्राएल अपने ईश्वरों को देखो जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाये हैं। २९ सो उस ने एक बछड़े को बेतेल और ३० दूसरे को दान में स्थापित किया। और यह बात पाप के कारण हुई और लोग एक के साम्हने दण्डवत करने को दान लों जाने लगे। ३१ और उस ने ऊंचे स्थानों के भवन बनाये और सब प्रकार के लोगों[1] में से जो लेवीवंशी न थे याजक ठहराये। ३२ फिर यारोबाम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन यहूदा में के पर्व के समान एक पर्व ठहरा दिया और वेदी पर बलि चढ़ाने लगा इस रीति उस ने बेतेल में अपने बनाये हुए बछड़ों के लिये वेदी पर बलि किया और अपने बनाये हुए ऊंचे स्थानों के याजकों को बेतेल में ठहरा दिया ॥

(यहूदी नबी की कथा)

३३ और जिस महीने को उस ने अपने मन में कल्पना की थी अर्थात् आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। उस ने इस्राएलियों के लिये एक पर्व्व ठहरा दिया और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया ॥

(१) मूल में अन्त के लोगों।

१३. तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया और यारोबाम धूप जलाने को वेदी के पास खड़ा था। २ उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विरुद्ध यों पुकारा कि वेदी हे वेदी यहोवा यों कहता है कि सुन दाऊद के कुल में योशिय्याह नाम एक लड़का उत्पन्न होगा वह उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं तुझ पर बलि कर देगा और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी। ३ और उस ने उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिह्न भी बताया कि यह वचन जो यहोवा ने कहा है इस का चिह्न यह है कि यह वेदी फट जाएगी और इस पर की राख गिर जाएगी। ४ परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उस बेतेल के विरुद्ध पुकारके कहा यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा उस को पकड़ लो तब उस का हाथ जो उस की ओर बढ़ाया था सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। ५ और वेदी फट गई और उस पर की राख गिर गई सो वह चिह्न पूरा हुआ जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था। ६ तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए सो परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। ७ तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा मेरे संग घर चलकर अपना जी ठंडा कर और मैं तुझे दान भी दूंगा। ८ परमेश्वर के जन ने राजा से कहा चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे तौभी तेरे घर न चलूंगा और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा न पानी पीऊंगा। ९ क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है कि न तो रोटी खाना न पानी पीना और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा। १० सो वह उस मार्ग से जिस से बेतेल को गया था न लौटकर दूसरे मार्ग से चला गया ॥

११ बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था और उस के एक बेटे ने आकर उस से उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किये थे और जो बातें उस ने राजा से कही थीं उन को भी उस ने अपने पिता से कह सुनाया। १२ उस के बेटों ने तो यह देखा था कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया था किस मार्ग से चला गया सो उन के पिता ने उन से पूछा वह किस मार्ग से चला गया। १३ और उस ने अपने बेटों से कहा मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो सो उन्हों ने गदहे पर काठी बांधी और

१४ वह उस पर चढ़ा, और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक बांजवृक्ष के तले बैठा हुआ पाया और उस से पूछा परमेश्वर का जो जन यहूदा से आया था क्या तू १५ वही है उस ने कहा हां वही हूं। उस ने उस से कहा मेरे १६ संग घर चलकर भोजन कर। उस ने उस से कहा मैं न तो तेरे संग लौट सकता न तेरे संग घर में जा सकता और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊंगा या पानी पीऊंगा। १७ क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है कि वहां न तो रोटी खाना न पानी पीना और जिस १८ मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना। उस ने कहा जैसा तू वैसा ही मैं भी नबी हूं और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ कि वह रोटी खाए और पानी पीए। यह १९ उस ने उस से झूठ कहा। सो वह उस के संग लौटा २० और उस के घर में रोटी खाई और पानी पिया। वे मेज पर बैठे ही थे कि यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुंचा २१ जो दूसरे को लौटा ले आया था। और उस ने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा से आया था पुकारके कहा यहोवा यों कहता है कि तू ने यहोवा का वचन न माना और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी उसे २२ नहीं माना, पर जिस स्थान के विषय उस ने तुझ से कहा था कि उस में न रोटी खाना न पानी पीना उसी में तू ने लौट कर रोटी खाई और पानी पिया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी न दी २३ जाएगी। जब वह खा पी चुका तब उस ने परमेश्वर के उस जन के लिये जिस को वह लौटा ले आया था गदहे २४ पर काठी बंधाई। वह मार्ग में चल रहा था कि एक सिंह उसे मिला और उस को मार डाला और उस की लोथ मार्ग पर पड़ी रही और गदहा उस के पास खड़ा रहा २५ और सिंह भी लोथ के पास खड़ा रहा। जो लोग उधर से चले उन्हों ने यह देख कर कि मार्ग पर एक लोथ पड़ी है और उस के पास सिंह खड़ा है उस नगर में जाकर जहां वह बूढ़ा नबी रहता था यह समाचार सुनाया। २६ यह सुनकर उस नबी ने जो उस को मार्ग पर से लौटा ले आया था कहा परमेश्वर का वही जन होगा जिस ने यहोवा के कहे के विरुद्ध किया था इस कारण यहोवा ने उस को सिंह के पंजे में पड़ने दिया और यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने उस से कहा था सिंह ने उसे २७ फाड़ कर मार डाला होगा। तब उस ने अपने बेटों से कहा मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो जब उन्हों ने काठी २८ बांधी, तब उस ने जाकर उस जन की लोथ मार्ग पर पड़ी हुई और गदहे और सिंह दोनों को लोथ के पास खड़े हुए पाया और यह भी कि सिंह ने न तो लोथ को खाया और न गदहे को फाड़ा है। तब उस बूढ़े नबी ने २९ परमेश्वर के जन की लोथ उठाकर गदहे पर लाद ली और उस के लिये छाती पीटने और उसे मिट्टी देने को अपने नगर में लौटा ले गया। और उस ने उस की लोथ को ३० अपने कब्रिस्तान में रक्खा और लोग हाय मेरे भाई यह कहकर छाती पीटने लगे। फिर उसे मिट्टी ३१ देकर उस ने अपने बेटों से कहा जब मैं मर जाऊं तब मुझे इसी कब्रिस्तान में रखना जिस में परमेश्वर का यह जन रक्खा गया है और मेरी हड्डियां उसी की हड्डियों के पास धर देना। क्योंकि जो वचन उस ने यहोवा से ३२ पाकर बेतेल में की वेदी और शोमरोन के नगरों में के सब ऊंचे स्थानों के भवनों के विरुद्ध पुकार के कहा है सो निश्चय पूरा हो जाएगा॥

(यारोबाम का अन्तकाल)

इस के पीछे यारोबाम अपनी बुरी चाल से न ३३ फिरा। उस ने फिर सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के याजक बनाये वरन जो कोई चाहता था उस का संस्कार करके वह उस को ऊंचे स्थानों का याजक होने को ठहरा देता था। और यह बात यारोबाम के घराने ३४ का पाप ठहरी इस कारण उस का विनाश हुआ और वह धरती पर से नाश किया गया॥

१४. उस समय यारोबाम का बेटा अबिय्याह रोगी हुआ। सो यारोबाम ने अपनी २ स्त्री से कहा ऐसा भेष बना कि कोई तुझे पहिचान न सके कि यह यारोबाम की स्त्री है और शीलो को चली जा वहां तो अहिय्याह नबी रहता है जिस ने मुझ से कहा था कि तू इस प्रजा का राजा हो जाएगा। उस के पास तू दस ३ रोटी और पपड़ियां और एक कुप्पी मधु लिये हुए जा और वह तुझे बताएगा कि लड़के को क्या होगा। यारोबाम की ४ स्त्री ने वैसा ही किया और चलकर शीलो को पहुंची और अहिय्याह के घर पर आई अहिय्याह को तो कुछ सूझ न पड़ता था क्योंकि बुढ़ापे के कारण उस की आंखें धुन्धली पड़ गई थीं। और यहोवा ने अहिय्याह से कहा सुन ५ यारोबाम की स्त्री तुझ से अपने बेटे के विषय जो रोगी है कुछ पूछने को आती है सो तू उस से यों यों कहना वह तो आकर अपने को दूसरी बताएगी। सो जब ६ अहिय्याह ने द्वार में आते हुए उस के पांव की आहट सुनी तब कहा हे यारोबाम की स्त्री भीतर आ तू अपने को क्यों दूसरी बताती है मुझे तेरे लिये भारी सन्देशा मिला है। तू जाकर यारोबाम से कह इस्राएल का परमे- ७ श्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि मैं ने तो तुझ को

प्रजा में से बढ़ाकर अपनी प्रजा इस्राएल पर प्रधान किया, ८ और दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुझ को दिया पर तू मेरे दास दाऊद के समान न हुआ जो मेरी आज्ञाओं को मानता और अपने सारे मन से मेरे पीछे पीछे चलता और केवल वही करता था जो मेरे लेखे ९ ठीक है। तू ने उन सभों से बढ़कर जो तुझ से पहिले थे बुराई की है और जाकर पराये देवता मान लिये और मूरतें ढालकर बनाईं जिस से मुझे रिस उपजी और मुझे १० तो पीठ पीछे कर दिया है। इस कारण मैं यारोबाम के घराने पर विपत्ति डालूंगा वरन मैं यारोबाम के कुल में से हर एक लड़के को और क्या बन्धुए क्या स्वाधीन इस्राएल के बीच हर एक रहनेहारे को भी नाश कर डालूंगा और जैसा कोई लीद तब लों उठाता रहता है जब लों वह सब उठ नहीं जाती वैसे ही मैं यारोबाम के ११ घराने को उठा दूंगा। यारोबाम के घराने का जो कोई नगर में मर जाए उस को कुत्ते खाएंगे और जो मैदान में मरे उस को आकाश के पक्षी खा जाएंगे क्योंकि यहोवा १२ ने यह कहा है। सो तू अपने घर चली जा और नगर के भीतर तेरे पांव पड़ते ही वह बालक मर जाएगा। १३ उसे तो सारे इस्राएली छाती पीटकर मिट्टी देंगे यारोबाम के घराने में से उसी को कबर मिलेगी क्योंकि यारोबाम के घराने में से यहोवा के विषय उस में कुछ अच्छा १४ पाया जाता है। फिर यहोवा इस्राएल का ऐसा राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन यारोबाम का घराना नाश कर १५ डालेगा वरन वह कर ही चुका है। क्योंकि यहोवा इस्राएल को ऐसा मारेगा जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है और वह उन को इस अच्छी भूमि में से जो उस ने उन के पुरखाओं को दी थी उखाड़कर महानद के पार तितर बितर करेगा क्योंकि उन्हों ने अशेरा १६ नाम मूरतें बनाकर यहोवा को रिस दिलाई है। और उन पापों के कारण जो यारोबाम ने किये और इस्राएल १७ से कराये थे यहोवा इस्राएल को त्याग देगा। तब यारोबाम की स्त्री विदा होकर चली और तिर्सा को आई और वह भवन की डेवढ़ी पर पहुंची ही थी कि बालक मर १८ गया। तब यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने अपने दास अहिय्याह नबी से कहलाया था सारे इस्राएल ने उस को मिट्टी देकर उस के लिये छाती पीटी। १९ यारोबाम के और काम अर्थात् उस ने कैसा कैसा युद्ध किया और कैसा राज्य किया यह सब इस्राएल के राजाओं २० के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। यारोबाम बाईस बरस लों राज्य करके अपने पुरखाओं के संग सोया और उस का नादाब नाम पुत्र उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(रहबाम का राज्य)

और सुलैमान का पुत्र रहबाम यहूदा में राज्य २१ करने लगा। रहबाम इकतालीस बरस का होकर राज्य करने लगा और यरूशलेम जिस को यहोवा ने सारे इस्राएली गोत्रों में से अपना नाम रखने के लिये चुन लिया था उस नगर में वह सत्रह बरस तक राज्य करता रहा और उस की माता का नाम नामा था जो अम्मोनी स्त्री थी। और यहूदी लोग वह करने लगे जो यहोवा के २२ लेखे बुरा है और अपने पुरखाओं से भी अधिक पाप करके उस की जलन भड़काई। उन्हों ने तो सब ऊंचे टीलों पर २३ और सब हरे वृक्षों के तले ऊंचे स्थान और लाठें और अशेरा नाम मूरतें बना लीं। और उन के देश में पुरुष- २४ गामी भी थे निदान वे उन जातियों के से सब घिनौने काम करते थे जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से निकाल दिया था। राजा रहबाम के पांचवें बरस में २५ मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम पर चढ़ाई करके, यहोवा २६ के भवन की अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल वस्तुएं सब की सब उठा ले गया और सोने की जो फरियां सुलैमान ने बनाई थीं उन सब को वह ले गया। सो राजा रहबाम ने उन के बदले पीतल की ढालें २७ बनवाईं और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे। और जब २८ जब राजा यहोवा के भवन में जाता तब तब पहरुए उन्हें उठा ले चलते और फिर अपनी कोठरी में लौटाकर रख देते थे। रहबाम के और सब काम जो उस ने किये सो २९ क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। रहबाम और यारोबाम के बीच तो लड़ाई सदा ३० होती रही। और रहबाम जिस की माता नामा नाम एक ३१ अम्मोनिन थी अपने पुरखाओं के साथ सो गया और उन्हीं के पास दाऊदपुर में उस को मिट्टी दी गई और उस का पुत्र अबिय्याम उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(अबिय्याम का राज्य)

१५. नबात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें बरस में अबिय्याम यहूदा पर राज्य करने लगा। और वह तीन बरस लों २ यरूशलेम में राज्य करता रहा उस की माता का नाम माका था जो अबशालोम की नतिनी थी। वह वैसे ही ३ पापों की लीक पर चलता रहा जैसे उस के पिता ने उस से पहिले किये और उस का मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परदादा दाऊद की नाईं पूरी रीति से लगा न था, तौभी दाऊद के कारण उस के परमेश्वर ४ यहोवा ने यरूशलेम में उसे एक दीपक देकर उस के

पुत्र को उस के पीछे ठहराया और यरूशलेम को बनाये ५ रक्खा। क्योंकि दाऊद वह किया करता था जो यहोवा के लेखे ठीक है और हित्ती ऊरिय्याह की बात छोड़ और किसी बात में यहोवा की किसी आज्ञा से जीवन ६ भर कभी न मुड़ा। रहबाम के जीवन भर तो उस के ७ और यारोबाम के बीच लड़ाई होती रही। अबिय्याम के और सब काम जो उस ने किये क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। और अबिय्याम ८ की यारोबाम के साथ लड़ाई होती रही। निदान अबिय्याम अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊदपुर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र आसा उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(आसा का राज्य)

९ इस्राएल के राजा यारोबाम के बीसवें बरस में १० आसा यहूदा पर राज्य करने लगा, और यरूशलेम में इकतालीस बरस लों राज्य करता रहा और उस की ११ माता अबशालोम की नतिनी माका थी। और आसा ने अपने मूलपुरुष दाऊद की नाईं वही किया जो यहोवा १२ की दृष्टि में ठीक है। उस ने तो पुरुषगामियों को देश से निकाल दिया और जितनी मूरतें उस के पुरखाओं ने १३ बनाई थीं उन सभों को उस ने दूर किया। बरन उस की माता माका जिस ने अशेरा के पास रहने को एक घिनौनी मूरत बनाई उस को उस ने राजमाता के पद से उतार दिया और आसा ने उस की मूरत को काट डाला और १४ किद्रोन नाले में फूंक दिया। ऊंचे स्थान तो ढाए न गये तौभी आसा का मन जीवन भर यहोवा की ओर पूरी १५ रीति से लगा रहा। और जो सोना चांदी और पात्र उस के पिता ने अर्पण किये थे और जो उस ने आप अर्पण किये थे उन सभों को उस ने यहोवा के भवन में पहुंचा १६ दिया। और आसा और इस्राएल के राजा बाशा के १७ बीच उन के जीवन भर लड़ाई होती रही। और इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की और रामा को इसलिये दृढ़ किया कि कोई यहूदा के राजा आसा १८ के पास आने जाने न पाए। तब आसा ने जितना सोना चांदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में रह गया था उस सब को निकाल अपने कर्म्मचारियों के हाथ सौंपकर दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास जो हेज्योन का पोता और तब्रिम्मोन का पुत्र था भेजकर १९ यह कहा कि, जैसे मेरे तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे तेरे बीच भी वाचा बान्धी जाए देख मैं तेरे पास चांदी सोने की भेंट भेजता हूं सो आ इस्राएल के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को टाल दे इसलिये कि वह मुझ पर से दूर हो। राजा आसा की यह बात मानकर बेन्हदद २० ने अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई कराकर इय्योन दान आबेल्बेतमाका और सारे किन्नेरेत को नप्ताली के सारे देश समेत जीत लिया। यह २१ सुनकर बाशा ने रामा का दृढ़ करना छोड़ दिया और तिर्सा में रहा। तब राजा आसा ने सारे यहूदा में प्रचार २२ कराके किसी को बिना छोड़े सभों को बुलाया सो वे रामा के पत्थरों और लकड़ी को जिन से बाशा उसे दृढ़ करता था उठा ले गये और उन से राजा आसा ने बिन्यामीन में के गेबा और मिस्पा को दृढ़ किया। आसा के और काम और उस की वीरता और जो कुछ २३ उस ने किया और जो नगर उस ने दृढ़ किये यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। बुढ़ापे में तो उसे पांवों का रोग लगा। निदान आसा २४ अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे उस के मूलपुरुष दाऊद के नगर में उन्हीं के पास मिट्टी दी और उस का पुत्र यहोशापात उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(नादाब का राज्य)

यहूदा के राजा आसा के दूसरे बरस में यारोबाम २५ का पुत्र नादाब इस्राएल पर राज्य करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा। उस ने वह किया जो यहोवा २६ के लेखे बुरा है और अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जो उस ने इस्राएल से कराया था। नादाब सब इस्राएल समेत पलिश्तियों के देश के २७ गिब्बतोन नगर को घेरे था। कि इस्साकार के गोत्र के अहिय्याह के पुत्र बाशा ने उस के विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके गिब्बतोन के पास उस को मार डाला। और यहूदा के राजा आसा के तीसरे बरस में बाशा ने २८ नादाब को मार डाला और उस के स्थान पर राजा हुआ। राजा होते ही बाशा ने यारोबाम के सारे घराने २९ को मार डाला उस ने यारोबाम के वंश को यहां लों विनाश किया कि एक भी जीता न रहा यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास शीलोवासी अहिय्याह से कहवाया था। यह इस कारण ३० हुआ कि यारोबाम ने आप पाप किये और इस्राएल से भी कराये थे और उस ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई थी। नादाब के और सब काम जो उस ३१ ने किये सो क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। आसा और इस्राएल के राजा ३२ बाशा के बीच तो उन के जीवन भर लड़ाई होती रही॥

(बाशा का राज्य)

यहूदा के राजा आसा के तीसरे बरस में अहिय्याह ३३

का पुत्र बाशा तिर्सा में सारे इस्राएल पर राज्य करने
३४ लगा और चौबीस बरस लों राज्य करता रहा। और उस
ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और यारोबाम
के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जिसे उस
१ **१६.** ने इस्राएल से कराया था। और बाशा
के विषय यहोवा का यह वचन हनानी
२ के पुत्र येहू के पास पहुंचा कि, मैं ने तुझ को मिट्टी पर
से उठाकर अपनी प्रजा इस्राएल का प्रधान किया पर तू
यारोबाम की सी चाल चलता और मेरी प्रजा इस्राएल
से ऐसे पाप कराता आया है जिन से वे मुझे रिस दिलाते
३ हैं। सुन मैं बाशा को घराने समेत पूरी रीति से उठा दूंगा
और तेरे घराने को नबात के पुत्र यारोबाम का सा कर
४ दूंगा। बाशा के घर का जो कोई नगर में मर जाए उस
को कुत्ते खा डालेंगे और उस का जो कोई मैदान में मर
५ जाए उस को आकाश के पक्षी खा डालेंगे। बाशा के और
सब काम जो उस ने किये और उस की वीरता यह सब क्या
इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा
६ है। निदान बाशा अपने पुरखाओं के संग सोया और तिर्सा
में उसे मिट्टी दी गई और उस का पुत्र एला उस के स्थान
७ पर राजा हुआ। यहोवा का जो वचन हनानी के पुत्र येहू
के द्वारा बाशा और उस के घराने के विरुद्ध आया सो
न केवल उस सारी बुराई के कारण आया जो उस ने
यारोबाम के घराने के समान होकर यहोवा के लेखे की
और अपने कामों से उस को रिस दिलाई बरन इस
कारण भी आया कि उस ने उस को मार डाला था॥

(एला का राज्य)

८ यहूदा के राजा आसा के छब्बीसवें बरस में बाशा
का पुत्र एला तिर्सा में इस्राएल पर राज्य करने लगा
९ और दो बरस लों राज्य करता रहा। जब वह तिर्सा में
अर्सा नाम भण्डारी के घर में जो उस के तिर्सा में के
भवन का प्रधान था दारू पीकर मतवाला हो गया था
तब उस के जिम्री नाम एक कर्म्मचारी ने जो उस के आधे
१० रथों का प्रधान था राजद्रोह की गोष्ठी की, और भीतर
जाकर उस को मार डाला और उस के स्थान पर राजा
हुआ। यह यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें बरस में
११ हुआ। और जब वह राज्य करने लगा तब गद्दी पर
बैठते ही उस ने बाशा के सारे घराने को मार डाला बरन
उस ने न तो उस के कुटुंबियों और न उस के मित्रों में से
१२ एक लड़के को भी जीता छोड़ा। इस रीति यहोवा के उस
वचन के अनुसार जो उस ने येहू नबी से बाशा के विरुद्ध
कहा था जिम्री ने बाशा का सारा घराना बिनाश किया।
१३ इस का कारण बाशा के सब पाप और उस के पुत्र एला
के भी पाप थे जो उन्हों ने आप करके और इस्राएल से
भी कराके इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ बातों
से रिस दिलाई थी। एला के और सब काम जो उस ने १४
किये सो क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में नहीं लिखे हैं॥

(जिम्री का राज्य)

यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें बरस में जिम्री १५
तिर्सा में राज्य करने लगा और तिर्सा में सात दिन लों
राज्य करता रहा। उस समय लोग पलिश्तियों के देश
में के गिब्बतोन के विरुद्ध डेरे किये हुए थे। सो जब उन १६
डेरे लगाये हुए लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजद्रोह की
गोष्ठी करके राजा को मार डाला तब उसी दिन सारे
इस्राएल ने ओम्री नाम प्रधान सेनापति को छावनी में
इस्राएल का राजा किया। तब ओम्री ने सारे इस्राएल १७
को संग ले गिब्बतोन को छोड़कर तिर्सा को घेर लिया।
जब जिम्री ने देखा कि नगर ले लिया गया है तब राज- १८
भवन के गुम्मट में जाकर राजभवन में आग लगा दी और
उसी में आप भी जल मरा। यह उस के पापों के कारण १९
हुआ कि उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है
क्योंकि वह यारोबाम की सी चाल और उस के किये हुए
और इस्राएल से कराये हुए पाप की लीक पर चला।
जिम्री के और काम और जो राजद्रोह की गोष्ठी उस ने २०
की यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में नहीं लिखा है॥

(ओम्री का राज्य)

तब इस्राएली प्रजा दो भाग हो गई प्रजा के आधे २१
लोग तो तिब्नी नाम गीनत के पुत्र को राजा करने के
लिये उसी के पीछे हो लिये और आधे ओम्री के पीछे
हो लिये। अन्त में जो लोग ओम्री के पीछे हुए थे वे २२
उन पर प्रबल हुए जो गीनत के पुत्र तिब्नी के पीछे हो
लिये थे सो तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा हुआ।
यहूदा के राजा आसा के इकतीसवें बरस में ओम्री इस्रा- २३
एल पर राज्य करने लगा और बारह बरस लों राज्य
करता रहा, उस ने छः बरस तो तिर्सा में राज्य किया। और २४
उस ने शेमेर से शोमरोन पहाड़ को दो किक्कार चांदी में
मोल लेकर उस पर एक नगर बसाया और अपने बसाये हुए
नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर के नाम पर शोम-
रोन रक्खा। और ओम्री ने वह किया जो यहोवा के २५
लेखे बुरा है बरन उन सभों से भी जो उस से पहिले थे
अधिक बुराई की। वह नबात के पुत्र यारोबाम की २६
सी सारी चाल चला और उस के सारे पापों के अनुसार
जो उस ने इस्राएल से ऐसे कराये कि उन्हों ने इस्राएल

के परमेश्वर यहोवा को अपनी व्यर्थ बातों से रिस दिलाई। २७ ओम्री के और काम जो उस ने किये और जो वीरता उस ने दिखाई यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। २८ निदान ओम्री अपने पुरखाओं के संग सोया और शोमरोन में उस को मिट्टी दी गई और उस का पुत्र अहाब उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(अहाब के राज्य का आरम्भ)

२९ यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें बरस में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल पर राज्य करने लगा और इस्राएल पर शोमरोन में बाईस बरस लों राज्य करता रहा। ३० और ओम्री के पुत्र अहाब ने उन सब से अधिक जो उस से पहिले थे वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है। ३१ उस ने तो नबात के पुत्र यारोबाम के पापों में चलना हलकी सी बात जानकर सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईजेबेल को ब्याहकर बाल देवता की उपासना और उस को दण्डवत् की। ३२ और उस ने बाल का एक भवन शोमरोन में बनाकर उस में बाल की एक वेदी बनाई। ३३ और अहाब ने एक अशेरा भी बनाया बरन उस ने उन सब इस्राएली राजाओं से बढ़कर जो उस से पहिले थे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलानेहारे काम किये। ३४ उस के दिनों में बेतेलवासी हीएल ने यरीहो को फिर बसाया जब उस ने उस की नेव डाली तब उस का जेठा पुत्र अबीराम मर गया और जब उस ने उस के फाटक खड़े किये तब उस का लहुरा पुत्र सगूब मर गया यह यहोवा के उस कहे के अनुसार हुआ जो उस ने नून के पुत्र यहोशू के द्वारा कहा था॥

(एलिय्याह के काम का आरम्भ)

१७. और तिश्बी एलिय्याह जो गिलाद के परदेशी रहनेहारों में से था उस ने अहाब से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिस के सम्मुख मैं हाजिर रहता हूं उस के जीवन की सोंह इन बरसों में मेरे बिना कहे न तो मेंह बरसेगा और न ओस पड़ेगी। २ तब यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि, ३ यहां से चल पूरब ओर मुख करके करीत नाम नाले में ४ जो यर्दन के साम्हने है छिप जा। उसी नाले का पानी तू पिया कर और मैं ने कौवों को आज्ञा दी है कि वे तुझे वहां खिलाएं[१]। ५ यहोवा का यह वचन मानकर वह यर्दन ६ के साम्हने के करीत नाम नाले में जा रहा। और सबेरे और सांझ को कौवे उस के पास रोटी और मांस लाया करते ७ थे और वह नाले का पानी पीता था। कुछ दिन बीते पर उस देश में वर्षा न होने के कारण नाला सूख गया॥

८ तब यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि, ९ चल सीदोन में के सारपत नगर को जाकर वहां रह सुन मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है। १० सो वह चल दिया और सारपत को गया नगर के फाटक के पास पहुंचकर उस ने क्या देखा कि एक विधवा लकड़ी बीन रही है उस को बुलाकर उस ने कहा किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ। ११ वह उसे लेने को जा रही थी कि उस ने उसे पुकारके कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ। १२ उस ने कहा तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की सोंह मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिये जाती हूं कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं और हम उसे खाएं फिर मर जाएं। १३ एलिय्याह ने उस से कहा मत डर जाकर अपनी बात के अनुसार कर पर पहिले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ फिर इस के पीछे अपने और अपने बेटे के लिये बनाना। १४ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जब लों यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाए तब लों न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा और न उस कुप्पी का तेल घट जाएगा। १५ तब वह चली गई और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया तब से वह और स्त्री और उस का घराना बहुत दिन लों खाते रहे। १६ यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने एलिय्याह के द्वारा कहा था न तो उस घड़े का मैदा चुका और न उस कुप्पी का तेल घट गया। १७ इन बातों के पीछे उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी थी सो रोगी हुआ और उस का रोग यहां तक बढ़ा कि उस का सांस लेना बन्द हो गया। १८ तब वह एलिय्याह से कहने लगी हे परमेश्वर के जन मेरा तुझ से क्या काम क्या तू इसलिये मेरे यहां आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो मेरे पाप का स्मरण दिलाए। १९ उस ने उस से कहा अपना बेटा मुझे दे तब वह उसे उस की गोद से लेकर उस अटारी में ले गया जहां वह आप रहता था और अपनी खाट पर लिटा दिया। २० तब उस ने यहोवा को पुकारके कहा हे मेरे परमेश्वर यहोवा क्या तू इस विधवा का बेटा मार डालकर जिस के यहां मैं टिका हूं इस पर भी विपत्ति ले आया है। २१ तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और यहोवा को पुकारके कहा हे मेरे परमेश्वर यहोवा इस बालक का प्राण इस में फिर डाल दे। २२ एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली सो बालक का प्राण उस में फिर आया और वह जी उठा। २३ तब एलिय्याह बालक को अटारी में

(१) मूल में तेरे पालने पोसने की।

से नीचे घर में ले गया और एलिय्याह ने यह कहकर उस की माता के हाथ में सौंप दिया कि देख तेरा बेटा जीता है। २४ स्त्री ने एलिय्याह से कहा अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है सो सच होता है॥

(यहोवा की विजय और बाल का पराजय)

१८. बहुत दिनों के पीछे तीसरे बरस में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा कि जाकर अपने आप को अहाब को २ दिखा और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा। तब एलिय्याह अपने आप को अहाब को दिखाने गया। उस समय ३ शोमरोन में अकाल भारी था। सो अहाब ने ओबद्याह ४ को जो उस के घराने के ऊपर था बुलवाया। ओबद्याह तो यहोवा का भय यहां लों मानता था कि जब ईजेबेल यहोवा के नबियों को नाश करती थी तब ओबद्याह ने एक सौ नबियों को लेकर पचास पचास करके गुफाओं में छिपा रक्खा और अन्न जल देकर ५ पालता रहा। और अहाब ने ओबद्याह से कहा कि देश में जल के सब सोतों और सब नदियों के पास जा क्या जाने कि इतनी घास मिले कि घोड़ों और खच्चरों को ६ जीते बचा सकें और हमारे सब पशु न मर जाएं। और उन्हों ने आपस में देश बांटा कि उस में होकर चलें एक ७ ओर अहाब और दूसरी ओर ओबद्याह चला। ओबद्याह मार्ग में था कि एलिय्याह उस को मिला उसे चीन्हकर वह मुंह के बल गिरा और कहा हे मेरे प्रभु एलिय्याह ८ क्या तू है। उस ने कहा हां मैं ही हूं जाकर अपने ९ स्वामी से कह कि एलिय्याह मिला है। उस ने कहा मैं ने ऐसा क्या पाप किया है कि तू मुझे मरवा डालने १० के लिये अहाब के हाथ करना चाहता है। तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की सोंह कोई ऐसी जाति वा राज्य नहीं जिस में मेरे स्वामी ने तुझे ढूंढ़ने को न भेजा हो और जब उन लोगों ने कहा कि वह यहां नहीं है तब उस ने उस राज्य वा जाति को इस की किरिया ११ खिलाई कि एलिय्याह नहीं मिला। और अब तू कहता है कि जाकर अपने स्वामी से कह कि एलिय्याह मिला। १२ फिर ज्यों ही मैं तेरे पास से चला जाऊंगा त्यों ही यहोवा का आत्मा तुझे न जाने कहां उठा ले जाएगा सो जब मैं जाकर अहाब को बताऊंगा और तू उसे न मिलेगा तब वह मुझे मार डालेगा पर मैं तेरा दास अपने लड़कपन से यहोवा का भय मानता आया हूं। १३ क्या मेरे प्रभु को यह नहीं बताया गया कि जब ईजेबेल यहोवा के नबियों को घात करती थी तब मैं ने क्या किया कि यहोवा के नबियों में से एक सौ लेकर पचास पचास करके गुफाओं में छिपा रक्खे और उन्हें अन्न जल देकर पालता रहा। १४ फिर अब तू कहता है जाकर अपने स्वामी से कह कि एलिय्याह मिला है। तब वह मुझे घात करेगा। १५ एलिय्याह ने कहा सेनाओं का यहोवा जिस के साम्हने मैं रहता हूं उस के जीवन की सोंह आज मैं अपने आप को उसे दिखाऊंगा। १६ तब ओबद्याह अहाब से मिलने गया और उस को बता दिया सो १७ अहाब एलिय्याह से मिलने चला। एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा हे इस्राएल के सतानेहारे क्या तू ही १८ है। उस ने कहा मैं ने इस्राएल को कष्ट नहीं दिया पर तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को टालकर बाल देवताओं के पीछे १९ हो लिये। अब भेजकर सारे इस्राएल को और बाल के साढ़े चार सौ नबियों और अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईजेबेल की मेज पर खाते हैं मेरे पास कर्म्मेल पर्वत पर २० इकट्ठा कर ले। तब अहाब ने सारे इस्राएलियों में भेज २१ कर नबियों को कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा किया। और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा तुम कब लों दो विचारों में लटके रहोगे यदि यहोवा परमेश्वर हो तो उस के पीछे हो लेओ और यदि बाल हो तो उस के पीछे हो लेओ। लोगों ने उस के उत्तर में एक भी २२ बात न कही। तब एलिय्याह ने लोगों से कहा यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूं और बाल के २३ नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं। सो दो बछड़े लाकर हमें दिये जाएं और वे एक अपने लिये चुन उसे टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दें और कुछ आग न लगाएं और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रक्खूंगा २४ और कुछ आग न लगाऊंगा। तब तुम तो अपने देवता से प्रार्थना करना और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे तब सब २५ लोग बोल उठे अच्छी बात। और एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो क्योंकि तुम तो बहुत हो तब अपने देवता से २६ प्रार्थना करना पर आग न लगाना। सो उन्हों ने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया लेकर तैयार किया और भोर से ले दोपहर लों वह कहकर बाल से प्रार्थना करते रहे कि हे बाल हमारी सुन हे बाल हमारी सुन पर न कोई शब्द न कोई उत्तर देनेहारा हुआ तब वे २७ अपनी बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने लगे। दोपहर को एलिय्याह ने यह कहकर उनका ठट्ठा किया कि ऊंचे

शब्द से पुकारो वह तो देवता है वह तो ध्यान लगाये होगा वा कहीं गया वा यात्रा में होगा वा क्या जानिये २८ सोता हो और उसे जगाना चाहिये। और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकार पुकारके अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बर्छियों से अपने अपने को यहां लों घायल किया २९ कि लोहू लुहान हो गये। वे दोपहर के पीछे बरन भेंट चढ़ाने के समय लों नबूवत करते रहे पर कोई शब्द सुन न पड़ा और न तो किसी ने उत्तर दिया न कान लगाया। ३० तब एलिय्याह ने सब लोगों से कहा मेरे निकट आओ और सब लोग उस के निकट आये तब उस ने यहोवा ३१ की वेदी की जो गिराई गई थी मरम्मत की। फिर एलिय्याह ने याकूब के पुत्रों की गिनती के अनुसार जिस के पास यहोवा का यह वचन आया था कि तेरा नाम ३२ इस्राएल होगा बारह पत्थर छांटे, और उन पत्थरों से यहोवा के नाम की एक वेदी बनाई और उस के चारों ओर इतना बड़ा एक गड़हा खोद दिया कि उस में दो ३३ सआ बीज समा सके। तब उस ने वेदी पर लकड़ी को सजाया और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर धर दिया और कहा चार घड़े पानी भरके होमबलि पशु और ३४ लकड़ी पर उण्डेल दो। तब उस ने कहा दूसरी बार वैसा ही करो सो लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया फिर उस ने कहा तीसरी बार करो सो लोगों ने तीसरी ३५ बार भी किया। और जल वेदी के चारों ओर बह गया ३६ और गड़हे को भी उस ने जल से भर दिया। फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जाकर कहने लगा हे इब्राहीम इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा आज यह विदित हो कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है और मैं तेरा दास हूं और मैं ने ये सब काम तुझ ३७ से वचन पाकर किये हैं। हे यहोवा मेरी सुन मेरी सुन कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा तू ही परमेश्वर है और तू ३८ ही उन का मन लौटा लेता है। तब यहोवा की आग आकाश से पड़ी और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया और गड़हे में का जल ३९ सुखा दिया। यह देख सब लोग मुंह के बल गिरके बोल उठे यहोवा ही परमेश्वर है यहोवा ही परमेश्वर ४० है। एलिय्याह ने उन से कहा बाल के नबियों को पकड़ लो उन में से एक भी छूटने न पाए सो उन्हों ने उन को पकड़ लिया और एलिय्याह ने उन्हें नीचे ४१ कीशोन के नाले में ले जाकर वहां मार डाला। फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा उठकर खा पी क्योंकि भारी ४२ वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है। सो अहाब खाने पीने चला गया और एलिय्याह कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया और भूमि पर गिर अपना मुंह घुटनों के बीच ४३ किया। और उस ने अपने सेवक से कहा चढ़कर समुद्र की ओर ताक सो उस ने चढ़कर ताका और लौटकर कहा कुछ नहीं दीखता एलिय्याह ने कहा फिरके सात ४४ बार जा। सातवीं बार उस ने कहा कि सुन समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है एलिय्याह ने कहा अहाब के पास जाकर कह रथ जुतवा ४५ कर नीचे जा न हो कि तू वर्षा से रुक जाए। थोड़ी ही बेर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं और वायु से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी और अहाब ४६ सवार होकर यिज्रेल को चला। तब यहोवा की शक्ति[१] एलिय्याह पर ऐसी हुई कि वह कमर बांधकर अहाब के आगे आगे यिज्रेल लों दौड़ता गया॥

(एलिय्याह का निराश होना और फिर छियाव बांधना)

१९. तब अहाब ने ईजेबेल को एलिय्याह के सारे काम विस्तार से बताये कि उस ने सब नबियों को तलवार से कैसे मार डाला। २ तब ईजेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत से कहला भेजा कि यदि मैं कल इसी समय लों तेरा प्राण उन का सा न करूं तो देवता मेरे साथ वैसा ही बरन उस से भी ३ अधिक करें। यह देख एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा और यहूदा में के बेर्शेबा को पहुंचकर अपना सेवक ४ वहीं छोड़ दिया और आप जंगल में एक दिन का मार्ग जा एक झाऊ के पेड़ तले बैठ गया वहां उस ने यह कह कर अपनी मृत्यु मांगी कि हे यहोवा बस है अब मेरा प्राण ले ले क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूं। ५ वह झाऊ के पेड़ तले लेटकर सो रहा था कि एक दूत ६ ने उसे छूकर कहा उठकर खा। उस ने दृष्टि करके क्या देखा कि मेरे सिरहाने पत्थरों पर पकी हुई एक रोटी और एक सुराही पानी धरा है सो उस ने खाया और पिया ७ और फिर लेट गया। दूसरी बार यहोवा के दूत ने आ उसे छूकर कहा उठकर खा क्योंकि तुझे बहुत भारी यात्रा ८ करनी है। तब उस ने उठकर खाया पिया और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन रात लों चलते चलते ९ परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुंचा। वहां वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उस के पास १० पहुंचा कि हे एलिय्याह तेरा यहां क्या काम। उस ने उत्तर दिया सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी तेरी वेदियों को गिरा दिया और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है और मैं ही अकेला रह गया

(१) मूल में का हाथ।

११ हूं और वे मेरे भी प्राण के खोजी हैं कि उसे हर लें। उस ने कहा निकलकर यहोवा के सन्मुख पर्वत पर खड़ा हो। और यहोवा पास से होकर चला और यहोवा के साम्हने एक बड़ी प्रचण्ड वायु से पहाड़ फटने और ढांग टूटने लगीं तौभी यहोवा उस वायु में न था फिर वायु के पीछे भुईं-
१२ डोल हुआ तौभी यहोवा उस भुईंडोल में न था। फिर भुईंडोल के पीछे आग दिखाई दी तौभी यहोवा उस आग में न था फिर आग के पीछे एक दबा हुआ धीमा शब्द
१३ सुनाई दिया। यह सुनते ही एलिय्याह ने अपना मुंह चद्दर से ढांपा और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ फिर एक शब्द उसे सुनाई दिया कि हे एलिय्याह तेरा यहां क्या
१४ काम। उस ने कहा मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी तेरी वेदियों को गिरा दिया और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है और मैं ही अकेला रह गया हूं और
१५ वे मेरे भी प्राण के खोजी हैं कि उसे हर लें। यहोवा ने उस से कहा लौटकर दमिश्क के जंगल को जा और वहां
१६ पहुंचकर अराम का राजा होने के लिये हजाएल का और इस्राएल का राजा होने को निमशी के पोते येहू का और अपने स्थान पर नबी होने के लिये आबेलमहोला के शापात
१७ के पुत्र एलीशा का अभिषेक करना। और हजाएल की तलवार से जो कोई बच जाए उस को येहू मार डालेगा और जो कोई येहू की तलवार से बच जाए उस को एलीशा
१८ मार डालेगा। तौभी मैं सात हजार इस्राएलियों को बचा रक्खूंगा। ये तो वे सब हैं जिन्हों ने न तो बाल के आगे
१९ घुटने टेके और न मुंह से उसे चूमा है। सो वह वहां से चल दिया और शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे किये हुए आप बारहवीं के साथ होकर हल जोत रहा था उस के पास जाकर
२० एलिय्याह ने अपनी चद्दर उस पर डाल दी। तब वह बैलों को छोड़कर एलिय्याह के पीछे दौड़ा और कहने लगा मुझे अपने माता पिता को चूमने दे तब मैं तेरे पीछे चलूंगा उस ने कहा लौट जा मैं ने तुझ से क्या
२१ किया है। तब वह उस के पीछे से लौट गया और एक जोड़ी बैल लेकर बलि किये और बैलों का सामान जलाकर उन का मांस पकाके अपने लोगों को दे दिया और उन्हों ने खाया तब वह कमर बांधकर एलिय्याह के पीछे चला और उस की सेवा टहल करने लगा॥

(अरामियों पर विजय)

२०. और अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी सारी सेना इकट्ठी की और उस के साथ बत्तीस राजा और घोड़े और रथ थे सो उन्हें संग लेकर उस ने शोमरोन पर चढ़ाई की और उसे घेरके उस के विरुद्ध लड़ा। और उस ने नगर में
२ इस्राएल के राजा अहाब के पास दूतों को यह कहने
३ के लिये भेजा कि बेन्हदद तुझ से यों कहता है, कि तेरी चान्दी सोना मेरा है और तेरी स्त्रियों और लड़केबालों
४ में जो जो उत्तम हैं सो भी सब मेरे हैं। इस्राएल के राजा ने उस के पास कहला भेजा हे मेरे प्रभु हे राजा तेरे वचन के अनुसार मैं और मेरा जो कुछ है सब तेरा
५ है। उन्हीं दूतों ने फिर आकर कहा बेन्हदद तुझ से यों कहता है कि मैं ने तेरे पास यह कहला भेजा था कि तुझे अपनी चान्दी सोना और स्त्रियां और बालक भी मुझे
६ देने पड़ेंगे। पर कल इसी समय में अपने कर्म्मचारियों को तेरे पास भेजूंगा और वे तेरे और तेरे कर्म्मचारियों के घरों में ढूंढ़ ढांढ़ करेंगे और तेरी जो जो मनभावनी वस्तुएं निकलें सो वे अपने अपने हाथ में लेकर आएंगे।
७ तब इस्राएल के राजा के अपने देश के सब पुरनियों को बुलवाकर कहा सोच विचार करो कि वह मनुष्य हमारी हानि ही का अभिलाषी है उस ने मुझ से मेरी स्त्रियां बालक चान्दी सोना मंगा भेजा और मैं ने नाह न
८ की। तब सब पुरनियों ने और सब साधारण लोगों
९ ने उस से कहा उस की न सुनना और न मानना। सो राजा ने बेन्हदद के दूतों से कहा मेरे प्रभु राजा से मेरी ओर से कहो जो कुछ तू ने पहले अपने दास से चाहा था सो तो मैं करूंगा, पर यह मुझ से न होगा सो बेन्हदद
१० के दूतों ने जाकर उसे यह उत्तर सुना दिया। तब बेन्हदद ने अहाब के पास कहला भेजा यदि शोमरोन में इतनी धूलि निकले कि मेरे सब पीछे चलनेहारों की मुट्ठी भर कर अटे तो देवता मेरे साथ ऐसा ही बरन इस से भी
११ अधिक करें। इस्राएल के राजा ने उत्तर देकर कहा उस से कहो कि जो हथियार बांधता हो सो उस की नाईं न
१२ फूले जो उन्हें उतारता हो। यह वचन सुनते ही वह जो और राजाओं समेत डेरों में पी रहा था उस ने अपने कर्म्मचारियों से कहा पांति बांधो सो उन्हों ने नगर के
१३ विरुद्ध पांति बांधी। तब एक नबी ने इस्राएल के राजा अहाब के पास जाकर कहा यहोवा तुझ से यों कहता है यह बड़ी भीड़ जो तू ने देखी है उस सब को मैं आज तेरे हाथ कर दूंगा इस से तू जान लेगा कि मैं यहोवा
१४ हूं। अहाब ने पूछा किस के द्वारा उस ने कहा यहोवा यों कहता है कि प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों के द्वारा फिर उस ने पूछा युद्ध का कौन आरम्भ करे उस ने उत्तर
१५ दिया तू ही। तब उस ने प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों की गिनती ली और वे दो सौ बत्तीस निकले और उन के

पीछे उस ने सब इस्राएली लोगों की गिनती ली और
१६ वे सात हजार हुए । ये दोपहर को निकल गये उस समय
बेन्हदद अपने सहायक बत्तीसों राजाओं समेत डेरों में
१७ दारू पीकर मतवाला हो रहा था । सो प्रदेशों के हाकिमों
के सेवक पहिले निकले तब बेन्हदद ने दूत भेजे और
उन्हों ने उस से कहा शोमरोन से कुछ मनुष्य निकले
१८ आते हैं । उस ने कहा चाहे वे मेल करने को निकले हों
१९ चाहे लड़ने को तौभी उन्हें जीते ही पकड़ लाओ । सो
प्रदेशों के हाकिमों के सेवक और उन के पीछे की सेना
२० के सिपाही नगर से निकले । और वे अपने अपने साम्हने के
पुरुष को मारने लगे और अरामी भागे और इस्राएल
उन के पीछे पड़ा और अराम का राजा बेन्हदद सवारों
२१ के संग घोड़े पर चढ़ा और भागकर बच गया । तब
इस्राएल के राजा ने भी निकलकर घोड़ों और रथों को
२२ मारा और अरामियों को बड़ी मार से मारा । तब उस
नबी ने इस्राएल के राजा के पास जाकर कहा जाकर
लड़ाई के लिये अपने को दृढ़ कर और सचेत होकर सोच
कि क्या करना है क्योंकि नये बरस के लगते ही अराम
का राजा फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा ॥

२३ तब अराम के राजा के कर्म्मचारियों ने उस से
कहा उन लोगों का देवता पहाड़ी देवता है इस कारण
वे हम पर प्रबल हुए सो हम उन से चौरस भूमि पर
२४ लड़ें तो निश्चय हम उन पर प्रबल हो जाएंगे । और
यह भी काम कर अर्थात् सब राजाओं का पद ले ले
२५ और उन के स्थान पर सेनापतियों को ठहरा दे । फिर एक
और सेना अपने लिये गिन ले जो तेरी उस सेना के
बराबर हो जो नाश हो गई है घोड़े के बदले घोड़ा
और रथ के बदले रथ तब हम चौरस भूमि पर उन से
लड़ें और निश्चय उन पर प्रबल हो जाएंगे । उन की
२६ यह सम्मति मानकर बेन्हदद ने वैसा ही किया । और
नये बरस के लगते ही बेन्हदद ने अरामियों को इकट्ठा
किया और इस्राएल से लड़ने के लिये अपेक को गया ।
२७ और इस्राएली भी इकट्ठे किये गये और उन के भोजन
की तैयारी हुई तब वे उन का साम्हना करने को गये
और इस्राएली उन के साम्हने डेरे डालकर बकरियों के
दो छोटे झुण्ड से देख पड़े पर अरामियों से देश भर
२८ गया । तब परमेश्वर के उसी जन ने इस्राएल के राजा
के पास आकर कहा यहोवा यों कहता है अरामियों ने
यह कहा है कि यहोवा पहाड़ी देवता है पर नीची भूमि
का नहीं है इस कारण मैं उस सारी बड़ी भीड़ को तेरे
हाथ कर दूंगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ।
२९ जब वे सात दिन आम्हने साम्हने डेरे डाले हुए रहे तब
सातवें दिन लड़ाई होने लगी और एक दिन में इस्रा-
एलियों ने एक लाख अरामी पियादे मार डाले । जो
३० बच गये सो अपेक को भागकर नगर में घुसे और वहां
उन बचे हुए लोगों में से सत्ताईस हजार पुरुष शहरपनाह
के गिरने से दब मरे । बेन्हदद भी भाग गया और नगर
की एक भीतरी कोठरी में गया । तब उस के कर्म्मचारियों
३१ ने उस से कहा सुन हम ने तो सुना है कि इस्राएल के
घराने के राजा दयालु राजा होते हैं सो हमें कमर में
टाट और सिर पर रस्सियां बांधे इस्राएल के राजा के
पास जाने दे क्या जाने वह तेरा प्राण बचाए । सो वे
३२ कमर में टाट और सिर पर रस्सियां बांध इस्राएल के
राजा के पास जाकर कहने लगे तेरा दास बेन्हदद तुझ
से कहता है मेरा प्राण छोड़ । राजा ने उत्तर दिया क्या
वह अब लों जीता है वह तो मेरा भाई है । उन लोगों
३३ ने शकुन जानकर फुर्ती से बूझ लेने का यत्न किया कि
यह उस के मन की बात है कि नहीं और कहा हां तेरा
भाई बेन्हदद । राजा ने कहा जाकर उस को ले आओ
सो बेन्हदद उस के पास निकल आया और उस ने उसे
अपने रथ पर चढ़ा लिया । तब बेन्हदद ने उस से कहा
३४ जो नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से ले लिये ये उन को
मैं फेर दूंगा और जैसे मेरे पिता ने शोमरोन में अपने
लिये सड़कें बनवाईं वैसे ही तू दमिश्क में सड़कें बनवाना
अहाब ने कहा मैं इसी वाचा पर तुझे छोड़ देता हूं तब
उस ने बेन्हदद से वाचा बांधकर उसे छोड़ दिया ॥

३५ इस के पीछे नबियों के चेलों में से एक जन ने
यहोवा से वचन पाकर अपने संगी से कहा मुझे मार जब
उस मनुष्य ने उसे मारने से नाह की, तब उस ने उस
३६ से कहा तू ने यहोवा का वचन नहीं माना इस कारण
सुन ज्योंहीं तू मेरे पास से चला जाएगा त्योंहीं सिंह से
मार डाला जाएगा । सो ज्योंहीं वह उस के पास से चला
गया त्योंहीं उसे एक सिंह मिला और उस को मार डाला ।
३७ फिर उस को दूसरा मनुष्य मिला और उस से भी उस
ने कहा मुझे मार और उस ने उस को ऐसा मारा कि
वह घायल हुआ । तब वह नबी चला गया और आंखों
३८ को पगड़ी से ढांपकर राजा की बाट जोहता हुआ मार्ग
पर खड़ा रहा । जब राजा पास होकर जा रहा था तब
३९ उस ने उस की दोहाई देकर कहा जब तेरा दास युद्ध
के बीच गया था तब कोई मनुष्य मेरी ओर मुड़कर
किसी मनुष्य को मेरे पास ले आया और मुझ से कहा
इस मनुष्य की चौकसी कर यदि यह किसी रीति छूट
जाए तो उस के प्राण के बदले तुझे अपना प्राण देना
होगा नहीं तो किक्कार भर चान्दी देना पड़ेगा । पीछे ४०

तेरा दास इधर उधर काम में फंस गया फिर वह न मिला। इस्राएल के राजा ने उस से कहा तेरा ऐसा ही न्याय होगा ४१ तू ने आप अपना न्याय किया है। नबी ने झट अपनी आंखों से पगड़ी उठाई तब इस्राएल के राजा ने उसे चीन्ह ४२ लिया कि यह कोई नबी है। तब उस ने राजा से कहा यहोवा तुझ से यों कहता है इसलिये कि तू ने अपने हाथ से ऐसे एक मनुष्य को जाने दिया जिसे मैं ने सत्यानाश हो जाने को ठहराया था[१] तुझे उस के प्राण की सन्ती अपना प्राण और उस की प्रजा की सन्ती अपनी प्रजा ४३ देनी पड़ेगी। तब इस्राएल का राजा उदास और अनमना होकर घर की ओर चला और शोमरोन को आया॥

(नाबोत की हत्या और ईश्वर का कोप)

२१. नाबोत नाम एक यिज्रेली की एक दाख की बारी शोमरोन के २ राजा अहाब के राजमन्दिर के पास यिज्रेल में थी। इन बातों के पीछे अहाब ने नाबोत से कहा तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है सो उसे मुझे दे कि मैं उस में साग पात की बारी लगाऊं और मैं उस के बदले तुझे उस से अच्छी एक बारी दूंगा नहीं तो तेरी इच्छा हो मैं ३ तुझे उस का मोल दे दूंगा। नाबोत ने अहाब से कहा यहोवा न करे कि मैं अपने पुरखाओं का निज भाग ४ तुझे दूं। यिज्रेली नाबोत के इस वचन के कारण कि मैं तुझे अपने पुरखाओं का निज भाग न दूंगा अहाब उदास और अनमना होकर अपने घर गया और बिछौने पर लेट गया और मुंह फेर लिया और कुछ भोजन न ५ किया। तब उस की स्त्री ईजेबेल ने उस के पास आकर पूछा तेरा मन क्यों ऐसा उदास है कि तू कुछ भोजन नहीं ६ करता। उस ने कहा कारण यह है कि मैं ने यिज्रेली नाबोत से कहा कि रुपया लेकर मुझे अपनी दाख की बारी दे नहीं तो यदि तुझे भाए तो मैं उस की सन्ती दूसरी दाख की बारी दूंगा और उस ने कहा मैं अपनी ७ दाख की बारी तुझे न दूंगा। उस की स्त्री ईजेबेल ने उस से कहा क्या तू इस्राएल पर राज्य करता है कि नहीं उठकर भोजन कर और तेरा मन आनन्दित होए यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी मैं तुझे दिलवा दूंगी। ८ तब उस ने अहाब के नाम से चिट्ठी लिखकर उस की अंगूठी की छाप लगाकर उन पुरनियों और रईसों के पास भेज दी जो उसी नगर में नाबोत के पड़ोस में रहते ९ थे। उस चिट्ठी में उस ने यों लिखा कि उपवास का प्रचार करो और नाबोत को लोगों के साम्हने ऊंचे स्थान पर १० बैठाना। तब दो ओछे जनों को उस के साम्हने बैठाना जो साक्षी देकर उस से कहें तू ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की[२] तब तुम लोग उसे बाहर ले जाकर उस को पत्थरवाह करना कि वह मर जाए। ११ ईजेबेल चिट्ठी में की आज्ञा के अनुसार करके नगर में रहनेहारे १२ पुरनियों और रईसों ने, उपवास का प्रचार किया और नाबोत को लोगों के साम्हने ऊंचे स्थान पर बैठाया। १३ तब दो ओछे जन आकर उस के सन्मुख बैठ गये और उन ओछे जनों ने लोगों के साम्हने नाबोत के विरुद्ध यह साक्षी दी कि नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की[२] इस पर उन्हों ने उसे नगर के बाहर ले जाकर उस को पत्थरवाह किया और वह मर गया। १४ तब उन्हों ने ईजेबेल के पास यह कहला भेजा कि नाबोत पत्थरवाह करके मार डाला गया है। १५ यह सुनते ही कि नाबोत पत्थरवाह करके मार डाला गया है ईजेबेल ने अहाब से कहा उठकर यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी को जिसे वह तुझे रुपया लेकर देने से नट गया था अपने अधिकार में ले क्योंकि नाबोत जीता नहीं वह मर १६ गया है। यिज्रेली नाबोत की मृत्यु का समाचार पाते ही अहाब उस की दाख की बारी अपने अधिकार में लेने के लिये वहां जाने को उठा॥

१७ तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास १८ पहुंचा कि, चल शोमरोन में रहनेहारे इस्राएल के राजा अहाब से मिलने को जा वह तो नाबोत की दाख की बारी में है उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहां १९ गया है। और उस से यह कहना कि यहोवा यों कहता है कि क्या तू ने घात किया और अधिकारी भी बन बैठा फिर तू उस से यह भी कहना कि यहोवा यों कहता है कि जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लोहू चाटा उसी २० स्थान पर कुत्ते तेरा भी लोहू चाटेंगे। एलिय्याह को देखकर अहाब ने कहा हे मेरे शत्रु क्या तू ने मेरा पता लगाया है उस ने कहा हां लगाया तो है और इस का कारण यह है कि जो यहोवा के लेखे बुरा है उसे करने २१ के लिये तू ने अपने को बेच डाला है। मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूंगा कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूंगा और अहाब के घर के हर एक लड़के को और क्या बन्धुए क्या स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहनेहारे को २२ भी नाश कर डालूंगा। और मैं तेरा घराना नबात के पुत्र यारोबाम और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा इसलिये कि तू ने मुझे रिस दिलाई और २३ इस्राएल से पाप कराया है। और ईजेबेल के विषय यहोवा यह कहता है कि यिज्रेल के धुस के पास

(१) मूल में मेरे सत्यानाश के मनुष्य को हाथ से जाने दिया।

(२) मूल में दोनों को बिदा किया।

२४ कुत्ते ईजेबेल को खा डालेंगे। अहाब का जो कोई नगर में मर जाए उस को कुत्ते खा लेंगे और जो कोई मैदान २५ में मर जाए उस को आकाश के पक्षी खा जाएंगे। सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न था जो अपनी स्त्री ईजेबेल के उसकाने से वह करने को जो यहोवा के लेखे २६ बुरा है अपने को बेच डाला है। वह तो उन एमोरियों की नाईं जिन को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाला था बहुत ही घिनौने काम करता था २७ अर्थात् मूरतों के पीछे चलता था। एलिय्याह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने २८ और दबे पांवों चलने लगा। और यहोवा का यह वचन २९ तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा कि, क्या तू ने देखा है कि अहाब मेरे साम्हने दबा रहता है सो इस कारण कि वह मेरे साम्हने दबा रहता है मैं वह विपत्ति उस के जीते जी न डालूंगा उस के पुत्र के दिनों में मैं उस के घराने पर वह विपत्ति डालूंगा॥

(अहाब की मृत्यु)

२२.

अरामी और इस्राएली तीन बरस लों आपस में बिन लड़े रहे।

२ तब तीसरे बरस में यहूदा का राजा यहोशापात इस्राएल ३ के राजा के यहां गया। तब इस्राएल के राजा ने अपने कर्म्मचारियों से कहा क्या तुम को मालूम है कि गिलाद का रामोत हमारा है फिर हम क्यों चुपचाप रहते और उसे अराम के राजा के हाथ से क्यों नहीं छीन लेते। ४ और उस ने यहोशापात से पूछा क्या तू मेरे संग गिलाद के रामोत से लड़ने के लिये जाएगा यहोशापात ने इस्राएल के राजा को उत्तर दिया जैसा तू वैसा मैं भी हूं जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी भी प्रजा और जैसे तेरे घोड़े ५ वैसे मेरे भी घोड़े हैं। फिर यहोशापात ने इस्राएल के ६ राजा से कहा कि आज यहोवा की आज्ञा ले। सो इस्राएल के राजा ने नबियों को जो कोई चार सौ पुरुष थे इकट्ठा करके उन से पूछा क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने के चढ़ाई करूं वा रुका रहूं उन्हों ने उत्तर दिया चढ़ाई कर क्योंकि प्रभु उस को राजा के हाथ कर ७ देगा। पर यहोशापात ने पूछा क्या यहां यहोवा का ८ और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें। इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा हां यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुरुष और है जिस के द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं पर मैं उस से घिन रखता हूं क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की नबूवत ९ करता है। यहोशापात ने कहा राजा ऐसा न कहे। तब इस्राएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ। १० इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात अपने अपने राजवस्त्र पहिने हुए शोमरोन के फाटक में एक खुले स्थान में अपने अपने सिंहासन पर विराज रहे थे और सब ११ नबी उन के साम्हने नबूवत कर रहे थे। तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनाकर कहा यहोवा यों कहता है कि इन से तू अरामियों को मारते मारते १२ नाश कर डालेगा। और सब नबियों ने इसी आशय की नबूवत करके कहा गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ कर १३ देगा। और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस ने उस से कहा सुन नबी लोग एक ही मुंह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं सो तेरी बातें उन की सी हों १४ तू भी शुभ वचन कहना। मीकायाह ने कहा यहोवा के जीवन की सोंह जो कुछ यहोवा मुझ से कहे सोई मैं १५ कहूंगा। जब वह राजा के पास आया तब राजा ने उस से पूछा हे मीकायाह क्या हम गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करें वा रुके रहें उस ने उस को उत्तर दिया हां चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो और यहोवा उस १६ को राजा के हाथ कर दे। राजा ने उस से कहा मुझे कितनी बार तुझे किरिया धराकर चिताना होगा कि तू १७ यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह। मीकायाह ने कहा मुझे सारा इस्राएल बिना चरवाहे की भेड़ बकरियों की नाईं पहाड़ों पर तित्तर बित्तर देख पड़ा और यहोवा का यह वचन आया कि वे तो अनाथ हैं सो १८ अपने अपने घर कुशलक्षेम से लौट जाएं। तब इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही १९ की नबूवत करेगा। मीकायाह ने कहा इस कारण तू यहोवा का यह वचन सुन मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उस के पास दहिने बायें खड़ी हुई स्वर्ग की २० सारी सेना देख पड़ी। तब यहोवा ने पूछा अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करके खेत आए तब किसी ने कुछ और किसी ने २१ कुछ कहा। निदान एक आत्मा पास आकर यहोवा के सन्मुख खड़ा हुआ और कहने लगा मैं उस को बहका- २२ ऊंगा यहोवा ने पूछा किस उपाय से। उस ने कहा मैं जाकर उस के सब नबियों में पैठकर उन से झूठ बुलवाऊंगा[१] यहोवा ने कहा तेरा उस को बहकाना सुफल २३ होगा जाकर ऐसा ही कर। सो अब सुन यहोवा ने तेरे

(१) मूल में झूठा आत्मा हूंगा।

इन सब नबियों के मुंह में एक झूठ बोलनेहारा आत्मा पैठाया है और यहोवा ने तेरे विषय हानि की कही है।
२४ तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने मीकायाह के निकट जा उस के गाल पर थपेड़ा मारके पूछा यहोवा का आत्मा
२५ मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया। मीकायाह ने कहा जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से
२६ कोठरी में भागेगा तब जानेगा। इस पर इस्राएल के राजा ने कहा मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन
२७ और योआश राजकुमार के पास लौटा कर, उन से कह राजा यों कहता है कि इस को बन्दीगृह में डालो और जब लों मैं कुशल से न आऊं तब लों इसे दुख की रोटी
२८ और पानी दिया करो। और मीकायाह ने कहा यदि तू कभी कुशल से लौटे तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा। फिर उस ने कहा हे देश देश के लोगो तुम सब के सब सुन रक्खो॥

२९ तब इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशा-
३० पात दोनों ने गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की। और इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा मैं तो भेष बदलकर लड़ाई में जाऊंगा पर तू अपने ही वस्त्र पहिने रह सो इस्राएल का राजा भेष बदल कर लड़ाई में गया।
३१ और अराम के राजा ने तो अपने रथों के बत्तीसों प्रधानों को आज्ञा दी थी कि न तो छोटे से लड़ो न
३२ बड़े से केवल इस्राएल के राजा से लड़ो। सो जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात को देखा तब कहा निश्चय इस्राएल का राजा वही है और वे उसी से लड़ने को मुड़े
३३ सो यहोशापात चिल्ला उठा। यह देखकर कि वह इस्राएल का राजा नहीं है रथों के प्रधान उस का पीछा छोड़कर
३४ लौट गये। तब किसी ने अटकल से एक तीर चलाया और वह इस्राएल के राजा के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा सो उस ने अपने सारथी से कहा मैं घायल हुआ सो बाग फेरके मुझे सेना में से बाहर
३५ ले चल। और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और राजा अपने रथ में औरों के सहारे अरामियों के सन्मुख खड़ा रहा और सांझ को मर गया और उस के घाव का लोहू
३६ बहकर रथ के पौदान में भर गया। सूर्य्य डूबते हुए सेना में यह पुकार हुई कि हर एक अपने नगर और अपने
३७ देश को लौट जाए। जब राजा मर गया तब शोमरोन को
३८ पहुंचाया गया और शोमरोन में उसे मिट्टी दी गई। और यहोवा के वचन के अनुसार जब उस का रथ शोमरोन के पोखरे में धोया गया तब कुत्तों ने उस का लोहू चाट
३९ लिया और वेश्याएं नहा रही थीं। अहाब के और सब काम जो उस ने किये और हाथीदांत का जो भवन उस ने बनाया और जो जो नगर उस ने बसाये यह सब क्या इस्राएली राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं
४० लिखा है। निदान अहाब अपने पुरखाओं के संग सोया और उस का पुत्र अहज्याह उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(यहोशापात का राज्य)

४१ इस्राएल के राजा अहाब के चौथे बरस में आसा
४२ का पुत्र यहोशापात यहूदा पर राजा हुआ। जब यहोशापात राज्य करने लगा तब वह पैंतीस बरस का था और पच्चीस बरस लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अजूबा था जो शिल्ही की बेटी
४३ थी। और उस की चाल सब प्रकार से उस के पिता आसा की सी थी अर्थात् जो यहोवा के लेखे ठीक है सोई वह करता रहा और उस से कुछ न मुड़ा। तौभी ऊंचे स्थान ढाये न गये प्रजा के लोग ऊंचे स्थानों पर
४४ तब भी बलि किया और धूप जलाया करते थे। यहोशा-
४५ पात ने इस्राएल के राजा से मेल किया। और यहोशापात के काम और जो वीरता उस ने दिखाई और उस ने जो जो लड़ाइयां कीं यह सब क्या यहूदा के राजाओं
४६ के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। पुरुषगामियों में से जो उस के पिता आसा के दिनों में रह गये थे उन
४७ को उस ने देश में से नाश किया। उस समय एदोम में कोई राजा न था एक नाइब राज्य का काम करता था।
४८ फिर यहोशापात ने तर्शीश के जहाज सोना लाने के लिये ओपीर जाने को बनवा लिये पर वे एस्योनगेबेर में टूट
४९ गये सो वहां न जा सके। तब अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा मेरे जहाजियों को अपने जहाजियों के संग जहाजों में जाने दे पर यहोशापात ने नाह कर
५० दी। निदान यहोशापात अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पुरखाओं के बीच उस के मूलपुरुष दाऊद के पुर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र यहोराम उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(अहज्याह का राज्य)

५१ यहूदा के राजा यहोशापात के सत्रहवें बरस में अहाब का पुत्र अहज्याह शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा और दो बरस लों इस्राएल पर राज्य
५२ करता रहा। और उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और उस की चाल उस के माता पिता और नबात के पुत्र यारोबाम की सी थी जिस ने इस्राएल से पाप
५३ कराया था। जैसे उस का पिता बाल की उपासना और उसे दण्डवत् करने से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाता रहा वैसे ही अहज्याह भी करता रहा॥

(१) मूल में अपना हाथ।

राजाओं के वृत्तान्त का दूसरा भाग।

(अहज्याह की मृत्यु)

१. अहाब के मरने के पीछे मोआब इस्राएल से फिर गया। २ और अहज्याह एक झिलमिलीदार खिड़की में से जो शोमरोन में उस की अटारी में थी गिर पड़ा और पीड़ित हुआ सो उस ने दूतों को यह कह कर भेजा कि तुम जाकर एक्रोन के बालजबूब[१] नाम देवता से यह पूछ आओ कि क्या मैं इस ३ पीड़ा से बचूंगा कि नहीं। तब यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा उठकर शोमरोन के राजा के दूतों से मिलने को जा और उन से कह क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तुम एक्रोन के बालजबूब देवता से ४ पूछने जाते हो। सो यहोवा तुझ से यों कहता है कि जिस पलंग पर तू पड़ा है उस पर से कभी न उठेगा मर ५ ही जाएगा सो एलिय्याह चला गया। जब अहज्याह के दूत उस के पास लौट आये तब उस ने उन से पूछा तुम ६ क्यों लौट आये हो। उन्हों ने उस से कहा कि एक मनुष्य हम से मिलने को आया और कहा कि जिस राजा ने तुम को भेजा उस के पास लौटकर कहो यहोवा यों कहता है कि क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तू एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को भेजता है इस कारण जिस पलंग पर तू पड़ा है उस पर से कभी न उठेगा मर ७ ही जाएगा। उस ने उन से पूछा जो मनुष्य तुम से मिलने को आया और तुम से ये बातें कहीं उस का कैसा ८ ढंग था। उन्हों ने उस को उत्तर दिया वह तो रोंआर मनुष्य और अपनी कमर में चमड़े का फेंटा बांधे हुए था ९ उस ने कहा वह तिशबी एलिय्याह होगा। तब उस ने उस के पास पचास सिपाहियों के एक प्रधान को उस के पचासों सिपाहियों समेत भेजा। प्रधान ने उस के पास जाकर क्या देखा कि वह पहाड़ की चोटी पर बैठा है। और उस ने उस से कहा हे परमेश्वर के जन राजा ने कहा है १० कि उतर आ। एलिय्याह ने उस पचास सिपाहियों के प्रधान से कहा यदि मैं परमेश्वर का जन हूं तो आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले। तब आकाश से आग गिरी और उस से वह अपने पचासों ११ समेत भस्म हो गया। फिर राजा ने उस के पास पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया। प्रधान ने उस से कहा हे परमेश्वर के जन राजा ने कहा है कि फुर्ती से उतर आ। १२ एलिय्याह ने उत्तर देकर उन से कहा यदि मैं परमेश्वर का जन हूं तो आकाश से आग गिर के तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले तब आकाश से परमेश्वर की आग गिरी और उस से वह अपने पचासों समेत भस्म हो गया। १३ फिर राजा ने तीसरी बार पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया और पचास का वह तीसरा प्रधान चढ़कर एलिय्याह के साम्हने घुटनों के बल गिरा और गिड़गिड़ाहट के साथ उस से कहने लगा हे परमेश्वर के जन मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण तेरे लेखे अनमोल ठहरें। १४ पचास पचास सिपाहियों के जो दो प्रधान अपने अपने पचासों समेत पहिले आये थे उन को तो आग ने आकाश से गिरकर भस्म कर डाला पर अब मेरा प्राण तेरे लेखे अनमोल ठहरे। १५ तब यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा उस के संग नीचे जा उस से मत डर तब एलिय्याह उठकर उस के संग राजा के पास नीचे गया, १६ और उस से कहा यहोवा यों कहता है कि तू ने तो एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को दूत भेजे सो क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं कि जिस से तू पूछ सके इस कारण तू जिस पलंग पर पड़ा है उस पर से कभी न उठेगा मर ही जाएगा। १७ यहोवा के इस वचन के अनुसार जो एलिय्याह ने कहा था वह मर गया। और उस के निपुत्र होने के कारण योराम उस के स्थान पर यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे बरस में राजा हुआ। १८ अहज्याह के और काम जो उस ने किये सो क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं॥

(एलिय्याह का स्वर्गारोहण)

२. जब यहोवा एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था तब एलिय्याह और एलीशा दोनों संग संग गिलगाल से चले। २ एलिय्याह ने एलीशा से कहा यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है सो तू यहीं ठहरा रह एलीशा ने कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सोंह मैं तुझे नहीं छोड़ने का सो वे बेतेल को चले गये। ३ और बेतेलवासी नबियों के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे क्या तुझे

(१) अर्थात् मक्खियों का नाथ।

मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है उस ने कहा हां मुझे भी यह मालूम है ४ तुम चुप रहो। और एलिय्याह ने उस से कहा हे एलीशा यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है सो तू यहीं ठहरा रह उस ने कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सोंह मैं तुझे ५ नहीं छोड़ने का सो वे यरीहो को आये। और यरीहोवासी नबियों के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है उस ने उत्तर दिया हां मुझे भी ६ मालूम है तुम चुप रहो। फिर एलिय्याह ने उस से कहा यहोवा मुझे यर्दन तक भेजता है सो तू यहीं ठहरा रह उस ने कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सोंह मैं ७ तुझे नहीं छोड़ने का सो वे दोनों आगे चले। और नबियों के चेलों में से पचास जन जाकर उन के साम्हने दूर खड़े हुए और वे दोनों यर्दन के तीर खड़े हुए। ८ तब एलिय्याह ने अपनी चद्दर पकड़कर ऐंठ ली और जल पर मारी तब वह इधर उधर दो भाग हो गया और ९ वे दोनों स्थल ही स्थल पार गये। उन के पार पहुंचने पर एलिय्याह ने एलीशा से कहा उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊं जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं सो मांग एलीशा ने कहा तुझ में जो आत्मा १० है उस में से दूना भाग मुझे मिल जाए। एलिय्याह ने कहा तू ने कठिन बात मांगी है तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के पीछे देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही ११ होगा नहीं तो न होगा। वे चलते चलते बातें कर रहे थे कि अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन को अलग अलग किया और एलिय्याह बवंडर में १२ होकर स्वर्ग पर चढ़ गया। और इसे एलीशा देखता और पुकारता रहा कि हाय मेरे पिता हाय मेरे पिता हाय इस्राएल के रथ और सवारो। जब वह उस को फिर देख न पड़ा तब उस ने अपने वस्त्र पकड़े और फाड़कर १३ दो भाग कर दिये। फिर उस ने एलिय्याह की चद्दर उठाई जो उस पर से गिरी थी और वह लौट गया और १४ यर्दन के तीर पर खड़ा हो, एलिय्याह की वह चद्दर जो उस पर से गिरी थी पकड़कर जल पर मारी और कहा एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा कहां है। जब उस ने जल पर मारा तब वह इधर उधर दो भाग हुआ और १५ एलीशा पार गया। उसे देखकर नबियों के चेले जो यरीहो में उस के साम्हने थे कहने लगे एलिय्याह में जो आत्मा था वही एलीशा पर ठहर गया है सो उन्हों ने उस से मिलने को जाकर उस के साम्हने भूमि लों १६ झुककर दण्डवत् की। तब उन्हों ने उस से कहा सुन तेरे दासों के पास पचास बलवान पुरुष हैं वे जाकर तेरे स्वामी को ढूंढ़ें क्या जाने यहोवा के आत्मा ने उस को उठाकर किसी पहाड़ पर वा किसी तराई में डाल दिया हो उस ने कहा मत भेजो। जब उन्हों ने उस को दबाते दबाते १७ निरुत्तर कर दिया तब उस ने कहा भेज दो सो उन्हों ने पचास पुरुष भेज दिये और वे उसे तीन दिन ढूंढ़ते रहे पर न पाया। तब लों वह यरीहो में ठहरा रहा सो जब १८ वे उस के पास लौट आये तब उस ने उन से कहा क्या मैं ने तुम से न कहा था मत जाओ॥

(एलीशा के दो आश्चर्य्य कर्म्म)

उस नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा देख यह १९ नगर मनभावने स्थान पर बसा है जैसा मेरा प्रभु देखता है पर पानी बुरा है और भूमि गर्भ गिरानेहारी है। उस २० ने कहा एक नई थाली में लोन डालकर मेरे पास ले आओ। जब वे उसे उस के पास ले आये तब वह जल २१ के सोते के पास निकल गया और उस में लोन डालकर कहा यहोवा यों कहता है कि मैं यह पानी ठीक कर देता हूं सो वह फिर कभी मृत्यु वा गर्भ गिरने का कारण न होगा। एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक २२ हो गया और आज लों ऐसा ही है॥

वहां से वह बेतेल को चला और मार्ग की चढ़ाई २३ में चल रहा था कि नगर से छोटे लड़के निकलकर उस का ठट्ठा करके कहने लगे हे चन्दुए चढ़ जा हे चन्दुए चढ़ जा। तब उस ने पीछे की ओर फिरकर उन पर दृष्टि २४ की और यहोवा के नाम से उन को स्राप दिया तब बन में से दो रीछिनियों ने निकलकर उन में से बयालीस लड़के फाड़ डाले। वहां से वह कर्म्मेल को गया और २५ फिर वहां से शोमरोन को लौट गया॥

(यहोराम के राज्य का आरम्भ)

३. **यहूदा** के राजा यहोशापात के अठारहवें बरस में अहाब का पुत्र यहोराम शोमरोन में राज्य करने लगा और बारह बरस लों राज्य करता रहा। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे २ बुरा है तौभी उस ने अपने माता पिता के बराबर नहीं किया बरन अपने पिता की बनवाई हुई लाट को दूर किया। तौ भी वह नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे ३ पापों में जैसे उस ने इस्राएल से भी कराये लिपटा रहा और उन से न फिरा॥

(मोआब पर विजय)

मोआब का राजा मेशा बहुत सी भेड़ बकरियां रखता ४ था और इस्राएल के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेढ़े कर की रीति से दिया करता था। जब अहाब ५

मर गया तब मोआब के राजा ने इस्राएल के राजा से
६ बलवा किया। उस समय राजा यहोराम ने शोमरोन से
७ निकलकर सारे इस्राएल की गिनती ली। और उस ने
जाकर यहूदा के राजा यहोशापात के पास यों कहला
भेजा कि मोआब के राजा ने मुझ से बलवा किया है
क्या तू मेरे संग मोआब से लड़ने को चलेगा उस ने कहा
हां मैं चलूंगा जैसा तू वैसा मैं जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी
८ प्रजा और जैसे तेरे घोड़े वैसे मेरे घोड़े हैं। फिर उस ने
पूछा हम किस मार्ग से जाएं उस ने उत्तर दिया एदोम के
९ जंगल होकर। सो इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा
और एदोम का राजा चले और जब सात दिन लों घूम-
कर चल चुके तब सेना और उस के पीछे पीछे चलनेहारे
१० पशुओं के लिये कुछ पानी नहीं मिला। और इस्राएल
के राजा ने कहा हाय यहोवा ने इन तीन राजाओं को
इसलिये इकट्ठा किया कि उन को मोआब के हाथ कर
११ दे। पर यहोशापात ने कहा क्या यहां यहोवा का कोई
नबी नहीं है जिस के द्वारा हम यहोवा से पूछें इस्राएल
के राजा के किसी कर्म्मचारी ने उत्तर देकर कहा हां
शापात का पुत्र एलीशा जो एलिय्याह के हाथों को
१२ धुलाया करता था वह तो यहां है। तब यहोशापात ने
कहा उस के पास यहोवा का वचन पहुंचा करता है। सो
इस्राएल का राजा और यहोशापात और एदोम का
१३ राजा उस के पास गये। तब एलीशा ने इस्राएल के राजा
से कहा मेरा तुझ से क्या काम है अपने पिता के नबियों
और अपनी माता के नबियों के पास जा इस्राएल के
राजा ने उस से कहा ऐसा न कह क्योंकि यहोवा ने इन
तीनों राजाओं को इसलिये इकट्ठा किया कि इन को
१४ मोआब के हाथ में कर दे। एलीशा ने कहा सेनाओं का
यहोवा जिस के सन्मुख मैं हाजिर रहा करता हूं उस के
जीवन की सौंह यदि यहूदा के राजा यहोशापात का आदर
मान न करता तो मैं न तो तेरी ओर मुंह करता और
१५ न तुझ पर दृष्टि करता। अब कोई बजानेहारा मेरे पास
ले आओ। जब बजानेहारा बजाने लगा तब यहोवा की
१६ शक्ति[१] एलीशा पर हुई, और उस ने कहा इस नाले में
तुम लोग इतना खोदो कि इस में गड़हे ही गड़हे हो जाएं।
१७ क्योंकि यहोवा यों कहता है कि तुम्हारे साम्हने न तो
वायु चलेगी और न वर्षा होगी तौभी यह नाला पानी से
भर जाएगा और अपने गाय बैलों और और पशुओं
१८ समेत तुम पीने पाओगे। और इस को हलकी सी बात
जानकर यहोवा मोआब को भी तुम्हारे हाथ में कर
१९ देगा। तब तुम सब गढ़वाले और उत्तम नगरों को नाश
करना और सब अच्छे वृक्षों को काट डालना और जल
के सब सोतों को भर देना और सब अच्छे खेतों में पत्थर
फेंककर उन्हें बिगाड़ देना। बिहान को अन्नबलि चढ़ाने २०
के समय एदोम की ओर से जल बह आया और देश
जल से भर गया। यह सुनकर कि राजाओं ने हम से २१
लड़ने को चढ़ाई की है जितने मोआबियों की अवस्था
हथियार बांधने के योग्य थी सो सब बुलाकर इकट्ठे किये
गये और सिवाने पर खड़े हुए। बिहान को जब वे सबेरे २२
उठे उस समय सूर्य्य की किरणें उस जल पर ऐसी पड़ीं
कि वह मोआबियों को परली ओर से लोहू सा लाल देख
पड़ा। सो वे कहने लगे वह तो लोहू होगा निःसन्देह वे २३
राजा एक दूसरे को मारके नाश हो गये हैं सो अब हे
मोआबियो लूट लेने को जाओ। वे इस्राएल की छावनी २४
के पास आये ही थे कि इस्राएली उठकर मोआबियों को
मारने लगे और वे उन से भाग गये और वे मोआब
को मारते मारते उन के देश में[२] पहुंच गये। और उन्हों २५
ने नगरों को ढा दिया और सब अच्छे खेतों में एक एक
पुरुष ने अपना अपना पत्थर डालकर उन्हें भर दिया और
जल के सब सोतों को भर दिया और सब अच्छे अच्छे
वृक्षों को काट डाला यहां तक कि कीर्हेरेशेत के पत्थर
तो रह गये पर उस को भी चारों ओर गोफन चलाने-
हारों ने जाकर उस को मारा। यह देखकर कि हम युद्ध २६
में हार चले मोआब के राजा ने सात सौ तलवार रखने-
वाले पुरुष संग लेकर एदोम के राजा तक पांति भेदकर
पहुंचने का यत्न किया पर पहुंच न सका। तब उस ने २७
अपने जेठे बेटे को जो उस के स्थान में राज्य करनेवाला
था पकड़कर शहरपनाह पर होमबलि चढ़ाया इस से
इस्राएल पर बड़ा ही कोप हुआ सो वे उसे छोड़कर
अपने देश को लौट गये॥

(एलीशा के चार आश्चर्य्य कर्म्म)

४. नबियों के चेलों की स्त्रियों में से एक
स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर
कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया और तू जानता
है कि वह यहोवा का भय माननेहारा था और उस का
व्यवहरिया मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये
आया है। एलीशा ने उस से पूछा मैं तेरे लिये क्या करूं २
मुझ से कह कि तेरे घर में क्या है उस ने कहा तेरी दासी
के घर में एक हांडी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है।
उस ने कहा तू बाहर जाकर अपनी सब पड़ोसिनों से छूछे ३
बरतन मांग ले आ और थोड़े नहीं। फिर तू अपने बेटों ४
समेत अपने घर में जा और द्वार बन्द करके उन सब

(१) मूल में हाथ।

(२) मूल में उस में।

बरतनों में तेल उण्डेल देना और जो भर जाए उन्हें ५ अलग रखना। तब वह उस के पास से चली गई और अपने बेटों समेत अपने घर जाकर द्वार बन्द किया तब वे तो उस के पास बरतन ले आते गये और वह उण्डेलती ६ गई। जब बरतन भर गये तब उस ने अपने बेटे से कहा मेरे पास एक और भी ले आ उस ने उस से कहा और ७ बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया। तब उस ने आकर परमेश्वर के जन को यह बता दिया और उस ने कहा जा तेल बेचकर ऋण भर दे और जो रह जाए उस से तू अपने बेटों सहित अपना निर्वाह करना॥

८ फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया जहां एक कुलीन स्त्री थी और उस ने उसे रोटी खाने के लिये बिनती करके दबाया और जब जब वह उधर से जाता तब तब वह वहां रोटी खाने को उतरता ९ था। और उस स्त्री ने अपने पति से कहा सुन यह जो बार बार हमारे यहां से होकर जाया करता है सो १० मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र जन जान पड़ता है। सो हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएं और उस में उस के लिये एक खाट एक मेज़ एक कुर्सी और एक दीवट रक्खें कि जब जब वह हमारे यहां आए तब तब उसी ११ में टिका करे। एक दिन की बात है कि वह वहां जाकर उस उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में सो गया। १२ और उस ने अपने सेवक गेहजी से कहा उस शूनेमिन को बुला ले। जब उस के बुलाने से वह उस के साम्हने १३ खड़ी हुई, तब उस ने गेहजी से कहा इस से कह कि तू ने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है सो तेरे लिये क्या किया जाए क्या तेरी चर्चा राजा वा प्रधान सेनापति से की जाए। उस ने उत्तर दिया मैं तो अपने ही १४ लोगों में रहती हूं। फिर उस ने कहा तो इस के लिये क्या किया जाए। गेहजी ने उत्तर दिया निश्चय उस के १५ कोई लड़का नहीं और उस का पति बूढ़ा है। उस ने कहा उस को बुला ले और जब उस ने उसे बुलाया तब १६ वह द्वार में खड़ी हुई। तब उस ने कहा बसन्त ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी स्त्री ने कहा हे मेरे प्रभु हे परमेश्वर के जन ऐसा नहीं अपनी १७ दासी को धोखा न दे। और स्त्री को गर्भ रहा और बसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से कहा था १८ उसी समय जब दिन पूरे हुए तब वह बेटा जनी। और जब लड़का बड़ा हो गया तब एक दिन वह अपने पिता १९ के पास लवनेहारों के निकट निकल गया। और उस ने अपने पिता से कहा आह मेरा सिर आह मेरा सिर तब पिता ने अपने सेवक से कहा इस को इस की माता २० के पास ले जा। वह उसे उठाकर उस की माता के पास ले गया फिर वह दोपहर लों उस के घुटनों पर बैठा २१ रहा तब मर गया। तब उस ने चढ़कर उस को परमेश्वर के जन की खाट पर लिटा दिया और निकलकर किवाड़ २२ बन्द किया तब उतर गई। और उस ने अपने पति से पुकारकर कहा मेरे पास एक सेवक और एक गदही भेज दे कि मैं परमेश्वर के जन के यहां झट हो आऊं। उस ने २३ कहा आज तू उस के यहां क्यों जाएगी आज न तो नये चांद का और न विश्राम का दिन है उस ने कहा कल्याण होगा[1]। २४ तब उस स्त्री ने गदही पर काठी बांधकर अपने सेवक से कहा हांके चल और मेरे कहे बिना हांकने में ढिलाई न करना। २५ सो वह चलते चलते कर्मेल पर्वत को परमेश्वर के जन के निकट पहुंची। उसे दूर से देखकर परमेश्वर के जन ने अपने सेवक गेहजी से कहा देख २६ उधर तो वह शूनेमिन है। अब उस से मिलने को दौड़ जा और उस से पूछ कि तू कुशल से है तेरा पति भी कुशल से है और लड़का भी कुशल से है। पूछने पर स्त्री ने २७ उत्तर दिया हां कुशल से हैं। वह पहाड़ पर परमेश्वर के जन के पास पहुंची और उस के पांव पकड़ने लगी, तब गेहजी उस के पास गया कि उसे धक्का देकर हटाए परन्तु परमेश्वर के जन ने कहा उसे छोड़ दे उस का मन व्याकुल है पर यहोवा ने मुझ को नहीं बता दिया २८ छिपा ही रक्खा है। तब वह कहने लगी क्या मैं ने अपने प्रभु से पुत्र का वर मांगा था क्या मैं ने न कहा था मुझे २९ धोखा न दे। तब एलीशा ने गेहजी से कहा अपनी कमर बांध और मेरी छड़ी हाथ में लेकर चला जा मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उस का कुशल न पूछना और कोई तेरा कुशल पूछे तो उस को उत्तर न देना और मेरी यह ३० छड़ी उस लड़के के मुंह पर धर देना। तब लड़के की मा ने एलीशा से कहा यहोवा के और तेरे जीवन की सोंह मैं तुझे न छोड़ूंगी सो वह उठकर उस के पीछे पीछे चला। ३१ उन से आगे बढ़कर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुंह पर रक्खा पर कोई शब्द सुन न पड़ा और न उस ने कान लगाया सो वह एलीशा से मिलने को लौट आया ३२ और उस को बतला दिया कि लड़का नहीं जागा। जब एलीशा घर में आया तब क्या देखा कि लड़का मरा ३३ हुआ मेरी खाट पर पड़ा है। सो उस ने अकेला भीतर जाकर किवाड़ बन्द किया और यहोवा से प्रार्थना की। ३४ तब वह चढ़कर लड़के पर इस रीति से लेट गया कि अपना मुंह उस के मुंह से अपनी आंखें उस की आंखों से और अपने हाथ उस के हाथों से मिला दिये और वह

(१) मूल में उस ने कहा कुशल।

लड़के पर पसर गया तब लड़के की देह गर्माने लगी। ३५ और वह उसे छोड़कर घर में इधर उधर टहलने लगा और फिर चढ़ कर लड़के पर पसर गया तब लड़का सात बार ३६ छींका और अपनी आंखें खोलीं। तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा शूनेमिन को बुला ले जब उस के बुलाने से वह उस के पास आई तब उस ने कहा अपने बेटे को ३७ उठा ले। वह भीतर गई और उस के पांवों पर गिर भूमि लों झुककर दण्डवत् की फिर अपने बेटे को उठाकर निकल गई॥

३८ और एलीशा गिलगाल को लौट गया। उस समय देश में अकाल था और नबियों के चेले उस के साम्हने बैठे हुए थे और उस ने अपने सेवक से कहा हण्डा ३९ चढ़ाकर नबियों के चेलों के लिये कुछ सिझा। तब कोई मैदान में साग तोड़ने गया और कोई बनैली लता पाकर अपनी अंकवार भर इन्द्रायण तोड़ ले आया और फांक फांक करके सिझाने के हण्डे में डाल दिया और वे उस ४० को न चीन्हते थे। सो उन्हों ने उन मनुष्यों के खाने के लिये हण्डे में से परोसा। खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे हे परमेश्वर के जन हण्डे में माहुर[१] है और वे उस ४१ में से खा न सके। तब एलीशा ने कहा अच्छा कुछ मैदा ले आओ तब उस ने उसे हण्डे में डाल कर कहा उन लोगों के खाने के लिये परोस दे फिर हण्डे में कुछ हानि की वस्तु न रही॥

४२ और कोई मनुष्य बालशालीशा से पहिले उपजे हुए जव की बीस रोटियां और अपनी बोरी में हरी बालें परमेश्वर के जन के पास ले आया सो एलीशा ने कहा उन लोगों को खाने के लिये दे। उस के टहलुए ने कहा क्यों मैं सौ मनुष्यों के साम्हने इतना ही धर दूं उस ने कहा लोगों को दे दे कि खाएं क्योंकि यहोवा यों कहता है ४४ उन के खाने पर कुछ बच भी जाएगा। तब उस ने उन के आगे धर दिया और यहोवा के वचन के अनुसार उन के खाने पर कुछ बच भी गया॥

(नामान कोढ़ी का शुद्ध किया जाना)

५. **अराम** के राजा का नामान नाम सेनापति अपने स्वामी के लेखे बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था क्योंकि यहोवा ने उस के द्वारा अरामियों का विजय किया था और यह शूरवीर था पर २ कोढ़ी था। अरामी लोग दल बांध इस्राएल के देश में जाकर वहां से एक छोटी लड़की बंधुई करके ले आये थे ३ और वह नामान की स्त्री की टहलुइन हो गई। उस ने अपनी स्वामिन से कहा जो मेरा स्वामी शोमरोन के नबी के पास होता तो क्या ही अच्छा होता क्योंकि वह उस को कोढ़ से चंगा कर देता। सो किसी ने उस के प्रभु के पास ४ जाकर कह दिया कि इस्राएली लड़की यों यों कहती है। ५ अराम के राजा ने कहा तू जा मैं इस्राएल के राजा के पास एक पत्र भेजूंगा सो वह दस किक्कार चान्दी और छः हजार टुकड़े सोना और दस जोड़े कपड़े साथ लेकर ६ चल दिया। और वह इस्राएल के राजा के पास वह पत्र ले गया जिस में यह लिखा था कि जब यह पत्र तुझे मिले तब जानना कि मैं ने नामान नाम अपने एक कर्म्मचारी को तेरे पास इसलिये भेजा है कि तू उस का कोढ़ ७ दूर कर दे। इस पत्र के पढ़ने पर इस्राएल का राजा अपने वस्त्र फाड़कर बोला क्या मैं मारनेहारा और जिलानेहारा परमेश्वर हूं कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को इसलिये भेजा है कि मैं उस का कोढ़ दूर करूं सोच विचार करो कि वह मुझ से झगड़े का कारण ढूंढ़ता ८ होगा। यह सुनकर कि इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं परमेश्वर के जन एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा कि तू ने क्यों अपने वस्त्र फाड़े हैं वह मेरे पास आए तब जान लेगा कि इस्राएल में नबी तो है। ९ सो नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर १० आकर खड़ा हुआ। तब एलीशा ने एक दूत से उस के पास यह कहला भेजा कि तू जाकर यर्दन में सात बार डुबकी मार तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा और ११ तू शुद्ध होगा। पर नामान कोपित हो यह कहता हुआ चला गया कि मैं ने तो सोचा था कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा और खड़ा हो अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर १२ कोढ़ को दूर करेगा। क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं क्या मैं उन में स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता। सो १३ वह फिर के जलजलाहट से भरा हुआ चला गया। तब उस के सेवक पास आकर कहने लगे हे हमारे पिता यदि नबी तुझे कोई भारी काम बताता तो क्या तू उसे न करता फिर क्यों नहीं जब वह कहता है कि स्नान करके शुद्ध हो। १४ तब उस ने परमेश्वर के जन के कहे के अनुसार यर्दन को जाकर उस ने सात बार डुबकी मारी और उस का शरीर छोटे लड़के का सा हो गया और वह शुद्ध हुआ। १५ तब वह अपने सब दल बल समेत परमेश्वर के जन के यहां लौट गया और उस के सन्मुख खड़ा होकर कहने लगा सुन अब मैं ने जान लिया है कि सारी पृथिवी में इस्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है सो अब १६ अपने दास की भेंट ग्रहण कर। एलीशा ने कहा यहोवा

(१) मूल में मृत्यु।

जिस के सन्मुख मैं हाजिर रहता हूं उस के जीवन की सोंह मैं कुछ भेंट न लूंगा और जब उस ने उस के बहुत दबाया
१७ कि उसे ग्रहण करे तब भी वह नाहिं ही करता रहा। तब नामान ने कहा अच्छा तो तेरे दास को दो खच्चर मिट्टी मिले क्योंकि आगे को तेरा दास यहोवा को छोड़ और किसी ईश्वर को होमबलि वा मेलबलि न चढ़ाएगा।
१८ एक बात तो यहोवा तेरे दास के लिये क्षमा करे कि जब मेरा स्वामी रिम्मोन के भवन में दण्डवत् करने को जाए और वह मेरे हाथ का सहारा ले और यों मुझे भी रिम्मोन के भवन में दण्डवत् करनी पड़े तब यहोवा तेरे दास का यह काम क्षमा करे कि मैं रिम्मोन के भवन में दण्डवत्
१९ करूं। उस ने उस से कहा कुशल से बिदा हो। वह
२० उस के यहां से थोड़ी दूर चला गया था कि, परमेश्वर के जन एलीशा का सेवक गेहजी सोचने लगा कि मेरे स्वामी ने तो उस अरामी नामान को ऐसा ही छोड़ दिया है कि जो वह ले आया था उस को उस ने न लिया पर यहोवा के जीवन की सोंह मैं उस के पीछे
२१ दौड़कर उस से कुछ न कुछ लूंगा। तब गेहजी नामान के पीछे दौड़ा और नामान किसी को अपने पीछे दौड़ता हुआ देखकर उस से मिलने को रथ से उतर पड़ा और
२२ पूछा सब कुशल क्षेम तो है। उस ने कहा हां सब कुशल है पर मेरे स्वामी ने मुझे यह कहने को भेजा है कि एप्रैम के पहाड़ी देश से नबियों के चेलों में से दो जवान मेरे यहां अभी आये हैं सो उन के लिये एक किक्कार
२३ चान्दी और दो जोड़े वस्त्र दे। नामान ने कहा दो किक्कार लेने को प्रसन्न हो तब उस ने उस से बहुत बिनती करके दो किक्कार चान्दी अलग थैलियों में बांधकर दो जोड़े वस्त्र समेत अपने दो सेवकों पर लाद दिया और वे उन्हें
२४ उस के आगे आगे ले चले। जब वह टीले के पास पहुंचा तब उन वस्तुओं को उन से लेकर घर में रख दिया और उन मनुष्यों को बिदा किया सो वे चले गये।
२५ और वह भीतर जाकर अपने स्वामी के साम्हने खड़ा हुआ। एलीशा ने उस से पूछा हे गेहजी तू कहां से
२६ आता है उस ने कहा तेरा दास तो कहीं नहीं गया। उस ने उस से कहा जब वह पुरुष इधर मुंह फेरकर तुझ से मिलने को अपने रथ पर से उतरा तब वह सारा हाल मुझे मालूम था[१] क्या यह समय चान्दी वा वस्त्र वा जलपाई वा दाख की बारियां भेड़ बकरियां गाय बैल और
२७ दास दासी लेने का है। इस कारण से नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा। सो वह हिम सा श्वेत कोढ़ी होकर उस के साम्हने से चला गया॥

(१) मूल में क्या मेरा मन न गया।

(एलीशा का एक आश्चर्य्य कर्म्म)

६. और नबियों के चेलों में से किसी ने एलीशा से कहा यह स्थान जिस में हम तेरे साम्हने रहते हैं सो हमारे लिये सकेत है। सो हम यर्दन
२ तक जाएं और वहां से एक एक बल्ली लेकर यहां अपने रहने
३ के लिये एक स्थान बना लें, उस ने कहा अच्छा जाओ। तब किसी ने कहा अपने दासों के संग चलने को प्रसन्न हो उस
४ ने कहा चलता हूं। सो वह उन के संग चला और वे यर्दन
५ के तीर पहुंचकर लकड़ी काटने लगे। पर एक जन बल्ली काट रहा था कि कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर जल में गिर गई सो वह चिल्लाकर कहने लगा हाय मेरे प्रभु वह तो मंगनी
६ की थी। परमेश्वर के जन ने पूछा वह कहां गिरी जब उस ने स्थान दिखाया तब उस ने एक लकड़ी काटकर वहां
७ डाल दी और वह लोहा उतराने लगा। उस ने कहा उसे उठा ले सो उस ने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया॥

(एलीशा का अरामी दल से बचना)

८ और अराम का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था और सम्मति करके अपने कर्म्मचारियों से कहा कि फुलाने
९ स्थान पर मेरी छावनी हो। तब परमेश्वर के जन ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा कि चौकसी कर और फुलाने स्थान होकर न जाना क्योंकि वहां अरामी
१० चढ़ाई करनेवाले हैं। तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को जिस की चर्चा करके परमेश्वर के जन ने उसे चिताया था भेजकर अपनी रक्षा की और यह दो एक बार नहीं
११ बहुत बार हुआ। इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया सो उस ने अपने कर्म्मचारियों को बुलाकर उन से पूछा क्या तुम मुझे न बता दोगे कि हमारे लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है।
१२ उस के एक कर्म्मचारी ने कहा हे मेरे प्रभु हे राजा ऐसा नहीं एलीशा जो इस्राएल में नबी है वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है जो तू शयन की
१३ कोठरी में बोलता है। राजा ने कहा जाकर देखो कि वह कहां है तब मैं भेजकर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। जब उस
१४ को यह समाचार मिला कि वह दोतान में है, तब उस ने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा और
१५ उन्हों ने रात को आकर नगर को घेर लिया। भोर को परमेश्वर के जन का टहलुआ उठ निकल कर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे है सो उस के सेवक ने उस से कहा हाय मेरे स्वामी हम
१६ क्या करें। उस ने कहा मत डर क्योंकि जो हमारी ओर
१७ हैं सो उन से अधिक हैं जो उन की ओर हैं। तब एलीशा ने यह प्रार्थना की कि हे यहोवा इस की आंखें

खोल दे कि यह देख सके सो यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं और जब वह देख सका तब क्या देखा कि एलीशा को चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और
१८ रथों से भरा हुआ है। जब अरामी उस के पास आये तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की कि इस गोल को अन्धा कर डाल। एलीशा के इस वचन के अनुसार उस
१९ ने उन्हें अन्धा कर डाला। तब एलीशा ने उन से कहा यह तो मार्ग नहीं है और न यह नगर है मेरे पीछे हो लो मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास जिसे तुम खोजते हो पहुंचाऊंगा
२० तब उस ने उन्हें शोमरोन को पहुंचा दिया। जब वे शोमरोन में आ गये तब एलीशा ने कहा हे यहोवा इन लोगों की आंखें खोल कि देख सकें सो यहोवा ने उन की आंखें खोलीं और जब वे देखने लगे तब क्या देखा
२१ कि हम शोमरोन के बीच हैं। उन को देखकर इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा हे मेरे पिता क्या मैं इन को
२२ मार लूं क्या मार लूं। उस ने उत्तर दिया मत मार क्या तू अपनी तलवार और धनुष के बन्धुओं को मार लेता है। इन को अन्न जल दे कि खा पीकर अपने स्वामी के पास
२३ चले जाएं। तब उस ने उन के लिये बड़ी जेवनार की और जब वे खा पी चुके तब उस ने उन्हें बिदा किया और वे अपने स्वामी के पास चले गये। इस के पीछे अराम के दल फिर इस्राएल के देश में न आये॥

(शोमरोन में बड़ी महंगी का होना और छूट जाना)

२४ पर इस के पीछे अराम का राजा बेन्हदद ने अपनी सारी सेना एकट्ठी करके शोमरोन पर चढ़ाई की और उस
२५ को घेर लिया। सो शोमरोन में बड़ी महंगी हुई और वह यहां लों घिरा रहा कि अन्त में एक गदहे का सिर चान्दी के अस्सी टुकड़ों में और कब की चौथाई भर कबूतर की बीट पांच टुकड़े चान्दी तक बिकने लगी।
२६ और इस्राएल का राजा शहरपनाह पर टहल रहा था कि एक स्त्री ने पुकारके उस से कहा हे प्रभु हे राजा बचा।
२७ उस ने कहा यदि यहोवा तुझे न बचाए तो मैं कहां से तुझे बचाऊं क्या खलिहान में से वा दाखरस के कुण्ड में
२८ से। फिर राजा ने उस से पूछा तुझे क्या हुआ उस ने उत्तर दिया इस स्त्री ने मुझ से कहा था मुझे अपना बेटा दे कि हम आज उसे खा लें फिर कल मैं अपना बेटा
२९ दूंगी और हम उसे भी खाएंगी। सो मेरा बेटा सिझाकर हम ने खा लिया फिर दूसरे दिन जब मैं ने इस से कहा कि अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें तब इस ने अपने
३० बेटे को छिपा रक्खा। उस स्त्री की ये बातें सुनते ही राजा ने अपने वस्त्र फाड़े (वह तो शहरपनाह पर टहल रहा था) सो जब लोगों ने देखा तब उन को यह देख पड़ा कि वह भीतर अपनी देह पर टाट पहिने है। तब
३१ वह बोल उठा यदि मैं शापात के पुत्र एलीशा का सिर आज उस के धड़ पर रहने दूं तो परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही बरन इस से अधिक भी करे। इतने में एलीशा अपने
३२ घर में बैठा हुआ था और पुरनिये भी उस के संग बैठे थे सो जब राजा ने अपने पास से एक जन भेजा तब उस दूत के पहुंचने से पहिले उस ने पुरनियों से कहा देखो कि इस खूनी के बेटे ने किसी को मेरा सिर काटने को भेजा है, सो जब वह दूत आए तब किवाड़ बन्द करके रोके रहना क्या उस के स्वामी के पांव की आहट उस के
३३ पीछे नहीं सुन पड़ती। वह उन से यों बातें कर ही रहा था कि दूत उस के यहां आ पहुंचा। और राजा कहने लगा यह विपत्ति यहोवा की ओर से है सो मैं आगे को भी यहोवा की बाट क्यों जोहता रहूं।

७. १ तब एलीशा ने कहा यहोवा का वचन सुनो यहोवा यों कहता है कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और दो सआ जव भी एक शेकेल में
२ बिकेगा। तब उस सरदार ने जिस के हाथ पर राजा टेक लगाये था परमेश्वर के जन को उत्तर देकर कहा सुन चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी उस ने कहा सुन तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा पर उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा॥

३ और चार कोढ़ी फाटक के बाहर थे वे आपस में
४ कहने लगे हम क्यों यहां बैठे बैठे मर जाएं। यदि हम कहें कि नगर में जाएं तो वहां मर जाएंगे क्योंकि वहां महंगी पड़ी है और जो हम यहीं बैठे रहें तौभी मर ही जाएंगे सो आओ हम अराम की सेना में पकड़े जाएं यदि वे हम को जिलाये रक्खें तो हम जीते रहेंगे और यदि वे हम को मार डालें तौभी हम को मरना ही है।
५ सो वे सांझ को अराम की छावनी में जाने को चले और अराम की छावनी की छोर पर पहुंचकर क्या देखा
६ कि वहां कोई नहीं है। क्योंकि प्रभु ने अराम की सेना को रथों और घोड़ों की और भारी सेना की सी आहट सुनाई थी सो वे आपस में कहने लगे थे कि सुनो इस्राएल के राजा ने हित्ती और मिस्री राजाओं को वेतन
७ पर बुलवाया कि हम पर चढ़ाई करें। सो वे सांझ को उठकर ऐसे भाग गये कि अपने डेरे घोड़े गदहे और छावनी जैसी की तैसी छोड़ छाड़ अपना अपना प्राण
८ लेकर भाग गये। सो जब वे कोढ़ी छावनी की छोर के डेरों के पास पहुंचे तब एक डेरे में घुसकर खाया पिया और उस में से चान्दी सोना और वस्त्र ले जाकर छिपा रक्खा फिर लौटकर दूसरे डेरे में पैठे और उस में से भी

९ ले जाकर छिपा रक्खा। तब वे आपस में कहने लगे जो हम कर रहे हैं सो अच्छा काम नहीं है यह आनन्द के समाचार का दिन है पर हम किसी को नहीं बताते। जो हम पह फटने लों ठहरे रहें तो हम को दण्ड मिलेगा सो अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात १० बतला दें। सो वे चले और नगर के डेवढ़ीदारों के बुलाकर बताया कि हम जो अराम की छावनी में गये तो क्या देखा कि वहां कोई नहीं है और मनुष्य की कुछ आहट नहीं है केवल बन्धे हुए घोड़े और गदहे हैं और डेरे जैसे के तैसे ११ हैं। तब डेवढ़ीदारों ने पुकार के राजभवन के भीतर १२ समाचार दिलाया। और राजा रात ही के उठा और अपने कर्म्मचारियों से कहा मैं तुम्हें बताता हूं कि अरामियों ने हम से क्या किया है वे जानते हैं कि हम लोग भूखे हैं इस कारण वे छावनी में से मैदान में छिपने को यह कहकर गये हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे तब हम उन १३ को जीते ही पकड़कर नगर में घुसने पाएंगे। पर राजा के किसी कर्म्मचारी ने उत्तर देकर कहा कि जो घोड़े नगर में बच रहे हैं उन में से लोग पांच घोड़े लें और उन को भेजकर हम हाल जान लें। वे तो इस्राएल की सारी भीड़ सी हैं जो नगर में रह गई है बरन वे इस्राएल की जो १४ भीड़ मर मिट गई है उसी के समान हैं। सो उन्हों ने दो रथ और उन के घोड़े लिये और राजा ने उन को अराम की सेना के पीछे भेजा और उस ने कहा आओ देखो। १५ सो वे यर्दन तक उन के पीछे चले गये और क्या देखा कि सारा मार्ग वस्त्रों और पात्रों से भरा पड़ा है जिन्हें अरामियों ने उतावली के मारे फेंक दिया तब दूत लौट १६ आये और राजा से यह कह सुनाया। सो लोगों ने निकलकर अराम के डेरों को लूट लिया और यहोवा के वचन के अनुसार एक सआ मैदा एक शेकेल में और दो सआ जव १७ एक शेकेल में बिकने लगा। और राजा ने उस सरदार को जिस के हाथ पर वह टेक लगाता था फाटक का अधिकारी ठहराया तब वह फाटक में लोगों के नीचे दबकर मर गया यह परमेश्वर के जन के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने राजा के अपने यहां आने के समय कहा १८ था। परमेश्वर के जन ने जैसा राजा से यह कहा था कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक में दो सआ जव एक शेकेल में और एक सआ मैदा एक शेकेल में बिकेगा १९ वैसा ही हुआ, और उस सरदार ने परमेश्वर के जन को उत्तर देकर कहा था कि सुन चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी और उस ने कहा था सुन तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा पर २० उस अन्न में से खाने न पाएगा, यह उस पर ठीक घट गया सो वह फाटक में लोगों के नीचे दबकर मर गया॥

(एलीशा के आश्चर्य्यकर्म्मों की कीर्त्ति)

८. जिस स्त्री के बेटे को एलीशा ने जिलाया था उस से उस ने कहा था अपने घराने समेत यहां से जाकर जहां कहीं तू रह सके वहां रह क्योंकि यहोवा की इच्छा है कि अकाल पड़े[१] वह २ इस देश में सात बरस लों बना रहेगा। परमेश्वर के जन के इस वचन के अनुसार वह स्त्री अपने घराने समेत ३ पलिश्तियों के देश में जा सात बरस रही। सात बरस के बीते पर वह पलिश्तियों के देश से लौट आई और अपने घर और भूमि के लिये दोहाई देने के राजा के पास ४ गई। राजा परमेश्वर के जन के सेवक गेहजी से बातें कर रहा था और उस ने कहा था जो बड़े बड़े काम ५ एलीशा ने किये हैं उन्हें मुझ से वर्णन कर। जब वह राजा से यह वर्णन कर ही रहा था कि एलीशा ने एक मुर्दे को जिलाया तब जिस स्त्री के बेटे को उस ने जिलाया था वही आकर अपने घर और भूमि के लिये दोहाई देने लगी सो गेहजी ने कहा हे मेरे प्रभु हे राजा यह वही स्त्री है और यही उस का बेटा है जिसे एलीशा ने जिलाया ६ था। जब राजा ने स्त्री से पूछा तब उस ने उस से सब कह दिया सो राजा ने एक हाकिम को यह कहकर उस के साथ कर दिया कि जो कुछ इस का था बरन जब से इस ने देश को छोड़ दिया तब से इस के खेत की जितनी आमदनी अब लों हुई हो सब को इसे भरवा दे॥

(हजाएल का अराम की गद्दी छीन लेना)

७ और एलीशा दमिश्क को गया और जब अराम के राजा बेन्हदद को जो रोगी था यह समाचार मिला कि ८ परमेश्वर का जन यहां भी आया है, तब उस ने हजाएल से कहा भेंट लेकर परमेश्वर के जन से मिलने को जा और उस के द्वारा यहोवा से यह पूछ कि क्या बेन्हदद ९ जो रोगी है सो बचेगा कि नहीं। तब हजाएल भेंट के लिये दमिश्क की सब उत्तम उत्तम वस्तुओं से चालीस ऊंट लदवाकर उस से मिलने को चला और उस के सन्मुख खड़ा होकर कहने लगा तेरे पुत्र अराम के राजा बेन्हदद ने मुझे तुझ से यह पूछने को भेजा है कि क्या १० मैं जो रोगी हूं सो बचूंगा कि नहीं। एलीशा ने उस से कहा जाकर कह तू निश्चय न बचेगा क्योंकि यहोवा ने मुझ पर प्रगट किया है कि वह निःसंदेह मर जाएगा। ११ और वह उस की ओर टकटकी बांध कर देखता रहा यहां लों कि वह लज्जित हुआ तब परमेश्वर का जन रोने

(१) मूल में यहोवा ने अकाल बुलाया है।

१२ लगा। तब हजाएल ने पूछा मेरा प्रभु क्यों रोता है उस ने उत्तर दिया इसलिये कि मुझे मालूम है कि तू इस्राएलियों पर क्या क्या उपद्रव करेगा उन के गढ़वाले नगरों को तू फूंक देगा उन के जवानों को तू तलवार से घात करेगा उन के बालबच्चों को तू पटक देगा और उन की गर्भवती
१३ स्त्रियों को तू चीर डालेगा। हजाएल ने कहा तेरा दास जो कुत्ते सरीखा है सो क्या है कि ऐसा बड़ा काम करे एलीशा ने कहा यहोवा ने मुझ पर यह प्रगट किया है
१४ कि तू अराम का राजा हो जाएगा। तब वह एलीशा से बिदा होकर अपने स्वामी के पास गया और उस ने उस से पूछा एलीशा ने तुझ से क्या कहा उस ने उत्तर दिया
१५ उस ने मुझ से कहा कि बेन्हदद निःसंदेह बचेगा। दूसरे दिन उस ने रजाई को लेकर जल से भिगो दिया और उस को उस के मुंह पर ओढ़ा दिया और वह मर गया। तब हजाएल उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(इस्राएली योराम का राज्य)

१६ इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र योराम के पांचवें बरस में जब यहूदा का राजा यहोशापात जीता था तब यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा पर राज्य करने लगा।
१७ जब वह राजा हुआ तब बत्तीस बरस का था और आठ
१८ बरस लों यरूशलेम में राज्य करता रहा। वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला जैसे अहाब का घराना चलता था क्योंकि उस की स्त्री अहाब की बेटी थी और वह उस काम को करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है।
१९ तौभी यहोवा ने यहूदा को नाश करना न चाहा यह उस के दास दाऊद के कारण हुआ क्योंकि उस ने उस को वचन दिया था कि तेरे वंश के निमित्त मैं सदा तेरे
२० लिये एक दीपक बरा हुआ रक्खूंगा। उस के दिनों में एदोम ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपना एक राजा
२१ बना लिया। तब योराम अपने सब रथ साथ लिये हुए साईर को गया और रात को उठकर उन एदोमियों को जो उसे घेरे हुए थे और रथों के प्रधानों को भी मारा और
२२ लोग अपने अपने डेरे को भाग गये। यों एदोम यहूदा के वश से छूट गया और आज लों वैसा ही है। उस समय लिब्ना ने भी यहूदा की अधीनता छोड़ दी।
२३ योराम के और सब काम और जो कुछ उस ने किया सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं
२४ लिखा है। निदान योराम अपने पुरखाओं के संग सोया और उन के बीच दाऊदपुर में उसे मिट्टी दी गई और उस का पुत्र अहज्याह उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(यहूदी अहज्याह का राज्य)

२५ अहाब के पुत्र इस्राएल के राजा योराम के बारहवें बरस में यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राज्य करने लगा।
२६ जब अहज्याह राजा हुआ तब बाईस बरस का था और यरूशलेम में एक ही बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अतल्याह था जो इस्राएल के राजा ओम्री की पोती थी।
२७ वह अहाब के घराने की सी चाल चला और अहाब के घराने की नाईं वह काम करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है कि वह अहाब के घराने का दामाद था।
२८ और वह अहाब के पुत्र योराम के संग गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया
२९ और अरामियों ने योराम को घायल किया। सो राजा योराम इसलिये लौट गया कि यिज्रेल में उन घावों का इलाज कराए जो उस को अरामियों के हाथ से उस समय लगे जब वह हजाएल के साथ लड़ रहा था और अहाब का पुत्र योराम जो यिज्रेल में रोगी रहा इस से यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह उस को देखने गया॥

(येहू का अभिषेक और राज्य)

९. तब एलीशा नबी ने नबियों के चेलों में से एक को बुलाकर उस से कहा कमर बांध हाथ में तेल की यह कुप्पी लेकर गिलाद के रामोत को जा।
२ और वहां पहुंचकर येहू को जो यहोशापात का पुत्र और निमशी का पोता है ढूंढ़ लेना तब भीतर जा उस को खड़ा कराकर उस के भाइयों से अलग एक भीतरी कोठरी में ले जाना।
३ तब तेल की यह कुप्पी लेकर तेल को उस के सिर पर यह कह कर डालना कि यहोवा यों कहता है कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं तब द्वार खोलकर भागना विलम्ब न करना।
४ सो वह जवान नबी गिलाद के रामोत को गया।
५ वहां पहुंचकर उस ने क्या देखा कि सेनापति बैठे हुए हैं तब उस ने कहा हे सेनापति मुझे तुझ से कुछ कहना है येहू ने पूछा हम सभों में किस से उस ने कहा हे सेनापति तुझी से।
६ जब वह उठकर घर में गया तब उस ने यह कहकर उस के सिर पर तेल डाला कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं अपनी प्रजा इस्राएल पर राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं।
७ सो तू अपने स्वामी अहाब के घराने को मार डालना जिस से मुझे अपने दास नबियों के बरन अपने सब दासों के खून का जो ईजेबेल ने बहाया पलटा मिले।
८ अहाब का सारा घराना नाश हो जाएगा और मैं अहाब के वंश के हर एक लड़के को और इस्राएल में के क्या बन्धुए क्या स्वाधीन हर एक को नाश कर डालूंगा।
९ और मैं अहाब का घराना नबात के पुत्र यारोबाम का सा और अहिय्याह

१० के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा। और ईज़ेबेल को यिज्रेल की भूमि में कुत्ते खाएंगे और उस को मिट्टी देनेहारा
११ कोई न होगा तब वह द्वार खोलकर भाग गया। तब येहू अपने स्वामी के कर्म्मचारियों के पास निकल आया और एक ने उस से पूछा क्या कुशल है वह बावला क्यों तेरे पास आया था उस ने उन से कहा तुम को मालूम होगा कि वह कौन है और उस से क्या बातचीत हुई।
१२ उन्हों ने कहा झूठ है हमें बता दे उस ने कहा उस ने मुझ से कहा तो बहुत पर मतलब यह कि यहोवा यों कहता है कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक
१३ कर देता हूं। तब उन्हों ने झट अपना अपना वस्त्र उतार कर उस के नीचे सीढ़ी ही पर बिछाया और नरसिंगे फूंककर
१४ कहने लगे कि येहू राजा है। यों येहू जो निमशी का पोता और यहोशापात का पुत्र था उस ने योराम से राजद्रोह की गोष्ठी की। योराम तो सारे इस्राएल समेत अराम के राजा
१५ हज़ाएल से गिलाद के रामोत की रक्षा कर रहा था। पर राजा यहोराम आप जो घाव अराम के राजा हज़ाएल से युद्ध करने के समय उस को अरामियों से लगे थे उन का इलाज कराने के लिये यिज्रेल को लौट गया था। सो येहू ने कहा यदि तुम्हारा ऐसा मन हो तो इस नगर में से कोई
१६ निकल कर यिज्रेल में सुनाने को न जाने पाए। तब येहू रथ पर चढ़कर यिज्रेल को चला जहां योराम पड़ा हुआ था और यहूदा का राजा अहज्याह योराम के देखने को
१७ वहां आया था। यिज्रेल में के गुम्मट पर जो पहरुआ खड़ा था उस ने येहू के संग आते हुए दल को देखकर कहा मुझे एक दल दीखता है यहोराम ने कहा एक सवार को बुलाकर उन लोगों से मिलने को भेज और
१८ वह उन से पूछे क्या कुशल है। सो एक सवार उस से मिलने को गया और उस से कहा राजा पूछता है क्या कुशल है येहू ने कहा कुशल से तेरा क्या काम हटकर मेरे पीछे चल। सो पहरुए ने कहा वह दूत उन के पास
१९ पहुंचा तो था पर लौट नहीं आता। तब उस ने दूसरा सवार भेजा और उस ने उन के पास पहुंचकर कहा राजा पूछता है क्या कुशल है येहू ने कहा कुशल से तेरा क्या
२० काम हटकर मेरे पीछे चल। तब पहरुए ने कहा वह भी उन के पास पहुंचा तो था पर लौट नहीं आता और हांकना निमशी के पोते येहू का सा है वह तो बौड़हे
२१ की नाईं हांकता है। योराम ने कहा मेरा रथ जुतवा जब उस का रथ जुत गया तब इस्राएल का राजा यहोराम और यहूदा का राजा अहज्याह दोनों अपने अपने रथ पर चढ़ कर निकल गये और येहू से मिलने को बाहर जाकर यिज्रेल नाबोत की भूमि में उस से भेंट की।

२२ येहू को देखते ही यहोराम ने पूछा हे येहू क्या कुशल है येहू ने उत्तर दिया जब लों तेरी माता ईज़ेबेल बहुत सा छिनाला और टोना करती रहे तब लों कुशल कहां।
२३ तब यहोराम रास[1] फेरके और अहज्याह से यह कहकर
२४ कि हे अहज्याह विश्वासघात है भाग चला। तब येहू ने धनुष को कान तक खींचकर[2] यहोराम के पखौड़ों के बीच ऐसा तीर मारा कि वह उस का हृदय फोड़कर निकल गया और वह अपने रथ में झुक कर गिर पड़ा।
२५ तब येहू ने बिदकर नाम अपने एक सरदार से कहा उसे उठाकर यिज्रेली नाबोत की भूमि में फेंक दे स्मरण तो कर कि जब मैं और तू हम दोनों एक संग सवार होकर उस के पिता अहाब के पीछे पीछे चल रहे थे तब यहोवा ने उस से यह भारी वचन कहवाया कि,
२६ यहोवा की यह वाणी है कि नाबोत और उस के पुत्रों का जो खून हुआ उसे मैं ने देखा है और यहोवा की यह वाणी है कि मैं उसी भूमि में तुझे बदला दूंगा। सो अब यहोवा के उस वचन के अनुसार इसे उठाकर इसी भूमि में फेंक दे।
२७ यह देखकर यहूदा के राजा अहज्याह बारी के भवन के मार्ग से भाग चला और येहू ने उस का पीछा करके कहा उस को भी रथ ही पर मारो सो वह यिबलाम के पास की गूर की चढ़ाई पर मारा गया और
२८ मगिद्दो तक भागकर मर गया। तब उस के कर्म्मचारियों ने उसे रथ पर यरूशलेम को पहुंचाकर दाऊदपुर में उस के पुरखाओं के बीच मिट्टी दी॥

२९ अहज्याह तो अहाब के पुत्र योराम के ग्यारहवें
३० बरस में यहूदा पर राज्य करने लगा था। जब येहू यिज्रेल को आया तब ईज़ेबेल यह सुन अपनी आंखों में सुर्मा लगा अपना सिर संवारकर खिड़की में से झांकने
३१ लगी। सो जब येहू फाटक होकर आ रहा था तब उस ने कहा हे अपने स्वामी के घात करनेहारे जिम्री क्या
३२ कुशल है। तब उस ने खिड़की की ओर मुंह उठाकर पूछा मेरी ओर कौन है कौन। इस पर दो तीन खोजों
३३ ने उस की ओर झांका। तब उस ने कहा उसे नीचे गिरा दो सो उन्हों ने उस को नीचे गिरा दिया और उस के लोहू की कुछ छींटे भीत पर और कुछ घोड़ों पर पड़ीं
३४ और उस ने उस को पांव से लताड़ दिया। तब वह भीतर जाकर खाने पीने लगा और कहा जाओ उस स्रापित स्त्री को देख लो और उसे मिट्टी दो वह तो राजा की बेटी
३५ है। जब वे उसे मिट्टी देने गये तब उस की खोपड़ी पांवों और हथेलियों को छोड़कर उस का और कुछ न पाया।
३६ सो उन्हों ने लौटकर उस से कह दिया तब उस ने कहा यह

(१) मूल में अपने हाथ। (२) मूल में अपना हाथ धनुष से भर के।

यहोवा का वह वचन है जो उस ने अपने दास तिशबी एलिय्याह से कहवाया था कि ईजेबेल का मांस यिज्रेल ३७ की भूमि में कुत्तों से खाया जाएगा। और ईजेबेल की लोथ यिज्रेल की भूमि पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी यहां लों कि कोई न कहेगा कि यह ईजेबेल है॥

१०. अहाब के तो सत्तर बेटे पोते शोमरोन में रहते थे सो येहू ने शोमरोन में उन पुरनियों के पास जो यिज्रेल के हाकिम थे और अहाब के लड़केबालों के पालनेहारों के पास पत्र २ लिखकर भेजे कि, तुम्हारे स्वामी के बेटे पोते तो तुम्हारे पास रहते हैं और तुम्हारे रथ और घोड़े भी हैं और तुम्हारे एक गढ़वाला नगर और हथियार भी हैं सो इस ३ पत्र के हाथ लगते ही, अपने स्वामी के बेटों में से जो सब से अच्छा और योग्य हो उस को छांट कर उस के पिता की गद्दी पर बैठाओ और अपने स्वामी के घराने ४ के लिये लड़ो। पर वे निपट डर गये और कहने लगे उस के साम्हने दो राजा भी ठहर न सके फिर हम कहां ५ ठहर सकेंगे। तब जो राजघराने के काम पर था और जो नगर के ऊपर था उन्हों ने और पुरनियों और लड़केबालों के पालनेहारों ने येहू के पास यों कहला भेजा कि हम तेरे दास हैं जो कुछ तू हम से कहे उसे हम करेंगे हम किसी ६ को राजा न बनाएंगे जो तुझे भाए सोई कर। सो उस ने दूसरा पत्र लिखकर उन के पास भेजा कि यदि तुम मेरी ओर के हो और मेरी मानो तो अपने स्वामी के बेटों पोतों के सिर कटवाकर कल इसी समय तक मेरे पास यिज्रेल में हाजिर होना। राजपुत्र तो जो सत्तर ७ मनुष्य थे सो उस नगर के रईसों के पास पलते थे। यह पत्र उन के हाथ लगते ही उन्हों ने उन सत्तरों राजपुत्रों को पकड़कर मार डाला और उन के सिर टोकरियों में ८ रखकर यिज्रेल को उस के पास भेज दिये। और एक दूत ने उस के पास जाकर बता दिया कि राजकुमारों के सिर आ गये हैं तब उस ने कहा उन्हें फाटक में दो ढेर करके ९ बिहान लों रक्खो। बिहान को उस ने बाहर जा खड़े होकर सारे लोगों से कहा तुम तो निर्दोष हो मैं ने अपने स्वामी से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे घात किया पर १० इन सभों को किस ने मार डाला। अब जान लो कि जो वचन यहोवा ने अपने दास एलिय्याह के द्वारा कहा था उसे उस ने पूरा किया है जो वचन यहोवा ने अहाब के घराने के विषय कहा उस में से एक भी बात बिना ११ पूरी हुए न रहेगी[१]। सो अहाब के घराने के जितने लोग यिज्रेल में रह गये उन सभों को और उस के जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक थे उन सभों को येहू ने मार डाला यहां लों कि उस ने किसी को जीता न १२ छोड़ा। तब वह वहां से चलकर शोमरोन को गया और मार्ग में चरवाहों के ऊन कतरने के स्थान पर पहुंचा, १३ कि यहूदा के राजा अहज्याह के भाई येहू को मिले और जब उस ने पूछा कि तुम कौन हो तब उन्हों ने उत्तर दिया हम अहज्याह के भाई हैं और राजपुत्रों और राजमाता १४ के बेटों का कुशलक्षेम पूछने को जाते हैं। तब उस ने कहा इन्हें जीते पकड़ो सो उन्हों ने उन को जो बयालीस पुरुष थे जीते पकड़ा और ऊन कतरने के स्थान की बावली पर मार डाला उस ने उन में से किसी को न छोड़ा॥

१५ जब वह वहां से चला तब रेकाब का पुत्र यहोनादाब साम्हने से आता हुआ उस को मिला। उस का कुशल उस ने पूछकर कहा मेरा मन तो तेरी ओर निष्कपट है सो क्या तेरा मन भी वैसा ही है यहोनादाब ने कहा हां ऐसा ही है फिर उस ने कहा ऐसा हो तो अपना हाथ मुझे दे उस ने अपना हाथ उसे दिया और वह यह कहकर उसे अपने १६ पास रथ पर चढ़ाने लगा कि, मेरे संग चल और देख कि मुझे यहोवा के निमित्त कैसी जलन रहती है सो वह उस १७ के रथ पर चढ़ा दिया गया। शोमरोन को पहुंचकर उस ने यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने एलिय्याह से कहा था अहाब के जितने शोमरोन में बचे रहे उन १८ सभों को मार के विनाश किया। तब येहू ने सब लोगों को इकट्ठा करके कहा अहाब ने तो बाल की थोड़ी ही उपासना की थी अब येहू उस की उपासना बढ़के करेगा। १९ सो अब बाल के सब नबियों सब उपासकों और सब याजकों को मेरे पास बुला लाओ उन में से कोई भी न रह जाए क्योंकि बाल के लिये मेरा एक बड़ा यज्ञ होनेवाला है जो कोई न आए सो जीता न बचेगा। येहू ने यह काम कपट करके बाल के सब उपासकों को नाश करने के लिये २० किया। तब येहू ने कहा बाल की एक पवित्र महासभा २१ का प्रचार करो सो लोगों ने प्रचार किया। और येहू ने सारे इस्राएल में दूत भेजे सो बाल के सब उपासक आये यहां लों कि ऐसा कोई न रह गया जो न आया हो। और वे बाल के भवन में इतने आये कि वह एक सिरे से २२ दूसरे सिरे लों भर गया। तब उस ने उस मनुष्य से जो वस्त्र के घर का अधिकारी था कहा बाल के सब उपासकों के लिये वस्त्र निकाल ले आ सो वह उन के लिये वस्त्र २३ निकाल ले आया। तब येहू रेकाब के पुत्र यहोनादाब को संग लेकर बाल के भवन में गया और बाल के उपासकों से कहा ढूंढ़कर देखो कि यहां तुम्हारे संग यहोवा का कोई उपासक तो नहीं है केवल बाल ही के उपासक

(१) मूल में भूमि पर न गिरेगी।

२४ हैं। तब वे मेलबलि और होमबलि चढ़ाने को भीतर गये येहू ने तो अस्सी पुरुष बाहर ठहराकर उन से कहा था यदि उन मनुष्यों में से जिन्हें मैं तुम्हारे हाथ कर दूं कोई भी बचने पाए तो जो उसे जाने दे उस का प्राण उस
२५ के प्राण की सन्ती जाएगा। फिर जब होमबलि चढ़ चुका तब येहू ने पहरुओं और सरदारों से कहा भीतर जाकर उन्हें मार डालो कोई निकलने न पाए सो उन्हों ने उन्हें तलवार से मारा और पहरुए और सरदार उन को बाहर
२६ फेंककर बाल के भवन के नगर को गये। और उन्हों ने
२७ बाल के भवन में की लाठें निकालकर फूंक दीं। और बाल की लाठ को उन्हों ने तोड़ डाला और बाल के भवन को ढाकर पायखाना बना दिया और वह आज लों
२८ ऐसा ही है। यों येहू ने बाल को इस्राएल में से नाश
२९ करके दूर किया। तौभी नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार करने से अर्थात् बेतेल और दान में के सोने के बछड़ों की पूजा
३० उस से तो येहू अलग न हुआ। और यहोवा ने येहू से कहा इसलिये कि तू ने वह किया जो मेरे लेखे ठीक है और अहाब के घराने से मेरी पूरी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया है तेरे परपोते के पुत्र लों तेरी सन्तान इस्राएल की
३१ गद्दी पर बिराजती रहेगी। पर येहू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था पर सारे मन से चलने की चौकसी न की बरन यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार करने से वह अलग न हुआ॥

३२ उन दिनों यहोवा इस्राएल को घटाने लगा सो
३३ हजाएल ने इस्राएल का वह सारा देश मारा, जो यर्दन से पूरब ओर है गिलाद का सारा देश और गादी और रूबेनी और मनश्शेई का देश अर्थात् अरोएर से लेकर जो अर्नोन की तराई के पास है गिलाद और बाशान
३४ तक। येहू के और सब काम जो कुछ उस ने किया और उस की सारी वीरता यह सब क्या इस्राएल के राजाओं
३५ के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। निदान येहू अपने पुरखाओं के संग सोया और शोमरोन में उस को मिट्टी दी गई और उस का पुत्र यहोआहाज उस के स्थान
३६ पर राजा हुआ। येहू के शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने का समय तो अट्ठाईस बरस का था॥

(यहोआश का घात से बचकर राजा हो जाना)

११. जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया तब उस
२ ने सारे राजवंश को नाश कर डाला। पर यहोशेबा जो राजा योराम की बेटी और अहज्या की बहिन थी उस ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच में चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया और उन्हों ने उसे अतल्याह से ऐसा छिपा रक्खा कि वह मार डाला न गया। और वह उस के
३ पास यहोवा के भवन में छः बरस छिपा रहा और अतल्याह देश पर राज्य करती रही॥

४ सातवें बरस में यहोयादा ने जल्लादों और पहरुओं के शतपतियों को बुला भेजा और उन को यहोवा के भवन में अपने पास ले आया और उन से वाचा बान्धी और यहोवा के भवन में उन को किरिया खिलाकर उन को
५ राजपुत्र दिखाया। और उस ने उन्हें आज्ञा दी कि यह काम करो अर्थात् तुम में से एक तिहाई के लोग जो विश्रामदिन को आनेवाले हों सो राजभवन के पहरे की
६ चौकसी करें। और एक तिहाई के लोग सूर नाम फाटक में ठहरे रहें और एक तिहाई के लोग पहरुओं के पीछे के फाटक में रहें यों तुम भवन की चौकसी करके लोगों को
७ रोके रहना। और तुम्हारे दो दल अर्थात् जितने विश्राम दिन को बाहर जानेवाले हों सो राजा के आसपास होकर
८ यहोवा के भवन की चौकसी करें। और तुम अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा के चारों ओर रहना और जो कोई पांतियों के भीतर घुसना चाहे वह मार डाला जाए और तुम राजा के आते जाते उस के संग रहना।
९ यहोयादा याजक की इन सारी आज्ञाओं के अनुसार शतपतियों ने किया। वे विश्रामदिन को आनेहारे और विश्रामदिन को जानेहारे दोनों दलों के अपने अपने जनों
१० को संग लेकर यहोयादा याजक के पास गये। तब याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे और ढालें जो
११ यहोवा के भवन में थीं दे दीं। सो वे पहरुए अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए भवन के दक्खिनी कोने से लेकर उत्तरी कोने लों वेदी और भवन के पास राजा
१२ के चारों ओर उस की आड़ करके खड़े हुए। तब उस ने राजकुमार को बाहर लाकर उस के सिर पर मुकुट और साक्षीपत्र धर दिया तब लोगों ने उस का अभिषेक करके उस को राजा बनाया फिर ताली बजा बजाकर बोल उठे
१३ राजा जीता रहे। जब अतल्याह को पहरुओं और लोगों का हौरा सुन पड़ा तब वह उन के पास यहोवा के भवन
१४ में गई। और उस ने क्या देखा कि राजा रीति के अनुसार खम्भे के पास खड़ा है और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेहारे खड़े हैं और सब लोग आनन्द करते और तुरहियां बजा रहे हैं तब अतल्याह अपने वस्त्र
१५ फाड़कर राजद्रोह राजद्रोह यों पुकारने लगी। तब यहोयादा याजक ने दल के अधिकारी शतपतियों को आज्ञा दी कि उसे अपनी पांतियों के बीच से निकाल ले आओ

और जो कोई उस के पीछे चले उसे तलवार से मार डालो सो याजक ने तो यह कहा कि वह यहोवा के भवन में मार
१६ डाली न जाए। सो उन्हों ने दोनों ओर से उस को जगह दी और वह उस मार्ग से चली गई जिस से घोड़े राजभवन में जाया करते थे और वहां वह मार डाली गई॥

१७ तब यहोयादा ने यहोवा के और राजा प्रजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बन्धाई और उस ने
१८ राजा और प्रजा के बीच भी वाचा बन्धाई। तब सब लोगों ने बाल के भवन को जाकर ढा दिया और उस की वेदियां और मूरतें भली भांति तोड़ दीं और मतान नाम बाल के याजक को वेदियों के साम्हने ही घात किया। और याजक ने यहोवा के भवन पर अधिकारी ठहरा
१९ दिये। तब वह शतपतियों जल्लादों और पहरुओं और सब लोगों को साथ लेकर राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया और पहरुओं के फाटक के मार्ग से राजभवन को पहुंचा दिया और राजा राजगद्दी पर विराजमान
२० हुआ। सो सब लोग आनन्दित हुए और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह तो राजभवन के पास तलवार से मार डाली गई थी॥

(यहोआश का राज्य)

१२. जब यहोआश राजा हुआ तब वह सात बरस का था। येहू के सातवें बरस में यहोआश राज्य करने लगा और यरूशलेम में चालीस बरस लों राज्य करता रहा उस की माता का
२ नाम सिब्या था जो बेर्शेबा की थी। और जब लों यहोयादा याजक यहोआश को शिक्षा देता रहा तब लों वह वही काम करता रहा जो यहोवा के लेखे ठीक है।
३ तौभी ऊंचे स्थान गिराये न गये प्रजा के लोग तब भी ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे॥

४ और यहोआश ने याजकों से कहा पवित्र की हुई वस्तुओं का जितना रुपया यहोवा के भवन में पहुंचाया जाए अर्थात् गिने हुए लोगों का रुपया और जितने रुपये के जो कोई योग्य ठहराया जाए और जितना रुपया जिस
५ की इच्छा यहोवा के भवन में ले आने की हो, इस सब को याजक लोग अपनी जान पहचान के लोगों से लिया करें और भवन में जो कुछ टूटा फूटा हो उस को सुधार
६ दें। तौभी याजकों ने भवन में जो टूटा फूटा था उसे यहोआश राजा के तेईसवें बरस तक न सुधारा था।
७ सो राजा यहोआश ने यहोयादा याजक और और याजकों को बुलवाकर पूछा भवन में जो कुछ टूटा फूटा है उसे तुम क्यों नहीं सुधारते भला अब से अपनी जान पहचान के लोगों से और रुपया न लेना जो तुम्हें मिल चुका
८ हो उसे भवन के सुधारने के लिये दे दो। तब याजकों ने मान लिया कि न तो हम प्रजा से और रुपया लें और न
९ भवन को सुधारें। पर यहोयादा याजक ने एक संदूक ले उस के ढकने में छेद करके उस को यहोवा के भवन में आनेहारे के दहिने हाथ पर वेदी के पास धर दिया और डेवढ़ी की रखवाली करनेहारे याजक उस में वह सब रुपया डाल देने लगे जो यहोवा के भवन में लाया जाता था।
१० जब उन्हों ने देखा कि संदूक में बहुत रुपया है तब राजा के प्रधान और महायाजक ने आकर उसे थैलियों में बांध दिया और यहोवा के भवन में पाये हुए रुपये को गिन
११ लिया। तब उन्हों ने उस तौले हुए रुपये को उन काम करानेहारों के हाथ में दिया जो यहोवा के भवन में अधिकारी थे और इन्हों ने उसे यहोवा के भवन के बनानेहारे
१२ बढ़इयों, राजों और संगतराशों को दिया और लकड़ी और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने में वरन जो कुछ भवन में के टूटे फूटे की मरम्मत में खर्च होता था उस में लगाया।
१३ पर जो रुपया यहोवा के भवन में आता था उस में से चान्दी के तसले चिमटे कटोरे तुरहियां आदि सोने वा
१४ चान्दी के किसी प्रकार के पात्र न बने। पर वह काम करनेहारों को दिया गया और उन्हों ने उसे लेकर यहोवा
१५ के भवन की मरम्मत की। और जिन के हाथ में काम करनेहारों को देने के लिये रुपया दिया जाता था उन से कुछ लेखा न लिया जाता था क्योंकि वे सचाई से काम
१६ करते थे। जो रुपया दोषबलियों और पापबलियों के लिये दिया जाता था यह तो यहोवा के भवन में न लगाया गया वह याजकों को मिलता था॥

१७ तब अराम के राजा हजाएल ने गत नगर पर चढ़ाई की और उस से लड़ाई करके उसे ले लिया तब उस ने
१८ यरूशलेम पर भी चढ़ाई करने को अपना मुंह किया। तब यहूदा के राजा यहोआश ने उन सब पवित्र वस्तुओं को जिन्हें उस के पुरखा यहोशापात यहोराम और अहज्याह नाम यहूदा के राजाओं ने पवित्र किया था और अपनी पवित्र की हुई वस्तुओं को भी और जितना सोना यहोवा के भवन के भण्डारों में और राजभवन में मिला उस सब को लेकर अराम के राजा हजाएल के पास भेज दिया
१९ और वह यरूशलेम के पास से चला गया। योआश के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं
२० के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। योआश के कर्म्मचारियों ने राजद्रोह की गोष्ठी करके उस को मिल्लो के भवन में जो सिल्ला की उतराई पर था मार डाला।
२१ अर्थात् शिमात का पुत्र योजाकार और शोमेर का पुत्र

यहोजाबाद जो उस के कर्म्मचारी थे उन्हों ने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया तब उसे उस के पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी और उस का पुत्र अमस्याह उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(यहोआहाज का राज्य)

१३. **अहज्याह** के पुत्र यहूदा के राजा योआश के तेईसवें बरस में येहू का पुत्र यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा और सत्रह बरस लों राज्य करता रहा। २ और उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन ३ को छोड़ न दिया। सो यहोवा का कोप इस्राएल के विरुद्ध भड़क उठा और वह उन को अराम के राजा हजाएल और उस के पुत्र बेन्हदद के हाथ में लगातार किये रहा। ४ तब योआहाज ने यहोवा को मनाया और यहोवा ने उस की सुन ली क्योंकि उस ने इस्राएल पर का अंधेर देखा कि अराम का राजा उन पर कैसा अंधेर करता था। ५ सो यहोवा ने इस्राएल को एक छुड़ानेहारा दिया था और वे अराम के वश से छूट गये और इस्राएली अगले दिनों ६ की नाईं फिर अपने अपने डेरे में रहने लगे। तौभी वे ऐसे पापों से न फिरे जैसे यारोबाम के घराने ने किया और जिन के अनुसार उस ने इस्राएल से पाप कराये थे पर उन में चलते रहे और शोमरोन में अशेरा भी खड़ी रही। ७ अराम के राजा ने तो यहोआहाज की सेना में से केवल पचास सवार दस रथ और दस हजार प्यादे छोड़ दिये थे क्योंकि उस ने उन को नाश किया और मरद मरद के ८ धूलि में मिला दिया था[१]। योआहाज के और सब काम उस ने किये और उस की बीरता यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं ९ लिखा है। निदान यहोआहाज अपने पुरखाओं के संग सोया और शोमरोन में उसे मिट्टी दी गई और उस का पुत्र योआश उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(योआश का राज्य और एलीशा की मृत्यु)

१० यहूदा के राजा योआश के राज्य के सैंतीसवें बरस में यहोआहाज का पुत्र यहोआश शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा और सोलह बरस राज्य करता रहा। ११ और उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन १२ से अलग न हुआ। योआश के और सब काम जो उस ने किये और जिस बीरता से वह यहूदा के राजा अमस्याह से लड़ा यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। १३ निदान योआश अपने पुरखाओं के संग सोया और यारोबाम उस की गद्दी पर बिराजने लगा और योआश को शोमरोन में इस्राएल के राजाओं के बीच मिट्टी दी गई है॥

१४ और एलीशा को वह रोग लग गया था जिस से वह पीछे मर गया सो इस्राएल का राजा योआश उस के पास गया और उस के ऊपर रोकर कहने लगा हाय मेरे पिता हाय मेरे पिता हाय इस्राएल के रथ और सवारो। १५ एलीशा ने उस से कहा धनुष और तीर ले आ। जब वह १६ उस के पास धनुष और तीर ले आया, तब उस ने इस्राएल के राजा से कहा धनुष पर अपना हाथ लगा। जब उस ने अपना हाथ लगाया तब एलीशा ने अपने हाथ राजा के हाथों पर धर दिये। १७ तब उस ने कहा पूरब की खिड़की खोल। जब उस ने उसे खोल दिया तब एलीशा ने कहा तीर छोड़ दे सो उस ने तीर छोड़ा और एलीशा ने कहा यह तीर यहोवा की ओर से छुटकारे अर्थात् अराम से छुटकारे का चिन्ह है सो तू अपेक में अराम को यहां लों मार लेगा कि उन का अन्त कर डालेगा। १८ फिर उस ने कहा तीरों को ले और जब उस ने उन्हें लिया तब उस ने इस्राएल के राजा से कहा भूमि पर मार। तब वह तीन बार मार १९ कर ठहर गया। और परमेश्वर के जन ने उस पर क्रोधित होकर कहा तुझे तो पांच छः बार मारना चाहिये था ऐसा करने से तो तू अराम को यहां लों मारता कि उन का अन्त कर डालता पर अब तू उन्हें तीन ही बार मारेगा॥

२० सो एलीशा मर गया और उसे मिट्टी दी गई। बरस दिन के बीते पर मोआब के दल देश में आये थे। २१ लोग किसी मनुष्य को मिट्टी दे रहे थे कि एक दल उन्हें देख पड़ा सो उन्हों ने उस लोथ को एलीशा की कबर में डाल दिया तब एलीशा की हड्डियों के छूते ही वह जी उठा और अपने पांवों के बल खड़ा हो गया॥

२२ यहोआहाज के जीवन भर अराम का राजा हजाएल २३ इस्राएल पर अंधेर करता रहा। पर यहोवा ने उन पर अनुग्रह किया और उन पर दया करके अपनी उस बाचा के कारण जो उस ने इब्राहीम इसहाक और याकूब से बान्धी थी उन पर कृपादृष्टि की और तब भी न तो उन्हें २४ नाश किया और न अपने साम्हने से निकाल दिया। सो अराम का राजा हजाएल मर गया और उस का पुत्र २५ बेन्हदद उस के स्थान पर राजा हुआ। और यहोआहाज के पुत्र यहोआश ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद के हाथ से वे नगर फिर ले लिये जिन्हें उस ने युद्ध करके उस के पिता

(१) मूल में रौंदने के लिये धूलि के समान कर दिया था।

यहोआहाज के हाथ से छीन लिया था। योआश ने उस को तीन बार जीतकर इस्राएल के नगर फिर ले लिये॥

(अमस्याह का राज्य)

१४. इस्राएल के राजा योआहाज के पुत्र योआश के दूसरे बरस में यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह राजा हुआ। २ जब वह राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और यरूशलेम में उनतीस बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यहोअद्दीन था जो यरूशलेम की ३ थी। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है तौभी अपने मूलपुरुष दाऊद की नाईं न किया उस ने ठीक ४ अपने पिता योआश के से काम किये। उस के दिनों में ऊंचे स्थान गिराये न गये लोग तब भी उन पर बलि ५ चढ़ाते और धूप जलाते रहे। जब राज्य उस के हाथ में स्थिर हो गया तब उस ने अपने उन कर्म्मचारियों को मार डाला जिन्हों ने उस के पिता राजा को मार डाला था। ६ पर उन खूनियों के लड़केवालों को उस ने न मार डाला क्योंकि यहोवा की यह आज्ञा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है कि पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए और पिता के कारण पुत्र न मार डाला जाए जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला ७ जाए। उसी अमस्याह ने लोन की तराई में दस हजार एदोमी पुरुष मार डाले और सेला नगर से युद्ध करके उसे ले लिया और उस का नाम योक्तेल[1] रक्खा और वह नाम आज तक चलता है॥

८ तब अमस्याह ने इस्राएल के राजा यहोआश के पास जो येहू का पोता और यहोआहाज का पुत्र था दूतों से कहला भेजा कि आ हम एक दूसरे का साम्हना ९ करें। इस्राएल के राजा यहोआश ने यहूदा के राजा अमस्याह के पास यों कहला भेजा कि लबानोन पर के एक झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदारु के पास कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे इतने में लबानोन में का एक बनैला पशु पास से चला गया और उस १० झड़बेरी को रौंद डाला। तू ने एदोमियों को जीता तो है इसलिये तू फूल उठा है[2] उसी पर बड़ाई मारता हुआ घर में रह जा तू अपनी हानि के लिये यहां क्यों हाथ डालेगा जिस से तू क्या बरन यहूदा भी नीचा खाएगा। ११ पर अमस्याह ने न माना सो इस्राएल के राजा यहोआश ने चढ़ाई की और उस ने और यहूदा के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का साम्हना किया। १२ और यहूदा इस्राएल से हार गया और एक एक अपने अपने डेरे को भागा। १३ तब इस्राएल का राजा यहोआश यहूदा के राजा अमस्याह को जो अहज्याह का पोता और यहोआश का पुत्र था बेतशेमेश में पकड़ा और यरूशलेम को गया और यरूशलेम की शहरपनाह में से एप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक लों चार सौ हाथ गिरा दिये। १४ और जितना सोना चांदी और जितने पात्र यहोवा के भवन में और राजभवन के भण्डारों में मिले उन सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह शोमरोन को लौट गया। १५ यहोआश के और काम जो उस ने किये और उस की वीरता और उस ने किस रीति यहूदा के राजा अमस्याह से युद्ध किया यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। १६ निदान योआश अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे इस्राएल के राजाओं के बीच शोमरोन में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र यारोबाम उस के स्थान पर राजा हुआ॥*

१७ यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के राजा यहोआश के मरने के पीछे योआश का पुत्र यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह बरस जीता रहा। १८ अमस्याह के और काम क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। १९ जब यरूशलेम में उस के विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की गई तब वह लाकीश को भाग गया सो उन्हों ने उस के पीछे लाकीश लों भेजकर उस को वहां मार डाला। २० तब वह घोड़ों पर रखकर यरूशलेम में पहुंचाया गया और वहां उस के पुरखाओं के बीच उस को दाऊदपुर में मिट्टी दी गई। २१ तब सारी यहूदी प्रजा ने अजर्याह को जो सोलह बरस का था लेकर उस के पिता अमस्याह के स्थान पर राजा कर दिया। २२ जब राजा अमस्याह अपने पुरखाओं के संग सोया उस के पीछे अजर्याह ने एलत को दृढ़ करके यहूदा के वश में फिर कर लिया॥

(दूसरे यारोबाम का राज्य)

२३ यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्य के पन्द्रहवें बरस में इस्राएल के राजा योआश का पुत्र यारोबाम शोमरोन में राज्य करने लगा और एकतालीस बरस लों राज्य करता रहा। २४ उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से वह अलग न हुआ। २५ उस ने इस्राएल का सिवाना हमात की घाटी से ले अराबा के ताल लों ज्यों का त्यों कर दिया जैसे कि इस्राएल के

(१) अर्थात् ईश्वर का दबाया।
(२) मूल में तेरे मन ने तुझे उठाया है।

परमेश्वर यहोवा ने अमित्ते के पुत्र अपने दास गथेपे-
२६ रवासी योना नबी के द्वारा कहा था । क्योंकि यहोवा ने इस्राएल का दुःख देखा कि बहुत ही कठिन[1] है बरन क्या बंधुआ क्या स्वाधीन कोई भी बचा न रहा और न
२७ इस्राएल के लिये कोई सहायक था । यहोवा ने न कहा था कि मैं इस्राएल का नाम धरती पर[2] से मिटा डालूंगा परन्तु उस ने योआश के पुत्र यारोबाम के द्वारा
२८ उन को छुटकारा दिया । यारोबाम के और सब काम जो उस ने किये और कैसे पराक्रम के साथ उस ने युद्ध किया और दमिश्क और हमात को जो पहले यहूदा के राज्य में थे इस्राएल के वश में फिर कर लिया यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं
२९ लिखा है । निदान यारोबाम अपने पुरखाओं के संग जो इस्राएल के राजा थे सोया और उस का पुत्र जकर्याह उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(अजर्याह का राज्य)

१५. इस्राएल के राजा यारोबाम के सताईसवें बरस में यहूदा
२ के राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह राजा हुआ । जब वह राज्य करने लगा तब सोलह बरस का था और यरूशलेम में बावन बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यकोल्याह था जो यरूशलेम की थी ।
३ जैसे उस का पिता अमस्याह वह किया करता था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसे ही वह भी करता था ।
४ तौभी ऊंचे स्थान गिराये न गये प्रजा के लोग तब भी
५ उन पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे । यहोवा ने उस राजा को ऐसा मारा कि वह मरने के दिन लों कोढ़ी रहा और अलग एक घर में रहता था और योताम नाम राजपुत्र उस के घराने के काम पर ठहरकर देश के लोगों
६ का न्याय करता था । अजर्याह के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की
७ पुस्तक में नहीं लिखे हैं । निदान अजर्याह अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊदपुर में उस के पुरखाओं के बीच मिट्टी दी गई और उस का पुत्र योताम उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(जकर्याह का राज्य)

८ यहूदा के राजा अजर्याह के अड़तीसवें बरस में यारोबाम का पुत्र जकर्याह इस्राएल पर शोमरोन में राज्य
९ करने लगा और छः महीने राज्य किया । उस ने अपने पुरखाओं की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और
१० उन से वह अलग न हुआ । और याबेश के पुत्र शल्लूम ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके उस को प्रजा के साम्हने मारा और उस का घात करके उस के स्थान पर
११ राजा हुआ । जकर्याह के और काम इस्राएल के राजाओं
१२ के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं । यों ही यहोवा का वह वचन पूरा हुआ जो उस ने येहू से कहा था कि तेरे परपोते के पुत्र लों तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर विराजती आएगी और वैसा ही हुआ ॥

(शल्लूम का राज्य)

१३ यहूदा का राजा उज्जियाह[3] के उनतालीसवें बरस में याबेश का पुत्र शल्लूम राज्य करने लगा और महीने
१४ भर शोमरोन में राज्य करता रहा । क्योंकि गादी के पुत्र मनहेम ने तिर्सा से शोमरोन को जाकर याबेश के पुत्र शल्लूम को वहीं मारा और उसे घात करके उस के स्थान
१५ पर राजा हुआ । शल्लूम के और काम और उस ने राजद्रोह की जो गोष्ठी की यह सब इस्राएल के राजाओं के
१६ इतिहास की पुस्तक में लिखा है । तब मनहेम ने तिर्सा से जाकर सब निवासियों और आस पास के देश समेत तिप्सह को इस कारण मार लिया कि तिप्सहियों ने उस के लिये फाटक न खोले थे सो उस ने उसे मार लिया और उस में जितनी गर्भवती स्त्रियां थीं उन सभों को चीर डाला ॥

(मनहेम का राज्य)

१७ यहूदा के राजा अजर्याह के उनतालीसवें बरस में गादी का पुत्र मनहेम इस्राएल पर राज्य करने लगा
१८ और दस बरस लों शोमरोन में राज्य करता रहा । उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से वह
१९ जीवन भर अलग न हुआ । अश्शूर के राजा पूल ने देश पर चढ़ाई की और मनहेम ने उस को हजार किक्कार चान्दी इस इच्छा से दी कि वह मेरा सहायक होकर
२० राज्य को मेरे हाथ में स्थिर रक्खे । यह चान्दी अश्शूर के राजा को देने के लिये मनहेम ने बड़े बड़े धनवान् इस्राएलियों से ले ली एक एक पुरुष को पचास पचास शेकेल चान्दी देनी पड़ी सो अश्शूर का राजा देश को
२१ छोड़कर लौट गया । मनहेम के और काम जो उस ने किये वे सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
२२ पुस्तक में नहीं लिखे हैं । निदान मनहेम अपने पुरखाओं के संग सोया और उस का पुत्र पकह्याह उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(१) मूल में कड़वा । (२) मूल में आकाश के तले । (३) अर्थात् अजर्याह ।

(पकह्याह और पेकह का राज्य)

२३ यहूदा के राजा अजर्याह के पचासवें बरस में मनहेम का पुत्र पकह्याह शोमरोन में इस्राएल पर राज्य २४ करने लगा और दो बरस लों राज्य करता रहा। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से वह अलग २५ न हुआ। उस के सर्दार रमल्याह के पुत्र पेकह ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके शोमरोन के राजभवन के गुम्मट में उस को और उस के संग अर्गोब और अर्ये को मारा और पेकह के संग पचास गिलादी पुरुष थे और वह उस का घात करके उस के स्थान पर राजा हुआ। २६ पकह्याह के और सब काम जो उस ने किये सो इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं॥

(पेकह का राज्य)

२७ यहूदा के राजा अजर्याह के बावनवें बरस में रमल्याह का पुत्र पेकह शोमरोन में इस्राएल पर राज्य २८ करने लगा और बीस बरस लों राज्य करता रहा। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है अर्थात् जैसे पाप नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था उस के पापों के अनुसार वह करता रहा और उन से २९ वह अलग न हुआ। इस्राएल के राजा पेकह के दिनों में अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर ने आकर इय्योन अबेल्बेत्माका यानोह केदेश और हासोर नाम नगरों को और गिलाद और गालील बरन नताली के सारे देश को भी ले लिया और उन के लोगों को बंधुआ करके अश्शूर को ले ३० गया। उज्जिय्याह के पुत्र योताम के बीसवें बरस में एला के पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे मारा और उसे घात करके उस के स्थान पर ३१ राजा हुआ। पेकह के और सब काम जो उस ने किये सो इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं॥

(योताम का राज्य)

३२ रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकह के दूसरे बरस में यहूदा के राजा उज्जिय्याह का पुत्र योताम राजा ३३ हुआ। जब वह राज्य करने लगा तब पच्चीस बरस का था और यरूशलेम में सोलह बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यरूशा था वही सादोक की ३४ बेटी थी। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है अर्थात् जैसा उस के पिता उज्जिय्याह ने किया था ठीक ३५ वैसा ही उस ने किया। तौभी ऊंचे स्थान गिराये न गये प्रजा के लोग उन पर तब भी बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे। यहोवा के भवन के उपरले फाटक को इसी ने बनाया। ३६ योताम के और सब काम जो उस ने किये वे क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। ३७ उन दिनों में यहोवा अराम के राजा रसीन को और रमल्याह के पुत्र पेकह को यहूदा के ३८ विरुद्ध भेजने लगा। निदान योताम अपने पुरखाओं के संग सोया और अपने मूलपुरुष दाऊद के पुर में अपने पुरखाओं के बीच उस को मिट्टी दी गई और उस का पुत्र आहाज उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(आहाज का राज्य)

१६. रमल्याह के पुत्र पेकह के सत्रहवें बरस में यहूदा के राजा योताम

का पुत्र आहाज राज्य करने लगा। २ जब आहाज राज्य करने लगा तब वह बीस बरस का था और सोलह बरस लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और अपने मूलपुरुष दाऊद का सा काम नहीं किया जो उस के परमेश्वर यहोवा के लेखे ठीक है। ३ परन्तु वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला बरन उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था उस ने अपने बेटे को आग में होम कर दिया। ४ और ऊंचे स्थानों पर और पहाड़ियों पर और सब हरे वृक्षों के तले वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था। ५ तब अराम के राजा रसीन और रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकह ने यरूशलेम पर लड़ने के लिये चढ़ाई की और उन्हों ने आहाज को घेर लिया पर युद्ध करके उन से कुछ न बन पड़ा। ६ उस समय अराम के राजा रसीन ने एलत को अराम के वश में करके यहूदियों को वहां से निकाल दिया तब अरामी लोग एलत को गये और आज के दिन लों वहां रहते हैं। ७ और आहाज ने दूत भेजकर अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर के पास कहला भेजा कि मुझे अपना दास बरन बेटा जान कर चढ़ाई कर और मुझे अराम के राजा और इस्राएल के राजा के हाथ से बचा जो मेरे विरुद्ध उठे हैं। ८ और आहाज ने यहोवा के भवन में और राजभवन के भण्डारों में जितना सोना चान्दी मिली उसे अश्शूर के राजा के पास भेंट करके भेज दिया। ९ उस की मानकर अश्शूर के राजा ने दमिश्क पर चढ़ाई की और उसे लेकर उस के लोगों को बंधुआ करके कीर को ले गया और रसीन को मार डाला। १० तब राजा आहाज अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर से भेंट करने के लिये दमिश्क को गया और वहां की वेदी देखकर उस की सारी बनावट के अनुसार उस का नकशा ऊरिय्याह याजक के पास नमूना करके भेज दिया। ११ ठीक

इसी नमूने के अनुसार जिसे राजा आहाज ने दमिश्क से भेजा था ऊरिय्याह याजक ने राजा आहाज के
१२ दमिश्क से आने लों एक वेदी बना दी । जब राजा दमिश्क से आया तब उस ने उस वेदी को देखा और
१३ उस के निकट जाकर उस पर बलि चढ़ाये । उसी वेदी पर उस ने अपना होमबलि और अन्नबलि जलाया और अर्घ दिया और मेलबलियों का लोहू छिड़क दिया ।
१४ और पीतल की जो वेदी यहोवा के साम्हने रहती थी उस को उस ने भवन के साम्हने से अर्थात् अपनी वेदी और यहोवा के भवन के बीच से हटाकर उस वेदी की
१५ उत्तर ओर रख दिया । तब राजा आहाज ने ऊरिय्याह याजक को यह आज्ञा दी कि भोर के होमबलि सांझ के अन्नबलि राजा के होमबलि और उस के अन्नबलि और सब साधारण लोगों के होमबलि और अर्घ बड़ी वेदी पर चढ़ाया कर और होमबलियों और मेलबलियों का सब लोहू उस पर छिड़क और पीतल की वेदी के विषय में
१६ विचार करूंगा । राजा आहाज की इस आज्ञा के अनुसार
१७ ऊरिय्याह याजक ने किया । फिर राजा आहाज ने पायों की पटरियों को काट डाला और हौदियों को उन पर से उतार दिया और गंगाल को उन पीतल के बैलों पर से जो उस के तले थे उतारकर पत्थरों के फर्श पर धर
१८ दिया । और विश्राम के दिन के लिये जो छाया हुआ स्थान भवन में बना था और राजा के बाहर से प्रवेश करने का फाटक उन दोनों को उस ने अश्शूर के राजा के
१९ कारण यहोवा के भवन में छिपा[१] दिया । आहाज के और काम जो उस ने किये वे क्या यहूदा के राजाओं के
२० इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं । निदान आहाज अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे उस के पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र हिजकिय्याह उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(होशे का राज्य और इस्राएली राज्य का टूट जाना)

१७. **यहूदा** के राजा आहाज के बारहवें बरस में एला का पुत्र होशे शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा और नौ
२ बरस लों राज्य करता रहा । उस ने वही किया जो यहोवा के लेखे बुरा है पर इस्राएल के उन राजाओं के
३ बराबर नहीं जो उस से पहिले थे । उस पर अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने चढ़ाई की और होशे उस के अधीन
४ होकर उस को भेंट देने लगा । पर अश्शूर के राजा ने होशे को राजद्रोह की गोष्ठी करनेहारा जान लिया क्योंकि उस ने सो नाम मिस्र के राजा के पास दूत भेजे और अश्शूर के राजा के पास सालियाना भेंट भेजनी छोड़ दी इस कारण अश्शूर के राजा ने उस को बन्द किया और बेड़ी डालकर बन्दीगृह में डाल दिया ।
५ तब अश्शूर के राजा ने सारे देश पर चढ़ाई की और
६ शोमरोन को जाकर तीन बरस लों उसे घेरे रहा । होशे के नौवें बरस में अश्शूर के राजा ने शोमरोन को ले लिया और इस्राएल को अश्शूर में ले जाकर हलह में और हाबोर और गोजान नदियों के पास और मादियों
७ के नगरों में बसाया । इस का यह कारण है कि यद्यपि इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उन को मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर मिस्र देश से निकाल लाया था तौभी उन्हों ने उस के विरुद्ध पाप किया और पराये
८ देवताओं का भय माना था, और जिन जातियों को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाला था उन की रीति पर और अपने राजाओं की चलाई हुई
९ रीतियों पर चले थे । और इस्राएलियों ने कपट करके अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध अनुचित काम किये कैसे कि पहरुओं के गुम्मट से ले गढ़वाले नगर लों अपनी
१० सारी बस्तियों में ऊंचे स्थान बना लिये थे, और सब ऊंची पहाड़ियों पर और सब हरे वृक्षों के तले लाठें और अशेरा
११ खड़े कर लिये थे, और ऐसे ऊंचे स्थानों में उन जातियों की नाईं जिन को यहोवा ने उन के साम्हने से निकाल दिया था धूप जलाया और यहोवा को रिस दिलाने के
१२ योग्य बुरे काम किये थे, और मूरतों की उपासना की जिस के विषय यहोवा ने उन से कहा था कि तुम यह काम
१३ न करना । तौभी यहोवा ने सब नबियों और सब दर्शियों के द्वारा इस्राएल और यहूदा को यह कहकर चिताया था कि अपनी बुरी चाल छोड़कर उस सारी व्यवस्था के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी और अपने दास नबियों के हाथ तुम्हारे पास पहुंचाई है मेरी आज्ञाओं और विधियों को
१४ माना करो । पर उन्हों ने न माना बरन अपने उन पुरखाओं की नाईं जिन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वास न
१५ किया था वे भी हठीले[२] बने । और वे उस की विधियां और अपने पुरखाओं के साथ उस की वाचा और जो चितौनियां उस ने उन्हें दी थीं उन को तुच्छ जानकर निकम्मी बातों के पीछे हो लिये जिस से वे आप निकम्मे हो गये और अपने चारों ओर की उन जातियों के पीछे भी जिन के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी कि उन के
१६ से काम न करना । बरन उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को त्याग दिया और दो बछड़ों की मूरतें ढालकर बनाईं और अशेरा भी बनाई और आकाश

(१) मूल में ढुका ।

(२) मूल में कड़ी गर्दनवाले ।

के सारे गण को दण्डवत् की और बाल की उपासना की, १७ और अपने बेटे बेटियों को आग में होम करके चढ़ाया और भावी कहनेहारों से पूछने और टोना करने लगे और जो यहोवा के लेखे बुरा है जिस से वह रिसियाता भी है १८ उस के करने को अपनी इच्छा से बिक गये[१]। इस कारण यहोवा इस्राएल से अति क्रोधित हुआ और उन्हें अपने साम्हने से दूर कर दिया यहूदा का गोत्र छोड़ और कोई १९ बचा न रहा। और यहूदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं न मानीं बरन जो विधियां इस्राएल ने चलाई २० थीं उन पर चलने लगे। सो यहोवा ने इस्राएल की सारी सन्तान को छोड़कर उन को दुःख दिया और लूटनेहारों के हाथ कर दिया और अन्त में उन्हें अपने साम्हने से २१ निकाल दिया। उस ने इस्राएल को तो दाऊद के घराने के हाथ से छीन लिया और उन्हों ने नबात के पुत्र यारोबाम को अपना राजा किया और यारोबाम ने इस्राएल को यहोवा के पीछे चलने से खींचकर उन से बड़ा पाप २२ कराया। सो जैसे पाप यारोबाम ने किये थे वैसे ही पाप इस्राएली भी करते रहे और उन से अलग न हुए। २३ अन्त को यहोवा ने इस्राएल को अपने साम्हने से दूर कर दिया जैसे कि उस ने अपने सब दास नबियों के द्वारा कहा था। सो इस्राएल अपने देश से निकाल कर अश्शूर को पहुंचाया गया जहां वह आज के दिन लों रहता है॥

(इस्राएल के देश में अन्य जातिवालों का बसाया जाना)

२४ और अश्शूर के राजा ने बाबेल कूता अव्वा हमात और सपर्वैम नगरों से लोगों को लाकर इस्राएलियों के स्थान पर शोमरोन के नगरों में बसाया, सो वे शोमरोन के २५ अधिकारी होकर उस के नगरों में रहने लगे। जब वे वहां पहिले पहिल रहने लगे तब यहोवा का भय न मानते थे इस कारण यहोवा ने उन के बीच सिंह भेजे जो २६ उन को मार डालने लगे। इस कारण उन्हों ने अश्शूर के राजा के पास कहला भेजा कि जो जातियां तू ने उन के देशों से निकालकर शोमरोन के नगरों में बसा दी हैं वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानतीं इस से उस ने उन के बीच सिंह भेजे हैं जो उन को इसलिये मार डालते हैं २७ कि वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानते। तब अश्शूर के राजा ने आज्ञा दी कि जिन याजकों को तुम उस देश से ले आये उन में से एक को वहां पहुंचा दो और वे वहां जाकर रहें और वह उन को उस देश के २८ देवता की रीति सिखाए। सो जो याजक शोमरोन से निकाले गये थे उन में से एक जाकर बेतेल में रहने लगा और उन को सिखाने लगा कि यहोवा का भय किस रीति मानना चाहिये। तौभी एक एक जाति के लोगों २९ ने अपने अपने निज देवता बनाकर अपने अपने बसाये हुए नगर में उन ऊंचे स्थानों के भवनों में रक्खे जो शोमरोनियों ने बनाये थे। बाबेल के मनुष्यों ने तो ३० सुक्कोतबनोत को कूत के मनुष्यों ने नेर्गल को हमात के मनुष्यों ने अशीमा को, और अव्वियों ने निभज और ३१ तर्त्ताक को स्थापन किया और सपर्वैमी लोग अपने बेटों को अद्रम्मेलेक और अनम्मेलेक नाम सपर्वैम के देवताओं के लिये होम करके चढ़ाने लगे। यों वे यहोवा का ३२ भय मानते तो थे पर सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के याजक भी ठहरा देते थे जो ऊंचे स्थानों के भवनों में उन के लिये बलि करते थे। वे यहोवा का भय ३३ मानते तो थे पर उन जातियों की रीति पर जिन के बीच से वे निकाले गये थे अपने अपने देवताओं की भी उपासना करते रहे। आज के दिन लों वे अपनी पहिली ३४ रीतियों पर चलते हैं वे यहोवा का भय नहीं मानते और न तो अपनी विधियों और नियमों पर और न उस व्यवस्था और आज्ञा के अनुसार चलते हैं जो यहोवा ने याकूब की सन्तान को दी थी जिस का नाम उस ने इस्राएल रक्खा था। उन से यहोवा ने वाचा बांधकर ३५ उन्हें यह आज्ञा दी थी कि तुम पराये देवताओं का भय न मानना न उन्हें दण्डवत् करना न उन की उपासना करना न उन को बलि चढ़ाना। परन्तु यहोवा जो तुम को ३६ बड़े बल और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मिस्र देश से निकाल ले आया तुम उसी का भय मानना उसी को दण्डवत् करना और उसी को बलि चढ़ाना। और जो जो ३७ विधियां और नियम और जो व्यवस्था और आज्ञाएं उस ने तुम्हारे लिये लिखीं उन्हें तुम सदा चौकसी से मानते रहो और पराये देवताओं का भय न मानना। और जो ३८ वाचा मैं ने तुम्हारे साथ बांधी है उसे न बिसराना और पराये देवताओं का भय न मानना। केवल अपने परमे- ३९ श्वर यहोवा का भय मानना वही तुम को तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा। तौभी उन्हों ने न माना पर ४० वे अपनी पहिली रीति के अनुसार करते रहे। सो वे जातियां ४१ यहोवा का भय मानती तो थीं और अपनी खुदी हुई मूरतों की उपासना भी करते रहे और जैसे वे[२] करते थे वैसे ही उन के बेटे पोते भी आज के दिन लों करते हैं॥

(हिजकिय्याह के राज्य का आरम्भ)

१८. एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे के तीसरे बरस में यहूदा के राजा आहाज का पुत्र हिजकिय्याह राजा हुआ। जब वह राज्य १

(१) मूल में उन्हों ने अपने को बेच डाला।

(२) मूल में उन के पुरखा।

करने लगा तब पचास बरस का था और उनतीस बरस लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अबी था जो जकर्याह की बेटी थी। ३ जैसे उस के मूलपुरुष दाऊद ने वही किया था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसा ही उस ने भी किया। ४ उस ने ऊंचे स्थान गिरा दिये लाठों को तोड़ दिया अशेरा को काट डाला और पीतल का जो सांप मूसा ने बनाया था उस को उस ने इस कारण चूर चूर कर दिया कि उन दिनों तक इस्राएली उस के लिये धूप जलाते थे और उस ने उस का नाम नहुशतान[१] रक्खा। ५ वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता था और उस के पीछे यहूदा के सब राजाओं में कोई उस के बराबर न हुआ और न उस से पहिले भी ऐसा कोई हुआ था। ६ और वह यहोवा से लगा रहा और उस के पीछे चलना न छोड़ा और जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दी थीं उन का वह पालन करता रहा। ७ सो यहोवा उस के संग रहा और जहां कहीं वह जाता था वहां उस का काम सुफल होता था और उस ने अश्शूर के राजा से बलवा करके उस की अधीनता छोड़ दी। ८ उस ने आस पास के देश समेत अज्जा लों क्या पहरुओं के गुम्मट क्या गढ़वाले नगर के सब पलिश्तियों को मार लिया॥

९ राजा हिजकिय्याह के चौथे बरस में जो एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे का सातवां बरस था अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने शोमरोन पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया। १० और तीन बरस के बीतने पर उन्हों ने उस को ले लिया सो हिजकिय्याह के छठवें बरस में जो इस्राएल के राजा होशे का नौवां बरस था शोमरोन ले लिया गया। ११ तब अश्शूर का राजा इस्राएल को बंधुआ करके अश्शूर में ले गया और हलह में और हाबोर और गोजान नदियों के पास और मादियों के नगरों में बसा दिया। १२ इस का कारण यह था कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानी बरन उस की वाचा को तोड़ा और जितनी आज्ञाएं यहोवा के दास मूसा ने दी थीं उन को टाला और न उन को सुना न उन के अनुसार किया॥

(सन्हेरीब की चढ़ाई और उस की सेना का विनाश)

१३ हिजकिय्याह राजा के चौदहवें बरस में अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उन को ले लिया। १४ तब यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा के पास लाकीश को कहला भेजा कि मुझ से अपराध हुआ मेरे पास से लौट जा और जो भार तू मुझ पर डाले उस को मैं उठाऊंगा। सो अश्शूर के राजा ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिये तीन सौ किक्कार चांदी और तीस किक्कार सोना ठहरा दिया। १५ तब जितनी चांदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में मिली उस सब को हिजकिय्याह ने उसे दे दिया। १६ उस समय हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के किवाड़ों से और उन खंभों से भी जिन पर यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सोना मढ़ाया था सोने को छीलकर अश्शूर के राजा को दे दिया। १७ तौभी अश्शूर के राजा ने तर्त्तान रबसारीस और रबशाके को बड़ी सेना देकर लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया सो वे यरूशलेम को गये और वहां पहुंचकर उपरले पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़े हुए। १८ और जब उन्हों ने राजा को पुकारा तब हिजकिय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मन्त्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेहारा था ये तीनों उन के पास बाहर निकल गये। १९ रबशाके ने उन से कहा हिजकिय्याह से कहो कि महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर का राजा यों कहता है कि तू यह क्या भरोसा करता है। २० तू जो कहता है कि मेरे यहां युद्ध के लिये युक्ति और पराक्रम है सो केवल बात ही बात है तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है। २१ सुन तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उस के हाथ में चुभकर छेदेगा। मिस्र का राजा फिरौन अपने सब भरोसा रखनेहारों के लिये ऐसा ही होता है। २२ फिर यदि तुम मुझ से कहो कि हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है तो क्या वह वही नहीं है जिस के ऊंचे स्थानों और वेदियों को हिजकिय्याह ने दूर करके यहूदा और यरूशलेम से कहा कि तुम इसी वेदी के साम्हने जो यरूशलेम में है दण्डवत् करना। २३ सो अब मेरे स्वामी अश्शूर के राजा के पास कुछ बंधक रख तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूंगा क्या तू उन पर सवार चढ़ा सकेगा कि नहीं। २४ फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्म्मचारी का भी कहा नकारके[२] क्योंकर रथों और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखता है। २५ क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे इस स्थान को उजाड़ने के लिये चढ़ाई की है यहोवा ने मुझ से कहा है कि उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे। २६ तब हिलकिय्याह के पुत्र एल्याकीम और शेब्ना और योआह ने रबशाके से कहा अपने दासों से अरामी भाषा में बातें कर क्योंकि हम उसे

(१) अर्थात् पीतल का टुकड़ा।

(२) मूल में कर्म्मचारियों में से एक गवर्नर का भी मुंह फेर के।

समझते हैं और हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर
२७ बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर। रबशाके ने उन से कहा क्या मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी ही के वा तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं इसलिये कि तुम्हारे संग उन को भी अपनी विष्ठा खाना
२८ और अपना मूत्र पीना पड़े। तब रबशाके ने खड़ा हो यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा महाराजाधिराज
२९ अर्थात् अश्शूर के राजा की बात सुनो। राजा यों कहता है कि हिजकिय्याह तुम को भुलाने न पाए क्योंकि वह
३० तुम्हें मेरे हाथ से बचा न सकेगा। और वह तुम से यह कहकर यहोवा पर भी भरोसा कराने न पाए कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर के राजा
३१ के वश में न पड़ेगा। हिजकिय्याह की मत सुनो अश्शूर का राजा कहता है कि भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो[1] और मेरे पास निकल आओ तब अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खाओ और अपने अपने कुण्ड का
३२ पानी पीओ। पीछे मैं आकर तुम को ऐसे देश में ले जाऊंगा जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाखमधु का देश रोटी और दाखबारियों का देश जलपाइयों और मधु का देश है वहां तुम मरोगे नहीं जीते रहोगे सो जब हिजकिय्याह यह कह कर तुम को बहकाए कि यहोवा
३३ हम को बचाएगा तब उस की न सुनना। क्या और जातियों के देवताओं ने अपने अपने देश को अश्शूर के
३४ राजा के हाथ से कभी बचाया है। हमात और अर्पाद के देवता कहां रहे सपर्वैम हेना और इव्वा के देवता कहां रहे क्या उन्हों ने शोमरोन को मेरे हाथ से बचाया है।
३५ देश देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है जिस ने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो फिर क्या यहोवा
३६ यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा। पर सब लोग चुप रहे और उस के उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा
३७ की ऐसी आज्ञा थी कि उस को उत्तर न देना। तब हिजकिय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मन्त्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेहारा था इन्हों ने हिजकिय्याह के पास वस्त्र फाड़े हुए जाकर रबशाके की बातें कह सुनाईं॥

१९. जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना तब वह अपने वस्त्र फाड़ टाट ओढ़कर
२ यहोवा के भवन में गया। और उस ने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना मन्त्री को और याजकों के पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे आमोस
३ के पुत्र यशायाह नबी के पास भेज दिया। उन्हों ने उस से कहा हिजकिय्याह यों कहता है कि आज का दिन संकट और उलहने और निन्दा का दिन है बच्चे जन्मने पर हुए
४ पर जननी को जनने का बल न रहा। क्या जानिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा रबशाके की सब बातें सुने जिसे उस के स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उन्हें दपटे सो तू इन बचे हुओं के लिये जो रह गये हैं प्रार्थना कर[2]।
५ सो हिजकिय्याह राजा के कर्म्मचारी
६ यशायाह के पास आये। तब यशायाह ने उन से कहा अपने स्वामी से कहो कि यहोवा यों कहता है कि जो वचन तू ने सुने हैं जिन के द्वारा अश्शूर के राजा के जनों ने
७ मेरी निन्दा की है उन के कारण मत डर। सुन मैं उस के मन में प्रेरणा करूंगा कि वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाय और मैं उस को उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा॥

८ सो रबशाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया क्योंकि उस ने सुना था कि वह
९ लाकीश के पास से उठ गया है। और जब उस ने कूश के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना कि वह मुझ से लड़ने को निकला है तब उस ने हिजकिय्याह के पास दूतों को
१० यह कहकर भेजा कि, तुम यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यों कहना कि तेरा परमेश्वर जिस का तू भरोसा करता है यह कह कर तुझे धोखा न देने पाए कि यरूशलेम
११ अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा। देख तू ने तो सुना है कि अश्शूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा किया है कि उन्हें सत्यानाश ही किया है फिर क्या तू बचेगा।
१२ गोजान और हारान और रेसेप और तलस्सार में रहनेहारे एदेनी जिन जातियों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया क्या उन में से किसी जाति के देवताओं ने उस को बचा लिया।
१३ हमात का राजा और अर्पाद का राजा और सपर्वैम नगर का राजा और हेना और इव्वा के राजा ये सब कहां रहे।
१४ इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा तब यहोवा के भवन में जाकर उस को यहोवा के साम्हने
१५ फैला दिया। और यहोवा से यह प्रार्थना की कि हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा हे करूबों पर बिराजनेहारे पृथिवी के सारे राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है आकाश
१६ और पृथिवी को तू ही ने बनाया है। हे यहोवा कान लगाकर सुन हे यहोवा आंख खोलकर देख और सन्हेरीब

(१) मूल में मेरे साथ आशीर्वाद करो।

(२) मूल में प्राथना उठा।

के वचनों को सुन ले जो उस ने जीवते परमेश्वर
१७ को निन्दा करने को कहला भेजे हैं। हे यहोवा सच तो
है कि अश्शूर के राजाओं ने जातियों को और उन के
१८ देशों को उजाड़ा है, और उन के देवताओं को आग में
झोंका है क्योंकि वे ईश्वर न थे वे मनुष्यों के बनाये हुए
काठ और पत्थर ही के थे इस कारण वे उन को नाश
१९ करने पाये। सो अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू हमें
उस के हाथ से बचा कि पृथिवी के राज्य राज्य के लोग
जान लें कि केवल तू ही यहोवा है॥

२० तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास
यह कहला भेजा कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों
कहता है कि जो प्रार्थना तू ने अश्शूर के राजा सन्हेरीब
२१ के विषय मुझ से की उसे मैं ने सुना है। उस के विषय
में यहोवा ने यह वचन कहा है कि सिय्योन की कुमारी
कन्या तुझे तुच्छ जानती और तुझे ठट्ठों में उड़ाती है
२२ यरूशलेम की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है। तू ने जो
नामधराई और निन्दा की है सो किस की की है और तू
जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया[१] है सो किस के
विरुद्ध किया है इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध तू ने किया है।
२३ अपने दूतों के द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा
है कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर बरन
लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूं सो मैं उस के ऊंचे
ऊंचे देवदारुओं और अच्छे अच्छे सनोवरों को काट
डालूंगा और उस में जो सब से ऊंचा टिकने का स्थान हो
उस में और उस के वन में की फलदाई बारियों में घुसूंगा।
२४ मैं ने तो खुदवाकर परदेश का पानी पिया और मिस्र की
२५ नहरों में पांव धरते ही उन्हें सुखा डालूंगा। क्या तू ने
नहीं सुना कि प्राचीनकाल से मैं ने यही ठहराया और
अगले दिनों से इस की तैयारी की थी सो अब मैं ने यह
पूरा भी किया है कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही
२६ खण्डहर कर दे। इसी कारण उन में के रहनेहारों का
बल घट गया वे विस्मित और लज्जित हुए वे मैदान के
छोटे छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर की घास और
ऐसे अनाज के समान हो गये जो बढ़ने से पहिले सूख
२७ जाता है। मैं तो तेरा बैठा रहना और कूच करना और
लौट आना जानता हूं और यह भी कि तू मुझ पर अपना
२८ क्रोध भड़काता है। इस कारण कि तू मुझ पर अपना
क्रोध भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में
पड़ी हैं मैं तेरी नाक में अपनी नकेल डालकर और तेरे
मुंह में अपना लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू आया है
उसी से तुझे लौटा दूंगा। और तेरे लिये यह चिन्ह होगा
२९ कि इस बरस तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगे
और दूसरे बरस उसे जो उत्पन्न हो सो खाओगे और
तीसरे बरस बीज बोने और उसे लवने पाओगे दाख की
३० बारियां लगाने और उन का फल खाने पाओगे। और
यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे[२]
३१ और फलेंगे भी। क्योंकि यरूशलेम में से बचे हुए और
सिय्योन पर्वत के भागे हुए लोग निकलेंगे। यहोवा
३२ अपनी जलन के कारण यह काम करेगा। सो यहोवा
अश्शूर के राजा के विषय में यों कहता कि वह इस
नगर में प्रवेश करने बरन इस पर एक तीर भी मारने
न पाएगा और न वह ढाल लेकर इस के साम्हने आने
३३ वा इस के विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा। जिस मार्ग से
वह आया उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर
में प्रवेश न करने पाएगा यहोवा की यही वाणी है।
३४ और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त
इस नगर की रक्षा करके बचाऊंगा॥

३५ उसी रात में क्या हुआ कि यहोवा के दूत ने निक-
लकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार
पुरुषों को मारा और भोर को जब लोग सबेरे उठे तब
३६ क्या देखा कि लोथ ही लोथ पड़ी हैं। सो अश्शूर का
राजा सन्हेरीब चल दिया और लौटकर नीनवे में रहने
३७ लगा। वहां वह अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में दण्डवत्
कर रहा था कि अद्रम्मेलेक और सरेसेर ने उस को तल-
वार से मारा और अरारात देश में भाग गये और उसी
का पुत्र एसर्हद्दोन उस के स्थान पर राज्य करने लगा॥

(हिजकिय्याह का मृत्यु से बचना)

२०. उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरा चाहता था और
आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उस के पास जाकर कहा
यहोवा यों कहता है कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा
२ देनी हो सो दे क्योंकि तू नहीं बचेगा मर जाएगा। तब
उस ने भीत की ओर मुंह फेर यहोवा से प्रार्थना करके
३ कहा, हे यहोवा मैं बिनती करता हूं स्मरण कर कि मैं
सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर[३]
चलता आया हूं और जो तुझे अच्छा लगता है सोई मैं
करता आया हूं तब हिजकिय्याह बिलक बिलक रोया।
४ यशायाह नगर के बीच में जाने न पाया कि
५ यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा कि, लौटकर

(१) मूल में अपनी आंखें ऊपर की ओर उठाईं।

(२) मूल में नीचे की ओर जड़।
(३) मूल में तेरे साम्हने।

मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं सुन मैं तुझे चंगा करने पर हूं परसों तू यहोवा के भवन में जाने पाएगा। ६ और मैं तेरी आयु पन्द्रह बरस और बढ़ा दूंगा और अश्शूर के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद ७ के निमित्त इस नगर की रक्षा करूंगा। तब यशायाह ने कहा अंजीरों की एक टिकिया लो जब उन्हों ने उसे लेकर ८ फोड़े पर बांधा तब वह चंगा हो गया। हिजकिय्याह ने तो यशायाह से पूछा था यहोवा जो मुझे ऐसा चंगा करेगा कि मैं परसों यहोवा के भवन को जा सकूंगा इस ९ का क्या चिन्ह होगा। यशायाह ने कहा था यहोवा जो अपने इस कहे हुए बचन को पूरा करेगा इस बात का तेरे लिये यहोवा की ओर से यह चिन्ह होगा क्या धूपघड़ी की छाया दस अंश बढ़ जाए वा दस अंश लौट जाए। १० हिजकिय्याह ने कहा छाया का दस अंश आगे बढ़ना तो हलकी बात है सो ऐसा न होए छाया दस अंश पीछे ११ लौट जाए। तब यशायाह नबी ने यहोवा को पुकारा और आहाज की धूपघड़ी की छाया जो दस अंश ढल चुकी थी यहोवा ने उस को पीछे की ओर लौटा दिया॥

(हिजकिय्याह का गर्व्व और उस का दण्ड)

१२ उस समय बलदान का पुत्र बरोदकबलदान जो बाबेल का राजा था उस ने हिजकिय्याह के रोगी होने की चर्चा सुनकर उस के पास पत्री और भेंट भेजी। १३ उन के लाने हारों की मानकर हिजकिय्याह ने उन को अपने अनमोल पदार्थों का सारा भण्डार और चान्दी और सोना और सुगंध द्रव्य और उत्तम तेल और अपने हथियारों का सारा घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं सो सब दिखाईं हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई १४ हो। तब यशायाह नबी ने हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा वे मनुष्य क्या कह गये और कहां से तेरे पास आये थे हिजकिय्याह ने कहा वे तो दूर देश से १५ अर्थात् बाबेल से आये थे। फिर उस ने पूछा तेरे भवन में उन्हों ने क्या क्या देखा है हिजकिय्याह ने कहा जो कुछ मेरे भवन में है सो सब उन्हों ने देखा मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैं ने उन्हें न दिखाई हो। १६ यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा यहोवा का बचन सुन १७ ले। ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रक्खा हुआ आज के दिन लों भण्डारों में है वो सब बाबेल को उठ जाएगा यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। १८ और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों उन में से भी कितनों को वे बन्धुआई में ले जाएंगे और वे खोजे बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे। १९ हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा यहोवा का बचन जो तू ने कहा है सो भला ही है फिर उस ने कहा क्या मेरे दिनों में शांति और सच्चाई बनी न २० रहेंगी। हिजकिय्याह के और सब काम और उस की सारी वीरता और किस रीति उस ने एक पोखरा और नाली खुदवाकर नगर में पानी पहुंचा दिया यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। २१ निदान हिजकिय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया और उस का पुत्र मनश्शे उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(मनश्शे का राज्य)

२१.

जब मनश्शे राज्य करने लगा तब बारह बरस का था और यरूशलेम में पचपन बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम हेप्सीबा था। २ उस ने उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है। ३ उस ने उन ऊंचे स्थानों को जिन को उस के पिता हिजकिय्याह ने नाश किया था फिर बनाया और इस्राएल के राजा अहाब की नाईं बाल के लिये वेदियां और एक अशेरा बनवाई और आकाश के सारे गण को दण्डवत् करता और उन की उपासना करता रहा। ४ और उस ने यहोवा के उस भवन में वेदियां बनाईं जिस के विषय यहोवा ने कहा था कि यरूशलेम में मैं अपना नाम रक्खूंगा। ५ बरन यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में भी उस ने आकाश के सारे गण के लिये वेदियां बनाईं। ६ फिर उस ने अपने बेटे को आग में होम करके चढ़ाया और शुभ अशुभ मुहूर्त्तों को मानता और टोना करता और ओझों और भूत सिद्धिवालों से व्यवहार करता था बरन उस ने ऐसे बहुत से काम किये जो यहोवा के लेखे बुरे हैं और जिन से वह रिसियाता है। ७ और अशेरा की जो मूरत उस ने खुदवाई उस को उस ने उस भवन में स्थापन किया जिस के विषय यहोवा ने दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान से कहा था कि इस भवन में और यरूशलेम में जिस को मैं ने इस्राएल के सब गोत्रों में से चुन लिया है मैं सदा लों अपना नाम रक्खूंगा। ८ और यदि वे मेरी सब आज्ञाओं के और मेरे दास मूसा की दी हुई सारी व्यवस्था के अनुसार करने की चौकसी करें तो मैं ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने इस्राएल के पुरखाओं को दिया था

९ उस से वे फिर निकलकर मारे मारे फिरेंगे। पर उन्हों ने न माना बरन मनश्शे ने उन को यहां लों भटका दिया कि उन्हों ने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई की जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से विनाश किया था।
१० सो यहोवा ने अपने दास नबियों के द्वारा कहा कि,
११ यहूदा के राजा मनश्शे ने जो ये घिनौने काम किये और जितनी बुराइयां एमोरियों ने जो उस से पहिले थे की थीं उन से भी अधिक बुराइयां कीं और यहूदियों से अपनी बनाई हुई मूरतों की पूजा कराके उन्हें पाप में
१२ फंसाया है। इस कारण इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं यरूशलेम और यहूदा पर ऐसी विपत्ति डाला चाहता हूं कि जो कोई उस का समाचार
१३ सुने वह बड़े सन्नाटे में आ जाएगा[१]। और जो मापने की डोरी मैं ने शोमरोन पर डाली और जो साहुल मैं ने अहाब के घराने पर लटकाया सोई यरूशलेम पर डालूंगा और मैं यरूशलेम को ऐसा पोंछूंगा जैसे कोई थाली को
१४ पोंछता है वह उसे पोंछकर उलट देता है। और मैं अपने निज भाग के बचे हुओं को त्यागकर शत्रुओं के हाथ कर दूंगा और वे अपने सब शत्रुओं की लूट और
१५ धन हो जाएंगे। इस का कारण यह है कि जब से उन के पुरखा मिस्र से निकले तब से आज के दिन लों वे वह काम करके जो मेरे लेखे बुरा है मुझे रिस दिलाते
१६ आते हैं। मनश्शे ने तो न केवल वह काम कराके जो यहोवा के लेखे बुरा है यहूदियों से पाप कराया बरन निर्दोषों का खून बहुत किया यहां लों कि उस ने यरूशलेम
१७ को एक सिरे से दूसरे सिरे लों खून से भर दिया। मनश्शे के और सब काम जो उस ने किये और जो पाप उस ने किया यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की
१८ पुस्तक में नहीं लिखा है। निदान मनश्शे अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे उस के भवन की बारी में जो उज्जा की बारी कहावती थी मिट्टी दी गई और उस का पुत्र आमोन उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(आमोन का राज्य)

१९ जब आमोन राज्य करने लगा तब वह बाईस बरस का था और यरूशलेम में दो बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम मशुल्लेमेत था जो योत्बा-
२० वासी हारूस की बेटी थी। और उस ने अपने पिता मनश्शे की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा
२१ है। और वह अपने पिता की सी सारी चाल चला और जिन मूरतों की उपासना उस का पिता करता था उन की वह भी उपासना करता और उन्हें दण्डवत्
२२ करता था। और उस ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया और यहोवा के मार्ग पर न
२३ चला। और आमोन के कर्म्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी
२४ करके राजा को उसी के भवन में मार डाला। तब साधारण लोगों ने उन सभों को मार डाला जिन्हों ने राजा आमोन से द्रोह की गोष्ठी की थी और लोगों ने उस के पुत्र योशिय्याह को उस के स्थान पर राजा
२५ किया। आमोन के और काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे
२६ हैं। उसे भी उज्जा की बारी में उस की निज कबर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र योशिय्याह उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(योशिय्याह के राज्य में व्यवस्था की पुस्तक का मिलना)

२२. जब योशिय्याह राज्य करने लगा तब आठ बरस का था और यरूशलेम में एकतीस बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यदीदा था जो बोस्कतवासी अदाया की
२ बेटी थी। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है और जिस मार्ग पर उस का मूलपुरुष दाऊद चला ठीक उसी पर वह भी चला और उस से न तो दहिनी ओर मुड़ा और न बाईं ओर॥

३ अपने राज्य के अठारहवें बरस में राजा योशिय्याह ने असल्याह के पुत्र शापान मंत्री को जो मशुल्लाम का पोता था यहोवा के भवन में यह कहकर भेजा कि,
४ हिलकिय्याह महायाजक के पास जाकर कह कि जो चान्दी यहोवा के भवन में लाई गई है और डेवढ़ीदारों ने
५ प्रजा से इकट्ठी की है उस को जोड़कर, उन काम करानेहारों को सौंप दे जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिये हैं फिर वे उस को यहोवा के भवन में काम करनेहारे कारीगरों को दें इसलिये कि उस में जो कुछ टूटा फूटा हो
६ उस की वे मरम्मत करें, अर्थात् बढ़इयों राजों और संगतराशों को दें और भवन की मरम्मत के लिये लकड़ी
७ और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने में लगाएं। पर जिन के हाथ में वह चान्दी सौंपी गई उन से लेखा न लिया
८ गया क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे। और हिलकिय्याह महायाजक ने शापान मंत्री से कहा मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है तब हिलकिय्याह ने शापान को वह पुस्तक दी और वह
९ उसे पढ़ने लगा। तब शापान मंत्री ने राजा के पास लौटकर यह सन्देश दिया कि जो चान्दी भवन में मिली उसे तेरे कर्म्मचारियों ने थैलियों में डाल कर उन को सौंप

(१) मूल में सब के दोनों कान सनसना जाएंगे।

१० दिया जो यहोवा के भवन के काम करानेहारे हैं। फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया कि हिलकिय्याह याजक ने मुझे एक पुस्तक दी है तब शापान
११ उसे राजा को पढ़कर सुनाने लगा। व्यवस्था की उस पुस्तक की बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े।
१२ फिर उस ने हिलकिय्याह याजक शापान के पुत्र अहीकाम मीकायाह के पुत्र अकबोर शापान मंत्री और असाया
१३ नाम अपने एक कर्म्मचारी को आज्ञा दी कि, यह पुस्तक जो मिली है उस की बातों के विषय तुम जाकर मेरी और प्रजा की और सारे यहूदियों की ओर से यहोवा से पूछो क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इस कारण भड़की है कि हमारे पुरखाओं ने इस पुस्तक की बातें न मानी थीं और जो कुछ हमारे लिये लिखा
१४ है उस को न माना था। सो हिलकिय्याह याजक और अहीकाम अकबोर शापान और असाया ने हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से बातें कीं वह तो उस शल्लूम की स्त्री थी जो तिकवा का पुत्र और हर्हस का पोता और वस्त्रों का रखवाला था और वह स्त्री यरूशलेम के नये
१५ टोले में रहती थी। उस ने उन से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जिस पुरुष ने तुम को
१६ मेरे पास भेजा उस से यह कहो कि, यहोवा यों कहता है कि सुन जिस पुस्तक को यहूदा के राजा ने पढ़ा है उस की सब बातों के अनुसार मैं इस स्थान और इस के
१७ निवासियों पर विपत्ति डाला चाहता हूं। उन लोगों ने मुझे त्याग करके पराये देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई है इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर
१८ भड़केगी और फिर शांत न होगी। पर यहूदा का राजा जिस ने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेज दिया उस से तुम यों कहो कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है
१९ इसलिये कि तू वे बातें सुनकर, दीन हुआ और मेरी वे बातें सुनकर कि इस स्थान और इस के निवासियों को देखकर लोग चकित होंगे और स्राप दिया करेंगे तू ने यहोवा के साम्हने अपना सिर नवाया और अपने वस्त्र फाड़कर मेरे साम्हने रोया है इस कारण मैं ने भी तेरी
२० सुनी है यहोवा की यही वाणी है। इसलिये सुन मैं ऐसा करूंगा कि तू अपने पुरखाओं के संग मिल जाएगा और तू शांति से अपनी कबर को पहुंचाया जाएगा और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर डाला चाहता हूं उस में से तुझे अपनी आंखों से कुछ देखना न पड़ेगा। तब उन्हों ने लौटकर राजा को यही सन्देश दिया॥

(योशिय्याह का मूर्त्तिपूजा को बन्द करना)

२३. राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियों को अपने पास इकट्ठा
२ बुलवा भेजा। और राजा यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों और याजकों और नबियों वरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन को गया तब उस ने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी उस की सारी बातें उन को पढ़कर
३ सुनाईं। तब राजा ने खंभे के पास खड़ा होकर यहोवा से इस आशय की वाचा बांधी कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा और अपने सारे मन और सारे जीव से उस की आज्ञाएं चितौनियां और विधियां पाला करूंगा और इस वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूंगा। और सारी प्रजा वाचा में भागी[१] हुई। तब राजा
४ ने हिलकिय्याह महायाजक और उस के नीचे के याजकों और डेवढ़ीदारों को आज्ञा दी कि जितने पात्र बाल और अशेरा और आकाश के सारे गण के लिये बने हैं उन सभों को यहोवा के मन्दिर में से निकाल ले आओ तब उस ने उन को यरूशलेम के बाहर किद्रोन के खेतों में
५ फूंककर उन की राख बेतेल को पहुंचा दी। और जिन पुजारियों को यहूदा के राजाओं ने यहूदा के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यरूशलेम के आस पास के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था उन को और जो बाल और सूर्य्य चन्द्रमा राशिचक्र और आकाश के सारे गण को धूप जलाते थे उन को भी राजा ने दूर कर दिया।
६ और वह अशेरा को यहोवा के भवन में से निकालकर यरूशलेम के बाहर किद्रोन नाले में लिवा ले गया और वहीं उस को फूंक दिया और पीसकर बुकनी कर दिया तब वह बुकनी साधारण लोगों की कबरों पर फेंक दी।
७ फिर पुरुषगामियों के घर जो यहोवा के भवन में थे जहां स्त्रियां अशेरा के लिये पर्दे बिना करती थीं उन को उस ने
८ ढा दिया। और उस ने यहूदा के सब नगरों से याजकों को बुलवाकर गेबा से बेर्शेबा लों के उन ऊंचे स्थानों को जहां उन याजकों ने धूप जलाया था अशुद्ध कर दिया और फाटकों में के ऊंचे स्थान अर्थात् जो स्थान नगर के यहोशू नाम हाकिम के फाटक पर थे और नगर के फाटक के भीतर जानेवाले की बाईं ओर थे उन को उस ने ढा
९ दिया। तौभी ऊंचे स्थानों के याजक यरूशलेम में यहोवा की वेदी के पास न आये वे अखमीरी रोटी अपने भाइयों
१० के साथ खाते थे। फिर उस ने तोपेत जो हिन्नोमवंशियों की तराई में था अशुद्ध कर दिया इसलिये कि कोई

(१) मूल में खड़ी।

अपने बेटे वा बेटी को मोलेक के लिये आग में होम कर
११ के न चढ़ाए। और जो घोड़े यहूदा के राजाओं ने सूर्य्य
को अर्पण करके यहोवा के भवन के द्वार पर नतन्मेलेक
नाम खोजे की बाहर की कोठरी में रक्खे थे उन को उस ने
दूर किया और सूर्य्य के रथों को आग में फूंक दिया।
१२ और आहाज की अटारी की छत पर जो वेदियां यहूदा के
राजाओं की बनाई हुई थीं और जो वेदियां मनश्शे ने
यहोवा के भवन के दोनो आंगनों में बनाई थीं उन को राजा
ने ढाकर पीस डाला और उन की बुकनी किद्रोन नाले में
१३ फेंक दी। और जो ऊंचे स्थान इस्राएल के राजा
सुलैमान ने यरूशलेम की पूरब ओर और बिकारी नाम
पहाड़ी की दक्खिन अलंग अश्तोरेत नाम सीदोनियों की
घिनौनी देवी और कमोश नाम मोआबियों के घिनौने
देवता और मिल्कोम नाम अम्मोनियों के घिनौने देवता
के लिये बनवाये थे उन को राजा ने अशुद्ध कर दिया।
१४ और उस ने लाठों को तोड़ दिया और अशेरों को काट
डाला और उन के स्थान मनुष्यों की हड्डियों से भर दिये।
१५ फिर बेतेल में जो वेदी थी और जो ऊंचा स्थान नबात
के पुत्र यारोबाम ने बनाया था जिस ने इस्राएल से पाप
कराया था उस वेदी और उस ऊंचे स्थान को उस ने ढा
दिया और ऊंचे स्थान को फूंककर बुकनी कर दिया और
१६ अशेरा को फूंक दिया। और योशिय्याह ने फिरके वहां
के पहाड़ पर की कबरों को देखा सो उस ने भेजकर उन
कबरों से हड्डियां निकलवा दीं और वेदी पर जलवाकर
उस को अशुद्ध किया यह यहोवा के उस वचन के अनुसार
हुआ जो परमेश्वर के उस जन ने पुकारकर कहा था जिस
१७ ने इन्हीं बातों की चर्चा पुकारके की थी। तब उस ने
पूछा जो खंभा मुझे देख पड़ता है वह क्या है तब
नगर के लोगों ने उस से कहा वह परमेश्वर के उस जन
की कबर है जिस ने यहूदा से आकर इसी काम की
चर्चा पुकारके की जो तू ने बेतेल की वेदी पर किया है।
१८ तब उस ने कहा उस को छोड़ दो उस की हड्डियों को
कोई न हटाए सो उन्हों ने उस की हड्डियां उस नबी की
हड्डियों के संग जो शोमरोन से आया था रहने दीं।
१९ फिर ऊंचे स्थान के जितने भवन शोमरोन के नगरों में
थे जिन को इस्राएल के राजाओं ने बनाकर यहोवा को
रिस दिलाई थी उन सभों को योशिय्याह ने गिरा दिया
और जैसा जैसा उस ने बेतेल में किया था वैसा वैसा उन
२० से भी किया। और उन ऊंचे स्थानों के जितने याजक
वहां थे उन सभों को उस ने उन्हीं वेदियों पर बलि किया
और उन पर मनुष्यों की हड्डियां जलाकर यरूशलेम को
लौट गया॥

(योशिय्याह का उत्तर चरित्र)

और राजा ने सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी कि २१
इस वाचा की पुस्तक में जो कुछ लिखा है उस के
अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह का पर्ब्ब
मानो। निश्चय ऐसा फसह न तो उन न्यायियों के दिनों में २२
माना गया था जो इस्राएल का न्याय करते थे और न
इस्राएल वा यहूदा के राजाओं के सारे दिनों में माना गया
था। राजा योशिय्याह के अठारहवें बरस में यहोवा के लिये २३
यरूशलेम में यह फसह माना गया। फिर ओझे भूत- २४
सिद्धिवाले गृहदेवता मूरतें और जितनी घिनौनी वस्तुएं
यहूदा देश और यरूशलेम में जहां कहीं देख पड़ीं उन
सभों को योशिय्याह ने इस मनसा से नाश किया कि
व्यवस्था की जो बातें उस पुस्तक में लिखी थीं जो हिल-
किय्याह याजक को यहोवा के भवन में मिली थी उन
को वह पूरी करे। और उस के तुल्य न तो उस से पहिले २५
कोई ऐसा राजा हुआ और न उस के पीछे ऐसा कोई
राजा उठा जो मूसा की सारी व्यवस्था के अनुसार अपने
सारे मन और सारे जीव और सारी शक्ति से यहोवा की
ओर फिरा हो। तौभी यहोवा का भड़का हुआ बड़ा २६
कोप शान्त न हुआ जो इस कारण से यहूदा पर भड़का
हुआ था कि मनश्शे ने यहोवा को रिस पर रिस दिलाई
थी। सो यहोवा ने कहा था जैसे मैं ने इस्राएल को २७
अपने साम्हने से दूर किया वैसे ही यहूदा को भी दूर
करूंगा और इस यरूशलेम नगर से जिसे मैं ने चुना और
इस भवन से जिस के विषय मैं ने कहा कि यह मेरे नाम का
निवास होगा मैं हाथ उठाऊंगा। योशिय्याह के और सब २८
काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के राजाओं के
इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। उस के दिनों में २९
फिरौन नको नाम मिस्र का राजा अश्शूर के राजा के विरुद्ध
परात महानद लों गया सो योशिय्याह राजा उस का
साम्हना करने को गया और उस ने उस को मगिद्दो में
देखकर मार डाला। तब उस के कर्म्मचारियों ने उस की ३०
लोथ एक रथ पर रख मगिद्दो से ले जाकर यरूशलेम को
पहुंचाई और उस की निज कबर में रख दी। तब साधारण
लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उस का
अभिषेक करके उस के पिता के स्थान पर राजा किया॥

(यहोआहाज का राज्य)

जब यहोआहाज राज्य करने लगा तब वह तेईस ३१
बरस का था और तीन महीने लों यरूशलेम में राज्य
करता रहा और उस की माता का नाम हमूतल था जो
लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी थी। उस ने ठीक अपने ३२
पुरखाओं की नाईं वही किया जो यहोवा के लेखे बुरा

३३ है। उस को फिरौन-नको ने हमात देश के रिबला नगर में बांध रक्खा इसलिये कि वह यरूशलेम में राज्य न करने पाए फिर उस ने देश पर सौ किक्कार चान्दी और
३४ किक्कार भर सोना जुर्माना किया। तब फिरौन-नको ने योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम को उस के पिता के स्थान पर राजा किया और उस का नाम बदलकर यहोयाकीम रक्खा और यहोआहाज को ले गया सो यहोआहाज
३५ मिस्र में जाकर वहीं मर गया। यहोयाकीम ने फिरौन को वह चान्दी और सोना तो दिया पर देश पर इसलिये कर लगाया कि फिरौन की आज्ञा के अनुसार उसे दे सके अर्थात् देश के सब लोगों में से जितना जिस पर लगान लगा उतनी चान्दी और सोना उस से फिरौन-नको को देने के लिये ले लिया॥

(यहोयाकीम का राज्य)

३६ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा तब वह पच्चीस बरस का था और ग्यारह बरस तक यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम जबीदा था जो
३७ रूमावासी पदायाह की बेटी थी। उस ने ठीक अपने पुरखाओं की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है।

१ २४ उस के दिनों में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने चढ़ाई की और यहोयाकीम तीन बरस लों उस के अधीन रहा पीछे उस ने फिरके उस से बलवा
२ किया। तब यहोवा ने उस के विरुद्ध और यहूदा को नाश करने के लिये उस के विरुद्ध कसदियों अरामियों मोआबियों और अम्मोनियों के दल भेज दिये यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास नबियों
३ के द्वारा कहा था। निःसंदेह यह यहूदा पर यहोवा की आज्ञा से हुआ इस लिये कि वह उन को अपने साम्हने से दूर करे यह मनश्शे के सब पापों के कारण हुआ। और
४ निर्दोषों के उस खून के कारण जो उस ने किया था क्योंकि उस ने यरूशलेम को निर्दोषों के खून से भर दिया
५ था जिस को यहोवा क्षमा करने का न था। यहोयाकीम के और सब काम जो उस ने किये सो क्या यहूदा के
६ राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। निदान यहोयाकीम अपने पुरखाओं के संग सोया और उस का
७ पुत्र यहोयाकीन उस के स्थान पर राजा हुआ। और मिस्र का राजा अपने देश से बाहर फिर कभी न आया क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से लेकर परात महानद लों जितना देश मिस्र के राजा का था उस सब को अपने वश में कर लिया था॥

(यहोयाकीन का राज्य)

८ जब यहोयाकीन राज्य करने लगा तब वह अठारह बरस का था और तीन महीने लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम नहुश्ता था जो यरूशलेम
९ के एलनातान की बेटी थी। उस ने ठीक अपने पिता की
१० नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है। उस के दिनों में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के कर्म्मचारियों ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके नगर को घेर लिया।
११ और जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के कर्म्मचारी नगर को घेरे
१२ हुए थे तब वह आप वहां आ गया। और यहूदा का राजा यहोयाकीन अपनी माता और कर्म्मचारियों हाकिमों और खोजों को संग लेकर बाबेल के राजा के पास गया और बाबेल के राजा ने अपने राज्य के आठवें बरस में
१३ उन को पकड़ लिया। तब उस ने यहोवा के भवन में और राजभवन में रक्खा हुआ सारा धन वहां से निकाल लिया और सोने के जो पात्र इस्राएल के राजा सुलैमान ने बनाकर यहोवा के मन्दिर में रक्खे थे उन सभों को उस ने टुकड़े टुकड़े कर डाला जैसे कि यहोवा ने कहा
१४ था। फिर वह सारे यरूशलेम को अर्थात् सब हाकिमों और सब धनवानों को जो मिलकर दस हजार थे और सब कारीगरों और लोहारों को बंधुआ करके ले गया यहां लों कि साधारण लोगों में से कंगालों को छोड़ और कोई न
१५ रह गया। और वह यहोयाकीन को बाबेल में ले गया और उस की माता और स्त्रियों और खोजों को और देश के बड़े लोगों को वह बंधुआ करके यरूशलेम से बाबेल
१६ को ले गया। और सब धनवान जो सात हजार थे और कारीगर और लोहार जो मिलकर एक हजार थे और वे सब वीर और युद्ध के योग्य थे उन्हें बाबेल का राजा बंधुआ
१७ करके बाबेल को ले गया। और बाबेल के राजा ने उस के स्थान पर उस के चचा मत्तन्याह को राजा ठहराया और उस का नाम बदलकर सिदकिय्याह रक्खा॥

(सिदकिय्याह का राज्य)

१८ जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा तब वह इक्कीस बरस का था और यरूशलेम में ग्यारह बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम हमूतल था जो
१९ लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी थी। उस ने ठीक यहोयाकीम की लीक पर चलकर वही किया जो यहोवा के लेखे
२० बुरा है। क्योंकि यहोवा के कोप के कारण यरूशलेम और यहूदा की ऐसी दशा हुई कि अन्त में उस ने उन को अपने साम्हने से दूर किया। और सिदकिय्याह ने

१ २५. बाबेल के राजा से बलवा किया। उस के राज्य के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सारी सेना लेकर यरूशलेम पर चढ़ाई की और उस के पास छावनी

२ करके उस के चारों ओर कोट बनाये। और नगर सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें बरस लों घेरा हुआ रहा।
३ और महीने के नौवें दिन से नगर में महंगी यहां लों बढ़ गई कि देश के लोगों के लिये कुछ खाने को न रहा।
४ तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई और दोनों भीतों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था उस मार्ग से सब योद्धा रात ही रात निकल भागे। कसदी तो नगर को घेरे हुए थे पर राजा ने अराबा का मार्ग
५ लिया। तब कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और उस को यरीहो के पास के अराबा में जा लिया और उस की सारी सेना उस के पास से तितर बितर हो गई।
६ सो वे राजा को पकड़कर रिबला में बाबेल के राजा के
७ पास ले गये और उस के दण्ड की आज्ञा दी गई। और उन्हों ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उस के साम्हने घात किया और सिदकिय्याह की आंखें फोड़ डालीं और उसे पीतल की बेड़ियों से जकड़कर बाबेल को ले गये॥

(यरूशलेम का विनाश)

८ बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के उन्नीसवें बरस के पांचवें महीने के सातवें दिन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान जो बाबेल के राजा का एक कर्म्मचारी था सो
९ यरूशलेम में आया। और उस ने यहोवा के भवन और राजभवन और यरूशलेम के सब घरों को अर्थात हर एक
१० बड़े घर को आग लगाकर फूंक दिया। और यरूशलेम के चारों ओर की सब शहरपनाह को कसदियों की सारी सेना ने जो जल्लादों के प्रधान के संग थी ढा दिया।
११ और जो लोग नगर में रह गये थे और जो लोग बाबेल के राजा के पास भाग गये थे और साधारण लोग जो रह गये थे इन सभों को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान
१२ बंधुआ करके ले गया। पर जल्लादों के प्रधान ने देश के कंगालों में से कितनों को दाख की बारियों की सेवा और
१३ किसनई करने को छोड़ दिया। और यहोवा के भवन में जो पीतल के खंभे थे और पाये और पीतल का गंगाल जो यहोवा के भवन में था इन को कसदी तोड़कर उन का
१४ पीतल बाबेल को ले गये। और हण्डियां फावड़ियों चिमटाओं धूपदानों और पीतल के सब पात्रों को जिन से
१५ सेवा टहल होती थी वे ले गये। और करछे और कटोरियां जो सोने की थीं और जो कुछ चान्दी का था सो
१६ सब सोना चान्दी जल्लादों का प्रधान ले गया। दोनों खंभे एक गंगाल और जो पाये सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये बनाये थे इन सब वस्तुओं का पीतल तौल से बाहर
१७ था। एक एक खंभे की ऊंचाई अठारह अठारह हाथ की थी और एक एक खंभे के ऊपर तीन तीन हाथ ऊंची पीतल की एक एक कंगनी थी और एक एक कंगनी पर चारों ओर जाली और अनार जो बने थे सो सब पीतल
१८ के थे। और जल्लादों के प्रधान ने सरायाह महायाजक और उस के नीचे के याजक सपन्याह और तीनों डेवढ़ीदारों को पकड़ लिया।
१९ और नगर में से उस ने एक हाकिम पकड़ लिया जो योद्धाओं के ऊपर ठहरा था और जो पुरुष राजा के सन्मुख रहा करते थे उन में से पांच जन जो नगर में मिले और सेनापति का मुंशी जो लोगों को सेना में भरती किया करता था और लोगों में से साठ
२० पुरुष जो नगर में मिले, इन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान पकड़कर रिबला में बाबेल के राजा के पास ले
२१ गया। तब बाबेल के राजा ने उन्हें हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गये। यों यहूदी बंधुआ करके अपने देश से निकाल लिये गये।
२२ और जो लोग यहूदा देश में रह गये जिन को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने छोड़ दिया उन पर उस ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को जो शापान का पोता था अधिकारी ठहराया॥

(गदल्याह की हत्या)

२३ जब दलों के सब प्रधानों ने अर्थात् नतन्याह के पुत्र इश्माएल कारेहू के पुत्र योहानान नतोपाई तन्हूमेत के पुत्र सरायाह और किसी माकाई के पुत्र याजन्याह ने और उन के जनों ने यह सुना कि बाबेल के राजा ने गदल्याह को अधिकारी ठहराया है तब वे अपने अपने
२४ जनों समेत मिस्पा में गदल्याह के पास आये। और गदल्याह ने उन से और उन के जनों से किरिया खाकर कहा कसदियों के सिपाहियों से न डरो देश में रहते हुए बाबेल के राजा के अधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा।
२५ परन्तु सातवें महीने में नतन्याह का पुत्र इश्माएल जो एलीशामा का पोता और राजवंश का था उस ने दस जन संग ले गदल्याह के पास जाकर उसे ऐसा मारा कि वह मर गया और जो यहूदी और कसदी उस के संग मिस्पा में रहते थे उन को भी मार डाला।
२६ तब क्या छोटे क्या बड़े सारी प्रजा के लोग और दलों के प्रधान कसदियों के डर के मारे उठकर मिस्र में जाकर रहे॥

(यहोयाकीन का बढ़ाया जाना)

२७ फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन की बंधुआई के सैंतीसवें बरस में अर्थात् जिस बरस में बाबेल का राजा एवीलमरोदक राजगद्दी पर विराजमान हुआ उसी के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद
२८ दिया, और उस से मधुर मधुर बचन कहकर जो राजा उस के संग बाबेल में बन्धुए थे उन के सिंहासनों से

२९ उस के सिंहासन को अधिक ऊंचा किया, और उस के बन्दीगृह के वस्त्र बदला दिये और उस ने ३० जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन किया। और दिन दिन के खर्च के लिये राजा के यहां से नित्य का खर्च ठहराया गया सो उस के जीवन भर लगातार मिलता रहा॥

इतिहास नाम पुस्तक। पहिला भाग।

(आदम आदि की वंशावलियां)

२ १. आदम शेत एनोश, केनान महललेल ३ येरेद, हनोक मतूशेलह लेमेक, ४ नूह शेम हाम और येपेत॥

५ येपेत के पुत्र गोमेर मागोग मादै यावान तूबल ६ मेशेक और तीरास। और गोमेर के पुत्र अशकनज ७ दीपत और तोगर्मा। और यावान के पुत्र एलीशा तर्शीश और कित्ती और रोदानी लोग॥

८, ९ हाम के पुत्र कूश मिस्र पूत और कनान। और कूश के पुत्र सबा हवीला सबता रामा और सब्तका और १० रामा के पुत्र शबा और ददान। और कूश ने निम्रोद ११ को जन्माया पृथिवी पर पहिला वीर वही हुआ। और १२ मिस्र ने लूदी अनामी लहाबी नप्तही पत्रूसी कसलूही १३ (वहां से पलिश्ती निकले) और कप्तोरी जन्माये। कनान १४ ने अपना जेठा सीदोन और हित्त, और यबूसी एमोरी १५, १६ गिर्गाशी, हिव्वी अर्की सीनी, अर्वदी समारी और हमाती जन्माये॥

१७ शेम के पुत्र एलाम अश्शूर अर्पक्षद लूद अराम १८ ऊस हूल गेतेर और मेशेक। और अर्पक्षद ने शेलह और १९ शेलह ने एबेर को जन्माया। और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए एक का नाम पेलेग इस कारण रक्खा गया कि उस के दिनों में पृथिवी बांटी गई और उस के भाई २० का नाम योक्तान था। और योक्तान ने अल्मोदाद २१, २२ शेलेप हसर्मावेत येरह, हदोराम ऊजाल दिक्ला, २३ एबाल अबीमाएल शबा, ओपीर हवीला और योबाब को जन्माया ये ही सब योक्तान के पुत्र हुए॥

२४, २५, २६ शेम अर्पक्षद शेलह, एबेर पेलेग रू, सरूग २७ नाहोर तेरह, अब्राम सोई इब्राहीम भी कहलाता है। २८ इब्राहीम के पुत्र इसहाक और इश्माएल॥

२९ इन की वंशावलियां ये हैं। इश्माएल का जेठा ३० नबायोत, फिर केदार अदबेल मिबसाम मिश्मा दूमा मस्सा हदद तेमा यतूर नापीश केदमा ये इश्माएल के ३१ पुत्र हुए॥

फिर कतूरा जो इब्राहीम की रखेली थी उस के ये ३२ पुत्र हुए अर्थात् वह जिम्रान योक्षान मदान मिद्यान यिशबाक और शूह को जनी। योक्षान के पुत्र शबा और ददान। और मिद्यान के पुत्र एपा एपेर हनोक अबीदा ३३ और एलदा ये सब कतूरा के पुत्र हुए॥

इब्राहीम ने इसहाक को जन्माया। इसहाक के पुत्र ३४ एसाव और इस्राएल॥

एसाव के पुत्र एलीपज रूएल यूश यालाम और ३५ कोरह। एलीपज के पुत्र तेमान ओमार सपी गाताम ३६ कनज तिम्ना और अमालेक। रूएल के पुत्र नहत जेरह ३७ शम्मा और मिज्जा। फिर सेईर के पुत्र, लोतान शोबाल ३८ सिबोन अना दीशोन एसेर और दीशान। और लोतान ३९ के पुत्र होरी और होमाम, और लोतान की बहिन तिम्ना थी। शोबाल के पुत्र अल्यान मानहत एबाल शपी और ४० ओनाम और सिबोन के पुत्र अय्या और अना। अना ४१ का पुत्र दीशोन। और दीशोन के पुत्र हम्रान एशबान यित्रान और करान। एसेर के पुत्र, बिल्हान जावान और ४२ याकान। और दीशान के पुत्र ऊस और अरान॥

जब इस्राएलियों पर किसी राजा ने राज्य न किया ४३ था तब एदोम के देश में ये राजा हुए अर्थात् बोर का पुत्र बेला और उस की राजधानी का नाम दिन्हाबा था। बेला के मरने पर बोस्राई जेरह का पुत्र योबाब ४४ उस के स्थान पर राजा हुआ। और योबाब के मरने पर ४५ तेमानियों के देश का हूशाम उस के स्थान पर राजा हुआ। फिर हूशाम के मरने पर बदद का पुत्र हदद उस ४६ के स्थान पर राजा हुआ यह वही है जिस ने मिद्यानियों को मोआब के देश में मार लिया और उस की राजधानी का नाम अवीत था। और हदद के मरने पर मस्रेकाई ४७ सम्ला उस के स्थान पर राजा हुआ। फिर सम्ला के ४८

मरने पर शाऊल जो महानद के तट पर के रहोबोत नगर
४९ का था सो उस के स्थान पर राजा हुआ। और शाऊल
के मरने पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान उस के स्थान
५० पर राजा हुआ। और बाल्हानान के मरने पर हदद
उस के स्थान पर राजा हुआ और उस की राजधानी
का नाम पाई था और उस की स्त्री का नाम महेतबेल
था जो मेजाहाब की नतिनी और मत्रेद की बेटी थी।
५१ और हदद मर गया फिर एदोम के अधिपति ये थे अर्थात्
तिम्ना अधिपति अल्या अधिपति यतेत अधिपति,
५२ ओहोलीबामा अधिपति एला अधिपति पीनोन अधिपति,
५३ कनज अधिपति तेमान अधिपति मिबसार अधिपति,
५४ मग्दीएल अधिपति ईराम अधिपति। एदोम के ये
अधिपति हुए॥

२. इस्राएल के ये पुत्र हुए रूबेन शिमोन लेवी यहूदा इस्साकार जबू-
२ लून, दान यूसुफ बिन्यामीन नप्ताली गाद और आशेर॥

(यहूदा की वंशावली)

३ यहूदा के ये पुत्र हुए एर ओनान और शेला उस
के ये तीनों पुत्र बतशू नाम एक कनानी स्त्री जनी और
यहूदा का जेठा एर यहोवा के लेखे बुरा था इस कारण
४ उस ने उस को मार डाला। यहूदा की बहू तामार उस के
जन्माये पेरेस और जेरह को जनी। यहूदा के सब पुत्र
५, ६ पांच हुए। पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल। और
जेरह के पुत्र जिम्री एतान हेमान कलकोल और दारा
७ सब मिलकर पांच। फिर कर्मी का पुत्र आकार जो अर्पण
की हुई वस्तु के विषय में विश्वासघात करके इस्राएलियों
८ का कष्ट देनेहारा हुआ। और एतान का पुत्र अजर्याह।
९ हेस्रोन के जो पुत्र उत्पन्न हुए यरह्मेल राम और कलूबै।
१० और राम ने अम्मीनादाब को और अम्मीनादाब ने नह-
११ शोन को जन्माया जो यहूदियों का प्रधान हुआ। और
१२ नहशोन ने सल्मा को और सल्मा ने बोअज को, और
बोअज ने ओबेद को और ओबेद ने यिशै को जन्माया।
१३ और यिशै ने अपने जेठे एलीआब को और दूसरे अबीना-
१४ दाब को तीसरे शिमा को, चौथे नतनेल को पांचवें रद्दै
१५ को, छठवें ओसेम को और सातवें दाऊद को जन्माया।
१६ इन की बहिनें सरूयाह और अबीगैल थीं। और सरूयाह
१७ के पुत्र अबीशै योआब और असाहेल ये तीन। और
अबीगैल अमासा को जनी और अमासा का पिता
१८ इश्माएली येतेर था। हेस्रोन के पुत्र कालेब ने अजूबा
नाम एक स्त्री से और यरीओत से बेटे जन्माये और इस
के पुत्र ये हुए[1] अर्थात् येशेर शोबाब और अर्दोन।
१९ जब अजूबा मर गई तब कालेब ने एप्रात को ब्याह लिया
२० और वह उस के जन्माये हूर को जनी। और हूर ने ऊरी
२१ को और ऊरी ने बसलेल को जन्माया। इस के पीछे
हेस्रोन ने गिलाद के पिता माकीर की बेटी से प्रसंग
किया जिसे उस ने तब ब्याह लिया जब वह साठ बरस
२२ का था और वह उस के जन्माये सगूब को जनी। और
सगूब ने याईर को जन्माया जिस के गिलाद देश में
२३ तेईस नगर थे। और गशूर और अराम ने याईर की
बस्तियों को और गांवों समेत कनत को उन से ले लिया
ये सब नगर मिलकर साठ थे। ये सब गिलाद के पिता
२४ माकीर के पुत्र हुए। और जब हेस्रोन कालेबेप्राता में
मर गया तब उस की अबिय्याह नाम स्त्री उस के जन्माये
२५ अशहूर को जनी जो तको का पिता हुआ। और हेस्रोन
के जेठे यरह्मेल के ये पुत्र हुए अर्थात् राम जो उस का
जेठा था और बूना ओरेन ओसेम और अहिय्याह।
२६ और यरह्मेल की एक और स्त्री थी जिस का नाम अतारा
२७ था वह ओनाम की माता हुई। और यरह्मेल के जेठे
राम के ये पुत्र हुए अर्थात् मास यामीन और एकेर।
२८ और ओनाम के पुत्र शम्मै और यादा हुए और शम्मै
२९ के पुत्र नादाब और अबीशूर हुए। और अबीशूर का
स्त्री का नाम अबीहैल था और वह उस के जन्माये
३० अहबान और मोलीद को जनी। और नादाब के पुत्र
सेलेद और अप्पैम हुए सेलेद तो निःसन्तान मर गया।
३१ और अप्पैम के पुत्र यिशी और यिशी का पुत्र
३२ शेशान और शेशान का पुत्र अहलै, फिर शम्मै
के भाई यादा के पुत्र येतेर और योनातान हुए येतेर
३३ तो निःसन्तान मर गया। योनातान के पुत्र पेलेत और
३४ जाजा। यरह्मेल के पुत्र ये हुए। शेशान के तो बेटा
न हुआ केवल बेटियां हुईं। शेशान के तो यर्हा नाम
३५ एक मिस्री दास था। सो शेशान ने उस को अपनी बेटी
३६ ब्याह दी और वह उस के जन्माये अत्तै को जनी। और
३७ अत्तै ने नातान को नातान ने जाबाद को, जाबाद ने
३८ एपलाल को एपलाल ने ओबेद को, ओबेद ने येहू
३९ को येहू ने अजर्याह को, अजर्याह ने हेलेस को
४० हेलेस ने एलासा को, एलासा ने सिस्मै को सिस्मै ने
४१ शल्लूम को, शल्लूम ने यकम्याह को और यकम्याह
४२ ने एलीशामा को जन्माया। फिर यरह्मेल के भाई
कालेब के ये पुत्र हुए अर्थात् उस का जेठा मेशा जो
जीप का पिता हुआ और हेब्रोन के पिता मारेशा के पुत्र

(१) वा कालेब ने अजूबा नाम अपनी स्त्री से यरीओत को जन्माया और (यरीओत) के ये पुत्र हुए।

४३ भी उसी के वंश में हुए। और हेब्रोन के पुत्र कोरह तप्पूह
४४ रेकेम और शेमा। और शेमा ने योर्काम के पिता रहम
४५ को और रेकेम ने शम्मै को जन्माया। और शम्मै
का पुत्र माओन हुआ और माओन बेत्सूर का पिता
४६ हुआ। फिर एपा जो कालेब की रखेली थी सो हारान
मोसा और गाजेज को जनी और हारान ने गाजेज को
४७ जन्माया। फिर याहदै के पुत्र रेगेम योताम गेशान
४८ पेलेत एपा और शाप। और माका जो कालेब की
४९ रखेली थी सो शेबेर और तिर्हाना को जनी। फिर वह
मदमन्ना के पिता शाप को और मकबेना और गिबा
के पिता शवा को जनी। और कालेब की बेटी अकसा
५० थी। कालेब के सन्तान ये हुए अर्थात् एप्राता के
जेठे हूर का पुत्र किर्यत्यारीम का पिता शोबाल।
५१ बेतलेहेम का पिता सल्मा और बेतगादेर का पिता
५२ हारेप। और किर्यत्यारीम के पिता शोबाल के वंश
५३ में हारोए आधे मनुहोतवासी, और किर्यत्यारीम के कुल
अर्थात् यित्री पूती शूमाती और मिश्राई और इन से
५४ सोराई और एश्ताओली निकले। फिर सल्मा के वंश
में बेतलेहेम और नतोपाई अत्रोतबेत्योआब और आधे
५५ मानहती सोरी, और याबेस में रहनेहारे लेखकों के
कुल अर्थात् तिराती शिमाती और सूकाती हुए। ये
रेकाब के घराने के मूलपुरुष हम्मत के वंशवाले
केनी हैं॥

३. दाऊद के पुत्र जो हेब्रोन में उस के जन्मे सो ये हैं जेठा अम्नोन जो

यिज्रेली अहीनोअम से दूसरा दानिय्येल जो कर्मेली
२ अबीगैल से उत्पन्न हुआ, तीसरा अबशालोम जो गशूर के
राजा तल्मै की बेटी माका का पुत्र था चौथा अदोनि-
३ य्याह जो हग्गीत का पुत्र था, पांचवां शपत्याह जो अबी-
तल से और छठवां यित्राम जो उस की स्त्री एग्ला से
४ उत्पन्न हुआ। दाऊद के जन्माये हेब्रोन में छः पुत्र उत्पन्न
हुए और वहां उस ने साढ़े सात बरस राज्य किया और
५ यरूशलेम में तैंतीस बरस राज्य किया। और यरूशलेम
में उस के ये पुत्र उत्पन्न हुए अर्थात् शिमा शोबाब नातान
और सुलैमान ये चारों अम्मीएल की बेटी बतशू से
६, ७ उत्पन्न हुए। और यिभार एलीशामा एलीपेलेत, नोगह
८ नेपेग यापी, एलीशामा एल्यादा और एलीपेलेत ये नौ
९ पुत्र, ये सब दाऊद के पुत्र थे और इन को छोड़ रखे-
लियों के भी पुत्र थे और इन की बहिन तामार थी।
१० फिर सुलैमान का पुत्र रहबाम हुआ रहबाम का अबि-
११ य्याह अबिय्याह का आसा आसा का यहोशापात, यहो-
शापात का योराम योराम का अहज्याह अहज्याह
का योआश, योआश का अमस्याह अमस्याह का १२
अजर्याह अजर्याह का योताम, योताम का आहाज १३
आहाज का हिजकिय्याह हिजकिय्याह का मनश्शे,
मनश्शे का आमोन और आमोन का योशिय्याह १४
पुत्र हुआ। और योशिय्याह के पुत्र उस का जेठा १५
योहानान दूसरा यहोयाकीम तीसरा सिदकिय्याह चौथा
शल्लूम। और यहोयाकीम के पुत्र यकोन्याह इस का १६
पुत्र सिदकिय्याह। और यकोन्याह के पुत्र अस्सीर उस १७
का पुत्र शालतीएल, और मल्कीराम पदायाह शेनस्सर १८
यकम्याह होशामा और नदब्याह। और पदायाह १९
के पुत्र जरुब्बाबेल और शिमी हुए और जरुब्बाबेल के
पुत्र मशुल्लाम और हनन्याह जिन की बहिन शलोमीत
थी, और हशूबा ओहेल बेरेक्याह हसद्याह और यूशबे- २०
सेद पांच। और हनन्याह के पुत्र पलत्याह और २१
यशायाह। और रपायाह के पुत्र अर्नान के पुत्र ओबद्याह
के पुत्र और शकन्याह के पुत्र। और शकन्याह का पुत्र २२
शमायाह। और शमायाह के पुत्र हत्तूश यिगाल बारीह
नार्याह और शापात छः। और नार्याह के पुत्र एल्योएनै २३
हिजकिय्याह और अज्रीकाम तीन। और एल्योएनै २४
के पुत्र होदब्याह एल्याशीब पलायाह अक्कूब योहानान
दलायाह और अनानी सात॥

४. यहूदा के पुत्र पेरेस हेस्रोन कर्मी हूर और शोबाल। और शोबाल २

के पुत्र रायाह ने यहत को और यहत ने अहूमै और
लहद को जन्माया ये सोराई कुल हैं। और एताम के ३
पिता के ये पुत्र हुए अर्थात् यिज्रेल यिश्मा और यिद्बाश
जिन की बहिन का नाम हस्सलेलपोनी था, और गदोर ४
का पिता पनूएल और हूशा का पिता एजेर। ये एप्राता
के जेठे हूर के सन्तान हैं जो बेतलेहेम का पिता हुआ।
और तको के पिता अशहूर के हेला और नारा नाम दो ५
स्त्रियां थीं। और नारा तो उस के जन्माये अहुज्जाम ६
हेपेर तेमनी और हाहश्तारी यो जनी नारा के ये ही
पुत्र हुए। और हेला के पुत्र सेरेत यिसहर और एत्नान। ७
फिर कोस ने आनूब और सोबेबा को जन्माया और ८
उस के वंश में हारूम के पुत्र अहर्हेल के कुल भी उत्पन्न हुए।
और याबेस अपने भाइयों से अधिक प्रतिष्ठित हुआ और ९
उस की माता ने यह कहकर उस का नाम याबेस[१]
रक्खा कि मैं इसे पीड़ित होकर जनी। और याबेस ने १०
इस्राएल के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा कि भला
होता कि तू मुझे सचमुच आशिष देता और मेरा देश

(१) अर्थात् पीड़ा।

बढ़ाता और तेरा हाथ मेरे साथ रहता और तू मुझे बुराई[1] से ऐसा बचा रखता कि मैं उस से पीड़ित न होता। और जो कुछ उस ने मांगा सो परमेश्वर ने दे
११ दिया। फिर शूहा के भाई कलूब ने एशतोन के पिता
१२ महीर को जन्माया। और एशतोन के वंश में राया का घराना और पासेह और ईर्नाहाश का पिता तहिन्ना उत्पन्न
१३ हुए रेका के लोग ये ही हैं। और कनज के पुत्र ओत्नीएल
१४ और सरायाह और ओत्नीएल का पुत्र हतत। मोनोते ने ओप्रा को और सरायाह ने योआब को जन्माया जो
१५ गेहराशीम का पिता हुआ वे तो कारीगर थे। और यपुन्ने के पुत्र कालेब के पुत्र एला और नाम। और एला
१६ के पुत्र कनज। और यहल्लेल के पुत्र जीप जीपा तीरया
१७ और असरेल। और एज्रा के पुत्र येतेर मेरेद एपेर और यालोन और उस की स्त्री मिर्य्याम शम्मै और एशतमो के
१८ पिता यिशबह को जनी। और उस की यहूदिन स्त्री गदोर के पिता येरेद सोको के पिता हेबेर और जानोह के पिता यकूतीएल को जनी ये फिरौन की बेटी बित्या के पुत्र थे
१९ जिसे मेरेद ने ब्याह लिया था। और होदिय्याह की स्त्री जो नहम की बहिन थी उस के पुत्र कीला का पिता एक
२० गेरेमी और एशतमो का पिता एक माकाई। और शीमोन के पुत्र अम्नोन रिन्ना बेन्हानान और तीलोन और यिशी
२१ के पुत्र जोहेत और बेनजोहेत। यहूदा के पुत्र शेला के पुत्र लेका का पिता एर मारेशा का पिता लादा और अशबे के घराने के कुल जिस में सन के कपड़े का काम
२२ होता था और योकीम और कोजेबा के मनुष्य और योआश और साराप जो मोआब में प्रभुता करते थे और
२३ याशूब लेहेम इन का वृत्तान्त प्राचीन है। ये कुम्हार थे और नताईम और गदेरा में रहते थे जहां वे राजा का कामकाज करते हुए उस के पास रहते थे।

(शिमोन की वंशावली)

२४ शिमोन के पुत्र नमूएल यामीन यारीब जेरह और
२५ शाऊल। और शाऊल का पुत्र शल्लूम शल्लूम मिबसाम
२६ और मिबसाम का मिश्मा हुआ। और मिश्मा के पुत्र उस का पुत्र हम्मूएल उस का पुत्र जक्कूर और उस का
२७ पुत्र शिमी। शिमी के सोलह बेटे और छः बेटी हुईं पर उस के भाइयों के बहुत बेटे न हुए और उन का
२८ सारा कुल यहूदियों के बराबर न बढ़ा। वे बेर्शेबा
२९, ३० मोलादा हसर्शूआल, बिल्हा एसेम तोलाद, बतूएल
३१ होर्मा सिक्लग, बेतमर्काबोत हसर्सूसीम बेतबिरी और शारैम में बस गये दाऊद के राज्य के समय लों उन
३२ के ये ही नगर रहे। और उन के गांव एताम ऐन रिम्मोन तोकेन और आशान नाम पांच नगर, और बाल तक
३३ जितने गांव इन नगरों के आसपास थे उन के बसने के स्थान ये ही थे और उन के वंशावली है। फिर मशोबाब
३४ और यम्लेक और अमस्याह का पुत्र योशा, और योएल
३५ और योशिब्याह का पुत्र येहू जो सरायाह का पोता और असीएल का परपोता था, और एल्योएनै और याकोबा
३६ यशोहायाह और असायाह और अदीएल और यसीमीएल और बनायाह, और शिपी का पुत्र जीजा जो
३७ अल्लोन का पुत्र यह यदायाह का पुत्र यह शिम्री का पुत्र यह शमायाह का पुत्र था, ये जिन के नाम लिखे
३८ हुए हैं अपने अपने कुल में प्रधान थे और उन के पितरों के घराने बहुत बढ़ गये। ये अपनी भेड़ बकरियों के लिये
३९ चराई ढूंढ़ने को गदोर की घाटी की तराई की पूरब ओर तक गये। और उन को उत्तम से उत्तम चराई मिली और
४० देश लम्बा चौड़ा चैन और शांति का था क्योंकि वहां के पहिले रहनेहारे हाम के वंश के थे। और जिन के नाम
४१ ऊपर लिखे हैं उन्हों ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में वहां आकर जो मूनी वहां मिले उन को डेरों समेत मारकर ऐसा सत्यानाश कर डाला कि आज लों उन का पता नहीं है और वे उन के स्थान में रहने लगे क्योंकि वहां उन की भेड़ बकरियों के लिये चराई थी। और उन में से
४२ अर्थात् शिमोनियों में से पांच सौ पुरुष अपने ऊपर पलत्याह नार्याह रपायाह और उज्जीएल नाम यिशी के पुत्रों को अपने प्रधान ठहराकर सेईर पहाड़ को गये, और जो अमेलेकी
४३ बचकर रह गये थे उन को मारा और आज के दिन लों वहां रहते हैं॥

(रूबेन और गाद की वंशावलियां और मनश्शे के आधे गोत्र की वंशावली)

५. इस्राएल का जेठा तो रूबेन था पर उस ने जो अपने पिता के बिछौने को अशुद्ध किया इस कारण जेठाई का अधिकार इस्राएल के पुत्र यूसुफ के पुत्रों को दिया गया। वंशावली
२ जेठाई के अधिकार के अनुसार नहीं ठहरी। क्योंकि यहूदा अपने भाइयों पर प्रबल हो गया और प्रधान उस के वंश से हुआ पर जेठाई का अधिकार यूसुफ का था।
३ इस्राएल के जेठे पुत्र रूबेन के पुत्र ये हुए अर्थात् हनोक
४ पल्लू हेस्रोन और कर्मी। और योएल के पुत्र उस का पुत्र
५ शमायाह शमायाह का गोग गोग का शिमी, शिमी का
६ मीका मीका का रायाह रायाह का बाल, और बाल का पुत्र बेरा इस को अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर बंधुआई में ले गया और वह रूबेनियों का प्रधान था।
७ और उस के भाइयों की वंशावली के लिखते समय वे

(१) वा विपत्ति।

अपने अपने कुल के अनुसार ये ठहरे अर्थात् मुख्य तो
८ यीएल फिर जकर्याह, और अजाज का पुत्र बेला जो
शेमा का पोता और योएल का परपोता था वह अरो-
९ एर में और नबो और बाल्मोन लों रहता था। और
पूरब ओर वह उस जंगल के सिवाने तक रहा जो फरात
महानद लों पहुंचता है क्योंकि उन के पशु गिलाद देश
१० में बढ़ गये थे। और शाऊल के दिनों में उन्हों ने हग्रियों
से युद्ध किया और हग्री उन के हाथ से मारे गये तब वे
गिलाद की सारी पूरबी अलंग में उन के डेरों में रहने
लगे॥

११ गादी उन के साम्हने सल्का लों बाशान देश में
१२ रहते थे, अर्थात् मुख्य तो योएल और दूसरा शापाम
१३ फिर यानै और शापात ये बाशान में रहते थे। और उन
के भाई अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार
मीकाएल मशुल्लाम शेबा योरै याकान जी और एबेर
१४ सात। ये अबीहैल के पुत्र थे जो हूरी का पुत्र था यह
योराह का पुत्र यह गिलाद का पुत्र यह मिकाएल का
पुत्र यह यशीशै का पुत्र यह यहदो का पुत्र यह बूज का
१५ पुत्र था। इन के पितरों के घरानों का मुख्य पुरुष
१६ अब्दीएल का पुत्र और गूनी का पोता अही था। ये
लोग बाशान में गिलाद में और उस के गांवों में और
शारोन की सब चराइयों में उस की परली ओर तक
१७ रहते थे। इन सभों की वंशावली यहूदा के राजा
योताम के दिनों और इस्राएल के राजा यारोबाम
के दिनों में लिखी गई॥

१८ रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र में
के योद्धा जो ढाल बान्धने तलवार चलाने और धनुष
से तीर छोड़ने के योग्य और युद्ध करने को सीखे हुए
थे सो चौवालीस हजार सात सौ साठ थे जो युद्ध में
१९ जाने के योग्य थे। इन्हों ने हग्रियों और यतूर नापीश
२० और नोदाब से युद्ध किया। उन के विरुद्ध इन को सहा-
यता मिली और हग्री उन सब समेत जो उन के साथ थे
उन के हाथ में कर दिये गये क्योंकि युद्ध में इन्हों ने
परमेश्वर की दोहाई दी और उस ने उन की बिनती
इस कारण सुनी कि इन्हों ने उस पर भरोसा रक्खा
२१ था। और इन्हों ने उन के पशु हर लिये अर्थात् ऊंट तो
पचास हजार भेड़ बकरी अढ़ाई लाख गदहे दो हजार
२२ और मनुष्य एक लाख बंधुए करके ले गये। बहुत से
मारे तो पड़े क्योंकि वह लड़ाई परमेश्वर की ओर से हुई।
सो ये उन के स्थान में बन्धुआई के समय लों बसे रहे॥

२३ फिर मनश्शे के आधे गोत्र के सन्तान उस देश में
बसे और वे बाशान से ले बाल्हेर्मोन और सनीर और
हेर्मोन पर्वत लों फैल गये। और उन के पितरों के घरानों २४
के मुख्य पुरुष ये थे अर्थात् एपेर यिशी एलीएल अज्री-
एल यिर्मयाह होदव्याह और यहदीएल ये बड़े वीर और
नामी और अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे॥

और उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर से विश्वा- २५
सघात किया और उस देश के लोग जिन को परमेश्वर
ने उन के साम्हने से बिनाश किया था उन के देवताओं
के पीछे व्यभिचारिन की नाईं हो लिये। सो इस्राएल २६
के परमेश्वर ने अश्शूर के राजा पूल का और अश्शूर
के राजा तिलगत्पिलनेसेर का मन उभारा और इस ने
उन्हें अर्थात् रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे
गोत्र के लोगों को बंधुआ करके हलह हाबोर और हारा
को और गोज़ान नदी के पास पहुंचा दिया और आज
के दिन लों वे वहीं रहते हैं॥

(लेवी की वंशावली और लेवियों के वासस्थान)

६. लेवी के पुत्र गेर्शोन कहात और
मरारी। और कहात के पुत्र २
अम्राम यिसहार हेब्रोन और उज्जीएल। और अम्राम ३
के सन्तान हारून मूसा और मरियम और हारून
के पुत्र नादाब अबीहू एलाजार और ईतामार। एला- ४
जार ने पीनहास को जन्माया पीनहास ने अबीशू को,
अबीशू ने बुक्की को बुक्की ने उज्जी को, उज्जी ने ५, ६
जरहाह को जरहाह ने मरायोत को, मरायोत ने अम- ७
र्याह को अमर्याह ने अहीतूब को, अहीतूब ने सादोक को ८
सादोक ने अहीमास को, अहीमास ने अजर्याह को अज- ९
र्याह ने योहानान को, और योहानान ने अजर्याह को १०
जन्माया जो सुलैमान के यरूशलेम में बनाये हुए भवन
में याजक का काम करता था। फिर अजर्याह ने अमर्याह ११
को अमर्याह ने यहीतूब को, यहीतूब ने सादोक को १२
सादोक ने शल्लूम को, शल्लूम ने हिल्किय्याह को हिल- १३
किय्याह ने अजर्याह को, अजर्याह ने सरायाह को और १४
सरायाह ने यहोसादाक को जन्माया, और जब यहोवा यहूदा १५
और यरूशलेम को नबूकदनेस्सर के द्वारा बन्धुआ करके
ले गया तब यहोसादाक भी बंधुआ होकर गया॥

लेवी के पुत्र गेर्शोम कहात और मरारी। और १६, १७
गेर्शोम के पुत्रों के नाम ये थे अर्थात् लिब्नी और शिमी।
और कहात के पुत्र अम्राम यिसहार हेब्रोन और १८
उज्जीएल। और मरारी के पुत्र महली और मूशी और १९
अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार लेवीयों के कुल
ये हुए अर्थात्, गेर्शोम का पुत्र लिब्नी हुआ लिब्नी का २०
यहत यहत का जिम्मा, जिम्मा का योआह योआह का २१
इद्दो इद्दो का जेरह और जेरह का पुत्र यातरै हुआ।

२२ फिर कहात का पुत्र अम्मीनादाब हुआ अम्मीनादाब का
२३ कोरह कोरह का अस्सीर, अस्सीर का एल्काना एल्काना
२४ का एब्यासाप एब्यासाप का अस्सीर, अस्सीर का तहत
तहत का ऊरीएल ऊरीएल का उज्जिय्याह और उज्जिय्याह
२५ का पुत्र शाऊल हुआ। फिर एल्काना के पुत्र अमासै और
२६ अहीमोत। एल्काना का पुत्र सोपै सोपै का नहत,
२७ नहत का एलीआब एलीआब का यरोहाम और यरो-
२८ हाम का पुत्र एल्काना हुआ। और शमूएल के पुत्र
उस का जेठा योएल[१] और दूसरा अबिय्याह हुआ।
२९ फिर मरारी का पुत्र महली महली का लिब्नी लिब्नी
३० का शिमी शिमी का उज्जा, उज्जा का शिमा शिमा का
हग्गिय्याह और हग्गिय्याह का पुत्र असायाह हुआ॥
३१ फिर जिन को दाऊद ने संदूक के ठिकाना पाने के
पीछे यहोवा के भवन में गाने के अधिकारी ठहरा दिया
३२ सो ये हैं। जब लों सुलैमान यरूशलेम में यहोवा के
भवन को बनवा न चुका तब लों वे मिलापवाले
तंबू के निवास के साम्हने गाने के द्वारा सेवा करते थे
और इस सेवा में नियम के अनुसार हाजिर हुआ करते
३३ थे। जो अपने अपने पुत्रों समेत हाजिर हुआ करते थे
सो ये हैं अर्थात् कहातियों में से हेमान गवैया जो योएल
३४ का पुत्र था और योएल शमूएल का, शमूएल एल्काना
का एल्काना यरोहाम का यरोहाम एलीएल का एली-
३५ एल तोह का, तोह सूप का सूप एल्काना का एल्काना
३६ महत का महत अमासै का, अमासै एल्काना का एल्काना
योएल का योएल अजर्याह का अजर्याह सपन्याह का,
३७ सपन्याह तहत का तहत अस्सीर का अस्सीर
३८ एब्यासाप का एब्यासाप कोरह का, कोरह यिसहार
का यिसहार कहात का कहात लेवी का और लेवी
३९ इस्राएल का पुत्र था। और उस का भाई आसाप जो
उस के दहिने खड़ा हुआ करता था और बेरेक्याह का
४० पुत्र था और बेरेक्याह शिमा का, शिमा मीकाएल का
मीकाएल बासेयाह का बासेयाह मल्किय्याह का,
४१ मल्किय्याह एत्नी का एत्नी जेरह का जेरह अदायाह
४२ का, अदायाह एतान का एतान जिम्मा का जिम्मा शिमी
४३ का, शिमी यहत का यहत गेर्शोम का गेर्शोम लेवी का पुत्र
४४ था। और बाईं ओर उन के भाई मरारीय खड़े होते थे
अर्थात् एतान जो कीशी का पुत्र था और कीशी अब्दी
४५ का अब्दी मल्लूक का, मल्लूक हशब्याह का हशब्याह
४६ अमस्याह का अमस्याह हिलकिय्याह का, हिलकिय्याह
४७ अमसी का अमसी बानी का बानी शेमेर का, शेमेर
महली का महली मूशी का मूशी मरारी का और मरारी

(१) आरामी में योएल। फिर देखो पद ३३।

लेवी का पुत्र था। और इन के भाई जो लेवीय थे सो ४८
परमेश्वर के भवन के निवास में की सब प्रकार की सेवा
के लिये अर्पण किये[२] हुए थे॥
परन्तु हारून और उस के पुत्र होमबलि की वेदी ४९
और धूप की वेदी दोनों पर चढ़ाते और परमपवित्रस्थान
का सब काम करते और इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त
करते थे जैसे कि परमेश्वर के दास मूसा ने आज्ञाएं दी
थीं। और हारून के वंश में ये हुए अर्थात् उस का पुत्र ५०
एलाजार हुआ और एलाजार का पीनहास पीनहास का
अबीशू, अबीशू का बुक्की बुक्की का उज्जी उज्जी का ५१
जरह्याह, जरह्याह का मरायोत मरायोत का अमर्याह ५२
अमर्याह का अहीतूब, अहीतूब का सादोक और सादोक ५३
का अहीमास पुत्र हुआ॥
और उन के भागों में उन की छावनियों के अनु- ५४
सार उन की बस्तियां ये हैं अर्थात् कहात के कुलों में से
पहिली चिट्ठी जो हारून की सन्तान के नाम पर निकली,
सो चारों ओर की चराइयों समेत यहूदा देश का हेब्रोन ५५
उन्हें मिला, पर उस नगर के खेत और गांव यपुन्ने के पुत्र ५६
कालेब को दिये गये। और हारून की सन्तान को शरण ५७
नगर हेब्रोन और चराइयों समेत लिब्ना और यत्तीर और
अपनी अपनी चराइयों समेत एशतमो, हीलेन दबीर, ५८
आशान और बेतशेमेश, और बिन्यामीन के गोत्र ५९, ६०
में से अपनी अपनी चराइयों समेत गेबा अल्लेमेत और
अनातोत दिये गये। उन के सब कुल मिलाकर उन के
सब नगर तेरह ठहरे। और शेष कहातियों के गोत्र के ६१
कुल अर्थात् मनश्शे के आधे गोत्र में से चिट्ठी डालकर
दस नगर दिये गये। और गेर्शोमियों के कुलों के अनुसार ६२
उन्हें इस्साकार आशेर और नप्ताली के गोत्र और
बाशान में रहनेहारे मनश्शे के गोत्र में से तेरह नगर
मिले। मरारियों के कुलों के अनुसार उन्हें रूबेन गाद ६३
और जबूलून के गोत्रों में से चिट्ठी डालकर बारह नगर
दिये गये। और इस्राएलियों ने लेवीयों को ये नगर चराइयों ६४
समेत दिये। और उन्हों ने यहूदियों शिमोनियों और ६५
बिन्यामीनियों के गोत्रों में से वे नगर दिये जिन के नाम
ऊपर दिये गये हैं। और कहातियों के कितने एक कुलों ६६
को उन के भाग के नगर एप्रैम के गोत्र में से मिले।
सो उन को अपनी अपनी चराइयों समेत एप्रैम के ६७
पहाड़ी देश का शकेम जो शरणनगर था फिर गेजेर, योक ६८
माम बेथोरोन, अय्यालोन और गत्रिम्मोन, और ६९, ७०
मनश्शे के आधे गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत
आनेर और बिलाम दिये गये शेष कहातियों के कुल को

(२) मूल में दिये।

७१ ये ही नगर मिले । फिर गेर्शोमियों को मनश्शे के आधे गोत्र के कुल में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत बाशान ७२ का गोलान और अशतारोत, और इस्साकार के गोत्र में ७३ से अपनी अपनी चराइयों समेत केदेश दाबरत, रामोत ७४ और आनेम, और आशेर के गोत्र में से अपनी अपनी ७५ चराइयों समेत माशाल अब्दोन, हूकोक और रहोब, ७६ और नप्ताली के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत ७७ गालील का केदेश हम्मोन और किर्यातैम मिले । फिर शेष लेवीयों अर्थात मरारीयों को जबूलून के गोत्र में से तो ७८ अपनी अपनी चराइयों समेत रिम्मोन और ताबोर, और यरीहो के पास की यर्दन नदी की पूरब ओर रूबेन के गोत्र में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत जंगल में का ७९ ८० बेसेर यहसा, कदेमोत और मेपात, और गाद के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत गिलाद का रामोत ८१ महनैम, हेशोबोन और याजेर दिये गये ॥

(इस्साकार बिन्यामीन नप्ताली मनश्शे एप्रैम और आशेर की वंशावलियां)

७. इस्साकार

के पुत्र तोला पूआ याशूब और शिम्रोन चार । और २ तोला के पुत्र उज्जी रपायाह यरीएल यहमै यिबसाम और शमूएल ये अपने अपने पितरों के घरानों अर्थात् तोला की सन्तान के मुख्य पुरुष और बड़े बीर थे और दाऊद के दिनों में उन के वंश की गिनती बाईस हजार छः सौ ३ थी । और उज्जी का पुत्र यिज्रह्याह और यिज्रह्याह के पुत्र मीकाएल ओबद्याह योएल और यिश्शिय्याह ४ पांच । ये सब मुख्य पुरुष थे । और उन के साथ उन की वंशावलियों और पितरों के घरानों के अनुसार सेना के दलों के छत्तीस हजार योद्धा थे क्योंकि उन के बहुत ५ स्त्रियां और बेटे हुए । और उन के भाई जो इस्साकार के सब कुलों में से थे सो सत्तासी हजार बड़े बीर थे जो अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने गये ॥

६ बिन्यामीन के पुत्र बेला बेकेर और यदीएल तीन । ७ बेला के पुत्र एसबोन उज्जी उज्जीएल यरीमोत और ईरी पांच । ये अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े बीर थे और अपनी अपनी वंशावली के अनुसार उन ८ की गिनती बाईस हजार चौंतीस हुई । और बेकेर के पुत्र जमीरा योआश एलीएजेर एल्योएनै ओम्री यरेमोत अबिय्याह अनातोत और आलेमेत ये सब बेकेर के पुत्र ९ हुए । ये जो अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े बीर थे इन के वंश की गिनती अपनी अपनी १० वंशावली के अनुसार बीस हजार दो सौ ठहरी । और यदीएल का पुत्र बिल्हान और बिल्हान के पुत्र यूश बिन्यामीन एहूद कनाना जेतान तर्शीश और अहीशहर । ये ११ सब जो यदीएल के सन्तान और अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े बीर थे इन के वंश सेना में युद्ध करने के योग्य सत्रह हजार दो सौ पुरुष थे । और ईर के १२ पुत्र शुप्पीम और हुप्पीम और अहेर के पुत्र हूशी थे ॥

नप्ताली के पुत्र यहसीएल गूनी येसेर और शल्लूम १३ ये बिल्हा के पोते थे ॥

मनश्शे के पुत्र अस्रीएल जिस को उस की अरामी १४ रखेली जनी और अरामी गिलाद के पिता माकीर को भी जनी । और माकीर जिस की बहिन का नाम माका था १५ उस ने हुप्पीम और शुप्पीम के लिये स्त्रियां ब्याह लीं और दूसरे का नाम सलोफाद था और सलोफाद के बेटियां हुई । फिर माकीर की स्त्री माका एक बेटा जनी १६ और उस का नाम पेरेश रक्खा और उस के भाई का नाम शेरेश था और इस के पुत्र ऊलाम और राकेम हुए । और ऊलाम का पुत्र बदान । ये गिलाद के सन्तान हुए १७ जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था । फिर १८ उस की बहिन हम्मोलेकेत ईशहोद अबीएजेर और महला को जनी । और शमीदा के पुत्र अह्यान शेकेम लिखी १९ और अनीआम हुए ॥

और एप्रैम के पुत्र शूतेलह और शूतेलह का बेरेद २० बेरेद का तहत तहत का एलादा एलादा का तहत, तहत २१ का जाबाद और जाबाद का पुत्र शूतेलह हुआ और येजेर और एलाद भी जिन्हें गत के मनुष्यों ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे इसलिये घात किया कि वे उन के पशु हर लेने को आये थे । सो उन का पिता एप्रैम उन २२ के लिये बहुत दिन शोक करता रहा और उस के भाई उसे शांति देने को आये । तब उस ने अपनी स्त्री से २३ प्रसंग किया और वह गर्भवती होकर एक बेटा जनी और एप्रैम ने उस का नाम इस कारण बरीआ[१] रक्खा कि उस के घराने में विपत्ति पड़ी थी । और उस की बेटी शेरा थी २४ जिस ने निचले और उपरले दोनों बेथोरान नाम नगरों और उज्जेनशेरा को दृढ़ कराया । और उस का बेटा रेपा २५ था और रेशेप भी और उस का पुत्र तेलह तेलह का तहन, तहन का लादान लादान का अम्मीहूद अम्मीहूद २६ का एलीशामा, एलीशामा का नून और नून का पुत्र २७ यहोशू हुआ । और उन की निज भूमि और बस्तियां गांवों २८ समेत बेतेल और पूरब ओर नारान और पच्छिम ओर गांवों समेत गेजेर फिर गांवों समेत शकेम और गांवों समेत अय्या थीं, और मनश्शेइयों के सिवाने के पास अपने २९

(१) अर्थात् विपत्ति ।

अपने गांवों समेत बेतशान तानाक मगिद्दो और दोर।
इन में इस्राएल के पुत्र यूसुफ के सन्तान रहते थे॥

३० आशेर के पुत्र यिम्ना यिश्वा यिश्वी और बरीआ
३१ और उन की बहिन सेरह हुई। और बरीआ के पुत्र हेबेर
३२ और मल्कीएल और यह बिजोंत का पिता हुआ। और
हेबेर ने यपलेत शोमेर होताम और उन की बहिन शूआ
३३ को जन्माया। और यपलेत के पुत्र पासक बिम्हाल और
३४ अश्वात यपलेत के ये ही पुत्र हुए। और शेमेर के पुत्र
३५ अही रोहगा यहुब्बा और अराम। और उस के भाई हेलेम
३६ के पुत्र सोपह यिम्ना शेलेश और आमाल। और सोपह के
३७ पुत्र सूह हर्नेपेर शूआल बेरी यिम्रा, बेसेर होद शम्मा
३८ शिलसा यित्रान और बेरा। और येतेर के पुत्र यपुन्ने
३९ पिस्पा और अरा। और उल्ला के पुत्र आरह हन्नीएल
४० और रिस्या। ये सब आशेर के वंश में हुए और अपने
अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े से
बड़े बीर और प्रधानों में मुख्य थे और ये जो अपनी
अपनी वंशावली के अनुसार सेना में युद्ध करने
के लिये गिने गये इन की गिनती छब्बीस हजार
ठहरी॥

(बिन्यामीन की वंशावली)

८. **बिन्यामीन** ने अपने जेठे बेला को
दूसरे अशबेल तीसरे अहह,
२,३ चौथे नोहा और पांचवें रापा को जन्माया। और बेला के
४,५ पुत्र अद्दार गेरा अबीहूद, अबीशू नामान अहोह, गेरा
६ शपूपान और हूराम हुए। और एहूद के पुत्र ये हुए
गेबा के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष ये
७ थे जो बन्धुए करके मानहत को पहुंचाये गये। और
नामान अहिय्याह और गेरा हुए यही उन्हें बन्धुआ करके
मानहत को ले गया और उस ने उज्जा और अहीहूद को
८ जन्माया। और शहरैम ने हूशीम और बारा नाम अपनी
स्त्रियों को छोड़ देने के पीछे मोआब देश में लड़के
९ जन्माये। सो उस ने अपनी स्त्री होदेश से योआब सिब्या
१० मेशा मल्काम, यूस सोक्या और मिर्मा को जन्माया
उस के ये पुत्र अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष
११ थे। और हूशीम से उस ने अबीतूब और एल्पाल को
१२ जन्माया। एल्पाल के पुत्र एबेर मिशाम और शेमेर
१३ इसी ने ओनो और गांवों समेत लोद को बसाया, फिर
बरीआ और शेमा जो अय्यालोन के निवासियों के पितरों
के घरानों में मुख्य पुरुष थे और गत के निवासियों को भगा
१४,१५ दिया, और अह्यो शाशक यरेमोत, जबद्याह अराद एदेर,
१६,१७ मीकाएल यिस्पा योहा जो बरीआ के पुत्र थे, जबद्याह

मशुल्लाम हिजकी हेबेर, यिशमरै यिजलीआ योबाब जो १८
एल्पाल के पुत्र थे, और याकीम जिक्री जब्दी, एलीएनै १९,२०
सिल्लतै एलीएल, अदायाह बरायाह और शिम्रात जो २१
शिमी के पुत्र थे, और यिशपान एबेर एलीएल, अब्दोन २२,२३
जिक्री हानान, हनन्याह एलाम अन्तोतिय्याह, यिपदयाह २४,२५
और पनूएल जो शाशक के पुत्र थे, और शमशरै शहर्याह २६
अतल्याह, यारेश्याह एलिय्याह और जिक्री जो यरोहाम २७
के पुत्र थे। ये अपनी अपनी पीढ़ी में अपने अपने पितरों २८
के घरानों में मुख्य पुरुष और प्रधान थे ये यरूशलेम में
रहते थे। और गिबोन में गिबोन का पिता रहता था २९
जिस की स्त्री का नाम माका था, और उस का जेठा ३०
बेटा अब्दोन हुआ फिर शूर कीश बाल नादाब, गदोर ३१
अह्यो जेकेर। और मिक्लोत ने शिमा को जन्माया ३२,
और ये भी अपने भाइयों के साम्हने अपने भाइयों के संग
यरूशलेम में रहते थे। और नेर ने कीश को जन्माया ३३
कीश ने शाऊल को और शाऊल ने योनातान मलकीशू
अबीनादाब और एशबाल को जन्माया। और योनातान ३४
का पुत्र मरीब्बाल हुआ और मरीब्बाल ने मीका को
जन्माया। और मीका के पुत्र पीतोन मेलेक तारे और ३५
आहाज। और आहाज ने यहोअद्दा को जन्माया और ३६
यहोअद्दा ने आलेमेत अजमावेत और जिम्री को और
जिम्री ने मोसा को, और मोसा ने बिना को जन्माया और ३७
इस का पुत्र रापा हुआ रापा का एलासा और एलासा
का पुत्र आसेल हुआ। और आसेल के छः पुत्र हुए ३८
जिन के ये नाम थे अर्थात् अज्रीकाम बोकरू यिश्माएल
शार्याह ओबद्याह और हानान ये ही सब आसेल के पुत्र
हुए। और उस के भाई एशेक के ये पुत्र हुए अर्थात् ३९
उस का जेठा ऊलाम दूसरा यूश तीसरा एलीपेलेत। और ४०
ऊलाम के पुत्र शूरबीर और धनुर्धारी हुए और उन के
बहुत बेटे पोते अर्थात् डेढ़ सौ हुए ये ही सब बिन्यामीन
के वंश के थे॥

(यरूशलेम में रहनेहारों का प्रबन्ध)

९. **यों** सब इस्राएली अपनी अपनी वंशा-
वली के अनुसार जो इस्राएल के
राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं गिने गये
और यहूदी अपने विश्वासघात के कारण बंधुए करके
बाबेल को पहुंचाये गये। जो लोग अपनी अपनी निज २
भूमि अर्थात् अपने नगरों में रहते थे सो इस्राएली,
याजक लेवीय और नतीन थे। और यरूशलेम में कुछ ३
यहूदी कुछ बिन्यामीनी और कुछ एप्रैमी और मनश्शेई
रहते थे, अर्थात् यहूदा के पुत्र पेरेस के वंश में से ४

अम्मीहूद का पुत्र ऊती जो ओम्री का पुत्र और इम्री का
५ पोता और बानी का परपोता था, और शीलोइयों में से
६ उस का जेठा बेटा असायाह और उस के पुत्र, और जेरह
के वंश में से यूएल और इन के भाई ये छः सौ नब्बे
७ हुए। फिर बिन्यामीन के वंश में से सल्लू जो मशुल्लाम
का पुत्र होदव्याह का पोता और हस्सनूआ का परपोता
८ था, और यिब्नियाह जो यरोहाम का पुत्र था और
एला जो उज्जी का पुत्र और मिक्री का पोता था और
मशुल्लाम जो शपत्याह का पुत्र रूएल का पोता और
९ यिब्नियाह का परपोता था, और इन के भाई जो
अपनी अपनी वंशावली के अनुसार मिलकर नौ सौ
छप्पन ठहरे ये सब पुरुष अपने अपने पितरों के
घरानों के अनुसार पितरों के घरानों में मुख्य थे ॥

१० फिर याजकों में से यदायाह यहोयारीब और
११ याकीन, और अजर्याह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान
और हिलकिय्याह का पुत्र था यह मशुल्लाम का पुत्र यह
सादोक का पुत्र यह मरायोत का पुत्र यह अहीतूब का
१२ पुत्र था, और अदायाह जो यरोहाम का पुत्र था यह
पशहूर का पुत्र यह मल्कियाह का पुत्र यह मासै का
पुत्र यह अदीएल का पुत्र यह जेरा का पुत्र यह मशुल्लाम
का पुत्र यह मशिल्लीत का पुत्र यह इम्मेर का पुत्र था।
१३ और इन के भाई थे जो अपने अपने पितरों के घरानों
में सत्रह सौ साठ मुख्य पुरुष थे वे परमेश्वर के भवन
१४ की सेवा के काम में बहुत निपुण पुरुष थे। फिर लेवीयों
में से मरारी के वंश में से शमायाह जो हश्शूब का पुत्र
१५ अज्रीकाम का पोता और हशब्याह का परपोता था, और
बकबक्कर हेरेश और गालाल और आसाप के वंश में
से मत्तन्याह जो मीका का पुत्र और जिक्री का पोता था,
१६ और ओबद्याह जो शमायाह का पुत्र गालाल का पोता
और यदूतून का परपोता था और बेरेक्याह जो आसा
का पुत्र और एल्काना का पोता था जो नतोपाइयों के
१७ गांवों में रहता था। और डेवढ़ीदारों में से अपने अपने
भाइयों सहित शल्लूम अक्कूब तल्मोन और अहीमान
१८ इन में से मुख्य तो शल्लूम था, और वह तब लों पूरब ओर
राजा के फाटक के पास डेवढ़ीदारी करता था। लेवीयों की
१९ छावनी के डेवढ़ीदार ये ही थे। और शल्लूम जो कोरे
का पुत्र एब्यासाप का पोता और कोरह का परपोता था
और उस के भाई जो उस के मूलपुरुष के घराने के
अर्थात् कोरही थे सो इस काम के अधिकारी थे कि वे
तम्बू के डेवढ़ीदार हों। उन के पुरखा तो यहोवा की
२० छावनी के अधिकारी और पैठाव के रखवाल थे। और
अगले समय में एलाजार का पुत्र पीनहास जिस के संग
यहोवा रहा सो उन का प्रधान था। २१ मेशेलेम्याह का पुत्र
जकर्याह मिलापवाले तंबू का डेवढ़ीदार था। २२ ये सब जो
डेवढ़ीदार होने को चुने गये सो दो सौ बारह थे ये जिन
के पुरखाओं को दाऊद और शमूएल दर्शी ने विश्वासयोग्य
जानकर ठहराया था सो अपने अपने गांव में अपनी
अपनी वंशावली के अनुसार गिने गये। २३ सो वे और उन
के सन्तान यहोवा के भवन अर्थात् तंबू के भवन के
फाटकों का अधिकार बारी बारी रखते थे। २४ डेवढ़ीदार
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों दिशा की ओर चौकी
देते थे। २५ और उन के भाई जो गांवों में रहते थे उन को
सात सात दिन पीछे बारी बारी करके उन के संग रहने
के लिये आना पड़ता था। २६ क्योंकि चारों प्रधान डेवढ़ीदार
जो लेवीय थे सो विश्वासयोग्य जानकर परमेश्वर के
भवन की कोठरियों और भण्डारों के अधिकारी ठहराये
गये थे। २७ और वे परमेश्वर के भवन के आस पास इसलिये
रात बिताते थे कि उस की रक्षा उन्हें सौंपी गई थी और भोर
भोर को उसे खोलना उन्हीं का काम था। २८ और उन में
से कुछ उपासना के पात्रों के अधिकारी थे क्योंकि ये
गिनकर भीतर पहुंचाये और गिनकर बाहर निकाले भी
जाते थे। २९ और उन में से कुछ सामान के और पवित्र-
स्थान के पात्रों के और मैदे दाखमधु तेल लोबान और
सुगंधद्रव्यों के अधिकारी ठहराये गये। ३० और याजकों के
बेटों में से कुछ सुगन्धद्रव्यों में गंधी का काम करते थे।
३१ और मत्तित्याह नाम एक लेवीय जो कोरही शल्लूम का
जेठा था सो विश्वासयोग्य जानकर तवों पर बनाई हुई
वस्तुओं का अधिकारी था। ३२ और उस के भाइयों अर्थात्
कहातियों में से कुछ तो भेंटवाली रोटी के अधिकारी थे
कि एक एक विश्रामदिन को उसे तैयार किया करें। ३३ और
ये गवैये थे जो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य थे और
कोठरियों में रहते और और काम से छूटे थे क्योंकि वे दिन
रात अपने काम में लगे रहते थे। ३४ ये ही अपनी अपनी
पीढ़ी में लेवीयों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे
ये यरूशलेम में रहते थे ॥

३५ और गिबोन में गिबोन का पिता यीएल रहता था
जिस की स्त्री का नाम माका था। ३६ उस का जेठा बेटा
अब्दोन हुआ फिर सूर कीश बाल नेर नादाब, ३७ गदोर
अह्यो जकर्याह और मिक्लोत। ३८ और मिक्लोत ने शिमाम
को जन्माया और ये भी अपने भाइयों के साम्हने अपने
भाइयों के संग यरूशलेम में रहते थे। ३९ और नेर ने कीश
को जन्माया कीश ने शाऊल को और शाऊल ने योना-
तान मल्कीशू अबीनादाब और एशबाल को जन्माया।
४० और योनातान का पुत्र मरीब्बाल हुआ और मरीब्बाल ने

४१ मीका को जन्माया। और मीका के पुत्र पीतोन मेलेक
४२ और तहू[१]। और आहाज ने यारा को जन्माया और यारा ने आलेमेत अजमावेत और जिम्री को जन्माया और जिम्री
४३ ने मोसा को, और मोसा ने बिना को जन्माया और इस का पुत्र रपायाह हुआ रपायाह का एलासा और एलासा
४४ का पुत्र आसेल हुआ, और आसेल के छः पुत्र हुए जिन के ये नाम थे अर्थात् अज्रीकाम बोकरू यिश्माएल शार्याह ओबद्याह और हानान आसेल के ये ही पुत्र हुए॥

(शाऊल की मृत्यु और दाऊद के राज्य का आरम्भ)

१०. पलिश्ती तो इस्राएलियों से लड़े और इस्राएली पलिश्तियों के साम्हने से भागे और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गये।
२ और पलिश्ती शाऊल और उस के पुत्रों के पीछे लगे रहे और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातान अबीनादाब
३ और मल्कीशू को मार डाला। और शाऊल के साथ लड़ाई और भारी होती गई और धनुर्धारियों ने उसे जा
४ लिया और वह उन के कारण व्याकुल हो गया। तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेहारे से कहा अपनी तलवार खींचकर मेरे भोंक दे ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मेरा ठट्ठा करें पर उस के हथियार ढोनेहारे ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करना नकारा तब शाऊल अपनी
५ तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा। यह देखकर कि शाऊल मर गया उस का हथियार ढोनेहारा भी अपनी
६ तलवार पर आप गिरकर मर गया। यों शाऊल और उस के तीनों पुत्र और उस के सारे घराने के लोग एक
७ संग मर गये। यह देखकर कि वे भाग गये और शाऊल और उस के पुत्र मर गये उस तराई में रहनेहारे सब इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगर को छोड़कर भाग गये और पलिश्ती आकर उनमें रहने लगे॥
८ दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आये तब उन को शाऊल और उस के पुत्र गिलबो
९ पहाड़ पर पड़े हुए मिले। सो उन्हों ने उस के बस्त्रों को उतार उस का सिर और हथियार ले लिये और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इसलिये भेज दिया कि उन के देवताओं और साधारण लोगों में यह शुभ समा-
१० चार देते जाएं। तब उन्हों ने उस के हथियार तो अपने देवालय में रक्खे और उस की खोपड़ी दागोन के मन्दिर
११ में जड़ दी। जब गिलाद के याबेश के सारे लोगों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल से क्या क्या किया है,
१२ तब सब शूरवीर चले और शाऊल और उस के पुत्रों की लोथें उठाकर याबेश में ले आये और उनकी हड्डियों को याबेश में के बांज वृक्ष के तले गाड़ दिया और सात दिन
१३ का उपवास किया। सो शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया जो उस ने यहोवा से किया था क्योंकि उस ने यहोवा का बचन टाला था फिर उस ने भूतसिद्धि
१४ करनेवाली से पूछकर सम्मति ली थी, उस ने यहोवा से न पूछा था सो यहोवा ने उसे मारकर राज्य यिशै के पुत्र दाऊद का कर दिया॥

११. तब सब इस्राएली दाऊद के पास हेब्रोन में इकट्ठे होकर कहने लगे सुन हम
२ लोग और तू एक ही हाड़ मांस हैं। अगले दिनों में जब शाऊल राजा था तब भी इस्राएलियों का अगुआ तू ही था और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ से कहा कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा और मेरी प्रजा इस्राएल
३ का प्रधान तू ही होगा। सो सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन में राजा के पास आये और दाऊद ने उन के साथ हेब्रोन में यहोवा के साम्हने वाचा बांधी और उन्हों ने यहोवा के वचन के अनुसार जो उस ने शमूएल से कहा था इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक
४ किया। तब सब इस्राएलियों समेत दाऊद यरूशलेम को गया जो यबूस भी कहलाता था और यबूसी नाम उस
५ देश के निवासी वहां रहते थे। सो यबूस के निवासियों ने दाऊद से कहा तू यहां आने न पाएगा। तौभी दाऊद ने सिय्योन नाम गढ़ को ले लिया वही दाऊदपुर भी
६ कहावता है। और दाऊद ने कहा जो कोई यबूसियों को सब से पहिले मारेगा सो मुख्य सेनापति होगा तब सरूयाह का पुत्र योआब सब से पहिले चढ़ गया और
७ मुख्य ठहर गया। और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा
८ सो उस का नाम दाऊदपुर पड़ा। और उस ने नगर के चारों ओर अर्थात् मिल्लो से लेकर चारों ओर शहरपनाह बनवाई और योआब ने शेष नगर के खण्डहरों को फिर
९ बसाया[२]। और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई और सेनाओं का यहोवा उस के संग था॥

(दाऊद के शूरवीर)

१० यहोवा ने इस्राएल के विषय जो वचन कहा था उस के अनुसार दाऊद के जिन शूरवीरों ने सारे इस्राएलियों समेत उस के राज्य में उस के पक्ष में होकर उसे राजा बनाने को बल किया उन में से मुख्य पुरुष ये हैं।
११ दाऊद के शूरवीरों की नामावली[३] यह है अर्थात् किसी हक्मोनी का पुत्र याशोबाम जो तीसों में मुख्य था उस

(१) देखो ८ : ३५।

(२) मूल में बाकी नगर जिलाता था। (३) मूल में गिनती।

ने तीन सौ पुरुषों पर भाला चलाकर उन्हें एक ही समय १२ मार डाला। उस के पीछे दोदो का पुत्र एक अहोही एलाजार नाम था जो तीनों बड़े वीरों में से एक था। १३ वह पसदम्मीम में जहां जव का एक खेत था दाऊद के संग रहा और पलिश्ती वहां युद्ध करने को इकट्ठे हुए थे १४ और लोग पलिश्तियों के साम्हने से भाग गये थे। तब उन्हों ने उस खेत के बीच खड़े होकर उस की रक्षा की और पलिश्तियों को मारा और यहोवा ने उन का बड़ा १५ उद्धार किया। और तीसों मुख्य पुरुषों में से तीन दाऊद के पास चटान को अर्थात् अदुल्लाम नाम गुफा में गये और पलिश्तियों की छावनी रपाईम नाम तराई में पड़ी १६ हुई थी। उस समय दाऊद गढ़ में था और उसी समय १७ पलिश्तियों की एक चौकी बेतलेहेम में थी। तब दाऊद ने बड़ी अभिलाष के साथ कहा कौन मुझे बेतलेहेम के १८ फाटक के पास के कुएं का पानी पिलाएगा। सो वे तीनों जन पलिश्तियों की छावनी में टूट पड़े और बेतलेहेम के फाटक के कुएं से पानी भरकर दाऊद के पास ले आये पर दाऊद ने पीने से नाह की और यहोवा के १९ साम्हने अर्घ करके उण्डेला। और उस ने कहा मेरा परमेश्वर मुझ से ऐसा करना दूर रक्खे क्या मैं इन मनुष्यों का लोहू पीऊं जो अपने प्राण पर खेले हैं ये तो अपने प्राण पर खेलकर उसे ले आये हैं सो उस ने वह पानी पीने से नाह की इन तीन वीरों ने तो ये ही २० काम किये। और अबीशै जो योआब का भाई था सो तीनों में मुख्य था और उस ने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला और तीनों में नामी हो गया। २१ दूसरी श्रेणी के तीनों में से वह अधिक प्रतिष्ठित था और उन का प्रधान हो गया पर मुख्य तीनों के पद को न २२ पहुंचा। यहोयादा का पुत्र बनायाह था जो कबजेल के एक वीर का पुत्र था जिस ने बड़े बड़े काम किये थे उस ने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला और बरफ के समय उस ने एक गड़हे में उतर के एक सिंह को २३ मार डाला। फिर उस ने एक डीलवाले अर्थात् पांच हाथ लंबे मिस्री पुरुष को मार डाला मिस्री तो हाथ में जुलाहों का ढेका सा एक भाला लिये हुए था पर बनायाह एक लाठी ही लिये हुए उस के पास गया और मिस्री के हाथ से भाले को छीनकर उसी के भाले से उसे घात २४ किया। ऐसे ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह २५ उन तीनों वीरों में नामी हो गया। वह तो तीसों से अधिक प्रतिष्ठित था पर मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। उस को दाऊद ने अपनी निज सभा में सभासद किया॥

२६ फिर दलों के वीर ये थे अर्थात् योआब का भाई असाहेल बेतलेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान, २७ हरोरी २८ शम्मोत पलोनी हेलेस, तकोई इक्केश का पुत्र ईरा अना-तोती अबीएजेर, २९,३० हूशाई सिब्बकै अहोही ईलै, नतोपाई महरै एक और नतोपाई, बाना का पुत्र हेलेद, ३१ बिन्या-मीनियों के गिबा नगरवासी रीबै का पुत्र इतै पिरातोनी बनायाह, ३२ गाश के नालों के पास रहनेहारा हूरै अराबा-वासी अबीएल, ३३ बहूरीमी अजमावेत शाल्बोनी एल्यहबा, ३४ गीजोई हाशेम के पुत्र फिर पहाड़ी शागे का पुत्र ३५ योनातान, पहाड़ी सराकार का पुत्र अहीआम ऊर का पुत्र एलीपाल, ३६,३७ मकेराई हेपेर पलोनी अहिय्याह, कर्मेली हेस्रो ३८ एज्बै का पुत्र नारै, नातान का भाई योएल हग्री का पुत्र ३९ मिभार, अम्मोनी सेलेक बेरोती नहरै जो सरूयाह के पुत्र ४० योआब का हथियार ढोनेहारा था, येतेरी ईरा और गारेब, ४१,४२ हित्ती ऊरिय्याह अहलै का पुत्र जाबाद, तीस पुरुषों समेत रूबेनी शीजा का पुत्र अदीना जो रूबेनियों ४३ का मुखिया था, माका का पुत्र हानान मेतेनी ४४ योशापात, अशतारोती उजिय्याह अरोएरी होताम ४५ के पुत्र शामा और यीएल, शिम्री का पुत्र यदीएल ४६ और उस का तीसी भाई योहा, महवीमी एलीएल एलनाम के पुत्र यरीबै और योशव्याह मोआबी यित्मा, ४७ एलीएल ओबेद और मसोबाई यासीएल॥

(दाऊद के अनुचर)

१२. जब दाऊद सिकलग में कीश के पुत्र शाऊल के डर के मारे छिपा[१] रहता था तब ये उस के पास वहां आये और ये उन वीरों में के थे जो युद्ध में उस के सहायक थे। २ ये धनुर्धारी थे जो दहिने बायें दोनों हाथों से गोफन के पत्थर और धनुष के तीर चला सकते थे और ये शाऊल के भाइयों में से बिन्यामीनी थे। ३ मुख्य तो अहीएजेर और दूसरा योआश था ये गिबा-वासी शमाआ के पुत्र थे फिर अजमावेत के पुत्र यजीएल ४ और पेलेत फिर बराका और अनातोती येहू, और गिबोनी यिशमायाह जो तीसों में से एक वीर और उन के ऊपर भी था फिर यिर्मयाह यहजीएल योहानान गदेरावासी ५ योजाबाद, एलूजै यरीमोत बाल्याह शमर्याह हारूपी ६ शपत्याह, एल्काना यिशिय्याह अजरेल योएजेर याशो-७ बाम जो सब कोरहवंशी थे, और गदोरवासी यरोहाम के ८ पुत्र योएला और जबद्याह। फिर जब दाऊद जंगल के गढ़ में रहता था तब ये गादी जो शूरवीर थे और युद्ध करने को सीखे हुए और ढाल और भाला काम में लानेहारे थे और उन के मुंह सिंह के से और वे पहाड़ी चिकारे

(१) मूल में बन्द।

हैं वेग दौड़नेहारे थे ये और गादियों से अलग होकर उस के
९ पास आये, अर्थात् मुख्य तो एजेर दूसरा ओबद्याह तीसरा
१०, ११ एलीआब, चौथा मिश्मन्ना पांचवां यिर्मयाह, छठा
१२ अत्तै सातवां एलीएल, आठवां योहानान नौवां एलजा-
१३ बाद, दसवां यिर्मयाह और ग्यारहवां मकबन्नै था।
१४ ये गादी मुख्य योद्धा थे उन में से जो सब से छोटा था
सो तो एक सौ के बराबर और जो सब से बड़ा था सो
१५ हजार के बराबर था। ये ही वे हैं जो पहिले महीने में
जब यर्दन नदी सब कड़ाड़ों के ऊपर ऊपर बहती थी तब
उस के पार उतरे और पूरब और पच्छिम दोनों ओर के
१६ सब तराई के रहनेहारों को भगा दिया। और कई
एक बिन्यामीनी और यहूदी भी दाऊद के पास गढ़ में
१७ आये। उन से मिलने को दाऊद निकला और उन से
कहा यदि तुम मेरे पास मित्रभाव से मेरी सहायता करने
को आये हो तब तो मेरा मन तुम से लगा रहेगा पर
जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकड़वाने
आये हो तो हमारे पितरों का परमेश्वर इस पर दृष्टि करके
१८ डांटे क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं हुआ। तब
आत्मा अमासै में समाया जो तीसों वीरों में मुख्य था
और उस ने कहा हे दाऊद हम तेरे हैं हे यिशै के पुत्र
हम तेरी ओर के हैं तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे
सहायकों का कुशल हो क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता
किया करता है सो दाऊद ने उन को रख लिया और
१९ अपने दल के मुखिये ठहरा दिया। फिर कुछ मनश्शेई
भी उस समय दाऊद के पास भाग गये जब वह पलिश्तियों
के साथ होकर शाऊल से लड़ने को गया पर उन की कुछ
सहायता न की क्योंकि पलिश्तियों के सरदारों ने सम्मति
लेने पर यह कहकर उसे बिदा किया कि वह हमारे सिर
कटवाकर अपने स्वामी शाऊल से फिर मिल जाएगा।
२० जब वह सिक्लग को जा रहा था तब ये मनश्शेई उस के
पास भाग गये अर्थात् अदना योजाबाद यदीएल मीकाएल
योजाबाद एलीहू और सिल्लतै जो मनश्शे के हजारों के
२१ मुखिये थे। इन्हों ने लुटेरों के दल के बिरुद्ध दाऊद की
सहायता की क्योंकि ये सब शूरवीर थे और सेना के प्रधान
२२ भी बन गये। बरन दिन दिन लोग दाऊद की सहायता
करने को उस के पास आते रहे यहां लों कि परमेश्वर
की सी एक बड़ी सेना बन गई॥

२३ फिर जो लड़ने को हथियार बांधे हुए हेब्रोन में
दाऊद के पास इसलिये आये कि यहोवा के वचन के
अनुसार शाऊल का राज्य उस के हाथ कर दें उन के
२४ मुखियों की यह गिन्ती है। यहूदी तो ढाल और भाला
लिये हुए लड़ने को हथियारबन्द छः हजार आठ सौ
आये। शिमोनी लड़ने को तैयार सात हजार एक सौ शूरवीर २५
आये। लेवीय चार हजार छः सौ आये। और हारून २६, २७
के घराने का प्रधान यहोयादा था और उस के साथ तीन
हजार सात सौ आये। और सादोक नाम एक जवान वीर २८
भी आया और उस के पिता के घराने के बाईस प्रधान आये।
और शाऊल के भाई बिन्यामीनियों में से तीन हजार ही २९
आये क्योंकि उस समय लों आधे बिन्यामीनियों से अधिक
शाऊल के घराने का पक्ष करते रहे। फिर एप्रैमियों में ३०
से बड़े वीर और अपने अपने पितरों के घरानों में नामी
पुरुष बीस हजार आठ सौ आये और मनश्शे के आधे ३१
गोत्र में से दाऊद को राजा करने के लिये अठारह हजार
आये जिन के नाम बताये गये थे। और इस्साकारियों में ३२
से जो समय को पहचानते थे कि इस्राएल को क्या करना
उचित है उन के प्रधान दो सौ थे और उन के सब भाई
उन की आज्ञा में रहते थे। फिर जबूलून में से युद्ध के ३३
सब प्रकार के हथियार लिये हुए लड़ने को पांति बांधने-
हारे योद्धा पचास हजार आये थे पांति बांधनेहारे थे और
चंचल न थे[१]। फिर नप्ताली में से प्रधान तो एक हजार ३४
और उन के संग ढाल और भाला लिये सैंतीस हजार
आये। और दानियों में से लड़ने के लिये पांति बांधनेहारे ३५
अट्ठाईस हजार छः सौ आये। और आशेर में से लड़ने ३६
को पांति बांधनेहारे चालीस हजार योद्धा आये। और ३७
यर्दन पार रहनेहारे रूबेनी गादी और मनश्शे के आधे
गोत्रियों में से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिये हुए
एक लाख बीस हजार आये। ये सब युद्ध के लिये पांति ३८
बांधनेहारे योद्धा दाऊद को सारे इस्राएल का राजा
करने के लिये हेब्रोन में सच्चे मन से आये और और
सब इस्राएली भी दाऊद को राजा करने के लिये एक
मन हुए थे। और वे वहां तीन दिन दाऊद के संग ३९
खाते पीते रहे क्योंकि उन के भाइयों ने उन के लिये
तैयारी की थी। और जो उन के निकट बरन इस्साकार ४०
जबूलून और नप्ताली लों रहते थे वे भी गदहों ऊंटों
खच्चरों और बैलों पर मैदा अंजीरों और किशमिश की
टिकियां दाखमधु और तेल आदि भोजनवस्तु लादकर
लाये और बैल और भेड़ बकरियां बहुतायत से लाये
क्योंकि इस्राएल में आनन्द हो रहा था॥

(पवित्र संदूक के यरूशलेम में पहुंचाये जाने का वर्णन)

१३. और दाऊद ने सहस्रपतियों शतपतियों और सब प्रधानों से सम्मति
ली। तब दाऊद ने इस्राएल की सारी मण्डली २

(१) मूल में, मन और मन के बिना।

से कहा यदि यह तुम को अच्छा लगे और हमारे परमेश्वर की इच्छा हो तो इस्राएल के सब देशों में हमारे जो भाई रह गये और उन के साथ जो याजक और लेवीय अपने अपने चराईवाले नगरों में रहते हैं उन के पास भी यह हर कहीं कहला भेजें कि हमारे ३ पास इकट्ठे हो जाओ। और हम अपने परमेश्वर के संदूक को अपने यहां ले आएं क्योंकि शाऊल के दिनों ४ हम उस के समीप न जाते थे। और सारी मण्डली ने कहा हम ऐसा ही करेंगे क्योंकि यह बात उन सब लोगों ५ को ठीक जची। सो दाऊद ने मिस्र के शीहोर से ले हमात की घाटी लों के सब इस्राएलियों को इसलिये इकट्ठा किया कि परमेश्वर के संदूक को किर्यत्यारीम से ६ ले आएं। तब दाऊद सब इस्राएलियों को संग लेकर बाला को गया जो किर्यत्यारीम भी कहावता और यहूदा के भाग में था कि परमेश्वर यहोवा का संदूक वहां से ले आएं वह तो करूबों पर विराजनेहारा है और उस का ७ नाम भी लिया जाता है, सो उन्हों ने परमेश्वर का संदूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर अबीनादाब के घर से निकाला और उज्जा और अह्यो उस गाड़ी को हांकने लगे। ८ और दाऊद और सारे इस्राएली परमेश्वर के साम्हने तन मन से गीत गाते और वीणा सारंगी डफ झांझ ९ और तुरहियां बजाते थे। जब वे कीदोन के खलिहान तक आये तब उज्जा ने अपना हाथ संदूक थामने को १० बढ़ाया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी। तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा और उस ने उस को मारा क्योंकि उस ने संदूक पर हाथ लगाया था वह वहीं पर- ११ मेश्वर के साम्हने मर गया। तब दाऊद अप्रसन्न हुआ इसलिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था और उस ने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा[1] रक्खा यह नाम आज लों १२ बना है। और उस दिन दाऊद परमेश्वर से डरकर कहने लगा मैं परमेश्वर के संदूक को अपने यहां क्योंकर १३ ले आऊं। सो दाऊद ने संदूक को अपने यहां दाऊदपुर में न पहुंचाया पर ओबेदेदोम नाम गती के यहां १४ हटा ले गया। और परमेश्वर का संदूक ओबेदेदोम के यहां उस के घराने के पास तीन महीने रहा और यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने पर और जो कुछ उस का था उस पर भी आशिष दी ॥

१४. और सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत और उस का भवन बनाने को देवदारु की लकड़ी और राज और बढ़ई भेजे। और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा २ ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्थिर किया क्योंकि उस की प्रजा इस्राएल के निमित्त उस का राज्य अत्यन्त बढ़ गया था ॥

और यरूशलेम में दाऊद ने और स्त्रियां ब्याह लीं ३ और और बेटे बेटियां जन्माईं। उस के जो सन्तान ४ यरूशलेम में उत्पन्न हुए उन के ये नाम हैं अर्थात् शम्मू शोबाब नातान सुलैमान, यिभार एलीशू एलपेलेत, ५ नोगह नेपेग यापी, एलीशामा बेल्यादा और एलीपेलेत ॥ ६,७

जब पलिश्तियों ने सुना कि सारे इस्राएल का राजा ८ होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ तब सब पलिश्तियों ने दाऊद की खोज में चढ़ाई की यह सुनकर दाऊद उन का साम्हना करने को निकल गया। सो ९ पलिश्ती आये और रपाईम नाम तराई में धावा किया था। तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा क्या मैं पलिश्तियों १० पर चढ़ाई करूं और क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर देगा यहोवा ने उस से कहा चढ़ाई कर क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ कर दूंगा। सो जब वे बालपरासीम को आये तब दाऊद ने ११ उन को वहीं मार लिया, तब दाऊद ने कहा परमेश्वर मेरे द्वारा मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पड़ा है इस कारण उस स्थान का नाम बालपरासीम[2] रक्खा गया। वहां वे अपने देवताओं को छोड़ गये १२ और दाऊद की आज्ञा से वे आग लगाकर फूंक दिये गये। फिर दूसरी बार पलिश्तियों ने उसी तराई में धावा १३ किया। तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर पूछा और १४ परमेश्वर ने उस से कहा उन का पीछा मत कर उन से मुड़कर तूत वृक्षों के साम्हने से उन पर छापा मार। और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने १५ की सी आहट तुझे सुन पड़े तब यह जानकर युद्ध करने को निकल जाना कि परमेश्वर पलिश्तियों की सेना मारने को मेरे आगे पधारा है। परमेश्वर की इस आज्ञा १६ के अनुसार दाऊद ने किया और इस्राएलियों ने पलिश्तियों की सेना को गिबोन से लेकर गेजेर लों मार लिया। तब दाऊद की कीर्त्ति सब देशों में फैल गई और यहोवा १७ ने सब जातियों के मन में उस का डर उपजाया ॥

१५. तब दाऊद ने दाऊदपुर में भवन बनवाये और परमेश्वर के संदूक के लिये एक स्थान तैयार करके एक तंबू खड़ा किया। तब दाऊद ने २ कहा लेवीयों को छोड़ और किसी को परमेश्वर का संदूक उठाना नहीं चाहिये क्योंकि यहोवा ने उन्हीं

(१) अर्थात् उज्जा पर टूट पड़ना।

(२) अर्थात् टूट पड़ने का स्थान।

को इसलिये चुना है कि परमेश्वर का संदूक उठाएं और ३ उस की सेवा टहल सदा किया करें । सो दाऊद ने सब इस्राएलियों को यरूशलेम में इसलिये इकट्ठा किया कि यहोवा का संदूक उस स्थान पर पहुंचाएं जिसे उस ने ४ उस के लिये तैयार किया था । तब दाऊद ने हारून के ५ सन्तानों और इन लेवीयों को इकट्ठा किया, अर्थात् कहातियों में से ऊरीएल नाम प्रधान को और उस के ६ एक सौ बीस भाइयों को, मरारीयों में से असायाह नाम ७ प्रधान को और उस के दो सौ बीस भाइयों को, गेर्शोमियों में से योएल नाम प्रधान को और उस के एक सौ तीस ८ भाइयों को, एलीसापानियों में से शमायाह नाम प्रधान ९ को और उस के दो सौ भाइयों को, हेब्रोनियों में से एलीएल १० नाम प्रधान को और उस के अस्सी भाइयों को, और उज्जीएलियों में से अम्मीनादाब नाम प्रधान को और उस ११ के एक सौ बारह भाइयों को । तब दाऊद ने सादोक और एब्यातार नाम याजकों को और ऊरीएल असायाह योएल शमायाह एलीएल और अम्मीनादाब नाम लेवीयों को १२ बुलवाकर, उन से कहा तुम तो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष हो सो अपने भाइयों समेत अपने अपने को पवित्र करो कि तुम इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का संदूक उस स्थान पर पहुंचा सको जिस को मैं ने उस के लिये तैयार १३ किया है । क्योंकि पहिली बार तुम लोग उस को न लाये थे इस कारण हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा क्योंकि १४ हम उस की खोज में नियम के अनुसार न लगे थे । सो याजकों और लेवीयों ने अपने अपने को पवित्र किया कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का संदूक ले जा सकें । १५ तब उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दी थी लेवीयों ने संदूक को डंडों के बल अपने १६ कंधों पर उठा लिया । और दाऊद ने प्रधान लेवीयों को आज्ञा दी कि अपने भाई गानेहारों को बाजे अर्थात् सारंगी बीणा और झांझ देकर बजाने और आनन्द के १७ साथ ऊंचे स्वर से गाने को ठहराओ । सो लेवीयों ने योएल के पुत्र हेमान को और उस के भाइयों में से बेरेक्याह के पुत्र आसाप को और अपने भाई मरारीयों १८ में से कूशायाह के पुत्र एतान को ठहराया । और उन के साथ उन्हों ने दूसरे पद के अपने भाइयों को अर्थात जकर्याह बेन याजीएल शमीरामोत यहीएल उन्नी एलीआब बनायाह मासेयाह मत्तित्याह एलीपलेह मिकनेयाह और ओबेदेदोम और यीएल को जो डेवढ़ीदार थे ठहराया । १९ यों हेमान आसाप और एतान नाम गानेहारे तो पीतल २० की झांझ बजा बजाकर राग चलाने को, और जकर्याह अजीएल शमीरामोत यहीएल उन्नी एलीआब मासेयाह और बनायाह अलामोत नाम राग में सारंगी बजाने को, २१ और मत्तित्याह एलीपलेह मिकनेयाह ओबेदेदोम यीएल २२ और अजज्याह बीणा खर्ज में छेड़ने को ठहराये गये । और उठाने का अधिकारी कनन्याह नाम लेवीयों का प्रधान था वह उठाने के विषय शिक्षा देता था क्योंकि वह २३ निपुण था । और बेरेक्याह और एल्काना संदूक के २४ डेवढ़ीदार थे । और शबन्याह योशापात नतनेल अमासै जकर्याह बनायाह और एलीएजेर नाम याजक परमेश्वर के संदूक के आगे आगे तुरहियां बजाते हुए चले और ओबेदेदोम और यहिय्याह उस के डेवढ़ीदार थे । २५ और दाऊद और इस्राएलियों के पुरनिये और सहस्रपति सब मिलकर यहोवा की वाचा का संदूक ओबेदेदोम के घर से आनन्द के साथ ले आने को गये । २६ जब परमेश्वर ने यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे लेवीयों की सहायता की तब उन्हों ने सात बैल और सात मेढ़े बलि किये । २७ दाऊद और यहोवा की वाचा का संदूक उठानेहारे सब लेवीय और गानेहारे और गानेहारों के साथ उठानेहारों का प्रधान कनन्याह ये सब तो सन के कपड़े के बागे पहिने थे और दाऊद सन के कपड़े का एपोद पहिने था । २८ यों सारे इस्राएली यहोवा की वाचा के संदूक को जयजयकार करते और नरसिंगे तुरहियां और झांझ बजाते और सारंगियां और बीणा सुनाते हुए ले चले । २९ जब यहोवा की वाचा का संदूक दाऊदपुर लों पहुंचा तब दाऊद की बेटी मीकल ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए देखा और उसे मन ही मन तुच्छ जाना ॥

१६. तब परमेश्वर का संदूक ले आकर उस तंबू में रक्खा गया जो दाऊद ने उस के लिये खड़ा कराया था और परमेश्वर के साम्हने होमबलि और मेलबलि चढ़ाये गये । २ जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका तब उस ने यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया । ३ और उस ने क्या पुरुष क्या स्त्री सब इस्राएलियों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा मांस और किशमिश की एक एक टिकिया बंटवा दी ॥

४ तब उस ने कितने एक लेवीयों को इसलिये ठहरा दिया कि यहोवा के संदूक के साम्हने से सेवा टहल किया करें और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की चर्चा और उस का धन्यवाद और स्तुति किया करें । ५ उन का मुखिया तो आसाप था और उस के नीचे जकर्याह था फिर यीएल शमीरामोत यहीएल मत्तित्याह एलीआब बनायाह ओबेदेदोम और यीएल ये थे तो सारंगियां और

झीणाएं लिये हुए थे और आसाप झांझ बजाकर राग
६ चलाता था । और बनायाह और यहजीएलनाम याजक
परमेश्वर की वाचा के संदूक के साम्हने तुरहियां नित्य
बजाने को ठहराये गये ॥

७ पहिले उसी दिन दाऊद ने यहोवा का धन्यवाद
करने का काम आसाप और उस के भाइयों को सौंप दिया।

८ यहोवा का धन्यवाद करो उस से प्रार्थना करो
देश देश में उस के कामों का प्रचार करो ।
९ उस का गीत गाओ उस का भजन गाओ
उस के सब आश्चर्य्य कर्म्मों का ध्यान करो ।
१० उस के पवित्र नाम पर बड़ाई करो
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो ।
११ यहोवा और उस के सामर्थ की खोज करो
उस के दर्शन के लगातार खोजी रहो ।
१२ उस के किये हुए आश्चर्य्यकर्म्म
उस के चमत्कार और न्यायवचन स्मरण करो ।
१३ हे उस के दास इस्राएल के वंश
हे याकूब की सन्तान तुम जो उस के चुने हुए हो,
१४ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है
उस के न्याय के काम पृथिवी भर में होते हैं ।
१५ उस की वाचा को सदा लों स्मरण रक्खो
सो वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये
ठहरा[१] दिया ।
१६ वह वाचा उस ने इब्राहीम के साथ बांधी
और उसी के विषय उस ने इसहाक से किरिया खाई ।
१७ और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके
इस्राएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा बांधकर
दृढ़ किया कि,
१८ मैं कनान देश तुझी को दूंगा
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा ।
१९ उस समय तो तुम गिनती में थोड़े थे
वरन बहुत ही थोड़े और उस देश में परदेशी थे ।
२० और वे एक जाति से दूसरी जाति में
और एक राज्य से दूसरे में फिरते तो रहे,
२१ पर उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न
दिया
और वह राजाओं को उन के निमित्त यह धमकी
देता था कि,
२२ मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ
और न मेरे नबियों की हानि करो ।
२३ हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का गीत गाओ

(१) मूल में जिस को आज्ञा उस ने हजार पीढ़ियों के लिये दी ।

दिन दिन उस के किये हुए उद्धार का शुभसमाचार
सुनाते रहो ।
२४ अन्यजातियों में उस की महिमा का
और देश देश के लोगों में उस के आश्चर्य्य कर्म्मों
का वर्णन करो ।
२५ क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के अति योग्य है
वह तो सारे देवताओं से अधिक भययोग्य है ।
२६ क्योंकि देश देश के सब देवता मूरतें ही हैं
पर यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है ।
२७ उसके चारों ओर विभव और ऐश्वर्य्य है
उस के स्थान में सामर्थ्य और आनन्द है ।
२८ हे देश देश के कुलो यहोवा का गुणानुवाद करो
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो ।
२९ यहोवा के नाम की महिमा मानो
भेंट लेकर उस के सम्मुख आओ
पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत्
करो ॥
३० हे सारी पृथिवी के लोगो उस के साम्हने थरथ-
राओ जगत ऐसा स्थिर भी है कि वह टलने का नहीं।
३१ आकाश आनन्द करे और पृथिवी मगन हो और
जाति जाति में लोग कहें कि यहोवा राजा हुआ है ।
३२ समुद्र और उस में की सारी वस्तुएं गरज उठें
मैदान और जो कुछ उस में है सो प्रफुल्लित हो ।
३३ उसी समय वन के वृक्ष यहोवा के साम्हने जयजयकार
करें
क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने को आनेहारा है ।
३४ यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है
उस की करुणा सदा की है ।
३५ और यह कहो कि हे हमारे उद्धार करनेहारे परमेश्वर
हमारा उद्धार कर
और हम को इकट्ठा करके अन्यजातियों से छुड़ा
कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय बड़ाई मारें
३६ अनादिकाल से अनन्तकाल लों
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है ।
तब सारी प्रजा ने आमेन कहा और यहोवा की
स्तुति की ।

३७ तब उस ने वहां अर्थात् यहोवा की वाचा के संदूक
के साम्हने आसाप और उस के भाइयों को छोड़ दिया
कि दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार वे संदूक के साम्हने
३८ नित्य सेवा टहल किया करें, और अड़सठ भाइयों
समेत ओबेदेदोम को और डेवढ़ीदारी के लिये यदूतून

३९ के पुत्र ओबेदेदोम और होसा को सोंप दिया। फिर उस ने सादोक याजक और उस के भाई याजकों को यहोवा के निवास के साम्हने जो गिबोन के ऊंचे स्थान में था ४० ठहरा दिया कि वे नित्य सबेरे और सांझ को होमबलि की वेदी पर यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें और उस सब के अनुसार किया करें जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा ४१ है जिसे उस ने इस्राएल को दिया था। और उन के संग उस ने हेमान और यदूतून और उन दूसरों को भी जो नाम लेकर चुने गये थे ठहरा दिया कि यहोवा की सदा ४२ की करुणा के कारण उस का धन्यवाद करें। और उन के संग उस ने हेमान और यदूतून को बजानेहारों के लिये तुरहियां और झांझें और परमेश्वर के गीत गाने के लिये बाजे दिये और यदूतून के बेटों को फाटक की रखवाली ४३ करने को ठहरा दिया। निदान प्रजा के सब लोग अपने अपने घर चले गये और दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने लौट गया॥

(दाऊद का मन्दिर बनाने की इच्छा करना और यहोवा का दाऊद के वंश में सनातन राज्य स्थिर करने का वचन देना)

१७. जब दाऊद अपने भवन में रहता था तब दाऊद नातान नबी से कहने लगा देख मैं तो देवदार के बने हुए घर में रहता हूं २ पर यहोवा की वाचा का संदूक तंबू में रहता है। नातान ने दाऊद से कहा जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर ३ क्योंकि परमेश्वर तेरे संग है। उसी दिन रात को परमेश्वर का यह वचन नातान के पास पहुंचा कि, ४ जाकर मेरे दास दाऊद से कह यहोवा यों कहता है कि ५ मेरे निवास के लिये तू घर बनवाने न पाएगा। क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले आया आज के दिन लों मैं कभी घर में नहीं रहा पर एक तंबू से दूसरे तंबू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता ६ हूं। जहां जहां मैं ने सारे इस्राएलियों के बीच आया जाया किया क्या मैं ने इस्राएल के न्यायियों में से जिन को मैं ने अपनी प्रजा की चरवाही करने को ठहराया था किसी से ऐसी बात कभी कही कि तुम लोगों ने मेरे लिये देवदारु ७ का घर क्यों नहीं बनवाया। सो अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं ने तो तुझ को भेड़शाला से और भेड़बकरियों के पीछे पीछे फिरने से इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी ८ प्रजा इस्राएल का प्रधान हो जाए। और जहां कहीं तू आया गया वहां वहां मैं तेरे संग रहा और तेरे सारे शत्रुओं को तेरे साम्हने से नाश किया है। फिर मैं तेरे नाम को पृथिवी पर के बड़े बड़े लोगों के नामों के समान बड़ा कर दूंगा। ९ और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उस को स्थिर करूंगा कि वह अपने ही स्थान में बसी रहेगी और कभी चलायमान न होगी। और कुटिल लोग उन को नाश न करने पाएंगे जैसे कि पहिले दिनों में करते थे, १० और उस समय से भी जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल के ऊपर न्यायी ठहराता था और मैं तेरे सारे शत्रुओं को दबा दूंगा। फिर मैं तुझे यह भी बताता हूं कि यहोवा तेरा घर बनाये रक्खेगा। ११ जब तेरी आयु पूरी हो जायगी और तुझे अपने पितरों के संग रहना पड़ेगा तब मैं तेरे पीछे तेरे वंश को जो तेरे पुत्रों में से होगा खड़ा करके उस के राज्य को स्थिर करूंगा। १२ मेरे लिये एक घर वही बनाएगा और मैं उस की राजगद्दी को सदा लों स्थिर रक्खूंगा। १३ मैं उस का पिता ठहरूंगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा और जैसे मैं ने अपनी करुणा उस पर से जो तुझ से पहिले था हटाई वैसे मैं उसे उस पर से न हटाऊंगा। १४ बरन मैं उस को अपने घर और अपने राज्य में सदा लों स्थिर रक्खूंगा और उस की राजगद्दी सदा लों अटल रहेगी। १५ इन सब बातों और इस सारे दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को समझा दिया॥

१६ तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सन्मुख बैठा और कहने लगा हे यहोवा परमेश्वर मैं तो क्या हूं और मेरा घराना क्या है कि तू ने मुझे यहां लों पहुंचाया है। १७ और हे परमेश्वर यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हुई क्योंकि तू ने अपने दास के घराने के विषय आगे के बहुत दिनों तक की चर्चा की है और हे यहोवा परमेश्वर तू ने मुझे ऊंचे पद का मनुष्य सा[१] जाना है। १८ जो महिमा तेरे दास पर दिखाई गई है उस के विषय दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है तू तो अपने दास को जानता है। १९ हे यहोवा तू ने अपने दास के निमित्त और अपने मन के अनुसार यह सब बड़ा काम किया है कि तेरा दास उस को जान ले। २० हे यहोवा जो कुछ हम ने अपने कानों से सुना है उस के अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं और न तुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है। २१ फिर तेरी प्रजा इस्राएल के भी तुल्य कौन है वह तो पृथिवी भर में एक ही जाति है उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया इसलिये कि तू बड़े और डरावने काम करके अपना नाम करे और अपनी प्रजा के साम्हने से जो तू ने मिस्र से छुड़ा ली थी जाति जाति के लोगों को निकाल दे। २२ क्योंकि तू ने अपनी प्रजा इस्राएल को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया

(१) वा ऊपर से आनेहारे आदम।

और हे यहोवा तू आप उस का परमेश्वर ठहर गया।
२३ सो अब हे यहोवा तू ने जो वचन अपने दास के और उस के घराने के विषय दिया है सो सदा लों अटल रहे
२४ और अपने कहे के अनुसार ही कर। और तेरा नाम सदा लों अटल रहे और यह कहकर उस की बड़ाई सदा की जाए कि सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है सो इस्राएल के हित का परमेश्वर है और तेरे दास
२५ दाऊद का घराना तेरे साम्हने स्थिर हुआ है। क्योंकि हे मेरे परमेश्वर तू ने यह कहकर अपने दास पर यह प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाये रक्खूंगा इस कारण तेरे दास को तेरे सन्मुख प्रार्थना करने का हियाव हुआ है।
२६ और अब हे यहोवा तू ही परमेश्वर है और तू ने अपने दास से यह भलाई करने का वचन दिया है। और अब
२७ तू ने प्रसन्न होकर अपने दास के घराने पर ऐसी आशिष दी है कि वह तेरे सन्मुख सदा लों बना रहे क्योंकि हे यहोवा तू आशिष दे चुका है सो वह सदा के लिये धन्य है॥

(दाऊद के विजयों का संक्षेप वर्णन)

१८. इस के पीछे दाऊद ने पलिश्तियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया और गांवों समेत गत नगर को पलिश्तियों के हाथ
२ से छीन लिया। फिर उस ने मोआबियों को भी जीत लिया और मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट लाने
३ लगे। फिर जब सोबा का राजा हदरेजेर परात महानद के पास अपना राज्य[१] स्थिर करने को जा रहा था तब
४ दाऊद ने उस को हमात के पास जीत लिया। और दाऊद ने उस से एक हजार रथ सात हजार सवार और बीस हजार पियादे हर लिये और दाऊद ने सब रथवाले घोड़ों के सुम की नस कटवाई पर एक सौ रथवाले घोड़े बचा
५ रक्खे। और जब दमिश्क के अरामी सोबा के राजा हदरेजेर की सहायता करने को आये तब दाऊद ने अरा-
६ मियों में से बाईस हजार पुरुष मारे। तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों की चौकियां बैठाई सो अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहां जहां दाऊद जाता वहां वहां यहोवा उस को
७ जिताता था। और हदरेजेर के कर्म्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम को आया।
८ और हदरेजेर के तिभत और कून नाम नगरों से दाऊद बहुत ही पीतल ले आया और उसी से सुलैमान ने पीतल के हौज और खम्भों और पीतल के पात्रों को
९ बनवाया। और जब हमात के राजा तोऊ ने सुना कि दाऊद ने सोबा के राजा हदरेजेर की सारी सेना को जीत

(१) मूल में हाथ।

१० लिया, तब उस ने हदोराम नाम अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उस का कुशल क्षेम पूछने और इसलिये उसे बधाई देने को भी भेजा कि उस ने हदरेजेर से लड़कर उसे जीत लिया था क्योंकि हदरेजेर तोऊ से लड़ा करता था। और हदोराम सोने चांदी और पीतल के सब
११ प्रकार के पात्र लिये हुए आया। इन को दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रक्खा और वैसा ही सब जातियों से अर्थात् एदोमियों मोआबियों अम्मोनियों पलिश्तियों और अमालेकियों से हरे हुए सोने चांदी से
१२ किया। फिर सरूयाह के पुत्र अबीशै ने लोन की तराई
१३ में अठारह हजार एदोमियों को मार लिया। तब उस ने एदोम में सिपाहियों की चौकियां बैठाई और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गये। और दाऊद जहां जहां जाता वहां वहां यहोवा उस को जिताता था॥

(दाऊद के कर्म्मचारियों की नामावली)

१४ दाऊद तो सारे इस्राएल पर राज्य करता था और वह अपनी सारी प्रजा के साथ न्याय और धर्म्म के काम
१५ करता था। और प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योआब था इतिहास का लिखनेहारा अहीलूद का पुत्र यहोशा-
१६ पात था। प्रधान याजक अहीतूब का पुत्र सादोक और
१७ एब्यातार का पुत्र अबीमेलेक थे मंत्री शवशा था, करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह था और दाऊद के पुत्र राजा के पास मुखिये होकर रहते थे॥

(अम्मोनियों पर विजय)

१९. इस के पीछे अम्मोनियों का राजा नाहाश मर गया और उस का पुत्र उस के
२ स्थान पर राजा हुआ। तब दाऊद ने यह सोचा कि हानून के पिता नाहाश ने जो मुझ पर प्रीति दिखाई थी सो मैं भी उस पर प्रीति दिखाऊंगा सो दाऊद ने उस के पिता के विषय शांति देने के लिये दूत भेजे। और दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियों
३ के देश में हानून के पास उसे शांति देने को आये। पर अम्मोनियों के हाकिम हानून से कहने लगे दाऊद ने जो तेरे पास शांति देनेहारे भेजे हैं सो क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने की मनसा से भेजे हैं क्या उस के कर्म्मचारी इसी मनसा से तेरे पास नहीं आये कि ढूंढ़
४ ढांढ़ करें और उलट दें और देश का भेद लें। तब हानून ने दाऊद के कर्म्मचारियों को पकड़ा और उन के बाल मुंड़वाये और आधे वस्त्र अर्थात् नितम्ब लों कटवाकर
५ उन को जाने दिया। तब कितनों ने जाकर दाऊद को बता दिया कि उन पुरुषों के साथ कैसा बर्ताव किया

गया सो उस ने लोगों को उन से मिलने के लिये भेजा क्योंकि वे पुरुष बहुत लजाते थे और राजा ने कहा जब लों तुम्हारी दाढ़ियां बढ़ न जाएं तब लों यरीहो में ठहरे ६ रहो और पीछे लौट आना। जब अम्मोनियों ने देखा कि हम दाऊद को घिनौने लगे हैं तब हानून और अम्मोनियों ने एक हजार किक्कार चांदी अरमनहरैम और अरम्माका और सोबा को भेजी कि रथ और सवार बेतन ७ पर बुलाएं। सो उन्हों ने बत्तीस हजार रथ और माका के राजा और उस की सेना को बेतन पर बुलाया और इन्हों ने आकर मेदबा के साम्हने अपने डेरे खड़े किये। और अम्मोनी अपने अपने नगर में से इकट्ठे होकर लड़ने ८ को आये। यह सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरों ९ की सारी सेना को भेजा। तब अम्मोनी निकले और नगर के फाटक के पास पांति बांधी और जो राजा आये १० थे सो उन से न्यारे मैदान में थे। यह देखकर कि आगे पीछे दोनों ओर हमारे विरुद्ध पांति बंधी है योआब ने सब बड़े बड़े इस्राएली वीरों में से कितनों को छांटकर ११ अरामियों के साम्हने उन की पांति बंधाई, और शेष लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया और १२ उन्हों ने अम्मोनियों के साम्हने पांति बांधो। और उस ने कहा यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें तो तू मेरी सहायता करना और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने १३ लगें तो मैं तेरी सहायता करूंगा। तू हियाव बांध और हम सब अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें और यहोवा जैसा उस को अच्छा १४ लगे वैसा ही करेगा। तब योआब और जो लोग उस के साथ थे अरामियों से युद्ध करने को उन के साम्हने गये १५ और वे उस के साम्हने से भागे। यह देखकर कि अरामी भाग गये हैं अम्मोनी भी उस के भाई अबीशै के साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब यरूशलेम १६ को लौट आया। फिर यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गये अरामियों ने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियों को बुलवाया और हदरेजेर के सेनापति शोपक १७ को अपना प्रधान बनाया। इस का समाचार पाकर दाऊद ने सारे इस्राएलियों को इकट्ठा किया और यर्दन पार होकर उन पर चढ़ाई की और उन के विरुद्ध पांति बंधाई और जब दाऊद ने अरामियों के विरुद्ध पांति १८ बंधाई तब वे उस से लड़ने लगे। पर अरामी इस्राएलियों से भागे और दाऊद ने उन में से सात हजार रथियों और चालीस हजार प्यादों को मार डाला और शोपक १९ सेनापति को भी मार डाला। यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गये हैं हदरेजेर के कर्म्मचारियों ने दाऊद से संधि की और उस के अधीन हो गये और अरामियों ने अम्मोनियों की सहायता फिर करनी न चाही॥

२०. फिर नये बरस के लगने के समय जब राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं तब योआब ने भारी सेना संग ले जाकर अम्मोनियों का देश उजाड़ दिया और आकर रब्बा को घेर लिया पर दाऊद यरूशलेम में रह गया और योआब ने २ रब्बा को जीतकर ढा दिया। तब दाऊद ने उन के राजा का मुकुट उस के सिर से उतारके क्या पाया कि इस का तौल किक्कार भर सोने का है और उस में मणि भी जड़े थे सो वह दाऊद के सिर पर रक्खा गया। फिर उस ने ३ उस नगर से बहुत ही लूट पाई। और उस ने उस के रहनेहारों को निकालकर आरों और लोहे के हेंगों और कुल्हाड़ियों से कटवाया और अम्मोनियों के सब नगरों से दाऊद ने वैसा ही किया। तब दाऊद सब लोगों समेत यरूशलेम को लौट गया॥

४ इस के पीछे गेजेर में पलिश्तियों के साथ युद्ध हुआ उस समय हूशाई सिब्बकै ने सिप्पै को जो रापा की ५ सन्तान का था, मार डाला और वे दब गये। और पलिश्तियों के साथ फिर युद्ध हुआ उस में याईर के पुत्र एलहानान ने गती गोल्यत के भाई लहमी को मार डाला ६ जिस के बर्छे की छड़ ढेंके के समान थी। फिर गत में भी युद्ध हुआ और वहां एक बड़े डील का पुरुष था जो रापा की सन्तान का था और उस के एक एक हाथ पांव में छः छः अंगुली अर्थात् सब मिलाकर चौबीस अंगुली ७ थीं। जब उस ने इस्राएलियों को ललकारा तब दाऊद ८ के भाई शिमा के पुत्र योनातान ने उस को मारा। ये ही गत में रापा से उत्पन्न हुए थे और वे दाऊद और उस के जनों से मार डाले गये॥

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना और इस पाप के दंड और पापमोचन के द्वारा मन्दिर का स्थान ठहराया जाना)

२१. और शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर दाऊद को उसकाया कि २ इस्राएलियों की गिनती ले। सो दाऊद ने योआब और प्रजा के हाकिमों से कहा तुम जाकर बेर्शेबा से ले दान लों के इस्राएल की गिनती लेकर मुझे बताओ कि मैं जान लूं ३ कि वे कितने हैं। योआब ने कहा यहोवा की प्रजा के कितने ही क्यों न हों वह उन को सौ गुना बढ़ा दे पर हे मेरे प्रभु हे राजा क्या वे सब राजा के अधीन नहीं हैं मेरा प्रभु ऐसी बात क्यों चाहता है वह इस्राएल पर दोष ४ लगने का कारण क्यों बने। तौभी राजा की आज्ञा

योआब पर प्रबल हुई सो योआब विदा हो सारे इस्राएल
५ में घूम कर यरूशलेम को लौट आया। तब योआब ने
प्रजा की गिनती का जोड़ दाऊद को सुनाया और सब
तलवरिये पुरुष इस्राएल के तो ग्यारह लाख और यहूदा
६ के चार लाख सत्तर हजार ठहरे। पर इन में योआब ने
लेवी और बिन्यामीन को न गिना क्योंकि वह राजा की
७ आज्ञा से घिन करता था। और यह बात परमेश्वर को
८ बुरी लगी सो उस ने इस्राएल को मारा। और दाऊद
ने परमेश्वर से कहा यह काम जो मैं ने किया सो बड़ा
पाप है पर अब अपने दास का अधर्म्म दूर कर मुझ से
९ तो बड़ी मूर्खता हुई है। तब यहोवा ने दाऊद के दर्शी
१० गाद से कहा, जाकर दाऊद से कह कि यहोवा यों कहता
है कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूं उन में से एक
११ को चुन ले कि मैं उसे तुझ पर डालूं। सो गाद ने दाऊद
के पास जाकर उस से कहा यहोवा यों कहता है कि जिस
१२ को तू चाहे उसे चुन ले, कह तो तीन बरस का काल पड़े
वा तीन महीने लों तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें और
तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे वा तीन दिन
लों यहोवा की तलवार चले अर्थात् मरी देश में फैले
और यहोवा का दूत सारे इस्राएली देश में विनाश करता
रहे। अब सोच कि मैं अपने भेजनहारे को क्या उत्तर
१३ दूं। दाऊद ने गाद से कहा मैं बड़े संकट में पड़ा हूं मैं
यहोवा के हाथ में पड़ूं क्योंकि उस की दया बहुत बड़ी है
१४ पर मनुष्य के हाथ में मुझे पड़ना न पड़े। सो यहोवा ने
इस्राएल में मरी फैलाई और इस्राएल में से सत्तर हजार
१५ पुरुष मर मिटे। फिर परमेश्वर ने एक दूत यरूशलेम
को भी उसे नाश करने को भेजा और वह नाश करने
ही पर था कि यहोवा देखकर दुःख देने से पछताया
और नाश करनेहारे दूत से कहा बस कर अब अपना
हाथ खींच। और यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान के
१६ खलिहान के पास खड़ा था। और दाऊद ने आंखें
उठाकर देखा कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई
और यरूशलेम के ऊपर बढ़ाई हुई एक तलवार लिये
हुए पृथिवी और आकाश के बीच खड़ा है सो दाऊद
१७ और पुरनिये टाट पहिने हुए मुंह के बल गिरे। तब दाऊद
ने परमेश्वर से कहा जिस ने प्रजा की गिनती लेने की
आज्ञा दी थी सो क्या मैं नहीं हूं हां जिस ने पाप किया
और बहुत बुराई की है सो तो मैं ही हूं पर इन भेड़
बकरियों ने क्या किया है सो हे मेरे परमेश्वर यहोवा
तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो पर
१८ तेरी प्रजा के विरुद्ध न हो कि वे मारे जाएं। तब यहोवा
के दूत ने गाद को दाऊद से यह कहने की आज्ञा दी
कि दाऊद चढ़कर यबूसी ओर्नान के खलिहान में यहोवा
की एक वेदी बनाए। गाद के इस वचन के अनुसार १९
जो उस ने यहोवा के नाम से कहा था दाऊद चढ़ गया।
तब ओर्नान ने पीछे फिर के दूत को देखा और उस के २०
चारों बेटे जो उस के संग थे छिप गये ओर्नान तो गेहूं
दांवता था। जब दाऊद ओर्नान के पास आया तब २१
ओर्नान ने दृष्टि करके दाऊद को देखा और खलिहान
से बाहर जाकर भूमि लों झुककर दाऊद को दण्डवत्
की। तब दाऊद ने ओर्नान से कहा इस खलिहान का २२
स्थान मुझे दे दे कि मैं इस पर यहोवा की एक वेदी
बनाऊं उस का पूरा दाम लेकर उसे मुझ को दे कि यह
विपत्ति प्रजा पर से दूर की जाए। ओर्नान ने दाऊद से २३
कहा इसे ले ले और मेरे प्रभु राजा को जो कुछ भाए
सोई वह करे सुन मैं तुझे होमबलि के लिये बैल और
ईंधन के लिये दांवने के हथियार और अन्नबलि के लिये
गेहूं यह सब मैं दे देता हूं। राजा दाऊद ने ओर्नान से २४
कहा सो नहीं मैं अवश्य इस का पूरा दाम देकर इसे
मोल लूंगा क्योंकि जो तेरा है सो मैं यहोवा के लिये न
लूंगा और न सेंतमेंत का होमबलि चढ़ाऊंगा। सो दाऊद २५
ने उस स्थान के लिये ओर्नान को छः सौ शेकेल सोना
तौलकर दिया। तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी २६
बनाई और होमबलि और मेलबलि चढ़ाकर यहोवा से
प्रार्थना की और उस ने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग
गिराकर उस की सुन ली। तब यहोवा ने दूत को आज्ञा २७
दी और उस ने अपनी तलवार मियान में फिर रक्खी॥

उसी समय यह देखकर कि यहोवा ने यबूसी २८
ओर्नान के खलिहान में मेरी सुन ली है दाऊद ने वहां
बलिदान किया। यहोवा का निवास तो जो मूसा ने २९
जंगल में बनाया था और होमबलि की वेदी ये दोनों
उस समय गिबोन के ऊंचे स्थान पर थे। पर दाऊद ३०
परमेश्वर के पास उस के साम्हने न जा सका क्योंकि
वह यहोवा के दूत की तलवार से डर गया था॥

२२. तब दाऊद कहने लगा यहोवा परमेश्वर का १
भवन यही है और इस्राएल के लिये होमबलि
की वेदी यही है॥

(मन्दिर के बनाने की तैयारी और उस में की भान्ति
भान्ति की उपासना और उपासकों का प्रबन्ध)

सो दाऊद ने इस्राएल के देश में के परदेशियों को २
इकट्ठा करने की आज्ञा दी और परमेश्वर का भवन बनाने
को पत्थर गढ़ने के लिये राज ठहरा दिये। फिर दाऊद ने ३
फाटकों के किवाड़ों की कीलों और जोड़ों के लिये बहुत
सा लोहा और तौल से बाहर बहुत पीतल, और गिनती ४

से बाहर देवदार के पेड़ इकट्ठे किये क्योंकि सीदोन और सोर के लोग दाऊद के पास बहुत से देवदार के पेड़ ५ लाये। और दाऊद ने कहा मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार और लड़का है और जो भवन यहोवा के लिये बनना है सो अत्यन्त तेजोमय और सब देशों में प्रसिद्ध और शोभायमान होना चाहिये मैं उस के लिये तैयारी करूंगा। सो दाऊद ने मरने से पहिले बहुत तैयारी की॥

६ फिर उस ने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये भवन बनाने की ७ आज्ञा दी। दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा मेरी मनसा तो थी कि अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक ८ भवन बनाऊं। पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि तू ने लोहू बहुत बहाया और बड़े बड़े युद्ध किये हैं तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा क्योंकि तू ने ९ भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लोहू बहाया है। सुन तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा जो शांत पुरुष होगा और मैं उस को चारों ओर के शत्रुओं से शांति दूंगा उस का नाम तो सुलैमान[१] होगा और उन के दिनों में मैं इस्राएल को १० शांति और चैन दूंगा। वही मेरे नाम का भवन बनाएगा और वही मेरा पुत्र ठहरेगा और मैं उस का पिता ठहरूंगा और उस की राजगद्दी को मैं इस्राएल के ऊपर सदा ११ लों स्थिर रक्खूंगा। अब हे मेरे पुत्र यहोवा तेरे संग रहे और तू कृतार्थ होकर उस वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे विषय कहा है उस का भवन १२ बनाना। इतना हो कि यहोवा तुझे बुद्धि और समझ दे और इस्राएल का अधिकारी ठहरा दे और तू अपने १३ परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था को मानता रहे। तू तब ही कृतार्थ होगा जब उन विधियों और नियमों पर चलने की चौकसी करे जिन की आज्ञा यहोवा ने इस्राएल के लिये मूसा को दी थी हियाव बांध और दृढ़ हो मत डर १४ और तेरा मन कच्चा न हो। सुन मैं ने अपने क्लेश के समय यहोवा के भवन के लिये एक लाख किक्कार सोना और दस लाख किक्कार चांदी और पीतल और लोहा इतना इकट्ठा किया है कि बहुतायत के कारण तौल से बाहर है और लकड़ी और पत्थर मैं ने इकट्ठे किये हैं १५ और तू उन को बढ़ा सकेगा। और तेरे पास बहुत कारीगर हैं अर्थात् पत्थर और लकड़ी के काटने और गढ़नेहारे बरन सब भांति के काम के लिये सब प्रकार १६ के प्रवीण पुरुष हैं। सोने चांदी पीतल और लोहे की तो कुछ गिनती नहीं है सो उस काम में लग जा और यहोवा तेरे संग रहे। फिर दाऊद ने इस्राएल के सब १७ हाकिमों को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने की आज्ञा यह कहकर दी कि, क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा १८ तुम्हारे संग नहीं है क्या उस ने तुम्हें चारों ओर से विश्राम नहीं दिया उस ने तो देश के निवासियों को मेरे वश कर दिया है और देश यहोवा और उस की प्रजा के साम्हने दबा हुआ है। अब तन मन से[२] अपने परमेश्वर यहोवा १९ के पास जाया करो और जी लगाकर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्थान बनाना कि तुम यहोवा की वाचा का संदूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र उस भवन में लाओ जो यहोवा के नाम का बननेवाला है॥

२३.

दाऊद तो बूढ़ा बरन बहुत पुरनिया हो गया था सो उस ने अपने पुत्र सुलैमान को इस्राएल पर राजा ठहराया। तब उस २ ने इस्राएल के सब हाकिमों और याजकों और लेवीयों को इकट्ठा किया। और जितने लेवीय तीस बरस के और ३ उस से अधिक अवस्था के थे सो गिने गये और एक एक पुरुष के गिनने से उन की गिनती अड़तीस हजार ठहरी। इन में से चौबीस हजार तो यहोवा के भवन का काम ४ चलाने के लिये हुए और छः हजार सरदार और न्यायी, और चार हजार डेवढ़ीदार हुए और चार हजार उन ५ बाजों से यहोवा की स्तुति करने के लिये ठहरे जो दाऊद[३] ने स्तुति करने को बनाये थे। फिर दाऊद ने उन को ६ गेर्शोन कहात और मरारी नाम लेवी के पुत्रों के अनुसार दलों में अलग अलग कर दिया। गेर्शोनियों में से ७ तो लादान और शिमी थे। और लादान के पुत्र मुख्य ८ यहीएल फिर जेताम और योएल तीन। और शिमी ९ के पुत्र शलोमीत हजीएल और हारान तीन। लादान के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही थे। फिर १० शिमी के पुत्र यहत जीना यूश और बरीआ के पुत्र शिमी यही चार थे। यहत मुख्य था और जीजा ११ दूसरा यूश और बरीआ के बहुत बेटे न हुए इस कारण वे मिलकर पितरों का एक ही घराना ठहरे। कहात के १२ पुत्र अम्राम यिसहार हेब्रोन और उज्जीएल चार। अम्राम के पुत्र हारून और मूसा और हारून तो इस- १३ लिये अलग किया गया कि वह और उस के सन्तान सदा लों परमपवित्र वस्तुओं को पवित्र करें और सदा लों यहोवा के सन्मुख धूप जलाया करें और उस की सेवा टहल करें और उस के नाम से आशीर्वाद दिया करें।

(१) अर्थात् शांतिवाला।

(२) मूल में अपना मन और अपना जीव देकर।

(३) मूल में मैं।

१४ परन्तु परमेश्वर के जन मूसा के पुत्रों के नाम लेवी के गोत्र १५ के बीच गिने गये। मूसा के पुत्र, गेर्शोम और एलीएजेर। १६,१७ और गेर्शोम के पुत्र शबूएल मुख्य, और एलीएजेर के पुत्र रहब्याह मुख्य और एलीएजेर के और कोई पुत्र न हुआ पर रहब्याह के बहुत ही बेटे हुए। १८, १९ यिसहार के पुत्रों में से शलोमीत मुख्य ठहरा। हेब्रोन के पुत्र यरीय्याह मुख्य दूसरा अमर्याह तीसरा यहजीएल और चौथा यकमाम। २० उज्जीएल के पुत्रों में से मुख्य तो मीका और दूसरा यिशिय्याह था। २१ मरारी के पुत्र महली और मूशी। महली के पुत्र एलाजार और २२ कीश। एलाजार निपुत्र मर गया उस के केवल बेटियां हुई सो कीश के पुत्रों ने जो उन के भाई थे उन्हें ब्याह २३ लिया। मूशी के पुत्र महली एदेर और यरेमोत तीन। २४ लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही थे ये नाम ले लेकर एक एक पुरुष करके गिने गये और बीस बरस की वा उस से अधिक अवस्था के थे और यहोवा के भवन २५ में सेवा का काम करते थे। क्योंकि दाऊद ने कहा इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अपनी प्रजा को विश्राम दिया और वह तो यरूशलेम में सदा के लिये बस गया है, २६ और लेवीयों को निवास और उस में की उपासना का २७ सामान फिर उठाना न पड़ेगा। क्योंकि दाऊद की पिछली आज्ञाओं के अनुसार बीस बरस वा उस से अधिक २८ अवस्था के लेवीय गिने गये। क्योंकि उन का काम तो हारून की सन्तान की सेवा टहल करना था अर्थात् यह कि वे आंगनों और कोठरियों में और सब पवित्र वस्तुओं के शुद्ध करने में और परमेश्वर के भवन में की २९ उपासना के सारे कामों में सेवा टहल करें और भेंट की रोटी का अन्नबलियों के मैदे का और अखमीरी पपड़ियों का और तवे पर बनाये हुए और सने हुए का और मापने ३० और तौलने के सब प्रकार का काम करें। और भोर भोर और सांझ सांझ को यहोवा का धन्यवाद और उस की ३१ स्तुति करने के लिये खड़े रहा करें, और विश्रामदिनों और नये चान्द के दिनों और नियत पर्वों में गिनती के नियम के अनुसार नित्य यहोवा के सब होमबलियों को ३२ चढ़ाएं, और यहोवा के भवन की उपासना के विषय मिलापवाले तंबू और पवित्रस्थान की रक्षा करें और अपने भाई हारूनियों के सौंपे हुए काम को चौकसी से करें॥

२४. फिर हारून की सन्तान के दल ये ठहरे। हारून के पुत्र तो २ नादाब अबीहू एलाजार और ईतामार हुए। पर नादाब और अबीहू अपने पिता के साम्हने निपुत्र मर गये सो ३ याजक का काम एलाजार और ईतामार करते थे। और दाऊद और एलाजार के वंश के सादोक और ईतामार के वंश के अहीमेलेक ने उन को अपनी अपनी सेवा के अनुसार दल दल करके बांट दिया। ४ और एलाजार के वंश के मुख्य पुरुष ईतामार के वंश के मुख्य पुरुषों से अधिक थे सो वे यों बांटे गये अर्थात् एलाजार के वंश के पितरों के घरानों के सोलह और ईतामार के वंश के पितरों के घरानों के आठ मुख्य पुरुष ठहरे। ५ सो वे चिट्ठी डालकर बराबर बराबर बांटे गये क्योंकि एलाजार और ईतामार दोनों के वंशों में पवित्रस्थान के हाकिम और परमेश्वर के हाकिम हुए थे। ६ और नतनेल के पुत्र शमायाह ने जो लेवीय था उन के नाम राजा और हाकिमों और सादोक याजक और एब्यातार के पुत्र अहीमेलेक और याजकों और लेवीयों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के साम्हने लिखे अर्थात् पितरों का एक घराना तो एलाजार के वंश में से और एक ईतामार के वंश में से लिया गया। ७ पहिली चिट्ठी तो यहोयारीब के और ८ दूसरी यदायाह के, तीसरी हारीम के चौथी सोरीम के, ९,१० पांचवीं मल्किय्याह के छठवीं मिय्यामीन के, सातवीं हक्कोस के आठवीं अबिय्याह के, ११ नौवीं येशू के दसवीं शकन्याह के, १२ ग्यारहवीं एल्याशीब के बारहवीं याकीम के, १३,१४ तेरहवीं हुप्पा के चौदहवीं येसेबाब के, पन्द्रहवीं १५ बिल्गा के सोलहवीं इम्मेर के, सत्रहवीं हेजीर के अठारहवीं १६ हप्पिस्सेस के, उन्नीसवीं पतह्याह के बीसवीं यहेजकेल के, १७,१८ इक्कीसवीं याकीन के बाईसवीं गामूल के, तेईसवीं दलायाह के और चौबीसवीं माज्याह के नाम पर निकली। १९ उन की सेवकाई के लिये उन का यही नियम ठहराया गया कि वे अपने उस नियम के अनुसार जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन के मूलपुरुष हारून ने चलाया था यहोवा के भवन में जाया करें॥

२० फिर लेवीय अम्राम के वंश में से शूबाएल, शूबाएल २१ के वंश में से येहदयाह। रहब्याह के, रहब्याह के वंश २२ में से यिशिय्याह मुख्य था। यिसहारियों में से शलोमोत २३ और शलोमोत के वंश में से यहत। और हेब्रोन के वंश में से मुख्य तो यरिय्याह दूसरा अमर्याह तीसरा यहजीएल २४ और चौथा यकमाम। उज्जीएल के वंश में से मीका और २५ मीका के वंश में से शामीर। मीका का भाई यिशिय्याह २६ यिशिय्याह के वंश में से जकर्याह। मरारी के पुत्र २७ महली और मूशी और याजिय्याह का पुत्र बनो। मरारी के पुत्र, याजिय्याह के, बनो और शोहम जक्कूर और २८ इब्री। महली के, एलाजार जिस के कोई पुत्र न हुआ। २९,३० कीश के कीश के वंश में यरह्मेल। और मूशी के पुत्र महली एदेर और यरीमोत अपने अपने पितरों के घरानों

३१ के अनुसार ये ही लेवीय थे। इन्हों ने भी अपने भाई हारून के सन्तानों की नाईं दाऊद राजा और सादोक और अहीमेलेक और याजकों और लेवीयों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के साम्हने चिट्ठियां डालीं अर्थात् मुख्य पुरुष के पितरों का घराना उस के छोटे भाई के पितरों के घराने के बराबर ठहरा॥

२५. फिर दाऊद और सेनापतियों ने आसाप हेमान और यदूतून के कितने पुत्रों को सेवकाई के लिये अलग किया कि वे बीणा सारंगी और झांझ बजा बजाकर नबूवत करें और इस सेवकाई का काम करनेहारे मनुष्यों की गिनती यह २ थी, अर्थात् आसाप के पुत्रों में से तो जक्कूर योसेप नतन्याह और अशरेला आसाप के ये पुत्र आसाप ही की आज्ञा में थे जो राजा की आज्ञा के अनुसार नबूवत ३ करता था। फिर यदूतून के पुत्रों में से गदल्याह सरी यशायाह हसब्याह मत्तित्याह ये ही छः अपने पिता यदूतून की आज्ञा में होकर जो यहोवा का धन्यवाद और ४ स्तुति कर करके नबूवत करता था बीणा बजाते थे। और हेमान के पुत्रों में से मुक्किय्याह मत्तन्याह उज्जीएल शबूएल यरीमोत हनन्याह हनानी एलीआता गिद्दलती रोममतीएजेर योशबकाशा मल्लोती होतीर और महली- ५ ओत थे। ये सब हेमान के पुत्र थे जो राजा का दर्शी होकर नरसिंगा बजाता हुआ परमेश्वर के वचन सुनाता था और परमेश्वर ने हेमान को चौदह बेटे और तीन ६ बेटियां दीं। ये सब यहोवा के भवन में गाने के लिये अपने अपने पिता के अधीन रहकर परमेश्वर के भवन की सेवकाई में झांझ सारंगी और बीणा बजाते थे और आसाप यदूतून और हेमान आप राजा के अधीन रहते ७ थे। भाइयों समेत इन सभों की गिनती जो यहोवा के गीत सीखे हुए थे और सब निपुण थे दो सौ अठासी ८ थी। और उन्हों ने क्या बड़ा क्या छोटा क्या गुरु क्या ९ चेला अपनी अपनी बारी के लिये चिट्ठी डाली। और पहिली चिट्ठी आसाप के बेटों में से योसेप के नाम पर निकली दूसरी गदल्याह के नाम पर जिस के पुत्र और १० भाई उस समेत बारह थे। तीसरी जक्कूर के नाम पर जिस ११ के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। चौथी यिस्री के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १२ पांचवीं नतन्याह के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस १३ समेत बारह थे। छठीं बुक्किय्याह के नाम पर जिस के १४ पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। सातवीं यसरेला के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १५ आठवीं यशायाह के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। नौवीं मत्तन्याह के नाम पर जिस के १६ पुत्र और भाई समेत बारह थे। दसवीं शिमी के नाम १७ पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ग्यारहवीं १८ अजरेल के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। बारहवीं हशब्याह के नाम पर जिस के पुत्र १९ और भाई उस समेत बारह थे। तेरहवीं शूबाएल के २० नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। चौदहवीं मत्तित्याह के नाम पर जिस के पुत्र और भाई २१ उस समेत बारह थे। पन्द्रहवीं यरेमोत के नाम पर जिस २२ के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। सोलहवीं हनन्याह २३ के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। सत्रहवीं योशबकाशा के नाम पर जिस के पुत्र और भाई २४ उस समेत बारह थे। अठारहवीं हनानी के नाम पर जिस २५ के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। उन्नीसवीं मल्लोती २६ के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। बीसवीं एलिय्याता के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस २७ समेत बारह थे। इक्कीसवीं होतीर के नाम पर जिस के पुत्र २८ और भाई उस समेत बारह थे। बाईसवीं गिद्दलती के नाम २९ पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। तेईसवीं ३० महजीओत के नाम पर जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। और चौबीसवीं चिट्ठी रोममतीएजेर के नाम ३१ पर निकली जिस के पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥

२६. फिर डेवढ़ीदारों के दल ये थे, कोरहियों में से तो मशेलेम्याह जो १ कोरे का पुत्र और आसाप के सन्तानों में से था। और २ मशेलेम्याह के पुत्र हुए अर्थात् उस का जेठा जकर्याह दूसरा यदीएल तीसरा जबद्याह चौथा यतीएल, पांचवां ३ एलाम छठवां यहोहानान और सातवां एल्यहोएनै। फिर ४ ओबेदेदोम के भी पुत्र हुए उस का जेठा शमायाह दूसरा यहोजाबाद तीसरा योआह चौथा साकार पांचवां नतनेल, ५ छठवां अम्मीएल सातवां इस्साकार और आठवां पुल्लतै ६ क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशिष दी थी। और उस के पुत्र शमायाह के भी पुत्र उत्पन्न हुए जो शूरबीर होने के कारण अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते थे। ७ शमायाह के पुत्र ये थे अर्थात् ओत्नी रपाएल ओबेद एलजाबाद और उन के भाई एलीहू और समक्याह ८ बलवान् थे। ये सब ओबेदेदोम की सन्तान में से थे वे और उन के पुत्र और भाई इस सेवकाई के लिये बलवान् ९ और शक्तिमान् थे ये ओबेदेदोमी बासठ थे। और मशेले- १० म्याह के पुत्र और भाई थे जो अठारह बलवान् थे। फिर मरारी के वंश में से होसा के भी पुत्र थे अर्थात् मुख्य तो शिम्री जिस को जेठा न होने पर भी उस के पिता ने

११ मुख्य ठहराया। दूसरा हिल्कियाह तीसरा तबल्याह और चौथा जकर्याह था होसा के सब पुत्र और भाई मिलकर १२ तेरह हुए। डेवढ़ीदारों के दल इन मुख्य पुरुषों के थे ये अपने भाइयों के बराबर ही यहोवा के भवन में सेवा १३ टहल करते थे। इन्हों ने क्या छोटे क्या बड़े अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार एक एक फाटक के लिये १४ चिट्ठी डाली। पूरब ओर की चिट्ठी शेलेम्याह के नाम पर निकली तब उन्हों ने उस के पुत्र जकर्याह के नाम की चिट्ठी डाली (वह बुद्धिमान् मंत्री था) और चिट्ठी उत्तर १५ ओर के लिये निकली। दक्खिन ओर के लिये ओबेदेदोम के नाम पर चिट्ठी निकली और उस के बेटों के नाम पर १६ खजाने की कोठरी के लिये। फिर शुप्पीम और होसा के नामों की चिट्ठी पच्छिम ओर के लिये निकली कि वे शल्लेकेत नाम फाटक के पास चढ़ाई की सड़क पर आम्हने साम्हने १७ चौकी दिया करें। पूरब ओर तो छः लेवीय थे उत्तर ओर दिन दिन चार दक्खिन ओर दिन दिन चार और खजाने १८ की कोठरी के पास दो दो ठहरे। पच्छिम ओर के पर्बार नाम स्थान पर सड़क के पास तो चार और पर्बार ही के १९ पास दो रहे। डेवढ़ीदारों के दल तो ये थे इन में से कितने तो कोरह के और कितने मरारी के वंश के थे॥

२० फिर लेवीयों में से अहिय्याह परमेश्वर के भवन और पवित्र की हुई वस्तुओं दोनों के भण्डारों का अधि- २१ कारी ठहरा। लादान के सन्तान ये थे अर्थात् गेर्शोनियों के सन्तान जो लादान के कुल के थे अर्थात् लादान गेर्शोनी के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे अर्थात् यहोएली। २२ यहोएली के पुत्र ये थे अर्थात् जेताम और उस का भाई २३ योएल जो यहोवा के भवन के अधिकारी थे। अम्रामियों २४ यिसहारियों हेब्रोनियों और उज्जीएलियों में से, शबूएल जो मूसा के पुत्र गेर्शोम के वंश का था सो खजानों का २५ मुख्य अधिकारी था। और उस के भाइयों का वृत्तान्त यह है एलीएजेर के कुल में उस का पुत्र रहब्याह रहब्याह का पुत्र यशायाह यशायाह का पुत्र योराम योराम का २६ पुत्र जिक्री और जिक्री का पुत्र शलोमोत था। यही शलोमोत अपने भाइयों समेत उन सब पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों का अधिकारी था जो राजा दाऊद और पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों और सहस्रपतियों और २७ शतपतियों और मुख्य सेनापतियों ने पवित्र की थीं। जो लूट लड़ाइयों में मिलती थी उस में से उन्हों ने यहोवा २८ का भवन दृढ़ करने के लिये कुछ पवित्र किया। बरन जितना शमूएल दर्शी कीश के पुत्र शाऊल नेर के पुत्र अब्नेर और सरूयाह के पुत्र योआब ने पवित्र किया था और जो कुछ जिस किसी ने पवित्र कर रक्खा था सो सब शलोमोत और उस के भाइयों के अधिकार में था।

२९ यिसहारियों में से कनन्याह और उस के पुत्र इस्राएल के देश का काम अर्थात् सरदार और न्यायी का काम करने के लिये ठहरे थे। ३० और हेब्रोनियों में से हशब्याह और उस के भाई जो सत्रह सौ बलवान पुरुष थे सो यहोवा के सब काम और राजा की सेवा के विषय यर्दन की पच्छिम ओर रहनेहारे इस्राएलियों के अधिकारी ठहरे। ३१ हेब्रोनियों में से यरिय्याह मुख्य था अर्थात् हेब्रोनियों की पीढ़ी पीढ़ी के पितरों के घरानों के अनुसार दाऊद के राज्य के चालीसवें बरस में वे ढूंढ़े गये और उन में से कई शूरवीर गिलाद के याजेर में मिले। ३२ और उस के भाई जो वीर थे पितरों के घरानों के दो हजार सात सौ मुख्य पुरुष थे। इन को दाऊद राजा ने परमेश्वर के सब विषयों और राजा के विषय में रूबेनियों गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के अधिकारी ठहराया॥

(देश का प्रबन्ध)

२७. इस्राएलियों की गिनती अर्थात् पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों और सहस्रपतियों और शतपतियों और उन के सरदारों की गिनती जो बरस भर के महीने महीने हाजिर होने और छुट्टी पानेहारे दलों के सब विषयों में राजा की सेवा टहल करते थे एक एक दल में चौबीस हजार थे। २ पहिले महीने के लिये पहिले दल का अधिकारी जब्दीएल का पुत्र याशोबाम ठहरा और उस के दल में चौबीस ३ हजार थे। वह पेरेस के वंश का था और पहिले महीने में ४ सब सेनापतियों का अधिकारी था। और दूसरे महीने के दल का अधिकारी दोदै नाम एक अहोही था और उस के दल का प्रधान मिक्लोत था और उस के दल में ५ चौबीस हजार थे। तीसरे महीने के लिये तीसरा सेनापति यहोयादा याजक का पुत्र बनायाह था और उस के दल ६ में चौबीस हजार थे। यह वही बनायाह है जो तीसों शूरों में वीर और तीसों में श्रेष्ठ भी था और उस के दल में उस का पुत्र अम्मीजाबाद था। ७ चौथे महीने के लिए चौथा सेनापति योआब का भाई असाहेल था और उस के पीछे उस का पुत्र जबद्याह था और उस के दल में ८ चौबीस हजार थे। पांचवें महीने के लिये पांचवां सेनापति यिज्राही शम्हूत था और उस के दल में चौबीस ९ हजार थे। छठवें महीने के लिये छठवां सेनापति तकोई इक्केश का पुत्र ईरा था और उस के दल में चौबीस १० हजार थे। सातवें महीने के लिये सातवां सेनापति एप्रैम के वंश का हेलेस पलोनी था और उस के दल में चौबीस ११ हजार थे। आठवें महीने के लिये आठवां सेनापति जेरह

के वंश में से हूशाई सिब्बकै था और उस के दल में
१२ चौबीस हजार थे। नौवें महीने के लिये नौवां सेनापति बिन्यामीनी अबीएजेर अनातोतवासी था और उस के
१३ दल में चौबीस हजार थे। दसवें महीने के लिये दसवां सेनापति जेरही महरै नतोपावासी था और उस के दल में
१४ चौबीस हजार थे। ग्यारहवें महीने के लिये ग्यारहवां सेनापति एप्रैम के वंश का बनायाह पिरातोनवासी था और
१५ उस के दल में चौबीस हजार थे। बारहवें महीने के लिये बारहवां सेनापति ओत्नीएल के वंश का हेल्दै नतोपावासी था और उस के दल में चौबीस हजार थे ॥

१६ फिर इस्राएली गोत्रों के ये अधिकारी ठहरे अर्थात् रूबेनियों का प्रधान जिक्री का पुत्र एलीएजेर शिमोनियों
१७ का माका का पुत्र शपत्याह, लेवी का कमूएल का पुत्र
१८ हशब्याह हारून की सन्तान का सादोक, यहूदा का एलीहू नाम दाऊद का एक भाई इस्साकार का मीका-
१९ एल का पुत्र ओम्री, जबूलून का ओबद्याह का पुत्र
२० यिशमायाह नप्ताली का अज्रीएल का पुत्र यरीमोत, एप्रैम का अजज्याह का पुत्र होशे मनश्शे के आधे गोत्र का,
२१ पदायाह का पुत्र योएल, गिलाद में आधे मनश्शे का जकर्याह का पुत्र इद्दो बिन्यामीन का अब्नेर का पुत्र
२२ यासीएल, और दान का यारोहाम का पुत्र अजरेल
२३ ठहरा इस्राएल के गोत्रों के हाकिम ये ही ठहरे। पर दाऊद ने उन की गिनती बीस बरस की अवस्था के नीचे न की क्योंकि यहोवा ने इस्राएल की गिनती आकाश के
२४ तारों के बराबर लों बढ़ाने को कहा था। सरूयाह का पुत्र योआब गिनती लेने लगा तो सही पर न निपटाया और इस कारण ईश्वर का कोप इस्राएल पर भड़का और यह गिनती राजा दाऊद के इतिहास में नहीं लिखी गई ॥

२५ फिर राज भण्डारों का अधिकारी अदीएल का पुत्र अजमावेत था और दिहात और नगरों और गांवों और गुम्मटों के भण्डारों का अधिकारी उज्जियाह का पुत्र
२६ यहोनातान था। और जो भूमि को जोत बोकर खेती
२७ करते थे उन का अधिकारी कलूब का पुत्र एज्री था। और दाख की बारियों का अधिकारी रामाई शिमी और दाख की बारियों की उपज जो दाखमधु के भण्डारों में रखने के
२८ लिये थी उस का अधिकारी शापामी जब्दी था। और नीचे के देश के जलपाई और गूलर के वृक्षों का अधिकारी गदेरी बाल्हानान था और तेल के भण्डारों का
२९ अधिकारी योआश था। और शारोन में चरनेहारे गाय-बैलों का अधिकारी शारोनी शित्रै था और तराइयों में के गाय बैलों का अधिकारी अदलै का पुत्र शापात था।
३० और ऊंटों का अधिकारी इश्माएली ओबील और गदहियों का अधिकारी मेरोनोतवासी येहदयाह, और भेड़-
३१ बकरियों का अधिकारी हग्री याजीज था। राजा दाऊद के धन संपत्ति के अधिकारी ये ही सब ठहरे ॥

३२ और दाऊद का भतीजा[1] योनातान एक समझदार मंत्री और शास्त्री था और किसी हक्मोनी का पुत्र यहीएल राजपुत्रों के संग रहा करता था। और अहीतोपेल
३३ राजा का मंत्री था और एरेकी हूशै राजा का मित्र था।
३४ और अहीतोपेल के पीछे बनायाह का पुत्र यहोयादा और एब्यातार मन्त्री ठहरे और राजा का प्रधान सेनापति योआब था ॥

(दाऊद की पिछली सभा और उस की मृत्यु)

२८. और दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अर्थात् गोत्रों के हाकिमों और और राजा की सेवा टहल करनेहारे दलों के हाकिमों को और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा और उस के पुत्रों के पशु आदि सब धन संपति के अधिकारियों सरदारों और वीरों और सब शूरवीरों को यरू-
२ शलेम में बुलवाया। तब दाऊद राजा खड़ा होकर कहने लगा हे मेरे भाइयो और हे मेरी प्रजा के लोगो मेरी सुनो मेरी मनसा तो थी कि यहोवा की वाचा के संदूक के लिये और हम लोगों के परमेश्वर के चरणों की पाढ़ी के लिये विश्राम का एक भवन बनाऊं और मैं ने उस के बनाने की
३ तैयारी की थी। परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा तू मेरे नाम का भवन बनाने न पाएगा क्योंकि तू युद्ध करने-
४ हारा है और तू ने लोहू बहाया है। तौभी इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के सारे घराने में से मुझी को चुन लिया कि इस्राएल का राजा सदा बना रहूं अर्थात् उस ने यहूदा को प्रधान होने के लिये और यहूदा के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के पुत्रों में से वह मुझी को सारे इस्राएल का राजा
५ करने के लिये प्रसन्न हुआ। और मेरे सब पुत्रों में से (यहोवा ने तो मुझे बहुत पुत्र दिये हैं) उस ने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन लिया है कि वह इस्राएल के ऊपर
६ यहोवा के राज्य की गद्दी पर विराजे। और उस ने मुझ से कहा कि तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आंगनों को बनाएगा क्योंकि मैं ने उस को चुन लिया है
७ कि मेरा पुत्र ठहरे और मैं उस का पिता ठहरूंगा। और यदि वह मेरी आज्ञाओं और नियमों के मानने में आज कल की नाईं दृढ़ रहे तो मैं उस का राज्य सदा लों
८ स्थिर रक्खूंगा। सो अब इस्राएल के देखते अर्थात

[1] वा चचा।

यहोवा की मण्डली के देखते और अपने परमेश्वर के सुनते अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहो इसलिये कि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो और इसे अपने पीछे अपने वंश का सदा का भाग होने के लिये छोड़ ९ जाओ। और हे मेरे पुत्र सुलैमान तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख और खरे मन और प्रसन्न जीव से उस की सेवा करता रह क्योंकि यहोवा मन मन को जांचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है यदि तू उस की खोज में रहे तो वह तुझ से मिलेगा पर यदि तू उस को त्यागे तो वह सदा के लिये १० तुझ को छोड़ देगा। अब चौकस रह यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने को चुन लिया है जो पवित्रस्थान ठहरे हियाव बांधकर इस काम में लग जाना॥

११ तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे कोठरियों भण्डारों अटारियों भीतरी कोठरियों १२ और प्रायश्चित्त के ढकने के स्थान का नमूना, और यहोवा के भवन के आंगनों और चारों ओर की कोठरियों और परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों को जो जो नमूने ईश्वर के आत्मा की १३ प्रेरणा से[१] उस को मिले थे सो सब दे दिये। फिर याजकों और लेवीयों के दलों और यहोवा के भवन में की सेवा के सब कामों और यहोवा के भवन में की सेवा के सारे १४ सामान, अर्थात् सब प्रकार की सेवा के लिये सोने के पात्रों के निमित्त सोना तौलकर और सब प्रकार की सेवा के १५ लिये चान्दी के पात्रों के निमित्त चांदी तौलकर, और सोने की दीवटों के लिये और उन के दीपकों के लिये एक एक दीवट और उस के दीपकों का सोना तौल कर और चान्दी के दीवटों के लिये एक एक दीवट और उस के दीपक की चांदी एक एक दीवट के काम के अनुसार १६ तौलकर, और भेंट की रोटी की मेजों के लिये एक एक मेज का सोना तौल कर और चांदी की मेजों के लिये १७ चांदी, और चोखे सोने के कांटों कटोरों और प्यालों और सोने की कटोरियों के लिये एक एक कटोरी का सोना तौलकर और चान्दी की कटोरियों के लिये एक एक १८ कटोरी की चांदी तौलकर, और धूप की वेदी के लिये ताया हुआ सोना तौलकर और रथ अर्थात् यहोवा की वाचा का संदूक छानेहारे और पंख फैलाये हुए करूबों के १९ नमूने का सोना दे दिया। मैं ने यहोवा की शक्ति से जो मुझ को मिला यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है। २० फिर दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा हियाव बांध और दृढ़ होकर इस काम में लग जाना मत डर और तेरा मन कच्चा न हो क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है सो तेरे संग है और जब लों यहोवा के भवन में जितना काम करना हो सो न हो चुके तब लों वह न तो तुझे धोखा देगा और न तुझे त्यागेगा। और २१ सुन परमेश्वर के भवन के सब काम के लिये याजकों और लेवीयों के दल ठहराये गये हैं और सब प्रकार की सेवा के लिये सब प्रकार के काम प्रसन्नता से करनेहारे बुद्धिमान् पुरुष भी तेरा साथ देंगे और हाकिम और सारी प्रजा के लोग भी जो कुछ तू कहेगा वही करेंगे॥

२९.

फिर राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार लड़का है और केवल उसी को परमेश्वर ने चुना है काम तो भारी है क्योंकि यह भवन मनुष्य के लिये नहीं यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा। मैं ने तो २ अपनी शक्ति भर अपने परमेश्वर के भवन के निमित्त सोने की वस्तुओं के लिये सोना चांदी की वस्तुओं के लिये चांदी पीतल की वस्तुओं के लिये पीतल लोहे की वस्तुओं के लिये लोहा और लकड़ी की वस्तुओं के लिये लकड़ी और सुलैमानी पत्थर और जड़ने के योग्य मणि और पच्ची के काम के लिये रङ्ग रङ्ग के नग और सब भांति के मणि और बहुत सा संगमर्मर इकट्ठा किया है। फिर ३ मेरा मन अपने परमेश्वर के भवन में लगा है इस कारण जो कुछ मैं ने पवित्र भवन के लिये इकट्ठा किया है उस सब से अधिक मैं अपना निज धन भी जो सोना चांदी का मेरे पास है अपने परमेश्वर के भवन के लिये दे देता हूं, अर्थात् तीन हजार किक्कार ओपीर का ४ सोना और सात हजार किक्कार ताई हुई चांदी जिस से कोठरियों की भीतें मढ़ी जाएं, और सोने की वस्तुओं ५ के लिये सोना और चांदी की वस्तुओं के लिये चांदी और कारीगरों से बनानेवाले सब प्रकार के काम के लिये मैं उसे देता हूं। और कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिये अपने को अर्पण[२] कर देता है। तब पितरों के घरानों के ६ प्रधानों और इस्राएल के गोत्रों के हाकिमों और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा के काम के अधिकारियों ने अपनी अपनी इच्छा से, परमेश्वर के भवन के ७ काम के लिये पांच हजार किक्कार और दस हजार दर्कनोन सोना दस हजार किक्कार चांदी अठारह हजार किक्कार पीतल और एक लाख किक्कार लोहा दे दिया।

(१) वा अपने आत्मा में।

(२) मूल में अपना हाथ भरता है।

८ और जिन के पास मणि थे उन्हों ने उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिये गेर्शोनी यहीएल के हाथ में दे दिया। ९ तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर खरे मन और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये भेंट दी थी और दाऊद राजा बहुत ही १० आनन्दित हुआ। सो दाऊद ने सारी सभा के सन्मुख यहोवा का धन्यवाद किया और दाऊद ने कहा हे यहोवा हे हमारे मूल पुरुष इस्राएल के परमेश्वर अनादिकाल से ११ अनन्तकाल लों तू धन्य है। हे यहोवा महिमा पराक्रम शोभा सामर्थ्य और विभव तेरा ही है क्योंकि आकाश और पृथिवी में जो कुछ है सो तेरा ही है हे यहोवा राज्य तेरा है और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान् ठहरा १२ है। धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना १३ तेरे हाथ में है। सो अब हे हमारे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं। १४ मैं तो क्या हूं और मेरी प्रजा क्या है कि हम को इस रीति अपनी इच्छा से तुझे भेंट देने की शक्ति मिले तुझी से तो सब कुछ मिलता है और हम ने तेरे हाथ से पाकर १५ तुझे दिया है। हम तो अपने सब पुरखाओं की नाईं तेरे लेखे उपरी और परदेशी हैं पृथिवी पर हमारे दिन छाया १६ की नाईं बीते जाते हैं और हमारा कुछ ठिकाना नहीं। हे हमारे परमेश्वर यहोवा वह जो बड़ा संचय हम ने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिये इकट्ठा किया है सो तेरे ही हाथ से हमें मिला था और सब तेरा ही है। १७ और हे मेरे परमेश्वर मैं जानता हूं कि तू मन को जांचता है और सिधाई से प्रसन्न रहता है मैं ने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है और अब मैं ने आनन्द से देखा है कि तेरी प्रजा के लोग जो यहां हाजिर हैं सो अपनी इच्छा से तेरे लिये १८ भेंट देते हैं। हे यहोवा हे हमारे पुरखा इब्राहीम इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर अपनी प्रजा के मन के विचारों में यह बात बनाये रख और उन के मन अपनी १९ ओर लगाये रख। और मेरे पुत्र सुलैमान का मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओं चितौनियों और विधियों को मानता रहे और यह सब कुछ करे और उस भवन को बनाए जिस की तैयारी मैं ने की है। २० तब दाऊद ने सारी सभा से कहा तुम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो सो सभा के सब लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया और अपना अपना सिर झुकाकर यहोवा को और राजा को दण्डवत् की। २१ और उस दिन के बिहान को उन्हों ने यहोवा के लिये बलिदान किये अर्थात् अर्घों समेत एक हजार बैल एक हजार मेढ़े और एक हजार भेड़ के बच्चे होमबलि करके चढ़ाये और सारे इस्राएल के लिये बहुत से मेलबलि करके, २२ उसी दिन यहोवा के साम्हने बड़े आनन्द से खाया और पिया। फिर उन्हों ने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार राजा ठहराकर यहोवा की ओर से प्रधान होने के लिये उस का और याजक होने के लिये सादोक का अभिषेक किया। २३ तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और भाग्यमान हुआ और सारे इस्राएल ने उस की मानी। २४ और सब हाकिमों और शूरवीरों और राजा दाऊद के सब पुत्रों ने सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार की। २५ और यहोवा ने सुलैमान को सारे इस्राएल के देखते बहुत बढ़ाया और उसे ऐसा राजकीय ऐश्वर्य्य दिया जैसा उस से पहिले इस्राएल के किसी राजा का न हुआ था॥

२६ यों यिशै के पुत्र दाऊद ने सारे इस्राएल के ऊपर राज्य किया। २७ और उस के इस्राएल पर राज्य करने का समय चालीस बरस था उस ने सात बरस तो हेब्रोन और तैंतीस बरस यरूशलेम में राज्य किया। २८ और वह पूरे बुढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर और धन और विभव मनमाना भोगकर[१] मर गया और उस का पुत्र सुलैमान उस के स्थान पर राजा हुआ। २९ आदि से अन्त लों राजा दाऊद के सब कामों का वृत्तान्त, ३० और उस के सारे राज्य और पराक्रम का और उस पर और इस्राएल पर बरन देश देश के सब राज्यों पर जो कुछ बीता इस का भी वृत्तान्त शमूएल दर्शी और नातान नबी और गाद दर्शी की लिखी हुई पुस्तकों में[२] लिखा हुआ है॥

(१) मूल में दिनों धन और विभव से तृप्त। (२) मूल में के वचनों में।

इतिहास नाम पुस्तक। दूसरा भाग।

(सुलैमान के राज्य का आरम्भ)

१. दाऊद का पुत्र सुलैमान राज्य में स्थिर हो गया और उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहा और उस को बहुत २ ही बढ़ाया। और सुलैमान ने सारे इस्राएल से अर्थात् सहस्रपतियों शतपतियों न्यायियों और सारे इस्राएल में के सब रईसों से जो पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष ३ थे बातें कीं। और सुलैमान सारी मण्डली समेत गिबोन के ऊंचे स्थान पर गया क्योंकि परमेश्वर का मिलापवाला तंबू जिसे यहोवा के दास मूसा ने जंगल में बनाया ४ था सो वहीं था। परन्तु परमेश्वर के संदूक को दाऊद किर्यत्यारीम से उस स्थान पर ले आया था जो उस ने उस के लिये तैयार किया था उस ने तो उस के लिये ५ यरूशलेम में एक तंबू खड़ा कराया था। और पीतल की जो वेदी ऊरी के पुत्र बसलेल ने जो हूर का पोता था बनाई थी सो गिबोन में[१] यहोवा के निवास के साम्हने थी सो सुलैमान मण्डली समेत उस के पास ६ गया। और वहीं उस पीतल की वेदी के पास जाकर जो यहोवा के साम्हने मिलापवाले तंबू के पास थी सुलैमान ने उस पर एक हजार होमबलि चढ़ाये॥

७ उसी दिन रात को परमेश्वर ने सुलैमान को दर्शन देकर उस से कहा जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं सो ८ मांग। सुलैमान ने परमेश्वर से कहा तू मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा और मुझ को उस के स्थान ९ पर राजा किया है। अब हे यहोवा परमेश्वर जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था सो पूरा हो तू ने तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा किया जो भूमि की धूलि १० के किनकों के समान बहुत है। अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान दे कि मैं इस प्रजा के साम्हने आया जाया कर सकूं क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का ११ न्याय कर सके। परमेश्वर ने सुलैमान से कहा तेरी जो ऐसी ही मनसा हुई अर्थात् तू ने न तो धन संपत्ति मांगी है न ऐश्वर्य्य और न अपने बैरियों का प्राण और न अपनी दीर्घायु मांगी केवल बुद्धि और ज्ञान का बर मांगा है जिस से तू मेरी प्रजा का जिस के ऊपर मैं ने तुझे राजा किया है न्याय कर सके, इस कारण बुद्धि और १२ ज्ञान तुझे दिया जाता है और मैं तुझे इतना धन संपत्ति और ऐश्वर्य्य दूंगा जितना न तो तुझ से पहिले किसी राजा को मिला और न तेरे पीछे किसी राजा को मिलेगा। १३ तब सुलैमान गिबोन के ऊंचे स्थान से अर्थात् मिलापवाले तंबू के साम्हने से यरूशलेम को आया और वहां इस्राएल पर राज्य करने लगा॥

१४ फिर सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिये और उस के चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार हुए और उन को उस ने रथों के नगरों में और यरूशलेम में १५ राजा के पास ठहरा रक्खा। और राजा ने ऐसा किया कि यरूशलेम में सोने चान्दी का लेखा पत्थरों का सा और देवदारों का लेखा बहुतायत के कारण नीचे के देश के १६ गूलरों का सा हो गया। और जो घोड़े सुलैमान रखता था सो मिस्र से आते थे और राजा के व्यापारी उन्हें झुण्ड झुण्ड करके ठहराये हुए दाम पर लिया करते थे। १७ एक रथ तो छः सौ शेकेल चान्दी पर और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर मिस्र से आता था और इसी दाम पर वे हित्तियों के सारे राजाओं और अराम के राजाओं के लिये उन्हीं के द्वारा लाया करते थे॥

(मन्दिर का बनाना)

२. और सुलैमान ने यहोवा के नाम का एक भवन और अपना राजभवन बनाने की मनसा की। २ सो सुलैमान ने सत्तर हजार बोझिये और अस्सी हजार पहाड़ पर पत्थर निकालनेहारे और वृक्ष काटनेहारे और इन पर तीन हजार छः सौ ३ मुखिये गिनती करके ठहराये। तब सुलैमान ने सोर के राजा हूराम के पास कहला भेजा कि जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से बर्त्ताव किया अर्थात् उस के रहने का भवन बनाने को देवदार भेजे थे वैसा ही अब मुझ से भी ४ बर्त्ताव कर। सुन मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाने पर हूं कि उसे उस के लिये पवित्र करूं और उस के सन्मुख सुगन्धित धूप जलाऊं और नित्य भेंट की रोटी उस में रक्खी जाए और दिन दिन सबेरे और सांझ को और विश्राम और नये चांद के दिनों और

(१) मूल में वहां।

हमारे परमेश्वर यहोवा के सब नियत पर्ब्बों में होमबलि चढ़ाया जाए। इस्राएल के लिये ऐसी ही सदा की विधि है।
५ और जो भवन मैं बनाने पर हूं सो महान् होगा क्योंकि
६ हमारा परमेश्वर सब देवताओं से महान है। पर किस की इतनी शक्ति है कि उस के लिये भवन बनाए वह तो स्वर्ग में बरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी नहीं समाता सो मैं क्या हूं कि उस के साम्हने धूप जलाने को छोड़ और
७ किसी मनसा से उस का भवन बनाऊं। सो अब तू मेरे पास एक ऐसा मनुष्य भेज दे जो सोने चांदी पीतल लोहे और बैंजनी लाल और नीले कपड़े की कारीगरी में निपुण हो और नक्काशी भी जानता हो कि वह मेरे पिता दाऊद के ठहराये हुए निपुण मनुष्यों के साथ होकर जो
८ मेरे पास यहूदा और यरूशलेम में रहते हैं काम करे। फिर लबानोन से मेरे पास देवदार सनौबर और चंदन की लकड़ी भेजना मैं तो जानता हूं कि तेरे दास लबानोन में वृक्ष काटना जानते हैं और तेरे दासों के संग मेरे दास भी
९ रहकर, मेरे लिये बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे क्योंकि जो भवन मैं बनाने चाहता हूं सो बड़ा और अचंभे के
१० योग्य होगा। और तेरे दास जो लकड़ी काटेंगे उन को मैं बीस हजार कोर कुटा हुआ गेहूं बीस हजार कोर जव बीस हजार बत दाखमधु और बीस हजार बत तेल
११ दूंगा। तब सोर के राजा हूराम ने चिट्ठी लिखकर सुलैमान के पास भेजी कि यहोवा अपनी प्रजा से प्रेम रखता
१२ है इस से उस ने तुझे उन का राजा कर दिया। फिर हूराम ने यह भी लिखा[१] कि धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो आकाश और पृथिवी का सिरजनेहारा है और उस ने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान चतुर और समझदार पुत्र दिया है जो यहोवा का एक भवन और
१३ अपना राजभवन भी बनाए। सो अब मैं एक बुद्धिमान् और समझदार पुरुष को अर्थात् अपने बाबा हूराम को
१४ भेजता हूं। वह तो एक दानी स्त्री का बेटा है और उस का पिता सोर का पुरुष था और वह सोने चान्दी पीतल लोहे पत्थर लकड़ी बैंजनी और नीले और लाल और सूक्ष्म सन के कपड़े का काम और सब प्रकार की नक्काशी को जानता और सब भांति की कारीगरी बना सकता है सो तेरे चतुर मनुष्यों के संग और मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के चतुर मनुष्यों के संग उस को भी काम मिले।
१५ सो अब मेरे प्रभु ने जो गेहूं जव तेल और दाखमधु भेजने की चर्चा की है उसे अपने दासों के पास भिजवा
१६ दे। और हम लोग जितनी लकड़ी का तुझे प्रयोजन हो उतनी लबानोन पर से काटेंगे और बेड़े बनवाकर समुद्र के मार्ग से यापो को पहुंचाएंगे और तू उसे
१७ यरूशलेम को ले जाना। तब सुलैमान ने इस्राएली देश में के सब परदेशियों की गिनती ली यह उस गिनती के पीछे हुई जो उस के पिता दाऊद ने ली थी और वे
१८ डेढ़ लाख तीन हजार छः सौ पुरुष निकले। उन में से उस ने सत्तर हजार बोझिये अस्सी हजार पहाड़ पर पत्थर निकालनेहारे और वृक्ष काटनेहारे और तीन हजार छः सौ उन लोगों से काम करानेहारे मुखिये ठहरा दिये॥

(१) मूल में कहा।

३. तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिय्याह नाम पहाड़ पर उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरंभ किया जिसे उस के पिता दाऊद ने दर्शन पाकर यबूसी ओर्नान के खलिहान में
२ तैयार किया था। उस ने अपने राज्य के चौथे बरस के दूसरे महीने के दूसरे दिन को बनाना आरंभ किया।
३ परमेश्वर का जो भवन सुलैमान ने बनाया उस का यह ढब है अर्थात् उस की लंबाई तो प्राचीनकाल की नाप के अनुसार साठ हाथ और उस की चौड़ाई बीस हाथ की
४ थी। और भवन के साम्हने के ओसारे की लंबाई तो भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की और उस की ऊंचाई एक सौ बीस हाथ की थी और सुलैमान ने उस को
५ भीतर बार चोखे सोने से मढ़वाया। और भवन के बड़े भाग की छत उस ने सनौबर की लकड़ी से पटवाई और उस को अच्छे सोने से मढ़वाया और उस पर खजूर के
६ वृक्ष की और सांकलों की नक्काशी कराई। फिर शोभा देने के लिये उस ने भवन में मणि जड़वाये। और यह
७ सोना पर्वैम का था। और उस ने भवन को अर्थात् उस की कड़ियों डेवढ़ियों भीतों और किवाड़ों को सोने से
८ मढ़वाया और भीतों पर करूब खुदवाये। फिर उस ने भवन के परमपवित्र स्थान को बनाया उस की लंबाई तो भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की थी और उस की चौड़ाई बीस हाथ की थी और उस ने उसे छः सौ किक्कार
९ चोखे सोने से मढ़वाया। और सोने की कीलों का तौल पचास शेकेल था और उस ने अटारियों को भी सोने से
१० मढ़वाया। फिर भवन के परमपवित्र स्थान में उस ने नक्काशी के काम के दो करूब बनवाये और वे सोने से
११ मढ़ाये गये। करूबों के पंख तो सब मिलाकर बीस हाथ लंबे थे अर्थात् एक करूब का एक पंख पांच हाथ का और भवन की भीत लों पहुंचा हुआ था और उस का दूसरा पंख पांच हाथ का था और दूसरे करूब के पंख से छुआ
१२ था। और दूसरे करूब का भी एक पंख पांच हाथ का और भवन की दूसरी भीत लों पहुंचा था और दूसरा

पंख पांच हाथ का और पहिले करूब के पंख से सटा
१३ हुआ था। उन करूबों के पंख बीस हाथ लों फैले हुए थे
और वे अपने अपने पांवों के बल खड़े थे और अपना
१४ अपना मुख भीतर की ओर किये हुए थे। फिर उस ने
बीचवाले पर्दे को नीले बैंजनी और लाल रंग के सन के
१५ कपड़े का बनवाया और उस पर करूब कढ़वाये। और
भवन के साम्हने उस ने पैंतीस पैंतीस हाथ ऊंचे दो
खंभे बनवाये और जो कंगनी एक एक के ऊपर थी सो
१६ पांच पांच हाथ की थी। फिर उस ने भीतरी कोठरी में
सांकलें बनवाकर खंभों के ऊपर लगाईं और एक सौ
१७ अनार भी बनवाकर सांकलों पर लटकाये। इन खंभों को
उस ने मन्दिर के साम्हने एक तो उस की दहिनी ओर
और दूसरा बाईं ओर खड़ा कराया और दहिने खंभे का
नाम याकीन और बायें खंभे का नाम बोअज रक्खा॥

४. फिर उस ने पीतल की एक वेदी बनाई उस की लंबाई और चौड़ाई बीस
२ बीस हाथ की और ऊंचाई दस हाथ की थी। फिर उस
ने एक ढाला हुआ गंगाल बनवाया जो छोर से छोर लों
दस हाथ चौड़ा था उस का आकार गोल था और उस
की ऊंचाई पांच हाथ की थी और उस के चारों ओर का
३ घेर तीस हाथ सूत का था। और उस के तले उस के
चारों ओर एक एक हाथ में दस दस बैलों की प्रति-
माएं बनी थीं जो गंगाल को घेरे थीं जब वह ढाला गया
४ तब ये बैल भी दो पांति करके ढाले गये। और वह
बारह बने हुए बैलों पर धरा गया जिन में से तीन उत्तर
तीन पच्छिम तीन दक्खिन और तीन पूरब की ओर
मुंह किये हुए थे और इन के ऊपर गंगाल धरा था
५ और उन सभों के पिछले अंग भीतरी पड़ते थे। और
गंगाल की मोटाई चौवा भर की थी और उस का
मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाईं सोसन के फूलों के
काम से बना था और उस में तीन हजार बत भरकर
६ समाता था। फिर उस ने धोने के लिये दस हौदी बनवा
कर पांच दहिनी और पांच बाईं ओर रख दीं उन में
तो होमबलि की वस्तुएं धोई जाती थीं पर गंगाल याजकों
७ के धोने के लिये था। फिर उस ने सोने की दस दीवट
विधि के अनुसार बनवाईं और पांच दहिनी ओर और
८ पांच बाईं ओर मन्दिर में धरा दीं। फिर उस ने दस
मेज बनवाकर पांच दहिनी ओर और पांच बाईं ओर
मन्दिर में रखा दीं। और उस ने सोने के एक सौ
९ कटोरे बनवाये। फिर उस ने याजकों के आंगन और बड़े
आंगन को बनवाया और इस आंगन में फाटक[1] बनवा
कर उन के किवाड़ों पर पीतल मढ़वाया। और उस ने १०
गंगाल को भवन की दहिनी ओर अर्थात् पूरब और दक्खिन
के कोने की ओर धरा दिया। और हूराम ने हण्डों ११
फावड़ियों और कटोरों को बनाया। सो हूराम ने राजा
सुलैमान के लिये परमेश्वर के भवन में जो काम करना
था उसे निपटा दिया अर्थात् दो खंभे और गोलों समेत १२
वे कंगनियां जो खंभों के सिरों पर थीं और खंभों के सिरों
पर के गोलों के ढांपने की जालियों की दो दो पांति,
और दोनों जालियों के लिये चार सौ अनार और खंभों के १३
सिरों पर जो गोले थे उन के ढांपने के एक एक जाली के
लिये अनारों की दो दो पांति बनाईं। फिर उस ने पाये १४
और पायों पर की हौदियां, एक गंगाल और उस के १५
नीचे के बारह बैल बनाये। फिर हण्डों फावड़ियों कांटों १६
और इन के सारे सामान को उस के पिता हूराम ने यहोवा
के भवन के लिये राजा सुलैमान की आज्ञा से झलकाये
हुए पीतल के बनवाया। राजा ने उन को यर्दन की १७
तराई में अर्थात् सुक्कोत और सरेदा के बीच की चिकनी
मिट्टीवाली भूमि में ढलवाया। ये सब पात्र सुलैमान ने १८
बहुत ही बनवाये यहां लों कि पीतल के तौल का कुछ
लेखा न हुआ। और सुलैमान ने परमेश्वर के भवन १९
के सब पात्र और सोने की वेदी और वे मेज जिन पर
भेंट की रोटी रक्खी जाती थी, और दीपकों समेत २०
चोखे सोने की दीवटें जो विधि के अनुसार भीतरी
कोठरी के साम्हने बरा करें, और सोने बरन निरे सोने २१
के फूल दीपक और चिमटे, और चोखे सोने की कैंचियां २२
कटोरे धूपदान और करछे बनवाये। फिर भवन के द्वार
और परम पवित्र स्थान के भीतरी किवाड़ और भवन
अर्थात् मन्दिर के किवाड़ सोने के बने॥

५. निदान जो जो काम सुलैमान ने यहोवा के १
भवन के लिये बनवाया सो सब निपट गया। तब
सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किये हुए सोने
चांदी और सब पात्रों को भीतर पहुंचाकर परमेश्वर के
भवन के भण्डारों में रखा दिया॥

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

तब सुलैमान ने इस्राएल के पुरनियों को और गोत्रों २
के सब मुख्य पुरुष जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के
प्रधान थे उन को भी यरूशलेम में इस मनसा से इकट्ठा
किया कि वे यहोवा की वाचा का संदूक दाऊदपुर से
अर्थात् सिय्योन से ऊपर लिवा ले आएं। सो सब इस्रा- ३
एली पुरुष सातवें महीने के पर्व के समय राजा के पास
इकट्ठे हुए। जब इस्राएल के सब पुरनिये आये तब ४
लेवीयों ने संदूक को उठा लिया। और संदूक और ५

(१) मूल में किवाड़।

मिलाप का तंबू और जितने पवित्र पात्र उस तंबू में थे
६ उन सभों को लेवीय याजक ऊपर ले गये। और राजा सुलैमान और सारी इस्राएली मण्डली के लोग जो उस के पास इकट्ठे हुए थे उन्हों ने संदूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि किये जिन की गिनती और लेखा
७ बहुतायत के कारण न हो सकता था। तब याजकों ने यहोवा की वाचा का संदूक उस के स्थान में अर्थात् भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्थान है
८ पहुंचाकर करूबों के पंखों के तले रख दिया। करूब तो संदूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाये हुए थे कि वे
९ ऊपर से संदूक और उस के डण्डों को ढांपे थे। डण्डे तो ऐसे लंबे थे कि उन के सिरे संदूक से निकले हुए भीतरी कोठरी के साम्हने देख पड़ते थे पर बाहर से तो वे देख न पड़ते थे। वे आज के दिन लों वहीं हैं।
१० संदूक में पत्थर की उन दो पटियाओं को छोड़ कुछ न था जिन्हें मूसा ने होरेब में उस के भीतर उस समय रक्खा जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने
११ के पीछे उन के साथ वाचा बांधी थी। जब याजक पवित्रस्थान से निकले (जितने याजक हाजिर थे उन सभों ने तो अपने अपने को पवित्र किया था और अलग
१२ अलग दलों में होकर सेवा न करते थे, और जितने लेवीय गानेहारे थे वे अर्थात् पुत्रों और भाइयों समेत आसाप हेमान और यदूतून सब के सब सन के वस्त्र पहिने झांझ सारंगियां और वीणाएं लिए हुए वेदी के पूरब अलंग खड़े थे और उन के साथ एक सौ बीस
१३ याजक तुरहियां बजा रहे थे), सो जब तुरहियां बजानेहारे और गानेहारे एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे और तुरहियां झांझ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊंचे शब्द से करने लगे अर्थात् वह भला है और उस की करुणा सदा की है तब
१४ यहोवा के भवन में बादल भर आया, और बादल के कारण याजक लोग सेवा टहल करने को खड़े न रह सके क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था॥

६. तब सुलैमान कहने लगा यहोवा ने कहा था कि मैं घोर अंधकार में वास किये
२ रहूंगा। पर मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान वरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है जिस में तू युग युग रहे।
३ और राजा ने इस्राएल की सारी सभा की ओर मुंह फेरकर उस को आशीर्वाद दिया और इस्राएल की
४ सारी सभा खड़ी रही। और उस ने कहा धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिस ने अपने मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था और अपने हाथों
से इसे पूरा किया है कि, जिस दिन से मैं अपनी प्रजा ५ को मिस्र देश से निकाल लाया तब से मैं ने न तो इस्राएल के किसी गोत्र का कोई नगर चुना जिस में मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए और न कोई मनुष्य चुना कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो,
पर मैं ने यरूशलेम को इसलिये चुना है कि मेरा नाम ६ वहां हो और दाऊद को चुन लिया है कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो। मेरे पिता दाऊद की ७ यह मनसा तो थी कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं। पर यहोवा ने मेरे पिता ८ दाऊद से कहा यह जो तेरी मनसा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं ऐसी मनसा करके तू ने भला किया। तौभी तू उस भवन को न बनाएगा। तेरा जो ९ निज पुत्र होगा वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। यह १० जो वचन यहोवा ने कहा था उसे उस ने पूरा भी किया है और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर विराजता हूं और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया है। और इस में मैं ने उस संदूक को रक्खा ११ दिया है जिस में यहोवा की वह वाचा है जो उस ने इस्राएलियों से बांधी थी॥

तब वह इस्राएल की सारी सभा के देखते यहोवा १२ की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ और अपने हाथ फैलाये। सुलैमान ने तो पांच हाथ लंबी पांच हाथ चौड़ी और १३ तीन हाथ ऊंची पीतल की एक चौकी बनाकर आंगन के बीच रखवाई थी सो उस पर उस ने खड़ा हो इस्राएल की सारी सभा के देखते घुटने टेककर स्वर्ग की ओर हाथ फैलाये हुए कहा, हे यहोवा हे इस्राएल के परमेश्वर तेरे १४ समान न तो स्वर्ग में और न पृथिवी पर कोई ईश्वर है तेरे जो दास अपने सारे मन से अपने को तेरे सन्मुख जानकर[१] चलते हैं उन के लिए तू अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहता है। जो वचन तू ने मेरे पिता १५ दाऊद को दिया था उस का तू ने पालन किया है जैसा तू ने अपने मुंह से कहा था वैसा ही अपने हाथ से उस को हमारी आंखों के साम्हने[२] पूरा किया है। सो १६ अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा इस वचन को भी पूरा कर जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था कि तेरे कुल में मेरे साम्हने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेहारे सदा बने रहेंगे इतना हो कि जैसे तू अपने को मेरे सन्मुख जानकर[१] चलता रहा वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें कि मेरी

(१) मूल में तेरे साम्हने। (२) मूल में आज के दिन की नाईं।

१७ व्यवस्था पर चलें। सो अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा अपना जो वचन तू ने अपने दास दाऊद को १८ दिया था वह सच्चा किया जाए। परन्तु क्या परमेश्वर सचमुच मनुष्यों के संग पृथिवी पर वास करेगा स्वर्ग में बरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता फिर मेरे १९ बनाये हुए इस भवन में तू क्योंकर समाएगा। तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की ओर फिरके मेरी पुकार और यह प्रार्थना २० सुन जो मैं तेरे साम्हने कर रहा हूं। वह यह है तेरी आंखें इस भवन की ओर अर्थात् इसी स्थान की ओर जिस के विषय तू ने कहा है कि मैं उस में अपना नाम रक्खूंगा रात दिन खुली रहें और जो प्रार्थना तेरा दास इस २१ स्थान की ओर करे उसे तू सुन ले। और अपने दास और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिस को वे इस स्थान की ओर मुंह किये हुए गिड़गिड़ाकर करें उसे सुनना स्वर्ग में से जो तेरा निवासस्थान है सुन लेना २२ और सुनकर क्षमा करना। जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे और उस को किरिया खिलाई जाए और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने किरिया २३ खाए, तब तू स्वर्ग में से सुनना और मानना और अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को बदला देना और उस की चाल उसी के सिर लौटा देना और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर २४ उस के धर्म्म के अनुसार उस को फल देना। फिर यदि तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाएं और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम मानें और इस भवन में तुझ से प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट २५ करें, तो तू स्वर्ग में से सुनना और अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करना और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जिसे तू ने उन को और उन के पुरखाओं को दिया है।

२६ जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें और इस कारण आकाश ऐसा बन्द हो जाए कि वर्षा न हो ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें और तू जो उन्हें २७ दुःख देता है इस कारण अपने पाप से फिरें, तो तू स्वर्ग में से सुनना और अपने दासों और अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को क्षमा करना तू जो उन को वह भला मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिये इसलिये अपने इस देश पर जिसे तू ने अपनी प्रजा का भाग कर २८ दिया है पानी बरसा देना। जब इस देश में काल वा मरी वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा उन के शत्रु उन के देश के फाटकों में उन्हें घेर रक्खें २९ कोई विपत्ति वा रोग क्यों न हो, तब यदि कोई मनुष्य वा तेरी सारी प्रजा इस्राएल जो अपना अपना दुःख और अपना अपना खेद जान ले और गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाए, तो ३० तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान से सुनकर क्षमा करना और एक एक के मन को जानकर उस की चाल के अनुसार उसे फल देना तू ही तो आदमियों के मन का जाननेहारा है, ३१ कि वे जितने दिन इस देश में रहें जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था उतने दिन लों तेरा भय मानते हुए तेरे मार्गों पर चलते रहें। ३२ फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो जब वह तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई बांह के कारण दूर देश से आए जब वे आकर इस भवन की ओर मुंह किये हुए प्रार्थना करें, ३३ तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुने और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे उस के अनुसार करना जिस से पृथिवी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय मानें और निश्चय करें कि यह भवन जो मैं ने बनाया है सो तेरा ही कहलाता है। ३४ जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे वहां अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएं और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है मुंह किये हुए तुझ से प्रार्थना करें, ३५ तब तू स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुने और उन का न्याय करे। ३६ निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है सो यदि वे भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे और वे उन्हें बंधुआ करके किसी देश को चाहे वह दूर हो चाहे निकट ले जाएं, ३७ तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें और फिरकर अपनी बन्धुआई करनेहारों के देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें कि हम ने पाप किया और कुटिलता और दुष्टता की है, ३८ यदि वे अपनी बन्धुआई के देश में जहां वे उन्हें बन्धुआ करके ले गये हों अपने सारे मन और सारे जीव से तेरी ओर फिरें और अपने इस देश की ओर जो तू ने उन के पुरखाओं को दिया था और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है मुंह किये हुए तुझ से प्रार्थना करें, ३९ तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से उन की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुने और उन का न्याय करे और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करें उन्हें क्षमा करना। ४० और हे मेरे परमेश्वर जो प्रार्थना इस स्थान में की जाए उस की ओर अपनी आंखें खोले और अपने कान लगाये रख। ४१ अब हे यहोवा परमेश्वर उठकर अपने सामर्थ्य के संदूक समेत अपने विश्रामस्थान में आ हे यहोवा

परमेश्वर तेरे याजक उद्धाररूपी वस्त्र पहिने रहें और तेरे ४१ भक्त लोग भलाई के कारण आनन्द करते रहें। हे यहोवा परमेश्वर अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को सुनी अनसुनी न कर[1] तू अपने दास दाऊद पर की करुणा के काम स्मरण रख ॥

७. जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका तब स्वर्ग से आग ने गिरकर होमबलियों और और बलियों को भस्म किया और यहोवा का तेज २ भवन में भर आया। और याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन ३ में भर गया था। और जब आग गिरी और यहोवा का तेज भवन पर छा गया तब सब इस्राएली देखते रहे और फर्श पर झुककर अपना अपना मुंह भूमि पर किये हुए दण्डवत् की और यों कहकर यहोवा का धन्यवाद किया ४ कि वह भला है उस की करुणा सदा की है। तब सारी ५ प्रजा समेत राजा ने यहोवा को बलि चढ़ाये। और राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ बकरियां चढ़ाई यों सारी प्रजा समेत राजा ने यहोवा ६ के भवन की प्रतिष्ठा की। और याजक अपना अपना कार्य्य करने को खड़े रहे और लेवीय भी यहोवा के वे गीत के बाजे लिये हुए खड़े थे जिन्हें दाऊद राजा ने यहोवा की सदा की करुणा के कारण उस का धन्यवाद करने को बनाकर उन के द्वारा स्तुति कराई थी और इन के साम्हने याजक लोग तुरहियां बजाते रहे और सारे ७ इस्राएली खड़े रहे। फिर सुलैमान ने यहोवा के भवन के साम्हने आंगन के बीच एक स्थान पवित्र करके होमबलि और मेलबलियों की चर्बी वहीं चढ़ाई क्योंकि सुलैमान की बनाई हुई पीतल की वेदी होमबलि और अन्नबलि और ८ चर्बी के लिये छोटी थी। उसी समय सुलैमान ने और उस के संग हमात की घाटी से लेकर मिस्र के नाले तक के सारे इस्राएल की एक बहुत बड़ी सभा ने सात दिन ९ लों पर्व को माना। और आठवें दिन को उन्हों ने महासभा की उन्हों ने वेदी की प्रतिष्ठा सात दिन की और १० पर्व को भी सात दिन माना। निदान सातवें महीने के तेईसवें दिन को उस ने प्रजा के लोगों को बिदा किया कि वे अपने अपने डेरे को जाएं और वे उस भलाई के कारण जो यहोवा ने दाऊद और सुलैमान और अपनी प्रजा इस्राएल पर की थी आनन्दित थे ॥

११ यों सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका और यहोवा के भवन में और अपने भवन में जो कुछ उस ने बनाना चाहा उस में उस का मनोरथ पूरा हुआ। तब यहोवा ने रात में उस को दर्शन देकर १२ उस से कहा मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और इस स्थान को यज्ञ के भवन के लिये अपनाया है। यदि मैं आकाश को १३ ऐसा बन्द करूं कि वर्षा न हो वा टिड्डियों को देश उजाड़ने की आज्ञा दूं वा अपनी प्रजा में मरी फैलाऊं, तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं दीन १४ होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें तो मैं स्वर्ग से सुनकर उस का पाप क्षमा करूंगा और उन के देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा। अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी उस पर १५ मेरी आंखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे। और अब १६ मैं ने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा लों इस में बना रहे मेरी आंखें और मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे। और यदि तू अपने १७ पिता दाऊद की नाईं अपने को मेरे सन्मुख जानकर[2] चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे, तो मैं १८ तेरी राजगद्दी को स्थिर रखूंगा जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद के साथ वाचा बांधी थी कि तेरे कुल में इस्राएल पर प्रभुता करनेहारा सदा बना रहेगा। पर यदि तुम १९ लोग फिरो और मेरी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं ने तुम को दी हैं त्यागो और जाकर पराये देवताओं की उपासना और उन्हें दण्डवत् करो, तो मैं उन को अपने २० देश में से जो मैं ने उन को दिया है जड़ से उखाड़ूंगा और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूंगा और ऐसा करूंगा कि देश देश के लोगों के बीच उस की उपमा और नामधराई चलेगी। और यह भवन जो इतना ऊंचा है उस २१ के पास से आने जानेहारे चकित होकर पूछेंगे यहोवा ने इस देश और इस भवन से ऐसा क्यों किया है। तब २२ लोग कहेंगे कि उन लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उन को मिस्र देश से निकाल लाया था त्यागकर पराये देवताओं को ग्रहण किया और उन्हें दण्डवत् और उन की उपासना की इस कारण उस ने यह सारी विपत्ति उन पर डाली है ॥

(सुलैमान का भांति भांति का चरित्र)

८. सुलैमान को तो यहोवा के भवन और अपने भवन के बनाने में बीस बरस लगे, तब जो नगर हूराम ने सुलैमान को दिये उन्हें २ सुलैमान ने दृढ़ करके उन में इस्राएलियों को बसाया ॥

तब सुलैमान सोबा के हमात को जाकर उस पर ३

(१) मूल में अपने अभिषिक्त का मुख न फेर दे।

(२) मूल में मेरे साम्हने।

४ जयवन्त हुआ। और उस ने तद्मोर को जो जंगल में ५ है और हमात के सब भण्डारनगरों को दृढ़ किया। फिर उस ने उपरले और निचले दोनों बेथोरोन को शहरपनाह ६ फाटकों और बेंड़ों से दृढ़ किया। और बालात और सुलैमान के जितने भण्डारनगर थे और उस के रथों और सवारों के जितने नगर थे उन को और जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम लबानोन और अपने राज्य के सारे देश में ७ बनाना चाहा उस सब को उस ने बनाया। हित्तियों एमोरियों परिज्जियों हिव्वियों और यबूसियों के बचे हुए लोग ८ जो इस्राएल के न थे, उन के वंश जो उन के पीछे देश में रह गये और उन का इस्राएलियों ने अन्त न किया था उन में से तो कितनों को सुलैमान ने बेगार में रक्खा ९ और आज लों उन की वही दशा है। पर इस्राएलियों में से सुलैमान ने अपने काम के लिये किसी को दास न बनाया वे तो योद्धा और उस के हाकिम उस के सरदार १० और उस के रथों और सवारों के प्रधान हुए। और सुलैमान के सरदारों के प्रधान जो प्रजा के लोगों पर प्रभुता ११ करनेहारे थे सो अढ़ाई सौ थे। फिर सुलैमान फिरौन की बेटी को दाऊदपुर में से उस भवन में ले आया जो उस ने उस के लिये बनाया था उस ने तो कहा कि जिस जिस स्थान में यहोवा का संदूक आया है वे पवित्र हैं सो मेरी रानी इस्राएल के राजा दाऊद के भवन में न रहने पाएगी॥

१२ तब सुलैमान ने यहोवा की उस वेदी पर जो उस ने ओसारे के आगे बनाई थी यहोवा को होमबलि १३ चढ़ाया। वह मूसा की आज्ञा के और दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार अर्थात् विश्राम और नये चांद के दिनों में और अखमीरी रोटी के पर्व्व और अठवारों के पर्व्व और झोपड़ियों के पर्व्व बरस दिन के इन तीनों १४ नियत समयों में बलि चढ़ाया करता था। और उस ने अपने पिता दाऊद के नियम के अनुसार याजकों की सेवकाई के लिये उन के दल ठहराये और लेवीयों को उन के कामों पर ठहराया कि दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार वे यहोवा की स्तुति और याजकों के साम्हने सेवा टहल किया करें और एक एक फाटक के पास डेवढ़ीदारों को दल दल करके ठहरा दिया क्योंकि परमेश्वर के १५ जन दाऊद ने ऐसी आज्ञा दी थी। और राजा ने भण्डारों वा किसी और बात में याजकों और लेवीयों के लिये जो जो आज्ञा दी थी उस को उन्हों ने न टाला। १६ और सुलैमान का सब काम जो उस ने यहोवा के भवन की नेव डालने से ले उस के पूरा करने लों किया सो ठीक किया गया। निदान यहोवा का भवन पूरा हुआ॥

१७ तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत को गया जो एदोम के देश में समुद्र के तीर हैं। और हूराम ने उस १८ के पास अपने जहाजियों के द्वारा जहाज और समुद्र के जानकार मल्लाह भेज दिये और उन्हों ने सुलैमान के जहाजियों के संग ओपीर को जाकर वहां से साढ़े चार सौ किक्कार सोना राजा सुलैमान को ला दिया॥

(शबा की रानी का सुलैमान का दर्शन करना)

९. जब शबा की रानी ने सुलैमान की कीर्त्ति सुनी तब वह कठिन कठिन प्रश्नों से उस की परीक्षा करने के लिये यरूशलेम को चली। वह तो बहुत भारी दल और मसालों और बहुत सोने और मणि से लदे ऊंट साथ लिये हुए आई और सुलैमान के पास पहुंचकर अपने मन की सारी बातों के विषय उस २ से बातें करने लगी। सुलैमान ने उस के सब प्रश्नों का उत्तर दिया कोई बात सुलैमान की बुद्धि से ऐसी बाहर ३ न रही[१] कि वह उसे न बता सका। जब शबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी और उस का बनाया हुआ ४ भवन, और उस की मेज पर का भोजन देखा और उस के कर्म्मचारी किस रीति बैठते और उस के टहलुए किस रीति खड़े रहते और कैसे कैसे कपड़े पहिने रहते हैं और उस के पिलानेहारे कैसे हैं और वे भी कैसे कपड़े पहिने हैं और वह कैसी चढ़ाई है जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता है यह सब जब उस ने देखा तब वह ५ चकित हो गई। सो उस ने राजा से कहा तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्त्ति मैं ने अपने देश में सुनी ६ सो सच ही है। पर जब लों मैं ने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा तब लों मैं ने उन की प्रतीति न की पर तेरी बुद्धि की आधी बड़ाई भी मुझे न बताई गई थी तू उस कीर्त्ति से बढ़कर है जो मैं ने सुनी थी। ७ धन्य हैं तेरे जन धन्य हैं तेरे ये सेवक जो नित्य तेरे सन्मुख हाजिर रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं। ८ धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे अपनी राजगद्दी पर इसलिये विराजमान किया कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर से राज्य करे तेरा परमेश्वर जो इस्राएल से प्रेम करके उन्हें सदा के लिये स्थिर करने चाहता था इसी कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म्म करने को उन का राजा कर दिया। ९ और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना बहुत सा सुगन्धद्रव्य और मणि दिये जैसे सुगन्धद्रव्य शबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिये वैसे देखने में नहीं १० आये। फिर हूराम और सुलैमान दोनों के जहाजी जो ओपीर से सोना लाते थे सो चन्दन की लकड़ी और

(१) मूल में कोई बात सुलैमान से न छिपी।

११ मणि भी लाते थे। और राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिये चबूतरे और गानेहारों के लिये वीणाएं और सारंगियां बनाईं ऐसी वस्तुएं
१२ उस से पहिले यहूदा देश में न देख पड़ी थीं। और शबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उस को उस की इच्छा के अनुसार दिया यह उस के सिवाय था जो वह राजा के पास ले आई थी तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई ॥

(सुलैमान का माहात्म्य और मृत्यु)

१३ जो सोना बरस दिन में सुलैमान के पास पहुंचा करता था उस का तौल छः सौ छियासठ किक्कार था।
१४ यह उस से अधिक था जो सौदागर और व्यापारी लाते थे और अरब देश के सब राजा और देश के अधिपति
१५ भी सुलैमान के पास सोना चान्दी लाते थे। और राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनाईं एक एक ढाल में छः छः सौ शेकेल गढ़ा हुआ सोना
१६ लगा। फिर उस ने सोना गढ़ाकर तीन सौ फरियां भी बनाईं एक एक छोटी ढाल में तीन सौ शेकेल सोना लगा और राजा ने उन को लबानोनी बन नाम भवन में रख
१७ दिया। और राजा ने हाथीदांत का एक बड़ा सिंहासन
१८ बनाया और चोखे सोने से मढ़ाया। उस सिंहासन में छः सीढ़ियां और सोने का एक पावदान था ये सब सिंहासन से जुड़े थे और बैठने के स्थान की दोनों अलंग टेक लगी थी और दोनों टेकों के पास एक एक सिंह खड़ा हुआ बना
१९ था। और छहों सीढ़ियों की दोनों अलंग एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था सो बारह हुए किसी राज्य में ऐसा
२० कभी न बना। और राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के थे और लबानोनी बन नाम भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के थे सुलैमान के दिनों में चांदी का कुछ
२१ लेखा न था। क्योंकि हूराम के जहाजियों के संग राजा के तर्शीश को जानेवाले जहाज थे और तीन तीन बरस के पीछे वे तर्शीश के जहाज सोना चांदी हाथीदांत बन्दर और
२२ मोर ले आते थे। सो राजा सुलैमान धन और बुद्धि में
२३ पृथिवी के सब राजाओं से बढ़ कर हो गया। और पृथिवी के सब राजा सुलैमान की उस बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उस के मन में उपजाई थीं उस का दर्शन
२४ करने चाहते थे। और वे बरस बरस अपनी अपनी भेंट अर्थात् चांदी और सोने के पात्र वस्त्र शस्त्र सुगन्धद्रव्य
२५ घोड़े और खच्चर ले आते थे। और अपने घोड़ों और रथों के लिये सुलैमान के चार हजार थान और बारह हजार सवार भी थे जिन को उस ने रथों के नगरों में और यरूश-
२६ लेम में राजा के पास ठहरा रक्खा। और वह महानद से ले पलिश्तियों के देश और मिस्र के सिवाने लों के सब
२७ राजाओं पर प्रभुता करता था। और राजा ने ऐसा किया कि यरूशलेम में चांदी का लेखा पत्थरों का और देवदार का लेखा बहुतायत के कारण नीचे के देश के गूलरों का
२८ सा हो गया। और लोग मिस्र से और और सब देशों से सुलैमान के लिये घोड़े लाते थे ॥

२९ आदि से अन्त लों सुलैमान के और सारे काम क्या नातान नबी की पुस्तक[1] में और शीलोवासी अहिय्याह की नबूवत की पुस्तक में और नबात के पुत्र यारोबाम के विषय इद्दो दर्शी के दर्शन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं।
३० सुलैमान ने यरूशलेम में सारे इस्राएल पर चालीस
३१ बरस लों राज्य किया। और सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पिता दाऊद के पुर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र रहबाम उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(इस्राएल के राज्य का दो भाग हो जाना)

१०. रहबाम तो शकेम को गया क्योंकि सारा इस्राएल उस को राजा करने के लिये वहीं गया था।
२ और नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना (वह तो मिस्र में रहता था जहां वह सुलैमान राजा के डर के मारे भाग गया था) सो
३ यारोबाम मिस्र से लौट आया। तब उन्हों ने उस को बुलवा भेजा सो यारोबाम और सब इस्राएली आकर
४ रहबाम से कहने लगे, तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रक्खा था सो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को जो उस ने हम पर डाल रक्खा है कुछ हलका कर तब हम तेरे अधीन
५ रहेंगे। उस ने उन से कहा तीन दिन के पीछे मेरे पास
६ फिर आना सो वे चले गये। तब राजा रहबाम ने उन बूढ़ों से जो उस के पिता सुलैमान के जीवन भर उस के साम्हने हाजिर रहा करते थे यह कह कर सम्मति ली कि इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है? इस में तुम
७ क्या सम्मति देते हो? उन्हों ने उस को यह उत्तर दिया कि यदि तू इस प्रजा के लोगों से अच्छा बर्त्ताव करके उन्हें प्रसन्न करे और उन से मधुर बातें कहे तो वे सदा
८ लों तेरे अधीन बने रहेंगे। पर उस ने उस सम्मति को छोड़ा जो बूढ़ों ने उस को दी थी और उन जवानों से सम्मति ली जो उस के संग बड़े हुए थे और उस के सन्मुख
९ हाजिर रहा करते थे। उन से उस ने पूछा मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूं इस में तुम क्या सम्मति देते हो? उन्हों ने तो मुझ से कहा है कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर

(१) मूल में के वचनों।

१० डाल रक्खा है उसे तू हलका कर। जवानों ने जो उस के संग बड़े हुए थे उस को यह उत्तर दिया कि उन लोगों ने तुझ से कहा है कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया था पर तू उसे हमारे लिये हलका कर तू उन से यों कहना कि मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कटि से ११ भी मोटी ठहरेगी। मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रक्खा था उसे मैं और भी भारी करूंगा मेरा पिता तो तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था पर मैं बिच्छुओं से १२ दूंगा। तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया था कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना वैसे ही यारोबाम और सारी १३ प्रजा रहबाम के पास हाजिर हुई। तब राजा ने उन से कड़ी बातें कीं और रहबाम राजा ने बूढ़ों की दी हुई सम्मति १४ छोड़कर, जवानों की सम्मति के अनुसार उन से कहा मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया पर मैं उसे और भी भारी कर दूंगा मेरे पिता ने तो तुम को कोड़ों १५ से ताड़ना दी पर मैं बिच्छुओं से ताड़ना दूंगा। सो राजा ने प्रजा की न मानी इस का कारण यह है कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा था उस को पूरा करने के लिये परमेश्वर १६ ने ऐसा ही ठहराया था। जब सारे इस्राएल ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता तब वे बोले[१] कि दाऊद के साथ हमारा क्या अंश हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं है हे इस्राएलियो अपने अपने डेरे को चले जाओ अब हे दाऊद अपने ही घराने की चिन्ता कर। १७ सो सारे इस्राएली अपने अपने डेरे को चले गये। केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरों में बसे हुए थे उन पर १८ तो रहबाम राज्य करता रहा। तब राजा रहबाम ने हदोराम को जो सब बेगारों पर अधिकारी था भेज दिया और इस्राएलियों ने उस को पत्थरवाह किया और वह मर गया सो रहबाम फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर यरूशलेम को भाग गया। सो इस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया और आज लों फिरा हुआ है॥

(रहबाम का राज्य)

११. जब रहबाम यरूशलेम को आया तब उस ने यहूदा और बिन्यामीन के घराने को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे इकट्ठा किया कि इस्राएल के साथ लड़ने से २ राज्य रहबाम के वश में फिर आए। तब यहोवा का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह के पास पहुंचा कि, ३ यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम से और यहूदा ४ और बिन्यामीन में के सब इस्राएलियों से कह, यहोवा यों कहता है कि अपने भाइयों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो तुम अपने अपने घर लौट जाओ क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है। यहोवा के ये वचन मानकर वे ५ यारोबाम पर बिना चढ़ाई किये लौट गये। तब रहबाम यरूशलेम में रहने लगा और यहूदा में बचाव के लिये ६ ये नगर दृढ़ किये, अर्थात् बेतलेहेम एताम तको, ७,८ बेतसूर सोको अदुल्लाम, गत मारेशा जीप, अदोरैम ९,१० लाकीश अजेका, सोरा अय्यालोन और हेब्रोन ये यहूदा ११ और बिन्यामीन में दृढ़ नगर हैं। और उस ने दृढ़ नगरों को और भी दृढ़ करके उन में प्रधान ठहराये और भोजवस्तु और तेल दाखमधु के भण्डार रखा दिये। फिर १२ एक एक नगर में उस ने ढालें और भाले रखवाकर उन को अत्यन्त दृढ़ कर दिया। यहूदा और बिन्यामीन तो उस १३ के थे। और सारे इस्राएल में के याजक और लेवीय भी १४ अपने सारे देश से उठकर उस के पास गये। यों लेवीय अपनी चराइयां और निज भूमि छोड़कर यहूदा और यरूशलेम में आये क्योंकि यारोबाम और उस के पुत्रों ने उन को निकाल दिया था कि वे यहोवा के लिये याजक १५ का काम न करें। और उस ने ऊंचे स्थानों और बकरों और अपने बनाये हुए बछड़ों के लिये अपनी ओर से १६ याजक ठहरा लिये थे। और लेवीयों के पीछे इस्राएल के सब गोत्रों में से जितने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के खोजी होने को मन लगाते थे वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिये यरूशलेम को आये। १७ और उन्हों ने यहूदा का राज्य स्थिर किया और सुलैमान के पुत्र रहबाम को तीन बरस लों दृढ़ कराया क्योंकि तीन बरस लों वे दाऊद और सुलैमान की लीक पर चलते रहे। १८ और रहबाम ने एक स्त्री को ब्याह लिया अर्थात् महलत को जिस का पिता दाऊद का पुत्र यरीमोत और माता यिशै १९ के पुत्र एलीआब की बेटी अबीहैल थी। वह उस के जन्माये २० यूश शमर्याह और जाहम नाम पुत्र जनी। और उस के पीछे उस ने अबशालोम की नतिनी माका को ब्याह लिया और वह उस के जन्माये अबिय्याह अत्तै जीजा और २१ शलोमीत को जनी। रहबाम ने अठारह रानियां तो ब्याह लीं और साठ रखेलियां रक्खीं और अट्ठाईस बेटे और साठ बेटियां जन्माईं पर अबशालोम की नतिनी माका से वह अपनी सारी रानियों और रखेलियों से अधिक प्रेम २२ रखता था। सो रहबाम ने माका के बेटे अबिय्याह को मुख्य और सब भाइयों में प्रधान इस मनसा से ठहरा दिया २३ कि उसे राजा करे। और वह समझ बूझकर काम करता था और उस ने अपने सब पुत्रों को अलग अलग करके

(१) मूल में राजा को उत्तर दिया।

यहूदा और बिन्यामीन के सारे देशों के सब गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया और उन्हें भोजन वस्तु बहुतायत से दी और उन के लिये बहुत सी स्त्रियां ढूंढ़ीं॥

१२. परन्तु

जब रहबाम का राज्य दृढ़ हो गया और वह आप स्थिर हो गया तब उस ने और उस के साथ सारे इस्राएल ने २ यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया। उन्हों ने जो यहोवा से विश्वासघात किया इस कारण राजा रहबाम के ३ पांचवें बरस में मिस्र के राजा शीशक ने, बारह सौ रथ और साठ हजार सवार लिये हुए यरूशलेम पर चढ़ाई की और जो लोग उस के संग मिस्र से आये अर्थात् ४ लूबी, सुक्कियी, कूशी, सो अनगिनित थे। और उस ने यहूदा के गढ़वाले नगरों को ले लिया और यरूशलेम ५ तक आया। तब शमायाह नबी रहबाम और यहूदा के हाकिमों के पास जो शीशक के डर के मारे यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे आकर कहने लगा यहोवा यों कहता है कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया है सो मैं ने तुम को छोड़कर ६ शीशक के हाथ में कर दिया है। तब इस्राएल के हाकिम और राजा दीन हो गये और कहा यहोवा धर्म्मी है। ७ जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं तब यहोवा का यह बचन शमायाह के पास पहुंचा कि वे दीन हो गये हैं मैं उन को नाश न करूंगा मैं उन का कुछ बचाव करूंगा और मेरी जलजलाहट शीशक के द्वारा यरूशलेम पर न ८ भड़केगी। वे उस के अधीन तो रहेंगे इसलिये कि वे मेरी सेवा जान लें और देश देश के राज्यों की भी सेवा ९ जान लें। सो मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम पर चढ़ाई करके यहोवा के भवन की अनमोल अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल वस्तुएं उठा ले गया। वह सब की सब को उठा ले गया और सोने की जो फरियां १० सुलैमान ने बनाई थीं उन को भी वह ले गया। सो राजा रहबाम ने उन के बदले पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया जो ११ राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे। और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता तब तब पहरुए आकर उन्हें उठा ले चलते और फिर पहरुओं की कोठरी में १२ लौटाकर रख देते थे। जब रहबाम दीन हुआ तब यहोवा का कोप उस पर से उतर गया और उस ने उस का पूरा १३ बिनाश न किया फिर यहूदा में बातें अच्छी हुईं। सो राजा रहबाम यरूशलेम में दृढ़ हो राज्य करता रहा। जब रहबाम राज्य करने लगा तब एकतालीस बरस का था और यरूशलेम में अर्थात् उस नगर में जिसे यहोवा ने अपना नाम बनाये रखने के लिये इस्राएल के सारे गोत्रों में से चुन लिया था सत्रह बरस लों राज्य करता रहा। उस की माता का नाम नामा था जो अम्मोनी १४ स्त्री थी। उस ने वह किया जो बुरा है अर्थात् उस ने १५ अपने मन को यहोवा की खोज में न लगाया। आदि से अन्त लों रहबाम के काम क्या शमायाह नबी और इद्दो दर्शी की पुस्तकों[१] में वंशावलियों की रीति पर नहीं लिखे हैं। रहबाम और यारोबाम के बीच तो लड़ाई १६ सदा होती रही। और रहबाम अपने पुरखाओं के संग सोया और दाऊदपुर में उस को मिट्टी दी गई। और उस का पुत्र अबिय्याह उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(अबिय्याह का राज्य)

१३. यारोबाम

के अठारहवें बरस में अबिय्याह यहूदा पर राज्य करने २ लगा। वह तीन बरस लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम मीकायाह था जो गिबावासी ऊरीएल की बेटी थी। और अबिय्याह और यारोबाम के ३ बीच लड़ाई हुई। सो अबिय्याह ने तो बड़े बड़े योद्धाओं का दल अर्थात् चार लाख छांटे हुए पुरुष लेकर लड़ने के लिये पांति बन्धाई और यारोबाम ने आठ लाख छांटे हुए पुरुष जो बड़े शूरवीर थे लेकर उस के विरुद्ध पांति ४ बन्धाई। तब अबिय्याह समारैम नाम पहाड़ पर जो एप्रैम के पहाड़ी देश में है खड़ा होकर कहने लगा हे ५ यारोबाम हे सब इस्राएलियो मेरी सुनो। क्या तुम को न जानना चाहिए कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने लोनवाली[२] वाचा बांधकर दाऊद को और उस के वंश ६ को इस्राएल का राज्य सदा के लिये दे दिया है। तौभी नबात का पुत्र यारोबाम जो दाऊद के पुत्र सुलैमान का ७ कर्म्मचारी था सो अपने स्वामी के विरुद्ध उठा। और उस के पास हलके और ओछे मनुष्य बटुर गये और जब सुलैमान का पुत्र रहबाम लड़का और अल्हड़ मन का था और उन का साम्हना न कर सकता था, तब वे उस ८ के विरुद्ध सामर्थी हो गये। और अब तुम सोचते हो कि हम यहोवा के राज्य का साम्हना करेंगे जो दाऊद की सन्तान के हाथ में है तुम मिलकर बड़ा समाज बने हो और तुम्हारे पास वे सोने के बछड़े भी हैं जिन्हें यारोबाम ९ ने तुम्हारे देवता होने के लिये बनवाया। क्या तुम ने यहोवा के याजकों को अर्थात् हारून की सन्तान और लेवीयों को निकालकर देश देश के लोगों की नाईं याजक ठहरा नहीं लिये, जो कोई एक बछड़ा और सात मेढ़े अपना संस्कार कराने को ले आता सो उन

(१) मूल में बचनों।   (२) अर्थात् अक्षय।

१० का याजक हो जाता है, जो ईश्वर नहीं है। पर हम लोगों का परमेश्वर यहोवा है और हम ने उस को नहीं त्यागा और हमारे पास यहोवा की सेवा टहल करनेहारे याजक हारून की सन्तान और अपने अपने काम ११ में लगे हुए लेवीय हैं। और वे नित्य सबेरे और सांझ को यहोवा के लिये होमबलि और सुगन्धद्रव्य का धूप जलाते हैं और शुद्ध मेज पर भेंट की रोटी सजाते और सोने की दीवट और उस के दीपक सांझ सांझ को बारते हैं हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते रहते हैं पर तुम ने उस को त्याग दिया है। १२ और सुनो हमारे संग हमारा प्रधान परमेश्वर है और तुम्हारे विरुद्ध सांस बांधकर फूंकने को तुरहियां लिये हुए उस के याजक भी हमारे साथ हैं। हे इस्राएलियो अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा से मत लड़ो क्योंकि तुम १३ कृतार्थ न होगे। पर यारोबाम ने घातुओं को घुमाकर उन के पीछे भेज दिया सो वे तो यहूदा के साम्हने थे १४ और घातू उन के पीछे थे। और जब यहूदियों ने पीछे को मुंह फेरा तो क्या देखा कि हमारे आगे और पीछे दोनों ओर से लड़ाई होनेवाली है तब उन्हों ने यहोवा १५ की दोहाई दी और याजक तुरहियों को फूंकने लगे। तब यहूदी पुरुषों ने जयजयकार किया और जब यहूदी पुरुषों ने जयजयकार किया तब परमेश्वर ने अबिय्याह और यहूदियों के साम्हने यारोबाम और सारे इस्राएल १६ को मारा। और इस्राएली यहूदा के साम्हने से भागे १७ और परमेश्वर ने उन्हें उन के हाथ में कर दिया। और अबिय्याह और उस की प्रजा ने उन्हें बड़ी मार से मारा यहां लों कि इस्राएल में से पांच लाख छांटे हुए पुरुष १८ मारे गये। सो उस समय इस्राएली दब गये और यहूदी इस कारण प्रबल हुए कि उन्हों ने अपने पितरों के १९ परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रक्खा था। तब अबिय्याह ने यारोबाम का पीछा करके उस से बेतेल यशाना और २० एप्रोन नगरों और उन के गांवों को ले लिया। और अबिय्याह के जीवन भर यारोबाम फिर सामर्थी न हुआ निदान यहोवा ने उस को ऐसा मारा कि वह मर गया। २१ पर अबिय्याह और भी सामर्थी हो गया और चौदह स्त्रियां २२ ब्याहकर बाइस बेटे और सोलह बेटियां जन्माईं। और अबिय्याह के और काम और उस की चाल चलन और उस के वचन इद्दो नबी के लिखे हुए वृत्तान्त में लिखे हैं॥

(आसा का राज्य)

१४. निदान अबिय्याह अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊदपुर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र आसा उस के स्थान पर राजा हुआ। इस के दिनों में दस बरस लों २ देश चैन से रहा। और आसा ने वही किया जो उस के ३ परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक है। उस ने तो पराई वेदियों को और ऊंचे स्थानों को दूर किया और लाठों को तुड़वा डाला और अशेरा नाम मूरतों को ४ तोड़ डाला, और यहूदियों को आज्ञा दी कि अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा की खोज करो और व्यवस्था ५ और आज्ञा को मानो। और उस ने ऊंचे स्थानों और सूर्य्य की प्रतिमाओं को यहूदा के सब नगरों में से दूर ६ किया और राज्य उस के साम्हने चैन से रहा। और उस ने यहूदा में गढ़वाले नगर बसाये क्योंकि देश चैन से रहा और उन बरसों में इस कारण उस की किसी से लड़ाई न ७ हुई कि यहोवा ने उसे विश्राम दिया था। उस ने यहूदियों से कहा आओ हम इन नगरों को बसाएं और उन के चारों ओर शहरपनाह गुम्मट और फाटकों के पल्ले और बेंड़े बनाएं देश अब लों हमारे साम्हने पड़ा है क्योंकि हम ने अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है हम ने उस की खोज की और उस ने हम को चारों ओर से विश्राम दिया है। सो उन्हों ने उन नगरों को बसाया और ८ कृतार्थ हुए। फिर आसा के पास ढाल और बर्छी रखनेहारों की एक सेना थी अर्थात् यहूदा में से तो तीन लाख पुरुष और बिन्यामीन में से फरी रखनेहारे और धनुर्धारी दो लाख अस्सी हजार ये सब शूरवीर थे। ९ और उन के विरुद्ध दस लाख पुरुषों की सेना और तीन सौ रथ लिये हुए जेरह नाम एक कूशी निकला और १० मारेशा लों आ गया। तब आसा उस का साम्हना करने को चला और मारेशा के निकट सपाता नाम तराई ११ में युद्ध की पांति बांधी गई। तब आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की यों दोहाई दी कि हे यहोवा जैसे तू सामर्थी की सहायता कर सकता है वैसे ही शक्तिहीन की भी हे हमारे परमेश्वर यहोवा हमारी सहायता कर क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरुद्ध आये हैं हे यहोवा तू हमारा परमेश्वर है मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाए। १२ तब यहोवा ने कूशियों को आसा और यहूदियों के साम्हने मारा और कूशी भाग गये। १३ और आसा और उस के संग के लोगों ने उन का पीछा गरार तक किया और इतने कूशी मारे गये कि वे फिर सिर न उठा सके क्योंकि वे यहोवा और उस की सेना से हार गये और यहूदी बहुत ही लूट ले गये। १४ और उन्हों ने गरार के आस पास के सब नगरों को मार लिया क्योंकि यहोवा का भय उन के रहनेहारों के मन में समा गया और उन्हों ने

उन नगरों को लूट लिया क्योंकि उन में बहुत सा धन १५ था। फिर वे पशुशालाओं को जीत कर बहुत सी भेड़ बकरियां और ऊंट लूटकर यरूशलेम को लौटे ॥

१५. तब परमेश्वर का आत्मा ओदेद के पुत्र अजर्याह में समा गया। २ और वह आसा से भेंट करने को निकला और उस से कहा हे आसा और हे सारे यहूदा और बिन्यामीन मेरी सुनो जब लों तुम यहोवा के संग रहोगे तब लों वह तुम्हारे संग रहेगा और यदि तुम उस की खोज में लगे रहो तब तो वह तुम से मिला करेगा पर यदि तुम उस को त्याग दो तो वह तुम को त्याग देगा। ३ बहुत दिन इस्राएल बिना सत्य परमेश्वर के और बिना सिखानेहारे याजक के और बिना ४ व्यवस्था के रहा। पर जब जब वे संकट में पड़कर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरे और उस को ढूंढ़ा तब ५ तब वह उन को मिला। उन समयों में न तो जानेहारे की कुछ शांति होती थी और न आनेहारे की बरन सारे देश के सब निवासियों में बड़ा ही कोलाहल होता था। ६ और जाति से जाति और नगर से नगर चूर किये जाते थे क्योंकि परमेश्वर नाना प्रकार का कष्ट देकर उन्हें ७ घबरा देता था। पर तुम लोग हियाव बांधो और तुम्हारे हाथ ढीले न पड़ें क्योंकि तुम्हारे काम का बदला मिलेगा। ८ जब आसा ने ये बचन और ओदेद नबी की नबूवत सुनी तब उस ने हियाव बांधकर यहूदा और बिन्यामीन के सारे देश में से और उन नगरों में से भी जो उस ने एप्रैम के पहाड़ी देश में ले लिये थे सब घिनौनी वस्तुएं दूर कीं और यहोवा की जो वेदी यहोवा के ओसारे के ९ साम्हने थी उस को नये सिरे से बनाया। और उस ने सारे यहूदा और बिन्यामीन को और एप्रैम मनश्शे और शिमोन में से जो लोग उन के संग रहते थे उन को इकट्ठा किया क्योंकि वे यह देखकर कि उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहता है इस्राएल में से उस के पास १० बहुत चले आये। सो आसा के राज्य के पन्द्रहवें बरस के तीसरे महीने में वे यरूशलेम में इकट्ठे हुए। और ११ उसी समय उन्हों ने उस लूट में से जो वे ले आये थे सात सौ बैल और सात हजार भेड़ बकरियां यहोवा को १२ बलि करके चढ़ाईं। और उन्हों ने वाचा बांधी कि हम अपने सारे मन और सारे जीव से अपने पितरों के १३ परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे, और क्या बड़ा क्या छोटा क्या स्त्री क्या पुरुष जो कोई इस्राएल के परमेश्वर १४ यहोवा की खोज न करे सो मार डाला जाएगा। और उन्हों ने जयजयकार के साथ तुरहियां और नरसिंगे १५ बजाते हुए ऊंचे शब्द से यहोवा की किरिया खाई। और सारे यहूदी यह किरिया खाकर आनन्दित हुए क्योंकि उन्हों ने अपने सारे मन से किरिया खाई और बड़ी अभिलाषा से उस को ढूंढ़ा और वह उन को मिला और यहोवा ने चारों ओर से उन्हें विश्राम दिया। १६ बरन आसा राजा की माता माका जिस ने अशेरा के पास रखने को एक घिनौनी मूरत बनाई उस को उस ने राजमाता के पद से उतार दिया और आसा ने उस की मूरत काटकर पीस डाली और किद्रोन नाले में फूंक दी। १७ ऊंचे स्थान तो इस्राएलियों में से न ढाये गये तौभी आसा का मन जीवन भर निष्कपट रहा। १८ और जो सोना चांदी और पात्र उस के पिता ने अर्पण किये थे और जो उस ने आप अर्पण किये थे उन को उस ने परमेश्वर के भवन में पहुंचवा दिया। १९ और राजा आसा के राज्य के पैंतीसवें बरस लों फिर लड़ाई न हुई ॥

१६. आसा के राज्य के छत्तीसवें बरस में इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की और रामा को इसलिये दृढ़ किया कि यहूदा के राजा आसा के पास कोई आने जाने न पाए। २ तब आसा ने यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में से चांदी सोना निकाल दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास भेज कर यह कहा कि, ३ जैसे मेरे तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे तेरे बीच भी वाचा बन्धे देख मैं तेरे पास चांदी सोना भेजता हूं सो आ इस्राएल के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को तोड़ दे इसलिये कि वह मुझ पर से दूर हो। ४ राजा आसा की यह बात मानकर बेन्हदद ने अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई कराकर इय्योन दान आबेल्मैम और नप्ताली के सब भण्डारवाले नगरों को जीत लिया। ५ यह सुनकर बाशा ने रामा का दृढ़ करना छोड़ दिया और अपना वह काम बन्द करा दिया। ६ तब राजा आसा ने सारे यहूदा को साथ लिया और वे रामा के पत्थरों और लकड़ी को जिन से बाशा उसे दृढ़ करता था उठा ले गये और उन से उस ने गेबा और मिस्पा को दृढ़ किया। ७ उस समय हनानी दर्शी यहूदा के राजा आसा के पास जाकर कहने लगा तू ने जो अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं लगाया बरन अराम के राजा ही पर भरोसा लगाया है इस कारण अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से छूट गई है। ८ क्या कूशियों और लूबियों की सेना बड़ी न थी और क्या उस में बहुत ही रथ और सवार न थे तौभी तू ने यहोवा पर भरोसा लगाया इस कारण उस ने उन को तेरे हाथ में कर दिया। ९ देख यहोवा की दृष्टि सारी पृथिवी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिन का मन

उस की ओर निष्कपट रहता है उन की सहायता में वह अपना सामर्थ्य दिखाए यह काम तू ने मूर्खता से किया
१० है सो अब से तू लड़ाइयों में फंसा रहेगा। तब आसा दर्शी पर रिसियाया और उसे काठ में ठोंकवा दिया क्योंकि वह इस कारण उस पर क्रोधित था और उसी समय
११ आसा प्रजा के कुछ लोगों को पीसने भी लगा। आदि से लेकर अन्त लों आसा के काम यहूदा और इस्राएल
१२ के राजाओं के वृत्तान्त[1] में लिखे हैं। अपने राज्य के उनतीसवें बरस में आसा को पांव का रोग लगा और वह रोग अत्यन्त बढ़ गया तौभी उस ने रोगी होकर
१३ यहोवा की नहीं वैद्यों ही की शरण ली। निदान आसा अपने राज्य के एकतालीसवें बरस में मरके
१४ अपने पुरखाओं के संग सोया। तब उस को उसी की कबर में जो उस ने दाऊदपुर में खुदवा ली थी मिट्टी दी गई और वह सुगंधद्रव्यों और गंधी के काम के भांति भांति के मसालों से भरे हुए एक बिछौने पर लिटा दिया गया और बहुत सा सुगन्धद्रव्य उस के लिये जलाया गया॥

(यहोशापात का राज्य)

१७. और उस का पुत्र यहोशापात उस के स्थान पर राजा हुआ और
२ इस्राएल के विरुद्ध अपना बल बढ़ाया। और उस ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिये और यहूदा के देश में और एप्रैम के उन नगरों में भी जो उस के पिता आसा ने ले लिये थे सिपाहियों की
३ चौकियां बैठा दीं। और यहोवा यहोशापात के संग रहा क्योंकि वह अपने मूलपुरुष दाऊद की प्राचीन चाल सी चाल चला और बाल देवताओं की खोज में न लगा।
४ वरन वह अपने पिता के परमेश्वर ही की खोज में लगा रहता और उसी की आज्ञाओं पर चलता था और इस्राएल
५ के से काम न करता था। इस कारण यहोवा ने राज्य को उस के हाथ में दृढ़ किया और सारे यहूदी उस के पास भेंट लाया करते थे और उस के बहुत धन और विभव
६ हो गया। और यहोवा के मार्गों पर चलते चलते उस का मन उभर गया फिर उस ने यहूदा में से ऊंचे स्थान
७ और अशेरा नाम मूरतें दूर कीं। और अपने राज्य के तीसरे बरस में उस ने बेन्हैल ओबद्याह जकर्याह नतनेल और मीकायाह नाम अपने हाकिमों को यहूदा के नगरों
८ में शिक्षा देने को भेज दिया। और उन के साथ शमायाह नतन्याह जबद्याह असाहेल शमीरामोत यहोनातान अदोनिय्याह तोबिय्याह और तोबदोनिय्याह नाम लेवीय और उन के संग एलीशामा और यहोराम नाम
९ याजक थे। सो उन्हों ने यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक साथ लिये हुए यहूदा में शिक्षा दी वरन वे यहूदा के
१० सब नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे। और यहूदा के आस पास के देशों के राज्य राज्य में यहोवा का ऐसा डर समा गया कि उन्हों ने यहोशापात से युद्ध न
११ किया। वरन कितने पलिश्ती यहोशापात के पास भेंट और कर समझकर चांदी लाये और अरबी सात हजार सात सौ मेढ़े और सात हजार सात सौ बकरे ले आये।
१२ और यहोशापात बहुत ही बढ़ता गया और उस ने यहूदा में गढ़ियां और भण्डार के नगर तैयार किये।
१३ और यहूदा के नगरों में उस का बहुत काम होता था
१४ और यरूशलेम में योद्धा जो शूरवीर थे रहते थे। और इन के पितरों के घरानों के अनुसार इन की यह गिनती थी अर्थात् यहूदी सहस्रपति तो ये थे अर्थात् अदना
१५ प्रधान जिस के साथ तीन लाख शूरवीर थे। और उस के पीछे यहोहानान प्रधान जिस के साथ दो लाख
१६ अस्सी हजार पुरुष थे। और इस के पीछे जिक्री का पुत्र अमस्याह जिस ने अपने को अपनी ही इच्छा से यहोवा को अर्पण किया था और उस के साथ दो लाख
१७ शूरवीर थे। फिर बिन्यामीन में से एल्यादा नाम एक शूरवीर जिस के संग ढाल रखनेहारे दो लाख धनुर्धारी
१८ थे। और उस के पीछे यहोजाबाद जिस के संग युद्ध के हथियार बांधे हुये एक लाख अस्सी हजार पुरुष थे।
१९ ये वे हैं जो राजा की सेवा में लवलीन थे और ये उन से अलग थे जिन्हें राजा ने सारे यहूदा के गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया॥

१८. यहोशापात बड़ा धनवान् और ऐश्वर्य्यवान् हो गया और उस ने
२ अहाब के साथ समधियाना किया। कुछ बरस पीछे वह शोमरोन में अहाब के पास गया तब अहाब ने उस के और उस के संगियों के लिये बहुत सी भेड़ बकरियां और गाय बैल काटकर उसे गिलाद के रामोत पर चढ़ाई
३ करने को उसकाया। और इस्राएल के राजा अहाब ने यहूदा के राजा यहोशापात से कहा क्या तू मेरे संग गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करेगा उस ने उसे उत्तर दिया जैसा तू वैसा मैं भी हूं और जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी भी प्रजा
४ है हम लोग युद्ध में तेरा साथ देंगे। फिर यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा आज यहोवा की आज्ञा ले।
५ सो इस्राएल के राजा ने नबियों को जो चार सौ पुरुष थे इकट्ठा करके उन से पूछा क्या हम गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें वा मैं रुका रहूं? उन्हों ने उत्तर

(१) मूल में पुस्तक।

दिया चढ़ाई कर क्योंकि परमेश्वर उस को राजा के हाथ
६ कर देगा । पर यहोशापात ने पूछा क्या यहां यहोवा का
और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें ।
७ इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा हां एक पुरुष
और है जिस के द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं पर
मैं उस से घिन रखता हूं क्योंकि वह मेरे विषय कभी
कल्याण की नहीं सदा हानि ही की नबूवत करता है
वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह है । यहोशापात ने कहा
८ राजा ऐसा न कहे । तब इस्राएल के राजा ने एक हाकिम
को बुलवाकर कहा यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती
९ से ले आ । इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा
यहोशापात अपने अपने राजवस्त्र पहिने हुये अपने
अपने सिंहासन पर बैठे हुये थे वे शोमरोन के फाटक में
एक खुले स्थान में विराज रहे थे और सब नबी उन के
१० साम्हने नबूवत कर रहे थे । तब कनाना के पुत्र सिदकि-
य्याह ने लोहे के सींग बनवाकर कहा यहोवा यों कहता
है कि इन से तू अरामियों को मारते मारते नाश कर
११ डालेगा । और सब नबियों ने इसी आशय की नबूवत
कर के कहा कि गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और
तू कृतार्थ होए क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ कर
१२ देगा । और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस
ने उस से कहा सुन नबी लोग एक ही मुंह से राजा
के विषय शुभ वचन कहते हैं सो तेरी बात उन की सी
१३ हो तू भी शुभ वचन कहना । मीकायाह ने कहा
यहोवा के जीवन की सोंह जो कुछ मेरा परमेश्वर कहे
१४ सोई मैं भी कहूंगा । जब वह राजा के पास आया तब
राजा ने उस से पूछा हे मीकायाह क्या हम गिलाद
के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें वा मैं रुका रहूं ?
उस ने कहा हां तुम लोग चढ़ाई करो और कृतार्थ होओ
१५ और वे तुम्हारे हाथ में कर दिये जाएं । राजा ने उस
से कहा मुझे कितनी बार तुझे किरिया धराकर चिताना
होगा कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह ।
१६ मीकायाह ने कहा मुझे सारा इस्राएल बिना चरवाहे की
भेड़ बकरियों की नाईं पहाड़ों पर तितर बितर देख
पड़ा और यहोवा का यह वचन आया कि वे तो अनाथ
१७ हैं सो अपने अपने घर कुशल क्षेम से लौट जाएं । तब
इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा क्या मैं ने तुझ
से न कहा था कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि
१८ ही की नबूवत करेगा । मीकायाह ने कहा इस कारण
तुम लोग यहोवा का यह वचन सुनो । मुझे सिंहासन पर
विराजमान यहोवा और उस के दहिने बाएं खड़ी हुई स्वर्ग
१९ की सारी सेना देख पड़ी । तब यहोवा ने पूछा इस्राएल के
राजा अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा कि वह गिलाद के
रामोत पर चढ़ाई करके खेत आए तब किसी ने कुछ
और किसी ने कुछ कहा । निदान एक आत्मा पास २०
आकर यहोवा के सम्मुख खड़ा हुआ और कहने लगा मैं
उस को बहकाऊंगा यहोवा ने पूछा किस उपाय से । उस २१
ने कहा मैं जाकर उस के सब नबियों में पैठ के उन से झूठ
बुलवाऊंगा[१] यहोवा ने कहा तेरा उस को बहकाना
सुफल होगा जाकर ऐसा ही कर । सो अब सुन यहोवा २२
ने तेरे इन नबियों के मुंह में एक झूठ बोलनेहारा आत्मा
पैठाया है और यहोवा ने तेरे विषय हानि की कही है ।
तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने मीकायाह के निकट २३
जा उस के गाल पर थपेड़ा मारके पूछा यहोवा का
आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर
गया । मीकायाह ने कहा जिस दिन तू छिपने के लिये २४
कोठरी से कोठरी में भागेगा तब जानेगा । इस पर इस्रा- २५
एल के राजा ने कहा कि मीकायाह को नगर के हाकिम
आमोन और योआश राजकुमार के पास लौटाकर, उन २६
से कहो राजा यों कहता है कि इस को बन्दीगृह में
डालो और जब लों मैं कुशल से न आऊं तब लों इसे
दुःख की रोटी और पानी दिया करो । तब मीकायाह ने २७
कहा यदि तू कभी कुशल से लौटे तो जान कि यहोवा ने
मेरे द्वारा नहीं कहा । फिर उस ने कहा हे देश देश के
लोगो तुम सब के सब सुन रक्खो ॥

तब इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशा- २८
पात दोनों ने गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की । और २९
इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा मैं तो भेष बदल-
कर युद्ध में जाऊंगा पर तू अपने ही वस्त्र पहिने रह
सो इस्राएल के राजा ने भेष बदला और वे दोनों युद्ध
में गये । अराम के राजा ने तो अपने रथों के प्रधानों को ३०
आज्ञा दी थी कि न तो छोटे से लड़ो न बड़े से केवल
इस्राएल के राजा से लड़ो । सो जब रथों के प्रधानों ने ३१
यहोशापात को देखा तब कहा इस्राएल का राजा वही
है और वे उसी से लड़ने को मुड़े सो यहोशापात चिल्ला
उठा तब यहोवा ने उस की सहायता की और परमेश्वर
ने उन को उस के पास फिर जाने की प्रेरणा की । सो ३२
यह देखकर कि वह इस्राएल का राजा नहीं है रथों के
प्रधान उस का पीछा छोड़के लौट गये । तब किसी ने ३३
अटकल से एक तीर चलाया और वह इस्राएल के राजा
के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा सो
उस ने अपने सारथी से कहा मैं घायल हुआ सो बाग[२]
फेरके मुझे सेना में से बाहर ले चल । और उस दिन ३४

(१) मूल में झूठा आत्मा हूंगा । (२) मूल में अपना हाथ ।

युद्ध बढ़ता गया और इस्राएल का राजा अपने रथ में अरामियों के सन्मुख सांझ तक खड़ा रहा पर सूर्य अस्त होते वह मर गया॥

१९.

और यहूदा का राजा यहोशापात यरूशलेम को अपने भवन में २ कुशल से लौट गया। तब हनानी का पुत्र येहू नाम दर्शी यहोशापात राजा से भेंट करने को आकर कहने लगा क्या दुष्टों की सहायता करनी और यहोवा के बैरियों से प्रेम रखना चाहिये इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ ३ पर कोप भड़का है। तौभी तुझ में कुछ अच्छी बातें पाई जाती हैं तू ने तो देश में से अशेरों को नाश किया और अपने मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है॥

४ सो यहोशापात यरूशलेम में रहता था और बेर्शेबा से ले एप्रैम के पहाड़ी देश लों अपनी प्रजा में फिर दौरा करके उन को उन के पितरों के परमेश्वर यहोवा की ओर ५ फेर दिया। फिर उस ने यहूदा के एक एक गढ़वाले नगर ६ में न्यायी ठहराया। और उस ने न्यायियों से कहा सोचो कि क्या करते हो क्योंकि तुम जो न्याय करोगे सो मनुष्य के लिये नहीं यहोवा के लिये करोगे और वह न्याय करते ७ समय तुम्हारे संग रहेगा। सो अब यहोवा का भय तुम में समाया रहे चौकसी से काम करना क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ कुटिलता नहीं है और न वह किसी का ८ पक्ष करता न घूस लेता है। और यरूशलेम में भी यहोशापात ने लेवीयों और याजकों और इस्राएल के पितरों के घरानों के कुछ मुख्य पुरुषों को यहोवा की ओर से न्याय करने और मुकद्दमों के जांचने के लिये ठहराया। ९ और वे यरूशलेम को लौटे। और उस ने उन को आज्ञा दी कि यहोवा का भय मानकर सच्चाई और निष्कपट मन १० से ऐसा करना। तुम्हारे भाई जो अपने अपने नगर में रहते हैं उन में से जिस जिस का कोई मुकद्दमा तुम्हारे साम्हने आए चाहे वह खून का हो चाहे व्यवस्था वा किसी आज्ञा वा विधि वा नियम के विषय हो उन को चिता देना कि यहोवा के विषय दोषी न होओ न हो कि तुम और तुम्हारे भाइयों दोनों पर उस का कोप ११ भड़के ऐसा करने से तुम दोषी न ठहरोगे। और सुनो यहोवा के विषय के सब मुकद्दमों में तो अमर्याह महायाजक और राजा के विषय के सब मुकद्दमों में यहूदा के घराने का प्रधान इश्माएल का पुत्र जबद्याह तुम्हारे ऊपर ठहरा है और लेवीय तुम्हारे साम्हने सरदारों का काम करेंगे सो हियाव बांधकर काम करो और भले मनुष्य के संग यहोवा रहे॥

२०.

इस के पीछे मोआबियों और अम्मोनियों ने और उन के संग कितने मूनियों[1] ने युद्ध करने के लिये यहोशापात पर चढ़ाई की। तब २ लोगों ने आकर यहोशापात को बता दिया कि ताल के पार से एदोम[2] देश की ओर से एक बड़ी भीड़ तुझ पर चढ़ाई कर रही है और सुन वह हससोन्तामार लों जो ३ एनगदी भी कहावता है पहुंच गई है सो यहोशापात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया और सारे यहूदा ४ में उपवास का प्रचार कराया। सो यहूदी यहोवा से सहायता मांगने के लिये इकट्ठे हुए बरन वे यहूदा के ५ सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आये। तब यहोशापात यहोवा के भवन में नये आंगन के साम्हने यहूदियों ६ और यरूशलेमियों की मण्डली में खड़ा होकर, यह कहने लगा कि हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा साम्हना कोई ७ नहीं कर सकता। हे हमारे परमेश्वर क्या तू ने इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल के साम्हने से निकालकर इसे अपने प्रेमी इब्राहीम के वंश को सदा के ८ लिये नहीं दे दिया। सो वे इस में बस गये और इस में ९ तेरे नाम का एक पवित्रस्थान बनाकर कहा कि, यदि तलवार वा मरी वा अकाल वा और कोई विपत्ति हम पर पड़े तो हम इसी भवन के साम्हने और तेरे साम्हने (कि तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े होकर अपने क्लेश के कारण तेरी दोहाई देंगे और तू सुनकर बचाएगा। १० और अब अम्मोनी और मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के लोग जिन पर तू ने इस्राएल को मिस्र देश से आते समय चढ़ाई करने न दिया और वे उन की ओर ११ से मुड़ गये और उन को विनाश न किया, देख वे ही लोग हम को तेरे दिये हुए अधिकार के इस देश में से जिस का अधिकार तू ने हमें दिया है निकालने को आकर १२ कैसा बदला हम को दे रहे हैं। हे हमारे परमेश्वर क्या तू उन का न्याय न करेगा यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है उस के साम्हने हमारा तो बस नहीं चलता और क्या करना चाहिये यह हमें तो कुछ सूझता १३ नहीं पर हमारी आंखें तेरी ओर लगी हैं। और सब यहूदी अपने अपने बालबच्चों स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के १४ सन्मुख खड़े थे। तब आसाप के वंश में से यहजीएल

(१) मूल में अम्मोनियों। (२) मूल में अराम।

नाम एक लेवीय जो जकर्याह का पुत्र बनायाह का पोता
और मत्तन्याह के पुत्र यीएल का परपोता था उस में
१५ यहोवा का आत्मा मण्डली के बीच समाया। और वह
कहने लगा हे सब यहूदियो हे यरूशलेम के रहनेहारो हे
राजा यहोशापात तुम सब ध्यान दो यहोवा तुम से यों
कहता है कि तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा
मन कच्चा न हो क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं परमेश्वर का
१६ काम है। कल उन का साम्हना करने को जाना देखो
वे सीस की चढ़ाई पर चढ़े आते हैं और यरूएल नाम
१७ जंगल के साम्हने नाले के सिरे पर तुम्हें मिलेंगे। इस
लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा हे यहूदा और हे यरूशलेम
ठहरे रहना और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना
बचाव देखना मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो
कल उन का साम्हना करने को चलना और यहोवा
१८ तुम्हारे संग रहेगा। तब यहोशापात मुंह भूमि की ओर
करके झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवा-
सियों ने यहोवा के साम्हने गिरके यहोवा को दण्डवत्
१९ की। और कहातियों और कोरहियों में से कुछ लेवीय
खड़े होकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति अत्यन्त
२० ऊंचे स्वर से करने लगे। बिहान को वे सबेरे उठकर
तको के जंगल की ओर निकल गये और चलते समय
यहोशापात ने खड़े होकर कहा हे यहूदियो हे यरूशलेम
के निवासियो मेरी सुनो अपने परमेश्वर यहोवा पर
विश्वास रक्खो तब तुम स्थिर रहोगे उस के नबियों की
२१ प्रतीत करो तब तुम कृतार्थ हो जाओगे। तब प्रजा के
साथ सम्मति करके उस ने कितनों को ठहराया जो पवित्रता
से शोभायमान होकर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते
हुए यहोवा के गीत गाएं और उस की स्तुति यह कहते
हुए करें कि यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि उस की
२२ करुणा सदा की है। जिस समय वे गाकर स्तुति करने
लगे उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों मोआबियों और
सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ
२३ रहे थे घातुओं को बैठा दिया और वे मारे गये। कैसे कि
अम्मोनियों और मोआबियों ने सेईर के पहाड़ी देश के
निवासियों को मारने और सत्यानाश करने के लिये उन
पर चढ़ाई की और जब वे सेईर के पहाड़ी देश के
निवासियों का अन्त कर चुके तब उन सभों ने एक दूसरे
२४ के नाश करने में हाथ लगाया। सो जब यहूदियों ने
जंगल की चौकी पर पहुंचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि
की तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़ी हुई लोथ ही हैं
२५ और कोई नहीं बचा। सो यहोशापात और उस की प्रजा
लूट लेने को गये तो लोथों के बीच बहुत सी संपत्ति और
मनभावने गहने मिले वे उन्हों ने इतने उतार लिये
कि इन को न ले जा सके बरन लूट इतनी मिली कि
बटोरते बटोरते तीन दिन बीत गये। चौथे दिन वे २६
बराका[१] नाम तराई में इकट्ठे हुए और वहां यहोवा का
धन्यवाद किया इस कारण उस स्थान का नाम बराका
की तराई पड़ा और आज लों वही पड़ा है। तब वे अर्थात् २७
यहूदा और यरूशलेम नगर के सब पुरुष और उन के
आगे आगे यहोशापात आनन्द के साथ यरूशलेम
लौटने को चले क्योंकि यहोवा ने उन्हें शत्रुओं पर
आनन्दित किया था। सो वे सारंगियां वीणाएं और २८
तुरहियां बजाते हुए यरूशलेम में यहोवा के भवन को
आये। और जब देश देश के सब राज्यों के लोगों ने २९
सुना कि इस्राएल के शत्रुओं से यहोवा लड़ा तब परमे-
श्वर का डर उन के मन में समा गया। और यहोशापात ३०
के राज्य को चैन मिला क्योंकि उस के परमेश्वर ने उस
को चारों ओर से विश्राम दिया॥

यों यहोशापात ने यहूदा पर राज्य किया। जब वह ३१
राज्य करने लगा तब वह पैंतीस बरस का था और
पच्चीस बरस लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस
की माता का नाम अजूबा था जो शिल्ही की बेटी थी।
और वह अपने पिता आसा की लीक पर चला और उस ३२
से न मुड़ा अर्थात् जो यहोवा के लेखे ठीक है सोई वह
करता रहा। तौ भी ऊंचे स्थान ढाये न गये बरन तब ३३
लों प्रजा के लोगों ने अपना मन अपने पितरों के
परमेश्वर की ओर तत्पर न किया था। और आदि से ३४
अन्त लों यहोशापात के और काम हनानी के पुत्र येहू
के लिखे उस वृत्तान्त में लिखे हैं जो इस्राएल के
राजाओं के वृत्तान्त में पाया जाता है॥

इस के पीछे यहूदा के राजा यहोशापात ने इस्राएल ३५
के राजा अहज्याह से जो बड़ी दुष्टता करता था मेल
किया। अर्थात् उस ने उस के साथ इसलिये मेल किया ३६
कि तर्शीश जाने को जहाज बनवाए और उन्हों ने ऐसे
जहाज एस्योन गेबेर में बनवाए। तब दोदावाह के पुत्र ३७
मारेशावासी एलीएजेर ने यहोशापात के विरुद्ध यह
नबूवत कही कि तू ने जो अहज्याह से मेल किया इस
कारण यहोवा तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा।
सो जहाज टूट गये और तर्शीश को न जा सके॥

(यहोराम का राज्य)

२१. निदान यहोशापात अपने पुरखाओं
के संग सोया और उस को
उस के पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी गई

(१) अर्थात् धन्यवाद का आशिष।

और उस का पुत्र यहोराम उस के स्थान पर राजा हुआ ।
२ इस के भाई जो यहोशापात के पुत्र थे अर्थात् अजर्याह यहीएल जकर्याह अजर्याह मीकाएल और शपत्याह ये सब इस्राएल के राजा यहोशापात के पुत्र थे ।
३ और उन के पिता ने उन्हें चांदी सोना और अनमोल वस्तुएं और बड़े बड़े दान और यहूदा में गढ़वाले नगर दिये थे पर यहोराम को उस ने राज्य दे दिया क्योंकि
४ वह जेठा था । जब यहोराम अपने पिता के राज्य पर ठहरा और बलवन्त भी हो गया तब उस ने अपने सब भाइयों को और इस्राएल के कुछ हाकिमों को भी तल-
५ वार से घात किया । जब यहोराम राजा हुआ तब बत्तीस बरस का था और वह आठ बरस लों यरूशलेम
६ में राज्य करता रहा । वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला जैसे अहाब का घराना चलता था क्योंकि उस की स्त्री अहाब की बेटी थी और वह उस काम को
७ करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है । तौभी यहोवा ने दाऊद के घराने को नाश करना न चाहा यह उस वाचा के कारण था जो उस ने दाऊद से बान्धी थी और उस वचन के अनुसार था जो उस ने उस को दिया था कि मैं ऐसा करूंगा कि तेरा और तेरे वंश का दीपक कभी न
८ बुझेगा । उस के दिनों में एदोम ने यहूदा की अधीनता
९ छोड़कर अपने ऊपर एक राजा बना लिया । सो यहोराम अपने हाकिमों और अपने सब रथों को साथ लेकर उधर गया और रात को उठकर उन एदोमियों को जो उसे घेरे
१० हुए थे और रथों के प्रधानों को मारा । यों एदोम यहूदा के वश से छूट गया और आज लों वैसा ही है । उसी समय लिब्ना ने भी उस की अधीनता छोड़ दी यह इस कारण हुआ कि उस ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा
११ को त्याग दिया था । और उस ने यहूदा के पहाड़ों पर ऊंचे स्थान बनाये और यरूशलेम के निवासियों से व्यभि-
१२ चार कराया और यहूदा को बहका दिया । सो एलिय्याह नबी का एक पत्र उस के पास आया कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि तू जो न तो अपने पिता यहोशापात की लीक पर चला है और
१३ न यहूदा के राजा आसा की लीक पर, वरन इस्राएल के राजाओं की लीक पर चला है और अहाब के घराने की नाईं यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों से व्यभिचार कराया है और अपने पिता के घराने में से अपने भाइयों
१४ को जो तुझ से अच्छे थे घात किया है, इस कारण यहोवा तेरी प्रजा पुत्रों स्त्रियों और सारी संपत्ति को बड़ी मार से
१५ मारेगा, और तू अन्तरियों के रोग से बहुत पीड़ित हो जाएगा यहां लों कि उस रोग के कारण तेरी अन्तरियां दिन दिन निकलती जाएंगी । और यहोवा ने पलिश्तियों १६ को और कूशियों के पास रहनेहारे अरबियों को यहोराम के विरुद्ध उभारा । और वे यहूदा पर चढ़ाई करके उस पर १७ टूट पड़े और राजभवन में जितनी संपत्ति मिली उस सब को और राजा के पुत्रों और स्त्रियों को भी ले गये यहां लों कि उस के लहुरे बेटे यहोआहाज को छोड़ उस के पास कोई भी पुत्र न रहा । इस सब के पीछे यहोवा ने उसे १८ अन्तरियों के असाध्यरोग से पीड़ित कर दिया । और कुछ १९ समय के पीछे अर्थात् दो बरस के अन्त में उस रोग के कारण उस की अन्तरियां निकल पड़ीं और वह अत्यन्त पीड़ित होकर मर गया और उस की प्रजा ने जैसे उस के पुरखाओं के लिये सुगन्धद्रव्य जलाया था वैसा उस के लिये कुछ न जलाया । वह जब राज्य करने लगा तब बत्तीस २० बरस का था और यरूशलेम में आठ बरस लों राज्य करता रहा और सब को अप्रिय होकर जाता रहा और उस को दाऊदपुर में मिट्टी दी गई पर राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं ॥

(यहूदी अहज्याह का राज्य)

२२. तब यरूशलेम के निवासियों ने उस के लहुरे पुत्र अहज्याह को उस के स्थान पर राजा किया क्योंकि जो दल अरबियों के संग छावनी में आया था उस ने उस के सब बड़े बेटों को घात किया था सो यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राजा हुआ । जब अहज्याह राजा हुआ तब २ बयालीस[1] बरस का था और यरूशलेम में एक ही बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अतल्याह था जो ओम्री की पोती थी । वह अहाब के घराने की सी ३ चाल चला क्योंकि उस की माता उसे दुष्टता करने की संमति देती थी । और वह अहाब के घराने की नाईं वह ४ काम करता था जो यहोवा के लेखे बुरा है क्योंकि उस के पिता की मृत्यु के पीछे वे उस को ऐसी सम्मति देते थे जिस से उस का विनाश हुआ । और वह उन की ५ सम्मति के अनुसार चलता था और इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र यहोराम के संग गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया और अरामियों ने योराम को घायल किया । सो राजा यहोराम इसलिये ६ लौट गया कि यिज्रेल में उन घावों का इलाज कराए जो उस को अरामियों के हाथ से उस समय लगे जब वह हजाएल के साथ लड़ रहा था और अहाब का पुत्र योराम जो यिज्रेल में रोगी रहा इस से यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह[2] उस को देखने गया । और अहज्याह ७

(१) २ राजा ८ : २६ में बाईस । (२) मूल में अजर्याह ।

का विनाश यहोवा की ओर से हुआ क्योंकि वह योराम के पास गया था कैसे कि जब वह वहां पहुंचा तब उस के संग निमशी के पोते येहू का साम्हना करने को निकल गया जिस का अभिषेक यहोवा ने इसलिये कराया था कि ८ वह अहाब के घराने को नाश करे। और जब येहू अहाब के घराने को दण्ड दे रहा था तब उस को यहूदा के हाकिम और अहज्याह के भतीजे जो अहज्याह के टहलुए ९ थे मिले सो उस ने उन को घात किया। तब उस ने अहज्याह को ढूंढ़ा वह तो शोमरोन में छिपा था सो लोगों ने उस को पकड़ लिया और येहू के पास पहुंचाकर उस को मार डाला तब यह कहकर उस को मिट्टी दी कि यह यहोशापात का पोता है जो अपने सारे मन से यहोवा की खोज करता था। और अहज्याह के घराने में राज्य करने के योग्य कोई न रह गया॥

(यहोआश का राज्य)

१० जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया तब उस ने उठकर यहूदा के घराने के ११ सारे राजवंश को नाश किया। पर यहोशाबत जो राजा की बेटी थी उस ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच से चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया यों राजा यहोराम की बेटी यहोशाबत जो यहोयादा याजक की स्त्री और अहज्याह की बहिन थी उस ने योआश को अतल्याह से ऐसा १२ छिपा रक्खा कि वह उसे मार डालने न पाई। और वह उन के पास परमेश्वर के भवन में छः बरस छिपा रहा इतने में अतल्याह देश पर राज्य करती रही॥

२३. सातवें बरस में यहोयादा ने हियाव बांधकर यरोहाम के पुत्र अजर्याह यहोहानान के पुत्र इश्माएल ओबेद के पुत्र अजर्याह अदायाह के पुत्र मासेयाह और जिक्री के पुत्र एलीशा- २ पात इन शतपतियों से वाचा बान्धी। तब वे यहूदा में घूमकर यहूदा के सब नगरों में से लेवीयों को और इस्राएल के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को ३ इकट्ठा करके यरूशलेम को ले आये। और उस सारी मण्डली ने परमेश्वर के भवन में राजा के साथ वाचा बांधी और यहोयादा ने उन से कहा सुनो यह राजकुमार राज्य करेगा जैसे कि यहोवा ने दाऊद के वंश के विषय ४ कहा है। सो तुम यह काम करो अर्थात् तुम याजकों और लेवीयों की एक तिहाई के लोग जो विश्रामदिन को ५ आनेवाले हों सो डेवढ़ीदारी करें। और एक तिहाई के लोग राजभवन पर रहें और एक तिहाई के लोग नेव के फाटक के पास रहें और सारे लोग यहोवा के भवन के आंगनों में रहें। पर याजकों और सेवा टहल करनेहारे ६ लेवीयों को छोड़ और कोई यहोवा के भवन के भीतर न आने पाए वे तो भीतर आएं क्योंकि वे पवित्र हैं पर सब लोग यहोवा के भवन की चौकसी करें। और लेवीय लोग ७ अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा के चारों ओर रहें और जो कोई भवन के भीतर घुसे सो मार डाला जाए और तुम राजा के आते जाते उस के संग रहना। यहोयादा याजक की इन सारी आज्ञाओं के अनुसार ८ लेवीयों और सब यहूदियों ने किया उन्हों ने विश्रामदिन को आनेहारे और विश्रामदिन को जानेहारे दोनों दलों के अपने अपने जनों को अपने साथ कर लिया क्योंकि यहोयादा याजक ने किसी दल के लेवीयों को बिदा न किया था। तब यहोयादा याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद ९ के बर्छे और फरियां और ढालें जो परमेश्वर के भवन में थीं दे दीं। फिर उस ने उन सब लोगों को अपने १० अपने हाथ में हथियार लिये हुए भवन के दक्खिनी कोने से लेकर उत्तरी कोने लों वेदी और भवन के पास राजा के चारों ओर उस की आड़ करके खड़ा कर दिया। तब ११ उन्हों ने राजकुमार को बाहर ला उस के सिर पर मुकुट और साक्षीपत्र धरकर उसे राजा किया तब यहोयादा और उस के पुत्रों ने उस का अभिषेक किया और लोग बोल उठे राजा जीता रहे। जब अतल्याह को उन लोगों १२ का हौरा जो दौड़ते और राजा को सराहते थे सुन पड़ा तब वह लोगों के पास यहोवा के भवन में गई। और १३ उस ने क्या देखा कि राजा द्वार के निकट खंभे के पास खड़ा है और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेहारे खड़े हैं और सब लोग आनन्द करते और तुरहियां बजा रहे हैं और गाने बजानेहारे बाजे बजाते और स्तुति करते हैं तब अतल्याह अपने वस्त्र फाड़कर राजद्रोह राजद्रोह यों पुकारने लगी। तब यहोयादा याजक ने दल के अधि- १४ कारी शतपतियों को बाहर लाकर उन से कहा कि उसे अपनी पांतियों के बीच से निकाल ले जाओ और जो कोई उस के पीछे चले सो तलवार से मार डाला जाए। याजक ने तो यह कहा कि उसे यहोवा के भवन में न मार डालो। सो उन्हों ने दोनों ओर से उस को जगह १५ दी और वह राजभवन के घोड़ाफाटक के द्वार लों गई और वहां उन्हों ने उस को मार डाला॥

तब यहोयादा ने अपने और सारी प्रजा के और १६ राजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बंधाई। तब सब लोगों ने बाल के भवन को जाकर ढा दिया १७

और उस की वेदियों और मूरतों को टुकड़े टुकड़े किया और मत्तान नाम बाल के याजक को वेदियों के साम्हने
१८ ही घात किया। तब यहोयादा ने यहोवा के भवन के अधिकारी उन लेवीय याजकों के अधिकार में ठहरा दिये जिन्हें दाऊद ने यहोवा के भवन पर दल दल करके इसलिये ठहराया था कि जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है वैसे ही वे यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें और दाऊद की चलाई हुई विधि[१] के अनुसार आनन्द करें और गाएं।
१९ और उस ने यहोवा के भवन के फाटकों पर डेवढ़ीदारों को इस लिये खड़ा किया कि जो किसी रीति से अशुद्ध
२० हो सो भीतर जाने न पाए। और वह शतपतियों और रईसों और प्रजा पर प्रभुता करनेहारों और देश के सब लोगों को साथ करके राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया और ऊंचे फाटक से होकर राजभवन में
२१ आया और राजा को राजगद्दी पर बैठाया। सो सब लोग आनन्दित हुए और नगर में शांति हुई। अतल्याह तो तलवार से मार डाली गई थी॥

२४.

जब योआश राजा हुआ तब वह सात बरस का था और यरूशलेम में चालीस बरस राज्य करता रहा उस की माता का
२ नाम सिब्या था जो बेर्शेबा की थी। और जब लों यहोयादा याजक जीता रहा तब लों योआश वह काम करता
३ रहा जो यहोवा के लेखे ठीक है। और यहोयादा ने उस के दो ब्याह कराये और उस ने बेटे बेटियां जन्माईं।
४ इस के पीछे योआश के मन में यहोवा के भवन की
५ मरम्मत करने की मनसा उपजी। सो उस ने याजकों और लेवीयों को इकट्ठा करके कहा बरस बरस यहूदा के नगरों में जा जाकर सब इस्राएलियों से रुपए लिया करो जिस से तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो देखो इस काम में फुर्ती करो। तौभी लेवीयों ने कुछ फुर्ती न
६ की। सो राजा ने यहोयादा महायाजक को बुलवाकर पूछा क्या कारण है कि तू ने लेवीयों को दृढ़ आज्ञा नहीं दी कि यहूदा और यरूशलेम से उस चन्दे के रुपए ले आओ जिस का नियम यहोवा के दास मूसा और इस्राएल की मण्डली ने साक्षीपत्र के तंबू के निमित्त चलाया
७ था। उस दुष्ट स्त्री अतल्याह के बेटों ने तो परमेश्वर के भवन को तोड़ दिया और यहोवा के भवन की सब पवित्र की हुई वस्तुएं बाल देवताओं को दे दी थीं।
८ और राजा ने एक संदूक बनाने की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रक्खा गया।
९ तब यहूदा और यरूशलेम में यह प्रचार किया गया कि जिस चंदे का नियम परमेश्वर के दास मूसा ने जंगल में इस्राएल में चलाया था उस के रुपए यहोवा के निमित्त
१० ले आओ। सो सारे हाकिम और प्रजा के सब लोग आनन्दित हो रुपए ले आकर जब लों चन्दा पूरा न हुआ
११ तब लों संदूक में डालते गये। और जब जब वह संदूक लेवीयों के हाथ से राजा के प्रधानों के पास पहुंचाया जाता और यह जान पड़ता था कि उस में रुपए बहुत हैं तब तब राजा के प्रधान और महायाजक का नाइब आकर संदूक को खाली करते तब उसे लेकर फिर उस
१२ के स्थान पर रख देते थे। उन्हों ने दिन दिन ऐसा किया और बहुत रुपए इकट्ठा किए तब राजा और यहोयादा ने वह रुपए यहोवा के भवन का काम करानेहारों को दे दिये और उन्हों ने राजों और बढ़इयों को यहोवा के भवन के सुधारने के लिये और लोहारों और ठठेरों को यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिये मजूरी पर
१३ रक्खा। सो कारीगर काम करते गये और काम पूरा होता गया[२] और उन्हों ने परमेश्वर का भवन जैसे का तैसा
१४ बनाकर दृढ़ कर दिया। जब उन्हों ने वह काम निपटा दिया तब वे शेष रुपए राजा और यहोयादा के पास ले गये और उस से यहोवा के भवन के लिये पात्र बनाये गये अर्थात् सेवा टहल करने और होमबलि चढ़ाने के पात्र और धूपदान आदि सोने चांदी के पात्र। और जब लों यहोयादा जीता रहा तब लों यहोवा के भवन में होमबलि
१५ नित्य चढ़ाये जाते थे। पर यहोयादा बूढ़ा हो गया और दीर्घायु होकर मर गया। जब वह मरा तब एक सौ तीस
१६ बरस का हुआ था। और उस को दाऊदपुर में राजाओं के बीच मिट्टी दी गई क्योंकि उस ने इस्राएल में और परमेश्वर के और उस के भवन के विषय भला किया था॥
१७ यहोयादा के मरने के पीछे यहूदा के हाकिमों ने राजा के पास जाकर उसे दण्डवत् की और राजा ने उन
१८ की मानी। तब वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का भवन छोड़कर अशेरों और मूरतों की उपासना करने लगे सो उन के ऐसे दोषी होने के कारण परमेश्वर का
१९ क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का। तौभी उस ने उन के पास नबी भेजे कि उन को यहोवा के पास फेर लाएं और इन्हों ने इन्हें चिता दिया पर उन्हों ने कान न
२० लगाया। और परमेश्वर का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह में समा गया और वह लोगों से ऊपर खड़ा होकर उन से कहने लगा परमेश्वर यों कहता है कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों टालते हो ऐसा

(१) मूल में दाऊद के हाथों।

(२) मूल में काम पर पट्टी चढ़ी।

करके तुम भाग्यवान् नहीं हो सकते देखो तुम ने तो यहोवा को त्याग दिया है इस कारण उस ने भी तुम को २१ त्याग दिया है। तब लोगों ने उस से द्रोह की गोष्ठी करके राजा की आज्ञा से यहोवा के भवन के आंगन में २२ उस को पत्थरवाह किया। यों राजा योआश ने वह प्रीति बिसराकर जो यहोयादा ने उस से की थी उस के पुत्र को घात किया और मरते समय उस ने कहा यहोवा इस २३ पर दृष्टि करके इस का लेखा ले। नये बरस के लगते अरामियों की सेना ने उस पर चढ़ाई की और यहूदा और यरूशलेम को आकर प्रजा में से सब हाकिमों को नाश किया और उन का सारा धन लूटकर दमिश्क के २४ राजा के पास भेजा। अरामियों की सेना थोड़े ही पुरुषों की तो आई पर यहोवा ने एक बहुत बड़ी सेना उन के हाथ कर दी इस कारण कि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर को त्याग दिया था। और यहोआश को भी २५ उन्हों ने दण्ड दिया। और जब वे उसे बहुत ही रोगी छोड़ गये तब उस के कर्म्मचारियों ने यहोयादा याजक के पुत्रों के खून के कारण उस से द्रोह की गोष्ठी करके उसे उस के बिछौने ही पर ऐसा मारा कि वह मर गया और उन्हों ने उस को दाऊदपुर में मिट्टी दी पर राजाओं २६ के कब्रिस्तान में नहीं। जिन्हों ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी की सो ये थे अर्थात शिमात अम्मोनिन का पुत्र जाबाद २७ और शिम्रीत मोआबिन का पुत्र यहोजाबाद। उस के बेटों के विषय और उस के विरुद्ध जो बड़े दण्ड की नबूवत हुई उस के और परमेश्वर के भवन के बनने के विषय ये सब बातें राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। और उस का पुत्र अमस्याह उस के स्थान पर राजा हुआ ॥

(अमस्याह का राज्य)

२५. जब अमस्याह राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और यरूशलेम में उनतीस बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यहोअद्दान था जो यरूशलेम की थी। २ उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है पर खरे मन ३ से न किया। जब राज्य उस के हाथ में स्थिर हो गया तब उस ने अपने उन कर्म्मचारियों को मार डाला जिन्हों ४ ने उस के पिता राजा को मार डाला था। पर उन के लड़केबालों को उस ने न मार डाला क्योंकि उस ने यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार किया जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है कि पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए जिस ने पाप किया हो सोई उस पाप के कारण मार डाला जाए। ५ और अमस्याह ने यहूदा को बरन सारे यहूदियों और बिन्यामीनियों को इकट्ठा करके उन के पितरों के घरानों के अनुसार सहस्रपतियों और शतपतियों के अधिकार में ठहराया और उन में से जितनों की अवस्था बीस बरस की वा उस से अधिक थी उन की गिनती करके तीन लाख भाला चलानेहारे और ढाल ६ उठानेहारे बड़े बड़े योद्धा पाये। फिर उस ने एक लाख इस्राएली शूरवीरों को भी एक सौ किक्कार चान्दी दे ७ बुलवाकर रक्खा। परन्तु परमेश्वर के एक जन ने उस के पास आकर कहा हे राजा इस्राएल की सेना तेरे संग जाने न पाए क्योंकि यहोवा इस्राएल अर्थात् एप्रैम की सारी ८ सन्तान के संग नहीं रहता। तौभी तू जाकर पुरुषार्थ कर और युद्ध के लिये हियाव बांध परमेश्वर तुझे शत्रुओं के साम्हने गिराएगा क्योंकि सहायता करने और गिरा देने ९ दोनों के लिये परमेश्वर सामर्थी है। अमस्याह ने परमेश्वर के जन से पूछा फिर जो सौ किक्कार चान्दी मैं इस्राएली दल को दे चुका हूं उस के विषय क्या करूं। परमेश्वर के जन ने उत्तर दिया यहोवा तुझे इस से भी बहुत १० अधिक दे सकता है। तब अमस्याह ने उन्हें अर्थात् उस दल को जो एप्रैम की ओर से उस के पास आया था अलग कर दिया कि वे अपने स्थान को लौट जाएं। तब उन का कोप यहूदियों पर बहुत भड़क उठा और वे ११ अत्यन्त कोपित होकर अपने स्थान को लौट गये। पर अमस्याह हियाव बांधकर अपने लोगों को ले चला और लोन की तराई को जाकर दस हजार सेईरियों को मार १२ दिया। और और दस हजार को यहूदियों ने बंधुआ करके ढांग की चोटी पर ले जाकर ढांग की चोटी पर १३ से गिरा दिया सो सब चूर चूर हो गये। पर उस दल के पुरुष जिसे अमस्याह ने लौटा दिया कि वे उस के संग युद्ध करने को न जाएं शोमरोन से बेथोरोन लों यहूदा के सब नगरों पर टूट पड़े और उन के तीन हजार निवासी मार डाले और बहुत लूट ले ली ॥

१४ जब अमस्याह एदोमियों का संहार करके लौट आया उस के पीछे उस ने सेईरियों के देवताओं को ले आकर अपने देवता करके खड़ा किया और उन्हीं के साम्हने १५ दण्डवत् करने और उन्हीं के लिये धूप जलाने लगा। सो यहोवा का कोप अमस्याह पर भड़क उठा और उस ने उस के पास एक नबी भेजा जिस ने उस से कहा जो देवता अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा न सके उन की १६ खोज में तू क्यों लगा। वह उस से बातें कही रहा था कि उस ने उस से पूछा क्या हम ने तुझे राजमंत्री ठहरा दिया है चुप रह क्या तू मार खाना चाहता है। तब वह

नबी यह कहकर चुप हो गया कि मुझे मालूम है कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को ठाना है क्योंकि तू ने ऐसा किया है और मेरी सम्मति नहीं मानी ॥

१७ तब यहूदा के राजा अमस्याह ने सम्मति लेकर इस्राएल के राजा योआश के पास जो येहू का पोता और यहोआहाज का पुत्र था यों कहला भेजा कि आ हम एक
१८ दूसरे का साम्हना करें। इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह के पास यों कहला भेजा कि लबानोन पर की एक झड़बेड़ी ने लबानोन के एक देवदार के पास कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे इतने में लबानोन में का कोई बनैला पशु पास से चला
१९ गया और उस झड़बेड़ी को रौंद डाला। तू कहता है कि मैं ने एदोमियों को जीत लिया है इस कारण तू फूल उठा और बड़ाई मारता है। अपने घर में रह जा तू अपनी हानि के लिये यहां क्यों हाथ डालेगा जिस से तू क्या बरन यहूदा भी नीचा खाएगा। पर अमस्याह ने न माना।
२० यह तो परमेश्वर की ओर से हुआ कि वह उन्हें उन के शत्रुओं के हाथ कर दे क्योंकि वे एदोम के देवताओं की
२१ खोज में लग गये थे। सो इस्राएल के राजा योआश ने चढ़ाई की और उस ने और यहूदा के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का साम्हना किया।
२२ और यहूदा इस्राएल से हार गया और एक एक अपने
२३ अपने डेरे को भागा। तब इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को जो यहोआहाज का पोता और योआश का पुत्र था बेतशेमेश में पकड़ा और यरूशलेम को ले गया और यरूशलेम की शहरपनाह में से एप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक लों चार सौ हाथ गिरा दिये।
२४ और जितना सोना चान्दी और जितने पात्र परमेश्वर के भवन में ओबेदेदोम के पास मिले और राजभवन में जितना खजाना था उस सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह शोमरोन को लौट गया ॥

२५ यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के राजा योआश के मरने के पीछे योआश का पुत्र यहूदा का राजा अमस्याह
२६ पन्द्रह बरस लों जीता रहा। आदि से अन्त लों अमस्याह के और काम क्या यहूदा और इस्राएल के राजाओं
२७ के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। जिस समय अमस्याह यहोवा के पीछे चलना छोड़कर फिर गया उस समय से यरूशलेम में उस के विरुद्ध द्रोह की गोष्ठी होने लगी और वह लाकीश को भाग गया सो दूतों ने लाकीश
२८ लों उस का पीछा कर के उस को वहीं मार डाला। तब वह घोड़ों पर रखकर पहुंचाया गया और उसे उस के पुरखाओं के बीच यहूदा के पुर में मिट्टी दी गई ॥

(उज्जिय्याह का राज्य)

२६. तब सारी यहूदी प्रजा ने उज्जिय्याह को जो सोलह बरस का था लेकर उस के पिता अमस्याह के स्थान पर राजा कर दिया।
२ जब राजा अमस्याह अपने पुरखाओं के संग सोया उस के पीछे उज्जिय्याह ने एलोत नगर को दृढ़ करके यहूदा के वश में
३ फिर कर लिया। जब उज्जिय्याह राज्य करने लगा तब सोलह बरस का था और यरूशलेम में बावन बरस लों राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यकोल्याह
४ था जो यरूशलेम की थी। जैसे उस का पिता अमस्याह वह किया करता था जो यहोवा के लेखे ठीक है वैसे ही
५ वह भी करता था। और जकर्याह के दिनों में जो परमेश्वर के दर्शन के विषय समझ रखता था[१] वह परमेश्वर की खोज में लगा रहता था और जब तक वह यहोवा की खोज में लगा रहा तब तक परमेश्वर उस को भाग्यवान् किये
६ रहा। सो उस ने जाकर पलिश्तियों से युद्ध किया और गत यब्ने और अशदोद की शहरपनाहें गिरा दीं और अशदोद के आसपास और पलिश्तियों के बीच बीच नगर
७ बसाये। और परमेश्वर ने पलिश्तियों और गूर्बालवासी
८ अरबियों और मूनियों के विरुद्ध उस की सहायता की। और अम्मोनी उज्जिय्याह को भेंट देने लगे बरन उस की कीर्त्ति मिस्र के सिवाने लों भी फैल गई क्योंकि वह अत्यन्त सामर्थी
९ हो गया था। फिर उज्जियाह ने यरूशलेम में कोने के फाटक और तराई के फाटक और शहरपनाह के मोड़ पर
१० गुम्मट बनवा कर दृढ़ किये। और उस के बहुत ढोर थे सो उस ने जंगल में और नीचे के देश और चौरस देश में गुम्मट बनवाये और बहुत से कुण्ड खुदवाये और पहाड़ों पर और कर्म्मेल में उस के किसान और दाख की बारियों
११ के माली थे क्योंकि वह खेती का चाहनेहारा था। फिर उज्जिय्याह के योद्धाओं की एक सेना थी जो गिनती यीएल मुंशी और मासेयाह सरदार हनन्याह नाम राजा के एक हाकिम की आज्ञा से करते थे उस के अनुसार
१२ वह दल दल करके लड़ने को जाती थी। पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष जो शूरवीर थे उन की
१३ पूरी गिनती दो हजार छः सौ थी। और उन के अधिकार में तीन लाख साढ़े सात हजार की एक बड़ी सेना थी जो शत्रुओं के विरुद्ध राजा की सहायता करने
१४ को बड़े बल से युद्ध करनेहारे थे। इन के लिये अर्थात् सारी सेना के लिये उज्जिय्याह ने ढालें भाले टोप
१५ झिलम, धनुष और गोफन के पत्थर तैयार किये। फिर

---

(१) वा जो परमेश्वर के भय मानने की शिक्षा देता था।

उस ने यरूशलेम में गुम्मटों और कंगुरों पर रखने को चतुर पुरुषों के निकाले हुए यन्त्र भी बनवाये जिन के द्वारा तीर और बड़े बड़े पत्थर फेंके जाएं। और उस की कीर्ति दूर दूर लों फैल गई क्योंकि उसे अद्भुत सहायता यहां तक मिली कि वह सामर्थी हो गया॥

१६ परन्तु जब वह सामर्थी हो गया तब उस का मन फूल उठा और उस ने बिगड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया अर्थात् वह धूप की वेदी पर धूप १७ जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया। और अजर्याह याजक उस के पीछे भीतर गया और उस के १८ संग यहोवा के अस्सी याजक भी जो वीर थे गये। और उन्हों ने उज्जिय्याह राजा का साम्हना करके उस से कहा हे उज्जिय्याह यहोवा के लिये धूप जलाना तेरा काम नहीं हारून की सन्तान अर्थात् उन याजकों ही का है जो धूप जलाने को पवित्र किये गये हैं तू पवित्रस्थान से निकल जा तू ने विश्वासघात किया है यहोवा परमेश्वर की ओर से यह तेरी महिमा का कारण न होगा। १९ तब उज्जिय्याह धूप जलाने को धूपदान हाथ में लिये हुए झुंझला उठा और वह याजकों पर झुंझला रहा था कि याजकों के देखते यहोवा के भवन में धूप की वेदी के २० पास ही उस के माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ। और अजर्याह महायाजक और सब याजकों ने उस पर दृष्टि की और क्या देखा कि उस के माथे पर कोढ़ निकला है सो उन्हों ने उस को वहां से झटपट निकाल दिया बरन यह जानकर कि यहोवा ने मुझे कोढ़ी कर दिया है उस ने २१ आप बाहर जाने को उतावली की। और उज्जिय्याह राजा मरने के दिन लों कोढ़ी रहा और कोढ़ के कारण अलग एक घर में रहता था वह तो यहोवा के भवन में जाने न पाता था[१] और उस का पुत्र योताम राजघराने के काम पर ठहरा और लोगों का न्याय करता २२ था। आदि से अन्त लों उज्जिय्याह के और कामों का २३ वर्णन तो आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने लिखा। निदान उज्जिय्याह अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को उस के पुरखाओं के निकट राजाओं के मिट्टी देने के खेत में मिट्टी दी गई। उन्हों ने तो कहा कि वह कोढ़ी था। और उस का पुत्र योताम उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(योताम का राज्य)

२७. जब योताम राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और यरूशलेम में सोलह बरस तक राज्य करता रहा और उस की माता का नाम यरूशा था जो सादोक की बेटी थी।

२ उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है अर्थात् जैसा उस के पिता उज्जिय्याह ने किया था ठीक वैसा ही उस ने किया तौभी वह यहोवा के मन्दिर में न घुसा। और प्रजा के लोग तब भी बिगड़ी चाल चलते थे। ३ उसी ने यहोवा के भवन के ऊपरले फाटक को बनाया और ओपेल की शहरपनाह पर बहुत कुछ बनवाया। ४ फिर उस ने यहूदा के पहाड़ी देश में कई एक नगर दृढ़ ५ किये और जंगलों में गढ़ और गुम्मट बनाये। और वह अम्मोनियों के राजा से युद्ध करके उन पर प्रबल हो गया सो उसी बरस में अम्मोनियों ने उस को सौ किक्कार चांदी और दस दस हजार कोर गेहूं और जव दिये और फिर दूसरे और तीसरे बरस में भी उन्हों ने उसे उतना ही दिया। ६ यों योताम सामर्थी हो गया क्योंकि वह अपने आप को अपने परमेश्वर यहोवा के सन्मुख जानकर खरी ७ चाल चलता था। योताम के और काम और उस के सब युद्ध और उस की चाल चलन इन बातों का वर्णन तो इस्राएल और यहूदा के राजाओं के वृत्तान्त की ८ पुस्तक में लिखा है। जब वह राजा हुआ तब तो पचीस बरस का था और यरूशलेम में सोलह बरस तक राज्य ९ करता रहा। निदान योताम अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे दाऊदपुर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र आहाज उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(आहाज का राज्य)

२८. जब आहाज राज्य करने लगा तब वह बीस बरस का था और सोलह बरस तक यरूशलेम में राज्य करता रहा और अपने मूलपुरुष दाऊद का सा काम नहीं किया जो २ यहोवा के लेखे ठीक है। परन्तु वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला और बाल देवताओं की मूर्तियां ३ ढलवाकर बनाईं, और हिन्नोम के बेटे की तराई में धूप जलाया और उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था अपने लड़केबालों को आग में होम ४ कर दिया। और ऊंचे स्थानों पर और पहाड़ियों पर और सब हरे वृक्षों के तले वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया ५ करता था। सो उस के परमेश्वर यहोवा ने उस को अरामियों के राजा के हाथ कर दिया और वे उस को जीतकर उस के बहुत से लोगों को बंधुआ करके दमिश्क को ले गये। और वह इस्राएल के राजा के वश में कर ६ दिया गया जिस ने उसे बड़ी मार से मारा। और रमल्याह के पुत्र पेकह ने यहूदा में एक ही दिन में एक लाख बीस हजार लोगों को जो सब के सब वीर थे घात

(१) मूल में भवन से कटा था।

किया क्योंकि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा ७ को त्याग दिया था। और जिक्री नाम एक एप्रैमी बीर ने मासेयाह नाम एक राजपुत्र को और राजभवन के प्रधान अज्रीकाम को और एलकाना को जो राजा के नीचे था ८ मार डाला। और इस्राएली अपने भाइयों में से स्त्रियों बेटों और बेटियों को मिलाकर दो लाख लोगों को बंधुआ करके और उन की बहुत लूट भी छीनकर शोमरोन की ९ ओर ले चले। पर ओदेद नाम यहोवा का एक नबी वहां था वह शोमरोन को आनेवाली सेना से मिलने को जाकर कहने लगा सुनो तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने यहूदियों पर झुंझलाकर उन को तुम्हारे हाथ कर दिया है और तुम ने उन को ऐसा क्रोध करके घात किया १० जिस की चिल्लाहट स्वर्ग लों पहुंच गई है। और अब तुम ने ठाना है कि यहूदियों और यरूशलेमियों को अपने दास दासी करके दबाये रक्खें क्या तुम भी अपने पर- ११ मेश्वर यहोवा के यहां दोषी नहीं हो। सो अब मेरी सुनो और इन बन्धुओं को जिन्हें तुम अपने भाइयों में से बन्धुआ करके ले आये हो लौटा दो यहोवा का कोप तो १२ तुम पर भड़का है। तब एप्रैमियों के कितने मुख्य पुरुष अर्थात् योहानान का पुत्र अजर्याह मशिल्लेमोत का पुत्र बेरेक्याह शल्लूम का पुत्र यहिजकिय्याह और हल्दै का १३ पुत्र अमासा लड़ाई से आनेहारों का साम्हना करके, उन से कहने लगे तुम इन बन्धुओं को यहां मत ले आओ क्योंकि तुम ने वह ठाना है जिस के कारण हम यहोवा के यहां दोषी हो जाएंगे और उस से हमारा पाप और दोष बढ़ जाएगा हमारा दोष तो बड़ा है और इस्राएल १४ पर बहुत कोप भड़का है। सो उन हथियारबंदों ने बंधुओं और लूट को हाकिमों और सारी सभा के साम्हने छोड़ १५ दिया। तब जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उन्हों ने उठकर बंधुओं को ले लिया और लूट में से सब नंगे लोगों को कपड़े और जूतियां पहिनाईं और खाना खिलाया और पानी पिलाया और तेल मला और सब निर्बल लोगों को गदहों पर चढ़ाकर यरीहो को जो खजूर का नगर कहलाता है उन के भाइयों के पास पहुंचा दिया तब शोमरोन को लौट गये॥

१६ उस समय राजा आहाज ने अश्शूर के राजाओं १७ के पास भेजकर सहायता मांगी। क्योंकि एदोमियों ने यहूदा में आकर उस को मारा और बंधुओं को ले गये १८ थे। और पलिश्तियों ने नीचे के देश और यहूदा के दक्खिन देश के नगरों पर चढ़ाई करके बेतशेमेश अय्या-लोन और गदेरोत को और अपने अपने गांवों समेत सोको तिम्ना और गिमजो को ले लिया और उन में रहने लगे थे। यों यहोवा ने इस्राएल के राजा आहाज के १९ कारण यहूदा को दबा दिया क्योंकि वह निरंकुश होकर चला और यहोवा से बड़ा विश्वासघात किया। सो २० अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर उस के विरुद्ध आया और उस को कष्ट दिया बल नहीं दिया। आहाज ने तो २१ यहोवा के भवन और राजभवन और हाकिमों के घरों में से धन निकाल कर[१] अश्शूर के राजा को दिया पर इस से उस की कुछ सहायता न हुई। और क्लेश के समय इस २२ राजा आहाज ने यहोवा से और भी विश्वासघात किया। और उस ने दमिश्क के देवताओं के लिये जिन्हों ने उस २३ को मारा था बलि चढ़ाया क्योंकि उस ने यह सोचा कि अरामी राजाओं के देवताओं ने उन की सहायता की सो मैं उन के लिये बलि करूंगा कि वे मेरी सहायता करें। परन्तु वे उस के और सारे इस्राएल के नीचा खाने के कारण हुए। फिर आहाज ने परमेश्वर के भवन के पात्र २४ बटोर कर तुड़वा डाले और यहोवा के भवन के द्वारों को बन्द कर दिया और यरूशलेम के सब कोनों में वेदियां बनाईं। और यहूदा के एक एक नगर में उस ने २५ पराये देवताओं को धूप जलाने के लिये ऊंचे स्थान बनाये और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई। और उस के और कामों और आदि से अन्त २६ लों उस की सारी चाल चलन का बर्णन यहूदा और इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखा है। निदान आहाज अपने पुरखाओं के संग सोया और उस २७ को यरूशलेम नगर में मिट्टी दी गई पर वह इस्राएल के राजाओं के कब्रिस्तान में पहुंचाया न गया। और उस का पुत्र हिजकिय्याह उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(हिजकिय्याह की की हुई सुधराई)

२९. जब हिजकिय्याह राज्य करने लगा तब पचीस बरस का था और उनतीस बरस लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस की माता का नाम अबिय्याह था जो जकर्याह की बेटी थी। २ जैसे उस के मूलपुरुष दाऊद ने वही किया था जो यहोवा ३ के लेखे ठीक है वैसा ही उस ने भी किया। अपने राज्य के पहिले बरस के पहिले महीने में उस ने यहोवा के भवन के द्वार खुलवा दिये और उन की मरम्मत भी ४ कराई। तब उस ने याजकों और लेवीयों को ले आकर ५ पूरब के चौक में इकट्ठा किया, और उन से कहने लगा हे लेवीयो मेरी सुनो अब अपने अपने को पवित्र करो और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के भवन को

(१) मूल में काटकर।

६ पवित्र करो और पवित्रस्थान में से मैल निकालो। देखो हमारे पुरखाओं ने विश्वासघात करके वह किया था जो हमारे परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है और उस को त्याग करके यहोवा के निवास से मुंह फेरकर उस को ७ पीठ दिखाई थी। फिर उन्हों ने ओसारे के द्वार बन्द किये और दीपकों को बुझा दिया था और पवित्रस्थान में इस्राएल के परमेश्वर के लिये न तो धूप जलाया न ८ होमबलि चढ़ाया था। सो यहोवा का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का है और उस ने ऐसा किया कि वे मारे मारे फिरें और चकित होने और ताली बजाने का कारण हो जाएं जैसे कि तुम अपनी आंखों से देख सकते ९ हो। देखो इस कारण हमारे बाप तलवार से मारे गये और हमारे बेटे बेटियां और स्त्रियां बंधुआई में चली गई १० हैं। अब मेरे मन में यह है कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से वाचा बांधूं इसलिये कि उस का भड़का हुआ ११ कोप हम पर से उतर जाए। हे मेरे बेटो ढीलाई न करो देखो यहोवा ने अपने सम्मुख खड़े रहने और अपनी सेवा टहल करने और अपने टहलुए और धूप जलानेहारे होने के लिये तुम्हीं को चुन लिया है॥

१२ सो ये लेवीय उठ खड़े हुए अर्थात् कहातियों में से अमासै का पुत्र महत और अजर्याह का पुत्र योएल और मरारीयों में से अब्दी का पुत्र कीश और यहल्लेलेल का पुत्र अजर्याह और गेर्शोनियों में से जिम्मा का पुत्र योआह १३ और योआह का पुत्र एदेन, और एलीसापान की सन्तान में से शिम्री और यूएल और आसाप की सन्तान में से १४ जकर्याह और मत्तन्याह, और हेमान की सन्तान में से यहूएल और शिमी और यदूतून की सन्तान में से शमायाह १५ और उज्जीएल। ये अपने भाइयों को इकट्ठा कर अपने अपने को पवित्र करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोवा से वचन पाकर दी थी यहोवा के भवन के १६ शुद्ध करने के लिये भीतर गये। तब याजक यहोवा के भवन के भीतरी भाग के शुद्ध करने के लिये उस में जाकर यहोवा के मन्दिर में जितनी अशुद्ध वस्तुएं मिलीं उन सब को निकालकर यहोवा के भवन के आंगन में ले गये और लेवीयों ने उन्हें उठाकर बाहर किद्रोन के नाले में १७ पहुंचा दिया। पहिले महीने के पहिले दिन को उन्हों ने पवित्र करने का आरंभ किया और उसी महीने के आठवें दिन को वे यहोवा के ओसारे लों आ गये सो उन्हों ने यहोवा के भवन को आठ दिन में पवित्र किया और पहिले महीने के सोलहवें दिन को उन्हों ने उसे निपटा दिया। १८ तब उन्हों ने राजा हिजकिय्याह के पास भीतर जाकर कहा हम यहोवा के सारे भवन को और पात्रों समेत होमबलि की वेदी और भेंट की रोटी की मेज को भी १९ शुद्ध कर चुके। और जितने पात्र राजा आहाज ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिये उन को हम ने ठीक करके पवित्र किया है और वे यहोवा की वेदी के साम्हने रक्खे हुए हैं।

२० सो राजा हिजकिय्याह सवेरे उठकर नगर के हाकिमों २१ को इकट्ठा करके यहोवा के भवन को गया। तब वे राज्य और पवित्रस्थान और यहूदा के निमित्त सात बछड़े सात मेढ़े सात भेड़ के बच्चे और पापबलि के लिये सात बकरे ले आये और उस ने हारून की सन्तान के लेवीयों को उन्हें २२ यहोवा की वेदी पर चढ़ाने की आज्ञा दी। सो उन्हों ने बछड़े बलि किये और याजकों ने उन का लोहू लेकर वेदी पर छिड़क दिया तब उन्हों ने मेढ़े बलि किये और उन का लोहू भी वेदी पर छिड़क दिया और भेड़ के बच्चे बलि २३ किये और उन का भी लोहू वेदी पर छिड़क दिया। तब वे पापबलि के बकरों को राजा और मण्डली के साम्हने २४ समीप ले आये और उन पर अपने अपने हाथ टेके। तब याजकों ने उन को बलि करके उन का लोहू वेदी पर पापबलि किया जिस से सारे इस्राएल के लिये प्रायश्चित्त किया जाए क्योंकि राजा ने होमबलि और पापबलि सारे २५ इस्राएल के लिये किये जाने की आज्ञा दी थी। फिर उस ने दाऊद और राजा के दर्शी गाद और नातान नबी की आज्ञा के अनुसार जो यहोवा की ओर से उस के नबियों के द्वारा आई थी झांझ सारंगियां और वीणाएं लिये हुए लेवीयों को यहोवा के भवन में खड़ा किया। २६ सो लेवीय दाऊद के चलाये बाजे लिये हुए और याजक २७ तुरहियां लिये हुए खड़े हुए। तब हिजकिय्याह ने वेदी पर होमबलि चढ़ाने की आज्ञा दी और जब होमबलि चढ़ने लगा तब यहोवा का गीत आरंभ हुआ और तुरहियां और २८ इस्राएल के राजा दाऊद के बाजे बजने लगे। और सारी मण्डली के लोग दण्डवत् करते और गानेहारे गाते और तुरही फूंकनेहारे फूंकते रहे यह सब तब लों होता २९ रहा जब लों होमबलि चढ़ न चुकी। और जब बलि चढ़ चुकी तब राजा और जितने उस के संग वहां थे उन ३० सभों ने सिर झुकाकर दण्डवत् की। और राजा हिजकिय्याह और हाकिमों ने लेवीयों को आज्ञा दी कि दाऊद और आसाप दर्शी के भजन[१] गाकर यहोवा की स्तुति करो सो उन्हों ने आनन्द के साथ स्तुति की ३१ और सिर नवाकर दण्डवत् की। तब हिजकिय्याह कहने लगा अब तुम ने यहोवा के निमित्त अपना संस्कार किया है सो समीप आकर यहोवा के भवन में

(१) मूल में वचन।

मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचाओ। सो मण्डली के लोगों ने मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचा दिये और जितने अपनी इच्छा से देने चाहते थे उन्हों ने होमबलि भी ३२ पहुंचाये। जो होमबलिपशु मण्डली के लोग ले आये उन की गिनती सत्तर बैल एक सौ मेढ़े और दो सौ भेड़ के बच्चे थी ये सब यहोवा के निमित्त होमबलि के काम में ३३ आये। और पवित्र किये हुए पशु छः सौ बैल और तीन ३४ हजार भेड़बकरियां थीं। परन्तु याजक ऐसे थोड़े थे कि वे सब होमबलि पशुओं की खालें न उतार सके सो उन के भाई लेवीय तब लों उन की सहायता करते रहे जब लों वह काम निपट न गया और याजकों ने अपने को पवित्र न किया क्योंकि लेवीय अपने को पवित्र करने के लिये ३५ याजकों से अधिक सीधे मन के थे। और फिर होमबलिपशु बहुत थे और मेलबलिपशुओं की चर्बी भी बहुत थी और एक एक होमबलि के साथ अर्घ भी देना पड़ा यों ३६ यहोवा के भवन में की उपासना ठीक की गई। तब हिजकिय्याह और सारी प्रजा के लोग उस काम के कारण आनन्दित हुए जो यहोवा ने अपनी प्रजा के लिये तैयार किया था क्योंकि वह काम अचानक हो गया था॥

(हिजकिय्याह का माना हुआ फसह)

३०. फिर हिजकिय्याह ने सारे इस्राएल और यहूदा में कहला भेजा और एप्रैम और मनश्शे के पास इस आशय के पत्र लिख भेजे कि तुम यरूशलेम को यहोवा के भवन में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह मानने को आओ। २ राजा और उस के हाकिमों और यरूशलेम की मण्डली ने तो सम्मति की थी कि हम फसह को दूसरे महीने में ३ मानेंगे। क्योंकि वे उसे उस समय में इस कारण न मान सकते थे कि थोड़े ही याजकों ने अपने अपने को पवित्र किया था और प्रजा के लोग यरूशलेम में इकट्ठे न हुए ४ थे। और यह बात राजा और सारी मण्डली को अच्छी ५ लगी। तब उन्हों ने यह ठहरा दिया कि बेर्शेबा से ले दान लों के सारे इस्राएलियों में यह प्रचार किया जाए कि यरूशलेम में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह ६ मानने को चले आओ। बहुत लोगों ने तो उस को वैसा न माना था जैसा लिखा है सो हरकारे राजा और उस के हाकिमों से चिट्ठियां लेकर राजा की आज्ञा के अनुसार सारे इस्राएल और यहूदा में घूमे और यह कहते गये कि हे इस्राएलियो इब्राहीम इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो कि वह तुम बचे हुए लोगों की ओर फिरे जो अश्शूर के राजाओं के हाथ से ७ बचे हुए हो। और अपने पुरखाओं और भाइयों के समान मत बनो जिन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा से विश्वासघात किया था और उस ने उन्हें चकित होने का कारण कर दिया जैसे कि तुम्हें देख पड़ता है। अब अपने ८ पुरखाओं की नाईं हठ न करो यहोवा को वचन[१] देकर उस के उस पवित्रस्थान को आओ जिसे उस ने सदा के लिये पवित्र किया है और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो कि उस का भड़का हुआ कोप तुम पर से उतर जाए। यदि तुम यहोवा की ओर फिरो तो जो ९ तुम्हारे भाइयों और लड़केबालों को बन्धुआ करके ले गये हैं सो उन पर दया करेंगे और वे इस देश में लौटने पाएंगे क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है और यदि तुम उस की ओर फिरो तो वह अपना मुंह तुम से फेरे न रहेगा। यों हरकारे एप्रैम और मनश्शे १० के देशों में नगर नगर होते हुए जबूलून तक गये पर उन्हों ने उन की हंसी की और उन्हें ठट्ठों में उड़ाया। तौभी आशेर मनश्शे और जबूलून में से कुछ लोग दीन ११ होकर यरूशलेम को आये। और यहूदा में भी परमेश्वर १२ की ऐसी शक्ति हुई कि वे एक मन होकर जो आज्ञा राजा और हाकिमों ने यहोवा के वचन के अनुसार दी थी उसे मानने को तत्पर हुए। सो बहुत लोग यरूशलेम १३ में इसलिये इकट्ठे हुए कि दूसरे महीने में अखमीरी रोटी का पर्व्व मानें और बहुत भारी सभा हो गई। और उन्हों १४ ने उठकर यरूशलेम में की वेदियों और धूप जलाने के सब स्थानों को उठाकर किद्रोन नाले में फेंक दिया। तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्हों ने फसह के १५ पशु बलि किये सो याजक और लेवीय लज्जित हुए और अपने को पवित्र करके होमबलियों को यहोवा के भवन में ले आये। और वे अपने नियम के अनुसार अर्थात् १६ परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार अपने अपने स्थान पर खड़े हुए और याजकों ने लोहू को लेवीयों के हाथ से लेकर छिड़क दिया। क्योंकि सभा में बहुतेरे १७ थे जिन्हों ने अपने को पवित्र न किया था सो सब अशुद्ध लोगों के फसह के पशुओं को बलि करने का अधिकार लेवीयों को दिया गया कि उन को यहोवा के लिये पवित्र करें। बहुत से लोगों ने अर्थात् एप्रैम मनश्शे इस्साकार १८ और जबूलून में से बहुतों ने अपने को शुद्ध न किया था तौभी वे फसह के पशु का मांस लिखी हुई विधि के विरुद्ध खाते थे। क्योंकि हिजकिय्याह ने उन के लिये यह प्रार्थना की थी कि यहोवा जो भला है सो उन सभों के पाप ढांप दे जो परमेश्वर की अर्थात् अपने पितरों के १९ परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाये हैं चाहे वे

(१) मूल में हाथ।

१० पवित्रस्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न हों। और यहोवा ने हिजकिय्याह की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा २१ किया था। और जो इस्राएली यरूशलेम में हाजिर थे सो सात दिन लों अखमीरी रोटी का पर्व्व बड़े आनन्द से मानते रहे और दिन दिन लेवीय और याजक ऊंचे शब्द के बाजे यहोवा के लिये बजाकर यहोवा की स्तुति २२ करते रहे। और जितने लेवीय यहोवा का भजन बुद्धि-मानी के साथ करते थे उन को हिजकिय्याह ने धीरज बन्धाया। यों वे मेलबलि चढ़ाकर और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करके उस नियत पर्व्व के २३ सातों दिन खाते रहे। तब सारी सभा ने सम्मति की कि हम और सात दिन मानेंगे सो उन्हों ने और सात दिन २४ आनन्द से माने। क्योंकि यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़ बकरियां दे दीं और हाकिमों ने सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़ बकरियां दीं[१] और बहुत से २५ याजकों ने अपने को पवित्र किया। तब याजकों और लेवीयों समेत यहूदा की सारी सभा और इस्राएल में से आये हुओं की सभा और इस्राएल के देश से आये हुए और यहूदा में रहनेहारे परदेशी इन सभों ने आनन्द २६ किया। सो यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के दिनों से २७ ऐसी बात यरूशलेम में न हुई थी। निदान लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया और उन की सुनी गई और उन की प्रार्थना उस के पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुंची ॥

(हिजकिय्याह का किया हुआ उपासना का प्रबन्ध)

३१. जब यह सब हो चुका तब जितने इस्राएली हाजिर थे उन सभों ने यहूदा के नगरों में जाकर सारे यहूदा और बिन्यामीन और एप्रैम और मनश्शे में की लाठों को तोड़ दिया अशेरों को काट डाला और ऊंचे स्थानों और वेदियों को गिरा दिया यहां लों कि उन्हों ने उन सब का अन्त कर दिया। तब सब इस्राएली अपने अपने नगर को लौटकर २ अपनी अपनी निज भूमि में पहुंचे। और हिजकिय्याह ने याजकों के दलों को और लेवीयों को बरन याजकों और लेवीयों दोनों को दल दल के अनुसार और एक एक मनुष्य को उस की सेवकाई के अनुसार इसलिये ठहरा दिया कि वे यहोवा की छावनी के द्वारों के भीतर होम-बलि मेलबलि सेवा टहल धन्यवाद और स्तुति किया करें। फिर उस ने अपनी संपत्ति में से राजभाग को ३ होमबलियों के लिये ठहरा दिया अर्थात् सबेरे और सांझ के होमबलि और विश्राम और नये चांद के दिनों और नियत समयों के होमबलि के लिये जैसे कि यहोवा की ४ व्यवस्था में लिखा है। और उस ने यरूशलेम में रहने-हारे लोगों को याजकों और लेवीयों के भाग देने की आज्ञा दी इसलिये कि वे यहोवा की व्यवस्था के काम ५ मन लगाकर कर सकें[२]। यह आज्ञा सुनते ही[३] इस्राएली अन्न नये दाखमधु टटके तेल मधु आदि खेती की सब भांति की पहिली उपज बहुतायत से देने और सब ६ वस्तुओं का दशमांश बहुत लाने लगे। और जो इस्राएली और यहूदी यहूदा के नगरों में रहते थे वे भी बैलों और भेड़ बकरियों का दशमांश और उन पवित्र वस्तुओं का दशमांश जो उन के परमेश्वर यहोवा के निमित्त पवित्र की गई थीं ले आकर राशि राशि करके रखने लगे। ७ यह राशि लगाना उन्हों ने तीसरे महीने में आरंभ किया ८ और सातवें महीने में पूरा किया। जब हिजकिय्याह और हाकिमों ने आकर राशियों को देखा तब यहोवा को और उस की प्रजा इस्राएल को भी धन्य धन्य कहा। ९ तब हिजकिय्याह ने याजकों और लेवीयों से उन राशियों १० के विषय पूछा। और अजर्याह महायाजक ने जो सादोक के घराने का था उस से कहा जब से लोग यहोवा के भवन में उठाई हुई भेंटें लाने लगे तब से हम लोग पेट भर खाने को पाते हैं बरन बहुत बचा भी करता है क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को आशिष दी है और जो बच रहा है उसी का यह बड़ा ढेर है। ११ तब हिजकिय्याह ने यहोवा के भवन में कोठरियां तैयार १२ करने की आज्ञा दी और वे तैयार की गईं। तब लोगों ने उठाई हुई भेंटें दशमांश और पवित्र की हुई वस्तुएं सच्चाई से पहुंचाईं और उन के अधिकारी मुख्य तो कोनन्याह नाम एक लेवीय और दूसरा उस का भाई १३ शिमी था। और कोनन्याह और उस के भाई शिमी के नीचे हिजकिय्याह राजा और परमेश्वर के भवन के प्रधान अजर्याह दोनों की आज्ञा से यहीएल अजज्याह नहत असाहेल यरीमोत योजाबाद एलीएल यिस्मक्याह १४ महत और बनायाह भी अधिकारी थे। और परमे-श्वर को दिये हुए स्वेच्छाबलियों का अधिकारी यिम्ना लेवीय का पुत्र कोरे था जो पूरबी फाटक का डेवढ़ीदार था कि वह यहोवा की उठाई हुई भेंटें और परमपवित्र १५ वस्तुएं बांटा करे। और उस के अधिकार में एदेन

(१) मूल में उठाईं।

(२) मूल में व्यवस्था में बल पकड़ें। (३) मूल में यह आज्ञा फूटते ही।

बिन्यामीन येशू शमायाह अमर्याह और शकन्याह याजकों के नगरों में रहते थे कि वे क्या बड़े क्या छोटे अपने भाइयों १६ को उन के दलों के अनुसार सच्चाई से दिया करें, और उन से अलग उनको भी दें जो पुरुषों की वंशावली के अनुसार गिने जाकर तीन बरस की अवस्था के वा उस से अधिक थे और अपने अपने दल के अनुसार अपनी अपनी सेवकाई निबाहने को दिन दिन के काम के अनुसार १७ यहोवा के भवन में जाया करते थे, और उन याजकों को भी दें जिन की वंशावली तो उन के पितरों के घरानों के अनुसार की गई और उन लेवीयों को भी जो बीस बरस की अवस्था से ले आगे को अपने अपने दल के अनुसार १८ अपने अपने काम निबाहते थे, और सारी सभा में उन के बालबच्चों स्त्रियों बेटों और बेटियों को भी दें जिन की वंशावली थी क्योंकि वे सच्चाई से अपने को पवित्र करते १९ थे। फिर हारून की सन्तान के याजकों को भी जो अपने अपने नगरों के चराईवाले मैदान में रहते थे देने के लिये वे पुरुष ठहरे थे जिन के नाम ऊपर लिखे हुए थे कि वे याजकों के सब पुरुषों और उन सब लेवीयों २० को भी भाग दिया करें जिन की वंशावली थी। और सारे यहूदा में भी हिजकिय्याह ने ऐसा ही प्रबन्ध किया और जो कुछ उस के परमेश्वर यहोवा के लेखे भला २१ और ठीक और सच्चाई का था उसे वह करता था। और जो जो काम उस ने परमेश्वर के भवन में की उपासना और व्यवस्था और आज्ञा के विषय अपने परमेश्वर की खोज में किया सो उस ने अपना सारा मन लगाकर किया और उस में कृतार्थ हुआ॥

(सन्हेरीब की सेना की चढ़ाई और निवास)

३२. इन बातों और इस सच्चाई के पीछे

अश्शूर का राजा सन्हेरीब आकर यहूदा में पैठा और गढ़वाले नगरों के विरुद्ध डेरे डालकर उन में अपने लाभ के लिये नाका करने की आशा २ की। यह देखकर कि सन्हेरीब निकट आया और ३ यरूशलेम से लड़ने की मनसा[१] करता है, हिजकिय्याह ने अपने हाकिमों और वीरों के साथ यह सम्मति की कि नगर के बाहर के सोतों को पाटेंगे। और उन्हों ने उस ४ की सहायता की। सो बहुत से लोग इकट्ठे हुए और यह कहकर कि अश्शूर के राजा यहां आकर क्यों बहुत पानी पाएं सब सोतों को पाट दिया और उस नदी को ५ सुखा दिया जो देश के बीच होकर बहती थी। फिर हिजकिय्याह ने हियाव बांधकर शहरपनाह जहां कहीं टूटी थी वहां उस को बनवाया और उस को गुम्मटों के बराबर ऊंचा किया और बाहर एक और शहरपनाह बनवाई और दाऊदपुर में मिल्लो को दृढ़ किया और बहुत से तीर और ढालें बनवाईं। तब उस ने प्रजा के ऊपर ६ सेनापति ठहराकर उन को नगर के फाटक के चौक में इकट्ठा किया और यह कहकर उन को धीरज बन्धाया कि, हियाव बांधो और दृढ़ हो तुम न तो अश्शूर के ७ राजा से डरो न उस के संग की सारी भीड़ से और तुम्हारा मन कच्चा न हो क्योंकि जो हमारे संग है सो उस के संगियों से बड़ा है। अर्थात् उस का सहारा तो ८ मनुष्य ही है[२] पर हमारे संग हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है। सो प्रजा के लोग यहूदा के राजा हिजकिय्याह की बातों पर भरोसा किये रहे॥

इस के पीछे अश्शूर का राजा सन्हेरीब जो सारी ९ सेना[३] समेत लाकीश के साम्हने पड़ा था उस ने अपने कर्म्मचारियों को यरूशलेम के पास यहूदा के राजा हिजकिय्याह और उन सब यहूदियों से जो यरूशलेम में थे यों कहने के लिये भेजा कि, अश्शूर का राजा सन्हेरीब १० यों कहता है कि तुम किस का भरोसा करते हो। कि तुम घेरे हुए यरूशलेम में बैठे रहते हो। क्या हिजकिय्याह ११ तुम से यह कहता हुआ कि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को अश्शूर के राजा के पंजे से बचाएगा तुम्हें नहीं भरमाता कि तुम को भूखों प्यासों मारे। क्या १२ उसी हिजकिय्याह ने उस के ऊंचे स्थान और वेदियां दूर करके यहूदा और यरूशलेम को आज्ञा नहीं दी कि तुम एक ही वेदी के साम्हने दण्डवत् करना और उसी पर धूप जलाना। क्या तुम को मालूम नहीं कि मैं १३ ने और मेरे पुरखाओं ने देश देश के सब लोगों से क्या क्या किया है क्या उन देशों में की जातियों के देवता किसी भी उपाय से अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके। जितनी जातियों का मेरे पुरखाओं ने सत्यानाश १४ किया उन के सब देवताओं में से ऐसा कौन था जो अपनी प्रजा को मेरे हाथ से बचा सका हो फिर तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा। सो अब १५ हिजकिय्याह तुम को इस रीति भुलाने वा बहकाने न पाए और तुम उस की प्रतीति न करो क्योंकि किसी जाति वा राज्य का कोई देवता अपनी प्रजा को न तो मेरे हाथ से बचा सका न मेरे पुरखाओं के हाथ से सो निश्चय है कि तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से न बचा सकेगा। इस से भी अधिक उस के कर्म्मचारियों १६ ने यहोवा परमेश्वर की और उस के दास हिजकिय्याह

(१) मूल में का मुख।

(२) मूल में उस के संग मांस की बांह। (३) मूल में राज्य।

१७ की निन्दा की। फिर उस ने ऐसा एक पत्र भेजा जिस में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की ये बातें लिखी थीं कि जैसे देश देश की जातियों के देवताओं ने अपनी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचाया वैसे ही हिजकिय्याह का देवता भी अपनी प्रजा को मेरे हाथ १८ से न बचा सकेगा। और उन्हों ने ऊंचे शब्द से उन यरूशलेमियों को जो शहरपनाह पर बैठे थे यहूदी बोली में पुकारा कि उन को डराकर घबराएं जिस से नगर १९ को ले लें। और उन्हों ने यरूशलेम के परमेश्वर की ऐसी चर्चा की कि मानो पृथिवी के देश देश के लोगों के देवताओं के बराबर था जो मनुष्यों के बनाये हुए २० हैं। और इस के कारण राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी दोनों ने प्रार्थना की २१ और स्वर्ग की ओर दोहाई दी। तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया जिस ने अश्शूर के राजा की छावनी में के सब शूरवीरों प्रधानों और सेनापतियों को नाश किया सो वह लज्जित होकर अपने देश को लौट गया और जब वह अपने देवता के भवन में था तब उस के निज २२ पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला। यों यहोवा ने हिजकिय्याह और यरूशलेम के निवासियों को अश्शूर के राजा सन्हेरीब और और सभों के हाथ से बचाया और २३ चारों ओर उन की अगुवाई की। और बहुत लोग यरूशलेम को यहोवा के लिये भेंट और यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिये अनमोल वस्तुएं ले आने लगे और उस समय से वह सब जातियों के लेखे महान ठहरा॥

(हिजकिय्याह का उत्तर चरित्र)

२४ उन दिनों हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरा चाहता था तब उस ने यहोवा से प्रार्थना की और उस ने उस से बातें करके उस के लिये एक चमत्कार दिखाया। २५ पर हिजकिय्याह ने उस उपकार का बदला न दिया क्योंकि उस का मन फूल उठा था इस कारण कोप उस पर और २६ यहूदा और यरूशलेम पर भड़का। तौभी हिजकिय्याह यरूशलेम के निवासियों समेत अपने मन के फूलने के कारण दीन हो गया सो यहोवा का कोप उन पर हिजकिय्याह के दिनों में न भड़का॥

२७ और हिजकिय्याह को बहुत ही धन और विभव मिला और उस ने चांदी सोने मणियों सुगंधद्रव्य ढालों और सब प्रकार के मनभावने पात्रों के लिये भण्डार बनवाये। २८ फिर उस ने अन्न नये दाखमधु और टटके तेल के लिये भण्डार और सब भांति के पशुओं के लिये थान और २९ भेड़ बकरियों के लिये भेड़शालाएं बनवाईं। और उस ने नगर बसाये और बहुत ही भेड़ बकरियों और गाय बैलों की संपत्ति कर ली क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत धन दिया था। ३० उसी हिजकिय्याह ने गीहोन नाम नदी के ऊपरले सोते को पाटकर उस नदी को नीचे की ओर दाऊदपुर की पच्छिम अलंग को सीधा पहुंचाया और हिजकिय्याह अपने सब कामों में कृतार्थ होता था। ३१ तौभी जब बाबेल के हाकिमों ने उस के पास उस के देश में किये हुए चमत्कार के विषय पूछने को दूत भेजे तब परमेश्वर ने उस को इसलिये छोड़ दिया कि उस को परख कर उस के मन का सारा भेद जान ले। ३२ हिजकिय्याह के और काम और उस के भक्ति के काम आमोस के पुत्र यशायाह नबी के दर्शन नाम पुस्तक में और यहूदा और इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखे हैं। ३३ निदान हिजकिय्याह अपने पुरखाओं के संग सोया और उस को दाऊद की सन्तान के कब्रिस्तान की चढ़ाई पर मिट्टी दी गई और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने उस की मृत्यु पर उस का आदरमान किया। और उस का पुत्र मनश्शे उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(मनश्शे का राज्य)

३३. जब मनश्शे राज्य करने लगा तब बारह बरस का था और यरूशलेम में पचपन बरस तक राज्य करता रहा। २ उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था। ३ उस ने उन ऊंचे स्थानों को जिन्हें उस के पिता हिजकिय्याह ने तोड़ दिया था फिर बनाया और बाल नाम देवताओं के लिये वेदियां और अशेरा नाम मूरतें बनाईं और आकाश के सारे गण को दण्डवत् करता और उन की उपासना करता रहा। ४ और उस ने यहोवा के उस भवन में वेदियां बनाईं जिस के विषय यहोवा ने कहा था कि यरूशलेम में मेरा नाम सदा लों बना रहेगा। ५ वरन यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में भी उस ने आकाश के सारे गण के लिये वेदियां बनाईं। ६ फिर उस ने हिन्नोम के बेटे की तराई में अपने लड़केबालों को होम करके चढ़ाया और शुभ अशुभ मुहूर्तों को मानता और टोना और तंत्र मंत्र करता और ओझों और भूतसिद्धिवालों से व्यवहार करता था वरन उस ने ऐसे बहुत से काम किये जो यहोवा के लेखे बुरे हैं और जिन से वह रिसियाता है। ७ और उस ने अपनी खुदवाई हुई मूर्त्ति परमेश्वर के उस भवन में स्थापन की जिस के विषय परमेश्वर ने दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान से कहा था कि इस भवन में और यरूशलेम में जिस को मैं ने इस्राएल के

सब गोत्रों में से चुन लिया है मैं सदा लों अपना नाम ८ रक्खूंगा, और मैं ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिया था उस में से इस्राएल फिर मारा मारा फिरे इतना हो कि वे मेरी सब आज्ञाओं अर्थात् मूसा की दी हुई सारी व्यवस्था और विधियों और नियमों ९ के करने की चौकसी करें। और मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों को यहां लों भटका दिया कि उन्हों ने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई की जिन्हें यहोवा १० ने इस्राएलियों के साम्हने से विनाश किया था। और यहोवा ने मनश्शे और उस की प्रजा से बातें कीं पर ११ उन्हों ने कुछ ध्यान न दिया। सो यहोवा ने उन पर अश्शूर के राजा के सेनापतियों से चढ़ाई कराई और वे मनश्शे के नकेल डालकर और पीतल की बेड़ियां जकड़ १२ कर उसे बाबेल को ले गये। तब संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने लगा और अपने पितरों के परमेश्वर के साम्हने बहुत दीन हुआ और उस से १३ प्रार्थना की तब उस ने प्रसन्न होकर उस की बिनती सुनी और उस को यरूशलेम में पहुंचाकर उस का राज्य फेर दिया। तब मनश्शे को निश्चय हो गया कि यहोवा ही परमेश्वर है॥

१४ इस के पीछे उस ने दाऊदपुर से बाहर गीहोन की पच्छिम ओर नाले में मच्छली फाटक लों एक शहरपनाह बनवाई फिर ओपेल को घेरकर बहुत ऊंचा कर दिया और यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सेनापति ठहरा १५ दिये। फिर उस ने पराये देवताओं को और यहोवा के भवन में की मूर्त्ति को और जितनी वेदियां उस ने यहोवा के भवन के पर्व्वत पर और यरूशलेम में बनवाई थीं उन १६ सब को दूर करके नगर से बाहर फेंकवा दिया। तब उस ने यहोवा की वेदी की मरम्मत की और उस पर मेलबलि और धन्यवादबलि चढ़ाने लगा और यहूदियों को इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की उपासना करने की १७ आज्ञा दी। तौभी प्रजा के लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान करते रहे पर केवल अपने परमेश्वर यहोवा के १८ लिये। मनश्शे के और काम और उस ने जो प्रार्थना अपने परमेश्वर से की और उन दर्शियों के वचन जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से उस से बातें करते थे यह सब इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त में लिखा हुआ १९ है। और उस की प्रार्थना और वह कैसे सुनी गई और उस का सारा पाप और विश्वासघात और उस ने दीन होने से पहिले कहां कहां ऊंचे स्थान बनवाये और अशेरा नाम और खुदी हुई मूर्त्तियां खड़ी कराईं यह सब होज़ै २० के वचनों में लिखा है। निदान मनश्शे अपने पुरखाओं के संग सोया और उसे उसी के घर में मिट्टी दी गई और उस का पुत्र आमोन उस के स्थान पर राजा हुआ॥

(आमोन का राज्य)

२१ जब आमोन राज्य करने लगा तब वह बाईस बरस का था और यरूशलेम में दो बरस लों राज्य करता रहा। २२ और उस ने अपने पिता मनश्शे की नाईं वह किया जो यहोवा के लेखे बुरा है और जितनी मूर्त्तियां उस के पिता मनश्शे ने खोदकर बनवाई थीं वह उन सभों के साम्हने २३ बलिदान और उन सभों की उपासना करता था। और जैसे उस का पिता मनश्शे यहोवा के साम्हने दीन हुआ वैसे वह दीन न हुआ बरन यह आमोन अधिक दोषी २४ होता गया। और उस के कर्म्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी २५ करके उस को उसी के भवन में मार डाला। तब साधारण लोगों ने उन सभों को मार डाला जिन्हों ने राजा आमोन से द्रोह की गोष्ठी की थी और लोगों ने उस के पुत्र योशिय्याह को उस के स्थान पर राजा किया॥

(योशिय्याह का किया हुआ सुधराव और व्यवस्था की पुस्तक का मिलना)

३४. जब योशिय्याह राज्य करने लगा तब आठ बरस का था और २ यरूशलेम में एकतीस बरस तक राज्य करता रहा। उस ने वह किया जो यहोवा के लेखे ठीक है और जिन मार्गों पर उस का मूलपुरुष दाऊद चलता रहा उन्हीं पर वह भी चला और उस से न तो दहिनी ओर मुड़ा और न ३ बाईं ओर। वह लड़का ही था अर्थात् उस को गद्दी पर बैठे आठ बरस पूरे न हुए थे कि अपने मूलपुरुष दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा और बारहवें बरस में वह ऊंचे स्थानों और अशेरा नाम मूरतों को और खुदी और ढली हुई मूरतों को दूर करके यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध करने लगा। ४ और बालदेवताओं की वेदियां उस के साम्हने तोड़ डाली गईं और सूर्य्य की प्रतिमायें जो उन के ऊपर ऊंचे पर थीं उस ने काट डालीं और अशेरा नाम और खुदी और ढली हुई मूरतों को उस ने तोड़कर पीस डाला और उन की बुकनी उन लोगों की ५ कबरों पर छितरा दी जो उन को बलि चढ़ाते थे। और पुजारियों की हड्डियां उस ने उन्हीं की वेदियों पर जलाईं। ६ यों उस ने यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध किया। फिर मनश्शे एप्रैम और शिमोन के बरन नप्ताली तक के नगरों ७ के खण्डहरों में, उस ने वेदियों को तोड़ डाला और अशेरा नाम और खुदी हुई मूरतों को पीसकर बुकनी कर डाला और इस्राएल के सारे देश में की सूर्य्य की सब प्रतिमाओं को काटकर यरूशलेम को लौट गया॥

८ फिर अपने राज्य के अठारहवें बरस में जब वह देश और भवन दोनों को शुद्ध कर चुका तब उस ने असल्याह के पुत्र शापान और नगर के हाकिम मासेयाह और योआहाज के पुत्र इतिहास के लिखनेहारे योआह को अपने परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत कराने के ९ लिये भेज दिया। सो उन्हों ने हिल्किय्याह महायाजक के पास जाकर जो रुपया परमेश्वर के भवन में लाया गया था अर्थात् जो लेवीय डेवढ़ीदारों ने मनश्शियों एप्रैमियों और सब बचे हुए इस्राएलियों से और सब यहूदियों और बिन्यामीनियों से और यरूशलेम के निवासियों के हाथ से १० लेकर इकट्ठा किया था, उस को सौंप दिया अर्थात् उन्हों ने उसे उन काम करनेहारों के हाथ सौंप दिया जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिये थे और यहोवा के भवन के उन काम करनेहारों ने उसे भवन में जो कुछ टूटा फूटा ११ था उस की मरम्मत करने में लगाया। अर्थात् उन्हों ने उसे बढ़इयों और राजों को दिया कि वे गढ़े हुए पत्थर और जोड़ों के लिये लकड़ी मोल लें और उन घरों को १२ पाटें जो यहूदा के राजाओं ने नाश कर दिये थे। और वे मनुष्य सच्चाई से काम करते थे और उन के अधिकारी मरारीय यहत् और ओबद्याह लेवीय और कहाती जकर्याह और मशुल्लाम काम चलानेहारे और गाने बजाने का भेद १३ सब जाननेहारे लेवीय भी थे। फिर वे बोझियों के अधिकारी थे और भान्ति भान्ति की सेवकाई और काम चलानेहारे थे और कुछ लेवीय मुन्शी सरदार और डेवढ़ीदार थे॥

१४ जब वे उस रुपये को जो यहोवा के भवन में पहुंचाया गया था निकाल रहे थे तब हिल्किय्याह याजक को मूसा के द्वारा दी हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक १५ मिली। तब हिल्किय्याह ने शापान मंत्री से कहा मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है सो १६ हिल्किय्याह ने शापान को वह पुस्तक दी। तब शापान उस पुस्तक को राजा के पास ले गया और यह संदेश दिया कि जो जो काम तेरे कर्म्मचारियों को सौंपा गया था १७ उसे वे कर रहे हैं। और जो रुपया यहोवा के भवन में मिला उस को उन्हों ने उण्डेलकर मुखियों और कारीगरों १८ के हाथों में सौंप दिया है। फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया कि हिल्किय्याह याजक ने मुझे एक पुस्तक दी है तब शापान ने उस में से राजा को पढ़कर १९ सुनाया। व्यवस्था की वे बातें सुनकर राजा ने अपने २० वस्त्र फाड़े। फिर राजा ने हिल्किय्याह शापान के पुत्र अहीकाम मीका के पुत्र अब्दोन शापान मंत्री और असा- २१ याह नाम अपने कर्म्मचारी को आज्ञा दी कि, तुम जाकर मेरी ओर से और इस्राएल और यहूदा में रहे हुओं की ओर से इस पाई हुई पुस्तक के वचनों के विषय यहोवा से पूछो क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इसलिये भड़की है कि हमारे पुरखाओं ने यहोवा का वचन न माना और इस पुस्तक में लिखी हुई सब आज्ञाएं २२ न पाली थीं। सो हिल्किय्याह ने राजा के और और दूतों समेत हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से उसी बात के अनुसार बातें कीं वह तो उस शल्लूम की स्त्री थी जो तोखत का पुत्र और हस्रा का पोता और वस्त्रालय का रखवाला था और वह स्त्री यरूशलेम के नये टोले में २३ रहती थी। उस ने उन से कहा इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि, जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास २४ भेजा उस से यह कहो कि, यहोवा यों कहता है कि सुन मैं इस स्थान और इस के निवासियों पर विपत्ति डालकर यहूदा के राजा के साम्हने जो पुस्तक पढ़ी गई उस में २५ जितने स्राप लिखे हैं उन सभों को पूरा करूंगा। उन लोगों ने मुझे त्याग करके पराये देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई है इस कारण मेरी जलजलाहट इस २६ स्थान पर भड़क उठी है और शांत न होगी। पर यहूदा का राजा जिस ने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेज दिया उस से तुम यों कहो कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा २७ यों कहता है कि इसलिये कि तू वे बातें सुनकर, दीन हुआ और परमेश्वर के साम्हने अपना सिर नवाया और उस की बातें सुनकर जो उस ने इस स्थान और इस के निवासियों के विरुद्ध कहीं तू ने मेरे साम्हने अपना सिर नवाया और वस्त्र फाड़कर मेरे साम्हने रोया है इस कारण २८ मैं ने तेरी सुनी है यहोवा की यही वाणी है। सुन मैं तुझे तेरे पुरखाओं के संग ऐसा मिलाऊंगा कि तू शांति से अपनी कबर को पहुंचाया जायगा और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर और इस के निवासियों पर डाला चाहता हूं उस में से तुझे अपनी आंखों से कुछ देखना न पड़ेगा तब उन लोगों ने लौटकर राजा को यही संदेशा दिया॥

२९ तब राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियों ३० को इकट्ठे होने को बुलवा भेजा। और राजा यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों और याजकों और लेवीयों बरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन को गया तब उस ने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी उस में की सारी ३१ बातें उन को पढ़कर सुनाईं। तब राजा ने अपने स्थान पर खड़ा होकर यहोवा से इस आशय की वाचा बांधी कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा और अपने सारे मन और सारे जीव से उस की आज्ञाएं चितौनियां और

विधियां पाला करूंगा और इस वाचा की बातों को जो
३२ इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूंगा । और उस ने उन सभों से जो यरूशलेम में और बिन्यामीन में थे वैसी ही वाचा बन्धाई । और यरूशलेम के निवासी परमेश्वर जो उन के पितरों का परमेश्वर था उस की वाचा के अनुसार करने
३३ लगे । और योशिय्याह ने इस्राएलियों के सब देशों में से सब घिनौनी वस्तुओं को दूर करके जितने इस्राएल में मिले उन सभों से उपासना कराई अर्थात् उन के परमेश्वर यहोवा की उपासना कराई । सो उस के जीवन भर उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना न छोड़ा ॥

(योशिय्याह का किया हुआ फसह)

३५. और योशिय्याह ने यरूशलेम में यहोवा के लिये फसह माना और पहिले महीने के चौदहवें दिन को फसह का पशु बलि
२ किया गया । और उस ने याजकों को अपने अपने काम में ठहराया और यहोवा के भवन में की सेवा करने को उन
३ का हियाव बन्धाया । फिर लेवीय जो सब इस्राएलियों को सिखाते और यहोवा के लिये पवित्र ठहरे थे उन से उस ने कहा तुम पवित्र संदूक को उस भवन में रक्खो जो दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान ने बनवाया था अब तुम को कंधों पर बोझ उठाना न होगा सो अब अपने परमेश्वर यहोवा की और उस की प्रजा इस्राएल
४ की सेवा करो । और इस्राएल के राजा दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान दोनों की लिखी हुई विधियों के अनुसार अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार अपने अपने
५ दल में तैयार रहो । और तुम्हारे भाई लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार पवित्रस्थान में खड़े रहो अर्थात् उन के एक भाग के लिये लेवीयों के एक एक पितर के
६ घराने का एक भाग हो । और फसह के पशुओं को बलि करो और अपने अपने को पवित्र करके अपने भाइयों के लिये तैयारी करो कि वे यहोवा के उस वचन के अनुसार
७ कर सकें जो उस ने मूसा के द्वारा कहा था । फिर योशिय्याह ने सब लोगों को जो वहां हाजिर थे तीस हजार भेड़ों और बकरियों के बच्चे और तीन हजार बैल दिये ये सब फसह के बलिदानों के लिये और राजा की संपत्ति में से दिये
८ गये । और उस के हाकिमों ने प्रजा के लोगों याजकों और लेवीयों को स्वेच्छाबलियों के लिये पशु दिये । और हिल्किय्याह जकर्याह और यहीएल नाम परमेश्वर के भवन के प्रधानों ने याजकों को दो हजार छः सौ भेड़ बकरियां और तीन सौ बैल फसह के बलिदानों के लिये
९ दिये । और कोनन्याह ने और शमायाह और नतनेल जो उस के भाई थे और हसब्याह यीएल और योजाबाद नाम लेवीयों के प्रधानों ने लेवीयों को पांच हजार भेड़ बकरियां और पांच सौ बैल फसह के बलिदानों के लिये दिये । यों
१० उपासना की तैयारी हो गई और राजा की आज्ञा के अनुसार याजक अपने अपने स्थान पर और लेवीय अपने
११ अपने दल में खड़े हुए । तब फसह के पशु बलि किये गये और याजक बलि करनेहारों के हाथ से लोहू को लेकर
१२ छिड़क देते और लेवीय उन की खाल उतारते गये । तब उन्हों ने होमबलि के पशु इसलिये अलग किये कि उन्हें लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार दें कि वे उन्हें यहोवा के लिये चढ़वा दें जैसे कि मूसा की पुस्तक में लिखा है और बैलों को भी उन्हों ने वैसा ही किया ।
१३ तब उन्हों ने फसह के पशुओं का मांस विधि के अनुसार आग में भूंजा और पवित्र वस्तुएं हंडियों और हंडों और थालियों में सिझा कर फुर्ती से लोगों को पहुंचा दिया ।
१४ और पीछे उन्हों ने अपने लिये और याजकों के लिये तैयारी की क्योंकि हारून की सन्तान के याजक होमबलि के पशु और चरबी रात लों चढ़ाते रहे इस कारण लेवीयों ने अपने लिये और हारून की सन्तान के याजकों के लिये
१५ तैयारी की । और आसाप के वंश के गवैये दाऊद आसाप हेमान और राजा के दर्शी यदूतून की आज्ञा के अनुसार अपने अपने स्थान पर रहे और डेवढ़ीदार एक एक फाटक पर रहे उन्हें अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा क्योंकि उन के भाई लेवीयों ने उन के लिये तैयारी
१६ की । यों उसी दिन राजा योशिय्याह की आज्ञा के अनुसार यहोवा की सारी उपासना की तैयारी की गई कि फसह मानना और यहोवा की वेदी पर होमबलि
१७ चढ़ाना हो सका । सो जो इस्राएली वहां हाजिर थे उन्हों ने फसह को उसी समय और अखमीरी रोटी के पर्व
१८ को सात दिन तक माना । इस फसह के बराबर शमूएल नबी के दिनों से इस्राएल में कोई फसह माना न गया था और न इस्राएल के किसी राजा ने ऐसा माना जैसा योशिय्याह और याजकों लेवीयों और जितने यहूदी और इस्राएली हाजिर थे उन्हों ने और यरूशलेम
१९ के निवासियों ने माना । यह फसह योशिय्याह के राज्य के अठारहवें बरस में माना गया ॥

(योशिय्याह की मृत्यु)

२० इस सब के पीछे जब योशिय्याह भवन को तैयार कर चुका तब मिस्र के राजा नको ने परात के पास के कर्कमीश नगर से लड़ने को चढ़ाई की और योशिय्याह
२१ उस का साम्हना करने को गया । पर उस ने उस के पास दूतों से कहला भेजा कि हे यहूदा के राजा मेरा तुझ से क्या काम आज मैं तुझ पर नहीं उसी कुल पर चढ़ाई

कर रहा हूं जिस के साथ मैं युद्ध करता हूं फिर परमेश्वर ने मुझ से फुर्ती करने को कहा है सो परमेश्वर जो मेरे संग है उस से अलग रह ऐसा न हो कि वह तुझे नाश २२ करे। पर योशिय्याह ने उस से मुंह न मोड़ा बरन उस से लड़ने के लिये भेष बदला और नको के उन बचनों को न माना जो उस ने परमेश्वर की ओर से कहे थे और मगिद्दो की तराई में उस से युद्ध करने को गया। २३ तब धनुर्धारियों ने राजा योशिय्याह की ओर तीर छोड़े और राजा ने अपने सेवकों से कहा मैं तो बहुत घायल २४ हुआ सो मुझे यहां से ले जाओ। तब उस के सेवकों ने उस को रथ पर से उतारकर उस के दूसरे रथ पर चढ़ाया और यरूशलेम को ले गये और वह मर गया और उस के पुरखाओं के कब्रिस्तान में उस को मिट्टी दी गई और यहूदियों और यरूशलेमियों ने योशिय्याह २५ के लिये बिलाप किया। और यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिये बिलाप का गीत बनाया और सब गानेहारे और गानेहारियां अपने बिलाप के गीतों में योशिय्याह की चर्चा आज तक करती हैं और इन का गाना इस्राएल में बिधि करके ठहराया गया और ये बातें बिलापगीतों में २६ लिखी हुई हैं। योशिय्याह के और काम और भक्ति के जो काम उस ने उसी के अनुसार किये जो यहोवा की २७ व्यवस्था में लिखा हुआ है, और आदि से अन्त लों उस के सब काम इस्राएल और यहूदा के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखे हुए हैं॥

(यहोआहाज यहोयाकीम यहोयाकीन और सिदकिय्याह के राज्य)

३६. तब देश के लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उस के २ पिता के स्थान पर यरूशलेम में राजा किया। जब यहोआहाज राज्य करने लगा तब वह तेईस बरस का था ३ और तीन महीने लों यरूशलेम में राज्य करता रहा। तब मिस्र के राजा ने उस को यरूशलेम में राजगद्दी से उतार दिया और देश पर सौ किक्कार चान्दी और किक्कार भर ४ सोना जुरमाना लगाया। तब मिस्र के राजा ने उस के भाई एल्याकीम को यहूदा और यरूशलेम पर राजा किया और उस का नाम बदलकर यहोयाकीम रक्खा। और नको उस के भाई यहोआहाज को मिस्र में ले गया॥

५ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा तब वह पचीस बरस का था और ग्यारह बरस तक यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस ने वह काम किया जो उस के ६ परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है। उस पर बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने चढ़ाई की और बाबेल ले जाने ७ के लिये उस के बेड़ियां डाल दीं। फिर नबूकदनेस्सर ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र बाबेल ले जाकर अपने मन्दिर में जो बाबेल में था रख दिये। ८ यहोयाकीम के और काम और उस ने जो जो घिनौने काम किये और उस में जो जो बुराइयां पाई गईं सो इस्राएल और यहूदा के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। और उस का पुत्र यहोयाकीन उस के स्थान पर राजा हुआ॥

९ जब यहोयाकीन राज्य करने लगा तब वह आठ बरस का था और तीन महीने और दस दिन लों यरूशलेम में राज्य करता रहा और उस ने वह किया जो परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है। १० नये बरस के लगते ही नबूकदनेस्सर ने भेजकर उसे और यहोवा के भवन के मनभावने पात्रों को बाबेल में पहुंचा दिया और उस के भाई सिदकिय्याह को यहूदा और यरूशलेम पर राजा किया॥

११ जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा तब वह इक्कीस बरस का था और यरूशलेम में ग्यारह बरस लों राज्य करता रहा। १२ और उस ने वही किया जो उस के परमेश्वर यहोवा के लेखे बुरा है यद्यपि यिर्मयाह नबी यहोवा की ओर से बातें कहता था तौभी वह उस के साम्हने दीन न हुआ। १३ फिर नबूकदनेस्सर जिस ने उसे परमेश्वर की किरिया खिलाई थी उस से उस ने बलवा किया और उस ने हठ किया[१] और अपना मन कठोर किया कि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर न फिरे॥

(यहूदियों की बंधुआई)

१४ बरन सब प्रधान याजकों ने और लोगों ने भी अन्य जातियों के से घिनौने काम करके बहुत बड़ा विश्वासघात किया और यहोवा के भवन को जो उस ने यरूशलेम में पवित्र किया था अशुद्ध कर डाला। १५ और उन के पितरों के परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्न करके[२] अपने दूतों से उन के पास कहला भेजा क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था। १६ पर वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते उस के वचनों को तुच्छ जानते और उस के नबियों की हंसी करते थे। निदान यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुंझला उठा कि बचने का कोई उपाय न रहा। १७ सो उस ने उन पर कसदियों के राजा से चढ़ाई कराई और इस ने उन के जवानों को उन के पवित्र भवन ही में तलवार से मार डाला और क्या जवान क्या कुंवारी क्या बूढ़े क्या पक्के बालवाले किसी पर भी कोमलता न की यहोवा ने सभों को उस के हाथ कर दिया। १८ और क्या छोटे क्या बड़े

(१) मूल में अपनी गर्दन कठोर की।
(२) मूल में तड़के उठ उठकर।

परमेश्वर के भवन के सब पात्र और यहोवा के भवन और राजा और उस के हाकिमों के खजाने इन सभों को वह बाबेल में ले गया। १९ और कसदियों ने परमेश्वर का भवन फूंक दिया और यरूशलेम की शहरपनाह को तोड़ डाला और आग लगाकर उस में के सब भवनों को जलाया और उस में का सारा मनभावना सामान नाश किया। २० और जो तलवार से बच गये उन्हें वह बाबेल को ले गया और फारस के राज्य के प्रबल होने लों वे उस के और उस के बेटे पोतों के अधीन रहे। २१ यह सब इसलिये हुआ कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था सो पूरा हो कि देश अपने विश्राम कालों में सुख भोगता रहे सो जब लों वह सूना पड़ा रहा तब लों अर्थात् सत्तर बरस के पूरे होने लों उस को विश्राम रहा॥

(यहूदियों का फिर भाग्यवान होना)

२२ फारस के राजा कुस्रू के पहिले बरस में यहोवा ने उस के मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था सो पूरा हो सो उस ने अपने सारे राज्य में यह प्रचार कराया और इस आशय की चिट्ठियां लिखाईं कि, २३ फारस का राजा कुस्रू यों कहता है कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने तो पृथिवी भर का राज्य मुझे दिया है और उसी ने मुझे आज्ञा दी कि यरूशलेम जो यहूदा में है मेरा एक भवन बनवा सो हे उस की सारी प्रजा के लोगो तुम में से जो कोई चाहे उस का परमेश्वर यहोवा उस के संग रहे और वह वहां जाए[१]॥

(१) मूल में चढ़े।

एज्रा नाम पुस्तक।

(बन्धुए यहूदियों का यरूशलेम को लौट जाना)

१. फारस के राजा कुस्रू के पहिले बरस में यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था सो पूरा हो जाए सो उस ने अपने सारे राज्य में यह प्रचार कराया और लिखा भी २ दिया कि, फारस का राजा कुस्रू यों कहता है कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथिवी भर का राज्य मुझे दिया है और उस ने मुझे आज्ञा दी कि यहूदा के यरूशलेम ३ में मेरा एक भवन बनवा। उस की सारी प्रजा के लोगों में से तुम्हारे बीच जो कोई हो उस का परमेश्वर उस के संग रहे और वह यहूदा के यरूशलेम को जाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए जो यरूशलेम ४ में है वही परमेश्वर है। और जो कोई किसी स्थान में रह गया हो जहां वह रहता हो उस स्थान के मनुष्य चान्दी सोना धन और पशु देकर उस की सहायता करें और इस से अधिक परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन ५ के लिये अपनी अपनी इच्छा से भी भेंट करें। तब यहूदा और बिन्यामीन के जितने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों और याजकों और लेवीयों का मन परमेश्वर ने उभारा कि जाकर यहोवा के यरूशलेम में के भवन को बनाएं ६ सो सब उठ खड़े हुए। और उन के आसपास सब रहनेवालों ने चान्दी के पात्र सोना धन पशु और अनमोल वस्तुएं देकर उन की सहायता की यह उस सब से अधिक था जो लोगों ने अपनी अपनी इच्छा से दिया। ७ फिर यहोवा के भवन के जो पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से निकालकर अपने देवता के भवन में रक्खे ८ थे उन को कुस्रू राजा ने, मिथ्रदात खजांची से निकलवाकर यहूदियों के शेशबस्सर नाम प्रधान को गिनकर सौंप ९ दिया। उन की गिनती यह थी अर्थात् सोने के तीस और चान्दी के एक हजार परात और उनतीस छुरी, १० सोने के तीस और मध्यम प्रकार के चांदी के चार सौ ११ दस कटोरे और और प्रकार के पात्र एक हजार। सोने चांदी के पात्र सब मिलकर पांच हजार चार सौ हुए। इन सभों को शेशबस्सर उस समय ले आया जब बंधुए बाबेल से यरूशलेम को आये॥

(लौटे हुए यहूदियों का ब्योरा)

२. जिन को बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर बाबेल को बंधुआ करके ले गया था उन में से प्रान्त के जो लोग बंधुआई से छूटकर यरूशलेम

और यहूदा को अपने अपने नगर में लौटे सो ये
हैं। ये जरुब्बाबेल येशू नहेम्याह सराथाह रेलायाह मौर्दकै
बिलशान मिस्पार बिगवै रहूम और बाना के संग आये।
२ इस्राएली प्रजा के मनुष्यों की यह गिनती है अर्थात्,
३,४ परोश के सन्तान दो हजार एक सौ बहत्तर, शपत्याह
५ के सन्तान तीन सौ बहत्तर, आरह के सन्तान सात सौ
६ पछहत्तर, पहत्मोआब के सन्तान येशू और योआब की
७ सन्तान में से दो हजार आठ सौ बारह, एलाम के
८ सन्तान बारह सौ चौवन, जत्तू के सन्तान नौ सौ
९,१० पैंतालीस, जक्कै के सन्तान सात सौ साठ, बानी के
११ सन्तान छः सौ बयालीस, बेबै के सन्तान छः सौ
१२,१३ तेईस, अजगाद के सन्तान बारह सौ बाईस, अदोनीकाम
१४ के सन्तान छः सौ छियासठ, बिग्वै के सन्तान दो हजार
१५,१६ छप्पन, आदीन के सन्तान चार सौ चौवन, यहिज-
१७ किय्याह के सन्तान आतेर की सन्तान में से अट्ठानवे, बेसै
१८ के सन्तान तीन सौ तेईस, योरा के लोग एक सौ बारह,
१९, २० हाशूम के लोग दो सौ तेईस, गिब्बार के लोग
२१, २२ पंचानवे, बेतलेहेम के लोग एक सौ तेईस, नतोपा
२३ के मनुष्य छप्पन, अनातोत के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस,
२४,२५ अज्मावेत के लोग बयालीस, किर्यतारीम कपीरा
२६ और बेरोत के लोग सात सौ तैंतालिस, रामा और गेबा
२७ के लोग छः सौ इक्कीस, मिकमास के मनुष्य एक सौ
२८,२९ बाईस, बेतेल और ऐ के मनुष्य दो सौ तेईस, नबो
३० के लोग बावन, मग्बीस के सन्तान एक सौ छप्पन,
३१,३२ दूसरे एलाम के सन्तान बारह सौ चौवन, हारीम के
३३ सन्तान तीन सौ बीस, लोद हादीद और ओनो के लोग
३४ सात सौ पचीस, यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस,
३५,३६ सना के लोग तीन हजार छः सौ तीस। फिर
याजकों अर्थात् येशू के घराने में से यदायाह के सन्तान
३७ नौ सौ तिहत्तर, इम्मेर के सन्तान एक हजार बावन,
३८,३९ पशहूर के सन्तान बारह सौ सैंतालीस, हारीम के सन्तान
४० एक हजार सतरह। फिर लेवीय अर्थात् येशू के सन्तान
और कदमिएल के सन्तान होदव्याह की सन्तान में से
४१ चौहत्तर। फिर गवैयों में से आसाप के सन्तान एक सौ
४२ अट्ठाईस। फिर डेवढ़ीदारों के सन्तान, शल्लूम के सन्तान
आतेर के सन्तान तल्मोन के सन्तान अक्कूब के सन्तान
हतीता के सन्तान और शोबै के सन्तान ये सब मिलकर
४३ एक सौ उनतालीस हुए। फिर नतीन के सन्तान सीहा
४४ के सन्तान हसूपा के सन्तान तब्बाओत के सन्तान। केरोस
४५ के सन्तान सीअहा के सन्तान पादोन के सन्तान, लबाना
४६ के सन्तान हगाबा के सन्तान अक्कूब के सन्तान, हागाब
४७ के सन्तान शमलै के सन्तान हानान के सन्तान, गिद्देल
के संतान गहर के संतान राथाह के संतान, रसीन के संतान ४८
नकोदा के संतान गज्जाम के संतान, उज्जा के संतान ४९
पासेह के संतान बेसै के संतान, अस्ना के संतान मूनीम ५०
के संतान नपीसीम के संतान, बकबूक के संतान हकूपा ५१
के संतान हर्हूर के संतान, बसलूत के संतान महीदा ५२
के संतान हर्शा के संतान, बर्कोस के संतान सीसरा के ५३
संतान तेमह के संतान, नसीह के संतान और हतीपा ५४
के संतान। फिर सुलैमान के दासों के संतान सोतै के ५५
संतान हस्सोपेरेत के संतान परूदा के संतान, याला ५६
के संतान दर्कोन के संतान गिद्देल के संतान, शपत्याह ५७
के संतान हत्तील के संतान पोकरेतसबायीम के संतान
और आमी के संतान। सब नतीन और सुलैमान के ५८
दासों के संतान तीन सौ बानवे थे॥

फिर जो तेल्मेलह तेलहर्शा करूब अद्दान और इम्मेर ५९
से आये पर वे अपने अपने पितर के घराने और वंशावली[१]
न बता सके कि इस्राएल के हैं सो ये हैं, अर्थात् दला- ६०
याह के संतान तोबिय्याह के संतान और नकोदा के संतान
जो मिलकर छः सौ बावन थे। और याजकों की संतान ६१
में से हबायाह के संतान हक्कोस के संतान और बर्जिल्लै
के संतान जिस ने गिलादी बर्जिल्लै की एक बेटी को
ब्याह लिया और उसी का नाम रख लिया था। इन ६२
सभों ने अपनी अपनी वंशावली का पत्र औरों को वंशावली
की पोथियों में ढूंढ़ा पर वे न मिले इसलिये वे अशुद्ध
ठहराकर याजकपद से निकाले गये। और अधिपति[२] ने ६३
उन से कहा कि जब लों ऊरीम और तुम्मीम धारण
करनेहारा कोई याजक न हो तब लों तुम कोई परमपवित्र
वस्तु खाने न पाओगे॥

सारी मण्डली मिलकर बयालीस हजार तीन सौ ६४
साठ की थी। इन को छोड़ इन के सात हजार तीन ६५
सौ सैंतीस दास दासियां और दो सौ गानेवाले और
गानेवालियां थीं। उन के घोड़े सात सौ छत्तीस खच्चर दो ६६
सौ पैंतालीस, ऊंट चार सौ पैंतीस और गदहे छः हजार ६७
सात सौ बीस थे। और पितरों के घरानों के कुछ मुख्य ६८
मुख्य पुरुषों ने जब यहोवा के यरूशलेम में के भवन को
आये तब परमेश्वर के भवन को उसी के स्थान में खड़ा
करने के लिये अपनी अपनी इच्छा से कुछ दिया।
उन्हों ने अपनी अपनी पूंजी के अनुसार इकसठ ६९
हजार दर्कमोन सोना और पांच हजार माने चांदी और
याजकों के योग्य एक सौ अंगरखे अपनी अपनी इच्छा से
उस काम के खजाने में दे दिये। सो याजक और लेवीय ७०
और लोगों में से कुछ और गवैये और डेवढ़ीदार और

(१) मूल में वंश। (२) मूल में तिर्शाता।

नतीन लोग अपने अपने नगर में और सब इस्राएली अपने अपने नगर में फिर बस गये ॥

(वेदी का बनाया जाना)

३. जब सातवां महीना आया और इस्राएली अपने अपने नगर में बस थे तब
२ लोग यरूशलेम में एक मन होकर इकट्ठे हुए। तब अपने भाई याजकों समेत योसादाक के पुत्र येशू ने और अपने भाइयों समेत शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल ने कमर बांधकर इस्राएल के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि उस पर होमबलि चढ़ाएं जैसे कि परमेश्वर के जन मूसा
३ की व्यवस्था में लिखा है। सो उन्हों ने वेदी को उस के स्थान पर खड़ा किया क्योंकि उन्हें देश देश के लोगों का भय रहा सो वे उस पर यहोवा के लिये होमबलि अर्थात् दिन दिन सवेरे और सांझ के होमबलि चढ़ाने
४ लगे। और उन्हों ने झोंपड़ियों के पर्व को माना जैसे कि लिखा है और दिन दिन के होमबलि एक एक दिन
५ की गिनती और नियम के अनुसार चढ़ाये। और उस के पीछे नित्य होमबलि और नये नये चान्द और यहोवा के पवित्र किये हुये सब नियत पर्वों के बलि और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये सब स्वेच्छाबलि देनेहारों
६ के बलि चढ़ाये। सातवें महीने के पहिले दिन से वे यहोवा को होमबलि चढ़ाने लगे परन्तु यहोवा के
७ मन्दिर की नेव तब लों न डाली गई थी। सो उन्हों ने पत्थर गढ़नेहारों और कारीगरों को रुपया और सीदोनी और सोरी लोगों को खाने पीने की वस्तुएं और तेल दिया कि वे फारस के राजा कुस्रू के परवाने के अनुसार देवदार की लकड़ी लबानोन से यापो के पास के समुद्र में पहुंचाएं ॥

(मन्दिर की नेव का डाला जाना)

८ परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन को आने के दूसरे बरस के दूसरे महीने में शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल ने और योसादाक के पुत्र येशू ने और उन के और भाइयों ने जो याजक और लेवीय थे और जितने बन्धुआई से यरूशलेम में आये थे उन्हों ने भी काम का आरम्भ किया और बीस बरस वा उस से अधिक अवस्था के लेवीयों
९ को यहोवा के भवन का काम चलाने को ठहराया। सो येशू और उस के बेटे और भाई और कदमीएल और उस के बेटे जो यहूदा के सन्तान थे और हेनादाद के सन्तान और उन के बेटे परमेश्वर के भवन में कारीगरों
१० का काम चलाने को खड़े हुये। और जब राजों ने यहोवा के मन्दिर की नेव डाली तब अपने वस्त्र पहिने हुए और तुरहियां लिये हुए याजक और झांझ लिये हुये आसाप के वंश के लेवीय इसलिये ठहराये गये कि इस्राएलियों के राजा दाऊद की चलाई हुई रीति[१] के अनुसार यहोवा
११ की स्तुति करें। सो वे यह गा गाकर यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे कि वह भला है और उस की करुणा इस्राएल पर सदा की है। और जब वे यहोवा की स्तुति करने लगे तब सब लोगों ने यह जानकर कि यहोवा के भवन की नेव अब पड़ रही है ऊंचे शब्द से
१२ जयजयकार किया। परन्तु बहुतेरे याजक और लेवीय और पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष अर्थात् वे बूढ़े जिन्हों ने पहिला भवन देखा था जब इस भवन की नेव उन की आंखों के साम्हने पड़ी तब फूट फूटकर रोये और बहुतेरे आनन्द के मारे ऊंचे शब्द से जयजयकार कर रहे थे।
१३ सो लोग आनन्द के जयजयकार का शब्द लोगों के रोने के शब्द से अलग पहिचान न सके क्योंकि लोग ऊंचे शब्द से जयजयकार कर रहे थे और वह शब्द दूर लों सुनाई देता था ॥

(यहूदियों के शत्रुओं से मन्दिर के बनने का रोका जाना)

४. जब यहूदा और बिन्यामीन के शत्रुओं ने यह सुना कि बन्धुआई से छूटे हुए लोग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये मन्दिर बना
२ रहे हैं, तब वे जरुब्बाबेल और पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों के पास आकर उन से कहने लगे हमें भी अपने संग बनाने दो क्योंकि तुम्हारी नाईं हम भी तुम्हारे परमेश्वर की खोज में लगे हैं और अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन जिस ने हमें यहां पहुंचाया उस के दिनों से
३ हम उसी को बलि चढ़ाते हैं। जरुब्बाबेल येशू और इस्राएल के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों ने उन से कहा हमारे परमेश्वर के लिये भवन बनाने में तुम को हम से कुछ काम नहीं हम ही लोग एक संग होकर फारस के राजा कुस्रू की आज्ञा के अनुसार इस्राएल के
४ परमेश्वर यहोवा के लिये उसे बनाएंगे। तब उस देश के लोग यहूदियों के हाथ ढीले करने और उन्हें डराकर
५ बनाने में रोकने लगे, और रुपए देकर उन का विरोध करने को वकील करके फारस के राजा कुस्रू के जीवन भर वरन फारस के राजा दारा के राज्य के समय लों यहूदियों की युक्ति निष्फल कर रक्खी ॥
६ क्षयर्ष के राजा के पहिले दिनों में तो उन्हों ने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों का दोषपत्र लिख भेजा।
७ फिर अर्तक्षत्र के दिनों में बिशलाम मिथदात और ताबेल ने अपने और सहचारियों समेत फारस के राजा अर्तक्षत्र को चिट्ठी लिखी और चिट्ठी अरामी अक्षरों और

(१) मूल में दाऊद के हाथ।

८ अरामी भाषा में लिखी गई। अर्थात् रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री ने यरूशलेम के विरुद्ध राजा अर्तक्षत्र को ९ इस आशय की चिट्ठी लिखी। उस समय रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और उन के और सहचारियों ने अर्थात् दीनी अपर्सतकी तर्पली अफारसी एरेकी बाबेली शूशनी १० देहवी एलामी, आदि जातियों ने जिन्हें महान और प्रधान ओस्नप्पर ने पार ले आकर शोमरोन नगर में और महानद के इस पार के शेष देश में बसाया एक चिट्ठी ११ लिखी इत्यादि। जो चिट्ठी उन्हों ने अर्तक्षत्र राजा को लिखी उस की यह नकल है तेरे दास जो महानद के १२ पार के मनुष्य हैं इत्यादि। राजा को यह विदित हो कि जो यहूदी तेरे पास से चले आये सो हमारे पास यरूशलेम को पहुंचे हैं वे उस दंगैत और घिनौने नगर को बसा रहे हैं वरन उस की शहरपनाह को खड़ा कर चुके १३ और उस की नेव को जोड़ चुके हैं। अब राजा को विदित हो कि यदि वह नगर बसाया जाए और उस की शहरपनाह बन चुके तो वे लोग कर चुंगी और राहदारी फिर न देंगे और अन्त में राजाओं की हानि होगी। हम १४ लोग तो राजमन्दिर का नमक खाते हैं और उचित नहीं कि राजा का अनादर हमारे देखते हो इस कारण हम यह १५ चिट्ठी भेजकर राजा को चिता देते हैं, इसलिये कि तेरे पुरखाओं के इतिहास की पुस्तक में खोज की जाए तब इतिहास की पुस्तक में तू यह पाकर जान लेगा कि वह नगर बलवा करनेहारा और राजाओं और प्रान्तों की हानि करनेहारा है और प्राचीन काल से उस में बलवा मचता आया है और इस कारण वह नगर नाश भी १६ किया गया। हम राजा को चिता रखते हैं कि यदि वह नगर बसाया जाए और उस की शहरपनाह बन चुके तो इस कारण से महानद के इस पार तेरा कोई भाग न रह १७ जाएगा। तब राजा ने रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और शोमरोन और महानद के इस पार रहनेहारे उन के और सहचारियों के पास यह उत्तर भेजा कि कुशल इत्यादि। १८ जो चिट्ठी तुम लोगों ने हमारे पास भेजी सो मेरे साम्हने १९ पढ़ कर साफ साफ सुनाई गई। और मेरी आज्ञा से खोज किये जाने पर जान पड़ा है कि वह नगर प्राचीनकाल से राजाओं के विरुद्ध सिर उठाता आया और उस में दंगा २० और बलवा होता आया है। यरूशलेम के सामर्थी राजा भी हुए जो महानद के पार के सारे देश पर राज्य करते थे और कर चुंगी और राहदारी उन को दी जाती थी। २१ सो अब आज्ञा प्रचारो कि वे मनुष्य रोके जाएं और जब लों मेरी ओर से आज्ञा न मिले तब लों वह नगर बनाया २२ न जाए। और चौकस रहो कि इस बात में ढीले न होना राजाओं की हानि करनेवाली वह बुराई क्यों बढ़ने पाए। २३ जब राजा अर्तक्षत्र की यह चिट्ठी रहूम और शिमशै मंत्री और उन के सहचारियों को पढ़कर सुनाई गई तब वे उतावली करके यरूशलेम को यहूदियों के पास गये और २४ भुजबल और बरियाई से उन को रोक दिया। तब परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन का काम रुक गया और फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे बरस लों रुका रहा॥

(मन्दिर के बनने का राजा की आज्ञा से निपटाया जाना)

५. तब हाग्गै नाम नबी और इद्दो का पोता जकर्याह यहूदा और यरूशलेम के यहूदियों से नबूवत करने लगे इस्राएल के परमेश्वर के २ नाम से उन्हों ने उन से नबूवत की। सो शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशू कमर बान्ध कर परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन को बनाने लगे और परमेश्वर के वे नबी उन का साथ देते रहे। ३ उसी समय महानद के इस पार का तत्तनै नाम अधिपति और शतर्बोजनै अपने सहचारियों समेत उन के पास जाकर यों पूछने लगे कि इस भवन के बनाने और इस शहरपनाह के खड़े करने की किस ने तुम को आज्ञा दी है। ४ तब हम लोगों ने उन से यह कहा कि इस भवन के बनाने-५ वालों के क्या क्या नाम हैं। परन्तु यहूदियों के पुरनियों के परमेश्वर की दृष्टि उन पर रही सो जब लों इस बात की चर्चा दारा से न की गई और इस के विषय चिट्ठी के द्वारा उत्तर न मिला तब लों उन्हों ने इन को न रोका॥

६ जो चिट्ठी महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतर्बोजनै और महानद के इस पार के उन के सहचारी अपार्सकियों ने राजा दारा के पास भेजी ७ उस की नकल यह है। उन्हों ने उस को एक चिट्ठी लिखी जिस में यह लिखा था कि राजा दारा का कुशल ८ क्षेम सब प्रकार से हो। राजा को विदित हो कि हम लोग यहूदा नाम प्रान्त में महान् परमेश्वर के भवन के पास गये थे वह बड़े बड़े पत्थरों से बन रहा है और उस की भीतों में कड़ियां जुड़ रही हैं और यह काम उन लोगों से फुर्ती के साथ हो रहा और सुफल भी हो ९ जाता है। सो हम ने उन पुरनियों से यों पूछा कि यह भवन बनवाने और यह शहरपनाह खड़ी करने की १० आज्ञा किस ने तुम्हें दी। और हम ने उन के नाम भी पूछे कि हम उन के मुख्य पुरुषों के नाम लिखकर तुझ को ११ जता सकें। और उन्हों ने हमें यों उत्तर दिया कि हम तो आकाश और पृथिवी के परमेश्वर के दास हैं और जिस भवन को बहुत बरस हुए इस्राएलियों के एक बड़े राजा

ने बनाकर तैयार किया था उसी को हम बना रहे हैं।
१२ जब हमारे पुरखाओं ने स्वर्ग के परमेश्वर को रिस दिलाई थी तब उस ने उन्हें बाबेल के कसदी राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिया और उस ने इस भवन को नाश किया और लोगों को बंधुआ करके बाबेल को ले गया।
१३ पर बाबेल के राजा कुस् के पहिले बरस में उसी कुस् राजा ने परमेश्वर के इस भवन के बनाने की आज्ञा दी।
१४ और परमेश्वर के भवन के जो सोने और चान्दी के पात्र नबूकदनेस्सर यरूशलेम में के मन्दिर में से निकलवा कर बाबेल में के मन्दिर में ले गया था उन को राजा कुस् ने बाबेल में के मन्दिर में से निकलवा कर शेशबस्सर नाम एक पुरुष को जिसे उस ने अधिपति ठहरा
१५ दिया सौंप दिया। और उस ने उस से कहा ये पात्र ले जाकर यरूशलेम में के मन्दिर में रख और परमेश्वर का
१६ वह भवन अपने स्थान पर बनाया जाए। तब उसी शेशबस्सर ने आकर परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन की नेव डाली और तब से अब लों यह बन रहा है पर
१७ अब लों नहीं बन चुका। सो अब यदि राजा को भाए तो बाबेल में के राजभण्डार में इस बात की खोज की जाए की राजा कुस् ने सचमुच परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन के बनवाने की आज्ञा दी थी वा नहीं तब राजा इस विषय में अपनी इच्छा हम को जताए॥

६. तब राजा दारा की आज्ञा से बाबेल के पुस्तकालय में जहां खजाना भी रहता
२ था खोज की गई। और मादै नाम प्रान्त के अहमता नगर के राजगढ़ में एक पुस्तक मिली जिस में यह
३ वृत्तान्त लिखा था कि, राजा कुस् के पहिले बरस में उसी कुस् राजा ने यह आज्ञा दी कि परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन के विषय वह भवन अर्थात् वह स्थान जिस में बलिदान किये जाते थे सो बनाया जाए और उस की नेव दृढ़ता से डाली जाए उस की ऊंचाई
४ और चौड़ाई साठ साठ हाथ की हो। उस में तीन रद्दे भारी भारी पत्थरों के हों और एक परत नई लकड़ी का
५ हो और इन की लागत राजभवन में से दी जाय। और परमेश्वर के भवन के जो सोने और चांदी के पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम में के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल को पहुंचा दिये थे सो लौटाकर यरूशलेम में के मन्दिर के अपने अपने स्थान पर पहुंचाये जाएं और
६ तू उन्हें परमेश्वर के भवन में रख देना। सो अब हे महानद के पार के अधिपति तत्तनै हे शतर्बोजनै तुम अपने सहचारी महानद के पार के अपार्सकियों समेत
७ वहां से अलग रहो। परमेश्वर के उस भवन के काम को रहने दो यहूदियों का अधिपति और यहूदियों के पुरनिये परमेश्वर के उस भवन को उसी के स्थान पर बनाने
८ पाएं। बरन मैं आज्ञा देता हूं कि तुम्हें यहूदियों के उन पुरनियों से ऐसा बर्ताव करना होगा कि परमेश्वर का वह भवन बनाया जाए अर्थात् राजा के धन में से महानद के पार के कर में से उन पुरुषों का फुर्ती के साथ खर्चा दिया
९ जाए ऐसा न हो कि उन को रुकना पड़े। और क्या बछड़े क्या मेढ़े क्या मेम्ने स्वर्ग के परमेश्वर के होमबलियों के लिये जिस जिस वस्तु का उन्हें प्रयोजन हो और जितना गेहूं लोन दाखमधु और तेल यरूशलेम में के याजक कहें सो सब उन्हें बिना भूल चूक दिन दिन दिया जाए इस-
१० लिये कि वे स्वर्ग के परमेश्वर को सुखदायक सुगंधवाले बलि चढ़ाकर राजा और राजकुमारों के दीर्घायु के लिये
११ प्रार्थना किया करें। फिर मैं ने आज्ञा दी है कि जो कोई यह आज्ञा टाले उस के घर में से कड़ी निकाली जाए और उस पर वह आप चढ़ाकर जकड़ा जाए और उस
१२ का घर इस अपराध के कारण घूरा बनाया जाए। और परमेश्वर जिस ने वहां अपने नाम का निवास ठहराया है सो क्या राजा क्या प्रजा उन सभों को उलट दे जो यह आज्ञा टालने और परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम में है नाश करने के लिये हाथ बढ़ाएं। मुझ दारा ने यह आज्ञा दी है फुर्ती से ऐसा ही करना॥

१३ तब महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतर्बोजनै और उन के सहचारियों ने दारा राजा के चिट्ठी
१४ भेजने के कारण उसी के अनुसार फुर्ती से किया। सो यहूदी पुरनिये हाग्गै नबी और इद्दो के पोते जकर्याह के नबूवत करने से मन्दिर को बनाते रहे और कृतार्थ भी हुए और इस्राएल के परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार और फारस के राजा कुस् दारा और अर्तक्षत्र की आज्ञाओं के अनुसार बनाते बनाते उसे पूरा करने पाये।
१५ सो वह भवन राजा दारा के राज्य के छठवें बरस में
१६ अदार महीने के तीसरे दिन को बन चुका। तब इस्राएली अर्थात् याजक लेवीय और और जितने बंधुआई से आये थे उन्हों ने परमेश्वर के उस भवन की प्रतिष्ठा उत्सव
१७ के साथ की। और उस भवन की प्रतिष्ठा में उन्हों ने एक सौ बैल और दो सौ मेढ़े और चार सौ मेम्ने और फिर सारे इस्राएल के निमित्त पापबलि करके इस्राएल
१८ के गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह बकरे चढ़ाये। तब जैसे मूसा की पुस्तक में लिखा है वैसे उन्हों ने परमेश्वर की आराधना के लिये जो यरूशलेम में है बारी बारी के याजकों और दल दल के लेवीयों को ठहरा दिया॥

१९ फिर पहिले महीने के चौदहवें दिन को बंधुआई २० से आये हुए लोगों ने फसह माना । क्योंकि याजकों और लेवीयों ने एक मन होकर अपने अपने को शुद्ध किया था सो वे सब के सब शुद्ध थे और उन्हों ने बंधुआई से आये हुए सब लोगों और अपने भाई याजकों के और २१ अपने अपने लिये फसह के पशु बलि किये । तब बंधुआई से लौटे हुए इस्राएली और जितने उस देश की अन्य जातियों की अशुद्धता से इसलिये अलग होकर यहूदियों से मिल गये थे कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की २२ खोज करें उन सभों ने भोजन किया, और अखमीरी रोटी का पर्ब्ब सात दिन लों आनन्द के साथ मानते रहे क्योंकि यहोवा ने उन्हें आनन्दित किया था और अश्शूर के राजा का मन उन की ओर ऐसा फेर दिया था कि उस ने परमेश्वर अर्थात् इस्राएल के परमेश्वर के भवन के काम में उन को हियाव बंधाया था ॥

(एज्रा का राजा की ओर से यरूशलेम को भेजा जाना)

७. इन बातों के पीछे अर्थात् फारस के राजा अर्तक्षत्र के दिनों में एज्रा बाबेल से यरूशलेम को गया वह सरायाह का पुत्र था और सरायाह २ अजर्याह का पुत्र था अजर्याह हिल्किय्याह का, हिल्किय्याह शल्लूम का शल्लूम सादोक का सादोक अहीतूब का, ३ अहीतूब अमर्याह का अमर्याह अजर्याह का अजर्याह ४ मरायोत का, मरायोत जरह्याह का जरह्याह उज्जी का ५ उज्जी बुक्की का, बुक्की अबीशू का अबीशू पीनहास का पीनहास एलाजार का और एलाजार हारून महायाजक ६ का पुत्र था । वह एज्रा मूसा की व्यवस्था के विषय जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी निपुण शास्त्री था और उस के परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि[१] जो उस पर रही इस के अनुसार राजा ने उस का सारा ७ मांगा बर दे दिया । और कितने इस्राएली और याजक लेवीय गवैये और नतीन अर्तक्षत्र राजा के सातवें बरस ८ में यरूशलेम को गये । और वह राजा के सातवें बरस ९ के पांचवें महीने में यरूशलेम को पहुंचा । पहिले महीने के पहिले दिन को तो वह बाबेल से चल दिया और उस के परमेश्वर की कृपादृष्टि[२] उस पर रही इस से पांचवें १० महीने के पहिले दिन वह यरूशलेम को पहुंचा । क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ बूझ लेने और उस के अनुसार चलने और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था ॥

११ जो चिट्ठी राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा याजक और शास्त्री को दी जो यहोवा की आज्ञाओं के वचनों का और उस की इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था उस की नकल यह है अर्थात्, १२ एज्रा याजक जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री है उस को अर्तक्षत्र महाराजाधिराज की ओर से इत्यादि । १३ मैं यह आज्ञा देता हूं कि मेरे राज्य में जितने इस्राएली और उन के याजक और लेवीय अपनी इच्छा से यरूशलेम जाने चाहें सो तेरे संग जाने पाएं । १४ तू तो राजा और उस के सातों मंत्रियों की ओर से इसलिये भेजा जाता है कि अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है यहूदा और यरूशलेम की दशा बूझ ले, १५ और जो चांदी सोना राजा और उस के मंत्रियों ने इस्राएल के परमेश्वर को जिस का निवास यरूशलेम में है अपनी इच्छा से दिया है, १६ और जितना चांदी सोना सारे बाबेल प्रान्त में तुझे मिलेगा और जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर के भवन के लिये जो यरूशलेम में है देंगे उस को ले जाए । १७ इस कारण तू उस रुपये से फुर्ती के साथ बैल मेढ़े और मेम्ने उन के योग्य अन्नबलि और अर्घ की वस्तुओं समेत मोल ले और उस वेदी पर चढ़ाना जो तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेम में के भवन में है । १८ और जो चांदी सोना बचा रहे उस से जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को उचित जान पड़े सोई अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना । १९ और तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये जो पात्र तुझे सौंपे जाते हैं उन्हें यरूशलेम के परमेश्वर के साम्हने दे देना । २० और इन से अधिक जो कुछ तुझे अपने परमेश्वर के भवन के लिये आवश्यक जानकर देना पड़े सो राजखजाने में से दे देना । २१ मैं अर्तक्षत्र राजा यह आज्ञा देता हूं कि तुम महानद के पार के सब खजांचियों से जो कुछ एज्रा याजक जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का शास्त्री है तुम लोगों से चाहे वह फुर्ती के साथ किया जाए, २२ अर्थात् सौ किक्कार तक चांदी सौ कोर तक गेहूं सौ बत लों दाखमधु सौ बत लों तेल और लोन जितना चाहिये उतना दिया जाए । २३ जो जो आज्ञा स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से मिले ठीक उसी के अनुसार स्वर्ग के परमेश्वर के भवन के लिये किया जाए, राजा और राजकुमारों के राज्य पर परमेश्वर का क्रोध तो क्यों भड़कने पाए । २४ फिर हम तुम को चिता देते हैं कि परमेश्वर के उस भवन के किसी याजक लेवीय गवैये डेवढ़ीदार नतीन वा और किसी सेवक से कर चुंगी वा राहदारी लेने की आज्ञा नहीं है । २५ फिर हे एज्रा तेरे परमेश्वर से मिली हुई बुद्धि के अनुसार जो

(१) मूल में हाथ । (२) मूल में भला हाथ ।

तुझ में है न्यायियों और विचार करनेहारों को ठहराना जो महानद के पार रहनेहारे उन सब लोगों में जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्था जानते हों न्याय किया करें और जो जो उन्हें न जानते हों उन को तुम सिखाया करो। २६ और जो कोई तेरे परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था न माने उस को दण्ड फुर्ती से दिया जाए चाहे प्राणदण्ड चाहे देश निकाला चाहे माल जब्त किया जाना चाहे कैद करना॥

२७ धन्य है हमारे पितरों का परमेश्वर यहोवा जिस ने ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है कि यहोवा के २८ यरूशलेम में के भवन को संवारे, और मुझ पर राजा और उस के मंत्रियों और राजा के सब बड़े बड़े हाकिमों को दयालु किया। सो मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि[१] जो मुझ पर हुई इस के अनुसार मैं ने हियाव बांधा और इस्राएल में से कितने मुख्य पुरुषों को इकट्ठे किया जो मेरे संग चलें॥

(एज्रा का सहचारियों समेत यरूशलेम को पहुंचना)

८. **उन** के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष ये हैं और जो लोग राजा अर्तक्षत्र के राज्य में बाबेल से मेरे संग यरूशलेम को गये २ उन की वंशावली यह है। अर्थात् पीनहास के वंश में से गेर्शोम ईतामार के वंश में से दानिय्येल दाऊद के ३ वंश में से हत्तूश। शकन्याह के वंश के परोश के वंश में से जकर्याह जिस के संग डेढ़ सौ पुरुषों की वंशावली ४ हुई। पहत्मोआब के वंश में से जरह्याह का पुत्र ५ एल्यहोएनै जिस के संग दो सौ पुरुष थे। शकन्याह के वंश में से यहजीएल का पुत्र जिस के संग तीन सौ पुरुष ६ थे। आदीन के वंश में से योनातान का पुत्र एबेद ७ जिस के संग पचास पुरुष थे। एलाम के वंश में से अतल्याह का पुत्र यशायाह जिस के संग सत्तर पुरुष ८ थे। शपत्याह के वंश में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह ९ जिस के संग अस्सी पुरुष थे। योआब के वंश में से यहीएल का पुत्र ओबद्याह जिस के संग दो सौ अठारह १० पुरुष थे। शलोमीत के वंश में से योसिप्याह का पुत्र ११ जिस के संग एक सौ साठ पुरुष थे। बेबै के वंश में से बेबै का पुत्र जकर्याह जिस के संग अट्ठाईस पुरुष थे। १२ अजगाद के वंश में से हक्कातान का पुत्र योहानान जिस १३ के संग एक सौ दस पुरुष थे। अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे गये उन के ये नाम हैं अर्थात् एलीपेलेत यीएल और शमायाह और उन के संग साठ पुरुष थे। और बिग्वै के वंश में से ऊतै और जब्बूद थे और उन के १४ संग सत्तर पुरुष थे॥

१५ इन को मैं ने उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है इकट्ठा कर लिया और वहां हम लोग तीन दिन डेरे डाले रहे और मैं ने वहां लोगों और याजकों को देख लिया पर किसी लेवीय को न पाया। १६ सो मैं ने एलीएजेर अरीएल शमायाह एलनातान यारीब एलनातान नातान जकर्याह और मशुल्लाम को जो मुख्य पुरुष थे और योयारीब और एलनातान को जो बुद्धिमान् थे बुलवाकर, १७ इद्दो के पास जो कासिप्या नाम स्थान का प्रधान था भेज दिया और उन को समझा दिया कि कासिप्या स्थान में इद्दो और उस के भाई नतीन लोगों से क्या क्या कहना कि वे हमारे पास हमारे परमेश्वर के भवन के लिये सेवा टहल करनेहारों को ले आएं। १८ और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि[२] जो हम पर हुई इस के अनुसार वे हमारे पास ईश्शेकेल[३] के जो इस्राएल के परपोता और लेवी के पोता महली के वंश में से था और शेरेब्याह को और उस के १९ पुत्रों और भाइयों को अर्थात् अठारह जनों को, और हशब्याह को और उस के संग मरारी के वंश में से यशायाह को और उस के पुत्रों और भाइयों को अर्थात् २० बीस जनों को, और नतीन लोगों में से जिन्हें दाऊद और हाकिमों ने लेवीयों की सेवा करने को ठहराया था दो सौ बीस नतीनों को ले आये। इन सभों के नाम लिखे हुए २१ थे। तब मैं ने वहां अर्थात् अहवा नदी के तीर पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया कि हम परमेश्वर के साम्हने दीन हों और उस से अपने और अपने बालबच्चों और अपनी सारी संपत्ति के लिये सरल यात्रा मांगें। २२ क्योंकि मैं मार्ग में के शत्रुओं से बचने के लिये सिपाहियों का दल और सवार राजा से मांगने से लजाता था क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे कि हमारा परमेश्वर अपने सब खोजियों पर तो उन की भलाई के लिये कृपादृष्टि[४] रखता पर जो उसे त्याग देते हैं उस का बल २३ और कोप उन के विरुद्ध है। सो इस विषय हम ने उपवास करके अपने परमेश्वर से प्रार्थना की और उस ने हमारी २४ सुनी। तब मैं ने मुख्य याजकों में से बारह पुरुषों को अर्थात् शेरेब्याह हशब्याह और इन के दस भाइयों को २५ अलग करके, जो चांदी सोना और पात्र राजा और उस के मंत्रियों और उस के हाकिमों और जितने इस्राएली हाजिर थे उन्हों ने हमारे परमेश्वर के भवन के लिये भेंट दिये थे उन्हें तौल कर उन को दिया। २६ अर्थात् मैं ने उन के

(१) मूल में हाथ।

(२) मूल में भला हाथ। (३) वा एक बुद्धिमान् पुरुष।
(४) मूल में हाथ।

हाथ में साढ़े छः सौ किक्कार चांदी सौ किक्कार चांदी के
१७ पात्र सौ किक्कार सोना, हजार दर्कमोन के सोने के बीस कटोरे और सोने सरीखे अनमोल चोखे चमकनेहारे
१८ पीतल के दो पात्र तौलकर दे दिये। और मैं ने उन से कहा तुम तो यहोवा के लिये पवित्र हो और ये पात्र भी पवित्र हैं और यह चांदी और सोना भेंट का है जो तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा के लिये प्रसन्नता से दी
१९ गई। सो जागते रहो और जब लों तुम इन्हें यरूशलेम में प्रधान याजकों और लेवीयों और इस्राएल के पितरों के घरानों के प्रधानों के साम्हने यहोवा के भवन की कोठरियों
३० में तौलकर न दो तब लों इन की रक्षा करते रहो। तब याजकों और लेवीयों ने चांदी सोने और पात्रों की तौल कर लिया कि उन्हें यरूशलेम को हमारे परमेश्वर के भवन में पहुंचाएं॥

३१ पहिले महीने के बारहवें दिन को हम ने अहवा नदी से कूच करके यरूशलेम का मार्ग लिया और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि[१] हम पर रही और उस ने हम को शत्रुओं और मार्ग पर घात लगानेहारों के हाथ से
३२ बचाया। निदान हम यरूशलेम को पहुंचे और वहां तीन
३३ दिन रहे। फिर चौथे दिन वह चांदी सोना और पात्र हमारे परमेश्वर के भवन में ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत याजक के हाथ में तौलकर दिये गये और उस के संग पीनहास का पुत्र एलाजार था और उन के संग येशू का पुत्र योजाबाद लेवीय और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह लेवीय
३४ थे। वे सब वस्तुएं गिनी और तौली गईं और उन की
३५ सारी तौल उसी समय लिखी गई। जो बंधुआई से आये थे उन्हों ने इस्राएल के परमेश्वर के लिये होमबलि चढ़ाये अर्थात् सारे इस्राएल के निमित्त बारह बछड़े छियानवे मेढ़े और सतहत्तर मेम्ने और पापबलि के लिये बारह बकरे
३६ यह सब यहोवा के लिये होमबलि था। तब उन्हों ने राजा की आज्ञाएं महानद के इस पार के उस के अधिकारियों और अधिपतियों को दीं और उन्हों ने इस्राएली लोगों और परमेश्वर के भवन के काम की सहायता की॥

(यहूदा के पाप के कारण एज्रा की प्रार्थना)

९. जब ये काम हो चुके तब हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे न तो इस्राएली लोग न याजक न लेवीय देश देश के लोगों से न्यारे हुए बरन उन के से अर्थात् कनानियों हित्तियों परिज्जियों यबूसियों अम्मोनियों मोआबियों मिस्रियों और
२ एमोरियों के से घिनौने काम करते हैं। क्योंकि उन्हों ने उन की बेटियों में से अपने और अपने बेटों के लिये

(१) मूल में हाथ।

स्त्रियां कर ली हैं और पवित्र वंश देश देश के लोगों में मिल गया है बरन हाकिम और सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं। यह बात सुन कर मैं ने अपने वस्त्र
३ और बागे को फाड़ा और अपने सिर और डाढ़ी के बाल
४ नोचे और विस्मित होकर बैठ रहा। तब जितने लोग इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर बंधुआई से आये हुए लोगों के विश्वासघात के कारण थरथराते थे सब मेरे पास इकट्ठे हुए और मैं सांझ की भेंट के समय लों
५ विस्मित होकर बैठा रहा। पर सांझ की भेंट के समय मैं वस्त्र और बागा फाड़े हुए उपवास की दशा में उठा फिर घुटनों के बल झुका और अपने हाथ अपने परमे-
६ श्वर यहोवा की ओर फैलाकर कहा, हे मेरे परमेश्वर मुझे तेरी ओर अपना मुंह उठाते लाज आती है और हे मेरे परमेश्वर मेरा मुंह काला है क्योंकि हम लोगों के अधर्म्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गये हैं और हमारा
७ दोष बढ़ते बढ़ते आकाश लों पहुंचा है। अपने पुरखाओं के दिनों से ले आज के दिन लों हम बड़े दोषी हैं और अपने अधर्म्म के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश देश के राजाओं के हाथ में किये गये कि तलवार बंधुआई लुटे जाने और मुंह काले हो जाने की विपत्तियों में पड़ें जैसे कि आज हमारी दशा है।
८ और अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है कि हम में से कोई कोई बच निकले और हम को उस के पवित्र स्थान में एक खूंटी मिली और हमारे परमेश्वर ने हमारी आंखों में ज्योति आने दी
९ और दासत्व में हम को थोड़ा सा नया जीवन मिला। हम दास तो हैं ही पर हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने हम को नहीं छोड़ दिया बरन फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने और उस के खंडहरों को सुधारने पाये और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़
१० मिली। और अब हे हमारे परमेश्वर इस के पीछे हम क्या कहें यही कि हम ने तेरी उन आज्ञाओं को तोड़
११ दिया है, जो तू ने यह कहकर अपने दास नबियों के द्वारा दीं कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो वह तो देश देश की लोगों की अशुद्धता के कारण और उन के घिनौने कामों के कारण अशुद्ध देश है उन्हों ने तो उसे एक सिवाने से दूसरे सिवाने लों अपनी
१२ अशुद्धता से भर दिया है। सो अब तुम न तो अपनी बेटियां उन के बेटों को ब्याह देना न उन की बेटियों से अपने बेटों का ब्याह करना और न कभी उन का कुशल क्षेम चाहना इसलिये कि तुम बल पकड़ो और

उस देश के अच्छे अच्छे पदार्थ खाने पाओ और उसे ऐसा छोड़ जाओ कि वह तुम्हारे वंश का अधिकार सदा बना रहे। १३ और उस सब के पीछे जो हमारे बुरे कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है जब हे हमारे परमेश्वर तू ने हमारे अधर्म्म के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया बरन हम में से इतनों को बचा रक्खा है, १४ तो क्या हम तेरी आज्ञाओं को फिर तोड़कर इन घिनौने काम करनेहारे लोगों से समधियाना करें। क्या तू हम पर यहां तक कोप न करेगा कि हम मिट जाएंगे और न तो कोई बचेगा न कोई छूटा रहेगा। १५ हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा तू तो धर्म्मी है हम बचकर छूटे ही हैं जैसे कि आज देख पड़ता है देख हम तेरे साम्हने दोषी हैं इस कारण न कोई तेरे साम्हने खड़ा नहीं रह सकता॥

(यहूदियों का अन्यजाति स्त्रियों को दूर करना)

१०. जब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने पड़ा रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था तब इस्राएल में से पुरुषों स्त्रियों और लड़केबालों की एक बहुत बड़ी मण्डली उस के पास जुड़ गई और लोग बिलग बिलग रो रहे थे। २ तब यहीएल का पुत्र शकन्याह जो एलाम की सन्तान में का था एज्रा से कहने लगा हम लोगों ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति स्त्रियां ब्याह कर अपने परमेश्वर का विश्वासघात तो किया है पर इस दशा में भी इस्राएल के लिये आशा है। ३ सो अब हम अपने परमेश्वर से यह वाचा बांधें कि हम प्रभु की सम्मति और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेहारों की सम्मति के अनुसार ऐसी सब स्त्रियों को और उन के लड़केबालों को दूर करें और व्यवस्था के अनुसार काम किया जाए। ४ तू उठ क्योंकि यह काम तेरा ही है और हम तेरे साथ हैं सो हियाव बांधकर इस काम में लग जा। ५ तब एज्रा उठा और याजकों लेवीयों और सब इस्राएलियों के प्रधानों को यह किरिया खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे और उन्हों ने वैसी ही किरिया खाई। ६ तब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने से उठा और एल्याशीब के पुत्र योहानान की कोठरी में गया और वहां पहुंचकर न तो रोटी खाई न पानी पिया क्योंकि वह बंधुआई से आये हुओं के विश्वासघात के कारण शोक करता रहा। ७ तब उन्हों ने यहूदा और यरूशलेम में रहनेहारे बंधुआई से आये हुए सब लोगों में यह प्रचार कराया कि तुम यरूशलेम में इकट्ठे हो, ८ और जो कोई हाकिमों और पुरनियों की सम्मति न माने और तीन दिन लों न आए उस की सारी धनसंपत्ति सत्यानाश की जाएगी और वह आप बंधुआई से आये हुओं की सभा से अलग किया जायगा। ९ सो यहूदा और बिन्यामीन के सब मनुष्य तीन दिन के भीतर यरूशलेम में इकट्ठे हुए यह तो नौवें महीने के बीसवें दिन हुआ और सब लोग परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय के कारण और झड़ी के मारे कांपते हुए बैठे रहे। १० तब एज्रा याजक खड़ा होकर उन से कहने लगा तुम लोगों ने विश्वासघात करके अन्यजाति स्त्रियां ब्याह लीं और इस से इस्राएल का दोष बढ़ गया है। ११ सो अब अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपना पाप मान लो और उस की इच्छा पूरी करो और इस देश के लोगों से और अन्यजाति स्त्रियों से न्यारे हो जाओ। १२ तब सारी मण्डली के लोगों ने ऊंचे शब्द से कहा जैसा तू ने कहा है वैसा ही हमें करना उचित है। १३ पर लोग बहुत हैं और झड़ी का समय है और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते और यह दो एक दिन का काम नहीं है क्योंकि हम ने इस बात में बड़ा अपराध किया है। १४ सारी मण्डली की ओर से हमारे हाकिम ठहराये जाएं और जब लों हमारे परमेश्वर का भड़का हुआ कोप हम पर से दूर न हो और यह काम निपट न जाए तब लों हमारे नगरों के जितने निवासियों ने अन्यजाति स्त्रियां ब्याह ली हों सो नियत समयों पर आया करें और उन के संग एक एक नगर के पुरनिये और न्यायी आएं। १५ इस के विरुद्ध केवल असाहेल के पुत्र योनातान और तिकवा के पुत्र यहजयाह खड़े हुए और मशुल्लाम और शब्बतै लेवीयों ने उन का सहारा किया। १६ पर बंधुआई से आये हुए लोगों ने वैसा ही किया। सो एज्रा याजक और पितरों के घरानों के कितने मुख्य पुरुष अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार अपने सब नाम लिखाकर अलग किये गये और दसवें महीने के पहिले दिन को इस बात की तहकीकात के लिये बैठने लगे। १७ और पहिले महीने के पहिले दिन लों उन्हों ने उन सब पुरुषों की बात निपटा दी जिन्हों ने अन्यजाति स्त्रियों का ब्याह लिया था। १८ और याजकों की सन्तान में से ये जन पाये गये जिन्हों ने अन्यजाति स्त्रियों को ब्याह लिया था अर्थात् योसादाक के पुत्र येशू के पुत्र और उस के भाई मासेयाह एलीएजेर यारीब और गदल्याह। १९ इन्हों ने हाथ मारकर वचन दिया कि हम अपनी स्त्रियों को निकाल देंगे और उन्हों ने दोषी ठहरकर अपने अपने दोष के कारण एक एक मेढ़ा बलि किया। २० और इम्मेर की संतान में से हनानी और जबद्याह, २१ और हारीम की संतान में से मासेयाह एलिय्याह शमायाह यहीएल और उज्जिय्याह, २२ और पशहूर

की संतान में से एल्योएनै मासेयाह इश्माएल नतनेल
२३ योजाबाद और एलासा। फिर लेवीयों में से योजाबाद
शिमी केलायाह जो कलीता कहलाता है पतह्याह यहूदा
२४ और एलीएजेर। और गानेहारों में से एल्याशीब और
२५ डेवढ़ीदारों में से शल्लूम तेलेम और ऊरी। और इस्राएल
में से परोश की संतान में से रम्याह यिजिय्याह मल्कि-
य्याह मिय्यामीन एलाजार मल्किय्याह और बनायाह,
२६ और एलाम की संतान में से मत्तन्याह जकर्याह यहीएल
२७ अब्दी यरेमोत और एलियाह, और जत्तू की संतान में से
एल्योएनै एल्याशीब मत्तन्याह यरेमोत जाबाद और
२८ अजीजा, और बेबै की संतान में से यहोहानान हनन्याह
२९ जब्बै और अतलै, और बानी की सन्तान में से मशु-
३० ल्लाम मल्लूक अदायाह याशूब शाल और यरामोत, और
पहतमोआब की सन्तान में से अदना कलाल बनायाह
मासेयाह मत्तन्याह बसलेल बिन्नूई और मनश्शे, और ३१
हारीम की सन्तान में से एलीएजेर यिश्शिय्याह मल्कि-
य्याह शमायाह शिमोन, बिन्यामीन मल्लूक और शमर्याह, ३२
और हाशूम की सन्तान में से मत्तनै मत्तत्ता जाबाद ३३
एलीपेलेत यरेमै मनश्शे और शिमी, और बानी की ३४
सन्तान में से मादै अम्राम ऊएल, बनायाह बेदयाह ३५
कलूही, वन्याह मरेमोत एल्याशीब, मत्तन्याह ३६,३७
मत्तनै यासू, बानी बिन्नूई शिमी, शेलेम्याह नातान ३८,३९
अदायाह, मक्नदबै शाशै शारै, अजरेल शेलेम्याह ४०,४१
शेमर्याह शल्लूम अमर्याह और योसेप, और नबो की ४२,४३
सन्तान में से यीएल मत्तित्याह जाबाद जबीना इद्दो
योएल और बनायाह। इन सभों ने अन्य जाति स्त्रियां ४४
ब्याह ली थीं और कितनों की स्त्रियों से लड़के भी
उत्पन्न हुए थे॥

नहेम्याह नाम पुस्तक।

(नहेम्याह का राजा से आज्ञा पाकर यरूशलेम को जाना)

१. हकल्याह के पुत्र नहेम्याह के वचन। बीसवें बरस के किसलेव नाम
महीने में जब मैं शूशन नाम राजगढ़ में रहता था,
२ तब हनानी नाम मेरा एक भाई और यहूदा से आये
हुए कई एक पुरुष आये तब मैं ने उन से उन बचे हुए
यहूदियों के विषय जो बंधुवाई से छूट गये थे और
३ यरूशलेम के विषय पूछा। उन्हों ने मुझ से कहा जो बचे
हुए लोग बंधुआई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं सो
बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं और उन की निन्दा होती है क्योंकि
यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई और उस के फाटक
४ जले हुए हैं। ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और
कितने दिन तक विलाप करता और स्वर्ग के परमेश्वर
के सन्मुख उपवास और यह कहकर प्रार्थना करता रहा
५ कि, हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा हे महान् और भययोग्य
ईश्वर तू जो अपने प्रेम रखनेहारों और आज्ञा मानने-
हारों के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा
६ करता है, तू कान लगाये और आंखें खोले रह कि जो
प्रार्थना मैं तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियों के
लिये दिन रात करता रहता हूं उसे तू सुन ले। मैं
इस्राएलियों के पापों को जो हम लोगों ने तेरे विरुद्ध किये हैं
मान लेता हूं मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप
किया है। हम ने तेरे साम्हने बहुत बुराई की है और जो ७
आज्ञाएं विधियां और नियम तू ने अपने दास मूसा
को दिये थे उन को हम ने नहीं माना। उस वचन की ८
सुधि ले जो तू ने अपने दास मूसा से कहा था कि यदि
तुम लोग विश्वासघात करो तो मैं तुम को देश देश के
लोगों में तितर बितर करूंगा, पर यदि तुम मेरी और ९
फिरो और मेरी आज्ञाएं मानो और उन पर चलो तो
चाहे तुम में से धकियाये हुए लोग आकाश की छोर में
भी हों तौभी मैं उन को वहां से इकट्ठा करके उस स्थान
में पहुंचाऊंगा जिसे मैं ने अपने नाम के निवास के लिये
चुन लिया है। अब वे तेरे दास और तेरी प्रजा के लोग १०
हैं जिन को तू ने अपने बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ
के द्वारा छुड़ा लिया है। हे प्रभु बिनती यह है कि तू ११
अपने दास की प्रार्थना पर और अपने उन दासों की
प्रार्थना पर जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं कान
लगा और आज अपने दास का काम सुफल कर और
उस पुरुष को उस पर दयालु कर। मैं तो राजा का
पिलानेहारा था॥

२. अर्तक्षत्र राजा के बीसवें बरस के नीसान नाम महीने में जब उस के साम्हने दाखमधु था तब मैं ने दाखमधु उठाकर राजा को दिया उस से पहिले तो मैं उस के साम्हने उदास २ कभी न हुआ था। सो राजा ने मुझ से पूछा तू तो रोगी नहीं है फिर तेरा मुंह क्यों उतरा है यह तो मन ३ ही की उदासी होगी। तब मैं अत्यन्त डर गया और राजा से कहा राजा सदा जीता रहे जब वह नगर जिस में मेरे पुरखाओं की कबरें हैं उजाड़ पड़ा और उस के ४ फाटक जले हुए हैं तो मेरा मुंह क्यों न उतरे। राजा ने मुझ से पूछा फिर तू क्या मांगता है तब मैं ने स्वर्ग के ५ परमेश्वर से प्रार्थना करके, राजा से कहा यदि राजा को भाए और तू अपने दास से प्रसन्न हो तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओं की कबरों के नगर को भेज कि मैं ६ उसे बनाऊं। तब राजा ने जिस के पास रानी बैठी थी मुझ से पूछा तू कितने दिन लों परदेश रहेगा और कब लौटेगा। सो राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ और मैं ७ ने उस के लिये एक समय ठहराया। फिर मैं ने राजा से कहा यदि राजा को भाए तो महानद के पार के अधिपतियों के लिये इस आशय की चिट्ठियां मुझे दी जाएं कि जब लों मैं यहूदा को न पहुंचूं तब लों वे मुझे अपने ८ अपने देश से होकर जाने दें। और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के लिये भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दी जाए कि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिये और शहरपनाह के और उस घर के लिये जिस में मैं जाकर रहूंगा लकड़ी दे। मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि[१] मुझ पर रही इस से राजा ने मुझे यह ९ दिया। तब मैं ने महानद के पार के अधिपतियों के पास जाकर उन्हें राजा की चिट्ठियां दीं। राजा ने तो मेरे १० संग सेनापति और सवार भेजे थे। यह सुनकर कि एक मनुष्य इस्राएलियों के कल्याण का उपाय करने को आया है होरोनी सम्बल्लत और तोबिय्याह नाम कर्म्मचारी जो अम्मोनी था उन दोनों को बहुत बुरा लगा। ११ जब मैं यरूशलेम पहुंच गया तब वहां तीन दिन रहा। १२ तब मैं थोड़े पुरुषों समेत रात को उठा मैं ने तो किसी को न बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिये मेरे मन में क्या उपजाया था और अपनी सवारी के १३ पशु को छोड़ कोई पशु भी मेरे संग न था। सो मैं रात को तराई के फाटक होकर निकला और अजगर के सोते की ओर और कूड़ाफाटक के पास गया और यरूशलेम की टूटी पड़ी हुई शहरपनाह और जले फाटकों को देखा। तब मैं आगे बढ़कर सोते के फाटक और १४ राजा के कुण्ड के पास गया पर मेरी सवारी के पशु के लिये आगे जाने को स्थान न था। तब मैं रात ही रात १५ नाले से होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ़ गया फिर घूमकर तराई के फाटक से भीतर आया और यों लौट गया। और हाकिम न जानते थे कि मैं कहां गया और १६ क्या करता था वरन मैं ने तब तक न तो यहूदियों को कुछ बताया था न याजकों न रईसों न हाकिमों न दूसरे काम करनेहारों को। तब मैं ने उन से कहा तुम तो आप देखते १७ हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं कि यरूशलेम उजाड़ पड़ा और उस के फाटक जले हुए हैं सो आओ हम यरूशलेम की शहरपनाह को उठाएं कि आगे को हमारी नामधराई न रहे। फिर मैं ने उन को बतलाया कि मेरे १८ परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझ से क्या क्या बातें कही थीं तब उन्हों ने कहा आओ हम कमर बान्धकर बनाने लगें और उन्हों ने इस भले काम करने को हियाव बांध लिया। यह सुनकर होरोनी १९ सम्बल्लत और तोबिय्याह नाम कर्म्मचारी जो अम्मोनी था और गेशेम नाम एक अरबी हमें ठट्ठों में उड़ाने लगे और हमें तुच्छ जानकर कहने लगे यह तुम क्या काम करते हो, क्या तुम राजा के विरुद्ध बलवा करोगे। तब २० मैं ने उन को उत्तर देकर उन से कहा स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सुफल करेगा इसलिये हम उस के दास कमर बांधकर बनाएंगे पर यरूशलेम में तुम्हारा न तो भाग न हक न स्मरण है॥

(यरूशलेम की शहरपनाह का फेर बनाया जाना)

३. तब एल्याशीब महायाजक ने अपने भाई याजकों समेत कमर बान्धकर भेड़-फाटक को बनाया उन्हों ने उस की प्रतिष्ठा की और उस के पल्लों को भी लगाया और हम्मेआ नाम गुम्मट लों वरन हननेल के गुम्मट के पास लों उन्हों ने शहरपनाह की प्रतिष्ठा की। उस से आगे यरीहो के मनुष्यों २ ने बनाया और इन से आगे इम्री के पुत्र जक्कूर ने बनाया। फिर मछलीफाटक को हस्सना के बेटों ने बनाया ३ उन्हीं ने उस की कड़ियां लगाईं और उस के पल्ले ताले और बेंड़े लगाये। और उन से आगे मरेमोत ने जो ४ हक्कोस का पोता और ऊरिय्याह का पुत्र था मरम्मत की और इन से आगे मशुल्लाम ने जो मशेजबेल का पोता और बेरेक्याह का पुत्र था मरम्मत की और इन से आगे बाना के पुत्र सादोक ने मरम्मत की। और इन से आगे तकोइयों ने मरम्मत की पर उन के ५

(१) मूल में भला हाथ।

रईसों ने अपने प्रभु की सेवा का जूआ अपनी गर्दन पर
६ न लिया। फिर पुराने फाटक की मरम्मत पासेह के
पुत्र योयादा और बसोदयाह के पुत्र मशुल्लाम ने की
उन्हीं ने उस की कड़ियां लगाईं और उस के पल्ले ताले
७ और बेंड़े लगाये। और उन से आगे गिबोनी मलत्याह
और मेरोनोती यादोन ने और गिबोन और मिस्पा के
मनुष्यों ने महानद के पार के अधिपति के सिंहासन की
८ ओर मरम्मत की। उन से आगे हर्हयाह के पुत्र उज्जी-
एल ने और और सुनारों ने मरम्मत की और इस से आगे
हनन्याह ने जो गंधियों के समाज का था[१] मरम्मत की
और उन्हों ने चौड़ी शहरपनाह लों यरूशलेम को दृढ़
९ किया। और उन से आगे हूर के पुत्र रपायाह ने जो
यरूशलेम के आधे जिले का हाकिम था मरम्मत की।
१० और उन से आगे हरूमप के पुत्र यदायाह ने अपने ही
घर के साम्हने मरम्मत की और इस से आगे हशब्नयाह
११ के पुत्र हत्तूश ने मरम्मत की। हारीम के पुत्र मल्किय्याह
और पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने एक और भाग की
१२ और भट्ठों के गुम्मट की मरम्मत की। इस से आगे
यरूशलेम के आधे जिले के हाकिम हल्लोहेश के पुत्र
१३ शल्लूम ने अपनी बेटियों समेत मरम्मत की। तराई के
फाटक की मरम्मत हानून और जानोह के निवासियों ने
की उन्हों ने उस को बनाया और उस के ताले बेंड़े और
पल्ले लगाये और हजार हाथ की शहरपनाह को भी
अर्थात् कूड़ाफाटक तक बनाया। और कूड़ाफाटक की
१४ मरम्मत रेकाब के पुत्र मल्किय्याह ने की जो बेथक्केरेम
के जिले का हाकिम था उसी ने उस को बनाया और
१५ उस के ताले बेंड़े और पल्ले लगाये। और सोताफाटक की
मरम्मत कोल्होजे के पुत्र शल्लूम ने की जो मिस्पा के
जिले का हाकिम था उसी ने उस को बनाया और पाटा
और उस के ताले बेंड़े और पल्ले लगाये और उसी ने
राजा की बारी के पास के शेलह नाम कुण्ड की शहरपनाह
१६ को भी दाऊदपुर से उतरनेहारी सीढ़ी लों बनाया। इस
के पीछे अजबूक के पुत्र नहेम्याह ने जो बेतशूर के आधे
जिले का हाकिम था दाऊद के कब्रिस्तान के साम्हने
तक और बनाये हुए पोखरे लों बरन वीरों के घर तक
१७ भी मरम्मत की। इस के पीछे बानी के पुत्र रहूम ने
कितने लेवीयों समेत मरम्मत की। इस से आगे कीला
के आधे जिले के हाकिम हशब्याह ने अपने जिले की
१८ ओर से मरम्मत की। उस के पीछे उन के भाइयों समेत
कीला के आधे जिले के हाकिम हेनादाद के पुत्र बव्वै ने
मरम्मत की। उस से आगे एक और भाग की मरम्मत १९
जो शहरपनाह के मोड़ के पास शस्त्रों के घर की चढ़ाई के
साम्हने है येशू के पुत्र एजेर ने की जो मिस्पा का हाकिम
था। उस के पीछे एक और भाग की अर्थात् उसी मोड़ २०
से ले एल्याशीब महायाजक के घर के द्वार लों की मरम्मत
जब्बै के पुत्र बारूक ने तन मन से की। इस के पीछे २१
एक और भाग की अर्थात् एल्याशीब के घर के द्वार से
ले उसी घर के सिरे लों की मरम्मत मरेमोत ने की जो
हक्कोस का पोता और ऊरिय्याह का पुत्र था। उस के २२
पीछे उन याजकों ने मरम्मत की जो तराई के मनुष्य
थे। उन के पीछे बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घर के २३
साम्हने मरम्मत की और इन के पीछे अजर्याह ने जो
मासेयाह का पुत्र और अनन्याह का पोता था अपने
घर के पास मरम्मत की। उस के पीछे एक और भाग २४
की अर्थात् अजर्याह के घर से ले शहरपनाह के मोड़ बरन
उस के कोने लों की मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने
की। फिर उसी मोड़ के साम्हने जो ऊंचा गुम्मट राज- २५
भवन से उभरा हुआ पहरे के आंगन के पास है उस के
साम्हने ऊजै के पुत्र पालाल ने मरम्मत की इस के पीछे
परोश के पुत्र पदायाह ने मरम्मत की। नतीन लोग तो २६
ओपेल में पूरब ओर जलफाटक के साम्हने लों और उभरे
गुम्मट लों रहते थे। पदायाह के पीछे तकोइयों ने एक २७
और भाग की मरम्मत की जो बड़े उभरे हुए गुम्मट के
साम्हने और ओपेल की शहरपनाह लों है। फिर घोड़ा- २८
फाटक के ऊपर याजकों ने अपने अपने घर के साम्हने
मरम्मत की। इन के पीछे इम्मेर के पुत्र सादोक ने २९
अपने घर के साम्हने मरम्मत की और इस के पीछे पूरबी
फाटक के रखवाले शकन्याह के पुत्र शमायाह ने मरम्मत
की। इस के पीछे शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप ३०
के छठवें पुत्र हानून ने एक और भाग की मरम्मत की।
इन के पीछे बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने अपनी कोठरी
के साम्हने मरम्मत की। उस के पीछे मल्किय्याह ने ३१
जो सुनार था[२] नतीनों और ब्योपारियों के स्थान लों
ठहराये हुवे स्थान के फाटक[३] के साम्हने और कोने के
कोठे तक मरम्मत की। और कोनेवाले कोठे से ले ३२
भेड़फाटक लों सुनारों और ब्योपारियों ने मरम्मत की॥

(यहूदियों के शत्रुओं का विरोध करना)

४. जब सम्बल्लत ने सुना कि यहूदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं तब उस ने बुरा माना और बहुत रिसियाकर यहूदियों को ठट्ठों में उड़ाने

(१) मूल में जो गंधियों का बेटा था।

(२) मूल में जो सुनारों का बेटा था। (३) वा हम्मिफकाद नाम फाटक।

२ लगा । वह अपने भाइयों के और शोमरोन की सेना के
सामहने यों कहने लगा वे निर्बल यहूदी क्या किया चाहते
हैं क्या वे वह काम अपने बल से करेंगे[१] क्या वे अपना
स्थान दृढ़ करेंगे क्या वे यज्ञ करेंगे क्या वे आज ही सब काम
निपटा डालेंगे क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों
३ को फिर नये सिरे से बनाएंगे[२] । उस के पास तो अम्मोनी
तोबिय्याह था सो वह कहने लगा जो कुछ वे बना रहे
हैं यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े तो वह उन की
४ बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा । हे हमारे
परमेश्वर सुन ले कि हमारा अपमान हो रहा है और
उन की की हुई नामधराई को उन्हीं के सिर पर लौटा दे
५ और उन्हें बंधुवाई के देश में लुटवा दे । और उन का
अधर्म्म तू ढांप न दे न उन का पाप तेरे मन से भूल
जाए[३] क्योंकि उन्हों ने तुझे शहरपनाह बनानेहारों के साम्हने
६ रिस दिलाई । और हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया
और सारी शहरपनाह आधी ऊंचाई लों जुड़ गई क्योंकि
लोगों का मन उस काम में लगा रहा ॥

७ जब सम्बल्लत और तोबिय्याह और अरबियों अम्मो
नियों और अशदोदियों ने सुना कि यरूशलेम की शहर-
पनाह की मरम्मत होती जाती है[४] और उस में के नाके
८ बंद होने लगे तब उन्हों ने बहुत ही बुरा माना, और
सभों ने एक मन से गोष्ठी की कि हम जाकर यरूशलेम
९ से लड़ेंगे और उस में गड़बड़ डालेंगे । पर हम लोगों ने
अपने परमेश्वर से प्रार्थना की और उन के डर के मारे
१० उन के विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिये । और
यहूदी कहने लगे ढोनेहारों का बल घट गया और मिट्टी
बहुत पड़ी है सो शहरपनाह हम से नहीं बन सकती ।
११ और हमारे शत्रु कहने लगे कि जब लों हम उन के बीच
में न पहुंचें और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें
तब लों उन को न कुछ मालूम होगा और न कुछ
१२ देख पड़ेगा । फिर जो यहूदी उन के पास रहते थे उन्हों
ने सब स्थानों से दस बार आ आकर हम लोगों से कहा
१३ हमारे पास लौटना चाहिये । इस कारण मैं ने लोगों को
तलवारें बर्छियां और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे
सब से नीचे के खुले स्थानों में घराने घराने के अनुसार
१४ बैठा दिया । तब मैं देखकर उठा और रईसों और हाकिमों
और और सब लोगों से कहा उन से मत डरो प्रभु जो
महान् और भययोग्य है उसी को स्मरण करके अपने
भाइयों बेटों बेटियों स्त्रियों और घरों के लिये लड़ना ।

(१) मूल में वे अपने लिये छोड़ेंगे । (२) मूल में जिलाएंगे ।
(३) मूल में तेरे साम्हने से न मिटे ।
(४) मूल में शहरपनाह पर पट्टी चढ़ी ।

सो जब हमारे शत्रुओं ने सुना कि यह उन्हें मालूम हो १५
गया और परमेश्वर ने हमारी युक्ति निष्फल की है तब
हम सब के सब शहरपनाह के पास अपने अपने काम
पर लौट गये । और उस दिन से मेरे आधे सेवक तो १६
उस काम में लगे और आधे बर्छियों तलवारों धनुषों और
झिलमों को धारण किये रहते थे और यहूदा के सारे
घराने के पीछे हाकिम रहा करते थे । शहरपनाह के १७
बनानेहारे और बोझ के ढोनेहारे दोनों भार उठाते थे
अर्थात् एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से
हथियार पकड़े रहते थे । और राज अपनी अपनी जांघ १८
पर तलवार लटकाये हुये बनाते थे । और नरसिंगे का
फूंकनेहारा मेरे पास रहता था । सो मैं ने रईसों हाकिमों १९
और सब लोगों से कहा काम तो बड़ा और फैला हुआ है
और हम लोग शहरपनाह पर अलग अलग एक दूसरे
से दूर रहते हैं । सो जिधर से नरसिंगा तुम्हें सुनाई दे २०
उधर ही हमारे पास इकट्ठे हो जाना हमारा परमेश्वर
हमारी ओर से लड़ेगा । यों हम काम में लगे रहे और २१
उन में से आधे पह फटने से तारों के निकलने लों बर्छियां
लिये रहते थे । फिर उसी समय मैं ने लोगों से यह भी २२
कहा कि एक एक मनुष्य अपने दास समेत यरूशलेम के
भीतर रात बिताया करे कि वे रात को तो हमारी रखवाली
करें और दिन को काम में लगे रहें । और न तो मैं अपने २३
कपड़े उतारता था और न मेरे भाई न मेरे सेवक न वे
पहरुए जो मेरे अनुचर थे अपने कपड़े उतारते थे सब कोई
पानी के पास हथियार लिये हुये जाते थे ॥

(यहूदियों में अन्धेर पाया जाना)

५. तब लोग और उन की स्त्रियों की अपने
भाई यहूदियों के विरुद्ध बड़ी चिल्लाहट
मची । कितने तो कहते थे हम अपने बेटे बेटियों समेत २
बहुत प्राणी हैं इसलिये हमें अन्न मिलना चाहिये उसे
खाकर जीते रहें । और कितने कहते थे कि हम अपने ३
अपने खेतों दाख की बारियों और घरों को बंधक रखते
हैं महंगी के कारण हमें अन्न मिलना चाहिये । फिर ४
कितने यह कहते थे कि हम ने राजा के कर के लिये
अपने अपने खेतों और दाख की बारियों पर रुपया
उधार लिया । पर हमारा और हमारे भाइयों का शरीर ५
और हमारे और उन के लड़केबाले एक ही समान हैं तौभी
हम अपने बेटे बेटियों को दास बनाते हैं वरन हमारी
कोई कोई बेटी दासी हो भी चुकी हैं और हमारा कुछ
बस नहीं चलता क्योंकि हमारे खेत और दाख की
बारियां औरों के हाथ पड़ी हैं । यह चिल्लाहट और ये ६
बातें सुनकर मैं ने बहुत बुरी मानीं । तब अपने मन में ७

सोच विचार करके मैं ने रईसों और हाकिमों को घुड़ककर कहा तुम अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो। तब मैं ने उन के विरुद्ध एक बड़ी सभा की। ८ और मैं ने उन से कहा हम लोगों ने तो अपनी शक्ति भर अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यजातियों के हाथ बिक गये थे दाम देकर छुड़ाया है फिर क्या तुम अपने भाइयों को बेचने पाओगे क्या वे हमारे हाथ बिकेंगे। तब वे चुप रहे और कुछ न कह सके। ९ फिर मैं कहता गया जो काम तुम करते हो सो अच्छा नहीं है क्या तुम को इस कारण हमारे परमेश्वर का भय मानकर चलना न चाहिये कि हमारे शत्रु जो अन्यजाति हैं सो हमारी नामधराई करते हैं। १० मैं भी और मेरे भाई और सेवक उन को रुपया और अनाज उधार देते हैं पर हम इस का ब्याज छोड़ दें। ११ आज ही उन को उन के खेत और दाख और जलपाई की बारियां और घर फेर दो और जो रुपया अन्न नया दाखमधु और टटका तेल तुम उन से ले लेते हो उस का सौवां भाग फेर दो। १२ उन्हों ने कहा हम उन्हें फेर देंगे और उन से कुछ न लेंगे जैसा तू कहता है वैसा ही हम करेंगे। तब मैं ने याजकों को बुलाकर उन लोगों को यह किरिया खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे। १३ फिर मैं ने अपने कपड़े की छोर झाड़कर कहा इसी रीति जो कोई इस वचन को पूरा न करे उस को परमेश्वर झाड़कर उस का घर और कमाई उस से छोड़ाये इसी रीति वह झाड़ा जाए और छूछा हो जाए। तब सारी सभा ने कहा आमेन और यहोवा की स्तुति की और लोगों ने इस वचन के अनुसार काम किया। १४ फिर जब से मैं यहूदा देश में उन का अधिपति ठहराया गया अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें बरस से ले उस के बत्तीसवें बरस लों अर्थात् बारह बरस लों मैं और मेरे भाई अधिपति के हक का भोजन न खाते थे। १५ पर पहले अधिपति जो मुझ से आगे थे सो प्रजा पर भार डालते थे और उन से रोटी और दाखमधु और इस से अधिक[१] चालीस शेकेल चान्दी लेते थे बरन उन के सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे पर मैं ऐसा न करता था क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था। १६ फिर मैं शहरपनाह के काम में लिपटा रहा और हम लोगों ने कुछ भूमि मोल न ली और मेरे सब सेवक काम करने के लिये वहां इकट्ठे रहते थे। १७ फिर मेरी मेज़ पर खानेहारे एक सौ पचास यहूदी और हाकिम और वे भी थे जो चारों ओर की अन्यजातियों में से हमारे पास आते थे। १८ और जो दिन दिन के लिये तैयार किया जाता था सो एक बैल छः अच्छी अच्छी भेड़ें वा बकरियां थीं और मेरे लिये चिड़ियाएं भी तैयार की जाती थीं और दस दस दिन पीछे भांति भांति का बहुत दाखमधु भी पर तौभी मैं ने अधिपति के हक का भोज नहीं लिया क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था। १९ हे मेरे परमेश्वर जो कुछ मैं ने इस प्रजा के लिये किया है उसे तू मेरे हित के लिये स्मरण रख॥

(शत्रुओं के विरोध करने पर भी शहरपनाह का बन चुकना)

६. जब सम्बल्लत तोबिय्याह और अरबी गेशेम और हमारे और शत्रुओं को यह समाचार मिला कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका और यद्यपि उस समय लों भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा चुका था तौभी शहरपनाह में कोई नाका न रह गया था, २ तब सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यों कहला भेजा कि आ हम ओनो के मैदान के किसी गांव में एक दूसरे से भेंट करें। पर वे मेरी हानि करने की इच्छा करते थे। ३ पर मैं ने उन के पास दूतों से कहला भेजा कि मैं तो भारी काम में लगा हूं सो वहां नहीं जा सकता मेरे यह काम छोड़कर तुम्हारे पास जाने से यह क्यों बन्द रहे। ४ फिर उन्हों ने चार बार मेरे पास वैसी ही बात कहला भेजी और मैं ने उन को वैसा ही उत्तर दिया। ५ तब पांचवीं बार सम्बल्लत ने अपने सेवक को खुली हुई चिट्ठी देकर मेरे पास भेजा, ६ जिस में यों लिखा था कि जाति जाति के लोगों में यह कहा जाता है और गेशेम भी यही बात कहता है कि तुम्हारी और यहूदियों की मनसा बलवा करने की है और इस कारण तू उस शहरपनाह को बनवाता है और तू इन बातों के अनुसार उन का राजा बनना चाहता है। ७ और तू ने यरूशलेम में नबी ठहराये हैं जो यह कह कर तेरे विषय प्रचार करें कि यहूदियों में एक राजा है अब ऐसा ही समाचार राजा को दिया जायगा सो अब आ हम एक साथ सम्मति करें। ८ तब मैं ने उन के पास कहला भेजा कि जैसा तू कहता है वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ तू ये बातें अपने मन से गढ़ता है। ९ वे सब लोग यह सोच कर हमें डराना चाहते थे कि उन के हाथ ढीले पड़ेंगे और काम बन्द हो जाएगा। पर अब तू मुझे हियाव दे॥

१० और मैं शमायाह के घर में गया जो दलायाह का पुत्र और महेतबेल का पोता था वह तो बन्द घर में था उस ने कहा आ हम परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस में भेंट करें और मन्दिर के द्वार बन्द करें क्योंकि वे लोग तुझे घात करने आएंगे रात ही को वे तुझे घात करने आयेंगे। ११ पर

(१) मूल में पीछे।

मैं ने कहा क्या मुझ ऐसा मनुष्य भागे और मुझ ऐसा
कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे[१] मैं
१२ नहीं जाने का। फिर मैं ने जान लिया कि वह परमेश्वर
का भेजा नहीं है पर उस ने वह बात ईश्वर का वचन
कहकर[२] मेरी हानि के लिये कही है और तोबिय्याह और
१३ सम्बल्लत ने उसे रुपया दे रक्खा था। उन्हों ने उसे इस
कारण रुपया देकर रक्खा था कि मैं डर जाऊं और
वैसा ही काम करके पापी ठहरूं और उन को अपवाद
लगाने का अवसर मिले और वे मेरी नामधराई कर
१४ सकें। हे मेरे परमेश्वर तोबिय्याह सम्बल्लत और नोअद्याह
नबिया और और जितने नबी मुझे डराना चाहते थे उन
सब के ऐसे ऐसे कामों की सुधि रख॥

१५ एलूल महीने के पचीसवें दिन को अर्थात् बावन
१६ दिन के भीतर शहरपनाह बन चुकी। जब हमारे सब
शत्रुओं ने यह सुना तब हमारे चारों ओर रहनेहारे सब
अन्यजाति डर गये और बहुत लजा गये क्योंकि उन्हों ने
जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से
१७ हुआ। उन दिनों में भी यहूदी रईसों और तोबिय्याह के
१८ बीच चिट्ठी बहुत आया जाया करती थी। क्योंकि वह
आरह के पुत्र शकन्याह का दामाद था और उस के पुत्र
यहोहानान जिस ने बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम की बेटी
को ब्याह लिया था इस कारण बहुत से यहूदी उस का
१९ पक्ष करने की किरिया खाये हुए थे। और वे मेरे सुनते
उस के भले कामों की चर्चा किया करते और मेरी बातें
भी उस को सुनाया करते थे। और तोबिय्याह मुझे
डराने के लिये चिट्ठियां भेजा करता था॥

(यरूशलेम का बसाया जाना)

७. जब शहरपनाह बन गई और मैं ने उस
के फाटक खड़े किये और डेवढ़ीदार
२ गवैये और और लेवीय लोग ठहराये गये, तब मैं ने अपने
भाई हनानी और राजगढ़ के हाकिम हनन्याह को यरू-
शलेम के अधिकारी ठहराया क्योंकि यह सच्चा पुरुष और
बहुतेरों से अधिक परमेश्वर का भय माननेहारा था।
३ और मैं ने उन से कहा जब लों घाम कड़ा न हो तब
लों यरूशलेम के फाटक न खोले जाएं और जब पहरुए
पहरा देते रहें तब ही फाटक बन्द किये और बेड़े लगाये
जाएं फिर यरूशलेम के निवासियों में से तू रखवाले
ठहरा जो अपना अपना पहरा अपने अपने घर के साम्हने
४ दिया करें। नगर तो लम्बा चौड़ा था पर उस में लोग
५ थोड़े थे और घर बने न थे। सो मेरे परमेश्वर ने मेरे

(१) वा जो मन्दिर में घुसकर जीता रहे।
(२) मूल में वह नबूवत।

मन में यह उपजाया कि रईसों हाकिमों और प्रजा के
लोगों को इसलिये इकट्ठे करूं कि वे अपनी अपनी
वंशावली के अनुसार गिने जाएं। और मुझे पहिले पहिल
यरूशलेम को आये हुओं का वंशावलीपत्र मिला और
उस में मैं ने यों लिखा हुआ पाया कि, जिन को बाबेल ६
का राजा नबूकदनेस्सर बन्धुआ करके ले गया था उन में
से प्रान्त के जो लोग बन्धुआई से छूटकर, जरुब्बाबेल येशू ७
नहेम्याह अजर्याह राम्याह नहमानी मोर्दकै बिलशान
मिस्पेरेत बिग्वै नहूम और बाना के संग यरूशलेम और
यहूदा के अपने अपने नगर को आये सो ये हैं। इस्राएली
प्रजा के लोगों की गिनती यह है। अर्थात् परोश के ८
संतान दो हजार एक सौ बहत्तर, शपत्याह के संतान ९
तीन सौ बहत्तर, आरह के सन्तान छः सौ बावन, १०
पहत्मोआब के सन्तान, येशू और योआब के सन्तान ११
दो हजार आठ सौ अठारह, एलाम के संतान बारह सौ १२
चौवन, जत्तू के संतान आठ सौ पैंतालीस, जक्कै के १३,१४
सन्तान सात सौ साठ, बिन्नूई के सन्तान छः सौ अड़- १५
तालीस, बेबै के संतान छः सौ अट्ठाईस, अजगाद १६,१७
के सन्तान दो हजार तीन सौ बाईस, अदोनीकाम के १८
संतान छः सौ सड़सठ, बिग्वै के संतान दो हजार सड़सठ, १९
आदीन के सन्तान छः सौ पचपन, हिजकिय्याह के २०,२१
सन्तान आतेर के वंश में से अट्ठानवे, हाशूम के संतान २२
तीन सौ अट्ठाईस, बेसै के सन्तान तीन सौ चौबीस, २३
हारीप के सन्तान एक सौ बारह, गिबोन के लोग २४,२५
पंचानवे, बेतलेहेम और नतोपा के मनुष्य एक सौ अट्ठासी, २६
अनातोत के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस, बेतजमावेत २७,२८
के मनुष्य बयालीस, किर्यत्यारीम कपीरा और बेरोत २९
के मनुष्य सात सौ तैंतालीस, रामा और गेबा के मनुष्य ३०
छः सौ इक्कीस, मिकमास के मनुष्य एक सौ बाईस, ३१
बेतेल और ऐ के मनुष्य एक सौ तेईस, दूसरे नबो ३२,३३
के मनुष्य बावन, दूसरे एलाम के सन्तान बारह सौ ३४
चौवन, हारीम के संतान तीन सौ बीस, यरीहो के ३५,३६
लोग तीन सौ पैंतालीस, लोद हादीद और ओनो के ३७
लोग सात सौ इक्कीस, सना के लोग तीन हजार नौ ३८
सौ तीस। फिर याजक अर्थात् येशू के घराने में से ३९
यदायाह के संतान नौ सौ तिहत्तर, इम्मेर के संतान ४०
एक हजार बावन, पशहूर के संतान बारह सौ सैंता- ४१
लीस, हारीम के संतान एक हजार सत्रह। फिर ४२,४३
लेवीय ये थे अर्थात् होदवा के वंश में से कदमीएल के
संतान येशू के संतान चौहत्तर। फिर गवैये ये थे अर्थात् ४४
आसाप के संतान एक सौ अड़तालीस। फिर डेवढ़ीदार ४५
ये थे अर्थात् शल्लूम के संतान आतेर के संतान

तल्मोन के संतान अक्कूब के संतान हतीता के संतान और शोबै के संतान सो सब मिलकर एक सौ अड़तीस
४६ हुए। फिर नतीन अर्थात् सीहा के संतान हसूपा के संतान
४७ तब्बाओत के संतान, केरोस के संतान सीआ के संतान
४८ पादोन के संतान, लबाना के संतान हगाबा के संतान
४९ शल्मै के संतान। हानान के संतान गिद्देल के संतान
५० गहर के संतान, राया के संतान रसीन के संतान नकोदा
५१ के संतान, गज्जाम के संतान उज्जा के संतान पासेह के
५२ संतान, बेसै के संतान मूनीम के संतान नपूशस के
५३ संतान, बकबूक के संतान हकूपा के संतान हर्हूर के
५४ संतान, बसलीत के संतान महीदा के संतान हर्शा के संतान,
५५ बर्कोस के संतान सीसरा के संतान तेमह के संतान,
५६, ५७ नसीह के संतान और हतीपा के संतान। फिर सुलैमान के दासों के संतान अर्थात् सोतै के संतान
५८ सोपेरेत के संतान परीदा के संतान, याला के संतान
५९ दर्कोन के संतान गिद्देल के संतान, शपत्याह के संतान हत्तील के संतान पोकेरेत सबायीम के संतान और
६० आमोन के संतान। नतीन और सुलैमान के दासों के संतान मिलकर तीन सौ बानवे थे॥

६१ और ये वे हैं जो तेलमेलह तेलहर्शा करूब अद्दोन और इम्मेर से यरूशलेम को गये पर अपने अपने पितर के घराने और वंशावली न बता सके कि इस्राएल के हैं
६२ वा नहीं। अर्थात् दलायाह के संतान तोबिय्याह के संतान और नकोदा के संतान जो सब मिलकर छः सौ
६३ बयालीस थे। और याजकों में से होबायाह के संतान हक्कोस के संतान और बर्जिल्लै के संतान जिस ने गिलादी बर्जिल्लै की बेटियों में से एक को ब्याह लिया और
६४ उन्हीं का नाम रख लिया था। इन्हों ने अपना अपना वंशावलीपत्र और और वंशावलीपत्रों में ढूंढ़ा पर न पाया इसलिये वे अशुद्ध ठहरकर याजकपद से निकाले गये।
६५ और अधिपति[१] ने उन से कहा कि जब लों ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेहारा कोई याजक न उठे तब लों तुम कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाओगे॥

६६ सारी मण्डली के लोग मिलकर बयालीस हजार
६७ तीन सौ साठ ठहरे। उन को छोड़ उन के सात हजार तीन सौ सैंतीस दास दासियां और दो सौ पैंतालीस
६८ गानेहारे और गानेहारियां थीं। उन के घोड़े सात सौ
६९ छत्तीस खच्चर दो सौ पैंतालीस, ऊंट चार सौ पैंतीस
७० और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे। और पितरों के घरानों के कई एक मुख्य पुरुषों ने काम के लिये दिया। अधिपति[१] ने तो चन्दे में हजार दर्कमोन सोना पचास कटोरे और पांच सौ तीस याजकों के अंगरखे दिये।
७१ और पितरों के घरानों के कई मुख्य मुख्य पुरुषों ने उस काम के चन्दे में बीस हजार दर्कमोन सोना और दो
७२ हजार दो सौ माने चांदी दी। और शेष प्रजा ने जो दिया सो बीस हजार दर्कमोन सोना दो हजार माने
७३ चांदी और सड़सठ याजकों के अंगरखे हुए। सो याजक लेवीय द्वेवढ़ीदार गवैये प्रजा के कुछ लोग और नतीन और सब इस्राएली अपने अपने नगर में बस गये॥

(यहूदियों को व्यवस्था का सुनाया जाना)

८. जब सातवां महीना निकट आया तब सारे इस्राएली अपने अपने नगर में थे। तब उन सब लोगों ने
१ एक मन होकर जलफाटक के साम्हने के चौक में इकट्ठे होकर एज्रा शास्त्री से कहा कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी उस की पुस्तक
२ ले आ। सो एज्रा याजक सातवें महीने के पहिले दिन को क्या स्त्री क्या पुरुष क्या जितने सुनकर समझ सकते
३ थे उन सभों के साम्हने व्यवस्था को ले आया। और वह उस की बातें भोर से दो पहर लों उस चौक के साम्हने जो जलफाटक के साम्हने था क्या स्त्री क्या पुरुष सब समझनेहारों को पढ़कर सुनाता रहा और सब लोग
४ व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाये रहे। एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिये बना था खड़ा हो गया और उस की दहिनी अलंग मत्तित्याह शेमा अनायाह ऊरिय्याह हिल्किय्याह और मासेयाह और बाईं अलंग पदायाह मीशाएल मल्किय्याह हाशूम हश्बद्दाना
५ जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए। तब एज्रा ने जो सब लोगों से ऊंचे पर था सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया और जब उस ने उस को खोला तब सब
६ लोग उठ खड़े हुए। तब एज्रा ने महान् परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमेन आमेन कहा और सिर झुकाकर अपना अपना
७ माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत की। और येशू बानी शेरेब्याह यामीन अक्कूब शब्बतै होदिय्याह मासेयाह कलीता अजर्याह योजाबाद हानान पलायाह नाम लेवीय लोगों को व्यवस्था समझाते गये और लोग
८ अपने स्थान पर खड़े रहे। और उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में पढ़कर और टीका लगाकर अर्थ
९ समझा दिया और लोगों ने पाठ को समझ लिया। तब नहेम्याह जो अधिपति था और एज्रा जो याजक और शास्त्री था और जो लेवीय लोगों को समझा रहे थे उन्हों ने सब लोगों से कहा आज का दिन तो तुम्हारे

(१) मूल में तिर्शाता।

परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है सो विलाप न करो और न रोओ क्योंकि सब लोग व्यवस्था के वचन सुनकर रोते रहे। १० फिर उस ने उन से कहा कि जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा रस पियो और जिन के लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उन के पास बैना भेजो क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है फिर उदास मत रहो क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है। ११ यों लेवीयों ने सब लोगों को यह कहकर चुप करा दिया कि चुप रहो क्योंकि आज का दिन पवित्र है और उदास मत रहो। १२ सो सब लोग खाने पीने बैना भेजने और बड़ा आनन्द करने को चले गये इस कारण कि जो वचन उन को समझाये गये थे उन्हें वे समझ गये थे ॥

१३ और दूसरे दिन को भी सारी प्रजा के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष और याजक और लेवीय लोग एज्रा शास्त्री के पास व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनने को इकट्ठे हुए। १४ और उन्हें व्यवस्था में यह लिखा हुआ मिला कि यहोवा ने मूसा से यह आज्ञा दिलाई थी कि इस्राएली सातवें महीने के पर्व के समय झोंपड़ियों में रहा करें, १५ और अपने सब नगरों और यरूशलेम में यों सुनाया और प्रचार किया जाए कि पहाड़ पर जाकर जलपाई तैलवृक्ष मेंहदी खजूर और घने घने वृक्षों की डालियां ले आकर झोंपड़ियां बनाओ जैसे कि लिखा है। १६ सो लोग बाहर जाकर डालियां ले आये और अपने अपने घर की छत पर और अपने आंगनों में और परमेश्वर के भवन के आंगनों में और जलफाटक के चौक में और एप्रैम के फाटक के चौक में झोंपड़ियां बना लीं। १७ वरन जितने बंधुआई से छूटकर लौट आये थे उन की सारी मण्डली के लोग झोंपड़ियां बनाकर उन में टिके। नून के पुत्र येशू के दिनों से ले उस दिन तक इस्राएलियों ने ऐसा न किया था। सो बहुत बड़ा आनन्द हुआ। १८ फिर पहिले दिन से पिछले दिन लों एज्रा ने दिन दिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। यों वे सात दिन लों पर्व को मानते रहे और आठवें दिन नियम के अनुसार महासभा हुई ॥

(पाप का अंगीकार)

९. फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास किये टाट पहिने २ और सिर पर धूल डाले हुए इकट्ठे हो गये। तब इस्राएल के वंश के लोग सब अन्यजाति लोगों से न्यारे हो गये और खड़े होकर अपने अपने पापों और अपने पुरखाओं के अधर्म्म के कामों को मान लिया। ३ तब उन्हों ने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक तो अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते और एक और पहर अपने पापों को मानते और अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करते रहे। ४ और येशू बानी कद्मीएल शबन्याह बुन्नी शेरेब्याह बानी और कनानी ने लेवीयों की सीढ़ी पर खड़े होकर ऊंचे स्वर से अपने परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी। ५ फिर येशू कद्मीएल बानी हशब्नयाह शेरेब्याह होदिय्याह शबन्याह और पतह्याह नाम लेवीयों ने कहा खड़े हो अपने परमेश्वर यहोवा को अनादिकाल से अनन्तकाल लों धन्य कहो और तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए जो सारे धन्यवाद और स्तुति से बढ़कर है। ६ तू ही अकेला यहोवा है स्वर्ग वरन सब से ऊंचे स्वर्ग और उस के सारे गण और पृथिवी और जो कुछ उस में है और समुद्र और जो कुछ उस में है सभों को तू ही ने बनाया और सभों की रक्षा तू ही करता है और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत् करती है। ७ हे यहोवा तू वही परमेश्वर है जो अब्राम को चुनकर कसदियों के ऊर नगर में से निकाल लाया और उस का नाम इब्राहीम रक्खा, ८ और उस के मन को अपने साथ सच्चा पाकर उस से वाचा बांधी कि मैं तेरे वंश को कनानियों हित्तियों एमोरियों परिज्जियों यबूसियों और गिर्गाशियों का देश दूंगा और तू ने अपना वह वचन पूरा भी किया क्योंकि तू धर्मी है। ९ फिर तू ने मिस्र में हमारे पुरखाओं के दुःख पर दृष्टि की और लाल समुद्र के तीर पर उन की दोहाई सुनी। १० और फिरौन और उस के सब कर्म्मचारी वरन उस के देश के सारे लोगों को दण्ड देने के लिये चिन्ह और चमत्कार दिखाये क्योंकि तू जानता था कि वे उन से अभिमान करते हैं और तू ने अपना ऐसा बड़ा नाम किया जैसा आज लों बना है। ११ और तू ने उन के आगे समुद्र को ऐसा दो भाग किया कि वे समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार हुए और जो उन के पीछे पड़े थे उन को तू ने गहिरे स्थानों में ऐसा डाल दिया जैसा पत्थर महाजलराशि में डाला जाए। १२ फिर तू ने दिन को बादल के खंभे में होकर और रात को आग के खंभे में होकर उन की अगुवाई की कि जिस मार्ग पर उन्हें चलना था उस में उन को उजियाला मिले। १३ फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उन के साथ बातें कीं और उन को सीधे नियम सच्ची व्यवस्था और अच्छी विधियां और आज्ञाएं दीं, १४ और उन्हें अपने पवित्र विश्रामदिन का ज्ञान दिया और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और व्यवस्था दीं, १५ और उन की भूख मिटाने को आकाश

से उन्हें भोजन दिया और उन की प्यास बुझाने को चटान में से उन के लिये पानी निकाला और उन्हें आज्ञा दी कि जिस देश के तुम्हें देने की मैं ने किरिया खाई है[1] १५ उस के अधिकारी होने को तुम उस में जाओ। परन्तु उन्हों ने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान किया और १६ हठीले बने और तेरी आज्ञाएं न मानीं, १७ और आज्ञा मानने को नाह की और जो आश्चर्य्यकर्म्म तू ने उन के बीच किये थे उन का स्मरण न किया बरन हठ करके यहां लों बलवा करनेहारे बने कि एक प्रधान ठहराया कि अपने दासत्व की दशा में लौटें। पर तू क्षमा करनेहारा अनुग्रहकारी और दयालु बिलम्ब से कोप करनेहारा और अतिकरुणामय ईश्वर है तू ने उन को न त्यागा। १८ बरन जब उन्हों ने बछड़ा ढालकर कहा कि तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है सो यही है और तेरा बहुत तिरस्कार किया, १९ तब भी तू जो अति दयालु है सो उन को जंगल में न त्यागा, न तो दिन को अगुआई करनेहारा बादल का खंभा उन पर से हट गया और न रात को उजियाला देनेहारा और उन का मार्ग दिखानेहारा आग का खंभा। २० बरन तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया और अपना मान उन्हें खिलाना न छोड़ा और उन की प्यास बुझाने को पानी देता रहा। २१ चालीस बरस लों तू जंगल में उन का ऐसा पालन पोषण करता रहा कि उन की कुछ घटी न हुई न तो उन के वस्त्र पुराने हो गये और न उन के पांव सूजे। २२ फिर तू ने राज्य राज्य और देश देश के लोगों को उन के वश कर दिया और दिशा दिशा में उन को बांट दिया, सो वे हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों के देशों के अधिकारी हो गये। २३ फिर तू ने उन की सतान को आकाश के तारों के समान बहुत करके उन्हें उस देश में पहुंचा दिया जिस के विषय तू ने उन के पितरों से कहा था कि वे उस में जाकर उस के अधिकारी हो जाएंगे। २४ सो यह सन्तान जाकर उस की अधिकारिन हो गई और तू ने उन से देश के निवासी कनानियों को दबाया और राजाओं और देश के लोगों समेत उन को उन के हाथ कर दिया कि वे उन से जो चाहें सोई करें। २५ और उन्हों ने गढ़वाले नगर और उपजाऊ भूमि ले ली और सब भांति की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों के और खुदे हुए हौदों के और दाख और जलपाई की बारियों के और खाने के फलवाले बहुत से वृक्षों के अधिकारी हो गये सो वे खा खाकर तृप्त हुए और हृष्टपुष्ट हो गये और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख मानते रहे। २६ परन्तु वे तुझ से फिरकर बलवा करनेहारे हुए और तेरी व्यवस्था को पीठ पीछे कर दिया और तेरे जो नबी तेरी ओर फेरने के लिये उन को चिताते रहे उन को घात किया और तेरा बहुत तिरस्कार किया। २७ इस कारण तू ने उन को उन के शत्रुओं के हाथ में कर दिया और उन्हों ने उन को संकट में डाल दिया तौभी जब जब वे संकट में पड़कर तेरी दोहाई देते तब तब तू स्वर्ग से उन की सुनता और तू जो अतिदयालु है सो उन के छुड़ानेहारे ठहराता था जो उन को शत्रुओं के हाथ से छुड़ाते थे। २८ पर जब जब उन को चैन मिला तब तब वे फिर तेरे साम्हने बुराई करते थे इस कारण तू उन को शत्रुओं के हाथ कर देता था और वे उन पर प्रभुता करते थे तौभी जब वे फिरकर तेरी दोहाई देते तब तू स्वर्ग से उन की सुनता और तू जो दयालु है सो बार बार उन को छुड़ाता, २९ और उन को चिताता था इसलिये कि उन को फिर अपनी व्यवस्था के अधीन कर दे। पर वे अभिमान करते और तेरी आज्ञाएं न मानते थे और तेरे नियम जिन को यदि मनुष्य माने तो उन के कारण जीता रहे उन के विरुद्ध पाप करते और हठ करके अपना कन्धा हटाते और न सुनते थे। ३० तू तो बहुत बरस लों उन की सहता रहा और अपने आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा पर वे कान न लगाते थे सो तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया। ३१ तौभी तू ने जो अति दयालु है सो उन का अंत न कर डाला और न उन को त्याग दिया क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर है। ३२ अब तो हे हमारे परमेश्वर हे महान् पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहता है जो बड़ा कष्ट अश्शूर के राजाओं के दिनों से ले आज के दिन लों हमें और हमारे राजाओं हाकिमों याजकों नबियों पुरखाओं बरन तेरी सारी प्रजा को भोगना पड़ा है सो तेरे लेखे थोड़ा न ठहरे। ३३ तौभी जो कुछ हम पर बीता है उस के विषय तू तो धर्म्मी है तू ने तो सच्चाई से काम किया है पर हम ने दुष्टता की है। ३४ और हमारे राजाओं और हाकिमों याजकों और पुरखाओं ने न तो तेरी व्यवस्था को माना है न तेरी आज्ञाओं और चितौनियों की ओर ध्यान दिया जिन से तू ने उन को चिताया था। ३५ उन्हों ने अपने राज्य में और उस बड़े कल्याण के समय जो तू ने उन्हें दिया था और इस लंबे चौड़े और उपजाऊ देश में तेरी सेवा न की और न अपने बुरे कामों से फिरे। ३६ हम आज कल दास हैं जो देश तू ने हमारे पितरों को दिया था कि उस की

(१) मूल में हाथ उठाया है।

१७ उत्तम उपज खाएं इसी में हम दास हैं। इस की उपज से उन राजाओं को जिन्हें तू ने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर ठहराया है बहुत धन मिलता है और वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी अपनी इच्छा के अनुसार प्रभुता जताते हैं से हम बड़े संकट में
३८ पड़े हैं। और इस सब के कारण हम सच्चाई के साथ वाचा बांधते और लिख भी देते हैं और हमारे हाकिम लेवीय और याजक उस पर छाप लगाते हैं॥

(व्यवस्था के अनुसार चलने की वाचा बांधनी)

१०. **जिन्हों** ने छाप लगाई सो ये हैं अर्थात् हकल्याह का पुत्र नहेम्याह
२ जो अधिपति[1] था और सिदकिय्याह, सरायाह अयर्याह
३,४ यिर्मयाह, पशहूर अमर्याह मल्किय्याह, हत्तूश शबन्याह
५,६ मल्लूक, हारीम मरेमोत ओबद्याह, दानिय्येल गिन्नतोन
७,८ बारूक, मशुल्लाम अबिय्याह, मिय्यामीन। माज्याह बिलगै
९ और शमायाह ये ही तो याजक थे। फिर इन लेवीयों ने छाप लगाई अर्थात् आजन्याह का पुत्र येशू हेनादाद की
१० संतान में से बिन्नूई और कदमीएल, और उन के भाई
११ शबन्याह होदिय्याह कलीता पलायाह हानान, मीका
१२, १३ रहोब हशब्याह, जक्कूर शेरेब्याह शबन्याह, होदि-
१४ य्याह बानी और बनीन। फिर प्रजा के इन प्रधानों ने छाप लगाई अर्थात् परोश पहत्मोआब एलाम जत्तू
१५, १६ बानी, बुन्नी अजगाद बेबै, अदोनिय्याह बिग्वै
१७, १८ आदीन, आतेर हिजकिय्याह अज्जूर, होदिय्याह
१९, २० हाशूम बेसै, हारीष अनातोत नोबै, मग्पीआश
२१, २२ मशुल्लाम हेजीर, मशेजबेल सादोक यद्दू, पलत्याह
२३, २४ हानान अनायाह, होशे हनन्याह हश्शूब, हल्लोहेश
२५, २६ पिल्हाशोबेक, रहूम हशब्ना मासेयाह, अहि-
२७ य्याह हानान आनान, मल्लूक हारीम और बाना।
२८ और शेष लोग अर्थात् याजक लेवीय डेवढ़ीदार गवैये और नतीन लोग निदान जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश देश के लोगों से न्यारे हुए थे उन सभों ने अपनी अपनी स्त्रियों और उन बेटों बेटियों समेत
२९ जो समझनेहारे थे, अपने भाई रईसों से मिलकर किरिया खाई[2] कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो उस के दास मूसा के द्वारा दी गई और अपने प्रभु यहोवा की सब आज्ञाएं नियम और विधियां मानने में
३० चौकसी करेंगे, और हम न तो अपनी बेटियां इस देश के लोगों को ब्याह देंगे और न अपने बेटों के लिये उन
३१ की बेटियां ब्याह लेंगे, और जब इस देश के लोग विश्रामदिन को अन्न वा और बिकाऊ वस्तुएं बेचने को ले आयें तब हम उन से न तो विश्रामदिन को न किसी पवित्र दिन को कुछ लेंगे और सातवें सातवें बरस में भूमि पड़ी रहने देंगे और अपने अपने ऋण की उगाही
३२ छोड़ देंगे। फिर हम लोगों ने ऐसा नियम बांध लिया जिस से हम को अपने परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये
३३ एक एक तिहाई शेकेल देना पड़े, अर्थात् भेंट की रोटी और नित्य अन्नबलि और नित्य होमबलि और विश्रामदिनों और नये चांद और नियत पर्वों के बलिदानों और और पवित्र भेंटों और इस्राएल के प्रायश्चित्त के निमित्त पापबलियों निदान अपने परमेश्वर के भवन के
३४ सारे काम के खर्च के लिये। फिर क्या याजक क्या लेवीय क्या साधारण लोग हम सभों ने इस बात के ठहराने के लिये चिट्ठियां डालीं कि अपने पितरों के घरानों के अनुसार बरस बरस में ठहराये हुए समयों पर लकड़ी की भेंट व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार हम अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाने के लिये अपने परमेश्वर
३५ के भवन में लाया करेंगे, और अपनी अपनी भूमि की पहिली उपज और सब भांति के वृक्षों के पहिले फल बरस
३६ बरस यहोवा के भवन में ले आएंगे, और व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार अपने अपने पहिलौठे बेटों और पशुओं अर्थात् पहिलौठे बछड़ों और मेम्नों को अपने परमेश्वर के भवन में उन याजकों के पास लाया करेंगे जो हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा टहल करते
३७ हैं, और अपना पहिला गूंधा हुआ आटा और उठाई हुई भेंट और सब प्रकार के वृक्षों के फल और नया दाखमधु और टटका तेल अपने परमेश्वर के भवन की कोठरियों में याजकों के पास और अपनी अपनी भूमि की उपज का दशमांश लेवीयों के पास लाया करेंगे क्योंकि लेवीय वे हैं
३८ जो हमारी खेती के सब नगरों में दशमांश लेते हैं। और जब जब लेवीय दशमांश लें तब तब उन के संग हारून की सन्तान का कोई याजक रहा करे और लेवीय दश-मांशों का दशमांश हमारे परमेश्वर के भवन की कोठ-
३९ रियों में अर्थात् भण्डार में पहुंचाया करेंगे। क्योंकि जिन कोठरियों में पवित्र स्थान के पात्र और सेवा टहल करने-हारे याजक और डेवढ़ीदार और गवैये रहते हैं उन में इस्राएली और लेवीय अनाज नये दाखमधु और टटके तेल की उठाई हुई भेंटें पहुंचाएंगे। निदान हम अपने परमेश्वर के भवन को न छोड़ेंगे॥

(यहूदी कहां कहां बस गये)

११. **प्रजा** के हाकिम तो यरूशलेम में रहते थे और शेष लोगों ने यह ठहराने के लिये चिट्ठियां डालीं कि दस में से एक

(१) मूल में तिर्शाता। (२) मूल में स्राप और किरिया में प्रवेश किया।

मनुष्य यरूशलेम में जो पवित्र नगर है बसे और नौ
२ मनुष्य और और नगरों में बसें। और जिन्हों ने अपनी
ही इच्छा से यरूशलेम में बसना ठाना उन सभों को
३ लोगों ने धन्य धन्य कहा। उस प्रान्त के मुख्य मुख्य
पुरुष जो यरूशलेम में रहते थे सो ये हैं पर यहूदा के
नगरों में एक एक मनुष्य अपनी निज भूमि में रहता था
अर्थात् इस्राएली याजक लेवीय नतीन और सुलैमान के
४ दासों के सन्तान। यरूशलेम में तो कुछ यहूदी और
बिन्यामीनी रहते थे। यहूदियों में से तो पेरेस के वंश
का अतायाह जो उज्जिय्याह का पुत्र था यह जकर्याह का
पुत्र यह अमर्याह का पुत्र यह शपत्याह का पुत्र यह
५ महललेल का पुत्र था, और मासेयाह जो बारूक का
पुत्र था यह कोलहोजे का पुत्र यह हजायाह का पुत्र
यह अदायाह का पुत्र यह योयारीब का पुत्र यह जकर्याह
६ का पुत्र यह शीलोई का पुत्र था। पेरेस के वंश के जो
यरूशलेम में रहते थे सो सब मिलाकर चार सौ अड़सठ
७ शूरवीर थे। और बिन्यामीनियों में से सल्लू जो मशुल्लाम
का पुत्र था यह योएद का पुत्र यह पदायाह का
पुत्र यह कोलायाह का पुत्र यह मासेयाह का पुत्र यह
८ ईतीएल का पुत्र यह यशायाह का पुत्र था। और उस के
पीछे गब्बै सल्लै जिस के साथ नौ सौ अट्ठाईस पुरुष थे।
९ इन का रखवाल जिक्री का पुत्र योएल था और हस्सनूआ
का पुत्र यहूदा नगर के प्रधान का नाइब था।
१० फिर याजकों में से योयारीब का पुत्र यदायाह और
११ याकीन, और सरायाह जो परमेश्वर के भवन का
प्रधान और हिल्किय्याह का पुत्र था यह मशुल्लाम का
पुत्र यह सादोक का पुत्र यह मरायोत का पुत्र यह अही-
१२ तूब का पुत्र था, और इन के आठ सौ बाईस भाई जो
उस भवन का काम करते थे और अदायाह जो यरोहाम
का पुत्र था यह पलल्याह का पुत्र यह अम्सी का पुत्र
यह जकर्याह का पुत्र यह पशहूर का पुत्र यह मल्कि-
१३ य्याह का पुत्र था, और इस के दो सौ बयालीस भाई
जो पितरों के घरानों के प्रधान थे और अमशै जो अज-
रेल का पुत्र था यह अहजै का पुत्र यह मशिल्लेमोत का
पुत्र यह इम्मेर का पुत्र था और इन के एक सौ अट्ठा-
१४ ईस शूरवीर भाई। इन का रखवाल हग्गदोलीम का
१५ पुत्र जब्दीएल था। फिर लेवीयों में से शमायाह जो
हश्शूब का पुत्र था यह अज्रीकाम का पुत्र यह हशब्याह
१६ का पुत्र यह बुन्नी का पुत्र था, और शब्बतै और योजा-
बाद जो मुख्य लेवीयों में से और परमेश्वर के भवन के
१७ बाहरी कामपर ठहरे थे, और मत्तन्याह जो मीका का पुत्र
और जब्दी का पोता और आसाप का परपोता था और
प्रार्थना में धन्यवाद करनेहारों का मुखिया था और
बकबुक्याह जो अपने भाइयों में दूसरा था और अब्दा जो
शम्मू का पुत्र और गालाल का पोता और यदूतून का
परपोता था। जो लेवीय पवित्र नगर में रहते थे सो सब १८
मिलाकर दो सौ चौरासी थे। और अक्कूब और तल्मोन १९
नाम डेवढ़ीदार और उन के भाई जो फाटकों के रखवाले
थे एक सौ बहत्तर थे। और शेष इस्राएली याजक और २०
लेवीय यहूदा के सब नगरों में अपने अपने भाग पर रहते
थे। और नतीन लोग ओपेल में रहते और नतीनों के २१
ऊपर सीहा और गिश्पा ठहरे थे। और जो लेवीय यरूशलेम २२
में रहकर परमेश्वर के भवन के काम में लगे रहते थे
उन का मुखिया आसाप के वंश के गवैयों में का उज्जी
था जो बानी का पुत्र था यह हशब्याह का पुत्र यह
मत्तन्याह का पुत्र यह हशब्याह का पुत्र था। क्योंकि २३
उन के विषय राजा की आज्ञा थी और गवैयों के दिन
दिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध था। और प्रजा २४
के सारे काम के लिये मशेजबेल का पुत्र पतह्याह जो
यहूदा के पुत्र जेरह के वंश में से था सो राजा के पास
रहता था। फिर गांव और उन के खेत कुछ यहूदी २५
किर्यतर्बा और उस के गांवों में कुछ दीबोन और उस के
गांवों में कुछ यकब्सेल और उस के गांवों में रहते थे, फिर २६
येशू मोलादा बेत्पेलेत, हसर्शूआल और बेर्शेबा और २७
और उस के गांवों में, और सिकलग और मकोना और २८
उन के गांवों में, एन्रिम्मोन सोरा यर्मूत, जानोह और २९, ३०
अदुल्लाम और उन के गांवों में लाकीश और उस के खेतों
में अजेका और उस के गांवों में वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम
की तराई लों डेरे डाले हुए रहते थे। और बिन्यामीनी ३१
गेबा से लेकर मिकमाश अय्या और बेतेल और उस के
गांवों में, अनातोत नोब अनन्याह, हासोर रामा ३२, ३३
गित्तैम, हादीद सबोईम नबल्लत, लोद ओनो और ३४, ३५
कारीगरों की तराई लों रहते थे। और कितने यहूदी ३६
लेवीयों के दल बिन्यामीन से मिलाये गये॥

(याजकों और लेवीयों का ब्योरा)

१२. जो याजक और लेवीय शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल के और येशू के संग
यरूशलेम को गये[१] थे सो ये थे अर्थात् सरायाह यिर्म-
याह एज्रा, अमर्याह मल्लूक हत्तूश, शकन्याह रहूम २, ३
मरेमोत, इद्दो गिन्नतोई अबिय्याह, मीय्यामीन माद्याह ४, ५
बिलगा, शमायाह योयारीब यदायाह, सल्लू आमोक ६, ७
हिल्किय्याह और यदायाह। येशू के दिनों में तो याजकों
और उन के भाइयों के मुख्य मुख्य पुरुष ये ही थे। फिर ८

(१) मूल में चढ़ गये।

ये लेवीय गये अर्थात् येशू बिन्नूई कदमीएल शेरेब्याह
यहूदा और वह मत्तन्याह जो अपने भाइयों समेत धन्य-
९ वाद के काम पर ठहरा था। और उन के भाई बकबुक्याह
और उन्नो उन के साम्हने अपनी अपनी सेवकाई में
लगे रहते थे॥

१० और येशू ने योयाकीम को जन्माया और योयाकीम
११ ने एल्याशीब को और एल्याशीब ने योयादा को, और
योयादा ने योनातान को और योनातान ने यद्दू को
१२ जन्माया। योयाकीम के दिनों में ये याजक अपने अपने
पितर के घराने के मुख्य पुरुष थे अर्थात् सरायाह का
१३ तो मरायाह यिर्मयाह का हनन्याह, एज्रा का मशुल्लाम
१४ अमर्याह का यहोहानान, मल्लूकी का योनातान शबन्याह
१५ का योसेप, हारीम का अदना मरायोत का हेलकै,
१६, १७ इद्दो का जकर्याह गिन्नतोन का मशुल्लाम, अबिय्याह का
१८ जिक्री मिन्यामीन का मोअद्याह का पिलतै, बिलगा का
१९ शम्मू शमायाह का यहोनातान, योयारीब का मत्तनै
२० यदायाह का उज्जी, सल्लै का कल्लै आमोक का एबेर,
२१ हिल्कियाह का हशब्याह और यदायाह का नतनेल।
२२ एल्याशीब योयादा योहानान और यद्दू के दिनों में
लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम लिखे जाते
थे और दारा फारसी के राज्य में याजकों के भी नाम लिखे
२३ जाते थे। जो लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे
उन के नाम एल्याशीब के पुत्र योहानान के दिनों तक
२४ इतिहास की पुस्तक में लिखे जाते थे। और लेवीयों के
मुख्य पुरुष ये थे अर्थात् हसब्याह शेरेब्याह और कदमीएल
का पुत्र येशू और उन के साम्हने उन के भाई परमेश्वर
के जन दाऊद की आज्ञा के अनुसार आम्हने साम्हने
२५ स्तुति और धन्यवाद करने पर ठहरे थे। मत्तन्याह
बकबुक्याह ओबद्याह मशुल्लाम तल्मोन और अक्कूब
फाटकों के पास के भण्डारों का पहरा देनेहारे डेवढ़ीदार
२६ थे। योयाकीम के दिनों ने जो योसादाक का पोता और
येशू का पुत्र था और नहेम्याह अधिपति और एज्रा
अधिपति याजक और शास्त्री के दिनों में ये ही थे॥

(यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा)

२७ और यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के समय
लेवीय अपने सब स्थानों में ढूंढ़े गये कि यरूशलेम को
पहुंचाये जाएं जिस से आनन्द और धन्यवाद करके और
झांझ सारंगी और वीणा बजाकर और गाकर उस की
२८ प्रतिष्ठा करें। सो गवैयों के सन्तान यरूशलेम के चारों
२९ ओर के देश से और नतोपातियों के गांवों से, और बेत-
गिलगाल से और गेबा और अज्मावेत के खेतों से इकट्ठे
हुए क्योंकि गवैयों ने यरूशलेम के आस पास गांव बसा
३० लिये थे। तब याजकों और लेवीयों ने अपने अपने को
शुद्ध किया और उन्हों ने प्रजा को और फाटकों और
३१ शहरपनाह को भी शुद्ध किया। तब मैं ने यहूदी हाकिमों
को शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल ठहराये जो धन्य-
वाद करते हुए धूमधाम के साथ चलते थे। इन में से एक
दल तो दक्खिन ओर अर्थात् कूड़ाफाटक की ओर शहर-
३२ पनाह के ऊपर ऊपर से चला। और उस के पीछे पीछे ये
३३ चले अर्थात् होशायाह और यहूदा के आधे हाकिम, और
३४ अजर्याह एज्रा मशुल्लाम, यहूदा बिन्यामीन शमायाह
३५ और यिर्मयाह, और याजकों के कितने पुत्र तुरहियां लिये
हुए अर्थात् जकर्याह जो योहानान का पुत्र था यह
शमायाह का पुत्र यह मत्तन्याह का पुत्र यह मीकायाह
का पुत्र यह जक्कूर का पुत्र यह आसाप का पुत्र था,
३६ और उस के भाई शमायाह अजरेल मिललै गिललै माऐ
नतनेल यहूदा और हनानी परमेश्वर के जन दाऊद के
बाजे लिये हुए। और उन के आगे आगे एज्रा शास्त्री
३७ चला। ये सोताफाटक से हो सीधे दाऊदपुर की सीढ़ी पर
चढ़ शहरपनाह की ऊंचाई पर से चल कर दाऊद के
भवन के ऊपर से होकर पूरब की ओर जलफाटक तक
३८ पहुंचे। और धन्यवाद करने और धूमधाम से चलनेहारों
का दूसरा दल और उन के पीछे पीछे मैं और आधे लोग
उन से मिलने को शहरपनाह के ऊपर ऊपर से भट्ठों के
३९ गुम्मट के पास से चौड़ी शहरपनाह तक, और एप्रैम के
फाटक और पुराने फाटक और मछलीफाटक और हननेल
के गुम्मट और हम्मेआ नाम गुम्मट के पास से होकर
भेड़ फाटक लों चले और पहरुओं के फाटक के पास खड़े
४० हो गये। तब धन्यवाद करनेहारों के दोनों दल परमेश्वर
के भवन में खड़े हो गये और मैं और मेरे साथ आधे
४१ हाकिम, और एल्याकीम मासेयाह मिन्यामीन मीकायाह
एल्योएनै जकर्याह और हनन्याह नाम याजक तुरहियां
४२ लिये हुए, और मासेयाह शमायाह एलाजार उज्जी यहो-
हानान मल्कियाह एलाम और एजेर खड़े हुए। और
गवैये जिन का मुखिया यिज्रह्याह था सो ऊंचे स्वर से
४३ गाते बजाते रहे। उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े मेलबलि
चढ़ाये और आनन्द किया क्योंकि परमेश्वर ने उन को
बहुत ही आनन्दित किया था सो स्त्रियों और बालबच्चों
ने भी आनन्द किया और यरूशलेम के आनन्द की
ध्वनि दूर दूर लों पहुंच गई॥

(उपासना आदि का प्रबन्ध)

४४ उसी दिन खजानों के उठाई हुई भेंटों के पहिली
पहिली उपज और दशमांशों की कोठरियों के अधिकारी
ठहराये गये कि उन में नगर नगर के खेतों के अनुसार

वे वस्तुएं संचय करें जो व्यवस्था के अनुसार याजकों और लेवीयों के भाग ठहरी थीं क्योंकि यहूदी हाजिर होनेहारे याजकों और लेवीयों के कारण आनन्दित हुए। ४५ सो वे अपने परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय चौकसी करते रहे और गवैये और डेवढ़ीदार भी दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार वैसा ही ४६ करते रहे। प्राचीनकाल अर्थात् दाऊद और आसाप के दिनों में तो गवैयों के प्रधान होते थे और परमेश्वर की ४७ स्तुति और धन्यवाद के गीत गाये जाते थे। और जरुब्बाबेल और नहेम्याह के दिनों में सारे इस्राएली गवैयों और डेवढ़ीदारों के दिन दिन के भाग देते रहे और लेवीयों के अंश पवित्र करके देते थे और लेवीय हारून की सन्तान के अंश पवित्र कर के देते थे॥

(कुरीतियों का सुधारा जाना)

१३. **उसी** दिन मूसा की पुस्तक लोगों को पढ़कर सुनाई गई और उस में यह लिखा हुआ मिला कि कोई अम्मोनी वा मोआबी २ परमेश्वर की सभा में कभी न आने पाए, क्योंकि उन्हों ने अन्न जल लेकर इस्राएलियों से भेंट न की बरन बिलाम को उन्हें स्राप देने के लिये दक्षिणा देकर बुलवाया तौभी हमारे परमेश्वर ने स्राप की सन्ती ३ आशिष ही दिलाई। यह व्यवस्था सुनकर उन्हों ने इस्राएल में से मिली जुली हुई भीड़ को अलग कर दिया॥

४ इस से पहिले एल्याशीब याजक जो हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों का अधिकारी और तोबिय्याह का ५ संबन्धी था, उस ने तोबिय्याह के लिये एक बड़ी कोठरी ठहरा रक्खी थी जिस में पहिले अन्नबलि का सामान और लोबान और पात्र और अनाज नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश जिन्हें लेवीयों गवैयों और डेवढ़ीदारों को देने की आज्ञा थी और याजकों के लिये उठाई हुई ६ भेंटें भी रक्खी जाती थीं। पर उस सारे समय मैं यरूशलेम में न रहता था क्योंकि बाबेल के राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें बरस में मैं राजा के पास गया फिर कितने दिन ७ पीछे राजा से छुट्टी मांगकर, मैं यरूशलेम को आया तब मैं ने जान लिया कि एल्याशीब ने तोबिय्याह के लिये परमेश्वर के भवन के आंगनों में एक कोठरी ठहरा ८ कर क्या ही बुराई की है। सो मैं ने बहुत बुरा माना और तोबिय्याह का सारा घरेलू सामान उस कोठरी में ९ से फेंक दिया। तब मेरी आज्ञा से वे कोठरियां शुद्ध की गईं और मैं ने परमेश्वर के भवन के पात्र और अन्नबलि १० का सामान और लोबान उन में फिर रखा दिया। फिर मैं ने जान लिया कि लेवीयों के भाग नहीं दिये गये और इस कारण काम करनेहारे लेवीय और गवैये अपने अपने खेत ११ को भाग गये हैं। तब मैं ने हाकिमों को डांटकर कहा परमेश्वर का भवन क्यों त्यागा गया है। फिर मैं ने उन को इकट्ठा करके एक एक को उस के स्थान पर ठहरा दिया। १२ तब से सब यहूदी अनाज नये दाखमधु और टटके तेल के १३ दशमांश भण्डारों में लाने लगे। और मैं ने भण्डारों के अधिकारी शेलेम्याह याजक और सादोक मुंशी को और लेवीयों में से पदायाह को और उन के नीचे हानान को जो मत्तन्याह का पोता और जक्कूर का पुत्र था ठहरा दिया वे तो विश्वासयोग्य गिने जाते थे और अपने भाइयों के बीच बांटना उन का काम था। १४ हे मेरे परमेश्वर मेरा यह काम मेरे हित के लिये स्मरण रख और जो जो सुकर्म्म मैं ने अपने परमेश्वर के भवन और उस में की आराधना के विषय किये हैं उन्हें न बिसरा[१]॥

१५ उन्हीं दिनों में मैं ने यहूदा में कितनों को देखा जो विश्रामदिन को हौदों में दाख रौंदते और पूलियों को ले आते और गदहों पर लादते थे वैसे ही वे दाखमधु दाख अंजीर और भांति भांति के बोझ विश्रामदिन को यरूशलेम में लाते थे तब जिस दिन वे भोजनवस्तु बेचते थे उसी दिन मैं ने उन को चिता दिया। १६ फिर उस में सोरी लोग रहकर मछली और भांति भांति का सौदा ले आकर यहूदियों के हाथ यरूशलेम में विश्रामदिन को बेचा करते थे। १७ सो मैं ने यहूदा के रईसों को डांटकर कहा तुम लोग यह क्या बुराई करते हो जो विश्रामदिन को अपवित्र करते हो। १८ क्या हमारे पुरखा ऐसा न करते थे और क्या हमारे परमेश्वर ने यह सारी बिपत्ति हम पर और इस नगर पर न डाली तौभी तुम विश्रामदिन को अपवित्र करने से इस्राएल पर परमेश्वर का कोप और भी भड़काते हो। १९ सो जब विश्रामदिन के पहिले दिन को यरूशलेम के फाटकों के आसपास अंधेरा होने लगा तब मैं ने आज्ञा दी कि उन के पल्ले बन्द किए जाएं और यह भी आज्ञा दी कि वे विश्रामदिन के पूरे होने तक खोले न जाएं तब मैं ने अपने कितने सेवकों को फाटकों के अधिकारी ठहरा दिया इस लिये कि विश्रामदिन को कोई बोझ भीतर आने न पाये। २० सो व्योपारी और भांति भांति के सौदे के बेचनेहारे यरूशलेम के बाहर दो एक बेर टिके। २१ तब मैं ने उन को चिताकर कहा तुम लोग शहरपनाह के साम्हने क्यों टिकते हो यदि तुम फिर ऐसा करो तो मैं तुम पर हाथ बढ़ाऊंगा सो उस समय से वे फिर विश्रामदिन को न आये। २२ तब मैं

(१) मूल में मिटा।

ने लेवीयों को आज्ञा दी कि अपने अपने को शुद्ध करके फाटकों की रखवाली करने के लिये आया करो इसलिये कि विश्रामदिन पवित्र माना जाए। हे मेरे परमेश्वर मेरे हित के लिये यह भी स्मरण रख और अपनी बड़ी करुणा के अनुसार मुझ पर तरस कर ॥

२३ फिर उन्हीं दिनों में मुझ को ऐसे यहूदी देख पड़े जिन्होंने अशदोदी अम्मोनी और मोआबी स्त्रियां ब्याह २४ ली थीं। और उन के लड़केबालों की आधी बोली अशदोदी थी और वे यहूदी बोली न बोल सकते थे २५ दोनों जाति की बोली बोलते थे। सो मैं ने उन को डांटा और कोसा और उन में से कितनों को पिटवा दिया और उन के बाल नुचवाये और उन को परमेश्वर की यह किरिया खिलाई कि हम अपनी बेटियां उन के बेटों के साथ न ब्याहेंगे और न अपने लिये वा २६ अपने बेटों के लिये उन की बेटियां ब्याह लेंगे। क्या इस्राएल का राजा सुलैमान इसी प्रकार के पाप में न फंसा था तौभी बहुतेरी जातियों में उस के तुल्य कोई राजा न हुआ और वह अपने परमेश्वर का प्रिय भी था और परमेश्वर ने उसे सारे इस्राएल के ऊपर राजा किया पर उस को भी अन्यजाति स्त्रियों ने पाप में फंसाया। २७ सो क्या हम तुम्हारी सुनकर ऐसी बड़ी बुराई करें कि बिरानी स्त्रियां ब्याहकर अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करें। २८ और एल्याशीब महायाजक के पुत्र योयादा का एक पुत्र होरोनी सम्बल्लत का दामाद हुआ था सो मैं ने उस को २९ अपने पास से भगा दिया। हे मेरे परमेश्वर उन की हानि के लिये याजकपद और याजकों और लेवीयों की वाचा ३० का तोड़ा जाना स्मरण रख। सो मैं ने उन को सब अन्यजातियों से शुद्ध किया और एक एक याजक और ३१ लेवीय की बारी और काम ठहराया। फिर मैं ने लकड़ी की भेंट ले आने के विशेष समय ठहरा दिये और पहिली पहिली उपज के देने का प्रबन्ध किया। हे मेरे परमेश्वर मेरे हित के लिये मेरा स्मरण रख ॥

एस्तेर नाम पुस्तक ।

(क्षयर्ष की जेवनार के समय वशती का पटरानी के पद से उतारा जाना)

१. क्षयर्ष नाम राजा के दिनों में ये बातें हुईं। यह वही क्षयर्ष है जो एक सौ सताईस प्रान्तों पर अर्थात् हिन्दुस्तान से लेकर कूश २ देश लों राज्य करता था। उन्हीं दिनों में जब क्षयर्ष राजा अपनी उस राजगद्दी पर विराज रहा था जो शूशन ३ नाम राजगढ़ में थी, उस ने अपने राज्य के तीसरे बरस में अपने सब हाकिमों और कर्म्मचारियों की जेवनार की। फारस और मादै के सेनापति और प्रान्त प्रान्त ४ के प्रधान और हाकिम उस के सन्मुख आ गये। और वह उन्हें बहुत दिन बरन एक सौ अस्सी दिन लों अपने राजविभव का धन और अपने माहात्म्य के अनमोल ५ पदार्थ दिखाता रहा। इतने दिनों के बीतने पर राजा ने क्या छोटे क्या बड़े उन सभों की भी जो शूशन नाम राजगढ़ में इकट्ठे हुए थे राजभवन की बारी के आंगन में ६ सात दिन की जेवनार की। वहां के पर्दे श्वेत और नीले सूत के थे और सन और बैंजनी रंग की डोरियों से चांदी के छल्लों में जो संगमर्मर के खंभों से लगे हुए थे और वहां की चौकियां सोने चांदी की थीं और लाल और श्वेत और पीले और काले संगमर्मर के बने हुए ७ फर्श पर धरी हुई थीं। उस जेवनार में राजा के योग्य दाखमधु डौल डौल के सोने के पात्रों में डालकर राजा ८ की उदारता से बहुतायत के साथ पिलाया जाता था। पीना तो नियम के अनुसार होता था किसी को बरबस नहीं पिलाया जाता क्योंकि राजा ने तो अपने भवन के सब भण्डारियों को आज्ञा दी थी कि जो पाहुन जैसा चाहे ९ उस के साथ वैसा ही बर्ताव करना। वशती रानी ने भी राजा क्षयर्ष के राजभवन में स्त्रियों की जेवनार की। १० सातवें दिन जब राजा का मन दाखमधु में मगन था तब उस ने महूमान बिजता हर्बोना बिगता अबगता जेतेर और कर्कस नाम सातों खोजों को जो क्षयर्ष राजा ११ के सन्मुख सेवा टहल किया करते थे आज्ञा दी, कि वशती रानी को राजमुकुट धारण किये हुए राजा के सन्मुख ले आओ इसलिये कि देश देश के लोगों और हाकिमों पर उस की सुन्दरता प्रगट हो। वह तो देखने १२ में रूपवती थी। खोजों के द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर वशती रानी ने आने से नाह की सो राजा बड़े

१३ क्रोध से जलने लगा। तब राजा ने समय समय का भेद जाननेहारे पण्डितों से पूछा (राजा तो नीति और न्याय
१४ के सब जाननेहारों से ऐसा किया करता था। और उस के पास कर्शना शेतार अदमाता तर्शीश मेरेस मर्सना और ममूकान नाम फारस और मादै के सातों खोजे थे जो राजा का दर्शन करते और राज्य में मुख्य मुख्य पदों
१५ पर विराजते थे)। राजा ने पूछा कि वशती रानी ने राजा क्षयर्ष की खोजों से दिलाई हुई आज्ञा न मानी सो हमें
१६ नीति के अनुसार उस से क्या करना चाहिये। तब ममूकान ने राजा और हाकिमों के सुनते उत्तर दिया वशती रानी ने जो टेढ़ा काम किया सो न केवल राजा से किया सारे हाकिमों से और उन सारे देशों के लोगों से भी
१७ किया जो राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में रहते हैं। कैसे कि रानी के इस काम की चर्चा सब स्त्रियों को मिलेगी और जब यह कहा जायगा कि राजा क्षयर्ष ने तो वशती रानी को अपने साम्हने ले आने की आज्ञा दी पर वह न आई तब वे अपने अपने पति को तुच्छ जानने
१८ लगेंगी। और आज के दिन फारसी और मादी हाकिमों की स्त्रियां रानी का काम सुनकर राजा के सब हाकिमों से ऐसा ही कहने लगेंगी जिस से बहुत ही अपमान और
१९ कोप होगा। यदि राजा को भाए तो उस की ओर से यह आज्ञा निकले और फार्सियों और मादियों के कानून में लिखी भी जाए जिस से न बदल सके कि वशती राजा क्षयर्ष के सन्मुख फिर आने न पाए और राजा पटरानी का पद किसी दूसरी को दे जो उस से अच्छी
२० हो। और जब राजा की यह आज्ञा उस के सारे बड़े राज्य में सुनाई जाएगी तब सब पत्नियां छोटे बड़े अपने
२१ अपने पति का आदरमान करती रहेंगी। यह वचन राजा और हाकिमों को भाया और राजा ने ममूकान का
२२ कहा माना, और अपने राज्य में अर्थात् एक एक प्रान्त के अक्षरों में और एक एक जाति की बोली में चिट्ठियां भेजीं कि सब पुरुष अपने अपने घर में अधिकार चलाएं और अपने लोगों की बोली बोला करें॥

(एस्तेर का पटरानी बन जाना)

२. इन बातों के पीछे जब राजा क्षयर्ष की जलजलाहट ठंढी हो गई तब उस ने वशती की और जो काम उस ने किया था और जो उस
२ के विषय ठाना गया था उस की भी सुधि ली। तब राजा के सेवक जो उस के टहलुए थे कहने लगे राजा के
३ लिये सुन्दर सुन्दर जवान कुंवारियां ढूंढ़ी जाएं। और राजा अपने राज्य के सब प्रान्तों में लोगों को इसलिये ठहराए कि सब सुन्दर जवान कुंवारियों को शूशन गढ़ के रनवास में इकट्ठी करके स्त्रियों के रखवाले राजा के खोजे हेगे को सौंप दें और शुद्ध करने के योग्य वस्तुएं उन्हें दी
४ जाएं। तब उन में से जो कुंवारी राजा की दृष्टि में उत्तम होए सो वशती के स्थान पर पटरानी हो जाए। यह बात राजा को अच्छी लगी सो उस ने ऐसा ही किया॥

५ शूशन गढ़ में मोर्दकै नाम एक यहूदी रहता था जो कीश नाम एक बिन्यामीनी का परपोता शिमी का
६ पोता और याईर का पुत्र था। वह उन बन्धुओं के साथ यरूशलेम से बन्धुआई में गया था जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर यहूदा के राजा यकोन्याह के संग
७ बन्धुआ करके ले गया था। उस ने हदस्सा नाम अपनी चचेरी बहिन को पाला पोसा था जो एस्तेर भी कहावती थी। क्योंकि उस के माता पिता कोई न था और वह लड़की सुन्दर और रूपवती थी और जब उस के माता पिता मर गये तब मोर्दकै ने उस को अपनी बेटी करके
८ पाला। जब राजा की आज्ञा और नियम सुनाये गये और बहुत सी जवान स्त्रियां शूशन गढ़ में हेगे के अधिकार में इकट्ठी की गईं तब एस्तेर भी राजभवन में स्त्रियों के
९ रखवाले हेगे के अधिकार में सौंपी गई। और वह जवान स्त्री उस की दृष्टि में अच्छी लगी और वह उस से प्रसन्न हुआ सो उस ने बिना बिलम्ब उसे राजभवन में से शुद्ध करने की वस्तुएं और उस का भोजन और उस के लिये चुनी हुई सात सहेलियां भी दीं और उस को और उस की सहेलियों को रनवास में सब से अच्छा रहने का
१० स्थान दिया। एस्तेर ने न अपनी जाति बताई थी न अपना कुल क्योंकि मोर्दकै ने उस को आज्ञा दी थी कि
११ उसे न बताना। मोर्दकै तो दिन दिन रनवास के आंगन के साम्हने टहलता था इसलिये कि जाने कि एस्तेर
१२ कैसी है और उस को क्या होगा। जब एक एक कन्या की बारी हुई कि वह क्षयर्ष राजा के पास जाए (और यह उस समय हुआ जब उस के साथ स्त्रियों के लिये ठहराये हुए नियम के अनुसार बारह मास लों व्यवहार किया गया था अर्थात् उन के शुद्ध करने के दिन इस रीति से बीत गये कि छः मास लों गंधरस का तेल लगाया जाता था और छः मास लों सुगंधद्रव्य और स्त्रियों के शुद्ध करने का और और सामान लगाया जाता
१३ था), तब इस प्रकार से कन्या राजा के पास जाती थी कि जो कुछ उस ने मांगा वह उसे दिया गया और वह
१४ उसे लिये हुए रनवास से राजभवन में गई। सांझ को तो वह गई और बिहान को वह लौटकर रनवास के दूसरे घर में जाकर रखेलियों के रखवाले राजा के खोजे शाशगज के अधिकार में हो गई और यदि राजा ने उस

से प्रसन्न हो उस को नाम लेकर न बुलवाया हो तो वह

१५ उस के पास फिर न गई। जब मोर्दकै के चचा अबीहैल की बेटी एस्तेर जिस को मोर्दकै ने बेटी करके रक्खा था उस की राजा के पास जाने की बारी पहुंच गई तब जो कुछ स्त्रियों के रखवाले राजा के खोजे हेगे ने उस के लिये ठहराया था उस से अधिक उस ने और कुछ न मांगा। और जितनों ने एस्तेर को देखा वे सब उस से प्रसन्न हुए।

१६ यों एस्तेर राजभवन में राजा क्षयर्ष के पास उस के राज्य के सातवें बरस के तेबेत नाम दसवें महीने में पहुंचाई

१७ गई। और राजा ने एस्तेर से और सब स्त्रियों से अधिक प्रीति की और और सब कुंवारियों से अधिक उस के अनुग्रह और कृपा की दृष्टि उसी पर हुई इस कारण उस ने उस के सिर पर राजमुकुट धरा और उस को वशती

१८ के स्थान पर रानी किया। तब राजा ने अपने सब हाकिमों और कर्म्मचारियों की बड़ी जेवनार करके उसे एस्तेर की जेवनार कहा और प्रान्तों में छुट्टी दिलाई और अपनी

१९ उदारता के योग्य इनाम भी बांटे। जब कुंवारियां दूसरी बार इकट्ठी की गईं तब मोर्दकै राजभवन के फाटक में

२० बैठा था। तब तक एस्तेर ने अपनी जाति और कुल न बताये थे क्योंकि मोर्दकै ने उस को ऐसी आज्ञा दी थी और एस्तेर मोर्दकै की बात ऐसी मानती थी जैसे कि उस

२१ के यहां पलने के समय मानती थी। उन्हीं दिनों में जब मोर्दकै राजा के राजभवन के फाटक में बैठा करता था राजा के खोजे जो डेवढ़ीदार भी थे उन में से बिकतान और तेरेश नाम दो जनों ने राजा क्षयर्ष से रूठकर उस

२२ पर हाथ चलाने की युक्ति की। यह बात मोर्दकै को मालूम हुई और उस ने एस्तेर रानी को बताई और एस्तेर ने मोर्दकै का नाम लेकर राजा को जता दिया।

२३ तब तहकीकात होने पर यह बात सच निकली और वे दोनों वृक्ष पर लटकाये गये और यह वृत्तान्त राजा के साम्हने इतिहास की पुस्तक में लिखा गया॥

(हामान के द्रोह के कारण यहूदियों के सत्यानाश की आज्ञा का दिया जाना)

३. इन बातों के पीछे राजा क्षयर्ष ने अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को बड़ा पद दिया और उस को बढ़ाकर उस के लिये उस के संग के सब हाकिमों के सिंहासनों से ऊंचा सिंहासन ठह-

२ राया। और राजा के सारे कर्म्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे हामान के साम्हने झुककर दण्डवत् करते थे क्योंकि राजा ने उस के विषय ऐसी आज्ञा दी थी पर मोर्दकै न तो झुकता और न उस को

३ दण्डवत् करता था। सो राजा के कर्म्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे उन्हों ने मोर्दकै से

४ पूछा तू राजा की आज्ञा क्यों टाल देता है। जब वे उस से दिन दिन ऐसा ही कहते रहे और उस ने उन की न मानी तब उन्हों ने यह देखने की इच्छा से कि मोर्दकै की बातें ठहरेंगी कि नहीं हामान को बता दिया। उस ने उन को तो बताया था कि यहूदी हूं।

५ जब हामान ने देखा कि मोर्दकै नहीं झुकता और न मुझ को दण्डवत् करता है तब बहुत ही जल उठा।

६ और उस ने केवल मोर्दकै पर हाथ चलाना तुच्छ जाना क्योंकि उन्हों ने हामान को यह बता दिया था कि मोर्दकै किस जाति का है सो हामान ने क्षयर्ष के राज्य भर में रहनेहारे सारे यहूदियों को भी मोर्दकै की जाति जानकर विनाश कर

७ डालने का यत्न किया। राजा क्षयर्ष के बारहवें बरस के नीसान नाम पहिले महीने में हामान ने अदार नाम बारहवें महीने लों के एक एक दिन और एक एक महीने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी अपने साम्हने डलवायी।

८ और हामान ने राजा क्षयर्ष से कहा तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहनेहारे देश देश के लोगों के बीच तितर बितर और छिटकी हुई एक जाति है जिस के नियम और सब लोगों के नियमों से अलग हैं और वे राजा के कानून पर नहीं चलते इसलिये उन्हें रहने देना राजा को उचित नहीं

९ है। सो यदि राजा को भाए तो उन्हें नाश करने की आज्ञा लिखी जाए और मैं राजा के भण्डारियों के हाथ में राजभण्डार में पहुंचाने के लिये दस हजार किक्कार चांदी

१० दूंगा। तब राजा ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से उतारकर अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को जो यहूदियों का

११ बैरी था दे दी। और राजा ने हामान से कहा वह चांदी तुझे दी गई है और वे लोग भी कि तू उन से

१२ जैसा तेरा जी चाहे वैसाही बर्ताव करे। सो उसी पहिले महीने के तेरहवें दिन को राजा के लेखक बुलाये गये और हामान की सारी आज्ञा के अनुसार राजा के सब अधिपतियों और सब प्रान्तों के प्रधानों और देश देश के लोगों के हाकिमों के लिये चिट्ठियां एक एक प्रान्त के अक्षरों में और एक एक देश के लोगों की बोली में राजा क्षयर्ष के नाम से लिखी गईं और उन में राजा की अंगूठी

१३ की छाप लगाई गई। और राज्य के सब प्रान्तों में इस आशय की चिट्ठियां हरकारों के द्वारा भेजी गईं कि एक ही दिन में अर्थात् अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को क्या जवान क्या बूढ़ा क्या स्त्री क्या बालक सब यहूदी विध्वंस घात और नाश किये जाएं और उन की

१४ धन संपत्ति लूटी जाए। उस आज्ञा के लेख की नकलें सारे प्रान्तों में खुली हुई भेजी गईं कि सब देशों के लोग

१५ उस दिन के लिये तैयार हो जाएं। यह आज्ञा शूशन गढ़ में दी गई और हरकारे राजा की आज्ञा से फुर्ती के साथ निकल गये तब राजा और हामान तो जेवनार में बैठ गये पर शूशन नगर में घबराहट हुई॥

(मोर्दकै एस्तेर को बिनती करने के लिये उसकाता है)

४. जब मोर्दकै ने जान लिया कि क्या क्या किया गया तब वस्त्र फाड़ टाट पहिन राख डालकर नगर के बीच जाकर ऊंचे और दुखभरे २ शब्द से चिल्लाने लगा। और वह राजभवन के फाटक के साम्हने पहुंचा टाट पहिने राजभवन के फाटक के ३ भीतर तो किसी के जाने का हुक्म न था। और एक एक प्रान्त में जहां जहां राजा की आज्ञा और नियम पहुंचा वहां वहां यहूदी बड़ा विलाप और उपवास करने और रोने पीटने लगे बरन बहुतेरे टाट पहिने और राख ४ डाले हुए पड़े रहे। और एस्तेर रानी की सहेलियों और खोजों ने जाकर उस को बता दिया तब रानी शोक से भर गई[१] और मोर्दकै के पास वस्त्र भेजकर यह कहलाया कि टाट उतार कर इन्हें पहिन ले पर उस ने उन्हें न ५ लिया। तब एस्तेर ने राजा के खोजों में से हताक को जिसे राजा ने उस के पास रहने को ठहराया था बुलाकर आज्ञा दी कि मोर्दकै के पास जाकर बूझ ले कि यह ६ क्या बात है और इस का क्या कारण है। सो हताक नगर के उस चौक में जो राजभवन के फाटक के साम्हने ७ था मोर्दकै के पास निकल गया। तब मोर्दकै ने उस को बता दिया कि मेरे ऊपर क्या क्या बीता है और हामान ने यहूदियों के नाश करने की अनुमति पाने के लिये राजभण्डार में कितनी चांदी भर देने का वचन दिया यह ८ भी ठीक बतला दिया। फिर यहूदियों के विनाश करने की जो आज्ञा शूशन में दी गई थी उस की एक नकल भी उस ने हताक के हाथ में एस्तेर को दिखाने के लिये दी और उसे सब हाल बताने और यह आज्ञा देने को कहा कि भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के ९ लिये गिड़गिड़ा कर बिनती कर। तब हताक ने एस्तेर के १० पास जा मोर्दकै की बातें कह सुनाईं। तब एस्तेर ने ११ हताक को मोर्दकै से यह कहने की आज्ञा दी कि, राजा के सारे कर्म्मचारियों बरन राजा के प्रान्तों के सब लोगों को भी मालूम है कि क्या पुरुष क्या स्त्री कोई क्यों न हो जो आज्ञा बिना पाये भीतरी आंगन में राजा के पास जाए उस के मार डालने ही की आज्ञा है केवल जिस की ओर राजा सोने का राजदण्ड बढ़ाए वही बचता है पर १२ मैं अब तीस दिन से राजा के पास बुलाई नहीं गई। सो एस्तेर की ये बातें मोर्दकै को सुनाई गईं। तब मोर्दकै ने १३ एस्तेर के पास यह कहला भेजा कि तू मन ही मन यह विचार न कर कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूंगी। क्योंकि जो तू इस समय १४ चुपचाप रहे तो और किसी न किसी उपाय से[२] यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा पर तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही समय के लिये राजपद मिल गया हो। तब एस्तेर ने १५ मोर्दकै के पास यह कहला भेजा कि, तू जाकर शूशन के १६ सब यहूदियों को इकट्ठा कर और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो तीन दिन रात न तो कुछ खाओ और न कुछ पीओ और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूंगी और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊंगी और जो नाश हो गई तो हो गई। सो मोर्दकै चला गया और १७ एस्तेर की आज्ञा के अनुसार ही किया॥

५. तीसरे दिन एस्तेर अपने राजकीय वस्त्र पहिन राजभवन के भीतरी आंगन में जाकर राजभवन के साम्हने खड़ी हो गई। राजा तो राजभवन में राजगद्दी पर भवन के द्वार के साम्हने विराजमान था। और जब राजा ने एस्तेर रानी को २ आंगन में खड़ी हुई देखा तब वह उस से प्रसन्न हुआ और अपने हाथ का सोने का राजदण्ड उस की ओर बढ़ाया सो एस्तेर ने निकट जाकर राजदण्ड की नोक छुई। तब राजा ने उस से पूछा हे एस्तेर रानी तुझे ३ क्या चाहिये और तू क्या मांगती है मांग और तुझे आधे राज्य तक दिया जाएगा। एस्तेर ने कहा यदि राजा को ४ भाए तो आज हामान को साथ लेकर उस जेवनार में आए जो मैं ने राजा के लिये तैयार की है। तब राजा ५ ने आज्ञा दी कि हामान को फुर्ती से ले आओ कि एस्तेर की बात मानी जाए। सो राजा और हामान एस्तेर की की हुई जेवनार में आये। जेवनार के समय जब ६ दाखमधु पिया जाता था तब राजा ने एस्तेर से कहा तेरा क्या निवेदन है वह पूरा किया जाएगा और तू क्या मांगती है मांग और आधे राज्य लों तुझे दिया जाएगा। एस्तेर ने उत्तर दिया मेरा निवेदन और जो मैं ७ मांगती हूं सो यह है कि, यदि राजा मुझ पर प्रसन्न ८ हो और मेरा निवेदन सुनना और जो वर मैं मांगूं वही देना राजा को भाए तो राजा और हामान कल उस जेवनार में आएं जिसे मैं उन के लिये करूंगी और कल मैं राजा के कहे के अनुसार करूंगी। उस दिन हामान ९

(१) मूल में पीड़ा से ऐंठ गई।

(२) मूल में स्थान से।

आनन्दित और मन में प्रसन्न होकर बाहर गया पर जब उस ने मोर्दकै को राजभवन के फाटक में देखा कि वह मेरे साम्हने न तो खड़ा होता और न थरथराता है तब
१० वह मोर्दकै के विरुद्ध क्रोध से भर गया। तौभी वह अपने को रोककर अपने घर गया और अपने मित्रों और
११ अपनी स्त्री जेरेश को बुलवा भेजा। तब हामान ने उन से अपने धन का विभव और अपने लड़केबालों की बढ़ती और राजा ने उस को कैसे कैसे बढ़ाया और और सब हाकिमों और अपने और सब कर्म्मचारियों से ऊंचा पद
१२ दिया था इस सब का बखान किया। हामान ने यह भी कहा कि एस्तेर रानी ने भी मुझे छोड़ और किसी को राजा के संग अपनी की हुई जेवनार में आने न दिया और कल के लिये भी राजा के संग उस ने मुझी
१३ को नेवता दिया है। तौभी जब जब मुझे वह यहूदी मोर्दकै राजभवन के फाटक में बैठा हुआ देख पड़ता है
१४ तब तब यह सब मेरे लेखे कुछ नहीं है[१]। उस की स्त्री जेरेश और उस के सब मित्रों ने उस से कहा पचास हाथ ऊंचा फांसी का एक खंभा बनाया जाए और बिहान को राजा से कहना कि उस पर मोर्दकै लटका दिया जाए तब राजा के संग आनन्द से जेवनार में जाना। इस बात से प्रसन्न होकर हामान ने ऐसा ही फांसी का एक खंभा बनवाया॥

६. उस रात राजा को नींद न आई सो उस की आज्ञा से इतिहास की पुस्तक
२ लाई गई और वह पढ़कर राजा को सुनाई गई। और यह लिखा हुआ मिला कि जब राजा क्षयर्ष के हाकिम जो डेवढ़ीदार भी थे उन में से बिगताना और तेरेश नाम दो जनों ने उस पर हाथ चलाने की युक्ति की तब
३ मोर्दकै ने इसे प्रगट किया था। तब राजा ने पूछा इस के बदले मोर्दकै की क्या प्रतिष्ठा और बड़ाई की गई राजा के जो सेवक उस की सेवा टहल कर रहे थे उन्हों ने उस को उत्तर दिया उस के लिये कुछ भी नहीं किया
४ गया। राजा ने पूछा आंगन में कौन है उसी समय तो हामान राजा के भवन से बाहरी आंगन में इस मनसा से आया था कि जो खंभा उस ने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था उस पर उस को लटका देने की चर्चा राजा
५ से करे। सो राजा के सेवकों ने उस से कहा आंगन में तो हामान खड़ा है राजा ने कहा उसे भीतर लाओ।
६ जब हामान भीतर आया तब राजा ने उस से पूछा जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस से क्या करना उचित होगा हामान ने यह सोचकर कि मुझ से
७ अधिक राजा किस की प्रतिष्ठा करना चाहता होगा, राजा को उत्तर दिया जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना
८ चाहे उस के लिये कोई राजकीय वस्त्र लाया जाए जो राजा पहिनता हो और एक घोड़ा भी जिस पर राजा सवार होता हो और उस के सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा
९ जाता हो सो लाया जाए। फिर वह वस्त्र और वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपे जाएं कि जिस की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस को वह वस्त्र पहिनाया जाए और उस घोड़े पर सवार करके नगर के चौक में फिराया जाए और उस के आगे आगे यह प्रचार किया जाए कि जिस की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस से
१० यों ही किया जाएगा। राजा ने हामान से कहा फुर्ती करके अपने कहे के अनुसार उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर उस यहूदी मोर्दकै से जो राजभवन के फाटक में बैठा करता है वैसा ही कर जो कुछ तू ने कहा है उस
११ में कुछ भी कम होने न पाए। सो हामान ने उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर मोर्दकै को पहिनाया और उसे घोड़े पर चढ़ाकर नगर के चौक में यों पुकारता हुआ फिराया कि जिस की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उस
१२ से यों ही किया जाएगा। तब मोर्दकै तो राजभवन के फाटक में लौट गया पर हामान झट शोक करते और
१३ सिर ढांपे हुए अपने घर गया। और हामान ने अपनी स्त्री जेरेश और अपने सब मित्रों से सब कुछ बखान किया
१४ जो उस पर बीता था। तब उस के बुद्धिमान मित्रों और उस की स्त्री जेरेश ने उस से कहा मोर्दकै जिस से तू नीचा खाने लगा है यदि वह यहूदियों के वंश में का है तो तू उस पर प्रबल न होगा उस से पूरी रीति नीचा
१५ ही खाएगा। वे उस से बातें कर ही रहे थे कि राजा के खोजों ने आकर हामान को एस्तेर की की हुई जेवनार में फुर्ती से पहुंचा दिया॥

७. सो राजा और हामान एस्तेर रानी की जेवनार में आ गये। उस दूसरे
२ दिन को दाखमधु पीते पीते राजा ने एस्तेर से फिर पूछा हे एस्तेर रानी तेरा क्या निवेदन है वह पूरा किया जाएगा और तू क्या मांगती है मांग और आधे राज्य तक तुझे
३ दिया जाएगा। एस्तेर रानी ने उत्तर दिया हे राजा यदि तू मुझ पर प्रसन्न हो और राजा को यह भाए भी तो मेरे निवेदन से मुझे और मेरे मांगने से मेरे लोगों
४ को प्राणदान मिले। क्योंकि मैं और मेरी जाति के लोग बेच डाले गये हैं कि हम सब विध्वंस घात और नाश

(१) मूल में यह सब मेरे बराबर नहीं।

किये जाएं। यदि हम केवल दास दासी हो जाने के लिये बेच डाले जाते तो मैं चुप रहती चाहे उस दशा ५ में भी वह विरोधी राजा की हानि भर न सकता। तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से पूछा वह कौन है और कहां ६ है जिस ने ऐसा करने की मनसा की है। एस्तेर बोली वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है तब हामान ७ राजा रानी के साम्हने भय खा गया। राजा तो जल-जलाहट में आ मधु पीने से उठकर राजभवन की बारी में निकल गया और हामान यह देखकर कि राजा ने मेरी हानि ठानी होगी एस्तेर रानी से प्राणदान मांगने ८ को खड़ा हुआ। जब राजा राजभवन की बारी से दाख-मधु पीने के स्थान से लौट आया तब क्या देखा कि हामान उसी चौकी पर जिस पर एस्तेर बैठी है पड़ा है और राजा ने कहा क्या यह घर ही में मेरे साम्हने ही रानी से बरबस करना चाहता है। राजा के मुंह से यह वचन निकला ही था कि सेवकों ने हामान का मुंह ढांप ९ दिया। तब राजा के साम्हने हाजिर रहनेहारे खोजों में से हर्बोना नाम एक ने राजा से कहा हामान के यहां पचास हाथ ऊंचा फांसी का एक खंभा खड़ा है जो उस ने मोर्दकै के लिये बनवाया है जिस ने राजा के हित की बात कही थी। राजा ने कहा उस को उसी पर १० लटका दो। सो हामान उसी खंभे पर जो उस ने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था लटका दिया गया। इस पर राजा की जलजलाहट ठंडी हो गई॥

(यहूदियों को अपने शत्रुओं के घात करने की अनुमति मिलनी)

८. उसी दिन राजा क्षयर्ष ने यहूदियों के विरोधी हामान का घरबार एस्तेर रानी को दे दिया और मोर्दकै राजा के साम्हने आया क्योंकि एस्तेर ने राजा को बताया था कि वह मेरा कौन २ है। तब राजा ने अपनी वह अंगूठी जो उस ने हामान से ले ली थी उतार कर मोर्दकै को दे दी। और एस्तेर ने मोर्दकै को हामान के घरबार पर अधिकारी ठहराया। ३ फिर एस्तेर दूसरी बार राजा से बोली और उस के पांव पर गिर आंसू बहा उस से गिड़गिड़ाकर बिन्ती की कि अगागी हामान की बुराई और यहूदियों की हानि की ४ उस की की हुई युक्ति निष्फल की जाए। तब राजा ने एस्तेर की ओर सोने का राजदण्ड बढ़ाया सो एस्तेर ५ उठकर राजा के साम्हने खड़ी हुई, और कहने लगी यदि राजा को यह भाए और वह मुझ पर प्रसन्न हो और यह बात उस को ठीक जान पड़े और मैं भी उस को अच्छी लगती हूं तो जो चिट्ठियां हम्मदाता अगागी के पुत्र हामान ने राजा के सब प्रान्तों के यहूदियों को नाश करने की युक्ति करके लिखाई थीं उन को पलटने ६ के लिये लिखा जाए। क्योंकि मैं तो अपने जाति के लोगों पर पड़नेवाली वह विपत्ति किस रीति देख सकूंगी और अपने भाइयों के सत्यानाश को मैं क्योंकर देख ७ सकूंगी। तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से और मोर्दकै यहूदी से कहा मैं हामान का घरबार तो एस्तेर को दे चुका हूं और वह फांसी के खंभे पर लटकाया गया है ८ इस लिए कि उस ने यहूदियों पर हाथ बढ़ाया था। सो तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहूदियों के नाम पर लिखो और राजा की अंगूठी की छाप भी लगाओ क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए और उस पर उस की अंगूठी की छाप लगाई ९ जाए उस को कोई भी पलट नहीं सकता। सो उसी समय अर्थात् सीवान नाम तीसरे महीने के तेईसवें दिन को राजा के लेखक बुलाये गये और जिस जिस बात की आज्ञा मोर्दकै ने उन्हें दी सो यहूदियों और अधिपतियों और हिन्दुस्तान से ले कूश लों जो एक सौ सत्ताईस प्रान्त हैं उन सभों के अधिपतियों और हाकिमों को एक एक प्रान्त के अक्षरों में और एक एक देश के लोगों की बोली में और यहूदियों को उन के अक्षरों और बोली में १० लिखी गई, मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के नाम से चिट्ठियां लिखाकर और उन पर राजा की अंगूठी की छाप लगाकर बेग चलनेहारे सरकारी घोड़ों खच्चरों और सांड़नियों ११ की डाक लगाकर हरकारों के हाथ भेज दीं। इन चिट्ठियों में सब नगरों के यहूदियों को राजा की ओर से अनुमति दी गई कि वे इकट्ठे हों अपना अपना प्राण बचाने के लिये खड़े होकर जिस जाति वा प्रान्त के लोग बल करके उन को वा उन की स्त्रियों और बालबच्चों को दुःख देना चाहें उन को विध्वंस घात और नाश करने और १२ उन की धन संपत्ति लूट लेने पाएं। और यह राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में एक दिन को किया जाए अर्थात् १३ अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को। इस आज्ञा के लेख की नकलें सारे प्रान्तों में सब देशों के लोगों के पास खुली हुई भेजी गईं इस लिये कि यहूदी उस दिन के लिये अपने शत्रुओं से पलटा लेने को १४ तैयार हों। सो हरकारे बेग चलनेहारे सरकारी घोड़ों पर सवार होकर राजा की आज्ञा से फुर्ती करके जल्दी चले गये और यह आज्ञा शूशन राजगढ़ में दी गई थी। १५ तब मोर्दकै नील और श्वेत रंग के राजकीय वस्त्र पहिने सिर पर सोने का बड़ा मुकुट धरे और सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग का बागा पहिने हुए राजा के सन्मुख से निकल गया। और शूशन नगर के लोग आनन्द के मारे ललकार उठे।

१६,१७ यहूदियों को आनन्द हर्ष और प्रतिष्ठा हुई। और जिस जिस प्रान्त और जिस जिस नगर में जहां कहीं राजा की आज्ञा और नियम पहुंचे वहां वहां यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उन्हों ने जेवनार करके उस दिन को खुशी का दिन माना। और उस देश के लोगों में से बहुत लोग यहूदी बन गये इस कारण से कि उन के मन में यहूदियों का डर समा गया॥

(पूरीम नाम पर्व का ठहराया जाना)

९. अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को जिस दिन राजा की आज्ञा और नियम पूरा होने को थे और यहूदियों के शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे पर इस के उलटे यहूदी अपने बैरियों पर प्रबल हुए उस दिन, २ यहूदी लोग राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में अपने अपने नगर में इकट्ठे हुए कि जो उन की हानि करने का यत्न करें उन पर हाथ डालें। और कोई उन का साम्हना न कर सका क्योंकि उन का डर देश देश के सब लोगों के ३ मन में समाया था। बरन प्रान्तों के सब हाकिमों और अधिपतियों और प्रधानों और राजा के कर्म्मचारियों ने यहूदियों की सहायता की क्योंकि उन के मन में मोर्दकै ४ का डर समा गया। मोर्दकै तो राजा के यहां बहुत प्रतिष्ठित था और उस की कीर्त्ति सब प्रान्तों में फैल गई बरन उस पुरुष मोर्दकै की महिमा बढ़ती चली गई। ५ सो यहूदियों ने अपने सब शत्रुओं को तलवार से मारकर और घात करके नाश कर डाला और अपने बैरियों से ६ अपनी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया। और शूशन राजगढ़ में यहूदियों ने पांच सौ मनुष्यों को घात करके ७ नाश किया। और उन्हों ने पर्शन्दाता दल्फोन अस्पाता, ८, ९ पोराता अदल्या अरीदाता, पर्मशता अरीसै अरीदै और १० वैजाता नाम, हम्मदाता के पुत्र यहूदियों के विरोधी हामान के दसों पुत्रों को भी घात किया पर उन के धन ११ को न लूटा। उसी दिन शूशन राजगढ़ में घात किये १२ हुओं की गिनती राजा को सुनाई गई। तब राजा ने एस्तेर रानी से कहा यहूदियों ने शूशन राजगढ़ ही में पांच सौ मनुष्य और हामान के दसों पुत्र भी घात करके नाश किये हैं फिर राज्य के और और प्रान्तों में उन्हों ने न जाने क्या क्या किया होगा। अब इस से अधिक तेरा निवेदन क्या है वह पूरा किया जाएगा और तू क्या १३ मांगती है वह भी तुझे दिया जाएगा। एस्तेर ने कहा यदि राजा को भाए तो शूशन के यहूदियों को आज की नाईं कल भी करने दिया जाए और हामान के दसों पुत्र १४ फांसी के खंभों पर लटकाये जाएं। राजा ने कहा ऐसा किया जाए सो आज्ञा शूशन में दी गई और हामान के दसों पुत्र लटकाये गये। १५ और शूशन के यहूदियों ने अदार महीने के चौदहवें दिन को भी इकट्ठे होकर शूशन में तीन सौ पुरुषों को घात किया पर धन को न लूटा। १६ राज्य के और और प्रान्तों के यहूदी इकट्ठे होकर अपना अपना प्राण बचाने को खड़े हुए और अपने बैरियों में से पचहत्तर हजार मनुष्यों को घात करके अपने शत्रुओं से विश्राम पाया पर धन को न लूटा। १७ यह अदार महीने के तेरहवें दिन को किया गया और चौदहवें दिन को उन्हों ने विश्राम करके जेवनार और आनन्द का दिन ठहराया। १८ पर शूशन के यहूदी अदार महीने के तेरहवें दिन को और उसी महीने के चौदहवें दिन को इकट्ठे हुए और उसी महीने के पंद्रहवें दिन को उन्हों ने विश्राम करके जेवनार और आनन्द का दिन ठहराया। १९ इस कारण दिहाती यहूदी जो बिना शहरपनाह की बस्तियों में रहते हैं वे अदार महीने के चौदहवें दिन को आनन्द और जेवनार और खुशी और आपस में बैना भेजने का दिन करके मानते हैं।

२० इन बातों का वृत्तान्त लिखकर मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में क्या निकट क्या दूर रहनेहारे सारे यहूदियों के पास चिट्ठियां भेजकर यह आज्ञा दी, २१ कि अदार महीने के चौदहवें और उसी महीने के पंद्रहवें दिनों को बरस बरस माना करें, २२ जिन में यहूदियों ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया और वह महीना माना करें जिस में शोक आनन्द से और विलाप खुशी से बदला गया और उन को जेवनार और आनन्द और एक दूसरे के पास बैना भेजने और कंगालों को दान देने के दिन मानें। २३ और यहूदियों ने जैसा आरंभ किया था और जैसा मोर्दकै ने उन्हें लिखा वैसा ही करना ठान लिया। २४ क्योंकि हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान जो सब यहूदियों का विरोधी था उस ने यहूदियों के नाश करने की युक्ति की और उन्हें मिटा डालने और नाश करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी डाली थी, २५ पर जब राजा ने यह जान लिया तब उस ने आज्ञा देकर लिखाई कि जो दुष्ट युक्ति हामान ने यहूदियों के विरुद्ध की सो उसी के सिर पर पलट आए सो वह और उस के पुत्र फांसी के खंभों पर लटकाये गये। २६ इस कारण उन दिनों का नाम पूर शब्द से पूरीम रक्खा गया। इस चिट्ठी की सब बातों के कारण और जो कुछ उन्हों ने इस विषय में देखा और जो कुछ उन पर बीता था उस के कारण भी, २७ यहूदियों ने अपने अपने लिये और अपनी सन्तान के लिये और उन सभों के लिये भी जो उन में मिल जाएं यह अटल प्रण किया कि उस लेख के अनुसार

बरस बरस उस के ठहराये हुए समय में हम ये दो दिन
२८ मानें, और पीढ़ी पीढ़ी कुल कुल प्रान्त प्रान्त नगर नगर में ये दिन स्मरण किये और माने जाएं और इन पूरीम नाम दिनों का मानना यहूदियों में से जाता न रहे और न उन
२९ का स्मरण उन के वंश से मिट जाए। फिर अबीहैल की बेटी एस्तेर रानी और मोर्दकै यहूदी ने पूरीम के विषय की यह दूसरी चिट्ठी स्थिर करने को बड़े अधिकार के
३० साथ लिखी। इस की नकलें मोर्दकै ने क्षयर्ष के राज्य के एक सौ सत्ताईसों प्रान्तों के सब यहूदियों के पास शान्ति देनेहारी और सच्ची बातों के साथ इस आशय से भेजीं,
३१ कि पूरीम के उन दिनों के विशेष ठहराये हुए समयों में मोर्दकै यहूदी और एस्तेर रानी की आज्ञा के अनुसार और जो यहूदियों ने अपने और अपनी संतान के लिये ठान लिया था उस के अनुसार भी उपवास और विलाप
किये जाएं। और पूरीम के विषय का यह नियम एस्तेर ३२ की आज्ञा से भी स्थिर किया गया और उस की चर्चा पुस्तक में लिखी गई॥

(मोर्दकै का माहात्म्य)

१०. और राजा क्षयर्ष ने देश और समुद्र के टापू दोनों पर कर लगाया।
और उस के माहात्म्य और पराक्रम के कामों और मोर्दकै २ की उस बड़ाई का पूरा ब्योरा जो राजा ने उस की कर दी सो क्या मादै और फारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है। निदान यहूदी मोर्दकै ३ क्षयर्ष राजा ही के नीचे था और यहूदियों के लेखे बड़ा था और उस के सब भाई उस से प्रसन्न रहे वह अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा और अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था॥

अय्यूब नाम पुस्तक।

(अय्यूब का भारी परीक्षा में पड़ना)

१. उस देश में अय्यूब नाम एक पुरुष था जो खरा और सीधा था और परमेश्वर
२ का भय मानता और बुराई से परे रहता था। उस के सात
३ बेटे और तीन बेटियां उत्पन्न हुईं। फिर उस के सात हजार भेड़बकरियां तीन हजार ऊंट पांच सौ जोड़ी बैल और पांच सौ गदहियां और बहुत ही दास दासियां थीं बरन उस के इतनी संपत्ति थी कि पूरबियों में वह सब से
४ बड़ा था। उस के बेटे अपने अपने दिन पर एक दूसरे के घर में खाने पीने को जाया करते और अपनी तीनों बहिनों को अपने संग खाने पीने के लिये बुलवा भेजते
५ थे। और जब जब जेवनार के दिन पूरे होते तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता और बड़ी भोर उठ कर उन की गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था क्योंकि अय्यूब सोचता था कि क्या जाने मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो। इसी रीति अय्यूब किया करता था॥
६ एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उस के साम्हने हाजिर होने को आये और उन के बीच शैतान भी आया।
७ यहोवा ने शैतान से पूछा तू कहां से आता है शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया पृथिवी पर इधर उधर घूमते फिरते और डोलते डालते आया हूं। यहोवा ने शैतान से पूछा ८ क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथिवी पर उस के तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेहारा और बुराई से परे रहनेहारा मनुष्य और कोई नहीं है। शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया क्या अय्यूब परमेश्वर ९ का भय बिना लाभ के मानता है। क्या तू ने उस की १० और उस के घर की और उस के सब कुछ के चारों ओर बाड़ा नहीं बांधा तू ने तो उस के काम पर आशिष दी है और उस की संपत्ति देश भर में फैल गई है। पर अब ११ अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उस का है उसे छू तब वह निश्चय तुझे निधड़क[१] छोड़ देगा। यहोवा ने शैतान से १२ कहा सुन जो कुछ उस का है सो सब तेरे हाथ में है केवल उस के शरीर पर हाथ न लगाना। तब शैतान यहोवा के साम्हने से चला गया॥
एक दिन अय्यूब के बेटे बेटियां बड़े भाई के घर १३ में खाते और दाखमधु पीते थे। तब एक दूत अय्यूब के १४ पास आकर कहने लगा हम तो बैलों से हल जोत रहे थे और गदहियां उन के पास चर रही थीं, कि शबाई १५

(१) मूल में तेरे मुख के साम्हने।

लोगों धावा करके उन को ले गये और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला और मैं ही अकेला बचकर तुझे १६ समाचार देने को आया हूं । वह कहता ही था कि दूसरा भी आकर कहने लगा कि परमेश्वर की आग आकाश से पड़ी और उस से भेड़बकरियां और सेवक जलकर भस्म हो गये और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने १७ को आया हूं । वह कह ही रहा था कि एक और आकर कहने लगा कि कसदी लोग तीन गोल बांधकर ऊंटों पर धावा करके उन्हें ले गये और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने १८ को आया हूं । वह कह ही रहा था कि एक और आकर कहने लगा तेरे बेटे बेटियां बड़े भाई के घर में खाते १९ और दाखमधु पीते थे, कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा कि वह जवानों पर गिर पड़ा और वे मर गये और मैं २० ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं । तब अय्यूब उठा और बागा फाड़ सिर मुड़ा भूमि पर गिर २१ दण्डवत् करके कहा मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा । यहोवा ने दिया २२ और यहोवा ही ने लिया यहोवा का नाम धन्य है । इन सारी बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया और न परमेश्वर पर मूर्खता का दोष लगाया ॥

२. फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उस के साम्हने हाजिर होने को आये और उन के बीच शैतान भी उस के २ साम्हने हाजिर होने को आया । यहोवा ने शैतान से पूछा तू कहां से आता है शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया पृथिवी पर इधर उधर घूमते फिरते और डोलते ३ डालते आया हूं । यहोवा ने शैतान से पूछा क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथिवी पर उस के तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेहारा और बुराई से परे रहनेहारा मनुष्य और कोई नहीं है और यद्यपि तू ने मुझे उस को बिना कारण सत्यानाश करने को उभारा तौभी वह अब लों अपनी खराई पर बना ४ है । शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया खाल के बदले खाल पर प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता ५ है । परन्तु अपना हाथ बढ़ाकर उस की हड्डियां और मांस छू तब निश्चय वह तुझे निधड़क[१] छोड़ देगा । ६ यहोवा ने शैतान से कहा सुन वह तेरे हाथ में है केवल ७ उस का प्राण छोड़ देना । सो शैतान यहोवा के साम्हने से निकला और अय्यूब को पांव के तलवे से ले सिर की चोटी लों बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया । ८ तब अय्यूब खुजलाने के लिये एक ठीकरा लेकर राख के बीच बैठ ९ गया । तब उस की स्त्री उस से कहने लगी क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है परमेश्वर को छोड़ दे तब चाहे १० मर जाए तो मर जा । उस ने उस से कहा तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है क्या तो हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं सो क्या दुःख भी न लें । इन सारी बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप न किया ॥

११ जब तेमानी एलीपज और शूही बिलदद और नामाती सोपर अय्यूब के इन तीन मित्रों ने इस सारी विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थी तब वे आपस में यह ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उस के संग विलाप करेंगे और उस को शांति देंगे अपने १२ अपने यहां से उस के पास चले । जब उन्हों ने दूर से आंख उठा कर अय्यूब को देखा और उसे न चीन्ह सके तब चिल्लाकर रो उठे और अपना अपना बागा फाड़ा और आकाश की ओर धूलि उड़ाकर अपने अपने सिर १३ पर डाली । तब वे सात दिन और सात रात उस के संग भूमि पर बैठे रहे पर उस का दुःख बहुत ही बड़ा जानकर किसी ने उस से एक भी बात न कही ॥

(अय्यूब का अपने जन्म दिन को धिक्कारना)

३. इस के पीछे अय्यूब मुंह खोलकर अपने २ जन्मदिन को यों धिक्कारने लगा, कि

३ वह दिन जल जाए जिस में मैं उत्पन्न हुआ और
वह रात भी जिस में कहा गया कि बेटे का
गर्भ रहा ॥
४ वह दिन अंधियारा होए
ऊपर से ईश्वर उस की सुधि न ले
और न उस में प्रकाश होए ॥
५ अंधियारा बरन घोर अन्धकार उस पर छाया
रहे[२]
उस में बादल छाए रहें
और जो कुछ दिन को अंधेरा कर सकता है सो
उस को डराए ॥
६ फिर उस रात को घोर अंधकार पकड़े बरस के
दिनों के बीच वह आनन्द न करने पाए
और महीनों में उस की गिनती न की जाए ॥
७ सुनो वह रात बांझ होए

(१) मूल में तेरे मुख के साम्हने ।

(२) मूल में उसका दाम देकर उसे अपना लें ।

उस में गाने का शब्द न सुन पड़े ॥
८ जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं और लिव्यातान को छेड़ने में निपुण हैं सो उसे धिक्कारें ॥
९ उस दिन की भोर के तारे प्रकाश न दें वह उजियाले की बाट जोहे पर वह उसे न मिले वह भोर की पलकों को देखने न पाए ॥
१० क्योंकि उस ने मेरी माता की कोख बन्द न की[1]
और मुझे कष्ट देखने दिया ॥
११ मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया
पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा ॥
१२ मैं घुटनों पर क्यों लिया गया
मैं छातियों को क्यों पीने पाया ॥
१३ ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता मैं सोता रहता और विश्राम करता ॥
१४ मैं पृथिवी के उन राजाओं और मन्त्रियों के साथ होता
जिन्हों ने सूने स्थान बनवा लिये थे,
१५ वा मैं उन सोना रखनेवाले हाकिमों के साथ होता जिन्होंने अपने घरों को चांदी से भर दिया था,
१६ वा मैं असमय गिरे हुए गर्भ की नाईं हुआ न होता
वा ऐसे बच्चों के समान होता जो उजियाले को देखने नहीं पाते ॥
१७ उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते
और थके मांदे विश्राम करते हैं ॥
१८ उस में बंधुए एक संग सुख से रहते हैं और परिश्रम करानेहारे का बोल नहीं सुनते ॥
१९ उस में छोटे बड़े सब रहते हैं और दास अपने स्वामी से छूटा रहता है ॥
२० दुःखियों को उजियाला
और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है ॥
२१ वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह आती नहीं
और गड़े हुए धन से अधिक उस की खोज करते हैं[2] ॥
२२ वे कबर को पहुंच कर आनन्दित और अत्यन्त मगन होते हैं ॥
२३ उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है जिस का मार्ग छिपा
जिस के चारों ओर ईश्वर ने घेरा बांध दिया हो ॥
२४ मुझे तो रोटी खाने की सन्ती लम्बी लम्बी सांसें आती हैं
और मेरा विलाप धारा की नाईं बहता रहता है[3] ॥
२५ क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूं सोई मुझ पर आ पड़ती है
और जिस से मैं भय खाता हूं सोई मुझ पर आ जाता है ॥
२६ मुझे न तो कल न शान्ति न विश्राम मिलता है पर दुःख आता है ॥

(एलीपज का वचन)

४. तब तेमानी एलीपज ने कहा,

२ यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे तो क्या तुझे बुरा लगेगा
पर बात करने से कौन रुक सके ॥
३ सुन तू ने बहुतों को शिक्षा दी
और निर्बल लोगों[4] को बल तो दिया ॥
४ गिरते हुओं को तू ने अपनी बातों से संभाल तो लिया
और लड़खड़ाते हुए लोगों[5] को तू ने बल तो दिया था,
५ पर अब विपत्ति जो तुझ पर आ पड़ी सो तू उकताता है
और उस के छुवाव ही से तू भभर उठा है ॥
६ परमेश्वर का भय जो तू मानता है क्या इस पर तेरा आसरा नहीं
और तेरी चालचलन जो खरी है क्या इस से तुझे आशा नहीं ॥
७ सोच कि क्या कोई निर्दोष कभी नाश हुआ और खरे लोग कहां बिलाय गये ॥
८ मेरे देखने में तो जो अनर्थ जोतते
और उत्पात बोते हैं सो वैसा ही लवते हैं ॥
९ वे तो ईश्वर की फूक से नाश होते
और उस की कोप की सांस लगते ही उन का अन्त होता है ॥
१० सिंह का गरजना और भयंकर सिंह का शब्द बन्द हो जाता है :
और जवान सिंहों के दांत तोड़े जाते हैं ॥

(१) मूल में उस ने मेरी कोख के किवाड़ बन्द न किये न मेरी आंखों से कष्ट छिपाया। (२) मूल में उस के लिए खोदते हैं। (३) मूल में मेरे गर्जन जल की नाईं उंडेले जाते हैं। (४) मूल में निर्बल हाथ। (५) मूल में टिकते हुए।

११ शिकार न पाने से बूढ़ा सिंह मर जाता
और सिंहिनी के डांवरू तितर बितर हो जाते हैं ॥
१२ मेरे पास तो एक बात चुपके से पहुंची
और उस की कुछ भनक मेरे कान में पड़ी ॥
१३ रात के स्वप्नों की चिन्ताओं के बीच
जब मनुष्य भारी नींद में पड़े थे,
१४ मुझे ऐसी थरथराहट और कंपकंपी लगी
कि मेरी सब हड्डियां तक थरथरा उठीं ॥
१५ तब एक आत्मा[1] मेरे साम्हने से होकर चला
इस से मेरी देह के रोएं खड़े हो गये ॥
१६ वह ठहर गया और उस का आकार मुझे ठीक न देख पड़ा
पर मेरी आंखों के साम्हने कुछ रूप था
पहिले सन्नाटा रहा फिर शब्द सुन पड़ा कि
१७ क्या मनुष्य ईश्वर के लेखे धर्म्मी ठहरे
क्या पुरुष अपने सिरजनहार के लेखे शुद्ध ठहरे ॥
१८ सुन वह अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखता
और अपने दूतों को मूर्ख ठहराता है ॥
१९ फिर जो मिट्टी के घरों में रहते हैं
जिन की नेव धूल में डाली गई है
और वे पतंगे की नाईं पिस जाते हैं उन का क्या लेखा ॥
२० वे भोर से सांझ लों टुकड़े टुकड़े किये जाते हैं
वे सदा के लिये नाश होते हैं
और कोई ध्यान नहीं देता ॥
२१ क्या उन के डेरे की डोरी नहीं कट जाती
वे बिना बुद्धि मर जाते हैं ॥

५. पुकार तो पुकार पर कौन तुझे उत्तर देगा

पवित्रों में से तू किस की ओर फिरेगा ॥
२ मूढ़ तो खेद करते करते नाश होता
और भोला जलते जलते मर जाता है ॥
३ मैं ने मूढ़ को जड़ पकड़ते देखा
पर अचानक मैं ने उस के वासस्थान को धिक्कारा ॥
४ उस के लड़केवाले उद्धार से दूर हैं
और जब वे कचहरी में[2] पीसे जाते
तब कोई छुड़ानेहारा नहीं रहता ॥
५ उस के खेत की उपज भूखे लोग खा लेते
बरन कटीली बाड़ में से भी निकाल लेते
और उन के धन के लिये फन्दा लगा है

(१) वा वायु। (२) मूल में फाटक में।

६ विपत्ति तो धूल से उत्पन्न नहीं होती और न कष्ट भूमि से उगता है ॥
७ जैसे चिंगारे ऊपर ही ऊपर उड़ जाते वैसे ही मनुष्य कष्ट ही भोगने के लिये उत्पन्न होता है ॥
८ पर मैं तो ईश्वर को खोजता और अपना मुकद्दमा परमेश्वर पर छोड़ देता ॥
९ वह तो ऐसे बड़े काम करता है जिन की थाह नहीं लगती
और इतने आश्चर्य्यकर्म्म करता है जो गिने नहीं जाते ॥
१० वही पृथिवी के ऊपर वर्षा करता और खेतों पर जल बरसाता है ॥
११ इस रीति वह नम्र लोगों को ऊंचे स्थान पर रखता
और शोक का पहिरावा पहिने हुए लोग ऊंचे पर पहुंचकर बचते हैं ॥
१२ वह तो धूर्त्त लोगों की कल्पनाएं व्यर्थ कर देता है
कि उन के हाथों से कुछ बन नहीं पड़ता ॥
१३ वह बुद्धिमानों को उन की धूर्त्तता ही में फंसाता
और कुटिल लोगों की युक्ति दूर की जाती है ॥
१४ उन पर दिन को अंधेरा छा जाता है और दिन दुपहरी वे रात की नाईं टटोलते फिरते हैं ॥
१५ पर वह दरिद्रों को उन के वचनरूपी तलवार से[3]
और बलवानों के हाथ से बचाता है ॥
१६ सो कंगालों को आशा होती है और कुटिल मनुष्यों का मुंह बन्द हो जाता है ॥
१७ सुन क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस को ईश्वर डांटे
सो तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना तुच्छ मत जान ॥
१८ क्योंकि वही घायल करता और वही पट्टी बांधता है
वही मारता और वही अपने हाथों से चंगा करता है ॥
१९ वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा बरन सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी ॥
२० अकाल में वह तुझे मृत्यु से और युद्ध में तलवार की धार से बचा लेगा ॥
२१ तू वचनरूपी कोड़े से बचा रहेगा[4]

(३) मूल में तलवार से उन के मुंह से। (४) मूल में छिपाया जायगा।

और जब उजाड़ होगा तब भी तुझे डरना न होगा ॥
२२ उजाड़ और अकाल के दिनों में तू हंसमुख रहेगा
और तुझे बनैले जन्तुओं से भी डर न लगेगा ॥
२३ बरन मैदान के पत्थर भी तुझ से वाचा बांधे रहेंगे
और बनैले पशु तुझ से मेल रक्खेंगे ॥
२४ और तुझे निश्चय होगा कि मेरा डेरा कुशल से है
और जब तू अपने निवास में देखे तब कोई वस्तु खोई न होगी ॥
२५ तुझे यह भी निश्चय होगा कि मेरे बहुत वंश होंगे
और मेरे सन्तान पृथिवी की घास के तुल्य बहुत होंगे ॥
२६ जैसे पूलियों का ढेर समय पर खलिहान में रक्खा जाता है
वैसे ही तू पूरी अवस्था का होकर कबर को पहुंचेगा ॥
२७ इसी को सुन हम ने खोज खोजकर ऐसा ही पाया
सो तू सुन और अपने ध्यान में रख ॥

(अय्यूब का उत्तर)

६. फिर अय्यूब ने कहा

२ भला होता कि मेरा खेद तौला जाता और मेरी सारी विपत्ति तुला में धरी जाती ॥
३ क्योंकि वह समुद्र की बालू से भी भारी ठहरती
इसी कारण मेरी बातें उतावली से हुई हैं ॥
४ क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे चुभे हैं और उन का विष मेरे आत्मा में पैठ गया है[१] ईश्वर की भयंकर बातें मेरे विरुद्ध पांति बांधे हैं ॥
५ जब बनैले गदहे को घास मिलती तब क्या वह रेंकता है
और बैल चारा पाकर क्या डकराता है ॥
६ जो फीका है सो क्या बिना लोन खाया जाता है
क्या अंडे की सुफेदी में कुछ स्वाद होता है ॥
७ जिन वस्तुओं के छूने को मैं नकारता था वे ही मानो मेरा घिनौना आहार ठहरी हैं ॥

(१) मूल में मेरे आत्मा को पी लेता है।

भला होता कि मुझे मुंह मांगा वर मिलता ८
और जिस बात की मैं आशा करता हूं सो ईश्वर मुझे दे देता
कि ईश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल डालता और ९ हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालता ॥
मेरी शांति का यह कारण बना रहता बरन भारी १० पीड़ा में[२] भी मैं इस कारण से उछल पड़ता
कि मैं उस पवित्र के वचनों को कभी नहीं मुकरा ॥
मुझ में क्या बल है कि मैं आशा रक्खूं और मेरा ११ अन्त क्या होगा कि मैं धीरज धरूं ॥
क्या मेरी दृढ़ता पत्थरों की सी है क्या मेरा शरीर १२ पीतल का है ॥
क्या मैं निरुपाय नहीं हूं १३
क्या बने रहने की शक्ति मुझ से दूर नहीं हो गई ॥
जो निराश है उस पर तो पड़ोसी को कृपा १४ करनी चाहिये
नहीं तो क्या जाने वह सर्वशक्तिमान का भय मानना भी छोड़ दे ॥
मेरे पड़ोसी नाले के समान विश्वासघाती हो गये हैं १५
बरन उन नालों के समान जिन की धार रहती ही नहीं
और वे बरफ के कारण काले से हो जाते हैं १६
और उन में हिम छिपा रहता है ॥
पर जब गरमी होने लगती तब उन की धाराएं १७ घटने लगती हैं
और जब कड़ा घाम होता है तब वे जहां का तहां बिलाय जाती हैं[३] ॥
वे घूमते घूमते सूख जातीं और सुनसान स्थान में १८ बहकर नाश होती हैं ॥
तेमा के बनजारों ने उन के लिये ताका और शबा १९ के काफिलेवालों ने उन की आशा रक्खी ॥
भरोसा करने के कारण उन की आशा टूटी और २० वहां पहुंचकर उन के मुंह सूख गये ॥
उसी प्रकार अब तुम भी न रहे मेरी विपत्ति देखकर २१ तुम डर गये हो ॥
क्या मैं ने तुम से कहा था कि मुझे कुछ दो २२
वा अपनी संपत्ति में से मेरे लिये दान दो ॥
वा मुझे सतानेहारे के हाथ से बचाओ वा उपद्रव २३ करनेहारों के वश से छुड़ा लो ॥

(२) मूल में बिना छोड़ने की पीड़ा में। (३) मूल में उन के मार्ग की डगरें घूमती हैं।

२४ मुझे शिक्षा दो मैं चुप रहूंगा
और मुझे समझाओ कि मैं किस बात में चूका हूं ॥
२५ सीधाई के वचनों में कितना गुण होता है पर
तुम्हारे डांटने से क्या सिद्ध होता है ॥
२६ क्या तुम बातें पकड़ने[1] की कल्पना करते हो
निराश जन की बातें तो वायु सी हैं ॥
२७ तुम बपमुओं पर चिट्ठी डालते और अपने मित्र
को बेचकर लाभ उठाते ॥
२८ अब कृपा करके मुझे देखो निश्चय मैं तुम्हारे
साम्हने झूठ न बोलूंगा ॥
२९ फिर कुटिलता कुछ न होने पाए फिर इस मुकद्दमे
में मेरा धर्म्म ज्यों का त्यों बना है ॥
३० क्या मेरे वचनों में[2] कुछ कुटिलता है
क्या मैं [3] दुष्टता नहीं पहचान सकता ॥

७. क्या मनुष्य को पृथिवी पर कठिन सेवा
करनी नहीं पड़ती
क्या उस के दिन मजूर के से नहीं होते ॥
२ जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा करे वा मजूर
अपनी मजूरी की आशा रक्खे,
३ वैसा ही मेरा भाग महीनों तक का अनर्थ है और
मेरे लिये क्लेश से भरी रातें ठहराई गई हैं ॥
४ जब मैं लेट जाता तब कहता हूं
मैं कब उठूंगा और रात कब बीतेगी
और पह फटने लों छटपटाते छटपटाते उकता
जाता हूं ॥
५ मेरी देह कीड़ों और मिट्टी के ढेलों से ढकी हुई है
मेरा चमड़ा सिमट जाता और फिर गल जाता है
६ मेरे दिन करघे से अधिक फुर्ती से चलनेहारे हैं
और निराशी से बीते जाते हैं ॥
७ सोच कर कि मेरा जीवन वायु ही है
मैं अपनी आंखों से कल्याण फिर न देखूंगा ॥
८ जो मुझे अब देखता है उसे मैं फिर दिखाई
न दूंगा
तेरी आंखें मेरी ओर होंगी पर मैं न मिलूंगा ॥
९ जैसे बादल छटकर बिलाय जाता है
वैसे ही अधोलोक में उतरनेहारा फिर वहां से
नहीं निकल आता ॥
१० वह अपने घर को फिर लौट न आएगा और न
अपने स्थान में फिर मिलेगा[4] ॥

(१) मूल में डांटने। (२) मूल में मेरी जीभ पर। (३) मूल में मेरा तालू। (४) मूल में उस का स्थान उसे फिर न चीन्हेगा।

इसलिये मैं अपना मुंह बन्द न रक्खूंगा ११
अपने मन का खेद खोलकर कहूंगा
और अपने जीव की कड़वाहट के कारण कुड़कुड़ाता
रहूंगा ॥
क्या मैं समुद्र वा मगरमच्छ हूं १२
कि तू मुझ पर चौकी बैठाता है ॥
जब जब मैं सोचता हूं कि मुझे खाट पर शांति १३
मिलेगी
और बिछौने पर मेरा खेद कुछ हलका होगा,
तब तब तू मुझे स्वप्नों से घबरा देता १४
और दीखते हुए रूपों से भयभीत कर देता है,
यहां लों कि मेरा जी सांस का बन्द होना ही १५
और अपनी हड्डियों के बने रहने से मरना ही अधिक
चाहता है ॥
मुझे अपने जीवन से घिन आती है मैं सदा लों १६
जीता रहना नहीं चाहता
मेरा जीवनकाल सांस सा है सो मुझे छोड़ दे ॥
मनुष्य तो क्या है कि तू उसे बड़ा जानकर १७
अपना मन उस पर लगाए,
और भोर भोर को उस की सुधि लेकर १८
क्षण क्षण उसे जांचता रहे ॥
तू कब लों मेरी ओर आंख लगाये रहेगा और इतनी १९
बेर लों भी मुझे न छोड़ेगा कि मैं अपना थूक
लील जाऊं ॥
हे मनुष्यों के ताकनेहारे मैं ने पाप तो किया होगा २०
मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा
तू ने क्यों मुझ को अपना निशाना ठहराया
यहां लों कि मैं अपने ऊपर आपही बोझ हुआ हूं ॥
और तू क्यों मेरा अपराध क्षमा नहीं करता २१
और मेरा अधर्म्म क्यों दूर नहीं करता
अब तो मैं मिट्टी में सो रहूंगा
और तू मुझे यत्न से ढूंढ़ेगा पर मेरा पता कहां ॥

(बिलदद का वचन)

८. तब शूही बिलदद ने कहा

तू कब लों ऐसी ऐसी बातें करता रहेगा और तेरे २
मुंह की बातें कब लों प्रचण्ड वायु सी रहेंगी ॥
क्या ईश्वर न्याय को टेढ़ा करता ३
और क्या सर्वशक्तिमान धर्म्म को उलटा करता है ॥
यदि तेरे लड़केबालों ने उस के विरुद्ध पाप ४
किया हो

तो उस ने उन को उन के अपराध का फल भुगताया है[१] ॥
५ पर यदि तू आप ईश्वर को यत्न से ढूंढे
और सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर बिनती करे,
६ और यदि तू पवित्र और सीधा है
तो निश्चय वह तेरे लिये जागेगा
और तुझ निर्दोष का निवास फिर ज्यों का त्यों कर देगा ॥
७ चाहे तेरा भाग पहिले छोटा ही रहा हो
पर अन्त में तेरी बहुत बढ़ती होगी ॥
८ अगली पीढ़ी के लोगों से तो पूछ
और जो कुछ उन के पुरखाओं ने निकाला है उस में ध्यान दे ॥
९ क्योंकि हम तो कल ही के हैं और कुछ नहीं जानते
और पृथिवी पर हमारे दिन छाया की नाईं बीतते जाते हैं ॥
१० क्या वे लोग तुझ से शिक्षा की बातें न कहेंगे
क्या वे अपने मन से बातें न निकालेंगे ॥
११ क्या सरकण्डा कीच बिना बढ़ता है
क्या कछार की घास पानी बिना बढ़ सकती है ॥
१२ चाहे वह हरी हो और काटी भी न गई हो
तौभी वह और सब भांति की घास से पहिले ही सूख जाती है ॥
१३ ईश्वर के सब बिसरानेहारों की गति ऐसी ही होती है
और भक्तिहीन की आशा टूट जाती है ॥
१४ उस की आशा का मूल कट जाता
और जिस का वह भरोसा करता है सो मकड़ी का जाला ठहरता है ॥
१५ चाहे वह अपने घर पर टेक लगाए पर वह न ठहरेगा
वह उसे थांभे तो थांभे पर वह स्थिर न रहेगा ॥
१६ वह धाम पाकर हरा भरा होता
और उस की डालियां बारी में चारों ओर फैलती हैं ॥
१७ उस की जड़ कंकरों के ढेर में लिपटी हुई रहती है
और वह पत्थर के स्थान को देख लेता है ॥
१८ पर जब वह अपने स्थान पर से नाश किया जाए
तब वह स्थान उस से मुकरेगा कि मैं ने उसे कभी नहीं देखा ॥
१९ सुन उस की आनन्द भरी चाल यही है
फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेंगे ॥

(१) मूल में उन के अपराध के हाथ में भेजा है।

२० सुन ईश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता
और न बुराई करनेहारों को संभालता[२] है ॥
२१ वह तो तुझे हंसमुख करेगा
और तुझ से[३] जयजयकार कराएगा ॥
२२ तेरे बैरी लज्जा का वस्त्र पहिनेंगे
और दुष्टों का डेरा कहीं रहने न पाएगा ॥

(अय्यूब बिलदद को उत्तर देता)

९. तब अय्यूब ने कहा
२ मैं निश्चय जानता हूं कि बात ऐसी ही है
पर मनुष्य ईश्वर के लेखे क्योंकर धर्म्मी ठहरे ॥
३ चाहे वह उस से मुकद्दमा लड़ने को प्रसन्न भी होए
तौभी मनुष्य हजार बातों में से एक का भी उत्तर न दे सकेगा ॥
४ वह बुद्धिमान और अति सामर्थी है
उस के विरोध में हठ करके कौन कभी प्रबल हुआ ॥
५ वह तो पर्वतों को अचानक हटा देता
वह कोप में आकर उन्हें उलट भी देता है ॥
६ वह पृथिवी को कंपाकर उस के स्थान से अलग करता है
और उस के खंभे डोल उठते हैं ॥
७ उस की आज्ञा बिना सूर्य्य उदय नहीं होता
और वह तारों पर छाप लगाता है ॥
८ वह आकाशमण्डल को अकेला ही फैलाता
और समुद्र की ऊंची ऊंची लहरों पर चलता है ॥
९ वह सप्तर्षि मृगशिरा और कचपचिया
और दक्खिन के नक्षत्रों[४] का बनानेहारा है ॥
१० वह तो ऐसे बड़े कर्म्म करता है जिन की थाह नहीं लगती
और इतने आश्चर्यकर्म्म करता है जो गिने नहीं जाते ॥
११ सुनो वह मेरे साम्हने से होकर तो चलता है पर मुझ को नहीं देख पड़ता
और आगे को बढ़ जाता है पर मुझे सूझ नहीं पड़ता ॥
१२ सुनो जब वह छीनने लगे तब उस को कौन रोकेगा
कौन उस से कह सकता कि तू यह क्या करता है ॥

(२) मूल में का हाथ थाम्भता है। (३) मूल में तेरे होंठों से।
(४) मूल में कोठरियों।

१३ ईश्वर अपना कोप ठंडा नहीं करता
अभिमानी[१] के सहायकों को उस के पांव तले
झुकना पड़ता है ॥
१४ फिर मैं क्या हूं जो उसे उत्तर दूं
और बातें छांट छांटकर उस से विवाद करूं ॥
१५ चाहे मैं निर्दोष होता भी पर उस को उत्तर न
दे सकता
मैं अपने मुद्दई से गिड़गिड़ाकर बिनती करता ॥
१६ चाहे मेरे पुकारने से वह उत्तर भी देता
तौभी मैं इस बात की प्रतीति न करता कि वह
मेरी बात सुनता है ॥
१७ वह तो आंधी चलाकर मुझे तोड़ डालता
और बिना कारण मेरे चोट पर चोट लगाता है ॥
१८ वह मुझे सांस भी लेने नहीं देता
और मुझे कड़वाहट से भरता है ॥
१९ जो सामर्थ्य की चर्चा होए तो देखो वह
बलवान है
और यदि न्याय की चर्चा हो तो वह कहेगा मुझ से
कौन मुकद्दमा लड़ेगा[२] ॥
२० चाहे मैं निर्दोष होऊं भी पर अपने ही मुंह से
दोषी ठहरूंगा
खरा होने पर भी वह मुझे कुटिल ठहराएगा ॥
२१ मैं खरा तो हूं पर अपना भेद नहीं जानता
अपने जीवन से मुझे घिन आती है ॥
२२ बात तो एक ही है इस से मैं यह कहता हूं
कि ईश्वर खरे और दुष्ट दोनों को नाश
करता है।
२३ जब लोग विपत्ति[३] से अचानक मरने लगते
तब वह निर्दोष लोगों के गल जाने पर हंसता है ॥
२४ देश दुष्टों के हाथ में दिया हुआ है
वह उस के न्यायियों की आंखों को मून्द देता है[४]
इस का करनेहारा वही न हो तो कौन है ॥
२५ मेरे दिन हरकारे से अधिक वेग चले जाते हैं
वे भागे जाते और उन में कल्याण कुछ दिखाई
नहीं देता ॥
२६ वे नरकट की नावों की नाईं चले जाते हैं
वा अहेर पर झपटते हुए उकाब की नाईं ॥
२७ जो मैं कहूं कि विलाप करना भूल जाऊंगा
और उदासी[५] छोड़ कर अपना मन हरा कर लूंगा,
२८ तो मैं अपने सारे दुखों से डरता हूं
मैं तो जानता हूं कि तू मुझे निर्दोष न ठहराएगा ॥
२९ मैं तो दोषी ठहरूंगा
फिर व्यर्थ क्यों परिश्रम करूं ॥
३० चाहे मैं हिम के जल में स्नान करूं,
और अपने हाथ खार से निर्मल करूं,
३१ तौभी तू मुझे गड़हे में डाल देगा
और मेरे वस्त्र भी मुझ से घिनाएंगे ॥
३२ क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उस से
वादविवाद कर सकूं
और हम दोनों एक दूसरे से मुकद्दमा लड़ सकें ॥
३३ हम दोनों के बीच कोई बिचवई नहीं है
जो हम दोनों पर अपना हाथ रक्खे ॥
३४ वह अपना सोंटा मुझ पर से दूर करे
और न भय दिखाकर मुझे घबरा दे
३५ तब मैं उस से निडर होकर कुछ कह सकूंगा
क्योंकि मैं अपने लेखे ऐसा नहीं हूं ॥

१०. मेरा जी जीते रहने से उकताता है

सो मैं बिना रुके कुड़कुड़ाऊंगा[६]
और अपने मन की कड़वाहट के मारे बातें करूंगा ॥
२ मैं ईश्वर से कहूंगा मुझे दोषी न ठहरा
मुझे बता दे कि तू किस कारण मुझ से मुकद्दमा
लड़ता है ॥
३ क्या तुझे अंधेर करना
और दुष्टों की युक्ति को सुफल करके[७]
अपने हाथों के बनाये हुए[८] को निकम्मा जानना
भला लगता है ॥
४ क्या तेरी देहधारियों की सी आंखें हैं
और क्या तेरा देखना मनुष्य का सा है ॥
५ क्या तेरे दिन मनुष्य के से
वा तेरे बरस पुरुष के से हैं,
६ कि तू मेरा अधर्म्म ढूंढ़ता
और मेरा पाप पूछता है।
७ तुझे तो मालूम ही है कि मैं दुष्ट नहीं हूं
और तेरे हाथ से कोई छुड़ानेहारा नहीं ॥
८ तू ने अपने हाथों से मुझे ठीक रचा और जोड़कर
बनाया है

(१) मूल में रहब। (२) मूल में मेरे लिये कौन समय ठहराएगा। (३) मूल में कोड़े। (४) मूल में के मुंह ढांपता है।

(५) मूल में मुंह। (६) मूल में अपनी कुड़कुड़ाहट अपने ऊपर छोड़ूंगा। (७) मूल में युक्ति पर चमक के। (८) मूल में हाथों के परिश्रम।

तौभी मुझे नाश किये डालता है ॥
९ स्मरण कर कि तू ने मुझ को मिट्टी की नाईं बनाया
क्या तू मुझे फिर मिट्टी में मिलाएगा ॥
१० क्या तू ने मुझे दूध की नाईं उण्डेलकर और दही के समान जमाकर नहीं बनाया ॥
११ फिर तू ने मुझ पर चमड़ा और मांस चढ़ाया
और हड्डियां और नसें गूंथकर मुझे बनाया है ॥
१२ तू ने मुझे जीवन दिया और मुझ पर करुणा की है
और तेरी चौकसी से मेरे प्राण की रक्षा हुई है ॥
१३ तौभी तू ने ऐसी बातों को अपने मन में छिपा रक्खा
मैं तो जान गया कि तू ने ऐसा ही करना ठाना था ॥
१४ जो मैं पाप करूं तो तू उस का लेखा लेगा
और अधर्म्म करने पर मुझे निर्दोष न ठहराएगा ॥
१५ जो मैं दुष्ट होऊं तो हाय मुझ पर
और जो मैं धर्मी होऊं तौभी मैं सिर न उठाऊंगा
क्योंकि मैं अपमान से छक गया
और अपने दुःख पर ध्यान रखता हूं ॥
१६ और चाहे सिर उठाऊं तौभी तू सिंह की नाईं मुझे अहेर करता
और फिरके मेरे विरुद्ध आश्चर्य्यकर्म्म करता है ॥
१७ तू मेरे साम्हने अपने नये नये साक्षी ले आता
और मुझ पर अपनी रिस बढ़ाता है
और मुझ पर सेना पर सेना चढ़ाई करती है ॥
१८ तू ने मुझे गर्भ से क्यों निकाला
नहीं तो मैं वहीं प्राण छोड़ता और कोई मुझे देखने न पाता ॥
१९ मेरा होना न होने के समान होता
और पेट ही से कबर को पहुंचाया जाता ।
२० क्या मेरे दिन थोड़े नहीं । सो मुझे छोड़कर
मेरी ओर से मुंह फेर ले कि मेरा मन थोड़ा हरा हो जाए,
२१ उस से पहिले कि मैं वहां जाऊं जहां से न लौटूंगा
अर्थात् अंधियारे और घोर अंधकार के देश में,
२२ जो अंधकार ही अंधकार
और घोर अंधकार का देश है जिस में सब कुछ गड़बड़ है
और उस में का प्रकाश अंधकार के समान हो है ॥

(सोपर का वचन)

११. तब नामाती सोपर ने कहा
२ बहुत सी बातें जो कही गईं हैं क्या उन का उत्तर देना न चाहिये
क्या बकवादी मनुष्य धर्म्मी ठहराया जाए ॥
३ क्या तेरे बड़े बोल के कारण लोग चुप रहें
और जब तू ठट्ठा करता है तो क्या कोई तुझे लज्जित न करे ॥
४ तू तो यह कहता है कि मेरा सिद्धान्त शुद्ध है
और मैं ईश्वर[१] के लेखे पवित्र हूं ॥
५ पर भला होता कि ईश्वर तनिक बातें करे
और तेरे विरुद्ध मुंह खोले,
६ और तुझ पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रगट करे
कि उन का मर्म तेरी बुद्धि से बढ़कर[२] है
जान ले कि ईश्वर तेरे अधर्म्म में से बहुत कुछ बिसराता है ॥
७ क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता
और सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता ॥
८ आकाश सा ऊंचा तू क्या कर सकता
अधोलोक से गहिरा तू कहां समझ सकता ॥
९ उस की माप पृथिवी से भी लंबी
और समुद्र से चौड़ी है ॥
१० जब ईश्वर पास जाकर बन्द करे
और सभा में बुलाए तो कौन उस को रोक सकता ॥
११ वह तो पाखण्डी मनुष्यों का भेद जानता है
और अनर्थ काम को बिना सोच विचार किये भी जान लेता है ॥
१२ पर मनुष्य छूछा और निर्बुद्धि होता है
क्योंकि मनुष्य जन्म ही से बनैले गदहे के बच्चे के समान होता है ॥
१३ यदि तू अपना मन सिद्ध करे
और ईश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए,
१४ और जो कोई अनर्थ काम तुझ से होता हो उसे दूर करे
और अपने डेरों में कोई कुटिलता न रहने दे,
१५ तो तू निश्चय अपना मुंह निष्कलंक दिखा[३] सकेगा
और तू स्थिर होकर न डरेगा ॥
१६ तब तू अपना दुःख बिसराएगा वा उस का स्मरण बहे हुए जल का सा होगा ॥

(१) मूल में तेरे । (२) मूल में दुगना । (३) मूल में बिना कलंक उठा ।

१७ और तेरा जीवनकाल दोपहर से भी अधिक प्रकाशमान होगा
और चाहे अंधेरा भी होए तौभी वह भोर सा हो जाएगा ॥
१८ और तुझे आसरा जो होएगा इस कारण तू निडर रहेगा
और अपने चारों ओर देख देखकर तू निडर से सकेगा ॥
१९ और जब तू लेटेगा तब कोई तुझे न डराएगा
और बहुतेरे तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे ॥
२० पर दुष्ट लोगों की आंखें रह जाएंगी
और उन्हें शरण का कोई स्थान न रहेगा
और उन की आशा प्राण निकलना ही होगी ॥

(अय्यूब सोपर को उत्तर देता है)

१२. तब अय्यूब ने कहा
२ निःसन्देह तुम ही हो[१]
और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी ॥
३ पर तुम्हारी नाईं मेरे भी बुद्धि है
मैं तुम लोगों से कुछ घटकर नहीं हूं
कौन ऐसा है जो ऐसी बातें न जानता हो ॥
४ मैं ईश्वर से प्रार्थना करता था और वह मेरी सुन लिया करता था
पर अब मेरे पड़ोसी मुझ पर हंसते हैं
जो धर्मी और खरा मनुष्य है उस की हंसी हो रही है ॥
५ दुःखी लोग तो सुखियों की समझ में तुच्छ ठहरते हैं
और जिन के पांव फिसला चाहते हैं उन का अपमान अवश्य ही होता है ॥
६ लुटेरों के डेरे कुशल क्षेम से रहते हैं
और जो ईश्वर को रिस दिलाते हैं सो बहुत ही निडर रहते हैं
और उन के हाथ में ईश्वर बहुत देता है ॥
७ पशुओं से तो पूछ और वे तुझे दिखाएंगे
और आकाश के पक्षियों से और वे तुझे बता देंगे ॥
८ पृथिवी पर ध्यान दे तब उस से तुझे शिक्षा मिलेगी
और समुद्र की मछलियां भी तुझ से वर्णन करेंगी ॥

(१) मूल में देश के लोग हो।

९ इन सभों के द्वारा कौन नहीं जानता
कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस संसार को बनाया है ॥
१० उस के हाथ में एक एक जीवधारी का प्राण और एक एक देहधारी मनुष्य का आत्मा भी रहता है ॥
११ जैसे जीभ[२] से भोजन चीखा जाता है
क्या वैसे ही कान से वचन नहीं परखे जाते ॥
१२ बूढ़ों में बुद्धि पाई जाती तो है
और दिनी लोगों में समझ होती तो है ॥
१३ ईश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाये जाते हैं
युक्ति और समझ उसी के हैं ॥
१४ देखो जिस को वह ढा दे सो फिर बनाया नहीं जाता
जिस मनुष्य को वह बन्द करे सो फिर खोला नहीं जाता।
१५ देखो जब वह वर्षा को रोक रखता तो जल सूख जाता है
फिर जब वह जल छोड़ देता तब पृथिवी उलट जाती है ॥
१६ उस में सामर्थ्य और खरी बुद्धि पाई जाती है
भूलनेहारे और भुलानेहारे दोनों उसी के हैं ॥
१७ वह मंत्रियों को लूटकर बन्धुआई में ले जाता
और न्यायियों को मूर्ख बना देता है ॥
१८ वह राजाओं का अधिकार तोड़ देता
और उन की कमर पर बन्धन बन्धवाता है ॥
१९ वह याजकों को लूटकर बंधुआई में ले जाता और सामर्थियों को उलट देता है ॥
२० वह विश्वासयोग्य पुरुषों से बोलने की शक्ति और पुरनियों से विवेक की शक्ति[३] हर लेता है ॥
२१ वह हाकिमों को अपने अपमान से लादता
और बलवानों के हाथ ढीले कर देता है[४] ॥
२२ वह अंधियारे से गहरी बातें प्रगट करता
और घोर अन्धकार में भी प्रकाश कर देता है ॥
२३ वह जातियों को बढ़ाता और उन को नाश करता
वह उन को फैलाता और बन्धुआई में ले जाता है ॥
२४ वह पृथिवी के मुख्य लोगों की बुद्धि हरता
और उन को निर्जल स्थानों में जहां रास्ता नहीं है भटकाता है ॥

(२) मूल में तालू।
(३) मूल में हांठ। (४) मूल में फेंटा ढीला करता है।

२५ वे बिन उजियाले के अंधेरे में टटोलते फिरते हैं
और वह उन्हें मतवाले की नाईं डगमगाते चलाता है ॥

१३. सुनो मैं यह सब कुछ अपनी आंख से देख चुका
और अपने कान से सुन चुका और समझ भी चुका हूं ॥
२ जो कुछ तुम जानते हो सो मैं भी जानता हूं
मैं तुम लोगों से कुछ घटकर नहीं हूं ॥
३ मैं तो सर्वशक्तिमान से बातें करूंगा
और मेरी अभिलाषा ईश्वर से वादविवाद करने की है ॥
४ पर तुम लोग झूठी बात के गढ़नेहारे हो
तुम सब के सब निकम्मे वैद्य हो ॥
५ भला होता कि तुम बिलकुल चुप रहते
और इस से तुम बुद्धिमान ठहरते ॥
६ मेरा विवाद सुनो
और मेरी बहस की बातों पर कान लगाओ ॥
७ क्या तुम ईश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें कहोगे
और उस के पक्ष में कपट से बोलोगे ॥
८ क्या तुम उस का पक्षपात करोगे
और ईश्वर के लिये मुकद्दमा चलाओगे ॥
९ क्या यह भला होगा कि वह तुम को जांचे
क्या जैसा कोई मनुष्य को ठगे वैसा ही तुम उस को भी ठगोगे ॥
१० जो तुम छिप कर पक्षपात करो
तो वह निश्चय तुमको डांटेगा ॥
११ क्या तुम उस के माहात्म्य से भय न खाओगे
क्या उस का डर तुम्हारे मन में न समाएगा ॥
१२ तुम्हारे स्मरणयोग्य नीतिवचन राख के समान हैं
तुम्हारे कोट मिट्टी ही के ठहरे हैं ॥
१३ मुझ से बात करना छोड़ो कि मैं भी कुछ कहने पाऊं
फिर मुझ पर जो चाहे सो आ पड़े ॥
१४ मैं क्यों अपना मांस अपने दान्तों से चबाऊं
और क्यों अपना प्राण हथेली पर रक्खूं ॥
१५ वह मुझे घात करेगा मुझे कुछ आशा नहीं
तो भी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूंगा ॥
१६ और यह भी मेरे बचाव का कारण होगा कि भक्तिहीन जन उस के साम्हने नहीं आ सकता ॥
१७ चित्त लगा कर मेरी बात सुनो
और मेरी बिनती तुम्हारे कान में पड़े ॥
१८ सुनो मैं ने अपने मुकद्दमे की पूरी तैयारी की है
मैं ने निश्चय किया कि मैं निर्दोष ठहरूंगा ॥
१९ कौन है जो मुझ से मुकद्दमा लड़ सकेगा
ऐसा कोई पाया जाए तो मैं चुप होकर प्राण छोड़ूंगा ॥
२० दो ही काम मुझ से न कर
तो मैं तुझ से छिप न जाऊंगा ॥
२१ अपनी ताड़ना मुझ से दूर कर
और अपने भय से मुझे न घबरा ॥
२२ तब तेरे बुलाने पर मैं बोलूंगा
नहीं तो मैं प्रश्न करूं और तू मुझे उत्तर दे ॥
२३ मुझ से कितने अधर्म्म के काम और पाप हुए
मेरे अपराध और पाप मुझे जता दे ॥
२४ तू किस कारण अपना मुंह फेर लेता[1]
और मुझे अपना शत्रु गिनता है ॥
२५ क्या तू उड़ते हुए पत्ते को भी कंपाएगा ॥
और सूखे भूसे को खदेड़ेगा ॥
२६ तू मेरे लिये कठिन दुःखों[2] की आज्ञा देता
और मेरी जवानी के अधर्म्म का फल मुझे भुगता देता है[3]
२७ और मेरे पांवों को काठ में ठोंकता और मेरी सारी चाल चलन देखता रहता
और मेरे पांवों की चारों ओर सीमा बांध लेता है ॥
२८ और मैं सड़ी गली वस्तु
और कीड़ा खाये कपड़े के समान हूं ॥

१४. मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है सो थोड़े दिनों का और संताप से भरा रहता है ॥
२ वह फूल की नाईं खिलता फिर तोड़ा जाता है
वह छाया की रीति पर ढल[4] जाता और कहीं नहीं ठहरता ॥
३ फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता
क्या तू मुझे अपने साथ कचहरी में घसीटता है
४ अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है। कोई नहीं।

(१) मूल में छिपाता। (२) मूल में कड़वी बातों। (३) मूल में अधर्म्म के कर्म्मों का भागी मुझे करता है। (४) मूल भाग।

५ मनुष्य के दिन ठहराए गये हैं
और उस के महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है
और तू ने उस के लिये ऐसा सिवाना बांधा है
जिसे वह नहीं लांघ सकता
६ इस कारण उस से अपना मुंह फेर ले कि वह
आराम करे
जब लों कि वह मजूर की नाईं अपना दिन पूरा
न कर ले ॥
७ वृक्ष की तो आशा रहती है
कि चाहे वह काट डाला भी जाए तौ भी फिर
पनपेगा
और उस से कनखाएं निकलती ही रहेंगी ॥
८ चाहे उस की जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए।
और उस का ठूंठ मिट्टी में सूख भी जाए,
९ तौ भी वर्षा[1] की गंध पाकर वह फिर पनपेगा
और पौधे की नाईं उस से शाखाएं फूटेंगी ॥
१० पर पुरुष मर जाता और पड़ा रहता है
जब उस का प्राण छूट गया तब वह कहां रहा ॥
११ जैसे नील नदी[2] का जल घट जाता
और जैसे महानद का जल सूखते सूखते सूख
जाता है,
१२ वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता
जब लों आकाश बना रहेगा तब लों लोग न
जागेंगे
और न उन की नींद टटेगी ॥
१३ भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता
और जब लों तेरा कोप ठंढा न होता तब लों
मुझे छिपाये रखता
और मेरे लिये समय ठहरा कर फिर मेरी सुधि
लेता ॥
१४ यदि पुरुष मर जाए तो क्या वह फिर जिएगा
जब लों मेरा छुटकारा न होता[3]
तब लों मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा
लगाये रहता ॥
१५ तू मुझे बुलाता और मैं बोलता
तुझे अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा
होती ॥
१६ पर अब तू मेरे पग पग को गिनता है
क्या तू मेरे पाप की नहीं देखता रहता ॥
१७ मेरे अपराध को थैली में रखकर छाप लगाई गई है
और तू मेरे अधर्म्म को अधिक बढ़ाता है ॥
१८ पहाड़ भी गिरते गिरते नाश हो जाता है
और चटान अपने स्थान से हट जाती है,
१९ और पत्थर जल से घिस जाते हैं
और भूमि की धूलि उस की बाढ़ से बहाई जाती है
उसी प्रकार तू मनुष्य की आसरा मिटा देता है ॥
२० तू सदा उस पर प्रबल होता और वह जाता
रहता है
तू उस का चिहरा बिगाड़कर उसे निकाल देता है ॥
२१ उस के पुत्रों की बड़ाई होती और यह उसे नहीं
सूझता
और उन की घटी होती पर वह उन का हाल
नहीं जानता ॥
२२ केवल अपने ही कारण उस की देह को दुःख
होता है
और अपने ही कारण उस का जीव शोकित
रहता है ॥

(एलीपज का वचन)

१५. तब तेमानी एलीपज ने कहा
क्या बुद्धिमान को उचित है कि
२ अज्ञानता[4] के साथ उत्तर दे
वा अपने अन्तःकरण को पूरबी पवन से भरे।
३ क्या वह निष्फल वचनों से
वा व्यर्थ बातों से वादविवाद करे ॥
४ बरन तू भय मानना छोड़ देता
और ईश्वर का ध्यान करना औरों से छुड़ाता है ॥
५ तू अपने मुंह से अपना अधर्म्म प्रगट करता
और धूर्त्त लोगों के बोलने की रीति पर बोलता है[5]।
६ मैं तो नहीं पर तेरा मुंह ही तुझे दोषी ठहराता है
और तेरे ही वचन तेरे विरुद्ध साक्षी देते हैं ॥
७ क्या पहिला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ
क्या तेरी उत्पत्ति पहाड़ों से भी पहिले हुई ॥
८ क्या तू ईश्वर की सभा में बैठा सुनता था
क्या सारी बुद्धि अपने लिये तू ही रखता है ॥
९ तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते
तुझ में ऐसी कौन सी समझ है जो हम में नहीं ॥
१० हम लोगों में तो पक्के बालवाले और अति पुरनिये
मनुष्य हैं

(१) मूल में जल। (२) मूल में जैसे समुद्र।
(३) मूल में मेरा बदल न आता।

(४) मूल में वायु के ज्ञान। (५) मूल में धूर्त्तों की बोल चुनता है।

जो तेरे पिता से भी बहुत दिनी हैं॥
११ ईश्वर की शांति देनेहारी बातें
और जो वचन तेरे लिये कोमल हैं क्या ये तेरे लेखे तुच्छ हैं॥
१२ तेरा मन क्यों तुझे खींच ले जाता है
और तू आंख से क्यों सैन करता है॥
१३ तू तो अपना जी ईश्वर के विरुद्ध फेरता
और अपने मुंह से व्यर्थ बातें निकलने देता है॥
१४ मनुष्य क्या है कि निष्कलङ्क हो
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ सो क्या है कि निर्दोष हो सके॥
१५ सुन वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास नहीं करता
और स्वर्ग[1] भी उस की दृष्टि में निर्मल नहीं है॥
१६ फिर मनुष्य अधिक घिनौना और मलीन है जो कुटिलता को पानी की नाईं पीता है॥
१७ मैं तुझे समझा दूंगा सो मेरी सुन ले
जो मैं ने देखा है उसी का वर्णन मैं करता हूं॥
१८ (वे ही बातें जो बुद्धिमानों ने अपने पुरखाओं से सुनकर
बिना छिपाये बताया है॥
१९ केवल उन्हीं को देश दिया गया था
और उन के बीच कोई विदेशी आता जाता न था)॥
२० दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा से तड़पता है
और बलात्कारी के बरसों की गिनती ठहराई हुई है॥
२१ उस के कान में डरावना शब्द बना रहता है
कुशल के समय भी नाश करनेहारा उस पर आ पड़ता है॥
२२ उसे अंधियारे में से फिर निकलने की कुछ आशा नहीं होती
और तलवार उस की घात में रहती है॥
२३ रोटी रोटी ऐसा चिल्लाता हुआ[2] वह मारा मारा फिरता है
उसे निश्चय रहता है कि अंधकार का दिन मेरे पास ही है॥
२४ संकट और सकेती से उस को डर लगता रहता है
ऐसे राजा की नाईं जो युद्ध के लिये तैयार हो वे उस पर प्रबल होते हैं॥
२५ उस ने तो ईश्वर के विरुद्ध हाथ बढ़ाया है
और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह ताल ठोंकता है,

(१) वा आकाश। (२) मूल में रोटी कहां।

२६ और सिर उठाकर[3] और अपनी मोटी मोटी ढालें दिखाता हुआ[4]
वह उस पर धावा करता है॥
२७ फिर उस के मुंह पर चिकनाई छा गई है
और उस की कमर में चर्बी जमी है॥
२८ और वह उजाड़े हुए नगरों में
और जो घर रहने योग्य नहीं
और ढीह होने को छोड़े गये हैं उन में बस गया है॥
२९ वह धनी न रहेगा और न उस की संपत्ति बनी रहेगी
और ऐसे लोगों के खेत की उपज भूमि की ओर न झुकने पाएगी॥
३० वह अंधियारे से न छूटेगा
और उस की कनखाएं लौ से झुलस जाएंगी
और ईश्वर के मुंह की फूंक से वह उड़ जाएगा॥
३१ वह अपने को धोखा देकर व्यर्थ बातों का भरोसा न करे
क्योंकि उस का बदला धोखा ही होगा॥
३२ वह उस के नियत दिन से पहिले पूरा पूरा दिया जाएगा
उस की डालियां हरी न रहेंगी॥
३३ दाख की नाईं उस के कच्चे फल झड़ जाएंगे
और उस के फूल जलपाई के वृक्ष के से गिरेंगे॥
३४ क्योंकि भक्तिहीन के परिवार से कुछ बन न पड़ेगा[5]
और जो घूस लेते हैं उन के तंबू आग से जल जाएंगे॥
३५ उन के उपद्रव का पेट रहता और अनर्थ उत्पन्न होता है
और वे अपने अन्तःकरण में छल की बातें गढ़ते हैं॥

(अय्यूब का वचन)

१६. तब अय्यूब ने कहा
२ ऐसी ऐसी बातें मैं बहुत सी सुन चुका हूं
तुम सब के सब उकतानेहारे शान्तिदाता हो॥
३ क्या व्यर्थ बातों का अन्त कभी होगा
नहीं तो तुझे उत्तर देने के लिये क्या उसकाता है॥
४ मैं भी तुम्हारी सी बातें कर सकता हूं
जो तुम्हारी दशा मेरी सी होती
तो मैं भी तुम्हारे विरुद्ध बातें जोड़ सकता
और तुम्हारे विरुद्ध सिर हिला सकता॥

(३) मूल में गर्दन है। (४) मूल में अपनी ढालों की मोटी पीठों से। (५) मूल में परिवार बांझ होगा।

५ पर मैं बचनों से तुम को हियाव बन्धाता और बातों[1] से शांति देकर तुम्हारा शोक घटा देता ॥
६ चाहे मैं बोलूं पर मेरा शोक न घटेगा चाहे मैं चुप रहूं तौभी मेरा दुःख कुछ कम न होगा[2] ॥
७ पर अब उस ने मुझे उकता दिया
तू ने मेरे सारे परिवार को उजाड़ डाला है ॥
८ और तू ने जो मेरे शरीर को सुखा डाला है सो मेरे विरुद्ध साक्षी ठहरा है
और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खड़ा होकर मेरे साम्हने साक्षी देता है ॥
९ उस ने कोप में आकर मुझ को फाड़ा और मेरे पीछे पड़ा है
वह मेरे विरुद्ध दांत पीसता
और मेरा बैरी मुझ को आंखें दिखाता है ॥
१० अब लोग मुझ पर मुंह पसारते हैं
और मेरी नामधराई करके मेरे गाल पर थपेड़ा मारते
और मेरे विरुद्ध भीड़ लगाते हैं ॥
११ ईश्वर ने मुझे कुटिलों के वश में कर दिया
और दुष्ट लोगों के हाथ में फेंक दिया है ॥
१२ मैं सुख से रहता था और उस ने मुझे चूर चूर कर डाला
उस ने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे टुकड़े टुकड़े कर दिया
फिर उस ने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है ॥
१३ उस के तीर मेरे चारों ओर उड़ रहे हैं
वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को बेधता है
और मेरा पित्त भूमि पर बहाता है ॥
१४ वह शूर की नाईं मुझ पर धावा करके मुझे चोट पर चोट पहुंचाकर घायल करता है ॥
१५ मैं ने टाट सी सीकर अपनी खाल पर ओढ़ा
और अपना सींग मिट्टी में मैला कर दिया है ॥
१६ रोते रोते मेरा मुंह सूज गया
और मेरी आंखों पर घोर अन्धकार छा गया है ॥
१७ तौभी मुझ से कोई उपद्रव नहीं हुआ
और मेरी प्रार्थना पवित्र है ॥
१८ हे पृथिवी तू मेरे लोहू को न ढांपना और मेरी दोहाई कहीं न रुके ॥
१९ अब भी स्वर्ग में मेरा साक्षी है
और मेरा गवाही देनेहारा ऊपर है ॥
२० मेरे मित्र मेरे ठट्ठा करनेहारे हो गये हैं
पर मैं ईश्वर के साम्हने आंसू बहाता हूं,
२१ कि कोई ईश्वर के विरुद्ध सज्जन का और आदमी का मुकद्दमा उस के पड़ोसी के विरुद्ध लड़े ॥
२२ क्योंकि थोड़े ही बरसों के बीतने पर मैं उस मार्ग से चला जाऊंगा जिस से मैं नहीं लौटूंगा ॥

१७.

मेरा जीव नाश हुआ है मेरे दिन हो चुके[3] हैं
मेरे लिये कबर तैयार है ॥
२ निश्चय जो मेरे संग हैं सो ठट्ठा करनेहारे हैं
जो मुझे लगातार दिखाई देता है सो उन का झगड़ा रगड़ा है ॥
३ बन्धक धर दे अपने और मेरे बीच में तू ही जामिन हो
कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे ॥
४ तू ने इन का मन समझने से रोका है
इस कारण तू इन को प्रबल न करेगा ॥
५ जो अपने मित्रों को चुगली खाकर लुटा देता
उस के लड़कों की आंखें रह जाएंगी ॥
६ उस ने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा देते हैं
और लोग मेरे मुंह पर थूकते हैं,
७ और खेद के मारे मेरी आंखों में धुंधलापन छा गया
और मेरे सब अंग छाया की नाईं हो गये हैं ॥
८ इसे देखकर सीधे लोग चकित होते
और जो निर्दोष हैं सो भक्तिहीन के विरुद्ध उभरते हैं ॥
९ धर्म्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे
और शुद्ध काम करनेहारे[4] सामर्थ्य पर सामर्थ्य पाते जाएंगे ॥
१० तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ
पर मुझे तुम लोगों में एक भी बुद्धिमान न मिलेगा ॥
११ मेरे दिन तो बीत चुके और मेरी मनसाएं मिट गईं
और जो मेरे मन में था सो नाश हुआ है ॥
१२ वे रात को दिन ठहराते
वे कहते हैं अंधियारे के निकट उजियाला है ॥
१३ यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक मेरा धाम होगा

(१) मूल में होंठों। (२) मूल में मुझ से क्या किया जायगा। (३) मूल मे बुझ गये। (४) मूल में शुद्ध हाथवाला।

यदि मैं अन्धियारे में अपना बिछौना बिछा चुका होऊं,
१४ यदि मैं विनाश से कह चुका होऊं कि तू मेरा पिता है
और कीड़े से कि तू मेरी मा और मेरी बहिन है,
१५ तो मेरी क्या आशा रही
और मेरी आशा किस के देखने में आएगी ॥
१६ वह तो अधोलोक में[1] उतर जाएगी और उस समेत मुझे भी मिट्टी में विश्राम मिलेगा।

(शूही बिल्दद का वचन)

१८. तब शूही बिल्दद ने कहा
२ तुम कब लों फंदे लगा लगाकर वचन पकड़ते रहोगे
चित्त लगाओ तब हम बोलेंगे ॥
३ हम लोग तुम्हारे लेखे क्यों पशु सरीखे
और अशुद्ध ठहरे हैं ॥
४ हे अपने को कोप के मारे चीथनेहारे
क्या तेरे निमित्त पृथिवी उजड़ जाएगी
और चटान अपने स्थान से हट जाएगी ॥
५ तौभी दुष्टों का दीपक बुझ जाएगा
और दुष्ट की आग की लौ न चमकेगी ॥
६ उस के डेरे में का उजियाला अंधेरा हो जाएगा
और उस के ऊपर का दिया बुझ जाएगा ॥
७ उस के बड़े बड़े फाल छोटे हो जाएंगे
और वह अपनी ही युक्ति के द्वारा गिरेगा ॥
८ वह अपने ही पांव जाल में फंसाएगा
वह वागुर पर चलता है ॥
९ उस की एड़ी फंदे में फंस जाएगी
और वह वागुर में पकड़ा जाएगा ॥
१० फंदे की रस्सियां उस के लिये भूमि में
और वागुर डगर में छिपा रहता है ॥
११ चारों ओर से डरावनी वस्तुएं उसे डराती
और उस के पीछे पड़कर उस को भगाती हैं ॥
१२ उस का बल दुःख से घट जाएगा
और विपत्ति उस के पास ही तैयार रहेगी ॥
१३ उस के अंग खाए जाएंगे
काल का पहिलौठा उस के अंगों को[2] खा लेगा ॥

अपने जिस डेरे का भरोसा वह करता है उस में १४ से वह छीन लिया जाएगा
और वह भयंकर राजा के पास पहुंचाया जाएगा ॥
जो उस के यहां का नहीं है सो उस के डेरे में १५ बास करेगा
और उस के घर पर गंधक छितराई जाएगी ॥
उस की जड़ तो सूख जाएगी १६
और डालियां कट जाएंगी ॥
पृथिवी पर से उस का स्मरण मिट जाएगा १७
और हाट[3] में उस का नाम कभी न सुन पड़ेगा ॥
वह उजियाले से अंधियारे में ढकेल दिया जाएगा १८
और जगत में से भी भगाया जाएगा ॥
उस के कुटुंबियों में उस के कोई पुत्र पौत्र न रहेगा १९
और जहां वह रहता था वहां कोई बचा हुआ न रह जाएगा ॥
उस का दिन देखकर पूरबी लोग चकित होंगे २०
और पश्चिम के निवासियों के रोएं खड़े हो जाएंगे ॥
निःसंदेह कुटिल लोगों के निवास ऐसे हो जाते हैं २१
और जिस को ईश्वर का ज्ञान नहीं रहता उस का स्थान ऐसा ही हो जाता है ॥

(अय्यूब का वचन)

१९. तब अय्यूब ने कहा
तुम कब लों मेरे जीव को २ दुःख देते रहोगे
और बातों से मुझे चूर चूर करोगे ॥
इन दसों बार तुम लोग मेरी निन्दा करते ३
और निर्लज्ज होकर मुझे भभराते हो ॥
और चाहे मुझ से भूल हुई भी हो ४
तौभी वह भूल मेरे ही सिर रहेगी ॥
जो तुम सचमुच मेरे विरुद्ध बड़ाई मारोगे ५
और प्रमाण देकर मेरी निन्दा करोगे,
तो जानो कि ईश्वर ने मेरा न्याय बिगाड़ा ६
और मुझे अपने जाल में फंसा लिया है ॥
सुनो मैं उपद्रव उपद्रव यों चिल्लाता रहता हूं पर ७ कोई नहीं सुनता
मैं दोहाई देता रहता हूं पर कोई न्याय नहीं करता ॥
उस ने मेरे मार्ग को ऐसा रूंधा है कि मैं आगे ८ चल नहीं सकता
और मेरी डगरें अंधेरी कर दी हैं ॥
मेरा विभव उस ने हर लिया ९

(१) मूल में अधोलोक के बेंडों में।
(२) मूल में उस के चमड़े के बेंडों को।
(३) अथवा जंगल।

और मेरे सिर पर से मुकुट उतार दिया है ॥
१० उस ने चारों ओर से मुझे तोड़ दिया सो मैं जाता रहा
और मेरा आसरा उस ने वृक्ष की नाईं उखाड़ डाला है ॥
११ उस ने मुझ पर अपना कोप भड़काया
और अपने शत्रुओं में मुझे गिनता है ॥
१२ उस के दल इकट्ठे होकर मेरे विरुद्ध घुस बांधते हैं
और मेरे डेरे के चारों ओर छावनी डालते हैं ॥
१३ उस ने मेरे भाइयों को मुझ से दूर किया है
और जो मेरी जान पहचान के थे सो बिलकुल अनजान हो गये हैं ॥
१४ मेरे कुटुंबी मुझे छोड़ गये
और जो मुझे जानते थे सो मुझे भूल गये हैं ॥
१५ जो मेरे घर में रहा करते वे बरन मेरी दासियां भी मुझे अनजाना गिनने लगीं
उन के लेखे मैं परदेशी हो गया हूं ॥
१६ जब मैं अपने दास को बुलाता हूं तब वह नहीं बोलता
मुझे उस से गिड़गिड़ाना पड़ता है ॥
१७ मेरी सांस मेरी स्त्री को
और मेरा गन्ध मेरे भाइयों[१] के लेखे अनजान का सा लगता है ॥
१८ लड़के भी मुझे तुच्छ जानते
और जब मैं उठने लगता तब वे मेरे विरुद्ध बोलते हैं ॥
१९ मेरे सब परम मित्र[२] मुझ से घिन करते हैं
और जिन से मैं ने प्रेम किया सो पलटकर मेरे विरोधी हो गये हैं ॥
२० मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गये हैं
और अपने दांतों का छिलका ही लिये हुए मैं बच गया हूं ॥
२१ हे मेरे मित्रो मुझ पर दया करो दया
क्योंकि ईश्वर ने मुझे मारा है ॥
२२ तुम ईश्वर की नाईं क्यों मेरे पीछे पड़े हो
और मेरे मांस से क्यों तृप्त नहीं हुए ॥
२३ भला होता कि मेरी बातें अब लिखी जातीं
भला होता कि वे पुस्तक में लिखी जातीं,
२४ और लोहे की टांकी और शीशे से
वे सदा के लिये चटान पर खोदी होतीं ॥

(१) मूल में मेरे गर्भ के लड़कों। (२) मूल में भेद के मनुष्य।

२५ मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेहारा जीता है
और वह अन्त में मिट्टी पर खड़ा होगा ॥
२६ सो जब मेरे शरीर का यों नाश हो जाएगा
तब शरीर से अलग होकर मैं ईश्वर का दर्शन पाऊंगा ॥
२७ उस का दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिये करूंगा और न कोई दूसरा
मेरा हृदय फट चला है ॥
२८ मुझ में तो धर्म[१] का मूल पाया जाता है
सो तुम जो कहते हो हम इस को क्योंकर सताएं,
२९ इस कारण तुम तलवार से भय खाओ
क्योंकि जलजलाहट से तलवार का दण्ड मिलता है।
जिस से तुम जान लो कि न्याय होता है ॥

(सोपर का वचन)

२०.

तब नामाती सोपर ने कहा
२ मेरा जी चाहता है कि उत्तर दूं
और इस से बोलने को फुर्ती करता हूं ॥
३ मैं ने ऐसी शिक्षा सुनी जिस से मेरी निन्दा हुई
और मेरा आत्मा अपनी समझ में से मुझे उत्तर देता है ॥
४ क्या तू यह नियम नहीं जानता जो सनातन और उस समय का है
जब मनुष्य पृथिवी पर बसाया गया,
५ कि दुष्टों का ताली बजाना जल्दी बन्द हो जाता
और भक्तिहीनों का आनन्द पल भर का होता है ॥
६ चाहे ऐसे मनुष्य का माहात्म्य आकाश तक पहुंचे
और उस का सिर बादलों से लगे,
७ तौभी वह अपनी विष्ठा की नाईं सदा के लिये नाश हो जाएगा
और जो उस को देखते थे सो पूछेंगे कि वह कहां रहा ॥
८ वह स्वप्न की नाईं बिलाय जाएगा और किसी को फिर न मिलेगा

(१) मूल में बात।

रात में देखे हुए रूप की नाईं वह रहने न पाएगा ॥
९ जिस ने उस को देखा हो सो फिर उसे न देखेगा
और अपने स्थान पर उस का कुछ पता न रहेगा[1] ॥
१० उस के लड़केबाले कंगालों से भी बिन्ती करेंगे
और वह अपना छीना हुआ माल फेर देगा ॥
११ उस की हड्डियों में जवानी का बल भरा हुआ है
पर वह उसी के साथ मिट्टी में मिल[2] जाएगा ॥
१२ चाहे बुराई उस को मीठी लगे
और वह उसे अपनी जीभ के नीचे छिपा रक्खे,
१३ और वह उसे बचा रक्खे और न छोड़े
बरन उसे अपने तालू के बीच दबा रक्खे,
१४ तौभी उस का भोजन उस के पेट में पलटेगा
वह उस के बीच नाग का सा विष बन जाएगा ॥
१५ उस ने जो धन निगल लिया उसे वह फिर उगल देगा
ईश्वर उसे उस के पेट में से निकाल देगा ॥
१६ वह नागों का विष चूस लेगा
वह करैत के डसने से मर जाएगा ॥
१७ वह नदियें अर्थात् मधु और दही की नदियों को देखने न पाएगा ॥
१८ जिस के लिये उस ने परिश्रम किया उस को उसे फेर देना पड़ेगा और वह उसे निगलने न पाएगा
उस की मोल ली हुई वस्तुओं से जितना आनन्द होना चाहिये उतना तो उसे न मिलेगा ॥
१९ क्योंकि उस ने कंगालों को पीसकर छोड़ दिया
उस ने घर को छीन लिया उस को वह बढ़ाने[3] न पाएगा ॥
२० लालसा[4] के मारे जो उस को कभी शांति न मिलती[5] थी
इसलिये वह अपनी कोई मनभावनी वस्तु बचा न सकेगा ॥
२१ कोई वस्तु उस का कौर बिना हुए न बचती थी
इसलिये उस का कुशल बना न रहेगा ॥
२२ पूरी संपत्ति रहते भी वह सकेती में पड़ेगा
तब सब दुःखियों के हाथ उस पर उठेंगे ॥
२३ ऐसा होगा कि उस के पेट भरने के लिये ईश्वर अपना कोप उस पर भड़काएगा

(१) मूल में उस का स्थान उसे फिर न ताकेगा । (२) मूल में लेट । (३) मूल में बनाने । (४) मूल में पेट । (५) मूल में जान पड़ती ।

और रोटी खाने के समय[6] वह उस पर पड़ेगा[7] ॥
२४ वह लोहे के हथियार से भागेगा
और पीतल के धनुष से मारा जाएगा ॥
२५ वह उस तीर को खींचकर अपने पेट से निकालेगा
उस की चमकनेहारी नोक[8] उस के पित्त से होकर निकलेगी
भय उस में समाएगा ॥
२६ उस के गड़े हुए धन पर घोर अंधकार छा जाएगा[9]
वह ऐसी आग से भस्म होगा जो मनुष्य की फूंकी हुई न हो
और उसी से उस के डेरे में जो बचा हो वही भस्म हो जाएगा ॥
२७ आकाश उस का अधर्म्म प्रगट करेगा
और पृथिवी उस के विरुद्ध खड़ी होगी ॥
२८ उस के घर की बढ़ती जाती रहेगी
वह उस के कोप के दिन बह जाएगी ॥
२९ परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य का अंश
और उस के लिये ईश्वर का ठहराया हुआ भाग यही है ॥

(अय्यूब का वचन)

२१. तब अय्यूब ने कहा

२ चित्त लगाकर मेरी बात सुनो
और तुम्हारी शान्ति यही ठहरे ॥
३ मेरी कुछ तो सहो कि मैं भी बातें करूं
और जब मैं बातें कर चुकूं तब पीछे ठट्ठा करना ॥
४ क्या मैं किसी मनुष्य की दोहाई देता हूं
फिर मैं अधीर क्यों न होऊं
५ मेरी ओर चित्त लगाकर चकित हो
और अपनी अपनी अंगुली[10] दांत तले दबाओ ॥
६ जब मैं स्मरण करता तब मैं घबरा जाता हूं
और मेरी देह में कंपकंपी लगती है ॥
७ क्या कारण है कि दुष्ट लोग जीते रहते हैं
बरन बूढ़े भी हो जाते और उन का धन बढ़ता जाता है ॥
८ उन की सन्तान उन के संग
और उन के बालबच्चे उन की आंखों के साम्हने बने रहते हैं ॥
९ उन के घर में बेडर का कुशल रहता है

(६) वा उस की रोटी ठहराकर वा उस के मांस में । (७) मूल में उस पर बरसाएगा । (८) मूल में बिजली । (९) मूल में उस के छिपे द्रव्यों के लिये सब अंधकार छिपा है । (१०) मूल में हाथ मुंह पर रक्खो ।

और ईश्वर की छड़ी उन पर नहीं पड़ती ॥
१० उन का सांड़ गाभिन करता और चूकता नहीं
उन की गायें बियाती हैं और गाभ कभी नहीं गिरातीं ॥
११ वे अपने लड़कों को झुण्ड के झुण्ड बाहर जाने देते
और उन के बच्चे नाचते हैं ॥
१२ वे डफ और बीणा बजाते हुए गाते और बांसुरी के शब्द से आनन्दित होते हैं ॥
१३ वे अपने दिन सुख से बिताते और पल भर ही में अधोलोक को उतर जाते हैं ॥
१४ तौ भी वे ईश्वर से कहते थे कि हम से दूर हो
तेरी गति जानने की हम को इच्छा नहीं रहती ॥
१५ सर्वशक्तिमान क्या है कि हम उस की सेवा करें
और जो हम उस से बिनती भी करें तो हमें क्या लाभ होगा ॥
१६ देखो उन का कुशल उन के हाथ में नहीं रहता
दुष्ट लोगों का विचार मुझ से दूर रहे ॥
१७ कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझ जाता
और उन पर विपत्ति आ पड़ती है
और ईश्वर कोप करके उन के बांट में दुःख देता है,
१८ और वे वायु से उड़ाए हुए भूसे की
और बवण्डर से उड़ाई हुई भूसी की नाईं होते हैं ॥
१९ ईश्वर उस के अधर्म्म का दण्ड उस के लड़केबालों के लिये रख छोड़ता है
वह उसे उसी को दे कि उस का बोध उसी को हो ॥
२० दुष्ट अपना नाश अपनी ही आंखों से देखे और
सर्वशक्तिमान की जलजलाहट में से आप पी ले ॥
२१ क्योंकि जब उस के महीनों की गिनती कट चुकी
तब पीछे रहनेहारे अपने घराने से उस का क्या काम रहा ॥
२२ क्या ईश्वर को कोई ज्ञान सिखाएगा
वह तो ऊंचे पर रहनेहारों का भी न्याय करता है ॥
२३ कोई तो अपने पूरे बल में
बड़े चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है ॥
२४ उस की दोहनियां दूध से
और उस की हड्डियां गूदे से भरी रहती हैं ॥
२५ और कोई अपने जीव के दुःख[१] ही में
बिना कभी सुख भोगे मर जाता है ॥
२६ वे दोनों बराबर मिट्टी में मिल[२] जाते
और कीड़ों से ढंप जाते हैं ॥
२७ सुनो मैं तुम्हारी कल्पनाएं जानता हूं
और उन युक्तियों को भी जो तुम मेरे विषय अन्याय से करते हो ॥
२८ तुम कहते तो हो कि रईस का घर कहां रहा
दुष्टों के निवास के डेरे कहां रहे ॥
२९ पर क्या तुम ने बटोहियों से कभी नहीं पूछा
तुम उन के इस विषय के प्रमाणों से अनजान हो,
३० कि विपत्ति के दिन के लिये दुर्जन रक्खा जाता है
और रोष के समय के लिये ऐसे लोग बचाए जाते[३] हैं ॥
३१ उस की चाल उस के मुंह पर कौन कहेगा
और उस ने जो किया है उस का पलटा कौन देगा ॥
३२ तौ भी वह कबर को पहुंचाया जाता
और लोग उस कबर की रखवाली करते रहते हैं[४] ॥
३३ नाले के ढेले उस को सुखदायक लगते हैं
और जैसे अगले लोग अनगिनित जा चुके
वैसे ही सब मनुष्य उस के पीछे भी चले जाएंगे ॥
३४ सो तुम्हारे उत्तरों में जो झूठ ही पाया जाता है
तो तुम क्यों मुझे व्यर्थ शान्ति देते हो ॥

(एलीपज का वचन)

२२. तब तेमानी एलीपज ने कहा
२ क्या पुरुष से ईश्वर को लाभ पहुंच सकता
जो बुद्धिमान है सो अपने ही लाभ का कारण होता है ॥
३ क्या तेरे धर्म्मी होने से सर्वशक्तिमान सुख पा सकता
तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो सकता ॥
४ वह जो तुझे डांटता है और तुझ से मुकद्दमा लड़ता है
क्या इस कारण तेरी भक्ति हो सकती है ॥
५ क्या तेरी बुराई बहुत नहीं
तेरे अधर्म्म के कामों का कुछ अन्त नहीं ॥
६ तू ने तो अपने भाई का बंधक अकारण रख लिया
और नंगे के वस्त्र उतार लिये थे ॥

(१) मूल में कड़वाहट। (२) मूल में लेट। (३) मूल में पहुंचाये जाते हैं। (४) वा और कबर पर पहरा देता रहता है।

७ थके हुए को तू ने पानी न पिलाया
और भूखे को रोटी देने से नाह की थी ॥
८ जो बरियार था उसी को भूमि मिली
और जिस पुरुष की प्रतिष्ठा हुई थी सोई उस में
बस गया ॥
९ तू ने विधवाओं को छूछे हाथ लौटा दिया
और अपमूओं की बाँहें तोड़ डाली गई थीं ॥
१० इस कारण तेरे चारों ओर फंदे लगे हैं
और अचानक डर के मारे तू घबरा रहा है ॥
११ क्या तू अंधियारे को नहीं देखता
और उस बाढ़ को जिस में तू डूब रहा है ॥
१२ क्या ईश्वर स्वर्ग के ऊंचे स्थान में नहीं है
ऊंचे से ऊंचे तारों को देख कि वे कितने ऊंचे हैं ॥
१३ फिर तू कहता है कि ईश्वर क्या जानता है
क्या वह घोर अंधकार की आड़ में होकर न्याय
कर सकता है ॥
१४ काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि
कुछ नहीं देख सकता
वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर चलता
फिरता है ॥
१५ क्या तू उस पुरानी डगर को पकड़े रहेगा
जिस पर वे अनर्थ करनेहारे चलते थे,
१६ जो असमय कट गये
और उन के घर की नेव नदी सी बह गई ॥
१७ उन्हों ने ईश्वर से कहा था हम से दूर हो जा
और सर्वशक्तिमान हमारा[१] क्या कर सकता है ॥
१८ तौभी उस ने उन के घर अच्छे अच्छे पदार्थों से
भर दिये थे
दुष्ट लोगों का विचार मुझ से दूर रहे ॥
१९ धर्म्मी लोग देखकर आनन्दित होते और निर्दोष
लोग उन की हंसी करते हैं कि,
२० जो हमारे बिरुद्ध उठे थे सो निःसन्देह मिट गये
और उन का बड़ा धन आग का कौर हो
गया है ॥
२१ उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शांति मिलेगी
और जिस से तेरी भलाई होगी ॥
२२ उस के मुंह से शिक्षा सुन ले
और उस के वचन अपने मन में रख ॥
२३ यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिर के समीप जाए
और अपने डेरे से कुटिल काम दूर करे तो तू बन
जाएगा ॥

(१) मूल में उन का ।

२४ तू अपनी अनमोल वस्तुओं को[२] धूलि पर बरन
ओपीर का कुन्दन भी नालों के पत्थरों में डाल दे ॥
२५ तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल वस्तु[३]
और तेरे लिये चमकनेहारी चांदी होगा ॥
२६ तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा
और ईश्वर की ओर अपना मुंह बेखटके उठा सकेगा ॥
२७ और तू उस से प्रार्थना करेगा
और वह तेरी सुनेगा
और तू अपनी मन्नतों को पूरी करेगा ॥
२८ और जो बात तू ठाने सो तुझ से बन भी पड़ेगी
और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा ॥
२९ चाहे दुर्भाग्य हो[४] तो तू कहेगा कि सुभाग्य हो[५]
क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता है ॥
३० बरन जो निर्दोष न हो उस को भी वह बचाता है
अर्थात् वह तेरे शुद्ध कामों[६] के कारण छुड़ाया
जाएगा ॥

(अय्यूब का वचन)

२३.

१ तब अय्यूब ने कहा
२ मेरी कुड़कुड़ाहट अब भी नहीं
रुक सकती[७]
मेरी मार[८] मेरे कराहने से भारी है ॥
३ भला होता कि मैं जानता कि वह कहां मिल सकता
और उस के विराजने के स्थान तक जा सकता ॥
४ मैं उस के साम्हने अपना मुकद्दमा पेश करता
और बहुत से[९] प्रमाण देता ॥
५ मैं जान लेता कि वह मुझ से उत्तर में क्या कह
सकता
और जो कुछ वह मुझ से कहता सो मैं समझ लेता ॥
६ क्या वह अपना बड़ा बल दिखा कर मुझ से मुकद्दमा
लड़ता
नहीं वह मुझ पर ध्यान देता ॥
७ तब सज्जन उस से विवाद कर सकता
और इस रीति मैं अपने न्यायी के हाथ से सदा के
लिये छूट जाता ॥
८ सुनो मैं आगे जाता पर वह नहीं मिलता
मैं पीछे हटता हूं पर वह देख नहीं पड़ता ॥
९ जब वह बाईं ओर में काम करता है तब वह मुझे
दिखाई नहीं देता

(२) मूल में खान से निकला हुआ सोना चांदी ।
(३) मूल में तेरा धातु । (४) मूल में वे नीचे होएं ।
(५) मूल में ऊंचाई । (६) मूल में हाथों । (७) मूल में ढिठाई है ।
(८) मूल में हाथ । (९) मूल में मुंह भर के ।

जब वह दहनी ओर मुड़ता है तब वहां भी मुझे देख नहीं पड़ता ॥
१० पर वह जानता है कि मैं कैसी चाल चला हूं
और जब वह मुझे ता ले तब मैं सोने के समान निकलूंगा ॥
११ मेरे पैर उस की डगरों में स्थिर रहे
और मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े पकड़े रहा ॥
१२ उस की[१] आज्ञा के पालने से मैं न हटा
और मैं ने उस के[२] वचन अपनी इच्छा[३] से कहीं अधिक काम के जानकर रख छोड़े ॥
१३ पर वह एक ही बात पर अड़ा रहता और कोई उस को उस से फेर नहीं सकता
जो वह आप चाहता है सोई वह करता है ॥
१४ जो कुछ मेरे लिये ठना है उसी को वह पूरा करता है
और उस के मन में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं ॥
१५ इस कारण मैं उस को देखते घबराता जाता हूं
जब मैं सोचता हूं तब उस से थरथरा उठता हूं ॥
१६ क्योंकि मेरा मन ईश्वर ही ने कच्चा कर दिया
और सर्वशक्तिमान ही ने मुझ को घबरवा दिया है ॥
१७ सो मेरा सत्यानाश न तो अंधियारे के कारण हुआ
और न इस कारण कि घोर अंधकार मेरे मुंह पर छा गया है ॥

२४. सर्वशक्तिमान से समय क्यों नहीं ठहराये जाते

और जो लोग उस का ज्ञान रखते हैं सो उस के दिन क्यों देखने नहीं पाते ॥
२ कुछ लोग मेंड़ों को बढ़ाते
और भेड़ बकरियां छीनकर चराते हैं ॥
३ और वे बपमूओं का गदहा हांक ले जाते
और विधवा का बैल बंधक कर रखते हैं ॥
४ वे दरिद्र लोगों को मार्ग से हटा देते
और देश के दीनों को इकट्ठे छिपना पड़ता है ॥
५ देखो वे बनैले गदहों की नाईं
अपने काम को अर्थात् कुछ खाना यत्न से[४] ढूंढ़ने को निकल जाते हैं
उन के लड़केबालों का भोजन उन को जंगल से मिलता है ॥
६ उन को खेत में चारा काटना
और दुष्टों की बची बचाई दाख बटोरना पड़ता है ॥
७ रात को उन्हें बिना वस्त्र उघारा पड़ना
और जाड़े के समय बिना ओढ़े रहना पड़ता है ॥
८ वे पहाड़ों पर की झड़ियों से भींगे रहते और शरण न पाकर चटान से लिपट जाते हैं ॥
९ कुछ लोग बपमुए बालक को मा की छाती पर से छीन लेते
और दीन लोगों से बंधक लेते हैं,
१० जिस से वे बिना वस्त्र उघारे फिरते हैं
और पूलियां ढोते समय भी भूखे रहते हैं ॥
११ वे उन की भीतों के भीतर तेल पेरते
और उन के कुण्डों में दाख रौंदते हुए भी प्यासे रहते हैं ॥
१२ वे बड़े नगर में कराहते
और घायल किये हुओं का जी दोहाई देता है
पर ईश्वर मूर्खता का लेखा नहीं लेता ॥
१३ फिर कुछ लोग उजियाले से बैर रखते
वे उस के मार्गों को नहीं पहचानते
और न उस की डगरों में बने रहते हैं ॥
१४ खूनी पह फटते ही उठकर
दीन दरिद्र मनुष्य को घात करता
और रात को चोर बन जाता है ॥
१५ व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न पाए
दिन डूबने की राह देखता रहता
और वह अपना मुंह छिपा भी रखता है ॥
१६ वे अंधियारे के समय घरों में सेंध मारते और दिन को छिपे रहते हैं
वे उजियाले को जानते भी नहीं ॥
१७ सो उन सभों को भोर का प्रकाश घोर अंधकार सा जान पड़ता है
क्योंकि घोर अंधकार का भय वे जानते हैं ॥
१८ वे जल के ऊपर हलकी वस्तु के सरीखे हैं
उन के भाग को पृथिवी के रहनेहारे कोसते हैं
और वे अपनी दाख की बारियों में लौटने नहीं पाते ॥
१९ जैसे सूखे और घाम से हिम का जल बिलाय[५] जाता है
वैसे ही पापी लोग अधोलोक में बिलाय जाते हैं ॥

(१) मूल में उस को होठों की। (२) मूल में उस के मुंह को। (३) मूल में विधि। (४) मूल में तड़के उठकर।
(५) मूल में छीना।

२० माता[१] भी उस को भूल जाती और कीड़े उसे चूसते हैं
आगे को उस का स्मरण न रहेगा
इस रीति टेढ़े काम करनेहारा वृक्ष की नाईं कट जाता है ॥
२१ वह बांझ स्त्री को जो कभी नहीं जनी लूटता
और विधवा से भलाई करना नकारता है ॥
२२ बलात्कारियों की भी ईश्वर अपनी शक्ति से रक्षा करता है
जो जीने की आशा नहीं रखता वह भी फिर उठ बैठता है ॥
२३ ईश्वर उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है कि वे संभले रहते हैं
और उस की कृपादृष्टि उन की चाल पर लगी रहती है ॥
२४ वे बढ़ते हैं तब थोड़ी बेर में बिलाय जाते
वे दबाये जाते और सभों की नाईं रख लिये जाते हैं
और अनाज की बाल की नाईं काटे जाते हैं ॥
२५ क्या यह सब सच नहीं कौन मुझे झुठलाएगा कौन मेरी बातें निकम्मी ठहराएगा ॥

(शूही बिल्दद का वचन)

२५. तब शूही बिल्दद ने कहा

२ प्रभुता करना और डराना यह उसी का काम है
वह अपने ऊंचे ऊंचे स्थानों में संधि कर रखता है ॥
३ क्या उस की सेनाओं की गिनती हो सकती और कौन है जिस पर उस का प्रकाश नहीं पड़ता ॥
४ फिर मनुष्य ईश्वर के लेखे धर्म्मी क्योंकर ठहर सकता
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है सो क्योंकर निर्मल हो सकता है ॥
५ देख उस की दृष्टि में चंद्रमा भी अंधेरा ठहरता
और तारे भी निर्मल नहीं ठहरते ॥
६ फिर मनुष्य की क्या गिनती जो कीड़ा है और आदमी कहां रहा जो केंचुआ है ॥

(अय्यूब का वचन)

२६. तब अय्यूब ने कहा

२ निर्बल जन की तू ने क्या ही बड़ी सहायता की
और जिस की बांह में सामर्थ्य नहीं उस को तू ने कैसे संभाला है ॥

(१) मूल में गर्भ।

३ निर्बुद्धि मनुष्य को तू ने क्या ही अच्छी सम्मति दी
और अपनी खरी बुद्धि कैसी ही भली भांति प्रगट की है ॥
४ तू ने किस के हित के लिये बातें कहीं
और किस के मन की बातें तेरे मुंह से निकलीं[२]
५ बहुत दिन के मरे हुए लोग भी
जलनिधि और उस के निवासियों के तले तड़पते हैं ॥
६ अधोलोक उस के साम्हने उघड़ा रहता है
और विनाश का स्थान ढंप नहीं सकता ॥
७ वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाये रहता है
और बिना टेक[३] पृथिवी को लटकाये रखता है ॥
८ वह जल को अपनी काली घटाओं में बांध रखता
और बादल उस के बोझ से नहीं फटता ॥
९ वह अपने सिंहासन के साम्हने बादल फैलाकर उस को छिपाये रखता है ॥
१० उजियाले और अंधियारे के बीच जहां सिवाना बंधा है
वहां लों उस ने जलनिधि का सिवाना ठहरा रक्खा है ॥
११ उस की घुड़की से
आकाश के खंभे थरथराकर चकित होते हैं ॥
१२ वह अपने बल से समुद्र को उछालता
और अपनी बुद्धि से रहब को पटक देता है ॥
१३ उस के आत्मा से आकाशमण्डल स्वच्छ हो जाता है
वह अपने हाथ से भागनेहारा नाग मार देता है ॥
१४ देखो ये तो उस की गति के किनारे ही हैं
और उस की आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है
फिर उस के पराक्रम के गरजने का भेद कौन समझ सकता है ॥

२७. अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा,

२ मैं ईश्वर के जीवन की सों खाता हूं जिस ने मेरा न्याय बिगाड़ दिया
अर्थात उस सर्वशक्तिमान के जीवन की जिस ने मेरा जीव कड़ुआ कर दिया ॥

(२) मूल में किस की सांस तुझ से निकली।
(३) मूल में नास्ति के ऊपर।

३ क्योंकि अब लों मेरी सांस बराबर आती है
और ईश्वर का आत्मा[१] मेरे नथुनों में बना है ॥
४ मैं यह कहता हूं कि मेरे मुंह से कोई कुटिल बात न निकलेगी
और न मैं[२] कपट की बातें बोलूंगा ॥
५ ऐसा न हो कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊं
जब लों मेरा प्राण न छूटे तब लों मैं अपनी खराई से न मुकरूंगा[३] ॥
६ मैं अपना धर्म्म पकड़े हूं और उस को हाथ से जाने न दूंगा
क्योंकि मेरा मन जीवन भर के किसी दिन के विषय मुझे दोषी नहीं ठहराता ॥
७ मेरा शत्रु दुष्टों के समान
और जो मेरे विरुद्ध उठता है सो कुटिलों के तुल्य ठहरे ॥
८ जब ईश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण निकालकर हर ले
तब उस की क्या आशा रहेगी ॥
९ जब वह संकट में पड़े
तब क्या ईश्वर उस की दोहाई सुनेगा ॥
१० क्या वह सर्वशक्तिमान में सुख पा सकेगा और
हर समय ईश्वर को पुकार सकेगा ॥
११ मैं तुम्हें ईश्वर के काम[४] के विषय शिक्षा दूंगा
और सर्वशक्तिमान की बात[५] मैं न छिपाऊंगा ॥
१२ सुनो तुम लोग सब के सब उसे आप देख चुके हो
फिर तुम व्यर्थ बिचार क्यों पकड़े रहते हो ॥
१३ दुष्ट मनुष्य का भाग ईश्वर की ओर से यह है
और बलात्कारियों का अंश जो वे सर्वशक्तिमान के हाथ से पाते हैं सो यह है कि
१४ चाहे उस के लड़केवाले गिनती में बढ़ भी जाएं
तौभी तलवार ही के लिये बढ़ेंगे
और उस की सन्तान पेट भर रोटी न खाने पाएगी ॥
१५ उस के जो लोग बचे रहें सो मरकर कबर को पहुंचेंगे
और उस के यहां की विधवाएं न रोएंगी ॥
१६ चाहे वह रुपया धूलि के समान बटोर रक्खे
और वस्त्र मिट्टी के किनकों के तुल्य अनगिनित तैयार कराए,
१७ वह उन्हें तैयार कराए तो सही पर धर्मी उन्हें पहिन लेगा
और उस का रुपया निर्दोष लोग आपस में बांटेंगे ॥
१८ उस ने अपना घर कीड़े का सा बनाया
और खेत के रखवाले की झोंपड़ी की नाईं बनाया ॥
१९ वह धनी होकर लेट जाए पर ऐसा फिर करने न पाएगा
पलक मारते ही वह न रह जाएगा ॥
२० भय की धाराएं उसे बहा ले जाएंगी[६]
रात को बवण्डर उस को उड़ा ले जाएगा ॥
२१ पुरवाई उसे ऐसा उड़ा ले जाएगी कि वह जाता रहेगा
और उस को उस के स्थान से उड़ा ले जाएगी ॥
२२ क्योंकि ईश्वर उस पर विपत्तियां बिना तरस खाये डाल देगा
उस के हाथ से वह भाग जाने चाहेगा ॥
२३ लोग उस पर ताली बजाएंगे
और उस पर ऐसी हथोड़ी पीटेंगे कि वह अपने यहां न रह सकेगा ॥

२८.

चांदी की खानि तो होती है
और उस सोने के लिये भी स्थान होता है जिसे लोग ताते हैं ॥
२ लोहा मिट्टी में से निकाला जाता और पत्थर पिघलाकर पीतल बनाया जाता है ॥
३ मनुष्य अंधियारे को दूर कर
दूर दूर लों खोद खोदकर
अंधियारे और घोर अंधकार में के पत्थर ढूंढ़ते हैं ॥
४ जहां लोग रहते हैं वहां से दूर वे खानि खोदते हैं
वहां पृथिवी पर चलनेहारों के बिसराये[७] हुए वे
मनुष्यों से दूर लटके हुए डोलते रहते हैं ॥
५ यह भूमि जो है इस से रोटी तो मिलती है पर
उस के नीचे के स्थान मानो आग से उलट दिये जाते हैं ॥
६ उस के पत्थर नीलमणि का स्थान हैं
और उसी में सोने की धूलि भी है ॥
७ उस की डगर कोई मांसहारी पक्षी नहीं जानता

(१) वा ईश्वर का दिया हुआ प्राण । (२) मूल में मेरी जीभ । (३) मूल में हटाऊंगा । (४) मूल में ईश्वर के हाथ । (५) मूल में जो सर्वशक्तिमान के संग है ।

(६) मूल में आ लेगी । (७) मूल में पांव से ।

और किसी चील की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी ॥

८ उस पर अभिमानी पशुओं ने पांव नहीं धरा
और न उस से होकर कोई सिंह कभी गया है ॥

९ वह चकमक के पत्थर पर हाथ लगाता
और पहाड़ों को जड़ ही से उलट देता है ॥

१० वह चटान खोदकर नालियां बनाता
और उस की आंखों को हर एक अनमोल वस्तु देख पड़ती है ॥

११ वह नदियों को ऐसा रोक देता है कि उन से एक बून्द भी पानी नहीं टपकता[1]
और जो कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालता है ॥

१२ पर बुद्धि कहां मिल सकती
और समझ का स्थान कहां है ॥

१३ उस का मोल मनुष्य को मालूम नहीं
जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती ॥

१४ अथाह सागर कहता है वह मुझ में नहीं है
और समुद्र भी कहता है वह मेरे पास नहीं है ॥

१५ चोखे सोने से वह मोल लिया नहीं जाता
और न उस के दाम के लिये चान्दी तौली जाती है ॥

१६ न तो उस के साथ ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है
और न अनमोल सुलैमानी पत्थर वा नील मणि की ॥

१७ न सोना न कांच उस के बराबर ठहर सकता है
कुन्दन के गहने के बदले भी वह नहीं मिलती ॥

१८ मूंगे और स्फटिकमणि की उस के आगे क्या चर्चा
बुद्धि का मोल माणिक से भी अधिक है ॥

१९ कूश देश के पद्मराग उस के तुल्य नहीं ठहर सकते
और न उस से चोखे कुन्दन की बराबरी हो सकती है ॥

२० फिर बुद्धि कहां मिल सकती है
और समझ का स्थान कहां

२१ वह सब प्राणियों की आंखों से छिपी है
और आकाश के पक्षियों के देखाव में नहीं है ॥

२२ विनाश और मृत्यु कहती हैं
कि हम ने उस की चर्चा सुनी है ॥

२३ परन्तु परमेश्वर उस का मार्ग समझता है
और उस का स्थान उस को मालूम है ॥

२४ वह तो पृथिवी की छोर लों ताकता रहता
और सारे आकाशमण्डल के तले देखता भालता है ॥

२५ जब उस ने वायु का तौल ठहराया
और जल को नपुए में नापा

२६ और मेंह के लिये विधि
और गर्जन और बिजली के लिये मार्ग ठहराया

२७ तब उस ने बुद्धि को देखकर उस का बखान भी किया
और उस को सिद्ध करके उस का सारा भेद बूझ लिया ॥

२८ तब उस ने मनुष्य से कहा
सुन प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है
और बुराई से दूर रहना यही समझ है ॥

(अय्यूब का वचन)

२९. अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा

२ भला होता कि मेरी दशा बीते हुए महीनों की सी होती
जिन दिनों में ईश्वर मेरी रक्षा करता था,

३ जब उस के दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर रहता था
और उस से उजियाला पाकर मैं अंधेरे में चलता था ॥

४ वे तो मेरी जवानी[2] के दिन थे
जब ईश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर प्रगट होती थी ॥

५ तब लों तो सर्वशक्तिमान मेरे संग रहता था
और मेरे लड़केबाले मेरे चारों ओर रहते थे ॥

६ तब मैं अपने पगों को मलाई से धोता था और
मेरे पास की चटानों से तेल की धाराएं बहा करती थीं ॥

७ जब जब मैं नगर के फाटक की ओर चलकर खुले स्थान में अपने बैठने का स्थान तैयार करता था ॥

८ तब तब जवान मुझे देखकर छिप जाते
और पुरनिये उठकर खड़े हो जाते थे ॥

९ हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते
और हाथ से मुंह मूंदे रहते थे ॥

१० प्रधान लोग चुप रहते थे[3]

---

(१) मूल में आंसू बहाने से ।

(२) मूल में फल पकने के समय ।

(३) मूल में प्रधानों की वाणी छिप जाती थी ।

और उन की जीभ तालू से सट जाती थी ॥
११ क्योंकि जब कोई[1] मेरा समाचार सुनता तब वह मुझे धन्य कहता था
और जब कोई मुझे देखता तब मेरे विषय साक्षी देता था
१२ इस कारण कि मैं दोहाई देनेहारे दीन जन को
और असहाय बपमुए को भी छुड़ाता था ॥
१३ जो नाश होने पर था सो मुझे आशीर्वाद देता था
और मेरे कारण विधवा आनन्द के मारे गाती थी ॥
१४ मैं धर्म्म को पहिने रहा और वह मुझे पहिने रहा
मेरा न्याय का काम मेरे लिये बागे और सुन्दर पगड़ी का काम देता था ॥
१५ मैं अन्धों के लिये आंखें
और लंगड़ों के लिये पांव ठहरता था ॥
१६ दरिद्र लोगों का मैं पिता ठहरता
और जो मेरी पहिचान का न था उस के मुकद्दमे का हाल मैं पूछपाछ करके जान लेता था ॥
१७ मैं कुटिल मनुष्यों की डाढ़ें तोड़ डालता और
उन का शिकार उन के मुह से छीनकर बचा लेता था ॥
१८ तब मैं सोचता था कि मेरे दिन बालू के किनकों के समान अनगिनित होंगे
और अपने ही बसेरे में मेरा प्राण छूटेगा ॥
१९ मेरी जड़ जल की ओर फैली[2]
और मेरी डाली पर ओस रात भर पड़ी रहेगी
२० मेरी महिमा ज्यों की त्यों[3] बनी रहेगी
और मेरा धनुष मेरे हाथ में सदा नया होता जाएगा ॥
२१ लोग मेरी ही ओर कान लगाकर ठहरते
और मेरी सम्मति सुनकर चुप रहते थे ॥
२२ जब मैं बोल चुकता था तब वे और कुछ न बोलते थे
मेरी बातें उन पर मेंह की नाईं बरसा करती थीं ॥
२३ जैसे लोग बरसात की वैसे ही मेरी भी बाट देखते थे
और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा के लिये वैसे ही वे आंखें लगाते[4] थे ॥
जब उन को कुछ आशा न रहती तब मैं हंसकर २४ उन को प्रसन्न करता था
और कोई मेरे मुंह को बिगाड़ न सकता था ॥
मैं उन का मार्ग चुन लेता और उन में मुख्य २५ ठहरकर बैठा करता
और जैसा सेना में राजा वा विलाप करनेहारों के बीच शांतिदाता
वैसा ही मैं रहता था ॥

३०. पर अब जिन की अवस्था मुझ से कम है वे मेरी हंसी करते

जिन के पिताओं को मैं अपनी भेड़ बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य न जानता था[5] ॥
उन के भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता २ था
उन का पौरुष तो जाता रहा था ॥
वे घटी और काल के मारे दुबले पड़े ३ हुए हैं
वे अंधेरे और सुनसान स्थानों में सूखी धूल फांकते हैं ॥
वे झाड़ी के आस पास का लोनिया साग तोड़ ४ लेते
और झाऊ की जड़ें खाते हैं ॥
वे मनुष्यों के बीच में से निकाले जाते हैं, ५
उन के पीछे ऐसी पुकार होती है जैसी चोर के पीछे ॥
डरावने नालों में भूमि के बिलों में ६
और चटानों में उन्हें रहना पड़ता है ॥
वे झाड़ियों के बीच रेंकते ७
और बिच्छू पौधों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं ॥
वे मूढ़ों और नीच लोगों[6] के वंश हैं ८
जो मार मार के इस देश से निकाले गये थे ॥
ऐसे ही लोग अब मुझ पर लगते गीत गाते ९
और मुझ पर ताना मारते हैं ॥
वे मुझ से घिन खाकर दूर रहते १०
वा मेरे मुंह पर थूकने से भी नहीं डरते[7] ॥
ईश्वर ने जो मेरी रस्सी खोलकर मुझे दुःख दिया है ११
सो वे मेरे साम्हने मुंह में लगाम नहीं रखते ॥
मेरी दहिनी अलंग पर बजारू लोग उठ खड़े होते १२ हैं वे मेरे पांव सरका देते

(१) मूल में कान। (२) मूल में खुली। (३) मूल में टटकी। (४) मूल में मुंह खोलते।

(५) मूल में कुत्तों के साथ ठहराना नकारता था। (६) मूल में नामरहितों। (७) मूल में मुंह से थूक नहीं रख छोड़ते।

और मेरे नाश के लिये धुस[१] बांधते हैं ॥

१३ जिन के कोई सहायक नहीं
सो भी मेरी डगरों को बिगाड़ते
और मेरी विपत्ति को बढ़ाते हैं[२] ॥

१४ मानो बड़े नाके से घुसकर वे आ पड़ते
और उजाड़ के बीच हो मुझ पर धावा करते हैं ॥

१५ मुझ को घबराहट आ गई है[३]
और मेरा रईसपन मानो वायु से उड़ाया गया
और मेरा कुशल बादल की नाईं जाता रहा है ॥

१६ और अब मैं शोकसागर में डूबा जाता हूं[४]
दुःख के दिन आये हैं[५] ॥

१७ रात को मेरी हड्डियां छिद जाती हैं[६]
और मेरी नसों में चैन नहीं पड़ती[७] ॥

१८ ईश्वर के बड़े बल से मेरे वस्त्र का रूप बदल गया है
वह मेरे कुर्त्ते के गले की नाईं मुझे जकड़ रखता है ॥

१९ उस ने मुझ को कीच में फेंक दिया है
और मैं मिट्टी और राख के तुल्य हो गया हूं ॥

२० मैं तेरी दोहाई देता पर तू नहीं सुनता
मैं खड़ा होता हूं पर तू मेरी ओर मुंह किये रहता है ॥

२१ तू मेरे लिये क्रूर हो गया है
और अपने बली हाथ से मुझे सताता है ॥

२२ तू मुझे वायु पर सवार करके उड़ाता
और आंधी के पानी में मुझे गला देता है ॥

२३ मुझे निश्चय है कि तू मुझे काल के वश कर देगा और उस घर में पहुंचाएगा जिस में सब प्राणी मिल जाते हैं ॥

२४ तौभी क्या कोई गिरते समय हाथ न बढ़ाए
और क्या कोई विपत्ति के समय[८] दोहाई न दे ॥

२५ मैं तो उस के लिये रोता था जिस के दुर्दिन आये थे
और दरिद्र जन के कारण मैं जी से दुखित होता था ॥

२६ जब मैं कुशल का मार्ग जोहता था तब विपत्ति पड़ी
और जब मैं उजियाले का आसरा लगाये रहा तब अंधकार छा गया ॥

(१) मूल में अपनी डगरें। (२) मूल में विपत्ति की सहायता करते हैं। (३) मूल में मुझ पर घबराहट घुमाई गई। (४) मूल में मेरा जीव मेरे ऊपर उण्डेला जाता है। (५) मूल में दुःख के दिनों ने मुझे पकड़ा है। (६) मूल में मुझ पर से छिदती हैं। (७) मूल में मेरी नसें नहीं सोतीं। (८) मूल में होते इस कारण।

मेरा हृदय निरंतर जलता रहता है[९] २७
मेरे दुःख के दिन आ गये हैं ॥

मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए मानो बिना सूर्य्य के चलता फिरता था। २८
और सभा में खड़ा होकर दोहाई देता था ॥

मैं गीदड़ों का भाई २९
और शुतुर्मुर्गों का संगी हो गया हूं ॥

मेरा चमड़ा काला होकर उचलता जाता है ३०
और ताप के मारे मेरी हड्डियां जलती हैं ॥

इस कारण मेरा वीणा बजाना विलाप से ३१
और मेरा बांसुरी बजाना रोने से बदल गया ॥

३१. मैं ने अपनी आंखों के विषय वाचा बांधी थी

सो मैं किसी कुंआरी पर क्योंकर आंखें लगाऊं ॥

क्योंकि ईश्वर स्वर्ग से कौन अंश २
और सर्वशक्तिमान ऊपर से कौन भाग बांटता है ॥

क्या वह कुटिल मनुष्यों की विपत्ति ३
और अनर्थ काम करनेहारों का सत्यानाश नहीं है ॥

क्या वह मेरी गति नहीं देखता ४
क्या वह मेरे पग पग नहीं गिनता ॥

यदि मैं व्यर्थ चाल चला होऊं ५
वा कपट करने के लिये दौड़ा होऊं[१०],

तो मैं धर्म्म के तराजू में तौला जाऊं ६
कि ईश्वर मेरी खराई जान ले ॥

यदि मेरे पग मार्ग से मुड़े हों ७
वा मेरा मन आंखों के पीछे हो लिया हो
वा मेरे हाथों को कुछ कलंक लगा हो

तो मैं बीज बोऊं पर दूसरा खाए ८
बरन मेरा खेत उखाड़ डाला जाए

यदि मैं किसी स्त्री के फन्दे में फंसा होऊं ९
वा अपने पड़ोसी के द्वार पर घात लगाई हो

तो मेरी स्त्री दूसरे की पिसनहारी होए १०
और पराये पुरुष उस को भ्रष्ट करें ॥

क्योंकि वह तो महापाप ११
और न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म्म का काम होता ॥

क्योंकि वह ऐसी आग है जो जलाकर नाश कर देती है १२

(९) मूल में खौलती है और चुप नहीं होती।
(१०) मूल में मेरा पांव दौड़ा हो।

और वह मेरी सारी उपज उखाड़ देती ॥
१३ जब मेरे दास वा दासी मुझ से झगड़ती रहीं
तब यदि मैं उन का हक तुच्छ जानता
१४ तो ईश्वर के उठ खड़े होने के समय मैं क्या करता ॥
और उस के लेखा लेने पर मैं क्या लेखा दे सकता ॥
१५ जिस ने मुझ को पेट में गढ़ा क्या उस ने उस को भी न गढ़ा
क्या एक ही ने हम दोनों को गर्भ में न रचा था ॥
१६ यदि मैं ने कंगालों की इच्छा पूरी न की हो
वा मेरे कारण विधवा की आंखें कभी रह गई हों
१७ वा मैं ने अपना टुकड़ा अकेला खाया हो
और उस में से बपमुए न खाने पाये हों
१८ (पर वह मेरे लड़कपन ही से मुझे पिता जानकर मेरे संग बढ़ा है
और मैं जन्म ही से विधवा को पालता आया हूं)
१९ यदि मैं ने किसी को वस्त्र बिना मरते हुए
वा किसी दरिद्र को बिन ओढ़ने देखा हो
२० और उस को अपनी भेड़ों की ऊन के कपड़े न दिये हों
और उस ने गर्म होकर मुझे आशीर्वाद न दिया हो[१]
२१ वा यदि मैं ने फाटक में अपने सहायक देखकर
बपमुओं के मारने को अपना हाथ उठाया हो
२२ तो मेरी बांह पखौड़े से उखड़कर गिर पड़े
और मेरी भुजा की हड्डी टूट जाए[२] ॥
२३ ईश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा न कर सकता था
क्योंकि उस की ओर की विपत्ति के कारण मैं थरथराता था ॥
२४ यदि मैं ने सोने का भरोसा किया होता
वा कुन्दन को अपना आसरा कहा होता
२५ वा अपने बहुत से धन
वा अपनी बड़ी कमाई के कारण आनन्द किया होता
२६ वा सूर्य को चमकते
वा चन्द्रमा को महाशोभा से चलते हुए देखकर
२७ मैं मन ही मन बहक जाता
और अपने मुंह से अपना हाथ चूमा होता[३]
२८ तो यह भी न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म्म का काम होता
क्योंकि ऐसा करके मैं ऊपर के ईश्वर के विषय पाखण्ड करता ॥

२९ यदि मैं ने अपने बैरी के नाश से आनन्द किया होता
वा जब उस पर विपत्ति पड़ी तब उस पर फूल उठा होता
३० (पर मैं ने न तो उस को स्राप देते हुए न उस के प्राणदण्ड की प्रार्थना करते हुए अपने मुंह[४] से पाप किया है)
३१ यदि मेरे डेरे के रहनेहारों ने यह न कहा होता
कि ऐसा कोई कहां मिलेगा जो इस के यहां का मांस खाकर तृप्त न हुआ हो
३२ (परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता था मैं बटोही[५] के लिये अपना द्वार खुला रखता था)
३३ यदि मैं ने आदम की नाईं अपना अपराध इस लिये ढांपा होता
और अपना अधर्म्म मन में[६] छिपाया होता
३४ कि मैं बड़ी भीड़ से त्रास खाता
वा कुलीनों[७] से तुच्छ किये जाने का भय मानता
जिस से मैं द्वार से बिना निकले चुपचाप रहता—
३५ भला होता कि मेरे कोई सुननेहारा होता सर्व-शक्तिमान अभी मेरा न्याय चुकाए देखो मेरा दस्तखत यही है ॥
भला होता कि जो शिकायतनामा मेरे मुद्दई ने लिखा है सो मेरे पास होता ॥
३६ निश्चय मैं उस को अपने कंधे पर उठाये फिरता
और सुन्दर पगड़ी जानकर अपने सिर में बांधे रहता ॥
३७ मैं उस को अपने पग पग का लेखा देता मैं उस के निकट प्रधान की नाईं निडर जाता ॥
३८ यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध दोहाई देती हो और उस की रेघारियां मिलकर रोती हों
३९ यदि मैं ने अपनी भूमि की उपज बिना मजूरी[८] दिये खाई
वा उस के मालिक का प्राण छुड़ाया हो
४० तो गेहूं के बदले झड़बेड़ी
और जव के बदले जंगली घास उगें ॥
अय्यूब के बचन पूरे हुए हैं ॥

(एलीहू का बचन)

३२. तब उन तीनों पुरुषों ने यह देखकर कि अय्यूब अपने लेखे निर्दोष है उस को उत्तर देना छोड़ दिया। और बूजी २

(१) मूल में उस की कमर ने मुझे आशीर्वाद न दिया हो। (२) मूल में मेरी भुजा नरट से टूट जाए। (३) मूल में मेरा हाथ मेरे मुंह को चूमता। (४) मूल में तालू। (५) मूल में बाट। (६) मूल में अपनी गोद में। (७) मूल में कुलों। (८) मूल में रुपये।

बारकेल का पुत्र एलीहू जो राम के कुल का था उस का कोप भड़क उठा अय्यूब पर उस का कोप इसलिये भड़क उठा कि उस ने परमेश्वर को नहीं अपने ही को
३ निर्दोष ठहराया। फिर अय्यूब के तीनों मित्रों के विरुद्ध भी उस का कोप इस कारण भड़का कि वे अय्यूब को
४ उत्तर न दे सके तौभी उस को दोषी ठहराया। एलीहू तो अपने को उन से छोटा जानकर अय्यूब की बातों
५ के अन्त की बाट जोहता रहा। पर जब एलीहू ने देखा कि ये तीनों पुरुष कुछ उत्तर नहीं देते तब उस का कोप भड़क उठा॥

६ सो बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू कहने लगा कि
मैं तो जवान हूं और तुम बहुत बूढ़े हो
इस कारण मैं रुका रहा और अपना मत तुम को बताने से डरता था॥
७ मैं सोचता था कि जो दिनी हैं वे ही बातें करें
और जो बहुत बरस के हैं वे ही बुद्धि सिखाएं॥
८ परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही
और सर्वशक्तिमान अपनी दी हुई सांस से उन्हें समझने की शक्ति देता है॥
९ जो बुद्धिमान हैं सो बड़े बड़े लोग ही नहीं और न्याय के समझनेहारे बूढ़े ही नहीं होते॥
१० इसलिये मैं कहता हूं कि मेरी भी सुनो[१]
मैं भी अपना मत बताऊंगा॥
११ मैं तो तुम्हारी बातें सुनने को ठहरा रहा
मैं तुम्हारे प्रमाण सुनने के लिये ठहरा रहा
जब कि तुम कहने के लिये कुछ खोजते रहे॥
१२ मैं चित्त लगाकर तुम्हारी सुनता रहा
पर किसी ने अय्यूब के पक्ष का खण्डन नहीं किया
और न उस की बातों का उत्तर दिया॥
१३ तुम लोग मत समझो कि हम को ऐसी बुद्धि मिली है
उस का खण्डन मनुष्य नहीं ईश्वर ही कर सकता है॥
१४ जो बातें उस ने कहीं सो मेरे विरुद्ध तो नहीं कहीं
और न मैं तुम्हारी सी बातों से उस को उत्तर दूंगा॥
१५ वे विस्मित हुए और फिर कुछ उत्तर नहीं देते हैं
उन्हों ने बातें करना छोड़ दिया[२]॥
१६ सो वे जो कुछ नहीं बोलते और चुपचाप खड़े रहते हैं
इस कारण मैं ठहरा रहा॥
१७ पर अब मैं भी कुछ कहूंगा[३]
मैं भी अपना मत प्रगट करूंगा॥
१८ क्योंकि मेरे मन में बातें भरी हैं
और मेरा आत्मा मुझे उभारता है॥
१९ मेरा मन उस दाखमधु के समान है जो खोला न गया हो
वह नई कुप्पियों की नाईं फटा चाहता है॥
२० शान्ति पाने के लिये मैं बोलूंगा
मैं मुंह खोलकर उत्तर दूंगा॥
२१ कहीं मैं किसी का पक्ष न करूं
और किसी मनुष्य से ठकुरसोहाती बातें न करूं॥
२२ मैं तो ठकुरसोहाती कहने को जानता भी नहीं
नहीं तो मेरा सिरजनहार क्षण भर में मुझे उठा लेता॥

३३.

तौभी हे अय्यूब मेरी बातें सुन
और मेरे सब वचनों पर कान लगा॥
२ मैं ने तो अपना मुंह खोला है
और मेरी जीभ मुंह में चुलबुला रही है[४]॥
३ मेरी बातें अपने मन की सिधाई से होंगी
जो ज्ञान मैं रखता हूं सो खराई के साथ कहूंगा[५]॥
४ मैं ईश्वर के आत्मा का रचा हुआ हूं
और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिला है॥
५ यदि तू मुझे उत्तर दे सके तो दे
मेरे साम्हने अपनी बातें क्रम से रचकर खड़ा हो जा॥
६ देख मैं ईश्वर के लेखे तुझ सा हूं
मैं भी मिट्टी का बना हुआ हूं॥
७ सुन तुझे मेरे डर के मारे घबराना न पड़ेगा और
न तू मेरे बोझ से दबेगा॥
८ निःसंदेह तेरी ऐसी बात मेरे कान पड़ी और मैं ने तेरे ऐसे वचन सुने हैं कि
९ मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलंक हूं
और मुझ में अधर्म्म नहीं है॥
१० देख वह मुझ से झगड़ने के दांव ढूंढ़ ढूंढ़कर मुझे अपना शत्रु गिनता है॥
११ वह मेरे पांवों को काठ में ठोंकता
और मेरी सारी चाल ताकता रहता है॥

(१) मूल में सुन।
(२) मूल में बातों ने उन से कूच किया।
(३) मूल में अपना अंश उत्तर दूंगा।
(४) मूल में बोली है। (५) मूल में मेरे होंठ कहेंगे।

१२ सुन इस में तो तू सच्चा नहीं है
मैं तुझे उत्तर देता हूं
ईश्वर तो मनुष्य से बढ़कर है ॥
१३ तू उस से क्यों मुकद्दमा लड़ता है
कि वह तो अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता ॥
१४ ईश्वर तो एक क्या बरन दो प्रकार से भी बातें करता है
पर लोग उस पर चित्त नहीं लगाते ॥
१५ स्वप्न में वा रात को दिये हुए दर्शन में
जब मनुष्य भारी नींद में पड़े रहते हैं
वा बिछौने पर ऊंघते हैं
१६ तब वह मनुष्यों के कान खोलता
और उन की शिक्षा पर छाप लगाता है
१७ जिस से वह मनुष्य को उस के काम से रोके
और पुरुष में गर्व न अंकुरने पाए[१] ॥
१८ वह उस को कबर में पड़ने नहीं देता
और उस का जीवन हथियार से खाने नहीं देता ॥
१९ यह ताड़ना किसी की होती है कि
वह बिछौने पर पड़ा पड़ा तड़पता है
और उस की हड्डी हड्डी में लगातार गड़बड़ होता है
२० यहां तक कि उस का जीव रोटी से
और उस का मन स्वादिष्ट भोजन से घिन खाता है ॥
२१ उस की देह यहां लों गल जाती कि वह देखी नहीं जाती
और उस की हड्डियां जो पहिले दिखाई न देती थीं सो निकली देख पड़ती हैं[२] ॥
२२ निदान वह कबर के निकट पहुंचता
और उस का जीवन नाश करनेहारों के वश में हो जाता है ॥
२३ यदि उस के लिये कोई बिचवई दूत मिले जो हजार में से एक ही हो
और मनुष्य को सिधाई बता सके
२४ तो ईश्वर उस पर अनुग्रह करके कहेगा
उसे बचाकर कबर में न पड़ने दे
मुझे छुड़ौती मिली है ॥
२५ उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक ताजी हो जाएगी ॥
उस की जवानी के दिन फिर आएंगे ॥

वह ईश्वर से बिनती करेगा और वह उस से २६ प्रसन्न होगा
सो वह आनन्द करके ईश्वर का दर्शन करेगा
और ईश्वर मनुष्य को ज्यों का त्यों धर्मी कर देता है ॥
वह मनुष्यों के साम्हने गाकर कहता है कि २७
मैं ने पाप किया और सीधे को टेढ़ा कर दिया था
पर उस का बदला मुझे दिया नहीं गया ॥
उस ने मेरा जीव कबर में पड़ने से बचाया है २८
सो मैं[३] उजियाले को देखूंगा ॥
सुन ऐसे ऐसे के सब काम २९
ईश्वर पुरुष के साथ दो बार क्या बरन तीन बार भी करता है ॥
जिस से उस को कबर से बचाए[४] ३०
और वह जीवनलोक के उजियाले का प्रकाश पाए ॥
हे अय्यूब कान लगाकर मेरी सुन ३१
चुप रह मैं बोलता रहूं ॥
यदि तुझे बात कहनी हो तो मुझे उत्तर दे ३२
कह दे क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना चाहता हूं ॥
नहीं तो तू मेरी सुन ३३
चुप रह मैं तुझे बुद्धि की बात सिखाऊंगा ॥

(एलीहू का बचन)

३४. फिर एलीहू यों भी कहता गया
हे बुद्धिमानो मेरी बातें सुनो २
और हे ज्ञानियो मेरी बातों पर कान लगाओ ॥
क्योंकि जैसे जीभ से[५] चखा जाता है ३
वैसे ही बचन कान से परखे जाते हैं ॥
हम न्याय की बात सुन लें ४
और मिलाकर भली बात बूझ लें ॥
अय्यूब ने कहा है कि मैं निर्दोष हूं ५
पर ईश्वर ने मेरा न्याय बिगाड़ दिया है ॥
मैं सच्चाई पर हूं तौभी झूठा ठहरता हूं ६
मैं निरपराध हूं पर मेरा घाव[६] असाध्य है
अय्यूब के तुल्य कौन पुरुष है ७
जो ईश्वर की निन्दा पानी की नाईं पीता है
जो अनर्थ करनेहारों का साथ देता ८
और दुष्ट मनुष्यों की संगति रखता है ॥
उस ने तो कहा है कि मनुष्य को इस से कुछ लाभ ९ नहीं

(१) मूल में और पुरुष से गर्व छिपाए। (२) वा उस के अंग सूखते सूखते मानो अनदेखे हो जाते हैं।

(३) मूल में मेरा जीवन। (४) मूल में फेर लाए।
(५) मूल में तालू से। (६) मूल में तीर।

कि वह आनन्द से परमेश्वर की संगति रक्खे ॥
१० इसलिये हे समझवाली मेरी सुनो कि
दुष्ट काम करना यह ईश्वर से दूर रहे
और सर्वशक्तिमान से यह दूर हो कि टेढ़ा काम करे ॥
११ वह मनुष्य की करनी का बदला देता
और एक एक को अपनी अपनी चाल का फल भुगवाता है ॥
१२ निःसन्देह ईश्वर दुष्टता नहीं करता
और न सर्वशक्तिमान न्याय बिगाड़ता है ॥
१३ किस ने पृथिवी को उस के हाथ सौंपा
वा किस ने सारे जगत का प्रबन्ध किया ॥
१४ यदि उस का ध्यान अपनी ही ओर हो
और वह अपना आत्मा और श्वास अपने ही में समेट ले
१५ तो सब देहधारी एक संग नाश होंगे
और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जाएगा ॥
१६ सो इस को सुनकर समझ रख
और मेरी इन बातों पर कान लगा ॥
१७ जो न्याय का बैरी हो क्या वह शासन करे
जो पूर्ण धर्म्मी है क्या तू उसे दुष्ट ठहराएगा ॥
१८ क्या किसी राजा से ऐसा कहना उचित है कि तू ओछा है
वा प्रधानों से कि तुम दुष्ट हो ॥
१९ ईश्वर तो हाकिमों का पक्ष नहीं करता
और धनी और कंगाल दोनों को अपने बनाये हुए जानकर
उन में कुछ भेद नहीं करता
२० आधी रात को पल भर में वे मर जाते हैं
और प्रजा के लोग लड़खड़ाकर जाते रहते हैं
और प्रतापी लोग बिना हाथ लगाये उठा लिये जाते हैं ॥
२१ क्योंकि ईश्वर की आंखें मनुष्य की चाल चलन पर लगी रहतीं
और वह उस के पग पग को देखता रहता है ॥
२२ ऐसा अंधियारा वा घोर अंधकार नहीं है
जिस में अनर्थ करनेहारे छिप सकें ॥
२३ क्योंकि उस को मनुष्य पर चित्त लगाने का कुछ प्रयोजन नहीं
सो मनुष्य उस के साथ क्यों मुकद्दमा लड़े ॥
२४ वह बड़े बड़े बलवानों को पूछपाछ के बिना चूर चूर करता
और उन के स्थान पर औरों को खड़ा कर देता है ॥
२५ सो वह उन के कामों को भली भांति जानता है
वह उन्हें रात में ऐसा उलट देता कि वे चूर चूर हो जाते हैं ॥
२६ वह उन्हें दुष्ट जानकर
सभों के देखते मारता है ॥
२७ क्योंकि उन्हों ने उस के पीछे चलना छोड़ दिया
और उस के किसी मार्ग पर चित्त न लगाया ॥
२८ सो उन के कारण कंगालों की दोहाई उस तक पहुंची
और दीन लोगों की दोहाई उस को सुन पड़ी ॥
२९ जब वह चैन देता तो उसे कौन दोषी ठहरा सकता है
और जब वह मुंह फेर लेता तब कौन उस का दर्शन पा सकता है
जाति भर और अकेले मनुष्य दोनों के साथ उस का यही नियम है
३० जिस से भक्तिहीन राज्य करता न रहे
और प्रजा फंसाई न जाए ॥
३१ क्या किसी ने कभी ईश्वर से कहा कि
मैं ने दण्ड सहा मैं आगे को बुराई न करूंगा
३२ जो कुछ मुझे नहीं सूझ पड़ता सो तू मुझे दिखा दे
और यदि मैं ने टेढ़ा काम किया हो तो आगे को वैसा न करूंगा ॥
३३ क्या वह तेरे ही मन के अनुसार बदला दे
तू तो उस से अप्रसन्न है
सो मुझे नहीं तुझी को चुनना होगा
इस कारण जो तुझे समझ पड़ता है सो कह दे ॥
३४ सब ज्ञानी पुरुष
बरन जितने बुद्धिमान मेरी सुनते हैं सो मुझ से कहेंगे कि
३५ अय्यूब ज्ञान की बातें नहीं कहता
और न उस के वचन समझ के साथ होते हैं ॥
३६ भला होता कि अय्यूब अन्त लों परीक्षा में रहता
क्योंकि उस ने अनर्थियों के से उत्तर दिये हैं ॥
३७ और वह अपने पाप में विरोध बढ़ाता
और हमारे बीच ताली बजाता
और ईश्वर के विरुद्ध बहुत सी बातें कहता है ॥

(एलीहू की वाणी)

३५. फिर एलीहू यों भी कहता गया कि
२ क्या तू इसे अपना हक समझता है
क्या तू कहता है मेरा धर्म्म ईश्वर के धर्म्म से अधिक है

३ कि तू कहता है कि मुझे क्या लाभ
अपने पाप के छूट जाने से क्या लाभ उठाऊंगा ॥
४ मैं ही तुझे
और तेरे साथियों को भी एक संग उत्तर देता हूं ॥
५ आकाश की ओर दृष्टि करके देख
और आकाशमंडल को ताक जो तुझ से ऊंचा है
६ यदि तू ने पाप किया हो तो ईश्वर का क्या बिगड़ता
चाहे तेरे अपराध बहुत ही हों तौभी तू उस के साथ क्या करता ॥
७ यदि तू धर्म्मी हो तो उस को क्या लाभ
और तुझ से उस को क्या मिलता ॥
८ तेरी दुष्टता का फल तुझ ऐसे ही पुरुष को
और तेरे धर्म्म का फल भी तुझ ऐसे ही मनुष्य को प्राप्त होता है ॥
९ बहुत अंधेर होने के कारण वे चिल्लाते हैं
और बलवान के बाहुबल के कारण वे दोहाई देते हैं ॥
१० पर कोई यह नहीं कहता कि मेरा सिरजनहार ईश्वर कहां है
जो रात में भी गीत गवाता है
११ और हमें पृथिवी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता
और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धिमान करता है ॥
१२ वे दोहाई देते पर कोई उत्तर नहीं देता
यह बुरे लोगों के घमण्ड के कारण होता है ॥
१३ निश्चय ईश्वर व्यर्थ बातें नहीं सुनता
और न सर्वशक्तिमान उन पर चित्त लगाता है ॥
१४ तू तो कहता है कि वह मुझे दर्शन नहीं देता पर
यह मुकद्दमा उस के साम्हने है सो तू उस की बाट जोहता रह ॥
१५ पर अभी तो उस ने कोप करके दण्ड नहीं दिया
और अभिमान पर चित्त बहुत नहीं लगाया ॥
१६ इस कारण अय्यूब मुंह व्यर्थ खोलकर
अज्ञानता की बातें बहुत बढ़ाता है ॥

३६.

१ फिर एलीहू यों भी कहता गया
२ कुछ ठहरा रह मैं तुझ को समझाऊंगा
क्योंकि ईश्वर के पक्ष में मुझे कुछ और भी कहना है ॥
३ मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले आऊंगा
और अपने सिरजनहार को धर्म्मी ठहराऊंगा ॥
४ निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी
जो तेरे संग है सो पूरा ज्ञानी है ॥
५ सुन ईश्वर सामर्थी है पर किसी को तुच्छ नहीं जानता
वह समझने की शक्ति में समर्थ है ॥
६ वह दुष्टों को जिलाये नहीं रखता
और दीनों को उन का हक देता है
७ वह धर्मियों से अपनी आंखें नहीं फेरता
बरन उन को राजाओं के संग सदा के लिये सिंहासन पर बैठालता
और वे ऊंचे पद को प्राप्त करते हैं ॥
८ और चाहे वे सांकलों में जकड़े जाएं
और दुःखदाई रस्सियों से बांधे जाएं
९ तो ईश्वर उन पर उन के काम
और उन का यह अपराध प्रगट करता है कि उन्हों ने गर्व किया है ॥
१० वह उन के कान शिक्षा सुनने को खोलता
और उन को अनर्थ काम छोड़ने को कहता है ॥
११ यदि वे सुनकर उस की सेवा करें
तो वे अपने दिन कल्याण से
और अपने बरस सुख से काटेंगे ॥
१२ पर यदि वे न सुनें तो वे हथियार से नाश हो जाएंगे
और उन का प्राण अज्ञानता में छूटेगा ॥
१३ पर जो मन ही मन भक्तिहीन होकर क्रोध बढ़ाते
और जब वह उन को बांधता है तब भी दोहाई नहीं देते
१४ वे तो जवानी में मर जाते
और उन का जीवन लुच्चों का सा नाश होता है ॥
१५ वह दुखियों को उन के दुःख ही के द्वारा छुड़ाता
और उपद्रव ही के द्वारा उन का कान खोलता है ॥
१६ वह तुझ को भी लुभाकर क्लेश के मुंह में से निकालता
और ऐसे चौड़े स्थान में जहां सकेती नहीं है पहुंचाता
और चिकना चिकना भोजन तेरी मेज पर लगाता[1] है ॥
१७ पर तू ने दुष्टों का सा निर्णय किया है[2]
निर्णय और न्याय तुझ से लिपटे रहते हैं ॥

(१) मूल में और तेरी मेज की उतराई चिकनाई से भरी।
(२) मूल में दुष्ट के निर्णय से भर गया।

१८ देख तू जलजलाहट से उभरके ठट्ठा मत कर और न प्रायश्चित्त को अधिक बड़ा जानकर मार्ग से मुड़ जा ॥
१९ क्या तू चिल्लाने ही के कारण वा बड़ा बल करके क्लेश से छूट जाएगा ॥
२० उस रात की अभिलाषा न कर जिस में देश देश के लोग अपने अपने स्थान से मिट जाएंगे ॥
२१ चौकस रह अनर्थ काम की ओर मत फिर तू ने तो दुःख[1] से अधिक इसी को चाहा है
२२ सुन ईश्वर अपने सामर्थ्य से ऊंचे ऊंचे काम करता है
उस के समान सिखानेहारा कौन है ॥
२३ किस ने उस के चलने का मार्ग ठहराया है
और कौन उस से कह सकता है कि तू ने टेढ़ा काम किया है ॥
२४ उस की करनी की महिमा करने को स्मरण रख
जिस का गीत मनुष्यों ने गाया है ॥
२५ सब मनुष्य उस को ध्यान से देखते आये हैं
और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता है ॥
२६ सुन ईश्वर महान् और हमारे ज्ञान से परे है
और उस के बरसों की गिनती अनन्त है ॥
२७ वह तो जल की बूंदें खींच लेता है
वे कुहरे के साथ मेंह होकर गिरती हैं ॥
२८ वे ऊंचे ऊंचे बादलों से पड़ती हैं
और मनुष्यों के ऊपर बहुतायत से बरसती हैं ॥
२९ फिर क्या कोई बादलों का फैलना
और उस के मंडल में का गरजना समझ सकता है ॥
३० देख वह अपने साम्हने उजियाला फैलाता
और समुद्र की थाह को[2] ढांपता है ॥
३१ इस प्रकार से वह देश देश के लोगों का न्याय करता
और भोजनवस्तुएं बहुतायत से देता है ॥
३२ वह बिजली को दोनों हाथ में भरके[3]
उसे निशाने में लगने की[4] आज्ञा देता है ॥
उस की कड़क से उस का समाचार मिलता है
ढोर भी प्रगट करते हैं कि वह चढ़ा आता है ॥

(१) वा दीनता। (२) मूल में जड़ को।
(३) मूल में दोनों हाथ उजियाले से ढांपकर।
(४) मूल में निशाना मारनेहारे की नाईं।

३७. फिर इस पर मेरा हृदय थरथराता

और अपने ठिकाने नहीं रहता ॥
२ उस के बोलने का शब्द
और जो शब्द उस के मुंह से निकलता है उस को सुनो ॥
३ वह उस को सारे आकाश के तले
और अपनी बिजली पृथिवी की छोर लों भेजता है ॥
४ उस के पीछे गरजने का शब्द होता है
वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता है
और जब वह अपना शब्द सुनाता तब बिजली लगातार चमकने लगती है[5] ॥
५ ईश्वर गरजकर अपना शब्द अद्भुत रीति से सुनाता है
और बड़े बड़े काम करता है जिन को हम नहीं समझते ॥
६ वह तो हिम से कहता है पृथिवी पर गिर और मेंह को और भारी वर्षा को भी
ऐसी ही आज्ञा देता है ॥
७ वह सब मनुष्यों का काम[6] बन्द कर देता है
जिस से उस के बनाये हुए सब मनुष्य उस को पहचाने ॥
८ तब वनपशु आड़ में जाते
और अपनी अपनी मान्दों में रहते हैं ॥
९ दक्खिन दिशा से[8] बवन्डर
और उतरहिया से[9] जाड़ा आता है ॥
१० ईश्वर की सांस की फूंक से बरफ पड़ता है
तब जलाशयों का पाट जम जाता है ॥
११ फिर वह घटाओं को भाफ से लादता
और अपनी बिजली से भरे हुए उजियाले का बादल फैलाता है ॥
१२ और वह उस की बुद्धि की युक्ति से घुमाये हुए फिरता है
इसलिये कि जो जो आज्ञा वह उन को दे
सोई वे बसाई हुई पृथिवी के ऊपर पूरी करें ॥

(५) मूल में अपने उजियाले।
(६ मूल में तब उन्हें नहीं रोकता।
(७) मूल में हाथ।
(८) मूल में कोठरी से। (९) मूल में बिखेरनेहारों से।

१३ चाहे ताड़ना देना चाहे अपनी पृथिवी की भलाई करना चाहे
मनुष्यों पर करुणा करने के लिये वह उस को ले आता है॥
१४ हे अय्यूब इस पर कान लगा
खड़ा रह और ईश्वर के आश्चर्य्यकर्म्मों का विचार कर॥
१५ क्या तू जानता है कि ईश्वर क्योंकर अपने बादलों को आज्ञा देता
और अपने बादल की बिजली चमकाता है॥
१६ क्या तू घटाओं का तौलना
वा सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म्म जानता है॥
१७ जब पृथिवी पर दक्खिन ही के कारण सब कुछ चुपचाप रहता है[1]
तब तो तेरे वस्त्र तुझे गर्म लगते हैं॥
१८ फिर क्या तू उस का संगी होकर उस आकाशमण्डल को तान सकता है
जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य पोढ़ है॥
१९ तू हमें यह सिखा कि उस से क्या कहना चाहिये
हम तो अंधियारे के मारे अपने वचन ठीक नहीं रच सकते॥
२० क्या उस को बताया जाए कि मैं बोलने चाहता हूं
क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है॥
२१ अभी तो आकाशमण्डल में का बड़ा प्रकाश देखा नहीं जाता
पर वायु चलकर उस को शुद्ध करता है॥
२२ उत्तर दिशा से सोने की सी ज्योति आती है
ईश्वर कैसे ही भययोग्य तेज से आभूषित है॥
२३ सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है और जिस का भेद हम से पाया नहीं जाता
सो न्याय और पूर्ण धर्म्म को नहीं बिगाड़ने[2] का॥
२४ इसी से सज्जन उस का भय मानते हैं और जो अपने लेखे बुद्धिमान हैं उन पर वह दृष्टि नहीं करता॥

(यहोवा और अय्यूब का संवाद)

३८. तब यहोवा अय्यूब से आंधी में से कहने लगा।

२ यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर
युक्ति को बिगाड़ना चाहता है[3]॥
३ पुरुष की नाईं अपनी कमर बांध
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं और तू मुझे बता दे॥
४ जब मैं ने पृथिवी की नेव डाली तब तू कहां था
यदि तू समझदार हो तो बता दे॥
५ उस की नाप किस ने ठहराई क्या तू जानता है
उस पर किस ने डोरी डाली॥
६ उस की कुर्सियां कौन सी वस्तु पर रक्खी गईं[4]
किस ने उस के कोने का पत्थर बिठाया
७ जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाने
और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करने लगे॥
८ फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला मानो वह गर्भ से फूट निकला
तब किस ने द्वार मून्द कर उस को रोक दिया
९ जब कि मैं ने उस को बादल पहिराया
और घोर अंधकार में लपेट दिया
१० और उस के लिये सिवाना बांधा[5]
और यह कहकर बेंड़े और किवाड़े लगा दिये कि
११ यहीं तक आ और आगे न बढ़
और तेरी उमण्डनेहारी लहरें यहीं थम जाएं॥
१२ क्या तू ने जीवन भर में कभी भोर को आज्ञा दी
और पह को उस का स्थान जताया है
१३ कि वह पृथिवी की छोरों को उठाकर
दुष्ट लोगों को उस पर से झाड़ दे॥
१४ वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर की छाप के नीचे मिट्टी बदलती है
और सब वस्तुएं मानो वस्त्र पहिने हुए दिखाई देती हैं[6]
१५ और दुष्टों का उजियाला[7] उन पर से उठा लिया जाता है
और उन की बढ़ाई हुई बांह तोड़ी जाती है॥
१६ क्या तू कभी समुद्र के सोतों तक पहुंचा है
वा गहिरे सागर की थाह में कभी चला फिरा है॥
१७ क्या मृत्यु के फाटक तुझ पर प्रगट हुए
क्या तू घोर अंधकार के फाटकों को कभी देखने पाया है॥
१८ क्या तू ने पृथिवी का पाट पूरी रीति से समझ लिया
जो तू यह सब जानता हो तो बतला दे॥
१९ उजियाले के निवास का मार्ग कहां है

(१) मूल में जब पृथिवी दक्खिन ही से चुपचाप होती है। (२) मूल में दबाने। (३) मूल में अंधेरा कर देता है। (४) मूल में बैठाई गईं। (५) मूल में तोड़ा। (६) मूल में खड़ी हो जाती हैं। (७) अर्थात् अंधियारा।

और अंधियारे का स्थान कहां है ॥
२० क्या तू उसे उस के सिवाने तक हटा सकता
और उस के घर की डगर पहिचान सकता है ॥
२१ निःसन्देह तू यह सब कुछ जानता होगा
क्योंकि तू तो उस समय उत्पन्न हुआ था
और तू बहुत दिनी होगा ॥
२२ फिर क्या तू कभी हिम के भण्डार में पैठा
वा कभी ओलों के भण्डार को देखा है
२३ जिस को मैं ने संकट के समय
और युद्ध और लड़ाई के दिन के लिये रख छोड़ा है ॥
२४ किस मार्ग से उजियाला फैलाया जाता
और पुरवाई पृथिवी पर बहाई[१] जाती है ॥
२५ महावृष्टि के लिये किस ने नाला काटा
और कड़कनेहारी बिजली के लिये मार्ग बनाया है
२६ कि निर्जन देश में
और जंगल में जहां कोई मनुष्य नहीं रहता पानी बरसा कर
२७ उजाड़ ही उजाड़ देश को सींचे
और हरी घास उगाए ॥
२८ क्या मेंह का कोई पिता है
और ओस की बूंदें किस ने जन्माईं ॥
२९ किस के गर्भ से बरफ निकला
और आकाश से गिरे हुए पाले को कौन जनी ॥
३० जल पत्थर के समान जम[२] जाता है
और गहिरे पानी के ऊपर जमावट होती है ॥
३१ क्या तू कचपचिया का गुच्छा गूंथ सकता
वा मृगशिरा के बंधन खोल सकता है ॥
३२ क्या तू राशियों को ठीक ठीक समय पर उदय कर सकता[३]
वा सप्तर्षि को साथियों समेत लिये चल सकता है ॥
३३ क्या तू आकाशमण्डल की विधियां जानता
और पृथिवी पर उन का अधिकार ठहरा सकता है ॥
३४ क्या तू बादलों को अपनी वाणी सुनाए[४]
कि बहुत जल तुझ पर बरसे ॥
३५ क्या तू बिजली को आज्ञा दे सकता है[५]
कि वह निकलकर कहे क्या आज्ञा ॥
३६ किस ने अन्तःकरण में[६] बुद्धि उपजाई

(१) मूल में छितराई। (२) मूल में छिप। (३) मूल में निकाल सकता। (४) मूल में उठाए। (५) मूल में भेज सकता है। (६) मूल में गुर्दों में।

और मन में[७] समझने की शक्ति किस ने दी है ॥
३७ कौन बुद्धि से बादलों को गिन सकता
और आकाश के कुप्पों को[८] उण्डेल सकता
३८ जब धूलि जम जाती
और ढेले एक दूसरे से सट जाते हैं ॥
३९ क्या तू सिंहनी के लिये अहेर पकड़ सकता और जवान सिंहों का पेट भर सकता है ॥
४० वे मांद में बैठते
और झाड़ में घात लगाये दबकर रहते हैं ॥
४१ फिर जब कौवे के बच्चे ईश्वर की दोहाई देते हुए निराहार उड़ते फिरते हैं
तब उन को आहार कौन देता है ॥

३९. क्या तू ढांग पर की बनैली बकरियों के जनने का समय जानता है

जब हरिणियां बियाती हैं तब क्या तू देखता रहता है ॥
२ क्या तू उन के महीने गिन सकता
क्या तू उन के बियाने का समय जानता है ॥
३ वे बैठकर अपने बच्चों को जनतीं
वे अपनी पीड़ों से छूट जाती हैं ॥
४ उन के बच्चे हृष्टपुष्ट होकर मैदान में बढ़ जाते
वे निकल जाते और फिर नहीं लौटते ॥
५ किस ने बनैले गदहे को स्वाधीन करके छोड़ दिया है
किस ने उस के बंधन खोले हैं ॥
६ उस का घर मैं ने निर्जल देश को
और उस का निवास लोनिया भूमि को ठहराया है ॥
७ वह नगर के कोलाहल पर हंसता
और हांकनेहारे की हांक सुनता भी नहीं ॥
८ पहाड़ों पर जो कुछ मिलता है सोई वह चरता
वह सब भांति की हरियाली ढूंढ़ता फिरता है ॥
९ क्या बनैला बैल तेरा काम करने को प्रसन्न होगा
क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा ॥
१० क्या तू बनैले बैल को रस्से से बांधकर रेघारियों में चलाएगा
क्या वह नालों में तेरे पीछे पीछे हेंगा फेरेगा ॥
११ क्या तू इस कारण उस पर भरोसा रक्खेगा कि उस का बल बड़ा है

(७) वा कुक्कट में। (८) अर्थात् बादलों को।

वा जो परिश्रम का काम तेरा हो क्या तू उसे उस पर छोड़ेगा ॥
१२ क्या तू उस का विश्वास करेगा कि वह मेरा अनाज घर ले आएगा
और मेरे खलिहान का अन्न इकट्ठा कर लाएगा ॥
१३ फिर शुतुरमुर्गी अपने पंखों को आनन्द से फुलाती है
पर क्या ये पंख और पर स्नेह के काम आते हैं ॥
१४ वह तो अपने अंडे भूमि में देती
और धूलि में उन्हें गर्म करती है
१५ और इस की सुधि नहीं रखती कि ये पांव से दब जाएंगे
वा कोई वनपशु इन्हें कुचल डालेगा ॥
१६ वह अपने बच्चों से ऐसी कठोरता करती है कि मानो उस के नहीं हैं
यद्यपि उस का कष्ट अकारथ होता है तौ भी वह निश्चिन्त रहती है ॥
१७ क्योंकि ईश्वर ने उस को बुद्धिरहित बनाया[१]
और उसे समझने की शक्ति बांट नहीं दी ॥
१८ जिस समय वह उभरके अपने पंख फैलाती
तब घोड़े और उस के सवार दोनों की हंसी करती है ॥
१९ क्या तू घोड़े को उस का बल देता
वा उस की गर्दन में फहराती हुई अयाल जमाता है ॥
२० क्या उस को टिड्डी की सी उछलने की शक्ति तू देता है
उस के फुरकने का शब्द डरावना होता है ॥
२१ वह तराई में टापता और अपने बल से हर्षित रहता है
वह हथियारबन्दों का साम्हना करने को पयान करता है ॥
२२ वह डर की बात पर हंसता और नहीं घबराता
और तलवार से पीछे नहीं हटता ॥
२३ तर्कश और चमकता हुआ सांग और भाला उस पर खड़खड़ाती है ॥
२४ वह रिस और क्रोध के मारे भूमि को निगलता है
जब नरसिंगे का शब्द सुनाई देता तब उस से खड़ा नहीं रहा जाता ॥
२५ जब जब नरसिंगा बजता तब तब वह आहा कहता है
और लड़ाई और अफसरों की ललकार और जय-जयकार
दूर से मानों सूंघ लेता है ॥
२६ क्या तेरे समझाने से बाज उड़ता
और दक्खिन की ओर उड़ने को अपने पंख फैलाता है ॥
२७ क्या उकाब तेरी आज्ञा से चढ़ जाता
और ऊंचे स्थान पर अपना घोंसला बनाता है ॥
२८ वह ढांग पर रहता
और चटान की चोटी और दृढ़स्थान पर बसेरा करता है ॥
२९ वह अपनी आंखों से दूर तक देखता
वहां से वह अपने अहेर की ताक लगाता है ॥
३० उस के बच्चे लोहू पीते हैं
और जहां घात किये हुए लोग होते वहां वह होता है ॥

४०. फिर यहोवा ने अय्यूब से यह भी कहा कि

२ क्या सुधारनेहारा सर्वशक्तिमान से मुकद्दमा लड़े
जो ईश्वर से विवाद करना चाहे सो इस का उत्तर दे ॥
३ तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया
४ देख मैं तो तुच्छ हूं मैं तुझे क्या उत्तर दूं
मैं अपनी अंगुली दांत तले दबाता हूं[२] ॥
५ एक बार तो मैं कह चुका पर और कुछ न कहूंगा
हां दो बार भी मैं कह चुका पर अब कुछ और न कहूंगा ॥
६ तब यहोवा अय्यूब से आंधी में से यह भी कहने लगा
७ पुरुष की नाईं अपनी कमर बांध
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं तू मुझे सिखा दे ॥
८ क्या तू मेरा न्याय भी बिगाड़ेगा
क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा से मुझ को भी दोषी ठहराएगा ॥
९ क्या तेरा बाहुबल ईश्वर का सा है
क्या तू मेरा सा शब्द करके गरज सकता है ॥
१० अपने को महिमा और प्रताप से संवार
और ऐश्वर्य्य और तेज के वस्त्र पहिन ले ॥
११ अपना सारा कोप भड़काकर प्रगट कर
और एक एक घमंडी को देखते ही नीचा कर ॥
१२ हर एक घमंडी को देखकर झुका दे और
दुष्ट लोगों को जहां के तहां गिरा दे ॥

(१) मूल में उस से बुद्धि भुलाई।

(२) मूल में अपना हाथ अपने मुंह पर रक्खूंगा।

उन को एक संग मिट्टी में मिला[१] दे
और अधोलोक[२] में उन के मुंह बांध रख ॥
१४ तब मैं भी मान लूंगा
कि तू अपने ही दहिने हाथ से अपना उद्धार कर सकता है ॥
१५ उस जलगज को देख जिस को मैं ने तेरे साथ बनाया है
वह बैल की नाईं घास खाता है ॥
१६ देख उस की कमर में कैसा ही बल
और उस के पेट की नसों में कितना ही सामर्थ्य रहता है ॥
१७ वह अपनी पूंछ को देवदार की नाईं हिलाता
उस की जांघों की नसें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।
१८ उस की हड्डियां मानो पीतल की नलियां
उस की पसुलियां मानो लोहे के बेंड़े हैं ॥
१९ वह ईश्वर का मुख्य कार्य[३] है
जो उस का सिरजनहार है सोई उस की तलवार दे देता है ॥
२० उस का चारा पहाड़ों पर मिलता है
जहां और सब बनैले पशु कलोल करते हैं ॥
२१ वह छतनार वृक्षों के तले
नरकटों की आड़ में और कीच पर लेटा करता है ॥
२२ छतनार वृक्ष उस पर छाया करते हैं
वह नाले के मजनू वृक्षों से घिरा रहता है ॥
२३ चाहे नदी की बाढ़ भी हो तौभी वह न घबराएगा
चाहे यर्दन भी बढ़कर उस के मुंह तक आए पर वह निडर रहेगा ॥
२४ जब वह देखता भालता रहे तब[४] क्या कोई उस को पकड़ सकेगा
वा फंदे लगाकर उस को नाथ सकेगा ॥

४१. फिर क्या तू लिव्यातान को बंसी के द्वारा खींच सकता
वा डोरी से उस की जीभ दबा सकता है ॥
२ क्या तू उस की नाक में नकेल लगा सकता
वा उस का जबड़ा कील से बेध सकता है ॥
३ क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट करेगा वा
तुझ से मीठी मीठी बातें बोलेगा ॥
४ क्या वह तुझ से वाचा बांधेगा
कि मैं सदा तेरा दास रहूंगा ॥
५ क्या तू उस से ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से
वा अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे बांध रक्खेगा ॥
६ क्या मछुओं के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे
वा उसे व्योपारियों में बांट देंगे ॥
७ क्या तू उस का चमड़ा भालेवाले कांटों से
वा उस का सिर मछुवे के शूलों से भर सकता है ॥
८ तू उस पर अपना हाथ भी धरे
तो लड़ाई तू कभी न भूलेगा[५] और आगे को कभी ऐसा न करेगा ॥
९ सुन उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है
उस के देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता है ॥
१० कोई ऐसा साहसी[६] नहीं जो उस को भड़काए
फिर ऐसा कौन है जो मेरे साम्हने ठहर सके ॥
११ किस ने मुझे पहिले दिया है जिस का बदला मुझे देना पड़े
देख सारी धरती पर[७] जो कुछ है सो मेरा है ॥
१२ मैं उस के अंगों के विषय
और उस के बड़े बल और उस की बनावट की शोभा के विषय चुप न रहूंगा ॥
१३ उस के आगे के पहिरावे को कौन उतार सकता
उस के दांतों की दोनों पांतियों[८] के बीच कौन पैठेगा ॥
१४ उस के मुख के दोनों किवाड़ कौन खोल सकता
उस के दांत चारों ओर डरावने हैं ॥
१५ उस के छिलकों[९] की रेखाएं घमंड का कारण हैं
वे मानो कड़ी छाप से बन्द किये हुए हैं ॥
१६ वे एक दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं
कि उन के बीच कुछ वायु भी नहीं पैठ सकती ॥
१७ वे आपस में मिले हुए
और ऐसे सटे हुए हैं कि अलग अलग नहीं हो सकते ॥
१८ फिर उस के छींकने से उजियाला चमक जाता
और उस की आंखें भोर की पलकों के समान हैं ॥
१९ उस के मुंह से जलते हुए पलीते निकलते
और आग की चिंगारियां छूटती हैं ॥

(१) मूल में छिपा। (२) मूल में गुप्त।
(३) मूल में मार्गों का पहिला है।
(४) मूल में उस की आंखों में।
(५) मूल में तू स्मरण रख। (६) मूल में क्रूर।
(७) मूल में सारे आकाश के तले।
(८) मूल में दुहरे बाग।
(९) मूल में उस की ढालों के नाले।

२० उस के नथुनों से धुआं ऐसा निकलता
जैसा खौलती हुई हांडी और जलते हुए नरकटों से ॥
२१ उस की सांस से कोयले सुलगते
और उस के मुंह से आग की लौ निकलती है ॥
२२ उस की गर्दन में सामर्थ्य बना रहता है
और उस के साम्हने निराशी छा जाती है[१] ॥
२३ उस के मांस पर मांस चढ़ा हुआ है
और ऐसा पोढ़ है जो हिलने का नहीं ॥
२४ उस का हृदय पत्थर सा पोढ़ है
बरन चक्की के निचले पाट के समान पोढ़ है ॥
२५ जब वह उठने लगता तब सामर्थी भी डर जाते
और डर के मारे उन की सुध बुध जाती रहती है ॥
२६ यदि कोई उस पर तलवार चलाए तो उस से कुछ न बन पड़ेगा[२]
और न बर्छे न बर्छी न तीर से ॥
२७ वह लोहे को पुआल सा
और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है ॥
२८ वह तीर[३] से भगाया नहीं जाता
गोफन के पत्थर उस के लेखे भूसे से ठहरते हैं ॥
२९ लाठियां भी भूसे के समान गिनी जाती हैं
वह बर्छी की हड़हड़ाहट पर हंसता है ॥
३० उस के निचले भाग पैने पैने ठीकरे से हैं
कीच पर मानो वह हेंगा फेरता है ॥
३१ वह गहिरे जल को हंडे की नाईं मथता है
उस के कारण नील नदी[४] मरहम की हांडी के समान होती है ॥
३२ उस के पीछे लीक चमकती है
मानो गहिरा जल पक्के बालवाला हो जाता है ॥
३३ धरती पर उस के तुल्य और कोई नहीं है
वह ऐसा बनाया गया है कि उस को कुछ भय न लगे ॥
३४ जो कुछ ऊंचा है उसे वह ताकता ही रहता
वह सब घमंडियों के ऊपर राजा है ॥

(अय्यूब का वचन)

२ **४२. तब** अय्यूब ने यहोवा से कहा
मैं जान गया कि तू सब कुछ कर सकता है
और तेरी युक्तियों में से कोई नहीं रुकने की ॥
३ तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति को छिपाइने चाहता है[५]
मैं तो जो नहीं समझता था उसे बोला
अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं ॥
४ सुन मैं कुछ कहूंगा
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं तू मुझे सिखा दे ॥
५ मैं ने सुनी सुनाई तो तेरे विषय सुनी थी
पर अब अपनी आंख से तुझे देखता हूं ॥
६ इस लिये मैं अपनी बातों को तुच्छ जानता
और धूलि और राख में पश्चात्ताप करता हूं ॥

(अय्यूब का घोर परीक्षा से छूटना)

७ जब यहोवा ये बातें अय्यूब से कह चुका तब उस ने तेमानी एलीपज से कहा मेरा कोप तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है वैसी तुम लोगों ने नहीं कही। ८ सो अब तुम सात बैल और सात मेढ़े छांट मेरे दास अय्यूब के पास जाकर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ तब मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा क्योंकि उसी की मैं ग्रहण करूंगा और नहीं तो मैं तुम से तुम्हारी मूढ़ता के योग्य बर्ताव करूंगा क्योंकि तुम लोगों ने मेरे विषय मेरे दास अय्यूब की सी ठीक बात नहीं कही। ९ यह सुन तेमानी एलीपज शूही बिल्दद और नामाती सोपर ने जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया और यहोवा ने अय्यूब की ग्रहण की। १० जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की तब यहोवा ने उस का सारा दुःख दूर किया[६] और जितना अय्यूब का पहिले था उस का दुगना यहोवा ने उसे दिया। ११ तब उस के सब भाई और सब बहिनें और जितने पहिले उस को जानते पहिचानते थे उन सभों ने आकर उस के यहां उस के संग भोजन किया और जितनी विपत्ति यहोवा ने उस पर डाली थी उस सब के विषय उन्हों ने विलाप किया और उसे शांति दी और उसे एक एक कसीता और सोने की एक एक बाली दी। १२ और यहोवा ने अय्यूब के पिछले दिनों में उस को अगले दिनों से अधिक आशिष दी और उस के चौदह हजार भेड़ बकरियां छः हजार ऊंट हजार जोड़ी बैल और हजार गदहियां हो गईं। १३ और उस के सात बेटे और तीन बेटियां भी उत्पन्न हुईं। १४ इन में से उस ने जेठी बेटी का नाम तो यमीमा दूसरी का कसीआ

(१) मूल में नाचती है।
(२) मूल में खड़ी न होगी।
(३) मूल में मनुष्य के पुत्र। (४) मूल में समुद्र।
(५) मूल में अंधेरा कर देता है।
(६) मूल में उस की बंधुआई से लौटा दिया।

१५ और तीसरी का केरेन्हप्पूक रक्खा। और उस सारे देश में ऐसी स्त्रियां कहीं न थीं जो अय्यूब की बेटियों के समान सुन्दर हों और उन के पिता ने उन को उन के
१६ भाइयों के संग ही भाग दिये। इस के पीछे अय्यूब एक सौ चालीस बरस जीता रहा और चार पीढ़ी लों अपना वंश[1] देखने पाया। निदान अय्यूब पुरनिया और १७ दीर्घायु[2] होकर मर गया।

(१) मूल में बेटे पोते।
(२) मूल में पुरनिया और दिनों से तृप्त।

भजन संहिता।

पहिला भाग।

१. क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चला
और न पापियों के मार्ग में खड़ा हुआ
न ठट्ठा करनेहारों के बैठक में बैठा हो॥
२ वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता और उस की व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है॥
३ सो वह उस वृक्ष के समान होता है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया हो
और अपनी ऋतु में फलता हो
और जिस के पत्ते मुरझाने के नहीं
और जो कुछ वह पुरुष करे सो सफल होता है॥
४ दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते
वे उस भूसी के समान होते हैं जो पवन से उड़ाई जाती है॥
५ इस कारण दुष्ट लोग न्याय में स्थिर न रह सकेंगे
और न पापी धर्म्मियों की मण्डली में ठहरेंगे॥
६ क्योंकि यहोवा धर्म्मियों के मार्ग की सुधि लेता है
और दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा॥

२. जाति जाति के लोग हुल्लड़ क्यों मचाते और देश देश के लोग
व्यर्थ बात क्यों सोच रहे हैं॥
२ यहोवा के और उस के अभिषिक्त के विरुद्ध पृथिवी के राजा खड़े होते हैं
और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं कि
३ आओ हम उन के बान्धे हुए बन्धन तोड़ डालें
और उन की रस्सियों को फेंक दें॥
४ जो स्वर्ग में विराजमान है सो हंसेगा
प्रभु उन को ठट्ठों में उड़ाएगा॥
५ तब वह उन से कोप करके बातें करेगा
और क्रोध में आकर उन्हें घबराएगा कि
६ मैं तो अपने ठहराये हुए राजा को
अपने पवित्र पर्वत सिय्योन [की राजगद्दी] पर बैठा चुका हूं॥
७ मैं उस वचन का प्रचार करूंगा
जो यहोवा ने कहा कि तू मेरा पुत्र है
आज मैं ही ने तुझे जन्माया है॥
८ मुझ से मांग और मैं जाति जाति के लोगों को तेरे भाग में दे दूंगा
और दूर दूर देशों को तेरी निज भूमि कर दूंगा॥
९ तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा
तू मिट्टी के बर्तन की नाईं उन्हें चकनाचूर करेगा॥
१० सो अब हे राजाओ बुद्धिमान हो
हे पृथिवी के न्यायियो यह उपदेश मान लो॥
११ यहोवा की सेवा डरते हुए करो
और थरथराते हुए मगन हो॥
१२ पुत्र को चूमो न हो कि वह कोप करे
और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ
क्योंकि क्षण भर में उस का कोप भड़केगा
क्या ही धन्य हैं वे सब जो उस के शरणागत हैं॥

दाऊद का भजन। उस समय का जब वह अपने पुत्र अबशालोम के साम्हने से भागा जाता था।

३. हे यहोवा मेरे सतानेहारे क्या ही बढ़ गये हैं
बहुत से लोग मेरे विरुद्ध उठे हैं॥
२ बहुत से लोग मेरे विषय कहते हैं
कि उस का बचाव परमेश्वर से नहीं हो सकता[१]
सेला॥
३ पर हे यहोवा तू तो मेरे चारों ओर ढाल है
तू मेरी महिमा और मेरे सिर का ऊंचा करनेहारा है॥
४ मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं
और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मेरी सुन लेता है। सेला॥
५ मैं तो लेटा और सो गया
फिर जाग उठा क्योंकि यहोवा मेरा संभालनेहारा है॥
६ मैं उन दस दस हजार लोगों से नहीं डरता
जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बांधे खड़े हैं॥
७ हे यहोवा उठ हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा
क्योंकि तू मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारता
और दुष्टों की दाढ़ों को तोड़ डालता आया है॥
८ उद्धार यहोवा ही से होता है
हे यहोवा तेरी आशिष तेरी प्रजा पर हो। सेला॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का भजन।

४. हे मेरे धर्म्ममय परमेश्वर जब मैं पुकारूं तब तू मेरी सुन ले
जब मैं सकेती में पड़ा तब तू ने मुझे फैलाव दिया
मुझ पर अनुग्रह कर मेरी प्रार्थना सुन॥
२ हे महापुरुषो मेरी महिमा के बदले कब लों अनादर होता रहेगा
तुम कब लों व्यर्थ बात में प्रीति रक्खोगे और झूठी युक्ति विचारते रहोगे। सेला॥
३ पर यह जान रक्खो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रक्खा है
जब मैं यहोवा को पुकारूं तब वह सुनेगा॥
४ भय करो और पाप न करो
अपने अपने बिछौने पर मन ही मन सोचो और चुपके रहो। सेला॥
५ धर्म के बलिदान चढ़ाओ
और यहोवा पर भरोसा रक्खो॥
६ बहुत से लोग तो कहते हैं कि कौन हम से भलाई की भेंट कराएगा
हे यहोवा अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका॥
७ उन के अन्न और दाखमधु की बढ़ती के समय की अपेक्षा
तू ने मेरे मन में अधिक आनन्द दिया है।
८ मैं शान्ति से लेटते ही सो जाऊंगा
क्योंकि हे यहोवा तू मुझ को एकान्त में निडर रहने देता है॥

प्रधान बजानेहारों के लिये। बांसुलियों के साथ। दाऊद का भजन॥

५. हे यहोवा मेरे वचनों पर कान धर
मेरे ध्यान करने की ओर मन लगा॥
२ हे मेरे राजा हे मेरे परमेश्वर मेरी दोहाई पर ध्यान दे
क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं॥
३ हे यहोवा भोर को मेरा शब्द तुझे सुनाई देगा
भोर को मैं तेरे लिये अपनी भेंट सजाकर ताकता रहूंगा॥
४ क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो
बुराई तेरे पास टिकने न पाएगी॥
५ घमंडी तेरे साम्हने खड़े होने न पाएंगे
तू सब अनर्थकारियों से बैर रखता है॥
६ तू झूठ बोलनेहारों को नाश करेगा
हे यहोवा तू हत्यारे और छली से घिन खाता है॥
७ पर मैं तो तेरी अपार करुणा के कारण तेरे भवन में आऊंगा
मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा॥
८ हे यहोवा मेरे द्रोहियों के कारण अपने धर्म के मार्ग में मेरी अगुआई कर
मुझे अपना मार्ग सीधा दिखा॥
९ क्योंकि उन की बातों का कुछ ठिकाना नहीं
उन के मन में निरी दुष्टता है
उन का गला खुली हुई कबर है
वे चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं॥
१० हे परमेश्वर उन को दोषी ठहरा
वे अपनी युक्तियों से आप ही गिर जाएं
उन को बहुत से अपराधों में फंसे हुए धकिया दे
क्योंकि वे तेरे विरुद्ध उठे हैं॥
११ पर जितने तेरे शरणागत हैं वे सब आनन्द करें
वे सदा ऊंचे स्वर से गाते रहें और तू उन की आड़ रह

(१) मूल में परमेश्वर में नहीं है।

और तेरे नाम के प्रेमी तेरे कारण प्रफुल्लित हों ॥
१२ क्योंकि हे यहोवा तू धर्म्मी को आशिष देगा
तू उस को अपनी प्रसन्नतारूपी ढाल से घेरे रहेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। तारवाले बाजों के साथ। खर्ज में। दाऊद का भजन ॥

६. हे यहोवा मुझे कोप करके न डांट न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर ॥
२ हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि मैं कुम्हला गया हूं ॥
हे यहोवा मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी हड्डियां हिल गई हैं ॥
३ मेरा जीव भी बहुत थरथरा उठा है
पर तू हे यहोवा कब लों—
४ हे यहोवा लौटकर मेरा प्राण बचा
अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार कर ॥
५ क्योंकि मरने पर तेरा कुछ स्मरण नहीं होता
अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद कर सकता है ॥
६ मैं कराहते कराहते थक गया
रात रात मेरा बिछौना आंसुओं से भीज जाता है
मैं अपनी खाट को उन से भिगोता हूं ॥
७ मेरी आंखें शोक से धुन्धली हो गईं
मेरे सब सतानेहारों के कारण वे धुन्धला गई हैं ॥
८ हे सब अनर्थकारियो मुझ से दूर हो
क्योंकि यहोवा ने मेरा रोना सुना है ॥
९ यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है।
वह मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा ॥
१० मेरे सब शत्रु लजाएंगे और बहुत ही घबराएंगे
वे लौट जाएंगे और एकाएक लज्जित होंगे ॥

दाऊद का शिग्गायोन नाम भजन जो उस ने बिन्यामीनी कूश की बातों के कारण यहोवा के साम्हने गाया।

७. हे मेरे परमेश्वर यहोवा मैं तेरा ही शरणागत हूं
मुझे सब खदेड़नेहारों से बचा और छुटकारा दे
२ न हो कि वे मुझ को सिंह की नाईं फाड़कर टुकड़े टुकड़े करें
और कोई मेरा छुड़ानेहारा न हो ॥
३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा यदि मैं ने यह किया हो
वा मेरे हाथों से कुटिल काम हुआ हो
४ यदि मैं ने अपने मेल रखनेहारे से बुरा व्यवहार किया हो
वा उस को जो अकारण मेरा सतानेहारा था बचाया न हो
५ तो शत्रु मेरा पीछा करके मुझे पकड़े
वरन मुझ को भूमि पर रौंदे
और मेरी महिमा को मिट्टी में मिलाए। सेला ॥
६ हे यहोवा कोप करके उठ
मेरे क्रोधभरे सतानेहारों के विरुद्ध खड़ा हो
और मेरे लिये जाग तू ने न्याय की आज्ञा तो दी है ॥
७ और देश देश के लोगों की मण्डली तेरे चारों ओर आएगी
और तू उन के ऊपर से होकर ऊंचे पर लौट जा ॥
८ हे यहोवा तू समाज समाज का न्याय करेगा
मेरे धर्म्म और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे।
९ भला हो कि दुष्टों की बुराई का अन्त हो जाए पर धर्म्मी को तू स्थिर कर
क्योंकि तू जो धर्म्मी परमेश्वर है सो मन और मर्म का जांचनेहारा है ॥
१० मेरी ढाल परमेश्वर के हाथ में है
वह सीधे मनवालों को बचाता है ॥
११ परमेश्वर धर्म्मी और न्याय करनेहारा है
और ऐसा ईश्वर है जो दिन दिन क्रोध करता है ॥
१२ यदि मनुष्य न फिरे तो वह अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा
वह अपना धनुष चढ़ाकर तीर सन्धान चुका है ॥
१३ और उस मनुष्य के लिये उस ने मृत्यु के हथियार तैयार किये हैं
वह अपने तीरों को अग्निबाण बनाएगा ॥
१४ देख दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ें लगी हैं
उस को उत्पात का पेट रहा और वह झूठ को जानता है ॥
१५ उस ने गड़हा खोदकर गहिरा किया
पर जो गड़हा उस ने खना उस में वही आप गिरा ॥
१६ उस का उत्पात पलट कर उसी के सिर पर पड़ेगा
और उस का उपद्रव उसी के चोंडे पर पड़ेगा ॥
१७ मैं यहोवा के धर्म्म के अनुसार उस का धन्यवाद करूंगा
और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। गित्तीत में। दाऊद का भजन।

८. हे यहोवा हमारे प्रभु तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है
तू ने अपना विभव स्वर्ग पर दिखाया है॥
२ तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चों और दूध पिउवों के द्वारा[१] सामर्थ्य की नेव डाली है
इस लिये कि तू शत्रु और पलटा लेनेहारे को रोक रक्खे॥
३ जब मैं आकाश को जो तेरे हाथों[२] का कार्य्य है
और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने ठहराये हैं देखता हूं
४ तो मनुष्य क्या है कि तू उस का स्मरण करता है
और आदमी क्या कि तू उस की सुधि लेता है॥
५ तू ने उस को परमेश्वर[३] से थोड़ा घटिया बनाया
और महिमा और प्रताप का मुकुट उस के सिर पर रक्खा है॥
६ तू ने उसे अपने हाथों के कार्य्यों पर प्रभुता दी
तू ने उस के पांव तले सब कुछ कर दिया है
७ भेड़ बकरी और गाय बैल सब के सब
और जितने वनपशु हैं
८ आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां
और जितने जीव जन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं॥
९ हे यहोवा हे हमारे प्रभु
तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही प्रतापमय है॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। मूतलब्बेन में। दाऊद का भजन।

९. हे यहोवा मैं अपने सारे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा
मैं तेरे सब आश्चर्य्य कर्म्मों का वर्णन करूंगा॥
२ मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित हूंगा
हे परमप्रधान मैं तेरे नाम का भजन गाऊंगा॥
३ क्योंकि मेरे शत्रु उलटे फिरे हैं
वे तेरे साम्हने से ठोकर खाकर नाश होते हैं॥
४ तू ने मेरा न्याय और मुकद्दमा चुकाया है
तू सिंहासन पर विराजमान होकर धर्म्म से न्याय करता है॥
५ तू ने अन्यजातियों को झिड़का और दुष्ट को नाश किया
तू ने उस का नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया है॥
६ शत्रु जो हैं सो बिलाय गये वे अनन्तकाल के लिये उजड़ गये
और जिन नगरों को तू ने ढा दिया उन का नाम भी मिट गया है॥
७ पर यहोवा सदा विराजमान रहेगा
उस ने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है॥
८ और वह आप जगत का न्याय धर्म्म से करेगा
वह देश देश के लोगों का मुकद्दमा खराई से निपटाएगा॥
९ और यहोवा पिसे हुओं के लिये ऊंचा गढ़
वह संकट के समय के लिये भी ऊंचा गढ़ ठहरेगा॥
१० और तेरे नाम के जाननेहारे तुझ पर भरोसा रक्खेंगे
क्योंकि हे यहोवा तू ने अपने खोजियों को त्याग नहीं दिया॥
११ यहोवा जो सिय्योन में विराजता है उस का भजन गाओ
जाति जाति के लोगों के बीच उस के महाकर्म्मों का प्रचार करो॥
१२ क्योंकि खून के पलटा लेनेहारे ने उन का स्मरण किया है
और दीन लोगों की दोहाई को नहीं बिसराया॥
१३ हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर
तू मेरे दुःख को देख जो मेरे बैरी मुझे दे रहे हैं
तू जो मुझे मृत्यु के फाटकों के पास से उठाता है
१४ इसलिये कि मैं सिय्योन[४] के फाटकों के पास तेरे सब गुणों का वर्णन करूं
और तेरे किये हुए उद्धार से मगन होऊं॥
१५ अन्य जातिवालों ने जो गड़हा खोदा था उसी में वे आप गिर पड़े
जो जाल उन्हों ने लगाया था उस में उन्हीं का पांव फंस गया॥
१६ यहोवा ने अपने को प्रगट किया उस ने न्याय चुकाया है
दुष्ट अपने किये हुए कामों में फंस जाता है॥
हिग्गायोन। सेला॥
१७ दुष्ट अधोलोक में लौटा दिये जाएंगे
जितनी जातियां परमेश्वर को भूल जाती हैं॥

(१) मूल में मुंह से। (२) मूल में अंगुलियों।
(३) वा स्वर्गदूतों से।
(४) मूल में सिय्योन की पुत्री।

१८ क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल लों बिसरे हुए न रहेंगे
नम्र लोगों की आशा सदा के लिये नाश न होगी ॥
१९ हे यहोवा उठ मनुष्य प्रबल न हो
जातियों का न्याय तेरे साम्हने किया जाए ॥
२० हे यहोवा उन को भय दिखा
जातियां अपने को मनुष्यमात्र जानें । सेला ॥

१०. हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा रहता है
संकट के समय में क्यों छिपा रहता है ॥
२ दुष्टों के अहंकार के कारण दीन मनुष्य खदेड़े जाते हैं
वे अपनी निकाली हुई युक्तियों में फंस जाएं ॥
३ क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर घमण्ड करता
और लोभी यहोवा का त्याग और तिरस्कार करता है ॥
४ दुष्ट अपने अभिमान के कारण कहता है कि वह लेखा नहीं लेने का
उस का सारा विचार यही है कि परमेश्वर है ही नहीं ॥
५ वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है तेरे
न्याय के विचार ऐसे ऊंचे पर होते हैं कि उन को देख नहीं पड़ते
जितने उस के विरोधी हैं उन पर वह फुफकारता है ॥
६ उस ने सोचा है कि मैं नहीं टलने का
मैं दुःख से पीढ़ी से पीढ़ी लों बचा रहूंगा ॥
७ उस का मुंह स्राप और छल और अंधेर से भरा है
वह उत्पात और अनर्थ की बातें बोला करता है ॥
८ वह गांवों के ढूका लगने के स्थानों में बैठा करता
और छिपने के स्थानों में निर्दोष को घात करता है
उस की आंखें लाचार को छिपकर ताकती हैं ॥
९ जैसा सिंह अपनी झाड़ी में तैसा वह भी छिपकर घात में बैठा करता है
वह दीन को पकड़ने के लिये उस की घात में लगता है
जब वह दीन को अपने जाल में फंसाकर घसीट लाता है तब उसे पकड़ लेता है ॥
१० वह झुक जाता और दबक बैठता है
और लाचार लोग उस के महाबल से पटके जाते हैं ।
११ उस ने अपने मन में सोचा है कि ईश्वर भूल गया
उस ने अपना मुंह फेर लिया[१] वह कभी नहीं देखने का ।
१२ हे यहोवा उठ हे ईश्वर अपना हाथ उठा दीन लोगों को भूल न जा ॥
१३ परमेश्वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है उस ने सोचा कि तू लेखा न लेगा ॥
१४ तू ने देखा है क्योंकि तू उत्पात और कलपाने पर दृष्टि रखता है कि उस का पलटा ले[२]
लाचार अपने को तेरे हाथ में छोड़ता है
बपमूए का सहायक तू ही बना है ॥
१५ दुष्ट की भुजा को तोड़ डाल
और दुर्जन की दुष्टता का लेखा तब लों लेता जा जब लों वह बनी रहे ॥
१६ यहोवा अनन्तकाल के लिये राजा है
उस के देश में से अन्यजाति लोग नाश हो गये हैं ॥
१७ हे यहोवा तू ने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी
तू उस का मन तैयार करेगा तू कान लगाएगा
१८ इसलिये कि तू बपमूए और पिसे हुए का न्याय चुकाएगा
कि मनुष्य जो मिट्टी से बना है फिर भय दिखाने न पाए ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का ।

११. मैं यहोवा का शरणागत हूं तुम लोग मुझ से क्योंकर कह सकते हो
कि चिड़िया की नाईं अपने पहाड़ पर उड़ जा ॥
२ क्योंकि देख दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते
और अपना तीर धनुष की डोरी से जोड़ते हैं
कि सीधे मनवालों पर अंधेरे में तीर चलाएं ॥
३ नेवें ढाई जाती हैं
धर्मी से क्या बना ॥
४ यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है
यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है
वह अपनी आंखों से मनुष्यों को ताकता और आंख गड़ाकर[३] उन को जांचता है ॥

---

(१) मूल में छिपाया ।
(२) मूल में उसे अपने हाथ में रखने ।
(३) मूल में अपना पलकों से ।

५ यहोवा धर्मी को तो जांचता है
पर वह उन से जी भर बैर रखता है जो दुष्ट
है और उपद्रव में प्रीति रखते हैं ॥
६ वह दुष्टों पर फन्दे बरसाएगा
आग और गन्धक और प्रचण्ड लूह उन के
कटोरों में बांट दी जाएंगी ॥
७ क्योंकि यहोवा धर्म्ममय है वह धर्म्म के कामों से
प्रसन्न रहता है
सीधे लोग उस का दर्शन पाएंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । खर्ज में । दाऊद का भजन ।

१२. हे यहोवा बचा क्योंकि एक भी
भक्त नहीं रहा
मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग मर मिटे हैं ॥
२ सब कोई एक दूसरे से व्यर्थ ही बात बकते हैं
वे चापलूसी के साथ दुरंगी बातें कहते हैं ।
३ यहोवा सब चापलूसों को नाश करे
और उस जीभ[1] को जिस से बड़ा बोल
निकलता है ॥
४ वे कहते हैं कि हम बात करने ही से
जीतेंगे
हमारे मुंह हमारे वश में हैं हमारा कौन प्रभु है ॥
५ दीन लोगों के लुट जाने और दरिद्रों के कराहने
के कारण
यहोवा कहता है कि अब मैं उठूंगा
जिस बचाव की लालसा वह करता वह उसे
दूंगा[2] ।
६ यहोवा के वचन खरे हैं
वे उस चांदी के समान हैं जो पृथिवी पर घड़िया
में ताई गई
और सात बार निर्मल की गई हो ॥
७ हे यहोवा तू उन की रक्षा करेगा
तू उन को इस काल के लोगों से सदा बचा
रक्खेगा ॥
८ जब मनुष्यों में नीचपन का आदर होता
तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ।

१३. हे यहोवा तू कब लों मुझे लगा-
तार भूला रहेगा
कब लों अपना मुख मुझ से छिपाये रहेगा ॥
२ मैं कब लों अपने मन में युक्तियां करता रहूंगा
और दिन भर मेरा जी उदास रहेगा
कब लों मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा ॥
३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर निहारके मुझे
उत्तर दे
मेरी आंखों में ज्योति आने दे नहीं तो मुझे मृत्यु
की नींद आ जाएगी
४ न हो कि मेरा शत्रु कहे कि मैं उस पर प्रबल
हुआ
और मेरे सतानेहारे मेरे डगमगाने पर मगन हों ॥
५ पर मैं तो तेरी करुणा पर भरोसा रखता हूं
मेरा हृदय तेरे किये हुये उद्धार से मगन होगा ।
६ मैं यहोवा के नाम का गीत गाऊंगा
क्योंकि उस ने मेरी भलाई की है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये दाऊद का भजन ।

१४. मूढ़ ने अपने मन में कहा है
कि परमेश्वर है ही नहीं
वे बिगड़ गये उन्हों ने घिनौने काम किये सुकर्म्मी
कोई नहीं ॥
२ यहोवा ने स्वर्ग में से मनुष्यों को निहारा है
कि देखे कि कोई बुद्धि से चलता
वा परमेश्वर को पूछता है ॥
३ वे सब के सब भटक गये सब एक साथ
बिगड़ गये
कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं ॥
४ क्या किसी अनर्थकारी को कुछ ज्ञान नहीं रहता
वे मेरे लोगों को रोटी जानकर खा जाते हैं
और यहोवा का नाम नहीं लेते ॥
५ वहां वे भयभीत हुए
क्योंकि परमेश्वर धर्म्मी लोगों के बीच रहता है ॥
६ तुम तो दीन की युक्ति को तुच्छ जानते हो
इसलिये कि यहोवा उस का शरणस्थान है ॥
७ भला हो कि इस्राएल का उद्धार सिय्योन से
प्रगट हो
जब यहोवा अपनी प्रजा को बंधुआई से लौटा
ले आएगा
तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा ॥

दाऊद का भजन ।

१५. हे यहोवा तेरे तंबू में कौन टिकने
पाएगा तेरे पवित्र पर्वत पर
कौन बसने पाएगा ॥

---

(१) मूल में अपनी जीभ के द्वारा ।
(२) वा जिस पर लोग फुफकार मारते हैं उस को मैं अभयदान दूंगा ।

२ जो खराई से चलता और धर्म्म के काम करता
और मन में सच्चाई का विचार करता है ॥
३ जो चुगली नहीं करता
और न किसी दूसरे से बुराई करता
न अपने पड़ोसी की निन्दा सुनता है
४ जिस के लेखे निकम्मा मनुष्य तो तुच्छ है
पर वह यहोवा के डरवैयों का आदर करता
है जो किरिया खाने पर हानि भी देखकर नहीं
बदलता
५ जो अपना रुपया ब्याज पर नहीं देता
न निर्दोष की हानि करने के लिये घूस लेता है जो
कोई ऐसी चाल चलता है सो कभी न टलेगा ॥

मिक्ताम। दाऊद का।

१६. हे

ईश्वर मेरी रक्षा कर क्योंकि मैं
तेरा शरणागत हूं ॥
२ हे मन तू ने यहोवा से कहा है कि तू मेरा प्रभु है
तुझे छोड़ मेरा कुछ भला नहीं ॥
३ पृथिवी पर जो पवित्र लोग हैं
सोई आदर के योग्य हैं और उन्हीं से मैं प्रसन्न
रहता हूं ॥
४ जो यहोवा को किसी दूसरे से बदल लेते हैं उन के
दुःख बहुत होंगे
मैं उन के लोहूवाले तपावन नहीं देने का
और उन का नाम तक नहीं लेने का[१]।
५ यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे में का हिस्सा है
मेरे बांट को तू स्थिर रखता है ॥
६ मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी
और मेरा भाग मुझे भावता है ॥
७ मैं यहोवा को धन्य कहता हूं क्योंकि उस ने मुझे
सम्मति दी
मेरा मन भी रात में मुझे चिता देता है ॥
८ मैं यहोवा को निरन्तर अपने सन्मुख जानता[२]
आया हूं
वह मेरे दहिने रहता है इसलिये मैं नहीं
टलने का ॥
९ इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरा
आत्मा[३] मगन हुआ
मेरा शरीर भी बेखटके रहेगा ॥
१० क्योंकि तू मेरे जीव को अधोलोक में न छोड़ेगा
न अपने भक्त को सड़ने देगा ॥

(१) मूल में अपने होंठों पर नहीं लेने का।
(२) मूल में रखता। (३) मूल में महिमा।

११ तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा
तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है
तेरे दहिने हाथ में सुख सदा बना रहता है ॥

दाऊद की प्रार्थना।

१७. हे

यहोवा धर्म्म के वचन सुन
मेरी पुकार की ओर ध्यान दे
मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट मुंह से निकलती
है कान लगा ॥
२ मेरे मुकद्दमे का निर्णय कर
तेरी आंखें न्याय पर लगी रहें ॥
३ तू ने मेरे हृदय को जांचा तू रात को देखने के
लिये आया
तू ने मुझे ताया पर कुछ नहीं पाया
मैं ने ठान लिया है कि मेरे मुंह से अपराध की
बात न निकलेगी ॥
४ मनुष्यों के कामों के विषय—मैं तेरे मुंह के वचन
के द्वारा
बरियाई करनेहारे की सी चाल से अपने को
बचाये रहा ॥
५ मेरे पांव तेरे पथों में स्थिर हैं
मेरे पैर नहीं टलने के ॥
६ हे ईश्वर मैं ने तुझे पुकारा है क्योंकि तू मेरी सुन
लेगा
अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी बात सुन ॥
७ तू जो अपने दहिने हाथ के द्वारा अपने शरणा-
गतों को उन के विरोधियों से बचाता है
अपनी अद्भुत करुणा दिखा ॥
८ आंख की पुतली की नाईं मेरी रक्षा कर
अपने पंखों तले मुझे छिपा रख
९ उन दुष्टों से जो मेरा नाश किया चाहते हैं
मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेरे हुए हैं ॥
१० वे मोटे हो गये हैं
उन के मुंह से घमंड की बातें निकलती हैं ॥
११ हमारे पगों को वे अब घेर चुके हैं
वे हम को भूमि पर पटक देने के लिये टकटकी
लगाये हुए हैं ॥
१२ वह सिंह की नाईं फाड़ने की लालसा करता है
और जवान सिंह की नाईं छुका लगाने के स्थानों
में बैठा रहता है ॥
१३ हे यहोवा उठ
उसे रोक उस को दबा दे
अपनी तलवार के बल मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ॥

१४ अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा मुझे मनुष्यों से बचा
संसारी मनुष्यों से जिन का भाग इसी जीवन में है
और जिन का पेट तू अपने भण्डार से भरता है
वे लड़केबालों से तृप्त होते
और जो वे बचाते हैं सो अपने बच्चों के लिये
छोड़ जाते हैं ॥
१५ पर मैं तो धर्म्मी ठहरके तेरे मुख को निहारूंगा।
जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप को देखकर तृप्त
हूंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। यहोवा के दास दाऊद का गीत जिस
के वचन उस ने यहोवा के लिये उस समय गाये जब यहोवा
ने उस को उस के सारे शत्रुओं के हाथ से और
शाऊल के हाथ से बचाया था। उस ने कहा

१८. हे यहोवा हे मेरे बल मैं तुझ से स्नेह रखता हूं ॥

२ यहोवा मेरा ढांग और मेरा गढ़ और मेरा
छुड़ानेहारा
मेरा ईश्वर और मेरी चटान है जिस का मैं
शरणागत हूं
वह मेरी ढाल मेरा बचानेहारा सींग और मेरा
ऊंचा गढ़ है ॥
३ मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा।
और अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा ॥
४ मैं मृत्यु की रस्सियों से चारों ओर घिर गया और
नीचपन की धारों ने मुझ को घबरा दिया था ॥
५ अधोलोक की रस्सियां मेरे चारों ओर थीं
और मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने थे ॥
६ अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा
मैं ने अपने परमेश्वर की दोहाई दी
और उस ने मेरी बात को अपने मन्दिर में से
सुना।
और मेरी दोहाई उस के पास पहुंचकर उस के
कानों में पड़ी ॥
७ तब पृथिवी हिल गई और डोल उठी
और पहाड़ों की नेवें कांपकर बहुत ही हिल गईं
क्योंकि वह कोपित हुआ था ॥
८ उस के नथनों से धूआं निकला
और उस के मुंह से आग निकलकर भस्म करने
लगी
जिस से कोएले दहक उठे ॥
९ और वह स्वर्ग को नीचे करके उतर आया
और उस के पांवों तले घोर अंधकार था ॥
१० और वह करूब पर चढ़ा हुआ उड़ा
और पवन के पंखों पर चढ़कर वेग से उड़ा ॥
११ उस ने अंधियारे को अपने छिपने का स्थान और
अपने चारों ओर का मण्डप ठहराया
मेघों का[1] अंधकार और आकाश की काली घटाएं ॥
१२ उस के सन्मुख की झलक से उस की काली घटाएं
फट गईं
ओले और अंगारे ॥
१३ तब यहोवा आकाश में गरजा
और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई
ओले और अंगारे ॥
१४ और उस ने तीर चला चलाकर मेरे शत्रुओं को तितर
बितर किया
और बिजली गिरा गिराकर उन को घबरा दिया ॥
१५ तब जल के नाले देख पड़े
और जगत की नेवें खुल गईं
यह तो हे यहोवा तेरी डांट से
और तेरे नथनों की सांस की झोक से हुआ ॥
१६ उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थांभ लिया
और गहरे जल में से खींच लिया ॥
१७ उस ने मेरे बलवन्त शत्रु से
और मेरे बैरियों से जो मुझ से अधिक सामर्थी थे
मुझे छुड़ाया ॥
१८ मेरी विपत्ति के दिन उन्हों ने मेरा साम्हना तो
किया
पर यहोवा मेरा आश्रय था ॥
१९ और उस ने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में
पहुंचाया
उस ने मुझ को छुड़ाया क्योंकि वह मुझ से
प्रसन्न था ॥
२० यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म्म के अनुसार व्यवहार
किया
मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार उस ने मुझे
बदला दिया ॥
२१ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा
और अपने परमेश्वर से फिर के दुष्ट न बना ॥
२२ उस के सारे नियम मेरे साम्हने बने रहे
और उस की विधियों से मैं हट न गया ॥
२३ और मैं उस के साथ खरा बना रहा

(१) मूल में जलों का।

और अधर्म्म से[1] अपने को बचाये रहा ॥

२४ सो यहोवा ने मुझे मेरे धर्म्म के अनुसार बदला दिया

मेरे कामों[2] की उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था ॥

२५ दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त दिखाता

खरे पुरुष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है ॥

२६ शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता

और टेढ़े के साथ तू तिर्छा बनता है ॥

२७ क्योंकि तू दीन लोगों को तो बचाता है ॥

पर घमण्ड भरी आंखों को नीची करता है ॥

२८ तू ही मेरे दीपक को बारता है

मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अंधियारे को दूर करके उजियाला कर देता है ॥

२९ तेरी सहायता से मैं दल पर धावा करता

और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूं ॥

३० ईश्वर की गति खरी है

यहोवा का वचन ताया हुआ है

वह अपने सब शरणागतों की ढाल ठहरा है ॥

३१ यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है

हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चटान है ॥

३२ यह वही ईश्वर है जो मेरी कमर बंधाता

और मेरे मार्ग को ठीक करता है ॥

३३ वह मेरे पैरों को हरिणियों के से करता

और मुझे ऊंचे स्थानों पर[3] खड़ा करता है ॥

३४ वह मुझे[4] युद्ध करना सिखाता है

मेरी बाहों से पीतल का धनुष नवता है ॥

३५ तू ने मुझ को बचाव[5] की ढाल दी

और तू अपने दहिने हाथ से मुझे संभाले हुए है

और तेरी नम्रता मुझे बढ़ाती है ॥

३६ तू मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा करता है

और मेरे टकने नहीं डिगे ॥

३७ मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़ लूंगा

और जब लों उन का अन्त न करूं तब लों न फिरूंगा ॥

३८ मैं उन्हें ऐसा मारूंगा कि वे उठ न सकेंगे

पर मेरे पांवों के नीचे पड़ेंगे ॥

३९ और तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर बंधाई

और मेरे विरोधियों को मेरे तले दबा दिया ॥

४० और तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे दिखाई

कि मैं अपने बैरियों का सत्यानाश करूं ॥

४१ उन्हों ने दोहाई तो दी पर उन्हें कोई बचानेहार न मिला

उन्हों ने यहोवा की भी दोहाई दी पर उस ने उन की न सुन ली ॥

४२ मैं ने उन को कूट कूटकर पवन से उड़ाई हुई धूल के समान कर दिया

मैं ने उन्हें सड़कों की कीच के समान निकाल फेंका ॥

४३ तू ने मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाकर

अन्य जातियों का प्रधान ठहराया

जिन लोगों को मैं न जानता वे मेरे अधीन हो गये ॥

४४ कान से सुनते ही वे मेरे वश में आएंगे

परदेशी मेरी चापलूसी करेंगे[6] ॥

४५ परदेशी लोग मुर्झाएंगे

और अपने कोटों में से थरथराते हुए निकलेंगे ॥

४६ यहोवा जीता है और जो मेरी चटान ठहरा सो धन्य है

और मेरे बचानेहारे परमेश्वर की बड़ाई हो ॥

४७ धन्य है मेरा पलटा लेनेहारा ईश्वर

जिस ने देश देश के लोगों को मेरे तले दबा दिया है

४८ और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है

तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊंचा करता

और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ॥

४९ इस कारण मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा

और तेरे नाम का भजन गाऊंगा ॥

५० वह अपने ठहराये हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है

वह अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उस के वंश पर युग युग करुणा करता रहेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन ॥

१९. आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है

आकाशमण्डल उस के हाथों के काम प्रगट करता है ॥

२ दिन से दिन बातें करता

और रात को रात ज्ञान सिखाती है ॥

(१) मूल में अपने अधर्म्म से। (२) मूल में मेरे हाथों। (३) मूल में मेरे ऊंचे स्थानों पर। (४) मूल में मेरे हाथों को। (५) मूल में अपने बचाव।

(६) मूल में परदेशी के लड़के मुझ से झूठ बोलेंगे।

३ न तो बातें न बचन
न उन का कुछ शब्द सुनाई देता है ॥
४ उन के स्वर सारी पृथिवी पर
और उन के बचन जगत की छोर लों पहुंच गये हैं
उन में उस ने सूर्य्य के लिये एक डेरा खड़ा किया है ॥
५ सूर्य्य मण्डप से निकलते हुए दुल्हे के समान है
वह वीर की नाईं अपनी दौड़ दौड़ने को हर्षित होता है ॥
६ वह आकाश की एक छोर से निकलता है
और वह उस की दूसरी छोर लों चक्कर मारता है
और उस का घाम[१] सब को पहुंचता है ॥
७ यहोवा की व्यवस्था खरी है जी में जी ले आनेहारी
यहोवा की चितौनी विश्वासयोग्य है भोले को बुद्धि देनेहारी ॥
८ यहोवा के उपदेश सीधे हैं हृदय को आनन्दित करनेहारे
यहोवा की आज्ञा निर्म्मल है आंखों में ज्योति ले आनेहारी ॥
९ यहोवा का भय शुद्ध है अनन्तकाल लों ठहरनेहारा
यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्म्ममय हैं ॥
१० वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनभाऊ हैं
वे मधु से और टपकनेहारे छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं ॥
११ फिर उन से तेरा दास चिताया जाता है
उन के पालन करने से बड़ा ही बदला मिलता है ॥
१२ अपनी भूलचूक को कौन समझ सके
मेरे गुप्त पापों से तू मुझे निर्दोष ठहरा दे ॥
१३ और ढिठाई[२] से भी अपने दास को रोक रख
वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएं तब मैं खरा हूंगा
और बड़े अपराध के विषय निर्दोष ठहरूंगा ॥
१४ हे यहोवा हे मेरी चटान और मेरे छुड़ानेहारे
मेरे मुंह के बचन और मेरे हृदय का ध्यान तुझे भाए ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

२०. संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले
याकूब के परमेश्वर का नाम
तुझे ऊंचे स्थान पर बैठाए ॥
२ वह पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे
और सिय्योन से तुझे सम्भाल ले ॥
३ वह तेरे सब अन्नबलियों को स्मरण करे
और तेरे होमबलि को ग्रहण करे[३]। सेला ॥
४ वह तेरे मन की इच्छा पूरी करे
और तेरी सारी युक्ति को सुफल करे ॥
५ तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊंचे स्वर से गाएंगे
और अपने परमेश्वर के नाम से अपने झण्डे खड़े करेंगे
यहोवा तेरे सब मुंह मांगे वर दे ॥
६ अब मैं जान गया कि यहोवा अपने अभिषिक्त का उद्धार करता है
वह अपने पवित्र स्वर्ग से उस की सुनकर
अपने दहिने हाथ के उद्धार करनेहारे पराक्रम के कामों से सहायता करेगा ॥
७ कोई तो रथों की और कोई घोड़ों की
पर हम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम ही की चर्चा करेंगे ॥
८ वे तो झुक गये और गिर पड़े
पर हम उठे और सीधे खड़े हैं ॥
९ हे यहोवा बचा ले
जिस दिन हम पुकारें उस दिन राजा हमारी सुन ले ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का।

२१. हे यहोवा तेरे सामर्थ्य से राजा आनन्दित होगा
और तेरे किये हुए उद्धार से वह अति मगन होगा ॥
२ तू ने उस के मनोरथ को पूरा किया
और उस के मुंह की बिनती को तू ने नाह नहीं किया। सेला ॥
३ तू उत्तम आशीषें देता हुआ उस से मिलता है
तू उस के सिर पर कुन्दन का मुकुट पहिनाता है ॥
४ उस ने तुझ से जीवन मांगा
तू ने उस को युग युग का जीवन दिया ॥
५ उस की महिमा तेरे किये हुए उद्धार के कारण बड़ी है

(१) मूल में गर्मी। (२) वा ढीठों।

(३) मूल में चिकनाई जानकर ग्रहण करे।

विभव और ऐश्वर्य तू उस को देता है ॥
६ तू उस को सदा के लिये आशिषों का भण्डार ठहराता है
तू उस को अपने सन्मुख हर्ष और आनन्द से भर देता है ॥
७ क्योंकि राजा यहोवा पर भरोसा रखता है
और परमप्रधान की करुणा से वह नहीं टलने का ॥
८ तू अपने हाथ से अपने सब शत्रुओं को पकड़ेगा
और अपने दहिने हाथ से अपने बैरियों को धर लेगा ॥
९ तू प्रगट होने के समय उन्हें जलते हुए भट्ठे की नाईं जलाएगा[१]
यहोवा अपने कोप के मारे उन्हें निगल जाएगा
और आग उन को भस्म कर डालेगी ॥
१० तू उन की संतान को पृथिवी पर से
और उन के वंश को मनुष्यों में से नाश करेगा ॥
११ क्योंकि उन्हों ने तेरी हानि का यत्न किया
उन्हों ने युक्ति निकाली तो है पर उस को पूरी न कर सकेंगे ॥
१२ क्योंकि तू अपना धनुष उन के विरुद्ध चढ़ाएगा
और वे पीठ दिखाकर भागेंगे ॥
१३ हे यहोवा अपने सामर्थ्य से महान् हो
और हम गा गाकर तेरे पराक्रम का भजन सुनाएंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। अय्येलेरशहर[२] में।
दाऊद का भजन।

२२. हे

मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया
मेरी पुकार से क्या बनता मेरा बचाव कहां[३]
हे मेरे परमेश्वर मैं दिन को पुकारता तो हूं पर तू नहीं सुनता
और रात को भी मैं चुप नहीं रहता ॥
३ पर हे इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान
तू तो पवित्र है
४ हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे
वे भरोसा रखते थे और तू उन्हें छुड़ाता था ॥
५ वे तेरी ही ओर चिल्लाते और छुड़ाये जाते थे
वे तुझी पर भरोसा रखते थे और उन की आशा न टूटती थी ॥
६ पर मैं कीड़ा हूं मनुष्य नहीं
मनुष्यों में मेरी नामधराई और लोगों में मेरा अपमान होता है ॥
७ जितने मुझे देखते हैं सो ठट्ठा करते
और होंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं
८ कि यहोवा पर अपना भार डाल वह उस को छुड़ाए
वह उस को उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न तो है ॥
९ पर तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला
जब मैं दूधपिउवा बच्चा था तब भी तू ने मुझे भरोसा रखना सिखाया[४]
१० मैं जन्मते ही तुझ पर डाल दिया गया
माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है ॥
११ मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है
और कोई सहायक नहीं ॥
१२ बहुत से सांड़ों ने मुझे घेरा
बाशान के बलवन्त मेरे चारों ओर आये हैं ॥
१३ फाड़ने और गरजनेहारे सिंह की नाईं
उन्हों ने मेरे लिये अपना मुंह पसारा है ॥
१४ मैं जल की नाईं बह गया
और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गये
मेरा हृदय मोम हो गया
वह मेरी देह के भीतर पिघल गया ॥
१५ मेरा बल टूट गया मैं ठीकरा हो गया
और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई
और तू मुझे मारके मिट्टी में मिला देता है ॥
१६ क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेरा
कुकर्म्मियों की मण्डली मेरे चारों ओर आई
उन्हों ने मेरे हाथों और पैरों को छेदा है ॥
१७ मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं
वे मुझे देखते और निहारते हैं ॥
१८ वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते
और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं ॥
१९ पर हे यहोवा तू दूर न रह
हे मेरे सहायक मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर ॥
२० मेरे प्राण को तलवार से
मेरे जीव को[५] कुत्ते के पंजे से बचा ले ॥
२१ मुझे सिंह के मुंह से बचा

(१) मूल में रक्खेगा।
(२) अर्थात् भोरवाली हरिणी।
(३) मूल में मेरे गोहराने का वचन मेरे उद्धार से दूर है।
(४) मूल में भरोसा दिया।
(५) मूल में मेरी एकली को।

तू ने मेरी सुन कर बनैले बैलों के सींगों से बचा तो लिया है ॥
२२ मैं अपने भाइयों के साम्हने तेरे नाम का प्रचार करूंगा।
सभा के बीच मैं तेरी स्तुति करूंगा ॥
२३ हे यहोवा के डरवैयो उस की स्तुति करो
हे याकूब के सारे वंश तुम उसकी बड़ाई करो
और हे इस्राएल के सारे वंश तुम उस का भय मानो ॥
२४ क्योंकि उस ने दुःखी को तुच्छ नहीं जाना न उस से घिन की है
और न उस से अपना मुख छिपा लिया
पर जब उस ने उस की दोहाई दी तब उस की सुन ली ॥
२५ बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है
मैं अपनी मन्नतें उस के डरवैयों के साम्हने पूरी करूंगा ॥
२६ नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे
जो यहोवा के खोजी हैं वे उस की स्तुति करेंगे
तुम्हारे जीव सदा जीते रहें ॥
२७ पृथिवी के सब दूर दूर देशों के लोग चेत करके यहोवा की ओर फिरेंगे
और जाति जाति के सब कुल तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगे ॥
२८ क्योंकि राज्य यहोवा ही का है
और सब जातियों पर वही प्रभुता करनेहारा है ॥
२९ पृथिवी के सब हृष्टपुष्ट लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे
जितने मिट्टी में मिल जानेहारे हैं
और अपना अपना प्राण नहीं बचा सकते वे सब उसी के साम्हने घुटने टेकेंगे ॥
३० उस की सेवा करनेहारा एक वंश होगा
दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा ॥
३१ लोग आकर उस का धर्मी होना बताएंगे
वे उत्पन्न होनेहारे लोगों से कहेंगे कि उस ने काम किया है ॥

दाऊद का भजन ।

२३. यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ घटी न होगी ॥

२ वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता
वह मुझे सुखदाई जल के पास ले चलता है ॥
३ वह मेरे जी में जी ले आता है
धर्म्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है ॥
४ चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं
तौभी हानि से न डरूंगा क्योंकि तू मेरे साथ रहता है
तेरे सोंटे और लाठी से मुझे शांति मिलती है ॥
५ तू मेरे सतानेहारों के साम्हने मेरे लिये मेज लगाता है
तू ने मेरे सिर पर तेल डाला है
मेरा कटोरा उमण्ड रहा है ॥
६ सचमुच भलाई और करुणा जीवन भर मेरे पीछे पीछे बनी रहेंगी
और मैं यहोवा के घर में पहुंचकर[1] ढेर दिन रहूंगा ॥

दाऊद का भजन ।

२४. पृथिवी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है

जगत अपने बासियों समेत उसी का है ॥
२ क्योंकि उसी ने उस को समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रक्खा
और महानदों के ऊपर स्थिर किया है ॥
३ यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता
और उस के पवित्रस्थान में कौन खड़ा हो सकता है ॥
४ जिस के काम[2] निर्दोष और हृदय शुद्ध है
जिस ने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया
और न कपट से किरिया खाई है ॥
५ वह यहोवा की ओर से आशिष पाएगा
और अपने उद्धार करनेहारे परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा ॥
६ ऐसे ही लोग उस के खोजी हैं
वे तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी हैं । सेला ॥
७ हे फाटको खुल जाओ[3]
और हे सनातन द्वारो खुल जाओ[4]
कि प्रतापी राजा प्रवेश करे ॥
८ वह प्रतापी राजा कौन है
वह तो सामर्थी और पराक्रमी यहोवा है
वह युद्ध में पराक्रमी यहोवा है ॥
९ हे फाटको खुल जाओ[3]

(१) मूल में लौटकर । (२) मूल में के हाथ ।
(३) मूल में अपने सिर उठाओ । (४) मूल में अपने को उठाओ ।

और हे सनातन द्वारो तुम भी खुल जाओ[1]
कि प्रतापी राजा प्रवेश करे॥
१० वह जो प्रतापी राजा है सो कौन है
सेनाओं का यहोवा वही प्रतापी राजा है। सेला॥

दाऊद का।

२५. हे यहोवा मैं अपने मन को तेरी ओर लगाता[2] हूं॥
२ हे मेरे परमेश्वर मैं ने तुझी पर भरोसा रक्खा है
मेरी आशा टूटने न पाए
मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने न पाएं॥
३ बरन जितने तेरी बाट जोहते हैं उन में से किसी की आशा न टूटेगी
पर जो अकारण विश्वासघाती हैं उन्हीं की आशा टूटेगी॥
४ हे यहोवा अपने मार्ग मुझ को दिखा दे
अपने पथ मुझे बता दे॥
५ मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे
क्योंकि मेरा उद्धार करनेहारा परमेश्वर तू है
दिन भर मैं तेरी ही बाट जोहता रहता हूं॥
६ हे यहोवा अपनी दया और करुणा के कामों को स्मरण कर
क्योंकि वे तो सदा से होते आये हैं॥
७ हे यहोवा अपनी भलाई के कारण
मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को स्मरण न कर
अपनी करुणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर॥
८ यहोवा भला और सीधा है
इस कारण वह पापियों को अपना मार्ग दिखाएगा॥
९ वह नम्र लोगों को न्याय पर चलाएगा
और नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखाएगा॥
१० जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को पालन करते हैं
उन के लिये उस का सारा व्यवहार करुणा और सच्चाई का होता है॥
११ हे यहोवा अपने नाम के निमित्त
मेरे अधर्म्म को जो बड़ा है क्षमा कर॥
१२ कोई भी मनुष्य जो यहोवा का भय मानता हो
यहोवा उस के चुने हुए मार्ग में उस की अगुवाई करेगा॥

(१) मूल में अपने को उठाओ।
(२) मूल में उठाता।

१३ वह कुशल से टिका रहेगा
और उस का वंश पृथिवी का अधिकारी होगा॥
१४ यहोवा अपने डरवैयों के साथ गाढ़ी मित्रता रखता है
और अपनी वाचा खोलकर उन को बताता है
१५ मेरी आंखें यहोवा पर टकटकी बान्धे हैं
क्योंकि मेरे पांवों को जाल में से वही छुड़ाएगा॥
१६ हे यहोवा मेरी ओर फिरके मुझ पर अनुग्रह कर
क्योंकि मैं अकेला और दीन हूं॥
१७ मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया
तू मुझे सकेती से निकाल॥
१८ मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर
और मेरे सारे पापों को क्षमा कर॥
१९ मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गये हैं
और मुझ से बड़ा बैर रखते हैं॥
२० मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा
मेरी आशा टूटने न पाए क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं॥
२१ खराई और सीधाई मेरी रक्षा करें
क्योंकि मैं तेरी बाट जोहता हूं॥
२२ हे परमेश्वर इस्राएल को
उस के सारे संकटों से छुड़ा ले॥

दाऊद का।

२६. हे यहोवा मेरा न्याय चुका क्योंकि मैं खराई से चला हूं॥
और मेरा भरोसा यहोवा पर अचल बना है॥
२ हे यहोवा मुझ को जांच और परख
मेरे मन और हृदय को ताव॥
३ तेरी करुणा तो मुझे दीखती रहती है
और मैं तेरे सत्य पर चलता फिरता हूं॥
४ मैं निकम्मी चाल चलनेहारों के संग नहीं बैठा
और न मैं कपटियों के साथ कहीं जाऊंगा॥
५ मैं कुकर्मियों की संगति से बैर रखता हूं
और दुष्टों के संग न बैठूंगा॥
६ मैं अपने हाथों को निर्दोषता के जल से धोऊंगा
तब हे यहोवा मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा करूंगा।
७ कि तेरा धन्यवाद ऊंचे शब्द से करूं।
और तेरे सब आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करूं॥
८ हे यहोवा मैं तेरे धाम से
तेरी महिमा के निवासस्थान से प्रीति रखता हूं॥

९ मेरे प्राण को पापियों के साथ
और मेरे जीवन को हत्यारों के साथ न मिला दे॥
१० वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं
और उन का दाहिना हाथ घूस से भरा रहता है॥
११ पर मैं तो खराई से चलूंगा
तू मुझे छुड़ा ले और मुझ पर अनुग्रह कर॥
१२ मेरा पांव चौरस स्थान में स्थिर है
सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूंगा॥

दाऊद का।

२७. यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है मैं किस से डरूं, यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है मैं किस का भय खाऊं॥
२ जब कुकर्म्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से वैर रखते थे
मुझे खा डालने के लिये मुझ पर चढ़ाई की थी
तब वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े॥
३ चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी करे
तौभी मैं न डरूंगा
चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई उठे
उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे रहूंगा॥
४ एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है उसी के यत्न में लगा रहूंगा
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं
जिस से यहोवा की मनोहरता पर टकटकी लगाये रहूं
और उस के मन्दिर में ध्यान किया करूं॥
५ वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रक्खेगा
अपने तंबू के गुप्तस्थान में वह मुझे गुप्त रक्खेगा
और चटान पर चढ़ाये रक्खेगा॥
६ सो अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊंचा होगा
और मैं यहोवा के तंबू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊंगा
और उस का भजन गाऊंगा॥
७ हे यहोवा सुन मैं ऊंचे शब्द से पुकारता हूं
सो तू मुझ पर अनुग्रह करके मेरी सुन ले॥
८ तू ने कहा है कि मेरे दर्शन के खोजी हो इसलिये
मेरा मन तुझ से कहता है कि
हे यहोवा तेरे दर्शन का मैं खोजी होता हूं॥
९ अपना मुख मुझ से न छिपा
अपने दास को कोप करके न हटा
तू मेरा सहायक बना है
हे मेरे उद्धार करनेहारे परमेश्वर मेरा त्याग न कर
और मुझे छोड़ न दे॥
१० मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है
पर यहोवा मुझे रख लेगा॥
११ हे यहोवा अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर
और मेरे द्रोहियों के कारण
मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल॥
१२ मुझ को मेरे सतानेहारों की इच्छा पर न छोड़
क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने की धुन में हैं
मेरे विरुद्ध उठे हैं॥
१३ मैं विश्वास करता हूं[१] कि यहोवा की भलाई को
जीते जी देखने पाऊंगा॥
१४ यहोवा की बाट जोह
हियाव बांध और तेरा हृदय दृढ़ रहे
यहोवा की बाट जोहता ही रह॥

दाऊद का।

२८. हे यहोवा मैं तुझी को पुकारूंगा
हे मेरी चटान मेरी सुनी अनसुनी न कर
नहीं तो तेरे चुप लगाये रहने से
मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊंगा॥
२ जब मैं तेरी दोहाई दूं
और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊं
तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन॥
३ उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग मुझे न घसीट
जो अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल की बोलते हैं
पर हृदय में बुराई रखते हैं॥
४ उन के कामों के और उन की करनी की बुराई के अनुसार उन से बर्ताव कर
उन के हाथों के काम के अनुसार उन्हें बदला दे
उन के कामों का पलटा उन्हें दे॥
५ वे जो यहोवा की क्रिया को

(१) मूल में यदि मैं विश्वास न करता।

और उस के हाथों के काम को नहीं बिचारते
इसलिये वह उन्हें पछाड़ेगा और न उठाएगा ॥
६ यहोवा धन्य है
क्योंकि उस ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है ॥
७ यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल ठहरा है
उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है
इसलिये मेरा हृदय हुलसता है
और मैं गा गाकर उस का धन्यवाद करूंगा ॥
८ यहोवा उन का बल है
और अपने अभिषिक्त के बचाव के लिये दृढ़ गढ़ ठहरा है ॥
९ हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर और अपने निज भाग के लोगों को आशिष दे
और उन की चरवाही कर और सदा लों उन्हें संभाले रह ॥

दाऊद का भजन।

२९. हे बलवन्तों के पुत्रो[1] यहोवा का गुणानुवाद करो

यहोवा की महिमा और सामर्थ को मानो ॥
२ यहोवा के नाम की महिमा को मानो
पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो ॥
३ यहोवा की वाणी मेघों[2] के ऊपर सुन पड़ती है
प्रतापी ईश्वर गरजा है
यहोवा घने मेघों[3] के ऊपर रहता है ॥
४ यहोवा की वाणी शक्तिमान है
यहोवा की वाणी प्रतापमय है ॥
५ यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है
यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है ॥
६ वह उन्हें बछड़े की नाईं कुदाता है
वह लबानोन और शिर्योन को बनैली गायों के बच्चों के समान उछालता है ॥
७ यहोवा की वाणी बिजली को चमकाती[4] है ॥
८ यहोवा की वाणी वन को कंपाती
यहोवा कादेश के वन को भी कंपाता है ॥
९ यहोवा की वाणी से हरिणियों का गर्भपात

(१) वा ईश्वर के पुत्रो। (२) मूल में जल।
(३) मूल में बहुत जल। (४) मूल में आग की लौवों को चीरती है।

और अरण्य में पतझड़ होती है
और उस के मन्दिर में सब कुछ महिमा महिमा बोलता रहता है ॥
१० जलप्रलय के समय यहोवा विराजमान था
और यहोवा सदा का राजा होकर विराजमान रहता है ॥
११ यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा
यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशिष देगा ॥

भजन। भजन की प्रतिष्ठा का गीत। दाऊद का।

३०. हे यहोवा मैं तुझे सराहूंगा क्योंकि तू ने मुझे खींचकर निकाला है

और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द करने नहीं दिया ॥
२ हे मेरे परमेश्वर यहोवा
मैं ने तेरी दोहाई दी थी और तू ने मुझे चंगा किया है ॥
३ हे यहोवा तू ने मेरा प्राण अधोलोक में से निकाला है
तू ने मुझ को जीता रक्खा और कबर में पड़ने से बचाया है ॥
४ हे यहोवा के भक्तो उस का भजन गाओ
और जिस पवित्र नाम से उस का स्मरण होता है उस का धन्यवाद करो ॥
५ क्योंकि उस का कोप तो क्षण भर का होता है
पर उस की प्रसन्नता जीवन भर की होती है
सांझ को रोना आकर रहे तो रहे
पर बिहान को जयजयकार होगा ॥
६ मैं ने तो अपने चैन के समय कहा था
कि मैं कभी नहीं टलने का ॥
७ हे यहोवा अपनी प्रसन्नता से तू ने मेरे पहाड़ को दृढ़ और स्थिर किया था
जब तू ने अपना मुख फेर लिया[5] तब मैं घबरा गया ॥
८ हे यहोवा मैं ने तुझी को पुकारा
और यहोवा से गिड़गिड़ाकर यह बिनती की कि
९ मेरे लोहू के बहने से और कबर में पड़ने के समय क्या लाभ होगा
क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती क्या वह तेरी सच्चाई प्रचार कर सकती है ॥
१० हे यहोवा सुनकर मुझ पर अनुग्रह कर
हे यहोवा तू मेरा सहायक हो ॥

(५) मूल में छिपाया।

११ तू ने मेरे बिलाप को दूर करके मुझे आनन्द से नचाया
तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का फेंटा बांधा है
१२ इसलिये कि मेरा आत्मा[1] तेरा भजन गाता रहे और कभी चुप न हो
हे मेरे परमेश्वर यहोवा मैं सदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

३१. हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं, मेरी आशा कभी टूटने न पाए
तू जो धर्म्मी है सो मुझे छुड़ा ॥
२ अपना कान मेरी ओर लगाकर झट मुझे छुड़ा
मेरे बचाने को दृढ़ चटान और गढ़ का काम दे ॥
३ क्योंकि तू मेरे लिये ढांग और गढ़ ठहरा है
सो अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई कर और मुझे ले चल ॥
४ जो जाल उन्हों ने मेरे लिये लगाया है उस से तू मुझ को छुड़ा
तू तो मेरा दृढ़ स्थान ठहरा है ॥
५ मैं अपने आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूं
हे यहोवा हे सत्यवादी ईश्वर तू ने मुझे छुड़ा लिया है ॥
६ जो व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं, उन का मैं बैरी हूं
और मेरा भरोसा यहोवा ही पर है ॥
७ मैं तेरी करुणा से मगन और आनन्दित हूंगा
क्योंकि तू ने मेरे दुःख पर दृष्टि की है
मेरे कष्ट के समय तू ने मेरी सुधि ली है ॥
८ और तू ने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने नहीं दिया,
तू ने मुझे बेखटका कर दिया है[2] ॥
९ हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि मैं संकट में हूं
मेरी आंखें शोक से धुन्धली पड़ गईं मेरा जीव और पेट सूख गया है ॥
१० मेरा जीवन शोक के मारे और मेरी अवस्था कराहते कराहते घट चली
मेरा बल मेरे अधर्म्म के कारण जाता रहा और मेरी हड्डियों में घुन लग गया है ॥
११ मेरे सब सतानेहारों के कारण मेरी नामधराई हुई है
और विशेष करके मेरे पड़ोसियों में हुई है और मैं अपने चिन्हारों के लिये डर का कारण हूं।
जो मुझ को सड़क पर देखते सो मुझ से भाग जाते हैं ॥
१२ मैं मुर्दे की नाईं लोगों के मन से बिसर गया
मैं टूटे बासन के समान हो गया हूं ॥
१३ मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद सुना
चारों ओर भय ही भय है
जब उन्हों ने मेरे विरुद्ध आपस में सम्मति की
तब मेरा प्राण लेने की युक्ति की ॥
१४ पर हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर भरोसा रक्खा है
मैं ने कहा कि तू मेरा परमेश्वर है ॥
१५ मेरे दिन[3] तेरे हाथ में हैं
तू मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ से और मेरे पीछे पड़नेहारों से बचा ॥
१६ अपने दास पर अपने मुंह का प्रकाश चमका
अपनी करुणा से मेरा उद्धार कर ॥
१७ हे यहोवा मेरी आशा टूटने न पाए क्योंकि मैं ने तुझ को पुकारा है
दुष्टों की आशा टूटे और वे अधोलोक में चुपचाप पड़े रहें ॥
१८ जो अहंकार और अपमान से
धर्म्मी की निन्दा करते हैं
उन के झूठ बोलनेहारे मुह बन्द किये जाएं ॥
१९ आहा तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी,
और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के साम्हने प्रगट भी की है ॥
२० तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रक्खेगा
तू उन को अपने मण्डप में झगड़े रगड़े से छिपा रक्खेगा ॥
२१ यहोवा धन्य है
क्योंकि उस ने मुझे गढ़वाले नगर में रखकर मुझ पर अद्भुत करुणा की है ॥
२२ मैं ने तो घबराकर कहा था कि मैं यहोवा की दृष्टि से दूर हो गया
तौभी जब मैं ने तेरी दोहाई दी तब तू ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना ॥

(१) मूल में महिमा।
(२) मूल में मेरे पांवों को चौड़े स्थान में खड़ा किया है।
(३) मूल में समय।

२३ हे यहोवा के सब भक्तो उस से प्रेम रक्खो,
यहोवा सच्चे लोगों की तो रक्षा करता,
पर जो अहंकार करता है उस को वह भली भांति बदला देता है ॥
२४ हे यहोवा के सब आशा रखनेहारो
हियाव बांधो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें ॥

दाऊद का। मस्कील।

३२.

क्या ही धन्य है वह जिस का अपराध क्षमा किया गया और जिस का पाप ढांपा गया हो ॥
२ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिस के अधर्म्म का यहोवा लेखा न ले
और उस के आत्मा में कपट न हो ॥
३ जब लों मैं चुप रहा
तब लों दिन भर चीखते चीखते मेरी हड्डियों में घुन लगा रहा ॥
४ क्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा
और मेरी तरावट धूप काल की सी झुराहट बनती गई। सेला ॥
५ जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म्म न छिपाया
और कहा कि मैं यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा
तब तू ने मेरे अधर्म्म और पाप को क्षमा किया। सेला ॥
६ इस कारण हर एक भक्त जब उस का पाप उस पर खुल जाए[१] तब तुझ से प्रार्थना करेगा
जल की बड़ी बाढ़ हो तो हो पर निश्चय उस भक्त के पास न पहुंचेगी ॥
७ तू मेरे छिपने का स्थान है तू संकट से मेरी रक्षा करेगा
तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के गीत सुनवाएगा[२]। सेला ॥
८ मैं तुझे बुद्धि दूंगा और जिस मार्ग में तुझे चलना हो उस में तेरी अगुवाई करूंगा
मैं तुझ पर कृपादृष्टि करके[३] सम्मति दिया करूंगा ॥
९ घोड़े और खच्चर के समान न हो जो समझ नहीं रखते

(१) वा जब तू मिल सकता है।
(२) मूल में तू मुझे छुटकारे के गीतों से घेरेगा
(३) मूल में आंख लगाकर।

उन की उमंग लगाम और बाग से रोकनी पड़ती है
नहीं तो वे तेरे बश में नहीं आने के ॥
१० दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी
पर जो यहोवा पर भरोसा रखता है सो करुणा से घिरा रहेगा ॥
११ हे धर्म्मियो यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो
और हे सब सीधे मनवालो जयजयकार करो ॥

३३.

हे धर्म्मियो यहोवा के कारण जयजयकार करो
क्योंकि सीधे लोगों को स्तुति करनी सजती है ॥
२ वीणा बजा बजाकर यहोवा का धन्यवाद करो
दस तारवाली सारङ्गी बजा बजाकर उस का भजन गाओ ॥
३ उस के लिये नया गीत गाओ
जयजयकार के साथ भली भांति बजाओ ॥
४ क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है
और उस का सारा काम सच्चाई से होता है ॥
५ वह धर्म्म और न्याय पर प्रीति रखता है
यहोवा की करुणा से पृथिवी भरपूर है ॥
६ आकाशमण्डल यहोवा के वचन से बन गया
और वह सारा गण उस के मुंह की सांस से बना ॥
७ वह समुद्र का जल ढेर की नाईं इकट्ठा करता
वह गहिरे सागर को अपने भण्डार में रखता है ॥
८ सारी पृथिवी के लोग यहोवा से डरें
जगत के सब निवासी उस का भय मानें ॥
९ क्योंकि जब उस ने कहा तब हो गया
जब उस ने आज्ञा दी तब स्थिर हुआ ॥
१० यहोवा अन्यजातियों की युक्ति को व्यर्थ कर देता
वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है ॥
११ यहोवा की युक्ति सदा स्थिर रहेगी
उस के मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहेंगी ॥
१२ क्या ही धन्य है वह जाति जिस का परमेश्वर यहोवा है
और वह समाज जिसे उस ने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया हो ॥
१३ यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता
वह सारे मनुष्यों को निहारता है ॥

१४ अपने निवास के स्थान से
वह पृथिवी के सब रहनेहारों को ताकता है ॥
१५ वही है जो उन सभों के मन को गढ़ता
और उन के सब कामों को बूझ लेता है ॥
१६ कोई ऐसा राजा नहीं जो सेना की बहुतायत के कारण बच सके
और अपनी बड़ी शक्ति के कारण छूट नहीं जाता ॥
१७ घोड़ा बचाव के लिये व्यर्थ है
वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी को नहीं बचा सकता ॥
१८ देखो यहोवा की दृष्टि उस के डरवैयों पर
और उन पर जो उस की करुणा की आशा रखते हैं बनी रहती है
१९ कि वह उन के प्राण को मृत्यु से बचाए
और अकाल के समय उन को जीता रक्खे ॥
२० हम यहोवा का आसरा तकते आये हैं
वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है ॥
२१ हमारा हृदय उस के कारण आनन्दित होगा
क्योंकि हम ने उस के पवित्र नाम का भरोसा रक्खा है ॥
२२ हे यहोवा हम ने जो तेरी आशा रक्खी है
इसलिये तेरी करुणा हम पर हो ॥

दाऊद का। जब वह अबीमेलेक के साम्हने बौरहा बना और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया और वह चला गया।

३४. मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूंगा
उस की स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी ॥
२ मैं यहोवा पर घमण्ड करूंगा
नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे
३ मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो
और आओ हम मिलकर उस के नाम को सराहें ॥
४ मैं यहोवा के पास गया तब उस ने मेरी सुन ली
और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया ॥
५ जिन्हों ने उस की ओर दृष्टि की
उन्हों ने ज्योति पाई
और उन का मुंह कभी काला न होने पाया ॥
६ इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया
और इस को इस के सारे कष्टों से छुड़ा लिया ॥
७ यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उस का दूत छावनी किये हुए
उन को बचाता है ॥

८ परखकर[1] देखो कि यहोवा कैसा भला है
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उस की शरण लेता है ॥
९ हे यहोवा के पवित्र लोगो उस का भय मानो
क्योंकि उस के डरवैयों को किसी बात की घटी नहीं होती ॥
१० जवान सिंहों को घटी हो और वे भूखे रह जाएं
पर यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होवेगी ॥
११ हे लड़को आओ मेरी सुनो
मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊंगा
१२ कि जो कोई जीवन की इच्छा रखता
और दीर्घायु चाहता हो कि कुशल से रहे
१३ अपनी जीभ बुराई से रोक रख
और अपने मुंह की चौकसी कर कि उस से छल की बात न निकले ॥
१४ बुराई को छोड़ और भलाई कर
मेल को ढूंढ़ और उस का पीछा न छोड़ ॥
१५ यहोवा की आंखें धर्म्मियों पर लगी रहती हैं
और उस के कान भी उन की दोहाई की ओर लगे रहते हैं ॥
१६ यहोवा बुराई करनेहारों के विमुख रहता है
कि उन का नाम[2] पृथिवी पर से मिटा डाले ॥
१७ लोग दोहाई देते और यहोवा सुनता
और उन को सारी विपत्तियों से छुड़ाता है ॥
१८ यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है
और पिसे हुओं का उद्धार करता है ॥
१९ धर्म्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं
पर यहोवा उस को उन सब से छुड़ाता है।
२० वह उस की हड्डी हड्डी की रक्षा करता है
सो उन में से एक भी टूटने नहीं पाती ॥
२१ दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा पड़ेगा
और धर्म्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे ॥
२२ यहोवा अपने दासों का प्राण बचा लेता है
और जितने उस के शरणागत हैं उन में से कोई दोषी न ठहरेगा ॥

दाऊद का।

३५. हे यहोवा जो मेरे साथ मुकद्दमा लड़ते हैं
उन के साथ तू भी मुकद्दमा लड़
जो मुझ से युद्ध करते हैं उन से तू युद्ध कर ॥

(१) मूल में चखकर।
(२) मूल में स्मरण।

२ ढाल और फरी लेकर मेरी सहायता करने को खड़ा हो ॥
३ और बर्छी को खींच और मेरा पीछा करनेहारों के साम्हने आकर उन को रोक
और मुझ से कह कि मैं तेरा उद्धार हूं ॥
४ जो मेरे प्राण के गाहक हैं उन की आशा टूट जाए और वे निरादर हों
जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं सो पीछे हटाये जाएं और उन का मुंह काला हो ॥
५ वे वायु से उड़ जानेहारी भूसी के समान हों
और यहोवा का दूत उन्हें धकियाता जाए ॥
६ उन का मार्ग अंधियारा और फिसलहा हो
और यहोवा का दूत उन को खदेड़ता जाए ॥
७ क्योंकि अकारण उन्हों ने मेरे लिये अपना जाल गड़हे में लगाया
अकारण ही उन्हा ने मेरा प्राण लेने के लिये गड़हा खोदा है ॥
८ अचानक उन की विपत्ति हो
और जो जाल उन्हों ने लगाया है उसी में वे आप फंसें
उसी विपत्ति में वे आप ही पड़ें ॥
९ तब मैं यहोवा के कारण जी से मगन हूंगा
मैं उस के किये हुए उद्धार से हर्षित हूंगा ॥
१० मेरी हड्डी हड्डी कहेंगी कि हे यहोवा तेरे तुल्य कौन है
जो दीन जन को बड़े बड़े बलवन्तों से बचाता है
और लुटेरों से दीन दरिद्र लोगों की रक्षा करता है ॥
११ द्रोह करनेहारे साक्षी खड़े होते हैं
और जो बात मैं नहीं जानता वही लोग मुझ से पूछते हैं ॥
१२ वे मुझ से भलाई के बदले बुराई करते हैं
मैं बन्धुहीन हुआ हूं ॥
१३ मैं तो जब वे रोगी थे तब टाट पहिने रहा
और उपवास कर करके दुःख उठाता था
और मेरी प्रार्थना का फल मुझी को मिलेगा[१] ॥
१४ मैं ऐसा भाव रखता था कि मानो वे मेरे संगी वा भाई हैं
जैसा कोई माता के लिये विलाप करता हो
वैसा ही मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए झुका चलता था ॥

(१) मूल में मेरी प्रार्थना मेरी गोद में लौट आएगी ।

१५ पर वे लोग जब मैं लंगड़ाने लगा तब आनन्दित होकर इकट्ठे हुए
नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न था सो मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए
वे मुझे लगातार फाड़ते रहे ॥
१६ उन पाखण्डी भांड़ों की नाईं जो पेट के लिये उपहास करते हैं
वे भी मुझ पर दांत पीसते हैं ॥
१७ हे प्रभु तू कब लों देखता रहेगा
इस विपत्ति से जिस में उन्हों ने मुझे डाला है मुझ को छुड़ा
जवान सिंहों से मेरे जीव[२] को बचा ले ॥
१८ तब मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूंगा
बहुतेरे लोगों के बीच मैं तेरी स्तुति करूंगा ॥
१९ मेरे झूठ बोलनेहारे शत्रु मेरे विरुद्ध आनन्द न करने पाएं
जो अकारण मेरे बैरी हैं सो आपस में नैन से सैन न करने पाएं ॥
२० क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते
पर देश में जो चुपचाप रहते हैं उन के विरुद्ध छल की कल्पनाएं करते हैं ॥
२१ और उन्हों ने मेरे विरुद्ध मुंह पसार के कहा
आहा आहा हम ने अपनी आंखों से देखा है ॥
२२ हे यहोवा तू ने तो देखा है सो चुप न रह
हे प्रभु मुझ से दूर न रह ॥
२३ उठ मेरे न्याय के लिये जाग
हे मेरे परमेश्वर हे मेरे प्रभु मेरा मुकद्दमा निपटाने के लिये आ ॥
२४ हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू जो धर्म्मी है इसलिये मेरा न्याय चुका
और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे ॥
२५ वे मन में न कहने पाएं कि आहा हमारी इच्छा पूरी हुई
हम उस को निगल गये हैं ॥
२६ जो मेरी हानि से आनन्दित हैं उन के मुंह लज्जा के मारे एक साथ काले हों
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं सो लज्जा और अनादर से ढंप जाएं ॥
२७ जो मेरे धर्म्म से प्रसन्न रहते हैं सो जयजयकार और आनन्द करें

(२) मूल में मेरी एकली ।

और निरन्तर कहते रहें कि यहोवा की बड़ाई हो जो
अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है ॥
२८ तब मेरे मुंह से तेरे धर्म्म की चर्चा होगी
और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । यहोवा के दास
दाऊद का ।

३६. दुष्ट जन के हृदय के भीतर अपराध
की वाणी हुआ करती है

परमेश्वर का भय उस के मन[१] में नहीं आता ॥
२ वह अपने अधर्म्म के खुलने और घिनौने ठहरने
के विषय
अपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें
विचारता है ॥
३ उस की बातें अनर्थ और छल की हैं
उस ने बुद्धि और भलाई के काम करने से हाथ
उठाया है ॥
४ वह अपने बिछौने पर पड़े पड़े अनर्थ की कल्पना
करता है
वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है
बुराई से वह हाथ नहीं उठाता ॥
५ हे यहोवा तेरी करुणा स्वर्ग में है
तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची है ॥
६ तेरा धर्म्म ईश्वर के पर्वतों के समान है
तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं
हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा
करता है ॥
७ हे परमेश्वर तेरी करुणा कैसी अनमोल है
मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं ॥
८ वे तेरे भवन में के चिकने भोजन से तृप्त होंगे
और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा ॥
९ क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है
तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे ।
१० अपने जाननेहारों पर करुणा करता रह
और अपने धर्म्म के काम सीधे मनवालों से
करता रह ।
११ अहंकारी मुझ पर लात उठाने न पाए
और न दुष्ट अपने हाथ के बल से मुझे भगाने
पाए ॥
१२ वहां अनर्थकारी गिर पड़े हैं
वे ढकेल दिये गये और फिर उठ न सकेंगे ॥

(१) मूल में उस की आंखों के साम्हने ।

दाऊद का ।

३७. कुकर्म्मियों के कारण मत कुढ़ कुटिल
काम करनेहारों के विषय
डाह न कर ।
२ क्योंकि वे घास की नाईं झट कट जाएंगे
और हरी घास की नाईं मुर्झा जाएंगे ॥
३ यहोवा पर भरोसा रख और भला कर
देश में बसा रह और सच्चाई में मन लगाये रह ॥
४ यहोवा को अपने सुख का मूल जान
और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा ॥
५ अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़
और उस पर भरोसा रख वही पूरा करेगा ॥
६ और वह तेरा धर्म्म ज्योति की नाईं
और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले की नाईं
प्रगट करेगा ॥
७ यहोवा के साम्हने चुपचाप रह और धीरज से उस
का आसरा रख
उस के कारण न कुढ़ जिस के काम सुफल
होते हैं
और वह बुरी युक्तियों को निकालता है ॥
८ कोप से परे रह और जलजलाहट को छोड़ दे
मत कुढ़ उस से बुराई ही निकलेगी ।
९ कुकर्म्मी लोग काट डाले जाएंगे
और जो यहोवा की बाट जोहते हैं सोई पृथिवी के
अधिकारी होंगे ॥
१० थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं
और तू उस के स्थान को भली भांति देखने पर भी
उस को न पायेगा ॥
११ पर नम्र लोग पृथिवी के अधिकारी होंगे
और बड़ी शांति के कारण सुख मानेंगे ॥
१२ दुष्ट धर्म्मी के विरुद्ध बुरी युक्ति निकालता
और उस पर दांत पीसता है ॥
१३ प्रभु उस पर हंसेगा
क्योंकि वह देखता है कि उस का दिन आनेहारा
है ॥
१४ दुष्ट लोग तलवार खींचे और धनुष चढ़ाये हैं
कि दीन दरिद्र को गिरा दें
और सीधी चाल चलनेहारों को वध करें ॥
१५ उन की तलवारों से उन्हीं के हृदय छिदेंगे
और उन के धनुष तोड़े जाएंगे ॥
१६ धर्म्मी का थोड़ा सा
बहुत से दुष्टों के ढेर से उत्तम है ॥

१७ क्योंकि दुष्टों की भुजाएं तो तोड़ी जाएंगी
पर यहोवा धर्म्मियों को संभालता है ॥
१८ यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है
और उन का भाग सदा लों बना रहेगा ॥
१९ विपत्ति के समय उन की आशा न टूटेगी
और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे ॥
२० दुष्ट लोग नाश हो जाएंगे
और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घास की नाईं नाश होंगे
वे धूएं की नाईं बिलाय जाएंगे ॥
२१ दुष्ट ऋण लेता है और भरता नहीं
पर धर्म्मी अनुग्रह करके दान देता है ॥
२२ क्योंकि जो उस से आशिष पाते हैं सो तो पृथिवी के अधिकारी होंगे
पर जो उस से स्रापित होते हैं सो नाश हो जाएंगे ॥
२३ मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है
और उस के चलन से वह प्रसन्न रहता है ॥
२४ चाहे वह गिरे तौभी बिछा न दिया जाएगा
क्योंकि यहोवा उस का हाथ थांभे रहता है ॥
२५ मैं लड़कपन से ले बुढ़ापे लों देखता आया हूं
पर न तो कभी धर्म्मी को त्यागा हुआ
और न उस के वंश को टुकड़े मांगते देखा है ॥
२६ वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके ऋण देता है
और उस के वंश पर आशिष फलती रहती है ॥
२७ बुराई को छोड़ और भलाई कर
और तू सदा लों बना रहेगा ॥
२८ क्योंकि यहोवा न्याय में प्रीति रखता
और अपने भक्तों को न तजेगा
उन की तो रक्षा सदा होती है
पर दुष्टों का वंश काट डाला जाएगा ॥
२९ धर्म्मी लोग पृथिवी के अधिकारी होंगे
और उस पर सदा बसे रहेंगे ॥
३० धर्म्मी अपने मुंह से बुद्धि की बातें करता
और न्याय का बचन कहता है ॥
३१ उस के परमेश्वर की व्यवस्था उस के हृदय में बनी रहती है
उस के पैर नहीं फिसलते ॥
३२ दुष्ट धर्म्मी की ताक में रहता
और उस के मार डालने का यत्न करता है ॥
३३ यहोवा उस को उस के हाथ में न छोड़ेगा
और जब उस का बिचार किया जाए तब वह उसे दोषी न ठहराएगा ॥
३४ यहोवा की बाट जोहता रह और उस के मार्ग पर बना रह
और वह तुझे बढ़ाकर पृथिवी का अधिकारी कर देगा
जब दुष्ट काट डाले जाएंगे तब तू देखेगा ॥
३५ मैं ने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी और ऐसा फैलता हुआ देखा
जैसा कोई हरा पेड़ अपने निज देश में फैले ॥
३६ पर किसी ने उधर से जाते हुए क्या देखा कि वह है ही नहीं
और मैं ने भी उसे ढूंढ़कर कहीं न पाया ॥
३७ खरे को ताक और सीधे को देख रख
क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का अन्तफल होगा ॥
३८ पर अपराधी एक साथ सत्यानाश किये जाएंगे,
दुष्टों का अन्तफल काटा जाएगा ॥
३९ धर्म्मियों का बचाव यहोवा की ओर से होता है
संकट के समय वह उन का दृढ़ स्थान ठहरता है ॥
४० और यहोवा उन की सहायता करके उन को छुड़ाता है
वह उन को दुष्टों से छुड़ाकर उन का उद्धार करता है
इसलिये कि वे उस के शरणागत हैं ॥

दाऊद का भजन । स्मरण कराने के लिये ।

३८.

हे यहोवा क्रोध करके मुझे न डांट
न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर ॥
२ क्योंकि तेरे तीर मेरे बिध गये
और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूं ॥
३ तेरे रोष के कारण मेरे शरीर में कुछ आरोग्यता नहीं
मेरे पाप के हेतु मेरी हड्डियों में कुछ चैन नहीं ॥
४ क्योंकि मेरे अधर्म्म के कामों में मेरा सिर डूब गया
और वे भारी बोझ की नाईं मेरे सहने से बाहर हो गये हैं ॥

५ मेरी मूढ़ता के कारण
मेरे कोड़े खाने के घाव बसाते और सड़ते हैं ॥
६ मैं झुक गया मैं बहुत ही निहुड़ गया
दिन भर मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए चलता हूं ॥
७ क्योंकि मेरी कटि भर में जलन है
और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं ॥
८ मैं निर्बल और बहुत ही चूर हो गया
मैं अपने मन की घबराहट से चिल्लाता हूं
९ हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सन्मुख है
और मेरा कराहना तुझ को सुन पड़ता है[१] ॥
१० मेरा हृदय धड़कता है मेरा बल जाता रहा
और मेरी आंखों में भी कुछ ज्योति नहीं रही ॥
११ मेरे मित्र और मेरे संगी मेरी विपत्ति में अलग खड़े हैं
मेरे कुटुम्बी भी दूर खड़े हो गये हैं ॥
१२ और मेरे प्राण के गाहक फन्दे लगाते
और मेरी हानि के यत्न करनेहारे दुष्टता की बात बोलते
और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं ॥
१३ पर मैं बहिरे की नाईं सुनता नहीं
और गूंगे के समान हूं जो बोल नहीं सकता ॥
१४ मैं ऐसे मनुष्य के सरीखा हूं जो कुछ नहीं सुनता
और जिस के मुंह से विवाद की कोई बात नहीं निकलती ॥
१५ क्योंकि हे यहोवा मैं ने तेरी ही आशा लगाई है
हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर तू ही उत्तर देगा ॥
१६ मैं ने कहा ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें
क्योंकि जब मेरा पांव टल जाता तब वे मुझ पर बड़ाई मारते हैं ॥
१७ और मैं तो अब लंगड़ाने ही पर हूं
और लगातार पीड़ा ही भोगता रहता हूं ॥
१८ मैं तो अपने अधर्म्म को प्रगट करूंगा
मैं अपने पाप के कारण खेदित रहूंगा ॥
१९ पर मेरे शत्रु फुर्तीले और सामर्थी हैं
और मेरे झूठ बोलनेहारे बैरी बहुत हो गये हैं ॥
२० और जो भलाई के पलटे में बुराई करते हैं
सो मेरे भलाई के पीछे चलने के कारण मुझ से विरोध करते हैं ॥
२१ हे यहोवा मुझे न छोड़
हे मेरे परमेश्वर मुझ से दूर न रह ॥
२२ हे यहोवा हे मेरे उद्धार
मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर ॥

यदूतून प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।

३९.

१ मैं ने कहा मैं अपनी चालचलन में चौकसी करूंगा
न हो कि वचन से पाप करूं
जब लों दुष्ट मेरे साम्हने रहे
तब लों मैं ढाठी लगाये अपना मुंह बन्द किये रहूंगा ॥
२ मैं मौन गहकर गूंगा बन गया भली बात भी न बोला
और मेरी पीड़ा बढ़ती गई ॥
३ मेरा हृदय जल उठा।
मेरे सोचते सोचते आग भड़क उठी
तब मैं बोल उठा कि
४ हे यहोवा मेरा अन्त मुझे जता
और यह कि मेरे दिन कितने हैं
जिस से मैं जान लूं कि कैसा अनित्य हूं ॥
५ देख तू ने मेरे दिनों को चौवे भर के किये
और मेरी अवस्था तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं
सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों तौ भी सांस ठहरे हैं। सेला ॥
६ सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है
सचमुच उस की घबराहट व्यर्थ है
वह धन का संचय तो करता है पर नहीं जानता कि किस के भण्डार में पड़ेगा ॥
७ और अब हे प्रभु मैं किस बात की बाट जोहूं
मेरी आशा तेरी ओर लगी है ॥
८ मुझे मेरे सब अपराधों के बंधन से छुड़ा
मूढ़ को मेरी नामधराई न करने दे ॥
९ मैं गूंगा बन गया और मुंह न खोला
क्योंकि यह काम तू ने किया है ॥
१० तू ने जो विपत्ति मुझ पर डाली है उसे दूर कर
क्योंकि मैं तेरे हाथ की मार से मिट चला ॥
११ जब तू मनुष्य को अधर्म्म के कारण दपट दपटकर ताड़ना देता है
तब उस की मनभावनी वस्तुओं को कीड़े की नाईं नाश करता है

(१) मूल में तुझ से छिपा नहीं।

सचमुच सब मनुष्य सांस ठहरे हैं । सेला ॥
१२ हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन और मेरी दोहाई पर कान धर
मेरा रोना सुनने से कान न मूंद
क्योंकि मैं तेरे संग उपरी होकर रहता हूं
और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूं ॥
१३ उस से पहिले कि मैं जाता रहूं और आगे को न रहूं
मेरी ओर से मुंह फेर कि मेरा मन हरा हो जाए ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ।

४०. मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा
और उस ने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी ॥
२ उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा
और मुझ को ढांग पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है ॥
३ और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है
बहुतेरे यह देखकर डरेंगे
और यहोवा पर भरोसा रक्खेंगे ॥
४ क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने यहोवा को अपना आधार माना हो
और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुड़नेहारों की ओर मुंह न फेरता हो ॥
५ हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू ने बहुत से काम किए हैं
जो आश्चर्य्यकर्म्म और कल्पनाएं तू हमारे लिये करता है सो बहुत सी हैं
तेरे तुल्य कोई नहीं
मैं तो चाहता हूं कि खोलकर उन की चर्चा करूं
पर उन की गिनती कुछ भी नहीं हो सकती ॥
६ मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता
तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं
होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा ॥
७ तब मैं ने कहा देख मैं आया हूं
क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है ॥
८ हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं
और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बनी है ॥
९ मैं ने बड़ी सभा में धर्म्म का शुभ समाचार प्रचारा है
देख मैं ने अपना मुंह बन्द नहीं किया
हे यहोवा तू इसे जानता है ॥
१० मैं ने तेरा धर्म्म मन ही में नहीं रक्खा
मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे किये हुए उद्धार की चर्चा की है
मैं ने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रक्खी ॥
११ हे यहोवा तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले
तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर मेरी रक्षा होती रहे ॥
१२ क्योंकि मैं अनगिनित बुराइयों से घिरा हुआ हूं
मेरे अधर्म्म के कामों ने मुझे आ पकड़ा और मैं दृष्टि नहीं कर सकता
वे गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं सो मेरे जी में जी नहीं रहा ॥
१३ हे यहोवा कृपा करके मुझे छुड़ा
हे यहोवा मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर ॥
१४ जो मेरे प्राण की खोज में हैं
उन सभों की आशा टूट जाए और उन के मुंह काले हों
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं
सो पीछे हटाये और निरादर किये जाएं ॥
१५ जो मुझ से आहा आहा कहते हैं
सो अपनी लज्जा के मारे विस्मित हों ॥
१६ जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सो सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों
जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं सो निरन्तर कहते रहें
कि यहोवा की बड़ाई हो ॥
१७ मैं तो दीन और दरिद्र हूं
तौभी प्रभु मेरी चिन्ता करता है
तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है
हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ।

४१. क्या ही धन्य है वह जो कंगाल की सुधि रखता है
विपत्ति के दिन यहोवा उस को बचाएगा ॥

२ यहोवा उस की रक्षा करके उस को जीता रक्खेगा
और वह पृथिवी पर भाग्यवान होगा
तू उस को शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़ ॥
३ जब वह व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो तब
यहोवा उसे संभालेगा
तू रोग में उस के सारे बिछौने को उलट कर
ठीक करेगा ॥
४ मैं ने कहा हे यहोवा मुझ पर अनुग्रह कर
मुझ को चंगा कर मैं ने तो तेरे विरुद्ध पाप
किया है ॥
५ मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई कहते हैं
कि वह कब मरेगा और उस का नाम कब
मिटेगा ॥
६ और जब कोई मुझे देखने आता है तब वह व्यर्थ
बातें बकता है
वह मन में अनर्थ बातें संचय करता है
और बाहर जाकर उन की चर्चा करता है ॥
७ मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं
वे मेरे ही विरुद्ध होकर मेरी हानि की कल्पना
करते हैं ॥
८ वे कहते हैं कि वह किसी ओछेपन का फल भोग रहा
होगा
और वह जो पड़ा है सो फिर न उठेगा ॥
९ मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था और
वह मेरी रोटी खाता था
उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है ॥
१० पर हे यहोवा तू मुझ पर अनुग्रह करके मुझ को
उठा
कि मैं उन को बदला दूं ॥
११ मेरा शत्रु जो मुझ पर जयजयकार करने नहीं पाता
इस से मैं ने जान लिया है कि तू मुझ से प्रसन्न है ॥
१२ और मुझे तो तू खराई में संभालता
और सदा के लिये अपने सन्मुख स्थिर करता है ॥
१३ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
सदा से सदा लों धन्य है
आमेन फिर आमेन ॥

दूसरा भाग ।

प्रधान बजानेहारे के लिये । मस्कील । कोरहवंशियों का ।

४२. जैसे हरिणी नदी के जल के लिये
हांफती है
वैसे ही हे परमेश्वर मैं तेरे लिये हांफता हूं ॥
२ जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं[1] प्यासा हूं
मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा ॥
३ मेरे आंसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं
और लोग दिन भर मुझ से कहते रहते हैं कि
तेरा परमेश्वर कहां रहा ॥
४ मैं भीड़ के संग जाया करता था
मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव
करनेहारी भीड़ के बीच परमेश्वर के भवन
को धीरे धीरे जाया करता था
यह स्मरण करके मेरा जी उदास होता है[2] ॥
५ हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता
और मेरे ऊपर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह
क्योंकि मैं उस के दर्शन से उद्धार पाकर
फिर उस का धन्यवाद करने पाऊंगा ।
६ हे मेरे परमेश्वर मेरा जीव ढया जाता है
इसलिये मैं यर्दन के पास के देश में
और हेर्मोन के पहाड़ों और मिसार की पहाड़ी
के पास रहते हुए तुझे स्मरण करता हूं ॥
७ तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर जल जल को
पुकारता है
तेरे सारे तरंगों और ढेवों में मैं डूब गया हूं ॥
८ पर दिन को यहोवा अपनी शक्ति और करुणा
प्रगट करेगा

(१) मूल में मैं अपना जीव अपने ऊपर उंडेलता हूं ।

(२) मूल में मेरा जीव ।

और रात को भी मैं उस का गीत गाऊंगा
और मेरे जीवनदाता ईश्वर से मेरी प्रार्थना होगी ॥
९ मैं ईश्वर से जो मेरी ढांग ठहरा है कहूंगा कि तू ने मुझे क्यों बिसरा दिया है
मुझे शत्रु के अंधेर के मारे क्यों शोक का पहिरावा पहिने हुए चलना पड़ता है ॥
१० मेरे सतानेहारे जो मुझे चिढ़ाते हैं उस से मेरी हड्डियां कटार से छिदी जाती हैं
क्योंकि वे दिन भर मुझ से कहते रहते हैं कि तेरा परमेश्वर कहां रहा ॥
११ हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता
और मेरे ऊपर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह क्योंकि मैं फिर उस का धन्यवाद करने पाऊंगा
जो मेरे मुख की चमक[1] और मेरा परमेश्वर है ॥

४३. हे परमेश्वर मेरा न्याय चुका और अभक्त जाति से मेरा मुकद्दमा लड़
मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा ॥
२ क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा दृढ़ गढ़ है तू ने क्यों मुझे त्याग दिया है
मुझे शत्रु के अंधेर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए क्यों चलना पड़ता है ॥
३ अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को प्रगट कर कि वे मेरी अगुवाई करें
वे मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर
तेरे निवास में पहुंचाएं ॥
४ तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा
उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का सार है
हे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर मैं वीणा बजा बजाकर तेरा धन्यवाद करूंगा ॥
५ हे मेरे जीव तू क्यों ढया जाता
और मेरे ऊपर क्यों कुढ़ता है
परमेश्वर की आशा लगाये रह क्योंकि मैं फिर उस का धन्यवाद करने पाऊंगा
जो मेरे मुख की चमक[1] और मेरा परमेश्वर है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरहवंशियों का। मस्कील।

४४. हे परमेश्वर हम ने अपने कानों से सुना हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है
कि तू ने उन के दिनों और प्राचीनकाल में क्या काम किया था ॥

(१) मूल में का उद्धार।

२ तू ने अपने हाथ से जातियों को निकाल दिया और उन को बसाया
तू ने देश देश के लोगों को दुःख दिया और उन को फैला दिया ॥
३ क्योंकि वे अपनी तलवार के बल से इस देश के अधिकारी न हुए
और न अपने बाहुबल से
पर तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हो गये
क्योंकि तू उन को चाहता था ॥
४ हे परमेश्वर तू ही हमारा राजा है
तू याकूब के उद्धार की आज्ञा दे ॥
५ तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को ढकेलकर गिरा देंगे
तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियों को रौंदेंगे ॥
६ क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रक्खूंगा
और न अपनी तलवार के बल से बचूंगा ॥
७ तू ही ने हम को द्रोहियों से बचाया
और हमारे बैरियों को निराश किया है ॥
८ हम परमेश्वर की बड़ाई दिन भर जताते हैं
और सदा लों तेरे नाम का धन्यवाद करते रहेंगे।
सेला ॥
९ पर अब तू ने हम को त्याग दिया और हमारा अनादर किया है
और हमारे दलों के साथ पयान नहीं करता ॥
१० तू हम को शत्रु के साम्हने से हटा देता है
और हमारे बैरी मनमानते लूट लेते हैं ॥
११ तू हमें कसाई की भेड़ों के समान कर देता है
और हम को अन्य जातियों में तितर बितर करता है ॥
१२ तू अपनी प्रजा को सेंतमेंत बेच डालता है
उन के मोल से तू धनी नहीं होता ॥
१३ तू हमारे पड़ोसियों से हमारी नामधराई कराता है
और हमारे चारों ओर के रहनेहारे हम से हंसी ठट्ठा करते हैं ॥
१४ तू हम को अन्यजातियों के बीच उपमा ठहराता है
और देश देश के लोग हमारे कारण सिर हिलाते हैं ॥
१५ दिन भर हमें अनादर सहना पड़ता है
और उस कलंक लगाने और निन्दा करनेहारे के बोल से

१६ जो शत्रु होकर बैर लेता है
हमारे मुंह पर लज्जा छा गई है ॥
१७ यह सब कुछ हम पर बीतने पर भी हम तुझे नहीं भूले
न तेरी वाचा के विषय विश्वासघात किया है ॥
१८ हमारा मन पीछे नहीं हटा
न हमारे पैर तेरी बाट से फिर गये हैं ॥
१९ तौभी तू ने हमें गीदड़ों के स्थान में पीस डाला
और हम पर घोर अंधकार छवा दिया है ॥
२० यदि हम अपने परमेश्वर का नाम भूल जाते
वा किसी पराये देवता की ओर अपने हाथ फैलाते
२१ तो क्या परमेश्वर इस का विचार न करता
वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है ॥
२२ पर हम दिन भर तेरे निमित्त मार डाले जाते
और कसाई की भेड़ों के समान ठहरते हैं ॥
२३ हे प्रभु उठ क्यों सोता है
जाग हम को सदा के लिये त्याग न दे ॥
२४ तू क्यों अपना मुंह फेर लेता[१]
और हमारा दुःख और दब जाना भूल जाता है ॥
२५ हमारा जीव मिट्टी से लग गया
हमारा पेट भूमि से सट गया है ॥
२६ हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा हो
और अपनी करुणा के निमित्त हम को छुड़ा ले ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । शोशन्नीम में । कोरहवंशियों का । मस्कील । प्रेम प्रीति का गीत ।

४५. मेरे मन में भली बात उबल रही है
जो बात मैं ने राजा के विषय रची है उस को सुनाता हूं
मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी बनी है ॥
२ तू मनुष्यों में सब से अति सुन्दर है
तेरे होंठों में अनुग्रह भरा हुआ है
इस कारण परमेश्वर ने तुझे सदा के लिये आशिष दी है ॥
३ हे वीर अपना विभव और प्रताप
अपनी तलवार कटि पर बांध ॥
४ और अपने प्रताप के साथ सवार होकर
सत्यता नम्रता और धर्म्म के निमित्त भाग्यवान हो
और अपने दहिने हाथ से भयानक काम करता जा[२] ॥

५ तेरे तीर तो तेज हैं
तेरे साम्हने देश देश के लोग गिरेंगे
राजा के शत्रुओं के हृदय उन से छिदेंगे ॥
६ हे परमेश्वर तेरा सिंहासन[३] सदा सर्वदा बना रहेगा
तेरा राजदण्ड न्याय का है ॥
७ तू ने धर्म्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रक्खा है
इस कारण परमेश्वर ने, तेरे परमेश्वर ने
तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है ॥
८ तेरे सारे वस्त्र गन्धरस अगर और तज से सुगन्धित हैं
तू हाथीदांत के मन्दिरों में तारवाले बाजों के कारण आनन्दित हुआ है ॥
९ तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजकुमारियां भी हैं
तेरी दहिनी ओर पटरानी ओपीर के कुन्दन से विभूषित खड़ी है ॥
१० हे राजकुमारी सुन और कान लगाकर ध्यान दे
अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा ॥
११ और राजा तेरे रूप की चाह करेगा
वह तो तेरा प्रभु है सो तू उसे दण्डवत् कर ॥
१२ सोर की राजकुमारी भी भेंट लिये हुए उपस्थित होगी
प्रजा में के धनवान लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे ॥
१३ राजकुमारी रनवास में अति शोभायमान है
उस के वस्त्र में सोनहले बूटे कढ़े हुए हैं ।
१४ वह बूटेदार वस्त्र पहिने हुए राजा के पास पहुंचाई जाएगी ॥
जो कुमारियां उस की सहेलियां हैं
सो उस के पीछे पीछे चलती हुई तेरे पास पहुंचाई जाएंगी ॥
१५ वे आनन्दित और मगन होकर पहुंचाई जाएंगी
और राजा के मन्दिर में प्रवेश करेंगी ॥
१६ तेरे पितरों के बदले तेरे पुत्र होंगे
जिन को तू सारी पृथिवी पर हाकिम ठहराएगा ॥
१७ मैं ऐसा करूंगा कि तेरे नाम की चर्चा पीढ़ी से पीढ़ी लों होती रहेगी
इस कारण देश देश के लोग सदा सर्वदा तेरा धन्यवाद करते रहेंगे ॥

---

(१) मूल में छिपाता ।
(२) मूल में तेरा दहिना हाथ तुझे भयानक काम सिखाए ।
(३) वा तेरा सिंहासन परमेश्वर का है और ।

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरहवंशियों का।
अलामोत में। गीत।

४६. परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है

संकट में सहायक जो अति सहज से मिलता है ॥
२ इस कारण हम न डरेंगे चाहे पृथिवी उलट जाए
और पहाड़ समुद्र के मध्य में डोलकर गिरें ॥
३ चाहे समुद्र गरजे और फेनाए
और पहाड़ उस के बढ़ने से कांप उठे। सेला ॥
४ एक नदी है जिस की नहरों से परमेश्वर के नगर में
परमप्रधान के पवित्र निवास में आनन्द होता है ॥
५ परमेश्वर उस नगर के बीच में है वह नहीं टलने का
पह फटते ही परमेश्वर उस की सहायता करता है ॥
६ जाति जाति के लोग गरज उठे राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे
वह बोल उठा और पृथिवी पिघल गई ॥
७ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है। सेला ॥
८ आओ यहोवा के महाकर्म्म देखो
कि उस ने पृथिवी पर कैसा उजाड़ किया है ॥
९ वह पृथिवी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है ॥
वह धनुष को तोड़ता और भाले को दो टुकड़े करता
और रथों को आग में झोंक देता है ॥
१० रह जाओ और जान लो कि परमेश्वर मैं ही हूं
मैं जातियों में महान् हूंगा
मैं पृथिवी भर में महान् हूंगा ॥
११ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है। सेला ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। कोरहवंशियों का। भजन।

४७. हे देश देश के सब लोगो तालियां बजाओ

ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो ॥
२ क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है
वह सारी पृथिवी के ऊपर महान् राजा है ॥
३ वह देश देश के लोगों को हमारे तले दबाता
और अन्य जातियों को हमारे पांवों के नीचे कर देता है ॥
४ वह हमारे लिये उत्तम भाग निकालता है
जो उस के प्रिय याकूब के घमण्ड का कारण है। सेला ॥
५ परमेश्वर जयजयकार सहित
यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है ॥
६ परमेश्वर का भजन गाओ भजन गाओ
हमारे राजा का भजन गाओ भजन गाओ ॥
७ क्योंकि परमेश्वर सारी पृथिवी का राजा है
समझ बूझकर भजन गाओ ॥
८ परमेश्वर जाति जाति पर राजा हुआ है
परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान हुआ है ॥
९ राज्य राज्य के रईस इब्राहीम के परमेश्वर की प्रजा होकर इकट्ठे हुए हैं
क्योंकि पृथिवी की ढालें परमेश्वर के वश में हैं
वह तो अति महान् हुआ है ॥

गीत। भजन। कोरहवंशियों का।

४८. हमारे परमेश्वर के नगर में और उस के पवित्र पर्वत पर

यहोवा महान् और स्तुति के अति योग्य है ॥
२ सिय्योन पर्वत ऊंचाई में सुन्दर और सारी पृथिवी के हर्ष का कारण
राजाधिराज का नगर उत्तरीय सिरे पर है ॥
३ परमेश्वर उस के महलों में ऊंचा गढ़ माना गया है ॥
४ देखो राजा लोग इकट्ठे हुए
वे एक संग आगे बढ़ गये ॥
५ उन्हों ने आप देखा और देखते ही विस्मित हुए
वे घबराकर भाग गये ॥
६ वहीं कपकपी ने उन को पकड़ा
और जननेहारी स्त्री की सी पीड़ें उन्हें उठीं ॥
७ तू पुरवाई से
तर्शीश के जहाजों को तोड़ डालता है ॥
८ सेनाओं के यहोवा के नगर में
अपने परमेश्वर के नगर में जैसा हम ने सुना था वैसा देखा भी है
परमेश्वर उस को सदा दृढ़ रक्खेगा। सेला ॥
९ हे परमेश्वर हम ने तेरे मन्दिर के भीतर
तेरी करुणा पर ध्यान किया है ॥
१० हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य

तेरी स्तुति पृथिवी की छोर लों होती है
तेरा दहिना हाथ धर्म्म से भरा है ॥
११ तेरे न्याय के कामों के कारण
सिय्योन पर्वत आनन्द करे
और यहूदा के नगर[१] मगन हों ॥
१२ सिय्योन के चारों ओर चलो और उस की परिक्रमा करो
उस के गुम्मटों को गिन लो ॥
१३ उस की शहरपनाह पर मन लगाओ उस के महलों को ध्यान से देखो
कि तुम आनेहारी पीढ़ी के लोगों से इस बात का वर्णन कर सको ॥
१४ क्योंकि यह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर रहेगा
वह मृत्यु लों हमारी अगुवाई करेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये कोरहवंशियों का भजन ।

४९. हे देश देश के सब लोगो यह सुनो
हे संसार के सब निवासियो
२ क्या बड़े क्या छोटे
क्या धनी क्या दरिद्र कान लगाओ ।
३ मेरे मुंह से बुद्धि की बातें निकलेंगी
और मेरे मन की बातें समझ की होंगी ॥
४ मैं नीतिबचन की ओर अपना कान लगाऊंगा
मैं वीणा बजाते हुए अपनी गुप्त बात खोलकर कहूंगा ।
५ विपत्ति के दिनों में जब मैं अपने अड़ंगा मारनेहारों की बुराइयों में घिरूं
तब मैं क्यों डरूं
६ जो अपनी संपत्ति पर भरोसा रखते
और अपने धन की बहुतायत पर फूलते हैं
७ उन में से कोई अपने भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता ।
न परमेश्वर को उस की सन्ती प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है ॥
८ क्योंकि उन के प्राण की छुड़ौती भारी है
यहां लों कि वह कभी न मिलेगी ॥
९ कोई ऐसा नहीं जो सदा जीता रहे
वा उस को सड़ना न पड़े ॥
१० क्योंकि देखने में आता है कि बुद्धिमान भी मरते हैं
और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी दोनों नाश होते हैं
और अपनी संपति औरों के लिये छोड़ जाते हैं ॥
११ वे मन ही मन यह सोचते हैं कि हमारे घर सदा ठहरेंगे
और हमारे निवास पीढ़ी से पीढ़ी लों बने रहेंगे
इसलिये वे अपनी अपनी भूमि का नाम अपने अपने नाम पर रखते हैं ॥
१२ पर मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी ठहरने का नहीं
वह पशुओं के समान होता है जो मर मिटते हैं ॥
१३ उन की यह चाल उन की मूर्खता है
तौभी जो उन के पीछे आते हैं सो उन की बात से प्रसन्न होते हैं । सेला ॥
१४ वे अधोलोक की मानो भेड़ बकरियां ठहराये गये हैं
मृत्यु उन की चरानेहारी ठहरी
और बिहान को सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे
और उन का रूप अधोलोकन में मिटता जाएगा
और उस का कोई आधार न रहेगा ॥
१५ परन्तु परमेश्वर मुझ को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा
वह तो मुझे रख लेगा । सेला ॥
१६ जब कोई धनी होए और उस के घर का विभव बढ़ जाए
तब तू न डरना ॥
१७ क्योंकि वह मरने के समय कुछ भी न ले जाएगा
न उस का विभव उस के साथ कबर में जाएगा ॥
१८ चाहे वह जीते जी अपने आप को धन्य गिने
(जब तू अपनी भलाई करता है तब तो लोग तेरी प्रशंसा करते हैं)
१९ तौभी वह अपने पुरखाओं के समाज में मिलाया जाएगा
जो कभी उजियाला न देखेंगे ॥
२० मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हो पर समझ न रक्खे
तो पशुओं के समान है जो मर मिटते हैं ॥

आसाप का भजन ।

५० ईश्वर परमेश्वर यहोवा ने कहा है
और उदयाचल से ले अस्ताचल लों पृथ्वी के लोगों को बुलाया है ॥

(१) मूल में बेटियां ।

२ सिय्योन से जो परम सुन्दर है
परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है ॥
३ हमारा परमेश्वर आएगा और चुप न
रहेगा
उस के आगे आगे आग [illegible] करती आएगी
और उस के चारों ओर [illegible] आंधी चलेगी ॥
४ वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये
ऊपर के आकाश को और पृथ्वी को भी पुकारेगा
५ कि मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो जिन्हों ने
बलिदान चढ़ा कर मुझ से वाचा बांधी है ॥
६ और स्वर्ग उस के धर्म्मी होने का प्रचार करेगा
परमेश्वर तो आप ही न्यायी है । सेला ॥
७ हे मेरी प्रजा सुन मैं बोलता हूं
हे इस्राएल मैं तेरे विषय साक्षी देता हूं
परमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूं ॥
८ मैं तुझ पर तेरे मेलबलियों के विषय दोष नहीं
लगाता
तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिये चढ़ते हैं ॥
९ मैं न तो तेरे घर से बैल
न तेरे पशुशालों से बकरे ले लूंगा ॥
१० क्योंकि वन के सारे जीवजन्तु
और हजारों पहाड़ों के ढोर मेरे ही हैं ॥
११ पहाड़ों के सब पंक्षियों को मैं जानता हूं
और मैदान के चलने फिरनेहारे मेरे ही हैं ॥
१२ यदि मैं भूखा होता तो तुझ से न कहता
क्योंकि जगत् और जो कुछ उस में है सो
मेरा है ॥
१३ क्या मैं बैलों का मांस खाऊं
वा बकरों का लोहू पीऊं ॥
१४ परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा
और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर
१५ और संकट के दिन मुझे पुकार
मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा करने
पाएगा ॥
१६ पर दुष्ट से परमेश्वर कहता है
तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम
तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है ॥
१७ तू तो शिक्षा से बैर करता
और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है ॥
१८ जब तू ने चोर को देखा तब उस की संगति से
प्रसन्न हुआ
और परस्त्रीगामियों के साथ भागी हुआ ।

तू ने अपना मुंह बुराई करने के लिये खोला १९
और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है ॥
तू बैठा हुआ अपने भाई के विरुद्ध बोलता २०
और अपने सगे भाई की चुगली खाता है ॥
यह काम तू ने किया और मैं चुप रहा २१
सो तू ने समझ लिया कि परमेश्वर बिलकुल मेरे
समान है
पर मैं तुझे समझाऊंगा और तेरी आंखों के
साम्हने सब कुछ अलग अलग दिखाऊंगा ॥
हे ईश्वर के बिसरानेहारो यह बात बिचारो २२
न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूं और कोई छुड़ाने-
हारा न हो ॥
धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेहारा मेरी २३
महिमा करता है
और मार्ग के सुधारनेहारे को
मैं परमेश्वर का किया हुआ उद्धार दिखाऊंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन जब नातान
नबी उस के पास इसलिये आया कि दाऊद
बतशेबा के पास गया था ।

५१. हे परमेश्वर अपनी करुणा के अनुसार
मुझ पर अनुग्रह कर
अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे ॥
मुझे भली भांति धोकर मेरा अधर्म्म दूर कर २
और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर ॥
मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं ३
और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है ॥
मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया ४
और जो तेरे लेखे बुरा है वही किया है
सो तू बोलने में धर्म्मी
और न्याय करने में निष्कलंक ठहरेगा ॥
देख मैं अधर्म्म के साथ उत्पन्न हुआ ५
और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा ॥
देख तू हृदय की सचाई से प्रसन्न होता है ६
और मेरे मन[१] में ज्ञान सिखाएगा ॥
जूफा के द्वारा मेरा पाप दूर कर और मैं शुद्ध हो ७
जाऊंगा
मुझे धो और मैं हिम से अधिक श्वेत बनूंगा ॥
मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना ८
तब जो हड्डियां तू ने तोड़ डालीं सो मगन हो
जाएंगी ॥

(१) मूल में गुप्त स्थान ।

९ अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर
और मेरे सारे अधर्म्म के कामों को मिटा ॥
१० हे परमेश्वर मेरे लिये शुद्ध मन सिरज
और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उपजा ॥
११ मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे
और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से न ले ले ॥
१२ अपने किये हुए उद्धार का हर्ष मुझे फेर दे
और उदार आत्मा देकर मुझे संभाल ॥
१३ तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग बताऊंगा,
और पापी तेरी ओर फिरेंगे ॥
१४ हे परमेश्वर हे मेरे उद्धार कर्त्ता परमेश्वर मुझे खून से छुड़ा,
मैं तेरे धर्म्म का जयजयकार करूंगा ॥
१५ हे प्रभु मेरा मुह खोल
तब मैं तेरा गुणानुवाद करूंगा
१६ तू मेलबलि से प्रसन्न नहीं होता नहीं तो मैं देता,
होमबलि को भी तू नहीं चाहता ॥
१७ टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है
हे परमेश्वर तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता ॥
१८ प्रसन्न होकर सिय्योन की भलाई कर
यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना ॥
१९ तब तू धर्म्म के बलिदानों से अर्थात् सर्वांग पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा,
तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढ़ाएंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। मस्कील। दाऊद का। जब दोएग एदोमी ने आकर शाऊल से कहा कि दाऊद अहीमेलेक के घर में गया था।

५२. हे वीर तू बुराई करने पर क्यों बड़ाई मारता है
ईश्वर की करुणा तो लगातार बनी रहती है ॥
२ तेरी जीभ दुष्टता गढ़ती है
सान धरे हुए छुरे की नाईं वह छल का काम करती है ॥
३ तू भलाई से बढ़कर बुराई में
और धर्म्म की बात से बढ़कर झूठ में प्रीति रखता है। सेला ॥
४ हे छली जीभवाले
तू सब विनाश करनेवाले वचनों में प्रीति रखता है ॥
५ निश्चय ईश्वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा
वह तुझ को पकड़कर तेरे डेरे से निकाल देगा
और जीवन के लोक से भी उखाड़ डालेगा। सेला ॥
६ तब धर्म्मी लोग देखकर डरेंगे
और यह कहकर उस पर हंसेंगे कि
७ देखो यह वही पुरुष है जिस ने परमेश्वर को अपना आधार नहीं माना
पर अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था
और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता था ॥
८ पर मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे जलपाई के वृक्ष के समान हूं
मैं ने परमेश्वर की करुणा पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा रक्खा है ॥
९ मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूंगा इसलिये कि तू ने काम किया है
और तेरे भक्तों के साम्हने तेरे नाम की बाट जोहूंगा
क्योंकि वह उत्तम है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। महलत में। दाऊद का मस्कील।

५३. मूढ़ ने अपने मन में कहा है कि परमेश्वर है ही नहीं
वे बिगड़ गये वे कुटिलता के घिनौने काम करते हैं
सुकर्म्मी कोई नहीं ॥
२ परमेश्वर ने स्वर्ग से मनुष्यों को निहारा है
कि देखे कोई बुद्धि से चलता
वा परमेश्वर को पूछता है कि नहीं ॥
३ वे सब के सब हट गये सब एक साथ बिगड़ गये
कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं ॥
४ क्या अनर्थकारी कुछ ज्ञान नहीं रखते
वे मेरे लोगों को रोटी जानकर खा जाते हैं
और परमेश्वर का नाम नहीं लेते ॥
५ वहां वे भयभीत हुए जहां कुछ भय का कारण न था
क्योंकि जो तुझ छावनी करके घेरते थे उन की हड्डियों को उस ने छितरा दिया है
परमेश्वर ने जो उन्हें निकम्मा ठहराया है इस लिये तू ने उन की आशा तोड़ी है ॥
६ भला हो कि इस्राएल का पूरा उद्धार सिय्योन से निकले
जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बंधुआई से लौटा ले आएगा
तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का मस्कील तारवाले बाजों के साथ । जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता ।

५४. हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर
और अपने पराक्रम से मेरा न्याय चुका ॥
२ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन
मेरे मुंह के वचनों की ओर कान लगा ॥
३ क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे
और बलात्कारी मेरे प्राण के गाहक हुए हैं ।
वे परमेश्वर को अपने साम्हने नहीं जानते । सेला ॥
४ देखो परमेश्वर मेरा सहायक है
प्रभु मेरे संभालनेहारों में का है ॥
५ वह मेरे द्रोहियों की बुराई उन्हीं पर लौटा देगा।
हे परमेश्वर अपनी सच्चाई के कारण उन्हें विनाश कर ॥
६ मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊंगा
हे यहोवा मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा क्योंकि वह उत्तम है ॥
७ क्योंकि उस ने मुझे सारे कष्ट से छुड़ाया है
और मैं अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट हुआ हूं ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । तारवाले बाजों के साथ । दाऊद का मस्कील ।

५५. हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा,
और मेरी गिड़गिड़ाहट से दूर न रह[१] ॥
२ मेरी ओर ध्यान देकर मेरी सुन ले
मैं चिन्ता के मारे छटपटाता और विकल रहता हूं ॥
३ क्योंकि शत्रु कोलाहल और दुष्ट उपद्रव करते हैं
कि वे मुझ से अनर्थ काम करते
और कोप करके मुझे सताते हैं ॥
४ मेरा मन संकट में है
और मृत्यु का भय मुझ में समाया है ॥
५ भय और कपकपी ने मुझे पकड़ा
और मेरे रोंए खड़े हो गये हैं ॥
६ और मैं ने कहा यदि मेरे कबूतर के से पंख होते
तो मैं उड़ जाता और ठिकाना पाता ॥
७ देखो मैं दूर उड़ते उड़ते
जंगल में बसेरा लेता । सेला ॥
८ मैं प्रचण्ड बयार और आंधी से भाग कर शरण लेता ॥
९ हे प्रभु उन को सत्यानाश कर और उन की भाषा में गड़बड़ डाल
क्योंकि मैं ने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है ॥
१० रात दिन वे उस की शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर घूमते हैं
और उस के भीतर अनर्थ काम और उत्पात होता है ॥
११ उस के भीतर दुष्टता हो रही है
और अंधेर और छल उस के चौक से दूर नहीं होते ॥
१२ जो मेरी नामधराई करता है सो शत्रु नहीं है
नहीं तो मैं सह सकता
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है सो मेरा बैरी नहीं है
नहीं तो मैं उस से छिप जाता ॥
१३ पर तू ही जो मेरी बराबरी का मनुष्य
मेरा परममित्र और मेरी जान पहचान का था ॥
१४ हम दोनों आपस में कैसी मीठी मीठी बात करते थे
हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे ॥
१५ वे उजड़ जाएं,
वे जीते जी अधोलोक में जाएं,
क्योंकि उन के घर और मन दोनों में बुराइयां होती हैं ॥
१६ मैं तो परमेश्वर को पुकारूंगा
और यहोवा मेरा उद्धार करेगा ॥
१७ सांझ को भोर को दोपहर को तीनों बेला मैं ध्यान करूंगा और कहरूंगा
और वह मेरी सुनेगा ॥
१८ जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उस से उस ने मुझे कुशल के साथ बचा लिया है
उन्हों ने तो बहुतों को संग लेकर मेरा साम्हना किया था ॥
१९ ईश्वर सुनकर उन को उत्तर देगा
वह तो आदि से विराजमान है । सेला ॥
उन की दशा कभी बदलती नहीं

(१) मूल में छिप न जा ।

और वे परमेश्वर का भय नहीं मानते ॥
२० उस ने अपने मेल रखनेहारों पर भी हाथ छोड़ा
उस ने अपनी वाचा को तोड़ दिया है ॥
२१ उस के मुंह की बातें तो मक्खन सी चिकनी थीं
पर उस के मन का विचार लड़ाई का था
उस के वचन तेल से नरम तो थे
पर नंगी तलवार से थे ॥
२२ जो भार यहोवा ने तुझ पर रक्खा है सो उसी पर डाल दे और वह तुझे संभालेगा
वह धर्मी को कभी टलने न देगा ॥
२३ पर हे परमेश्वर तू उन लोगों को विनाश के गड़हे में गिरा देगा ॥
हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी आयु लों जीते न रहेंगे
सो मैं तुझ पर भरोसा रक्खे रहूंगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिए। योनतेलेम्रहोकीम[१] में। दाऊद का मिक्ताम। जब पलिश्तियों ने उस को गत नगर में पकड़ा था।

५६. हे परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि मनुष्य मुझे निगलना चाहते हैं

वे लगातार लड़ते हुए मुझ पर अंधेर करते हैं ॥
२ मेरे द्रोही लगातार मुझे निगलने को चाहते हैं
बहुत से लोग अभिमान करके मुझ से लड़ते हैं ॥
३ जिस समय मैं डरूं
उसी समय मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा ॥
४ परमेश्वर की सहायता से मैं उस के वचन की प्रशंसा करूंगा
परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा
कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है ॥
५ वे लोग लगातार मेरे वचनों का उलटा अर्थ लगाते हैं
उन की सारी कल्पनाएं मेरी ही हानि करने की होती हैं ॥
६ वे इकट्ठे होते और छिपकर बैठते हैं
वे आप मेरा पीछा करते हैं
और मेरे प्राण की घात में ताक लगाये हुए बैठे रहते हैं ॥
७ क्या वे अनर्थ काम करने पर बचेंगे
हे परमेश्वर अपने कोप से देश देश के लोगों को गिरा दे ॥
८ मेरे मारे मारे फिरने का वृत्तान्त तू ने लिख रक्खा है
तू मेरे आंसुओं को अपनी कुप्पी में रख
क्या उन की चर्चा[२] तेरी पुस्तक में नहीं है ॥
९ जिस समय मैं पुकारूं उसी समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे
यह मैं जानता हूं कि परमेश्वर मेरी ओर है ॥
१० परमेश्वर की सहायता से मैं उस के वचन की प्रशंसा करूंगा,
यहोवा की सहायता से मैं उस के वचन की प्रशंसा करूंगा ॥
११ मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ॥
१२ हे परमेश्वर तेरी मन्नतों का भार मुझ पर बना है
सो मैं तुझ को धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा ॥
१३ क्योंकि तू ने मुझ को मृत्यु से बचाया है
क्या तू मेरे पैरों को भी फिसलने से न बचाएगा
कि मैं जीवनदायक उंजियाले में अपने को ईश्वर के साम्हने जानकर चलूं फिरूं ॥

प्रधान बजानेहारे के लिए। अलतशहेत[२] में दाऊद का। मिक्ताम। जब वह शाऊल से भागकर गुफा में छिप गया था।

५७. हे परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर मुझ पर अनुग्रह कर

क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं
और जब लों ये बलाएं निकल न जाएं
तब लों मैं तेरे पंखों के तले शरण लिये रहूंगा ॥
२ मैं परम प्रधान परमेश्वर को पुकारूंगा
उस ईश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है ॥
३ ईश्वर स्वर्ग से भेज कर मुझे बचा लेगा
जब मेरा निगलनेहारा निन्दा कर रहा हो। सेला ॥
तब परमेश्वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट करेगा ॥
४ मेरा प्राण सिंहों के बीच है
मुझे जलते हुओं के बीच लेटना पड़ता है
ऐसे मनुष्यों के बीच जिन के दांत बर्छी और तीर हैं
और जिन की जीभ तेज तलवार है ॥
५ हे परमेश्वर स्वर्ग के ऊपर ऊंचा हो
तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर हो ॥
६ उन्हों ने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया
मेरा जीव ढपा हुआ है

(१) अर्थात् दूरदेशियों की मौनी कबूतरी।

(२) अर्थात् नाश न कर।

उन्हों ने मेरे लिये गड़हा खोदा
और आपही उस में गिर पड़े हैं। सेला॥
७ हे परमेश्वर मेरा मन स्थिर है मेरा मन स्थिर है
मैं गा गाकर भजन करूंगा॥
८ हे मेरे आत्मा[१] जाग हे सारंगी और वीणा जागो,
मैं भी पह फटते जाग उठूंगा॥
९ हे प्रभु मैं देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूंगा
मैं राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊंगा॥
१० क्योंकि तेरी करुणा इतनी बड़ी है कि स्वर्ग लों पहुंचती
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है॥
११ हे परमेश्वर स्वर्ग के ऊपर ऊंचा हो
तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर हो॥

प्रधान बजानेहारे के लिए। अलतशहेत[२] में। दाऊद का। मिक्ताम।

५८. हे मनुष्यों धर्म्म की बात तो बोलनी चाहिये क्या तुम सचमुच चुप रहते
क्या तुम सीधाई से न्याय करते हो॥
२ नहीं तुम कुटिल काम मन से करते हो
तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो[३]॥
३ दुष्ट लोग जन्मते ही विराने हो जाते
वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं॥
४ उन में सर्प का सा विष है
वे उस नाग के समान हैं जो सुनना नहीं चाहता
५ और सपेरे कैसी ही निपुणता से क्यों न बाजीगरी करें
तौभी उस की नहीं सुनता॥
६ हे परमेश्वर उन के मुंह में से दांतों को तोड़
हे यहोवा उन जवान सिंहों की दाढ़ों को उखाड़ डाल॥
७ वे गलकर जल सरीखे हों जो बहकर चला जाता है
जब वे अपने तीर चढ़ाएं तब तीर मानो दो टुकड़े हो जाएं॥
८ वे घोंघे के समान हों जो गलकर जाता रहता है
और स्त्री के गिरे हुए गर्भ सरीखे होकर उजियाले को कभी न देखें॥
९ उस से पहिले कि तुम्हारी हांडियों में कांटों की आंच लगे
वह जले बिन जले दोनों को आंधी की नाईं उड़ा ले जाएगा॥
१० धर्म्मी ऐसा पलटा देखकर आनन्दित होगा
वह अपने पांव दुष्ट के लोहू में धोएगा॥
११ और मनुष्य कहने लगेंगे निश्चय धर्म्मी के लिये फल तो है
निश्चय परमेश्वर तो है जो पृथिवी पर न्याय करता है॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। अलतशहेत[४] दाऊद का। मिक्ताम। जब शाऊल के भेजे हुए लोगों ने घर का पहरा दिया कि उस को मार डालें।

५९. हे मेरे परमेश्वर मुझ को शत्रुओं से बचा
मुझे ऊंचे स्थान पर रखकर मेरे विरोधियों से बचा॥
२ मुझ को अनर्थकारियों से बचा
और हत्यारों से मेरा उद्धार कर॥
३ क्योंकि देख वे मेरी घात में लगे हैं
बलवन्त लोग मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं।
हे यहोवा यह बिना मेरे किसी अपराध वा पाप के होता है॥
४ मेरे दोष के बिना वे दौड़कर लड़ने को तैयार हो जाते हैं
मुझ से मिलने के लिये जाग उठ और यह देख॥
५ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
हे इस्राएल के परमेश्वर सब अन्यजातिवालों को दण्ड देने के लिये जाग
किसी विश्वासघाती अनर्थकारी पर अनुग्रह न कर। सेला॥
६ वे लोग सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राते हैं
और नगर के चारों ओर घूमते हैं॥
७ देख वे डकारते हैं
उन के मुंह में तलवारें हैं
वे कहते हैं कि कौन सुनता है॥

(१) मूल में है मेरी महिमा।
(२) अर्थात् नाश न कर।
(३) मूल में तुम अपने हाथों का उपद्रव देश में तौल देते हो।
(४) अर्थात् नाश न कर।

८ पर हे यहोवा तू उन पर हंसेगा
तू सब अन्यजातिवालों को ठट्ठों में उड़ाएगा ॥
९ उस के बल के कारण मैं तेरी ओर ताकता रहूंगा
क्योंकि परमेश्वर मेरा ऊंचा गढ़ है ॥
१० परमेश्वर करुणा करता हुआ मुझ से मिलेगा
परमेश्वर मेरे द्रोहियों के विषय मेरी इच्छा पूरी कर देगा[१] ॥
११ उन्हें घात न कर न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए
हे प्रभु हे हमारी ढाल
अपनी शक्ति से उन्हें तितर बितर कर उन्हें दबा दे ॥
१२ अपने मुंह के बचनों के
और स्राप देने और झूठ बोलने के कारण
वे अभिमान में फंसे हुए पकड़े जाएं ॥
१३ जलजलाहट में आकर उन का अन्त कर उन का अन्त कर दे कि वे आगे को न रहें
तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर
बरन पृथिवी की छोर लों प्रभुता करता है। सेला ॥
१४ चाहे वे सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राएं
और नगर के चारों ओर घूमें
१५ और टुकड़े के लिये मारे मारे फिरें
और तृप्त न होने पर रात भर वहीं ठहरे रहें
१६ पर मैं तेरे सामर्थ्य का यश गाऊंगा
और भोर को तेरी करुणा का जयजयकार करूंगा
क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़
और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है ॥
१७ हे मेरे बल मैं तेरा भजन गाऊंगा
क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा गढ़ और मेरा करुणामय परमेश्वर है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का। मिक्ताम। शूशनेदूत[२] में। शिक्षादायक। जब वह अरम्नहरैम और अरमसोबा से लड़ता था और योआब ने लौट कर लोन की तराई में एदोमियों में से बारह हजार पुरुष मार लिये।

६०. हे परमेश्वर तू ने हम को त्याग दिया
और हम को तोड़ डाला है
तू कोपित तो हुआ फिर हम को ज्यों के त्यों कर दे ॥
२ तू ने भूमि को कंपाया और फाड़ डाला है
उस के दरारों को भर दे[३] क्योंकि वह डगमगा रही है ॥
३ तू ने अपनी प्रजा को कठिन दुःख भुगताया
तू ने हमें लड़खड़ी का दाखमधु पिलाया है ॥
४ तू ने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है
कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए। सेला ॥
५ इसलिये कि तेरे प्रिय छुड़ाये जाएं
तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमारी सुन ले ॥
६ परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है मैं प्रफुल्लित हूंगा
मैं शकेम को बांट लूंगा और सुक्कोत की तराई को नपवाऊंगा
७ गिलाद मेरा है मनश्शे भी मेरा है
और एप्रैम मेरे सिर का टोप
यहूदा मेरा राजदण्ड है ॥
८ मोआब मेरे धोने का पात्र है
मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूंगा
हे पलिश्त मेरे ही कारण जयजयकार कर ॥
९ मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुंचाएगा
एदोम लों मेरी अगुवाई किस ने की है ॥
१० हे परमेश्वर क्या तू ने हम को त्याग नहीं दिया
और हे परमेश्वर तू हमारी सेना के साथ पयान नहीं करता ॥
११ द्रोही के विरुद्ध हमारी सहायता कर
क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा व्यर्थ होता है ॥
१२ परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएंगे
हमारे द्रोहियों को वही रौंदेगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। तारवाले बाजे के साथ। दाऊद का।

६१. हे परमेश्वर मेरा चिल्लाना सुन
मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे ॥
२ मूर्छा खाते समय मैं पृथिवी की छोर से भी तुझे पुकारूंगा
जो चटान मेरे लिये ऊंची है उस पर मुझ को ले चल ॥
३ क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है
और शत्रु से बचने के लिये दृढ़ गुम्मट है ॥
४ मैं तेरे तंबू में युग युग रहूंगा

(१) मूल में मेरे द्रोहियों को मुझे दिखाएगा।
(२) अर्थात् साक्षी के सोसन।
(३) मूल में चंगा कर।

मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिये रहूंगा।
सेला॥
५ क्योंकि हे परमेश्वर तू ने मेरी मन्नतें सुनीं
जो तेरे नाम के डरवैये हैं उन का सा भाग तू ने मुझे दिया है॥
६ तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा
उस के बरस पीढ़ी पीढ़ी के बराबर होंगे॥
७ वह परमेश्वर के सन्मुख सदा बना रहेगा
तू अपनी करुणा और सच्चाई को उस की रक्षा के लिये ठहरा रख॥
८ और मैं सदा लों तेरे नाम का भजन गा गाकर
अपनी मन्नतें दिन दिन पूरी किया करूंगा॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का भजन।
यदूतून को।

६२.

सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाये हूं
मेरा उद्धार उसी से होता है॥
२ सचमुच वही मेरी चटान और मेरा उद्धार है
वह मेरा गढ़ है मैं बहुत न डिगूंगा॥
३ तुम कब लों एक पुरुष पर धावा करते रहोगे
कि सब मिलकर उस का घात करो।
वह तो झुकी हुई भीत वा गिरते हुए बाड़े के समान है॥
४ सचमुच वे उस को उस के ऊंचे पद से गिराने की सम्मति करते हैं
वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं
मुंह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं। सेला॥
५ हे मेरे मन परमेश्वर के साम्हने चुपचाप रह
क्योंकि मेरी आशा उसी से है॥
६ सचमुच वही मेरी चटान और मेरा उद्धार है
वह मेरा गढ़ है सो मैं न डिगूंगा॥
७ मेरे उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्वर है
मेरी दृढ़ चटान और मेरा शरणस्थान परमेश्वर है॥
८ हे लोगो हर समय उस पर भरोसा रक्खो
उस से[1] अपने अपने मन की बातें खोलकर कहो[2]
परमेश्वर हमारा शरणस्थान है। सेला॥
९ सचमुच छोटे लोग तो सांस और बड़े लोग मिथ्या ही हैं
तौल में वे हलके निकलते हैं
वे सब के सब सांस से भी हलके हैं॥
१० अंधेर करने पर भरोसा मत रक्खो
और लूट पाट करने पर मत फूलो
चाहे धन संपत्ति बढ़े तौभी उस पर मन न लगाना॥
११ परमेश्वर ने एक बार कहा है
दो बार मैं ने यह सुना है
कि सामर्थ्य परमेश्वर का है॥
१२ और हे प्रभु करुणा भी तेरी है
क्योंकि तू एक एक जन को उस के काम के अनुसार फल देता॥

दाऊद का भजन। जब वह यहूदा के जंगल में था।

६३.

हे परमेश्वर तू मेरा ईश्वर है मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा
सूखी और जल बिना ऊसर[3] भूमि पर
मेरा मन तेरा प्यासा है मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है॥
२ इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ को ताका था
कि तेरा सामर्थ्य और महिमा निहारूं॥
३ इस लिये कि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है
मैं तेरी प्रशंसा करूंगा॥
४ सो मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूंगा
और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊंगा॥
५ मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा
और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूंगा॥
६ जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा
तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा॥
७ क्योंकि तू मेरा सहायक बना है
सो मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूंगा॥
८ मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता है
और मुझे तो तू अपने दहिने हाथ से थांभ रखता है॥
९ पर वे जो मेरे प्राण के खोजी हैं
सो पृथिवी के नीचे स्थानों में जा पड़ेंगे॥
१० वे तलवार से मारे जाएंगे
और गीदड़ों का आहार हो जाएंगे॥
११ पर राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा

(१) मूल में उस के साम्हने। (२) मूल में उण्डेल दो।
(३) मूल में थकी।

जो कोई ईश्वर की किरिया खाए सो बड़ाई करने पाएगा
पर झूठ बोलनेहारों का मुंह बन्द किया जाएगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ।

६४. हे परमेश्वर जब मैं तेरी दोहाई दूं तब मेरी सुन
शत्रु के उपजाये हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर ॥
२ कुकर्म्मियों की गोष्ठी से
और अनर्थकारियों के हुल्लड़ से मेरी आड़ हो ॥
३ उन्हों ने अपनी जीभ को तलवार की नाईं तेज किया
और अपने कड़वे वचनों के तीरों को चढ़ाया है
४ कि छिपकर खरे मनुष्य को मारें
वे निडर होकर उस को अचानक मारते भी हैं ॥
५ वे बुरे काम करने को हियाव बांधते हैं
वे फंदे लगाने के विषय बातचीत करते हैं
और कहते हैं कि हम को कौन देखेगा ॥
६ वे कुटिलता की युक्तियां निकालते
और कहते हैं कि हम ने पक्की युक्ति खोजकर निकाली है
एक एक का मन और हृदय अथाह है ॥
७ परन्तु परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा
वे अचानक घायल हो जाएंगे ॥
८ वे अपने ही वचनों के कारण ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे
जितने उन पर दृष्टि करेंगे सो सब अपने अपने सिर हिलाएंगे ॥
९ और सारे मनुष्य भय खाएंगे
और परमेश्वर के कर्म्म का बखान करेंगे
और उस के काम पर ध्यान करेंगे ॥
१० धर्म्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उस का शरणागत होगा
और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन । गीत ।

६५. हे परमेश्वर सिय्योन में तेरे साम्हने चुपचाप रहना ही स्तुति है
और तेरे लिये मन्नतें पूरी की जाएंगी ॥
२ हे प्रार्थना के सुननेहारे
सारे प्राणी तेरे ही पास आएंगे ॥
३ अधर्म्म के काम मुझ पर प्रबल हुए हैं
हमारे अपराधों को तू ढांप देगा ॥
४ क्या ही धन्य है वह जिस को तू चुनकर अपने समीप ले आए
कि वह तेरे आंगनों में वास करे
हम तेरे भवन के अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे ॥
५ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर
हे पृथिवी के सब दूर दूर देशों के
और दूर के समुद्र पर के रहनेहारों के आधार
तू धर्म्म से किये हुए भयानक कामों के द्वारा हमारा मुंह मांगा देगा ॥
६ तू पराक्रम का फेंटा कसे हुए
अपने सामर्थ्य से पर्वतों को स्थिर करता है ॥
७ तू समुद्र का महाशब्द उस की तरङ्गों का महाशब्द
और देश देश के लोगों का कोलाहल शान्त करता है ॥
८ सो दूर दूर देशों के रहनेहारे तेरे चिन्ह देखकर डर गये हैं
तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों से जयजयकार कराता है ॥
९ तू भूमि की सुधि लेकर उस को सींचता है
तू उस को बहुत फलदायक करता है
परमेश्वर की नहर जल से भरी रहती है
तू पृथिवी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है ॥
१० तू रेघारियों को भली भांति सींचता
और उन के बीच बीच की मिट्टी को बैठाता है
तू भूमि को मेंह से नरम करता
और उस की उपज पर आशिष देता है ॥
११ अपनी भलाई से भरे हुए बरस पर तू ने मानो मुकुट धर दिया है
तेरी लीकों में उत्तम उत्तम पदार्थ पाये जाते हैं[१] ॥
१२ वे जंगल की चराइयों में पाये जाते हैं
और पहाड़ियां हर्ष का फेंटा बांधे हुए हैं ॥
१३ चराइयां भेड़ बकरियों से भरी हुई
और तराइयां अन्न से ढंपी हुई हैं
वे जयजयकार करतीं और गाती भी हैं ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । गीत । भजन ।

६६. हे सारी पृथिवी के लोगो परमेश्वर के लिये जयजयकार करो ॥
२ उस के नाम की महिमा का भजन गाओ
उस की स्तुति करते हुए उस की महिमा करो ॥

(१) मूल में चिकनाई टपकती है ।

३ परमेश्वर से कहो कि तेरे काम क्या ही भयानक हैं
तेरे महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे ॥
४ सारी पृथिवी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे
और तेरा भजन गाएंगे
वे तेरे नाम का भजन गाएंगे । सेला ॥
५ आओ परमेश्वर के कामों को देखो
वह अपने कार्य्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख पड़ता है ॥
६ उस ने समुद्र को सूखी भूमि कर डाला
वे महानद में से पांव पांव उतरे
वहां हम उस के कारण आनन्दित हों ॥
७ वह अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता करता है
और अपनी आंखों से जाति जाति को ताकता है
हठीले अपने सिर न उठाएं । सेला ॥
८ हे देश देश के लोगो हमारे परमेश्वर को धन्य कहो
और उस की स्तुति की धुनि सुनाओ ।
९ वही है जो हम को जीते रखता है
और हमारे पांव को टलने नहीं देता ॥
१० क्योंकि हे परमेश्वर तू ने हम को जांचा
तू ने हमें चांदी की नाईं ताया था ॥
११ तू ने हम को जाल में फंसाया
और हमारी कटि पर भारी बोझ बांधा था ॥
१२ तू ने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया
हम आग और जल से होकर गये तो थे
पर तू ने हम को उबार के सुख से भर दिया है ॥
१३ मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आऊंगा
मैं उन मन्नतों को तेरे लिये पूरी करूंगा
१४ जो मैं ने मुंह[1] खोलकर मानीं
और संकट के समय कही थीं ॥
१५ मैं तुझे मोटे पशुओं के होमबलि
मेढ़ों की चर्बी के धूप समेत चढ़ाऊंगा
मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊंगा । सेला ॥
१६ हे परमेश्वर के सब डरवैयो आकर सुनो
मैं वर्णन करूंगा कि उस ने मेरे लिये क्या क्या किया है ॥
१७ मैं ने उसी को पुकारा
और उस का गुणानुवाद मुझ से हुआ ॥
१८ यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता
तो प्रभु मेरी न सुनता ॥
१९ परन्तु परमेश्वर ने सुना तो है
उस ने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है ॥
२० धन्य है परमेश्वर
जिस ने न तो मेरी प्रार्थना सुनी अनसुनी की
न मुझ से अपनी करुणा दूर कर दी है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । तारवाले बाजों के साथ । भजन । गीत ।

६७. परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हम को आशिष दे

वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए[2] । सेला ॥
२ जिस से तेरी गति पृथिवी पर
और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जाए ॥
३ हे परमेश्वर देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें ॥
४ राज्य राज्य के लोग आनन्द करें और जयजयकार करें
क्योंकि तू देश देश के लोगों का न्याय धर्म्म से करेगा
और पृथिवी के राज्य राज्य के लोगों की अगुवाई करेगा ॥ सेला ॥
५ हे परमेश्वर देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें ॥
६ भूमि ने अपनी उपज दी है
परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है सो हमें आशिष देगा ॥
७ परमेश्वर हम को आशिष देगा
और पृथिवी के दूर दूर देशों के सारे लोग उस का भय मानेंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का भजन ।

६८. परमेश्वर उठे उस के शत्रु तित्तर बित्तर हों

और उस के बैरी उस के साम्हने से भाग जाएं ॥
२ जैसा धूंआं उड़ जाता है तैसे ही तू उन को उड़ा दे
जैसा मोम आग की आंच से गल जाता है
वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर के दर्श से नाश हों ॥
३ पर धर्म्मी आनन्दित हों वे परमेश्वर के साम्हने प्रफुल्लित हों

(१) मूल में होंठ ।

(२) मूल में हमारे साथ अपना मुख चमकाए ।

वे आनन्द में मगन हों ॥
४ परमेश्वर का गीत गाओ उस के नाम का भजन गाओ
जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है उस के लिये सड़क बनाओ
उस का नाम याह है सो तुम उस के साम्हने प्रफुल्लित हो ॥
५ परमेश्वर अपने पवित्र धाम में
अपमूओं का पिता और विधवाओं का न्यायी है ॥
६ परमेश्वर अनाथों का घर बसाता
और बंधुओं को छुड़ाकर भाग्यवान करता है
पर हठीलों को सूखी भूमि पर रहना पड़ता है ॥
७ हे परमेश्वर जब तू अपनी प्रजा के आगे आगे पयान करता था
जब तू निर्जल भूमि में सेना समेत चलता था । सेला ॥
८ तब पृथिवी कांप उठी
और आकाश परमेश्वर के साम्हने टपकने लगा
उधर सीनै पर्वत परमेश्वर के इस्राएल के परमेश्वर के साम्हने कांप उठा ॥
९ हे परमेश्वर तू ने बहुत से बरदान बरसाये[१]
तेरा निज भाग तो बहुत सूखा था पर तू ने उस को हरा भरा[२] किया है ॥
१० तेरा झुण्ड इस में बसने लगा
हे परमेश्वर तू ने अपनी भलाई से दीन जन के लिये तैयारी की है ॥
११ प्रभु आज्ञा देता है
तब शुभ समाचार सुनानेहारियों की बड़ी सेना हो जाती है ॥
१२ अपनी अपनी सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं
और गृहस्थिन लूट को बांट लेती हैं ॥
१३ क्या तुम भेड़शालों के बीच लेट जाओगे
और ऐसी कबूतरी के सरीखे होगे जिस के पंख चांदी से
और उस के पर पीले सोने से मढ़े हुए हों ॥
१४ जब सर्वशक्तिमान ने उस में राजाओं को तितर बितर किया
तब मानो सल्मोन पर्वत पर हिम पड़ा ॥
१५ बाशान का पहाड़ परमेश्वर का पहाड़ तो है
बाशान का पहाड़ बहुत शिखरवाला पहाड़ तो है ॥
१६ पर हे शिखरवाले पहाड़ो तुम क्यों उस पर्वत को घूरते हो
जिसे परमेश्वर ने अपने वास के लिये चाहा है
वहां यहोवा सदा वास किये ही रहेगा ॥
१७ परमेश्वर के रथ हजारों बरन हजारों हजार हैं
प्रभु उन के बीच है
सीनै पवित्रस्थान में है ॥
१८ तू ऊंचे पर चढ़ा तू लोगों के बन्धुआई में ले गया
तू ने मनुष्यों के बरन हठीले मनुष्यों के बीच भी भेंटें लीं
जिस से याह परमेश्वर उन में वास करे ॥
१९ धन्य है प्रभु जो दिन दिन हमारा बोझ उठाता है
वही हमारा उद्धारकर्त्ता ईश्वर है । सेला ॥
२० वही हमारे लिये बचानेहारा ईश्वर ठहरा
यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है[३] ॥
२१ निश्चय परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर
और जो अधर्म्म के मार्ग पर चलता रहता है
उस के बाल भरे चोण्डे पर मार मार के उसे चूर करेगा ॥
२२ प्रभु ने कहा है कि मैं उन्हें बाशान से निकाल लाऊंगा मैं उनको गहिरे सागर के तल से भी फेर ले आऊंगा
२३ कि तू अपने पांव को लोहू में डुबोए
और तेरे शत्रु तेरे कुत्तों का भाग ठहरें ॥
२४ हे परमेश्वर तेरी गति देखी गई
मेरे ईश्वर मेरे राजा की गति पवित्रस्थान में दिखाई दी है
२५ गानेहारे आगे आगे तारवाले बाजों के बजानेहारे पीछे पीछे गये
चारों ओर कुमारियां डफ बजाती थीं ॥
२६ सभाओं में परमेश्वर का
हे इस्राएल के सोते से निकले हुए लोगो प्रभु का धन्यवाद करो ।
२७ वहां उन का प्रभु छोटा बिन्यामीन है
वहां यहूदा के हाकिम अपने अनुचरों समेत हैं
वहां जबूलून और नताली के भी हाकिम हैं ॥
२८ तेरे परमेश्वर ने आज्ञा दी कि तुझे सामर्थ्य मिले
हे परमेश्वर जो कुछ तू ने हमारे लिये किया है उसे दृढ़ कर ॥

(१) मूल में स्वेच्छादानों की वृष्टि हिलाई ।
(२) मूल में स्थिर ।
(३) मूल में यहोवा प्रभु के पास मृत्यु से निकास है ।

२९ यरूशलेम के ऊपरवाले तेरे मन्दिर के कारण
राजा तेरे लिये भेंट ले आएंगे ॥

३० नरकटों में रहनेहारे झुण्ड को
सांड़ों के झुण्ड को और देश देश के बछड़ों को घुड़क
वे चांदी के टुकड़े लिये हुए प्रणाम करेंगे
जो लोग युद्ध से प्रसन्न रहते हैं उन को उस ने
तित्तर बित्तर किया है ॥

३१ मिस्र से रईस आएंगे
कूशी अपने हाथों को परमेश्वर की ओर फुर्ती से
फैलाएंगे ॥

३२ हे पृथिवी पर के राज्य राज्य के लोगो परमेश्वर का
गीत गाओ
प्रभु का भजन गाओ। सेला॥

३३ जो सब से ऊंचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर
चलता है
वह अपनी वाणी सुनाता है वह गंभीर वाणी है ॥

३४ परमेश्वर के सामर्थ्य की स्तुति करो
उस का प्रताप इस्राएल पर छाया हुआ है
और उस का सामर्थ्य आकाशमण्डल में है ॥

३५ हे परमेश्वर तू अपने पवित्रस्थानों में भययोग्य है
इस्राएल का ईश्वर ही अपनी प्रजा को सामर्थ्य
और शक्ति देनेहारा है
परमेश्वर धन्य है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। शोशन्नीम[१] में। दाऊद का।

६९. हे

परमेश्वर मेरा उद्धार कर मैं जल में डूबा चाहता हूं ॥

२ मैं बड़े दलदल में धसा जाता हूं और मेरे पैर
कहीं नहीं रुकते
मैं गहिरे जल में आ गया और धारा में डूबा
जाता हूं ॥

३ मैं पुकारते पुकारते थक गया मेरा गला सूख गया है
अपने परमेश्वर की बाट जोहते जोहते मेरी आंखें
रह गई हैं ॥

४ जो अकारण मेरे बैरी हैं सो गिनती में मेरे सिर
के बालों से अधिक हैं
मेरे विनाश करनेहारे जो अनर्थ से मेरे शत्रु हैं
सो सामर्थी हैं।
सो जो मैं ने लूट न लिया था वह भी मुझ को
देना पड़ा ॥

५ हे परमेश्वर तू तो मेरी मूढ़ता को जानता है

(१) अर्थात् पुष्पविशेष।

और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं ॥

६ हे प्रभु हे सेनाओं के यहोवा जो तेरी बाट जोहते
हैं उन की आशा मेरे कारण न टूटे
हे इस्राएल के परमेश्वर जो तुझे ढूंढ़ते हैं उन का
मुंह मेरे कारण काला न हो ॥

७ तेरे ही कारण मेरी निन्दा हुई है
और मेरा मुंह लज्जा से ढंपा है ॥

८ मैं अपने भाइयों के लेखे बिराना हुआ
और अपने सगे भाइयों की दृष्टि में उपरी ठहरा हूं ॥

९ क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते जलते
भस्म हुआ
और जो निन्दा वे तेरी करते हैं वही निन्दा मुझ
को सहनी पड़ी है ॥

१० जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था
तब उस से भी मेरी नामधराई ही हुई ॥

११ और जब मैं टाट का वस्त्र पहिने था
तब मेरा दृष्टान्त उन में चलता था ॥

१२ फाटक के पास बैठनेहारे मेरे विषय बातचीत
करते हैं
और मदिरा पीनेहारे मुझ पर लगता हुआ गीत
गाते हैं ॥

१३ पर हे यहोवा मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता
के समय में हो रही है
हे परमेश्वर अपनी करुणा की बहुतायत से
और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा के अनुसार[२]
मेरी सुन ले ॥

१४ मुझ को दलदल में से उबार कि मैं धस न जाऊं
मैं अपने बैरियों से और गहिरे जल में से बच
जाऊं ॥

१५ मैं धारा में डूब न जाऊं
और न मैं गहिरे जल में डूब मरूं ॥
और कूएं का मुंह मेरे ऊपर बन्द न हो।

१६ हे यहोवा मेरी सुन ले क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है
अपनी दया की बहुतायत के अनुसार मेरी ओर
फिर ॥

१७ और अपने दास से अपना मुंह फेरे हुए न रह
क्योंकि मैं संकट में हूं सो फुर्ती से मेरी सुन ले ॥

१८ मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले
मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे ॥

१९ मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर को तू
जानता है

(२) मूल में अपने उद्धार की सच्चाई से।

मेरे सब द्रोही तेरे साम्हने हैं ॥
२० मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया और
मेरा रोग असाध्य है
और मैं ने किसी तरस खानेहारे की आशा तो
की पर किसी को न पाया
और शान्ति देनेहारे ढूंढ़ता तो रहा पर कोई न
मिला ॥
२१ और लोगों ने मेरे खाने के लिये विष दिया
और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका
पिलाया ॥
२२ उन का भोजन[१] बाझुर
और उन के सुख के समय फन्दा बने ॥
२३ उन की आंखों पर अंधेरा छा जाए कि वे देख
न सकें
और तू उन की कटि को निरन्तर कंपाता रह ॥
२४ उन के ऊपर अपना रोष भड़का
और तेरे कोप की आंच उन को लगे ॥
२५ उन की छावनी उजड़ जाए
उन के डेरों में कोई न रहे ॥
२६ क्योंकि जिस को तू ने मारा वे उस के पीछे पड़े हैं
और जिन को तू ने घायल किया वे उन की पीड़ा
की चर्चा करते हैं ॥
२७ उन के अधर्म्म पर अधर्म्म बढ़ा
और वे तेरे धर्म्म को प्राप्त न करें ॥
२८ उन का नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए
और धर्म्मियों के संग लिखा न जाए ॥
२९ पर मैं तो दुःखी और पीड़ित हूं
सो हे परमेश्वर तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊंचे
स्थान पर बैठा ॥
३० मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूंगा
और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूंगा ॥
३१ यह यहोवा को बैल से अधिक
बरन सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक
भाएगा ॥
३२ नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे
हे परमेश्वर के खोजियो तुम्हारा मन हरा हो जाए ॥
३३ क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता
और अपने लोगों को जो बंधुए हैं तुच्छ नहीं
जानता ॥
३४ स्वर्ग और पृथिवी

(१) मूल में उन की मेज।

और सारा समुद्र अपने सब जीव जन्तुओं समेत
उस की स्तुति करें ॥
३५ क्योंकि परमेश्वर सिय्योन का उद्धार करेगा और
यहूदा के नगरों को बसाएगा
और लोग फिर वहां बसकर उस के अधिकारी
हो जाएंगे ॥
३६ उस के दासों का वंश उस को अपने भाग में
पाएगा
और उस के नाम के प्रेमी उस में वास करेंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। दाऊद का स्मरण
कराने के लिये।

७०.

हे परमेश्वर मुझे छुड़ाने के लिये
हे यहोवा मेरी सहायता करने को
फुर्ती कर ॥
२ जो मेरे प्राण के खोजी हैं
उन की आशा टूटे और मुंह काला हो जाए
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं
सो पीछे हटाए और निरादर किये जाएं ॥
३ जो कहते हैं आहा आहा
सो अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएं ॥
४ जितने तुझे ढूंढ़ते हैं सो सब तेरे कारण हर्षित
और आनन्दित हों
और जो तेरा उद्धार चाहते हैं सो निरन्तर कहते रहें
कि परमेश्वर की बड़ाई हो ॥
५ मैं तो दीन और दरिद्र हूं
हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर
तू मेरा सहायक और छुड़ानेहारा है
हे यहोवा बिलंब न कर ॥

७१.

हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं
मेरी आशा कभी टूटने न पाए ॥
२ तू जो धर्म्मी है सो मुझे छुड़ा और उबार
मेरी ओर कान लगा और मेरा उद्धार कर ॥
३ मेरे लिये ऐसा चटानवाला धाम बन जिस
में मैं नित्य जा सकूं
तू ने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है
क्योंकि तू मेरी ढांग और मेरा गढ़ ठहरा है ॥
४ हे मेरे परमेश्वर दुष्ट के
और कुटिल और क्रूर मनुष्य के हाथ से मेरी
रक्षा कर ॥
५ क्योंकि हे प्रभु यहोवा मैं तेरी ही बाट जोहता
आया हूं ॥

बचपन से मेरा आधार तू है ॥
६ मैं गर्भ से निकलते ही तुझ से संभाला गया
मुझे मा की कोख से तू ही ने निकाला
सो मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूंगा ॥
७ मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हूं
पर तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है ॥
८ मेरे मुंह से तेरे गुणानुवाद
और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे ॥
९ बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर
जब मेरा बल घटे तब मुझ को छोड़ न दे ॥
१० क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें करते हैं
और जो मेरे प्राण की ताक में हैं
सो आपस में यह सम्मति करते हैं कि
११ परमेश्वर ने उस को छोड़ दिया है
उस का पीछा करके उसे पकड़ लो क्योंकि उस का कोई छुड़ानेहारा नहीं ॥
१२ हे परमेश्वर मुझ से दूर न रह
हे मेरे परमेश्वर मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर ॥
१३ जो मेरे प्राण के विरोधी हैं उन की आशा टूटे और उन का अन्त हो जाए
जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं सो नामधराई और अनादर में गड़ जाएं ॥
१४ मैं तो निरन्तर आशा लगाये रहूंगा
और तेरी स्तुति अधिक अधिक करता जाऊंगा ॥
१५ मैं अपने मुंह से तेरे धर्म्म का
और तेरे किये हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता तो रहूंगा
पर उन का पूरा ब्यौरा जाना भी नहीं जाता ॥
१६ मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊंगा
मैं केवल तेरे ही धर्म्म की चर्चा किया करूंगा ॥
१७ हे परमेश्वर तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है
और अब लों मैं तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का प्रचार करता आया हूं ॥
१८ सो हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊं
और मेरे बाल पक जाएं तब भी मुझे न छोड़
तब लों मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों को तेरा बाहुबल
और सब उत्पन्न होनेहारों को तेरा पराक्रम सुनाता रहूंगा ॥
१९ और हे परमेश्वर तेरा धर्म्म अति महान है
और तू जिस ने महाकार्य्य किये हैं
हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है ।
२० तू ने तो हम से बहुत और कठिन कष्ट भुगताये तो हैं
पर अब फिरके हम को जिलाएगा
और पृथिवी के गहिरे गड़हे में से उबार लेगा ।
२१ तू मेरी बड़ाई को बढ़ाएगा
और फिरके मुझे शान्ति देगा ॥
२२ हे मेरे परमेश्वर
मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाऊंगा
हे इस्राएल के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊंगा ॥
२३ जब मैं तेरा भजन गाऊंगा तब अपने मुंह से
और अपने जीव से भी जो तू ने बचा लिया है जयजयकार करूंगा ॥
२४ और मैं तेरे धर्म्म की चर्चा दिन भर करता रहूंगा
क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे उन की आशा टूट गई और मुंह काले हो गये हैं ॥

सुलैमान का

७२.

हे परमेश्वर राजा को अपना नियम बता
राजपुत्र को अपना धर्म्म सिखा ॥
२ वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म्म से
और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक ठीक चुकाएगा ॥
३ पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये
धर्म्म के द्वारा शान्ति मिला करेगी ॥
४ वह प्रजा में के दीन लोगों का न्याय करेगा
और दरिद्र लोगों को बचाएगा
और अन्धेर करनेहारे को चूर करेगा ॥
५ जब लों सूर्य्य और चन्द्रमा बने रहेंगे
तब लों लोग पीढ़ी पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे ॥
६ वह घास की खूंटी पर बरसनेहारे मेंह
और भूमि सींचनेहारी झड़ियों के समान होगा ॥
७ उस के दिनों में धर्म्मी फूले फलेंगे
और जब लों चन्द्रमा बना रहेगा तब लों शान्ति बहुत रहेगी ॥
८ और वह समुद्र से समुद्र लों
और महानद से पृथिवी की छोर लों प्रभुता करेगा ॥
९ उस के साम्हने जंगल के रहनेहारे घुटने टेकेंगे
और उसके शत्रु माटी चाटेंगे ॥
१० तर्शीश और द्वीप द्वीप के राजा भेंट ले आएंगे

शबा और सबा दोनों के राजा द्रव्य पहुंचाएंगे ॥
११ सारे राजा उस को दण्डवत् करेंगे
जाति जाति के लोग उस के अधीन हो जाएंगे ॥
१२ क्योंकि वह दोहाई देनेहारे दरिद्र को
और दुःखी और असहाय मनुष्य को उबारेगा ॥
१३ वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा
और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा ॥
१४ वह उन के प्राणों को अंधेर और उपद्रव से
छुड़ा लेगा
और उन का लोहू उस की दृष्टि में अनमोल
ठहरेगा ॥
१५ वह तो जीता रहेगा और शबा के सोने में से उस
को दिया जाएगा
लोग उस के लिये नित्य प्रार्थना करेंगे
और दिन भर उस को धन्य कहते रहेंगे ॥
१६ देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत सा अन्न होगा
जिस की बालें लबानोन के देवदारुओं की नाईं
झूमेंगी
और नगर के लोग घास की नाईं लहलहाएंगे ॥
१७ उस का नाम सदा बना रहेगा
जब लों सूर्य बना रहेगा तब लों उस का नाम
नित्य नया होता रहेगा
और लोग अपने को उस के कारण धन्य गिनेंगे
सारी जातियां उस को भाग्यवान कहेंगी ॥
१८ धन्य है यहोवा परमेश्वर जो इस्राएल का
परमेश्वर है
आश्चर्य्य कर्म्म केवल वही करता है ॥
१९ और उस का महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा
और सारी पृथिवी उस की महिमा से परिपूर्ण होगी।
आमेन फिर आमेन ॥

२० यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं ॥

तीसरा भाग।

आसाप का भजन।

७३. सचमुच इस्राएल के अर्थात् शुद्ध मनवालों के लिये
परमेश्वर भला है ॥
२ मेरे पांव तो टला चाहते थे
मेरे पैर फिसल जाने ही पर थे ॥
३ क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था
तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था ॥
४ क्योंकि उन को मृत्युकारक बाधाएं नहीं होतीं
उन का बल अटूट रहता है ॥
५ उन को दूसरे मनुष्यों की नाईं कष्ट नहीं होता
और और मनुष्यों के समान उन पर विपत्ति
नहीं पड़ती ॥
६ इस कारण अहंकार उन के गले का हार बना
उन का ओढ़ना उपद्रव है ॥
७ उन की आंखें चर्बी में से झलकती हैं
उन के मन की भावनाएं उमण्डती हैं ॥
८ वे ठट्ठा मारते और दुष्टता से अंधेर की बात
बोलते हैं
वे डींग मारते हैं[१] ॥
९ वे मानो स्वर्ग में बैठे हुए बोलते हैं[१]
और वे पृथिवी में बोलते फिरते हैं[२] ॥
१० तौभी उस की प्रजा इधर लौट आएगी
और उन को भरे हुए प्याले का जल मिलेगा ॥
११ फिर वे कहते हैं कि ईश्वर कैसे जानता है
क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है ॥
१२ देखो ये तो दुष्ट लोग हैं
तौभी सदा सुभागी रहकर धन संपत्ति बटोरते
रहते हैं ॥
१३ निश्चय मैं ने जो अपने हृदय को शुद्ध किया
और अपने हाथों को निर्दोषता में धोया है सो
सब व्यर्थ है ॥
१४ क्योंकि मैं लगातार मार खाता आया हूं
और भोर भोर को मेरी ताड़ना होती आई है ॥
१५ यदि मैं ऐसा ही कहना ठानता
तो मैं तेरे लड़कों के समाज को धोखा
खिलाता ॥

(१) मूल में वे ऊंचे पर से बोलते हैं।
(२) मूल में उन की जीभ पृथिवी में चलती।

१६ इस बात के समझने के लिये सोचते सोचते
यह मेरी दृष्टि में तब लों अति कठिन ठहरी
१७ जब लों मैं ने ईश्वर के पवित्रस्थान में जाकर
उन लोगों के परिणाम को न विचारा ॥
१८ निश्चय तू उन्हें फिसलहे स्थानों में रखता
और गिराकर सत्यानाश कर देता है ॥
१९ अहा वे क्षण भर में कैसे उजड़ गये हैं
वे मिट गये वे घबराते घबराते नाश हो गये हैं ॥
२० जैसे जागनेहारा स्वप्न को तुच्छ जानता है
वैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा तब उन को छाया सा
समझकर तुच्छ जानेगा ॥
२१ मेरा मन तो चिड़चिड़ा हो गया
मेरा अन्तःकरण छिद गया था ॥
२२ मैं तो पशु सरीखा था और समझता न था
मैं तेरे संग रहकर भी पशु बन गया था ॥
२३ तौभी मैं निरन्तर तेरे संग ही था
तू ने मेरे दहिने हाथ को पकड़ रक्खा ॥
२४ तू सम्मति देता हुआ मेरी अगुवाई करेगा
और पीछे मेरी महिमा करके मुझ को अपने
पास रक्खेगा ॥
२५ स्वर्ग में मेरा और कौन है ?
तेरे संग रहते हुए मैं पृथिवी पर भी कुछ नहीं
चाहता ॥
२६ मेरे तन और मन दोनों तो हार गये हैं
परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और
मेरे मन की चटान बना है ॥
२७ जो तुझ से दूर रहते हैं वे तो नाश होंगे
जो कोई तेरे विरुद्ध व्यभिचार करता है उस को
तू विनाश करता है ॥
२८ परन्तु परमेश्वर के समीप रहना यही मेरे लिये
भला है
मैं ने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है
जिस से तेरे सब कामों का वर्णन करूं ॥

आसाप का मस्कील ।

७४. हे परमेश्वर तू ने हमें क्यों सदा के
लिये छोड़ दिया है
तेरी कोपाग्नि का धूआं तेरी चराई की भेड़ों
के विरुद्ध क्यों उठ रहा है ॥
२ अपनी मण्डली को जिसे तू ने प्राचीनकाल
में मोल लिया था
और अपने निज भाग का गोत्र होने के लिये
छुड़ा लिया था
और इस सिय्योन पर्वत को भी जिस पर तू ने
वास किया था स्मरण कर ॥
३ सदा के उजाड़ों की ओर पधार
शत्रु ने तो पवित्रस्थान में सब कुछ बिगाड़
दिया है ॥
४ तेरे द्रोही तेरे सभास्थान के बीच गरजे
उन्हों ने अपनी ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया ॥
५ वे ऐसे देख पड़े
कि मानो घने बन के पेड़ों पर कुल्हाड़े उठा
रहे हैं ॥
६ और अब वे उस भवन की नक्काशी को
कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से एक दम तोड़
डालते हैं ॥
७ उन्हों ने तेरे पवित्रस्थान को आग में झोंक दिया
और तेरे नाम के निवास को गिराकर अशुद्ध कर
डाला है ॥
८ उन्हों ने मन में कहा है कि हम इन को एक दम
दबा दें
उन्हों ने इस देश में ईश्वर के सब सभास्थानों
को फूंक दिया है ॥
९ हम को अपने संकेत नहीं देख पड़ते
अब कोई नबी नहीं रहा
न हमारे बीच कोई जानता है कि कब लों ॥
१० हे परमेश्वर द्रोही कब लों नामधराई करता रहेगा ?
क्या शत्रु तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा ॥
११ तू अपना दाहना हाथ क्यों रोके रहता है
उसे अपनी छाती पर से उठाकर उन का अन्त
कर दे ॥
१२ परमेश्वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है
वह पृथिवी पर उद्धार के काम करता आया है ॥
१३ तू ने तो अपनी शक्ति से समुद्र को दो भाग
किया
तू ने तो जल में मगर मच्छों के सिरों को फोड़
दिया ॥
१४ तू ने तो लिब्यातानों के सिर टुकड़े टुकड़े करके
जंगली जन्तुओं को खिला दिये ॥
१५ तू ने तो सोता खोलकर जल की धारा बहाई
तू ने तो बारहमासी नदियों को सुखा डाला ॥
१६ दिन तेरा है रात भी तेरी है,
सूर्य्य और चंद्रमा को तू ने स्थिर किया है ॥
१७ तू ने तो पृथिवी के सब सिवानों को ठहराया
धूपकाल और जाड़ा दोनों तू ने ठहराये हैं ॥

१८ हे यहोवा स्मरण कर कि शत्रु ने नामधराई की है
और मूढ़ लोगों ने तेरे नाम की निन्दा की है ॥
१९ अपनी पिण्डुकी के प्राण को बनपशु के वश में न कर दे,
अपने दीन जनों को सदा के लिये न बिसरा ॥
२० अपनी वाचा की सुधि ले
क्योंकि देश के अंधेरे स्थान अंधेर के घरों से भरपूर हैं ॥
२१ पिसे हुए जन को निरादर होकर लौटना न पड़े
दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की स्तुति करने पाएं ॥
२२ हे परमेश्वर उठ अपना मुकद्दमा आप ही लड़
तेरी जो नामधराई मूढ़ से दिन भर होती रहती है सो स्मरण कर ॥
२३ अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल
तेरे विरोधियों का कोलाहल तो निरन्तर उठता रहता है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । अलतशहेत[१] ।
आसाप का भजन । गीत ।

७५.

हे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद करते हम तेरा धन्यवाद करते हैं क्योंकि तेरा नाम प्रगट[२] हुआ है
तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन हो रहा है ॥
२ जब ठीक समय आएगा
तब मैं आप ही ठीक ठीक न्याय करूंगा ॥
३ पृथिवी अपने सब रहनेहारों समेत गल रही है
मैं उस के खंभों को थांभे हूं । सेला ॥
४ मैं ने घमंडियों से कहा कि घमण्ड मत करो
और दुष्टों से कि सींग ऊंचा मत करो ॥
५ अपना सींग बहुत ऊंचा मत करो
न सिर उठाकर[३] ढिठाई की बात बोलो ॥
६ क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पच्छिम से
और न जंगल की ओर से आती है ॥
७ परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है
वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है ॥
८ यहोवा के हाथ में एक कटोरा है जिस में का दाखमधु फेना रहा है
उस में मसाला मिला है और वह उस में से उंडेलता है
निश्चय उस की तलछट तक पृथिवी के सब दुष्ट लोग पी जाएंगे[४] ॥
९ पर मैं तो सदा प्रचार करता रहूंगा
मैं याकूब के परमेश्वर का भजन गाऊंगा ॥
१० और दुष्टों के सब सींगों को मैं काट डालूंगा
पर धर्म्मी के सींग ऊंचे किये जाएंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये तारवाले बाजों के साथ ।
आसाप का भजन । गीत ।

७६.

परमेश्वर यहूदा में जाना गया है उस का नाम इस्राएल में महान हुआ है ॥
२ और उस का मण्डप शालेम में
और उस का धाम सिय्योन में है ॥
३ वहां उस ने चमचमाते तीरों को
और ढाल और तलवार तोड़कर निदान लड़ाई ही को तोड़ डाला है । सेला ॥
४ हे परमेश्वर तू तो ज्योतिमय है
तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक महान है ॥
५ दृढ़ मनवाले लुट गये और भारी नींद में पड़े हैं
और शूरवीरों में से किसी का हाथ न चला[५] ॥
६ हे याकूब के परमेश्वर तेरी घुड़की से
रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े ॥
७ केवल तू ही भययोग्य है
और जब तू कोप करने लगे तब तेरे साम्हने कौन खड़ा रह सकेगा ॥
८ तू ने स्वर्ग से निर्णय का वचन सुनाया
पृथिवी उस समय सुनकर डर गई और चुप रही
९ जब परमेश्वर न्याय करने को
और पृथिवी के सब नम्र लोगों का उद्धार करने को उठा । सेला ॥
१० निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी
और जो जलजलाहट रह जाए उस को तू रोकेगा ॥
११ अपने परमेश्वर यहोवा की मन्नत मानो और पूरी भी करो
वह जो भय के योग्य है सो उस के आस पास के सब रहनेहारे भेंट ले आएं ॥
१२ वह तो प्रधानों का अभिमान[६] मिटा देगा
वह पृथिवी के राजाओं को भययोग्य जान पड़ता है ॥

---

(१) अर्थात् नाश न कर । (२) मूल में निकट ।
(३) मूल में न गर्दन से ।
(४) मूल में निचोड़ निचोड़कर पीएंगे ।
(५) मूल में मिला । (६) मूल में आत्मा ।

प्रधान बजानेहारे के लिये। यदूतून को।
आसाप का। भजन।

७७. मैं परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाकर दूंगा

मैं परमेश्वर की दोहाई दूंगा और वह मेरी ओर कान लगाएगा ॥

२ संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा
रात को मेरा हाथ फैला रहा और ढीला न हुआ
मुझ को शान्ति आई ही नहीं ॥

३ मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके कहरता हूं
मैं चिन्ता करते करते मूर्छित हो चला हूं। सेला॥

४ तू मुझे झपकी लगाने नहीं देता
मैं ऐसा घबराया हूं कि मेरे मुंह से बात नहीं निकलती ॥

५ मैं ने प्राचीनकाल के दिनों को
और युग युग के बरसों को सोचा है ॥

६ मैं रात के समय अपने गीत को स्मरण करता
और मन में ध्यान करता
और जो मैं भली भांति विचार करता हूं ॥

७ क्या प्रभु युग युग के लिये छोड़ देगा
और फिर कभी प्रसन्न न होगा ॥

८ क्या उस की करुणा सदा के लिये जाती रही?
क्या उस का वचन पीढ़ी पीढ़ी के लिये निष्फल हो गया है ॥

९ क्या ईश्वर अनुग्रह करने को भूल गया
क्या उस ने कोप करके अपनी सारी दया को रोक रक्खा है। सेला॥

१० मैं ने कहा यह तो मेरी दुर्बलता ही है
परन्तु परमप्रधान के दहिने हाथ के बरसों को विचारता हूं ॥

११ मैं याह के बड़े कामों की चर्चा करूंगा
निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत कामों को स्मरण करूंगा ॥

१२ मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा
और तेरे बड़े कामों को सोचूंगा ॥

१३ हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है
कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है ॥

१४ अद्भुत काम करनेहारा ईश्वर तू ही है
तू ने देश देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट की है ॥

१५ तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा
याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया। सेला॥

१६ हे परमेश्वर जल ने तुझे देखा
जल को तुझे देखने से पीड़ें उठीं
गहिरा सागर भी व्याकुल हुआ ॥

१७ मेघों से बड़ी वर्षा हुई
आकाश से शब्द हुआ
फिर तेरे तीर इधर उधर चले ॥

१८ बवण्डर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा
जगत बिजली से प्रकाशित हुआ
पृथिवी कांपी और हिल गई ॥

१९ तेरा मार्ग समुद्र में
और तेरा रास्ता गहिरे जल में हुआ
और तेरे पांवों के चिन्ह देख न पड़े ॥

२० तू ने मूसा और हारून के द्वारा
अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की सी की ॥

आसाप का मस्कील।

७८. हे मेरी प्रजा मेरी शिक्षा सुन

मेरे वचनों की ओर कान लगा ॥

२ मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा
मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा ॥

३ जिन बातों को हम ने सुना और जान लिया
और हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है

४ उन्हें हम उन की सन्तान से गुप्त न रक्खेंगे
पर होनहार पीढ़ी के लोगों से
यहोवा का गुणानुवाद और उस के सामर्थ्य और आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करेंगे ॥

५ उस ने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई
और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई
उन के विषय उस ने हमारे पितरों को आज्ञा दी
कि तुम इन्हें अपने अपने लड़केबालों को बताना

६ इस लिये कि आनेहारी पीढ़ी के लोग अर्थात् जो लड़केबाले उत्पन्न होनेहारे हैं सो इन्हें जानें
और अपने अपने लड़केबालों से इन का बखान करने में उद्यत हों

७ जिस से वे परमेश्वर का आसरा करें
और ईश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएं
और उस की आज्ञाओं का पालन रहें

८ और अपने पितरों के समान न हों
क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले और दंगइत थे
और उन्हों ने अपना मन दृढ़ न किया था
और न उन का आत्मा ईश्वर की ओर सच्चा रहा ॥

९ एप्रैमियों ने तो शस्त्रधारी और धनुर्धारी होने पर भी
युद्ध के समय पीठ फेरी ॥
१० उन्हों ने परमेश्वर की वाचा पूरी न की
और उस की व्यवस्था पर चलने को नकारा
११ और उस के बड़े कामों को और जो आश्चर्य-कर्म्म उस ने उन के साम्हने किये थे
उन को बिसरा दिया ॥
१२ उस ने तो उन के बापदादों के सन्मुख
मिस्र देश के सोअन के मैदान में अद्भुत कर्म्म किये थे ॥
१३ उस ने समुद्र को दो भाग करके उन्हें पार कर दिया
और जल को ढेर की नाईं खड़ा कर दिया ॥
१४ और उस ने दिन को तो बादल के
और रात भर अग्नि के प्रकाश के द्वारा उन की अगुवाई की ॥
१५ वह जंगल में चटानें फाड़ फाड़कर
उन को मानो गहिरे जलाशयों से मनमानते पिलाता था ॥
१६ उस ने ढांग से भी धाराएं निकालीं
और नदियों का सा जल बहाया ॥
१७ तौ भी वे फिर उस के विरुद्ध अधिक पाप करते गये
और निर्जल देश में परमप्रधान के विरुद्ध उठते रहे ॥
१८ और अपनी चाह के अनुसार[१] भोजन मांगकर
मन ही मन ईश्वर की परीक्षा की ॥
१९ और वे परमेश्वर के विरुद्ध बोले
और कहने लगे क्या ईश्वर जङ्गल में मेज लगा सकता ॥
२० उस ने चटान पर मारके जल बहा तो दिया
और धाराएं उमण्ड चलीं
पर क्या वह रोटी भी दे सकता
क्या वह अपनी प्रजा के लिये मांस भी तैयार कर सकता ॥
२१ सो यहोवा सुन कर रोष से भर गया
तब याकूब के बीच आग लगी
और इस्राएल के विरुद्ध कोप भड़का ॥
२२ इसलिये कि उन्हों ने परमेश्वर पर विश्वास न रक्खा
न उस की उद्धार करने की शक्ति पर भरोसा किया ॥
२३ तौ भी उस ने आकाश को आज्ञा दी
और स्वर्ग के द्वारों को खोला ॥
२४ और उन के लिये खाने को मान बरसाया
और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया ॥
२५ उन को शूरवीरों की सी रोटी मिली
उस ने उन को मनमानते भोजन दिया ॥
२६ उस ने आकाश में पुरवाई को चलाया
और अपनी शक्ति से दक्खिनहिया बहाई ॥
२७ और उन के लिये मांस धूलि की नाईं बहुत बरसाया
और समुद्र की बालू के समान अनगिनित पंछी भेजे
२८ और उन की छावनी के बीच
उन के निवासों के चारों ओर गिराये ॥
२९ सो वे खाकर अति तृप्त हुए
और उस ने उन की कामना पूरी की ॥
३० उन की कामना बनी ही रही[२]
उन का भोजन उन के मुंह ही में था
३१ कि परमेश्वर का कोप उन पर भड़का
और उस ने उन के हृष्टपुष्टों को घात किया
और इस्राएल के जवानों को गिरा दिया ॥
३२ इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गये
और परमेश्वर के आश्चर्यकर्म्मों की प्रतीति न की ॥
३३ सो उस ने उन के दिनों को व्यर्थ श्रम में
और उन के बरसों को घबराहट में कटवाया ॥
३४ जब जब वह उन्हें घात करने लगता तब तब वे उस को पूछते थे
और फिरके ईश्वर को यत्न से खोजते थे ॥
३५ और उन को स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चटान है
और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ानेहारा है ॥
३६ तौभी उन्हों ने उस से चापलूसी की
और वे उस से झूठ बोले ॥
३७ क्योंकि उन का हृदय उस की ओर दृढ़ न था
न वे उस की वाचा के विषय सच्चे थे ॥
३८ पर वह जो दयालु है सो अधर्म्म को ढांपता और नाश नहीं करता
वह बार बार अपने कोप को ठण्डा करता

(१) मूल में जीव ।

(२) मूल में वे अपनी तृष्णा से बिराने न हुए थे ।

और अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़-
कने नहीं देता ॥

३९ सो उस को स्मरण हुआ कि ये नाशमान[1] हैं
ये वायु के समान हैं जो चली जाती और लौट
नहीं आती ॥

४० उन्हों ने कितनी ही बार जङ्गल में उस से
बलवा किया।
और निर्जल देश में उस को उदास किया ॥

४१ वे फिरके ईश्वर की परीक्षा करते
और इस्राएल के पवित्र को खेदित करते थे ॥

४२ उन्हों ने न तो उस का भुजबल स्मरण किया
न वह दिन जब उस ने उन को द्रोही के वश से
छुड़ाया था

४३ कि उस ने क्योंकर अपने चिन्ह मिस्र में
और अपने चमत्कार सोअन के मैदान में
किये थे ॥

४४ उस ने तो मिस्रियों[2] की नहरों को लोहू
बना डाला
और वे अपनी नदियों का जल पी न सके ॥

४५ उस ने उन के बीच डांस भेजे जिन्हों ने उन्हें
काट खाया ॥
और मेंढक भी भेजे जिन्हों ने उन का बिगाड़
किया ॥

४६ और उस ने उन की भूमि की उपज कीड़ों को
और उन की खेतीबारी टिड्डियों को खिला दी थी ॥

४७ उस ने उन की दाखलताओं को ओलों से
और उन की गूलरों को बड़े बड़े पत्थर बरसाकर
नाश किया ॥

४८ उस ने उन के पशुओं को ओलों से
और उन के ढोरों को बिजलियों से मिटा दिया ॥

४९ उस ने उन के ऊपर अपना प्रचण्ड कोप क्रोध
और रोष भड़काया
और उन्हें संकट में डाला
और दुखदाई दूतों का दल भेजा ॥

५० उस ने अपने कोप का मार्ग खोला[3]
और उन के प्राणों को मृत्यु से न बचाया
पर उन को मरी के वश कर दिया

५१ और मिस्र में के सब पहिलौठों को मारा
जो हाम के डेरों में पौरुष के पहिले फल थे

५२ पर अपनी प्रजा को भेड़ बकरियों की नाईं पयान
कराया
और जङ्गल में उन की अगुवाई पशुओं के झुण्ड
की सी की ॥

५३ सो वे तो उस के चलाने से बेखटके चले और
उन को कुछ भय न हुआ
पर उन के शत्रु समुद्र में डूब गये ॥

५४ और उस ने उन को अपने पवित्र देश के
सिवाने लों
इसी पहाड़ी देश में पहुंचाया जो उस ने अपने
दहिने हाथ से प्राप्त किया था ॥

५५ और उस ने उन के साम्हने से अन्यजातियों को
भगा दिया
और उन की भूमि को डोरी से माप मापकर
बांट दिया
और इस्राएल के गोत्रों को उन के डेरों में बसाया ॥

५६ परन्तु उन्हों ने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा की
और उस से बलवा किया
और उस की चितौनियों को न माना

५७ और मुड़कर अपने पुरखाओं की नाईं विश्वासघात
किया
उन्हों ने निकम्मे[4] धनुष की नाईं धोखा दिया[5],

५८ और उन्हों ने ऊंचे स्थान बनाकर उस को रिस
दिलाई
और खुदी हुई मूर्तियों के द्वारा उस के जलन
उपजाई ॥

५९ परमेश्वर सुनकर रोष से भर गया
और इस्राएल को बिलकुल तज दिया ॥

६० और शीलो में के निवास
अर्थात् उस तम्बू को जो उस ने मनुष्यों के बीच
खड़ा किया था त्याग दिया ॥

६१ और अपने सामर्थ को बंधुआई में जाने दिया
और अपनी शोभा को द्रोही के वश कर दिया

६२ और अपनी प्रजा को तलवार से मरवा दिया
और अपने निज भाग के लोगों पर रोष से भर गया ॥

६३ उन के जवान आग से भस्म हुए
और उन की कुमारियों के विवाह के गीत न
गाये गये ॥

६४ उन के याजक तलवार से मारे गये
और उन की विधवाएं रोने न पाईं ॥

(१) मूल में मांस ।
(२) मूल में उन ।
(३) मूल में समथर किया ।
(४) मूल में धोखा देनेहारे । (५) मूल में मुड़ गये ।

६५ तब प्रभु नींद से चौंक उठा
और ऐसे वीर के समान उठा जो दाखमधु पीकर ललकारता हो ॥
६६ और उस ने अपने द्रोहियों को मारके पीछे हटा दिया
और उन की सदा की नामधराई कराई ॥
६७ फिर उस ने यूसुफ के तंबू को तज दिया
और एप्रैम के गोत्र को न चुना
६८ पर यहूदा ही के गोत्र को
और अपने प्रिय सिय्योन पर्वत को चुन लिया ॥
६९ और अपने पवित्रस्थान को बहुत ऊंचा बना दिया
और पृथिवी के समान स्थिर बनाया जिस की नेव उस ने सदा के लिये डाली है ॥
७० फिर उस ने अपने दास दाऊद को चुनकर
भेड़शालाओं में से ले लिया ॥
७१ वह उस को बच्चेवाली भेड़ों के पीछे पीछे फिरने से ले आया
कि वह उस की प्रजा याकूब की
अर्थात् उस के निज भाग इस्राएल की चरवाही करे
७२ सो उस ने खरे मन से उन की चरवाही की
और अपने हाथ की कुशलता से उन की अगुवाई की ॥

आसाप का भजन।

७९. हे परमेश्वर अन्यजातियां तेरे निज भाग में घुस आई
उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया
और यरूशलेम को डीह ही डीह कर दिया है ॥
२ उन्हों ने तेरे दासों की लोथों को आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया
और तेरे भक्तों का मांस बनैले पशुओं को खिला दिया है ॥
३ उन्हों ने उन का लोहू यरूशलेम के चारों ओर जल की नाईं बहाया
और उन को मिट्टी देनेहारा कोई न रहा ॥
४ पड़ोसियों के बीच हमारी नामधराई हुई
चारों ओर के रहनेहारे हम पर हंसते और ठट्ठा करते हैं ॥
५ हे यहोवा तू कब लों लगातार कोप करता रहेगा
तुझ में आग की सी जलन कब लों भड़कती रहेगी ॥
६ जो जातियां तुझ को नहीं जानतीं
और जिन राज्यों के लोग तुझ से प्रार्थना नहीं करते
उन्हीं पर अपनी सारी जलजलाहट भड़का[१] ॥
७ क्योंकि उन्हों ने याकूब को निगल लिया
और उस के वासस्थान को उजाड़ दिया है ॥
८ हमारी हानि के लिये हमारे पुरखाओं के अधर्म्म के कामों को स्मरण न कर ॥
तेरी दया हम पर शीघ्र हो
क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं ॥
९ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर अपने नाम की महिमा के निमित्त हमारी सहायता कर
और अपने नाम के निमित्त हम को छुड़ाकर हमारे पापों को ढांप दे ॥
१० अन्यजातियां क्यों कहने पाएं कि उन का परमेश्वर कहां रहा
अपने दासों के खून का पलटा लेना
अन्यजातियों के बीच हमारे देखते मालूम हो जाए ॥
११ बंधुओं का कराहना तेरे कान लों पहुंचे
घात होनेहारों को अपने भुजबल के द्वारा बचा ॥
१२ और हे प्रभु हमारे पड़ोसियों ने जो तेरी निन्दा की है
उस का सातगुणा बदला उन को दे ॥
१३ तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी चराई की भेड़ें हैं
सो तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे
और पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरा गुणानुवाद करते रहेंगे ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये। शोशन्नीमेदूत[२] में।
आसाप का भजन।

८०. हे इस्राएल के चरवाहे
तू जो यूसुफ की अगुवाई भेड़ों की सी करता है कान लगा
तू जो करूबों पर विराजमान है अपना तेज दिखा ॥

(१) मूल में अपनी जलजलाहट उण्डेल।
(२) अर्थात् सोसन साक्षी।

२ एप्रैम बिन्यामीन और मनश्शे के साम्हने अपना पराक्रम दिखाकर
हमारा उद्धार करने को आ ॥
३ हे परमेश्वर हम को ज्यों के त्यों कर दे
और अपने मुख का प्रकाश चमका तब हमारा उद्धार हो जाएगा ॥
४ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
तू कब लों अपनी प्रजा की प्रार्थना पर क्रोधित रहेगा[१] ॥
५ तू ने आंसुओं को उन का आहार कर दिया
और मटके भर भरके उन्हें आंसू पिलाये हैं ॥
६ तू हमें हमारे पड़ोसियों के झगड़ने का कारण कर देता है
और हमारे शत्रु मनमानते ठट्ठा करते हैं ॥
७ हे सेनाओं के परमेश्वर हम को ज्यों के त्यों कर दे
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका तब हमारा उद्धार हो जाएगा ॥
८ तू मिस्र से एक दाखलता ले आया
और अन्यजातियों को निकालकर उसे लगा दिया ॥
९ तू ने उस के लिये स्थान तैयार किया
और उस ने जड़ पकड़ी और फैलकर देश को भर दिया ॥
१० उस की छाया पहाड़ों पर फैल गई
और उस की डालियां ईश्वर के देवदारों के समान हुईं ॥
११ उस की शाखाएं समुद्र लों बढ़ गईं
और उस के अंकुर महानद लों फैल गये ॥
१२ फिर तू ने उस के बाड़ों को क्यों गिरा दिया
कि सारे बटोही उस के फलों को तोड़ लेते ॥
१३ बनसूअर उस को नाश किये डालता है
और मैदान के सब पशु उसे चरे लेते हैं ॥
१४ हे सेनाओं के परमेश्वर फिर आ
स्वर्ग से ध्यान देकर देख और इस दाखलता की सुधि ले ॥
१५ और जो पौधा तू ने अपने दाहिने हाथ से लगाया
और जिस लता की शाखा[२] तू ने अपने लिये दृढ़ की है उन की सुधि ले ।

(१) मूल में धूआं उठाता रहेगा ।
(२) मूल में बेटा ।

वह जल गई वह कट गई है १६
तेरी घुड़की से वे नाश होते हैं ॥
तेरे दहिने हाथ के संभाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ रक्खा रहे १७
उस आदमी पर जिसे तू ने अपने लिये दृढ़ किया है ॥
तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे १८
तू हम को जिला और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे ॥
हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा हम को ज्यों के त्यों कर दे १९
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका तब हमारा उद्धार हो जाएगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । गित्तीथ में । आसाप ।

८१. परमेश्वर जो हमारा बल है उस का गीत आनन्द से गाओ

याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो ॥
भजन उठाओ डफ और मधुर बजनेहारी बीणा २
और सारंगी को ले आओ ॥
नये चांद के दिन ३
और पूर्णमासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूंको ॥
क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि ४
और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है ॥
इस को उस ने यूसुफ में चितनी की रीति पर तब चलाया ५
जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला
वहां मैं ने एक अनजानी भाषा सुनी ॥
मैं ने उन के कन्धों पर से बोझ को उतार दिया ६
उन का टोकरी ढोना छूट गया ॥
तू ने संकट में पड़कर पुकारा तब मैं ने तुझे छुड़ाया ७
बादल गरजने के गुप्त स्थान में से मैं ने तेरी सुनी
और मरीबा नाम सोते के पास तेरी परीक्षा की ।
सेला ॥
हे मेरी प्रजा सुन मैं तुझे चिता देता हूं ८
हे इस्राएल भला हो कि तू मेरी सुने ॥
तेरे बीच पराया ईश्वर न हो ९

न तू और किसी के माने हुए ईश्वर को दण्डवत् करना ॥
१० तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूं
जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है
तू अपना मुंह पसार मैं उसे भर दूंगा ॥
११ पर मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी
इस्राएल ने मुझ को न चाहा ॥
१२ सो मैं ने उस को उस के मन के हठ पर छोड़ दिया
कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले ॥
१३ यदि मेरी प्रजा मेरी सुने
यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले
१४ तो मैं क्षण भर में उन के शत्रुओं को दबाऊं
और अपना हाथ उन के द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊं ॥
१५ यहोवा के बैरियों को तो उस[1] की चापलूसी करनी पड़े
पर वे सदाकाल लों बने रहें ॥
१६ और वह उन को उत्तम से उत्तम गेहूं खिलाए
और मैं चटान में के मधु से उन को तृप्त करूं ॥

आसाप का भजन ।

८२. परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है

वह ईश्वरों के मध्य में न्याय करता है ॥
२ तुम लोग कब लों टेढ़ा न्याय करते
और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे । सेला ॥
३ कंगाल और बपमूए का न्याय चुकाओ
दीन दरिद्र का विचार धर्म्म से करो ॥
४ कंगाल और निर्धन को बचा लो
दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ ॥
५ वे न तो कुछ समझते और न कुछ बूझते
पर अंधेरे में चलते फिरते रहते हैं
पृथिवी की सारी नेव हिल जाती है ॥
६ मैं ने कहा था कि तुम ईश्वर हो
और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो
७ तौभी तुम मनुष्यों की नाईं मरोगे
और किसी हाकिम के समान उतारे जाओगे ॥
८ हे परमेश्वर उठ पृथिवी का न्याय कर
क्योंकि सारी जातियों को अपने भाग में तू ही लेगा ॥

(१) मूल में उस ।

गीत । आसाप का भजन ।

८३. हे परमेश्वर मौन न रह हे ईश्वर चुप न रह और न सुस्ता

क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं २
और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है ॥
वे चतुराई से तेरी प्रजा की हानि की सम्मति करते ३
और तेरे रक्षित[2] लोगों के विरुद्ध युक्तियां निकालते हैं ॥
उन्हों ने कहा आओ हम उन का ऐसा नाश न करें ४
कि राज्य[3] न रहे
और इस्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे ॥
उन्हों ने एक मन होकर युक्ति निकाली ५
और तेरे ही विरुद्ध वाचा बांधी है ॥
ये तो एदोम के तंबूवाले ६
और इश्माएली मोआबी और हग्री
गबाली अम्मोनी अमालेकी ७
और सोर समेत पलिश्ती हैं ॥
इन के संग अश्शूरी भी मिल गये ८
उन से भी लोतवंशियों को सहारा मिला है । सेला ॥
इन से ऐसा कर जैसा मिद्यानियों से ९
और कीशोन नाले में सीसरा और याबीन से किया था ॥
जो एन्दोर में नाश हुए १०
और भूमि के लिये खाद बन गये ॥
इन के रईसों को ओरेब और जेब सरीखे ११
और इन के सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान कर दे ॥
जिन्हों ने कहा था १२
कि हम परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी आप हो जाएं ॥
हे मेरे परमेश्वर इन को बवण्डर की धूलि १३
वा पवन से उड़ाये हुए भूसे सरीखे कर दे ॥
उस आग की नाईं जो बन को भस्म करती १४
और उस लौ की नाईं जो पहाड़ों को जला देती है
तू इन्हें अपनी आंधी से भगा १५
और अपने बवण्डर से घबरा दे ॥
इन के मुंह को अति लज्जित कर १६
कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूंढ़ें ॥
ये सदा लों लज्जित और घबराये रहें १७

(२) मूल में छिपाये हुए । (३) मूल में जाति ।

इन के मुंह काले हों और इन का नाश हो जाए
१८ जिस से ये जानें कि केवल तू जिस का नाम यहोवा है
सारी पृथिवी के ऊपर परमप्रधान है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । गित्तीथ में । कोरहवंशियों का । भजन ।

८४. हे सेनाओं के यहोवा
तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं ॥
२ मेरा जीव यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला
मेरा तन मन दोनों जीवते ईश्वर को पुकार रहे हैं ॥
३ हे सेनाओं के यहोवा हे मेरे राजा और मेरे परमेश्वर तेरी वेदियों में
गौरैया को बसेरा
और शूपाबेनी को घोंसला मिला तो है
जिस में वह अपने बच्चे रक्खे ॥
४ क्या ही धन्य हैं वे जो तेरे भवन में रहते हैं
वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे । सेला ॥
५ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता[१]
और वे जिन को सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है ॥
६ वे रोने की तराई में जाते हुए उस को सोतों का स्थान बनाते हैं
फिर बरसात की अगली वृष्टि उस में आशिष ही आशिष उपजाती है ॥
७ वे बल पर बल पाते जाते हैं
उन में से हर एक जन सिय्योन में परमेश्वर को अपना मुंह दिखाएगा ॥
८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा मेरी प्रार्थना सुन
हे याकूब के परमेश्वर कान लगा । सेला ॥
९ हे परमेश्वर हे हमारी ढाल दृष्टि कर
और अपने अभिषिक्त का मुख देख ॥
१० क्योंकि तेरे आंगनों में का एक दिन और कहीं के हजार दिन से उत्तम है
दुष्टों के डेरों में वास करने से
अपने परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक भावता है ॥
११ क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य्य और ढाल है
यहोवा अनुग्रह करेगा और महिमा देगा
और जो लोग खरी चाल चलते हैं उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा ॥
१२ हे सेनाओं के यहोवा
क्या ही धन्य वह मनुष्य है जो तुझ पर भरोसा रखता है ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । कोरहवंशियों का । भजन ।

८५. हे यहोवा तू अपने देश पर प्रसन्न हुआ
याकूब को बंधुआई से लौटा ले आया है ॥
२ तू ने अपनी प्रजा के अधर्म्म को क्षमा किया
और उस के सारे पाप को ढांप दिया है । सेला ॥
३ तू ने अपने सारे रोष को शान्त किया
और अपने भड़के हुए कोप को दूर किया है ॥
४ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर हम को फेर
और अपनी रिस हम पर से दूर कर ॥
५ क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा
क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी लों कोप करता रहेगा ॥
६ क्या तू हम को फिर न जिलाएगा
कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे ॥
७ हे यहोवा अपनी करुणा हमें दिखा
और तू हमारा उद्धार कर[२] ॥
८ मैं कान लगाये रहूंगा कि ईश्वर यहोवा क्या कहता है
वह तो अपनी प्रजा से जो उस के भक्त हैं शांति की बातें कहेगा
पर वे फिरके मूर्खता करने न लगें ॥
९ निश्चय उस के डरवैयों के उद्धार का समय निकट है
तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा ॥
१० करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं
धर्म्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है ॥
११ पृथिवी में से सच्चाई उगती
और स्वर्ग से धर्म्म झुकता है ॥
१२ फिर यहोवा उत्तम पदार्थ देगा
और हमारी भूमि अपनी उपज देगी ॥
१३ धर्म्म उस के आगे आगे चलेगा
और उस के पांवों के चिन्हों को हमारे लिये मार्ग बनाएगा ॥

दाऊद की प्रार्थना ।

८६. हे यहोवा कान लगाकर मेरी सुन ले
क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं ॥

(१) मूल में जिस की शक्ति तुझ में है ।

(२) मूल में अपना उद्धार हमें दे ।

२ मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं भक्त हूं
तू जो मेरा परमेश्वर है सो अपने दास का जिस का भरोसा तुझ पर है उद्धार कर ॥
३ हे प्रभु मुझ पर अनुग्रह कर
क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हूं ॥
४ अपने दास के मन को आनन्दित कर
क्योंकि हे प्रभु मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूं ॥
५ क्योंकि हे प्रभु तू भला और क्षमा करनेहारा है
और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों के लिये तू अति करुणामय है ॥
६ हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा
और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान से सुन ॥
७ संकट के दिन मैं तुझ को पुकारूंगा
क्योंकि तू मेरी सुन लेगा ॥
८ हे प्रभु देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं
और न किसी के काम तेरे कामों के बराबर हैं ॥
९ हे प्रभु जितनी जातियों को तू ने बनाया है सब आकर तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगी
और तेरे नाम की महिमा करेंगी ॥
१० क्योंकि तू महा और आश्चर्य्य कर्म्म करनेहारा है
केवल तू ही परमेश्वर है ॥
११ हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा
मुझ को एकचित्त कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूं ॥
१२ हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर मैं अपने सारे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा
और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा ॥
१३ क्योंकि तेरी करुणा मेरे ऊपर बड़ी है
और तू ने मुझ को अधोलोक के तल में जाने से बचा लिया है ॥
१४ हे परमेश्वर अभिमानी लोग तो मेरे विरुद्ध उठे
और बलात्कारियों का समाज मेरे प्राण का खोजी हुआ
और वे तेरा कुछ विचार नहीं रखते ॥
१५ पर हे प्रभु तू दयालु और अनुग्रहकारी ईश्वर है
तू विलम्ब से कोप करनेहारा और अति करुणामय है ॥
१६ मेरी ओर फिरके मुझ पर अनुग्रह कर
अपने दास को तू शक्ति दे
और अपनी दासी के पुत्र का उद्धार कर ॥
१७ मेरी भलाई का लक्षण दिखा
जिसे देखकर मेरे बैरी निराश हों
क्योंकि हे यहोवा तू ने आप मेरी सहायता की और मुझे शान्ति दी है ॥

कोरहवंशियों का भजन । गीत ।

८७. **यहोवा** पवित्र पर्वतों पर की अपनी डाली हुई नेव में
और सिय्योन के फाटकों में २
याकूब के सारे निवासियों से बढ़कर
प्रीति रखता है ॥
हे परमेश्वर के नगर ३
तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं[१] । सेला ॥
मैं अपने चिन्हारों की चर्चा चलाते समय रहब ४ और बाबेल की भी चर्चा करूंगा।
पलिश्त सोर और कूश को देखो
यह वहां उत्पन्न हुआ है
और सिय्योन के विषय यह कहा जाएगा कि ५ फुलाना फुलाना मनुष्य उस में उत्पन्न हुआ
और परमप्रधान आप ही उस को स्थिर रक्खेगा ॥
यहोवा जब देश देश के लोगों के नाम लिखकर ६ गिन लेगा तब यह कहेगा
कि यह वहां उत्पन्न हुआ है । सेला ॥
गानेहारे और नाचनेहारे दोनों कहेंगे
कि हमारे सारे सोते तुझी में पाये जाते हैं ॥

गीत । कोरहवंशियों का भजन प्रधान बजानेहारे के लिये । महलतलन्नोत में । एज्राहवंशी हेमान का मस्कील ।

८८. **हे** मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर यहोवा मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता आया हूं ॥
मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचे २
मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा ॥
क्योंकि मेरा जीव क्लेश से भरा हुआ है ३
और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुंचा है ॥
मैं कबर में पड़नेहारों में गिना गया ४
मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूं ॥
मैं मुर्दों के बीच छोड़ा गया[२] हूं ५
और जो घात होकर कबर में पड़े हैं
जिन को तू फिर स्मरण नहीं करता
और वे तेरी सहायता रहित हैं[३]

---

(१) वा तेरी संगती महिमा के साथ हुई ।
(२) मूल में स्वाधीन ।
(३) मूल में तेरे हाथ से कटे हुए ।

उन के समान मैं हुआ हूं ॥
६ तू ने मुझे गड़हे के तल ही में
अंधेरे और गहिरे स्थान में रक्खा है ॥
७ तेरी जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है
और तू ने अपने सारे तरंगों से मुझे दुःख दिया है। सेला ॥
८ तू ने मेरे चिन्हारों को मुझ से दूर किया
और मुझ को उन के लेखे घिनौना किया है
मैं बन्द हूं और निकल नहीं सकता।
९ दुःख भोगते भोगते मेरी आंख धुन्धला गई है ॥
हे यहोवा मैं लगातार तुझे पुकारता और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूं ॥
१० क्या तू मुर्दों के लिये अद्भुत काम करेगा
क्या मरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे। सेला ॥
११ क्या कबर में तेरी करुणा का
वा विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा
१२ क्या तेरे अद्भुत काम अंधकार में
वा तेरा धर्म्म बिसरने की दशा[१] में जाना जाएगा ॥
१३ पर हे यहोवा मैं ने तेरी दोहाई दी है
और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचेगी ॥
१४ हे यहोवा तू मुझ को क्यों छोड़ता है
तू अपना मुख मुझ से क्यों फेरे[२] रहता है ॥
१५ मैं बचपन ही से दुःखी बरन अधमूआ हूं
तुझ से भय खाते खाते मैं अति व्याकुल हो गया हूं ॥
१६ तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है
उस भय से मैं मिट गया हूं।
१७ वह दिन भर जल की नाईं मुझे घेरे रहता है
वह मेरे चारों ओर दिखाई देता है ॥
१८ तू ने मित्र और भाईबन्धु दोनों को मुझ से दूर किया है
मेरा चिन्हार अंधकार ही है ॥

एतान एज्राहवंशी का मस्कील

८९. मैं यहोवा की सारी करुणा के विषय सदा गाता रहूंगा
मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों जताता रहूंगा ॥

(१) मूल में देश। (२) मूल में छिपाये।

२ क्योंकि मैं ने कहा है कि करुणा सदा बनी रहेगी
तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रक्खेगा ॥
३ मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बांधी
मैं ने अपने दास दाऊद से किरिया खाई है
४ कि मैं तेरे वंश को सदा लों स्थिर रक्खूंगा
और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी लों बनाये रक्खूंगा। सेला ॥
५ और हे यहोवा स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम की
और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी ॥
६ क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठहरेगा
बलवंतों[१] के पुत्रों में से कौन है जिस के साथ यहोवा की उपमा दी जायगी ॥
७ ईश्वर पवित्रों की गोष्ठी में अत्यन्त त्रास के योग्य
और अपने चारों ओर सब रहनेहारों से अधिक भययोग्य है ॥
८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
हे याह तेरे तुल्य कौन सामर्थी है तेरी सच्चाई तो तेरे चारों ओर है ॥
९ समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता
जब उस के तरंग उठते हैं तब तू उन को शान्त कर देता है ॥
१० तू ने रहब को घात किये हुए के समान कुचल डाला
और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल से तितर बितर किया है ॥
११ आकाश तेरा है पृथिवी भी तेरी है
जगत और जो कुछ उस में है उसे तू ही ने स्थिर किया है ॥
१२ उत्तर और दक्खिन को तू ही ने सिरजा
ताबोर और हेर्मोन तेरे नाम का जयजयकार करते हैं ॥
१३ तेरी भुजा बलवन्त है
तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दहिना हाथ प्रबल है ॥
१४ तेरे सिंहासन का मूल धर्म्म और न्याय है
करुणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती हैं ॥
१५ क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के महा शब्द को पहिचानता है ॥

(१) वा ईश्वरों।

हे यहोवा वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं ॥
१६ वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं
और तेरे धर्म्म के कारण महान हो जाते हैं ॥
१७ क्योंकि तू उन के बल की शोभा है
और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊंचा करेगा ॥
१८ क्योंकि हमारी ढाल यहोवा के वश में है
हमारा राजा इस्राएल के पवित्र के हाथ में है ॥
१९ एक समय तू ने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें कीं
और कहा मैं ने सहायता करने का भार एक वीर पर रक्खा
और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है ॥
२० मैं ने अपने दास दाऊद को लेकर
अपने पवित्र तेल से उस का अभिषेक किया है ॥
२१ मेरा हाथ उस के साथ बना रहेगा
और मेरी भुजा उसे दृढ़ रक्खेगी ॥
२२ शत्रु उस को तंग करने न पाएगा
और न कुटिल जन उस को दुःख देने पाएगा ॥
२३ और मैं उस के द्रोहियों को उस के साम्हने से नाश करूंगा
और उस के बैरियों पर विपत्ति डालूंगा ॥
२४ पर मेरी सच्चाई और करुणा उस पर बनी रहेंगी
और मेरे नाम के द्वारा उस का सींग ऊंचा हो जाएगा ॥
२५ और मैं समुद्र को उस के हाथ के नीचे
और महानदों को उस के दहिने हाथ के नीचे कर दूंगा ॥
२६ वह मुझे पुकार के कहेगा कि तू मेरा पिता
मेरा ईश्वर और मेरे बचने की चटान है ॥
२७ फिर मैं उस को अपना पहिलौठा
और पृथिवी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊंगा ॥
२८ मैं अपनी करुणा उस पर सदा बनाये रहूंगा
और मेरी वाचा उस के लिये अटल रहेगी ॥
२९ और मैं उस के वंश को सदा बनाये रक्खूंगा
और उस की राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा रहेगी ॥
३० यदि उस के वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें
और मेरे नियमों के अनुसार न चलें
३१ यदि वे मेरी विधियों को उल्लंघन करें
और मेरी आज्ञाओं को न मानें
३२ तो मैं उन के अपराध का दण्ड सोंटे से
और उन के अधर्म्म का दण्ड कोड़ों से दूंगा ।
३३ पर मैं अपनी करुणा उस पर से न हटाऊंगा
और न सच्चाई त्यागकर झूठा ठहरूंगा ॥
३४ मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा
और जो मेरे मुंह से निकल चुका है उसे न बदलूंगा ॥
३५ एक बार मैं अपनी पवित्रता की किरिया खा चुका हूं
और दाऊद को कभी धोखा न दूंगा ॥
३६ उस का वंश सर्वदा रहेगा
और उस की राजगद्दी सूर्य्य की नाईं मेरे सन्मुख ठहरी रहेगी ॥
३७ वह चन्द्रमा की नाईं सदा बना रहेगा
आकाशमण्डल में का साक्षी विश्वासयोग्य है । सेला ॥
३८ तौभी तू ने अपने अभिषिक्त को छोड़ा और तज दिया
और उस पर अति रोष किया है ॥
३९ तू अपने दास के साथ की वाचा से घिनाया
और उस के मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है ॥
४० तू ने उस के सब बाड़ों को तोड़ डाला
और उस के गढ़ों को उजाड़ दिया है ॥
४१ सब बटोही उस को लूट लेते हैं
और उस के पड़ोसियों से उस की नामधराई होती है ॥
४२ तू ने उस के द्रोहियों को प्रबल[१] किया
और उस के सब शत्रुओं को आनन्दित किया है ॥
४३ फिर तू उस की तलवार की धार को मोड़ देता है
और युद्ध में उस के पांव जमने नहीं देता ॥
४४ तू ने उस का तेज हर लिया[२]
और उस के सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है ॥
४५ तू ने उस की जवानी को घटाया
और उस को लज्जा से ढांप दिया है । सेला ॥
४६ हे यहोवा तू कब लों लगातार मुंह फेरे[३] रहेगा
तेरी जलजलाहट कब लों आग की नाईं भड़की रहेगी ॥

(१) मूल में द्रोहियों का दहिना हाथ ऊंचा । (२) मूल में बन्द किया । (३) मूल में अपने को छिपाये ।

४७ मेरा स्मरण तो कर कि मैं कैसा अनित्य हूं
तू ने सारे मनुष्यों को क्यों व्यर्थ सिरजा है ॥
४८ कौन पुरुष सदा अमर रहेगा[१]
क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकता। सेला ॥
४९ हे प्रभु तेरी प्राचीनकाल की करुणा कहां रही
जिस के विषय तू ने अपनी सच्चाई की किरिया दाऊद से खाई ॥
५० हे प्रभु अपने दासों की नामधराई की सुधि कर
मैं तो सारी सामर्थी जातियों का बोझ लिये[२] रहता हूं ॥
५१ तेरे उन शत्रुओं ने तो हे यहोवा
तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़कर उस की[३] नामधराई की है ॥
५२ यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा
आमेन फिर आमेन ॥

(१) मूल में जीता रहेगा और मृत्यु न देखेगा।
(२) मूल में अपनी गोद मे लिये।
(३) मूल में तेरे अभिषिक्त के पदचिन्हों की।

चौथा भाग।

परमेश्वर के जन मूसा की प्रार्थना।

९०. हे प्रभु तू पीढ़ी पीढ़ी
हमारे लिये धाम बना है ॥
२ उस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए
और तू ने पृथिवी और जगत को रचा
वरन अनादिकाल से अनन्तकाल लों तू ही ईश्वर है ॥
३ तू मनुष्य को लौटाकर चूर करता
और कहता है कि हे आदमियो लौट आओ ॥
४ क्योंकि हजार बरस तेरी दृष्टि में
बीते हुए कल के दिन के
वा रात के एक पहर के सरीखे हैं ॥
५ तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है वे स्वप्न ठहरते हैं
भोर को वे बढ़नेहारी घास के सरीखे होते हैं ॥
६ वह भोर को फूलती और बढ़ती है
और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है ॥
७ क्योंकि हम तेरे कोप से नाश हुए
और तेरी जलजलाहट से घबरा गये हैं ॥
८ तू ने हमारे अधर्म्म के कामों को अपने सन्मुख
और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रक्खा है ॥
९ क्योंकि हमारे सारे दिन तेरे रोष में बीत जाते हैं
हम अपने बरस शब्द की नाईं[१] बिताते हैं ॥
१० हमारी आयु के बरस सत्तर तो होते हैं
और चाहे बल के कारण अस्सी बरस भी हों
तौभी उन पर का घमण्ड कष्ट और व्यर्थ बात ठहरता है
क्योंकि वह जल्दी कट जाती है और हम जाते रहते हैं ॥
११ तेरे कोप की शक्ति को
और तेरे भय के योग्य तेरे रोष को कौन समझता ॥
१२ हम को अपने दिन गिनने की समझ दे
कि हम बुद्धिमान हो जाएं[२] ॥
१३ हे यहोवा लौट आ कब लों
और अपने दासों पर तरस खा ॥
१४ भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त कर
कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें
१५ जितने दिन तू हमें दुःख देता आया और जितने बरस हम क्लेश भोगते आये हैं
उतने बरस हम को आनन्द दे ॥
१६ तेरा काम तेरे दासों को
और तेरा प्रताप उन की सन्तान पर प्रगट हो ॥
१७ और हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रगट हो

(१) मूल में उच्छ। (२) मूल में बुद्धिवाला मन ले आएं।

तू हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर
हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर ॥

९१. जो परमप्रधान के छाये हुए स्थान में बैठा रहे

सो सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा ॥
२ मैं यहोवा के विषय कहूंगा कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है
वह मेरा परमेश्वर है मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा ॥
३ वह तो तुझे बहेलिये के जाल से
और महामरी से बचाएगा ॥
४ वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा।
और तू उस के परों के नीचे शरण पाएगा
उस की सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी ॥
५ तू न तो रात के भय से
और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है
६ न उस मरी से जो अंधेरे मे फैलती है डरेगा
और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी उजाड़ता है ॥
७ तेरे निकट हजार
और तेरी दहिनी ओर दस हजार गिरेंगे
पर वह तेरे पास न आएगा ॥
८ तू आंखों से निहारके
दुष्टों के कामों के बदले को केवल देखेहीगा ॥
९ हे यहोवा तू मेरा शरणस्थान ठहरा है
तू ने जा परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है
१० इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी
न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा ॥
११ क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा
कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें ॥
१२ वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे
न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे ॥
१३ तू सिंह और नाग को कुचलेगा
तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा ॥
१४ उस ने जो मुझ से स्नेह किया है इसलिये मैं उस को छुड़ाऊंगा
मैं उस को ऊंचे स्थान पर रक्खूंगा क्योंकि उस ने मेरे नाम को जान लिया है ॥
१५ जब वह मुझ को पुकारे तब मैं उस की सुनूंगा
संकट में मैं उस के संग रहूंगा
मैं उस को बचाकर उस की महिमा बढ़ाऊंगा ॥
१६ मैं उस को दीर्घायु से तृप्त करूंगा
और अपने किये हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा ॥

(१) मूल में तेरे सब मार्गों में।

भजन । विश्राम के दिन के लिये गीत ।

९२. यहोवा का धन्यवाद करना भला है

हे परमप्रधान तेरे नाम का भजन गाना
२ प्रातःकाल को तेरी करुणा
और रात रात तेरी सच्चाई का प्रचार करना
३ दस तारवाले बाजे और सारंगी पर
और वीणा पर गम्भीर स्वर से गाना भला है ॥
४ क्योंकि हे यहोवा तू ने मुझ को अपने काम से आनन्दित किया है
और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार करूंगा ॥
५ हे यहोवा तेरे काम क्या ही बड़े हैं
तेरी कल्पनाएं बहुत गम्भीर हैं ॥
६ पशु सरीखा मनुष्य इस को नहीं समझता
और मूर्ख इस का विचार नहीं करता ॥
७ दुष्ट जो घास की नाईं फूलते फलते
और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित होते हैं
यह इसलिये होता है कि वे सर्वदा के लिये नाश हो जाएं ॥
८ पर हे यहोवा तू सदा विराजमान रहेगा ॥
९ क्योंकि हे यहोवा तेरे शत्रु
तेरे शत्रु नाश होंगे
सब अनर्थकारी तित्तर बित्तर होंगे
१० पर मेरा सींग तू ने बनैले बैल का सा ऊंचा किया है
मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं ॥
११ और मैं अपने द्रोहियों पर दृष्टि देकरके
और उन कुकर्म्मियों का हाल जो मेरे विरुद्ध उठे थे सुनकर सन्तुष्ट हुआ हूं
१२ धर्म्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे
और लबानोन के देवदार की नाईं बढ़ते रहेंगे ॥
१३ वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर
हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे ॥
१४ वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे
और रस भरे और लहलहाते रहेंगे
१५ जिस से यह प्रकट हो कि यहोवा सीधा है
वह मेरी चटान है और उस में कुटिलता कुछ भी नहीं ॥

९३. **यहोवा** राजा हुआ है उस ने माहात्म्य का पहिरावा पहिना है
यहोवा पहिरावा पहिने हुए और सामर्थ्य का फेटा बांधे है
फिर जगत स्थिर है वह नहीं टलने का ॥
२ हे यहोवा तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है तू सर्वदा से है ॥
३ हे यहोवा महानदों का कोलाहल हो रहा है
महानदों का बड़ा शब्द हो रहा है
महानद गरजते हैं ॥
४ महासागर के शब्द से
और समुद्र की महातरंगों से
विराजमान यहोवा अधिक महान है ॥
५ तेरी चितौवनियां अति विश्वासयोग्य हैं
हे यहोवा तेरे भवन को युग युग पवित्रता ही फबती है ॥

९४. **हे** यहोवा हे पलटा लेनेहारे ईश्वर हे पलटा लेनेहारे ईश्वर अपना तेज दिखा ॥
२ हे पृथिवी के न्यायी उठ
घमंडियों को बदला दे ॥
३ हे यहोवा दुष्ट लोग कब लों
दुष्ट लोग कब तक डींग मारते रहेंगे ॥
४ वे बकते और ढिठाई की बातें बोलते हैं
सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं ॥
५ हे यहोवा वे तेरी प्रजा को पीस डालते
वे तेरे निज भाग को दुःख देते हैं ॥
६ वे विधवा और परदेशी का घात करते
और बपमुओं को मार डालते हैं
७ और कहते हैं कि याह न देखेगा
याकूब का परमेश्वर विचार न करेगा
८ तुम जो प्रजा में पशुसरीखे हो विचार करो
और हे मूर्खो तुम कब बुद्धिमान हो जाओगे ॥
९ जिस ने कान दिया क्या वह आप नहीं सुनता
जिस ने आंख रची क्या वह आप नहीं देखता ॥
१० जो जाति जाति को ताड़ना देता और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है
क्या वह न समझाएगा ॥
११ यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को जानता तो है
कि वे सांस ही हैं ॥
१२ हे याह क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस को तू ताड़ना देता
और अपनी व्यवस्था सिखाता है ॥
१३ क्योंकि तू उस को विपत्ति के दिनों के रहते तब लों चैन देता रहता है
जब लों दुष्ट के लिये गड़हा खोदा नहीं जाता ॥
१४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा
वह अपने निज भाग को न छोड़ेगा ॥
१५ पर न्याय पर फिर धर्म्म के अनुसार किया जाएगा
और सारे सीधे मनवाले उस के पीछे पीछे हो लेंगे
१६ कुकर्म्मियों के विरुद्ध मेरी ओर कौन खड़ा होगा
मेरी ओर से अनर्थकारियों का कौन साम्हना करेगा ॥
१७ यदि यहोवा मेरा सहायक न होता
तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर रहना पड़ता ॥
१८ जब मैं ने कहा कि मेरा पांव फिसलने लगा
तब हे यहोवा मैं तेरी करुणा से थांभ लिया गया ॥
१९ जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएं होती हैं
तब हे यहोवा तेरी दी हुई शान्ति से मुझ को सुख होता है ॥
२० क्या तेरे और खलता के सिंहासन के बीच सन्धि होगी
जिस की ओर से कानून की रीति उत्पात होता है ॥
२१ वे धर्म्मी का प्राण लेने को दल बांधते हैं
और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं ॥
२२ पर यहोवा मेरा गढ़
और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की चटान ठहरा है
२३ और उस ने उन का अनर्थ काम उन्हीं पर लौटाया है
और वह उन्हें उन्हीं की बुराई के द्वारा सत्यानाश करेगा।
हमारा परमेश्वर यहोवा उन को सत्यानाश करेगा ॥

९५. **आओ** हम यहोवा के लिये ऊंचे स्वर से गाएं
अपने उद्धार की चटान का जयजयकार करें ॥
२ हम धन्यवाद करते हुए उस के सन्मुख आएं।
और भजन गाते हुए उस का जयजयकार करें ॥
३ क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है
और सारे देवताओं के ऊपर महान राजा है ॥
४ पृथिवी के गहिरे स्थान उसी के हाथ में हैं
और पहाड़ों की चोटियां भी उसी की हैं ॥
५ समुद्र उस का है और उसी ने उस को बनाया
और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है ॥
६ आओ हम झुककर दण्डवत् करें

और अपने कर्त्ता यहोवा के साम्हने घुटने टेकें ॥
७ क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है
और हम उस की चराई की प्रजा और उस के हाथ की भेड़ें हैं
भला होता कि आज तुम उस की बात सुनते ॥
८ अपना अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो जैसा मरीबा में
वा मस्सा के दिन जंगल में हुआ था ॥
९ उस समय तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा
उन्हों ने मुझ को जांचा और मेरे काम को भी देखा ॥
१० चालीस बरस लों मैं उस पीढ़ी के लोगों से रूठा रहा
और मैं ने कहा ये तो भरमनेहारे मन के हैं
और इन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं पहिचाना ॥
११ इस कारण मैं ने कोप में आकर किरिया खाई
कि ये मेरे विश्राम स्थान में प्रवेश न करने पाएंगे ॥

९६. यहोवा के लिये नया गीत गाओ हे सारी पृथिवी के लोगो

२ यहोवा का गीत गाओ ॥
यहोवा का गीत गाओ उस के नाम को धन्य कहो
दिन दिन उस के किये हुये उद्धार का शुभसमाचार सुनाते रहो ॥
३ अन्यजातियों में उस की महिमा का
और देश देश के लोगों में उस के आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन करो ॥
४ क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के अति योग्य है
वह तो सारे देवताओं से अधिक भययोग्य है ॥
५ क्योंकि देश देश के सब देवता तो मूरतें ही हैं
पर यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है ॥
६ उस के चारों ओर विभव और ऐश्वर्य्य है
उस के पवित्रस्थान में सामर्थ्य और शोभा है ॥
७ हे देश देश के कुलो यहोवा का गुणानुवाद करो
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो ॥
८ यहोवा के नाम की महिमा मानो
भेंट लेकर उस के आंगनों में आओ ॥
९ पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो
हे सारी पृथिवी के लोगो उस के साम्हने थरथराओ ॥
१० जाति जाति में कहो कि यहोवा राजा हुआ है
और जगत ऐसा स्थिर है कि वह टलने का नहीं
वह देश देश के लोगों का न्याय सीधाई से करेगा ॥
११ आकाश आनन्द करे और पृथिवी मगन हो
समुद्र और उस में की सारी वस्तुएं गरज उठें ॥
१२ मैदान और जो कुछ उस में है सो प्रफुल्लित हो
उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करें ॥
१३ यह यहोवा के साम्हने हो क्योंकि वह आनेहारा है।
वह पृथिवी का न्याय करने को आनेहारा है
वह धर्म्म से जगत का
और सच्चाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा ॥

९७. यहोवा राजा हुआ है पृथिवी मगन हो

और द्वीप जो बहुतेरे हैं सो आनन्द करें ॥
२ बादल और अन्धकार उस के चारों ओर हैं
उस के सिंहासन का मूल धर्म्म और न्याय हैं ॥
३ उस के आगे आगे आग चलती हुई
उस के द्रोहियों को चारों ओर भस्म करती है ॥
४ उस की बिजलियों से जगत प्रकाशित हुआ
पृथिवी देख कर थरथरा गई है ॥
५ पहाड़ यहोवा के साम्हने से
सारी पृथिवी के प्रभु के साम्हने से मोम की नाईं पिघल गये ॥
६ आकाश ने उस के धर्म्म की साक्षी दी
और देश देश के सब लोगों ने उस की महिमा देखी है ॥
७ जितने खुदी हुई मूर्त्तियों की उपासना करते
और मूरतों पर फूलते हैं सो लज्जित हों
हे सारे देवताओ तुम उसी को दण्डवत् करो ॥
८ सिय्योन सुनकर आनन्दित हुई
और यहूदा की बेटियां मगन हुईं
यह हे यहोवा तेरे नियमों के कारण हुआ ॥
९ क्योंकि हे यहोवा तू सारी पृथिवी के ऊपर परमप्रधान है
तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है ॥
१० हे यहोवा के प्रेमियो बुराई के बैरी हो
वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता
और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता है ॥

११ धर्म्मी के लिये ज्योति
और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया
हुआ है ॥
१२ हे धर्म्मियो यहोवा के कारण आनन्दित हो
और जिस पवित्र नाम से उस का स्मरण होता है
उस का धन्यवाद करो ॥

भजन ।

९८. यहोवा का नया गीत गाओ
क्योंकि उस ने आश्चर्य्यकर्म्म
किये हैं
उस के दहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उस के
लिये उद्धार किया है ॥
२ यहोवा ने अपना किया हुआ उद्धार प्रकाशित
किया उस ने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना
धर्म्म प्रकट किया है ॥
३ उस ने इस्राएल के घराने पर की अपनी करुणा
और सच्चाई की सुधि ली
और पृथिवी के सब दूर दूर देशों ने हमारे परमे-
श्वर का किया हुआ उद्धार देखा है ॥
४ हे सारी पृथिवी के लोगो यहोवा का जयजयकार
करो
उमंग में आकर जयजयकार करो और भजन
गाओ ॥
५ वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ
वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओ ॥
६ तुरहियां और नरसिंगे फूंक फूंककर
यहोवा राजा का जयजयकार करो ॥
७ समुद्र और उस में की सारी वस्तुएं गरज उठें
जगत और उस के निवासी महाशब्द करें ॥
८ नदियां तालियां बजाएं
पहाड़ मिलकर जयजयकार करें ॥
९ यह यहोवा के साम्हने हो क्योंकि वह पृथिवी का
न्याय करने को आनेहारा है
वह धर्म्म से जगत का
और सीधाई से देश देश के लोगों का न्याय
करेगा ॥

९९. यहोवा राजा हुआ है देश देश के
लोग कांप उठें
वह करूबों पर विराजमान है पृथिवी डोल उठे ॥
२ यहोवा सिय्योन में महान है
और वह देश देश के लोगों के ऊपर प्रधान है ॥
३ वे तेरे महान और भययोग्य नाम का धन्यवाद
कर
वह तो पवित्र है ॥
४ राजा का सामर्थ्य न्याय से मेल रखता है
तू ही ने सीधाई को स्थापित किया
न्याय और धर्म्म को याकूब में तू ही ने किया है ॥
५ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो
और उस के चरणों की चौकी के साम्हने दण्डवत्
करो
वह तो पवित्र है ॥
६ उस के याजकों में मूसा और हारून
और उस के प्रार्थना करनेहारों में से शमूएल
यहोवा को पुकारते थे और वह उन की सुन
लेता था ॥
७ वह बादल के खंभे में होकर उन से बातें
करता था
और वे उस की चितौनियों और उस की दी
हुई विधियों पर चलते थे ॥
८ हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू उन की सुन लेता था
तू उन के कामों का पलटा तो लेता था
तौभी उन के लिये क्षमा करनेहारा ईश्वर
ठहराता था ॥
९ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो
और उस के पवित्र पर्वत पर दण्डवत् करो
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है ॥

धन्यवाद का भजन ।

१००. हे सारी पृथिवी के लोगो
यहोवा का जयजयकार करो ॥
२ आनन्द से यहोवा की सेवा करो
जयजयकार के साथ उस के सन्मुख आओ ॥
३ निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है
उसी ने हम को बनाया और हम उसी के हैं[१]
हम उस की प्रजा और उस की चराई की भेड़ें हैं ॥
४ उस के फाटकों से धन्यवाद
और उस के आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो
उस का धन्यवाद करो और उस के नाम को धन्य
कहो ॥
५ क्योंकि यहोवा भला है उस की करुणा सदा लों
और उस की सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी
रहती है ॥

(१) वा न कि हम अपने को ।

दाऊद का भजन

१०१. मैं करुणा और न्याय के विषय गाऊंगा
हे यहोवा मैं तेरा ही भजन गाऊंगा ॥
२ मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूंगा
तू मेरे पास कब आएगा ?
मैं अपने घर में मन की खराई के साथ अपनी चाल चलूंगा ॥
३ मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊंगा
मैं कुमार्ग पर चलनेहारों के काम से घिन रखता हूं
ऐसे काम में मैं न लगूंगा ॥
४ टेढ़ा स्वभाव मुझ से दूर रहेगा
मैं बुराई को जानूंगा भी नहीं ॥
५ जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए उस को मैं सत्यानाश करूंगा
जिस की आंखें चढ़ीं और जिस का मन घमण्डी है उस की मैं न सहूंगा ॥
६ मेरी आंख देश के विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें
जो खरे मार्ग पर चलता हो सोई मेरा टहलुआ होगा ॥
७ जो छल करता हो सो मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा
जो झूठ बोलता हो सो मेरे साम्हने बना न रहेगा ॥
८ भोर भोर को मैं देश के सब दुष्टों को सत्यानाश किया करूंगा
इसलिये कि यहोवा के नगर के सब अनर्थकारियों को नाश करूं ॥

दीन जन की उस समय की प्रार्थना जब यह दुःख का मारा अपने शोक की बातें यहोवा के साम्हने खोलकर कहता हो[१] ।

१०२. हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन
मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे ॥
२ मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझ से न फेर ले[२]
अपना कान मेरी ओर लगा
जिस समय मैं पुकारूं उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले ॥
३ क्योंकि मेरे दिन धूएं की नाईं[३] बिलाय गये ।
और मेरी हड्डियां लुकटी के समान जल गई हैं ॥
४ मेरा मन झुलसी हुई घास की नाईं सूख गया
और मुझे अपनी रोटी खाना भी बिसर जाता है ॥
५ कहरते कहरते
मेरा चमड़ा हड्डियों में सट गया है ॥
६ मैं जंगल के धनेश के समान हो गया
मैं उजाड़ स्थानों के उल्लू सरीखा बन गया हूं ॥
७ मैं पड़ा जागता हूं और गौरे के समान हो गया
जो छत के ऊपर अकेला बैठता है ॥
८ मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई करते हैं
जो मेरे विरोध की धुन में बावले हो रहे हैं सो मेरा नाम लेकर किरिया खाते हैं ॥
९ मैं रोटी की नाईं राख खाता और आंसू मिलाकर पानी पीता हूं ॥
१० यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ
क्योंकि तू ने मुझे उठाया और फिर फेंक दिया है ॥
११ मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है
और मैं आप घास की नाईं सूख चला हूं ॥
१२ पर तू हे यहोवा सदा लों बिराजमान रहेगा
और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है सो पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहेगा ॥
१३ तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा
क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया हुआ समय आ पहुंचा है ॥
१४ क्योंकि तेरे दास उस के पत्थरों को चाहते हैं
और उस की धूल पर तरस खाते हैं ॥
१५ सो अन्य जातियां यहोवा के नाम का भय मानेंगी ।
और पृथिवी के सारे राजा तेरे प्रताप से डरेंगे ॥
१६ क्योंकि यहोवा सिय्योन को फिर बसाता
और अपनी महिमा के साथ दिखाई देता है ॥
१७ वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुंह करता
और उन की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता ॥
१८ यह बात आनेहारी पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी
और एक जाति जो सिरजी जाएगी सो याह की स्तुति करेगी ॥
१९ क्योंकि यहोवा ने अपने ऊंचे और पवित्र स्थान से दृष्टि करके
स्वर्ग से पृथिवी की ओर देखा
२० कि बंधुओं का कराहना सुने
और घात होनेहारों के बन्धन खोले
२१ और सिय्योन में यहोवा के नाम का वर्णन करे
और यरूशलेम...

(१) मूल में उण्डेलता हो ।
(२) मूल में छिपा । (३) मूल में धुएं में ।

यहोवा की उपासना करने को इकट्ठे होंगे ॥

२३ उस ने मुझे जीवन यात्रा में दुःख देकर
मेरे बल और आयु को घटाया ॥

२४ मैं ने कहा हे मेरे ईश्वर मुझे आधी आयु में न उठा लो
तेरे बरस पीढ़ी से पीढ़ी लों बने रहेंगे ॥

२५ आदि में तू ने पृथिवी की नेव डाली
और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है ॥

२६ वह तो नाश होगा पर तू बना रहेगा
और वह सब का सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा
तू उस को वस्त्र की नाईं बदलेगा और वह तो बदल जाएगा ॥

२७ पर तू वही है
और तेरे बरसों का अन्त नहीं होने का ॥

२८ तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी
और उन का वंश तेरे साम्हने स्थिर रहेगा ॥

दाऊद का ।

१०३. हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह
और जो कुछ मुझ में है सो उस के पवित्र नाम को धन्य कहे ॥

२ हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह
और उस के किसी उपकार को न बिसराना ॥

३ वही तो तेरे सारे अधर्म्म को क्षमा करता
और तेरे सब रोगों को चंगा करता है ॥

४ वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता
और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बांधता है ॥

५ वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है
जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है ॥

६ यहोवा सब पिसे हुओं के लिये
धर्म्म और न्याय के काम करता है ॥

७ उस ने मूसा को अपनी गति
और इस्राएलियों को अपने काम जताये ॥

८ यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी
विलम्ब से कोप करनेहारा और अति करुणामय है ॥

आर वह दर्श दर्श के ला।गा क ... ग्हेगा
... ॥

उस ने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया १०
न हमारे अधर्म्म के कामों के अनुसार हम को बदला दिया है ॥

११ जैसे आकाश पृथिवी के ऊपर ऊंचा है
वैसे ही उस की करुणा उस के डरवैयों के ऊपर प्रबल है ॥

१२ उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है
उस ने हमारे अपराधों को हम से उतनी दूर किया है ॥

१३ जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है
वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है ॥

१४ क्योंकि वह हमारा रचना जानता है
और उस को स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है[1] ॥

१५ मनुष्य की आयु घास के समान होती है
वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है

१६ जो पवन लगते ही रह नहीं जाता
और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है[2] ॥

१७ पर यहोवा की करुणा उस के डरवैयों पर युग युग
और उस का धर्म्म उन के नाती पोतों पर भी प्रगट होता रहता है

१८ अर्थात् उन पर जो उस की वाचा को पालते
और उस के उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं ॥

१९ यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है
और उस का राज्य सारी सृष्टि पर है

२० हे यहोवा के दूतो तुम जो बड़े वीर हो
और उस के वचन के मानने से उस को पूरा करते हो
उस को धन्य कहो ॥

२१ हे यहोवा की सारी सेनाओ हे उस के टहलुओ
तुम जो उस की इच्छा पूरी करते हो उस को धन्य कहो

२२ हे यहोवा की सारी रचनाओ
उस के राज्य के सब स्थानों में उस को धन्य कहो
हे मेरे मन तू यहोवा को धन्य कह ॥

---

(१) मूल में हम धूल ही हैं । (२) मूल में न उस का स्थान उसे फिर चीन्हेगा ।

१०४. हे मेरे मन तू यहोवा को धन्य कह हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू अत्यन्त महान है
तू विभव और ऐश्वर्य्य का वस्त्र पहिने है
२ वह उजियाले को चादर की नाईं ओढ़े रहता
वह आकाश को तंबू के समान ताने रहता है ॥
३ वह अपनी अटारियों की कड़ियां जल में धरता
और मेघों को अपना रथ बनाता
और पवन के पंखों पर चलता है ॥
४ वह पवनों को अपने दूत
और धधकती आग को अपने टहलुए बनाता है ॥
५ उस ने पृथिवी को आधार पर स्थिर किया
वह सदा सर्वदा नहीं टलने की ॥
६ तू ने उस को गहिरे सागर से मानो वस्त्र से ढांप दिया
जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया ॥
७ तेरी घुड़की से वह भाग गया
तेरे गरजने का शब्द सुनते ही वह उतावली करके बह गया ॥
८ वह पहाड़ों पर चढ़ गया और तराइयों के मार्ग से उस स्थान में उतर गया
जिसे तू ने उस के लिये तैयार किया था ॥
९ तू ने एक सिवाना ठहराया जिस को वह नहीं लांघ सकता
न फिर के स्थल को ढांप सकता ॥
१० वह नालों में सोतों को बहाता है
वे पहाड़ों के बीच से बहते हैं ॥
११ उन से मैदान के सब जीव जन्तु जल पीते हैं
बनैले गदहे भी अपनी प्यास बुझा लेते हैं ॥
१२ उन के पास आकाश के पक्षी बसेरा करते
और डालियों के बीच से बोलते हैं ॥
१३ वह अपनी अटारियों में से पहाड़ों को सींचता है
तेरे कामों के फल से पृथिवी तृप्त रहती है ॥
१४ वह पशुओं के लिये घास
और मनुष्यों के काम के लिये अन्नादि उपजाता
और इस रीति भूमि से भोजनवस्तुएं उत्पन्न करता है
१५ और दाखमधु जिस से मनुष्य का मन आनन्दित होता है
और तेल जिस से उस का मुख चमकता है
और अन्न जिस से वह संभल जाता है ॥
१६ यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते हैं
अर्थात् लबानोन के देवदार जो उसी के लगाये हुए हैं ॥
१७ उन में चिड़ियाएं अपने घोंसले बनाती हैं
लगलग का बसेरा सनौवर वृक्षों में होता है ॥
१८ ऊंचे पहाड़ बनैले बकरों के लिये हैं
और ढांगें शापानों के शरणस्थान हैं ॥
१९ उस ने नियत समयों के लिये चन्द्रमा को बनाया
सूर्य्य अपने अस्त होने का समय जानता है ॥
२० तू अंधकार करता है
तब रात हो जाती है
जिस में बन के सब जीवजन्तु घूमते फिरते हैं ॥
२१ जवान सिंह अहेर के लिये गरजते
और ईश्वर से अपना आहार मांगते हैं ॥
२२ सूर्य्य उदय होते ही वे चले जाते
और अपनी मान्दों में जा बैठते हैं ॥
२३ तब मनुष्य अपने काम के लिये
और संध्याकाल लों परिश्रम करने के लिये निकलता है ॥
२४ हे यहोवा तेरे काम कितने ही हैं
इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया
पृथिवी तेरी संपत्ति से परिपूर्ण है ॥
२५ वह समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है
और उस में अनगिनित जलचारी[१] जीव जन्तु क्या छोटे क्या बड़े भरे हैं ॥
२६ उस में जहाज भी आते जाते हैं
और लिव्यातान भी जिसे तू ने वहां खेलने के लिये बनाया है ॥
२७ ये सब तेरा आसरा ताकते हैं
कि तू उन का आहार समय पर दिया करे ॥
२८ तू उन्हें देता है वे चुन लेते हैं
तू मुट्ठी खोलता है वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं ॥
२९ तू मुख फेर लेता[२] है वे घबराये जाते हैं
तू उन की सांस ले लेता है उन के प्राण छूटते
और वे मिट्टी में फिर मिल जाते हैं ॥
३० फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है वे सिरजे जाते हैं
और तू धरती को नया कर देता है ॥
३१ यहोवा की महिमा सदा लों रहे
यहोवा अपने कामों से आनन्दित होवे ॥

(१) मूल में रेंगनेहारे।
(२) मूल में छिपाता।

३२ उस के निहारते ही पृथिवी कांप उठती है
और उस के छूते ही पहाड़ों से धूंआं निकलता है ॥
३३ मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूंगा
जब लों मैं बना रहूंगा तब लों अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा ॥
३४ मेरा ध्यान करना उस को प्रिय लगे
मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूंगा ॥
३५ पापी लोग पृथिवी पर से मिट जाएं
और दुष्ट लोग आगे को न रहें
हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह
याह की स्तुति करो[१] ॥

१०५. यहोवा का धन्यवाद करो उस से प्रार्थना करो

देश देश के लोगों में उस के कामों का प्रचार करो ॥
२ उस का गीत गाओ उस का भजन गाओ
उस के सब आश्चर्य कर्म्मों का ध्यान करो ॥
३ उस के पवित्र नाम पर बड़ाई करो
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो ॥
४ यहोवा और उस के सामर्थ को पूछो
उस के दर्शन के लगातार खोजी रहो ॥
५ उस के किये हुए आश्चर्य्यकर्म्म स्मरण करो
उस के चमत्कार और निर्णय स्मरण करो ॥
६ हे उस के दास इब्राहीम के वंश
हे याकूब की सन्तान तुम जो उस के चुने हुए हो
७ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है
पृथिवी भर में उस के निर्णय होते हैं ॥
८ वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है
सो वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया ॥
९ वह वाचा उस ने इब्राहीम के साथ बांधी
और उस के विषय उस ने इसहाक से किरिया खाई ॥
१० और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके
और इस्राएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया
११ कि मैं कनानदेश तुझी को दूंगा
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा ॥
१२ उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे
बरन बहुत ही थोड़े और उस देश में परदेशी थे ॥
१३ और वे एक जाति से दूसरी जाति में
और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते तो रहे ॥
१४ पर उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया
और वह राजाओं को उन के निमित्त यह धमकी देता था
१५ कि मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ
और न मेरे नबियों की हानि करो ॥
१६ फिर उस ने उस देश में अकाल डाला
और अन्न के सारे आधार को दूर कर दिया[२] ॥
१७ उस ने यूसुफ नाम एक पुरुष को उन से पहिले भेजा था
जो दास होने के लिये बेचा गया था ॥
१८ लोगों ने उस के पैरों में बेड़ियां डालकर उसे दुःख दिया
वह लोहे की सांकलों से जकड़ा गया[३] ।
१९ जब लों उस की बात पूरी न हुई
तब लों यहोवा का वचन उसे तावता रहा ॥
२० तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया
देश देश के लोगों के स्वामी ने उस के बन्धन खुलवाये ॥
२१ उस ने उस को अपने भवन का प्रधान
और अपनी सारी संपति का अधिकारी ठहराया
२२ कि वह उस के हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार बंधाए
और पुरनियों को ज्ञान सिखाए ॥
२३ फिर इस्राएल मिस्र में आया
और याकूब हाम के देश में परदेशी रहा ॥
२४ तब उस ने अपनी प्रजा को गिनती में बहुत बढ़ाया
और उस के द्रोहियों से अधिक बलवन्त किया ॥
२५ उस ने मिस्रियों के मन को ऐसा फेर दिया कि वे उस की प्रजा से बैर रखने
और उस के दासों से छल करने लगे ॥

(१) मूल में हल्ललूयाह ।

(२) मूल में सारी छड़ी को तोड़ दिया ।

(३) मूल में उस का जीव लोहे में समाया ।

२६ उस ने अपने दास मूसा को
और अपने चुने हुए हारून को भेजा ॥
२७ उन्हों ने उन के बीच उस की ओर से भांति भांति के चिन्ह
और हाम के देश में चमत्कार किये ॥
२८ उस ने अन्धकार कर दिया और अंधियारा हो गया
और उन्हों ने उस की बातों को न टाला ॥
२९ उस ने मिस्रियों के जल को लोहू कर डाला
और मछलियों को मार डाला ॥
३० मेंढ़क उन की भूमि में बरन उन के राजा की कोठरियों में भी भर गये ॥
३१ उस ने आज्ञा दी तब डांस आ गये
और उन के सारे देश में कुटकियां आ गईं ।
३२ उस ने उन के लिये जलवृष्टि की सन्ती ओले
और उन के देश में धधकती आग बरसाई ॥
३३ और उस ने उन की दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को
बरन उन के देश के सब पेड़ों को तोड़ डाला ॥
३४ उस ने आज्ञा दी तब टिड्डियां
और अनगिनित कीड़े आये
३५ और उन्हों ने उन के देश के सारे अन्नादि को खा डाला
और उन की भूमि के सब फलों को चट कर गये ॥
३६ उस ने उन के देश में के सब पहिलौठों को
उन के पौरुष के सब पहिले फल को नाश किया ॥
३७ वह अपने गोत्रियों को सोना चान्दी दिलाकर निकाल लाया
और उन में से कोई निर्बल न था ॥
३८ उन के जाने से मिस्री आनन्दित हुए
क्योंकि उन का डर उन में समा गया था ॥
३९ उस ने छाया के लिए बादल फैलाया
और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्रगट की ॥
४० उन्हों ने मांगा तब उस ने बटेरें पहुंचाईं
और उन को स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया ॥
४१ उस ने चटान फाड़ी तब पानी बह निकला
और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी ॥
४२ क्योंकि उस ने अपने पवित्र बचन
और अपने दास इब्राहीम को स्मरण किया ॥
४३ वह अपनी प्रजा को हर्षित करके
और अपने चुने हुओं से जयजयकार कराके निकाल लाया
४४ और उन को अन्यजातियों के देश दिये
और वे और लोगों के श्रम के फल के अधिकारी किये गये
४५ कि वे उस की विधियों को मानें
और उस की व्यवस्था को पूरी करें
याह की स्तुति करो[1] ॥

१०६.

याह की स्तुति करो[1]
यहोवा का धन्यवाद करो
क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सदा की है ॥
२ यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता
उस का पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता ॥
३ क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते
और हर समय धर्म्म के काम करते हैं ॥
४ हे यहोवा तेरी प्रजा पर की प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर
मेरे उद्धार के लिये[2] मेरी सुधि ले
५ कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूं
और तेरी प्रजा के आनन्द से आनन्दित होऊं
और तेरे निज भाग के संग बड़ाई करने पाऊं ॥
६ हम ने तो अपने पुरखाओं की नाईं[3] पाप किया
हम ने कुटिलता की हम ने दुष्टता की है ॥
७ मिस्र में हमारे पुरखाओं ने तेरे आश्चर्यकर्मों पर मन न लगाया
न तेरी अपार करुणा को स्मरण रक्खा
उन्हों ने समुद्र के तीर पर अर्थात् लाल समुद्र के तीर पर बलवा किया ॥
८ तौ भी उस ने अपने नाम के निमित्त उन का उद्धार किया
जिस से वह अपने पराक्रम को प्रसिद्ध करे ॥
९ सो उस ने लाल समुद्र को घुड़का और वह सूख गया
और वह उन्हें गहिरे जल के बीच से मानो जंगल में ले चला
१० और उस ने उन्हें बैरी के हाथ से उबारा
और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया ॥
११ और उन के द्रोही जल में डूब गये

(१) मूल में हल्ललूयाह । (२) मूल में अपना उद्धार लिये हुए । (३) मूल में पितरों के साथ ।

उन में से एक भी न बचा ॥
१२ सो उन्हों ने उस के बचनों का विश्वास किया
और उस की स्तुति गाने लगे ॥
१३ पर वे झट उस के कामों को भूल गये
और उस की युक्ति के लिये न ठहरे ॥
१४ उन्हों ने जंगल में अति लालसा की
और निर्जल स्थान में ईश्वर की परीक्षा की ॥
१५ सो उस ने उन्हें मुंह मांगा वर तो दिया
पर उन को दुबला कर दिया ॥
१६ उन्हों ने छावनी में मूसा के
और यहोवा के पवित्र जन हारून के विषय डाह की ॥
१७ भूमि फट कर दातान को निगल गई
और अबीराम के झुण्ड को ग्रस लिया[१] ॥
१८ और उन के झुण्ड में आग भड़की
और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गये ॥
१९ उन्हों ने होरेब में बछड़ा बनाया
और ढली हुई मूर्त्ति को दण्डवत् की ॥
२० यों उन्हों ने अपनी महिमा अर्थात् ईश्वर को
घास खानेहारे बैल की प्रतिमा से बदल डाला ॥
२१ वे अपने उद्धारकर्त्ता ईश्वर को भूल गये
जिस ने मिस्र में बड़े बड़े काम किये थे ॥
२२ उस ने तो हाम के देश में आश्चर्य्यकर्म्म
और लाल समुद्र के तीर पर भयंकर काम किये थे ॥
२३ सो उस ने कहा कि मैं इन्हें सत्यानाश करूंगा
पर उस का चुना हुआ मूसा जोखिम के स्थान में[२] खड़ा हुआ
कि उस की जलजलाहट को ठण्डा करे[३]
न हो कि वह उन्हें नाश कर डाले ॥
२४ उन्हों ने मनभावने देश को निकम्मा जाना
और उस के बचन की प्रतीति न की
२५ वे अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाये
और यहोवा का कहा न माना ॥
२६ तब उस ने उन के विषय में किरिया खाई[४]
कि मैं इन को जंगल में नाश करूंगा
२७ और इन के वंश को अन्यजातियों के बीच गिरा दूंगा
और देश देश में तित्तर बित्तर करूंगा ॥
२८ वे पोरवाले बाल देवता से मिल गये
और मुर्दों को चढ़ाये हुए पशुओं का मांस खाने लगे ॥

(१) मूल में छिपा लिया। (२) मूल में मसा भीत के नाके में।
(३) मूल में फेर दे। (४) मूल में हाथ उठाया।

२९ यों उन्हों ने अपने कामों से उस को रिस दिलाई
और मरी उन में फूट पड़ी ॥
३० तब पीनहास ने उठकर न्यायदण्ड दिया
जिस से मरी थम गई ॥
३१ और यह उस के लेखे पीढ़ी से पीढ़ी लों
सर्वदा के लिये धर्म्म गिना गया ॥
३२ उन्हों ने मरीबा के सोते के पास भी यहोवा का कोप भड़काया
और उन के कारण मूसा की हानि हुई ॥
३३ क्योंकि उन्हों ने उस के आत्मा से बलवा किया
तब मूसा बिन सोचे बोला ॥
३४ जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी
उन को उन्हों ने सत्यानाश न किया
३५ बरन उन्हीं जातियों से हिलमिल गये
और उन के व्यवहारों को सीख लिया
३६ और उन की मूर्त्तियों की पूजा करने लगे
और वे उन के लिये फन्दा बन गईं ॥
३७ बरन उन्हों ने अपने बेटे बेटियां पिशाचों के लिये बलि कीं
३८ और अपने निर्दोष बेटे बेटियों का खून किया
जिन्हें उन्हों ने कनान की मूर्त्तियों को बलि किया
सो देश खून से अपवित्र हो गया ॥
३९ और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गये
और अपने कार्य्यों के द्वारा व्यभिचारी बन गये ॥
४० तब यहोवा का कोप अपनी प्रजा पर भड़का
और उस को अपने निज भाग से घिन आई ॥
४१ सो उस ने उन को अन्यजातियों के वश में कर दिया
और उन के बैरियों ने उन पर प्रभुता की ॥
४२ उन के शत्रुओं ने उन पर अंधेर किया
और वे उन के हाथ तले दब गये ॥
४३ बारम्बार उस ने उन्हें छुड़ाया
पर वे उस के विरुद्ध युक्ति करते गये
और अपने अधर्म्म के कारण दबते गये ॥
४४ तौभी जब जब उन का चिल्लाना उस के कान में पड़ा
तब तब उस ने उन के संकट पर दृष्टि की
४५ और उन के हित अपनी वाचा को स्मरण करके
अपनी अपार करुणा के अनुसार तरस खाया
४६ और जो उन्हें बंधुए करके ले गये थे

(३१) मूल में ।

उन सब से उन पर दया कराई ॥
४७ हे हमारे परमेश्वर यहोवा हमारा उद्धार कर
और हमें अन्यजातियों में से इकट्ठा कर
कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय बड़ाई करें ॥

४८ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
अनादिकाल से अनन्तकाल लों धन्य है
और सारी प्रजा कहे आमेन
याह की स्तुति करो[१] ॥

(१) मूल में हल्ललूयाह।

पांचवां भाग।

---

१०७. यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है

और उस की करुणा सदा की है ॥
२ यहोवा के छुड़ाये हुए ऐसा ही कहें
जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से छुड़ा लिया है
३ और उन्हें देश देश से
पूरब पच्छिम उत्तर और दक्खिन से[१] इकट्ठा किया है ॥
४ वे जंगल में मरुभूमि के मार्ग पर भटके जाते थे,
और कोई बसा हुआ नगर न पाया ॥
५ भूख और प्यास के मारे
वे विकल हो गये ॥
६ तब उन्हों ने संकट में यहोवा की देहाई दी
और उस ने उन को सकेती से छुड़ाया
७ और उन को ठीक मार्ग पर चलाया
कि वे बसे हुए नगर को पहुंचें ॥
८ लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें ॥
९ क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता
और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है ॥
१० जो अंधियारे और घोर अंधकार में बैठे
और दुःख में पड़े और बेड़ियों से जकड़े हुए थे ॥
११ इस लिये कि वे ईश्वर के वचनों के विरुद्ध चले
और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना ॥
१२ तो उस ने उन को कष्ट के द्वारा दबाया
वे ठोकर खाकर गिर पड़े और उन को कोई सहायक न मिला ॥
१३ तब उन्हों ने संकट में यहोवा की देहाई दी
और उस ने सकेती से उन का उद्धार किया ॥
१४ उस ने उन को अंधियारे और घोर अंधकार से उबारा
और उन के बंधनों को तोड़ डाला ॥
१५ लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें ॥
१६ क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को तोड़ा
और लोहे के बेड़ों को टुकड़े टुकड़े किया ॥
१७ मूढ़ अपनी कुचाल
और अधर्म्म के कामों के कारण अति दुःखित होते हैं ॥
१८ उन का जी सब भांति के भोजन से मिचलाता है
और वे मृत्यु के फाटक लों पहुंचते हैं ॥
१९ तब वे संकट में यहोवा की देहाई देते हैं
और वह सकेती से उन का उद्धार करता है ॥
२० वह अपने वचन के द्वारा[२] उन को चंगा करता
और जिस गड़हे में वे पड़े हैं उस से उबारता है ॥
२१ लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें,
२२ और धन्यवादबलि चढ़ाएं
और जयजयकार करते हुए उस के कामों का वर्णन करें ॥
२३ जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते
और महासागर पर होकर व्योपार करते हैं,

(१) मूल में समुद्र से।
(२) मूल में अपना वचन भेजकर।

२४ वे यहोवा के कामों को
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों को जो वह गहिरे समुद्र में करता है देखते हैं ॥
२५ क्योंकि वह आज्ञा देता है तब प्रचण्ड बयार उठकर तरंगों को उठाती है ॥
२६ वे आकाश लों चढ़ जाते फिर गहिर में उतर आते हैं
और क्लेश के मारे उन के जी में जी नहीं रहता ॥
२७ वे चक्कर खाते और मतवाले की नाईं लड़खड़ाते हैं
और उन की सारी बुद्धि मारी[१] जाती है ॥
२८ तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं
और वह उन को सकेती से निकालता है ॥
२९ वह आंधी से नौका कर देता है
और तरंगें बैठ जाती हैं ॥
३० तब वे उन के बैठने से आनन्दित होते हैं
और वह उन को मन चाहे बन्दर में पहुंचा देता है ॥
३१ लोग यहोवा की करुणा के कारण
और उन आश्चर्य्यकर्म्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है उस का धन्यवाद करें
३२ और सभा में उस को सराहें
और पुरनियों के बैठक में उस की स्तुति करें ॥
३३ वह नदियों को जंगल बना डालता
और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है ॥
३४ वह फलवन्त भूमि को नोनी करता है
यह रहनेहारों की दुष्टता के कारण होता है ॥
३५ वह जंगल को जल का ताल
और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है ॥
३६ और वहां वह भूखों को बसाता है
कि वे बसने के लिये नगर तैयार करें
३७ और खेती करें और दाख की बारियां लगाएं
और भांति भांति के फल उपजा लें ॥
३८ और वह उन को ऐसी आशिष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं
और उन के पशुओं को भी वह घटने नहीं देता ॥
३९ फिर अंधेर विपत्ति और शोक के कारण
वे घटते और दब जाते हैं ॥
४० और वह हाकिमों को अपमान से लादकर
बेराह सुन में भटकाता है ॥
४१ वह दरिद्रों को दुःख से छुड़ाकर ऊंचे पर रखता
और उन को भेड़ों के झुण्ड सा परिवार देता है ॥
४२ सीधे लोग इसे देखकर आनन्दित होते हैं
और सब कुटिल लोग अपने मुंह बन्द करते हैं ॥
४३ जो कोई बुद्धिमान हो सो इन बातों पर ध्यान करेगा
और यहोवा की करुणा के कामों को बिचारेगा ॥

गीत । दाऊद का भजन ।

१०८. हे परमेश्वर मेरा हृदय स्थिर है
मैं गाऊंगा मैं अपने आत्मा[२] से भी भजन गाऊंगा ॥
२ हे सारङ्गी और वीणा जागो
मैं आप पह फटते जाग उठूंगा ॥
३ हे यहोवा मैं देश देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूंगा
और राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊंगा ॥
४ क्योंकि तेरी करुणा आकाश से भी ऊंची है
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है ॥
५ हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर हो
और तेरी महिमा सारी पृथिवी के ऊपर हो ॥
६ इस लिये कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएं
तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमारी सुन ले ॥
७ परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है
मैं प्रफुल्लित होकर शकेम को बांट लूंगा
और सुक्कोत की तराई को नपवाऊंगा ॥
८ गिलाद मेरा मनश्शे भी मेरा है
और एप्रैम मेरे सिर का टोप
यहूदा मेरा राजदण्ड है ॥
९ मोआब मेरे धोने का पात्र है
मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूंगा
पलिश्त पर मैं जयजयकार करूंगा ॥
१० मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुंचाएगा
एदोम लों मेरी अगुवाई किस ने की है ॥
११ हे परमेश्वर क्या तू ने हम को नहीं त्याग दिया
और हे परमेश्वर तू हमारी सेना के साथ पयान नहीं करता ॥
१२ द्रोहियों के विरुद्ध हमारी सहायता कर
क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा व्यर्थ है ॥
१३ परमेश्वर की सहायता से हम बीरता दिखाएंगे
हमारे द्रोहियों को वही रौंदेगा ॥

(१) मूल में निगली ।

(२) मूल में महिमा ।

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का । भजन ।

१०९. हे परमेश्वर तू जिस की मैं स्तुति करता हूं चुप न रह ॥
२ क्योंकि दुष्ट और कपटी मनुष्यों ने मेरे विरुद्ध मुंह खोला है
वे मेरे विषय झूठ बोलते हैं ॥
३ और उन्हों ने बैर के वचन मेरे चारों ओर कहे हैं
और अकारण मुझ से लड़े हैं ॥
४ मेरे प्रेम के बदले में वे मुझ से विरोध करते हैं
पर मैं तो प्रार्थना में लवलीन रहता हूं ॥
५ उन्हों ने भलाई के पलटे में मुझ से बुराई
और मेरे प्रेम के बदले में बैर किया है ॥
६ तू उस को किसी दुष्ट के अधिकार में रख
और विरोधी उस की दहिनी ओर खड़ा रहे ॥
७ जब उस का न्याय किया जाए तब वह दोषी निकले
और उस की प्रार्थना पाप गिनी जाए ॥
८ उस के दिन थोड़े हों
और उस के पद को दूसरा ले ॥
९ उस के लड़केवाले बपमूए
और उस की स्त्री विधवा हो जाए ॥
१० और उस के लड़के मारे मारे फिरें और भीख मांगा करें
उन को अपने उजड़े हुए घर से दूर जाकर टुकड़े मांगना पड़े ॥
११ महाजन फन्दा लगाकर उस का सर्वस्व ले ले
और परदेशी उस की कमाई को लूटें ॥
१२ कोई न हो जो उस पर करुणा करता रहे
और उस के बपमूए बालकों पर कोई अनुग्रह न करे ॥
१३ उस का वंश नाश हो
दूसरी पीढ़ी में उस का नाम मिट जाए ॥
१४ उस के पितरों का अधर्म्म यहोवा को स्मरण रहे
और उस की माता का पाप न मिटे ॥
१५ वह निरन्तर यहोवा के सन्मुख रहे
कि वह उन का नाम पृथिवी पर से मिटा डाले ॥
१६ क्योंकि वह दुष्ट कृपा करना बिसराता था
बरन दीन और दरिद्र के पीछे
और मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालों के पीछे पड़ता था ॥
१७ वह स्राप देने में प्रीति रखता था और स्राप उस पर आ पड़े
वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न होता था और आशीर्वाद उस से दूर रह गया ॥
१८ वह स्राप देना वस्त्र की नाईं पहिनता था
और वह उस के पेट में जल की नाईं
और उस की हड्डियों में तेल की नाईं समा गया ॥
१९ वह उस के लिये ओढ़ने का काम दे
और फेंटे की नाईं उस की कटि में नित्य कसा रहे ॥
२० यहोवा की ओर से मेरे विरोधियों को
और मेरे विरुद्ध बुरा कहनेवालों को यही बदला मिले ॥
२१ पर मुझ से हे यहोवा प्रभु तू अपने नाम के निमित्त बर्ताव कर
तेरी करुणा तो बड़ी[1] है सो तू मुझे छुटकारा दे ॥
२२ क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं
और मेरा हृदय घायल हुआ है ॥
२३ मैं ढलती हुई छाया की नाईं जाता रहा
मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूं ॥
२४ उपवास करते करते मेरे घुटने निर्बल हो गये
और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूं ॥
२५ और मेरी तो उन लोगों से नामधराई होती है
जब वे मुझे देखते तब सिर हिलाते हैं ॥
२६ हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी सहायता कर
अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार कर ॥
२७ जिस से वे जानें कि यह तेरा काम है
और हे यहोवा तू ही ने यह किया है ॥
२८ वे कोसते तो रहें पर तू आशिष दे
वे तो उठते ही लज्जित हों पर तेरा दास आनन्दित हो ॥
२९ मेरे विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहिनाया जाए
और वे अपनी लज्जा को कम्बल की नाईं ओढ़ें ॥
३० मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूंगा
और बहुत लोगों के बीच उस की स्तुति करूंगा ॥
३१ क्योंकि वह दरिद्र की दहिनी ओर खड़ा रहेगा
कि उस को घात करनेहारे न्यायियों से बचाए ॥

दाऊद का भजन ।

११०. मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है कि तू मेरे दहिने बैठकर तब लों रह
जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं ॥

(१) मूल में भली ।

२ तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा
तू अपने शत्रुओं के मध्य में शासन करे ॥
३ तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं
तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान
और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं ॥
४ यहोवा ने किरिया खाई और न पछताएगा
कि तू मेल्की सेदेक की रीति पर सर्वदा का याजक है ॥
५ प्रभु तेरी दहिनी ओर होकर
अपने कोप के दिन राजाओं को चूर कर देगा ॥
६ वह जाति जाति में न्याय चुकाएगा
रणभूमि लोथों से भर जायगी
वह लम्बे चौड़े देश के प्रधान को चूर कर देगा ॥
७ वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा
इस कारण वह सिर उठाएगा ॥

१११. याह की स्तुति करो[१]

मैं सारे मन से यहोवा का धन्यवाद
सीधे लोगों की गोष्ठी में और मण्डली में भी करूंगा ॥
२ यहोवा के काम बड़े हैं
जितने उन से प्रसन्न रहते हैं सो उन में ध्यान लगाते हैं ॥
३ उस के काम विभवमय और ऐश्वर्य्यमय होते हैं
और उस का धर्म्म सदा लों बना रहेगा ॥
४ उस ने अपने आश्चर्य्यकर्म्मों का स्मरण कराया है
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है ॥
५ उस ने अपने डरवैयों को आहार दिया है
वह अपनी वाचा को सदा लों स्मरण रक्खेगा ॥
६ उस ने अपनी प्रजा को अन्यजातियों का भाग देने के लिये
अपने कामों का प्रताप दिखाया है ॥
७ सच्चाई और न्याय उस के हाथों के काम हैं
उस के सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं ॥
८ वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे
वे सच्चाई और सिधाई से किये हुए हैं ॥
९ उस ने अपनी प्रजा का उद्धार कराया है
उस ने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है
उस का नाम पवित्र और भययोग्य है ॥
१० बुद्धि का मूल यहोवा का भय है
जितने उस की आज्ञाओं को मानते हैं उन की बुद्धि अच्छी होती है
उस की स्तुति सदा बनी रहेगी ॥

११२. याह की स्तुति करो[१]

क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता
और उस की आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है ॥
२ उस का वंश पृथिवी पर पराक्रमी होगा
सीधे लोगों की सन्तान आशिष पाएगी ॥
३ उस के घर में धन संपत्ति रहती है
और उस का धर्म्म सदा बना रहेगा ॥
४ सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच ज्योति उदय होती है
वह अनुग्रहकारी दयावन्त और धर्म्मी होता है ॥
५ जो पुरुष अनुग्रह करता और उधार देता है उस का कल्याण होता है
वह न्याय में अपने मुकद्दमे को जीतेगा ॥
६ वह तो सदा लों अटल रहेगा
धर्म्मी का स्मरण सदा लों बना रहेगा ॥
७ वह बुरे समाचार से नहीं डरता
उस का हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है ॥
८ उस का हृदय संभला हुआ है सो वह न डरेगा
वरन अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा ॥
९ उस ने उदारता से दरिद्रों को दान दिया
उस का धर्म्म सदा बना रहेगा
और उस का सींग महिमा के साथ ऊंचा किया जाएगा ॥
१० दुष्ट इसे देखकर कुढ़ेगा
वह दांत पीस पीसकर गल जाएगा
दुष्टों की लालसा पूरी न होगी[२] ॥

११३. याह की स्तुति करो,[१]

हे यहोवा के दासो स्तुति करो,
यहोवा के नाम की स्तुति करो ॥

(१) मूल में हल्ललूयाह।

(२) मूल में नाश होगी।

२ यहोवा का नाम
अब से ले सर्वदा लों धन्य कहा जाए ॥
३ उदयाचल से ले अस्ताचल लों
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है ॥
४ यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान है
और उस की महिमा आकाश से भी ऊंची है ॥
५ हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है
वह तो ऊंचे पर विराजमान है
६ और आकाश और पृथिवी पर
दृष्टि करने के लिये झुकता है ॥
७ वह कंगाल को मिट्टी पर से
और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर ऊंचा करता है
८ कि उस को प्रधानों के संग
अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए ॥
९ वह बांझ को घर में लड़कों की आनन्द करनेहारी माता बनाता है
याह की स्तुति करो[१] ॥

११४. जब इस्राएल ने मिस्र से अर्थात् याकूब के घराने ने
अन्य भाषावालों के बीच से पयान किया
२ तब यहूदा यहोवा[२] का पवित्रस्थान
और इस्राएल उस के राज्य के लोग हो गये ॥
३ समुद्र देखकर भागा
यर्दन नदी उलटी बही ॥
४ पहाड़ मेढ़ों की नाईं उछलने लगे
और पहाड़ियां भेड़ बकरियों के बच्चों की नाईं उछलने लगीं ॥
५ हे समुद्र तुझे क्या हुआ कि तू भागा
और हे यर्दन तुझे क्या हुआ कि तू उलटी बही ॥
६ हे पहाड़ो तुम्हें क्या हुआ कि तुम मेढ़ों की नाईं
और हे पहाड़ियो तुम्हें क्या हुआ कि तुम भेड़ बकरियों के बच्चों की नाईं उछलीं ॥
७ हे पृथिवी प्रभु के साम्हने
याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा उठ ॥
८ वह चटान को जल का ताल
चकमक के पत्थर को जल का सोता बना डालता है ॥

(१) मूल में हल्ललूयाह।
(२) मूल में उस।

११५. हे यहोवा हमारी नहीं हमारी नहीं अपने ही नाम की महिमा
अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर ॥
२ जाति जाति के लोग क्यों कहने पाएं
कि उन का परमेश्वर कहां रहा ॥
३ हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है
उस ने जो चाहा सो किया है ॥
४ उन लोगों की मूरतें सोने चांदी ही हैं
वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं ॥
५ उन के मुंह तो रहता पर वे बोल नहीं सकतीं
उन के आंखें तो रहतीं पर वे देख नहीं सकतीं ॥
६ उन के कान तो रहते पर वे सुन नहीं सकतीं
उन के नाक तो रहती पर वे सूंघ नहीं सकतीं ॥
७ उन के हाथ तो रहते पर वे स्पर्श नहीं कर सकतीं
उन के पांव तो रहते पर वे चल नहीं सकतीं
और अपने कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं ॥
८ जैसी वे हैं तैसे ही उन के बनानेहारे
और उन पर सब भरोसा रखनेहारे भी हो जाएंगे ॥
९ हे इस्राएल यहोवा पर भरोसा रख
तेरा[१] सहायक और ढाल वही है ॥
१० हे हारून के घराने यहोवा पर भरोसा रक्खो
तेरा[१] सहायक और ढाल वही है ॥
११ हे यहोवा के डरवैयो यहोवा पर भरोसा रक्खो
तेरा[१] सहायक और ढाल वही है ॥
१२ यहोवा ने हम को स्मरण किया है वह आशिष देगा।
वह इस्राएल के घराने को आशिष देगा
वह हारून के घराने को आशिष देगा ॥
१३ क्या छोटे क्या बड़े
जितने यहोवा के डरवैये हैं वह उन्हें आशिष देगा ॥
१४ यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कों को भी अधिक बढ़ाता जाए ॥
१५ यहोवा जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है
उस की ओर से तुम आशिष पाये हो ॥
१६ स्वर्ग जो है सो तो यहोवा का है

(१) मूल में उस का।

पर पृथिवी उस ने मनुष्यों को दी है ॥
१७ मुर्दे जितने चुपचाप पड़े हैं
सो तो याह की स्तुति नहीं कर सकते ॥
१८ पर हम लोग याह को
अब से ले सर्वदा लों धन्य कहते रहेंगे
याह की स्तुति करो[१] ॥

११६. मैं प्रेम रखता हूं इस लिये कि यहोवा ने

मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है ॥
२ उस ने जो मेरी ओर कान लगाया है
इस लिये मैं जीवन भर उस को पुकारा करूंगा ॥
३ मृत्यु की रस्सियां मेरे चारों ओर थीं
मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा
मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा ॥
४ तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की
कि हे यहोवा बिनती सुनकर मेरे प्राण को बचा ले ॥
५ यहोवा अनुग्रहकारी और धर्म्मी है
और हमारा परमेश्वर दया करनेहारा है ॥
६ यहोवा भोलों की रक्षा करता है
मैं बलहीन हो गया था और उस ने मेरा उद्धार किया ॥
७ हे मेरे मन तू अपने विश्रामस्थान में लौट आ
क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है ॥
८ तू ने तो मेरे प्राण को मृत्यु से
मेरी आंख को आंसू बहाने से
और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है ॥
९ मैं जीते जी
अपने को यहोवा के साम्हने जानकर[२] चलता रहूंगा ॥
१० मैं ने जो ऐसा कहा सो विश्वास करके कहा
मैं तो बहुत ही दुःखित हुआ ॥
११ मैं ने उतावली से कहा
कि सारे मनुष्य झूठे हैं ॥
१२ यहोवा ने मेरे जितने उपकार किये हैं
उन का बदला मैं उन को क्या दूं ॥
१३ मैं उद्धार का कटोरा उठाकर
यहोवा से प्रार्थना करूंगा ॥
१४ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें
प्रगट में उस की सारी प्रजा के साम्हने पूरी करूंगा ॥
१५ यहोवा के भक्तों की मृत्यु
उस के लेखे अनमोल है ॥
१६ हे यहोवा सुन मैं तो तेरा दास हूं
मैं तेरा दास और तेरी दासी का बेटा भी हूं
तू ने मेरे बंधन खोल दिये हैं ॥
१७ मैं तुझ को धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा
और यहोवा से प्रार्थना करूंगा ॥
१८ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें
प्रगट में उस की सारी प्रजा के साम्हने
१९ यहोवा के भवन के आंगनों में
हे यरूशलेम तेरे मध्य में पूरी करूंगा ।
याह की स्तुति करो[१] ॥

११७. हे जाति जाति के सब लोगो यहोवा की स्तुति करो

हे राज्य राज्य के सब लोगो उस की प्रशंसा करो ॥
२ क्योंकि उस की करुणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है
और यहोवा की सच्चाई सदा की है ।
याह की स्तुति करो[१] ॥

११८. यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है

और उस की करुणा सदा की है ॥
२ इस्राएल कहे
कि उस की करुणा सदा की है ॥
३ हारून का घराना कहे
कि उस की करुणा सदा की है ॥
४ यहोवा के डरवैये कहें
कि उस की करुणा सदा की है ॥
५ मैं ने सकेती में याह को पुकारा
याह ने मेरी सुनकर मुझे चौड़े स्थान में पहुंचाया ॥
६ यहोवा मेरी ओर है मैं न डरूंगा
मनुष्य मेरा क्या कर सकता ॥
७ यहोवा मेरी ओर मेरे सहायकों में का है
सो मैं अपने बैरियों पर दृष्टि करके सन्तुष्ट हूंगा ॥
८ यहोवा की शरण लेनी
मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है ॥
९ यहोवा की शरण लेनी

(१) मूल में हल्ललूयाह । (२) मूल में यहोवा के साम्हने ।

प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है ॥
१० सब जातियों ने मुझ को घेर लिया है
पर यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा ॥
११ उन्हों ने मुझ को घेर लिया वे मुझे घेर चुके भी हैं
पर यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा ॥
१२ उन्हों ने मुझे मधुमक्खियों की नाईं घेर लिया है
पर कांटों की आग की नाईं बुझ गये
यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूंगा ॥
१३ तू ने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था कि मैं गिर पड़ूं
पर यहोवा ने मेरी सहायता की ॥
१४ याह मेरा बल और भजन का विषय
और वह मेरा उद्धार ठहर गया है ॥
१५ धर्म्मियों के तंबुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है ॥
१६ यहोवा का दहिना हाथ महान हुआ है
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है ॥
१७ मैं न मरूंगा जीता रहूंगा
और याह के कामों का वर्णन करता रहूंगा ॥
१८ याह ने मेरी बड़ी ताड़ना तो की
पर मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया ॥
१९ मेरे लिये धर्म्म के द्वार खोलो
मैं उन से प्रवेश करके याह का धन्यवाद करूंगा ॥
२० यहोवा का द्वार यही है
इस से धर्म्मी प्रवेश करने पाएंगे ॥
२१ हे यहोवा मैं तेरा धन्यवाद करूंगा क्योंकि तू ने मेरी सुन ली
और मेरा उद्धार ठहर गया है ॥
२२ राजों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था
सो कोने के सिरे का हो गया है ॥
२३ यह तो यहोवा की ओर से हुआ
यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है ॥
२४ आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है
हम इस में मगन और आनन्दित हों ॥
२५ हे यहोवा बिनती सुन उद्धार कर
हे यहोवा बिनती सुन सफलता कर दे ॥
२६ धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है
हम ने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है ॥
२७ यहोवा ईश्वर है और उस ने हम को प्रकाश दिया है
यज्ञपशु को रस्सियों से वेदी के सींगों तक बांधो ॥
२८ हे यहोवा तू मेरा ईश्वर है सो मैं तेरा धन्यवाद करूंगा
तू मेरा परमेश्वर है मैं तुझ को सराहूंगा ॥
२९ यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है
और उस की करुणा सदा की है ॥

११९. क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं

और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं ॥
२ क्या ही धन्य हैं वे जो उस की चितौनियों पर चलते
और सारे मन से उस के पास आते हैं ॥
३ फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते
वे उस के मार्गों में चलते हैं ॥
४ तू ने अपने उपदेश इस लिये दिये हैं
कि वे यत्न से माने जाएं ॥
५ भला हो कि मेरी चालचलन
तेरी विधियों के मानने के लिये दृढ़ हो जाए ॥
६ जब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर चित्त लगाये रहूंगा
तब मेरी आशा न टूटेगी ॥
७ जब मैं तेरे धर्म्ममय नियमों को सीखूंगा
तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से करूंगा ॥
८ मैं तेरी विधियों को मानूंगा
तू मुझे पूरी रीति से न तज ॥
९ जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध करे
तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से ॥
१० मैं सारे मन से तेरी खोज में लगा हूं
मुझे अपनी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे ॥
११ मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है
कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं ॥
१२ हे यहोवा तू धन्य है
मुझे अपनी विधियां सिखा ॥
१३ तेरे सब कहे हुए[1] नियमों का वर्णन
मैं ने अपने मुंह से कहा है ॥

(१) मूल में तेरे मुख के ।

१४ मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से
मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूं ॥
१५ मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा
और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रक्खूंगा ॥
१६ मैं तेरी विधियों से सुख पाऊंगा
और तेरे वचन को न भूलूंगा ॥
१७ अपने दास का उपकार कर मैं जीता रहूंगा
और तेरे वचन पर चलता रहूंगा ॥
१८ मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत
बात निहारूं ॥
१९ मैं तो पृथिवी पर परदेशी हूं
अपनी आज्ञाओं को मुझ से छिपाये न रख ॥
२० मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण
हर समय खेदित रहता है ॥
२१ तू ने अभिमानियों को जो स्रापित हैं घुड़का है
वे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटके हुये हैं ॥
२२ मेरी नामधराई और अपमान दूर कर
क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हूं ॥
२३ फिर हाकिम बैठे हुए आपस में मेरे विरुद्ध बातें
करते थे
पर तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा ॥
२४ फिर तेरी चितौनियां मेरे सुखमूल
और मेरे मंत्री हैं ॥
२५ मैं[1] धूल में पड़ा हूं
तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला ॥
२६ मैं ने अपनी चालचलन का तुझ से वर्णन किया
और तू ने मेरी मानी
तू मुझ को अपनी विधियां सिखा ॥
२७ अपने उपदेशों का मार्ग मुझे बता
तब मैं तेरे आश्चर्य्य कर्म्मों पर ध्यान करूंगा ॥
२८ मेरा जीव उदासी के मारे गला चला है
तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल ॥
२९ मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर
और करुणा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे ॥
३० मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है
तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाये रहता हूं ॥
३१ मैं तेरी चितौनियों में लवलीन हूं
हे यहोवा मेरी आशा न तोड़ ॥
३२ जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूंगा ॥
३३ हे यहोवा मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा दे
तब मैं उसे अन्त लों पकड़े रहूंगा ॥
३४ मुझे समझ दे मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूंगा
और सारे मन से उस पर चलूंगा ॥
३५ अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला
क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं ॥
३६ मेरे मन को लोभ की ओर नहीं
अपनी चितौनियों ही की ओर फेर ॥
३७ मेरी आंखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे
तू अपने मार्ग में मुझे जिला ॥
३८ तेरा जो वचन तेरे भय माननेहारों के लिये है
उस को अपने दास के निमित्त भी पूरा कर ॥
३९ जिस नामधराई से मैं डरता हूं उसे दूर कर
क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं ॥
४० देख मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं
अपने धर्म्म के कारण मुझ को जिला ॥
४१ हे यहोवा तेरी करुणा और तेरा किया
हुआ उद्धार
तेरे वचन के अनुसार मुझ को भी मिले ॥
४२ तब मैं अपनी नामधराई करनेहारों को कुछ उत्तर
दे सकूंगा
क्योंकि मेरा भरोसा तेरे वचन पर है ॥
४३ मुझे अपने सत्य वचन कहने से न रोक[2]
क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है ॥
४४ तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार
सदा सर्वदा चलता रहूंगा ॥
४५ और मैं चौड़े स्थान में चलूं फिरूंगा
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों की सुधि रक्खी है ॥
४६ और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के साम्हने
भी करूंगा
और संकोच न करूंगा ॥
४७ और मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूंगा
क्योंकि मैं उन में प्रीति रखता हूं ॥
४८ और मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन में मैं प्रीति
रखता हूं हाथ फैलाऊंगा
और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा ॥
४९ जो वचन तू ने अपने दास को दिया है उसे
स्मरण कर
क्योंकि तू ने मुझे आशा तो दी है ॥
५० मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है
क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं जी गया हूं ॥
५१ अभिमानियों ने मुझे अत्यन्त ठट्ठे में उड़ाया है

(१) मूल में मेरा जीव ।

(२) मूल में मेरे मुंह में से बिलकुल न छीन ।

मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा ॥
५२ हे यहोवा मैं ने तेरे प्राचीन नियमों का स्मरण करके
शान्ति पाई है ॥
५३ जो दुष्ट तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए हैं
उन के कारण मैं सन्ताप से जलता हूं ॥
५४ जहां मैं परदेशी होकर रहता हूं तहां तेरी विधियां
मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं ॥
५५ हे यहोवा मैं ने रात को तेरा नाम स्मरण किया
और तेरी व्यवस्था पर चला हूं ॥
५६ यह मुझ को इस कारण हुआ
कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था ॥
५७ यहोवा मेरा भाग है
मैं ने तेरे वचनों के अनुसार चलना ठाना है ॥
५८ मैं ने सारे मन से तुझे मनाया
सो अपने वचन के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर ॥
५९ मैं ने अपनी चालचलन को सोचा
और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया ॥
६० मैं ने तेरी आज्ञाओं के मानने में
विलम्ब नहीं फुर्ती की ॥
६१ मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध गया
मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला ॥
६२ तेरे धर्म्ममय नियमों के कारण
मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उठूंगा ॥
६३ जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते हैं
उन का मैं संगी हूं ॥
६४ हे यहोवा तेरी करुणा पृथिवी में भरी हुई है
तू मुझे अपनी विधियां सिखा ॥
६५ हे यहोवा तू ने अपने वचन के अनुसार
अपने दास के संग भला किया है ॥
६६ मुझे भली विवेक शक्ति और ज्ञान दे
क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का विश्वास किया है ॥
६७ उस से पहले कि मैं दुःखित हुआ मैं भटकता था
पर अब मैं तेरे वचन को मानता हूं ॥
६८ तू भला है और भला करता भी है
मुझे अपनी विधियां सिखा ॥
६९ अभिमानियों ने तो मेरे विरुद्ध झूठ बात गढ़ी है
पर मैं तेरे उपदेशों को सारे मन से पकड़े रहूंगा ॥
७० उन का मन मोटा[१] हो गया है
पर मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूं ॥
७१ मुझे जो दुःख हुआ सो मेरे लिये भला ही हुआ
जिस से मैं तेरी विधियों को सीख सकूं ॥
७२ तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये
हजारों रुपैयों और मुहरों से भी भली है ॥
७३ तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूं
मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूं ॥
७४ तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित होंगे
क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर आशा लगाई है ॥
७५ हे यहोवा मैं जान गया कि तेरे नियम धर्म्ममय हैं
और तू ने अपनी सच्चाई के अनुसार मुझे दुःख दिया है ॥
७६ मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे
क्योंकि तू ने अपने दास को ऐसा ही वचन दिया है ॥
७७ तेरी दया मुझ पर हो तब मैं जी जाऊंगा
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं ॥
७८ अभिमानियों की आशा टूटे क्योंकि उन्हों ने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया
पर मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा ॥
७९ जो तेरा भय मानते हैं सो मेरी ओर फिरें
तब वे तेरी चितौनियों को समझ लेंगे ॥
८० मेरा मन तेरी विधियों के विषय खरा हो
न हो कि मेरी आशा टूटे ॥
८१ मुझे तुझ से उद्धार पाने की आशा करते करते जी में जी न रहा
पर मुझे तेरे वचन पर आशा रहती है ॥
८२ मेरी आंखें तेरे वचन के पूरे होने की बाट जोहते जोहते रह गईं
और मैं कहता हूं कि तू मुझे कब शांति देगा ॥
८३ क्योंकि मैं धूएं में की कुप्पी के समान हो गया हूं
तौभी तेरी विधियों को नहीं भूला ॥
८४ तेरे दास के कितने दिन रह गये हैं
तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देगा ॥
८५ अभिमानी जो तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते
उन्हों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं ॥
८६ तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं
वे लोग झूठ बोलते हुये मेरे पीछे पड़े हैं तू मेरी सहायता कर ॥

(१) मूल में चर्बी के समान मोटा

८७ वे मुझ को पृथिवी पर से मिटा डालने ही पर थे
पर मैं ने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा ॥
८८ अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला
तब मैं तेरी दी हुई[1] चितौनी को मानूंगा ॥
८९ हे यहोवा तेरा वचन
आकाश में सदा लों स्थिर रहता है ॥
९० तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है
तू ने पृथिवी को स्थिर किया सो वह बनी है ॥
९१ वे आज के दिन लों तेरे नियमों के अनुसार ठहरे हैं
क्योंकि सारी सृष्टि तेरे अधीन है ॥
९२ यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता
तो मैं दुःख के समय नाश हो जाता ॥
९३ मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा
क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है ॥
९४ मैं तेरा ही हूं तू मेरा उद्धार कर
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की सुधि रखता हूं ॥
९५ दुष्ट मेरा नाश करने के लिये मेरी घात में लगे हैं
मैं तेरी चितौनियों को विचारता हूं ॥
९६ जितनी बातें पूरी जान पड़ती हैं उन सब को तो
मैं ने अधूरी पाया है[2]
पर तेरी आज्ञा का अति विस्तार है ॥
९७ अहा मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं
दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है ॥
९८ तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से
अधिक बुद्धिमान करता है
क्योंकि वे सदा मेरे मन में रहती हैं ॥
९९ मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूं
क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है ॥
१०० मैं पुरनियों से भी समझदार हूं
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हूं ॥
१०१ मैं ने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक
रक्खा है
जिस से तेरे वचन के अनुसार चलूं ॥
१०२ मैं तेरे नियमों से नहीं हटा
क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है ॥
१०३ तेरे वचन मुझ को[3] कैसे मीठे लगते हैं
वे मुंह में के मधु से भी मीठे हैं ॥
१०४ तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूं
इसलिये मैं सब असत् मार्गों से बैर रखता हूं ॥

(१) मूल में तेरे मुख की ।
(२) मूल में सारी पूर्णता का मैं ने अंत देखा है ।
(३) मूल में मेरे तालू को ।

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक १०५
और मेरे पथ के लिये उजियाला है ॥
मैं ने किरिया खाई और ठाना भी है १०६
कि मैं तेरे धर्म्ममय नियमों के अनुसार चलूंगा ॥
मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हूं १०७
हे यहोवा अपने वचन के अनुसार मुझे जिला ॥
हे यहोवा मेरे वचनों को स्वेच्छाबलि जानकर १०८
अंगीकार कर
और अपने नियमों को मुझे सिखा ।
मेरा प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर रहता है १०९
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया ॥
दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है ११०
पर मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से नहीं भटका ॥
मैं ने तेरी चितौनियों को सदा के लिये अपना १११
निज भाग कर लिया है
क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण हैं ॥
मैं ने अपने मन को इस बात पर लगाया है ११२
कि अन्त लों तेरी विधियों पर सदा चलता रहूं ॥
मैं दुचित्तों से तो बैर रखता ११३
पर तेरी व्यवस्था में प्रीति रखता हूं ॥
तू मेरी आड़ और ढाल है ११४
मेरी आशा तेरे वचन पर है ॥
हे कुकर्म्मियो मुझ से दूर हो जाओ ११५
कि मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को पकड़े रहूं ॥
हे यहोवा अपने वचन के अनुसार मुझे संभाल ११६
कि मैं जीता रहूं
और मेरी आशा को न तोड़ ॥
मुझे थांभ रख तब मैं बचा रहूंगा ११७
और निरन्तर तेरी विधियों की ओर चित्त लगाये रहूंगा ॥
जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक जाते हैं ११८
उन सब को तू तुच्छ जानता है
क्योंकि उन की चतुराई झूठ है ॥
तू ने पृथिवी के सब दुष्टों को धातु के मैल के समान ११९
दूर किया है
इस कारण मैं तेरी चितौनियों में प्रीति रखता
हूं ॥
तेरे भय से मेरे रोएं खड़े हुये १२०
और मैं तेरे नियमों से डरता हूं ॥
मैं ने तो न्याय और धर्म्म किया है १२१
तू मुझे अंधेर करनेहारों के हाथ में न छोड़ ॥
अपने दास की भलाई के लिये जामिन हो १२२
अभिमानी मुझ पर अंधेर न करने पाएं ॥

१२३ मेरी आंखें तुझ से उद्धार पाने की और तेरे धर्म्ममय वचन के पूरे होने की
बाट जोहते जोहते रह गई हैं ॥
१२४ अपने दास के संग अपनी करुणा के अनुसार बर्ताव कर
और अपनी विधियां मुझे सिखा ॥
१२५ मैं तेरा दास हूं तू मुझे समझ दे
कि मैं तेरी चितौनियों को समझूं ॥
१२६ वह समय आया है कि यहोवा काम करे
क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को तोड़ दिया है ॥
१२७ इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं में
सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक प्रीति रखता हूं ॥
१२८ इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब विषयों में ठीक जानता हूं
और सब असत् मार्गों से बैर रखता हूं ॥
१२९ तेरी चितौनियां अनूप हैं
इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हूं ॥
१३० तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है
उस से भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं ॥
१३१ मैं मुंह खोलकर हांफने लगा
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा था ॥
१३२ जैसी तेरी रीति अपने नाम की प्रीति रखनेहारों से है
वैसे ही मेरी ओर भी फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर ॥
१३३ मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर जमा
और कोई अनर्थ बात मुझ पर प्रभुता न करने दे ॥
१३४ मुझे मनुष्यों के अन्धेर से छुड़ा ले
तब मैं तेरे उपदेशों को मानूंगा ॥
१३५ अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका
और अपनी विधियां मुझे सिखा ॥
१३६ मेरी आंखों से जल की धारा बहती रहती है
इस कारण कि लोग तेरी व्यवस्था को नहीं मानते ॥
१३७ हे यहोवा तू धर्म्मी है
और तेरे नियम सीधे हैं ॥
१३८ तू ने अपनी चितौनियों को
धर्म्म और पूरी सत्यता से कहा है ॥
१३९ मैं धुन के मारे भस्म हुआ हूं
इस कारण कि मेरे सतानेहारे तेरे वचनों को भूल गये हैं ॥
१४० तेरा वचन पूरी रीति से ताया हुआ है
और तेरा दास उस में प्रीति रखता है ॥
१४१ मैं छोटा और तुच्छ हूं
मैं तेरे उपदेशों को भूल नहीं गया ॥
१४२ तेरा धर्म्म सदा का धर्म्म है
और तेरी व्यवस्था सत्य है ॥
१४३ मैं संकट और सकेती में फंसा हूं
मैं तेरी आज्ञाओं से सुखी हूं ॥
१४४ तेरी चितौनियां सदा धर्म्ममय हैं
तू मुझ को समझ दे कि मैं जीता रहूं ॥
१४५ मैं ने सारे मन से पुकारा है हे यहोवा मेरी सुन ले
मैं तेरी विधियों को पकड़े रहूंगा ॥
१४६ मैं ने तुझ को पुकारा है तू मेरा उद्धार कर
और मैं तेरी चितौनियों को माना करूंगा ॥
१४७ मैं ने पह फटने से पहिले दोहाई दी
मेरी आशा तेरे वचनों पर थी ॥
१४८ मेरी आंखें रात के एक एक पहर से पहिले खुल गईं
कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूं ॥
१४९ अपनी करुणा के अनुसार मेरी सुन ले
हे यहोवा अपनी रीति के अनुसार मुझे जिला ॥
१५० जो दुष्टता में धुन लगाते हैं सो निकट आ गये हैं
वे तेरी व्यवस्था से दूर पड़े हैं ॥
१५१ हे यहोवा तू निकट है
और तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं ॥
१५२ बहुत काल से मैं तेरी चितौनियों से जानता हूं
कि तू ने उन की नेव सदा के लिये डाली है ॥
१५३ मेरे दुख को देखकर मुझे छुड़ा
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया ॥
१५४ मेरा मुकद्दमा लड़ और मुझे छुड़ा ले
अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला ॥
१५५ दुष्टों को उद्धार मिलना कठिन है[१]
क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं रखते ॥
१५६ हे यहोवा तेरी दया तो बड़ी है
सो अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला ॥
१५७ मेरा पीछा करनेहारे और मेरे सतानेहारे बहुत हैं
मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटा ॥
१५८ मैं विश्वासघातियों को देखकर उदास हुआ
क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते ॥
१५९ देख कि मैं तेरे उपदेशों में कैसी प्रीति रखता हूं
हे यहोवा अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला ॥
१६० तेरा सारा वचन[२] सत्य ही है
और तेरा एक एक धर्म्ममय नियम सदा का है ॥

(१) मूल में उद्धार दुष्टों से दूर है। (२) मूल में तेरे वचन का जोड़।

१६१ हाकिम अकारण मेरे पीछे पड़े तो हैं
पर मेरा हृदय तेरे वचनों से भय करता है ॥
१६२ जैसा कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है
वैसा ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूं ॥
१६३ झूठ से तो मैं बैर और घिन रखता हूं
पर तेरी व्यवस्था में प्रीति रखता हूं ॥
१६४ तेरे धर्म्ममय नियमों के कारण मैं दिन दिन
सात बेर तेरी स्तुति करता हूं ॥
१६५ तेरी व्यवस्था में प्रीति रखनेहारों को बड़ी शान्ति
होती है
और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती ॥
१६६ हे यहोवा मैं तुझ से उद्धार पाने की आशा
रखता
और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूं ॥
१६७ मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता
और उन में बहुत प्रीति रखता आया हूं ॥
१६८ मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को मानता
आया हूं
क्योंकि मेरी सारी चालचलन तेरे सन्मुख
प्रगट है ॥
१६९ हे यहोवा मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे
तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे ॥
१७० मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुंचे
तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ॥
१७१ मेरे मुंह से स्तुति निकला करे[१]
क्योंकि तू मुझे अपनी विधियां सिखाता
है ॥
१७२ मैं तेरे वचन का गीत गाऊं
क्योंकि तेरी सारी आज्ञाएं धर्म्ममय हैं ॥
१७३ तेरा हाथ मेरी सहायता करने को तैयार रहे
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों को अपनाया है ॥
१७४ हे यहोवा मैं तुझ से उद्धार पाने की अभिलाषा
करता हूं
मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं ॥
१७५ मुझे जिला और मैं तेरी स्तुति करूंगा
तेरे नियमों से मेरी सहायता हो ॥
१७६ मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटका हूं तू अपने
दास को ढूंढ़
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं
गया ॥

(१) मूल में मेरे होंठ स्तुति बहाएं।

यात्रा का गीत।

१२०. संकट के समय मैं ने यहोवा को पुकारा

और उस ने मेरी सुन ली ॥
२ हे यहोवा झूठ बोलनेहारे मुंह से
और छली जीभ से मेरी रक्षा कर ॥
३ हे छली जीभ
तुझ को क्या मिले और तेरे साथ क्या अधिक
किया जाए ॥
४ वीर के नोकीले तीर
और झाऊ के अंगारे ॥
५ हाय हाय क्योंकि मुझे मेशेक में परदेशी होकर
रहना
और केदार के तंबुओं के बीच बसना पड़ा
है ॥
६ बहुत काल से मुझ को
मेल के बैरियों के बीच बसना पड़ा है ॥
७ मैं तो मेल चाहता हूं
पर मेरे बोलते ही वे लड़ने चाहते हैं ॥

यात्रा का गीत।

१२१. मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर लगाऊंगा[२]

मुझे सहायता कहां से मिलेगी ॥
२ मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है
जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है ॥
३ वह तेरे पांव को टलने न देगे
तेरा रक्षक कभी न ऊंघे ॥
४ सुन इस्राएल का रक्षक
न ऊंघेगा न सो जाएगा ॥
५ यहोवा तेरा रक्षक है
यहोवा तेरी दहिनी ओर तेरी आड़ है ॥
६ न तो दिन को धूप से
और न रात को चान्दनी से तेरी कुछ हानि
होगी ॥
७ यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा ॥
८ यहोवा तेरे आने जाने में
तेरी रक्षा अब से ले सदा लों करता रहेगा ॥

(२) मूल में उठाऊंगा।

यात्रा का गीत। दाऊद का।

१२२. जब लोगों ने मुझ से कहा कि हम यहोवा के भवन को चलें
तब मैं आनन्दित हुआ ॥
२ हे यरूशलेम तेरे फाटकों के भीतर
हम खड़े हो गये हैं ॥
३ हे यरूशलेम तू ऐसे नगर के समान बना है
जिस के घर एक दूसरे से मिले हुए हैं ॥
४ वहां याह के गोत्र गोत्र के लोग
यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं
यह इस्राएल के लिये चितौनी है ॥
५ वहां तो न्याय के सिंहासन
दाऊद के घराने के लिये धरे हुए हैं ॥
६ यरूशलेम की शांति का बर मांगो
तेरे प्रेमी कुशल से रहें ॥
७ तेरी शहरपनाह के भीतर शांति
और तेरे महलों में कुशल होवे ॥
८ अपने भाइयों और संगियों के निमित्त
मैं कहूंगा कि तुझ में शांति होवे ॥
९ अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के निमित्त
मैं तेरी भलाई का यत्न करूंगा ॥

यात्रा का गीत।

१२३. हे स्वर्ग में विराजमान
मैं अपनी आंखें तेरी ओर लगाता[१] हूं ॥
२ देख जैसे दासों की आंखें स्वामियों के हाथ की ओर
और जैसे दासियों की आंखें स्वामी के हाथ की ओर लगी रहती हैं,
वैसे ही हमारी आंखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर लगी तब लों रहेंगी
जब लों वह हम पर अनुग्रह न करे ॥
३ हम पर अनुग्रह कर हे यहोवा हम पर अनुग्रह कर
क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गये हैं ॥
४ हमारा जीव सुखियों के ठट्ठों से
और अहंकारियों के अपमान से
बहुत ही भर गया है ॥

यात्रा का गीत। दाऊद का।

१२४. इस्राएल यह कहे
कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता
२ यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता
जब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई की
३ तो वे हम को तब ही जीते निगल जाते
जब उन का कोप हम पर भड़का था ॥
४ हम तब ही जल में डूब जाते
और धारा में बह जाते[२] ॥
५ उमंडते[३] जल में हम तब ही बह जाते ॥
६ धन्य है यहोवा
कि उस ने हम को उन के दांतों से काटे जाने न दिया ॥
७ हमारा जीव पक्षी की नाईं चिड़ीमार के जाल से छूट गया
जाल फट गया हम बच निकले ॥
८ यहोवा जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है
हमारी सहायता उसी के नाम से होती है ॥

यात्रा का गीत।

१२५. जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं
सो सिय्योन पर्वत के समान हैं
जो टलता नहीं सदा बना रहता है ॥
२ जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं
उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर
अब से ले सर्वदा लों रहेगा ॥
३ क्योंकि दुष्टों का राजदण्ड धर्म्मियों के भाग पर बना न रहेगा
ऐसा न हो कि धर्म्मी अपने हाथ कुटिल काम की ओर बढ़ाएं ॥
४ हे यहोवा भलों का
और सीधे मनवालों का भला कर ॥
५ पर जो मुड़कर टेढ़े पथों में चलते हैं
उन को यहोवा अनर्थकारियों के संग चला देगा
इस्राएल को शांति मिले ॥

यात्रा का गीत।

१२६. जब यहोवा सिय्योन के लौटनेहारों को लौटा ले आया
तब हम स्वप्न देखनेहारे से हो गये ॥
२ तब हम आनन्द से हंसने
और जयजयकार करने लगे,[४]

(१) मूल में उठाता।

(२) मूल में नदी हमारे प्राण के ऊपर से जाती।
(३) मूल में अभिमानी।
(४) मूल में हमारा मुंह हंसी से और हमारी जीभ ऊंचे स्वर के गीत से भर गई।

तब जाति जाति के बीच कहा जाता था
कि यहोवा ने इन के साथ बड़े बड़े काम किये हैं ॥
३ यहोवा ने हमारे साथ बड़े बड़े काम किये ता हैं
और इस से हम आनन्दित हुए ॥
४ हे यहोवा दक्खिन देश के नालों की नाईं
हमारे बंधुओं[1] को लौटा ले आ ॥
५ जो आंसू बहाते हुए बोते हैं
सो जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे ॥
६ चाहे बोनेहारा बीज लिये रोता हुआ चला जाए
पर वह फिर पूलियां लिये जयजयकार करता हुआ
निश्चय लौट आएगा ॥

यात्रा का गीत । सुलैमान का ।

१२७. यदि घर को यहोवा न बनाए
तो उस के बनानेहारों का
परिश्रम व्यर्थ होगा
यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे
तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा ॥
२ तुम जो सबेरे उठते और अबेर करके बिश्राम करते
और दुःखभरी रोटी खाते हो तो तुम्हारे लिये यह
सब व्यर्थ ही है
क्योंकि वह अपने प्रियों को योंही नींद दान करता है ॥
३ देखो लड़के यहोवा के दिये हुए भाग हैं
गर्भ का फल उस की ओर से बदला है ॥
४ जैसे वीर के हाथ में के तीर
वैसे ही जवान के लड़के होते हैं ॥
५ क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने अपने तर्कश
को उन से भर लिया हो
वे फाटक के पास शत्रुओं से बातें करते संकोच
न करेंगे ॥

यात्रा का गीत ।

१२८. क्या ही धन्य है हर एक जो
यहोवा का भय मानता
और उस के मार्गों पर चलता है ॥
२ तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा
तू क्या ही धन्य होगा और तेरा क्या ही भला
होगा ॥
३ तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता
सी होगी
तेरी मेज के चारों ओर तेरे बालक जलपाई के
पौधे से होंगे ॥

(१) मूल में हमारी बंधुआई ।

४ सुन जो पुरुष यहोवा का भय मानता हो
सो ऐसी ही आशिष पाएगा ॥
५ यहोवा तुझे सिय्योन से आशिष देवे
और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल देखता
रहे ॥
६ बरन तू अपने नाती पोतों को देखने पावे
इस्राएल को शान्ति मिले ॥

यात्रा का गीत ।

१२९. इस्राएल यह कहे
कि मेरे बचपन से लोग मुझे
बार बार क्लेश देते आये हैं ॥
२ मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार क्लेश देते तो
आये हैं
पर मुझ पर प्रबल नहीं हुए ॥
३ हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर हल चलाया
और लम्बी लम्बी रेखाएं कीं ॥
४ यहोवा धर्म्मी है
उस ने दुष्टों के फंदों को काट डाला है ॥
५ जितने सिय्योन से बैर रखते हैं
उन सभों की आशा टूटे और उन को पीछे हटना
पड़े ॥
६ वे छत पर की घास के समान हों
जो बढ़ते न बढ़ते सूख जाती है
७ जिस से कोई लवैया अपनी मुट्ठी नहीं भरता
न पूलियों का कोई बांधनेहारा अपनी अकवार भर
लेता है ॥
८ और न आने जानेहारे कहते हैं
कि यहोवा की आशिष तुम पर होवे
हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद
देते हैं ॥

यात्रा का गीत ।

१३०. हे यहोवा मैं ने गहिरे स्थानों में से
तुझ को पुकारा है ॥
२ हे प्रभु मेरी सुन
तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से लगे
रहें ॥
३ हे याह यदि तू अधर्म्म के कामों का लेखा ले
तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा ॥
४ पर तू क्षमा करनेहारा है[2]

(२) मूल में तेरे पास क्षमा है ।

जिस से तेरा भय माना जाए॥
५ मैं यहोवा की बाट जोहता हूं मैं जी से उस की बाट जोहता हूं
और मेरी आशा उस के वचन पर है॥
६ पहरुए जितना भोर को चाहते हैं
पहरुए जितना भोर को चाहते हैं
उस से भी अधिक मैं यहोवा को जी से चाहता हूं॥
७ इस्राएल यहोवा की आशा लगाये रहे
क्योंकि यहोवा करुणा करनेहारा
और पूरा छुटकारा देनेहारा है[१]॥
८ इस्राएल को सारे अधर्म्म के कामों से
वही छुटकारा देगा॥

यात्रा का गीत। दाऊद का।

१३१. हे यहोवा न तो मेरा मन गर्वी है और न मेरी दृष्टि घमण्ड भरी
और जो बातें बड़ी और मेरे लिये अधिक कठिन हैं
उन से मैं काम नहीं रखता॥
२ निश्चय मैं ने अपने मन को[२] शान्त और चुप कर दिया है
जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी मा की गोद में[३] रहता है
वैसे ही दूध छुड़ाये हुए लड़के के समान मेरा मन भी रहता है[४]॥
३ इस्राएल अब से ले सदा लों
यहोवा की आशा लगाये रहे॥

यात्रा का गीत।

१३२. हे यहोवा दाऊद के लिये उस की सारी दुर्दशा को स्मरण कर॥
२ उस ने यहोवा से किरिया खाई
और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्नत मानी
३ कि निश्चय मैं तब लों न अपने घर में[५] प्रवेश करूंगा
न अपने पलंग पर चढ़ूंगा
४ न अपनी आंखों में नींद
न अपनी पलकों में झपकी आने दूंगा
५ जब लों मैं यहोवा के लिये एक स्थान
अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास न पाऊं॥
६ देखो हम ने एप्राता में इस की चर्चा सुनी
हम ने इस को वन के खेतों में पाया है॥
७ आओ हम उस के निवास में प्रवेश करें
हम उस के चरणों की चौकी के आगे दण्डवत् करें॥
८ हे यहोवा उठकर अपने विश्रामस्थान में
अपने सामर्थ्य के सन्दूक समेत आ॥
९ तेरे याजक धर्म्म के वस्त्र पहिने रहें
और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें॥
१० अपने दास दाऊद के लिये
अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को सुनी अनसुनी न कर[६]॥
११ यहोवा ने दाऊद से सच्ची किरिया खाई
और वह उससे न मुकरेगा
कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊंगा॥
१२ यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा को पालें
और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा उस पर चलें
तो उन के वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग युग बैठते चले जाएंगे॥
१३ क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया
और अपने निवास के लिये चाहा है॥
१४ यह तो युग युग के लिये मेरा विश्रामस्थान है
यहीं मैं रहूंगा क्योंकि मैं ने इस को चाहा है॥
१५ मैं इस में की भोजनवस्तुओं पर अति आशिष दूंगा
और इस में के दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा॥
१६ और मैं इस में के याजकों को उद्धार का वस्त्र पहिनाऊंगा
और इस में के भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे॥
१७ वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा।
मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रक्खा है॥
१८ मैं उस के शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा
पर उसी के सिर पर उस का मुकुट शोभायमान रहेगा॥

(१) मूल में यहोवा के पास करुणा और उसी के पास बहुत छुटकारा है। (२) मूल में जीव को। (३) मूल में मा पर। (४) मूल में मेरे पर रहता। (५) मूल में अपने घर के डेरे में।

(६) मूल में अभिषिक्त का मुख न फेर दे।

यात्रा का गीत । दाऊद का ।

१३३. देखो यह क्या ही भली और क्या ही मनोहर बात है
कि भाई लोग आपस में मिले रहें ।।
२ यह तो उस उत्तम तेल के समान है
जो हारून के सिर पर डाला गया
और उस की दाढ़ी पर बहकर
उस के वस्त्र की छोर तक पहुंच गया
३ वा हेमान् की उस ओस के समान है
जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरे
यहोवा ने तो वहीं
सदा के जीवन की आशिष ठहराई है ।।

यात्रा का गीत ।

१३४. हे यहोवा के सब सेवको सुनो तुम जो रात रात यहोवा के भवन में खड़े रहते हो
यहोवा को धन्य कहो ।।
२ अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर
यहोवा को धन्य कहो ।।
३ यहोवा जो आकाश और पृथिवी का कर्त्ता है
सो सिय्योन में से तुझे आशिष देवे ।।

१३५. याह की स्तुति करो[१]
यहोवा के नाम की स्तुति करो
हे यहोवा के सेवको तुम स्तुति करो ।।
२ तुम जो यहोवा के भवन में
अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में खड़े रहते हो
३ याह की स्तुति करो[१] क्योंकि यहोवा भला है
उस के नाम का भजन गाओ क्योंकि यह मनभाऊ है ।।
४ याह ने तो याकूब को अपने लिये चुना
अर्थात् इस्राएल को अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है ।।
५ मैं तो जानता हूं कि हमारा प्रभु यहोवा
सारे देवताओं से महान है ।।
६ जो कुछ यहोवा ने चाहा
सो उस ने आकाश और पृथिवी और समुद्र और
सब गहिरे स्थानों में किया है ।।
७ वह पृथिवी की छोर से कुहरे उठाता
और वर्षा के लिये बिजली बनाता
और पवन को अपने भण्डार में से निकालता है ।।
८ उस ने मिस्र में क्या मनुष्य क्या पशु
सब के पहिलौठों को मार डाला ।।
९ हे मिस्र उस ने तेरे मध्य में
फिरौन और उस के सब कर्म्मचारियों के बीच चिन्ह और चमत्कार किये[२] ।।
१० उस ने बहुत सी जातियां नाश कीं
और सामर्थी राजाओं को
११ अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन को
और बाशान के राजा ओग को
और कनान के सारे राजाओं का घात किया
१२ और उन के देश को बांटकर
अपनी प्रजा इस्राएल के भाग होने के लिये दे दिया ।।
१३ हे यहोवा तेरा नाम सदा का है
हे यहोवा जिस नाम से तेरा स्मरण होता है सो पीढ़ी पीढ़ी बना रहेगा ।।
१४ यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय चुकाएगा
और अपने दासों की दुर्दशा देखकर तरस खाएगा ।।
१५ अन्यजातियों की मूरतें सोना चान्दी ही हैं
वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं ।।
१६ उन के मुंह तो रहता है पर वे बोल नहीं सकतीं
उन के आंख तो रहती हैं पर वे देख नहीं सकतीं ।।
१७ उन के कान तो रहते हैं पर वे सुन नहीं सकतीं
न उन के कुछ भी सांस चलती है ।।
१८ जैसी वे हैं वैसे ही उन के बनानेहारे
और उन पर के सब भरोसा रखनेहारे भी हो जाएंगे ।।
१९ हे इस्राएल के घराने यहोवा को धन्य कह
हे हारून के घराने यहोवा को धन्य कह ।।
२० हे लेवी के घराने यहोवा को धन्य कह
हे यहोवा के डरवैयो यहोवा को धन्य कहो ।।
२१ यहोवा जो यरूशलेम में वास करता है

(१) मूल में हल्ललूयाह ।

(२) मूल में भेजे ।

सो सिय्योन में धन्य कहा जावे
याह की स्तुति करो[१] ॥

१३६. यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है

उस की करुणा सदा की है ॥
२ जो ईश्वरों का परमेश्वर है उस का धन्यवाद करो
उस की करुणा सदा की है ॥
३ जो प्रभुओं का प्रभु है उस का धन्यवाद करो
उस की करुणा सदा की है ॥
४ उस को छोड़कर कोई बड़े बड़े आश्चर्य्यकर्म्म नहीं करता
उस की करुणा सदा की है ॥
५ उस ने अपनी बुद्धि से आकाश बनाया
उस की करुणा सदा की है ॥
६ उस ने पृथिवी को जल के ऊपर फैलाया
उस की करुणा सदा की है ॥
७ उस ने बड़ी बड़ी ज्योतियां बनाईं
उस की करुणा सदा की है,
८ दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य्य को
उस की करुणा सदा की है,
९ और रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा और तारागण को
उस की करुणा सदा की है,
१० उस ने मिस्रियों के पहिलौठों को मारा
उस की करुणा सदा की है,
११ और उन के बीच से इस्राएलियों को
उस की करुणा सदा की है,
१२ बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से निकाला
उस की करुणा सदा की है ॥
१३ उस ने लाल समुद्र को खण्ड खण्ड कर दिया
उस की करुणा सदा की है,
१४ और इस्राएल को उस के बीच से पार कर दिया
उस की करुणा सदा की है,
१५ और फिरौन को सेना समेत लाल समुद्र में झटक दिया
उस की करुणा सदा की है ॥
१६ वह अपनी प्रजा को जंगल में ले चला
उस की करुणा सदा की है ॥

(१) मूल में हल्ललूयाह।

१७ उस ने बड़े बड़े राजा मारे
उस की करुणा सदा की है ॥
१८ उस ने प्रतापी राजाओं को
उस की करुणा सदा की है,
१९ एमोरियों के राजा सीहोन को
उस की करुणा सदा की है,
२० और बाशान के राजा ओग को घात किया
उस की करुणा सदा की है,
२१ और उन के देश को भाग होने के लिये
उस की करुणा सदा की है,
२२ अपने दास इस्राएलियों के भाग होने के लिये दे दिया
उस की करुणा सदा की है ॥
२३ उस ने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि ली
उस की करुणा सदा की है,
२४ और हम को द्रोहियों से छुड़ाया है
उस की करुणा सदा की है ॥
२५ वह सारे प्राणियों को आहार देता है
उस की करुणा सदा की है ॥
२६ स्वर्गवासी ईश्वर का धन्यवाद करो
उस की करुणा सदा की है ॥

१३७. बाबेल की नहरों के किनारे हम लोग बैठ गये

और सिय्योन को स्मरण करके रो दिये ॥
२ उस के बीच के मजनू वृक्षों पर
हम ने अपनी वीणाओं को टांग दिया ॥
३ क्योंकि जो हम को बंधुए करके ले गये थे उन्हों ने वहां हम से गीत[२] गवाना चाहा
और हमारे रुलानेहारों ने हम से आनन्द चाहकर कहा
सिय्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ ॥
४ हम यहोवा के गीत को
पराये देश में क्योंकर गाएं ॥
५ हे यरूशलेम यदि मैं तुझे भूल जाऊं
तो मेरा दहिना हाथ भूठा हो जाए[३] ॥
६ यदि मैं तुझे स्मरण न रक्खूं
यदि मैं यरूशलेम को
अपने सारे आनन्द से श्रेष्ठ न जानूं
तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए ॥
७ हे यहोवा यरूशलेम के दिन को एदोमियों के विषय स्मरण कर

(२) मूल में गीत के वचन। (३) मूल में भूल जाए।

कि वे क्योंकर कहते थे ढाओ उस को नेव से ढा दो ॥

८ हे बाबेल[१] तू जो उजड़नेवाली है
क्या ही धन्य वह होगा जो तुझ से ऐसा ही बर्ताव करेगा
जैसा तू ने हम से किया है ॥

९ क्या ही धन्य वह होगा जो तेरे बच्चों को पकड़कर
ढांग पर पटक देगा ॥

दाऊद का ।

१३८. मैं सारे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा

देवताओं के साम्हने भी मैं तेरा भजन गाऊंगा ॥

२ मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा
और तेरी करुणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा
क्योंकि तू ने ऐसा वचन दिया है जो तेरे बड़े नाम से भी बढ़कर है ॥

३ जिस दिन मैं ने पुकारा उसी दिन तू ने मेरी सुन ली
और मुझ में बल देकर हियाव बंधाया ॥

४ हे यहोवा पृथिवी के सारे राजा तेरा धन्यवाद करेंगे
क्योंकि उन्हों ने तेरे वचन सुने हैं ॥

५ और वे यहोवा की गति के विषय गाएंगे
क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है ॥

६ यद्यपि यहोवा महान है तौभी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है
पर अहंकारी को दूर ही से पहिचानता है ॥

७ चाहे मैं संकट के बीच में रहूं[२] तौभी तू मुझे जिलाएगा
तू मेरे क्रोधित शत्रुओं के विरुद्ध हाथ बढ़ाएगा
और अपने दहिने हाथ से मेरा उद्धार करेगा ॥

८ यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा
हे यहोवा तेरी करुणा सदा की है
तू अपने हाथों के कार्य्यों को त्याग न कर ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये दाऊद का भजन ।

१३९. हे यहोवा तू ने मुझे जांचकर जान लिया है ॥

२ तू मेरा उठना बैठना जानता
और मेरे विचारों को दूर से भी समझ लेता है ॥

३ मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता
और मेरी सारी चालचलन का भेद जानता है ॥

४ और हे यहोवा मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं
जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो ॥

५ तू ने मुझे आगे पीछे घेर रक्खा
और अपना हाथ मुझ पर रक्खे रहता है ॥

६ यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है
यह गम्भीर[३] और मेरी समझ से बाहिर है ॥

७ मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं
वा तेरे साम्हने से किधर भागूं ॥

८ यदि मैं आकाश पर चढ़ूं तो तू वहां है
और यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है ॥

९ यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर[४] समुद्र के पार बसूं[५]

१० तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा
और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा ॥

११ और यदि मैं कहूं अंधकार में तो मैं छिप जाऊंगा
और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अंधेरा हो जाएगा

१२ तौभी अंधकार तुझ से न छिपाएगा
रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी
अंधियारा और उजियाला दोनों एक समान होंगे ॥

१३ मेरे मन का स्वामी तो तू है
तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा ॥

१४ मैं तेरा धन्यवाद करूंगा इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया ॥
तेरे काम तो आश्चर्य्य के हैं
और मैं इसे भली भांति जानता हूं ॥

१५ जब मैं गुप्त में बनाया जाता
और पृथिवी के नीचे स्थानों में रचा जाता था
तब मेरी हड्डियां तुझ से छिपी न थीं ॥

१६ तू मुझे गर्भ में देखता था
और मेरे सब अङ्ग जो दिन दिन बनते जाते थे
सो रचे जाने से पहिले
तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे ॥

१७ और मेरे लिये तो हे ईश्वर तेरे विचार क्या ही प्रिय हैं
उन की संख्या का जोड़ क्या ही बड़ा है ॥

(१) मूल में हे बाबेल की बेटी । (२) मूल में चलूं ।

(३) मूल में ऊंचे पर । (४) मूल में के पंख उठाकर ।
(५) मूल में पिछले भाग में बसूं ।

१८ यदि मैं उन को गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते
जब मैं जाग उठता हूं तब भी तेरे संग रहता हूं ॥
१९ हे ईश्वर निश्चय तू दुष्ट को घात करेगा
हे हत्यारो मुझ से दूर हो जाओ ॥
२० क्योंकि वे तेरी चर्चा चतुराई से करते हैं
तेरे द्रोही तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं ॥
२१ हे यहोवा क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रक्खूं
और तेरे विरोधियों से रूठ न जाऊं ॥
२२ हां मैं उन से पूर्ण बैर रखता हूं
मैं उन को अपने शत्रु करके मानता हूं ॥
२३ हे ईश्वर मुझे जांचकर जान ले
मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले ॥
२४ और देख कि मुझ में कोई संताप करनेहारी चाल है कि नहीं
और सदा के मार्ग में मेरी अगुवाई कर ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये । दाऊद का । भजन ।

१४०. हे यहोवा मुझ को बुरे मनुष्य से बचा ले
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर ॥
२ क्योंकि उन्हों ने मन में बुरी कल्पनाएं की हैं
वे लगातार लड़ाइयां मचाते हैं ॥
३ उन का बोलना सांप का काटना सा है[१]
उन के मुंह में[२] नाग का सा विष रहता है । सेला ॥
४ हे यहोवा मुझे दुष्ट के हाथों से बचा
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर
क्योंकि उन्हों ने मेरे पैरों के उखाड़ने की युक्ति की है ॥
५ घमण्डियों ने मेरे लिये फंदा और पासे लगाये
और पथ के किनारे जाल बिछाया
उन्हों ने मेरे लिये फसरियां लगाई हैं । सेला ॥
६ हे यहोवा मैं ने तुझ से कहा है कि तू मेरा ईश्वर है
हे यहोवा मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा ॥
७ हे यहोवा प्रभु हे मेरे सामर्थी उद्धारकर्त्ता[३]
तू ने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा की है ॥
८ हे यहोवा दुष्ट की इच्छा को पूरी न कर
उस की बुरी युक्ति को सफल न कर नहीं तो वह घमण्ड करेगा । सेला ॥
९ मेरे घेरनेहारों के सिर पर
उन्हीं का विचारा हुआ उत्पात[४] पड़े ॥
१० उन पर अंगारे डाले जाएं
वे आग में गिरा दिये जाएं
और ऐसे गड़हों में गिरें कि वे फिर उठ न सकें ॥
११ बकवादी पृथिवी पर स्थिर नहीं होने का
उपद्रवी पुरुष को बुराई गिराने के लिये अहेर करेगी ॥
१२ हे यहोवा मुझे निश्चय है कि तू दीन जन का
और दरिद्रों का न्याय चुकाएगा ॥
१३ निःसंदेह धर्म्मी तेरे नाम का धन्यवाद करने पाएंगे
सीधे लोग तेरे सम्मुख वास करेंगे ॥

दाऊद का । भजन ।

१४१. हे यहोवा मैं ने तुझे पुकारा है मेरे लिये फुर्ती कर
जब मैं तुझ को पुकारूं तब मेरी ओर कान लगा ॥
२ मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने सुगन्ध धूप
और मेरा हाथ फैलाना संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे ॥
३ हे यहोवा मेरे मुख पर पहरा बैठा
मेरे होंठों के द्वार की रखवाली कर ॥
४ मेरा मन किसी बुरी बात की ओर फिरने न दे
मैं अनर्थकारी पुरुषों के संग
दुष्ट कामों में न लगूं
और मैं उन के स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं में से कुछ न खाऊं ॥
५ धर्म्मी मुझ को मारे तो यह कृपा मानी जाएगी
और वह मुझे ताड़ना दे तो यह मेरे सिर पर का तेल ठहरेगा
मैं अपने सिर के लिये उसे नाह न करूं
लोगों के बुरे काम करने पर भी मैं प्रार्थना में लवलीन रहूंगा ॥
६ उन के न्यायी ढांग के पास गिराये गये
और उन्हों ने मेरे वचन सुन लिये क्योंकि वे मधुर हैं ॥
७ जैसे भूमि में हल चलने और ढेले फूटने के समय

(१) मूल में उन्हों ने सांपों की नाईं अपनी जीभ तेज की है ।
(२) मूल में होंठों के नीचे । (३) मूल में हे मेरे उद्धार के बल ।
(४) मूल में उन्हीं के होंठों का उत्पात ।

हमारी हड्डियां अधोलोक के मुंह पर छितराई हुई हैं ॥
८ पर हे यहोवा प्रभु मेरी आंखें तेरी ही ओर लगी हैं
मैं तेरा शरणागत हूं तू मेरा प्राण जाने न दे ।
९ मेरे लिये लगाये हुए फंदे से
और अनर्थकारियों की फंसरियों से मेरी रक्षा कर ॥
१० दुष्ट लोग अपने जालों में आप ही फंसें
और उस अवसर में मैं बच निकलूं ॥

दाऊद का मस्कील । जब वह गुफा में था । प्रार्थना ।

१४२. मैं यहोवा की दोहाई देता
मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हूं ॥
२ मैं अपने शोक की बातें उस से खोलकर कहता[1]
मैं अपना संकट उस के आगे प्रगट करता हूं ॥
३ जब मेरा आत्मा दपा हुआ था तब तू मेरी दशा[2] को जानता था
जिस रास्ते से मैं जानेवाला था उसी में उन्हों ने मेरे लिये फंदा लगाया ॥
४ मेरी दहिनी ओर देख कोई मुझ को नहीं पहिचानता
मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही मुझ को कोई नहीं पूछता ॥
५ हे यहोवा मैं ने तेरी दोहाई दी है
मैं ने कहा तू मेरा शरणस्थान है
मेरे जीते जी तू मेरा भाग है ॥
६ मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है
जो मेरे पीछे पड़े हैं उन से मुझे बचा ले
क्योंकि वे मुझ से अधिक सामर्थी हैं ॥
७ मुझ को बन्दीगृह से निकाल कि मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूं
धर्मी लोग मेरे चारों ओर आएंगे
इस लिये कि तू मेरा उपकार करेगा ॥

दाऊद का भजन ।

१४३. हे यहोवा मेरी प्रार्थना सुन मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा
तू जो सच्चा और धर्मी है सो[3] मेरी सुन ले ॥
२ और अपने दास से मुकद्दमा न उठा
क्योंकि कोई प्राणी तेरे लेखे निर्दोष नहीं ठहर सकता ॥
३ शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ
उस ने मुझे चूर कर के मिट्टी में मिलाया
और मुझे ढेर दिन के मरे हुओं के समान अंधेरे स्थान में डाल दिया है ॥
४ मेरा आत्मा दपा हुआ है
मेरा मन विकल है ॥
५ मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं
मैं तेरे सब अद्भुत कामों पर ध्यान करता
और तेरे काम को सोचता हूं ॥
६ मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाये हूं
सूखी भूमि की नाईं मैं तेरा प्यासा हूं । सेला ॥
७ हे यहोवा फुर्ती कर के मेरी सुन ले
क्योंकि मेरा प्राण निकलने पर है[4]
मुझ से अपना मुंह न फेर ले
ऐसा न हो कि मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊं ॥
८ अपनी करुणा की बात मुझे तड़के सुना
क्योंकि मैं ने तुझी पर भरोसा रक्खा है ।
जिस मार्ग से मुझे चलना है सो मुझ को बता दे
क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता[5] हूं ॥
९ हे यहोवा मुझे शत्रुओं से बचा ले
मैं तेरी ही आड़ में आ छिपा हूं ॥
१० मुझ को यह सिखा कि मैं तेरी इच्छा क्योंकर पूरी करूं क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है ।
तेरा आत्मा तो भला है सो मुझ को धर्म्म के मार्ग में ले चल ॥
११ हे यहोवा मुझे अपने नाम के निमित्त जिला
तू जो धर्मी है सो[6] मुझ को संकट से छुड़ा ॥
१२ और करुणा करके मेरे शत्रुओं को सत्यानाश कर
और मेरे सब सतानेहारों का नाश कर
क्योंकि मैं तेरा दास हूं ॥

दाऊद का ।

१४४. धन्य है यहोवा जो मेरी चटान है
वह मेरे हाथों को लड़ने और[7] युद्ध करने के लिये तैयार करता है ॥
२ वह मेरे लिये करुणानिधान और गढ़
ऊंचा स्थान और छुड़ानेहारा

(१) मूल में उस के साम्हने उण्डेलूंगा ।
(२) मूल में मेरा पथ ।
(३) मूल में अपनी सच्चाई और धार्म्मिकता से ।
(४) मूल में मेरा आत्मा मिट गया ।
(५) मूल में उठाता ।
(६) मूल में अपनी धार्म्मिकता से ।
(७) मूल में अंगुलियों से ।

ढाल और शरणस्थान है
मेरी प्रजा को मेरे वश में वही रखता है ॥
३ हे यहोवा मनुष्य क्या है कि तू उस की सुधि लेता है
आदमी क्या है कि तू उस का कुछ लेखा करता है ॥
४ मनुष्य तो सांस के समान है
उस के दिन मिटती हुई छाया के समान हैं ॥
५ हे यहोवा अपने स्वर्ग को नीचे करके उतर आ
पहाड़ों को छू तब उन से धूंआं उठेगा ॥
६ बिजली कड़काकर उन को तित्तर बित्तर कर
अपने तीर चलाकर उन को घबरा दे ॥
७ अपने हाथ ऊपर से बढ़ाकर
मुझे उबार और महासागर से
अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा ॥
८ उन के मुंह से तो व्यर्थ बातें निकलती हैं
और उन के दहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं[१] ॥
९ हे परमेश्वर मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊंगा
मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन गाऊंगा ॥
१० तू राजाओं का उद्धार करता
और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है ॥
११ तू मुझ को उबार और परदेशियों के वश से छुड़ा
जिन के मुंह से व्यर्थ बातें निकलतीं
और उन के दहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं ॥
१२ हमारे बेटे जो जवानी के समय पौधों की नाईं बढ़े हुए हों
हमारी बेटियां जो उन कोनेवाले पत्थरों के समान हों जो मन्दिर के पत्थरों की नाईं बनाये जाएं
१३ हमारे खत्ते जो भरे रहें और उन में भांति भांति का अन्न धरा जाए
हमारी भेड़ बकरियां जो हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जनें
१४ हमारे बैल जो खूब लदे हुए हों
हम पर जो न टूट पड़ना और न हमारा निकल जाना
और न हमारे चौकों में कुछ रोना पीटना हो
१५ इस दशा में जो राज्य हो सो क्या ही धन्य होगा
जिस राज्य का परमेश्वर यहोवा है सो क्या ही धन्य है ॥

(१) मूल में उन का दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है।

स्तुति । दाऊद का

१४५. हे मेरे परमेश्वर हे राजा मैं तुझे सराहूंगा
और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहूंगा ॥
दिन दिन मैं तुझ को धन्य कहा करूंगा २
और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहूंगा ॥
यहोवा महान् और स्तुति के अति योग्य है ३
और उस की बड़ाई अगम है ॥
तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे पराक्रम के कामों का वर्णन ४
पीढ़ी पीढ़ी होता चला जाएगा ॥
मैं तेरे ऐश्वर्य्य की महिमा के प्रताप पर ५
और तेरे भांति भांति के आश्चर्य्यकर्म्मों पर ध्यान करूंगा ॥
और लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति की चर्चा करेंगे ६
और मैं तेरे बड़े बड़े कामों का वर्णन करूंगा ॥
लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उस की चर्चा करेंगे ७
और तेरे धर्म्म का जयजयकार करेंगे ॥
यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु ८
विलम्ब से कोप करनेहारा और अति करुणामय है ॥
यहोवा सभों के लिये भला है ९
और उस की दया उस की सारी सृष्टि पर है ॥
हे यहोवा तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी १०
और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे ॥
वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे ११
और तेरे पराक्रम के विषय बातें करेंगे
इसलिये कि वे आदमियों को तेरे पराक्रम के काम १२
और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें ॥
तेरा राज्य युग युग का १३
और तेरी प्रभुता सारी पीढ़ियों की है ॥
यहोवा सब गिरते हुओं को संभालता १४
और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है ॥
सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं १५
और तू उन को आहार समय पर देता है ॥
तू अपनी मुट्ठी खोलकर १६
सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है ॥
यहोवा अपनी सारी गति में धर्म्मी १७

और अपने सब कामों में करुणामय है ॥
१८ जितने यहोवा को पुकारते हैं अर्थात् जितने उस को सच्चाई से पुकारते हैं
उन सभों के वह निकट होता है ॥
१९ वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा
और उन की दोहाई सुनकर उन का उद्धार करेगा ॥
२० यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा
पर सब दुष्टों को सत्यानाश करता है ॥
२१ मैं यहोवा की स्तुति करूंगा
और सारे प्राणी उस के पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें ॥

१४६. याह की स्तुति करो[१]

हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर ॥
२ मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूंगा
जब लों मैं बना रहूंगा तब लों मैं अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा ॥
३ तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना
न किसी आदमी पर क्योंकि उस में उद्धार करने की शक्ति नहीं ॥
४ उस का प्राण निकलेगा वह मिट्टी में मिल जाएगा
उसी दिन उस की सब कल्पनाएं नाश हो जाएंगी ॥
५ क्या ही धन्य वह है जिस का सहायक याकूब का ईश्वर हो
और जिस का आसरा अपने परमेश्वर यहोवा पर हो ॥
६ वह आकाश और पृथिवी और समुद्र
और उन में जो कुछ है सब का कर्त्ता है
और वह अपना वचन सदा लों पूरा करता रहेगा ॥
७ वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता
और भूखों को रोटी देता है
यहोवा बन्धुओं को छुड़ाता है ॥
८ यहोवा अन्धों को आंखें देता है
यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है
यहोवा धर्म्मियों से प्रेम रखता है ॥
९ यहोवा परदेशियों की रक्षा करता
और बपमूए और विधवा को तो सम्भालता है
पर दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा मेढ़ा करता है ॥
१० हे सिय्योन यहोवा सदा लों
तेरा परमेश्वर पीढ़ी पीढ़ी राज्य करता रहेगा
याह की स्तुति करो[१]

१४७. याह की स्तुति करो[१]

क्योंकि अपने परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है
वह मनभावना है स्तुति करनी फबती है ॥
२ यहोवा यरूशलेम को बसा रहा है
वह निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठा कर रहा है ॥
३ वह खेदित मनवालों को चंगा करता
और उन के शोक पर पट्टी बांधता है ॥
४ वह तारों को गिनता
और उन में से एक एक का नाम रखता है ॥
५ हमारा प्रभु महान् और अति सामर्थी है।
उस की बुद्धि अपार है ॥
६ यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता
और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता है ॥
७ धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत गाओ
वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का भजन गाओ ॥
८ वह आकाश को मेघों से छा देता
और पृथिवी के लिये मेंह की तैयारी करता
और पहाड़ों पर घास उगाता है ॥
९ वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को जो पुकारते हैं
आहार देता है ॥
१० न तो वह घोड़े के बल को चाहता
और न पुरुष के पैरों से प्रसन्न होता है ॥
११ यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न होता है
अर्थात् उन से जो उस की करुणा की आशा लगाये रहते हैं ॥
१२ हे यरूशलेम यहोवा की प्रशंसा कर
हे सिय्योन अपने परमेश्वर की स्तुति कर ॥
१३ क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के बेण्डों को दृढ़ किया
और तेरे लड़केबालों को[२] आशिष दी है ॥
१४ वह तेरे सिवानों में शान्ति देता
और तुझ को उत्तम से उत्तम गेहूं से तृप्त करता है ॥

(१) मूल में हल्ललूयाह।

(२) मूल में तेरे भीतर तेरे लड़कों को।

१५ वह पृथिवी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है
उस का वचन अति वेग से दौड़ता है ॥
१६ वह ऊन के समान हिम देता
और राख की नाईं पाला छितराता है ॥
१७ वह बरफ के टुकड़े गिराता है
उस की की हुई ठण्ड को कौन सह सकता है ॥
१८ वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है
वह वायु बहाता है तब जल बहने लगता है ॥
१९ वह याकूब को अपना वचन
इस्राएल को अपनी विधियां और नियम बताता है ॥
२० किसी और जाति से उस ने ऐसा बर्ताव नहीं किया
और उस के नियमों को औरों ने नहीं जाना
याह की स्तुति करो[१] ॥

१४८. याह की स्तुति करो[१]

यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो
उस की स्तुति ऊंचे स्थानों में करो ॥
२ हे उस के सारे दूतो उस की स्तुति करो
हे उस की सारी सेना उस की स्तुति कर ॥
३ हे सूर्य्य और चन्द्रमा उस की स्तुति करो
हे सारे ज्योतिमय तारो उस की स्तुति करो ॥
४ हे सब से ऊंचे आकाश
और हे आकाश के ऊपरवाले जल तुम दोनों उस की स्तुति करो ॥
५ ये यहोवा के नाम की स्तुति करें
क्योंकि उसी ने आज्ञा दी और ये सिरजे गये ॥
६ और उस ने उन को सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है
और ऐसी विधि ठहराई है जो टलने की नहीं ॥
७ पृथिवी में से यहोवा की स्तुति करो
हे मगरमच्छो और गहिरे सागर
८ हे अग्नि और ओलो हे हिम और कुहरे
हे उस का वचन माननेहारी प्रचण्ड बयार
९ हे पहाड़ो और सब टीलो
हे फलदाई वृक्षो और सब देवदारो
१० हे बनैले पशुओ और सब घरैले पशुओ
हे रेंगनेहारे जन्तुओ और हे पक्षियो

(१) मूल में हल्ललूयाह।

११ हे पृथिवी के राजाओ और राज्य राज्य के सब लोगो
हे हाकिमो और पृथिवी के सब न्यायियो
१२ हे जवानो और कुमारियो
हे पुरनियो और बालको
१३ यहोवा के नाम की स्तुति करो[२]।
क्योंकि केवल उसी का नाम महान् है
उस का ऐश्वर्य्य पृथिवी और आकाश के ऊपर है ॥
१४ और उस ने अपनी प्रजा के लिये एक सींग ऊंचा किया है
यह उस के सारे भक्तों के
अर्थात् इस्राएलियों के[१] उस के समीप रहनेहारी प्रजा के स्तुति करने का विषय है।
याह की स्तुति करो[१] ॥

१४९. याह की स्तुति करो[१]

यहोवा के लिये नया गीत
भक्तों की सभा में उस की स्तुति गाओ ॥
२ इस्राएल अपने कर्त्ता के कारण आनंदित हो
सिय्योन के निवासी अपने राजा के कारण मगन हों ॥
३ वे नाचते हुए उस के नाम की स्तुति करें
और डफ और वीणा बजाते हुए उस का भजन गाएं ॥
४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है
वह नम्र लोगों का उद्धार करके उन्हें शोभायमान करेगा।
५ भक्त लोग महिमा के कारण हुलसें
और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े जयजयकार करें ॥
६ उन के कंठ से ईश्वर की सराहना हो
और उन के हाथ में दोधारी तलवार रहे
७ कि वे अन्यजातियों से पलटा लें
और राज्य राज्य के लोगों को ताड़ना दें
८ और उन के राजाओं को सांकलों से
और उन के प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रक्खें

(२) मूल में करें।

६ और उन को ठहराया हुआ[1] दण्ड दें
उस के सारे भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी।
याह की स्तुति करो[2] ॥

१५०. याह की स्तुति करो[2]
ईश्वर के पवित्रस्थान में उस की स्तुति करो
उस के सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो ॥
२ उस के पराक्रम के कामों के कारण उस की स्तुति करो
उस की अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उस की स्तुति करो ॥

(१) मूल में लिखा हुआ। (२) मूल में हल्ललूयाह।

३ नरसिंगा फूंकते हुए उस की स्तुति करो
सारंगी और वीणा बजाते हुए उस की स्तुति करो ॥
४ डफ बजाते और नाचते हुए उस की स्तुति करो
तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उस की स्तुति करो ॥
५ ऊंचे शब्दवाली झांझ बजाते हुए उस की स्तुति करो
आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजाते हुए उस की स्तुति करो ॥
६ जितने प्राणी हैं
सब के सब याह की स्तुति करें।
याह की स्तुति करो[2] ॥

नीतिवचन।

१ दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के नीतिवचन ॥
२ इन के द्वारा पढ़नेहारा बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करे
और समझ की बात समझे
३ और काम करने में प्रवीणता
और धर्म्म न्याय और सीधाई की शिक्षा पाए
४ और भोलों को चतुराई
और जवान को ज्ञान और विवेक मिले
५ और बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढ़ाए
और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए
६ जिस से वे नीतिवचन और दृष्टान्त को
और बुद्धिमानों के वचन और दृष्टकूटों को समझें ॥
७ यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है
बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं ॥
८ हे मेरे पुत्र अपने पिता की शिक्षा को सुन
और अपनी माता की सीख को न तज ॥
९ क्योंकि वे मानों तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट
और तेरे गले के लिए कण्ठे बनेंगी ॥
१० हे मेरे पुत्र यदि पापी लोग तुझे फुसलाएं
तो उन की बात न मानना ॥
११ यदि वे कहें कि हमारे संग चल
हम खून करने के लिये घात लगाएं
हम निर्दोषों की ताक[1] में रहें
१२ हम अधोलोक की नाईं उन को जीते
और कबर में पड़ते हुओं के समान उन्हें समूचे निगल जाएं ॥
१३ हम को सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे
हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे
१४ तू हमारा साझी हो जा
हम सभों का एक ही बटुआ हो
१५ तो हे मेरे पुत्र उन के संग मार्ग में न चलना
बरन उन की डगर में पांव भी न धरना ॥
१६ क्योंकि वे बुराई ही करने को दौड़ते

(१) मूल में अकारण छुके।

और खून करने को फुर्ती करते हैं ॥
१७ किसी पक्षी के देखते
जाल फैलाना व्यर्थ होता है ॥
१८ ये लोग तो अपने खून के लिये घात लगाते हैं
और अपने ही प्राण की घात की ताक में रहते हैं
१९ सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है
उन का प्राण लालच ही के कारण नाश हो जाता है ॥
२० बुद्धि[1] सड़क में ऊंचे स्वर से बोलती
और चौकों में प्रचार करती है ॥
२१ वह हाटों के सिरे पर पुकारती
और फाटकों के बीच
और नगर के भीतर भी ये बातें बोलती है कि
२२ हे भोले लोगो तुम कब लों भोलेपन में प्रीति रक्खोगे
और हे ठट्ठा करनेहारो तुम कब लों ठट्ठा करना चाहोगे
और हे मूर्खो तुम कब लों ज्ञान से बैर रक्खोगे ॥
२३ मेरा डांटना सुनकर फिरो
सुनो मैं अपना आत्मा तुम्हारे लिये उण्डेल दूंगी
मैं तुम को अपने वचन बताऊंगी ॥
२४ मैं ने तो पुकारा पर तुम ने नाह की
और मैं ने हाथ फैलाया पर किसी ने ध्यान न दिया ॥
२५ बरन तुम ने मेरी सारी सम्मति को सुनी अनसुनी किया
और मेरे डांटने को नहीं चाहा ॥
२६ इसलिये मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हंसूंगी
और जब तुम पर भय आ पड़ेगा
२७ बरन आंधी की नाईं तुम पर भय आ पड़ेगा
और विपत्ति बवण्डर के समान आ पड़ेगी
और तुम संकट और सकेती में फंसोगे तब मैं ठट्ठा करूंगी ॥
२८ उस समय वे मुझे पुकारेंगे और मैं न सुनूंगी
वे मुझे यत्न से तो ढूंढ़ेंगे पर न पाएंगे ॥
२९ उन्हों ने ज्ञान से बैर किया
और यहोवा का भय मानना उन को न भाया ॥
३० उन्हों ने मेरी सम्मति न चाही
बरन मेरी सारी डांट का तिरस्कार किया ॥
३१ इसलिये वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे
और अपनी युक्तियों के फल से अघाएंगे ॥
३२ क्योंकि भोले लोगों का हट जाना उन के घात किये जाने का कारण होगा
और निश्चिन्त रहने के कारण मूढ़ लोग नाश होंगे ॥
३३ पर जो मेरी सुनेगा सो निडर बसा रहेगा और बेखटके सुख से रहेगा ॥

२. हे मेरे पुत्र यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े
२ और बुद्धि की बात ध्यान देके सुने
और समझ की बात मन लगा के सोचे
३ और प्रवीणता और समझ का
अति यत्न करे ॥
४ यदि उस को चांदी की नाईं ढूंढ़े
और गुप्त धन के समान उस की खोज में लगे
५ तो तू यहोवा के भय को समझ सकेगा
और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा ॥
६ क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है
ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती हैं ॥
७ वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता
जो खराई से चलते हैं उन के लिये वह ढाल ठहरता है ॥
८ वह न्याय के पथों की देख भाल करता
और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है ॥
९ सो तू धर्म्म और न्याय
और सीधाई को निदान सब भली भली चाल समझ सकेगा ॥
१० बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी
और ज्ञान तुझ को मनभाऊ लगेगा ॥
११ विवेक तुझे बचाएगा
और समझ से तेरी रक्षा होगी ॥
१२ इस से तू बुराई के मार्ग से
और उलट फेर की बातों के कहनेहारों से बचेगा ॥
१३ जो सीधाई की बाट को छोड़कर
अंधेरे मार्ग में चलते हैं
१४ और बुराई करने से आनन्दित
और दुष्ट जन की उलट फेर की बातों से मगन होते हैं
१५ उन की चाल चलन टेढ़ी
और चाल बिगड़ी होती है ॥

(१) मूल में बुद्धियां ।

१६ फिर तू पराई स्त्री से भी बचेगा
जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है
१७ और अपनी जवानी के परम प्रिय को छोड़ देती
और जो अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है ॥
१८ उस का घर मृत्यु की ओर ढुलकता है
और उस की डगरें मरे हुओं के बीच पहुंचाती हैं ॥
१९ जो उस के पास जाते हैं उन में से कोई भी लौट नहीं आता
और न वे जीवन का मार्ग पाते हैं ॥
२० तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल
और धर्म्मियों की बाट को पकड़े रह ॥
२१ क्योंकि सीधे ही लोग देश में बसे रहेंगे
और खरे ही लोग उस में बने रहेंगे ॥
२२ दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे
और विश्वासघाती उस में से उखाड़े जाएंगे ॥

३. हे मेरे पुत्र मेरी शिक्षा को न भूलना
अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रक्खे रहना ॥
२ क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु[1] बढ़ेगी
और तू अधिक कुशल से रहेगा ॥
३ कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं
बरन उन को अपने गले का हार बनाना
और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना
४ और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा
तू अति बुद्धिमान होगा ॥
५ और अपनी समझ का सहारा न लेना
बरन सारे मन से यहोवा पर भरोसा रखना ॥
६ उसी को स्मरण करके सब काम करना
तब वह तेरे लिये सीधी बाट निकालेगा ॥
७ अपने लेखे बुद्धिमान् न होना
यहोवा का भय मानना और बुराई से अलग रहना ॥
८ ऐसा करने से तेरा शरीर[2] भला चंगा
और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी ॥
९ अपनी संपत्ति के द्वारा
और अपनी भूमि की सारी पहिली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना,

(१) मूल में दिनों की लंबाई और जीवन के बरस।
(२) मूल में तेरी नाभि।

और तेरे खत्ते भरे पूरे रहेंगे १०
और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा ॥
हे मेरे पुत्र यहोवा की शिक्षा से मुंह न ११ मोड़ना
और जब वह तुझे डांटे तब तू बुरा न मानना ॥
क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता उस को १२ डांटता है
जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है ॥
क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए १३
और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे ॥
क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चान्दी की प्राप्ति से १४ बड़ी
और उस का लाभ चोखे सोने के लाभ से भी उत्तम है ॥
वह मूंगे से अधिक अनमोल है १५
और जितनी वस्तुओं की तू लालसा करता है उन में से कोई भी उस के तुल्य न ठहरेगी ॥
उस के दहिने हाथ में दीर्घायु १६
और उस के बाएं हाथ में धन और महिमा हैं ॥
उस के मार्ग मनभाऊ १७
और उस की सारी डगरें कुशल की हैं ॥
जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं उन के लिये वह १८ जीवन का वृक्ष बनती है
और जो उस को पकड़े रहते हैं सो धन्य हैं ॥
यहोवा ने पृथिवी की नेव बुद्धि ही से १९ डाली
और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर बनाया ॥
उसी के ज्ञान के द्वारा गहिरे सागर फूट निकले २०
और आकाशमण्डल से ओस टपकती है ॥
हे मेरे पुत्र ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न होने पाएं २१
खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर ॥
तब इन से तुझे जीवन मिलेगा २२
और ये तेरे गले का हार बनेंगे ॥
और तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा २३
और तेरे पांव में ठेस न लगेगी ॥
जब तू लेटेगा तब भय न खाएगा २४
जब तू लेटेगा तब सुख की नींद आएगी ॥
अचानक आनेहारे भय से न डरना २५
और जब दुष्टों की विपत्ति आ पड़े तब न घबराना ॥

२६ क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा
और तेरे पांव को फन्दे में फंसने न देगा ॥
२७ जिन का भला करना चाहिये यदि तुझे शक्ति रहे
तो भला करने से न रुकना ॥
२८ यदि तेरे पास देने को कुछ हो
तो अपने पड़ोसी से न कहना कि
जा कल फिर आना कल मैं तुझे दूंगा॥
२९ जब तेरा पड़ोसी तेरे पास बेखटके रहता है
तब उस के विरुद्ध बुरी युक्ति न बांधना ॥
३० जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो
उस से अकारण मुकद्दमा न खड़ा करना ॥
३१ उपद्रवी पुरुष के विषय डाह न करना
न उस की सी चाल चलना ॥
३२ क्योंकि यहोवा कुटिल से घिन करता है
पर वह अपना भेद सीधे लोगों पर खोलता है[१] ॥
३३ दुष्ट के घर पर यहोवा का स्राप
और धर्म्मियों के वासस्थान पर उस की आशिष
होती है ॥
३४ ठट्ठा करनेहारों से वह निश्चय ठट्ठा करता है
और दीनों पर अनुग्रह करता है ॥
३५ बुद्धिमान् महिमा को अपने भाग में पाएंगे
और मूर्खों की बढ़ती अपमान ही की होगी ॥

४. हे मेरे पुत्रो पिता की शिक्षा सुनो
और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ ॥
२ क्योंकि मैं ने तुम को उत्तम शिक्षा दी है
मेरी शिक्षा को न छोड़ो ॥
३ देखो मैं भी अपने पिता का पुत्र था
और माता का एकला दुलारा था,
४ और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता
था कि
तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे
तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर तब जीता
रहेगा ॥
५ बुद्धि को प्राप्त कर समझ को भी प्राप्त कर
उन को भूल न जाना न मेरी बातों को छोड़ना ॥
६ बुद्धि को न छोड़ वह तेरी रक्षा करेगी
उस से प्रीति रख वह तेरा पहरा देगी ॥
७ बुद्धि का आरंभ उस की प्राप्ति में यत्न
करना है

(१) मूल में उस का भेद सीधे लोगों के पास है।

सो जो कुछ तू प्राप्त करे उसे तो प्राप्त करे
पर समझ की प्राप्ति घटने न पाए ॥
उस की बड़ाई कर वह तुझ को बढ़ाएगी ८
जब तू उस से लिपट जाए तब वह तेरी महिमा
करेगी ॥
वह तेरे सिर पर शोभायमान भूषण बांधेगी ९
और तुझे सुन्दर मुकुट देगी ॥
हे मेरे पुत्र मेरी बातें सुनकर ग्रहण कर १०
तब तू बहुत बरस लों जीता रहेगा ॥
मैं ने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया ११
और सीधाई के पथ पर चलाया है ॥
चलने में तुझे रोक टोक न होगी १२
और चाहे तू दौड़े तौ भी ठोकर न खाएगा ॥
शिक्षा को पकड़े रह उसे छोड़ न दे १३
उस की रक्षा कर क्योंकि वही तेरा जीवन है ॥
दुष्टों की बाट में पांव मत धर १४
और न बुरे लोगों के मार्ग पर चल ॥
उसे छोड़ दे उस के पास से भी न चल १५
उस के निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा ॥
क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें तो उन को नींद १६
नहीं आती
और जब लों वे किसी को ठोकर न खिलाएं तब लों
उन्हें नींद नहीं पड़ती ॥
वे तो दुष्टता से कमाई हुई रोटी खाते १७
और उपद्रव के द्वारा पाया हुआ दाखमधु पीते हैं ॥
पर धर्म्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के १८
समान है
जिस का प्रकाश दोपहर लों अधिक अधिक बढ़ता
रहता है ॥
दुष्टों का मार्ग घोर अंधकारमय है १९
वे नहीं जानते कि हम किस से ठोकर खाते हैं ॥
हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन २०
और अपना कान मेरी बातों पर लगा ॥
इन को अपनी आंखों की ओट न होने दे २१
वरन अपने मन में धारण कर ॥
क्योंकि जिन को वे प्राप्त होती हैं वे उन के जीते २२
रहने का
और उन के सारे शरीर के चंगे रहने का कारण
होती हैं ॥
सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर २३
क्योंकि जीवन के निकास उसी से होते हैं ॥
टेढ़ी बात बोलने से परे रह २४

और उलट फेर की बातें कहने से दूर रह ॥
२५ तेरी आंखें साम्हने ही की ओर लगी रहें
और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें ॥
२६ अपने पांव धरने के लिए डगर को समथर कर
और तेरे सारे मार्ग ठीक किये जाएं ॥
२७ न तो दहिनी ओर मुड़ और न बाईं ओर
अपने पांव को बुराई के मार्ग पर रखने से रुका रह ॥

५. हे मेरे पुत्र मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे
मेरे समझाने की ओर कान लगा,
२ जिस से तुझे विवेक बना रहे
और तू ज्ञान के वचनों को पकड़े रहे ॥
३ पराई स्त्री के होठों से मधु टपकता है
और उस की बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं ॥
४ पर इस का परिणाम नागदौना सा कड़वा
और दोधारी तलवार सा पैना होता है ॥
५ उस के पांव मृत्यु की ओर बढ़ते
और उस के पग अधोलोक की ओर पड़ते हैं ॥
६ इस से वह जीवन की चौरस बाट को नहीं पा सकती
वह चाल चलन में चंचल है पर आप नहीं जानती ॥
७ सो अब हे मेरे पुत्रो मेरी सुनो
और मेरी बातों से मुंह न मोड़ो ॥
८ ऐसी स्त्री से दूर ही रह
और न उस की डेवढ़ी के पास जा ॥
९ ऐसा न हो कि तू अपना यश औरों के हाथ
और अपना जीवन क्रूर जन के वश कर दे
१० और बिराने तेरी कमाई से अपने पेट भरें
और उपरी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रक्खें
११ और तू अपने अन्त समय में
जब तेरा शरीर क्षीण हो तब यह कहकर हाय मारने लगे कि
१२ मैं ने शिक्षा से कैसा बैर किया
और डांटनेहारे का कैसा तिरस्कार किया
१३ और मैं ने अपने गुरुओं की बातें न मानीं
और अपने सिखानेहारों की ओर कान न लगाया ॥
मैं लगभग सब बुराइयों में पड़ने पर था १४
और यह सभा और मण्डली के बीच हुआ ॥
तू पानी अपने ही कुण्ड से १५
और अपने ही कुएं के सोते का जल पिया कर ॥
क्या तेरे सोतों का पानी सड़क में १६
और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाए ॥
यह केवल तेरे ही लिये रहे १७
और तेरे संग बिरानों के लिये न हो ॥
तेरा सोता धन्य रहे १८
और अपनी जवानी की स्त्री के साथ आनन्दित रह ॥
वह प्रिय हरिणी वा सुन्दर साबरनी के समान ठहरे १९
सो तू उसी के स्तनों से सर्वदा सन्तुष्ट रह
और नित्य उसी के प्रेम से मोहित रह ॥
हे मेरे पुत्र तू पराई स्त्री पर क्यों मोहित हो २०
और बिरानी को क्यों छाती से लगाए ॥
क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं २१
और वह उस के सारे पथों का विचार करता है ॥
दुष्ट अपने ही अधर्म्म के कामों से फंसेगा २२
और अपने ही पाप के बंधनों से बंधा रहेगा ॥
वह शिक्षा बिना मर जाएगा २३
और अपनी बड़ी मूढ़ता के कारण भटकता रहेगा ॥

६. हे मेरे पुत्र यदि तू अपने पड़ोसी का जामिन हुआ हो
वा बिराने के हाथ पर हाथ मारा हो
तो तू अपने ही मुंह के वचनों से फंसा २
और उन से बंध गया है ॥
सो हे मेरे पुत्र एक काम कर ३
तू जो अपने पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है
इसलिये जा उस को साष्टांग प्रणाम करके मना ले ॥
तू न तो अपनी आंखों में नींद ४
और न अपनी पलकों में झपकी आने दे ॥
अपने को छुड़ा ५

जैसे हरिणी वा चिड़िया व्याध के हाथ से ॥
६ हे आलसी च्यूंटियों के पास जा
उन के काम सोच सोचकर बुद्धिमान् हो ॥
७ उन के न तो कोई न्यायी होता है
और न प्रधान न प्रभुता करनेहारा ॥
८ तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करतीं
और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं ॥
९ हे आलसी तू कब लों सोता रहेगा
तेरी नींद कब टूटेगी
१० तनिक और सो लेना
तनिक और झपकी ले लेना
तनिक और छाती पर हाथ रक्खे लेटे रहना,
११ तब तेरा कंगालपन बटमार की नाईं
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान आ पड़ेगी ॥
१२ ओछे और अनर्थकारी को देखो
वह टेढ़ी टेढ़ी बातें बकता फिरता है ॥
१३ वह नैन से सैन और पांव से इशारा करता
और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है ॥
१४ उस के मन में उलट फेर की बातें रहतीं
वह लगातार बुराई गढ़ता है
और झगड़ा रगड़ा उत्पन्न करता है ॥
१५ इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी
वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा कि बचने का कोई उपाय न रहेगा ॥
१६ छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है
बरन सात हैं जिन से उस का जीव घिनाता है ॥
१७ अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई[१] आंखें झूठ बोलनेहारी जीभ
और निर्दोष का लोहू बहानेहारे हाथ
१८ अनर्थ कल्पना गढ़नेहारा मन
बुराई करने को वेग दौड़नेहारे पांव
१९ झूठ बोलनेहारा साक्षी
और भाइयों के बीच झगड़ा उत्पन्न करनेहारा मनुष्य ॥
२० हे मेरे पुत्र मेरी आज्ञा को मान
और अपनी माता की शिक्षा को न तज ॥
२१ इन को अपने हृदय में सदा गांठ बांधे रह
और अपने गले का हार बना ॥

(१) मूल में ऊंची।

वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई २२
और सोते समय तेरी रक्षा
और जागते समय तुझ से बातें करेगी ॥
आज्ञा तो दीपक और शिक्षा ज्योति ठहरी २३
और सिखानेहारे की डांट जीवन का मार्ग ठहरी है
कि तू बुरी स्त्री की २४
और बिरानी स्त्री की चिकनी चुपड़ी बातों से बचे ॥
उस की सुन्दरता देखकर अपने मन में उस की अभिलाषा न कर २५
वह तुझे अपने कटाक्षों[२] से फंसाने न पाए ॥
क्योंकि वेश्यागमन के कारण एक ही रोटी रह जाती है २६
पर व्यभिचारिन अनमोल जीवन का अहेर कर लेती है ॥
क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले २७
और उस के कपड़े न जलें ॥
क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले २८
और उस के पांव न जलें ॥
जो पराई स्त्री के पास जाता है उस की दशा ऐसी है २९
बरन जो कोई उस को छुएगा सो दण्ड से न बचेगा ॥
जो चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे ३०
उस को तो लोग तुच्छ नहीं जानते
तौभी यदि पकड़ा जाए तो उस को सातगुणा भर देना ३१
बरन अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा ॥
पर जो परस्त्रीगमन करता है सो निरा निर्बुद्ध है ३२
जो अपने प्राण को नाश करना चाहता है वही ऐसा करता है ॥
उस को घायल और अपमानित होना पड़ेगा ३३
और उस की नामधराई कभी न मिटेगी ॥
क्योंकि जलन रखने से पुरुष बहुत ही क्रोधित हो जाता है ३४
और पलटा लेने के दिन वह कुछ कोमलता नहीं करता ॥

(२) मूल में पलकों।

२५ वह घूस पर दृष्टि न करेगा
और चाहे तू उस को बहुत कुछ दे तौभी वह न मानेगा ॥

७. हे मेरे पुत्र मेरी बातों को माना कर
और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में रख छोड़ ॥
२ मेरी आज्ञाओं को मान इस से तू जीता रहेगा
और मेरी शिक्षा को आंख की पुतली जान ॥
३ उन को अपनी अंगुलियों में बांध
और अपनी हृदय की पटिया पर लिख ले ॥
४ बुद्धि से कह कि तू मेरी बहिन है
और समझ को अपनी साथिन कह ॥
५ तब तू पराई स्त्री से बचेगा
जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है ॥
६ मैं ने एक दिन अपने घर की खिड़की से
अपने झरोखे से झांका
७ तब मैं ने भोले लोगों में से
एक निर्बुद्धि जवान को देखा ॥
८ वह उस स्त्री के घर के कोने के पास की सड़क में चला जाता था
और उस ने उस के घर का मार्ग लिया ॥
९ तब दिन ढल गया और संध्याकाल आ गया था
बरन रात का घोर अंधकार छा गया था
१० और उस से एक स्त्री मिली
जिस का भेष वेश्या का सा था और वह बड़ी धूर्त्त थी ॥
११ वह शान्तिरहित और चंचल थी
वह अपने घर में न ठहरती थी ॥
१२ कभी वह सड़क में कभी चौक में पाई जाती थी
और एक एक कोने पर वह बाट जोहती थी ॥
१३ सो उस ने उस जवान को पकड़कर चूमा
और निर्लज्जता की चेष्टा करके उस से कहा
१४ मुझे मेलबलि चढ़वाने थे
सो मैं ने अपनी मन्नतें आज ही पूरी की हैं ॥
१५ इसी कारण मैं तुझ से भेंट करने को निकली
मैं तेरे दर्शन की खोजी थी सो अभी पाया है ॥
१६ मैं ने अपने पलंग पर बिछौने
बरन मिस्र के बेलबूटेवाले कपड़े बिछाये हैं ॥
१७ मैं ने अपने बिछौने पर
गन्धरस अगर और दारचीनी छिड़की हैं ॥
१८ सो चल हम प्रेम से भोर लों जी बहलाते रहें
हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित रहें ॥
१९ क्योंकि मेरा पति घर में नहीं
वह दूर देश को चला गया है ॥
२० वह चान्दी की थैली ले गया
और पूर्णमासी को लौट आएगा ॥
२१ ऐसी ही बातें कह कह कर उस ने उस को अपनी प्रबल माया में फंसा लिया
और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से उस को अपने वश कर लिया ॥
२२ वह तुरन्त उस के पीछे हो लिया
जैसे बैल कसाई खाने को
वा जैसे बेड़ी पहिने हुए कोई मूढ़ ताड़ना पाने को जाता है ॥
२३ अन्त में उस जवान का कलेजा तीर से बेधा जाएगा
वह उस चिड़िया के समान है जो फंदे की ओर वेग से उड़े
और न जानती हो कि उस में मेरा प्राण जाएगा ॥
२४ अब हे मेरे पुत्रो मेरी सुनो
और मेरी बातों पर मन लगाओ ॥
२५ तेरा मन ऐसी स्त्री के मार्ग की ओर न फिरे
और न उस की डगरों में भटक कर जा ॥
२६ क्योंकि बहुत लोग उस से मारे पड़े हैं
उस के घात किये हुओं की एक बड़ी संख्या होगी
२७ उस का घर अधोलोक का मार्ग है
वह मृत्यु के घर में पहुंचाता है ॥

८. क्या बुद्धि नहीं पुकारती
क्या समझ ऊंचे शब्द से नहीं बोलती ॥
२ वह तो ऊंचे स्थानों पर मार्ग की एक ओर
और तिर्मुहानियों में खड़ी होती है ॥
३ फाटकों के पास नगर के पैठाव में
और द्वारों ही में वह ऊंचे स्वर से कहती है कि
४ हे मनुष्यो मैं तुम को पुकारती हूं
और मेरी बात सब आदमियों के लिये है ॥
५ हे भोलो चतुराई सीखो
और हे मूर्खो अपने मन में समझ लो ॥
६ सुनो क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूंगी
और जब मुंह खोलूंगी तब उस से सीधी बातें निकलेंगी ॥
७ और मुझ से सच सच बातों का वर्णन होगा
और दुष्टता की बातों से मुझ को घिन आती है ॥

८ मेरे मुंह की सब बातें धर्म्म की होती हैं
उन में से कोई टेढ़ी वा उलट फेर की बात नहीं है ॥
९ समझवाले के लिये वे सब सहज
और ज्ञान के प्राप्त करनेहारों लिये निरी सीधी हैं ॥
१० चान्दी नहीं मेरी शिक्षा ही लो
और उत्तम कुन्दन से बढ़कर ज्ञान को ग्रहण करो ॥
११ क्योंकि बुद्धि मूंगे से भी अच्छी है
और सब मनभावनी वस्तुएं उस के तुल्य नहीं ॥
१२ मैं जो बुद्धि हूं सो चतुराई में वास करती
और ज्ञान और बिवेक को प्राप्त करती हूं ॥
१३ यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है
घमण्ड अहंकार और बुरी चाल से
और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूं ॥
१४ उत्तम युक्ति और खरी बुद्धि मेरी ही हैं
मैं तो समझ हूं और पराक्रम भी मेरा है ॥
१५ मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते
और अधिकारी धर्म्म से विचार करते हैं ॥
१६ मेरे ही द्वारा हाकिम और रईस
और पृथिवी के सब न्यायी शासन करते हैं ॥
१७ जो मुझ से प्रेम रखते हैं उन से मैं भी प्रेम रखती हूं
और जो मुझ को यत्न करके[१] खोजते हैं सो मुझे पाते हैं ॥
१८ मेरे पास धन और प्रतिष्ठा
ठहरनेहारा धन और धर्म्म भी हैं ॥
१९ मेरा फल चोखे सोने से बरन कुन्दन से भी उत्तम है
और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है ॥
२० मैं धर्म्म की बाट में
और न्याय की डगरों के बीच चलती हूं
२१ जिस से मैं अपने प्रेमियों को परमार्थ के भागी करूं
और उन के भण्डारों को भर दूं ॥
२२ यहोवा ने मुझे काम करने के आरंभ में
बरन अपने प्राचीनकाल के कामों से भी पहिले उत्पन्न किया ॥
२३ मैं सदा से बरन आदि ही से
पृथिवी के होने से पहिले ठहराई गई ॥
२४ जब न तो गहिरा सागर था
और न जल के सोते थे तब ही मैं उत्पन्न हुई ॥
२५ जब पहाड़ वा पहाड़ियां स्थिर न की गई थीं
२६ जब यहोवा ने न तो पृथिवी और न मैदान
न जगत की धूलि के परमाणु बनाये थे
तब ही मैं उत्पन्न हुई ॥
२७ जब उस ने आकाश को स्थिर किया तब मैं वहां थी
जब उस ने गहिरे सागर के ऊपर आकारमण्डल ठहराया
२८ जब उस ने आकाशमण्डल को ऊपर से स्थिर किया
और गहिरे सागर के सोते फूटने लगे
२९ जब उस ने समुद्र का सिवाना ठहराया
कि जल उस की आज्ञा का उल्लंघन न कर सके
और जब वह पृथिवी की नेव की डोरी लगाता था
३० तब मैं कारीगर सी उस के पास थी
और दिन दिन सुख करते हुए
हर समय उस के साम्हने हुलसती हुई थी ॥
३१ मैं उस की बसाई हुई पृथिवी पर हुलसती हुई थी
और मेरा सुख मनुष्यों की संगति से होता था ॥
३२ सो अब हे मेरे पुत्रो मेरी सुनो
क्या ही धन्य वे हैं जो मेरे मार्ग पकड़े रहते हैं ॥
३३ शिक्षा को सुनो और बुद्धिमान् हो जाओ
उस के विषय सुनी अनसुनी न करो ॥
३४ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता
बरन मेरी डेवढ़ी पर दिन दिन खड़ा
और मेरे द्वारों के खंभों के पास ताक लगाये रहता है ॥
३५ क्योंकि जो मुझे पाता सो जीवन को पाता है
और यहोवा उस से प्रसन्न होता है ॥
३६ पर जो मेरा अपराध करता[२] सो अपने ही पर उपद्रव करता है
जितने मुझ से बैर रखते सो मृत्यु से प्रीति रखते हैं ॥

९. बुद्धि ने[३] अपना घर बनाया
और उस के सातों खंभे गढ़े हैं ॥

(१) मूल में तड़के उठकर ।

(२) वा जिस की मुझ से भूल के कारण भेंट नहीं होती ।
(३) मूल में बुद्धियों ने ।

२ उस ने अपने पशु बध करके अपने दाखमधु में मसाला मिलाया
और अपनी मेज लगाई है ॥
३ उस ने अपनी सहेलियां सब को बुलाने के लिये भेजी हैं
वह नगर के ऊंचे स्थानों की चोटी पर पुकारती है कि
४ जो कोई भोला है सो मुड़कर यहीं आए
और जो निर्बुद्धि है उस से वह कहती है कि
५ आओ मेरी रोटी खाओ
और मेरे मसाला मिलाये हुए दाखमधु को पीओ ॥
६ भोलों का संग छोड़ो और जीते रहो
समझ के मार्ग में सीधे चलो ॥
७ जो ठट्ठा करनेहारे को शिक्षा देता सो अपमान
और जो दुष्ट जन को डांटता सो कलंक पाता है ॥
८ ठट्ठा करनेहारे को न डांट न हो कि वह तुझ से बैर रक्खे
बुद्धिमान् को डांट वह तो तुझ से प्रेम रक्खेगा ॥
९ बुद्धिमान् को शिक्षा दे वह अधिक बुद्धिमान् होगा
धर्म्मी को चिता वह अपनी विद्या बढ़ाएगा।
१० बुद्धि का आरंभ यहोवा का भय मानना है
और परमपवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है ॥
११ मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढ़ेगी
और तेरे जीवन के बरस अधिक होंगे ॥
१२ यदि तू बुद्धिमान् हो तो बुद्धि का फल तू ही भोगेगा
और यदि तू ठट्ठा करे तो दण्ड केवल तू ही भोगेगा ॥
१३ मूर्खतारूपी स्त्री हौरा मचानेहारी है
वह तो भोली है और कुछ नहीं जानती ॥
१४ वह अपने घर के द्वार में
और नगर के ऊंचे स्थानों में मचिया पर बैठी हुई
१५ जो बटोही अपना अपना मार्ग पकड़े हुए सीधे चले जाते हैं
उन को यह कह कहकर पुकारती है कि
१६ जो कोई भोला है सो मुड़कर यहीं आए
और जो निर्बुद्धि है उस से वह कहती है कि
१७ चोरी का पानी मीठा होता है
और लुके छिपे की रोटी अच्छी लगती है
१८ और वह नहीं जानता है कि वहां मरे हुए पड़े हैं
और उस स्त्री के नेवतहरी अधोलोक के निचले स्थानों में पहुंचे हैं ॥

१०. सुलैमान के नीतिवचन।

बुद्धिमान् पुत्र से पिता आनन्दित होता है
पर मूर्ख पुत्र के कारण माता उदास रहती है ॥
२ दुष्टों के रक्खे हुए धन से लाभ नहीं होता
पर धर्म्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है ॥
३ धर्म्मी को यहोवा भूखों मरने नहीं देता
पर दुष्टों की अभिलाषा वह पूरी होने नहीं देता ॥
४ जो काम में ढिलाई करता है सो निर्धन हो जाता है
पर कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं ॥
५ जो बेटा धूपकाल में बटोरता सो बुद्धि से काम करनेहारा है
पर जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा करता है सो लज्जा का कारण होता है ॥
६ धर्म्मी[१] पर बहुत से आशीर्वाद होते हैं
पर उपद्रव दुष्टों का मुंह छा लेता है ॥
७ धर्म्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं
पर दुष्टों का नाम मिट जाता है ॥
८ जो बुद्धिमान् है सो आज्ञाओं को स्वीकार करता है
पर जो बकवादी और मूढ़ है सो गिरा दिया जाता है ॥
९ जो खराई से चलता सो निडर चलता है
पर जो टेढ़ी चाल चलता उस की चाल प्रगट हो जाती है ॥
१० जो नैन से सैन करता उस से औरों को दुख मिलता है
और जो बकवादी और मूढ़ है सो गिरा दिया जाता है ॥
११ धर्म्मी का मुंह तो जीवन का सोता है
पर उपद्रव दुष्टों का मुंह छा लेता है ॥
१२ बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं
पर प्रेम से सब अपराध ढप जाते हैं ॥
१३ समझवालों के वचनों में बुद्धि पाई जाती है
पर निर्बुद्धि की पीठ के लिये कोड़ा है।
१४ बुद्धिमान् लोग ज्ञान को रख छोड़ते हैं
पर मूढ़ के बोलने से विनाश निकट आता है ॥
१५ धनी का धन उसका दृढ़ नगर है

(१) मूल में धर्म्मी के सिर।

पर कंगाल लोग निर्धन होने के कारण विनाश होते हैं ॥
१६ धर्म्मी का परिश्रम जीवन के लिये होता है
पर दुष्ट के लाभ से पाप होता है ॥
१७ जो शिक्षा पर चलता सो औरों के लिये जीवन की बाट है
पर जो डांट से मुंह मोड़ता सो औरों को भटका देता है ॥
१८ जो बैर को छिपा रखता सो झूठ बोलता है
और जो अपवाद फैलाता है सो मूर्ख है ॥
१९ जहां बहुत बातें होती हैं वहां अपराध भी होता है
पर जो अपने मुंह को बन्द रखता सो बुद्धि से काम करता है ॥
२० धर्म्मी के बचन तो उत्तम चांदी हैं
पर दुष्टों का मन बहुत हलका है ॥
२१ धर्म्मी के वचनों से बहुतों का पालन पोषण होता है
पर मूढ़ लोग निर्बुद्धि होने के कारण मर जाते हैं ॥
२२ धन यहोवा की आशिष ही से मिलता है
और वह उस के साथ दुःख नहीं मिलाता ॥
२३ मूर्ख को तो महापाप करना हंसी की बात जान पड़ती है
पर समझवाले पुरुष में बुद्धि रहती है ॥
२४ दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है सोई उस पर आ पड़ती है
और धर्म्मियों की लालसा पूरी होती है ॥
२५ बवण्डर निकल जाते ही दुष्ट जन रहता नहीं
पर धर्म्मी सदा के लिये नेव है ॥
२६ जैसे दांत को सिरका और आंख को धूआं
वैसे आलसी उन को लगता है जो उस को कहीं भेजते हैं ॥
२७ यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है
पर दुष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है ॥
२८ धर्म्मियों को आशा रखने में आनन्द मिलता है
पर दुष्टों की आशा टूट जाती है ॥
२९ यहोवा की गति खरे मनुष्य का गढ़ ठहरती है
पर उसी गति से अनर्थकारियों का विनाश होता है ॥
३० धर्म्मी सदा अटल रहेगा
पर दुष्ट पृथिवी पर बसे रहने न पाएंगे ॥
३१ धर्म्मी के मुंह से बुद्धि टपकती है
पर उलट फेर की बात कहनेहारे की जीभ काटी जाती है ॥
३२ धर्म्मी ग्रहणयोग्य बात समझ कर बोलता है
पर दुष्टों के मुंह से उलट फेर की बातें निकलती हैं ॥

११. छल के तराजू से यहोवा को घिन आती है
पर वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है ॥
२ जब अभिमान होता तब अपमान भी होता है
पर नम्र लोगों में बुद्धि होती है ॥
३ सीधे लोग अपनी खराई से अगुवाई पाते हैं
पर विश्वासघाती अपने कपट से विनाश होते हैं ॥
४ कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता
पर धर्म्म मृत्यु से भी बचाता है ॥
५ खरे मनुष्य का मार्ग धर्म्म के कारण सीधा होता है
पर दुष्ट अपनी दुष्टता के कारण गिर जाता है ॥
६ सीधे लोगों का बचाव उन के धर्म्म के कारण होता है
पर विश्वासघाती लोग अपनी दुष्टता के कारण फंसते हैं ॥
७ जब दुष्ट मरता तब उस की आशा टूट जाती है
और अनर्थ पर जो आशा रक्खी जाती सो नाश होती है ॥
८ धर्म्मी विपत्ति से छूट जाता
पर दुष्ट उसी विपत्ति में पड़ जाता है[१] ॥
९ भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुंह की बात से बिगाड़ता है
पर धर्म्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं ॥
१० जब धर्म्मियों का कल्याण होता है तब नगर के लोग हुलसते हैं
पर जब दुष्ट नाश होते तब जयजयकार होता है ॥
११ सीधे लोगों के आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है
पर दुष्टों के मुंह की बात से वह ढाया जाता है ।
१२ जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है सो निर्बुद्धि है
पर समझदार पुरुष चुपचाप रहता है ॥
१३ जो लुतराई करता फिरता सो तो भेद प्रगट करता है
पर विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है ॥
१४ जहां बुद्धि की युक्ति नहीं वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है

(१) मूल में दुष्ट उस के स्थान पर आता है ।

पर सम्मति देनेहारों की बहुतायत के कारण बचाव होता है ॥

१५ जो बिराने का जामिन होता सो बड़ा दुःख उठाता है
पर जो जमानत से घिन करता सो निडर रहता है ॥

१६ अनुग्रह करनेहारी स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती
और बलात्कारी लोग धन को नहीं खोते ॥

१७ कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता है
पर जो क्रूर है सो अपनी ही देह को दुःख देता है ॥

१८ दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है
पर जो धर्म्म का बीज बोता उस को निश्चय फल मिलता है ॥

१९ जो धर्म्म में दृढ़ रहता सो जीवन पाता है
पर जो बुराई का पीछा करता सो मृत्यु का कौर हो जाता है ॥

२० जो मन के टेढ़े हैं उन से यहोवा को घिन आती है
पर वह खरी चालवालों से प्रसन्न रहता है ॥

२१ मैं दृढ़ता के साथ कहता हूं कि[१] बुरा मनुष्य तो निर्दोष न ठहरेगा
पर धर्म्मी का वंश बचाया जाएगा ॥

२२ जो सुन्दर स्त्री विवेक नहीं रखती
सो थूथुन में सोने की नत्थ पहिने हुए सूअर के समान है ॥

२३ धर्म्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है
पर दुष्टों की आशा का फल कोप ही होता है ॥

२४ ऐसे हैं जो छितरा देते हैं तौभी उन की बढ़ती ही होती है
और ऐसे भी हैं जो हक से कम देते हैं और इस से उन की घटती ही होती है ॥

२५ उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता है
और जो औरों की खेती सींचता है उस की भी सींची जाएगी ॥

२६ जो अपना अनाज रख छोड़ता है उस को लोग कोसते हैं
पर जो उसे बेच देता है उस को आशीर्वाद दिया जाता है ॥

२७ जो यत्न से भलाई करता सो औरों की प्रसन्नता खोजता है
पर जो दूसरे की बुराई का खोजी होता उसी पर बुराई आ पड़ती है ॥

२८ जो अपने धन पर भरोसा रखता सो गिर जाता है
पर धर्म्मी लोग नये पत्ते की नाईं लहलहाते हैं ॥

२९ जो अपने घराने को दुःख देता उस का भाग वायु ही होगा
और मूढ़ बुद्धिमान् का दास हो जाता है ॥

३० धर्म्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है
और बुद्धिमान् मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है ॥

३१ देख धर्म्मी को पृथिवी पर फल मिलेगा
तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा ॥

१२. जो शिक्षा पाने में प्रीति रखता सो ज्ञान ही में प्रीति रखता है
पर जो डांट से बैर रखता सो पशु सरीखा है ॥

२ भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है
पर बुरी युक्ति करनेहारे को वह दोषी ठहराता है ॥

३ कोई मनुष्य दुष्टता के कारण स्थिर नहीं होता
पर धर्म्मियों की जड़ उखड़ने की नहीं ॥

४ भली स्त्री अपने पति का मुकुट है
पर जो लज्जा के काम करती सो मानो उस की हड्डियों के सड़ने का कारण होती है ॥

५ धर्म्मियों की कल्पनाएं न्याय ही की होती हैं
पर दुष्टों की युक्तियां छल की हैं ॥

६ दुष्टों की बातचीत खून करने के लिये घात लगाने के विषय होती है
पर सीधे लोग अपने मुंह की बात के द्वारा छुड़ानेहारे होते हैं ॥

७ जब दुष्ट लोग उलटे जाते तब वे रहते ही नहीं
पर धर्म्मियों का घर स्थिर रहता है ॥

८ मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उस की प्रशंसा होती है
पर कुटिल तुच्छ जाना जाता है

९ जो रोटी का दुखिया होता है पर बड़ाई मारता है
उस से दास रखनेहारा तुच्छ मनुष्य भी उत्तम है ॥

१० धर्म्मी अपने पशु के भी प्राण की सुध रखता है
पर दुष्टों की दया भी निर्दयता है ॥

११ जो अपनी भूमि को जोतता सो पेट भर खाता है
पर जो निकम्मों की संगति करता सो निर्बुद्धि ठहरता है ॥

(१) मूल में हाथ पर हाथ ।

१२ दुष्ट जन बुरे लोगों के जाल की अभिलाषा करते हैं
पर धर्म्मियों की जड़ हरी भरी रहती है ॥
१३ बुरा मनुष्य अपने दुर्वचनों के कारण फन्दे में फंसता है
पर धर्म्मी संकट से निकास पाता है ॥
१४ सज्जन अपने वचनों के फल के द्वारा भलाई से तृप्त होता है
और जैसी जिस की करनी वैसी उस की भरनी[१] ॥
१५ मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है
पर जो सम्मति मानता सो बुद्धिमान् है ॥
१६ मूढ़ की रिस उसी दिन प्रगट हो जाती है
पर चतुर अपमान को छिपा रखता है ॥
१७ जो सच बोलता सो धर्म्म
पर, जो झूठी साक्षी देता सो छल प्रगट करता है ॥
१८ ऐसे लोग हैं जिन का बिना सोच विचार का बोलना तलवार की नाईं चुभता है
पर बुद्धिमान् के बोलने से लोग चंगे होते हैं ॥
१९ सच्चाई[२] सदा लों बनी रहेगी
पर झूठ[३] पल ही भर का होता है ॥
२० बुरी युक्ति करनेहारों के मन में छल रहता है
पर मेल की युक्ति करनेहारों को आनन्द होता है ॥
२१ धर्म्मी को हानि नहीं होती
पर दुष्ट लोग सारी विपत्ति में डूब जाते हैं[४] ॥
२२ झूठे से यहोवा को घिन आती है
पर जो विश्वास से काम करते हैं उन से वह प्रसन्न होता है ॥
२३ चतुर मनुष्य ज्ञान को प्रगट नहीं करता
पर मूढ़ अपने मन की मूढ़ता ऊंचे शब्द से प्रचार करता है ॥
२४ कामकाजी प्रभुता करते हैं
पर आलसी बेगारी में पकड़े जाते हैं ॥
२५ उदास मन दब जाता है
पर भली बात से वह आनन्दित होता है ॥
२६ धर्म्मी अपने पड़ोसी की अगुवाई करता है
पर दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं ॥
२७ आलसी अहेर का पीछा नहीं करता
पर कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है ॥
२८ धर्म्म की बाट में जीवन मिलता है
और उस के पथ में मृत्यु का पता भी नहीं ॥

१३

बुद्धिमान् पुत्र पिता की शिक्षा सुनता है
पर ठट्ठा करनेहारा घुड़की को भी नहीं सुनता ॥
२ सज्जन अपनी बातों के कारण उत्तम वस्तु खाने को पाता है
पर विश्वासघाती लोगों का पेट[५] उपद्रव से भरता है ॥
३ जो अपने मुंह की चौकसी करता सो अपने प्राण की रक्षा करता है
पर जो गाल बजाता उस का विनाश हो जाता है ॥
४ आलसी जन जी से लालसा तो करता है पर उस को कुछ नहीं मिलता
पर कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं ॥
५ धर्म्मी झूठे वचन से बैर रखता है
पर दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है ॥
६ धर्म्म खरी चाल चलनेहारे की रक्षा करता है
पर पापी अपनी दुष्टता के कारण उलट जाता है ॥
७ कोई तो धन बटोरता पर उस के पास कुछ नहीं रहता
और कोई धन उड़ा देता तौभी उस के पास बहुत रहता है ॥
८ प्राण की छुड़ौती मनुष्य का धन है
पर निर्धन घुड़की को सुनता भी नहीं ॥
९ धर्म्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है
पर दुष्टों का दिया बुझ जाता है ॥
१० झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं
पर जो लोग सम्मति मानते हैं उन के बुद्धि रहती है ॥
११ फोकट का[६] माल नहीं ठहरता
पर जो अपने परिश्रम से बटोरता उस की बढ़ती होती है ॥
१२ जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता तो मन शिथिल होता है

(१) मूल में मनुष्य के हाथों का फल उस को लौट जाता है। (२) मूल में सच्चाई का होंठ। (३) मूल में झूठी जीभ। (४) मूल में विपत्ति से भर जाते हैं।

(५) मूल में प्राण।
(६) मूल में अपने को निर्धन करता।

पर जब लालसा पूरी होती तब जीवन का वृक्ष लगता है ॥

१३ जो वचन को तुच्छ जानता सो नाश हो जाता है
पर आज्ञा के डरवैये को अच्छा फल मिलता है ॥

१४ बुद्धिमान् की शिक्षा जीवन का सोता है
और उस के द्वारा लोग मृत्यु के फंदों से बच सकते हैं ॥

१५ सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है
पर विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है ॥

१६ सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं
पर मूर्ख अपनी मूढ़ता फैलाता है ॥

१७ दुष्ट दूत बुराई में फंसता है
पर विश्वासयोग्य एलची से कुशलक्षेम होता है ॥

१८ जो शिक्षा को सुनी अनसुनी करता सो निर्धन होता और अपमान पाता है
पर जो डांट को मानता उस की महिमा होती है ॥

१९ लालसा का पूरा होना तो जीव को मीठा लगता है
पर बुराई से हटना मूर्खों को घिनौना लगता है ॥

२० बुद्धिमानों की संगति कर तब तू भी बुद्धिमान् हो जाएगा
पर मूर्खों का साथी नाश हो जाएगा ॥

२१ बुराई पापियों के पीछे पड़ती है
और धर्म्मियों को अच्छा फल मिलता है ॥

२२ भला मनुष्य अपने नाती पोतों के लिये भाग छोड़ जाता है
पर पापी की संपत्ति धर्म्मी के लिये रक्खी जाती है ॥

२३ निर्बल लोगों को खेती बारी से बहुत भोजनवस्तु मिलती है
पर ऐसे लोग भी हैं जो अन्याय के कारण मिट जाते हैं ॥

२४ जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता सो उस का बैरी है
पर जो उस से प्रेम रखता सो यत्न से उस को शिक्षा देता है ॥

२५ धर्म्मी पेट भर खाने पाता है
पर दुष्ट भूखे ही रहते हैं ॥

१४. हर बुद्धिमान् स्त्री अपने घर को बनाती है
पर मूढ़ स्त्री उस को अपने ही हाथों से ढा देती है ॥

२ जो सीधाई से चलता सो यहोवा का भय माननेहारा
पर जो टेढ़ी चाल चलता सो उस को तुच्छ जाननेहारा ठहरता है ॥

३ मूढ़ के मुंह में गर्व का अंकुर है
पर बुद्धिमान् लोग अपने वचनों के द्वारा रक्षा पाते हैं ॥

४ जहां बैल नहीं वहां गोशाला निर्मल तो रहती है
पर बैल के बल से बड़ा ही लाभ होता है

५ सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता
पर झूठा साक्षी झूठी बातें उड़ाता है ॥

६ ठट्ठा करनेहारा बुद्धि को ढूंढ़ता पर नहीं पाता
पर समझवाले को ज्ञान सहज से मिलता है ॥

७ मूर्ख से अलग हो जा
तू उस से ज्ञान की बात न पाएगा[1] ॥

८ चतुर की बुद्धि अपनी चाल का जानना है
पर मूर्खों की मूढ़ता छल करना है ॥

९ मूढ़ लोग दोषी होने को ठट्ठा जानते हैं
पर सीधे लोगों के बीच अनुग्रह होता है ॥

१० मन अपना ही दुःख जानता है
और बिराना उस के आनन्द में हाथ नहीं डाल सकता ॥

११ दुष्टों का घर विनाश हो जाता है
पर सीधे लोगों के तम्बू में लहलहाना होता है ॥

१२ ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है
पर उस के अन्त में मृत्यु ही मिलती है ॥

१३ हंसी के समय भी मन उदास होता है
और आनन्द के अन्त में शोक होता है ॥

१४ जिस का मन ईश्वर की ओर से हट जाता है
वह अपनी चाल चलन का फल भोगता है
पर भला मनुष्य आप ही आप सन्तुष्ट होता है ॥

१५ भोला तो हर एक बात को सच मानता है
पर चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है ॥

१६ बुद्धिमान् डरकर बुराई से हटता है
पर मूर्ख ढीठ होकर निडर रहता है ॥

१७ जो झट क्रोध करे सो मूढ़ता का काम भी करेगा
पर जो बुरी युक्तियां निकालता है उस से लोग बैर रखते हैं ॥

१८ भोलों का भाग मूढ़ता ही होता है
पर चतुरों को ज्ञानरूपी मुकुट बांधा जाता है ॥

१९ बुरे लोग भलों के सन्मुख

(१) मूल में न जानेगा।

और दुष्ट लोग धर्म्मी के फाटक पर दण्डवत् करते हैं ॥
२० निर्धन का पड़ोसी भी उस से घिन करता है
पर धनी के बहुतेरे प्रेमी होते हैं ॥
२१ जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता सो पाप करता है
पर जो दीन लोगों पर अनुग्रह करता सो धन्य होता है ॥
२२ जो बुरी युक्ति निकालते हैं सो क्या भ्रम में नहीं पड़ते
पर भली युक्ति निकालनेहारों से करुणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है ॥
२३ परिश्रम से सदा लाभ होता है
पर बकवाद करने से केवल घटती होती है ॥
२४ बुद्धिमानों का धन उन का मुकुट ठहरता है
पर मूर्खों की मूढ़ता निरी मूढ़ता है ॥
२५ सच्चा साक्षी बहुतों के प्राण बचाता है
पर जो झूठी बातें उड़ाया करता है उस से धोखा ही होता है ॥
२६ यहोवा के भय मानने से दृढ़ भरोसा होता है
और उस के पुत्रों को शरणस्थान मिलता है ॥
२७ यहोवा का भय मानना जीवन का सोता है
और उस के द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच सकते हैं ॥
२८ राजा की महिमा प्रजा की बहुतायत से होती है
पर जहां प्रजा नहीं वहां हाकिम नाश हो जाता है ॥
२९ जो विलम्ब से कोप करनेहारा है सो बड़ा समझवाला है
पर जो अधीर है सो मूढ़ता की बढ़ती करता है ॥
३० शान्त मन तन का जीवन है
पर मन के जलने से हड्डियां भी जल[१] जाती हैं ॥
३१ जो कंगाल पर अंधेर करता सो उस के कर्त्ता की निन्दा
पर जो दरिद्र पर अनुग्रह करता सो उस की महिमा करता है ॥
३२ दुष्ट मनुष्य बुराई करता हुआ नाश हो जाता है
पर धर्म्मी को मृत्यु के समय भी शरण मिलती है ॥
३३ समझवाले के मन में बुद्धि वास किये रहती है
पर मूर्खों के अन्तःकाल में जो कुछ है सो प्रगट हो जाता है ॥
३४ जाति की बढ़ती धर्म्म ही से होती है
पर पाप से देश के लोगों[२] का अपमान होता है ॥
३५ जो कर्म्मचारी बुद्धि से काम करता उस पर राजा प्रसन्न होता है
पर जो लज्जा के काम करता उस पर वह रोष करता है ॥

१५. कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है
पर कटुवचन से कोप धधक उठता है ॥
२ बुद्धिमान् ज्ञान का ठीक बखान करते हैं
पर मूर्खों के मुंह से मूढ़ता उबल आती है ॥
३ यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं
वह बुरे भले दोनों को ताकता रहता है ॥
४ शांति देनेहारी बात जीवन वृक्ष है
पर उलट फेर की बात से आत्मा दुःखित होता है ॥
५ मूढ़ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है
पर जो डांट को मानता सो चतुर हो जाता है ॥
६ धर्म्मी के घर में बहुत धन रहता है
पर दुष्ट के उपार्जन में दुःख रहता है ॥
७ बुद्धिमान् लोग बातें करने से ज्ञान को फैलाते हैं
पर मूर्खों का मन ठीक नहीं रहता ॥
८ दुष्ट लोगों के बलिदान से यहोवा घिन करता है
पर वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है ॥
९ दुष्ट के चाल चलन से यहोवा को घिन आती है
पर जो धर्म्म का पीछा करता उस से वह प्रेम रखता है ॥
१० जो मार्ग को छोड़ देता उस को बड़ी ताड़ना मिलती है
और जो डांट से बैर रखता सो मर ही जाता ॥
११ जब कि अधोलोक और विनाशलोक यहोवा के साम्हने खुले रहते हैं
तो निश्चय मनुष्यों के मन भी ॥
१२ ठट्ठा करनेहारा डांटे जाने से प्रसन्न नहीं होता
और न वह बुद्धिमानों के पास जाता है ॥
१३ मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है
पर मन के दुःख से आत्मा निराश होता है ॥

(१) मूल में सड़।

(२) मूल में समुदाय समुदाय के लोगों।

१४ समझनेहारे का मन ज्ञान की खोज में रहता है
पर मूर्ख लोग मूढ़ता से पेट भरते हैं ॥
१५ दुखिया के सब दिन दुःख भरे रहते हैं
पर जिस का मन प्रसन्न रहता है सो मानो नित्य भोज में जाता है ॥
१६ घबराहट के साथ बहुत रक्खे हुए धन से
यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन उत्तम है ॥
१७ बैर रहते पोसे हुए बैल का मांस खाने से
प्रेम रहते सागपात का भी भोजन उत्तम है ॥
१८ क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है
पर जो विलम्ब से क्रोध करनेहारा है सो मुकद्दमों को दबा देता है ॥
१९ आलसी का मार्ग कांटों से रुन्धा हुआ होता है
पर सीधे लोगों की बाट राजमार्ग ठहरती है ॥
२० बुद्धिमान् पुत्र से पिता आनन्दित होता है
पर मूर्ख अपनी माता को तुच्छ जानता है ॥
२१ निर्बुद्धि को मूढ़ता से आनन्द होता है
पर समझवाला मनुष्य सीधी चाल चलता है ॥
२२ बिना सम्मति की कल्पनाएं निष्फल हुआ करती हैं
पर बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है ॥
२३ सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है
और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है ॥
२४ बुद्धिमान् के लिये जीवन की बाट ऊपर की ओर जाती है
इस रीति वह अधोलोक में पड़ने से बच सकता है ॥
२५ यहोवा अहंकारियों के घर को ढा देता
पर विधवा के सिवाने को अटल रखता है ॥
२६ बुरी कल्पनाएं यहोवा को घिनौनी लगतीं
पर मनभावने वचन शुद्ध हैं ॥
२७ लालची अपने घराने को दुःख देता है
पर घूस से घिन करनेहारा जीता रहता है ॥
२८ धर्म्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर दूं
पर दुष्टों के मुंह से बुरी बातें उबल आती हैं ॥
२९ यहोवा दुष्टों से दूर रहता है
पर धर्म्मियों की प्रार्थना सुनता है ॥
३० आंखों की चमक से मन को आनन्द होता है
और अच्छे समाचार से हड्डियां पुष्ट होती हैं ॥
३१ जो जीवनदायी डांट कान लगाकर सुनता है
सो बुद्धिमानों के संग ठिकाना पाता है ॥
३२ जो शिक्षा को सुनी अनसुनी करता सो अपने प्राण को तुच्छ जानता है
पर जो डांट को सुनता सो बुद्धि प्राप्त करता है ॥
३३ यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है
और महिमा से पहिले नम्रता होती है ॥

१६.

मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है
पर मुंह से कहना यहोवा की ओर से होता है ॥
२ मनुष्य का सारा चाल चलन अपने लेखे में पवित्र ठहरता है
पर यहोवा मन को तौलता है ॥
३ अपने कामों को यहोवा पर डाल
इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी ॥
४ यहोवा ने सब वस्तुएं उस के प्रयोजन के लिये
वरन दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है ॥
५ सब मन के घमण्डियों से यहोवा घिन करता है
मैं दृढ़ता से कहता हूं कि[१] ऐसे लोग निर्दोष न ठहरेंगे ॥
६ अधर्म्म का प्रायश्चित्त कृपा और सच्चाई से होता है
और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं ॥
७ जब किसी का चाल चलन यहोवा को भावता है
तब वह उस के शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है ॥
८ अन्याय के बड़े लाभ से
न्याय से थोड़ा ही प्राप्त करना उत्तम है ॥
९ मनुष्य मन में अपने मार्ग को विचारता है
पर यहोवा ही उस के पैरों को स्थिर करता है ॥
१० राजा के मुंह से दैवीवाणी निकलती है
न्याय करने में उस से चूक नहीं होती ॥
११ सच्चा तराजू और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं
थैली में जितने बटखरे हैं सब उसी के बनवाये हुए हैं ॥
१२ दुष्टता करना राजाओं के लिये घिनौना काम है

(१) मूल में हाथ पर हाथ।

क्योंकि उन की गद्दी धर्म्म ही से स्थिर रहती है ॥
१३ धर्म्म की बात बोलनेहारों से राजा प्रसन्न होते हैं
और जो सीधी बातें बोलता है उस से व प्रेम रखते हैं ॥
१४ राजा का कोप मृत्यु के दूत के समान है
पर बुद्धिमान् मनुष्य उस को ठण्ढा करता है ॥
१५ राजा के मुख की चमक में जीवन रहता है
और उस की प्रसन्नता बरसात के अन्त की घटा के समान होती है
१६ बुद्धि की प्राप्ति चोखे सोने से क्या ही उत्तम है
और समझ की प्राप्ति चान्दी से चुनने योग्य है ॥
१७ बुराई से हटना सीधे लोगों के लिये राजमार्ग है
जो अपने चाल चलन की चौकसी करता सो अपने प्राण की भी रक्षा करता है ॥
१८ विनाश से पहले गर्व
और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता ॥
१९ घमण्डियों के संग लूट बांट लेने से दीन लोगों के संग नम्र भाव से रहना उत्तम है ॥
२० जो वचन पर मन लगाता सो कल्याण पाता है
और जो यहोवा पर भरोसा रखता सो धन्य होता है ॥
२१ जिस के हृदय में बुद्धि है सो समझवाला कहावता है
और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है ॥
२२ जिस के बुद्धि है उस के लिये वह जीवन का सोता है
पर मूढ़ों को शिक्षा देना मूढ़ता ही होती है ॥
२३ बुद्धिमान् का मन उस के मुंह पर भी बुद्धिमानी प्रगट करता[१]
और वचन में विद्या रहती है ॥
२४ मनभावने वचन मधु भरे छत्ते की नाईं जीव को मीठे लगते और हड्डियों को हरी भरी करते हैं ॥
२५ ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है
पर उस के अन्त में मृत्यु ही मिलती है ॥
२६ परिश्रमी की लालसा उस के लिये परिश्रम करती है
उस की भूख[२] तो उस को उभारती रहती है ॥
२७ अधम मनुष्य बुराई की युक्ति निकालता है
और उस के वचनों से आग लग जाती है ॥
२८ टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़ों को उठाता है
और कानाफूसी करनेहारा परम मित्रों में भी फूट करा देता है
२९ उपद्रवी मनुष्य अपने पड़ोसी को फुसलाकर
कुमार्ग पर चलाता है ॥
३० आंख मूंदनेहारा छल की कल्पनाएं करता है
और होंठ दबानेहारा बुराई करता है ॥
३१ पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं
वे धर्म्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं ॥
३२ विलम्ब से कोप करना वीरता से
और अपने मन को वश में रखना नगर के जीत लेने से उत्तम है ॥
३३ चिट्ठी डाली जाती तो है
पर उस का निकलना यहोवा ही की ओर से होता है ॥

१७.

चैन के साथ सूखा टुकड़ा उस घर की अपेक्षा उत्तम है
जो मेलबलि पशुओं से भरा हो पर उस में झगड़े रगड़े हों ॥
२ बुद्धि से चलनेहारा दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा
और उस पुत्र के भाइयों के बीच भागी होगा ॥
३ चान्दी के लिये घड़िया और सोने के लिये भट्ठी होती है
पर मनों को यहोवा जांचता है ॥
४ कुकर्म्मी अनर्थ बात को ध्यान देकर सुनता है
और झूठा मनुष्य दुष्टता की बात की ओर कान लगाता है ॥
५ जो निर्धन को ठट्ठों में उड़ाता सो उस के कर्त्ता की निन्दा करता है
और जो किसी की विपत्ति पर हंसता सो निर्दोष नहीं ठहरता ॥
६ बूढ़ों की शोभा उन के नाती पोते हैं
और बालबच्चों की शोभा उन के माता पिता हैं ॥
७ मूढ़ को उत्तम बात फबती नहीं
और अधिक करके प्रधान को झूठी बात नहीं फबती ॥
८ देनेहारे के हाथ में घूस मोहनेहारे मणि का काम देता है

(१) मूल में उस के मुंह को बुद्धिमान् करता है।
(२) मूल में उस का मुंह।

जिधर ऐसा पुरुष फिरता उधर ही उस का काम सुफल होता है॥
९ जो दूसरे के अपराध को ढांप देता सो प्रेम का खोजी ठहरता है
पर जो बात की चर्चा बार बार करता है सो परम मित्रों में भी फूट करा देता है॥
१० एक घुड़की समझवाले के मन में जितनी गड़ जाती है
उतनी सौ बार मार खाना मूर्ख के मन में नहीं गड़ता॥
११ बुरा मनुष्य दंगे ही का यत्न करता है
इसलिये उस के पास क्रूर दूत भेजा जाएगा॥
१२ बच्चा छीनी हुई रीछनी का मिलना तो भला है
पर मूढ़ता में डूबे हुए मूर्ख से मिलना भला नहीं॥
१३ जो कोई भलाई के बदले में बुराई करे
उस के घर से बुराई दूर न होगी॥
१४ झगड़े का आरंभ बान्ध में के छेद के समान है
झगड़ा बढ़ने से पहिले उस को छोड़ देना॥
१५ जो दोषी को निर्दोष और जो निर्दोष को दोषी ठहराता है
उन दोनों से यहोवा घिन करता है॥
१६ बुद्धि मोल लेने के लिये मूर्ख अपने हाथ में दाम क्यों लिये है
वह उसे चाहता ही नहीं॥
१७ मित्र सब समयों में प्रेम रखता है
और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है॥
१८ निर्बुद्धि मनुष्य हाथ पर हाथ मारता
और अपने पड़ोसी के यहां जामिन होता है॥
१९ जो झगड़े रगड़े में प्रीति रखता सो अपराध करने में भी प्रीति रखता है
और जो अपने फाटक को बड़ा करता सो अपने विनाश के लिये यत्न करता है॥
२० जो मन का टेढ़ा है उस का कल्याण नहीं होता
और उलट फेर की बात करनेहारा विपत्ति में पड़ता है॥
२१ जो मूर्ख को जन्माता सो उस से दुःख ही पाता है
और मूढ़ के पिता को आनन्द नहीं होता॥
२२ मन का आनन्द अच्छी औषध है
पर मन के टूटने से हड्डियां सूख जाती हैं॥
२३ दुष्ट जन न्याय बिगाड़ने के लिये
अपनी गांठ[१] से घूस निकालता है॥
२४ बुद्धि समझवाले के साम्हने ही रहती है
पर मूर्ख की आंखें पृथिवी के दूर दूर देशों में लगी रहती हैं॥
२५ मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता
और जननी को शोक होता है॥
२६ फिर धर्म्मी से दण्ड लेना
और प्रधानों को सिधाई के कारण पिटवाना दोनों काम अच्छे नहीं॥
२७ जो संभलकर बोलता है वही ज्ञानी ठहरता
और जिस का आत्मा शान्त रहता है सोई समझवाला पुरुष ठहरता है॥
२८ मूढ़ भी जब चुप रहता तब बुद्धिमान् गिना जाता है
और जो अपना मुंह बन्द रखता सो समझवाला गिना जाता है

१८.

जो औरों से अलग हो जाता है सो अपनी ही इच्छा पूरी करने के लिये ऐसा करता
और सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर[२] करता है॥
२ मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता
वह केवल अपने मन की बात प्रगट करना चाहता है॥
३ जहां दुष्ट आता वहां अपमान भी आता है
और निन्दित काम के साथ नामधराई होती है॥
४ मनुष्य के मुंह के वचन गहिरा जल
वा उमण्डनेहारी नदी वा बुद्धि के सोते हैं॥
५ दुष्ट का पक्ष करना
और धर्म्मी का हक मारना अच्छा नहीं है॥
६ मूर्ख बात बढ़ाने से मुकद्दमा खड़ा करता
और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है[३]॥
७ मूर्ख का विनाश उस की बातों से होता
और उस के वचन उस के प्राण के लिये फंदे होते हैं॥
८ कानाफूसी करनेहारे के वचन स्वादिष्ट भोजन की नाईं
पेट के भीतर पहुंच जाते हैं॥
९ फिर जो काम में आलस करता है
सो खोनेहारे का भाई ठहरता है॥
१० यहोवा का नाम दृढ़ कोट है

(१) मूल में गोद।

(२) मूल में लड़ाई।
(३) मूल में उस का मुंह मार बुलाता है।

धर्म्मी उस में भागकर सब जोखिम से बचता है ॥
११ धनी का धन उस के लेखे गढ़वाला नगर
और ऊंचे पर बनी हुई शहरपनाह है ॥
१२ नाश होने से पहिले मनुष्य के मन में घमण्ड
और महिमा पाने से पहिले नम्रता होती है ॥
१३ जो बिना बात सुने उत्तर देता
सो मूढ़ ठहरता और उस का अनादर होता है ॥
१४ रोग में मनुष्य अपने आत्मा से सम्भलता है
पर जब आत्मा हार जाता तब इसे कौन सह सकता है ॥
१५ समझवाले का मन ज्ञान प्राप्त करता
और बुद्धिमान् ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं ॥
१६ भेंट मनुष्य के लिये राह खोल देती
और उसे बड़े लोगों के साम्हने पहुंचाती है ॥
१७ मुक़द्दमे में जो पहिले बोलता वही धर्म्मी जान पड़ता
पर पीछे दूसरा पक्षवाला[१] आकर उसे खोज लेता है ॥
१८ चिट्ठी डालने से झगड़े बन्द होते
और बलवंतों की लड़ाई का अन्त होता है ॥
१९ चिढ़े हुए भाई को मनाना दृढ़ नगर के लेने से कठिन होता है
और ऐसे झगड़े राजभवन के बेण्डों के समान हैं ॥
२० मनुष्य का पेट मुंह की बातों के फल से भरता है
और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता उस से वह तृप्त होता है ॥
२१ जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं
और जो उसे काम में लाना चाहे वह उसी का फल भोगेगा ॥
२२ जिस ने स्त्री ब्याह ली उस ने उत्तम पदार्थ पाया
और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है ॥
२३ निर्धन गिड़गिड़ाकर बोलता है
पर धनी कड़ा उत्तर देता है ॥
२४ संगियों के बढ़ाने से तो नाश होता है
पर कोई ऐसा प्रेमी होता है जो भाई से भी अधिक मिला रहता है ॥

१९.

जो निर्धन खराई से चलता है
सो उस मूर्ख से उत्तम है
जो टेढ़ी बातें बोलता है ॥
२ फिर मन का बिन ज्ञान रहना अच्छा नहीं
और जो उतावली से दौड़ता सो चूक जाता है ॥
३ मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है
और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है ॥
४ धनी के तो बहुत संगी हो जाते हैं
पर कंगाल के संगी उस से अलग हो जाते हैं ॥
५ झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता
और जो झूठ बोला करता है सो न बचेगा ॥
६ उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं
और दानी पुरुष का मित्र सब कोई बनता है ॥
७ जब निर्धन के सब भाई उस से बैर रखते हैं
तो निश्चय है कि उस के संगी उस से दूर हो जाते हैं
वह बातें करते करते उन का पीछा करता है पर उन को नहीं पाता ॥
८ जो बुद्धि प्राप्त करता सो अपने प्राण का प्रेमी ठहरता है
और जो समझ को धरे रहता उस का कल्याण होता है ॥
९ झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता
और जो झूठ बोला करता है सो नाश होता है ॥
१० जब सुख से रहना मूर्ख को नहीं फबता
तो हाकिमों पर दास का प्रभुता करना कहां फबे ॥
११ जो मनुष्य बुद्धि से चलता सो विलम्ब से कोप करता है
और अपराध से आनाकानी करना मनुष्य को सोहता है ॥
१२ राजा का कोप सिंह की गरजना सा
पर उस की प्रसन्नता घास पर की ओस सरीखी होती है ॥
१३ मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति ठहरता है
और स्त्री के झगड़े रगड़े लगातार टपकने के तुल्य होते हैं ॥
१४ घर और धन पुरखाओं से भाग में
पर बुद्धिमती स्त्री यहोवा ही से मिलती है ॥
१५ आलस से भारी नींद आ जाती है
और जो प्राणी ढिलाई से काम करता सो भूखा ही रहता है ॥

---

(१) मूल में उस का बन्धु।

१६ जो आज्ञा को मानता सो अपने प्राण की रक्षा करता है
पर जो अपने चाल चलन के विषय निश्चिन्त रहता सो मर जाता है ॥
१७ जो कंगाल पर अनुग्रह करता सो यहोवा को उधार देता है
और वह उस काम का प्रतिफल देगा ॥
१८ अपने पुत्र की ताड़ना कर क्योंकि अब लों आशा है
जान बूझकर उस को मार न डाल ॥
१९ जो बड़ा क्रोधी है उसे दण्ड उठाने दे
क्योंकि यदि तू उसे बचाए तो फिर फिर बचाना पड़ेगा ॥
२० सम्मति को सुन ले और शिक्षा को ग्रहण कर
कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे ॥
२१ मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएं होती हैं
पर जो युक्ति यहोवा करता है सोई स्थिर रहती है ॥
२२ मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने योग्य होता है
और निर्धन जन झूठ बोलनेहारे से उत्तम है ॥
२३ यहोवा के भय मानने से जीवन बढ़ता है
और उस का भय माननेहारा ठिकाना पाकर सुखी रहता है
उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की ॥
२४ आलसी अपना हाथ थाली में डालता है
पर अपने मुंह तक कौर नहीं उठाता ॥
२५ ठट्ठा करनेहारे को मार और इस से भोला चतुर हो जाएगा
और समझवाले को डांट तब वह अधिक ज्ञान पाएगा ॥
२६ जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता और अपनी मा को भगा देता है
सो अपमान और लज्जा का कारण होगा ॥
२७ हे मेरे पुत्र यदि भटकना चाहता है
तो शिक्षा का सुनना छोड़ दे ॥
२८ अधम साक्षी न्याय को ठट्ठों में उड़ाता है
और दुष्ट लोग अनर्थ काम निगल लेते हैं ॥
२९ ठट्ठा करनेहारों के लिये दण्ड की
और मूर्खों के लिये पीटने की तैयारी हुई है ॥

२०.

दाखमधु ठट्ठा करनेहारा और मदिरा हौरा मचानेहारी है
जो कोई उस के कारण चूक करता है सो बुद्धिमान् नहीं ॥
२ राजा का भय दिखाना सिंह का गरजना है
जो उस पर रोष करता सो अपने प्राण का अपराधी होता है ॥
३ मुकद्दमे से हाथ उठाना पुरुष की महिमा ठहरती है
पर सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं ॥
४ आलसी मनुष्य शीत के कारण हल नहीं जोतता
इसलिये कटनी के समय वह भीख मांगता और कुछ नहीं पाता ॥
५ मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो है
तौभी समझवाला मनुष्य उस को निकाल लेता है ॥
६ बहुत से मनुष्य अपनी कृपा का प्रचार करते हैं
पर सच्चा पुरुष कौन पा सकता है ॥
७ धर्म्मी जो खराई से चलता रहता है
उस के पीछे उस के लड़केबाले धन्य होते हैं ॥
८ राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा करता है
सो अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को उड़ा देता है ॥
९ कौन कह सकता है कि मैं ने अपने हृदय को पवित्र किया
मैं पाप से शुद्ध हुआ हूं ॥
१० घटती बढ़ती बटखरे[2] और घटती बढ़ती नपुए[1]
इन दोनों से यहोवा घिन करता है ॥
११ लड़का भी अपने कामों से पहिचाना जाता है
कि उस का काम पवित्र और सीधा है वा नहीं ॥
१२ सुनने के लिये कान और देखने के लिये आंख जो हैं
दोनों को यहोवा ने बनाया है ॥
१३ नींद से प्रीति न रख नहीं तो दरिद्र हो जाएगा
आंखें खोल तब तू रोटी से तृप्त होगा ॥
१४ मोल लेने के समय गाहक तुच्छ तुच्छ कहता है
पर चले जाने पर बड़ाई करता है ॥
१५ सोना और बहुत से मूंगे तो हैं
पर ज्ञान की बातें अनमोल मणि ठहरी हैं ॥
१६ जो अनजाने[2] का जामिन हुआ उस का कपड़ा

(१) मूल में एपा। (२) मूल में पराये।

और जो बिरानों का जामिन हुआ उस से बंधक की वस्तु ले रख॥
१७ चोरी छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है
पर पीछे उस का मुंह कंकर से भर जाता है॥
१८ सब कल्पनाएं सम्मति ही से स्थिर होती हैं
और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये॥
१९ जो लुतराई करता फिरता सो भेद प्रगट करता है
इसलिये बकवादी से मेल जोल न रखना॥
२० जो अपने माता पिता को कोसता
उस का दिया बुझ जाता और घोर अन्धकार हो जाता है॥
२१ जो भाग पहिले उतावली से तो मिलता है
अन्त में उस पर आशिष नहीं होती॥
२२ मत कह कि मैं बुराई का पलटा लूंगा
वरन यहोवा की बाट जोहता रह वह तुझ को छुड़ाएगा॥
२३ घटती बढ़ती बटखरो से यहोवा घिन करता है
और छल का तराजू अच्छा नहीं॥
२४ मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है
आदमी क्योंकर अपना चलना समझ सके॥
२५ जो मनुष्य बिना बिचारे किसी वस्तु को पवित्र ठहराए[१]
और जो मन्नत मानकर पूछपाछ करने लगे सो फन्दे में फंसेगा॥
२६ बुद्धिमान् राजा दुष्टों को ओसाकर उड़ा देता
और उन पर दावने का पहिया चलवाता है॥
२७ मनुष्य का आत्मा यहोवा का दीपक है
वह मन की सब बातों की खोज करता है॥
२८ राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है
और कृपा करने से उस की गद्दी संभलती है॥
२९ जवानों की शोभा उन का बल है
पर बूढ़ों की भी उन के पक्के बाल हैं॥
३० चोट लगने से जो घाव होते हैं सो बुराई दूर करते हैं
और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है॥

२१. राजा

का मन नालियों के जल की नाईं यहोवा के हाथ में रहता है
जिधर वह चाहता उधर उस को फेरता है॥
२ मनुष्य का सारा चाल चलन अपने लेखे तो ठीक होता है
पर यहोवा मन मन को जांचता है॥
३ धर्म्म और न्याय करना
यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है॥
४ चढ़ी आंखें घमण्डी मन
और दुष्टों की खेती तीनों पापमय हैं॥
५ कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है
पर उतावली करनेहारे को केवल घटती होती है॥
६ जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो
सो वायु से उड़ जानेहारा कुहरा है उस के ढूंढ़नेहारे मृत्यु ही को ढूंढ़ते हैं॥
७ जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं उस से उन्हीं का नाश होता है
क्योंकि वे न्याय का काम करने से नाह करते हैं॥
८ पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढ़ा होता है
पर जो पवित्र है उस का कर्म्म सीधा होता है॥
९ लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू स्त्री के संग रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है॥
१० दुष्ट जन बुराई की लालसा जी से करता है
वह अपने पड़ोसी पर अनुग्रह की दृष्टि नहीं करता॥
११ जब ठट्ठा करनेहारे को दण्ड दिया जाता तब भोला बुद्धिमान् हो जाता है
और बुद्धिमान् को जब उपदेश दिया जाता तब ज्ञान प्राप्त करता है॥
१२ ईश्वर जो धर्म्मी है सो दुष्टों के घराने में मन रखता
वह उन को बुराइयों में उलट देता है॥
१३ जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे
सो आप पुकारेगा और उस की सुनी न जाएगी॥
१४ गुप्त में दी हुई भेंट से कोप ठण्डा होता
और चुपके से दी हुई घूस से बड़ी जलजलाहट भी थमती है॥
१५ न्याय का काम करना धर्म्मी को तो आनन्द
पर अनर्थकारियों को विनाश ही का कारण जान पड़ता है॥
१६ जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए
उस का ठिकाना मरे हुओं के बीच होगा॥
१७ जो रागरंग[२] में प्रीति रखता है सो कंगाल होता है

(१) मूल में कहे कि पवित्र वस्तु।
(२) मूल में आनन्द।

और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने में प्रीति रखता सो धनी नहीं होता ॥
१८ दुष्ट जन धर्म्मी की छुड़ौती ठहरता है
और विश्वासघाती सीधे लोगों की सन्ती दण्ड भोगते हैं ॥
१९ झगड़ालू और चिढ़नेहारी स्त्री के संग रहने से जंगल में रहना उत्तम है ॥
२० बुद्धिमान् के घर में उत्तम धन और तेल पाये जाते हैं
पर मूर्ख उन को उड़ा डालता है ॥
२१ जो धर्म्म और कृपा का पीछा पकड़ता है
सो जीवन धर्म्म और महिमा भी पाता है ॥
२२ बुद्धिमान् शूरवीरों के नगर पर चढ़कर
उन के बल को जिस पर व भरोसा करते हैं नाश करता है ॥
२३ जो अपने मुंह को वश में रखता है
सो अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है ॥
२४ जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है
उस का नाम अभिमानी और अहंकारी ठट्ठा करनेहारा पड़ता है ॥
२५ आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है
क्योंकि उस के हाथ काम करने से नाह करते हैं ॥
२६ कोई ऐसा है जो दिन भर लालसा ही किया करता है
पर धर्म्मी लगातार दान करता रहता है ॥
२७ दुष्टों का बलिदान घिनौना लगता है
विशेष करके जब वह महापाप के निमित्त चढ़ाता है ॥
२८ झूठा साक्षी नाश होता है
जिस ने जो सुना है वही कहता हुआ स्थिर रहेगा ॥
२९ दुष्ट मनुष्य कठोर मुख का होता है
और जो सीधा है सो अपनी चाल सीधी करता है ॥
३० यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि और न कुछ समझ
न कोई युक्ति चलती है ॥
३१ युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है
पर जय यहोवा ही से मिलता है ॥

२२.

खरे धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है ॥
और सोने चांदी से औरों की प्रसन्नता उत्तम है ॥
२ धनी और निर्धन दोनों मिलते हैं
यहोवा उन दोनों का कर्त्ता है ॥
३ चतुर मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है
पर भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं ॥
४ नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल
धन महिमा और जीवन होता है ॥
५ टेढ़े मनुष्य के मार्ग में कांटे और फंदे रहते हैं
पर जो अपने प्राण की रक्षा करता सो उन से दूर रहता है ॥
६ लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उस को चलना चाहिये
वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा ॥
७ धनी निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है
और उधार लेनेहारा उधार देनेहारे का दास होता है ॥
८ जो कुटिलता का बीज बोता है सो अनर्थ ही लवेगा
और उस के रोष का सोंटा टूटेगा ॥
९ दया करनेहारे पर आशिष फलती है
क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है ॥
१० ठट्ठा करनेहारे को निकाल दे तब झगड़ा मिट जाएगा
और वाद विवाद और अपमान दोनों टूट जाएंगे ॥
११ जो मन की शुद्धता में प्रीति रखता है
उस के वचन मनोहर होते और राजा उस का मित्र होता है
१२ यहोवा ज्ञानी पर दृष्टि करके उस की रक्षा करता
पर विश्वासघाती की बातें उलट देता है ॥
१३ आलसी कहता है कि बाहर तो सिंह होगा
मैं चौक के बीच घात किया जाऊंगा ॥
१४ पराई स्त्रियों का मुंह गहिरा गड़हा है
जिस से यहोवा क्रोधित होता सोई उस में गिरता है ॥
१५ लड़के के मन में मूढ़ता बंधी रहती है
पर छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उस से दूर की जाती है ॥
१६ जो अपने लाभ के निमित्त कंगाल पर अन्धेर करता
और जो धनी को भेंट देता वे दोनों केवल हानि ही उठाते हैं ॥
१७ कान लगाकर बुद्धिमानों के वचन सुन
और मेरी ज्ञान की बातों की ओर मन लगा ॥
१८ यदि तू उन को अपने मन में रक्खे
और वे सब तेरे मुंह से भी निकला करें तो यह मनभावनी बात होगी ॥

१९ मैं आज इसलिये ये बातें तुझ को जता देता हूं
कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो ॥
२० मैं बहुत दिनों से तेरे हित के उपदेश
और ज्ञान की बातें लिखता आया हूं
२१ कि मैं तुझे सत्य वचनों का निश्चय करा दूं
जिस से जो तुझे काम में लगाएं उन को सच्चा
उत्तर दे सके ॥
२२ कंगाल पर इस कारण अन्धेर न करना कि वह
कंगाल है
और न दीन जन को कचहरी[1] में पीसना ॥
२३ क्योंकि यहोवा उन का मुकद्दमा लड़ेगा
और जो लोग उन का धन हर लेते हैं उन का
प्राण भी वह हर लेगा ॥
२४ क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना
और झट कोप करनेहारे के संग न चलना
२५ कहीं ऐसा न हो कि तू उन की चाल सीखे
और तेरा प्राण फन्दे में फंस जाए ॥
२६ जो लोग हाथ पर हाथ मारते
और ऋणियों के जामिन होते हैं उन में तू न
होना ॥
२७ यदि भर देने के लिये तेरे पास कुछ न हो
तो वह क्यों तेरे नीचे से खाट ले ॥
२८ जो सिवाना तेरे पुरखाओं ने बांधा हो
उस पुराने सिवाने को न बढ़ाना ॥
२९ तू ऐसा पुरुष देखे जो कामकाज में निपुण हो
वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा छोटे लोगों के
सम्मुख नहीं ॥

२३. जब तू किसी हाकिम के संग भोजन करने को बैठे

तब इस बात को मन लगाकर सोचना कि मेरे
साम्हने कौन है ॥
२ और यदि तू खाऊ हो
तो थोड़ा खाकर भूखा उठ आना ॥
३ उस की स्वादिष्ट भोजन वस्तुओं की लालसा न
करना
क्योंकि वह धोखे का भोजन है ॥
४ धनी होने के लिये परिश्रम न करना
अपनी समझ का भरोसा छोड़ना ॥
५ क्या तू अपनी दृष्टि उस पर लगाएगा वह तो है
ही नहीं

(१) मूल में फाटक ।

वह उकाब पक्षी की नाईं पंख लगाकर
निःसन्देह आकाश की ओर उड़ जाता है ॥
६ जो डाह से देखता है उस की रोटी न खाना
और न उस की स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की
लालसा करना ॥
७ क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचारता है
वैसा वह आप है
वह तुझ से कहता तो है कि खा पी
पर उस का मन तुझ से लगा नहीं ॥
८ जो कौर तू ने खाया हो उसे उगलना पड़ेगा
और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा ॥
९ मूर्ख के साम्हने न बोलना
नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ जानेगा ॥
१० पुराने सिवानों को न बढ़ाना
और न बपमुओं के खेत में घुसना ॥
११ क्योंकि उन का छुड़ानेहारा सामर्थी है
उन का मुकद्दमा तेरे संग वही लड़ेगा ।
१२ अपना हृदय शिक्षा की ओर
और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना ॥
१३ लड़के की ताड़ना न छोड़ना
क्योंकि यदि तू उस को छड़ी से मारे तो वह न
मरेगा ॥
१४ तू उस को छड़ी से मारके
उस का प्राण अधोलोक से बचाएगा ॥
१५ हे मेरे पुत्र यदि तू[2] बुद्धिमान् हो
तो विशेष करके मेरा ही मन आनन्दित होगा ॥
१६ और जब तू सीधी बातें बोले
तब मेरा मन हुलसेगा ॥
१७ तू पापियों के विषय मन में डाह न करना
दिन भर यहोवा का भय मानते रहना ॥
१८ क्योंकि अन्त में फल होगा
और तेरी आशा न टूटेगी ॥
१९ हे मेरे पुत्र तू सुनकर बुद्धिमान् हो
और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला ॥
२० दाखमधु के पीनेहारों में न होना
न मांस के अधिक खानेहारों की संगति करना ॥
२१ क्योंकि पियक्कड़ और खाऊ अपना भाग खोते
और पीनकवाले को चिथड़े पहिनने पड़ते हैं ॥
२२ अपने जन्मानेहारे की सुनना
और जब तेरी माता बुढ़िया हो जाए तब भी उसे
तुच्छ न जानना ॥

(२) मूल में तेरा मन ।

२३ सच्चाई को मोल लेना बेचना नहीं
और बुद्धि और शिक्षा और समझ को मोल लेना भी ॥
२४ धर्म्मी का पिता बहुत मगन होता
और बुद्धिमान् का जन्मानेहारा उस के कारण आनन्दित होता है ॥
२५ तेरे कारण माता पिता आनन्दित
और तेरी जननी मगन होए ॥
२६ हे मेरे पुत्र अपना मन मेरी ओर लगा
और तेरी दृष्टि मेरे चाल चलन पर लगी रहे ॥
२७ वेश्या गहिरा गड़हा ठहरती
और पराई स्त्री सकेत कूएं के समान है ॥
२८ वह डाकू की नाईं घात लगाती
और बहुत से मनुष्यों को विश्वासघाती कर देती है ॥
२९ कौन कहता है हाय कौन कहता है हाय हाय कौन झगड़े रगड़े में फंसता है
कौन बक बक करता है किस के अकारण घाव होते हैं
किस की आंखें लाल हो जाती हैं ॥
३० उन की जो दाखमधु देर तक पीते हैं
और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूंढ़ने को जाते हैं ॥
३१ जब दाखमधु लाल दिखाई देता है
कटोरे में उस का कैसा सुन्दर रंग होता
जब वह कैसा ठीक उण्डेला जाता है तब उस को न देखना ॥
३२ क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाईं डसता
और करैत के समान काटता है ॥
३३ तू पराई स्त्रियां देखता
और उलट फेर की बातें बकता रहेगा ॥
३४ और तू समुद्र के बीच लेटनेहारे
वा मस्तूल के सिरे पर सोनेहारे के समान रहेगा ॥
३५ मैं ने मार तो खाई पर दुःखित न हुआ
मैं पिट तो गया पर मुझे कुछ सुधि न थी
मैं होश में कब आऊं मैं तो फिर मदिरा ढूंढूंगा ॥

२४. बुरे लोगों के विषय डाह न करना
और न उन की संगति चाहना ॥
२ क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं
और उन के मुंह से उपाधि की बात निकलती है ॥
३ घर बुद्धि से बनता
और समझ के द्वारा स्थिर होता है ॥
४ और उस की कोठरियां ज्ञान के द्वारा
सब प्रकार की अनमोल और मनभाऊ वस्तुओं से भर जाती हैं ॥
५ बुद्धिमान् पुरुष बलवान् भी होता
और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान् होता है ॥
६ इसलिये जब तू युद्ध करे तब युक्ति के साथ करना
और जय बहुत से मन्त्रियों के द्वारा प्राप्त होता है ॥
७ बुद्धि इतने ऊंचे पर है कि मूढ़ उसे पा नहीं सकता
वह सभा[1] में अपना मुंह खोल नहीं सकता ॥
८ जो सोच विचार के बुराई करता है
उस को लोग खल कहते हैं ॥
९ मूढ़ता का विचार भी पाप है
और ठट्ठा करनेहारे से मनुष्य घिन करते हैं ॥
१० क्या तू विपत्ति के समय हियाव छोड़ता है
तो तेरी शक्ति थोड़ी ही है ॥
११ जिन को मार डालने के लिये ले जाते हों उन को छुड़ाना
और जो घात होने को थरथराते हुए चले जाते हों उन्हें रोक लेना ॥
१२ यदि तू कहे कि भला मैं इस को जानता न था
तो क्या मन का जांचनेहारा इसे नहीं समझता
और क्या तेरे प्राण का रक्षक इसे नहीं जानता
और क्या वह एक एक मनुष्य के काम का फल उसे न भुगताएगा ॥
१३ हे मेरे पुत्र मधु खा कि वह अच्छा है
और मधु का छत्ता भी कि वह तेरे मुंह में मीठा लगेगा ॥
१४ इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसे ही मीठी लगेगी
यदि तू उसे पाये तो अन्त में उस का फल भी मिलेगा
और तेरी आशा न टूटेगी ॥
१५ हे दुष्ट धर्म्मी का वासस्थान नाश करने को घात न लगा
और उस का विश्रामस्थान मत बिगाड़ ॥
१६ क्योंकि धर्म्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठता है
पर दुष्ट लोग विपत्ति में गिरते हैं ॥
१७ जब तेरा शत्रु गिरे तब तू आनन्दित न हो

(१) मूल में फाटक।

और जब वह ठोकर खाए तब तेरा मन मगन न हो ॥
१८ कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह देखकर बुरा माने
और अपना कोप उस पर से उतारे ॥
१९ कुकर्म्मियों के विषय मत कुढ़
दुष्ट लोगों के विषय डाह न कर ॥
२० क्योंकि बुरे मनुष्य को अन्त में कुछ फल न मिलेगा
दुष्टों का दिया बुझाया जाएगा ॥
२१ हे मेरे पुत्र यहोवा और राजा दोनों का भय मानना
और बलवा करनेहारों में न मिलना ॥
२२ क्योंकि उन पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी
और दोनों की आपत्ति कौन जानता है ॥
२३ बुद्धिमानों के वचन ये भी हैं
न्याय में पक्षपात करना किसी रीति अच्छा नहीं ॥
२४ जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है
उस को तो समाज समाज के लोग कोसते और जाति जाति के लोग धमकी देते हैं ॥
२५ पर जो लोग दुष्ट को डांटते उन का भला होता
और उत्तम से उत्तम आशीर्वाद उन पर आता है ॥
२६ जो सीधे उत्तर देता है
सो सुननेहारे[1] को चूमता है ॥
२७ अपना बाहर का कामकाज ठीक करना
और खेत में उसे तैयार कर लेना
पीछे अपना घर बनाना
२८ अकारण अपने पड़ोसी के विरुद्ध साक्षी न देना
और न उस को फुसलाना ॥
२९ मत कह कि जैसा उस ने मेरे साथ किया वैसा ही मैं भी उस के साथ करूंगा
और उस को उस के काम के अनुसार पलटा दूंगा ॥
३० मैं आलसी के खेत के
और निर्बुद्धि मनुष्य की दाखबारी के पास होकर जाता था
३१ तो क्या देखा कि वहां सब कहीं कटीले पेड़ भर गये
और वह बिच्छू पेड़ों से ढप गई
और उस का पत्थर का बाड़ा गिर गया है ॥
३२ तब मैं ने निहारके विचार किया
मैं ने देखकर शिक्षा प्राप्त की ॥

(१) मूल में होंठ।

३३ तनिक और सो लेना
तनिक और झपकी ले लेना
तनिक और छाती पर हाथ रक्खे[2] लेटे रहना
३४ तब तेरा कंगालपन डाकू की नाईं
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान आ पड़ेगी ॥

२५. सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं जिन्हें यहूदा के राजा

हिजकिय्याह के जनों ने नकल कर दिया ॥
२ परमेश्वर की महिमा तो बात के छिपा रखने में
पर राजाओं की महिमा बात के भेद निकालने में होती है ॥
३ स्वर्ग की ऊंचाई पृथिवी की नीचाई
और राजाओं का मन इन तीनों का अन्त नहीं मिलता ॥
४ चांदी में से मैल निकाल
तब सुनार के लिये एक पात्र की थकिया हो जाएगी ॥
५ राजा के साम्हने से दुष्ट को निकाल
तब उस की गद्दी धर्म्म के कारण स्थिर होगी ॥
६ राजा के साम्हने बड़ाई न मारना
और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न होना ॥
७ क्योंकि जिस प्रधान का तू ने दर्शन किया हो
उस के साम्हने तेरा अपमान होना नहीं।
उत्तम यह है कि तुझ से कहा जाए कि यहां पर बिराज[3] ॥
८ मुकद्दमा उतावली करके न चलाना
नहीं तो उस के अन्त में जब तेरा पड़ोसी तेरा मुंह काला करेगा
तब तू क्या कर सकेगा ॥
९ अपने पड़ोसी के साथ वादविवाद एकान्त में करना
और पराया भेद न खोलना
१० ऐसा न हो कि सुननेहारा तेरी निन्दा करे
और तेरा अपवाद बना रहे ॥
११ जैसे चांदी की टोकरियों में सोनहले सेब हों
वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है ॥
१२ जैसे सोने का नत्थ और कुन्दन की गोप अच्छा लगती है

(२) मूल में दोनों हाथ मिलाये।
(३) मूल में इधर चढ़ाओ।

वैसे ही माननेहारे के कान में बुद्धिमान् की डांट
भी अच्छी लगती है ॥
१३ जैसे कटनी के समय बरफ की ठण्ड से
वैसे ही विश्वासयोग्य दूत से भी
भेजनेहारों का जी ठण्डा होता है ॥
१४ जैसे बादल और पवन बिना वृष्टि निर्लाभ होते हैं
वैसे ही झूठ मूठ दान देनेहारे का बड़ाई मारना
होता है ॥
१५ धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता
और कोमल बात हड्डी को भी तोड़ती है ॥
१६ यदि तू ने मधु पाया हो तो जितना पचे[1] उतना
ही खाना
न हो कि अधिक खाकर[2] उसे छांट करना पड़े ॥
१७ अपने पड़ोसी के घर में बहुत न जाना[3]
न हो कि वह तुझ से अघाकर बैर करने लगे ॥
१८ जो किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी देता है
सो मानो हथौड़ा और तलवार और पैना तीर
होता है ॥
१९ विपत्ति के समय विश्वासघाती पर का भरोसा
टूटे हुए दांत वा उखड़े पांव के समान होता है ॥
२० जैसा जाड़े के दिनों में किसी का वस्त्र उतारना वा
सज्जी पर सिरका डालना
वैसा ही उदास मनवाले के साम्हने गीत गाना
होता है ।
२१ यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उस को रोटी
खिलाना
और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना ॥
२२ क्योंकि इस रीति तू उस के सिर पर अंगारे डालेगा
और यहोवा तुझे इस का फल देगा ॥
२३ जैसे उत्तरीय वायु वर्षा का
वैसे ही चुगली करने[4] से मुख पर क्रोध छा
जाता है ॥
२४ लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू स्त्री के संग रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है ॥
२५ जैसा थके मान्दे के लिये ठण्डा पानी
वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार
भी होता है ॥
२६ जो धर्म्मी दुष्ट के कहे में आता है
सो गदले सोते और बिगड़े हुए कुण्ड के
समान है ॥
२७ बहुत मधु खाना अच्छा नहीं
पर कठिन बातों की पूछपाछ महिमा का कारण
होती है ॥
२८ जिस का आत्मा वश में नहीं
सो ऐसे नगर के समान है जिस की शहरपनाह
नाका करके तोड़ दी गई हो ॥

२६.

जैसा धूपकाल में हिम का और
कटनी के समय जल का पड़ना
वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक नहीं होती ।
२ जैसे गौरिया घूमते घूमते और सूपाबेनी उड़ते
उड़ते नहीं बैठतीं
वैसे ही अकारण स्राप नहीं पड़ता ॥
३ घोड़े के लिये कोड़ा गदहे के लिये बाग
और मूर्खों की पीठ के लिये छड़ी ॥
४ मूर्ख को उस की मूढ़ता के अनुसार उत्तर न देना
ऐसा न हो कि तू भी उस के तुल्य ठहरे ॥
५ मूर्ख को उस की मूढ़ता के अनुसार उत्तर देना
ऐसा न हो कि वह अपने लेखे बुद्धिमान् ठहरे ॥
६ जो मूर्ख के हाथ से सन्देशा भेजता है
सो मानो अपने पांव में कुल्हाड़ा मारता और
विष[5] पीता है
७ जैसे लंगड़े के पांव लटके हुए बहते
वैसे ही मूर्खों के मुंह में नीतिवचन होता है ॥
८ जैसी पत्थरों के ढेर में मणियों की थैली
वैसी ही मूर्ख को महिमा देनी होती है ॥
९ जैसे मतवाले के हाथ में कांटा गड़ता है
वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी
दुःखदाई होता है
१० जैसा कोई तीरन्दाज जो अकारण सब को मारता हो
वैसा ही मूर्खों वा बटोहियों का मजूरी में लगाने-
हारा भी होता है ॥
११ जैसे कुत्ता अपनी छांट को चाटता[6] है
वैसे ही मूर्ख अपनी मूढ़ता को दुहराता है ॥
१२ यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपने लेखे
बुद्धिमान् हो
तो उस से अधिक मूर्ख ही की आशा है ॥
१३ आलसी कहता है कि मार्ग में सिंह होगा

(१) मूल में जितनी चाहिये । (२) मूल में अघाकर ।
(३) मूल में घर से अपना पांव बहुमूल्य करना ।
(४) मूल में छिपी जीभ ।
(५) मूल में उपद्रव ।
(६) मूल में छांट की ओर फिरता ।

चौक में सिंह होगा ॥
१४ जैसे किवाड़ अपनी चूल पर घूमता है
वैसे आलसी अपनी खाट पर करवट लेता है ॥
१५ आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता
पर आलस्य के मारे कौर मुंह तक नहीं उठाता ॥
१६ ठीक उत्तर देनेहारे सात मनुष्यों से भी
आलसी अपने को अधिक बुद्धिमान् समझता है ॥
१७ जो मार्ग पर चलते हुए पराये झगड़े में रिसि-
याता है
सो ऐसा होता है जैसा कोई कुत्ते के कानों को
पकड़े ॥
१८ जैसा कोई पागल जो लुकटियां
तीर क्या बरन मृत्यु ही को फेंकता हो
१९ वैसा ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी को
धोखा देकर
कहता है क्या मैं खेल ही न करता था ॥
२० जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है
उसी रीति जहां कानाफूसी करनेहारा नहीं वहां
झगड़ा मिट जाता है ॥
२१ जैसा अंगारों में कोएला और आग में लकड़ी
होती है
वैसा ही झगड़े के बढ़ाने के लिये झगड़ालू
होता है ॥
२२ कानाफूसी करनेहारे के वचन
स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उतर जाते हैं ॥
२३ जैसा कोई चांदी का पानी चढ़ाया हुआ मिट्टी का
बर्त्तन हो
वैसा ही बुरे मनवाले के प्रेम भरे वचन[१] होते हैं ॥
२४ जो बैरी बात से तो अपने को अनजान बनाता
पर अपने भीतर छल रखता है
२५ जब वह मीठी बातें बोले तब उस की प्रतीति न
करना
क्योंकि उस के मन में सात घिनौनी वस्तुएं रहती
हैं ॥
२६ चाहे उस का बैर छल के कारण छिप भी जाए
तौभी उस की बुराई सभा के बीच प्रगट हो
जाएगी ॥
२७ जो गड़हा खोदे सो उस में गिरेगा
और जो पत्थर लुढ़काए वह उस पर लुढ़क
आएगा ॥
२८ जिस ने जिस को झूठी बातों से घायल किया हो सो
उस से बैर रखता है
और चिकनी चुपड़ी बात बोलनेहारा विनाश का
कारण होता है ॥

२७. कल के दिन के विषय मत फूल
क्योंकि तू नहीं जानता कि
दिन भर में क्या होगा ॥
२ तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें पर तू आप न
करना
बिराना तुझे सराहे तो सराहे पर तू अपनी
सराहना न करना ॥
३ पत्थर तो भारी और बालू गुरु होती है
पर मूढ़ की रिस उन दोनों से भी भारी है ॥
४ क्रोध तो क्रूर और कोप धारा के समान
होता है
पर जब कोई जल उठता है तब कौन ठहर
सकता है ॥
५ साफ साफ डांट
छिपे हुए प्रेम से उत्तम है ॥
६ मित्र की चोटें विश्वासयोग्य हैं
पर बैरी बहुत चूमता है ॥
७ अघाने पर मधु का छत्ता फीका लगता है[२]
पर भूखे को सब कड़वी वस्तुएं भी मीठी जान
पड़ती हैं ॥
८ स्थान छोड़कर घूमनेहारा मनुष्य उस चिड़िया
के समान है
जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है ॥
९ जैसे तेल और सुगन्ध से
वैसे मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन
आनन्दित होता है ॥
१० जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो उसे न
छोड़ना
और अपनी विपत्ति के दिन अपने भाई के घर
न जाना
क्योंकि प्रेम करनेहारा पड़ोसी प्रेम न करनेहारे
भाई से कहीं उत्तम है ॥
११ हे मेरे पुत्र बुद्धिमान् होकर मेरा मन आनन्दित
कर
और मैं अपने निन्दा करनेहारे को उत्तर दे
सकूंगा ॥

(१) मूल में जले हुये होंठ ।

(२) मूल में तृप्त जीव छत्ता रौंदता है ।

१२ चतुर मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है
पर भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं ॥
१३ जो अनजाने पुरुष का जामिन हुआ उस का कपड़ा
और जो अनजानी स्त्री का जामिन हुआ उस से बन्धक की वस्तु ले रख ॥
१४ जो भोर को उठकर अपने पड़ोसी को ऊंचे शब्द से आशीर्वाद देता
उस के लिये यह स्राप गिना जाता है ॥
१५ झड़ी के दिन पानी का लगातार टपकना
और झगड़ालू स्त्री दोनों तुल्य हैं
१६ जो उस का रोक रक्खे सो वायु को भी रोक रक्खेगा
और दहिने हाथ से वह तेल पकड़ेगा ॥
१७ जैसे लोहा लोहे से चमकदार होता है
वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार होता है ॥
१८ जो अंजीर के पेड़ की रक्षा करता सो उस का फल खाता है
इस रीति से जो अपने स्वामी की सेवा करता उस की महिमा होती है ॥
१९ जैसे जल में मुख की परछाईं मुख से मिलती है
वैसे ही एक मनुष्य का मन दूसरे मनुष्य के मन से मिलता है ॥
२० जैसे अधोलोक और विनाशलोक
वैसे ही मनुष्य की आंखें भी तृप्त नहीं होतीं ॥
२१ जैसे चान्दी ताम्बे के पात्र में और सोना घड़िया में ताया जाता है
वैसे ही मनुष्य प्रशंसा करने से।
२२ चाहे तू मूढ़ को दानों के बीच दलकर ओखली में मूसल से कूटे
तौभी उस की मूढ़ता नहीं जाने की ॥
२३ अपनी भेड़ बकरियों की दशा भली भांति बूझ लेना और अपने सब पशुओं के झुण्डों की सुधि रखना ॥
२४ क्योंकि संपत्ति सदा लों नहीं ठहरती
और क्या राजमुकुट भी पीढ़ी पीढ़ी बना रहता है ॥
२५ कटी हुई घास उठ गई नई घास दिखाई दी
पहाड़ों की हरियाली काटकर इकट्ठी की गई ॥
२६ भेड़ों के बच्चे तेरे वस्त्र के लिये हैं
और बकरों के द्वारा खेत का देन दिया जाएगा
२७ और बकरियों का इतना दूध होगा कि तू अपने घराने समेत पेट भरके पिया करेगा
और तेरी लौंडियों की भी जीविका होगी ॥

२८.

दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं
पर धर्मी लोग जवान सिंहों के समान निडर रहते हैं ॥
२ देश में पाप होने के कारण उस के हाकिम बदलते जाते हैं
पर समझनेहारे और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुदशा बहुत दिन लों ठहरती है ॥
३ जो निर्धन पुरुष कंगालों पर अन्धेर करता है
सो ऐसी भारी वर्षा के समान है जो कुछ भोजनवस्तु नहीं छोड़ती ॥
४ जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते सो दुष्ट की प्रशंसा करते हैं
पर व्यवस्था के पालनेहारे उन से लड़ते हैं ॥
५ बुरे लोग न्याय को नहीं समझ सकते
पर यहोवा के ढूंढ़नेहारे सब कुछ समझते हैं ॥
६ टेढ़ी चाल चलनेहारे धनी मनुष्य से
खराई से चलनेहारा निर्धन ही जन उत्तम है ॥
७ जो व्यवस्था को पालता सो समझवाला सुपूत होता है
पर खाउओं का संगी अपने पिता का मुंह काला करता है ॥
८ जो अपना धन ब्याज आदि बढ़ती से बढ़ाता है
वह उस के लिये बटोरता है जो कंगालों पर अनुग्रह करता है ॥
९ जो अपना कान व्यवस्था सुनने से फेर लेता है
उस की प्रार्थना घिनौनी ठहरती है ॥
१० जो सीधे लोगों को भटकाकर कुमार्ग में कर देता सो अपने खोदे हुए गड़हे में आप गिरता है
पर खरे लोग कल्याण के भागी होते हैं ॥
११ धनी पुरुष अपने लेखे बुद्धिमान् होता है
पर समझदार कंगाल उस का मर्म बूझ लेता है ॥
१२ जब धर्मी लोग हुलसते हैं तब बड़ी शोभा होती है
पर जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं तब मनुष्य अपने आप को छिपाता है[१] ॥
१३ जो अपने अपराध छिपा रखता उस का कार्य्य सुफल नहीं होता

(१) मूल में मनुष्य ढूंढे जाते।

पर जो उन को मान लेता और छोड़ भी देता उस पर दया की जाती है ॥

१४ जो मनुष्य निरन्तर भय मानता रहता है सो धन्य है
पर जो अपना मन कठोर कर लेता सो विपत्ति में पड़ता है ॥

१५ कंगाल प्रजा पर प्रभुता करनेहारा दुष्ट
गरजनेहारे सिंह और घूमनेहारे रीछ के समान है ॥

१६ जो प्रधान मन्दबुद्धि होता है सोई बहुत अंधेर करता है
और जो लालच का बैरी होता सो दीर्घायु होता है ॥

१७ जो किसी प्राणी के खून का अपराधी हो
वह भागकर गड़हे में गिरेगा कोई उस को न रोकेगा ॥

१८ जो सीधाई से चलता सो बचाया जाता है
पर जो टेढ़ी चाल चलता सो अचानक गिर पड़ता है ॥

१९ जो अपनी भूमि को जोता बोया करता उस का तो पेट भरता है
पर जो निकम्मे लोगों की संगति करता सो कंगालपन से घिरा रहता है[१] ॥

२० सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद होते हैं
पर जो धनी होने में उतावली करता है सो निर्दोष नहीं ठहरता ॥

२१ पक्षपात करना अच्छा नहीं
और यह भी अच्छा नहीं कि पुरुष एक टुकड़े रोटी के लिये अपराध करे ॥

२२ जो डाह करता है वह धन प्राप्त करने में उतावली करता है
और नहीं जानता कि मैं घटी में पड़ूंगा ॥

२३ जो किसी मनुष्य को डांटता है सो पीछे
चापलूसी करनेहारे से अधिक प्यारा हो जाता है ॥

२४ जो अपने मा बाप को लूटकर कहता है कि कुछ अपराध नहीं
सो नाश करनेहारे का संगी ठहरता है ॥

२५ लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है
और जो यहोवा पर भरोसा रखता सो हृष्टपुष्ट हो जाता है ॥

२६ जो अपने ऊपर भरोसा रखता है सो मूर्ख है
और जो बुद्धि से चलता है सो बचता है ॥

(१) मूल में अघाता ।

२७ जो निर्धन को दान देता उस को घटी नहीं होती
पर जो उस से दृष्टि फेर लेता सो स्राप पर स्राप पाता[२] है ॥

२८ जब दुष्ट लोग प्रबल[३] होते तब तो मनुष्य छिप जाते हैं
पर जब वे नाश होते तब धर्मी लोग बहुत होते हैं ॥

२९.

जो बार बार डांटे जाने पर भी हठ करता है
सो अचानक नाश होगा और कुछ उपाय न चलेगा ॥

२ जब धर्मी लोग बहुत होते तब प्रजा आनन्दित होती है
पर जब दुष्ट प्रभुता करता तब प्रजा हाय मारती है ॥

३ जो पुरुष बुद्धि से प्रीति रखता उस का पिता आनन्दित होता है
पर वेश्याओं की संगति करनेहारा धन को खो देता है ॥

४ राजा न्याय करने से देश को स्थिर करता है
पर जो बहुत भेंटें लेता सो उस को उलट देता है ॥

५ जो पुरुष किसी से चिकनी चुपड़ी बात करता है
सो उस के पैरों के लिये जाल लगाता है ॥

६ बुरे मनुष्य का अपराध फंदा होता है
पर धर्मी आनन्दित होकर जयजयकार करता है ॥

७ धर्मी पुरुष कंगालों के मुकद्दमे में मन लगाता है
पर दुष्ट जन उसे जानने की समझ नहीं रखता ॥

८ ठट्ठा करनेहारे लोग नगर को फूंक देते हैं
पर बुद्धिमान् लोग कोप को ठण्डा करते हैं ॥

९ जब बुद्धिमान् मूढ़ के साथ वादविवाद करता
तब चाहे वह रोष करे चाहे हंसे तौभी चैन नहीं मिलता ॥

१० हत्यारे लोग खरे पुरुष से बैर रखते हैं
और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं ॥

११ मूर्ख अपने सारे मन की बात प्रगट करता है
पर बुद्धिमान् अपने मन को रोकता और शान्त कर देता है ॥

१२ जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है
तब उस के सब टहलुए दुष्ट हो जाते हैं ॥

१३ निर्धन और अन्धेर करनेहारा पुरुष इस में एक समान हैं

(२) मूल में छिपाता । (३) मूल में खड़े ।

कि यहोवा दोनों की आंखों में ज्योति देता है ॥
१४ जो राजा कंगालों का न्याय सच्चाई से चुकाता
उस की गद्दी सदा लों स्थिर रहती है ॥
१५ छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है
पर जो लड़का योहीं छोड़ा जाता सो अपनी माता की लज्जा का कारण होता है ॥
१६ दुष्टों के बढ़ने से अपराध भी बढ़ता है
पर अन्त में धर्म्मी लोग उन का गिरना देख लेते हैं ॥
१७ अपने बेटे की ताड़ना कर तब उस से तुझे चैन मिलेगा
और तेरा मन सुखी हो जाएगा ॥
१८ जहां दर्शन की बात नहीं होती वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं
और जो व्यवस्था को मानता है सो धन्य होता है ॥
१९ दास बातों ही के द्वारा सुधारा नहीं जाता
क्योंकि वह समझकर भी नहीं मानता ॥
२० तू बातें करने में उतावली करनेहारे मनुष्य को देखता है
उस से अधिक मूर्ख ही से आशा है ॥
२१ जो अपने दास को उस के लड़कपन से सुकुमार-पन में पालता
वह दास अन्त में उस का बेटा बन बैठता है ॥
२२ कोप करनेहारा मनुष्य झगड़ा मचाता है
और अत्यन्त कोप करनेहारा अपराधी भी होता है ॥
२३ मनुष्य गर्व के कारण नीचा खाता है
पर नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है ॥
२४ जो चोर की संगति करता सो अपने प्राण का बैरी होता है
सोंह धराने पर भी वह बात को प्रगट नहीं करता ॥
२५ मनुष्य का भय खाना फंदा हो जाता[१] है
पर जो यहोवा पर भरोसा रखता सो ऊंचे स्थान पर चढ़ाया जाता है ॥
२६ हाकिम से भेंट करना बहुत लोग चाहते हैं
पर मनुष्य का चुकाव यहोवा ही से मिलता है ॥
२७ धर्म्मी लोग कुटिल मनुष्य से घिन करते हैं
और दुष्ट जन भी सीधी चाल चलनेहारे से घिन करता है ॥

(१) मूल में देता।

३०. याके के पुत्र आगूर के वचन।

भारी वचन।

उस पुरुष की ईतीएल और उकाल से यह वाणी है कि
२ निश्चय मैं पशु सरीखा हूं बरन मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं
और मनुष्य की समझ मुझ में नहीं है ॥
३ और न मैं ने बुद्धि प्राप्त की है
न परमपवित्र का ज्ञान मुझे मिला है ॥
४ कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया
किस ने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रक्खा है
किस ने महासागर को अपने वस्त्र में बान्ध लिया है
किस ने पृथिवी के सिवानों को ठहराया है
उस का नाम क्या है और उस के पुत्र का नाम क्या है यदि तू जानता हो तो बता ॥
५ ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है
वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है ॥
६ उस के वचनों में कुछ मत बढ़ा
ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू झूठा ठहरे ॥
७ मैं ने तुझ से दो वर मांगे हैं
सो मेरे मरने से पहिले उन्हें नाह न करना
८ अर्थात् व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख
मुझे न निर्धन कर न धनी
मेरी दिन दिन की[२] रोटी मुझे खिलाया कर
९ ऐसा न हो कि जब मेरा पेट भरे तब मैं तुझ से मुकरके कहूं कि यहोवा कौन है
वा अपना भाग खोकर चोरी करूं
और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं ॥
१० किसी दास की उस के स्वामी से चुगली न खाना
न हो कि वह तुझे स्राप दे और तू दोषी ठहराया जाए ॥
११ ऐसे लोग हैं जो अपने पिता को कोसते
और अपनी माता को धन्य नहीं कहते ॥
१२ ऐसे लोग हैं जो अपने लेखे शुद्ध हैं
पर तौभी उन का मैल धोया नहीं गया ॥
१३ ऐसे लोग हैं जिन की दृष्टि क्या ही घमण्ड भरी है
और उन की आंखें क्या ही चढ़ी हुई हैं ॥

(२) मूल में मेरे भाग की।

१४ ऐसे लोग हैं जिन के दांत तलवार और उन की दाढ़ें छूरियां ठहरती हैं
वे दीन लोगों को पृथिवी पर से और दरिद्रों को मनुष्यों में से खाकर मिटा डालें ॥
१५ जैसे जोंक की दो बेटियां होती हैं जो कहती हैं दे दे
वैसे ही तीन वस्तुएं हैं जो तृप्त नहीं होतीं
बरन चार हैं जो कभी नहीं कहतीं बस ॥
१६ अधोलोक और बांझ की कोख
भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं होती
और आग जो कभी नहीं कहती बस ॥
१७ जिस आंख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे
और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने
उस आंख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे
और उकाब के बच्चे खा डालेंगे ॥
१८ तीन बातें मेरे लिये अधिक कठिन हैं
बरन चार हैं जो मेरी समझ से परे हैं
१९ आकाश में उकाब पक्षी का ढंग
चटान पर सर्प की चाल
समुद्र में जहाज की चाल
कन्या के संग पुरुष की चाल ॥
२० व्यभिचारिन स्त्री की चाल भी वैसी ही है
वह भोजन करके मुंह पोंछती
और कहती है कि मैं ने कोई अनर्थ काम नहीं किया ॥
२१ तीन बातों के कारण पृथिवी कांपती
बरन चार हैं जो उस से सही नहीं जातीं
२२ दास का राजा हो जाना
मूढ़ का पेट भरना
२३ घिनौनी स्त्री का ब्याहा जाना
और दासी का अपनी स्वामिन की वारिस होना ॥
२४ पृथिवी पर चार छोटे जन्तु हैं
जो अत्यन्त बुद्धिमान् हैं ॥
२५ च्यूटियां निर्बल जाति तो हैं
पर धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं ॥
२६ शापान बली जाति नहीं
तौभी उन की मान्दें ढांगों पर होती हैं ॥
२७ टिड्डियों के राजा तो नहीं होता
तौभी वे सब की सब दल बांध बांधकर पयान करती हैं ॥
२८ और छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है
तौभी राजभवनों में रहती हैं ॥
२९ तीन सुन्दर चलनेहारे प्राणी हैं
बरन चार हैं जिन की चाल सुन्दर है
३० सिंह जो सब पशुओं में पराक्रमी है
और किसी के डर से नहीं हटता
३१ शिकारी कुत्ता और बकरा
और अपनी सेना समेत राजा ॥
३२ यदि तू ने अपनी बड़ाई करने से मूढ़ता की
वा कोई बुरी युक्ति बांधी हो
तो अपने मुंह पर हाथ धर ॥
३३ क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्खन
और नाक के मरोड़ने से लोहू निकलता है
वैसे ही कोप के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है ॥

३१. लमूएल राजा के वचन।

वह भारी वचन जो उस की माता ने उसे सिखाया ॥
२ हे मेरे पुत्र क्या, हे मेरे निज बेटे क्या,
हे मेरी मन्नतों के पुत्र क्या कहूं ॥
३ अपना बल स्त्रियों को न देना
न अपना जीवन उन के वश कर देना
जो राजाओं का पौरुष खो देती हैं ॥
४ हे लमूएल राजाओं को दाखमधु पीना यह राजाओं को उचित नहीं
और मदिरा चाहना रईसों को नहीं फबता
५ न हो कि वे पीकर व्यवस्था को भूलें
और किसी दुःखी के मुकद्दमे को बिगाड़ें ॥
६ मदिरा नाश होनेहारे को
और दाखमधु उदास मनवालों ही को देना ॥
७ ऐसा मनुष्य पीकर अपना कंगालपन भूले
और अपना कठिन श्रम फिर स्मरण न करे ॥
८ अनबोल के लिये बोलना
और सब अनाथों का न्याय चुकाना ॥
९ मुंह खोलना और धर्म से न्याय करना
और दीन दरिद्रों का मुकद्दमा लड़ना ॥
१० भली स्त्री कौन पा सकता है
उस का मूल्य मूंगों से बहुत अधिक है ॥
उस के पति का मन उस पर भरोसा रखता है
११ और उस पति को लाभ की घटी नहीं होती ॥

१२ अपने जीवन के सारे दिन
वह उस से बुरा नहीं भला ही व्यवहार करती है ॥
१३ वह ऊन और सन ढूंढ़ ढूंढ़ कर
अपने हाथों से प्रसन्नता के साथ काम करती है ॥
१४ वह व्योपार के जहाजों की नाईं
अपनी भोजन वस्तुएं दूर से मंगवाती है ॥
१५ वह रात रहते उठकर
अपने घराने को भोजन
और अपनी लौंडियों को अलग अलग काम देती है ॥
१६ वह खेत सोच विचारकर लेती
और अपनी कमाई से दाख की बारी लगाती है ॥
१७ वह अपनी कटि में बल का फेंटा कसती
और अपनी बांहों को बली करती है ॥
१८ वह परख कर लेती है कि मेरा बनिज अच्छा चलता है
और रात को उस का दिया नहीं बुझता ॥
१९ वह अटेरन में हाथ लगाती
और चरखा पकड़ती है ॥
२० वह दीन के लिये मुट्ठी खोलती
और दरिद्र के संभालने को हाथ बढ़ाती है ॥
२१ वह अपने घराने के लिये हिम से नहीं डरती
क्योंकि उस के घर के सब लोग लाल कपड़े पहिनते हैं ॥
२२ वह तकिये बना लेती है
उस के वस्त्र सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग के होते हैं ॥
२३ जब उस का पति सभा[१] में देश के पुरनियों के संग बैठता है
तब उस का सन्मान होता है ॥
२४ वह सन के वस्त्र बनाकर बेचती
और व्योपारी को फेंटे देती है ॥
२५ वह बल और प्रताप का पहिरावा पहिने रहती
और आनेहारे काल के विषय पर हंसती है ॥
२६ वह बुद्धि की बात बोलती है
और उस के वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं ॥
२७ वह अपने घराने के चाल चलन को ध्यान से देखती
और अपनी रोटी बिना कमाये नहीं खाती ॥
२८ उस के पुत्र उठ उठकर उस को धन्य कहते हैं
उस का पति भी उठकर उस की ऐसी प्रशंसा करता
२९ है कि बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे अच्छे काम तो किये हैं पर तू उन सभों से श्रेष्ठ ठहरी ॥
३० शोभा तो झूठी और सुन्दरता बुलबुला[२] है
पर जो स्त्री यहोवा का भय मानती है उस की प्रशंसा की जाएगी ॥
३१ उस के हाथों के काम का फल उसे दो
और वह सभा में अपने कामों के योग्य प्रशंसा पाये[३] ॥

(१) मूल में फाटकों। (२) मूल में सांस। (३) मूल में उस के काम फाटकों में उस की स्तुति करें।

सभोपदेशक।

१. सभा का उपदेशक जो दाऊद का पुत्र और यरूशलेम का राजा था उस के वचन।
२ सभा के उपदेशक का यह वचन है कि व्यर्थ ही व्यर्थ व्यर्थ ही व्यर्थ सब कुछ व्यर्थ है। ३ उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर[१] करता है उस को क्या लाभ होता है। ४ एक पीढ़ी जाती और दूसरी पीढ़ी आती है और पृथिवी सदा लों बनी रहती है। ५ फिर सूर्य उदय होकर अस्त होता है और अपने उदय की दिशा को वेग से जाता है। ६ वायु दक्खिन की ओर बहती और उत्तर की ओर घूमती जाती है वह घूमती बहती रहती और अपने चक्करों में लौट आती है। ७ सारी नदियां समुद्र में जा मिलती हैं तौभी समुद्र भर नहीं जाता जिस स्थान में नदियां जाती हैं उसी में वे फिर जाती हैं। ८ सब बातें परिश्रम से भरी हैं इस का वर्णन किया नहीं जाता न तो आंखें देखते देखते सफल होती हैं न कान सुनते सुनते तृप्त। ९ जो कुछ हुआ था वही होगा और जो कुछ

(१) मूल में सूरज के नीचे।

किया गया वही किया जाएगा धरती पर[१] कोई नई
१० बात नहीं होती। क्या ऐसी कोई बात है जिस के विषय
लोग कह सकें कि देख यह नई है सो नहीं वह बीते
११ हुए युगों में हो चुकी है। प्राचीन लोगों का कुछ
स्मरण नहीं रहा और होनेहारे लोगों का कुछ स्मरण
उन के पीछे होनेहारों का न रहेगा॥

१२ मैं सभा का उपदेशक यरूशलेम में इस्राएल का
१३ राजा हुआ। और मैं ने मन लगाया कि जो कुछ धरती
पर[१] किया जाता है उस का भेद बुद्धि से सोच सोचकर
निकालूं यह बड़े दुःख का काम है जो परमेश्वर ने
१४ मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगे रहें। मैं ने
उन सब कामों को देखा जो धरती पर[१] किये जाते हैं
१५ देखो वे सब व्यर्थ और वायु को पकड़ना है। जो टेढ़ा
है सो सीधा नहीं हो सकता और जितनी वस्तुओं में घटी
१६ है वे गिनी नहीं जातीं। मैं ने मन में कहा कि देख
जितने यरूशलेम में मुझ से पहिले थे उन सभों से मैं
ने बहुत अधिक बुद्धि प्राप्त की और मुझ को बहुत
१७ बुद्धि और ज्ञान मिल गया है। और मैं ने मन
लगाया कि बुद्धि का भेद लूं और बावलेपन और
मूर्खता को भी जान लूं पर मुझे जान पड़ा कि यह भी
१८ वायु को पकड़ना है। क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत
खेद भी होता है और जो अपना ज्ञान बढ़ाता वह अपना
दुःख भी बढ़ाता॥

२. मैं ने अपने मन से कहा चल मैं तुझे
आनन्द के द्वारा जांचूंगा सो सुख
२ मान पर देखो यह भी व्यर्थ है। मैं ने हंसी के विषय
कहा यह तो बावलापन है और आनन्द के विषय कि
३ उस से क्या होता है। मैं ने मन में सोचा कि किस
प्रकार से मेरी बुद्धि भी बनी रहे और मैं अपने जी को
दाखमधु पाने से ऐसा बहलाऊं भी दूं कि मूर्खता को
पकड़े रहूं जब लों न देखूं कि वह अच्छा काम कौन है
४ जो मनुष्य अपने जीवन भर करते रहें। मैं ने बड़े बड़े
काम किये मैं ने अपने लिये घर बनवा लिये मैं ने
५ अपने लिये दाख की बारियां लगवा लीं, मैं ने अपने
लिये बारियां और बाग लगवा लिये और उन में भांति
६ भांति के फलदाई वृक्ष रुपवाये, मैं ने अपने लिये कुण्ड
खुदवा लिये कि उन से वह बन सींचा जाए जिस में पौधे
७ लगाये जाते थे। मैं ने दास और दासियां मोल लीं
और मेरे घर में दास उत्पन्न भी हुए मेरे इतनी
गाय बैल और भेड़ बकरियां हुईं जितनी मुझ से पहिले
८ किसी यरूशलेमवासी के न हुई थीं। मैं ने
चान्दी और सोना भी और राजाओं और प्रान्तों के
बहुमूल्य पदार्थों का संग्रह किया, मैं ने अपने लिये
गानेहारों और गानेहारियों को रक्खा और बहुत
सी कामिनियां भी जिन से मनुष्य सुख पाते हैं
९ अपनी कर लीं। सो मैं अपने से पहले के सब
यरूशलेमवासियों से अधिक बड़ा और धनाढ्य हो
१० गया तौ भी मेरी बुद्धि ठिकाने रही। और जितनी
वस्तुओं के देखने की मुझे लालसा हुई उन सभों को
देखने से मैं न रुका मैं ने अपना मन किसी प्रकार का
आनन्द भोगने से न रोका वरन मेरा मन मेरे सब
परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ और मेरे सब
११ परिश्रम से मुझे यही भाग मिला। तब मैं ने फिर के
अपने हाथों के सब कामों को और अपने सब परिश्रम
को देखा तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को
पकड़ना है और धरती पर[१] कुछ लाभ नहीं
होता॥

१२ फिर मैं ने अपना मन फेरा कि बुद्धि और
बावलेपन और मूर्खता को देखूं क्योंकि जो मनुष्य
राजा के पीछे आए सो क्या कर सकेगा केवल वही
१३ जो लोग कर चुके हैं। तब मैं ने देखा कि उजियाला
अंधियारे से जितना उत्तम है उतना बुद्धि भी मूर्खता
१४ से उत्तम है। जो बुद्धिमान् है उस के सिर में आंखें
रहती हैं पर मूर्ख अंधियारे में चलता है तौभी मैं ने
१५ जान लिया कि दोनों की एक सी दशा होती है। सो
मैं ने मन में कहा जैसी मूर्ख की दशा होगी वैसी
ही मेरी भी होगी फिर मैं क्यों अधिक बुद्धिमान् हुआ
तब मैं ने मन में कहा यह भी व्यर्थ ही है।
१६ क्योंकि बुद्धिमान् और मूर्ख दोनों सदा लों बिसरे
रहेंगे क्योंकि आनेहारे दिनों में सब कुछ बिसर जाएगा
इस रीति बुद्धिमान् का मरना मूर्ख ही का सा ठहरता
१७ है। तब मैं ने अपने जीवन से घिन की क्योंकि जो
काम धरती पर किया जाता है सो मुझे बुरा
हो लगा क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पक-
ड़ना है॥

१८ और मैं ने अपने सारे परिश्रम से जो मैं ने
धरती पर किया था घिन की क्योंकि मुझे उस
का फल किसी मनुष्य के लिये जो मेरे पीछे आएगा
१९ छोड़ जाना पड़ेगा। और वह मनुष्य बुद्धिमान् होगा
वा मूर्ख यह कौन जानता है तौ भी जितना परिश्रम
मैं ने किया और उस में धरती पर बुद्धि प्रगट की

(१) मूल में सूरज के नीचे।

उस के फल का वही अधिकारी होगा यह भी व्यर्थ २० ही है। सो मैं पलटकर उस सारे परिश्रम के विषय जो मैं ने धरती पर[1] किया था निराश होने पर २१ हुआ। क्योंकि कोई ऐसा मनुष्य होता है जिस का परिश्रम बुद्धि और ज्ञान से होता है और सफल भी होता है तौ भी उस को ऐसे मनुष्य के लिये जिस ने उस में कुछ परिश्रम न किया हो छोड़ जाना पड़ता है कि उसी का भाग हो जाए यह भी व्यर्थ और बहुत ही २२ बुरा है। क्योंकि मनुष्य जो परिश्रम धरती पर[1] मन लगा लगाकर करता है उस से उस को क्या लाभ होता २३ है। उस के सारे दिन तो दुःखों से भरे रहते और उस का काम खेद के साथ होता है बरन रात को भी उस का मन चैन नहीं पाता यह भी व्यर्थ ही है॥

२४ मनुष्य के लिये खाने पीने और परिश्रम करते हुये अपने जीव को सुख भुगाने से बढ़कर और कुछ अच्छा नहीं मैं ने इस को भी देखा कि यह परमेश्वर की ओर २५ से मिलता है। क्योंकि खाने पीने और सुख भोगने में २६ मुझ से कौन अधिक समर्थ है। जो मनुष्य परमेश्वर के लेखे में अच्छा है उस को वह बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है पर पापी को वह दुःखभरा काम ही देता कि वह उस को देने के लिये संचय कर करके ढेर लगाये जो परमेश्वर के लेखे में अच्छा हो यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥

३. एक एक बात का अवसर और धरती पर[1] जितने विषय होते हैं सब का २ एक एक समय होता है। जन्म का समय और मरन का भी समय रोपने का समय और रोपे हुए को उखाड़ने ३ का भी समय है। घात करने का समय और चंगा करने का भी समय ढा देने का समय और बनाने का भी समय ४ है। रोने का समय और हंसने का भी समय छाती ५ पीटने का समय और नाचने का भी समय है। पत्थर फेंकने का समय और पत्थर बटोरने का भी समय गले लगाने का समय और गले लगाने से रुकने का भी ६ समय है। ढूंढ़ने का समय और खो देने का भी समय बचा रखने का समय और फेंक देने का भी समय है। ७ फाड़ने का समय और सीने का भी समय चुप रहने का ८ समय और बोलने का भी समय है। प्रेम करने का समय और बैर करने का भी समय लड़ाई का समय और ९ मेल का भी समय है। काम करनेहारे को अपने परिश्रम १० से क्या लाभ होता है। मैं ने उस दुःखभरे काम को देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि ११ वे उस में लगे रहें। उस ने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं फिर उस ने मनुष्यों के मन में अनादि अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है सो मनुष्य १२ आदि से अन्त लों बूझ नहीं सकता। मैं ने जान लिया कि मनुष्यों के लिये आनन्द करने और जीवन भर १३ भलाई करने को छोड़ और कुछ अच्छा नहीं। और फिर यह परमेश्वर का दान है कि सब मनुष्य खाएं पीएं और १४ अपने अपने सब परिश्रम में सुख मानें। मैं ने यह भी जान लिया कि जो कुछ परमेश्वर करे सो सदा लों ठहरेगा न तो उस में कुछ बढ़ाया जाता है न कुछ घटाया जाता और परमेश्वर इसलिये ऐसा करता है कि लोग उस का १५ भय मानें। जो हुआ सो उस से पहिले भी हो चुका था और जो होनेहारा है सो हो भी चुका है और परमेश्वर बीती[2] हुई बात को पूछता है॥

१६ फिर मैं ने धरती पर[1] क्या देखा कि न्याय के स्थान में दुष्टता होती है और धर्म्म के स्थान में भी १७ दुष्टता होती है। मैं ने मन में कहा कि परमेश्वर धर्म्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा क्योंकि उस के यहां १८ एक एक विषय और एक एक काम का समय है। मैं ने मन में कहा कि यह तो मनुष्यों के कारण इसलिये होता है कि परमेश्वर उन को जांचे और वे देख सकें १९ कि हम पशु के समान हैं। क्योंकि जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी दशा होती है दोनों की वही दशा होती है जैसे यह मरता वैसे ही वह भी मरता है और सभों का एक सा प्राण है और मनुष्य पशु से कुछ २० बढ़कर नहीं क्योंकि सब कुछ व्यर्थ ही है। सब एक स्थान में जाते हैं सब मिट्टी से बने और सब मिट्टी में फिर २१ मिल जाते हैं। मनुष्यों का प्राण क्या ऊपर की ओर चढ़ता और पशुओं का प्राण क्या नीचे की ओर जाकर २२ मिट्टी में मिल जाता है यह कौन जानता है। सो मैं ने देखा कि इस से अधिक कुछ अच्छा नहीं कि मनुष्य अपने कामों में आनन्दित रहे क्योंकि उस का भाग यही है और उस के पीछे होनेहारी बातों के देखने के लिये कौन उस को लौटा ले आए॥

४. तब मैं ने फिर कर वह सब अन्धेर देखा जो धरती पर[1] किया जाता है और क्या देखा कि अन्धेर सहनेहारों के आंसू बह रहे हैं और उन को कोई शांति देनेहारा नहीं और अन्धेर

(१) मूल में सूरज के नीचे।

(२) मूल में हांक दी।

करनेहारों के तो शक्ति है पर उन को कोई शांति देने-
२ हारा नहीं । इसलिये मैं ने मरे हुओं को जो मर चुके
हैं उन जीवतों से जो अब लों जीते हैं अधिक सराहा ।
३ बरन उन दोनों से अधिक सुभागी वह है जो अब लों
हुआ ही नहीं क्योंकि उस ने ये बुरे काम नहीं देखे जो
धरती पर[1] होते हैं ॥

४ तब मैं ने सब परिश्रम और सब सफल काम देखा
और क्या देखा कि इस के कारण लोग एक दूसरे से
जलते हैं यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है ।
५ मूर्ख छाती पर हाथ रक्खे रहता[2] और अपना मांस खाता
६ है । चैन के साथ एक मुट्ठी भर परिश्रम करने और वायु
के पकड़ने के साथ दो मुट्ठी भर से अच्छा है ॥

७ तब मैं ने पलटकर धरती पर[1] यह भी व्यर्थ बात
८ देखी । कोई अकेला रहता और उस का कोई नहीं है न
उस के बेटा है न भाई है तौभी उस के परिश्रम का अन्त
नहीं होता और न उस की आंखें धन से सन्तुष्ट होती
हैं वह कहता है कि मैं किस के लिये परिश्रम करता और
अपने जीव को सुखरहित रखता हूं यह भी व्यर्थ और
९ निरा दुःखभरा काम है । एक से दो अच्छे हैं क्योंकि
१० उन के परिश्रम का अच्छा फल मिलता है । क्योंकि
यदि उन में से एक गिरे तो दूसरा उस को उठाएगा पर
हाय उस पर जो अकेला होकर गिरे और उस का कोई
११ उठानेहारा न होए । फिर यदि दो जन एक संग सोएं
तो वे गर्म रहेंगे पर कोई अकेला क्योंकर गर्म रह सके ।
१२ और कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो पर दो उस का
साम्हना कर सकेंगे और जो डोरी तीन तागे से बटी हो
सो जल्दी न टूटेगी ॥

१३ बुद्धिमान् जवान दरिद्र होने पर भी ऐसे बूढ़े और
मूर्ख राजा से जो फिर उपदेश ग्रहण न करे कहीं उत्तम
१४ है । क्योंकि यद्यपि उस के राज्य में धनहीन उत्पन्न हुआ
१५ तौभी वह बन्दीगृह से निकलकर राजा हुआ । मैं ने
सब जीवतों को जो धरती पर[1] चलते फिरते हैं देखा कि
वे उस दूसरे अर्थात् उस जवान के संग हो लिये हैं जो
१६ पहिले के स्थान में खड़ा हुआ । अनगिनित थे वे सब
लोग जिन पर वह प्रधान हुआ था तौभी पीछे होनेहारे
लोग उस के कारण आनन्दित न होंगे निःसन्देह यह भी
व्यर्थ और वायु को पकड़ना है ॥

५. जब

तू परमेश्वर के घर में जाए तब सावधानी से चलना[3] क्योंकि सुनने
के लिये समीप जाना मूर्खों के बलिदान चढ़ाने से अच्छा
है इस लिये कि वे नहीं जानते कि हम बुरा करते हैं ।
२ बात करने में उतावली न करना और अपने मन से
कोई बात उतावली करके परमेश्वर के साम्हने न निका-
लना क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में और तू पृथिवी पर है इस-
लिये तेरे वचन थोड़े ही हों । ३ क्योंकि जैसे बहुत से
धन्धों के कारण स्वप्न देखा जाता है वैसे ही बहुत सी
बातों का बोलनेहारा मूर्ख ठहरता है । ४ जब तू परमेश्वर
की कोई मन्नत माने तब उस के पूरे करने में विलम्ब न
करना क्योंकि वह मूर्खों से प्रसन्न नहीं होता सो जो
मन्नत तू ने मानी हो उसे पूरी करना । ५ मन्नत मानकर
पूरी न करने से मन्नत न मानना ही अच्छा है । ६ कोई
वचन कहकर अपना शरीर पाप में न फंसाना न ईश्वर के
दूत के साम्हने कहना कि यह भूल से हुआ परमेश्वर
क्यों तेरा बोल सुनकर रिसियाए और तेरा काम नाश
करे । ७ क्योंकि बहुत स्वप्नों और व्यर्थ कामों और बहुत
बातों से ऐसा होता है पर तू परमेश्वर का भय
मानना ॥

८ यदि तू किसी प्रान्त में निर्धनों का अन्धेर सहना
और न्याय और धर्म्म का बरियाई से बिगड़ना देखे तो
इस बात से चकित न होना क्योंकि उन बड़ों से भी
एक बड़ा है और उस को इन बातों की सुधि रहती है
और उन दोनों से भी अधिक बड़े हैं । ९ फिर सब प्रकार
से देश का लाभ इस से होता है कि राजा खेती की
सुधि लेता है ॥

१० जो रुपये में प्रीति रक्खे सो रुपये से तृप्त न होगा
और जो बहुत धन में प्रीति रक्खे उस को कुछ फल न
होगा यह भी व्यर्थ है । ११ जब संपत्ति बढ़ती है तब उस के
खानेहारे भी बढ़ते हैं तब उस के स्वामी को इसे छोड़
क्या लाभ हुआ कि उस ने उस संपत्ति को अपनी आंखों
से देखा है । १२ परिश्रम करनेहारा चाहे थोड़ा खाए चाहे
बहुत तौभी उस की नींद सुखदाई होती है पर धनी के
धन के बढ़ने के कारण उस को नींद नहीं आती ॥

१३ एक बड़े शोक की बात है जिसे मैं ने धरती
पर[1] देखा है अर्थात् वह धन जिस के रखने से उस के
स्वामी की निरी हानि होती है । १४ क्योंकि उस का धन
बड़े दुःखभरे काम करते करते उड़ जाता है और यदि
उस के बेटा हुआ हो तो उस के हाथ कुछ नहीं
लगता । १५ जैसा वह मा के पेट से निकला वैसा ही वह
नंगा लौट जाएगा और उस के परिश्रम का कुछ भी न
रहेगा जो वह अपने हाथ में ले जा सके । १६ सो यह भी
बड़े शोक की बात है कि जैसा वह आया ठीक वैसा ही
वह जाएगा भी फिर उस परिश्रम से क्या लाभ वह

(१) मूल में सूरज के नीचे । (२) मूल में दोनों हाथ मिलाना ।
(३) मूल में अपने पैर की रक्षा करना ।

१७ व्यर्थ ही हुआ । फिर वह जीवन भर अन्धेरे में खाता और बहुत ही रिसियाता और रोगी रहता और क्रोध भी करता है ॥

१८ सुन जो मैं ने देखा है सो यह है कि जिस परिश्रम में कोई धरती पर[१] लगा रहे उस में वह खाए पीए और परमेश्वर के ठहराये हुए अपने जीवन भर सुख भी माने यही अच्छा और उचित है क्योंकि उस का भाग
१९ यही है । बरन जिस किसी मनुष्य को परमेश्वर ने धन संपत्ति दी हो और उसे भोगने और उस से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने की शक्ति भी
२० दी हो तो यह परमेश्वर का वरदान है । क्योंकि इस जीवन के दिन उस को बहुत स्मरण न रहेंगे और परमेश्वर उस की सुन सुनकर उस के मन को आनन्दित करता है ॥

६. एक बला है जो मैं ने धरती पर[१] देखी है वह मनुष्यों को बहुत दबाये रहती
२ है । अर्थात् किसी मनुष्य को परमेश्वर धन संपत्ति और प्रतिष्ठा यहां लों देता है कि जो कुछ उस का जी चाहता है उस में से कुछ भी नहीं घटता तौभी परमेश्वर उस को उस में से खाने नहीं देता कोई बिराना ही उसे खाता है
३ यह व्यर्थ और बड़े शोक[२] की बात है । यदि कोई पुरुष सौ लड़के जन्माए और बहुत बरस जीता रहे और उस की अवस्था बढ़ जाए पर उस का जी सुख से तृप्त न हो और न उस की अन्त्यक्रिया की जाए तो मैं कहता हूं कि
४ ऐसे मनुष्य से मरा बच्चा ही उत्तम है । क्योंकि वह व्यर्थ होता और अन्धेरे में जाता है और उस का नाम कभी
५ लिया नहीं जाता[३] । और ज्योति[४] को वह न देखने न जानने पाया सो इस को उस मनुष्य से अधिक चैन
६ मिला । बरन चाहे वह दो हजार बरस जीता रहे और कुछ सुख भोगने न पाए तो उसे क्या हुआ क्या सब के
७ सब एक ही स्थान में नहीं जाते । मनुष्य का सारा परिश्रम उस के पेट के लिये होता तो है तौभी उस का
८ जी नहीं भरता । जो बुद्धिमान् है सो मूर्ख से किस बात में बढ़कर है और दीन जन जो यह जानता है कि इस जीवन में किस प्रकार से चलना चाहिये सो भी
९ उस से किस बात में बढ़कर है । आंखों का सुफल होना जी के डांवांडोल होने से उत्तम है यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है ॥

१० जो हुआ है उस का नाम बहुत दिनों से रक्खा गया है और यह प्रगट है कि वह आदमी[५] है और न वह उस से जो उस से अधिक शक्तिमान है मुकद्दमा
११ लड़ सकता है । बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन के कारण जीवन और भी व्यर्थ होता है फिर मनुष्य को क्या
१२ लाभ । क्योंकि मनुष्य के व्यर्थ जीवन के सब दिनों में जो वह परछाईं की नाईं बिताता है उस के लिये क्या क्या अच्छा है सो कौन जानता है और मनुष्य के पीछे धरती पर[१] क्या होगा सो भी उसे कौन बता सकता है ॥

७. अच्छा नाम अनमोल तेल से और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम
२ है । जेवनार के घर जाने से शोक ही के घर जाना उत्तम है क्योंकि सब मनुष्यों के लिये अन्त में मृत्यु का शोक यही है और जो जीता है सो इसे मन लगाकर सोचे ।
३ खेद हंसी से उत्तम है क्योंकि जब मुंह पर शोक छा
४ जाता है तब मन सुधरता है । बुद्धिमानों का मन शोक करनेहारों के घर की ओर लगा रहता पर मूर्खों का मन
५ आनन्द के घर में लगा रहता है । मूर्खों के गीत सुनने
६ से बुद्धिमान् की घुड़की सुनना उत्तम है । क्योंकि मूर्ख की हंसी हांड़ी के नीचे जलते हुए कांटों की चरचराहट के
७ समान होती है यह भी व्यर्थ है । निश्चय अन्धेर में पड़ने से बुद्धिमान् बावला हो जाता है और घूस लेने
८ से बुद्धि नाश होती है । किसी काम के आरंभ से उस का अन्त उत्तम है और धीरजवन्त पुरुष गर्वी से उत्तम है ।
९ अपने मन में उतावली करके न रिसियाना क्योंकि रिस
१० मूर्खों ही के हृदय में रहती है । तू न कहना कि इस का क्या कारण है कि बीते दिन इन से उत्तम थे क्योंकि
११ यह तू बुद्धिमानी से नहीं पूछता । बुद्धि बपौती के
१२ समान है बरन जीवतों[६] के लिये उस से श्रेष्ठ है । क्योंकि बुद्धि आड़ का काम देती है रुपया भी आड़ का काम देता है पर ज्ञान की यह श्रेष्ठता है कि बुद्धि से
१३ उस के रखनेहारों के जीवन की रक्षा होती है । परमेश्वर के काम पर दृष्टि कर जिस वस्तु को उस ने टेढ़ी किया
१४ हो उसे कौन सीधी कर सकता है । सुख के दिन सुख मान और दुःख के दिन सोच क्योंकि परमेश्वर ने दोनों को एक ही संग रक्खा है जिस से मनुष्य न बूझ सके कि मेरे पीछे क्या होनेहारा है ॥

---

(१) मूल में सूरज के नीचे ।　(२) मूल में रोग ।
(३) मूल में छिपा है ।　(४) मूल में सूर्य्य ।
(५) अर्थात् मिट्टी का बना हुआ ।
(६) मूल में सूर्य्य के देखनेहारों ।

१५ मैं ने अपने व्यर्थ दिनों में सब कुछ देखा है ऐसा धर्म्मी होता है जो धर्म्म करते हुए नाश हो जाता है और ऐसा दुष्ट है जो बुराई करते हुए दीर्घायु होता है। १६ अति धर्म्मी न बन और न अपने को अधिक बुद्धिमान् १७ ठहरा तू क्यों अपने ही नाश का कारण हो। अत्यन्त दुष्ट भी न बन और न मूर्ख हो तू असमय क्यों मरे। १८ यह अच्छा है कि तू इस बात को पकड़े रहे और उस बात से भी हाथ न उठाए क्योंकि जो परमेश्वर का भय मानता है वह इन सब कठिनाइयों से पार हो जाएगा॥

१९ बुद्धि ही से नगर में के दस हाकिमों की अपेक्षा २० बुद्धिमान् को अधिक सामर्थ प्राप्त होता है। निःसन्देह पृथिवी पर कोई ऐसा धर्म्मी मनुष्य नहीं जो बिना चूके २१ भलाई करे। फिर जितनी बातें कही जाएं सब पर कान न लगाना ऐसा न हो कि तू अपने दास को तुझे ही २२ कोसते हुए सुने। क्योंकि तू आप जानता है कि तू ने भी बहुत बेर औरों को कोसा है॥

२३ यह सब मैं ने बुद्धि से जांच लिया है मैं ने कहा कि मैं बुद्धिमान हो जाऊंगा पर यह मुझ से दूर रहा। २४ जो हुआ है सो दूर और अत्यन्त गहिरा है उस का २५ भेद कौन पा सकता है। मैं अपना मन लगाता हुआ फिरता रहा कि बुद्धि के विषय जान लूं उस का भेद जानूं और खोज निकालूं और यह भी जानूं कि दुष्टता २६ निरी मूर्खता है और मूर्खता निरा बावलापन है। और मैं ने मृत्यु से भी अधिक दुःखदाई एक वस्तु पाई अर्थात् वह स्त्री जिस का मन फन्दे और जाल के और जिस के हाथ बन्धन के सरीखे हैं जो पुरुष परमेश्वर को भाए वही उस से बचेगा पापी उस से फंसाया जाएगा। २७ सभा का उपदेशक कहता है कि मैं ने लेखा करने के लिये अलग अलग बातें मिलाकर जांचीं और यह बात २८ निकाली, उसे भी मेरा मन ढूंढ़ रहा है पर नहीं पाया अर्थात् हजार में से मैं ने पुरुष तो पाया पर उन में एक २९ भी स्त्री नहीं पाई। देखो विशेष करके मैं ने यह बात पाई तो है कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा बनाया था पर मनुष्यों ने बहुत सी युक्तियां निकाली हैं॥

८. बुद्धिमान के तुल्य कौन है और किसी बात का अर्थ कौन लगा सकता है मनुष्य की बुद्धि के कारण उस का मुख चम- २ कता और उस के मुख की ढिठाई दूर हो जाती है। मैं कहता हूं कि परमेश्वर की किरिया के कारण राजा की ३ आज्ञा मानना। राजा के साम्हने से उतावली करके न फिरना और न बुरी बात पर बने रहना क्योंकि वह जो ४ कुछ चाहे सो करेगा। क्योंकि राजा के वचन में तो सामर्थ्य रहता है और कौन उस से कह सके कि तू क्या ५ करता है। जो आज्ञा को मानता है सो बुरी बात में भागी नहीं होता क्योंकि बुद्धिमान् का मन समय और ६ न्याय का भेद जानता है। एक एक विषय का समय और न्याय तो होता है इस कारण मनुष्य की दुर्दशा ७ उस के लिये[१] बहुत भारी है। वह नहीं जानता कि क्या होनेहारा है और कब होगा यह उस को कौन बता ८ सकता है। कोई ऐसा मनुष्य नहीं जिस का वश प्राण पर चले कि वह उसे निकलते समय रोक ले और न कोई मृत्यु के दिन में अधिकारी होता है और न उस लड़ाई से छुट्टी मिल सकती है और न दुष्ट लोग अपनी दुष्टता के ९ कारण बच सकते हैं। यह सब कुछ मैं ने देखा और जितने काम धरती पर[२] किये जाते हैं सब को मन लगा- कर विचारा कि ऐसा समय होता है कि एक मनुष्य के दूसरे मनुष्य के वश में रहने से उस की हानि होती है॥

१० और फिर मैं ने दुष्टों को मिट्टी पाते देखा अर्थात् उन की कबर तो बनी पर जिन्हों ने ठीक काम किया था सो पवित्रस्थान से निकल गये और उन का स्मरण ११ नगर में न रहा यह भी व्यर्थ ही है। बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से पूरी नहीं होती इस कारण मनुष्यों का १२ मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है। चाहे पापी सौ बार पाप करे और अपने दिन भी बढ़ाए तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते और अपने तई उस के सन्मुख जानकर भय मानते हैं उन का तो १३ भला ही होगा। पर दुष्ट का भला नहीं होने का और उस की जीवनरूपी छाया लम्बी होने न पाएगी क्योंकि वह १४ परमेश्वर का भय नहीं मानता। एक व्यर्थ बात पृथिवी पर होती है अर्थात् ऐसे धर्म्मी हैं जिन की दुष्टों के काम के योग्य दशा होती है और ऐसे दुष्ट भी हैं जिन की धर्म्मियों के काम के योग्य दशा होती है सो मैं ने कहा १५ कि यह भी व्यर्थ ही है। तब मैं ने आनन्द को सराहा इसलिये कि धरती पर[२] मनुष्य के लिये खाने पीने और आनन्द करने को छोड़ कुछ अच्छा नहीं क्योंकि उस को जीवन भर में जो परमेश्वर उस के लिये धरती पर[२] ठहराए उस के परिश्रम में यही उस के संग बना रहेगा॥

१६ जब मैं ने बुद्धि जानने और सारे दुःखभरे काम देखने के लिये जो पृथिवी पर किये जाते हैं अपना मन लगाया कि कोई कोई मनुष्य रात दिन जागते रहते १७ हैं, तब मैं ने परमेश्वर का सारा काम देखा कि जो काम धरती पर[२] किया जाता है उस की थाह मनुष्य नहीं पा सकता चाहे मनुष्य उस की खोज में परिश्रम

(१) मूल में ऊपर। (२) मूल में सूरज के नीचे।

भी करे तौभी उस को न पाएगा बरन बुद्धिमान् भी कहे कि मैं उसे समझूंगा तौभी वह उस की थाह न पा सकेगा।

९.

१ क्योंकि मैं ने यह सब कुछ मन लगाकर विचारा कि इन सब बातों का भेद पाऊं अर्थात् यह कि धर्म्मी और बुद्धिमान् लोग और उन के काम परमेश्वर के हाथ में हैं चाहे प्रेम हो चाहे बैर मनुष्य नहीं जानता उन के आगे सब प्रकार की बातें हैं। २ सब घटनाएं सब को बराबर होती हैं धर्म्मी दुष्ट भले शुद्ध अशुद्ध यज्ञ करने और न करनेहारे सभों की एक सी दशा होती है जैसी भले मनुष्य की दशा वैसी ही पापी की दशा जैसी किरिया खानेहारे की दशा वैसा ही वह है जो किरिया खाते डरे। ३ जो कुछ धरती पर[१] किया जाता है उस में यह एक दोष है कि सब लोगों को एक सी दशा होती है और फिर मनुष्यों के मन में बुराई भरी हुई है और उन के जीते जी उन के मन में बावलापन रहता है और पीछे वे मरे हुओं में जा मिलते हैं। ४ क्योंकि उस को जो सब जीवतों में मिला हुआ हो उस को भरोसा है बरन जीवता कुत्ता तो मरे हुए सिंह से बढ़कर है। ५ क्योंकि जीवते तो इतना जानते कि हम मरेंगे पर मरे हुए कुछ भी नहीं जानते और न उन को बदला मिल सकता है क्योंकि उन का स्मरण मिट गया है। ६ उन का प्रेम और उन का बैर और उन की डाह अब नाश हो चुके और जो कुछ धरती पर[१] किया जाता है उस में उन का फिर सदा लों कोई भाग न होगा॥

७ चल अपनी रोटी आनन्द से खाया कर और अपना दाखमधु मन से सुख मान कर पिया कर क्योंकि परमेश्वर तेरे कामों से प्रसन्न हो चुका है। ८ तेरे वस्त्र सदा उजले रहें और तेरे सिर पर तेल की घटी न हो। ९ अपने जीवन के सारे व्यर्थ दिन जो उस ने धरती पर[१] तेरे लिये ठहराये हैं अपनी प्यारी स्त्री के संग अपने व्यर्थ जीवन के दिन बिताना क्योंकि तेरे जीवन में और तेरे परिश्रम में जो तू धरती पर[१] करता है तेरा यही भाग है। १० जो काम तुझे[२] मिले सो अपनी शक्ति भर करना क्योंकि अधोलोक में जहां तू जानेवाला है न काम न युक्ति न ज्ञान न बुद्धि चलती है॥

११ मैं ने फिर कर धरती पर[१] देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़नेहारे और न युद्ध में शूरवीर जीतते हैं फिर न तो बुद्धिमान् लोग रोटी पाते हैं और न समझवाले धन और न प्रवीणों पर अनुग्रह होता है वे सब समय और संयोग के वश में हैं। १२ क्योंकि मनुष्य अपना समय नहीं जानता जैसे मछलियां दुखदाई जाल में बझतीं और चिड़ियाएं फंदे में फंसती हैं वैसे ही मनुष्य दुखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है फंस जाते हैं॥

१३ मैं ने धरती पर[१] इस प्रकार की भी बुद्धि देखी है और वह मुझे बड़ी जान पड़ी। १४ अर्थात् एक छोटा सा नगर था और उस में थोड़े ही लोग थे और किसी बड़े राजा ने उस पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया और उस के विरुद्ध बड़े बड़े कोट बनवाये। १५ और उस में एक दरिद्र बुद्धिमान् पुरुष पाया गया और उस ने उस नगर को अपनी बुद्धि के द्वारा बचाया पर किसी ने उस दरिद्र पुरुष को स्मरण न रक्खा। १६ तब मैं ने कहा बुद्धि पराक्रम से उत्तम है तौभी उस दरिद्र की बुद्धि तुच्छ की जाती है और उस के वचन कोई नहीं सुनता॥

१७ बुद्धिमानों के वचन जो धीमे धीमे कहे जाते हैं सो मूर्खों के बीच प्रभुता करनेहारे के चिल्ला चिल्लाकर कहने से अधिक सुने जाते हैं। १८ बुद्धि लड़ाई के हथियारों से उत्तम है और एक पापी से बहुत भलाई नाश होती है।

१०.

१ मरी हुई मक्खियों के कारण गन्धी का तेल सड़ने और बसाने लगता है और थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और प्रतिष्ठा से भारी होती है। २ बुद्धिमान् का मन दाहिनी ओर रहता पर मूर्ख का मन बाईं ओर रहता है। ३ बरन जब मूर्ख मार्ग पर चलता है तब उस का मन काम में नहीं आता और वह मानो सब से कहता है मैं मूर्ख हूं। ४ यदि हाकिम का कोप तुझ पर भड़के तो अपना स्थान न छोड़ना क्योंकि धीरज धरने से बड़े बड़े पाप रुकते हैं, ५ एक बुराई है जो मैं ने धरती पर[१] देखी है सो हाकिम की भूल से होती हुई जान पड़ती है। ६ अर्थात् मूर्ख बड़ी प्रतिष्ठा के स्थानों में ठहराये जाते हैं और धनवान लोग नीचे बैठते हैं। ७ मैं ने दासों को घोड़ों पर चढ़े और रईसों को दासों की नाईं भूमि पर चलते हुए देखा है। ८ जो गड़हा खोदे सो उस में गिरेगा और जो बाड़ा तोड़े उस को सर्प डसेगा। ९ जो पत्थर उठाए सो उन से घायल होगा और जो लकड़ी काटे उसी से कटने का डर होगा। १० यदि लोहा थोथा हो और मनुष्य उस की धार को पैनी न करे तब तो अधिक बल करना पड़ेगा पर काम चलाने के लिये बुद्धि से लाभ होता है। ११ यदि मंत्र न होने के कारण सर्प डसे तो पीछे मंत्र पढ़नेहारे को कुछ लाभ नहीं। १२ बुद्धिमान् के वचनों के कारण अनुग्रह होता है पर मूर्ख

(१) मूल में सूरज के नीचे।

(१) मूल में तेरे हाथ को करने के लिये।

१३ अपने वचनों के द्वारा नाश होते हैं। उस की बात आरम्भ में मूर्खता की और अन्त में दुखदाई बावलेपन
१४ की होती है। मूर्ख बहुत बातें बोलता है तौ भी कोई मनुष्य नहीं जानता कि क्या होगा और मनुष्य के पीछे
१५ क्या होनवाला है सो कौन उसे बता सकता है, मूर्खों के परिश्रम से थकावट ही होती है वह नहीं जानता
१६ कि नगर को कैसे जाए। हे देश तुझ पर हाय कि तेरा राजा लड़का है और तेरे हाकिम प्रातःकाल को भोजन
१७ करते हैं। हे देश तू धन्य है कि तेरा राजा कुलीन का पुत्र है और तेरे हाकिम समय पर भोजन करते हैं और यह भी मतवाले होने को नहीं बरन बल बढ़ाने के लिये।
१८ आलस्य के कारण छत की कड़ियां दब जाती हैं और
१९ हाथों की सुस्ती से घर चूता है। मौज हंसी खुशी के लिये किया जाता और दाखमधु से जीवन को आनन्द मिलता है और रुपयों से सब कुछ प्राप्त होता है।
२० राजा को मन ही मन भी न कोसना और न धनवान् को अपने शयन की कोठरी में भी कोसना क्योंकि कोई आकाश का पक्षी तेरे वचन को ले जाएगा और कोई उड़नेहारा जन्तु उस बात को प्रगट करेगा॥

११. अपनी भोजनवस्तु जल के ऊपर डाल दे क्योंकि बहुत दिन

२ के पीछे तू उसे फिर पाएगा। सात बरन आठ जनों को भी भाग दे क्योंकि तू नहीं जानता कि पृथिवी पर क्या
३ विपत्ति आ पड़ेगी। जब बादल जल भर लाते हैं तब उस को भूमि पर उण्डेल देते हैं और वृक्ष चाहे दक्खिन की ओर गिरे चाहे उत्तर की ओर तौभी जिस स्थान पर
४ वृक्ष गिरेगा वहीं पड़ा रहेगा। जो वायु की सुधि रक्खेगा सो बीज बोने न पाएगा और जो बादलों को देखता
५ रहेगा सो लवने न पाएगा। जैसे तू नहीं जानता कि वायु के चलने का क्या मार्ग होगा और गर्भवती के पेट में हड्डियां किस रीति होती हैं वैसे ही परमेश्वर जो सब कुछ करता है उस के काम की रीति तू नहीं जानता।
६ भोर को अपना बीज बो और सांझ को भी अपना हाथ न रोक क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सुफल होगा चाहे यह चाहे वह वा दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे।
७ उजियाला मनभावना होता है और धूप के देखने से
८ आंखों को सुख होता है। सो यदि मनुष्य बहुत बरस जीता रहे तो उन सभों में आनन्दित तो रहे पर अन्धियारे के दिनों की भी सुधि रक्खे क्योंकि वे बहुत होंगे जो कुछ होनेहारा है सो व्यर्थ है॥
९ हे जवान अपनी जवानी में आनन्द कर और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह और अपनी मनमानी चाल चल और अपनी आंखों की दृष्टि के अनुसार चल पर यह जान रख कि इन सारी बातों के विषय परमेश्वर
१० तेरा न्याय करेगा। सो अपने मन से खेद और अपनी देह से दुःख दूर कर क्योंकि जवानी और चटक व्यर्थ हैं।

१२.

१ अपनी जवानी के दिनों में अपने सिरजनहार को भी स्मरण रख कि अबलों विपत्ति के दिन और वे बरस नहीं आये जिन में तू कहेगा
२ कि मेरा मन इन में नहीं लगता। तब सूर्य्य और प्रकाश और चन्द्रमा और तारागण अंधेरे हो जाएंगे और
३ वर्षा होने के पीछे बादल फिर घिर आएंगे। उस समय घर के रहवैये कांपेंगे और बलवन्त झुकेंगे और पिसनहारियां थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी और झरोखों
४ में से देखनेहारियां अंधी हो जाएंगी। और सड़क की ओर के किवाड़ बन्द होंगे और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा और तड़के चिड़िया बोलते ही नींद खुलेगी
५ और सब गानेहारियों का शब्द धीमा हो जाएगा[१]। फिर जो ऊंचा हो उस से भय खाया जाएगा और मार्ग में डरावनी वस्तुएं मानी जाएंगी और बादाम का पेड़ फूलेगा और टिड्डी भी भारी लगेगी और भूख बढ़ानेहारा फल फिर काम न देगा क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जानेहारा होगा और रोने पीटनेहार सड़क सड़क
६ फिरेंगे। उस समय चांदी का तार दो टूक होगा और सोने का कटोरा टूटेगा और सोते के पास घड़ा फूटेगा
७ और कुण्ड के पास रहट टूट जाएगा। तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी और आत्मा परमेश्वर के पास
८ जिस ने उसे दिया लौट जाएगा। सभा का उपदेशक कहता है कि सब व्यर्थ ही व्यर्थ सब कुछ व्यर्थ है॥
९ और फिर सभा का उपदेशक जो बुद्धिमान् था इसलिये वह प्रजा को ज्ञान सिखाता रहा और कान लगाकर और पूछपाछ करके बहुत से नीति वचन क्रम से
१० रखता था। सभा का उपदेशक मनभावनी बातें खोजकर निकालता था और ये बातें सच्ची हैं जो सीधाई से लिखी गई थीं॥
११ बुद्धिमानों के वचन पैनों के समान होते हैं और सभाओं के प्रधानों की बातें गाड़ी हुई कीलों के सरीखी
१२ हैं सो एक ही चरवाहे की ओर से मिलती हैं। और फिर हे मेरे पुत्र चौकसी इन्हीं से सीख बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता और बहुत पाठ करने से देह थक जाती है॥
१३ सब कुछ सुना गया अन्त की बात यह है कि परमेश्वर

(१) मूल में नींद से उठ जाएगा। (२) मूल में गाने बजाने की सब बेटियां नीची की जाएंगी।

का भय मान और उस की आज्ञाओं को पाल क्योंकि
१४ सब मनुष्यों का काम यही है। और परमेश्वर सब कामों का और सब गुप्त बातों का चाहे वे भली हों चाहे बुरी न्याय करेगा ॥

श्रेष्ठगीत।

---

१ श्रेष्ठगीत जो सुलैमान का है ॥

२ तू अपने मुंह से चूम
क्योंकि तेरा प्यार दाखमधु से उत्तम है ॥
३ तेरे भांति भांति के तेल का सुगन्ध उत्तम है
तेरा नाम बहाये हुआ तेल सा है
इस कारण कुमारियां तुझ से प्रेम रखती हैं ॥
४ मुझे खींच हम तेरे पीछे दौड़ेंगी
राजा मुझ अन्तःपुर में ले आया है
हम तेरे कारण मगन और आनन्दित होंगी
हम दाखमधु से अधिक तेरे प्यार की चर्चा करेंगी
सच्चे मन से वे तुझ से प्रेम रखती हैं ॥
५ हे यरूशलेम की स्त्रियो
मैं काली तो हूं पर सुन्दर हूं
केदार के तम्बुओं के सरीखी
सुलैमान के पर्दों के समान हूं ॥
६ इस कारण मुझ को न निहारना कि मैं काली सी हूं
मैं धूप से झुलस गई[1]
मेरे सगे भाई मुझ पर क्रोधित हुए
उन्हों ने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन ठहराया
अपनी निज दाख की बारी की रखवाली मैं करने न पाई ॥
७ हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता
कि तू अपनी भेड़ बकरियां कहां चराता और दोपहर को कहां बैठाता है
मैं क्यों तेरे संगियों की भेड़ बकरियों के पास
क्यों घूंघट काढ़े हुए चलनेहारी सी होऊं ॥
८ हे स्त्रियों में सुन्दरी यदि तू यह न जानती हो
तो भेड़ बकरियों के खुरों के चिन्हों पर चल
और चरवाहों के घरों के पास अपनी बकरियों की बच्चियां चरा ॥
९ हे मेरी प्यारी मैं ने तुझे
फिरौन के रथों में जुते हुए घोड़ों से उपमा दी है ॥
१० तेरे गाल बन्दी के बीच
और तेरा गला रत्नों की कण्ठी के कारण क्या ही सुन्दर लगता है ॥
११ हम तेरे लिये चान्दी के बेर मिलाये हुए
सोने की लड़ियां बनवाएंगे ॥
१२ राजा अपनी मेज के पास बैठा हुआ था
कि मेरी जटामासी का सुगन्ध फैलने लगा ॥
१३ मेरा प्यारा मेरे लिये गन्धरस की पोटली ठहरा है
जो मेरी छातियों के बीच में पड़ी रहे ॥
१४ मेरा प्यारा मेरे लिये मेंहदी के फूलों का ऐसा गुच्छा है
जो एनगदी की दाख की बारियों में होता ॥
१५ तू सुन्दर है हे मेरी प्यारी तू सुन्दर है
तेरी आंखें कबूतरी की सी हैं ॥
१६ हे मेरे प्यारे तू सुन्दर और मनभावना है
और हमारा बिछौना हरा है ॥
१७ देवदारु हमारे घर की कड़ियां
और सनोवर हमारी छत के बरगे हैं ॥

२ मैं शारोन देश का केसर
और तराइयों में का सोसन फूल हूं ॥
२ जैसे सोसन फूल कटीले पेड़ों के बीच
वैसे मेरी प्यारी और युवतियों के बीच है ॥
३ जैसे सेब का वृक्ष जंगली वृक्षों के बीच
वैसे मेरा प्यारा और जवानों के बीच है।
मैं उस की छाया में हर्षित होकर बैठ गई
और उस का फल मुझे खाने में मीठा लगा ॥
४ वह मुझे दाखमधु पीने के घर में ले आया

(१) मूल में सूर्य्य ने मुझे जलाया।

और उस का जो झण्डा मेरे ऊपर फहराता था
सो प्रेम था ॥
५ मुझे सूखी दाखों से संभालो सेब खिलाकर बल दो
क्योंकि मैं प्रेम से विवश[१] हूं ॥
६ उस का बायां हाथ मेरे सिर के नीचे है
और वह अपने दहिने हाथ से मुझे आलिंगन कर रहा है ॥
७ हे यरूशलेम की स्त्रियो मैं तुम से
चिकारियों और मैदान की हरिणियों की सौंह धराकर कहती हूं
कि जब लों प्रेम आप से न उठे
तब लों उस को न उसकाओ न जगाओ ॥
८ मेरे प्यारे का शब्द सुन पड़ता है
देखो वह पहाड़ों पर कूदता और पहाड़ियों पर फान्दता हुआ आता है ॥
९ मेरा प्यारा चिकारे वा जवान हरिन के समान है
देखो वह हमारी भीत के पीछे खड़ा
और खिड़कियों से झांकता
और झंझरी से ताकता है ॥
१० मेरा प्यारा मुझ से कह रहा है
हे मेरी प्यारी हे मेरी सुन्दरी उठकर चली आ ॥
११ क्योंकि देख कि जाड़ा जाता रहा
मेंह छूट गया और जाता रहा है ॥
१२ पृथिवी पर फूल दिखाई देते
चिड़ियों के बोलने का समय आ पहुंचा
और हमारे देश में पिण्डुक का शब्द सुनाई देता है ॥
१३ अजीर पकने लगे
और दाखलताएं फूलती
और सुगन्ध दे रही हैं
हे मेरी प्यारी हे मेरी सुन्दरी उठकर चली आ ॥
१४ हे मेरी कबूतरी हे ढांग की दरारों
और चढ़ाई की झाड़ी में रहनेहारी
अपना मुख मुझे दिखा
अपना बोल मुझे सुना
क्योंकि तेरा बोल मीठा और तेरा मुख सुन्दर है ॥
१५ जो छोटी लोमड़ियां[२] दाख की बारियों को बिगाड़ती हैं उन्हें पकड़ लो
क्योंकि हमारी दाख की बारियों में फूल लगे हैं ॥
१६ मेरा प्यारा मेरा है और मैं उस की हूं
वह अपनी भेड़ बकरियां सोसन फूलों के बीच चराता है ॥
१७ जब लों दिन का ठण्डा समय न आए और छाया लम्बी होते होते मिट न जाए
तब लों हे मेरे प्यारे फिर और उस चिकारे वा जवान हरिन के समान बन
जो बेतेर[३] के पहाड़ों पर फिरता हो ॥

३. रात के समय मैं अपने पलंग पर अपने प्राणप्रिय को ढूंढ़ती रही
मैं उसे ढूंढ़ती तो रही पर पाया नहीं ॥
२ मैं ने कहा मैं उठकर नगर में
और सड़कों और चौकों में घूमकर
अपने प्राणप्रिय को ढूंढ़ूंगी
मैं उसे ढूंढ़ती तो रही पर पाया नहीं ॥
३ जो पहरुए नगर में घूमते हैं सो मुझे मिले
मैं ने उन से पूछा क्या तुम ने मेरे प्राणप्रिय को देखा है ॥
४ मुझ को उन के पास से बढ़े हुए थोड़ी ही बेर हुई
कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिला
मैं ने उस को पकड़ लिया
और जब लों उसे अपनी माता के घर
अर्थात् अपनी जननी की कोठरी में न ले आई तब लों उस को जाने न दिया ॥
५ हे यरूशलेम की स्त्रियो मैं तुम से
चिकारियों और मैदान की हरिनियों की सौंह धराकर कहती हूं
कि जब लों प्रेम आप से न उठे
तब लों उस को न उसकाओ न जगाओ ॥
६ यह क्या है जो धूएं के खम्भों के सरीखा
गन्धरस और लोबान से सुगन्धित
और ब्योपारी के सब भांति की बुकनी लगाये हुए
जंगल से निकला आता है ॥
७ देखो यह सुलैमान की पालकी है
उस के चारों ओर साठ बीर चल रहे हैं
जो इस्राएल के शूरबीरों में से हैं ॥
८ वे सब के सब तलवार बांधनेहारे और युद्ध की विद्या सीखे हैं
एक एक पुरुष रात के डर के मारे
जांघ पर तलवार लटकाये हुए रहता है ॥
९ सुलैमान राजा ने एक महाडोल

(१) मूल में बीमार। (२) मूल में लोमड़ियां छोटी लोमड़ियां। (३) अर्थात् अलगाई।

लबानोन के काठ का बनवा लिया है ॥
१० उस ने उस के खम्भे चांदी के
उस का सिरहाना सोने का और गद्दी अर्गवानी रंग की बनवाई
और उस के बीच का स्थान
यरूशलेम की स्त्रियों की ओर से प्रेम से जड़ा गया है ॥
११ हे सिय्योन की स्त्रियो निकलकर सुलैमान राजा पर दृष्टि करो
देखो वह वही मुकुट पहिने हुए है
जो उस की माता ने उस के विवाह के दिन
और उस के मन के आनन्द के दिन उस के सिर पर रक्खा है ॥

४. हे मेरी प्यारी तू सुन्दर है तू सुन्दर है तेरी आंखें तेरी लटों के बीच में कबूतरों की सी दिखाई देती हैं
तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के समान हैं
जो गिलाद पहाड़ के ढलान पर लेटी हुई देख पड़ती हों ॥
२ तेरे दान्त उन ऊन कतरी हुई भेड़ियों के झुण्ड के समान हैं
जो नहाकर ऊपर आती हों
और जुड़वां जुड़वां होती हैं
और उन में से किसी का साथी नहीं जाता रहा ॥
३ तेरे होंठ लाही रंग की डोरी के समान हैं
और तेरा मुंह सजीला है
तेरी कनपटियां तेरी लटों के नीचे
अनार की फांक सी देख पड़ती हैं ॥
४ तेरा गला दाऊद के गुम्मट के समान है जो कुर्सी पर कुर्सी बना हुआ हो
और जिस पर हजार ढालें टंगी हुई हों
सब ढालें शूरवीरों की हैं ॥
५ तेरा दोनों छातियां मृगी के दो जुड़वे बच्चों के सरीखे हैं
जो सोसन फूलों के बीच चरते हों ॥
६ जब लों दिन ठण्डा न हो और छाया लम्बी होते होते मिट न जाए
तब लों मैं गन्धरस के पहाड़
और लोबान की पहाड़ी पर चला जाऊंगा ॥
७ हे मेरी प्यारी तू सर्वाङ्ग सुन्दरी है
तुझ में कुछ पय नहीं ॥

८ हे दुल्हिन तू मेरे संग लबानोन से
मेरे संग लबानोन से चल
तू अमाना की चोटी पर से
शनीर और हेर्मोन की चोटी पर से
सिंहों की गुफाओं से
चीतों के पहाड़ों पर से दृष्टि कर ॥
९ हे मेरी बहिन हे मेरी दुल्हिन तू ने मेरा मन मोह लिया
तू ने अपनी आंखों की एक ही चितवन से
और अपने गले की एक ही कण्ठी से मेरा हृदय मोह लिया है ॥
१० हे मेरी बहिन हे मेरी दुल्हिन तेरा प्यार क्या ही मनोहर है
तेरा प्यार दाखमधु से क्या ही उत्तम है
और तेरे तेलों का सुगन्ध सब प्रकार के मसालों के गन्ध से क्या ही अच्छा है ॥
११ हे दुल्हिन तेरे होठों से मधु टपकता है
तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध रहते हैं
और तेरे वस्त्रों का सुगन्ध लबानोन का सा है ॥
१२ मेरी बहिन मेरी दुल्हिन किवाड़ लगाई हुई बारी
किवाड़ बन्द किया हुआ सोता और छाप लगाया हुआ झरना है ॥
१३ तेरे अंकुर उत्तम फलवाली अनार की बारी से हैं
मेंहदी और जटामासी
१४ जटामासी और केसर
लोबान के सब भांति के पेड़ों समेत बच और दारचीनी
गन्धरस अगर आदि सब मुख्य मुख्य सुगन्धद्रव्य होते हैं ॥
१५ तू बारियों का सोता
फूटते हुए जल का कूआ
और लबानोन से बहती हुई धाराएं हैं ॥
१६ हे उत्तरहिया जाग और हे दक्खिनहिया चली आ
मेरी बारी पर बहो जिस से उस का सुगन्ध फैले
मेरा प्यारा अपनी बारी में आकर
अपने उत्तम उत्तम फल खा ले ॥

५. हे मेरी बहिन हे मेरी दुल्हिन मैं अपनी बारी में आया हूं
मैं ने अपना गन्धरस और बलसान चुन लिया
मैं ने मधु समेत छत्ता खा लिया
मैं ने दूध और दाखमधु पी लिया
हे संगियो तुम भी खाओ

हे प्यारो पिओ मनमाना पियो ॥
२ मैं सोती हुई तो थी पर मेरा मन जागता था
मेरे प्यारे का बोल सुन पड़ा वह खटखटाता है
हे मेरी बहिन हे मेरी प्यारी हे मेरी कबूतरी हे मेरी निर्मल मेरे लिये द्वार खोल दे
क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है
और मेरी लटें रात में गिरी हुई बून्दों से भीगी हैं ॥
३ मैं ने अपनी कुर्त्ती उतार डाली मैं क्योंकर उसे फिर पहिनूं
मैं ने अपने पांव धोये मैं क्योंकर उन्हें फिर मैला करूं ॥
४ मेरे प्यारे ने अपना हाथ किवाड़ के छेद से भीतर डाल दिया
तब मेरा हृदय उस के कारण घबराने लगा ॥
५ मैं अपने प्यारे के लिये द्वार खोलने को उठी
और मेरे हाथों से गंधरस
और मेरी अंगुलियों पर से टपकता हुआ गंधरस बेण्डे की मूठों पर टपकता था ॥
६ मैं ने अपने प्यारे के लिये द्वार तो खोला
पर मेरा प्यारा फिरके चला गया था
जब वह बोलता था तब मेरा जी ठिकाने न रहा
मैं ने उस को ढूंढ़ा पर न पाया
मैं ने उस को पुकारा पर वह न बोला ॥
७ जो पहरुए नगर में घूमते हैं सो मुझ को मिले
उन्हों ने मुझ को पीटकर घायल किया
शहरपनाह के पहरुओं ने मेरी चद्दर छीन ली ॥
८ हे यरूशलेम की स्त्रियो मैं तुम को सौंह धराकर कहती हूं कि यदि मेरा प्यारा तुम को मिले
तो उस को बताओ कि मैं प्रेम से विवश हूं ॥
९ हे स्त्रियों में सुन्दरी
तेरा प्यारा और प्यारों से किस बात में उत्तम है
तेरा प्यारा और प्यारों से किस बात में उत्तम है
कि तू हम को ऐसी सौंह धराती है ॥
१० मेरा प्यारा गोरा और लाल सा है
वह दस हजार में उत्तम है ॥
११ उस का सिर चोखा कुन्दन सा है
उस की लटें लटकी हुई और काले कौवे की नाईं काली हैं ॥
१२ उस की आंखें नदी तीर के कबूतरों के समान हैं
वे दूध से धोई हुई और अपने गोलकों में ठीक जड़ी हुई हैं ॥
१३ उस के गाल बलसान की कियारियों
वा सुगंधी पेड़ लगाये हुए टीलों समान हैं
उस के होंठ सोसन फूल हैं जिन से टपकता हुआ गंधरस टपकता है ॥
१४ उस के हाथ फीरोजा जड़े हुए सोने के किवाड़ हैं
उस का पेट नीलमों से जड़े हुए हाथीदांत का है ॥
१५ उस की टांगें कुन्दन की कुर्सियों पर बैठाये हुए संगमर्मर के खंभे हैं
वह देखने में लबानोन और देवदार वृक्षों सा उत्तम है ॥
१६ उस का बोल[1] अति मधुर है वह सर्वाङ्ग मनभावना है
हे यरूशलेम की स्त्रियो
मेरा प्यारा और संगी ऐसा ही है ॥

६.

हे स्त्रियों में सुन्दरी
तेरा प्यारा कहां गया
तेरा प्यारा कहां चला गया
हम तेरे संग होकर उस को ढूंढ़ें ॥
२ मेरा प्यारा अपनी बारी अर्थात् बलसान की कियारियों में उतर गया
कि बारी में अपनी भेड़बकरियां चराए और सोसन फूल तोड़े ॥
३ मैं अपने प्यारे की हूं और वह मेरा है
वह अपनी भेड़ बकरियां सोसन फूलों के बीच चराता है ॥
४ हे मेरी प्यारी तू तिर्सा की नाईं सुन्दरी
यरूशलेम के समान फबनेहारी
और झण्डे फहराती हुई सेना की सरीखी भयंकर है ॥
५ अपनी आंखें मेरी ओर से फेर ले
क्योंकि मैं उन से हार गया हूं
तेरे बाल ऐसी बकरियों के झुण्ड के समान हैं
जो गिलाद के ढलान पर लेटी हुई देख पड़ती हों ॥
६ तेरे दांत ऐसी भेड़ों के झुण्ड के समान हैं
जो नहाकर ऊपर आती हों
और जुड़वां जुड़वां होती हैं
और उन में से किसी का साथी नहीं जाता रहा ॥
७ तेरी कनपटियां तेरी लटों के नीचे
अनार की फांक सी देख पड़ती हैं ॥

(१) मूल में तालू।

८ साठ रानियां और अस्सी सुरैतिनें
और असंख्य कुमारियां हैं ॥
९ मेरी कबूतरी मेरी विमल एक ही है
वह अपनी माता की एकली है
वह अपनी जननी की दुलारी है
स्त्रियों ने उस को देखकर धन्य माना
रानियों और सुरैतिनों ने देखकर उस की प्रशंसा की ॥
१० यह कौन है जो पह की नाईं दिखाई देती
वह चंद्रमा के समान सुन्दर
सूर्य्य के सरीखे निर्मल
और झण्डे फहराती हुई सेना की रीति भयंकर देख पड़ती है ॥
११ मैं अखरोट की बारी में उतर गई
कि नाले में के अंकुर देखूं
और देखूं कि दाखलता में कली लगी
और अनारों में के फूल खिल गये हैं कि नहीं ॥
१२ तब अपने अनजाने मैं मन ही मन
अपने कुलीन जाति भाइयों के रथ में बैठाई गई।
१३ लौट आ लौट आ
हे शूलम्मिन[१] लौट आ लौट आ कि हम तुझ पर दृष्टि करें।
शूलम्मिन[१] में तुम किस बात पर दृष्टि करोगी
मानो महनैम के नाच पर ॥

७. हे कुलीन पुरुष की पुत्री तेरे पांव पनहियों में क्या ही सुन्दर हैं
तेरी जांघों की गोलाई ऐसे अलंकारों के समान है
जो कारीगर के बनाये हुए हों ॥
२ तेरी नाभि मानो गोल कटोरा है
जो मसाला मिले हुए दाखमधु से पूर्ण हो।
तेरा पेट सोसन फूलों से घिरे हुए
गेहूं के ढेर के समान है ॥
३ तेरी दोनों छातियां
मृगी के दो जुड़ौड़े बच्चों के समान हैं ॥
४ तेरा गला हाथीदांत का गुम्मट है
तेरी आंखें हेशबोन के उन कुण्डों के समान हैं
जो बत्रब्बीम के फाटक के पास हैं।
तेरी नाक लबानोन के उन गुम्मट के सरीखी है
जिस का मुंह दमिश्क की ओर है ॥
५ तेरा सिर कर्म्मेल के समान है
और तेरे सिर के लटके हुए बाल अर्गवानी रंग के कपड़े के समान हैं
राजा उन लटों में बंधुआ हो गया है ॥
६ हे प्रिये[२] तू सुख के लिये
कैसी सुन्दर और कैसी मनोहर है ॥
७ तेरी डील खजूर की सी
और तेरी छातियां दाख के गुच्छों सी देख पड़ती हैं ॥
८ मैं ने कहा मैं खजूर पर चढ़कर
उस की डालियों को पकड़ूंगा।
तब तेरी छातियां दाख के गुच्छों के
और तेरी नाक का सुगंध सेबों के समान ठहरीं
९ और तेरा बोल[३] उत्तम दाखमधु से मेल खाता है
जो मेरे प्यारे के लिये ठीक उण्डेला जाए
और सोये हुओं के होंठों में भी धीरे धीरे बहे[४] ॥
१० मैं अपने प्यारे की हूं
और उस की लालसा मेरी ओर है ॥
११ हे मेरे प्यारे चल हम मैदान में निकल जाएं
और गांवों में रात बिताएं ॥
१२ हम सबेरे उठकर दाख की बारियों में चलें
हम देखें कि दाखलता में कली लगी और फूल खिले
और अनार फूले हैं वा नहीं।
वहां मैं तुझ को अपना प्यार दिखाऊंगी[५] ॥
१३ दोदाफलों की सुगंध आ रही है
और हमारे द्वारों पर क्या नये क्या पुराने सब भांति के उत्तम फल हैं
जो मैं ने हे मेरे प्यारे तेरे लिये रख छोड़े हैं ॥

८. भला होता कि तू मेरे भाई के समान होता जिस ने मेरी माता की छातियों को पिया
तो मैं तुझे बाहर भी पाकर चूमती
और कोई मेरी निन्दा न करता ॥
२ मैं तुझ को अपनी माता के घर ले चलती
और तू मुझ को सिखाता
मैं तुझे मसाला मिला हुआ दाखमधु
और अपने अनारों का रस पिलाती ॥

(१) अर्थात शान्तिवाली।

(२) मूल में हे प्रेम। (३) मूल में तालू। (४) मूल में चले।
(५) मूल में दूंगी।

३ उस का बायां हाथ मेरे सिर के नीचे होता
और वह अपने दहिने हाथ से मुझे आलिंगन करता ॥
४ हे यरूशलेम की स्त्रियो मैं तुम को सोंह धराती हूं
कि जब लों प्रेम आप से न उठे
तब लों उस को न उसकाओ न जगाओ ॥
५ यह कौन है जो अपने प्यारे पर उठंगी हुई
जंगल से चली आती है
सेब के पेड़ के नीचे मैं ने तुझे जगाया
वहीं तेरी माता ने तुझे जन डाला
वहां तेरी जननी को पीड़ें लगीं ॥
६ मुझे मुद्रा की नाईं अपने हृदय पर
मुझे मुद्रा की नाईं अपनी बांह पर रख
क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी
और जलन अधोलोक के समान निठुर है।
उस की लपट आग की सी लपट
बरन याह ही की ज्वाला है ॥
७ प्रेम तो बहुत जल से भी नहीं बुझता
और न महानदों में भी डूब सकता है
चाहे कोई अपने घर की सारी संपत्ति प्रेम की सन्ती दे
तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी ॥
८ हमारी एक छोटी बहिन है
जिस की छातियां अभी नहीं उभरीं
जिस दिन हमारी बहिन के ब्याह की बात लगे
उस दिन हम उस के लिये क्या करें ॥
९ यदि वह शहरपनाह ठहरे
तो हम उस पर चांदी का कंगूरा बनाएंगे
और यदि वह फाटक का किवाड़ ठहरे
तो हम उस पर देवदार की लकड़ी के पटरे लगाएंगे ॥
१० मैं तो शहरपनाह और मेरी छातियां उस के गुम्मट ठहरीं
इसलिये मैं अपने प्यारे की दृष्टि में शान्ति पानेहारी सी हो गई हूं ॥
११ बाल्हामोन में सुलैमान की दाख की बारी हुई
उस ने वह दाख की बारी रखवालों को सौंपी
और एक एक रखवाले को उस के फलों के लिये
चांदी के हजार हजार टुकड़े देने पड़े ॥
१२ मेरी निज दाख की बारी मेरे साम्हने है
हे सुलैमान हजार तो तुझी को
और उस के फल के रखवालों को दो सौ मिलेंगे ॥
१३ तू जो बारियों में रहती है
संगी लोग तेरा बोल सुनने को ध्यान दे रहे हैं
उसे मुझ को सुना ॥
१४ हे मेरे प्यारे फुर्ती कर
और सुगन्धद्रव्यों के पहाड़ों पर
चिकारे वा जवान हरिन के सरीखा बन ॥

यशायाह नाम पुस्तक।

१. आमोस के पुत्र यशायाह का दर्शन जिस को उस ने यहूदा और यरूशलेम के विषय में उज्जिय्याह योताम आहाज और हिजकिय्याह नाम यहूदा के राजाओं के दिनों में पाया ॥

२ हे स्वर्ग सुन और हे पृथिवी कान लगा क्योंकि यहोवा कहता है कि मैं ने बालबच्चों का पालन पोषण किया और उन को बढ़ाया भी और उन्हों ने मुझ से बलवा किया है। ३ बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहिचानता है पर इस्राएल मुझे नहीं जानता और मेरी प्रजा सोच विचार नहीं करती ॥

४ हाय यह जाति पाप से कैसी भरी है यह समाज अधर्म्म से कैसा लदा हुआ है इस बंश के लोग कैसे कुकर्म्मी हैं और ये लड़केबाले कैसे बिगड़े हुए हैं उन्हों ने यहोवा को छोड़ दिया और इस्राएल के पवित्र को तुच्छ जाना है वे बिराने बनकर पीछे हट गये हैं। ५ तुम क्यों

अधिक बलवा कर करके अधिक मार खाना चाहते हो तुम्हारा सिर घावों से भर गया और तुम्हारा सारा ६ हृदय दुःख से भरा है। नख से सिख लों कहीं कुछ आरोग्यता नहीं चोट और कोड़े की मार के चिन्ह और सड़े हुए घाव हैं जो न दबाये न बांधे न तेल लगाकर ७ नरमाये गये हैं। तुम्हारा देश उजड़ा हुआ तुम्हारे नगर फूंके हुए हैं तुम्हारे खेतों को परदेशी लोग तुम्हारे देखते ही खा रहे हैं वह परदेशियों से नाश किये हुए देश के ८ समान उजाड़ है। और सिय्योन[1] दाख की बारी में की झोंपड़ी वा ककड़ी के खेत में की छपरिया वा घिरे हुए ९ नगर के समान अकेली खड़ी है। यदि सेनाओं का यहोवा हमारे थोड़े से लोगों को न बचा रखता तो हम सदोम के समान हो जाते और अमोरा के सरीखे १० ठहरते। हे सदोम के न्याइयो यहोवा का वचन सुनो हे अमोरा की प्रजा हमारे परमेश्वर की शिक्षा पर कान ११ लगा। यहोवा यह कहता है कि तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं मैं तो मेढ़ों के होमबलियों से और पोसे हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं मैं बछड़ों १२ वा भेड़ के बच्चों वा बकरों के लोहू से प्रसन्न नहीं होता। तुम जो अपने मुंह मुझे दिखाने के लिये आते और मेरे आंगनों को पांव से रौंदते हो यह तुम से कौन १३ चाहता है। व्यर्थ अन्नबलि फिर मत ले आओ धूप से मुझे घिन आती है नये चांद और विश्रामदिन का मानना और सभाओं का प्रचार करना यह मुझे बुरा लगता है महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझ १४ से सहा नहीं जाता। तुम्हारे नये चांदों और नियत पर्व्वों के मानने से मैं जी से बैर रखता हूं वे सब मुझे भार जान पड़ते हैं मैं उन को सहते सहते उकता गया। १५ जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ तब मैं तुम से मुख फेर[2] लूंगा तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा क्योंकि खून करने का दोष तुम्हें लगा १६ है[3]। अपने को धोकर पवित्र करो मेरी आंखों के साम्हने से अपने बुरे कामों को दूर करो आगे को बुराई करना १७ छोड़ दो, भलाई करना सीखो यत्न से न्याय करो[4] उपद्रवी को सुधारो बपमूए का न्याय चुकाओ विधवा का मुकद्दमा लड़ो॥

१८ यहोवा कहता है कि आओ हम आपस में वादविवाद करें तुम्हारे पाप चाहे लाही रङ्ग के हों तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे और चाहे लाल रङ्ग के हों तौभी वे ऊन के सरीखे हो जाएंगे। यदि तुम प्रसन्न होकर मेरी १९ मानो तो इस देश के उत्तम पदार्थ खाओगे। और यदि २० तुम न मानो और बलवा करो तो तलवार से मारे जाओगे यहोवा का यही वचन है॥

जो नगरी सती थी सो क्योंकर व्यभिचारिन हो गई २१ वह न्याय से भरपूर तो थी और धर्म्म ही उस में पाया जाता तो था पर अब उस में हत्यारे ही पाये जाते हैं। तेरी चांदी धातु का मैल हो गई तेरे दाखमधु में पानी मिल २२ गया है। तेरे हाकिम हठीले और चोरों से मिले हैं वे सब २३ के सब घूस खानेहारे और भेंट के लालची हैं और न तो वे बपमूए का न्याय करते और न विधवा का मुकद्दमा अपने पास आने देते हैं॥

इस कारण प्रभु सेनाओं के यहोवा इस्राएल के शक्तिमान की यह वाणी है कि सुनो मैं अपने शत्रुओं को दूर २४ कर के शांति पाऊंगा और अपने बैरियों से पलटा लूंगा। और मैं तुझ पर फिर हाथ बढ़ाकर तेरा धातु का मैल पूरी २५ रीति से[5] भस्म करूंगा और तेरा रांगा पूरा पूरा दूर करूंगा। और मैं तुझ में पहिले की नाईं न्यायी और २६ आदि काल के समान मंत्री फिर ठहराऊंगा उस के पीछे तू धर्म्मपुरी और सती नगरी कहाएगी। और सिय्योन न्याय २७ के द्वारा और जो उस में फिरेंगे सो धर्म्म के द्वारा छुड़ा लिये जाएंगे। पर बलवाइयों और पापियों का एक संग २८ नाश होगा और जिन्हों ने यहोवा को त्यागा है उन का अन्त हो जाएगा। और जिन बांजवृक्षों से तुम प्रीति २९ रखते थे उन से वे लज्जित होंगे जिन बारियों से तुम प्रसन्न रहते थे उन के कारण तुम्हारे मुंह काले होंगे। क्योंकि तुम पत्ते मुझाये हुये बांजवृक्ष के और बिना जल ३० की बारी के समान हो जाओगे। और बलवान तो सन ३१ और उस का काम चिंगारी बनेगा सो वे दोनों एक साथ जलेंगे और कोई बुझानेहारा न होगा॥

२.

आमोस के पुत्र यशायाह का वचन जिस का दर्शन उस ने यहूदा और यरूशलेम के विषय पाया॥

ऐसा होगा कि अन्त के दिनों में यहोवा के भवन का २ पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा और हर जाति के लोग धारा की नाईं उस की ओर चलेंगे। और बहुत देशों ३ के लोग आएंगे और आपस में कहेंगे कि आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा और

(१) मूल में सिय्योन की बेटी।
(२) मूल में छिपा। (३) मूल में तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं।
(४) मूल में न्याय पूछो।
(५) मूल में मानो खार डालकर।

हम उस के पथों पर चलेंगे क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उस का वचन यरूशलेम
४ से निकलेगा। वह जाति जाति का न्याय करेगा और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा सो वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी और लोग आगे को युद्ध की विद्या न सीखेंगे ॥

५ हे याकूब के घराने आ हम यहोवा के प्रकाश में
६ चलें। तू ने अपनी प्रजा याकूब के घराने को त्याग दिया है क्योंकि वे पूर्व्वियों के व्यवहार पर तन मन से चलते[१] और पलिश्तियों की नाईं टोना करते हैं और परदेशियों
७ के साथ हाथ मिलाते हैं। उन का देश चांदी और सोने से भरपूर है और उन के रक्खे हुए धन की सीमा नहीं उन का देश घोड़ों से भरपूर है और उन के रथ अनगि-
८ नित हैं। उन का देश मूरतों से भरा है वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को जिन्हें उन्हों ने अपनी अंगुलियों
९ से संवारा है दण्डवत् करते हैं। साधारण मनुष्य झुकते और बड़े मनुष्य प्रणाम करते हैं इस कारण उन को क्षमा
१० न कर। यहोवा के भय के कारण और उस की बड़ाई के प्रताप के मारे चटान में घुस और मिट्टी में छिप जा।
११ क्योंकि आदमियों की घमण्डभरी आंखें नीची की जाएंगी और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा और उस दिन
१२ केवल यहोवा ऊंचे पर विराजमान रहेगा। क्योंकि सेनाओं के यहोवा का एक दिन सब फूले हुए और ऊंचे
१३ और उन्नत पर आता है और वे नवाये जाएंगे। और लबानोन के सब देवदारों पर जो ऊंचे और उन्नत हैं
१४ और बाशान के सब बांजवृक्षों पर, और सब ऊंचे पहाड़ों
१५ और सब उन्नत पहाड़ियों पर, और सब ऊंचे गुम्मटों और
१६ सब दृढ़ शहरपनाहों पर, और तर्शीश के सब जहाजों और
१७ सब सुन्दर चित्रकारी पर वह दिन आता है। और आदमी का गर्व्व निकाला जाएगा और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा और उस दिन केवल यहोवा ऊंचे पर विराजमान
१८,१९ रहेगा। और मूरतें सब की सब बिलाय जाएंगी। और जब यहोवा पृथिवी के कंपाने के लिये उठेगा तब उस के भय के कारण और उस की बड़ाई के प्रताप के मारे लोग
२० चटानों की गुफाओं और भूमि के बिलों में घुसेंगे। उस दिन लोग अपनी चांदी सोने की मूरतों को जिन्हें उन्हों ने दण्डवत् करने के लिये बनाया है छछून्दरों और चम-
२१ गीदड़ों के आगे फेंकेंगे, कि यहोवा के भय के कारण और उस की बड़ाई के प्रताप के मारे चटानों की दरारों और टांगों के छेदों में घुस जाएं जब कि वह पृथिवी के कंपाने को उठेगा। मनुष्य जिस की सांस उस के नथनों
२२ में है उस से परे रहो वह किस लेखे में है ॥

३. सुनो

प्रभु सेनाओं का यहोवा यरूशलेम के और यहूदा के सब प्रकार का आधार[२] दूर करेगा अर्थात् अन्न का सारा आधार और जल का सारा आधार,
२ वीर और योद्धा को न्यायी
३ और नबी को भावी कहनेहारे और पुरनिये को, पचास सिपाहियों के सरदार और प्रतिष्ठित पुरुष को मंत्री और चतुर कारीगर को और निपुण टोन्हे को भी दूर
४ करेगा। और मैं लड़कों को उन के हाकिम कर दूंगा और
५ बच्चे उन पर प्रभुता करेंगे। और प्रजा के लोग आपस में एक दूसरे पर अंधेर करेंगे और लड़का पुरनिये से और
६ नीच जन रईस से ढिठाई करेगा। उस समय कोई अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़कर कहेगा कि तेरे पास तो कपड़े हैं सो तू हमारा न्यायी हो जा और यह
७ उजाड़ तेरे हाथ में हो। उस समय वह बोल उठेगा कि मैं चंगा करनेहारा न हूंगा क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न कपड़े सो मुझ को प्रजा का न्यायी मत ठह-
८ राओ। यरूशलेम तो डगमगाता और यहूदा गिरता है क्योंकि उन के वचन और उन के काम यहोवा के विरुद्ध हैं कि उस की तेजोमय आंखों के साम्हने बलवा करें।
९ उन का चिहरा ही उन के विरुद्ध साक्षी देता है वे सदोमियों की नाईं अपने पाप को आप ही बखानते और नहीं छिपाते। उन[३] पर हाय क्योंकि उन्हों ने अपनी
१० हानि आप की है। धर्म्मियों के विषय कहो कि भला
११ होगा क्योंकि वे अपने कामों का फल भोगेंगे। दुष्ट पर हाय उस का बुरा होगा क्योंकि उस के कामों का फल
१२ उस को मिलेगा। मेरी प्रजा पर बच्चे अंधेर करते और स्त्रियां उस पर प्रभुता करती हैं हे मेरी प्रजा तेरे अगुए तुझे भटका देते और तेरे चलने का मार्ग मिटा देते हैं[४]।
१३ यहोवा देश देश के लोगों से मुकद्दमा लड़ने और उन का
१४ न्याय करने के लिये खड़ा है। यहोवा अपनी प्रजा के पुरनियों और हाकिमों के साथ यह विवाद करेगा कि तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है और दीन लोगों
१५ का धन तुम लूटकर अपने घरों में रखते हो। तुम कौन हो कि मेरी प्रजा को दलते और दीन लोगों को[५] पीस डालते हो प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥

(१) मूल में पूरब से भर गये।

(२) मूल में लाठा और लाठी।

(३) मूल में उन के प्राण। (४) मूल में निगल लेते हैं।

(५) मूल में दीन लोगों के मुंह को।

१६ यहोवा ने यह भी कहा है कि सिय्योन की स्त्रियां जो घमण्ड करतीं और सिर ऊंचे किये आंखें मटकातीं और घुंघुरुओं को छमछमाती हुई ठुमुक ठुमुक चलती हैं, १७ इसलिये प्रभु यहोवा उन के चोण्डे को गंजा करेगा १८ और उन के तन को उघरवाएगा। उस समय प्रभु घुंघु- १९ रुओं जालियों चंद्रहारों, झुमकों कड़ों घूंघटों, २० पगड़ियों पैकरियों पटुकों सुगन्धपात्रों गण्डों, २१,२२ अंगूठियां नथों, सुन्दर वस्त्रों कुर्त्तियों चद्दरों बटुओं, २३ दर्पणों मलमल के वस्त्रों बन्दियों दुपट्टों इन सभों २४ की शोभा को दूर करेगा। और सुगन्ध की सन्ती सड़ाहट होगी और सुन्दर करधनी की सन्ती बंधन की रस्सी और गुन्धे हुए बालों की सन्ती गंजापन और सुन्दर पटुके की सन्ती टाट की पेटी और सुन्दरता की संती दाग २५ होगा। तुझ में के पुरुष तलवार से और शूरवीर युद्ध में २६ मारे जाएंगे। और उस के फाटकों में सांस भरना और विलाप करना होगा[१] और वह भूमि पर अकेली बैठी रहेगी[२]।

४.

उस समय सात स्त्रियां एक पुरुष को पकड़कर कहेंगी कि हम रोटी तो अपनी ही खाएंगी और वस्त्र अपने ही पहिनेंगी केवल हम तेरी कहलाएं हमारी नामधराई दूर कर ॥

२ उसी समय इस्राएल के बचे हुओं के लिये यहोवा का पल्लव भूषण और महिमा ठहरेगा और भूमि की ३ उपज बड़ाई और शोभा ठहरेगी। और जो कोई सिय्योन में बचा रहे और जो कोई यरूशलेम में बचा रहे अर्थात् यरूशलेम में जितनों के नाम जीवनपत्र में[३] ४ लिखे हों सो पवित्र कहाएंगे। यह तब होगा जब प्रभु न्याय करनेहारे और भस्म करनेहारे आत्मा के द्वारा सिय्योन की स्त्रियों के मल को निकाल[४] चुकेगा और यरूशलेम के बीच से खून को दूर कर चुकेगा। ५ तब यहोवा सिय्योन पर्वत के एक एक घर के ऊपर और उस के सभास्थानों के ऊपर दिन को तो धूएं का बादल और रात को धधकती आग का प्रकाश सिरजेगा ६ और सारे विभव के ऊपर मण्डप छाया रहेगा। और दिन को घाम से बचाने के लिये और आंधी पानी और झड़ी में शरण और आड़ के लिये एक तंबू होगा ॥

५.

अब मैं अपने प्रिय के लिए उस की दाख की बारी के विषय गीत गाऊं।

एक अति उपजाऊ टीले पर[५] मेरे प्रिय की एक दाख की २ बारी थी। उस ने उस की मिट्टी गोड़ दी और उस के पत्थर बीनकर उस में उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई और बीच में एक गुम्मट बनाया और उस में दाखरस के लिये एक कुण्ड भी खोदा तब वह दाख की आशा करने तो लगा पर उस में निकम्मी ही दाखें ३ लगीं। सो अब हे यरूशलेम के निवासियो और हे यहूदा के मनुष्यो मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय ४ करो। मेरी दाख की बारी के लिये और क्या करने को रह गया जो मैं ने उस के लिये न किया हो फिर क्या कारण है कि जब मैं ने दाख की आशा की तब उस में ५ निकम्मी दाखें लगीं। अब मैं तुम को जताता हूं कि अपनी दाख की बारी से क्या करूंगा मैं उस के कांटे- वाले बाड़े को उखाड़ दूंगा कि वह चट की जाए और उस की भीत को ढा दूंगा कि वह रौंदी जाए। ६ मैं उसे उजाड़ दूंगा और वह न तो फिर छांटी और न गोड़ी जाएगी और उस में भांति भांति के कटीले पेड़ उगेंगे और मैं मेघों को आज्ञा दूंगा कि उस पर जल न ७ बरसाना। क्योंकि सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इस्राएल का घराना और उस का मनभाऊ पौधा यहूदा के लोग हैं और उस ने उन में न्याय की आशा तो की पर अन्याय देख पड़ा उस ने धर्म्म की आशा तो की पर उसे चिल्लाहट ही सुन पड़ी ॥

८ हाय उन पर जो घर से घर और खेत से खेत यहां लों मिलाते जाते हैं कि कुछ स्थान नहीं ९ बचता कि तुम देश के बीच अकेले रह जाओ। सेनाओं के यहोवा ने मेरे कानों में कहा है कि निश्चय बहुत से घर सून हो जाएंगे और बड़े बड़े और सुन्दर घर १० निर्जन हो जाएंगे। और दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत दाखमधु मिलेगा और होमेर भर के बीज से एक ही एपा अन्न उत्पन्न होगा ॥

११ हाय उन पर जो बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात लों दाखमधु पीते रहते जब लों १२ उन को गर्मी चढ़ न जाए। उन की जेवनारों में वीणा सारंगी डफ बांसली और दाखमधु ये सब पाये जाते हैं और वे यहोवा के कार्य्य की ओर दृष्टि नहीं करते और १३ उस के हाथों के काम को नहीं देखते। इसलिये मेरी प्रजा अज्ञानता के कारण बंधुआई में गई और उस में के प्रतिष्ठित पुरुष भूखों और साधारण लोग प्यासों १४ मरे। इसलिये अधोलोक ने अत्यन्त लालसा करके अपना मुंह बिना परिमाण पसारा और उन का विभव और भीड़ भाड़ और हौरा और आनन्द करनेहारे सब १५ के सब उस के मुंह में आ पड़ते हैं। साधारण मनुष्य दबाये और बड़े मनुष्य नीचे किये जाते और ऊंचे

(१) मूल में उस के फाटक ठण्ढी सांस भरेंगे और विलाप करेंगे। (२) मूल में वह शून्य होकर भूमि पर बैठेगी। (३) मूल में जीवन के लिये। (४) मूल में मल को धो। (५) मूल में एक तेल के बेटे सींग पर।

१६ पदवालों की आंखें नीची की जाती हैं । और सेनाओं का यहोवा न्याय करने के कारण महान् ठहरता और १७ पवित्र धर्म्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है । और भेड़ों के बच्चे तो मानो अपने खेत में चरेंगे पर हृष्टपुष्टों के उजड़े स्थान परदेशियों को चराई के लिए मिलेंगे ॥

१८ हाय उन पर जो अधर्म्म को अनर्थ की रस्सियों से और पाप को मानो गाड़ी के रस्से से खींच ले आते हैं, १९ और कहते हैं कि वह फुर्ती तो करे और अपने काम को शीघ्र कर डाले कि हम उस को देखें और इस्राएल के पवित्र की युक्ति प्रगट और पूरी हो जाए[1] कि हम उस को समझें ॥

२० हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते और अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते और कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं ॥

२१ हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान् हैं ॥

२२ हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा २३ को तेज बनाने में बहादुर हैं, और घूस लेकर दुष्टों को २४ निर्दोष और निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं । इस कारण जैसे अग्नि की लौ से खूंटी भस्म होती और सूखी घास जलकर बैठ जाती है वैसे ही उन की जड़ सड़ जाएगी और उन के फूल धूल होकर उड़ जाएंगे क्योंकि उन्हों ने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को निकम्मी जाना और इस्राएल के पवित्र के वचन को तुच्छ जाना है ॥

२५ इस कारण यहोवा का कोप अपनी प्रजा पर भड़का है और उस ने उन के विरुद्ध हाथ बढ़ाकर उन को मारा है और पहाड़ कांप उठे और लोगों की लोथें सड़कों के बीच कूड़ा सी पड़ी हैं । इतने पर भी उस का कोप शान्त २६ नहीं हुआ उस का हाथ अब लों बढ़ा हुआ है । और वह दूर दूर की जातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा और सीटी बजाकर उन को पृथिवी की छोर से बुलाएगा २७ देखो वे फुर्ती करके वेग आएंगे । उन में कोई थकनेहारा वा ठोकर खानेहारा नहीं कोई ऊंघने वा सोनेहारा नहीं किसी का फेंटा नहीं खुलता और किसी के जूतों २८ का बन्धन नहीं टूटता । उन के तीर चोखे और उन के सब धनुष चढ़ाये हुए हैं उन के घोड़ों के खुर वज्र के २९ से और रथों के पहिये बवण्डर सरीखे हैं । वे सिंह वा जवान सिंह की नाईं गरजते हैं वे गुर्राकर अहेर को पकड़ लेते और उस को कुशल से ले भागते हैं और कोई उसे उन से नहीं छुड़ाता । ३० उस समय वे उन पर समुद्र के गर्जन की नाईं गर्जेंगे और यदि कोई देश की ओर देखे तो उसे अंधकार और संकट देख पड़ेंगे और ज्योति मेघों से छिप जाएगी ॥

६. जिस बरस उज्जिय्याह राजा मर गया मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा और उस के वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया है । २ उस से ऊंचे पर साराप दिखाई देते हैं और उन के छः छः पंख हैं दो पंख से वे अपने मुंह को ढांपे और दो से अपने पांवों को ढांपे हैं और दो से उड़ रहे हैं । ३ और वे एक दूसरे से पुकार पुकारकर कह रहे हैं कि सेनाओं का यहोवा पवित्र पवित्र पवित्र है सारी पृथिवी उस के तेज से भरपूर है । ४ और पुकारनेहारे के शब्द से डेवढ़ियों की नेवें डोल उठीं और भवन धूंए से भर गया । ५ तब मैं ने कहा हाय हाय मैं मारा पड़ा क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूं और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूं और मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आंखों से देखा है । ६ तब एक साराप हाथ में अंगारा लिये हुए जिसे उस ने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था मेरे पास उड़ आया । ७ और उस ने उस से मेरे मुंह को छूकर कहा देख इस ने तेरे होंठों को छू लिया है सो तेरा अधर्म्म दूर हो गया और तेरे पाप ढांपे गये । ८ तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना कि मैं किस को भेजूं और हमारी ओर से कौन जाएगा तब मैं ने कहा मैं हाजिर हूं मुझे भेज । ९ उस ने कहा जाकर इन लोगों से कह कि सुनते तो रहो पर न समझो और देखते तो रहो पर न बूझो । १० तू इन लोगों के मन को मोटे और उन के कानों को भारी कर और उन की आंखों को बन्द कर न हो कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से बूझें और फिरें और चंगे हो जाएं । ११ तब मैं ने पूछा कि हे प्रभु कब लों उस ने कहा जब लों कि नगर यहां लों न उजड़ें कि उन में कोई रह न जाए और घर भी यहां लों न उजड़ें कि उन में कोई मनुष्य न रह जाए और देश उजाड़ और सुनसान न हो जाए, १२ और यहोवा मनुष्यों को उस में से दूर न कर दे और उस के बहुत से स्थान निर्जन न हो जाएं । १३ चाहे उस के निवासियों[2] का दसवां अंश रह जाए तो वह फिर नाश किया जाएगा[3] पर जैसे छोटे वा बड़े बांज वृक्ष

(१) मूल में नियराए आए ।

(२) मूल में उस में । (३) मूल में फिर खा डाला जाएगा ।

को काट डालने पर भी उस का ठूंठ बना रहता है वैसे ही पवित्र वंश उस दसवें अंश का ठूंठ ठहरेगा ॥

७. यहूदा का राजा आहाज जो योताम का पुत्र और उज्जियाह का पोता था उस के दिनों में अराम का राजा रसीन और इस्राएल का राजा रमल्याह का पुत्र पेकह इन्हों ने यरूशलेम से लड़ने के लिये चढ़ाई तो की पर युद्ध करके उन से २ कुछ बन न पड़ा । और दाऊद के घराने को यह समाचार मिला था कि अरामियों ने एप्रैमियों से सन्धि की है और उन का और प्रजा का भी मन ऐसा कांप उठा जैसे बन के वृक्ष वायु चलने से कांप जाते हैं ॥

३ तब यहोवा ने यशायाह से कहा अपने पुत्र शार्याशूब[1] को लेकर ऊपरला पोखरे की नाली के सिरे पर धोबियों के खेत की सड़क पर आहाज से भेंट करने ४ के लिये जा । और उस से कह कि सावधान रह और शान्त हो और उन दोनों धूंआ निकलती लुकटियों से[2] अर्थात् रसीन के और अरामियों के भड़के हुए कोप से और रमल्याह के पुत्र से मत डर और न तेरा मन कच्चा ५ हो । क्योंकि अरामियों और रमल्याह के पुत्र समेत एप्रैमियों ने यह कहकर तेरे विरुद्ध बुरी युक्ति विचारी है, ६ कि आओ हम यहूदा पर चढ़ाई करके उस को घबरा दें और उस को अपने वश में लाकर[3] ताबेल के पुत्र ७ को राजा ठहरा दें । सो प्रभु यहोवा ने यह कहा है कि ८ यह युक्ति न तो सफल होगी और न पूरी । क्योंकि अराम का सिर दमिश्क और दमिश्क का सिर रसीन है फिर एप्रैम का सिर शोमरोन और शोमरोन का सिर रमल्याह ९ का पुत्र है । पैंसठ बरस के भीतर एप्रैम का बल टूट जाएगा और वह जाति बनी न रहेगी । यदि तुम लोग इस बात की प्रतीति न करो तो निश्चय तुम स्थिर न रहोगे ॥

१०, ११ फिर यहोवा ने आहाज से कहा, अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह मांग चाहे वह गहिरे १२ स्थान का हो वा ऊपर का हो । आहाज ने कहा मैं नहीं १३ मांगने का और मैं यहोवा की परीक्षा न करूंगा । तब उस ने कहा हे दाऊद के घराने सुनो क्या तुम मनुष्यों को उकता देना छोटी बात समझकर अब मेरे परमेश्वर १४ को भी उकता दोगे । इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा सुनो एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम इम्मानूएल[4] रक्खेगी । १५ वह तब मक्खन और मधु खायेगा जब[5] वह बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जानेगा । १६ क्योंकि उस से पहिले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने जिस देश के दोनों राजाओं के विषय तू घबरा रहा है सो निर्जन हो जाएगा । १७ यहोवा तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे पिता के घराने पर ऐसे दिनों को ले आएगा कि जब से एप्रैम यहूदा से अलग हो गया तब से वैसे दिन कभी नहीं आये अर्थात् अश्शूर के राजा को ॥

१८ उस समय यहोवा उन मक्खियों को जो मिस्र की नहरों के उधर रहती हैं और उन मधुमक्खियों को जो अश्शूर देश में रहती हैं सीटी बजाकर बुलाएगा । १९ और वे सब की सब आकर इस देश के पहाड़ी नालों में और ढांगों के दरारों में और सब भटकटैयों और सब चराइयों पर बैठ जाएंगी ॥

२० उसी समय प्रभु महानद के पारवाले अश्शूर के राजारूपी भाड़े के छुरे से सिर और पांवों के रोएं मूंड़ेगा उस छुरे से दाढ़ी भी पूरी मुंड़ जाएगी ॥

२१ उस समय कोई एक कलोर और दो भेड़ों को २२ पालेगा । और वे इतना दूध देंगी कि वह मक्खन खाया करेगा क्योंकि जितने इस देश में रह जाएंगे सो सब मक्खन और मधु खाया करेंगे ॥

२३ उस समय जिन जिन स्थानों में हजार टुकड़े चांदी की हजार दाखलताएं हैं उन सब स्थानों में कटीले ही कटीले पेड़ होंगे । २४ तीर और धनुष लेकर लोग वहां जाया करेंगे क्योंकि सारे देश में कटीले पेड़ हो जाएंगे । २५ और जितने पहाड़ कुदाल से गोड़े जाते हैं उन सभों पर कटीले पेड़ों के डर के मारे कोई न जाएगा वे गाय बैलों के चरने के और भेड़ बकरियों के रौंदने के लिये होंगे ॥

८. फिर यहोवा ने मुझ से कहा एक बड़ी पटिया लेकर उस पर साधारण अक्षरों से[6] यह लिख कि महेर्शालाल्हाशबज[7] के लिये । २ और मैं विश्वासयोग्य पुरुषों को अर्थात् ऊरिय्याह याजक और येबेरेक्याह के पुत्र जकर्याह को इस बात के साक्षी ३ करूंगा । और मैं अपनी स्त्री[8] के पास गया और वह

---

(१) अर्थात् बचा हुआ भाग फिरेगा । (२) मूल में लुकटियों के पुच्छों से । (३) मूल में अपने निमित्त फाड़कर ।

(४) अर्थात् ईश्वर हमारे संग है । (५) वा इस लिये कि । (६) मूल में मनुष्य के कलम से । (७) अर्थात् लूट शीघ्र आती छिन जाना फुर्ती करता है । (८) मूल में नबियैन ।

गर्भवती होकर पुत्र जनी तब यहोवा ने मुझ से कहा ४ उस का नाम महेर्शालाल्हाशबज[१] रख। क्योंकि उस से पहिले कि वह लड़का बप्पा और अम्मा पुकारना जाने दमिश्क और शोमरोन दोनों की धन संपत्ति लूटकर अश्शूर का राजा अपने देश को भेजेगा॥

५, ६ फिर यहोवा ने मुझ से दूसरी बार कहा कि, लोग शीलोह के धीरे धीरे बहनेहारे सोते को निकम्मा जानते हैं और रसीन के और रमल्याह के पुत्र के संग एका करके ७ आनन्द करते हैं, इस कारण सुन प्रभु उन पर उस प्रबल और गहिरे महानद को अर्थात् अश्शूर के राजा को उस के सारे प्रताप के साथ चढ़ा लाएगा वह अपने सारे नालों को भर देगा और अपने सारे कड़ाड़ों से उपटकर ८ बहेगा। और वह यहूदा पर भी चढ़ आएगा और बढ़ते बढ़ते वह उस पर चलेगा और गले लों पहुंचेगा हे इम्मानुएल तेरा सारा देश उस के पंखों के फैलने से ढंप जाएगा॥

९ हे देश देश के लोगो हौरा करो तो करो पर तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा हे पृथिवी के दूर दूर देश के सब लोगो कान लगाकर सुनो अपनी अपनी कमर कसो तो कसो पर तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा अपनी कमर कसो तो कसो पर तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। १० युक्ति करो तो करो पर वह निष्फल हो जाएगी कहो तो कहो पर तुम्हारा कहा ठहरेगा नहीं क्योंकि ईश्वर हमारे संग ११ है। क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साथ मुझ से बोला और १२ इन लोगों की सी चाल चलने से बरज कर कहा, जिस किसी बात को ये लोग राजद्रोह की गोष्ठी कहें उस को तुम राजद्रोह की गोष्ठी न कहना और जिस बात से वे १३ डरते उस से तुम न डरना और न भय खाना। सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना और उसी का डर मानना १४ और उसी का भय खाना। और वह पवित्रस्थान ठहरेगा पर इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चटान और यरूशलेम के निवासियों के १५ लिये फन्दा और फंसड़ी ठहरेगा। और उन में से बहुत से लोग ठोकर खाकर गिरेंगे और घायल भी हो जाएंगे और फंसाकर पकड़े जाएंगे॥

१६ मेरे चेलों के बीच चितौनी का पत्र बांध दे और १७ शिक्षा पर छाप कर। और मैं उस यहोवा की जो अपने मुख को याकूब के घराने से फेरता[२] है बाट जोहता १८ रहूंगा और उसी पर आशा लगाये रहूंगा। देखो मैं और जो लड़के यहोवा ने मुझे दिये हैं हम उसी सेनाओं के यहोवा की ओर से जो सिय्योन पर्वत पर वास किये रहता है इस्राएलियों में चिन्ह और चमत्कार ठहरे हैं। १९ जब लोग तुम से कहें कि ओझों और टोनहों के पास जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं जाकर पूछो क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिये और क्या जीवतों के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये। २० व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा हो यदि वे लोग इन के अनुसार न बोलें तो निश्चय उन के लिये पह न २१ फटेगी। और वे इस देश में क्लेशित और भूखे फिरते रहेंगे और जब उन को भूख लगे तब वे क्रोध में आकर अपने राजा और अपने परमेश्वर को कोसेंगे और चाहे २२ अपना मुख ऊपर की ओर करें, चाहे पृथिवी की ओर दृष्टि करें तो उन्हें क्या देख पड़ेगा कि संकट और अंधियारा और अंधकार भरी सकेती ही है और वे घोर अंधकार में ढकेल दिये जायेंगे॥

९. तौभी

जो सकेती में पड़ेगी वह अंधकार में पड़ी न रहेगी पहिले तो उस ने जबूलून और नप्ताली के देशों का अपमान किया पर पीछे उस ने ताल की ओर यर्दन के पार की अन्यजातियों के गालील की महिमा की। २ तब जो लोग अंधियारे में चलते थे उन्हें बड़ा उजियाला देख पड़ा जो लोग घोर अंधकार से भरे हुए देश में रहे उन पर ज्योति चमकी ३ है। तू ने जाति को बढ़ाया तू ने उन को बहुत आनन्द दिया[३] वह तेरे साम्हने कटनी के समय का सा आनन्द करेगी और ऐसी मगन होगी जैसे लोग लूट बांटने के ४ समय होते हैं। क्योंकि तू ने उस की गर्दन पर के भारी जूए और उस के बहंगे के बांस और उस पर अंधेर करनेहारे की लाठी इन सभों को ऐसा तोड़ दिया जैसे मिद्यानियों के दिन हुआ था। ५ क्योंकि लड़नेहारे सिपाहियों के जूते और लोहू में लथड़े हुए कपड़े सब आग का कौर हो जाएंगे॥

६ क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न होता हमें एक पुत्र दिया जाता है और वह प्रभुता का भार उठाएगा[४] और उस का नाम अद्भुत और युक्ति करनेहारा और पराक्रमी ईश्वर और अनन्तकाल का पिता और ७ शांति का प्रधान रक्खा जाएगा। दाऊद की राजगद्दी पर उस की प्रभुता सदा बढ़ती रहेगी और उस की शांति का अन्त न होगा[५] इस लिये वह उस को इस

(१) अर्थात् लूट शीघ्र आती छिन जाना फुर्ती करता है।
(२) मूल में छिपाता।
(३) वा तू ने बहुत आनन्द न दिया।
(४) मूल में प्रभुता उस के कन्धे पर होगी।
(५) मूल में प्रभुता की बढ़ती और शांति का अन्त नहीं।

समय से लेकर सर्वदा लों न्याय और धर्म्म के द्वारा स्थिर किये और संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह काम हो जाएगा॥

८ प्रभु ने याकूब के पास एक वचन कहला भेजा है ९ और वह वचन इस्राएल पर घटा है। और सारी प्रजा को एप्रैमियों और शोमरोनवासियों को मालूम होगा जो गर्व १० और अहंकार करके कहते हैं, कि ईंटें तो गिर गई हैं पर हम गढ़े हुए पत्थरों से घर बनाएंगे गूलर के वृक्ष तो कट गये हैं पर हम उन की सन्ती देवदारों से काम लेंगे। ११ इस कारण यहोवा उन पर रसीन के बैरियों को प्रबल १२ करेगा और उन के शत्रुओं को, आगे आराम को और पीछे पलिश्तियों को उभारेगा और वे मुंह खोलकर इस्राएलियों को निगल लेंगे। इतने पर भी उस का कोप शान्त नहीं हुआ और उस का हाथ अब लों बढ़ा हुआ है॥

१३ तौभी ये लोग अपने मारनेहारे सेनाओं के यहोवा की ओर नहीं फिरे और न उन्हों ने उस को पूछा है। १४ इस कारण यहोवा इस्राएल में से सिर और पूंछ को खजूर की डालियों और सरकंडे को एक ही दिन काट १५ डालेगा। पुरनिया और प्रतिष्ठित पुरुष तो सिर हैं और १६ झूठ सिखानेहारा नबी पूंछ है। जो इन लोगों की अगुवाई करते हैं सो इन को भटका देते हैं और जिन की १७ अगुवाई होती है सो नाश हो जाते हैं। इस कारण प्रभु न तो इन के जवानों से प्रसन्न होगा और न इन के बपमूए बालकों और विधवाओं पर दया करेगा क्योंकि हर एक भक्तिहीन और कुकर्म्मी है और हर एक के मुख से मूढ़ता की बात निकलती है। इतने पर भी उस का कोप शांत नहीं हुआ और उस का हाथ अब लों बढ़ा हुआ है॥

१८ क्योंकि दुष्टता आग की नाईं धधकती है वह ऊंटकटारों और कांटों को भस्म करती है वह घने वन में भी लगती है और उस से बड़ा धूआं चकरा चकराकर १९ उठता है। सेनाओं के यहोवा के रोष के मारे यह देश जल जाता और ये लोग आग का कौर होते हैं वे आपस २० में एक दूसरे से दया का व्यवहार नहीं करते। और दहिनी ओर कोई भोजनवस्तु छीनकर भी भूखा रहेगा और बायें कोई खाकर भी तृप्त न होगा और वे अपनी २१ अपनी बांहों का मांस भी खाएंगे। मनश्शे एप्रैम को और एप्रैम मनश्शे को खा डालेगा और वे दोनों यहूदा के विरुद्ध होंगे। इतने पर भी उस का कोप शांत नहीं हुआ और उस का हाथ अब लों बढ़ा हुआ है॥

१०.

हाय उन न्यायियों पर जो अनर्थ विचार करते हैं और उन पर जो उत्पात करने की आज्ञा लिख देते हैं, २ कि वे कंगालों का न्याय बिगाड़ें और मेरी प्रजा में के दीन लोगों का हक़ मारें और विधवाओं को लूटें और बपमूओं का माल अपना कर लें। ३ दण्ड के दिन जब आंधी दूर से आएगी तब क्या करोगे रक्षा के लिये कहां भाग जाओगे और अपने विभव को कहां रख जाओगे। ४ वे केवल बंधुओं के पैरों के पास[१] गिर पड़ेंगे और मारे हुओं से दबे पड़े रहेंगे। इतने पर भी उस का कोप शांत नहीं हुआ और उस का हाथ अब लों बढ़ा हुआ है॥

५ हे अश्शूर तू मेरे कोप का लठ है और तेरे हाथ में ६ का सोंटा मेरा क्रोध है। मैं उस को एक भक्तिहीन जाति के विरुद्ध भेजूंगा और जिन लोगों पर मेरा रोष भड़का है उन के विषय उस को आज्ञा दूंगा कि वह छीन छोर करे और लूट ले और उन को सड़कों की कीच के समान ७ लताड़े। पर उस की ऐसी मनसा न होगी और उस के मन में ऐसा विचार न होगा, क्योंकि उस के मन में यही होगा कि मैं बहुत सी जातियों का नाश और अंत कर ८ डालूं। वह कहता है क्या मेरे सब हाकिम राजा के ९ बराबर नहीं। क्या कलनो कर्कमीश के समान नहीं क्या हमात अर्पद के और शोमरोन दमिश्क के समान नहीं। १० जिस प्रकार मेरा हाथ मूरतों से भरे हुए उन राज्यों पर पहुंचा जिन की मूरतें यरूशलेम और शोमरोन की मूरतों ११ से बढ़िया थीं, और जिस प्रकार मैं ने शोमरोन और उस की मूरतों से किया क्या मैं उसी प्रकार यरूशलेम से और उस की मूरतों से भी न करूं॥

१२ इस कारण जब प्रभु सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपना सारा काम कर चुकेगा तब मैं अश्शूर के राजा के गर्व की बातों का और उस की घमण्ड भरी १३ आंखों का पलटा दूंगा। उस ने तो कहा है कि अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैं ने यह काम किया है क्योंकि मैं चतुर हो गया हूं सो मैं ने देश देश के सिवानों को हटा दिया और उन के रक्खे हुए धन को लूट लिया और वीर की नाईं गद्दी पर विराजमानों को उतार दिया १४ है। और देश देश के लोगों की धनसंपत्ति चिड़ियों के घोंसलों की नाईं मेरे हाथ आई और जैसा कोई छोड़े हुए अण्डों को बटोर ले वैसे ही मैं ने सारी पृथिवी को बटोर लिया है और कोई पंख फड़फड़ाने वा चोंच १५ खोलने वा चीं चीं करनेहारा न रहा। क्या कुल्हाड़ा उस के विरुद्ध जो उस से काटता हो डींग मारे वा आरी

(१) मूल में बन्धुओं के नीचे।

उस के विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई मारे क्या सोंटा अपने चलानेहारे को चलाए वा छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है ॥

१६ इस कारण प्रभु अर्थात् सेनाओं का प्रभु उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओं को दुबले कर देगा और उस की सजी हुई सेना के जंगल में अपने कोप की आग लगाएगा[१] । १७ और इस्राएल की ज्योति तो आग ठहरेगी और इस्राएल का पवित्र तो ज्वाला ठहरेगा और वह उस के झाड़ १८ झंखार को एक ही दिन में भस्म करेगी । उस से उस के वन और फलदाई बारी की शोभा पूरी रीति से[२] नाश होगी और रोगी के क्षीण हो जाने पर जैसी दशा होती १९ है वैसी ही उस की होगी । और उस वन के इतने थोड़े वृक्ष बच जाएंगे कि लड़का भी उन्हें गिन सकेगा ॥

२० उस समय इस्राएल के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भागे हुए अपने मारनेहारे पर फिर कभी टेक न लगाएंगे यहोवा जो इस्राएल का पवित्र है उसी २१ पर वे सच्चाई से टेक लगाएंगे । याकूब में से बचे हुए २२ लोग पराक्रमी ईश्वर की ओर फिरेंगे । हे इस्राएल चाहे तेरे लोग समुद्र की बालू के किनकों के समान भी बहुत होते तौभी निश्चय होता कि उन में से बचे ही लोग बचकर फिरेंगे, और सत्यानाश पूरे धर्म्म के साथ[३] ठाना गया २३ है । क्योंकि प्रभु सेनाओं के यहोवा न सारे देश का सत्यानाश करना ठाना है ॥

२४ इसलिये प्रभु सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि हे सिय्योन में रहनेहारी मेरी प्रजा अश्शूर से मत डर चाहे वह सोंटे से तुझे मारे और मिस्र की नाईं तेरे २५ ऊपर छड़ी उठाए । क्योंकि अब थोड़े ही दिनों के बीतने पर मेरी जलन और कोप उन का सत्यानाश करके शान्त होगा[४] ॥

२६ और सेनाओं का यहोवा उस के विरुद्ध कोड़ा खींचकर उस को ऐसा मारेगा जैसा उस ने ओरेब नाम चटान पर मिद्यानियों को मारा था और जैसा उस ने समुद्र पर मिस्रियों की ओर लाठी बढ़वाई वैसा ही उस की २७ ओर भी बढ़ाएगा । सो उस समय उस का बोझ तेरे कंधे पर से और उस का जूआ तेरी गर्दन पर से उतरेगा और तेल[५] के कारण जूआ तोड़ डाला जाएगा ॥

२८ वह अय्यात को आया और मिग्रोन से होकर आगे बढ़ा है मिकमाश में वह अपना सामान रख रहा २९ है । वे घाटी से पार हो गये वे गेबा में टिक गये रामा ३० थरथरा उठा शाऊल का गिबा भाग गया । हे गल्लीम के निवासियो[६] चिल्लाओ हे लैशा के लोगो कान ३१ लगाओ हाय बपुरे अनातोत । मदमेना मारा मारा फिरता है गेबीम के निवासी अपना अपना सामान ३२ भागने के लिये इकट्ठा कर रहे हैं । आज ही के दिन वह नोब में टिकेगा वह सिय्योन[७] पहाड़ पर और यरूशलेम की पहाड़ी पर हाथ हिलाकर धमकाएगा ॥

३३ देखो प्रभु सेनाओं का यहोवा पेड़ों को भयानक रूप से छांट डालेगा और ऊंचे ऊंचे वृक्ष काटे जाएंगे ३४ और जो ऊंचे हैं सो नीचे किये जाएंगे । वह घने वन को लोहे से काट डालेगा और लबानोन एक प्रतापी के हाथ से नाश किया जाएगा ॥

११. तब यिशै के ठूठ में से एक डाली फूटेगी और उस की जड़ में से एक २ शाखा निकलकर फलवन्त होगी । और यहोवा का आत्मा बुद्धि और समझ का आत्मा युक्ति और पराक्रम का आत्मा और यहोवा के ज्ञान और भय का आत्मा ३ उस पर ठहरा रहेगा । और उस को यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा और वह न तो मुंह देखा न्याय करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार चुकाव ४ करेगा । पर वह कंगालों का न्याय धर्म्म से करेगा और पृथिवी के नम्र लोगों के लिये खराई से चुकाव करेगा और वह पृथिवी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा ५ और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मार डालेगा । और उस की कटि का फेंटा धर्म्म और उस की कमर का फेंटा ६ सचाई होगी । और हुंड़ार भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा और बछड़ा और जवान सिंह और पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे और छोटा लड़का उन्हें फिराया करेगा । ७ और गाय और रीछनी चरेंगी और उन के बच्चे इकट्ठे ८ बैठेंगे और सिंह बैल की नाईं भूसा खाया करेगा । और दूधपिउवा बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा और नाग की ९ बामी में दूध छुड़ाया हुआ लड़का हाथ डालेगा । मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा क्योंकि पृथिवी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा समुद्र जल से भरा रहता है[८] ॥

१० उसी समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के झंडे के लिये खड़ी हो जाएगी और उसी के पास अन्य

(१) मूल में और उस के ऐश्वर्य्य के नीचे आग की सी जलन होगी। (२) मूल में जीव से मांस लों। (३) मूल में धर्म्म से उमण्डता। (४) मूल में करने से चुकेगा। (५) वा अभिषेक।

(६) मूल में गल्लीम की बेटी। (७) मूल में सिय्योन की बेटी। (८) मूल में जैसा जल समुद्र को ढांपता है।

जातियां चली आएंगी और उस का विश्रामस्थान तेजोमय होगा ॥

११ उस समय प्रभु अपना हाथ दूसरी बार बढ़ाकर अपनी प्रजा के बचे हुओं को जो रह जाएंगे अश्शूर और मिस्र और पत्रोस और कूश और एलाम और शिनार और हमात और समुद्र के द्वीपों से मोल लेकर १२ छुड़ाएगा। और वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करके इस्राएल के सब निकाले हुओं को और यहूदा के सब बिखरी हुइयों को पृथिवी की चारों दिशाओं से १३ इकट्ठा करेगा। और एप्रैम फिर डाह न करेगा और यहूदा के तंग करनेहारे काट डाले जाएंगे न तो एप्रैम यहूदा से डाह करेगा और न यहूदा एप्रैम को तंग १४ करेगा। पर वे पच्छिम ओर पलिश्तियों के कंधे पर झपट्टा मारेंगे और मिलकर पूर्व्वियों को लूटेंगे वे एदोम और मोआब पर हाथ बढ़ाएंगे और अम्मोनी उन १५ के अधीन हो जाएंगे। और यहोवा मिस्र के समुद्र की खाड़ी को सुखा डालेगा और महानद पर अपना हाथ बढ़ाकर प्रचण्ड लूह से ऐसा सुखाएगा कि वह सात धार हो जाएगा और लोग जूती पहिने हुए भी पार १६ जाएंगे। सो उस की प्रजा के बचे हुओं के लिये अश्शूर से एक ऐसा मार्ग होगा जैसा मिस्र देश से चले आने के समय इस्राएल के लिये हुआ था ॥

१२.

उस समय तू कहेगा कि हे यहोवा मैं तेरा धन्यवाद करता हूं क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर कोपित हुआ था पर अब तेरा कोप २ शान्त हुआ[१] और तू ने मुझे शान्ति दी है। ईश्वर मेरा उद्धार है सो मैं भरोसा रक्खूंगा और न थरथराऊंगा क्योंकि याह यहोवा मेरा बल और भजन का ३ विषय है और वह मेरा उद्धार ठहर गया है। तुम उद्धार ४ के सोतों से आनन्द के साथ जल भरोगे। और उस समय तुम कहोगे कि यहोवा का धन्यवाद करो उस से प्रार्थना करो सब जातियों में उस के बड़े कामों का प्रचार करो और इस की चर्चा करो कि उस का नाम महान् ५ है। यहोवा का भजन गाओ क्योंकि उस ने प्रतापमय ६ काम किये हैं यह सारी पृथिवी पर जाना जाए हे सिय्योन की रहनेहारी जयजयकार कर और ऊंचे स्वर से गा क्योंकि इस्राएल का पवित्र तेरे बीच में महान् है ॥

१३.

बाबेल के विषय का भारी वचन जिस को आमोस के पुत्र यशायाह २ ने दर्शन में पाया। मुंडे पहाड़ पर झंडा खड़ा करो

(१) मूल में फिर गया।

हाथ उठाकर उन को पुकारो कि वे रईसों के फाटकों में ३ प्रवेश करें। मैं ने आप अपने पवित्र किये हुओं को आज्ञा दी है मैं ने अपने कोप के कारण अपने वीरों को जो मेरे प्रताप के कारण हुलसते हैं बुलाया है। ४ पहाड़ों पर बड़ी भीड़ का सा कोलाहल हो रहा है राज्य राज्य की इकट्ठी की हुई जातियां हौरा मचा रही हैं सेनाओं का यहोवा युद्ध के लिये अपनी सेना की ५ गिनती ले रहा है। वे दूर देश से तो क्या पृथिवी[२] की छोर से आये हैं यहोवा अपने क्रोध के हथियारों समेत ६ सारे देश को नाश करने के लिये आया है। हाय हाय करो क्योंकि यहोवा का दिन निकट है सर्वशक्तिमान् की ओर ७ से मानो सत्यानाश आता है। इस कारण सब के हाथ ढीले पड़ेंगे और हर एक मनुष्य का कलेजा कांप ८ जाएगा[३]। और वे घबरा जाएंगे उन को दुःख और पीड़ा लगेगी उन को जननेहारी की सी पीड़ें उठेंगी वे चकित होकर एक दूसरे को ताकेंगे उन के मुंह सूख जाएंगे[४]। ९ देखो यहोवा का दिन रोष और कोप और निर्दयता के साथ आता है जिस से पृथिवी उजाड़ हो जाएगी और १० पापी उस में से नाश किये जाएंगे। और आकाश के तारागण और बड़े नक्षत्र न झलकेंगे और सूर्य्य उदय होते ही छिप जाएगा और चंद्रमा अपना प्रकाश न ११ देगा। और मैं जगत के लोगों को उन की बुराई का और दुष्टों को उन के अधर्म्म का दण्ड दूंगा और अभिमानियों के अभिमान को दूर करूंगा और उपद्रव करनेहारों १२ के घमण्ड को तोड़ूंगा। मैं मनुष्य को कुन्दन से और आदमी को ओपीर के सोने से अधिक महंगा करूंगा। १३ और मैं आकाश को कंपाऊंगा और पृथिवी अपने स्थान से टल जाएगी यह सेनाओं के यहोवा के रोष के कारण १४ और उस के भड़के हुए कोप के दिन में होगा। और वे खदेड़े हुए हरिण वा बिन चरवाहे की भेड़ों की नाईं अपने अपने लोगों की ओर फिरेंगे और अपने अपने देश १५ को भाग जाएंगे। जो कोई मिले सो बेधा जाएगा और जो कोई पकड़ा जाए सो तलवार से मार डाला १६ जाएगा। और उन के बालक उन के साम्हने पटक दिये जाएंगे और उन के घर लूटे जाएंगे और उन की स्त्रियां १७ भ्रष्ट की जाएंगी। देखो मैं उन के विरुद्ध मादी लोगों को उभारूंगा जो न तो चांदी का कुछ विचार करेंगे और १८ न सोने का लालच करेंगे। और वे तीरों से जवानों को मारेंगे और न बच्चों पर कुछ दया करेंगे न लड़कों पर कुछ १९ तरस खाएंगे। और बाबेल जो सब राज्यों का शिरोमणि

(२) मूल में आकाश। (३) मूल में मनुष्य का सारा हृदय गलेगा। (४) मूल में उन के लौवाले मुंह होंगे।

और उस की शोभा पर कसदी लोग फूलते हैं सो ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और अमोरा परमेश्वर से
१० उलट दिये जाने पर हो गये थे। वह फिर कभी न बसेगा और उस में युग युग कोई बास न करेगा और अरबी लोग भी उस में डेरा खड़ा न करेंगे और न
११ चरवाहे उस में अपने पशु बैठाएंगे। वहां जंगली जन्तु बैठेंगे और हुहानेहारे जन्तु उन के घरों में भरे रहेंगे और शुतुर्मुर्ग वहां बसेंगे और बनैले बकरे वहां नाचेंगे और उस नगर के राजभवनों में हुंडार और उस के सुख बिलास के मन्दिरों में गीदड़ बोला करेंगे उस के नाश होने का समय निकट आ गया और उस के दिन अब बहुत नहीं रहे। क्योंकि यहोवा याकूब पर दया

१४.

करेगा और इस्राएल को फिर अपनाकर उन्हीं के देश में बसाएगा और परदेशी उन से मिल जाएंगे और अपने अपने को याकूब के घराने
२ से मिलाएंगे[1]। और देश देश के लोग उन को उन्हीं के स्थान में पहुंचाएंगे और इस्राएल का घराना यहोवा की भूमि पर उन को दास दासियां करके उन के अधिकारी होगा और जो उन्हें बन्धुआई में ले गये थे उन्हें वे बन्धुए करेंगे और जो उन से परिश्रम कराते थे उन पर वे प्रभुता करेंगे॥

३ जिस दिन यहोवा तुझे तेरे सन्ताप और घबराहट से और उस कठिन श्रम से जो तुझ से लिया गया विश्राम
४ देगा, उस दिन तू बाबेल के राजा पर ताना मारकर कहेगा कि परिश्रम करानेहारा कैसा नाश हो गया है सोनहले मन्दिरों से भरी नगरी[2] कैसी नाश हो गई
५ है। यहोवा ने दुष्टों के सोंटे को और प्रभुता करनेहारों
६ के उस लठ को तोड़ दिया है, जिस से वे मनुष्यों को रोष से लगातार मारते जाते और जाति जाति पर कोप से प्रभुता करते और लगातार उन के पीछे पड़े रहते
७ थे। सारी पृथिवी को विश्राम मिला है वह चैन से है
८ लोग ऊंचे स्वर से गा उठे हैं। सनौवर और लबानोन के देवदार भी तुझ पर आनन्द करते हैं कि जब से तू पड़ा
९ हुआ है तब से कोई हमें काटने को नहीं आया। नीचे से अधोलोक में तुझ से मिलने को हलचल हो रही है वे मरे हुए जो पृथिवी पर प्रधान थे सो तेरे कारण जाग उठे हैं और जाति जाति के सब राजा अपने अपने
१० सिंहासन पर से उठे हैं। ये सब तुझ से कहते हैं क्या तू भी हमारी नाईं निर्बल हो गया है क्या तू हमारे
११ समान ही बन गया। तेरा विभव और तेरी सारंगियों का शब्द अधोलोक में उतारा गया है कीड़े तेरा बिछौना

(१) मूल में यह कहावत उठाएगी कि। (२) मूल में सोने का ढेर।

और केचुए तेरा ओढ़ना हैं। हे भोर के चमकनेहारे
१२ तारे[3] तू आकाश से कैसा गिर पड़ा है तू जो जाति जाति को हरा देता था सो अब कैसे कटकर भूमि पर
१३ गिराया गया है। तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा और उत्तर दिशा की छोर पर सभा
१४ के पर्वत पर बिराजूंगा। मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।
१५ पर तू अधोलोक में बरन उस गड़हे की छोर लों उतारा
१६ जाएगा। जो तुझे देखते सो तुझ को ध्यान से ताकते और तेरे विषय सोच सोचकर कहते हैं कि जो पृथिवी को चैन से रहने न देता था और राज्य राज्य में घबराहट डाल
१७ देता था, जो जगत को जंगल बनाता और उस के नगरों को ढा देता था और अपने बन्धुओं को घर जाने न
१८ देता था क्या यह वही पुरुष है। जाति जाति के राजा सब के सब अपने अपने घर पर महिमा के साथ पड़े
१९ हैं। पर तू निकम्मी शाखा की नाईं अपनी कबर में से फेंका गया तू उन मारे हुओं की लोथों से घिरा है[4] जो तलवार से छिदकर गड़हे में पत्थरों के बीच पड़े हैं और
२० तू लताड़ी हुई लोथ के समान है। उन के साथ तुझे मिट्टी न मिली क्योंकि तू ने अपने देश को उजाड़ दिया और अपनी प्रजा का घात किया है कुकर्म्मियों के वंश का
२१ नाम भी न रहेगा[5]। उन के पितरों के अधर्म्म के कारण पुत्रों के घात की तैयारी करो ऐसा न हो कि वे फिर पृथिवी के अधिकारी हो जाएं और जगत में बहुत से नगर
२२ बसाएं। और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं उन के विरुद्ध उठूंगा और बाबेल का नाम और निशान मिटा डालूंगा और बेटे पोते को काट डालूंगा[6] यहोवा
२३ की यही वाणी है। मैं उस को साही की मान्द और जल की झीलें कर दूंगा और मैं उसे सत्यानाश के झाड़ू से झाड़ डालूंगा सेनाओं के यहोवा की यह भी वाणी है॥

२४ सेनाओं के यहोवा ने यह किरिया खाई है कि निःसन्देह जैसा मैं ने ठाना वैसा ही होगा और जैसी
२५ मैं ने युक्ति की है वैसी ही ठहरी रहेगी, कि मैं अश्शूर को अपने देश में तोड़ दूंगा और अपने पहाड़ों पर उसे कुचल डालूंगा तब उस का जूआ उन की गर्दनों पर से और उस का बोझ उन के कंधों पर से उतर जाएगा।
२६ यह वही युक्ति है जो सारी पृथिवी के लिये की गई है और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ

(३) मूल में बेटे। (४) मूल में लोथें पहिनें है।
(५) मूल में नाम कभी लिया न जाएगा।
(६) मूल में बाबेल का नाम और बचती और बेटे पोते को काट डालूंगा।

२७ है। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है कौन उस को टाल सकता है और उस का हाथ बढ़ा हुआ है उसे कौन फेर सकता है ॥

२८ जिस बरस में आहाज राजा मर गया उसी में यह भारी वचन पहुंचा ॥

२९ हे सारे पलिश्त तू इसलिये आनन्द न कर कि तेरे मारनेहारे की लाठी टूट गई है क्योंकि सर्प की जड़ से एक काला नाग उत्पन्न होगा और इस से एक उड़नेहारा

३० और तेज विषवाला सर्प उत्पन्न होगा। और कंगाल से कंगाल खाने और दरिद्र लोग निडर बैठने तो पाएंगे पर मैं तेरे वंश को भूख से मार डालूंगा और तेरे बचे हुए

३१ लोग घात किये जाएंगे। हे फाटक हाय हाय कर हे नगर चिल्ला हे पलिश्त तू सब का सब पिघल गया है क्योंकि उत्तर से धूआं आता है और कोई अपनी पांति

३२ से बिछुर नहीं जाता। तब अन्यजातियों के दूतों को क्या उत्तर दिया जाएगा यह कि यहोवा ने सिय्योन की नेव डाली है और उस की प्रजा में के दीन लोग उस में शरण लिये हैं ॥

१५. मोआब के विषय भारी वचन।

निश्चय मोआब का आर नगर एक ही रात में उजड़ और नाश हो गया है निश्चय मोआब का कीर नगर एक ही रात में उजड़

२ और नाश हो गया है। बैत और दीबोन ऊंचे स्थानों पर रोने के लिए चढ़ गये हैं नबो और मेदबा के ऊपर मोआब हाय हाय करता है उन सभों के सिर मुड़े हुए

३ और सभों की डाढ़ियां मुंड़ी हुई हैं। सड़कों में लोग टाट पहिने हैं छतों पर और चौकों में सब कोई आंसु

४ बहाते हुए हाय हाय करते हैं। और हेशबोन और एलाले चिल्ला रहे हैं उन का शब्द यहस लों सुन पड़ता है इस कारण मोआब के हथियारबन्द लोग चिल्ला रहे

५ हैं उस का जी अति उदास है। मेरा मन मोआब के कारण दुःखित है क्योंकि उन के रईस सोअर और एग्लतशलीशिय्या लों भागे जाते हैं देखो लूहीत की चढ़ाई में वे रोते हुए चढ़ रहे हैं सुनो होरोनैम के मार्ग

६ में वे नाश की चिल्लाहट उठाते हैं। और निम्रीम का जल सूख गया और घास मुर्झा गई कोमल घास सूख

७ गई हरियाली कुछ नहीं रही। इसलिये जो धन उन्होंने बचा रक्खा और जो कुछ उन्हों ने जमा किया उस सब को वे उस नाले के पार लिये जा रहे हैं जिस में

८ मजनूवृक्ष हैं। इस कारण मोआब के चारों ओर के सिवाने में चिल्लाहट हो रही है उस में का हाहाकार

एग्लैम और बेरेलीम में भी सुन पड़ता है। क्योंकि ९ दीमोन का सोता लोहू से भरा हुआ है मैं तो दीमोन पर और भी दुःख डालूंगा मैं बचे हुए मोआबियों और उन के देश से भागे हुओं के विरुद्ध सिंह भेजूंगा ॥

१६. देश के हाकिम के लिये भेड़ों के बच्चों को जंगल की ओर के

सेला नगर से सिय्योन[१] के पर्वत पर भेजो। और जैसे २ उजाड़े हुए घोंसले से वैसे ही मोआब की बेटियां अर्नोन के घाट पर होंगी। संमति करो न्याय चुकाओ ३ दोपहर ही अपनी छाया को रात के समान करो घर से निकाले हुओं को छिपा रक्खो जो मारे मारे फिरते हैं उन को मत पकड़ाओ। मेरे लोग जो निकाले हुए हैं सो तेरे ४ बीच रहने पाएं नाश करनेहारे से मोआब को बचाओ क्योंकि पीसनेहारा नहीं रहा लूट पाट फिर न होगी देश में से अन्धेर करनेहारे नाश हो गये हैं। और ५ दया के साथ एक सिंहासन स्थिर किया जाएगा और उस पर दाऊद के तंबू में सच्चाई के साथ एक विराजमान होगा जो सोच विचार कर न्याय करेगा[२] और धर्म्म के काम फुर्ती से पूरा करेगा ॥

हम ने मोआब के गर्व के विषय सुना है कि वह ६ अत्यन्त गर्वी है उस के अभिमान और गर्व और रोष तो है पर उस का बड़ा बोल व्यर्थ ठहरेगा। क्योंकि ७ मोआब मोआब के लिये हाय हाय करेगा सब के सब हाहाकार करेंगे कीर्हेरेस की दाख की टिकियों के लिये वे अति निराश होकर लम्बी लम्बी सांस लिया करेंगे। क्योंकि हेशबोन के खेत और सिबमा की दाखलताएं ८ मुर्झा जाती हैं अन्यजातियों के अधिकारियों ने उन की उत्तम उत्तम लताओं को काट काटकर गिरा दिया है वे याजेर लों पहुंचीं वे जंगल में भी फैलती थीं और बढ़ते बढ़ते ताल के पार भी बढ़ गई थीं। सो मैं याजेर के ९ साथ सिबमा की दाखलताओं के लिये रोऊंगा हे हेशबोन और एलाले मैं तुम्हें अपने आंसुओं से सींचूंगा क्योंकि तुम्हारे धूपकाल के फलों के और अनाज की कटनी के समय ललकार सुनाई पड़ी है। और फलदाई बारियों में से १० आनन्द और मगनता जाती रही और दाख की बारियों में गीत न गाया जाएगा न हर्ष का शब्द सुनाई देगा दाखरस के कुण्डों में कोई दाख न रौंदेगा क्योंकि मैं उन के हर्ष के शब्द को बन्द करूंगा। इसलिये मेरा मन ११ मोआब के कारण और मेरा हृदय कीर्हेरेस के कारण

(१) मूल में सिय्योन की बेटी।
(२) मूल में जो न्याय करेगा और न्याय पूछेगा।

१२ वीणा का सा शब्द देता है। और जब मोआब ऊंचे स्थान पर मुंह दिखाते दिखाते थक जाए और प्रार्थना करने को अपने पवित्र स्थान में आए तब उस से कुछ न बन पड़ेगा॥

१३ यही तो वह बात है जो यहोवा ने इस से पहिले मोआब के विषय कही थी। १४ पर अब यहोवा ने यों कहा है कि मजूर के बरसों के समान तीन बरस के भीतर मोआब का विभव और उस की भीड़ भाड़ सब तुच्छ ठहरेगी और जो बचें सो थोड़े ही होंगे और कुछ लेखे में न रहेंगे॥

१७. दमिश्क के विषय भारी वचन। सुनो दमिश्क तो नगर न २ रहा वह खण्डहर ही खण्डहर हो जाएगा। अरोएर के नगर निर्जन हो जाएंगे वे पशुओं के झुण्डों के स्थान बनेंगे पशु उन में बैठेंगे और उन का कोई ३ भगानेहारा न होगा। एप्रैम के गढ़वाले नगर और दमिश्क का राज्य और बचे हुए अरामी तीनों आगे को न रहेंगे वे इस्राएलियों के विभव के समान होंगे सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

४ और उस समय याकूब का विभव क्षीण हो जाएगा ५ और उस की मोटी देह दुबली होगी। और ऐसा होगा जैसा लवनेहारा अनाज काट कर बालों को अपनी अंकवार में समेट लाया हो वा रपाईम नाम तराई में कोई ६ सिला बिनता हो। तौभी जैसा जलपाई वृक्ष के झाड़ते समय कुछ कुछ फल रह जाते हैं अर्थात् फुनगी पर दो तीन फल और फलवन्त डालियों में कहीं चार कहीं पांच फल रह जाते हैं वैसा ही उन में सिला बिनाई होगी। इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ७ उस समय मनुष्य अपने कर्त्ता की ओर दृष्टि करेगा और उस की आंख इस्राएल के पवित्र की ओर लगी रहेंगी। ८ और वह अपनी बनाई हुई वेदियों की ओर दृष्टि न करेगा और न अपनी बनाई हुई अशेरा नाम मूरतों वा ९ सूर्य्य की प्रतिमाओं की ओर देखेगा। उस समय उन के गढ़वाले नगर घने वन के और पहाड़ों की चोटियों के उन निर्जन स्थानों के समान होंगे जो इस्राएलियों के डर के मारे छोड़ दिये गये थे और १० वे उजाड़ पड़े रहेंगे। क्योंकि तू अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को भूल गई और अपनी दृढ़ चटान का स्मरण नहीं रक्खा इस कारण तू मनभावने पौधे लगाती ११ और विदेशी कलमें रोप देती है। रोपने के दिन तू उन के चारों ओर बाड़ा बांधती है और बिहान को फूल खिलने लगते हैं पर सन्ताप और असाध्य दुःख के दिन उस का फल नाश हो जाता है॥

१२ अहो देश देश के बहुत से लोगों की कैसी गरजना हो रही है जो समुद्र की नाईं गरजते हैं और राज्य राज्य के लोगों का कैसा नाद हो रहा है जो १३ प्रचण्ड धारा के समान नाद करते हैं। राज्य राज्य के लोग बहुत से जल की नाईं नाद करते तो हैं पर वह उन को घुड़केगा तब वे दूर भाग जाएंगे और ऐसे उड़ाये जाएंगे जैसे पहाड़ों पर की भूसी वायु से और धूलि बवण्डर १४ से भाकर उड़ाई जाती है। सांझ को तो देखो घबराहट और भोर से पहिले वे जाते रहे। हमारे धन के छीननेहारों का यही भाग और हमारे लूटनेहारों का यही हाल होगा॥

१८. अहो पंखों की खंखनाहट से भरे हुए देश तू जो कूश की नदियों के २ परे है, और समुद्र पर दूतों को नरकट की नावों में बैठा कर जल के मार्ग से यह कहके भेजता है कि हे फुर्तीले दूतो उस जाति के पास जाओ जिस के लोग लम्बे और चिकने हैं और वे आदि ही से डरावने होते आये हैं वे मापने और रौंदनेहारे भी हैं और उन का देश नदियों से बिभाग किया हुआ है। ३ हे जगत के सब रहनेहारो और पृथिवी के सब निवासियो जब झंडा पहाड़ों पर खड़ा किया जाए तब उसे देखो और जब नरसिंगा फूंका जाए तब सुनो। ४ क्योंकि यहोवा ने मुझ से यों कहा है कि धूप की तेज गर्मी वा कटनी के समय के ओसवाले बादल की नाईं मैं शान्त होकर निहारूंगा। ५ पर दाख तोड़ने के समय से पहिले जब फूल फूल चुकें और दाख के गुच्छे पकने लगें तब वह टहनियों को हंसुओं से काट डालेगा और सूतों को तोड़ ६ तोड़कर अलग फेंक देगा। वे पहाड़ों के मांसाहारी पक्षियों और बनैले पशुओं के लिये इकट्ठे पड़े रहेंगे और मांसाहारी पक्षी तो उन को नोचते नोचते[१] धूपकाल बिताएंगे और सब भान्ति के[२] बनैले पशु उन को खाते खाते[१] जाड़ा काटेंगे॥

७ उस समय जिस जाति के लोग लम्बे और चिकने हैं और वे आदि ही से डरावने होते आये हैं और वे मापने और रौंदनेहारे हैं और उन का देश नदियों से बिभाग किया हुआ है उस जाति से सेनाओं के यहोवा के नाम के स्थान सिय्योन पर्वत पर सेनाओं के यहोवा के पास भेंट पहुंचाई जाएगी॥

(१) मूल में उन पर। (२) मूल में और भूमि के सब।

१९. मिस्र

के विषय भारी वचन । देखो यहोवा शीघ्र उड़नेहारे बादल पर चढ़ा हुआ मिस्र में आ रहा है और मिस्र की मूरतें उस के आने से थरथरा उठेंगी और मिस्रियों का कलेजा काप जाएगा । २ और मैं मिस्रियों को एक दूसरे के विरुद्ध उभारूंगा सो वे आपस में लड़ेंगे भाई से भाई पड़ोसी से पड़ोसी नगर से नगर राज्य से राज्य लड़ेंगे । ३ और मिस्रियों की बुद्धि मारी पड़ेगी[१] और मैं उन की युक्तियों को व्यर्थ कर दूंगा और वे अपनी मूरतों के पास और ओझों और फुसफुसानेहारे टोनहों[२] के पास जा जाकर उन से पूछेंगे । ४ और मैं मिस्रियों को कठोर स्वामी के हाथ में कर दूंगा और क्रूर राजा उन पर प्रभुता करेगा प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है । ५ और समुद्र का जल घट जाएगा और महानद सूखते सूखते सूख जाएगा । ६ और उस की शाखाएं बसाने लगेंगी और मिस्र[३] की नहरें भी घटते घटते सूख जाएंगी और नरकट और हूगले कुम्हलाएंगे । ७ नील नदी के तीर पर के कछार की घास और नील नदी के पास जो कुछ बोया जाएगा सो सूखकर नाश होगा[४] और उस का पता तक न रहेगा । ८ तब मछुवे विलाप करेंगे और जितने नील नदी में बंसी डालते सो लम्बी लम्बी सांस लेंगे और जो जल के ऊपर जाल फेंकते हैं सो निर्बल हो जाएंगे[५] । ९ फिर जो लोग धुने हुए सन से काम करते हैं और जो सूत से बुनते हैं उन की आशा टूटेगी । १० और मिस्र के रईस तो निराश[६] और उस में के सब मजूर उदास हो जाएंगे । ११ निश्चय सोअन के सब हाकिम मूर्ख हैं और फिरौन के बुद्धिमान मंत्रियों की युक्ति पशु की सी हुई है फिरौन से तुम कैसे कह सकते हो कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र और प्राचीन राजाओं का पुत्र हूं । १२ तेरे बुद्धिमान् तो कहां रहे सेनाओं के यहोवा ने मिस्र के विरुद्ध जो युक्ति की है उस को वे तुझे बताएं बरन आप उस को जान लें । १३ सोअन के हाकिम मूढ़ बने हैं नोप के हाकिमों ने धोखा खाया है और मिस्र के गोत्रों के प्रधान लोगों[७] ने मिस्र को भरमा दिया है । १४ यहोवा ने उस के बीच भ्रमता उत्पन्न की है उन्हों ने मिस्र को उस के सारे कामों में वमन करते हुए मतवाले की नाईं डगमगा दिया है । १५ और मिस्र के लिये कोई ऐसा काम न रहेगा जो सिर वा पूंछ से खजूर की डाली वा सरकंडे से हो सके ॥

१६ उस समय मिस्री लोग स्त्रियों के समान हो जाएंगे और सेनाओं का यहोवा जो अपना हाथ उन पर बढ़ाएगा उस के डर के मारे वे थरथराएंगे और कांप उठेंगे । १७ और यहूदा का देश मिस्र के लिये यहां लों भय का कारण होगा कि जिस के सुनने में उस की चर्चा की जाए सो थरथरा उठेगा सेनाओं के यहोवा की उस युक्ति का यही फल होगा जो वह मिस्र के विरुद्ध करता है ॥

१८ उस समय मिस्र देश के पांच नगर होंगे जिन के लोग कनान की भाषा बोलेंगे और यहोवा की किरिया खाएंगे उन में से एक का नाम हेरेस नगर[८] रक्खा जाएगा ॥

१९ उस समय मिस्र देश के मध्य में यहोवा के लिये एक वेदी होगी और उस के सिवाने के पास यहोवा के लिये एक खंभा खड़ा होगा । २० और यह मिस्र देश में सेनाओं के यहोवा का चिन्ह और साक्षी ठहरेगा और जब वे अंधेर करनेहारों के कारण यहोवा की दोहाई देंगे तब वह उन के पास एक उद्धारकर्त्ता और वीर भेजेगा और वह उन्हें छुड़ाएगा । २१ तब यहोवा अपने को मिस्रियों पर प्रगट करेगा और मिस्री लोग उस समय यहोवा का ज्ञान पाकर मेलबलि और अन्नबलि चढ़ा कर उस की उपासना करेंगे और यहोवा का मन्नत मानकर पूरी करेंगे । २२ और यहोवा मिस्र को कूटेगा वह कूटेगा और चंगा भी करेगा और वे यहोवा की ओर फिरेंगे और वह उन की बिनती सुन कर उन को चंगा करेगा ॥

२३ उस समय मिस्र से अश्शूर जाने का एक राजमार्ग होगा सो अश्शूरी लोग मिस्र में और मिस्री लोग अश्शूर में जाएंगे और अश्शूरियों के संग मिस्री उपासना करेंगे ॥

२४ उस समय इस्राएल मिस्र और अश्शूर तीनों मिलकर पृथिवी के मध्य में आशिष का कारण होंगे । २५ क्योंकि सेनाओं का यहोवा कह कह कर उन तीनों को आशिष देगा कि धन्य हो मेरी प्रजा मिस्र और मेरा रचा हुआ अश्शूर और मेरा निज भाग इस्राएल ॥

२०. जिस

बरस में अश्शूर के राजा सर्गोन की आज्ञा से तर्तान ने अशदोद के पास आकर उस से युद्ध किया और उस को ले भी लिया, २ उसी बरस में यहोवा ने आमोस के पुत्र यशायाह से कहा जाकर अपनी कमर का टाट खोल और अपनी जूतियां उतार सो उस ने वैसा किया और उघाड़ा और

(१) मूल में मिस्र का आत्मा उस के भीतर छूछा होगा ।
(२) मूल में और फुसफुसानेहारों और ओझों और टोनहों ।
(३) मूल में मासोर ।
(४) मूल में सूखकर भगाया जाएगा । (५) मूल में सो कुम्हलाएंगे ।
(६) मूल में उस के खम्भे तो टूट पड़ेंगे ।
(७) मूल में गोत्रों के कोने ।

(८) अर्थात् वह नाशवाला नगर ।

३ नंगे पांव चलने लगा । और यहोवा ने कहा कि जिस प्रकार मेरा दास यशायाह तीन बरस से उघाड़ा और नंगे पांव चलता आया है कि मिस्र और कूश के लिये ४ चिन्ह और चमत्कार हो, उसी प्रकार अश्शूर का राजा मिस्र और कूश के क्या लड़के क्या बूढ़े सभों को बंधुए करके उघाड़े और नंगे पांव और नितम्ब खुले ले जाएगा ५ जिस से मिस्र को लाज हो । और वे कूश के कारण जिस पर वे आशा रखते हैं और मिस्र के हेतु जिस पर वे फूलते ६ हैं व्याकुल और लज्जित हो जाएंगे । और समुद्र के इस किनारे के रहनेहारे उस समय कहेंगे देखो जिन पर हम आशा रखते थे और जिन के पास हम अश्शूर के राजा से बचने के लिये भागने को थे उन की तो ऐसी दशा हो गई है फिर हम लोग कैसे बचेंगे ॥

२१. समुद्र के पास के जंगल के विषय भारी वचन । जैसे दक्खिन देश में बवण्डर जोर से चलते हैं वैसे ही वह जङ्गल से अर्थात् २ डरावने देश से आता है । कष्ट की बातों का दर्शन दिखाया गया है कि विश्वासघाती विश्वासघात करता और नाश करनेहारा नाश करता है हे एलाम चढ़ाई कर हे मादै घेर ले उस का सारा कराहना मैं ने ३ बन्द किया है । इस कारण मेरी कटि में कठिन पीड़ा उपजी जननेहारी की सी पीड़ें मुझे उठी हैं मैं ऐसे संकट में हूं कि कुछ सुन नहीं पड़ता मैं ऐसा घबरा गया कि ४ कुछ देख नहीं पड़ता । मेरा हृदय धड़क उठा मैं अत्यन्त भयभीत हूं जिस सांझ को मैं चाहता था उसे उस ने ५ मेरी थरथराहट का कारण कर दिया है । भोजन[१] की तैयारी हो रही है पहरुए बैठाये जा रहे हैं खाना पीना ६ हो रहा है हे हाकिमो उठो ढाल में तेल लगाओ । प्रभु ने मुझ से यों कहा है कि जाकर एक पहरुआ खड़ा कर ७ दे और वह जो कुछ देखे सो बताए । और जब वह दो दो करके चलते हुए सवारों का दल और गदहों का दल और ऊंटों का दल देखे तब बहुत ही ध्यान देकर कान ८ लगाए । और उस ने सिंह के से शब्द से पुकारा हे प्रभु मैं तो दिन भर लगातार खड़ा पहरा देता हूं और ९ रात भर भी अपनी चौकी पर ठहरा रहता हूं । और क्या देखता हूं कि मनुष्यों का दल और दो दो करके चलते हुए सवार आ रहे हैं और वह बोल उठा बाबेल गिर गया गिर गया और उस के देवताओं की सब खुदी १० हुई मूरतें भूमि पर चकनाचूर कर डाली गई हैं । हे मेरे दाएं हुए लोगो हे मेरे खलिहान के अन्न जो बातें मैं ने इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा से सुनी हैं उन को मैं ने तुम्हें जता दिया है ॥

११ दूमा के विषय भारी वचन । सेईर में से कोई मुझे पुकार रहा है कि हे पहरुए रात कितनी रही है हे पहरुए रात कितनी रही है । १२ पहरुआ कहता है कि भोर तो होने पर है और रात भी यदि पूछो तो पूछो फिरो आओ ॥

१३ अरब के विरुद्ध भारी वचन । हे ददानी बटोहियो के दलो तुम को अरब के जङ्गल में रात बितानी पड़ेगी । १४ प्यासे के पास वे जल लाये तेमा देश के रहनेहारे भागते हुए से मिलने को रोटी लिये हुए आ रहे हैं । १५ वे तो तलवार से बरन नंगी तलवार से और ताने हुए धनुष से और घोर युद्ध से भागे हैं । १६ क्योंकि प्रभु ने मुझ से यों कहा है कि मजूर के बरसों के अनुसार एक बरस में केदार का सारा विभव बिलाय जाएगा । १७ और केदार के धनुर्धारी शूरवीरों में से थोड़े ही रह जाएंगे क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

२२. दर्शन की तराई के विषय भारी वचन । तुम्हें क्या हुआ कि तुम सब के सब छतों पर चढ़ गये हो । २ हे कोलाहल और होरे से भरी नगरी हे हुलसनेहारे नगर तुझ में जो मारे हुए हैं सो न तो तलवार के मारे और न लड़ाई में मर गये हैं । ३ तेरे सब न्यायी एक संग भागे और धनुर्धारियों से बान्धे गये हैं और तेरे जितने पाये गये सो एक संग बान्धे गये वे दूर से भागे थे । ४ इस कारण मैं ने कहा मेरी ओर से मुंह फेर लो कि मैं बिलक बिलक रोऊं मेरे नगर[२] के सत्यानाश होने के शोक में मुझे शान्ति देने का यत्न मत करो । ५ वह तो सेनाओं के यहोवा प्रभु का ठहराया हुआ दिन होगा जब दर्शन की तराई में कोलाहल और रौंदा जाना और चौंधियाना होगा और शहरपनाह में सुरंग लगाई जाएगी और दोहाई का शब्द पहाड़ों लों पहुंचेगा । ६ और एलाम पैदलों के दल और सवारों समेत तर्कश बांधे हुए है और कीर ढाल खोले हुए है । ७ और तेरी उत्तम उत्तम तराइयां रथों से भरी हुई होंगी और सवार फाटक के साम्हने पांति बांधेंगे ॥

८ और उस ने यहूदा की आड़ खोल दी और उस समय तू ने बन नाम भवन में के अस्त्र शस्त्र की सुधि ली । ९ और तुम ने दाऊदपुर की शहरपनाह के दरारों को देखा कि बहुत से हैं और निचले पोखरे के जल को इकट्ठा किया, १० और यरूशलेम के घरों को गिन कर शहर-

(१) मूल में मेज ।

(२) मूल में बेटी

११ पनाह के दृढ़ करने के लिये घरों को ढा दिया, और दोनों भीतों के बीच पुराने पोखरे के जल के लिये एक कुंड खोदा तुम ने उस के कर्त्ता की सुधि नहीं ली और जिस ने प्राचीनकाल से उस को ठहरा रक्खा[1] है उस की
१२ ओर तुम ने दृष्टि नहीं की । और प्रभु सेनाओं के यहोवा ने उस समय रोने पीटने सिर मुड़ाने और टाट
१३ पहिनने के लिये कहा था । पर क्या देखा कि हर्ष और आनन्द गाय बैल का घात और भेड़ बकरी का बध मांस खाना और दाखमधु पीना और यह कहना कि खा पी
१४ ले कल तो मरना है । सेनाओं के यहोवा ने मेरे कान में अपने मन की बात प्रगट की कि निश्चय तुम लोगों के इस अधर्म्म का कुछ प्रायश्चित्त तुम्हारे मरने लों न हो सकेगा प्रभु सेनाओं का यहोवा यही कहता है ॥

१५ प्रभु सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि शेबना नाम उस भण्डारी के पास जो राजघराने के काम पर है
१६ जाकर कह कि, यहां तू क्या करता है और यहां तेरा कौन है कि तू ने यहां अपनी कबर खुदवाई है तू तो अपनी कबर ऊंचे स्थान में खुदवाता और अपने रहने का
१७ स्थान ढांग में खुदवा लेता है । सुन यहोवा तुझ को पहलवान की नाईं बल से पकड़कर बड़ी दूर फेंक
१८ देगा । वह तुझे मरोड़कर गेन्द की नाईं लम्बे चौड़े देश में फेंक देगा हे अपने स्वामी के घराने के लजवानेहारे वहां तू मरेगा और तेरे विभव के रथ वहीं रह
१९ जाएंगे । मैं तुझ को तेरे स्थान पर से ढकेल दूंगा और
२० वह तेरे पद से तुझे उतार देगा । और उस समय मैं हिल्कियाह के पुत्र अपने दास एल्याकीम को बुलाकर,
२१ तेरा ही अंगरखा पहिनाऊंगा और उस की कमर में तेरी ही पेटी कसकर बान्धूंगा और तेरी प्रभुता उस के हाथ में दूंगा और वह यरूशलेम के रहनेहारों और
२२ यहूदा के घराने का पिता ठहरेगा । और मैं दाऊद के घराने की कुंजी उस के कंधे पर रक्खूंगा और वह खोलेगा और कोई बन्द न कर सकेगा वह बन्द करेगा
२३ और कोई खोल न सकेगा । और मैं उस को दृढ़ स्थान में खूंटी की नाईं गाड़ूंगा और वह अपने पिता के
२४ घराने के लिये विभव का कारण[2] होगा । और उस के पिता के घराने का सारा विभव वंश और संतान सब छोटे छोटे पात्र क्या कटोरे क्या सुराहियां सो सब उस
२५ पर टांगी जाएंगी । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस समय वह खूंटी जो दृढ़ स्थान में गड़ेगी सो ढीली हो जाएगी और काटकर गिराई जाएगी और उस पर का बोझ कट जाएगा क्योंकि यहोवा ने यह कहा है ॥

२३. सोर के विषय भारी वचन ।

हे तर्शीश के जहाजो हाय हाय करो क्योंकि वह ऐसा सत्यानाश हुआ कि उस में न तो घर न प्रवेश रहा यह बात तुम को कित्तियों के देश में
२ से प्रगट की गई है । हे समुद्र के तीर के रहनेहारो चुपकर रहो तू जिस को समुद्र के पार जानेहारे
३ सीदोनी व्योपारियों ने धन से भर दिया है, और शीहोर[3] का अन्न और नील नदी के पास की उपज महासागर के मार्ग से उस को मिलती थी सो वह और और
४ जातियों के लिये व्योपार का स्थान हुआ । हे सीदोन लज्जित हो क्योंकि समुद्र ने अर्थात् समुद्र के दृढ़ स्थान ने यह कहा है कि मैं ने न तो कभी जनने की पीड़ा जानी न बालक जनी और न बेटों को पाला न
५ बेटियों को पोसा है । जब सोर का समाचार मिस्र में
६ पहुंचे तब वे सुनकर संकट में पड़ेंगे । हे समुद्र के तीर के रहनेहारो हाय हाय करो पार होकर तर्शीश को
७ जाओ । क्या यह तुम्हारी हुलस से भरी हुई नगरी है जो प्राचीनकाल से बसी थी जिस के पांव उसे बसने को
८ दूर ले जाते थे । सोर जो राजाओं को गद्दी पर बैठाती थी[4] जिस के व्योपारी हाकिम हुए थे और जिस के महाजन पृथिवी भर में प्रतिष्ठित थे उस के विरुद्ध किस
९ ने ऐसी युक्ति की है । सेनाओं के यहोवा ही ने ऐसी युक्ति की है कि सारी शोभा के घमण्ड को तुच्छ करा दे
१० और पृथिवी के प्रतिष्ठितों का अपमान कराए । हे तर्शीश के निवासियो[5] नील नदी की नाईं अपने देश में फैल
११ जाओ क्योंकि अब कुछ बंधन[6] नहीं रहा । उस ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाकर राज्य राज्य को हिला दिया है यहोवा ने कनान के दृढ़ स्थानों के नाश करने
१२ की हुई आज्ञा दी है । और उस ने कहा है हे सीदोन हे भ्रष्ट की हुई कुमारी तू फिर हुलसने की नहीं उठ पार होकर कित्तियों के पास जा तो जा पर वहां भी तुझे चैन न
१३ मिलेगा । कसदियों के देश को देखो वह जाति अब न रही अश्शूर ने उस देश को जंगली जन्तुओं का स्थान ठहराया उन्हों ने गुम्मट उठाए और राजभवनों को ढा दिया
१४ और उस को खण्डहर कर दिया । हे तर्शीश के जहाजो हाय हाय करो क्योंकि तुम्हारा दृढ़स्थान उजड़ गया है ।

(१) मूल में इसे रचा ।
(२) मूल में महिमायुक्त सिंहासन ।

(३) अर्थात् मिस्र का उत्तरवाला भाग । (४) मूल में मुकुट रखनेहारी सोर । (५) मूल में तर्शीशश की बेटी ।
(६) मूल में फेंटा ।

१५ उस समय एक राजा के दिनों के अनुसार सत्तर बरस लों सोर बिसरा हुआ रहेगा और सत्तर के बीते पर सोर वेश्या १६ की नाईं गीत गाने लगेगा । हे बिसरी हुई वेश्या बीणा लेकर नगर में घूम भली भांति बजा बहुत गीत गा १७ जिस से तू फिर स्मरण में आए । और सत्तर बरस के बीते पर यहोवा सोर की सुधि लेगा और वह फिर छिनाले की कमाई पर मन लगाकर धरती भर के सब राज्यों १८ के संग छिनाला करेगी । और उस के व्योपार की प्राप्ति और उस के छिनाले की कमाई यहोवा के लिये पवित्र ठहरेगी वह न भण्डार में रक्खी जाएगी न संचय की जाएगी क्योंकि उस के व्योपार की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो यहोवा के साम्हने रहा करेंगे कि उन को पूरा भोजन और चमकीला वस्त्र मिले ॥

२४. सुनो यहोवा पृथिवी को निर्जन और सुनसान करने पर है वह उस को उलटकर उस के रहनेहारों को तित्तर बित्तर करेगा । २ और जैसा यजमान वैसा याजक जैसा दास वैसा स्वामी जैसी दासी वैसी स्वामिनी जैसा लेनेहारा वैसा बेचनेहारा जैसा उधार देनेहारा वैसा उधार लेनेहारा जैसा ब्याज लेनेहारा वैसा ब्याज देनेहारा सभों की एक ही ३ दशा होगी । पृथिवी सून ही सून और नाश ही नाश ४ हो जाएगी क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है । पृथिवी विलाप करेगी और मुर्झाएगी जगत कुम्हलाएगा और मुर्झा जाएगा पृथिवी के महान् लोग कुम्हला जाएंगे । ५ क्योंकि पृथिवी अपने रहनेहारों के कारण[1] अशुद्ध हो गई है क्योंकि उन्हों ने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला और सनातन वाचा को तोड़ ६ दिया है । इस कारण स्राप पृथिवी को ग्रसेगा और उस के रहनेहारे दोषी ठहरंगे और इसी कारण पृथिवी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे । ७ नया दाखमधु जाता रहेगा[2] दाखलता मुर्झा जाएगी और जितने मन में आनन्द करते हैं सब लम्बी लम्बी ८ सांस लेंगे । डफ का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा हुलसनेहारों का कोलाहल जाता रहेगा बीणा का सुख- ९ दाई शब्द बन्द हो जाएगा । वे गाकर दाखमधु न १० पीएंगे पीनेहारों को मदिरा कड़ुई लगेगी । सुनसान होनेहारी नगरी नाश होगी उस का हर एक घर ऐसा ११ बंद किया जाएगा कि कोई पैठ न सकेगा । सड़कों में लोग दाखमधु के लिये चिल्लाएंगे आनन्द मिट जाएगा[3] देश का सारा हर्ष जाता रहेगा । नगर में उजाड़ ही १२ रह जाएगा और उस के फाटक तोड़कर नाश किये जाएंगे । और पृथिवी के बीच देश देश के मध्य वह १३ ऐसा होगा जैसा कि जलपाइयों के झाड़ने के समय वा दाख तोड़ने के समय के अन्त में कोई कोई फल रह जाते हैं । वे लोग गला खोलकर जयजयकार करेंगे १४ और यहोवा के माहात्म्य को देखकर समुद्र से पुकारेंगे इस कारण पूर्व में यहोवा की महिमा करो और समुद्र १५ के द्वीपों में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो ॥

पृथिवी की छोर से हम को ऐसे गीत सुन पड़ते १६ हैं कि धर्म्मी के लिये शोभा है । पर मैं ने कहा हाय हाय मैं नाश हो गया नाश[4] विश्वासघाती विश्वासघात करते वे बड़ा ही विश्वासघात करते हैं । हे पृथिवी १७ के रहनेहारो तुम्हारे लिये भय और गड़हा और फन्दा हैं । और जो कोई भय के शब्द से भागे सो गड़हे १८ में गिरेगा और जो कोई गड़हे में से निकले सो फंदे में फंसेगा क्योंकि आकाश के झरोखे खुल जाएंगे और पृथिवी की नेव डोल उठेगी । पृथ्वी फट फटकर १९ टुकड़े टुकड़े हो जाएगा पृथिवी अत्यंत कांप उठेगी । पृथिवी मतवाले की नाईं बहुत डगमगाएगी और २० मचान की नाईं डोलेगी वह अपने पाप के बोझ से दबकर गिरेगी और फिर न उठेगी, उस समय यहोवा २१ आकाश की सेना को आकाश में और पृथिवी के राजाओं को पृथिवी ही पर दण्ड देगा । और वे बंधुओं की २२ नाईं गड़हे में इकट्ठे किये जाएंगे और बन्दीगृह में बंद किये जाएंगे और बहुत दिन के पीछे उन की सुधि ली जाएगी । तब चन्द्रमा संकुचित[5] हो जाएगा और सूर्य्य २३ लजाएगा क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपनी प्रजा के पुरनियों के साम्हने प्रताप के साथ राज्य करेगा ॥

२५. हे यहोवा तू मेरा परमेश्वर है मैं तुझे सराहूंगा मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा क्योंकि तू ने आश्चर्य्य कर्म्म किये हैं तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियां की हैं । तू ने तो नगर को डीह और उस गढ़वाले नगर को २ खण्डहर कर डाला है तू ने परदेशियों की राजपुरी को ऐसा उजाड़ा कि वह नगर नहीं रहा वह फिर कभी बसाई न जाएगी । इस कारण बलवन्त राज्य के लोग ३ तेरी महिमा करेंगे भयानक अन्यजातियों के नगर में तेरा

(१) मूल में नीचे ।
(२) मूल में विलाप करेगा । (३) मूल में अन्धेरा होगा ।

(४) मूल में क्षीण हो गया क्षीण । (५) मूल में चन्द्रमा का मुंह काला ।

४ भय माना जाएगा। क्योंकि तू दीन और दरिद्र के संकट में उन का दृढ़स्थान हुआ जब भयानक लोगों का झोंका भीत पर के बौछार के समान होता था तब तू उस बौछार से बचने के लिये शरणस्थान और तपन में
५ छाया का ठौर हुआ। जैसा निर्जल देश में तपन बादल की छाया से ठण्डा होता है वैसा ही तू परदेशियों का हौरा और भयानकों का जयजयकार बन्द करता[१] है ॥

६ और सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसा जेवनार करेगा जिस में भांति भांति का चिकना भोजन और थिराया हुआ दाखमधु होगा चिकना भोजन तो उत्तम से उत्तम और थिराया हुआ दाखमधु
७ खूब थिराया हुआ होगा। और जो पर्दा[२] सब देशों के लोगों पर पड़ा है और जो ओढ़ार सब अन्यजातियों पर पड़ा हुआ है उन दोनों को वह इसी पर्वत पर नाश
८ करेगा। वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथिवी पर से दूर करेगा क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

९ और उस समय यह कहा जाएगा कि देखो हमारा परमेश्वर यही है हम इस की बाट जोहते आये हैं यह हमारा उद्धार करेगा यहोवा यही है हम इस की बाट जोहते आये हैं हम इस से उद्धार पाकर मगन और
१० आनन्दित होंगे। क्योंकि इस पर्वत पर यहोवा का हाथ ठहरेगा और मोआब अपने ही स्थान में ऐसा लताड़ा जाएगा जैसा पुआल घूरे के जल में लताड़ा जाता है।
११ और वह उस में अपने हाथ पैरने के समय की नाईं फैलाएगा पर वह उस के गर्व को तोड़ेगा और उस की
१२ चतुराई की युक्तियों[३] को निष्फल कर देगा[४]। और वह तेरी ऊंची ऊंची और मजबूत मजबूत शहरपनाहों को झुकाएगा और नीचा करेगा और भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देगा ॥

२६. उस समय यह गीत यहूदा देश में गाया जाएगा कि हमारे तो एक दृढ़ नगर है उस की शहरपनाह और धुस का काम देने
२ के लिये वह उद्धार को ठहराता है। फाटकों को खोलो कि सच्चाई का पालन करनेहारी एक धर्म्मी जाति प्रवेश
३ करे। जिस का मन धीरज धरे हुए है उस की तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है क्योंकि वह तुझ पर भरोसा
४ किये हुए रहता है। यहोवा पर सदा सर्वदा भरोसा किये हुए रहो क्योंकि याह यहोवा युग युग की चटान ठहरा
५ है। वह तो ऊंचे पदवाले को झुका देता जो नगर ऊंचे पर बसा है उस को वह नीचे कर देता वह उस को
६ भूमि पर गिराकर मिट्टी ही में मिला देता है। वह दीनों के पांवों और दरिद्रों के पैरों से रौंदा जाएगा[५] ॥

७ धर्म्मी के लिये मार्ग सीधा है तू जो आप सीधा
८ है सो धर्म्मी के रास्ते को चौरस कर देता है। हे यहोवा सचमुच हम लोग तेरे न्याय के कामों की बाट जोहते आये हैं तेरे नाम और तेरे स्मरण की हमारे जीव में
९ लालसा बनी रहती है। रात के समय मैं ने अपने जी से तेरी लालसा की है मैं अपने सारे मन से यत्न के साथ तुझे ढूंढता हूं क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथिवी पर प्रगट होते हैं तब जगत के रहनेहारे धर्म्म को सीखते
१० हैं। दुष्ट पर चाहे दया भी की जाए तौभी वह धर्म्म को न सीखेगा धर्म्मराज्य[६] में भी वह कुटिलता करेगा और यहोवा का माहात्म्य उसे सूझ नहीं पड़ने का ॥

११ हे यहोवा तेरा हाथ बढ़ाया हुआ तो है पर वे देखते नहीं वे देखेंगे कि तुझे प्रजा के लिये कैसी जलन
१२ है और लजाएंगे और तेरे बैरी आग से भस्म होंगे। हे यहोवा तू हमारे लिये शान्ति ठहराएगा जो कुछ हम ने
१३ किया है सो तू ही ने हमारे लिये किया है। हे हमारे परमेश्वर यहोवा तुझे छोड़ और और स्वामी हम पर प्रभुता करते तो थे पर तेरी कृपा से हम तेरे ही नाम का गुणा-
१४ नुवाद करने पाते हैं। वे मर गये हैं फिर नहीं जीने के उन को मरे बहुत दिन हुए फिर नहीं उठने के तू ने उन का विचार करके उन का ऐसा नाश किया कि वे फिर
१५ स्मरण में न आएंगे। तू ने जाति को बढ़ाया हे यहोवा तू ने जाति को बढ़ाया है तू ने अपनी महिमा दिखाई है और इस देश के सब सिवानों को तू ने बढ़ाया है ॥

१६ हे यहोवा दुःख में वे तुझे स्मरण करते थे जब तू उन्हें ताड़ना देता था तब वे दबे स्वर से अपने मन की
१७ बात तुझ पर प्रगट करते थे[७]। जैसे गर्भवती स्त्री जनने के समय ऐंठती और पीड़ों के कारण चिल्ला उठती है हम
१८ लोग भी हे यहोवा तेरे साम्हने वैसे ही हो गये हैं। हम भी गर्भवती हुए हम भी ऐंठे हम मानो वायु ही जने हम ने देश के लिये उद्धार का कोई काम नहीं किया और न
१९ जगत के रहनेहारे उत्पन्न[८] हुए। तेरे मरे हुए लोग जीएंगे मेरे मुर्दे उठ खड़े होंगे हे मिट्टी में मिले हुओ जाग-

(१) मूल में झुका देता। (२) मूल में परदे का जो मुंह। (३) मूल में उस के हाथों की चतुर युक्तियों। (४) मूल में नीचा कर देगा।

(५) मूल में उस को पांव रौंदेगा दीन के पांव कंगालों के कदम। (६) मूल में धर्म्म के देश। (७) मूल में उण्डेल दी। (८) वा पड़े।

कर जयजयकार करो क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है और पृथिवी बहुत दिन के मरे हुओं को लौटा देगी ॥

२० हे मेरे लोगो आओ अपनी अपनी कोठरी में प्रवेश करके किवाड़ों को बन्द करो जब लों क्रोध शान्त न हो[१] २१ तब लों अर्थात् पल भर अपने को छिपा रक्खो। क्योंकि देखो यहोवा पृथिवी के निवासियों को अधर्म्म का दण्ड देने के लिये अपने स्थान से चला आता है और पृथिवी अपना खून उघारेगी और घात किये हुओं को फिर न छिपा रक्खेगी ॥

२७. उस समय यहोवा अपनी कड़ी और बड़ी और पोढ़ तलवार से लिव्यातान नाम वेग चलनेहारे सर्प और लिव्यातान नाम टेढ़े सर्प दोनों को दण्ड देगा और जो अजगर समुद्र में रहता है उस को भी घात करेगा ॥

२ उस समय एक दाख की बारी होगी तुम उस का यश ३ गाओ। मैं यहोवा उस की रक्षा करता हूं मैं क्षण क्षण उस को सींचता रहूंगा मैं रात दिन उस की रक्षा करता ४ रहूंगा न हो कि कोई उस की हानि करने पाए। मेरे मन में जलजलाहट नहीं होती यदि कोई भांति भांति के कटीले पेड़ मुझ से लड़ने को खड़े करता तो मैं उन पर पांव बढ़ाकर उन को पूरी रीति से भस्म कर देता, ५ वा वह मेरे साथ मेल करने को मेरी शरण ले वह मेरे ६ साथ मेल कर ले। आनेहारे काल में याकूब जड़ पकड़ेगा और इस्राएल फूले फलेगा और उस के फलों से जगत भर जाएगा ॥

७ क्या उस ने उस को ऐसा मारा जैसा उस ने उस के मारनेहारों को मारा था क्या वह ऐसा घात किया गया ८ जैसे उस के घात किये हुए घात किये गये हैं। जब तू उस को निकाल देता है तब सोच सोचकर और विचार विचार कर उस को दुःख देता है[२] उस ने पुरवाई बहने के दिन ९ में उस को प्रचण्ड वायु से अलग कर दिया। सो इस से याकूब के अधर्म्म का प्रायश्चित्त किया जाएगा और उस के पाप के दूर होने का फल यही होगा कि वे वेदी के सब पत्थरों को चूना बनाने के पत्थरों के समान जानकर चकनाचूर करेंगे और अशेरा नाम मूर्त्तियां और सूर्य्य १० की प्रतिमाएं फिर न खड़ी की जाएंगी। गढ़वाला नगर निर्जन हुआ है वह छोड़ी हुई बस्ती हुआ है और त्यागे हुए जंगल के समान हो गया है वहां बछड़े चरेंगे और वहीं बैठेंगे और वहीं पेड़ों की डालियों की फुनगी को खा लेंगे। ११ जब उन की शाखाएं सूख जाएं तब तोड़ी जाएंगी स्त्रियां आ उन को तोड़कर जला देंगी क्योंकि ये लोग निर्बुद्धि हैं इसलिये उन का कर्त्ता उन पर दया न करेगा और उन का रचनेहारा उन पर अनुग्रह न करेगा ॥

१२ उस समय यहोवा महानद से ले मिस्र के नाले लों अपने अन्न को झाड़ देगा और हे इस्राएलियो तुम एक एक करके बटोरे जाओगे ॥

१३ उस समय बड़ा नरसिंगा फूका जाएगा और अश्शूर देश में के नाश होनेहारे और मिस्र देश में के बरबस बसाये हुए यरूशलेम में आ आकर पवित्र पर्वत पर यहोवा को दण्डवत् करेंगे ॥

२८. हाय एप्रैम के मतवालों के घमण्ड के मुकुट पर हाय उन के सुन्दर भूषणरूपी मुर्झानेहारे फूल पर जो दाखमधु के पियक्कड़ों की अति उपजाऊ तराई के सिरे पर है। २ सुनो प्रभु के एक बलवन्त और सामर्थी है जो ओले की वर्षा वा रोग उपजानेहारी आंधी वा उमंडनेहारी प्रचण्ड धारा की नाईं बल से उस को भूमि पर गिरा देगा। ३ एप्रैमी मतवालों के घमण्ड का मुकुट पांव से लताड़ा जाएगा। ४ और उन का सुन्दर भूषणरूपी मुर्झानेहारा फूल जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर है सो उस अंजीर के समान होगा जो धूपकाल से पहिले पके और देखनेहारा देखते समय हाथ में लेते ही उसे निगल जाए। ५ उस समय अपनी प्रजा के बचे हुओं के लिये सेनाओं का यहोवा आप ही सुन्दर मुकुट और शोभायमान किरीट ठहरेगा। ६ और जो न्याय करने को बैठते हैं उन के लिये न्याय करानेहारा आत्मा और जो चढ़ाई करते हुए शत्रुओं को[३] नगर के फाटक से हटा देते हैं उन के लिये वह वीरता ठहरेगा ॥

७ पर ये भी दाखमधु के कारण डगमगाते और मदिरा के द्वारा लड़खड़ाते हैं याजक और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते हैं दाखमधु ने उन्हीं को पी लिया वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते हैं वे दर्शन पाते हुए डगमगाते और विचार करते हुए लटपटाते हैं। ८ और सब मेजें वमन और मैल से भरी हैं उन पर कुछ स्थान नहीं रहा। ९ वह किस को ज्ञान सिखाएगा और किस को अपने समाचार का अर्थ समझाएगा क्या उन को जो दूध छुड़ाये हुए और स्तन से अलगाये हुए हैं। १० आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा नियम पर नियम नियम पर

(१) मूल में निकल न जाए।
(२) मूल में उस के साथ झगड़ा किया।
(३) मूल में लड़ाई को।

११ नियम कहीं थोड़ा कहीं थोड़ा ऐसा होता है[१]। वह तो इन लोगों से अशुद्ध बोली और दूसरी भाषा के द्वारा बात
१२ करेगा। उस ने उन से कहा तो था विश्राम इसी से मिलेगा इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो और चैन
१३ इसी से मिलेगा पर उन्हों ने सुनना न चाहा। पर यहोवा का वचन उन के पास आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा नियम पर नियम नियम पर नियम कहीं थोड़ा कहीं थोड़ा इस रीति पर पहुंचेगा जिस से वे ठोकर खा चित्त गिरकर घायल हो जाएं और फंदे में फंसकर पकड़े जाएं ॥

१४ इस कारण हे ठट्ठा करनेहारो जो इस यरूशलेम-
१५ वासी प्रजा के हाकिम हो यहोवा का वचन सुनो। तुम ने तो कहा है कि हम ने मृत्यु से वाचा बांधी और अधोलोक से प्रतिज्ञा कराई है इस कारण विपत्ति जब बाढ़ की नाई बढ़ आए तब हमारे पास न आएगी क्योंकि हम ने झूठ की शरण ली और मिथ्या की आड़ में छिपे
१६ हुए हैं। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं ने सिय्योन में नेव का एक पत्थर रक्खा है सो परखा हुआ पत्थर और कोने का अनमोल और अति दृढ़ और नेव के योग्य पत्थर है और जो विश्वास रक्खे उसे
१७ उतावली करनी न पड़ेगी। और मैं न्याय को डोरी और धर्म्म को साहुल ठहराऊंगा और तुम्हारा झूठरूपी शरणस्थान ओलों से बह जाएगा और तुम्हारे छिपने का स्थान
१८ जल से डूबेगा। और जो वाचा तुम ने मृत्यु से बांधी सो टूट जाएगी और जो प्रतिज्ञा तुम ने अधोलोक से कराई सो न ठहरेगी जब विपत्ति बाढ़ की नाई बढ़ आए तब
१९ तुम उस में डूब[२] ही जाओगे। जब जब वह बढ़ आए तब तब वह तुम को ले जाएगा वह तो भोर भोर बरन रात दिन बढ़ा करेगी तब इस समाचार का
२० समझना व्याकुल होने ही का कारण होगा। बिछौना तो टांग फैलाने के लिये छोटा और ओढ़ना ओढ़ने के लिये तंग है ॥

२१ क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम नाम पर्वत पर खड़ा हुआ था और जैसा गिबोन की तराई में उसने क्रोध दिखाया था वैसा ही वह अब क्रोध दिखाएगा जिस से वह अपना ऐसा काम करे जो बिराना
२२ है और वह कार्य्य करे जो अनोखा है। सो अब ठट्ठा मत मारो नहीं तो तुम्हारे बंधन कसे जाएंगे क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा प्रभु से यह सुना है कि सारे देश का सत्यानाश ठाना गया है ॥

२३ कान लगाकर मेरी सुनो ध्यान धरकर मेरा वचन
२४ सुनो। क्या हल जोतनेहारा बीज बोने के लिये लगातार जोतता रहता है क्या वह सदा धरती को चीरता
२५ और हेंगाता रहता है। क्या वह उस को चौरस करके सौंफ को नहीं छितराता और जीरे को नहीं बखेरता और गेहूं को पांति पांति करके और जव को उस के निज स्थान पर और कठिये गेहूं को खेत की छोर पर नहीं बोता।
२६ क्योंकि उस का परमेश्वर उस को ठीक ठीक करना
२७ सिखाता और बतलाता है। दांवने की गाड़ी से तो सौंफ दाई नहीं जाती और गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर चलाया नहीं जाता पर सौंफ छड़ी से और जीरा
२८ सोंटे से झाड़ा जाता है। न्या रोटी का अन्न चूर चूर किया जाता है सो नहीं कोई उस को सदा दांवता नहीं रहता और न गाड़ी के पहिये और न घोड़े उस
२९ पर चलाता है वह उसे चूर चूर नहीं करता। यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से होता है वह अद्भुत युक्ति और महाबुद्धि दिखाता है ॥

२९. हाय अरीएल पर हाय अरीएल पर उस नगर पर जिस में दाऊद छावनी किये हुए रहा बरस पर बरस जोड़ते जाओ उत्सव के
२ पर्व्व अपने अपने समय आते रहें। मैं तो अरीएल को सकेती में डालूंगा और रोना पीटना होगा और वह
३ मेरे लेखे सचमुच अरीएल[३] सा ठहरेगा। और मैं चारों ओर तेरे विरुद्ध छावनी करके तुझे कोठों से घेर
४ लूंगा और तेरे विरुद्ध गढ़ भी बनाऊंगा। तब तू गिराकर भूमि में धसाया जाएगा और धूल पर से बोलेगा और तेरी बातें भूमि से धीमी धीमी सुनाई देंगी और तेरा बोल भूमि से ओझे का सा होगा और तू धूल से
५ गुनगुना गुनगुनाकर बोलेगा। तब तेरे परदेशी बैरियों की भीड़ सूक्ष्म धूलि की नाई और उन भयानक लोगों की भीड़ भूसे की नाई उड़ाई जाएगी और यह बात
६ अचानक पल भर में होगी। सेनाओं का यहोवा बादल गरजाता और भूमि को कम्पाता और महाध्वनि करता और बवण्डर और आंधी चलाता और नाश करनेहारी
७ अग्नि भड़काता हुआ उस के पास आएगा। और जातियों की सारी भीड़ भाड़ जो अरीएल से युद्ध करेगी और जितने लोग उस के और उस के गढ़ के विरुद्ध लड़ेंगे और उस को सकेती में डालेंगे सो सब
८ रात के देखे हुए स्वप्न के समान ठहरेंगे। और जैसा कोई भूखा स्वप्न में तो देखे कि मैं खा रहा हूं पर

(१) मूल में वहां थोड़ा वहां थोड़ा।
(२) मूल में लताड़े।
(३) अर्थात् ईश्वर का अग्निकुण्ड वा ईश्वर का सिंह।

जागकर क्या देखे कि मेरा पेट अलता[1] है वा कोई प्यासा स्वप्न में तो देखे कि मैं पी रहा हूं पर जागकर क्या देखे कि मेरा गला सूखा जाता[2] और मैं प्यासों मरता हूं[3] वैसी ही उन सब जातियों की भीड़भाड़ की दशा होगी जो सिय्योन पर्वत से युद्ध करेंगी ॥

९ विलम्ब करो और चकित हो जाओ अपने तईं अन्धे करो और अन्धे हो जाओ वे मतवाले तो हैं पर दाखमधु पीने से नहीं वे डगमगाते तो हैं पर मदिरा पीने

१० से नहीं। यहोवा ने तुम को भारी नींद में डाल दिया[4] और उस ने तुम्हारी नबीरूपी आंखों को बन्द कर दिया

११ और तुम्हारे दर्शीरूपी सिरों पर पर्दा डाला है। सो सारा दर्शन तुम्हारे लिये एक लपेटी और छाप की हुई पुस्तक की बातों के समान ठहरा जिसे कोई पढ़े लिखे हुए मनुष्य को यह कहकर दे कि इसे पढ़ और वह कहे कि मैं नहीं पढ़ सकता क्योंकि इस पर छाप की हुई

१२ है, तब वही पुस्तक अनपढ़े को यह कहकर दी जाए कि इसे पढ़ और वह कहे कि मैं तो अनपढ़ा हूं ॥

१३ प्रभु ने कहा है ये लोग जो मुंह की बातों[5] से मेरा आदर करते हुए समीप तो आते पर अपना मन मुझ से दूर रखते हैं और ये जो मेरा भय मानते हैं सो मनुष्यों

१४ की आज्ञा सुन सुनकर मानते हैं,[6] इस कारण सुन मैं इन के साथ अद्भुत काम वरन अति अद्भुत और अचंभे का काम करूंगा तब इन के बुद्धिमानों की बुद्धि नाश होगी और इन के प्रवीणों की प्रवीणता जाती रहेगी[7] ॥

१५ हाय उन पर जो अपनी युक्ति को यहोवा से छिपाने का बड़ा यत्न करते[8] और अपने काम अंधेरे में करके कहते हैं कि हम को कौन देखता और हम को

१६ कौन जानता है। हाय तुम्हारी कैसी उलटी समझ है क्या कुम्हार मिट्टी के तुल्य गिना जाएगा क्या कार्य्य अपने करता के विषय कहेगा कि उस ने मुझे नहीं बनाया वा रची हुई वस्तु अपने रचनेहारे के विषय कहे कि वह कुछ

१७ समझ नहीं रखता। क्या अब बहुत ही थोड़े दिन के बीते पर लबानोन फिर फलदाई बारी न बन जाएगा और

१८ फलदाई बारी जंगल न गिनी जाएगी। और उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनने लगेंगे और अंधे जिन्हें अब

१९ कुछ नहीं सूझता सो देखने लगेंगे[9]। और नम्र लोग यहोवा के कारण अधिक आनन्दित और दरिद्र

२० मनुष्य इस्राएल के पवित्र के कारण मगन होंगे। क्योंकि उपद्रवी फिर न रहेंगे और ठट्ठा करनेहारों का अन्त होगा और जो अनर्थ काम करने के लिये जागते रहते

२१ हैं, और जो मनुष्यों को वचन से पाप में फंसाते हैं और उन के लिये जो सभा[10] में उलहना देते हैं फंदा लगाते और धर्म्मी को व्यर्थ बात के द्वारा बिगाड़ देते

२२ हैं सो सब मिट जाएंगे। इस कारण इब्राहीम का छुड़ानेहारा यहोवा याकूब के घराने के विषय यों कहता है कि याकूब को फिर लजाना न पड़ेगा और न उस का मुख

२३ फिर नीचा[11] होगा। और जब उस के सन्तान मेरा काम देखेंगे जो मैं उन के मध्य में करूंगा तब वे मेरे नाम को पवित्र ठहराएंगे वे याकूब के पवित्र को पवित्र ही ठहराएंगे और इस्राएल के परमेश्वर का अति भय मानेंगे।

२४ उस समय जिन का मन भटक गया सो बुद्धि सीख लेंगे और जो कुड़कुड़ाते हैं सो शिक्षा पाएंगे ॥

३०.

यहोवा की यह वाणी है कि हाय उन बलवा करनेहारे लड़कों पर जो युक्ति करते तो हैं पर मेरी ओर से नहीं और वाचा बांधते तो हैं पर वह मेरे आत्मा की सिखाई हुई नहीं और इस प्रकार

२ पाप पर पाप बढ़ाते हैं। वे मुझ से बिन पूछे मिस्र को चले जाते हैं कि फिरौन के शरणस्थान से बलवान हों और

३ मिस्र की छाया में शरण लें। फिरौन का शरणस्थान तुम्हारे आशा टूटने का और मिस्र की छाया में शरण लेना

४ तुम्हारी निन्दा का कारण होगा। उस के हाकिम सोअन

५ में तो आये हैं और उस के दूत अब हानेस में पहुंचे हैं। वे सब एक ऐसी जाति के कारण लजाएंगे जिस से उन का कुछ लाभ न होगा और वह सहायता और लाभ के बदले लज्जा और नामधराई का कारण होगी ॥

६ दक्खिन देश के पशुओं के विषय भारी वचन। वे अपनी धन सम्पत्ति को जवान गदहों की पीठ पर और अपने खजानों को ऊंटों के कूबड़ों पर लादे हुए संकट और सकेती के देश में होकर जहां[12] सिंह और सिंहनी नाग और उड़नेहारे तेज विषवाले सर्प रहते हैं उन लोगों के पास जा रहे हैं जिन से उन का लाभ न होगा।

७ क्योंकि मिस्र का सहायता करना व्यर्थ है और अकारथ होगा इस कारण मैं ने उस को बैठा रहनेहारा रहब[13] कहा

८ है। अब जाकर इस को उन के साम्हने पत्थर पर खोद

(१) मूल में शून्य। (२) मूल में कि मैं थका। (३) मूल में मेरा जीव लालसा करता है। (४) मूल में तुम पर भारी नींद का आत्मा उण्डेला। (५) मूल में मुंह और होंठों। (६) मूल में सो मनुष्यों की सिखाई हुई आज्ञा है। (७) मूल में छिप जाएगी। (८) मूल में नीचे जाते हैं। (९) मूल में अन्धों की आंखें तिमिर और अन्धकार से देखेंगी।

(१०) मूल में फाटक। (११) मूल में विवरण। (१२) मूल में जिन से। (१३) अर्थात् अभिमान।

और पुस्तक में लिख कि वह आनेहारे दिनों के लिये
९ सदा सर्व्वदा लों बना रहे। क्योंकि वे बलवा करनेहारे
लोग और झूठ बोलनेहारे लड़के हैं जो यहोवा की
१० शिक्षा को सुनने नहीं चाहते। वे दर्शियों से कहते हैं
कि दर्शी का काम मत करो और नबियों से कहते हैं
कि हमारे लिये ठीक नबूवत मत करो हम से चिकनी
११ चुपड़ी बातें बोलो धोखा देनेहारी नबूवत करो। मार्ग
से मुड़ो पथ से हटो और इस्राएल के पवित्र को हमारे
१२ साम्हने से दूर[१] करो। इस कारण इस्राएल का पवित्र
यों कहता है कि तुम लोग जो मेरे इस वचन को
निकम्मा जानते और अंधेर और कुटिलता पर भरोसा
१३ करके उन्हीं पर टेक लगाते हो। इस कारण यह अधर्म्म
तुम्हारे लिये ऐसा होगा जैसा ऊंची भीत का फूला हुआ
भाग जो फटकर गिरने पर हो और वह अचानक पल भर
१४ में टूटकर गिर पड़े। और वह उस को ऐसा नाश करेगा
जैसा कोई मिट्टी का घड़ा छोड़ बिना ऐसा चकनाचूर करे
कि उस के टुकड़ों में ऐसा भी ठीकरा न रहे जिस से
अंगेठी में से आग ली जाए वा गड़हे में से जल निकाला
१५ जाए। प्रभु यहोवा इस्राएल के पवित्र ने यों कहा था
कि लौटने और शान्त रहने से तुम्हारा उद्धार होगा चुप
चाप रहने और भरोसा रखने से तुम्हारी वीरता ठहरेगी
१६ पर तुम ने ऐसा करना नहीं चाहा। तुम ने कहा कि
नहीं हम घोड़ों पर भागेंगे इस कारण तुम्हें भागना
पड़ेगा और यह भी कहा हम तेज सवारी पर चलेंगे इस
१७ कारण तुम्हारा पीछा करनेहारे तेज चलेंगे। एक हजार
एक ही की धमकी से भागेंगे तुम पांच ही की धमकी से
भागोगे और अन्त को तुम पहाड़ की चोटी पर के डण्डे
वा टीले के ऊपर की ध्वजा के समान बिरले रह जाओगे॥

१८ और यहोवा इसलिये बिलम्ब करेगा कि तुम पर
अनुग्रह करे और इसलिये ऊंचे पर चढ़ेगा कि तुम पर
दया करे क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है सो क्या ही
१९ धन्य हैं वे सब जो उस पर आशा धरे रहते हैं। प्रजा के
लोग तो यरूशलेम अर्थात् सिय्योन में बसे रहेंगे तू फिर
कभी न रोएगा वह तेरी दोहाई सुनते ही तुझ पर निश्चय
२० अनुग्रह करेगा सुनते ही वह तेरी मानेगा। और चाहे
प्रभु तुम्हारी रोटी की कमी और जल की तंगी करे तौभी
तुम्हारे उपदेशक फिर न छिप जाएंगे और तुम अपनी आंखों
२१ से अपने उपदेशकों को देखते रहोगे। और जब कभी
तुम दाहिनी वा बाईं ओर मुड़ने लगो तब तुम्हारे पीछे
से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा कि मार्ग यही है
२२ इसी पर चलो। और तुम वह चांदी जिस से तुम्हारी
खुदी हुई मूर्त्तियां मढ़ी हैं और वह सोना जिस से तुम्हारी
ढली हुई मूर्त्तियां आभूषित हैं अशुद्ध करोगे तुम
उन को मैले कुचैले वस्त्र की नाईं फेंक देओगे और
२३ कहोगे कि दूर हो। और वह तेरे बीज के लिये जल
बरसाएगा कि तुम खेत में बीज बो सको और भूमि की
उपज भी अच्छी देगा और वह उत्तम और स्वादिष्ट
होगी और उस समय तुम्हारे ढोरों को लम्बी चौड़ी चराई
२४ मिलेगी। बैल और गदहे जो तुम्हारी खेती के काम में
आएंगे सो सूप और डलिया से उसाया हुआ स्वादिष्ट
२५ चारा खाएंगे। और उस महासंहार के समय जब गुम्मट
गिर पड़ेंगे सब ऊंचे ऊंचे पहाड़ों और पहाड़ियों पर
२६ नालियां और सोते पाये जाएंगे। उस समय जब यहोवा
अपनी प्रजा के लोगों का घाव बांधेगा और उन की चोट
चंगी करेगा तब चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य्य का सा हो
जाएगा और सूर्य्य का प्रकाश सातगुना होगा अर्थात्
अठवारे भर का प्रकाश एक दिन में होगा॥

२७ देखो यहोवा का नाम भड़के हुये कोप और घने धूएं
के साथ दूर से आता है उस के होंठ क्रोध से भरे हुए
और उस की जीभ भस्म करनेहारी आग के समान है।
२८ और उस की सांस ऐसी उमण्डनेहारी नदी के समान है
जो गले तक पहुंचती है वह सब जातियों को नाश के सूप
से फटकेगा और देश देश के लोगों को भटकाने के लिये
२९ उन के मुंह[२] में लगाम लगाया जाएगा। तुम पवित्र
पर्व्व की रात का सा गीत गाओगे, और जैसे लोग
यहोवा के पर्व्वत की ओर उसी से मिलने को जो
इस्राएल की चटान ठहरा है बांसुली बजाते हुए जाते हैं
३० वैसे ही तुम्हारे मन में भी आनन्द होगा। पर यहोवा
अपनी प्रतापवाली वाणी सुनाएगा और अपना कोप
भड़काता और आग की लौ से भस्म करता हुआ और
प्रचण्ड आंधी और अति वर्षा और ओले गिरने के साथ
३१ अपना भुजबल[३] दिखाएगा। और अश्शूर यहोवा के
शब्द की शक्ति से हार जाएगा वह उसे सोंटे से मारेगा।
३२ और जब जब यहोवा उस को मनठाना दण्ड देगा[४]
तब तब साथ ही डफ और वीणा बजेंगी और वह हाथ
३३ बढ़ा बढ़ाकर उस को लगातार मारता रहेगा। और बहुत
काल से फूकने का स्थान तैयार किया गया है वह राजा
ही के लिये ठहराया गया है वह लम्बा चौड़ा और
गहिरा भी बनाया गया है वहां की चिता में आग और
बहुत सी लकड़ी हैं यहोवा की सांस जलती हुई गन्धक
की धारा की नाईं उस को सुलगाएगी॥

(१) मूल में बन्द।

(२) मूल में जबड़ों। (३) मूल में अपनी भुजा का उतरना।
(४) मूल में उस पर नेववाला दण्ड रखेगा।

३१. हाय उन पर जो मिस्र को सहायता पाने के लिये जाते हैं और घोड़ों का आसरा करते हैं और रथों पर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं और सवारों पर क्योंकि वे अति बलवान् हैं पर इस्राएल के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं २ करते और न यहोवा की खोज में लगते हैं। वह भी बुद्धिमान् है और दुःख देगा और अपने वचन न टालेगा वह उठकर कुकर्म्मियों के घराने पर और अनर्थकारियों के सहायकों पर भी चढ़ाई करेगा। ३ मिस्री लोग तो ईश्वर नहीं मनुष्य ही हैं और उन के घोड़े आत्मा नहीं शरीर ही हैं और जब यहोवा हाथ बढ़ाएगा तब सहायता करनेहारे और सहायता चाहनेहारे दोनों ठोकर खाकर गिरेंगे और वे सब के सब ४ एक संग बिलाय जाएंगे। फिर यहोवा ने मुझ से यों कहा है कि जिस प्रकार सिंह वा जवान सिंह अपने अहेर पर गुर्राता हो और चाहे चरवाहे इकट्ठे होकर उस के विरुद्ध बड़ी भीड़ लगाएं तौभी वह उन के बोल से न घबराएगा न उन के कोलाहल के कारण दबेगा उसी प्रकार सेनाओं का यहोवा सिय्योन पर्वत और यरूशलेम ५ की पहाड़ी पर युद्ध करने को उतरेगा। पंख फैलाई हुई चिड़ियाओं की नाईं सेनाओं का यहोवा यरूशलेम की रक्षा करेगा वह उस की रक्षा करके बचाएगा और ६ उस को बिन छूए ही[1] उद्धार करेगा। हे इस्राएलियो जिस के विरुद्ध तुम ने भारी[2] बलवा किया उसी की ७ ओर फिरो। उस समय तुम लोग सोने चांदी की अपनी अपनी मूर्त्तियों से जिन्हें तुम[3] बनाकर पापी ८ हो गये हो घिन करोगे। तब अश्शूर उस तलवार से गिराया जाएगा जो मनुष्य की नहीं वह उस तलवार का कौर हो जाएगा जो आदमी की नहीं और वह तलवार के साम्हने से भागेगा और उस के जवान ९ बेगार में पकड़े जाएंगे। और उस की ढांग भय के मारे जाती रहेगी और उस के हाकिम ध्वजा के कारण विस्मित होंगे यहोवा जिस की अग्नि सिय्योन में और जिस का भट्ठा यरूशलेम में है उसी की यह वाणी है ॥

३२. सुनो एक राजा धर्म्म से राज्य करेगा और हाकिम न्याय से २ हुकूमत करेंगे। और एक पुरुष मानो वायु से छिपने का स्थान और बौछार से आड़ होगा वह मानो निर्जल देश में जल की नालियां और मानो तप्त भूमि में बड़ी ढांग की छाया होगा। ३ और देखनेहारों की आंखें धुन्धली न होंगी और सुननेहारों के कान लगे रहेंगे। ४ और उतावलों के मन ज्ञान की बातें समझेंगे और तुतलानेहारों की जीभ फुर्ती से साफ़ बोलेगी। ५ मूढ़ फिर उदार न कहाएगा और न ठग प्रतिष्ठित कहा जाएगा। ६ क्योंकि मूढ़ तो मूढ़ता ही की बातें बोलता और मन में अनर्थ ही की बातें गढ़ता रहता है कि वह बिन भक्ति के काम करे और यहोवा के विरुद्ध झूठ कहे और भूखे को भूखा ही रहने दे और प्यासे का जल रोक रक्खे। ७ ठग के उपाय बुरे होते हैं वह दुष्ट युक्तियां करता है कि जब दरिद्र लोग ठीक बोलते हों तब भी नम्रों को उस की झूठी बातों में फंसाए। ८ पर उदार तो उदारता ही की युक्तियां निकालता है वह तो उदारता के कारण स्थिर रहेगा ॥

९ हे सुखी स्त्रियो उठकर मेरी सुनो हे निश्चिन्त स्त्रियो मेरे वचन की ओर कान लगाओ। १० हे निश्चिन्त स्त्रियो बरस दिन से अधिक तुम विकल रहोगी क्योंकि तोड़ने को दाख न होगी और न किसी भांति के फल हाथ लगेंगे। ११ हे सुखी स्त्रियो थरथराओ हे निश्चिन्त स्त्रियो विकल हो अपने अपने वस्त्र उतारकर अपनी अपनी कमर में टाट कसो। १२ लोग मनभाऊ खेतों और फलवन्त दाखलताओं के लिये छाती पीटेंगे। १३ मेरे लोगों के बरन हुलसनेहारे नगर के सब हर्ष भरे घरों में भी भांति भांति के कटीले पेड़ उगेंगे। १४ क्योंकि राजभवन त्यागा जाएगा कोलाहल से भरा नगर सुनसान हो जाएगा और पहाड़ी और पहरुओं का घर सदा के लिये मांदे और बनैले गदहों का विहारस्थान और घरैले पशुओं की चराई तब लों बना रहेगा, १५ जब लों आत्मा ऊपर से हम पर उण्डेला न जाए और जंगल फलदायक बारी न बने और फलदायक बारी वन न गिनी जाए। १६ तब उस जङ्गल में न्याय बसेगा और उस फलदायक बारी में धर्म्म रहेगा। १७ और धर्म्म का फल शान्ति और उस का परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा। १८ और मेरे लोग शान्ति से निश्चिन्त रहने के स्थानों में १९ और सुख और विश्राम के स्थानों में रहेंगे। पर ओले गिरेंगे और वन के वृक्ष नाश होंगे और नगर पूरी रीति से चौपट हो जाएगा। २० क्या ही धन्य हो तुम लोग जो सब जलाशयों के पास बीज बोते और बैलों और गदहों को चलाते[4] हो ॥

(१) मूल में और लांघकर।　(२) मूल में गहिरा करके।
(३) मूल में जिन्हें तुम्हारे हाथ।
(४) मूल में गदहों के पैर भेजते।

३३. हाय तुझ लुटेरे पर जो लूटा नहीं गया हाय तुझ विश्वासघाती पर जिस के साथ विश्वासघात नहीं किया गया जब तू लूट चुके तब तू लूटा जाएगा और जब तू विश्वासघात कर चुके तब तेरे साथ विश्वासघात किया जाएगा । २ हे यहोवा हम लोगों पर अनुग्रह कर क्योंकि हम तेरी ही बाट जोहते आये हैं तू भोर भोर को उन का भुजबल और संकट के समय हमारा उद्धारकर्त्ता ठहर । ३ हुल्लड़ सुनते ही देश देश के लोग भाग गये तेरे उठने पर अन्यजातियां तित्तर बित्तर हुई । ४ और जैसे टिड्डियां चट करती हैं वैसे ही तुम्हारी लूट चट की जाएगी और जैसे टिड्डियां टूट पड़ती हैं वैसे ही वे उस पर टूट पड़ेंगे । ५ यहोवा महान् हुआ है वह ऊंचे पर रहता है उस ने सिय्योन को न्याय और धर्म्म से परिपूर्ण किया है । ६ और उद्धार और बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत तेरे दिनों का आधार होगी और यहोवा का भय उस का धन होगा ॥

७ सुनो उन के शूरवीर बाहर चिल्ला रहे हैं संधि के दूत बिलक बिलक रो रहे हैं । ८ राजमार्ग सुनसान पड़े हैं अब उन पर बटोही नहीं चलते उस ने वाचा को टाल दिया उस ने नगरों को तुच्छ जाना उस ने मनुष्य को कुछ न समझा । ९ पृथिवी विलाप करती और मुर्झा गई है लबानोन कुम्हला गया और उस पर सियाही छा गई है शारोन मरुभूमि के समान हो गया और बाशान और कर्म्मेल में पतझड़ हो रहा है । १० यहोवा कह रहा है कि अब मैं उठूंगा अब मैं अपना प्रताप दिखाऊंगा[१] अब मैं महान् ठहरूंगा । ११ तुम्हें सूखी घास का पेट रहेगा तुम भूसी जनोगे तुम्हारी सांस आग है जो तुम्हें भस्म करेगी । १२ देश देश के लोग फुंके हुए चूने के समान हो जाएंगे और कटे हुए कटीले पेड़ों की नाईं आग में जलाए जाएंगे ॥

१३ हे दूर दूर के लोगो सुनो कि मैं ने क्या किया है और तुम भी जो निकट हो मेरा पराक्रम जान लो । १४ सिय्योन में के पापी थरथरा गये भक्तिहीनों को कंपकपी लगी है हम में से कौन प्रचण्ड आग के साथ रह सकता हम में से कौन उस आग के साथ रह सकता जो कभी न बुझेगी । १५ जो धर्म्म से चलता और सीधी बातें बोलता और अंधेर के लाभ से घिन रखता और घूस नहीं लेता[२] और खून की बात सुनने से कान बन्द करता और बुराई देखने से आंख मूंद लेता है, १६ वही ऊंचे स्थानों में बास करेगा वह ढांगों में के गढ़ों में शरण लिये हुए रहेगा उस को रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी[३] । १७ तू अपनी आंखों से राजा को उस की सुन्दरता में निहारेगा और लम्बे चौड़े देश को देखेगा । १८ तू भय के दिनों को स्मरण करेगा कर का गिननेहारा और तौलनेहारा कहां रहा गुम्मटों का गिननेहारा कहां रहा । १९ तू उन निर्दय लोगों को न देखेगा जिन की कठिन भाषा[४] तू नहीं समझता और जिन की लड़बड़ाती जीभ की तू नहीं बूझता । २० हमारे पर्ब्ब के नगर सिय्योन पर दृष्टि कर तू अपनी आंखों से यरूशलेम को देखेगा कि वह विश्राम का स्थान और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया न जाएगा और जिस का कोई खूंटा कभी उखाड़ा न जाएगा और कोई रस्सी कभी न टूटेगी । २१ और वहां महाप्रतापी यहोवा हमारी ओर रहेगा सो बहुत बड़ी बड़ी नदियों और नहरों का स्थान होगा जिस में डांड़वाली नाव न चलेगी और न शोभायमान जहाज उस के पास होकर जाएगा । २२ क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी यहोवा हमारा हाकिम यहोवा हमारा राजा है वही हमारा उद्धार करेगा । २३ तेरी रस्सियां ढीली हुई वे मस्तूल की जड़ को दृढ़ न कर सके और न पाल को चढ़ा सके तब बड़ी लूट छीनकर बांटी गई लंगड़े लोग भी लूट के भागी हुए । २४ और कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूं और जो लोग इस में रहेंगे उन का अधर्म्म क्षमा किया जाएगा ॥

३४. हे जाति जाति के लोगो सुनने को निकट आओ और हे राज्य राज्य के लोगो ध्यान से सुनो पृथिवी और जो कुछ उस में है जगत और जो कुछ उस में उत्पन्न होता है सो सुनो । २ यहोवा सब जातियों पर कोप कर रहा है और उन की सारी सेना पर उस की जलजलाहट भड़की हुई है उस ने उन को सत्यानाश किया और संहार होने को छोड़ दिया है । ३ उन में के मारे हुए फेंक दिये जाएंगे और उन की लोथों की दुर्गंध उठेगी और उन के लोहू से पहाड़ गल जाएंगे । ४ और आकाश में का सारा गण जाता रहेगा और आकाश कागज की नाईं लपेटा जाएगा और जैसे दाखलता वा अंजीर के वृक्ष के पत्ते मुर्झा मुर्झाकर जाते रहते हैं वैसे ही उस का सारा गण धुंधला होकर जाता रहेगा । ५ क्योंकि मेरी तलवार आकाश में पीकर तृप्त हुई देखो वह न्याय करने को एदोम पर और उन पर पड़ेगी जिन पर मेरा स्राप है । ६ यहोवा की तलवार लोहू से भर गई वह चर्बी से और भेड़ों के बच्चों और बकरों के लोहू से और मेढ़ों के गुर्दों की चर्बी से

(१) मूल में अपने को ऊंचा करूंगा । (२) मूल में घूस थाम्हने से अपने हाथ झटक देता ।

(३) मूल में उसका पानी अटल है ।
(४) मूल में गहिरे होंठवाले लोग ।

लूत हुई है क्योंकि बोस्रा नगर में यहोवा का एक यज्ञ
७ और एदोम देश में बड़ा संहार है। और उन के संग बनैले और बनैले बैल और सांड़ गिर जाएंगे और उन की भूमि लोहू से छक जाएगी और वहां की मिट्टी चर्बी
८ से अघाएगी। क्योंकि पलटा लेने का यहोवा का एक दिन और सिय्योन का मुकद्दमा चुकाने के लिये बदला
९ देने को एक बरस ठहराया हुआ है। और एदोम की नदियां राल से और उस की मिट्टी गन्धक से बदल जाएगी और उस की भूमि जलती हुई राल बन जाएगी।
१० वह रात दिन न बुझेगी उस का धूआं सदा लों उठता रहेगा वह युगयुग उजाड़ पड़ा रहेगा सदा लों कोई उस
११ में से होकर न चलेगा। उस में धनेशपक्षी और साही पाये जाएंगे और उल्लू और कौवे का बसेरा होगा और वह उस पर गड़बड़ की डोरी और सुनसानी का साहुल[१]
१२ तानेगा। वहां न तो रईस होंगे और न ऐसा कोई होगा जो राज्य करने को ठहराया[२] जाए और उस के सारे
१३ हाकिमों का अन्त होगा। और उस के महलों में कटीले पेड़ और गढ़ों में बिच्छू पौधे और झाड़ उगेंगे और वह गीदड़ों का वासस्थान और शुतर्मुर्गों का आंगन हो
१४ जाएगा। वहां निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिलकर बसेंगे और रोंआर जन्तु एक दूसरे को बुलाएंगे और वहां लीलीत नाम जन्तु वासस्थान पाकर चैन से
१५ रहेगा। वहां सांपिन बाम्बी चुन अण्डे देकर उन्हें सेवेगी और अपने नीचे[३] बटोर लेगी और वहां गिद्धिनें अपनी
१६ अपनी साथिन के साथ इकट्ठी रहेंगी। यहोवा की पुस्तक से ढूंढकर पढ़ो इन में से एक भी बिन आये न रहेगी और न बिना साथिन होगी क्योंकि मैं ने अपने मुंह में यह आज्ञा दी और उसी के आत्मा ने उन्हें इकट्ठा
१७ किया है। और उसी ने उन के लिये चिट्ठी डाली और उसी ने अपने हाथ से डोरी डालकर उस देश को उन के लिये बांट दिया है और वह सदा लों उन का बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी लों उस में बसे रहेंगे॥

३५. जंगल

जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे और मरुभूमि मगन
२ होकर केसर की नाईं फूलेगी। वह तो अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी उस की शोभा लबानोन की सी होगी और वह कर्मेल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे॥

३ ढीले हाथों को दृढ़ और थरथराते घुटनों को
४ स्थिर करो। घबरानेहारों से कहो कि हियाव बांधो मत डरो देखो तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने को वरन परमेश्वर के योग्य बदला लेने को आएगा वही आकर
५ तुम्हारा उद्धार करेगा। तब अन्धों की आंखें खोली
६ जाएंगी और बहिरों के कान भी खोले जाएंगे। तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़ियां भरेगा और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे और जंगल में जल के सोते
७ फूट निकलेंगे और मरुभूमि में नदियां बहने लगेंगी। और मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे और जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं उस में
८ घास और नरकट और सरकंडे होंगे। और वहां एक सड़क अर्थात् मार्ग होगा और उस का नाम पवित्र मार्ग होगा कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे
९ सो चाहे मूर्ख भी हों तौभी भटक न जाएंगे। वहां सिंह न होगा और कोई हिंसक जन्तु चढ़ने न पाएगा ऐसे वहां मिलेंगे नहीं पर छुड़ाये हुए लोग उस में चलेंगे।
१० और यहोवा के छुड़ाये हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे और उन के सिर पर सदा का आनन्द होगा वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा॥

३६. हिजकिय्याह

हिजकिय्याह राजा के चौदहवें बरस में अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई
२ करके उन को ले लिया। और अश्शूर के राजा ने रबशाके को बड़ी सेना देकर लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया और वह उपरले पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की
३ सड़क पर जाकर खड़ा हुआ। तब हिजकिय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मंत्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेहारा था ये तीनों उस से मिलने को बाहर
४ निकल गये। रबशाके ने उन से कहा हिजकिय्याह से कहो कि महाराजाधिराज अश्शूर का राजा यों कहता
५ है कि तू यह क्या भरोसा करता है। मेरा कहना यह है कि युद्ध के लिये पराक्रम और युक्ति केवल बात ही बात है अब तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से
६ बलवा किया है। सुन तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है उस पर यदि कोई टेक

(१) मूल में पत्थर। (२) मूल में बुलाया।
(३) मूल में अपनी छाया में।

सहाय तो वह उस के हाथ में चुभकर छेदेगा । मिस्र का राजा फ़िरौन अपने सब भरोसा रखनेहारों के लिये ७ ऐसा ही होता है । फिर यदि तू मुझ से कहे कि हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है तो क्या वह वही नहीं है कि जिस के ऊंचे स्थानों और वेदियों को दूर करके यहूदा और यरूशलेम के लोगों से कहा ८ कि तुम इसी वेदी के साम्हने दण्डवत् करना । सो अब मेरे स्वामी अश्शूर के राजा के पास कुछ बन्धक रख तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूंगा क्या तू उन पर सवार ९ चढ़ा सकेगा कि नहीं । फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्म्मचारी का भी कहा नकारकर[1] क्योंकर रथों १० और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखता है । क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे इस देश को उजाड़ने के लिये चढ़ाई की है यहोवा ने मुझ से कहा है कि उस देश ११ पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे । तब एल्याकीम और शेब्ना और योआह ने रबशाके से कहा अपने दासों से अरामी भाषा में बातें कर क्योंकि हम उसे समझते हैं और हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के १२ सुनते बातें न कर । रबशाके ने कहा क्या मेरे स्वामी ने मुझे तेरे स्वामी ही के वा तेरे ही पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं इसलिये कि तुम्हारे संग उन को भी अपनी विष्ठा खाना और अपना मूत्र पीना पड़े । १३ तब रबशाके ने खड़ा हो यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा महाराजाधिराज अश्शूर के राजा की बात सुनो । १४ राजा यों कहता है कि हिजकिय्याह तुम को भुलाने न पाए १५ क्योंकि वह तुम्हें बचा न सकेगा । और हिजकिय्याह तुम से यह कहकर यहोवा पर भी भरोसा कराने न पाए कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर १६ के राजा के वश में न पड़ेगा । हिजकिय्याह की मत सुनो अश्शूर का राजा कहता है कि भेंट भेज कर मुझे प्रसन्न करो[2] और मेरे पास निकल आओ तब अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खाओ और अपने १७ अपने कुण्ड का पानी पीओ । पीछे मैं आकर तुम को ऐसे देश में ले जाऊंगा जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाखमधु का देश रोटी और दाखबारियों का १८ देश है । ऐसा न हो कि हिजकिय्याह यह कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हम को बचाएगा क्या और जातियों के देवताओं ने अपने अपने देश को अश्शूर के १९ राजा के हाथ से बचाया है । हमात और अर्पाद के देवता कहां रहे सपर्वैम के देवता कहां रहे क्या उन्हों ने शोमरोन को मेरे हाथ से बचाया । देश देश के सब २० देवताओं में से ऐसा कौन है जिस ने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो फिर क्या यहोवा यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा । पर वे चुप रहे और उस के २१ उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उस को उत्तर न देना । तब हिल्किय्याह का २२ पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना जो मंत्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेहारा था इन्हों ने हिजकिय्याह के पास वस्त्र फाड़े हुए जाकर रबशाके की बातें कह सुनाईं ॥

३७ जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना तब वह अपने वस्त्र फाड़ टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया । और उस ने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर था और शेब्ना २ मंत्री को और याजकों के पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेज दिया । उन्हों ने उस से कहा हिजकिय्याह यों कहता है ३ कि आज का दिन संकट और उलहने और निन्दा का दिन है बच्चे जन्मने पर हुए पर जननी को जनने का बल न रहा । क्या जानिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा ४ रबशाके की बातें सुने जिसे उस के स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उन्हें दपटे सो तू इन बचे हुओं के लिये जो रह गये हैं प्रार्थना करे[1] । सो हिजकिय्याह राजा के कर्म्मचारी यशायाह के ५ पास आये । तब यशायाह ने उन से कहा अपने स्वामी ६ से कहो कि यहोवा यों कहता है कि जो वचन तू ने सुने हैं जिन के द्वारा अश्शूर के राजा के जनों ने मेरी निन्दा की है उन के कारण मत डर । सुन मैं उस के ७ मन में प्रेरणा करूंगा कि वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए और मैं उस को उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा ॥

सो रबशाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना ८ नगर से युद्ध करते पाया क्योंकि उस ने सुना था कि वह लाकीश के पास से उठ गया है । और उस ने ९ कूश के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना कि वह मुझ से लड़ने को निकला है तब उस ने हिजकिय्याह के पास दूतों को यह कहकर भेजा कि, तुम यहूदा के राजा हिज- १० किय्याह से यों कहना कि तेरा परमेश्वर जिस का तू

(१) मूल में कर्म्मचारियों में से एक अधिपति का भी मुंह फेरके ।
(२) मूल में मेरे साथ आशीर्वाद करो ।

(१) मूल में प्रार्थना उठा ।

भरोसा करता है यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए कि
११ यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा। देख
तू ने तो सुना है कि अश्शूर के राजाओं ने सब देशों से[1]
कैसा किया है कि उन्हें सत्यानाश ही किया है फिर
१२ क्या तू बचेगा। गोज़ान और हारान और रेसेप और
तलस्सार में रहनेहारे एदेनी जिन जातियों को मेरे
पुरखाओं ने नाश किया क्या उन में से किसी जाति के
१३ देवताओं ने उस को बचा लिया। हमात का राजा और
अर्पाद के राजा और सपर्वैम नगर का राजा और हेना
१४ और इव्वा के राजा ये सब कहां रहे। सो इस पत्री को
हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा तब यहोवा के
भवन में जाकर पत्री को यहोवा के साम्हने फैला दिया,
१५, १६ और यहोवा से यह प्रार्थना की कि, हे सेनाओं के
यहोवा हे करूबों पर विराजनेहारे इस्राएल के परमेश्वर
पृथिवी के सारे राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है
१७ आकाश और पृथिवी को तू ही ने बनाया है। हे यहोवा
कान लगाकर सुन हे यहोवा आंख खोलकर देख और
सन्हेरीब के सारे वचनों को सुन ले जिस ने जीवते पर-
१८ मेश्वर की निन्दा करने को लिख भेजा है। हे यहोवा सच
तो है कि अश्शूर के राजाओं ने सब जातियों के देशों
१९ को[2] उजाड़ा है, और उन के देवताओं को आग में
झोंका है क्योंकि वे ईश्वर न थे वे मनुष्यों के बनाये
हुए काठ और पत्थर ही के थे इस कारण वे उन को
२० नाश करने पाए। सो अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा
तू हमें उस के हाथ से बचा कि पृथिवी के राज्य राज्य
के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है॥

२१ तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के
पास यह कहला भेजा कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
यों कहता है कि तू ने जो अश्शूर के राजा सन्हेरीब
२२ के विषय मुझ से प्रार्थना की है, सो उस के विषय
में यहोवा ने यह वचन कहा है कि सिय्योन की
कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और ठट्ठों में उड़ाती
२३ है यरूशलेम की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है। तू ने
जो नामधराई और निन्दा की है सो किस की की है
और तू ने बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है[2] सो
किस के विरुद्ध किया है इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध
२४ तू ने किया है। अपने कर्म्मचारियों के द्वारा तू ने प्रभु की
निन्दा करके कहा है कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की
चोटियों पर वरन लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूं सो
मैं उस के ऊंचे ऊंचे देवदारों और अच्छे अच्छे सनौ-
बरों को काट डालूंगा और उस के दूर दूर के ऊंचे
ऊंचे स्थानों में और उस के बन में की फलदाई बारियों
२५ में घुसूंगा। मैं ने तो खुदवा कर पानी पिया और मिस्र
२६ की नहरों में पांव धरते ही उन्हें सुखा डालूंगा। क्या तू
ने नहीं सुना कि प्राचीन काल से मैं ने यही ठहराया
और अगले दिनों से इस की तैयारी की थी सो अब
मैं ने यह पूरा भी किया है कि तू गढ़वाले नगरों को
२७ खंडहर ही खंडहर कर दे। इसी कारण उन में के रहने-
हारों का बल घट गया वे विस्मित और लज्जित हुए
वे मैदान के छोटे छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर
की घास और ऐसे अनाज[3] के समान हो गये जो बढ़ने से
२८ पहिले ही सूख जाता है। मैं तो तेरा बैठा रहना और कूच
करना और लौट आना जानता हूं और यह भी कि तू मुझ
२९ पर अपना क्रोध भड़काता है। इस कारण कि तू मुझ पर
अपना क्रोध भड़काता और अभिमान की बातें मेरे कानों
में पड़ी हैं तेरी नाक में नकेल डालकर और तेरे मुंह में
अपना लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू आया है उसी मार्ग
३० से तुझे लौटा दूंगा। और तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि इस
बरस तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगे और
दूसरे बरस उस से जो उत्पन्न हो सो खाओगे और तीसरे
बरस बीज बोने और उसे लवने पाओगे दाख की
३१ बारियां लगाने और उन का फल खाने पाओगे। और
यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़[4] पकड़ेंगे और
३२ फलेंगे[5] भी। क्योंकि यरूशलेम में से बचे हुए और
सिय्योन पर्वत से भागे हुए लोग निकलेंगे सेनाओं का
३३ यहोवा अपनी जलन के कारण यह काम करेगा[6]। सो
यहोवा अश्शूर के राजा के विषय में यों कहता है कि वह
इस नगर में प्रवेश करने बरन इस पर एक तीर भी मारने
न पाएगा और न वह ढाल लेकर इस के साम्हने आने
३४ वा इस के विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा। जिस मार्ग से
वह आया उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर
में प्रवेश न करने पाएगा यहोवा की यही वाणी है।
३५ और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के
निमित्त इस नगर की रक्षा करके बचाऊंगा॥

३६ सो यहोवा के दूत ने निकल कर अश्शूरियों की छावनी
में एक लाख पचासी हजार पुरुष को मारा और भोर को
जब लोग सबेरे उठे तब क्या देखा कि लोथ ही लोथ पड़ी
३७ हैं। सो अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया और लौटकर
३८ नीनवे में रहने लगा। वहां वह अपने देवता निस्रोक के

(१) मूल में सब देशों और उन की भूमि को।
(२) मूल में अपनी आंखें ऊपर की ओर उठाईं।

(३) मूल में खेत। (४) मूल में नीचे की ओर जड़। (५) मूल में ऊपर को ओर फलेंगे। (६) मूल में सेनाओं के यहोवा की जलन यह करेगी।

मन्दिर में दण्डवत् कर रहा था कि उस के पुत्र अद्रम्मेलेक और शरेसेर ने उस को तलवार से मारा और अरारात देश में भाग गये और उसी का पुत्र एसर्हद्दोन उस के स्थान पर राज्य करने लगा ॥

३८. उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरा चाहता था और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उस के पास आकर कहा यहोवा यों कहता है कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा २ देनी हो सो दे क्योंकि तू न बचेगा मर जाएगा। तब हिजकिय्याह ने भीत की ओर मुंह फेर यहोवा से प्रार्थना करके ३ कहा, हे यहोवा मैं बिनती करता हूं स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सन्मुख जानकर[१] चलता आया हूं जो तुझे अच्छा लगता है सोई मैं करता ४ आया हूं तब हिजकिय्याह बिलक बिलक रोया। तब ५ यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुंचा कि, जाकर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं सुन मैं तेरी आयु पन्द्रह बरस और ६ बढ़ा दूंगा। और अश्शूर के राजा के हाथ से मैं तेरी ७ और इस नगर की रक्षा करके बचाऊंगा। और यहोवा जो अपने इस कहे हुए वचन को पूरा करेगा इस बात ८ का तेरे लिये यहोवा की ओर से यह चिन्ह होगा कि, मैं धूपघड़ी की छाया को जो आहाज की धूपघड़ी में ढल गई है दस अंश पीछे की ओर लौटा दूंगा सो छाया दस अंश जो वह ढल चुकी थी लौट गई ॥

९ यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने जो लेख उस समय लिखा जब वह रोगी होकर चंगा हो गया था सो यह है ॥

१० मैं ने कहा था कि अपनी आयु के बीचों बीच[२] अधोलोक के फाटकों में प्रवेश करूंगा ॥
क्योंकि मेरी शेष आयु हर ली गई है ॥
११ मैं ने कहा था मैं याह को फिर न देखूंगा जीते जी मैं याह को न देखने पाऊंगा
मैं परलोकवासियों का साथी होकर मनुष्यों को फिर न देखूंगा ॥
१२ मेरा घर[३] चरवाहे के तंबू की नाईं उठा लिया गया
मैं ने बुननेहारे की नाईं अपने जीवन को लपेट दिया वह मुझे ताने से काट लेगा
एक दिन में[४] तू मेरा अन्त कर डालेगा ॥
१३ मैं भोर लों अपने मन को शान्त करता रहा
वह सिंह की नाईं मेरी सब हड्डियों को तोड़ता है
एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालेगा ॥
१४ मैं सूपाबेने वा सारस की नाईं च्यूं च्यूं करता
और पिण्डुक की नाईं विलाप करता था मेरी आंखें ऊपर देखते देखते रह गईं
हे यहोवा मुझ पर अन्धेर हो रहा है तू मेरा जामिन हो ॥
१५ मैं क्या कहूं उस ने मुझ से कहा और किया भी है
मैं जीवन भर जीव की कड़ुआहट के साथ दीनता से चलता रहूंगा ॥
१६ हे प्रभु इन्हीं बातों से लोग जीते हैं
और इन सभों से मेरे आत्मा का जीवन होता है
सो तू मुझे चंगा कर के जिलाएगा ॥
१७ देख शान्ति ही के लिये मुझे बड़ी कड़ुआहट मिली
और तू ने स्नेह करके मुझे विनाश के गड़हे से निकाला है
क्योंकि तू ने मेरे सब पापों को अपनी पीठ के पीछे कर[५] दिया था ॥
१८ अधोलोक तो तेरा धन्यवाद नहीं करता न मृत्यु तेरी स्तुति करती है
जो कबर में पड़े हैं सो तेरी सच्चाई की आशा नहीं रखते ॥
१९ जो जीता है सोई तेरा धन्यवाद करता है जैसा मैं आज कर रहा हूं।
पिता पुत्रों को तेरी सच्चाई जताता है ॥
२० यहोवा मेरा उद्धार करने को तैयार हुआ
तो हम जीवन भर यहोवा के भवन में
तारवाले बाजों पर अपने रचे हुए गीत गाते रहेंगे ॥

२१ यशायाह ने तो कहा था अंजीरों की एक पोटिया लेकर हिजकिय्याह के दुष्ट फोड़े पर बांधी जाए तब वह बचेगा। २२ और हिजकिय्याह ने पूछा था कि इस का क्या चिन्ह है कि मैं यहोवा के भवन को फिर जाने पाऊंगा ॥

३९. उस समय बलदान का पुत्र मरोदक बलदान जो बाबेल का राजा था उस ने हिजकिय्याह के रोगी होने और फिर चंगे हो

(१) मूल में तेरे साम्हने। (२) मूल में मौन में। (३) वा मेरी आयु। (४) मूल में दिन से रात लों।
(५) मूल में फेंक। (६) मूल में जीवता जीवता। (७) मूल में मेरे।

जाने की चर्चा सुन कर उस के पास पत्री और भेंट भेजी।
२ इन से हिजकिय्याह ने प्रसन्न होकर उन को अपने अनमोल पदार्थों का भण्डार और चांदी और सोना और सुगंध द्रव्य और उत्तम तेल और अपने हथियारों का सारा घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं सो सब दिखाई हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई हो।
३ तब यशायाह नबी ने हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा वे मनुष्य क्या कह गये और कहां से तेरे पास आये थे हिजकिय्याह ने कहा वे तो दूर देश से
४ अर्थात् बाबेल से मेरे पास आये थे। फिर उस ने पूछा तेरे भवन में उन्हों ने क्या क्या देखा है हिजकिय्याह ने कहा जो कुछ मेरे भवन में है सो सब उन्हों ने देखा मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैं ने उन्हें न
५ दिखाई हो। यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा सेनाओं
६ के यहोवा का यह वचन सुन ले। ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रक्खा हुआ आज के दिन लों तेरे भण्डारों में है सो सब बाबेल को उठ जाएगा यहोवा
७ यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों उन में से भी कितनों को वे बन्धुआई में ले जाएंगे और वे खोजे बन कर बाबेल के राजभवन
८ में रहेंगे। हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा यहोवा का वचन जो तू ने कहा है सो भला ही है फिर उस ने कहा मेरे दिनों में तो शान्ति और सच्चाई बनी रहेंगी॥

४०. तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है कि मेरी प्रजा को शान्ति
२ दो शान्ति। यरूशलेम से शान्ति की बातें कहो और उस से पुकारकर कहो कि तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है तेरे अधर्म्म का दण्ड अंगीकार किया गया है और यहोवा के हाथ से तू अपने सब पापों का दूना दण्ड पा चुका है॥

३ किसी का पुकार सुनाई देती है कि जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक
४ राजमार्ग चौरस करो। हर एक तराई भरी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए जो टेढ़ा है सो सीधा और जो ऊंच नीच है सो मैदान किया जाए।
५ तब यहोवा का तेज प्रगट हो जाएगा और सब प्राणी उस को एक संग देखेंगे क्योंकि यहोवा ने आप ऐसा कहा है॥

६ बोलनेहारे का वचन है कि प्रचार कर और किसी ने कहा मैं क्या प्रचार करूं सब प्राणी घास हैं उन की सारी शोभा मैदान के फूल के समान है।
७ घास सूख गई फूल मुर्झा गया है क्योंकि यहोवा की सांस उस
८ पर चली निःसन्देह प्रजा घास है। घास तो सूख जाती और फूल मुर्झा जाता है पर हमारे परमेश्वर का वचन सदा लों अटल रहेगा॥

९ हे सिय्योन को शुभ समाचार सुनानेहारे[1] ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा हे यरूशलेम को शुभ समाचार सुनानेहारे[1] बहुत ऊंचे शब्द से सुना ऊंचे शब्द से सुना मत डर यहूदा के नगरों से कह कि अपने परमेश्वर को देखो।
१० देखो प्रभु यहोवा सामर्थ दिखाता हुआ आता है और वह अपने भुजबल से प्रभुता कर लेगा[2] देखो जो मजूरी देने की है सो उस के पास और जो बदला देने का है
११ सो उस के हाथ में है। वह चरवाहे की नाईं अपने भुण्ड को चराएगा वह भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिये चलेगा और दूध पिलानेहारियों को धीरे धीरे ले चलेगा॥

१२ किस ने महासागर को अपने चुल्लू से मापा और किस के बित्ते से आकाश का परिमाण हुआ और किस ने पृथिवी की मिट्टी को नपवे में समवा लिया और पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को कांटे में तौला
१३ है। फिर किस ने यहोवा के आत्मा का परिमाण किया वा उस का मंत्री होकर उस को ज्ञान सिखाया है।
१४ किस ने उस को सम्मति दी और समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग
१५ जता दिया। देखो जातियां तो डोल पर की बून्द वा पलड़ों पर की धूलि के तुल्य ठहरीं देखो वह द्वीपों को
१६ धूलि के किनकों सरीखे उठाता है। और लबानोन ईंधन के लिये थोड़ा होगा और उस में के जीव जन्तु
१७ होमबलि के लिये थोड़े ठहरेंगे। सारी जातियां उस के साम्हने कुछ हैं ही नहीं वे उस के लेखे लोप और
१८ सुनसान सी ठहरीं। सो तुम ईश्वर को किस के समान बताओगे और उस को किस की उपमा दोगे।
१९ कारीगर मूरत ढालता है और सोनार उस को सोने से मढ़ता और उस के लिये चान्दी की सांकलें ढालकर
२० बनाता है। जो कंगाल इतना अर्पण नहीं कर सकता वह ऐसा वृक्ष चुन लेता है जो सड़ने का न हो और निपुण कारीगर ढूंढ़कर मूरत खुदवाता और उसे
२१ ऐसा स्थिर कराता है कि वह न डिग सके। क्या तुम नहीं जानते क्या तुम नहीं सुनते क्या तुम को प्राचीन

(१) मूल में सुनानेहारी। (२) मूल में उस की भुजा उस के लिये प्रभुता करेगी।

काल से बताया नहीं गया क्या तुम ने पृथिवी की नेव
२२ पड़ने का विचार नहीं किया। जो पृथिवी के चारों ओर के आकाशमण्डल पर विराजमान है और पृथिवी के रहनेहारे टिड्डी से हैं जो आकाश को मलमल की नाईं फैलाता और ऐसा तान देता है जैसा रहने के लिये तम्बू
२३ ताना जाता है, जो बड़े बड़े हाकिमों को तुच्छ कर देता है वही पृथिवी के अधिकारियों को सूने के समान
२४ करता है। बरन वे लगाये न गये वे बोये न गये उन के ठूंठ ने भूमि में जड़ न पकड़ी कि उस ने उन पर पवन बहाई और वे सूख गये और आंधी उन्हें भूसे की नाईं
२५ ले गई। सो तुम मुझ को किस के समान बताओगे कि मैं उस के तुल्य ठहरूं पवित्र का यही वचन है।
२६ अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखो कि किस ने इन को सिरजा कौन इन के गण को गिन गिनकर निकालता वह उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है वह ऐसा बड़ा सामर्थी और अत्यन्त बली है कि उन में से कोई बिन आये नहीं रहता॥

२७ हे याकूब तू क्यों कहता है और हे इस्राएल तू क्यों कहता है कि मेरा मार्ग यहोवा से छिपा हुआ है मेरा परमेश्वर मेरे न्याय की कुछ चिन्ता नहीं करता[१]।
२८ क्या तुम नहीं जानते क्या तुम ने नहीं सुना कि यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथिवी भर का सिरजनहार है सो न थकता और न श्रमित होता है और उस की बुद्धि
२९ अगम है। वह थके हुए को बल देता और शक्तिहीन
३० को बहुत सामर्थ देता है। तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं और जवान ठोकर खाकर गिरते तो
३१ हैं। पर जो यहोवा की बाट जोहते हैं सो नया बल प्राप्त करते जाएंगे वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे[२] वे दौड़ते दौड़ते श्रमित न होंगे और चलते चलते थक न जाएंगे॥

४१. हे द्वीपो मेरे साम्हने चुप रहो और

देश देश के लोग नया बल प्राप्त कर वे समीप आकर बोलें हम दोनों आपस में न्याय
२ चुकाने के लिये एक दूसरे के समीप आएं। किस ने पूरब दिशा से एक को उभारा है जिस को वह धर्म्म के साथ अपने पांव के पास बुलाता है वह उस के बश में जातियों को कर देता और उस को राजाओं पर अधिकारी ठहराता है वह उन्हें उस की तलवार को धूल के समान और उस के धनुष को उड़ाये हुए भूसे के समान कर देता
३ है। वह उन्हें खदेड़ता और ऐसे मार्ग से जिस पर वह कभी न चला था बिना रोक टोक आगे बढ़ता है। किस ने यह
४ काम किया है उस ने जो आदि से पीढ़ी को लगातार बुलाता आया है अर्थात् मैं यहोवा जो सब से पहिला हूं और अन्त के समय रहूंगा मैं वही हूं। द्वीप देखकर डरते
५ हैं पृथिवी के दूर दूर देश कांप उठते और निकट आगये
६ हैं। वे एक दूसरे की सहायता करते हैं और उन में से
७ एक एक अपने भाई से कहता है कि हियाव बांध। और बढ़ई सोनार को और हथौड़े से बराबर करनेहारा निहाई पर मारनेहारे को यह कहकर हियाव बंधा रहा है कि भड़न तो अच्छी है सो वह कील ठोक ठोककर उस को ऐसा दृढ़ करता है कि नहीं डिग सकती॥

८ हे मेरे दास इस्राएल हे मेरे चुने हुए याकूब
९ हे मेरे प्रेमी इब्राहीम के बंश, तू जिसे मैं ने पृथिवी के दूर दूर देशों से लेकर पहुंचाया और पृथिवी की छोर से बुलाकर यह कहा कि तू मेरा दास है मैं ने तुझे चुना
१० है और नहीं तजा, सो मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं इधर उधर मत ताक क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं मैं तुझे दृढ़ करता और तेरी सहायता करता और अपने धर्म्ममय दहिने हाथ से तुझे सम्हालता रहूंगा।
११ देख जो तुझ से क्रोधित हैं वे सब लज्जित होंगे और उन के मुंह काले हो जाएंगे जो तुझ से झगड़ते हैं
१२ सो नाश होकर बिलाय जाएंगे। जो तुझ से लड़ते हैं उन्हें तू ढूंढने पर भी न पाएगा जो तुझ से युद्ध करते
१३ हैं सो नाश होकर बिलाय ही जाएंगे। और मैं तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा दहिना हाथ पकड़े हूं मैं ही तुझ से कहता हूं कि मत डर क्योंकि मैं तेरी सहायता करूंगा।
१४ हे कीड़े सरीखे याकूब हे इस्राएल के मनुष्यो मत डरो क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरी सहायता
१५ करूंगा तेरा छुड़ानेहारा इस्राएल का पवित्र है। सुन मैं ने तुझे छुरीवाली दांवने की एक नई और चोखी कल ठहराया है सो तू पहाड़ों को दांय दांयकर सूक्ष्म धूलि कर देगा और पहाड़ियों को भूसे के समान कर देगा।
१६ तू तो उन को ओसाएगा और पवन उन्हें उड़ा ले जाएगी और आंधी उन्हें तित्तर बित्तर कर देगी और तू यहोवा के कारण मगन होगा और इस्राएल के पवित्र के कारण
१७ बड़ाई मारेगा। दीन और दरिद्र लोग जल ढूंढने पर भी नहीं पाते और उन का तालू प्यास के मारे सूख गया है पर मैं यहोवा उन की बिनती सुनूंगा मैं इस्राएल का
१८ परमेश्वर उन को त्याग न दूंगा। मैं मुण्डे टीलों से भी नदियां और मैदानों के बीच में सोते बहाऊंगा[१] मैं जंगल को ताल और निर्जल देश को सोते ही सोते कर दूंगा।

(१) मूल में मेरा न्याय मेरे परमेश्वर के पास होकर निकल गया।
(२) मूल में चढ़ेंगे।

(१) मूल में खोलूंगा।

१९ मैं जंगल में देवदार और बबूर और मेंहदी और जलपाई उगाऊंगा[१] मैं अराबा में सनौवर तिधार वृक्ष और सीधा
२० सनौवर इकट्ठे लगाऊंगा, जिस से लोग देखकर जान लें और सोचकर पूरी रीति से समझ लें कि यह यहोवा के हाथ का किया हुआ और इस्राएल के पवित्र का सिरजा हुआ है ॥

२१ यहोवा कहता है कि अपना मुकद्दमा लड़ो याकूब
२२ का राजा कहता है कि अपने दृढ़ प्रमाण दो । वे उन्हें देकर हम को बताएं कि होनहार में क्या होगा पूर्वकाल की घटनाएं बताओ कि आदि में क्या क्या हुआ जिस से हम उन्हें सोचकर जान सकें कि आगे को उन का क्या
२३ फल होगा वा होनेहारी घटनाएं हम को सुना दो । आगे को जो कुछ घटेगा सो बताओ तब हम जानेंगे कि तुम ईश्वर हो वा मंगल वा अमङ्गल कुछ तो करो कि हम
२४ देखकर एक संग चकित हो जाएं । देखो तुम कुछ नहीं हो और तुम से कुछ नहीं बनता जो कोई तुम को चाहता सो घिनौना ही है ॥

२५ मैं ने एक को उत्तर दिशा से उभारा वह आ भी गया है वह पूरब दिशा से भी मेरा नाम लेता है जैसा कुम्हार गीली मिट्टी को लताड़ता है वैसा ही वह हाकिमों को
२६ कीच के समान लताड़ देगा[२] । किस ने इस बात को पहिले से बताया था जिस से हम जान सकते किस ने पूर्वकाल से यह प्रगट किया जिस से हम कह सकते कि वह धर्म्मी है कोई भी बतानेहारा नहीं कोई भी सुनानेहारा नहीं तुम्हारी बातों का कोई भी सुननेहारा नहीं
२७ है । पहिले मैं ने सिय्योन से कहा कि देख उन्हें देख और मैं ने यरूशलेम के पास शुभ समाचार देनेहारे को भेजा
२८ है । मैं ने देखने पर भी किसी को न पाया उन में से कोई मन्त्री नहीं जो मेरे पूछने पर कुछ उत्तर दे सके ।
२९ सुनो उन सभों के काम अनर्थ और तुच्छ हैं और उन की ढली हुई मूर्त्तियां वायु और गड़बड़ ही हैं ॥

४२. मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं मेरे चुने हुए को देखो जिस से मेरा जी प्रसन्न है मैं ने उस में अपना आत्मा समवाया है सो वह अन्यजातियों के लिये न्याय को प्रगट करेगा ।
२ वह न चिल्लाएगा न ऊंचे शब्द से बोलेगा न सड़क में
३ अपनी वाणी सुनाएगा । वह कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा न धुन्धली बरती हुई बत्ती को बुझाएगा वह
४ सच्चाई से न्याय चुकाएगा । वह आप तब लों न धुंधला-एगा न कुचला जाएगा जब लों वह न्याय को पृथिवी पर स्थिर न करे और द्वीपों के लोग उस की व्यवस्था की बाट जोहेंगे । ईश्वर जो आकाश का सिरजनेहारा और
५ताननेहारा और उपज समेत पृथिवी का विस्तारनेहारा और उस पर के लोगों को सांस और उस पर के चलनेहारों को आत्मा देनेहारा यहोवा है सो यों कहता है
६ कि, मुझ यहोवा ने तुझ को धर्म्म की रीति से बुला लिया और मैं तेरा हाथ पकड़ कर तेरी रक्षा करूंगा मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा,
७ कि तू अन्धों की आंखें खोले और बंधुओं को बन्दीगृह से और जो अंधियारे में बैठे हैं उन को कालकोठरी से
८ निकाले । मैं यहोवा हूं मेरा नाम यही है और मैं अपनी महिमा दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है
९ सो खुदी हुई मूरतों को मिलने न दूंगा । सुनो पहिली बातें तो हो चुकी हैं और मैं नई बातें बताता हूं उन के होने से पहिले मैं उन्हें तुम को सुनाता हूं ॥

१० हे समुद्र पर चलनेहारो[३] हे समुद्र के सब रहनेहारो हे द्वीपो अपने रहनेहारों समेत तुम सब यहोवा के लिये नया गीत गाओ और पृथिवी की छोर से उस की
११ स्तुति करो । जङ्गल और उस में की बस्तियां और केदार के बसे हुए गांव जयजयकार करें सेला के रहनेहारे जयजयकार करें । वे पहाड़ों की चोटियों पर से ऊंचे शब्द से
१२ गाएं । वे यहोवा की महिमा करें और द्वीपों में उस का
१३ गुणानुवाद करें । यहोवा वीर की नाईं पयान करेगा और योद्धा के समान अपनी जलन भड़काएगा वह ऊंचे शब्द से ललकारेगा और अपने शत्रुओं पर वीरता दिखाएगा ॥

१४ बहुत काल से तो मैं चुप रहा हूं और मौन गहे हूं और अपने को रोकता आया पर अब जननेहारी की
१५ नाईं चिल्लाऊंगा मैं हांफ हांफकर सांस भरूंगा । मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को सुखा डालूंगा और उन की सब हरियाली को झुलसा दूंगा और नदियों को द्वीप कर
१६ दूंगा और तालों को सुखा डालूंगा । मैं अंधों को एक मार्ग से ले चलूंगा जिसे वे न जानते हों मैं उन को उन पथों से चलाऊंगा जिन्हें वे न जानते हों मैं उन के आगे अंधियारे को उजियाला करूंगा और टेढ़े मार्ग को सीधा
१७ करूंगा मैं ऐसे ऐसे काम करके उन को त्याग न दूंगा । जो लोग खुदी हुई मूरतों पर भरोसा रखते हैं और ढली हुई मूरतों से कहते हैं कि तुम हमारे ईश्वर हो उन को
१८ पीछे हटना और अत्यन्त लजाना पड़ेगा । हे बहिरो सुनो
१९ हे अंधो आंख खोलो कि तुम देख सको । मेरे दास को छोड़ कौन अंधा है और मेरे भेजे हुए दूत सरीखा

(१) मूल में दूंगा ।
(२) मूल में को आएगा ।
(३) मूल में उतरनेहारो ।

कौन बहिरा है मेरे मित्र के समान कौन अंधा है और
२० यहोवा के दास सरीखा अंधा कौन है । तू ने
बहुत सी बातें देखी तो हैं पर उन की चिन्ता नहीं करता
उस के कान खुले तो रहते हैं पर वह नहीं सुनता ॥

२१ यहोवा को अपने ही धर्म्म के निमित्त यह भावा था
२२ कि वह व्यवस्था की बड़ाई अधिक करे । पर ये लोग लूट-
पट गये हैं ये सब के सब गड़हियों में फंसे हुए और
कालकोठरियों में बन्द किये हुए हैं ये पकड़े गये और कोई
इन को नहीं छुड़ाता इन का धन छिन गया है और कोई
२३ उसे फेर देने की आज्ञा नहीं देता । तुम में से कौन इस
पर कान लगाएगा कौन ध्यान धरके होनहार के
२४ लिये सुनेगा । किस ने याकूब को लुटाया और इस्राएल
को लूटपाट करनेहारों के वश कर दिया क्या यहोवा ने
यह नहीं किया जिस के विरुद्ध हम ने पाप किया और
जिस के मार्गों पर उन्हों ने चलने न चाहा और जिस की
२५ व्यवस्था को उन्हों ने न माना । इस कारण उस ने उस
के ऊपर अपने कोप की आग भड़काई[१] और युद्ध का
बल चलाया और यद्यपि आग उस के चारों ओर लग गई
तौभी वह न जानता था बरन वह जल भी गया तौभी
उस ने कुछ मन नहीं लगाया ॥

४३. हे याकूब तेरा सिरजनेहारा यहोवा
और हे इस्राएल तेरा रचनेहारा
अब यों कहता है कि तू मत डर क्योंकि मैं ने तुझ को
छुड़ा लिया मैं ने तुझ को नाम लेकर बुलाया है तू तो
२ मेरा ही है । जब तू जल में होकर जाए तब मैं तेरे संग
संग रहूंगा और जब तू नदियों में होकर चले तब तू उन
में न डूबेगा जब तू आग में होकर जाए तब तू न
३ जलेगा और न लौ से तुझे आंच लगेगी । क्योंकि मैं
यहोवा तेरा परमेश्वर हूं मैं इस्राएल का पवित्र तेरा
उद्धारकर्त्ता हूं मैं मिस्र को तेरी छुड़ौती में देता और
४ कूश और सबा को तेरी सन्ती देता हूं । तू जो मेरे लेखे
अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा और मैं जो तुझ से प्रेम
रखता हूं इस कारण मैं तेरी सन्ती मनुष्यों को और तेरे
५ प्राण के पलटे में राज्य राज्य के लोगों को दूंगा । मत
डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूं मैं तेरे वंश को पूरब से ले
६ आऊंगा और पच्छिम से भी इकट्ठा करूंगा । मैं उत्तर से
कहूंगा कि दे दे और दक्खिन से कि रोक मत रख मेरे
पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथिवी की छोर से
७ ले आ, अर्थात् हर एक को जो मेरा कहलाता है जिस
को मैं ने अपनी महिमा के लिये सिरजा जिस को मैं ने
रचा और बनाया है । आंख रखते हुए अंधों को और ८
कान रखते हुए बहिरों को निकाल ले आ । जाति जाति ९
के लोग इकट्ठे किये जाएं और राज्य राज्य के लोग
जुट जाएं उन में से कौन यह बात बता सकता वा
बीती हुई बातें हम को सुना सकता है वे अपने साक्षी
ले आएं जिस से वे सच्चे ठहरें वा वे सुन लें और कहें
हां सत्य वचन है । यहोवा की यह वाणी है कि तुम १०
मेरे साक्षी और मेरे दास हो जिस को मैं ने इसलिये
चुना है कि तुम समझकर मेरी प्रतीति करो और यह
जान लो कि मैं वही हूं मुझ से पहिले कोई ईश्वर
न बना और न मेरे पीछे होगा । मैं ही यहोवा हूं और ११
मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्त्ता नहीं । मैं ही ने समाचार १२
दिया और उद्धार कर दिया और वर्णन भी किया और
तुम्हारे बीच में कोई पराया देवता न था सो यहोवा
की यह वाणी है कि तुम मेरे साक्षी हो और मैं ही
ईश्वर हूं । और अब से आगे को भी मैं वही रहूंगा १३
और मेरे हाथ से कोई छुड़ा न सकेगा जब मैं काम
करने चाहूं तब कौन मुझे रोक[२] सकेगा ॥

फिर यहोवा जो तुम्हारा छुड़ानेहारा और इस्राएल १४
का पवित्र है यों कहता है कि तुम्हारे निमित्त मैं
ने बाबेल को भेजा है और उस के सब रहनेहारे कस-
दियों को उन्हीं जहाजों पर चढ़ाकर जिन के विषय
वे बड़ा बोल बोलते हैं[३] भगवा दूंगा[४] । मैं यहोवा १५
तुम्हारा पवित्र हूं मैं इस्राएल का सिरजनहार तुम्हारा
राजा हूं । यहोवा तो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा १६
में पथ बनाता है, और रथ और घोड़ों को और शूरबीरों १७
समेत सेना को निकाल लाता है और वे तो एक संग
वहीं रह जाते और फिर नहीं उठ सकते वे बुत गये
वे सन की बत्ती की नाईं बुझ गये हैं । सो वह यों कहता १८
है कि अब बीती हुई घटनाओं को स्मरण मत करो
और न प्राचीन काल की घटनाओं पर मन लगाओ ।
देखो मैं एक नई बात करता हूं सो अभी प्रगट होगी १९
और निश्चय तुम उस को जान लोगे अर्थात् मैं जङ्गल
में मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा ।
गीदड़ और शुतुर्मुर्ग आदि बनैले जन्तु मेरी महिमा २०
करेंगे क्योंकि मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के पीने के
लिये जंगल में जल और निर्जल देश में नदियां बहा-
ऊंगा । इस प्रजा को मैं ने अपने लिये बनाया है २१
कि वे मेरा गुणानुवाद करें । हे याकूब तू ने मुझ से २२
प्रार्थना नहीं की हे इस्राएल तू मुझ से उकताया

(१) मूल में उण्डेली ।

(२) मूल में करे । (३) मूल में ऊंचे शब्द से बोलते हैं ।
(४) मूल में भगोड़े करके उतारूंगा ।

२३ है। तू मेरे लिये होमबलि करने को मेम्ने नहीं लाया और न मेलबलि चढ़ाकर मेरी महिमा की है देख मैं ने अन्नबलि चढ़ाने की कठिन सेवा तुझ से नहीं कराई और न तुझ से धूप दिलाकर तुझे थका दिया
२४ है। तू मेरे लिये सुगन्धित नरकट रुपए से मोल नहीं लाया और न मेलबलियों की चर्बी से मुझे तृप्त किया पर तू ने पाप करके मुझ से कठिन सेवा कराई और
२५ अपने अधर्म्म के कामों से मुझे थका दिया है। मैं वही हूं जो अपने निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और
२६ तेरे पापों को स्मरण न करूंगा। मुझे स्मरण करो हम आपस में न्याय चुकाएं तू ही ऐसा वर्णन कर जिस से
२७ तू निर्दोष ठहरे। तेरा मूलपुरुष पापी हुआ था और जो जो मेरे तुम्हारे बिचवई हुए सो मुझ से बलवा करते
२८ चले आये हैं। इस कारण मैं ने पवित्रस्थान के हाकिमों को अपवित्र ठहराया और याकूब का सत्यानाश और
१ इस्राएल को निन्दित होने दिया है। अब हे मेरे दास

४४.

याकूब हे मेरे चुने हुए इस्राएल सुन ले।
२ तेरा कर्त्ता यहोवा जो तुझे गर्भ ही में से बनाता आया है और वह तेरी सहायता करेगा सो यों कहता है कि हे मेरे दास याकूब हे मेरे चुने हुए यशूरून[१]
३ मत डर। क्योंकि मैं प्यास पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊंगा मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा और तेरी
४ सन्तान पर अपनी आशिष उंडेलूंगा। सो वे उन मजनुओं की नाईं बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के मध्य में होते
५ हैं। कोई तो कहेगा कि मैं यहोवा का हूं और कोई अपना नाम याकूब रक्खेगा और कोई इस के विषय दस्तखत करेगा कि मैं यहोवा का हूं और अपनी पदवी इस्राएली बताएगा॥

६ यहोवा जो इस्राएल का राजा है अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उस का छुड़ानेहारा है सो यों कहता है कि मैं सब से पहिला हूं और अन्त लों भी मैं ही रहूंगा
७ और मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं। और जब से मैं ने प्राचीनकाल के मनुष्यों को ठहराया तब से कौन हुआ जो मेरी नाईं उस का प्रचार करे वा बताये वा मेरे लिये रचे अथवा होनहार बातें जो घटा चाहती हैं
८ उन्हें प्रगट करे। तुम मत थरथराओ और भयमान न हो क्या मैं ये बातें उस समय से ले तुम्हें सुना सुनाकर बताता नहीं आया तुम तो मेरे साक्षी हो क्या मुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है नहीं मुझे छोड़ कोई चटान नहीं
९ मैं तो किसी को नहीं जानता। जो मूरत खोदकर बनाते हैं सो सब के सब व्यर्थ हैं[२] और उन की चाही हुई वस्तुओं से कुछ लाभ न होगा और उन के जो साक्षी हैं सो आप न तो कुछ देखते न कुछ जानते हैं इसलिये
१० उन को लज्जित होना पड़ेगा। किस ने देवता वा
११ निष्फल मूरत ढाली है। देख उस के सब संगियों को तो लजाना पड़ेगा और कारीगर जो हैं सो मनुष्य ही हैं वे सब के सब इकट्ठे होकर खड़े हों वे थरथरा उठेंगे और
१२ उन सभों के मुंह काले होंगे। लोहार एक बसूला लेकर मूरत को अंगारों में बनाता और हथौड़ों से गढ़ गढ़कर तैयार करता है वह उस को भुजबल से बनाता है फिर वह भूखा हो जाता है और उस का बल घटता है
१३ वह पानी न पीकर थक जाता है। बढ़ई सूत लगाकर टांकी से रेखा करता है और रन्दनी से काम करता और परकार से रेखा खींचता है और उस का आकार और सुन्दरता मनुष्य की सी करता है कि लोग उसे
१४ घर में रक्खें[३]। कोई देवदार को काटता वा बन के वृक्षों में से जाति जाति के बांजवृक्ष चुनकर सेवता है वा वह एक तूस का वृक्ष लगाता है जो वर्षा का जल
१५ पाकर बढ़ता है। वह मनुष्य के ईंधन के काम में आता है वह उस में से कुछ लेकर तापता है फिर उस को जलाकर रोटी बनाता है फिर वह देवता भी बनाकर उस को दण्डवत् करता है वह मूरत खुदवाकर उस के
१६ साम्हने प्रणाम करता है। उस का एक भाग तो वह आग में जलाता और दूसरे भाग से मांस पकाकर खाता है वह मांस भूनकर तृप्त होता फिर तापकर कहता है वाह मैं अच्छा ताता हूं मुझे आंच जान पड़ी
१७ है। और उस के बचे हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात् एक मूरत खोदकर बनवाता है तब वह उस के साम्हने प्रणाम और दण्डवत् करता और उस से प्रार्थना करके कहता है मुझे बचा ले क्योंकि तू मेरा
१८ देवता है। वे कुछ नहीं जानते और न कुछ समझ रखते हैं क्योंकि उन की आंखें ऐसी मून्दी[४] गई हैं कि वे देख नहीं सकते और उन का हृदय ऐसा हुआ है कि
१९ वे बूझ नहीं सकते। और कोई इस बात की ओर मन नहीं लगाता और न किसी को इतना ज्ञान वा समझ रहता है कि कह सके कि उस का एक भाग तो मैं ने जला दिया और उस के कोयलों पर रोटी बनाई और मांस भूनकर खाया है फिर क्या मैं उस के बचे हुए भाग को घिनौनी वस्तु बनाऊं क्या मैं काठ[५]
२० को प्रणाम करूं। वह तो राख खाता है वह भुले हुए

(१) अर्थात् सीधा।

(२) मूल में सो सब शून्यता है। (३) मूल में जिस से घर में रहे। (४) मूल में लेसी। (५) मूल में पेड़ के ठूंठ को।

मन से भटकाया हुआ है और वह न तो अपने को बचा सकता न कह सकता है कि क्या मेरे दहिने हाथ में मिथ्या नहीं है ॥

२१ हे याकूब हे इस्राएल इन बातों को स्मरण रख क्योंकि तू मेरा दास है मैं ने तुझे रचा है तू मेरा दास

२२ है हे इस्राएल मैं तुझ को न बिसराऊंगा। मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है मेरी ओर फिर क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है ॥

२३ हे आकाश ऊंचे स्वर से गा क्योंकि यहोवा ने काम किया है हे पृथिवी के गहिरे स्थानो जयजयकार करो हे पहाड़ो हे बन हे बन के सब वृक्षो गला खोलकर ऊंचे स्वर से गाओ क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इस्राएल के द्वारा अपने को शोभायमान

२४ दिखाएगा। यहोवा जिस ने तुझे छुड़ा लिया और तुझे गर्भ ही से बनाता आया है सो यों कहता है कि मैं यहोवा ही सब काम पूरा करनेहारा हूं मैं ही अकेला आकाश का ताननेहारा और पृथिवी का अपनी ही शक्ति से

२५ बिस्तारनेहारा हूं। मैं झूठे लोगों के कहे हुए चिन्हों को व्यर्थ कर देता और भावी कहनेहारों को बावला कर देता हूं और बुद्धिमानों को पीछे हटा देता और उन की

२६ पण्डिताई को मूर्खता बनाता हूं, और अपने दास के वचन को पूरा करता और अपने दूतों की युक्ति को सुफल करता हूं मैं यरूशलेम के विषय कहता हूं कि वह फिर बसाई जाएगी और यहूदा के नगरों के विषय कि वे फिर बसाए जाएंगे और मैं उन के खण्डहरों को सुधारूंगा।

२७ मैं गहिरे जल से कहता हूं कि तू सूख जा और मैं तेरी

२८ नदियों को सुखाऊंगा। मैं कुस्रू के विषय में कहता हूं कि वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा और यरूशलेम के विषय कहता हूं कि वह बसाई जाएगी और मन्दिर की नेव डाली जाएगी ॥

४५. **यहोवा** अपने अभिषिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है कि मैं ने उस[१] के दहिने हाथ को इसलिये थांभ लिया है कि उस के साम्हने जातियों को दबा दूं और राजाओं की कमर ढीली करूं और फाटकों को उस के साम्हने खोल दूं

२ और फाटक बन्द न किये जाएं। मैं तेरे आगे आगे चलूंगा और ऊंचे नीचे को चौरस करूंगा मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूंगा और लोहे के बेंड़ों को टुकड़े

३ टुकड़े कर दूंगा। मैं तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूंगा इसलिये कि तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूं और मैं

४ ही तुझे नाम लेकर बुलाता हूं। अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैं ने नाम लेकर तुझे बुलाया है यद्यपि तू मुझे नहीं जानता तौभी मैं ने

५ तुझे पदवी दी है। मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं यद्यपि तू मुझे नहीं

६ जानता तौभी मैं तेरी कमर कसूंगा, जिस से उदयाचल से लेकर अस्ताचल लों लोग जान लें कि मुझ बिना

७ कोई है ही नहीं मैं यहोवा हूं दूसरा कोई नहीं है। मैं उजियाले का बनानेहारा और अन्धियारे का सिरजनहार हूं मैं शान्ति का करनेहारा और विपत्ति का सिरजनहार

८ हूं मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं। हे आकाश ऊपर से धर्म्म बरसा और आकाशमण्डल से धर्म्म की वर्षा हो[२] फिर पृथिवी खुलकर उद्धार उत्पन्न करे और धर्म्म को उस के संग ही उगाए मुझ यहोवा ही ने उस को सिरजा है ॥

९ हाय उस पर जो अपने रचनेहारे से झगड़ता है वह तो मिट्टी के ठीकरों में से एक ठीकरा ही है। क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी कि तू यह क्या करता है क्या कारीगर का[३] बनाया हुआ कार्य्य उस के विषय कहेगा कि

१० उस के हाथ नहीं हैं। हाय उस पर जो अपने पिता से कहे कि अब तू क्या जन्माता वा स्त्री से कहे कि तू क्या

११ जनती है[४]। यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उस का बनानेहारा है सो यों कहता है क्या तुम आनेहारी घटनाएं मुझ से पूछोगे क्या मेरे पुत्रों और मेरे कामों

१२ के विषय मुझे आज्ञा दोगे। मैं ही ने पृथिवी को बनाया और उस के ऊपर मनुष्यों को सिरजा है मैं ने अपने ही हाथों से आकाश को तान दिया और उस के सारे

१३ गण को आज्ञा दी है। मैं ही ने उस पुरुष को धर्म्म की रीति से उभारा है और मैं उस के सब मार्गों को सीधा करूंगा सो वही मेरे नगर को फिर बसाएगा और मेरे बंधुओं को बिना दाम वा बदला लिये छुड़ा देगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ॥

१४ यहोवा यों कहता है कि मिस्रियों के श्रम की कमाई और कूशियों के ब्योपार का लाभ तुझ को मिलेगा और सबाई लोग जो डील डौलवाले हैं सो तेरे पास चले आएंगे और तेरे ही हो जाएंगे वे तेरे पीछे पीछे चलेंगे बरन सांकलों में बंधे हुए चले आएंगे और तेरे

(१) मूल में जिस।

(२) मूल में धर्म्म बहे। (३) मूल में तेरा। (४) मूल में मुझे किस से पीड़ें उठीं।

सामने दण्डवत् कर तुझ से बिनती करके कहेंगे कि निश्चय तेरे बीच ईश्वर है और दूसरा कोई नहीं कोई और परमेश्वर नहीं ॥

१५ हे इस्राएल के परमेश्वर हे उद्धारकर्त्ता निश्चय तू
१६ ऐसा ईश्वर है जो अपने को गुप्त रखता है। मूर्त्तियों के गढ़नेहारे सब के सब लज्जित और निरादर होंगे और
१७ उन के मुंह काले हो जाएंगे। पर इस्राएल का यहोवा के द्वारा युग युग का उद्धार हो जाएगा तुम युग युग बरन अनन्त काल लों लज्जित न होगे न तुम्हारे मुंह काले हो जाएंगे ॥

१८ क्योंकि यहोवा जो आकाश का सिरजनहार है सोई परमेश्वर है जिस ने पृथिवी को रचा और बनाया उसी ने उस को स्थिर भी किया और सुनसान होने के लिये नहीं सिरजा पर बसने के लिये उसे रचा वही यों कहता है कि मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं है।
१९ मैं ने न किसी गुप्त स्थान में न अन्धकार के देश के किसी स्थान में बातें कीं मैं ने याकूब के वंश से नहीं कहा कि मुझे व्यर्थ ढूंढ़ो[१] मैं यहोवा धर्म्म की बात
२० कहता और ठीक बातें बताता आया हूं। हे अन्यजातियों में के बचे हुए लोगो इकट्ठे होकर आओ एक संग निकट आओ जो अपनी काठ की खुदी हुई मूरत लिये फिरते हैं और जिस देवता से उद्धार नहीं हो सकता उस से
२१ प्रार्थना करते हैं वे कुछ ज्ञान नहीं रखते। बताओ तो और उन को लाओ वे आपस में सम्मति करें कौन इस को प्राचीनकाल से सुनाता आया और अगले दिनों से बताता आया है क्या मैं यहोवा ही ऐसा करता नहीं आया और मुझे छोड़ कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है मैं तो धर्म्मी और उद्धारकर्त्ता ईश्वर हूं और मुझे छोड़ दूसरा कोई नहीं है।
२२ हे पृथिवी के दूर दूर के देश के लोगो तुम मेरी ओर फिर कर उद्धार पाओ क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं और दूसरा कोई
२३ नहीं है। मैं ने अपनी ही किरिया खाई और यह वचन धर्म्म के अनुसार मेरे मुख से निकल चुका और न बदलेगा[२] कि हर कोई मेरे ही साम्हने घुटने टेकेगा हर एक
२४ के मुख से मेरी ही किरिया खाई जाएगी। लोग मेरे विषय कहेंगे कि केवल यहोवा से धर्म्म और शक्ति मिलती हैं लोग उस के पास आएंगे और जो उस से रूठे रहेंगे उन्हें
२५ लज्जित होना पड़ेगा। तब इस्राएल के सारे वंश के लोग यहोवा ही के कारण धर्म्मी ठहरेंगे और बड़ाई मारेंगे ॥

(१) मूल में सुनसान स्थान में ढूंढ़ो
(२) मूल में न लौटेगा।

४६. बेल देवता झुक गया नबो देवता निहुड़ गया उन की प्रतिमाएं पशुओं

पर बरन घरैले पशुओं पर लदी हैं जिन वस्तुओं को तुम लिये फिरते थे सो अब भारी बोझ ठहर गईं वे थकित
२ पशु के लिये भार हुई हैं। वे निहुड़ गये वे एक संग झुक गये वे भार को छुड़ा नहीं सके बरन आप भी बंधुआई में चले गये हैं ॥

३ हे याकूब के घराने हे इस्राएल के घराने के सारे बचे हुए लोगो मेरी ओर कान धरकर सुनो तुम को मैं तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाये रहता और जन्म ही से
४ लिये फिरता आया हूं। तुम्हारे बुढ़ापे लों भी मैं वैसा ही बना रहूंगा तुम्हारे बाल पकने के समय लों भी मैं तुम्हें उठाये रहूंगा मैं ने तुम्हें बनाया है और तुम को
५ लिये फिरता रहूंगा, मैं तुम्हें उठाये रहूंगा और छुड़ाता भी रहूंगा। तुम मुझे किस की उपमा दोगे और किस के समान बताओगे और किस से मेरा मिलान करोगे कि
६ वह मेरे समान ठहरे। वे थैली से सोना उण्डेलते वा कांटे में चान्दी तौलते तब सोनार को मजूरी देकर उस से देवता बनवाते हैं फिर उस देवता को प्रणाम बरन दण्डवत् भी करते हैं।
७ वे उस को कन्धे पर उठाकर लिये फिरते तब उसे उस के स्थान में रख देते हैं और वह वहीं खड़ा रहता है और अपने स्थान से हटता नहीं चाहे कोई उस की दोहाई दे तौभी वह न सुन सकेगा न विपत्ति से उस का उद्धार कर सकेगा ॥

८ हे अपराधियो इस बात को स्मरण करके स्थिर
९ हो इस की ओर मन लगाओ। प्राचीनकाल की अगली बातें स्मरण करो क्योंकि ईश्वर मैं ही हूं दूसरा कोई नहीं
१० परमेश्वर मैं ही हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो आदि से अन्त की बात को और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब लों नहीं हुई मैं कहता हूं कि मेरी युक्ति ठहरेगी और मैं
११ अपनी सारी इच्छा को पूरी करता हूं। मैं पूरब से एक मांसाहारी पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति के पूरा करनेहार पुरुष को बुलाता हूं मैं ने बात तो कही और उसे पूरी भी करूंगा मैं ने बात को ठहराया है और
१२ उसे सुफल भी करूंगा। हे कठोर मनवालो तुम जो
१३ धर्म्महीन हो[३] सो कान धरकर मेरी सुनो। मैं अपनी धार्म्मिकता प्रगट करने[४] पर हूं सो वह छिपी[५] न रहेगी और मेरे उद्धार करने में विलम्ब न लगेगा मैं

(३) मूल में तुम जो धर्म्म से दूर हो। (४) मूल में निकल ले आने। (५) मूल में दूर।

सिय्योन का उद्धार करूंगा और इस्राएल को शोभायमान कर दूंगा[१] ॥

४७. हे बाबेल की कुमारी बेटी उतरकर धूलि में बैठ जा हे कसदियों की बेटी बिना सिंहासन भूमि पर बैठ जा क्योंकि तू फिर २ कोमल और सुकुमार न कहाएगी। चक्की लेकर आटा पीस अपना बुर्का उतार घाघरा उठा और उघारी टांगों ३ नदियों को पार कर। तू नंगी की जाएगी और तेरी नंगाई प्रगट होगी क्योंकि मैं पलटा लूंगा और किसी मनुष्य को न छोड़ूंगा[२] ॥

४ हमारा छुड़ानेहारा जो है उस का नाम सेनाओं का यहोवा और इस्राएल का पवित्र है ॥

५ हे कसदियों की बेटी चुपचाप बैठी रह और अंधियारे में जा क्योंकि तू फिर राज्य राज्य की स्वामिन ६ न कहाएगी। मैं ने अपनी प्रजा से क्रोधित होकर अपने निज भाग को अपवित्र ठहराया और तेरे वश में कर दिया तब तू ने उस पर कुछ दया न की और बूढ़ों पर ७ अपना अत्यन्त भारी जूआ रख दिया। तू ने तो कहा कि मैं सदा स्वामिन बनी रहूंगी सो तू ने इन बातों पर मन न लगाया और न स्मरण किया कि उन का क्या फल होता है ॥

८ सो हे राग रंग में बझी हुई तू जो निडर बैठी रहती है और मन में कहती है कि मैं ही हूं और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं मैं विधवा न हूंगी और न मेरे ९ लड़के बाले जाते रहेंगे सो तू अब यह बात सुन कि, ये दोनों बातें लड़कों का जाता रहना और विधवा हो जाना अचानक एक ही दिन तुझ पर आ पड़ेंगी ये तेरे बहुत से टोनों और तेरे अति भारी तन्त्र मन्त्रों के रहते १० भी तुझ पर अपने पूरे बल से पड़ेंगी। तू ने तो अपनी दुष्टता पर भरोसा रक्खा है तू ने कहा है कि कोई मुझे नहीं देखता तेरी बुद्धि और ज्ञान जो है उसी ने तुझे बहकाया है सो तू ने मन में कहा है कि मैं ही हूं और कोई ११ दूसरा नहीं। इस कारण तेरी ऐसी दुर्गति होगी कि तुझे सूझ न पड़ेगा कि किस मन्त्र करके उसे दूर करूं और तुझ पर ऐसी विपत्ति पड़ेगी कि तू प्रायश्चित्त करके उसे निवारण न कर सकेगी और तेरे बिन जाने अचानक तेरा १२ विनाश होगा। तू अपने तन्त्र मन्त्र और बहुत से टोने करने जिन में तू बचपन से परिश्रम करती आई है खड़ी हो क्या जाने तू उन से लाभ उठा सके वा उन के बल से औरों को भय दिखा सके। तू तो युक्ति करते करते १३ थक गई है सो अब तेरे ज्योतिषी जो नक्षत्रों को ध्यान से देखते और नये नये चांद को देखकर होनहार बताते हैं सो खड़े होकर तुझे उन बातों से जो तुझ पर घटेंगी बचाएं। देख वे भूसे के समान होकर आग से भस्म हो १४ जाएंगे वे अपने ही प्राण ज्वाला से न बचा सकेंगे वह आग तो तापने के लिये अंगारा न होगी न ऐसी होगी जिस के साम्हने कोई बैठे। जिन बातों में तू परिश्रम १५ करती आई है सो तेरे लिये वैसी ही हो जाएंगी और जो तेरे बचपन से तेरे संग व्योपार करते आये हैं सो अपनी अपनी दिशा की ओर जाएंगे और तेरा कोई उद्धारकर्त्ता न होगा ॥

४८. हे याकूब के घराने यह बात सुन तुम जो इस्राएली कहावते और यहूदा के वंश में उत्पन्न हुए हो[३] जो यहोवा के नाम की किरिया तो खाते और इस्राएल के परमेश्वर की चर्चा तो करते हो पर सच्चाई और धर्म्म से नहीं करते। २ वे तो अपने को पवित्र नगर के बताते हैं और इस्राएल के परमेश्वर पर जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है टेक लगाये रहते हैं। ३ अगली बातों को तो मैं ने प्राचीनकाल से बताया और उन की चर्चा उठाकर सुनाई मैं ने अचानक उन्हें किया और वे हुईं। ४ मैं जो जानता था कि तू हठीला है और तेरी गर्दन लोहे की नस और तेरा माथा ५ पीतल का है, इस कारण मैं ने अगली बातें प्राचीन काल से तुझे बताईं उन के घटने से पहिले ही मैं ने तुझे सुनाया ऐसा न हो कि तू कहने पाए कि यह मेरी मूरत का काम है और मेरी खुदी और ढली हुई मूर्त्तियों ६ की आज्ञा से हुआ। तू ने सुना है इस सब का घटना देख क्या तुम उस का प्रचार न करोगे अब से मैं तुझे नई नई बातें और ऐसी गुप्त बातें जिन्हें तू न जानता था ७ सुनाता हूं। वे तो अभी सिरजी गईं और इस से पहिले न हुई थीं तू ने आज से पहिले उन्हें न सुना था कहीं ऐसा न हो कि तू कहने पाए कि मैं तो इन्हें जानता था। ८ निश्चय तू ने उन्हें न तो सुना न जाना और इस से पहिले तेरा कान न खुला था क्योंकि मैं जानता था कि तू निश्चय विश्वासघात करता है और उत्पत्ति ही ९ से तेरा नाम अपराधी पड़ा है। मैं अपने ही नाम के निमित्त कोप करने में विलम्ब करूंगा और अपने यश के निमित्त अपने तईं रोक रक्खूंगा ऐसा न हो कि मैं तुझे १० नाश करूं। देखो मैं ने तुझे शोधा तो सही पर चांदी की

(१) मूल में मैं सिय्योन में उद्धार इस्राएल के लिये अपनी शोभा दूंगा।
(२) मूल में मनुष्य से न मिलूंगा।
(३) मूल में यहूदा के जल से निकले हो।

नाई नहीं मैं ने तुझे दुःख की भट्ठी में अपनाया है।
११ अपने निमित्त अपने ही निमित्त मैं यह करूंगा मेरा नाम क्यों अपवित्र ठहरे और मैं अपनी महिमा दूसरे को न दूंगा ॥

१२ हे याकूब हे मेरे बुलाये हुए इस्राएल मेरी ओर कान धर कर सुन क्योंकि मैं ही हूं मैं आदि से[१]
१३ हूं और अन्त लों[२] भी मैं ही रहूंगा। मेरे ही हाथ से पृथिवी की नेव डाली गई और मेरे ही दहिने हाथ से आकाश फैलाया गया फिर जब मैं उन को बुलाता हूं तब वे एक साथ खड़े हो जाते हैं।
१४ तुम सब के सब इकट्ठे होकर सुनो उन में से किस ने कभी इन बातों को जताया है। जिस से यहोवा प्रेम रखता है वही बाबेल पर उस की इच्छा पूरी करेगा और
१५ कसदियों पर उसी का भुजबल पड़ेगा। मैं ही ने बातें कीं और मैं ने उस को बुलाया है मैं उस को ले आया
१६ और उस का काम सुफल होगा। मेरे निकट आकर इस बात को सुनो आदि से लेकर मैं ने कोई बात गुप्त में नहीं कही जब से यह हुई तब से मैं हूं और अब प्रभु यहोवा
१७ और उस के आत्मा ने मुझे भेज दिया है[३]। यहोवा जो तेरा छुड़ानेहारा और इस्राएल का पवित्र है सो यों कहता है कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे लाभ के लिये शिक्षा देता हूं और जिस मार्ग से तुझे चलना है उसी से तुझे
१८ चलाता । भला होता कि तू ने मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुना होता तो तेरी शान्ति नदी के और तेरा
१९ धर्म्म समुद्र की लहरों के समान होता। और तेरा वंश बालू के किनकों सरीखा और तेरी निज सन्तान उस के कणों के समान होती और उस का नाम मेरे साम्हने से नाश न होता न मिट जाता ॥

२० बाबेल में से निकल जाओ कसदियों के बीच से भाग जाओ जयजयकार करते हुए इस बात को प्रचार करके सुनाओ पृथिवी की छोर लों भी इस की चर्चा फैलाओ कि यहोवा ने अपने दास याकूब को छुड़ा लिया है।
२१ और जब वह उन्हें निर्जल देशों में ले चलता था तब वे प्यासे न रहे उस ने उन के लिये पानी बहाया उस ने
२२ चटान को फाड़ा और पानी फूट निकला। दुष्टों के लिये कुछ शान्ति नहीं यहोवा का यही वचन है ॥

४९. हे द्वीपो मेरी ओर कान लगाकर सुनो और हे दूर दूर के राज्यों के लोगो ध्यान धरकर मेरी सुनो क्योंकि यहोवा ने मुझे गर्भ ही में रहते बुलाया जब मैं माता के पेट में था तब भी उस ने मेरे नाम की चर्चा की।
२ और उस ने मेरे बचनों[४] को चोखी तलवार के समान कर दिया और अपने हाथ की आड़ में मुझे छिपा रक्खा फिर मुझ को चमकीला तीर बनाकर अपने तर्कश में गुप्त
३ रक्खा, और मुझ से कहा कि तू मेरा दास इस्राएल
४ है तेरे द्वारा मैं अपने को शोभायमान दिखाऊंगा। तब मैं ने कहा कि मैं ने तो अकारथ परिश्रम किया और व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है तौभी यहोवा मेरा न्याय चुकाएगा[५] और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के
५ हाथ में है। और अब यहोवा जिस ने मुझे जन्म ही से इसलिये रचा कि मैं उस का दास होकर याकूब को उस की ओर फेर ले आऊं अर्थात् इस्राएल को उस के पास इकट्ठा करूं और यहोवा की दृष्टि में मैं प्रतापमय
६ हूंगा और मेरा परमेश्वर मेरा बल होगा, उसी ने मुझ से अब कहा है यह तो हलकी सी बात होती कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा दास ठहरता सो मैं तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि तू पृथिवी की छोर छोर लों भी मेरी
७ ओर से उद्धार का मूल हो। जो मनुष्यों से तुच्छ जाना जाता और इस जाति से घिनौना समझा जाता और अधिकारियों का दास है उस से इस्राएल का छुड़ानेहारा और उसी का पवित्र अर्थात् यहोवा यों कहता है कि राजा देखकर खड़े हो जाएंगे और हाकिम दण्डवत् करेंगे और यह यहोवा के निमित्त होगा जो सच्चा और इस्राएल का पवित्र है और
८ उस ने तुझे चुन लिया है। यहोवा यों कहता है कि अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली और उद्धार करने के दिन मैं ने तेरी सहायता की है सो मैं तेरी रक्षा करके तेरे द्वारा लोगों के साथ वाचा बांधूंगा[६] कि तू देश को सुभागी[७] करे और उजड़े हुए स्थानों को
९ उन के अधिकारियों के हाथ में फेर दे, और बंधुओं से कहे कि बन्दीगृह से निकल आओ और जो अन्धियारे में हैं उन से कहे कि प्रकाश में आओ[८]। वे मार्गों के किनारे किनारे चरने पाएंगे और सब मुण्डे टीलों पर भी
१० उन को चराई मिलेगी। वे न भूखे होंगे न प्यासे और न लूह न घाम उन्हें लगेगा क्योंकि जो उन पर दया करता सो उन को ले चलेगा और जल के सोतों के

(१) मूल में पहिला। (२) मूल में पिछला। (३) वा प्रभु यहोवा ने मुझे और अपने आत्मा को भेज दिया है।

(४) मूल में मुंह। (५) मूल में मेरा न्याय यहोवा के पास है। (६) मूल में तुझे लोगों की वाचा ठहराऊंगा। (७) मूल में खड़ा। (८) मूल में अपने को प्रगट करो।

११ पास पास से चलाएगा। और मैं अपने सब पहाड़ों को मार्ग कर दूंगा और मेरे राजमार्ग ऊंचे हो जाएंगे।
१२ देखो ये तो दूर से आएंगे और ये उत्तर और पच्छिम
१३ से और ये सीनियों के देश से आएंगे। हे आकाश जयजयकार कर हे पृथिवी मगन हो हे पहाड़ो गला खोलकर जयजयकार करो क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी और अपने दीन लोगों पर दया की है॥

१४ परन्तु सिय्योन ने कहा है कि यहोवा ने मुझे त्याग दिया मेरा प्रभु ने मुझे बिसरा दिया है।
१५ क्या कोई स्त्री अपने दूधपिउवे बच्चे को ऐसा बिसरा सकती कि अपने उस जने हुए लड़के पर दया न करे हां वह तो भूल सकती है पर मैं तुझे भूल नहीं
१६ सकता। सुनो मैं ने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है तेरी शहरपनाह मेरी दृष्टि में लगातार
१७ बनी रहती है। तेरे लड़के तो फुर्ती से आ रहे हैं और तेरे ढानेहारे और उजाड़नेहारे तेरे मध्य से निकले जा रहे
१८ हैं। अपनी आंखें उठाकर चारो ओर देख कि वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह तू उन सभों को गहिने के समान पहिनेगी और दुल्हिन की
१९ नाईं अपने शरीर में बांध लेगी। और तेरे जो स्थान सुनसान और उजड़े हैं और तेरे जो देश खण्डहर ही खण्डहर हैं उन[1] में निवासी अब न समाएंगे और तेरे
२० नाश करनेहारे दूर हो जाएंगे। तेरे जो पुत्र जाते रहे[2] सो तेरे कान में कहने पाएंगे कि यह स्थान हमारे लिये सकेत
२१ है हमें और स्थान दे कि उस में रहें। तब तू मन में कहेगी कि किस ने मेरे लिये इन को जन्माया मेरे पुत्र तो जाते रहे थे और मैं बांझ हो गई मैं बंधुई और भगेड़ू हो गई सो इन को किस ने पाला देख मैं अकेली रह गई थी अब ये कहां से आये॥

२२ प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं अपना हाथ जाति जाति के लोगों की ओर बढ़ाऊंगा[3] और देश देश के लोगों के साम्हने अपना झण्डा खड़ा करूंगा तब वे तेरे बेटों को अपनी गोद में ले आएंगे और तेरी बेटियों को अपने कन्धे पर चढ़ाकर तेरे पास पहुंचाएंगे।
२३ और राजा तेरे बच्चों के निज सेवक और उन की रानियां तेरी दूध पिलानेहारियां होंगी वे अपनी नाक भूमि पर रखकर तुझे दण्डवत् करेंगे और तेरे पांवों की धूलि चाट लेंगे सो तू यह जान लेगी कि मैं यहोवा हूं और मेरी बाट जोहनेहारों की आशा कभी नहीं टूटने की।
२४ क्या वीर के हाथ से लूट छीन ली जाए वा धर्म्मी के बन्धुए
२५ छुड़ाये जाएं। तौभी यहोवा यों कहता है कि हां वीर के बंधुए उस से छीन लिये जाएंगे और बलात्कारी की लूट उस के हाथ से छुड़ाई जाएगी क्योंकि जो तुझ से मुकद्दमा लड़ते हैं उन से मैं आप मुकद्दमा लड़ूंगा और
२६ तेरे लड़केबालों का मैं आप उद्धार करूंगा। और जो तुझ पर अंधेर करते हैं उन को मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा और वे अपना लोहू पीकर ऐसे मतवाले होंगे जैसे नये दाखमधु से होते हैं तब सब प्राणी जान लेंगे कि तेरा उद्धारकर्त्ता यहोवा और तेरा छुड़ानेहारा याकूब का शक्तिमान् मैं ही हूं॥

५०.

तुम्हारी माता का त्यागपत्र जिसे मैं ने उस को छोड़ देने के समय दिया सो कहां है और ब्योपारियों में से मैं ने किस के हाथ तुम्हें बेच दिया है। यहोवा यों कहता है कि सुनो तुम अपने अधर्म्म के कामों के कारण बिक गये और तुम्हारे ही अपराधों के कारण तुम्हारी माता छोड़ दी गई।
२ इस का क्या कारण है कि जब मैं आया तब कोई न मिला और जब मैं ने पुकारा तब कोई न बोला क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता और क्या मुझ में इतनी शक्ति नहीं कि न उबार सकूं देखो मैं तो समुद्र को घुड़कते ही सुखा डालता और महानदों को जंगल बना देता हूं उन की मछलियां जल बिना मर जातीं और बसाती हैं।
३ मैं तो आकाश को मानो शोक का काला कपड़ा पहिनाता और टाट ओढ़ा देता हूं॥

४ प्रभु यहोवा ने मुझे शिष्यों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने बचन के द्वारा संभालना जानूं वह भोर भोर को मुझे जगाकर मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य की रीति सुनूं।
५ प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है और मैं ने हठ न किया न पीछे हट गया।
६ मैं ने मारनेहारों की ओर अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेहारों की ओर अपने गाल किये मैं ने अपमानित होने और उन के थूकने से मुंह न मोड़ा[4]।
७ क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करेगा इस कारण मैं ने संकोच नहीं किया बरन अपना माथा चकमक की नाईं कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था कि मेरी आशा न टूटेगी।
८ जो मुझे धर्म्मी ठहराता है सो मेरे निकट है कौन मेरे साथ मुकद्दमा करेगा हम एक संग खड़े हों जो कोई मेरा

(१) मूल में तुझ। (२) मूल में तेरे लड़कों के जाते रहने के बेटे। (३) मूल में उठाऊंगा।

(४) मूल में न छिपाया।

९ मुद्दई बनेगा वह मेरे निकट आए। सुनो प्रभु यहोवा मेरी सहायता करेगा मुझे कौन दोषी ठहरा सकेगा देखो वे सब कीड़े खाये हुए पुराने कपड़े की नाईं नाश हो जाएंगे॥

१० तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उस के दास की सुनता है जो चाहे अन्धियारे में चलता हो और उसे कुछ उजियाला न दिखाई देता हो तौभी यहोवा के नाम का भरोसा रक्खे रहे और अपने परमेश्वर पर टेक लगाये रहे। ११ देखो तुम जो आग बारते और अग्निबाणों को कमर में बांधते हो तुम सब अपनी बारी हुई आग में और अपने जलाये हुए अग्निबाणों के बीच आप ही चले जाओ। तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी कि तुम सन्ताप में पड़े रहोगे॥

५१. हे धर्म्म पर चलनेहारो हे यहोवा के ढूंढ़नेहारो कान लगाकर मेरी सुनो जिस चटान में से तुम खोदे गये और जिस खानि में से तुम निकाले गये उस पर ध्यान करो। २ अपने मूलपुरुष इब्राहीम और अपनी माता सारा पर ध्यान करो जब वह अकेला था तब ही मैं ने उस को बुलाया और आशिष दी और बढ़ा दिया। ३ यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है उस ने उस के सब खंडहरों को शान्ति दी है और उस के जंगल को अदेन के समान और उस के निर्जल देश को यहोवा की बारी के समान कर दिया है उस में हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा॥

४ हे मेरी प्रजा के लोगो मेरी ओर ध्यान धरो हे मेरे लोगो कान लगाकर मेरी सुनो मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी[१] और मैं अपना नियम देश देश के लोगों ५ की ज्योति होने के लिये स्थिर रक्खूंगा। मेरा धर्म्म प्रगट होने पर है[२] मैं उद्धार करने लगा हूं[३] मैं अपने भुजबल से देश देश के लोगों के न्याय के काम करूंगा द्वीप मेरी बाट जोहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रक्खेंगे। ६ आकाश की ओर अपनी आंखें उठाओ और पृथिवी को निहारो क्योंकि आकाश धूएं की नाईं बिलाय जाएगा और पृथिवी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी और उस के रहनेहारे यों ही जाते रहेंगे पर जो उद्धार मैं करूंगा सो सदा लों ठहरेगा और मेरा धर्म्म जाता न रहेगा॥

७ हे धर्म्म के जाननेहारो जिन के मन में मेरी व्यवस्था है तुम कान लगाकर मेरी सुनो मनुष्यों की की हुई नामधराई से मत डरो और उन के निन्दा करने से विस्मित न हो। ८ क्योंकि घुन उन्हें कपड़े की नाईं और कीड़ा उन्हें ऊन की नाईं खाएगा पर मेरा धर्म्म सदा लों ठहरेगा और मेरा किया हुआ उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहेगा॥

९ हे यहोवा की भुजा जाग जाग बल धारण कर जैसे प्राचीन काल के दिनों में और अगली पीढ़ियों के समय में वैसे ही अब भी जाग क्या तू वही नहीं है जिस ने रहब को टुकड़े टुकड़े किया और मगरमच्छ को घायल किया था। १० क्या तू वही नहीं है जिस ने समुद्र को अर्थात् गहिरे सागर के जल को सुखा डाला और उस की थाह में अपने छुड़ाये हुओं के पार जाने के लिये मार्ग निकाला था। ११ सो यहोवा के छुड़ाये हुए लोग लौट कर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे और उन को सदा का आनन्द मिलेगा[४] वे हर्ष और आनन्द प्राप्त करेंगे और शोक और लम्बी सांस भरना जाता रहेगा॥

१२ मैं तो मैं ही तेरा शान्तिदाता हूं सो तू कौन है जो विनाशी मनुष्य से और घास सरीखे मुर्झानेहारे[५] आदमी से डरता है, १३ और आकाश के ताननेहारे और पृथिवी की नेव डालनेहारे अपने कर्त्ता यहोवा को भूल जाता है और जब जब द्रोही नाश करने को तैयार होता है तब तब उस की जलजलाहट से दिन भर लगातार थरथराता है पर द्रोही की जलजलाहट कहां रही। १४ जो झुकाया हुआ है सो शीघ्र छुड़ाया जाएगा वह गड़हे में न मरेगा और उस का आहार न घटेगा। १५ जो समुद्र को बिलोड़ता और उस की लहरों को गरजाता है सो मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूं मेरा नाम सेनाओं का यहोवा है। १६ और मैं ने तुझे अपने वचन सिखाये[६] और अपने हाथ की आड़ में छिपा रक्खा है कि मैं आकाश तानूं[७] और पृथिवी की नेव डालूं और सिय्योन से कहूं कि तू मेरी प्रजा है॥

१७ हे यरूशलेम जाग उठ जाग उठ खड़ी हो जा तू ने यहोवा के हाथ से उस की जलजलाहट के कटोरे में से पिया है तू ने कटोरे में का लड़खड़ा देनेहारा मद पूरा पूरा पी लिया है। १८ जितने लड़के वह जनी है उन में से कोई न रहा जो उसे धीरे धीरे ले चले और जितने लड़के उस ने पाले पोसे उन में से कोई न रहा जो उस के हाथ को थाम्भ ले। १९ ये दो विपत्तियां तुझ पर आ पड़ी हैं सो कौन तेरे संग विलाप करेगा उजाड़ और विनाश और

(१) मूल में निकलेगी। (२) मूल में निकट है। (३) मूल में मेरा उद्धार निकला है।

(४) मूल में उन के सिर पर सदा का आनन्द होगा।
(५) मूल में सरीखे बननेहारे।
(६) मूल में मैं ने तेरे मुंह में अपने वचन डाले।
(७) मूल में आकाश को पौधे की नाईं लगाऊं।

महंगी और तलवार आ पड़ी हैं मैं किस रीति[१] तुझे शान्ति २० दे सकता। तेरे लड़के मूर्च्छित होकर एक एक सड़क के सिरे पर महाजाल में फंसे हुए हरिण की नाईं पड़े हैं यहोवा की जलजलाहट और तेरे परमेश्वर की घुड़की २१ के कारण वे अचेत पड़े हैं[२]। इस कारण हे दुखियारी तू मतवाली तो है पर दाखमधु पीकर नहीं तू यह बात २२ सुन। तेरा प्रभु यहोवा जो अपनी प्रजा का मुकद्दमा लड़नेहारा तेरा परमेश्वर है सो यों कहता है कि सुन मैं लड़खड़ा देनेहारे मद के कटोरे को अर्थात् अपनी जलजलाहट के कटोरे को तेरे हाथ से ले लेता हूं सो तुझे २३ उस में से फिर कभी पीना न पड़ेगा। और मैं उसे तेरे उन दुःख देनेहारों के हाथ में दूंगा जिन्हों ने तुझ से कहा कि लेट जा कि हम तुझ पर पांव देकर चलें[३] और तू ने औंधे मुंह भूमि पर गिरकर अपनी पीठ को सड़क सी बना दिया[४]॥

५२. हे सिय्योन जाग जाग अपना बल धारण कर हे पवित्र नगर यरूशलेम अपने शोभायमान वस्त्र पहिन ले क्योंकि तेरे बीच खतनारहित और अशुद्ध लोग फिर कभी प्रवेश न करने २ पाएंगे। अपने पर से धूल झाड़ दे हे यरूशलेम उठकर विराजमान हो हे सिय्योन की बंधुई बेटी अपने गले के बंधन को खोल दे॥

३ यहोवा तो यों कहता है कि तुम जो सेंतमेंत बिक गये थे सो बिना रुपया दिये छुड़ाये भी जाओगे। ४ फिर प्रभु यहोवा यों भी कहता है कि मेरी प्रजा तो पहिले पहिल मिस्र में परदेशी होकर रहने को गई थी और अश्शूरियों ने भी उस पर बिन कारण अंधेर ५ किया। सो अब यहोवा की यह वाणी है कि मैं यहां क्या करता हूं मेरी प्रजा सेंतमेंत हर ली गई है यहोवा की यह भी वाणी है कि जो उस पर प्रभुता करते हैं सो जयजयकार करते हैं और मेरे नाम की निन्दा ६ दिन भर लगातार होती रहती है। इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी इसी कारण वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता है सो यहोवा ही है देखो मैं वही हूं॥

७ पहाड़ों पर उस के पांव क्या ही सोहते हैं जो शुभ समाचार देता और शान्ति की बात सुनाता और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार होने का सन्देश देता और सिय्योन से कहता है कि तेरा परमेश्वर राजा हुआ है। सुन तेरे पहरुए पुकार रहे हैं वे एक ८ साथ जयजयकार कर रहे हैं क्योंकि वे साक्षात् देखते हैं कि यहोवा सिय्योन को क्योंकर लौटाये लाता है। ९ हे यरूशलेम के खंडहरो एक संग उमंग में आकर जयजयकार करो क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शांति दी और यरूशलेम को छुड़ा लिया है। यहोवा १० ने सारी जातियों के साम्हने अपनी पवित्र भुजा प्रगट की है और पृथिवी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखते हैं। दूर ११ हो दूर वहां से निकल जाओ कोई अशुद्ध वस्तु मत छूओ उस के बीच से निकल जाओ हे यहोवा के पात्रों के ढोनेहारो अपने को शुद्ध करो। क्योंकि तुम को न १२ उतावली से निकलना न भागते हुए चलना पड़ेगा क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे आगे और इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे पीछे चलेगा॥

देखो मेरा दास बुद्धि से काम करेगा वह ऊंचा १३ महान और अति उन्नत हो जाएगा। जैसे बहुत से लोग १४ तुझे देखकर चकित हुए (क्योंकि उस का रूप यहां लों बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ा और उस की सुन्दरता भी कि आदमियों की सी न रह गई), वैसे ही वह बहुत सी जातियों पर छिड़केगा और उस १५ को देखकर राजा चुपचाप रहेंगे[५] क्योंकि वे तब ऐसी बात देखेंगे जिस का वर्णन उन के सुनते कभी न किया गया हो और ऐसी बात समझ लेंगे जो उन्हों ने कभी न सुनी हो॥

५३. जो समाचार हम को दिया गया था उस का किस ने विश्वास किया और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ। वह तो २ उस के साम्हने अंकुर की नाईं और ऐसी जड़ की शाखा के समान बढ़ा होता गया जो निर्जल भूमि में हो उस की न तो कुछ सुन्दरता थी और न कुछ तेज और जब हम उस को देखते थे तब उस का ऐसा रूप हमें न देख पड़ता था कि हम उस को चाहते। वह तुच्छ जाना ३ जाता था और पुरुषों का त्यागा हुआ था वह दुःखी पुरुष था और रोग से उस की जान पहिचान थी और जैसा कोई जिस से लोग मुख फेर लेते हैं वैसा वह तुच्छ जाना जाता था और हम उसे लेखे में न लाते थे॥

निश्चय वह हमारे ही रोगों को उठाता था और ४

(१) मूल में मैं कौन। (२) मूल में घुड़की से भरे हैं। (३) मूल में कि हम आगे चलें। (४) मूल में तू ने आगे चलनेहारे के लिए अपनी पीठ भूमि और सड़क के समान रक्खी।

(५) मूल में राजा अपने मुंह मून्देंगे।

हमारे ही दुःखों से लदा हुआ था तौभी हम लोग उस को पिटा हुआ और परमेश्वर का मारा हुआ और
५ दुर्दशा में पड़ा हुआ समझते थे। पर वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म्म के कामों के हेतु कुचला गया था जिस ताड़ना से हमारे लिये शान्ति उपजे सो उस पर पड़ी और उस के कोड़े
६ खाने से हम लोग चंगे हो सके[१] हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गये थे बरन हम ने अपना अपना मार्ग लिया पर यहोवा ने हम सभों के अधर्म्म का भार उसी पर डाल दिया॥

७ उस पर अंधेर किया गया पर वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला जैसे भेड़ बध होने को जाने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप रहती
८ है वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला। अंधेर और निआय से वह उठा लिया गया और उस के समय के लोगों में से किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच से उठा लिया जाता है मेरे लोगों ही के
९ अपराध के कारण उस पर मार पड़ी है। और उस की कबर दुष्टों के संग और उस की मृत्यु के समय धनवान् के संग ठहराई गई तौभी[२] उस ने कुछ उपद्रव न किया था और न उस के मुंह से कभी छल की बात निकली थी॥

१० तौभी यहोवा को यह भावा कि उसे कुचले उसी ने उस को रोगी कर दिया जब तू उस का प्राण दोषबलि करे तब वह अपना वंश देखने पाएगा और बहुत दिन जीता रहेगा और उस के हाथ से यहोवा की
११ इच्छा पूरी हो जाएगी। वह अपने मन के खेद का फल देखकर शांति पाएगा[३] अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्म्मी दास बहुतेरों को धर्म्मी ठहराएगा और वह उन के अधर्म्म
१२ के कामों का भार आप उठाए रहेगा। इस कारण मैं उसे बड़ों के संग भाग दूंगा और वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा यह इस का पलटा होगा कि उस ने अपना प्राण मृत्यु के वश कर दिया[४] और वह अपराधियों के संग गिना गया पर उस ने बहुतों के पाप का भार उठा लिया और अपराधियों के लिये बिनती करता है॥

५४.

हे बांझ तू जो कभी न जनी जयजयकार कर तू जिसे जनने की पीड़ें न हुईं गला खोलकर जयजयकार कर और पुकार क्योंकि त्यागी हुई के लड़के सुहागिन के लड़कों से
२ अधिक हैं यहोवा का यही वचन है। अपने तंबू का स्थान चौड़ा कर और तेरे डेरे के पट लंबे किए जाएं हाथ मत रोक रस्सियों को लम्बी और खूंटों को दृढ़
३ कर। क्योंकि तू दाहिने बाएं फैलेगी और तेरा वंश जाति जाति का अधिकारी होगा और उजड़े हुए नगरों को
४ बसाएगा। तू मत डर क्योंकि तेरी आशा न टूटेगी और तू लज्जित न हो क्योंकि तुझ पर सियाही न छाएगी क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जाएगी और अपने विधवापन की नामधराई फिर स्मरण न करेगी।
५ क्योंकि तेरा कर्त्ता तेरा पति है उस का नाम सेनाओं का यहोवा है और इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ानेहारा है और वह सारी पृथिवी का भी परमेश्वर कहलाएगा।
६ क्योंकि यहोवा ने तुझे ऐसा बुलाया है मानो तू छोड़ी हुई और मन की दुखिया स्त्री और जवानी में निकाली
७ हुई स्त्री है तेरे परमेश्वर का यही वचन है। क्षण भर ही के लिये मैं ने तुझे छोड़ तो दिया था पर अब बड़ी दया
८ करके मैं फिर तुझे रख लूंगा। क्रोध के झकोरे में आकर मैं ने पल भर के लिये तुझ से मुंह छिपाया तो था पर करुणा करके मैं तुझ पर सदा के लिये दया करूंगा तेरे
९ छुड़ानेहारे यहोवा का यही वचन है। यह तो मेरे लेखे नूह के समय के जलप्रलय के समान है क्योंकि जैसे मैं ने किरिया खाई थी कि नूह के समय के जलप्रलय से पृथिवी फिर न डूबेगी वैसे ही मैं ने यह भी किरिया खाई है कि आगे को तुझ पर क्रोध न करूंगा और न तुझ
१० को घुड़कूंगा। चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाड़ियां टल जाएं तौभी मेरी करुणा तुझ पर से न हटेगी और मेरी शान्तिवाली वाचा न टलेगी यहोवा का जो तुझ पर दया करता है यही वचन है॥

११ हे दुःखियारी तू जो आंधी की सताई है और जिस को शांति नहीं मिली सुन मैं तेरे पत्थरों की पच्चीकारी करके
१२ बैठाऊंगा और तेरा नेव में नीलमणि डालूंगा। और मैं तेरे कलश माणिकों के और तेरे फाटक लालड़ियों के और
१३ तेरे सब सिवानों को मनोहर रत्नों के बनाऊंगा। और तेरे सब लड़के यहोवा के सिखाये हुए होंगे और उन को बड़ी
१४ शान्ति मिलेगी। तू धर्म्मी होने के द्वारा स्थिर होगी तू अंधेर से बचेगी क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा और तू भयभीत होने से बचेगी क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा।
१५ सुन लोग भीड़ लगाएंगे पर मेरी ओर से नहीं जितने
१६ तेरे विरुद्ध भीड़ लगाएं सो तेरे कारण गिरेंगे। सुन जो कारीगर आग में के कोयले फूंक फूंककर अपनी कारीगरी के अनुसार हथियार बनाता है सो मेरा ही सिरजा हुआ है और उजाड़ने के लिये नाश करनेहारा भी मेरा ही

(१) मूल में हमारे लिये चङ्गापन है। (२) वा क्योंकि। (३) मूल में तृप्त होगा। (४) मूल में मृत्यु के लिये उण्डेल दिया।

१७ सिरजा हुआ है। जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाये जाएं उन में से कोई सफल न होगा और जितने लोग मुद्दई होकर तुझ पर नालिश करें[1] उन सभों से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा और वे मेरे ही कारण धर्म्मी ठहरेंगे यहोवा की यही वाणी है॥

५५. अहो सब प्यासे लोगो पानी के पास आओ और जिन के पास कुछ रुपया न हो तुम भी आकर मोल लो और खाओ बरन आकर दाखमधु और दूध बिन रुपए और बिन दाम ले २ लो। जो भोजनवस्तु नहीं है उस के लिये तुम क्यों रुपया लगाते हो और जिस से पेट नहीं भरता उस के लिये क्यों परिश्रम करते हो मेरी ओर मन लगाकर सुनो तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी ३ वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे। कान लगाओ और मेरे पास आओ सुनो तब तुम जीते रहोगे[2] और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बांधूंगा अर्थात् दाऊद पर ४ की अटल करुणा की। सुनो मैं ने उस को राज्य राज्य के लोगों के लिये साक्षी और प्रधान और आज्ञा देनेहारा ५ ठहराया है। सुन तू ऐसी जाति को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं तेरे पास दौड़ी आएंगी वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के निमित्त यह करेंगी क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है॥

६ जब लों यहोवा मिल सकता है तब लों उस की खोज में रहो जब लों वह निकट है तब लों उस को ७ पुकारो। दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा की ओर फिरे और वह उस पर दया करेगा वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे ८ और वह पूरी रीति से उस को क्षमा करेगा। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मेरे और तुम्हारे सोच विचार एक समान नहीं और न तुम्हारी और ९ मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में आकाश और १० पृथिवी का अन्तर है[3]। जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते बरन भूमि पर पड़कर[4] उपज उपजाते और इसी रीति बोनेहारे ११ को बीज और खानेहारे को रोटी मिलती है, उसी प्रकार से मेरा वचन भी जो मेरे मुख से निकलता है सो व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा जो मेरी इच्छा हुई हो उस को वह पूरी ही करेगा और जिस काम के लिये मैं ने उस को भेजा हो सो पूरा होगा[5]। सो तुम आनन्द के साथ १२ निकलोगे और शान्ति के साथ पहुंचाये जाओगे तुम्हारे आगे आगे पहाड़ और पहाड़ियां गला खोलकर जयजयकार करेंगी और मैदान के सारे वृक्ष आनन्द के मारे ताली बजाएंगे। तब भटकटैयों की सन्ती सनौवर उगेंगे और बिच्छू पेड़ों की सन्ती मेंहदी उगेगी और इस से यहोवा का नाम होगा और सदा का चिन्ह रहेगा जो कभी मिट न जाएगा॥

५६. यहोवा यों कहता है कि न्याय का पालन करो और धर्म्म के काम करो क्योंकि मैं शीघ्र तुम्हारा उद्धार करूंगा[6] और मेरा धर्म्मी होना प्रगट होने पर है। क्या ही धन्य है २ वह मनुष्य जो ऐसा ही करता और वह आदमी जो इस को धरे रहता है जो विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचा रहता और अपने हाथ को सब भांति की बुराई करने से रोकता है। और जो जो परदेशी यहोवा से ३ मिले हुए हैं सो न कहें कि यहोवा हमें अपनी प्रजा से निश्चय अलग करेगा और खोजे भी न कहें कि हम तो सूखे वृक्ष हैं। क्योंकि जो खोजे मेरे विश्रामदिन मानते ४ और जिस बात से मैं प्रसन्न रहता हूं उसी को अपनाते और मेरी वाचा को पालते हैं उन के विषय यहोवा यों कहता है कि, मैं अपने भवन और अपनी शहरपनाह के ५ भीतर उन को ऐसा स्थान और नाम दूंगा जो बेटे बेटियों से कहीं उत्तम होगा बरन मैं उन का नाम सदा बनाये रक्खूंगा[7] और वह कभी मिट न जाएगा। परदेशी भी ६ जो यहोवा के साथ इस इच्छा से मिले हुए हैं कि उस की सेवा टहल करें और यहोवा के नाम से प्रीति रक्खें और उस के दास हो जाएं जितने विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे रहते और मेरी वाचा को पालते हैं, उन को ७ मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा उन के होमबलि और मेलबलि मेरी वेदी पर ग्रहण किये जाएंगे क्योंकि मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहाएगा। प्रभु यहोवा जो निकाले दिये हुए इस्राएलियों को इकट्ठे ८ करनेहारा है उस की यह वाणी है कि जो इकट्ठे किये

(१) मूल में जितनी जीभें तेरे साथ उठें।
(२) मूल में तुम्हारे प्राण जीएंगे।
(३) मूल में आकाश पृथिवी से ऊंचा है वैसे ही मेरी गति तुम्हारी गति से और मेरे सोच विचार तुम्हारे सोच विचारों से ऊंचे हैं।
(४) मूल में भूमि को सींचकर।
(५) मूल में उस में सुफल होगा।
(६) मूल में मेरा उद्धार आने को निकट है।
(७) मूल में उन को सदा का नाम दूंगा।

गये हैं उन से मैं औरों को भी इकट्ठे करके मिला दूंगा ॥

९ हे मैदान के सारे जन्तुओ हे वन के सब जन्तुओ १० खा डालने के लिये आओ। उस के पहरुए अंधे हैं वे सब के सब अज्ञानी वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं जो भूंक नहीं सकते वे स्वप्न देखनेहारे और लेटनेहारे और ऊंघने ११ के चाहनेहारे हैं। वे तो मरभूखे कुत्ते हैं जो तृप्त कभी नहीं होते[1] और वे ही चरवाहे हैं उन में समझ की शक्ति नहीं उन सभों ने अपने अपने लाभ के लिये अपना १२ अपना मार्ग लिया है। वे कहते हैं कि आओ हम दाखमधु ले आएं और मदिरा पीकर छक जाएं कल का दिन तो आज सरीखा अत्यन्त बड़ा दिन होगा ॥

५७. धर्म्मी जन नाश होता है पर कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता और भक्त मनुष्य उठा लिये जाते हैं पर कोई नहीं सोचता कि धर्म्मी जन विपत्ति के होने से पहिले २ उठा लिया जाता है। वह शांति को पहुंचता है जो सीधा चला जाता है सो अपनी खाट पर विश्राम करता है ॥

३ हे टोनहाइन के लड़को हे व्यभिचारी और व्यभि- ४ चारिनी की सन्तान इधर निकट आ। तुम किस पर हंसी करते और मुंह बनाकर बिराते हो[2] क्या तुम ५ पाखण्डी और झूठे[3] नहीं हो। तुम तो सब हरे वृक्षों के तले देवताओं के कारण कामातुर होते और नालों में ढागों की दरारों के बीच[4] बालबच्चों को बध करते हो। ६ नालों के चिकने पत्थर ही तेरा भाग और अंश ठहरे[5] ऐसी ही वस्तुओं को तू तपावन देती और अन्नबलि ७ चढ़ाती है क्या मैं इन बातों पर शान्त होऊं। बड़े ऊंचे पहाड़ पर तू ने अपना बिछौना बिछाया है वहीं तू बलि ८ चढ़ाने को चढ़ गई है। तू ने अपनी चिन्हानी अपने द्वार के किवाड़ और चौखट की आड़ ही में रक्खी और तू मुझे छोड़कर औरों को अपने तईं दिखाने के लिये चढ़ी तू ने अपनी खाट चौड़ी की और उन से वाचा बांध ली और तू ने उन की खाट में प्रीति रक्खी जहां तू ने ९ उस को देखा। और तू तेल लिये हुए राजा के पास गई और बहुत सुगंधित तेल अपने काम में लाई और अपने दूत दूर लों भेज दिये और अधोलोक लों अपने को नीचा किया। तू अपनी यात्रा की लम्बाई के कारण १० थक गई तौभी तू ने न कहा कि व्यर्थ है क्योंकि तेरा बल कुछ थोड़ा सा अधिक हो गया[6] इसी कारण तू हार नहीं गई[7]। तू ने जो झूठ कहा और मुझ को ११ स्मरण नहीं रक्खा और चिन्ता न की सो किस के डर से और किस का भय मानकर ऐसा किया क्या मैं बहुत काल से चुप नहीं रहा इस कारण तू मुझ से तो नहीं डरती। मैं आप तेरे धर्म्म और कर्म्म का बर्णन १२ करूंगा पर उन से तुझे कुछ लाभ न होगा। जब तू १३ दोहाई दे तब तेरी बटोरी हुई वस्तुएं तुझे छुड़ाएं वे तो सब की सब वायु से बरन एक फूंक से भी उड़ जाएंगी पर जो मेरी शरण ले सो देश को भाग में पाएगा और मेरे पवित्र पर्वत का अधिकारी हो जाएगा। और यह १४ कहा जाएगा कि धुस बांध बांधकर राजमार्ग बनाओ और मेरी प्रजा के मार्ग पर से ठोकर दूर करो ॥

क्योंकि जो महान् और उन्नत और सदा बना १५ रहता है और जिस का नाम पवित्र ईश्वर है सो यों कहता है कि मैं ऊंचे पर पवित्र स्थान में निवास करता हूं और उस के संग भी रहता हूं जो खेदित और नम्र है कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हरा करूं[8]। मैं तो सदा मुकद्दमा लड़ता न रहूंगा और न सर्वदा १६ क्रोधित रहूंगा नहीं तो आत्मा और मेरे बनाये हुए जीव मेरे साम्हने मूर्च्छित हो जाते। उस के लोभ के पाप के १७ कारण मैं ने क्रोधित होकर उस को दुःख दिया था और क्रोध के मारे उस से मुंह फेरा[9] था और वह अपने मनमाने मार्ग में दूर चलता गया था। मैं जो उस की १८ चाल देखता आया हूं सो अब उस को चंगा करूंगा और उसे ले चलूंगा और उस को विशेष करके उस में के शोक करनेहारों को शांति दूंगा। मैं मुंह के फल का १९ सिरजनहार हूं यहोवा ने कहा है कि जो दूर है और जो निकट है दोनों को पूरी शांति मिले और मैं उस को चंगा करूंगा। दुष्ट तो लहराते हुए समुद्र सरीखे हैं २० जो स्थिर नहीं हो सकता और उस के जल में से मैल और कीच निकलती है। दुष्टों के लिये कुछ शांति २१ नहीं मेरे परमेश्वर का यही वचन है ॥

५८. गला खोलकर पुकार रख मत छोड़ नरसिंगे का सा ऊंचा शब्द कर मेरी प्रजा को उस का अपराध अर्थात् याकूब के घराने

(१) मूल में फिर कुत्ते मरभूखे हैं वे तृप्ति नहीं जानते।

(२) मूल में मुंह खोलकर जीभ बढ़ाते हो।

(३) मूल में तुम अपराध के सन्तान झूठ का वंश।

(४) मूल में के नीचे। (५) मूल में वे ही वे ही तेरी चिट्ठी।

(६) मूल में तू ने अपने हाथ का जीव न पाया।

(७) मूल में तू बीमार नहीं हुई।

(८) मूल में नम्रों का आत्मा जिलाने को और चूर्णों का मन जिलाने को। (९) मूल में छिपाया।

२ को उन का पाप जता। वे तो दिन दिन मेरे पास आते हैं और मेरी गति बूझने की इच्छा ऐसे रखते हैं मानो वे धर्म्म करनेहारे लोग हैं जिन्हों ने अपने परमेश्वर के नियमों को नहीं टाला वे तो मुझ से धर्म्म के नियम पूछते और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं।
३ वे कहते हैं कि क्या कारण है कि हम ने तो उपवास किया पर तू ने इस की सुधि नहीं ली और हम ने तो दुःख उठाया पर तू ने कुछ विचार नहीं किया इस का कारण यह है कि तुम उपवास के दिन अपनी ही इच्छा पूरी करते
४ और अपने सब कठिन कामों को कराते हो। सुनो तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में झगड़ते और लड़ते और अन्याय से घूंसे मारते हो जैसा उपवास तुम आजकल करते हो उस से तुम्हारा
५ शब्द ऊंचे पर सुनाई नहीं देता। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं अर्थात् जिस में मनुष्य दुःख उठाए क्या वह इस प्रकार का होता है क्या तुम सिर को झाऊ की नाईं झुकाना और अपने नीचे टाट बिछाना और राख फैलाना ही उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने
६ का उपाय[1] कहते हो। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं सो क्या यह नहीं है कि अन्याय से बनाये हुए दासों और अंधेर सहनेहारों का जूआ तोड़कर[2] उन को छुड़ा देना और सब जूओं को टुकड़े टुकड़े करना।
७ क्या वह यह भी नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देनी और बपुरे मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना और किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना और
८ अपने जातिभाइयों से अपने का न छिपाना। तब तेरा प्रकाश पह फटने की नाईं चमकेगा और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा और तेरा धर्म्म तेरे आगे आगे चलेगा और
९ यहोवा का तेज तेरे पीछे पीछे चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा सुन लेगा तू दोहाई देगा और वह कहेगा कि मैं सुनाता हूं[3]। यदि तू अंधेर करना[4] और अंगुली मटकानी और अनर्थ बात बोलनी छोड़ दे,
१० और प्रेम से भूखे की सहायता करे[5] और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे तो अंधियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा और तेरा घोर अंधकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।
११ और यहोवा तुझे लगातार लिये चलेगा और झूरा पड़ने के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा और तू सींची हुई बारी के और ऐसे सोते के समान रहेगा जिस का जल कभी नहीं घटता। और तेरे वंश
१२ के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे और तू पीढ़ी पीढ़ी की पड़ी हुई नेव पर घर उठाएगा तब तेरा नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारनेहारा और पथों[6] का ठीक करनेहारा पड़ेगा।
१३ यदि तू विश्रामदिन को अशुद्ध न करे[7] अर्थात् मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे और विश्रामदिन को आनन्द का दिन और यहोवा के पवित्र किये हुए दिन को मान्य समझ कर उस दिन अपने ही मार्ग पर न चलने और अपनी ही इच्छा पूरी न करने और अपनी ही बातें
१४ न बोलने से उस का मान करे, तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा और मैं तुझे देश के ऊंचे स्थानों पर चलने दूंगा और तेरे मूलपुरुष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊंगा यहोवा ने यों कहा है॥

५९. सुनो यहोवा का हाथ ऐसा निर्बल[8] नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके और न वह ऐसा बहिरा[9] हो गया है कि न
२ सुन सके। पर तुम्हारे अधर्म्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों के कारण उस का मुंह तुम से ऐसा फिरा[10] है कि वह
३ नहीं सुनता। क्योंकि तुम्हारे हाथ[11] खून और अधर्म्म करने से अपवित्र हो गये हैं तुम्हारे मुंह से तो झूठ और
४ तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें कही जाती हैं। कोई धर्म्म के साथ नालिश नहीं करता और न कोई सच्चाई से मुकद्दमा लड़ता है वे मिथ्या पर भरोसा रखते और व्यर्थ बातें बकते उन को मानो उत्पात का गर्भ रहता और वे
५ अनर्थ को जनते हैं। वे सांपिन के अण्डे सेवते और मकड़ी के जाले बनाते हैं जो कोई उन के अण्डे खाता सो मर जाता है और जब कोई उस को फोड़ता तब उस में से
६ संपोला निकलता है[12]। फिर उन के जाले कपड़े का काम न देंगे और न वे अपने कामों से अपने को ढांपेंगे क्योंकि उन के काम अनर्थ ही के होते हैं और उन के हाथों से
७ उपद्रव का काम होता है। वे बुराई[13] करने को दौड़ते और निर्दोष का खून करने को फुर्ती करते हैं उन की युक्तियां अनर्थ की हैं और जहां जहां वे जाते हैं वहां
८ वहां उजाड़ और विनाश होते हैं। शांति का मार्ग वे

(१) मूल में दिन। (२) मूल में कि दुष्टता के बंधन खोलूंगा और जूए का रस्सियां खोलना। (३) मूल में मुझे देख। (४) मूल में जूआ। (५) मूल में और भूखे के लिये अपना जीव खींच निकाले।

(६) मूल में रहने के लिये पथों। (७) मूल में यदि विश्राम दिन से अपना पांव मोड़े। (८) मूल में छोटा। (९) मूल में उस का कान ऐसा भारी। (१०) मूल में छिपा। (११) मूल में और तुम्हारी अंगुलियां। (१२) मूल में और कुचला हुआ संपोला फूटता है। (१३) मूल में उन के पांव बुराई।

जानते नहीं और उन की लीकों में न्याय नहीं है उन के पथ टेढ़े हैं उन पर जो कोई चले सो शांति न पाएगा॥

९ इस कारण न्याय का चुकाना हम से दूर है और धर्म्म हम से नहीं मिला हम उजियाले की बाट तो जोहते पर अंधियारा ही बना रहता है हम प्रकाश की आशा तो लगाये हैं पर घोर अंधकार ही में चलना

१० पड़ता है। हम अंधों के समान हैं जो भीत टटोलते हैं हम बिन आंख के लोगों की नाईं टटोलते हैं हम दिन दुपहरी रात की नाईं ठोकर खाते हैं हम हृष्टपुष्टों के बीच

११ मुर्दों के समान हैं। हम सब के सब रीछों की नाईं चिल्लाते हैं और पिण्डुकों के समान च्यूं च्यूं करते हैं हम निर्णय की बाट तो जोहते हैं पर कुछ नहीं होता

१२ और उद्धार की पर वह हम से दूर रहता है। कारण यह है कि हमारे अपराध तेरे साम्हने बहुत हुए हैं और हमारे पाप हमारे विरुद्ध साक्षी देते हैं हमारे अपराध बने रहते हैं[१] और हम अपने अधर्म्म के काम जानते

१३ हैं, कि हम ने यहोवा का अपराध किया और उस से मुकर गये और अपने परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ा और अंधेर करने और फेर की बातें कहीं और झूठी बातें

१४ मन में गढ़ीं और कही भी हैं। और न्याय का चुकाना तो पीछे हटाया गया और धर्म्म दूर रह गया सच्चाई पाई नहीं जाती[२] और सिधाई प्रवेश करने नहीं पाती।

१५ बरन सच्चाई मिलती ही नहीं और जो बुराई से फिर जाता है सो लूटा जाता है॥

१६ यह देखकर यहोवा ने बुरा माना क्योंकि न्याय कुछ नहीं रहा और उस ने देखा कि कोई पुरुष नहीं और उस ने इस से अचंभा किया कि कोई बिनती करनेहारा नहीं तब उस ने अपने ही भुजबल से उद्धार

१७ किया[३] और अपने धर्म्मी होने से वह संभल गया। और उस ने धर्म्म को झिलम की नाईं पहिन लिया और उस के सिर पर उद्धार का टोप रक्खा गया उस ने पलटा लेने का वस्त्र धारण किया और जलन को बागे की नाईं

१८ पहिन लिया है। वह उन की करनी के अनुसार उन को फल देगा वह अपने द्रोहियों पर अपनी रिस भड़काएगा और अपने शत्रुओं को उन की कमाई देगा वह द्वीपवासियों

१९ को भी उन की कमाई भर देगा। तब पच्छिम की ओर लोग यहोवा के नाम का और पूर्व की ओर उस की महिमा का भय मानेंगे क्योंकि जब शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करे तब यहोवा का आत्मा उस के विरुद्ध झण्डा

२० खड़ा करेगा और याकूब में जो अपराध से फिरते हैं उन के लिये सिय्योन में एक छुड़ानेहारा आएगा यहोवा की

२१ यही वाणी है। और यहोवा यह कहता है कि जो वाचा मैं ने उन से बांधी है सो यह है कि मेरा जो आत्मा तुझ पर ठहरा है और अपने जो वचन मैं ने तुझे सिखाये[४] हैं सो अब से लेकर सर्वदा लों तेरी जीभ पर[५] और तेरे बेटों पोतों की जीभ पर भी चढ़े रहेंगे[६] यहोवा का यही वचन है॥

६०. उठ

प्रकाशमान हो क्योंकि तुझे प्रकाश मिल गया है और यहोवा का तेज

२ तेरे ऊपर उदय हुआ है। देख पृथिवी पर तो अंधियारा और राज्य राज्य के लोगों पर तो घोर अन्धकार छाया हुआ है पर तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा और उस का

३ तेज तुझ पर दिखाई देगा। और अन्यजातियां तेरे

४ प्रकाश की ओर राजा तेरी चमक की ओर चलेंगे। अपनी आंखें चारों ओर उठाकर देख वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं तेरे बेटे तो दूर से आ रहे हैं और

५ तेरी बेटियां गोद में पहुंचाई जा रही हैं। तब तू इसे देखेगी और तेरा मुख चमकेगा और तेरा हृदय थरथराएगा और आनन्द से भर जाएगा[७] क्योंकि समुद्र का सारा धन और अन्यजातियों की धन संपत्ति तुझ को

६ मिलेगी। तेरे देश[८] में ऊंटों के झुण्ड और मिद्यान और एपादेशों की साड़नियां भरेंगी शबा के सब लोग आकर सोना और लोबान भेंट लाएंगे और यहोवा का गुणानुवाद आनन्द से सुनाएंगे।

७ केदार की सब भेड़ बकरियां इकट्ठी होकर तेरी हो जाएंगी नबायोत के मेढ़े तेरी सेवा टहल के काम में आएंगे वे चढ़ावे में[९] मुझ से ग्रहण किये जाएंगे और मैं अपने शोभायमान भवन को और भी

८ शोभायमान कर दूंगा। ये कौन हैं जो बादल की नाईं और दर्बाओं की ओर उड़ते हुए पिण्डुकों की नाईं उड़े आते हैं।

९ निश्चय द्वीप मेरी ही बाट जोहेंगे पहिले तो तर्शीश के जहाज आएंगे कि तेरे बेटों को सोने चान्दी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्थात् इस्राएल के पवित्र के नाम के निमित्त दूर से पहुंचाएं क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है।

१० और परदेशी लोग तेरी शहरपनाह को उठाएंगे और उन के राजा तेरी सेवा टहल करेंगे क्योंकि मैं ने क्रोध में आकर तुझे दुःख तो दिया था पर अब तुझ से प्रसन्न होकर तुझ पर दया करता हूं।

११ और तेरे फाटक लगातार

(१) मूल में हमारे अपराध हमारे संग हैं। (२) मूल में सच्चाई ने चौक में ठोकर खाई। (३) मूल में उसी की भुजा ने उस के लिये उद्धार किया।

(४) मूल में तेरे मुंह में डाले। (५) मूल मे तेरे मुंह से। (६) मूल में के मुंह से भी न हटेंगे। (७) मूल में और बढ़ेगा। (८) मूल में तुझ में। (९) मूल में वे मेरी वेदी पर।

खुले रहेंगे और न दिन को न रात को बन्द किये जाएंगे जिस से अन्यजातियों की धन सम्पति और उन के राजा
१२ बंधुए होकर तेरे पास पहुंचाये जाएं। क्योंकि जिस जाति और राज्य के लोग तेरे अधीन न होंगे सो नाश होंगे बरन ऐसी जातियां पूरी रीति से सत्यानाश हो
१३ जाएंगी। लबानोन का विभव अर्थात् सनौबर और तिधार और सीधे सनौबर के पेड़ एक साथ तेरे पास आएंगे कि मेरे पवित्रस्थान के ठांव को शोभा दें और
१४ मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूंगा। और तेरे दुःख देनेहारों के सन्तान तेरे पास सिर झुकाये हुए आएंगे और जिन्हों ने तेरा तिरस्कार किया था सो सब तेरे पांवों पर[1] गिरकर दण्डवत् करेंगे और वे तुझ को यहोवा का नगर और इस्राएल के पवित्र का
१५ सिय्योन कहेंगे। तू जो छोड़ी और घिन की हुई है यहां लों कि कोई तुझ से होकर नहीं जाता इस की सन्ती मैं तुझे सदा के घमण्ड का और पीढ़ी पीढ़ी
१६ के हर्ष का कारण ठहराऊंगा। और तू अन्यजातियों का दूध और राजाओं की छाती से पीएगी और तू जान लेगी कि मैं यहोवा तेरा उद्धारकर्त्ता और छुड़ानेहारा
१७ और याकूब का शक्तिमान् हूं। मैं तुझे पीतल की सन्ती सोना और लोहे की सन्ती चान्दी और काठ की सन्ती पीतल और पत्थर की सन्ती लोहा दूंगा[2] और मैं मेल मिलाप को तेरे हाकिम और धर्म्म को तेरे चौधरी ठहरा-
१८ ऊंगा। न तेरे देश में फिर उपद्रव की न तेरे सिवानों के भीतर उत्पात वा अन्धेर की चर्चा सुन पड़ेगी तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम
१९ यश रक्खेगी। दिन में तो उजियाला पाने के लिये तुझे सूर्य्य का और रात में प्रकाश के लिये चन्द्रमा का फिर कुछ काम न पड़ेगा क्योंकि यहोवा तेरे लिये सदा का
२० उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा। तेरा सूर्य्य फिर अस्त न होगा और तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन न होगी[3] क्योंकि यहोवा तेरी सदा की ज्योति
२१ ठहरेगा सो तेरे विलाप के दिन अन्त हो जाएंगे। तेरे लोग सब के सब धर्म्मी होंगे वे देश के अधिकारी सदा रहेंगे वे मेरे लगाये हुए पौधे और मेरे रचे हुए[4] ठहरेंगे जिस से
२२ मैं शोभायमान ठहरूं। जो कम है सो हजार हो जाएगी और जो थोड़ा है सो सामर्थी जाति बन जाएगी मैं यहोवा इस के ठीक समय पर शीघ्र पूरा करूंगा॥

(१) मूल में तेरे पांवों के तलुए पर।
(२) मूल में लाऊंगा।
(३) मूल में और तेरा चन्द्रमा न सिमटेगा।
(४) मूल में मेरे हाथों का काम।

६१.

प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर ठहरा है क्योंकि यहोवा ने नम्र लोगों को शुभसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं और बंधुओं के साम्हने स्वाधीन होने का और कैदियों के साम्हने छुटकारे का प्रचार करूं, और
२ यहोवा के प्रसन्न रहने के बरस का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं और सब विलाप करने
३ हारों को शांति दूं, और सिय्योन में के विलाप करनेहारों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बांध दूं और उन का विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उन की उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं जिस से वे धर्म्म के बांझवृक्ष और यहोवा के लगाये
४ हुए कहलाएं कि वह शोभायमान ठहरे। सो वे बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे और अगले दिनों से पड़े हुए खण्डहरों में फिर घर बनाएंगे और उजड़े हुए नगरों को जो पीढ़ी पीढ़ी से उजड़े हुए हों
५ फिर नये सिरे से बसाएंगे। और परदेशी तो खड़े खड़े तुम्हारी भेड़बकरियों को चराएंगे और विदेशी लोग तुम्हारे हरवाहे और दाख की बारी के माली होंगे।
६ पर तुम यहोवा के याजक कहाओगे लोग तुम को हमारे परमेश्वर के टहलुए कहेंगे और तुम अन्यजातियों की धन संपत्ति को भोगोगे और उन के विभव की
७ वस्तुएं पाकर बड़ाई मारोगे। तुम्हारी नामधराई की सन्ती दूना भाग मिलेगा और अनादर की सन्ती वे अपने भाग के कारण जयजयकार करेंगे सो वे अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होंगे और सदा आन-
८ न्दित रहेंगे। क्योंकि मैं यहोवा न्याय में प्रीति रखता और बलिदान[5] के साथ चोरी करनी घिनौनी समझता हूं और मैं उन को उन का प्रतिफल सच्चाई से दूंगा और
९ उन के साथ सदा की वाचा बांधूंगा। और उन का वंश अन्यजातियों में और उन की सन्तान देश देश के लोगों के बीच प्रसिद्ध होगी जितने उन को देखेंगे सो उन्हें चीन्ह लेंगे कि यहोवा की ओर से धन्य वंश के ये ही हैं॥

१० मैं यहोवा के कारण अति हर्ष करता हूं और अपने परमेश्वर के हेतु मगन हूं क्योंकि उस ने मुझे उद्धार के वस्त्र ऐसे पहिनाये और धर्म्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे वर याजक की सी सुन्दर पगड़ी बान्धता वा
११ दुल्हिन गहने पहिनती है। क्योंकि जैसे भूमि अपनी

(५) वा अन्याय।

उपज को उगाती और बारी में जो कुछ बोया जाता है उस को वह उपजाती है वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धर्म्म और यश उगाएगा ॥

६२.

सिय्योन के निमित्त मैं तब लों चुप न हूंगा और यरूशलेम के निमित्त मैं तब लों चैन न लूंगा जब लों उस का धर्म्म अरुणोदय की नाईं और उस का उद्धार जलते २ हुए पलीते के समान दिखाई न दे। तब अन्यजातियां तेरा धर्म्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे और तेरा एक नया नाम रक्खा जाएगा जिसे यहोवा आप[१] ३ ठहराएगा। और तू यहोवा के हाथ में का एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजकीय ४ पगड़ी ठहरेगी। न तो तू फिर छोड़ी हुई और न तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई कहाएगी तू तो हेप्सीबा[२] और तेरी भूमि बूला[३] कहाएगी क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न ५ है और तेरी भूमि सुहागिन हो जाएगी। जैसे जवान पुरुष कुमारी को ब्याहता है वैसे ही तेरे लड़के तुझे ब्याहेंगे और जैसे वर दुल्हिन के कारण हर्षित होता है वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा ॥

६ हे यरूशलेम मैं ने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं जो दिन भर और रात भर भी लगातार पुकारते ७ रहेंगे[४] हे यहोवा को स्मरण करानेहारो चैन न लो, और जब लों वह यरूशलेम को स्थिर करके उस की प्रशंसा पृथिवी पर न फैला दे तब लों उस को भी चैन लेने न ८ दो। यहोवा ने अपने दहिने हाथ की और अपने बलवन्त भुजा की किरिया खाई है कि मैं फिर तेरा अन्न तेरे शत्रुओं को खाने के लिये न दूंगा और न बिराने लोग तेरा नया दाखमधु जिस के लिये तू ने परिश्रम ९ किया हो पीने पाएंगे। पर जिन्हों ने उसे खत्ते में रक्खा हो सोई उस को खाकर यहोवा की स्तुति करेंगे और जिन्हों ने दाखमधु भण्डारों में रक्खा हो वे ही उसे मेरे पवित्रस्थान के आंगनों में पीने पाएंगे ॥

१० फाटकों से निकल आओ निकल आओ प्रजा के लिये मार्ग सुधारो धुस बांधकर राजमार्ग बनाओ उस में के पत्थर बीन बीनकर फेंक दो देश देश के लोगों ११ के लिये झण्डा खड़ा करो। सुनो यहोवा पृथिवी की छोर लों इस आज्ञा का प्रचार करता है कि सिय्योन से[५] कहो कि देख तेरा उद्धारकर्त्ता आता है देख जो मजूरी उस को देनी है सो उस के पास और जो बदला उस को देना है सो उस के हाथ में[६] हैं। १२ और लोग उन को पवित्र प्रजा और यहोवा के छुड़ाये हुए कहेंगे और तेरा नाम पूछी हुई और न छोड़ी हुई नगरी पड़ेगा ॥

६३.

यह कौन है जो एदोम देश के बोस्रा नगर से बैंजनी वस्त्र पहिने हुए चला आता है और अति बलवान् और भड़कीला पहिरावा पहिने हुए झूमता चला आता है। मैं ही हूं जो धर्म्म से बोलता और पूरा उद्धार करता हूं[७] ॥

२ तेरा पहिरावा क्यों लाल है और क्या कारण है कि तेरे वस्त्र हौद में दाख रौंदनेहारे के से हैं ॥

३ मैं ने तो हौद में अकेला ही दाखें रौंदी हैं और देश देश के लोगों में से किसी ने मेरा साथ नहीं दिया सो मैं ने कोप में आकर उन्हें रौंदा और जलकर उन्हें लताड़ा उन के लोहू के छींटे जो मेरे वस्त्रों पर पड़े सो मेरा सारा पहिरावा मैला हो गया है। ४ क्योंकि पलटा लेने का दिन मैं ने ठहराया था[८] और मेरे जनों के छुड़ाने का बरस आ गया है। ५ और मेरे ताकने पर कोई सहायक न देख पड़ा और मैं ने इस से अचंभा भी किया कि कोई संभालनेहारा नहीं मिलता तब मैं ने अपने ही भुजबल से अपने लिये उद्धार किया और मेरी जलजलाहट मेरी संभालनेहारी है। ६ मैं ने तो कोप में आकर देश देश के लोगों को लताड़ा और अपनी जलजलाहट में उन्हें मतवाला किया और उन के लोहू को भूमि पर बहा दिया ॥

७ जितना उपकार यहोवा ने हम लोगों का किया अर्थात् इस्राएल के घराने पर दया और अत्यन्त करुणा करके उस ने हम से जितनी भलाई की उस सब के अनुसार मैं यहोवा के करुणामय कामों की चर्चा और उस का गुणानुवाद करूंगा। ८ उस ने कहा कि निःसंदेह ये मेरी प्रजा के लोग और ऐसे लड़के हैं जो धोखा न देंगे सो वह उन का उद्धारकर्त्ता हो गया। ९ उन के सारे संकट में उस ने भी संकट पाया[९] और उस का प्रत्यक्षरूप करनेहारा दूत उन का उद्धार करता था प्रेम और कोमलता से वह आप उन को छुड़ा लेता

(१) मूल में यहोवा का मुख। (२) अर्थात् जिस से मैं प्रसन्न हूं। (३) अर्थात् सुहागिन। (४) मूल में लगातार चुप न रहेंगे।

(५) मूल में सिय्योन की बेटी से। (६) मूल में उस के साम्हने।
(७) मूल में उद्धार करने को बड़ा।
(८) मूल में मेरे मन में था।
(९) या वह संकट देनेहारा न था।

था और प्राचीन काल के सब दिनों में उन्हें उठाये रहा। १० तौभी उन्हों ने बलवा किया और उस के पवित्र आत्मा को खेदित किया इस कारण वह पलटकर उन का ११ शत्रु हो गया और आप उन से लड़ने लगा। तब उस के लोगों को प्राचीन दिन अर्थात् मूसा के दिन स्मरण आये वे कहने लगे कि जो अपनी भेड़ों को उन के चरवाहे समेत समुद्र में से निकाल लाया सो कहां है जिस ने अपनी प्रजा के बीच अपना पवित्र आत्मा समवाया १२ सो कहां है। जो अपने भुजबल के प्रताप से मूसा के दहिने हाथ को संभालता गया[१] और अपने लोगों के साम्हने जल को दो भाग करके अपना सदा का नाम कर लिया १३ सो कहां है। जो उन को गहिरे समुद्र में ऐसा ले चला जैसा घोड़े को जंगल में कि उन को ठोकर न लगे १४ सो कहां है। जैसे घरैला पशु नीचान में उतर जाता है वैसे ही यहोवा के आत्मा ने उन को विश्राम दिया इसी प्रकार से तू ने अपनी प्रजा को पहुंचाकर अपना नाम १५ सुशोभित किया। स्वर्ग से जो तेरा पवित्र और शोभायमान वासस्थान है दृष्टि कर तेरी जलन और पराक्रम कहां १६ रहा तेरी दया और मया मुझ पर से हट[२] गई है। तू तो हमारा पिता है इब्राहीम तो हमें नहीं पहिचानता और इस्राएल हमारी सुधि नहीं लेता तौभी हे यहोवा तू हमारा पिता है प्राचीन काल से भी हमारा छुड़ानेहारा १७ यही तेरा नाम है। हे यहोवा तू क्यों हम को अपने मार्गों से भटका देता और हमारा मन ऐसा कठोर करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते। अपने दासों अपने १८ निज भाग के गोत्रों के निमित्त लौट आ। तेरी पवित्र प्रजा तो थोड़े ही काल लों अधिकारी रही हमारे द्रोहियों १९ ने तेरे पवित्रस्थान को लताड़ दिया है। हम लोग तो ऐसे हो गये हैं कि मानो हम[३] पर तू ने कभी प्रभुता नहीं की और न हम कभी तेरे कहलाये॥

६४.

भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए और पहाड़ तेरे साम्हने से कांप उठें, २ जैसे आग झाड़ झंखाड़ जला देती है वा जल को उबालती है उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप से कांप उठें। ३ जब तू ने ऐसे भयानक काम किये जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे तब तू उतर आया और पहाड़ तेरे प्रताप ४ से कांप उठे। प्राचीन काल से तो ऐसा परमेश्वर जो अपनी बाट जोहनेहारों के लिये काम करे तुझे छोड़ न तो कभी देखा[४] गया न कान से उस की चर्चा सुनी गई। ५ जो लोग धर्म्म के काम हर्ष के साथ करते हैं और तेरे मार्गों पर चलते हुए तुझे स्मरण करते हैं उन से तो तू मिलता है पर तू क्रोधित हुआ है क्योंकि हम पापी हुए और यह दशा बहुत काल से है तो हमारा उद्धार कहां ६ हो सकता है। देख हम सब के सब अशुद्ध मनुष्य से हो गये और हमारे सारे धर्म्म के काम कुचैले चिथड़े सरीखे हैं फिर हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा गये और हमारे अधर्म्म के कामों ने बायु की नाईं हमें उड़ा दिया ७ है। कोई तुझ से प्रार्थना नहीं करता और न कोई तुझ से सहायता लेने के लिये उद्यत होता है क्योंकि तू ने अपना मुख हम से फेर[५] लिया और हमारे अधर्म्म के ८ कामों के द्वारा हम को भस्म कर दिया है। तौभी हे यहोवा तू हमारा पिता है देख हम तो मिट्टी और तू कुम्हार ९ ठहरा हम सब के सब तेरे बनाये हुए[६] हैं। सो हे यहोवा अत्यन्त क्रोधित न हो और न अनन्तकाल लों हमारे अधर्म्म को स्मरण रख विचार करके देख हम सब तेरी १० प्रजा हैं। देख तेरे पवित्र नगर जंगल हो गये सिय्योन तो ११ जंगल हो गया यरूशलेम उजड़ गया है। हमारा पवित्र और शोभायमान भवन जिस में हमारे पितर तेरी स्तुति करते थे सो आग का कौर हो गया और हमारी सब १२ मनभावनी वस्तुएं नाश हो गई हैं। हे यहोवा क्या इन बातों के रहते भी तू अपने को रोके रहेगा क्या तू हम लोगों को इस अत्यन्त दुर्दशा में रहने देगा॥

६५.

जो मुझ को पूछते न थे वे मुझे खोजने लगे हैं और जो मुझे ढूंढ़ते न थे उन को मैं मिलता हूं और जो जाति मेरी नहीं कहलाई उस से भी मैं कहता हूं कि देख देख मैं २ हूं[७]। मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर हाथ फैलाये रहता हूं जो अपनी युक्तियों के अनुसार ३ बुरे मार्ग में चलते हैं। सो ये लोग हैं जो मेरे साम्हने ही बारियों में बलि चढ़ा चढ़ाकर और ईंटों पर धूप ४ जला जलाकर मुझे लगातार रिस दिलाते हैं। ये कबरों के बीच बैठते और छिपे हुए स्थानों में रात बिताते और सूअर का मांस खाते और घिनौनी वस्तुओं ५ का जूस अपने बर्तनों में रखते, और कहते हैं कि हट जा मेरे निकट मत आ क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूं। ये मेरी नाक में धूंए के और दिन भर जलती हुई आग

(१) मूल में जो अपनी शोभायमान भुजा को मूसा के दहिने हाथ पर चलाता था। (२) मूल में बक। (३) मूल में उन।

(४) मूल में आंख से देखा। (५) मूल में छिपा। (६) मूल में तेरे हाथ का काम। (७) मूल में कि मुझे देख मुझे देख।

६ के समान है। देखो मेरे साम्हने यह बात लिखी हुई है
७ मैं चुप न रहूंगा मैं निश्चय पलटा दूंगा, बरन उन की गोद में पलटा भर दूंगा अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे पुरखाओं के भी अधर्म्म के कामों का जो उन्हों ने पहाड़ों पर धूप जलाकर और पहाड़ियों पर मेरी निन्दा करके किये। मैं यहोवा कहता हूं कि इन की कमाई मैं पहिले इन की गोद में माप दूंगा॥

८ यहोवा यों कहता है कि जिस भांति जब दाख के किसी गुच्छे में रस[१] भर आता है तब लोग कहते हैं कि उसे नाश मत कर क्योंकि उस में आशिष है उसी भांति मैं अपने दासों के निमित्त ऐसा करूंगा कि सभों
९ को नाश न करूं। और मैं याकूब में से एक वंश और यहूदा में से अपने पर्वतों का एक अधिकारी उत्पन्न करूंगा सो मेरे चुने हुए उस के अधिकारी होंगे और
१० मेरे दास वहां बसेंगे। और मेरी प्रजा जो मुझे खोजती है उस की तो भेड़बकरियां शारोन में चरेंगी और उस
११ के गाय बैल आकोर नाम तराई में बैठे रहेंगे। पर तुम जो यहोवा को त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते और भाग्य देवता के लिये मेज पर भोजन की वस्तुएं सजाते और भावी देवी के लिये मसाला
१२ मिला हुआ दाखमधु भर देते हो, मैं तुम्हारी यह भावी कर दूंगा कि तुम्हें तलवार के लिए ठहराऊंगा और तुम सब घात होने के लिए झुकोगे इस का कारण यह है कि जब मैं ने तुम्हें बुलाया तब तुम न बोले और जब मैं ने तुम से बातें कीं तब तुम ने मेरी न सुनी बरन जो मुझे बुरा लगता है सोई तुम ने किया और जिस से मैं अप्रसन्न होता हूं उसी को तुम ने अपनाया॥

१३ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मेरे दास तो खाएंगे पर तुम भूखे रहोगे मेरे दास तो पीएंगे पर तुम प्यासे रहोगे मेरे दास तो आनन्द करेंगे पर
१४ तुम्हारी आशा टूटेगी। सुनो मेरे दास तो हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे पर तुम शोक से चिल्लाओगे
१५ और खेद के मारे हाय हाय करोगे। और प्रभु यहोवा तुम को तो नाश करेगा और मेरे चुने हुए लोग तुम्हारी उपमा दे कर स्राप देंगे[२] और प्रभु यहोवा तुझ को तो नाश करेगा पर अपने दासों का दूसरा नाम रक्खेगा।
१६ तब देश भर में जो कोई अपने को धन्य कहे सो सच्चे परमेश्वर[३] का नाम लेकर अपने को धन्य कहेगा और देश भर में जो कोई किरिया खाए सो सच्चे परमेश्वर[३] की किरिया खाएगा क्योंकि अगले कष्ट बिसर जाएंगे और मेरी आंखों से छिप जाएंगे।
१७ क्योंकि सुनो मैं नया आकाश और नई पृथिवी सिरजने पर हूं और अगली बातें स्मरण न रहेंगी और न फिर मन में आएंगी।
१८ सो जो मैं सिरजने पर हूं उस के कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो क्योंकि देखो मैं यरूशलेम को मगन होने का और उस की प्रजा को हर्ष का कारण ठहराऊंगा[४]।
१९ और मैं आप यरूशलेम के कारण मगन और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा और उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुन पड़ेगा।
२० उस में फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिस ने अपनी आयु पूरी न की हो क्योंकि जो लड़कपन में मरे सो सौ बरस का होकर मरेगा पर पापी तो सौ बरस का होकर स्रापित ठहरेगा।
२१ वे घर बना कर उन में बसेंगे और दाख की बारियां लगाकर उन का फल खाएंगे।
२२ ऐसा न होगा कि वे तो बनाएं और दूसरा बसे वा वे तो लगाएं और दूसरा खाए क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे।
२३ उन का परिश्रम व्यर्थ न होगा और न उन के बालक घबराहट के लिए उत्पन्न होंगे क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश हैं और उन के बालबच्चे उन से अलग न होंगे।
२४ फिर उन के पुकारने से भी पहिले मैं उन की सुनूंगा और उन के मांगते ही मैं उन की सुन लूंगा।
२५ भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे और सिंह बैल की नाईं भूसा खाएगा और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगी। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा यहोवा का यही वचन है॥

६६. **यहोवा** यों कहता है कि मेरा सिंहासन आकाश और मेरे चरणों की पीढ़ी पृथिवी है सो तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाओगे और मेरे विश्राम का कैसा स्थान होगा।
२ यहोवा की यह वाणी है कि ये सब वस्तुएं तो मेरे हाथ की बनाई हुई हैं सो यह सब हो गईं मैं तो उसी की ओर दृष्टि करूंगा जो दीन और खेदित मन का हो और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो।
३ बैल का बलि करनेहारा मनुष्य के मार डालनेहारे के समान भेड़ का चढ़ानेहारा कुत्ते का गला काटनेहारे के समान अन्नबलि का चढ़ानेहारा सूअर का लोहू चढ़ानेहारे के समान और

(१) मूल में नया दाखमधु।
(२) मूल में तुम अपना नाम मेरे चुने हुओं के लिये किरिया छोड़ोगे।
(३) मूल में आमेन [अर्थात् सत्य वचन] के परमेश्वर।
(४) मूल में सिरजूंगा।

लोबान का चढ़ानेहारा[१] मूरत के धन्य कहनेहारे के समान ठहरता है । वे जो अपने ही मार्ग निकालते ४ और घिनौनी वस्तुओं से प्रसन्न रहते हैं, इसलिये मैं भी उन के दुःख की बातें निकालूंगा और जिन बातों से वे डरते हैं उन्हीं को उन पर लाऊंगा क्योंकि जब मैं ने उन्हें बुलाया तब कोई न बोला और जब मैं ने उन से बातें कीं तब उन्हों ने मेरी न सुनी बरन जो मुझे बुरा लगता है सोई वे करते रहे और जिस से मैं अप्रसन्न होता हूं उसी को वे अपनाते थे ॥

५ तुम जो यहोवा का वचन सुनकर थरथराते हो उस का यह वचन सुनो कि तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते और तुम को मेरे नाम के निमित्त अलग कर देते हैं उन्होंने तो कहा है कि भला यहोवा की महिमा बढ़े जिस से हम तुम्हारा आनन्द देखने पाएं पर अन्त में ६ उन्हीं को लजाना पड़ेगा। सुनो नगर से कोलाहल मन्दिर से भी शब्द सुनाई देता है सो यहोवा का शब्द है जो अपने शत्रुओं को उन की करनी का फल देता ७ है । उस की पीड़ें उठने से पहिले ही वह जन चुकी उस ८ को पीड़ें लगने से पहिले ही उस से बेटा जन्मा । ऐसी बात किस ने कभी सुनी ऐसी बातें किस ने कभी देखीं क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता वा जाति क्षणमात्र में उत्पन्न हो सकती है तौभी सिय्योन पीड़ें ९ लगते ही बालकों को जनी । यहोवा कहता है कि क्या मैं बालकों को जन्मने लों पहुंचाकर न जनाऊं फिर तेरा परमेश्वर कहता है कि मैं जो जनाता हूं सो क्या कोख बन्द करूं ॥

१० हे यरूशलेम के सब प्रेम रखनेहारो उस के साथ आनन्द करो और उस के कारण मगन हो हे उस के विषय सब विलाप करनेहारो उस के साथ बहुत हर्षित ११ हो, जिस से तुम उस के शांतिरूपी स्तन से दूध पी पीकर तृप्त हो और दूध निकालकर उस की महिमा की बहु- १२ तायत से अत्यन्त सुखी हो । क्योंकि यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं उस की ओर शांति को नदी की नाईं और अन्यजातियों के विभव को बढ़ी हुई नदी के समान उस में बहा दूंगा और तुम उस में से पीओगे और गोद १३ में उठाये और घुटनों पर दुलारे जाओगे । जैसे माता पुत्र को[२] शांति देती है वैसे ही मैं भी तुम्हें शांति दूंगा १४ सो तुम को यरूशलेम में शांति मिलेगी । तुम यह देखकर प्रफुल्लित होगे और तुम्हारी हड्डियां घास की नाईं हरी भरी होंगी और यहोवा का हाथ उस के दासों पर और उस के शत्रुओं के ऊपर उस का क्रोध प्रगट होगा । १५ सुनो यहोवा आग के साथ आएगा और उस के रथ बवण्डर के समान होंगे जिस से वह भड़के हुए कोप के साथ दण्ड और भस्म करनेहारी लौ के साथ घुड़की दे । १६ क्योंकि यहोवा सारे प्राणियों के साथ आग और अपनी तलवार लिये हुए न्याय चुकाएगा सो यहोवा के मारे हुए १७ बहुतेरे होंगे । जो लोग अपने को इसलिये पवित्र और शुद्ध करते हैं कि बारियों के बीच में जा किसी के पीछे खड़े होकर सूअर वा मूस का मांस और और घिनौनी वस्तुएं खाएं सो एक ही संग बिलाय जाएंगे यहोवा १८ की यही वाणी है । क्योंकि मैं उन के काम और कल्पनाएं दोनों जानता हूं और वह समय आता है कि मैं सारी जातियों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारों को इकट्ठे १९ करूंगा और वे आकर मेरी महिमा देखेंगे । और मैं उन में चिन्ह प्रगट करूंगा और उन में के बचे हुओं को मैं उन अन्यजातियों के पास भेजूंगा जिन्हों ने न तो मेरा समाचार सुना और न मेरी महिमा देखी हो अर्थात् तर्शीशियों और धनुर्धारी पूलियों और लूदियों के पास फिर तबलियों और यूनानियों और दूर द्वीपवासियों के पास भेज दूंगा और वे अन्यजातियों में मेरी महिमा का २० वर्णन करेंगे । और वे तुम्हारे सब भाइयों को घोड़ों रथों पालकियों खच्चरों और सांड़नियों पर चढ़ा चढ़ाकर मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम पर यहोवा के लिये भेंट ऐसा ले आएंगे जैसा इस्राएली लोग अन्नबलि को शुद्ध पात्र में धरकर यहोवा के भवन में ले आते हैं २१ यहोवा का यही वचन है । और उन में से भी मैं कितने लोगों को याजक और लेवीय होने के लिये चुन लूंगा । २२ क्योंकि जिस प्रकार जो नया आकाश और नई पृथिवी मैं बनाने पर हूं सो मेरे साम्हने बनी रहेगी उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा यहोवा २३ की यही वाणी है । और नये चांद के दिन से नये चांद के दिन लों और विश्राम दिन से विश्राम दिन लों सारे प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत् करने को आया करेंगे २४ यहोवा का यही वचन है । तब वे निकलकर उन लोगों की लोथों को जिन्हों ने मुझ से बलवा किया देखेंगे कि उन में पड़े हुए कीड़े कभी न मरेंगे और न उन की आग कभी बुझेगी और सारे मनुष्यों को उन से अत्यन्त घिन होगी ॥

(१) मूल में स्मरण करानेहारा ।

(२) मूल में पुरुष को ।

यिर्मयाह नाम पुस्तक।

---

१. हिल्किय्याह का पुत्र यिर्मयाह जो बिन्यामीन देश के अनातोत में रहनेहारे याजकों में से था उस के ये वचन हैं। २ यहोवा का वचन उस के पास आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में अर्थात् उस के राज्य के तेरहवें बरस में पहुंचा। ३ फिर योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के दिनों में भी और योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें बरस के अंत लों भी अर्थात् जब लों उस बरस के पांचवें महीने में यरूशलेम के निवासी बंधुआई में न गये तब लों पहुंचा किया॥

४ सो यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि। ५ गर्भ में रचने से पहिले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया था और उत्पन्न होने से पहिले ही मैं ने तुझे पवित्र किया मैं ने तुझे जातियों का नबी ठहराया था। ६ तब मैं ने कहा अहह प्रभु यहोवा सुन मैं तो बोलना नहीं जानता क्योंकि लड़का ही हूं। ७ यहोवा ने मुझ से कहा मत कह कि मैं लड़का हूं क्योंकि जहां कहीं मैं तुझे भेजूंगा वहां तू जाएगा और जो कुछ मैं तुझ को कहने की आज्ञा दूं सो तू कहेगा। ८ तू उन से मत डर क्योंकि बचाने के लिये मैं तेरे संग हूं यहोवा की यही वाणी है। ९ तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को छूआ यहोवा ने मुझ से कहा सुन मैं ने अपने वचन तेरे मुंह में डाले हैं। १० सुन मैं ने आज के दिन गिराने और ढा देने और नाश करने और काट डालने के लिये और बनाने और रोपने के लिये तुझे जातियों और राज्यों पर अधिकारी ठहराया है॥

११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि हे यिर्मयाह तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा बादाम की एक टहनी मुझे देख पड़ती है। १२ तब यहोवा ने मुझ से कहा तुझे ठीक देख पड़ता है क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये सचेत रहता हूं। १३ फिर यहोवा का वचन मेरे पास दूसरी बार पहुंचा और उस ने पूछा तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा मुझे खौलते हुए जल का एक हण्डा देख पड़ता है जिस का मुंह उत्तर दिशा से फेरा हुआ है। १४ तब यहोवा ने मुझ से कहा इस देश के सब रहनेहारों पर विपत्ति उत्तर दिशा से आ पड़ेगी। १५ यहोवा की यह वाणी है कि मैं उत्तर दिशा के राज्यों और कुलों को बुलाऊंगा और वे आकर यरूशलेम के फाटकों में और उस के चारों ओर की शहरपनाह और यहूदा के और सब नगरों के साम्हने अपना अपना सिंहासन रक्खेंगे। १६ और उन की सारी बुराई के कारण मैं उन पर दण्ड होने की आज्ञा दूंगा इसलिये कि उन्हों ने मुझ को त्यागकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् किया है। १७ सो तू कमर कसकर उठ और जो कुछ मैं तुझ को कहने की आज्ञा दूं सो उन से कहना तू उन के साम्हने न घबराना ऐसा न हो कि मैं तुझे उन के साम्हने घबरा दूं। १८ सो सुन मैं ने आज तुझ को इस सारे देश और यहूदा के राजाओं हाकिमों और याजकों और साधारण लोगों के विरुद्ध गढ़वाला नगर और लोहे का खंभा और पीतल की शहरपनाह कर दिया है। १९ वे तुझ से लड़ेंगे तो सही पर तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि मैं बचाने के लिये तेरे संग हूं यहोवा की यही वाणी है॥

२. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ जाकर यरूशलेम को पुकार के यह सुना दे कि यहोवा का यह वचन है कि तेरे विषय तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आते हैं कि तू जंगल में जहां भूमि जोती बोई न थी वहां मेरे पीछे पीछे चली आती थी। ३ इस्राएल यहोवा की पवित्र वस्तु और उस की पहली उपज थी जितने उसे खाते थे सो दोषी ठहरते और विपत्ति में पड़ते थे यहोवा की यही वाणी है॥

४ हे याकूब के घराने हे इस्राएल के घराने के सारे कुलों के लोगो यहोवा का वचन सुनो, ५ यहोवा ने यों कहा है कि तुम्हारे पुरखाओं ने मुझ में कौन ऐसी कुटिलता पाई कि वे मेरी ओर से हट गये और निकम्मी वस्तुओं के पीछे होकर आप भी निकम्मे हो गये। ६ उन्हों

ने इतना भी न कहा कि यहोवा जो हम को मिस्र देश से ले आया और जंगल में और रेत और गढ़हों से भरे हुए निर्जल और घोर अंधकार के देश में जिस से होकर कोई नहीं चलता और जिस में कोई मनुष्य नहीं रहता ऐसे देश में जो हम को ले चला वह
७ कहां है। मैं तो तुम को इस उपजाऊ देश में ले आया कि उस का फल और उत्तम उपज खाओ पर तुम ने मेरे इस देश में आकर इस को अशुद्ध किया और मेरे
८ इस निज भाग को घिनौना कर दिया। याजक भी न पूछते थे कि यहोवा कहां है और जो व्यवस्था से काम रखते थे वे मुझ को जानते न थे फिर चरवाहों ने मुझ से बलवा किया और नबियों ने बाल देवता के नाम से नबूवत की और निष्फल बातों के पीछे चले थे।
९ इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं फिर तुम्हारा मुकद्दमा चलाऊंगा और तुम्हारे बेटे
१० पोतों का भी चलाऊंगा। कित्तियों के द्वीपों में पार उतरके देखो और केदार में दूत भेजकर भली भांति बिचारो और देखो कि ऐसा काम कहीं हुआ है कि
११ नहीं। क्या किसी जाति ने अपने देवताओं को जो परमेश्वर नहीं हैं बदल दिया पर मेरी प्रजा ने अपनी
१२ महिमा को निकम्मी वस्तु से बदल दिया है। यहोवा की यह वाणी है कि इस कारण चाहिये था कि आकाश चकित होता और बहुत ही थरथराता और बहुत सूख
१३ भी जाता[१]। क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं उन्हों ने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया और उन्हों ने हौद बना लिये बरन ऐसे हौद जो फट
१४ गये हैं और उन में जल नहीं ठहरता। क्या इस्राएल दास है क्या वह घर में जन्मा हुआ दास है[२] फिर
१५ वह क्यों लूटा गया है। जवान सिंहों ने उस के विरुद्ध गरजकर नाद किया उन्हों ने उस के देश को उजाड़ दिया और उस के नगरों को ऐसा फूंक दिया कि उन
१६ में कोई नहीं रह गया। और नोप और तहपन्हेस के
१७ निवासी तेरे देश की उपज[३] चट कर गये हैं। क्या यह तेरी ही करनी का फल नहीं क्योंकि जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे मार्ग में लिये चलता था तब तू
१८ ने उस को छोड़ दिया। और अब तुझे मिस्र के मार्ग से क्या काम है कि तू सीहोर[४] का जल पीए और तुझे अश्शूर के मार्ग से भी क्या काम कि तू महानद का जल पीए। तेरी बुराई के कारण तेरी ताड़ना होगी
१९ और हट जाने से तू डांटी जाती है सो निश्चय करके देख कि तू ने जो अपने परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया और तुझे मेरा भय नहीं रहा सो बुरी और कड़वी बात
२० है प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। मैं ने तो कब ही तेरा जूआ तोड़ डाला और तेरे बन्धन खोले पर तू ने कहा कि मैं सेवा न करूंगी और सब ऊंचे ऊंचे टीलों पर और सब हरे पेड़ों के तले तू व्यभिचारिन
२१ का सा काम करती रही। मैं ने तो तुझे उत्तम जाति की दाखलता और सच्चाई का बीज करके रोपा[५] फिर तू क्यों मेरे देखने में पराये देश की निकम्मी दाखलता
२२ की शाखाएं बन गई है। चाहे तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन भी काम में ले आए तौभी तेरे अधर्म्म का दाग मेरे साम्हने पक्का बना रहेगा
२३ प्रभु यहोवा की यही वाणी है। तू क्योंकर कह सकती है कि मैं अशुद्ध नहीं मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं चली तू तराई में की अपनी चाल देख और जान कि तू ने क्या किया है। तू वेग से चलनेहारी और इधर
२४ उधर फिरनेहारी सांड़नी है, जंगल में पली हुई और कामातुर होकर वायु सूंघनेहारी बनैली गदही जब काम के बश होती तब कौन उस को लौटा सकता है जितने उस को ढूंढेंगे सो व्यर्थ परिश्रम न करेंगे क्योंकि वे उस को
२५ उस के ऋतु में[६] पाएंगे। तू नंगे पांव और गला सुखाये न रह। पर तू ने कहा है कि नहीं ऐसा तो नहीं हो सकता क्योंकि मेरा प्रेम दूसरों से लग गया है सो उन
२६ के पीछे चलती रहूंगी। जैसा चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है वैसा ही इस्राएल का घराना राजाओं हाकिमों याजकों और नबियों समेत लज्जित होता है।
२७ वे काठ से कहते हैं कि तू मेरा बाप है और पत्थर से कहते हैं कि तू मुझे जनी है इस प्रकार उन्हों ने मेरी ओर मुंह नहीं पीठ ही फेरी है। पर विपत्ति के समय
२८ वे कहेंगे कि उठकर हमें बचा। पर जो देवता तू ने बना लिये हैं सो कहां रहे क्योंकि हे यहूदा तेरे देवता तेरे नगरों के बराबर बहुत हैं यदि वे तेरी विपत्ति के समय तुझे बचा सकते हैं तो अभी उठें॥

२९ तुम मेरे संग क्यों वादविवाद करोगे तुम सभों ने मुझ से बलवा किया है यहोवा की यही
३० वाणी है। मैं ने व्यर्थ ही तुम्हारे बेटों को दुःख दिया उन्हों ने ताड़ना से भी नहीं माना तुम ने अपने नबियों को अपनी तलवार से ऐसा काट डाला है जैसा

(१) मूल में इस कारण हे आकाश चकित हो रोमांचित हो और बहुत सूख जा। (२) वा क्या इस्राएल दास है क्या वह घर में उत्पन्न हुआ। (३) मूल में तेरा चोंयड़ा। (४) अर्थात् नील नदी।

(५) मूल में मैं ने तुझे उत्तम जाति की दाखलता बिल्कुल सच्चा बीज लगाया। (६) मूल में अपने महीने में।

३१ सिंह नाईं[1] करता है। हे इस समय के लोगो यहोवा के इस वचन को सोचो कि क्या मैं इस्राएल के लिये जंगल वा घोर अंधकार का देश बना हूं मेरी प्रजा क्यों कहती है कि हम जो छोटे हैं सो तेरे पास फिर न आएंगे।
३२ क्या कुमारी अपने सिंगार वा दुल्हिन अपना पटुका भूल सकती तौभी मेरी प्रजा ने मुझे अनगिनित दिनों
३३ से बिसरा दिया है। प्रेम लगाने के लिये तू कैसी सुन्दर चाल चलती है तू ने बुरी स्त्रियों को भी अपनी सी चाल
३४ सिखाई है। फिर तेरे आंचले में निर्दोष दरिद्र लोगों के लोहू का चिन्ह पाया जाता है तू ने उन्हें सेंध मारते नहीं पाया पर इन सब के कारण उन्हें बध किया।
३५ तौभी तू कहती है कि मैं तो निर्दोष हूं निश्चय उस का कोप मुझ पर से उतरा होगा सुन तू जो कहती है कि मैं ने पाप नहीं किया इसलिये मैं तुझ से
३६ मुकद्दमा लड़ूंगा। तू क्यों नया मार्ग पकड़ने के लिये इतनी डांवाडोल फिरती है जैसे अश्शूरियों से तेरी
३७ आशा टूटी वैसे ही मिस्रियों से भी टूटेगी। वहां से भी तू सिर पर हाथ रक्खे हुए यों ही चली आएगी क्योंकि जिन पर तू ने भरोसा रक्खा है यहोवा ने उन को निकम्मा ठहराया है और तेरा प्रयोजन उन के कारण सफल न होगा॥

३.

कहते हैं कि यदि कोई अपनी स्त्री को त्याग दे और वह उस के पास से जाकर दूसरे पुरुष की हो जाए तो क्या वह उस के पास फिर लौटेगा क्या वह देश अति अशुद्ध न हो जाएगा। यहोवा की यह वाणी है कि तू ने बहुत से यारों के साथ व्यभिचार तो किया है तौभी तू मेरे पास फिर आ।
२ मुण्डे टीलों की ओर आंखें उठाकर देख कि ऐसा कौन स्थान है जहां तू ने कुकर्म्म न किया हो मार्गों में तू ऐसी बैठी हुई थी जैसे अरबी जंगल में और तू ने अपने देश को व्यभिचार आदि बुराइयों से अशुद्ध किया
३ है। इसी कारण झड़ियां और बरसात की पिछली वर्षा नहीं हुई इस पर भी तेरा माथा वेश्या का सा है तू
४ लजाना जानती ही नहीं[2]। क्या तू अब से मुझे पुकारके न कहने लगेगी कि हे मेरे पिता तू ही मेरी जवानी का
५ रखवाला है। क्या वह मन में सदा क्रोध रक्खे रहेगा क्या वह उस को सदा बनाये रहेगा। तू ने ऐसा कहा तो है पर बुरे काम प्रबलता के साथ किये हैं॥
६ फिर योशिय्याह राजा के दिनों में यहोवा ने मुझ से यह भी कहा कि क्या तू ने देखा है कि संग छोड़नेहारी इस्राएल ने क्या किया है उन से तो सब ऊंचे पहाड़ों पर और सब हरे पेड़ों के तले जा जाकर
७ व्यभिचार किया है। और जब वह ये सब काम कर चुकी थी तब मैं ने कहा यह मेरी ओर फिरेगी पर वह न फिरी और उस की विश्वासघातिन बहिन यहूदा ने
८ यह देखा। फिर मैं ने देखा कि जब मैं ने संग छोड़नेहारी इस्राएल को उस के व्यभिचार करने के कारण त्यागकर त्यागपत्र दिया तब उस की विश्वासघातिन बहिन यहूदा न डरी वरन जाकर आप भी व्यभिचारिन
९ बनी। और उस के निर्लज्ज व्यभिचारिन होने के कारण देश भी अशुद्ध हो गया और उस ने पत्थर और काठ के
१० साथ भी व्यभिचार किया था। इतने पर भी उस की विश्वासघातिन बहिन यहूदा सारे मन से नहीं पर कपट
११ से मेरी ओर फिरी यहोवा की यही वाणी है। और यहोवा ने मुझ से कहा संग छोड़नेहारी इस्राएल विश्वास-
१२ घातिन यहूदा से कम दोषी निकली है। तू जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचार के कह कि यहोवा की यह वाणी है कि हे संग छोड़नेहारी इस्राएल लौट आ तब मैं तुझ पर कोप की दृष्टि न रक्खूंगा क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं करुणामय हूं, मैं सदा लों क्रोध
१३ रक्खे न रहूंगा। यहोवा की यह वाणी है कि केवल अपना यह अधर्म्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से फिर गई और सब हरे पेड़ों के तले इधर
१४ उधर दूसरों के पास गई मेरी नहीं सुनी। यहोवा की यह वाणी है कि हे संग छोड़नेहारे लड़को लौट आओ क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूं और मैं तुम्हारे नगर पीछे एक और कुल पीछे दो लेकर सिय्योन में पहुंचा दूंगा।
१५ और मैं तुम्हारे ऊपर अपने मन के अनुसार चरवाहे ठहराऊंगा जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएंगे।
१६ और यहोवा की यह भी वाणी है कि उन दिनों में जब तुम इस देश में बढ़ोगे और फूलो फलोगे तब लोग फिर यहोवा की वाचा का संदूक ऐसा न कहेंगे और न वह सुधि वा स्मरण में आएगा न लोग उस के न रहने से चिन्ता करेंगे और न वह फिर से बनाया जाएगा।
१७ उस समय यरूशलेम यहोवा का सिंहासन कहाएगी और सब जातियां उसी यरूशलेम में मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी हुआ करेंगी और वे फिर अपने बुरे मन के हठ
१८ पर न चलेंगी। उन दिनों में यहूदा का घराना इस्राएल के घराने के साथ चलेगा और वे दोनों मिलकर उत्तर के देश से इस देश में आएंगे जिसे मैं ने उन के पितरों
१९ को निज भाग करके दिया था। पर मैं ने सोचा कि मैं

(१) मूल में तुम्हारी तलवार ने नाशक की नाईं।
(२) मूल में लजाने को नकारा।

तुझे क्योंकर लड़कों में गिनकर वह मनभावना देश जो सब जातियों के देशों का शिरोमणि है दे सकता हूं तब मैं ने सोचा कि तू मुझे पिता कहेगी और मेरे पीछे
२० हो लेना न छोड़ेगी। इस में तो सन्देह नहीं कि जैसे स्त्री अपने प्रिय से फिर जाती है वैसे ही हे इस्राएल के घराने तू मुझ से फिर गया है यहोवा की यही वाणी है।
२१ मुंडे टीलों पर से इस्राएलियों के रोने और गिड़गिड़ाने का शब्द सुनाई देता है क्योंकि वे टेढ़ी चाल चले और
२२ अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गये हैं। हे संग छोड़नेहारे लड़को लौट आओ मैं तुम्हारा संग छोड़ना दूर[1] करूंगा। देख हम तेरे पास आये हैं क्योंकि तू हमारा
२३ परमेश्वर यहोवा है। निश्चय पहाड़ों और पहाड़ियों पर जो कोलाहल होता है सो व्यर्थ ही है निश्चय इस्राएल
२४ का उद्धार हमारे परमेश्वर यहोवा ही से है। वह आशा तोड़नेहारी वस्तु हमारे बचपन से हमारे पुरखाओं की कमाई अर्थात् उन की भेड़ बकरी और गाय बैल और
२५ उन के बेटे बेटियों को भी खाती आई है। हम लज्जा के साथ लेट जाएं और हमारा संकोच हमारी ओढ़नी बने क्योंकि हमारे पुरखा और हम भी बचपन से लेकर आज के दिन लों अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करते आये हैं और अपने परमेश्वर यहोवा की बात हम ने नहीं मानी॥

४. यहोवा की यह वाणी है कि हे इस्राएल यदि तू फिरना चाहता है तो मेरी ओर फिर और यदि तू घिनौनी वस्तुओं को मेरे साम्हने से दूर करे तो तुझे मारा मारा फिरना न पड़ेगा।
२ और तू सच्चाई और न्याय और धर्म्म से यहोवा के जीवन की किरिया खाएगा और अन्यजातियां अपने अपने को उसी के कारण धन्य गिनेंगी और उसी के विषय बड़ाई मारेंगी॥

३ फिर यहोवा ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों से यों कहा कि अपनी पड़ती भूमि में हल जोतो और कटीले
४ झाड़ों के बीच में बीज मत बोओ। हे यहूदा के लोगो और यरूशलेम के निवासियो यहोवा के लिये अपना खतना करो और अपने मन की खलड़ी दूर करो नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरा कोप आग की नाईं भड़केगा और ऐसा जलता रहेगा कि कोई उसे बुझा न
५ सकेगा। यहूदा में यह प्रचार करो और यरूशलेम नगर में यह नाओ कि देश भर में नरसिंहा फूंको और गला खोलकर यह पुकारो कि आओ हम इकट्ठे हों और गढ़वाले नगरों में जाएं। सिय्योन के मार्ग में
६ झंडा खड़ा करो अपना सामान बटोर के भागो खड़े मत रहो क्योंकि मैं उत्तर की दिशा से विपत्ति और सत्यानाश
७ ले आया चाहता हूं। सिंह अपनी झाड़ी से निकला अर्थात् जाति जाति का नाश करनेहारा चढ़ाई करके आ रहा है वह तो कूच करके अपने स्थान से इसलिये निकला है कि तुम्हारे देश को उजाड़ दे और तुम्हारे नगरों को ऐसे सूने कर दे कि उन में कोई भी न रह जाए।
८ इस कारण कमर में टाट बांधो विलाप और हाय हाय करो क्योंकि यहोवा का भड़का हुआ कोप हम पर से
९ नहीं उतरा। और यहोवा की यह भी वाणी है कि उस समय राजा और हाकिमों का कलेजा कांप उठेगा और याजक चकित होंगे और नबी अचंभित हो जाएंगे॥

१० तब मैं ने कहा हाय प्रभु यहोवा तू ने तो यह कह कर कि तुम को शांति मिलेगी निश्चय अपनी इस प्रजा को और यरूशलेम को भी बड़ा धोखा दिया है क्योंकि
११ तलवार प्राण लों छेदने पर है। उस समय तेरी इस प्रजा से और यरूशलेम से भी कहा जाएगा कि जंगल में के मुण्डे टीलों पर से प्रजा के लोगों की ओर[2] लूह बह रही है सो ऐसी वायु नहीं जिस से ओसाना वा फरछाना हो,
१२ पर ऐसे कामों के लिये अधिक प्रचण्ड वायु मेरे निमित्त बहेगी अब मैं उन को दण्ड मिलने की आज्ञा दूंगा।
१३ देखो वह बादलों की नाईं चढ़ाई करके आ रहा है उस के रथ बवण्डर के समान और उस के घोड़े उकाबों से अधिक वेग चलते हैं हम पर हाय कि हम नाश
१४ हुए। हे यरूशलेम अपना मन बुराई से धो कि तुम्हारा उद्धार हो जाए तुम अनर्थ कल्पनाएं कब लों करते
१५ रहोगे[3]। क्योंकि दान नगर से शब्द सुन पड़ता है और एप्रैम के पहाड़ी देश से विपत्ति का समाचार सुनाई
१६ देता है। अन्यजातियों में इस की चर्चा करो यरूशलेम के विरुद्ध भी इस का समाचार सुनाओ कि घेरनेहारे[4] दूर देश से आकर यहूदा के नगरों के विरुद्ध ललकार
१७ रहे हैं। वे खेत के रखवालों की नाईं उस के चारों ओर से घेर रहे हैं क्योंकि वह मुझ से फिर गई है यहोवा
१८ की यही वाणी है। ये तेरी चाल और कामों का फल हैं तेरी यह दुष्टता दुखदाई है कि इस से तेरा हृदय छिद जाता है॥

१९ हाय हाय[5] मेरा हृदय भीतर भीतर तड़पता

(१) मूल में चंगा।

(२) मूल में मेरी प्रजा की बेटी की ओर। (३) मूल में कब लों तुझ में बनी रहेंगी। (४) मूल में पहरुए। (५) मूल में मेरी अन्तड़ियां मेरी।

और मेरा मन घबराता है मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि हे मेरे जीव नरसिंगे का शब्द और युद्ध की ललकार
२० तुझ लों पहुंची है। नाश पर नाश का समाचार आता है अब सारा देश लूटा गया है मेरे डेरे अचानक और
२१ मेरे तम्बू एकाएक लूटे गये हैं। मुझे और कितने दिन लों उन का झण्डा देखना और नरसिंगे का शब्द
२२ सुनना पड़ेगा। क्योंकि मेरी प्रजा मूढ़ है वे मुझ को नहीं जानते वे ऐसे मूर्ख लड़के हैं कि उन को कुछ भी समझ नहीं है बुराई करने को तो वे बुद्धिमान् हैं पर भलाई करना नहीं जानते ॥

२३ मैं ने पृथिवी को देखा कि वह सूनी और सुनसान पड़ी है और आकाश को कि उस में ज्योति नहीं रही।
२४ मैं ने पहाड़ों को देखा कि वे हिल रहे और सब
२५ पहाड़ियों को कि वे डोल रही हैं। फिर मैं क्या देखता हूं कि कोई मनुष्य नहीं रहा सब पक्षी भी उड़ गये हैं।
२६ फिर मैं क्या देखता हूं कि उपजाऊ देश जङ्गल और यहोवा के प्रताप और उस भड़के हुए कोप के कारण
२७ उस के सारे नगर खंडहर हो गये हैं। क्योंकि यहोवा ने यह बताया कि सारा देश उजाड़ हो जाएगा तौभी
२८ मैं उस का अन्त न कर डालूंगा। इस कारण पृथिवी विलाप करेगी और आकाश शोक का काला वस्त्र पहिनेगा क्योंकि मैं ने ऐसा ही करना ठाना और कहा भी है और इस से नहीं पछताया और न अपने प्रण को छोड़ूंगा ॥

२९ इस सारे नगर के लोग सवारों और धनुर्धारियों का कोलाहल सुनकर भाग जाते हैं वे झाड़ियों में घुस जाते और चटानों पर चढ़ जाते हैं सब नगर निर्जन हो
३० गये और उन में कोई न रहा। तू जब उजड़ेगी तब क्या करेगी चाहे तू लाही रङ्ग के वस्त्र पहिने और सोने के आभूषण धारण करे और अपनी आंखों में अंजन लगाए पर तू व्यर्थ ही अपना सिंगार करेगी क्योंकि तेरे यार तुझे निकम्मी जानते और तेरे प्राण के खोजी हैं।
३१ मैं ने जननेहारी का सा शब्द पहिलौठा जनती हुई स्त्री की सी चिल्लाहट सुनी है यह सिय्योन की बेटी का शब्द है वह हांफती और हाथ फैलाये हुए यों कहती है कि हाय मुझ पर मैं हत्यारों के हाथ पड़कर मूर्छित हो चली हूं ॥

५. यरूशलेम की सड़कों में इधर उधर दौड़कर देखो और उस के चौकों में ढूंढ़ो यदि ऐसा कोई मिल सकता है जो न्याय से काम करे और सच्चाई का खोजी हो तो मैं उस का
२ पाप क्षमा करूंगा। यद्यपि उस के निवासी यहोवा के जीवन की सौं ऐसा कहते हैं तौभी निश्चय वे झूठी किरिया खाते हैं ॥

३ हे यहोवा क्या तू सच्चाई पर दृष्टि नहीं लगाता तू ने उन को दुःख दिया पर वे शोकित नहीं हुए तू ने उन को नाश किया पर उन्हों ने ताड़ना से नहीं माना उन्हों ने अपना मन चटान से भी अधिक कड़ा किया
४ और फिरने को नकारा है। फिर मैं ने सोचा कि ये लोग तो कङ्गाल और अबोध हैं ये यहोवा का मार्ग और अपने
५ परमेश्वर का नियम नहीं जानते। सो मैं बड़े लोगों के पास जाकर उन को सुनाऊंगा क्योंकि वे तो यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम जानते होंगे पर उन्हीं ने मिलकर जूए को तोड़ दिया और बन्धनों को खोल डाला है ॥

६ इस कारण सिंह वन में से आकर उन्हें मार डालेगा और निर्जल देश का भेड़िया उन को नाश करेगा और चीता उन के नगरों के पास घात लगाये रहेगा और जो कोई इन से निकले सो फाड़ा जाएगा इस कारण से कि उन के अपराध बढ़ गये और वे मुझ से बहुत ही
७ दूर हट गये हैं। मैं किस प्रकार से तेरा पाप क्षमा करूं तेरे लोगों ने[१] मुझ को छोड़कर उन की किरिया खाई है जो परमेश्वर नहीं हैं और जब मैं ने उन का पेट भर दिया तब उन्हों ने व्यभिचार किया और वेश्याओं के
८ घरों में भीड़ की भीड़ जाते थे। वे खिलाये हुए और घूमते फिरते घोड़ों के समान हुए वे अपने अपने पड़ोसी
९ की स्त्री के लिये हिनहिनाने लगे। यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं ऐसे कामों का दण्ड न दूं क्या मैं ऐसी
१० जाति से अपना पलटा न लूं। शहरपनाह पर चढ़ाई करके नाश तो करो तौभी उस का अन्त मत कर डालो उस की जड़ तो रहने दो पर उस की डालियों को तोड़
११ कर फेंक दो क्योंकि वे यहोवा की नहीं हैं। यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल और यहूदा के घरानों ने मुझ
१२ से बड़ा ही विश्वासघात किया है। उन्हों ने यहोवा की बातें झुठलाकर कहा कि यह वह नहीं है विपत्ति हम पर न पड़ेगी और हम न तो तलवार को और न महंगी
१३ को देखेंगे। और नबी हवा हो जाएंगे और उन में ईश्वर का वचन नहीं सो उन के साथ ऐसा ही किया
१४ जाएगा। इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि ये लोग जो ऐसा कहते हैं इस लिये देख मैं अपने वचन तेरे मुंह में आग और यह प्रजा काठ
१५ बनाता हूं और वह उन्हें खाएगी। यहोवा की यह

(१) मूल में तेरे लड़के।

वाणी है कि हे इस्राएल के घराने सुन मैं तुम्हारे विरुद्ध दूर से ऐसी जाति की चढ़ाई कराऊंगा जो सामर्थी और प्राचीन जाति है और उस की भाषा तुम न समझोगे और न जानोगे कि वे लोग क्या कह रहे १६ हैं। उन का तर्कस खुली कबर सा है और वे सब के १७ सब शूरवीर हैं। वे तुम्हारे पक्के खेत और भोजनवस्तुएं खा जाएंगे जो तुम्हारे बेटे बेटियों के खाने के लिये होतीं वे तुम्हारी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को खा डालेंगे वे तुम्हारी दाखों और अंजीरों को खा जाएंगे और जिन गढ़वाले नगरों पर तुम भरोसा रखते हो १८ उन्हें वे तलवार के बल से गिरा देंगे। तौभी यहोवा की यह वाणी है कि उन दिनों में भी मैं तुम्हारा अन्त १९ न कर डालूंगा। सो जब तुम पूछोगे कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम से ये सब काम किस के पलटे में किये हैं तब तू उन से कहना कि जिस प्रकार से तुम ने मुझ को त्यागकर दूसरे देवताओं की सेवा अपने देश में की है उसी प्रकार से तुम को पराये देश में परदेशियों की सेवा करनी पड़ेगी॥

२० याकूब के घराने में यह प्रचार करो और यहूदा में २१ यह सुनाओ, हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो तुम जो आंखें रहते हुए नहीं देखते और कान रहते हुए नहीं सुनते २२ यह सुनो। यहोवा की यह वाणी है कि क्या तुम लोग मेरा भय नहीं मानते मैं ने तो बालू को समुद्र का सिवाना ठहराकर युग युग का ऐसा विधान किया कि वह उस को न लांघे जब जब उस की लहरें उठें तब तब वे प्रबल न होएं और जब जब गरजें तब तब वे उस को न लांघें फिर क्या तुम मेरे साम्हने नहीं थरथराते। २३ पर इस प्रजा का हठीला और बलवा करनेहारा मन है वे २४ हठ करके चले गये हैं। फिर वे मन में इतना भी नहीं सोचते कि हमारा परमेश्वर यहोवा तो बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों का जल समय पर बरसाता और कटनी के नियत अठवारे हमारे लिये रखता है सो २५ हम उस का भय मानें। पर वे तुम्हारे अधर्म्म के कामों ही के कारण रुक गये और तुम्हारे पापों के हेतु तुम्हारी २६ भलाई नहीं होती[१]। मेरी प्रजा में दुष्ट लोग भी पाये जाते हैं जैसे चिड़ीमार ताक में रहते हैं वैसे ही वे भी घात लगाये रहते हैं वे फंदा लगाकर मनुष्यों को अपने २७ वश में कर लेते हैं। जैसा पिंजरा चिड़ियाओं से भरा पूरा होता है वैसे ही उन के घर छल से भरे पूरे रहते हैं २८ इसी प्रकार से वे बढ़ गये और धनी हो गये हैं। वे मोटे चिकने हो गये हैं वे बुरे कामों में सीमा को लांघ गये हैं वे न्याय और विशेष करके बपमूओं का न्याय नहीं चुकाते इस से उन का काम सफल नहीं होता फिर वे २९ कंगालों का हक नहीं दिलाते। सो यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं इन बातों का दण्ड न दूं क्या मैं ऐसी जाति से पलटा न लूं॥

३० देश में ऐसा काम होता है जिस से चकित और ३१ रोमांचित होना चाहिये। नबी तो झूठमूठ नबूवत करते हैं और याजक उन के सहारे से प्रभुता करते हैं और मेरी प्रजा को यह भावता भी है सो इस के अन्त में तुम क्या करोगे॥

६. हे बिन्यामीनियो यरूशलेम में से अपना अपना सामान लेकर भागो और तको में नरसिंगा फूंको और बेथक्केरेम पर झण्डा खड़ा करो क्योंकि उत्तर की दिशा से आनेहारी विपत्ति और बड़ा २ बिगाड़ दिखाई देता है। सुन्दर और सुकुमार सिय्योन ३ को मैं नाश करने पर हूं। चरवाहे अपनी अपनी भेड़ बकरियां संग लिये हुए उस पर चढ़कर उस के चारों ओर अपने तंबू खड़े करेंगे और अपने अपने पास की घास ४ चरा लेंगे। आओ उस के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करो उठो हम दोपहर को चढ़ाई करें हाय हाय दिन ढलने ५ लगा और सांझ की परछाईं लम्बी हो चली है। उठो हम रात ही रात चढ़ाई करें और उस के महलों को ६ नाश करें। सेनाओं का यहोवा तुम से कहता है कि वृक्ष काट काटकर यरूशलेम के विरुद्ध धुस बांधो यह वही नगर है जिस का दण्ड हुआ चाहता इस में अन्धेर ७ ही अन्धेर भरा हुआ है। जैसा कूए में से नित्य नया जल निकला करता है वैसा ही इस नगर में नित्य नई बुराई निकलती है इस में उत्पात और उपद्रव का कोलाहल मचा करता है चोट और मारपीट मेरे देखने ८ में निरन्तर आती है। हे यरूशलेम ताड़ना से मान ले नहीं तो तू मेरे जीव से उतर जाएगी और मैं तुझ को ९ उजाड़कर निर्जन कर डालूंगा। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि दाखलता की नाईं इस्राएल के बचे हुए सब तोड़े जाएंगे दाख के तोड़नेहारे की नाईं उस लता की डालियों पर फिर फिर हाथ लगा॥

१० मैं किस से बोलूं और चिताकर कहूं कि वह माने। देख ये ऊंचा सुनते हैं[२] और ध्यान भी नहीं दे सकते देख वे यहोवा के वचन की निन्दा करते और ११ उस को नहीं चाहते। इस कारण यहोवा का कोप मेरे

(१) मूल में तुम्हारे अधर्म्मों ने इन्हें मोड़ा और तुम्हारे पापों ने भलाई तुम से रोकी।

(२) मूल में उन का कान खतनारहित है।

मन में भर दिया गया और मैं उसे रोकते रोकते उकता गया, उसे सड़क पर के बच्चों और जवानों की सभा में भड़का[1] दे क्योंकि स्त्री पुरुष अधेड़ बूढ़ा सब के सब पकड़े जाएंगे। १२ और यहोवा की यह वाणी है कि उन लोगों के घर और खेत और स्त्रियां सब औरों की हो जाएंगी क्योंकि मैं इस देश के रहनेहारों पर हाथ बढ़ाऊंगा। १३ क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक वे सब के सब लालची हैं और क्या नबी क्या याजक वे सब के सब छल से काम करते हैं। १४ और उन्हों ने शांति है शांति ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा[2] के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा किया पर शांति कुछ भी नहीं। १५ क्या वे घिनौना काम करके लजा गये नहीं वे कुछ भी नहीं लजाये वे लजाना जानते ही नहीं इस कारण जब और लोग नीचा खाएंगे तब वे भी नीचा खाएंगे और जब मैं उन को दण्ड देने लगूं तब वे ठोकर खाकर गिरेंगे यहोवा का यही वचन है॥

१६ यहोवा यों भी कहता है कि सड़कों पर खड़े होकर देखो और पूछो कि प्राचीन काल का अच्छा मार्ग कौन सा है उसी में चलो और तुम अपने अपने मन में चैन पाओगे। पर उन्हों ने कहा हम न चलेंगे। १७ फिर मैं ने तुम्हारे लिये पहरुए बैठाकर कहा है नरसिंगे का शब्द ध्यान से सुनो। पर उन्हों ने कहा है हम न सुनेंगे। १८ इस लिये हे अन्यजातियो सुनो और हे मण्डली देख कि इन लोगों में क्या हो रहा है। १९ हे पृथिवी सुन और देख कि मैं इस जाति पर वह विपत्ति ले आऊंगा जो उन की कल्पनाओं का फल है क्योंकि इन्हों ने मेरे वचनों पर ध्यान नहीं लगाया और मेरी शिक्षा को इन्हों ने निकम्मी जाना है। २० मेरे लिये लोबान जो शबा से और सुगन्धित नरकट जो दूर देश से आता है इस का क्या प्रयोजन है तुम्हारे होमबलियों से मैं प्रसन्न नहीं होता और न तुम्हारे मेलबलि मुझे मीठे लगते हैं। २१ इस कारण यहोवा ने यों कहा कि सुनो मैं इस प्रजा के आगे ठोकर रक्खूंगा और बाप बेटा पड़ोसी और संगी वे सब के सब ठोकर खाकर नाश होंगे॥

२२ यहोवा यों कहता है कि देखो उत्तर से बरन पृथिवी की छोर से एक बड़ी जाति के लोग इस देश पर उभारे जाएंगे। २३ वे धनुष और बर्छी धारण किये आएंगे वे क्रूर और निर्दय हैं और जब वे बोलते तब मानो समुद्र गरजता है वे घोड़ों पर चढ़े हुए आएंगे हे सिय्योन[3] वे वीर की नाईं हथियारबन्द होकर[4] तुझ पर चढ़ाई करेंगे। २४ इस का समाचार सुनते ही हमारे हाथ ढीले पड़ गये हैं हम संकट में पड़े हैं जननेहारी की सी पीड़ हम को उठी है। २५ मैदान में मत निकल जाओ मार्ग में भी न चलो क्योंकि वहां शत्रु की तलवार और चारों ओर भय देख पड़ता है। २६ सो हे मेरी प्रजा[5] कमर में टाट बांध और राख में लोट जैसा विलाप एकलौते पुत्र के लिये होता है वैसा ही बड़ा शोकमय विलाप कर क्योंकि नाश करनेहारा हम पर अचानक आ पड़ेगा॥

२७ मैं ने तुझ को अपनी प्रजा के बीच गुम्मट वा गढ़ इस लिये ठहरा दिया कि तू उन की चाल परखे और जान ले। २८ वे सब बहुत ही हठीले हैं वे लुतराई करते फिरते हैं उन सभों की चाल बिगड़ी है वे निरा तांबा और लोहा ही निकलते हैं। २९ धौंकनी जल गई शीशा आग में जल गया सो ढालनेहारे ने व्यर्थ ही ढाला है बुरे लोग निकाले नहीं गये। ३० उन का नाम खोटी चांदी पड़ेगा क्योंकि यहोवा ने उन को खोटा पाया है॥

७. जो वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास पहुंचा सो यह है कि, २ यहोवा के भवन के फाटक में खड़ा हो यह वचन प्रचारके कह कि हे सब यहूदियो तुम जो यहोवा को दण्डवत् करने के लिये इन फाटकों से प्रवेश करते हो सो यहोवा का वचन सुनो। ३ सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है यों कहता है कि अपनी अपनी चाल और काम सुधारो तब मैं तुम को इस स्थान में बसे रहने दूंगा। ४ यह जो तुम लोग कहा करते हो कि झूठी बातों पर भरोसा रखकर मत कहो कि यहोवा का मन्दिर यह है यहोवा का मन्दिर यहोवा का मन्दिर। ५ यदि तुम सचमुच अपनी अपनी चाल और काम सुधारो ६ और सचमुच मनुष्य मनुष्य के बीच न्याय करो, और परदेशी और बपमूए और विधवा पर अंधेर न करो और इस स्थान में निर्दोष का खून न करो और दूसरे देवताओं के पीछे न चलो जिस से तुम्हारी हानि होती है, ७ मैं तो तुम को इस नगर में और इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया युगयुग से रहने दूंगा। ८ सुनो तुम झूठी बातों पर जिन से कुछ लाभ नहीं हो सकता भरोसा रखते हो। ९ तुम जो चोरी हत्या और व्यभिचार करते और झूठी किरिया खाते और बाल देवता के लिये धूप जलाते और दूसरे देवताओं के पीछे जिन्हें तुम पहिले न जानते थे चलते हो, १० सो क्या उचित है कि

(१) मूल में उण्डेल। (२) मूल में मेरी प्रजा की पुत्री। (३) मूल में हे सिय्योन की बेटी। (४) मूल में जैसा युद्ध के लिये पुरुष।

(५) मूल में प्रजा की पुत्री।

तुम इस भवन में आओ जो मेरा कहावता है और मेरे साम्हने खड़े होकर कहो कि हम इस लिये छूट गये हैं कि
११ ये सब घिनौने काम करें। क्या यह भवन जो हमारा कहलाता है तुम्हारे लेखे डाकुओं की गुफा हो गया है मैं
१२ ही ने यह देखा है यहोवा की यही वाणी है। मेरा जो स्थान शीलो में था जहां मैं ने पहिले अपने नाम का निवास ठहराया था वहां जाकर देखो कि मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल की बुराई के कारण उस की क्या दशा कर दी
१३ है। सो अब यहोवा की यह वाणी है कि तुम तो ये सब काम करते आये हो और यद्यपि मैं तुम से बातें करता आया हूं बरन बड़े यत्न से[१] कहता आया हूं पर तुम ने नहीं सुना और यद्यपि मैं तुम्हें बुलाता आया हूं पर तुम
१४ नहीं बोले, इस लिये जो यह भवन मेरा कहावता है जिस पर तुम भरोसा रखते हो और यह स्थान जो मैं ने तुम को और तुम्हारे पितरों को दिया इन की दशा मैं शीलो की
१५ सी कर दूंगा। और जैसा मैं ने तुम्हारे सब भाइयों को अर्थात् सारे एप्रैमियों को अपने साम्हने से दूर कर दिया है वैसा ही तुम को भी दूर कर दूंगा॥

१६ तू इस प्रजा के लिये प्रार्थना मत कर न तो इन लोगों के लिये ऊंचे स्वर से प्रार्थना कर न मुझ से बिनती
१७ कर क्योंकि मैं तेरी न सुनूंगा। क्या तू नहीं देखता कि ये लोग यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में
१८ क्या करते हैं। देख लड़के बाले तो ईंधन बटोरते और बाप आग बारते और स्त्रियां आटा गूंधती हैं कि मुझे रिसियाने को स्वर्ग की रानी के लिये रोटियां चढ़ाएं और
१९ दूसरे देवताओं के लिये तपावन दें। यहोवा की यह वाणी है कि क्या वे मुझी को रिस दिलाते हैं क्या वे अपने ही
२० को नहीं जिस से उन के मुंह पर सियाही छाए। सो प्रभु यहोवा ने यों कहा है कि क्या मनुष्य क्या पशु क्या मैदान के वृक्ष क्या भूमि की उपज उन सब पर जो इस स्थान में हैं मेरी कोप की आग भड़कने पर है और जलती भी रहेगी और कभी न बुझेगी॥

२१ सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है यों कहता है कि अपने मेलबलियों में अपने होमबलि
२२ बढ़ाओ और मांस खाओ। क्योंकि जिस समय मैं तुम्हारे पितरों को मिस्र देश में से निकाल ले आया उस समय मैं ने उन से होमबलि और मेलबलि के विषय
२३ कुछ आज्ञा न दी। मैं ने तो उन को यही आज्ञा दी कि मेरी सुना करो तब मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे और जिस किसी मार्ग की मैं तुम्हें
२४ आज्ञा दूं उसी में चलो तब तुम्हारा भला होगा। पर उन्हों ने मेरी न सुनी और न कान लगाया वे अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे और
२५ आगे न बढ़े पर पीछे हट गये। जिस दिन तुम्हारे पुरखा मिस्र देश से निकले उस दिन से आज लों मैं तो अपने सारे दास नबियों को तुम्हारे पास लगातार बड़े यत्न
२६ से भेजता आया हूं। पर उन्हों ने मेरी नहीं सुनी न कान लगाया उन्हों ने हठ की और अपने पुरखाओं से बढ़कर बुराई की है॥

२७ यह सब बात उन से कह तो सही पर वे तेरी न सुनेंगे और उन को बुला तो सही पर वे न बोलेंगे।
२८ तब तू उन से कहना कि यह वही जाति है जो अपने परमेश्वर यहोवा की नहीं सुनती और ताड़ना से भी नहीं मानती सच्चाई नाश हो गई और उन के मुंह से दूर रही॥

२९ अपने बाल मुंड़ाकर फेंक दे और मुण्डे टीलों पर चढ़कर विलाप का गीत गा क्योंकि यहोवा ने इस समय के निवासियों पर कोप किया और उन्हें[२] निकम्मा जान-
३० कर त्याग दिया है। यहोवा की यह वाणी है कि इस का कारण यह है कि यहूदियों ने वह किया है जो मेरे लेखे बुरा है जो भवन मेरा कहावता है उस में भी उन्हों ने अपनी घिनौनी वस्तुएं रखकर उसे अशुद्ध
३१ किया है। और उन्हों ने हिन्नोमवंशियों की तराई में तोपेत नाम ऊंचे स्थान बनाकर अपने बेटे बेटियों को आग में जलाया है जिस की आज्ञा मैं ने कभी
३२ नहीं दी और न वह मेरे मन में कभी आया। यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन इस लिये आते हैं कि वह तराई फिर न तो तोपेत की और न हिन्नोमवंशी की कहाएगी घात ही की तराई कहाएगी और तोपेत में
३३ इतनी कबरें होंगी कि और स्थान न रहेगा। सो इन लोगों की लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान के जीवजन्तुओं का आहार होंगी और उन का हांकनेहारा
३४ कोई न रहेगा। उस समय मैं ऐसा करूंगा कि यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पड़ेगा और न दुल्हे वा दुल्हिन का क्योंकि देश उजाड़ ही उजाड़ हो जाएगा॥

८. यहोवा की यह वाणी है कि उस समय यहूदा के राजाओं हाकिमों याजकों और नबियों और यरूशलेम के और और
२ रहनेहारों की हड्डियां कबरों में से निकाल कर, सूर्य्य चन्द्रमा और आकाश के सारे गण के साम्हने फैलाई जाएंगी क्योंकि वे उन्हीं से प्रेम रखते और उन्हीं की

(१) मूल में तड़के उठकर।

(२) मूल में यहोवा ने अपनी जलजलाहट की पीढ़ी को।

सेवा करते और उन्हीं के पीछे चलते और उन्हीं के पास आया करते और उन्हीं को दण्डवत् करते थे और वे न तो ढेर की जाएंगी और न कबर में रक्खी जाएंगी
३ बरन खाद के समान भूमि के ऊपर पड़ी रहेंगी। और इस बुरे कुल में से जो लोग उन सब स्थानों में जिन में मैं उन को बरबस कर दूंगा रह जाएंगे सो जीवन से अधिक मृत्यु ही को चाहेंगे सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

४ फिर तू उन से यह कह कि यहोवा यों कहता है कि जब कोई गिरता तब क्या वह फिर नहीं उठता जब
५ कोई भटक जाता तब क्या वह लौट नहीं आता। फिर क्या कारण है कि ये यरूशलेमी लोग सदा अधिक अधिक दूर भटकते जाते हैं ये छल को नहीं छोड़ते और लौटने
६ को नकारते हैं। मैं ने ध्यान देकर सुना पर ये ठीक नहीं बोलते इन में से किसी ने अपनी बुराई से पछता कर नहीं कहा कि हाय मैं ने क्या किया है जैसा घोड़ा लड़ाई में वेग से दौड़ता है वैसे ही इन में से एक एक जन अपनी
७ दौड़ में दौड़ता है। आकाश का लगलग अपने नियत समयों को जानता है और पिण्डुकी और सूपाबेना और सारस भी अपने आने का समय रखते हैं पर मेरी प्रजा
८ यहोवा का नियम नहीं जानती। तुम क्योंकर कह सकते हो कि हम तो बुद्धिमान हैं यहोवा की दी हुई व्यवस्था हमारे पास है। पर उन के शास्त्रियों ने उस का झूठा
९ विवरण लिखकर उस को[1] झूठा बना दिया है। बुद्धिमान लज्जित हुए वे विस्मित हुए और पकड़े गये देखो उन्हों ने यहोवा के वचन को निकम्मा जाना है सो बुद्धि उन में
१० कहां रही। इस कारण मैं उन की स्त्रियों को दूसरे पुरुषों के और उन के खेत दूसरे अधिकारियों के वश कर दूंगा क्योंकि छोटे से लेकर बड़े लों वे सब के सब लालची हैं और क्या नबी क्या याजक वे सब के सब छल से काम
११ करते हैं। और उन्हों ने शांति है शांति ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा[2] के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा किया पर
१२ शांति कुछ भी नहीं है। क्या वे घिनौना काम करके लजाये नहीं वे कुछ भी नहीं लजाये वे लजाना जानते ही नहीं इस कारण जब और लोग नीचा खाएंगे तब वे भी नीचा खाएंगे और जब उन के दण्ड का समय आएगा तब वे ठोकर खाकर गिरेंगे यहोवा का यही
१३ वचन है। यहोवा की यह भी वाणी है कि मैं उन सभों का अन्त कर दूंगा न तो उन की दाखलताओं में दाख पाई जाएंगी और न अंजीर के वृक्ष में अंजीर बरन उन के पत्ते भी सूख जाएंगे इस प्रकार जो कुछ मैं ने उन्हें दिया है सो उन के पास से जाता रहेगा। हम क्यों बैठे
१४ हैं आओ हम चलकर गढ़वाले नगरों में इकट्ठे नाश हों क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को नाश किया चाहता है हम ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया है इस लिये उस ने हम को विष पिलाया है। हम शांति की बाट
१५ जोहते तो थे पर कुछ कल्याण नहीं मिला और अच्छी दशा के हो जाने की आशा तो करते थे पर घबराना ही
१६ पड़ा है। घोड़ों का फुरकना दान से सुन पड़ता है और उन के बलवन्त घोड़ों के हिनहिनाने के शब्द से सारा देश कांप उठा और उन्हों ने आकर हमारे देश को और जो कुछ उस में है और हमारे नगर को वासियों समेत
१७ नाश किया है। क्योंकि देखो मैं तुम्हारे बीच ऐसे सांप और नाग भेजूंगा जिन पर मंत्र न चलेगा और वे तुम को डसेंगे यहोवा की यही वाणी है॥

१८ हाय हाय इस शोक की दशा में मुझे शांति कहां
१९ से मिलेगी मेरा हृदय भीतर भीतर तड़पता है। क्योंकि मुझे अपने लोगों[3] की चिल्लाहट दूर के देश से सुनाई देती है कि क्या यहोवा सिय्योन में नहीं रहा क्या उस का राजा उस में नहीं रहा। उन्हों ने मुझ को अपनी खोदी हुई मूरतों और परदेश की व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा क्यों
२० रिस दिलाई है। कटनी का समय बीत गया फल तोड़ने की ऋतु भी बीत गई और हमारा उद्धार नहीं हुआ।
२१ सो अपने लोगों के[4] दुःख से मैं भी दुःखित हुआ मैं
२२ शोक का पहिरावा पहिने अति अचंभे में डूबा हूं। क्या गिलाद देश में कुछ बलसान की औषधि नहीं क्या उस में अब कोई वैद्य नहीं यदि है तो मेरे लोगों[5] के घाव क्यों चंगे नहीं हुए॥

९. भला होता कि मेरा सिर जल ही जल और मेरी आंखें आंसुओं का सोता होतीं कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों[6] के लिये
२ रोता रहता। भला होता कि मुझे जंगल में बटोहियों का कोई टिकाव मिलता कि मैं अपने लोगों को छोड़कर वहीं चला जाता क्योंकि वे सब व्यभिचारी और उन का
३ समाज विश्वासघातियों का है। और वे अपनी अपनी जीभ को धनुष की नाईं झूठ बोलने के लिये तैयार करते हैं और देश में बलवन्त तो हो गये पर सच्चाई के लिये नहीं वे बुराई पर बुराई बढ़ाते जाते हैं और वे

(१) मूल में शास्त्रियों के झूठे कलम ने उस को।
(२) मूल में प्रजा की बेटी।
(३) मूल में अपने लोगों की बेटी। (४) मूल में अपने लोगों की बेटी के। (५) मूल में मेरे लोगों की बेटी के। (६) मूल में मेरे लोगों की बेटी के मारे हुओं के।

मुझ को जानते ही नहीं यहोवा की यही वाणी है।
४ अपने अपने संगी से चौकस रहो और अपने भाई पर भी भरोसा न रखो क्योंकि सब भाई निश्चय अड़ंगा
५ मारेंगे और सब संगी लुतराई करते फिरेंगे। वे एक दूसरे को ठगेंगे और सच नहीं बोलेंगे वे झूठ ही बोलना
६ सीखे हैं[१] और कुटिलता ही में परिश्रम करते हैं। तेरा निवास छल के बीच है और छल के कारण वे मेरा ज्ञान नहीं चाहते यहोवा की यही वाणी है॥

७ सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुन मैं उन को तपाकर परखूंगा क्योंकि अपनी प्रजा[२] के कारण मैं उन से
८ और क्या कर सकता हूं। पर उन की जीभ काल के तीर सरीखी बेधनेहारी होती है उस से छल की बातें निकलती हैं वे मुंह से तो एक दूसरे से मेल की बात बोलते पर मन ही मन एक दूसरे की घात लगाते हैं।
९ यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं ऐसी बातों का दण्ड न दूं क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूं॥

१० मैं पहाड़ों के लिये रो उठूंगा और शोक का गीत गाऊंगा और जङ्गल में की चराइयों के लिये विलाप का गीत गाऊंगा क्योंकि वे ऐसे जल गये कि कोई उन से होकर नहीं चलता और उन में ढोर का शब्द सुनाई नहीं
११ पड़ता पशु पक्षी सब दूर हो गये हैं। और मैं यरूशलेम को डीह ही डीह करके गीदड़ों का स्थान बनाऊंगा और यहूदा के नगरों को ऐसा उजाड़ दूंगा कि कोई उन में न
१२ रह जाएगा। जो बुद्धिमान पुरुष हो सो इस का भेद समझ ले और जिस ने यहोवा के मुख से इस का कारण सुना हो सो बता दे कि देश क्यों नाश हुआ और क्यों जङ्गल की नाईं जल गया और क्यों कोई उस से होकर नहीं चलता॥

१३ फिर यहोवा ने कहा उन्हों ने तो मेरी व्यवस्था को जो मैं ने उन को सुनवा दी छोड़ दिया और न तो मेरी बात मानी और न उस व्यवस्था के अनुसार चले
१४ हैं, बरन अपने हठ पर और बाल नाम देवताओं के पीछे
१५ चले जैसे कि उन के पुरखाओं ने उन को सिखाया। इस कारण सेनाओं का यहोवा इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है कि सुन मैं अपनी इस प्रजा को कड़वी वस्तु
१६ खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा। और मैं उन लोगों को ऐसी जातियों में जिन्हें न तो वे न उन के पुरखा जानते तितर बितर करूंगा और मेरी ओर से तलवार उन के पीछे पड़ेगी जब तक कि उन का अन्त न हो जाए॥

१७ सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि विलाप करनेहारियों को सोच विचार के बुलाओ और बुद्धिमान स्त्रियों
१८ को बुलवा भेजो, कि वे फुर्ती करके हम लोगों के लिये शोक का गीत गाएं कि हमारी आंखों से आंसू बह चलें
१९ और हमारी पलकें जल बहाएं। सिय्योन से शोक का यह गीत सुन पड़ता है कि हम क्या ही नाश हो गये हम लज्जा में गड़ गये हैं क्योंकि हम को अपना देश छोड़ना पड़ा और हमारे घर गिरा दिये गये हैं।
२० सो हे स्त्रियो यहोवा का यह वचन सुनो और उस की यह आज्ञा मानो। कि तुम अपनी अपनी बेटियों को शोक का गीत और अपनी अपनी पड़ोसिनों को विलाप का गीत सिखाओ।
२१ क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों से होकर हमारे महलों में घुस आई कि हमारी सड़कों में बच्चों को और चौकों में
२२ जवानों को मिटा दे। तू कह कि यहोवा की वाणी यों हुई है कि मनुष्यों की लोथ ऐसी पड़ी रहेंगी जैसा खाद खेत के ऊपर और पूलियां काटनेहारे के पीछे पड़ी रहती हैं और उन का कोई उठानेहारा न होगा॥

२३ यहोवा यों कहता है कि न तो बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड करे और न वीर अपनी वीरता पर न
२४ धनवान अपने धन पर घमण्ड करे। पर जो घमण्ड करे सो इसी बात पर घमण्ड करे कि वह मुझ को जानता है और यह समझता है कि यहोवा वही है जो पृथ्वी पर करुणा न्याय और धर्म्म के काम करता है क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं यहोवा की यही वाणी
२५ है। सुनो यहोवा की यह भी वाणी है कि ऐसे दिन आनेहारे हैं कि जिन का खतना हुआ है उन के खतनारहित
२६ होने के कारण मैं उन्हें दण्ड दूंगा, अर्थात् मिस्रियों यहूदियों एदोमियों अम्मोनियों मोआबियों को और उन वनवासियों को भी जो अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालते हैं क्योंकि सब अन्यजातिवाले तो खतनारहित हैं और इस्राएल का सारा घराना मन में खतनारहित है॥

१०.

हे इस्राएल के घराने जो वचन यहोवा तुम से कहता है सो सुन।
२ यहोवा यों कहता है कि अन्यजातियों की चाल मत सीखो और न उन की नाईं आकाश के चिन्हों से विस्मित हो उन से तो अन्यजाति के लोग विस्मित होते हैं।
३ और देशों के लोगों की रीतियां तो निकम्मी हैं यह मूरत तो वन में से किसी का काटा हुआ काठ है
४ कारीगर ने उसे बसूले से बनाया है। लोग उस को सोने चांदी से सजाते और हथौड़े से कील ठोंक ठोंककर दृढ़
५ करते हैं कि वह हिल डुल न सके। वे खरादकर ताड़ के पेड़ के समान गोल बनाई जाती हैं और बोल नहीं सकतीं उन्हें उठाये फिरना पड़ता है क्योंकि वे नहीं

(१) मूल में उन्हों ने अपनी जीभ को झूठ बोलना सिखाया है।
(२) मूल में प्रजा की बेटी।

चल सकतीं तुम उन से मत डरो क्योंकि वे न तो कुछ बुरा कर सकती हैं और न कुछ भला ॥

६ हे यहोवा तेरे समान कोई नहीं है तू तो महान है ७ और तेरा नाम पराक्रम में बड़ा है। हे सब जातियों के राजा तुझ से कौन न डरेगा क्योंकि तू इस के योग्य है और अन्य जातियों के सारे बुद्धिमानों में और उन के ८ सारे राज्यों में तेरे समान कोई नहीं है। पर वे पशु सरीखे निरे मूर्ख ही हैं निकम्मी वस्तुओं की शिक्षा ९ काठ ही है उन से क्या शिक्षा मिल सकती है। पत्तर बनाई हुई चांदी तर्शीश से लाई जाती है और सोना ऊपज से कारीगर का और सोनार के हाथों का काम उन के पहिरावे नीले और बैजनी रंग के वस्त्र हैं निदान उन में १० जो कुछ है सो निपुण लोगों का काम है। परन्तु यहोवा सचमुच परमेश्वर है जीवता परमेश्वर और सदा का राजा वही है उस के कोप से पृथिवी कांपती और जाति जाति के लोग उस के क्रोध को सह नहीं सकते ॥

११ तुम उन से ऐसा कहना कि ये देवता जिन्हों ने आकाश और पृथिवी को नहीं बनाया सो पृथिवी पर से और आकाश के तले से नाश हो जाएंगे ॥

१२ उस ने पृथिवी को अपने सामर्थ्य से बनाया और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया और आकाश १३ को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है वह पृथिवी की छोर से कुहरे उठाता और वर्षा के लिये बिजली बनाता और अपने भण्डार में से पवन निकाल १४ ले आता है। सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञान रहित हैं सब सोनारों की आशा अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण टूटती है क्योंकि उन की ढाली हुई मूरतें झूठी १५ हैं और उन के सांस है ही नहीं। वे तो व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं जब उन के नाश किये जाने का १६ समय आएगा[१] तब वे नाश होंगी। पर याकूब का निज भाग उन के समान नहीं है वह तो इस सब का बनानेहारा है और इस्राएल उस के निज भाग का गोत्र है उस का नाम सेनाओं का यहोवा है ॥

१७ हे घेरे हुए नगर की रहनेहारी अपनी गठरी १८ भूमि पर से उठा। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि मैं अब की बेर इस देश के रहनेहारों को मानो गोफन में धरके फेंक दूंगा और उन्हें ऐसे संकट में डालूंगा कि १९ उन को समझ पड़ेगा। मुझ पर हाय मेरी चोट चंगी होने की नहीं फिर मैं सोचता हूं कि यह तो मेरा ही रोग है सो मुझ को इसे सहना ही चाहिये। मेरा तंबू २० लूटा गया और सब रस्सियां टूट गई मेरे लड़केवाले निकल गये और नहीं मिलते अब कोई नहीं रहा जो मेरे तंबू को ताने और मेरी कनातें खड़ी करे। क्योंकि २१ चरवाहे पशु सरीखे हो गये और यहोवा को नहीं पूछा इस कारण वे बुद्धि से नहीं चलते और उन की सब भेड़ें तित्तर बित्तर हो गई हैं। एक शब्द सुनाई देता है २२ उत्तर की दिशा से बड़ा हुल्लड़ मच रहा है वह आ रहा है कि यहूदा के नगरों को उजाड़कर गीदड़ों का स्थान बनाए। हे यहोवा मैं जान गया हूं कि मनुष्य की गति २३ उस के वश में नहीं रहती मनुष्य चलता तो है पर अपने पैर स्थिर नहीं कर सकता। हे यहोवा मेरी २४ ताड़ना विचार करके कर पर कोप में आकर नहीं ऐसा न हो कि मैं नाश हो जाऊं[२]। जो जाति तुझे नहीं २५ जानती और जो कुछ तुझ से प्रार्थना नहीं करता उन्हीं पर अपनी जलजलाहट भड़का[३] क्योंकि उन्हों ने याकूब को निगल लिया बरन खाकर अन्त कर दिया और उस के वासस्थान को उजाड़ दिया है ॥

११. यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा कि, इस वाचा के २ वचन सुनो और यहूदा के पुरुषों और यरूशलेम के रहनेहारों से बातें करो। और उन से कह इस्राएल ३ का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि स्रापित हो वह मनुष्य जो इस वाचा के वचन न माने, जो मैं ने तुम्हारे ४ पुरखाओं के साथ लोहे की भट्ठी अर्थात् मिस्र देश में से निकालने के समय यह कहके बांधी थी कि मेरी सुनो और जितनी आज्ञाएं मैं तुम्हें दूं उन सभों को मानो तब तुम मेरी प्रजा ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा। और इस प्रकार जो किरिया मैं ने तुम्हारे ५ पितरों से खाई थी कि जिस देश में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं सो मैं तुम को दूंगा उस किरिया को पूरी करूंगा। और अब देखो वह पूरी तो हुई है। यह सुनकर मैं ने कहा कि हे यहोवा सत्य वचन है[४] ॥

तब यहोवा ने मुझ से कहा ये सब वचन यहूदा के ६ नगरों और यरूशलेम की सड़कों में प्रचार करके कह कि इस वाचा के वचन सुनो और इस के अनुसार काम करो, कि जिस समय से मैं तुम्हारे पुरखाओं को ७ मिस्र देश से छुड़ा ले आया आज के दिन लों मैं उन को दृढ़ता से चिताता आया हूं कि मेरी बात सुनो।

(१) मूल में उन के दण्ड होने के समय

(२) मूल में तू मुझे घटाएगा। (३) मूल में अपनी जलजलाहट उंडेल। (४) मूल में हे यहोवा आमेन।

८ पर उन्हों ने मेरी न सुनी न मेरी ओर कान लगाया वरन अपने अपने बुरे मन के हठ पर चले और मैं ने उन के विषय इस वाचा की सब बातों को जिन के मानने की मैं ने उन्हें आज्ञा दी और उन्हों ने न मानी पूरा किया है॥

९ फिर यहोवा ने मुझ से कहा यहूदियों और यरूशलेम के वासियों में द्रोह की गोष्ठी पाई गई है। १० जैसे इन के पुरखा मेरे वचन सुनने को नकारते थे वैसे ही ये उन के अधर्मों के अनुसार करके दूसरे देवताओं के पीछे चलते और उन की उपासना करते हैं इस्राएल और यहूदा के घरानों ने उस वाचा को जो मैं ने उन के पितरों से बांधी थी तोड़ दिया है। ११ इस लिये यहोवा यों कहता है कि सुन मैं इन पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूं जिस से ये बच न सकेंगे और चाहे ये मेरी १२ दोहाई दें पर मैं इन की न सुनूंगा। उस समय यरूशलेम आदि यहूदा के नगरों के निवासी आकर उन देवताओं की जिन के लिये वे धूप जलाते हैं दोहाई देंगे पर वे उन की विपत्ति के समय उनको कुछ भी न १३ बचा सकेंगे। हे यहूदा जितने तेरे नगर उतने तेरे देवता भी हैं और यरूशलेम के निवासियों ने एक एक सड़क में उस लजवानेहारे बाल की वेदियां बना बनाकर उस १४ के लिये धूप जलाया है। सो तू मेरी इस प्रजा के लिये प्रार्थना मत कर न तो इन लोगों के लिये ऊंचे स्वर से प्रार्थना कर क्योंकि जिस समय ये अपनी विपत्ति के मारे मेरी दोहाई देंगे तब मैं इन की न सुनूंगा॥

१५ मेरी प्यारी को मेरे घर में तेरा क्या काम है उस ने तो बहुतों के साथ कुकर्म किया और तेरी पवित्रता पूरी रीति से जाती रही है[१] क्योंकि जब तू बुराई १६ करती है तब न हुलसती है। यहोवा ने तुझ को हरी मनोहर सुन्दर फलवाली जलपाई तो कहा था पर उस ने बड़े जोर शोर से उस में आग लगाई और उस की १७ डालियां तोड़ डाली गईं। और सेनाओं का यहोवा जिस ने तुझे लगाया उस ने तुझ पर विपत्ति डालने के लिये कहा है[२] इस का कारण इस्राएल और यहूदा के घरानों की वह बुराई है जो उन्हों ने मुझे रिस दिलाने के लिये बाल के निमित्त धूप जलाकर किया॥

१८ और यहोवा ने मुझे बताया सो यह बात मुझे मालूम हो गई क्योंकि हे यहोवा तू ने उन की १९ युक्तियां मुझ पर प्रगट कीं। मैं तो वध होनेहारे[३] भेड़ के पालतू बच्चे के समान अनजान था मैं जानता न था कि वे लोग मेरी हानि की युक्तियां यह कहकर करते हैं कि आओ हम फल[४] समेत वृक्ष को उखाड़ दें और जीवतों के बीच में से काट डालें तब इस का नाम फिर स्मरण न रहे। २० पर अब हे सेनाओं के यहोवा हे धर्म्मी न्यायी हे मन की जाननेहारे अब तू उन्हें पलटा दे तब मैं उसे देखने पाऊं क्योंकि मैं ने अपना मुकद्दमा तेरे ऊपर छोड़ दिया है[५]। २१ इस लिये यहोवा ने मुझ से कहा अनातोत के लोग जो तेरे प्राण के खोजी हैं और यह कहते हैं कि तू यहोवा का नाम लेकर नबूवत न कर नहीं तो हमारे २२ हाथों से मरेगा, सो उन के विषय सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं उन को दण्ड दूंगा उन में के जवान तो तलवार से और उन के लड़के लड़कियां भूख से २३ मरेंगी। और उन में से कोई भी बचा न रहेगा मैं अनातोत के लोगों पर विपत्ति डालूंगा उन के दण्ड का दिन[६] आनेहारा है॥

१२. हे यहोवा यदि मैं तुझ से मुकद्दमा लड़ूं तो तू धर्म्मी ठहरेगा तौभी मुझे अपने संग इस विषय वादविवाद करने दे कि दुष्टों की चाल क्यों सफल होती है क्या कारण है कि जितने बड़ा विश्वासघात करते हैं सो बहुत सुख से रहते हैं। २ तू ने उन को रोपा और उन्हों ने जड़ भी पकड़ी वे बढ़ते और फूलते फलते भी हैं वे मुंह से तो तुझे निकट ठहराते पर मन से दूर रहते हैं। ३ हे यहोवा तू मुझे जानता है तू मुझे देखता और मेरे मन को जांचकर जान भी लिया है कि मैं तेरी ओर कैसा रहता हूं सो जैसे भेड़ बकरियां घात होने के लिये झुंड में से निकाली जाती हैं वैसे ही उन को भी निकाल ले और वध के दिन के लिये तैयार[७] कर रख। ४ कब लों देश विलाप करता रहेगा और सारे मैदान की घास सूखी रहेगी देश के निवासियों की बुराई के कारण पशु पक्षी सब बिलाय गये हैं क्योंकि उन लोगों ने कहा कि वह हमारे अन्त को देखने न पाएगा॥

५ तू जो प्यादों के संग दौड़कर थक गया तो घोड़ों के संग क्योंकर बराबरी कर सकेगा और अब लों तो तू शांति के इस देश में निडर है पर यर्दन के आस ६ पास के घने जंगल में[८] तू क्या करेगा। तेरे भाई और तेरे घराने के लोगों ने भी तेरा विश्वासघात किया है

(१) मूल के पवित्र मांस तुझ पर से चला गया। (२) मूल में उस ने तेरे विषय बुराई कही। (३) मूल में बध के लिये पहुंचाये जानेहारे।

(४) मूल में भोजनवस्तु। (५) मूल में तुझी को प्रगट किया है। (६) मूल में बरस। (७) मूल में पवित्र। (८) मूल में यर्दन की बढ़ाई में।

वे भी तेरे पीछे ललकारते आये इस कारण चाहे वे तुझ से मीठी बातें भी कहें तौभी उन की प्रतीति न करना। ७ मैं ने अपना घर छोड़ दिया और अपना निज भाग त्याग दिया मैं ने अपनी प्राणप्रिया को शत्रुओं के वश में कर दिया है। ८ क्योंकि मेरा निज भाग मेरे देखने में बन में के सिंह के समान हुआ वह मेरे विरुद्ध गरजा है इस कारण मैं ने उस से बैर किया है। ९ क्या मेरा निज भाग मेरे लेखे चित्तीवाले और मांसाहारी पक्षी के समान नहीं हुआ जिसे और मांसाहारी पक्षी घेर लेते हों सब बनैले जन्तुओं को भी खा डालने के लिये इकट्ठे करो। १० मेरी दाख की बारी को बहुत से चरवाहों ने नाश कर दिया उन्हों ने मेरे भाग को लताड़ा बरन मेरे मनोहर भाग के खेत को निर्जन जंगल बना दिया है। ११ उन्हों ने उस को उजाड़ दिया और वह उजड़कर मेरे साम्हने विलाप कर रहा है सारा देश उजड़ गया इस का कारण यह है कि कोई नहीं सोचता। १२ जंगल में के सब मुंडे टीलों पर नाश करनेहारे चढ़े हैं यहोवा की तलवार देश के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे लों नाश करती जाती है किसी मनुष्य को शांति नहीं मिलती। १३ उन्हों ने गेहूं तो बोया पर कटीले पेड़ काटे उन्हों ने कष्ट तो उठाया पर उस से कुछ लाभ न हुआ यहोवा के कोप भड़कने के कारण अपने खेतों की उपज के विषय में तुम्हारी आशा टूटेगी॥

१४ मेरे जो दुष्ट पड़ोसी उस भाग पर जिस का भागी मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल को किया हाथ लगाते हैं उन के विषय यहोवा यों कहता है कि मैं उन को उन की भूमि में से उखाड़ डालूंगा पीछे यहूदा के घराने को उन के बीच से उखाड़ूंगा। १५ फिर उन्हें उखाड़ने के पीछे मैं उन पर दया करूंगा और उन में से एक एक को उस के निज भाग और देश में फिर रोपूंगा। १६ और यदि जिस प्रकार से उन्हों ने मेरी प्रजा को बाल की किरिया खाना सिखाया है उसी प्रकार से वे मेरी प्रजा की चाल सीखकर मेरे ही नाम की किरिया यह कहकर खाने लगें कि यहोवा के जीवन की सों तो मेरी प्रजा के बीच उन का भी वंश बढ़ेगा[१]। १७ पर यदि वे न मानें तो मैं ऐसी जाति को ऐसा उखाड़ूंगा कि वह फिर कभी न पनपेगी यहोवा की यही वाणी है॥

१३.

यहोवा ने मुझ से यों कहा कि जाकर सनी की एक पेटी मोल ले और कमर में बांध और जल में मत भीगने दे। २ सो मैं ने यहोवा के वचन के अनुसार एक पेटी मोल लेकर अपनी कमर में बांध ली। ३ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ४ जो पेटी तू ने मोल लेकर कटि में कसी है सो परात के तीर पर ले जा और वहां उस को कड़ाड़े में की एक दरार में छिपा दे। ५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मैं ने उस को परात के तीर पर ले जाकर छिपा रक्खा। ६ बहुत दिनों के पीछे यहोवा ने मुझ से कहा फिर परात के पास जा और जिस पेटी को मैं ने तुझे वहां छिपाने की आज्ञा दी सो वहां से ले ले। ७ सो मैं ने फिर परात के पास जा खोदकर जिस स्थान में मैं ने पेटी को छिपाया था वहां से उस को निकाल लिया और देखो पेटी बिगड़ गई वह किसी काम की न रही। ८ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ९ यहोवा यों कहता है कि इसी प्रकार से मैं यहूदियों का गर्व्व और यरूशलेम का बड़ा गर्व्व तोड़ दूंगा। १० इस दुष्ट जाति के लोग जो मेरे बचन सुनने को नाह करते और अपने मन के हठ पर चलते और दूसरे देवताओं के पीछे चल कर उन की उपासना और उन को दण्डवत् करते हैं सो इस पेटी के समान होंगे जो किसी काम की नहीं रही। ११ यहोवा की यह वाणी है कि जिस प्रकार से पेटी मनुष्य की कमर में कसी जाती है उसी प्रकार से मैं ने इस्राएल के सारे घराने और यहूदा के सारे घराने को अपनी कटि में बांध लिया है कि वे मेरी प्रजा ठहरके मेरे नाम और कीर्त्ति और शोभा का कारण हों पर उन्हों ने न माना। १२ सो तू उन से यह वचन कह कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से भर दिये जाते हैं तब वे तुझ से कहेंगे क्या हम नहीं जानते कि दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से भर दिये जाते हैं। १३ तब तू उन से कहना यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं इस देश के सब रहनेहारों को विशेष करके दाऊदवंश की गद्दी पर विराजनेहारे राजा और याजक और नबी आदि यरूशलेम के सब निवासियों को अपने कोपरूपी मदिरा पिलाकर अचेत कर दूंगा[२]। १४ तब मैं उन्हें एक दूसरे पर बाप को बेटे पर और बेटे को बाप पर पटक दूंगा। यहोवा की यह वाणी है कि मैं उन पर न कोमलता दिखाऊंगा न तरस खाऊंगा और न दया करके उन को नाश होने से बचाऊंगा॥

१५ सुनो और कान लगाओ गर्व्व मत करो क्योंकि यहोवा ने यों कहा है। १६ अपने परमेश्वर यहोवा की

(१) मूल में वे बन जावेंगे।

(२) मूल में निवासियों को मतवालेपन से भरूंगा।

महिमा उस से पहिले करो कि वह अंधकार करे और तब राह को पहाड़ों पर ठोकर खाओ और जब तुम प्रकाश का आसरा देखते रहो तब वह उस की सन्ती तुम पर घोर अंधकार और बड़ा अंधियारा छा दे। १७ यदि तुम इसे न सुनो तो मैं निराले स्थानों में तुम्हारे गर्व्व के कारण रोऊंगा और आंख से आंसुओं की धारा बहती रहेगी क्योंकि यहोवा की भेड़ें हर ली गई हैं॥

१८ राजा और राजमाता से कह कि नीचे बैठ जाओ क्योंकि तुम्हारे सिरों पर जो शोभायमान मुकुट हैं सो १९ उतार लिये जाएंगे। दक्खिन देश के नगर घेरे गये कोई उन्हें बचा[१] न सकेगा यहूदी जाति सब बन्धुई हो गई वह तो बिलकुल बन्धुआई में चली गई है॥

२० अपनी आंखें उठाकर उन को देख जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं वह सुन्दर झुण्ड कहां है जो तुझे २१ सौंपा गया। जब वह तेरे उन मित्रों को जिन्हें तू ने अपनी हानि करने की शिक्षा दी है तेरे ऊपर प्रधान ठहराएगा तब तू क्या कहेगी क्या उस समय तुझे जनने- २२ हारी की सी पीड़ें न उठेंगी। और यदि तू अपने मन में सोचे कि मुझ पर ये बातें किस कारण पड़ी हैं तो तेरा घांघरा जो उठाया गया और तेरी एड़ियां जो बरियाई से २३ नंगी की गईं इस का कारण तेरा बड़ा अधर्म्म है। क्या हबशी अपना चमड़ा वा चीता अपने धब्बे बदल सकता यदि कर सकें तो तू भी जो बुराई करना सीख गई है २४ भलाई कर सकेगी। इस कारण मैं उन को ऐसा तितर बितर करूंगा जैसा भूसा जंगल के पवन से तितर बितर २५ किया जाता है। यहोवा की यह वाणी है कि तेरा बांट और मुझ से ठहराया हुआ तेरा भाग यही है इसलिये २६ कि तू ने मुझे भूलकर झूठ पर भरोसा रक्खा है। सो मैं भी तेरा घांघरा तेरे मुंह लों उठाऊंगा तब तेरी पत २७ उतर जाएगी। व्यभिचार और चोचला[२] और छिनाला आदि तेरे घिनौने काम जो तू ने मैदान के टीलों पर किये सो सब मैं ने देखे हैं हे यरूशलेम तुझ पर हाय तू तो शुद्ध नहीं होती और कितने दिन लों बनी रहेगी॥

१४. यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास सूखा पड़ने के विषय

२ पहुंचा कि, यहूदा विलाप करता और फाटकों में लोग शोक का पहिरावा पहिरे हुए भूमि पर उदास बैठे हैं और यरूशलेम की चिल्लाहट आकाश लों पहुंच गई है[३]। ३ और उन के बड़े लोग उन के छोटे लोगों को पानी के लिये भेजते हैं और वे गड़हों पर आकर पानी नहीं पाते सो छूछे बर्तन लिये हुए घर लौट जाते हैं वे ४ लज्जित और निराश होकर सिर ढांप लेते हैं। देश में पानी न पड़ने से भूमि में दरार पड़ गये इस कारण ५ किसान लोग निराश होकर सिर ढांप लेते हैं। हरिणी मैदान में बच्चा जनकर छोड़ जाती है इसलिये कि हरी ६ घास नहीं मिलती। और बनैले गदहे भी मुंडे टीलों पर खड़े हुए गीदड़ों की नाईं हांपते हैं उन की आंखें धुन्धला जाती हैं इसलिये कि हरियाली कुछ नहीं है॥

७ हे यहोवा हमारे अधर्म्म के काम हमारे विरुद्ध साक्षी देते तो हैं कि हम तेरा संग छोड़कर बहुत दूर भटक गये और हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया तौभी तू अपने ८ नाम के निमित्त काम कर। हे इस्राएल के आधार हे संकट के समय उस के बचानेहारे तू ही है तू इस देश में परदेशी की नाईं क्यों रहता है तू क्यों उस बटोही के समान है जो कहीं रात भर रहने के लिये ९ टिकता हो। तू विस्मित पुरुष और ऐसे वीर सरीखा क्यों होता है जो बचा न सकता हो हे यहोवा तू हमारे बीच में और हम तेरे कहलाये हैं सो हम को न तज॥

१० यहोवा ने इन लोगों के विषय यों कहा कि इन को ऐसा भटकना अच्छा लगता है और कुमार्ग में चलने से ये नहीं रुके इसलिये यहोवा इन से प्रसन्न नहीं और इन का अधर्म्म स्मरण करेगा और इन के ११ पाप का दण्ड देगा। फिर यहोवा ने मुझ से कहा मेरी १२ इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर। चाहे वे उपवास भी करें तौभी मैं इन की दोहाई न सुनूंगा और चाहे वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाएं तौभी मैं इन से प्रसन्न न हूंगा मैं तलवार महंगी और मरी के १३ द्वारा इन का अन्त कर डालूंगा। तब मैं ने कहा हाय प्रभु यहोवा देख नबी इन से कहते हैं कि न तो तुम पर तलवार चलेगी और न महंगी होगी यहोवा तुम को १४ इस स्थान में सदा की शांति[४] देगा। और यहोवा ने मुझ से कहा नबी मेरा नाम लेकर झूठी नबूवत करते हैं मैं ने उन को न तो भेजा और न कुछ आज्ञा दी और न उन से कोई भी बात कही वे तुम लोगों से दर्शन का झूठा दावा करके अपने ही मन से भावी बात की व्यर्थ १५ और धोखे की नबूवत करते हैं। इस कारण जो नबी लोग मेरे बिना भेजे मेरा नाम लेकर नबूवत करते हैं

(१) मूल में खोल। (२) मूल में हिनहिनाना। (३) मूल में चिल्लाहट चढ़ गई है। (४) मूल में सच्चाई की शांति।

कि इस देश में न तो तलवार चलेगी और न महंगी होगी उन के विषय यहोवा यों कहता है कि वे नबी
१६ आप तलवार और महंगी से नाश किये जाएंगे। और जिन लोगों से वे नबूवत करते हैं न तो उन का और न उन की स्त्रियों और बेटे बेटियों का कोई मिट्टी देनेहारा रहेगा सो महंगी और तलवार के द्वारा मर जाने पर वे यरूशलेम की सड़कों में फेंक दिये जाएंगे यों मैं उन की
१७ बुराई उन्हीं को भुगताऊंगा[1]। सो तू उन से यह बात कह कि मेरी आंखों से रात दिन आंसू लगातार बहते रहेंगे क्योंकि मेरे लोगों की कुंवारी कन्या बहुत ही तोड़ी
१८ गई और घायल हुई है। यदि मैं मैदान में जाऊं तो देखने में क्या आएगा कि तलवार के मारे हुए पड़े हैं और यदि मैं फिर नगर के भीतर आऊं तो देखने में क्या आएगा कि भूख से अधमूए पड़े हैं[2] फिर नबी और याजक अनजाने देश में मारे मारे फिरते हैं॥

१९ क्या तू ने यहूदा से बिलकुल हाथ उठा लिया क्या तू सिय्योन से घिना गया है नहीं तो तू ने क्यों हम को ऐसा मारा है कि हम चंगे नहीं हो सकते हम शान्ति की बाट जोहते आये हैं तौभी हमें कुछ कल्याण नहीं मिला और यद्यपि हम अच्छे हो जाने की आशा करते आये
२० हैं तौभी घबराना ही पड़ा है। हे यहोवा हम अपनी दुष्टता और अपने पुरखाओं के अधर्म्म को भी मान लेते
२१ हैं कि हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है। तौभी अपने नाम के निमित्त हमारा तिरस्कार न कर और अपने तेजोमय सिंहासन का अपमान न कर जो वाचा तू ने हमारे साथ
२२ बांधी है उसे स्मरण कर और न तोड़। क्या अन्यजातियों के निकम्मों में से कोई वर्षा कर सकता है क्या आकाश झड़ियां लगा सकता है हे हमारे परमेश्वर यहोवा क्या तू ही ऐसा करनेहारा नहीं है सो हम तेरा ही आसरा देखते रहेंगे क्योंकि इन सारी वस्तुओं का रचनेहारा तू ही है॥

१५. फिर यहोवा ने मुझ से कहा यदि मूसा और शमूएल भी मेरे साम्हने खड़े होते तौभी मेरा मन इन लोगों की ओर न फिरता सो इन को मेरे साम्हने से निकाल और वे
२ निकल जाएं। और यदि ये तुझ से पूछें कि हम कहां निकल जाएं तो कहना कि यहोवा यों कहता है कि जो मरनेवाले हैं सो मरने को चले जाएं और जो तलवार से मरनेवाले हैं सो तलवार से मरने को और जो भूखों मरनेवाले हैं सो भूखों मरने को और जो बंधुए होनेहारे हैं सो बन्धुआई में चले जाएं। और यहोवा की यह वाणी
३ है कि मैं उन के विरुद्ध चार प्रकार की वस्तु[3] ठहराऊंगा अर्थात् मार डालने के लिये तलवार और फाड़ डालने के लिये कुत्ते और नोच डालने के लिये आकाश के पक्षी
४ और फाड़ खाने के लिये मैदान के जीवजन्तु। और मैं उन्हें ऐसा करूंगा कि वे पृथिवी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरेंगे यह हिजकिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा मनश्शे के उन कामों के कारण होगा जो उस ने यरूशलेम में
५ किये। हे यरूशलेम तुझ पर कौन तरस खाएगा और कौन तेरे लिये शोक करेगा वा कौन तेरा कुशल पूछने
६ को मुड़ेगा। यहोवा की यह वाणी है कि तू जो मुझ को त्यागकर पीछे हट गई है इसलिये मैं तुझ पर हाथ *बढ़ाकर तेरा नाश करूंगा क्योंकि मैं तरस खाते खाते*
७ उकता गया हूं। सो मैं ने उन को देश के फाटकों में सूप से फटक दिया है उन्हों ने जो कुमार्ग को नहीं छोड़ा इस से मैं ने अपनी प्रजा को निर्वंश किया और नाश भी
८ किया। उन की विधवाएं मेरे देखने में समुद्र की बालू के किनकों से अधिक हो गई हैं उन में के जवानों की माता के विरुद्ध मैं दुपहरी को लूटनेहारा लाया हूं मैं ने उन को अचानक संकट में डाल दिया और घबरा दिया है।
९ सात लड़कों की माता भी सूख गई और प्राण भी छोड़ दिया उस का सूर्य्य दोपहर ही को अस्त हो गया उस की आशा टूट गई और उस के मुंह पर स्याही छा गई और जो बचेंगे उन को भी मैं शत्रुओं की तलवार से मरवा डालूंगा यहोवा की यही वाणी है॥

१० हे मेरी माता मुझ पर हाय कि तू मुझ ऐसे मनुष्य को जनी जो संसार भर से झगड़ा और वादविवाद करनेहारा ठहरा है न तो मैं ने ब्याज के लिये रुपए दिये और न किसी ने मुझ को ब्याज पर रुपए दिये हैं तौभी सब लोग मुझे कोसते हैं॥

११ यहोवा ने कहा निश्चय मैं तेरी भलाई के लिये तुझे दृढ़ करूंगा निश्चय मैं विपत्ति और कष्ट के समय
१२ शत्रु से भी तेरी बिनती कराऊंगा। क्या कोई पीतल वा
१३ लोहा वा उत्तर दिशा का लोहा तोड़ सकता है। मैं तेरी धन संपत्ति और खजाने उस के सब पापों के कारण जो
१४ सारे देश में हुए बिना दाम लिये लुट जाने दूंगा। मैं ऐसा करूंगा कि तेरा धन शत्रुओं के साथ ऐसे देश में जिसे तू नहीं जानती चला जाएगा क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है और वह तुम में लग जाएगी॥

(१) मूल में उन्हीं पर उण्डेलूंगा। (२) मूल में भूख के रोगी हैं। (३) मूल में चार कुल।

१५ हे यहोवा तू तो जानता है मुझे स्मरण कर और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेहारों से मेरा पलटा ले तू धीरज के साथ कोप करनेहारा है इसलिये मुझे न उठा ले जान रख कि तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है।
१६ जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा मैं तेरा
१७ कहलाता हूं। तेरी छाया मुझ पर हुई मैं मन बहलानेहारों के बीच बैठकर नहीं हुलसा तेरे हाथ के दबाव से मैं अकेला बैठा क्योंकि तू ने मुझे क्रोध से भर दिया है।
१८ मेरी पीड़ा क्यों लगातार बनी रहती मेरी चोट का क्यों कुछ उपाय नहीं है क्या तू सचमुच मेरे लिये धोखा देनेहारी नदी और सूखनेहारे जल सरीखा होगा॥
१९ यह सुनकर यहोवा ने यों कहा कि यदि तू फिरे तो मैं तुझे फिरके अपने साम्हने खड़ा करूंगा और यदि तू अनमोल को निकम्मे में से निकाले तो मेरे मुख के समान होगा। वे लोग तेरी ओर फिरें तो फिरें पर तू
२० उन की ओर न फिरना। और मैं तुझ को उन लोगों के साम्हने पीतल की दृढ़ शहरपनाह बनाऊंगा वे तुझ से लड़ेंगे पर तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि मैं तुझे बचाने और तेरा उद्धार करने के लिये तेरे संग हूं यहोवा की
२१ यही वाणी है। और मैं तुझे दुष्ट लोगों के हाथ से बचाऊंगा और उपद्रवी लोगों के पंजे से छुड़ाऊंगा॥

१६. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि,
२ इस स्थान में
३ विवाह करके बेटे बेटियां मत जन्मा। क्योंकि जो बेटे बेटियां इस स्थान में उत्पन्न हों और उन की माताएं जो उन्हें जनी हों और उन के पिता जो उन्हें इस देश में
४ जन्माये हों उन के विषय यहोवा यों कहता है कि, ये बुरी बुरी रीतियों से मरेंगे और न कोई उन के लिये छाती पीटेगा न उन को मिट्टी देगा वे भूमि के ऊपर खाद की नाईं पड़े रहेंगे और तलवार और महंगी से मर मिटेंगे और उन की लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान
५ के जीवजन्तुओं का आहार होंगी। यहोवा ने कहा कि जिस घर में रोना पीटना हो उस में न जाना और न छाती पीटने के लिये कहीं जाना न इन लोगों के लिये शोक करना क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने अपनी शान्ति और करुणा और दया इन लोगों पर से खींच
६ ली है। सो इस देश में के छोटे बड़े सब मरेंगे न तो इन को मिट्टी दी जाएगी और न इन के लिये लोग छाती पीटेंगे न अपना शरीर चीरेंगे न सिर मुंड़ाएंगे,
७ न लोग इन के लिये शोक करनेहारों को रोटी बांटेंगे कि शोक में इन को शान्ति दें और न लोग पिता वा माता के मरने पर भी किसी को शान्ति के कटोरे में दाखमधु
८ पिलाएंगे। फिर तू जेवनार के घर में भी इन के संग
९ खाने पीने के लिये न जाना। क्योंकि सेनाओं का यहोवा इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है कि सुन मैं इन लोगों के देखते इन्हीं दिनों में ऐसा करूंगा कि इस स्थान में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पड़ेगा और न दुल्हे
१० वा दुल्हिन का शब्द। और जब तू इन लोगों से ये सब बातें कहे और वे तुझ से पूछें कि यहोवा ने हमारे ऊपर यह सारी बड़ी विपत्ति डालने को क्यों कहा है हमारा क्या अधर्म्म है और हम ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध
११ कौन सा पाप किया है, तो तू इन लोगों से कहना कि यहोवा की यह वाणी है कि तुम्हारे पुरखा तो मुझे त्याग कर दूसरे देवताओं के पीछे चले और उन की उपासना करते और उन को दण्डवत् करते थे और इस प्रकार उन्हों ने मुझ को त्याग दिया और मेरी व्यवस्था पर न चले।
१२ और जितनी बुराई तुम्हारे पुरखाओं ने की थी उस से अधिक तुम करते हो तुम अपने बुरे मन के हठ पर
१३ चलते हो और मेरी नहीं सुनते। इस कारण मैं तुम को इस देश से उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूंगा जिस को न तो तुम जानते हो और न तुम्हारे पुरखा जानते थे और वहां तुम रात दिन दूसरे देवताओं की उपासना करते रहोगे और वहां मैं तुम पर कुछ अनुग्रह न करूंगा॥
१४ फिर यहोवा की यह वाणी हुई कि ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में यह फिर न कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया उस के
१५ जीवन की सों। वरन यह कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियों को उत्तर के देश से और उन सब देशों से जहां उस ने उन को बरबस कर दिया था छुड़ा ले आया उस के जीवन की सों क्योंकि मैं उन को उन के निज देश में जो मैं ने उन के पितरों को दिया था लौटा ले आऊंगा।
१६ सुनो यहोवा की यह वाणी है कि मैं बहुत से मछुओं को बुलवा भेजूंगा कि वे इन लोगों को पकड़ लें और फिर मैं बहुत से बहेलियों को बुलवा भेजूंगा और वे इन को अहेर करके सब पहाड़ों और पहाड़ियों पर से और ढांगों
१७ की दरारों में से निकालेंगे। क्योंकि उन का सारा चालचलन मेरी आंखों के साम्हने प्रगट है न तो वह मेरी दृष्टि से छिपा है और न उन का अधर्म्म मेरी आंखों से
१८ गुप्त है। सो पहिले मैं उन के अधर्म्म और पाप का दूना दण्ड दूंगा इसलिये कि उन्हों ने मेरे देश को अपनी घिनौनी वस्तुओं की लोथों से अशुद्ध किया और मेरे

निज भाग को अपनी घिनौनी वस्तुओं से भर दिया है॥

१९ हे यहोवा हे मेरे बल और दृढ़ गढ़ और संकट के समय मेरे शरणस्थान अन्यजातियों के लोग पृथिवी की छोर छोर से तेरे पास आकर कहेंगे निश्चय हमारे पुरखा झूठी व्यर्थ और निष्फल वस्तुओं को अपने भाग में करते २० आये हैं। क्या मनुष्य ईश्वरों को बना ले नहीं वे तो ईश्वर नहीं हो सकते॥

२१ इस कारण मैं अब की बार इन लोगों को अपना भुजबल और पराक्रम जताऊंगा और ये जानेंगे कि मेरा

१ **१७.** नाम यहोवा है। यहूदा का पाप लोहे की टांकी और हीरे की नोक से लिखा हुआ है वह उन के हृदयरूपी पटिया और उन की वेदियों के सींगों पर भी २ खुदा हुआ है। फिर उन की जो वेदियां और अशेरा नाम देवियां हरे पेड़ों के पास और ऊंचे टीलों के ऊपर हैं ३ सो उन के लड़कों को भी स्मरण रहती हैं। हे मेरे पर्वत तू जो मैदान में है मैं तेरी धन संपत्ति और सारा भण्डार और पूजा के ऊंचे स्थान जो तेरे सारे देश में ४ पाये जाते हैं तेरे पाप के कारण लुट जाने दूंगा। और तू अपने ही दोष के कारण अपने उस भाग का जो मैं ने तुझे दिया है अधिकारी न रहने पाएगा और मैं ऐसा करूंगा कि तू अनजाने देश में अपने शत्रुओं की सेवा करेगा क्योंकि तू ने मेरे कोप की आग ऐसी भड़काई कि वह सदा लों जलती रहेगी॥

५ यहोवा यों कहता है कि स्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता और उसी का[१] सहारा लेता और जिस का मन यहोवा से फिर जाता है। ६ वह निर्जल देश के अधमूए पेड़ के समान होगा जब कल्याण होगा तब तो उस के लिये नहीं होगा पर वह निर्जल और निर्जन और लोनी भूमि पर रहनेहारा ७ होगा। धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है ८ और उस को अपना आधार मानता है। वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा और उस की जड़ जल के पास फैली हो सो जब घाम होगा तब वह उस को न लगेगा और उस के पत्ते हरे बने रहेंगे और सूखे के बरस में उस के विषय कुछ चिन्ता न होगी ९ क्योंकि तब भी वह फलता रहेगा। मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेहारा होता है और उस में असाध्य रोग लगा है उस का भेद कौन समझ सकता है। १० मैं यहोवा मन मन की खोजता और जांचता हूं कि एक एक जन को उस की चाल के अनुसार उस के कामों का फल दूं। जो अन्याय से धन बटोरता सो उस तीतर ११ के समान होता है जो दूसरी चिड़िया के[२] दिये हुए अण्डों को सेवे वैसा ही वह धन उस मनुष्य को आधी आयु में छोड़ जाता है और अंत में वह मूढ़ ही ठहरता है॥

हमारा पवित्र स्थान आदि से ऊंचे स्थान पर १२ रक्खा हुआ एक तेजोमय सिंहासन है। हे यहोवा हे १३ इस्राएल के आधार जितने तुझ को छोड़ देते हैं उन सभों की आशा टूटेगी और जो मुझ से फिर जाते हैं उन के नाम भूमि ही पर लिखे जाएंगे इसलिये कि उन्हों ने बहते जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है। हे यहोवा मुझे चंगा कर तब मैं चंगा हूंगा मुझे बचा १४ तब मैं बचूंगा क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूं[३]। सुन वे मुझ से कहते हैं कि यहोवा का बचन कहां रहा १५ वह अभी पूरा हो जाए। पर तू मेरा हाल जानता है कि १६ तेरे पीछे चलते हुए मैं ने उतावली करके चरवाहे का काम नहीं छोड़ा और न मैं ने उस आनेवाली निरुपाय विपत्ति की लालसा की है बरन जो कुछ मैं बोलता था सो तुझ पर प्रगट होता था। सो तू मुझे न घबरा दे १७ संकट के दिन मेरा शरणस्थान तू ही है। हे यहोवा १८ मेरी आशा टूटने न दे पर मेरे सतानेहारों की आशा टूटे मुझे विस्मित न होना पड़े उन्हीं को विस्मित होना पड़े उन पर विपत्ति डाल और उन को चूर चूर कर॥

यहोवा ने मुझ से यों कहा कि जाकर सदर फाटक १९ में खड़ा हो जिस से यहूदा के राजा भीतर बाहर आया जाया करते हैं बरन यरूशलेम के सब फाटकों में भी खड़ा हो, और उन से कह दे यहूदा के राजाओ और २० सब यहूदियो और यरूशलेम के सब निवासियो हे सब लोगो जो इन फाटकों से होकर भीतर जाते हो यहोवा का वचन सुनो। यहोवा यों कहता है कि सावधान रहो २१ विश्राम के दिन कोई बोझ मत उठा ले आओ और न कोई बोझ यरूशलेम के फाटकों के भीतर ले आओ। फिर विश्रामदिन अपने अपने घर से भी कोई बोझ २२ बाहर मत ले जाओ और न किसी रीति का काम काज करो बरन उस आज्ञा के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी विश्रामदिन को पवित्र माना करो। पर उन्हों ने न सुनी और न कान लगाया पर इसलिये २३ हठ किया कि न सुनें और ताड़ना से भी न मानें। और २४ यहोवा की यह वाणी है कि यदि तुम सचमुच मेरी सुनो और विश्रामदिन इस नगर के फाटकों के भीतर कोई बोझ न ले आओ बरन विश्रामदिन को पवित्र मानो

(१) मूल में मांस का।

(२) मूल में अपने न। (३) मूल में तू ही मेरी स्तुति है।

२५ और उस में किसी रीति का काम काज न करो, तब तो इस नगर के फाटकों से होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए हाकिमों और यहूदा के लोग और यरूशलेम के निवासी प्रवेश किया
२६ करेंगे और यह नगर सदा लों बसा रहेगा। और यहूदा के नगरों से और यरूशलेम के आस पास से और बिन्यामीन के देश से और नीचे के देश से और पहाड़ी देश से और दक्खिन देश से लोग होमबलि मेलबलि अन्नबलि लोबान और धन्यवादबलि लिये हुए यहोवा
२७ के भवन में आया करेंगे। पर यदि तुम मेरी सुनकर विश्राम दिन को पवित्र न मानो पर उस दिन यरूशलेम के फाटकों से बोझ लिये हुए प्रवेश करते रहो तो मैं यरूशलेम के फाटकों में आग लगाऊंगा और उस से यरूशलेम के महल भी भस्म हो जाएंगे और वह आग फिर न बुझेगी॥

१८. यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा कि,
२ उठकर कुम्हार के घर जा और वहां मैं तुझे अपने वचन
३ सुनाऊंगा। सो मैं कुम्हार के घर गया तो क्या देखा
४ कि वह चाक पर कुछ बना रहा है। और जो बासन वह मिट्टी का बनाता था सो बिगड़ गया तब उस ने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया।

५ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि,
६ हे इस्राएल के घराने यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार की नाईं तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता देख जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है वैसा ही हे इस्राएल के घराने तुम भी मेरे हाथ में हो।
७ जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि उसे
८ उखाड़ूंगा वा ढा दूंगा वा नाश करूंगा, तब यदि उस जाति के लोग जिस के विषय मैं ने वह बात कही हो बुराई से फिरें तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन
९ पर डालने को ठाना हो पछताऊंगा। फिर जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि मैं उसे बनाऊंगा और
१० रोपूंगा, तब यदि वे उस काम को करें जो मेरे लेखे बुरा है और मेरी बात न मानें तो मैं उस कल्याण के विषय जिसे मैं ने उन के लिये करने को कहा हो पछताऊंगा।
११ सो अब तू यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों से यह कह कि यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं तुम्हारी हानि की युक्ति और तुम्हारे विरुद्ध कल्पना कर रहा हूं सो तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिरो और
१२ अपना अपना चालचलन और काम सुधारो। वे तो कहते हैं ऐसा होने की आशा नहीं हो सकती हम तो अपनी ही अपनी कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे और अपने बुरे मन के हठ पर बने रहेंगे। इस कारण मैं
१३ यहोवा यों कहता हूं कि अन्यजातियों में पूछ कि ऐसी बातें कभी किसी के सुनने में आई हैं इस्राएल की कुमारी ने जो काम किया है उस के सुनने से रोएं खड़े
१४ होते हैं। क्या लबानोन का हिम जो चटान पर से मैदान में बहता है बन्द हो सकता है क्या वह ठण्डा जल जो
१५ दूर से[१] बहता है कभी सूख[२] सकता है। मेरी प्रजा तो मुझे भूल गई है और निकम्मी वस्तुओं के लिये धूप जलाया है और उन्हों ने उन के प्राचीन काल के मार्गों में ठोकर खिलाकर उन्हें पगडण्डियों और बेढ़ब[३] मार्गों
१६ में चलाया है, कि उन का देश उजड़ जाए और लोग उस पर सदा ताली बजाते रहें जो कोई उस के पास से
१७ चले सो चकित होगा और सिर हिलाएगा। मैं उन को पुरवाई से उड़ाकर शत्रु के साम्हने से तितर बितर कर दूंगा मैं उन की विपत्ति के दिन उन को मुंह नहीं पर पीठ दिखाऊंगा॥

१८ तब वे कहने लगे चलो यिर्मयाह के विरुद्ध युक्तियां करें क्योंकि न याजक से व्यवस्था न ज्ञानी से संमति न नबी से वचन दूर हो जाएंगे सो आओ हम उस की कोई बात पकड़कर उसे नाश कराएं[४] और फिर उस की किसी बात पर ध्यान न दें॥

१९ हे यहोवा मेरी ओर ध्यान दे और जो लोग मेरे
२० साथ झगड़ते हैं उन की बातें सुन। क्या भलाई के बदले में बुराई का व्यवहार किया जाए तू इस बात का स्मरण कर कि मैं उन की भलाई के लिये तेरे साम्हने प्रार्थना करने को खड़ा हुआ कि तेरी जलजलाहट उन पर से उतर जाए और अब उन्हीं ने मेरे प्राण लेने के
२१ लिये गड़हा खोदा है। इसलिये उन के लड़केबालों को भूख से मरने दे और वे तलवार से कट मरें[५] और उन की स्त्रियां निर्वंश और विधवा हो जाएं और उन के पुरुष मरी से मरें और जवान लड़ाई में तलवार से मारे
२२ जाएं। जब तू उन पर अचानक दल चढ़ाएगा तब उन के घरों से चिल्लाहट सुनाई दे क्योंकि उन्हों ने मेरे लिये गड़हा खोदा और मेरे फंसाने को फन्दे लगाये
२३ हैं। हे यहोवा तू तो उन की सब युक्तियां जानता है जो वे मेरी मृत्यु के लिये करते हैं सो तू उन के इस अधर्म्म को ढांप न देना न उन के पाप को अपने

(१) मूल में जो पर देशी। (२) मूल में उखड़। (३) मूल में अनबने। (४) मूल में हम उस की जीभ मारें। (५) मूल में उन्हें तलवार के हाथों में सौंप दे।

साम्हने से मिटा देना वे तेरे देखते ही ठोकर खाकर गिर जाएं तू कोप में आकर उन से इसी प्रकार का व्यवहार कर ॥

१९. यहोवा ने यों कहा जाकर कुम्हार की बनाई हुई मिट्टी की एक सुराही मोल ले और प्रजा के पुरनियों में से और याजकों के पुरनियों में से भी कितनों को साथ लेकर, २ हिन्नोमियों की तराई में उस फाटक के निकट चला जा जहां ठीकरे फेंक दिये जाते हैं और जो वचन मैं कहूं ३ उसे वहां प्रचार कर। तू यह कहना कि हे यहूदा के राजाओ और यरूशलेम के सब निवासियो यहोवा का वचन सुनो इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं इस स्थान पर ऐसी विपत्ति डाला चाहता हूं कि जो कोई उस का समाचार सुने वह ४ सन्नाटे में आ जाएगा[१]। क्योंकि यहां के लोगों ने मुझे त्याग दिया और इस स्थान को पराया कर दिया और इस में दूसरे देवताओं के लिये जिन को न तो वे जानते हैं और न उन के पुरखा वा यहूदा के पुराने राजा जानते थे धूप जलाया और इस स्थान को निर्दोषों के लोहू से ५ भर दिया है, और बाल की पूजा के ऊंचे स्थानों को बनाकर अपने लड़केवालों को बाल के लिये होम कर दिया यद्यपि इस की आज्ञा मैं ने कभी न दी न उस ६ की चर्चा की न वह कभी मेरे मन में आया। इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि यह स्थान फिर तोपेत वा हिन्नोमियों की तराई न ७ कहाएगा घात ही की तराई कहाएगा। और मैं इस स्थान में यहूदा और यरूशलेम की युक्तियों को निष्फल कर दूंगा और उन को उन के प्राण के शत्रुओं के हाथ से तलवार चलवाकर गिरा दूंगा और उन की लोथें आकाश के पक्षियों और भूमि के जीवजन्तुओं का ८ आहार कर दूंगा। और मैं इस नगर को ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग इसे देख के ताली बजाएंगे और जो कोई इस के पास से चले सो इस की सारी विपत्तियों ९ के कारण चकित होगा और ताली बजाएगा। और घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में उन के प्राण के शत्रु इन को डालेंगे मैं इन्हें इन्हीं के बेटे बेटियों का और एक दूसरे का भी मांस खिलाऊंगा। १० तब तू उस सुराही को उन मनुष्यों के साम्हने जो तेरे ११ संग जाएंगे तोड़ देना। और उन से कहना कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जिस प्रकार यह मिट्टी का बासन जो टूट गया सो फिर बनाया न जाएगा इसी प्रकार मैं इस देश के लोगों को और इस नगर को तोड़ डालूंगा और तोपेत नाम तराई में इतनी कबरें होंगी कि कबर के लिये और स्थान न रहेगा। यहोवा की १२ यह वाणी है कि मैं इस स्थान और इस के रहनेहारों से ऐसा ही काम करूंगा मैं इस नगर को तोपेत के तुल्य बना दूंगा। और यरूशलेम के सब घर और १३ यहूदा के राजाओं के भवन जिन की छतों पर आकाश की सारी सेना के लिये धूप जलाया और दूसरे देवताओं के लिये तपावन दिया गया है सो तोपेत के बराबर अशुद्ध हो जाएंगे ॥

तब यिर्मयाह तोपेत से जहां यहोवा ने उसे १४ नबूवत करने को भेजा था लौट आकर यहोवा के भवन के आंगन में खड़ा हुआ और सब लोगों से कहने लगा, इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों १५ कहता है कि सुनो मैं सब गांवों समेत इस नगर पर वह सारी विपत्ति जो मैं ने इस पर डालने को कहा है डाला चाहता हूं क्योंकि उन्हों ने हठ करके मेरे वचन को न माना है ॥

२०. जब यिर्मयाह यह नबूवत कर रहा था तब इम्मेर का पुत्र पशहूर जो याजक और यहोवा के भवन का प्रधान रखवाल था सो सुन रहा था। सो पशहूर ने यिर्मयाह नबी को २ मारा और उस काठ में डाल दिया जो यहोवा के भवन के ऊपरवार बिन्यामीन के फाटक के पास है। फिर ३ बिहान को पशहूर ने यिर्मयाह को काठ में से निकलवाया तब यिर्मयाह ने उस से कहा यहोवा ने तेरा नाम पशहूर नहीं मागोर्मिस्साबीब[२] रक्खा है। क्योंकि ४ यहोवा ने यों कहा है कि सुन मैं तुझे तेरे ही लिये और तेरे सब मित्रों के लिये भी भय का कारण ठहराऊंगा और वे अपने शत्रुओं की तलवार से तेरे देखते ही मर जाएंगे और मैं सारे यहूदियों को बाबेल के राजा के वश में कर दूंगा और वह उन को बन्धुए करके बाबेल में ले जाएगा और तलवार से मार डालेगा। फिर मैं इस नगर के सारे धन को और इस ५ में की कमाई और इस में की सब अनमोल वस्तुएं और यहूदा के राजाओं का जितना रक्खा हुआ धन है उस सब को उन के शत्रुओं के वश में कर दूंगा और वे उस को लूटकर अपना कर लेंगे और बाबेल में ले जाएंगे। और हे पशहूर तू उन सब समेत जो तेरे घर ६

(१) मूल में उन के कान संसनावेंगे।

(२) अर्थात् चारों ओर भय ही भय।

में रहते हैं बन्धुआई में चला जाएगा और तू अपने उन मित्रों समेत जिन से तू ने झूठी नबूवत की बाबेल जाएगा और वहीं मरेगा और वहीं तुझे और उन्हें मिट्टी दी जाएगी ॥

७ हे यहोवा तू ने मुझे धोखा दिया और मैं ने धोखा खाया तू मुझ से बलवन्त है इस से तू मुझ पर प्रबल हो गया मेरी दिन भर हंसी होती है और सब कोई ८ मुझ से ठट्ठा करते हैं। जब जब मैं बातें करता हूं तब तब उपद्रव हुआ उपद्रव उत्पात हुआ उत्पात ऐसा चिल्लाना पड़ता है क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे ९ लिये निन्दा और ठट्ठे का कारण होता रहता है। और यदि मैं कहूं कि मैं उस की चर्चा न करूंगा न उस के नाम से बोलूंगा तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी कि मानो मेरी हड्डियों में भड़की हुई आग है और मैं अपने को १० रोकते रोकते हार जाता और सह नहीं सकता। मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद सुना चारों ओर भय ही भय है मेरे सब जानी पहचानी जो मेरे ठोकर खाने की बाट जोहते हैं सो कहते हैं कि उस के दोष बताओ तब हम उन की चर्चा फैला देंगे क्या जानिये वह धोखा खाए तो ११ हम उस पर प्रबल होकर उस से पलटा लेंगे। पर यहोवा भयंकर बीर सा है वह मेरे संग है इस कारण मेरे सतानेहारे प्रबल न होंगे वे ठोकर खाकर गिरेंगे वे बुद्धि से काम नहीं करते सो उन्हें बहुत लजाना पड़ेगा उन का अनादर सदा बना रहेगा और कभी बिसर न जाएगा। १२ और हे सेनाओं के यहोवा हे धर्म्मियों के जांचनेहारे और मन की जाननेहारे जो पलटा तू उन से लेगा सो मैं देखने पाऊं क्योंकि मैं ने अपना मुकद्दमा तेरे ऊपर छोड़ १३ दिया है। यहोवा के लिये गाओ यहोवा की स्तुति करो क्योंकि वह दरिद्र जन के प्राण को कुकर्म्मियों के हाथ से बचाता है ॥

१४ स्रापित हो वह दिन जिस में मैं उत्पन्न हुआ जिस १५ दिन मेरी माता मुझ को जनी सो धन्य न हो। स्रापित हो वह जन जिस ने मेरे पिता को यह समाचार देकर कि तेरे लड़का उत्पन्न हुआ उस को बहुत आनन्दित १६ किया। उस जन की दशा उन नगरों की सी हो जिन्हें यहोवा ने बिन पछताये ढा दिया और उसे सवेरे तो चिल्लाहट और दोपहर को युद्ध की ललकार सुन पड़ा १७ करे। क्योंकि उस ने मुझे गर्भ ही में न मार डाला कि मेरी माता का गर्भ मेरी कबर होती और मैं उसी में १८ सदा पड़ा रहता। मैं क्यों उत्पात और शोक भोगने और अपना जीवनकाल नामधराई में काटने को जन्मा ॥

२१. यह वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास उस समय पहुंचा जब सिदकिय्याह राजा ने उस के पास मल्किय्याह के पुत्र पशहूर और मासेयाह याजक के पुत्र सपन्याह के हाथ से यह २ कहला भेजा कि, हमारे लिये यहोवा से पूछ क्योंकि बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर हमारे विरुद्ध युद्ध करता है क्या जानिये यहोवा हम से अपने सब आश्चर्य्यकर्म्मों के अनुसार ऐसा व्यवहार करे कि वह हमारे पास से उठ ३ जाए। तब यिर्मयाह ने उन से कहा तुम सिदकिय्याह से ४ यों कहो कि, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सुनो युद्ध के जो हथियार तुम्हारे हाथों में हैं जिन से तुम बाबेल के राजा और शहरपनाह के बाहर घेरनेहारे कसदियों से लड़ते हो उन को मैं लौटाकर इस नगर के ५ बीच में इकट्ठा करूंगा। और मैं आप तुम्हारे साथ बढ़ाये हुए हाथ और बलवन्त भुजा से और कोप और जल-६ जलाहट और बड़े क्रोध में आकर लड़ूंगा। और मैं क्या मनुष्य क्या पशु इस नगर के सब रहनेहारों को मार ७ डालूंगा वे बड़ी मरी से मरेंगे। और यहोवा की यह वाणी है कि उस के पीछे हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह मैं तुझे और तेरे कर्म्मचारियों और लोगों को बरन जो लोग इस नगर में मरी तलवार और महंगी से बचे रहेंगे उन को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर और उन के प्राण के शत्रुओं के बश में कर दूंगा और वह उन को तलवार से मार डालेगा वह उन पर न तो तरस खाएगा और न कुछ ८ कोमलता करेगा न कुछ दया। और इस प्रजा के लोगों से यों कह कि यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं तुम्हारे साम्हने जीवन का उपाय और मृत्यु का भी उपाय बताता ९ हूं। जो कोई इस नगर में रहे सो तलवार महंगी और मरी से मरेगा पर जो कोई निकलकर उन कसदियों के पास जो तुम को घेर रहे हैं भाग जाए सो जीता रहेगा और १० उस का प्राण बचेगा। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने इस नगर की ओर अपना मुख भलाई के लिये नहीं बुराई ही के लिये किया है सो यह बाबेल के राजा के बश में पड़ जाएगा और वह इस को फुंकवा देगा ॥

११ और यहूदा के राजकुल के लोगों से कह कि १२ यहोवा का वचन सुनो कि, हे दाऊद के घराने यहोवा यों कहता है कि भोर भोर को न्याय चुकाओ और लुटे हुए को अंधेर करनेहारे के हाथ से छुड़ाओ नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरे कोप की आग भड़केगी और जलती रहेगी और कोई उसे बुझा न सकेगा। १३ यहोवा की यह वाणी है कि हे तराई में और समथर देश की चटान में रहनेहारी मैं तेरे विरुद्ध हूं तुम तो

कहते हो कि हम पर कौन चढ़ाई कर सकेगा और हमारे वासस्थान में कौन बैठ सकेगा पर मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं। १४ और यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हें दण्ड देकर तुम्हारे कामों का फल तुम्हें भुगताऊंगा और मैं उस के बन में आग लगाऊंगा जिस से उस के चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा॥

२२. यहोवा ने यों कहा कि यहूदा के राजा के भवन में उतर २ जाकर यह वचन कह कि, हे दाऊद की गद्दी पर विराजनेहारे यहूदा के राजा तू अपने कर्म्मचारियों और अपनी प्रजा के लोगों समेत जो इन फाटकों से आया करते हैं ३ यहोवा का वचन सुन। यहोवा यों कहता है कि न्याय और धर्म्म के काम करो और लुटे हुए को अंधेर करनेहारे के हाथ से छुड़ाओ और परदेशी और बपमूए और विधवा पर अंधेर और उपद्रव न करो और इस स्थान ४ में निर्दोषों का लोहू मत बहाओ। और देखो यदि तुम ऐसा करो तो इस भवन के फाटकों से होकर दाऊद की गद्दी पर विराजनेहारे राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए अपने अपने कर्म्मचारियों और प्रजा समेत प्रवेश ५ किया करेंगे। पर यदि तुम इन बातों को न मानो तो यहोवा की यह वाणी है कि मैं अपनी ही किरिया ६ खाता हूं कि यह भवन उजाड़ हो जाएगा। यहोवा यहूदा के राजा के इस भवन के विषय यों कहता है कि तू मुझे गिलाद देश और लबानोन का शिखर सा देख पड़ता है पर निश्चय मैं तुझे जंगल और निर्जन नगर ७ बनाऊंगा। और मैं नाश करनेहारों को हथियार देकर तेरे विरुद्ध भेजूंगा वे तेरे सुन्दर देवदारों को काटकर ८ आग में झोंक देंगे। और जाति जाति के लोग जब इस नगर के पास से निकलें तब एक दूसरे से पूछेंगे कि यहोवा ने इस बड़े नगर की ऐसी दशा क्यों की है। ९ तब लोग कहेंगे कि इस का कारण यह है कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं को दण्डवत् और उन की उपासना की॥

१० मरे हुए के लिए मत रोओ उस के लिये विलाप मत करो जो परदेश चला गया है उसी के लिये फूट फूटकर रोओ क्योंकि वह लौटकर अपनी जन्मभूमि को ११ फिर कभी देखने न पाएगा। क्योंकि यहूदा के राजा योशिय्याह का पुत्र शल्लूम जो अपने पिता योशिय्याह के स्थान पर राजा हुआ और इस स्थान से निकल गया उस के विषय यहोवा यों कहता है कि वह फिर यहां १२ लौटकर न आने पाएगा। जिस स्थान में वह बन्धुआ होकर गया उसी में मर जाएगा और इस देश को फिर देखने न पाएगा॥

१३ उस पर हाय जो अपने घर को अधर्म्म से और अपनी ऊपरौठी कोठरियों को अन्याय से बनवाता है और अपने पड़ोसी से बेगारी काम कराता और उस की मजूरी नहीं देता। १४ वह कहता है कि मैं लम्बा चौड़ा घर और हवादार कोठा बनवा लूंगा और वह खिड़कियां रखवा लेता है फिर वह देवदार की लकड़ी से पाटा और सिन्दूर से रंगा जाता है। १५ तू जो देवदार की लकड़ी के विषय देखादेखी करता है क्या इस रीति तेरा राज्य बना रहेगा देख तेरा पिता न्याय और धर्म्म के काम करता था और वह खाता पीता और सुख से रहता था। १६ वह इस कारण सुख से रहता था कि दीन और दरिद्र लोगों का न्याय चुकाता था। यहोवा की यह वाणी है क्या ऐसा करना मुझे जानना नहीं है। १७ पर तू केवल अपना ही लाभ उठाने और निर्दोषों का खून करने और अंधेर और उपद्रव करने पर मन और दृष्टि लगाता है। १८ इसलिये योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय यहोवा यह कहता है कि जैसे लोग इस रीति कहकर रोते हैं कि हाय मेरे भाई वा हाय मेरी बहिन वा हाय मेरे प्रभु वा हाय तेरा विभव ऐसा तेरे लिये कोई विलाप न करेगा। १९ वरन उस को गदहे की नाईं मिट्टी दी जाएगी वह घसीटकर यरूशलेम के फाटकों के बाहर फेंक दिया जाएगा॥

२० लबानोन पर चढ़कर हाय हाय कर तब बाशान जाकर ऊंचे स्वर से चिल्ला फिर अबारीम पहाड़ पर जाकर हाय हाय कर क्योंकि तेरे सब यार नाश हो गये। २१ मैं ने तेरे सुख के समय तुझ को चिताया था पर तू ने कहा कि मैं तेरी न सुनूंगी। तेरे बचपन ही से ऐसी बान पड़ी है कि तू मेरी नहीं सुनती। २२ तेरे सारे चरवाहे वायु से उड़ाये जाएंगे और तेरे यार बन्धुवाई में चले जाएंगे निश्चय तू उस समय अपनी सारी बुराई के कारण लज्जित होगी और तेरे मुंह पर सियाही छाएगी। २३ हे लबानोन की रहनेहारी हे देवदार में अपना घोंसला बनानेहारी जब तुझ को जननेहारी की सी पीड़ें उठें तब तू बपुरी हो जाएगी। २४ यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौं चाहे यहोयाकीम का पुत्र यहूदा का राजा कोन्याह मेरे दहिने हाथ की अंगूठी भी होता तौभी मैं उसे उतार फेंकता। २५ मैं तुझे तेरे प्राण के खोजियों के हाथ और जिन से तू डरता है उन के अर्थात् बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर और कसदियों के हाथ में कर दूंगा। २६ और मैं तुझे जननी समेत दूसरे एक देश में जो

तुम्हारी जन्मभूमि नहीं है फेंक दूंगा और वहीं तुम मर २७ जाओगे। और जिस देश में वे लौटने की बड़ी लालसा करते हैं वहां लौटने न पाएंगे॥

२८ क्या यह पुरुष कोन्याह तुच्छ और टूटा हुआ बासन है क्या यह निकम्मा बरतन है फिर वह वंश समेत अनजाने देश में क्यों निकालकर फेंक दिया २९ जाएगा। हे पृथिवी हे पृथिवी हे पृथिवी यहोवा का ३० वचन सुन। यहोवा यों कहता कि इस पुरुष को निर्वंश लिखो इस का जीवनकाल तो कुशल से न बीतेगा और इस के वंश में से कोई भाग्यवान् होकर दाऊद की गद्दी पर विराजनेहारा वा यहूदियों पर प्रभुता करनेहारा न होगा॥

२३.

यहोवा की यह वाणी है उन चरवाहों पर हाय कि जो मेरी चराई की भेड़ बकरियों को नाश और तित्तर बित्तर करते २ हैं। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के चरानेहारे चरवाहों से यों कहता है कि तुम ने जो मेरी भेड़ बकरियों की सुधि नहीं ली वरन उन को तित्तर बित्तर किया और बरबस निकाल दिया इस कारण यहोवा की यह वाणी ३ है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों का दण्ड दूंगा। और मेरी जो भेड़ बकरियां बची हैं उन को मैं उन सब देशों में से जिन में मैं ने उन्हें बरबस कर दिया है आप फेर लाकर उन्हीं की भेड़शाला में इकट्ठी करूंगा और वे फिर फूलें फलेंगी। ४ और मैं उन के ऐसे चरवाहे ठहराऊंगा जो उन्हें चराएंगे और तब से वे फिर न तो डरेंगी न विस्मित होंगी और न उन में से कोई खो जाएगी यहोवा की यही वाणी है।

५ यहोवा की यह भी वाणी है कि सुन ऐसे दिन आते हैं कि मैं दाऊद के कुल में एक धर्म्मी पल्लव को उगाऊंगा और वह राजा होकर बुद्धि से राज्य करेगा और ६ अपने देश में न्याय और धर्म्म करेगा। उस के दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे और उस का यह नाम हमारी धार्म्मिकता नाम रक्खा ७ जाएगा। सुन यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं जिन में लोग फिर न कहेंगे कि यहोवा जो हम इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया उस के जीवन ८ की सों। वे यही कहेंगे कि यहोवा जो हम इस्राएल के घराने को उत्तर देश से और उन सब देशों से भी जहां उस ने हमें बरबस कर दिया छुड़ा ले आया उस के जीवन की सों और वे अपने ही देश में बसे रहेंगे॥

९ नबियों के विषय मेरा हृदय भीतर भीतर फटा जाता है मेरी सब हड्डियां थरथराती हैं यहोवा ने जो पवित्र वचन कहे हैं उन्हें सुनकर मैं ऐसे मनुष्य के समान हो गया हूं जो दाखमधु के नशे में चूर हो गया हो। क्योंकि १० यह देश व्यभिचारियों से भरा है इस पर ऐसा शाप पड़ा है कि यह विलाप कर रहा है बन में की चराइयां भी सूख गई और लोग बड़ी दौड़ तो दौड़ते हैं पर बुराई ही की ओर और वीरता तो करते हैं पर अन्याय ही में[१]। क्योंकि नबी और याजक दोनों भक्तिहीन हो गये ११ अपने भवन में भी मैं ने उन की बुराई पाई है यहोवा की यही वाणी है। इस कारण उन का मार्ग अन्धेरा और १२ फिसलहा होगा जिस में वे ढकेलकर गिरा दिये जाएंगे और यहोवा की यह वाणी है कि मैं उन के दण्ड के बरस में उन पर विपत्ति डालूंगा। शोमरोन के नबियों में १३ तो मैं ने यह मूर्खता देखी थी कि वे बाल के नाम से नबूवत करते और मेरी प्रजा इस्राएल को भटका देते थे। पर यरूशलेम के नबियों में मैं ने ऐसे काम देखे हैं जिन १४ से रोएं खड़े हो जाते हैं अर्थात् व्यभिचार और पाखण्ड और वे कुकर्म्मियों को ऐसा हियाव बन्धाते हैं कि वे अपनी अपनी बुराई से नहीं फिरते सब निवासी मेरे लेखे सदोमियों और अमोरियों के समान हो गये हैं। इस १५ कारण सेनाओं का यहोवा यरूशलेम के नबियों के विषय यों कहता है कि सुन मैं उन को कड़वी वस्तुएं खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा क्योंकि उन के कारण सारे देश में भक्तिहीनता फैल गई है॥

सेनाओं के यहोवा ने तुम से यों कहा है कि इन १६ नबियों की बातों की ओर जो तुम से नबूवत करते हैं कान मत लगाओ क्योंकि ये तुम को व्यर्थ बातें सिखाते हैं ये दर्शन का दावा करके यहोवा के मुख की नहीं अपने ही मन की बातें कहते हैं। जो लोग मेरा तिरस्कार १७ करते हैं उन से ये नबी सदा कहते रहते हैं कि यहोवा कहता है कि तुम्हारा कल्याण होगा और जितने लोग अपने हठ ही पर चलते हैं उन से ये कहते हैं कि तुम पर कोई विपत्ति न पड़ेगी। भला कौन यहोवा की गुप्त सभा १८ में खड़ा होकर उस का वचन सुनने और समझने[२] पाया वा किस ने ध्यान देकर मेरा वचन सुना है। सुनो १९ यहोवा की जलजलाहट की आंधी और प्रचण्ड बवण्डर चलने लगा है और उस का झोंका दुष्टों के सिर पर बल से लगेगा। और जब लों यहोवा अपना काम और अपनी २० युक्तियों को पूरी न कर चुके तब लों उस का कोप शान्त न होगा। अन्त के दिनों में तुम इस बात को भली भांति समझ सकोगे। ये नबी बिना मेरे भेजे दौड़ जाते और २१

(१) मूल में और उन की दौड़ बुरी और उन की वीरता नाहक है।
(२) मूल में देखने और सुनने।

२२ बिना मेरे कुछ कहे नबूवत करने लगते हैं। और यदि ये मेरी गुप्त सभा में खड़े होते तो मेरी प्रजा के लोगों को मेरे वचन सुनाते और वे अपनी बुरी चाल और कामों २३ से फिर आते। यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं ऐसा २४ परमेश्वर हूं जो दूर नहीं निकट ही रहता हो। फिर यहोवा की यह वाणी है कि क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है कि मैं उसे न देख सकूं क्या स्वर्ग २५ और पृथिवी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं। मैं ने इन नबियों की भी बातें सुनी हैं जो मेरे नाम से यह कहकर झूठी नबूवत करते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा है स्वप्न। २६ जो नबी झूठमूठ नबूवत करते और अपने छली मन ही के नबी हैं इन के मन में यह बात कब लों समाई रहेगी। २७ जैसे मेरी प्रजा के लोगों के पुरखा मेरा नाम भूलकर बाल का नाम लेने लगे थे वैसे ही अब ये नबी उन से अपने अपने स्वप्न बता बताकर मेरा नाम बिसरवाने २८ चाहते हैं। जो किसी नबी ने स्वप्न देखा हो तो वह उसे बताए और जो किसी ने मेरा वचन सुना हो तो वह मेरा वचन सच्चाई से सुनाए यहोवा की यह वाणी है कि २९ कहां भूसा और कहां गेहूं। यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है फिर क्या वह ऐसा ३० हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले। यहोवा की यह वाणी है कि सुनो जो नबी मेरे वचन औरों से चुरा चुराकर ३१ कर बोलते हैं उन के मैं विरुद्ध हूं। फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो नबी उस की यह वाणी है ऐसी झूठी वाणी कहकर अपनी अपनी जीभ डुलाते हैं उन के भी ३२ मैं विरुद्ध हूं। फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो बिना मेरे भेजे वा बिना मेरी आज्ञा पाये स्वप्न देखने का झूठा दावा करके नबूवत करते हैं और उस का वर्णन करके मेरी प्रजा को झूठे घमण्ड में आकर भरमाते हैं उन के भी मैं विरुद्ध हूं और उन से मेरी प्रजा के लोगों का कुछ लाभ न होगा॥

३३ यदि साधारण लोगों में से कोई जन वा कोई नबी वा याजक तुझ से पूछे कि यहोवा ने क्या भारी वचन कहा है तो उस से कहना कि क्या भारी वचन, यहोवा ३४ की यह वाणी है मैं तुम को त्याग दूंगा। और जो नबी वा याजक वा साधारण मनुष्य यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा कहता रहे उस को घराने समेत मैं ३५ दण्ड दूंगा। सो तुम लोग एक दूसरे से और अपने अपने भाई से यों पूछना कि यहोवा ने क्या उत्तर दिया ३६ वा यहोवा ने क्या कहा है। यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा तुम आगे को न कहना नहीं तो तुम्हारा ऐसा कहना ही दण्ड का कारण हो जाएगा क्योंकि हमारा परमेश्वर सेनाओं का यहोवा जो जीता परमेश्वर है उस के वचन तुम लोगों ने मोड़ दिये हैं। ३७ सो तू नबी से यों पूछ कि यहोवा ने तुझे क्या उत्तर दिया वा यहोवा ने क्या कहा है। ३८ यदि तुम यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा ही कहोगे तो यहोवा का यह वचन सुनो कि मैं ने तो तुम्हारे पास कहला भेजा है कि यहोवा का कहा हुआ भारी वचन ऐसा आगे को न कहना पर तुम यह कहते ही रहते हो कि यहोवा का कहा हुआ भारी वचन। ३९ इस कारण सुनो मैं तुम को बिलकुल भूलूंगा और तुम को और इस नगर को जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को और तुम को भी दिया है त्यागकर अपने साम्हने से दूर कर दूंगा। ४० और मैं ऐसा करूंगा कि तुम्हारी नामधराई और अनादर सदा बना रहेगा और कभी बिसर न जाएगा॥

२४. जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को और यहूदा के हाकिमों और लोहारों और और कारीगरों को बन्धुए करके यरूशलेम से बाबेल को ले गया उस के पीछे यहोवा ने मुझ को अपने मन्दिर के साम्हने रक्खे हुए अंजीरों के दो टोकरे दिखाये। २ एक टोकरे में तो पहिले पके से अच्छे अच्छे अंजीर थे और दूसरे टोकरे में बहुत निकम्मे अंजीर थे बरन वे ऐसे निकम्मे थे कि खाने के योग्य न थे। ३ फिर यहोवा ने मुझ से पूछा हे यिर्मयाह तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा अंजीर, जो अंजीर अच्छे हैं सो तो बहुत ही अच्छे हैं पर जो निकम्मे हैं सो बहुत ही निकम्मे हैं बरन ऐसे निकम्मे हैं कि खाने के योग्य नहीं हैं। ४ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ५ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जैसे अच्छे अंजीरों को वैसे ही मैं यहूदी बन्धुओं को जिन्हें मैं ने इस स्थान से कसदियों के देश में भेज दिया है देखकर प्रसन्न हूंगा। ६ और मैं उन पर कृपादृष्टि रक्खूंगा और उन को इस देश में लौटा ले आऊंगा और उन्हें नाश न करूंगा पर बनाऊंगा और उखाड़ न डालूंगा पर लगाये रक्खूंगा। ७ और मैं उन का ऐसा मन कर दूंगा कि वे मुझे जानेंगे कि मैं यहोवा हूं और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा क्योंकि वे मेरी ओर सारे मन से फिरेंगे। ८ और जैसे निकम्मे अंजीर निकम्मे होने के कारण खाये नहीं जाते उसी प्रकार से मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उस के हाकिमों और बचे हुए यरूशलेमियों को जो इस देश में वा मिस्र में रह गये हैं छोड़ दूंगा। ९ और मेरे

छोड़ने के कारण वे पृथिवी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरते हुए दुःख भोगते रहेंगे और जितने स्थानों में मैं उन्हें बरबस कर दूंगा उन सभों में वे नामधराई और १० दृष्टान्त और स्राप का विषय होंगे। और मैं उन में तलवार चलाऊंगा और महंगी और मरी फैलाऊंगा और अन्त में वे इस देश में से जो मैं ने उन के पुरखाओं को और उन को दिया मिट जाएंगे॥

२५. योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे बरस में जो बाबेल के राजा नबूकद्नेस्सर के राज्य का पहिला बरस था यहोवा का जो वचन यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा सो यह है। २ सो यिर्मयाह नबी ने उसी वचन के अनुसार सब यहूदियों और यरूशलेम ३ के सब निवासियों से कहा कि, आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के राज्य के तेरहवें बरस से लेकर आज के दिन लों अर्थात् तेईस बरस से यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचता आया है और मैं तो उसे बड़े यत्न के साथ[१] तुम से कहता आया हूं पर तुम ने उसे नहीं सुना। ४ और यहोवा तुम्हारे पास अपने सारे दास नबियों को भी यह कहने को बड़े यत्न से[१] भेजता आया है पर ५ तुम ने न तो सुना न कान लगाया है, वे ऐसा कहते आये हैं कि अपनी अपनी बुरी चाल और अपने अपने बुरे कामों से फिरो तब जो देश यहोवा ने प्राचीन काल में तुम्हारे पितरों को और तुम को भी सदा के लिये ६ दिया है उस पर बसे रहने पाओगे। और दूसरे देवताओं के पीछे होकर उन की उपासना और उन को दण्डवत् मत करो और न अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाओ तब मैं तुम्हारी कुछ हानि न करूंगा। ७ यह सुनने पर भी तुम ने मेरी नहीं मानी बरन अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाते आये हो जिस से तुम्हारी हानि ही हो सकती है यहोवा की यही ८ वाणी है। इसलिये सेनाओं का यहोवा यों कहता है ९ कि तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने, इसलिये सुनो मैं उत्तर में रहनेहारे सब कुलों को बुलाऊंगा और अपने दास बाबेल के राजा नबूकद्नेस्सर को बुलवा भेजूंगा और उन सभों को इस देश और इस के निवासियों के विरुद्ध और इस के आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊंगा और इन सब देशों का मैं सत्यानाश करके ऐसा उजाडूंगा कि लोग इन्हें देखकर ताली बजाएंगे बरन ये सदा उजड़े ही रहेंगे यहोवा की यही वाणी है। १० और मैं ऐसा करूंगा कि इन में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पड़ेगा और न दुल्हे वा दुल्हिन का और न चक्की का भी शब्द सुन पड़ेगा और न इन में दिया जलेगा। ११ और सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा और ये सब जातियां सत्तर बरस लों बाबेल के राजा के अधीन रहेंगी। १२ और यहोवा की यह वाणी है कि जब सत्तर बरस बीत चुकें तब मैं बाबेल के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों को अधर्म्म का दण्ड दूंगा और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूंगा। १३ और मैं उस देश में अपने वे सब वचन जो मैं ने उस के विषय में कहे हैं और जितने वचन यिर्मयाह ने सारी जातियों के विरुद्ध नबूवत करके पुस्तक में लिखे हैं पूरे करूंगा। १४ और बहुत सी जातियों के लोग और बड़े बड़े राजा उन से भी अपनी सेवा कराएंगे और मैं उन को उन की करनी का फल भुगताऊंगा॥

१५ इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझ से यों कहा कि मेरे हाथ से इस जलजलाहट के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब जातियों को पिला दे जिन के पास मैं तुझे भेजता हूं। १६ और वे पीकर उस तलवार के कारण जो मैं उन के बीच चलाऊंगा लड़खड़ाएंगे। १७ और बावले हो जाएंगे सो मैं ने यहोवा के हाथ से वह कटोरा लेकर उन सब जातियों को पिला दिया जिन के पास यहोवा ने मुझे भेज दिया। १८ अर्थात् यरूशलेम और यहूदा के और नगरों के निवासियों को और उन के राजाओं और हाकिमों को पिलाया कि उन का देश उजाड़ होए और लोग ताली बजाएं और उस की उपमा देकर स्राप दिया करें जैसा आजकल होता है। १९ और मिस्र के राजा फिरौन और उस के कर्म्मचारियों हाकिमों और और सारी प्रजा को, २० और सब दोगले मनुष्यों की जातियों को और ऊस देश के सब राजाओं को और पलिश्तियों के देश के सब राजाओं को और अश्कलोन अज्जा और एक्रोन के और अशदोद के बचे हुए लोगों को, २१ और एदोमियों मोआबियों और अम्मोनियों को, २२ और सोर के सारे राजाओं को और सीदोन के सब राजाओं को और समुद्र पार के देशों के राजाओं को, २३ फिर ददानियों तेमाइयों और बूजियों को और जितने अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालते हैं उन सभों को भी, २४ और अरब के सब राजाओं को और जंगल में रहनेहारे दोगले मनुष्यों के सब राजाओं को, २५ और जिम्री एलाम और मादै के सब राजाओं को, २६ और क्या निकट क्या दूर के उत्तर दिशा के सब राजाओं को एक संग पिलाया निदान धरती भर पर रहनेहारे जगत के राज्यों

(१) मूल में तड़के उठकर।

के सब लोगों को मैं ने पिलाया और इन सब के पीछे शेषक[1] के राजा को भी पीना पड़ेगा ॥

२७ तू उन से यह कह कि सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है यों कहता है कि पीओ और मतवाले हो और छांट करो और गिर पड़ो और फिर कभी न उठो यह उस तलवार के कारण से होगा जो २८ मैं तुम्हारे बीच चलाऊंगा। और यदि वे तेरे हाथ से यह कटोरा लेकर पीने को नकारें तो उन से कहना सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम को निश्चय पीना २९ पड़ेगा। देखो जो नगर मेरा कहलाता है मैं पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूंगा फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहरके बचोगे तुम तो निर्दोष ठहरके न बचोगे क्योंकि मैं पृथिवी के सब रहनेहारों पर तलवार चलाने पर हूं ३० सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। इतनी बातें नबूवत की रीति उन से कहकर यह भी कहना कि यहोवा ऊपर से गरजेगा और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा वह अपनी चराई के स्थान के विरुद्ध बल से गरजेगा वह पृथ्वी के सारे निवासियों के विरुद्ध भी दाख लताड़नेहारों की नाईं ललकारेगा। ३१ पृथिवी की छोर लों भी कोलाहल होगा क्योंकि सब जातियों से यहोवा का मुकद्दमा है वह सारे मनुष्यों से वादविवाद करेगा और दुष्टों को वह तलवार के वश में कर देगा ॥

३२ सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो विपत्ति एक जाति से दूसरी जाति में फैलेगी और बड़ी ३३ आंधी पृथिवी की छोर से उठेगी। उस समय यहोवा के मारे हुओं की लोथें पृथिवी की एक छोर से दूसरी छोर लों पड़ी रहेंगी उन के लिये कोई रोने पीटनेहारा न रहेगा और उन की लोथें न तो बटोरी जाएंगी न कबरों में रक्खी जाएंगी वे भूमि के ऊपर खाद की नाईं पड़ी ३४ रहेंगी। हे चरवाहो हाय हाय करो और चिल्लाओ हे बलवन्त मेढ़ो और बकरो राख में लोटो क्योंकि तुम्हारे बध होने के दिन आ चुके हैं और मैं मनभाऊ बरतन ३५ की नाईं तुम्हारा सत्यानाश करूंगा। उस समय न तो चरवाहों के भागने के लिये कोई स्थान रहेगा और न ३६ बलवन्त मेढ़े और बकरे भागने पाएंगे। चरवाहों की चिल्लाहट और बलवन्त मेढ़ों और बकरों के मिमियाने का शब्द सुन पड़ता है क्योंकि यहोवा उन की चराई को ३७ नाश करता है। और यहोवा के कोप भड़कने के कारण शांति के स्थान नाश हो जाएंगे जिन वासस्थानों में अब शांति है वे नाश हो जाएंगे। युवा सिंह की नाईं वह ३८ अपने ठौर को छोड़कर निकलता है क्योंकि अंधेर करनेहारी तलवार और उस के भड़के हुए कोप के कारण उन का देश उजाड़ हो गया ॥

२६. योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य

के आरंभ में यहोवा की ओर से यह वचन पहुंचा कि, २ यहोवा यों कहता है कि यहोवा के भवन के आंगन में खड़ा होकर यहूदा के सब नगरों के लोगों के साम्हने जो यहोवा के भवन में दण्डवत् करने को आएं ये वचन कह दे जिन के विषय उन से कहने की आज्ञा मैं तुझे ३ देता हूं उन में से कोई वचन रख मत छोड़। क्या जानिये वे सुनकर अपनी अपनी बुरी चाल से फिरें और मैं उन की उस हानि से जो उन के बुरे कामों के ४ कारण करने की कल्पना करता हूं पछताऊंगा। सो तू उन से कह यहोवा यों कहता है कि यदि तुम मेरी सुनकर मेरी व्यवस्था के अनुसार जो मैं ने तुम को सुनवा ५ दी है[2] न चलो, और न मेरे दास नबियों के वचनों पर कान धरो जिन्हें मैं तुम्हारे पास बड़ा यत्न करके[3] ६ भेजता आया हूं पर तुम ने उन की नहीं सुनी, तो मैं इस भवन को शीलो के समान उजाड़ कर दूंगा और इस नगर का ऐसा सत्यानाश कर दूंगा कि पृथिवी की सारी जातियों के लोग उस की उपमा दे देकर स्राप दिया ७ करेंगे। जब यिर्मयाह ये वचन यहोवा के भवन में कह रहा था तब याजक और नबी और सब साधारण लोग ८ सुन रहे थे। और जब यिर्मयाह सब कुछ जिस के सारी प्रजा से कहने की आज्ञा यहोवा ने दी थी कह चुका तब याजकों और नबियों और सब साधारण लोगों ने यह कहकर उस को पकड़ लिया कि निश्चय तेरा प्राण-९ दण्ड होगा। तू ने यहोवा के नाम से क्यों यह नबूवत की कि यह भवन शीलो के समान उजाड़ हो जाएगा और यह नगर ऐसा उजड़ेगा कि उस में कोई न रह जाएगा। इतना कहकर सब साधारण लोगों ने यहोवा के भवन में यिर्मयाह के विरुद्ध भीड़ लगाई ॥

१० यह बातें सुनकर यहूदा के हाकिम राजा के भवन से यहोवा के भवन में चढ़ गये और उस के नये ११ फाटक में बैठ गये। तब याजकों और नबियों ने हाकिमों और सब लोगों से कहा यही मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य है क्योंकि इस ने इस नगर के विरुद्ध ऐसी नबूवत की

(१) अनुमान है कि यह बाबेल का एक नाम है।

(२) मूल में तुम्हारे साम्हने रक्खी है। (३) मूल में तड़के उठके।

है कि जिसे तुम भी अपने कानों से सुन चुके हो। १२ तब यिर्मयाह ने सब हाकिमों और सब लोगों से कहा जो वचन तुम ने सुने हैं सो यहोवा ही ने मुझे इस भवन और इस नगर के विरुद्ध नबूवत की रीति कहने के १३ लिये भेज दिया है। सो अब अपना चालचलन और अपने काम सुधारो और अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानो तब यहोवा उस विपत्ति के विषय जिस की चर्चा १४ उस ने तुम से की है पछताएगा। देखो मैं तुम्हारे वश में हूं जो कुछ तुम्हारे लेखे भला और ठीक हो सोई १५ मेरे साथ करो। यह निश्चय जानो कि यदि तुम मुझे मार डालो तो अपने को और इस नगर और इस के निवासियों को निर्दोष के खूनी बनाओगे क्योंकि सचमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास ये सब वचन सुनाने के लिये १६ भेजा है। तब हाकिमों और सब लोगों ने याजकों और नबियों से कहा यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य नहीं क्योंकि उस ने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से हम से १७ कहा है। और देश के पुरनियों में से कितनों ने उठकर १८ प्रजा की सारी मण्डली से कहा। यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में मोरसेती मीकायाह नबूवत करता था सो उस ने यहूदा के सारे लोगों से कहा सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा और यरूशलेम डीह ही डीह हो जाएगा और भवनवाला पर्वत बनवाला स्थान हो जाएगा[१]। १९ क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने वा किसी यहूदी ने उस को कहीं मरवा डाला क्या उस राजा ने यहोवा का भय न माना और उस से विनती न की और तब यहोवा ने जो विपत्ति उन पर डालने को कहा था उस के विषय क्या वह न पछताया। ऐसा २० करके हम अपने प्राणों की बड़ी हानि करेंगे। फिर शमायाह का पुत्र ऊरिय्याह नाम किर्यत्यारीम का एक पुरुष यहोवा के नाम से नबूवत करता था और उस ने भी इस नगर और इस देश के विरुद्ध ठीक ऐसी ही २१ नबूवत की जैसी यिर्मयाह ने अभी की है। और जब यहोयाकीम राजा और उस के सब वीरों और सब हाकिमों ने उस के वचन सुने तब राजा ने उसे मरवा डालने का यत्न किया और ऊरिय्याह यह सुनकर डर २२ के मारे मिस्र में भाग गया। सो यहोयाकीम राजा ने मिस्र में लोग भेजे अर्थात् अकबोर के पुत्र एलनातान २३ को कितने और पुरुषों समेत मिस्र में भेजा। और वे ऊरिय्याह को मिस्र से निकालकर यहोयाकीम राजा के पास ले आये और उस ने उसे तलवार से मरवाकर उस की लोथ को साधारण लोगों की कबरों में फेंकवा दिया। २४ पर शापान का पुत्र अहीकाम यिर्मयाह का सहारा करने लगा और वह लोगों के वश में मार डालने के लिये दिया न गया॥

२७. योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम[२] के राज्य के आरम्भ में यहोवा की ओर से यह वचन २ यिर्मयाह के पास पहुंचा कि, बन्धन और जूए बनवाकर ३ अपनी गर्दन पर रख। तब उन्हें एदोम और मोआब और अम्मोन और सोर और सीदोन के राजाओं के पास उन दूतों के हाथ भेजना जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पास यरूशलेम में आये हैं। ४ और उन को उन के स्वामियों के लिये यह कहकर आज्ञा देना कि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों ५ कहता है कि अपने अपने स्वामी से यों कहो कि, पृथिवी को और पृथिवी पर के मनुष्यों और पशुओं को अपनी बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भुजा से मैं ने बनाया और जिस किसी को मैं चाहता हूं उसी को मैं उन्हें दिया ६ करता हूं। सो अब मैं ने ये सब देश अपने दास बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को आप दे दिये हैं और मैदान के जीवजन्तुओं को भी ७ मैं ने उसे दिया है कि वे उस के अधीन रहें। और ये सब जातियां उस के और उस के पीछे उस के बेटे और पोते के अधीन तब लों रहेंगी जब लों उस के भी देश का दिन न आवे और बहुत सी जातियां और बड़े बड़े ८ राजा उस से अपनी सेवा कराएंगे। सो जो जाति वा राज्य बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधीन न हो और उस का जूआ अपनी गर्दन पर न ले ले उस जाति को मैं तलवार महंगी और मरी का दण्ड तब लों देता रहूंगा जब लों उस को उस के हाथ के द्वारा न मिटा दूं ९ यहोवा की यही वाणी है। सो तुम लोग अपने नबियों और भावी कहनेहारों और स्वप्न देखनेहारों और टोनहों और तान्त्रिकों की ओर चित्त मत लगाओ जो तुम से कहते हैं कि तुम को बाबेल के राजा के अधीन होना १० न पड़ेगा। क्योंकि वे तुम से झूठी नबूवत करते हैं जिस से तुम अपने अपने देश से दूर हो जाओ और मैं आप तुम को दूर करके नाश कर दूं। पर जो जाति बाबेल ११

(१) मूल में और भवन का पर्वत अरण्य के ऊंचे स्थान।

(२) जान पड़ता है कि यहोयाकीम की सन्ती सिदकिय्याह समझना चाहिये।

के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर लेकर उस के अधीन रहे उस को मैं उसी के देश में रहने दूंगा और वह उस में खेती करती हुई बसी रहेगी यहोवा की यही वाणी है ॥

१२ और यहूदा के राजा सिदकिय्याह से भी मैं ने ऐसी सब बातें कहीं कि अपनी प्रजा समेत तू बाबेल के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर ले और उस के १३ और उस की प्रजा के अधीन रहकर जीता रह। जब यहोवा ने उस जाति के विषय जो बाबेल के राजा के अधीन न हो यह कहा है कि वह तलवार महंगी और मरी से नाश होगी तो फिर तू अपनी प्रजा समेत क्यों १४ मरना चाहता है। जो नबी तुझ से कहते हैं कि तुझ को बाबेल के राजा के अधीन हो जाना न पड़ेगा उन की मत सुन क्योंकि वे तुझ से झूठी नबूवत करते हैं। १५ यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा वे मेरे नाम से झूठी नबूवत करते हैं और इस का फल यही होगा कि मैं तुझ को देश से निकाल दूंगा और तू उन नबियों समेत जो तुझ से नबूवत करते हैं नाश हो जाएगा ॥

१६ फिर याजकों और साधारण लोगों से भी मैं ने कहा यहोवा यों कहता है कि तुम्हारे जो नबी तुम से यह नबूवत करते हैं कि यहोवा के भवन के पात्र अब शीघ्र ही बाबेल से लौटा दिये जाएंगे उन के वचनों की ओर कान मत धरो क्योंकि वे तुम से झूठी नबूवत १७ करते हैं। उन की मत सुनो बाबेल की राजा के अधीन होकर और सेवा करके जीते रहो यह नगर क्यों उजाड़ १८ हो जाए। और यदि वे नबी भी हों और यहोवा का वचन उन के पास हो तो वे सेनाओं के यहोवा से बिनती करें कि जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गये हैं सो १९ बाबेल न जाने पाएं। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जो खंभे और पीतल का गंगाल और पाये और २० और पात्र इस नगर में रह गये हैं, जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर उस समय न ले गया जब वह यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को और यहूदा और यरूशलेम के सब कुलीनों को बंधुआ करके २१ यरूशलेम से बाबेल को ले गया, जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गये हैं उन के विषय इस्राएल का परमेश्वर २२ सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि, वे भी बाबेल में पहुंचाये जाएंगे और जब लों मैं उन की सुधि न लूं तब लों वहीं रहेंगे और तब मैं उन्हें ले आकर इस स्थान में फिर रखाऊंगा यहोवा की यही वाणी है ॥

२८. फिर उसी बरस के अर्थात् यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे बरस के पांचवें महीने में अज्जूर का पुत्र हनन्याह जो गिबोन का एक नबी था उस ने मुझ से यहोवा के भवन में याजकों और सब लोगों के साम्हने कहा, २ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं ने बाबेल के राजा के जूए को तोड़ डाला है। ३ यहोवा के भवन के जितने पात्र बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर इस स्थान से उठाकर बाबेल ले गया उन्हें मैं दो बरस के भीतर फिर इसी स्थान में ले आऊंगा। ४ और यहूदा का राजा यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह और सब यहूदी बंधुए जो बाबेल को गये हैं उन को भी मैं इस स्थान में फेर ले आऊंगा क्योंकि मैं ने बाबेल के राजा के जूए को तोड़ दिया है यहोवा की यही ५ वाणी है। यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से याजकों और उन सब लोगों के साम्हने जो यहोवा के भवन में ६ खड़े हुए थे कहा, आमेन यहोवा ऐसा ही करे जो बातें तू ने नबूवत करके कहीं हैं कि यहोवा के भवन के पात्र और सब बंधुए बाबेल से इस स्थान में फिर आएंगे ७ उन्हें यहोवा पूरा करे। तौभी मेरा यह वचन सुन जो ८ मैं तुझे और सब लोगों को कह सुनाता हूं। जो नबी प्राचीन काल से मेरे और तेरे पहिले होते आये थे उन्हों ने तो बहुत से देशों और बड़े बड़े राज्यों के विरुद्ध युद्ध और विपत्ति और मरी के विषय नबूवत की ९ थी। जो नबी कुशल के विषय नबूवत करे जब उस का वचन पूरा हो तब ही उस नबी के विषय निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है। १० तब हनन्याह नबी के उस जूए को जो यिर्मयाह नबी की गर्दन पर था उतारके तोड़ दिया। ११ और हनन्याह ने सब लोगों के साम्हने कहा यहोवा यों कहता है कि इसी प्रकार से मैं पूरे दो बरस के भीतर बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के जूए को सब जातियों की गर्दन पर से उतारके तोड़ दूंगा। तब यिर्मयाह नबी चला गया। १२ जब हनन्याह नबी ने यिर्मयाह नबी की गर्दन पर से जूआ उतारके तोड़ दिया उस के पीछे यहोवा का यह १३ वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा कि, जाकर हनन्याह से यह कह कि यहोवा यों कहता है कि तू ने काठ का जूआ तो तोड़ दिया पर ऐसा करके तू ने उस की सन्ती लोहे १४ का जूआ बना लिया है। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं इन सब जातियों की गर्दन पर लोहे का जूआ रखता हूं कि बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधीन रहें और इन

१९ पहिली रीति के अनुसार बस जाएगा। और वहां से धन्य कहने और आनन्द करने का शब्द सुन पड़ेगा और
२० मैं उन का विभव बढ़ाऊंगा वे थोड़े न होंगे। फिर उन के लड़केवाले प्राचीन काल के समान होंगे और उन की मण्डली मेरे साम्हने स्थिर रहेगी और जितने उन पर
२१ अन्धेर करते हैं उन को मैं दण्ड दूंगा। और उन का महापुरुष उन्हीं में से होगा और उन पर जो प्रभुता करेगा सो उन्हीं में से उत्पन्न होगा और मैं उसे अपने समीप बुलाऊंगा और वह मेरे समीप आ भी जाएगा क्योंकि कौन है जो अपने जीव पर खेला है यहोवा की
२२ यही वाणी है। उस समय तुम मेरी प्रजा ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा॥

२३ यहोवा की जलजलाहट की आंधी चलती है वह अति प्रचण्ड आंधी है वह दुष्टों के सिर पर बल से
२४ लगेगी। जब लों यहोवा अपना काम न कर चुके और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके तब लों उस का भड़का हुआ कोप शान्त न होगा। अन्त के दिनों में तुम इस बात को समझ सकोगे॥

३१. उन दिनों में मैं सारे इस्राएली कुलों का परमेश्वर ठहरूंगा और वे
२ मेरी प्रजा ठहरेंगे यहोवा की यही वाणी है। यहोवा यों कहता है कि जो प्रजा तलवार से बच निकली जंगल में उन पर अनुग्रह हुआ मैं इस्राएल को विश्राम देने के लिये तैयार हुआ[२]॥

३ यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है कि मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं इस कारण मैं ने तुझे
४ करुणा करके खींच लिया है। हे इस्राएली कुमारी कन्या मैं तुझे फिर बसाऊंगा वहां तू फिर सिंगार करके डफ बजाने लगेगी और आनन्द करनेहारों के बीच में नाचती
५ हुई निकलेगी। तू शोमरोन के पहाड़ों पर दाख की बारियां फिर लगाएगी और जो उन्हें लगाएंगे सो उन
६ के फल भी खाने पाएंगे[३]। क्योंकि ऐसा दिन आएगा जिस में एप्रैम के पहाड़ी देश में के पहरुए पुकारेंगे कि उठो हम अपने परमेश्वर यहोवा के पास सिय्योन को
७ जाएं। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि याकूब की श्रेष्ठ जाति के कारण आनन्द से जयजयकार करो फिर ऊंचे शब्द से स्तुति करो और कहो कि हे यहोवा अपनी प्रजा
८ इस्राएल के छूटे हुए लोगों का भी उद्धार कर। मैं उन को उत्तर देश से ले आऊंगा और पृथिवी की छोर छोर से इकट्ठे करूंगा और उन के बीच अन्धे लंगड़े गर्भवती और जननेहारी स्त्रियां भी आएंगी बड़ी मण्डली यहां
९ लौट आएगी। वे आंसू बहाते हुए आएंगे और गिड़गिड़ाते हुए मुझ से पहुंचाये जाएंगे और मैं उन्हें नदियों के किनारे किनारे से और ऐसे चौरस मार्ग से ले आऊंगा कि वे ठोकर न खाने पाएंगे क्योंकि मैं इस्राएल का पिता हूं और एप्रैम मेरा जेठा है॥

१० हे जाति जाति के लोगो यहोवा का वचन सुनो और दूर दूर के द्वीपों में भी इस का प्रचार करो कहो कि जिस ने इस्राएलियों को तित्तर बित्तर किया था सोई उन्हें इकट्ठे भी करेगा और उन की ऐसी रक्षा करेगा
११ जैसी चरवाहा अपने झुण्ड की करता है। यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया और उस शत्रु के पंजे से जो उस
१२ से अधिक बलवन्त है छुटकारा दिया है। सो वे सिय्योन की चोटी पर आकर जयजयकार करेंगे और अनाज नया दाखमधु टटका तेल और भेड़ बकरियों और गाय बैलों के बच्चे आदि उत्तम उत्तम दान यहोवा से पाने के लिये तांता बांधकर[४] चलेंगे और उन का जीव सींची हुई बारी के समान बनेगा और वे फिर कभी उदास न
१३ होंगे। उस समय उन में की कुमारियां नाचती हुई आनन्द करेंगी और जवान और बूढ़े एक संग आनन्द करेंगे क्योंकि मैं उन के शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूंगा और शांति दूंगा और दुःख के बदले
१४ आनन्द दूंगा। और मैं याजकों को चिकनी वस्तुओं से अति तृप्त करूंगा बरन मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी यहोवा की यही वाणी होगी॥

१५ यहोवा यह भी कहता है कि सुन रामा नगर में विलाप और बिलक बिलक रोने का शब्द सुनने में आता है राहेल अपने लड़कों के लिये रो रही है और अपने लड़कों के कारण शांत नहीं होती क्योंकि
१६ वे जाते रहे। सो यहोवा यों कहता है कि रोने पीटने और आंसू बहाने से रुक जा क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलनेवाला है और वे शत्रुओं के देश से लौट
१७ आएंगे। यहोवा की यह वाणी है कि अन्त में तेरी आशा पूरी होगी तेरे वंश के लोग अपने देश में लौट
१८ आएंगे। निश्चय मैं ने एप्रैम को ये बातें कहकर विलपते सुना है कि तू ने मेरी ताड़ना की और मेरी ताड़ना ऐसे बछड़े की सी हुई जो निकाला न गया हो पर अब तू मुझे फेर तब मैं फिरूंगा क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है।
१९ मैं फिर जाने के पीछे पछताया और सिखाये जाने के

(१) मूल में न फिरेगा। (२) मूल में चलूंगा।
(३) मूल में साधारण भी ठहराएंगे।

(४) मूल में महानद की नाईं बहेंगे।

पीछे छाती पीटी पुराने पापों को सोचकर मैं लज्जित
२० हुआ और मेरे मुंह पर सियाही छा गई। क्या एप्रैम मेरा प्रिय पुत्र नहीं है क्या वह मेरा दुलारा लड़का नहीं है जब जब मैं उस के विरुद्ध बातें करता हूं तब तब मुझे उस का स्मरण आता है इसलिये मेरा मन उस के कारण भर आता है और मैं निश्चय उस पर दया करूंगा यहोवा की यही वाणी है ॥

२१ हे इस्राएली कुमारी जिस राजमार्ग से तू गई थी उसी में खंभे और दण्डे खड़े कर और अपने इन नगरों
२२ में लौट आने पर मन लगा। हे संग छोड़नेहारी कन्या तू कब लों इधर उधर फिरती रहेगी यहोवा की तो एक नई सृष्टि पृथिवी पर प्रगट होगी अर्थात् नारी पुरुष को घेर लेगी ॥

२३ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जब मैं यहूदी बन्धुओं को उन के देश के नगरों में लौटाऊंगा तब उन में यह आशीर्वाद[१] फिर दिया जाएगा कि हे धर्म्मभरे वासस्थान हे पवित्र पर्वत
२४ यहोवा तुझे आशिष दे। और यहूदा और उस के सब नगरों के लोग और किसान और चरवाहे[२] भी उस में
२५ इकट्ठे बसेंगे। और मैं ने थके हुए लोगों का जीव तृप्त किया और उदास लोगों के जीव को भर दिया है ॥

२६ इस पर मैं जाग उठा और देखा और मेरी नीन्द मुझे मीठी लगी ॥

२७ सुन यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं जिन में मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों के लड़केवाले
२८ और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊंगा[३]। और जिस प्रकार से मैं सोच सोचकर उन को गिराता और ढाता और नाश करता और काट डालता और सत्यानाश ही करता था उसी प्रकार से मैं अब सोच सोचकर उन को रोपूंगा और
२९ बढ़ाऊंगा यहोवा की यही वाणी है। उन दिनों वे फिर न कहेंगे कि जंगली दाख खाई तो पुरखा लोगों ने पर
३० दांत खट्टे हो गये हैं उन के वंश के। क्योंकि जो कोई जंगली दाख खाए उसी के दांत खट्टे हो जाएंगे हर एक मनुष्य अपने ही अपने अधर्म्म के कारण मारा जाएगा ॥

३१ फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि सुन ऐसे दिन आते हैं कि मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से
३२ नई वाचा बांधूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उन के पुरखाओं से उस समय बांधी थी जब मैं उन का हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया क्योंकि यद्यपि मैं उन का पति हुआ तौभी उन्हों ने मेरी यह वाचा तोड़ी। यहोवा की यह वाणी है कि जो
३३ वाचा मैं उन दिनों के पीछे इस्राएल के घराने से बांधूंगा सो यह है कि मैं अपनी व्यवस्था उन के मन में समवाऊंगा और उन के हृदय पर लिखूंगा और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे। और
३४ तब से उन्हें फिर एक दूसरे से यह कहना न पड़ेगा कि यहोवा का ज्ञान सीखो क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े लों वे सब के सब मेरा ज्ञान रक्खेंगे क्योंकि मैं उन का अधर्म्म क्षमा करूंगा और उन का पाप फिर स्मरण न करूंगा। जिस ने दिन को
३५ प्रकाश देने के लिये सूर्य्य के और रात को प्रकाश देने के लिये चन्द्रमा और तारागण के नियम ठहराये और समुद्र को उछालता और उस की लहरों को गरजाता है और जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है सोई यहोवा यों कहता
३६ है कि, जब वे नियम मेरे साम्हने से टल जाएं तब ही यह हो सकेगा कि इस्राएल का वंश मेरे लेखे एक जाति
३७ ठहरने से सदा के लिये छूट जाए। यहोवा यों भी कहता है कि जब ऊपर से आकाश मापा जाए और नीचे से पृथिवी की नेव खोद खोदकर पाई जाए तब ही मैं इस्राएल के सारे वंश के सब पापों के कारण उन से
३८ हाथ उठाऊंगा। सुन यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि जिन में यह नगर हननेल के गुम्मट से लेकर कोने के फाटक लों यहोवा के लिये बनाया
३९ जाएगा। और मापने की रस्सी फिर आगे बढ़कर सीधी गारेब पहाड़ी लों और वहां से घूमकर गोआ को पहुं-
४० चेगी। और लोथों और राख की सारी तराई और किद्रोन नाले लों जितने खेत हैं और घोड़ों के पूरबी फाटक के कोने लों जितनी भूमि है सो सब यहोवा के लिये पवित्र ठहरेगी वह नगर सदा लों फिर कभी न तो गिराया और न ढाया जाएगा ॥

३२. **यहूदा** के राजा सिदकिय्याह के राज्य के दसवें बरस में जो नबूकदनेस्सर के राज्य का अठारहवां बरस था यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा। उस समय
२ बाबेल के राजा की सेना ने यरूशलेम को घेर लिया था और यिर्मयाह नबी यहूदा के राजा के पहरे के भवन के आंगन में कैद किया गया था। क्योंकि यहूदा के राजा
३ सिदकिय्याह ने यह कहकर उसे कैद किया कि तू ऐसी नबूवत क्यों करता है कि यहोवा यों कहता है कि सुनो

---

(१) मूल में वचन। (२) मूल में घूम घूमकर झुण्ड के चरानेहारे।
(३) मूल में घरानों में मनुष्य का बीज और पशु का बीज बोऊंगा।
(४) मूल में जाग जागकर।

मैं यह नगर बाबेल के राजा के वश में कर दूंगा सो वह ४ इस को ले लेगा और यहूदा का राजा सिदकिय्याह कसदियों के हाथ से न बचेगा वह बाबेल के राजा के वश में अवश्य ही पड़ेगा और वह और बाबेल का राजा आपस में साम्हने साम्हने बातें करेंगे और उन की चार ५ आंखें होंगी, और वह सिदकिय्याह को बाबेल में ले जाएगा और यहोवा की वह वाणी है कि जब लों मैं उस की सुधि न लूं तब लों वह वहीं रहेगा सो तुम लोग कसदियों से लड़ो तो लड़ो पर तुम्हारे लड़ने से कुछ बन न पड़ेगा॥

६ और यिर्मयाह ने कहा यहोवा का वचन मेरे पास ७ पहुंचा कि, सुन शल्लूम का पुत्र हनमेल जो तेरा चचेरा भाई है सो तेरे पास यह कहने को आने पर है कि मेरा जो खेत अनातोत में है सो मोल ले क्योंकि उसे मोल ८ लेकर छुड़ाने का अधिकार तेरा ही है। सो यहोवा के कहे के अनुसार मेरा चचेरा भाई हनमेल पहरे के आंगन में मेरे पास आकर कहने लगा मेरा जो खेत बिन्यामीन देश के अनातोत में है सो मोल ले क्योंकि उस के स्वामी होने और उस के छुड़ा लेने का अधिकार तेरा ही है सो तू उसे मोल ले। तब मैं ने जान लिया ९ कि वह यहोवा का वचन था। सो मैं ने उस अनातोत के खेत को अपने चचेरे भाई हनमेल से मोल लिया और उस का दाम चांदी के सत्तरह शेकेल तौलकर दिये। १० और मैं ने दस्तावेज में दस्तखत और मोहर हो जाने पर गवाहों के साम्हने वह चांदी कांटे में तौलकर उसे दी। ११ तब मोल लेने की दोनों दस्तावेजें जिन में सब शर्तें लिखी हुई थीं और जिन में से एक पर मोहर थी और १२ दूसरी खुली थी उन्हें लेकर मैं ने, अपने चचेरे भाई हनमेल के और उन गवाहों के साम्हने जिन्हों ने दस्तावेज में दस्तखत किया था और उन सब यहूदियों के साम्हने भी जो पहरे के आंगन में बैठे हुए थे नेरिय्याह के पुत्र बारूक को जो महसेयाह का पोता था सौंप १३ दिया। तब मैं ने उन के साम्हने बारूक को यह आज्ञा १४ दी कि, इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा ने यों कहा कि जिस पर मोहर की हुई है और जो खुली हुई है मोल लेने की दस्तावेजों को लेकर मिट्टी के बर्तन १५ में रख इसलिये कि ये बहुत दिन लों बनी रहें। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि इस देश में घर और खेत और दाख की बारियां फिर मोल ली जाएंगी॥

१६ जब मैं ने मोल लेने की वह दस्तावेज नेरिय्याह के पुत्र बारूक के हाथ में दी उस के पीछे मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना की कि, अहो प्रभु यहोवा तू ने तो बड़े १७ सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथिवी को बनाया और तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है। १८ तू हजारों पर करुणा करता रहता और पितरों के अधर्म्म का बदला उन के पीछे उन के वंश के लोगों को देता है। तू तो वह महान और पराक्रमी ईश्वर है जिस का १९ नाम सेनाओं का यहोवा है। तू बड़ा युक्ति करनेहारा और सामर्थी काम करनेहारा है तेरी दृष्टि मनुष्यों के सारे चालचलन पर लगी रहती है और तू एक एक को उस के चालचलन और करनी का फल भुगताता है। २० तू ने मिस्र देश में चिन्ह और चमत्कार किये और आज लों इस्राएलियों वरन सारे मनुष्यों के बीच करता आया है और इस भांति तू ने अपना ऐसा नाम किया है जो २१ आज के दिन लों बना है। और तू अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र देश में से चिन्हों और चमत्कारों और बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से बड़े भयानक कामों २२ के द्वारा निकाल लाया। फिर तू ने यह देश जिस के देने की तू ने उन के पितरों से किरिया खाई थी और जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं उन्हें दिया। २३ और वे आकर इस के अधिकारी हुए तौ भी तेरी नहीं मानी और न तेरी व्यवस्था पर चले बरन जो कुछ तू ने उन को करने की आज्ञा दी थी उस में से उन्हों ने कुछ भी नहीं किया इस कारण तू ने उन पर यह सारी २४ विपत्ति डाली है। अब इन धुसों को देख वे लोग इस नगर के ले लेने के लिये आ गये हैं और यह नगर तलवार महंगी और मरी के कारण इन चढ़े हुए कसदियों के वश में किया गया है और जो तू ने कहा था २५ सो अब पूरा हुआ और तू इसे देखता भी है। तौ भी हे प्रभु यहोवा तू ने मुझ से कहा है कि गवाह बुलाकर उस खेत को मोल ले पर यह नगर कसदियों के वश में कर दिया गया है॥

२६ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा २७ कि, मैं तो सारे प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूं क्या २८ कोई काम मेरे लिये कठिन है। सो यहोवा यों कहता है कि देख मैं यह नगर कसदियों और बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के वश में कर देने पर हूं सो वह इस को २९ ले लेगा। और जो कसदी इस नगर से युद्ध कर रहे हैं वे आकर इस में आग लगाकर फूंक देंगे और जिन घरों की छतों पर उन्हों ने बाल के लिये धूप जलाकर और दूसरे देवताओं को तपावन देकर मुझे रिस दिलाई है वे ३० घर जला दिये जाएंगे। क्योंकि इस्राएल और यहूदा जो काम मुझे बुरा लगता है वही लड़कपन से करते आये

हैं और इस्राएली अपनी बनाई हुई वस्तुओं से मुझ को
३१ रिस ही रिस दिलाते आये हैं। यहोवा की यह वाणी है
कि यह नगर जब से बसा तब से आज के दिन लों मेरे
कोप और जलजलाहट के भड़कने का कारण हुआ है
सो अब मैं इस को अपने साम्हने से इस कारण दूर
३२ करूंगा, कि इस्राएल और यहूदा अपने राजाओं हाकिमों
याजकों और नबियों समेत क्या यहूदा देश के क्या
यरूशलेम के निवासी सब के सब बुराई पर बुराई करके
३३ मुझ को रिस दिलाते आये हैं। उन्हों ने तो मेरी
ओर मुंह नहीं पीठ ही फेरी है मैं उन्हें बड़े यत्न से[1]
सिखाता आया हूं पर उन्हों ने मेरी शिक्षा नहीं मानी।
३४ वरन जो भवन मेरा कहावता है उस में भी उन्हों ने
अपनी घिनौनी वस्तुएं स्थापन करके उसे अशुद्ध किया
३५ है। और उन्हों ने हिन्नोमियों की तराई में बाल के ऊंचे
ऊंचे स्थान बनाकर अपने बेटे बेटियों को मोलेक के
लिये होम किये जिस की आज्ञा मैं ने कभी नहीं दी और
न यह बात कभी मेरे मन में आई कि ऐसा घिनौना काम
किया जाए जिस से यहूदी लोग पाप में फंसें॥

३६ पर अब इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के
विषय जिसे तुम लोग तलवार महंगी और मरी के द्वारा
बाबेल के राजा के वश में पड़ा हुआ कहते हो यों कहता
३७ है कि, सुनो मैं उन को उन सब देशों से जिन में कोप
और जलजलाहट और बड़े क्रोध में आकर उन्हें बरबस
कर दूंगा लौटा ले आकर इसी नगर में इकट्ठे करूंगा
३८ और निडर करके बसा दूंगा। और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे
३९ और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा। और मैं उन का एक
ही मन और एक ही चाल कर दूंगा कि वे सदा मेरा
भय मानते रहें जिस से उन का और उन के पीछे उन के
४० वंश का भी भला हो। और मैं उन से यह वाचा
बांधूंगा कि मैं कभी तुम्हारा संग छोड़कर तुम्हारा
भला करना न छोड़ूंगा। और मैं अपना भय उन के
मन में ऐसा उपजाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग
४१ होना न चाहेंगे। और मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उन
का भला करता रहूंगा और सचमुच उन्हें इस देश में
४२ अपने सारे मन और सारे जी से बसा दूंगा। देख
यहोवा यों कहता है कि जैसे मैं ने अपनी इस प्रजा पर
यह सारी बड़ी विपत्ति डाल दी वैसे ही निश्चय इन
से वह सारी भलाई भी करूंगा जिस के करने का
४३ वचन मैं ने दिया है। सो यह देश जिस के विषय तुम
लोग कहते हो कि यह तो उजाड़ हुआ है इस में न तो
मनुष्य रह गये हैं और न पशु यह तो कसदियों के वश
में पड़ चुका है इसी में खेत फिर मोल लिये जाएंगे।
४४ बिन्यामीन के देश में और यरूशलेम के आस पास
और यहूदा देश के अर्थात् पहाड़ी देश नीचे के देश
और दक्खिन देश के नगरों में लोग गवाह बुलाकर
खेत मोल लेंगे और दस्तावेज में दस्तखत और मोहर
करेंगे क्योंकि मैं उन के बंधुओं को लौटा ले आऊंगा।
यहोवा की यही वाणी है॥

(१) मूल में तड़के उठकर।
(२) मूल में शिक्षा।

३३. जिस

समय यिर्मयाह पहरे के आंगन में बन्द ही रहा उस समय
यहोवा का वचन दूसरी बार उस के पास पहुंचा कि,
२ यहोवा जो पूरा करनेहारा है यहोवा जो उस के स्थिर
३ होने की तैयारी करता है[3] उस का नाम यहोवा है, वह
यह कहता है कि मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुन
कर तुझे बड़ी बड़ी और कठिन[4] बातें बताऊंगा जिन्हें
तू अब नहीं समझता॥

४ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर
के घरों और यहूदा के राजाओं के भवनों के विषय जो
इसलिये गिराये जाते हैं कि धुसों और तलवार के
५ साथ सुभीते से लड़ सकें यों कहता है। कसदियों से
युद्ध करने को वे लोग आते तो हैं पर मैं कोप और
जलजलाहट में आकर उन को मरवाऊंगा और उन की
लोथें उसी स्थान में भरवा दूंगा क्योंकि उन की दुष्टता के
६ कारण मैं ने इस नगर से मुख फेर लिया है। सुन मैं इस
नगर का इलाज करके इस के वासियों को चंगा करूंगा।
और उन पर पूरी शान्ति और सच्चाई प्रगट करूंगा।
७ और मैं यहूदा और इस्राएल के बन्धुओं को लौटा ले
८ आऊंगा और उन्हें पहिले की नाईं बनाऊंगा। और मैं
उन को उन के सारे अधर्म्म और पाप के काम से जो
उन्हों ने मेरे विरुद्ध किये हैं शुद्ध करूंगा और उन्हों ने
जितने अधर्म्म और पाप और अपराध के काम मेरे
९ विरुद्ध किये हैं उन सब को मैं क्षमा करूंगा। क्योंकि वे
वह सारी भलाई सुनेंगे जो मैं उन की करूंगा और उस
सारे कल्याण और सारी शान्ति की चर्चा सुनकर जो मैं
उन से करूंगा डरेंगे और थरथराएंगे वह पृथिवी की उन
जातियों के लेखे मेरे लिये हर्षानेवाला और स्तुति
१० और शोभा का कारण हो जाएगा। यहोवा यों कहता
है कि यह स्थान जिस के विषय तुम लोग कहते हो कि
यह तो उजाड़ हो गया है इस में न तो मनुष्य रह गया
है और न पशु अर्थात् यहूदा देश के नगर और यरूश-
लेम की सड़कें जो ऐसी सुनसान पड़ी हैं कि उन में न

(३) मूल में गढ़ता। (४) मूल में कोठों में घिरी।

११ तौ कोई मनुष्य रहता है और न कोई पशु, इन्हीं में हर्ष और आनन्द का शब्द दुल्हे दुल्हिन का शब्द और इस बात के कहनेहारों का शब्द फिर सुन पड़ेगा कि सेनाओं के यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि यहोवा भला है और उस की करुणा सदा की है और यहोवा के भवन में धन्यवादबलि ले आनेहारों का भी शब्द सुनाई देगा क्योंकि मैं इस देश की दशा पहिले की नाईं ज्यों की त्यों कर दूंगा यहोवा का यही वचन है। १२ सेनाओं का यहोवा कहता है कि सब गांवों समेत यह स्थान जो ऐसा उजाड़ है कि इस में न तो मनुष्य रह गया है और न पशु इसी में भेड़ बकरियां बैठानेहारे १३ चरवाहे फिर रहेंगे। क्या पहाड़ी देश के क्या नीचे के देश के क्या दक्खिन देश के नगरों में क्या बिन्यामीन देश में क्या यरूशलेम के आस पास निदान यहूदा देश के सब नगरों में भेड़ बकरियां फिर गिन गिनकर चराई[2] जाएंगी यहोवा का यही वचन है॥

१४ यहोवा की यह भी वाणी है कि सुन ऐसे दिन आते हैं कि कल्याण का जो वचन मैं ने इस्राएल और यहूदा के घरानों के विषय कहा है उसे पूरा करूंगा। १५ उन दिनों में और उस समय में मैं दाऊद के वंश में धर्म्म का एक पल्लव उगाऊंगा और वह इस देश में १६ न्याय और धर्म्म के काम करेगा। उन दिनों में यहूदा बचा रहेगा और यरूशलेम निडर बसा रहेगा और उस का यह नाम रक्खा जाएगा अर्थात् यहोवा हमारी १७ धार्म्मिकता। यहोवा यों कहता है कि दाऊद के कुल में इस्राएल की घराने की गद्दी पर विराजनेहारे अटूट १८ रहेंगे। और लेवीय याजकों के कुलों में दिन दिन मेरे लिये होमबलि चढ़ानेहारे और अन्नबलि जलानेहारे और मेलबलि चढ़ानेहारे अटूट रहेंगे॥

१९ फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास २० पहुंचा कि, यहोवा यों कहता है कि मैं ने दिन और रात के विषय जो वाचा बांधी है उस को जब तुम ऐसा तोड़ सको कि दिन और रात अपने अपने समय में न हों, २१ तब ही जो वाचा मैं ने अपने दास दाऊद के संग बांधी है कि तेरे वंश की गद्दी पर बिराजनेहारे अटूट रहेंगे सो टूट सकेगी और जो वाचा मैं ने अपनी सेवा टहल करनेहारे लेवीय याजकों के संग बांधी है वह भी २२ टूट सकेगी। आकाश की सेना की गिनती और समुद्र की बालू के किनकों का परिमाण नहीं हो सकता इसी प्रकार मैं अपने दास दाऊद के वंश और अपनी सेवा टहल करनेहारे लेवीयों को बढ़ाकर अनगिनित कर दूंगा॥

२३ फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास २४ पहुंचा कि, क्या तू ने नहीं सोचा कि ये लोग यह क्या कहते हैं कि जो दो कुल यहोवा ने चुन लिये थे उन दोनों से उस ने अब हाथ उठाया है यह कहकर कि ये मेरी प्रजा को तुच्छ जानते हैं यह जाति हमारे लेखे २५ जाती रहेगी। यहोवा यों कहता है कि यदि दिन और रात के विषय मेरी वाचा अटल न रहे और यदि आकाश २६ और पृथिवी के नियम मेरे ठहराये हुए न रह जाएं, तो मैं याकूब के वंश से हाथ उठाऊंगा और इब्राहीम इसहाक और याकूब के वंश पर प्रभुता करने के लिये अपने दास दाऊद के वंश में से किसी को फिर न ठहराऊंगा परन्तु इस के उलटे मैं उन पर दया करके उन को बन्धुआई से लौटा लाऊंगा॥

३४.

जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर अपनी सारी सेना समेत और पृथिवी के जितने राज्य उस के वश में थे उन सभों के लोगों समेत भी यरूशलेम और उस के सब गांवों से लड़ रहा था तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह २ के पास पहुंचा कि, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि जाकर यहूदा के राजा सिदकिय्याह से कह कि यहोवा यों कहता है कि सुन मैं इस नगर को बाबेल के राजा के वश में कर देने पर हूं और वह ३ इसे फुंकवा देगा। और तू उस के वंश से बच न निकलेगा निश्चय पकड़ा जाएगा और उस के वश में कर दिया जावेगा और तेरी और बाबेल के राजा की चार आंखें होंगी और आम्हने साम्हने बातें करोगे। ४ और तू बाबेल को जाएगा। तौभी हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह यहोवा का यह भी वचन सुन जो यहोवा तेरे विषय कहता है कि तू तलवार से मारा न जाएगा, ५ तू शान्ति के साथ मरेगा और जैसा तेरे पितरों के लिये अर्थात् जो तुझ से पहले राजा थे उन के लिये सुगंध द्रव्य जलाया गया वैसा ही तेरे लिये भी जलाया जाएगा और लोग यह कहकर कि हाय मेरे प्रभु तेरे ६ लिये छाती पीटेंगे यहोवा की यही वाणी है। ये सब वचन यिर्मयाह नबी ने यहूदा के राजा सिदकिय्याह ७ से यरूशलेम में उस समय कहे, जब बाबेल के राजा की सेना यरूशलेम से और यहूदा के जितने नगर बच गये थे उन से अर्थात् लाकीश और अजेका से लड़ रही

(१) मूल में क्योंकि मैं देश की बन्धुआई को लौटा लाऊंगा।
(२) मूल में आगे चलाई।

थी। क्योंकि यहूदा के जो गढ़वाले नगर थे उन में से केवल वे ही रह गये थे।

८ यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास इस के पीछे आया कि सिदकिय्याह राजा ने सारी प्रजा से जो यरूशलेम में थी यह वाचा बन्धाई कि दासों के स्वाधीन होने ९ का इस आशय का प्रचार किया जाए, कि सब लोग अपने अपने दास दासी को जो इब्री वा इब्रिन हों स्वाधीन करके जाने दें और कोई अपने यहूदी भाई से १० फिर अपनी सेवा न कराए। तब तो सब हाकिमों और सारी प्रजा ने यह वाचा बांधकर कि हम अपने अपने दास दासियों को स्वाधीन करके छोड़ेंगे और फिर उस से अपनी सेवा न कराएंगे उस वाचा के अनुसार किया ११ और उन को छोड़ दिया। पर पीछे से वे फिरे और जिन दास दासियों को उन्हों ने स्वाधीन करके जाने दिया था उन को फिर अपने वश में लाकर दास दासी बना लिया।

१२ तब यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा १३ कि, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुम से यों कहता है कि जिस समय मैं तुम्हारे पितरों को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया उस समय मैं ने १४ तो आप उन से यह कहकर वाचा बांधी कि, तुम्हारा जो इब्री भाई तुम्हारे हाथ में बेचा जाए उस को तुम सातवें बरस में छोड़ देना, छः बरस तो वह तुम्हारी सेवा करे पर पीछे तुम उस को स्वाधीन करके अपने पास से जाने देना पर तुम्हारे पितरों ने मेरी न सुनी न १५ मेरी ओर कान लगाया। तुम अभी फिरे तो थे और अपने अपने भाई को स्वाधीन कर देने का प्रचार कराके जो काम मेरे लेखे भला है उसे तुम ने किया भी था और जो भवन मेरा कहावता है उस में मेरे साम्हने १६ वाचा भी बांधी थी। पर अब तुम ने फिरके मेरा नाम इस रीति अशुद्ध किया कि जिन दास दासियों को तुम स्वाधीन करके उन की इच्छा पर छोड़ चुके थे उन्हें तुम ने फिर अपने वश में कर लिया है और वे तुम्हारे १७ दास दासियां फिर बन गये हैं। इस कारण यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरी आज्ञा के अनुसार अपने अपने भाई के स्वाधीन होने का प्रचार नहीं किया सो यहोवा की यह वाणी है कि सुनो मैं तुम्हारे इस प्रकार के स्वाधीन होने का प्रचार करता हूं कि तुम तलवार मरी और महंगी के वश में पड़ो और मैं ऐसा करूंगा कि तुम पृथिवी के राज्य राज्य में मारे मारे १८ फिरो, और जो लोग मेरी वाचा का उल्लंघन करते हैं और जो वाचा उन्हों ने मेरे साम्हने और बछड़े को दो भाग करके उस के दोनों अंशों के बीच होकर गये पर १९ उस के वचनों को पूरा न किया, यहूदा देश और यरूशलेम नगर के हाकिम और खोजे और याजक और साधारण लोग जो बछड़े के अंशों के बीच होकर गये थे, २० उन को मैं उन के शत्रुओं अर्थात् उन के प्राण के खोजियों के वश कर दूंगा और उन की लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान के पशुओं का आहार हो जाएंगी। २१ और मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उस के हाकिमों को उन के शत्रुओं उन के प्राण के खोजियों अर्थात् बाबेल के राजा की सेना के वश में जो तुम्हारे २२ साम्हने से चली गई है कर दूंगा। यहोवा की यह वाणी है कि सुनो मैं उन को आज्ञा देकर इस नगर के पास लौटा ले आऊंगा और वे इस से लड़कर इसे ले लेंगे और फूंक देंगे और यहूदा के नगरों को मैं ऐसा उजाड़ कर दूंगा कि कोई उन में न रहेगा।

३५.

योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के दिनों में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास २ पहुंचा कि, रेकाबियों के घराने के पास जाकर उन से बातें कर और उन्हें यहोवा के भवन की एक कोठरी ३ में ले आकर दाखमधु पिला। तब मैं याजन्याह को जो हबस्सिन्याह का पोता और यिर्मयाह का पुत्र था और उस के भाइयों और सब पुत्रों को निदान रेकाबियों के ४ सारे घराने को लेकर, यिग्दल्याह का पुत्र हानान जो परमेश्वर का एक जन था उस के पुत्रों की यहोवा के भवन में उस कोठरी में आया जो हाकिमों की उस कोठरी के पास थी जो शल्लूम के पुत्र डेवढ़ी के रखवाल ५ मासेयाह की कोठरी के ऊपर थी। तब मैं ने रेकाबियों के घराने को दाखमधु से भरे हुए हण्डे और कटोरे ६ देकर कहा दाखमधु पीओ। उन्हों ने कहा हम दाखमधु न पीएंगे क्योंकि रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो हमारा पुरखा था हम को यह आज्ञा दी थी कि तुम सदा लों दाखमधु न पीना न तुम न तुम्हारे वंश का कोई कुछ ७ दाखमधु पीए। और न घर बनाना न बीज बोना न दाख की बारी लगाना न तुम्हारे कोई ऐसी बारी हो अपने जीवन भर तंबुओं ही में रहा करना इस से जिस देश में तुम परदेशी हो उस में बहुत दिन लों जीते ८ रहोगे। सो हम रेकाब के पुत्र अपने पुरखा योनादाब की बात मानकर उस की सारी आज्ञाओं के अनुसार करते हैं न तो हम अपने जीवन भर कुछ दाखमधु पीते हैं और न हमारी स्त्रियां वा बेटे बेटियां पीती ९ हैं। और न हम घर बनाकर उन में रहते हैं न दाख १० की बारी न खेत न बीज रखते हैं। हम तंबुओं ही में

रहा करते हैं और अपने पुरखा योनादाब की मानकर उस की सारी आज्ञाओं के अनुसार काम करते हैं। ११ परन्तु जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश पर चढ़ाई की तब हम ने कहा चलो कसदियों और अरामियों के दलों के डर के मारे यरूशलेम में जाएं इस कारण हम अब यरूशलेम में रहते हैं॥

१२ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा १३ कि, इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जाकर यहूदा देश के लोगों और यरूशलेम नगर के निवासियों से कह यहोवा की यह वाणी है कि १४ क्या तुम शिक्षा मानकर मेरी न सुनोगे। देखो रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो आज्ञा अपने वंश को दी थी कि तुम दाखमधु न पीना सो तो मानी गई है यहां लों कि आज के दिन लों भी वे लोग कुछ नहीं पीते वे अपने पुरखा की आज्ञा मानते हैं पर यद्यपि मैं तुम से बड़ा यत्न करके कहता आया हूं तौभी तुम ने मेरी १५ नहीं सुनी। मैं तुम्हारे पास अपने सारे दास नबियों को बड़ा यत्न करके[१] यह कहने को भेजता आया हूं कि अपनी बुरी चाल से फिरो और अपने काम सुधारो और दूसरे देवताओं के पीछे जाकर उन की उपासना मत करो तब तुम इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था और तुम को भी दिया है बसे रहने पाओगे पर तुम १६ ने मेरी ओर कान नहीं लगाया न मेरी सुनी है। देखो रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश ने तो अपने पुरखा की आज्ञा को मान लिया पर तुम ने मेरी नहीं सुनी। १७ इसलिये सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है यों कहता है कि सुनो यहूदा देश और यरूशलेम नगर के सारे निवासियों पर जितनी बिपत्ति डालने की मैं ने चर्चा की है सो उन पर अब डालता हूं क्योंकि मैं ने उन को सुनाया पर उन्हों ने नहीं सुना और मैं ने उन को बुलाया १८ पर वे नहीं बोले। और यिर्मयाह ने रेकाबियों के घराने से कहा इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है कि तुम ने जो अपने पुरखा योनादाब की आज्ञा मानी बरन उस की सब आज्ञाओं को मान लिया और जो कुछ उस ने कहा १९ उस के अनुसार काम किया है, इसलिये इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश में ऐसा जन सदा पाया जाएगा जो मेरे सन्मुख खड़ा रहे॥

(१) मूल में तड़के उठकर।

३६. फिर योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे बरस में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा २ कि, एक पुस्तक लेकर जितने वचन मैं ने तुझ से योशिय्याह के दिनों से लेकर अर्थात् जब मैं तुझ से बातें करने लगा आज के दिन लों इस्राएल और यहूदा और सब जातियों के विषय में कहे हैं सब को उस में लिख। ३ क्या जानिये यहूदा का घराना उस सारी बिपत्ति का समाचार सुनकर जो मैं उन पर डालने की कल्पना करता हूं अपनी बुरी चाल से फिरे और मैं उन के अधर्म्म और पाप को ४ क्षमा करूं। सो यिर्मयाह ने नेरिय्याह के पुत्र बारूक को बुलाया और बारूक ने यहोवा के सब वचन जो उस ने यिर्मयाह से कहे थे उस के मुख से सुनकर पुस्तक में लिख ५ दिये। फिर यिर्मयाह ने बारूक से कहा मैं तो रुका हुआ ६ हूं मैं यहोवा के भवन में नहीं जा सकता। सो तू उपवास के दिन यहोवा के भवन में जाकर उस के जो वचन तू ने मुझ से सुन कर लिखे हैं सो पुस्तक में से लोगों को पढ़कर सुनाना और जितने यहूदी लोग अपने अपने ७ नगरों से आएंगे उन को भी पढ़ सुनाना। क्या जानिये वे यहोवा से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करें और अपनी अपनी बुरी चाल से फिरें क्योंकि जो कोप और जलजलाहट यहोवा ने अपनी इस प्रजा पर भड़काने को ८ कहा है सो बड़ी है। यिर्मयाह नबी की इस आज्ञा के अनुसार करके नेरिय्याह का पुत्र बारूक ने यहोवा के भवन में उस के वचन पुस्तक में से पढ़ सुनाये॥

९ फिर योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के पांचवें बरस के नौवें महीने में यरूशलेम में जितने लोग थे और यहूदा के नगरों से जितने लोग यरूशलेम में आये थे उन्हों ने यहोवा के १० साम्हने उपवास करने का प्रचार किया। तब बारूक ने शापान का पुत्र गमर्याह जो प्रधान था उस की जो कोठरी ऊपरले आंगन में यहोवा के भवन के नये फाटक के पास थी यहोवा के भवन में सब लोगों को यिर्मयाह ११ के सब वचन पुस्तक में से पढ़ सुनाये। तब शापान का पुत्र गमर्याह का पुत्र मीकायाह यहोवा के सारे १२ वचन पुस्तक में से सुनकर, राजभवन के प्रधान की कोठरी में उतर गया और क्या देखा कि यहां एलीशामा प्रधान और शमायाह का पुत्र दलायाह और अकबोर का पुत्र एलनातान और शापान का पुत्र गमर्याह और हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह और सब हाकिम बैठे १३ हुए हैं। और मीकायाह ने जितने वचन उस समय सुने थे जब बारूक ने पुस्तक में से लोगों को पढ़

१४ सुनाया था सो सब वर्णन किये। उन्हें सुनकर सब हाकिमों ने बारूक के पास यहूदी को जो नतन्याह का पुत्र और शेलेम्याह का पोता और कूशी का परपोता था यह कहने को भेजा कि जिस पुस्तक में से तू ने सब लोगों को पढ़ सुनाया सो लेता आ तो नेरिय्याह का पुत्र बारूक वह पुस्तक हाथ में लिये हुए उन के १५ पास आया। तब उन्हों ने उस से कहा बैठ और हमें पढ़ सुना सो बारूक ने उन को पढ़ सुना दिया। १६ और जब वे उन सब वचनों को सुन चुके तब थरथराते हुए एक दूसरे को देखने लगे और बारूक से कहा निश्चय हम राजा से इन सब वचनों का वर्णन करेंगे। १७ फिर उन्हों ने बारूक से कहा हम से कह कि तू ने ये सब वचन उस के मुख से सुनकर किस प्रकार से लिखे। १८ बारूक ने उन से कहा वह ये सब वचन अपने मुख से मुझे सुनाता गया और मैं इन्हें पुस्तक में स्याही १९ से लिखता गया। तब हाकिमों ने बारूक से कहा जा तू और यिर्मयाह दोनों छिप जाओ और कोई न जाने कि २० तुम कहां हो। तब वे पुस्तक को एलीशामा प्रधान की कोठरी में रखकर राजा के पास आंगन में आये और २१ राजा को वे सब वचन कह सुनाये। तब राजा ने यहूदी को पुस्तक ले आने के लिये भेजा सो उस ने उसे एलीशामा प्रधान की कोठरी में से लेकर राजा को और जो हाकिम राजा के आस पास खड़े थे उन को भी पढ़ २२ सुना दिया। और राजा शीतकाल के भवन में बैठा हुआ था क्योंकि नौवां महीना था और उस के साम्हने २३ अंगेठी जल रही थी। सो जब यहूदी तीन चार कोठे पढ़ चुका तब उस ने उसे चाकू से काटा और जो आग अंगेठी में थी उस में फेंक दिया सो अंगेठी की आग में २४ सारी पुस्तक जलकर भस्म हो गई। और कोई न थरथराया और न किसी ने अपने कपड़े फाड़े अर्थात् न तो राजा ने और न उस के कर्मचारियों में से किसी २५ ने ऐसा किया जिन्हों ने वे सब वचन सुने थे। पर एलनातान और दलायाह और गमर्याह ने राजा से बिनती की थी कि पुस्तक को न जला तौभी उस ने २६ उन की न सुनी। राजा ने राजपुत्र यरहमेल को और अज्रीएल के पुत्र सरायाह को और अब्देल के पुत्र शेलेम्याह को आज्ञा दी कि बारूक लेखक और यिर्मयाह नबी को पकड़ ले आओ पर यहोवा ने उन को छिपा रक्खा॥

२७ जब राजा ने उन वचनों की पुस्तक को जो बारूक ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर लिखे थे जला दिया उस के पीछे यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा २८ कि, फिर एक और पुस्तक लेकर उस में यहूदा के राजा यहोयाकीम की जलाई हुई पहिली पुस्तक के सारे वचन लिख दे। २९ और यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय कह कि यहोवा यों कहता है कि तू ने उस पुस्तक को यह कहकर जला दिया है कि तू ने उस में यह क्यों लिखा है कि बाबेल का राजा निश्चय आकर इस देश को नाश करके ऐसा करेगा कि उस में न तो मनुष्य रह जाएगा न पशु। ३० इसलिये यहोवा यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय यों कहता है कि उस का कोई दाऊद की गद्दी पर विराजमान न रहेगा और उस की लोथ ऐसी फेंक दी जाएगी कि दिन को घाम में और रात को पाले में पड़ी रहेगी। ३१ और मैं उस को और उस के वंश और कर्म्मचारियों को अधर्म्म का दण्ड दूंगा और जितनी विपत्ति मैं ने उन पर और यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के सब लोगों पर डालने को कहा है पर उन्हों ने सच नहीं माना उन सब को मैं उन पर डालूंगा। ३२ सो यिर्मयाह ने दूसरी पुस्तक लेकर नेरिय्याह के पुत्र बारूक लेखक को दी और जो पुस्तक यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग में जला दी थी उस में के सब वचनों को बारूक ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर उस में लिख दिया और उन वचनों में उन के समान और भी बहुत से बढ़ाये गये॥

३७.

और यहोयाकीम के पुत्र कोन्याह के स्थान पर योशिय्याह का पुत्र सिदकिय्याह राज्य करने लगा क्योंकि बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसी को यहूदा देश में राजा ठहराया था। २ और न तो उस ने और न उस के कर्म्मचारियों ने न साधारण लोगों ने यहोवा के वचनों को जो उस ने यिर्मयाह नबी के द्वारा कहा था मान लिया॥

३ सिदकिय्याह राजा ने शेलेम्याह के पुत्र यहूकल और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को यिर्मयाह नबी के पास यह कहने के लिये भेजा कि हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर। ४ उस समय यिर्मयाह बन्दीगृह में डाला न गया था सो लोगों के बीच वह आया जाया करता था। ५ और फिरौन की सेना मिस्र से निकली थी सो जो कसदी यरूशलेम को घेरे हुए थे वे उस का समाचार सुनकर यरूशलेम के पास से उठ गये। ६ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा कि, ७ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि यहूदा के जिस राजा ने तुम को प्रार्थना कराने के लिये मेरे पास भेजा है उस से यों कहो कि सुन फिरौन की

जो सेना तुम्हारी सहायता के लिये निकली है सो अपने
८ देश मिस्र में लौट जाएगी। और कसदी फिर आकर इस
नगर से लड़ेंगे और इस को ले लेंगे और फूंक देंगे।
९ यहोवा यों कहता है कि तुम यह कहकर अपने अपने
मन में धोखा न खाओ कि कसदी हमारे पास से निश्चय
१० चले गये हैं क्योंकि वे नहीं चले गये। सुनो यदि तुम ने
कसदियों की सारी सेना को जो तुम से लड़ती है ऐसा
मार भी लिया होता कि उन में से केवल घायल लोग
रह जाते तौभी वे अपने अपने तंबू में से उठकर इस
नगर को फूंक देते॥

११ जब कसदियों की सेना फिरौन की सेना के डर के
१२ मारे यरूशलेम के पास से उठ गई, तब यिर्मयाह यरू-
शलेम से निकलकर बिन्यामीन के देश की ओर इसलिये
जा रहा था कि वहां से और लोगों के संग अपना
१३ अंश ले। जब वह बिन्यामीन के फाटक में था तब यिरि-
य्याह नामक पहरुओं का एक सरदार वहां था जो
शेलेम्याह का पुत्र और हनन्याह का पोता था सो उस ने
यिर्मयाह नबी को यह कहकर पकड़ लिया कि तू कस-
१४ दियों के पास भागा जाता है। यिर्मयाह ने कहा यह
झूठ है मैं कसदियों के पास भागा नहीं जाता पर यिरि-
य्याह ने उस की न मानी सो वह उस को पकड़कर
१५ हाकिमों के पास ले गया। तब हाकिमों ने यिर्मयाह से
क्रोधित होकर उसे पिटवाया और योनातान प्रधान का
घर जो बन्दीगृह था उस में डलवा दिया क्योंकि उन्हों
१६ ने उसी को साधारण बन्दीगृह किया था। जब यिर्मयाह
उस तलघर में जिस में कई एक कोठरियां थीं आकर
१७ वहां रहने लगा उस के बहुत दिन पीछे, सिदकिय्याह
राजा ने उस को बुलवा भेजा और अपने भवन में
छिपकर यह प्रश्न किया कि क्या यहोवा की ओर से
कोई वचन पहुंचा है यिर्मयाह ने कहा हां पहुंचा तो है
वह यह है कि तू बाबेल के राजा के वश में कर दिया
१८ जाएगा। फिर यिर्मयाह ने सिदकिय्याह राजा से कहा
मैं ने तेरा और तेरे कर्म्मचारियों का और तेरी प्रजा का
क्या अपराध किया है कि तुम लोगों ने मुझ को बन्दीगृह
१९ में डलवाया है। और तुम्हारे जो नबी तुम से नबूवत
करके कहा करते थे कि बाबेल का राजा तुम पर और
२० इस देश पर चढ़ाई न करेगा सो अब कहां रहे। अब हे
मेरे प्रभु हे राजा मेरी प्रार्थना तुझ से ग्रहण की जाए कि
मुझे योनातान प्रधान के घर में फिर न भेज नहीं तो वहां
२१ मर जाऊंगा। सो सिदकिय्याह राजा की आज्ञा से यिर्मयाह
पहरे के आंगन में रक्खा गया और जब लों नगर में की
सब रोटी चुक न गई तब लों उस को रोटीवालों के हाट
में से दिन दिन एक रोटी दी जाती थी। सो यिर्मयाह
पहरे के आंगन में रहने लगा॥

३८. फिर जो वचन यिर्मयाह सब लोगों
से कहता था उन को मत्तान
का पुत्र शपत्याह और पशहूर का पुत्र गदल्याह और
शेलेम्याह का पुत्र यूकल और मल्कियाह का पुत्र पश-
२ हूर ने सुना कि, यहोवा यों कहता है कि जो कोई इस
नगर में रहे सो तलवार महंगी और मरी से मरेगा पर
जो कोई कसदियों के पास निकल भागे सो अपना प्राण
३ बचा कर जीता रहेगा। यहोवा यों कहता है कि यह
नगर बाबेल के राजा की सेना के वश में कर दिया
४ जाएगा और वह इस को ले लेगा। सो उन हाकिमों ने
राजा से कहा कि उस पुरुष को मरवा डाल क्योंकि वह
जो इस नगर में रहे हुए योद्धाओं और और सब लोगों
से ऐसे ऐसे वचन कहता है इस से उन के हाथ पांव
ढीले हो जाते हैं और वह पुरुष इस प्रजा के लोगों की
५ भलाई नहीं बुराई ही चाहता है। सिदकिय्याह राजा
ने कहा सुनो वह तो तुम्हारे वश में है क्योंकि राजा
६ ऐसा नहीं होता कि तुम्हारे विरुद्ध कुछ कर सके। तब
उन्हों ने यिर्मयाह को लेकर राजपुत्र मल्किय्याह के
उस गड़हे में जो पहरे के आंगन में था रस्सियों से उतार
के डाल दिया और उस गड़हे में दलदल था सो
७ यिर्मयाह कीचड़ में धस गया। उस समय राजा बिन्या-
मीन के फाटक के पास बैठा था सो जब एबेदमेलेक
कूशी ने जो राजभवन में एक खोजा था सुना कि उन्हों
८ ने यिर्मयाह को गड़हे में डाल दिया, तब एबेदमेलेक
९ राजभवन से निकलकर राजा से कहने लगा कि, हे मेरे
स्वामी हे राजा उन लोगों ने यिर्मयाह नबी से जो कुछ
किया है सो बुरा किया है उन्हों ने उस को गड़हे में
डाल दिया नगर में कुछ रोटी नहीं रही सो जहां वह
१० है वहां वह भूख से मर जाएगा। तब राजा ने एबेद-
मेलेक कूशी को यह आज्ञा दी कि यहां से तीस पुरुष
साथ लेकर यिर्मयाह नबी को मर जाने से पहिले गड़हे
११ में से निकाल। सो एबेदमेलेक उतने पुरुषों को साथ
लेकर राजभवन में के भण्डार के तलघर में गया और
वहां से पुराने फटे हुए कपड़े और पुराने सड़े चिथड़े ले
कर उस गड़हे में यिर्मयाह के पास रस्सियों से उतार दिये।
१२ और एबेदमेलेक कूशी ने यिर्मयाह से कहा ये पुराने
फटे कपड़े और सड़े चिथड़े अपनी कांखों में रस्सियों के
१३ नीचे रख ले सो यिर्मयाह ने वैसा ही किया। तब
उन्हों ने यिर्मयाह को रस्सियों से खींचकर गड़हे में से
निकाला और यिर्मयाह पहरे के आंगन में रहने लगा॥

१४ सिदकिय्याह राजा ने यिर्मयाह नबी को अपने पास यहोवा के भवन के तीसरे द्वार में बुलवा भेजा और राजा ने यिर्मयाह से कहा मैं तुझ से एक बात पूछता हूं सो १५ मुझ से कुछ न छिपा। यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा यदि मैं तुझे बताऊं तो क्या तू मुझे मरवा न डालेगा और चाहे मैं तुझे सम्मति दूं तौ भी तू मेरी न मानेगा। १६ तब सिदकिय्याह राजा ने छिपकर यिर्मयाह से किरिया खाई कि यहोवा जिस ने हमारा यह जीव रचा उस के जीवन की सोंह मैं न तो तुझे मरवा डालूंगा और न उन मनुष्यों के बश में जो तेरे प्राण के खोजी हैं कर १७ दूंगा। सो यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है यों कहता है कि तू बाबेल के राजा के हाकिमों के पास सचमुच निकल जाए तब तो तेरा प्राण बचेगा और यह नगर फूंका न जाएगा और तू अपने घराने १८ समेत जीता रहेगा। पर यदि तू बाबेल के राजा के हाकिमों के पास न निकल जाए तो यह नगर कसदियों के वश में कर दिया जाएगा और वे इसे फूंक देंगे और १९ तू उन के हाथ से बच न निकलेगा। सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा जो यहूदी लोग कसदियों के पास भाग गये हैं उन से मैं डरता हूं ऐसा न हो कि मैं उन के वश में कर दिया जाऊं और वे मुझ से ठट्ठा करें। २० यिर्मयाह ने कहा तू उन के वश में कर दिया न जाएगा जो कुछ मैं तुझ से कहता हूं उसे यहोवा की बात समझ कर सुन ले तब तेरा भला होगा और तेरा प्राण २१ बचेगा। और यदि तू निकल जाने को नकारे तो जो बात यहोवा ने मुझे दर्शन के द्वारा बताई है सो यह है कि, २२ सुन यहूदा के राजा के रनवास में जितनी स्त्रियां रह गई हैं सो बाबेल के राजा के हाकिमों के पास निकाल कर पहुंचाई जाएंगी और वे उस से कहेंगी तेरे मित्रों ने तुझे बहकाया और उन की इच्छा पूरी हो गई अब तेरे २३ पांव कीच में धस गये वे पीछे फिर गये हैं। फिर तेरी सब स्त्रियां और लड़केबाले कसदियों के पास निकाल कर पहुंचाए जाएंगे और तू कसदियों के हाथ से न बचेगा तू पकड़कर बाबेल के राजा के वश में कर दिया जाएगा और इस नगर के फूंके जाने के कारण तू ही २४ ठहरेगा। सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा इन बातों २५ को कोई न जानने पाए और तू मारा न जाएगा। यदि हाकिम लोग यह सुनकर कि मैं ने तुझ से बातचीत की है तेरे पास आकर कहने लगें हमें बता कि तू ने राजा से क्या कहा हम से कोई बात न छिपा और हम तुझे मरवा न डालेंगे और यह भी बता कि राजा ने तुझ से क्या कहा, तो तू उन से कहना कि २६ मैं ने राजा से गिड़गिड़ा कर बिनती की कि मुझे योनातान के घर में फिर न भेज नहीं तो वहां मर २७ जाऊंगा। फिर सब हाकिमों ने यिर्मयाह के पास आकर पूछा और जैसा राजा ने उस को आज्ञा दी थी ठीक वैसा ही उस ने उन को उत्तर दिया सो वे उस से और कुछ न बोले और यह भेद न खुला। २८ इस प्रकार जिस दिन यरूशलेम ले लिया गया उस दिन लों वह पहरे के आंगन ही में रहा॥

३९. यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के नौवें बरस के दसवें महीने में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सारी सेना समेत यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसे घेर २ लिया। और सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें बरस के चौथे महीने के नौवें दिन को उस नगर की शहरपनाह ३ तोड़ी गई। सो जब यरूशलेम ले लिया गया तब नेर्गल-सरेसेर और समगर्नबो और खोजों का प्रधान सर्सकीम और मगों का प्रधान नेर्गलसरेसेर आदि बाबेल के राजा के सब हाकिम आकर बीच के फाटक में बैठ गये। ४ जब यहूदा के राजा सिदकिय्याह और सब योद्धाओं ने उन्हें देखा तब रात ही रात राजा की बारी के मार्ग से दोनों भीतों के बीच के फाटक से होकर नगर से निकल ५ भागते हुए चले और अराबा का मार्ग लिया। और कसदियों की सेना ने उन को खदेड़कर सिदकिय्याह को यरीहो के अराबा में जा लिया और उस को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के पास हमात देश के रिबला में ले गये और उस ६ ने वहां उस के दण्ड की आज्ञा दी। तब बाबेल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को रिबला में उसी के साम्हने घात किया और सब कुलीन यहूदियों को भी घात किया। ७ और सिदकिय्याह की आंखों को उस ने फुड़वा डाला और उस को बाबेल ले जाने के लिये बेड़ियों से जकड़वा ८ रक्खा। और राजभवन को और प्रजा के घरों को कसदियों ने आग लगाकर फूंक दिया और यरूशलेम की ९ शहरपनाह को ढा दिया। तब जल्लादों का प्रधान नबूजरदान प्रजा के बचे हुओं को जो नगर में रह गये और जो लोग उस के पास भाग गये थे उन को अर्थात् प्रजा में से जितने रह गये उन सब को बन्धुआ करके बाबेल १० को ले गया। परन्तु प्रजा में से जो ऐसे कंगाल थे कि उन के पास कुछ न था उन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान यहूदा देश में छोड़ गया और जाते समय ११ उन को दाख की बारियां और खेत दिये। और बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने जल्लादों के प्रधान नबूजरदान

१२ को यिर्मयाह के विषय यह आज्ञा दी थी कि, उस को लेकर उस पर कृपादृष्टि बनाये रखना और उस की कुछ हानि न करना जैसा वह तुझ से कहे वैसा ही उस
१३ से व्यवहार करना। सो जल्लादों के प्रधान नबूजरदान और खोजों के प्रधान नबूसजबान और मगों के प्रधान
१४ नेर्गलसेर और बाबेल के राजा के सब प्रधानों ने, लोगों को भेजकर यिर्मयाह को पहरे के आंगन में से बुलवा लिया और गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था सौंप दिया कि वह उसे घर पहुंचाए तब से वह लोगों के बीच में रहने लगा॥

१५ जब यिर्मयाह पहरे के आंगन में कैद था तब
१६ यहोवा का यह वचन उस के पास पहुंचा था कि, जाकर एबेदमेलेक कूशी से कह इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता है कि सुन मैं अपने वे वचन जो मैं ने इस नगर के विषय कहे हैं ऐसे पूरे करूंगा कि इस का कुशल न होगा हानि ही होगी और उस
१७ समय उन का पूरा होना तुझे देख पड़ेगा। पर यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तुझे बचाऊंगा और जिन मनुष्यों से तू भय खाता है उन के वश में तू कर
१८ दिया न जाएगा। क्योंकि मैं तुझे निश्चय बचाऊंगा और तू तलवार से न मरेगा तेरा प्राण बचा रहेगा यहोवा की यह वाणी है कि यह इस कारण होगा कि तू ने मुझ पर भरोसा रक्खा है॥

४०. जब जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को रामा में उन सब यरूशलेमी और यहूदी बन्धुओं के बीच हथकड़ियों से बंधा हुआ पाकर जो बाबेल जाने को थे छुड़ा लिया उस
२ के पीछे यहोवा का वचन उस के पास पहुंचा। जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने तो यिर्मयाह को उस समय अपने पास बुला लिया और कहा इस स्थान पर यह जो विपत्ति पड़ी है सो तेरे परमेश्वर यहोवा की कही
३ हुई थी। और जैसा यहोवा ने कहा था वैसा ही उस ने पूरा भी किया है तुम लोगों ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया और उस की नहीं मानी इस कारण तुम्हारी यह
४ दशा हुई है। और अब मैं तेरी इन हथकड़ियों को काटे देता हूं और यदि मेरे संग बाबेल में जाना तुझे अच्छा लगे तो चल वहां मैं तुझ पर कृपादृष्टि रक्खूंगा और यदि मेरे संग बाबेल जाना तुझे न भाए तो रह जा देख सारा देश तेरे साम्हने पड़ा है जिधर जाना तुझे अच्छा
५ और ठीक जंचे उधर ही जा। वह जब तक लौट न गया था कि नबूजरदान ने उस से कहा कि गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है जिस को बाबेल के राजा ने यहूदा के नगरों पर अधिकारी ठहराया है उस के पास लौट जा और उस के संग लोगों के बीच रह वा जहां कहीं तुझे जाना ठीक जान पड़े वहीं जा। सो जल्लादों के प्रधान ने उस को सीधा और कुछ द्रव्य भी देकर बिदा किया। तब यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गद-
६ ल्याह के पास मिस्पा को गया और वहां उन लोगों के बीच जो देश में रह गये थे रहने लगा॥

७ योद्धाओं के जो दल दिहात में थे जब उन के सब प्रधानों ने अपने जनों समेत सुना कि बाबेल के राजा ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को देश का अधिकारी ठहराया और देश के जिन कंगाल लोगों को वह बाबेल को नहीं ले गया क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बालबच्चे उन
८ सभों को उसे सौंप दिया है, तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल और कारेह के पुत्र योहानान और योनातान और तन्हूमेत का पुत्र सरायाह और एपै नतोपावासी के पुत्र और किसी माकावासी का पुत्र याजन्याह अपने जनों
९ समेत गदल्याह के पास मिस्पा में आये। और गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था उस ने उन से और उन के जनों से किरिया खाकर कहा कसदियों के अधीन रहने से मत डरो इसी देश में रहते हुए बाबेल के राजा के अधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा।
१० और मैं तो इसलिये मिस्पा में रहता हूं कि जो कसदी लोग हमारे यहां आएं उन के साम्हने हाजिर हुआ करूं पर तुम दाखमधु और धूपकाल के फल और तेल को बटोर के अपने बरतनों में रखते अपने लिये हुए नगरों में
११ बसे रहो। फिर जब मोआबियों अम्मोनियों एदोमियों और और सब जातियों के बीच रहनेहारे सब यहूदियों ने सुना कि बाबेल के राजा ने यहूदियों में से कुछ लोग बचाये और उन पर गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है अधिकारी ठहराया है,
१२ तब सब यहूदी जिन जिन स्थानों में तित्तर बित्तर हो गये थे उन से लौटकर यहूदा देश के मिस्पा नगर में गदल्याह के पास आये और बहुत सा दाखमधु और धूपकाल के फल बटोरने लगे॥

१३ तब कारेह का पुत्र योहानान और मैदान में रहनेहारे योद्धाओं के सब दलों के प्रधान मिस्पा में
१४ गदल्याह के पास आकर, कहने लगे क्या तू जानता है कि अम्मोनियों के राजा बालीस ने नतन्याह के पुत्र इश्माएल को तुझे प्राण से मारने के लिये भेजा है। पर अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन की प्रतीति न
१५ की। फिर कारेह के पुत्र योहानान ने गदल्याह से

मिस्पा में छिपकर कहा मुझे जाकर नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने दे और कोई इसे न जानेगा वह तुझे क्यों मार डाले और जितने यहूदी लोग तेरे पास एकट्ठे हुए हैं सो क्यों तित्तर बित्तर हो जाएं और १६ बचे हुए यहूदी क्यों नाश हो जाएं। अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान से कहा ऐसा काम मत कर तू इश्माएल के विषय झूठ बोलता है॥

४१. **और** सातवें महीने में इश्माएल जो नतन्याह का पुत्र और एलीशामा का पोता और राजवंश का और राजा के प्रधान पुरुषों में से था सो दस जन संग लेकर मिस्पा में अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास आया और २ वहां मिस्पा में वे एक संग भोजन करने लगे। तब नतन्याह के पुत्र इश्माएल और उस के संग के दस जनों ने उठकर गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था और जिसे बाबेल के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था तलवार से ऐसा मारा ३ कि वह मर गया। और गदल्याह के संग जितने यहूदी मिस्पा में थे और जो कसदी योद्धा वहां मिले उन ४ सभों को इश्माएल ने मार डाला। और गदल्याह के मार डालने के दूसरे दिन जब कोई इसे न जानता ५ था, तब शकेम और शीलो और शोमरोन से अस्सी पुरुष डाढ़ी मुड़ाये वस्त्र फाड़े शरीर चीरे हुए और हाथ में अन्नबलि और लोबान लिये हुए यहोवा के भवन में ६ जाने को आते दिखाई दिये। तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल उन से मिलने को मिस्पा से निकला और रोता हुआ चला और जब वह उन से मिला तब कहा ७ अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास चलो। जब वे उस नगर के बीच आये तब नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने अपने संगी जनों समेत उन को घात करके गड़हे के ८ बीच फेंक दिया। पर उन में से दस मनुष्य इश्माएल से कहने लगे हम को मार न डाल क्योंकि हमारे पास मैदान में रक्खा हुआ गेहूं जव तेल और मधु है सो उस ने उन्हें छोड़ दिया और उन के भाइयों के साथ ९ मार न डाला। जिस गड़हे में इश्माएल ने उन लोगों की सब लोथें जिन्हें उस ने मारा था गदल्याह की लोथ के पास फेंक दी सो वही गड़हा है जिसे आसा राजा ने इस्राएल के राजा बाशा के डर के मारे खुदवाया था उस को नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने मारे हुओं से १० भर दिया। तब जो लोग मिस्पा में बचे हुये थे अर्थात् राजकुमारियां और जितने और लोग मिस्पा में रह गये थे जिन्हें जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को सौंप दिया था उन सभों को नतन्याह का पुत्र इश्माएल बंधुआ करके अम्मोनियों के पास ले जाने को चला॥

जब कारेह के पुत्र योहानान ने और योद्धाओं के ११ दलों के उन सब प्रधानों ने जो उस के संग थे सुना कि नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने यह सब बुराई की है, तब वे सब जनों को लेकर नतन्याह के पुत्र इश्मा- १२ एल से लड़ने को निकले और उस को उस बड़े जलाशय के पास पाया जो गिबोन में है। कारेह के पुत्र योहा- १३ नान को और दलों के सब प्रधानों को जो उस के संग थे देखकर इश्माएल के संग जो लोग थे सो सब आनन्दित हुए। और जितने लोगों को इश्माएल मिस्पा से बंधुआ १४ करके लिये जाता था सो पलटकर कारेह के पुत्र योहानान के पास चले आये। पर नतन्याह का पुत्र इश्माएल १५ आठ पुरुष समेत योहानान के हाथ से बचकर अम्मो- नियों के पास चला गया। तब प्रजा में से जितने बच १६ गये थे अर्थात् जिन योद्धाओं स्त्रियों बालबच्चों और खोजों को कारेह का पुत्र योहानान अहीकाम के पुत्र गदल्याह के मिस्पा में मारे जाने के पीछे नतन्याह के पुत्र इश्माएल के पास से छुड़ाकर गिबोन से फेर ले आया था उन को वह अपने सब संगी दलों के प्रधानों समेत लेकर चल दिया, और बेतलेहेम के निकट जो १७ किम्हाम की सराय है उस में वे इसलिये टिक गये कि मिस्र में जाएं। क्योंकि वे कसदियों से डरते थे इस १८ कारण कि अहीकाम का पुत्र गदल्याह जिसे बाबेल के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था उसे नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने मार डाला था॥

४२. **तब** कारेह का पुत्र योहानान और होशा- याह का पुत्र याजन्याह और दलों के सब प्रधान छोटे से लेकर बड़े लों सब लोग यिर्मयाह नबी के निकट आकर, कहने लगे हमारी बिनती ग्रहण करके २ अपने परमेश्वर यहोवा से हम सब बचे हुओं के लिये प्रार्थना कर क्योंकि तू अपनी आंखों से देखता है कि हम जो पहले बहुत थे अब थोड़े ही रह गये हैं। सो ३ इसलिये प्रार्थना कर कि तेरा परमेश्वर यहोवा हम को बताए कि हम किस मार्ग से चलें और कौन सा काम करें। सो यिर्मयाह नबी ने उन से कहा मैं ने तुम्हारी ४ सुनी है देखो मैं तुम्हारे वचनों के अनुसार तुम्हारे परमे- श्वर यहोवा से प्रार्थना करूंगा और जो उत्तर यहोवा तुम्हारे लिये दे सो मैं तुम को बताऊंगा मैं तुम से कोई

५ बात न रख छोड़ूंगा। उन्हों ने यिर्मयाह से कहा यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुंचाये और हम उस के अनुसार न करें तो यहोवा हमारे बीच में सच्चा और विश्वासयोग्य साक्षी ठहरे। ६ चाहे वह भली बात हो चाहे बुरी तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा की जिस के पास हम तुझे भेजते हैं मानेंगे जिस से जब हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानें तब हमारा भला हो॥

७ दस दिन के बीते पर यहोवा का वचन यिर्मयाह ८ के पास पहुंचा। तब उस ने कारेह के पुत्र योहानान को और उस के साथ के दलों के प्रधानों को और छोटे से लेकर बड़े लों जितने लोग थे उन सभों को ९ बुलाकर उन से कहा। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिस के पास तुम ने मुझ को इसलिये भेजा कि मैं तुम्हारी बिनती उस के आगे कह सुनाऊं सो यों कहता १० है कि, यदि तुम इस देश में सचमुच रह जाओ तब तो मैं तुम को नाश न करूंगा बनाये रक्खूंगा और नहीं उखाड़ूंगा रोपे रक्खूंगा क्योंकि तुम्हारी जो हानि मैं ने ११ की है उस से मैं पछताता हूं। तुम जो बाबेल के राजा से डरते हो सो उस से मत डरो यहोवा की यह वाणी है कि उस से मत डरो क्योंकि मैं तुम्हारी रक्षा करने और तुम को उस के हाथ से बचाने के लिये १२ तुम्हारे संग हूं। और मैं तुम पर दया करूंगा और वह भी तुम पर दया करके तुम को तुम्हारी भूमि पर १३ फेर बसा देगा। पर यदि तुम यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानो कि हम इस देश १४ में न रहेंगे, हम मिस्र देश जाकर वहीं रहेंगे क्योंकि वहां हम तो न युद्ध देखेंगे और न नरसिंगे का शब्द १५ सुनेंगे न भोजन की घटी हम को होगी, तो हे बचे हुए यहूदियो अब यहोवा का वचन सुनो इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि यदि तुम सचमुच मिस्र की ओर जाने का मुंह करो और वहां १६ रहने के लिये जाओ, तो जिस तलवार से तुम डरते हो वही वहां मिस्र देश में तुम को जा लेगी और जिस महंगी का भय तुम खाते हो सो मिस्र में तुम्हारा पीछा १७ न छोड़ेगी और वहां तुम मरोगे। जितने मनुष्य मिस्र में रहने के लिये उस की ओर मुंह करें सो सब तलवार महंगी और मरी से मरेंगे और जो विपत्ति मैं उन के बीच १८ डालूंगा उस से कोई उन में से बचा न रहेगा। इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जिस प्रकार से मेरा कोप और जलजलाहट यरूशलेम के निवासियों पर भड़क उठी थी उसी प्रकार से यदि तुम मिस्र में जाओ तो मेरी जलजलाहट तुम्हारे ऊपर ऐसी भड़क उठेगी कि लोग चकित होंगे और तुम्हारी उपमा देकर स्राप दिया और निन्दा किया करेंगे और तुम इस स्थान को फिर न देखने पाओगे॥

१९ हे बचे हुये यहूदियो यहोवा ने तुम्हारे विषय कहा है कि मिस्र में मत जाओ सो तुम निश्चय करके जानो कि मैं आज तुम को चिताकर यह बात कहता २० हूं। क्योंकि जब तुम ने मुझ को यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा के पास भेज दिया कि हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसी के अनुसार हम को बता और हम वैसा ही करेंगे तब तुम जान बूझके अपने २१ ही को धोखा देते थे। देखो मैं आज तुम को बताये देता हूं पर और जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से कहने के लिये मुझ को भेजा है उस में से २२ तुम कोई बात नहीं मानते। सो अब तुम निश्चय करके जानो कि जिस स्थान में तुम परदेशी होके रहने की इच्छा करते हो उस में तुम तलवार महंगी और मरी से मर जाओगे॥

४३. जब यिर्मयाह उन के परमेश्वर यहोवा के सब वचन जिन के कहने के लिये उस ने उस को उन सब लोगों के पास भेजा था २ अर्थात् ये सब वचन कह चुका तब, होशायाह के पुत्र अजर्याह और कारेह के पुत्र योहानान और सब अभिमानी पुरुषों ने यिर्मयाह से कहा तू झूठ बोलता है हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझ को यह कहने के लिये ३ नहीं भेजा कि मिस्र में रहने के लिये मत जाओ। पर नेरिय्याह का पुत्र बारूक तुझ को हमारे विरुद्ध उसकाता है कि हम कसदियों के हाथ में पड़ें और वे हम को ४ मार डालें वा बन्धुआ करके बाबेल को ले जाएं। सो कारेह के पुत्र योहानान और दलों के और सब प्रधानों और सब लोगों ने यहूदा देश में रहने की यहोवा की ५ आज्ञा मानने को नकारा। और जो यहूदी उन सब जातियों में से जिन के बीच वे तित्तर बित्तर हो गये थे लौटकर यहूदा देश में रहने लगे थे उन को कारेह का पुत्र ६ योहानान और दलों के और सब प्रधान ले गये। पुरुष स्त्री बालबच्चे राजकुमारियां और जितने प्राणियों को जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था सौंप दिया था उन को और यिर्मयाह नबी और नेरिय्याह के पुत्र बारूक ७ को वे ले गये। सो वे मिस्र देश में तहपन्हेस नगर लों आ गये क्योंकि उन्हों ने यहोवा की मानने को नकारा॥

८ तब यहोवा का यह वचन तहपन्हेस में यिर्मयाह ९ के पास पहुंचा कि, अपने हाथ से बड़े पत्थर ले और यहूदी पुरुषों के साम्हने उस ईंट के चबूतरे में जो तहपन्हेस में फ़िरौन के भवन के द्वार के पास है चूना १० फेर के छिपा दे। और उन पुरुषों से कह इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं बाबेल के राजा अपने सेवक नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूंगा और वह अपना सिंहासन इन पत्थरों के ऊपर जो मैं ने छिपा रक्खे हैं रखाएगा और अपना छत्र इन ११ के ऊपर तनवाएगा। और वह आके मिस्र देश को मारेगा तब जो मरनेहारे हों सो मृत्यु के और जो बन्धुए होनेहारे हों सो बन्धुआई के और जो तलवार से कटने-१२ हारे हों सो तलवार के वश में कर दिये जाएंगे। और मैं मिस्र के देवालयों में आग लगवाऊंगा वह उन्हें फुंकवा देगा और देवताओं को बन्धुआई में ले जाएगा और जैसा कोई चरवाहा अपना वस्त्र ओढ़ता है वैसा ही वह मिस्र देश को ओढ़ेगा और वह बेखटके चला १३ जाएगा। और वह मिस्र देश के सूर्यगृह के खंभों को तुड़वा डालेगा और मिस्र के देवालयों को आग लगाकर फुंकवा देगा॥

४४. जितने यहूदी लोग मिस्र देश में मिग्दोल तहपन्हेस और नोप नगरों और पत्रोस देश में रहते थे उन के विषय २ यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा कि, इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जो विपत्ति मैं यरूशलेम और यहूदा के सब नगरों पर डाल चुका हूं वह सब तुम लोगों ने देखी है और देखो वे आज ३ के दिन कैसे उजड़े हुए और निर्जन हैं। और इस का कारण उन के निवासियों की वह बुराई है जिस के करने से उन्हों ने मुझे रिस दिलाई थी कि वे जाकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाते और उन की उपासना करते थे जिन्हें न तो तुम जानते थे और न तुम्हारे ४ पुरखा। मैं तुम्हारे पास अपने सब दास नबियों को यह कहने के लिए बड़े यत्न से[१] भेजता रहा कि यह घिनौना काम जिस से मैं घिन रखता हूं मत करो। ५ पर उन्हों ने मेरी न सुनी न मेरी और कान लगाया कि अपनी बुराई से फिरें और दूसरे देवताओं के लिये धूप ६ न जलाएं। इस कारण मेरी जलजलाहट और कोप की आग यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर भड़क[२] गई और इस से वे आज के दिन उजाड़ और सुनसान पड़े हैं। अब यहोवा सेनाओं का परमेश्वर जो ७ इस्राएल का परमेश्वर है सो यों कहता है कि तुम लोग अपनी यह बड़ी हानि क्यों करते हो कि क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बालक क्या दूधपिउवा बच्चा तुम सब यहूदा के बीच से नाश किये जाओ और कोई न रहे। क्योंकि इस ८ मिस्र देश में जहां तुम परदेशी होकर रहने के लिये आये हो तुम अपने कामों के द्वारा अर्थात् दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाकर मुझे रिस दिलाते हो जिस से तुम नाश हो जाओगे और पृथ्वी भर की सब जातियों के लोग तुम्हारी जाति की नामधराई करेंगे और तुम्हारी उपमा देकर स्राप दिया करेंगे। जो जो बुराइयां तुम्हारे ९ पुरखा और यहूदा के राजा और उन की स्त्रियां और तुम्हारी स्त्रियां वरन तुम आप यहूदा देश और यरूशलेम की सड़कों में करते थे उसे क्या तुम भूल गये हो। उन १० का मन आज के दिन लों चूर नहीं हुआ और न वे डरते हैं और न मेरी उस व्यवस्था और उन विधियों पर चलते हैं जो मैं ने तुम्हारे पितरों को और तुम को भी सुनवाई हैं। इस कारण इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों ११ कहता है कि सुनो मैं तुम्हारे विमुख होकर तुम्हारी हानि करूंगा कि सारे यहूदियों का अन्त करूं। और बचे हुए १२ यहूदियों को जो हठ करके मिस्र देश में आकर रहने लगे हैं सो सब मिट जाएंगे[३] इस मिस्र देश में छोटे से लेकर बड़े लों वे तलवार और महगी के द्वारा मरके मिट जाएंगे और लोग कोसेंगे और चकित होंगे और उन की उपमा देकर स्राप दिया और निन्दा किया करेंगे। सो जैसा मैं ने यरूशलेम को तलवार महगी और मरी १३ के द्वारा दण्ड दिया है वैसा ही मिस्र देश में रहनेहारों को भी दण्ड दूं। सो बचे हुए यहूदी जो मिस्र देश में १४ परदेशी होकर रहने के लिये आये हैं यद्यपि वे यहूदा देश में रहने के लिये लौटने की बड़ी अभिलाषा रखते हैं तौ भी उन में से एक भी बचकर वहां लौटने न पाएगा भागे हुओं को छोड़ कोई भी वहां न लौटने पाएगा॥

तब मिस्र देश के पत्रोस में रहनेहारे जितने पुरुष १५ जानते थे कि हमारी स्त्रियां दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाती हैं और जितनी स्त्रियां बड़ी मण्डली बांधे हुए पास खड़ी थीं उन सभों ने यिर्मयाह को यह उत्तर दिया कि, जो वचन तू ने यहोवा के नाम से हम को सुनाया १६ है उस को हम नहीं सुनने की। जो जो मन्नतें हम मान १७

(१) मूल में तड़के उठकर।

(२) मूल में उण्डेली।

(३) मूल में मैं उन्हें लूंगा और वे सब मिट जाएंगे।

चुके हैं उन्हें हम निश्चय पूरी करेंगी कि हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाएं और तपावन दें जैसे कि हमारे पुरखा लोग और हम भी अपने राजाओं और और हाकिमों समेत यहूदा के नगरों में और यरूशलेम की सड़कों में करती थीं क्योंकि उस समय हम पेट भरके खाते और भली चंगी रहती थीं और किसी १८ विपत्ति में न पड़ती थीं। पर जब से हम ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाना और तपावन देना छोड़ दिया तब से हम को सब वस्तुओं की घटी है और हम तलवार १९ और महंगी के द्वारा मिट चली हैं। और जब हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाती और चंद्राकार रोटियां बनाकर तपावन देती थीं तब अपने अपने पति के बिन जाने ऐसा नहीं करतीं॥

२० तब क्या स्त्री क्या पुरुष जितने लोगों ने यिर्मयाह २१ को यह उत्तर दिया उन से उस ने कहा, तुम्हारे पुरखा और तुम जो अपने राजाओं और हाकिमों और लोगों समेत यहूदा देश के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में धूप जलाते थे क्या वह यहोवा के चित्त में नहीं चढ़ा २२ था और क्या वह उस को स्मरण न रहा। सो जब यहोवा तुम्हारे बुरे कामों और सब घिनौने कामों को और सह न सका तब से तुम्हारा देश उजाड़कर निर्जन और सुनसान हो गया यहां तक कि लोग उस की उपमा देकर स्राप दिया करते हैं जैसे कि आज होता २३ है। तुम जो धूप जला कर यहोवा के विरुद्ध पाप करते और उस की न सुनते और उस की व्यवस्था और विधियों और चितौनियों के अनुसार न चलते थे इस कारण यह विपत्ति तुम पर आ पड़ी जैसे कि आज के दिन है॥

२४ फिर यिर्मयाह ने उन सब लोगों से और उन सब स्त्रियों से कहा हे सारे मिस्र देश में रहनेहारे यहूदियो २५ यहोवा का वचन सुनो। इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम और तुम्हारी स्त्रियों ने मन्नतें मानीं[१] और यह कहकर उन्हें पूरी करते हो कि हम ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाने और तपावन देने की जो जो मन्नतें मानी हैं उन्हें हम अवश्य ही पूरी करेंगे। भला अपनी अपनी मन्नतों को मानकर २६ पूरी करो। पर हे मिस्र देश में रहनेहारे सारे यहूदियो यहोवा का वचन सुनो कि मैं ने अपने बड़े नाम की किरिया खाई है कि अब सारे मिस्र देश में कोई यहूदी मनुष्य मेरा नाम लेकर फिर कभी यह कहने न पाएगा

(१) मूल में अपने अपने मुंह से कहा।

कि प्रभु यहोवा के जीवन की सोंह। सुनो अब मैं उन २७ की भलाई नहीं हानि ही की चिन्ता[२] करूंगा सो मिस्र देश में रहनेहारे सब यहूदी तलवार और महंगी के द्वारा मिटकर नाश हो जाएंगे। और जो तलवार से बचकर २८ और मिस्र देश से लौटकर यहूदा देश में पहुंचेंगे सो थोड़े ही होंगे और मिस्र देश में रहने के लिये आये हुए सब यहूदियों में से जो बचेंगे सो जान लेंगे कि किस का वचन ठहरा मेरा वा उन का। और यहोवा की यह वाणी २९ है कि मैं जो तुम को इस स्थान में दण्ड दूंगा इस बात का यह चिन्ह मैं तुम्हें देता हूं जिस से तुम जान सको कि मेरे वचन तुम्हारी हानि करने में निश्चय पूरे होंगे। यहोवा यों कहता है कि सुनो जैसा मैं ने यहूदा ३० के राजा सिदकिय्याह को उस के शत्रु अर्थात् उस के प्राण के खोजी बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में दिया वैसे ही मैं मिस्र के राजा फिरौन होप्रा को भी उस के शत्रुओं अर्थात् उस के प्राण के खोजियों के हाथ में कर दूंगा॥

४५. योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य

के चौथे बरस में जब नेरिय्याह का पुत्र बारूक यिर्मयाह नबी से नबूवत के ये वचन सुनकर पुस्तक में लिख चुका था तब उस ने उस से यह वचन कहा कि, हे २ बारूक इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है कि, तू ने तो कहा है कि हाय हाय यहोवा ने ३ मुझे दुःख पर दुःख दिया है[३] मैं कराहते कराहते हार गया और मुझे कुछ चैन नहीं मिलता। सो तू उस से ४ यों कह कि यहोवा यों कहता है कि सुन इस सारे देश में जिस को मैं ने बनाया था उसे मैं आप ढा दूंगा और जिन को मैं ने रोपा था उन को मैं आप उखाड़ूंगा। सो तू जो अपनी बड़ाई का यत्न करता है सो मत कर ५ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं सारे मनुष्यों पर विपत्ति डालूंगा पर जहां कहीं तू जाए वहां मैं तेरा प्राण बचाकर जीता रक्खूंगा[४]॥

४६. अन्यजातियों के विषय यहोवा का जो वचन यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा सो यह है॥

मिस्र के विषय मिस्र के राजा फिरौन नको की जो ६ सेना फरात महानद के तीर पर कर्कमीश में थी और बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसे योशिय्याह के

(२) मूल में जागता हुआ। (३) मेरी पीड़ा पर खेद बढ़ाया है।
(४) मूल में तेरे प्राण को लूट समझकर तुझे दूंगा।

पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे बरस
३ में मार लिया उस सेना के विषय, ढालें और फरियां
४ तैयार करके लड़ने को निकट आओ। घोड़ों को जुत-
वाओ और हे सवारो घोड़ों पर चढ़कर टोप पहिने हुए
खड़े हो जाओ भालों को पैना करो झिलमों को पहिन
५ लो। मैं ने इसे क्यों देखा है वे विस्मित होकर पीछे
हट गये और उन के शूरवीर गिराये गये और उतावली
करके भाग गये और पीछे देखते भी नहीं यहोवा की
६ यह वाणी है कि चारों ओर भय ही भय है। न वेग
चलनेहारे भागने और न वीर बचने पाए क्योंकि उत्तर
की दिशा में फरात महानद के तीर पर वे सब ठोकर
७ खाकर गिर पड़े। यह कौन है जो नील नदी की नाईं
जिस का जल महानदों का सा उछलता है बढ़ा आता
८ है। मिस्र नील नदी की नाईं बढ़ता है और उस का जल
महानदों का सा उछलता है वह कहता है मैं चढ़कर
पृथिवी को भर दूंगा मैं निवासियों समेत नगर नगर को
९ नाश करूंगा। हे मिस्री सवारो चढ़ो हे रथियो बहुत ही
वेग से चलाओ हे ढाल पकड़नेहारे कूशी और पूती
१० वीरो हे धनुर्धारी लूदियो चले आओ। और वह दिन
सेनाओं के यहोवा प्रभु के पलटा लेने का दिन होगा
जिस में वह अपने द्रोहियों से पलटा लेगा सो तलवार
खाकर तृप्त और उन का लोहू पीकर छक जाएगी क्योंकि
उत्तर के देश में फरात महानद के तीर पर सेनाओं के
११ यहोवा प्रभु का यज्ञ है। हे मिस्र की कुमारी कन्या
गिलाद को जाकर बलसान औषधि ले पर तू व्यर्थ ही
बहुत इलाज करती है क्योंकि तू चंगी होने की नहीं।
१२ सब जाति के लोगों ने सुना है कि तू नीच हो गई और
पृथिवी तेरी चिल्लाहट से भर गई वीर से वीर ठोकर
खाकर गिर पड़े वे दोनों एक संग गिर गये हैं॥

१३ यहोवा ने यिर्मयाह नबी से इस विषय कि
बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर क्योंकर आकर मिस्र
१४ देश को मार लेगा यह वचन भी कहा कि, मिस्र में
वर्णन करो और मिग्दोल में सुनाओ और नोप और
तहपन्हेस में सुनाकर यह कहो कि खड़ा होकर तैयार
हो जा क्योंकि तेरे चारों ओर सब कुछ तलवार खा
१५ गई है। तेरे बलवन्त जन क्यों विलाय गये हैं यहोवा
१६ ने उन्हें ढकेल दिया इस से वे खड़े न रह सके। उस ने
बहुतों को ठोकर खिलाई सो ये एक दूसरे पर गिर पड़े
तब कहने लगे चलो हम कराल[१] तलवार के डर के
मारे अपने अपने लोगों और अपनी अपनी जन्म-भूमि
में फिर जाएं। वहां वे पुकारके कहते हैं कि मिस्र का १७
राजा फिरौन हौरा ही हौरा है उस ने अपना अवसर खो
दिया है। राजाधिराज जिस का नाम सेनाओं का १८
यहोवा है उस की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सों
कि वह ऐसा आएगा जैसा ताबोर और और पहाड़ों से
और कर्मेल समुद्र पर से ऊंचा पड़ता है। हे मिस्र के रहने- १९
हारी[२] बंधुआई के योग्य सामान तैयार कर रख क्योंकि
नोप नगर उजाड़ और ऐसा भस्म हो जाएगा कि उस
में कोई न रहेगा। मिस्र बहुत ही सुन्दर बछिया तो है २०
पर उत्तर दिशा से नाश चला आता है वह आ भी
चुका है। और उस के जो सिपाही किराये में आये हैं सो २१
इस बात में पोसे हुए बछड़ों के समान हैं कि उन्हों ने
मुंह मोड़ा और एक संग भाग गये और खड़े नहीं रहे
क्योंकि उन की विपत्ति का दिन और दण्ड पाने का
समय आ गया। उस की आहट सर्प के भागने की २२
सी होगी। क्योंकि वे वृक्षों के काटनेहारों की सेना और
कुल्हाड़ियां लिये हुए उस के विरुद्ध आएंगे। यहोवा की २३
यह वाणी है कि चाहे उस का वन बहुत ही घना भी हो
पर वे उस को काट डालेंगे क्योंकि वे टिड्डियों से भी
अधिक अनगिनित हैं। मिस्री कन्या की आशा टूटेगी २४
क्योंकि वह उत्तर दिशा के लोगों के वश में कर दी
जाएगी। इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा २५
कहता है कि सुनो मैं तो नगरवासी आमोन और
फिरौन राजा उस के सब देवताओं और राजाओं समेत
मिस्र को और फिरौन को उन समेत जो उस पर भरोसा
रखते हैं दण्ड देने पर हूं, और मैं उन को बाबेल के २६
राजा नबूकदनेस्सर और उस के कर्मचारियों को जो उन
के प्राण के खोजी हैं उन के वश में कर दूंगा।
और उस के पीछे वह प्राचीन काल की नाईं फिर
बसाया जाएगा यहोवा की यह वाणी है। पर हे २७
मेरे दास याकूब तू मत डर और हे इस्राएल
विस्मित न हो क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंश को
बंधुआई के दूर देश से छुड़ा ले आऊंगा सो याकूब
लौटकर चैन और सुख से रहेगा और कोई उसे
डराने न पाएगा। हे मेरे दास याकूब यहोवा की २८
यह वाणी है कि तू मत डर क्योंकि मैं तेरे संग
हूं और यद्यपि उन सब जातियों का जिन में मैं
तुझे बरबस कर दूंगा अन्त कर डालूंगा पर तेरा अन्त न
करूंगा तेरी ताड़ना मैं विचार करके करूंगा और तुझे
किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊंगा॥

(१) मूल में अंधेर करनेहारी।

(२) मूल में मिस्र की रहनेहारी कन्या।

४७. फ़िरौन के अज्जा नगर को मार लेने से पहिले यिर्मयाह नबी के पास पलिश्तियों के विषय यहोवा का यह वचन २ पहुंचा कि, यहोवा यों कहता है कि देखो उत्तर दिशा से उमण्डनेहारी नदी देश को उस सब समेत जो उस में है और निवासियों समेत नगर को डुबो लेगी तब मनुष्य चिल्लाएंगे बरन देश के सब रहनेहारे हाय हाय ३ करेंगे। शत्रुओं के बलवन्त घोड़ों की टाप और रथों के वेग चलने और उन के पहियों के चलने का कोलाहल सुनकर बाप के हाथ पांव ऐसे ढीले पड़ जाएंगे कि मुंह ४ मोड़कर अपने लड़कों को भी न देखेगा। क्योंकि सब पलिश्तियों के नाश होने का दिन आता है और सोर और सीदोन के सब बचे हुए सहायक मिट जाएंगे क्योंकि यहोवा पलिश्तियों को जो कप्तोर नाम समुद्र तीर के बचे हुए रहनेहारे हैं उन को नाश करने पर है। ५ अज्जा के लोग सिर मुड़ाये हैं अश्कलोन जो पलिश्तियों के नीचान में अकेला रह गया है सो भी मिटाया गया है तू कब लों अपनी देह चीरता रहेगा॥

६ हाय यहोवा की तलवार तू कब लों कल न पकड़ेगी अपने मियान में घुस जा शांत हो और थमी रह। ७ हाय तू क्योंकर थम सकती क्योंकि यहोवा ने तुझ को आज्ञा दी और अश्कलोन और समुद्रतीर के विरुद्ध ठहराया है॥

४८. मोआब के विषय इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि नबो पर हाय क्योंकि वह नाश हो गया किर्यातैम की आशा टूटी है वह ले लिया गया २ है ऊंचा गढ़ निराश और बिस्मित हो गया है। मोआब की प्रशंसा जाती रही हेशबोन में उस की हानि की कल्पना की गई है कि आओ हम उस को ऐसा नाश करें कि राज्य न रहे। हे मदमेन तू सुनसान हो जाएगा ३ तलवार तेरे पीछे पड़ेगी। होरोनैम से चिल्लाहट का शब्द नाश और बड़े दुःख का शब्द सुनाई देता है। ४ मोआब का सत्यानाश हो रहा है उस के नन्हे बच्चों की ५ चिल्लाहट सुन पड़ी। लूहीत की चढ़ाई में लोग लगातार रोते हुए चढ़ेंगे और होरोनैम की उतार में नाश ६ की चिल्लाहट का संकट हुआ[१] है। भागकर अपना अपना प्राण बचाओ और उस अधमूए पेड़ के समान ७ हो जाओ जो जङ्गल में होता है। क्योंकि तू जो अपने कामों और भण्डारों पर भरोसा रखता है इस कारण तू पकड़ा जाएगा और कमोश देवता भी अपने याजकों और हाकिमों समेत बन्धुआई में जाएगा। और यहोवा ८ के वचन के अनुसार नाश करनेहारे तुम्हारे एक एक नगर पर चढ़ाई करेंगे और तुम्हारा कोई नगर न बचेगा और नीचानवाले और पहाड़ पर की चौरस भूमिवाले दोनों नाश किये जाएंगे। मोआब को पंख दे कि वह ९ उड़कर दूर हो जाए क्योंकि उस के नगर यहां लों उजाड़ हो जाएंगे कि उन में कोई न रह जाएगा। जो कोई १० यहोवा का काम आलस्य से करे और जो अपनी तलवार लोहू बहाने से रोक रक्खे सो स्रापित हो। मोआब बचपन ही से सुखी है अपनी तलछट पर बैठ ११ गया है वह न एक बरतन से दूसरे बरतन में उण्डेला गया न बन्धुआई में गया इसलिये उस का स्वाद उस में रहा और उस की गन्ध ज्यों की त्यों बनी रही है। इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आएंगे १२ कि मैं लोगों को उस के उण्डेलने के लिये भेजूंगा और वे उस को उण्डेलेंगे जिन घड़ों में वह रक्खा हुआ है उन को छूछे करके फोड़ डालेंगे। और जैसा इस्राएल १३ के घराने को बेतेल से जिस पर वे भरोसा रखते थे लज्जित होना पड़ा वैसा ही मोआबी लोग कमोश से लजाएंगे। तुम क्योंकर कह सकते हो कि हम तो वीर १४ और पराक्रमी योद्धा हैं। मोआब तो नाश हुआ और १५ उस के नगर भस्म हो गये और उस के चुने हुए जवान घात होने को उतर गये राजाधिराज की जिस का नाम सेनाओं का यहोवा है यही वाणी है। मोआब की १६ विपत्ति निकट आ गई और उस का संकट में पड़ने का दिन बहुत ही वेग से आता है। हे उस के आस पास १७ के सब रहनेहारो हे उस की कीर्त्ति के सब जाननेहारो उस के लिये विलाप करो कहो हाय वह मजबूत सोंटा और सुन्दर छड़ी क्या ही टूट गई है। हे दीबोन की १८ रहनेहारी अपना विभव छोड़कर प्यासी बैठी रह क्योंकि मोआब के नाश करनेहारे ने तुझ पर चढ़ाई करके तेरे दृढ़ गढ़ों को नाश किया है। हे अरोएर की १९ रहनेहारी[२] मार्ग में खड़ी होकर ताकती रह उस से जो भागता है और उस से जो बच निकलती है पूछ कि क्या हुआ है। मोआब की आशा टूटेगी वह विस्मित २० हो गया सो हाय हाय करो और चिल्लाओ अर्नोन में भी यह बताओ कि मोआब नाश हुआ है। और चौरस २१ भूमि के देश में होलोन यहसा मेपात, दीबोन नबो २२

(१) मूल में सुना गया।

(२) मूल में दीबोन की रहनेहारी बेटी।

२३, २४ बेतदिबलातैम, किर्य्यातैम बेतगामूल, बेतमोन, करिय्योत बोस्रा निदान क्या दूर क्या निकट मोआब देश के २५ सारे नगरों में दण्ड की आज्ञा पूरी हुई। यहोवा की यह वाणी है कि मोआब का सींग कट गया और भुजा २६ टूट गई है। उस को मतवाला करो क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है सो मोआब अपनी २७ छांट में लोटेगा और ठट्ठों में उड़ाया जाएगा। क्या तू ने भी इस्राएल को ठट्ठों में नहीं उड़ाया क्या वह चोरों के बीच पकड़ा गया कि तू जब जब उस की चर्चा २८ करता तब तब तू सिर हिलाता है। हे मोआब के रहनेहारो अपने अपने नगर को छोड़कर ढांग की दरार में बसो और उस पिण्डुकी के समान हो जो गुफा के २९ मुंह की एक ओर घोंसला बनाती हो। हम ने मोआब के गर्व्व के विषय सुना है कि वह अत्यन्त गर्व्वी है उस का अहंकार और गर्व्व और अभिमान और उस का ३० मन फूलना प्रसिद्ध है। यहोवा की यह वाणी है कि मैं उस के रोष को भी जानता हूं कि वह व्यर्थ ही है उस के बड़े बोल से कुछ बन न पड़ा॥

३१ इस कारण मैं मोआबियों के लिये हाय हाय करूंगा मैं सारे मोआबियों के लिये चिल्लाऊंगा कीहेरेस के लोग। ३२ के लिये विलाप किया जाएगा। हे सिबमा की दाखलता मैं तुम्हारे लिये याजेर से भी अधिक विलाप करूंगा तेरी डालियां तो ताल के पार बढ़ गईं बरन याजेर के ताल लों भी पहुंची थीं पर नाश करनेहारा तेरे धूपकाल के फलों पर और तोड़ी हुई दाखों पर भी टूट ३३ पड़ा है। और फलवाली बारियों और मोआब के देश से आनन्द और मगन होना उठ गया है और मैं ने ऐसा किया कि दाखरस के कुण्डों में दाखमधु कुछ न रह गया लोग फिर दाख ललकारते हुए न रौंदेंगे जो ३४ ललकार होनेवाली है सो होगी नहीं। हेशबोन की चिल्लाहट सुनकर लोग एलाले लों और यहस लों भी और सोआर से होरोनैम और एग्लतशलीशिया लों भी चिल्लाते हुए भागे चले गये हैं और निम्रीम का ३५ जल भी सूख गया है। फिर यहोवा की यह वाणी है कि मैं ऊंचे स्थान पर चढ़ावा चढ़ाना और देवताओं के लिये धूप जलाना दोनों मोआब में बन्द कर दूंगा। ३६ इस कारण मेरा मन मोआब और कीहेरेस के लोगों के लिये रो रोकर बांसुली सा आलापता है क्योंकि जो कुछ उन्हों ने कमाकर बचाया है सो नाश हो गया है। ३७ क्योंकि सब के सिर मूंड़े गये और सब की डाढ़ियां नोची गईं सब के हाथ चीरे हुए और सब की कमरों में टाट ३८ बन्धा हुआ है। मोआब के सब घरों की छतों पर और सब चौकों में रोना पीटना हो रहा है क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने मोआब को तुच्छ बरतन की नाईं तोड़ डाला है। ३९ मोआब कैसे विस्मित हो गया हाय हाय करो क्योंकि उस ने कैसे लज्जित होकर पीठ फेरी है इस प्रकार मोआब के चारों ओर के सब रहनेहारे उस से ठट्ठा करेंगे और विस्मित हो जाएंगे। ४० क्योंकि यहोवा यों कहता है कि देखो वह उकाब सा उड़ेगा मोआब के ऊपर अपने पंख फैलाएगा। ४१ करिय्योत ले लिया गया और गढ़वाले नगर दूसरों के वश में पड़ गये और उस दिन मोआबी वीरों के मन जननेहारी स्त्री के से हो जाएंगे। ४२ और मोआब ऐसा तित्तर बित्तर हो जाएगा कि उस का दल टूट जाएगा क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है। ४३ यहोवा की यह वाणी है कि हे मोआब के रहनेहारे तेरे लिये भय और गड़हा और फन्दा ठहराये गये हैं। ४४ जो कोई भय से भागे सो गड़हे में गिरेगा और जो कोई गड़हे में से निकले सो फन्दे में फंसेगा क्योंकि मैं मोआब के दण्ड का दिन उस पर ले आऊंगा यहोवा की यही वाणी है। ४५ जो भागे हुए हैं सो हेशबोन में शरण लेकर खड़े हो गये हैं पर हेशबोन से आग और सीहोन के बीच से लौ निकली जिस से मोआब देश के कोने और बलवैयों के चोण्डे भस्म हो गये हैं। ४६ हे मोआब तुझ पर हाय कमोश की प्रजा नाश हो गई क्योंकि तेरे स्त्री पुरुष दोनों बन्धुआई में गये हैं। ४७ तौभी यहोवा की यह वाणी है कि अन्त के दिनों में मैं मोआब को बन्धुआई से लौटा ले आऊंगा। मोआब के दण्ड का वचन यहीं लों वर्णन हुआ॥

४९. अम्मोनियों के विषय यहोवा यों कहता है कि क्या इस्राएल

के पुत्र नहीं हैं क्या उस का कोई वारिस नहीं रहा फिर मल्काम क्यों गाद के देश का अधिकारी होने पाया और उस की प्रजा क्यों उस के नगरों में बसने पाई है। २ यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि मैं अम्मोनियों के रब्बा नाम नगर के विरुद्ध युद्ध की ललकार सुनवाऊंगा और वह उजड़कर डीह हो जाएगा और उस की बस्तियां[१] फूंक दी जाएंगी तब जिन लोगों ने इस्राएलियों के देश को अपना लिया है उन के देश को इस्राएली अपना लेंगे यहोवा का यही वचन है। ३ हे हेशबोन हाय हाय कर क्योंकि ऐ नगर नाश हो गया है रब्बा की बेटियो चिल्लाओ और कमर में टाट

(१) मूल में बेटियां।

बांधो छाती पीटती हुई बाड़ों में इधर उधर दौड़ो क्योंकि मल्काम अपने याजकों और हाकिमों समेत बन्धुआई ४ में जाएगा। हे संग छोड़नेहारी जाति[१] तू अपने देश की तराइयों पर विशेष करके अपनी बहुत ही उपजाऊ तराई पर क्यों फूलती है तू क्यों यह कहकर अपने रक्खे हुए धन पर भरोसा रखती है कि मेरे विरुद्ध कौन ५ चढ़ाई कर सकेगा। प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि सुन मैं तेरे चारों ओर के सब रहनेहारों की तरफ से तेरे मन में भय उपजाने पर हूं और तेरे लोग अपने अपने साम्हने की ओर धकिया दिये जाएंगे और जब वे मारे मारे फिरेंगे तब कोई उन्हें इकट्ठे न ६ करेगा। पर उस के पीछे मैं अम्मोनियों को बन्धुआई से लौटा लाऊंगा यहोवा की यही वाणी है॥

७ एदोम के विषय सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि क्या तेमान में अब कुछ बुद्धि नहीं रही क्या वहां के ज्ञानियों की युक्ति निष्फल हो गई क्या उन की बुद्धि ८ जाती रही है। हे ददान के रहनेहारो भागो लौट जाओ वहां छिपकर बसो क्योंकि जब मैं एसाव को दण्ड देने ९ लगूं तब उस पर भारी विपत्ति पड़ेगी। यदि दाख के तोड़नेहारे तेरे पास आते तो क्या वे कहीं कहीं दाख न छोड़ जाते और यदि चोर रात को आते तो क्या वे १० जितना चाहते उतना धन लूटकर ले न जाते। क्योंकि मैं ने एसाव को उघारा मैं ने उस के छिपने के स्थानों को प्रगट किया यहां लों कि वह छिप न सका उस के वंश और भाई और पड़ोसी सब नाश हो गये और वह ११ जाता रहा है। अपने बपमूए बालकों को छोड़ जाओ मैं उन को जिलाऊंगा और तुम्हारी विधवाएं मुझ पर १२ भरोसा रक्खें। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि देखो जो इस के योग्य न थे कि कटोरे में से पीएं उन को तो निश्चय पीना पड़ेगा फिर क्या तू किसी प्रकार से निर्दोष ठहरके बचेगा तू निर्दोष ठहरके न बचेगा १३ अवश्य ही पीना पड़ेगा। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने अपनी किरिया खाई है कि बोस्रा ऐसा उजड़ जाएगा कि लोग चकित होंगे और उस की उपमा देकर निन्दा किया और स्राप दिया करेंगे और उस के सारे गांव सदा के लिये उजाड़ हो जाएंगे॥

१४ मैं ने यहोवा की ओर से समाचार सुना है बरन जाति जाति में यह कहने को एक दूत भेजा गया है कि इकट्ठे होकर एदोम पर चढ़ाई करो और उस से लड़ने को उठो॥

१५ मैं ने तुझे जातियों में छोटी और मनुष्यों में १६ तुच्छ कर दिया है। हे ढांग की दरारों में बसे हुए हे पहाड़ी की चोटी पर कोट बनानेवाले[२] तेरे भयानक रूप और मन के अभिमान ने तुझे धोखा दिया है चाहे तू उकाब की नाईं अपना बसेरा ऊंचे स्थान पर बनाये तौभी मैं वहां से तुझे उतार लाऊंगा यहोवा की यही १७ वाणी है। एदोम यहां लों उजाड़ होगा कि जो कोई उस के पास से चले सो चकित होगा और उस के सारे १८ दुखों पर ताली बजाएगा। यहोवा का यह वचन है कि सदोम और अमोरा और उन के आस पास के नगरों के उलट जाने में उन की जैसी दशा हुई थी वैसी ही होगी वहां न कोई मनुष्य रहेगा और न कोई १९ आदमी उस में टिकेगा। देखो वह सिंह की नाईं यर्दन के आस पास के घने जंगल से[३] सदा की चराई पर चढ़ेगा और मैं उन को उस के साम्हने से झट भगा दूंगा तब जिस को मैं चुन लूं उस को उन पर अधिकारी ठहराऊंगा देखो मेरे तुल्य कौन है और कौन मुझ पर मुकद्दमा चलाएगा और वह चरवाहा कहां है जो मेरा २० साम्हना कर सकेगा[४]। सो सुनो यहोवा ने एदोम के विरुद्ध क्या युक्ति की है और तेमान के रहनेहारों के विरुद्ध कौन सी कल्पना की है निश्चय वह भेड़ बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा निश्चय वह चराई २१ को भेड़ बकरियों से खाली कर देगा। उन के गिरने के शब्द से पृथिवी कांप उठती और ऐसी चिल्लाहट मचती २२ जो लाल समुद्र लों सुन पड़ती है। देखो वह उकाब की नाईं निकलकर उड़ आएगा और बोस्रा पर अपने पंख फैलाएगा और उस दिन एदोमी शूरवीरों का मन जननेहारी स्त्री का सा हो जायगा॥

२३ दमिश्क के विषय। हमात और अर्पद की आशा टूटी है क्योंकि उन्हों ने बुरा समाचार सुना है वे गल गये हैं २४ समुद्र पर चिन्ता है वह शान्त नहीं हो सकता। दमिश्क बलहीन होकर भागने को फिरती है पर कंपकंपी ने उसे २५ पकड़ा जननेहारी की सी पीड़ें उस को उठी हैं। हाय वह नगर वह प्रशंसा योग्य पुरी जो मेरे हर्ष का कारण है २६ सो क्यों छोड़ा न जाएगा। सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस में के जवान चौकों में गिराये जाएंगे २७ और सब योद्धाओं का बोलना बन्द हो जाएगा। और मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग लगाऊंगा जिस से बेन्हदद के राजभवन भस्म हो जाएंगे॥

---

(१) मूल में संग छोड़नेहारी बेटी।

(२) मूल में चोटी का पकड़नेहारा। (३) मूल में यर्दन की बढ़ाई से। (४) मूल में कौन मेरे लिये समय ठहराएगा।

२८ केदार के विषय और हासोर के राज्यों के विषय जिन्हें बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने मार लिया यहोवा यों कहता है कि उठकर केदार पर चढ़ाई करो
२९ और पूरबियों को नाश करो। वे उन के डेरे और भेड़ बकरियां ले जाएंगे उन के तंबू और सब बरतन उठाकर ऊंटों को भी हांक ले जाएंगे और उन लोगों से पुकारके
३० कहेंगे कि चारों ओर भय ही भय है। यहोवा की यह वाणी है कि हे हासोर के रहनेहारो भागो दूर दूर मारे मारे फिरो कहीं जाकर छिपके बसो क्योंकि बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे विरुद्ध युक्ति और कल्पना
३१ की है। यहोवा की यह वाणी है कि उठकर उस चैन से रहनेहारी जाति के लोगों पर चढ़ाई करो जो निडर रहते हैं और बिना किवाड़ और बेण्डे यों ही बसे हुए
३२ हैं। उन के ऊंट और अनगिनित गाय बैल और भेड़ बकरियां लूट में जाएंगी क्योंकि मैं उन को गाल के बाल मुंड़ानेहारों को उड़ाकर सब दिशाओं[१] में तित्तर बित्तर करूंगा और चारों ओर से उन पर विपत्ति लाकर डालूंगा
३३ यहोवा की यह वाणी है। और हासोर गीदड़ों का वास-स्थान और सदा के लिये उजाड़ होगा न कोई मनुष्य वहां रहेगा और न कोई आदमी उस में टिकेगा॥

३४ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के आदि में यहोवा का यह वचन यिर्मयाह नबी के पास एलाम के
३५ विषय पहुंचा कि, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं एलाम के धनुष को जो उन के पराक्रम का
३६ मुख्य कारण है तोड़ूंगा। और मैं आकाश के चारों ओर से वायु बहाकर उन्हें चारों दिशाओं[१] की ओर तित्तर बित्तर करूंगा यहां लों कि ऐसी कोई जाति न रहेगी
३७ जिस में भागते हुए एलामी न आएं। और मैं एलाम को उन के शत्रुओं और उन के प्राण के खोजियों के साम्हने विस्मित करूंगा और उन पर अपना कोप भड़काकर विपत्ति डालूंगा और यहोवा की यह वाणी है कि मैं तलवार को उन के पीछे चलवाते चलवाते उन
३८ का अन्त कर डालूंगा। और मैं एलाम में अपना सिंहासन रखकर उन के राजा और हाकिमों को नाश
३९ करूंगा यहोवा की यही वाणी है। और यहोवा की यह भी वाणी है कि अन्त के दिनों में मैं एलाम को बन्धुआई से लौटा ले आऊंगा॥

५०. बाबेल और कसदियों के देश के विषय यहोवा ने

२ यिर्मयाह नबी के द्वारा यह वचन कहा कि, जातियों में बताओ और सुनाओ और झण्डा खड़ा करो सुनाओ मत छिपाओ कि बाबेल ले लिया गया बेल का मुंह काला हो गया मरोदक विस्मित हो गया बाबेल की प्रतिमाएं लज्जित हुईं और उस की बेडौल मूरतें विस्मित हो
३ गईं। क्योंकि उत्तर दिशा से एक जाति उस पर चढ़ाई करके उस के देश को उजाड़ यहां लों कर देगी कि क्या मनुष्य क्या पशु उस में कोई भी न रह जाएगा सब
४ भागकर चले जाएंगे। यहोवा की यह वाणी है कि उन दिनों में इस्राएली और यहूदा एक संग आएंगे वे रोते हुए अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढने के लिये चले
५ आएंगे। वे सिय्योन की ओर मुंह किये हुए उस का मार्ग पूछते और आपस में यह कहते आएंगे कि आओ हम यहोवा के साथ ऐसी वाचा बान्धकर जो कभी बिसर न जाए सदा ठहरी रहे उस से मिल जाएं॥

६ मेरी प्रजा खोई हुई भेड़ें हैं उन के चरवाहों ने उन को भटका दिया और पहाड़ों पर फिराया है वे पहाड़ पहाड़ और पहाड़ी पहाड़ी घूमते घूमते अपने बैठने के
७ स्थान को भूल गई हैं। जितनों ने उन्हें पाया सो उन को खा गये और उन के सतानेहारों ने कहा इस में हमारा कुछ दोष नहीं क्योंकि यहोवा जो धर्म्म का आधार है और उन के पितरों का आश्रय था उस के
८ विरुद्ध उन्हों ने पाप किया है। बाबेल के बीच में से भागो कसदियों के देश से जैसे बकरे भेड़ बकरियों के
९ अगुवे होते हैं वैसे निकल आओ। क्योंकि देखो मैं उत्तर के देश से बड़ी जातियों को उभारके उन की मण्डली बाबेल पर चढ़ा ले आऊंगा और वे उस के विरुद्ध पांति बांधेंगे उसी दिशा से वह ले लिया जाएगा उन के तीर चतुर वीर के से होंगे उन में से कोई अकारथ न
१० जाएगा। और कसदियों का देश ऐसा लुटेगा कि सब
११ लूटनेहारों का पेट भरेगा यहोवा की यह वाणी है। हे मेरे भाग के लूटनेहारो तुम जो मेरी प्रजा पर आनन्द करते और हुलसते हो और घास चरनेहारी बछिया की नाईं उछलते और बलवन्त घोड़ों के समान हिनहिनाते
१२ हो, इस कारण तुम्हारी माता की आशा टूटेगी तुम्हारी जननी का मुंह काला होगा क्योंकि वह सब जातियों में से नीच होगी वह जंगल और मरु और निर्जल देश हो जाएगी।
१३ यहोवा के क्रोध के कारण वह देश बसा न रहेगा वह उजाड़ ही उजाड़ होगा जो कोई बाबेल के पास से चले सो चकित होगा और उस के सब दुःख देखकर ताली
१४ बजाएगा। हे सब धनुर्धारियो बाबेल के चारों ओर उस के विरुद्ध पांति बांधो उस पर तीर चलाओ उन्हें रख मत
१५ छोड़ो क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। चारों

(१) मूल में वायुओं।

ओर से उस पर ललकारो उस ने हार मानी उस के कोट गिराये और शहरपनाह ढाई गई क्योंकि यहोवा उस से अपना पलटा लेने पर है सो तुम भी उस से अपना अपना पलटा लो जैसा उस ने किया है वैसा ही तुम भी उस से करो। १६ बाबेल में से बोनेहारा और काटनेहारा दोनों को नाश करो वे दुखदाई तलवार के डर के मारे अपने अपने लोगों की ओर फिरें और अपने अपने देश को भाग जाएं॥

१७ इस्राएल भगाई हुई भेड़ है सिंहों ने उस को भगा दिया है पहिले तो अश्शूर के इस राजा ने उस को खा डाला और पीछे बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने उस की हड्डियों को तोड़ दिया है। १८ इस कारण इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो जैसे मैं ने अश्शूर के राजा को दण्ड दिया था वैसे ही अब देश समेत बाबेल के राजा को दण्ड दूंगा। १९ और मैं इस्राएल को उस की चराई में फेर लाऊंगा और वह कर्म्मेल और बाशान में फिर चरेगा और एप्रैम के पहाड़ों पर २० और गिलाद में फिर पेट भर खाने पाएगा। यहोवा की यह वाणी है कि उन दिनों में[1] एस्राएल का अधर्म्म ढूंढ़ने पर भी पाया न जाएगा और यहूदा के पाप खोजने पर भी न मिलेंगे क्योंकि जिन को मैं बचा रक्खूंगा उन का पाप भी क्षमा करूंगा॥

२१ तू मरातैम[2] देश और पकोद[3] नगर के निवासियों पर चढ़ाई कर मनुष्यों को तो मार डाल और धन का सत्यानाश कर[4] यहोवा की यह वाणी है कि जो जो २२ आज्ञा मैं तुझे देता हूं उन सभों के अनुसार कर। सुनो उस देश में युद्ध और सत्यानाश का सा शब्द हो रहा २३ है। जो हथौड़ा सारी पृथिवी के लोगों को चूर चूर करता था सो कैसा काट डाला गया है बाबेल सब जातियों के २४ बीच में कैसा उजाड़ हो गया है। हे बाबेल मैं ने तेरे लिये फन्दा लगाया और तू अनजाने उस में फंस भी गया तू ढूंढ़कर पकड़ा गया है क्योंकि तू यहोवा से झगड़ा २५ करता था। प्रभु सेनाओं के यहोवा ने शस्त्रों का अपना घर खोलकर अपने क्रोध प्रगट करने का सामान निकाला है क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा के कसदियों के देश में २६ एक काम करना है। पृथिवी की छोर से आओ और उस के बखरियों को खोलो उस को ढेर ही ढेर बना दो और सत्यानाश करो कि उस में का कुछ भी बचा न रहे। २७ उस में के सब बैलों को नाश करो वे घात होने के स्थान में उतर जाएं उन पर हाय क्योंकि उन के दण्ड पाने का दिन आ पहुंचा है। २८ सुनो बाबेल के देश में से भागनेहारों का सा बोल सुन पड़ता है जो सिय्योन में यह समाचार देने को दौड़े आते हैं कि हमारा परमेश्वर यहोवा अपने मन्दिर का पलटा ले रहा है। २९ बहुत से बरन सब धनुर्धारियों को बाबेल के विरुद्ध इकट्ठे करो उस की चारों ओर छावनी डालो उस का कोई भागकर निकलने न पाए उस के काम का बदला उसे देओ जैसा उस ने किया है ठीक वैसा ही उस के साथ करो क्योंकि उस ने यहोवा इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध अभिमान किया है। ३० इस कारण उस में के जवान चौकों में गिराये जाएंगे और सब योद्धाओं का बोल बन्द हो जाएगा यहोवा की यही वाणी है। ३१ प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि हे अभिमानी मैं तेरे विरुद्ध हूं और तेरे दण्ड पाने का दिन आ गया है। ३२ सो अभिमानी ठोकर खाकर गिरेगा और कोई उसे फिर न उठाएगा और मैं उस के नगरों में आग लगाऊंगा और उस से उस के चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा॥

३३ सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि इस्राएल और यहूदा दोनों बराबर पिसे हुए हैं और जितनों ने उन को बन्धुआ किया सो तो उन्हें पकड़े रहते हैं और जाने नहीं देते। ३४ उन का छुड़ानेहारा सामर्थी है सेनाओं का यहोवा यही उस का नाम है वह उन का मुकद्दमा भली भांति लड़ेगा इसलिये कि वह पृथिवी को चैन देकर बाबेल के निवासियों को व्याकुल करे। ३५ यहोवा की यह वाणी है कि कसदियों और बाबेल के हाकिम पण्डित आदि सब निवासियों पर तलवार चलेगी। ३६ उन बड़ा बोल बोलनेहारों पर तलवार चलेगी और वे मूर्ख बनेंगे उस के शूरवीरों पर भी तलवार चलेगी और वे विस्मित हो जाएंगे। ३७ उस में के सवारों और रथियों[5] पर और सब मिले जुले लोगों पर तलवार चलेगी और वे स्त्री बन जाएंगे। उस के भण्डारों पर तलवार चलेगी और वे लुट जाएंगे। ३८ उस के जलाशयों पर सूखा पड़ेगा और वे सूख जाएंगे क्योंकि वह खुदी हुई मूरतों से भरा हुआ देश है और वे अपनी भयानक प्रतिमाओं पर बावले हैं। ३९ इसलिये निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिल कर वहां बसेंगे और शुतुर्मुर्ग उस में वास करेंगे और वह फिर सदा लों बसाया न जाएगा न उस में युग युग लों कोई वास करेगा। ४० यहोवा की यह वाणी है कि सदोम और अमोरा और उन के आस पास के नगरों की जैसी दशा परमेश्वर के उलट देने से हुई थी वैसी

(१) मूल में उन दिनों और उस समय में।
(२) अर्थात् अत्यन्त बलवैये। (३) अर्थात दण्डयोग्य। (४) मूल में मार डाल और उन के पीछे हरम कर।
(५) मूल में घोड़ों और रथों।

ही बाबेल की भी होगी यहां लों कि न कोई मनुष्य उस
४१ में रहेगा और न कोई आदमी उस में टिकेगा। सुनो
उत्तर दिशा से एक देश के लोग आते हैं और पृथिवी
की छोर से एक बड़ी जाति और बहुत से राजा उठकर
४२ लड़ाई करेंगे। वे धनुष और बर्छी पकड़े हुए हैं वे क्रूर
और निर्दय हैं वे समुद्र की नाईं गरजेंगे और घोड़ों पर
चढ़े हुए तुझ बाबेल की बेटी के विरुद्ध पांति बांधे युद्ध
४३ करनेहारे की नाईं आएंगे। उन का समाचार सुनते ही
बाबेल के राजा के हाथ पांव ढीले पड़ जाते हैं और
४४ उस को जननेहारी की सी पीड़ें उठीं। सुनो सिंह की
नाईं जो यर्दन[1] के आस पास के घने जंगल में सदा
की चराई पर चढ़े मैं उन को उस के साम्हने से झट
भगा दूंगा तब जिस को मैं चुन लूं उस को उन पर
अधिकारी ठहराऊंगा देखो मेरे तुल्य कौन है और कौन
मुझ पर मुकद्दमा चलाएगा[2] और वह चरवाहा कहां है
४५ जो मेरा साम्हना कर सकेगा। सो सुनो कि यहोवा ने
बाबेल के विरुद्ध क्या युक्ति की है और कसदियों के
देश के विरुद्ध कौन सी कल्पना की है निश्चय वह भेड़
बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा निश्चय वह
सिंह चराइयों को भेड़ बकरियों से खाली कर देगा।
४६ बाबेल के ले लिये जाने के शब्द से पृथिवी कांप उठती
और उस की चिल्लाहट जातियों में सुन पड़ती है॥

५१. यहोवा

यों कहता है कि मैं बाबेल के और लेबकामै[3] के रहनेहारों के विरुद्ध एक नाश करनेहारी वायु चलाऊंगा।
२ और मैं बाबेल के पास ऐसे लोगों को भेजूंगा जो उस
को फटक फटककर उड़ा देंगे और इस रीति उस के देश
को सुनसान करेंगे और विपत्ति के दिन चारों ओर से
३ उस के विरुद्ध होंगे। धनुर्धारी के विरुद्ध धनुर्धारी धनुष
चढ़ाए और अपना जो झिलम पहिने उठे उस के जवानों
से कुछ कोमलता न करना उसकी सारी सेना का
४ सत्यानाश करना। कसदियों के देश में लोग मारे हुए
५ और उस की सड़कों में छिदे हुए गिरेंगे। क्योंकि यद्यपि
इस्राएल और यहूदा के देश इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध
किये हुए पापों से भरपूर हो गये हैं तौभी उन के
परमेश्वर सेनाओं के यहोवा ने उन को त्याग
नहीं दिया॥

६ बाबेल के बीच से भागो और अपना अपना प्राण
बचाओ उस के अधर्म्म में भागी होकर तुम भी न मिट
जाओ क्योंकि यह यहोवा के पलटा लेने का समय है
७ वह उस को बदला देने पर है। बाबेल यहोवा के हाथ
में सोने का कटोरा ठहरा था जिस से सारी पृथ्वी के
लोग मतवाले होते थे जाति जाति के लोगों ने उस के
दाखमधु में से पिया इस कारण वे बावले हो गये।
८ बाबेल अचानक ले ली और नाश की गई उस के
लिये हाय हाय करो उस के घावों के लिये बलसान
९ औषधि लाओ क्या जानिये वह चंगी हो सके। हम
बाबेल का इलाज करते तो थे पर वह चंगी नहीं हुई
सो आओ हम उस को तजकर अपने अपने देश को चले
जाएं क्योंकि उस पर किया हुआ न्याय आकाश बरन
१० स्वर्ग लों भी पहुंच गया है। यहोवा ने हमारे धर्म्म के
काम प्रकट किये हैं सो आओ हम सिय्योन में अपने
११ परमेश्वर यहोवा के काम का वर्णन करें। तीरें पैनी करो
ढालें थांभे रहो क्योंकि यहोवा ने मादी राजाओं के मन
को उभारा है उस ने बाबेल को नाश करने की कल्पना
की है और यहोवा का यही पलटा है जो वह अपने
१२ मन्दिर का लेगा। बाबेल की शहरपनाह के विरुद्ध
झण्डा खड़ा करो बहुत पहरुए बैठाओ घात लगानेहारों
को बैठाओ क्योंकि यहोवा ने बाबेल के रहनेहारों के
विरुद्ध जो कुछ कहा था सो अब करने को ठाना और
१३ किया भी है। हे बहुत जलाशयों के बीच बसी हुई और
बहुत भण्डार रखनेहारी तेरा अन्त आया तेरे लोभ की
१४ सीमा पहुंच गई है। सेनाओं के यहोवा ने अपनी ही
किरिया खाई है कि निश्चय मैं तुझ को टिड्डियों के
समान अनगिनित मनुष्यों से भर दूंगा और वे तेरे विरुद्ध
ललकारेंगे॥

१५ उस ने पृथिवी को अपने सामर्थ्य से बनाया और
जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया। और आकाश को
१६ अपनी प्रवीणता से तान दिया है। जब वह बोलता है
तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है वह पृथिवी
की छोर से कुहरे उठाता और वर्षा के लिये बिजली
बनाता और अपने भण्डार में से पवन निकाल ले आता
१७ है। सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित हैं सब सोनारों
को अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण लज्जित होना
पड़ेगा क्योंकि उन की ढाली हुई मूरतें धोखा देनेहारी हैं
१८ और उन के कुछ भी सांस नहीं चलती। वे तो व्यर्थ
और ठट्ठे ही के योग्य हैं जब उन के नाश किये जाने
१९ का समय आएगा तब[4] वे नाश ही होंगी। पर जो

(१) मूल में यर्दन की बढ़ाई से। (२) मूल में कौन मेरे लिए समय ठहराएगा। (३) अर्थात् मेरे विरोधियों का हृदय। यह कसदियों के देश का एक नाम जान पड़ता है।

(४) मूल में उन के दण्ड होने के समय।

याकूब का निज अंश है वह उन के समान नहीं वह तो सब का बनानेहारा है और इस्राएल उस का निज भाग है उस का नाम सेनाओं का यहोवा है॥

२० तू मेरा फरसा और युद्ध के हथियार ठहरा है सो तेरे द्वारा मैं जाति जाति को तित्तर बित्तर करूंगा और २१ तेरे ही द्वारा राज्य राज्य को नाश करूंगा। और तेरे ही द्वारा मैं सवार समेत घोड़ों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और रथी समेत रथ को भी तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े २२ करूंगा। और तेरे ही द्वारा मैं स्त्री पुरुष दोनों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और तेरे ही द्वारा मैं बूढ़े और लड़के दोनों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और जवान पुरुष और जवान स्त्री दोनों को मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े २३ करूंगा। और तेरे ही द्वारा मैं भेड़ बकरियों समेत चरवाहे को टुकड़े टुकड़े करूंगा और तेरे ही द्वारा मैं किसान और उस के जोड़े बैलों को भी टुकड़े टुकड़े करूंगा। और अधिपतियों और हाकिमों को मैं तेरे ही २४ द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा। और बाबेल को और सारे कसदियों को भी मैं उस सारी बुराई का बदला दूंगा जो उन्हों ने तुम लोगों के साम्हने सिय्योन से की है यहोवा की यही वाणी है॥

२५ हे नाश करनेहारे पहाड़ जिस के द्वारा सारी पृथिवी नाश हुई है यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और हाथ बढ़ाकर तुझे ढांगों पर से लुढ़का दूंगा और २६ जला हुआ पहाड़ बनाऊंगा। और लोग तुझ से न तो घर के कोने के लिये पत्थर ले लेंगे और न नेव के लिये क्योंकि तू सदा उजाड़ रहेगा यहोवा की यही वाणी है। २७ देश में झण्डा खड़ा करो जाति जाति में नरसिंगा फूंको बाबेल के विरुद्ध जाति जाति को तैयार करो अरारात मिन्नी और अश्कनज नाम राज्यों को उस के विरुद्ध बुलाओ उस के विरुद्ध सेनापति भी ठहराओ घोड़ों को शिखरवाली २८ टिड्डियों के समान अनगिनित चढ़ा ले आओ। उस के विरुद्ध जातियों को तैयार करो मादी राजाओं और अधिपतियों और सब हाकिमों और उस राज्य के सारे देश को तैयार २९ करो। यहोवा का यह विचार है कि वह बाबेल के देश को ऐसा उजाड़ करेगा कि उस में कोई भी न रह जाएगा सो अब पूरा होने पर है इस लिये पृथिवी कांपती और ३० दुःखित होती है। बाबेल के शूरवीर गढ़ों में रहकर लड़ने को नकारते हैं उन की वीरता जाती रही है और वे यह देखकर स्त्री बन गये हैं कि हमारे वासस्थानों में ३१ आग लग गई और फाटकों के बेण्डे तोड़े गये हैं। एक हरकारा दूसरे हरकारे से और एक समाचार देनेहारा दूसरे समाचार देनेहारे से मिलने और बाबेल के राजा को यह समाचार देने के लिये दौड़ेगा कि तेरा नगर चारों ओर ३२ से ले लिया गया, और घाट शत्रुओं के वश हो गये[1] और ३३ ताल सुखाये[2] गये और योद्धा घबरा उठे हैं। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि बाबेल की बेटी दांवते समय के खलिहान सरीखी है थोड़े ही दिनों में उस की कटनी का काल आएगा॥

३४ बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने मुझ को खा लिया और मुझ को पीस डाला और मुझ को छूछे बर्तन के समान कर दिया उस ने मगरमच्छ की नाईं मुझ को निगल लिया और मुझ को स्वादिष्ट भोजन जानकर अपने पेट को मुझ से भर लिया उस ने मुझ को बरबस ३५ निकाल दिया है। सो सिय्योन की रहनेहारी कहेगी कि मुझ पर और मेरे शरीर पर जो उपद्रव हुआ है सो बाबेल पर पलट आए और यरूशलेम कहेगी कि मुझ में किये हुए खून का दोष कसदियों के देश के रहनेहारों पर लगाया जाएगा॥

३६ इसलिये यहोवा कहता है कि मैं तेरा मुकद्दमा लड़ूंगा और तेरा पलटा लूंगा और उस के ताल को ३७ सुखाऊंगा और उस के सोते को सुखा दूंगा। और बाबेल डीह ही डीह और गीदड़ों का वासस्थान होगा और लोग उसे देखकर चकित होंगे और ताली बजाएंगे और उस ३८ में कोई न रह जाएगा। लोग एक संग ऐसे गरजेंगे और गुर्राएंगे जैसे युवा सिंह और सिंह के बच्चे अहेर पर करते ३९ हैं। पर जब उन को बड़ा उत्साह होगा तब मैं जेवनार तैयार करके उन्हें ऐसा मतवाला करूंगा कि वे हुलसकर सदा की नींद में पड़ेंगे और कभी न जागेंगे यहोवा की ४० यही वाणी है। मैं उन को भेड़ों के बच्चों की और मेढ़ों ४१ और बकरों की नाईं घात करा दूंगा। शेशक कैसे ले लिया गया जिस की प्रशंसा सारी पृथिवी पर होती थी सो कैसे पकड़ा गया बाबेल जाति जाति के बीच कैसे सुनसान ४२ हो गया है। बाबेल के ऊपर समुद्र चढ़ आया है वह उस ४३ की बहुत सी लहरों में डूब गया है। उस के नगर उजड़ गये और उस का देश निर्जन और निर्जल हो गया है उस में कोई मनुष्य नहीं रहता और उस से होकर ४४ कोई आदमी नहीं चलता। मैं बाबेल में बेल को दण्ड दूंगा और उस ने जो कुछ निगल लिया है सो उस के मुंह से उगलवाऊंगा और जातियों के लोग फिर उस की ओर तांता बांधे हुए न चलेंगे और बाबेल की शहरपनाह ४५ गिराई जाएगी। हे मेरी प्रजा उस के बीच से निकल आओ और अपने अपने प्राण को यहोवा के भड़के हुए ४६ कोप से बचाओ। और जब उड़ती बात उस देश में सुनी

(१) मूल में घाट पकड़े गये। (२) मूल में आग से जलाये।

जाए तब तुम्हारा मन न घबराए और तुम न डरना एक बरस में तो एक उड़ती बात आएगी और उस के पीछे दूसरे बरस में एक और उड़ती बात आएगी और उस देश में उपद्रव हुआ करेगा और हाकिम हाकिम के ४७ विरुद्ध होगा। उस के पीछे मैं बाबेल की खुदी हुई मूरतों पर दण्ड करूंगा और उस के सारे देश के लोगों का मुंह काला हो जाएगा और उस के सब लोग उस के ४८ बीच मार डाले जाएंगे। तब स्वर्ग और पृथिवी के सारे निवासी बाबेल पर जयजयकार करेंगे क्योंकि उत्तर दिशा से नाश करनेहारे उस पर चढ़ाई करेंगे यहोवा की यही ४९ वाणी है। जैसा बाबेल ने इस्राएल के लोगों को मार डाला वैसा ही सारे देश के लोग उसी में मार डाले जाएंगे। ५० हे तलवार से बचे हुए भागो खड़े मत रहो यहोवा को दूर से स्मरण करो और यरूशलेम की भी सुधि लो॥

५१ हमारा मुंह काला है हम ने अपनी नामधराई सुनी है यहोवा के पवित्र भवन में जो परदेशी घुसने पाये इस से हमारे मुंह पर सियाही छाई हुई है॥

५२ इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि मैं उस की खुदी हुई मूरतों पर दण्ड करूंगा और उस के सारे देश में लोग घायल होकर कराहते ५३ रहेंगे। चाहे बाबेल ऐसा ऊंचा बनाया जाए कि आकाश से बातें करे और उस के ऊंचे गढ़ और भी दृढ़ किये जाएं तौभी मैं उसे नाश करने के लिये लोगों को भेजूंगा ५४ यहोवा की यह वाणी है। सुनो बाबेल से चिल्लाहट का शब्द सुन पड़ता और कसदियों के देश से सत्यानाश का ५५ बड़ा कोलाहल सुनाई देता है। यहोवा बाबेल को नाश और उस में का बड़ा कोलाहल बन्द करता है इस से उन ५६ का कोलाहल महासागर का सा सुनाई देता है। बाबेल पर भी नाश करनेहारे चढ़ आये हैं और उस के शूरवीर पकड़े गये और उन के धनुष तोड़ डाले गये क्योंकि यहोवा बदला देनेहारा ईश्वर है वह अवश्य ही पलटा ५७ लेगा। और मैं उस के हाकिमों पण्डितों अधिपतियों रईसों और शूरवीरों को ऐसा मतवाला करूंगा कि वे सदा की नींद में पड़ेंगे और फिर न जागेंगे सेनाओं के ५८ यहोवा नाम राजाधिराज की यही वाणी है। सेनाओं का यहोवा यों भी कहता है कि बाबेल की चौड़ी शहरपनाह नेव से ढाई जाएगी और उस के ऊंचे फाटक आग लगाकर जलाए जाएंगे और उस में राज्य राज्य के लोगों का परिश्रम व्यर्थ ठहरेगा और जातियों का परिश्रम आग का कौर हो जाएगा और वे थक जाएंगे॥

५९ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे बरस में जब उस के संग बाबेल को सरायाह भी गया जो नेरिय्याह का पुत्र और महसेयाह का पोता और राजभवन का अधिकारी भी था तब यिर्मयाह नबी ने ६० उस को आज्ञा दी कि, इन सब बातों को जो बाबेल पर पड़नेवाली सारी विपत्ति के विषय लिखी हुई ६१ हैं यिर्मयाह ने पुस्तक में लिख दिया. और यिर्मयाह ने सरायाह से कहा जब तू बाबेल में पहुंचे तब अवश्य ६२ ही[१] ये सब वचन पढ़कर, यह कहना कि हे यहोवा तू ने तो इस स्थान के विषय यह कहा है कि मैं इसे ऐसा मिटा दूंगा कि इस में क्या मनुष्य क्या पशु कोई भी न ६३ रह जाएगा वरन यह सदा उजाड़ पड़ा रहेगा। और जब तू इस पुस्तक को पढ़ चुके तब इसे एक पत्थर के ६४ संग बांधकर परात महानद के बीच में फेंक देना। और यह कहना कि यों ही बाबेल डूब जाएगा और मैं उस पर ऐसी विपत्ति डालूंगा कि वह फिर कभी न उठेगा यों उस में का सारा परिश्रम व्यर्थ ही ठहरेगा और वे थके रहेंगे॥

यहां लों यिर्मयाह के वचन हैं॥

५२. जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा तब वह इक्कीस बरस का था और यरूशलेम में ग्यारह बरस लों राज्य करता रहा उस की माता का नाम हमूतल है जो लिब्नावासी २ यिर्मयाह की बेटी थी। और उस ने यहोयाकीम के सब कामों के अनुसार वह किया जो यहोवा के लेखे ३ बुरा है। सो यहोवा के कोप के कारण यरूशलेम और यहूदा की ऐसी दशा हुई कि अन्त में उस ने उन को अपने साम्हने से निकाला। और सिदकिय्याह ने बाबेल ४ के राजा से बलवा किया। सो उस के राज्य के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सारी सेना लेकर यरूशलेम पर चढ़ाई की और उस ने उस के पास छावनी करके ५ उस के चारों ओर कोट बनाये। यों नगर घिर गया और सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें बरस लों घिरा ६ रहा। चौथे महीने के नौवें दिन से नगर में महंगी यहां ७ लों बढ़ गई कि लोगों के लिये कुछ रोटी न रही। तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई और दोनों भीतों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था उस से सब योद्धा भागकर रात ही रात नगर से निकल ८ गये और अराबा का मार्ग लिया। उस समय कसदी लोग नगर को घेरे हुए थे सो उन की सेना ने राजा का पीछा किया और उस को यरीहो के पास के अराबा में

(१) मूल में तब देख और।

जा पकड़ा तब उस की सारी सेना उस के पास से तित्तर ९ बित्तर हो गई। सो वे राजा को पकड़कर हमात देश के रिबला में बाबेल के राजा के पास ले गये और वहां उस १० ने उस के दण्ड की आज्ञा दी। और बाबेल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उस के साम्हने घात किया और यहूदा के सारे हाकिमों को भी रिबला में घात ११ किया। और सिदकिय्याह की आंखों को उस ने फुड़वा डाला और उस को बेड़ियों से जकड़ाकर बाबेल लों ले गया फिर बाबेल के राजा ने उस को दण्डगृह में डाल दिया सो वह मरने के दिन लों वहीं रहा॥

१२ फिर उसी बरस अर्थात् बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें महीने के दसवें दिन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान जो बाबेल के राजा के सन्मुख हाजिर हुआ करता था यरूशलेम १३ में आया। और उस ने यहोवा के भवन और राजभवन और यरूशलेम के सब बड़े बड़े घरों को आग लगवाकर १४ फूंक दिया। और यरूशलेम के चारों ओर की सब शहरपनाह को कसदियों की सारी सेना ने जो जल्लादों १५ के प्रधान के संग थी ढा दिया। और कंगाल लोगों में से कितनों को और जो लोग नगर में रह गये और जो लोग बाबेल के राजा के पास भाग गये थे और जो कारीगर रह गये थे उन सब को जल्लादों का प्रधान १६ नबूजरदान बंधुआ करके ले गया। पर दिहात के कंगाल लोगों में से कितनों को जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने दाख की बारियों की सेवा और किसानी करने को छोड़ १७ दिया। और यहोवा के भवन में जो पीतल के खंभे थे और पाये और पीतल का गंगाल जो यहोवा के भवन में था उन सभों को कसदी लोग तोड़कर उन का पीतल १८ बाबेल को ले गये। और हांड़ियों फावड़ियों कैंचियों कटोरों धूपदानों निदान पीतल के और सब पात्रों को १९ जिन से लोग सेवा टहल करते थे वे ले गये। और तसलों करछों कटोरियों हांड़ियों दीवटों धूपदानों और कटोरों में से जो कुछ सोने का था सो सोने की और जो कुछ चांदी का था सो चांदी की लूट करके जल्लादों का २० प्रधान ले गया। दोनों खंभे एक गंगाल पीतल के बारहों बैल जो पायों के नीचे थे इन सब को तो सुलैमान राजा ने यहोवा के भवन के लिये बनवाया था और इन सब २१ का पीतल तौल से बाहर था। खंभे जो थे उन में से एक एक की ऊंचाई अठारह हाथ और घेरा बारह हाथ और मोटाई चार अंगुल की थी वे तो खोखले थे। और एक २२ एक की कंगनी पीतल की थी एक एक कंगनी की ऊंचाई पांच हाथ की थी और उस पर चारों ओर जाली और अनार जो बने थे सो सब पीतल के थे। और कंगनियों २३ के चारों अलंगों पर छियानवे अनार बने थे सो जाली के ऊपर चारों ओर एक सौ अनार थे। और जल्लादों २४ के प्रधान ने सरायाह महायाजक और उस के नीचे के याजक सपन्याह और तीनों डेवढ़ीदारों को पकड़ लिया। और नगर में से उस ने एक खोजा पकड़ लिया जो २५ योद्धाओं के ऊपर ठहरा था और जो पुरुष राजा के सन्मुख रहा करते थे उन में से सात जन जो नगर में मिले और सेनापति का मुन्शी जो साधारण लोगों को सेना में भरती करता था और साधारण लोगों में से साठ पुरुष जो नगर में मिले, इन सब को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान रिबला २६ में बाबेल के राजा के पास ले गया। तब बाबेल के राजा २७ ने उन्हें हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गये। सो यहूदी अपने देश से बंधुए होकर गये। जिन २८ लोगों को नबूकदनेस्सर बंधुए करके ले गया सो इतने हैं अर्थात् उस के राज्य के सातवें बरस में तीन हजार तेईस यहूदी। फिर अपने राज्य के अठारहवें बरस में २९ नबूकदनेस्सर यरूशलेम से आठ सौ बत्तीस प्राणियों को ले गया। फिर नबूकदनेस्सर के राज्य के तेईसवें ३० बरस में जल्लादों का प्रधान नबूजरदान सात सौ पैंतालीस यहूदी प्राणियों को बंधुए करके ले गया सो सब प्राणी मिलकर चार हजार छः सौ हुए॥

फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन की बंधुआई के ३१ सैंतीसवें बरस में अर्थात् जिस बरस में बाबेल का राजा एवीलमरोदक राजगद्दी पर विराजमान हुआ उसी के बारहवें महीने के पचीसवें दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया, और उस से मधुर मधुर वचन कहकर जो राजा ३२ उस के संग बाबेल में बंधुए थे उन के सिंहासनों से उस के सिंहासन को अधिक ऊंचा किया, और उस के बन्दीगृह ३३ के वस्त्र बदला दिये और वह जीवन भर नित्य राजा के सन्मुख भोजन करने पाया। और दिन दिन के खर्च के ३४ लिये बाबेल के राजा के यहां से नित्य उस को कुछ मिलने का प्रबन्ध हुआ और यह उस के मरने के दिन लों उस के जीवन भर लगातार बना रहा॥

विलापगीत।

---

१. जो नगरी लोगों से भरपूर थी
सो अब क्या ही विधवा सी अकेली बैठी हुई है जातियों के लेखे बड़ी और प्रांतों में रानी थी सो अब क्या ही कर देनेहारी हो गई है॥

२ वह रात को फूट फूटकर रोती है उस के आंसू गालों पर ढलकते हैं
उस के सब यारों में से कोई अब उस को शांति नहीं देता
उस के सब मित्रों ने उस से विश्वासघात किया और शत्रु बन गये हैं॥

३ यहूदा दुःख और कठिन दासत्व से बचने के लिये परदेश चली गई
पर अन्यजातियों में रहती हुई चैन नहीं पाती
उस के सब खदेड़नेहारों ने उसे घाटी में पकड़ लिया॥

४ सिय्योन के मार्ग विलाप कर रहे हैं इसलिये कि नियत पर्वों में कोई नहीं आता
उस के सब फाटक सुनसान पड़े हैं उस के याजक कहरते हैं
उस की कुमारियां शोकित हैं और वह आप कठिन दुःख भोग रही है॥

५ उस के द्रोही प्रधान हो गये उस के शत्रु भाग्यवान् हैं
क्योंकि यहोवा ने उस के बहुत से अपराधों के कारण उसे दुःख दिया
उस के बालबच्चों को शत्रु हांक हांकर बन्धुआई में ले गये॥

६ और सिय्योन की पुत्री का सारा प्रताप जाता रहा
उस के हाकिम ऐसे हरिणों के समान हो गये जो कुछ चराई नहीं पाते
और खदेड़नेहारों के साम्हने से बलहीन होकर भाग गये हैं॥

७ यरूशलेम ने इन दुःख और मारे मारे फिरने के दिनों में
अपनी सब मनभावनी वस्तुएं जो प्राचीन काल से उस की बनी थीं स्मरण की हैं
जब उस के लोग द्रोहियों के हाथ में पड़े और उस का कोई सहायक न रहा
तब उन द्रोहियों ने उस को उजड़ा देख कर ठट्ठा किया॥

८ यरूशलेम ने बड़ा पाप किया इसलिये वह अशुद्ध वस्तु[१] सी ठहरी
जितने उस का आदर करते थे सो उसे तुच्छ जानते हैं इसलिये कि उन्हों ने उस को नंगी देखा
सो वह कहरती हुई पीछे को फिरी जाती है॥

९ उस की अशुद्धता उस के वस्त्र पर है उस ने अपना अन्तसमय स्मरण न रक्खा था
इसलिये वह अद्भुत रीति से पद से उतारी गई और कोई उसे शांति नहीं देता
हे यहोवा मेरे दुःख पर दृष्टि कर क्योंकि शत्रु ने मेरे विरुद्ध बड़ाई मारी है॥

१० द्रोहियों ने उस की सब मनभावनी वस्तुओं पर हाथ बढ़ाया है
अन्यजातियां जिन के विषय तू ने आज्ञा दी थी कि वे मेरी सभा में भागी न होने पाएं
उन को उस ने अपने पवित्रस्थान ही में घुसी हुई देखा है॥

११ उस के सब निवासी कहरते हुए भोजनवस्तु ढूंढ़ रहे हैं
उन्हों ने जी में जी ले आने के लिये अपनी मनभावनी वस्तुएं बेचकर भोजन लिया
हे यहोवा दृष्टि कर और ध्यान से देख क्योंकि मैं तुच्छ हो गई हूं॥

१२ हे सब बटोहियो क्या इस बात की तुम्हें कुछ चिन्ता नहीं
दृष्टि करके देखो कि जो पीड़ा मुझ पर पड़ी है और यहोवा ने कोप भड़कने के दिन मुझे दी है

---

(१) वा स्त्री।

उस के तुल्य और पीड़ा कहां ॥
१३ ऊपर से उस ने मेरी हड्डियों में आग लगाई है
और वे उस से भस्म हो गईं
उस ने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया और मुझ
को उलटा फेर दिया ॥
उस ने ऐसा किया कि मैं छोड़ी हुई और रोग से
लगातार निर्बल रहती हूं ॥
१४ उस ने जुए की रस्सियों की नाईं मेरे अपराधों
को अपने हाथ से कसा है
उस ने उन्हें बटकर मेरी गर्दन पर चढ़ाया और
मेरा बल घटाया
जिन के साम्हने मैं खड़ी नहीं हो सकती उन्हीं
के वश में प्रभु ने मुझे कर दिया है ॥
१५ प्रभु ने मुझ में के सब पराक्रमी पुरुषों को
तुच्छ जाना
उस ने नियत पर्व का प्रचार करके लोगों को
मेरे विरुद्ध बुलाया कि मेरे जवानों को पीस
डालें
प्रभु ने यहूदा की कुमारी कन्या को कोल्हू में
पेरा है ॥
१६ इन बातों के कारण मैं रोती हूं मेरी आंखों से
आंसू की धारा बहती रहती है
क्योंकि जिस शांति देनेहार के कारण मेरे जी में
जी आता था सो मुझ से दूर हो गया
मेरे लड़केवाले अकेले छोड़े गये इसलिये कि
शत्रु प्रबल हुआ है ॥
१७ सिय्योन हाथ फैलाये हुए है उस को कोई शांति
नहीं देता
यहोवा ने याकूब के विषय यह आज्ञा दी
है कि उस के चारों ओर के निवासी उस
के द्रोही हो जाएं
यरूशलेम उन के बीच अशुद्ध स्त्री सी हो गई है ॥
१८ यहोवा तो निर्दोष है क्योंकि मैं ने उस की आज्ञा
का उल्लंघन किया है
हे सब लोगो सुनो और मेरी पीड़ा को देखो
मेरे कुमार और कुमारियां बन्धुआई में चली
गई हैं ॥
१९ मैं ने अपने यारों को पुकारा पर उन्हों ने मुझे
धोखा दिया
जब मेरे याजक और पुरनिये भोजनवस्तु इसलिये
ढूंढ़ रहे थे कि खाने से उन के जी में जी आए
तब नगर ही में उन का प्राण छूट गया ॥

२० हे यहोवा दृष्टि कर क्योंकि मैं संकट में हूं मेरी
अन्तड़ियां ऐंठी जाती हैं
मेरा हृदय उलट गया कि मैं ने बड़ा बलवा
किया है
बाहर तो मैं तलवार से निर्वंश होती हूं और
घर में मृत्यु विराज रही है ॥
२१ उन्हों ने सुना है कि मैं कहरती हूं मुझे कोई
शांति नहीं देता
मेरे सब शत्रुओं ने मेरी विपत्ति का समाचार
सुना है वे इस कारण हर्षित हो गये कि तू ही
ने यह किया है
पर जिस दिन की चर्चा तू ने प्रचार करके की
उस को तू दिखा भी देगा तब वे मेरे सरीखे
हो जाएंगे ॥
२२ उन की सारी दुष्टता की ओर दृष्टि कर
और जैसा तू ने मेरे सारे अपराधों के कारण मुझे
दण्ड दिया वैसा ही उन को भी दण्ड दे
क्योंकि मैं बहुत ही कहरती हूं और मेरा हृदय
रोग से निर्बल है ॥

२. प्रभु ने सिय्योन की पुत्री को क्या ही
अपने कोप के बादल से ढांप
दिया
उस ने इस्राएल की शोभा को आकाश से धरती
पर पटक दिया
और कोप करने के दिन अपने पांवों की चौकी को
स्मरण नहीं किया ॥
२ प्रभु ने याकूब की सब बस्तियों को निठुरता से
निगल लिया
उस ने रोष में आकर यहूदा की पुत्री के दृढ़ गढ़ों
को ढाकर मिट्टी में मिला दिया
उस ने हाकिमों समेत राज्य को अपवित्र ठह-
राया है ॥
३ उस ने भड़के हुए कोप से इस्राएल के सींग को जड़
से[१] काट डाला
उस ने शत्रु का साम्हना करने से अपना दहिना
हाथ खींच लिया
और चारों ओर भस्म करती हुई लौ की नाईं
याकूब को जला दिया है ॥
४ उस ने शत्रु बनकर धनुष चढ़ाया वह बैरी बनकर
दहिना हाथ बढ़ाये हुए खड़ा हुआ

(१) मूल में सारे सींग को।

और जितने दृष्टि में मनभावने थे सब को घात
किया
सिय्योन की पुत्री के तम्बू पर उस ने आग की नाई
अपनी जलजलाहट भड़का दी है ॥
५ प्रभु शत्रु बन गया उस ने इस्राएल को निगल
लिया
उस के सब महलों को उस ने निगल लिया उस
के दृढ़ गढ़ों को उस ने बिगाड़ डाला
और यहूदा की पुत्री का रोना पीटना बहुत
बढ़ाया है ॥
६ और उस ने अपना मण्डप बारी में के मचान की
नाई बरयाई से गिरा दिया
अपने मिलापस्थान का उस ने नाश किया
यहोवा ने सिय्योन में नियत पर्व और विश्रामदिन
दोनों को बिसरवा दिया
और अपने भड़के हुए कोप से राजा और याजक
दोनों को तिरस्कार किया है ॥
७ प्रभु ने अपनी वेदी मन से उतार दी और अपना
पवित्रस्थान अपमान के साथ तजा
उस के महलों की भीतों को उस ने शत्रुओं के
वश कर दिया
यहोवा के भवन में उन्हों ने ऐसा कोलाहल
मचाया कि मानो नियत पर्व का दिन था ॥
८ यहोवा ने सिय्योन की कुमारी की शहरपनाह
तोड़ डालने को ठाना था
सो उस ने डोरी डाली और अपना हाथ नाश
करने से नहीं खींच लिया
और कोट और शहरपनाह दोनों से विलाप कराया
वे दोनों एक साथ गिराये गये हैं ॥
९ उस के फाटक भूमि में धस गये हैं उस ने उन के
बेड़ों को तोड़कर नाश किया
उस का राजा और और हाकिम अन्यजातियों
में रहने से व्यवस्थारहित हो गये हैं
और उस के नबी यहोवा से दर्शन नहीं पाते ॥
१० सिय्योन की पुत्री के पुरनिये भूमि पर चुपचाप
बैठे हैं
उन्हों ने अपने सिर पर धूल उड़ाई और टाट
का फेंटा बांधा है
यरूशलेम की कुमारियों ने अपना अपना सिर
भूमि लों झुकाया है ॥
११ मेरी आंखें आंसू बहाते बहाते रह गईं मेरी
अन्तड़ियां ऐंठी जाती हैं
मेरे लोगों की पुत्री के विनाश के कारण मेरा
कलेजा फट गया
क्योंकि बच्चे बरन दूधपिउवे बच्चे भी नगर के
चौकों में मूर्छित होते हैं ॥
१२ वे अपनी अपनी मा से कहते हैं अन्न और दाखमधु
कहां हैं
वे नगर के चौकों में घायल किये हुए मनुष्य की
नाईं मूर्छित होकर
अपने अपने प्राण को अपनी अपनी माता की
गोद में छोड़ते हैं ॥
१३ हे यरूशलेम की पुत्री मैं तुझ से क्या कहूं मैं
तेरी उपमा किस से दूं
हे सिय्योन की कुमारी कन्या मैं कौन सी वस्तु
तेरे समान ठहराकर तुझे शान्ति दूं
क्योंकि तेरा दुःख समुद्र सा अपार है तुझे कौन
चंगा कर सकता है ॥
१४ तेरे नबियों ने दर्शन का दावा करके तुझ से व्यर्थ
और मूर्खता की बातें कही थीं
और तेरा अधर्म्म प्रगट न किया था नहीं तो
तेरी बन्धुआई न होने पाती
उन्हों ने तेरे लिये व्यर्थ के भारी वचन
बताये हैं
जो देश से निकाल दिये जाने के कारण
हुए हैं ॥
१५ सब बटोही तुझ पर ताली पीटते हैं
वे यरूशलेम की पुत्री पर यह कहकर ताली बजाते
और सिर हिलाते हैं कि
क्या यह वह नगरी है जिसे परमसुन्दर और सारी
पृथिवी के हर्ष का कारण कहते थे ॥
१६ तेरे सब शत्रुओं ने तुझ पर मुंह फैलाया है
वे ताली बजाते और दांत पीसते हैं वे कहते हैं कि
हम उसे निगल गये हैं
जिस दिन की हम बाट जोहते थे सो तो यही है
वह हम को मिल गया हम उस को देख
चुके हैं ॥
१७ यहोवा ने जो कुछ ठाना था सोई किया
भी है
जो वचन वह प्राचीन काल से कहता आया सोई
उस ने पूरा किया
उस ने निठुरता से तुझे ढा दिया
और शत्रुओं को तुझ पर आनन्दित किया
और तेरे द्रोहियों के सींग को ऊंचा किया है ॥

१८ वे प्रभु की ओर तन मन से चिल्लाये हैं
हे सिय्योन की कुमारी की शहरपनाह अपने आंसू
रात दिन नदी की नाईं बहाती रह
तनिक भी विश्राम न ले न तेरी आंख की पुतली
थम जाए ॥

१९ रात के पहर पहर के आदि में उठकर चिल्लाया
कर
प्रभु के सन्मुख अपने मन की बातों की धारा
बांध[1]
तेरे जो बालबच्चे एक एक सड़क के सिरे पर भूख
से मूर्छित हो रहे हैं
उन के प्राण के निमित्त अपने हाथ उस की
ओर फैला ॥

२० हे यहोवा दृष्टि कर और ध्यान से देख कि तू ने
यह सब दुःख किस को दिया है
क्या स्त्रियां अपना फल अर्थात् अपनी गोद[2] के
बच्चों को खा डालें
हे प्रभु क्या याजक और नबी तेरे पवित्रस्थान में
घात किये जाएं ॥

२१ सड़कों में लड़के और बूढ़े दोनों भूमि पर
पड़े हैं
मेरी कुमारियां और जवान लोग तलवार से गिरे
तू ने कोप करने के दिन उन्हें घात किया तू ने
निठुरता के साथ वध किया ॥

२२ तू ने नियत पर्व की भीड़ के समान चारों ओर से
मेरे भय के कारणों को बुलाया है
और यहोवा के कोप के दिन न तो कोई भाग
निकला और न कोई बच रहा है
जिन को मैं ने गोद[2] में लिया और पोस पोसकर
बढ़ाया था मेरे शत्रु ने उन का अन्त कर
डाला है ॥

३. उस के रोष की छड़ी से जो दुःख
भोगनेहारा है वही पुरुष मैं हूं ॥

२ मुझ को वह ले जाकर उजियाले में नहीं अंधि-
यारे ही में जलाता है ॥

३ मेरे ही विरुद्ध उस का हाथ दिन भर बार बार
उठता[3] है ॥

४ उस ने मेरा मांस और चमड़ा गला दिया
और मेरी हड्डियों को तोड़ दिया है ॥

५ उस ने मुझे रोकने के लिये कोट बनाया और मुझ
को कठिन दुःख[4] और श्रम से घेरा है ॥

६ उस ने मुझे बहुत दिन के मरे हुए लोगों के
समान अन्धेरे स्थानों में बसा दिया ॥

७ मेरे चारों ओर उस ने बाड़ा बांधा इस से मैं
निकल नहीं सकता उस ने मुझे भारी सांकल
से जकड़ा है[5] ॥

८ फिर जब मैं चिल्ला चिल्लाके दोहाई देता हूं तब
वह मेरी प्रार्थना नहीं सुनता ॥

९ मेरे मार्गों को उस ने गढ़े हुए पत्थरों से छेंका
मेरी डगरों को उस ने टेढ़ी किया है ॥

१० वह मेरे लिये घात में बैठे हुए रीछ और दुबका
लगाये हुए सिंह के समान है ॥

११ उस ने मेरे मार्गों को टेढ़ा किया उस ने मुझे फाड़
डाला उस ने मुझ को उजाड़ दिया है ॥

१२ उस ने धनुष चढ़ाकर मुझे अपनी तीर का
निशाना ठहराया है ॥

१३ उस ने अपनी तीरों से मेरे गुर्दों को बेध
दिया है ॥

१४ मुझ पर मेरे सब लोग हंसते और मुझ पर
लगते गीत दिन भर गाते हैं ॥

१५ उस ने मुझे कठिन दुःख से[6] भर दिया और नाग-
दौना पिलाकर तृप्त किया है ॥

१६ और उस ने मेरे दांतों को कंकरी से तोड़ डाला
और मुझे राख से ढांप दिया है ॥

१७ और तू ने मुझ को मन से उतारके कुशल से
रहित किया है मुझे कल्याण बिसर
गया है ॥

१८ और मैं ने कहा कि मेरा बल नाश हुआ और मेरी
जो आशा यहोवा पर थी सो टूट गई है ॥

१९ मेरा दुःख और मारा मारा फिरना मेरा नागदौन
और और विष का पीना स्मरण कर ॥

२० मैं उन्हें भली भांति स्मरण रखता हूं इस से मेरा
जीव ढया जाता है ॥

२१ इस का स्मरण करके मैं इसी के कारण आशा
रक्खूंगा ॥

२२ हम मिट नहीं गये यह यहोवा की महाकरुणा का
फल है क्योंकि उस का दया करना बन्द
नहीं हुआ ॥

(१) मूल में अपना हृदय जल की नाईं उण्डेल । (२) मूल में हथेली ।
(३) मूल में उलटता ।
(४) मूल में विष । (५) मूल में मेरी सांकल भारी की ।
(६) मूल में कड़वाहटों से ।

२३ वह भोर भोर को नई होती रहती है तेरी सच्चाई बड़ी तो है ॥
२४ मैं ने मन में कहा है कि यहोवा मेरा भाग है इस कारण मैं उस से आशा रक्खूंगा ॥
२५ जो यहोवा की बाट जोहते और[१] उस के पास जाते हैं उन के लिये यहोवा भला है ॥
२६ यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है ॥
२७ पुरुष के लिये जवानी में जूआ उठाना भला है ॥
२८ वह यह जानकर अकेला चुपचाप बैठा रहे कि उसी ने मुझ पर यह बोझ डाला है ॥
२९ वह यह कहकर अपनी नाक भूमि पर रगड़े[२] कि जानिये कुछ आशा हो ॥
३० वह अपना गाल अपने मारनेहारे की ओर फेरे और नामधराई से बहुत ही भर जाए ॥
३१ क्योंकि प्रभु मन से सदा उतारे नहीं रहता ॥
३२ चाहे वह दुःख भी दे तौभी अपनी करुणा की बहुतायत के कारण वह दया भी करता है ॥
३३ क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता न दुःख देता है ॥
३४ पृथिवी भर के बन्धुओं को पांव के तले दल डालना,
३५ किसी पुरुष का हक परमप्रधान के साम्हने मारना
३६ और किसी मनुष्य का मुकद्दमा बिगाड़ना इन तीन कामों को प्रभु देख नहीं सकता ॥
३७ जब प्रभु ने आज्ञा न दी हो तब कौन है कि जो वचन कहे सो पूरा हो ॥
३८ विपत्ति और कल्याण क्या दोनों परमप्रधान की आज्ञा से नहीं होते ॥
३९ जीता मनुष्य क्यों कुड़कुड़ाये पुरुष अपने पाप के दण्ड को क्यों बुरा माने ॥
४० हम अपने चालचलन को ध्यान से परखें और यहोवा की ओर फिरें ॥
४१ हम स्वर्गवासी ईश्वर की ओर हाथ फैलाएं और मन भी लगाएं ॥
४२ हम ने तो अपराध और बलवा किया है और तू ने क्षमा नहीं की ॥
४३ तेरा कोप हम पर भूम रहा तू हमारे पीछे पड़ा तू ने बिना तरस खाये घात किया है ॥
४४ तू ने अपने को मेघ से घेर लिया है कि प्रार्थना तुझ लों न पहुंच सके ॥
४५ तू ने हम को जाति जाति के लोगों के बीच कूड़ा कुर्कट सा ठहराया है ॥
४६ हमारे सब शत्रुओं ने हम पर अपना अपना मुंह फैलाया है ॥
४७ भय और गड़हा उजाड़ और विनाश ये ही हमारे भाग हुए हैं ॥
४८ मेरी आंखों से मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के कारण जल की धाराएं बह रही हैं ॥
४९ मेरी आंख से आंसू तब लों लगातार बहते रहेंगे
५० जब लों यहोवा स्वर्ग से मेरी ओर न देखे ॥
५१ अपनी नगरी की सब स्त्रियों का हाल देखने से मेरा दुःख बढ़ता है[३]॥
५२ मेरे जो अकारण शत्रु हैं उन्हों ने चिड़िया का सा मेरा अहेर निर्दयता से किया ॥
५३ उन्हों ने मुझे गड़हे में डालकर मेरे जीवन का अन्त कर दिया और मेरे ऊपर पत्थर डाला है ॥
५४ जल मेरे सिर पर से बह गया मैं ने कहा मैं नाश हुआ ॥
५५ हे यहोवा गहिरे गड़हे में से मैं ने तुझ से प्रार्थना की है ॥
५६ तू ने मेरी सुनी थी मैं जो दोहाई हांफ हांफकर देता हूं उस से कान न फेर[४] ले ॥
५७ जिस दिन मैं ने तुझे पुकारा उसी दिन तू ने निकट आकर कहा मत डर ॥
५८ हे प्रभु तू ने मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा प्राण बचा लिया है ॥
५९ हे यहोवा जो अन्याय मुझ पर हुआ सो तू ने देखा है सो तू मेरा न्याय चुका ॥
६० उन्हों ने जो पलटा मुझ से लिया और जो कल्पनाएं मेरे विरुद्ध कीं सो भी तू ने देखी हैं ॥
६१ हे यहोवा वे जो निन्दा करते और मेरे विरुद्ध कल्पनाएं करते हैं,
६२ मेरे विरोधियों के वचन भी और जो कुछ वे मेरे विरुद्ध लगातार सोचते हैं सो तू ने जाना है ॥
६३ उन का उठना बैठना ध्यान से देख वे मुझ पर लगते हुए गीत गाते हैं ॥
६४ हे यहोवा तू उन के कामों के अनुसार उन को बदला देगा ॥

(१) मूल में और जो जीव।
(२) मूल में वह अपना मुंह मिट्टी में देवे।
(३) मूल में मेरी आंख मेरे मन को दुःख देती है।
(४) मूल में छिपा। (५) मूल में होंठ।

६५ तू उन का मन सुन्न कर देगा उन के लिये तेरे साप का यही फल होगा ॥

६६ तू उन को कोप से खदेड़ खदेड़ कर यहोवा की धरती पर से[१] विनाश करेगा ॥

४. सोना क्या ही खोटा[२] हो गया है अत्यन्त खरा सोना क्या ही बदल गया है पवित्रस्थान के पत्थर तो एक एक सड़क के सिरे पर फेंक दिये गये हैं ॥

२ सिय्योन के उत्तम पुत्र[३] जो कुन्दन के तुल्य हैं सो कुम्हार के बनाये हुए मिट्टी के घड़ों के समान क्या ही तुच्छ गिने गये हैं ॥

३ गीदड़िन भी थन लगाकर अपने बच्चों को पिलाती है पर मेरे लोगों की बेटी बन के शुतुर्मुर्गों के तुल्य निर्दय हो गई है ॥

४ दूधपिउवे बच्चों की जीभ प्यास के मारे तालू में चिपट गई बालबच्चे रोटी मांगते हैं पर कोई उन को नहीं देता ॥

५ जो आगे स्वादिष्ट भोजन खाते थे सो अब सड़कों में विकल फिरते हैं जो लाही रंग के वस्त्र में पले थे सो घूरों पर लोटते हैं[४] ॥

६ और मेरे लोगों की बेटी का अधर्म्म सदोम के पाप से भी अधिक ठहरा जो किसी के हाथ डाले बिना क्षण भर में उलट गया ॥

७ उन के नाजीर हिम से भी निर्मल और दूध से अधिक उजले थे उन की देह मूंगों से अधिक लाल और उन की सुन्दरता नीलमणि की सी थी ॥

८ पर अब उन का रूप अन्धकार से भी अधिक काला है वे सड़कों में चीन्हे नहीं जाते उन का चमड़ा हड्डियों में सट गया वह तो लकड़ी के समान सूख गया है ॥

९ तलवार के मारे हुए भूख के मारे हुओं से कम दुःखी हैं क्योंकि इन का प्राण तो खेत की उपज बिना भूख के मारे भूरता जाता है ॥

१० दयालु स्त्रियों ने अपने बच्चों को अपने ही हाथों से सिझाया है मेरे लोगों के विनाश के समय वे ही उन का आहार हुए ॥

११ यहोवा ने अपनी पूरी जलजलाहट प्रगट की उस ने अपना कोप बहुत ही भड़काया और सिय्योन में ऐसी आग लगाई है जिस से उस की नेव तक भस्म हो गई है ॥

१२ पृथिवी का कोई राजा वा जगत का कोई रहनेहारा इस की प्रतीति कभी न कर सकता था कि द्रोही और शत्रु यरूशलेम के फाटकों के भीतर घुसने पाएंगे ॥

१३ यह उस के नबियों के पापों और उस के याजकों के अधर्म्म के कामों के कारण हुआ है क्योंकि वे उस के बीच धर्म्मियों का खून करते आये ॥

१४ अब वे सड़कों में अंधे से मारे मारे फिरते और मानो लोहू की छींटों से यहां लों अशुद्ध हैं कि कोई उन के वस्त्र नहीं छू सकता ॥

१५ लोग उन को पुकारते हैं कि रे अशुद्ध लोगो हट जाओ हट जाओ हम को मत छूओ जब वे भागकर मारे मारे फिरने लगे तब अन्यजाति के लोगों ने कहा वे आगे को यहां टिकने न पाएंगे ॥

१६ यहोवा ने अपने प्रताप से उन्हें तित्तर बित्तर किया वह उन पर फिर दया दृष्टि न करेगा न तो याजकों का सन्मान न पुरनियों पर कुछ अनुग्रह किया गया ॥

१७ हमारी आंखें सहायता की बाट व्यर्थ जोहते जोहते रह गई हैं हम ऐसी एक जाति का मार्ग लगातार देखते आये हैं जो बचा नहीं सकती ॥

१८ वे लोग हमारे पीछे ऐसे पड़े हैं कि हम अपने नगर के चौकों में भी नहीं चल सकते हमारा अन्त निकट आया हमारी आयु पूरी हुई हमारा अन्त आ गया है ॥

१९ हमारे खदेड़नेहारे आकाश के उकाबों से भी अधिक वेग चलते थे वे पहाड़ों पर हमारे पीछे पड़े और जंगल में हमारे लिये घात लगाते थे ॥

(१) मूल में आकाश के तले से। (२) मूल में फीके रंग का। (३) मूल में बेटे। (४) मूल में घूरों को गले लगाते हैं। (५) मूल में उंडेला।

२० यहोवा का अभिषिक्त जो हमारा प्राण[1] था
और जिस के विषय हम ने सोचा था कि
अन्य जातियों के बीच हम उसी के छत्र के
नीचे[2] जीते रहेंगे
सो उन के खोदे हुए गड़हों में पकड़ा गया ॥
२१ हे एदोम की पुत्री तू जो ऊस देश में रहती है
हर्षित और आनन्दित रह
पर कटोरा तुझ लों भी पहुंचेगा और तू मतवाली
होकर अपने को नंगी करेगी ॥
२२ हे सिय्योन की पुत्री तेरे अधर्म्म का फल भुगत
गया वह तुझे फिर बंधुआई में न
जाने देगा
हे एदोम की पुत्री वह तेरे अधर्म्म का दण्ड देगा
और तेरे पापों को प्रगट करेगा ॥

५. हे यहोवा स्मरण कर कि हम पर क्या
क्या बीता है
हमारी ओर दृष्टि करके हमारी नामधराई को देख ॥
२ हमारा भाग परदेशियों के
हमारे घर उपरी लोगों के हो गये हैं ॥
३ हम अनाथ और बपमूए हो गये
हमारी माताएं विधवा सी हुई हैं ॥
४ हम पानी मोल लेकर पीते हैं
हम को लकड़ी दाम से मिलती है ॥
५ खदेड़नेहारे हमारी गर्दन पर टूट पड़े हैं
हम थक गये और हमें विश्राम नहीं मिलता ॥
६ हम मिस्र के अधीन हो गये
और अश्शूर के भी कि पेट भर सकें ॥
७ हमारे पुरखाओं ने पाप किया और जाते रहे
और हम को उन के अधर्म्म के कामों का भार
उठाना पड़ा ॥
८ हमारे ऊपर दास अधिकार रखते हैं
उन के हाथ से कोई हमें नहीं छुड़ाता ॥

(१) मूल में हमारे नथनों का प्राण। (२) मूल में की छाया में।

९ हम उस तलवार के कारण जो जंगल में
चलती है
प्राण जोखिम में डालकर अपनी भोजनवस्तु ले
आते हैं ॥
१० भूख की आग के कारण
हमारा चमड़ा तंदूर की नाईं जल रहा है ॥
११ सिय्योन में स्त्रियां
और यहूदा के नगरों में कुमारियां भ्रष्ट की गईं ॥
१२ हाकिम हाथ के बल टांगे गये
और पुरनियों का कुछ आदरमान न किया गया ॥
१३ जवानों को चक्की उठानी पड़ती
और लड़केवाले लकड़ी के बोझ उठाये ठोकर
खाते जाते हैं ॥
१४ अब फाटक पर पुरनिये नहीं बैठते
जवानों का गीत सुनाई नहीं पड़ता।
१५ हमारे मन का हर्ष जाता रहा
हमारा नाचना विलाप से बदल गया है ॥
१६ हमारे सिर पर का मुकुट गिर पड़ा
हम पर हाय कि हम ने पाप किया है ॥
१७ इसी कारण हमारा हृदय निर्बल हुआ
इन्हीं बातों से हमारी आंखें धुन्धली पड़ गई
हैं ॥
१८ सिय्योन पर्वत उजाड़ पड़ा है
इसलिये सियार उस पर घूमते हैं ॥
१९ हे यहोवा तू तो सदा लों विराजमान रहेगा
तेरा राज्य पीढ़ी पीढ़ी बना रहेगा ॥
२० तू ने हम को क्यों सदा के लिये बिसरा
दिया
क्यों बहुत काल के लिये हमें छोड़ दिया है ॥
२१ हे यहोवा हम को अपनी ओर फेर तब हम
फिरेंगे
हमारे दिन बहोर के प्राचीन काल की नाईं ज्यों
के त्यों कर दे ॥
२२ तू ने हम से बिल्कुल तो हाथ नहीं उठाया
होगा
तू ऐसा अत्यन्त क्रोधित न हुआ होगा ॥

उठाकर ले गया और मैं कठिन दुःख से भरा[1] और मन में जलता हुआ चला गया और यहोवा की शक्ति
१५ मुझ में प्रबल थी[2]। सो मैं उन बन्धुओं के पास आया जो कबार नदी के तीर पर तेलाबीब में के जहां वे रहते थे वहीं मैं आया और वहां सात दिन लों उन के बीच विस्मित हो बैठा रहा॥

१६ फिर सात दिन के बीतने पर यहोवा का यह वचन
१७ मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे इस्राएल के घराने के लिये पहरुआ ठहराया है सो तू मेरे मुंह की बात सुनकर मेरी ओर से उन्हें चिताना।
१८ जब मैं दुष्ट से कहूं तू निश्चय मरेगा और तू उस को न चिताए और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिस से वह सचेत हो अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीता रहे तो वह दुष्ट अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेगा पर उस के
१९ खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। पर यदि तू दुष्ट को चिताए और वह अपनी दुष्टता और दुष्ट मार्ग से न फिरे तो वह तो अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेहीगा पर
२० तू अपना प्राण बचाएगा। फिर जब धर्म्मी जन अपने धर्म्म से फिर कर कुटिल काम करने लगे और मैं उस के साम्हने ठोकर रक्खूं तो वह मर जायगा तू ने जो उस को नहीं चिताया इसलिये वह अपने पाप में फंसा हुआ मरेगा और जो धर्म्म के कर्म्म उस ने किये हों उन की सुधि न ली जाएगी पर उस के खून का लेखा मैं तुझी
२१ से लूंगा। पर यदि तू धर्म्मी को ऐसा कहकर चिताए कि तू पाप न कर और वह पाप न करे तो वह चिताए जाने के कारण निश्चय जीता रहेगा और तू अपना प्राण बचाएगा॥

२२ फिर यहोवा की शक्ति[3] वहीं मुझ पर हुई और उस ने मुझ से कहा उठकर मैदान में जा और वहां मैं
२३ तुझ से बातें करूंगा। तब मैं उठकर मैदान में गया और वहां क्या देखा कि यहोवा का तेज जैसा मुझे कबार नदी के तीर पर वैसा ही यहां भी देख पड़ता
२४ है और मैं मुंह के बल गिरा। तब आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया फिर वह मुझ से कहने लगा जा अपने घर के भीतर घुसा रह।
२५ और हे मनुष्य के सन्तान सुन वे लोग तुझे रस्सियों से जकड़ कर बांध रक्खेंगे और तू निकलकर उन के
२६ बीच जाने न पाएगा। और मैं तेरी जीभ तेरे तालू से लगाऊंगा जिस से तू मौन रह कर उन का डांटनेहारा
२७ न हो क्योंकि वे बलवा करनेहारे घराने के हैं। पर जब जब मैं तुझ से बातें करूं तब तब तेरे मुंह को खोलूंगा और तू उन से ऐसा कहना कि प्रभु यहोवा यों कहता है जो सुने सो सुने और जो न सुने सो न सुने वे तो बलवा करनेहारे घराने के हैं ही॥

(१) मूल में मैं कड़वा। (२) मूल में यहोवा का हाथ मुझ पर प्रबल था। (३) मूल में का हाथ।

४.

फिर हे मनुष्य के सन्तान तू एक ईंट ले और उसे अपने साम्हने रखकर उस पर एक नगर अर्थात् यरूशलेम का चित्र खींच।
२ तब उसे घेर अर्थात् उस के विरुद्ध कोट बना और उस के साम्हने धुस बांध और छावनी डाल और उस
३ के चारों ओर युद्ध के यंत्र लगा। तब तू लोहे की थाली लेकर उस को लोहे की शहरपनाह मानकर अपने और उस नगर के बीच खड़ा कर तब अपना मुंह उस की ओर कर और वह घेरा जाए इस रीति तू उसे घेर रख। यह इस्राएल के घराने के लिये चिन्ह ठहरेगा॥

४ फिर तू अपने बायें पांजर के बल लेटकर इस्राएल के घराने का अधर्म्म उस पर मान जितने दिन तू उस के बल लेटा रहेगा उतने दिन लों उन लोगों के
५ अधर्म्म का भार सहता रह। मैं ने तो उन के अधर्म्म के बरस तेरे लिये दिन करके ठहराये अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन सो तू उतने दिन तक इस्राएल के घराने के अधर्म्म
६ का भार सहता रह। और फिर जब इतने दिन पूरे हों जाएं तब अपने दहिने पांजर के बल लेटकर यहूदा के घराने के अधर्म्म का भार सह लेना मैं ने उस के लिये भी तेरे लिये एक एक बरस की सन्ती एक एक दिन
७ अर्थात् चालीस दिन ठहराये हैं। सो तू यरूशलेम के घेरने के लिये बांह उघाड़े अपना मुंह उधर करके उस के
८ विरुद्ध नबूवत करना। और सुन मैं तुझे रस्सियों से जकड़ूंगा और जब लों तेरे उसे घेरने के वे दिन पूरे न
९ हों तब लों करवट न ले सकेगा। और तू गेहूं जव सेम मसूर बाजरा और कठिया गेहूं लेकर एक बासन में रख और उन से रोटी बनाया करना जितने दिन तू अपने पांजर के बल लेटा रहेगा उतने अर्थात् तीन सौ नब्बे
१० दिन लों उसे खाया करना। और जो भोजन तू खाए सो तौल तौलकर खाना अर्थात् दिन दिन बीस बीस शेकेल भर खाया करना और उसे समय समय पर
११ खाना। और पानी भी तू माप मापकर पिया करना अर्थात् दिन दिन हीन का छठवां अंश पीना और उस को
१२ समय समय पर पीना। और अपना वह भोजन जव की रोटियों की नाईं बनाकर खाया करना और उस को
१३ मनुष्य की विष्ठा से उन के देखते बनाया करना। फिर यहोवा ने कहा इसी प्रकार से इस्राएल उन जातियों के

बीच अपनी अपनी रोटी अशुद्ध ही खाया करेंगे जहां मैं
१४ उन्हें बरबस पहुंचाऊंगा। तब मैं ने कहा हाय प्रभु यहोवा सुन मेरा जीव कभी अशुद्ध नहीं हुआ और न मैं ने बचपन से ले अब लों अपनी मृत्यु से मरे हुए वा फाड़े हुए पशु का मांस खाया और न किसी प्रकार
१५ का घिनौना मांस मेरे मुंह में कभी गया है। उस ने मुझ से कहा सुन मैं ने तेरे लिये मनुष्य की विष्ठा की सन्ती गोबर ठहराया है सो तू अपनी रोटी उसी से
१६ बनाना। फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान सुन मैं यरूशलेम में अन्नरूपी आधार को दूर करूंगा सो वहां के लोग तौल तौलकर और चिन्ता कर करके रोटी खाया करेंगे और माप मापकर और विस्मित हो
१७ होकर पानी पिया करेंगे। और इस से उन्हें रोटी और पानी की घटी होगी और वे सब के सब विस्मित होंगे और अपने अधर्म में फंसे हुए सूख जाएंगे[1] ॥

५. फिर हे मनुष्य के सन्तान एक पैनी तलवार ले और उसे नाऊ के छुरे के काम में लाकर अपने सिर और डाढ़ी के बाल मूंड़ तब तौलने का कांटा लेकर बालों का भाग कर।
२ जब नगर के घिरने के दिन पूरे होंगे तब नगर के भीतर एक तिहाई आग में डालकर जलाना और एक तिहाई लेकर चारों ओर तलवार से मारना और एक तिहाई को पवन में उड़ाना और मैं तलवार खींचकर उस के
३ पीछे चलाऊंगा। तब इन में से थोड़े से बाल लेकर
४ अपने कपड़े की छोर में बांधना। फिर इन में से भी थोड़े से लेकर आग के बीच डालना कि वे आग में जल जाएं तब उसी से एक लौ भड़ककर इस्राएल के सारे घराने में फैल जाएगी॥

५ प्रभु यहोवा यों कहता है कि यरूशलेम ऐसी ही है मैं ने उस को अन्य जातियों के बीच ठहराया और
६ वह चारों ओर देश देश से घिरी है। और उस ने मेरे नियमों के विरुद्ध काम करके अन्यजातियों से अधिक दुष्टता की और मेरी विधियों के विरुद्ध चारों ओर के देशों के लोगों से अधिक बुराई की है क्योंकि उन्हों ने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियों पर
७ नहीं चले। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम लोग जो अपने चारों ओर की जातियों से अधिक हुल्लड़ मचाते और न मेरी विधियों पर चले हो न मेरे नियमों को माना है और न अपने चारों ओर
८ की जातियों के नियमों के अनुसार किया, इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं आप तेरे विरुद्ध हूं और अन्यजातियों के देखते तेरे बीच न्याय के
९ काम करूंगा। और तेरे सब घिनौने कामों के कारण मैं तेरे बीच ऐसा काम करूंगा जैसा न अब लों किया
१० है न आगे को फिर करूंगा। सो तेरे बीच लड़केवाले अपने अपने बाप को और बाप अपने अपने लड़केवालों का मांस खाएंगे और मैं तुझ को दण्ड दूंगा और तेरे
११ सब बचे हुओं को चारों ओर तित्तर बित्तर करूंगा। सो प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि अपने जीवन की सौंह तू ने जो मेरे पवित्रस्थान को अपनी सारी घिनौनी मूरतों और सारे घिनौने कामों से अशुद्ध किया है इसलिये मैं तुझे घटाऊंगा और दया की दृष्टि तुझ पर न करूंगा
१२ और तुझ पर कुछ भी कोमलता न करूंगा। तेरी एक तिहाई तो मरी से मरेगी वा तेरे बीच भूख से मर मिटेगी और एक तिहाई तेरे आस पास तलवार से मारी जाएगी और एक तिहाई को मैं चारों ओर तित्तर बित्तर करूंगा
१३ और तलवार खींचकर उन के पीछे चलाऊंगा। इस प्रकार से मेरा कोप शान्त होगा मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भड़काकर[2] शान्ति पाऊंगा और जब मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भड़का चुकूंगा तब वे जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने जलन में आकर
१४ यह कहा है। और मैं तुझे तेरे चारों ओर की जातियों के बीच सब बटोहियों के देखते उजाड़ूंगा और तेरी
१५ नामधराई कराऊंगा। सो जब मैं तुझ को कोप और जलजलाहट और रिसवाली घुड़कियों के साथ दण्ड दूंगा तब तेरे चारों ओर की जातियों के साम्हने नामधराई ठट्ठा शिक्षा और विस्मय होगा क्योंकि मुझ यहोवा ने यह
१६ कहा है। यह तब होगा जब मैं उन लोगों को नाश करने के लिये तुम पर महंगी तीखे के तीर चलाकर तुम्हारे बीच महंगी बढ़ाऊंगा और तुम्हारे अन्नरूपी आधार को
१७ दूर करूंगा, और मैं तुम्हारे बीच महंगी और दुष्ट जन्तु भेजूंगा जो तुझे निःसन्तान करेंगे और मरी और खून तुम्हारे बीच चलते रहेंगे और मैं तुझ पर तलवार चलवाऊंगा मुझ यहोवा ने यह कहा है॥

६. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
२ पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख इस्राएल के पहाड़ों की ओर करके
३ उन के विरुद्ध नबूवत कर। और कह कि हे इस्राएल के पहाड़ो प्रभु यहोवा का वचन सुनो प्रभु यहोवा पहाड़ों और पहाड़ियों से और नालों और तराइयों से यों

(१) मूल में गल जाएंगे।

(२) जलजलाहट को विश्राम देकर।

कहता है कि सुनो मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा और
४ पूजा के तुम्हारे ऊंचे स्थानों का नाश करूंगा। और
तुम्हारी वेदियां उजड़ेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएं
तोड़ी जाएंगी और मैं तुम में के मारे हुओं को तुम्हारी
५ मूरतों के आगे फेंक दूंगा। मैं इस्राएलियों की लोथों को
उन की मूरतों के साम्हने रक्खूंगा और उन की[१] हाड्डियों
६ को तुम्हारी वेदियों के आस पास छितरा दूंगा। तुम पर
के जितने बसे बसाये नगर हैं सो सब उजड़ जाएंगे और
पूजा के ऊंचे स्थान उजाड़ हो जाएंगे कि तुम्हारी वेदियां
उजड़ें और ढाई जाएं और तुम्हारी मूरतें जाती रहें
और तुम्हारी सूर्य्य की प्रतिमाएं काटी जाएं और
७ तुम पर जो कुछ बना है सो मिट जाए। और तुम्हारे
बीच मारे हुए गिरेंगे और तुम जान लोगे कि मैं
८ यहोवा हूं। तौभी मैं कितनों को बचा रक्खूंगा सो जब
तुम देश देश में तित्तर बित्तर होगे तब अन्यजातियों के
बीच तलवार से बचे हुए तुम्हारे कुछ लोग पाए जाएंगे।
९ और तुम्हारे वे बचे हुए लोग उन जातियों के बीच जिन
में वे बंधुए होकर जाएंगे मुझे स्मरण करेंगे और यह
भी कि हमारा व्यभिचारी हृदय यहोवा से कैसे हट गया
है और हमारी व्यभिचारिन की सी आंखें मूरतों पर
कैसे लगी हैं जिस से यहोवा का मन कैसा टूटा है।
इस रीति से उन बुराइयों के कारण जो उन्हों ने अपने
सारे घिनौने काम करके की है अपने लेखे में घिनौने
१० ठहरेंगे। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं और मैं ने
उन की यह सारी हानि करने को जो कहा है सो व्यर्थ
नहीं कहा॥

११ प्रभु यहोवा यों कहता है कि अपना हाथ दे मार-
कर और अपना पांव पटककर कह हाय हाय इस्राएल
के घराने के सारे घिनौने कामों पर वे तलवार भूख और
१२ मरी से नाश हो जाएंगे। जो दूर हो सो मरी से मरेगा
और जो निकट हो सो तलवार से मार डाला जाएगा
और जो बचकर नगर में रहते हुए घेरा जाए सो भूख
से मरेगा इस भांति मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी
१३ रीति से उतारूंगा। और जब हर एक ऊंची पहाड़ी
और पहाड़ों की हर एक चोटी पर और हर एक हरे
पेड़ के नीचे और हर एक घने बांजवृक्ष की छाया में और
जहां जहां वे अपनी सब मूरतों को सुखदायक सुगंध
द्रव्य चढ़ाते हैं वहां वहां उन में के मारे हुए लोग अपनी
वेदियों के आस पास अपनी मूरतों के बीच पड़े रहेंगे
१४ तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। मैं अपना
हाथ उन के विरुद्ध बढ़ाकर उस देश को सारे घरों समेत

(१) मूल में तुम्हारी।

जंगल से ले दिबला की ओर लों उजाड़ ही उजाड़ कर
दूंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

७. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा कि हे मनुष्य के सन्तान २
प्रभु यहोवा इस्राएल की भूमि के विषय यों कहता है
कि अन्त हुआ चारों कोनों समेत देश का अंत आ गया
है। तेरा अन्त अभी आ गया और मैं अपना कोप ३
तुझ पर भड़काकर तेरे चालचलन के अनुसार तुझे दण्ड
दूंगा और तेरे सारे घिनौने कामों का फल तुझे दूंगा।
और मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी और न मैं कोमलता ४
करूंगा तेरे चालचलन का फल तुझे दूंगा और तेरे
घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तू जान लेगा कि मैं
यहोवा हूं॥

प्रभु यहोवा यों कहता है कि विपत्ति है वह एक ५
ही विपत्ति है देखो वह आया चाहती है। अन्त आ गया ६
सब का अन्त आया है वह तेरे विरुद्ध जागा है देखो वह
आया चाहता है। हे देश के निवासी तेरे लिये चक्र ७
घूम चुका समय आ गया दिन नियरा गया पहाड़ों पर
आनन्द के शब्द का दिन नहीं हुल्लड़ ही का होगा। अब ८
थोड़े दिनों में मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर भड़काऊंगा[२]
और तुझ पर पूरा कोप करूंगा और तेरे चालचलन
के अनुसार तुझे दण्ड दूंगा और तेरे सारे घिनौने कामों
का फल तुझे भुगताऊंगा। और मेरी दयादृष्टि तुझ पर ९
न होगी न मैं तुझ से कोमलता करूंगा। बरन तुझे तेरी
चालचलन का फल भुगताऊंगा और तेरे घिनौने पाप
तुझ में बने रहेंगे तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा
मारनेहारा हूं। देखो उस दिन को देखो वह आया १०
चाहता है चक्र अभी घूम चुका दण्ड फूल चुका अभि-
मान फूला है। उपद्रव बढ़ते बढ़ते दुष्टता का दण्ड बन ११
गया न तो उन में से कोई रह जाएगा और न उन की
भीड़ भाड़ वा उन के धन में से कुछ रहेगा और न उन
में से किसी के लिये विलाप सुन पड़ेगा। समय आ १२
गया दिन नियरा गया न तो मोल लेनेहारा आनन्द
और न बेचनेहारा शोक करे क्योंकि उस की सारी भीड़
भाड़ पर कोप भड़क उठा है। सो चाहे वे जीते रहें तौभी १३
बेचनेहारा बेची हुई वस्तु के पास कभी लौटने न पाएगा
क्योंकि दर्शन की यह बात देश की सारी भीड़भाड़ पर घटेगी
कोई न लौटेगा बरन कोई मनुष्य जो अधर्म्म में जीता
रहता है बल न पकड़ सकेगा। उन्हों ने नरसिंगा फूंका १४
और सब कुछ तैयार कर दिया पर युद्ध में कोई नहीं

(२) मूल में उण्डेलूंगा।

जाता क्योंकि देश की सारी भीड़ भाड़ पर मेरा कोप
१५ भड़का हुआ है। बाहर तो तलवार और भीतर महंगी और मरी हैं जो मैदान में हो सो तलवार से मरेगा और जो नगर में हो सो भूख और मरी से मारा जाएगा।
१६ और उन में से जो बच निकलेंगे सो बचेंगे तो सही पर अपने अपने अधर्म्म में फंसे रहकर तराइयों में रहनेहारे कबूतरों की नाईं पहाड़ों के ऊपर
१७ विलाप करते रहेंगे। सब के हाथ ढीले और सब के
१८ घुटने अति निर्बल हो जाएंगे[१]। और वे कमर में टाट कसेंगे और उन के रोएं खड़े होंगे सब के मुंह
१९ सूख जाएंगे और सब के सिर मूंड़े जाएंगे। वे अपनी चांदी सड़कों में फेंक देंगे और उन का सोना मैली वस्तु ठहरेगा यहोवा की जलन के दिन उन का सोना चांदी उन को बचा न सकेगी न उस से उन का जी सन्तुष्ट होगा न उन के पेट भरेंगे क्योंकि वह उन के अधर्म्म के
२० ठोकर का कारण हुआ है। उन का देश जो शोभायमान शिरोमणि था उस के विषय उन्हों ने गर्व्व ही गर्व्व करके उस में अपनी घिनौनी वस्तुओं की मूरतें और और घिनौनी वस्तुएं बना रक्खीं इस कारण मैं ने उसे उन के
२१ लिये मैली वस्तु ठहराया है। और मैं उसे लूटने के लिये परदेशियों के हाथ और धन छीनने के लिये पृथिवी के दुष्ट लोगों के वश कर दूंगा और वे उसे अपवित्र कर
२२ डालेंगे। मैं उन से मुंह फेर लूंगा सो वे मेरे रक्षित स्थान को अपवित्र करेंगे और डाकू उस में घुसकर उसे
२३ अपवित्र करेंगे। एक सांकल बना दे क्योंकि देश अन्याय
२४ के खून से और नगर उपद्रव से भरा हुआ है। सो मैं अन्यजातियों के बुरे से बुरे लोग लाऊंगा जो उन के घरों के स्वामी हो जाएंगे और मैं सामर्थियों का गर्व्व तोड़ दूंगा और उन के पवित्र स्थान अपवित्र किये
२५ जाएंगे। सत्यानाश होने पर है उन्हें ढूंढ़ने पर भी शान्ति
२६ न मिलेगी। विपत्ति पर विपत्ति आएगी और चर्चा के पीछे चर्चा सुनाई पड़ेगी और लोग नबी से दर्शन की बात पूछेंगे पर याजक के पास से व्यवस्था और पुरनिये के पास से सम्मति देने की शक्ति जाती रहेगी।
२७ राजा तो शोक करेगा और रईस उदासीरूपी वस्त्र पहिनेंगे और देश के लोगों के हाथ ढीले पड़ेंगे मैं उन के चलन के अनुसार उन से बर्ताव करूंगा और उन की कमाई के समान उन को दण्ड दूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

(१) मूल में जल [बनकर बह] जाएंगे।

८. फिर छठवें बरस के छठवें महीने के पांचवें दिन को मैं अपने घर में बैठा था और यहूदियों के पुरनिये मेरे साम्हने बैठे थे कि प्रभु यहोवा की शक्ति[२] वहीं मुझ पर हुई।
२ तब मैं ने देखा कि आग का सा एक रूप दिखाई देता है उस की कमर से नीचे की ओर आग है और उस की कमर से ऊपर की ओर झलकाए हुए पीतल की
३ झलक सी कुछ है। उस ने हाथ सा कुछ बढ़ाकर मेरे सिर के बाल पकड़े तब आत्मा ने मुझे पृथिवी और आकाश के बीच में उठाकर परमेश्वर के दिखाये हुए दर्शनों में यरूशलेम के मन्दिर के भीतर आंगन के उस फाटक के पास पहुंचा दिया जिस का मुंह उत्तर ओर है और जिस में उस जलन उपजानेहारी प्रतिमा का स्थान था जिस के कारण जलन होती है।
४ फिर वहां इस्राएल के परमेश्वर का तेज वैसा ही था
५ जैसा मैं ने मैदान में देखा था। उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान अपनी आंखें उत्तर ओर उठाकर देख सो मैं ने अपनी आंखें उत्तर ओर उठाकर देखा कि वेदी के फाटक की उत्तर ओर उस के पैठाव ही में
६ वह जलन उपजानेहारी प्रतिमा है। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं इस्राएल का घराना क्या ही बड़े घिनौने काम यहां करता है जिस से मैं अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊं फिर तुझे इन से भी अधिक घिनौने काम
७ देखने को हैं। तब वह मुझे आंगन के द्वार पर ले गया और मैं ने देखा कि भीत में एक छेद है।
८ तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान भीत को फोड़ सो मैं ने भीत को फोड़कर क्या देखा कि
९ एक द्वार है। उस ने मुझ से कहा भीतर जाकर देख कि ये लोग यहां कैसे कैसे अति घिनौने काम कर रहे
१० हैं। सो मैं ने भीतर जाकर देखा कि चारों ओर की भीत पर जाति जाति के रेंगनेहारे जन्तुओं और घिनौने पशुओं और इस्राएल के घराने की सब मूरतों के चित्र
११ खिंचे हुए हैं। और इस्राएल के घराने के पुरनियों में से सत्तर पुरुष जिन के बीच शापान का पुत्र याजन्याह भी है सो उन चित्रों के साम्हने खड़े हैं और एक एक पुरुष अपने हाथ में धूपदान लिये हुए है और धूप के धूएं के
१२ बादल की सुगन्ध उठ रही है। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान क्या तू ने देखा है कि इस्राएल के घराने के पुरनिये अपनी अपनी नक्काशीवाली

(२) मूल में का हाथ।

कोठरियों के अन्धेरे में क्या कर रहे हैं वे कहते हैं कि यहोवा हम को नहीं देखता यहोवा ने देश को त्याग दिया है। १३ फिर उस ने मुझ से कहा तुझे इन से और भी बड़े बड़े घिनौने काम जो वे करते हैं देखने को हैं। १४ तब वह मुझे यहोवा के भवन के उस फाटक के पास ले गया जो उत्तर ओर था और वहां स्त्रियां बैठी हुई तम्मूज के लिये रो रही थीं। १५ तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान क्या तू ने यह देखा है फिर इन से भी बड़े घिनौने काम तुझे देखने को हैं। १६ सो वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आंगन में ले गया और वहां यहोवा के मन्दिर के द्वार के पास ओसारे और वेदी के बीच कोई पचीस पुरुष अपनी पीठ यहोवा के मन्दिर की ओर और अपने मुख पूरब ओर किये हुए थे और वे पूरब दिशा की ओर सूर्य को दण्डवत् कर रहे थे। १७ तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान क्या तू ने यह देखा है क्या यहूदा के घराने का ये घिनौने काम करना जो वे यहां करते हैं हलकी बात है उन्हों ने अपने देश को उपद्रव से भर दिया और फिर यहां आकर मुझे रिस दिलाते हैं बरन वे डाली को अपनी नाक के आगे लिये रहते हैं। १८ सो मैं आप जलजलाहट के साथ काम करूंगा मेरी दयादृष्टि न होगी न मैं कोमलता करूंगा और चाहे वे मेरे कानों में ऊंचे शब्द से पुकारें तौभी मैं उन की न सुनूंगा॥

९. फिर उस ने मेरे सुनते ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा नगर के अधिकारियों को अपने अपने हाथ में नाश करने का हथियार लिये हुए निकट लाओ। २ इस पर छः पुरुष उत्तर ओर के ऊपरी फाटक के मार्ग से अपने अपने हाथ में घात करने का हथियार लिये हुये आये और उन के बीच सन का वस्त्र पहिने कमर में दवात बांधे हुये एक और पुरुष था। और वे सब भवन के भीतर जाकर पीतल की वेदी के पास खड़े हुए। ३ इस्राएल के परमेश्वर का तेज तो करूबों पर से जिन के ऊपर वह रहा करता था भवन की डेवढ़ी पर उठ आया था और उस ने उस सन का वस्त्र पहिने हुए पुरुष को जो कमर में दवात बांधे हुए था पुकारा। ४ और यहोवा ने उस से कहा इस यरूशलेम नगर के भीतर इधर उधर जाकर जितने मनुष्य उन सारे घिनौने कामों के कारण जो उस में किये जाते हैं सांसें भरते और दुःख के मारे चिल्लाते हैं उन के माथों पर चिन्ह कर दे। ५ तब दूसरों से उस ने मेरे सुनते कहा नगर में उस के पीछे पीछे चलकर मारते जाओ किसी पर दयादृष्टि न करना न कोमलता से काम करना। ६ बूढ़े जवान कुंवारी बालबच्चे स्त्रियां सब को मारकर नाश करना जिस किसी मनुष्य के माथे पर वह चिन्ह हो उस के निकट न जाना और मेरे पवित्रस्थान ही से आरम्भ करो। सो उन्हों ने उन पुरनियों से आरम्भ किया जो भवन के साम्हने थे। ७ फिर उस ने उन से कहा भवन को अशुद्ध करो और आंगनों को लोथों से भर दो निकल जाओ। सो वे निकलकर नगर में मारने लगे। ८ जब वे मार रहे थे और मैं अकेला रह गया तब मैं ने मुंह के बल गिर चिल्लाकर कहा हाय प्रभु यहोवा क्या तू अपनी जलजलाहट यरूशलेम पर भड़काकर[१] इस्राएल के सारे बचे हुओं को भी नाश करेगा। ९ उस ने मुझ से कहा इस्राएल और यहूदा के घरानों का अधर्म्म अत्यन्त ही बड़ा है यहां तक कि देश तो खून से और नगर अन्याय से भर गया है और वे कहते हैं कि यहोवा ने पृथिवी[२] को त्यागा और यहोवा कुछ नहीं देखता। १० सो मेरी दयादृष्टि न होगी न मैं कोमलता करूंगा बरन उन की चाल उन्हीं के सिर लौटा दूंगा। ११ तब मैं ने क्या देखा कि जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए और कमर में दवात बांधे था उस ने यह कहकर समाचार दिया कि जैसे तू ने आज्ञा दी वैसे ही मैं ने किया है॥

१०. इस के पीछे मैं ने देखा कि करूबों के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल है उस में नीलमणि का सिंहासन सा कुछ दिखाई देता है। २ तब यहोवा ने उस सन का वस्त्र पहिने हुए पुरुष से कहा घूमनेहारे पहियों के बीच करूबों के नीचे जा अपनी दोनों मुट्ठियों को करूबों के बीच के अंगारों से भरकर नगर पर छितरा दे। सो वह मेरे देखते उन के बीच में गया। ३ जब वह पुरुष करूबों के बीच में गया तब तो वे भवन की दक्खिन ओर खड़े थे और बादल भीतरी आंगन में भरा हुआ था। ४ पर पीछे यहोवा का तेज करूबों के ऊपर से उठकर भवन की डेवढ़ी पर आ गया और बादल भवन में भर गया और आंगन यहोवा के तेज के प्रकाश से भर

(१) मूल में उण्डेलते उण्डेलते।

(२) वा इस देश।

५ गया। और करूबों के पंखों का शब्द बाहरी आंगन तक सुनाई देता था वह सर्वशक्तिमान् ईश्वर के बोलने का ६ सा शब्द था। जब उस ने सन का वस्त्र पहिने हुए पुरुष को घूमनेहारे पहियों के बीच से करूबों के बीच से आग लेने की आज्ञा दी तब वह उन के बीच में जाकर एक ७ पहिये के पास खड़ा हुआ। तब करूबों के बीच से एक करूब ने अपना हाथ बढ़ाकर उस आग में डाल दिया जो करूबों के बीच में थी और कुछ उठाकर सन का वस्त्र पहिने हुए की मुट्ठी में दी और वह उसे लेकर बाहर गया। ८ करूबों के पंखों के नीचे तो मनुष्य का हाथ सा कुछ ९ दिखाई देता था। तब मैं ने देखा कि करूबों के पास चार पहिये हैं अर्थात् एक एक करूब के पास एक एक पहिया है और पहियों का रूप फीरोजा का सा है। १० और उन का ऐसा रूप है कि चारों एक से दिखाई देते हैं अर्थात् जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो। ११ चलने के समय वे अपनी चारों अलंगों के बल से चलते हैं और चलते समय मुड़ते नहीं बरन जिधर उन का सिर रहता है उधर ही वे उस के पीछे चलते हैं १२ चलते समय वे मुड़ते नहीं। और पीठ हाथ और पंखों समेत करूबों का सारा शरीर और जो पहिये उन के हैं सो भी सब के सब चारों ओर आंखों से भरे हुए हैं। १३ पहिये मेरे सुनते यह कहलाये अर्थात् घूमनेहारे पहिये। १४ और एक एक के चार चार मुख थे एक मुख तो करूब का सा दूसरा मनुष्य का सा तीसरा सिंह का सा और १५ चौथा उकाब पक्षी का सा था। करूब तो भूमि पर से उठ गये ये तो वे ही जीवधारी हैं जो मैं ने कबार नदी १६ के पास देखे थे। और जब जब वे करूब चलते तब तब पहिये उन के पास पास चलते हैं और जब जब करूब पृथिवी पर से उठने के लिये अपने पंख उठाते १७ तब तब पहिये उन के पास से नहीं मुड़ते। जब वे खड़े होते तब ये भी खड़े होते हैं और जब वे उठते तब ये भी उन के संग उठते हैं क्योंकि जीवधारियों का आत्मा १८ इन में भी रहता है। यहोवा का तेज तो भवन की १९ डेवढ़ी पर से उठकर करूबों के ऊपर ठहर गया। और करूब अपने पंख उठा मेरे देखते पृथिवी पर से उठकर निकल गये और पहिये भी उन के संग गये और वे सब यहोवा के भवन के पूरबी फाटक में खड़े हो गये और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उन के ऊपर ठहरा रहा। २० ये वे ही जीवधारी हैं जो मैं ने कबार नदी के पास इस्राएल के परमेश्वर के नीचे देखे थे और मैं ने जान २१ लिया कि वे भी करूब हैं। एक एक के चार मुख और चार पंख और पंखों के नीचे मनुष्य के से हाथ भी हैं। २२ और उन के मुखों का रूप वही है जो मैं ने कबार नदी के तीर पर देखा और उन के मुख का क्या बरन उन की सारी देह भी वैसी ही है वे सीधे अपने ही अपने साम्हने चलते हैं॥

११. तब आत्मा ने मुझे उठाकर यहोवा के भवन के पूरबी फाटक के पास जिस का मुंह पूरब दिशा की ओर है पहुंचा दिया और वहां मैं ने क्या देखा कि फाटक ही में पचीस पुरुष हैं और मैं ने उन के बीच अज्जूर के पुत्र याजन्याह को और बनायाह के पुत्र पलत्याह को देखा २ जो प्रजा के हाकिम थे। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान जो मनुष्य इस नगर में अनर्थ ३ कल्पना और बुरी युक्ति करते हैं सो ये ही हैं। ये तो कहते हैं घर बनाने का समय निकट नहीं यह नगर ४ हंडा और हम उस में का मांस हैं। इसलिये हे मनुष्य ५ के सन्तान इन के विरुद्ध नबूवत कर नबूवत। तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा और मुझ से कहा ऐसा कह कि यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल के घराने तुमने ऐसा ही कहा है। जो कुछ तुम्हारे मन ६ में आता है उसे मैं जानता हूं। तुम ने तो इस नगर में बहुतों को मार डाला बरन उस की सड़कों को ७ लोथों से भर दिया है। इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि जो मनुष्य तुम ने इस में मार डाले हैं उन की लोथें ही इस नगररूपी हंडे में का मांस हैं ८ और तुम इस के बीच से निकाले जाओगे। तुम तलवार से डरते हो और मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा प्रभु ९ यहोवा की यही वाणी है। मैं तुम को इस में से निकालकर परदेशियों के हाथ कर दूंगा और तुम को १० दण्ड दिलाऊंगा। तुम तलवार से मरकर गिरोगे और मैं तुम्हारा मुकद्दमा इस्राएल के देश के सिवाने पर ११ चुकाऊंगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। न तो यह नगर तुम्हारे लिये हंडा और न तुम इस में का मांस होगे मैं तुम्हारा मुकद्दमा इस्राएल के देश के १२ सिवाने पर चुकाऊंगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं तुम तो मेरी विधियों पर नहीं चले और मेरे नियमों को तुम ने नहीं माना पर अपने चारों ओर १३ की अन्यजातियों की रीतियों पर चले हो। मैं इसी प्रकार की नबूवत कर रहा था कि बनायाह का पुत्र पलत्याह मर गया। तब मैं मुंह के बल गिरकर ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा और कहा हाय प्रभु यहोवा क्या तू इस्राएल के बचे हुओं को नाश ही नाश करता है॥

१४ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि,
१५ हे मनुष्य के सन्तान यरूशलेम के निवासियों ने तेरे निकट भाइयों से[1] बरन इस्राएल के सारे घराने से भी कहा है तुम यहोवा के पास से दूर हो जाओ यह देश
१६ हमारे ही अधिकार में दिया गया है। पर तू उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं ने तुम को दूर दूर की जातियों में बसाया और देश देश में तित्तर बित्तर कर दिया तो है तौभी जिन देशों में तुम आये हुए हो उन में मैं तुम्हारे लिये थोड़े दिन लों आप पवित्रस्थान ठहरा
१७ रहूंगा। फिर उन से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को जाति जाति के लोगों के बीच से बटोरूंगा और जिन देशों में तुम तित्तर बित्तर किये गये हो उन में से तुम को इकट्ठा करूंगा और तुम्हें इस्राएल
१८ की भूमि दूंगा। और वे वहां पहुंचकर उस देश की सब घिनौनी मूरतें और सब घिनौने काम भी उस में से दूर
१९ करेंगे। और मैं उन का एक ही मन कर दूंगा और तुम्हारे भीतर नया आत्मा उपजाऊंगा और उन की देह में से पत्थर का सा हृदय निकालकर उन्हें मांस का
२० हृदय दूंगा, जिस से वे मेरी विधियों पर चलें और मेरे नियमों को मानें और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उन
२१ का परमेश्वर ठहरूंगा। पर वे लोग जो अपनी घिनौनी मूरतों और घिनौने कामों में मन लगाकर चलते रहते हैं मैं ऐसा करूंगा कि उन की चाल उन्हीं के सिर पर
२२ पड़ेगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है। इस पर करूबों ने अपने पंख उठाये और पहिये उन के संग रहे और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उन के ऊपर था।
२३ तब यहोवा का तेज नगर के बीच पर से उठकर उस
२४ पर्वत पर ठहर गया जो नगर की पूरब ओर है। फिर आत्मा ने मुझे उठाया और परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से दर्शन में मुझे कसदियों के देश में बन्धुओं के पास पहुंचा दिया। और जो दर्शन मैं ने पाया था सो
२५ लोप हो गया[2]। तब जितनी बातें यहोवा ने मुझे दिखाई थीं सो मैं ने बन्धुओं को बता दीं॥

१२.

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के
२ सन्तान तू तो बलवा करनेहारे घराने के बीच रहता है जिन के देखने के लिये आंख तो हैं पर नहीं देखते और सुनने के लिये कान तो हैं पर नहीं सुनते क्योंकि
३ वे बलवा करनेहारे घराने के हैं। सो हे मनुष्य के सन्तान बन्धुआई का सामान तैयार करके दिन को उन के देखते उठ जाना अपना स्थान छोड़कर उन के देखते दूसरे स्थान को जाना यद्यपि वे बलवा करनेहारे घराने के हैं
४ तौभी क्या जानिये वे ध्यान दें। सो तू दिन को उन के देखते बन्धुआई के सामान की नाईं अपना सामान निकालना और तू आप बन्धुआई में जानेहारे की रीति
५ सांझ को उन के देखते उठ जाना। उन के देखते भीत
६ को फोड़कर उसी में से अपना सामान निकालना। उन के देखते उसे अपने कंधे पर उठाकर अंधेरे में निकालना और अपना मुख ढांपे रहना कि भूमि तुझे न देख पड़े क्योंकि मैं ने तुझे इस्राएल के घराने के लिये
७ चिन्ह ठहराया है। आज्ञा के अनुसार मैं ने ऐसा ही किया दिन को मैं ने अपना सामान बन्धुआई के सामान की नाईं निकाला और सांझ को अपने हाथ से भीत को फोड़ा फिर अंधेरे में सामान को निकालकर उन
८ के देखते अपने कंधे पर उठाये हुये चला गया। फिर बिहान को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि,
९ हे मनुष्य के सन्तान क्या इस्राएल के घराने ने अर्थात् उस बलवा करनेहारे घराने ने तुझ से यह नहीं पूछा कि
१० यह तू क्या करता है। तू उन से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि यह भारी वचन यरूशलेम में के प्रधान पुरुष और इस्राएल के सारे घराने के विषय है जिस
११ के बीच वे रहते हैं। तू उन से कह कि मैं तुम्हारे लिये चिन्ह हूं जैसा मैं ने आप किया है वैसा ही इस्राएली लोगों से भी किया जाएगा उन को उठकर बंधुआई में जाना
१२ पड़ेगा। उन के बीच जो प्रधान पुरुष है सो अंधेरे में अपने कंधे पर बोझ उठाये हुए निकलेगा वे अपना सामान निकालने के लिये भीत को फोड़ेंगे और वह प्रधान अपना मुख ढांपे रहेगा कि उस को भूमि न देख पड़े।
१३ फिर मैं उस पर अपना जाल फैलाऊंगा और वह मेरे फंदे में फंसेगा और मैं उसे कसदियों के देश के बाबेल में पहुंचा दूंगा पर यद्यपि वह उस नगर में मर जाएगा
१४ तौभी उस को न देखेगा। और जितने उस के आस पास उस के सहायक होंगे उन को और उस की सारी टोलियों को मैं सब दिशाओं में तित्तर बित्तर कर दूंगा
१५ और तलवार खींचकर उन के पीछे चलवाऊंगा। और जब मैं उन्हें जाति जाति में तित्तर बित्तर कर दूंगा और देश देश में छिन्न भिन्न कर दूंगा तब वे जान लेंगे कि
१६ मैं यहोवा हूं। और मैं उन में से थोड़े से लोगों को तलवार भूख और मरी से बचा रक्खूंगा और वे अपने घिनौने काम उन जातियों में बखान करेंगे जिन के बीच वे पहुंचेंगे तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

(१) मूल में तेरे भाइयों तेरे भाइयों तेरे समीपीजनों से।
(२) मूल में मुझ पर से उठ गया।

१७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा १८ कि, हे मनुष्य के सन्तान कांपते हुए अपनी रोटी खाना और थरथराते और चिन्ता करते हुए अपना पानी १९ पीना । और इस देश के लोगों से यों कहना कि प्रभु यहोवा यरूशलेम और इस्राएल के देश के निवासियों के विषय यों कहता है कि वे अपनी रोटी चिन्ता के साथ खाएंगे और अपना पानी विस्मय के साथ पीएंगे और देश के सब रहनेहारों के उपद्रव के कारण उस सब २० से जो उस में है वह रहित होकर उजड़ जाएगा । और बसे हुए नगर उजड़ेंगे और देश भी उजाड़ हो जाएगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं ॥

२१ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २२ हे मनुष्य के सन्तान यह क्या कहावत है जो तुम लोग इस्राएल के देश में कहा करते हो कि दिन अधिक हो २३ गये हैं और दर्शन की कोई बात पूरी नहीं हुई[1] । इसलिये उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं इस कहावत को बन्द करूंगा और यह कहावत इस्राएल पर फिर न चलेगी तू उन से कह कि वह दिन निकट आया २४ और दर्शन की सब बातें पूरी होने पर हैं । और इस्राएल के घराने में न तो झूठे दर्शन की कोई बात और न भावी २५ की कोई चिकनी चुपड़ी बात फिर कही जाएगी । क्योंकि मैं यहोवा हूं जब मैं बोलूं तब जो वचन मैं कहूं सो पूरा हो जाएगा उस में विलम्ब न होगा हे बलवा करनेहारे घराने तुम्हारे ही दिनों में मैं वचन कहूंगा और वह पूरा हो जाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

२६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा २७ कि, हे मनुष्य के सन्तान सुन इस्राएल के घराने के लोग यह कह रहे हैं कि जो दर्शन वह देखता है सो बहुत दिन के पीछे पूरा होनेवाला है और वह दूर के २८ समय के विषय नबूवत करता है । इसलिये तू उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे किसी वचन के पूरे होने में फिर विलम्ब न होगा बरन जो वचन मैं कहूं सो पूरा ही होगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१३. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य २ के सन्तान इस्राएल के जो नबी अपने ही मन से नबूवत करते हैं उन के विरुद्ध तू नबूवत करके कह कि यहोवा ३ का वचन सुनो । प्रभु यहोवा यों कहता है कि हाय उन मूढ़ नबियों पर जो अपने ही आत्मा के पीछे भटक जाते ४ और दर्शन नहीं पाया । हे इस्राएल तेरे नबी खण्डहरों में की लोमड़ियों के समान बने हैं । ५ तुम ने नाकों में चढ़कर इस्राएल के घराने के लिये भीत नहीं सुधारी जिस से वे यहोवा के दिन युद्ध में स्थिर रह सकें । ६ जो लोग कहते हैं कि यहोवा की यह वाणी है उन्हों ने भावी का व्यर्थ और झूठा दावा किया है क्योंकि चाहे तुम ने यह आशा दिलाई कि यहोवा यह वचन पूरा करेगा तौभी यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा । ७ क्या तुम्हारा दर्शन झूठा नहीं है और क्या तुम झूठमूठ भावी नहीं कहते कि तुम कहते हो कि यहोवा की यह वाणी है पर मैं ने कुछ नहीं कहा है । ८ इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है कि तुम ने जो व्यर्थ बात कही और झूठे दर्शन देखे हैं इसलिये मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

९ जो नबी झूठे दर्शन देखते और झूठमूठ भावी कहते हैं मेरा हाथ उन के विरुद्ध होगा और न वे मेरी प्रजा की गोष्ठी में भागी होंगे न उन के नाम इस्राएल की नामावली में लिखे जाएंगे और न वे इस्राएल के देश में प्रवेश करने पाएंगे इस से तुम लोग जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं । १० क्योंकि[2] उन्हों ने शान्ति ऐसा कहकर जब शान्ति नहीं है मेरी प्रजा को बहकाया है फिर जब कोई भीत बनाता तब वे उस की कच्ची लेसाई करते हैं । ११ उन कच्ची लेसाई करनेहारों से कह कि वह तो गिर जाएगी क्योंकि बड़े जोर की वर्षा होगी और बड़े बड़े ओले भी गिरेंगे और प्रचण्ड आंधी उसे गिराएगी । १२ सो जब भीत गिर जाएगी तब क्या लोग तुम से यह न कहेंगे कि जो लेसाई तुम ने की सो कहां रही । १३ इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है कि मैं जलकर उस को प्रचण्ड आंधी के द्वारा गिराऊंगा और मेरे कोप से भारी वर्षा होगी और मेरी जलजलाहट से बड़े बड़े ओले गिरेंगे कि भीत को नाश करें । १४ इस रीति जिस भीत पर तुम ने कच्ची लेसाई की है उसे मैं ढा दूंगा बरन मिट्टी में मिलाऊंगा और उस की नेव खुल जाएगी और जब वह गिरेगी तब तुम भी उस के नीचे दबकर नाश होगे तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं । १५ इस रीति मैं भीत और उस की कच्ची लेसाई करनेहारे दोनों पर अपनी जलजलाहट पूरी रीति से भड़काऊंगा फिर तुम से कहूंगा कि न तो भीत रही और न उस के लेसनेहारे रहे, १६ अर्थात् इस्राएल के वे नबी जो यरूशलेम के विषय नबूवत करते और उन की शांति का दर्शन बताते हैं पर प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि शांति है ही नहीं ॥

(१) मूल में सब दर्शन नाश हुए ।

(२) मूल में क्योंकि और क्योंकि

१७ फिर हे मनुष्य के सन्तान तू अपने लोगों की स्त्रियों[१] से विमुख होकर जो अपने ही मन से नबूवत करती हैं उन के विरुद्ध नबूवत करके कह, १८ कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जो स्त्रियां हाथ के सब जोड़ों के लिये तकिया सीती और प्राणियों का अहेर करने को डील डील के मनुष्यों के सिर के ढांपने के लिये कपड़े बनाती हैं उन पर हाय । क्या तुम मेरी प्रजा के प्राणों का अहेर करके अपने निज प्राण बचा रक्खोगी । १९ तुम ने तो मुट्ठी मुट्ठी भर जव और रोटी के टुकड़ों के बदले मुझे मेरी प्रजा की दृष्टि में अपवित्र ठहराकर अपनी उन झूठी बातों के द्वारा जो मेरी प्रजा के लोग तुम से सुनते हैं उन प्राणियों को मार डाला जो नाश के योग्य न थे और उन प्राणियों को बचा रक्खा है जो बचने के योग्य न थे । २० इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है कि सुनो मैं तुम्हारे उन तकियों के विरुद्ध हूं जिन के द्वारा तुम वहां प्राणियों को अहेर करके उड़ाती हो सो उन को तुम्हारी बांह पर से छीनकर उन प्राणियों को छुड़ा दूंगा जिन्हें तुम अहेर कर करके उड़ाती हो । २१ फिर मैं तुम्हारे सिर के कपड़े फाड़कर अपनी प्रजा के लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊंगा और वे आगे को तुम्हारे वश में न रहेंगे कि तुम उन का अहेर कर सको तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं । २२ तुम ने जो झूठ कह कर धर्म्मी के मन को उदास किया है जिस को मैं ने उदास करना नहीं चाहा और दुष्ट जन को हियाव बंधाया है जिस से वह अपने बुरे मार्ग से न फिरे और जीता रहे, २३ इस कारण तुम फिर न तो झूठा दर्शन देखोगी और न भावी कहोगी क्योंकि मैं अपनी प्रजा को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊंगा तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं ॥

१४. **फिर** इस्राएल के कितने पुरनिये मेरे पास आकर मेरे साम्हने बैठ गये । २ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, ३ हे मनुष्य के सन्तान इन पुरुषों ने तो अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित कीं और अपने अधर्म्म की ठोकर अपने साम्हने रक्खी है फिर क्या वे मुझ से कुछ भी पूछने पाएं । ४ सो तू उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि इस्राएल के घराने में से जो कोई अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित करके और अपने अधर्म्म की ठोकर अपने साम्हने रखकर नबी के पास आए उस को मैं यहोवा उस की बहुत सी मूरतों के अनुसार ही उत्तर दूंगा, ५ जिस से इस्राएल का घराना जो अपनी मूरतों के द्वारा मुझे त्यागकर सब का सब दूर हो गया है उन्हें मैं उन्हीं के मन के द्वारा फंसाऊं । ६ सो इस्राएल के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि फिरो और अपनी मूरतों को पीठ पीछे करो और अपने सब घिनौने कामों से मुंह मोड़ो । ७ क्योंकि इस्राएल के घराने में से और उस के बीच रहनेहारे परदेशियों में से भी कोई क्यों न हो जो मेरे पीछे हो लेना छोड़कर अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित करे और अपने अधर्म्म की ठोकर अपने साम्हने रक्खे और तब मुझ से अपनी कोई बात पूछने के लिये नबी के पास आए उस को मैं यहोवा आप ही उत्तर दूंगा । ८ और मैं उस मनुष्य से विमुख होकर उस को विस्मित करूंगा और चिह्न ठहराऊंगा उस की कहावत चलाऊंगा और मैं उसे अपनी प्रजा में से नाश करूंगा तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं । ९ और यदि नबी ने धोखा खाकर कोई वचन कहा हो तो जानो कि मुझ यहोवा ने उस नबी को धोखा दिया है और अपना हाथ उस के विरुद्ध बढ़ाकर उसे अपनी प्रजा इस्राएल में से विनाश करूंगा । १० वे सब लोग अपने अपने अधर्म्म का बोझ उठाएंगे अर्थात् जैसा नबी से पूछनेहारे का अधर्म्म ठहरेगा नबी का भी अधर्म्म वैसा ही ठहरेगा, ११ इसलिये कि इस्राएल का घराना मेरे पीछे हो लेना आगे को न छोड़े न अपने भांति भांति के अपराधों के द्वारा आगे को अशुद्ध बने बरन वे मेरी प्रजा ठहरें और मैं उन का परमेश्वर ठहरूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१२ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १३ हे मनुष्य के सन्तान जब किसी देश के लोग मुझ से विश्वासघात करके पापी हो जाएं और मैं अपना हाथ उस देश के विरुद्ध बढ़ाकर उस में का अन्नरूपी आधार दूर करूं और उस में अकाल डालकर उस में से मनुष्य और पशु दोनों को नाश करूं, १४ तब चाहे उस में नूह दानिय्येल और अय्यूब ये तीनों पुरुष हों तौभी वे अपने धर्म के द्वारा केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है । १५ यदि मैं किसी देश में दुष्ट जन्तु भेजूं जो उस को निर्जन करके उजाड़ कर डालें और जन्तुओं के कारण कोई उस में होकर न जाए, १६ तो चाहे उस में वे तीन पुरुष हों तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह वे न तो बेटों न बेटियों को बचा सकेंगे वे ही अकेले बचेंगे और देश उजाड़ हो जाएगा । १७ यदि मैं उस देश पर तलवार खींचकर कहूं हे तलवार उस देश में चल और

(१) मूल में बेटियों ।

इस रीति मनुष्य और पशु उस में से नाश करूं,
१८ तो चाहे उस में वे तीन पुरुष हों तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह वे न तो बेटों न
१९ बेटियों को बचा सकेंगे वे ही अकेले बचेंगे। यदि मैं उस देश में मरी फैलाऊं और उस पर अपनी जलजलाहट भड़काकर[१] उस में का लोहू ऐसा बहाऊं कि वहां के
२० मनुष्य और पशु दोनों नाश हों। तो चाहे नूह दानिय्येल और अय्यूब उस में हों तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह वे न तो बेटों न बेटियों को बचा सकेंगे वे अपने धर्म्म के द्वारा
२१ अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे। और प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं यरूशलेम पर अपने चारों दण्ड पहुंचाऊंगा अर्थात् तलवार अकाल दुष्ट जन्तु और मरी
२२ जिन से मनुष्य और पशु सब उस में से नाश हों। तौभी उस में थोड़े से बेटे बेटियां बचेंगी वहां से निकालकर तुम्हारे पास पहुंचाई जाएंगी और तुम उन के चाल चलन और कामों को देखकर उस विपत्ति के विषय जो मैं यरूशलेम पर डालूंगा बरन जितनी विपत्ति मैं उस
२३ पर डालूंगा उस सब के विषय तुम शांति पाओगे। जब तुम उन का चाल चलन और काम देखो तब तुम्हारी शान्ति के कारण होंगे और तुम जान लोगे कि मैं ने यरूशलेम में जो कुछ किया सो बिना कारण नहीं किया प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१५. फिर

यहोवा का यह वचन मेरे पास
२ पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान सब वृक्षों में दाखलता की क्या श्रेष्ठता है दाख की शाखा जो जंगल के पेड़ों के बीच उत्पन्न होती है
३ उस में क्या गुण है। क्या कोई वस्तु बनाने के लिये उस में से लकड़ी ली जाती वा कोई बर्तन टांगने के लिये
४ उस में से खूंटी बन सकती है। वह तो ईन्धन बनकर आग में झोंकी जाती है उस के दोनों सिरे आग से जल जाते और उस का बीच भस्म हो जाता है क्या वह
५ किसी काम की है। सुन जब वह बनी थी तब वह भी किसी काम की न थी फिर जब वह आग का ईन्धन
६ होकर भस्म हो गई है तब किसी काम की कहां रही। सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि जैसे जंगल के पेड़ों में से मैं दाखलता को आग का ईन्धन कर देता हूं वैसे ही
७ मैं यरूशलेम के निवासियों को नाश कर देता हूं। और मैं उन से विमुख हूंगा और वे आग में से निकलकर फिर दूसरी आग का ईन्धन हो जाएंगे और जब मैं उन से विमुख हूंगा तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा
८ हूं। और मैं उन का देश उजाड़ दूंगा क्योंकि उन्हों ने मुझ से विश्वासघात किया है प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१६. फिर

यहोवा का यह वचन मेरे पास
२ पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान
३ यरूशलेम को उस के सब घिनौने काम जता दे। और उस से कह हे यरूशलेम प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है कि तेरा जन्म और तेरी उत्पत्ति कनानियों के देश से हुई तेरा पिता तो एमोरी और तेरी माता हित्तिन थी।
४ और तेरे जन्म पर ऐसा हुआ कि जिस दिन तू जन्मी उस दिन न तेरा नाल छीना गया न तू शुद्ध होने के लिये धोई गई न तेरे कुछ भी लोन मला गया न तू कुछ भी
५ कपड़ों में लपेटी गई। किसी की दयादृष्टि तुझ पर न हुई कि इन कामों में से तेरे लिये एक भी काम किया जाता बरन अपने जन्म के दिन तू घिनौनी होने के
६ कारण खुले मैदान में फेंक दी गई थी। और जब मैं तेरे पास से होकर निकला और तुझे लोहू में लोटते हुए देखा तब मैं ने तुझ से कहा हे लोहू में लोटती हुई जीती रह फिर तुझ से मैं ने कहा लोहू में लोटती हुई
७ जीती रह। फिर मैं ने तुझे खेत के बिरुले की नाईं बढ़ाया सो तू बढ़ते बढ़ते बड़ी हो गई और अति सुन्दर हो गई तेरी छातियां सुडौल हुईं और तेरे बाल बढ़े
८ और तू नंग धड़ंग थी। फिर मैं ने तेरे पास से होकर जाते हुए तुझे देखा कि तू पूरी स्त्री हो गई है सो मैं ने तुझे अपना वस्त्र ओढ़ाकर तेरा तन ढांप दिया और तुझ से किरिया खाकर तेरे संग वाचा बांधी और तू मेरी
९ हो गई प्रभु यहोवा की यही वाणी है। तब मैं ने तुझे जल से नहलाकर तेरा लोहू तुझ पर से धो दिया और
१० तेरी देह पर तेल मला। फिर मैं ने तुझे बूटेदार वस्त्र और सूइसों के चमड़े की पनहियां पहिनाईं और तेरी कमर में सूक्ष्म सन बांधा और तुझे रेशमी कपड़ा
११ ओढ़ाया। तब मैं ने तेरा सिंगार किया और तेरे हाथों
१२ में चूड़ियां और तेरे गले में तोड़ा पहिनाया। फिर मैं ने तेरी नाक में नत्थ और तेरे कानों में बालियां पहिनाईं
१३ और तेरे सिर पर शोभायमान मुकुट धरा। सो तेरे आभूषण सोने चांदी के और तेरे वस्त्र सूक्ष्म सन रेशम और बूटेदार कपड़े के बने फिर तेरा भोजन मैदा मधु और तेल हुआ। और तू अत्यन्त सुन्दर बरन रानी
१४ होने के योग्य हो गई। और तेरी सुन्दरता की कीर्त्ति अन्यजातियों में फैल गई क्योंकि उस प्रताप के कारण

(१) मूल में उण्डेलकर।

जो मैं ने अपनी ओर से तुझे दिया था तू पूर्ण सुन्दर थी प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१५ तब तू अपनी सुन्दरता का भरोसा करके अपनी नामवरी के कारण व्यभिचार करने लगी और सब बटोहियों के संग बहुत कुकर्म्म किया जो कोई तुझे चाहता १६ उसी से तू मिलती थी। और तू ने अपने वस्त्र लेकर रंग बिरंगे ऊंचे स्थान बना लिये और उन पर व्यभिचार १७ किया ऐसे काम फिर न बन पड़ेंगे, ऐसा नहीं होने का। और तू ने अपने सुशोभित गहने लेकर जो मेरे दिये हुए सोने चान्दी के थे पुरुष की मूरतें बना लीं और १८ उन से भी व्यभिचार करने लगी, और अपने बूटेदार वस्त्र लेकर उन को पहिनाये और मेरा तेल और मेरा धूप उन १९ के साम्हने चढ़ाया। और जो भोजन मैं ने तुझे दिया था अर्थात् जो मैदा तेल और मधु मैं तुझे खिलाता था सो सब तू ने उन के साम्हने सुखदायक सुगन्ध करके रक्खा २० यों ही होता था प्रभु यहोवा की यही वाणी है। फिर तू ने अपने बेटे बेटियां जो तू मेरी जन्माई जनी थी लेकर उन मूरतों को नैवेद्य करके चढ़ाई। क्या तेरा २१ व्यभिचार ऐसी छोटी बात थी, कि तू ने मेरे लड़केबाले २२ उन मूरतों के आगे आग में चढ़ाकर घात किये हैं। और तू ने अपने सब घिनौने काम में और व्यभिचार करते हुए अपने बचपन के दिनों की सुधि कभी न ली जब २३ तू नंग धड़ंग अपने लोहू में लोटती थी। और तेरी उस सारी बुराई के पीछे क्या हुआ प्रभु यहोवा की यह २४ वाणी है कि हाय तुझ पर हाय, कि तू ने एक डाटवाला घर बनवा लिया और हर एक चौक में एक ऊंचा २५ स्थान बनवा लिया। और एक एक सड़क के सिरे पर भी तू ने अपना ऊंचा स्थान बनवाकर अपनी सुन्दरता घिनौनी कर दी और एक एक बटोही को कुकर्म्म के २६ लिये बुलाकर महाव्यभिचारिन हो गई। तू ने अपने पड़ोसी मिस्री लोगों से भी जो मोटे ताजे हैं व्यभिचार किया तू मुझे रिस दिलाने के लिये अपना व्यभिचार २७ बढ़ाती गई। इस कारण मैं ने अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाकर तेरा दिन दिन का खाना घटा दिया और तेरी बैरिन पलिश्ती स्त्रियां जो तेरी महापाप की चाल से लजाती हैं उन की इच्छा पर मैं ने तुझे छोड़ दिया है। २८ फिर तेरी तृष्णा जो न बुझी इसलिये तू ने अश्शूरी लोगों से भी व्यभिचार किया और उन से व्यभिचार करने पर २९ भी तेरी तृष्णा न बुझी। फिर तू लेन देन के देश में व्यभिचार करते करते कसदियों के देश लों पहुंची और ३० वहां भी तेरी तृष्णा न बुझी। सो प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि तेरा हृदय कैसा चंचल है कि तू ये सब काम करती है जो निर्लज्ज वेश्या ही के काम हैं। ३१ तू ने जो एक एक सड़क के सिरे पर अपना डाटवाला घर और चौक चौक में अपना ऊंचा स्थान बनवाया है इसी में तू वेश्या के समान नहीं ठहरी क्योंकि तू ऐसी कमाई पर हंसती ३२ है। तू व्यभिचारिन पत्नी है तू पराये पुरुषों को अपने ३३ पति की सन्ती ग्रहण करती है। सब वेश्याओं को तो रुपया मिलता है पर तू ने अपने सब यारों को रुपए देकर और उन को लालच दिखाकर बुलाया है कि वे ३४ चारों ओर से आकर तुझ से व्यभिचार करें। इस प्रकार तेरा व्यभिचार और व्यभिचारिनों से उलटा है तेरे पीछे कोई व्यभिचारी नहीं चलता और तू दाम किसी से लेती नहीं बरन तू ही देती है इसी रीति तू उलटी ठहरी॥

३५ इस कारण हे वेश्या यहोवा का वचन सुन। ३६ प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू ने जो व्यभिचार में अति निर्लज्ज होकर अपनी देह अपने यारों को दिखाई और अपनी मूरतों से घिनौने काम किये और अपने ३७ लड़केबालों का लोहू बहाकर उन्हें बलि चढ़ाया है, इस कारण सुन मैं तेरे सब यारों को जो तेरे प्यारे हैं और जितनों से तू प्रीति लगाई और जितनों से तू ने बैर रक्खा उन सभों को चारों ओर से तेरे विरुद्ध इकट्ठा कर उन को तेरी देह नंगी करके दिखाऊंगा और वे तेरा ३८ तन देखेंगे। तब मैं तुझ को ऐसा दण्ड दूंगा जैसा व्यभिचारिनों और लोहू बहानेहारी स्त्रियों को दिया जाता है और क्रोध और जलन के साथ तेरा लोहू ३९ बहाऊंगा। इस रीति मैं तुझे उन के वश कर दूंगा और वे तेरे डाटवाले घर को ढा देंगे और तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़ देंगे और तेरे वस्त्र बरबस उतारेंगे और तेरे सुन्दर ४० गहने छीन लेंगे और तुझे नंग धड़ंग करके छोड़ेंगे। तब वे तेरे विरुद्ध एक सभा इकट्ठी करके तुझ को पत्थरवाह ४१ करेंगे और अपने कटारों से वारपार छेदेंगे। तब वे आग लगाकर तेरे घरों को जला देंगे और तुझे बहुत सी स्त्रियों के देखते दण्ड देंगे और मैं तेरा व्यभिचार बन्द करूंगा और तू छिनाले के लिये दाम फिर न देगी। ४२ और जब मैं तुझ पर पूरी जलजलाहट प्रगट कर चुकूंगा तब तुझ पर और न जलूंगा बरन शान्त हो जाऊंगा और ४३ फिर न रिसियाऊंगा। तू ने जो अपने बचपन के दिन स्मरण नहीं रक्खे बरन इन सब बातों के द्वारा मुझे चिढ़ाया इस कारण मैं तेरा चाल चलन तेरे सिर डालूंगा और तू अपने सब पिछले घिनौने कामों से अधिक और और महापाप न करेगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

४४ सुन कहावतों के सब कहनेहारे तेरे विषय यह ४५ कहावत कहेंगे कि जैसी मा वैसी बेटी। तेरी मा जो

अपने पति और लड़केवालों से घिन करती है तू ठीक उस की बेटी ठहरी और तेरी बहिनें जो अपने अपने पति और लड़केवालों से घिन करती थीं तू ठीक उन की बहिन ठहरी उन की भी माता हित्तिन और उन का भी पिता ४६ एमोरी था। तेरी बड़ी बहिन तो शोमरोन है जो अपनी बेटियों समेत तेरी बाईं ओर रहती है और तेरी छोटी बहिन जो तेरी दहिनी ओर रहती है सो बेटियों समेत ४७ सदोम है। पर तू उन की सी चाल नहीं चली और न उन के से घिनौने काम किये हैं यह तो बहुत छोटी बात ठहरती पर तेरा सारा चालचलन उन से भी अधिक ४८ बिगड़ गया। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौंह तेरी बहिन सदोम ने अपनी बेटियों समेत तेरे ४९ और तेरी बेटियों के समान काम नहीं किये। सुन तेरी बहिन सदोम का अधर्म्म यह था कि वह अपनी बेटियों सहित घमण्ड करती पेट भर भरके खाती और सुख चैन ५० से रहती थी और दीन दरिद्र को न संभालती थी। सो वह गर्व्व करके मेरे साम्हने घिनौने काम करने लगी और ५१ यह देखकर मैं ने उन्हें दूर कर दिया। फिर शोमरोन ने तेरे पाप के आधे भी नहीं किये तू ने तो उस से बढ़कर घिनौने काम किये और अपने सारे घिनौने कामों ५२ के द्वारा अपनी बहिनों को जीत लिया[१]। सो तू ने जो अपनी बहिनों का न्याय किया इस कारण लज्जा करती रह क्योंकि तू ने जो उन से बढ़कर घिनौने पाप किये हैं इस कारण वे तुझ से कम दोषी ठहरी हैं सो तू इस बात से लज्जा और लजाती रह कि तू ने अपनी बहिनों ५३ को जीत लिया है। सो जब मैं उन को अर्थात् बेटियों सहित सदोम और शोमरोन को बन्धुआई से फेर लाऊंगा तब उन के बीच ही तेरे बन्धुओं को भी फेर ५४ लाऊंगा, जिस से तू लजाती रहे और अपने सब कामों से यह देखकर लजाए कि तू उन की शांति ही का कारण ५५ हुई है। और तेरी बहिनें सदोम और शोमरोन अपनी अपनी बेटियों समेत अपनी पहिली दशा को फिर पहुंचेंगी और तू भी अपनी बेटियों सहित अपनी पहिली ५६ दशा को फिर पहुंचेगी। अपने घमण्ड के दिनों में तो ५७ तू अपनी बहिन सदोम का नाम भी न लेती थी, जब कि तेरी बुराई प्रगट न हुई थी अर्थात् जिस समय तू आसपास के लोगों समेत अरामी स्त्रियों की और पलिश्ती स्त्रियों की जो अब चारों ओर से तुझे तुच्छ जानती ५८ हैं नामधराई करती थी। पर अब तुझ को अपने महापाप और घिनौने कामों का भार आप ही उठाना पड़ा ५९ यहोवा की यही वाणी है। प्रभु यहोवा यह कहता है कि मैं तेरे साथ ऐसा बर्ताव करूंगा जैसा तू ने किया है तू ने तो वाचा तोड़कर किरिया तुच्छ जानी है। तौभी मैं ६० तेरे बचपन के दिनों की अपनी वाचा स्मरण करूंगा और तेरे साथ सदा की वाचा बांधूंगा। और जब तू ६१ अपनी बहिनों को अर्थात् अपनी बड़ी बड़ी और छोटी छोटी बहिनों को ग्रहण करे तब तू अपना चालचलन स्मरण करके लजाएगी और मैं उन्हें तेरी बेटियां ठहरा दूंगा पर यह तेरी वाचा के अनुसार न करूंगा। और ६२ मैं तेरे साथ अपनी वाचा स्थिर करूंगा तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूं, जिस से तू स्मरण करके लजाए ६३ और लज्जा के मारे फिर कभी मुंह न खोले यह तब होगा जब मैं तेरे सब कामों को ढांपूंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१७. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, कि हे मनुष्य के २ संतान इस्राएल के घराने से यह पहेली और दृष्टान्त कह कि, प्रभु यहोवा यों कहता है कि एक लम्बे पंखे- ३ वाले और परों से भरे और रङ्ग बिरङ्गे बड़े उकाब पक्षी ने लबानोन जाकर एक देवदार की फुनगी नोच ली। तब उस ने उस फुनगी की सब से ऊपर पतली टहनी ४ को तोड़ लिया और उसे लेन देन करनेहारों के देश में ले जाकर व्योपारियों के एक नगर में लगाया। तब उस ५ ने देश का कुछ बीज लेकर एक उपजाऊ खेत में बोया और उसे बहुत जल भरे स्थान में मजनू की नाईं लगाया। और वह उगकर छोटी फैलनेहारी दाखलता ६ हो गई जिस की डालियां उकाब की ओर झुकीं और उस की सोर उस के नीचे फैलीं इस प्रकार से वह दाखलता होकर कनखा फोड़ने और पत्तों से भरने लगी। फिर और एक लम्बे पंखवाला और परों से भरा ७ हुआ बड़ा उकाब पक्षी था सो क्या हुआ कि वह दाखलता उस कियारी से जहां वह लगाई गई थी उसी दूसरे उकाब की ओर अपनी सोर फैलाने और अपनी डालियां झुकाने लगी जिस से वही उसे सींचा करे। पर वह तो इसलिये अच्छी भूमि में बहुत जल के पास ८ लगाई गई थी कि कनखाएं फोड़े और फले और उत्तम दाखलता बने। सो तू यह कह कि प्रभु यहोवा यों ९ पूछता है कि क्या वह फूले फलेगी क्या वह उस को जड़ से न उखाड़ेगा और उस के फलों को न झाड़ डालेगा कि वह अपनी सब हरी नई पत्तियों समेत सूख जाए वह तो बहुत बल बिना किये और बहुत लोगों के बिना आये भी जड़ से उखाड़ी जाएगी। चाहे वह १० लगी भी रहे तौभी क्या वह फूले फलेगी जब पुरवाई

(१) मूल में निर्दोष ठहराया।

उस को लगे तब क्या वह बिलकुल सूख न जाएगी वह तो उसी कियारी में सूख जाएगी जहां उगी है ॥

११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १२ उस बलवा करनेहारे घराने से कह कि क्या तुम इन बातों का अर्थ नहीं समझते फिर उन से कह बाबेल के राजा ने यरूशलेम को जा उस के राजा और और हाकिमों को लेकर अपने यहां बाबेल में पहुंचाया । १३ तब उस राजवंश में से एक पुरुष को लेकर उस से वाचा बांधी और उस को वश में रहने की किरिया खिलाई और देश के सामर्थी सामर्थी पुरुषों को ले १४ गया, कि वह राज्य निर्बल रहे और सिर न उठा सके १५ बरन वाचा पालने से स्थिर रहे । तौभी इस ने घोड़े और बड़ी सेना मांगने को अपने दूत मिस्र में भेजकर उससे बलवा किया । क्या वह फूले फलेगा क्या ऐसे कामों का करनेहारा बचेगा क्या वह अपनी वाचा १६ तोड़ने पर बच जाएगा । प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह जिस राजा की खिलाई हुई किरिया उस ने तुच्छ जानी और जिस की वाचा उस ने तोड़ी उस के यहां जिस ने उसे राजा किया था अर्थात् बाबेल १७ में वह उस के पास ही मर जाएगा । और जब वे बहुत से प्राणियों को नाश करने के लिये धुस बांधेंगे और कोट बनाएंगे तब फिरौन अपनी बड़ी सेना और बहुतों की मण्डली रहते भी युद्ध में उस की सहायता न १८ करेगा । क्योंकि उस ने किरिया को तुच्छ जाना और वाचा को तोड़ा देखो उस ने वचन देने पर भी ऐसे १९ ऐसे काम किये हैं सो वह बच न जाएगा । सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह कि उस ने मेरी किरिया तुच्छ जानी और मेरी वाचा तोड़ी यह पाप २० मैं उसी के सिर पर डालूंगा । और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और वह मेरे फन्दे में फंसेगा और मैं उस को बाबेल में पहुंचाकर उस विश्वासघात का मुकद्दमा उस से लड़ूंगा जो उस ने मुझ से किया है । २१ और उस के सब दलों में से जितने भागें सो सब तलवार से मारे जाएंगे और जो रह जाएं सो चारों दिशाओं में तितर बितर हो जाएंगे तब तुम लोग जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है ॥

२२ फिर प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं भी देवदार की ऊंची फुनगी में से कुछ लेकर लगाऊंगा और उस की सब से ऊपरवाली कनखाओं में से एक कोमल २३ कनखा तोड़कर एक अति ऊंचे पर्वत पर, अर्थात् इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर आप लगाऊंगा सो वह डालियां फोड़ बलवन्त होकर उत्तम देवदार बन जाएगा और उस के नीचे अर्थात् उस की डालियों की छाया में भांति भांति के सब पक्षी बसेरा करेंगे । २४ तब मैदान के सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने ऊंचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को ऊंचा किया फिर हरे वृक्ष को सुखा दिया और सूखे वृक्ष को फुलाया फलाया मुझ यहोवा ही ने यह कहा और कर भी दिया है ॥

१८. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ तुम लोग जो इस्राएल के देश के विषय यह कहावत कहते हो कि जंगली दाख खाते तो पुरखा लोग पर दांत खट्टे होते हैं लड़केवालों के इस का क्या मतलब है । ३ प्रभु यहोवा यों कहता कि मेरे जीवन की सोंह तुम को इस्राएल में यह कहावत कहने का फिर अवसर न मिलेगा । ४ सुनो सभों के प्राण तो मेरे हैं जैसा पिता का प्राण वैसा ही पुत्र का भी प्राण है दोनों मेरे ही हैं सो जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा । ५ जो कोई धर्म्मी हो और न्याय और धर्म्म के काम करे, ६ और न तो पहाड़ों पर भोजन किया हो न इस्राएल के घराने की मूरतों की ओर आंखें उठाई हों न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो न ऋतुमती के पास गया हो, ७ और न किसी पर अन्धेर किया हो बरन ऋणी को उस का बंधक फेर दिया हो और न किसी को लूटा हो बरन भूखे को अपनी रोटी दी हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, ८ न ब्याज पर रुपया दिया हो न रुपए की बढ़ोतरी ली हो और अपना हाथ कुटिल काम से खींचा हो और मनुष्य के बीच सच्चाई से न्याय किया हो, ९ और मेरी विधियों पर चलता और मेरे नियमों को मानता हुआ सच्चाई से काम किया हो ऐसा मनुष्य धर्म्मी है वह तो निश्चय जीता रहेगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है । १० पर यदि उस का पुत्र डाकू खूनी वा ऊपर कहे हुए पापों में से किसी का करनेहारा हो, ११ और ऊपर कहे हुए उचित कामों का करनेहारा न हो और पहाड़ों पर भोजन किया हो पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, १२ दीन दरिद्र पर अन्धेर किया हो औरों को लूटा हो बन्धक न फेर दिया हो मूरतों की ओर आंख उठाई हो, घिनौना काम किया हो, १३ ब्याज पर रुपया दिया हो और बढ़ोतरी ली हो तो क्या वह जीता रहेगा वह जीता न रहेगा उस ने ये सब घिनौने काम किये हैं इसलिये वह निश्चय मरेगा उस का खून उसी के सिर पड़ेगा । १४ फिर यदि ऐसे मनुष्य के पुत्र हो और वह अपने पिता के ये सब पाप देखकर विचारके उन के समान न करता हो, १५ अर्थात् न तो पहाड़ों पर भोजन किया हो न इस्राएल के घराने की

मूरतों की ओर आंख उठाई हो न पराई स्त्री को बिगाड़ा १६ हो, न किसी पर अन्धेर किया हो न कुछ बंधक लिया हो न किसी को लूटा हो बरन अपनी रोटी भूखे को दी १७ हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, दीन जन की हानि करने से हाथ खींचा हो ब्याज और बढ़ोतरी न ली हो और मेरे नियमों को माना हो और मेरी विधियों पर चला हो तो वह अपने पिता के अधर्म्म के कारण न मरेगा १८ जीता ही रहेगा। उस का पिता तो जिस ने अंधेर किया और लूटा और अपने भाइयों के बीच अनुचित काम किया है वही अपने अधर्म्म के कारण मर जाएगा। १९ तौभी तुम लोग कहते हो क्यों क्या पुत्र पिता के अधर्म्म का भार नहीं उठाता जब पुत्र ने न्याय और धर्म्म के काम किये हों और मेरी सब विधियों को पालकर उन पर २० चला हो तो वह जीता ही रहेगा। जो प्राणी पाप करे सोई मरेगा न तो पुत्र पिता के अधर्म्म का भार उठाएगा न पिता पुत्र का धर्म्मी को अपने ही धर्म्म का फल २१ और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा। पर यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर मेरी सब विधियों को पाले और न्याय और धर्म्म के काम करे तो वह न २२ मरेगा जीता ही रहेगा। उस ने जितने अपराध किये हों उन में से किसी का स्मरण उस के विरुद्ध न किया जाएगा जो धर्म्म का काम उस ने किया हो उस के २३ कारण वह जीता रहेगा। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर २४ जीता रहे। पर जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरकर टेढ़े काम बरन दुष्ट के सब घिनौने कामों के अनुसार करने लगे तो क्या वह जीता रहेगा, जितने धर्म्म के काम उस ने किये हों उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा जो विश्वासघात और पाप उस ने किया हो उस के कारण २५ वह मर जाएगा। तौभी तुम लोग कहते हो कि प्रभु की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल के घराने सुन क्या मेरी गति एकसी नहीं क्या तुम्हारी ही गति बेठीक नहीं है। २६ जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरकर टेढ़े काम करने लगे तो वह उन के कारण से मरेगा अर्थात् वह अपने टेढ़े २७ काम ही के कारण फिर मर जाएगा। फिर जब दुष्ट अपने दुष्ट कामों से फिरकर न्याय और धर्म्म के काम २८ करने लगे तो वह अपना प्राण बचाएगा। वह जो सोच विचार कर अपने सब अपराधों से फिरा इस कारण न २९ मरेगा जीता ही रहेगा। तौभी इस्राएल का घराना कहता है कि प्रभु की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल के घराने क्या मेरी गति एकसी नहीं क्या तुम्हारी गति बेठीक नहीं। ३० प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि हे इस्राएल के घराने मैं तुम में से एक एक मनुष्य का उस की चाल के अनुसार न्याय करूंगा। फिरो और अपने सब अपराधों को छोड़ो इस रीति तुम्हारा अधर्म्म तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा। ३१ अपने सब अपराधों को जो तुम ने किये हैं दूर करो अपना मन और अपना आत्मा बदल डालो हे इस्राएल के घराने तुम काहे को ३२ मरो। क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि जो मरे उस के मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता इसलिये फिरो तब तुम जीते रहोगे॥

१९. फिर तू इस्राएल के प्रधानों के विषय यह विलापगीत सुना कि,

२ तेरी माता कौन थी एक सिंहनी थी वह सिंहों के बीच बैठा करती और अपने डांवरुओं को जवान सिंहों के ३ बीच पालती पोसती थी। अपने डांवरुओं में से उस ने एक को पोसा और वह जवान सिंह हो गया और अहेर पकड़ना सीख गया उस ने मनुष्यों को भी फाड़ खाया। ४ और जाति जाति के लोगों ने उस की चर्चा सुनी और उसे अपने खोदे हुए गड़हे में फंसाया और उस के नकेल ५ डालकर उसे मिस्र देश में ले गये। जब उस की मा ने देखा कि मैं धीरज धरे रही मेरी आशा टूट गई तब अपने एक और डांवरू को लेकर उसे जवान सिंह कर ६ दिया। सो वह जवान सिंह होकर सिंहों के बीच चलने फिरने लगा और वह भी अहेर पकड़ना सीख गया और ७ मनुष्यों को भी फाड़ खाया। और उस ने उन के भवनों को जाना और उन के नगरों को उजाड़ा बरन उस के गरजने के डर के मारे देश और जो उस में था सो ८ उजड़ गया। तब चारों ओर के जाति जाति के लोग अपने अपने प्रान्त से उस के विरुद्ध आये और उस के लिये जाल लगाया और वह उन के खोदे हुए गड़हे में ९ फंस गया। तब वे उस के नकेल डाल उसे कठघरे में बन्द करके बाबेल के राजा के पास ले गये और गढ़ में बन्द किया कि उस का बोल इस्राएल के पहाड़ी देश में फिर सुनाई न दे॥

१० तेरी माता जिस से तू उत्पन्न हुआ[१] सो जल के तीर पर लगी हुई दाखलता के समान थी और गहिरे जल के कारण वह फलों और शाखाओं से भरी हुई ११ थी। और प्रभुता करनेहारों के राजदण्डों के लिये उस में मोटी मोटी टहनियां थीं और उस की ऊंचाई इतनी हुई कि वह बादलों के बीच लों पहुंची और अपनी

(१) मूल में तेरे लोहू में।

बहुत सी डालियों समेत बहुत ही लम्बी दिखाई पड़ी।
१२ तौभी वह जलजलाहट के साथ उखाड़कर भूमि पर गिराई गई और उस के फल पुरवाई लगने से सूख गये और उस की मोटी टहनियां टूटकर सूख गईं और वे
१३ आग से भस्म हो गईं। और अब वह जङ्गल में बरन
१४ निर्जल देश में लगाई गई है। और उस की शाखाओं की टहनियों में से आग निकली जिस से उस के फल भस्म हो गये और प्रभुता करने के योग्य राजदण्ड के लिये उस में अब कोई मोटी टहनी नहीं रही। विलापगीत यही है और विलापगीत बना रहेगा॥

२०. फिर सातवें बरस के पांचवें महीने के दसवें दिन को इस्राएल के कितने पुरनिये यहोवा से प्रश्न करने को आये और
२ मेरे साम्हने बैठ गये। तब यहोवा का यह वचन मेरे
३ पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान इस्राएली पुरनियों से यह कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि क्या तुम मुझ से प्रश्न करने को आये हो प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह तुम मुझ से प्रश्न करने न
४ पाओगे। हे मनुष्य के सन्तान क्या तू उन का न्याय न करेगा क्या तू उन का न्याय न करेगा। उन के पुरखाओं
५ के घिनौने काम उन्हें जता दे। और उन से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस दिन मैं ने इस्राएल को चुन लिया और याकूब के घराने के वंश से किरिया खाई और मिस्र देश में अपने को उन पर प्रगट किया और उन से किरिया खाकर कहा मैं तुम्हारा परमेश्वर
६ यहोवा हूं। उसी दिन मैं ने उन से यह भी किरिया खाई कि मैं तुम को मिस्र देश से निकालकर एक देश में पहुंचाऊंगा जिसे मैं ने तुम्हारे लिये चुन लिया है वह सब देशों का शिरोमणि है और उस में दूध और मधु
७ की धाराएं बहती हैं। फिर मैं ने उन से कहा जिन घिनौनी वस्तुओं पर तुम में से एक एक की आंखें लगी हैं उन्हें फेंक दो और मिस्र की मूरतों से अपने को अशुद्ध न करो मैं तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।
८ पर वे मुझ से बिगड़ गये और मेरी सुननी न चाही जिन घिनौनी वस्तुओं पर उन की आंखें लगी थीं उन को एक एक ने फेंक न दिया और न मिस्र की मूरतों को छोड़ दिया तब मैं ने कहा मैं यहीं मिस्र देश के बीच तुम पर अपनी जलजलाहट भड़काऊंगा[१] और पूरा
९ कोप दिखाऊंगा। तौभी मैं ने अपने नाम के निमित्त काम किया कि वह उन जातियों के साम्हने अपवित्र न ठहरे जिन के बीच वे थे और जिन के देखते मैं ने उन को मिस्र देश से निकालने के लिये अपने को उन पर प्रगट किया था।
१० सो मैं उन को मिस्र देश से निकालकर
११ जंगल में ले आया। वहां मैं ने उन को अपनी विधियां बताईं और अपने नियम बनाये जो मनुष्य उन को माने सो उन के कारण जीता रहेगा।
१२ फिर मैं ने उन के लिये अपने विश्रामदिन ठहराये जो मेरे और उन के बीच चिन्ह ठहरें कि वे जानें कि मैं यहोवा उन का पवित्र करनेहारा हूं।
१३ तौभी इस्राएल के घराने ने जंगल में मुझ से बलवा किया वे मेरी विधियों पर न चले और मेरे नियमों को तुच्छ जाना जिन्हें जो मनुष्य माने सो उन के कारण जीता रहेगा और उन्हों ने मेरे विश्रामदिनों को अति अपवित्र किया। तब मैं ने कहा मैं जंगल में इन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर[२] इन का अन्त कर डालूंगा।
१४ पर मैं ने अपने नाम के निमित्त ऐसा काम किया कि वह उन जातियों के साम्हने जिन के देखते मैं उन को निकाल लाया था अपवित्र न ठहरे।
१५ फिर मैं ने जंगल में उन से किरिया खाई कि जो देश मैं ने उन को दे दिया और जो सब देशों का शिरोमणि है जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं उस में उन्हें न पहुंचाऊंगा,
१६ इस कारण कि उन्हों ने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियों पर न चले और मेरे विश्रामदिन अपवित्र किये थे क्योंकि उन का मन अपनी मूरतों की ओर लगा हुआ था।
१७ तौभी मैं ने उन पर तरस की दृष्टि की और उन को नाश न किया और न जंगल में पूरी रीति से उन का अन्त कर डाला।
१८ फिर मैं ने जंगल में उन की सन्तान से कहा अपने पुरखाओं की विधियों पर न चलो न उन की रीतियों को मानो न उन की मूरतें पूजकर अपने को अशुद्ध करो।
१९ मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं मेरी विधियों पर चलो
२० और मेरे नियमों के मानने में चौकसी करो, और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो और वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें जिस से तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।
२१ पर उस की सन्तान ने भी मुझ से बलवा किया वे मेरी विधियों पर न चले न मेरे नियमों के मानने में चौकसी की जिन्हें जो मनुष्य माने सो उन के कारण जीता रहेगा फिर मेरे विश्रामदिनों को उन्हों ने अपवित्र किया। तब मैं ने कहा मैं जंगल में उन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर[२] अपना कोप दिखाऊंगा।

(१) मूल में उंडेलूंगा।

(२) मूल में उण्डेलकर।

२२ तौभी मैं ने हाथ खींच लिया और अपने नाम के निमित्त ऐसा काम किया जिस से वह उन जातियों के साम्हने जिन के देखते मैं उन्हें निकाल लाया था अपवित्र न ठहरे । २३ फिर मैं ने जंगल में उन से किरिया खाई कि मैं तुम्हें जाति जाति में तित्तर बित्तर करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा, २४ क्योंकि उन्हों ने मेरे नियम न माने और मेरी विधियों को तुच्छ जाना और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया और अपने पुरखाओं की मूरतों की और उन की आंखें लगी रहीं । २५ फिर मैं ने उन की ऐसी ऐसी विधियां ठहराईं जो अच्छी न ठहरें और ऐसी ऐसी रीतियां, जिन के कारण वे जीते न रहें, २६ अर्थात् वे अपनी सब स्त्रियों के पहिलौठों को आग में होम करने लगे इस रीति मैं ने उन्हें उन्हीं की भेंटों के द्वारा अशुद्ध किया जिस से उन्हें निर्वंश कर डालूं और तब वे जान लें कि मैं यहोवा हूं ॥

२७ सो हे मनुष्य के सन्तान तू इस्राएल के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम्हारे पुरखाओं ने इस में भी मेरी निन्दा की कि उन्हों ने मेरा विश्वासघात किया । २८ क्योंकि जब मैं ने उन को उस देश में पहुंचाया जिस के उन्हें देने की किरिया मैं ने उन से खाई थी तब वे हर एक ऊंचे टीले और हर एक घने वृक्ष पर दृष्टि करके वहीं अपने मेलबलि करने लगे और वहीं रिस दिलानेहारी अपनी भेंटें चढ़ाने लगे और वहीं अपना सुखदायक सुगन्धद्रव्य जलाने लगे और वहीं अपने तपावन देने लगे । २९ तब मैं ने उन से पूछा जिस ऊंचे स्थान को तुम लोग जाते हो उस का क्या प्रयोजन है । इस से उस का नाम आज लों बामा[१] कहलाता है । ३० इसलिये इस्राएल के घराने से कह प्रभु यहोवा तुम से यह पूछता है कि तुम भी अपने पुरखाओं की रीति पर चलकर अशुद्ध बने हो और उन के घिनौने कामों के अनुसार क्या तुम भी व्यभिचारिन की नाईं काम करते हो । ३१ आज लों जब जब तुम अपनी भेंटें चढ़ाते और अपने लड़केवालों को होम करके आग में चढ़ाते हो तब तब तुम अपनी मूरतों के निमित्त अशुद्ध ठहरते हो । हे इस्राएल के घराने क्या तुम मुझ से पूछने पाओ । प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह तुम मुझ से पूछने न पाओगे । ३२ और जो बात तुम्हारे मन में आती है कि हम काठ और पत्थर के उपासक होकर अन्य जातियों और देश देश के कुलों के समान हो जाएंगे वह किसी भांति पूरी नहीं होने की । ३३ प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सोंह निश्चय मैं बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से और भड़काई[२] हुई जलजलाहट के साथ तुम्हारे ऊपर राज्य करूंगा । ३४ और मैं बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से और भड़काई[२] हुई जलजलाहट के साथ तुम्हें देश देश के लोगों में से अलगाऊंगा और उन देशों से जिन में तुम तित्तर बित्तर हो गये हो इकट्ठा करूंगा । ३५ और मैं तुम्हें देश देश के लोगों के जंगल में ले जाकर वहां आम्हने साम्हने तुम से मुकद्दमा लड़ूंगा । ३६ जिस प्रकार मैं तुम्हारे पितरों से मिस्र देशरूपी जंगल में मुकद्दमा लड़ता था उसी प्रकार तुम से मुकद्दमा लड़ूंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है । ३७ फिर मैं तुम्हें लाठी के तले में चलाऊंगा और तुम्हें वाचा के बंधन में न डालूंगा । ३८ और मैं तुम में से सब बलवाइयों को जो मेरा अपराध करते हैं निकालकर तुम्हें शुद्ध करूंगा और जिस देश में वे टिकते हैं उस में से मैं निकाल दूंगा पर इस्राएल के देश में घुसने न दूंगा तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं । ३९ और हे इस्राएल के घराने तुम से तो प्रभु यहोवा यों कहता है कि जाकर अपनी अपनी मूरतों की उपासना करो तो करो और यदि तुम मेरी न सुनोगे तो आगे को भी करो पर मेरे पवित्र नाम को अपनी भेंटों और मूरतों के द्वारा फिर अपवित्र न करना । ४० क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल का सारा घराना अपने देश में मेरे पवित्र पर्वत पर इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर सब का सब मेरी उपासना करेगा वहीं मैं उन से प्रसन्न हूंगा और मैं वहीं तुम्हारी उठाई हुई भेंटें और चढ़ाई हुई उत्तम उत्तम वस्तुएं और तुम्हारी सब पवित्र की हुई वस्तुएं तुम से लिया करूंगा । ४१ जब मैं तुम्हें देश देश के लोगों में से अलगाऊंगा और उन देशों से जिन में तुम तित्तर बित्तर हुए हो इकट्ठा करूंगा तब तुम को सुखदायक सुगन्ध जानकर ग्रहण करूंगा और अन्य जातियों के साम्हने तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहराया जाऊंगा । ४२ और जब मैं तुम्हें इस्राएल के देश में पहुंचाऊंगा जिस के मैं ने तुम्हारे पितरों को देने की किरिया खाई थी तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं । ४३ और वहां तुम अपने चालचलन और अपने सब कामों को जिन के करने से तुम अशुद्ध हुए स्मरण करोगे और अपने सब बुरे कामों के कारण अपनी दृष्टि में घिनौने ठहरोगे । ४४ और हे इस्राएल के घराने जब मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे बुरे चाल चलन और बिगड़े हुए कामों के अनुसार नहीं पर अपने ही नाम के निमित्त बर्ताव करूंगा तब तुम

(१) मूल में ऊंचा स्थान । (२) अर्थात् उंडेली ।

जान लोगे कि मैं यहोवा हूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

४५,४६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख दक्खिन की ओर कर और दक्खिन की ओर वचन सुना और दक्खिन देश के बन ४७ के विषय नबूवत कर, और दक्खिन देश के बन से कह कि यहोवा का यह वचन सुन प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं तुझ में आग लगाऊंगा और तुझ में क्या हरे क्या सूखे जितने पेड़ हैं सब को वह भस्म करेगी उस की धधकती ज्वाला न बुझेगी और उस के कारण ४८ दक्खिन से उत्तर लों सब के मुख झुलस जाएंगे। तब सब प्राणियों को सूझ पड़ेगा कि यह आग यहोवा की ४९ लगाई हुई है और वह कभी न बुझेगी। तब मैं ने कहा अहा प्रभु यहोवा लोग तो मेरे विषय कहा करते हैं कि क्या वह दृष्टान्त ही का कहनेहारा नहीं है ॥

२१. फिर यहोवा का यह वचन मेरे २ पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख यरूशलेम की ओर कर और पवित्र स्थानों की ओर वचन सुना[१] और इस्राएल देश के ३ विषय नबूवत कर, और उस से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तेरे विरुद्ध हूं और अपनी तलवार मियान में से खींचकर तुझ में से धर्मी अधर्मी दोनों को ४ नाश करूंगा। मैं जो तुझ में से धर्मी अधर्मी सब को नाश करनेवाला हूं इस कारण मेरी तलवार मियान से निकलकर दक्खिन से उत्तर लों सब प्राणियों के ५ विरुद्ध चलेगी। तब प्राणी जान लेंगे कि यहोवा ने मियान में से अपनी तलवार खींची है और वह उस में ६ फिर रक्खी न जाएगी। सो हे मनुष्य के सन्तान तू आह मार भारी खेद और कमर टूटने के साथ लोगों ७ के साम्हने आह मार। और जब वे तुझ से पूछें कि तू क्यों आह मारता है तब कहना, समाचार के कारण क्योंकि ऐसी बात आनेवाली है कि सब के मन टूट जाएंगे और सब के हाथ ढीले पड़ेंगे और सब के आत्मा बेबस और सब के घुटने निर्बल[२] हो जाएंगे सुनो ऐसी ही बात आनेवाली है और वह अवश्य होगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा ९ कि, हे मनुष्य के सन्तान नबूवत करके कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि ऐसा कह कि देख तलवार सान चढ़ाई और झलकाई हुई तलवार। वह इसलिये १० सान चढ़ाई गई कि उस से घात किया जाए और इसलिये झलकाई गई कि बिजली की नाईं चमके तो क्या हम हर्षित हों। वह तो यहोवा के[३] पुत्र का राजदण्ड और सब पेड़ों को तुच्छ जाननेहारी है। और वह ११ झलकाने को इसलिये दी गई कि हाथ में ली जाए वह इसलिये सान चढ़ाई और झलकाई गई कि घात करनेहार के हाथ में दी जाए। हे मनुष्य के सन्तान १२ चिल्ला और हाय हाय कर क्योंकि वह मेरी प्रजा पर चला चाहती वह इस्राएल के सारे प्रधानों पर चला चाहती है मेरी प्रजा के संग ये भी तलवार के वश में आ गये इस कारण तू अपनी छाती[४] पीट। क्योंकि जांचना है १३ और यदि तुच्छ जाननेहारा राजदण्ड भी न रहे तो क्या। प्रभु यहोवा की यही वाणी है। सो हे मनुष्य के सन्तान १४ नबूवत कर और हाथ पर हाथ दे मार और तीन बार तलवार का बल दुगना किया जाए वह तो घात करने की तलवार बरन बड़े से बड़े के घात करने की वह तलवार है जिस से कोठरियों में भी कोई नहीं बच सकता[५]। मैं १५ ने घात करनेहारी तलवार को उन के सब फाटकों के विरुद्ध इसलिये चलाया है कि लोगों के मन टूट जाएं और वे बहुत ठोकर खाएं हाय हाय वह तो बिजली के समान बनाई गई और घात करने को सान चढ़ाई गई है। सिकुड़कर दहिनी ओर जा फिर तैयार होकर बाईं १६ ओर मुड़ जिधर ही तेरा मुख हो। मैं भी हाथ पर हाथ १७ दे मारूंगा और अपनी जलजलाहट को थाभूंगा मुझ यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १८ हे मनुष्य के सन्तान दो मार्ग ठहरा ले कि बाबेल के १९ राजा की तलवार आए दोनों मार्ग एक ही देश से निकलें फिर एक चिन्ह कर अर्थात् नगर के मार्ग के सिरे पर एक चिन्ह कर। एक मार्ग ठहरा कि तलवार २० अम्मोनियों के रब्बा नगर पर और यहूदा देश के गढ़वाले नगर यरूशलेम पर चले। क्योंकि बाबेल का राजा २१ तिर्मुहाने अर्थात् दोनों मार्गों के निकलने के स्थान पर भावी बूझने को खड़ा हुआ उस ने तीरों को हिला दिया गृहदेवताओं से प्रश्न किया और कलेजे को भी देखा। उस के दहिने हाथ में यरूशलेम का नाम[६] है कि वह २२ उस की ओर युद्ध के यन्त्र लगाये और घात करने की

(१) मूल में फिरकार टपका। (२) मूल में जल की नाईं निर्बल।

(३) मूल में मेरे। (४) मूल में जांघ। (५) मूल में जो उन की कोठरियों में पैठती है। (६) मूल में भावी।

आशा गला फाड़कर दे और ऊंचे शब्द से ललकारे और फाटकों की ओर युद्ध के यन्त्र लगाए और धुस बांधे २३ और कोट बनाए । और लोग तो उस भावी कहने को मिथ्या समझेंगे पर उन्हों ने जो उन की किरिया खाई है इस कारण वह उन के अधर्म्म का स्मरण कराकर उन्हें पकड़ लेगा ॥

२४ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम्हारा अधर्म्म जो स्मरण आया और तुम्हारे अपराध जो खुल गये और तुम्हारे सब कामों में जो पाप ही पाप देख पड़ा है और तुम जो स्मरण में आये हो इसलिये तुम २५ हाथ से पकड़े जाओगे । और हे इस्राएल के असाध्य घायल दुष्ट प्रधान तेरा दिन आ गया है अधर्म्म के २६ अन्त का समय पहुंचा है । तेरे विषय प्रभु यहोवा यों कहता है कि पगड़ी उतार और मुकुट दे वह ज्यों का त्यों नहीं रहने का जो नीचा है उसे ऊंचा कर और जो २७ ऊंचा है उसे नीचा कर । मैं इस को उलट दूंगा उलट दूंगा उलट दूंगा वह भी जब लों उस का अधिकारी न आए तब लों उलटा हुआ रहेगा तब मैं उस को दूंगा ॥

२८ फिर हे मनुष्य के सन्तान नबूवत करके कह कि प्रभु यहोवा अम्मोनियों और उन की की हुई नामधराई के विषय यों कहता है सो तू यों कह कि खिंची हुई तलवार है तलवार वह घात के लिये झलकाई हुई है कि २९ नाश करे और बिजली के समान हो, जब कि वे तेरे विषय झूठे दर्शन पाते और झूठे भावी तुझ को बताते हैं कि तू उन दुष्ट असाध्य घायलों की गर्दनों पर पड़े जिन का दिन आ गया और उन के अधर्म्म के अंत का समय ३० पहुंचा है । उस को मियान में फिर रखा दे जिस स्थान में तू सिरजी गई और जिस देश में तेरी उत्पत्ति हुई उसी ३१ में मैं तेरा न्याय करूंगा। और मैं तुझ पर अपना क्रोध भड़काऊंगा[१] और तुझ पर अपनी जलजलाहट की आग फूंक दूंगा और तुझे पशु सरीखे मनुष्यों के हाथ कर दूंगा ३२ जो नाश करने में निपुण हैं। तू आग का कौर होगी तेरा खून देश में बना रहेगा तू स्मरण में न रहेगी क्योंकि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है ॥

२२. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के २ सन्तान क्या तू उस खूनी नगर का न्याय न करेगा क्या तू उस का न्याय न करेगा उस को उस के सब घिनौने ३ काम जता दे । और कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि एक नगर जो अपने बीच में खून करता है जिस से उस का समय आए और अपनी हानि करने के लिये अशुद्ध ४ होने को मूरतें बनाता है । जो खून तू ने किया है उस से तू दोषी ठहरी और और जो मूरतें तू ने बनाई हैं उन के कारण तू अशुद्ध हो गई तू ने अपने अंत के दिन नियरा लिये और अपने पिछले बरसों तक पहुंच गई इस कारण मैं ने तुझे जाति जाति के लोगों की ओर से नामधराई का और सब देशों के ठट्ठे का कारण कर ५ दिया । हे बदनाम हे हुल्लड़ से भरे हुये नगर जो निकट ६ हैं और जो दूर हैं वे सब तुझे ठट्ठों में उड़ाएंगे । सुन इस्राएल के प्रधान लोग अपने अपने बल के अनुसार ७ तुझ में खून करनेहारे हुए हैं । तुझ में माता पिता तुच्छ किये गये हैं और तेरे बीच परदेशी पर अन्धेर किया गया और तुझ में अपमुआ और विधवा पीसी गई हैं । ८ तू ने मेरी पवित्र वस्तुओं को तुच्छ जाना और मेरे ९ विश्रामदिनों को अपवित्र किया है । तुझ में लुतरे लोग खून करने को तत्पर हुये और तेरे लोगों ने पहाड़ों पर भोजन किया है और तेरे बीच महापाप किया गया है । १० तुझ में पिता की देह उघारी गई और तुझ में ऋतुमती ११ स्त्री से भी भोग किया गया है । तुझ में किसी ने पड़ोसी की स्त्री के साथ घिनौना काम किया और किसी ने अपनी बहू को बिगाड़कर महापाप किया और किसी ने अपनी बहिन अर्थात् अपने पिता की बेटी को भ्रष्ट किया १२ है । तुझ में खून करने के लिये दाम लिया गया है तू ने ब्याज और बढ़ोतरी ली और अपने पड़ोसियों को पीस पीसकर अन्याय से लाभ उठाया और मुझ को तो तू ने १३ बिसरा दिया है प्रभु यहोवा की यही वाणी है । सो सुन जो लाभ तू ने अन्याय से उठाया और अपने बीच खून किया है उस पर मैं ने हाथ पर हाथ दे मारा है । १४ सो जिन दिनों में मैं तेरा विचार करूंगा उन में क्या तेरा हृदय दृढ़ और तेरे हाथ स्थिर रह सकेंगे मुझ यहोवा १५ ने यह कहा है और ऐसा ही करूंगा । और मैं तेरे लोगों को जाति जाति में तित्तर बित्तर करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा और तेरी अशुद्धता को तुझ में से नाश १६ करूंगा । और तू जाति जाति के देखते अपने लेखे अपवित्र ठहरेगी तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूं ॥

१७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा १८ कि, हे मनुष्य के सन्तान इस्राएल का घराना मेरे लेखे धातु का मैल हो गया वे सब के सब भट्ठी के बीच के पीतल और रांगे और लोहे और शीशे के समान बन १९ गये वे चांदी के मैल ही सरीखे हो गये हैं । इस कारण प्रभु यहोवा उन से यों कहता है कि तुम सब के सब जो धातु के मैल के समान बन गये हो इसलिये सुनो

(१) मूल में उण्डेलूंगा ।

मैं तुम को यरूशलेम के भीतर इकट्ठा करने पर हूं। २० जैसे लोग चांदी पीतल लोहा शीशा और रांगा इसलिये भट्ठी के भीतर बटोरकर रखते कि उन्हें आग फूंककर पिघलाएं वैसे ही मैं तुम को अपने कोप और जलजलाहट से इकट्ठा कर वहीं रखकर पिघला दूंगा। २१ मैं तुम को वहां बटोरकर अपने रोष की आग में फूंकूंगा सो तुम उस के बीच पिघलाये जाओगे। २२ जैसे चांदी भट्ठी के बीच पिघलाई जाती है वैसे ही तुम उस के बीच पिघलाये जाओगे तब तुम जान लोगे कि जिस ने हम पर अपनी जलजलाहट भड़काई[1] है सो यहोवा है॥

२३ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २४ हे मनुष्य के सन्तान उस देश से कह कि तू ऐसा देश है जो शुद्ध नहीं हुआ और जलजलाहट के दिन में तुझ पर वर्षा नहीं हुई। २५ तुझ में तेरे नबियों ने राजद्रोह की गोष्ठी की उन्हों ने गरजनेहारे सिंह की नाईं अहेर पकड़ा और प्राणियों को खा डाला है वे रक्खे हुए अनमोल धन को छीन लेते और तुझ में बहुत स्त्रियों को विधवा कर दिया है। २६ फिर उस के याजकों ने मेरी व्यवस्था का अर्थ खींच खांचकर लगाया और मेरी पवित्र वस्तुओं को अपवित्र किया है उन्हों ने पवित्र अपवित्र का कुछ भेद नहीं माना और न औरों को शुद्ध अशुद्ध का भेद सिखाया है और वे मेरे विश्रामदिनों के विषय निश्चिन्त रहते हैं[2] और मैं उन के बीच अपवित्र ठहरता हूं। २७ फिर उस के हाकिम हुंड़ारों की नाईं अहेर पकड़ते और अन्याय से लाभ उठाने के लिये खून करते और प्राणघात करने को तत्पर रहते हैं। २८ फिर उस के नबी उन के लिये कच्ची लेसाई करते हैं उन का दर्शन पाना मिथ्या है और यहोवा के बिना कुछ कहे वे यह कहकर झूठी भावी बताते हैं कि प्रभु यहोवा यों कहता है। २९ फिर देश के साधारण लोग अन्धेर करते और पराया धन छीनते और दीन दरिद्र को पीसते और न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अंधेर करते हैं। ३० और मैं ने उन में ऐसा मनुष्य ढूंढ़ा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे साम्हने ऐसा खड़ा हो कि मुझे तुझ को नाश न करना पड़े पर ऐसा कोई न मिला। ३१ इस कारण मैं ने उन पर अपना रोष भड़काया[3] और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया और उन की चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दी प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

(१) मूल में उण्डेली।
(२) मूल में अपनी आंखें छिपाते हैं।
(३) मूल में उण्डेला।

२३.

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ हे मनुष्य के संतान दो स्त्रियां थीं जो एक ही मा की बेटी थीं। ३ वे अपने बचपन ही में वेश्या का काम मिस्र में करने लगीं उन की छातियां कुंवारपन में पहिले वहीं मींजी गईं और उन का मरदन भी हुआ। ४ उन लड़कियों में से बड़ी का नाम ओहोला और उस की बहिन का नाम ओहोलीबा था और वे मेरी हो गईं और मेरे जन्माये बेटे बेटियां जनीं। उन के नामों में से ओहोला तो शोमरोन का और ओहोलीबा यरूशलेम का नाम है। ५ और ओहोला जब मेरी थी तब व्यभिचारिन होकर अपने यारों पर मोहित होने लगी जो उस के पड़ोसी अश्शूरी थे। ६ वे तो सब के सब नीले वस्त्र पहिननेहारे और घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति और और प्रकार के हाकिम थे। ७ सो उन्हीं के साथ जो सब के सब श्रेष्ठ अश्शूरी थे उस ने व्यभिचार किया और जिस किसी पर वह मोहित हुई उस की मूरतों से वह अशुद्ध हुई। ८ और जो व्यभिचार उस ने मिस्र में सीखा था उस को भी उस ने न छोड़ा बचपन में तो उस ने उन के साथ कुकर्म्म किया और उस की छातियां मींजी गईं और तन मन से उस के संग व्यभिचार किया गया था। ९ इस कारण मैं ने उस को उस के अश्शूरी यारों के हाथ कर दिया जिन पर वह मोहित हुई थी। १० उन्हों ने उस को नंगी कर उस के बेटे बेटियां छीनकर उस को तलवार से घात किया इस रीति उन के हाथ से दण्ड पाकर वह स्त्रियों में प्रसिद्ध हो गई। ११ फिर उस की बहिन ओहोलीबा ने यह देखा तौ भी मोहित होकर व्यभिचार करने में अपनी बहिन से भी अधिक बढ़ गई। १२ वह अपने अश्शूरी पड़ोसियों पर मोहित होती थी जो सब के सब अति सुन्दर वस्त्र पहिननेहारे और घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति और और प्रकार के हाकिम थे। १३ तब मैं ने देखा कि वह भी अशुद्ध हो गई उन दोनों बहिनों की एक ही चाल थी। १४ और ओहोलीबा अधिक व्यभिचार करती गई सो जब उस ने भीत पर सेंदूर से खिंचे हुए ऐसे कसदी पुरुषों के चित्र देखे, १५ जो कटि में फेंटे बांधे हुए सिर में छोर लटकती रंगीली पगड़ियां दिये हुए और सब के सब अपनी जन्मभूमि कसदी बाबेल के लोगों[4] की रीति प्रधानों का रूप धरे हुए थे, १६ तब उन को देखते ही वह उन पर मोहित हुई और उन के पास कसदियों के देश में दूत भेजे। १७ सो बाबेली लोग उस के पास पलंग पर आये और उस के साथ व्यभिचार करके उस को अशुद्ध किया

(४) मूल में बेटों।

और जब वह उन से अशुद्ध हुई तब उस का मन उन १८ से फिर गया। तौभी वह तन उघाड़ती और व्यभिचार करती गई तब मेरा मन जैसे उस की बहिन से फिर गया १९ था वैसे ही उस से भी फिर गया। तौभी अपने बचपन के दिन जब वह मिस्र देश में वेश्या का काम करती थी २० स्मरण करके वह अधिक व्यभिचार करती गई। वह ऐसे यारों पर मोहित हुई जिन का मांस गदहों का सा और २१ वीर्य घोड़ों का सा था। इस प्रकार से तू अपने बचपन के उस समय के महापाप का स्मरण कराती है जब मिस्री लोग तेरी छातियां मींजते थे ॥

२२ इस कारण हे ओहोलीबा प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है कि सुन मैं तेरे यारों को उभारकर जिन से तेरा २३ मन फिर गया चारों ओर से तेरे विरुद्ध ले आऊंगा, अर्थात् बाबेलियों और सब कसदियों को और पकोद शो और को के लोगों को और उन के साथ सब अश्शूरियों को लाऊंगा जो सब के सब घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति और और प्रकार के हाकिम प्रधान और नामी पुरुष २४ हैं। वे लोग हथियार रथ छकड़े और देश देश के लोगों का दल लिये हुए तुझ पर चढ़ाई करेंगे और ढाल और फरी और टोप धारण किए हुए तेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बांधेंगे और मैं न्याय का काम उन्हीं के हाथ सौंपूंगा और वे अपने अपने नियम के अनुसार तेरा न्याय करेंगे। २५ और मैं तुझ पर जलूंगा और वे जलजलाहट के साथ तुझ से बर्ताव करेंगे वे तेरी नाक और कान काट लेंगे और तेरा जो बचा रहेगा सो तलवार से मारा जाएगा वे तेरे बेटे बेटियों को छीन ले जाएंगे और तेरा २६ जो बचा रहेगा सो आग से भस्म हो जाएगा। और वे तेरे वस्त्र उतारकर तेरे सुन्दर सुन्दर गहने छीन ले २७ जाएंगे। इस रीति मैं तेरा महापाप और जो वेश्या का काम तू ने मिस्र देश में सीखा था उसे भी तुझ से छुड़ाऊंगा यहां लों कि तू फिर अपनी आंख उन की ओर न लगाएगी न मिस्र देश को फिर स्मरण करेगी। २८ क्योंकि प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है कि सुन मैं तुझे उन के हाथ सौंपूंगा जिन से तू बैर रखती और २९ तेरा मन फिरा है। और वे तुझ से बैर के साथ बर्ताव करेंगे और तेरी सारी कमाई को उठा लेंगे और तुझे नंग धड़ंग करके छोड़ देंगे और तेरे तन के उघाड़े जाने से ३० तेरा व्यभिचार और महापाप प्रगट हो जाएगा। ये काम तुझ से इस कारण किये जाएंगे कि तू अन्यजातियों के पीछे व्यभिचारिन की नाईं होती और ३१ उन की मूरतें पूजकर अशुद्ध हो गई है। तू अपनी बहिन की लीक पर चली है इस कारण मैं तेरे हाथ में उस का सा कटोरा दूंगा। प्रभु यहोवा यों कहता कि ३२ अपनी बहिन के कटोरे से जो गहिरा और चौड़ा है तुझे पीना पड़ेगा तू हंसी और ठट्ठों में उड़ाई जाएगी क्योंकि उस कटोरे में बहुत कुछ समाता है। तू मतवालेपन और ३३ दुःख से छक जाएगी तू अपनी बहिन शोमरोन के कटोरे को अर्थात् विस्मय और उजाड़ को पीकर छक जाएगी। उस में से तू गार गारकर पीएगी तू उस के ठिकरों को ३४ भी चबाएगी और अपनी छातियां घायल करेगी क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है। तू ३५ ने जो मुझे बिसरा दिया और पीठ पीछे कर दिया है इसलिये अपने महापाप और व्यभिचार का भार तू आप उठा ले प्रभु यहोवा का यही वचन है ॥

फिर यहोवा ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान ३६ क्या तू ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करेगा तो उन के घिनौने काम उन्हें जता दे। उन्हों ने तो व्यभि- ३७ चार किया है और उन के हाथों में खून लगा है उन्हों ने अपनी मूरतों के साथ भी व्यभिचार किया और अपने लड़केवाले जो वे मेरे जन्माये जनी थीं उन मूरतों के आगे भस्म होने के लिये चढ़ाये हैं। फिर उन्हों ने मुझ ३८ से ऐसा बर्ताव भी किया कि उसी दिन मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया। वे अपने लड़केवाले अपनी मूरतों के साम्हने ३९ बलि चढ़ाकर उसी दिन मेरा पवित्रस्थान अपवित्र करने को उस में घुसीं देख इस भांति का काम उन्हों ने मेरे भवन के भीतर किया है। और फिर उन्हों ने पुरुषों को ४० दूर से बुलवा भेजा और वे चले आये और उन के लिये तू नहा धो आंखों में अंजन लगा गहने पहिनकर, सुन्दर पलंग पर बैठी रही और उस के साम्हने एक ४१ मेज बिछी हुई थी जिस पर तू ने मेरा धूप और मेरा तेल रक्खा था। तब उस के साथ निश्चिन्त लोगों की भीड़ ४२ का कोलाहल सुन पड़ा और उन साधारण लोगों के पास जंगल से बुलाये हुए पियक्कड़ लोग भी थे जिन्हों ने उन दोनों बहिनों के हाथों में चूड़ियां पहिनाईं और उन के सिरों पर शोभायमान मुकुट रक्खे। तब जो ४३ व्यभिचार करते करते बुढ़ा गई थी उस के विषय मैं बोल उठा अब तो वे उसी के साथ व्यभिचार करेंगे। सो वे उस के पास ऐसे गये जैसे ४४ लोग वेश्या के पास जाते हैं वे ओहोला और ओहोलीबा नाम महापापिन स्त्रियों के पास वैसे ही गये। सो धर्म्मी लोग व्यभिचारिनों और खून करनेहारियों के ४५ साथ उन के योग्य न्याय करेंगे क्योंकि वे व्यभिचारिन तो हैं और खून उन के हाथों में लगा है। इस कारण ४६

प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं एक भीड़ से उन पर चढ़ाई कराकर उन्हें ऐसा करूंगा कि वे मारी मारी फिरेंगी और लूटी जाएंगी। ४७ और उस भीड़ के लोग उन को पत्थरवाह करके उन्हें अपनी तलवारों से काट डालेंगे तब वे उन के बेटे बेटियों को घात करके आग लगाकर उन के घर फूंक देंगे। ४८ सो मैं महापाप को देश में से दूर करूंगा और सब स्त्रियां शिक्षा पाकर तुम्हारा सा महापाप करने से बची रहेंगी। ४९ और तुम्हारा महापाप तुम्हारे ही सिर पड़ेगा और तुम अपनी मूरतों की पूजा के पापों का भार उठाओगे और तुम जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं॥

२४. फिर नवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २ हे मनुष्य के सन्तान आज का दिन लिख रख क्योंकि आज ही के दिन बाबेल का राजा यरूशलेम के निकट जा पहुंचा है। ३ और इस बलवा करनेहारे घराने से यह दृष्टान्त कह कि प्रभु यहोवा कहता है कि हण्डे को आग पर धर दे धर फिर उस में पानी डाल। ४ तब उस में जांघ कन्धा सब अच्छे अच्छे टुकड़े बटोरकर रख और उसे उत्तम उत्तम हड्डियों से भर दे। ५ झुंड में से सब से अच्छे पशु ले और उन हड्डियों का हण्डे के नीचे ढेर कर और उस को भली भांति सिझा और भीतर की हड्डियां भी सीझ जाएं॥

६ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि हाय उस खूनी नगरी पर हाय उस हण्डे पर जिस का मोर्चा उस में बना है और छूटा न हो उस में से टुकड़ा टुकड़ा करके निकाल लो उस पर चिट्ठी न डाली जाए। ७ क्योंकि उस नगरी में किया हुआ खून उस में है उस ने उसे भूमि पर डालकर धूलि से नहीं ढांपा पर नंगी चटान पर रख दिया है। ८ इसलिये कि पलटा लेने को जलजलाहट भड़के मैं ने भी उस का खून नंगी चटान पर रक्खा है कि वह ढंप न सके। ९ प्रभु यहोवा यों कहता है कि हाय उस खूनी नगरी पर मैं आप ढेर को बड़ा करूंगा। १० बहुत लकड़ी डाल आग को बहुत तेज कर मांस को भली भांति सिझा गाढ़ा जूस बना और हड्डियां जल जाएं। ११ तब हंडे को छूछा करके अंगारों पर रख जिस से वह गर्म हो और उस का पीतल जले और उस में का मैल गले और उस का मोर्चा नाश हो जाए। १२ मैं उस के कारण परिश्रम करते करते थक गया पर उस का भारी मोर्चा उस से छूटता नहीं उस का मोर्चा आग के द्वारा भी नहीं छूटता। १३ हे नगरी तेरी अशुद्धता महापाप की है मैं तो तुझे शुद्ध करता था पर तू शुद्ध नहीं हुई इस कारण जब लों मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर से शांत न करूं तब लों तू फिर शुद्ध न की जाएगी। १४ मुझ यहोवा ही ने यह कहा है वह हो जाएगा और मैं ऐसा करूंगा मैं तुझे न छोड़ूंगा न तुझ पर तरस खाऊंगा न पछताऊंगा तेरे चालचलन और कामों के अनुसार तेरा न्याय किया जाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१५ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १६ हे मनुष्य के सन्तान सुन मैं तेरी आंखों के प्यारे को[१] मारकर तेरे पास से ले लेने पर हूं पर तू न रोना न पीटना न आंसू बहाना। १७ लम्बी सांसें खींच तो खींच पर सुनाई न पड़ें मरे हुओं के लिये विलाप न करना सिर पर पगड़ी बांधे और पांव में जूती पहने रहना और न तो अपने होंठ को ढांपना न शोक के योग्य रोटी खाना। १८ सो मैं सबेरे लोगों से बोला और सांझ को मेरी स्त्री मर गई और बिहान को मैं ने आज्ञा के अनुसार किया। १९ तब लोग मुझ से कहने लगे क्या तू हमें न बताएगा कि यह जो तू करता है इस का हम लोगों के लिये क्या अर्थ है। २० मैं ने उन को उत्तर दिया कि यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २१ तू इस्राएल के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं अपने पवित्रस्थान को अपवित्र करने पर हूं जिस के गढ़वाले होने पर तुम फूलते हो और जो तुम्हारी आंखों का चाहा हुआ है और जिस को तुम्हारा मन चाहता है और अपने जिन बेटे बेटियों को तुम वहां छोड़ आये हो सो तलवार से मारे जाएंगे। २२ और जैसा मैं ने किया है वैसा ही तुम लोग करोगे तुम भी अपने होंठ न ढांपोगे और न शोक के योग्य रोटी खाओगे। २३ और तुम सिर पर पगड़ी बांधे और पांवों में जूती पहिने रहोगे, तुम न रोओगे न पीटोगे बरन अपने अधर्म्म के कामों में फंसे हुए गलते जाओगे और एक दूसरे की ओर कहराहते रहोगे। २४ इस रीति यहेजकेल तुम्हारे लिये चिन्ह ठहरेगा जैसा उस ने किया ठीक वैसा ही तुम भी करोगे और जब यह हो जाएगा तब तुम जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं॥

२५ और हे मनुष्य के सन्तान क्या यह सच नहीं कि जिस दिन मैं उन का दृढ़ गढ़ उन की शोभा और हर्ष का कारण और उन के बेटे बेटियां जो उन की शोभा का आनन्द और उन की आंखों और

(१) मूल में तेरी आंख के चाहे हुए को।

२६ मन का चाहा हुआ है उन को उन से ले लूंगा। उसी दिन जो भागकर बचेगा सो तेरे पास आकर तुझे समा-२७ चार सुनाएगा। उसी दिन तेरा मुंह खुलेगा और तू फिर चुप न रहेगा उस बचे हुए के साथ बातें ही करेगा सो तू इन लोगों के लिये चिन्ह ठहरेगा और ये जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

२५. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास २ पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान अम्मोनियों की ओर मुंह करके उन के ३ विषय नबूवत कर। और उन से कह हे अम्मोनियो प्रभु यहोवा का वचन सुनो प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरे पवित्रस्थान के विषय जब वह अपवित्र किया गया और इस्राएल के देश के विषय जब वह उजड़ गया और यहूदा के घराने के विषय जब वे बन्धु-४ आई में गये आहा कहा। इस कारण सुनो मैं तुझ को पूरबियों के अधिकार में करने पर हूं और वे तेरे बीच अपनी छावनियां डालेंगे और अपने घर बनाएंगे तेरे ५ फल वे खाएंगे और तेरा दूध वे पीएंगे। और मैं रब्बा नगर को ऊंटों के रहने और अम्मोनियों के देश को भेड़ बकरियों के बैठने का स्थान कर दूंगा तब तुम जान ६ लोगे कि मैं यहोवा हूं। क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो इस्राएल के देश के कारण ताली बजाई और नाचे और अपने सारे मन के अभिमान से आनन्द ७ किया, इस कारण सुन मैं ने अपना हाथ तेरे ऊपर बढ़ाया है और तुझ को जाति जाति की लूट कर दूंगा और देश देश के लोगों में से तुझे मिटाऊंगा और देश देश में से नाश करूंगा मैं तेरा सत्यानाश कर डालूंगा तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं॥

८ प्रभु यहोवा यों कहता है कि मोआब और सेईर जो कहते हैं देखो यहूदा का घराना और सब जातियों ९ के समान हो गया है, इस कारण सुन मोआब के देश के किनारे के नगरों को बेत्यशीमोत बालमोन और किर्यातैम जो उस देश के शिरोमणि हैं मैं उन का मार्ग[1] १० खोलकर, उन्हें पूरबियों के वश में ऐसा कर दूंगा कि वे अम्मोनियों पर चढ़ाई करें और मैं अम्मोनियों को यहां लों उन के अधिकार में दूंगा कि जाति जाति के ११ बीच उन का स्मरण फिर न रहे। और मैं मोआब को भी दण्ड दूंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

(१) मूल में कन्धा।

प्रभु यहोवा यों भी कहता है कि एदोम ने जो यहूदा १२ के घराने से पलटा लिया और उन से पलटा लेकर बड़ा दोषी हो गया है, इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है १३ कि मैं एदोम के देश के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाकर उस में से मनुष्य और पशु दोनों को मिटाऊंगा और तेमान से लेकर ददान लों उस को उजाड़ कर दूंगा और वे तलवार से मारे जाएंगे। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के द्वारा अपना १४ पलटा एदोम से लूंगा और वे उस देश में मेरे कोप और जलजलाहट के अनुसार काम करेंगे तब वे मेरा पलटा लेना जान लेंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

प्रभु यहोवा यों कहता है कि पलिश्ती लोगों ने जो १५ पलटा लिया बरन अपनी युग युग की शत्रुता के कारण अपने मन के अभिमान से पलटा लिया कि नाश करें, इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं पलिश्तियों १६ के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाने पर हूं और करेतियों को मिटा डालूंगा और समुद्रतीर के बचे हुए रहनेहारों को नाश करूंगा। और मैं जलजलाहट के साथ मुकद्दमा १७ लड़कर उन से कड़ाई के साथ पलटा लूंगा और जब मैं उन से पलटा लूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

२६. फिर ग्यारहवें बरस के पहिले महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान २ सोर ने जो यरूशलेम के विषय कहा है आहा जो देश देश के लोगों के फाटक सी थी वह नाश हो गई उस के उजड़ जाने से मैं भरपूर हो जाऊंगा, इस कारण प्रभु ३ यहोवा कहता है कि हे सोर सुन मैं तेरे विरुद्ध हूं और ऐसा करूंगा कि बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध ऐसे उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। और वे सोर की शहर-४ पनाह को गिराएंगी और उस के गुम्मटों को तोड़ डालेंगी मैं उस की मिट्टी उस पर से खुरचकर उसे नंगी चटान कर दूंगा। वह समुद्र के बीच का जाल फैलाने ही का ५ स्थान हो जाएगा क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि यह मेरा ही वचन है और वह जाति जाति से लुट जाएगा। और उस की जो बेटियां मैदान में हैं सो तल-६ वार से मारी जाएंगी तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। क्योंकि प्रभु यहोवा यह कहता है कि सुन मैं सोर के ७ विरुद्ध राजाधिराज बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को घोड़ों और रथों और सवारों और बड़ी भीड़ और दल समेत उत्तर दिशा से ले आऊंगा। और तेरी जो बेटियां ८ मैदान में हैं उन को वह तलवार से मारेगा और तेरे

विरुद्ध कोट बनाएगा और धुस बांधेगा और ढाल उठा-
९ एगा। और वह तेरी शहरपनाह के विरुद्ध युद्ध के यन्त्र चलाएगा और तेरे गुम्मटों को फरसों से ढा डालेगा।
१० उस के घोड़े इतने होंगे कि तू उन की धूलि से ढंपेगा और जब वह तेरे फाटकों में ऐसे घुसेगा जैसे लोग नाकेवाले नगर में घुसते हैं तब तेरी शहरपनाह सवारों
११ छकड़ों और रथों के शब्द से कांप उठेगी। वह अपने घोड़ों की टापों से तेरी सब सड़कों को खुन्द डालेगा और तेरे निवासियों को तलवार से मार डालेगा और तेरे
१२ बल के खंभे भूमि पर गिराये जाएंगे। और लोग तेरा धन लूटेंगे और तेरे ब्योपार की वस्तुएं छीन लेंगे और तेरी शहरपनाह ढा देंगे और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे और तेरे पत्थर और काठ और तेरी धूलि
१३ जल में फेंक देंगे। और मैं तेरे गीतों का सुरताल बन्द करूंगा और तेरी वीणाओं की ध्वनि फिर सुनाई न
१४ देगी। और मैं तुझे नंगी चटान कर दूंगा तू जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा और फिर बसाया न जाएगा क्योंकि मुझ यहोवा ही ने यह कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१५ प्रभु यहोवा सोर से यों कहता है कि तेरे गिरने के शब्द से जब घायल लोग कहरेंगे और तुझ में घात
१६ ही घात होगा तब क्या टापू टापू न कांप उठेंगे। तब समुद्रतीर के सब प्रधान लोग अपने अपने सिंहासन पर से उतरेंगे और अपने बागे और बूटेदार वस्त्र उतार थर-थराहट के वस्त्र पहिनेंगे और भूमि पर बैठकर क्षण क्षण
१७ में कांपेंगे और तेरे कारण विस्मित रहेंगे। और वे तेरे विषय विलाप का गीत बनाकर तुझ से कहेंगे हाय मल्लाहों की[1] बसाई हुई हाय सराही हुई नगरी जो समुद्र के बीच निवासियों समेत सामर्थी रही और सब टिकनेहारों
१८ की डरानेहारी नगरी थी तू कैसी नाश हुई है। अब तेरे गिराने के दिन टापू टापू कांप उठेंगे और तेरे जाते रहने
१९ के कारण समुद्र से सब टापू घबरा जाएंगे। क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब मैं तुझे निर्जन नगरों के समान उजाड़ करूंगा और तेरे ऊपर महासागर चढ़ाऊंगा
२० और तू गहरे जल में डूब जाएगा, तब गड़हे में और और गिरनेहारों के संग मैं तुझे भी प्राचीन लोगों में उतार दूंगा और गड़हे में और गिरनेहारों के संग तुझे भी नीचे के लोक में[2] रखकर प्राचीन काल के उजड़े हुए स्थानों के समान कर दूंगा यहां लों कि तू फिर न बसेगा और तब मैं जीवन के लोक में अपना शिरोमणि
२१ रक्खूंगा। और मैं तुझे घबराने का कारण करूंगा कि तू आगे रहेगा ही नहीं वरन ढूंढ़ने पर भी तेरा पता न लगेगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

२७. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
२ पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान
३ सोर के विषय एक विलाप का गीत बनाकर, उस से यों कह कि हे समुद्र के पैठाव पर रहनेहारी हे बहुत से द्वीपों के लिए देश देश के लोगों के साथ ब्योपार करनेहारी प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे सोर तू ने तो कहा है
४ कि मैं सर्वांग सुन्दर हूं। तेरे सिवाने समुद्र के बीच हैं
५ तेरे बनानेहारों ने तुझे सर्वांग सुन्दर बनाया। तेरी सब पटरियां सनीर पर्वत के सनौबर की लकड़ी की बनीं
६ तेरे मस्तूल के लिये लबानोन के देवदार लिये गये। तेरे डांड़ बाशान के बांजवृक्षों के बने तेरे जहाजों का पटाव कित्तियों के द्वीपों से लाये हुए सीधे सनौबर की हाथी-
७ दांत जड़ी हुई लकड़ी का बना। तेरे जहाजों के पाल मिस्र से लाये हुए बूटेदार सन के कपड़े के बने कि तेरे लिये झण्डे का काम दें तेरी चांदनी एलीशा के द्वीपों से
८ लाये हुए नीले और बैंजनी रंग के कपड़े की बनी। तेरे खेवनेहारे सीदोन और अर्वद के रहनेहारे थे हे सोर तेरे
९ ही बीच के बुद्धिमान् लोग तेरे मांझी थे। तेरे गावनेहारे गबल नगर के पुरनिये और बुद्धिमान् लोग थे तुझ में ब्योपार करने के लिये मल्लाहों समेत समुद्र पर के सब
१० जहाज तुझ में आ गये थे। तेरी सेना में फारसी लूदी और पूती लोग भरती हुए थे उन्हों ने तुझ में ढाल और
११ टोपी टांगी तेरा प्रताप उन के कारण हुआ था। तेरी शहरपनाह पर तेरी सेना के साथ अर्वद के लोग चारों ओर थे और तेरे गुम्मटों में शूरवीर खड़े थे उन्हों ने अपनी ढालें तेरे चारों ओर की शहरपनाह पर टांगी थीं
१२ तेरी सुन्दरता उन के द्वारा पूरी हुई थी। अपनी सब प्रकार की संपत्ति की बहुतायत के कारण तर्शीशी लोग तेरे ब्योपारी थे उन्हों ने चांदी लोहा रांगा और सीसा
१३ देकर तेरा माल मोल लिया। यावान तूबल और मेशेक के लोग दास दासी और पीतल के पात्र तेरे माल के
१४ बदले देकर तेरे ब्योपारी थे। तोगर्मा के घराने के लोगों ने तेरी संपत्ति लेकर घोड़े सवारी के घोड़े और खच्चर
१५ दिये। ददानी तेरे ब्योपारी थे बहुत से द्वीप तेरे हाट बने थे वे तेरे पास हाथीदांत की सींग और आबनूस की
१६ लकड़ी ब्योपार में ले आये थे। तुझ में जो बहुत कारीगरी हुई इस से अराम तेरा ब्योपारी था मरकत बैंजनी रंग का और बूटेदार वस्त्र सन मूगा और लालड़ी देकर

(१) मूल में समुद्रों से। (२) मूल में निचले स्थानों के देश में।

१७ उन्हों ने तेरा माल लिया। यहूदा और इस्राएल वे तो तेरे ब्योपारी थे उन्हों ने मिन्नीत का गेहूं पन्नग और मधु
१८ तेल और बलसान देकर तेरा माल लिया। तुझ में जो बहुत कारीगरी हुई और सब प्रकार का धन हुआ इस से दमिश्क तेरा ब्योपारी हुआ तेरे पास हेलबोन का दाखमधु
१९ और उजला ऊन पहुंचाया गया वदान और यावान ने तेरे माल के बदले में सूत दिया और उन के कारण तेरे ब्योपार
२० के माल में फौलाद तज और बच भी हुआ। चार जामे के योग सुथरे कपड़े के लिये ददान तेरा ब्योपारी हुआ।
२१ अरब और केदार के सब प्रधान तेरे ब्योपारी ठहरे उन्हों ने मेम्ने मेढ़े और बकरे ले आकर तेरे साथ लेन देन किया।
२२ शबा और रामा के ब्योपारी तेरे ब्योपारी ठहरे उन्हों ने उत्तम उत्तम जाति का सब भांति का मसाला सब भांति
२३ के मणि और सोना देकर तेरा माल लिया। हारान कन्ने और एदेन और शबा के ब्योपारी और अश्शूर और कल
२४ मद ये सब तेरे ब्योपारी ठहरे। इन्हों ने उत्तम उत्तम वस्तुएं अर्थात् ओढ़ने के नीले और बूटेदार वस्त्र और डोरियों से बंधी और देवदार की बनी हुई चित्र विचित्र कपड़ों की पेटियां ले आकर तेरे साथ लेन देन किया।
२५ तर्शीश के जहाज तेरे ब्योपार के माल के ढोनेहारे हुए उन के द्वारा तू समुद्र के बीच रहकर बहुत धनवान् और प्रताप-
२६ वान् हो गई थी। तेरे खेवनेहारों ने तुझे गहिरे जल में पहुंचा दिया है और पुरवाई ने तुझे समुद्र के बीच तोड़ दिया
२७ है। जिस दिन तू डूब जाएगी उसी दिन तेरा धन संपत्ति ब्योपार का माल मल्लाह मांझी गाबनेहारे ब्योपारी लोग और तुझ में जितने सिपाही हैं और तुझ में की सारी
२८ भीड़ भाड़ समुद्र के बीच गिर जाएगी। तेरे मांझियों की चिल्लाहट के शब्द के मारे तेरे आस पास के स्थान कांप
२९ उठेंगे। और सब खेवनेहारे और मल्लाह और समुद्र में जितने मांझी रहते हैं वे अपने अपने जहाज पर से उतरेंगे,
३० वे भूमि पर खड़े होकर तेरे विषय ऊंचे शब्द से बिलक बिलक रोएंगे और अपने अपने सिर पर धूलि उड़ाकर
३१ राख में लोटेंगे, और तेरे शोक में अपने सिर मुंड़वा देंगे और कमर में टाट बांधकर अपने मन के कड़े दुःख[१]
३२ के साथ तेरे विषय रोएं पीटेंगे, वे विलाप करते हुए तेरे विषय विलाप का ऐसा गीत बनाकर गाएंगे कि सोर जो अब समुद्र के बीच चुपचाप पड़ी है उस के तुल्य
३३ कौन नगरी है। जब तेरा माल समुद्र पर से निकलता था तब तो बहुत सी जातियां के लोग तृप्त होते थे तेरे धन और ब्योपार के माल की बहुतायत से पृथिवी के
३४ राजा धनी होते थे। जिस समय तू अथाह जल में लहरों से टूटी उस समय तेरे ब्योपार का माल और तेरे सब निवासी
३५ भी तेरे भीतर रहकर नाश हो गये। टापू टापू के सब रहनेहारे तेरे कारण विस्मित हुए और उन के राजाओं के सब रोएं खड़े हो गये और उन के मुख उदास देख पड़े
३६ हैं। देश देश के ब्योपारी तेरे विरुद्ध हथौड़ी बजा रहे हैं तू भय का कारण हो गई और फिर कभी रहेगी नहीं॥

२८.

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के
२ संतान सोर के प्रधान से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू ने तो मन में फूलकर कहा है कि मैं ईश्वर हूं और समुद्र के बीच परमेश्वर के आसन पर बैठा हूं पर यद्यपि तू अपना मन परमेश्वर का सा दिखाता है तौ भी तू ईश्वर नहीं मनुष्य ही है। तू तो दानिय्येल से
३ भी अधिक बुद्धिमान् है कोई भी भेद तुझ से छिपा न
४ होगा। अपनी बुद्धि और समझ के द्वारा तू ने धन प्राप्त किया और अपने भण्डारों में सोना चांदी रक्खी
५ है। तू ने तो बड़ी बुद्धि से लेन देन किया इस से तेरा धन बढ़ा और धन के कारण तेरा मन फूल उठा है।
६ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू जो
७ अपना मन परमेश्वर का सा दिखाता है, इस लिये सुन मैं तुझ पर ऐसे परदेशियों से चढ़ाई कराऊंगा। जो सब जातियों में से बलात्कारी हैं और वे अपनी तलवारें तेरी बुद्धि की शोभा पर चलाएंगे और तेरी
८ चमक दमक को बिगाड़ेंगे। वे तुझे कबर में उतारेंगे और तू समुद्र के बीच के मारे हुओं की रीति मर
९ जाएगा। क्या तू अपने घात करनेहारे के साम्हने कहता रहेगा कि मैं परमेश्वर हूं। तू अपने घायल करनेहारे के
१० हाथ में ईश्वर नहीं मनुष्य ही ठहरेगा। तू परदेशियों के हाथ से खतनाहीन लोगों की रीति से मारा जाएगा क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि,
१२ हे मनुष्य के संतान सोर के राजा के विषय विलाप का गीत बनाकर उस से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि तू तो उत्तम से भी उत्तम है[२] तू बुद्धि से भरपूर और
१३ सर्वाङ्ग सुन्दर है। तू तो परमेश्वर की एदेन नाम बारी में था तेरे आभूषण माणिक पद्मराग हीरा फीरोजा सुलैमानी मणि यशब नीलमणि मरकत और लाल सब

(१) मूल में मन की कड़ुआहट।

(२) मूल में, पूर्णता पर छाप देता है।

भांति के मणि और सोने के थे तेरे डफ और बांसुलियां तुझी में बनाई गई थीं जिस दिन तू सिरजा गया था उस
१४ दिन वे भी तैयार की गई थीं । तू तो छानेहारा अभिषिक्त करूब था मैं ने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था तू आग सरीखे चमकनेहारे
१५ मणियों के बीच चलता फिरता था । जिस दिन से तू सिरजा गया और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई उस बीच में तो तू अपनी सारी चालचलन में निर्दोष
१६ रहा । पर लेन देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया इस से मैं ने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा और हे छानेहारे करूब मैं ने तुझे आग सरीखे चमकनेहारे मणियों के बीच से
१७ नाश किया है । सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था और विभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया और राजाओं के साम्हने तुझे
१८ रक्खा है कि वे तुझ को देखें । तेरे अधर्म्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्थान अपवित्र हो गये सो मैं ने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से तू भस्म हुआ और मैं ने तुझे सब देखनेहारों के साम्हने भूमि पर भस्म कर डाला है ।
१९ देश देश में के लोगों से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए तू भय का कारण हुआ और तू फिर कभी पाया न जाएगा ॥

२० फिर यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुंचा
२१ कि, हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख सीदोन की ओर
२२ करके उस के विरुद्ध नबूवत कर । और कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे सीदोन मैं तेरे विरुद्ध हूं मैं तेरे बीच अपनी महिमा कराऊंगा । जब मैं उस के बीच दण्ड दूंगा और उस में अपने को पवित्र ठहराऊंगा
२३ तब लोग जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं । और मैं उस में मरी फैलाऊंगा और उस की सड़कों में लोहू बहाऊंगा और उस के चारों ओर तलवार चलेगी तब उस के बीच घायल लोग गिरेंगे और वे जान लेंगे कि मैं
२४ यहोवा हूं । और इस्राएल के घराने के चारों ओर की जितनी जातियां उन के साथ अभिमान का बर्ताव रखती हैं उन में से कोई उन का चुभनेहारा कांटा वा बेधनेहारा शूल फिर न ठहरेगी तब वे जान लेंगी कि मैं प्रभु यहोवा हूं ॥

२५ प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब मैं इस्राएल के घराने को उन सब लोगों में से जिन के बीच वे तित्तर बित्तर हुए हैं इकट्ठा करूंगा और देश देश के लोगों के साम्हने उन के द्वारा पवित्र ठहरूंगा तब वे उस देश में वास करेंगे जो मैं ने अपने दास याकूब को दिया
२६ था । वे उस में तब निडर बसे रहेंगे वे घर बनाकर और दाख की बारियां लगाकर निडर रहेंगे जब मैं उन के चारों ओर के सब लोगों को जो उन से अभिमान का बर्ताव करते हैं दण्ड दूंगा । निदान वे जान लेंगे कि हमारा परमेश्वर यहोवा ही है ॥

२९. दसवें बरस के दसवें महीने के बारहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान अपना
२ मुख मिस्र के राजा फिरौन की ओर करके उस के और सारे मिस्र के विरुद्ध नबूवत कर । यह कह कि प्रभु
३ यहोवा यों कहता है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं हे मिस्र के राजा फिरौन हे बड़े नगर तू जो अपनी नदियों के बीच पड़ा रहता जिस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी निज की है और मैं
४ ही ने उस को अपने लिये बनाया है, मैं तो तेरे जभड़ों में आंकड़े डालूंगा और तेरी नदियों की मछलियों को तेरे चोंयों में चिपटाऊंगा और तेरे छिलकों में चिपटी हुई तेरी नदियों की सब मछलियों समेत तुझ को तेरी नदियों में से
५ निकालूंगा । तब मैं तुझे तेरी नदियों की सारी मछलियों समेत जंगल में निकाल दूंगा और तू मैदान में पड़ा रहेगा तेरी किसी प्रकार की सुधि न ली जाएगी[१] मैं ने तुझे बनैले पशुओं और आकाश के पक्षियों का आहार कर
६ दिया है । तब मिस्र के सारे निवासी जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं वे तो इस्राएल के घराने के लिये नरकट की टेक
७ ठहरे थे । जब उन्हों ने तुझ पर हाथ का बल दिया तब तू टूट गया और उन के पखौड़े उखड़ ही गये और जब उन्हों ने तुझ पर टेक लगाई तब तू टूट गया और उन
८ की कमर की सारी नसें चढ़ गईं । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तुझ पर तलवार चलवा
९ कर तेरे क्या मनुष्य क्या पशु सभों का नाश करूंगा । तब मिस्र देश उजाड़ ही उजाड़ होगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं । उस ने तो कहा है कि मेरी नदी मेरी
१० निज की है और मैं ही ने उसे बनाया, इस कारण सुन मैं तेरे और तेरी नदियों के विरुद्ध हूं और मिस्र देश को मिग्दोल से लेकर सवेने लों बरन कूश देश के
११ सिवाने लों उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा । चालीस बरस लों उस में मनुष्य वा पशु का पग तक न पड़ेगा और
१२ न उस में कोई बसा रहेगा । चालीस बरस तक मैं मिस्र देश को उजड़े हुए देशों के बीच उजाड़ कर रक्खूंगा

(१) मूल में तू न तो एकट्ठा किया जाएगा न बटोरा जाएगा ।

और उस के नगर उजड़े हुए नगरों के बीच खण्डहर ही रहेंगे और मैं मिस्रियों को जाति जाति में छिन्न भिन्न कर १३ दूंगा और देश देश में तित्तर बित्तर करूंगा । प्रभु यहोवा तो यों कहता है कि चालीस बरस के बीते पर मैं मिस्रियों को उन जातियों के बीच से इकट्ठा करूंगा जिन १४ में वे तित्तर बित्तर हुए । और मैं मिस्रियों को बंधुआई से छुड़ाकर पत्रास देश में जो उन की जन्मभूमि है फिर पहुंचाऊंगा और वहां उन का छोटा सा राज्य हो १५ जाएगा । वह सब राज्यों में से छोटा होगा और फिर अपना सिर और जातियों के ऊपर न उठाएगा क्योंकि मैं मिस्रियों को ऐसा घटाऊंगा कि वे फिर अन्य जातियों १६ पर प्रभुता करने न पाएंगे । और वह फिर इस्राएल के घराने के भरोसे का कारण न होगा जो उन के अधर्म्म की सुधि तब कराता है जब वे फिर कर उन की ओर देखते हैं । वे तो जान लेंगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं ॥

१७ फिर सताईसवें बरस के पहले महीने के पहिले १८ दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर के घेरने में [१] अपनी सेना से बड़ा परिश्रम कराया हर एक का सिर चन्दला हो गया और हर एक के कंधों का चमड़ा उड़ गया तौभी इस बड़े परिश्रम की मजूरी सोर से न तो १९ कुछ उस को मिली और न उस की सेना को । इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र देश दूंगा और वह उस की भीड़ भाड़ को ले जाएगा और उस की धन संपत्ति को लूटकर अपना कर लेगा सो उस की सेना को यही मजूरी २० मिलेगी । मैं ने उस के परिश्रम के बदले में उस को मिस्र देश इस कारण दिया है कि उन लोगों ने मेरे लिये काम किया था प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

२१ उसी समय मैं इस्राएल के घराने के एक सींग जमाऊंगा और उन के बीच तेरा मुंह खुलाऊंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

३०. **फिर** यहोवा का यह वचन मेरे २ पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान नबूवत करके कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि ३ हाय हाय करो हाय उस दिन पर । क्योंकि वह दिन अर्थात् यहोवा का दिन निकट है वह बादलों का दिन ४ और जातियों के दण्ड का समय होगा । मिस्र में तलवार चलेगी और जब मिस्र में लोग मारे जाकर गिरेंगे तब कूश में भी संकट पड़ेगा लोग मिस्र की भीड़ भाड़ ले जाएंगे और उस की नेवें उलट दी जाएंगी । कूश ५ पूत लूद और सब दोगले और कूब लोग और वाचा बांधे हुए देश के निवासी मिस्रियों के संग तलवार से मारे जाएंगे ॥

यहोवा यों कहता है कि मिस्र के संभालनेहारे ६ भी गिर जाएंगे और अपने जिस सामर्थ्य पर मिस्री फूलते हैं सो टूटेगा मिग्दोल से लेकर सवेने लों उस के निवासी तलवार से मारे जाएंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है । और वे उजड़े हुए देशों के बीच उजड़े ७ ठहरेंगे और उन के नगर खंडहर किये हुए नगरों में गिने जाएंगे । जब मैं मिस्र में आग लगाऊंगा और उस ८ के सब सहायक नाश होंगे तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं । उस समय मेरे साम्हने से दूत जहाजों पर ९ चढ़कर निडर निकलेंगे और कूशियों को डराएंगे और उन पर संकट पड़ेगा जैसा कि मिस्र के दण्ड के समय वह आता तो है ॥

प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं बाबेल के राजा १० नबूकदनेस्सर के हाथ से मिस्र की भीड़ भाड़ को नाश करा दूंगा । वह अपनी प्रजा समेत जो सब जातियों ११ में भयानक है उस देश के नाश करने को पहुंचाया जाएगा और वे मिस्र के विरुद्ध तलवार खींचकर देश को मरे हुओं से भर देंगे । और मैं नदियों को सुखा १२ डालूंगा और देश को बुरे लोगों के हाथ कर दूंगा और देश को और जो कुछ उस में है मैं परदेशियों से उजाड़ करा दूंगा मुझ यहोवा ही ने यह कहा है ॥

प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं नोप में से मूरतों १३ को नाश करूंगा मैं उस में की मूरतों को रहने न दूंगा मिस्र देश में कोई प्रधान फिर न उठेगा और मैं मिस्र देश में भय उपजाऊंगा । और मैं पत्रोस को उजाड़ूंगा १४ और सोअन में आग लगाऊंगा और नो को दण्ड दूंगा । और सीन जो मिस्र का दृढ़ स्थान है उस पर मैं १५ अपनी जलजलाहट भड़काऊंगा [२] और नो की भीड़ भाड़ का अंत कर डालूंगा । और मैं मिस्र में आग लगाऊंगा १६ सीन बहुत थरथराएगा और नो फाड़ा जाएगा और नोप के विरोधी दिन दहाड़े उठेंगे । आवेन और पीबेसेत १७ के जवान तलवार से गिरेंगे और ये नगर बंधुआई में चले जाएंगे । और जब मैं मिस्रियों के जूओं को १८ तहपन्हेस में तोड़ूंगा तब उस में दिन को अंधेरा होगा और उस की सामर्थ्य जिस पर वह फूलता है सो नाश

(१) मूल में सोर के विरुद्ध ।

(२) मूल में उतरंगा । (३) मूल में उण्डेलूंगा ।

हो जाएगी उस पर तो घटा छा जाएगी और उस की १९ बेटियां बंधुआई में चली जाएंगी। मैं मिस्रियों को दण्ड दूंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

२० फिर ग्यारहवें बरस के पहले महीने के सातवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, २१ हे मनुष्य के संतान मैं ने मिस्र के राजा फिरौन की भुजा तोड़ी है और न तो वह जुड़ी न उस पर लेप लगाकर पट्टी चढ़ाई गई न वह बांधने से तलवार २२ पकड़ने के लिये बली की गई है। सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं मिस्र के राजा फिरौन के विरुद्ध हूं और उस की अच्छी और टूटी दोनों भुजाओं को तोड़ूंगा और तलवार को उस के हाथ से गिराऊंगा। २३ और मैं मिस्रियों को जाति जाति में तित्तर बित्तर २४ करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा। और मैं बाबेल के राजा की भुजाओं को बली करके अपनी तलवार उस के हाथ में दूंगा और फिरौन की भुजाओं को तोड़ूंगा और वह उस के साम्हने ऐसा कराहेगा जैसा २५ मर्म का घायल कराहता है। मैं बाबेल के राजा की भुजाओं को सम्भालूंगा और फिरौन की भुजाएं ढीली पड़ेंगी सो जब मैं बाबेल के राजा के हाथ में अपनी तलवार दूंगा और वह उसे मिस्र देश पर चलाएगा २६ तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूं। और मैं मिस्रियों को जाति जाति में तित्तर बित्तर करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

३१.

फिर ग्यारहवें बरस के तीसरे महीने के पहिले दिन को २ यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान मिस्र के राजा फिरौन और उस की भीड़ भाड़ से कह कि अपनी बड़ाई में तू किस के समान ३ है। सुन अश्शूर तो लबानोन का एक देवदार था जिस की सुन्दर सुन्दर शाखा घनी छाया और बड़ी ऊंचाई थी और उस की फुनगी बादलों तक पहुंचती ४ थी। जल से वह बढ़ गया उस गहिरे जल के कारण वह ऊंचा हुआ जिस से नदियां उस के स्थान के चारों ओर बहती थीं और उस की नालियां निकलकर मैदान ५ के सारे वृक्षों के पास पहुंचती थीं। इस कारण उस की ऊंचाई मैदान के सब वृक्षों से अधिक हुई और उस की टहनियां बहुत हुईं और उस की शाखाएं लम्बी हो गईं क्योंकि जब वे निकलीं तब उन को बहुत जल ६ मिला। उस की टहनियों में आकाश के सब प्रकार के पक्षी बसेरा करते थे और उस की शाखाओं के नीचे मैदान के सब भांति के जीवजन्तु जन्मते थे और उस की छाया में सब बड़ी जातियां रहती थीं। ७ वह अपनी बड़ाई और अपनी डालियों की लम्बाई के कारण सुन्दर हुआ क्योंकि उस की जड़ बहुत जल के निकट ८ थी। परमेश्वर की बारी में के देवदार भी उस को न छिपा सकते थे सनौबर उस की टहनियों के समान न थे और अर्मोन वृक्ष उस की शाखाओं के तुल्य न थे परमेश्वर की बारी का कोई भी वृक्ष सुन्दरता में उस के ९ बराबर न था। मैं ने उसे डालियों की बहुतायत से सुन्दर बनाया था यहां लों कि एदेन के सब वृक्ष जो परमेश्वर की बारी में थे उस से डाह करते थे॥

१० इस कारण प्रभु यहोवा ने यों कहा है कि उस की ऊंचाई जो बढ़ गई और उस की फुनगी जो बादलों तक पहुंचती है और अपनी ऊंचाई के कारण उस का ११ मन जो फूल उठा है, सो जातियों में जो सामर्थी है उस के हाथ में उस को कर दूंगा और वह निश्चय उस से बुरा व्यवहार करेगा मैं ने उस की दुष्टता के कारण १२ उस को निकाल दिया है। और परदेशी जो जातियों में भयानक लोग हैं उन्हों ने उस को काटकर छोड़ दिया उस की डालियां पहाड़ों पर और सब तराइयों में गिराई गईं और उस की शाखाएं देश के सब नालों में टूटी पड़ी हैं और जाति जाति के सब लोग उस की १३ छाया को छोड़कर चले गये हैं। उस गिरे हुए वृक्ष पर आकाश के सब पक्षी बसेरा करते हैं और उस की शाखाओं के ऊपर मैदान के सब जीवजन्तु चढ़ने पाते हैं, १४ इसलिये कि जल के पास के सब वृक्षों में से कोई अपनी ऊंचाई न बढ़ाए न अपनी फुनगी को बादलों तक पहुंचाए और उन में से जितने जल पाकर दृढ़ हो गये हैं सो ऊंचे होने के कारण सिर न उठाएं क्योंकि कबर में गड़े हुओं के संग मनुष्यों के बीच वे भी सब के सब मृत्यु के वश करके अधोलोक में डाले जाएंगे॥

१५ प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस दिन वह अधोलोक में उतर गया उस दिन मैं ने विलाप कराया मैं ने उस के कारण गहिरे समुद्र को ढांपा और नदियों को रोका बहुत जल रुका रहा और मैं ने उस के कारण लबानोन पर उदासी छा दी और मैदान के सब वृक्ष १६ उस के कारण मूर्छित हुए। जब मैं ने उस को कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में फेंक दिया तब मैं ने उस के गिरने के शब्द से जाति जाति को थरथरा दिया और एदेन के सब वृक्षों अर्थात् लबानोन के उत्तम उत्तम वृक्षों ने जितने जल पाते हैं अधोलोक में शांति पाई। १७ वे भी उस के संग तलवार से मारे हुओं के

(१) मूल में तेरी।

पास अधोलोक में उतर गये अर्थात् वे जो उस की भुजा थे और जाति जाति के बीच उस की छाया में रहते थे ॥

१८ सो महिमा और बड़ाई के विषय एदेन के वृक्षों में से तू किस के समान है तू तो एदेन के और वृक्षों के संग अधोलोक में उतारा जाएगा और खतनाहीन लोगों के बीच तलवार से मारे हुओं के संग पड़ा रहेगा। फिरौन अपनी सारी भीड़ भाड़ समेत यों ही होगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

३२. फिर बारहवें बरस के बारहवें महीने के पहिले दिन को यहोवा का २ यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के सन्तान मिस्र के राजा फिरौन के विषय विलाप का गीत बनाकर उस को सुना कि तेरी उपमा जाति जाति में जवान सिंह से दी गई थी पर तू समुद्र में के मगर के समान है तू अपनी नदियों में टूट पड़ा और उन के जल को पांवों से ३ मथकर गदला[१] कर दिया। प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं बहुत सी जातियों की मण्डली के द्वारा तुझ पर अपना जाल फैलाऊंगा और वे मुझे मेरे महाजाल में ४ खींच लेंगे। तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूंगा और मैदान में फेंककर आकाश के सब पक्षियों को तुझ पर बैठाऊंगा और तेरे मांस से सारी पृथिवी के जीवजन्तुओं को तृप्त ५ करूंगा। और मैं तेरे मांस को पहाड़ों पर रक्खूंगा और ६ तराइयों को तेरी डील से भर दूंगा। और जिस देश में तू तैरता है उस को पहाड़ों तक तेरे लोहू से सींचूंगा ७ और उस के नाले तुझ से भर जाएंगे। और जिस समय मैं तुझे मलिन करूंगा उस समय मैं आकाश को ढांपूंगा और तारों को धुन्धला कर दूंगा सूर्य को मैं बादल से ८ छिपाऊंगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। आकाश में जितनी प्रकाशमान ज्योतियां हैं सब को मैं तेरे कारण धुन्धला कर दूंगा और तेरे देश में अंधकार कर दूंगा ९ प्रभु यहोवा की यही वाणी है। जब मैं तेरे विनाश का समाचार जाति जाति में और तेरे अनजाने देशों में फैलाऊंगा तब बड़े बड़े देशों के लोगों के मन में रिस १० उपजाऊंगा। और मैं बहुत सी जातियों को तेरे कारण विस्मित कर दूंगा और जब मैं उन के राजाओं के साम्हने अपनी तलवार भांजूंगा तब तेरे कारण उन के सब रोएं खड़े हो जाएंगे और तेरे गिरने के दिन वे अपने अपने प्राण के लिये क्षण क्षण कांपते रहेंगे ॥

(१) मूल में उन की नदियों को मैला।

११ प्रभु यहोवा यों कहता है कि बाबेल के राजा की १२ तलवार तुझ पर चलेगी। मैं तेरी भीड़ भाड़ को ऐसे शूरवीरों की तलवारों के द्वारा गिराऊंगा जो सब के सब जातियों में भयानक हैं और वे मिस्र के घमण्ड को तोड़ेंगे और उस की सारी भीड़ भाड़ का सत्यानाश १३ होगा। और मैं उस के सब पशुओं को उस के बहुतेरे जलाशयों के तीर पर से नाश करूंगा और वे आगे को न तो मनुष्य के पांव से और न पशु के खुरों से गदले १४ किये जाएंगे। तब मैं इन का जल निर्मल कर दूंगा और उन की नदियां तेल की नाईं बहेंगी प्रभु यहोवा १५ की यही वाणी है। जब मैं मिस्र देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा और जिस से वह भरपूर है उस से छूछा कर दूंगा और उस के सब रहनेहारों को मारूंगा १६ तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। लोगों के विलाप करने के लिये विलाप का गीत यही है जाति जाति की स्त्रियां इसे गाएंगी मिस्र और उस की सारी भीड़ भाड़ के विषय वे यही विलापगीत गाएंगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१७ फिर बारहवें बरस के उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, १८ हे मनुष्य के सन्तान मिस्र की भीड़ भाड़ के लिये हाय हाय कर और उस को प्रतापी जातियों की बेटियों समेत कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में उतार। १९ तू किस से मनोहर है तू उतरकर खतनाहीनों के संग २० लिटाया जाए। तलवार से मारे हुओं के बीच वे गिरेंगे उन[२] के लिये तलवार ही ठहराई गई है सो मिस्र को २१ सारी भीड़ भाड़ समेत घसीट ले जाओ। सामर्थी शूरवीर उस से और उस के सहायकों से अधोलोक में से बातें करेंगे वहां वे खतनाहीन लोग तलवार से मारे २२ जाकर उतरे पड़े हैं। वहां सारी मण्डली समेत अश्शूर भी है उस की कबरें उस के चारों ओर हैं सब के सब २३ तलवार से मारे जाकर गिरे हैं। उस की कबरें गड़हे के कोनों में बनी हुई हैं और उस की कबर के चारों ओर उस की मण्डली है, वे सब के सब जो जीवनलोक में भय उपजाते थे अब तलवार से मारे जाकर पड़े हुए २४ हैं। वहां एलाम है और उस की कबर के चारों ओर उस की सारी भीड़ भाड़ है वे सब के सब तलवार से मारे जाकर गिरे हैं वे खतनाहीन अधोलोक में उतर गये हैं वे जीवनलोक में भय उपजाते थे पर अब कबर में और और गड़े हुओं के संग उन के मुंह पर सियाही २५ छाई हुई है। सारी भीड़ भाड़ समेत उस को मारे हुओं

(२) मूल में उस।

के बीच सेज मिली उस की कबरें उस के चारों ओर वहीं हैं सब के सब खतनाहीन तलवार से मारे गये उन्हों ने जीवनलोक में तो भय उपजाया था पर अब कबर में और गड़े हुओं के संग उन के मुंह पर सियाही छाई हुई है और वह मारे हुओं के बीच रक्खा २६ गया है। वहां सारी भीड़ भाड़ समेत मेशेक और तूबल हैं उन की कबरें उन के चारों ओर हैं सब के सब खतनाहीन तलवार से मारे गये वे तो जीवनलोक २७ में भय उपजाते थे। क्या वे उन गिरे हुए खतनाहीन शूरवीरों के संग पड़े न रहेंगे जो अपने अपने युद्ध के हथियार लिये हुए अधोलोक में उतर गये हैं और वहां उन की तलवार उन के सिरों के नीचे रक्खी हुई हैं और उन के अधर्म्म के काम उन की हड्डियों में व्यापे हैं क्योंकि जीवनलोक में उन से शूरवीरों को भी भय उपजता २८ था। सो खतनाहीनों के संग अंग भंग होकर तू भी २९ तलवार से मारे हुओं के संग पड़ा रहेगा। वहां एदोम और उस के राजा और उस के सारे प्रधान हैं जो पराक्रमी होने पर भी तलवार से मारे हुओं के संग वहीं रक्खे हैं गड़हे में गड़े हुए खतनाहीन लोगों के ३० संग वे भी पड़े रहेंगे। वहां उत्तर दिशा के सारे प्रधान और सारे सीदोनी हैं मारे हुओं संग वे भी उतर गये उन्हों ने अपने पराक्रम से भय उपजाया था पर अब वे लज्जित हुए और तलवार से और और मारे हुओं के संग वे भी खतनाहीन पड़े हुए हैं और कबर में और और गड़े हुओं के संग उन के मुंह पर भी सियाही छाई ३१ हुई है। इन को देखकर फिरौन अपनी सारी भीड़ भाड़ के विषय शांति पाएगा और फिरौन और उस की सारी सेना तलवार से मारी गई है प्रभु यहोवा की यही ३२ वाणी है। क्योंकि मैं ने उस के कारण जीवनलोक में भय उपजाया है और वह सारी भीड़ भाड़ समेत तलवार से और मारे हुओं के संग खतनाहीनों के बीच लिटाया जाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

३३. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान २ अपने लोगों से कह कि जब मैं किसी देश पर तलवार चलाने लगूं और उस देश के लोग अपने किसी को ३ पहरुआ करके ठहराएं, तब यदि वह यह देखकर कि इस देश पर तलवार चला चाहती है नरसिंगा फूंककर लोगों ४ को चिता दे, तो जो कोई नरसिंगे का शब्द सुनने पर न चेत जाए और तलवार के चलने से वह मर जाए ५ उस का खून उसी के सिर पड़ेगा। उस ने नरसिंगे का शब्द तो सुना पर चेत न गया सो उस का खून उसी को लगेगा पर यदि वह चेत जाता तो अपना प्राण ६ बचा लेता। और यदि पहरुआ यह देखने पर कि तलवार चला चाहती है नरसिंगा फूंककर लोगों को चिता न दे और तब तलवार के चलने से उन में से कोई मर जाए तो वह तो अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मर जाएगा पर उस के खून का लेखा मैं पहरुए ७ ही से लूंगा। सो हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहरा दिया है सो तू मेरे मुंह से ८ वचन सुन सुनकर मेरी ओर से उन्हें चिता दे। जब मैं दुष्ट से कहूं कि हे दुष्ट तू निश्चय मरेगा तब यदि तू दुष्ट को उस के मार्ग के विषय न चिताए तो वह दुष्ट अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेगा पर उस के खून का ९ लेखा मैं तुझी से लूंगा। पर यदि तू दुष्ट को उस के मार्ग के विषय चिताए कि अपने मार्ग से फिर जाए और वह अपने मार्ग से न फिर जाए तो वह तो अपने अधर्म्म में फंसा हुआ मरेगा पर तू अपना प्राण बचा लेगा॥

१० फिर हे मनुष्य के सन्तान इस्राएल के घराने से यह कह कि तुम लोग कहते हो कि हमारे अपराधों और पापों का भार हमारे ऊपर लदा हुआ है हम उस के ११ कारण गलते जाते हैं हम जीते कैसे रहें। सो तू उन से यह कह प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता पर इस से कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीता रहे हे इस्राएल के घराने तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर १२ जाओ तुम क्यों मर जाओ। और हे मनुष्य के सन्तान अपने लोगों से यह कह कि जिस दिन धर्म्मी जन अपराध करे उस दिन वह अपने धर्म्म के कारण न बचेगा और दुष्ट की दुष्टता जो है जिस दिन वह उस से फिर जाए उस के कारण वह न गिर जाएगा फिर धर्म्मी जन जब वह १३ पाप करे तब अपने धर्म्म के कारण जीता न रहेगा। जब मैं धर्म्मी से कहूं कि तू निश्चय जीता रहेगा और वह अपने धर्म्म पर भरोसा करके कुटिल काम करने लगे तब उस के धर्म्म के कामों में से किसी का स्मरण न किया जाएगा जो कुटिल काम उस ने किये हों उन्हीं में फंसा १४ हुआ वह मरेगा। फिर जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा और वह अपने पाप से फिरकर न्याय और धर्म्म के १५ काम करने लगे, अर्थात् यदि दुष्ट जन बन्धक फेर देने अपनी लूटी हुई वस्तुएं भर देने और बिना कुटिल काम किये जीवनदायक विधियों पर चलने लगे तो वह न १६ मरेगा निश्चय जीता रहेगा। जितने पाप उस ने किये हों उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा उस ने

न्याय और धर्म्म के काम किये वह निश्चय जीता ही
१७ रहेगा। तौभी तेरे लोग कहते हैं कि प्रभु की चाल ठीक
१८ नहीं पर उन्हीं की चाल ठीक नहीं। जब धर्म्मी अपने
धर्म्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे तब उन में फंसा
१९ हुआ वह मर जाएगा। और जब दुष्ट अपनी दुष्टता से
फिरकर न्याय और धर्म्म के काम करने लगे तब वह उन
२० के कारण जीता रहेगा। तौभी तुम कहते हो कि प्रभु
की चाल ठीक नहीं है इस्राएल के घराने मैं तुम्हारा
न्याय एक एक जन की चाल ही के अनुसार करूंगा॥

२१ फिर हमारी बन्धुआई के ग्यारहवें बरस के दसवें महीने
के पांचवें दिन को एक जन जो यरूशलेम से भागकर
बच गया था सो मेरे पास आकर कहने लगा नगर ले
२२ लिया गया। उस भागे हुए के आने से पहिले सांझ को
यहोवा की शक्ति[२] मुझ पर हुई थी और भोर लों अर्थात्
उस मनुष्य के आने लों उस ने मेरा मुंह खोल दिया सो
२३ मेरा मुंह खुला ही रहा और मैं फिर चुप न रहा। तब
२४ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य
के सन्तान इस्राएल की भूमि के उन खण्डहरों के रहने-
हारे यह कहते हैं कि इब्राहीम एक ही था तौभी देश
का अधिकारी हुआ पर हम लोग बहुत से हैं और देश
२५ हमारे ही अधिकार में दिया गया। इस कारण तू उन
से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि तुम लोग तो मांस
लोहू समेत खाते और अपनी मूरतों की ओर दृष्टि करते
और खून करते हो फिर क्या तुम उस देश के अधिकारी
२६ रहने पाओगे। तुम तो अपनी अपनी तलवार पर भरोसा
करते और घिनौने काम करते और अपने अपने पड़ोसी
की स्त्री को अशुद्ध करते हो फिर क्या तुम उस देश के
२७ अधिकारी रहने पाओगे। तू उन से यह कह कि प्रभु यहोवा
यों कहता है कि मेरे जीवन की सौंह निःसंदेह जो लोग
खण्डहरों में रहते हैं सो तलवार से गिरेंगे और जो खुले
मैदान में रहता है उसे मैं जीवजन्तुओं का आहार कर
दूंगा और जो गढ़ों और गुफाओं में रहते हैं सो मरी से
२८ मरेंगे। और मैं उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा
और उस का अपने बल का घमण्ड जाता रहेगा और
इस्राएल के पहाड़ ऐसे उजड़ेंगे कि उन पर होकर कोई न
२९ चलेगा। सो जब मैं उन लोगों के किये हुए सब घिनौने
कामों के कारण उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा
३० तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। और हे मनुष्य के संतान
तेरे लोग भीतों के पास और घरों के द्वारों में तेरे विषय
बातें करते और एक दूसरे से कहते हैं कि आओ सुनो
तो यहोवा की ओर से कौन सा वचन निकलता है। वे ३१
प्रजा की नाईं तेरे पास आते और मेरी प्रजा बनकर
तेरे साम्हने बैठकर तेरे वचन सुनते हैं पर वह उन पर
चलते नहीं मुंह से तो वे बहुत प्रेम दिखाते हैं पर उन
का मन लालच ही में लगा रहता है। और तू उन के ३२
लेखे मीठे गानेहारे और अच्छे बजानेहारे का प्रेमवाला
गीत सा ठहरा है वे तेरे वचन सुनते तो हैं पर उन पर
चलते नहीं। पर जब यह बात घटेगी वह घटनेवाली तो ३३
है तब वे जान लेंगे कि हमारे बीच एक नबी आया था॥

३४. फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान २
इस्राएल के चरवाहों के विरुद्ध नबूवत करके उन चरवाहों
से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है हाय इस्राएल के
चरवाहों पर जो अपने अपने पेट भरते हैं क्या चरवाहों
को भेड़ बकरियों का पेट न भरना चाहिये। तुम लोग ३
चर्बी खाते ऊन पहिनते और मोटे मोटे पशुओं को काटते
हो और भेड़ बकरियों को तुम नहीं चराते। न तो तुम ने ४
बीमारों को बलवान् किया न रोगियों को चंगा किया
न घायलों के घावों को बांधा न निकाली हुई को फेर
लाये न खोई हुई को खोजा पर तुम ने बल और
बरबस्ती से अधिकार चलाया है। वे चरवाहे के न होने ५
के कारण तित्तर बित्तर हुईं और सब बनैले पशुओं का
आहार हो गईं वे तित्तर बित्तर हुई हैं। मेरी भेड़ ६
बकरियां सारे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे टीलों पर भटकती
थीं मेरी भेड़ बकरियां सारी पृथिवी के ऊपर तित्तर बित्तर
हुईं और उन की न तो कोई सुधि लेता था न कोई
उन को ढूंढ़ता था। इस कारण हे चरवाहो यहोवा का ७
वचन सुनो। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे ८
जीवन की सौंह मेरी भेड़ बकरियां जो लुट गईं और
मेरी भेड़ बकरियां जो चरवाहे के न होने के कारण
सब बनैले पशुओं का आहार हो गईं और मेरे चरवाहों
ने जो मेरी भेड़ बकरियों की सुधि नहीं ली और मेरी
भेड़ बकरियों का पेट नहीं अपना ही अपना पेट भरा,
इस कारण हे चरवाहो यहोवा का वचन सुनो। प्रभु ९, १०
यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं चरवाहों के विरुद्ध हूं और
उन से अपनी भेड़ बकरियों का लेखा लूंगा और उन को
उन्हें फिर चराने न दूंगा सो वे फिर अपना अपना पेट
भरने न पाएंगे क्योंकि मैं अपनी भेड़ बकरियां उन के
मुंह से छुड़ाऊंगा कि वे आगे को उन का आहार न हों।
और प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं आप ही ११

(१) मूल में तुम कहते हो कि।
(२) मूल में हाथ।

अपनी भेड़ बकरियों की सुधि लूंगा और उन्हें ढूंढ़ूंगा ।
१२ जैसे चरवाहा जब अपनी तित्तर बित्तर हुई भेड़ बकरियों
के बीच होता है तब अपने झुंड को बटोरता है वैसे ही
मैं भी अपनी भेड़ बकरियों को बटोरूंगा मैं उन्हें उन सब
स्थानों से निकाल ले आऊंगा जहां जहां वे बादल और
१३ घोर अन्धकार के दिन तित्तर बित्तर हो गई हों । और मैं
उन्हें देश देश के लोगों में से निकालूंगा और देश देश
से इकट्ठा करूंगा और उन्हीं की निज भूमि पर ले
आऊंगा और इस्राएल के पहाड़ों पर और नालों में और
१४ उस देश के सब बसे हुए स्थानों पर चराऊंगा । मैं उन्हें
अच्छी चराई में चराऊंगा और इस्राएल के ऊंचे ऊंचे
पहाड़ों पर उन को भेड़शाला मिलेगी वहां वे अच्छी
भेड़शाला में बैठा करेंगी और इस्राएल के पहाड़ों पर
१५ उत्तम से उत्तम चराई चरेंगी । मैं आप ही अपनी भेड़
बकरियों का चरवाहा हूंगा और मैं आप ही उन्हें बैठाऊंगा
१६ प्रभु यहोवा की यही वाणी है । मैं खोई हुई को ढूंढ़ूंगा
और निकाली हुई को फेर लाऊंगा और घायल के घाव
बांधूंगा और बीमार को बलवान् करूंगा और जो मोटी
और बलवन्त है उसे मैं नाश करूंगा मैं उन की
चरवाही न्याय से करूंगा ॥

१७ और हे मेरे झुण्ड तुम से प्रभु यहोवा यों कहता है
कि सुनो मैं भेड़ भेड़ के बीच और मेढ़ों और बकरों के
१८ बीच न्याय करता हूं । अच्छी चराई चर लेनी क्या
तुम्हें ऐसी छोटी बात जान पड़ती है कि तुम शेष चराई
को अपने पांवों से रौंदते हो और निर्मल जल पी लेना
क्या तुम्हें ऐसी छोटी बात जान पड़ती है कि तुम शेष
१९ जल को अपने पांवों से गदला करते हो । और मेरी भेड़
बकरियों को तुम्हारे पांवों के रौंदे हुए को चरना और
२० तुम्हारे पांवों के गदले किये हुए को पीना पड़ता है । इस
कारण प्रभु यहोवा उन से यों कहता कि सुनो मैं आप
मोटी और दुबली भेड़ बकरियों के बीच न्याय करूंगा ।
२१ तुम जो सब बीमारों को पांजर और कन्धे से यहां तक
ढकेलते और सींग से यहां तक मारते हो कि वे तित्तर
२२ बित्तर हो जाती हैं, इस कारण मैं अपनी भेड़ बकरियों
को छुड़ाऊंगा और वे फिर न लुटेंगी और मैं भेड़ भेड़
२३ के बीच और बकरी बकरी के बीच न्याय करूंगा । और
मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो उन की चर-
वाही करेगा वह मेरा दास दाऊद होगा वही उन को
२४ चराएगा और वही उन का चरवाहा होगा । और मैं
यहोवा उन का परमेश्वर ठहरूंगा और मेरा दास दाऊद
उन के बीच प्रधान होगा मुझ यहोवा ही ने यह कहा
२५ है । और मैं उन के साथ शांति की वाचा बांधूंगा और
दुष्ट जन्तुओं को देश में न रहने दूंगा सो वे जंगल में
निडर रहेंगे और वन में सोएंगे । और मैं उन्हें और २६
अपनी पहाड़ी के आस पास के स्थानों को आशिष का
कारण कर दूंगा और मेंह को ठीक समय में बरसाया
करूंगा और आशिषों की वर्षा होगी । और मैदान के २७
वृक्ष फलेंगे और भूमि अपनी उपज उपजाएगी और वे
अपने देश में निडर रहेंगे । जब मैं उन के जूए को तोड़-
कर उन लोगों के हाथ से छुड़ाऊंगा जो उन से सेवा
कराते हैं तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं । और वे २८
फिर जाति जाति से न लूटे जाएंगे और न बनैले पशु
उन्हें फाड़ खाएंगे वे निडर रहेंगे और उन को कोई न
डराएगा । और मैं बड़े नाम के लिये ऐसे पेड़ उपजाऊंगा २९
कि वे देश में फिर भूखों न मरेंगे और न जाति जाति के
लोग फिर उन की निन्दा करेंगे । और वे जानेंगे कि ३०
हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे संग है और हम जो
इस्राएल का घराना हैं सो उस की प्रजा हैं मुझ प्रभु
यहोवा की यही वाणी है । तुम तो मेरी भेड़ बकरियां मेरी ३१
चराई की भेड़ बकरियां हो तुम तो मनुष्य हो और मैं
तुम्हारा परमेश्वर हूं प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

३५. फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के २
संतान अपना मुख सेईर पहाड़ की ओर करके उस के
विरुद्ध नबूवत कर । और उस से कह प्रभु यहोवा यों ३
कहता है कि हे सेईर पहाड़ मैं तेरे विरुद्ध हूं और अपना
हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाकर तुझे उजाड़ ही उजाड़ कर
दूंगा । मैं तेरे नगरों को खण्डहर कर दूंगा और तू उजाड़ ४
हो जायगा तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं । इस ५
कारण कि तू इस्राएलियों से युग युग की शत्रुता रखता
था और उन की विपत्ति के समय जब अधर्म्म के अंत का
समय पहुंचा तब उन्हें तलवार से मारे जाने को दे दिया[१],
इस कारण तुझे प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे ६
जीवन की सौंह खून किये जाने के लिये तुझे मैं तैयार
करूंगा खून तेरा पीछा करेगा तू तो खून से न घिनाता
था इस कारण खून तेरा पीछा करेगा । इस रीति मैं ७
सेईर पहाड़ को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा और जो
उस में आता जाता है उस को मैं नाश करूंगा । और ८
मैं उस के पहाड़ों को मारे हुओं से भर दूंगा तेरे टीलों
तराइयों और सब नालों में तलवार से मारे हुए गिरेंगे ।
मैं तुझे युग युग के लिये उजाड़ कर दूंगा और तेरे नगर ९
न बसेंगे और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं । तू ने १०
तो कहा है कि ये दोनों जातियां और ये दोनों

(१) मूल में तलवार के हाथों पर सौंप दिया ।

देश मेरे होंगे और हम ही उन के स्वामी होंगे
११ तौभी यहोवा वहां बना रहा, इस कारण प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सोंह तेरे कोप के अनुसार और जो जलजलाहट तू ने उन पर अपने बैर के कारण की है उस के अनुसार मैं बर्ताव करूंगा और जब मैं तेरा न्याय करूंगा तब अपने को
१२ उन में प्रगट करूंगा। और तू जानेगा कि मुझ यहोवा ने तेरी सब तिरस्कार की बातें सुनी हैं जो तू ने इस्राएल के पहाड़ों के विषय कहीं हैं कि वे तो उजड़ गये वे हम ही
१३ को दिये गये हैं कि हम उन्हें खा डालें। तुम ने अपने मुंह से मेरे विरुद्ध बड़ाई मारी और मेरे विरुद्ध बहुत
१४ बातें कही हैं इसे मैं ने सुना है। प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब पृथिवी भर में आनन्द होगा तब मैं तुझे
१५ उजाड़ करूंगा। तू तो इस्राएल के घराने के निज भाग के उजड़ जाने के कारण आनन्दित हुआ और मैं तो तुझ से वैसा ही करूंगा हे सेईर पहाड़ हे एदोम के सारे देश तू उजाड़ हो जाएगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

३६. फिर हे मनुष्य के सन्तान तू इस्राएल के पहाड़ों से नबूवत करके
२ कह हे इस्राएल के पहाड़ो यहोवा का वचन सुनो। प्रभु यहोवा यों कहता है कि शत्रु ने तो तुम्हारे विषय कहा है कि आहा प्राचीन काल के ऊंचे स्थान अब हमारे अधि-
३ कार में आ गये। इस कारण नबूवत करके कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि लोगों ने जो तुम्हें उजाड़ा और चारों ओर से तुम्हें निगल लिया कि तुम बची हुई जातियों का अधिकार हो जाओ और लुतरे जो तुम्हारी
४ चर्चा और साधारण लोग जो तुम्हारी निन्दा करते हैं, इस कारण हे इस्राएल के पहाड़ो प्रभु यहोवा का वचन सुनो प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है अर्थात् पहाड़ों और पहाड़ियों से और नालों और तराइयों और उजड़े हुए खण्डहरों और निर्जन नगरों से जो चारों ओर की बची हुई जातियों से लुट गये और उन के हंसने के कारण हो गये,
५ प्रभु यहोवा यों कहता है कि निश्चय मैं ने अपनी जलन की आग में बची हुई जातियों के और सारे एदोम के विरुद्ध कहा है जिन्हों ने अपने मन के पूरे आनन्द और अभिमान से मेरे देश को अपने अधिकार में करने के लिये
६ ठहराया है वह पराया होकर लूटा जाए। इस कारण इस्राएल के देश के विषय नबूवत करके पहाड़ों पहाड़ियों नालों और तराइयों से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो तुम ने तो जातियों की निन्दा सही है इस
७ कारण मैं अपनी बड़ी जलजलाहट से बोला हूं। सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं ने यह किरिया खाई है[1] कि निःसन्देह तुम्हारे चारों ओर जो जातियां हैं उन को अपनी निन्दा आप सहनी पड़ेगी॥

८ और हे इस्राएल के पहाड़ो तुम पर डालियां पनपेंगी और उन के फल मेरी प्रजा इस्राएल के लिये लगेंगे
९ क्योंकि उस का लौट आना निकट है। और सुनो मैं तुम्हारे पक्ष का हूं और तुम्हारी ओर कृपादृष्टि करूंगा और
१० तुम जोते बोये जाओगे। और मैं तुम पर बहुत मनुष्यों अर्थात् इस्राएल के सारे घराने को बसाऊंगा और नगर
११ फिर बसाये और खण्डहर फिर बनाए जाएंगे। और मैं तुम पर मनुष्य और पशु दोनों को बहुत कर दूंगा और वे बढ़ेंगे और फूलें फलेंगे और मैं तुम को प्राचीन काल की नाईं बसाऊंगा और आरम्भ से अधिक तुम्हारी भलाई
१२ करूंगा और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। और मैं ऐसा करूंगा कि मनुष्य अर्थात् मेरी प्रजा इस्राएल तुम पर चले फिरेगी और वे तुम्हारे स्वामी होंगे और तुम उन का निज भाग होगे और वे फिर तुम्हारे
१३ कारण निर्वंश न हो जाएंगे। प्रभु यहोवा यों कहता है कि लोग जो तुम से कहा करते हैं कि तू तो मनुष्यों का खानेहारा है और अपने पर बसी हुई जाति निर्वंश
१४ कर देता है, इस कारण तू फिर मनुष्यों को न खाएगा और न अपने पर बसी हुई जाति निर्वंश करेगा प्रभु
१५ यहोवा की यही वाणी है। और मैं फिर तेरी निन्दा जाति जाति के लोगों से न सुनवाऊंगा और तुझे जाति जाति की ओर से नामधराई फिर सहनी न पड़ेगी और तू अपने पर बसी हुई जाति को फिर ठोकर न खिलाएगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा
१७ कि, हे मनुष्य के सन्तान जब इस्राएल का घराना अपने देश में रहता था तब वे उस को अपने चाल चलन और कामों के द्वारा अशुद्ध करते थे उन के चाल चलन मुझे ऋतुमती की अशुद्धता सी जान पड़ता था।
१८ सो जो खून उन्हों ने देश में किया था और देश को अपनी मूरतों के द्वारा अशुद्ध किया था इस के कारण
१९ मैं ने उन पर अपनी जलजलाहट भड़काई[2], और मैं ने उन्हें जाति जाति में तित्तर बित्तर किया और वे देश देश में छितरा गये मैं ने उन के चालचलन और कामों के
२० अनुसार उन को दण्ड दिया। और जब वे उन जातियों में जिन में पहुंचाये गये पहुंच गये तब मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया क्योंकि लोग उन के विषय कहने लगे ये यहोवा की प्रजा हैं पर अब उस के देश से

(१) मूल में मैं ने हाथ उठाया है। (२) मूल में उंडेली।

२१ निकाले गये हैं। पर मैं ने अपने पवित्र नाम की सुधि[1] ली जिसे इस्राएल के घराने ने उन जातियों के बीच
२२ अपवित्र ठहराया जहां वे गये थे। इस कारण तू इस्राएल के घराने से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल के घराने मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं पर अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूं जिसे तुम ने उन
२३ जातियों में अपवित्र ठहराया जहां तुम गये थे। और मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊंगा जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया जिसे तुम ने उन के बीच अपवित्र किया और जब मैं उन की दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा तब वे जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं
२४ प्रभु यहोवा की यही वाणी है। मैं तुम को जातियों में से ले लूंगा और देशों में से इकट्ठा करूंगा और तुम को
२५ तुम्हारे निज देश में पहुंचा दूंगा। और मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से
२६ शुद्ध करूंगा। और मैं तुम को नया मन दूंगा और तुम्हारे भीतर नया आत्मा उपजाऊंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का
२७ हृदय दूंगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे
२८ नियमों को मानकर उन के अनुसार करोगे। और तुम उस देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था बसोगे और मेरी प्रजा ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर
२९ ठहरूंगा। और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊंगा और अन्न उपजने की आज्ञा देकर उसे
३० बढ़ाऊंगा और तुम्हारे बीच अकाल न डालूंगा। और मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊंगा कि जातियों में अकाल के कारण तुम्हारी नामधराई फिर
३१ न होगी। तब तुम अपने बुरे चालचलन और अपने कामों को जो अच्छे नहीं थे स्मरण करके अपने अधर्म्म और घिनौने कामों के कारण अपने अपने से घिन
३२ खाओगे। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि तुम जान लो कि मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं करता हे इस्राएल के घराने अपने चालचलन के विषय लजाओ और तुम्हारा
३३ मुख काला हो जाए। प्रभु यहोवा यों कहता है कि जब मैं तुम को तुम्हारे सब अधर्म्म के कामों से शुद्ध करूंगा तब तुम्हारे नगरों को बसाऊंगा और तुम्हारे
३४ खण्डहर फिर बनाये जाएंगे। और तुम्हारा देश जो सब आने जानेहारों के साम्हने उजाड़ है सो उजाड़ होने की सन्ती जोता बोया जाएगा। और लोग कहा करेंगे
३५ यह देश जो उजाड़ था सो एदेन की बारी सा हो गया और जो नगर खण्डहर और उजाड़ हो गये और ढाये गये थे सो गढ़वाले हुए और बसाये गये हैं। तब जो
३६ जातियां तुम्हारे आस पास बची रहेंगी सो जान लेंगी कि मुझ यहोवा ने ढाये हुए को फिर बनाया और उजाड़ में पेड़ रोपे हैं मुझ यहोवा ही ने यह कहा और करूंगा भी॥

३७ प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरी बिनती इस्राएल के घराने से फिर की जाएगी कि मैं उन के लिये यह करूं अर्थात् मैं उन में मनुष्यों की गिनती भेड़ बकरियों
३८ की नाईं बढ़ाऊंगा। जैसे पवित्र समयों की भेड़ बकरियां अर्थात् नियत पर्वों के समय यरूशलेम में की भेड़ बकरियां अनगिनित होती हैं वैसे ही जो नगर अब खण्डहर हैं सो अनगिनित मनुष्यों के झुण्डों से भर जाएंगे तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

३७.

यहोवा की शक्ति[2] मुझ पर हुई और वह मुझ में अपना आत्मा समवा कर बाहर ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया और तराई हड्डियों से भरी हुई
२ थी। तब उस ने मुझे उन के ऊपर चारों ओर घुमाया और तराई की तह पर बहुत ही हड्डियां थीं और वे
३ बहुत सूखी थीं। तब उस ने मुझ से पूछा हे मनुष्य के सन्तान क्या ये हड्डियां जी सकती मैं ने कहा हे प्रभु
४ यहोवा तू ही जानता है। तब उस ने मुझ से कहा इन हड्डियों में नबूवत करके कह हे सूखी हड्डियो यहोवा का
५ वचन सुनो। प्रभु यहोवा तुम[3] हड्डियों से यों कहता है कि सुनो मैं आप तुम में सांस समवाऊंगा और तुम
६ जी उठोगी। और मैं तुम्हारे नसें उपजाकर मांस चढ़ाऊंगा और तुम को चमड़े से ढांपूंगा और तुम में सांस समवाऊंगा और तुम जीओगी और यह जान लोगी कि
७ मैं यहोवा हूं। इस आज्ञा के अनुसार मैं नबूवत करने लगा और नबूवत कर ही रहा था कि आहट आई और भुईंडोल हुआ और वे हड्डियां इकट्ठी होकर हड्डी से
८ हड्डी जुड़ गईं। और मैं देखता रहा कि उन के नसें उपजीं और मांस चढ़ा और वे ऊपर चमड़े से ढंप गईं
९ पर उन में सांस कुछ न थी। तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान सांस से नबूवत कर और सांस से नबूवत करके कह हे सांस प्रभु यहोवा यों कहता है कि चारों दिशाओं से आकर इन घात किये हुओं में चल
१० कि ये जी उठें। उस की इस आज्ञा के अनुसार मैं ने

(१) मूल में उस पर मैं ने दया की है।

(२) मूल में यहोवा का हाथ। (३) मूल में इन।

नबूवत की तब सांस उन में आ गई और वे जीकर अपने अपने पांवों के बल खड़े हो गये और बहुत बड़ी सेना हो गई॥

११ फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान ये हड्डियां इस्राएल के सारे घराने की उपमा हैं वे तो कहते हैं कि हमारी हड्डियां सूख गईं और हमारी आशा जाती १२ रही हम पूरी रीति से कट चुके हैं। इस कारण नबूवत करके उन से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरी प्रजा के लोगो सुनो मैं तुम्हारी कबरें खोलकर तुम को उन से निकालूंगा और इस्राएल के देश में पहुंचा दूंगा। १३ सो जब मैं तुम्हारी कबरें खोलूंगा और तुम को उन से निकालूंगा तब हे मेरी प्रजा के लोगो तुम जान लोगे १४ कि मैं यहोवा हूं। और मैं तुम में अपना आत्मा समवाऊंगा और तुम जीओगे और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊंगा तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा और किया है यहोवा की यही वाणी है॥

१५ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा १६ कि, हे मनुष्य के संतान एक लकड़ी लेकर उस पर लिख कि यहूदा की और उस के संगी इस्राएलियों की तब दूसरी लकड़ी लेकर उस पर लिख कि यूसुफ की अर्थात् एप्रैम की और उस के संगी इस्राएलियों की १७ लकड़ी। फिर उन लकड़ियों को एक दूसरी से जोड़कर एक ही कर ले कि वे तेरे हाथ में एक ही लकड़ी बन १८ जाएं। और जब तेरे लोग तुझ से पूछें कि क्या तू हमें न १९ बताएगा कि इन से तेरा क्या अभिप्राय है, तब उन से कहना प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं यूसुफ की लकड़ी को जो एप्रैम के हाथ में है और इस्राएल के जो गोत्र उस के संगी हैं उन को ले यहूदा की लकड़ी से जोड़कर उस के साथ एक ही लकड़ी कर दूंगा और दोनों २० मेरे हाथ में एक ही लकड़ी बनेंगी। और जिन लकड़ियों पर तू ऐसा लिखेगा वे उन के साम्हने तेरे हाथ में रहें। २१ और तू उन लोगों से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं इस्राएलियों को उन जातियों में से लेकर जिन में वे चले गये हैं चारों ओर से इकट्ठा करूंगा और उन २२ के निज देश में पहुंचाऊंगा। और मैं उन को उस देश अर्थात् इस्राएल के पहाड़ों पर एक ही जाति कर दूंगा और उन सभों का एक ही राजा होगा और वे फिर दो २३ न रहेंगे न फिर दो राज्यों में कभी बंट जाएंगे। और न वे फिर अपनी मूरतों और घिनौने कामों वा अपने किसी प्रकार के पाप के द्वारा अपने को अशुद्ध करेंगे और मैं उन को उन सब बस्तियों से जहां वे पाप करते थे निकालकर शुद्ध करूंगा और वे मेरी प्रजा होंगे और मैं उन का परमेश्वर हूंगा। और मेरा दास दाऊद उन २४ का राजा होगा सो उन सभों का एक ही चरवाहा होगा और वे मेरे नियमों पर चलेंगे और मेरी विधियों को मान कर उन के अनुसार चलेंगे। और वे उस देश में २५ रहेंगे जिसे मैं ने अपने दास याकूब को दिया था और जिस में तुम्हारे पुरखा रहते थे और वे और उन के बेटे पोते सदा लों उस में बसे रहेंगे और मेरा दास दाऊद सदा लों उन का प्रधान रहेगा। और मैं उन के २६ साथ शांति की वाचा बांधूंगा वह सदा की वाचा ठहरेगी और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊंगा और उन के बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाये रक्खूंगा। और मेरे निवास का तम्बू उन के ऊपर तना २७ रहेगा और मैं उन का परमेश्वर हूंगा और वे मेरी प्रजा होंगे। और जब मेरा पवित्रस्थान उन के बीच सदा के २८ लिये रहेगा तब सब जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा इस्राएल का पवित्र करनेहारा हूं॥

३८. फिर

यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, हे मनुष्य के संतान २ अपना मुख मागोग देश के गोग की ओर करके जो रोश मेशेक और तूबल का प्रधान है उस के विरुद्ध नबूवत कर। और यह कह कि हे गोग हे रोश मेशेक और ३ तूबल के प्रधान प्रभु यहोवा यों कहता है कि सुन मैं तेरे विरुद्ध हूं। और मैं तुझे घुमा ले आऊंगा और तेरे ४ जभड़ों में आंकड़े डालकर तुझे निकालूंगा और तेरी सारी सेना को अर्थात् घोड़ों सवारों को जो सब के सब कवच पहिने हुए होंगे एक बड़ी भीड़ को जो फरी और ढाल लिये हुए सब के सब तलवार चलानेहारे होंगे, और उन के संग फारस कूश और पूत को जो ५ सब के सब ढाल लिये और टोप लगाये होंगे, और ६ गोमेर और उस के सारे दलों को और उत्तर दिशा के दूर दूर देशों के तोगर्मा के घराने और उस के सारे दलों को निकालूंगा तेरे संग बहुत से देशों के लोग होंगे। सो तू ७ तैयार हो जा तू और जितनी भीड़ें तेरे पास इकट्ठी हों अपनी तैयारी करना और तू उन का नाथ बनना। बहुत दिनों के बीते पर तेरी सुधि ली जाएगी और ८ अन्त के बरसों में तू उस देश में आएगा जो तलवार के वश से छूटा हुआ होगा और जिस के निवासी[१] बहुत सी जातियों में से इकट्ठे होंगे अर्थात् तू इस्राएल के पहाड़ों पर आएगा जो निरन्तर उजाड़ रहे हैं पर वे[२] देश देश के लोगों के वश से छुड़ाये जाकर सब के सब

(१) मूल में जो। (२) मूल में वह।

९ निडर रहेंगे। और तू चढ़ाई करेगा तू आंधी की नाईं आएगा और अपने सारे दलों और बहुत देशों के लोगों
१० समेत मेघ के समान देश पर छा जाएगा। प्रभु यहोवा यों कहता है कि उस दिन तेरे मन में ऐसी ऐसी बातें
११ आएंगी कि तू एक बुरी युक्ति निकालेगा, और तू कहेगा कि मैं बिना शहरपनाह के गांवों के देश पर चढ़ाई करूंगा मैं उन लोगों के पास जाऊंगा जो चैन से निडर रहते हैं जो सब के सब बिना शहरपनाह और बिना
१२ बेंड़ों और पल्लों के बसे हुए हैं, जिस से मैं छीनकर लूटूं कि तू अपना हाथ उन खण्डहरों पर बढ़ाए जो फिर बसाये गये और उन लोगों के विरुद्ध फेरे जो जातियों में से इकट्ठे हुए और पृथिवी के बीचोंबीच[1] रहते हुए ढोर
१३ और और सम्पत्ति रखते हैं। शबा और ददान के लोग और तर्शीश के ब्योपारी अपने देश के सब जवान सिंहों समेत तुझ से कहेंगे क्या तू लूटने को आता है क्या तू ने धन छीनने सोना चान्दी उठाने ढोर और और सम्पत्ति ले जाने और बड़ी लूट अपनी कर लेने को अपनी भीड़ इकट्ठी की है ॥

१४ इस कारण हे मनुष्य के सन्तान नबूवत करके गोग से कह प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस समय मेरी प्रजा इस्राएल निडर बसी रहेगी क्या तुझे
१५ इस का समाचार न मिलेगा। और तू उत्तर दिशा के दूर दूर स्थानों से अपने स्थान से आएगा तू और तेरे साथ बहुत सी जातियों के लोग जो सब के सब घोड़ों पर चढ़े हुए होंगे अर्थात् एक बड़ी भीड़ और बलवन्त
१६ सेना। और तू मेरी प्रजा इस्राएल के देश पर ऐसे चढ़ाई करेगा जैसे बादल भूमि पर छा जाता है सो हे गोग अन्त के दिनों में ऐसा ही होगा कि मैं तुझ से अपने देश पर इसलिये चढ़ाई कराऊंगा कि जब मैं जातियों के देखते तेरे द्वारा अपने को पवित्र ठहराऊंगा तब वे
१७ मुझे पहिचानें। प्रभु यहोवा यों कहता है कि क्या तू वही नहीं जिस की चर्चा मैं ने प्राचीनकाल में अपने दासों के अर्थात् इस्राएल के उन नबियों के द्वारा की थी जो उन दिनों में बरसों तक यह नबूवत करते गये कि
१८ यहोवा गोग[2] से इस्राएलियों पर चढ़ाई कराएगा। और जिस दिन इस्राएल के देश पर गोग चढ़ाई करेगा उसी दिन मेरी जलजलाहट मेरे मुख में प्रगट होगी प्रभु
१९ यहोवा की यही वाणी है। और मैं ने जलजलाहट और क्रोध की आग में कहा कि निःसन्देह उस दिन इस्राएल

(१) मूल में पृथिवी की नाभि में।
(२) मूल में तुझे।

२० के देश में बड़ा भुईंडोल होगा, और मेरे दर्शन से समुद्र की मछलियां और आकाश के पक्षी और मैदान के पशु और भूमि पर जितने जीवजन्तु रेंगते हैं और भूमि के ऊपर जितने मनुष्य रहते हैं सो सब कांप उठेंगे और पहाड़ गिराये जाएंगे और चढ़ाइयां नाश होंगी[1] और सब
२१ भीतें गिरकर मिट्टी में मिल जाएंगी। और प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मैं उस के विरुद्ध तलवार चलाने के लिये अपने सब पहाड़ों को पुकारूंगा हर एक की
२२ तलवार उस के भाई के विरुद्ध उठेगी। और मैं उस से मरी और खून के द्वारा मुकद्दमा लड़ूंगा और उस पर और उस के दलों पर और उन बहुत सी जातियों पर जो उस के पास हों मैं बड़ी झड़ी लगाऊंगा और ओले
२३ और आग और गन्धक बरसाऊंगा। और मैं अपने को महान् और पवित्र ठहराऊंगा और बहुत सी जातियों के साम्हने अपने को प्रगट करूंगा और वे जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं ॥

३९.

फिर हे मनुष्य के सन्तान गोग के विरुद्ध नबूवत करके यह कह कि हे गोग हे रोश मेशेक और तूबल के प्रधान प्रभु यहोवा
२ यों कहता है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं। और मैं तुझे घुमा ले आऊंगा और उत्तर दिशा के दूर दूर देशों से चढ़ा ले आऊंगा और इस्राएल के पहाड़ों पर पहुंचाऊंगा।
३ वहां मैं मारकर तेरा धनुष तेरे बाएं हाथ से गिराऊंगा
४ और तेरी तीरों को तेरे दहिने हाथ से गिरा दूंगा। तू अपने सारे दलों और अपने साथ की सारी जातियों समेत इस्राएल के पहाड़ों पर मार डाला जाएगा और मैं तुझे भांति भांति के मांसाहारी पक्षियों और बनैले
५ जन्तुओं का आहार कर दूंगा। तू खेत आएगा क्योंकि मैं
६ ही ने ऐसा कहा है प्रभु यहोवा की यही वाणी है। मैं मागोग में और द्वीपों के निडर रहनेहारों के बीच आग
७ लगाऊंगा और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बीच अपना नाम प्रगट करूंगा और अपना पवित्र नाम फिर अपवित्र ठहरने न दूंगा तब जाति जाति के लोग भी जान लेंगे कि मैं यहोवा
८ इस्राएल का पवित्र हूं। यह घटना हुआ चाहती वह हो जाएगी प्रभु यहोवा की यही वाणी है यह वही दिन
९ है जिस की चर्चा मैं ने की है। और इस्राएल के नगरों के रहनेहारे निकलेंगे और हथियारों में आग लगाकर जला देंगे क्या ढाल क्या फरी क्या धनुष क्या तीर क्या लाठी क्या बर्छे सब को वे सात बरस तक

(१) मूल में गिर जाएंगी।

१० जलाते रहेंगे। और वे न तो मैदान में लकड़ी बीनेंगे न जंगल में काटेंगे क्योंकि वे हथियारों ही को जलाया करेंगे वे अपने लूटनेहारों को लूटेंगे और अपने छीननेहारों से छीनेंगे प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

११ उस समय मैं गोग को इस्राएल के देश में कब्रिस्तान दूंगा वह ताल की पूरब ओर होगा और आने जानेहारों की वह तराई कहलाएगी और आने जानेहारों को वहां रुकना पड़ेगा वहां सारी भीड़ भाड़ समेत गोग को मिट्टी दी जाएगी और उस स्थान का नाम १२ गोग की भीड़ भाड़ की तराई पड़ेगा। और इस्राएल का घराना उन को सात महीने मिट्टी देता रहेगा कि १३ अपने देश को शुद्ध करे। देश के सब लोग मिलकर उन को मिट्टी देंगे और जिस समय मेरी महिमा होगी उस समय उन का भी बड़ा नाम होगा प्रभु यहोवा की यही १४ वाणी है। तब वे मनुष्यों को अलग करेंगे जो निरन्तर इस काम में लगे रहेंगे अर्थात् देश में घूम घामकर आने जानेहारों के संग होकर उन को जो भूमि के ऊपर पड़े रह जाएंगे देश को शुद्ध करने के लिये मिट्टी देंगे और वे सात महीने के बीते पर ढूंढ़ ढूंढ़कर करने लगेंगे। १५ और देश में आने जानेहारों में से जब कोई किसी मनुष्य की हड्डी देखे तब उस के पास एक चिन्ह खड़ा करेगा यह तब लों बना रहेगा जब लों मिट्टी देनेहारे उसे १६ गोग की भीड़ भाड़ की तराई में गाड़ न दें। और एक नगर का भी नाम हमोना है[१] पड़ेगा। यों देश शुद्ध किया जाएगा ॥

१७ फिर हे मनुष्य के संतान प्रभु यहोवा यों कहता है कि भांति भांति के सब पक्षियों और सब बनैले जन्तुओं को आज्ञा दे कि इकट्ठे होकर आओ मेरे इस बड़े यज्ञ में जो मैं तुम्हारे लिये इस्राएल के पहाड़ों पर करता हूं चारों १८ दिशा से बटुरो कि तुम मांस खाओ और लोहू पीओ। तुम शूरवीरों का मांस खाओगे और पृथिवी के प्रधानों का और मेढ़ों मेम्नों बकरों बैलों का जो सब के सब बाशान १९ के तैयार किये हुये होंगे उन सब का लोहू पीओगे। और मेरे उस भोज की चर्बी जो मैं तुम्हारे लिये करता हूं तुम खाते खाते अघा जाओगे और उस का लोहू पीते पीते २० छक जाओगे। तुम मेरी मेज पर घोड़ों रथों शूरवीरों और सब प्रकार के योद्धाओं से तृप्त होगे प्रभु यहोवा की २१ यही वाणी है। और मैं जाति जाति के बीच अपनी महिमा प्रगट करूंगा और जाति जाति के सब लोग मेरे न्याय के काम जो मैं करूंगा और मेरा हाथ जो उन पर पड़ेगा २२ देख लेंगे। सो उस दिन से आगे को इस्राएल का घराना जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है। २३ और जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि इस्राएल का घराना अपने अधर्म के कारण बन्धुआई में गया था उन्हों ने तो मुझ से विश्वासघात किया था सो मैं ने अपना मुख उन से फेर[२] लिया और उन को उन के वैरियों के वश कर दिया था और वे सब तलवार से मारे गये। २४ मैं ने तो उन की अशुद्धता और अपराधों ही के अनुसार उन से बर्ताव करके उन से अपना मुख फेर[२] लिया था ॥

२५ सो प्रभु यहोवा यों कहता है कि अब मैं याकूब को बन्धुआई से फेर लाऊंगा और इस्राएल के सारे घराने पर दया करूंगा और अपने पवित्र नाम के लिये मुझे जलन होगी। २६ और वे तब अपनी लज्जा उठाएंगे और उन का सारा विश्वासघात जो उन्हों ने मेरे विरुद्ध किया तब उन पर होगा जब वे अपने देश में निडर रहेंगे और कोई २७ उन को न डराएगा, जब कि मैं उन को जाति जाति के बीच से फेर लाऊंगा और उन शत्रुओं के देशों से इकट्ठा करूंगा और बहुत जातियों की दृष्टि में उन के द्वारा २८ पवित्र ठहरूंगा, तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है क्योंकि मैं ने उन को जाति जाति में बन्धुआ करके फिर उन के निज देश में इकट्ठा किया है और मैं २९ उन में से किसी को फिर परदेश में[३] न छोड़ूंगा। और मैं उन से अपना मुंह फिर कभी न फेर[४] लूंगा क्योंकि मैं ने इस्राएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

४०.

हमारी बन्धुआई के पचीसवें बरस अर्थात् यरूशलेम नगर के ले लिये जाने के पीछे चौदहवें बरस के पहिले महीने के दसवें दिन को यहोवा की शक्ति[५] मुझ पर हुई और उस ने मुझे वहां पहुंचाया। २ अपने दर्शनों में परमेश्वर ने मुझे इस्राएल के देश में पहुंचाया और वहां एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर खड़ा किया जिस पर दक्खिन ओर मानो किसी नगर का आकार था। ३ वह मुझे वहीं ले गया और मैं ने क्या देखा कि पीतल का रूप धरे हुए और हाथ में सन का फीता और मापने का बांस लिये हुए एक पुरुष फाटक में खड़ा है। ४ उस पुरुष ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान अपनी आंखों से देख और अपने कानों से सुन और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊंगा उस सब पर ध्यान दे क्योंकि तू इसलिये यहां पहुंचाया गया है कि मैं तुझे ये बातें दिखाऊं और जो कुछ तू देखे सो इस्राएल के घराने को बता ॥

(१) अर्थात् भीड़भाड़।

(२) मूल में छिपा (३) मूल में वहां। (४) मूल में छिपा। (५) मूल में यहोवा का हाथ।

५ और भवन के बाहर चारों ओर एक भीत थी और उस पुरुष के हाथ में मापने का बांस था जिस की लम्बाई ऐसे छः हाथ की थी जो साधारण हाथों से चौवा चौवा भर अधिक हैं सो उस ने भीत[१] की मोटाई मापकर बांस भर की पाई फिर उस की ऊंचाई भी मापकर बांस भर ६ की पाई। तब वह उस फाटक के पास आया जिस का मुख पूरब ओर था और उस की सीढ़ी पर चढ़ फाटक की दोनों डेवढ़ियों की चौड़ाई माप कर बांस बांस भर की ७ पाई। और पहरेवाली कोठरियां बांस भर लम्बी और बांस बांस भर चौड़ी थीं और दो दो कोठरियों का अंतर पांच हाथ का था और फाटक की डेवढ़ी जो फाटक के ओसारे के पास भवन की ओर थी सो बांस भर की ८ थी उस ने फाटक का वह ओसारा जो भवन के साम्हने ९ था मापकर बांस भर का पाया। तब उस ने फाटक का ओसारा मापकर आठ हाथ का पाया और उस के खंभे दो दो हाथ के पाये और फाटक का ओसारा भवन के १० साम्हने था। और पूरबी फाटक की दोनों ओर तीन तीन पहरेवाली कोठरियां थीं जो सब एक ही माप की थीं और दोनों ओर के खम्भे भी एक ही माप के ११ थे। फिर उस ने फाटक के द्वार की चौड़ाई मापकर दस हाथ की पाई और फाटक की लम्बाई मापकर तेरह हाथ १२ की पाई। और दोनों ओर की पहरेवाली कोठरियों के आगे हाथ भर का स्थान और दोनों ओर की कोठरियां १३ छः छः हाथ की थीं। फिर उस ने फाटक की एक ओर की पहरेवाली कोठरी की छत से लेकर दूसरी ओर की पहरेवाली कोठरी की छत लों मापकर पचीस हाथ की १४ पाई और द्वार आम्हने साम्हने थे। फिर उस ने साठ हाथ के खम्भे मापे[२] और आंगन फाटक के आस पास १५ खम्भों तक था। और फाटक के बाहरी द्वार के आगे से लेकर उस के भीतरी ओसारे के आगे लों पचास हाथ १६ का अंतर था। और पहरेवाली कोठरियों में और फाटक भीतर चारों ओर कोठरियों के बीच के खम्भे के बीच बीच में झिलमिलीदार खिड़कियां थीं और खम्भों के ओसारे में वैसी ही थीं सो भीतर की चारों ओर खिड़कियां थीं और एक एक खम्भे पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे॥

१७ फिर वह मुझे बाहरी आंगन में ले गया और उस आंगन के चारों ओर कोठरियां और एक फर्श बना १८ हुआ था और फर्श पर तीस कोठरियां बनी थीं। और यह फर्श अर्थात् निचला फर्श फाटकों से लगा हुआ १९ और उन की लम्बाई के अनुसार था। फिर उस ने निचले फाटक के आगे से लेकर भीतरी आंगन के बाहर के आगे लों माप कर सौ हाथ पाये सो पूरब और उत्तर दोनों ओर ऐसा था। २० तब बाहरी आंगन के उत्तरमुखी फाटक की लम्बाई और चौड़ाई उस ने मापी। २१ और उस की दोनों ओर तीन तीन पहरेवाली कोठरियां थीं और इस के भी खभों और खभों के ओसारे की माप पहिले फाटक के अनुसार थी इस की लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी। २२ और इस की भी खिड़कियों और खभों के ओसारे और खजूरों की माप पूरबमुखी फाटक की सी थी और इस पर चढ़ने को सात सीढ़ियां थीं और उन के साम्हने इस का खभों का ओसारा था। २३ और भीतरी आंगन की उत्तर और पूरब ओर दूसरे फाटकों के साम्हने फाटक थे और उस ने फाटक फाटक का बीच मापकर सौ हाथ का पाया। २४ फिर वह मुझे दक्खिन ओर ले गया और दक्खिन ओर एक फाटक था और उस ने इस के खंभे और खभों का ओसारा मापकर इन की वैसी ही माप पाई। २५ और उन खिड़कियों की नाईं इस के भी और इस के खम्भों के ओसारों के चारों ओर खिड़कियां थीं और इस की भी लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी। २६ और इस में भी चढ़ने के लिये सात सीढ़ियां थीं और उन के साम्हने खम्भों का ओसारा था और उस के दोनों ओर के खम्भों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे। २७ और दक्खिन ओर भी भीतरी आंगन का एक फाटक था और उस ने दक्खिन ओर के दोनों फाटकों का बीच मापकर सौ हाथ का पाया॥

२८ फिर वह दक्खिनी फाटक से होकर मुझे भीतरी आंगन में ले गया और उस ने दक्खिनी फाटक को मापकर वैसा ही पाया। २९ अर्थात् इस की भी पहरेवाली कोठरियां और खंभे और खभों का ओसारा सब वैसे ही थे और इस के भी और इस के खभों के ओसारे के भी चारों ओर खिड़कियां थीं और इस की लम्बाई पचास ३० और चौड़ाई पचीस हाथ की थी। और इस के भी चारों ओर के खभों का ओसारा पचीस हाथ लम्बा और पांच हाथ चौड़ा था। ३१ और इस का खम्भों का ओसारा बाहरी आंगन की ओर था और इस के भी खंभों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे और इस पर चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं। ३२ फिर वह पुरुष मुझे पूरब की ओर भीतरी आंगन में ले गया और उस ओर के फाटक को मापकर वैसा ही पाया। ३३ और इस की भी पहरेवाली कोठरियां और खंभे और खभों का ओसारा सब वैसे ही थे और इस के भी और इस के खम्भों के ओसारे के भी चारों

(१) मूल में बनाई हुई वस्तु। (२) मूल में बनाये।

और खिड़कियां थीं और इस की लम्बाई पचास और
३४ चौड़ाई पचीस हाथ की थी। और इस का भी खंभों
का ओसारा बाहरी आंगन की ओर था और इस के भी
दोनों ओर के खंभों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे और
३५ इस पर भी चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं। फिर उस पुरुष
ने मुझे उत्तरी फाटक के पास ले जाकर उसे मापा और
३६ उस की वैसी ही माप पाई। और उस के भी पहरेवाली
कोठरियां और खंभे और खंभों का ओसारा था और
उस के भी चारों ओर खिड़कियां थीं और उस की भी
३७ लम्बाई पचास और चौड़ाई पचीस हाथ की थी। और
उस के भी खंभे बाहरी आंगन की ओर थे और उन पर
भी दोनों ओर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे और उस में
भी चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं॥

३८ फिर फाटकों के पास के खंभों के निकट द्वार समेत
३९ कोठरी थी जहां होमबलि धोया जाता था। और होम-
बलि पापबलि और दोषबलि के पशुओं के बध करने के
लिये फाटक के ओसारे के पास उस के दोनों ओर दो
४० दो मेजें थीं। फाटक की एक बाहरी अलंग पर अर्थात्
उत्तरी फाटक के द्वार की चढ़ाई पर दो मेजें थीं और
उस की दूसरी बाहरी अलंग पर जो फाटक के ओसारे
४१ के पास थीं दो मेजें थीं। फाटक की दोनों अलंगों पर
चार चार मेजें थीं सो सब मिलकर आठ मेजें थीं जो बलिपशु
४२ बध करने के लिये थीं। फिर होमबलि के लिये तराशे
हुए पत्थर की चार मेजें थीं जो डेढ़ डेढ़ हाथ लम्बी डेढ़
डेढ़ हाथ चौड़ी और हाथ भर ऊंची थीं उन पर होमबलि
और मेलबलि के पशुओं को बध करने के हथियार रक्खे
४३ जाते थे। और भीतर चारों ओर चौवे भर की अंकड़ियां
लगी थीं और मेजों पर चढ़ावे का मांस रक्खा हुआ था।
४४ और भीतरी आंगन की उत्तरी फाटक की अलंग के बाहर
गानेहारों की कोठरियां थीं जिन के द्वार दक्खिन ओर
थे और पूर्बी फाटक की अलंग पर एक कोठरी थी जिस
४५ का द्वार उत्तर ओर था। उस ने मुझ से कहा यह कोठरी
जिस का द्वार दक्खिन ओर है उन याजकों के लिये है
४६ जो भवन की चौकसी करते हैं। और जिस कोठरी का
द्वार उत्तर ओर है सो उन याजकों के लिये है जो वेदी
की चौकसी करते हैं ये तो सादोक की सन्तान हैं और
लेवीयों में से यहोवा की सेवा टहल करने को उस के
४७ समीप जाते हैं। फिर उस ने आंगन को मापकर उसे
चौकोना अर्थात् सौ हाथ लंबा और सौ हाथ चौड़ा पाया
और भवन के साम्हने वेदी थी॥

४८ फिर वह मुझे भवन के ओसारे को ले गया और
ओसारे के दोनों ओर के खंभों को मापकर पांच पांच
हाथ का पाया और दोनों ओर फाटक की चौड़ाई तीन
तीन हाथ की थी। ओसारे की लम्बाई बीस हाथ और ४९
चौड़ाई ग्यारह हाथ की थी और उस पर चढ़ने को
सीढ़ियां थीं और दोनों ओर के खंभों के पास
लाटें थीं॥

४१.

फिर वह मुझे मन्दिर के पास ले गया और उस के दोनों ओर
के खंभों को मापकर छः छः हाथ चौड़े पाया यह तो
तम्बू की चौड़ाई थी। और द्वार की चौड़ाई दस हाथ २
की थी और द्वार की दोनों अलंगें पांच पांच हाथ की
थीं और उस ने मन्दिर की लम्बाई मापकर चालीस हाथ
की और उस की चौड़ाई बीस हाथ की पाई। तब उस ३
ने भीतर जाकर द्वार के खंभों को मापा और दो दो
हाथ के पाया और द्वार छः हाथ का था और द्वार की
चौड़ाई सात हाथ की थी। तब उस ने भीतर के भवन की ४
लम्बाई और चौड़ाई मन्दिर के साम्हने मापकर बीस
बीस हाथ की पाई और उस ने मुझ से कहा यह तो
परमपवित्र स्थान है। फिर उस ने भवन की भीत को ५
मापकर छः हाथ की पाया और भवन के आस पास
चार चार हाथ की चौड़ी बाहरी कोठरियां थीं। और ६
ये बाहरी कोठरियां तिमहली थीं और एक एक महल
में तीस तीस कोठरियां थीं और भवन के आस पास
जो भीत इसलिये थी कि बाहरी कोठरियां उस के सहारे
में हों उसी में कोठरियों की कड़ियां पैठाई हुई थीं और
भवन की भीत के सहारे में न थीं। और भवन के आस ७
पास जो कोठरियां बाहर थीं उन में से जो ऊपर थीं वे
अधिक चौड़ी थीं अर्थात् भवन के आस पास जो कुछ
बना था सो जैसे जैसे ऊपर की ओर चढ़ता गया वैसे
वैसे चौड़ा होता गया इस रीति इस घर की चौड़ाई
ऊपर की ओर बढ़ी हुई थी और लोग नीचले महल से
बिचले में होकर उपरले महल को चढ़ जाते थे। फिर ८
मैं ने भवन के आस पास ऊंची भूमि देखी और बाहरी
कोठरियों की ऊंचाई जोड़ लों छः हाथ के बांस की
थी। बाहरी कोठरियों के लिये जो भीत थी सो पांच ९
हाथ मोटी थी और जो रह गया था सो भवन की
बाहरी कोठरियों का स्थान था। और बाहरी कोठरियों १०
के बीच बीच भवन के आस पास बीस हाथ का अन्तर
था। और बाहरी कोठरियों के द्वार उस स्थान की ओर ११
थे जो रह गया था अर्थात् एक द्वार उत्तर और दूसरा
दक्खिन ओर था और जो स्थान रह गया
उस की चौड़ाई चारों ओर पांच पांच हाथ
की थी। फिर जो भवन पच्छिम ओर के भिन्न १२

स्थान के साम्हने था सो सत्तर हाथ चौड़ा था और भवन के आस पास की भीत पांच हाथ मोटी थी और
१३ उस की लम्बाई नव्वे हाथ की थी। तब उस ने भवन की लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई और भीतों समेत भिन्न स्थान की भी लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई।
१४ और भवन का साम्हना और भिन्न स्थान की पूरबी अलंग सौ सौ हाथ चौड़ी ठहरीं॥

१५ फिर उस ने पीछे के भिन्न स्थान के आगे की भीत की लम्बाई जिस की दोनों ओर छज्जे थे मापकर सौ हाथ की पाई और भीतरी भवन और आंगन के ओसारों
१६ को भी मापा। तब उस ने डेवढ़ियों और झिलमिलीदार खिड़कियों और आस पास के तीनों महलों के छज्जों को मापा जो डेवढ़ी के साम्हने थे और चारों ओर उन की तखताबन्दी हुई थी और भूमि से खिड़कियों तक और खिड़कियों के आस पास सब कहीं
१७ तखताबन्दी हुई थी। फिर उस ने द्वार के ऊपर का स्थान भीतरी भवन लों और उस के बाहर भी और आस पास की सारी भीत के भीतर और बाहर भी
१८ मापा। और उस में करूब और खजूर के पेड़ ऐसे खुदे हुए थे कि दो दो करूबों के बीच एक एक खजूर का
१९ पेड़ था और करूबों के दो दो मुख थे। इस प्रकार से एक एक खजूर के एक ओर मनुष्य का मुख बनाया हुआ था और दूसरी ओर जवान सिंह का मुख बनाया हुआ था इसी रीति सारे भवन के चारों ओर बना
२० था। भूमि से लेकर द्वार के ऊपर लों करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे मन्दिर की भीत इसी भांति
२१ बनी हुई थी। भवन के द्वारों के बाजू चौपहल थे और
२२ पवित्रस्थान के साम्हने का रूप मन्दिर का सा था। वेदी काठ की बनी थी उस की ऊंचाई तीन हाथ और लम्बाई दो हाथ की थी और उस के कोने और उस का सारा पाट और अलंगें भी काठ की थीं और उस ने मुझ से
२३ कहा यह तो यहोवा के सम्मुख की मेज है। और मन्दिर और पवित्र स्थान के द्वारों के दो दो किवाड़ थे।
२४ और एक एक किवाड़ में दो दो मुड़नेवाले पल्ले थे
२५ एक एक किवाड़ के लिये दो दो पल्ले। और जैसे मन्दिर की भीतों में करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे वैसे ही उस के किवाड़ों में भी थे और ओसारे की बाहरी ओर लकड़ी की मोटी मोटी धरनें
२६ थीं। और ओसारे के दोनों ओर झिलमिलीदार खिड़कियां थीं और खजूर के पेड़ खुदे थे और भवन की बाहरी कोठरियां और मोटी मोटी धरनें भी थीं॥

४२. फिर वह मुझे बाहरी आंगन में उत्तर की ओर ले गया और मुझे उन दो कोठरियों के पास ले गया जो भिन्न स्थान और भवन दोनों के बाहर उन की उत्तर ओर थीं।
२ सौ हाथ की दूरी पर उत्तरी द्वार था और चौड़ाई पचास हाथ की थी।
३ भीतरी आंगन के बीस हाथ के अन्तर और बाहरी आंगन के फर्श दोनों के साम्हने तीनों महलों में छज्जे थे।
४ और कोठरियों के साम्हने भीतर की ओर जानेवाला दस हाथ चौड़ा एक मार्ग था और हाथ भर का एक मार्ग था और कोठरियों के द्वार उत्तर ओर थे।
५ और उपरली कोठरियां छोटी थीं अर्थात् छज्जों के कारण वे निचली और बिचली कोठरियों से छोटी थीं।
६ क्योंकि वे तिमहली थीं और आंगनों के से उन के खंभे न थे इस कारण उपरली कोठरियां निचली और बिचली कोठरियों से छोटी थीं।
७ और जो भीत कोठरियों के बाहर उन के पास पास थी अर्थात् कोठरियों के साम्हने बाहरी आंगन की ओर थी उस की लम्बाई पचास हाथ की थी।
८ क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियां पचास हाथ लम्बी थीं और मन्दिर के साम्हने की अलंग सौ हाथ की थी।
९ और इन कोठरियों के नीचे पूरब की ओर मार्ग था जहां लोग बाहरी आंगन से इन में जाते थे।
१० आंगन की भीत की चौड़ाई में पूरब की ओर भिन्न स्थान और भवन दोनों के साम्हने कोठरियां थीं।
११ और उन के साम्हने का मार्ग उत्तरी कोठरियों के मार्ग सा था लम्बाई चौड़ाई निकास ढंग और द्वार उन के से थे।
१२ और दक्खिनी कोठरियों के द्वारों के अनुसार मार्ग के सिरे पर द्वार था अर्थात् पूरब की ओर की भीत के साम्हने का जहां लोग उन में घुसते थे।
१३ फिर उस ने मुझ से कहा ये उत्तरी और दक्खिनी कोठरियां जो भिन्न स्थान के साम्हने हैं सो वे ही पवित्र कोठरियां हैं जिन में यहोवा के समीप जानेहारे याजक परमपवित्र वस्तुएं खाया करेंगे वे परमपवित्र वस्तुएं और अन्नबलि और पापबलि और दोषबलि वहीं रक्खेंगे क्योंकि वह स्थान पवित्र है।
१४ जब जब याजक लोग भीतर जाएंगे तब तब निकलने के समय वे पवित्रस्थान से बाहरी आंगन में यों ही न निकलेंगे अर्थात् वे पहिले अपने सेवा टहल के वस्त्र पवित्रस्थान में रख देंगे क्योंकि ये कोठरियां पवित्र हैं तब वे और वस्त्र पहिनकर साधारण लोगों के स्थान में जाएंगे।

१५ जब वह भीतरी भवन को माप चुका तब मुझे पूरब दिशा के फाटक के मार्ग से बाहर ले जाकर बाहर का स्थान चारों ओर मापने लगा।
१६ उस ने पूरबी अलंग

को मापने के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया।
१७ उस ने उत्तरी अलंग को मापने के बांस से मापकर पांच
१८ सौ बांस का पाया। उस ने दक्खिनी अलंग को मापने
१९ के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया। उस ने पच्छिमी अलंग को घूम उस को मापने के बांस से
२० मापकर पांच सौ बांस का पाया। उस ने उस स्थान की चारों अलंगें मापीं और उस के चारों ओर भीत थी वह पांच सौ बांस लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ा था और इसलिये बनी थी कि पवित्र अपवित्र अलग अलग रहें॥

४३. फिर वह मुझे उस फाटक के पास ले गया जो पूरबमुखी था।
२ तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज पूरब दिशा से आया और उस की वाणी बहुत से जल की घरघराहट सी
३ हुई और उस के तेज से पृथिवी प्रकाशित हुई। और यह दर्शन उस दर्शन सरीखा था जो मैं ने नगर के नाश करने को आते समय देखा था फिर ये दोनों दर्शन उस के समान थे जो मैं ने कबार नदी के तीर पर देखा
४ था। और मैं मुंह के बल गिर पड़ा। तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूरबमुखी था भवन में आ
५ गया। और आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी आंगन में
६ पहुंचाया और यहोवा का तेज भवन में भरा था। तब मैं ने एक जन की सुनी जो भवन में से मुझ से बोल रहा
७ था फिर एक पुरुष मेरे पास खड़ा हुआ। उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान यहोवा की यह वाणी है कि यह तो मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पांव रखने का स्थान है जहां मैं इस्राएल के बीच सदा वास किये रहूंगा और न तो इस्राएल का घराना और न उस के राजा अपने व्यभिचार से वा अपने ऊंचे स्थानों में अपने राजाओं की लोथों के द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध
८ ठहराएंगे। वे तो अपनी डेवढ़ी मेरी डेवढ़ी के पास और अपने द्वार के बाजू मेरे द्वार के बाजुओं के निकट बनाते थे और मेरे और उन के बीच केवल भीत रही थी और उन्हों ने अपने घिनौने कामों से मेरा पवित्र नाम अशुद्ध ठहराया इसलिये मैं ने कोप करके उन्हें नाश
९ किया। सो अब वे अपना व्यभिचार और अपने राजाओं की लोथें मेरे सन्मुख से दूर कर दें तब मैं उन के बीच सदा वास किये रहूंगा॥
१० हे मनुष्य के सन्तान तू इस्राएल के घराने को इस भवन का नमूना दिखाए कि वे अपने अधर्म्म के कामों
११ से लजाएं फिर वे उस नमूने को मापें। और यदि वे अपने सारे कामों से लजाएं तो उन्हें इस भवन का आकार और स्वरूप और इस के बाहर भीतर आने जाने के मार्ग और इस के सब आकार और विधियां और नियम बतलाना और उन के साम्हने लिख रखना जिस से वे इस का सारा आकार और इस की सब
१२ विधियां स्मरण करके उन के अनुसार करें। भवन का नियम तो यह है कि पहाड़ की चोटी उस के चारों ओर के सिवाने के भीतर परमपवित्र है देख भवन का नियम यही है॥
१३ और ऐसे हाथ के लेखे से जो साधारण हाथ से चौवा भर अधिक हो वेदी की माप यह है अर्थात् उस का आधार[1] एक हाथ का और उस की चौड़ाई एक हाथ की और उस के चारों ओर की छोर पर की पटरी
१४ एक चौवे की और यह वेदी का पाया ऐसा हो। और इस भूमि पर धरे हुए आधार[1] से लेकर निचली कुर्सी लों दो हाथ की ऊंचाई रहे और उस की चौड़ाई हाथ भर की हो और छोटी कुर्सी से लेकर बड़ी कुर्सी लों चार हाथ हों और उस की चौड़ाई हाथ भर की हो।
१५ और उपरला भाग चार हाथ ऊंचा हो और वेदी पर जलाने के स्थान से चार सींग ऊपर की ओर निकले
१६ हों। और वेदी पर जलाने का स्थान चौकोन अर्थात्
१७ बारह हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा हो। और निचली कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह चौड़ी हो और उस के चारों ओर की पटरी आध हाथ की हो और उस का आधार चारों ओर हाथ भर का हो और उस की सीढ़ी उस की पूरब ओर हो॥
१८ फिर उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस दिन होमबलि चढ़ाने और लोहू छिड़कने के लिये वेदी बनाई जाए
१९ उस दिन की विधियां ये ठहरें। अर्थात् लेवीय याजक लोग जो सादोक के सन्तान हैं और मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप रहते हैं उन्हें तू पापबलि के लिये
२० एक बछड़ा देना प्रभु यहोवा की यही वाणी है। तब तू उस के लोहू में से कुछ लेकर वेदी के चारों सींगों और कुर्सी के चारों कोनों और चारों ओर की पटरी पर लगाना इस प्रकार से उस के लिये प्रायश्चित्त करने
२१ के द्वारा उस को पवित्र करना। तब पापबलि के बछड़े को लेकर भवन के पवित्रस्थान के बाहर ठहराए हुए
२२ स्थान में जला देना। और दूसरे दिन एक निर्दोष बकरा पापबलि करके चढ़ाना और जैसे वेदी बछड़े के द्वारा पवित्र की जाए वैसे ही वह इस बकरे के द्वारा

(१) मूल में गोद।

२३ भी की जाए। जब तू उसे पवित्र कर चुके तब एक
२४ निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेढ़ा चढ़ाना। तू इन्हें यहोवा के साम्हने ले आना और याजक लोग उन पर लोन डाल उन्हें यहोवा को होमबलि करके चढ़ाएं।
२५ सात दिन लों तू दिन दिन पापबलि के लिये एक बकरा तैयार करना और निर्दोष बछड़ा और भेड़ों में से निर्दोष
२६ मेढ़ा भी तैयार किया जाए। सात दिन लों याजक लोग वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे शुद्ध करते रहें इसी
२७ भांति उस का संस्कार हो। और जब वे दिन समाप्त हों तब आठवें दिन और उस से आगे को याजक लोग तुम्हारे होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाया करें तब मैं तुम से प्रसन्न हूंगा प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

४४. फिर वह मुझे पवित्रस्थान की उस बाहरी फाटक के पास लौटा
२ ले गया जो पूरबमुखी है और वह बन्द था। तब यहोवा ने मुझ से कहा यह फाटक बन्द रहे और खोला न जाए कोई इस से होकर भीतर जाने न पाए क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस से होकर भीतर आया
३ है इस कारण यह बन्द रहे। प्रधान तो प्रधान होने के कारण मेरे साम्हने भोजन करने को वहां बैठेगा वह फाटक के ओसारे से होकर भीतर जाए और इसी से होकर
४ निकले। फिर वह उत्तरी फाटक के पास होकर मुझे भवन के साम्हने ले गया तब मैं ने देखा कि यहोवा का भवन यहोवा के तेज से भर गया है तब मैं मुंह के
५ बल गिर पड़ा। तब यहोवा ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान ध्यान देकर अपनी आंखों से देख और जो कुछ मैं तुझ से अपने भवन की सब विधियों और नियमों के विषय कहूं सो सब अपने कानों से सुन और भवन के पैठाव और पवित्रस्थान के सब निकासों पर
६ ध्यान दे। और उन बलवाइयों अर्थात् इस्राएल के घराने से कहना प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल के
७ घराने अपने सब घिनौने कामों से अब हाथ उठा। जब तुम मेरा भोजन अर्थात् चर्बी और लोहू चढ़ाते थे तब तुम बिराने लोगों को जो मन और तन दोनों के खतना-हीन थे मेरे पवित्रस्थान में आने और मेरा भवन अपवित्र करने को ले आते थे और उन्हों ने मेरी वाचा को तोड़ दिया जिस से तुम्हारे सब घिनौने काम बढ़ गये।
८ और तुम ने आप मेरी पवित्र वस्तुओं की रक्षा न की बरन मेरे पवित्रस्थान में मेरी वस्तुओं की रक्षा करनेहारे
९ अपने ही लिये ठहराये। प्रभु यहोवा यों कहता है कि इस्राएलियों के बीच जितने बिराने लोग हों जो मन और तन दोनों के खतनाहीन हों उन में से कोई मेरे
१० पवित्रस्थान में न आने पाए। फिर लेवीय लोग जो उस समय मुझ से दूर हो गये थे जब इस्राएली लोग मुझे छोड़कर अपनी मूरतों के पीछे भटक गये थे सो अपने
११ अधर्म्म का भार उठाएंगे। पर वे मेरे पवित्रस्थान में टहलुए होकर भवन के फाटकों का पहरा देनेहारे और भवन के टहलुए रहें होमबलि और मेलबलि के पशु वे लोगों के लिये वध करें और उन की सेवा टहल करने को वे उन
१२ के साम्हने खड़े हुआ करें। वे तो इस्राएल के घराने की सेवा टहल उन की मूरतों के साम्हने करते थे और उन के ठोकर खाने और अधर्म्म में फंसने का कारण हो गये थे इस कारण मैं ने उन के विषय किरिया खाई है कि वे अपने अधर्म्म का भार उठाएं प्रभु यहोवा की यही वाणी
१३ है। सो वे मेरे समीप न आएं और न मेरे लिये याजक का काम करने और न मेरी किसी पवित्र वस्तु वा किसी परमपवित्र वस्तु को छूने पाएं वे अपनी लज्जा का और जो घिनौने काम उन्हों ने किये उन का भार उठाएं।
१४ तौभी मैं उन्हें भवन में की सौंपी हुई वस्तुओं के रक्षक ठहराऊंगा उस में सेवा का जितना काम हो और जो कुछ करना हो उस के करनेहारे वे ही हों॥

१५ फिर लेवीय याजक जो सादोक के सन्तान हैं और उन्हों ने उस समय मेरे पवित्रस्थान की रक्षा की जब इस्राएली मेरे पास से भटक गये थे वे तो मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप आया करें और मुझे चर्बी और लोहू चढ़ाने को मेरे सन्मुख खड़े हुआ करें प्रभु
१६ यहोवा की यही वाणी है। वे मेरे पवित्रस्थान में आया करें और मेरी मेज के पास मेरी सेवा टहल करने को
१७ आएं और मेरी वस्तुओं की रक्षा करें। और जब वे भीतरी आंगन के फाटकों से होकर जाया करें तब सन के वस्त्र पहिने हुए जाएं और जब वे भीतरी आंगन के फाटकों में वा उस के भीतर सेवा टहल करते हों तब
१८ कुछ ऊन के वस्त्र न पहिनें। वे सिर पर सन की सुन्दर टोपियां पहिने और कमर में सन की जांघियां बांधे हों जिस कपड़े से पसीना होता है उसे वे कमर में न बांधें।
१९ और जब वे बाहरी आंगन में लोगों के पास निकलें तब जो वस्त्र पहिने हुए वे सेवा टहल करते थे उन्हें उतारकर और पवित्र कोठरियों में रखकर दूसरे वस्त्र पहिनें जिस
२० से लोग उन के वस्त्रों के कारण पवित्र न ठहरें। और वे न तो सिर मुण्डाएं और न बाल लम्बे होने दें केवल
२१ अपने बाल कटाएं। और भीतरी आंगन में जाने के
२२ समय कोई याजक दाखमधु न पीए। और वे विधवा वा छोड़ी हुई स्त्री को ब्याह न लें केवल इस्राएल के

घराने के वंश में से कुंवारी वा ऐसी ही विधवा जो याजक की स्त्री हुई हो ब्याह लें। २३ और वे मेरी प्रजा को पवित्र अपवित्र का भेद सिखाया करें और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर बताया करें। २४ और जब जब कोई मुकद्दमा हो तब तब न्याय करने को वे ही बैठें[१] और मेरे नियमों के अनुसार वे न्याय करें और मेरे सब नियम पर्वों के विषय वे मेरी व्यवस्था और विधियां पालन करें और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानें। २५ और वे किसी मनुष्य की लोथ के पास न जाएं कि अशुद्ध हो जाएं केवल माता पिता बेटे बेटी भाई और ऐसी बहिन की लोथ के कारण जिस का विवाह न हुआ हो वे अशुद्ध हो सकते हैं। २६ और जब वे फिर शुद्ध हो जाएं तब से उन के लिये सात दिन गिने जाएं। २७ और जिस दिन वे पवित्रस्थान अर्थात् भीतरी आंगन में सेवा टहल करने को फिर प्रवेश करें उस दिन अपने लिये पापबलि चढ़ाएं प्रभु यहोवा की यही वाणी है। २८ और उन के एक निज भाग तो होगा अर्थात् उन का भाग मैं ही हूं तुम उन्हें इस्राएल के बीच कुछ ऐसी भूमि न देना जो उन की निज हो उन की निज भूमि मैं ही हूं। २९ वे अन्नबलि पापबलि और दोषबलि खाया करें और इस्राएल में जो वस्तु अर्पण की जाएं वह उन को मिला करें। ३० और सब प्रकार की सब से पहिली उपज और सब प्रकार की उठाई हुई वस्तु जो तुम उठाकर चढ़ाओ याजकों को मिला करें और नवान्न का पहिला गूंधा हुआ आटा याजक को दिया करना जिस से तुम लोगों के घर में आशिष हो। ३१ जो कुछ अपने आप मरे वा फाड़ा गया हो चाहे पक्षी हो चाहे पशु हो उस का मांस याजक न खाएं॥

४५. फिर जब तुम चिट्ठी डालकर देश को बांटो तब देश में से एक भाग पवित्र जानकर यहोवा को अर्पण करना। उस की लम्बाई पचीस हजार बांस की और चौड़ाई दस हजार बांस की हो वह भाग अपने चारों ओर के सिवाने लों पवित्र ठहरे। २ उस में से पवित्रस्थान के लिये पांच सौ बांस लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ी चौकोनी भूमि हो और उस की चारों ओर पचास पचास हाथ चौड़ी भूमि छूटी पड़ी रहे। ३ सो तुम पचीस हजार बांस लम्बी और दस हजार बांस चौड़ी भूमि को मापना और उस में पवित्रस्थान हो जो परमपवित्र है। ४ वह भाग देश में से पवित्र ठहरे जो याजक पवित्रस्थान की सेवा टहल करें और यहोवा की सेवा टहल करने को समीप आएं उन के लिये वह हो उन के घरों के लिये स्थान और पवित्रस्थान के लिये पवित्र स्थान हो। ५ फिर पचीस हजार बांस लम्बा और दस हजार बांस चौड़ा एक भाग भवन की सेवा टहल करनेहारे लेवीयों के लिये बीस कोठरियों के लिये हो। ६ फिर तुम पवित्र अर्पण किये हुए भाग के पास पांच हजार बांस चौड़ी और पचीस हजार बांस लम्बी नगर के लिये विशेष भूमि ठहराना वह इस्राएल के सारे घराने के लिये हो। ७ और प्रधान का निज भाग पवित्र अर्पण किये हुए भाग और नगर की विशेष भूमि के दोनों ओर अर्थात् दोनों की पच्छिम और पूरब दिशाओं में दोनों भागों के साम्हने हो और उस की लम्बाई पच्छिम से लेकर पूरब लों उन दो भागों में से किसी एक के तुल्य हो। ८ इस्राएल के देश में प्रधान की तो यही निज भूमि हो और मेरे ठहराये हुए प्रधान मेरी प्रजा पर फिर अन्धेर न करें पर इस्राएल के घराने को उस के गोत्रों के अनुसार देश मिले॥

९ फिर प्रभु यहोवा यों कहता है कि हे इस्राएल के प्रधानो बस करो उपद्रव और उत्पात को दूर करो और न्याय और धर्म्म के काम किया करो मेरी प्रजा के लोगों का निकाल देना छोड़ दो प्रभु यहोवा की यही वाणी है। १० तुम्हारे पास सच्चा तराजू सच्चा एपा सच्चा बत रहे। ११ एपा और बत दोनों एक ही नाप के हों अर्थात् दोनों में होमेर का दसवां अंश समाए दोनों की नाप होमेर के लेखे से हो। १२ और शेकेल बीस गेरा का हो और तुम्हारा माने चाहे बीस चाहे पचीस चाहे पन्द्रह शेकेल का हो। १३ तुम्हारी उठाई हुई भेंट यह हो अर्थात् गेहूं के होमेर से एपा का छठवां अंश और जव के होमेर में से एपा का छठवां अंश देना। १४ और तेल का नियत अंश कोर में से बत का दसवां अंश हो कोर तो दस बत अर्थात् एक होमेर के तुल्य है क्योंकि होमेर दस बत का होता है। १५ और इस्राएल की उत्तम उत्तम चराइयों से दो दो सौ भेड़ बकरियों में से एक भेड़ वा बकरी दी जाए। ये सब वस्तुएं अन्नबलि होमबलि और मेलबलि के लिये दी जाएं जिस से उन के लिये प्रायश्चित्त किया जाए प्रभु यहोवा की यही वाणी है। १६ इस्राएल के प्रधान के लिये देश के सब लोग यह भेंट दें। १७ पर्वों नये चांद के दिनों विश्रामदिनों और इस्राएल के घराने के सब नियत समयों में होमबलि अन्नबलि और अर्घ देना प्रधान ही का काम हो इस्राएल के घराने के लिये प्रायश्चित्त करने को वह पापबलि अन्नबलि होमबलि और मेलबलि तैयार करे॥

(१) मूल में खड़े हुआ।

१८ प्रभु यहोवा ने यों कहा है कि पहिले महीने के पहले दिन को तू एक निर्दोष बछड़ा लेकर पवित्रस्थान को पवित्र १९ करना। याजक इस पापबलि के लोहू में से कुछ लेकर भवन के चौखट के बाजुओं और वेदी की कुर्सी के चारों कोनों और भीतरी आंगन के फाटक के बाजुओं पर २० लगाए। फिर महीने के सातवें दिन को सब भूल में पड़े हुओं और भोलों के लिये यों ही करना इसी प्रकार २१ से भवन के लिये प्रायश्चित्त करना। पहिले महीने के चौदहवें दिन को तुम लोगों का फसह हुआ करे वह सात दिन का पर्व हो उस में अखमीरी रोटी खाई २२ जाए। और उसी दिन प्रधान अपने और प्रजा के सब लोगों के निमित्त एक बछड़ा पापबलि के लिये तैयार २३ करे। और सातों दिन वह यहोवा के लिये होमबलि तैयार करे अर्थात् एक एक दिन सात सात निर्दोष बछड़े और सात सात निर्दोष मेढ़े और दिन दिन एक २४ एक बकरा पापबलि के लिये तैयार करे, और बछड़े और मेढ़े पीछे वह एपा भर अन्नबलि और एपा पीछे २५ हीन भर तेल तैयार करे। सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से लेकर सात दिन लों अर्थात् पर्व के दिनों में वह पापबलि होमबलि अन्नबलि और तेल इसी विधि के अनुसार किया करे॥

४६. प्रभु यहोवा यों कहता है कि भीतरी आंगन का पूरबमुखी फाटक काम काज के छओं दिन बन्द रहे पर विश्रामदिन को खुला २ रहे। और नये चांद के दिन भी खुला रहे और प्रधान बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से आकर फाटक के एक बाजू के पास खड़ा हो जाए और याजक उस का होमबलि और मेलबलि तैयार करें और वह फाटक की डेवढ़ी पर दण्डवत् करे तब वह बाहर जाए और फाटक सांझ से पहिले बन्द न किया ३ जाए। और लोग विश्राम और नये चांद के दिनों में उस फाटक के द्वार में यहोवा के साम्हने दण्डवत् करें। ४ और जो होमबलि प्रधान विश्रामदिन में यहोवा के लिये चढ़ाए सो भेड़ के छः निर्दोष बच्चों का और एक निर्दोष ५ मेढ़े का हो। और अन्नबलि यह हो अर्थात् मेढ़े पीछे एपा भर अन्न और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न ६ और एपा पीछे हीन भर तेल। और नये चांद के दिन वह एक निर्दोष बछड़ा और भेड़ के छः बच्चे और एक ७ मेढ़ा चढ़ाए ये सब निर्दोष हों। और बछड़े और मेढ़े दोनों के साथ वह एक एक एपा अन्नबलि तैयार करे और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा ८ पीछे हीन भर तेल। और जब प्रधान भीतर जाए तब वह फाटक के ओसारे से होकर जाए और उसी मार्ग से निकल जाए। पर जब साधारण लोग नियत समयों में ९ यहोवा के साम्हने दण्डवत् करने आएं तब जो उत्तरी फाटक से होकर दण्डवत् करने को भीतर आए सो दक्खिनी फाटक से होकर निकले और जो दक्खिनी फाटक से होकर भीतर आए सो उत्तरी फाटक से होकर निकले अर्थात् जो जिस फाटक से भीतर आया हो सो उसी फाटक से न लौटे अपने साम्हने ही निकल जाए। १० और जब वे भीतर आएं तब प्रधान उन के बीच होकर ११ आएं और जब वे निकलें तब वे एक साथ निकलें। और पर्वों और और नियत समयों में का अन्नबलि बछड़े पीछे एपा भर और मेढ़े पीछे एपा भर का हो और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति का और एपा पीछे हीन भर तेल। १२ फिर जब प्रधान होमबलि वा मेलबलि को स्वेच्छाबलि करके यहोवा के लिये तैयार करे तब पूरबमुखी फाटक उस के लिये खोला जाए और वह अपना होमबलि वा मेलबलि वैसे ही तैयार करे जैसे वह विश्रामदिन को करता है तब वह निकले और उस के निकलने के पीछे १३ फाटक बन्द किया जाए। और तू दिन दिन बरस भर का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के होमबलि के लिये १४ तैयार करना यह भोर भोर को तैयार किया जाए। और भोर भोर को उस के साथ एक अन्नबलि तैयार करना अर्थात् एपा का छठवां अंश और मैदा में मिलाने के लिये हीन भर तेल की तिहाई यहोवा के लिये सदा का अन्नबलि १५ नित्य विधि के अनुसार चढ़ाया जाए। भेड़ का बच्चा अन्नबलि और तेल भोर भोर को नित्य होमबलि करके चढ़ाया जाए॥

१६ प्रभु यहोवा यों कहता है कि यदि प्रधान अपने किसी पुत्र को कुछ दे तो वह उस का भाग होकर पोतों को भी मिले भाग के नियम के अनुसार वह उन का भी १७ निज धन ठहरे। पर यदि वह अपने भाग में से अपने किसी कर्म्मचारी को कुछ दे तो वह छुट्टी के बरस लों तो उस का बना रहे पीछे प्रधान को लौटा दिया जाए और १८ उस का निज भाग उस के पुत्रों को मिले। और प्रधान प्रजा का कोई भाग ऐसा न ले कि अन्धेर से उन की निज भूमि छीन ले वह अपने पुत्रों को अपनी ही निज भूमि में से भाग दे ऐसा न हो कि मेरी प्रजा के लोग अपनी अपनी निज भूमि से तित्तर बित्तर हो जाएं॥

१९ फिर वह मुझे फाटक की एक अलंग में के द्वार से होकर याजकों की उत्तरमुखी पवित्र कोठरियों में ले २० गया और पच्छिम ओर के कोने में एक स्थान था। तब उस ने मुझ से कहा यह वह स्थान है जिस में याजक

लोग दोषबलि और पापबलि के मांस को सिझाएं और अन्नबलि को पकाएं न हो कि उन्हें बाहरी आंगन में ले
२१ जाने से साधारण लोग पवित्र ठहरें। तब उस ने मुझे बाहरी आंगन में ले जाकर उस आंगन के चारों कोनों में फिराया और आंगन के एक एक कोने में एक एक ओटा
२२ बना था। अर्थात् आंगन के चारों कोनों में चालीस हाथ लम्बे और तीस हाथ चौड़े ओटे थे चारों कोनों के
२३ ओटों की एक ही माप थी। और चारों ओर के भीतर चारों ओर भीत[१] थी और चारों ओर की भीतों के
२४ नीचे सिझाने के चूल्हे बने हुए थे। तब उस ने मुझ से कहा सिझाने के घर जहां भवन के टहलुए लोगों के बलिदानों को सिझाएं सो ये ही हैं॥

४७. फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूरब ओर बह रहा था भवन का द्वार तो पूरबमुखी था और सोता भवन के
२ पूरब और वेदी के दक्खिन नीचे से निकलता था। तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात् पूरबमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया और दक्खिनी अलंग से जल
३ पसीजकर बह रहा था। जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिये हुए पूरब ओर निकला तब उस ने भवन से लेकर हजार हाथ तक उस सोते को मापा और मुझ
४ से उसे पार कराया और जल टखनों तक था। फिर वह हजार हाथ मापकर मुझ से पार कराया और जल घुटनों तक था फिर हजार हाथ मापकर मुझ से पार कराया
५ और जल कमर तक था। फिर उस ने एक हजार हाथ मापे तो ऐसी नदी हो गई थी जिस के पार मैं न जा सका क्योंकि जल बढ़कर तैरने के योग्य था अर्थात् ऐसी नदी थी जिस के पार कोई न जा सके॥

६ तब उस ने मुझ से पूछा कि हे मनुष्य के सन्तान क्या तू ने यह देखा है फिर मुझे नदी के तीर लौटाकर
७ पहुंचा दिया। लौटकर मैं ने क्या देखा कि नदी के दोनों
८ तीरों पर बहुत ही वृक्ष हैं। तब उस ने मुझ से कहा यह सोता पूरबी देश की ओर बह रहा है और अराबा में उतर कर ताल की ओर बहेगा और यह भवन से निकला हुआ सोता ताल में मिल जाएगा और उस का जल
९ मीठा हो जाएगा। और जहां जहां यह नदी[२] बहे वहां वहां सब प्रकार के बहुत अंडे देनेहारे जीवजन्तु जीएंगे और मछलियां बहुत ही हो जाएंगी क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है और ताल का जल मीठा हो जाएगा और जहां कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब
१० जन्तु जीएंगे। और ताल के तीर पर मछवे खड़े रहेंगे एनगदी से लेकर ऐनेग्लैम लों जाल फैलाए जाएंगे और मछवों को भांति भांति की और महासागर की सी अन-
११ गिनित मछलियां मिलेंगी। पर ताल के पास जो दल-दल और गड्हे हैं उन का जल मीठा न होगा वे खारे
१२ ही खारे रहेंगे। और नदी के दोनों तीरों पर भांति भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे जिन के पत्ते न मुर्झाएंगे और उन का फलना कभी बन्द न होगा नदी का जल जो पवित्र स्थान से निकला है इस कारण उन में महीने महीने नये नये फल लगेंगे उन के फल तो खाने के और पत्ते औषधि के काम आएंगे॥

१३ प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस सिवाने के भीतर भीतर तुम को यह देश अपने बारहों गोत्रों के अनुसार
१४ बांटना पड़ेगा सो यह है। यूसुफ को दो भाग मिलें। और उसे तुम एक दूसरे के समान निज भाग में पावोगे क्योंकि मैं ने किरिया खाई[४] कि तुम्हारे पितरों को दूंगा सो यह
१५ देश तुम्हारा निज भाग ठहरेगा। देश का सिवाना यह हो अर्थात् उत्तर ओर का सिवाना महासागर से लेकर हेत-
१६ लोन के पास से सदाद की घाटी लों पहुंचे और उस सिवाने के पास हमात बेरोता और सिब्रैम हो जो दमिश्क और हमात के सिवानों के बीच में है और हसर्हत्तीकोन जो
१७ हौरान के सिवाने पर है। और सिवाना समुद्र से लेकर दमिश्क के सिवाने के पास के हसरेनोन तक पहुंचे और उस की उत्तर ओर हमात का सिवाना हो उत्तर का
१८ सिवाना तो यही हो। और पूरबी सिवाना जिस की एक ओर हौरान दमिश्क और गिलाद और दूसरी ओर इस्राएल का देश हो सो यर्दन हो उत्तरी सिवाने से लेकर पूरबी ताल लों उसे मापना पूरब का सिवाना तो
१९ यही हो। और दक्खिनी सिवाना तामार से लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते तक अर्थात् मिस्र के नाले तक और महासागर लों पहुंचे दक्खिनी सिवाना यही
२० हो। और पच्छिमी सिवाना दक्खिनी सिवाने से लेकर हमात की घाटी के साम्हने लों का महासागर हो पच्छिमी
२१ सिवाना यही हो। इस देश को इस्राएल के गोत्रों के
२२ अनुसार आपस में बांट लेना। और इस को आपस में और उन परदेशियों के साथ बांट लेना जो तुम्हारे बीच रहते हुए बालकों को जन्माएं वे तुम्हारे लेखे देशी

(१) मूल में पांति। (२) मूल में पांतियां।
(३) मूल में दो नदियां।

(४) मूल में मैं ने हाथ उठाया था।

इस्राएलियों की नाईं ठहरें और तुम्हारे गोत्रों के बीच
२३ अपना अपना भाग पाएं। अर्थात् जो परदेशी जिस गोत्र के देश में रहता हो वहीं उस को भाग देना प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

४८. गोत्रों के भाग[१] ये हों। उत्तर सिवाने से लगा हुआ हेतलोन के मार्ग के पास से हमात की घाटी लों और दमिश्क के सिवाने के पास के हसरेनान से उत्तर ओर हमात के पास तक एक भाग दान का हो और उस के पूरबी और पश्चिमी
२ सिवाने भी हों। और दान के सिवाने से लगा हुआ
३ पूरब से पश्चिम लों आशेर का एक भाग हो। और आशेर के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पश्चिम लों
४ नप्ताली का एक भाग हो। और नप्ताली के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पश्चिम लों मनश्शे का एक भाग।
५ और मनश्शे के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम
६ लों एप्रैम का एक भाग हो। और एप्रैम के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों रूबेन का एक भाग
७ हो। और रूबेन के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों यहूदा का एक भाग हो॥

८ और यहूदा के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों वह अर्पण किया हुआ भाग हो जिसे तुम्हें अर्पण करना होगा वह पचीस हजार बांस चौड़ा और पूरब से पच्छिम लों किसी एक गोत्र के भाग के तुल्य
९ लम्बा हो और उस के बीच में पवित्रस्थान हो। जो भाग तुम्हें यहोवा को अर्पण करना होगा उस की लम्बाई पचीस हजार बांस और चौड़ाई दश हजार बांस की हो।
१० और यह अर्पण किया हुआ पवित्रभाग याजकों को मिले वह उत्तर ओर पचीस हजार बांस लम्बा पच्छिम ओर दस हजार बांस चौड़ा और पूरब ओर दस हजार बांस चौड़ा दक्खिन ओर पचीस हजार बांस लम्बा हो और
११ उस के बीचोंबीच यहोवा का पवित्रस्थान हो। यह विशेष पवित्र भाग सादोक की सन्तान के उन याजकों का हो जो मेरी आज्ञाओं को पालते रहे और इस्राएलियों के भटक जाने
१२ के समय लेवीयों की नाईं भटक न गये थे। सो देश के अर्पण किये हुए भाग में से यह उन के लिये अर्पण किया हुआ भाग अर्थात् परमपवित्र देश ठहरे और लेवीयों के
१३ सिवाने से लगा रहे। और याजकों के सिवाने से लगा हुआ लेवीयों का भाग हो वह पचीस हजार बांस लम्बा और दस हजार बांस चौड़ा हो सारी लम्बाई पचीस हजार बांस की और चौड़ाई दस हजार बांस की हो। और वे
१४ उस में से न तो कुछ बेचें न दूसरी भूमि से बदलें और न भूमि की पहिली उपज और किसी को दी जाए क्योंकि वह
१५ यहोवा के लिये पवित्र है। और चौड़ाई के पचीस हजार बांस के साम्हने जो पांच हजार बचा रहेगा सो नगर और बस्ती और चराई के लिये साधारण भाग हो और नगर
१६ उस के बीच हो। और नगर की यह माप हो अर्थात् उत्तर दक्खिन पूरब और पच्छिम ओर साढ़े चार चार हजार
१७ बांस। और नगर के पास चराइयां हों उत्तर दक्खिन
१८ पूरब पच्छिम और अढ़ाई अढ़ाई सौ बांस चौड़ी हों। और अर्पण किये हुए पवित्र भाग के पास की लंबाई में से जो कुछ बचे अर्थात् पूरब और पच्छिम दोनों ओर दस दस बांस जो अर्पण किये हुए भाग के पास हो उस की उपज
१९ नगर में परिश्रम करनेहारों के खाने के लिये हो। और इस्राएल के सारे गोत्रों में से जो जो नगर में परिश्रम करें
२० सो उस की खेती किया करें। सारा अर्पण किया हुआ भाग पचीस हजार बांस लम्बा और पचीस हजार बांस चौड़ा हो तुम्हें चौकोना पवित्र भाग जिस में नगर की विशेष
२१ भूमि हो अर्पण करना होगा। और जो भाग रह जाए सो प्रधान को मिले अर्थात् पवित्र अर्पण किये हुए भाग की और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् उन की पूरब और पच्छिम अलंगों के पचीस पचीस हजार बांस की चौड़ाई के पास और गोत्रों के भागों के पास जो भाग रहे सो प्रधान को मिले और अर्पण किया हुआ पवित्र भाग और भवन का पवित्रस्थान उन के
२२ बीच हो। और प्रधान का भाग जो होगा उस के बीच लेवीयों और नगरों की विशेष भूमि हो और प्रधान का भाग यहूदा और बिन्यामीन के सिवाने के बीच हो॥

२३ अब और गोत्रों के भाग पूरब से पच्छिम लों बिन्यामीन का एक भाग हो।
२४ और बिन्यामीन के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों शिमोन का एक भाग
२५ हो। और शिमोन के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों इस्साकार का एक भाग हो।
२६ और इस्साकार के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों जबूलून
२७ का एक भाग हो। और जबूलून के सिवाने से लगा हुआ पूरब से पच्छिम लों गाद का एक भाग हो।
२८ और गाद के सिवाने के पास दक्खिन ओर का सिवाना तामार से लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते तक और मिस्र के नाले
२९ और महासागर लों पहुंचे। जो देश तुम्हें इस्राएल के गोत्रों को बांट देना होगा सो यही है और उन के भाग ये ही हैं प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

(१) मूल में नाम।

३० फिर नगर के निकास ये हों अर्थात् उत्तर की अलंग जिस की लम्बाई साढ़े चार हजार बांस की हो, ३१ उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक रूबेन का फाटक एक यहूदा का फाटक और एक लेवी का फाटक हो क्योंकि नगर के फाटकों के नाम इस्राएल के गोत्रों के नामों पर ३२ रखने होंगे। और पूरब की अलङ्ग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो और उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक यूसुफ का फाटक एक बिन्यामीन का फाटक और एक दान ३३ का फाटक हो। और दक्खिन की अलङ्ग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो और उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक शिमोन का फाटक एक इस्साकार का फाटक और एक जबूलून का फाटक हो। ३४ और पच्छिम की अलङ्ग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो और उस में तीन फाटक हों अर्थात् एक गाद का फाटक एक आशेर का फाटक और नप्ताली का फाटक हो। ३५ नगर की चारों अलङ्गों का घेरा अठारह हजार बांस का हो और उस दिन से आगे को नगर का यह नाम यहोवा शाम्मा[१] रहेगा॥

(१ अर्थात् यहोवा वहां है।

दानिय्येल नाम पुस्तक

१. यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे बरस में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके उस को घेर २ लिया। तब प्रभु ने यहूदा के राजा यहोयाकीम और परमेश्वर के भवन के कितने एक पात्रों को उस के हाथ में कर दिया और उस ने उन पात्रों को शिनार देश अपने देवता के मन्दिर में ले जाकर अपने देवता के भण्डार में ३ रख दिया। तब उस राजा ने अपने खोजों के प्रधान अशपनज को आज्ञा दी कि इस्राएली राजपुत्रों और ४ प्रतिष्ठित पुरुषों में से, ऐसे कई जवानों को ले आकर जो बिन खोट सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण और ज्ञान में निपुण और विद्वान् और राजमन्दिर में हाजिर रहने के योग्य हों कसदियों के शास्त्र और भाषा ५ सिखवा दे। और राजा ने आज्ञा दी कि मेरे भोजन और मेरे पीने के दाखमधु में से उन्हें दिन दिन खाने पीने को दिया जाए और तीन बरस लों उन का पालन पोषण होता रहे फिर उस के पीछे वे मेरे साम्हने हाजिर ६ किये जाएं। सो इन में से दानिय्येल हनन्याह मीशाएल ७ और अजर्याह नाम यहूदी थे। और खोजों के प्रधान ने उन के दूसरे नाम रक्खे अर्थात् दानिय्येल का नाम उस ने बेलतशस्सर और हनन्याह का शद्रक और मीशाएल का ८ मेशक और अजर्याह का अबेदनगो नाम रक्खा। दानिय्येल ने अपने मन में ठाना कि मैं राजा का भोजन खाकर और उस के पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होऊं सो उस ने खोजों के प्रधान से बिनती की कि मुझे अपवित्र होना न पड़े। ९ परमेश्वर ने खोजों के प्रधान के मन में दानिय्येल पर कृपा और दया बहुत उपजाई। १० सो खोजों के प्रधान ने दानिय्येल से कहा मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूं क्योंकि तुम्हारा खाना पीना उसी ने ठहराया है वह तुम्हारे मुंह तुम्हारी जोड़ी के जवानों से उतरा हुआ क्यों देखे तुम मेरा सिर राजा के साम्हने जोखिम में डालोगे। ११ तब दानिय्येल ने उस मुखिये से जिस को खोजों के प्रधान ने दानिय्येल हनन्याह मीशाएल और अजर्याह के ऊपर ठहराया था कहा, १२ अपने दासों को दस दिन लों जांच हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी दिया जाए। १३ फिर उस दिन के पीछे हमारे मुंह को और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं उन के मुंह को देख और जैसा तुझे देख पड़े उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना। १४ उन की यह बिनती उस ने मान ली और दस दिन लों उन को जांचता रहा। १५ दस दिन के पीछे उन के मुंह राजा के भोजन के खानेहारे सब जवानों से अधिक अच्छे और चिकने देख पड़े। १६ सो वह मुखिया उन का भोजन और उन के पीने के लिये ठहराया हुआ दाखमधु दोनों छुड़ाकर उन को साग पात देने लगा। १७ और परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धि और प्रवीणता दी और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का जानकार हो गया। १८ सो जितने दिन नबूकदनेस्सर राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दी थी उतने दिन बीतने पर खोजों का प्रधान

१९ उन्हें उस के सामने ले गया, और राजा उन से बातचीत करने लगा तब दानिय्येल हनन्याह मीशाएल और अजर्याह के तुल्य उन सब में से कोई न ठहरा सो २० वे राजा के सन्मुख हाजिर रहने लगे। और बुद्धि और समझ के जिस किसी विषय में राजा उन से पूछता उस में वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तन्त्रियों से दसगुणे और निपुण ठहरते थे। २१ और दानिय्येल कुस्रू राजा के पहिले बरस लों बना रहा ॥

२. अपने राज्य के दूसरे बरस में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उस का मन बहुत ही व्याकुल हो गया और २ उस को नींद न आई। तब राजा ने आज्ञा दी कि ज्योतिषी तन्त्री टोनहे और कसदी बुलाये जाएं कि वे राजा को उस का स्वप्न बताएं सो वे आकर राजा के ३ साम्हने हाजिर हुए। तब राजा ने उन से कहा मैं ने एक स्वप्न देखा है और मेरा मन व्याकुल है कि स्वप्न ४ को कैसे समझूं। कसदियों ने राजा से अरामी भाषा में कहा हे राजा तू सदा लों जीता रहे अपने दासों को ५ स्वप्न बता और हम उस का फल बताएंगे। राजा ने कसदियों को उत्तर दिया यह बात मेरे मुख से निकली कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओ तो तुम टुकड़े टुकड़े किये जाओगे और तुम्हारे घर घूरे बनाये ६ जाएंगे। और यदि तुम फल समेत स्वप्न को बताओ तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे ७ इसलिये मुझे फल समेत स्वप्न को बताओ। उन्हों ने दूसरी बार कहा हे राजा स्वप्न तेरे दासों को बताया जाए और हम उस का फल समझा देंगे। ८ राजा ने उत्तर दिया मैं निश्चय जानता हूं कि तुम यह देखकर कि आज्ञा राजा के मुंह से निकल चुकी समय ९ बढ़ाना चाहते हो। सो यदि तुम मुझे स्वप्न न बताओ तो तुम्हारे लिये एक ही आज्ञा है क्योंकि तुम ने एका किया होगा कि जब लों समय न बदले तब लों हम राजा के साम्हने झूठी और गपशप की बातें कहा करेंगे इसलिये मुझे स्वप्न को बताओ तब मैं जानूंगा कि तुम १० उस का फल भी समझा सकते हो। कसदियों ने राजा से कहा पृथिवी भर में कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके और न कोई ऐसा राजा वा प्रधान वा हाकिम कभी हुआ जिस ने किसी ज्योतिषी ११ वा तन्त्री वा कसदी से ऐसी बात पूछी हो। और जो बात राजा पूछता है सो अनोखी है और देवताओं को छोड़कर जिन का निवास प्राणियों के संग नहीं है कोई १२ दूसरा नहीं जो राजा को यह बता सके। इस से राजा ने खीझकर और बहुत ही क्रोधित होकर बाबेल के सारे पण्डितों के नाश करने की आज्ञा दी। १३ सो यह आज्ञा निकली और पण्डित लोगों का घात होने पर था और लोग दानिय्येल और उस के संगियों को ढूंढ़ रहे थे कि वे भी घात किये जाएं। १४ तब दानिय्येल ने जल्लादों के प्रधान अर्योक से जो बाबेल के पण्डितों को घात करने के लिये निकला था सोच विचारकर और बुद्धिमानी के साथ कहा, १५ और वह राजा के हाकिम अर्योक से पूछने लगा कि यह आज्ञा राजा की ओर से ऐसी उतावली के साथ क्यों निकली। जब अर्योक ने दानिय्येल को इस का भेद बता दिया, १६ तब दानिय्येल ने भीतर जाकर राजा से बिनती की कि मेरे लिये कोई समय ठहराया जाए तो मैं महाराज को स्वप्न का फल बताऊंगा ॥

१७ तब दानिय्येल ने अपने घर जाकर अपने संगी हनन्याह मीशाएल और अजर्याह को यह हाल बताकर १८ कहा, इस भेद के विषय स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये यह कहकर प्रार्थना करो कि बाबेल के सब और पण्डितों के संग दानिय्येल और उस के संगी भी नाश न किये जाएं। १९ तब वह भेद दानिय्येल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया तब दानिय्येल ने स्वर्ग २० के परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया कि, परमेश्वर का नाम सदा से सदा लों धन्य है क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं। २१ और समयों और ऋतुओं को वही पलटता है राजाओं को अस्त और उदय भी वही करता है और बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ वही देता है। २२ वह गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है वह जानता है कि अन्धियारे में क्या क्या है और उस के संग सदा प्रकाश बना रहता है। २३ हे मेरे पितरों के परमेश्वर मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूं कि तू ने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से मांगा था सो तू ने समय पर मुझ पर प्रगट किया है तू ने हम को राजा की बात बताई है। २४ तब दानिय्येल ने अर्योक के पास जिसे राजा ने बाबेल के पण्डितों के नाश करने के लिये ठहराया था भीतर जाकर कहा बाबेल के पण्डितों का नाश न कर मुझे राजा के सन्मुख भीतर ले चल मैं फल बताऊंगा ॥

२५ तब अर्योक ने दानिय्येल को भीतर राजा के सन्मुख उतावली से ले जाकर उस से कहा यहूदी बंधुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है जो राजा को स्वप्न का फल बताएगा। २६ राजा ने दानिय्येल से जिस का नाम बेलतशस्सर भी था पूछा क्या तुझ में इतनी शक्ति है कि जो

२७ स्वप्न मैं ने देखा है सो फल समेत मुझे बताए। दानिय्येल ने राजा के। उत्तर दिया जो भेद राजा पूछता है सो न तो पण्डित राजा के। बता सकते हैं न तंत्री न २८ ज्योतिषी न दूसरे होनहार बतानेहारे। पर भेदों का खोलनेहारा स्वर्ग में परमेश्वर है और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा के। जताया है कि अंत के दिनों में क्या क्या होनेवाला है। तेरा स्वप्न और जो कुछ तू ने पलङ्ग पर २९ पड़े हुए देखा सो यह है। हे राजा जब तुझ के। पलङ्ग पर यह विचार हुआ कि पीछे क्या क्या होनेवाला है तब भेदों के खोलनेहारे ने तुझ के। बताया कि क्या क्या ३० होनेवाला है। मुझ पर तो यह भेद कुछ इस कारण नहीं खोला गया कि मैं सब और प्राणियों से अधिक बुद्धिमान् हूं केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वप्न का फल राजा के। बताया जाए और तू अपने मन के विचार ३१ समझ सके। हे राजा जब तू देख रहा था तब एक बड़ी मूर्त्ति देख पड़ी और वह मूर्त्ति जो तेरे साम्हने खड़ी थी सो लम्बी चौड़ी थी और उस की चमक अनुपम ३२ थी और उस का रूप भयंकर था। उस मूर्त्ति का सिर तो चोखे सोने का था उस की छाती और भुजाएं चांदी ३३ की उस का पेट और जांघें पीतल की, उस की टांगें लोहे की और उस के पांव कुछ तो लोहे के और कुछ ३४ मिट्टी के थे। फिर देखते देखते तू ने क्या देखा कि एक पत्थर ने किसी के बिना खोदे आप ही आप उखड़कर उस मूर्त्ति के पांवों पर जो लोहे और मिट्टी के थे लगकर ३५ उन के। चूर चूर कर डाला। तब लोहा मिट्टी पीतल चांदी और सोना भी सब चूर चूर हो गये और धूपकाल में खलिहानों के भूसे की नाईं बयार से ऐसे उड़ गये कि उन का कहीं पता न रहा और वह पत्थर जो मूर्त्ति पर लगा था सो बड़ा पहाड़ बन कर सारी ३६ पृथिवी में भर गया। स्वप्न तो यों ही हुआ और अब ३७ हम उस का फल राजा के। समझा देते हैं। हे राजा तू तो महाराजाधिराज है क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझ के। राज्य सामर्थ्य शक्ति और महिमा दी है। ३८ और जहां कहीं मनुष्य पाये जाते हैं वहां उस ने उन सभों के। और मैदान के जीवजन्तु और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिये हैं और तुझ के। उन सब का अधिकारी ठहराया है यह सोने का सिर तू ही है। ३९ और तेरे पीछे उस से कुछ उतर के एक राज्य और उदय होगा फिर एक और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिस में सारी पृथिवी आ जाएगी। ४० और चौथा राज्य लोहे के तुल्य पोढ़ा होगा लोहे से तो सब वस्तुएं चूर चूर हो जाती और पिस जाती हैं सो जिस भांति लोहे से वे सब कुचली जाती हैं उसी भांति उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर चूर होकर पिस ४१ जाएगा। और तू ने जो मूर्त्ति के पांवों और उन की अंगुलियों के। देखा जो कुछ कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थीं इस से वह चौथा राज्य बटा हुआ होगा तौभी उस में लोहे का सा कड़ापन रहेगा जैसे कि तू ने कुम्हार की मिट्टी के संग लोहा भी मिला हुआ ४२ देखा। और पांवों की अंगुलियां जो कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्टी की थीं इस का फल यह है कि वह ४३ राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल[१] होगा। और तू ने जो लोहे के। कुम्हार की मिट्टी के संग मिला हुआ देखा इस का फल यह है कि उस राज्य के लोग नीच मनुष्यों से[२] मिले जुले तो रहेंगे पर जैसे लोहा मिट्टी के साथ मिलकर एक दिल नहीं होता तैसे ही वे दोनों भी एक ४४ न बन रहेंगे। और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो सदा लों न टूटेगा और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा परन्तु वह उन सब राज्यों के। चूर चूर करेगा और उन का अन्त कर डालेगा और वह आप स्थिर ४५ रहेगा। तू ने जो देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से उखड़ा और लोहे पीतल मिट्टी चान्दी और सोने के। चूर चूर किया इसी रीति महान् परमेश्वर ने राजा के। जताया कि इस के पीछे क्या क्या होनेवाला है और न स्वप्न में न उस के फल ४६ में कुछ संदेह है। इतना सुन नबूकदनेस्सर राजा ने मुंह के बल गिरके दानिय्येल के। दण्डवत् किया और आज्ञा दी कि इस के। भेंट चढ़ाओ और इस के साम्हने ४७ सुगंध वस्तु जलाओ। फिर राजा ने दानिय्येल से कहा सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर सब ईश्वरों के ऊपर परमेश्वर और सब राजाओं का प्रभु और भेदों का खोलनेहारा है इसलिये तू यह भेद खोलने पाया। ४८ तब राजा ने दानिय्येल का पद बड़ा किया और उस के। बहुत से बड़े बड़े दान दिये और यह आज्ञा दी कि वह बाबेल के सारे प्रान्त पर हाकिम और बाबेल के सब ४९ पण्डितों पर मुख्य प्रधान बने। तब दानिय्येल के बिनती करने से राजा ने शद्रक मेशक और अबेदनगो के। बाबेल के प्रान्त के कार्य्य के ऊपर ठहरा दिया पर दानिय्येल आप राजा के दरबार में रहा करता था॥

३.

नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई जिस की ऊंचाई साठ हाथ और चौड़ाई छः हाथ की थी और

(१) मूल में भुरभुरा। (२) मूल में विनाशी मनुष्यों के वंश से।

उस ने उस को बाबेल के प्रान्त में के दूरा नाम मैदान
२ में खड़ा कराया। तब नबूकदनेस्सर राजा ने अधिपतियों हाकिमों गवर्नरों जजों खजांचियों न्यायियों शास्त्रियों आदि प्रान्त प्रान्त के सब अधिकारियों को बुलवा भेजा कि वे उस मूरत की प्रतिष्ठा में जो उस ने खड़ी कराई
३ थी आएं। तब अधिपति हाकिम गवर्नर जज खजांची न्यायी शास्त्री आदि प्रान्त प्रान्त के सारे अधिकारी नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई मूरत की प्रतिष्ठा के लिये इकट्ठे हुए और उस मूरत के साम्हने खड़े
४ हुए। तब ढंढोरिये ने ऊंचे शब्द से पुकारके कहा हे देश देश और जाति जाति के लोगो और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारो तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि,
५ जिस समय तुम नरसिंगे बांसुली वीणा सारंगी सितार पूंगी आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो उसी समय गिरके नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई
६ सोने की मूरत को दण्डवत् करो। और जो कोई गिरके दण्डवत् न करे सो उसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच
७ में डाल दिया जाएगा। इस कारण उस समय ज्यों ही सब जाति के लोगों को नरसिंगे बांसुली वीणा सारंगी सितार आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा त्यों ही देश देश और जाति जाति के लोगों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारों ने गिरके उस सोने की मूरत को जो नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई थी दण्डवत्
८ की। उस समय कई एक कसदी पुरुष राजा के पास
९ गये और यह कह कर यहूदियों की चुगली खाई कि, वे नबूकदनेस्सर राजा से कहने लगे हे राजा तू सदा लों
१० जीता रहे। हे राजा तू ने तो यह आज्ञा दी है कि जो जो मनुष्य नरसिंगे बांसुली वीणा सारंगी सितार पूंगी आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुने तो गिरके उस
११ सोने की मूरत को दण्डवत् करे। और जो कोई गिरके दण्डवत् न करे सो धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल
१२ दिया जाएगा। सुन शद्रक मेशक और अबेदनगो नाम कुछ यहूदी पुरुष हैं जिन्हें तू ने बाबेल के प्रान्त के कार्य्य के ऊपर ठहराया है उन पुरुषों ने हे राजा तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं की वे तेरे देवता की उपासना नहीं करते और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई है
१३ उस को दण्डवत् नहीं करते। तब नबूकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक मेशक और अबेदनगो को लाओ तब वे पुरुष राजा के साम्हने
१४ हाजिर किये गये। नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा हे शद्रक मेशक और अबेदनगो तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् नहीं करते क्या तुम जान बूझ-
१५ कर ऐसा करते हो। यदि तुम अभी तैयार हो कि जब नरसिंगे बांसुली वीणा सारंगी सितार पूंगी आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो उसी क्षण गिरके मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत् करो तो बचोगे और यदि तुम दण्डवत् न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाले जाओगे फिर ऐसा कौन देवता
१६ है जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके। शद्रक मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा हे नबूकदनेस्सर इस विषय तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान
१७ पड़ता। हमारा परमेश्वर जिस की हम उपासना करते हैं यदि ऐसा हो तो हम को उस धधकते हुए भट्ठे से छुड़ा सकता है बरन हे राजा वह हमें तेरे हाथ से भी
१८ छुड़ा सकता है। और जो हो सो हो पर हे राजा तुझे विदित हो कि हम लोग तेरे देवता की उपासना न करेंगे और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को
१९ दण्डवत् करेंगे। तब नबूकदनेस्सर जल उठा और उस के चेहरे का रंग ढंग शद्रक मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया तब उस ने आज्ञा दी कि भट्ठे को रीति
२० से सातगुणा अधिक धधका दो। फिर अपनी सेना में के कई एक बलवान् पुरुषों को उस ने आज्ञा दी कि शद्रक मेशक और अबेदनगो को बांधकर उस धधकते
२१ हुए भट्ठे में डाल दो। तब वे पुरुष अपने मोजों अंगरखों बागों और और वस्त्रों सहित बांधकर उस धध-
२२ कते हुए भट्ठे में डाल दिये गये। वह भट्ठा तो राजा की दृढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यन्त धधकाया गया था इस कारण जिन पुरुषों ने शद्रक मेशक और अबेदनगो
२३ को उठाया सो आग की आंच ही से जल मरे। और उसी धधकते हुए भट्ठे के बीच शद्रक मेशक और
२४ अबेदनगो ये तीनों पुरुष बंधे हुए गिर पड़े। तब नबू-कदनेस्सर राजा अचंभित हुआ और घबराकर उठ खड़ा हुआ और अपने मंत्रियों से पूछने लगा क्या हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बंधे हुए नहीं डलवाये उन्हों ने राजा को उत्तर दिया हां राजा सच बात
२५ है। फिर उस ने कहा अब क्या देखता हूं कि चार पुरुष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं और उन की कुछ भी हानि नहीं भासती और चौथे पुरुष का स्वरूप
२६ किसी ईश्वर के पुत्र का सा है। फिर नबूकदनेस्सर उस धधकते हुए भट्ठे के द्वार के पास जाकर कहने लगा हे शद्रक मेशक और अबेदनगो हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो निकलकर यहां आओ यह सुनकर शद्रक मेशक
२७ और अबेदनगो आग के बीच से निकल आये। जब

अधिपति हाकिम गवर्नर और राजा के मंत्रियों ने जो इकट्ठे हुए थे उन पुरुषों की ओर देखा तब क्या पाया कि इन की देह में आग का कुछ छुवाव नहीं और न इन के सिर का एक बाल भी झुलसा न इन के मोजे कुछ बिगड़े न इन में जलने की गंध कुछ पाई जाती है। २८ नबूकदनेस्सर कहने लगा धन्य है शद्रक मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर जिस ने अपना दूत भेजकर अपने इन दासों को इसलिये बचाया कि इन्हों ने राजा की आज्ञा न मानकर उसी पर भरोसा रक्खा बरन यह सोचकर अपना शरीर भी अर्पण किया कि हम अपने परमेश्वर को छोड़ किसी देवता की उपासना वा दण्डवत् २९ न करेंगे। सो मैं यह आज्ञा देता हूं कि देश देश और जाति जाति के लोगों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारों में से जो कोई शद्रक मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करे सो टुकड़े टुकड़े किया जाए और उस का घर घूरा बनाया जाए क्योंकि ऐसा कोई और देवता ३० नहीं जो इस रीति से बचा सके। तब राजा ने बाबेल के प्रान्त में शद्रक मेशक और अबेदनगो का पद बढ़ाया॥

४. देश देश के और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारे जितने सारी पृथिवी पर रहते हैं उन सभों से नबूकदनेस्सर राजा २ का यह वचन हुआ कि तुम्हारा कुशल क्षेम बढ़े। मुझ को अच्छा लगा कि परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाये हैं उन को प्रगट करूं। ३ उस के दिखाये हुए चिन्ह क्या ही बड़े और उस के चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रगट होती है उस का राज्य तो सदा का और उस की प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लों बनी रहती है॥

४ मैं नबूकदनेस्सर अपने भवन में जिस में रहता था ५ चैन से और प्रफुल्लित रहता था। मैं ने ऐसा स्वप्न देखा जिस के कारण मैं डर गया और पलंग पर पड़े पड़े जो विचार मेरे मन में आये और जो बातें मैं ने ६ देखीं उन के कारण मैं घबरा गया। सो मैं ने आज्ञा दी कि बाबेल के सब पण्डित मेरे स्वप्न का फल मुझे ७ बताने के लिये मेरे साम्हने हाजिर किये जाएं। तब ज्योतिषी तंत्री कसदी और और होनहार बतानेहारे भीतर आये और मैं ने उन को अपना स्वप्न बताया पर ८ वे उस का फल न बता सके। निदान दानिय्येल मेरे सन्मुख आया जिस का नाम मेरे देवता के नाम के कारण बेलतशस्सर रक्खा गया था और जिस में पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है और मैं ने उस को अपना ९ स्वप्न यह कहकर बता दिया कि, हे बेलतशस्सर तू तो सब ज्योतिषियों का प्रधान है मैं जानता हूं कि तुझ में पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है और तू किसी भेद के कारण नहीं घबराता सो जो स्वप्न मैं ने देखा है उसे फल समेत मुझे बताकर समझा दे। १० पलंग पर जो दर्शन मैं ने पाया सो यह है अर्थात् मैं ने क्या देखा कि पृथिवी के बीचोबीच एक वृक्ष लगा है जिस की ऊंचाई बड़ी है। ११ वह वृक्ष बढ़ बढ़ कर दृढ़ हो गया उस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची और वह सारी पृथिवी की छोर लों देख पड़ता १२ है। उस के पत्ते सुन्दर हैं और उस में फल बहुत हैं यहां लों कि उस में सभों के लिये भोजन है उस के नीचे मैदान के सब पशुओं को छाया मिलती है और उस की डालियों में सब आकाश की चिड़ियाएं बसेरा करती हैं १३ और सारे प्राणी उस से आहार पाते हैं। मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा कि एक पवित्र पहरुआ स्वर्ग १४ से उतर आया। उस ने ऊंचे शब्द से पुकार के यह कहा कि वृक्ष को काट डालो उस की डालियों को छांट दो उस के पत्ते झाड़ दो और उस के फल छितरा डालो पशु उस के नीचे से हट जाएं और चिड़ियाएं उस की डालियों १५ पर से उड़ जाएं। तौभी उस के ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो और उस को लोहे और पीतल के बन्धन से बांधकर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो वह आकाश की ओस से भीगा करे और भूमि की घास खाने में मैदान १६ के पशुओं के संग भागी हो। उस का मन बदले और मनुष्य का न रहे पशु ही का सा बन जाए और सात १७ काल उस पर बीतने पाएं। यह नियम पहरुओं के निर्णय से और यह बात पवित्र लोगों के वचन से निकली और उस की यह मनसा है कि जो जीते हैं सो जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता और उस को जिसे चाहे उसे दे देता है और तब उस पर नीच से नीच मनुष्य भी ठहरा देता १८ है। मुझ नबूकदनेस्सर राजा ने यही स्वप्न देखा सो हे बेलतशस्सर तू इस का फल बता क्योंकि मेरे राज्य में और कोई पण्डित तो इस का फल मुझे समझा नहीं सकता पर तुझ में जो पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है इस से तू उसे समझा सकता है॥

१९ तब दानिय्येल जिस का नाम बेलतशस्सर भी था सो घड़ी भर घबराता रहा और सोचते सोचते व्याकुल हो गया राजा कहने लगा हे बेलतशस्सर इस स्वप्न से वा इस के फल से तू व्याकुल मत हो। बेलतशस्सर ने कहा हे मेरे प्रभु यह स्वप्न तेरे बैरियों २० पर और इस का अर्थ तेरे द्रोहियों पर फले। जिस वृक्ष को तू ने देखा जो बढ़ा और दृढ़ हो गया और उस की

ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची वह पृथिवी भर पर देख पड़ा,
२१ उस के पत्ते सुन्दर और फल बहुत थे उस में सभों के लिये भोजन था उस के नीचे मैदान के सब पशु रहते थे और उस की डालियों में आकाश की चिड़ियाएं बसेरा
२२ करती थीं। हे राजा उस का अर्थ तू ही है तू तो बड़ा और सामर्थी हो गया तेरी महिमा बढ़ी और स्वर्ग लों पहुंच गई और तेरी प्रभुता पृथिवी की छोर लों फैली
२३ है। और हे राजा तू ने जो एक पवित्र पहरुए को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट डालो और उस का नाश करो तौभी उस के ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो और उस को लोहे और पीतल के बन्धन से बांधकर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो वह आकाश की ओस से भीगा करे और उस को मैदान के पशुओं के संग ही भाग मिले और जब लों सात काल उस पर बीत न चुकें तब लों उस की ऐसी ही दशा
२४ रहे। हे राजा इस का फल जो परमप्रधान ने ठाना है
२५ कि राजा पर घटे सो यह है कि, तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा और मैदान के पशुओं के संग रहेगा और बैलों की नाईं घास चरेगा और आकाश की ओस से भीगा करेगा और सात काल तुझ पर बीतेंगे जब लों कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता और उस को जिसे चाहे उसे दे देता है।
२६ और उस वृक्ष के ठूंठ को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई इस का फल यह है कि तेरा राज्य तेरे लिये बना रहेगा और जब तू जान ले कि जगत का प्रभु स्वर्ग
२७ ही में है[1] तब से तू फिर राज्य करने पाएगा। इस कारण हे राजा मेरी यह सम्मति तुझे मानने के योग्य जान पड़े कि तू पाप छोड़कर धर्म्म करने लगे और अधर्म्म छोड़कर दीन हीनों पर दया करने लगे क्या जानिये ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे॥
२८ यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया।
२९ बारह महीने के बीते पर वह बाबेल के राजभवन की
३० छत पर टहल रहा था। तब वह कहने लगा क्या वह बड़ा बाबेल नहीं है जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ्य से राजनिवास होने को अपने प्रताप की बड़ाई
३१ के लिये बसाया है। यह वचन राजा के मुंह से निकलने न पाया कि यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय आज्ञा निकलती है राज्य तेरे हाथ से
३२ छूट गया। और तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा और मैदान के पशुओं के संग रहेगा और बैलों की नाईं घास चरेगा और सात काल तुझ पर बीतेंगे जब लों कि तू जान न ले कि परमप्रधान मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता और उस को जिसे चाहे उसे दे देता है।
३३ उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय पूरा हुआ अर्थात् वह मनुष्यों में से निकाला गया और बैलों की नाईं घास चरने लगा और उस की देह आकाश की ओस से भीगती थी यहां लों कि उस के बाल उकाब पक्षियों के परों के और उस के नाखून चिड़ियाओं
३४ के चंगुलों के समान बढ़ गये। उन दिनों के बीते पर मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा और जो सदा लों जीता रहता है उस की स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा कि उस की प्रभुता सदा की है और उस का राज्य पीढ़ी से पीढ़ी
३५ लों बना रहनेहारा है। और पृथिवी के सारे रहनेहारे उस के साम्हने तुच्छ गिने जाते हैं और वह स्वर्ग की सेना और पृथिवी के रहनेहारों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है और कोई उस को रोककर[2] उस से नहीं कह सकता कि तू ने यह क्या किया है।
३६ उसी समय मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और श्री मुझ में फिर आ गई और मेरे मंत्री और और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने को आने लगे और मैं अपने राज्य में
३७ स्थिर हो गया और मेरी विशेष बड़ाई होने लगी। सो अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता और उस की स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उस के सब काम सच्चे और उस के सब व्यवहार न्याय के हैं और जो लोग गर्व्व से चलते हैं उन को वह नीचा कर सकता है॥

५.

बेलशस्सर नाम राजा ने अपने हजार प्रधानों के लिये बड़ी जेवनार की और उन हजार लोगों के साम्हने
२ दाखमधु पिया। दाखमधु पीते पीते बेलशस्सर ने आज्ञा दी कि सोने चांदी के जो पात्र मेरे पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में से निकाले थे सो ले आओ कि राजा अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों
३ समेत उन से पीएं। तब जो सोने के पात्र यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के मन्दिर में से निकाले गये थे सो लाये गये और राजा अपने प्रधानों और रानियों और
४ रखेलियों समेत उन से पीने लगा। वे दाखमधु पी पीकर सोने चांदी पीतल लोहे काठ और पत्थर के देव-
५ ताओं की स्तुति कर रहे थे कि, उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की सी कई अंगुलियां निकलकर दीवट के साम्हने

(१) मूल में कि स्वर्ग प्रभुता करता है।

(२) मूल में उस का हाथ मार के।

राजमन्दिर की भीत के चूने पर कुछ लिखने लगीं और हाथ का जो भाग लिख रहा था सो राजा को देख ६ पड़ा। उसे देखकर राजा श्रीहत हो गया और वह सोचते सोचते घबरा गया और उस की कटि के जोड़ ढीले हो गये और कांपते कांपते उस के घुटने एक ७ दूसरे से लगने लगे। तब राजा ने ऊंचे शब्द से पुकारके तन्त्रियों कसदियों और और होनहार बतानेहारों को हाजिर कराने की आज्ञा दी। जब बाबेल के पण्डित पास आये तब राजा उन से कहने लगा जो कोई वह लिखा हुआ बांचे और उस का अर्थ मुझे समझाए उसे बैंजनी रंग का वस्त्र और उस के गले में सोने का कण्ठा पहिनाया जाएगा और मेरे राज्य में तीसरा वही प्रभुता ८ करेगा। तब राजा के सब पण्डित लोग भीतर तो आये पर उस लिखे हुए को बांच न सके और न राजा को उस ९ का अर्थ समझा सके। इस पर बेलशस्सर राजा निपट घबरा गया और वह श्रीहत होगया और उस के प्रधान १० भी बहुत व्याकुल हुए। राजा और प्रधानों के वचनों का हाल सुनकर रानी जेवनार के घर में आई और कहने लगी हे राजा तू युगयुग जीता रहे मन में न घबरा और ११ न श्रीहत हो। क्योंकि तेरे राज्य में दानिय्येल एक पुरुष है जिस का नाम तेरे पिता ने बेलतशस्सर रक्खा था उस में पवित्र ईश्वरों का आत्मा रहता है और उस राजा के दिनों में प्रकाश प्रवीणता और ईश्वरों के तुल्य बुद्धि उस में पाई गईं और हे राजा तेरा पिता जो राजा था उस ने उस को सब ज्योतिषियों तन्त्रियों कसदियों और १२ और होनहार बतानेहारों का प्रधान ठहराया था। क्योंकि उस में उत्तम आत्मा ज्ञान और प्रवीणता और स्वप्नों का फल बताने और पहेलियां खोलने और संदेह दूर करने की शक्ति पाई गई। सो अब दानिय्येल बुलाया जाए और वह इस का अर्थ बताएगा॥

१३ तब दानिय्येल राजा के साम्हने भीतर बुलाया गया। राजा दानिय्येल से पूछने लगा कि क्या तू वही दानिय्येल है जो मेरे पिता नबूकदनेस्सर राजा के यहूदा १४ देश से लाये हुए यहूदी बंधुओं में से है। मैं ने तो तेरे विषय सुना है कि ईश्वरों का आत्मा तुझ में रहता है और प्रकाश प्रवीणता और उत्तम बुद्धि तुझ में १५ पाई जाती हैं। सो अभी पण्डित और तंत्री लोग मेरे साम्हने इसलिये लाये गये थे कि वह लिखा हुआ बांचें और उस का अर्थ मुझे बताएं और वे तो उस बात का १६ अर्थ न समझा सके। पर मैं ने तेरे विषय सुना है कि दानिय्येल भेद खोल सकता और सन्देह दूर कर सकता है सो अब यदि तू उस लिखे हुए को बांच सके और उस का अर्थ भी मुझे समझा सके तो तुझे बैंजनी रंग का वस्त्र और तेरे गले में सोने का कंठा पहिनाया १७ जाएगा और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा। दानिय्येल ने राजा से कहा अपने दान अपने ही पास रख और जो बदला तू देना चाहता है सो दूसरे को दे मैं वह लिखी हुई बात राजा को पढ़ सुनाऊंगा और उस १८ का अर्थ भी तुझे समझाऊंगा। हे राजा परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य बड़ाई १९ प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था। और उस बड़ाई के कारण जो उस ने उस को दी थी देश देश और जाति जाति के सब लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारे उस के साम्हने कांपते और थरथराते थे जिस को वह चाहता उसे वह घात कराता था और जिस को वह चाहता उसे वह जीता रखता था जिस को वह चाहता उसे वह ऊंचा पद देता था और जिस को वह चाहता २० उसे वह गिरा देता था। निदान जब उस का मन फूल उठा और उस का आत्मा कठोर हो गया यहां लों कि वह अभिमान करने लगा तब वह अपने राजसिंहासन पर से उतारा गया और उस की प्रतिष्ठा भंग की गई, २१ और वह मनुष्यों में से निकाला गया और उस का मन पशुओं का सा और उस का निवास बनैले गदहों के बीच हो गया वह बैलों की नाईं घास चरता और उस का शरीर आकाश की ओस से भीगा करता था जब लों कि उस ने जान न लिया कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता और जिसे चाहता २२ उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है। तौभी हे बेलशस्सर तू जो उस का पुत्र है यद्यपि यह सब कुछ जानता २३ था तौभी तेरा मन नम्र न हुआ। बरन तू ने स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध सिर उठा उस के भवन के पात्र मंगाकर अपने साम्हने धरवा लिये और अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत तू ने उन से दाखमधु पिया और चांदी सोने पीतल लोहे काठ और पत्थर के देवता जो न देखते न सुनते न कुछ जानते हैं उन की तो स्तुति की परन्तु परमेश्वर जिस के हाथ में तेरा प्राण है और जिस के वश में तेरा सब चलना फिरना है उस का २४ सम्मान तू ने नहीं किया। तब ही यह हाथ का एक भाग उसी की ओर से प्रगट किया गया और वे शब्द लिखे २५ गये। और जो शब्द लिखे गये सो ये हैं अर्थात् मने[1] २६ मने तकेल ऊपर्सीन[3]। इस वाक्य का अर्थ यह है मने परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उस का अन्त कर २७ दिया है। तकेल तू मानो तुला में तौला गया और

(१) अर्थात् गिना। (२) अर्थात् तौला। (३) अर्थात् और बांटते हैं।

२८ हलका जंचा है । परेस[१] तेरा राज्य बांटकर मादियों और
२९ फारसियों को दिया गया है । तब बेलशस्सर ने आज्ञा दी
और दानिय्येल को बैजनी रंग का वस्त्र और उस के
गले में सोने का कंठा पहिनाया गया और ढंढोरिये ने
उस के विषय पुकारा कि राज्य में तीसरा दानिय्येल
३० ही प्रभुता करेगा । उसी रात को कसदियों का राजा
३१ बेलशस्सर मार डाला गया । और दारा मादी जो
कोई बासठ बरस का था राजगद्दी पर बिराजने लगा ॥

६. दारा को यह भावा कि अपने राज्य
के ऊपर एक सौ बीस ऐसे
अधिपति ठहराए जो सारे राज्य में अधिकार रक्खें ।
२ और उन के ऊपर उस ने तीन अध्यक्ष जिन में से दानि-
य्येल एक था इसलिये ठहराये कि वे उन
अधिपतियों से लेखा लिया करें और इस रीति राजा
३ की कुछ हानि न होने पाये । जब यह देखा गया कि
दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहता है तब उस को उन
अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली बरन
राजा यह भी सोचता था कि उस को सारे राज्य के
४ ऊपर ठहराऊंगा । तब अध्यक्ष और अधिपति दानिय्येल
के विरुद्ध राजकार्य्य के विषय गैं ढूंढ़ने लगे पर वह जो
विश्वासयोग्य था और उस के काम में कोई भूल वा दोष
न निकला सो वे ऐसी कोई गैं वा दोष न पा सके ।
५ तब वे लोग कहने लगे हम उस दानिय्येल के परमेश्वर
की व्यवस्था को छोड़ और किसी विषय में उस के
६ विरुद्ध कोई गैं न पा सकेंगे । सो वे अध्यक्ष और
अधिपति राजा के पास उतावली से आये और उस से
७ कहा हे राजा दारा तू युगयुग जीता रहे । राज्य के सारे
अध्यक्षों ने और हाकिमों अधिपतियों न्यायियों और
गवर्नरों ने भी आपस में संमति की है कि राजा ऐसी
आज्ञा दे और ऐसी सख्त मनाही करे कि तीस दिन
लों जो कोई हे राजा तुझे छोड़ किसी और मनुष्य से
वा देवता से बिनती करे सो सिंहों के गड़हे में डाल
८ दिया जाए । सो अब हे राजा ऐसी मनाही कर दे और
इस पत्र पर दस्तखत कर जिस से यह बात मादियों
और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार अदल
९ बदल न हो । तब दारा राजा ने उस मनाही के लिये
१० पत्र पर दस्तखत किया । जब दानिय्येल को मालूम
हुआ कि उस पत्र पर दस्तखत किया गया है तब अपने
घर में गया जिस की उपरौठी कोठरी की खिड़कियां
यरूशलेम के साम्हने खुली रहती थीं और अपनी
पहली रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने
परमेश्वर के साम्हने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद
करता था वैसा ही तब भी करता रहा । सो उन पुरुषों ११
ने उतावली से आकर दानिय्येल को अपने परमेश्वर के
साम्हने बिनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया ।
तब वे राजा के पास जाकर उस की मनाही के विषय १२
उस से कहने लगे हे राजा क्या तू ने ऐसी मनाही
के लिये दस्तखत नहीं किया कि तीस दिन लों जो कोई
मुझे छोड़ किसी मनुष्य वा देवता से बिनती करे तो सिंहों
के गड़हे में डाल दिया जाएगा । राजा ने उत्तर दिया हां
मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार
यह बात स्थिर है । तब उन्हों ने राजा से कहा यहूदी १३
बंधुओं में से जो दानिय्येल है उस ने हे राजा न तो
तेरी ओर कुछ ध्यान दिया न तेरे दस्तखत किए हुए
मनाही के पत्र की ओर । वह दिन में तीन बार बिनती
किया करता है । यह वचन सुनकर राजा बहुत उदास १४
हुआ और दानिय्येल के बचाने के उपाय सोचने लगा
और सूर्य्य के अस्त होने लों उस के बचाने का यत्न
करता रहा । तब वे पुरुष राजा के पास उतावली से १५
आकर कहने लगे हे राजा यह जान रख मादियों और
फारसियों में यह व्यवस्था है कि जो जो मनाही वा
आज्ञा राजा ठहराये सो नहीं बदल सकती । तब राजा १६
ने आज्ञा दी और दानिय्येल लाकर सिंहों के गड़हे
में डाल दिया गया । उस समय राजा ने दानिय्येल
से कहा तेरा परमेश्वर जिस की तू नित्य उपासना करता
है सोई तुझे बचाएगा । तब एक पत्थर लाकर उस १७
गड़हे के मुंह पर रक्खा गया और राजा ने उस पर
अपनी अंगूठी से और अपने प्रधानों की अंगूठियों से
छाप दी कि दानिय्येल के विषय कुछ बदलने न
पाए । तब राजा अपने मन्दिर में चला गया और उस १८
रात को बिना भोजन बिताया और न उस के पास
सुख बिलास की कोई वस्तु पहुंचाई गई और न नींद
उस को कुछ भी आई । भोर को पह फटते राजा उठा १९
और सिंहों के गड़हे की ओर फुर्ती करके चला ।
जब राजा गड़हे के निकट आया तब शोकभरी वाणी २०
से चिल्लाने लगा और दानिय्येल से कहने लगा हे दानि-
य्येल हे जीवते परमेश्वर के दास क्या तेरा परमेश्वर
जिस की तू नित्य उपासना करता है तुझे सिंहों से बचा
सका है । तब दानिय्येल ने राजा से कहा हे राजा २१
तू युगयुग जीता रहे । मेरे परमेश्वर ने अपना दूत २२
भेजकर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द कर रक्खा है कि
उन्हों ने मेरी कुछ भी हानि नहीं की इस का कारण
यह है कि मैं उस के साम्हने निर्दोष पाया गया और

(१) अर्थात् बांट दिया ।

२३ हे राजा तेरी भी मैं ने कुछ हानि नहीं की। तब राजा ने दानिय्येल के विषय बहुत आनन्दित होकर उस को गड़हे में से निकालने की आज्ञा दी। सो दानिय्येल गड़हे में से निकाला गया और उस में हानि का कोई चिन्ह पाया न गया इस कारण कि वह अपने परमेश्वर २४ पर विश्वास रखता था। और राजा ने आज्ञा दी तब जिन पुरुषों ने दानिय्येल की चुगली खाई थी सो अपने अपने लड़केबालों और स्त्रियों समेत लाकर सिंहों के गड़हे में डाल दिये गये और वे गड़हे की पेंदी लों न पहुंचे कि सिंहों ने उन को झपककर सब हड्डियों समेत उन को चबा डाला॥

२५ तब दारा राजा ने सारी पृथिवी के रहनेहारे देश देश और जाति जाति के सब लोगों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारों के पास यह लिखा कि तुम्हारा बहुत २६ कुशल हो। मैं यह आज्ञा देता हूं कि जहां जहां मेरे राज्य का अधिकार है वहां वहां के लोग दानिय्येल के परमेश्वर के सन्मुख कांपते और थरथराते रहें क्योंकि जीवता और युगयुग ठहरनेहारा परमेश्वर वही है और उस का राज्य अविनाशी और उस की प्रभुता सदा स्थिर २७ रहेगी। जिस ने दानिय्येल को सिंहों से बचाया है सो बचाने और छुड़ानेहारा और स्वर्ग में और पृथिवी पर २८ चिन्हों और चमत्कारों का करनेहारा ठहरा है। और दानिय्येल दारा और कुस् फारसी दोनों के राज्य के दिनों में भाग्यवान रहा॥

७. बाबेल के राजा बेलशस्सर के पहिले बरस में दानिय्येल ने पलङ्ग पर स्वप्न देखा पीछे उस ने वह स्वप्न लिखा और बातों २ का सार भी वर्णन किया। दानिय्येल ने यह कहा कि मैं ने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी ३ बयार चलने लगी। तब समुद्र में से चार बड़े बड़े ४ जन्तु जो एक दूसरे से भिन्न थे निकल आये। पहिला जन्तु सिंह के समान था और उस के उकाब के से पंख थे और मेरे देखते देखते उस के पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर से उठाकर मनुष्य की नाईं पांवों के बल खड़ा किया गया और उस को मनुष्य का हृदय ५ दिया गया। फिर मैं ने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान था और एक पांजर के बल उठा हुआ था और उस के मुंह में दांतों के बीच तीन पसुली थीं और लोग उस से कह रहे थे कि उठकर बहुत मांस खा। ६ इस के पीछे मैं ने दृष्टि की और देखा कि चीते के समान एक और जन्तु है जिस की पीठ पर पक्षी के से चार पंख हैं और उस जन्तु के चार सिर हैं और उस को अधिकार दिया गया। ७ फिर इस के पीछे मैं ने स्वप्न में दृष्टि की और देखा कि चौथा एक जन्तु भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है और उस के लोहे के बड़े बड़े दांत हैं वह सब कुछ खा डालता और चूर चूर करता और जो बच जाता है उसे पैरों से रौंदता है और वह पहिले सब जन्तुओं से भिन्न है और उस के दस सींग हैं। ८ मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उन के बीच एक और छोटा सा सींग निकला और इस के बल से उन पहिले सींगों में से तीन उखाड़े गये फिर मैं ने क्या देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आंखें और बड़ा बोल बोलनेहारा मुंह ९ भी है। मैं ने देखते देखते अन्त में क्या देखा कि सिंहासन रक्खे गये और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ जिस का वस्त्र हिम सा उजला और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे हैं उस का सिंहासन अग्निमय और इस के पहिये धधकती हुई आग के देख पड़ते १० हैं। उस प्राचीन के सन्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही है फिर हजारों हजार लोग उस की सेवा टहल कर रहे हैं और लाखों लाख लोग उस के साम्हने हाजिर हैं फिर न्यायी बैठ गये और पुस्तकें खोली गई ११ हैं। उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा और देखते देखते अन्त में क्या देखा कि वह जन्तु घात किया गया और उस का शरीर धधकती हुई आग से भस्म किया गया। १२ और रहे हुए जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया पर उन का प्राण कुछ समय के लिये[१] बचाया गया। १३ मैं ने रात में स्वप्न में दृष्टि की और देखा कि मनुष्य का सन्तान सा कोई आकाश के मेघों समेत आ रहा है और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा और उस के समीप किया १४ गया। तब उस को ऐसी प्रभुता महिमा और राज्य दिया गया कि देश देश और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेहारे सब उस के अधीन हों उस की प्रभुता सदा की और अटल और उस का राज्य अविनाशी ठहरा॥

१५ और मुझ दानिय्येल का मन विकल हो गया[२] और जो कुछ मैं ने देखा था उस के कारण मैं घबरा १६ गया[३]। तब जो लोग पास खड़े थे उन में से एक के पास जाकर मैं ने उन सारी बातों का भेद पूछा उस ने यह

(१) मूल में समय और काल के लिये।
(२) मूल में आत्मा देह के बीच घबरा गया।
(३) मूल में मेरे सिर के दर्शनों ने मुझे घबरा दिया।

१७ कहकर मुझे उन बातों का अर्थ बता दिया कि, उन चार बड़े बड़े जन्तुओं का अर्थ चार राज्य[1] हैं जो पृथिवी पर १८ उदय होंगे। परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे और युगयुग बरन सदा लों उन के अधिकारी १९ बने रहेंगे। तब मेरे मन में यह इच्छा हुई कि उस चौथे जन्तु का भेद भी जान लूं जो और तीनों से भिन्न और अति भयंकर था उस के दांत लोहे के और नखून पीतल के थे वह सब कुछ खा डालता और चूर चूर करता और २० बचे हुए को पैरों से रौंद डालता था। फिर उस के सिर में के दस सींगों का भेद और जिस ओर सींग के निकलने से तीन सींग गिर गये अर्थात् जिस सींग की आंखें और बड़ा बोल बोलनेहारा मुंह और सब और सींगों से अधिक कठोर चेष्टा थी उस के भी भेद जानने की मुझे २१ इच्छा हुई। और मैं ने देखा था कि वह सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर उस समय तक प्रबल २२ भी हो गया, जब तक कि वह अति प्राचीन न आ गया तब परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी ठहरे और उन २३ पवित्र लोगों के राज्याधिकारी होने का समय पहुंचा। उस ने कहा उस चौथे जन्तु का अर्थ एक चौथा राज्य है जो पृथिवी पर होकर और सब राज्यों से भिन्न होगा और सारी पृथिवी को नाश करेगा और दांव दांवकर चूर चूर २४ करेगा। और उन दस सींगों का अर्थ यह है कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे और उन के पीछे उन पहिलों से भिन्न एक और राजा उठेगा जो तीन राजाओं को २५ गिरा देगा। और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा २६ बरन साढ़े तीन काल लों वे सब उस के वश में कर दिये जाएंगे। और न्यायी बैठेंगे[2] तब उस की प्रभुता छीनकर मिटाई और नाश की जाएगी यहां लों कि उस का अन्त २७ ही हो जाएगा। तब राज्य और प्रभुता और धरती भर पर के राज्य[3] की महिमा परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उस के पवित्र लोगों को दी जाएगी उस का राज्य तो सदा का राज्य है और सब प्रभुता करनेहारे उस के २८ अधीन होंगे और उस की आज्ञा मानेंगे। इस बात का बर्णन तो मैं अब कर चुका पर मुझ दानिय्येल के मन में बड़ी घबराहट बनी रही और मैं श्रीहत हो गया और मैं इस बात को अपने मन में रक्खे रहा॥

(१) मूल में राजा।
(२) मूल में न्याय बैठेगा।
(३) मूल में आकाश भर के नीचे के राज्य।

८.

बेलशस्सर राजा के राज्य के तीसरे बरस में एक बात मुझ दानिय्येल को दर्शन के द्वारा उस बात के पीछे दिखाई गई जो पहिले मुझे दिखाई गई थी। २ जब मैं एलाम नाम प्रान्त में के शूशन नाम राजगढ़ में रहता था तब मैं ने दर्शन में क्या देखा कि मैं ऊलै नदी के तीर पर हूं। ३ फिर मैं ने आंख उठाकर क्या देखा कि उस नदी के साम्हने दो सींगवाला एक मेढ़ा खड़ा है और सींग दोनों तो बड़े हैं पर उन में से एक अधिक बड़ा है और जो बड़ा है सो पीछे ही निकला। ४ मैं ने उस मेढ़े को देखा कि वह पच्छिम उत्तर और दक्खिन ओर सींग मारता रहता है और न तो कोई जन्तु उस के साम्हने खड़ा रह सकता और न कोई किसी को उस के हाथ से बचा सकता है और वह अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करके बढ़ता जाता है। ५ मैं सोच रहा था कि फिर क्या देखा कि एक बकरा पच्छिम दिशा से निकलकर सारी पृथिवी के ऊपर हो आया और चलते समय भूमि में पांव न छुवाया और उस बकरे की आंखों के बीच एक देखने योग्य सींग था। ६ और वह उस दो सींगवाले मेढ़े के पास जा जिस को मैं ने नदी के साम्हने खड़ा देखा था उस पर जलकर अपने सारे बल से लपका। ७ मैं ने देखा कि वह मेढ़े के निकट आकर उस पर झुंझलाया और मेढ़े को मारके उस के दोनों सींगों को तोड़ दिया और उस का साम्हना करने को मेढ़े का कुछ बश न चला सो बकरे ने उस को भूमि पर गिराकर रौंद डाला और मेढ़े का उस के हाथ से छुड़ानेहारा कोई न मिला। ८ तब बकरा अत्यन्त बड़ाई मारने लगा और जब बलवन्त हुआ तब उस का बड़ा सींग टूट गया और उस की सन्ती देखने योग्य चार सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे। ९ फिर इन में से एक सींग से एक छोटा सा सींग और निकला जो दक्खिन पूरब और शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़ गया। १० बरन वह स्वर्ग की सेना लों बढ़ गया और उस में से और तारों में से भी कितनों को भूमि पर गिराकर रौंद डाला। ११ बरन वह उस सेना के प्रधान लों भी बढ़ गया और उस का नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया और उस का पवित्र वासस्थान गिरा दिया गया। १२ और लोगों के अपराध के कारण नित्य होमबलि के साथ सेना भी उस के हाथ में कर दी गई और उस सींग ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया और वह काम करते करते कृतार्थ हो गया। १३ तब मैं ने एक पवित्र जन को बोलते सुना फिर एक और पवित्र जन ने उस पहिले बोलनेहारे से पूछा कि नित्य

होमबलि और उजड़वानेहारे अपराध के विषय जो कुछ दर्शन देखा गया सो कब लों फलता रहेगा अर्थात् पवित्रस्थान और सेना दोनों का रौंदा जाना कब लों होता
१४ रहेगा। उस ने मुझ से कहा जब लों सांझ और सबेरा दो हजार तीन सौ बार न हों तब लों वह होता रहेगा तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा ॥

१५ यह बात दर्शन में देखकर मैं दानिय्येल इस के समझने का यत्न करने लगा इतने में पुरुष का रूप धरे
१६ हुए कोई मेरे सन्मुख खड़ा हुआ देख पड़ा। तब मुझे ऊलै नदी के बीच से एक मनुष्य का शब्द सुन पड़ा जो पुकारके कहता था कि हे गब्रीएल उस जन को उस
१७ की देखी हुई बातें समझा। सो जहां मैं खड़ा था यहां वह मेरे निकट आया और उस के आते ही मैं घबरा गया और मुंह के बल गिर पड़ा तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के संतान उन देखी हुई बातों को समझ ले क्योंकि उन
१८ का अर्थ अन्त ही के समय में फलेगा। जब वह मुझ से बातें कर रहा था तब मैं अपना मुंह भूमि की ओर किए हुए भारी नींद में पड़ा पर उस ने मुझे छूकर सीधा खड़ा
१९ कर दिया। तब उस ने कहा कोप भड़कने के अन्त के दिनों में जो कुछ होगा सो मैं तुझे जताता हूं क्योंकि अन्त
२० के ठहराये हुए समय में वह सब पूरा हो जाएगा। जो दो सींगवाला मेढ़ा तूने देखा उस का अर्थ मादियों और
२१ फारसियों के राज्य[१] हैं। और वह रोंआर बकरा यूनान का राज्य[२] ठहरा और उस की आंखों के बीच जो बड़ा
२२ सींग निकला सो पहिला राजा ठहरा। और वह सींग जो टूट गया और उस की सन्ती चार सींग जो निकले इस का अर्थ यह है कि उस जाति से चार राज्य उदय तो होंगे
२३ पर उन का बल उस का सा न होगा। और उन राज्यों के अन्त समय में जब अपराधी पूरा बल पकड़ेंगे तब क्रूर दृष्टिवाला और पहेली बूझनेहारा एक राजा उठेगा।
२४ और उस का सामर्थ्य बड़ा तो होगा पर उस पहिले राजा का सा नहीं और वह अद्भुत रीति से लोगों का नाश करेगा और कृतार्थ होकर काम करता जाएगा और सामर्थियों का और पवित्र लोगों के समुदाय का नाश
२५ करेगा। और उस की चतुराई के कारण उस का छल सफल होगा और वह मन में फूलकर निडर रहते हुए बहुत लोगों का नाश करेगा बरन वह सब हाकिमों के हाकिम के विरुद्ध भी खड़ा होगा पर अन्त को वह
२६ किसी के हाथ से बिना मार खाये टूट जाएगा, और सांझ और सबेरे के विषय जो कुछ तू ने देखा और सुना है सो सच बात है पर जो कुछ तू ने दर्शन में देखा है उसे बन्द रख क्योंकि वह बहुत दिनों के पीछे फलेगा।
२७ तब मुझ दानिय्येल का बल जाता रहा और मैं कुछ दिन तक बीमार पड़ा रहा तब मैं उठकर राजा का कामकाज फिर करने लगा पर जो कुछ मैं ने देखा था उस से मैं चकित रहा क्योंकि उस का कोई समझानेहारा न रहा ॥

९. मादी क्षयर्ष का पुत्र दारा जो कसदियों के देश पर राजा ठहराया गया
२ उस के राज्य के पहिले बरस में, मुझ दानिय्येल ने शास्त्र के द्वारा समझ लिया कि यरूशलेम की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार जो यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा था कितने बरसों के बीते पर अर्थात् सत्तर
३ बरस के पीछे निपट जाएगी। तब मैं अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा और उपवास कर टाट पहिन राख में बैठकर
४ वर मांगने लगा। मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार प्रार्थना की और पाप का अंगीकार किया कि हे प्रभु तू महान् और भययोग्य ईश्वर है जो अपने प्रेम रखने और आज्ञा माननेहारों के साथ अपनी वाचा
५ पालता और करुणा करता रहता है। हम लोगों ने तो पाप कुटिलता दुष्टता और बलवा किया और तेरी
६ आज्ञाओं और नियमों को तोड़ दिया। और तेरे जो दास नबी लोग हमारे राजाओं हाकिमों पितरों और सब साधारण लोगों से तेरे नाम से बात करते थे उन की
७ हम ने नहीं सुनी। हे प्रभु तू धर्म्मी है और हम लोगों को आज के दिन लजाना पड़ता है अर्थात् यरूशलेम के निवासी आदि सब यहूदी बरन क्या समीप क्या दूर के सब इस्राएली लोग जिन्हें तू ने उस विश्वासघात के कारण जो उन्हों ने तेरा किया था देश देश में बरबस
८ कर दिया है उन सभों को लजाना ही है। हे यहोवा हम लोगों ने जो अपने राजाओं हाकिमों और पितरों समेत तेरे विरुद्ध पाप किया है इस कारण हम को
९ लजाना पड़ता है। पर यद्यपि हम अपने परमेश्वर प्रभु से फिर गये तौभी वह दयासागर और क्षमा की खानि
१० है। हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की शिक्षा सुनने पर भी जो उस ने अपने दास नबियों से हम को सुनवा
११ दी उस पर नहीं चले। बरन सारे इस्राएलियों ने भी तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया और ऐसे हट गये कि तेरी नहीं सुनी इस कारण जिस स्राप की चर्चा[३]

(१) मूल में के राजा।　(२) मूल में का राजा।

(३) मूल में जिस स्राप और किरिया।

परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई है वह स्राप हम पर घट गया क्योंकि हम ने उस के विरुद्ध
१२ पाप किया है । सो उस ने हमारे और हमारे न्यायियों के विषय जो वचन कहे थे उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर पूरा किया है यहां लों कि जैसी विपत्ति यरूशलेम पर पड़ी है वैसी सारी धरती पर[2] और कहीं नहीं पड़ी ।
१३ जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है वैसा ही यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिये न तो अपने अधर्म्म के कामों से फिरे और न तेरी सत्य बातों में प्रवीणता प्राप्त की ।
१४ इस कारण यहोवा ने सोच सोचकर[3] हम पर विपत्ति डाली है क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा जितने काम करता है उन सभों में धर्म्मी ठहरता है पर हम ने उस
१५ की नहीं सुनी । और अब हे हमारे परमेश्वर हे प्रभु तू ने तो अपनी प्रजा को मिस्र देश से बली हाथ के द्वारा निकाल लाकर अपना ऐसा बड़ा नाम किया जो आज लों प्रसिद्ध है पर हम ने पाप और दुष्टता ही की है ।
१६ हे प्रभु हमारे पापों और हमारे पुरखाओं के अधर्म्म के कामों के कारण तो यरूशलेम और तेरी प्रजा की हमारे आस पास के सब लोगों की ओर से नामधराई हो रही है तौभी तू अपने सारे धर्म्म के कामों के कारण अपना कोप और जलजलाहट अपने नगर यरूशलेम पर से
१७ जो तेरे पवित्र पर्वत पर बसा है उतार दे । हे हमारे परमेश्वर अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख का
१८ प्रकाश चमका हे प्रभु अपने निमित्त यह कर । हे मेरे परमेश्वर कान लगाकर सुन आंखें खोलकर हमारी उजाड़ की दशा और उस नगर को भी देख जो तेरा कहलाता है क्योंकि हम जो तेरे साम्हने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं सो अपने धर्म्म के कामों पर नहीं तेरी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रखकर करते हैं ।
१९ हे प्रभु सुन ले हे प्रभु पाप क्षमा कर हे प्रभु ध्यान देकर जो करना है सो कर विलम्ब न कर हे मेरे परमेश्वर तेरा नगर और तेरी प्रजा जो तेरी ही कहलाती है इसलिये अपने निमित्त ऐसा ही कर ॥
२० यों मैं प्रार्थना करता और अपने और अपने इस्राएली जातिभाइयों के पाप का अंगीकार करता और अपने परमेश्वर यहोवा के सन्मुख उस के पवित्र पर्वत
२१ के लिये गिड़गिड़ाकर बिनती करता ही था, कि वह पुरुष गब्रीएल जिसे मैं ने उस समय देखा था जब मुझे पहिले दर्शन हुआ उस ने वेग से उड़ने की आज्ञा पाकर सांझ के अन्नबलि के समय मुझ को छू लिया,
२२ और मुझे समझाकर मेरे साथ बातें करने लगा और कहा हे दानिय्येल मैं अभी तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने
२३ को निकल आया हूं । जब तू गिड़गिड़ाकर बिनती करने लगा तब ही इस की आज्ञा निकली सो मैं तुझे समझाने को आया हूं क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा सो उस विषय को समझ और दर्शन की बात का अर्थ बूझ
२४ ले । तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सत्ते ठहराये गये कि उन के अन्त लों अपराध का होना बन्द हो और पापों का अन्त और अधर्म्म का प्रायश्चित्त किया जाए और युग युग की धार्म्मिकता प्रगट होए[4] और दर्शन की बात पर और नबूवत पर छाप दी
२५ जाए और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए । सो यह जान और समझ ले कि यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से ले अभिषिक्त प्रधान के समय लों सात सत्ते बीतेंगे फिर बासठ सत्तों के बीते पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर
२६ बसाया जाएगा । और उन बासठ सत्तों के बीते पर अभिषिक्त पुरुष नाश किया जाएगा[5] और उस के हाथ कुछ न लगेगा और आनेहारे प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नाश तो करेगी पर उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है तौभी उस अन्त लों लड़ाई होती रहेगी क्योंकि उजड़ जाना निश्चय करके
२७ ठाना गया है । और वह प्रधान एक सत्ते के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बांधेगा पर आधे ही सत्ते के बीते पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा और घिनौनी वस्तुओं के कंगूरे पर उजड़वानेहारा दिखाई देगा और निश्चय से ठनी हुई समाप्ति के होने लों ईश्वर का शाप उजड़वानेहारे पर पड़ा रहेगा[6] ॥

१०. **फारस** देश के राजा कुस्रू के राज्य के तीसरे बरस में दानिय्येल पर जो बेलतशस्सर भी कहावता है एक बात प्रगट की गई और यह बात सच है कि बड़ा युद्ध होगा सो उस ने इस बात को बूझ लिया और इस देखी हुई बात की समझ उस को आ गई । उन दिनों में
२ दानिय्येल तीन अठवारों तक शोक करता रहा । उन
३

(१) मूल में उंडेला ।
(२) मूल में सारे आकाश के तले ।
(३) मूल में जाग जागकर ।
(४) मूल में लाया जाय ।
(५) मूल में काटा जाएगा ।
(६) मूल में उंडेला जाएगा ।

तीन अठवारों के पूरे होने लों मैं ने न तो स्वादिष्ठ भोजन किया और न मांस वा दाखमधु अपने मुंह में
४ छुआया न अपनी देह में कुछ भी तेल लगाया। फिर पहले महीने के चौबीसवें दिन को मैं हिद्देकेल नाम
५ नदी के तीर पर था। तब मैं ने आंखें उठाकर क्या देखा कि सन का वस्त्र पहिने हुए और ऊफज देश के कुन्दन
६ से कमर बान्धे हुए एक पुरुष है। उस का शरीर फीरोजा सा उस का मुख बिजली सा उस की आंखें जलते हुए दीपक सी उस की बाहें और पांव चमकाये हुए पीतल के से और उस के वचनों का शब्द भीड़ का
७ सा था। उस को केवल मुझ दानिय्येल ही ने देखा और मेरे संगी मनुष्यों को उस का कुछ दर्शन न हुआ वे बहुत ही थरथराने लगे और छिपने के लिये भाग
८ गये। सो मैं अकेला रहकर यह अद्भुत[१] दर्शन देखता रहा इस से मेरा बल जाता रहा और मैं श्रीहत हो
९ गया और मुझ में कुछ भी बल न रहा। तौभी मैं ने उस पुरुष के वचनों का शब्द सुना और जब वह मुझे सुन पड़ा तब मैं मुंह के बल गिरके भारी नींद में पड़ा
१० हुआ भूमि पर औंधे मुंह था। फिर किसी ने अपना हाथ मेरी देह में छुवाया और मुझे उठाकर घुटनों और
११ हथेलियों के बल लड़खड़ाते बैठा कर दिया। तब उस ने मुझ से कहा हे दानिय्येल हे अति प्रिय पुरुष जो वचन मैं तुझ से कहना चाहता हूं सो समझ ले और सीधा खड़ा हो क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूं। जब उस ने मुझ से यह वचन कहा तब मैं खड़ा तो हो
१२ गया पर थरथराता रहा। फिर उस ने मुझ से कहा हे दानिय्येल मत डर क्योंकि जिस पहिले दिन को तू ने समझने बूझने और अपने परमेश्वर के साम्हने अपने को दीन होने बनाने की ओर मन लगाया उसी दिन तेरे वचन सुने गये और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया
१३ हूं। फारस के राज्य का प्रधान तो इक्कीस दिन लों मेरा साम्हना किये रहा पर मीकाएल नाम जो मुख्य प्रधानों में से है सो मेरी सहायता के लिये आया सो ऐसा होने पर फारस के राजाओं के पास मेरे रहने का प्रयोजन न
१४ रहा। और अब मैं तुझे समझाने आया हूं कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी क्योंकि जो तू ने दर्शन पाकर देखा है सो कुछ दिनों के पीछे
१५ फलेगा। जब वह पुरुष मुझ से ऐसी बातें कह चुका तब मैं ने मुंह भूमि की ओर किया और चुपका रह
१६ गया। तब क्या हुआ कि मनुष्य के सन्तान के समान किसी ने मेरे होंठ छूए और मैं मुंह खोलकर बोलने लगा और जो मेरे साम्हने खड़ा था उस से कहा हे मेरे प्रभु दर्शन की बातों के कारण मुझ को पीड़ा सी उठी और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा। सो प्रभु का १७
दास अपने प्रभु के साथ क्योंकर बातें कर सके क्योंकि तब से मेरी देह में न तो कुछ बल रहा और न कुछ सांस। तब मनुष्य के समान किसी ने फिर मुझे छूकर १८
मेरा हियाव बन्धाया। और कहा हे अति प्रिय पुरुष १९
मत डर तुझे शान्ति मिले तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धे जब उस ने यह कहा तब मैं ने हियाव बांधकर कहा हे मेरे प्रभु अब कह क्योंकि तू ने मेरा हियाव बंधाया है। उस ने कहा मैं किस कारण तेरे पास आया २०
हूं सो क्या तू जानता है अब तो मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूंगा और जब मैं निकलूंगा तब यूनान का प्रधान आएगा। और जो कुछ सच्ची बातों से २१
भरी हुई पुस्तक में लिखा हुआ है सो मैं तुझे बताता हूं और उन प्रधानों के विरुद्ध तुम्हारे प्रधान मीकाएल को छोड़ मेरे संग स्थिर रहनेहारा कोई भी नहीं है।

११. और दारा नाम मादी राजा के राज्य के पहिले बरस में उस को हियाव बन्धाने और बल देने के लिये मैं ही खड़ा हो गया था॥

और अब मैं तुझ को सच्ची बात बताता हूं कि फारस २
के राज्य में अब तीन और राजा उठेंगे और चौथा राजा उन सभों से अधिक धनी होगा और जब वह धन के कारण सामर्थी होगा तब सब लोगों को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभारेगा। उस के पीछे एक पराक्रमी राजा उठकर अपना ३
राज्य बहुत बढ़ाएगा और अपनी इच्छा के अनुसार काम किया करेगा। जब वह बड़ा होगा तब उस का राज्य ४
टूटेगा और चारों दिशाओं की ओर बटकर अलग अलग हो जाएगा और न तो उस के राज्य की शक्ति ज्यों की त्यों रहेगी न उस के वंश को कुछ मिलेगा क्योंकि उस का राज्य उखड़कर उस को छोड़ और लोगों को प्राप्त होगा। तब दक्खिन देश का राजा अपने एक हाकिम ५
समेत बल पकड़ेगा वह उस से अधिक बल पकड़कर प्रभुता करेगा यहां लों कि उस की बड़ी ही प्रभुता हो जाएगी। कई बरस के बीते पर ये दोनों आपस में मिलेंगे और ६
दक्खिन देश के राजा की बेटी उत्तर देश के राजा के पास सत्य वाचा बांधने को आएगी पर न तो उस का बाहुबल ठहरा रहेगा और न उस के पिता का बरन वह स्त्री अपने पहुंचानेहारों और जन्मानेहारे और उस समेत भी जो उन दिनों उसे संभालेगा परवश की जाएगी। फिर ७
उस के कुल में कोई उत्पन्न होकर[२] उस के स्थान में

(१) मूल में बड़ा।

(२) मूल में उस की साख में से।

विराजमान होके सेना समेत उत्तर के राजा के गढ़ में प्रवेश करेगा और वहां उन से युद्ध करके प्रबल होगा। ८ तब वह उन के देवताओं की ढली हुई मूरतों और सोने चांदी के मनभाऊ पात्रों को छीनकर मिस्र में ले जाएगा इस के पीछे वह कुछ बरस लों उत्तर देश के ९ राजा की ओर से हाथ रोके रहेगा। तब वह राजा दक्खिन देश के राजा के राज्य के देश में आएगा पर १० फिर अपने देश में लौट जाएगा। तब उस के पुत्र झगड़ा मचाकर बहुत से बड़े बड़े दल इकट्ठे करेंगे तब वह उमण्डनेहारी नदी की नाईं आ देश के बीच होकर जाएगा फिर लौटता हुआ अपने गढ़ लों झगड़ा ११ मचाता जाएगा। तब दक्खिन देश का राजा चिढ़ेगा और निकलकर उत्तर देश के उस राजा से युद्ध करेगा और यह राजा लड़ने के लिये बड़ी भीड़ भाड़ इकट्ठी करेगा पर वह भीड़ उस के हाथ में कर दी जाएगी। १२ उस भीड़ को दूर करके उस का मन फूल उठेगा और वह लाखों लोगों को गिराएगा पर तौभी प्रबल न १३ होगा। क्योंकि उत्तर देश का राजा लौटकर पहिली से भी बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा और कई दिनों बरन बरसों के बीते पर वह निश्चय बड़ी सेना और धन १४ लिये हुए आएगा। और उन दिनों में बहुत से लोग दक्खिन देश के राजा के विरुद्ध उठेंगे बरन तेरे लोगों में से भी बलात्कारी लोग उठ खड़े होंगे जिस से इस दर्शन की बात पूरी हो जाएगी पर वे ठोकर खाकर गिरेंगे। १५ सो उत्तर देश का राजा आकर धुस बांधेगा और दृढ़ दृढ़ नगर ले लेगा और दक्खिन देश के न तो प्रधान[१] खड़े रहेंगे और न बड़े बड़े वीर न किसी को खड़े रहने १६ का बल होगा। सो उन के विरुद्ध जो आएगा वह अपनी इच्छा पूरी करेगा और उस का साम्हना करनेहारा कोई न रहेगा बरन वह हाथ में सत्यानाश लिए १७ हुए शिरोमणि देश में भी खड़ा होगा। तब वह अपने राज्य के सारे बल समेत कई सीधे लोगों को संग लिये हुए आने लगेगा और अपनी इच्छा के अनुसार काम किया करेगा और उस को एक स्त्री[२] इसलिये दी जाएगी कि बिगाड़ी जाए पर वह स्थिर न रहेगी न उस १८ राजा की हो जाएगी। तब वह द्वीपों की ओर मुंह करके बहुतों को ले लेगा पर एक सेनापति उस की की हुई नामधराई को मिटाएगा[३] बरन पलटाकर १९ उसी के ऊपर लगा देगा। तब वह अपने देश के गढ़ों की ओर मुंह फेरेगा और वहां ठोकर खाकर गिरेगा और उस का पता कहीं न रहेगा। २० तब उस के स्थान में ऐसा कोई उठेगा जो शिरोमणि राज्य में बरबस करनेहारों को घुमाएगा पर थोड़े दिन बीते वह कोप वा युद्ध किये बिना नाश होगा। २१ फिर उस के स्थान में एक तुच्छ मनुष्य उठेगा जिस की राजप्रतिष्ठा पहिले तो न होगी तौभी वह चैन के समय आकर चिकनी चुपड़ी बातों के द्वारा राज्य को प्राप्त करेगा। २२ तब उस की भुजारूपी बाढ़ से लोग बरन वाचा का प्रधान भी उस के साम्हने से बहकर नाश होंगे। २३ क्योंकि वह उस के संग वाचा बांधने पर भी छल करेगा और थोड़े ही लोगों को संग लिये हुए चढ़कर प्रबल होगा। २४ चैन के समय वह प्रान्त के उत्तम से उत्तम स्थानों पर चढ़ाई करेगा और जो काम न उस के पुरखा न उस के पुरखाओं के पुरखा भी करते थे सो वह करेगा और लुटी छिनी धन संपत्ति में बहुत बांटा करेगा और वह कुछ काल लों दृढ़ नगरों के लेने की कल्पना करता रहेगा। २५ तब वह दक्खिन देश के राजा के विरुद्ध बड़ी सेना लिये हुये अपने बल और हियाव को बढ़ाएगा और दक्खिन देश का राजा अत्यन्त बड़ी और सामर्थी सेना लिये हुये युद्ध तो करेगा पर ठहर न सकेगा क्योंकि लोग उस के विरुद्ध कल्पना करेंगे। २६ बरन उस के भोजन के खानेहारे भी उस को हरवाएंगे और यद्यपि उस की सेना बाढ़ की नाईं चढ़ेगी तौभी उस के बहुत से लोग खेत रहेंगे। २७ तब उन दोनों राजाओं के मन बुराई करने में लगेंगे यहां लों कि वे एक ही मेज पर बैठे हुए भी आपस में झूठ बोलेंगे और इस से कुछ बन न पड़ेगा क्योंकि इन सब बातों का अन्त नियत ही समय में होनेवाला है। २८ तब उत्तर देश का राजा बड़ी लूट लिये हुए अपने देश को लौटेगा और उस का मन पवित्र वाचा के विरुद्ध उभरेगा सो वह अपनी इच्छा पूरी करके अपने देश को लौट जाएगा। २९ नियत समय पर वह फिर दक्खिन देश की ओर जाएगा पर उस अगली बार के समान इस पिछली बार उस का वश न चलेगा। ३० क्योंकि कित्तियों के जहाज़ उस के विरुद्ध आएंगे इसलिये वह उदास होकर लौटेगा और पवित्र वाचा पर चिढ़कर अपनी इच्छा पूरी करेगा और लौटकर पवित्र वाचा के तोड़नेहारों की सुधि लेगा। ३१ तब उस के सहायक[४] खड़े होकर दृढ़ पवित्र स्थान को अपवित्र करेंगे और नित्य होमबलि को बन्द करेंगे और उजड़वानेहारी घिनौनी वस्तु को

(१) मूल में बांहें। (२) मूल में स्त्रियों की बेटी।
(३) मूल में बंद करेगा।

(४) मूल में बांहें।

३२ खड़ा करेंगे । और जो लोग दुष्ट होकर उस वाचा को तोड़ेंगे उन को वह चिकनी चुपड़ी बातें कह कहकर भक्तिहीन कर देगा पर जो लोग अपने परमेश्वर का ३३ ज्ञान रक्खेंगे सो हियाव बांधकर बड़े कर्म्म करेंगे । और लोगों के सिखानेहारे जन बहुतों को समझाएंगे पर तलवार से छिदकर और आग में जलकर और बन्धुए होकर और लुटकर बहुत दिन लों बड़े दुःख में पड़े ३४ रहेंगे । जब वे पड़ेंगे तब थोड़ा बहुत संभलेंगे तो सही पर बहुत से लोग चिकनी चुपड़ी बातें कह कहकर ३५ उन से मिल जाएंगे । और सिखानेहारों में से कितने जो गिरेंगे सो इसलिये गिरने पाएंगे कि जांचे जाएं और निर्मल और उजले किये जाएं यह दशा अन्त के समय लों बनी रहेगी क्योंकि इन सब बातों का ३६ अन्त नियत ही समय में होनेवाला है । सो वह राजा अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करेगा और सारे देवताओं के ऊपर अपने को ऊंचा और बड़ा ठहराएगा वरन सारे देवताओं के ऊपर जो ईश्वर है उस के विरुद्ध भी अनोखी बातें कहेगा और जब लों परमेश्वर का कोप शान्ति न हो तब लों उस राजा का कार्य्य सफल रहेगा क्योंकि जो कुछ निश्चय करके ठना हुआ है सो ३७ अवश्य ही होनेवाला है । फिर वह अपने पुरखाओं के देवताओं की भी चिन्ता न करेगा और न तो स्त्रियों की प्रीति की कुछ चिन्ता करेगा न किसी देवता की वरन ३८ वह सभों के ऊपर अपने ही को बड़ा ठहराएगा । और वह अपने राजपद पर स्थिर रहकर दृढ़ गढ़ों ही के देवता का सन्मान करेगा अर्थात् एक देवता का जिसे उस के पुरखा न जानते थे वह सोना चान्दी मणि और ३९ और मनभावनी वस्तुएं चढ़ाकर सन्मान करेगा । और उस बिराने देवता के सहारे से वह अति दृढ़ गढ़ों से लड़ेगा और जो कोई उस को माने उस को वह बड़ी प्रतिष्ठा देगा और ऐसे लोगों को बहुतों के ऊपर प्रभुता देगा और अपने लाभ के लिये अपने देश की भूमि को ४० बांट देगा । अन्त के समय दक्खिन देश का राजा उस को सींग मारने लगेगा पर उत्तर देश का राजा उस पर बवण्डर की नाईं बहुत से रथ सवार और जहाज़ संग लेकर चढ़ाई करेगा इस रीति वह बहुत से देशों में ४१ फैल जाएगा और यों निकल जाएगा । वरन वह शिरोमणि देश में भी आएगा और बहुत से देश तो उजड़ जाएंगे पर एदोमी मोआबी और मुख्य मुख्य अम्मोनी इन जातियों के देश भी उस के हाथ से बच जाएंगे । ४२ वह कई देशों पर हाथ बढ़ाएगा और मिस्र देश न ४३ बचेगा । वरन वह मिस्र में के सोने चान्दी के खजानों और सब मनभावनी वस्तुओं का स्वामी हो जाएगा और लूबी और कूशी लोग भी उस के पीछे हो लेंगे । ४४ उसी समय वह पूरब और उत्तर दिशाओं से समाचार सुनकर घबराएगा तब बड़े क्रोध में आकर बहुतों को ४५ सत्यानाश करने को निकलेगा । और वह दोनों समुद्रों के बीच पवित्र शिरोमणि पर्वत के पास अपना राजकीय तंबू खड़ा कराएगा इतना करने पर भी उस का अन्त आ जाएगा और उस का सहायक कोई न रहेगा ।

१२

१ उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान जो तेरे जातिभाइयों का पक्ष करने को खड़ा हुआ करता है सो खड़ा होगा और तब ऐसे संकट का समय होगा जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर तब लों कभी न हुआ होगा पर उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम ईश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं सो बच २ निकलेंगे । और भूमि के नीचे[१] जो सोये रहेंगे उन में से बहुत लोग कितने तो सदा के जीवन के लिये और कितने अपनी नामधराई और सदा लों अत्यन्त घिनौने ३ ठहरने के लिये जाग उठेंगे । तब सिखानेहारों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी और जो बहुतों को धर्म्मी बनाते हैं सो सदा सर्वदा तारों की नाईं प्रकाशमान रहेंगे । ४ और हे दानिय्येल तू इन वचनों को अन्तसमय लों बंद कर रख और इस पुस्तक पर छाप दे रख बहुत लोग पूछ पाछ और ढूंढ़ ढांढ़ तो करेंगे और इस से ज्ञान बढ़ भी जाएगा ॥

५ यह सब सुन मुझ दानिय्येल ने दृष्टि करके क्या देखा कि और दो पुरुष खड़े हैं एक तो नदी के इस तीर ६ पर और दूसरा नदी के उस तीर पर है । तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर था उस से उन पुरुषों में से एक ने पूछा कि इन आश्चर्य्य कामों ७ का अन्त कब लों होगा । तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर था उस ने मेरे सुनते दहिना और बांया दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर सदा जीते रहनेहारे की यह किरिया खाई कि यह दशा साढ़े तीन ही काल लों रहेगी और जब पवित्र प्रजा की शक्ति तोड़ते तोड़ते टूट जाएगी तब ये सब बातें पूरी ८ होंगी । यह बात मैं सुनता तो था पर कुछ न समझा सो मैं ने कहा हे मेरे प्रभु इन बातों का अन्तफल क्या ९ होगा । उस ने कहा हे दानिय्येल चला जा क्योंकि ये बातें अन्तसमय के लिये बन्द हैं और इन पर छाप १० दी हुई है । बहुत लोग तो अपने अपने को निर्मल और उजले करेंगे और स्वच्छ हो जाएंगे पर दुष्ट लोग

(१) मूल में धूलि की भूमि में ।

दुष्टता ही करते रहेंगे और दुष्टों में से कोई ये बातें न ११ समझेगा पर सिखानेहारे समझेंगे। और जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी और उजड़वानेहारी घिनौनी वस्तु स्थापित की जाएगी तब से बारह सौ नव्वे दिन बीतेंगे। १२ क्या ही धन्य वह होगा जो धीरज धरके तेरह सौ पैंतीस दिन के अंत लों भी पहुंचे। १३ सो तू जाकर अन्त लों ठहरा रह तब लों तू विश्राम करता रहेगा फिर उन दिनों के अन्त में निज भाग पर खड़ा होगा॥

होशे।

१. यहूदा के राजा उज्जिय्याह योताम आहाज और हिजकिय्याह और इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनों में यहोवा का वचन बेरी के पुत्र होशे के पास पहुंचा॥

२ जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहिले पहिल बातें कीं तब उस ने होशे से यह कहा कि जाकर एक वेश्या को अपनी स्त्री और उस के कुकर्म्म के लड़केवालों को अपने लड़केवाले कर ले क्योंकि यह देश यहोवा के पीछे हो चलना छोड़कर वेश्या का सा काम बहुत करता ३ रहा है। सो उस ने जाकर दिबलैम की बेटी गोमेर को अपनी स्त्री कर लिया और वह उस से गर्भवती होकर ४ एक पुत्र जनी। तब यहोवा ने उस से कहा इस का नाम यिज्रेल[1] रख क्योंकि थोड़े ही काल में मैं येहू के घराने को यिज्रेल के खून का दण्ड दूंगा और इस्राएल के घराने के राज्य का अन्त कर दूंगा। ५ और उस समय मैं यिज्रेल की तराई में इस्राएल के धनुष को ६ तोड़ डालूंगा। और वह स्त्री फिर गर्भवती होकर एक बेटी जनी तब यहोवा ने होशे से कहा उस का नाम लोरुहामा रख क्योंकि मैं इस्राएल के घराने पर फिर कभी दया करके उन का अपराध किसी प्रकार से क्षमा ७ न करूंगा। परन्तु यहूदा के घराने पर मैं दया करूंगा और उन का उद्धार करूंगा धनुष वा तलवार वा युद्ध वा घोड़ों वा सवारों के द्वारा नहीं परन्तु उन के परमेश्वर ८ यहोवा के द्वारा उन का उद्धार करूंगा। जब उस स्त्री ने लोरुहामा का दूध छुड़ाया तब वह गर्भवती होकर एक ९ पुत्र जनी। तब यहोवा ने कहा इस का नाम लोअम्मी[3] रख क्योंकि तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो और न मैं तुम लोगों का रहूंगा॥

१० तौभी इस्राएलियों की गिनती समुद्र की बालू की सी हो जाएगी जिन का मापना गिनना अनहोना है और जिस स्थान में उन से यह कहा जाता है कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो उसी स्थान में वे जीवते ईश्वर ११ के पुत्र कहलाएंगे। तब यहूदी और इस्राएली दोनों इकट्ठे हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएंगे क्योंकि यिज्रेल का दिन प्रसिद्ध[4] होगा।

२. १ सो तुम लोग अपने भाइयों से अम्मी[5] और अपनी बहिनों से रुहामा[6] कहो॥

२ अपनी माता से विवाद करो विवाद क्योंकि वह मेरी स्त्री नहीं और न मैं उस का पति हूं वह अपने मुंह पर से अपने छिनालपन को और अपनी छातियों ३ के बीच से व्यभिचारों को अलग करे। नहीं तो मैं उस के वस्त्र उतारकर उस को जन्म के दिन के समान नंगी कर दूंगा और उस को जङ्गल के समान और मरुभूमि सरीखी बनाऊंगा और प्यास से मार डालूंगा। ४ और उस के लड़केवालों पर भी मैं कुछ दया न करूंगा ५ क्योंकि वे कुकर्म के लड़के हैं। अर्थात् उन की माता ने छिनाला किया जिस के गर्भ में वे पड़े उस ने लज्जा के योग्य काम किया उस ने कहा कि मेरे यार जो मेरी रोटी पानी ऊन सन तेल और मद्य देते हैं उन्हीं के पीछे ६ मैं चलूंगी। इसलिये सुनो मैं उस के मार्ग को कांटों से रूंधूंगा और ऐसा बाड़ा खड़ा करूंगा कि वह राह ७ न पा सकेगी। और वह अपने यारों के पीछे चलने से भी उन्हें जान लेगी और उन्हें ढूंढ़ने से भी न पाएगी तब वह कहेगी मैं अपने पहिले पति के पास फिर जाऊंगी क्योंकि मेरी पहिली दशा इस समय की दशा से अच्छी ८ थी। वह तो नहीं जानती कि अन्न नया दाखमधु और तेल मैं ही उसे देता हूं और उस के लिये वह चांदी

(१) अर्थात् ईश्वर बोएगा वा तितर बितर करेगा यिज्रेल एक नगर का भी नाम है। (२) अर्थात् जिस पर दया नहीं हुई।
(३) अर्थात् मेरी प्रजा नहीं।

(४) मूल में बड़ा। (५) अर्थात् मेरी प्रजा।
(६) अर्थात् जिस पर दया हुई है।

सोना जिस को वे बाल देवता के काम में ले आते हैं
९ मैं ही बढ़ाता हूं। इस कारण मैं अन्न की ऋतु में अपने अन्न को और नये दाखमधु के होने के समय में अपने नये दाखमधु को हर लूंगा और अपना ऊन और सन भी जिन से वह अपना तन ढांपती है छीन लूंगा।
१० और अब मैं उस के यारों के साम्हने उस के तन को उघाड़ूंगा और मेरे हाथ से को उसे न छुड़ा सकेगा।
११ और मैं उस के पर्व्व नये चांद और विश्रामदिन आदि
१२ सब नियत समयों के उत्सव को उठा दूंगा। और मैं उस की दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को जिन के विषय वह कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति है जिसे मेरे यारों ने मुझे दी है ऐसा बिगाड़ूंगा कि वे जङ्गल से हो जाएंगे और बनैले पशु उन्हें चर डालेंगे।
१३ और वे दिन जिन में वह बाल देवताओं के लिये धूप जलाती और नत्थ और हार पहिने अपने यारों के पीछे जाती और मुझ को भूले रहती थी उन दिनों का दण्ड
१४ मैं उसे दूंगा यहोवा की यही वाणी है। इसलिये देखो मैं उसे मोहित करके जङ्गल में ले जाऊंगा और
१५ वहां उस से शांति की बातें कहूंगा। और मैं उस को दाख की बारियां वहीं[१] दूंगा और आकोर[२] की तराई को आशा का द्वार कर दूंगा और वहां वह मुझ से ऐसी बातें कहेगी जैसी अपनी जवानी के दिनों में अर्थात् मिस्र देश से चले आने के समय कहती थी।
१६ और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय तू मुझे
१७ ईशी[३] कहेगी और फिर बाली न कहेगी। क्योंकि मैं उसे बाल देवताओं के नाम आगे को लेने न दूंगा और न
१८ उन के नाम फिर स्मरण में रहेंगे। और उस समय मैं उन के लिये बनैले पशुओं और आकाश के पक्षियों और भूमि पर के रेंगनेहारे जन्तुओं के साथ वाचा बांधूंगा और धनुष और तलवार तोड़कर युद्ध को उन के देश से दूर कर दूंगा और ऐसा करूंगा कि वे लोग
१९ निडर सोया करेंगे। और मैं तुझे सदा के लिये अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूंगा और यह प्रतिज्ञा धर्म्म और न्याय और करुणा और दया के साथ करूंगा।
२० और ये सच्चाई के साथ भी की जाएगी और तू
२१ यहोवा का ज्ञान पाएगी। और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तो आकाश की सुनकर उस को उत्तर
२२ दूंगा और वह पृथिवी की सुनकर उस को उत्तर देगा। और पृथिवी अन्न नये दाखमधु और टटके तेल की सुनकर
२३ उन को उत्तर देगी और वे यिज्रेल को उत्तर देंगे। और मैं अपने लिये उस को देश में बोऊंगा और लोरुहामा पर दया करूंगा और लोअम्मी से कहूंगा कि तू मेरी प्रजा है और वह कहेगा हे मेरे परमेश्वर॥

३. फिर यहोवा ने मुझ से कहा अब जाकर ऐसी एक स्त्री से प्रीति कर जो व्यभिचारिन होने पर भी अपने प्रिय की प्यारी हो क्योंकि उसी भांति यद्यपि इस्राएली पराये देवताओं की ओर फिरते और दाख की टिकियों में प्रीति रखते हैं तौभी यहोवा उन से प्रीति रखता है।
२ सो मैं ने एक स्त्री को चांदी के पन्द्रह टुकड़े और डेढ़
३ होमेर जव देकर मोल लिया। और मैं ने उस से कहा तू बहुत दिन लों मेरे लिये बैठी रहना और न तो छिनाला करना और न किसी पुरुष की स्त्री हो जाना
४ और मैं भी तेरे लिये ऐसा ही रहूंगा। क्योंकि इस्राएली बहुत दिन लों बिना राजा बिना हाकिम बिना यज्ञ बिना लाठ और बिना एपोद वा गृह देवताओं के बैठे
५ रहेंगे। उस के पीछे वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूंढ़ने लगेंगे और अन्त के दिनों में यहोवा के पास और उस की उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएंगे॥

४. हे इस्राएलियो यहोवा का वचन सुनो यहोवा का इस देश के वासियों के साथ मुकद्दमा है क्योंकि इस में न तो कुछ सच्चाई है और न कुछ करुणा न कुछ परमेश्वर का ज्ञान है।
२ स्राप देने झूठ बोलने वध करने चुराने व्यभिचार करने को छोड़ कुछ नहीं होता वे व्यवस्था की सीमा को लांघकर
३ निकल गये और खून ही खून होता रहता है[४]। इस कारण यह देश विलाप करेगा और मैदान के जीव जन्तुओं और आकाश के पक्षियों समेत उस के सब निवासी कुम्हला जाएंगे समुद्र की मछलियां भी नाश
४ हो जाएंगी। देखो कोई वाद विवाद न करे न कोई उलहना दे क्योंकि तेरे लोग तो याजक से वाद विवाद
५ करनेहारों के समान हैं। तू दिनदुपहरी ठोकर खाएगा और रात को नबी भी तेरे साथ ठोकर खाएगा और मैं
६ तेरी माता को नाश करूंगा। मेरी प्रजा मेरे ज्ञान बिना नाश हो गई तू ने जो मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है इसलिये मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा और तू ने जो अपने परमेश्वर की व्यवस्था को बिसराया है इसलिये मैं भी तेरे लड़केबालों को बिसराऊंगा।

(१) मूल में वहीं से। (२) अर्थात् कष्ट। (३) अर्थात् मेरे पति।

(४) मूल में लोहू को लोहू पहुंचाता है।

७ जैसे जैसे वे बढ़ते गये वैसे वैसे वे मेरे विरुद्ध पाप करते गये मैं उन के विभव के पलटे उन का अना-
८ दर करूंगा। वे मेरी प्रजा के पापबलियों को खाते हैं
९ और प्रजा के पापी होने की लालसा करते हैं। सो प्रजा की जो दशा होगी वही याजक की भी होगी और मैं उन के चालचलन का दण्ड दूंगा और उन के कामों
१० का बदला उन को दूंगा। वे खाएंगे तो पर तृप्त न होंगे और वेश्यागमन तो करेंगे पर न बढ़ेंगे क्योंकि उन्हों ने यहोवा की ओर मन लगाना छोड़ दिया है।
११ वेश्यागमन और दाखमधु और टटका दाखमधु ये तीनों
१२ बुद्धि[1] को भ्रष्ट करते हैं। मेरी प्रजा के लोग अपने काठ से प्रश्न करते हैं और उन की छड़ी उन को बताती है क्योंकि छिनाला करानेहारे आत्मा ने उन्हें बहकाया और वे अपने परमेश्वर की अधीनता छोड़कर छिनाला
१३ करते हैं। बांज चिनार और छोटे बांज वृक्षों की छाया जो अच्छी होती है इसलिये वे उन के तले पहाड़ों की चोटियों पर यज्ञ करते और टीलों पर धूप जलाते हैं इस कारण तुम्हारी बेटियां छिनाल और तुम्हारी बहुएं
१४ व्यभिचारिन हो गई हैं। चाहे तुम्हारी बेटियां छिनाला और तुम्हारी बहुएं व्यभिचार करें तौभी मैं उन को दण्ड न दूंगा क्योंकि वे आप ही वेश्याओं के साथ एकान्त में जाते और देवदासियों के साथी होकर यज्ञ करते हैं और वे लोग जो समझ नहीं रखते सो गिरा
१५ दिये जाएंगे। हे इस्राएल यद्यपि तू छिनाला करता है तौभी यहूदा दोषी न बने न तो गिलगाल को आओ और न बेतावेन को चढ़ आओ और न यह कहकर
१६ किरिया खाओ कि यहोवा के जीवन की सोंह। क्योंकि इस्राएल ने हठीली कलोर की नाईं हठ किया है सो अब यहोवा उन्हें भेड़ के बच्चे की नाईं लंबे चौड़े मैदान
१७ में चराएगा। एप्रैम तो मूरतों का संगी हो गया है
१८ सो उस को रहने दे। जब पिलौवल कर चुकते हैं तब वेश्यागमन करने में लग जाते हैं उन के प्रधान
१९ लोग निरादर होने में अति प्रीति रखते हैं। आंधी उन को अपने पंखों में बांधकर उड़ा ले जाएगी और उन के बलिदानों के कारण उन की आशा टूट जाएगी॥

५. हे याजको यह बात सुनो और हे इस्राएल के सारे घराने ध्यान देकर सुनो और हे राजा के घराने तुम कान लगाओ क्योंकि तुम पर न्याय किया जाएगा क्योंकि तुम मिस्पा में फन्दा और ताबोर पर लगाया हुआ जाल बन गये हो।
२ उन बिगड़े हुओं ने घोर हत्या की है[2] सो मैं उन
३ सभों को ताड़ना दूंगा। मैं एप्रैम का भेद जानता हूं और इस्राएल की दशा मुझ से छिपी नहीं है हे एप्रैम तू ने छिनाला किया और इस्राएल अशुद्ध हुआ है।
४ उन के काम उन्हें अपने परमेश्वर की ओर फिरने नहीं देते क्योंकि छिनाला करानेहारा आत्मा उन में रहता
५ है और यहोवा का ज्ञान उन में नहीं रहा। और इस्राएल का गर्व्व उस के साम्हने ही साक्षी देता है और इस्राएल और एप्रैम अपने अधर्म्म के कारण ठोकर खाएंगे और यहूदा भी उन के संग ठोकर खाएगा।
६ वे अपनी भेड़ बकरियां और गाय बैल लेकर यहोवा को ढूंढ़ने चलेंगे पर वह उन को न मिलेगा क्योंकि वह
७ उन के पास से अन्तर्धान हो जाएगा। वे जो व्यभिचार के लड़के जनीं इस में यहोवा का विश्वासघात किया इस कारण अब चांद उन के और उन के भागों के नाश का कारण होगा॥

८ गिबा में नरसिंगा और रामा में तुरही फूंको बेतावेन में ललकार कर कहो कि हे बिन्यामीन अपने पीछे
९ देख। एप्रैम न्याय के दिन में उजाड़ हो जाएगा जिस बात का होना ठाना गया है उसी का सन्देश मैं ने
१० इस्राएल के सब गोत्रों को दिया है। यहूदा के हाकिम उन के समान हुए हैं जो सिवाना बढ़ा लेते हैं मैं उन पर अपनी जलजलाहट जल की नाईं उण्डेलूंगा।
११ एप्रैम पर अंधेर किया गया है और वह मुकद्दमा हार गया है क्योंकि वह उस आज्ञा के अनुसार जी लगाकर
१२ चला। सो मैं एप्रैम के लिये कीड़े और यहूदा के
१३ घराने के लिये सड़ाहट के समान हूंगा। जब एप्रैम ने अपना रोग और यहूदा ने अपना घाव देखा तब एप्रैम अश्शूर के पास गया और यारेब[3] राजा से कहला भेजा पर वह न तुम को चंगा न तुम्हारा घाव अच्छा कर
१४ सकता है। मैं एप्रैम के लिये सिंह और यहूदा के घराने के लिये जवान सिंह बनूंगा मैं आप ही उन्हें फाड़कर ले जाऊंगा और जब मैं उठा ले जाऊंगा तब मेरे पंजे
१५ से कोई छुड़ा न सकेगा। जब लों वे अपने को अपराधी मानकर मेरे दर्शन के खोजी न हों तब लों मैं जाकर अपने स्थान को लौटूंगा जब वे संकट में पड़ेंगे तब जी लगाकर मुझे ढूंढ़ने लगेंगे॥

६. चलो हम यहोवा की ओर फिरें क्योंकि उसी ने फाड़ा और वही चंगा भी करेगा उसी ने मारा और वही हमारे घावों

(१) मूल में हृदय।

(२) मूल में हत्या में गहिराई की। (३) अर्थात् झगड़नेहारे।

२ पर पट्टी बांधेगा । दो दिन के पीछे वह हम को जिलाएगा तीसरे दिन वह हम को उठाकर खड़ा करेगा तब
३ हम उस के सन्मुख जीते रहेंगे । आओ हम ज्ञान ढूंढें बरन यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये बड़ा यत्न भी करें[1] क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है और वह हमारे ऊपर वर्षा की नाईं बरन बरसात के अंत की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती आएगा ॥

४ हे एप्रैम मैं तुझ से क्या करूं हे यहूदा मैं तुझ से क्या करूं तुम्हारा स्नेह तो भोर के मेघ और सवेरे उड़ जानेवाली ओस के समान है ।
५ इस कारण मैं ने नबियों के द्वारा उन पर मानो कुल्हाड़ी चलाई और अपने वचनों से उन को घात किया और तेरे नियम प्रकाश सरीखे प्रगट होंगे[2] ।
६ मैं तो बलिदान से नहीं कृपा ही से प्रसन्न होता हूं और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूं कि लोग
७ परमेश्वर का ज्ञान रक्खें । पर उन लोगों ने आदम की नाईं वाचा को तोड़ दिया उन्हों ने यहां मुझ से
८ विश्वासघात किया है । गिलाद नाम गढ़ी तो अनर्थकारियों
९ से भरी है वह खून से भरी हुई है । और जैसे डाकुओं के दल किसी के घात में बैठते हैं वैसे ही याजकों का दल शकेम के मार्ग में वध करता है बरन उन्हों ने
१० महापाप भी किया है । इस्राएल के घराने में मैं ने रोएं खड़े होने का कारण देखा है उस में एप्रैम का छिनाला
११ और इस्राएल की अशुद्धता पाई जाती है । फिर हे यहूदा जब मैं अपनी प्रजा को बन्धुआई से लौटा ले आऊंगा उस समय के लिये तेरे निमित्त भी पलटा ठहराया हुआ है ॥

७. जब

जब मैं इस्राएल को चंगा करना चाहता हूं तब तब एप्रैम का अधर्म्म और शोमरोन की बुराइयां प्रगट हो जाती हैं वे छल से काम करते हैं चोर तो भीतर घुसता और
२ डाकुओं का दल बाहर छांड़ छीन लेता है । और वे नहीं सोचते कि यहोवा हमारी सारी बुराई को स्मरण रखता है सो अब वे अपने कामों के जाल में फंसेंगे
३ क्योंकि उन के कार्य्य मेरी दृष्टि में बने हैं । वे राजा को बुराई करने से और और हाकिमों को झूठ बोलने से
४ आनन्दित करते हैं । वे सब के सब व्यभिचारी हैं वे उस तंदूर के समान हैं जिस को पकानेहारा गर्म तो करता है पर जब लों आटा गूंधा नहीं जाता और खमीर से फूल नहीं चुकता तब लों वह आग को नहीं उसकाता ।
५ हमारे राजा के जन्म दिन दाखमधु पीकर चूर हुए उस ने
६ ठट्ठा करनेहारों से अपना हाथ मिलाया । जब लों वे घात लगाये बैठे रहते हैं तब लों वे अपना मन तंदूर की नाईं तैयार किये रहते हैं उन का पकानेहारा रात भर सोता पर भोर को तंदूर धधकती लौ से लाल हो
७ जाता है । वे सब के सब तंदूर की नाईं धधकते और अपने न्यायियों को भस्म करते हैं उन के सब राजा मारे गये हैं उन में से कोई नहीं है जो मेरी दोहाई
८ देता हो । एप्रैम देश देश के लोगों से मिला जुला रहता है एप्रैम ऐसी चपाती ठहरा है जो उलटी न गई
९ हो । परदेशियों ने उस का बल तोड़ डाला[3] पर वह इसे नहीं जानता और उस के सिर में कहीं कहीं पक्के बाल हैं पर वह इसे भी नहीं जानता ।
१० और इस्राएल का गर्व्व उस के साम्हने ही साक्षी देता है यहां लों कि वे इन सब बातों के रहते न तो अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरे न उस को ढूंढ़ा है ।
११ और एप्रैम भोली पिण्डुकी के समान हो गया है जिस को कुछ बुद्धि नहीं वे मिस्रियों की दोहाई देते वे अश्शूर को चले
१२ जाते हैं । जब जब वे जाएं तब तब मैं उन के ऊपर अपना जाल फैलाऊंगा और उन्हें ऐसा खींच लूंगा जैसे आकाश के पक्षी खींचे जाते हैं मैं उन को ऐसी ताड़ना दूंगा जैसी उन की मण्डली सुन चुकी है ।
१३ उन पर हाय क्योंकि वे मेरे पास से भटक गये उन का सत्यानाश होए क्योंकि उन्हों ने मुझ से बलवा किया है मैं तो उन्हें छुड़ाता आया पर वे मुझ से झूठ बोलते
१४ आये हैं । वे मेरी दोहाई मन से नहीं देते पर अपने बिछौने पर पड़े हुए हाय हाय करते हैं वे अन्न और नये दाखमधु पाने के लिये भीड़ लगाते हैं और मुझ
१५ से हट जाते हैं । मैं तो उन को शिक्षा देता और उन की भुजाओं को बलवन्त करता आया हूं पर वे मेरे
१६ विरुद्ध बुरी कल्पना करते आये हैं । वे फिरते तो हैं पर परमप्रधान की ओर नहीं वे धोखा देनेहारे धनुष के समान हैं इसलिये उन के हाकिम अपनी क्रोधभरी बातों के कारण तलवार से मारे जाएंगे मिस्र देश में उन के ठट्ठों में उड़ाये जाने का यही कारण होगा ॥

८. अपने

मुंह में नरसिंगा लगा । वह उकाब की नाईं यहोवा के घर पर झपटेगा इसलिये कि मेरे घर के लोगों ने मेरी वाचा तोड़ी और मेरी व्यवस्था उल्लंघन की है । वे
२

(१) मूल में पीछा भी करें ।
(२) मूल में निकलनेवाले हैं ।
(३) मूल में खा तो लिया ।

मुझ को पुकारकर कहेंगे कि हे हमारे परमेश्वर हम ३ इस्राएली लोग तुझे जानते हैं। पर इस्राएल ने भलाई को मन से उतार दिया है शत्रु उस के पीछे पड़ेगा। ४ वे राजाओं को ठहराते तो आये पर मेरी इच्छा से नहीं वे हाकिमों को भी ठहराते तो आये पर मेरे अनजाने उन्हों ने अपना सोना चान्दी लेकर मूरतें बना ५ लीं इसलिये कि वे नाश हो जाएं। हे शोमरोन उस ने तेरे बछड़े को मन से उतार दिया है मेरा कोप उन पर ६ भड़का वे कब लों निर्दोष होने में विलम्ब करेंगे। यह तो इस्राएल से हुआ है वह कारीगर से बना और परमेश्वर नहीं है इस कारण शोमरोन का वह बछड़ा टुकड़े ७ टुकड़े हो जाएगा। वे तो वायु बोते हैं और बवण्डर लवेंगे उस के लिये कुछ खेत रहेगा नहीं उन की उगती से कुछ आटा न होगा और यदि हो तो परदेशी उस ८ को खा डालेंगे। इस्राएल निगला गया अब वे अन्यजातियों में ऐसे निकम्मे ठहरे जैसा तुच्छ बरतन ठहरता ९ है। क्योंकि वे अश्शूर को ऐसे चले गये हैं जैसा बनैला गदहा झुण्ड से बिछुर के रहता एप्रैम ने यारों १० को मजूरी पर रक्खा है। यद्यपि वे अन्य जातियों में से मजूर कर रक्खें तौभी मैं उन को इकट्ठा करूंगा और वे हाकिमों के राजा के बोझ के कारण घटने ११ लगेंगे। एप्रैम ने पाप करने को बहुत ही वेदियां बनाई हैं और वे वेदियां उस के पापी ठहरने का कारण १२ भी ठहरीं। मैं तो उस के लिये अपनी व्यवस्था की लाखों बातें लिखता आता हूं पर वे इन्हें बिरानी सम- १३ झते हैं। वे मेरे लिये बलिदान करते हैं तब पशु बलि करते तो हैं पर उस का फल मांस ही है वे तो खाते हैं पर यहोवा उन से प्रसन्न नहीं होता अब वह उन के अधर्म्म की सुधि लेकर उन के पाप का दण्ड देगा वे १४ मिस्र में लौट जाएंगे। इस्राएल ने अपने कर्त्ता को बिसरा कर मन्दिर बनाये और यहूदा ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया है पर मैं उन के नगरों में आग लगाऊंगा जिस से उन के महल भस्म हो जाएंगे॥

९. हे इस्राएल तू देश देश के लोगों की नाईं आनन्द में मगन मत हो क्योंकि तू अपने परमेश्वर को छोड़कर वेश्या बनी तू ने अन्न के एक एक खलिहान पर छिनाले की कमाई आनन्द २ से ली है। वे न तो खलिहान के अन्न से तृप्त होंगे और न कुण्ड के दाखमधु से और नये दाखमधु के ३ घटने से वे धोखा खाएंगे। वे यहोवा के देश में रहने न पाएंगे पर एप्रैम मिस्र में लौट जाएगा और वे अश्शूर ४ में अशुद्ध अशुद्ध वस्तुएं खाएंगे। वे यहोवा के लिये दाखमधु अर्घ जानकर न देंगे न उन के बलिदान उस को भाएंगे बरन शोक करनेहारों की सी भोजनवस्तु ठहरेंगे जितने उस से खाएंगे सब अशुद्ध हो जाएंगे उन की भोजनवस्तु उन की भूख बुझाने ही के लिये होगी वह यहोवा के भवन में न आ सकेगी। ५ नियत समय के पर्व्व और यहोवा के उत्सव के दिन तुम क्या करोगे। ६ देखो वे सत्यानाश होने के डर के मारे चले गये पर वहां मर जाएंगे और मिस्री उन की लोथें इकट्ठी करेंगे और मोप के निवासी उन को मिट्टी देंगे उन की मनभावनी चांदी की वस्तुएं बिच्छू पेड़ों के बीच में[1] पड़ेंगी और उन के तंबुओं में झड़बेरी उगेगी। ७ दण्ड के दिन आये हैं पलटा लेने के दिन आये हैं और इस्राएल यह जान लेगा उन के बहुत से अधर्म्म और बड़े द्वेष के कारण नबी तो मूर्ख और जिस पुरुष पर आत्मा उतरता है वह बावला ठहरेगा॥

८ एप्रैम मेरे परमेश्वर के संग एक पहरुआ तो है नबी के सब मार्गों में बहेलिये का फन्दा लगा और उस के परमेश्वर के घर में बैर हुआ है। ९ वे गिबा के दिनों की भांति अत्यन्त बिगड़े[2] हुए हैं सो वह उन के अधर्म्म की सुधि लेकर उन के पाप का दण्ड देगा॥

१० मैं ने इस्राएल को ऐसा पाया था जैसा कोई जंगल में दाख पाए और तुम्हारे पुरखाओं पर ऐसी दृष्टि की थी जैसे अंजीर के पहिले फलों पर दृष्टि की जाती है पर उन्हों ने पोर के बाल के पास जाकर अपने तईं उस वस्तु को अर्पण कर दिया जो लज्जा का कारण है और जिस से वे मोहित हो गये थे उस के समान घिनौने हो गये। ११ एप्रैम जो है उस का विभव पक्षी की नाईं उड़ जाएगा न तो किसी का जन्म होगा न किसी को गर्भ रहेगा और न कोई स्त्री गर्भवती होगी। १२ चाहे वे अपने लड़केवालों को पोसकर बड़े भी करें तौभी मैं उन्हें यहां लों निर्वंश करूंगा कि कोई न रह जाएगा और जब मैं उन से दूर हो जाऊंगा तब उन पर हाय होगी। १३ जैसा मैं ने सोर को देखा वैसा एप्रैम को भी मनभाऊ स्थान में बसा हुआ देखा तौभी उसे अपने लड़केवालों को घातक के लिये निकालना पड़ेगा॥

१४ हे यहोवा उन को दण्ड दे तू क्या देगा यह कि उन की स्त्रियों के गर्भ गिर जाएं और स्तन सूख जाएं॥

१५ उन की सारी बुराई गिल्गाल में है सो वहीं मैं ने उन से घिन की उन के बुरे कामों के कारण मैं उन को

---

(१) मूल में के अधिकार में। (२) मूल में गहिराई करके बिगड़े।

अपने घर से निकाल दूंगा और उन से फिर प्रीति न रक्खूंगा क्योंकि उन के सब हाकिम बलवा करनेहारे १६ हैं। एप्रैम मारा हुआ है उन की जड़ सूख गई उन में फल न लगेगा और चाहे उन की स्त्रियां जनें भी तौभी मैं उन के जने हुए दुलारों को मार डालूंगा ॥

१७ मेरा परमेश्वर उन को निकम्मा ठहराएगा क्योंकि उन्हों ने उस की नहीं सुनी वे अन्यजातियों के बीच मारे मारे फिरनेहारे होंगे ॥

१०.

इस्राएल एक लहलहाती हुई दाखलता सा है जिस में बहुत से फल भी लगे पर ज्यों ज्यों उस के फल बढ़े त्यों त्यों उस ने अधिक वेदियां बनाईं जैसे जैसे उस की भूमि सुधरती २ आई वैसे वैसे वे सुन्दर लाठें बनाते आये। उन का मन बटा हुआ है अब वे दोषी ठहरेंगे वह उन की वेदियों को तोड़ डालेगा और उन की लाठों को टुकड़े ३ टुकड़े करेगा। अब तो वे कहेंगे कि हमारे कोई राजा नहीं है कारण यह है कि हम ने यहोवा का भय नहीं ४ माना सो राजा हमारे लिये क्या कर सकता। वे बातें ही करके और झूठी किरिया खाकर वाचा बांधते हैं इस कारण खेत की रेघारियों में धतूरे की नाईं दण्ड ५ फूले फलेगा। शोमरोन के निवासी बेतावेन के बछड़े[१] के लिये डरते रहेंगे और उस के लोग उस के लिये विलाप करेंगे और उस के पुजारी जो उस के कारण मगन होते थे सो उस के प्रताप के लिये इस कारण विलाप ६ करेंगे कि वह उस में से उठ गया है। वह यारेब[२] राजा की भेंट ठहरने के लिये अश्शूर देश में पहुंचाया जाएगा एप्रैम लज्जित होगा और इस्राएल भी अपनी युक्ति से ७ लजाएगा। शोमरोन अपने राजा समेत जल के बुलबुले ८ की नाईं मिट जाएगा। और आवेन में के ऊंचे स्थान जो इस्राएल का पाप हैं सो नाश होंगे और उन की वेदियों पर झड़बेरी पेड़ और ऊंटकटारे उगेंगे उस समय लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम को छिपा लो और ९ टीलों से कि हम पर गिर पड़ो। हे इस्राएल तू गिबा के दिनों से पाप करता आया है उस में वे रहे क्या वे १० कुटिल मनुष्यों के संग की लड़ाई में न फंसेंगे। जब मेरी इच्छा होगी तब मैं उन्हें ताड़ना दूंगा और देश देश के लोग उन के विरुद्ध इकट्ठे हो जाएंगे इसलिये कि वे अपने दोनों अधर्म्मों के संग जुते हुए हैं। ११ और एप्रैम सीखी हुई बछिया है जो अन्न दांवने से प्रसन्न होती है पर मैं ने उस की सुन्दर गर्दन पर जूआ रक्खा है मैं एप्रैम पर सवार चढ़ाऊंगा और यहूदा हल और याकूब हेंगा खींचेगा। धर्म्म का बीज बोओ १२ तब करुणा के अनुसार खेत काटने पाओगे अपनी पड़ती भूमि को जोतो देखो अब यहोवा के पीछे हो लेने का समय है जब लों कि वह आकर तुम्हारे ऊपर धर्म्म न बरसाए। तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और १३ अन्याय का खेत काटा और धोखे का फल खाया है और यह इसलिये हुआ कि तुम ने अपने कुव्यवहार पर और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रक्खा था। इस कारण तेरे लोगों में हुल्लड़ उठेगा और तेरे सब गढ़ १४ ऐसे नाश किये जाएंगे जैसा बेतर्बेल नगर युद्ध के समय शल्मन से नाश किया गया और उस समय माता अपने बच्चों समेत पटक दी गई थी। इसी प्रकार का १५ व्यवहार बेतल भी तुम से तुम्हारी अत्यन्त बुराई के कारण करेगा भोर होते इस्राएल का राजा पूरी रीति से मिट जाएगा ॥

११.

जब इस्राएल लड़का था तब मैं ने उस से प्रेम किया और अपने पुत्र को मिस्र से बुला लाया। पर जैसे वे उन को बुलाते थे वैसे २ वे उन के साम्हने से भागे जाते थे वे बाल देवताओं के लिये बलिदान करते और खुदी हुई मूरतों के लिये धूप जलाते गये। और मैं एप्रैम को पांव पांव चलाता था ३ और उन को गोद में लिये फिरता था पर वे न जानते थे कि उन का चंगा करनेहारा मैं हूं। मैं उन को मनुष्य ४ जानकर प्रेम की सी डोरी से खींचता था और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उस के साम्हने आहार रख दे वैसा ही मैं ने उन से किया। वह मिस्र ५ देश में लौटने न पाएगा अश्शूर ही उस का राजा होगा क्योंकि उस ने मेरी ओर फिरने को नकारा है। और तलवार उस के नगरों में चलेगी और उन के बेंड़ों ६ का पूरा नाश करेगी और यह उन की युक्तियों के कारण से होगा। मेरी प्रजा मुझ से फिर जाने में लगी रहती ७ है यद्यपि वे उन को परमप्रधान की ओर बुलाते हैं तौभी उन में से कोई भी मेरी महिमा नहीं करता। हे एप्रैम मैं तुझे क्योंकर छोड़ दूं हे इस्राएल मैं तुझे ८ शत्रु के वश क्योंकर कर दूं मैं तुझे क्योंकर अदमा की नाईं छोड़ दूं और सबोयीम के समान कर दूं मेरा हृदय तो उलट पुलट गया मेरा मन स्नेह के मारे पिघल गया है[३]। मैं अपने कोप को भड़कने न दूंगा और न मैं ९ फिर कर एप्रैम को नाश करूंगा क्योंकि मैं मनुष्य नहीं

(१) मूल में को तू बछियों। (२) अर्थात् झगड़नेहारे।

(३) मूल में मेरे पछतावे एक संग उबले हैं।

ईश्वर हूं मैं तेरे बीच में रहनेहारा पवित्र हूं मैं क्रोध करके
१० न आऊंगा। वे यहोवा के पीछे पीछे चलेंगे वह तो सिंह की नाईं गरजेगा और ये लड़के पच्छिम दिशा से
११ थर्थराते हुए आएंगे। वे मिस्र से चिड़ियों की नाईं और अश्शूर के देश से पिण्डुकी की भांति थर्थराते हुए आएंगे और मैं उन को उन्हीं के घरों में बसा दूंगा यहोवा की यही वाणी है॥

१२ एप्रैम ने मिथ्या से और इस्राएल के घराने ने छल से मुझे घेर रक्खा है और यहूदा अब लों पवित्र और विश्वासयोग्य ईश्वर की ओर चंचल बना रहता है।

१ **१२.** एप्रैम पानी पीटते और पुरवाई का पीछा करता रहता है वह लगातार झूठ और उत्पात को बढ़ाता रहता है वे अश्शूर के साथ वाचा बांधते और मिस्र में तेल भेजते हैं॥

२ यहूदा के साथ भी यहोवा का मुकद्दमा है और वह याकूब को उस के चालचलन के अनुसार दण्ड देगा उस के कामों के अनुसार वह उस को बदला देगा।
३ अपनी माता की कोख ही में उस ने अपने भाई को अड़ङ्गा मारा और बड़ा होकर वह परमेश्वर के साथ
४ लड़ा। अर्थात् वह दूत से लड़ा और जीत भी गया वह रोया और उस से गिड़गिड़ाकर बिनती की बेतेल में भी वह उस को मिला और वहीं हम से उस ने बातें
५ कीं, अर्थात् यहोवा सेनाओं के परमेश्वर ने जिस का
६ स्मरण यहोवा नाम से होता है। इसलिये अपने परमेश्वर की ओर फिर और कृपा और न्याय के काम करता रह और अपने परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह॥

७ वह बनिया है और उस के हाथ छल का तराजू
८ है अंधेर ही करना उस को भाता है। और एप्रैम कहता है कि मैं धनी हो गया मैं ने संपत्ति प्राप्त की है मेरे सब कामों में से किसी में ऐसा अधर्म्म न पाया जाएगा
९ जिस से पाप लगे। मैं यहोवा तो मिस्र देश ही से तेरा परमेश्वर हूं मैं तुझे फिर तम्बुओं में ऐसा बसाऊंगा
१० जैसा नियत पर्व के दिनों में हुआ करता है। मैं नबियों से बातें करता और बार बार दर्शन देता और नबियों के
११ द्वारा दृष्टान्त कहता आया हूं। क्या गिलाद अनर्थकारी नहीं है वे तो पूरे धोखेबाज हो गये हैं गिल्गाल में बैल बलि किये जाते हैं बरन उन की वेदियां उन ढेरों के
१२ समान हैं जो खेत की रेघारियों के पास हों। और याकूब अराम के मैदान में भाग गया था वहां इस्राएल ने स्त्री के लिये सेवा की स्त्री के लिये वह चरवाही करता
१३ था। और एक नबी के द्वारा यहोवा इस्राएल को मिस्र से निकाल ले आया और नबी ही के द्वारा उस की रक्षा
१४ हुई। एप्रैम ने अत्यन्त रिस दिलाई है सो उस का किया हुआ खून उसी के ऊपर बना रहेगा और उस ने अपने प्रभु के नाम में जो बट्टा लगाया है सो उसी को लौटाया जाएगा॥

१३. जब एप्रैम बोलता था तब लोग कांपते थे और वह इस्राएल में बड़ा था पर जब वह बाल के कारण दोषी हो गया
२ तब वह मर गया। और अब वे लोग पाप पर पाप बढ़ाते जाते हैं और अपनी बुद्धि से चांदी ढालकर ऐसी मूरतें बनाई हैं जो सब की सब कारीगरों ही से बनी और उन्हीं के विषय लोग कहते हैं कि जो नरमेध करें
३ वे बछड़ों को चूमें। इस कारण वे भोर के मेघ और तड़के सूख जानेहारी ओस और खलिहान पर से आंधी के मारे उड़ानेहारी भूसी और धूंआरे से निकलते हुए धूएं
४ के समान होंगे। मिस्र देश ही से मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं तू मुझे छोड़ किसी को परमेश्वर करके न जाने
५ क्योंकि मेरे बिना तेरा कोई उद्धारकर्त्ता नहीं है। मैं ने उस समय तुझ पर मन लगाया जब तू जंगल में बरन
६ अत्यन्त सूखे देश में था। जैसे इस्राएली चराये जाते वैसे ही वे तृप्त होते जाते थे और तृप्त होने पर उन का मन घमण्ड से भरता था इस कारण वे मुझ को भूल
७ गये। इस कारण मैं उन के लिये सिंह सा बना हूं मैं
८ चीते की नाईं उन के मार्ग में घात लगाये रहूंगा। मैं बच्चे छिनी हुई रीछनी के समान बनकर उन को मिलूंगा और उन के हृदय की झिल्ली को फाड़ूंगा और वहीं सिंह की नाईं उन को खा डालूंगा बनैला पशु उन को फाड़
९ डालेगा। हे इस्राएल तेरे विनाश का कारण यह है कि
१० तू मुझ अपने सहायक के विरुद्ध है। अब तेरा राजा कहां रहा कि वह तेरे सब नगरों में तुझे बचाए और तेरे न्यायी कहां रहे जिन के विषय तू ने कहा था कि
११ राजा और हाकिम मेरे लिये ठहरा दे। मैं ने कोप में आकर तेरे लिये राजा बनाया और फिर जलजलाहट
१२ में आकर उस को उठा भी दिया। एप्रैम का अधर्म्म
१३ गठा हुआ है उस का पाप संचय किया हुआ है। उस को जननेहारी की सी पीड़ें उठेंगी वह तो निर्बुद्धि लड़का
१४ है जो जनने के समय[१] ठीक से आता नहीं। मैं उस को अधोलोक के वश से छुड़ा लूंगा मैं मृत्यु से उस को छुटकारा दूंगा हे मृत्यु तेरी मारने की शक्ति कहां रही हे अधोलोक तेरी नाश करने की शक्ति कहां रही मैं फिर

(१) मूल में लड़कों के टूट पड़ने के स्थान में।
(२) मूल में तेरी मरियां।

१५ कभी पछताऊंगा नहीं। चाहे वह अपने भाइयों से अधिक फूले फले तौभी पुरवाई उस पर चलेगी और यहोवा की ओर से पवन जंगल से आएगा और उस का कुण्ड सूखेगा और उस का सोता निर्जल हो जाएगा और वह उस की रक्खी हुई सब मनभावनी वस्तुएं लूट १६ ले जाएगा। शोमरोन दोषी ठहरेगा क्योंकि उस ने अपने परमेश्वर से बलवा किया है वे तलवार से मारे जाएंगे और उन के बच्चे पटके जाएंगे और उन की गर्भवती स्त्रियां चीर डाली जाएंगी॥

१४. हे इस्राएल अपने परमेश्वर यहोवा के पास फिर आ क्योंकि तू ने २ अपने अधर्म्म के कारण ठोकर खाई है। बातें सीखकर[१] और यहोवा की ओर फिरकर उस से कहो कि सारा अधर्म्म दूर कर जो भला हो सो ग्रहण कर तब हम धन्यवाद-३ रूपी बलि चढ़ाएंगे[२] अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा हम घोड़ों पर सवार न होंगे और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे कि तुम हमारे ईश्वर हो क्योंकि बपमूए पर तू ही दया करनेहारा है॥

४ उन की हट जाने की बान को दूर करूंगा मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा क्योंकि मेरा कोप उन पर से उतर गया है। ५ मैं इस्राएल के लिये ओस के समान हूंगा सो वह सोसन की नाईं फूले फलेगा और लबानोन की नाईं जड़ फैलाएगा। ६ उस की सोर से फूटकर पौधे निकलेंगे और उस की शोभा जलपाई की सी और उस की सुगन्ध लबानोन की सी होगी। ७ जो उस की छाया में बैठेंगे सो अन्न की नाईं बढ़ेंगे और दाखलता की नाईं फूलें फलेंगे और उस की कीर्त्ति लबानोन के दाखमधु की सी होगी। ८ एप्रैम कहेगा कि मूरतों से अब मेरा और क्या काम मैं उस की सुनकर उस पर दृष्टि बनाये रक्खूंगा मैं हरे सनौवर सा हूं मुझी से तू फल पाया करेगा॥

९ जो बुद्धिमान् हो वही इन बातों को समझेगा जो प्रवीण हो वही इन्हें बूझ सकेगा क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे हैं धर्म्मी तो उन में चलते रहेंगे पर अपराधी उन में ठोकर खाकर गिरेंगे॥

(१) मूल में अपने साथ बातें लो।
(२) मूल में हम बैल अपने होंठ फेर देंगे

योएल।

१. यहोवा का जो वचन पतूएल के पुत्र योएल के पास पहुंचा सो २ यह है। हे पुरनियो सुनो हे इस देश के सब रहनेहारो कान लगाकर सुनो क्या ऐसी बात तुम्हारे दिनों में वा ३ तुम्हारे पुरखाओं के दिनों में कभी हुई है। अपने लड़केबालों से इस का वर्णन करो और वे अपने लड़केबालों से और फिर उन के लड़केबाले आनेवाली पीढ़ी के ४ लोगों से। जो कुछ गाजाम नाम टिड्डी से बचा सो अर्बे नाम टिड्डी ने खा लिया और जो कुछ अर्बे नाम टिड्डी से बचा सो येलेक नाम टिड्डी ने खा लिया और जो कुछ येलेक नाम टिड्डी से बचा सो ५ हासील नाम टिड्डी ने खा लिया है। हे मतवालो जाग उठो और रोओ और हे सब दाखमधु पीनेहारो नये दाखमधु के कारण हाय हाय करो क्योंकि वह तुम ६ को अब न मिलेगा[१]। देखो मेरे देश पर एक जाति ने चढ़ाई की है जो सामर्थी है और उस के लोग अनगिनित हैं उन के दांत सिंह के से और दाढ़ें सिंहनी की सी हैं। ७ उस ने मेरी दाखलता को उजाड़ दिया और मेरे अंजीर के वृक्ष को तोड़ डाला है और उस की सारी छाल छीलकर उसे गिरा दिया है और उस की डालियां [illegible] से सफेद हो गई हैं। ८ युवती अपने पति के लिये कटि में टाट बांधे हुए जैसा विलाप करती है वैसा तुम भी विलाप करो॥

९ यहोवा के भवन में न तो अन्नबलि और न अर्घ आता है उस के टहलुए जो याजक हैं सो विलाप कर रहे हैं। १० खेती मारी गई भूमि विलाप करती है क्योंकि अन्न नाश हो गया नया दाखमधु सूख गया तेल भी ११ सूख गया है। हे किसानो लजाओ हे दाख की बारी के मालियो गेहूं और जव के लिये हाय हाय करो क्योंकि खेती मारी गई है। १२ दाखलता सूख गई और अंजीर का वृक्ष कुम्हला गया है अनार ताड़ सेब वरन मैदान के सारे वृक्ष सूख गये हैं और मनुष्यों का हर्ष जाता

(१) मूल में वह तुम्हारे मुंह से कट गया।

१३ रहा है[१]। हे याजको कटि में टाट बांधकर छाती पीट पीटके रोओ हे वेदी के टहलुओ हाय हाय करो हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ आओ टाट ओढ़े हुए रात बिताओ क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और १४ अर्घ अब नहीं आते। उपवास का दिन ठहराओ[२] महासभा का प्रचार करो पुरनियों को बरन देश के सब रहनेहारों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन १५ में इकट्ठे करके उस की दोहाई दो। उस दिन के कारण हाय हाय यहोवा का दिन तो निकट है वह सर्वशक्तिमान् १६ की ओर से सत्यानाश का दिन होकर आएगा। क्या भोजनवस्तुएं हमारे देखते नाश नहीं हुईं क्या हमारे परमेश्वर के भवन का आनन्द और आह्लाद जाता नहीं १७ रहा। बीज ढेलों के नीचे झुलस गये भण्डार सून पड़े १८ हैं खत्ते गिर पड़े हैं क्योंकि खेती मारी गई। पशु कैसे कहराते हैं झुण्ड के झुण्ड गाय बैल विकल हैं क्योंकि उन के लिये चराई नहीं रही और झुण्ड के झुण्ड भेड़ १९ बकरियां पाप का फल भोग रही हैं। हे यहोवा मैं तेरी दोहाई देता हूं क्योंकि जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं और मैदान के सब वृक्ष लौ से जल २० गये। बरन बनैले पशु भी तेरे लिये हांफते हैं क्योंकि जल के सोते सूख गये और जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं॥

२.

सिय्योन में नरसिंगा फूंको मेरे पवित्र पर्वत पर सांस बांधकर फूंको देश के सब रहनेहारे कांप उठें क्योंकि यहोवा का दिन २ आता है बरन वह निकट ही है। वह अंधकार और तिमिर का दिन है वह बदली का दिन है अंधियारा ऐसा फैलता है जैसा भोर का प्रकाश पहाड़ों पर फैलता है अर्थात् एक ऐसी बड़ी और सामर्थी जाति आएगी जैसी प्राचीन काल से कभी न हुई और न उस के पीछे भी ३ पीढ़ी पीढ़ी में[३] फिर होगी। उस के आगे आगे तो आग भस्म करती जाएगी और उस के पीछे पीछे लौ जलाती है उस के आगे की भूमि तो एदेन की बारी सरीखी पर उस के पीछे की भूमि उजाड़ है और ४ उस से कोई नहीं बच जाता। उन का रूप घोड़ों का सा है और वे सवारी के घोड़ों की नाईं दौड़ते हैं। ५ उन के कूदने का शब्द ऐसा होता है जैसा पहाड़ों की चोटियों पर रथों के चलने का वा खूंटी भस्म करती हुई लौ का वा पांति बांधे हुए बली योद्धाओं[४] का शब्द होता है। उन के साम्हने जाति जाति के लोगों को पीड़ें ६ लगती हैं और सब के मुख मलीन होते हैं। वे शूरवीरों ७ की नाईं दौड़ते और योद्धाओं की भांति शहरपनाह पर चढ़ते और अपने अपने मार्ग पर चलते हैं कोई अपनी पांति से अलग न चलेगा। एक का दूसरे को ८ धक्का नहीं लगता वे अपनी अपनी राह लिये चले आते शस्त्रों का साम्हना करने से भी उन की पांति नहीं टूटती। वे नगर में इधर उधर दौड़ते और शहरपनाह ९ पर चढ़ते हैं और घरों में ऐसे घुसते जैसे चोर खिड़कियों से घुसते हैं। उन के आगे पृथिवी कांप उठती १० और आकाश थरथराता है न तो सूर्य्य और चंद्रमा काले हो जाते हैं और न तारे झलकते[५] हैं। और ११ यहोवा अपने उस दल के आगे अपना शब्द सुनाता है क्योंकि उस की सेना बहुत ही बड़ी है और जो उस का वचन पूरा करनेहारा है सो सामर्थी है और यहोवा का दिन बड़ा और अति भयानक है उस को कौन सह सकेगा॥

तौभी यहोवा की यह वाणी है कि अभी सुनो १२ उपवास के साथ रोते पीटते अपने पूरे मन से मेरी ओर फिरकर मेरे पास आओ। और अपने वस्त्र नहीं अपने १३ मन ही को फाड़कर अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो क्योंकि वह अनुग्रहकारी और दयालु विलम्ब से कोप करनेहारा करुणानिधान और दुःख देकर पछतानेहारा है, क्या जाने वह फिरकर पछताए और ऐसी आशिष दे १४ जाए जिस से तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का अन्नबलि और अर्घ दिया जाए। सिय्योन में नरसिंगा फूंको १५ उपवास का दिन ठहराओ[६] महासभा का प्रचार करो। लोगों को इकट्ठा करो सभा को पवित्र करो पुरनियों को १६ बुला लो बच्चों और दूधपीउवों को भी इकट्ठा करो दुल्हा अपनी कोठरी से और दुल्हिन भी अपने कमरे से निकल आएं। याजक जो यहोवा के टहलुए हैं सो १७ ओसारे और वेदी के बीच में रो रोकर कहें कि हे यहोवा अपनी प्रजा पर तरस खा और अपने निज भाग की नामधराई होने न दे और न अन्यजातियां उस की उपमा देने पाएं जाति जाति के लोग आपस में क्यों कहने पाएं कि उन का परमेश्वर कहां रहा॥

तब यहोवा को अपने देश के विषय जलन हुई १८ और उस ने अपनी प्रजा पर तरस खाया। और यहोवा १९

(१) मूल में लजा गया है। (२) मूल में उपवास पवित्र करो। (३) मूल में पीढ़ी पीढ़ी के बरसों तक।

(४) मूल में बली लोगों। (५) मूल में तारे अपनी झलक समेटेंगे (६) मूल में उपवास पवित्र करो।

ने अपनी प्रजा के लोगों को उत्तर दिया कि सुनो मैं अन्न और नया दाखमधु और टटका तेल तुम्हें देने पर हूं और तुम उन्हें खा पीकर तृप्त होगे और मैं आगे को अन्यजातियों से तुम्हारी नामधराई न होने दूंगा।
२० और मैं उत्तर ओर से आई हुई सेना को तुम्हारे पास से दूर करूंगा और एक निर्जल और उजाड़ देश में निकाल दूंगा उस का आगा तो पूरब के ताल की ओर और उस का पीछा पच्छिम के समुद्र की ओर होगा और उस की दुर्गन्ध फैलेगी और उस की सड़ी गंध फैलेगी
२१ इसलिये कि उस ने बड़े बड़े काम किये हैं। हे देश तू मत डर तू मगन हो और आनन्द कर क्योंकि यहोवा
२२ ने बड़े बड़े काम किये हैं। हे मैदान के पशुओ मत डरो क्योंकि जंगल में चराई उगेगी और वृक्ष फलने लगेंगे अब अंजीर का वृक्ष और दाखलता अपना अपना
२३ बल दिखाने लगेंगी। और हे सिय्योनियो[1] तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो और आनन्द करो क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा अर्थात् बरसात की पहिली वर्षा जितनी चाहिये उतनी[2] देगा और पहिले मास में
२४ की पिछली वर्षा को भी बरसाएगा। सो खलिहान अन्न से भर जाएंगे और रसकुण्ड नये दाखमधु और टटके
२५ तेल से उमड़ेंगे। और जिन बरसों की उपज अर्बे नाम टिड्डियों और येलेक और हासील ने और गाजाम नाम टिड्डियों ने अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिस को मैं ने तुम्हारे बीच भेजा खा ली उस की हानि मैं तुम को भर दूंगा।
२६ तब तुम पेट भर कर खाओगे और तृप्त होगे और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगे जिस ने तुम्हारे लिये आश्चर्य्य के काम किये हैं और मेरी
२७ प्रजा की आशा कभी न टूटेगी। तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल के बीच हूं और मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं है और मेरी प्रजा की आशा कभी न टूटेगी॥

२८ उन बातों के पीछे मैं सारे प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां नबूवत करेंगी और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे और तुम्हारे जवान
२९ दर्शन देखेंगे। बरन दासों और दासियों पर भी मैं उन
३० दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा। और मैं आकाश में और पृथिवी पर चमत्कार अर्थात् लोहू और आग और
३१ धूएं के खंभे दिखाऊंगा। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य्य अंधियारा और चंद्रमा रक्त सा हो जाएगा। उस समय जो कोई यहोवा
३२ से प्रार्थना करे वह छुटकारा पाएगा और यहोवा के कहे के अनुसार सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में जिन भागे हुओं को यहोवा बुलाएगा वे उद्धार पाएंगे॥

३. सुनो

जिन दिनों में और जिस समय मैं यहूदा और यरूशलेमवासियों
२ को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा, उस समय मैं सब जातियों को इकट्ठी करके यहोशापात की तराई में ले जाऊंगा और वहां उन के साथ अपनी प्रजा अर्थात् अपने निज भाग इस्राएल के विषय जिसे उन्हों ने अन्यजातियों में तित्तर बित्तर करके मेरे देश को बांट
३ लिया है मुकद्दमा लड़ूंगा। उन्हों ने तो मेरी प्रजा पर चिट्ठी डाली और एक लड़का वेश्या के बदले में दे दिया
४ और एक लड़की बेचकर दाखमधु पिया है। और हे सोर और सीदोन और पलिशत के सब प्रदेशो तुम को मुझ से क्या काम क्या तुम मुझ को बदला दोगे यदि तुम मुझ को बदला देते हो तो झटपट मैं तुम्हारा दिया
५ हुआ बदला तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा। क्योंकि तुम ने मेरी चांदी सोना ले लिया और मेरी अच्छी और मनभावनी वस्तुएं अपने मन्दिरों में ले जाकर रक्खी हैं,
६ और यहूदियों और यरूशलेमियों को यूनानियों के हाथ इसलिये बेच डाला है कि वे अपने देश से दूर किये
७ जाएं। सो सुनो मैं उन को उस स्थान से जहां के जानेहारों के हाथ तुम ने उन को बेच दिया बुलाने[3] पर हूं और तुम्हारा दिया हुआ बदला तुम्हारे ही सिर पर डाल
८ दूंगा। और मैं तुम्हारे बेटे बेटियों को यहूदियों के हाथ बिकवा दूंगा और वे उन को शबाइयों के हाथ जो दूर देश के रहनेहारे हैं बेच देंगे क्योंकि यहोवा ने यह कहा है॥

९ जाति जाति में यह प्रचारो कि तुम युद्ध की तैयारी करो[4] अपने शूरवीरों को उभारो सब योद्धा निकट
१० आकर लड़ने को चढ़ें। अपने अपने हल की फाल को पीटकर तलवार और अपनी अपनी हंसिया को पीटकर बर्छी बनाओ जो बलहीन हो सो भी कहे कि मैं वीर
११ हूं। हे चारों ओर के जाति जाति के लोगो फुर्ती करके आओ और इकट्ठे हो जाओ॥

हे यहोवा तू भी अपने शूरवीरों को वहां ले जा॥
१२ जाति जाति के लोग उभरकर चढ़ जाएं और यहोशापात की तराई जाएं क्योंकि वहां मैं चारों ओर

(१) मूल में सिय्योन के लड़को। (२) मूल में धर्म्म के लिये। (३) मूल में जगाऊंगा। (४) मूल में युद्ध पवित्र करो।

१३ की सारी जातियों का न्याय करने को बैठूंगा। हंसुआ लगाओ क्योंकि खेत पक गया है आओ दाख रौंदो क्योंकि हौद भर गया रसकुण्ड उमण्डने लगे अर्थात् १४ उन की बुराई बड़ी है। निबटेरे की तराई में भीड़ की भीड़, क्योंकि निबटेरे की तराई में यहोवा का दिन निकट १५ है। न तो सूर्य्य और चन्द्रमा अपना अपना प्रकाश १६ देंगे और न तारे झलकेंगे। और यहोवा सिय्योन से गरजेगा और यरूशलेम से बड़ा शब्द सुनाएगा आकाश और पृथिवी थरथराएंगी पर यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरणस्थान और इस्राएलियों के लिये गढ़ ठहरेगा। १७ सो तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर वास किये रहता है सोई हमारा परमेश्वर है और यरूशलेम पवित्र ठहरेगा और परदेशी फिर उस के होकर न जाने पाएंगे। और उस समय पहाड़ों से १८ नया दाखमधु टपकने और टीलों से दूध बहने लगेगा और यहूदा देश के सब नाले जल से भर जाएंगे और यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा जिस से शित्तीम नाम नाला सींचा जाएगा। यहूदियों पर १९ उपद्रव करने के कारण मिस्र उजाड़ और एदोम उजड़ा हुआ जंगल होगा क्योंकि उन्हों ने उन के देश में निर्दोषी का खून किया था। पर यहूदा सदा लों और यरूशलेम २० पीढ़ी पीढ़ी बनी रहेगी। और उन का जो खून मैं ने २१ निर्दोषों का नहीं ठहराया उसे अब निर्दोष का ठहराऊंगा यहोवा सिय्योन में वास किये रहता है॥

आमोस।

१. आमोस तकोई जो भेड़ बकरियों के चरानेहारों का था उस के ये वचन हैं जो उस ने यहूदा के राजा उज्जिय्याह के और योआश के पुत्र इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनों में भुईंडोल से दो बरस पहिले इस्राएल के विषय दर्शन देखकर कहे॥

२ यहोवा सिय्योन से गरजेगा और यरूशलेम से अपना शब्द सुनाएगा तब चरवाहों की चराइयां विलाप करेंगी और कर्म्मेल की चोटी झुलस जाएगी॥

३ यहोवा यों कहता है कि दमिश्क के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[१] क्योंकि उन्हों ने गिलाद को लोहे के दांवनेवाले यंत्रों से दाया। ४ सो मैं हजाएल के राजभवन में आग लगाऊंगा और उस से बेन्हदद के राजभवन भी ५ भस्म हो जाएंगे। और मैं दमिश्क के बेण्डों को तोड़ डालूंगा और आवेन नाम तराई के रहनेहारों को और एदेन के घर में रहनेहारे राजदण्डधारी को नाश करूंगा और अराम के लोग बंधुए होकर कीर को जाएंगे यहोवा का यही वचन है॥

६ यहोवा यों कहता है कि अज्जा के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[१] क्योंकि वे सब लोगों को बंधुआ करके ले गये कि उन्हें एदोम के वश में कर दें। ७ सो मैं अज्जा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा और उस से उस के भवन भस्म हो जाएंगे। ८ और मैं अशदोद के रहनेहारों को और अस्कलोन के राजदण्डधारी को नाश करूंगा और मैं अपना हाथ एक्रोन के विरुद्ध चलाऊंगा और शेष पलिश्ती लोग नाश होंगे प्रभु यहोवा का यही वचन है॥

९ यहोवा यों कहता है कि सोर के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा क्योंकि उन्हों ने सब लोगों को बंधुआ करके एदोम के वश में कर दिया और भाई की सी वाचा का स्मरण न किया। १० सो मैं सोर की शहरपनाह पर आग लगाऊंगा और उस से उस के भवन भी भस्म हो जाएंगे॥

११ यहोवा यों कहता है कि एदोम के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[१] क्योंकि उस ने अपने भाई को तलवार लिये हुए खदेड़ा और दया कुछ भी न की[२] पर कोप से

(१) मूल में मैं उस को न फेरूंगा।

(१) मूल में मैं उस को न फेरूंगा।
(२) मूल में अपनी दया को बिगाड़ा।

उन को लगातार सदा फाड़ता रहा और वह अपने रोष
१२ को अनन्त काल के लिये बनाये रहा। सो मैं तेमान में आग लगाऊंगा और उस से बोस्रा के भवन भस्म हो जाएंगे ॥

१३ यहोवा यों कहता है कि अम्मोन के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[१] क्योंकि उन्हों ने अपने सिवाने को बढ़ा लेने के लिये गिलाद की गर्भिणी स्त्रियों का पेट
१४ चीर डाला। सो मैं रब्बा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा और उस से उस के भवन भी भस्म हो जाएंगे उस युद्ध के दिन में ललकार होगी वह आंधी
१५ बरन बवण्डर का दिन होगा। और उन का राजा अपने हाकिमों समेत बन्धुआई में जाएगा यहोवा का यही वचन है ॥

२. यहोवा यों कहता है कि मोआब के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[१] क्योंकि उस ने एदोम के राजा की हड्डियों को जलाकर चूना कर दिया।
२ सो मैं मोआब में आग लगाऊंगा और उस से करिय्योत के भवन भस्म हो जाएंगे और मोआब हुल्लड़ और ललकार और नरसिंगे के शब्द होते होते मर जाएगा।
३ और मैं उस के बीच में से न्यायी को नाश करूंगा और साथ ही साथ उस के सारे हाकिमों को भी घात करूंगा यहोवा का यही वचन है ॥

४ यहोवा यों कहता है कि यहूदा के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा क्योंकि उन्हों ने यहोवा की व्यवस्था को तुच्छ जाना और मेरी विधियों को नहीं माना और अपने झूठों के कारण जिन के पीछे उन के पुरखा चलते थे वे भी भटक गये
५ हैं। सो मैं यहूदा में आग लगाऊंगा और उस से यरूशलेम के भवन भस्म हो जाएंगे ॥

६ यहोवा यों कहता है कि इस्राएल के तीन क्या बरन चार अपराधों के कारण मैं उस का दण्ड न छोड़ूंगा[१] क्योंकि उन्हों ने निर्दोष को रुपए पर और दरिद्र
७ को एक जोड़ी जूतियों के लिये बेच डाला है। वे कंगालों के सिर पर की धूलि के लिये हांफते और नम्र लोगों को मार्ग से हटा देते हैं और बाप बेटा दोनों एक ही कुमारी के पास जाते हैं जिस से मेरे पवित्र नाम
८ को अपवित्र ठहराएं। और वे हर एक वेदी के पास बन्धक के वस्त्रों पर सोते हैं और जुरमाना लगाए हुओं का दाखमधु अपने देवता के घर में पी लेते हैं। मैं ने
९ उन के साम्हने से एमोरियों को नाश किया था जिन की लम्बाई देवदारों की सी और बल बांज वृक्षों का सा था तौभी मैं ने ऊपर से उस के फल और नीचे से उस की जड़ नाश की।
१० फिर मैं तुम को मिस्र देश से निकाल लाया और जंगल में चालीस बरस लों लिये फिरता रहा जिस से तुम एमोरियों के देश के अधिकारी हो जाओ।
११ और मैं ने तुम्हारे पुत्रों में से नबी होने और तुम्हारे जवानों में से नाज़ीर होने के लिये ठहराये हैं हे इस्राएलियो यहोवा की यह वाणी है कि क्या यह सब सच नहीं है।
१२ पर तुम ने नाज़ीरों को दाखमधु पिलाया और नबियों को आज्ञा दी कि नबूवत मत करो।
१३ सुनो मैं तुम को ऐसा दबाऊंगा जैसी पूलों से भरी हुई गाड़ी नीचे को दबाई जाए[२]।
१४ सो वेग दौड़नेहारे को भाग जाने का स्थान न मिलेगा और सामर्थी का सामर्थ्य कुछ काम न देगा और पराक्रमी अपना प्राण बचा न सकेगा।
१५ और धनुर्धारी खड़ा न रह सकेगा और फुर्ती से दौड़नेहारा न बचेगा और न सवार भी अपना प्राण बचा सकेगा।
१६ और शूरवीरों में जो अधिक धीर हो सो भी उस दिन नंगा होकर भाग जाएगा यहोवा की यही वाणी है ॥

३. हे इस्राएलियो यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विषय अर्थात् उस सारे कुल के विषय कहा है जिस को मैं मिस्र देश से लाया।
२ पृथिवी के सारे कुलों में से मैं ने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है इस कारण मैं तुम्हारे सारे अधर्म्म के कामों का दण्ड दूंगा ॥

३ दो मनुष्य यदि आपस में सम्मति न करें तो क्या एक संग चल सकेंगे।
४ क्या सिंह बिना अहेर पाये बन में गरजेंगे क्या जवान सिंह बिना कुछ पकड़े अपनी मांद में से गुर्राएगा।
५ क्या चिड़िया फंदा बिना लगाये फंसेगी क्या बिना कुछ फंसे फंदा भूमि पर से उचकेगा।
६ क्या किसी नगर में नरसिंगा फूंकने पर लोग न थरथराएंगे क्या यहोवा के बिना डाले किसी नगर में कोई विपत्ति पड़ेगी।
७ इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास नबियों पर अपना मर्म बिना प्रगट किये कुछ भी न करेगा।
८ सिंह गरजा कौन न डरेगा प्रभु यहोवा बोला कौन नबूवत न करेगा ॥

---

(१) मूल में मैं उस को न फेरूंगा।

(२) वा तुम्हारे नीचे ऐसा दबा हूं जैसे गाड़ी जो पूलों से भरी हो दबी रहती है।

९ अशदोद के भवन और मिस्र देश के राजभवन पर प्रचार करके कहो कि शोमरोन के पहाड़ों पर इकट्ठे होकर देखो कि उस में क्या ही बड़ा कोलाहल और १० उस के बीच क्या ही अंधेर के काम हो रहे हैं। और यहोवा की यह वाणी है कि जो लोग अपने भवनों में उपद्रव और डकैती का धन बटोर रखते हैं सो सीधाई का काम करना जानते ही नहीं ॥

११ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है कि देश का घेरनेवाला एक शत्रु होगा और वह तेरा बल तोड़ेगा १२ और तेरे भवन लूटे जाएंगे। यहोवा यों कहता है कि जिस भांति चरवाहा सिंह के मुंह से दो टांग व कान का एक टुकड़ा छुड़ाए वैसे ही इस्राएली लोग जो शोमरोन में बिछौने के एक कोने व रेशमी गद्दी पर १३ बैठा करते हैं छुड़ाये जाएंगे। सेनाओं के परमेश्वर प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि सुनो और याकूब के घराने १४ से यह बात चिताकर कहो कि, जिस समय मैं इस्राएल को उस के अपराधों का दण्ड दूंगा उसी समय मैं बेतेल की वेदियों का भी दण्ड दूंगा और वेदी के सींग टूटकर १५ भूमि पर गिर पड़ेंगे। और मैं जाड़े का भवन और धूपकाल का भवन दोनों गिराऊंगा और हाथीदांत के बने भवन भी नाश होंगे और बड़े बड़े घर नाश हो जाएंगे यहोवा की यही वाणी है ॥

४. हे बाशान की गायो यह वचन सुनो तुम जो शोमरोन पर्वत पर हो और कंगालों पर अंधेर करती और दरिद्रों को कुचल डालती हो और अपने अपने पति से कहती हो कि ला २ दे हम पीएं। प्रभु यहोवा अपनी पवित्रता की किरिया खाकर कहता है कि सुनो तुम पर ऐसे दिन आनेहारे हैं कि तुम कटियाओं से और तुम्हारे संतान मछली की ३ बंसियों से खींच लिये जाएंगे। और तुम बाड़े के नाकों से होकर सीधी निकल जाओगी और हर्म्मोन में डाली जाओगी यहोवा की यही वाणी है ॥

४ बेतेल में आकर अपराध करो गिल्गाल में आकर बहुत से अपराध करो और अपने चढ़ावे भोर भोर को और अपने दशमांश तीसरे दिन में बराबर ले ५ आया करो, और धन्यवादबलि खमीर मिलाकर चढ़ाओ और अपने स्वेच्छाबलियों की चर्चा चलाकर उन का प्रचार करो क्योंकि हे इस्राएलियो ऐसा करना तुम को ६ भावता है प्रभु यहोवा की यही वाणी है। मैं ने तो तुम्हारे सब नगरों में दांत की सफाई करा दी और तुम्हारे सब स्थानों में रोटी की घटी की है तौभी तुम मेरी ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है। ७ और जब कटनी के तीन महीने रह गये तब मैं ने तुम्हारे लिये वर्षा न की वा मैं ने एक नगर में जल बरसाकर दूसरे में न बरसाया वा एक खेत में जल बरसा और ८ दूसरा खेत जिस में न बरसा सो सूख गया। सो दो तीन नगरों के लोग पानी पीने को मारे मारे फिरते हुए एक ही नगर में आये पर तृप्त न हुए तौभी तुम मेरी ९ ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है। मैं ने तुम को लूह और गेरुई से मारा है और जब तुम्हारे बागीचे और दाख की बारियां और अंजीर और जलपाई के वृक्ष बहुत हो गये तब टिड्डियां उन्हें खा गईं तौभी तुम मेरी १० ओर फिर के न आये यहोवा की यही वाणी है। मैं ने तुम्हारे बीच मिस्र देश की सी मरी फैलाई और मैं ने तुम्हारे घोड़ों को छिनवाकर तुम्हारे जवानों को तलवार से घात करा दिया और तुम्हारी छावनी की दुर्गन्ध तुम्हारे पास पहुंचाई तौभी तुम मेरी ओर ११ फिरके न आये यहोवा की यही वाणी है। मैं ने तुम में से कई एक ऐसे उलट दिये जैसे परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को उलट दिया था और तुम आग से निकाली हुई लुकटी के समान ठहरे तौभी तुम मेरी ओर फिरके न आये यहोवा की यही वाणी १२ है। इस कारण हे इस्राएल मैं तुझ से यह काम करूंगा और मैं जो तुझ से यह काम करूंगा सो हे इस्राएल अपने परमेश्वर के साम्हने आने के लिये तैयार हो १३ रह। देख पहाड़ों का बनानेहारा और पवन का सिरजनेहारा और मनुष्य को उस के मन का विचार बतानेहारा और भोर को अन्धकार करनेहारा और पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चलनेहारा जो है उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है ॥

५. हे इस्राएल के घराने इस विलाप के गीत के वचन सुनो जो मैं तुम्हारे २ विषय कहता हूं कि, इस्राएल की कुमारी कन्या गिर गई और फिर उठ न सकेगी वह अपनी ही भूमि पर पटक दी गई है और उस का उठानेहारा कोई नहीं। ३ क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है कि जिस नगर से हजार निकलते थे उस में इस्राएल के घराने के सौ ही बचे रहेंगे और जिस से सौ निकलते थे उस में दस ४ बचे रहेंगे। यहोवा इस्राएल के घराने से यों कहता है ५ कि मेरी खोज में लगो तब जीते रहोगे। और बेतेल की खोज में न लगो न गिल्गाल में प्रवेश करो न बेर्शेबा को जाओ क्योंकि गिल्गाल निश्चय बंधुआई में ६ जाएगा और बेतेल सूना पड़ेगा। यहोवा की खोज

करो तब जीते रहोगे नहीं तो वह यूसुफ के घराने पर आग की नाईं भड़केगा और वह उसे भस्म करेगी और बेतेल में उस का कोई बुझानेहारा न होगा । ७ हे न्याय के बिगाड़नेहारो[1] और धर्म्म को मिट्टी में मिलानेहारो, ८ जो कचपचिया और मृगशिरा का बनानेहारा है और घोर अंधकार को दूर करके भोर का प्रकाश करता और दिन को अंधकार करके रात बना देता और समुद्र का जल स्थल के ऊपर बहा देता है उस का नाम यहोवा है, ९ वह तुरन्त ही बलवन्त को विनाश कर देता और गढ़ का भी सत्यानाश करता है । १० वे उस से बैर रखते हैं जो सभा में[2] उलाहना देता है और खरी बात बोलनेहारे से घिन करते हैं । ११ तुम जो कंगालों को लताड़ा करते और भेंट कहकर उन से अन्न हर लेते हो इसलिये जो घर तुम ने गढ़े हुए पत्थरों के बनाये हैं उन में रहने न पाओगे और जो मनभावनी दाख की बारियां तुम ने लगाई हैं उन का दाखमधु पीने न पाओगे । १२ क्योंकि मैं तो जानता हूं कि तुम्हारे पाप भारी हैं तुम धर्म्मी को सताते और घूस लेते और फाटक में दरिद्रों का न्याय बिगाड़ते हो । १३ समय तो बुरा है इस कारण जो बुद्धिमान् हो सो ऐसे समय चुपका रहे । १४ हे लोगो बुराई को नहीं भलाई को पूछो कि तुम जीते रहो और तुम्हारा यह कहना सच ठहरे कि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा हमारे संग है । १५ बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रक्खो और फाटक में न्याय को स्थिर करो क्या जाने सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यूसुफ के बचे हुओं पर अनुग्रह करे । १६ इस कारण सेनाओं का परमेश्वर प्रभु यहोवा यों कहता है कि सब चौकों में रोना पीटना होगा और सब सड़कों में लोग हाय हाय करेंगे और वे किसान विलाप करने को और जो लोग विलाप करने में निपुण हैं सो रोने पीटने को बुलाये जाएंगे । १७ और सब दाख की बारियों में रोना पीटना होगा क्योंकि यहोवा यों कहता है कि मैं तुम्हारे बीच से होकर जाऊंगा । १८ हाय तुम पर जो यहोवा के दिन की अभिलाषा करते हो यहोवा के दिन से तुम्हारा क्या लाभ होगा वह तो उजियाले का नहीं अंधियारे का दिन होगा । १९ जैसा कोई सिंह से भागे और उसे भालू मिले वा घर में आकर भीत पर हाथ टेके और सांप उस को डसे । २० क्या यह सच नहीं है कि यहोवा का दिन उजियाले का नहीं अंधियारे ही का होगा बरन ऐसे घोर अंधकार का जिस में कुछ भी चमक न हो ॥

२१ मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता और उन्हें निकम्मा जानता हूं और तुम्हारी महासभाओं से प्रसन्न न हूंगा[3] । २२ चाहे तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ पर मैं प्रसन्न न हूंगा और न तुम्हारे पोसे हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर ताकूंगा । २३ अपने गीतों का कोलाहल मुझ से दूर करो तुम्हारी सारङ्गियों का सुर मैं न सुनूंगा । २४ न्याय तो नदी की नाईं और धर्म्म महानद की नाईं बहता जाए । २५ हे इस्राएल के घराने तुम जंगल में चालीस बरस लों पशुबलि और अन्नबलि क्या मुझी को चढ़ाते रहे । २६ नहीं तुम तो अपने राजा का तम्बू और अपनी मूरतों की चरणपीठ और अपने देवता का तारा लिये फिरते रहे । २७ इस कारण मैं तुम को दमिश्क के उधर बन्धुआई में कर दूंगा सेनाओं के परमेश्वर नाम यहोवा का यही वचन है ॥

६. हाय उन पर जो सिय्योन में सुख से रहते और उन पर जो शोमरोन के पर्वत पर निश्चिन्त रहते हैं और श्रेष्ठ जाति में प्रसिद्ध हैं जिन के पास इस्राएल का घराना आता है । २ कलने नगर को जाकर देखो और वहां से हमात नाम बड़े नगर को चलो फिर पलिश्तियों के गत नगर को जाओ क्या वे इन राज्यों से उत्तम हैं वा उन का देश तुम्हारे देश से कुछ बड़ा है । ३ तुम तो बुरे दिन की चिन्ता को दूर कर देते और उपद्रव की गद्दी को निकट ले आते हो । ४ तुम हाथी दांत के पलङ्गों पर सोते और अपने अपने बिछौने पर पांव फैलाये सोते हो और भेड़ बकरियों में से मेम्ने और गोशालाओं में से बछड़े खाते हो, ५ और सारङ्गी के साथ वाहियात गीत गाते और दाऊद की नाईं भांति भांति के बाजे बुद्धि से निकालते हो, ६ और कटोरों में से दाखमधु पीते और उत्तम उत्तम तेल लगाते हो पर वे यूसुफियों पर आनेहारी विपत्ति का हाल सुनकर शोकित नहीं होते । ७ इस कारण वे अब बन्धुआई में पहिले हो जाएंगे और जो पांव फैलाये सोते थे उन की धूम जाती रहेगी । ८ सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि प्रभु यहोवा ने अपनी ही किरिया खाकर कहा है कि जिस पर याकूब घमण्ड करता है उस से मैं घिन और उस के राजभवनों से बैर रखता हूं और मैं इस नगर को उस सब समेत जो उस में है शत्रु के वश कर दूंगा । ९ और चाहे किसी घर में दस पुरुष बचे रहें तौभी वे मर

(१) मूल में न्याय को नागदौना बनाने । (२) मूल में फाटक ।

(३) मूल में मैं न सूंघूंगा ।

१० जाएंगे । और जब किसी का चचा जो उस का फूंकनेहारा होगा उस की हड्डियों को घर से निकालने के लिये उठाएगा और जो घर के कोने में पड़ा हो उस से कहेगा कि क्या तेरे पास और कोई है और वह कहेगा कि कोई नहीं तब वह कहेगा कि चुप रह क्योंकि यहोवा ११ का नाम लेना नहीं चाहिये । क्योंकि यहोवा की आज्ञा से बड़े घर में छेद और छोटे घर में दरार होगी । १२ क्या घोड़े चटान पर दौड़ें क्या कोई ऐसे स्थान में बैलों से जोते कि तुम लोगों ने न्याय को विष से और धर्म्म के फल को कड़वे फल से बदल डाला है । १३ तुम ऐसी वस्तु के कारण जो निरी माया है आनन्द करते हो और कहते हो कि क्या हम अपने ही यत्न से १४ सामर्थी नहीं हो गये । इस कारण सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि हे इस्राएल के घराने देख मैं तुम्हारे विरुद्ध एक ऐसी जाति खड़ी करूंगा जो हमात की घाटी से लेकर अराबा की नदी लों तुम को संकट में डालेगी ॥

७. प्रभु

यहोवा ने मुझे यों दिखाया और क्या देखता हूं कि वह पिछली घास के उगने के पहिले दिनों में टिड्डियां बना रहा है और वह राजा की कटनी के पीछे ही की पिछली २ घास थी । जब वे घास खा चुकीं तब मैं ने कहा हे प्रभु यहोवा क्षमा कर नहीं तो याकूब किस रीति ठहर ३ सकेगा वह तो निर्बल[१] है । इस के विषय यहोवा पछताया और कहा कि ऐसी बात न होगी ॥

४ प्रभु यहोवा ने मुझे यों दिखाया और क्या देखता हूं कि प्रभु यहोवा ने आग के द्वारा मुकद्दमा लड़ने को पुकारा सो आग से महासागर सूख गया ५ और देश भी भस्म हुआ चाहता था । तब मैं ने कहा हे प्रभु यहोवा रह जा नहीं तो याकूब किस रीति ठहर ६ सकेगा वह तो निर्बल[१] है । इस के विषय भी यहोवा पछताया और प्रभु यहोवा ने कहा कि ऐसी बात न होगी ॥

७ उस ने मुझे यों भी दिखाया कि प्रभु साहुल लगाकर बनाई हुई किसी भीत पर खड़ा है और उस ८ के हाथ में साहुल है । और यहोवा ने मुझ से कहा हे आमोस तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा एक साहुल तब प्रभु ने कहा सुन मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बीच ९ में साहुल लगाऊंगा मैं अब उन को न छोड़ूंगा । और इसहाक के ऊंचे स्थान उजाड़ और इस्राएल के पवित्रस्थान सुनसान हो जाएंगे और मैं यारोबाम के घराने पर तलवार खींचे हुए चढ़ाई करूंगा ॥

१० तब बेतेल के याजक अमस्याह ने इस्राएल के राजा यारोबाम के पास कहला भेजा कि आमोस ने इस्राएल के घराने के बीच में तुझ से राजद्रोह की गोष्ठी की है उस के सारे वचनों को देश नहीं सह ११ सकता । आमोस तो यों कहता है कि यारोबाम तलवार से मारा जाएगा और इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय बंधुआई में जाएगा । १२ अमस्याह ने आमोस से कहा हे दर्शी यहां से निकलकर यहूदा देश में भाग जा और वहीं रोटी खाया कर और वहीं नबूवत किया १३ कर । पर बेतेल में फिर कभी नबूवत न करना क्योंकि यह राजा का पवित्रस्थान और राजपुरी है । १४ आमोस ने उत्तर देकर अमस्याह से कहा मैं न तो नबी था और न नबी का बेटा मैं गाय बैल का चरवाहा और १५ गूलर के वृक्षों का छांटनेहारा था । और यहोवा ने मुझे भेड़ बकरियों के पीछे पीछे फिरने से बुलाकर कहा जा १६ मेरी प्रजा इस्राएल से नबूवत कर । सो अब तू यहोवा का वचन सुन तू कहता है कि इस्राएल के विरुद्ध नबूवत मत कर और इसहाक के घराने के विरुद्ध बार १७ बार वचन मत सुना[२] । इस कारण यहोवा यों कहता है कि तेरी स्त्री नगर में वेश्या हो जाएगी और तेरे बेटे बेटियां तलवार से मारी जाएंगी और तेरी भूमि डोरी डालकर बांट ली जाएगी और तू आप अशुद्ध देश में मरेगा और इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय बंधुआई में जाएगा ॥

८. प्रभु

यहोवा ने मुझ को यों दिखाया कि धूप काल के फलों[३] से भरी हुई २ एक टोकरी है । और उस ने कहा हे आमोस तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा धूपकाल के फलों[४] से भरी एक टोकरी । यहोवा ने मुझ से कहा मेरी प्रजा इस्राएल का अन्त[४] आ गया है मैं अब उस को और न ३ छोड़ूंगा । और प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि उस दिन राजमन्दिर में के गीत हाहाकार[५] से बदल जाएंगे और लोथों का बड़ा ढेर लगेगा और सब स्थानों में वे ४ चुपचाप फेंक दी जाएंगी । यह सुनो तुम जो दरिद्रों को निगलना और देश में के नम्र लोगों को नाश करना ५ चाहते हो, जो कहते हो नया चांद कब बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें और विश्रामदिन कब बीतेगा कि हम

(१) मूल में छोटा ।

(२) मूल में विरुद्ध मत टपका । (३) मूल में केसे । (४) मूल में केस । (५) मूल में हाहाकार करेंगे ।

अन्न के खत्ते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल को
६ भारी कर दें और छल से डण्डी मारें, और कंगालों को रुपया देकर और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियां देकर मोल
७ लें और निकम्मा अन्न बेचें। यहोवा जिस पर याकूब को घमण्ड करना योग्य है वही अपनी किरिया खाकर कहता है कि मैं तुम्हारे किसी काम को कभी न भूलूंगा।
८ क्या इस कारण भूमि न कांपेगी और क्या उस पर के सब रहनेहारे विलाप न करेंगे यह देश सब का सब मिस्र की नील नदी के समान होगा जो बढ़ती फिर लहरें
९ मारती और घट जाती है। प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं सूर्य्य को दोपहर के समय अस्त करूंगा और इस देश को दिन दुपहरी अंधियारा कर
१० दूंगा। और मैं तुम्हारे पर्वों के उत्सव को दूर करके विलाप कराऊंगा और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके विलाप के गीत गवाऊंगा और मैं तुम सब की कटि में टाट बंधाऊंगा और तुम सब के सिरों को मुंड़ाऊंगा और ऐसा विलाप कराऊंगा जैसा एकलौते के लिये होता है और इस का अन्त कठिन दुःख के दिन का सा होगा[१]।
११ प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि सुनो ऐसे दिन आते हैं कि मैं इस देश में महंगी करूंगा उस में न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी पर यहोवा के वचनों
१२ के सुनने ही की भूख प्यास होगी। और लोग यहोवा के वचन की खोज में समुद्र से समुद्र लों और उत्तर से पूरब
१३ लों मारे मारे तो फिरेंगे पर उस को न पाएंगे। उस समय सुन्दर कुमारियां और जवान पुरुष दोनों प्यास के मारे
१४ मूर्छा खाएंगे। जो लोग शोमरोन के पापमूल देवता की किरिया खाते हैं और जो कहते हैं कि दान के[२] देवता के जीवन की सों और बेर्शेबा के पंथ की सों वे सब गिर पड़ेंगे और फिर न उठेंगे॥

९. फिर

मैं ने प्रभु को वेदी के ऊपर खड़ा देखा और उस ने कहा खंभे की कंगनियों पर मार जिस से डेवढ़ियां हिलें और उन को सब लोगों के सिर पर गिराकर टुकड़े टुकड़े कर और जो नाश होने से बचें उन्हें मैं तलवार से घात करूंगा यहां लों कि उन में से जो भागे वह भाग न निकलेगा और जो अपने को बचाए सो बचने न
२ पाएगा। क्योंकि चाहे वे खोदकर अधोलोक में उतर जाएं तो वहां से मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें लाऊंगा और चाहे वे आकाश पर चढ़ जाएं तो वहां से मैं उन्हें

[१] मूल में कडुवा दिन। [२] मूल में हे दान तेरे।

उतार लाऊंगा। और चाहे वे कर्म्मेल में छिप जाएं पर ३
वहां भी मैं उन्हें ढूंढ़ ढूंढ़ कर पकड़ लूंगा और चाहे वे समुद्र की थाह में मेरी दृष्टि से ओट हों पर वहां मैं सर्प को उन्हें डसने की आज्ञा दूंगा। और चाहे शत्रु ४
उन्हें हांक हांककर बंधुआई में ले जाएं पर वहां भी मैं आज्ञा देकर तलवार से उन्हें घात कराऊंगा और मैं उन पर भलाई करने के लिये नहीं बुराई ही करने के लिये दृष्टि रक्खूंगा। और सेनाओं के प्रभु यहोवा के ५
स्पर्श करने से पृथिवी पिघलती है और उस के सारे रहनेहारे विलाप करते हैं और वह सब की सब मिस्र की नदी के समान हो जाती है जो बढ़ती फिर लहरें मारती और घट जाती है। जो आकाश में अपनी कोठ- ६
रियां बनाता और अपने आकाशमण्डल की नेव पृथिवी पर डालता और समुद्र का जल धरती पर बहा देता है उसी का नाम यहोवा है। हे इस्राएलियो यहोवा ७
की यह वाणी है कि क्या तुम मेरे लेखे कूशियों के बराबर नहीं हो क्या मैं इस्राएल को मिस्र देश से नहीं लाया और पलिश्तियों को कप्तोर से और अरामियों को कीर से नहीं लाया। सुनो प्रभु यहोवा की दृष्टि इस पाप- ८
मय राज्य पर लगी है और मैं इस को धरती पर से नाश करूंगा तौभी पूरी रीति से मैं याकूब के घराने को नाश न करूंगा यहोवा की यही वाणी है। मेरी आज्ञा से ९
इस्राएल का घराना सब जातियों में ऐसा चाला जाएगा जैसा अन्न चलनी में चाला जाता है पर उस में का एक भी पुष्ट दाना भूमि पर न गिरेगा। मेरी प्रजा में के सब १०
पापी जो कहते हैं कि वह विपत्ति हम पर न पड़ेगी और न हमें घेरेगी सो तो तलवार से मारे जाएंगे॥

उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को ११
खड़ा करूंगा और उस के बाड़े के नाकों को सुधारूंगा और उस के खण्डहरों को फेर बनाऊंगा और प्राचीन काल में जैसा वह था वैसा ही उस को बना दूंगा,
जिस से वे बचे हुए एदोमियों वरन सब अन्यजातियों १२
को जो मेरी कहावती हैं अपने अधिकार में लें यहोवा जो यह काम पूरा करता है उस की यही वाणी है।
यहोवा की यह भी वाणी है कि सुनो ऐसे दिन आते १३
हैं कि हल जोतते जोतते लवना आरंभ होगा और दाख रौंदते रौंदते बीज बोना आरम्भ होगा[३] और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा और सब पहाड़ियां पिघल जाएंगी। और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बंधुओं को १४

[३] मूल में हल जोतनेहारा लवनेहारे को और दाख रौंदनेहारा बीज बोनेहारे को जा लेगा।

फेर ले आऊंगा और वे उजड़े हुए नगरों को सुधारकर बसेंगे और दाख की बारियां लगाकर दाखमधु पीएंगे १५ और बगीचे लगाकर फल खाएंगे । और मैं उन्हें उन्हीं की भूमि में रोपूंगा और वे अपनी भूमि में से जो मैं ने उन्हें दी है फिर उखाड़े न जाएंगे तेरे परमेश्वर यहोवा का यही वचन है ॥

ओबद्याह ।

ओबद्याह का दर्शन । प्रभु यहोवा ने एदोम के विषय यों कहा कि हम लोगों ने यहोवा की ओर से समाचार सुना है और एक दूत अन्यजातियों में यह कहने को भेजा गया है कि उठो हम उस से लड़ने २ को उठें । मैं तुझे जातियों में छोटा करता हूं तू ३ बहुत तुच्छ गिना जाएगा । हे ढांग की दरारों में बसनेवाले हे ऊंचे स्थान में रहनेहारे तेरे अभिमान ने तुझे धोखा दिया है तू तो मन में कहता है ४ कि कौन मुझे भूमि पर उतार देगा । पर चाहे तू उकाब की नाईं ऊंचा उड़ता हो वरन तारागण के बीच अपना घोंसला बनाये हो तौभी मैं तुझे वहां से ५ नीचे गिराऊंगा यहोवा की यही वाणी है । यदि चोर डाकू रात को तेरे पास आता (हाय तू कैसे मिटा दिया गया है) तो क्या वे चुराए हुए धन से तृप्त होकर चले न जाते और यदि दाख के तोड़नेहारे तेरे पास आते तो ६ क्या वे कहीं कहीं दाख न छोड़ जाते । पर एसाव का जो कुछ है वह कैसा खोजकर निकाला गया है उस का गुप्त धन कैसा पता लगा लगाकर निकाला गया है । ७ जितने तुझ से वाचा बांधे थे सिवाने लों उन सभों ने तुझ को पहुंचाया दिया है जो लोग तुझ से मेल रखते थे वे तुझ को धोखा देकर तुझ पर प्रबल हुए हैं और जो तेरी रोटी खाते हैं वे तेरे लिये फन्दा लगाते हैं ८ उस में कुछ समझ नहीं है, यहोवा की यह वाणी है कि क्या मैं उस समय एदोम में से बुद्धिमानों को और एसाव के पहाड़ में से चतुराई को नाश न करूंगा । ९ और हे तेमान तेरे शूरवीर का मन कच्चा हो जाएगा और यों एसाव के पहाड़ पर का हर एक पुरुष घात होने से १० नाश हो जाएगा । हे एसाव उस उपद्रव के कारण जो तू ने अपने भाई याकूब पर किया तू लज्जा से ढंपेगा और ११ सदा के लिये नाश हो जाएगा । जिस दिन परदेशी लोग उस की धन संपत्ति छीनकर ले गये और बिराने लोगों ने उस के फाटकों से घुसकर यरूशलेम पर चिट्ठी डाली और उस दिन तू भी उन में से एक सा हुआ । पर तू १२ अपने भाई के दिन में अर्थात् उस के विपत्ति के दिन में उस की ओर देखता न रहना और यहूदियों के नाश होने के दिन उन के ऊपर आनन्द न करना और उन के संकट के दिन बड़ा बोल न बोलना । मेरी प्रजा की १३ विपत्ति के दिन तू उस के फाटक से न घुसना और उस की विपत्ति के दिन उस की दुर्दशा को देखता न रहना और उस की विपत्ति के दिन उस की धन संपत्ति पर हाथ न लगाना । और तिरमुहाने पर उस के भागनेहारों को १४ मार डालने के लिये खड़ा न होना और उस के संकट के दिन उस के बचे हुओं को पकड़ा न देना । क्योंकि १५ सारी अन्यजातियों पर यहोवा के दिन का आना निकट है जैसा तू ने किया है वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा । जिस १६ प्रकार तू ने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया उसी प्रकार से सारी अन्यजातियां लगातार पीती रहेंगी वरन सुड़क सुड़ककर पीएंगी और ऐसी हो जाएंगी मानों कभी हुई ही नहीं । उस समय सिय्योन पर्वत पर बचे हुए लोग १७ रहेंगे और वह पवित्रस्थान ठहरेगा और याकूब का घराना अपने निज भागों का अधिकारी होगा । और १८ याकूब का घराना आग और यूसुफ का घराना लौ और एसाव का घराना खूंटी बनेगा और वे उन में आग लगाकर उन को भस्म करेंगे और एसाव के घराने का कोई न बचेगा क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा कहा है । और १९ दक्खिन देश के लोग एसाव के पहाड़ के अधिकारी हो जाएंगे और नीचे के देश के लोग पलिश्तियों के अधिकारी होंगे और यहूदी एप्रैम और शोमरोन के दिहात को अपने भाग में लेंगे और बिन्यामीन गिलाद का अधिकारी होगा । और इस्राएलियों के उस दल में से जो २०

लोग बंधुआई में जाकर कनानियों के बीच सारपत लों रहते हैं और यरूशलेमियों में से जो लोग बंधुआई में जाकर सपाराद में रहते हैं सो सब दक्खिन देश के नगरों के अधिकारी हो जाएंगे। और उद्धार करनेहारे २१ एसाव के पहाड़ का न्याय करने के लिये सिय्योन पर्वत पर चढ़ आएंगे और राज्य यहोवा ही का हो जाएगा॥

योना।

---

१. **यहोवा** का यह वचन अमित्तै के पुत्र योना के पास पहुंचा कि। २ उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा और उस के विरुद्ध प्रचार कर क्योंकि उस की बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई ३ है[१] पर योना यहोवा के सन्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिये उठा और यापो नगर को जाकर तर्शीश जानेहारा एक जहाज पाया और भाड़ा दे उस पर चढ़[२] गया कि उन के साथ होकर यहोवा के सन्मुख से तर्शीश ४ को चला जाए। तब यहोवा ने समुद्र में प्रचंड बयार चलाई सो समुद्र में बड़ी आंधी उठी यहां लों कि जहाज ५ टूटा चाहता था। तब मल्लाह लोग डरकर अपने अपने देवता की दोहाई देने लगे और जहाज में जो व्योपार की सामग्री थी उसे समुद्र में फेंकने लगे जिस से उन को कुछ कल हो जाए। योना जहाज के निचले भाग में उतरकर ६ सो गया और भारी नींद में पड़ा हुआ था। सो मांझी उस के निकट आकर कहने लगा तू भारी नींद में पड़ा हुआ क्या करता है उठ अपने देवता की दोहाई दे क्या जाने परमेश्वर हमारी चिन्ता करे कि हमारा नाश न हो। ७ फिर उन्हों ने आपस में कहा आओ हम चिट्ठी डालकर जान लें कि यह विपत्ति हम पर किस के कारण पड़ी है सो उन्हों ने चिट्ठी डाली और चिट्ठी योना के नाम पर ८ निकली। तब उन्हों ने उस से कहा हमें बता कि किस के कारण यह विपत्ति हम पर पड़ी है तेरा उद्यम क्या है और तू कहां से आया है तू किस देश और किस जाति ९ का है। उस ने उन से कहा मैं इब्री हूं और स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिस ने जल स्थल दोनों को बनाया है १० उसी का भय मानता हूं। तब वे निपट डर गये और उस से कहने लगे कि तू ने यह क्या किया है क्योंकि वे इस कारण जान गये थे कि वह यहोवा के सन्मुख से भाग आया है कि उस ने उन को ऐसा बता ११ दिया था। फिर उन्हों ने उस से पूछा हम तुझ से क्या करें कि समुद्र में नीवा पड़ जाए उस समय तो समुद्र की लहरें बढ़ती चली जाती थीं। उस १२ ने उन से कहा मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो तब समुद्र में नीवा पड़ जाएगा क्योंकि मैं जानता हूं कि यह भारी आंधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है। तौभी उन मनुष्यों ने बड़े यत्न से खेया जिस से उस को १३ तीर में लगाए पर पहुंच न सके इसलिए कि समुद्र की लहरें उन के विरुद्ध बढ़ती चली जाती थीं। तब उन्हों ने यहोवा को पुकारकर कहा हे यहोवा १४ हम बिनती करते हैं कि इस पुरुष के प्राण की सती हमारा नाश न होने दे और न हमें निर्दोष के खून के दोषी ठहरा क्योंकि हे यहोवा जो कुछ तेरी इच्छा थी सोई तू ने किया है। तब उन्हों ने योना को उठाकर १५ समुद्र में फेंक दिया और समुद्र में हलकोरे उठने से थम गये। तब उन मनुष्यों ने यहोवा का बहुत ही भय १६ माना और उस को चढ़ावे चढ़ाये और मन्नतें मानीं। यहोवा ने तो एक बड़ा सा मच्छ ठहराया कि योना १७ को निगल ले और योना उस मच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा॥

२. **तब** योना ने उस के पेट में से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कहा कि

पड़े हुए मैं ने संकट में यहोवा की दोहाई दी २
और उस ने मेरी सुन ली
अधोलोक के उदर में से मैं चिल्ला उठा
और तू ने मेरी सुन ली॥
तू ने मुझे गहिरे सागर में समुद्र की थाह तक ३
डाल दिया
और मैं धारों के बीच पड़ा था
तेरे उठाए हुए सारे तरङ्ग और ढेऊ मेरे ऊपर से
चलते थे॥

(१) मूल में चढ़ आई है। (२) मूल में उस में उतरा।

४ मैं ने कहा कि मैं तेरे साम्हने से निकाल दिया गया हूं
तौभी तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूंगा ॥
५ मैं जल से यहां लों घिरा हुआ था कि मेरा प्राण जाता था
गहिरा सागर मेरे चारों ओर था
और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ था ॥
६ मैं पहाड़ों की जड़ लों पहुंच गया था
मैं सदा के लिये भूमि में बन्द हो गया था
तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू ने मेरे प्राण को गड़हे में से उठाया है ॥
७ जब मैं मूर्छा खाने लगा तब मैं ने यहोवा को स्मरण किया
और मेरी प्रार्थना तेरे पास बरन तेरे पवित्र मन्दिर में पहुंच गई ॥
८ जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं
सो अपने करुणानिधान को छोड़ देते हैं ॥
९ पर मैं ऊंचे शब्द से धन्यवाद करके तुझे बलि चढ़ाऊंगा
मैं ने जो मन्नत मानी उस को पूरी करूंगा
उद्धार यहोवा ही से होता है ॥
१० इस पर यहोवा ने मच्छ को आज्ञा दी
और उस ने योना को स्थल पर उगल दिया ॥

३. **फिर** यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुंचा कि, २ उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा और जो बात मैं ३ तुझ से कहूंगा उस का उस में प्रचार कर। सो योना यहोवा के कहे के अनुसार नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा नगर था वह तीन दिन की यात्रा का ४ था। सो योना नगर में प्रवेश करके एक दिन के मार्ग लों गया और यह प्रचार करता गया कि अब से चालीस दिन के बीते पर नीनवे उलट दिया जाएगा। ५ तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की और उपवास का प्रचार किया और बड़े से लेकर ६ छोटे लों सभों ने टाट ओढ़ा। तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान लों पहुंचा सो उस ने सिंहासन पर से उठ अपना राजकीय ओढ़ना उतारकर टाट ओढ़ ७ लिया और राख पर बैठ गया। और राजा ने प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का ढंढोरा पिटवाया कि क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या भेड़ बकरी क्या और और पशु कोई कुछ भी न खाए वे न खाएं न ८ पानी पीवें। और मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाकर दें और अपने कुमार्ग से फिरें और उस उपद्रव से जो वे करते हैं फिरें। क्या जाने परमेश्वर फिरे और पछताए और ९ उस का भड़का हुआ कोप शांत हो जाए और हम नाश न हों। तब परमेश्वर ने उन के कामों को देखा कि वे १० कुमार्ग से फिरे जाते हैं सो परमेश्वर ने पछताकर उन की जो हानि करने को कहा था उस को न किया ॥

४. **यह** बात योना को बहुत ही बुरी लगी और उस का क्रोध भड़का। और २ उस ने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना की कि हे यहोवा मेरी बिनती यह है कि जब मैं अपने देश में था तब क्या मैं यही बात न कहता था इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भागने को फुर्ती की क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर और विलम्ब से कोप करनेहारा करुणानिधान और दुःख देने से पछतानेहारा है। सो अब हे यहोवा ३ मेरा प्राण ले ले क्योंकि मेरे लिये जीते रहने से मरना ही अच्छा है। यहोवा ने कहा तेरा जो क्रोध भड़का ४ है सो क्या अच्छा है। इस पर योना उस नगर से ५ निकलकर उस की पूरब ओर बैठ गया और वहां एक छप्पर बनाकर उस की छाया में बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर को क्या होगा। तब यहोवा परमेश्वर ६ ने एक रेंड़ का पेड़ उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो जिस से उस का दुःख दूर हो सो योना उस रेंड़ के पेड़ के कारण बहुत ही आनन्दित हुआ। बिहान को जब पह फटने लगी तब परमेश्वर ने ७ एक कीड़ा ठहराया जिस ने रेंड़ का पेड़ ऐसा काटा कि वह सूख गया। और जब सूर्य उगा तब परमेश्वर ८ ने पुरवाई बहाकर लूह चलाई और घाम योना के सिर पर ऐसा लगा कि वह मूर्छा खाने लगा और यह कहकर मृत्यु मांगी कि मेरे लिये जीते रहने से मरना ही अच्छा है। परमेश्वर ने योना से कहा तेरा क्रोध ९ जो रेंड़ के पेड़ के कारण भड़का है क्या अच्छा है? उस ने कहा हां मेरा जो क्रोध भड़का है वह अच्छा ही है बरन क्रोध के मारे मरना भी अच्छा होता। तब यहोवा १० ने कहा जिस रेंड़ के पेड़ के लिये तू ने न तो कुछ परिश्रम किया न उस को बढ़ाया और वह एक ही रात में हुआ फिर एक ही रात में नाश भी हुआ उस पर तो तू ने तरस खाई है। फिर यह बड़ा नगर नीनवे जिस में एक ११ लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दहिने बाएं हाथों का भेद नहीं पहिचानते और बहुत घरैले पशु भी रहते हैं उस पर क्या मैं तरस न खाऊं ॥

मीका ।

---

१. यहोवा का वचन जो यहूदा के राजा योताम आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में मीका मोरेशेती को पहुंचा जिस को उस ने शोमरोन और यरूशलेम के विषय पाया।
२ हे जाति जाति के सारे लोगो सुनो हे पृथिवी तू उस सब समेत जो तुझ में है ध्यान धर कि प्रभु यहोवा तुम्हारे विरुद्ध बरन प्रभु अपने पवित्र मन्दिर में से साक्षी हो ॥

३ देखो यहोवा तो अपने स्थान में से निकलता है और उतरकर पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चलेगा।
४ और पहाड़ उस के नीचे ऐसे गल जाएंगे और तराई ऐसे फटेंगी जैसे मोम आग की आंच से और पानी जो
५ घाट से नीचे बहता है। यह सब याकूब के अपराध और इस्राएल के घराने के पाप के कारण से होता है याकूब का अपराध क्या है क्या शोमरोन नहीं है और यहूदा के ऊंचे स्थान क्या हैं क्या वे यरूशलेम नहीं।
६ इस कारण मैं शोमरोन को मैदान का डीह कर दूंगा और दाख की बारी ही बारी हो जाएगी और मैं उस के पत्थरों को खड्ड में लुढ़का दूंगा और उस की नेव
७ उघारूंगा। और उस की सब खुदी हुई मूरतें टुकड़े टुकड़े की जाएंगी और जो कुछ उस ने छिनाला करके कमाया है सो आग से भस्म किया जाएगा और उस की सब प्रतिमाओं को मैं चकनाचूर करूंगा क्योंकि छिनाले की सी कमाई से तो उस ने उन को बटोर रक्खा है और वे फिर छिनाले की सी कमाई ही हो जाएंगी ॥

८ इस कारण मैं छाती पीट पीटकर हाय हाय करूंगा मैं लुटा सा और नंगा चलूंगा मैं गीदड़ों की
९ नाई चिल्लाऊंगा और शुतुर्मुर्गों की नाई रोऊंगा। क्योंकि उस के घाव असाध्य हैं और विपत्ति यहूदी पर भी आ पड़ी बरन वह मेरे जातिभाइयों पर पड़कर यरूशलेम
१० के फाटक लों पहुंच गई है। गत नगर में इस की चर्चा मत करो और कुछ भी मत रोओ बेतलाप्रा[१] में धूलि
११ में लोटपोट करो। हे शापीर नंगे होने से लज्जित होकर निकल जा सानान[२] की रहनेहारी नहीं निकली बेतसेल में रोना पीटना तुम को उस में रहने न देगा। क्योंकि
१२ मारोत की रहनेहारी को कुशल की बाट जोहते जोहते पीड़ें उठती हैं इसलिये कि यहोवा की ओर से यरूशलेम के फाटक लों विपत्ति आ पहुंची है। हे
१३ लाकीश की रहनेहारी अपने रथों में वेग चलनेहारे घोड़े जोत सिय्योन की प्रजा का[३] पाप उसी से आरंभ हुआ और इस्राएल के अपराध तुझी में पाये गये।
१४ इस कारण तू गत के मोरेशेत को दान देकर दूर कर देगा क्योंकि अकजीब[४] के घर से इस्राएल के राजा
१५ धोखा ही खाएंगे। हे मारेशा की रहनेहारी मैं फिर तुझ पर एक अधिकारी ठहराऊंगा और इस्राएल के प्रतिष्ठित
१६ लोगों को अदुल्लाम में आना पड़ेगा। अपने दुलारे लड़कों के लिये अपना केश कटवाकर सिर मुंड़ा बरन अपना सारा सिर गिद्ध के समान गंजा कर दे क्योंकि वे बंधुए होकर तेरे पास से चले गये हैं ॥

२. हाय उन पर जो बिछौनों पर पड़े हुए अनर्थ कल्पना करते और दुष्ट काम बिचारते हैं और बलवन्त होने के कारण बिहान
२ को दिन होते ही वे उस को पूरा करने पाते हैं। और वे खेतों का लालच करके उन्हें छीन लेते और घरों का लालच करके उन्हें ले लेते हैं और उस के घराने समेत किसी पुरुष पर और उस के निज भाग समेत किसी
३ पुरुष पर अन्धेर करते हैं। इस कारण यहोवा यों कहता है कि मैं इस कुल पर ऐसी विपत्ति डालने की कल्पना करता हूं जिस के नीचे से तुम अपनी गर्दन हटा न सकोगे न अपने सिर ऊंचे किये हुए चल सकोगे
४ क्योंकि विपत्ति का समय होगा। उस समय यह अत्यन्त शोक का गीत दृष्टान्त की रीति गाया जाएगा कि हम तो नाश ही नाश हो गये वह मेरे लोगों के भाग को बिगाड़ता है हाय वह उसे मुझ से कितनी ही दूर कर
५ देता है वह हमारे खेत बलवैयों को दे देता है। इस कारण तेरा ऐसा कोई न होगा जो यहोवा की मण्डली में
६ चिट्ठी डालकर डोरी डाले। वे तो कहा करते हैं कि

(१) अर्थात् धूलि के घर। (२) अर्थात् निकलना।

(३) मूल में सिय्योन की बेटी का (४) अर्थात् धोखे। (५) मूल में इस्राएल की महिमा को।

कहते न रहना वे इन के लिये कहते न रहेंगे, अप्रतिष्ठा
७ जाती न रहेगी। हे याकूब के घराने क्या यह कहा जाए कि यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है¹। क्या ये काम उसी के किये हुए हैं क्या मेरे वचनों से उस का
८ भला नहीं होता जो सीधाई से चलता है। पर मेरी प्रजा आज कल शत्रु बनकर मेरे विरुद्ध उठी है जो लोग निधड़क और बिना लड़ाई का कुछ विचार किये चले
९ जाते हैं उन से तुम चद्दर खींच लेते हो। मेरी प्रजा में की स्त्रियों को तुम उन के सुखधामों से निकाल देते हो और उन के नन्हें बच्चों से तुम मेरी दी हुई उत्तम
१० वस्तुएं² सवदा के लिये छीन लेते हो। उठो चले जाओ क्योंकि यह तुम्हारा विश्रामस्थान नहीं है इस का कारण वह अशुद्धता है जो कठिन दुःख के साथ तुम्हारा नाश
११ करेगी। यदि कोई झूठे आत्मा में चलता हुआ यह झूठी बात कहे कि मैं तुम से नित्य दाखमधु और मदिरा का वचन सुनाता रहूंगा तो वही इन लोगों का नबी ठहरेगा॥

१२ हे याकूब मैं निश्चय तुम सभों को इकट्ठा करूंगा मैं इस्राएल के बचे हुओं को निश्चय बटोरूंगा और बोस्रा की भेड़ बकरियों की नाईं एक संग रक्खूंगा उस झुण्ड की नाईं जो अच्छी चराई में हो वे मनुष्यों की
१३ बहुतायत के मारे कोलाहल करेंगे। उन के आगे बाड़े का तोड़नेहारा निकल गया सो वे भी उसे तोड़ रहे हैं और फाटक से होकर निकल जा रहे हैं उन का राजा उन के आगे और यहोवा उन के सिरे पर निकला है॥

३. और मैं ने कहा हे याकूब के प्रधानो हे इस्राएल के घराने के न्यायियो सुनो क्या न्याय का भेद जानना तुम्हारा काम
२ नहीं। तुम तो भलाई से बैर और बुराई से प्रीति रखते हो मानो तुम लोगों पर से उन की खाल और उन की
३ हड्डियों पर से उन का मांस उधेड़ लेते हो, बरन वे मेरे लोगों का मांस खा भी लेते और उन की खाल उधेड़ते वे उन की हड्डियों को हांडी में पकाने के लिये तोड़ डालते और उन का मांस हंडे में पकाने के लिये टुकड़े टुकड़े
४ करते हैं। वे उस समय यहोवा की दोहाई देंगे पर वह उन की न सुनेगा बरन उस समय वह उन के बुरे कामों
५ के कारण उन से मुंह फेर लेगा। यहोवा का यह वचन है जो नबी मेरी प्रजा को भटका देते हैं और अपने दांतों से काटकर शांति शांति पुकारते हैं और जो कोई उन के मुंह में कुछ नहीं देता उस के विरुद्ध युद्ध करने
६ को तैयार हो जाते हैं,³ इस कारण ऐसी रात तुम पर आएगी कि तुम को दर्शन न मिलेगा और तुम ऐसे अंधकार में पड़ोगे कि भावी न कह सकोगे और नबियों के लिये सूर्य्य अस्त होगा और दिन रहते अंधियारा⁴ हो
७ जाएगा। और दर्शी लज्जित होंगे और भावी कहनेहारों के मुंह काले होंगे और वे सब के सब इसलिये अपने होंठों को ढांपेंगे कि परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं
८ मिलता। पर मैं तो यहोवा के आत्मा से शक्ति न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूं कि मैं याकूब को उस का अपराध और इस्राएल को उस का पाप जता सकूं।
९ हे याकूब के घराने के प्रधानो हे इस्राएल के घराने के न्यायियो हे न्याय से घिन करनेहारो और सब सीधी
१० बातों को टेढ़ी मेढ़ी करनेहारो यह बात सुनो। वे तो सिय्योन को खून करके और यरूशलेम को कुटिलता
११ करके दृढ़ करते हैं। उस के प्रधान घूस ले लेकर विचार करते और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देते और नबी रुपए के लिये भावी कहते हैं और इतने पर भी वे यह कहकर यहोवा पर टेक लगाते हैं कि यहोवा हमारे बीच में तो है सो कोई विपत्ति हम पर आ न
१२ पड़ेगी। इस कारण तुम्हारे हेतु सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा और यरूशलेम डीह ही डीह हो जाएगा और जिस पर्वत पर भवन बना है सो वन के ऊंचे स्थान हो जाएगा॥

४. ऐसा होगा कि अन्त के दिनों में यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा और हर जाति के लोग
२ धारा की नाईं उस की ओर चलेंगे। और बहुत जातियों के लोग जाएंगे और आपस में कहेंगे कि आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा और हम उस के पथों पर चलेंगे क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उस का वचन
३ यरूशलेम से निकलेगा। वह बहुत देशों के लोगों का न्याय करेगा और दूर दूर लों की सामर्थी जातियों के झगड़ों को मिटाएगा सो वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे तब एक

(१) वा, हे याकूब का घराना कहानेवाले क्या यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है। (२) मूल में मेरा प्रताप। (३) मूल में युद्ध पवित्र करते हो। (४) मूल में काला।

जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी ४ और लोग आगे को युद्ध विद्या न सीखेंगे। बरन वे अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे और कोई उन को डर न दिखाएगा सेनाओं के ५ यहोवा ने यही वचन दिया है। सब राज्यों के लोग तो अपने अपने देवता का नाम लेकर चलते हैं पर हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर सदा सर्वदा चलते रहेंगे॥

६ यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं प्रजा में के लंगड़ानेहारों[1] और बरबस निकाले हुओं[2] को और जिन को मैं ने दुःख दिया है उन को इकट्ठे ७ करूंगा। और मैं लंगड़ानेहारों[1] को बचा रक्खूंगा और दूर किये हुओं को एक सामर्थी जाति कर दूंगा और यहोवा उन पर सिय्योन पर्वत के ऊपर से सदा राज्य ८ करता रहेगा। और हे एदेर के गुम्मट हे सिय्योन[4] की पहाड़ी पहिली प्रभुता अर्थात् यरूशलेम[5] का राज्य ९ तुझे मिलेगा। अब तू क्यों चिल्ला मारती है क्या तुझ में कोई राजा नहीं रहा क्या तुझ में का युक्ति करनेहारा नाश हुआ कि जननेहारी स्त्री की नाईं तुझे पीड़ें उठती १० ही रहें। हे सिय्योन की बेटी जननेहारी स्त्री की नाईं पीड़ें उठाकर जन क्योंकि अब तू गढ़ी में से निकलकर मैदान में बसेगी बरन बाबेल लों जाएगी वहीं तू छुड़ाई जाएगी अर्थात् वहीं यहोवा तुझे तेरे शत्रुओं के वश से छुड़ा ११ लेगा। और अब बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध इकट्ठी होकर तेरे विषय कहेंगी कि सिय्योन अपवित्र की जाए और हम १२ अपनी आंखों से उस को निहारें। पर वे यहोवा की कल्पनाएं नहीं जानते न उस की युक्ति समझते हैं कि वह १३ उन्हें ऐसा बटोर लेगा जैसे खलिहान में पूले बटोरे जाते हैं। हे सिय्योन[4] उठ और दांव में तेरे सींगों को लोहे के और तेरे खुरों को पीतल के बना दूंगा और तू बहुत सी जातियों को चूरचूर करेगी और उन की कमाई यहोवा को और उन की धन संपत्ति पृथिवी के प्रभु के लिये अर्पण करेगी।

५.

१ अब हे बहुत दलों की स्वामिनी[6] दल बांध बांधकर इकट्ठी हो क्योंकि उस ने हम लोगों को घेर लिया है वे इस्राएल के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे॥

२ हे बेतलेहेम एप्राता तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता[7] तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेहारा होगा और उस का निकलना प्राचीन काल से बरन अनादि काल से होता आया है। ३ इस कारण वह उन को तब लों त्यागे रहेगा जब लों जननेहारी जन न ले तब इस्राएलियों के पास उस के बचे हुए भाई ४ लौटकर उन से मिल जाएंगे। और वह खड़ा होकर यहोवा की दी हुई शक्ति से और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से उन की चरवाही करेगा और वे बैठे रहेंगे क्योंकि अब वह पृथिवी की छोर लों महान ठहरेगा॥

५ और वह शान्ति का मूल होगा। जब अश्शूरी हमारे देश पर चढ़ाई करें और हमारे राजभवनों[8] में पांव धरें तब हम उन के विरुद्ध सात चरवाहे बरन आठ प्रधान ६ मनुष्य खड़े करेंगे। और वे अश्शूर के देश को बरन पैठाव के स्थानों तक निम्रोद के देश को तलवार चला कर मार लेंगे और जब अश्शूरी लोग हमारे देश में आएं और उस के सिवाने के भीतर पांव धरें तब वही ७ पुरुष हम को उन से बचाएगा। और याकूब के बचे हुए लोग बहुत राज्यों के बीच ऐसा काम देंगे जैसा यहोवा की ओर से पड़नेहारी ओस और घास पर की वर्षा जो किसी के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों की ८ बाट नहीं जोहती। और याकूब के बचे हुए लोग जातियों में और देश देश के लोगों के बीच ऐसे ठहरेंगे जैसे बनैले पशुओं में सिंह वा भेड़ बकरियों के झुंडों में जवान सिंह ठहरता है कि यदि वह उन के बीच से जाए तो लताड़ता और फाड़ता जाएगा और कोई बचा ९ न सकेगा। तेरा हाथ तेरे द्रोहियों पर पड़े और तेरे सब शत्रु नाश हो जाएं॥

१० यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तेरे घोड़ों को तेरे बीच में से नाश करूंगा और तेरे रथों का ११ विनाश करूंगा। और मैं तेरे देश में के नगरों को भी १२ नाश करूंगा और तेरे कोटों को ढा दूंगा। और मैं तेरे तन्त्र मन्त्र नाश करूंगा और तुझ में टोनहे आगे न १३ रहेंगे। और मैं तेरी खुदी हुई मूरतें और तेरी लाठें तेरे बीच में से नाश करूंगा और तू आगे को अपने हाथ १४ की बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत न करेगा। और मैं तेरी अशेरा नाम मूरतों को तेरी भूमि में से उखाड़ १५ डालूंगा और तेरे नगरों को विनाश करूंगा। और मैं अन्यजातियों से जो मेरा कहा नहीं मानतीं कोप और जलजलाहट के साथ पलटा लूंगा॥

(१) मूल में लंगड़ानेहारी। (२) मूल में निकाली हुई। (३) मूल में की हुई। (४) मूल में सिय्योन की बेटी। (५) मूल में यरूशलेम की बेटी। (६) मूल में बेटी। (७) मूल में तू यहूदा के हजारों में होने से छोटा है।

(८) मूल में फाटकों।

६. जो बात यहोवा कहता है उसे सुनो कि उठकर पहाड़ों के साम्हने २ वादविवाद कर और टीले भी तेरी सुनने पाएं। हे पहाड़ो और हे पृथिवी की अटल नेव यहोवा का वादविवाद सुनो क्योंकि यहोवा का अपनी प्रजा के साथ मुकद्दमा है और वह इस्राएल से वादविवाद करता है। ३ हे मेरी प्रजा मैं ने तेरा क्या किया और क्या करके तुझे ४ उकता दिया है मेरे विरुद्ध साक्षी दे। मैं तो तुझे मिस्र देश से निकाल ले आया और दासत्व के घर में से तुझे छुड़ा लाया और तेरी अगुवाई करने को मूसा हारून ५ और मरियम को भेज दिया। हे मेरी प्रजा स्मरण कर कि मोआब के राजा बालाक ने तेरे विरुद्ध कौन सी युक्ति की और बेर के पुत्र बिलाम ने उस को क्या सम्मति दी और शित्तीम से गिल्गाल लों की बातों का स्मरण कर जिस ६ से तू यहोवा के धर्म्म के काम समझ सके। मैं क्या लेकर यहोवा के सन्मुख आऊं और ऊपर रहनेहारे परमेश्वर के साम्हने झुकूं क्या मैं होमबलि के लिये एक एक बरस के ७ बछड़े लेकर उस के सन्मुख आऊं। क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से वा तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में अपने पहिलौठे को वा अपने पाप के बदले में अपने जन्माये हुए किसी को ८ दूं। हे मनुष्य वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है और यहोवा तुझ से इस को छोड़ क्या चाहता है कि तू न्याय से काम करे और कृपा से प्रीति रक्खे और अपने परमेश्वर के संग संग सिर झुकाये हुए चले॥

९ यहोवा इस नगर को पुकार रहा है और बुद्धि तेरे नाम का भय मानेगी दण्ड की और जो उसे दे रहा है १० उस की बात सुनो। क्या अब लों दुष्ट के घर में दुष्टता से पाया हुआ धन और छोटा एपा घिणित नहीं है। ११ क्या मैं कपट का तराजू और घटबढ़ के बटखरों की १२ थैली लेकर पवित्र ठहर सकता हूं। यहां के धनवान् लोग उपद्रव का काम देखा करते हैं और यहां के सब रहनेहारे झूठ बोलते हैं और उन के मुंह से छल की बातें १३ निकलती हैं[१]। इस कारण मैं तुझे मारते मारते बहुत ही घायल कर देता और तेरे पापों के हेतु तुझ को १४ उजाड़ डालता हूं। तू खाएगा पर तृप्त न होगा और तेरा पेट जलता रहेगा और तू अपनी संपत्ति लेकर चलेगा पर न बचा सकेगा और जो कुछ तू बचा भी ले उस १५ को मैं तलवार चलाकर लुटा दूंगा। तू बोएगा पर लवेगा नहीं तू जलपाई का तेल निकालेगा पर लगाने न पाएगा और दाख रौंदेगा पर दाखमधु पीने न पाएगा क्योंकि वे ओम्री की विधियों पर और १६ अहाब के घराने के सब कामों पर चलते हैं और उन की युक्तियों के अनुसार तुम चलते हो इसलिये मैं तुझे उजाड़ूंगा और इस नगर के रहनेहारों पर हथेली बजवाऊंगा और तुम मेरी प्रजा की नामधराई सहोगे॥

७. हाय मुझ पर क्योंकि मैं उस जन के समान हो गया हूं जो धूपकाल के फल तोड़ने पर वा रही हुई दाख बीनने के समय के अन्त में आ जाए मुझे तो पक्की अंजीरों की लालसा थी पर खाने के लिये कोई गुच्छा नहीं रहा। भक्त लोग २ पृथिवी पर से नाश हो गये हैं और मनुष्यों में एक भी सीधा जन नहीं रहा वे सब के सब खून के लिये घात लगाते और जाल लगाकर अपने अपने भाई का अहेर करते हैं। वे अपने दोनों हाथों से भली भांति बुराई ३ करते हैं हाकिम तो कुछ मांगता और न्यायी घूस लेने को तैयार रहता है और रईस मन की दुष्टता वर्णन करता है इसी प्रकार से वे सब मिलकर जालसाजी करते हैं। उन में से जो उत्तम से उत्तम है सो कटीली ४ झाड़ी के समान दुःखदाई है जो सीधे से सीधा है सो कांटेवाले बाड़े से बुरा है तेरे पहरुओं का कहा हुआ दिन अर्थात् तेरा दण्ड आता है सो वे शीघ्र चौंधिया जाएंगे। मित्र पर विश्वास मत करो परममित्र पर भी भरोसा ५ मत रक्खो वरन अपनी अर्द्धांगिन[२] से भी संभलकर बोलना। क्योंकि पुत्र पिता का अपमान करता और बेटी ६ माता के और पतोह सास के विरुद्ध उठती है और एक एक जन के घर ही के लोग शत्रु होते हैं॥

पर मैं यहोवा की ओर ताकता रहूंगा मैं अपने ७ उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूंगा मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा। हे मेरी बैरिन मुझ पर आनन्द मत ८ कर क्योंकि ज्यों मैं गिरूं त्योंही उठूंगा और ज्यों मैं अंधकार में पड़ूं त्योंही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा। मैं ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया इस कारण ९ मैं तब लों उस के क्रोध को सहता रहूंगा जब लों कि वह मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा उस समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले आएगा और मैं उस का धर्म्म देखूंगा। तब मेरी बैरिन जो मुझ से यह १० कहती है कि तेरा परमेश्वर यहोवा कहां रहा वह भी उसे देखेगी और लज्जा से ढंपेगी मैं अपनी आंखों से उसे

(१) मूल में उस के मुंह में उन की जीभ धोखा देनेहारी है।

(२) मूल में अपनी गोद में, सोनेवाली।

देखूंगा तब वह सड़कों की कीच की नाईं लताड़ी (११) जाएगी। तब तेरे बाड़ों के बांधने का दिन आता है (१२) उस दिन सीमा बढ़ाई जाएगी। उस दिन अश्शूर से और मिस्र के नगरों से और मिस्र और महानद के बीच के और समुद्र समुद्र और पहाड़ पहाड़ के बीच के देशों (१३) से लोग तेरे पास आएंगे, तौभी यह देश अपने रहनेहारों के कामों के कारण उजाड़ ही रहेगा॥

(१४) अपनी प्रजा की अर्थात् अपने निज भाग की भेड़ बकरियों की जो कर्म्मेल पर[१] के वन में अलग बैठती हैं तू लाठी लिये हुए चरवाही कर वे अगले दिनों की नाईं बाशान और गिलाद में चरा करें॥

(१५) जैसे कि मिस्र देश से तेरे निकल आने के दिनों (१६) में वैसे ही मैं उस को अद्भुत काम दिखाऊंगा। अन्यजातियां देखकर अपने सारे पराक्रम के विषय लजाएंगी वह अपने मुंह को हाथ से मूंदेंगी और उन के कान बहिरे हो जाएंगे। (१७) वे सर्प की नाईं मिट्टी चाटेंगी और भूमि पर के रेंगनेहारे जन्तुओं की भान्ति अपने कांटों में से कांपती हुई निकलेंगी। (१८) वे हमारे परमेश्वर यहोवा के पास थरथराती हुई आएंगी और तुझ से डर जाएंगी॥

तेरे समान ऐसा ईश्वर कहां है जो अधर्म्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध से आनाकानी करे वह अपने कोप को सदा लों बनाये नहीं रहता क्योंकि वह करुणा में प्रीति रखता है। (१९) वह फिरकर हम पर दया करेगा और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा तू उन के सारे पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा। (२०) तू याकूब के विषय वह सच्चाई और इब्राहीम के विषय वह करुणा पूरी करेगा जिस की किरिया तू हमारे पितरों से प्राचीन काल के दिनों से लेकर खाता आया है॥

(१) मूल में कर्म्मेल के बीच।

नहूम ।

१

१. नीनवे के विषय भारी वचन। एल्कोशी नहूम के दर्शन (२) की पुस्तक। यहोवा जल उठनेहारा और पलटा लेनेहारा ईश्वर है यहोवा पलटा लेनेहारा और जलजलाहट करनेहारा है यहोवा अपने द्रोहियों से पलटा लेता है और (३) अपने शत्रुओं का पाप नहीं भूलता[१]। यहोवा विलम्ब से कोप करनेहारा और बड़ा शक्तिमान है और वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा यहोवा बवंडर और आंधी में होकर चलता है और बादल उस के पांवों (४) की धूलि हैं। उस के घुड़कने से महानद सूख जाते हैं और समुद्र भी निर्जल हो जाता है बाशान और कर्म्मेल कुम्हलाते और लबानोन की हरियाली जाती रहती है। (५) उस के स्पर्श से पहाड़ कांप उठते और पहाड़ियां गल जाती हैं उस के प्रताप से पृथिवी वरन जगत भर भी (६) अपने सारे रहनेहारों समेत फूल उठता है। उस के क्रोध का साम्हना कौन कर सकता है और जब उस का कोप भड़कता है तब कौन ठहर सकता उस की जलजलाहट आग की नाईं भड़काई जाती और चटानें उस (७) की शक्ति से फट फटकर गिरती हैं। यहोवा भला है संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है और अपने शरणागतों की सुधि रखता है। (८) पर वह उमण्डती हुई धारा से उस के स्थान का अन्त कर देगा और अपने शत्रुओं को खदेड़कर अंधकार में भगा देगा। (९) तुम यहोवा के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो वह तुम्हारा अन्त कर देगा विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी। (१०) क्योंकि चाहे वे कांटों से उलझे हुए हों और मदिरा के नशे में चूर भी हों[२] तौभी वे सूखी खूंटी की नाईं भस्म ही भस्म किये जाएंगे। (११) तुझ में से एक निकला है जो यहोवा के विरुद्ध कुकल्पना करता और ओछी युक्ति बांधता है। (१२) यहोवा यों कहता है कि चाहे वे सब प्रकार समर्थ और बहुत भी हों तौभी पूरी रीति से काटे जाएंगे और वह बिलाया जाएगा मैं ने तुझे दुःख दिया तो है पर फिर न दूंगा। (१३) क्योंकि अब मैं उस का जूआ तेरी गर्दन पर से उतारकर तोड़ डालूंगा और तेरा बन्धन फाड़ डालूंगा। (१४) और यहोवा ने तेरे विषय यह आज्ञा दी है कि आगे को तेरा वंश न चले मैं तेरे देवालयों में से ढली और गढ़ी हुई मूरतों को काट डालूंगा मैं तेरे लिये कबर खोदूंगा क्योंकि तू नीच है। (१५) देखो पहाड़ों पर शुभसमाचार का सुनानेहारा और शान्ति का प्रचार

(१) मूल में अपने शत्रुओं के लिए रख छोड़ना है।

(२) मूल में अपने पीने से खूब भीगे हों।

करनेहारा आ रहा है अब हे यहूदा अपने पर्व मान और अपनी मन्नतें पूरी कर क्योंकि वह ओछा फिर कभी तेरे बीच होकर न चलेगा वह पूरी रीति से नाश हुआ है॥

२. सत्यानाश करनेहारा तेरे विरुद्ध चढ़ आया है गढ़ को दृढ़ कर मार्ग देखती हुई चौकस रह अपनी कमर कस २ अपना बल बढ़ा दे। क्योंकि यहोवा याकूब की बड़ाई इस्राएल की बड़ाई के समान ज्यों की त्यों कर देता है उजाड़नेहारों ने उन को उजाड़ तो दिया और ३ दाखलता की डालियों को नाश किया है। उस के शूरवीरों की ढालें लाल रंग में रंगी गईं और उस के योद्धा लाही रंग के वस्त्र पहिने हुए हैं तैयारी के दिन रथों का लोहा आग की नाईं चमकता है और भाले[१] ४ हिलाये जाते हैं। रथ सड़कों में बहुत वेग से हांके जाते और चौकों में इधर उधर चलाये जाते हैं वे पलीतों के समान दिखाई देते हैं और उन का वेग ५ बिजली का सा है। वह अपने शूरवीरों को स्मरण करता है वे चलते चलते ठोकर खाते हैं शहरपनाह की ओर फुर्ती से जाते हैं और काठ का गुम्मट तैयार किया ६ जाता है। नहरों के द्वार खुले जाते और राजमन्दिर ७ गलकर बैठा जाता है। यह ठहराया गया है वह नंगी करके बन्धुआई में ले ली जाएगी और उस की दासियां छाती पीटती हुई पिंडुकों की नाईं विलाप करेंगी। ८ नीनवे तो जब से बनी है तब से तलाव के समान है तौभी वे भागे जाते हैं और खड़े हो खड़े हो ऐसा ९ पुकारे जाने पर भी कोई मुंह नहीं फेरता। चांदी को लूटो सोने को लूटो उस के रक्खे हुए धन की बहुतायत का कुछ परिमाण नहीं और विभव की सब प्रकार की १० मनभावनी सामग्री का कुछ परिमाण नहीं। वह खाली और छूछी और सूनी हो गई है और मन कच्चा हो गया और पांव कांपते हैं और उन सभों की कटियों में बड़ी पीड़ा उठी और सभों के मुख का रंग उड़ गया है। ११ सिंहों की वह मांद और जवान सिंह के आखेट का वह स्थान कहां रहा जिस में सिंह और सिंहनी डाव- १२ रुओं समेत बेखटके चलती थीं। सिंह तो अपने डावरुओं के लिये बहुत अहेर को फाड़ता था और अपनी सिंहनियों के लिये अहेर का गला घोंट घोंटकर ले आता था और अपनी गुफाओं और मान्दों को अहेर से भर १३ लेता था। सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और उस के रथों को भस्म करके धूंएं में उड़ा दूंगा और उस के जवान सिंह तलवार से मारे जाएंगे और मैं तेरे अहेर को पृथिवी पर से नाश करूंगा और तेरे दूतों का बोल फिर सुना न जाएगा॥

३. हाय उस खूनी नगरी पर वह तो छल और लूट के धन से भरी हुई है अहेर छूट नहीं जाती है[२]। कोड़ों की फटकार २ और पहियों की घड़घड़ाहट हो रही है घोड़े कूदते फांदते और रथ उछलते चलते हैं। सवार चढ़ाई करते तलवारें ३ और भाले बिजली की नाईं चमकते हैं मारे हुओं की बहुतायत और लोथों का बड़ा ढेर है मुर्दों की कुछ गिनती नहीं लोग मुर्दों से ठोकर खा खाकर चलते हैं। ४ यह सब उस अति सुन्दर वेश्या और निपुण टोनहिन के छिनाले की बहुतायत के कारण हुआ जो छिनाले के द्वारा जाति जाति के लोगों को और टोने के द्वारा कुल कुल के लोगों को बेच डालती है। सेनाओं के यहोवा ५ की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और तेरे वस्त्र को उठाकर तुझे जाति जाति के साम्हने नंगी और राज्य राज्य के साम्हने नीचे करके दिखाऊंगा। और मैं ६ तुझ पर घिनौनी वस्तुएं फेंककर तुझे तुच्छ कर दूंगा और सब से तेरी हंसी कराऊंगा। और जितने तुझे ७ देखेंगे सब तेरे पास से भागकर कहेंगे कि नीनवे नाश हो गई कौन उस के कारण विलाप करे हम उस के लिये शांति देनेहारे कहां से ढूंढ़ ले आएं। क्या तू अमोन ८ नगरी से बढ़कर है जो नहरों के बीच बसी थी और उस के चारों ओर जल था और उस के धुस और शहरपनाह का काम महानद देता था। कूश और मिस्री ९ उस को अनगिनित बल देते थे पूत और लूबी तेरे सहायक थे। तौभी लोग उस को बन्धुआई में ले गये १० और उस के नन्हे बच्चे एक सड़क के सिरे पर पटक दिये गये और उस के प्रतिष्ठित पुरुषों के लिये उन्हों ने चिट्ठी डाली और उस के सब रईस बेड़ियों से जकड़े गये। तू ११ भी मतवाली होगी तू बिलाय[३] जाएगी तू भी शत्रु के डर के मारे शरण का स्थान ढूंढ़ेगी। तेरे सब गढ़ ऐसे १२ अंजीर के वृक्षों के समान होंगे जिन में पहिले पक्के अंजीर लगे हों यदि वे हिलाये जाएं तो फल खानेहारे के मुंह में गिरेंगे। देख तेरे लोग जो तेरे बीच में हैं सो लुगाइें हैं १३ तेरे देश में प्रवेश करने के मार्ग तेरे शत्रुओं के लिये बिलकुल खुले पड़े हैं और तेरे बेण्डे आग के कौर हो

(१) मूल में सनौबर।

(२) मूल में लूट हट नहीं जाती।

(३) मूल में छिप।

१४ गये हैं। घिर जाने के दिनों के लिये पानी भर ले और कोटों को अधिक दृढ़ कर कीचड़ में आकर गारा लताड़ १५ और भट्ठे को सजा। वहां तू आग में भस्म होगी और तू तलवार से नाश हो जाएगी वह येलेक नाम टिड्डी की नाईं तुझे निगल जाएगी येलेक नाम टिड्डी के समान अर्बे नाम टिड्डी के समान अनगिनित हो जाएगी। १६ तेरे व्योपारी आकाश के तारागण से भी अधिक अन- १७ गिनित हुए टिड्डी छीलकर उड़ गई है। तेरे मुकुटधारी लोग टिड्डियों के समान और तेरे सेनापति टिड्डियों के दलों सरीखे ठहरेंगे जो जाड़े के दिन में बाड़ों पर टिकते हैं पर जब सूर्य्य दिखाई देता तब भाग जाते हैं और कोई नहीं जानता कि वे कहां गये। हे अश्शूर के १८ राजा तेरे ठहराये हुए चरवाहे ऊंघते हैं तेरे शूरवीर भारी नीन्द में पड़ गये हैं तेरी प्रजा पहाड़ों पर तित्तर बित्तर हो गई है और कोई उन को फिर इकट्ठे नहीं करता। तेरा घाव पूज न सकेगा तेरा रोग असाध्य है १९ जितने तेरा समाचार सुनेंगे सो तेरे ऊपर ताली बजाएंगे क्योंकि ऐसा कौन है जिस पर लगातार तेरी दुष्टता का प्रभाव न पड़ा हो॥

हबक्कूक।

---

१. भारी वचन जिस को हबक्कूक नबी ने दर्शन में पाया॥

२ हे यहोवा मैं कब लों तेरी दोहाई देता रहूं और तू न सुने मैं तुझ से उपद्रव उपद्रव ऐसा चिल्लाता हूं और ३ तू उद्धार नहीं करता। तू मुझे अनर्थ काम क्यों दिखाता और क्या कारण है कि तू आप उत्पात को देखता रहता है और मेरे साम्हने लूट पाट और उपद्रव होते रहते हैं और झगड़ा हुआ करता और वादविवाद बढ़ता ४ जाता है। इस के कारण व्यवस्था ढीली हो जाती है और न्याय कभी नहीं प्रगट होता दुष्ट लोग धर्मी को घेर लेते हैं और इस कारण न्याय उलटा होकर प्रगट होता है॥

५ अन्यजातियों की ओर चित्त लगाकर देखो और बहुत ही चकित हो क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में ऐसा काम करने पर हूं कि चाहे वह तुम को बताया भी जाए ६ तौभी तुम उस की प्रतीति न करोगे। देखो मैं कसदियों को उभारने पर हूं वे क्रूर और उतावली करनेहारी जाति हैं जो पराये वासस्थानों के अधिकारी होने के लिये ७ पृथिवी भर में फैल जाते हैं। वह भयानक और डरावनी है उस का विचार और उस की बड़ाई उसी से होती ८ हैं। और उन के घोड़े चीतों से भी अधिक वेग चलनेहारे सांझ को अहेर करते हुए हुंडारों से भी अधिक क्रूर हैं और उस के सवार दूर दूर फैल जाते हैं और अहेर पर ९ झपटनेहारे उकाब की नाईं झपट्टा मारते हैं। वह सब के सब उपद्रव करने को आते हैं वे मुख साम्हने की ओर किये हुए हैं और वे बंधुओं को बालू के किनकों के समान बटोरते हैं। और वह राजाओं को ठट्ठों में उड़ाता १० और हाकिमों का उपहास करता है वह सब दृढ़ गढ़ों पर भी हंसता क्योंकि वह धुस बांधकर[१] उन को ले लेता है। तब वह वायु की नाईं चला आएगा और मर्यादा छोड़कर ११ दोषी ठहरेगा उस का बल ही उस का देवता है॥

हे मेरे परमेश्वर यहोवा हे मेरे पवित्र ईश्वर १२ क्या तू अनादि काल से नहीं है इस कारण हम लोग नहीं मरने के हे यहोवा तू ने उस को न्याय करने के लिये ठहराया होगा हे चटान तू ने उलाहना देने के लिये उस को बैठाया है। तू तो ऐसा शुद्ध है कि बुराई को १३ देख नहीं सकता और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता फिर तू विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता और जब दुष्ट उस को जो उस से कम दोषी है निगल जाता है तब तू क्यों चुप रहता है। और तू क्यों मनुष्यों को १४ समुद्र की मछलियों के और उन रेंगनेहारे जन्तुओं के समान जिन के राजा नहीं होता कर देता है। वह उन १५ सब मनुष्यों को बंसी से पकड़कर उठा लेता और जाल में घसीट लेता और महाजाल में फंसा लेता है इस कारण वह आनन्दित और मगन रहता है। इस कारण वह अपने जाल के साम्हने बलि चढ़ाता १६

(१) मूल में धूलि का ढेर लगाकर।

और अपने महाजाल के आगे धूप जलाता है क्योंकि इन्हीं के द्वारा उस का भाग पुष्ट होता और उस का १७ भोजन चिकना होता है। पर क्या वह इस कारण जाल को खाली कर देगा और जाति जाति के लोगों को १८ लगातार निर्दयता से घात करने पाएगा॥

२. मैं अपने पहरे पर खड़ा हूंगा और गुम्मट पर ठहरा रहूंगा और ताकता रहूंगा कि देखूं मुझ से वह क्या कहेगा और मैं अपने २ दिये हुए उलाहने के विषय क्या कहूं[१]। यहोवा ने मुझ से कहा दर्शन की बातें लिख दे बरन पटियाओं पर ३ साफ साफ लिख दे वे सहज से पढ़ी जाएं[२]। क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेहारी है बरन इस के पूरी होने का समय वेग आता[३] है और इस में धोखा न होगा सो चाहे इस में विलम्ब हो तौभी उस की बाट जोहता रहना क्योंकि यह निश्चय पूरी ४ होगी[४] और इस में अबेर न होगी। देख उस का मन फूला हुआ है वह सीधा नहीं है पर धर्म्मी अपने ५ विश्वास के द्वारा जीता रहेगा। फिर दाखमधु से धोखा होता है अहंकारी पुरुष घर में नहीं रहता और उस की लालसा अधोलोक की सी पूरी नहीं होती और मृत्यु की नाईं उस का पेट नहीं भरता अर्थात् वह सब जातियों को अपने पास खींच लेता और सब देशों ६ के लोगों को अपने पास इकट्ठे कर रखता है। क्या वे सब उस का दृष्टान्त चलाकर और उस पर ताना मार कर न कहेंगे कि हाय उस पर जो पराया धन छीन छीनकर धनवान हो जाता है। कब लों। हाय उस पर ७ जो अपना घर बन्धक की वस्तुओं से भर लेता है। क्या वे लोग अचानक न उठेंगे जो तुझ से ब्याज लेंगे और क्या वे न जागेंगे जो तुझ को संकट में डालेंगे ८ और क्या तू उन से लूटा न जाएगा। तू ने जो बहुत सी जातियों को लूट लिया है सब बचे हुए लोग तुझे भी लूट लेंगे इस का कारण मनुष्यों का खून है और वह उपद्रव भी जो तू ने इस देश और राजधानी और इस के सब रहनेहारों पर किया है॥

९ हाय उस पर जो अपने घर के लिये अन्याय से लाभ का लोभी है इसलिये कि वह अपना घोंसला १० ऊंचे स्थान में बनाकर विपत्ति से बचे। तू ने बहुत सी जातियों को काट डालकर अपने घर के लिये लज्जा की युक्ति बांधी और अपने ही प्राण की हानि की है। ११ क्योंकि घर की भीत का पत्थर दोहाई देता और उस की छत की कड़ी उन के स्वर में स्वर मिला देती है॥

१२ हाय उस पर जो खून कर करके नगर को बनाता और कुटिलता कर करके गढ़ी को दृढ़ करता है। १३ देखो क्या यह सेनाओं के यहोवा की ओर से नहीं होता कि देश देश के लोग परिश्रम तो करते हैं पर वह आग का कौर होने को होता है और राज्य राज्य के १४ लोग थक जाते तो हैं पर व्यर्थ ही ठहरेगा। क्योंकि पृथिवी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से[५]॥

१५ हाय उस पर जो अपने पड़ोसी को मदिरा पिलाता और उस में विष मिलाकर उस को मतवाला कर देता १६ है कि वह उस को नंगा देखे। तू महिमा की सन्ती अपमान ही से भर गया तू भी पी जा और तू खतना-हीन है जो कटोरा यहोवा के दहिने हाथ में रहता है सो घूमकर तेरी ओर भी जाएगा और तेरा विभव १७ तेरी छांट से अशुद्ध हो जाएगा। क्योंकि लबानोन में जो उपद्रव तेरा किया हुआ है और वहां के पशुओं पर तेरा किया हुआ उत्पात जिस से वे भयभीत हो गये थे तुझ पर आ पड़ेंगे यह मनुष्यों के खून और उस उपद्रव के कारण होगा जो इस देश और राजधानी और इस के सब रहनेहारों पर किया गया है॥

१८ खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देखकर बनानेहारे ने उसे खोदा है फिर झूठ पर चलानेहारी ढली हुई मूरत में क्या लाभ देखकर ढालनेहारे ने उस पर इतना भरोसा रक्खा है कि अनबोल और निकम्मी मूरत १९ बनाए। हाय उस पर जो काठ से कहता है कि जाग वा अनबोल पत्थर से कि उठ क्या वह सिखाएगा देखो वह सोने चांदी में मढ़ा हुआ तो है पर उस में २० आत्मा नहीं है। यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है समस्त पृथिवी उस के साम्हने चुपकी रहे॥

३. हबक्कूक नबी की प्रार्थना। शिग्योनोत की रीति पर॥

२ हे यहोवा मैं तेरी कीर्त्ति सुनकर डर गया
हे यहोवा बरसों के बीतते अपने काम में फिर
हाथ लगा

(१) मूल में क्या उत्तर दूं।
(२) मूल में जिस से उस का पढ़नेहारा दौड़े।
(३) मूल में बरन वह अन्त की ओर हांफती है।
(४) मूल में निश्चय आएगी।
(५) मूल में जैसे जल समुद्र को ढांपता है।

बरसों के बीतते तू उस को प्रकट कर
क्रोध करते हुए भी दया करना न भूल ॥

३ ईश्वर तेमान से
अर्थात् पवित्र ईश्वर पारान पर्वत से आ रहा है। सेला।
उस का तेज आकाश पर छाया हुआ है
और पृथिवी उस की स्तुति से परिपूर्ण हुई है ॥

४ और उस की ज्योति सूर्य्य की सी है
उस के हाथ से किरणें निकल रही हैं
और उस का सामर्थ्य छिपा हुआ है ॥

५ उस के आगे आगे मरी फैल रही है
और उस के पीछे पीछे महाज्वर निकल रहा है ॥

६ वह खड़ा होकर पृथिवी को आंक रहा है
वह जाति जाति को आंख दिखाकर घबरा रहा है
और सनातन पर्वत तित्तर बित्तर हो रहे हैं
और सनातन की पहाड़ियां झुक रही हैं
उस की गति सदा एक सी रहती है ॥

७ मुझे कूशान के तंबू में रहनेहारे दुःख से दबे देख पड़ते हैं
और मिद्यान् देश के डेरे थरथरा रहे हैं ॥

८ क्या यहोवा नदियों पर रिसियाया है
क्या तेरा कोप नदियों पर भड़का है
क्या तेरी जलजलाहट समुद्र पर भड़की है
तू अपने घोड़ों पर और उद्धार करनेवाले रथों पर चढ़कर आ रहा है ॥

९ तेरा धनुष खोल में से निकाला हुआ है
तेरे दण्ड का वचन किरिया के साथ हुआ है
तू धरती को फाड़कर बहुत सी नदियां निकाल रहा है ॥

१० पहाड़ तुझे देखकर कांप उठे हैं
आंधी चल रही है पानी पड़ रहा है
गहिरा सागर बोलता और हाथ उठाता है

११ सूर्य और चन्द्रमा अपने अपने स्थान में ठहरे हैं ॥

१२ तेरे तीरों के चलने से ज्योति
और तेरे भाले के चमकने से प्रकाश हो रहा है
तू क्रोध में आकर पृथिवी पर चलता हुआ
जाति जाति को क्रोध से दांवता जा रहा है ॥

१३ तू अपनी प्रजा के उद्धार के लिये निकला
अर्थात् अपने अभिषिक्त के संग होकर उद्धार के लिये निकला
तू दुष्ट के घर के सिर को फोड़कर
उस के गले लों नेव को उघाड़ रहा है[1]। सेला।

१४ तू उस के योद्धाओं के सिरों को उस की बर्छी से छेद देता है
वे मुझ को तित्तर बित्तर करने के लिये आंधी की नाईं तो आये
और दीन लोगों को घात लगाकर मार डालने की आशा से हुलसते आये ॥

१५ तू अपने घोड़ों समेत समुद्र पर
अर्थात् बहुत जल के ढेर पर चला है ॥

१६ यह सब सुनते ही मेरा कलेजा थरथरा उठा
मेरे होंठ कांप गये
मेरी हड्डियां पिराने लगीं और मैं खड़े खड़े कांप उठा
कि मैं उस दिन की बाट शान्ति से जोहता रहूं
जब दल बांधकर प्रजा चढ़ाई करे ॥

१७ क्योंकि चाहे न तो अंजीर के वृक्षों में फूल
और न दाखलताओं में फल लगें
और जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए
और खेतों में अन्न न उपजे
और न तो भेड़शालाओं में भेड़ बकरियां रह जाएं
और न थानों में गाय बैल रहें ॥

१८ तौभी मैं यहोवा के कारण हुलसूंगा
और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के हेतु मगन हूंगा ॥

१९ यहोवा प्रभु मेरा बलमूल है
और वह मेरे पांव हरिणों के से करेगा
और मुझ को मेरे ऊंचे स्थानों पर चलाएगा ॥

प्रधान बजानेहारे के लिये मेरे तारवाले बाजों के साथ।

---

(१) मूल में गले लों नेव नंगी करनी।

सपन्याह।

---

१. आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में यहोवा का जो वचन सपन्याह के पास पहुंचा जो हिजकिय्याह के पुत्र अमर्याह का परपोता और २ गदल्याह का पोता और कूशी का पुत्र था। मैं धरती पर से सब का अन्त कर दूंगा यहोवा की यही वाणी ३ है। मैं मनुष्य और पशु दोनों का अन्त कर दूंगा मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों का और दुष्टों समेत उन की रक्खी हुई ठोकरों का भी अन्त कर दूंगा मैं मनुष्य जाति को भी धरती पर से नाश कर ४ डालूंगा यहोवा की यही वाणी है। और मैं यहूदा पर और यरूशलेम के सब रहनेहारों पर हाथ उठाऊंगा और इस स्थान में बाल के बचे हुओं को और याजकों समेत देवताओं के पुजारियों के नाम को नाश कर दूंगा। ५ और जो लोग अपने अपने घर की छत पर आकाश के गण को दण्डवत् करते और जो लोग दण्डवत् करते हुए इधर तो यहोवा की सेवा करने की किरिया खाते ६ और अपने मोलेक की भी किरिया खाते हैं, और जो यहोवा के पीछे चलने से फिर गये हैं और जिन्हों ने न तो यहोवा को ढूंढा न उस की खोज में लगे उन को भी मैं नाश कर डालूगा॥

७ प्रभु यहोवा के साम्हने चुपके रहो क्योंकि यहोवा का दिन निकट है यहोवा ने यज्ञ सिद्ध किया और अपने ८ नेवतहरियों को पवित्र किया है। और यहोवा के यज्ञ के दिन मैं हाकिमों और राजकुमारों को और जितने परदेश के वस्त्र पहिना करते हैं उन को भी दण्ड दूंगा। ९ और उस दिन मैं उन सभों को दण्ड दूंगा जो डेवढ़ी को लांघते और अपने स्वामी के घर को उपद्रव और छल १० से भर देते हैं। और यहोवा की यह वाणी है कि उस दिन मछली फाटक के पास चिल्लाहट का और नये टोले में हाहाकार का और टीलों पर बड़ी धड़ाम का शब्द ११ होगा। हे मक्तेश के रहनेहारो हाय हाय करो क्योंकि सब व्योपारी मिट गये जितने चांदी से लदे थे उन सब १२ का नाश हो गया है। उस समय मैं दीपक लिये हुए यरूशलेम में ढूंढ़ ढांढ़ करूंगा और जो लोग थिराये हुए दाखमधु के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि यहोवा न तो भला करेगा और न बुरा उन को मैं दण्ड दूंगा। सो १३ उन की धन संपत्ति लूटी जाएगी और उन के घर उजाड़ होंगे वे घर तो बनाएंगे पर उन में रहने न पाएंगे और वे दाख की बारियां तो लगाएंगे पर उन से दाखमधु पीने न पाएंगे। यहोवा का भयानक दिन निकट है वह १४ बहुत वेग से नियराता चला आता है यहोवा के दिन का शब्द सुन पड़ता है वहां वीर दुःख के मारे चिल्लाता है। वह रोष का दिन होगा वह संकट और सकेती का दिन १५ वह उजाड़ और उखाड़ का दिन वह अंधेरे और घोर अंधकार का दिन वह बादल और काली घटा का दिन होगा। वह गढ़वाले नगरों और ऊंचे गुम्मटों के विरुद्ध १६ नरसिंगा फूंकने और ललकारने का दिन होगा। और १७ मैं मनुष्यों को संकट में डालूंगा और वे अधों की नाईं चलेंगे क्योंकि उन्हों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है और उन का लोहू धूलि के समान और उन का मांस विष्ठा सरीखा फेंक[१] दिया जाएगा। और यहोवा के १८ रोष के दिन में न तो चांदी से उन का बचाव होगा और न सोने से क्योंकि उस के जलन की आग से सारी पृथिवी[२] भस्म हो जाएगी क्योंकि वह तो पृथिवी के सारे रहनेहारों को घबरवाकर उन का अन्त कर डालेगा॥

२. हे निर्लज्ज जाति के लोगो इकट्ठे हो उस से पहिले इकट्ठे हो कि दण्ड की आज्ञा पूरी हो जाए और बचाव का दिन भूसी की नाईं निकल जाए और यहोवा का भड़कता हुआ कोप तुम पर आ पड़े और यहोवा के कोप का दिन तुम पर आए। हे पृथिवी के सब नम्र लोगो ३ हे यहोवा के नियम के माननेहारो उस को ढूंढ़ते रहो धर्म्म को ढूंढ़ो नम्रता को ढूंढ़ो क्या जाने तुम यहोवा के कोप के दिन में शरण पाओ। क्योंकि अज्जा तो निर्जन ४ और अश्कलोन उजाड़ हो जाएगा अशदोद के निवासी दिनदुपहरी निकाल दिये जाएंगे और एक्रोन[३] उखाड़ा

---

(१) मूल में उंडेल। (२) वा देश।
(३) एक्रोन शब्द का अर्थ उखाड़ है।

५ जाएगा। हाय समुद्रतीर के रहनेहारों पर हाय करेनी जाति पर हे कनान हे पलिश्तियों के देश यहोवा का वचन तेरे विरुद्ध है मैं तुझ को ऐसा नाश करूंगा कि ६ तुझ में कोई न रहेगा। और उसी समुद्रतीर पर चरवाहों के घरों और भेड़शालाओं समेत चराई ही चराई होगी। ७ अर्थात् वही समुद्रतीर यहूदा के घराने के बचे हुओं को मिलेगी वे उस पर चराएंगे वे अश्कलोन के छोड़े हुए घरों में सांझ को लेटेंगे क्योंकि उन का परमेश्वर यहोवा उन की सुधि लेकर उन के बन्धुओं को लौटा ले आएगा। ८ मोआब ने जो मेरी प्रजा की नामधराई और अम्मोनियों ने जो उस की निन्दा करके उस के देश की सीमा ९ पर चढ़ाई की सो मेरे कानों तक पहुंची है। इस कारण इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौं निश्चय मोआब सदोम के समान और अम्मोनी अमोरा के तुल्य बिच्छू पेड़ों के स्थान और लोन की खानियां हो जाएंगे और सदा लों उजड़े रहेंगे और मेरी प्रजा के बचे हुए उन को लूटेंगे[१] और मेरी जाति के रहे हुए लोग उन १० को अपने भाग में पाएंगे। यह उन के गर्व्व का पलटा होगा उन्हों ने तो सेनाओं के यहोवा की प्रजा की नाम-११ धराई की और उस पर बड़ाई मारी है। यहोवा उन को डरावना दिखाई देगा वह पृथिवी भर के देवताओं को भूखा मार डालेगा और अन्य जातियों के सब द्वीपों के १२ निवासी अपने अपने स्थान से उस को दण्डवत् करेंगे। हे १३ कूशियो तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे। वह अपना हाथ उत्तर दिशा की ओर बढ़ाकर अश्शूर को नाश करेगा और नीनवे को उजाड़ वरन जंगल के समान १४ निर्जल कर देगा। और उस के बीच में झुण्ड के सब जाति के बनैले पशु झुण्ड के झुण्ड बैठेंगे और उस के खंभों की कंगनियों पर धनेश और साही दोनों रात को बसेरा करेंगे और उस की खिड़कियों में बोला करेंगे उस की डेवढ़ियां सूनी पड़ी रहेंगी और देवदार की लकड़ी १५ उघारी जाएगी। यह तो वही नगरी है जो हुलसती और निडर बैठी रहती थी और सोचती थी कि मैं ही हूं और मुझे छोड़ कोई है ही नहीं पर अब यह उजाड़ और बनैले पशुओं के बैठने का स्थान बन गया है यहां लों कि जो कोई इस के पास होकर चले सो हथेली बजाएगा और हाथ चमकाएगा॥

३. **हाय** बलवा करनेहारी और अशुद्ध और अन्धेर से भरी हुई नगरी

(१) मूल में अपना लेंगे।

पर। उस ने मेरी नहीं सुनी उस ने ताड़ना से नहीं २ माना उस ने यहोवा पर भरोसा नहीं रक्खा वह अपने परमेश्वर के समीप नहीं आई। इस में ३ के हाकिम गरजनेहारे सिंह ठहरे इस के न्यायी सांझ को अहेर करनेहारे हुंडार हैं जो बिहान के लिये कुछ नहीं छोड़ते। इस के नबी फूहड़ बकनेहारे और विश्वासघाती ४ हैं इस के याजकों ने पवित्रस्थान को अशुद्ध और व्यवस्था में खींचखांच की है। यहोवा जो उस के बीच में है ५ सो धर्म्मी है वह कुटिलता न करेगा वह अपना न्याय भोर भोर प्रगट करता है चूकता नहीं पर कुटिल जन को लाज आती ही नहीं। मैं ने अन्यजातियों को नाश ६ किया यहां लों कि उन के कोनवाले गुम्मट उजड़ गये मैं ने उन की सड़कों को सूनी किया यहां लों कि कोई उन पर नहीं चलता उन के नगर यहां लों नाश हुए कि उन में कोई मनुष्य वरन कोई भी प्राणी[२] नहीं रहा। मैं ने कहा अब तो तू मेरा भय मानेगी और ७ मेरी ताड़ना अंगीकार करेगी जिस से उस का धाम उस सब के अनुसार जो मैं ने ठहराया था नाश न हो पर वे सब प्रकार के बुरे बुरे काम यत्न से[३] करने लगे। इस ८ कारण यहोवा की यह वाणी है कि जब लों मैं नाश करने को न उठूं तब लों तुम मेरी बाट जोहते रहो मैं ने यह ठाना है कि जाति जाति के और राज्य राज्य के लोगों को मैं इकट्ठा करूंगा कि उन पर अपने कोप की आग पूरी रीति से भड़काऊं क्योंकि समस्त पृथिवी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी। और उस समय मैं देश ९ देश के लोगों से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊंगा कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें और एक मन[४] से कांधा जोड़े हुए उस की सेवा करें। मेरी १० तितर बितर की हुई प्रजा[५] मुझ से बिनती करती हुई मेरी भेंट बनकर आएगी। उस दिन क्या तू अपने सब ११ बड़े से बड़े कामों से जिन्हें करके तू मुझ से फिर गई लज्जित न होगी उस समय तो मैं तेरे बीच से सब फूले हुए घमंडियों को दूर करूंगा और तू मेरे पवित्र पर्वत पर फिर कभी अभिमान न करेगी। और मैं तेरे बीच १२ में दीन और कंगाल लोगों का एक दल बचा रक्खूंगा और वे यहोवा के नाम का शरण लेंगे। इस्राएल के बचे १३ हुए लोग न तो कुटिलता करेंगे और न झूठ बोलेंगे और न उन के मुंह से छल की बातें निकलेंगी[६] वे चरेंगे

(२) मूल में रहनेहारा। (३) मूल में तड़के उठ कर। (४) मूल में एक कंधे या पीठ में। (५) मूल में किये हुओं की बेटी। (६) मूल में मुंह में छली जीभ पाई जायगी।

१४ और बैठा करेंगे और कोई डरानेहारा न होगा। हे सिय्योन[1] ऊंचे स्वर से गा हे इस्राएल जयजयकार कर हे यरूशलेम[2] अपने सारे मन से आनन्द कर १५ और हुलस। यहोवा ने तेरा दण्ड भोगना बन्द किया और तेरा शत्रु दूर किया इस्राएल का राजा यहोवा तेरे १६ बीच में है सो तू फिर विपत्ति न भोगेगी। उस समय यरूशलेम से यह कहा जाएगा कि मत डर और १७ सिय्योन से यह कि तेरे हाथ ढीले न पड़ने पाए। तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है वह उद्धार करने में पराक्रमी है वह तेरे कारण आनन्द में मगन होगा वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा॥

१८ जो लोग नियत पर्व के विषय खेदित रहते हैं उन को मैं इकट्ठा करूंगा क्योंकि वे तेरे तो हैं और उस की नामधराई उन को बोझ जान पड़ती है। उस १९ समय मैं उन सभों से जो तुझे दुःख देते हैं उचित बर्ताव करूंगा और लंगड़ानेहारों[3] को चंगा करूंगा और बरबस निकाले[4] हुओं को इकट्ठा करूंगा और जिन की लज्जा की चर्चा समस्त पृथिवी पर फैली है उन की प्रशंसा और कीर्त्ति सब कहीं फैलाऊंगा[5]। उसी २० समय मैं तुम्हें ले आऊंगा और उसी समय मैं तुम्हें इकट्ठा करूंगा और जब मैं तुम्हारे साम्हने तुम्हारे बन्धुओं को लौटा लाऊंगा तब पृथिवी की सारी जातियों के बीच तुम्हारी कीर्त्ति और प्रशंसा फैला[6] दूंगा यहोवा का यही वचन है॥

(१) मूल में सिय्योन की बेटी। (२) मूल में यरूशलेम की बेटी।

(३) मूल में लंगड़ानेहारी। (४) मूल में निकाली हुई।

(५) मूल में उन की प्रशंसा और कीर्त्ति ठहराऊंगा

(६) मूल में तुम को कीर्त्ति और प्रशंसा ठहराऊंगा।

हाग्गै।

---

१. दारा राजा के दूसरे बरस के छठवें महीने के पहिले दिन यहोवा का यह वचन हाग्गै नबी के द्वारा शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल के पास जो यहूदा का अधिपति था और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के पास पहुंचा २ कि, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि ये लोग तो कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने को हमारे आने ३ का समय अभी नहीं है। फिर यहोवा का यह वचन ४ हाग्गै नबी के द्वारा पहुंचा कि, क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है और यह भवन ५ उजाड़ पड़ा है। सो अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि अपनी अपनी चालचलन को सोचो विचारो। ६ तुम ने बोया बहुत पर लवा थोड़ा तुम खाते हो पर पेट नहीं भरता तुम पीते हो पर प्यास नहीं बुझती तुम कपड़े पहिनते पर गरमाते नहीं और जो मजूरी कमाता है सो उसे कमाकर फटी हुई थैली में डाल ७ देता है। सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है कि ८ अपने अपने चालचलन को सोचो। पहाड़ पर चढ़ कर लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ और मैं उस को देखकर प्रसन्न हूंगा और मेरी महिमा होगी यहोवा का यही वचन है। तुम ने बहुत उपज की आशा ९ रक्खी पर देखो थोड़ी ही है फिर जब तुम उसे घर ले आये तब मैं ने उस को उड़ा दिया सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि इस का क्या कारण है क्या यह नहीं कि मेरा भवन तो उजाड़ पड़ा है और तुम अपने अपने घर के लिये दौड़ धूप करते हो। इस १० कारण आकाश से ओस गिरनी और पृथिवी से अन्न उपजना दोनों बन्द हैं। और मेरी आज्ञा से पृथिवी पर ११ सूखा पड़ा पृथिवी पर और पहाड़ों पर और अन्न और नये दाखमधु और टटके तेल पर और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर और मनुष्यों और घरैले पशुओं पर और उन के परिश्रम की सारी कमाई पर भी॥

तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और यहोसा- १२ दाक के पुत्र यहोशू महायाजक ने सब बचे हुए लोगों समेत अपने परमेश्वर यहोवा की मानी और जो वचन उन के परमेश्वर यहोवा ने उन से कहने के लिये हाग्गै नबी को भेज दिया उन्हें मान लिया और लोगों ने यहोवा का भय माना। तब यहोवा के दूत हाग्गै ने १३

यहोवा से यह आज्ञा पाकर उन लोगों से कहा कि यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे संग हूं। १४ फिर यहोवा ने शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल को जो यहूदा का अधिपति था और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक को और सब बचे हुए लोगों के मन को ऐसा उभारा कि वे आकर अपने परमेश्वर सेनाओं के यहोवा के भवन बनाने में काम करने लगे। १५ यह दारा राजा के दूसरे बरस के छठवें महीने की चौबीसवें दिन को हुआ॥

२.

फिर सातवें महीने के इक्कीसवें दिन को यहोवा का यह वचन हाग्गै २ नबी के पास पहुंचा कि, शालतीएल के पुत्र यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक और सब बचे हुए लोगों से यह बात कह ३ कि, तुम में से कौन रह गया जिस ने इस भवन की पहिली महिमा देखी अब तुम इस को कैसी दशा देखते हो क्या यह सच नहीं कि यह तुम्हारे लेखे उस की ४ अपेक्षा कुछ है ही नहीं। तौभी अब यहोवा की यह वाणी है कि हे जरुब्बाबेल हियाव बांध और हे यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक हियाव बांध और यहोवा की यह भी वाणी है कि हे देश के सब लोगो हियाव बांधकर काम करो क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं ५ सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। तुम्हारे साथ मिस्र से निकलने के समय जो वाचा मैं ने बांधी थी उसी वाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे मध्य में बना ६ है सो तुम मत डरो। क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि अब थोड़ी ही वेर बाकी है कि मैं आकाश और पृथिवी और समुद्र और स्थल सब को कंपाऊंगा। ७ और मैं सारी जातियों को कंपाऊंगा और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी और मैं इस भवन को तेज से भर दूंगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ८ चान्दी तो मेरी है और सोना भी मेरा ही है सेनाओं ९ के यहोवा की यही वाणी है। इस भवन की पिछली महिमा इस की पहिली महिमा से बड़ी होगी सेनाओं के यहोवा का यही वचन है और इस स्थान में मैं शांति दूंगा सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

१० दारा के दूसरे बरस के नौवें महीने के चौबीसवें दिन को यहोवा का यह वचन हाग्गै नबी के पास ११ पहुंचा कि, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि याजकों से इस बात की व्यवस्था पूछ कि, १२ यदि कोई अपने वस्त्र के अंचल में पवित्र मांस बांधकर उसी अंचल से रोटी वा सिझे हुए भोजन वा दाखमधु वा तेल वा किसी प्रकार के भोजन को छुए तो क्या वह भोजन पवित्र ठहरेगा याजकों ने उत्तर दिया कि नहीं। १३ फिर हाग्गै ने पूछा कि यदि कोई जन मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध होकर ऐसी किसी वस्तु को छुए तो क्या वह अशुद्ध ठहरेगी याजकों ने उत्तर दिया कि हां अशुद्ध ठहरेगी। १४ फिर हाग्गै ने कहा यहोवा की यह वाणी है कि मेरी दृष्टि में यह प्रजा और यह जाति वैसी ही है और इन के सब काम भी वैसे हैं और जो कुछ वे वहां चढ़ाते हैं सो भी अशुद्ध है। १५ अब सोच विचार करो कि आज से पहिले अर्थात् जब यहोवा के मन्दिर में पत्थर पर पत्थर रक्खा न गया था, १६ उन दिनों में जब कोई अन्न के बीस नपुओं के पास जाता तब दस ही पाता था और जब कोई दाखरस कुण्ड के पास इस आशा से जाता कि पचास बत् निकलें तब बीस ही निकलते थे। १७ मैं ने तुम्हारी सारी खेती को लूह और गेरुई और ओलों से मारा तौभी तुम मेरी ओर न फिरे यहोवा की यही वाणी है। १८ और अब सोच विचार करो कि आज से पहिले अर्थात् जिस दिन यहोवा के मन्दिर की नेव डाली गई उस दिन से लेकर नौवें महीने की इसी चौबीसवें दिन लों क्या दशा थी इस का सोच १९ विचार तो करो। क्या अब लों अन्न खत्ते में रक्खा गया है सो नहीं अब लों तो दाखलता और अंजीर और अनार और जलपाई के वृक्ष नहीं फले पर आज के दिन से मैं आशिष देता रहूंगा॥

२० फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को दूसरी बार यहोवा का यह वचन हाग्गै के पास पहुंचा कि, २१ यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल से यों कह कि मैं आकाश और पृथिवी दोनों को कंपाऊंगा। २२ और मैं राज्य राज्य की गद्दी को उलट दूंगा और अन्यजातियों के राज्य राज्य का बल तोड़ूंगा और रथों को चढ़वैयों समेत उलट दूंगा और घोड़ों समेत सवार एक दूसरे की तलवार से गिरेंगे। २३ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस दिन हे शालतीएल के पुत्र मेरे दास जरुब्बाबेल मैं तुझे लेकर मुन्दरी के समान रक्खूंगा यहोवा की यही वाणी है क्योंकि मैं ने तुझी को चुन लिया है सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

जकर्याह

१. दारा के राज्य के दूसरे बरस के आठवें महीने में यहोवा का यह वचन जकर्याह नबी के पास जो बेरेक्याह का पुत्र २ और इद्दो का पोता था पहुंचा कि, यहोवा तुम लोगों ३ के पुरखाओं से बहुत ही क्रोधित हुआ था। सो तू इन लोगों से कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि तुम मेरी ओर फिरो तब मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा सेनाओं के यहोवा ४ का यही वचन है। अपने पुरखाओं के समान न बनो उन से तो अगले नबी यह पुकार पुकारकर कहते थे कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि अपने बुरे मार्गों से और अपने बुरे कामों से फिरो पर उन्हों ने न तो सुना न मेरी ओर ध्यान दिया यहोवा की यही वाणी है। ५ तुम्हारे पुरखा कहां रहे और नबी क्या सदा लों जीते ६ रहे। पर मेरे वचन और मेरी आज्ञाएं जिन को मैं ने अपने दास नबियों को दिया था क्या वे तुम्हारे पुरखाओं के विषय पूरी न हुई[१] तब उन्हों ने फिरकर कहा कि सेनाओं के यहोवा ने हमारे चालचलन और कामों के अनुसार हम से जैसा व्यवहार करने को कहा था वैसा ही उस ने हम से किया भी है॥

७ दारा के दूसरे बरस के शबात नाम ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन को जकर्याह नबी के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता है यहोवा का ८ वचन यों पहुंचा कि, मैं ने रात को क्या देखा कि एक पुरुष लाल घोड़े पर चढ़ा हुआ उन मेंहदियों के बीच खड़ा है जो नीचे स्थान में हैं और उस के पीछे ९ लाल और सुरंग और श्वेत घोड़े भी खड़े हैं। तब मैं ने कहा कि हे मेरे प्रभु ये कौन हैं तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने मुझ से कहा कि मैं तुझे बताऊंगा कि १० ये कौन हैं। फिर जो पुरुष मेंहदियों के बीच खड़ा था उस ने कहा वे हैं जिन को यहोवा ने पृथिवी पर ११ फेरा करने के लिये भेजा है। तब उन्हों ने यहोवा के उस दूत से जो मेंहदियों के बीच खड़ा था कहा कि हम ने पृथिवी पर फेरा किया है और क्या देखा कि १२ सारी पृथिवी चैन से चुपचाप रहती है। तब यहोवा के दूत ने कहा हे सेनाओं के यहोवा तू जो यरूशलेम और यहूदा के नगरों पर सत्तर बरस से क्रोधित है सो उन पर कब लों दया न करेगा। १३ और यहोवा ने उत्तर देकर उस दूत से जो मुझ से बातें करता था अच्छी अच्छी और शान्ति की बातें कहीं। १४ तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने मुझ से कहा तू पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मुझे यरूशलेम और सिय्योन के लिये बड़ी जलन हुई है। १५ और जो जातियां सुख से रहती हैं उन से मैं क्रोधित हूं क्योंकि मैं ने तो थोड़ा सा क्रोध किया था पर उन्हों ने विपत्ति को बढ़ा दिया। १६ इस कारण यहोवा यों कहता है कि अब मैं दया करके यरूशलेम को लौट आया हूं मेरा भवन उस में बनेगा और यरूशलेम पर मापने की डोरी डाली जाएगी सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। १७ फिर यह भी पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मेरे नगर फिर उत्तम वस्तुओं से भर जाएंगे और यहोवा फिर सिय्योन को शांति देगा और यरूशलेम को फिर अपना ठहराएगा॥

१८ फिर मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि चार १९ सींग हैं। तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस से मैं ने पूछा कि ये क्या हैं उस ने मुझ से कहा ये वे ही सींग हैं जिन्हों ने यहूदा और इस्राएल और यरूशलेम २० को तित्तर बित्तर किया है। फिर यहोवा ने मुझे चार २१ लोहार दिखाये। तब मैं ने पूछा कि ये क्या करने को आते हैं उस ने कहा कि ये वे ही सींग हैं जिन्हों ने यहूदा को ऐसा तित्तर बित्तर किया कि कोई सिर न उठा सका पर ये लोग उन्हें भगाने के लिये और उन जातियों के सींगों को काट डालने के लिये आये हैं जिन्हों ने यहूदा के देश को तित्तर बित्तर करने के लिये उस के विरुद्ध अपने अपने सींग उठाये थे॥

२. फिर मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि हाथ में मापने की डोरी लिये हुए एक पुरुष है। २ तब मैं ने उस से पूछा कि तू कहां जाता है उस ने मुझ से कहा यरूशलेम को मापने को जाता हूं कि देखूं कि उस की चौड़ाई कितनी और लम्बाई कितनी है। ३ तब मैं ने क्या देखा कि जो

(१) मूल में क्या उन्हों ने तुम्हारे पुरखाओं को न जा लिया।

दूत मुझ से बातें करता है सो जाता है और दूसरा
४ दूत उस से मिलने के लिये आकर, उस से कहता है दौड़कर इस जवान से कह कि यरूशलेम मनुष्यों और घरैले पशुओं की बहुतायत के मारे शहरपनाह के बाहर
५ बाहर भी बसेगी[१]। और यहोवा की यह वाणी है कि मैं आप उस के चारों ओर आग की सी शहरपनाह ठहरूंगा और उस के मध्य में तेजोमय होकर दिखाई
६ दूंगा[२]। यहोवा की यह वाणी है कि अहो अहो उत्तर के देश में से भाग जाओ क्योंकि मैं ने तुम को आकाश के चारों वायुओं के समान तित्तर बित्तर किया है।
७ अहो बाबेलवाली जाति[३] के संग रहनेहारी सिय्योन
८ बचकर निकल आ। क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उस तेज के प्रगट होने के पीछे उस ने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटती हैं क्योंकि जो तुम को छूता है सो उस की आंख की पुतली ही को
९ छूता है। क्योंकि सुनो मैं अपना हाथ उन पर उठाऊंगा[४] तब वे उन से लूटे जाएंगे जो उन के दास हुए थे और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे भेजा है।
१० हे सिय्योन[५] ऊंचे स्वर से गा और आनन्द कर क्योंकि देख मैं आकर तेरे बीच में वास करूंगा यहोवा की यही
११ वाणी है। उस समय बहुत सी जातियां यहोवा से मिल जाएंगी और मेरी प्रजा हो जाएंगी और मैं तेरे मध्य में वास करूंगा और तू जानेगी कि सेनाओं के यहोवा ने
१२ मुझे तेरे पास भेज दिया है। और यहोवा यहूदा को पवित्र देश में अपना भाग करके अपना लेगा और यरूशलेम
१३ को फिर अपना ठहराएगा। हे सब प्राणियो यहोवा के साम्हने चुपके रहो क्योंकि वह जागकर अपने पवित्र निवासस्थान से निकला है॥

३. फिर उस ने मुझे यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के साम्हने खड़ा दिखाया और शैतान उस की दहिनी ओर उस
२ का विरोध करने को खड़ा था। तब यहोवा ने शैतान से कहा हे शैतान यहोवा तुझ को घुड़के यहोवा जो यरूशलेम को अपना लेता है वही तुझे घुड़के क्या यह
३ आग से निकाली हुई लुकटी सी नहीं है। उस समय यहोशू तो दूत के साम्हने कुचैले वस्त्र पहिने हुए खड़ा
४ था। सो दूत ने उन से जो साम्हने खड़े थे कहा इस के ये कुचैले वस्त्र उतारो फिर उस ने उस से कहा देख मैं ने तेरा अधर्म्म दूर किया है और तुझे सुन्दर सुन्दर वस्त्र
५ पहिना देता हूं। तब मैं ने कहा इस के सिर पर एक शुद्ध पगड़ी रक्खी जाए सो उन्हों ने उस के सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रक्खी और उस को वस्त्र पहिनाये उस समय यहोवा का दूत पास खड़ा रहा।
६ तब यहोवा के दूत ने यहोशू को चिताकर कहा कि
७ सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता है कि यदि तू मेरे मार्गों पर चले और जो कुछ मैं ने तुझे सौंप दिया है उस की रक्षा करे तो तू मेरे भवन में का न्यायी और मेरे आंगनों का रक्षक होगा और मैं तुझ को इन के बीच
८ में जो पास खड़े हैं आने जाने दूंगा। हे यहोशू महायाजक तू सुन ले और तेरे भाईबन्धु जो तेरे साम्हने बैठा करते हैं वे भी सुनें क्योंकि वे अद्भुत चिह्न से मनुष्य हैं सुनो कि मैं पल्लव नाम अपने दास को प्रगट
९ करूंगा। उस पत्थर को देख जिसे मैं ने यहोशू के आगे रक्खा है उस एक ही पत्थर के ऊपर सात आंखें बनी हैं सो सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि सुन मैं उस पत्थर पर खोद देता हूं और इस देश के अधर्म्म को
१० एक ही दिन में दूर कर दूंगा। उसी दिन तुम अपने
११ अपने भाईबन्धुओं को दाखलता और अंजीर के वृक्ष के नीचे आने को बुलाओगे सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

४. फिर जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने फिर आकर मुझे ऐसा जगाया जैसा कोई नींद से जगाया जाए।
२ और उस ने मुझ से पूछा कि तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा मैं ने देखा कि एक दीवट है जो संपूर्ण सोने की है और उस का कटोरा उस की चोटी पर है और इस पर उस के सातों दीपक भी हैं और चोटी पर के इन दीपकों के लिये सात सात नलियां हैं।
३ और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं एक तो उस कटोरे की दहिनी ओर दूसरा उस की बाईं ओर।
४ तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से
५ बातें करता था पूछा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं। जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने मुझ को उत्तर दिया कि क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं मैं ने कहा हे मेरे
६ प्रभु मैं नहीं जानता। तब उस ने मुझ से उत्तर देकर कहा जरुब्बाबेल के लिये यहोवा का यह वचन है कि न तो बल से और न शक्ति से पर मेरे आत्मा के द्वारा
७ होगा मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। हे बड़े पहाड़ तू क्या है जरुब्बाबेल के साम्हने तू मैदान हो जाएगा और वह चोटी का पत्थर यह पुकारते हुए

(१) मूल में बिना शहरपनाह के गांव होकर बसेगी।
(२) मूल में तेज हूंगा। (३) मूल में बाबेल की बेटी।
(४) मूल में हिलाऊंगी।
(५) मूल में सिय्योन की बेटी।

८ लाएगा कि उस पर अनुग्रह हो अनुग्रह । फिर यहोवा ९ का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि, जरुब्बाबेल ने अपने हाथों से इस भवन की नेव डाली है और वही अपने हाथों से उस को तैयार भी करेगा और तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है । १० क्योंकि किस ने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है यहोवा अपनी इन सातों आंखों से सारी पृथिवी पर दृष्टि करके साहुल को जरुब्बाबेल के हाथ में देखेगा और ११ आनन्दित होगा । तब मैं ने उस से फिर पूछा ये दो जलपाई के वृक्ष जो दीवट की दहिनी बाईं ओर हैं ये क्या १२ हैं । फिर मैं ने दूसरी बार उस से पूछा कि जलपाई की दोनों डालियां जो सोने की दोनों नलियों के द्वारा अपने पर से सोनहला तेल उण्डेलती हैं सो क्या हैं । १३ उस ने मुझ से कहा क्या तू नहीं जानता कि ये क्या १४ हैं मैं ने कहा हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता । तब उस ने कहा इन का अर्थ टटके तेल से भरे हुए वे दो पुरुष हैं[१] जो समस्त पृथिवी के प्रभु के पास हाजिर रहते हैं ॥

५. फिर मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि एक लिखा हुआ पत्रा २ उड़ रहा है । दूत ने मुझ से पूछा कि तुझे क्या देख पड़ता है मैं ने कहा मुझे एक लिखा हुआ पत्र उड़ता देख पड़ता है जिस की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ३ दस हाथ की है । तब उस ने मुझ से कहा यह वह स्राप है जो इस सारे देश पर पड़ा चाहता है[२] अर्थात् जो कोई चोरी करता है सो उस की एक ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की नाईं निकाल दिया जाएगा और जो कोई किरिया खाता है सो उस की दूसरी ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की नाईं निकाल दिया ४ जाएगा । सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं उस को ऐसा चलाऊंगा[३] कि वह चोर के घर में और मेरे नाम की झूठी किरिया खानेहारे के घर में घुसकर ठहरेगा और उस को लकड़ी और पत्थरों समेत नाश करेगा ॥

५ तब जो दूत मुझ से बातें करता था उस ने बाहर जाकर मुझसे कहा आंखें उठाकर देख कि वह ६ क्या वस्तु निकल जा रही है । मैं ने पूछा कि वह क्या है । उस ने कहा वह वस्तु जो निकल जा रही है सो एक एपा का नपुआ है । उस ने फिर कहा सारे देश में लोगों का यही रूप है । ७ फिर मैं ने क्या देखा कि किक्कार भर शीशे का एक बटखरा उठाया जा रहा है और यह एक स्त्री है जो एपा के बीच में बैठी है । ८ और दूत ने कहा इस का अर्थ दुष्टता है और उस ने उस को एपा के बीच में दबा दिया और शीशे के उस बटखरे को लेकर उस से एपा का मुंह ढांप दिया । ९ तब मैं ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि दो स्त्रियां चली आती हैं जिन के पंख पवन से फैले हुए हैं और उन के पंख लगलग के से हैं और वे एपा को आकाश और पृथिवी के बीच में उड़ाये लिये जा रही हैं । १० तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था पूछा ११ कि वे एपा को कहां लिये जाती हैं । उस ने कहा शिनार देश में लिये जाती हैं कि वहां उस के लिये एक भवन बनाएं और जब वह तैयार किया जाए तब वह एपा वहां अपने ही पाये पर खड़ा किया जाएगा ॥

६. मैं ने जो फिर आंखें उठाईं तो क्या देखा कि दो पहाड़ों के बीच से चार रथ चले आते हैं और वे पहाड़ पीतल के हैं । २ पहिले रथ में लाल घोड़े और दूसरे रथ में काले, ३ और तीसरे रथ में श्वेत और चौथे रथ में चितकबरे और ४ बदामी घोड़े हैं । तब मैं ने उस दूत से जो मुझ ५ से बातें करता था पूछा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं । दूत ने मुझ से कहा ये तो आकाश के चारों वायु[४] हैं जो सारी पृथिवी के प्रभु के पास हाजिर रहने पर अब ६ निकले आये हैं । जिस रथ में काले घोड़े हैं वह उत्तर देश की ओर जाता है और श्वेत घोड़े उन के पीछे पीछे चले जाते हैं और चितकबरे घोड़े दक्खिन देश की ओर ७ जाते हैं । और बदामी घोड़ों ने निकलकर चाहा कि जाकर पृथिवी पर फेरा करें तब दूत ने कहा जाकर पृथिवी पर फेरा करो सो वे पृथिवी पर फेरा करने लगे । ८ तब उस ने मुझ से पुकारकर कहा देख वे जो उत्तर के देश की ओर जाते हैं उन्हों ने उत्तर के देश में मेरा जी ठंडा किया है ॥

९ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा १० कि, बंधुआई के लोगों में से अर्थात् हेल्दै और तोबिय्याह और यदायाह से कुछ ले और उसी दिन तू सपन्याह के पुत्र योशियाह के घर जिस में वे बाबेल से आकर उतरे हैं उस में जाकर, ११ उन के हाथ से सोना चांदी ले और मुकुट बनाकर उन्हें यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के सिर पर रखना । १२ और उस से

(१) मूल में टटके तेल के पुत्र । (२) मूल में देश पर निकलना है । (३) मूल में मैं उस को निकालूंगा । (४) वा आत्मा ।

यह कहना कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उस पुरुष को देख जिस का नाम पल्लव है वह अपने ही स्थान में मानों उगकर यहोवा के मन्दिर को बना-
१३ एगा। वही यहोवा के मन्दिर को बनाएगा और वही महिमा पाएगा[1] और अपने सिंहासन पर विराजमान होकर प्रभुता करेगा और सिंहासन पर विराजता हुआ याजक भी बनेगा और दोनों के बीच मेल की सम्मति
१४ ठहरेगी। और वे मुकुट हेलेम तोबिय्याह यदायाह और सपन्याह के पुत्र हेन को मिलें कि वे यहोवा
१५ के मन्दिर में स्मरण के लिये बने रहें। फिर दूर दूर के लोग आ आकर यहोवा के मन्दिर बनाने [illegible] करेंगे और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। यदि तुम मन लगाकर अपने परमेश्वर यहोवा की मानो तो यह बात होगी॥

७. फिर

दारा राजा के चौथे बरस के किसलेव नाम नौवें महीने के चौथे दिन को यहोवा का वचन जकर्याह के पास
२ पहुंचा। बेतेलवासियों ने जनों समेत शरेसेर और रेगेम्मेलेक को इसलिये भेजा था कि यहोवा से विनती
३ करें, और सेनाओं के यहोवा के भवन के याजकों से और नबियों से भी यह पूछें कि क्या हमें उपवास करके रोना चाहिये जैसे कि पांचवें महीने में कितने बरसों
४ से हम करते आये हैं। तब सेनाओं के यहोवा का यह
५ वचन मेरे पास पहुंचा कि, सब साधारण लोगों से और याजकों से कह कि जब तुम इन सत्तर बरसों के बीच पांचवें और सातवें महीनों में उपवास और विलाप करते थे तब क्या तुम सचमुच मेरे ही लिये उपवास
६ करते थे। और जब तुम खाते पीते हो तो क्या तुम आप ही खानेहारे और तुम आप ही पीनेहारे नहीं हो।
७ क्या यह वही वचन नहीं है जो यहोवा अगले नबियों के द्वारा उस समय पुकारकर कहता रहा जब यरूशलेम अपने चारों ओर के नगरों समेत बसा और चैन से थी और दक्खिन देश और नीचे का देश भी बसा हुआ था॥
८ फिर यहोवा का यह वचन जकर्याह के पास
९ पहुंचा कि, सेनाओं के यहोवा ने यों कहा है कि खराई से न्याय चुकाना और एक दूसरे के साथ कृपा और
१० दया से काम करना। और न तो विधवा पर अंधेर करना न बपमूए न परदेशी न दीन जन पर और न अपने अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना
११ करना। पर उन्हों ने चित्त लगाना न चाहा और हठ किया और अपने कानों को मूंद लिया कि न सुन सकें।
१२ बरन उन्हों ने अपने हृदय को वज्र सा इसलिये बना लिया कि वे उस व्यवस्था और उन वचनों को न मान सकें जिन्हें सेनाओं के यहोवा ने अपने आत्मा के द्वारा अगले नबियों से कहला भेजा था इस कारण सेनाओं के यहोवा की ओर से उन पर बड़ा क्रोध
१३ भड़का। और सेनाओं के यहोवा का यह वचन हुआ कि जैसा मेरे पुकारने से उन्हों ने नहीं सुना वैसे ही
१४ उन के पुकारने से मैं भी न सुनूंगा, बरन मैं उन्हें उन सब जातियों के बीच जिन्हें वे नहीं जानते आंधी से तित्तर बित्तर कर दूंगा और उन का देश उन के पीछे ऐसा उजाड़ पड़ा रहेगा कि उस में किसी का आना जाना न होगा। इसी प्रकार से उन्हों ने मनोहर देश को उजाड़ कर दिया॥

८. फिर

सेनाओं के यहोवा का यह वचन
२ पहुंचा कि, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सिय्योन के लिये मुझे बड़ी जलन
३ हुई बरन बहुत ही जलजलाहट मुझे उपजी है। यहोवा यों कहता है कि मैं सिय्योन में लौट आया हूं और यरूशलेम के बीच बास किये रहूंगा और यरूशलेम सच्चाई का नगर कहाएगा और सेनाओं के यहोवा का पर्वत
४ पवित्र पर्वत कहाएगा। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि यरूशलेम के चौकों में फिर बूढ़े और बूढ़ियां बहुत दिनों होने के कारण अपने अपने हाथ में लाठी लिए हुए
५ बैठा करेंगी। और नगर के चौक खेलनेवाले लड़कों और
६ लड़कियों से भरे रहेंगे। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उन दिनों में चाहे यह बात इन बचे हुओं के लेखे अनोखी ठहरे पर क्या यह मेरे लेखे भी अनोखी ठहरेगी
७ सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो मैं अपनी प्रजा का उद्धार करके उसे
८ पूरब से और पच्छिम से ले आऊंगा। और मैं उन्हें ले आकर यरूशलेम के बीच बसाऊंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा यह तो सच्चाई
९ और धर्म के साथ होगा। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम जो इन दिनों में ये वचन उन नबियों के मुख से सुनते हो जो सेनाओं के यहोवा के भवन के नेव डालने के समय अर्थात् मन्दिर के बनने के समय में
१० थे। उन दिनों के पहिले न तो मनुष्य की मजूरी

(१) मूल में उठाएगा।

मिलती थी और न पशु का भाड़ा बरन सतानेहारों के कारण न तो आनेहारे को चैन मिलता था और न जानेहारे को क्योंकि मैं सब मनुष्यों से एक दूसरे पर ११ चढ़ाई कराता था। पर अब मैं इस प्रजा के बचे हुओं से ऐसा बर्ताव न करूंगा जैसा कि अगले दिनों में १२ करता था सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। सो शांति के समय की उपज अर्थात् दाखलता फला करेगी पृथिवी अपनी उपज उपजाया करेगी और आकाश से ओस गिरा करेगी क्योंकि मैं अपनी इस प्रजा के बचे १३ हुओं को इन सब का अधिकारी कर दूंगा। और हे यहूदा के घराने और इस्राएल के घराने जिस प्रकार तुम अन्यजातियों के बीच स्राप के कारण थे उसी प्रकार मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा और तुम आशिष के कारण होगे सो तुम मत डरो और न तुम्हारे हाथ ढीले पड़ने १४ पाएं। क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जिस प्रकार जब तुम्हारे पुरखा मुझे रिस दिलाते थे तब मैं ने उन की हानि करने को ठाना था और फिर न पछताया, १५ उसी प्रकार मैं ने इन दिनों में यरूशलेम की और यहूदा के घराने की भलाई करने को ठाना है सो तुम १६ मत डरो। जो जो काम तुम्हें करना चाहिये सो ये हैं अर्थात् एक दूसरे के साथ सत्य बोला करना अपनी कचहरियों[१] में सच्चाई का और मेलमिलाप की नीति १७ का न्याय करना। और अपने अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना न करना और झूठी किरिया में प्रीति न रखना क्योंकि इन सब कामों से मैं घिन करता हूं यहोवा की यही वाणी है॥

१८ फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा १९ कि, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि चौथे और पांचवें और सातवें और दसवें महीने में जो जो उपवास के दिन होते हैं वे यहूदा के घराने के लिये हर्ष और आनन्द और उत्सव के पर्वों के दिन हो जाएंगे सो तुम २० सच्चाई और मेलमिलाप में प्रीति रक्खो। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि ऐसा समय आनेहारा है कि देश देश के लोग और बहुत नगरों के रहनेहारे आएंगे। २१ और एक नगर के रहनेहारे दूसरे नगर के रहनेहारों के पास जाकर कहेंगे कि यहोवा से बिनती करने और सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने के लिये चलो मैं भी २२ चलूंगा। बरन बहुत से देशों के और सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने और २३ यहोवा से बिनती करने के लिये आएंगे। सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि उन दिनों में भांति भांति की भाषा बोलनेहारी सब जातियों में से दस मनुष्य एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे कि हम तुम्हारे संग चलेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है॥

(१) मूल में फाटकों।

९. हद्राक देश के विषय यहोवा का कहा हुआ भारी वचन जो दमिश्क पर भी पड़ेगा[२] क्योंकि यहोवा की दृष्टि मनुष्य जाति की २ और इस्राएल के सब गोत्रों की ओर लगी है, और हमात की ओर जो दमिश्क के निकट है और सोर और सीदोन ३ की ओर ये तो बहुत ही बुद्धिमान् हैं, और सोर ने अपने लिये एक गढ़ बनाया और चान्दी धूलि के किनकों की नाईं और चोखा सोना सड़कों की कीच के समान ४ बटोर रक्खा है। सुनो प्रभु उस को औरों के अधिकार में कर देगा और उस के धुस को तोड़कर समुद्र में डाल देगा और वह नगर आग का कौर हो जाएगा। ५ यह देखकर अश्कलोन डरेगा और अज्जा को पीड़ें उठेंगी और एक्रोन भी डरेगा क्योंकि उस की आशा टूटेगी और अज्जा में फिर राजा न रहेगा और अश्कलोन फिर ६ बसी न रहेगी। और अश्दोद में बिजन्मे लोग बसेंगे सो इसी प्रकार मैं पलिश्तियों के गर्व को तोड़ूंगा। ७ और मैं उस के मुंह में से अहेर का लोहू और घिनौनी वस्तुएं[३] निकाल दूंगा तब उन में से जो बचा रहेगा वह हमारे परमेश्वर[४] का जन होगा और यहूदा में अधिपति सा होगा और एक्रोन के लोग यबूसियों के समान ८ बनेंगे। और मैं उस सेना के कारण जो पास से होकर जाएगी और फिर लौट आएगी अपने भवन के आसपास छावनी किये रहूंगा और कोई परिश्रम करानेहारा फिर उन के पास से होकर न जाएगा मैं तो ये बातें अब भी देखता हूं॥

९ हे सिय्योन[५] बहुत ही मगन हो हे यरूशलेम[५] जयजयकार कर क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है वह दीन है और गदहे पर बरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा। १० और मैं एप्रैम के रथ और यरूशलेम के घोड़े नाश करूंगा और युद्ध के धनुष तोड़ डाले जाएंगे और वह अन्यजातियों से शान्ति की बातें कहेगा और वह समुद्र से समुद्र लों और महानद से पृथिवी के दूर दूर देशों लों प्रभुता करेगा। और तू भी इन तेरी वाचा के लोहू के ११

(२) मूल में दमिश्क उस का विश्रामस्थान।
(३) मूल में और उस के दांतों के बीच से उस की घिनौनी वस्तुएं।
(४) मूल में सिय्योन की बेटी। (५) मूल में यरूशलेम की बेटी।

कारण मैं ने तेरे बन्दियों को बिना जल के गड़हे में से
१२ उबार लिया है। हे आशा धरे हुए बन्दियो गढ़ की ओर फिरो आज ही मैं बताता हूं कि मैं तुम को बदले
१३ में दूना सुख दूंगा। क्योंकि मैं ने धनुष की नाईं यहूदा को चढ़ाकर उस पर तीर की नाईं एप्रैम को सन्धाना और सिय्योन के निवासियों को यूनान के निवासियों के विरुद्ध उभारूंगा और उन्हें वीर की तलवार सा कर
१४ दूंगा। तब यहोवा उन के ऊपर दिखाई देगा और उस का तीर बिजली की नाईं छूटेगा और प्रभु यहोवा नरसिंगा फूंककर दक्खिन देश की सी आंधी में होके
१५ चलेगा। सेनाओं का यहोवा ढाल से उन्हें बचाएगा और वे अपने शत्रुओं का नाश करेंगे और उन के गोफन के पत्थरों पर पांव धरेंगे और वे पीकर ऐसा कोलाहल करेंगे जैसा लोग दाखमधु पीकर करते हैं और वे कटोरे की नाईं या वेदी के कोने की नाईं भरे जाएंगे।
१६ और उस समय उन का परमेश्वर यहोवा उन को अपनी प्रजारूपी भेड़ बकरियां जानकर उन का उद्धार करेगा और वे मुकुटमणि ठहरके उस की भूमि से बहुत ऊंचे
१७ पर चमकते रहेंगे। उस का क्या ही कुशल और क्या ही शोभा होगी उस के जवान लोग अन्न खाकर और कुमारियां नया दाखमधु पीकर हृष्टपुष्ट हो जाएंगी॥

१०. **यहोवा** से बरसात के अन्त में वर्षा मांगो अर्थात् यहोवा से जो बिजली चमकाता है और वह उन को वर्षा देता
२ और एक एक के खेत में हरियाली उपजाता है। क्योंकि गृहदेवता अनर्थ बात कहते और भावी करनेहारे झूठा दर्शन देखते और झूठे स्वप्न सुनाते और व्यर्थ शांति देते हैं इस कारण लोग भेड़ बकरियों की नाईं भटक गये और चरवाहे न होने के कारण दुर्दशा में पड़े॥
३ मेरा कोप चरवाहों पर भड़का है और मैं उन्हें और बकरों को दण्ड दूंगा क्योंकि सेनाओं का यहोवा अपने झुण्ड अर्थात् यहूदा के घराने का हाल देखने को आएगा और लड़ाई में उन को अपना हृष्टपुष्ट घोड़ा सा
४ बनाएगा। सो उसी में से कोने का पत्थर उसी में से खूंटी उसी में से युद्ध का धनुष उसी में से प्रधान सब
५ के सब प्रगट होंगे। और वे ऐसे वीरों के समान होंगे जो लड़ाई में अपने बैरियों को सड़कों की कीच की नाईं रौंदते हों और वे लड़ेंगे क्योंकि यहोवा उन के संग रहेगा इस कारण वे वीरता से लड़ेंगे और सवारों की
६ आशा टूटेगी। और मैं यहूदा के घराने को पराक्रमी करूंगा और यूसुफ के घराने का उद्धार करूंगा और मुझे जो उन पर दया आई इस कारण उन्हें लौटा लाकर उन्हीं के देश में बसाऊंगा और वे ऐसे होंगे कि मानो मैं ने उन को मन से नहीं उतारा क्योंकि उन का परमेश्वर यहोवा हूं इसलिये उन की सुन लूंगा।
७ और एप्रैमी लोग वीर के समान होंगे और उन का मन ऐसा आनन्दित होगा जैसे दाखमधु से होता है और यह देखकर उन के लड़के बाले आनन्द करेंगे
८ और उन का मन यहोवा के कारण मगन होगा। मैं सीटी बजाकर उन को इकट्ठा करूंगा क्योंकि मैं उन का
९ छुड़ानेहारा हूं और वे ऐसे बढ़ेंगे जैसे बढ़े थे। और मैं उन्हें जाति जाति के लोगों के बीच छितराऊंगा[१] और वे दूर दूर देशों में मुझे स्मरण करेंगे और अपने
१० बालकों समेत जी जाएंगे तब लौट आएंगे। मैं उन्हें मिस्र देश से लौटा लाऊंगा और अश्शूर से इकट्ठा करूंगा और गिलाद और लबानोन के देशों में ले आकर इतना
११ बढ़ाऊंगा कि वहां उन की समाई न होगी। और यह उस कष्टदाई समुद्र में से होकर उस की लहरें दबाता हुआ जाएगा और नील नदी[२] का सब गहिरा जल सूख जाएगा और अश्शूर का घमण्ड तोड़ा जाएगा
१२ और मिस्र का राजदण्ड जाता रहेगा। और मैं उन्हें यहोवा के द्वारा पराक्रमी करूंगा और वे उस के नाम से चलें फिरेंगे यहोवा की यही वाणी है॥

११. **हे** लबानोन आग को रस्ता दे[३] कि वह आकर तेरे देवदारों को
२ भस्म करने पाए। हे सनौबरो हाय हाय करो क्योंकि देवदार गिर गया है और बड़े से बड़े वृक्ष नाश हो गये हैं हे बाशान के बांज वृक्षो हाय हाय करो क्योंकि
३ अगम्य वन काटा गया है। चरवाहों के हाहाकार का शब्द हो रहा है क्योंकि उन का विभव नाश हो गया है जवान सिंहों का गरजना सुनाई देता है क्योंकि यर्दन तीर का घना वन[४] नाश किया गया है॥
४ मेरे परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा दी कि घात
५ होनेहारी भेड़ बकरियों का चरवाहा हो जा। उन के मोल लेनेहारे उन्हें घात करने पर भी अपने को दोषी नहीं जानते और उन के बेचनेहारे कहते हैं कि यहोवा धन्य है हम धनी हो गये हैं और उन के चरवाहे उन
६ पर कुछ दया नहीं करते। सो यहोवा की यह वाणी है कि मैं इस देश के रहनेहारों पर फिर दया न करूंगा बरन मैं मनुष्यों को एक दूसरे के

(१) मूल में बो दूंगा। (२) मूल में योर।
(३) मूल में अपने किवाड़ खोल।
(४) मूल में गर्व।

हाथ में और उन के राजा के हाथ में पकड़वा दूंगा और वे इस देश को नाश करेंगे और मैं इस के रहने-
७ हारों को उन के वश से न छुड़ाऊंगा। सो मैं घात होनेहारी भेड़ बकरियों को और विशेष करके उन में से जो गरीब थीं उन को चराने लगा और मैं ने दो लाठियां लीं एक का नाम मैं ने मनोहरता रक्खा और दूसरी का नाम बन्धन इन को लिये हुए मैं उन भेड़ बकरियों को
८ चराने लगा। और मैं ने उन के तीनों चरवाहों को एक महीने में विलाय दिया और मैं उन के कारण अधीर
९ था और वे मुझ से घिन करती थीं। तब मैं ने उन से कहा मैं तुम को न चराऊंगा तुम में से जो मरे सो मरे और जो विलाए सो विलाए और जो बची रहें सो एक
१० दूसरे का मांस खाएं। और मैं ने अपनी वह लाठी जिस का नाम मनोहरता था तोड़ डाली कि जो वाचा मैं ने
११ सब अन्यजातियों के साथ बांधी थी उसे तोड़ूं। सो वह उसी दिन तोड़ी गई और इस से गरीब भेड़ बकरियां जो मुझे ताकती रहीं उन्हों ने जान लिया कि यह
१२ यहोवा का वचन है। तब मैं ने उन से कहा यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजूरी दो और नहीं तो मत दो, सो उन्हों ने मेरी मजूरी में चान्दी के तीस टुकड़े
१३ तौल दिये। तब यहोवा ने मुझ से कहा इन्हें कुम्हार के आगे फेंक दे अर्थात् यह क्या ही भारी दाम है जो उन्हों ने मेरा ठहराया है सो मैं ने चान्दी के उन तीस टुकड़ों को लेकर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक
१४ दिया। और मैं ने अपनी दूसरी लाठी जिस का नाम बन्धन था इसलिये तोड़ डाली कि मैं उस भाई भाई के से नाते को जो यहूदा और इस्राएल के बीच में है तोड़ूं॥

१५ तब यहोवा ने मुझ से कहा अब तू मूढ़ चरवाहे
१६ के हथियार ले ले। क्योंकि मैं इस देश में ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो न खोई हुई को ढूंढ़ेगा न तित्तर बित्तर को इकट्ठी करेगा न घायलों को चङ्गी करेगा न जो भली चङ्गी हैं उन का पालन पोषण करेगा, बरन मोटियों का मांस खाएगा और उन के खुरों को फाड़
१७ डालेगा। हाय उस निकम्मे चरवाहे पर जो भेड़ बकरियों को छोड़ जाता है उस की बांह और दहिनी आंख दोनों पर तलवार लगेगी तब उस की बांह सूख ही जाएगी और उस की दहिनी आंख बैठ ही जाएगी॥

१२. **इस्राएल** के विषय यहोवा का कहा हुआ भारी वचन यहोवा जो आकाश का ताननेहारा और पृथिवी की नेव डालनेहारा और मनुष्य के आत्मा का रचनेहारा है
२ उस की यह वाणी है कि, सुनो मैं यरूशलेम को चारों ओर की सब जातियों के लिये लड़खड़ा देने के मद का कटोरा ठहरा दूंगा और जब यरूशलेम घेर
३ लिया जाएगा तब यहूदा की दशा ऐसी ही होगी। और उस समय पृथिवी की सारी जातियां यरूशलेम के विरुद्ध इकट्ठी होंगी तब मैं उस को इतना भारी पत्थर बनाऊंगा कि उन सभों में से जितने उस को उठाने लगें
४ सो बहुत ही घायल होंगे। यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं हर एक घोड़े को घबरा दूंगा और उस के सवार को बौरहा करूंगा और मैं यहूदा के घराने पर कृपादृष्टि रक्खूंगा पर अन्यजातियों के सब घोड़ों को
५ अंधा कर डालूंगा। तब यहूदा के अधिपति सोचेंगे कि यरूशलेम के निवासी अपने परमेश्वर सेनाओं के
६ यहोवा की सहायता से मेरे सहायक बनेंगे। उस समय मैं यहूदा के अधिपतियों को ऐसा कर दूंगा जैसी लकड़ी के ढेर में आग भरी अंगेठी वा पूले में जलती हुई मशाल होती है अर्थात् वे दहिने बायें पर चारों ओर के सब लोगों को भस्म कर डालेंगे और यरूशलेम जहां
७ अब बसी है वहीं यरूशलेम ही में बसी रहेगी। और यहोवा पहिले यहूदा के तंबुओं का उद्धार करेगा कहीं ऐसा न हो कि दाऊद का घराना और यरूशलेम के निवासी अपने अपने विभव के कारण यहूदा के विरुद्ध
८ बड़ाई मारें। उस समय यहोवा यरूशलेम के निवासियों को मानो ढाल से बचा लेगा और उस समय उन में से जो ठोकर खानेहारा हो सो दाऊद के समान होगा और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा अर्थात् यहोवा के उस दूत के समान जो उन के आगे
९ आगे चलता था। और उस समय मैं उन सब जातियों को जो यरूशलेम पर चढ़ाई करेंगे नाश करने का यत्न
१० करूंगा। और मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेहारा[१] और प्रार्थना सिखानेहारा[२] आत्मा उण्डेलूंगा सो वे मुझे अर्थात् जिसे उन्हों ने बेधा उसे ताकेंगे और उस के लिये ऐसे रोएंगे पीटेंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते पीटते हैं और ऐसा भारी शोक करेंगे जैसा पहिलौठे पर करते हैं।
११ उस समय यरूशलेम में इतना रोना पीटना होगा जैसा मगिद्दोन की तराई में के हदद्रिम्मोन में हुआ था।
१२ बरन सारे देश में विलाप एक एक कुल में अलग अलग होगा अर्थात् दाऊद के घराने का कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग नातान के घराने का कुल अलग और
१३ उन की स्त्रियां अलग। लेवी के घराने का कुल अलग

(१) मूल में का। (२) मूल में ऐसे करके होंगे।

और उन की स्त्रियां अलग शिमीयों का कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग, निदान जितने कुल रह गये हों एक एक कुल अलग और उन की स्त्रियां अलग ॥ १४

१३. उसी समय दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों के लिये पाप और मलिनता धोने के निमित्त बहता हुआ सोता होगा। २ और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं इस देश में से मूरतों के नाम मिटा डालूंगा और वे फिर स्मरण में न रहेंगी और मैं नबियों और अशुद्ध आत्मा को इस देश में से निकाल दूंगा। ३ और यदि कोई फिर नबूवत करे तो उस के माता पिता जिन से वह उत्पन्न हुआ उस से कहेंगे कि तू जीता न बचेगा क्योंकि तू ने यहोवा के नाम से झूठ कहा है सो जब वह नबूवत करे तब उस के माता पिता जिन से वह उत्पन्न हुआ उस को वेध डालेंगे। ४ और उस समय नबी लोग नबूवत करते हुए अपने अपने दर्शन से लज्जित होंगे और न वे धोखा देने के लिये कंबल का वस्त्र पहिनेंगे। ५ बरन एक एक कहेगा कि मैं नबी नहीं किसान हूं और लड़कपन ही से मैं औरों का दास हूं। ६ तब उस से यह पूछा जाएगा कि तेरी छाती में ये घाव कैसे हुए[१] और वह कहेगा ये वे ही हैं जो मेरे प्रेमियों के घर में मुझे लगे हैं ॥

७ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि हे तलवार मेरे ठहराये हुए चरवाहे के विरुद्ध अर्थात् जो पुरुष मेरा सजाति है उस के विरुद्ध चल तू उस चरवाहे को काट तब भेड़ बकरियां तित्तर बित्तर हो जाएंगी पर बच्चों ८ पर मैं अपने हाथ फेरूंगा। यहोवा की यह भी वाणी है कि इस देश के सारे निवासियों की दो तिहाई मार डाली जाएगी और बची हुई तिहाई उस में बनी ९ रहेगी। इस तिहाई को मैं आग में डालकर ऐसा निर्मल करूंगा जैसा रूपा निर्मल किया जाता है और ऐसा जांचूंगा जैसा सोना जांचा जाता है सो वे मुझ से प्रार्थना किया करेंगे और मैं उन की सुनूंगा मैं तो उन के विषय कहूंगा कि ये मेरी प्रजा हैं और वे मेरे विषय कहेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है ॥

१४. सुनो यहोवा का ऐसा एक दिन आनेहारा है कि तेरा धन २ लूटकर तेरे बीच में बांट लिया जाएगा। क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम से लड़ने के लिये इकट्ठा करूंगा और वह नगर ले लिया जाएगा और घर लूटे जाएंगे और स्त्रियां भ्रष्ट की जाएंगी और नगर के आधे लोग बन्धुआई में जाएंगे पर प्रजा के शेष लोग नगर ही में रहने पाएंगे। ३ तब यहोवा निकलकर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था। ४ और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर जो पूरब और यरूशलेम के साम्हने है पांव धरेगा तब जलपाई का पर्वत पूरब से लेकर पच्छिम लों बीचों बीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा सो आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्खिन की ओर हट जाएगा। ५ तब तुम मेरे बनाये हुए उस खड्ड से होकर भाग जाओगे क्योंकि वह खड्ड आसेल लों पहुंचेगा बरन तुम ऐसे भागोगे जैसे उस भुईडोल के डर से भागे थे जो यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में हुआ था। तब मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा और सब पवित्र लोग तेरे साथ होंगे। ६ उस समय कुछ उजियाला न रहेगा क्योंकि ज्योतिगण सिमट जाएंगे। ७ और वह एक ही दिन होगा जिसे यहोवा ही जानता है न तो दिन होगा और न रात होगी पर सांझ को उजियाला होगा। ८ और उस समय यरूशलेम से बहता हुआ जल फूट निकलेगा उस की एक शाखा पूरब के ताल और दूसरी पच्छिम के समुद्र की ओर बहेगी और धूप के दिनों में और जाड़े के दिनों में बराबर बहती रहेगी। ९ तब यहोवा सारी पृथिवी का राजा होगा और उस समय यहोवा एक ही और उस का नाम एक ही माना जाएगा। १० गेबा से लेकर यरूशलेम की दक्खिन ओर के रिम्मोन लों सारी भूमि अराबा के समान हो जाएगी और वह ऊंची होकर बिन्यामीन के फाटक से लेके पहिले फाटक के स्थान लों और कोनेवाले फाटक लों और हननेल के गुम्मट से लेकर राजा के दाखरसकुण्डों लों अपने स्थान में बसेगी। ११ और लोग उस में बसेंगे और फिर सत्यानाश का स्राप न होगा और यरूशलेम बेखटके बसी रहेगी। १२ और जितनी जातियों ने यरूशलेम से युद्ध किया हो उन सभों को यहोवा ऐसी मार से मारेगा कि खड़े खड़े उन का मांस सड़ जाएगा और उन की आंखें अपने गोलकों में सड़ जाएंगी और उन की जीभ उन के मुंह में सड़ जाएगी। १३ और उस समय यहोवा की ओर से उन में बड़ी घबराहट पैठेगा और वे एक दूसरे के हाथ को पकड़ेंगे और एक दूसरे पर अपने अपने हाथ उठाएंगे। १४ और यहूदा भी यरूशलेम में लड़ेगा और सोना चान्दी वस्त्र आदि चारों ओर की सब जातियों की धन संपत्ति उस में बटोरी जाएगी। १५ और घोड़े खच्चर ऊंट और गदहे बरन जितने पशु उन की छावनियों में होंगे सो भी ऐसी

(१) मूल में तेरे हाथों के बीच ये क्या घाव हैं।

१६ मार से मारे जाएंगे। और यरूशलेम पर चढ़नेहारी सब जातियों में से जितने लोग बचे रहेंगे सो बरस बरस राजा को अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने और झोंपड़ियों का पर्व मानने के लिये यरूशलेम को

१७ जाया करेंगे। और पृथिवी के कुलों में से जो लोग यरूशलेम में राजा अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिये न जाए उन के यहां वर्षा न होगी।

१८ और यदि मिस्र का कुल वहां न आए तो क्या उन पर वह मरी न पड़ेगी जिस से यहोवा उन जातियों को मारेगा जो झोंपड़ियों का पर्व मानने के लिए न जाएं।

१९ यह मिस्र का पाप और उन सब जातियों का पाप ठहरेगा जो झोंपड़ियों का पर्व मानने के लिये न जाएं।

२० उस समय घोड़ों की घंटियों पर भी यह लिखा रहेगा कि यहोवा के लिये पवित्र और यहोवा के भवन की हंड़ियां उन कटोरों के तुल्य पवित्र ठहरेंगी जो वेदी के

२१ साम्हने रहत हैं। बरन यरूशलेम में और यहूदा देश में सब हंड़ियां सेनाओं के यहोवा के लिये पवित्र ठहरेंगी और सब मेलबलि करनेहारे आ आकर उन हंड़ियों में मांस सिझाया करेंगे और उस समय सेनाओं के यहोवा के भवन में फिर कोई कनानी न पाया जाएगा॥

मलाकी।

---

१. मलाकी के द्वारा इस्राएल के विषय यहोवा का कहा हुआ भारी वचन॥

२ यहोवा यह कहता है कि मैं ने तुम से प्रेम किया है पर तुम पूछते हो कि तू ने किस बात में हम से प्रेम किया है यहोवा की यह वाणी है कि क्या एसाव याकूब का

३ भाई न था तौ भी मैं ने याकूब से प्रेम किया पर एसाव को अप्रिय जानकर उस के पहाड़ों को उजाड़ डाला और उस के भाग को जंगल के गीदड़ों का कर दिया

४ है। एदोम तो कहता है कि हमारा देश उजड़ गया है पर हम खंडहरों को फिरकर बसाएंगे सो सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि वे तो बनाएंगे पर मैं ढा दूंगा और उन का नाम दुष्ट जाति पड़ेगा और वे ऐसे लोग कहा-

५ एंगे जिन पर यहोवा सदा क्रोधित रहेगा। और तुम अपनी आंखों से यह देखकर कहोगे कि यहोवा इस्राएल को छोड़ और जातियों में भी[१] महान ठहरेगा॥

६ पुत्र पिता का और दास स्वामी का आदर करता है सो मैं जो पिता हूं मेरा आदर कहां और मैं जो स्वामी हूं मेरा भय मानना कहां। सेनाओं का यहोवा तुम याजकों से जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है पर तुम पूछते हो कि हम ने किस

७ बात में तेरे नाम का अपमान किया है। तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते हो तौभी तुम पूछते हो कि हम किस बात में तुझे अशुद्ध ठहराते हैं इस बात में कि तुम कहते हो कि यहोवा की मेज तुच्छ है।

८ फिर जब तुम अंधे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते तो क्या यह बुरा नहीं और जब तुम लंगड़े वा रोगी पशु को ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओ तो क्या वह तुम से प्रसन्न होगा वा तुम पर अनुग्रह करेगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

९ अब ईश्वर से बिनती करो कि वह हम लोगों पर अनुग्रह करे यह तुम्हारे हाथ से हुआ है क्या तुम समझते हो कि ईश्वर तुम में से किसी का पक्ष करेगा सेनाओं

१० के यहोवा का यही वचन है। भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ों को बन्द करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग बारने न पाते सेनाओं के यहोवा का यह वचन है कि मैं तुम से कुछ भी सन्तुष्ट नहीं

११ और न तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण करूंगा। उदयाचल से लेकर अस्ताचल लों अन्यजातियों में तो मेरा नाम बड़ा है और हर कहीं धूप और शुद्ध भेंट मेरे नाम पर चढ़ाई जाती है क्योंकि अन्यजातियों में मेरा नाम बड़ा

१२ है सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। पर तुम लोग उस को यह कहकर अपवित्र ठहराते हो कि यहोवा की मेज अशुद्ध है और उस पर से जो भोजनवस्तु मिलती

१३ है सो तुच्छ है। फिर तुम कहते हो कि यह कैसे बड़े क्लेश का काम है और सेनाओं के यहोवा का यह वचन है कि तुम ने उस भोजनवस्तु से नाक सिकोड़ी है और

(१) मूल में इस्राएल के सिवान की परली ओर

चोरी के और लंगड़े और रोगी पशु की भेंट ले आते हो फिर क्या मैं ऐसी भेंट तुम्हारे हाथ से ग्रहण करूं यहोवा
१४ का यही वचन है। जिस छली के झुण्ड में नरपशु हो पर वह मन्नत मानकर प्रभु को बर्जा हुआ पशु चढ़ाए वह स्रापित है, मैं तो बड़ा राजा हूं और मेरा नाम अन्यजातियों में भययोग्य है सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

२ २. और अब हे याजको यह आज्ञा तुम्हारे लिये है। यदि तुम इसे न सुनो और मन लगाकर मेरे नाम का आदर न करो तो सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को स्राप दूंगा और जो वस्तुएं मेरी आशिष से तुम्हें मिली हैं उन पर मेरा स्राप पड़ेगा वरन तुम जो मन नहीं लगाते
३ इस कारण मेरा स्राप उन पर पड़ चुका है। सुनो मैं तुम्हारे खेतों के बीज को जमने न दूंगा[१] और तुम्हारे मुंह पर तुम्हारे पर्वों के यज्ञपशुओं का मल फेंकूंगा[२] और
४ उस के संग तुम भी उठा लिये जाओगे। तब तुम जानोगे कि मैं ने तुम को यह आज्ञा इसलिये दिलाई है कि लेवी के साथ मेरी बंधी हुई वाचा बनी रहे सेनाओं के
५ यहोवा का यही वचन है। मेरी जो वाचा उस के साथ बंधी वह जीवन और शांति की है और मैं ने उन्हें उस को इसलिये दिये कि वह भय माने और उसने मेरा भय मान भी लिया और मेरे नाम से अत्यन्त भय खाता
६ था। उस को मेरी सच्ची व्यवस्था कंठ थी और उस के मुंह से कुटिल बात न निकलती थी वह शांति और सीधाई से मेरे संग संग चलता था और बहुतों
७ को अधर्म्म से फेर लेता था। याजक को तो चाहिये कि वह अपने होंठों से ज्ञान की रक्षा करे और लोग उस के मुंह से व्यवस्था पूछें क्योंकि वह सेनाओं के
८ यहोवा का दूत है। पर तुम लोग धर्म्म के मार्ग से आप हट गये तुम ने बहुतों को भी व्यवस्था के विषय ठोकर खिलाई है तुम ने लेवी की वाचा को तोड़ दिया है
९ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। सो मैं ने भी तुम को सब लोगों के साम्हने तुच्छ और नीच कर दिया है क्योंकि तुम मेरे मार्गों पर नहीं चलते बरन व्यवस्था देने में मुंह देखा विचार करते हो॥

१० क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं क्या एक ही ईश्वर ने हम को नहीं सिरजा हम क्यों एक दूसरे का विश्वासघात करके अपने पितरों की वाचा को तोड़ देते हैं। यहूदा ने विश्वासघात किया है और इस्राएल
११ में और यरूशलेम में घिनौना काम किया गया है कैसे कि यहूदा ने बिराने देवता की कन्या से विवाह करके यहोवा के पवित्र स्थान को जो उस का प्रिय है अपवित्र
१२ किया है। जो पुरुष ऐसा काम करे उस से सेनाओं का यहोवा उस के घर के रक्षक और सेनाओं के यहोवा की भेंट चढ़ानेहारे को यहूदा के तंबुओं में से नाश करे।
१३ फिर तुम ने यह दूसरा काम किया है तुम ने यहोवा की वेदी को रोनेहारों और सांस भरनेहारों को आंसुओं से भिगो दिया है यहां लों कि वह तुम्हारी भेंट की ओर दृष्टि नहीं करता और न प्रसन्न होकर उस को तुम्हारे हाथ से ग्रहण करता है तौभी तुम पूछते हो कि
१४ क्यों। इस कारण कि यहोवा तेरे और तेरी उस जवानी की संगिनी और ब्याही हुई स्त्री के बीच साक्षी हुआ
१५ जिस का तू ने विश्वासघात किया है। क्या उस ने एक ही को नहीं बनाया तौभी शेष आत्मा उस के पास था[३] और एक ही क्यों इसलिये कि वह परमेश्वर के योग्य सन्तान चाहता था सो तुम अपने आत्मा के विषय चौकस रहो और तुम में से कोई अपनी जवानी
१६ की स्त्री से विश्वासघात न करे। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि मैं स्त्रीत्याग से घिन करता हूं और उस से भी जो अपने वस्त्र पर उपद्रव करता है सो तुम अपने आत्मा के विषय चौकस रहो सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

१७ तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को उकता दिया है तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में उसे उकता दिया इस में कि तुम कहते हो कि जो कोई बुरा करता है सो यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है वा यह कि न्यायी परमेश्वर कहां रहा॥

३. सुनो मैं अपने दूत को भेजता हूं और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा और वह प्रभु जिसे तुम ढूंढ़ते हो अचानक अपने मन्दिर में आएगा अर्थात् वाचा का वह दूत जिसे तुम चाहते हो सुनो वह आता है सेनाओं के यहोवा का यही
२ वचन है। पर उस के आने का दिन कौन सह सकेगा और जब वह दिखाई दे तब कौन खड़ा रह सकेगा क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के
३ समान है। और वह रूपे का तावनेहारा और शुद्ध

(१) मूल में मैं तुम्हारे कारण बीज को घुड़कूंगा।
(२) मूल में फैलाऊंगा।
(३) वा क्या एक ही पुरुष ने ऐसा किया जिस में आत्मा कुछ भी रहा था।

करनेहारा बन बैठेगा और लेवीयों को शुद्ध करेगा और उन को सोने रूपे की नाईं निर्मल करेगा तब वे यहोवा ४ की भेंट धर्म्म से चढ़ाएंगे। तब यहूदा और यरूशलेम में की भेंट यहोवा को ऐसी भाएगी जैसी पहिले दिनों ५ और प्राचीनकाल में भावती थी। और मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊंगा और टोनहों और व्यभिचारियों और झूठी किरिया खानेहारों के विरुद्ध और जो मजूर की मजूरी को दबाते और विधवा और बपमूए पर अंधेर करते और परदेशी का न्याय बिगाड़ते और मेरा भय नहीं मानते उन सभों के विरुद्ध मैं फुर्ती से ६ साक्षी दूंगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। मैं यहोवा तो बदला नहीं इसी कारण हे याकूबियो तुम नाश नहीं हुए॥

७ अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आये हो और उन्हें पालन नहीं करते मेरी ओर फिरो तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूंगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है पर तुम पूछते हो ८ कि हम किस बात में फिरें। क्या मनुष्य परमेश्वर को झांसे देखो तुम तो मुझ को झांसते हो तौ भी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे झांसा है दशमांश और ९ उठाने की भेंटों में। तुम पर भारी स्राप पड़ा है क्योंकि तुम मुझे झांसते हो बरन यह सारी जाति ऐसो करती है। १० सारे दशमांश को भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे और सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर बेपरिमाण आशिष ११ बरसाऊंगा कि नहीं। और मैं तुम्हारे कारण नाश करनेहारे को ऐसा घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे १२ न गिरेंगे सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। और सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी क्योंकि तुम्हारा देश[१] मनोहर देश होगा सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

१३ यहोवा यह कहता है कि तुम ने मेरे विरुद्ध ढिठाई की बातें कही हैं पर तुम पूछते हो कि हम तेरे विरुद्ध १४ आपस में क्या बोले हैं। तुम ने कहा है कि परमेश्वर की सेवा करनी व्यर्थ है और हम ने जो उस के सौंपे हुए कामों को पूरा किया और सेनाओं के यहोवा के डर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए चले हैं इस से क्या १५ लाभ हुआ। और अब हम अभिमानी लोगों को धन्य कहते हैं क्योंकि दुराचारी तो बन गये हैं बरन वे परमेश्वर की परीक्षा करने पर भी बच गये हैं। १६ तब यहोवा का भय माननेहारे आपस में बात करते थे और यहोवा ध्यान धरकर उन की सुनता था और जो यहोवा का भय मानते और उस के नाम का संमान करते थे उन के स्मरण के निमित्त उस के साम्हने एक पुस्तक लिखी जाती १७ थी। सो सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि जो दिन मैं ने ठहराया है उस दिन वे लोग मेरे बरन मेरे निज ठहरेंगे और मैं उन से ऐसी कोमलता करूंगा जैसी १८ कोई अपने सेवा करनेहारे पुत्र से करे। तब तुम फिरकर धर्म्मी और दुष्ट का भेद अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है और जो उस की सेवा नहीं करता उन दोनों का भेद पहिचान सकोगे।

४. १ क्योंकि सुनो वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है तब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे और उस आनेहारे दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उन का पता तक न रहेगा[२] सेनाओं के २ यहोवा का यही वचन है। पर तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो धर्म्म का सूर्य्य उदय होगा और उस की किरणों के द्वारा से तुम चंगे हो जाओगे[३] और निकलकर पाले हुए बछड़ों की नाईं कूदो फांदोगे। ३ तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे अर्थात् मेरे उस ठहराये हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जाएंगे सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

४ मेरे दास मूसा की व्यवस्था अर्थात् जो जो विधि और नियम मैं ने सारे इस्राएलियों के लिये उस को होरेब में दिये थे उन को स्मरण रक्खो। ५ सुनो यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले मैं ६ तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। और वह पितरों[४] के मन को उन के पुत्रों की ओर और पुत्रों के मन को उन के पितरों[४] की ओर फेरेगा ऐसा न हो कि मैं आकर पृथिवी को सत्यानाश करूं॥

(१) मूल में तुम।

(२) मूल में उन की न जड़ न डालियां छोड़ेगा।

(३) मूल में उस के पंखों में चंगापन।

(४) वा माता पिता।

धर्म्मपुस्तक का नया नियम

अर्थात्

प्रभु यीशु

का

सुसमाचार

ब्रिटिश एन्ड फ़ारेन बाइबल सोसाइटी

इलाहाबाद

१९४०

NEW TESTAMENT
IN HINDI
1940

Reprint *8,700 Copies*

नये धर्म नियम

की पुस्तकों के नाम

और

उन का सूचीपत्र और पर्ब्बों की संख्या

नये नियम की पुस्तकें

पुस्तकों के नाम	अध्याय
मत्ती रचित सुसमाचार	२८
मरकुस रचित सुसमाचार	१६
लूका रचित सुसमाचार	२४
यूहन्नारचित सुसमाचार	२१
प्रेरितों के कामों का बखान	२८
रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	१६
कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	१६
कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	१३
गलतियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	६
इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	६
फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	४
कुलुस्सियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	४
थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	५
थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	३
तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	६
तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	४
तितुस के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	३
फिलेमोन के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	१
इब्रानियों के नाम पत्री	१३
याकूब की पत्री	५
पतरस की पहिली पत्री	५
पतरस की दूसरी पत्री	३
यूहन्ना की पहिली पत्री	५
यूहन्ना की दूसरी पत्री	१
यूहन्ना की तीसरी पत्री	१
यहूदा की पत्री	१
यूहन्ना का प्रकाशित वाक्य	२२

सुसमाचार

मत्ती रचित सुसमाचार

---

१. इब्राहीम के सन्तान दाऊद के सन्तान यीशु मसीह की वंशावली।

२ इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ इसहाक से ३ याकूब और याकूब से यहूदा और उस के भाई, यहूदा और तामार से फिरिस और जोरह और फिरिस से ४ हिस्रोन और हिस्रोन से राम, और राम से अम्मीनादाब और अम्मीनादाब से नहशोन और नहशोन से सलमोन, ५ और सलमोन और राहब से बोअज और बोअज और ६ रूत से ओबेद और ओबेद से यिशै, और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ॥

७ और दाऊद और उरिय्याह की विधवा से सुलै-८ मान उत्पन्न हुआ, और सुलैमान से रहबाम और रहबाम से अबिय्याह और अबिय्याह से आसा, और आसा से यहोशाफात और यहोशाफात से योराम और योराम से ९ उज्जिय्याह, और उज्जिय्याह से योताम और योताम से १० आहाज और आहाज से हिजकिय्याह, और हिजकिय्याह से मनश्शिह और मनश्शिह से आमोन और आमोन से ११ योशिय्याह उत्पन्न हुआ। और बाबिल को पहुंचाये जाने के समय में योशिय्याह से यकुन्याह और उस के भाई उत्पन्न हुए॥

१२ बाबिल को पहुंचाये जाने के पीछे यकुन्याह से १३ शालतिएल और शालतिएल से जरुब्बाबिल, और जरुब्बाबिल से अबीहूद और अबीहूद से इल्याकीम १४ और इल्याकीम से अजोर, और अजोर से सदोक और १५ सदोक से अखीम और अखीम से इलीहूद, और इलीहूद से इलियाजार और इलियाजार से मत्तान और १६ मत्तान से याकूब, और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ जो मरयम का पति था जिस से यीशु जो मसीह कहलाता है उत्पन्न हुआ॥

१७ इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी और दाऊद से बाबिल को पहुंचाये जाने तक चौदह पीढ़ी और बाबिल को पहुंचाये जाने के समय से मसीह तक चौदह पीढ़ी ठहरीं।

१८ **यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ। जब उस की माता मरयम की मंगनी यूसुफ से हुई तो उन** के इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। १९ सो उस के पति यूसुफ ने जो धर्म्मी था उस को बदनाम करना न चाहकर उसे चुपके से त्यागने की मनसा की। २० जब वह इन बातों के सोचही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, हे यूसुफ दाऊद के सन्तान तू अपनी पत्नी मरयम को अपने यहां लाने से मत डर क्योंकि जो उस के गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। २१ वह पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उन के पापों से छुड़ाएगा[१]। २२ यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने नबी के द्वारा कहा था वह पूरा हो कि, २३ देखो कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम इम्मानुएल रक्खा जायगा जिस का अर्थ यह है परमेश्वर हमारे साथ। २४ यूसुफ जाग उठकर प्रभु के दूत के कहे अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। २५ और उस के पास न गया जब तक कि वह पुत्र न जनी और उस ने उस का नाम यीशु रक्खा॥

२. हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ तो देखो पूरब से कितने ज्योतिषी यरूशलेम में २ आकर पूछने लगे कि, यहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ कहां है क्योंकि हम ने पूरब में उस का तारा देखा और उस को प्रणाम करने आये हैं। ३ यह सुनकर हेरोदेस राजा और उस के साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। ४ और उस ने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठे कर उन से पूछा मसीह का जन्म कहां होगा। ५ उन्हों ने उस से कहा यहूदिया के बैतलहम में क्योंकि ६ नबी के द्वारा यों लिखा गया है कि, हे बैतलहम जो यहूदा के देश में है तू किसी रीति से यहूदा के हाकिमों में सब से छोटा नहीं क्योंकि तुझ में से एक हाकिम निकलेगा जो मेरे लोग इस्राएल की रखवाली करेगा। ७ तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उन से

---

(१) यून० । उद्धार करेगा।

८ पूछा कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया। और उस ने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा कि जाकर उस बालक के विषय ठीक ठीक बूझो और जब उसे पाओ तो मुझे समाचार दो कि मैं भी जाकर उस को प्रणाम ९ करूं। वे राजा की सुनकर चले गए और देखो जो तारा उन्हों ने पूरब में देखा था वह उन के आगे आगे चला और जहां बालक था उस जगह के ऊपर पहुंच १० कर ठहर गया। उन्हों ने उस तारे को देखकर बहुत ही ११ बड़ा आनन्द किया। और घर में जाकर उस बालक को उस की माता मरयम के साथ देखा और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया और अपना अपना थैला खोल कर उस को सोना और लोबान और गन्धरस की भेंट १२ चढ़ाई। और स्वप्न में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए॥

१३ उन के चले जाने के पीछे देखो प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा उठ बालक और उस की माता को लेकर मिसर देश को भाग जा और जब तक मैं तुझ से न कहूं तब तक वहीं रहना क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर है कि उसे १४ मरवा डाले। वह रात ही उठकर बालक और उस की १५ माता को लेकर मिसर को चल दिया। और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने नबी के द्वारा कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर से १६ बुलाया पूरा हो। हेरोदेस यह देखकर कि ज्योतिषियों ने मुझ से हंसी की है क्रोध से भर गया और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उस के आस पास के सारे लड़कों को १७ जो दो बरस के या उस से छोटे थे मरवा डाला। तब जो वचन यिरमयाह नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ १८ कि, रामा में एक शब्द सुनाई दिया रोना और बड़ा विलाप राहेल अपने बालकों के लिए रो रही थी और शान्त होना न चाहती थी क्योंकि वे मिलते नहीं॥

१९ हेरोदेस के मरे पीछे देखो प्रभु के दूत ने मिसर में २० यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा कि, उठ बालक और उस की माता को लेकर इस्राईल के देश में चला जा क्योंकि जो बालक का प्राण लेना चाहते थे वे मर २१ गए। वह उठ बालक और उस की माता को साथ २२ लेकर इस्राईल के देश में आया। पर यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज्य करता है वहां जाने से डरा और स्वप्न में २३ चितौनी पाकर गलील देश में गया। और नासरत नाम नगर में जा बसा कि वह वचन पूरा हो जो नबियों के द्वारा कहा गया था कि वह नासरी कहलाएगा॥

३. उन दिनों में यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह २ प्रचार करने लगा कि, मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का ३ राज्य निकट आया है। यह वही है जिस की चर्चा यशायाह नबी के द्वारा की गई कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग ४ तैयार करो उस की सड़कें सीधी करो। यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने था और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था और उस का आहार ५ टिड्डियां और बनमधु था। तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के और यरदन के आस पास के सारे देश ६ के लोग उस के पास निकल आने, और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिसमा लेने ७ लगे। जब उस ने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को बपतिसमा के लिये अपने पास आते देखा तो उन से कहा हे सांप के बच्चो किस ने तुम्हें जता दिया कि आने- ८ वाले क्रोध से भागो। सो मन फिराव के योग्य फल ९ लाओ। और अपने अपने मन में न सोचो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिए सन्तान उत्पन्न १० कर सकता है। और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता ११ वह काटा और आग में डाला जाता है। मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिसमा देता हूं पर जो मेरे पीछे आनेवाला है वह मुझ से शक्तिमान् है मैं उस की जूती उठाने के लायक नहीं वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और १२ आग से बपतिसमा देगा। उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना खलियान अच्छी तरह से साफ करेगा और अपने गेहूं को खत्ते में इकट्ठा करेगा पर भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा॥

१३ तब यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के १४ पास उस से बपतिसमा लेने आया। पर यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा कि मुझे तेरे हाथ से बपतिसमा लेने १५ की आवश्यकता है और तू मेरे पास आया है। यीशु ने उस को यह उत्तर दिया कि अब ऐसा ही होने दे क्योंकि हमें इसी रीति से सब धर्म को पूरा करना चाहिए तब १६ उस ने उस की मान ली। और यीशु बपतिसमा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया और देखो उस के लिये आकाश खुल गया और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।

१७ और यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं॥

४. तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि २ शैतान[1] उस की परीक्षा करे। वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा अन्त ३ में उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने पास आकर कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर ४ रोटियां बन जाएं। उस ने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं पर हर एक वचन से जो ५ परमेश्वर के मुख से निकलता है जीता रहेगा। तब शैतान ने उसे पवित्र नगर में ले जाकर मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा ६ किया। और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को नीचे गिरा दे क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा कि वे तुझे हाथों हाथ उठा लें न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस ७ लगे। यीशु ने उस से कहा यह भी लिखा है कि तू प्रभु ८ अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य ९ और उस का विभव दिखाकर, उस से कहा कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दूंगा। १० तब यीशु ने उस से कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल ११ उसी की उपासना कर। तब शैतान उस के पास से चला गया और देखो स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे॥

१२ फिर यह सुनकर कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया १३ वह गलील को चला गया। और नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो झील के किनारे ज़बूलून और नपताली १४ के देश में है जा बसा। कि जो यशायाह नबी के द्वारा १५ कहा गया था वह पूरा हो। कि ज़बूलून और नपताली के देश झील की ओर यरदन के पार अन्यजातियों का १६ गलील। जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे उन पर ज्योति उदय हुई॥

१७ उस समय से यीशु प्रचार करने और यह कहने लगा कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया १८ है। उसने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाई अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है और उस के भाई आन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा क्योंकि वे १९ मछुवे थे। और उन से कहा मेरे पीछे चले आओ और २० मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा। वे तुरन्त जालों २१ को छोड़कर उस के पीछे हो लिये। और वहां से आगे बढ़कर उस ने और दो भाई अर्थात् ज़बदी के पुत्र याकूब और उस के भाई यूहन्ना को अपने पिता ज़बदी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा और उन्हें भी बुलाया। वे तुरन्त नाव को और अपने पिता को छोड़कर २२ उस के पीछे हो लिये॥

२३ और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता और लोगों में हर बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। २४ और सारे सूरिया में उस का बड़ा नाम हो गया और लोग सब बीमारों को जो नाना प्रकार की बीमारियों और पीड़ाओं से दुखी थे और जिन में दुष्टात्मा थे और मिर्गीहों और झोले के मारे हुओं को उस के पास लाये और उस ने उन्हें चंगा किया। २५ और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उस के पीछे हो ली॥

५. वह इस भीड़ को देख कर पहाड़ पर चढ़ गया और जब बैठा तो उस के चेले उस २ के पास आये। और वह अपना मुंह खोल कर उन्हें यह ३ उपदेश देने लगा। धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं क्योंकि ४ स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते ५ हैं क्योंकि वे शांति पाएंगे। धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि ६ वे पृथिवी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे ७ और पियासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे। धन्य हैं वे ८ जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया की जायगी। धन्य हैं ९ वे जिन के मन शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र १० कहलाएंगे। धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं ११ क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे लिए तुम्हारी निन्दा करें और सताएं और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें १२ कहें। आनन्द और मगन हो क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्हों ने उन नबियों को जो तुम से पहिले हुए थे इसी रीति से सताया था॥

१३ तुम पृथिवी के नमक हो पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा वह फिर किसी काम का नहीं केवल यह कि बाहर १४ फेंका और मनुष्यों से रौंदा जाए। तुम जगत का उजाला हो। जो नगर पहाड़ पर बसा है वह छिप नहीं १५ सकता। फिर लोग दिया बार के पैमाने[2] के नीचे नहीं पर दीवट पर रखते हैं और वह घर के सब लोगों को १६ उजाला देता है। वैसा ही तुम्हारा उजाला मनुष्यों के

(१) यून०। इबलीस।

(२) एक बरतन जिस में डेढ़ मन अनाज नापा जाता था।

सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की बड़ाई करें ॥

१७ यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों के लेखों
१८ को लोप करने आया हूं। लोप करने नहीं पर पूरा करने आया हूं क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक आकाश और पृथिवी टल न जाएं तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु बिना
१९ पूरे हुए न टलेगा। इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से एक को टाले और लोगों को ऐसा ही सिखाए वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा पर जो कोई उन्हें माने और सिखाए वही
२० स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहलाएगा। मैं तुम से कहता हूं यदि तुम शास्त्रियों और फरीसियों से बढ़कर धर्मी न हो तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी जाने न पाओगे ॥

२१ तुम ने सुना है कि अगलों को कहा गया था कि खून न करना और जो कोई खून करे वह कचहरी में दण्ड
२२ के योग्य होगा। पर मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करे वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई से कहे अरे निकम्मा[१] वह महा सभा में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई कहे अरे मूर्ख वह नरक की आग के दण्ड के योग्य
२३ होगा। सो यदि तू अपनी भेंट बेदी पर लाए और वहां स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर कुछ विरोध है तो अपनी भेंट वहां बेदी के सामने छोड़ कर चला जा।
२४ पहिले अपने भाई से मेल कर तब आकर अपनी भेंट
२५ चढ़ा। जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है झट मेल कर ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे और हाकिम तुझे पियादे को सौंपे और तू जेलखाने
२६ में डाला जाए। मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा।

२७ तुम ने सुना है कि कहा गया था कि व्यभिचार न
२८ करना। पर मैं तुम से कहता हूं जो कोई बुरे मन से किसी स्त्री को देखे वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर
२९ चुका। यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर फेंक दे क्योंकि तेरे लिए यह भला है कि तेरा एक अंग नाश हो और तेरा सारा शरीर नरक
३० में न डाला जाए। और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट कर फेंक दे क्योंकि तेरे लिए यह भला है कि तेरा एक अंग नाश हो और तेरा सारा शरीर नरक में न जाए।

(१) यू० राका।

यह भी कहा गया था कि जो कोई अपनी पत्नी ३१ को त्यागे वह उसे त्याग पत्र दे। पर मैं तुम से कहता ३२ हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागे वह उस से व्यभिचार कराता है और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे वह व्यभिचार करता है ॥

फिर तुम ने सुना है कि अगलों से कहा गया ३३ था कि झूठी किरिया न खाना पर प्रभु के लिए अपनी किरियाओं को पूरी करना। पर मैं तुम से कहता हूं ३४ किरिया कभी न खाना न स्वर्ग की क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। न धरती की क्योंकि वह उस के ३५ पांवों की चौकी है न यरूशलेम की क्योंकि वह महाराजा का नगर है। अपने सिर की भी किरिया न खाना ३६ क्योंकि तू एक बाल को न उजला न काला कर सकता है। पर तुम्हारी बात हां की हां या नहीं की नहीं हो जो ३७ कुछ इस से अधिक हो वह बुराई से होता है ॥

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि आंख ३८ के बदले आंख और दांत के बदले दांत। पर मैं तुम से ३९ कहता हूं कि बुरे का सामना न करना पर जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे। जो तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना ४० चाहे उसे दोहर भी लेने दे। जो कोई तुझे कोस भर ४१ बेगार ले जाए उस के साथ दो कोस चला जा। जो ४२ कोई तुझ से मांगे उसे दे और जो तुझ से करज़ा लेना चाहे उस से मुंह न मोड़ ॥

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि अपने ४३ पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर। पर मैं ४४ तुम से कहता हूं कि अपने बैरियों से प्रेम रखना और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करना। इस से तुम ४५ अपने स्वर्गीय पिता के सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर सूरज उदय करता है और धर्म्मियों और अधर्म्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। यदि तुम ४६ अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रक्खो तो क्या फल पाओगे क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते ॥

और यदि तुम अपने भाइयों ही को नमस्कार ४७ करो तो कौन सा बड़ा काम करते हो क्या अन्य जाति भी ऐसा ही नहीं करते। सो जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता ४८ सिद्ध है वैसे ही तुम भी सिद्ध हो जाओ।

६. चौकस रहो कि तुम मनुष्यों के सामने दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ फल न पाओगे ॥

२ इसलिये जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही न फुंकवा जैसा कपटी सभाओं और गलियों में करते हैं कि लोग उन की बड़ाई करें मैं तुम से सच कहता ३ हूं वे अपना फल पा चुके। पर जब तू दान करे तो जो तेरा दहिना हाथ करता है तेरा बांया हाथ न जानने ४ पाए। कि तेरा दान गुप्त में हो और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे बदला देगा॥

५ जब तू प्रार्थना करे तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को भाता है। मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल ६ पा चुके। पर जब तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और द्वार मून्द कर अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे ७ बदला देगा। प्रार्थना करने में अन्यजातियों की नाईं बकबक न करो क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे बहुत ८ बोलने से हमारी सुनी जाएगी। सो तुम उन की नाईं न बनो क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ९ जानता है तुम्हें क्या क्या चाहिए। तुम इस रीति से प्रार्थना करना हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है तेरा १० नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए तेरी इच्छा ११ जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथिवी पर भी हो। हमारी १२ दिन भर की रोटी आज हमें दे। और जैसे हम ने अपने अपराधियों[1] को क्षमा किया है वैसे ही हमारे अपराधों[2] १३ को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला बल्कि बुराई से १४ बचा। इसलिये कि यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा १५ करो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा। पर यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा॥

१६ जब तुम उपवास करो तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाए क्योंकि वे अपने मुंह मलीन करते हैं कि लोगों को उपवासी दिखाई दें मैं तुम से सच १७ कहता हूं वे अपना फल पा चुके। पर जब तू उपवास १८ करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो। कि तू लोगों को नहीं पर अपने पिता को जो गुप्त में है उपवासी दिखाई दे और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे बदला देगा॥

१९ अपने लिये पृथिवी पर धन बटोर कर न रक्खो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध २० देते और चुराते हैं। पर अपने लिये स्वर्ग में धन बटोर कर रक्खो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर न सेंध देते न चुराते हैं। २१ क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। २२ शरीर का दिया आंख है इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर उजाला होगा। २३ पर यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सारा शरीर अंधेरा होगा जो उजाला तुझ में है यदि अंधेरा हो तो वह अंधेरा कैसा भारी है। २४ कोई दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रक्खेगा या एक से मिला रहेगा और दूसरे को हलका जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। २५ इसलिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण की यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे क्या भोजन से प्राण और वस्त्र से शरीर बढ़ कर नहीं। २६ आकाश के पक्षियों को देखो वे न बोते हैं न लवते और न खत्तों में बटोरते हैं तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को पालता है क्या तुम उन से बहुत बढ़ कर नहीं। २७ तुम में से कौन है जो चिन्ता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी[3] भी बढ़ा सकता है। २८ और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो मैदान के सोसनों पर ध्यान करो वे कैसे बढ़ते हैं वे न मिहनत करते न कातते हैं। २९ पर मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभव में उन में से एक के बराबर पहिने हुए न था। ३० यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जायगी ऐसा पहिनाता है तो हे अल्पविश्वासियो वह क्योंकर तुम्हें न पहिनाएगा। ३१ सो तुम यह चिन्ता न करना कि क्या खाएंगे क्या पीएंगे या क्या पहिनेंगे। ३२ अन्यजाति लोग तो इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तु चाहिए। ३३ पहिले उस के राज्य और धर्म की खोज करो और ये सब वस्तु भी तुम्हें दी जाएंगी। ३४ सो कल के लिए चिन्ता न करो क्योंकि कल अपनी चिन्ता आप करेगा आज का दुःख आज ही के लिये बहुत है॥

७. दोष न लगाओ कि तुम पर दोष न लगाया जाए। २ क्योंकि जैसे तुम दोष लगाते हो वैसे ही तुम पर लगाया जायगा और जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जायगा। ३ तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता। ४ और जब तू अपनी

(१) यू०। कर्जदार। (२) यू०। कर्ज। (३) यू०। हाथ।

आंख का लट्ठा नहीं देखता तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है ठहर जा मैं तेरी आंख के तिनके को ५ निकाल दूं । हे कपटी पहले अपनी आंख से लट्ठा निकाल तब अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा ॥

६ पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो और न अपने मोती सुअरों के आगे डालो ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदें और फिरकर तुम को फाड़ें ॥

७ मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे ८ खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा । क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है वह पाता है और जो खटखटाता है उस के लिए खोला ९ जायगा । तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि जब उस का १० पुत्र उस से रोटी मांगे तो उसे पत्थर दे । या मछली मांगे ११ तो उसे सांप दे । सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के बालों को अच्छी वस्तुएं देनी जानते हो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों १२ न देगा । जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उन के साथ वैसा ही करो क्योंकि व्यवस्था और नबियों की शिक्षा यही है ॥

१३ सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता १४ है और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं । क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं ॥

१५ झूठे नबियों से चौकस रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं पर अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए १६ हैं । उन के फलों से उन्हें पहचानोगे क्या झाड़ियों से १७ अंगूर या ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं । योंही हर एक अच्छा पेड़ अच्छे फल लाता और निकम्मा पेड़ बुरे फल १८ लाता है । अच्छा पेड़ बुरे फल नहीं ला सकता न १९ निकम्मा पेड़ अच्छा फल । जो जो पेड़ अच्छे फल नहीं २० लाता वह काटा और आग में डाला जाता है । सो उन २१ के फलों से उन्हें पहचानोगे । न हर एक जो मुझ से हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा पर २२ वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है । उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हम ने तेरे नाम से नबूवत न की और तेरे नाम से दुष्टात्मा नहीं निकाले और तेरे नाम से बहुत सामर्थ के काम नहीं किए । २३ तब मैं उन से खुलकर कहूंगा मैं ने तुम को कभी नहीं २४ जाना हे कुकर्म करनेवालो मुझ से दूर हो । इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें माने वह उस बुद्धिमान् मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चटान पर २५ बनाया । और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आंधियां चलीं और उस घर पर लगीं पर वह नहीं गिरा क्योंकि उस २६ की नेव चटान पर डाली गई थी । पर जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें न माने वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की २७ नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया । और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आंधियां चलीं और उस घर पर लगीं और वह गिर कर सत्यानाश हो गया ॥

२८ जब यीशु ये बातें कर चुका तो लोग उस के उपदेश २९ से चकित हुए । क्योंकि वह उन के शास्त्रियों के समान तो नहीं पर अधिकारी की नाईं उन्हें उपदेश देता था ॥

८. जब वह उस पहाड़ से उतरा तो भीड़ की २ भीड़ उस के पीछे हो ली । और देखो एक कोढ़ी पास आ उसे प्रणाम करके यह कहने लगा कि हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है । ३ यीशु ने हाथ बढ़ा कर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं ४ शुद्ध हो जा वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया । यीशु ने उस से कहा देख किसी से न कह पर जाकर अपने आप को याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो ॥

५ जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उस ६ के पास आकर उस से विनती की । कि हे प्रभु मेरा सेवक ७ घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है । उस ने उस ८ से कहा मैं आकर उसे चंगा करूंगा । सूबेदार ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आए पर वचन ही कह तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा । ९ मैं भी पराधीन मनुष्य हूं और सिपाही मेरे हाथ में हैं और जब एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को कि यह कर १० तो वह करता है । यह सुन कर यीशु ने अचम्भा किया और जो उस के पीछे आ रहे थे उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं ने इस्राईल में भी ऐसा विश्वास ११ नहीं पाया । और मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे पूरब और पच्छिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और १२ याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे । पर राज्य के सन्तान बाहर के अंधेरे में डाल दिये जाएंगे वहां रोना १३ और दांत पीसना होगा । और यीशु ने सूबेदार से कहा जा जैसा तू ने विश्वास किया है वैसा ही तेरे लिये हो और उस का सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया ॥

१४ यीशु ने पतरस के घर में आकर उस की सास को १५ तप में पड़ी देखा । उस ने उस का हाथ छूआ और तप उस पर से उतर गई और वह उठकर उस की

१६ सेवा करने लगी। सांझ को लोग उस के पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्ट आत्मा थे और उस ने उन आत्माओं को बात कहते ही निकाल दिया और सब
१७ बीमारों को चंगा किया। कि जो वचन यशायाह नबी के द्वारा कहा गया था पूरा हो कि उस ने हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और बीमारियों को उठा लिया॥

१८ यीशु ने अपने चारों ओर भीड़ की भीड़ देखकर
१९ पार जाने की आज्ञा दी। और एक शास्त्री ने पास आकर कहा हे गुरु जहां जहां तू जाएगा मैं तेरे पीछे
२० हो लूंगा। यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं पर मनुष्य के पुत्र
२१ को सिर धरने की भी जगह नहीं। एक और चेले ने उस से कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता
२२ को गाड़ दूं। यीशु ने उस से कहा तू मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदों को गाड़ने दे॥

२३ जब वह नाव पर चढ़ा तो उस के चेले उस के
२४ पीछे हो लिए। और देखो झील में ऐसे बड़े हिलकोरे उठे कि नाव लहरों से ढंपने लगी पर वह सोता था।
२५ तब उन्हों ने पास आकर उसे यह कहकर जगाया कि
२६ हे प्रभु हमें बचा हम नाश हुए जाते हैं। उस ने उन से कहा हे अल्पविश्वासियो डरते क्यों हो उस ने उठकर आंधी और पानी को डांटा और बड़ा चैन हो गया।
२७ और वे लोग अचम्भा करके कहने लगे यह कैसा मनुष्य है कि आंधी और पानी भी उस की मानते हैं॥

२८ जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुंचा तो दो मनुष्य जिन में दुष्टात्मा थे क़बरों से निकलते हुए उसे मिले जो इतने प्रचण्ड थे कि कोई उस मार्ग से
२९ न जा सकता था। और देखो उन्हों ने चिल्ला कर कहा हे परमेश्वर के पुत्र हमारा तुझ से क्या काम क्या तू
३० समय से पहिले हमें पीड़ा देने यहां आया है। उन से कुछ दूर बहुत से सूअरों का एक झुंड चर रहा था।
३१ दुष्टात्माओं ने उस से यह कहकर बिनती की यदि तू
३२ हमें निकालता है तो सूअरों के झुंड में भेज दे। उस ने उन से कहा जाओ वे निकलकर सूअरों में पैठे और देखो सारा झुंड कड़ाड़े पर से झपटकर पानी में जा
३३ पड़ा और डूब मरा। पर चरवाहे भागे और नगर में जाकर ये सब बातें और जिन में दुष्टात्मा हुए थे उन
३४ का हाल सुनाया। और देखो सारे नगर के लोग यीशु की भेंट को निकले और उसे देखकर बिनती की कि हमारे सिवानों से निकल जा॥

९. वह नाव पर चढ़कर पार गया और अपने
२ नगर में पहुंचा। और देखो कई लोग एक झोले के मारे को खाट पर पड़े हुए उस के पास लाए और यीशु ने उन का विश्वास देखकर उस झोले के मारे से कहा हे पुत्र ढाढ़स बांध तेरे पाप क्षमा हुए।
३ और देखो कई शास्त्रियों ने सोचा कि यह तो परमेश्वर
४ की निन्दा करता है। यीशु ने उन के मन की बातें जानकर कहा तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार
५ क्यों कर रहे हो। सहज क्या है यह कहना कि तेरे पाप
६ क्षमा हुए या यह कि उठ और चल फिर। पर इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने झोले के मारे से कहा) उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर जा।
७,८ वह उठ कर घर चला गया। लोग यह देखकर डर गये और परमेश्वर की जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है बड़ाई करने लगे॥

९ वहां से आगे बढ़कर यीशु ने मत्ती नाम एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे हो ले। वह उठकर उस के पीछे हो लिया॥

१० जब वह घर में भोजन करने बैठा तो बहुतेरे महसूल लेनेवाले और पापी आकर यीशु और उस के चेलों
११ के साथ खाने बैठे। यह देखकर फरीसियों ने उस के चेलों से कहा तुम्हारा गुरु महसूल लेनेवालों और पापियों
१२ के साथ क्यों खाता है। उस ने यह सुनकर उन से कहा
१३ वैद्य भले चंगों को नहीं पर बीमारों को अवश्य है। पर तुम जाकर इस का अर्थ सीख लो कि मैं बलिदान नहीं पर दया चाहता हूं क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को बुलाने आया हूं॥

१४ तब यूहन्ना के चेलों ने उस के पास आकर कहा हम और फरीसी क्यों इतना उपवास करते हैं पर तेरे
१५ चेले उपवास नहीं करते। यीशु ने उन से कहा क्या बराती जब तक दूलहा उन के साथ रहे शोक कर सकते हैं। पर वे दिन आएंगे कि दूलहा उन से अलग किया
१६ जाएगा उस समय वे उपवास करेंगे। कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता क्योंकि वह पैवन्द पहिरावन से और कुछ खींच लेता है और वह
१७ और फट जाता है। न नया दाख रस पुरानी मशकों में भरते हैं ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं और दाख रस बह जाता और मशकें नाश होती हैं पर नया दाख रस नई मशकों में भरते हैं और दोनों बची रहती हैं॥

१८ वह उन से ये बातें कह ही रहा था कि देखो एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी बेटी अभी मरी है पर चलकर अपना हाथ उस पर रख
१९ तो वह जी जाएगी। यीशु उठकर अपने चेलों समेत

२० उस के पीछे हो लिया। और देखो एक स्त्री ने जिस के बारह बरस से लोहू बहता था पीछे से आ उस के वस्त्र २१ के आंचल को छूआ। क्योंकि अपने जी में सोचा यदि मैं उस के वस्त्र ही को छू लूं तो चंगी हो जाऊंगी। २२ यीशु ने फिरकर उसे देखा और कहा बेटी ढाढ़स बांध तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है सो वह स्त्री उसी २३ घड़ी से चंगी हुई। जब यीशु उस सरदार के घर पहुंचा तो बांसली बजानेवालों और भीड़ को हल्ला मचाते देखकर २४ कहा, अलग हो जाओ लड़की मरी नहीं पर सोती है २५ और वे उस की हंसी करने लगे। जब भीड़ निकाल दी गई तो उस ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा और २६ वह उठी। इस की चर्चा उस सारे देश में फैल गई॥

२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तो दो अंधे उस के पीछे पुकारते हुए चले कि हे दाऊद के सन्तान हम पर २८ दया कर। जब वह घर में पहुंचा तो वे अंधे उस के पास आए और यीशु ने उन से कहा क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं उन्हों ने उस से कहा हां २९ प्रभु। तब उस ने उन की आंखें छूकर कहा तुम्हारे ३० विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो। और उन की आंखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा देखो ३१ यह बात कोई न जाने। पर उन्हों ने निकलकर सारे देश में उस की चर्चा फैला दी॥

३२ जब वे बाहर जा रहे थे तो देखो लोग एक गूंगे ३३ को जिस में दुष्टात्मा था उस के पास लाए। जब दुष्टात्मा निकाला गया तो गूंगा बोलने लगा और भीड़ ने अचम्भा कर कहा इस्राईल में ऐसा कभी न देखा ३४ गया। परन्तु फरीसियों ने कहा यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है॥

३५ तब यीशु सब नगरों और गांवों में फिरते उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता और हर एक बीमारी और दुर्बलता को ३६ दूर करता रहा। भीड़ को देखकर उसे लोगों पर तरस आया क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं व्याकुल ३७ और भटके हुए थे। तब उस ने अपने चेलों से कहा ३८ पके खेत बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने को मज़दूर भेज दे।

१० और उस ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब बीमारियों और दुर्बलताओं को दूर करें।

२ बारह प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला शमौन जो पतरस कहलाता है और उस का भाई अन्द्रियास ३ ज़बदी का पुत्र याकूब और उस का भाई यूहन्ना। फिलिप्पुस और बर-तुल्मै तोमा और महसूल लेनेवाला मत्ती ४ हलफै का पुत्र याकूब और तद्दै। शमौन कनानी और यहूदा इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया॥

५ इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा कि अन्य जातियों की ओर न जाना और सामरियों के किसी ६ नगर में न जाना। पर इस्राइल के घराने ही की खोई ७ हुई भेड़ों के पास जाना। और चलते चलते प्रचार कर ८ कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। बीमारों को चंगा करो मरे हुओं को जिलाओ कोढ़ियों को शुद्ध करो दुष्टात्माओं को निकालो तुम ने सेंत पाया सेंत दो। ९ अपने पटुकों में न सोना न रूपा न तांबा रखना। १० मार्ग के लिये न झोली रक्खो न दो कुरते न जूते न लाठी लो क्योंकि मज़दूर को अपना भोजन मिलना ११ चाहिए। जिस किसी नगर या गांव में जाओ तो पता लगाओ कि वहां कौन योग्य है और जब तक वहां से न १२ निकलो उसी के यहां रहो। घर में जाते हुए उस को १३ आशिष देना। यदि उस घर के लोग योग्य हों तो तुम्हारा कल्याण उस पर पहुंचेगा पर यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट आएगा। १४ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने १५ पांवों की धूल झाड़ डालो। मैं तुम से सच कहता हूं कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा सहने योग्य होगी॥

१६ देखो मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान् और कबूतरों की १७ नाईं भोले बनो। पर लोगों से चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें महा सभाओं में सौंपेंगे और अपनी पंचायतों में १८ तुम्हें कोड़े मारेंगे। तुम मेरे लिये हाकिमों और राजाओं के सामने उन पर और अन्यजातियों पर गवाह होने के १९ लिये पहुंचाए जाओगे। जब वे तुम्हें सौंपें तो यह चिन्ता न करना कि किस रीति से या क्या कहोगे क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा वह उसी घड़ी तुम्हें बता २० दिया जाएगा। क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो पर २१ तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलनेवाला है। भाई भाई को और पिता पुत्र को घात के लिये सौंपेंगे और लड़केवाले माता पिता के विरोध में उठ कर उन्हें मरवा २२ डालेंगे। मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का २३ उद्धार होगा। जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं तो दूसरे को भाग जाना मैं तुम से सच कहता हूं तुम

इस्राईल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा ॥

२४ चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं और न दास अपने
२५ स्वामी से । चेले का गुरू के और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है जब उन्हों ने घर के स्वामी के शैतान[१] कहा तो उस के घरवालों के क्यों न
२६ कहेंगे । सो उन से न डरना क्योंकि कुछ ढपा नहीं जो खोला न जाएगा और न कुछ छिपा है जो जाना
२७ न जाएगा । जो मैं तुम से अंधेरे में कहता हूं उसे उजाले में कहो और जो कानों कान सुनते हो उसे कोठों पर
२८ से प्रचार करो । जो शरीर के घात करते हैं पर आत्मा को घात नहीं कर सकते उन से न डरना पर उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों के नरक में नाश
२९ कर सकता है । क्या पैसे में दो गौरैये नहीं बिकतीं तौ भी तुम्हारे पिता की इच्छा बिना उन में से एक भी भूमि
३० पर नहीं गिर सकती । तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने
३१ हुए हैं । इसलिये डरो नहीं तुम बहुत गौरैयों से बढ़-
३२ कर हो । जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा ।
३३ पर जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे नकारे उसे मैं भी
३४ अपने स्वर्गीय पिता के सामने नकारूंगा । यह न समझो कि मैं पृथिवी पर मिलाप कराने के आया हूं मैं मिलाप कराने के नहीं पर तलवार चलवाने आया
३५ हूं । मैं तो आया हूं कि मनुष्य के उस के पिता से और बेटी के उस की मां से और बहू के उस की सास
३६ से अलग कर दूं । मनुष्य के बैरी उस के घर ही के लोग
३७ होंगे । जो माता या पिता के मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी के मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं ।
३८ और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे
३९ योग्य नहीं । जो अपना प्राण बचाता[२] है वह उसे खोएगा और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है वह
४० उसे बचाएगा[३] । जो तुम्हें ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे
४१ भेजनेवाले के ग्रहण करता है । जो नबी के नबी जान-कर ग्रहण करे वह नबी का बदला पाएगा और जो धर्मी जान कर धर्मी के ग्रहण करे वह धर्मी का बदला पाएगा ।
४२ जो कोई इन छोटों में से एक के चेला जान कर केवल एक कटोरा ठंढा पानी पिलाए मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा ॥

(१) यू० । बालजबूल । (२) यू० । पाता । (३) यू० । पाएगा ।

११. जब यीशु अपने बारह चेलों के आज्ञा दे चुका तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने के वहां से चला गया ॥

२ यूहन्ना ने जेलखाने में मसीह के कामों का समा-
३ चार सुनकर अपने चेलों के उस से यह पूछने भेजा, कि आनेवाला तू ही है या हम दूसरे की बाट जोहें ।
४ यीशु ने उत्तर दिया कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो
५ वह जाकर यूहन्ना से कह दो, कि अंधे देखते और लंगड़े चलते फिरते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते और बहिरे सुनते हैं मुरदे जिलाये जाते हैं और कंगालों के
६ सुसमाचार सुनाया जाता है । और धन्य है वह जो मेरे
७ कारण ठोकर न खाए । जब वे वहां से चल दिए तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने गये थे क्या हवा से हिलते हुए
८ सरकण्डे के । फिर तुम क्या देखने गये थे क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य के । देखो जो कोमल वस्त्र
९ पहिनते हैं वे राजभवनों में रहते हैं । तो फिर क्यों गये थे क्या किसी नबी के देखने के हां मैं तुम से कहता हूं
१० बरन नबी से भी बड़े के । यह वही है जिस के विषय लिखा है कि देख मैं अपने दूत के तेरे आगे भेजता हूं
११ जो तेरे आगे तेरा मार्ग सुधारेगा । मैं तुम से सच कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है ।
१२ यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य के लिये बल किया जाता है और बलवान् उसे ले
१३ लेते हैं । यूहन्ना लों सारे नबी और व्यवस्था नबूवत
१४ करते रहे । और चाहो तो मानो एलिय्याह जो आने-
१५ वाला था वह यही है । जिस के सुनने के कान हों वह
१६ सुन ले । मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं वे उन बालकों के समान हैं जो बाज़ारों में बैठे हुए
१७ एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं । हम ने तुम्हारे लिए बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने विलाप किया और
१८ तुम ने छाती न पीटी । क्योंकि यूहन्ना न खाता आया
१९ न पीता और वे कहते हैं उस में दुष्टात्मा है । मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया और वे कहते हैं देखो पेटू और पियक्कड़ मनुष्य महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र । पर ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है ॥

२० तब वह उन नगरों के उलाहना देने लगा जिन में उस के बहुतेरे सामर्थ के काम किए गए थे क्योंकि उन्हों ने
२१ अपना मन नहीं फिराया था । हाय खुराजीन हाय बैत-सैदा जो सामर्थ के काम तुम में किए गए यदि वे सूर

और सैदा में किए जाते तो टाट ओढ़ कर और राख में २२ बैठकर वे कब के मन फिराते। पर मैं तुम से कहता हूं कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की २३ दशा सहने योग्य होगी। और हे कफरनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा। जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं यदि सदोम में किये जाते तो वह आज तक बना रहता। २४ पर मैं तुम से कहता हूं कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा सहने योग्य होगी॥

२५ उसी समय यीशु ने कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रक्खा और २६ बालकों पर प्रगट किया। हां हे पिता क्योंकि तुझे यही २७ अच्छा लगा। मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और कोई पुत्र को नहीं जानता केवल पिता और कोई पिता को नहीं जानता केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे २८ प्रगट करना चाहे। हे सब थके और बोझ से दबे लोगो २९ मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं और तुम अपने मन में विश्राम ३० पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है॥

१२.

उस समय यीशु विश्राम के दिन खेतों में जा रहा था और उस के चेलों को भूख लगी तब वे बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे। २ फरीसियों ने यह देखकर उस से कहा देख तेरे चेले वह काम कर रहे हैं जो विश्राम के दिन करना उचित नहीं। ३ उस ने उन से कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने जब वह और उस के साथी भूखे हुए तो क्या किया। ४ वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया और भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना न उसे न उस के साथियों को पर ५ केवल याजकों को उचित था। या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि याजक विश्राम के दिन मन्दिर में विश्राम के दिन की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते ६ हैं। पर मैं तुम से कहता हूं कि यहां वह है जो मन्दिर ७ से भी बड़ा है। यदि तुम इस का अर्थ जानते कि मैं दया से प्रसन्न हूं बलिदान से नहीं तो तुम निर्दोषों को ८ दोषी न ठहराते। मनुष्य का पुत्र तो विश्राम के दिन का भी प्रभु है॥

९ वहां से चलकर वह उन की सभा के घर में आया। १० और देखो एक मनुष्य था जिस का हाथ सूखा था और उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा क्या विश्राम के दिन चंगा करना उचित है। ११ उस ने उन से कहा तुम में ऐसा कौन है जिस की एक ही भेड़ हो और वह विश्राम के दिन गड़हे में गिर जाए तो वह उसे पकड़ के न निकाले। १२ मनुष्य का मान भेड़ से कितना बढ़ कर है इसलिये विश्राम के दिन भलाई करना उचित है। १३ तब उस ने उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा। उस ने बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया। १४ तब फरीसियों ने बाहर जाकर उस के विरोध में सम्मति की कि उसे क्योंकर नाश करें। १५ यह जान कर यीशु वहां से चला गया और बहुत लोग उस के पीछे हो लिए और उस ने सब को चंगा किया। १६ और उन्हें चिताया कि मुझे प्रगट न करना। १७ कि जो वचन १८ यशायाह नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि देखो यह मेरा सेवक है जिसे मैं ने चुना है मेरा प्रिय जिस से मेरा मन प्रसन्न है मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा। १९ वह न झगड़ा करेगा न धूम मचाएगा और न बाज़ारों में कोई उस का शब्द सुनेगा। २० वह कुचले हुए सरकंडे को न तोड़ेगा और धूआं देती बत्ती को न बुझाएगा जब तक न्याय को प्रबल न कराए। २१ और अन्यजातियां उस के नाम पर आशा रक्खेंगी॥

२२ तब लोग एक अंधे गूंगे को जिस में दुष्टात्मा था उस के पास लाए और उस ने उसे अच्छा किया यहां तक कि वह गूंगा बोलने और देखने लगा। २३ इस पर सब लोग चकित हो कर कहने लगे यह क्या दाऊद का सन्तान है। २४ परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान[१] की सहायता बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता। २५ उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा जिस किसी राज्य में फूट होती है वह उजड़ जाता है और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है बना न रहेगा। २६ और यदि शैतान ही शैतान को निकाले तो वह अपना ही विरोधी हो गया है और उस का राज्य क्योंकर बना रहेगा। २७ भला यदि मैं शैतान[१] की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं। इस लिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। २८ पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। २९ या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुस कर उस का माल लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बांध ले और तब उस का घर लूट लेगा। ३० जो मेरे

(१) यू०। बालजबूल।

साथ नहीं वह मेरे विरोध में है और जो मेरे साथ नहीं
३१ बटोरता वह बिथराता है। इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी।
३२ जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा उस का यह अपराध क्षमा किया जाएगा पर जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा तो उस का अपराध न इस लोक में न परलोक में क्षमा किया जाएगा।
३३ यदि पेड़ को अच्छा कहो तो उस के फल को भी अच्छा कहो या पेड़ को निकम्मा कहो तो उस के फल को भी निकम्मा कहो क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है।
३४ हे सांप के बच्चो तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो क्योंकि जो मन में भरा है वही मुंह पर
३५ आता है। भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी
३६ बातें निकालता है। मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य जो जो निकम्मी बातें कहें न्याय के दिन हर एक बात
३७ का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों से निर्दोष और अपनी बातों से दोषी ठहराया जाएगा॥

३८ इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने कहा हे
३९ गुरु हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस समय के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनुस नबी के चिन्ह को छोड़
४० कोई चिन्ह उन को न दिया जाएगा। यूनुस तीन दिन और तीन रात बड़े जल जन्तु के पेट में था वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथिवी के भीतर रहेगा।
४१ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें दोषी ठहराएंगे क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुन कर मन फिराया और देखो यहां वह
४२ है जो यूनुस से भी बड़ा है। दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ उठ कर उन्हें दोषी ठहराएगी क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी की छोर से आई और देखो यहां वह है जो सुलैमान से
४३ भी बड़ा है। जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाता है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ता फिरता
४४ है और पाता नहीं। तब कहता है कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकला था लौट जाऊंगा और आकर उसे
४५ सूना झाड़ा बुहारा और सजा सजाया पाता है। तब वह जाकर अपने से और बुरे सात आत्माओं को अपने साथ ले आता है और वे उस में पैठ कर वहां वास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी होती है। इस समय के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी॥

४६ जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था तो देखो उस की माता और भाई बाहर खड़े थे और उस से बातें
४७ करनी चाहते थे। किसी ने उस से कहा देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और तुझ से बातें करनी
४८ चाहते हैं। यह सुन उस ने कहनेवाले को उत्तर दिया
४९ कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई। और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा देखो मेरी
५० माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है॥

१३

१ उसी दिन यीशु घर से निकल कर झील के किनारे जा बैठा। और उस
२ के पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ कर बैठा और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। और
३ उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं कि देखो
४ एक बोनेवाला बीज बोने निकला। बोते हुए कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पंछियों ने आकर उन्हें चुग
५ लिया। कुछ पथरीली भूमि पर गिरे जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने से वे जल्द उग आए।
६ पर सूरज निकलने पर वे जल गए और जड़ न पकड़ने
७ से सूख गए। कुछ झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने
८ बढ़ कर उन्हें दबा डाला। पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे और फल लाए कोई सौ गुना कोई साठ गुना कोई
९ तीस गुना। जिस के कान हों वह सुन ले॥

१० और चेलों ने पास आकर उस से कहा तू उन से
११ दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है। उस ने उत्तर दिया कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई
१२ है पर उन को नहीं। क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उस के पास बहुत हो जाएगा पर जिस के पास कुछ नहीं उस से जो कुछ उस के पास है वह भी
१३ ले लिया जाएगा। मैं उन से दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूं कि वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए
१४ नहीं सुनते और नहीं समझते। और उन के विषय यशायाह की यह नबूवत पूरी होती है कि तुम कानों से तो सुनोगे पर समझोगे नहीं और आंखों से तो देखोगे
१५ पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्हों ने अपनी आंखें मूंद ली हैं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर जाएं और
१६ मैं उन्हें चंगा करूं। पर धन्य है तुम्हारी आंखें कि वे
१७ देखती हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं। क्योंकि

मैं तुम से सच कहता हूं कि बहुत से नबियों और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें पर न देखीं और जो बातें तुम सुनते हो सुनें पर न सुनीं।

१८, १९ सो तुम बोनेवाले का दृष्टान्त सुनो। जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता उस के मन में जो कुछ बोया गया था उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है यह वही है जो मार्ग के किनारे बोया गया

२० था। और जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया यह वह है जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता

२१ है। पर अपने में जड़ न रखने से वह थोड़े ही दिन का है और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है

२२ तो तुरन्त ठोकर खाता है। जो झाड़ियों में बोया गया यह वह है जो वचन को सुनता है पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है और

२३ वह फल नहीं लाता। जो अच्छी भूमि में बोया गया यह वह है जो वचन को सुनकर समझता है और फल लाता है कोई सौ गुना कोई साठ गुना कोई तीस गुना।

२४ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिस ने अपने खेत में

२५ अच्छा बीज बोया। पर जब लोग सो रहे थे तो उस का बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज[१] बोकर चला

२६ गया। जब अंकुर निकले और बालें लगीं तो जंगली

२७ दाने भी दिखाई दिए। इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उस से कहा हे स्वामी क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था फिर जंगली दाने के पौधे उस

२८ में कहां से आए। उस ने उन से कहा यह किसी बैरी का काम है। दासों ने उस से कहा क्या तेरी इच्छा है

२९ कि हम जाकर उन को बटोर लें। उस ने कहा ऐसा नहीं न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उन के साथ

३० गेहूं भी उखाड़ लो। कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूंगा पहिले जंगली दाने के पौधे बटोर कर जलाने के लिए उन के गट्ठे बांध लो और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।

३१ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है जिसे किसी मनुष्य

३२ ने लेकर अपने खेत में बोया। वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता तब सब साग पात से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं।

३३ उस ने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया कि स्वर्ग का राज्य ख़मीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया और होते होते सब ख़मीर हो गया॥

३४ ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं और

३५ बिना दृष्टान्त उन से कुछ न कहता था। कि जो वचन नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो कि मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुंह खोलूंगा मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं प्रगट करूंगा॥

३६ तब वह भीड़ को छोड़ कर घर में आया और उस के चेलों ने उस के पास आकर कहा खेत के जंगली

३७ दाने का दृष्टान्त हमें समझा दे। उस ने उन को उत्तर दिया कि अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है।

३८ खेत संसार है अच्छा बीज राज्य के सन्तान और जंगली

३९ बीज दुष्ट के सन्तान हैं। जिस बैरी ने उन को बोया वह शैतान है कटनी जगत का अन्त है और काटनेवाले

४० स्वर्गदूत हैं। सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा।

४१ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उस के राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने-

४२ वालों को बटोरेंगे। और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे

४३ वहां रोना और दांत पीसना होगा। उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूरज की नाईं चमकेंगे। जिस के कान हों वह सुन ले॥

४४ स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया॥

४५ फिर स्वर्ग का राज्य एक व्योपारी के समान है

४६ जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उस ने एक बड़े मोल का मोती पाया तो जाकर अपना सब कुछ बेच कर उसे मोल लिया॥

४७ फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है जो समुद्र में डाला गया और हर प्रकार की मछलियां

४८ को समेट लाया। और जब भर गया तो उस को किनारे पर खींच लाये और बैठकर अच्छी अच्छी तो बरतनों

४९ में जमा कीं और निकम्मी निकम्मी फेंक दीं। जगत के अन्त में ऐसा ही होगा स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों

५० से अलग करेंगे और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

५१, ५२ क्या तुम ने ये सब बातें समझीं। उन्हों ने उस से कहा हां उस ने उन से कहा इसलिये हर एक शास्त्री

(१) यू०। जिजयानियुन।

(२) यू०। इबलीस।

जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है॥

५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तो वहां से
५४ चला गया। और अपने देश में आकर उन की सभा में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा कि वे चकित होकर कहने लगे इस को यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले।
५५ यह क्या बढ़ई का बेटा नहीं क्या इस की माता का नाम मरयम और इस के भाइयों के नाम याकूब और
५६ यूसुफ और शमौन और यहूदा नहीं। और क्या इस की सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं फिर इस को यह
५७ सब कहां से मिला। सो उन्हों ने उस के विषय ठोकर खाई पर यीशु ने उन से कहा नबी अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता।
५८ और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए॥

१४.

उस समय चौथाई के राजा हेरोदेस ने यीशु
२ की चर्चा सुनी। और अपने सेवकों से कहा यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है वह मरे हुओं में से जी उठा है इसलिये ये सामर्थ के काम उस से प्रगट होते
३ हैं। क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण यूहन्ना को पकड़ कर बांधा और
४ जेलखाने में डाला था। इसलिये कि यूहन्ना ने उस से
५ कहा था कि इस को रखना तुझे उचित नहीं। और वह उसे मार डालना चाहता था पर लोगों से डरा क्योंकि
६ वे उसे नबी जानते थे। पर जब हेरोदेस का जन्म दिन आया तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच कर
७ हेरोदेस को खुश किया। इसलिये उस ने किरिया खाकर
८ वचन दिया कि जो तू मांगे मैं तुझे दूंगा। वह अपनी माता की उस्काई हुई बोली यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले
९ का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे। राजा उदास हुआ पर अपनी किरिया के और साथ बैठनेवालों के कारण
१० आज्ञा की कि दे दिया जाए। और जलखाने में लोगों
११ को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवाया। और उस का सिर थाल में लाया गया और लड़की को दिया गया और वह
१२ उस को अपनी मां के पास ले गई। और उस के चेलों ने आकर और उस की लोथ को ले जाकर गाड़ा और जाकर यीशु को समाचार दिया॥

१३ जब यीशु ने यह सुना तो नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह एकान्त में चला गया और लोग
१४ यह सुनकर नगर में से पैदल उस के पीछे हो लिए। उस ने निकल कर बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया
१५ और उस ने उन के बीमारों को चंगा किया। जब सांझ हुई तो उस के चेलों ने उस के पास आकर कहा यह तो सुनसान जगह है और अबेर हो रही है लोगों को विदा कर कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिए भोजन मोल लें। यीशु ने उन से कहा उन का जाना अवश्य नहीं १६ तुम ही इन्हें खाने को दो। उन्हों ने उस से कहा यहां १७ हमारे पास पांच रोटी और दो मछली छोड़ और कुछ नहीं। उसने कहा उन को यहां मेरे पास ले आओ। १८ तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा और उन १९ पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़ कर चेलों को दीं और चेलों ने लोगों को। और सब खाकर २० तृप्त हो गए और उन्हों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरी उठाई। और खानेवाले स्त्रियों और बालकों २१ को छोड़ पांच हज़ार पुरुषों के अटकल थे॥

और उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर २२ चढ़ाया कि उस से पहिले पार जाएं जब तक कि वह लोगों को विदा करे। वह लोगों को विदा करके प्रार्थना २३ करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया और सांझ को वहां अकेला था। उस समय नाव झील के बीच लहरों से २४ डगमगा रही थी क्योंकि हवा सामने की थी। रात के २५ चौथे पहर वह झील पर चलते हुए उन के पास आया। चेले उस को झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए २६ और कहने लगे वह भूत है और डर के मारे चिल्लाए। यीशु ने तुरन्त उन से बातें कीं और कहा ढाढ़स बांधो २७ मैं हूं डरो मत। पतरस ने उस को उत्तर दिया हे प्रभु २८ यदि तू ही है तो मुझे अपने पास पानी पर आने की आज्ञा दे। उस ने कहा आ तब पतरस नाव पर से उतर कर २९ यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। पर हवा ३० को देखकर डर गया और जब डूबने लगा तो चिल्लाकर कहा हे प्रभु मुझे बचा। यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे ३१ थाम लिया और उस से कहा हे अल्प-विश्वासी क्यों सन्देह किया। जब वे नाव पर चढ़ गये तो हवा थम गई। ३२ इस पर जो नाव पर थे उन्हों ने उसे प्रणाम करके कहा ३३ सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है॥

वे पार उतरकर गन्नेसरत देश में पहुंचे। और वहां ३४,३५ के लोगों ने उसे पहचान कर आसपास सारे देश में कहला भेजा और सब बीमारों को उस के पास लाए। और उस ३६ से बिनती करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे और जितनों ने उसे छुआ वे चंगे हो गए॥

१५.

तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे। तेरे २ चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं कि बिन हाथ

३ धोए रोटी खाते हैं। उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम भी क्यों अपनी रीतों के कारण परमेश्वर की आज्ञा टालते ४ हो। क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना और जो कोई पिता या ५ माता को बुरा कहे वह मार डाला जाए। पर तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था वह संकल्प हो ६ चुका। तो वह अपने पिता का आदर न करे सो तुम ने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया। ७ हे कपटियो यशायाह ने तुम्हारे विषय यह नबूवत ठीक ८ की। कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं पर ९ उन का मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश १० करके सिखाते हैं। और उस ने लोगों को अपने पास ११ बुलाकर उन से कहा सुनो और समझो। जो मुंह में जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता पर जो मुंह से निक- १२ लता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। तब चेलों ने आकर उस से कहा क्या तू जानता है कि फरीसियों ने १३ यह वचन सुन कर ठोकर खाई। उस ने उत्तर दिया हर एक पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया उखाड़ा १४ जाएगा। उन को जाने दो वे अंधे मार्ग दिखानेवाले हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए तो दोनों गड़हे १५ में गिर पड़ेंगे। यह सुनकर पतरस ने उस से कहा यह १६ दृष्टान्त हमें समझा दे। उस ने कहा क्या तुम भी अब १७ तक ना समझ हो। क्या नहीं समझते कि जो कुछ मुंह में जाता वह पेट में पड़ता है और संडास में निकल १८ जाता है। पर जो कुछ मुंह से निकलता है वह मन से निकलता है और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। १९ क्योंकि कुचिन्ता, खून, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, २० झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती हैं। ये ही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं पर हाथ बिन धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता॥

२१ यीशु वहां से निकल कर सूर और सैदा के देशों की २२ ओर गया। और देखो उस देश से एक कनानी स्त्री निकली और चिल्लाकर कहने लगी हे प्रभु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है। २३ उस ने उसे कुछ उत्तर न दिया और उस के चेलों ने आकर उस से बिनती कर कहा इसे बिदा कर क्योंकि वह २४ हमारे पीछे चिल्लाती आती है। उस ने उत्तर दिया कि इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के २५ पास नहीं भेजा गया। पर वह आई और उसे प्रणाम कर २६ कहने लगी हे प्रभु मेरी सहायता कर। उस ने उत्तर दिया कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा २७ नहीं। उस ने कहा सत्य है प्रभु पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं जो उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं। २८ इस पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा कि हे स्त्री तेरा विश्वास बड़ा है जैसा चाहती है तेरे लिये वैसा ही हो और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई॥

२९ यीशु वहां से चलकर गलील की झील के पास आया ३० और पहाड़ पर चढ़ कर वहां बैठ गया। और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुत औरों को लेकर उस के पास आये और उन्हें उस के पांवों पर डाला और उस ने उन्हें चंगा किया। ३१ सो जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते टुण्डे चंगे होते लंगड़े चलते और अंधे देखते हैं तो अचम्भा करके इस्राईल के परमेश्वर की बड़ाई की॥

३२ यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा मुझे इस भीड़ पर तरस आता है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं और मैं उन्हें भूखा बिदा करना नहीं चाहता न हो कि मार्ग में थक कर रह ३३ जाएं। चेलों ने उस से कहा हम इस जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त ३४ करें। यीशु ने उन से पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं उन्हों ने कहा सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां। ३५ तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। ३६ और उन सात रोटियों और मछलियों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को देता गया और चेले लोगों ३७ को। सो सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भरे हुए सात टोकरे उठाए। ३८ और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हज़ार पुरुष थे। ३९ तब वह भीड़ को बिदा कर नाव पर चढ़ गया और मगदन देश में आया॥

१६. और फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसे परखने के लिये उस से २ कहा कि हमें आकाश का कोई चिन्ह दिखा। उस ने उन को उत्तर दिया कि सांझ को तुम कहते हो कि फरछा ३ होगा क्योंकि आकाश लाल है, और भोर को कहते हो कि आज आंधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है। तुम आकाश का लक्षण देख कर भेद बता सकते हो पर समयों के चिन्हों का भेद नहीं बता सकते। ४ इस समय के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा और वह उन्हें छोड़ कर चला गया॥

५ और चेले पार जाते समय रोटी लेना भूल गए ६ थे। यीशु ने उन से कहा देखो फरीसियों और सदूकियों ७ के ख़मीर से चौकस रहना। वे आपस में विचार करने

८ लगे कि हम रोटी नहीं लाए। यह जानकर यीशु ने उन से कहा हे अल्प विश्वासियो तुम आपस में क्यों ९ बिचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं। क्या तुम अब तक नहीं जानते और उन पांच हज़ार की पांच रोटी स्मरण नहीं करते और न यह कि कितनी टोकरियां उठाई १० थीं। और न उन चार हज़ार की सात रोटी और न यह ११ कि कितने टोकरे उठाए थे। तुम क्यों नहीं समझते कि मैं ने तुम से रोटियों के विषय नहीं कहा। फरीसियों और १२ सदूकियों के ख़मीर से चौकस रहना। तब उन की समझ में आया कि उस ने रोटी के ख़मीर से नहीं पर फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा था।

१३ यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या १४ कहते हैं। उन्हों ने कहा कितने तो यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला कहते हैं कितने एलिय्याह और कितने यिरमया १५ या नबियों में से एक कहते हैं। उस ने उन से कहा पर १६ तुम मुझे क्या कहते हो। शमौन पतरस ने उत्तर दिया १७ कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे शमौन योना के पुत्र तू धन्य है क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं पर मेरे पिता ने जो १८ स्वर्ग में हैं यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक १९ उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा और जो कुछ तू पृथिवी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा वह २० स्वर्ग में खुलेगा। तब उस ने चेलों को चिताया कि किसी से न कहना कि मैं मसीह हूं।

२१ उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा कि मुझे अवश्य है कि यरूशलेम जाऊं और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों से बहुत दुख उठाऊं २२ और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं। इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा कि हे २३ प्रभु परमेश्वर न करे तुझ पर ऐसा कभी न होगा। उस ने फिर कर पतरस से कहा हे शैतान मेरे सामने से दूर हो तू मेरे लिए ठोकर का कारण है क्योंकि तू परमेश्वर की २४ बातें नहीं पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। तब यीशु ने अपने चेलों से कहा यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपे को नकारे और अपना क्रूस उठाए २५ और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो कोई मेरे लिए २६ अपना प्राण खोएगा वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या २७ देगा। मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा और उस समय वह हर एक २८ को उस के कामों के अनुसार देगा। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कितने ऐसे हैं कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते हुए न देख लें तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।

१७. छः दिन के पीछे यीशु ने पतरस और याकूब और उस के भाई यूहन्ना को साथ लिया और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर २ ले गया। और उन के सामने उस का रूप बदल गया और उस का मुंह सूरज की नाईं चमका और उस का ३ वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। और देखो मूसा और एलिय्याह उस के साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई ४ दिए। इस पर पतरस ने यीशु से कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं एक तेरे लिए एक मूसा के लिए और एक एलि-५ य्याह के लिए। वह बोल ही रहा था कि देखो एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया और देखो उस बादल में से यह शब्द निकला कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से ६ मैं प्रसन्न हूं इस की सुनो। चेले यह सुन कर मुंह के बल ७ गिरे और बहुत डर गए। यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ ८ और कहा उठो डरो मत। तब उन्हों ने अपनी आंखें उठा कर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा॥

९ जब वे पहाड़ से उतरते थे तो यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा किसी से न कहना। १० और उस के चेलों ने उस से पूछा फिर शास्त्री क्यों ११ कहते हैं कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है। उस ने उत्तर दिया कि एलिय्याह तो आएगा और सब कुछ १२ सुधारेगा। पर मैं तुम से कहता हूं कि एलिय्याह आ चुका और उन्हों ने उसे नहीं पहिचाना पर जो चाहा उस के साथ किया इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन के हाथ १३ से दुख उठाएगा। तब चेलों ने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले की चर्चा की है॥

१४ जब वे भीड़ के पास पहुंचे तो एक मनुष्य उस के १५ पास आया और घुटने टेक कर कहने लगा। हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कर क्योंकि उस को मिर्गी आती है और वह बहुत दुःख उठाता है और बार बार आग में और बार १६ बार पानी में गिर पड़ता है। और मैं उस को तेरे चेलों १७ के पास लाया था पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके। यीशु

ने उत्तर दिया कि हे अविश्वासी और हठीले लोगो[1] मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा कब तक तुम्हारी सहूंगा उसे
१८ यहां मेरे पास लाओ। तब यीशु ने उसे घुड़का और दुष्टात्मा उस में से निकला और लड़का उसी घड़ी
१९ अच्छा हो गया। तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास
२० आकर कहा हम इसे क्यों नहीं निकाल सके। उस ने उन से कहा अपने विश्वास की घटी के कारण क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहां से सरककर वहां चला जा और वह चला जाएगा और कोई बात तुम्हारे लिए अन्होनी न होगी।

२१ जब वे गलील में थे तो यीशु ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।
२२ और वे उसे मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी
२३ उठेगा। इस पर वे बहुत उदास हुए॥

२४ जब वे कफरनहूम में पहुंचे तो मन्दिर के लिए कर लेनेवालों ने पतरस के पास आकर पूछा कि क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता उस ने कहा हां देता है।
२५ जब वह घर में आया तो यीशु ने उस के पूछने से पहिले उस से कहा हे शमौन तू क्या समझता है पृथिवी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं अपने पुत्रों से या
२६ परायों से। पतरस ने उस से कहा परायों से। यीशु ने
२७ उस से कहा तो पुत्र बच गए। तौभी इसलिये कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले उसे ले तुझे उस का मुंह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना॥

१८.

उसी घड़ी चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे स्वर्ग के राज्य में बड़ा
२ कौन है। इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर
३ उन के बीच में खड़ा किया। और कहा मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो
४ तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे। जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा वह
५ स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण
६ करता है। पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाये उस के लिये भला होता कि बड़ी चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता।
७ ठोकरों के कारण संसार पर हाय ठोकरों का लगना अवश्य है पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा ठोकर लगती है।
८ यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काटकर फेंक दे टुण्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला
९ जाए। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर फेंक दे। काना होकर जीवन में प्रवेश करना
१० तेरे लिए इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग[2] में डाला जाए। देखो कि तुम इन छोटों में
११ से किसी को तुच्छ न जानना क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं।
१२ तुम क्या समझते हो यदि किसी मनुष्य के सौ भेड़ें हों और उन में से एक भटक जाए तो क्या निन्नानवे को छोड़ कर और पहाड़ों पर जाकर उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा।
१३ और यदि ऐसा हो कि उसे पाये तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह उन निन्नानवे भेड़ों के लिए जो न भटकी थीं इतना आनन्द न करेगा
१४ जितना कि इस भेड़ के लिए करेगा। ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नाश हो॥

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा यदि वह तेरी सुने तो तू
१६ ने अपने भाई को पा लिया। वह यदि न सुने तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा कि हर एक बात दो
१७ या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए। यदि वह उन की भी न माने तो मण्डली से कह दे पर यदि वह मण्डली की भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और
१८ महसूल लेनेवाले के ऐसा जान। मैं तुम से सच कहता हूं जो कुछ तुम पृथिवी पर बांधोगे वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथिवी पर खोलोगे वह स्वर्ग में
१९ खुलेगा। फिर मैं तुम से कहता हूं यदि तुम में से दो जन पृथिवी पर किसी बात के लिए जिसे वे मांगें एक मन के हों तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन के
२० लिए हो जाएगी। क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे हुए हैं वहां मैं उन के बीच में हूं॥

२१ तब पतरस ने पास आकर उस से कहा हे प्रभु यदि मेरा भाई मेरा अपराध करता रहे तो मैं कै बार उसे
२२ क्षमा करूं क्या सात बार तक। यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार बरन सात बार
२३ के सत्तर गुने तक। इसलिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा।

(१) यू० । पीढ़ी ।

(२) यू० । आग के नरक में ।

२४ जब वह लेखा लेने लगा तो एक जन उस के सामने
२५ लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था। जब कि भर देने को उस के पास कुछ न था तो उस के स्वामी ने कहा कि यह और इस की पत्नी और लड़केवाले और जो कुछ इस का है सब बेचा जाए और वह क़रज भर दिया
२६ जाए। इस पर उस दास ने गिर कर उसे प्रणाम किया
२७ और कहा हे स्वामी धीरज धर मैं सब कुछ भर दूंगा। तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया और
२८ उस का धार क्षमा किया। पर जब वह दास बाहर निकला तो उस के संगी दासों में से एक उस को मिला जो उस के सौ दीनार[१] धारता था उस ने उसे पकड़ कर उस का गला घोंटा और कहा जो कुछ तू धारता है भर
२९ दे। इस पर उस का संगी दास गिर कर उस से बिनती
३० करने लगा कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा। उस ने न माना पर जाकर उसे जेलखाने में डाल दिया कि जब
३१ तक क़रज को भर न दे तब तक वहीं रहे। उस के संगी दास यह जो हुआ था देख कर बहुत उदास हुए और
३२ जाकर अपने स्वामी को सारा हाल बता दिया। तब उस के स्वामी ने उस को बुला कर उस से कहा हे दुष्ट दास तू ने जो मुझ से बिनती की तो मैं ने तुझे वह सारा
३३ क़रज क्षमा किया। सो जैसे मैं ने तुझ पर दया की वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना चाहिए
३४ न था। और उस के स्वामी ने क्रोध कर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ सौंप दिया कि जब तक वह सब क़रज
३५ भर न दे तब तक उन के हाथ में रहे। यों ही यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है तुम से भी करेगा॥

१९.

जब यीशु ये बातें कह चुका तो गलील से चला गया और यहूदिया के
२ देश में यरदन के पार आया। और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली और उस ने उन्हें वहां चंगा किया॥

३ तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिए पास आकर कहने लगे क्या हर एक कारण से अपनी स्त्री को
४ त्यागना उचित है। उस ने उत्तर दिया क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस ने उन्हें बनाया उस ने आरम्भ से नर और
५ नारी बनाकर कहा कि, इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे
६ दोनों एक तन होंगे। सो वे अब दो नहीं पर एक तन हैं इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग
७ न करे। उन्हों ने उस से कहा फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे। उस ने उन से
८ कहा मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी अपनी पत्नी को छोड़ने दिया पर आरम्भ से ऐसा
९ न था। और मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करे वह व्यभिचार करता है और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे वह भी व्यभिचार करता है।
१० चेलों ने उस से कहा यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा
११ सम्बन्ध है तो ब्याह करना अच्छा नहीं। उस ने उन से कहा सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते केवल वे जिन को
१२ यह दान दिया गया है। क्योंकि कोई नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे और कोई नपुंसक ऐसे हैं जिन्हें मनुष्यों ने नपुंसक बनाया और कोई नपुंसक ऐसे हैं जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आप को नपुंसक बनाया है। जो इस को ग्रहण कर सकता है वह ग्रहण करे॥

१३ तब लोग बालकों को उस के पास लाए कि वह उन पर हाथ रक्खे और प्रार्थना करे पर चेलों ने उन्हें
१४ डांटा। यीशु ने कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का
१५ है। और वह उन पर हाथ रखकर वहां से चला गया॥

१६ और देखो एक मनुष्य ने पास आकर उस से कहा हे गुरु मैं कौन सा भला काम करूं कि अनन्त जीवन
१७ पाऊं। उस ने उस से कहा तू मुझ से भलाई के विषय क्यों पूछता है भला तो एक ही है पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है तो आज्ञाओं को माना कर।
१८ उस ने उस से कहा कौन सी आज्ञाएं यीशु ने कहा यह कि खून न करना व्यभिचार न करना चोरी न करना झूठी
१९ गवाही न देना। अपने पिता और अपनी माता का आदर करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।
२० उस जवान ने उस से कहा इन सब को मैं ने माना अब
२१ मुझ में किस बात की घटी है। यीशु ने उस से कहा यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा अपना माल बेचकर कंगालों को दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर
२२ मेरे पीछे हो ले। पर वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनी था॥

२३ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि धनवान् का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना
२४ कठिन है। फिर तुम से कहता हूं कि परमेश्वर के राज्य में धनवान् के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से
२५ निकल जाना सहज है। यह सुनकर चेलों ने बहुत चकित
२६ होकर कहा फिर किस का उद्धार हो सकता है। यीशु ने उन की ओर देख कर कहा मनुष्यों से तो यह नहीं हो

(१) दीनार लगभग आठ आने के था।

२७ सकता परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है । इस
पर पतरस ने उस से कहा कि देख हम तो सब कुछ छोड़
२८ के तेरे पीछे हो लिए हैं सो हमें क्या मिलेगा । यीशु ने
उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि नई उत्पत्ति में
जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर
बैठेगा तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो बारह सिंहा-
सनों पर बैठकर इस्राईल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे ।
२९ और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता
या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लिए
छोड़ दिया उस को सौ गुना मिलेगा और वह अनन्त
३० जीवन का अधिकारी होगा । पर बहुतेरे जो पहिले हैं
पिछले होंगे और जो पिछले हैं पहिले होंगे ॥

२०. स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है
जो सवेरे निकला कि अपने दाख की
२ बारी में मज़दूरों को लगाए । और उस ने मज़दूरों से एक
दीनार[1] रोज ठहरा कर उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा ।
३ फिर पहर एक दिन चढ़े निकलकर और औरों को बाज़ार
४ में बेकार खड़े देखकर उन से कहा, तुम भी दाख की
बारी में जाओ और जो कुछ ठीक है तुम्हें दूंगा सो वे
५ भी गए । फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट
६ निकल कर वैसा ही किया । घड़ी एक दिन रहे फिर
निकल कर औरों को खड़े पाया और उन से कहा तुम क्यों
यहां दिन भर बेकार खड़े रहे । उन्हों ने उस से कहा इस-
७ लिये कि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया । उस ने उन
८ से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ । सांझ को दाख
की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा मज़दूरों को
बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मज़दूरी दे दे ।
९ सो जब वे आए जो घड़ी एक दिन रहे लगाए गए
१० थे तो उन्हें एक एक दीनार[1] मिला । जब पहिले आए तो
यह समझा कि हमें अधिक मिलेगा पर उन्हें भी एक ही
११ एक दीनार[1] मिला । जब मिला तो वे गृहस्थ पर कुड़कुड़ा
१२ के कहने लगे कि, इन पिछलों ने एक ही घड़ी काम
किया और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया जिन्हों ने
१३ दिन भर का भार उठाया और घाम सहा । उस ने उन में
से एक को उत्तर दिया कि, हे मित्र मैं तुझ से कुछ
अन्याय नहीं करता क्या तू ने मुझ से एक दीनार[1] न
१४ ठहराया । जो तेरा है उठा ले और चला जा मेरी इच्छा
यह है कि जितना तुझे उतना ही इस पिछले को भी दूं ।
१५ क्या उचित नहीं कि अपने माल से जो चाहूं सो करूं

(१) एक अठन्नी के लगभग था ।

क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता
है । इसी रीति से जो पिछले हैं वे पहिले होंगे और जो १६
पहिले हैं वे पिछले होंगे ॥

यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त १७
में ले गया और मार्ग में उन से कहने लगा, कि देखो हम १८
यरूशलेम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र महायाजकों
और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा और वे उस
को घात के योग्य ठहराएंगे । और उस को अन्यजातियों १९
के हाथ सौंपेंगे कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं और कोड़े मारें
और क्रूस पर चढ़ाएं और वह तीसरे दिन जिलाया
जाएगा ॥

तब जब्दी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के साथ २०
उस के पास आकर प्रणाम किया और उस से कुछ मांगने
लगी । उस ने उस से कहा तू क्या चाहती है वह उस से २१
बोली यह कह कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे
दहिने और एक तेरे बाएं बैठें । यीशु ने उत्तर दिया तुम २२
नहीं जानते कि क्या मांगते हो जो कटोरा मैं पीने पर हूं
क्या तुम पी सकते हो उन्हों ने उस से कहा पी सकते हैं ।
उस ने उन से कहा तुम मेरा कटोरा तो पीओगे पर २३
अपने दहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं पर
जिन के लिए मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया
उन्हीं के लिए है । यह सुनकर दसों चेले उन दोनों २४
भाइयों पर रिसियाए । यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा २५
तुम जानते हो कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर
प्रभुता करते हैं और जो बड़े हैं वे उन पर अधिकार
जताते हैं । पर तुम में ऐसा न होगा पर जो कोई तुम में २६
बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने । और जो तुम में २७
प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने । जैसे कि मनुष्य २८
का पुत्र इस लिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल की
जाए पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और
बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे ॥

जब वे यरीहो से निकलते थे तो एक बड़ी भीड़ २९
उस के पीछे हो ली । और देखो दो अंधे जो सड़क के ३०
किनारे बैठे थे यह सुन कर कि यीशु जा रहा है पुकार
कर कहने लगे कि हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया
कर । लोगों ने उन्हें डांटा कि चुप रहें पर वे और भी ३१
चिल्लाकर बोले हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया
कर । तब यीशु ने खड़े होकर उन्हें बुलाया और कहा ३२
तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूं । उन्हों ने ३३
उस से कहा हे प्रभु यह कि हमारी आंखें खुल जाएं ।
यीशु ने तरस खाकर उन की आंखें छुईं और वे तुरन्त ३४
देखने लगे और उस के पीछे हो लिए ॥

२१. जब वे यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए तो २ यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा, अपने सामने के गांव में जाओ वहां पहुंचते ही एक गदही बन्धी हुई और उस के साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा उन्हें खोल कर मेरे ३ पास ले आओ। यदि तुम से कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभु को इन का प्रयोजन है तब वह तुरन्त उन्हें भेज ४ देगा। यह इसलिये हुआ कि जो वचन नबी के द्वारा ५ कहा गया था वह पूरा हो, कि सिय्योन की बेटी से कहो देख तेरा राजा तेरे पास आता है वह नम्र और गदहे पर ६ बैठा है बरन लादू के बच्चे पर। चेलों ने जाकर जैसा ७ यीशु ने उन्हें कहा था वैसा ही किया। और गदही और बच्चे को लाकर उन पर अपने कपड़े डाले और वह उन ८ पर बैठ गया। और बहुतेरे लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और और लोगों ने पेड़ों से डालियां काटकर ९ मार्ग में बिछाई। और जो भीड़ आगे आगे जाती और पीछे पीछे चली आती थी पुकार पुकार कर कहती थी कि दाऊद के संतान को होशाना[१] धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है आकाश[२] में होशाना। १० जब उस ने यरूशलेम में प्रवेश किया तो सारे नगर में हलचल पड़ ११ गई और लोग कहने लगे यह कौन है। लोगों ने कहा यही गलील के नासरत का नबी यीशु है॥

१२ यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर उन सब को जो मन्दिर में लेन देन कर रहे थे निकाल दिया और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियां १३ उलट दीं। और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा पर तुम उसे डाकुओं की १४ खोह बनाते हो। और अंधे और लंगड़े मन्दिर में उस के १५ पास आए और उस ने उन्हें चंगा किया। पर जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्भुत कामों को जो उस ने किए और लड़कों को मन्दिर में दाऊद के संतान को होशाना पुकारते हुए देखा तो रिसिया कर उस से १६ कहने लगे क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं। यीशु ने उन से कहा हां क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति सिद्ध १७ कराई। तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया और वहां रात बिताई॥

१८ भोर को जब वह नगर को लौट रहा था १९ तो उसे भूख लगी। और अंजीर का एक पेड़ सड़क के किनारे देख कर वह उस के पास गया और पत्तों को छोड़ उस में और कुछ न पाकर उस से कहा अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे। और अंजीर का पेड़ २० तुरन्त सूख गया। यह देखकर चेलों ने अचम्भा किया और कहा यह अंजीर का पेड़ क्योंकर तुरन्त सूख गया। २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम विश्वास रक्खो और सन्देह न करो तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है पर यदि इस पहाड़ से भी कहोगे कि उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ तो यह हो जायगा। २२ और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास करके मांगोगे सो पाओगे॥

२३ वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था कि महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उस के पास आकर पूछा तू ये काम किस अधिकार से करता है और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है। २४ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं यदि वह मुझे बताओगे तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। २५ यूहन्ना का बपतिसमा कहां से था स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था तब वे आपस में विवाद करने लगे कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह हम से कहेगा फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की। २६ और यदि कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें भीड़ का डर है क्योंकि वे सब यूहन्ना को नबी जानते हैं। २७ सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते। उस ने भी उन से कहा तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। २८ तुम क्या समझते हो किसी मनुष्य के दो पुत्र थे उस ने पहिले के पास जाकर कहा हे पुत्र आज दाख की बारी में काम कर। २९ उस ने उत्तर दिया मैं नहीं जाऊंगा पर पीछे पछता कर गया। ३० फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा उस ने उत्तर दिया जी हां जाता हूं पर गया नहीं। ३१ इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी की उन्हों ने कहा पहिले ने। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। ३२ क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया और तुम ने उस की प्रतीति न की, पर महसूल लेनेवालों और वेश्याओं ने उस की प्रतीति की और तुम यह देख कर पीछे भी न पछताए कि उस की प्रतीति करते॥

३३ एक और दृष्टान्त सुनो। एक गृहस्थ था जिस ने दाख की बारी लगाई और उस के चारों ओर बाड़ा बांधा और उस में रस का कुंड खोदा और गुम्मट बनाया और किसानों को उस का ठीका देकर परदेश

(१) भजन संहिता। ११८ : २५ को देखना।
(२) यू०। ऊंचे से ऊंचे स्थान।

३४ चला गया। जब फल का समय निकट आया तो उस ने अपने दासों को उस का फल लेने के लिए किसानों के
३५ पास भेजा। पर किसानों ने उस के दासों को पकड़ के किसी को पीटा और किसी को मार डाला और किसी
३६ को पत्थरवाह किया। फिर उस ने और दासों को भेजा जो पहिलों से अधिक थे और उन्हों ने उन से भी वैसा
३७ ही किया। पीछे उस ने अपने पुत्र को उन के पास यह
३८ कहकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। पर किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा यह तो वारिस है आओ उसे मार डालें और उस की मीरास
३९ ले लें। और उन्हों ने उसे पकड़ा और दाख की बारी से
४० बाहर निकाल कर मार डाला। इसलिये जब दाख की बारी का स्वामी आएगा तो उन किसानों से क्या करेगा।
४१ उन्हों ने उस से कहा वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी का ठीका और किसानों
४२ को देगा जो समय पर उसे फल दिया करेंगे। यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजों ने निकम्मा ठहराया था
४३ वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया। यह प्रभु की ओर से हुआ और हमारे देखने में अद्भुत है। इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उस का फल लाए दिया
४४ जाएगा। जो इस पत्थर पर गिरेगा वह चूर हो जाएगा और जिस पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा।
४५ महायाजक और फरीसी उस के दृष्टान्तों को सुनकर
४६ समझ गए कि वह हमारे विषय कहता है। और उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा पर लोगों से डर गये क्योंकि वे उसे नबी जानते थे॥

२२.

इस पर यीशु फिर उन से दृष्टान्तों में
२ कहने लगा। स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिस ने अपने पुत्र का ब्याह किया।
३ और उस ने अपने दासों को भेजा कि नेवतहरियों को ब्याह के भोज में बुलाएं पर उन्हों ने आना न चाहा।
४ फिर उस ने और दासों को यह कहकर भेजा कि नेवतहरियों से कहो देखो मैं भोज तैयार कर चुका हूं और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गये हैं और सब कुछ तैयार
५ है ब्याह के भोज में आओ। पर वे बेपरवाई करके चल दिए कोई अपने खेत को कोई अपने ब्योपार को।
६ बाकियों ने उस के दासों को पकड़कर अनादर किया
७ और मार डाला। राजा ने क्रोध किया और अपनी सेना भेजकर उन खूनियों को नाश किया और उन के
८ नगर को फूंक दिया। तब उस ने अपने दासों से कहा ब्याह का भोज तो तैयार है पर नेवतहरी योग्य नहीं
९ ठहरे। इसलिये चौराहों में जाओ और जितने लोग
१० तुम्हें मिलें सब को ब्याह के भोज में बुला लाओ। सो उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे क्या भले जितने मिले सब को इकट्ठे किया और ब्याह का घर
११ जेवनहारों से भर गया। जब राजा जेवनहारों के देखने को भीतर आया तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा
१२ जो ब्याह का वस्त्र न पहिने था। उस ने उस से पूछा हे मित्र तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्योंकर आ
१३ गया। उस का मुंह बन्द हो गया। तब राजा ने सेवकों से कहा इस के हाथ पांव बांधकर उसे बाहर अंधेरे में
१४ डाल दो वहां रोना और दांत पीसना होगा। क्योंकि बुलाए हुए बहुत पर चुने हुए थोड़े हैं॥

१५ तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया कि
१६ उस को क्योंकर बातों में फंसाएं। सो उन्हों ने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उस के पास यह कहने को भेजा कि, हे गुरु हम जानते हैं कि तू सच्चा है और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है और किसी की परवा नहीं करता
१७ क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता। सो हमें बता तू क्या समझता है कैसर को कर देना उचित
१८ है कि नहीं। यीशु ने उन की दुष्टता जानकर कहा हे
१९ कपटियो मुझे क्यों परखते हो। कर का सिक्का मुझे
२० दिखाओ तब वे उस के पास एक दीनार[1] ले आये। उस
२१ ने उन से पूछा यह मूर्त्ति और नाम किस का है। उन्हों ने उस से कहा कैसर का तब उस ने उन से कहा जो कैसर का है वह कैसर को और जो परमेश्वर का है वह
२२ परमेश्वर को दो। यह सुन कर उन्हों ने अचम्भा किया और उसे छोड़ कर चले गये॥

२३ उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी
२४ उठना है ही नहीं उस के पास आये और उस से पूछा कि, हे गुरु मूसा ने कहा था यदि कोई बिना सन्तान मर जाए तो उस का भाई उस की पत्नी को ब्याहकर अपने भाई
२५ के लिए वंश उत्पन्न करे। अब हमारे यहां सात भाई थे पहिला ब्याह करके मर गया और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिए छोड़ गया।
२६ इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने किया सातों तक।
२७,२८ सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। सो जी उठने पर वह सातों में से किस की पत्नी होगी क्योंकि वह सब की
२९ पत्नी हुई थी। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते इस कारण

(१) अठन्नी के लगभग।

३० भूल में पड़ गए हो । क्योंकि जी उठने पर ब्याह शादी न होगी पर वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों की नाईं होंगे ।
३१ पर मरे हुओं के जी उठने के विषय क्या तुम ने यह
३२ वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा कि, मैं इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं । सो वह मरे हुओं का नहीं पर
३३ जीवतों का परमेश्वर है । यह सुन कर लोग उस के उपदेश से चकित हुए ॥

३४ जब फरीसियों ने सुना कि उस ने सदूकियों का
३५ मुंह बन्द कर दिया तो वे इकट्ठे हुए । और उन में से
३६ एक व्यवस्थापक ने परखने के लिए उस से पूछा । हे गुरु
३७ व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है । उस ने उस से कहा तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे जीव और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख ।
३८,३९ बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है । और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने
४० समान प्रेम रख । ये ही दो आज्ञा सारी व्यवस्था और नबियों का आधार है ॥

४१ जब फरीसी इकट्ठे थे तो यीशु ने उन से पूछा कि,
४२ मसीह के विषय तुम क्या समझते हो वह किस का
४३ सन्तान है उन्हों ने उस से कहा दाऊद का । उस ने उन से पूछा तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्योंकर
४४ कहता है कि, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा मेरे दहिने बैठ जब तक कि मैं तेरे वैरियों को तेरे पावों के नीचे न कर
४५ दूं । भला जब दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उस
४६ का पुत्र क्योंकर ठहरा । उस के उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका पर उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ ॥

२३.

तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों
२ से कहा । शास्त्री और फरीसी मूसा
३ की गद्दी पर बैठे हैं । इसलिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना और मानना पर उन के से काम न करना
४ क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं । वे ऐसे भारी बोझ जिन को उठाना कठिन है बांधकर उन्हें मनुष्यों के कांधों पर रखते हैं पर आप उन्हें अपनी उंगली से
५ भी सरकाना नहीं चाहते । वे अपने सब काम लोगों को दिखाने को करते हैं वे अपने तावीजों को चौड़े
६ करते और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं । जेवनारों में
७ मुख्य मुख्य जगहें और सभा में मुख्य मुख्य आसन, और बाज़ारों में नमस्कार और मनुष्यों में रब्बी रब्बी कहलाना
८ उन्हें भाता है । पर तुम रब्बी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है और तुम सब भाई हो । और ९
पृथिवी पर किसी को अपना पिता न कहना क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है जो स्वर्ग में है । और स्वामी भी १०
न कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है अर्थात् मसीह । जो तुम में बड़ा हो वह तुम्हारा सेवक बने । ११
जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया १२
जाएगा और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा ॥

हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम १३
मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बंद करते हो न आप ही उस में प्रवेश करते हो और न उस में प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो ॥

हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम १५
एक जन को अपने मत में लाने के लिए सारे जल और थल में फिरते हो और जब वह मत में आया है तो उसे अपने से दूना नरकी बनाते हो ॥

हे अंधे अगुवो तुम पर हाय जो कहते हो यदि कोई १६
मन्दिर की किरिया खाए तो कुछ नहीं पर यदि कोई मन्दिर के सोने की किरिया खाए तो उस से बंध जाएगा ।
हे मूर्खो और अंधो कौन बड़ा है सोना या वह मन्दिर १७
जिस से सोना पवित्र होता है । फिर कहते हो यदि कोई १८
बेदी की किरिया खाए तो कुछ नहीं पर जो भेंट उस पर है यदि कोई उस की किरिया खाए तो बंध जाएगा ।
हे अंधो कौन बड़ा है भेंट या बेदी जिस से भेंट पवित्र १९
होती है । इसलिये जो बेदी की किरिया खाता है वह २०
उस की और जो कुछ उस पर है उस की भी किरिया
खाता है । और जो मन्दिर की किरिया खाता है वह उस २१
की और उस में रहनेवाले की भी किरिया खाता है । और २२
जो स्वर्ग की किरिया खाता है वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठनेवाले की भी किरिया खाता है ॥

हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय २३
तुम पोदीने और सौंफ और ज़ीरे का दसवां अंश देते हो पर तुम ने व्यवस्था की भारी भारी बातों को अर्थात् न्याय और दया और विश्वास को छोड़ दिया है । चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न
छोड़ते । हे अंधे अगुवो जो मच्छर को तो छान डालते २४
हो पर ऊंट को निगल जाते हो ॥

हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम २५
कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो पर वे
भीतर अंधेर और असंयम से भरे हैं । हे अंधे फरीसी २६
पहिले कटोरे और थाली के भीतर साफ कर कि वे बाहर भी साफ हों ॥

२७ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम चूना फेरे हुए क़बरों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं पर भीतर मुरदों की हड्डियों और २८ सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो पर भीतर कपट और अधर्म से भरे हो॥

२९ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय तुम नबियों की क़बरें बनाते और धर्मियों की क़बरें ३० संवारते हो। और कहते हो कि यदि हम अपने बाप दादों के दिनों में होते तो नबियों के ख़ून में उन के ३१ साथी न होते। इस से तो तुम अपने पर आप ही गवाही ३२ देते हो कि तुम नबियों के घातकों के सन्तान हो। सो ३३ तुम अपने बापदादों के पाप का घड़ा भर दो। हे सांपो हे करैतों के बच्चो तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे। ३४ इसलिये देखो मैं तुम्हारे पास नबियों और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे और क्रूस पर चढ़ाओगे और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे और नगर से नगर ३५ खदेड़ते फिरोगे। जिस से धर्मी हाबील से लेकर बिरिक्याह के पुत्र ज़करयाह तक जिसे तुम ने मन्दिर[१] और बेदी के बीच मार डाला था जितने धर्मियों का लोहू पृथिवी पर बहाया गया है वह सब तुम्हारे सिर पर आएगा। ३६ मैं तुम से सच कहता हूं ये सब बातें इस समय के लोगों पर पड़ेंगी॥

३७ हे यरूशलेम हे यरूशलेम तू जो नबियों को मार डालती और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पत्थरवाह करती है कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है वैसे ही मैं भी ३८ तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं पर तुम ने न चाहा। देखो ३९ तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं अब से जब तक तुम न कहोगे कि धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है तब तक तुम मुझे कभी न देखोगे॥

२४. जब यीशु मन्दिर से निकल कर जा रहा था तो उस के चेले उस को २ मन्दिर की रचना दिखाने को उस के पास आए। उस ने उन से कहा क्या तुम यह सब नहीं देखते मैं तुम से सच कहता हूं यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा॥

३ और जब वह ज़ैतून के पहाड़ पर बैठा था तो चेलों ने अलग उस के पास आकर कहा हम से कह ये बातें कब होंगी और तेरे आने का और जगत के अन्त[२] का क्या चिन्ह होगा। यीशु ने उन को उत्तर दिया चौकस ४ रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम ५ से आकर कहेंगे मैं मसीह हूं और बहुतों को भरमाएंगे। तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे देखो न ६ घबराना क्योंकि इन का होना अवश्य है पर उस समय अन्त न होगा। क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर ७ राज्य चढ़ाई करेगा और जगह जगह अकाल पड़ेंगे और भुईंडोल होंगे। ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी। ८ तब वे क्लेश दिलाने के लिए तुम्हें पकड़वाएंगे और तुम्हें ९ मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर करेंगे। तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे और १० एक दूसरे को पकड़वाएंगे और एक दूसरे से बैर रक्खेंगे। और बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे और बहुतों को ११ भरमाएंगे। और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा १२ हो जाएगा। पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी १३ का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे १४ जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर गवाही हो और तब अन्त आ जाएगा॥

सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घिनित वस्तु को १५ जिस की चर्चा दानिय्येल नबी के द्वारा हुई थी पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो (जो पढ़े वह समझे)। तब १६ जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं। जो कोठे १७ पर हो वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे। और जो खेत में हो वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न १८ लौटे। उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी १९ उन के लिए हाय हाय। और प्रार्थना किया करो कि २० तुम्हें जाड़े में या विश्राम के दिन भागना न पड़े। क्योंकि २१ उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा कि जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ है और न कभी होगा। और यदि २२ वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता पर चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे। उस समय यदि २३ कोई तुम से कहे देखो मसीह यहां है या वहां है तो प्रतीति न करना। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ २४ खड़े होंगे और ऐसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। देखो २५ मैं ने पहिले से तुम से कह दिया है। इसलिये यदि २६ वे तुम से कहें देखो वह जंगल में है तो बाहर न निकल जाना। देखो वह कोठरियों में है तो प्रतीति न करना। क्योंकि जैसे बिजली पूरब से निकलकर पच्छिम तक २७

(१) अर्थात् पवित्रस्थान।

(२) मू०। युग की समाप्ति।

चमकती जाती है वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना
२८ होगा । जहां लोथ हो वहां गिद्ध इकट्ठे होंगे ॥

२९ उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरन्त सूरज अंधेरा हो
जाएगा और चांद प्रकाश न देगा तारे आकाश से गिरेंगे
३० और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी । तब मनुष्य
के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा और तब पृथिवी
के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र
को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ आकाश के बादलों पर
३१ आते देखेंगे । और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने
दूतों को भेजेगा और वे आकाश के इस छोर से उस छोर
तक चारों दिशा से उस के चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे ॥

३२ अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो । जब उस की
डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं तो
३३ तुम जान लेते हो कि धूप काल निकट है । इसी रीति
से जब तुम इन सब बातों को देखो तो जान लो कि वह
३४ निकट है बरन द्वार ही पर है । मैं तुम से सच कहता हूं
कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें तब तक यह लोग[1]
३५ जाते न रहेंगे । आकाश और पृथिवी टल जाएंगे पर मेरी
३६ बातें कभी न टलेंगी । उस दिन और उस घड़ी के विषय
कोई नहीं जानता न स्वर्ग के दूत न पुत्र पर केवल
३७ पिता । जैसे नूह के दिन थे वैसा ही मनुष्य के पुत्र का
३८ आना भी होगा । क्योंकि जैसे जल प्रलय से पहिले के
दिनों में जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा उसी
दिन तक लोग खाते पीते और उन में ब्याह शादी होती
३९ थी । और जब तक जल प्रलय आकर उन सब को बहा
न ले गया तब तक उन को कुछ ज्ञान न पड़ा वैसे ही
४० मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा । तब दो जन खेत में
होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा ।
४१ दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी एक ले ली जाएगी और
४२ दूसरी छोड़ी जाएगी । इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम
४३ नहीं जानते तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा । पर यह जान
लो कि यदि घर का स्वामी जानता कि चोर किस पहर
आएगा तो जागता रहता और अपने घर में सेंध लगने
४४ न देता । इसलिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी
के विषय तुम सोचते भी नहीं उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र
४५ आएगा । सो वह विश्वास योग्य और बुद्धिमान दास कौन
है जिसे स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया
४६ कि समय पर उन्हें भोजन दे । धन्य है वह दास जिसे उस
४७ का स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए । मैं तुम से सच
कहता हूं वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर सरदार ठहरा-
एगा । पर यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे कि मेरे स्वामी ४८
के आने में देर है । और अपने साथी दासों को पीटने ४९
लगे और पियक्कड़ों के साथ खाए पीए । तो उस दास ५०
का स्वामी ऐसे दिन आएगा जब वह उस की बाट न
जोहता हो और ऐसी घड़ी कि वह न जानता हो । और ५१
उसे भारी ताड़ना देकर उस का भाग कपटियों के साथ
ठहराएगा । वहां रोना और दांत पीसना होगा ॥

२५.

तब स्वर्ग का राज्य दस कुंवारियों के समान ठहरेगा जो अपनी मशालें
लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं । उन में पांच मूर्ख २
और पांच समझदार थीं । मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं ३
पर अपने साथ तेल न लिया । पर समझदारों ने अपनी ४
मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भर लिया ।
जब दूल्हे के आने में देर हुई तो वे सब ऊंघने लगीं और ५
सो गईं । आधी रात को धूम मची कि देखो दूल्हा ६
आ रहा है उस से भेंट करने को निकलो । तब वे सब ७
कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं । और ८
मूर्खों ने समझदारों से कहा अपने तेल में से कुछ हमें
भी दो क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं । पर सम- ९
झदारों ने उत्तर दिया कि क्या जाने हमारे और तुम्हारे
लिए पूरा न हो सो भला है कि तुम बेचनेवालों के
पास जाकर अपने लिए मोल लो । ज्यों वे मोल लेने को १०
जा रही थीं त्यों ही दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं
वे उस के साथ ब्याह के घर में गईं और द्वार बन्द किया
गया । पीछे वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं ११
हे स्वामी हे स्वामी हमारे लिए द्वार खोल दे । उस ने १२
उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं मैं तुम्हें नहीं
जानता । इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम न वह दिन १३
और न वह घड़ी जानते हो ॥

क्योंकि यह उस मनुष्य का सा हाल है जिस ने १४
परदेश जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी
संपत्ति उन को सौंप दी । उस ने एक को पांच तोड़े १५
दूसरे को दो तीसरे को एक हर एक को उस की सामर्थ
के अनुसार दिया और तब परदेश चला गया । तब जिस १६
को पांच तोड़े मिले थे उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन
देन किया और पांच तोड़े और कमाए । इसी रीति से १७
जिस को दो मिले थे उस ने भी दो और कमाए । पर १८
जिस को एक मिला था उस ने जाकर मिट्टी खोदी और
अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए । बहुत दिन पीछे उन १९
दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा । जिस २०
को पांच तोड़े मिले थे उस ने पांच तोड़े और लाकर

(१) या । यह पीढ़ी जाती न रहेगी ।

कहा हे स्वामी तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे देख मैं ने
२१ पांच तोड़े और कमाए। उस के स्वामी ने उस से कहा
धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास तू थोड़े में विश्वास-
योग्य हुआ मैं तुझे बहुत के ऊपर अधिकार दूंगा अपने
२२ स्वामी के आनन्द में भागी हो। और जिस के दो तोड़े
मिले थे उस ने भी आकर कहा हे स्वामी तू ने मुझे दो तोड़े
२३ सौंपे थे देख मैं ने दो तोड़े और कमाए। उस के स्वामी
ने उस से कहा धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास
तू थोड़े में विश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुत के ऊपर
अधिकार दूंगा अपने स्वामी के आनन्द में भागी हो।
२४ तब जिस के एक तोड़ा मिला था उस ने आकर कहा
हे स्वामी मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य है जहां
नहीं बोया वहां काटता है और जहां नहीं छींटा वहां
२५ से बटोरता है। सो मैं डरा और जाकर तेरा तोड़ा
मिट्टी में छिपा दिया देख जो तेरा है वह तुझे मिल
२६ गया। उस के स्वामी ने उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और
आलसी दास तू तो जानता था कि जहां मैं ने नहीं बोया
वहां काटता हूं और जहां मैं ने नहीं छींटा वहां से बटोरता
२७ हूं। सो तुझे चाहिए था कि मेरा रुपया सर्राफ़ों के देता
२८ तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता। इस
लिये वह तोड़ा उस से ले लो और जिस के पास दस
२९ तोड़े हैं उसी के दो। क्योंकि जिस किसी के पास है उसे
और दिया जाएगा और उस के पास बहुत होगा पर
जिस के पास नहीं है उस से वह भी जो उस के पास है
३० ले लिया जाएगा। और इस निकम्मे दास के बाहर के
अंधेरे में डाल दो वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

३१ जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा
और सब स्वर्गदूत उस के साथ तो वह अपनी महिमा
३२ के सिंहासन पर बैठेगा। और सब जातियां उस के
सामने इकट्ठी की जाएंगी और जैसा रखवाला भेड़ों के
बकरियों से अलग कर देता है वैसा ही वह उन्हें एक
३३ दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों के अपनी दहिनी
३४ ओर और बकरियों के बाईं ओर खड़ी करेगा। तब
राजा अपनी दहिनी ओरवालों से कहेगा हे मेरे पिता के
धन्य लोगो आओ उस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो
जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।
३५ क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने के दिया मैं
पियासा था और तुम ने मुझे पिलाया मैं परदेशी था और
३६ तुम ने मुझे अपने घर में उतारा। मैं नङ्गा था और तुम
ने मुझे कपड़े पहिनाये बीमार था और तुम ने मेरी ख़बर
३७ ली मैं जेलख़ाने में था और तुम मेरे पास आए। तब
धर्मी उस के उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब तुझे भूखा
देखा और खिलाया या पियासा देखा और पिलाया। हम ३८
ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में उतारा या
नंगा देखा और कपड़े पहिराए। हम ने कब तुझे बीमार ३९
या जेलख़ाने में देखा और तेरे पास आए। तब राजा ४०
उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो
मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से एक के लिए किया
वह मेरे लिए भी किया। तब वह बाईं ओरवालों से ४१
कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे सामने से उस अनन्त आग
में जा पड़ो जो शैतान[१] और उस के दूतों के लिए तैयार
की गई है। क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने ४२
के नहीं दिया मैं पियासा था और तुम ने मुझे नहीं
पिलाया। मैं परदेशी था और तुम ने मुझे अपने घर में ४३
नहीं उतारा मैं नंगा था और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहि-
राए बीमार और जेलख़ाने में था और तुम ने मेरी
ख़बर न ली। तब वे उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब ४४
तुझे भूखा या पियासा या परदेशी या नंगा या बीमार
या जेलख़ाने में देखा और तेरी सेवा टहल न की।
तब वह उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूं ४५
कि तुम ने जो इन छोटों से छोटों में से एक के लिए न
किया वह मेरे लिए भी न किया। और ये अनन्त दण्ड ४६
भोगेंगे[२] पर धर्मी अनन्त जीवन में जा रहेंगे।

२६. जब यीशु ये सब बातें कह चुका तो
अपने चेलों से कहने लगा। तुम २
जानते हो कि दो दिन के पीछे फ़सह होगा और मनुष्य
का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के पकड़वाया जाएगा।
तब महायाजक और प्रजा के पुरनिए काइफा नाम महा- ३
याजक के आंगन में इकट्ठे हुए। और आपस में विचार ४
किया कि यीशु के छल से पकड़कर मार डालें। पर वे ५
कहते थे कि पर्व्व के समय नहीं न हो कि लोगों में
बलवा मचे॥

जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था। ६
तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल अतर लेकर ७
उस के पास आई और जब वह भोजन करने बैठा था तो
उस के सिर पर ढाला। यह देखकर उस के चेले रिसि- ८
याए और कहने लगे इस का क्यों सत्यानाश किया गया।
यह तो अच्छे दाम पर बिक कर कंगालों के बांटा जा ९
सकता था। यह जान कर यीशु ने उन से कहा स्त्री के १०
क्यों सताते हो उस ने मेरे साथ भलाई की है। कंगाल ११
तुम्हारे साथ सदा रहते हैं पर मैं तुम्हारे साथ सदा न
रहूंगा। उस ने मेरी देह पर यह अतर जो ढाला है वह मेरे १२
गाड़े जाने के लिए किया है। मैं तुम से सच कहता हूं १३

(१) यू० इबलीस। (२) मू० में जाएंगे।

कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा वहां उस के इस काम की चर्चा भी उस के स्मरण में की जाएगी ॥

१४ तब यहूदा इस्करियोती नाम बारहों में से एक ने १५ महायाजकों के पास जाकर कहा। यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं तो मुझे क्या दोगे उन्हों ने उसे तीस १६ चांदी के सिक्के तौल कर दे दिये। और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा ॥

१७ अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे तू कहां चाहता है कि हम तेरे १८ लिए फ़सह खाने की तैयारी करें। उस ने कहा नगर में फ़ुलाने के पास जाकर उस से कहो गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां फ़सह १९ करूंगा। सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी और फ़सह २० तैयार किया। जब सांझ हुई तो वह बारहों के साथ २१ भोजन करने बैठा। जब वे खा रहे थे तो उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वा- २२ एगा। इस पर वे बहुत उदास हुए और हर एक उस से २३ पूछने लगा हे गुरु क्या वह मैं हूं? उस ने उत्तर दिया कि जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है वही मुझे २४ पकड़वाएगा। मनुष्य का पुत्र तो जैसा उस के विषय लिखा है जाता ही है पर उस मनुष्य पर हाय जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है। यदि उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिए भला होता। २५ तब उस के पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा कि हे रब्बी क्या २६ वह मैं हूं? उस ने उस से कहा तू कह चुका। जब वे खा रहे थे तो यीशु ने रोटी ली और आशिष मांगकर तोड़ी और चेलों को देकर कहा लो खाओ यह मेरी देह है। २७ फिर उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और उन्हें २८ देकर कहा तुम सब इस में से पिओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा २९ के निमित्त बहाया जाता है। मैं तुम से कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं ॥

३० फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए ॥

३१ तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं रखवाले को मारूंगा और झुण्ड की भेड़ें तित्तर बित्तर हो जाएंगी। ३२ पर मैं अपने जी उठने के पीछे तुम से पहिले गलील को ३३ जाऊंगा। इस पर पतरस ने उस से कहा यदि सब तेरे विषय ठोकर खाएं तो खाएं पर मैं कभी ठोकर न ३४ खाऊंगा। यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि इसी रात मुर्ग़ के बांग देने से पहिले तू तीन बार मुझ ३५ से मुकर जाएगा। पतरस ने उस से कहा चाहे मुझे तेरे साथ मरना भी हो तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा। ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा ॥

३६ तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमने नाम जगह में आकर उन से कहने लगा कि यहां बैठे रहो जब तक ३७ मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं। और वह पतरस और ज़बदी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया और उदास और ३८ बहुत व्याकुल होने लगा। तब उस ने उन से कहा मेरा जी बहुत उदास है यहां तक कि मैं मरने पर हूं। तुम ३९ यहां ठहरो और मेरे साथ जागते रहो। और वह थोड़ा आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा कि हे मेरे पिता यदि हो सके तो यह कटोरा मेरे पास से हट जाए तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं पर जैसा ४० तू चाहता है वैसा ही हो। फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया और पतरस से कहा क्या तुम मेरे साथ ४१ एक घड़ी भी न जाग सके। जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो आत्मा तो तैयार ४२ है पर शरीर दुर्बल है। फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की कि हे मेरे पिता यदि यह मेरे पिए बिना ४३ नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो। तब उस ने फिर आकर उन्हें सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से ४४ भरी थीं। और उन्हें छोड़कर फिर चला गया और वही ४५ बात फिर कह कर तीसरी बार प्रार्थना की। तब उस ने चेलों के पास आकर उन से कहा अब सोते रहो और विश्राम करते रहो देखो घड़ी आ पहुंची है और मनुष्य का ४६ पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। उठो चलें देखो मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुंचा है ॥

४७ वह यह कह ही रहा था कि देखो यहूदा जो बारहों में से था आ गया और उस के साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़ तलवारें ४८ और लाठियां लिये हुए आई। उस के पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उसे ४९ पकड़ लेना। और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा हे ५० रब्बी सलाम और उस को बहुत चूमा। यीशु ने उस से कहा हे मित्र जिस काम को तू आया है वह कर ले। तब उन्हों ने पास आकर यीशु पर हाथ डाले और उसे ५१ पकड़ लिया। और देखो यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खींची और महायाजक के ५२ दास पर चलाकर उस का कान उड़ा दिया। तब यीशु ने उस से कहा अपनी तलवार काठी में कर क्योंकि जो तलवार चलाते हैं वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।

५३ क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक ५४ मेरे पास अभी हाज़िर कर देगा। पर पवित्र शास्त्र की वे ५५ बातें कि ऐसा होना अवश्य है क्योंकर पूरी होंगी। उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा क्या तुम डाकू जानकर मेरे पकड़ने के लिए तलवारें और लाठियां लेकर निकले हो मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश किया करता था ५६ और तुम ने मुझे न पकड़ा। पर यह सब इसलिये हुआ है कि नबियों के वचन[1] पूरे हों। तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए॥

५७ और यीशु के पकड़नेवाले उसे काइफा महायाजक के पास ले गए जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। ५८ और पतरस दूर से उस के पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के ५९ साथ बैठ गया। महायाजक और सारी महा सभा यीशु को मार डालने के लिये उस के विरोध में झूठी गवाही ६० की खोज में थे। पर बहुतेरे झूठे गवाहों के आने पर भी ६१ न पाई। अन्त में दो जन आकर कहने लगे कि, इस ने कहा है कि मैं परमेश्वर का मन्दिर ढा सकता और उसे ६२ तीन दिन में बना सकता हूं। तब महायाजक ने खड़े होकर उस से कहा क्या तू कोई उत्तर नहीं देता ये लोग ६३ तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं। पर यीशु चुप रहा। महायाजक ने उस से कहा मैं तुझे जीवते परमेश्वर की किरिया देता हूं कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है तो ६४ हम से कह दे। यीशु ने उस से कहा तू कह चुका बरन मैं तुम से यह भी कहता हूं कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान्[2] की दहिनी ओर बैठे और आकाश के ६५ बादलों पर आते देखोगे। तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ के कहा इस ने परमेश्वर की निन्दा की अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन देखो तुम ने अभी यह निन्दा ६६ सुनी है। तुम क्या समझते हो उन्हों ने उत्तर दिया यह ६७ बध होने के योग्य है। तब उन्हों ने उस के मुंह पर थूका ६८ और उसे घूसे मारे औरों ने थप्पर मार के कहा हे मसीह हम से नबूवत कर कि किस ने तुझे मारा॥

६९ और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ था कि एक लौंडी ने उस के पास आकर कहा तू भी यीशु गलीली के ७० साथ था। वह सब के सामने मुकर गया और कहा मैं ७१ नहीं जानता तू क्या कह रही है। जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां ७२ थे कहा यह भी तो यीशु नासरी के साथ था। वह किरिया खाकर फिर मुकर गया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। थोड़ी देर पीछे जो वहां खड़े थे उन्हों ने पतरस के पास ७३ आकर उस से कहा सचमुच तू भी उन में से एक है क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है। तब वह ७४ धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता और तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी। तब पतरस ७५ को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग़ के बांग देने से पहिले तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा और बाहर निकल के फूट फूट कर रोने लगा॥

(१) यू० पवित्रशास्त्र। (२) यू०। सामथ।

२७.

जब भोर हुई तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार २ डालने की सम्मति की। और उन्हों ने उसे बांधा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ सौंप दिया॥

३ जब उस के पकड़वानेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया तो वह पछताकर वे तीस चांदी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया। ४ और कहा मैं ने निर्दोषी को घात के लिए पकड़वाकर पाप ५ किया है। उन्हों ने कहा हमें क्या तू ही जान। तब वह उन सिक्कों को मन्दिर[3] में फेंककर चला गया और जाकर ६ अपने आप को फांसी दी। महायाजकों ने वे सिक्के लेकर कहा इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं क्योंकि यह ७ लोहू का दाम है। सो उन्हों ने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिए कुम्हार का खेत मोल ८ लिया। इस कारण वह खेत आज तक लोहू का खेत ९ कहलाता है। तब जो वचन यिरमयाह नबी के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ कि उन्हों ने वे तीस सिक्के अर्थात् उस मुलाए हुए के मोल को जिसे इस्राईल के १० सन्तान में से कितनों ने मुलाया था ले लिए। और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के दाम में दिया॥

११ जब यीशु हाकिम के सामने खड़ा था तो हाकिम ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है यीशु ने उस से १२ कहा तू आपही कह रहा है। जब महायाजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे तो उस ने कुछ उत्तर न दिया। १३ सो पीलातुस ने उस से कहा क्या तू सुनता नहीं कि ये १४ तेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं। पर उस ने उस को एक बात का भी उत्तर न दिया यहां तक कि हाकिम १५ ने बहुत अचम्भा किया। और हाकिम की यह रीति थी कि उस पर्व्व में लोगों के लिए किसी एक बंधुए को १६ जिसे वे चाहते थे छोड़ देता था। उस समय बरअब्बा १७ नाम उन्हीं में का एक नामी बंधुआ था। सो जब वे

(३) यू०। पवित्रस्थान।

इकट्ठे हुए तो पीलातुस ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं बरअब्बा को या यीशु को जो मसीह कहलाता है। १८ क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उसे डाह से पकड़वाया था। १९ जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा था तो उस की पत्नी ने उसे कहला भेजा कि तू उस धर्म्मी के मामले में हाथ न डालना क्योंकि मैं ने आज सपने में उस के कारण बहुत दुख भोगा है। २० महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा कि वे बरअब्बा को मांग लें और यीशु को नाश कराएं। २१ हाकिम ने उन से पूछा कि इन दोनों में से किस को चाहते हो कि तुम्हारे लिए छोड़ दूं। उन्हों ने कहा बरअब्बा को। २२ पीलातुस ने उन से पूछा फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है क्या करूं। सब ने उस से कहा वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। २३ हाकिम ने कहा क्यों उस ने क्या बुराई की है पर वे और भी चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। २४ जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर इस के उलटे हुल्लड़ होता जाता है तो उस ने पानी लेकर भीड़ के सामने हाथ धोये और कहा मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो। २५ सब लोगों ने उत्तर दिया कि इस का लोहू हम पर और हमारे सन्तान पर हो। २६ इस पर उस ने बरअब्बा को उन के लिए छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

२७ तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को क़िले में ले जाकर सारी पलटन उस के आसपास इकट्ठी की। २८ और उस के कपड़े उतार कर उसे क़िरमिज़ी बागा पहिराया। २९ और कांटों का मुकुट गूथकर उस के सिर पर रक्खा और उस के दहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उस के आगे घुटने टेककर उस से ठट्ठे से कहा कि हे यहूदियों के राजा सलाम। ३० और उस पर थूका और वही सरकण्डा ले उस के सिर पर मारने लगे। ३१ जब वे उस का ठट्ठा कर चुके तो वह बागा उस से उतार कर फिर उसी के कपड़े उसे पहिनाए और क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले॥

३२ बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य मिला उसे बेगार में पकड़ा कि उस का क्रूस उठा ले चले। ३३ और गुलगुता नाम की जगह जो खोपड़ी की जगह कहलाती है पहुंचकर, ३४ उन्हों ने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया पर उस ने चखकर पीना न चाहा। ३५ तब उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया और चिट्ठियां डालकर उस के कपड़े बांट लिए। ३६ और वहां बैठकर उस का पहरा देने लगे। ३७ और उस का दोष पत्र उस के सिर के ऊपर लगाया कि यह यहूदियों का राजा यीशु है। ३८ तब उस के साथ दो डाकू एक दहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए। ३९ और आने जानेवाले सिर हिला हिलाकर उस की निन्दा करते और यह कहते थे कि, ४० हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले अपने आप को बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ। ४१ इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, ४२ इस ने औरों को बचाया अपने को नहीं बचा सकता। यह तो इस्राईल का राजा है। अब क्रूस पर से उतर आए और हम उस पर विश्वास करेंगे। ४३ उस ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है। यदि वह इस को चाहता है तो अब इसे छुड़ा ले क्योंकि उस ने कहा था कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। ४४ इसी रीति डाकू भी जो उस के साथ क्रूसों पर चढ़ाये गये थे उस की निन्दा करते थे॥

४५ दो पहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा। ४६ तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा एली एली लमा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया। ४७ जो वहां खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा वह एलिय्याह को पुकारता है। ४८ उन में से एक तुरन्त दौड़ा और इस्पंज लेकर सिरके में डुबोया और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। ४९ औरों ने कहा रह जा देखें एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं। ५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण[1] छोड़ा। ५१ और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया और धरती डोली और चटानें फट गईं। ५२ और क़बरें खुल गईं और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं। ५३ और उस के जी उठने के पीछे वे क़बरों में से निकलकर पवित्र नगर में गये और बहुतों को दिखाई दिए। ५४ तब सूबेदार और जो उस के साथ यीशु का पहरा दे रहे थे भुईडोल और जो कुछ हुआ था देखकर बहुत ही डर गए और कहा सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था। ५५ वहां बहुत सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उस के साथ आई थीं दूर से देख रही थीं। ५६ उन में मरयम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरयम और ज़बदी के पुत्रों की माता थीं॥

५७ जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था आया। ५८ उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। इस

(१) यू० आत्मा।

५९ पर पीलातुस ने देने की आज्ञा दी। यूसुफ ने लोथ को
६० लेकर उसे उजली चादर में लपेटा। और उसे अपनी नई क़बर में रक्खा जो उस ने चटान में खुदवाई थी और क़बर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़का के चला गया।
६१ और मरयम मगदलीनी और दूसरी मरयम वहां क़बर के सामने बैठी थीं॥

६२ दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के पीछे का दिन था महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे
६३ होकर कहा, हे महाराज हमें स्मरण है कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था कि मैं तीन दिन के
६४ पीछे जी उठूंगा। सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक क़बर की रखवाली की जाए न हो कि उस के चेले आकर उसे चुरा ले जाएं और लोगों से कहने लगें कि वह मरे हुओं में से जी उठा। तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा
६५ होगा। पीलातुस ने उन से कहा तुम्हारे पास पहरुए हैं
६६ जाओ अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। सो वे पहरुओं को साथ लेकर गए और पत्थर पर छाप देकर क़बर की रखवाली की॥

२८. विश्राम के दिन के पीछे अठवारे के पहिले दिन पह फटते मरयम मगदलीनी और दूसरी मरयम क़बर को देखने आईं।
२ और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढ़का दिया
३ और उस पर बैठ गया। उस का रूप बिजली सा और
४ उस का वस्त्र पाले की नाईं उजला था। उस के डर के
५ मारे पहरुए कांप उठे और मरे हुए से हो गए। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो।
६ वह यहां नहीं पर अपने कहने के अनुसार जी उठा है आओ यह जगह देखो जहां प्रभु पड़ा था। और
७ शीघ्र जाकर उस के चेलों से कहो कि वह मरे हुओं में से जी उठा है और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है वहां उसे देखोगे देखो मैं ने तुम से कह दिया।
८ और वे भय और बड़े आनन्द के साथ क़बर से शीघ्र चली जाकर उस के चेलों को समाचार देने दौड़ गईं।
९ और देखो यीशु उन्हें मिला और कहा सलाम और उन्हों ने पास आकर और उस के पांव पकड़ कर उसे प्रणाम
१० किया। तब यीशु ने उन से कहा मत डरो मेरे भाइयों से जाकर कहो कि गलील को चले जाएं वहां मुझे देखेंगे॥

११ वे जा रही थीं कि देखो पहरुओं में से कितनों ने नगर में आकर सारा हाल महायाजकों से कह दिया।
१२ तब उन्हों ने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की
१३ और सिपाहियों को बहुत चांदी देकर बोले कि, यह कहना कि रात को जब हम सो रहे थे तो उस के चेले
१४ आकर उसे चुरा ले गए। और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी तो हम उसे समझाएंगे और तुम्हें
१५ खटके से बचा लेंगे। सो उन्हों ने वह चांदी लेकर जैसे सिखाए गए थे वैसा ही किया और यह बात आज तक यहूदियों में फैली हुई है॥

१६ और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए
१७ जो यीशु ने उन्हें बताया था। और उन्हों ने उसे देखकर
१८ प्रणाम किया पर किसी किसी को सन्देह हुआ। यीशु ने उन के पास आकर कहा कि स्वर्ग और पृथिवी का
१९ सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला करो और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में बपतिसमा
२० दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त तक सब दिन तुम्हारे साथ हूं॥

मरकुस रचित सुसमाचार

---

१. परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।
२ जैसे यशायाह नबी की पुस्तक में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरा मार्ग सुधा-
३ रेगा। जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो उस की सड़कें सीधी करो।
४ यूहन्ना आया जो जंगल में बपतिसमा देता और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव के बपतिसमा का प्रचार करता
५ था। और सारे यहूदिया देश के और यरूशलेम के सब रहनेवाले उस के पास निकल आने और अपने अपने

पापों के मान कर यरदन नदी में उस से बपतिसमा लेने
६ लगे । यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने और अपनी
कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था और टिड्डियां
७ और बन मधु खाया करता था । उस ने प्रचार कर कहा
मेरे पीछे वह आता है जो मुझ से शक्तिमान् है मैं इस
८ योग्य नहीं कि झुककर उस के जूतों का बन्ध खोलूं । मैं
ने तो तुम्हें पानी से बपतिसमा दिया पर वह तुम्हें पवित्र
आत्मा से[1] बपतिसमा देगा ॥

९ उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर
१० यरदन में यूहन्ना से बपतिसमा लिया । और तुरन्त पानी
से निकल कर ऊपर आते हुए उस ने आकाश को फटते
और आत्मा को कबूतर की नाईं अपने ऊपर उतरते
११ देखा । और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र
है तुझ से मैं प्रसन्न हूं ॥

१२ तब आत्मा ने तुरन्त उस को जंगल की ओर
१३ भेजा । और जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उस
की परीक्षा की और वह वन पशुओं के साथ रहा और
स्वर्गदूत उस की सेवा करते रहे ॥

१४ यूहन्ना के पकड़वाए जाने के पीछे यीशु ने गलील
में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया ।
१५ और कहा समय पूरा हुआ है और परमेश्वर का राज्य निकट
आया है मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो ॥

१६ गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए उस
ने शमौन और उस के भाई अन्द्रियास को झील में जाल
१७ डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे । और यीशु ने उन से
कहा मेरे पीछे चले आओ मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे
१८ बनाऊंगा । वे तुरन्त जालों को छोड़कर उस के पीछे हो
१९ लिये । और कुछ आगे बढ़कर उस ने ज़बदी के पुत्र
याकूब और उस के भाई यूहन्ना को नाव पर जालों को
२० सुधारते देखा । उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे
अपने पिता ज़बदी को मज़दूरों के साथ नाव पर छोड़कर
उस के पीछे चले गये ॥

२१ और वे कफरनहूम में आए और वह तुरन्त
विश्राम के दिन सभा के घर में जाकर उपदेश करने लगा ।
२२ और लोग उस के उपदेश से चकित हुए क्योंकि वह उन्हें
शास्त्रियों की नाईं नहीं पर अधिकारी की नाईं उपदेश
२३ देता था । उसी समय उन की सभा के घर में एक मनुष्य
२४ था जिस में एक अशुद्ध आत्मा था । उस ने चिल्लाकर
कहा हे यीशु नासरी हमें तुझ से क्या काम । क्या तू हमें
नाश करने आया है । मैं तुझे जानता हूं तू कौन है
२५ परमेश्वर का पवित्र जन । यीशु ने उसे डांटकर कहा
चुप रह और उस में से निकल जा । तब अशुद्ध आत्मा २६
उस को मरोड़कर और बड़े शब्द से चिल्लाकर उस में से
निकल गया । इस पर सब लोग ऐसे अचम्भित हुए कि २७
आपस में पूछ पाछ करके कहने लगे यह क्या बात है ।
यह तो कोई नया उपदेश है वह अधिकार के साथ
अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है और वे उस की
मानते हैं । सो उस का नाम तुरन्त गलील के आस पास २८
के सारे देश में हर जगह फैल गया ॥

सभा के घर से तुरन्त निकलकर वे याकूब और २९
यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर में आए ।
और शमौन की सास तप में पड़ी थी और उन्हों ने ३०
तुरन्त उस के विषय उस से कहा । तब उस ने पास जा ३१
उस का हाथ पकड़ के उसे उठाया और तप उस पर से
उतर गई और वह उन की सेवा करने लगी ॥

सांझ को जब सूरज डूब गया तो लोग सब बीमारों ३२
और उन्हें जिन में दुष्टात्मा थे उस के पास लाए । और ३३
सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ । और उस ने बहुतों ३४
को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे चंगा किया
और बहुत दुष्टात्माओं को निकाला और दुष्टात्माओं को
बोलने न दिया क्योंकि वे उसे पहचानते थे ॥

और भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले वह ३५
उठकर निकला और जंगली जगह में जाकर वहां प्रार्थना
करने लगा । तब शमौन और उस के साथी उस की खोज ३६
में गए । जब वह मिला तो उस से कहा सब लोग तुझे ३७
ढूंढ रहे हैं । उस ने उन से कहा आओ हम और कहीं ३८
आस पास की बस्तियों में जाएं कि मैं वहां भी प्रचार
करूं क्योंकि मैं इसी लिए निकला हूं । सो वह सारे ३९
गलील में उन की सभाओं में जा जाकर प्रचार करता
और दुष्टात्माओं को निकालता रहा ॥

और एक कोढ़ी ने उस के पास आकर उस से ४०
बिनती की और उस के सामने घुटने टेककर उस से कहा
यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है । उस ने उस पर ४१
तरस खाकर हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा मैं चाहता हूं
शुद्ध हो जा । और तुरन्त उस का कोढ़ जाता रहा और वह ४२
शुद्ध हो गया । तब उस ने उसे चिताकर तुरन्त बिदा किया । ४३
और उस से कहा देख किसी से कुछ न कह पर जा ४४
अपने आप को याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के
विषय जो कुछ मूसा ने ठहराया उसे चढ़ा कि उन
पर गवाही हो । पर वह बाहर जाकर इस बात को बहुत ४५
प्रचार करने और यहां तक फैलाने लगा कि यीशु फिर
खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका पर बाहर जंगली जगहों
में रहा और चारों ओर से लोग उस के पास आते रहे ॥

(१) या । में ।

२. कई दिन के पीछे वह फिर कफरनहूम में आया और सुना गया कि वह घर २ में है। फिर इतने लोग इकट्ठे हुए कि द्वार के पास भी ३ जगह न मिली और वह उन्हें वचन सुना रहा था। और कई लोग एक झोले के मारे हुए को चार मनुष्यों से ४ उठवाकर उस के पास ले आए। पर जब वे भीड़ के कारण उस के निकट न पहुंच सके तो उन्हों ने उस छत को जिस के नीचे वह था खोल दिया और जब उसे उधेड़ चुके तो उस खाट को जिस पर झोले का मारा पड़ा था ५ लटका दिया। यीशु ने उन का बिश्वास देखकर उस ६ झोले के मारे से कहा हे पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए। और कई एक शास्त्री जो वहां बैठे थे अपने अपने मन में बिचार ७ करने लगे कि, यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है परमेश्वर को छोड़ और ८ कौन पाप क्षमा कर सकता है। यीशु ने तुरन्त अपने आत्मा में जाना कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं और उन से कहा तुम अपने अपने मन में यह ९ बिचार क्यों कर रहे हो। सहज क्या है क्या झोले के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना कि १० उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर। पर जिस से तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे से कहा)। ११ मैं तुझ से कहता हूं उठ अपनी खाट उठाकर अपने घर १२ चला जा। और वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर और सब के सामने निकलकर चला गया। इस पर सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हम ने ऐसा कभी न देखा॥

१३ वह फिर निकलकर झील के किनारे गया और सारी भीड़ उस के पास आई और वह उन्हें उपदेश देने लगा। १४ जाते हुए उस ने हलफई के पुत्र लेवी को महसूल की चौकी पर बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे हो ले। और वह १५ उठकर उस के पीछे हो लिया। और वह उस के घर में भोजन करने बैठा और बहुत से महसूल लेनेवाले और पापी यीशु और उस के चेलों के साथ भोजन करने बैठे क्योंकि वे बहुत थे और उस के पीछे हो लिये थे। और शास्त्रियों १६ और फरीसियों ने यह देखकर कि वह तो पापियों और महसूल लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है उस के चेलों से कहा, वह तो महसूल लेनेवालों और पापियों के साथ १७ खाता पीता है। यीशु ने यह सुनकर उन से कहा वैद्य भले चंगों को नहीं पर बीमारों को अवश्य है। मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को बुलाने आया हूं॥

१८ यूहन्ना के चेले और फरीसी उपवास करते थे और उन्हों ने आकर उस से यह कहा कि यूहन्ना के और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं पर तेरे चेले उपवास नहीं रखते। यीशु ने उन से कहा जब तक दूल्हा बरातियों के १९ साथ रहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं। सो जब तक दूल्हा उन के साथ है तब तक वे उपवास नहीं कर सकते। पर वे दिन आएंगे कि दूल्हा उन से अलग किया जाएगा २० उस समय वे उपवास करेंगे। कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने २१ पहिरावन पर कोई नहीं लगाता नहीं तो वह पैवन्द उस से कुछ खींच लेगा अर्थात् नया पुराने से और वह और फट जाएगा। और नया दाख रस पुरानी मशकों में कोई २२ नहीं भरता नहीं तो दाख रस मशकों को फाड़ देगा और दाख रस और मशकें दोनों नाश हो जाएंगी पर नया दाख रस नई मशकों में भरते हैं॥

बिश्राम के दिन यीशु खेतों में से जा रहा था और २३ उस के चेले चलते चलते बालें तोड़ने लगे। तब फ़री- २४ सियों ने उस से कहा देख ये बिश्राम के दिन वह काम क्यों करते हैं जो उचित नहीं। उस ने उन से कहा क्या २५ तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद को ज़रूरत थी और वह और उस के साथी भूखे हुए तब उस ने क्या किया था। उस ने क्योंकर अबियातार महायाजक के २६ समय परमेश्वर के घर में जाकर भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं और अपने साथियों को भी दीं। और उस ने उन २७ से कहा बिश्राम का दिन मनुष्य के लिए ठहराया गया है न कि मनुष्य बिश्राम के दिन के लिए। सो मनुष्य २८ का पुत्र बिश्राम के दिन का भी प्रभु है॥

३. और वह फिर सभा के घर में गया और वहां एक मनुष्य था जिस का हाथ सूख गया था। और वे उस पर दोष लगाने के लिए उस २ की ताक में लगे थे कि वह बिश्राम के दिन उसे चंगा करेगा कि नहीं। उस ने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा ३ बीच में खड़ा हो। और उन से कहा क्या बिश्राम के दिन ४ भला करना या बुरा करना जीव को बचाना या मारना उचित है पर वे चुप रहे। और उस ने उन के मन की ५ कठोरता से उदास होकर उन को क्रोध से चारों ओर देखा और उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा, उस ने बढ़ाया और उस का हाथ फिर अच्छा हो गया। तब फ़रीसी बाहर ६ जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उस के बिरोध में सम्मति करने लगे कि उसे क्योंकर नाश करें॥

यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर गया ७ और गलील से बहुत से लोग उस के पीछे हो लिए और

८ यहूदिया और यरूशलेम और इदूमया से और यरदन के पार और सूर और सैदा के आसपास से बहुत से लोग यह सुनकर कि वह कैसे बड़े काम करता है उस के पास आए । ९ और उस ने अपने चेलों से कहा भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार रहे न हो कि वे मुझे दबाएं । १० क्योंकि उस ने बहुतों को अच्छा किया था यहां तक कि जितने रोगी थे उसे छूने को उस पर गिरे पड़ते थे । ११ अशुद्ध आत्मा भी जब उसे देखते थे तो उस के आगे गिरते और चिल्लाकर कहते थे कि तू परमेश्वर का पुत्र है । १२ और उस ने उन्हें बहुत चिताया कि मुझे प्रगट न करना ॥

१३ और वह पहाड़ पर चढ़ गया और जिन्हें चाहा उन्हें अपने पास बुलाया और वे उस के पास चले आए । १४ तब उस ने बारह जनों को ठहराया कि वे उस के साथ साथ रहें, १५ और वह उन्हें भेजे कि प्रचार करें और दुष्टात्माओं के निकालने का अधिकार रक्खें । १६ और वे ये हैं शमौन जिस का नाम उस ने पतरस रक्खा । १७ और ज़बदी का पुत्र याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना जिन का नाम उस ने बूअनरगिस अर्थात् गर्जन के पुत्र रक्खा । १८ और अन्द्रियास और फिलिप्पुस और बरतुलमै और मत्ती और तोमा और हलफ़ई का पुत्र याकूब और तद्दी और १९ शमौन कनानी । और यहूदा इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया ॥

२० और वह घर में आया । २१ और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई कि वे रोटी भी न खा सके । जब उस के कुटुम्बियों ने सुना तो उसे पकड़ने को निकले क्योंकि कहते थे कि उस का चित्त ठिकाने नहीं है । २२ तब शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे यह कहने लगे कि उस में शैतान[1] है और यह भी कि वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है । २३ और वह उन्हें पास बुलाकर उन से दृष्टान्तों में कहने लगा शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता है । २४ और यदि किसी राज्य में फूट पड़े तो वह राज्य रह नहीं सकता । २५ और यदि किसी घर में फूट पड़े तो वह घर रह नहीं सकता । २६ और यदि शैतान अपने ही विरोध में होकर अपने में फूट डाले तो वह बना नहीं रह सकता पर उस का अन्त हो जाता है । २७ और कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उस का माल लूट नहीं सकता जब तक कि वह पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले और तब उस के घर को लूट लेगा । २८ मैं तुम से सच कहता हूं कि मनुष्यों के सन्तान के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं क्षमा की जाएगी । २९ पर जो कोई पवित्रात्मा के विषय निन्दा करे वह कभी क्षमा न किया जाएगा पर अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है । ३० क्योंकि वे यह कहते थे कि उस में अशुद्ध आत्मा है ॥

३१ और उस की माता और उस के भाई आए और बाहर खड़े होकर उसे बुला भेजा । ३२ और भीड़ उस के आस पास बैठी थी और उन्हों ने उस से कहा देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं । ३३ उस ने उन्हें उत्तर दिया कि मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं । ३४ और उन पर जो उस के आस पास बैठे थे दृष्टि करके कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई । ३५ क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है ॥

४. वह फिर झील के किनारे उपदेश करने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उस के पास इकट्ठी हो गई कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठा और सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे रही । २ और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाने लगा ३ और अपने उपदेश में उन से कहा । सुनो देखो एक बोनेवाला बीज बोने निकला । ४ और बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया । ५ और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जहां उस को बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण जल्द उग आया । ६ और जब सूरज निकला तो जल गया और जड़ न पकड़ने से सूख गया । ७ और कुछ झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा लिया और वह फल न लाया । ८ पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और उगा और बढ़कर फला और कोई तीस गुना कोई साठ गुना कोई सौ गुना फल लाया । ९ और उस ने कहा जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले ॥

१० जब वह अकेला रह गया तो उस के साथी उन बारह समेत उस से इन दृष्टान्तों के विषय पूछने लगे । ११ उस ने उन से कहा तुम को परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ[2] दी गई है पर बाहरवालों के लिए सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं । १२ इसलिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते हुए सुनें और न समझें ऐसा न हो कि वे फिरें और क्षमा किए जाएं । १३ फिर उस ने उन से कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते तो सब दृष्टान्तों को क्योंकर समझोगे । १४ बोनेवाला वचन

(१) यू० । बालज़बूल ।

(२) मूल में । का भेद दिया गया ।

१५ बोता है। मार्ग के किनारे के जहां वचन बोया जाता है ये वे हैं कि जब उन्हों ने सुना तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उन में बोया गया था उठा ले १६ जाता है। और वैसे ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं ये वे हैं कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से १७ मान लेते हैं। पर अपने में जड़ न रखने से वे थोड़ी ही देर के हैं इस के पीछे जब वचन के कारण क्लेश या १८ उपद्रव होता है तो तुरन्त ठोकर खाते हैं। और जो १९ झाड़ियों में बोए गए वे हैं जिन्हों ने वचन सुना, और संसार की चिन्ता और धन का धोखा और और वस्तुओं का लोभ उन में समाकर वचन को दबा देता है और २० वह फल नहीं लाता। और जो अच्छी भूमि में बोए गए ये वे हैं जो वचन सुनकर मानते और फल लाते हैं कोई तीस गुना कोई साठ गुना कोई सौ गुना॥

२१ और उस ने उन से कहा क्या दिये को इसलिये लाते हैं कि पैमाने[1] या खाट के नीचे रक्खा जाए क्या २२ इसलिये नहीं कि दीवट पर रक्खा जाए। कुछ छिपा नहीं पर इसलिये कि प्रगट किया जाए और न कुछ गुप्त है २३ पर इसलिये कि प्रगट हो जाए। यदि किसी के सुनने २४ के कान हों तो सुन ले। फिर उस ने उन से कहा चौकस रहो कि क्या सुनते हो जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जाएगा और तुम को और २५ दिया जाएगा। क्योंकि जिस के पास है उस को दिया जाएगा। पर जिस के पास नहीं उस से जो कुछ उस के पास है वह भी ले लिया जाएगा॥

२६ फिर उस ने कहा परमेश्वर का राज्य ऐसा है २७ जैसा कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। और रात दिन सोए और जागे और वह ऐसे उगे और बढ़े कि वह न २८ जाने। क्योंकि पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहिले २९ अंकुर तब बाल और तब बालों में तैयार दाना। पर जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है॥

३० फिर उस ने कहा हम परमेश्वर का राज्य किस की नाईं ठहराएं और किस दृष्टान्त से उस का बखान ३१ करें। वह राई के दाने के समान है कि जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। ३२ पर जब बोया गया तो उग कर सब साग पात से बड़ा हो जाता है और उस की ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाश के पक्षी उस की छाया में बसेरा कर सकते हैं॥

(१) एक बरतन जिस में डेढ़ मन अनाज नापा जाता है।

और वह उन्हें इस प्रकार के बहुत से दृष्टान्त दे ३३ देकर उन की समझ के अनुसार वचन सुनाता था। और ३४ बिना दृष्टान्त उन से कुछ न कहता था पर एकान्त में वह अपने निज चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था॥

उसी दिन जब सांझ हुई तो उस ने उन से कहा ३५ कि आओ हम पार चलें। सो वे भीड़ को छोड़कर जैसा ३६ वह था वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले और और नाव भी साथ थीं। और बड़ी आंधी आई और लहरें नाव ३७ पर यहां तक लगीं कि वह अब भरी जाती थी। और वह ३८ आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था और उन्हों ने उसे जगाकर उस से कहा हे गुरु क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नाश हुए जाते हैं। तब उस ने उठकर आंधी ३९ को डांटा और पानी से कहा चुप रह थम जा और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया। और उन से कहा ४० क्यों डरते हो क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं। और वे ४१ बहुत ही डर गए और आपस में बोले यह कौन है कि आंधी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं॥

५.

और वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे। और उस के नाव २ से उतरते ही एक मनुष्य जिस में अशुद्ध आत्मा था क़बरों से निकल कर उसे मिला। वह क़बरों में रहता था ३ और कोई उसे सांकलों से भी न बान्ध सकता था। क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और सांकलों से बान्धा ४ गया था पर उस ने सांकलों को तोड़ दिया और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिये थे और कोई उसे वश में न कर सकता था। वह लगातार रात दिन क़बरों और पहाड़ों ५ में चिल्लाता और अपने को पत्थरों से काटता था। वह ६ यीशु को दूर से देखकर दौड़ा और उसे प्रणाम किया। और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हे यीशु परम-प्रधान ७ परमेश्वर के पुत्र मुझे तुझ से क्या काम। मैं तुझे परमेश्वर की किरिया देता हूं कि मुझे पीड़ा न दे। क्योंकि ८ उस ने उस से कहा, हे अशुद्ध आत्मा इस मनुष्य से निकल आ। उस ने उस से पूछा तेरा क्या नाम है उस ने उस ९ से कहा मेरा नाम सेना[2] है क्योंकि हम बहुत हैं। और १० उस से बहुत बिनती की कि हमें इस देश से बाहर न भेज। वहां पहाड़ पर सूअरों का बड़ा झुण्ड चर रहा ११ था। सो उन्हों ने उस से बिनती कर कहा कि हमें उन १२ सूअरों में भेज दे कि हम उन में पैठें। सो उस ने उन्हें १३ जाने दिया और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों में पैठे और झुण्ड जो कोई दो हजार का था कड़ाड़े पर से

(२) यू॰। लिगियोन अर्थात् ६००० सिपाहियों की सेना।

१४ झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा । और उन के चरवाहों ने भागकर नगर और गांवों में जा सुनाया
१५ और जो हुआ था लोग देखने आए । और यीशु के पास आकर वे उस को जिस में दुष्टात्मा थे अर्थात् जिस में सेना समाई थी कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर
१६ डर गए । और देखनेवालों ने उस का जिस में दुष्टात्मा थे और सुअरों का सारा हाल उन को कह सुनाया ।
१७ और वे उस से बिनती करने लगे कि हमारे सिवानों
१८ से चला जा । जब वह नाव पर चढ़ने लगा तो वह जिस में पहले दुष्टात्मा थे उस से बिनती करने लगा कि मुझे
१९ अपने साथ रहने दे । पर उस ने नकारा और उस से कहा अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया
२० करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किये हैं । वह जाकर दिकपुलिस में प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिए कैसे बड़े काम किए और सब अचम्भा करते थे ॥

२१ जब यीशु फिर नाव से पार गया तो एक बड़ी भीड़ उस के पास इकट्ठी हो गई और वह झील के किनारे
२२ था । और याईर नाम सभा के सरदारों में से एक आया
२३ और उसे देखकर उस के पांवों पर गिरा । और उस ने यह कहकर बहुत बिनती की कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है । आकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी होकर
२४ जीती रहे । तब वह उस के साथ चला और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली और लोग उस पर गिरे पड़ते थे ॥

२५ और एक स्त्री जिस को बारह बरस से लोहू बहने
२६ का रोग था, और जिस ने बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया और अपना सब माल खर्च करने पर भी कुछ लाभ न देखा
२७ था पर और भी रोगी हो गई थी, यीशु की चर्चा सुनकर भीड़ में उस के पीछे से आई और उस के वस्त्र को छुआ ।
२८ क्योंकि वह कहती थी यदि मैं उस के वस्त्र ही को छू लूंगी
२९ तो चंगी हो जाऊंगी । और तुरन्त उस का लोहू बहना बन्द हो गया और उस ने अपनी देह में जान लिया कि मैं
३० उस पीड़ा से अच्छी हो गई । यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझ में से सामर्थ निकली और भीड़ में
३१ पीछे फिर कर पूछा कि मेरा वस्त्र किस ने छूआ । उस के चेलों ने उस से कहा तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है और तू कहता है कि किस ने मुझे छूआ ।
३२ तब उस ने उसे देखने के लिए जिस ने यह काम किया
३३ था चारों ओर दृष्टि की । तब वह स्त्री यह जान कर कि मेरी कैसी भलाई हुई है डरती और कांपती आई और उस के पांवों पर गिरकर उस से सारा हाल सच सच कह दिया ।
३४ उस ने उस से कहा बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा और अपनी पीड़ा से बची रह ॥

३५ वह यह कह ही रहा था कि सभा के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा तेरी बेटी तो मर गई अब गुरु को
३६ क्यों दुख देता है । जो बात वे कह रहे थे उस को यीशु ने अनसुनी करके सभा के सरदार से कहा मत डर केवल
३७ विश्वास रख । और उस ने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़ और किसी को अपने साथ आने
३८ न दिया । सभा के सरदार के घर पहुंचकर उस ने लोगों
३९ को बहुत रोते और चिल्लाते देखा । उस ने भीतर जाकर उन से कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो लड़की मरी
४० नहीं पर सोती है । वे उस की हंसी करने लगे पर वह सब को निकालकर लड़की के माता पिता और अपने साथियों
४१ को लेकर भीतर जहां लड़की पड़ी थी गया । और लड़की का हाथ पकड़ कर उस से कहा तलीता कूमी जिस का
४२ अर्थ यह है कि हे लड़की मैं तुझ से कहता हूं उठ । और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी क्योंकि वह बारह
४३ बरस की थी । और वे बहुत चकित हो गए । फिर उस ने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा कि उसे कुछ खाने को दिया जाए ॥

६. वहां से निकल कर वह अपने देश में आया और उस के चेले उस के पीछे
२ हो लिए । बिश्राम के दिन वह सभा में उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनकर चकित हुए और कहने लगे इस को ये बातें कहां से आ गईं और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है और कैसे सामर्थ के काम इस
३ के हाथों से होते हैं । यह क्या वही बढ़ई नहीं जो मरयम का पुत्र और याकूब और योसेस और यहूदा और शमौन का भाई है और क्या उस की बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं रहतीं । सो उन्हों ने उस के विषय ठोकर खाई ।
४ यीशु ने उन से कहा नबी अपने देश और अपने कुटुंब और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता ।
५ और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया ॥
६ और उस ने उन के अविश्वास से अचम्भा किया और चारों ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा ॥
७ और वह बारहों को अपने पास बुलाकर उन्हें दो दो करके भेजने लगा और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर
८ अधिकार दिया । और उस ने उन्हें आज्ञा दी कि मार्ग के लिए लाठी छोड़ और कुछ न लो न रोटी न झोली न
९ पटुके में पैसे । पर जूतियां पहिनो और दो दो कुरते न
१० पहिनो । और उस ने उन से कहा जहां कहीं तुम किसी घर में उतरो जब तक वहां से बिदा न हो तब तक उसी

११ में ठहरे रहो। जिस जगह के लोग तुम्हें ग्रहण न करें और तुम्हारी न सुनें वहां से चलते ही अपने तलवों
१२ की धूल झाड़ डालो कि उन पर गवाही हो। सो उन्हों
१३ ने जाकर प्रचार किया कि मन फिराओ। और बहुतेरे दुष्टात्माओं को निकाला और बहुत बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया॥

१४ और हेरोदेस राजा ने उस की चर्चा सुनी क्योंकि उस का नाम फैल गया था और कहा यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है इसी लिये उस से
१५ ये सामर्थ के काम प्रगट होते हैं। और औरों ने कहा यह एलिय्याह है पर औरों ने कहा नबी या नबियों में से किसी
१६ एक के समान है। हेरोदेस ने यह सुन कर कहा जिस यूहन्ना
१७ का मैं ने सिर कटवाया था वही जी उठा है। क्योंकि हेरोदेस ने आप अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण जिस से उस ने ब्याह किया था लोगों को भेजकर
१८ यूहन्ना को पकड़वाकर जेलखाने में डाल दिया था। इसलिये कि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था कि अपने भाई की
१९ पत्नी को रखना तुझे उचित नहीं। सो हेरोदियास उस से बैर रखती और यह चाहती थी कि उसे मरवा डाले पर
२० बन न पड़ा। क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्म्मी और पवित्र पुरुष जानकर उस से डरता और उसे बचाए रखता था और उस की सुनकर बहुत घबराता था पर सुनता खुशी
२१ से था। और ठीक अवसर उस दिन मिला जब हेरोदेस ने अपने जन्म दिन में अपने प्रधानों और सेनापतियों और
२२ गलील के बड़े लोगों के लिए जेवनार की। और उसी हेरोदियास की बेटी भीतर आई और नाचकर हेरोदेस को और उस के साथ बैठनेवालों को खुश किया तब राजा ने
२३ लड़की से कहा जो चाहे मुझ से मांग मैं तुझे दूंगा। और उस से किरिया खाई कि मेरे आधे राज्य तक जो कुछ तू
२४ मुझ से मांगेगी मैं तुझे दूंगा। उस ने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा मैं क्या मांगूं। वह बोली यूहन्ना बपतिसमा
२५ देनेवाले का सिर। वह तुरन्त जल्दी से राजा के पास भीतर आई और उस से बिनती की मैं चाहती हूं कि तू अभी यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले का सिर एक थाल में मुझे मंगवा
२६ दे। तब राजा बहुत उदास हुआ पर अपनी किरियाओं और साथ बैठनेवालों के कारण उसे टालना न चाहा।
२७ और राजा ने तुरन्त एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा
२८ कि उस का सिर काट लाए। सो उस ने जेलखाने में जाकर उस का सिर काटा और एक थाल में रखकर लाया और लड़की को दिया और लड़की ने अपनी मां
२९ को दिया। यह सुनकर उस के चेले आए और उस की लोथ को उठाकर क़बर में रक्खा॥

३० प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर जो कुछ उन्हों
३१ ने किया और सिखाया था सब उस को बता दिया। उस ने उन से कहा तुम आप अलग किसी जंगली जगह में आकर थोड़ा विश्राम करो क्योंकि बहुत लोग आते जाते
३२ थे और उन्हें खाने का अवसर भी न मिलता था। सो वे
३३ नाव पर चढ़कर सुनसान जगह में अलग चले गए। और बहुतों ने उन्हें जाते देखकर पहचान लिया और सब नगरों से इकट्ठे होकर वहां पैदल दौड़े और उन से पहिले जा
३४ पहुंचे। उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे जिन का रखवाला नहीं और वह उन्हें बहुत बातें सिखाने लगा।
३५ जब दिन बहुत ढल गया तो उस के चेले उस के पास आकर कहने लगे यह सुनसान जगह है और दिन बहुत
३६ ढल गया है। उन्हें बिदा कर कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर अपने लिए कुछ खाने को मोल लें।
३७ उस ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम ही उन्हें खाने को दो। उन्हों ने उस से कहा क्या हम जाकर दो सौ दीनार[१] की
३८ रोटियां लें और उन्हें खिलाएं। उस ने उन से कहा जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं। उन्हों ने मालूम
३९ करके कहा पांच और दो मछली भी। तब उस ने उन्हें आज्ञा दी कि सब को हरी घास पर पांति पांति बैठा दो।
४० वे सौ सौ और पचास पचास करके पांति पांति बैठ गए।
४१ और उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को देता गया कि वे लोगों को परोसें
४२ और वे दो मछलियां भी उन सब में बांट दीं। सो सब
४३ खाकर तृप्त हुए। और उन्हों ने टुकड़ों से बारह टोकरी
४४ भर कर उठाईं और कुछ मछलियों से भी। जिन्हों ने रोटी खाई वे पांच हज़ार पुरुष थे॥

४५ तब उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया कि वे उस से पहिले उस पार बैतसैदा चले जाएं
४६ जब तक कि वह लोगों को बिदा करे। और उन्हें बिदा
४७ करके पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया। और जब सांझ हुई तो नाव झील के बीच में थी और वह अकेला भूमि पर
४८ था। और जब उस ने देखा कि वे खेते खेते घबरा गए हैं क्योंकि हवा उन के सामने थी तो रात के चौथे पहर के निकट वह झील पर चलते हुए उन के पास आया और
४९ उन से आगे निकल जाना चाहता था। पर उन्हों ने उसे झील पर चलते देखकर समझा कि भूत है और चिल्ला
५० उठे, क्योंकि सब उसे देखकर घबरा गये थे पर उस ने

(१) या। दीनार आठ आने के लगभग।

तुरन्त उन से बातें कीं और कहा, ढाढ़स बान्धो मैं हूं डरो
५१ मत। तब वह उन के पास नाव पर चढ़ा और हवा थम
५२ गई और वे बहुत ही चकित हुए। क्योंकि वे उन रोटियों के विषय न समझे पर उन के मन कठोर हो गए थे॥

५३ और वे पार उतर कर गन्नेसरत में पहुंचे और
५४ लगान किया। जब वे नाव पर से उतरे तो लोग तुरन्त
५५ उस को पहचान कर, आस पास के सारे देश में दौड़े और बीमारों को खाटों पर डालकर जहां जहां उस के
५६ होने का समाचार पाया वहां ले जाने लगे। और जहां कहीं वह गांवों नगरों या खेड़ों में जाता था तो लोग बीमारों को बाज़ारों में रखकर उस से बिनती करते थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे और जितने उसे छूते थे सब चंगे हो जाते थे॥

७. तब फ़रीसी और कई एक शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे उस के पास
२ इकट्ठे हुए। और उन्हों ने उस के कई एक चेलों को
३ अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा। क्योंकि फ़रीसी और सब यहूदी पुरनियों की रीति पर चलते हैं और जब तक भली भांति हाथ नहीं धो लेते तब
४ तक नहीं खाते। और बाज़ार से आकर जब तक स्नान न कर[१] लेते तब तक नहीं खाते और बहुत सी और बातें हैं जो उन के पास मानने के लिये पहुंचाई गई हैं जैसे कटोरों और लोटों और तांबे के बरतनों को धोना।
५ सो उन फ़रीसियों और शास्त्रियों ने उस से पूछा कि तेरे चेले क्यों पुरनियों की रीतों पर नहीं चलते पर बिना
६ हाथ धोए रोटी खाते हैं। उस ने उन से कहा कि यशायाह ने तुम कपटियों के विषय ठीक नबूवत की जैसा लिखा है कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं
७ पर उन का मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की विधियों को
८ धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतों को मानते हो।
९ और उस ने उन से कहा तुम अपनी रीतों को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते
१० हो। क्योंकि मूसा ने कहा अपने पिता और अपनी माता का आदर कर और जो कोई पिता या माता को
११ बुरा कहे वह मार डाला जाए। पर तुम कहते हो यदि कोई अपने पिता या माता से कहे कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था वह कुरबान अर्थात्
१२ संकल्प हो चुका, तो तुम उस को उस के पिता या उस

(१) इ०। अपने ऊपर पानी न छिड़क लेते।

की माता के लिये और कुछ करने नहीं देते। सो तुम १३
अपनी रीतों से जिन्हें तुम ने ठहराया है परमेश्वर का वचन टाल देते हो और ऐसे ऐसे बहुतेरे काम करते
हो। और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से १४
कहा तुम सब मेरी सुनो और समझो। ऐसी तो कोई १५
वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर अशुद्ध करे पर जो वस्तुएं मनुष्य के भीतर से निकलती हैं वे ही उसे
अशुद्ध करती हैं। जब वह भीड़ के पास से घर में गया १७
तो उस के चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय उस से
पूछा। उस ने उन से कहा क्या तुम भी ऐसे ना समझ १८
हो क्या तुम नहीं समझते कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य
में समाती है वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती। क्योंकि १९
वह उस के मन में नहीं पर पेट में जाती है और संडास में निकल जाती है। यह कहकर उस ने सब भोजन
वस्तुओं को शुद्ध ठहराया। फिर उस ने कहा जो मनुष्य २०
में से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।
क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से बुरी बुरी २१
चिन्ता व्यभिचार चोरी खून परस्त्रीगमन लोभ दुष्टता २२
छल लुचपन कुदृष्टि निन्दा अभिमान और मूर्खता
निकलती हैं। ये सब बुरी बातें भीतर से निकलती और २३
मनुष्य को अशुद्ध करती हैं॥

फिर वह वहां से उठकर सूर और सैदा के देशों में २४
गया और किसी घर में गया और चाहता था कि कोई न
जाने पर वह छिप न सका। पर तुरन्त एक स्त्री जिस २५
की छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा था उस की चर्चा सुन
कर आई और उस के पांवों पर गिरी। यह यूनानी और २६
सूरूफिनीकी जाति की थी और उस ने उस से बिनती की
कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे। उस ने उस से २७
कहा पहिले लड़कों को तृप्त होने दे क्योंकि लड़कों की
रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं है। उस २८
ने उस को उत्तर दिया कि सच है प्रभु तौभी कुत्ते भी मेज़ के नीचे बालकों की रोटी का चूर चार खा लेते हैं।
उस ने उस से कहा इस बात के कारण चली जा २९
दुष्टात्मा तेरी बेटी से निकल गया है। सो उस ने अपने ३०
घर आकर देखा कि लड़की खाट पर पड़ी है और दुष्टात्मा निकल गया है॥

फिर वह सूर और सैदा के देशों से निकलकर ३१
दिकपुलिस देश से होता हुआ गलील की झील पर
पहुंचा। और लोगों ने एक बहिरे को जो हकला भी था ३२
उस के पास लाकर उस से बिनती की कि अपना हाथ
इस पर रख। तब वह उस को भीड़ से अलग ले गया ३३
और अपनी उंगलियां उस के कानों में डालीं और थूक

३४ कर उस की जीभ छुई। और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी और उस से कहा इप्फत्तह अर्थात् खुल जा। ३५ और उस के कान खुल गए और उस की जीभ की गांठ ३६ भी खुल गई और वह साफ़ साफ़ बोलने लगा। तब उस ने उन्हें चिताया कि किसी से न कहना पर जितना उस ने उन्हें चिताया उतना ही और प्रचार करने लगे। ३७ और वे बहुत ही चकित होकर कहने लगे उस ने सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरों को सुनने और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है॥

८. उन दिनों में जब फिर बड़ी भीड़ हुई और उन के पास कुछ खाने को न था तो उस ने अपने चेलों को बुला कर उन से कहा। २ मुझे इस भीड़ पर तरस आता है क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं और उन के पास कुछ खाने को ३ नहीं। यदि मैं उन्हें भूखे घर भेज दूं तो मार्ग में थक कर रह जाएंगे क्योंकि इन में से कोई कोई दूर से आए ४ हैं। उस के चेलों ने उस को उत्तर दिया कि यहां जंगल ५ में इतनी रोटी कोई कहां से लाये कि ये तृप्त हों। उस ने उन से पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं उन्हों ने ६ कहा सात। तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी और वे सात रोटियां लीं और धन्यवाद करके तोड़ीं और अपने चेलों को देता गया कि उन के आगे रक्खें ७ और उन्हों ने लोगों के आगे रख दीं। उन के पास थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं और उस ने धन्यवाद करके ८ उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा की। सो वे खाकर तृप्त हुए और बचे हुए टुकड़ों के सात टोकरे ९ भरकर उठाए। और लोग चार हज़ार के लगभग थे और १० उस ने उन को बिदा किया। और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़ कर दलमनूता देश में गया॥

११ और फ़रीसी निकल कर उस से पूछ पाछ करने लगे और उस के परखने के लिए उस से कोई आकाश १२ का चिन्ह मांगा। उस ने अपने आत्मा में आह मार कर कहा इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं मैं तुम से सच कहता हूं कि इस समय के लोगों[१] को कोई चिन्ह १३ न दिया जाएगा। और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ा और पार चला गया॥

१४ और वे रोटी लेना भूल गए थे और नाव में उन १५ के पास एक ही रोटी थी। और उस ने उन्हें चिताया कि देखो फ़रीसियों के ख़मीर और हेरोदेस के ख़मीर से चौकस रहो। १६ वे आपस में विचार करने और कहने लगे कि हमारे पास रोटी नहीं। १७ यह जानकर यीशु ने उन से कहा तुम क्यों आपस में विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया। १८ क्या आंखें रखते नहीं देखते और कान रखते नहीं सुनते और तुम्हें स्मरण नहीं कि, १९ जब मैं ने पांच हज़ार के लिए पांच रोटी तोड़ीं तो तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरी भरकर उठाईं उन्हों ने उस से कहा बारह। २० और जब चार हज़ार के लिए सात रोटी तो तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर उठाए थे। उन्हों ने उस से कहा सात। २१ उस ने उन से कहा क्या तुम अब तक नहीं समझते॥

२२ और वे बैतसैदा में आए और लोग एक अन्धे को उस के पास लाए और उस से बिनती की कि उस को २३ छुए। वह उस अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव के बाहर ले गया और उस की आंखों पर थूक कर उस पर हाथ २४ रक्खे और उस से पूछा क्या तू कुछ देखता है। उस ने आंखें उठा कर कहा मैं मनुष्यों को देखता हूं क्योंकि वे २५ मुझे चलते हुए दिखाई देते हैं जैसे पेड़। तब उस ने फिर उस की आंखों पर हाथ रक्खे और उस ने ध्यान से देखा और अच्छा हो गया और सब कुछ साफ़ साफ़ २६ देखने लगा। और उस ने उस से यह कह कर घर भेजा कि इस गांव के भीतर पांव न रखना॥

२७ यीशु और उस के चेले कैसरिया फिलिप्पी के गांवों में चले गए तो मार्ग में उस ने अपने चेलों से पूछा कि २८ लोग मुझे क्या कहते हैं। उन्हों ने उत्तर दिया कि यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला पर कोई कोई एलिय्याह और कोई २९ कोई नबियों में से एक भी कहते हैं। उस ने उन से पूछा फिर तुम मुझे क्या कहते हो। पतरस ने उस को उत्तर ३० दिया तू मसीह है। तब उस ने उन्हें चिताकर कहा कि ३१ मेरे विषय यह किसी से न कहना। और वह उन्हें सिखाने लगा कि मनुष्य के पुत्र के लिए अवश्य है कि वह बहुत दुख उठाए और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के पीछे जी उठे। उस ने यह बात साफ़ साफ़ कही। ३२ इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर उस को झिड़कने ३३ लगा। उस ने फिर कर और अपने चेलों की ओर देखकर पतरस को झिड़क कर कहा कि हे शैतान मेरे सामने से दूर हो क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं पर मनुष्यों ३४ की बातों पर मन लगाता है। उस ने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उन से कहा जो कोई मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपे को नकारे और अपना क्रूस

(१) यू०। पंढ़ी।

३५ उठाकर मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएगा वह उसे बचाएगा।
३६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की
३७ हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा। या मनुष्य अपने
३८ प्राण के बदले क्या देगा। जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति[1] के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा तब उस से भी

९. लजाएगा। और उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे॥

२ छः दिन के पीछे यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया और एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया और उन के सामने उस का रूप बदल गया।
३ और उस का वस्त्र चमकने लगा और यहां तक बहुत उजला हुआ कि पृथिवी पर कोई धोबी उजला नहीं कर
४ सकता। और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई
५ दिया और वे यीशु के साथ बातें करते थे। इस पर पतरस ने यीशु से कहा हे रब्बी हमारा यहां रहना अच्छा है सो हम तीन मण्डप बनाएं एक तेरे लिए एक मूसा के
६ लिए और एक एलिय्याह के लिए। वह न जानता था
७ कि क्या कहूं क्योंकि वे बहुत डर गए थे। तब एक बादल ने उन्हें छा लिया और उस बादल में से यह शब्द
८ निकला कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो। तब उन्हों ने एकाएक चारों ओर दृष्टि की और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा॥

९ पहाड़ से उतरते हुए उस ने उन्हें आज्ञा दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे तब
१० तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना। वे यह बात अपने जी में रखकर आपस में पूछ पाछ करने
११ लगे कि मरे हुओं में से जी उठना क्या है। और उन्हों ने उस से पूछा शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का
१२ पहिले आना अवश्य है। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि एलिय्याह सचमुच पहिले आकर सब कुछ सुधारेगा। फिर मनुष्य के पुत्र के विषय यह क्यों लिखा है कि वह
१३ बहुत दुख उठाएगा और तुच्छ गिना जाएगा। पर मैं तुम से कहता हूं कि एलिय्याह तो आ चुका और जैसा उस के विषय लिखा है उन्हों ने जो कुछ चाहा उस के साथ किया॥

१४ और जब वह चेलों के पास आया तो देखा कि उन के चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उन के
१५ साथ विवाद कर रहे हैं। और उसे देखते ही सब चकित हो गए और उस की ओर दौड़कर उसे नमस्कार करने
१६ लगे। उस ने उन से पूछा तुम इन से क्या पूछ पाछ कर
१७ रहे हो। भीड़ में से एक ने उत्तर दिया कि हे गुरु मैं अपने पुत्र को जिस में गूंगा आत्मा समाया है तेरे पास
१८ लाया था। जहां कहीं वह उसे पकड़ता वहीं पटक देता है और वह मुंह में फेन भर लाता और दांत पीसता और सूखा जाता है और मैं ने तेरे चेलों से कहा था कि वे उसे
१९ निकाल दें परन्तु उन से न हो सका। यह सुन उस ने उन से उत्तर देके कहा कि हे अविश्वासी लोगो[2] मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा और कब तक तुम्हारी सहूंगा।
२० उसे मेरे पास लाओ। तब वे उसे उस के पास ले आए और जब उस ने उसे देखा तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा और वह भूमि पर गिरा और मुंह से फेन बहाते हुए
२१ लोटने लगा। उस ने उस के पिता से पूछा इस का यह
२२ हाल कब से है। उस ने कहा बचपन से। उस ने इसे नाश करने के लिए कभी आग और कभी पानी में गिराया पर यदि तू कुछ कर सके तो हम पर तरस खाकर
२३ हमारा उपकार कर। यीशु ने उस से कहा यदि तू कर
२४ सकता है यह क्या बात है। विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है। बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा हे प्रभु मैं विश्वास करता हूं मेरे अविश्वास
२५ का उपाय कर। जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं तो उस ने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा कि हे गूंगे और बहिरे आत्मा मैं तुझे आज्ञा देता हूं
२६ उस में से निकल आ और उस में फिर कभी न पैठ। तब वह चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़कर निकल आया और बालक मरा हुआ सा हो गया यहां तक कि बहुत लोग कहने
२७ लगे वह मर गया। पर यीशु ने उस का हाथ पकड़ के
२८ उसे उठाया और वह खड़ा हो गया। जब वह घर में आया तो उस के चेलों ने एकान्त में उस से पूछा हम उसे
२९ क्यों न निकाल सके। उस ने उन से कहा कि यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती॥

३० फिर वे वहां से चल निकले और गलील होकर जा
३१ रहे थे और वह न चाहता था कि कोई जाने। क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उन से कहता था कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा

(१) यू०। पीढ़ी।

(२) यू०। पीढ़ी।

और वे उसे मार डालेंगे और वह मरने के तीन दिन
३२ पीछे जी उठेगा । पर यह बात उन की समझ में न आई
और वे उस से पूछने से डरते थे ॥

३३ फिर वे कफरनहूम में आए और घर में आकर उस ने उन से पूछा रास्ते में तुम किस बात का विवाद करते
३४ थे । वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में उन्हों ने आपस में यह
३५ वाद विवाद किया था कि हम में से बड़ा कौन है । तब उस ने बैठकर बारहों को बुलाया और उन से कहा यदि कोई बड़ा होना चाहे तो सब से छोटा और सब का सेवक
३६ बने । और उस ने एक बालक को लेकर उन के बीच में
३७ खड़ा किया और उसे गोद में ले उन से कहा । जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से एक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करता वह मुझे नहीं बरन मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है ॥

३८ तब यूहन्ना ने उस से कहा हे गुरु हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे क्योंकि वह हमारे पीछे
३९ नहीं हो लेता था । यीशु ने कहा उस को मत मना करो क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ का काम
४० करे और जल्दी से मुझे बुरा कह सके । इस लिये कि जो
४१ हमारे विरोध में नहीं वह हमारी ओर है । जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिये[१] पिलाए कि तुम मसीह के हो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपना प्रतिफल किसी
४२ रीति से न खोएगा । पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं किसी को ठोकर खिलाए उस के लिए भला होता कि एक बड़ी चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए ।
४३ यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो हाथ रहते नरक के बीच उस आग में डाला
४५ जाए जो कभी बुझने की नहीं । और यदि तेरा पांव तुझे
४६ ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल । लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो पांव रहते
४७ नरक में डाला जाए । और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल । काना होकर परमेश्वर के राज में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो आंख
४८ रहते नरक में डाला जाए । जहां उन का कीड़ा नहीं मरता
४९ और आग नहीं बुझती । क्योंकि हर एक जन आग से
५० नमकीन किया जायगा । नमक अच्छा है पर यदि नमक की नमकीनी जाती रहे तो उसे किस से स्वादिष्ट करोगे । अपने में नमक रक्खो और आपस में मेल मिलाप से रहो ॥

---

(१) यू० । इस नाम से ।

१०.

फिर वह वहां से उठ कर यहूदिया के सिवानों में और यरदन के पार आया और भीड़ उस के पास फिर इकट्ठी हो गई और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा ।
२ तब फ़रीसियों ने उस के पास आकर उस की परीक्षा करने को उस से पूछा क्या यह उचित है कि पुरुष अपनी पत्नी
३ को त्यागे । उस ने उन को उत्तर दिया कि मूसा ने तुम्हें
४ क्या आज्ञा दी है । उन्हों ने कहा मूसा ने त्यागपत्र लिखने
५ और त्यागने दिया । यीशु ने उन से कहा कि तुम्हारे मन
६ की कठोरता के कारण उस ने तुम्हारे लिए यह आज्ञा लिखी । पर सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी
७ करके उन को बनाया । इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे
८ दोनों एक तन होंगे । सो वे अब दो नहीं पर एक तन हैं ।
९ इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग
१० न करे । और घर में चेलों ने इस के विषय उस से फिर
११ पूछा । उस ने उन से कहा जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करे वह उस पहिली के विरोध में
१२ व्यभिचार करता है । और यदि स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे से ब्याह करे तो वह व्यभिचार करती है ॥

१३ फिर लोग बालकों को उस के पास लाने लगे कि वह
१४ उन पर हाथ रक्खे पर चेलों ने उन को डांटा । यीशु ने यह देख रिसियाकर उन से कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य
१५ ऐसों ही का है । मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह
१६ उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा । और उस ने उन्हें गोद में लिया और उन पर हाथ रख कर उन्हें आशिष दी ॥

१७ और जब वह निकल कर मार्ग में जाता था तो एक मनुष्य उस के पास दौड़ता हुआ आया और उस के आगे घुटने टेककर उस से पूछा, हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं ।
१८ यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है
१९ कोई उत्तम नहीं केवल एक अर्थात् परमेश्वर । तू आज्ञाओं को तो जानता है खून न करना व्यभिचार न करना चोरी न करना झूठी गवाही न देना ठगाई न करना अपने पिता और अपनी माता का आदर करना ।
२० उस ने उस से कहा हे गुरु इन सब को मैं लड़कपन से

२१ मानता आया हूं। यीशु ने उस पर दृष्टि कर उस से प्रेम किया और उस से कहा तुझ में एक बात की घटी है। जा जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे और तुझे
२२ स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले। इस बात से उस के चिहरे पर उदासी छा गई और वह शोक करता हुआ चला गया क्योंकि वह बहुत धनी था॥

२३ यीशु ने चारों ओर देख कर अपने चेलों से कहा धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा
२४ कठिन है। चेले उस की बातों से अचम्भित हुए इस पर यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया हे बालको जो धन पर भरोसा रखते हैं उन के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश
२५ करना कैसा कठिन है। परमेश्वर के राज्य में धनवान् के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल
२६ जाना सहज है। वे बहुत ही चकित होकर आपस में
२७ कहने लगे तो किस का उद्धार हो सकता है। यीशु ने उन की ओर देखकर कहा मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता परन्तु परमेश्वर से हो सकता है क्योंकि परमेश्वर से
२८ सब कुछ हो सकता है। पतरस उस से कहने लगा कि देख हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं।
२९ यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि ऐसा कोई नहीं जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या लड़के बालों या खेतों को
३० छोड़ दिया हो और अब इस समय सौ गुना न पाए घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़के बालों और खेतों को पर उपद्रव के साथ और परलोक में अनन्त
३१ जीवन। पर बहुतेरे जो पहिले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं पहिले होंगे॥

३२ और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे और यीशु उन के आगे आगे चल रहा था और वे अचम्भित हुए और उस पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारहों को लेकर उन से वे बातें कहने लगा जो उस पर आने-
३३ वाली थीं। कि देखो हम यरूशलेम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़-वाया जाएगा और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे
३४ और अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे। और वे उस को ठट्ठों में उड़ाएंगे और उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे और तीन दिन के पीछे वह जी उठेगा॥

३५ तब ज़बदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उस के पास आकर कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ
३६ से मांगें वही तू हमारे लिए करे। उस ने उन से कहा
३७ तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूं। उन्हों ने उस से कहा कि हमें यह दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दहिने और दूसरा तेरे बाएं बैठे। यीशु ने उन
३८ से कहा तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो। जो कटोरा मैं पीने पर हूं क्या पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं
३९ लेने पर हूं क्या ले सकते हो। उन्हों ने उस से कहा हम से हो सकता है, यीशु ने उन से कहा जो कटोरा मैं पीने पर हूं तुम पिओगे और जो बपतिसमा मैं लेने पर हूं
४० उसे लोगे। पर जिन के लिए तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपने दहिने और अपने बाएं बिठाना मेरा काम नहीं[१]। यह सुन कर दसों याकूब और यूहन्ना
४१ पर रिसियाने लगे। और यीशु ने उन को पास बुला कर
४२ उन से कहा तुम जानते हो कि जो अन्यजातियों के हाकिम समझे जाते हैं वे उन पर प्रभुता करते हैं और
४३ उन में जो बड़े हैं उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है पर जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह
४४ तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में प्रधान होना
४५ चाहे वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इस-लिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाय पर इस-लिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे॥

४६ और वे यरीहो में आए और जब वह और उस के चेले और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के
४७ किनारे बैठा था। वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है पुकार पुकार कर कहने लगा कि हे दाऊद के सन्तान
४८ यीशु मुझ पर दया कर। बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे पर वह और भी पुकारने लगा हे दाऊद के सन्तान मुझ
४९ पर दया कर। तब यीशु ने ठहरकर कहा उसे बुलाओ और लोगों ने उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा ढाढ़स
५० बान्ध उठ वह तुझे बुलाता है। वह अपना कपड़ा फेंक-
५१ कर शीघ्र उठा और यीशु के पास आया। इस पर यीशु ने उस से कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूं
५२ अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी मैं देखने लगूं। यीशु ने उस से कहा चला जा तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है। और वह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में उस के पीछे हो लिया॥

११.

जब वे यरूशलेम के निकट जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास आए तो उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा
२ कि, अपने सामने के गांव में जाओ और उस में पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा

(१) या। पर अपने दहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं पर जिन के लिए तैयार किया गया है उन्हीं के लिए है।

३ बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा उसे खोल लाओ। यदि तुम से कोई पूछे यह क्यों करते हो तो कहना कि प्रभु को इस ४ का प्रयोजन है और वह शीघ्र उसे लौटा देगा। उन्हों ने जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के पास चौक में बन्धा ५ हुआ पाया और खोलने लगे। और उन में से जो वहां खड़े थे कोई कोई कहने लगे कि बच्चे को क्यों खोलते ६ हो। उन्हों ने जैसा यीशु ने कहा था वैसा ही उन से कह ७ दिया तब उन्हों ने उन्हें जाने दिया। और उन्हों ने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और ८ वह उस पर बैठ गया। और बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और औरों ने खेतों में से डालियां काट काटकर ९ फैला दीं। और जो उस के आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे पुकार पुकार कर कहते जाते थे, होशाना, धन्य १० है वह जो प्रभु के नाम से आता है। हमारे पिता दाऊद का आनेवाला राज्य धन्य है आकाश[१] में होशाना॥

११ और वह यरूशलेम पहुंचकर मन्दिर में आया और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बारहों के साथ बैत-निय्याह गया क्योंकि सांझ हो गई थी॥

१२ दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकलते थे तो १३ उस को भूख लगी। और वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया कि क्या जाने उस में कुछ पाए पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया क्योंकि फल का समय न १४ था। इस पर उस ने उस से कहा अब से कोई तेरा फल कभी न खाए। और उस के चेले सुन रहे थे॥

१५ वे यरूशलेम में आए और वह मन्दिर में गया और वहां जो लेन देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा और सर्राफ़ों के पीढ़े और कबूतर के बेचनेवालों की १६ चौकियां उलट दीं। और मन्दिर में से होकर किसी को १७ बरतन लेकर आने जाने न दिया। और उपदेश करके उन से कहा क्या यह नहीं लिखा कि मेरा घर सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। पर तुम ने इसे डाकुओं १८ की खोह बना दिया है। यह सुन महायाजक और शास्त्री उस के नाश करने का अवसर ढूंढ़ने लगे क्योंकि उस से डरते थे इसलिये कि सब लोग उस के उपदेश से चकित होते थे॥

१९ और सांझ होते ही वह नगर से बाहर जाया २० करता था। भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्हों ने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा। २१ पतरस को वह बात स्मरण आई और उस ने उस से कहा हे रब्बी देख यह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने स्राप दिया था सूख गया। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि २२ परमेश्वर पर विश्वास रक्खो। मैं तुम से सच कहता हूं २३ जो कोई इस पहाड़ से कहे कि उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ और अपने मन में सन्देह न करे बरन प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा तो उस के लिए वही होगा। इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना २४ करके मांगो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया और तुम्हारे लिए हो जाएगा। और जब तुम खड़े हुए प्रार्थना २५ करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर कुछ विरोध हो तो क्षमा करो इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे॥

वे फिर यरूशलेम में आए और जब वह मन्दिर २७ में फिर रहा था, तो महायाजक और शास्त्री और पुरनिए उस के पास आकर पूछने लगे, तू ये काम किस अधिकार २८ से करता है और यह अधिकार तुझे किस ने दिया है कि ये काम करे। यीशु ने उन से कहा कि मैं भी तुम से २९ एक बात पूछता हूं मुझे उत्तर दो तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। यूहन्ना का ३० बपतिसमा क्या स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था मुझे उत्तर दो। तब वे आपस में विवाद करने लगे ३१ कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की। पर यदि हम कहें मनुष्यों ३२ की ओर से उन्हें लोगों का डर था क्योंकि सब जानते थे कि यूहन्ना सचमुच नबी था। सो उन्हों ने यीशु को ३३ उत्तर दिया कि हम नहीं जानते। यीशु ने उन से कहा मैं भी तुम को नहीं बताता कि ये काम किस अधिकार से करता हूं॥

१२.

फिर वह दृष्टान्तों में उन से बातें करने लगा। किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और उस के चारों ओर बाड़ा बान्धा और रस का कुंड खोदा और गुम्मट बनाया और किसानों को उस का ठीका देकर परदेश चला गया। समय पर २ उस ने किसानों के पास एक दास को भेजा कि किसानों से दाख की बारी के फलों का भाग ले। पर उन्हों ने ३ उसे पकड़ कर पीटा और छूछे हाथ लौटा दिया। फिर ४ उस ने एक और दास को उन के पास भेजा, और उन्हों ने उस का सिर फोड़ उस का अपमान किया। फिर उस ५ ने एक और को भेजा और उन्हों ने उसे मार डाला और बहुत औरों को भेजा उन में से उन्हों ने कितनों को पीटा और कितनों को मार डाला। अब एक ही रह गया था ६ जो उस का प्रिय पुत्र था अन्त में उस ने उसे भी उन के पास यह सोच कर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।

(१) यू०। ऊंचे से ऊंचे स्थान में।

७ पर उन किसानों ने आपस में कहा यह तो वारिस है आओ हम उसे मार डालें तब मीरास हमारी होगी। ८ और उन्हों ने उसे पकड़कर मार डाला और दाख की ९ बारी के बाहर फेंक दिया। इसलिये दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा। वह आकर उन किसानों को नाश १० करेगा और दाख की बारी औरों के हाथ देगा। क्या तुम ने पवित्र शास्त्र में यह वचन नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजों ने निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा ११ हो गया। यह प्रभु की ओर से हुआ और हमारे देखने में १२ अद्भुत है। तब उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा क्योंकि समझ गए थे कि उस ने हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है पर वे लोगों से डरे और उसे छोड़ कर चले गए॥

१३ तब उन्हों ने उसे बातों में फसाने के लिए कई एक १४ फरीसियों और हेरोदियों को उस के पास भेजा। और उन्हों ने आकर उस से कहा हे गुरु हम जानते हैं कि तू सच्चा है और किसी की परवा नहीं करता क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देख कर बातें नहीं करता परन्तु परमेश्वर का १५ मार्ग सच्चाई से बताता है। क्या कैसर को कर देना उचित है कि नहीं। हम दें या न दें। उस ने उन का कपट जानकर उन से कहा मुझे क्यों परखते हो एक १६ दीनार[१] मेरे पास लाओ कि मैं देखूं। वे लाए और उस ने उन से कहा यह मूर्ति और नाम किस का है उन्हों ने १७ कहा कैसर का। यीशु ने उन से कहा जो कैसर का है वह कैसर को और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो। तब वे उस से बहुत अचम्भा करने लगे॥

१८ सदूकी ने भी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं उस के पास आए और उस से पूछा १९ कि, हे गुरु मूसा ने हमारे लिए लिखा कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए और उस की पत्नी रह जाए तो उस का भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और २० अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करे। सात भाई थे। पहिला भाई ब्याह करके बिना सन्तान मर गया। २१ तब दूसरे भाई ने उस स्त्री को ब्याह लिया और बिना २२ सन्तान मर गया और वैसे ही तीसरे ने भी। और सातों से सन्तान न हुआ। सब के पीछे वह स्त्री भी २३ मर गई। सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी २४ होगी क्योंकि वह सातों की पत्नी हुई थी। यीशु ने उन से कहा क्या तुम इस कारण भूल में न पड़े हो कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते। २५ क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे तो उन में ब्याह शादी न होगी पर स्वर्ग में के दूतों की नाईं होंगे। मरे हुओं २६ के जी उठने के विषय क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने उस से कहा मैं इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं। परमेश्वर मरे हुओं का नहीं बरन २७ जीवतों का परमेश्वर है सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो॥

शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें पूछ पाछ करते २८ सुना और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया उस से पूछा सब से मुख्य आज्ञा कौन है। यीशु ने उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओं में से यह मुख्य २९ है कि हे इस्राईल सुन प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे ३० मन से और अपने सारे जीव से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और ३१ दूसरी यह है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं। शास्त्री ने उस से कहा हे गुरु बहुत ठीक तू ने सच ३२ कहा कि वह एक ही है और उसे छोड़ और कोई नहीं। और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे जीव और ३३ सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है। जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया तो ३४ उस से कहा तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं। और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ॥

फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा शास्त्री ३५ क्योंकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है। दाऊद ३६ ने आप ही पवित्र आत्मा में होकर कहा कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा मेरे दहिने बैठ जब तक मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों की पीढ़ी न कर दूं। दाऊद तो आप ही ३७ उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र कहां से ठहरा। भीड़ के लोग उस की आनन्द से सुनते थे॥

उस ने अपने उपदेश में उन से कहा शास्त्रियों से ३८ चौकस रहो जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना, और बाजारों ३९ में नमस्कार और सभाओं में मुख्य मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें भी चाहते हैं। वे विधवाओं ४० के घर खा जाते हैं और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं। ये बहुत दण्ड पाएंगे॥

और वह भण्डार के सामने बैठकर देख रहा था कि ४१ लोग क्योंकर भण्डार में पैसे डालते थे और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला। और एक कंगाल विधवा ४२ ने आकर दो दमड़ी जो एक अधेले के बराबर होता है डाला। तब उस ने अपने चेलों को पास बुला कर उन ४३

(१) देखो मत्ती १८:२८।

से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि भण्डार में डालने-वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला ४४ है। क्योंकि सब ने अपनी बढ़ती में से कुछ कुछ डाला है पर इस ने अपनी घटी में से जो कुछ उस का था अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है ॥

१३. जब वह मन्दिर से निकल रहा था तो उस के चेलों में से एक ने उस से कहा हे गुरु देख कैसे कैसे पत्थर और कैसे कैसे भवन २ हैं। यीशु ने उस से कहा क्या तुम ये बड़े बड़े भवन देखते हो। यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा ॥

३ जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ४ ने अलग जाकर उस से पूछा कि, हम से कह ये बातें कब होंगी और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस ५ समय का क्या चिन्ह होगा। यीशु उन से कहने लगा ६ चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, मैं वही हूं और बहुतों को भरमाएंगे। ७ जब तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनो तो न घबराना क्योंकि इन का होना अवश्य है पर उस समय ८ अन्त न होगा। क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा और जगह जगह भुईंडोल होंगे और अकाल पड़ेंगे यह तो पीड़ाओं का आरम्भ होगा ॥

९ अपने विषय चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे और मेरे लिए हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए १० जाओगे कि उन के सामने गवाही दो। पर अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। ११ जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे तो पहिले से चिन्ता न करना कि हम क्या कहेंगे पर जो कुछ तुम्हें उस घड़ी बताया जाए वही कहना क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो १२ पर पवित्र आत्मा। और भाई भाई को और पिता पुत्र को घात के लिए सौंपेंगे और लड़केवाले माता पिता के १३ विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा ॥

१४ सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घिनित वस्तु को जहां उचित नहीं वहां खड़ी देखो (जो पढ़े वह समझे) १५ तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं। जो कोठे पर हो वह अपने घर से कुछ लेने को न नीचे १६ उतरे और न भीतर जाए। और जो खेत में हो वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। उन दिनों में जो गर्भवती १७ और दूध पिलाती होंगी उन के लिए हाय हाय। और १८ प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो। क्योंकि वे दिन १९ ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने सृजी अब तक न हुए और न कभी होंगे। और २० यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई प्राणी न बचता पर उन चुने हुओं के कारण जिन को उस ने चुना है उन दिनों को घटाया। उस समय यदि २१ कोई तुम से कहे देखो मसीह यहां या देखो वहां है तो प्रतीति न करना। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी २२ उठ खड़े होंगे और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। पर २३ तुम चौकस रहो। देखो मैं ने तुम्हें सब बातें पहिले ही से कह दी हैं ॥

उन दिनों में उस क्लेश के पीछे सूरज अन्धेरा हो २४ जाएगा और चांद प्रकाश न देगा। आकाश से तारे २५ गिरेंगे और आकाश में की शक्तियां हिलाई जाएंगी। तब २६ लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। और तब वह अपने दूतों २७ को भेजेगा और पृथिवी के इस छोर से आकाश की उस छोर तक चारों दिशा से चुने हुओं को इकट्ठे करेगा ॥

अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो। जब उस की २८ डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं तो तुम जान लेते हो कि धूप काल निकट है। इसी रीति २९ से जब तुम ये बातें होते देखो तो जान लो कि वह निकट है बरन द्वार ही पर है। मैं तुम से सच कहता हूं कि ३० जब तक ये सब बातें न हो लेंगी तब तक यह लोग[१] जाते न रहेंगे। आकाश और पृथिवी टल जाएंगे पर मेरी ३१ बातें कभी न टलेंगी। उस दिन या उस घड़ी के विषय ३२ कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत न पुत्र पर केवल पिता। देखो जागते और प्रार्थना करते रहो क्योंकि तुम ३३ नहीं जानते वह समय कब आएगा। यह उस मनुष्य ३४ का सा हाल है जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए और अपने दासों को अधिकार दे और हर एक को उस का काम जता दे और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे। इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते ३५ घर का स्वामी कब आएगा सांझ को या आधी रात को या मुर्ग के बांग के समय या भोर को। ऐसा न हो कि ३६ वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए। और जो मैं तुम से ३७ कहता हूं वही सब से कहता हूं, जागते रहो ॥

---

(१) यू०। यह पीढ़ी जाती न रहेगी।

१४. दो दिन के पीछे फ़सह और अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब होनेवाला था और महायाजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे २ कि उसे क्योंकर छल से पकड़ के मार डालें। पर कहते थे पर्ब्ब के दिन नहीं न हो कि लोगों में बलवा मचे॥

३ जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा था तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुत मोल का चोखा अतर लेकर आई और पात्र तोड़ कर उस के सिर पर ढाला। ४ कोई कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे इस ५ अतर का क्यों सत्यानाश किया। क्योंकि यह अतर तो तीन सौ दीनार[१] से अधिक दाम में बिककर कंगालों को बांटा जा सकता था और वे उस को झिड़कने लगे। ६ यीशु ने कहा उसे छोड़ दो उसे क्यों सताते हो। उस ने ७ तो मेरे साथ भलाई की है। कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर ८ सकते हो पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा। जो कुछ वह कर सकी उस ने किया। उस ने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर अतर ढाला है। ९ मैं तुम से सच कहता हूं कि सारे जगत में जहां कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा वहां उस के इस काम की चर्चा भी उस के स्मरण में की जायगी॥

१० तब यहूदा इसकरियोती जो बारह में से एक था महायाजकों के पास गया इसलिये कि उसे उन के हाथ ११ पकड़वा दे। वे यह सुनकर आनन्दित हुए और उस को रुपये देने को कहा और वह अवसर ढूंढ़ने लगा कि उसे क्योंकर पकड़वा दे॥

१२ अख़मीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन जिस में वे फसह का मेम्ना मारते थे उस के चेलों ने उस से पूछा, तू कहां चाहता है कि हम जाकर तेरे लिये फ़सह खाने १३ की तैयारी करें। उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा उस के पीछे हो १४ लेना। और वह जिस घर में जाए उस घर के स्वामी से कहना गुरू कहता है कि मेरी पाहुनशाला जिस में मैं १५ अपने चेलों के साथ फ़सह खाऊं कहां है। वह तुम्हें एक सजी सजाई और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा १६ देगा वहां हमारे लिए तैयारी करो। सो चेले निकलकर नगर में आए और जैसा उस ने उन से कहा था वैसा ही पाया और फ़सह तैयार किया॥

१७ जब सांझ हुई तो वह बारहों के साथ आया। १८ जब वे बैठे भोजन कर रहे थे तो यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक जो मेरे साथ भोजन कर रहा है मुझे पकड़वाएगा। १९ वे उदास होने और एक एक करके उस से कहने लगे क्या वह मैं हूं। २० उस ने उन से कहा वह बारहों में से एक है जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है। २१ क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उस के विषय लिखा है जाता ही है परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है। यदि उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिए भला होता॥

२२ और जब वे खा रहे थे तो उस ने रोटी ली और आशिष मांग कर तोड़ी और उन्हें दी और कहा लो यह मेरी देह है। २३ और उस ने कटोरा ले धन्यवाद किया और उन्हें दिया और उन सब ने उस में से पिया। २४ और उस ने उन से कहा यह वाचा का मेरा वह लोहू है जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। २५ मैं तुम से सच कहता हूं कि दाख का रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं॥ २६ फिर वे भजन गाकर ज़ैतून पहाड़ पर गए॥

२७ तब यीशु ने उन से कहा तुम सब ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं रखवाले को मारूंगा और भेड़ें २८ तित्तर बित्तर हो जाएंगी। पर मैं अपने जी उठने के पीछे तुम से पहिले गलील को जाऊंगा। २९ पतरस ने उस से कहा यदि सब ठोकर खाएं तो खाएं पर मैं ठोकर नहीं खाऊंगा। ३० यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज इसी रात मुर्ग़ के दो बार बांग देने से पहिले तू तीन बार ३१ मुझ से मुकर जाएगा। पर उस ने और भी बल से कहा यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो तौभी तुझ से कभी न मुकरूंगा। ऐसा ही और सब ने भी कहा॥

३२ फिर वे गतसमने नाम एक जगह में आए और उस ने अपने चेलों से कहा यहां बैठ रहो जब तक मैं प्रार्थना ३३ करूं। और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया। और बहुत चकित और व्याकुल ३४ होने लगा। और उन से कहा मेरा मन बहुत उदास है यहां तक कि मैं मरने पर हूं। तुम यहां ठहरो ३५ और जागते रहो। और वह थोड़ा आगे बढ़ा और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके ३६ तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए और कहा, हे अब्बा, हे पिता तुझ से सब कुछ हो सकता है इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले तौभी जो मैं चाहता हूं ३७ वह नहीं पर जो तू चाहता है वही हो। फिर वह

(१) देखो मत्ती १८ : २८।

आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा हे शमौन
तू सो रहा है क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका।
३८ जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न
३९ पड़ो। आत्मा तो तैयार है पर शरीर दुर्बल है। और
वह फिर चला गया और वही बात कहकर प्रार्थना की।
४० और फिर आकर उन्हें सोते पाया क्योंकि उन की आंखें
नींद से भरी थीं और न जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें।
४१ फिर तीसरी बार आकर उन से कहा अब सोते रहो और
विश्राम करते रहो बस घड़ी आ पहुंची देखो मनुष्य का
४२ पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। उठो चलें
देखो मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुंचा है॥

४३ वह यह कह ही रहा था कि यहूदा जो बारहों में
से था अपने साथ महायाजकों और शास्त्रियों और पुर-
नियों की ओर से एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां
४४ लिए हुए तुरन्त आ पहुंचा। और उस के पकड़वानेवाले
ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है
४५ उसे पकड़ कर यतन से ले जाना। और वह आया और
तुरन्त उस के पास जाकर कहा हे रब्बी और उस को
४६ बहुत चूमा। तब उन्हों ने उस पर हाथ डाल कर उसे
४७ पकड़ लिया। उन में से जो पास खड़े थे एक ने तलवार
खींचकर महायाजक के दास पर चलाई और उस का
४८ कान उड़ा दिया। यीशु ने उन से कहा क्या तुम डाकू
जानकर मेरे पकड़ने के लिए तलवारें और लाठियां
४९ लेकर निकले हो। मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ
रह कर उपदेश दिया करता था और तब तुम ने मुझे न
पकड़ा। पर यह इसलिये हुआ कि पवित्र शास्त्र की बातें
५० पूरी हों। इस पर सब चेले उसे छोड़ कर भाग गए॥

५१ और एक जवान अपनी नंगी देह पर चादर ओढ़े
हुए उस के पीछे हो लिया और लोगों ने उसे पकड़ा।
५२ पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया॥

५३ फिर वे यीशु को महायाजक के पास ले गए और
सब महायाजक और पुरनिए और शास्त्री उस के यहां
५४ इकट्ठे हो गए। पतरस दूर दूर उस के पीछे पीछे महा-
याजक के आंगन के भीतर तक गया और प्यादों के साथ
५५ बैठ कर आग तापने लगा। महायाजक और सारी महा
सभा यीशु के मार डालने के लिए उस के विरोध में गवाही
५६ की खोज में थे पर न पाई। क्योंकि बहुतेरे उस के विरोध
में झूठी गवाही दे रहे थे पर उन की गवाही एक सी न
५७ थी। तब कितनों ने उठ कर उस पर यह झूठी गवाही दी
५८ कि, हम ने इसे यह कहते सुना कि मैं इस हाथ के
बनाये हुए मन्दिर को ढा दूंगा और तीन दिन में दूसरा
५९ बनाऊंगा जो हाथ से न बना हो। पर यों भी उन की

गवाही एक सी न निकली। तब महायाजक ने बीच में ६०
खड़े होकर यीशु से पूछा क्या तू कोई उत्तर नहीं देता।
ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं। पर वह चुप ६१
रहा और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक ने उस से
फिर पूछा क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है।
यीशु ने कहा हां मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्र को ६२
सर्वशक्तिमान[1] की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के
बादलों के साथ आते देखोगे। तब महायाजक ने अपने ६३
वस्त्र फाड़कर कहा अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन
है। तुम ने यह निन्दा सुनी है तुम्हें क्या समझ पड़ता ६४
है। सब ने उसे वध के योग्य ठहराया। तब कोई ६५
कोई उस पर थूकने और उस का मुंह ढांकने और उसे
घूसे मारने और उस से कहने लगे कि नबूवत कर। और
प्यादों ने उसे लेकर थप्पड़ मारे॥

जब पतरस नीचे आंगन में था तो महायाजक की ६६
लौंडियों में से एक आई। और पतरस को आग तापते ६७
देख उस पर टकटकी लगाकर कहने लगी तू भी तो
उस नासरी यीशु के साथ था। वह मुकर गया और ६८
कहा मैं न जानता और न समझता हूं कि तू क्या कह
रही है। फिर वह बाहर डेवढ़ी में गया और मुर्ग़ ने
बांग दी। वह लौंडी उसे देख कर उन से जो पास खड़े ६९
थे फिर कहने लगी यह उन में से एक है। पर वह फिर ७०
मुकर गया और थोड़ी देर पीछे उन्हों ने जो पास खड़े थे
फिर पतरस से कहा सचमुच तू उन में से एक है क्योंकि
तू गलीली भी है। तब वह धिक्कार देने और किरिया ७१
खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को जिस की तुम चर्चा
करते हो नहीं जानता। तब तुरन्त दूसरी बार मुर्ग़ ने ७२
बांग दी और पतरस को वह बात जो यीशु ने उस से
कही थी स्मरण आई कि मुर्ग़ के दो बार बांग देने से
पहिले तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा और वह इस
पर सोचकर रोने लगा॥

१५. और

भोर होते ही तुरन्त महाया-
जकों पुरनियों और शास्त्रियों
बरन सारी महासभा ने एका करके यीशु को बन्धवाया
और उसे ले जाकर पीलातुस के हाथ सौंप दिया। और २
पीलातुस ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है।
उस ने उस को उत्तर दिया कि तू आप ही कह रहा
है। और महायाजक उस पर बहुत से दोष लगा रहे ३
थे। पीलातुस ने उस से फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर ४
नहीं देता देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते

(१) यू०। सामर्थ।

५ हैं। फिर भी यीशु ने कुछ उत्तर न दिया यहां तक कि पीलातुस ने अचम्भा किया॥

६ और वह उस पर्ब्ब में किसी एक बन्धुए को जिसे ७ वे चाहते थे उन के लिए छोड़ दिया करता था। बर-अब्बा नाम एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्धुआ ८ था जिन्हों ने बलवे में खून किया था। और भीड़ ऊपर जाकर उस से बिनती करने लगी कि जैसा तू हमारे ९ लिए करता आया वैसा ही कर। पीलातुस ने उन को उत्तर दिया क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहू-१० दियों के राजा को छोड़ दूं। क्योंकि वह जानता था कि ११ महायाजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था। पर महा-याजकों ने लोगों को उभारा कि वह बर-अब्बा ही को १२ उन के लिए छोड़ दे। यह सुन पीलातुस ने उन से फिर पूछा तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो उसे मैं क्या करूं? वे फिर चिल्लाए कि उसे क्रूस पर चढ़ा। १३ पीलातुस ने उन से कहा क्यों उस ने क्या बुराई की है? १४,१५ पर वे और भी चिल्लाए कि उसे क्रूस पर चढ़ा। तब पीलातुस ने भीड़ को खुश करने की इच्छा से बर-अब्बा को उन के लिए छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा-१६ कर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए। और सिपाह उसे क़िले के भीतर के आंगन में ले गये और सारी १७ पलटन को बुला लाए। और उन्हों ने उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया और कांटों का मुकुट गूथकर उस के सिर पर १८ रक्खा। और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यहूदियों के १९ राजा सलाम। और वे उस के सिर पर सरकण्डे मारते और उस पर थूकते और घुटने टेक कर उसे प्रणाम करते २० रहे। और जब वे उस का ठट्ठा कर चुके तो उस पर से बैंजनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहिनाए और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए॥

२१ और सिकन्दर और रूफुस का पिता शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य जो गांव से आ रहा था उधर से निकला उन्हों ने उसे बेगार में पकड़ा कि उस का क्रूस २२ उठा ले चले। और वे उसे गुलगुता नाम जगह पर जिस २३ का अर्थ खोपड़ी की जगह है उठा लाए। और उसे मुर २४ मिला हुआ दाखरस देने लगे पर उस ने न लिया। तब उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया और उस के कपड़ों पर चिट्ठियां डालकर कि किस को क्या मिले उन्हें बांट २५ लिया। और पहर दिन चढ़ा था जब उन्हों ने उस को २६ क्रूस पर चढ़ाया और उस का दोषपत्र लिखकर उस के २७ ऊपर लगा दिया कि यहूदियों का राजा। और उन्हों ने उस के साथ दो डाकू एक दहिने और एक बाएं क्रूसों २९ पर चढ़ाये। और आने जानेवाले सिर हिला हिलाकर और यह कहकर उस की निन्दा करते और यह कहते थे कि वाह मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनाने-३० वाले, क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा। ३१ इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों समेत आपस में ठट्ठे से कहते थे इस ने औरों को बचाया अपने को नहीं ३२ बचा सकता। इस्राईल का राजा मसीह अब क्रूस पर से उतरे कि हम देखकर विश्वास करें। जो उस के साथ क्रूसों पर चढ़ाए गये थे वे भी उस की निन्दा करते थे॥

३३ और दोपहर होने पर सारे देश में अंधेरा छा ३४ गया और तीसरे पहर तक रहा। तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा इलोई इलोई लमा शबक-तनी जिस का अर्थ यह है हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमे-३५ श्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया। जो पास खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा देखो वह एलियाह को ३६ पुकारता है। और एक ने दौड़कर स्पंज को सिरके में डुबोया और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया और कहा रह जा देखें कि एलियाह उसे उतारने आता है ३७ कि नहीं। तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण ३८ छोड़ा। और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट-३९ कर दो टुकड़े हो गया। जो सूबेदार उस के सामने खड़ा था जब उसे यूं चिल्लाकर प्राण छोड़ते देखा तो कहा ४० सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था। कई स्त्रियां भी दूर से देख रही थीं उन में मरयम मगदलीनी और छोटे याकूब की और योसेस की माता मरयम और ४१ शलोमी थीं। जब वह गलील में था तो ये उस के पीछे हो लेतीं और उस की सेवाटहल करती थीं और और भी बहुत सी स्त्रियां थीं जो उस के साथ यरूशलेम में आई थीं॥

४२ जब सांझ हो गई तो इसलिये कि तैयारी का दिन था जो बिश्रामवार के एक दिन पहिले होता है, ४३ अरिमतिया का यूसुफ आया जो प्रतिष्ठित मंत्री और आप भी परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था वह हियाव करके पीलातुस के पास गया और यीशु की लोथ ४४ मांगी। पीलातुस ने अचम्भा किया कि वह ऐसे शीघ्र मर गया और सूबेदार को बुलाकर पूछा कि क्या उस ४५ को मरे हुए कुछ देर हुई। सो जब सूबेदार के द्वारा हाल ४६ जान लिया तो लोथ यूसुफ को दिला दी। तब उस ने एक चादर मोल ली और लोथ को उतार कर उस चादर में लपेटा और एक क़बर में जो चटान में खुदी हुई थी रक्खा और क़बर के द्वार पर पत्थर लुढ़का ४७ दिया। और मरयम मगदलीनी और योसेस की माता मरयम देख रही थीं कि वह कहां रक्खा गया है॥

१६. **जब** विश्राम का दिन बीत गया तो मरयम मगदलीनी और याकूब की माता मरयम और शलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं
२ मोल लीं कि आकर उस पर मलें। और अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर जब सूरज निकला ही था
३ क़बर पर आईं। और आपस में कहती थीं कि हमारे लिए क़बर के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा।
४ जब उन्हों ने आंख उठाई तो देखा कि पत्थर लुढ़का
५ हुआ है और वह बहुत बड़ा था। और क़बर के भीतर जाकर उन्हों ने एक जवान को उजला पैराहन पहिने हुए दहिनी ओर बैठे देखा और बहुत चकित हुईं।
६ उस ने उन से कहा चकित मत हो तुम यीशु नासरी को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह जी उठा है यहां नहीं है देखो यही वह जगह है जहां उन्हों ने
७ उसे रक्खा था। पर तुम जाओ और उस के चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम से पहिले गलील को जाएगा
८ जैसा उस ने तुम से कहा तुम वहीं उसे देखोगे। और वे निकल कर क़बर से भाग गईं क्योंकि उन्हें कपकपी और घबराहट ने दबा लिया था सो उन्हों ने किसी से कुछ न कहा क्योंकि डरती थीं॥
९ अठवारे के पहिले दिन वह भोर होते ही जी उठ कर पहिले पहिल मरयम मगदलीनी को जिस में से उस
१० ने सात दुष्टात्मा निकाले थे दिखाई दिया। उस ने जाकर उस के साथियों को जो शोक करते और रो रहे थे
११ समाचार दिया। और उन्हों ने यह सुनकर कि वह जीता है और उसे देखा है प्रतीति न की॥

१२ इस के पीछे वह दूसरे रूप में उन में से दो को जब
१३ वे गांव की ओर जा रहे थे दिखाई दिया। उन्हों ने भी जाकर औरों को समाचार दिया पर उन्हों ने उन की भी प्रतीति न की॥

१४ पीछे वह उन ग्यारहों को भी जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया क्योंकि जिन्हों ने उस के जी उठने के पीछे उसे देखा था इन्हों ने उन की
१५ प्रतीति न की थी। और उस ने उन से कहा तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार
१६ प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिसमा ले उस का उद्धार होगा पर जो विश्वास न करे वह दोषी
१७ ठहराया जाएगा। और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह
१८ होंगे वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे सांपों को उठा लेंगे और यदि वे नाशक वस्तु पीएं तो उन की कुछ हानि न होगी वे बीमारों पर हाथ रक्खेंगे और वे चंगे हो जाएंगे॥

१९ सो प्रभु यीशु उन से बातें करने के पीछे स्वर्ग पर
२० उठा लिया गया और परमेश्वर की दहिनी ओर बैठ गया। और उन्हों ने निकल कर हर कहीं प्रचार किया और प्रभु उन के साथ साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो होते थे वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन॥

लूका रचित सुसमाचार।

---

१. **इसलिए** कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं इतिहास
२ लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्हों ने जो पहिले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे
३ हमें सौंपा। सो हे श्रीमान् थियुफिलुस मुझे अच्छा लगा कि सब बातों का हाल चाल आरम्भ से ठीक ठीक जांच
४ करके उन्हें तेरे लिए सिलसिलेवार लिखूं, कि तू जान ले कि वे बातें जिन की तू ने शिक्षा पाई है कैसी पक्की हैं॥

५ यहूदिया के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल[१] में ज़करयाह नाम एक याजक था और उस की पत्नी हारून के वंश की थी जिस का नाम इलीशिबा
६ था। और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्म्मी थे और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलने-
७ वाले थे। उन के कोई सन्तान न थी क्योंकि इलीशिबा बांझ थी और वे दोनों बूढ़े थे॥

८ जब वह अपने दल[१] की पारी पर परमेश्वर के
९ सामने याजक का काम करता था। तो याजकों की

(१) इतिहास २३:६—२३ को देखो।

रीति के अनुसार उस के नाम पर चिट्ठी निकली कि प्रभु
१० के मन्दिर में जाकर धूप जलाए। और धूप जलाने के
समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही
११ थी, कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दहिनी
१२ ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया। और ज़करयाह
देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया।
१३ पर स्वर्गदूत ने उस से कहा हे ज़करयाह भय न खा
क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई और तेरी पत्नी इली-
शिबा तेरे लिए पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यूहन्ना
१४ रखना। और तुझे आनन्द और हर्ष होगा और बहुत
१५ लोग उस के जन्म के कारण आनन्दित होंगे। क्योंकि
वह प्रभु के साम्हने महान् होगा और दाख रस और मद
कभी न पीएगा और अपनी माता के पेट ही से पवित्र
१६ आत्मा से भरपूर हो जाएगा। और इस्राईलियों में से
१७ बहुतेरों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। वह
एलिय्याह के आत्मा और सामर्थ में होकर उस के आगे
आगे चलेगा कि पितरों का मन लड़केवालों की ओर फेर
दे और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ पर
लाए और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे।
१८ ज़करयाह ने स्वर्गदूत से पूछा यह मैं कैसे जानूं क्योंकि
१९ मैं तो बूढ़ा हूं और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है। स्वर्गदूत
ने उस को उत्तर दिया कि मैं जिब्रईल हूं जो परमेश्वर
के सामने खड़ा रहता हूं और मैं तुझ से बातें करने और
२० तुझे यह सुसमाचार सुनाने भेजा गया हूं। और देख
जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो लें उस दिन तक तू
चुपचाप रहेगा और बोल न सकेगा इसलिये कि तू ने
मेरी बातों की जो अपने समय पर पूरी होंगी प्रतीति न
२१ की। और लोग ज़करयाह की बाट देखते और अचम्भा
२२ करते थे कि उसे मन्दिर में ऐसी देर क्यों लगी। जब
वह बाहर आया तो उन से बोल न सका सो वे जान
गए कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है और वह
२३ उन से सैन करता रहा और गूंगा रह गया। जब उस की
सेवा के दिन पूरे हुए तो वह अपने घर गया॥

२४ इन दिनों के पीछे उस की पत्नी इलीशिबा गर्भवती
हुई और पांच महीने तक अपने आप को यह कहके छिपाए
२५ रक्खा, कि मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिए प्रभु
ने इन दिनों में कृपादृष्टि कर मेरे लिए ऐसा किया है॥

२६ छठे महीने परमेश्वर की ओर से जिब्रईल स्वर्गदूत
गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा
२७ गया, जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक
२८ पुरुष से हुई थी। उस कुंवारी का नाम मरयम था। और
उस ने उस के पास भीतर आकर कहा आनन्द तुझ को
जिस पर अनुग्रह हुआ है प्रभु तेरे साथ है। वह उस २९
वचन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि यह कैसा
नमस्कार है। स्वर्गदूत ने उस से कहा हे मरयम भय न ३०
कर क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और ३१
देख तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी तू उस का नाम
यीशु रखना। वह महान् होगा और परमप्रधान का पुत्र ३२
कहलाएगा और प्रभु परमेश्वर उस के पिता दाऊद का
सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा ३३
राज्य करेगा और उस के राज्य का अन्त न होगा। मरयम ३४
ने स्वर्गदूत से कहा यह क्योंकर होगा मैं तो पुरुष को जानती
ही नहीं। स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया कि पवित्र ३५
आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ
पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला
है परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। और देख तेरी कुटुम्बिनी ३६
इलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होनेवाला है यह उस का
जो बांझ कहलाती थी छठा महीना है। क्योंकि जो वचन ३७
परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता।
मरयम ने कहा देख मैं प्रभु की दासी हूं मुझे तेरे वचन ३८
के अनुसार हो तब स्वर्गदूत उस के पास से चला गया॥

उन दिनों में मरयम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश ३९
में यहूदा के एक नगर को गई। और ज़करयाह के घर ४०
में जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया। ज्योंही ४१
इलीशिबा ने मरयम का नमस्कार सुना त्योंही बच्चा
उस के पेट में उछला और इलीशिबा पवित्र आत्मा से
भरपूर हो गई। और उस ने बड़े शब्द से पुकार के ४२
कहा, तू स्त्रियों में धन्य और तेरे पेट का फल धन्य है।
और यह अनुग्रह मुझे कहां से हुआ कि मेरे प्रभु की ४३
माता मेरे पास आई। और देख ज्योंही तेरे नमस्कार ४४
का शब्द मेरे कानों में पड़ा त्योंही बच्चा मेरे पेट में
आनन्द से उछल पड़ा। और धन्य है वह जिस ने ४५
विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उस से
कही गईं वे पूरी होंगी। तब मरयम ने कहा मेरा प्राण ४६
प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरा आत्मा मेरे उद्धार ४७
करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुआ। क्योंकि उस ने ४८
अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है इसलिये देखो
अब से सब समयों के लोग मुझे धन्य कहेंगे। क्योंकि ४९
उस शक्तिमान् ने मेरे लिए बड़े बड़े काम किए हैं और
उस का नाम पवित्र है। और उस की दया उन पर ५०
जो उस से डरते हैं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती
है। उस ने अपना बाहुबल दिखाया और जो अपने ५१
आप को बड़ा समझते थे उन्हें तित्तर बित्तर किया।
उस ने बलवानों को सिंहासनों से गिरा दिया और ५२

५३ दीनों को ऊंचा किया। उस ने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया और धनवानों को छूछे हाथ निकाल
५४ दिया। उस ने अपने सेवक इस्राईल को सम्भाल लिया।
५५ कि अपनी उस दया को स्मरण करे जो इब्राहीम और उस के वंश पर सदा रहेगी जैसा उस ने हमारे बाप दादों
५६ से कहा था। मरयम लगभग तीन महीने उस के साथ रहकर अपने घर लौट गई॥

५७ तब इलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ और
५८ वह पुत्र जनी। उस के पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुन कर कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की उस के साथ
५९ आनन्द किया। और आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उस का नाम उस के पिता के नाम पर
६० ज़करयाह रखने लगे। और उस की माता ने उत्तर दिया
६१ सो नहीं बरन उस का नाम यूहन्ना रक्खा जाए। और उन्हों ने उस से कहा तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम
६२ नहीं। तब उन्हों ने उस के पिता से सैन किया कि तू
६३ उस का नाम क्या रखना चाहता है। और उस ने पाटी मंगाकर लिख दिया कि उस का नाम यूहन्ना है
६४ और सब ने अचम्भा किया। तब उस का मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई और वह बोलने और परमेश्वर का
६५ धन्यवाद करने लगा। और उन के आस पास के सब रहनेवालों पर भय छा गया और इन सब बातों की चर्चा
६६ यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई। और सब सुननेवालों ने अपने अपने मन में बिचार कर कहा यह बालक कैसा होगा क्योंकि प्रभु का हाथ उस के साथ था॥

६७ और उस का पिता ज़करयाह पवित्र आत्मा से
६८ भरपूर हो गया और नबूवत करने लगा कि प्रभु इस्राईल का परमेश्वर धन्य हो कि उस ने अपने लोगों पर
६९ दृष्टि कर उन का छुटकारा किया है। और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिए एक उद्धार का सींग
७० निकाला। जैसे उस ने अपने पवित्र नबियों के द्वारा जो
७१ जगत के आदि से होते आए हैं कहा कि, हमारे शत्रुओं से और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा
७२ उद्धार किया है। कि हमारे बाप दादों पर दया करके
७३ अपनी पवित्र वाचा स्मरण करे। अर्थात् वह किरिया जो
७४ उस ने हमारे पिता इब्राहीम से खाई थी कि वह हमें यह
७५ देगा कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छूटकर, उस के सामने पवित्रता और धार्म्मिकता से जीवन भर निडर
७६ रहकर उस की सेवा करते रहें। और तू हे बालक परम प्रधान का नबी कहलाएगा क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार
७७ करने के लिए उस के आगे आगे चलेगा, कि उस के लोगों को उद्धार का ज्ञान दे जो उन के पापों की क्षमा
७८ से प्राप्त होता है। यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर
७९ का प्रकाश उदय होगा, कि अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए॥

८० और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया और इस्राईल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा॥

२. उन दिनों में औगूस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली कि सारे जगत के लोगों
२ के नाम लिखे जाएं। यह पहिली नाम लिखाई उस समय
३ हुई जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था। और सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने अपने नगर को गए।
४ सो यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद
५ के नगर बैतलहम को गया, कि अपनी मंगेतर मरयम
६ के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए। उन के वहां
७ रहते हुए उस के जनने के दिन पूरे हुए। और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रक्खा क्योंकि उन के लिए सराय में जगह न थी॥

८ और उस देश में कितने रखवाले थे जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे।
९ और प्रभु का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ और प्रभु का तेज उन के चारों ओर चमका और वे
१० बहुत डर गये। तब स्वर्गदूत ने उन से कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार
११ सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता
१२ जन्मा है और यही मसीह प्रभु है। और इस का तुम्हारे लिए यह पता है कि तुम एक बालक को कपड़े
१३ में लिपटा और चरनी में पड़ा पाओगे। तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की
१४ स्तुति करते और यह कहते दिखाई दिया कि, आकाश[१] में परमेश्वर की महिमा और पृथिवी पर उन मनुष्यों में जिन से वह प्रसन्न है शान्ति हो॥

१५ जब स्वर्गदूत उन के पास से स्वर्ग को चले गये तो रखवालों ने आपस में कहा आओ हम बैतलहम जाकर यह बात जो हुई और जिसे प्रभु ने हमें बताया
१६ है देखें। और उन्हों ने तुरन्त जाकर मरयम और
१७ यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा। इन्हें देखकर उन्हों ने वह बात जो इस बालक के विषय उन से

(१) यू०। ऊंचे से ऊंचे स्थान में।

१८ कही गई थी प्रगट की। और सब सुननेवालों ने उन बातों से जो रखवालों ने उन से कहीं अचम्भा किया।
१९ पर मरयम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती
२० रही। और रखवाले जैसा उन से कहा गया था वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए॥

२१ जब आठ दिन पूरे हुए और उस के खतने का समय आया तो उस का नाम यीशु रक्खा गया जो स्वर्ग दूत ने उस के पेट में आने से पहले कहा था॥

२२ और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो वे उसे यरूशलेम में ले
२३ गए कि प्रभु के सामने लाएं। (जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है कि हर एक पहिलौठा प्रभु के लिए पवित्र
२४ ठहरेगा), और प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार पंडुकों का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे ला कर
२५ बलिदान करें। और देखो यरूशलेम में शमौन नाम एक मनुष्य था और वह मनुष्य धर्मी और भक्त था और इस्राईल की शांति की बाट जोहता था और पवित्र आत्मा
२६ उस पर था। और पवित्र आत्मा से उस को चितावनी हुई थी कि जब तक तू प्रभु के मसीह को देख न ले तब
२७ तक मृत्यु को न देखेगा। और वह आत्मा के सिखाने से[1] मन्दिर में आया और जब माता पिता उस बालक यीशु को भीतर लाए कि उस के लिए व्यवस्था की रीति
२८ के अनुसार करें। तो उस ने उसे अपनी गोद में लिया
२९ और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा, हे स्वामी अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शांति से बिदा
३० करता है। क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख
३१ लिया है। जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सामने तैयार
३२ किया है। कि वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिए
३३ ज्योति और तेरे निज लोग इस्राईल की महिमा हो। और उस का पिता और उस की माता इन बातों से जो उस
३४ के विषय कही जाती थीं अचम्भा करते थे। तब शमौन ने उन को आशिष देकर उस की माता मरयम से कहा देख यह तो इस्राईल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए और ऐसा एक चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है
३५ जिस के विरोध में बातें की जाएगी—बरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा—इस से बहुत हृदयों
३६ के विचार प्रगट होंगे। और अशेर के गोत्र में से हन्नाह नाम फनूएल की बेटी एक नबिया थी। वह बहुत बूढ़ी थी और ब्याह होने के बाद सात बरस अपने पति के साथ रही थी। वह चौरासी बरस से विधवा थी और
३७ मन्दिर को न छोड़ती थी पर उपवास और प्रार्थना कर करके रात दिन उपासना किया करती थी। और वह
३८ उसी घड़ी वहां आकर प्रभु का धन्यवाद करने लगी और उन सब से जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे उस के विषय बातें करने लगी। और जब वे प्रभु की
३९ व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तो गलील में अपने नगर नासरत को चले गए॥

४० और बालक बढ़ता और बलवन्त होता और बुद्धि से भरपूर होता गया और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था॥

४१ उस के माता पिता बरस बरस फ़सह के पर्ब्ब में
४२ यरूशलेम को जाया करते थे। जब वह बारह बरस का हुआ तो वे पर्ब्ब की रीति के अनुसार यरूशलेम को
४३ गए। और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे तो वह लड़का यीशु यरूशलेम में रह गया और यह उस
४४ के माता पिता न जानते थे। वे यह समझकर कि वह और बटोहियों के साथ होगा एक दिन का पड़ाव निकल गए और उसे अपने कुटुम्बियों और जान पहचानों में
४५ ढूंढ़ने लगे। पर जब न मिला तो ढूंढ़ते ढूंढ़ते यरूशलेम
४६ को फिर लौट गए। और तीन दिन के पीछे उन्हों ने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच बैठे उन की सुनते और उन
४७ से प्रश्न करते हुए पाया। और जितने उस की सुन रहे थे
४८ वे सब उस की समझ और उस के उत्तरों से चकित थे। तब वे उसे देखकर चकित हुए और उस की माता ने उस से कहा, हे पुत्र तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया देख
४९ तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। उस ने उन से कहा तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे क्या नहीं जानते थे कि
५० मुझे अपने पिता के भवन में होना[2] अवश्य है। पर जो
५१ बात उस ने उन से कही उन्हों ने न समझी। तब वह उन के साथ गया और नासरत में आया और उन के वश में रहा और उस की माता ने ये सब बातें अपने मन में रक्खीं॥

५२ और यीशु बुद्धि और डील डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया॥

३. तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें बरस में जब पुन्तियुस पीलातुस यहूदिया का हाकिम था और गलील में हेरोदेस नाम चौथाई का इतूरैया और त्रखोनीतिस में उस का भाई फिलिप्पुस

(१) यू० । में ।

(२) वा० । कामों में लगे रहना ।

२ और अबिलेने में लिसानियास चौथाई के राजा थे। और जब हन्ना और काइफा महायाजक थे उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में ज़करयाह के पुत्र यूहन्ना के पास ३ पहुंचा। और वह यरदन के आस पास के सारे देश में आकर पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिसमा ४ का प्रचार करने लगा। जैसे यशायाह नबी के कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो ५ उस की सड़कें सीधी करो। हर एक घाटी भर दी जाएगी और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा और जो टेढ़ा है सीधा और जो ऊंचा नीचा है चौरस ६ मार्ग बनेगा। और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा॥

७ जो भीड़ की भीड़ उस से बपतिसमा लेने को निकल आती थी उन से वह कहता था हे सांप के बच्चो तुम्हें किस ने जता दिया कि आनेवाले क्रोध से भागो। ८ मन फिराव के योग्य फल लाओ और अपने अपने मन में यह न सोचो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के ९ लिए सन्तान उत्पन्न कर सकता है। और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में झोंका १० जाता है। और लोगों ने उस से पूछा तो हम क्या करें। ११ उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस के पास दो कुरते हों वह उस के साथ जिस के पास नहीं बांट दे और जिस के १२ पास भोजन हो वह भी ऐसा ही करे। और महसूल लेनेवाले भी बपतिसमा लेने आए और उस से पूछा कि १३ हे गुरु हम क्या करें। उस ने उन से कहा जो तुम्हारे १४ लिए ठहराया गया है उस से अधिक न लेना। और सिपाहियों ने भी उस से यह पूछा हम क्या करें। उस ने उन से कहा किसी पर उपद्रव न करना और न झूठा दोष लगाना और अपनी मजूरी पर सन्तोष करना॥

१५ जब लोग आस लगाए हुए थे और सब अपने अपने मन में यूहन्ना के विषय विचार कर रहे थे कि १६ क्या यही मसीह न होगा। तो यूहन्ना ने उन सब से उत्तर दे कहा कि मैं तो तुम्हें पानी से बपतिसमा देता हूं पर वह आता है जो मुझ से शक्तिमान् है मैं इस योग्य नहीं कि उस के जूतों का बंध खोलूं वह तुम्हें १७ पवित्र आत्मा और आग से बपतिसमा देगा। उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा और गेहूं को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा पर भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा॥

१८ फिर वह बहुत और बातों का भी उपदेश करके १९ लोगों को सुसमाचार सुनाता रहा। पर उस ने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उस के भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के विषय और सब कुकर्मों के विषय जो २० उस ने किए थे उलाहना दिया था। इसलिये हेरोदेस ने उन सब से बढ़कर यह कुकर्म भी किया कि यूहन्ना को जेलखाने में डाल दिया॥

२१ जब सब लोगों ने बपतिसमा लिया और यीशु भी बपतिसमा लेकर प्रार्थना कर रहा था तो आकाश खुल २२ गया। और पवित्र आत्मा देही रूप में कबूतर की नाईं उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझ से प्रसन्न हूं॥

२३ जब यीशु आप उपदेश करने लगा तो बरस तीस एक का था और (जैसा समझा जाता था) यूसुफ का २४ पुत्र था। और वह एली का वह मत्तात का वह लेवी २५ का वह मलकी का वह यन्ना का वह यूसुफ का, वह मत्तियाह का वह आमोस का वह नहूम का वह २६ असल्याह का वह नोगह का, वह मात का वह मत्तित्याह २७ का वह शिमी का, वह योसेख का वह योदाह का वह यूहन्ना का वह रेसा का वह जरुब्बाबिल का वह शालतियेल २८ का वह नेरी का, वह मलकी का वह अद्दी का २९ वह कोसाम का वह इलमोदाम का वह एर का, वह येशू का वह इलाजार का वह योरीम का वह मत्तात ३० का वह लेवी का, वह शमौन का वह यहूदाह का वह ३१ यूसुफ का वह योनान का वह इलयाकीम का, वह मलेयाह का वह मिन्नाह का वह मत्तता का वह नातान ३२ का वह दाऊद का, वह यिशै का वह ओबेद का वह ३३ बोअज़ का वह सलमोन का वह नहशोन का, वह अम्मीनादाब का वह अरनी का वह हिस्रोन का वह ३४ फिरिस का वह यहूदाह का, वह याकूब का वह इसहाक ३५ का वह इब्राहीम का वह तिरह का वह नाहोर का, वह सरूग का वह रऊ का वह फिलिग का वह एबिर का ३६ वह शिलह का, वह केनान का वह अरफक्षद का वह ३७ शेम का वह नूह का वह लिमिक का, वह मथूशिलह का वह हनोक का वह यिरिद का वह महललेल का ३८ वह केनान का, वह इनोश का वह शेत का वह आदम का और वह परमेश्वर का॥

४. यीशु पवित्रात्मा से भरा हुआ यरदन से लौटा और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा और

२ शैतान[1] उस की परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उस ने कुछ न खाया और जब वे दिन पूरे हो गए तो उसे ३ भूख लगी। और शैतान[1] ने उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी ४ बन जाए। यीशु ने उसे उत्तर दिया कि लिखा है ५ मनुष्य केवल रोटी ही से जीता न रहेगा। तब शैतान[1] उसे ले गया और उस को पल भर में जगत के सारे ६ राज्य दिखाए। और शैतान[1] ने उस से कहा मैं यह सब अधिकार और इन का विभव तुझे दूंगा क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है और जिसे चाहता हूं उसी को दे ७ देता हूं। इसलिये यदि तू मुझे प्रणाम करे तो यह सब ८ तेरा हो जाएगा। यीशु ने उसे उत्तर दिया लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी ९ की उपासना कर। तब उस ने उसे यरूशलेम में ले जाकर मंदिर के कंगूरे पर खड़ा किया और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को यहां से १० नीचे गिरा दे। क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें। ११ और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव में १२ पत्थर से ठेस लगे। यीशु ने उस को उत्तर दिया यह भी कहा गया है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न १३ करना। जब शैतान[1] सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिए उस के पास से चला गया॥

१४ फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा और उस की चर्चा आसपास के सारे देश में १५ फैल गई। और वह उन की सभा के घरों में उपदेश करता रहा और सब उस की बड़ाई करते थे॥

१६ और वह नासरत में आया जहां पाला गया था और अपनी रीति के अनुसार बिश्राम के दिन सभा के १७ घर में जाकर पढ़ने को खड़ा हुआ। यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गई और उस ने पुस्तक खोलकर वह १८ जगह निकाली जहां यह लिखा था कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है और मुझे इस लिये भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे और अंधों को दृष्टि पाने का प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। १९ और प्रभु के प्रसन्न रहने के बरस का प्रचार करूं। २० तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दी और बैठ गया और सभा के सब लोगों की आंखें उस २१ पर लगी थीं। तब वह उन से कहने लगा कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने[2] पूरा हुआ है। और सब ने २२ उसे सराहा और जो अनुग्रह की बातें उस के मुंह से निकलती थीं उन से अचम्भा किया और कहने लगे क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं। उस ने उन से कहा तुम मुझ २३ पर यह कहावत अवश्य कहोगे कि हे वैद्य अपने आप को अच्छा कर। जो कुछ हम ने सुना कि कफरनहूम में किया गया वह यहां अपने देश में भी कर। और उस ने २४ कहा मैं तुम से सच कहता हूं कोई नबी अपने देश में मान सम्मान नहीं पाता। और मैं तुम से सच कहता हूं २५ कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन बरस आकाश बन्द रहा था यहां तक कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा तो इस्राईल में बहुत सी बिधवा थीं। पर एलिय्याह २६ उन में से किसी के पास न भेजा गया केवल सैदा के सारफत में एक बिधवा के पास। और इलीशा नबी के २७ समय इस्राईल में बहुत कोढ़ी थे पर नामान सूरयानी को छोड़ उन में से कोई शुद्ध न किया गया। ये बातें सुनते २८ ही जितने सभा में थे सब क्रोध से भर गये। और उठकर २९ उसे नगर से बाहर निकाला और जिस पहाड़ पर उन का नगर बसा था उस की चोटी पर ले चले कि उसे नीचे गिरा दें। पर वह उन के बीच में से निकलकर चला ३० गया॥

३१ फिर वह गलील के कफरनहूम नगर में गया और बिश्राम के दिन लोगों को उपदेश दे रहा था। वे उस ३२ के उपदेश से चकित हो गए क्योंकि उस का वचन अधिकार सहित था। सभा के घर में एक मनुष्य था ३३ जिस में अशुद्ध आत्मा था। वह ऊंचे शब्द से चिल्ला ३४ उठा हे यीशु नासरी हमें तुझ से क्या काम। क्या तू हमें नाश करने आया है। मैं तुझे जानता हूं कि तू कौन है परमेश्वर का पवित्र जन। यीशु ने उसे डांटकर ३५ कहा चुप रह और उस में से निकल जा। तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर हानि पहुंचाए बिना उस से निकल गया। इस पर सब को अचम्भा हुआ और वे आपस में ३६ बातें करके कहने लगे यह कैसा वचन है कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है और वे निकल जाते हैं। सो चारों ओर ३७ हर जगह उसकी धूम मच गई॥

३८ वह सभा के घर में से उठकर शमौन के घर में गया और शमौन की सास को बड़ी तप चढ़ी हुई थी और उन्हों ने उस के लिए उस से बिनती की। उस ने ३९ उस के निकट खड़े होकर तप को डांटा और वह उस

(१) यू० । इबलीस ।

(२) यू० । कानों में ।

पर से उतर गई और वह तुरन्त उठकर उन की सेवा करने लगी ॥

४० सूरज डूबते समय जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े थे वे सब उन्हें उस के पास लाए और उस ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा ४१ किया। और दुष्टात्मा भी चिल्लाते और यह कहते हुए कि तू परमेश्वर का पुत्र है बहुतों में से निकल गए पर वह उन्हें डांटता और बोलने न देता था क्योंकि वे जानते थे कि यह मसीह है ॥

४२ जब दिन हुआ तो वह निकल कर एक जंगली जगह में गया और भीड़ की भीड़ उसे ढूंढ़ती हुई उस के पास आई और उसे रोकने लगी कि हमारे पास से ४३ न जा। पर उस ने उन से कहा मुझे और और नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूं ॥

४४ सो वह गलील की सभा के घरों में प्रचार करता रहा ॥

५. जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी और परमेश्वर का वचन सुनती थी और २ वह गन्नेसरत की झील के किनारे खड़ा था। तो उस ने झील के किनारे दो नावें लगी देखीं और मछुवे उन पर ३ से उतरकर जाल धो रहे थे। उन नावों में से एक पर जो शमौन की थी चढ़कर उस ने उस से बिनती की कि किनारे से थोड़ा हटा ले चल तब वह बैठकर लोगों को ४ नाव पर से उपदेश करने लगा। जब वह बातें कर चुका तो शमौन से कहा गहिरे में ले चल और मछलियां पक-५ ड़ने के लिए अपने जाल डालो। शमौन ने उस को उत्तर दिया कि हे स्वामी हम ने सारी रात मिहनत की और कुछ न पकड़ा तौ भी तेरे कहने से जाल डालूंगा। ६ जब उन्हों ने ऐसा किया तो बहुत मछलियां घेर लाए ७ और उन के जाल फटने लगे। इस पर उन्हों ने अपने साझियों को जो दूसरी नाव पर थे सैन किया कि आकर हमारी सहायता करो और उन्हों ने आकर दोनों नाव यहां ८ तक भरीं कि वे डूबने लगीं। यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवों पर गिरा और कहा, हे प्रभु मेरे पास से ९ जा मैं पापी मनुष्य हूं। क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने से उसे और उस के साथियों को बहुत १० अचम्भा हुआ। और वैसे ही ज़बदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी जो शमौन के साझी थे अचम्भा हुआ तब यीशु ने शमौन से कहा मत डर अब से तू मनुष्यों ११ को जीवता पकड़ा करेगा। और वे नावों को किनारे पर लाए और सब कुछ छोड़कर उस के पीछे हो लिए ॥

१२ जब वह किसी नगर में था तो देखो वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य था और वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा और बिनती की कि हे प्रभु यदि तू १३ चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है। उस ने हाथ बढ़ा कर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं शुद्ध हो जा और उस १४ का कोढ़ तुरन्त जाता रहा। तब उस ने उसे चिताया कि किसी से न कह पर जाके अपने आप को याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय जो कुछ मूसा १५ ने ठहराया उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो। पर उस की चर्चा और भी फैल गई और भीड़ की भीड़ उस की सुनने को और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिए १६ इकट्ठी हुई। पर वह जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना करता था ॥

१७ और एक दिन वह उपदेश कर रहा था और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे जो गलील और यहूदिया के हर एक गाव से और यरूशलेम से आए थे और चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ उस के साथ १८ थी। और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा था खाट पर लाए और वे उसे भीतर ले जाने १९ और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ़ रहे थे। और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जाने पाए तो उन्हों ने कोठे पर चढ़ के और खपड़े हटाकर उसे खाट २० समेत बीच में यीशु के सामने उतार दिया। उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा, हे मनुष्य तेरे पाप २१ क्षमा हुए। तब शास्त्री और फरीसी बिचार करने लगे कि यह कौन है जो परमेश्वर की निन्दा करता है। परमेश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर सकता है। २२ यीशु ने उन के मन की बातें जानकर उन से कहा कि २३ तुम अपने मनों में क्या विचार कर रहे हो। सहज क्या है क्या यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह २४ कहना कि उठ और चल फिर। पर इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ और अपनी खाट २५ उठाकर अपने घर चला जा। वह तुरन्त उन के सामने उठा और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर परमेश्वर २६ की बड़ाई करता हुआ घर चला गया। तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे और बहुत डर कर कहने लगे कि आज हम ने अनोखी बातें देखीं ॥

२७ और इस के पीछे वह बाहर गया और लेवी नाम एक महसूल लेनेवाले को महसूल की चौकी पर

२८ बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे हो ले। तब वह सब कुछ छोड़ कर उठा और उस के पीछे हो लिया।
२९ और लेवी ने अपने घर में उस के लिए बड़ी जेवनार की और महसूल लेनेवालों और औरों की जो उस के
३० साथ भोजन करने बैठे थे बड़ी भीड़ थी। और फरीसी और उन के शास्त्री उस के चेलों से यह कह कर कुड़कुड़ाने लगे कि तुम महसूल लेनेवालों और पापियों के
३१ साथ क्यों खाते पीते हो। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि वैद्य भले चंगों को नहीं पर बीमारों को अवश्य
३२ है। मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को मन फिराने के
३३ लिए बुलाने आया हूं। और उन्हों ने उस से कहा यूहन्ना के चेले बार बार उपवास और प्रार्थना किया करते हैं और वैसे ही फरीसियों के भी पर तेरे चेले
३४ खाते पीते हैं। यीशु ने उन से कहा क्या तुम बरातियों से जब तक दूलहा उन के साथ रहे उपवास करवा
३५ सकते हो। पर वे दिन आएंगे जिन में दूलहा उन से अलग किया जाएगा तब वे उन दिनों में उपवास
३६ करेंगे। उस ने एक दृष्टान्त भी उन से कहा कि कोई मनुष्य नए पहिरावन में से फाड़ कर पुराने पहिरावन में पैवन्द नहीं लगाता नहीं तो नया फटेगा और वह
३७ पैवन्द पुराने में मेल भी न खाएगा। और कोई नया दाख रस पुरानी मशकों में नहीं भरता नहीं तो नया दाख रस मशकों को फाड़कर बह जाएगा और मशकें
३८ भी नाश हो जाएंगी। पर नया दाख रस नई मशकों में
३९ भरना चाहिए। कोई मनुष्य पुराना दाख रस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है पुराना ही अच्छा है॥

६. फिर विश्राम के दिन वह खेतों से जा रहा था और उस के चेले बालें तोड़ तोड़ कर और हाथों से मल मल कर खाते जाते
२ थे। तब फरीसियों में से कई एक कहने लगे तुम वह काम क्यों करते हो जो विश्राम के दिन करना उचित नहीं।
३ यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा कि दाऊद ने जब वह और उस के साथी भूखे हुए तो
४ क्या किया। वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया और भेंट की रोटियां लेकर खाईं जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं और अपने साथियों
५ को भी दीं। और उस ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र विश्राम के दिन का भी प्रभु है॥
६ किसी और विश्राम के दिन को वह सभा के घर में जाकर उपदेश करने लगा और वहां एक मनुष्य था
जिस का दहिना हाथ सूखा था। शास्त्री और फरीसी उस
७ पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिए उस की ताक में थे कि वह विश्राम के दिन में चङ्गा करेगा कि नहीं। पर
८ वह उन के विचार जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा उठ बीच में खड़ा हो। वह उठ कर खड़ा हुआ।
९ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से यह पूछता हूं विश्राम के दिन क्या उचित है भला करना या बुरा करना प्राण को बचाना या नाश करना।
१० और उस ने चारों ओर उन सब को देखकर उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा। उस ने ऐसा किया और उस का हाथ फिर अच्छा हो
११ गया। पर वे आपे से बाहर होकर आपस में कहने लगे हम यीशु के साथ क्या करें॥
१२ और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात
१३ बिताई। जब दिन हुआ तो उस ने अपने चेलों को बुला कर उन में से बारह चुन लिए और उन को प्रेरित कहा।
१४ और वे ये हैं, शमौन जिस का नाम उस ने पतरस भी रक्खा और उस का भाई अन्द्रियास और याकूब और यूहन्ना
१५ और फिलिप्पुस और बरतुलमै, और मत्ती और तोमा और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जो जेलोतेस कहलाता
१६ है, और याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इसकरियोती
१७ जो उस का पकड़वानेवाला बना। तब वह उन के साथ उतर कर चौरस जगह में खड़ा हुआ और उस के चेलों की बड़ी भीड़ और सारे यहूदिया और यरूशलेम और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बहुतेरे लोग जो उस की सुनने और अपनी बीमारियों से चंगे हो जाने
१८ के लिए उस के पास आए थे। और अशुद्ध आत्माओं के
१९ सताए हुए लोग भी अच्छे किये जाते थे। और सब उसे छूना चाहते थे क्योंकि उस से सामर्थ निकल कर सब को अच्छा करती थी॥
२० तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा धन्य हो तुम जो दीन हो क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा
२१ है। धन्य हो तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तृप्त किये जाओगे धन्य हो तुम जो अब रोते हो क्योंकि हंसोगे।
२२ धन्य हो तुम जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर करेंगे और तुम्हें निकाल देंगे और तुम्हारी निन्दा करेंगे और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट
२३ देंगे। उस दिन आनन्द होकर उछलना क्योंकि देखो तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है, उन के बाप दादे नबियों के साथ वैसा ही किया करते थे।
२४ परन्तु हाय तुम पर जो धनवान् हो क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके।
२५ हाय तुम पर जो अब भरपूर

हो क्योंकि भूखे होगे । हाय तुम पर जो अब हंसते हो
२६ क्योंकि शोक करोगे और रोओगे । हाय तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें । उन के बाप दादे झूठे नबियों के साथ वैसा ही किया करते थे ॥

२७ पर मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं कि अपने शत्रुओं से प्रेम रक्खो जो तुम से बैर करें उन का भला
२८ करो । जो तुम्हें स्राप दें उन को आशिष दो और जो
२९ तुम्हारा अपमान करें उन के लिये प्रार्थना करो । जो तेरे एक गाल पर मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे और जो तेरी दोहर छीन ले उस को कुरता लेने से भी
३० न रोक । जो कोई तुझ से मांगे उसे दे और जो तेरी
३१ वस्तु छीन ले उस से न मांग । और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उन के साथ
३२ वैसा ही करो । यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रक्खो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी
३३ भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं । और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई करते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी भी ऐसा
३४ ही करते हैं । और यदि तुम उन्हें उधार दो जिन से फिर पाने की आस रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं कि उतना ही फिर
३५ पाएं । पर अपने शत्रुओं से प्रेम रक्खो और भलाई करो और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो और तुम्हारे लिए बड़ा फल होगा और तुम परम प्रधान के सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह उन पर जो
३६ धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपाल है । जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है वैसे ही तुम भी दयावन्त
३७ बनो । दोष न लगाओ तो तुम पर भी दोष न लगाया जाएगा दोषी न ठहराओ तो तुम भी दोषी न ठहराए जाओगे । क्षमा करो तो तुम्हारी भी क्षमा की
३८ जाएगी । दिया करो तो तुम्हें भी दिया जाएगा लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा ॥

३९ फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा क्या अंधा अंधे को मार्ग बता सकता है क्या दोनों गड़हे में न
४० गिरेंगे । चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं पर जो कोई सिद्ध
४१ होगा वह अपने गुरु के समान होगा । तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है और अपनी ही आंख
४२ का लट्ठा तुझे नहीं सूझता । और जब तू अपनी ही आंख का लट्ठा नहीं देखता तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है हे भाई ठहर जा तेरी आंख से तिनके को निकाल दूं । हे कपटी पहिले अपनी आंख से लट्ठा निकाल तब जो तिनका तेरे भाई की आंख में है भली भांति देखकर
४३ निकाल सकेगा । कोई अच्छा पेड़ नहीं जो निकम्मा फल लाए और न कोई निकम्मा पेड़ है जो अच्छा फल लाए ।
४४ हर एक पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है क्योंकि लोग झाड़ियों से अंजीर नहीं तोड़ते और न झरबेरी से अंगूर ।
४५ भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है क्योंकि जो मन में भरा है वही उस के मुंह पर आता है ॥

४६ जब तुम मेरा कहा नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु
४७ हे प्रभु कहते हो । जो कोई मेरे पास आता है और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है मैं तुम्हें बताऊंगा वह किस
४८ के समान है । वह उस मनुष्य के समान है जिस ने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नेव डाली और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी पर उसे
४९ हिला न सकी क्योंकि वह पक्का बना था । पर जो सुनकर नहीं मानता वह उस मनुष्य के समान है जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया । जब उस पर धारा लगी तो वह तुरन्त गिर पड़ा और गिरकर उस का सत्यानाश हो गया ॥

७. जब वह लोगों को अपनी सारी बातें सुना चुका तो कफरनहूम में आया ।
२ और किसी सूबेदार का एक दास जो उस का प्रिय था
३ बीमारी से मरने पर था । उस ने यीशु की चर्चा सुन कर यहूदियों के कई पुरनियों को उस से यह बिनती करने को उस के पास भेजा कि आकर मेरे दास
४ को चंगा कर । वे यीशु के पास आकर उस से बड़ी बिनती कर के कहने लगे कि वह इस योग्य है कि तू
५ उस के लिए यह करे, क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है और उसी ने हमारा सभा का घर बनाया है ।
६ यीशु उन के साथ साथ चला पर जब वह घर से दूर न था तो सूबेदार ने उस के पास कई मित्रों के द्वारा कहला भेजा कि हे प्रभु दुख न उठा क्योंकि मैं
७ इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आए । इसी कारण मैं ने अपने आप को इस योग्य भी न समझा कि तेरे पास आऊं पर वचन ही कह तो मेरा सेवक चंगा हो
८ जाएगा । मैं भी पराधीन मनुष्य हूं और सिपाही मेरे हाथ में हैं और जब एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और

९ अपने दास को कि यह कर तो वह करता है। यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया और उस ने मुंह फेरकर उस भीड़ से जो उस के पीछे आ रही थी कहा मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने इस्राईल में भी ऐसा विश्वास नहीं १० पाया। और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर उस दास को चंगा पाया॥

११ थोड़े दिन के पीछे वह नाईन नाम एक नगर को गया और उस के चेले और बड़ी भीड़ उस के साथ १२ जा रही थी। जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा तो देखो एक मुरदे को बाहर लिए जाते थे जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और १३ नगर के बहुतेरे लोग उस के साथ थे। उसे देख कर १४ प्रभु को तरस आया और उस से कहा मत रो। तब उस ने पास आकर अर्थी को छूआ और उठानेवाले ठहर गए १५ तब उस ने कहा हे जवान मैं तुझ से कहता हूं उठ। तब मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा और उस ने उसे उस १६ की मां को सौंप दिया। इस से सब पर भय छा गया और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा नबी उठा है और परमेश्वर ने अपने लोगों १७ पर कृपा दृष्टि की है। और उस के विषय यह बात सारे यहूदिया और आस पास के सारे देश में फैल गई॥

१८ और यूहन्ना को उस के चेलों ने इन सब बातों का १९ समाचार दिया। तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने को भेजा कि आनेवाला २० तू ही है या हम दूसरे की आस रक्खें। उन्हों ने उस के पास आकर कहा यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है कि आनेवाला तू ही है या २१ हम दूसरे की बाट जोहें। उसी घड़ी उस ने बहुतों को बीमारियों और पीड़ाओं और दुष्टात्माओं से छुड़ाया और २२ बहुत से अंधों को आंखें दीं। और उस ने उन से कहा जो कुछ तुम ने देखा और सुना है जाकर यूहन्ना से कह दो कि अंधे देखते लंगड़े चलते फिरते कोढ़ी शुद्ध किए जाते बहिरे सुनते मुरदे जिलाए जाते हैं और कंगालों को २३ सुसमाचार सुनाया जाता है। और धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए॥

२४ जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल दिए तो यीशु यूहन्ना के विषय लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने गए थे क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे २५ को। फिर तुम क्या देखने गए थे क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को। देखो जो भड़कीला वस्त्र पहिनते और २६ सुख बिलास से रहते हैं वे राजभवनों में रहते हैं। तो क्या देखने गए थे क्या किसी नबी को। हां मैं तुम से २७ कहता हूं बरन नबी से भी बड़े को। यह वही है जिस के विषय लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा मार्ग सुधारेगा। २८ मैं तुम से कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है। २९ और सब साधारण लोगों ने सुनकर और महसूल लेनेवालों ने भी यूहन्ना का बपतिसमा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया। ३० पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिसमा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय टाल दिया। ३१ सो मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं वे किस के समान ३२ हैं। वे उन बालकों के समान हैं जो बाज़ार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने बिलाप किया और तुम न रोए। ३३ क्योंकि यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला न रोटी खाता न दाख रस पीता आया और तुम कहते हो उस में दुष्टात्मा है। मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया है और ३४ तुम कहते हो देखो पेटू और पियक्कड़ मनुष्य महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र। ३५ पर ज्ञान अपने सब सन्तानों से सच्चा ठहराया गया है॥

३६ फिर किसी फरीसी ने उस से बिनती की कि मेरे साथ भोजन कर सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा। ३७ और देखो उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जान कर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है संगमरमर के पात्र में अतर लाई। ३८ और उस के पांवों के पास पीछे खड़ी होकर रोती हुई उस के पांवों को आंसुओं से भिगाने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछे और उस के पांव बार बार चूमकर उन पर अतर मला। ३९ यह देखकर वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया था अपने मन में सोचने लगा यदि यह नबी होता तो जान जाता कि यह जो उसे छू रही है सो कौन और कैसी स्त्री है क्योंकि वह पापिनी है। ४० यीशु ने उस से उत्तर दे कहा कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है वह बोला हे गुरु कह। ४१ किसी महाजन के दो देनदार थे एक पांच सौ और दूसरा पचास दीनार[1] धारता था। ४२ जब कि उन के पास पटाने को कुछ न रहा तो उस ने दोनों को क्षमा कर दिया सो ४३ उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रक्खेगा। शमौन ने उत्तर दिया मेरी समझ में वह जिस का उस ने अधिक

(१) देखो मत्ती १८ : २८।

छोड़ दिया[१] । उस ने उस से कहा तू ने ठीक बिचार
४४ किया है । और उस स्त्री की ओर फिरकर उस ने शमौन से कहा क्या तू इस स्त्री को देखता है । मैं तेरे घर में आया तू ने मेरे पांव धोने को पानी न दिया पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगाए और अपने बालों से पोंछे ।
४५ तू ने मुझे चूमा न दिया पर जब से मैं आया तब से
४६ इस ने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा । तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला पर इस ने मेरे पांवों पर अतर मला
४७ है । इसलिये मैं तुझ से कहता हूं कि उस के पाप जो बहुत थे क्षमा हुए कि इस ने तो बहुत प्रेम किया पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ वह थोड़ा प्रेम करता है ।
४८, ४९ और उस ने स्त्री से कहा तेरे पाप क्षमा हुए । तब जो लोग उस के साथ भोजन करने बैठे थे वे अपने अपने मन में सोचने लगे यह कौन है जो पापों को भी क्षमा
५० करता है । पर उस ने स्त्री से कहा तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है कुशल से चली जा ॥

८.

इस के पीछे वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरने
२ लगा । और वे बारह उस के साथ थे और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्टात्माओं से और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं और वे ये हैं मरयम जो मगदलीनी कहलाती
३ थी जिस में से सात दुष्टात्मा निकले थे । और हेरोदेस के भण्डारी खूजा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह और बहुत सी और स्त्रियां ये तो अपनी सम्पत्ति से उस की सेवा करती थीं ॥

४ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई और नगर नगर के लोग उस के पास चले आते थे तो उस ने दृष्टान्त में कहा कि
५ एक बोनेवाला बीज बोने निकला । बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा और रौंदा गया और आकाश के पक्षियों
६ ने उसे चुग लिया । और कुछ चटान पर गिरा और उपजा
७ पर तरी न पाने से सूख गया । कुछ झाड़ियों के बीच में गिरा और झाड़ियों ने साथ साथ बढ़कर उसे दबा लिया ।
८ और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और उग कर सौ गुना फल लाया । यह कह कर उस ने ऊंचे शब्द से कहा जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले ॥

९ उस के चेलों ने उस से पूछा कि यह दृष्टान्त क्या
१० है । उस ने कहा तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दी गई है पर औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता है इसलिये कि वे देखते हुए न देखें और सुनते हुए
११ न समझें । दृष्टान्त यह है बीज तो परमेश्वर का वचन
१२ है । मार्ग के किनारे के वे हैं जिन्हों ने सुना तब शैतान[२] आकर उन के मन में से वचन उठा ले जाता है ऐसा न
१३ हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं । चटान पर के वे हैं कि जब सुनते हैं तो आनन्द से वचन को ग्रहण करते हैं पर जड़ न रखने से वे थोड़ी देर तक विश्वास
१४ रखते हैं और परीक्षा के समय बहक जाते हैं । जो झाड़ियों में गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर होते होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख बिलास में फंस
१५ जाते हैं और उन का फल नहीं पकता । पर अच्छी भूमि में के वे हैं जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं और धीरज से फल लाते हैं ॥

१६ कोई दिया बार के बरतन से नहीं छिपाता न खाट के नीचे रखता है पर दीवट पर रखता है कि भीतर
१७ आनेवाले उजाला पाएं । कुछ छिपा नहीं जो प्रगट न हो और न कुछ गुप्त है जो जाना न जाए और प्रगट न
१८ हो । इसलिये चौकस रहो कि तुम किस रीति से सुनते हो क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और जिस के पास नहीं है उस से वह भी ले लिया जाएगा जो अपना समझता है ॥

१९ उस की माता और उस के भाई उस के पास आए
२० पर भीड़ के कारण उस से भेंट न कर सके । और उस से कहा गया कि तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े
२१ हुए तुझ से मिलना चाहते हैं । उस ने उत्तर दे उन से कहा कि मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं ॥

२२ फिर एक दिन वह और उस के चेले नाव पर चढ़े और उस ने उन से कहा कि आओ झील के पार चलें
२३ सो उन्हों ने नाव खोल दी । पर नाव जब चल रही थी तो वह सो गया और झील पर आंधी आई और
२४ नाव पानी से भरी जाती थी और वे जोखिम में थे । तब उन्हों ने पास आकर उसे जगाया और कहा स्वामी स्वामी हम नाश हुए जाते हैं । तब उस ने उठ कर आंधी को और पानी के हिलकोरों को डांटा और वे थम गये और
२५ चैन हो गया । और उस ने उन से कहा तुम्हारा विश्वास कहां था पर वे डर गए और अचम्भित हो आपस में कहने लगे यह कौन है जो आंधी और पानी को भी आज्ञा देता है और वे उस की मानते हैं ॥

२६ फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुंचे जो उस पार

(१) यू० । क्षमा किया ।

(२) यू० । इबलीस ।

२७ गलील के सामने है। जब वह किनारे पर उतरा तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला जिस में दुष्टात्मा थे और बहुत दिनों से न कपड़े पहिनता न घर में रहता
२८ बरन क़बरों में रहा करता था। वह यीशु को देखकर चिल्लाया और उस के सामने गिरकर ऊंचे शब्द से कहा हे परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु मुझे तुझ से क्या
२९ काम मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे पीड़ा न दे। क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था क्योंकि वह उस पर बार बार प्रबल होता था और यद्यपि लोग उसे सांकलों और बेड़ियों से बांधते थे तौभी वह बंधनों को तोड़ डालता था और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाये फिरता था। यीशु ने उस
३० से पूछा तेरा क्या नाम है उस ने कहा सेना क्योंकि
३१ बहुत दुष्टात्मा उस में पैठ गये थे। और उन्हों ने उस से बिनती की कि हमें अथाह गढ़हे में जाने की आज्ञा न
३२ दे। वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था सो उन्हों ने उस से बिनती की कि हमें उन में पैठने
३३ दे सो उस ने उन्हें जाने दिया। तब दुष्टात्मा उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में पैठे और वह झुण्ड कड़ाड़े पर
३४ से झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा। चरवाहे यह जो हुआ था देखकर भागे और नगर में और गांवों
३५ में जाकर उस का समाचार कहा। और लोग यह जो हुआ था देखने को निकले और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्मा निकले थे उसे यीशु के पांवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए पा कर डर गए।
३६ और देखनेवालों ने उन को बताया कि वह दुष्टात्मा का
३७ सताया हुआ मनुष्य क्योंकर बच गया था। तब गिरासेनियों के आस पास के सारे लोगों ने यीशु से बिनती की कि हमारे यहां से चला जा क्योंकि उन पर बड़ा भय छा
३८ गया था सो वह नाव पर चढ़ के लौट गया। जिस मनुष्य से दुष्टात्मा निकले थे वह उस से बिनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे पर यीशु ने उसे बिदा करके कहा,
३९ अपने घर को लौट कर कह दे कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं। वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए॥

४० जब यीशु लौट रहा था तो लोग उस से आनन्द के साथ मिले क्योंकि वे सब उस की बाट जोह रहे थे।
४१ और देखो याईर नाम एक मनुष्य जो सभा का सरदार था आया और यीशु के पांवों पड़ के उस से बिनती
४२ करने लगा कि मेरे घर चल। क्योंकि उस के बारह बरस की एकलौती बेटी थी और वह मरने पर थी। जब वह जा रहा था तो लोग उस पर गिरे पड़ते थे॥

४३ और एक स्त्री ने जिस को बारह बरस से लोहू बहने का रोग था और जो अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे उठाकर भी किसी के हाथ से अच्छी न हो सकी थी,
४४ पीछे से आकर उस के वस्त्र के आंचल को छूआ और
४५ तुरन्त उस का लोहू बहना थम गया। इस पर यीशु ने कहा मुझे किस ने छूआ जब सब मुकरने लगे तो पतरस और उस के साथियों ने कहा हे स्वामी तुझे भीड़ दबा
४६ रही और तुझ पर गिरी पड़ती है। पर यीशु ने कहा किसी ने मुझे छूआ क्योंकि मैं ने जाना कि मुझ से सामर्थ
४७ निकली है। जब स्त्री ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती तब कांपती हुई आई और उस के पांवों पर गिर कर सब लोगों के सामने बताया कि मैं ने किस कारण से तुझे
४८ छूआ और क्योंकर तुरन्त चंगी हुई। उस ने उस से कहा बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगी किया है कुशल से चली जा॥

४९ वह यह कह ही रहा था कि किसी ने सभा के घर के सरदार के यहां से आकर कहा तेरी बेटी मर गई गुरु
५० को दुख न दे। यीशु ने सुन कर उसे उत्तर दिया मत
५१ डर केवल विश्वास रख तो वह बच जाएगी। घर में आकर उस ने पतरस और यूहन्ना और याकूब और लड़की के माता पिता को छोड़ किसी को अपने साथ भीतर
५२ आने न दिया। और सब उस के लिये रो पीट रहे थे पर
५३ उस ने कहा रोओ मत वह मरी नहीं पर सोती है। वे यह जान कर कि मर गई है उस की हंसी करने लगे।
५४ पर उस ने उस का हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा हे
५५ लड़की उठ। तब उस का प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी फिर उस ने आज्ञा दी कि उसे कुछ खाने को
५६ दिया जाए। उस के माता पिता चकित हुए पर उस ने उन्हें चिताया कि यह जो हुआ है किसी से न कहना॥

९.

फिर उस ने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को
२ दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया। और उन्हें परमेश्वर का राज्य प्रचार करने और बीमारों को अच्छा
३ करने के लिये भेजा। और उस ने उन से कहा मार्ग के लिये कुछ न लेना न लाठी न झोली न रोटी न
४ रुपये न दो दो कुरते। और जिस किसी घर में तुम
५ उतरो वहीं रहो और वहीं से बिदा हो। जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की
६ धूल झाड़ डालो कि उन पर गवाही हो। सो वे निकलकर गांव गांव सुसमाचार सुनाते और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते थे॥

७ और देश की चौथाई का राजा हेरोदेस यह सब सुन कर घबरा गया क्योंकि कितनों ने कहा यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है। ८ और कितनों ने यह कि एलिय्याह दिखाई दिया है और औरों ने यह कि पुराने नबियों में से कोई जी उठा है। ९ पर हेरोदेस ने कहा यूहन्ना का तो मैं ने सिर कटवाया अब यह कौन है जिस के विषय मैं ऐसी बातें सुनता हूं। और उस ने उसे देखना चाहा॥

१० फिर प्रेरितों ने लौटकर जो कुछ उन्हों ने किया था उस को बता दिया और वह उन्हें अलग करके बैतसैदा नाम एक नगर को ले गया। ११ भीड़ यह जानकर उस के पीछे हो ली और वह आनन्द के साथ उन से मिला और उन से परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा और जो चंगे होना चाहते थे उन्हें चंगा किया। १२ जब दिन ढलने लगा तो बारहों ने आकर उस से कहा भीड़ को बिदा कर कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर टिकें और भोजन का उपाय करें क्योंकि हम यहां सुनसान जगह में हैं। १३ उस ने उन से कहा तुम ही उन्हें खाने को दो उन्हों ने कहा हमारे पास पांच रोटियां और दो मछली छोड़ और कुछ नहीं पर हां यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिये भोजन मोल लें तो हो। १४ वे लोग तो पांच हज़ार पुरुषों के लगभग थे। तब उस ने अपने चेलों से कहा उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठा दो। १५ उन्हों ने ऐसा ही किया और सब को बैठा दिया। १६ तब उस ने वे पांच रोटियां और दो मछली लीं और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और तोड़ तोड़कर चेलों को देता गया कि लोगों को परोसें। १७ सो सब खाकर तृप्त हुए और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरी भरकर उठाई॥

१८ जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा था और चेले उस के साथ थे तो उस ने उन से पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं। १९ उन्हों ने उत्तर दिया यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और कोई कोई एलिय्याह और कोई यह कि पुराने नबियों में से कोई जी उठा है। २० उस ने उन से पूछा फिर तुम मुझे क्या कहते हो। पतरस ने उत्तर दिया परमेश्वर का मसीह। २१ तब उस ने उन्हें चिताकर कहा कि यह किसी से न कहना। २२ और उस ने कहा मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है कि वह बहुत दुख उठाए और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीसरे दिन जी उठे। २३ उस ने सब से कहा यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपे को नकारे और दिन दिन अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले। २४ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा पर जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोए वही उसे बचाएगा। २५ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खोए या उस की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा। २६ जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी और अपने पिता की और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा सहित आएगा तो उस से लजाएगा। २७ मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें तब तक मृत्यु का स्वाद न चक्खेंगे॥

२८ इन बातों के कोई आठ दिन पीछे वह पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने को पहाड़ पर गया। २९ जब वह प्रार्थना कर रहा था तो उस के मुंह का रूप और ही हो गया और उस का वस्त्र उजला होकर चमकने लगा। ३० और देखो मूसा और एलिय्याह ये दो पुरुष उस के साथ बातें कर रहे थे। ३१ ये महिमा सहित दिखाई दिए और उस के मरने[1] की चर्चा कर रहे थे जो यरूशलेम में होनेवाला था। ३२ पतरस और उस के साथी नींद में भरे थे और जब अच्छी तरह सचेत हुए तो उस की महिमा और उन दो पुरुषों को जो उस के साथ खड़े थे देखा। ३३ जब वे उस के पास से जाने लगे तो पतरस ने यीशु से कहा हे स्वामी हमारा यहां रहना अच्छा है सो हम तीन मण्डप बनाएं एक तेरे लिये एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये। ३४ वह जानता न था कि क्या कह रहा है। वह यह कह ही रहा था कि एक बादल ने आकर उन्हें छा लिया और जब वे उस बादल से घिरने लगे तो डर गये। ३५ और उस बादल में से यह शब्द निकला कि यह मेरा पुत्र मेरा चुना हुआ है इस की सुनो। ३६ यह शब्द होते ही यीशु अकेला पाया गया। और वे चुप रहे और जो कुछ देखा था उस की कोई बात उन दिनों में किसी से न कही॥

३७ और दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे तो एक बड़ी भीड़ उस से आ मिली। ३८ और देखो भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्ला कर कहा हे गुरु मैं तुझ से बिनती करता हूं कि मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर क्योंकि वह मेरा एकलौता है। ३९ और देख एक दुष्टात्मा उसे पकड़ता है और वह एकाएक चिल्ला उठता है और वह उसे ऐसा मरोड़ता है कि वह मुंह में फेन भर लाता है और उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ता है। ४० और मैं ने तेरे चेलों से बिनती की कि उसे निकालें पर वे न निकाल सके। ४१ यीशु ने उत्तर दिया हे अविश्वासी और हठीले लोगो[2]

(१) यू॰। बिदा होने। (२) यू॰ पीढ़ी।

मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हारी सहूंगा । ४२ अपने पुत्र को यहां ले आ । वह आता ही था कि दुष्टात्मा ने उसे पटककर मरोड़ा पर यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डांटा और लड़के को अच्छा करके उस के ४३ पिता को सौंप दिया । तब सब लोग परमेश्वर की महा-सामर्थ से चकित हुए ॥

४४ पर जब सब लोग उन सारे कामों से जो वह करता था अचम्भा कर रहे थे तो उस ने अपने चेलों से कहा ये बातें तुम्हारे कानों में पड़ी रहें क्योंकि मनुष्य का पुत्र ४५ मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाने को है । पर वे इस बात को न समझते थे और यह उन से छिपी रही कि वे उसे जानने न पाएं और वे इस बात के विषय उस से पूछने से डरते थे ॥

४६ फिर उन में यह विवाद होने लगा कि हम में से ४७ बड़ा कौन है । पर यीशु ने उन के मन का बिचार जान लिया और एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा किया । ४८ और उन से कहा जो कोई मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है । जो तुम सब में छोटे से छोटा है वही बड़ा है ॥

४९ तब यूहन्ना ने कहा हे स्वामी हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम ने उसे मना किया क्योंकि वह हमारे साथ होकर तेरे पीछे ५० नहीं हो लेता । यीशु ने उस से कहा उसे मना मत करो क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं वह तुम्हारी ओर है ॥

५१ जब उस के ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने पर थे तो उस ने यरूशलेम जाने को अपना मन[१] दृढ़ किया । ५२ और उस ने अपने आगे दूत भेजे । वे सामरियों के एक ५३ गांव में गए कि उस के लिये जगह तैयार करें । पर उन लोगों ने उसे उतरने न दिया क्योंकि वह यरूशलेम को ५४ जा रहा था । यह देखकर उस के चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा हे प्रभु क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें कि ५५ आकाश से आग गिरे और उन्हें भस्म कर दे । पर उस ५६ ने फिर कर उन्हें डांटा । और वे किसी और गांव में चले गए ॥

५७ जब वे मार्ग में चले जाते थे तो किसी ने उस से ५८ कहा जहां जहां तू जाएगा मैं तेरे पीछे हो लूंगा । यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की ५९ भी जगह नहीं । उस ने दूसरे से कहा मेरे पीछे हो ले उस ने कहा हे प्रभु मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं । उस ने उस से कहा मरे हुओं को अपने ६० मरे हुओं को गाड़ने दे पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना । एक और ने भी कहा हे प्रभु मैं तेरे पीछे ६१ हो लूंगा पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से बिदा हो आऊं । यीशु ने उस से कहा जो कोई अपना ६२ हाथ हल पर रख कर पीछे देखता है वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं ॥

(१) यू० । मुंह ।

१०

और इन बातों के पीछे प्रभु ने सत्तर और मनुष्य ठहराए और जिस जिस नगर और जगह वह आप जाने पर था वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा । २ और उस ने उन से कहा पक्के खेत बहुत हैं पर मज़दूर थोड़े इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने को मज़दूर भेज दे । ३ जाओ देखो मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं ४ भेड़ियों के बीच में भेजता हूं । न बटुआ न झोली न जूते लो और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो । ५ जिस किसी घर में जाओ पहिले कहो कि इस घर पर ६ कल्याण हो । यदि वहां कोई कल्याण के योग्य होगा तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे ७ पास लौट आएगा । उसी घर में रहो और जो कुछ उन से मिले वही खाओ पीओ क्योंकि मज़दूर को अपनी ८ मज़दूरी मिलनी चाहिए घर घर न फिरना । और जिस नगर में जाओ और वहां के लोग तुम्हें उतारें तो जो ९ कुछ तुम्हारे साम्हने रक्खा जाए खाओ । वहां के बीमारों को चंगा करो और उन से कहो कि परमेश्वर का राज्य १० तुम्हारे निकट आ पहुंचा है । पर जिस नगर में जाओ और वहां के लोग तुम्हें ग्रहण न करें तो उस के बाज़ारों ११ में जाकर कहो कि, तुम्हारे नगर की धूल भी जो हमारे पांवों में लगी है हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं तौ भी यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ १२ पहुंचा है । मैं तुम से कहता हूं कि उस दिन उस नगर १३ की दशा से सदोम की दशा सहने योग्य होगी । हाय ख़ुराजीन हाय बैतसैदा जो सामर्थ के काम तुम में किए गए यदि वे सूर और सैदा में किए जाते तो टाट ओढ़कर १४ और राख में बैठकर वे कब के मन फिराते । पर न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा सहने १५ योग्य होगी । और हे कफरनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा १६ किया जाएगा तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा । जो तुम्हारी सुनता है वह मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता है वह मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे

तुच्छ जानता है वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है ॥

१७ वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे हे प्रभु १८ तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं। उस ने उन से कहा मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा १९ हुआ देख रहा था। देखो मैं ने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि २० न होगी। तौभी इस से आनन्द मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं पर इस से आनन्द हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।

२१ उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया और कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रक्खा और बालकों पर प्रगट किया हां हे पिता क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। २२ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है केवल पिता और पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता केवल पुत्र और वह जिस २३ पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे। और चेलों की ओर फिर कर निराले में कहा, धन्य हैं वे आंखें जो ये बातें २४ जो तुम देखते हो देखती हैं। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुत से नबियों और राजाओं ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें पर न देखीं और जो बातें तुम सुनते हो सुनें पर न सुनीं ॥

२५ और देखो एक व्यवस्थापक उठा और यह कहकर उस की परीक्षा करने लगा कि हे गुरु अनन्त जीवन का २६ वारिस होने के लिये मैं क्या करूं। उस ने उस से कहा २७ कि व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है। उस ने उत्तर दिया कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे जी और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और अपने २८ पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। उस ने उस से कहा २९ तू ने ठीक उत्तर दिया यही कर तो तू जीएगा। पर उस ने अपनी तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा ३० तो मेरा पड़ोसी कौन है। यीशु ने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था कि डाकुओं ने घेरकर उस के कपड़े उतार लिए और मारपीट कर ३१ उसे अधमुआ छोड़ चले गए। और ऐसा हुआ कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था पर उसे देख के कतरा- ३२ कर चला गया। इसी रीति से एक लेवी उस जगह ३३ आया वह भी उसे देख के कतरा कर चला गया। पर एक सामरी बटोही वहां आ निकला और उसे देखकर ३४ तरस खाया। और उस के पास आकर और उस के घावों पर तेल और दाखरस ढालकर पट्टियां बांधी और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया और उस की ३५ सेवा टहल की। दूसरे दिन उस ने दो दीनार[1] निकाल-कर भटियारे को दिए और कहा इस की सेवा टहल करना और जो कुछ तेरा और लगेगा वह मैं लौटने पर तुझे भर ३६ दूंगा। अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था ३७ इन तीनों में से उस का पड़ोसी कौन ठहरा। उस ने कहा वही जिस ने उस पर तरस खाया। यीशु ने उस से कहा जा तू भी ऐसा ही कर ॥

३८ फिर जब वे जा रहे थे तो वह एक गांव में गया और मरथा नाम एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। ३९ और मरियम नाम उस की एक बहिन थी वह प्रभु के ४० पांवों के पास बैठकर उस का वचन सुनती थी। पर मरथा सेवा करते करते घबरा गई और उस के पास आकर कहने लगी हे प्रभु क्या तुझे कुछ सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली छोड़ दी ४१ है सो उस से कह कि मेरी सहायता करे। प्रभु ने उसे उत्तर दिया मरथा हे मरथा तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। पर एक बात[2] अवश्य है और उस उत्तम भाग को मरयम ने चुन लिया है जो उस से छीना न जाएगा ॥

११.

फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। जब वह कर चुका तो उस के चेलों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया वैसे ही तू २ भी हमें सिखा दे। उस ने उन से कहा जब तुम प्रार्थना करो तो कहो हे पिता तेरा नाम पवित्र माना जाए तेरा ३ राज्य आए। हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया ४ कर। और हमारे पापों को क्षमा कर क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में न ला ॥

५ और उस ने उन से कहा तुम में से कौन है कि उस का एक मित्र हो और वह आधी रात को उस के पास जाकर उस से कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटियां ६ दे[3]। क्योंकि एक बटोही मित्र मेरे पास आया है और ७ उस के आगे रखने को मेरे पास कुछ नहीं। और वह

(१) देखो मत्ती १८ : २८।
(२) या०। पर थोड़ी या एक ही वस्तु अवश्य है।
(३) यू०। उधार दे।

भीतर से उत्तर दे कि मुझे दुख न दे अब तो द्वार बन्द है और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं सो मैं उठकर
८ तुझे दे नहीं सकता। मैं तुम से कहता हूं यदि उस का मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे तौभी उस के लाज छोड़कर मांगने के कारण उसे जितनी दरकार हो उतनी
९ उठकर देगा। और मैं तुम से कहता हूं कि मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ
१० तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है वह पाता है और जो खटखटाता है उस के लिए खोला जाएगा।
११ तुम में से ऐसा कौन पिता होगा कि जब उस का पुत्र रोटी मांगे तो उसे पत्थर दे या मछली मांगे तो मछली
१२ के बदले उसे सांप दे या अण्डा मांगे तो उसे
१३ बिच्छू दे। सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के बालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा॥

१४ फिर वह एक गूंगे दुष्टात्मा को निकाल रहा था। जब दुष्टात्मा निकल गया तो गूंगा बोलने लगा और
१५ लोगों ने अचम्भा किया। पर उन में से कितनों ने कहा यह तो शैतान[१] नाम दुष्टात्माओं के प्रधान की
१६ सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है। औरों ने उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह
१७ मांगा। पर उस ने उन के मन की बातें जानकर उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट होती है वह राज्य उजड़ जाता है और जिस घर में फूट होती है वह
१८ नाश हो जाता है। और यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए तो उस का राज्य क्योंकर बना रहेगा। क्योंकि तुम मेरे विषय तो कहते हो कि यह शैतान[१] की सहा-
१९ यता से दुष्टात्मा निकालता है। भला यदि मैं शैतान[१] की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं।
२० इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। पर यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ[२] से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा।
२१ जब बलवन्त मनुष्य हथियार बांधे हुए अपने घर की रखवाली करता है तो उस की संपत्ति बची रहती है।
२२ पर जब उस से बढ़ कर कोई और बलवन्त चढ़ाई करके उसे जीत लेता है तो उस के वे हथियार जिन पर उस का भरोसा था छीन लेता और उस की संपत्ति
२३ लूट कर बांटता है। जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह
२४ बिथराता है। जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाता है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ता फिरता है और जब नहीं पाता तो कहता है कि मैं अपने उसी
२५ घर में जहां से निकला था लौट जाऊंगा। और आकर
२६ उसे झाड़ा बुहारा और सजा सजाया पाता है। तब वह जाकर अपने से और बुरे सात आत्माओं को अपने साथ ले आता है और वे उस में पैठकर बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है॥

२७ जब वह ये बातें कह ही रहा था तो भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से कहा धन्य वह गर्भ जिस में
२८ तू रहा और वे स्तन जो तू ने चूसे। उस ने कहा हां पर धन्य वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं॥

२९ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी होती जाती थी तो वह कहने लगा कि इस समय के लोग[३] बुरे हैं वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई चिन्ह उन्हें न दिया
३० जाएगा। जैसा यूनुस नीनवे के लोगों के लिये चिन्ह ठहरा वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस समय के लोगों[३]
३१ के लिए ठहरेगा। दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के मनुष्यों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी की छोर से आई और देखो यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा
३२ है। नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों[३] के साथ खड़े होकर उन्हें दोषी ठहराएंगे क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुनकर मन फिराया और देखो यहां वह है जो यूनुस से भी बड़ा है॥

३३ कोई मनुष्य दिया बार के तलघरे में या पैमाने[४] के नीचे नहीं रखता पर दीवट पर कि भीतर आनेवाले
३४ उजाला पाएं। तेरे शरीर का दिया तेरी आंख है इसलिये जब तेरी आंख निर्मल है तो तेरा सारा शरीर भी उजाला
३५ है पर जब वह बुरी है तो तेरा शरीर भी अंधेरा है। सो चौकस रहना कि जो उजाला तुझ में है वह अंधेरा न
३६ हो जाए। इसलिये यदि तेरा सारा शरीर उजाला हो और उस का कोई भाग अंधेरा न रहे तो सब का सब ऐसा उजाला होगा जैसा उस समय होता है जब दिया अपनी चमक से तुझे उजाला देता है॥

३७ जब वह बातें कर रहा था तो किसी फरीसी ने उस से बिनती की कि मेरे यहां भोजन कर और वह
३८ भीतर जाकर भोजन करने बैठा। फरीसी ने यह देखकर

(१) यू० बाल जबूल।
(२) यू० उंगली।
(३) यू०। पीढ़ी।
(४) देखो मत्ती ५: १५।

अचम्भा किया कि वह भोजन करने से पहिले नहीं
३९ नहाया। प्रभु ने उस से कहा हे फरीसियो तुम कटोरे
और थाली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो पर तुम्हारे
४० भीतर अंधेर और दुष्टता भरी है। हे निर्बुद्धियो जिस ने
बाहर का भाग बनाया क्या उस ने भीतर का भाग
४१ नहीं बनाया। पर हां भीतरवाली वस्तुओं को दान कर
दो तो देखो सब कुछ तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएगा॥
४२ पर हे फरीसियो तुम पर हाय तुम पोदीने और
सुदाब का और सब भांति के साग पात का दसवां अंश
देते हो पर न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते
हो। चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न
४३ छोड़ते। हे फरीसियो तुम पर हाय तुम सभाओं में मुख्य
४४ मुख्य आसन और बाज़ारों में नमस्कार चाहते हो। हाय
तुम पर क्योंकि तुम उन छिपी क़बरों के समान हो जिन
पर लोग चलते हैं पर नहीं जानते॥
४५ तब एक व्यवस्थापक ने उस को उत्तर दिया कि हे
गुरु इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है।
४६ उस ने कहा हे व्यवस्थापको तुम पर भी हाय तुम ऐसे
बोझ जिन को उठाना कठिन है मनुष्यों पर लादते हो पर
तुम आप उन बोझों को अपनी एक उंगली से भी नहीं
४७ छूते। हाय तुम पर तुम उन नबियों की क़बरें बनाते हो
४८ जिन्हें तुम्हारे ही बाप दादों ने मार डाला था। सो तुम
गवाह हो और अपने बाप दादों के कामों में सम्मत हो
क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की
४९ क़बरें बनाते हो। इसलिये परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा
है कि मैं उन के पास नबियों और प्रेरितों को भेजूंगी और
वे उन में से कितनों को मार डालेंगे और कितनों को
५० सताएंगे। कि जितने नबियों का ख़ून जगत की उत्पत्ति
से बहाया गया है सब का लेखा इस समय के लोगों[1]
५१ से लिया जाय, हाबील के ख़ून से लेकर ज़करयाह के
ख़ून तक जो बेदी और मन्दिर[2] के बीच में घात किया
गया। मैं तुम से सच कहता हूं उस का लेखा इसी समय
५२ के लोगों[1] से लिया जाएगा। हाय तुम व्यवस्थापकों पर
कि तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो ली पर तुम ने आप ही
प्रवेश नहीं किया और प्रवेश करनेवालों को भी रोका॥
५३ जब वह वहां से निकला तो शास्त्री और फरीसी
बहुत पीछे पड़ के छेड़ने लगे कि वह बहुत सी बातों
५४ की चर्चा करे। और उस की घात में लगे रहे कि उस
के मुंह की कोई बात पकड़ें॥

(१) यू०। पीढ़ी। (२) यू०। पवित्र स्थान।

१२. इतने में जब हज़ारों की भीड़ लग गई यहां तक कि एक दूसरे पर गिरा
पड़ता था तो वह सब से पहिले अपने चेलों से कहने
लगा कि फरीसियों के कपटरूपी ख़मीर से चौकस रहना।
२ कुछ ढपा नहीं जो खोला न जाएगा और न कुछ छिपा है
३ जो जाना न जाएगा। इसलिये जो कुछ तुम ने अंधेरे
में कहा है वह उजाले में सुना जाएगा। और जो तुम ने
कोठरियों में कानों कान कहा है वह कोठों पर प्रचार
४ किया जाएगा। पर मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूं
कि जो शरीर को घात करते हैं पर उस के पीछे और
५ कुछ नहीं कर सकते उन से न डरो। मैं तुम्हें चिताता हूं
तुम्हें किस से डरना चाहिए। घात करने के पीछे जिस
को नरक में डालने का अधिकार है उसी से डरो बरन
६ मैं तुम से कहता हूं उसी से डरो। क्या दो पैसे की पांच
गौरैया नहीं बिकतीं तौभी परमेश्वर उन में से एक को भी
७ नहीं भूलता। बरन तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने
८ हुए हैं सो डरो नहीं तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। मैं
तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान ले
उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने
९ मान लेगा। पर जो मनुष्यों के सामने मुझे नकारे वह
१० परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने नकारा जाएगा। जो कोई
मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहे उस का वह
अपराध क्षमा किया जाएगा पर जो पवित्र आत्मा की
११ निन्दा करे उस का अपराध क्षमा न किया जाएगा। जब
लोग तुम्हें सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के
सामने ले जाएं तो चिन्ता न करना कि किस रीति से या
१२ क्या उत्तर दें या क्या कहें। क्योंकि पवित्र आत्मा उसी
घड़ी तुम्हें सिखा देगा कि क्या कहना चाहिए॥
१३ फिर भीड़ में से किसी ने उस से कहा हे गुरु मेरे
१४ भाई से कह कि पिता की संपत्ति मुझे बांट दे। उस ने
उस से कहा हे मनुष्य किस ने मुझे तुम्हारा न्यायी या
१५ बांटनेवाला ठहराया। और उस ने उन से कहा चौकस
रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए
रखना क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की
१६ बहुतायत से नहीं होता। उस ने उन से एक दृष्टान्त
कहा कि किसी धनवान् की भूमि में बड़ी उपज हुई।
१७ तब वह अपने मन में विचार करने लगा क्या करूं
क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं जहां अपना अन्नादि रक्खूं।
१८ और उस ने कहा मैं यह करूंगा मैं अपनी बखारियां
१९ तोड़ कर उन से बड़ी बनाऊंगा। और वहां अपना सब
अन्न और अपनी संपत्ति रक्खूंगा। और अपने प्राण से
कहूंगा हे प्राण तेरे पास बहुत बरसों के लिये बहुत

२० संपत्ति रक्खी है चैन कर खा पी सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा तब जो कुछ तू ने इकट्ठा
२१ किया है वह किस का होगा। ऐसा ही वह भी है जो अपने लिये धन बटोरता परन्तु परमेश्वर के लेखे धनी नहीं॥

२२ फिर उस ने अपने चेलों से कहा इसलिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण की चिन्ता न करो कि हम क्या
२३ खाएंगे न शरीर की कि क्या पहिनेंगे। क्योंकि भोजन
२४ से प्राण और वस्त्र से शरीर बढ़कर है। कौवों को देख लो। वे न बोते हैं न लवते उन के न भण्डार और न खत्ता है तौ भी परमेश्वर उन्हें पालता है। तुम पक्षियों
२५ से कितने बढ़कर हो। तुम में से कौन है जो चिन्ता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी[1] भी बढ़ा सकता
२६ है। सो यदि तुम छोटे से छोटा काम भी नहीं कर सकते तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो।
२७ सोसनों पर ध्यान करो वे कैसे बढ़ते हैं वे न मिहनत करते न कातते हैं पर मैं तुम से कहता हूं कि सुलैमान भी अपने सारे विभव में उन में से एक के बराबर पहिने
२८ हुए न था। यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी ऐसा पहिनाता है तो हे अल्प विश्वासियो वह तुम्हें क्यों न पहिनाएगा।
२९ तुम इस बात की खोज में न रहो कि क्या खाएंगे और
३० क्या पीएंगे और न सन्देह करो। जगत की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं और तुम्हारा पिता
३१ जानता है कि तुम्हें ये वस्तुएं चाहिएं। पर उस के राज्य की
३२ खोज में रहो तो ये वस्तुएं भी तुम्हें दी जाएंगी। हे छोटे झुण्ड मत डर क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है कि
३३ तुम्हें राज्य दे। अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ जो पुराने नहीं होते और स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं जिस के
३४ निकट चोर नहीं जाता और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा॥

३५ तुम्हारी कमरें बंधी रहें और दिये जलते रहें और
३६ तुम उन मनुष्यों के समान बनो जो अपने स्वामी की बाट देख रहे हैं कि वह ब्याह से कब लौटेगा कि जब वह आकर द्वार खटखटाए तो तुरन्त उस के लिये खोल
३७ दें। धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए मैं तुम से सच कहता हूं वह कमर बांध कर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा और पास आकर उन की सेवाटहल करेगा।
३८ यदि वह दूसरे पहर या तीसरे पहर आकर उन्हें जागते पाए तो वे दास धन्य हैं। तुम यह जान रक्खो कि यदि
३९ घर का स्वामी जानता कि चोर किस घड़ी आएगा तो जागता रहता और अपने घर में सेंध लगने न देता।
४० तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आएगा॥

४१ तब पतरस ने कहा हे प्रभु क्या यह दृष्टान्त तू हम
४२ से या सब से कहता है। प्रभु ने कहा वह विश्वास योग्य और बुद्धिमान् भण्डारी कौन है जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर
४३ सीधा दे। धन्य है वह दास जिसे उस का स्वामी आकर
४४ ऐसा ही करते पाए। मैं तुम से सच कहता हूं वह उसे
४५ अपनी सब संपत्ति पर सरदार ठहराएगा। पर यदि वह दास सोचने लगे कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है और दासों और दासियों को मारने पीटने और खाने
४६ पीने और पियक्कड़ होने लगे, तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन कि वह उस की बाट जोहता न रहे और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो आएगा और उसे भारी ताड़ना देकर उस का भाग अविश्वासियों के साथ ठह-
४७ राएगा। सो वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था और तैयार न रहा न उस की इच्छा के अनुसार
४८ चला बहुत मार खाएगा। पर जो न जानता था और मार खाने के योग्य काम किए वह थोड़ी मार खाएगा सो जिसे बहुत दिया गया है उस से बहुत मांगा जाएगा और जिसे बहुत सोंपा गया है उस से बहुत मांगेंगे॥

४९ मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हूं और क्या
५० चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती। मुझे एक बपतिसमा लेना है और जब तक वह न हो ले तब तक
५१ मैं कैसी सकेती में हूं। क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवी पर मिलाप कराने आया हूं मैं तुम से कहता हूं
५२ नहीं बरन फूट। क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में फूट रक्खेंगे तीन दो से और दो तीन से।
५३ पिता पुत्र से और पुत्र पिता से फूट रक्खेगा मां बेटी से और बेटी मां से सास बहू से और बहू सास से फूट रक्खेगी॥

५४ और उस ने भीड़ से भी कहा जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो तो तुरन्त कहते हो कि वर्षा
५५ होगी और ऐसा ही होता है। और जब दक्खिना चलती देखते हो तो कहते हो कि लूह चलेगी और ऐसा ही
५६ होता है। हे कपटियो तुम धरती और आकाश के रूप में भेद कर सकते हो पर इस समय के विषय क्यों
५७ नहीं जानते। और तुम आप ही विचार क्यों नहीं कर

[1] (१) यू०। हाथ।

५८ लेते कि उचित क्या है। जब तू अपने मुद्दई के साथ हाकिम के पास जा रहा है तो मार्ग ही में उस से छूटने का यतन कर ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाए और न्यायी तुझे प्यादे के सौंपे ५९ और प्यादा तुझे बन्धन में डाल दे। मैं तुझ से कहता हूं कि जब तक तू दमड़ी दमड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा॥

१३

उस समय कितने लोग आ पहुंचे और उस से उन गलीलियों की चर्चा करने लगे जिन का लोहू पीलातुस ने उन ही के बलि-२ दानों के साथ मिलाया था। यह सुन उस ने उन के उत्तर दे कहा क्या तुम समझते हो कि ये गलीली और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी बिपत्ति ३ पड़ी। मैं तुम से कहता हूं कि नहीं पर यदि तुम मन न ४ फिराओ तो तुम सब इसी रीति से नाश होगे। या क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरा और वे दब कर मर गए यरूशलेम के ५ और सब रहनेवालों से बढ़कर अपराधी थे। मैं तुम से कहता हूं कि नहीं पर यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब इसी रीति से नाश होगे॥

६ फिर उस ने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी की अंगूर की बारी में एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था ७ वह उस में फल ढूंढ़ने आया पर न पाया। तब उस ने बारी के रखवाले से कहा देख तीन बरस से मैं इस अंजीर के पेड़ से फल ढूंढ़ने आता हूं पर नहीं पाता ८ इसे काट डाल यह भूमि के भी क्यों रोके। उस ने उस के उत्तर दिया कि हे स्वामी इसे इस बरस तो और ९ रहने दे कि मैं इस के चारों ओर खोद कर खाद डालूं। सो आगे के फले तो भला नहीं तो पीछे उसे काट डालना॥

१० विश्राम के दिन वह एक सभा के घर में उपदेश ११ कर रहा था। और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरस से एक दुर्बल करनेवाला दुष्टात्मा लगा था और वह कुबड़ी हो गई थी और किसी रीति से सीधी न हो १२ सकती थी। यीशु ने उसे देखकर बुलाया और कहा हे १३ नारी तू अपनी दुर्बलता से छूट गई। तब उस ने उस पर हाथ रक्खे और वह तुरन्त सीधी हो गई और परमे-१४ श्वर की बड़ाई करने लगी। इसलिये कि यीशु ने विश्राम के दिन उसे अच्छा किया था इस कारण सभा का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा छः दिन हैं जिन में काम करना चाहिए सो उनही दिनों में आकर १५ अच्छे होओ पर विश्राम के दिन में नहीं। यह सुन प्रभु ने उत्तर दे कहा हे कपटियो क्या विश्राम के दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे के थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता। और क्या उचित १६ न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह बरस से बांध रक्खा था विश्राम के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती। जब उस ने ये बातें कहीं तो १७ उस के सब विरोधी लजा गए और सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था आनन्द हुई॥

फिर उस ने कहा परमेश्वर का राज्य किस के समान १८ है और मैं उस की उपमा किस से दूं। वह राई १९ के एक दाने के समान है जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपनी बारी में बोया और वह बढ़कर पेड़ हो गया और आकाश के पक्षियों ने उस की डालियों पर बसेरा किया। उस ने फिर कहा मैं परमेश्वर के राज्य की उपमा किस २० से दूं। वह ख़मीर के समान है जिस के किसी स्त्री ने २१ लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया और होते होते सब ख़मीर हो गया॥

वह नगर नगर और गांव गांव होकर उपदेश २२ करता हुआ यरूशलेम की ओर जा रहा था। और २३ किसी ने उस से पूछा हे प्रभु क्या उद्धार पानेवाले थोड़े हैं। उस ने उन से कहा सकेत द्वार से प्रवेश करने का २४ यतन करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे और न कर सकेंगे। जब घर का स्वामी २५ उठकर द्वार बन्द कर चुका हो और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो हे प्रभु हमारे लिये खोल दे और वह उत्तर दे मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कहां के हो। तब तुम कहने लगोगे कि हम ने तेरे सामने खाया पीया २६ और तू ने हमारे बाज़ारों में उपदेश किया। पर वह २७ कहेगा मैं तुम से कहता हूं मैं नहीं जानता तुम कहां से हो हे कुकर्म करनेवालो तुम सब मुझ से दूर हो। वहां २८ रोना और दांत पीसना होगा जब तुम इब्राहीम और इसहाक और याकूब और सब नबियों के परमेश्वर के राज्य में बैठे और अपने आपको बाहर निकाले हुए देखोगे। और पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन से लोग २९ आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे। और ३० देखो कितने पिछले हैं जो पहिले होंगे और कितने पहिले हैं जो पिछले होंगे॥

उसी घड़ी कितने फरीसियों ने आकर उस से कहा ३१ यहां से निकल कर चला जा क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है। उस ने उन से कहा जाकर ३२ उस लोमड़ी से कह दो कि देख मैं आज और कल दुष्टात्माओं के निकालता और बीमारों के चंगा करता

३३ हूं और तीसरे दिन पूरा करूंगा । तौ भी मुझे आज और कल और परसों चलना अवश्य है क्योंकि हो नहीं ३४ सकता कि कोई नबी यरूशलेम के बाहर मारा जाए । हे यरूशलेम हे यरूशलेम तू जो नबियों को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पत्थरवाह करती है कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है वैसे ही मैं भी ३५ तेरे बालकों को इकट्ठे करूं पर तुम ने न चाहा । देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से कहता हूं जब तक तुम न कहोगे कि धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है तब तक तुम मुझे कभी न देखोगे ॥

१४. फिर वह विश्राम के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर २ में रोटी खाने गया और वे उस की ताक में थे । और देखो एक मनुष्य उस के सामने था जिसे जलन्धर का ३ रोग था । इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा क्या विश्राम के दिन अच्छा करना उचित है कि ४ नहीं पर वे चुप रहे । तब उस ने उसे हाथ लगाकर ५ चंगा किया और जाने दिया । और उन से कहा कि तुम में से ऐसा कौन है जिस का गदहा या बैल कूए में गिरे और वह विश्राम के दिन उसे तुरन्त न निकाल ६ ले । वे इन बातों का उत्तर न दे सके ॥

७ जब उस ने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर मुख्य मुख्य जगहें चुन लेते हैं तो एक दृष्टान्त देकर उन ८ से कहा । जब कोई तुझे ब्याह में बुलाए तो मुख्य जगह में न बैठ ऐसा न हो कि उस ने तुझ से भी ९ किसी बड़े को नेवता दिया हो । और जिस ने तुझे और उसे दोनों को नेवता दिया है आकर तुझ से कहे कि इस को जगह दे और तब तुझे लज्जा खाकर सब से १० नीची जगह में बैठना पड़े । पर जब तू बुलाया जाए तो सब से नीची जगह जा बैठ कि जब वह जिस ने तुझे नेवता दिया है आए तो तुझ से कहे हे मित्र आगे बढ़कर बैठ तब तेरे साथ बैठनेवालों के सामने तेरी बड़ाई ११ होगी । क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा और जो अपने आप को छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा ॥

१२ तब उस ने अपने नेवता देनेवाले से भी कहा जब तू दिन का या रात का भोज करे तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान् पड़ोसियों को न बुला ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें और तेरा बदला १३ हो जाए । पर जब तू भोज करे तो कंगालों टुण्डों लंगड़ों और अंधों को बुला । तब तू धन्य होगा क्योंकि १४ उन के पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं पर तुझे धर्मियों के जी उठने पर बदला मिलेगा ॥

१५ उस के साथ भोजन करनेवालों में से एक ने ये बातें सुनकर उस से कहा धन्य वह जो परमेश्वर के १६ राज्य में रोटी खाएगा । उस ने उस से कहा किसी मनुष्य १७ ने बड़ी जेवनार की और बहुतों को बुलाया । जब भोजन तैयार हो गया तो उस ने अपने दास के हाथ नेवतहरियों को कहला भेजा कि आओ अब भोजन तैयार है । १८ पर वे सब के सब क्षमा मांगने लगे पहिले ने उस से कहा मैं ने खेत मोल लिया है और चाहिए कि उसे देखूं मैं तुझ से बिनती करता हूं मुझे क्षमा करा दे । १९ दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं और उन्हें परखने जाता हूं मैं तुझ से बिनती करता हूं मुझे २० क्षमा करा दे । एक और ने कहा मैं ने ब्याह किया है २१ इसलिये मैं नहीं आ सकता । उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें सुनाईं तब घर के स्वामी ने क्रोध कर अपने दास से कहा नगर के बाज़ारों और गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों टुण्डों लंगड़ों और अंधों को २२ यहां ले आ । दास ने फिर कहा हे स्वामी जैसे तू ने कहा था वैसे ही हुआ है और अब भी जगह है । २३ स्वामी ने दास से कहा सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले आ[१] कि मेरा घर भर जाए । २४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि उन नेवते हुओं में से कोई मेरी जेवनार न चखेगा ॥

२५ और जब बड़ी भीड़ उस के साथ जा रही थी तो उस २६ ने पीछे फिरकर उन से कहा । यदि कोई मेरे पास आए और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता । २७ और जो कोई अपना क्रूस न उठाये और मेरे पीछे न २८ आए वह मेरा चेला नहीं हो सकता । तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो और पहिले बैठकर ख़र्च न जोड़े कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं । २९ ऐसा न हो कि जब नेव डाल कर तैयार न कर सके तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें ३० कि, यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका । ३१ या कौन ऐसा राजा है कि दूसरे राजा से लड़ने जाता हो और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हज़ार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है क्या मैं दस हज़ार लेकर उस का सामना कर सकता हूं कि नहीं । नहीं ३२

(१) या । बिन लाने से मत छोड़ ।

तो उस के दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप
३३ चाहेगा। इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न करे वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
३४ नमक अच्छा है पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए तो वह किस से स्वादित किया जाएगा। वह न भूमि के
३५ न खाद के लिये काम आता है। लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले॥

१५. सब महसूल लेनेवाले और पापी उस के पास आते थे कि उस की सुनें।
२ और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे कि यह तो पापियों से मिलता और उन के साथ खाता है॥

३, ४ तब उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा। तुम में से कौन है जिस की सौ भेड़ें हों और उन में से एक खो जाए तो वह निन्नानवे को जंगल में छोड़कर उस खोई हुई
५ को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे। और जब मिल जाती है तो वह आनन्द से उसे कांधे पर उठा
६ लेता है। और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है मेरे साथ आनन्द करो क्योंकि
७ मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई। मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय स्वर्ग में इतना आनन्द होगा जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय न होता जिन्हें मन फिराने की ज़रूरत नहीं॥

८ या कौन ऐसी स्त्री होगी जिस के पास दस सिक्के[1] हों और एक खो जाए तो वह दिया बार घर बुहार जब तक मिल न जाए जी लगाकर खोजती न रहे।
९ और जब मिल जाता है तो वह सखियों और पड़ोसिनियों को इकट्ठी करके कहती है, मेरे साथ आनन्द करो
१० कि मेरा खोया हुआ सिक्का[1] मिल गया। मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है॥

११ फिर उस ने कहा किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।
१२ उन में से छुटके ने पिता से कहा हे पिता संपत्ति में से
१३ जो भाग मेरा हो वह मुझे दे। उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी। और बहुत दिन न बीते कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया और
१४ वहां लुचपन में अपनी संपत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ उठा चुका तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और
१५ वह कंगाल हो गया। और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा उस ने उसे अपने खेतों में
१६ सूअर चराने को भेजा। और वह चाहता था कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे और
१७ उसे कोई कुछ न देता था। जब वह अपने आपे में आया तब वह कहने लगा मेरे पिता के कितने मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है और मैं यहां भूखों
१८ मरता हूं। मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा हे पिता मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरे
१९ देखते पाप किया है। अब इस लायक़ नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं मुझे अपने एक मज़दूर की नाईं लगा ले।
२० तब वह उठकर अपने पिता के पास चला पर वह अभी दूर ही था कि उस के पिता ने उसे देखकर तरस खाया
२१ और दौड़कर उसे गले लगाया और बहुत चूमा। पुत्र ने उस से कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरे देखते पाप किया है और अब इस योग्य नहीं रहा कि
२२ तेरा पुत्र कहलाऊं। पर पिता ने अपने दासों से कहा झट अच्छे से अच्छा पहिनावा निकाल कर उसे पहिनाओ और उस के हाथ में अंगूठी और पावों में जूती
२३ पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो और
२४ हम खाएं और आनन्द करें। क्योंकि मेरा यह पुत्र मरा था फिर जी गया है खो गया था अब मिला है तब वे
२५ आनन्द करने लगे। पर उस का जेठा पुत्र खेत में था और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा तो गाने
२६ बजाने और नाचने का शब्द सुना। और उस ने एक
२७ टहलुए को बुलाकर पूछा यह क्या हो रहा है। उस ने उस से कहा तेरा भाई आया है और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है इसलिये कि उसे भला चंगा
२८ पाया। यह सुन वह क्रोध से भर गया और भीतर जाना न चाहा पर उस का पिता बाहर आकर उसे
२९ मनाने लगा। उस ने पिता को उत्तर दिया कि देख मैं इतने बरस से तेरी सेवा कर रहा हूं और कभी तेरी आज्ञा न टाली तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।
३० पर जब तेरा यह पुत्र जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा आया तो उस के लिये तू ने पला हुआ बछड़ा
३१ कटवाया। उस ने उस से कहा पुत्र तू सदा मेरे साथ है
३२ और जो कुछ मेरा है सब तेरा ही है। पर आनन्द करना और मगन होना चाहिए था क्योंकि यह तेरा भाई मरा था फिर जी गया खो गया था अब मिला है॥

(१) यू० । द्राखमा । उसका मोल लगभग आठ आने के था।

१६. फिर उस ने चेलों से भी कहा किसी धनवान् का एक भण्डारी था और लोगों ने उस के सामने उस पर यह दोष लगाया २ कि यह तेरी संपत्ति उड़ाए देता है। सो उस ने उसे बुलाकर कहा यह क्या है जो मैं तेरे विषय सुनता हूं। अपने भण्डारीपन का लेखा दे क्योंकि तू आगे को ३ भण्डारी नहीं रह सकता। तब भण्डारी सोचने लगा मैं क्या करूं क्योंकि मेरा स्वामी भण्डारी का काम मुझ से छीने लेता है मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती और ४ भीख मांगने से मुझे लाज आती है। मैं समझ गया कि क्या करूंगा इसलिये कि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें। ५ और उस ने अपने स्वामी के देनदारों में से एक एक को बुलाकर पहिले से पूछा कि तुझ पर मेरे स्वामी का क्या ६ आता है। उस ने कहा सौ मन तेल तब उस ने उस से कहा कि अपनी टीप ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख ७ दे। फिर दूसरे से पूछा तुझ पर क्या आता है उस ने कहा सौ मन गेहूं तब उस ने उस से कहा अपनी टीप ८ लेकर अस्सी लिख दे। स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा कि उस ने चतुराई से काम किया है क्योंकि इस संसार के लाेग अपने समय के लोगों के साथ ज्योति ९ के लोगों से रीति व्यवहारों में बहुत चतुर हैं। और मैं तुम से कहता हूं कि अधर्म्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो कि जब वह जाता रहे तो ये तुम्हें अनन्त १० निवासों में ले लें। जो थोड़े से थोड़े में सच्चा[१] है वह बहुत में भी सच्चा[१] है और जो थोड़े से थोड़े में अधर्म्मी ११ है वह बहुत में भी अधर्मी है। इसलिये जब तुम अधर्म के धन में सच्चे[१] न ठहरे तो सच्चा[१] तुम्हें कौन १२ सोंपेगा। और यदि तुम पराये धन में सच्चे[१] न ठहरे तो १३ जो तुम्हारा है उसे तुम्हें कौन देगा। कोई टहलुआ दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रक्खेगा या एक से मिला रहेगा और दूसरे को हलका जानेगा तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते॥

१४ फरीसी जो लोभी थे ये सब बातें सुनकर उसे ठट्ठों १५ में उड़ाने लगे। उस ने उन से कहा तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराते हो। परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है। जो मनुष्यों के लेखे महान् १६ है वह परमेश्वर के निकट घिनौना है। व्यवस्था और नबी यूहन्ना तक रहे तब से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जाता है और हर कोई उस में बल से प्रवेश करता है। आकाश और पृथिवी का टल जाना १७ व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है। जो १८ कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करता है वह व्यभिचार करता है और जो कोई ऐसी त्यागी हुई स्त्री से ब्याह करता है वह भी व्यभिचार करता है॥

एक धनवान् मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और १९ मलमल पहिनता और दिन दिन सुख बिलास और धूम धाम के साथ रहता था। और लाजर नाम एक २० कंगाल घावों से भरा हुआ उस की डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और चाहता था कि धनवान् की मेज़ पर २१ की जूठन से अपना पेट भरे वरन कुत्ते भी आकर उस के घावों को चाटते थे। वह कंगाल मर गया और स्वर्ग २२ दूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया और वह धनवान् भी मरा और गाड़ा गया। और अधोलोक २३ में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और २४ उस ने पुकार कर कहा हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे कि अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंढी करे क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। पर इब्राहीम ने कहा हे २५ पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीते जी अच्छी वस्तुएं ले चुका है और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं पर अब वह यहां शान्ति पा रहा है और तू तड़प रहा है। और इन २६ सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी खड्ड ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें वे न जा सकें और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उस ने कहा तो हे पिता मैं तुझ २७ से बिनती करता हूं कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं वह उन के सामने इन बातों २८ की गवाही दे ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। इब्राहीम ने उस से कहा उन के पास मूसा २९ और नबियों की पुस्तकें हैं वे उन की सुनें। उस ने कहा ३० नहीं हे पिता इब्राहीम पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए तो वे मन फिराएंगे। उस ने उस से कहा ३१ कि जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उस की न मानेंगे॥

१७. फिर उस ने अपने चेलों से कहा हो नहीं सकता कि ठोकर न आएं पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा वे आती हैं। जो इन छोटों में से किसी एक को ठोकर खिलाता है उस के लिये यह भला होता कि चक्की का पाट उस के २

(१) यू०। बिश्वासयोग्य।

गले में लटकाया जाता और वह समुद्र में डाला
३ जाता। सचेत रहो यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे
४ समझा और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर। यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहे कि मैं पछताता हूं तो उसे क्षमा कर॥

५ तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा हमारा विश्वास
६ बढ़ा। प्रभु ने कहा कि यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता तो तुम इस तूत के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़ कर समुद्र में लग जा तो वह
७ तुम्हारी मान लेता। पर तुम में से ऐसा कौन है जिस का दास हल जोतता या भेड़ें चराता हो और जब वह खेत से आए तो उस से कहे तुरन्त आकर भोजन करने
८ बैठ। और यह न कहे कि मेरी बियारी बना और जब तक मैं खाऊं पीऊं तब तक कमर बांधकर मेरी टहल कर
९ इस के पीछे तू खा पी लेना। क्या वह उस दास का निहोरा मानेगा कि उस ने वे ही काम किए जिस की
१० आज्ञा दी गई थी। इसी रीति से तुम भी जब उन सब कामों को कर चुके जिस की आज्ञा तुम्हें दी गई थी तो कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है॥

११ वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और
१२ गलील के बीच से होकर जा रहा था। किसी गांव में पैठते समय उसे दस कोढ़ी मिले और उन्हों
१३ ने दूर खड़े होकर, ऊंचे शब्द से कहा हे यीशु
१४ हे स्वामी हम पर दया कर। उस ने उन्हें देखकर कहा जाओ और अपने तईं याजकों को दिखाओ और
१५ जाते जाते वे शुद्ध हो गए। तब उन में से एक यह देख कर कि मैं चंगा हो गया हूं ऊंचे शब्द से परमेश्वर की
१६ बड़ाई करता हुआ लौटा। और यीशु के पांवों पर मुंह के बल गिर कर उस का धन्यवाद करने लगा और यह
१७ सामरी था। इस पर यीशु ने कहा क्या दसों शुद्ध न
१८ हुए तो फिर वे नौ कहां हैं। क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला जो परमेश्वर की बड़ाई करता।
१९ तब उस ने उस से कहा उठ कर चला जा तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है॥

२० जब फरीसियों ने उस से पूछा कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा तो उस ने उन को उत्तर दिया कि
२१ परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे कि देखो यहां या वहां है क्योंकि देखो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य में है॥

२२ और उस ने चेलों से कहा वे दिन आएंगे जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन देखना चाहोगे और न देखने पाओगे। लोग तुम से कहेंगे २३ देखो वहां है या देखो यहां है पर तुम चले न जाना और न उन के पीछे हो लेना। क्योंकि जैसे बिजली २४ आकाश की एक ओर से कौन्धकर आकाश की दूसरी ओर चमकती है वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा। पर पहिले अवश्य है कि वह बहुत २५ दुख उठाए और इस समय के लोग उसे तुच्छ ठहराएं। जैसा नूह के दिनों में हुआ था वैसा ही मनुष्य के पुत्र २६ के दिनों में भी होगा। जिस दिन तक नूह जहाज़ पर २७ न चढ़ा उस दिन तक लोग खाते पीते थे और उन में ब्याह शादी होती थी तब जल प्रलय ने आकर उन सब को नाश किया। और जैसा लूत के दिनों में २८ हुआ था कि लोग खाते पीते लेन देन करते पेड़ लगाते और घर बनाते थे। पर जिस दिन लूत सदोम २९ से निकला उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नाश किया, मनुष्य के पुत्र के ३० प्रगट होने का दिन भी ऐसा ही होगा। उस दिन जो ३१ कोठे पर हो और उस का सामान घर में हो वह उसे लेने को न उतरे और वैसे ही जो खेत में हो वह पीछे न लौटे। लूत की पत्नी को स्मरण रक्खो। जो ३२,३३ कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो कोई उसे खोए वह उसे जीता रक्खेगा। मैं तुम से ३४ कहता हूं उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियां एक साथ चक्की पीसती होंगी ३५ एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी[१]। यह सुन उन्हों ने उस से पूछा, हे प्रभु यह कहां ३६ होगा उस ने उन से कहा जहां लोथ होगी वहां गिद्ध इकट्ठे होंगे॥

१८. फिर

उस ने इस के विषय कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा, कि किसी नगर में एक न्यायी था जो न परमेश्वर से २ डरता और न किसी मनुष्य की चिन्ता करता था। और उसी नगर में एक विधवा भी थी जो उस के पास ३ आ आकर कहा करती थी कि मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा। उस ने कितनी देर तक तो न ४ माना पर पीछे अपने जी में कहा यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता और न मनुष्य की चिन्ता करता हूं। तौभी ५

(१) यह पद सब से पुराने हस्तलेखों में नहीं मिलता। दो जन खेत में होंगे एक लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा।

यह विधवा मुझे सताती रहती है इसलिए मैं उस का न्याय चुकाऊंगा ऐसा न हो कि घड़ी घड़ी आकर अन्त ६ को मेरे नाक में दम करे। प्रभु ने कहा सुनो कि यह ७ अधर्मी न्यायी क्या कहता है। सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा जो रात दिन उस की दुहाई देते रहते और क्या वह उन के विषय ८ देर करेगा। मैं तुम से कहता हूं वह तुरन्त उन का न्याय चुकाएगा तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा तो क्या वह पृथिवी पर विश्वास पाएगा॥

९ और उस ने कितनों से जो अपने पर भरोसा रखते थे कि हम धर्मी हैं और औरों को तुच्छ जानते १० थे यह दृष्टान्त कहा कि, दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने गए एक फरीसी और दूसरा महसूल लेनेवाला। ११ फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा कि हे परमेश्वर मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं और मनुष्यों की नाईं अंधेर करनेवाला अन्यायी और व्यभिचारी नहीं और न इस महसूल लेनेवाले के समान १२ हूं। मैं अठवारे में दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी १३ सारी कमाई का दसवां अंश देता हूं। पर महसूल लेनेवाले ने दूर खड़े होकर स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा वरन अपनी छाती पीट पीटकर कहा हे परमेश्वर १४ मुझ पापी पर दया कर[१]। मैं तुम से कहता हूं कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा और जो अपने आप को छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा॥

१५ फिर लोग अपने बच्चों को भी उस के पास लाने लगे कि वह उन पर हाथ रक्खे और चेलों ने देखकर १६ उन्हें डांटा। यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो १७ क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा॥

१८ किसी सरदार ने उस से पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त-१९ जीवन का अधिकारी होने के लिये क्या करूं। यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है। कोई उत्तम २० नहीं केवल एक अर्थात् परमेश्वर। तू आज्ञाओं को तो जानता है कि व्यभिचार न करना खून न करना और चोरी न करना झूठी गवाही न देना अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। उस ने कहा मैं तो २१ इन सब को लड़कपन से मानता आया हूं। यह सुन २२ यीशु ने उस से कहा तुझ में अब भी एक बात की घटी है अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बांट दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले। वह यह सुन कर बहुत उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी २३ था। यीशु ने उसे देखकर कहा धनवानों का परमेश्वर २४ के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है। परमेश्वर के २५ राज्य में धनवान् के प्रवेश करने से ऊंट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है। और सुननेवालों ने कहा २६ तो किस का उद्धार हो सकता है। उस ने कहा जो मनुष्य २७ से नहीं हो सकता वह परमेश्वर से हो सकता है। पतरस २८ ने कहा देख हम तो घर बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं। उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि २९ ऐसा कोई नहीं जिस ने परमेश्वर के राज्य के लिये घर या पत्नी या भाइयों या माता पिता या लड़के बालों को छोड़ दिया हो, और इस समय कई गुना अधिक न पाए ३० और परलोक में अनन्त जीवन॥

उस ने बारहों को साथ लेकर उन से कहा देखो ३१ हम यरूशलेम को जाते हैं और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिये नबियों के द्वारा लिखी गई वे सब पूरी होंगी। क्योंकि वह अन्य जातियों के हाथ सौंपा जाएगा ३२ और वे उसे ठट्ठों में उड़ाएंगे और उस का अपमान करेंगे और उस पर थूकेंगे। और उसे कोड़े मारेंगे और ३३ घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा। और ३४ उन्हों ने इन बातों में से कोई बात न समझी और यह बात उन से छिपी रही और जो कहा जाता था वह उन की समझ में न आया॥

जब वह यरीहो के निकट पहुंचा तो एक अंधा ३५ सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था। और वह भीड़ के चलने की आहट सुनकर पूछने लगा ३६ यह क्या हो रहा है। उन्हों ने उस को बताया कि यीशु ३७ नासरी जा रहा है। तब उस ने पुकार के कहा हे यीशु ३८ दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर। जो आगे जाते ३९ थे वे उसे डांटने लगे कि चुप रहे पर वह और भी पुकारने लगा कि हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर। तब यीशु ने खड़े होकर कहा उसे मेरे पास लाओ ४० और जब वह निकट आया तो उस ने उस से यह पूछा कि तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं उस ने कहा ४१ हे प्रभु यह कि मैं देखने लगूं। यीशु ने उस से कहा ४२ देखने लग तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।

(१) या। प्रायश्चित्त के कारण मुझ पापी पर दया कर।

४३ और वह तुरन्त देखने लगा और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ उस के पीछे हो लिया और सब लोगों ने देखकर परमेश्वर की स्तुति की ॥

१९. वह यरीहो में आकर उस में जा रहा था। २ और देखो ज़क्कई नाम एक मनुष्य था जो महसूल लेनेवालों का सरदार और ३ धनी था। वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है पर भीड़ के कारण देख न सकता था ४ क्योंकि नाटा था। तब उस को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया क्योंकि ५ वह उसी मार्ग से जाने को था। जब यीशु उस जगह पहुंचा तो ऊपर दृष्टि कर उस से कहा हे ज़क्कई झट उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। ६ वह झट उतर कर आनन्द से उसे अपने घर ले गया। ७ यह देखकर सब कुड़कुड़ाकर कहने लगे वह तो एक ८ पापी मनुष्य के यहां उतरा है। ज़क्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा हे प्रभु देख मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूं और यदि किसी से अन्याय करके कुछ ले ९ लिया तो चौगुना फेर देता हूं। तब यीशु ने उस से कहा आज इस घर में उद्धार आया है इसलिये कि यह भी १० इब्राहीम का सन्तान है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है ॥

११ जब वे ये बातें सुन रहे थे तो उस ने एक दृष्टान्त कहा इसलिये कि वह यरूशलेम के निकट था और वे समझते थे कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट हुआ १२ चाहता है। सो उस ने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर १३ देश जाता था कि राजपद पाकर फिर आए। और उस ने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं और उन से कहा मेरे लौट आने तक लेन देन १४ करना। पर उस के नगर के रहनेवाले उस से बैर रखते थे और उस के पीछे दूतों के द्वारा कहला भेजा १५ कि हम नहीं चाहते कि यह हम पर राज्य करे। जब वह राजपद पाकर लौट आया तो उस ने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी अपने पास बुलवाया कि वह जाने कि उन्हों ने लेन देन करने से क्या क्या कमाया। १६ तब पहिले ने आकर कहा हे स्वामी तेरी मोहर ने दस १७ और मोहरें कमाई। उस ने उस से कहा धन्य हे उत्तम दास तुझे धन्य है तू बहुत ही थोड़े में विश्वासी निकला १८ अब दस नगरों पर अधिकार रख। दूसरे ने आकर कहा हे स्वामी तेरी मोहर ने पांच और मोहरें कमाई। १९ उस ने उस से भी कहा तू भी पांच नगरों पर हाकिम २० हो जा। तीसरे ने आकर कहा हे स्वामी देख तेरी २१ मोहर यह है जिसे मैं ने अंगोछे में बांध रक्खी। क्योंकि मैं तुझ से डरता था इसलिये कि तू कठोर मनुष्य है जो तू ने नहीं धरा उसे उठा लेता है और जो तू ने नहीं २२ बोया उसे काटता है। उस ने उस से कहा हे दुष्ट दास मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराता हूं। तू मुझे जानता था कि कठोर मनुष्य हूं जो मैं ने नहीं धरा उसे उठा लेता और जो मैं ने नहीं बोया उसे काटता हूं। २३ तो तू ने मेरे रुपये कोठी में क्यों नहीं रख दिए कि मैं २४ आकर ब्याज समेत ले लेता। और जो लोग निकट खड़े थे उस ने उन से कहा वह मोहर उस से ले लो २५ और जिस के पास दस मोहरें हैं उसे दे दो। उन्हों ने उस से कहा हे स्वामी उस के पास दस मोहरें तो हैं। २६ मैं तुम से कहता हूं कि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और जिस के पास नहीं उस से वह भी जो उस २७ के पास है ले लिया जाएगा। पर मेरे उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूं यहां लाकर मेरे सामने घात करो ॥

२८ ये बातें कहकर वह यरूशलेम की ओर उन के आगे आगे चला ॥

२९ और जब वह जैतून नाम पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास पहुंचा तो उस ने अपने चेलों में से ३० दो को यह कहके भेजा कि, सामने के गांव में जाओ और उस में पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई चढ़ा नहीं बंधा हुआ तुम्हें मिलेगा उसे खोल- ३१ कर लाओ। और यदि कोई तुम से पूछे क्यों खोलते हो ३२ तो यों कह देना कि प्रभु को इस का प्रयोजन है। जो भेजे गये थे उन्हों ने जाकर जैसा उस ने उन से कहा था ३३ वैसा ही पाया। जब वह गदही के बच्चे को खोल रहे थे तो उस के मालिकों ने उन से पूछा इस बच्चे को क्यों ३४ खोलते हो। उन्हों ने कहा प्रभु को इस का प्रयोजन है। ३५ सो वे उस को यीशु के पास ले आए और अपने कपड़े ३६ उस बच्चे पर डालकर यीशु को बैठाया। जब वह जा रहा था तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे। ३७ और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ के उतार पर पहुंचा तो चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ के कामों के लिये जो उन्हों ने देखे थे आनन्दित होकर ३८ बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी कि, धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम से आता है स्वर्ग में ३९ शान्ति और आकाश[१] में महिमा हो। तब भीड़ में से

(१) यू०। ऊंचे से ऊंचे स्थान।

कितने फरीसी उस से कहने लगे हे गुरु अपने चेलों को
४० डांट। उस ने उत्तर दिया कि मैं तुम से कहता हूं यदि
ये चुप रहें तो पत्थर चिल्ला उठेंगे॥

४१ जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस
४२ पर रोया। और कहा क्या ही भला होता कि तू हां तू
ही इस दिन कुशल की बातें जानता पर अब वे तेरी
४३ आंखों से छिपी हैं। वे दिन तो तुझ पर आएंगे कि तेरे
बैरी मोर्चा बांधकर तुझे घेर लेंगे और चारों ओर से
४४ तुझे दबाएंगे। और तुझे और तेरे बालकों को जो तुझ
में हैं मिट्टी में मिलाएंगे और तुझ में पत्थर पर पत्थर न
छोड़ेंगे क्योंकि तू ने वह अवसर जब तुझ पर कृपा दृष्टि
की गई न पहिचाना॥

४५ तब वह मन्दिर में जाकर बेचनेवालों को बाहर
४६ निकालने लगा, और उन से कहा लिखा है कि मेरा
घर प्रार्थना का घर होगा पर तुम ने उसे डाकुओं की
खोह बना दिया है॥

४७ वह मन्दिर में हर दिन उपदेश करता था और
महायाजक और शास्त्री और लोगों के रईस उसे नाश
४८ करने का अवसर ढूंढ़ते थे पर कुछ करने न पाए
क्योंकि सब लोग उस की सुनने में लौलीन थे॥

२०. एक दिन जब वह मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुना रहा था तो महायाजक और शास्त्री पुरनियों
२ के साथ पास आकर खड़े हुए और कहने लगे हमें
बता तू ये काम किस अधिकार से करता है और वह
३ कौन है जिस ने तुझे यह अधिकार दिया है। उस ने
उन को उत्तर दिया मैं भी तुम से यह बात पूछता हूं
४ मुझे बताओ। यूहन्ना का बपतिसमा क्या स्वर्ग की
५ ओर से या मनुष्यों की ओर से था। तब वे आपस में
कहने लगे यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह
६ कहेगा फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की। और
यदि हम कहें मनुष्यों की ओर से तो सब लोग हमें
पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे सचमुच जानते हैं कि यूहन्ना
७ नबी था। सो उन्हों ने उत्तर दिया हम नहीं जानते कि
८ वह कहां से था। यीशु ने उन से कहा तो मैं भी तुम
को नहीं बताता कि मैं ये काम किस अधिकार से
करता हूं॥

९ तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा कि
किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और किसानों को
उस का ठेका दे बहुत दिन तक परदेश में जा रहा।
१० समय पर उस ने किसानों के पास एक दास को भेजा
कि वे दाख की बारी के कुछ फलों का भाग उसे दें पर
११ किसानों ने उसे पीट कर छूछे हाथ लौटा दिया। फिर
उस ने एक और दास को भेजा और उन्हों ने उसे भी
पीटकर और उस का अपमान करके छूछे हाथ लौटा
१२ दिया। फिर उस ने तीसरा भेजा और उन्हों ने उसे भी
१३ घायल करके निकाल दिया। तब दाख की बारी के
स्वामी ने कहा मैं क्या करूं मैं अपने प्रिय पुत्र को
१४ भेजूंगा क्या जाने वे उस का आदर करें। जब किसानों
ने उसे देखा तो आपस में विचार करने लगे कि यह
तो वारिस है आओ हम उसे मार डालें की मीरास
१५ हमारी हो जाए। और उन्हों ने उसे दाख की बारी
से बाहर निकाल कर मार डाला। इसलिये दाख की
१६ बारी का स्वामी उन से क्या करेगा। वह आकर उन
किसानों को नाश करेगा और दाख की बारी औरों को
१७ सौंपेगा। यह सुनकर उन्हों ने कहा ऐसा न हो। उस ने
उन की ओर देखकर कहा क्या लिखा है कि जिस पत्थर
को राजों ने निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा
१८ हो गया। जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह चूर हो
जाएगा और जिस पर वह गिरेगा उस को पीस
डालेगा॥

१९ उसी घड़ी शास्त्रियों और महायाजकों ने उसे
पकड़ना चाहा क्योंकि समझ गए कि उस ने हम पर
२० यह दृष्टान्त कहा पर वे लोगों से डरे। और वे उस की
ताक में लगे और भेदिए भेजे जो धर्म का भेष धरकर
उस की कोई न कोई बात पकड़ें कि उसे हाकिम के
२१ हाथ और अधिकार में सौंप दें। उन्हों ने उस से यह
पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि तू ठीक कहता और
सिखाता है और किसी का पक्षपात नहीं करता बरन
२२ परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है। क्या हमें
२३ कैसर को कर देना उचित है कि नहीं। उस ने उन की
चतुराई ताड़ के उन से कहा एक दीनार[१] मुझे
२४ दिखाओ। इस पर किस की मूर्त्ति और नाम है। उन्हों ने
२५ कहा कैसर का। उस ने उन से कहा तो जो कैसर का
है वह कैसर को और जो परमेश्वर का है पर-
२६ मेश्वर को दो। वे लोगों के सामने उस बात को पकड़
न सके बरन उस के उत्तर से अचम्भित होकर चुप रहे॥

२७ फिर सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना
है ही नहीं उन में से कितनों ने उस के पास आकर
२८ पूछा कि, हे गुरु मूसा ने हमारे लिये यह लिखा है कि
यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए बिना

(१) देखो मत्ती १८ : २८।

सन्तान मर जाए तो उस का भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे।
२९ सो सात भाई थे पहिला भाई ब्याह करके बिना सन्तान
३० मर गया। फिर दूसरे और तीसरे ने भी उस स्त्री को
३१ ब्याह लिया। इसी रीति से सातों बिना सन्तान मर
३२,३३ गये। सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी क्योंकि वह
३४ सातों की पत्नी हुई थी। यीशु ने उन से कहा कि इस
३५ युग के सन्तानों में तो ब्याह शादी होती है। पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे कि उस युग को और मरे हुओं का जी उठना[1] प्राप्त करें उन में ब्याह शादी न
३६ होगी। वे फिर मरने के भी नहीं क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे और जी उठने के सन्तान होने से पर-
३७ मेश्वर के भी सन्तान होंगे। और यह बात कि मरे हुए जी उठते हैं मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट की है कि वह प्रभु को इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक़ का परमेश्वर और याक़ूब का परमेश्वर कहता है।
३८ परमेश्वर तो मरे हुओं का नहीं बरन जीवतों का परमेश्वर
३९ है क्योंकि उस के निकट सब जीते हैं। यह सुन शास्त्रियों में से कितनों ने कहा कि हे गुरु तू ने अच्छा कहा।
४० और उन्हें फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ॥

४१ फिर उस ने उन से पूछा मसीह को दाऊद का
४२ सन्तान क्योंकर कहते हैं। दाऊद आप भजनसंहिता की पुस्तक में कहता है कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा
४३ मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों
४४ की पीढ़ी न कर दूं। दाऊद तो उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का सन्तान क्योंकर ठहरा॥

४५ जब सब लोग सुन रहे थे तो उस ने अपने चेलों
४६ से कहा। शास्त्रियों से चौकस रहो जिन को लम्बे लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना भाता है और जिन्हें बाज़ारों में नमस्कार और सभाओं में मुख्य आसन और जेवनारों
४७ में मुख्य स्थान प्रिय लगते हैं। वे बिधवाओं के घर खा जाते हैं और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं। ये बहुत ही दण्ड पाएंगे॥

२१. उस ने आंख उठा कर धनवानों को अपना अपना दान भण्डार में
२ डालते देखा। और उस ने एक कंगाल बिधवा को भी
३ उस में दो दमड़ियां डालते देखा। तब उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवा ने सब से
४ बढ़कर डाला है। क्योंकि उन सब ने अपनी अपनी बढ़ती में से दान में कुछ डाला है पर इस ने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है॥

५ जब कितने लोग मन्दिर के विषय कह रहे थे कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों से और भेंट की वस्तुओं से
६ संवारा गया है तो उस ने कहा। वे दिन आएंगे जिन में यह सब जो तुम देखते हो उन में से पत्थर पर पत्थर
७ भी यहां न छूटेगा जो ढाया न जाएगा। उन्हों ने उस से पूछा हे गुरु यह कब होगा और ये बातें जब पूरी होने
८ पर होंगी तो उस समय का क्या चिन्ह होगा। उस ने कहा चौकस रहो कि भरमाए न जाओ क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे मैं वही हूं और समय निकट
९ आया है तुम उन के पीछे न जाना। जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चरचा सुनो तो घबरा न जाना क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है पर अन्त तुरन्त न होगा॥

१० तब उस ने उन से कहा जाति पर जाति और
११ राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। बड़े बड़े भूईंडोल होंगे और जगह जगह अकाल और मरियां पड़ेंगी और आकाश से भयंकर बातें और बड़े बड़े चिन्ह प्रगट
१२ होंगे। पर इन सब बातों से पहिले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे और सताएंगे और पंचायतों में सौंपेंगे और जेलखानों में डलवाएंगे और राजाओं और
१३ हाकिमों के सामने ले जाएंगे। पर यह तुम्हारे लिये
१४ गवाही देने का अवसर हो जाएगा। सो अपने अपने मन में ठान रक्खो कि हम पहिले से उत्तर देने की चिन्ता न
१५ करेंगे। क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा कि तुम्हारे सब बिरोधी सामना या खण्डन न कर सकेंगे।
१६ तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुम्ब और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएंगे और तुम में से कितनों को मरवा
१७ डालेंगे। और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से
१८ बैर करेंगे। पर तुम्हारे सिर का एक बाल बांका न
१९ होगा। अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रक्खोगे॥

२० जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ
२१ देखो तो जानो कि उस का उजड़ जाना निकट है। तब जो यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएं और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं और जो
२२ गांवों में हों वे उस में न जाएं। क्योंकि पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी हो
२३ जाएंगी। उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी उन के लिये हाय हाय क्योंकि देश में बड़ा क्लेश
२४ और इन लोगों पर क्रोध होगा। वे तलवार के कौर

(१) या। मृतकोत्थान।

हो जाएंगे और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा । २५ सूरज और चांद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे और पृथिवी पर देश देश के लोगों को संकट होगा और समुद्र और लहरों के गरजने से घबराहट होगी । २६ और डर के मारे और संसार पर आनेवाली बातों की बाट देखने से लोगों के जी में जी न रहेगा २७ क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी । तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ २८ बादल पर आते देखेंगे । जब ये बातें होने लगें तो सीधे होकर अपने सिर उठाना क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा ॥

२९ उस ने उन से एक दृष्टान्त भी कहा कि अंजीर ३० के पेड़ और सब पेड़ों को देखो । जब उन की कोंपलें निकलती हैं तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो कि ३१ धूपकाल निकट है । इसी रीति से जब तुम ये बातें होते देखो तब जानो कि परमेश्वर का राज्य निकट ३२ है । मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें न हो लें तब तक यह लोग[1] जाते ३३ न रहेंगे । आकाश और पृथिवी टल जाएंगे पर मेरी बातें कभी न टलेंगी ॥

३४ सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालपन और इस जीवन की चिन्ताओं से भारी हो जाएं और वह दिन तुम पर फन्दे की नाईं अचानक ३५ आ पड़े । क्योंकि वह सारी पृथिवी के सब रहनेवालों ३६ पर आ पड़ेगा । इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली बातों से बचने के और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो ॥

३७ और वह दिन को मन्दिर में उपदेश करता था और रात को बाहर जाकर जैतून नाम पहाड़ पर रहा ३८ करता था । और बड़े तड़के सब लोग उस की सुनने को मन्दिर में उस के पास आया करते थे ॥

२२.

अखमीरी रोटी का पर्ब्ब जो फ़सह कहलाता है निकट था । २ और महायाजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उस को क्योंकर मार डालें पर वे लोगों से डरते थे ॥

३ तब शैतान यहूदा में समाया जो इस्करियोती कहलाता है और जो बारह चेलों में गिना जाता था । ४ उस ने जाकर महायाजकों और पहरुओं के सरदारों के साथ बातचीत की कि उस को क्योंकर उन के हाथ पकड़वाए । ५ वे आनन्दित हुए और उसे रुपये देने का वचन दिया । ६ उस ने मान लिया और अवसर ढूंढ़ने लगा कि जब भीड़ न रहे तो उसे उन के हाथ पकड़वा दे ॥

७ तब अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का दिन आया जिस में फ़सह का मेमना मारना चाहिए था । ८ और उस ने पतरस और यूहन्ना को यह कहके भेजा कि जाकर हमारे खाने के लिये फ़सह तैयार करो । ९ उन्हों ने उस से पूछा तू कहां चाहता है कि हम तैयार करें । १० उस ने उन से कहा देखो नगर में जाते ही एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा । जिस घर में वह जाए तुम उस के पीछे हो लेओ । ११ और उस घर के स्वामी से कहो गुरु तुझ से कहता है कि पाहुनशाला जिस में मैं अपने चेलों के साथ फ़सह खाऊं कहां है । १२ वह तुम्हें एक सजी सजाई बड़ी अटारी दिखा देगा वहां तैयारी करना । १३ उन्हों ने जाकर जैसा उस ने कहा था वैसा ही पाया और फ़सह तैयार किया ॥

१४ जब घड़ी पहुंची तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा । १५ और उस ने उन से कहा मुझे बड़ी लालसा थी कि दुख भोगने से पहिले यह फ़सह तुम्हारे साथ खाऊं । १६ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा । १७ तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और कहा इस को लो और आपस में बांट लो । १८ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा । १९ फिर उस ने रोटी ली और धन्यवाद करके तोड़ी और उन को यह कहते हुए दी कि यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी जाती है मेरे स्मरण के लिये यही किया करो । २० इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी यह कहते हुए दिया कि यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है । २१ पर देखो मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेज पर है । २२ क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा ठहराया गया जाता ही है पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा वह पकड़वाया जाता है । २३ तब वे आपस में पूछ पाछ करने लगे कि हम में से कौन है जो यह काम करेगा ॥

२४ उन में यह विवाद भी हुआ कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है । २५ उस ने उन से कहा अन्य जातियों

(१) या । यह पीढ़ी जाती न रहेगी ।

के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन पर अधि-
२५ कार रखते हैं वे उपकारक कहलाते हैं। पर तुम ऐसे न
होना बरन जो तुम में बड़ा है वह छोटे की नाईं और
२७ जो प्रधान है वह टहलुए की नाईं बने॥ बड़ा कौन है
भोजन पर बैठनेवाला या टहलुआ? क्या भोजन पर बैठने-
वाला नहीं पर मैं तुम्हारे बीच में टहलुए की नाईं हूं।
२८ तुम ही हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे साथ लगातार
२९ रहे। और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया है
३० वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूं, कि तुम मेरे
राज्य में मेरी मेज़ पर खाओ पीओ और सिंहासनों पर
३१ बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो। शमौन
हे शमौन देख शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया कि
३२ गेहूं की नाईं फटके। पर मैं ने तेरे लिये बिनती की कि
तेरा विश्वास जाता न रहे और जब तू फिरे तो अपने
३३ भाइयों को स्थिर करना। उस ने उस से कहा हे प्रभु
मैं तेरे साथ जेलखाने जाने और मरने को भी तैयार हूं।
३४ उस ने कहा हे पतरस मैं तुझ से कहता हूं कि आज ही
मुर्ग बांग न देगा कि तू तीन बार मुझ से मुकर कर
कहेगा कि मैं उसे नहीं जानता॥

३५ और उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बटुए
और झोली और जूते बिना भेजा तो क्या तुम को
३६ किसी वस्तु की घटी हुई। उन्हों ने कहा किसी की नहीं।
उस ने उन से कहा पर अब जिस के पास बटुआ हो
वह उसे ले और वैसे ही झोली भी और जिस के पास
तलवार न हो वह अपने कपड़े बेच कर एक मोल ले।
३७ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जो लिखा है कि वह
अपराधियों के साथ गिना गया उस का मुझ में पूरा
होना अवश्य है क्योंकि मेरे विषय की बातें पूरी होने
३८ पर हैं। उन्हों ने कहा हे प्रभु देख यहां दो तलवार हैं।
उस ने उन से कहा बहुत हैं॥

३९ तब वह बाहर निकलकर अपनी रीति के अनुसार
ज़ैतून पहाड़ पर गया और चेले उस के पीछे हो लिए।
४० उस जगह पहुंचकर उस ने उन से कहा प्रार्थना करो कि
४१ तुम परीक्षा में न पड़ो। और वह आप उन से अलग ढेला
फेंकने के टप्पे भर गया और घुटने टेक कर प्रार्थना करने
४२ लगा कि, हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे
पास से हटा ले तौभी मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो।
४३ तब स्वर्ग से एक दूत जो उसे सामर्थ देता था उस को
४४ दिखाई दिया। और वह बड़े संकट में होकर और भी लौ
लगाकर प्रार्थना करने लगा और उस का पसीना लोहू के
४५ थक्के की नाईं भूमि पर गिर रहा था। तब वह प्रार्थना
से उठा और अपने चेलों के पास आकर उन्हें उदासी
के मारे सोते पाया। और उन से कहा क्यों सोते हो उठो ४६
प्रार्थना करो कि परीक्षा में न पड़ो॥

वह यह कह ही रहा था कि देखो एक भीड़ आई ४७
और बारहों में से एक जिस का नाम यहूदा था उन के
आगे आगे आ रहा था और यीशु का चूमा लेने को उस
के पास आया। यीशु ने उस से कहा क्या तू मनुष्य के ४८
पुत्र को चूमा लेकर पकड़वाता है। उस के साथियों ने ४९
जब देखा कि क्या होनेवाला है तो कहा हे प्रभु क्या हम
तलवार चलाएं। और उन में से एक ने महायाजक के ५०
दास पर चलाकर उस का दहिना कान उड़ा दिया। इस ५१
पर यीशु ने कहा अब बस करो[१] और उस का कान छूकर
उसे अच्छा किया। तब यीशु ने महायाजकों और मन्दिर ५२
के पहरुओं के सरदारों और पुरनियों से जो उस पर
चढ़ आए थे कहा क्या तुम मुझे डाकू जानकर तलवारें
और लाठियां लिए हुए निकले हो। जब मैं मन्दिर में हर ५३
दिन तुम्हारे साथ था तो तुम ने मुझ पर हाथ न डाला
पर यह तुम्हारी घड़ी है और अंधेरे का अधिकार॥

वे उसे पकड़ के ले चले और महायाजक के घर में ५४
लाए और पतरस दूर दूर पीछे पीछे चलता था। जब ५५
वे आंगन में आग सुलगाकर इकट्ठे बैठे तो पतरस भी
उन के बीच में बैठ गया। और एक लौंडी उसे आग के ५६
उजाले में बैठे देखकर और उस की ओर ताककर कहने
लगी यह भी उस के साथ था। वह उस से मुकर गया ५७
और कहा हे नारी मैं उसे नहीं जानता। थोड़ी देर पीछे ५८
किसी और ने उसे देखकर कहा तू भी उन्हीं में से है पतरस
ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं। घड़ी एक बीते और कोई ५९
दृढ़ता से कहने लगा सचमुच यह भी उस के साथ था
क्योंकि गलीली है। पतरस ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं ६०
जानता तू क्या कहता है। वह कह ही रहा था कि तुरन्त
मुर्ग़ ने बांग दी। तब प्रभु ने फिरकर पतरस की ओर ६१
देखा और पतरस को प्रभु की उस बात की सुध आई
जो उस ने कही थी कि आज मुर्ग़ के बांग देने से पहिले
तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। और वह बाहर ६२
निकलके फूट फूट कर रोने लगा॥

जो मनुष्य यीशु को पकड़े थे वे उसे ठट्ठों में उड़ाकर ६३
पीटने लगे। और उस की आंखें ढांपकर उस से पूछा ६४
कि नबूवत करके बता तुझे किस ने मारा। और उन्हों ने ६५
बहुत सी और भी निन्दा की बातें उस के विरोध में कहीं॥

जब दिन हुआ तो लोगों के पुरनिए और महा- ६६
याजक और शास्त्री इकट्ठे हुए और उसे अपनी महा-

---

(१) या। यहां तक रहने दो।

६७ सभा में लाकर पूछा, यदि तू मसीह है तो हम से कह दे। उस ने उन से कहा यदि मैं तुम से कहूं तो प्रतीति ६८, ६९ न करोगे, और यदि पूछूं तो उत्तर न दोगे। पर अब से मनुष्य का पुत्र सर्व्वशक्तिमान् परमेश्वर की दहिनी ओर बैठा रहेगा। सब ने कहा तो क्या तू ७० परमेश्वर का पुत्र है। उस ने उन से कहा तुम आप ७१ कहते हो क्योंकि मैं हूं। तब उन्हों ने कहा अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है क्योंकि हम ने आप ही उस के मुंह से सुना है॥

२३. तब सारी सभा उठकर उसे पीलातुस के २ पास ले गई। और वे यह कह कर उस पर दोष लगाने लगे कि हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते और अपने आप ३ को मसीह राजा कहते हुए सुना। पीलातुस ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है। उस ने उसे उत्तर ४ दिया कि तू आप ही कह रहा है। तब पीलातुस ने महायाजकों और लोगों से कहा मैं इस मनुष्य में कुछ ५ दोष नहीं पाता। पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे यह गलील से लेकर यहां तक सारे यहूदिया में उपदेश ६ करके लोगों को उसकाता है। यह सुनकर पीलातुस ने ७ पूछा क्या यह मनुष्य गलीली है। और यह जानकर कि वह हेरोदेस की रियासत का है उसे हेरोदेस के पास भेज दिया कि उन दिनों वह भी यरूशलेम में था॥

८ हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही खुश हुआ क्योंकि वह बहुत दिनों से उस को देखना चाहता था इसलिये कि उस के विषय सुना था और उस का ९ कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था। वह उस से बहुतेरी बातें पूछता रहा पर उस ने उस को कुछ १० उत्तर न दिया। और महायाजक और शास्त्री खड़े हुए ११ तन मन से उस पर दोष लगाते रहे। तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उस का अपमान कर ठट्ठों में उड़ाया और भड़कीला वस्त्र पहिनाकर उसे पीलातुस के पास लौटा दिया। उसी दिन पीलातुस और हेरोदेस १२ मित्र हो गए। इस से पहिले वे एक दूसरे के बैरी थे।

१३ पीलातुस ने महायाजकों और सरदारों और १४ लोगों को बुलाकर उन से कहा, तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो और देखो मैं ने तुम्हारे सामने उस की जांच की पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो उन बातों १५ के विषय मैं ने उस में कुछ भी दोष नहीं पाया। न हेरोदेस ने क्योंकि उस ने उसे हमारे पास लौटा दिया है और देखो उस से ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहरता। सो मैं उसे पिटवाकर १६ छोड़ देता हूं। सब मिलकर चिल्ला उठे कि इस का काम १८ तमाम कर और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे। यही १९ किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था और खून के कारण जेलखाने में डाला गया था। पर पीलातुस २० ने यीशु को छोड़ने की इच्छा कर लोगों को फिर समझाया। पर उन्हों ने चिल्लाकर कहा कि उसे क्रूस पर चढ़ा २१ क्रूस पर। उस ने तीसरी बार उन से कहा क्यों उस ने २२ कौन सी बुराई की है। मैं ने उस में मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई इसलिये मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं। पर वे चिल्ला चिल्लाकर पीछे पड़ गए कि वह २३ क्रूस पर चढ़ाया जाए और उन का चिल्लाना प्रबल हुआ। सो पीलातुस ने आज्ञा दी कि उन के मांगने २४ के अनुसार किया जाए। और उस ने उस मनुष्य को २५ जो बलवे और खून के कारण जेलखाने में डाला गया था और जिसे वे मांगते थे छोड़ दिया और यीशु को उन की इच्छा के अनुसार सौंप दिया॥

जब वे उसे लिए जाते थे तो उन्हों ने शमौन नाम २६ एक कुरेनी को जो गांव से आता था पकड़ के उस पर क्रूस लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे पीछे ले चले॥

लोगों की बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली और २७ बहुत सी स्त्रियां भी जो उस के लिये छाती पीटतीं और विलाप करती थीं। यीशु ने उन की ओर फिरकर कहा २८ हे यरूशलेम की पुत्रियो मेरे लिए मत रोओ पर अपने और अपने बालकों के लिए रोओ। क्योंकि देखो वे दिन २९ आते हैं जिन में कहेंगे धन्य वे जो बांझ हैं और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्हों ने दूध न पिलाया। उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम पर गिरो ३० और टीलों से कि हमें ढांप लो। क्योंकि जब वे हरे ३१ पेड़ के साथ ऐसा करते हैं तो सूखे के साथ क्या न किया जाएगा॥

वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्म्मी थे उस के ३२ साथ घात करने को ले चले॥

जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे ३३ तो उन्हों ने वहां उसे और उन कुकर्मियों को भी एक को दहिनी और दूसरे को बाईं ओर क्रूसों पर चढ़ाया। तब यीशु ने कहा हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि ३४ जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। और उन्हों ने चिट्ठियां डालकर उस के कपड़े बांट लिये। लोग खड़े खड़े ३५ देख रहे थे और सरदार भी ठट्ठा कर करके कहते थे कि इस ने औरों को बचाया यदि यह परमेश्वर का मसीह

और उस का चुना हुआ है तो अपने आप को बचा ले। ३६ सिपाही भी पास आकर और सिरका देकर ३७ उस का ठट्ठा करके कहते थे, यदि तू यहूदियों का राजा ३८ है तो अपने आप को बचा। और उस के ऊपर एक पत्र भी लगा था कि यह यहूदियों का राजा है॥

३९ जो कुकर्मी लटकाए गए थे उन में से एक ने उस की निन्दा करके कहा क्या तू मसीह नहीं तो अपने आप ४० को और हमें बचा। इस पर दूसरे ने, उसे डांटकर कहा क्या तू परमेश्वर से भी कुछ नहीं डरता। तू भी तो वही ४१ दण्ड पा रहा है। और हम तो न्याय, अनुसार दण्ड पा रहे हैं क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं ४२ पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया। तब उस ने कहा हे यीशु जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुध ४३ लेना। उस ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा॥

४४ और लगभग दो पहर से तीसरे पहर तक सारे ४५ देश में अंधेरा छाया रहा। और सूरज का उजाला जाता रहा और मन्दिर का परदा बीच से फट गया। ४६ और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं और यह कह ४७ कर प्राण छोड़ा। सूबेदार ने जो कुछ हुआ था देख कर परमेश्वर की बड़ाई की और कहा निश्चय यह ४८ मनुष्य धर्मी था। और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई थी सब जो हुआ था देखकर छाती पीटती हुई ४९ लौट गई। और उस के सब जान पहचान और जो स्त्रियां गलील से उस के साथ आई थीं दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थीं॥

५० और देखो यूसुफ नाम एक मन्त्री जो उत्तम और ५१ धर्मी पुरुष, और उन के बिचार और उन के इस काम से प्रसन्न न था और वह यहूदियों के नगर अरिमतियाह का रहनेवाला और परमेश्वर के राज्य की बाट जोहने- ५२ वाला था। उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की ५३ लोथ मांग ली। और उसे उतारकर चादर में लपेटा और एक क़बर में रक्खा जो चटान में खोदी हुई थी और उस में कोई कभी न रक्खा गया था। ५४ वह तैयारी का दिन था और बिश्राम का दिन होने पर ५५ था। और उन स्त्रियों ने जो उस के साथ गलील से आई थीं पीछे पीछे जाकर उस क़बर को देखा और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रक्खी गई। ५६ और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और अतर तैयार किया और बिश्राम के दिन तो उन्हों ने आज्ञा के अनुसार बिश्राम किया॥

२४. पर अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्हों ने तैयार की थीं ले के क़बर पर आईं। २ और उन्हों ने पत्थर को क़बर पर से लुढ़का हुआ पाया ३ और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ न पाई। ४ जब वे इस बात से हक्का बक्का हो रही थीं तो देखो, दो पुरुष झलकते वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े ५ हुए। जब वे डर गईं और धरती की ओर मुंह झुकाए रहीं तो उन्हों ने उन से कहा तुम जीवते को ६ मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं पर जी उठा है स्मरण करो कि उस ने गलील में रहते हुए तुम ७ से कहा था। अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए और क्रूस पर चढ़ाया जाए ८ और तीसरे दिन जी उठे। तब उस की बातें उन को ९ स्मरण आईं। और क़बर से लौटकर उन्हों ने उन ग्यारहों को और और सब को ये सब बातें बता दीं। १० जिन्हों ने प्रेरितों से ये बातें कहीं वे मरयम मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की माता मरयम और उन के ११ साथ की और स्त्रियां थीं। पर उन की बातें उन्हें कहानी सी समझ पड़ीं और उन्हों ने उन की प्रतीति न की। १२ तब पतरस उठकर क़बर पर दौड़ गया और झुककर केवल कपड़े पड़े देखे और जो हुआ था उस से अचम्भा करता हुआ अपने घर चला गया॥

१३ देखो उसी दिन उन में से दो जन इम्माऊस नाम एक गांव को जा रहे थे जो यरूशलेम से कोस चार १४ एक पर था। और वे इन सब बातों पर जो हुईं थीं १५ आपस में बातचीत करते जाते थे। और जब वे बात- चीत और पूछताछ कर रहे थे तो यीशु आप पास आकर १६ उन के साथ हो लिया। पर उन की आंखें ऐसी बन्द १७ कर दी गई थीं कि उसे पहचान न सके। उस ने उन से पूछा ये क्या बातें हैं जो तुम चलते चलते आपस १८ में करते हो वे उदास से खड़े रह गये। यह सुन कर उन में से क्लियुपास नाम एक जन ने कहा क्या तू यरू- शलेम में अकेला परदेशी है जो नहीं जानता कि इन १९ दिनों में उस में क्या क्या हुआ है। उस ने उन से पूछा कौन सी बातें। उन्हों ने उस से कहा यीशु नासरी के विषय जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम २० और वचन में सामर्थी नबी था। और महायाजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए और उसे क्रूस पर चढ़वाया। २१ पर हमें आशा थी कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा और इन सब बातों को छोड़ इस बात को हुए

२२ तीसरा दिन है। और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें चकित कर दिया है जो भोर को क़बर पर गईं।
२३ और जब उस की लोथ न पाई तो यह कहती हुई आईं कि हम ने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया जिन्हों ने
२४ कहा कि वह जीता है। तब हमारे साथियों में से कई एक क़बर पर गए और जैसा स्त्रियों ने कहा था वैसा
२५ ही पाया पर उस को न देखा। तब उस ने उन से कहा हे निर्बुद्धियो और नबियों की सब बातों पर विश्वास
२६ करने में मन्दमतियो। क्या अवश्य न था कि मसीह ये
२७ दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे। तब उस ने मूसा से और सब नबियों से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में अपने विषय की बातों का अर्थ उन्हें समझा
२८ दिया। इतने में वे उस गांव के पास पहुंचे जहां वे जा रहे थे और उस के ढग से ऐसा जान पड़ा कि आगे बढ़ा
२९ चाहता है। पर उन्हों ने यह कह कर उसे रोका कि हमारे साथ रह क्योंकि सांझ हो चली और दिन अब बहुत ढल गया है। तब वह उन के साथ रहने को
३० भीतर गया। जब वह उन के साथ भोजन करने बैठा तो उस ने रोटी लेकर धन्यवाद किया और उसे तोड़
३१ कर उन को देने लगा। तब उन की आंखें खुल गईं और उन्हों ने उसे पहचान लिया और वह उन की
३२ आंखों से छिप गया। उन्हों ने आपस में कहा जब वह मार्ग में हम से बातें करता था और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था तो क्या हमारे मन
३३ में उमंग न आई। वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम को लौट गए और उन ग्यारहों और उन के साथियों को
३४ इकट्ठे पाया। वे कहते थे प्रभु सचमुच जी उठा है और
३५ शमौन को दिखाई दिया है। तब उन्हों ने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्हों ने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना॥

३६ वे ये बातें कह ही रहे थे कि वह आप ही उन के बीच में आ खड़ा हुआ और उन से कहा तुम्हें शान्ति मिले। पर वे घबरा गये और डर गये और
३७ समझे कि हम किसी भूत को देखते हैं। उस ने उन से
३८ कहा क्यों घबराते हो और तुम्हारे मन में क्यों सन्देह
३९ होते हैं। मेरे हाथ और मेरे पांव देखो कि मैं ही हूं मुझे छूकर देखो क्योंकि आत्मा के हाड़ मांस नहीं
४० होता जैसा मुझ में देखते हो। यह कहकर उस ने उन्हें
४१ अपने हाथ पांव दिखाये। जब आनन्द के मारे उन को प्रतीति न हुई और अचरज करते थे तो उस ने उन से
४२ पूछा क्या यहां तुम्हारे पास कुछ भोजन है। उन्हों ने
४३ उसे भूनी मछली का टुकड़ा दिया। उस ने लेकर उन
४४ के सामने खाया। फिर उस ने उन से कहा ये मेरी वे बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और नबियों और भजनों की पुस्तकों में मेरे
४५ विषय लिखी हैं सब पूरी हों। तब उस ने पवित्र शास्त्र
४६ बूझने के लिये उन की समझ खोली। और उन से कहा यों लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा और तीसरे दिन
४७ मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का
४८ प्रचार उस के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब
४९ बातों के गवाह हो। और देखो जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है मैं उस को तुम पर उतारूंगा और तुम जब तक ऊपर से सामर्थ न पाओ तब तक इसी नगर में ठहरे रहो॥

५० तब वह उन्हें बैतनिय्याह के पास तक बाहर ले गया और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशिष दी।
५१ उन्हें आशिष देते हुए वह उन से अलग हो गया और
५२ स्वर्ग पर उठा लिया गया। और वे उस को प्रणाम
५३ करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गये। और लगातार मन्दिर में परमेश्वर का धन्यवाद किया करते थे॥

यूहन्ना रचित सुसमाचार।

१. आदि में वचन[1] था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन २ परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। ३ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ उस में से कोई भी वस्तु उस के बिना उत्पन्न न ४ हुई। उस में जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ५ ज्योति थी। और ज्योति अंधकार में चमकती है और ६ अंधकार ने उसे ग्रहण न किया[2]। एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ आया जिस का नाम यूहन्ना था। ७ यह गवाही देने आया कि ज्योति की गवाही दे कि सब ८ उस के द्वारा विश्वास करें। वह आप तो ज्योति न था ९ पर उस ज्योति की गवाही देने को आया था। सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है जगत १० में आनेवाली थी। वह जगत में था और जगत उस के ११ द्वारा हुआ और जगत ने उसे न पहचाना। वह अपनों के पास आया और उस के अपनों ने उसे ग्रहण न १२ किया। पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात् १३ उन्हें जो उस के नाम पर विश्वास करते हैं। वे न लोहू से न शरीर की इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से परन्तु १४ परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। और वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से भरपूर होकर हमारे बीच में डेरा किया और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी जैसी १५ पिता के एकलौते की महिमा। यूहन्ना ने उस की गवाही दी और पुकारकर कहा कि यह वही है जिस की चर्चा मैं ने की कि जो मेरे पीछे आनेवाला है वह मुझ से १६ बढ़कर ठहरा क्योंकि वह मुझ से पहिले था। उस की भरपूरी से हम सब ने पाया बरन अनुग्रह पर अनुग्रह १७ पाया। क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई अनुग्रह १८ और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची। किसी ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा एकलौता पुत्र[3] जो पिता की गोद में है उसी ने प्रगट किया॥

(१) या। शब्द।

(२) या। अन्धकार उस पर जयवन्त न हुआ।

(३) और पढ़ते हैं। परमेश्वर एकलौता।

१९ यूहन्ना की गवाही यह है कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवीयों को उस से यह पूछने को भेजा कि तू कौन है। २० तो उस ने मान लिया और मुकरा नहीं पर मान लिया कि मैं मसीह नहीं हूं। २१ तब उन्हों ने उस से पूछा तो कौन है क्या तू एलिय्याह है। उस ने कहा मैं नहीं हूं। तो क्या तू वह नबी है। उस ने उत्तर दिया कि नहीं। २२ फिर उन्हों ने उस से पूछा तू कौन है कि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें तू अपने विषय क्या कहता है। २३ उस ने कहा मैं जैसा यशायाह नबी ने कहा है किसी का शब्द हूं जो जङ्गल में पुकारता है कि प्रभु का मार्ग सुधारो। २४ और ये फरीसियों की ओर से भेजे गए थे। २५ उन्हों ने उस से पूछा कि यदि तू न मसीह और न एलिय्याह और न वह नबी है तो फिर क्यों बपतिसमा देता है। २६ यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया कि मैं तो पानी से[4] बपतिसमा देता हूं पर तुम्हारे बीच में एक जन खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। २७ वही मेरे पीछे आनेवाला है जिस की जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं। २८ ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुईं जहां यूहन्ना बपतिसमा देता था॥

२९ दूसरे दिन उस ने यीशु को अपने पास आते देखकर कहा देखो परमेश्वर का मेम्ना जो जगत का पाप हर ले जाता है। ३० यह वही है जिस के विषय मैं ने कहा था कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मुझ से बढ़कर ठहरा क्योंकि वह मुझ से पहिले था। ३१ मैं उसे पहचानता न था पर इसलिये मैं पानी से[4] बपतिसमा देता हुआ आया कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए। ३२ और यूहन्ना ने गवाही दी कि मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं आकाश से उतरते देखा और वह उस पर ठहर गया। ३३ और मैं तो उसे पहचानता न था पर जिस ने मुझे पानी से[4] बपतिसमा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा कि जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे वही तो पवित्र आत्मा से बपतिसमा देनेवाला है। ३४ और मैं ने देखा और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है।

(४) या। में।

३५ फिर दूसरे दिन यूहन्ना और उस के चेलों में से
३६ दो जन खड़े हुए थे। और उस ने यीशु को फिरते हुए
३७ देख कर कहा देखो परमेश्वर का मेम्ना। तब वे दोनों
३८ चेले उस की यह सुनकर यीशु के पीछे हो लिए। यीशु ने मुंह फेर उन को पीछे आते देखकर उन से कहा किस की खोज में हो। उन्हों ने उस से कहा हे रब्बी
३९ अर्थात् हे गुरु तू कहां रहता है। उस ने उन से कहा चलो तो देख लोगे। उन्हों ने आकर उस के रहने की जगह देखी और उस दिन उसी के साथ रहे और यह
४० दसवें घंटे के लगभग था। उन दोनों में से जो यूहन्ना की सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे एक तो शमौन
४१ पतरस का भाई अन्द्रियास था। उस ने पहिले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर कहा हमें तो मसीह
४२ अर्थात् ख्रीष्टुस मिल गया है। वह उसे यीशु के पास लाया यीशु ने उस को देखकर कहा, तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है तू केफा अर्थात् पतरस कहलाएगा॥

४३ दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा और
४४ फिलिप्पुस से मिलकर कहा मेरे पीछे हो ले। फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का रहनेवाला
४५ था। फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर कहा कि जिस की चर्चा मूसा ने व्यवस्था में और नबियों ने की है वह हम को मिल गया वह यूसुफ का पुत्र नासरत का
४६ यीशु है। नतनएल ने उस से कहा क्या कोई अच्छी वस्तु नासरत से निकल सकती है। फिलिप्पुस ने उस
४७ से कहा चलकर देख ले। यीशु ने नतनएल को अपने पास आते देखकर उस के विषय कहा देखो यह सच-
४८ मुच इस्राईली है इस में कपट नहीं। नतनएल ने उस से कहा तू मुझे कहां से पहचानता है। यीशु ने उस को उत्तर दिया उस से पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया जब तू अंजीर के पेड़ तले था तब मैं ने तुझे देखा था।
४९ नतनएल ने उस को उत्तर दिया कि हे रब्बी तू परमेश्वर
५० का पुत्र है तू इस्राईल का राजा है। यीशु ने उस को उत्तर दिया मैं ने जो तुझ से कहा कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ तले देखा क्या तू इसी लिये विश्वास करता है।
५१ तू इस से बड़े बड़े काम देखेगा। फिर उस ने कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम स्वर्ग को खुला और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर से चढ़ते उतरते देखोगे॥

२ तीसरे दिन गलील के काना में किसी का ब्याह था और यीशु
२ की माता वहां थी। और यीशु और उस के चेले भी
३ उस ब्याह में नेवते गए थे। जब दाख रस घट गया तो यीशु की माता ने उस से कहा उन के पास दाख रस
४ नहीं रहा। यीशु ने उस से कहा हे नारी[1] तेरा मुझ से
५ क्या काम। अभी मेरा समय नहीं आया। उस की माता ने सेवकों से कहा जो कुछ वह तुम से कहे वह
६ करना। वहां यहूदियों की शुद्ध करने की रीति के अनुसार पत्थर के छः मटके धरे थे जिन में दो दो तीन तीन
७ मन समाता था। यीशु ने उन से कहा मटकों में पानी
८ भर दो सो उन्हों ने उन्हें मुंहामुंह भर दिया। तब उस ने उन से कहा अब निकालकर भोज के प्रधान
९ के पास ले जाओ। वे ले गये। जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा जो दाखरस बन गया था और न जानता था कि वह कहां से आया है (पर जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे) तो भोज के प्रधान
१० ने दूल्हे को बुलाकर उस से कहा, हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता और जब लोग पीकर छक जाते हैं तब मध्यम देता है तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख
११ छोड़ा है। यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहिला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उस के चेलों ने उस पर विश्वास किया॥

१२ इस के पीछे वह और उस की माता और उस के भाई और उस के चेले कफरनहूम को गए और वहां कुछ दिन रहे॥

१३ यहूदियों का फ़सह निकट था और यीशु
१४ यरूशलेम को गया। और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफ़ों को बैठे हुए
१५ पाया। और रस्सियों का कोड़ा बनाकर सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया और सर्राफों के पैसे
१६ बिथरा दिये और पीढ़ों को उलट दिया। और कबूतर बेचनेवालों से कहा इन्हें यहां से ले जाओ मेरे पिता
१७ का घर ब्योपार का घर न बनाओ। तब उस के चेलों को स्मरण आया कि लिखा है तेरे घर की धुन मुझे खा
१८ जाएगी। इस पर यहूदियों ने उस से कहा तू जो यह
१९ करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि इस मन्दिर को ढा दो और मैं
२० उसे तीन दिन में उठाऊंगा। यहूदियों ने कहा इस मन्दिर के बनाने में छियालीस बरस लगे हैं और तू
२१ क्या तीन दिन में इसे उठाएगा। पर उस ने अपनी देह
२२ के मन्दिर के विषय कहा था। सो जब वह मरे हुओं में से जी उठा तो उस के चेलों को स्मरण आया कि उस ने यह कहा था और उन्हों ने पवित्र शास्त्र की और उस वचन की जो यीशु ने कहा था प्रतीति की॥

१) या महिला।

२३ जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता २४ था देखकर उस के नाम पर विश्वास किया। पर यीशु ने अपने आप को उन के भरोसे न छोड़ा क्योंकि वह २५ सब को जानता था। और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य के विषय कोई गवाही दे क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है॥

३. फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था जो यहूदियों २ का सरदार था। उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा हे रब्बी हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है यदि परमेश्वर उस के साथ न हो ३ तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता। ४ नीकुदेमुस ने उस से कहा मनुष्य बूढ़ा होकर क्योंकर जन्म ले सकता है क्या वह अपनी माता के गर्भ में ५ दूसरी बार जाकर जन्म ले सकता है। यीशु ने उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं यदि कोई पानी और आत्मा से न जन्मे तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश ६ नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है ७ और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैं ने तुझ से कहा कि तुम्हें नए सिरे से ८ जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती उधर चलती है और तू उस का शब्द सुनता है पर नहीं जानता वह कहां से आती और किधर जाती है। जो कोई आत्मा ९ से जन्मा है वह ऐसा ही है। नीकुदेमुस ने उस को १० उत्तर दिया कि ये बातें क्योंकर हो सकती हैं। यह सुन यीशु ने उस से कहा क्या तू इस्राईलियों का गुरु ११ होकर भी ये बातें नहीं समझता। मैं तुझ से सच सच कहता हूं हम जो जानते हैं वह कहते हैं और जो देखा है उस की गवाही देते हैं और तुम हमारी गवाही नहीं १२ मानते। जब मैं ने तुम से पृथिवी की बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की १३ बातें कहूं तो क्योंकर प्रतीति करोगे। और कोई स्वर्ग पर नहीं गया केवल वही जो स्वर्ग से उतरा अर्थात् १४ मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया उसी रीति से अवश्य १५ है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए, कि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए॥

१६ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रक्खा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो पर अनन्त जीवन पाए। १७ परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत को दोषी ठहराए पर इसलिये कि जगत उस के द्वारा उद्धार पाए। १८ जो उस पर विश्वास करता है वह दोषी नहीं ठहरता पर जो विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहर चुका इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। १९ और दोषी ठहरने का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रेम किया इसलिये कि उन के काम बुरे थे। २० क्योंकि जो कोई बुराई करता है वह ज्योति से बैर रखता है और ज्योति के निकट नहीं आता न हो कि उस के कामों पर दोष लगाया जाए। २१ पर जो सच्चाई पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है इसलिये कि उस के काम प्रगट हों कि परमेश्वर की ओर से किए गए हैं॥

२२ इस के पीछे यीशु और उस के चेले यहूदिया देश में आए और वह वहां उन के साथ रह कर बपतिसमा देने लगा। २३ यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिसमा देता था। क्योंकि वहां बहुत पानी था और लोग आकर बपतिसमा लेते थे। २४ क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेल खाने में न डाला गया था। २५ यूहन्ना के चेलों और किसी यहूदी में शुद्ध करने के विषय विवाद हुआ। २६ और उन्हों ने यूहन्ना के पास आकर उस से कहा हे रब्बी जो यरदन के पार तेरे साथ था और जिस की तू ने गवाही दी देख वह बपतिसमा देता है और सब उस के पास आते हैं। २७ यूहन्ना ने उत्तर दिया जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाय तो वह कुछ नहीं पा सकता। २८ तुम तो आप ही मेरे गवाह हो कि मैं ने कहा मैं मसीह नहीं पर उस के आगे भेजा गया हूं। २९ जिस की दुलहिन है वही दूलहा है पर दूलहे का मित्र जो खड़ा हुआ उस की सुनता है दूलहे के शब्द से बहुत हर्षित होता है सो मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है। ३० अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं॥

३१ जो ऊपर से आता है वह सब से ऊपर है जो पृथिवी से है वह पृथिवी का है और पृथिवी की बातें कहता है जो स्वर्ग से आता है वह सब के ऊपर है। ३२ जो कुछ उस ने देखा और सुना है उसी की गवाही देता है और कोई उस की गवाही नहीं मानता। ३३ जिस ने उस की गवाही मानी वह इस बात पर छाप दे चुका कि परमेश्वर सच्चा है। ३४ इसलिये कि जिसे परमेश्वर ने भेजा है वह परमेश्वर की बातें कहता है क्योंकि वह उस को आत्मा नाप नापकर नहीं देता। ३५ पिता पुत्र से प्रेम

रखता है और उस ने सब कुछ उस के हाथ में दिया
३६ है। जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उस का है पर जो पुत्र की नहीं मानता वह जीवन नहीं देखेगा परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है॥

४. जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले करता और उन्हें बपतिसमा
२ देता है, पर यीशु आप नहीं बरन उस के चेले बपतिसमा देते थे,
३ तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर
४ गलील को चला गया। और उस को सामरिया
५ से होकर जाना अवश्य था। सो वह सूखार नाम सामरिया के एक नगर तक आया जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को
६ दिया था। और याकूब का कूआं भी वहीं था सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर यों ही बैठ
७ गया और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई। इतने में
८ एक सामरी स्त्री पानी भरने को आई। यीशु ने उस से कहा मुझे पानी पिला। उस के चेले तो नगर में भोजन
९ मोल लेने को गए थे। उस सामरी स्त्री ने उस से कहा तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का
१० बरताव नहीं रखते) यीशु ने उत्तर दिया यदि तू परमेश्वर के दान को जानती और यह भी कि वह कौन है जो तुझ से कहता है मुझे पानी पिला दे तो तू उस से
११ मांगती और वह तुझे जीवन का जल देता। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु तेरे पास तो जल भरने को कुछ भी नहीं है और कूआं गहरा है फिर वह जीवन का जल
१२ तेरे पास कहां से आया। क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है जिस ने हमें यह कूआं दिया और आपही अपने
१३ सन्तान और अपने ढोरों समेत उस में से पिया। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो कोई यह जल पीएगा वह
१४ फिर पियासा होगा। पर जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा वह फिर कभी पियासा न होगा बरन जो जल मैं उसे दूंगा वह उस में अनन्त जीवन के लिए
१५ उमंडनेवाले जल का सोता हो जाएगा। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु वह जल मुझे दे कि मैं पियासी न होऊं न
१६ जल भरने को इतनी दूर आऊं। यीशु ने उस से कहा
१७ जा अपने पति को यहां बुला ला। स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं बिना पति की हूं। यीशु ने उस से कहा तू ठीक
१८ कहती है कि मैं बिना पति की हूं, क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति
१९ नहीं यह तू ने सच कहा है। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु

२० मुझे जान पड़ता है कि तू नबी है। हमारे बाप दादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।
२१ यीशु ने उस से कहा हे नारी मेरी प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न इस पहाड़ पर न
२२ यरूशलेम में पिता का भजन करोगे। तुम जिसे नहीं जानते उस का भजन करते हो और हम जिसे जानते हैं उस का भजन करते हैं क्योंकि उद्धार यहूदियों में
२३ से है। पर वह समय आता है और अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे क्योंकि पिता ऐसे भजन करनेवालों को चाहता है।
२४ परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उस के भजन
२५ करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें। स्त्री ने उस से कहा मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रीष्ट कहलाता है आनेवाला है जब वह आएगा तो हमें सब बातें बता
२६ देगा। यीशु ने उस से कहा मैं जो तुझ से बोल रहा हूं वही हूं॥

२७ इतने में उस के चेले आ गए और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है तौभी किसी ने न कहा कि तू क्या चाहता है या किस लिये उस से बातें
२८ करता है। तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली
२९ गई और लोगों से कहने लगी। आओ एक मनुष्य को देखो जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया।
३० क्या यही मसीह तो नहीं। सो वे नगर से निकलकर
३१ उस के पास आने लगे। इतने में उस के चेले यीशु से
३२ बिनती करने लगे कि हे रब्बी कुछ खा ले। उस ने उन से कहा मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम
३३ नहीं जानते। चेलों ने आपस में कहा क्या कोई उस के
३४ लिये कुछ खाने को लाया है। यीशु ने उन से कहा मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा पर
३५ चलूं और उस का काम पूरा करूं। क्या तुम नहीं कहते कि कटनी होने में अब भी चार महीने हैं। देखो मैं तुम से कहता हूं अपनी आंखें उठाकर खेतों को देखो कि
३६ वे कटनी के लिये पक चुके हैं। और काटनेवाला मज़दूरी पाता और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है कि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।
३७ इस में यह बात सच ठहरी कि बोनेवाला एक और
३८ काटनेवाला दूसरा है। मैं ने तुम्हें ऐसा खेत काटने को भेजा जिस में तुम ने मिहनत नहीं की औरों ने मिहनत की और तुम उन की मिहनत के फल में भागी हुए॥

३९ उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने से जिस ने यह गवाही दी थी कि उस ने सब कुछ जो

४० मैं ने किया है मुझे बता दिया विश्वास किया। इस लिये जब ये सामरी उस के पास आए तो उस से बिनती करने लगे कि हमारे यहां रह सो वह वहां दो दिन
४१ रहा। और उस के वचन के कारण और भी बहुतेरों
४२ ने विश्वास किया। और उस स्त्री से कहा अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया है और जान गए कि यही सचमुच जगत का उद्धारकर्त्ता है॥

४३ उन दो दिनों के पीछे वह वहां से निकलकर गलील
४४ को गया। क्योंकि यीशु ने तो आप ही गवाही दी कि
४५ नबी अपने निज देश में आदर नहीं पाता। जब वह गलील में आया तो गलीली आनन्द के साथ उस से मिले क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्व्व के समय किए थे उन्हों ने उन सब को देखा था क्योंकि वे भी पर्व्व में गए थे॥

४६ सो वह फिर गलील के काना में आया जहां उस ने पानी को दाख रस बनाया था और राजा का एक कर्मचारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था।
४७ वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है उस के पास जाकर उस से बिनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे क्योंकि वह मरने
४८ पर था। यीशु ने उस से कहा जब तक तुम चिन्ह और
४९ अद्भुत काम न देखोगे तो विश्वास न करोगे। उस कर्मचारी ने उस से कहा हे प्रभु मेरे बालक के मरने से
५० पहिले चल। यीशु ने उस से कहा जा तेरा पुत्र जीता है। उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की
५१ और चला गया। वह जा ही रहा था कि उस के दास उस से आ मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीता
५२ है। उस ने उन से पूछा किस घड़ी उस का जी हलका हुआ। उन्हों ने उस से कहा कल सातवें घण्टे उस की
५३ तप उतर गई। सो पिता जान गया कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा तेरा पुत्र जीता है और उस ने और उस के सारे घराने ने विश्वास किया।
५४ यह दूसरा चिन्ह था जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया॥

५. इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्व्व हुआ और यीशु यरूशलेम को गया॥

२ यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है और उस के
३ पांच ओसारे हैं। इन में बहुत से बीमार अंधे लंगड़े और सूखे अंगवाले पड़े थे[१]। वहां एक मनुष्य था जो
४
५ अड़तीस बरस से बीमारी में पड़ा था। यीशु ने उसे पड़ा
६ हुआ देख कर और यह जान कर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में है उस से पूछा क्या तू चंगा होना चाहता है। बीमार ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरे पास
७ कोई मनुष्य नहीं कि जब जल हिलाया जाए तो मुझे कुण्ड में उतारे और मेरे पहुंचते पहुंचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है। यीशु ने उस से कहा उठ
८ अपनी खाट उठाकर चल फिर। वह मनुष्य तुरन्त चंगा
९ हो गया और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा॥

१० उसी दिन विश्राम का दिन था। इसलिये यहूदी उस से जो अच्छा हुआ था कहने लगे आज तो विश्राम
११ का दिन है तुझे खाट उठानी उचित नहीं। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ
१२ से कहा अपनी खाट उठाकर चल फिर। उन्हों ने उस से पूछा वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा खाट
१३ उठाकर चल फिर। पर जो चंगा हो गया था वह न जानता था वह कौन है क्योंकि उस जगह में भीड़
१४ होने से यीशु वहां से टल गया था। इन बातों के पीछे वह यीशु को मन्दिर में मिला तब उस ने उस से कहा देख तू चंगा हो गया है फिर पाप न करना ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।
१५ उस मनुष्य ने आकर यहूदियों से कह दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया वह यीशु है।
१६ इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे कि वह ऐसे
१७ ऐसे काम विश्राम के दिन करता था। इस पर यीशु ने उन से कहा कि मेरा पिता अब तक काम
१८ करता है और मैं भी काम करता हूं। इस कारण यहूदी और भी अधिक उस के मार डालने का यतन करने लगे कि वह न केवल विश्राम के दिन की बिधि को तोड़ता परन्तु परमेश्वर को अपना निज पिता कह कर अपने आपको परमेश्वर के बराबर ठहराता था॥

१९ इस पर यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता केवल वह जो पिता को करते देखता है क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।
२० क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता वह सब उसे दिखाता है और वह इन से

(१) कई एक हस्तलेखों में यह मिलता है—जो जल के हिलने की बाट जोहते थे। (४) क्योंकि समय के अनुसार एक स्वर्गदूत उस कुंड में उतरके जल को हिलाता था इस से जो कोई जल के हिलने के पीछे उस में पहिले उतरता था कोई भी रोग उसे लगा हो चंगा हो जाता था।

भी बड़े काम उसे दिखाएगा कि तुम अचम्भा करो।
२१ क्योंकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है।
२२ और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता पर न्याय
२३ करने का सब काम पुत्र को दिया है, इसलिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता वह पिता
२४ का जिस ने उसे भेजा आदर नहीं करता। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो मेरा वचन सुन कर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है अनन्त जीवन उस का है और वह दोषी नहीं ठहरेगा[१] पर मृत्यु के पार होकर
२५ जीवन में पहुंचा है। मैं तुम से सच सच कहता हूं वह समय आता है और अब है जिस में मरे हुए परमेश्वर
२६ के पुत्र का शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे वे जीएंगे। क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि
२७ अपने आप में जीवन रक्खे। और उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र
२८ है। इस से अचम्भा मत करो क्योंकि वह समय आता है कि जितने कबरों में हैं वे सब उस का शब्द सुनकर
२९ निकलेंगे। जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान[२] के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान[२] के लिये जी उठेंगे॥
३० मैं आप से कुछ नहीं कर सकता जैसा सुनता हूं वैसा न्याय करता हूं और मेरा न्याय ठीक है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं पर अपने भेजनेवाले की इच्छा
३१ चाहता हूं। यदि मैं अपनी गवाही देता हूं तो मेरी
३२ गवाही सच्ची नहीं। एक और है जो मेरी गवाही देता है और मैं जानता हूं कि मेरी जो गवाही देता है वह सच्ची
३३ है। तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उस ने सचाई की
३४ गवाही दी है। मैं मनुष्य की गवाही नहीं चाहता तौभी मैं ये बातें इसलिये कहता हूं कि तुम्हें उद्धार
३५ मिले। वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था और तुम्हें कुछ देर तक उस की ज्योति में मगन होना
३६ अच्छा लगा। परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरे करने को सौंपे हैं अर्थात् ये जो काम मैं करता हूं वे
३७ मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। और पिता जिस ने मुझे भेजा है उस ने भी मेरी गवाही दी है। तुम ने न कभी उस का शब्द सुना और न उस का रूप
३८ देखा है। और उस का वचन तुम्हारे मन में नहीं ठहरने पाता क्योंकि जिसे उस ने भेजा उस की प्रतीति नहीं
३९ करते। तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो[३] क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन हमें मिलता है और यह
४० वही है जो मेरी गवाही देता है। पर तुम जीवन पाने
४१ को मेरे पास आना नहीं चाहते। मैं मनुष्यों से आदर
४२ नहीं लेता। पर मैं तुम्हें जानता हूं कि तुम में परमेश्वर
४३ का प्रेम नहीं। मैं अपने पिता के नाम से आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते यदि कोई और अपने ही
४४ नाम से आए तो उसे ग्रहण कर लोगे। तुम जो एक दूसरे से आदर लेते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है नहीं चाहते क्योंकर विश्वास
४५ कर सकते हो। यह न समझो कि मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊंगा। तुम पर दोष लगानेवाला तो है अर्थात् मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रक्खा है।
४६ क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते तो मेरी भी प्रतीति करते इसलिये कि उस ने मेरे विषय लिखा
४७ है। पर यदि तुम उस के लिखे की प्रतीति नहीं करते तो मेरे कहे की क्योंकर प्रतीति करोगे॥

६.

इन बातों के पीछे यीशु गलील की अर्थात् तिबिरियास की झील के पार गया।
२ और एक बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली इस कारण कि जो अचरज कर्म[४] वह बीमारों पर करता था वे
३ उन को देखते थे। तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने
४ चेलों के साथ वहां बैठा। और यहूदियों के फ़सह का
५ पर्व निकट था। तब यीशु ने अपनी आंखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा और फिलिप्पुस से कहा हम इन के भोजन के लिये कहां से रोटी
६ मोल लाएं। पर उस ने यह बात उसे परखने को कही क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करूंगा।
७ फिलिप्पुस ने उस को उत्तर दिया कि दो सौ दीनार[५] की रोटी उन के लिये इतनी भी न होगी कि उन में से
८ हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए। उस के चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा।
९ यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछली हैं पर इतने लोगों के लिये वे क्या हैं।
१० यीशु ने कहा कि लोगों को बैठा दो? उस जगह बहुत घास थी सो पुरुष जो गिनती में लगभग पांच हज़ार
११ के थे बैठ गए। सो यीशु ने रोटियां लीं और धन्यवाद

(१) या। वह न्याय में नहीं आता। (२) या। मृतकोत्थान।

(३) या। ढूंढ़ो। (४) यू०। चिन्ह। (५) देखो मत्ती १८:२८।

करके बैठनेवालों को बांट दीं और वैसे ही मछलियों में
१२ से जितनी वे चाहते थे । जब वे तृप्त हुए तो उस ने
अपने चेलों से कहा बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ
१३ फेंका[1] न जाए । सो उन्हों ने बटोरा और जव की पांच
रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच रहे उन की
१४ बारह टोकरी भरीं । जो चिन्ह उस ने दिखाया उसे वे
लोग देखकर कहने लगे कि सचमुच यही वह नबी है
जो जगत में आनेवाला था ॥

१५ जब यीशु ने जाना कि वे मुझे राजा बनाने के लिये
आकर पकड़ना चाहते हैं तो वह फिर पहाड़ पर अकेला
चला गया ॥

१६ जब सांझ हुई तो उस के चेले झील के किनारे
१७ गए । और नाव पर चढ़ के झील के पार कफरनहूम को
जा रहे थे । उस समय अंधेरा हो गया था और यीशु
१८ उन के पास तब तक न आया था । आंधी से झील
१९ लहराने लगी । जब वे खेते खेते कोस दो एक निकल
गए तो उन्हों ने यीशु को झील पर चलते और नाव
२० के निकट आते देखा और डर गए । पर उस ने उन से
२१ कहा मैं हूं डरो मत । तब उन्हों ने उसे नाव पर चढ़ा
लेना चाहा और तुरन्त नाव उस किनारे पर जहां वे
जाते थे लग गई ॥

२२ दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी
थी यह देखा कि यहां एक को छोड़कर और कोई
छोटी नाव न थी और यीशु अपने चेलों के साथ उस
नाव पर न चढ़ा पर केवल उस के चेले चले गए थे ।
२३ (तौभी और छोटी नावें तिबिरियास से उस जगह के
निकट आईं जहां उन्हों ने प्रभु के धन्यवाद करने के
२४ पीछे रोटी खाई थी) । सो जब भीड़ ने देखा कि यहां
न योशु है और न उस के चेले तो वे भी छोटी छोटी
नावों पर चढ़ के यीशु को ढूंढ़ते हुए कफरनहूम को
२५ पहुंचे । और झील के पार उस से मिलकर कहा हे
२६ रब्बी तू यहां कब आया । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि
मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मुझे इसलिये नहीं
ढूंढ़ते हो कि तुम ने चिन्ह देखे पर इसलिये कि उन
२७ रोटियों में से खाकर तृप्त हुए । नाशमान भोजन के
लिये परिश्रम न करो पर उस भोजन के लिये जो
अनन्त जीवन तक ठहरता है जिसे मनुष्य का पुत्र
तुम्हें देगा क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर ने उसी
२८ पर छाप कर दी है । उन्हों ने उस से कहा परमेश्वर
२९ के कार्य्य करने के लिये हम क्या करें । यीशु
ने उन्हें उत्तर दिया परमेश्वर का कार्य्य यह है कि तुम

(१) यू० । खोया ।

उस पर जिसे उस ने भेजा है विश्वास करो । उन्हों ने ३०
उस से कहा तो तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम
उसे देखकर तेरी प्रतीति करें तू कौन सा काम दिखाता
है । हमारे बाप दादों ने जंगल में मान[2] खाया जैसा ३१
लिखा है कि उस ने उन्हें स्वर्ग से रोटी खाने को दी ।
यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं मूसा ३२
ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी पर मेरा पिता तुम्हें
सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है । क्योंकि परमेश्वर की रोटी ३३
वही है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती
है । तब उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु यह रोटी हमें सदा ३४
दिया कर । यीशु ने उन से कहा जीवन की रोटी मैं हूं ३५
जो मेरे पास आएगा सो कभी भूखा न होगा और जो
मुझ पर विश्वास करेगा वह कभी पियासा न होगा । पर ३६
मैं ने तुम से कहा कि तुम ने मुझे देख भी लिया है
तौभी विश्वास नहीं करते । जो पिता मुझे देता है वह ३७
सब मेरे पास आएगा और जो कोई मेरे पास आएगा
उसे मैं कभी न निकालूंगा । क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं ३८
बरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये
स्वर्ग से उतरा हूं । और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह ३९
है कि सब जो उस ने मुझे दिया है उस में से मैं कुछ न
खोऊं पर उसे पिछले दिन जिला उठाऊं । मेरे पिता की ४०
इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर
विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए और मैं उसे पिछले
दिन में जिला उठाऊंगा ॥

इस से यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे इसलिये ४१
कि उस ने कहा था कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी वह मैं
हूं । और उन्हों ने कहा क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु ४२
नहीं जिस के माता पिता को हम जानते हैं तो वह
क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं । यीशु ने ४३
उन को उत्तर दिया कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ ।
कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता जिस ने ४४
मुझे भेजा है उसे खींच न ले और मैं उस को पिछले
दिन में जिला उठाऊंगा । नबियों के लेखों में यह लिखा ४५
है कि वे सब परमेश्वर के सिखाए हुए होंगे । जिस
किसी ने पिता से सुना और सीखा है वह मेरे पास
आता है । यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है पर ४६
जो परमेश्वर की ओर से है केवल उसी ने पिता को
देखा है । मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कोई ४७
विश्वास करता है अनन्त जीवन उसी का है । जीवन ४८
की रोटी मैं हूं । तुम्हारे बाप दादों ने जंगल में ४९
मान खाया और मर गए । यह वह रोटी है जो स्वर्ग ५०

(२) यू० । मन्ना । देखो निर्ग० १६ १५ ।

से उतरती है कि मनुष्य उस में से खाए और न मरे।
५१ जीवती रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए तो सदा लों जीता रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा वह मेरा मांस है॥

५२ इस पर यहूदी आपस में झगड़ने लगे कि यह मनुष्य क्योंकर हमें अपना मांस खाने को दे सकता है।
५३ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उस का
५४ लोहू न पीओ तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है अनन्त जीवन उसी का है और
५५ मैं उसे पिछले दिन जिला उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है और मेरा लोहू सच्ची पीने
५६ की वस्तु है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है वह मुझ में बना रहता है और मैं उस में।
५७ जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवता हूं वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण
५८ जीएगा। जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है न कि जैसा बाप दादों ने खाया और मर गए। जो कोई यह रोटी
५९ खाएगा वह सदा लों जीता रहेगा। उस ने ये बातें कफरनहूम में उपदेश करते हुए सभा के घर में कहीं॥

६० इसलिये उस के चेलों में से बहुतों ने यह सुन कर कहा यह बात कठिन है इसे कौन सुन सकता है।
६१ यीशु ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे चेले इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं उन से पूछा क्या इस बात से
६२ तुम्हें ठोकर लगती है। यदि मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहिले था वहां ऊपर जाते देखोगे तो क्या कहोगे।
६३ आत्मा तो जीवनदायक है शरीर से कुछ लाभ नहीं जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं और जीवन
६४ भी हैं। पर तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते। यीशु तो पहिले ही जानता था कि जो विश्वास नहीं करते वे कौन हैं और कौन मुझे पकड़वाएगा।
६५ और उस ने कहा इसी लिये मैं ने तुम से कहा है कि जब तक किसी को पिता की ओर से न दिया जाए वह मेरे पास नहीं आ सकता॥

६६ इस पर उस के चेलों में से बहुतेरे फिर गए और
६७ उस के साथ और न चले। इसलिये यीशु ने उन बारहों
६८ से कहा क्या तुम भी चला जाना चाहते हो। शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु किस के पास
६९ जाएं अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर
७० का पवित्र जन तू ही है। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया तौभी तुम में से एक जन शैतान[1] है। यह उस ने शमौन इस्करियोती ७१ के पुत्र यहूदाह के विषय कहा क्योंकि यही जो उन बारहों में से था उसे पकड़वाने पर था॥

७. इन बातों के पीछे यीशु गलील में फिरता रहा क्योंकि यहूदी उसे मार डालना चाहते थे इसलिये वह यहूदिया में फिरना न चाहता था। और २ यहूदियों का मण्डपों का पर्ब्ब निकट था। इसलिये उस ३ के भाइयों ने उस से कहा यहां से सिधार और यहूदिया में चला जा कि जो काम तू करता है उन्हें तेरे चेले भी देखें। क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे ४ और छिपकर काम करे। यदि तू यह काम करता है तो अपनी तई जगत को दिखा। क्योंकि उस के भाई भी ५ उस पर विश्वास नहीं करते थे। यीशु ने उन से कहा ६ मेरा समय अब तक नहीं आया पर तुम्हारा समय सदा बना रहता है। जगत तुम से बैर नहीं कर सकता पर ७ वह मुझ से बैर करता है क्योंकि मैं उस के विरोध में यह गवाही देता हूं कि उस के काम बुरे हैं। तुम पर्ब्ब में ८ जाओ। मैं अभी इस पर्ब्ब में नहीं जाता क्योंकि मेरा समय अब तक पूरा नहीं हुआ। वह उन से ये बातें ९ कह कर गलील ही में रह गया॥

पर जब उस के भाई पर्ब्ब में चले गए तो वह १० आप ही प्रगट में नहीं पर मानो गुप्त होकर गया। सो ११ यहूदी पर्ब्ब में उसे यह कहकर ढूंढ़ते थे कि वह कहां है। और लोगों में उस के विषय चुपके चुपके बहुत १२ सी बातें हुई कितने कहते थे वह भला मनुष्य है और कितने कहते थे नहीं पर वह लोगों को भरमाता है। तौभी यहूदियों के डर के मारे कोई उस के विषय १३ खुलकर न बोलता था॥

पर्ब्ब के बीचोंबीच यीशु मन्दिर में जाकर उप- १४ देश करने लगा। तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा १५ इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई। यीशु ने उन्हें उत्तर १६ दिया कि मेरा उपदेश मेरा नहीं पर मेरे भेजनेवाले का है। यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे तो १७ इस उपदेश के विषय जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूं। जो १८ अपनी ओर से कहता है वह अपनी ही बड़ाई चाहता है पर जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है और उस में अधर्म नहीं। क्या मूसा ने तुम्हें १९ व्यवस्था न दी तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर

(१) यू० । इबलीस।

नहीं चलता । तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो ।
२० लोगों ने उत्तर दिया कि तुझे दुष्टात्मा लगा है कौन तुझे
२१ मार डालना चाहता है । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने एक काम किया और तुम सब अचम्भा करते
२२ हो । मूसा ने तुम्हें ख़तने की आज्ञा दी (यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है पर बापदादों से चली आई है) और तुम विश्राम के दिन को मनुष्य का ख़तना करते हो ।
२३ जब विश्राम के दिन मनुष्य का ख़तना किया जाता है कि मूसा की व्यवस्था टल न जाए तो तुम मुझ पर क्यों इसलिये क्रोध करते हो कि मैं ने विश्राम के दिन
२४ मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया । मुंह देखकर न्याय न चुकाओ पर ठीक ठीक न्याय चुकाओ ॥

२५ तब कितने यरूशलेमी कहने लगे क्या यह वही
२६ नहीं जिसे वे मार डालना चाहते हैं । पर देखो वह खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उस से कुछ नहीं कहता क्या सरदारों ने सच सच जान लिया है कि यही
२७ मसीह है । इस को तो हम जानते हैं कि कहां का है पर मसीह जब आएगा तो कोई न जानेगा कि वह कहां का
२८ है । यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए पुकार के कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं मैं तो आप से नहीं आया पर मेरा भेजनेवाला सच्चा
२९ है उस को तुम नहीं जानते । मैं उसे जानता हूं क्योंकि
३० मैं उस की ओर से हूं और उसी ने मुझे भेजा है । इस पर उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला क्योंकि उस का समय अब तक न आया
३१ था । और भीड़ में से बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया और कहने लगे कि मसीह जब आएगा तो क्या इस से
३२ अधिक चिन्ह दिखाएगा जो इस ने दिखाए । फरीसियों ने लोगों को उस के विषय ये बातें चुपके चुपके करते सुना और महायाजकों और फरीसियों ने उस के पकड़ने
३३ को प्यादे भेजे । इस पर यीशु ने कहा मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूं तब अपने भेजनेवाले के पास चला
३४ जाऊंगा । तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं
३५ हूं वहां तुम नहीं आ सकते । यहूदियों ने आपस में कहा यह कहां जाएगा कि हम इसे न पाएंगे । क्या वह उन के पास जाएगा जो यूनानियों में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं और यूनानियों को भी उपदेश देगा ।
३६ यह क्या बात है जो उस ने कही कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे पर न पाओगे और जहां मैं हूं वहां तुम नहीं आ सकते ॥

३७ पिछले दिन जो पर्ब्ब का मुख्य दिन है यीशु खड़ा हुआ और पुकार के कहा यदि कोई पियासा हो तो मेरे
३८ पास आकर पीए । जो मुझ पर विश्वास करेगा जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उस के हृदय[1] से जीवन के
३९ जल की नदियां बहेंगी । उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय कहा जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे क्योंकि आत्मा अब तक न मिला था इस कारण कि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था ।
४० सो भीड़ में से किसी किसी ने ये बातें सुन कर कहा
४१ सचमुच यह नबी यही है । औरों ने कहा यह मसीह है पर किसी किसी ने कहा क्या मसीह गलील से आएगा ।
४२ क्या पवित्र शास्त्र में यह नहीं आया कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गांव से जहां दाऊद रहता
४३ था आएगा । सो उस के कारण लोगों में फूट पड़ी ।
४४ उन में से कितने उसे पकड़ना चाहते थे पर किसी ने उस पर हाथ न डाला ॥

४५ तब प्यादे महायाजकों और फ़रीसियों के पास आए और उन्हों ने उन से कहा तुम उसे क्यों नहीं लाए ।
४६ प्यादों ने उत्तर दिया कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी
४७ बातें न कीं । फरीसियों ने उन को उत्तर दिया क्या तुम
४८ भी भरमाए गए हो । क्या सरदारों या फरीसियों में से
४९ किसी ने भी उस पर विश्वास किया है । पर ये लोग
५० जो व्यवस्था नहीं जानते स्रापित हैं । नीकुदेमुस ने जो पहिले उस के पास आया और उन में से एक था उन
५१ से कहा, क्या हमारी व्यवस्था किसी को जब तक पहिले उस की सुनकर जान न ले कि वह क्या करता है दोषी
५२ ठहराती है । उन्हों ने उसे उत्तर दिया क्या तू भी गलील का है ढूंढ़कर देख कि गलील से कोई नबी प्रगट नहीं
५३ होता । [तब[2] सब कोई अपने अपने घर को गए ॥

८.

पर यीशु जैतून पहाड़ पर गया । और भोर
२ को फिर मन्दिर में आया और सब लोग उस के पास आए और वह बैठ कर
३ उन्हें उपदेश देने लगा । तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी
४ और इस को बीच में खड़ी करके उस से कहा, हे गुरु यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है ।
५ व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें सो तू इस स्त्री के विषय क्या
६ कहता है । उन्हों ने उस को परखने के लिये यह बात कही कि उस पर दोष लगाने के लिये कोई गौं पाए पर

(१) यू० पेट ।

(२) ७ : ५३ से ८ : ११ तक का वाक्य अकसर पुराने हस्तलेखों में नहीं मिलता ।

७ यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा। जब वे उस से पूछते रहे तो उस ने सीधे होकर उन से कहा तुम में से जो निष्पाप हो वह पहिले उस के पत्थर ८ मारे। और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने ९ लगा। पर वे यह सुन कर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए और यीशु अकेला रह गया १० और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रही। यीशु ने सीधे होकर उस से कहा हे नारी वे कहां गए क्या किसी ने तुझ ११ पर दंड की आज्ञा न दी। उस ने कहा हे प्रभु किसी ने नहीं। यीशु ने कहा मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता जा और फिर पाप न करना] ॥

१२ तब यीशु ने फिर लोगों से कहा मैं जगत की ज्योति हूं जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा पर १३ जीवन की ज्योति पाएगा। फरीसियों ने उस से कहा तू १४ अपनी गवाही आप देता है तेरी गवाही ठीक नहीं। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूं तौभी मेरी गवाही ठीक है क्योंकि मैं जानता हूं कि कहां से आया हूं और कहां जाता हूं पर तुम नहीं १५ जानते कि मैं कहां से आता हूं और कहां जाता हूं। तुम शरीर के अनुसार फैसला करते हो मैं किसी का फैसला १६ नहीं करता। और यदि मैं फैसला करूं भी तो मेरा फैसला ठीक है क्योंकि मैं अकेला नहीं पर मैं हूं और पिता है १७ जिस ने मुझे भेजा। तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि १८ दो जनों की गवाही ठीक होती है। एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूं और दूसरा मेरी गवाही पिता देता १९ है जिस ने मुझे भेजा। तब उन्हों ने उस से कहा तेरा पिता कहां है। यीशु ने उत्तर दिया कि न तुम मुझे जानते हो न मेरे पिता को यदि मुझे जानते तो मेरे २० पिता को भी जानते। ये बातें उस ने मन्दिर में उपदेश करते हुए भण्डार घर में कहीं और किसी ने उसे न पकड़ा क्योंकि उस का समय अब तक न आया था ॥

२१ उस ने उन से फिर कहा मैं जाता हूं और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे। जहां मैं जाता २२ हूं वहां तुम नहीं आ सकते। इस पर यहूदियों ने कहा क्या वह अपने आप को मार डालेगा जो कहता है कि २३ जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते। उस ने उन से कहा तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूं तुम संसार के २४ हो मैं संसार का नहीं। इसलिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे क्योंकि यदि तुम विश्वास न २५ करोगे कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे। उन्हों ने उस से कहा तू कौन है। यीशु ने उन से कहा वही[१] हूं जो तुम से कहता आया हूं। २६ तुम्हारे विषय मुझे बहुत कुछ कहना और फैसला करना है पर मेरा भेजनेवाला सच्चा है और जो मैं ने उस से सुना है वही जगत से २७ कहता हूं। वे न समझे कि हम से पिता के विषय २८ कहता है। सो यीशु ने कहा जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे तो जानोगे कि मैं वही हूं और आप से कुछ नहीं करता पर जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया २९ वैसे ही ये बातें कहता हूं। और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सदा ३० वही करता हूं जिस से वह प्रसन्न होता है। वह ये बातें कह ही रहा था कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया ॥

३१ सो यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उस की प्रतीति की थी कहा यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे ३२ तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे ३३ और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए फिर तू क्योंकर कहता है कि तुम ३४ स्वतंत्र हो जाओगे। यीशु ने उन को उत्तर दिया मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है वह ३५ पाप का दास है। और दास सदा घर में नहीं रहता ३६ पुत्र सदा रहता है। सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो ३७ सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे। मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश से हो पर मेरा वचन तुम में नहीं समाता[२] इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते ३८ हो। मैं वही कहता हूं जो अपने पिता के यहां देखा है और तुम वही करते रहते हो जो अपने पिता से सुना ३९ है। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हमारा पिता तो इब्राहीम है। यीशु ने उन से कहा यदि तुम इब्राहीम के ४० सन्तान होते तो इब्राहीम के से काम करते। पर अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो जिस ने तुम्हें वह सत वचन बताया जो परमेश्वर से सुना यह ४१ तो इब्राहीम ने न किया था। तुम अपने पिता के से काम करते हो। उन्हों ने उस से कहा हम व्यभिचार ४२ से नहीं जन्मे हमारा एक पिता परमेश्वर है। यीशु ने उन से कहा यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझ से प्रेम रखते क्योंकि मैं परमेश्वर से निकल कर आया हूं मैं आप से नहीं आया पर उसी ने मुझे भेजा। ४३ तुम मेरी बातें क्यों नहीं समझते। इसलिये कि मेरा ४४ वचन सुन नहीं सकते। तुम अपने पिता शैतान[३] से हो

(१) या। यह क्या बात है कि मैं तुम से बातें करता हूं।

(२) या। बढ़ने पाता।

(३) यू०। इबलीस।

और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से ख़ूनी है और सत्य पर स्थिर न रहा क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता तो अपने स्वभाव ही से बोलता है क्योंकि वह
४५ झूठा और झूठ का पिता है। पर मैं जो सच बोलता हूं
४६ इसी लिये तुम मेरी प्रतीति नहीं करते। तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है और यदि मैं सच बोलता हूं
४७ तो तुम मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते। जो परमेश्वर से होता है वह परमेश्वर की बातें सुनता है और तुम इस लिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।
४८ यह सुन यहूदियों ने उस से कहा क्या हम ठीक नहीं कहते कि तू सामरी है और तुझ में दुष्टात्मा
४९ है। यीशु ने उत्तर दिया कि मुझ में दुष्टात्मा नहीं पर मैं अपने पिता का आदर करता हूं और तुम
५० मेरा निरादर करते हो। पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता एक तो है जो चाहता और फैसला करता है।
५१ मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बात को
५२ मानेगा तो वह कभी मृत्यु को न देखेगा। यहूदियों ने उस से कहा अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है इब्राहीम मर गया और नबी भी मर गए हैं और तू कहता है कि यदि कोई मेरी बात को मानेगा तो वह
५३ कभी मृत्यु का स्वाद न चखेगा। क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से बड़ा है जो मर गया और नबी भी मर गए
५४ तू अपने आप को क्या ठहराता है। यीशु ने उत्तर दिया यदि मैं आप अपनी महिमा करूं तो मेरी महिमा कुछ नहीं मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है जिसे तुम
५५ कहते हो कि वह हमारा परमेश्वर है। और तुम ने तो उसे नहीं जाना पर मैं उसे जानता हूं और यदि कहूं कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी नाईं झूठा ठहरूंगा पर मैं उसे जानता और उस के वचन को मानता हूं।
५६ तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था और उस ने देखा और आनन्द किया।
५७ यहूदियों ने उस से कहा अब तक तू पचास बरस का
५८ नहीं फिर भी तू ने इब्राहीम को देखा है। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि इब्राहीम के
५९ होने से पहिले मैं हूं। तब उन्हों ने उसे मारने को पत्थर उठाए पर यीशु छिप कर मन्दिर से निकल गया॥

९. जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा जो
२ जन्म का अंधा था। और उस के चेलों ने उस से पूछा हे रब्बी किस ने पाप किया कि यह अंधा जन्मा इस मनुष्य ने या उस के माता पिता ने।
३ यीशु ने उत्तर दिया कि न तो इस ने न इस के माता पिता ने पर यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर के काम उस में
४ प्रगट हों। जिस ने मुझे भेजा है हमें उस के काम दिन ही दिन में करना अवश्य है वह रात आनेवाली है जिस
५ में कोई काम नहीं कर सकता। जब तक मैं जगत में हूं
६ तब तक जगत की ज्योति हूं। यह कह कर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी और वह मिट्टी
७ उस की आंखों पर लगाकर, उस से कहा जाकर शीलोह के कुंड में धो ले (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस
८ ने जाकर धोया और देखते हुए आया। तब पड़ोसी और जिन्हों ने पहिले उसे भीख मांगते देखा था कहने लगे क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख मांगा करता था।
९ कितनों ने कहा यह वही है औरों ने कहा नहीं पर उस
१० के समान है उस ने कहा मैं वही हूं। तब वे उस से
११ पूछने लगे तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं। उस ने उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्य ने मिट्टी सानी और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा शीलोह में जाकर
१२ धो ले सो मैं गया और धोकर देखने लगा। उन्हों ने उस से पूछा वह कहां है। उस ने कहा मैं नहीं जानता॥
१३ लोग उसे जो पहिले अंधा था फरीसियों के पास
१४ ले गए। जिस दिन यीशु ने मिट्टी सान कर उस की
१५ आंखें खोली थीं वह विश्राम का दिन था। फिर फरीसियों ने भी उस से पूछा तेरी आंखें किस रीति से खुलीं। उस ने उन से कहा उस ने मेरी आंखों पर मिट्टी लगाई
१६ फिर मैं ने धो लिया और अब देखता हूं। इस पर कई फरीसी कहने लगे यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं क्योंकि वह विश्राम का दिन नहीं मानता। औरों ने कहा पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे चिन्ह दिखा
१७ सकता है। सो उन में फूट पड़ी। उन्हों ने उस अंधे से फिर कहा उस ने जो तेरी आंखें खोलीं तो तू उस के
१८ विषय क्या कहता है। उस ने कहा वह नबी है। पर यहूदियों को प्रतीति न आई कि यह अंधा था और अब देखता है जब तक उन्हों ने उस के माता पिता को जिस
१९ की आंखें खुल गईं बुलाकर, उन से न पूछा कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो कि अंधा जन्मा
२० था। फिर अब वह क्योंकर देखता है। उस के माता पिता ने उत्तर दिया हम तो जानते हैं कि यह हमारा
२१ पुत्र है और अंधा जन्मा था। पर हम नहीं जानते कि अब क्योंकर देखता है और न यह जानते हैं कि किस ने उस की आंखें खोलीं वह सयाना है उसी से पूछ लो
२२ वह अपने विषय आप कह देगा। ये बातें उस के माता पिता ने इसलिये कहीं कि वे यहूदियों से डरते थे क्योंकि यहूदी एका कर चुके थे कि यदि कोई कहे

२३ कि वह मसीह है तो सभा से निकाला जाए। इसी कारण उस के माता पिता ने कहा वह सयाना है उसी २४ से पूछ लो। तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी बार बुलाकर उस से कहा परमेश्वर की महिमा २५ कर हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है। उस ने उत्तर दिया मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं, मैं एक बात जानता हूं कि मैं अंधा था और अब देखता हूं। २६ उन्हों ने उस से फिर कहा कि उस ने तेरे साथ क्या २७ किया और किस तरह तेरी आंखें खोलीं। उस ने उन से कहा मैं तो तुम से कह चुका और तुम ने न सुना अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो क्या २८ तुम भी उस के चेले होना चाहते हो। तब वे उसे बुरा भला कहकर बोले तू ही उस का चेला २९ है हम तो मूसा के चेले हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं पर इस मनुष्य को ३० नहीं जानते कि कहां का है। उस ने उन को उत्तर दिया यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते कि कहां ३१ का है तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं। हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता पर यदि कोई परमेश्वर का भक्त होता और उस की इच्छा पर चलता ३२ है तो वह उस की सुनता है। यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अंधे की आंखें खोली हों। ३३ यदि यह जन परमेश्वर की ओर से न होता तो कुछ ३४ न कर सकता। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू क्या हमें सिखाता है और उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया॥

३५ यीशु ने सुना कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया है और जब उस से भेंट हुई तो कहा कि क्या तू ३६ परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है। उस ने उत्तर दिया कि हे प्रभु वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास ३७ करूं। यीशु ने उस से कहा तू ने उसे देखा भी है और ३८ जो तेरे साथ बातें करता है वही है। उस ने कहा हे प्रभु ३९ मैं विश्वास करता हूं और उसे प्रणाम किया। तब यीशु ने कहा मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूं कि जो नहीं देखते वे देखें और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएं। ४० जो फरीसी उस के साथ थे उन्हों ने ये बातें सुन कर उस ४१ से कहा क्या हम भी अंधे हैं। यीशु ने उन से कहा यदि तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप न होता पर अब कहते हो कि हम देखते हैं इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है॥

१०. मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो द्वार से भेड़शाला में नहीं जाता पर और २ किसी ओर से चढ़ जाता है वह चोर और डाकू है। पर जो द्वार से भीतर आता है वह भेड़ों का रखवाला है। ३ उस के लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है और भेड़ें उस का शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। ४ और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है तो उन के आगे आगे चलता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उस का शब्द पहचानती हैं। ५ पर वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी पर उस से भागेंगी क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं। ६ यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा पर वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है॥

७ सो यीशु ने उन से फिर कहा मैं तुम से सच सच ८ कहता हूं कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। जितने मुझ से पहिले आए वे सब चोर और डाकू हैं पर भेड़ों ने उन की न ९ सुनी। द्वार मैं हूं यदि कोई मेरे द्वारा भीतर जाए तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और १० चारा पाएगा। चोर किसी और काम को नहीं केवल चोरी और घात और नाश करने को आता है। मैं इसलिये ११ आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं। अच्छा रखवाला मैं हूं अच्छा रखवाला भेड़ों के लिये अपना १२ प्राण देता है। मज़दूर जो न रखवाला है और न भेड़ों का मालिक है भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है और भेड़िया उन्हें पकड़ता और १३ तित्तर बित्तर कर देता है। यह इसलिये होता है कि वह मज़दूर है और उस को भेड़ों की चिन्ता नहीं। १४ अच्छा रखवाला मैं हूं जिस तरह पिता मुझे जानता है १५ और मैं पिता को जानता हूं, इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं और मैं १६ भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। और मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं मुझे उन का भी लाना अवश्य है वे मेरा शब्द सुनेंगी तब एक ही झुण्ड १७ और एक ही रखवाला होगा। पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर १८ लेऊं। कोई उस को मुझ से छीनता नहीं बरन मैं उसे आप ही देता हूं मुझे उस के देने का भी अधिकार है और उस के फिर लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली॥

१९ इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी। २० उन में से बहुतेरे कहने लगे कि उस में दुष्टात्मा है और २१ वह पागल है उस की क्यों सुनते हो। औरों ने कहा ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा हो क्या दुष्टात्मा अंधों की आंखें खोल सकता है॥

२२ यरूशलेम में स्थापन-पर्व्व हुआ और जाड़े का २३ समय था। और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में २४ फिर रहा था। तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा तू हमारे मन को कब तक दुबधा में रक्खेगा यदि तू २५ मसीह है तो हम से साफ साफ कह दे। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने तुम से कह दिया और तुम प्रतीति नहीं करते जो काम मैं अपने पिता के नाम से २६ करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं। पर तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते कि मेरी भेड़ों में से नहीं २७ हो। मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता २८ हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगी और कोई २९ उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। मेरा पिता जिस ने उन्हें मुझ को दिया है सब से बड़ा है और कोई पिता ३० के हाथ से उन्हें छीन नहीं सकता। मैं और पिता एक ३१ हैं। यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर ३२ उठाए। इस पर यीशु ने उन से कहा कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं उन में से किस काम के लिये मुझे पत्थरवाह करते हो। ३३ यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते परन्तु परमेश्वर की निन्दा के लिये और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप ३४ को परमेश्वर बनाता है। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा ३५ तुम ईश्वर हो। यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा और पवित्र शास्त्र की ३६ बात लोप नहीं हो सकती, तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है क्या तुम उस से कहते हो कि तू निन्दा करता है इसलिये कि मैं ने कहा मैं ३७ परमेश्वर का पुत्र हूं। यदि मैं अपने पिता के काम ३८ नहीं करता तो मेरी प्रतीति न करो। पर जो मैं करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति न करो तौभी उन कामों की प्रतीति करो कि तुम जानो और समझो कि पिता ३९ मुझ में है और मैं पिता में हूं। तब उन्हों ने फिर उसे पकड़ना चाहा पर वह उन के हाथ से निकल गया॥

४० वह फिर यरदन के पार उस जगह चला गया जहां यूहन्ना पहिले बपतिसमा देता था और वहीं रहा। ४१ और बहुतेरे उस के पास आकर कहते थे कि यूहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया पर जो कुछ यूहन्ना ने ४२ इस के विषय कहा था वह सब सच था। और वहां बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया॥

११. मरयम और उस की बहिन मरथा के गांव बैतनिय्याह का लाज़र नाम एक मनुष्य बीमार था। २ यह वही मरयम थी जिस ने प्रभु पर अतर डालकर उस के पांवों को अपने बालों से पोंछा इसी का भाई लाज़र बीमार था। ३ सो उस की बहिनों ने उसे कहला भेजा कि हे प्रभु देख जिस से तू प्रीति रखता है वह बीमार है। ४ यह सुनकर यीशु ने कहा यह बीमारी मृत्यु की नहीं परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है कि उस के द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो। ५ और यीशु मरथा और उस की बहिन और लाज़र से प्रेम रखता था। ६ सो जब उस ने सुना कि वह बीमार है तो जिस जगह था वहां दो दिन और रहा। ७ तब इस के पीछे उस ने चेलों से कहा कि आओ हम फिर यहूदिया को चलें। ८ चेलों ने उस से कहा हे रब्बी अभी तो यहूदी तुझे पत्थरवाह करना चाहते थे और क्या तू फिर भी वहीं जाता है। ९ यीशु ने उत्तर दिया क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते यदि कोई दिन को चले तो ठोकर नहीं खाता क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है। १० पर यदि कोई रात को चले तो ठोकर खाता है क्योंकि ११ उस में उजाला नहीं। उस ने ये बातें कहीं और इस के पीछे उन से कहने लगा कि हमारा मित्र लाज़र सो १२ गया है पर मैं उसे जगाने जाता हूं। सो चेलों ने उस से कहा हे प्रभु यदि वह सो गया है तो बच जायगा। १३ यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय कहा था पर वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय कहा। १४ तब यीशु ने उन से साफ साफ कह दिया कि लाज़र १५ मर गया। और तुम्हारे कारण आनन्दित हूं कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो पर अब आओ १६ हम उस के पास चलें। तब तोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है अपने साथ के चेलों से कहा आओ हम भी उस के साथ मरने को चलें॥

१७ सो यीशु ने आकर जाना कि उसे क़बर में १८ रक्खे चार दिन हो चुके हैं। बैतनिय्याह यरूशलेम से कोई कोस एक दूर था। १९ और बहुत से यहूदी मरथा और मरयम के पास उन के भाई के विषय २० शान्ति देने आये थे। सो मरथा यीशु के आने का समाचार सुन कर उस से भेंट करने को गई पर मरयम २१ घर में बैठी रही। मरथा ने यीशु से कहा हे प्रभु यदि तू २२ यहां होता तो मेरा भाई न मरता। और अब भी मैं जानती हूं कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगे परमेश्वर २३ तुझे देगा। यीशु ने उस से कहा तेरा भाई जी उठेगा। २४ मरथा ने उस से कहा मैं जानती हूं कि अन्तिम दिन में

२५ पुनरुत्थान[1] के समय वह जी उठेगा। यीशु ने उस से कहा पुनरुत्थान[2] और जीवन मैं ही हूं जो मुझ पर २६ विश्वास करे वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा। और जो कोई जीता और मुझ पर विश्वास करता है वह कभी २७ न मरेगा क्या तू इस बात पर विश्वास करती है। उस ने उस से कहा हां हे प्रभु मैं विश्वास कर चुकी हूं कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था २८ वह तू ही है। यह कहकर वह चली गई और अपनी बहिन मरयम को चुपके से बुलाकर कहा गुरु यहीं है २९ और तुझे बुलाता है। वह सुनते ही तुरन्त उठकर ३० उस के पास आई। यीशु अभी गांव में नहीं पहुंचा था पर उसी स्थान में था जहां मरथा ने उस से भेंट की थी। ३१ सो जो यहूदी उस के साथ घर में थे और उसे शान्ति दे रहे थे यह देखकर कि मरयम तुरन्त उठके बाहर गई यह समझ कर कि वह क़बर पर रोने को जाती है उस ३२ के पीछे हो लिये। जब मरयम वहां पहुंची जहां यीशु था तो उसे देखते ही उस के पांवों पड़के कहा हे प्रभु ३३ यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता। जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उस के साथ आए थे रोते हुए देखा तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ और घबरा कर[3] कहा तुम ने उसे कहां रक्खा है। ३४,३५ उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु चलकर देख ले। यीशु ३६ के आंसू बहने लगे। तब यहूदी कहने लगे देखो वह ३७ उस से कैसी प्रीति रखता था। पर उन में से कितनों ने कहा क्या यह जिस ने अंधे की आंखें खोलीं यह भी ३८ न कर सका कि यह मनुष्य न मरता। यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर क़बर पर आया वह गुफा थी ३९ और एक पत्थर उस पर धरा था। यीशु ने कहा पत्थर को उठाओ। उस मरे हुए की बहिन मरथा उस से कहने लगी हे प्रभु वह तो अब बसाता है क्योंकि उसे ४० मरे चार दिन हो गए। यीशु ने उस से कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी तो ४१ परमेश्वर की महिमा देखेगी। तब उन्हों ने उस पत्थर को हटाया और यीशु ने आंखें उठाकर कहा हे पिता मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है। ४२ और मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है पर जो भीड़ आस पास खड़ी है उन के कारण मैं ने यह कहा ४३ इसलिये कि वे विश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा। यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे लाज़र निकल ४४ आ। जो मर गया था वह कफन से हाथ पांव बांधे हुए निकल आया और उस का मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उन से कहा उसे खोलो और जाने दो॥

४५ तब जो यहूदी मरयम के यहां आए थे और उस का यह काम देखा था उन में से बहुतों ने उस ४६ पर विश्वास किया। पर उन में से कितनों ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया॥

४७ इस पर महायाजकों और फरीसियों ने सभा इकट्ठी करके कहा हम करते क्या हैं यह मनुष्य तो ४८ बहुत चिन्ह दिखाता है। यदि हम उसे योंहीं छोड़ दें तो सब उस पर विश्वास कर लेंगे और रोमी आकर ४९ हमारी जगह और जाति को भी छीन लेंगे। तब उन में से क़ाइफा नाम एक जन ने जो उस बरस का महा- ५० याजक था उन से कहा तुम कुछ नहीं जानते, और न यह सोचते हो कि तुम्हारे लिये भला है कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे और न यह कि सारी ५१ जाति नाश हो। यह बात उस ने अपनी ओर से न कही पर उस बरस का महायाजक होकर नबूवत की कि ५२ यीशु उस जाति के लिये मरेगा, और न केवल उस जाति के लिये बरन इसलिये भी कि परमेश्वर के ५३ तित्तर बित्तर सन्तानों को एक कर दे। सो उसी दिन से वे उस के मार डालने की सम्मति करने लगे॥

५४ इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा पर वहां से जंगल के निकट के देश में इफ्राईम नाम एक नगर को चला गया और अपने ५५ चेलों के साथ वहीं रहने लगा। यहूदियों का फ़सह निकट था और बहुतेरे लोग फ़सह से पहिले दिहात से ५६ यरूशलेम को गए कि अपने आप को शुद्ध करें। सो वे यीशु को ढूंढ़ने और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे तुम क्या समझते हो क्या वह पर्ब्ब में नहीं ५७ आएगा। और महायाजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रक्खी थी कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहां है तो बताए इसलिये कि उसे पकड़ लें॥

१२.

फिर यीशु फ़सह से छः दिन पहिले बैतनिय्याह में आया जहां लाज़र था जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया १ था। वहां उन्हों ने उस के लिये बियारी बनाई और मरथा सेवा कर रही थी और लाज़र उन में से एक २ था जो उस के साथ खाने को बैठे थे। तब मरयम ने ३ जटामासी का आध सेर बहुमोल खरा अतर लेकर यीशु

(१) यू० । जी उठने में । या मृतकोत्थान में ।

(२) यू० । जी उठना ।

(३) यू० अपने आप को बेचैन करके ।

के पांवों पर ढाला और अपने बालों से उस के पांव पोंछे ४ और अतर की गंध से घर सुगन्धित हो गया। पर उस के चेलों में से यहूदा इस्करियोती नाम एक चेला जो ५ उसे पकड़वाने पर था कहने लगा। यह अतर तीन सौ ६ दीनार[1] में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया गया। उस ने यह बात इसलिये न कही कि उसे कंगालों की चिन्ता थी पर इसलिये कि वह चोर था और उस के पास उन की थैली रहती थी और उस में जो कुछ डाला जाता था ७ सो निकाल लेता था। यीशु ने कहा उसे मेरे गाड़े जाने ८ के दिन के लिये रखने दे। कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा॥

९ यहूदियों में से साधारण लोग जान गए कि वह वहां है और वे न केवल यीशु के कारण आए पर इसलिये भी कि लाज़र को देखें जिसे उस ने मरे हुओं में से १० जिलाया था। तब महायाजकों ने लाज़र को भी मार ११ डालने की सम्मति की। क्योंकि उस के कारण बहुत से यहूदी चले गए और यीशु पर विश्वास किया॥

१२ दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्ब्ब में आए १३ थे यह सुनकर कि यीशु यरूशलेम में आता है। खजूर की डालियां लीं और उस से भेंट करने को निकले और पुकारने लगे कि होशाना धन्य इस्राईल का राजा १४ जो प्रभु के नाम से आता है। जब यीशु को एक गदहे का बच्चा मिला तो उस पर बैठा जैसा लिखा १५ है कि, हे सिय्योन की बेटी मत डर देख तेरा राजा १६ गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है। उस के चेले ये बातें पहिले न समझे थे पर जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तो उन को स्मरण आया कि ये बातें उस के विषय लिखी हुई थीं और लोगों ने १७ उस से ऐसा बरताव किया था। सो भीड़ के लोगों ने गवाही दी जो उस समय उस के साथ थे जब उस ने लाज़र को क़बर में से बुलाकर मरे हुओं में से जिलाया १८ था। इसी कारण लोग उस से भेंट करने को आए कि उन्हों ने सुना था कि उस ने यह चिन्ह दिखाया था। १९ सो फरीसियों ने आपस में कहा सोचो तो कि तुम से कुछ नहीं बनता देखो संसार उस के पीछे हो चला है॥

२० जो लोग पर्ब्ब में भजन करने आए थे उन में से २१ कई यूनानी थे। सो इन्हों ने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उस से बिनती की २२ कि हे साहिब हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं। फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास से कहा तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने आकर यीशु से कहा। २३ इस पर यीशु ने उन से कहा वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा २४ हो। मैं तुम से सच सच कहता हूं जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता २५ है पर जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता २६ है वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो ले और जहां मैं हूं वहां मेरा सेवक भी होगा यदि कोई मेरी सेवा २७ करे तो पिता उस का आदर करेगा। अब मेरा जी घबराता है और मैं क्या कहूं। हे पिता मुझे इस घड़ी से २८ बचा। पर मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। हे पिता अपने नाम की महिमा कर। तब यह आकाशवाणी हुई कि मैं ने उस की महिमा की है और फिर २९ भी करूंगा। तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे उन्हों ने कहा कि बादल गरजा औरों ने कहा कोई स्वर्गदूत ३० उस से बोला। इस पर यीशु ने कहा यह शब्द मेरे ३१ लिये नहीं पर तुम्हारे लिये आया है। अब इस जगत का न्याय होता है अब इस जगत का सरदार निकाल ३२ दिया जायगा। और मैं यदि पृथिवी से ऊंचे पर चढ़ाया ३३ जाऊंगा तो सब को अपने पास खींचूंगा। यह कहने में उस ने यह पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरने को ३४ था। इस पर लोगों ने उस से कहा कि हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है कि मसीह सदा लों रहेगा फिर तू क्योंकर कहता है कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाया ३५ जाना अवश्य है यह मनुष्य का पुत्र कौन है। यीशु ने उन से कहा ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे। जो अंधकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है। ३६ जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान होओ॥

ये बातें कहकर यीशु चला गया और उन से छिपा ३७ रहा। और उस ने उन के सामने इतने चिन्ह दिखाए ३८ तौभी उन्हों ने उस पर विश्वास न किया। कि यशायाह नबी का बचन पूरा हो जो उस ने कहा कि हे प्रभु हमारे समाचार की किस ने प्रतीत की है और प्रभु का ३९ भुजबल किस पर प्रगट हुआ। इस कारण वे विश्वास ४० न कर सके क्योंकि यशायाह ने फिर कहा। उस ने उन की आंखें अंधी और उन का मन कठोर किया है ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें और मन से समझें और

(१) देखो मत्ती १८ : २८।

४१ फिरें और मैं उन्हें चंगा करूं। यशायाह ने ये बातें इस लिये कहीं कि उस की महिमा देखी और उस ने उस के
४२ विषय बातें कीं। तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया परन्तु फरीसियों के कारण प्रकट में न मानते थे ऐसा न हो कि सभा में से निकाले
४३ जाएं। क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी॥

४४ यीशु ने पुकार कर कहा जो मुझ पर विश्वास करता है वह मुझ पर नहीं बरन मेरे भेजनेवाले पर
४५ विश्वास करता है। और जो मुझे देखता है वह मेरे
४६ भेजनेवाले को देखता है। मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं कि जो कोई मुझ पर विश्वास करे वह अंध-
४७ कार में न रहे। यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने को नहीं पर जगत का उद्धार करने को
४८ आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता उस को दोषी ठहरानेवाला तो एक है। जो वचन मैं ने कहा है वही पिछले दिन में उसे दोषी
४९ ठहराएगा। क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूं और क्या क्या बोलूं।
५० और मैं जानता हूं कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये जो कुछ मैं बोलता हूं जैसा पिता ने मुझ से
५१ कहा है वैसा ही बोलता हूं॥

१३. फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं तो अपने लोगों से जो जगत में थे जैसा प्रेम रखता था अन्त तक
२ प्रेम रखता रहा। और जब शैतान[१] शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था कि उसे
३ पकड़वाए तो बियारी के समय, यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं और परमेश्वर के पास जाता हूं,
४ बियारी से उठकर अपने कपड़े उतार दिए और अंगोछा
५ लेकर अपनी कमर बांधी। तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पांव धोने और जिस अंगोछे से उस की कमर
६ बंधी थी उस से पोंछने लगा। तब वह शमौन पतरस के पास आया। इस ने उस से कहा हे प्रभु क्या तू
७ मेरे पांव धोता है। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं करता हूं तू अब नहीं जानता पर इस के पीछे सम-
८ झेगा। पतरस ने उस से कहा तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा। यह सुन यीशु ने उस से कहा यदि मैं तुझे न
९ धोऊं तो मेरे साथ तेरा कुछ साझा नहीं। शमौन पतरस ने उस से कहा हे प्रभु तो मेरे पांव ही नहीं बरन
१० हाथ और सिर भी धो दे। यीशु ने उस से कहा जो नहा चुका है उसे पांव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं पर वह बिलकुल शुद्ध है और तुम शुद्ध
११ हो पर सब के सब नहीं। वह तो अपने पकड़वानेवाले को जानता था इसी लिये उस ने कहा तुम सब के सब शुद्ध नहीं॥

१२ जब वह उन के पांव धो चुका और अपने कपड़े पहिन कर फिर बैठ गया तो उन से कहने लगा क्या तुम
१३ समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया। तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो और भला कहते हो क्योंकि वही
१४ हूं। सो यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए।
१५ क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैं ने
१६ तुम्हारे साथ किया है तुम भी किया करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं
१७ और न भेजा हुआ[२] अपने भेजनेवाले से। तुम जो ये
१८ बातें जानते हो यदि उन पर चलो तो धन्य हो। मैं तुम सब के विषय नहीं कहता। जिन्हें मैं ने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूं। पर यह इसलिये है कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो कि जो मेरी रोटी
१९ खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई। अब मैं उस के होने से पहिले तुम्हें जताए देता हूं कि जब हो जाए तो
२० तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है॥

२१ ये बातें कहकर यीशु आत्मा में घबराया और यह गवाही दी कि मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम
२२ में से एक मुझे पकड़वाएगा। चेले यह संदेह करते हुए कि वह किस के विषय कहता है एक दूसरे की ओर
२३ देखने लगे। उस के चेलों में से एक जिस से यीशु प्रेम रखता था यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा[३] था।
२४ सो शमौन पतरस ने उस की ओर सैन करके पूछा कि
२५ बता तो वह किस के विषय कहता है। तब उस ने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुक कर पूछा हे प्रभु वह कौन
२६ है। यीशु ने उत्तर दिया जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा

(१) यू० । इबलीस।
(२) या प्रेरित। (३) यू०। लेटा।

डुबोकर दूंगा वही है । और उस ने टुकड़ा डुबोकर
२७ शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के दिया । और
टुकड़ा लेते ही शैतान उस में समा गया । तब यीशु
२८ ने उस से कहा जो तू करता है तुरन्त कर । पर
बैठनेवालों[१] में से किसी ने न जाना कि उस ने यह
२९ बात उस से किस लिये कही । यहूदा के पास थैली
रहती थी इसलिये किसी किसी ने समझा कि यीशु
उस से कहता है कि जो कुछ हमें पर्व के लिये चाहिए
३० वह मोल ले या यह कि कङ्गालों के कुछ दे । सो वह
टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया और रात थी ॥

३१ जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा अब
मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई और परमेश्वर की महिमा
३२ उस में हुई । और परमेश्वर भी अपने में उस को
३३ महिमा करेगा बरन तुरन्त करेगा । हे बालको मैं और
थोड़ी देर तुम्हारे पास हूं । तुम मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा
मैं ने यहूदियों से कहा कि जहां मैं जाता हूं वहां तुम
नहीं आ सकते वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूं ।
३४ मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे से प्रेम
रक्खो । जैसा मैं ने तुम से प्रेम रक्खा है वैसा ही तुम
३५ भी एक दूसरे से प्रेम रक्खो । यदि आपस में प्रेम
रक्खोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो ॥

३६ शमौन पतरस ने उस से कहा हे प्रभु तू कहां
जाता है । यीशु ने उत्तर दिया कि जहां मैं जाता हूं
वहां तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता पर इस के बाद
३७ मेरे पीछे आएगा । पतरस ने उस से कहा हे प्रभु अभी
मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता मैं तो तेरे लिये अपना
३८ प्राण दूंगा । यीशु ने उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना
प्राण देगा । मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि मुर्ग़
बांग न देगा जब तक तू तीन बार मुझ से न मुकरेगा ॥

१४. तुम्हारा मन न घबराए परमेश्वर पर विश्वास रखते हो[२]

२ मुझ पर भी विश्वास रक्खो । मेरे पिता के घर में
बहुत से रहने के स्थान हैं यदि न होते तो मैं तुम से
कह देता । मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता
३ हूं । यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं
तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां
४ मैं रहूं वहां तुम भी रहो । और जहां मैं जाता हूं
५ तुम वहां का मार्ग जानते हो । तोमा ने उस से कहा
हे प्रभु हम नहीं जानते तू कहां जाता है तो मार्ग कैसे

(१) यू० । लेटनेवालों ।

(२) या । रक्खो ।

जानें । यीशु ने उस से कहा मार्ग और सच्चाई और ६
जीवन मैं ही हूं बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास
नहीं पहुंचता । यदि तुम ने मुझे जाना होता ७
तो मेरे पिता के भी जानते अब से उसे जानते हो और
उसे देखा भी । फिलिप्पुस ने उस से कहा हे प्रभु पिता ८
के हमें दिखा दे यही हमारे लिये बहुत है । यीशु ने ९
उस से कहा हे फिलिप्पुस मैं इतने दिन से तुम्हारे
साथ हूं और क्या मुझे नहीं जानता । जिस ने मुझे
देखा उस ने पिता के देखा । तू क्योंकर कहता है कि
पिता के हमें दिखा । क्या तू प्रतीति नहीं करता कि १०
मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है ये बातें जो मैं तुम से
कहता हूं अपनी ओर से नहीं कहता परन्तु पिता मुझ में
रहकर अपने काम करता है । मेरी प्रतीति करो कि मैं ११
पिता में हूं और पिता मुझ में है नहीं तो कामों ही के
कारण मेरी प्रतीति करो । मैं तुम से सच सच कहता १२
हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है ये काम जो मैं
करता हूं वह भी करेगा बरन इन से भी बड़े काम
करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं । और जो कुछ तुम १३
मेरे नाम से मांगोगे वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा
पिता की महिमा हो । यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ १४
मांगोगे तो मैं उसे करूंगा । यदि तुम मुझ से प्रेम १५
रखते हो तो मेरी आज्ञाओं के मानोगे । और मैं पिता १६
से बिनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक
देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे । अर्थात् सत्य का १७
आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह
न उसे देखता और न उसे जानता है । तुम उसे जानते
हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम में
होगा । मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा मैं तुम्हारे पास आता १८
हूं । और थोड़ी देर है कि संसार मुझे फिर न देखेगा १९
पर तुम मुझे देखोगे इसलिये कि मैं जीता हूं तुम भी
जीते रहोगे । उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में २०
हूं और तुम मुझ में और मैं तुम में । जिस के पास २१
मेरी आज्ञाएं हैं और वह उन्हें मानता है वही मुझ से प्रेम
रखता है और जो मुझ से प्रेम रखता है उस से मेरा
पिता प्रेम रक्खेगा और मैं उस से प्रेम रक्खूंगा और अपने
आप के उस पर प्रगट करूंगा । उस यहूदा ने जो इस्क- २२
रियोती न था उस से कहा हे प्रभु क्या हुआ कि तू अपने
आप के हम पर प्रगट किया चाहता है और संसार पर
नहीं । यीशु ने उस के उत्तर दिया यदि कोई मुझ से प्रेम २३
रक्खे तो वह मेरे वचन मानेगा और मेरा पिता उस से
प्रेम रक्खेगा और हम उस के पास आएंगे और उस के
साथ बास करेंगे । जो मुझ से प्रेम नहीं रखता वह २४

मेरे वचन नहीं मानता और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं बरन पिता का है जिस ने मुझे भेजा ॥

२५ ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से २६ कहीं। पर सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है वह सब तुम्हें स्मरण करा- २७ एगा। मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं जैसे संसार देता है वैसे मैं तुम्हें नहीं देता। २८ तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा कि मैं जाता हूं और तुम्हारे पास फिर आता हूं। यदि तुम मुझ से प्रेम रखते तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूं २९ क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है कि जब वह हो ३० जाए तो तुम प्रतीति करो। मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूंगा क्योंकि इस संसार का सरदार ३१ आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं। पर यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी मैं वैसे ही करता हूं। उठो यहां से चलें ॥

१५. सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता २ किसान है। जो डाली मुझ में है और नहीं फलती उसे वह काट डालता है और जो ३ फलती है उसे वह छांटता है कि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है शुद्ध हो। ४ तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में। जैसे डाली दाखलता में यदि बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो ५ तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं तुम डालियां हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में वह बहुत फलता है क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ ६ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता और सूख जाता है और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं और ७ वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह ८ तुम्हारे लिये हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी में होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ तब ही तुम ९ मेरे चेले ठहरोगे। जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रक्खा वैसा १० ही मैं ने तुम से प्रेम रक्खा मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे तो मेरे प्रेम में बने रहोगे जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उस के प्रेम में बना रहता हूं। ११ मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में रहे और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। १२ मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रक्खा वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रक्खो। १३ इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। १४ जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं यदि उसे करो तो मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा क्योंकि दास नहीं जानता कि उस का स्वामी क्या करता है पर मैं ने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं वे सब तुम्हें बता दीं। १६ तुम ने मुझे नहीं चुना पर मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम्हें दे। १७ इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूं कि तुम एक दूसरे से प्रेम रक्खो। १८ यदि संसार तुम से बैर रखता है तो तुम जानते हो कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रक्खा। १९ यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनों से प्रीति रखता पर इस कारण कि तुम संसार के नहीं बरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है। २० जो बात मैं ने तुम से कही थी कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता वह स्मरण करो। यदि उन्हों ने मुझे सताया तो तुम्हें भी सताएंगे यदि उन्हों ने मेरी बात मानी तो तुम्हारी भी मानेंगे। २१ पर यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। २२ यदि मैं न आता और उन से बातें न करता तो वे पापी न ठहरते पर अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं। २३ जो मुझ से बैर रखता है वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। २४ यदि मैं उन में वे काम न करता जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते पर अब तो उन्हों ने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा और दोनों से बैर किया। २५ और यह इसलिये हुआ कि वह वचन पूरा हो जो उन की व्यवस्था में लिखा है कि उन्हों ने मुझ से अकारण बैर किया। २६ पर जब वह सहायक आएगा जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है तो वह मेरी गवाही देगा। २७ और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो ॥

१६. ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। २ वे तुम्हें सभा में से निकाल देंगे बरन वह समय आता है कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। ३ और यह वे इसलिये करेंगे कि उन्हों ने न पिता को जाना न मुझे। ४ पर ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कहीं कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए कि मैं ने तुम से कह दिया था और मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिये न कहीं कि मैं तुम्हारे साथ था। ५ अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता कि तू कहां जाता है। ६ पर मैं ने जो ये बातें तुम से कही हैं इसलिये तुम्हारा मन शोक से भर गया। ७ तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा पर यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। ८ और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय निरुत्तर[१] करेगा। ९ पाप के विषय इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। १० धार्मिकता के विषय इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं और तुम मुझे फिर न देखोगे। ११ न्याय के विषय इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। १२ मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं पर अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। १३ पर जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सारे सत्य का मार्ग बताएगा क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा पर जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। १४ वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। १५ जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है इसलिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। १६ थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे। १७ तब उस के कितने चेलों ने आपस में कहा यह क्या है जो वह हम से कहता है कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं। १८ सो उन्हों ने कहा यह थोड़ी देर जो वह कहता है क्या बात है हम नहीं जानते कि क्या कहता है। १९ यीशु ने यह जानकर कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं उन से कहा क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय पूछ पाछ करते हो कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे। २० मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम रोओगे और विलाप करोगे पर संसार आनन्द करेगा। तुम्हें शोक होगा पर तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा। २१ जब स्त्री जनने लगती है तो उस को शोक होता है क्योंकि उस की दुःख की घड़ी आ पहुंची पर जब वह बालक जन चुकी तो इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती। २२ और तुम्हें भी अब तो शोक है पर मैं तुम से फिर मिलूंगा[२] और तुम्हारे मन में आनन्द होगा और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा। २३ उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे। मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि पिता से कुछ मांगोगे तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। २४ अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा। मांगो तो पाओगे कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए॥

२५ मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं पर वह समय आता है कि मैं तुम से दृष्टान्तों में और नहीं कहूंगा पर खोलकर तुम्हें पिता के विषय बताऊंगा। २६ उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा। २७ क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रीति रक्खी है और यह भी प्रतीति की है कि मैं पिता की ओर से निकल आया। २८ मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं। २९ उस के चेलों ने कहा देख अब तो तू खोलकर कहता है और कोई दृष्टान्त नहीं कहता। ३० अब हम जान गए कि तू सब कुछ जानता है और तुझे प्रयोजन नहीं कि कोई तुझ से पूछे इस से हम प्रतीति करते हैं कि तू परमेश्वर से निकला है। ३१ यह सुन यीशु ने उन से कहा क्या तुम अब प्रतीति करते हो। ३२ देखो वह घड़ी आती है बरन आ पहुंची कि तुम सब तित्तर बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है। ३३ मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है पर ढाढ़स बांधो मैं ने संसार को जीता है॥

१७. यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें आकाश की ओर उठाकर कहा हे पिता वह घड़ी आ पहुंची अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करे। २ क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया कि जिन्हें तू ने

(१) या। कायल। (२ मू०। तुम्हें फिर देखूंगा।

३ उस को दिया है उन सब को वह अनन्त जीवन दे। और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर ४ को और यीशु मसीह को जिसे तू ने भेजा है जानें। जो काम तू ने मुझे करने को दिया था उसे पूरा करके मैं ने ५ पृथिवी पर तेरी महिमा की है। और अब हे पिता तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत ६ के होने से पहिले मेरी तेरे साथ थी। मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया। वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ७ ने तेरे वचन को मान लिया है। अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है सब तेरी ओर से है। ८ क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचा दीं मैं ने उन्हें उन को पहुंचा दिया और उन्हों ने उन को ग्रहण किया और सच सच जान लिया है कि मैं तेरी ओर से निकला हूं ९ और प्रतीति कर ली कि तू ने मुझे भेजा। मैं उन के लिये बिनती करता हूं संसार के लिये बिनती नहीं करता हूं पर उन्हीं के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है १० क्योंकि वे तेरे हैं। और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है और इन से मेरी महिमा ११ प्रगट है। मैं आगे को जगत में न रहूंगा पर ये जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं। हे पवित्र पिता अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है उन १२ की रक्षा कर कि वे हमारी नाईं एक हों। जब मैं उन के साथ था तो मैं ने तेरे उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है उन की रक्षा की मैं ने उन की चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ इसलिये कि पवित्र शास्त्र की १३ बात पूरी हो। पर अब मैं तेरे पास आता हूं और ये बातें जगत में कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपने में १४ पूरा पाएं। मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है और संसार ने उन से बैर किया क्योंकि जैसा मैं संसार का १५ नहीं वैसे ही वे संसार के नहीं। मैं यह बिनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले पर यह कि तू उन्हें १६ उस दुष्ट[१] से बचाए रख। जैसा मैं संसार का नहीं वैसे १७ ही वे भी संसार के नहीं। सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र १८ कर तेरा वचन सत्य है। जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा १९ वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। और उन के लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूं कि वे भी सत्य २० के द्वारा पवित्र किए जाएं। मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता पर उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक २१ हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है और मैं तुझ में हूं कि वे भी हम में हों इसलिये कि जगत प्रतीति २२ करे कि तू ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है कि जैसे हम एक हैं वैसे २३ वे भी एक हों। मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं और जगत जाने कि तू ने मुझे भेजा और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रक्खा वैसा ही उन से २४ प्रेम रक्खा। हे पिता मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है जहां मैं हूं वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है क्योंकि तू ने २५ जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रक्खा। हे धार्म्मिक पिता संसार ने तुझे नहीं जाना पर मैं ने तुझे जाना और इन्हों ने भी जाना कि तू ने मुझे भेजा। २६ और मैं ने तेरा नाम उन को जताया और जताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था वह उन में रहे और मैं उन में रहूं॥

(१) या बुराई।

१८

यीशु ये बातें कह कर अपने चेलों के साथ किद्रोन के नाले के पार गया वहां एक बारी थी जिस में वह और उस के २ चेले गए। उस का पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहां जाया ३ करता था। तब यहूदा पलटन को और महायाजकों और फरीसियों की ओर से प्यादों को लेकर दीपकों और ४ मशालों और हथियारों को लिये हुए वहां आया। सो यीशु उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थीं जानकर निकला और उन से कहने लगा किसे ढूंढ़ते ५ हो। उन्हों ने उस को उत्तर दिया यीशु नासरी को। यीशु ने उन से कहा मैं हूं। और उस का पकड़वाने- ६ वाला यहूदा भी उन के साथ खड़ा था। उस के यह कहते ही कि मैं हूं वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े। ७ तब उस ने फिर उन से पूछा तुम किस को ढूंढ़ते हो। ८ वे बोले यीशु नासरी को। यीशु ने उत्तर दिया मैं तो तुम से कह चुका कि मैं ही हूं सो यदि मुझे ढूंढ़ते हो ९ तो इन्हें जाने दो। यह इस लिये हुआ कि वह वचन पूरा हो जो उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझे दिया १० उन में से मैं ने एक को भी न खोया। शमौन पतरस ने तलवार जो उस के पास थी खींची और महायाजक के दास पर चलाकर उस का दहिना कान उड़ा दिया ११ उस दास का नाम मलखुस था। तब यीशु ने पतरस से कहा अपनी तलवार काठी में रख। जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊं॥

१२ तब सिपाहियों और उन के सूबेदार और यहूदियों १३ के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बांध लिया। और पहिले उसे हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह उस बरस के महा- १४ याजक काइफा का ससुर था। यह वही काइफा था जिस ने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरुष का मरना अच्छा है॥

१५ शमौन पतरस और एक और चेला भी यीशु के पीछे हो लिए। यह चेला महायाजक का जान पहचान था १६ और यीशु के साथ महायाजक के आंगन में गया। परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा सो वह दूसरा चेला जो महायाजक का जान पहचान था बाहर निकला और १७ द्वारपालिन से कहकर पतरस को भीतर ले आया। उस दासी ने जो द्वारपालिन थी पतरस से कहा क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है। उस ने कहा मैं नहीं हूं। १८ दास और प्यादे जाड़े के कारण कोयले धधकाकर खड़े ताप रहे थे और पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था॥

१९ तब महायाजक ने यीशु से उस के चेलों के २० विषय और उस के उपदेश के विषय पूछा। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि मैं ने जगत से खोलकर बातें कीं मैं ने सभाओं और मन्दिर में जहां सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं सदा उपदेश किया और २१ गुप्त में कुछ नहीं कहा। तू मुझ से क्यों पूछता है सुननेवालों से पूछ कि मैं ने उन से क्या कहा। देख २२ वे जानते हैं कि मैं ने क्या क्या कहा। जब उस ने यह कहा तो प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था यीशु को थप्पड़ मारकर कहा क्या तू महायाजक को यों उत्तर २३ देता है। यीशु ने उसे उत्तर दिया यदि मैं ने बुरा कहा तो उस बुराई पर गवाही दे पर यदि भला कहा तो मुझे २४ क्यों मारता है। हन्ना ने उसे बंधे हुए काइफा महायाजक के पास भेज दिया॥

२५ शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा था। तब उन्हों ने उस से कहा क्या तू भी उस के चेलों में से है। २६ उस ने मुकर के कहा मैं नहीं हूं। महायाजक के दासों में से एक जो उस के कुटुम्ब में से था जिस का कान पतरस ने काट डाला था बोला क्या मैं ने तुझे उस के २७ साथ बारी में न देखा था। पतरस फिर मुकर गया और तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी॥

२८ और वे यीशु को काइफा के पास से क़िले को ले गए और भोर का समय था पर वे आप क़िले के भीतर न गए कि अशुद्ध न हों पर फ़सह खा सकें। २९ सो पीलातुस उन के पास बाहर निकल आया और कहा तुम इस मनुष्य पर किस बात की नालिश करते ३० हो। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते। ३१ पीलातुस ने उन से कहा तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का न्याय करो। यहूदियों ने उस से कहा हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें। ३२ यह इस-लिये हुआ कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उस ने यह पता देते हुए कही थी कि उस का मरना कैसा होगा॥

३३ तब पीलातुस फिर क़िले के भीतर गया और यीशु को बुलाकर उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है। ३४ यीशु ने उत्तर दिया क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय तुझ से कही। ३५ पीलातुस ने उत्तर दिया क्या मैं यहूदी हूं। तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा तू ने क्या किया। ३६ यीशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं यदि मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता। पर अब मेरा राज्य यहां का नहीं। ३७ पीलातुस ने उस से कहा तो क्या तू राजा है। यीशु ने उत्तर दिया कि तू कहता है क्योंकि मैं राजा हूं मैं ने इसलिये जन्म लिया और इसलिये जगत में आया हूं कि सत्य पर साक्षी दूं जो कोई सत्य का है वह मेरा शब्द सुनता है। ३८ पीलातुस ने उस से कहा सत्य क्या है॥

और यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा मैं तो उस में कुछ दोष नहीं पाता। ३९ पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फ़सह में तुम्हारे लिये एक जन को छोड़ दूं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं। ४० तब उन्हों ने फिर चिल्लाकर कहा इसे नहीं पर बरअब्बा को और बरअब्बा डाकू था॥

१९.

इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए। २ और सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उस के सिर पर रक्खा और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया। ३ और उस के पास आ आकर कहने लगे हे यहूदियों के राजा प्रणाम और उसे थप्पड़ भी मारे। ४ तब पीलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा देखो मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूं इसलिये कि तुम जानो कि मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता। ५ सो यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और पीलातुस ने उन से कहा देखो यह मनुष्य। ६ जब महायाजकों और

प्यादों ने उसे देखा तो चिल्लाकर कहा कि क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर। पीलातुस ने उन से कहा तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता। ७ यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र ८ बनाया। जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और भी ९ डर गया। और फिर क़िले के भीतर गया और यीशु से कहा तू कहां का है पर यीशु ने उसे कुछ उत्तर न १० दिया। पीलातुस ने उस से कहा मुझ से क्यों नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का मुझे अधिकार है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी ११ मुझे अधिकार है। यीशु ने उत्तर दिया कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता इसलिये जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़- १२ वाया है उस का पाप अधिक है। इस से पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा पर यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा यदि तू इस को छोड़ दे तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह १३ कैसर का सामना करता है। ये बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह जो चबूतरा और इब्रानी में गब्बता कहलाता है न्याय-आसन पर बैठा। १४ यह फ़सह की तैयारी का दिन और छठे घंटे के लगभग था। तब उस ने यहूदियों से कहा देखो यही है १५ तुम्हारा राजा। पर वे चिल्लाए कि उस का काम तमाम कर उसे क्रूस पर चढ़ा। पीलातुस ने उन से कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं। महायाजकों ने उत्तर दिया कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा १६ नहीं। तब उस ने उसे उन के हाथ सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

१७ तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस जगह तक बाहर गया जो खोपड़ी की १८ जगह कहलाती है और इब्रानी में गुलगुता। वहां उन्हों ने उसे और उस के साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया एक को इधर और एक को उधर और बीच में १९ यीशु को। और पीलातुस ने दोष पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ था यीशु २० नासरी यहूदियों का राजा। यह दोष पत्र बहुत यहू- दियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया नगर के पास था और पत्र इब्रानी और २१ लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था। तब यहूदियों के महायाजकों ने पीलातुस से कहा यहूदियों का राजा मत लिख पर यह कि उस ने कहा मैं यहूदियों का राजा हूं। पीलातुस ने उत्तर दिया कि मैं ने जो लिख २२ दिया सो लिख दिया॥

२३ जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके तो उस के कपड़े लेकर चार भाग किये हर सिपाही के लिये एक भाग और कुरता भी लिया पर कुरता बिन २४ सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। इसलिये उन्हों ने आपस में कहा हम इस को न फाड़ें पर उस पर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा। यह इस- लिये हुआ कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए और मेरे वस्त्र पर २५ चिट्ठी डाली। सो सिपाहियों ने यही किया। पर यीशु के क्रूस के पास उस की माता और उस की माता की बहिन मरयम क्लोपास की पत्नी और मरयम मगदलीनी २६ खड़ी थी। यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिस से वह प्रेम रखता था पास खड़े देखकर अपनी माता से २७ कहा हे नारी[1] देख यह तेरा पुत्र है। तब उस चेले से कहा यह तेरी माता है और उसी समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया॥

२८ इस के पीछे यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी २९ हो कहा मैं पियासा हूं। वहां सिरके से भरा हुआ एक बर्तन धरा था सो उन्हों ने सिरके में भिगोए हुए इस्पंज ३० को ज़ूफे पर रखकर उस के मुंह से लगाया। जब यीशु ने वह सिरका लिया तो कहा पूरा हुआ और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिया॥

३१ इसलिये कि वह तैयारी का दिन था यहूदियों ने पीलातुस से बिनती की कि उन की टांगें तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं कि बिश्राम के दिन को क्रूसों पर न रहें क्योंकि वह बिश्राम का दिन बड़ा दिन था। ३२ सो सिपाहियों ने आकर पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे ३३ की भी जो उस के साथ क्रूसों पर चढ़ाये गए थे। पर जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है तो ३४ उस की टांगें न तोड़ीं। पर सिपाहियों में से एक ने बरछे से उस का पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और ३५ पानी निकला। जिस ने यह देखा उसी ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है और वह जानता है कि ३६ सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो। ये बातें इस लिये हुईं कि पवित्र शास्त्र की यह बात पूरी हो कि उस ३७ की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी। फिर एक जगह और यह लिखा है कि जिसे उन्हों ने बेधा उस पर दृष्टि करेंगे॥

(१) या महिला।

३८ इन बातों के पीछे अरमतियाह के यूसुफ़ ने जो यीशु का चेला था पर यहूदियों के डर से इस बात को छिपाये रखता था पीलातुस से बिनती की कि मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं और पीलातुस ने उस की
३९ सुनी और वह आकर उस की लोथ ले गया। निकुदेमुस भी जो पहिले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के अटकल मिला हुआ गन्धरस और
४० एलवा लेके आया। तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार
४१ उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा। उस जगह पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था एक बारी थी और उस बारी में एक नई क़बर थी जिस में कभी कोई
४२ न रक्खा गया था। सो यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्हों ने यीशु को वहां रक्खा क्योंकि वह क़बर निकट थी॥

२०. अठवारे के पहिले दिन मरयम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही क़बर पर आई और पत्थर को क़बर
२ से हटा हुआ देखा। तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा वे प्रभु को क़बर में से निकाल ले गए हैं और हम नहीं जानतीं कि उसे कहां
३ रख दिया है। तब पतरस और वह दूसरा चेला निक-
४ लकर क़बर की ओर चले। और दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे कि दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर क़बर
५ पर पहिले पहुंचा। और झुककर कपड़े पड़े देखे तौभी
६ वह भीतर न गया। तब शमौन पतरस उस के पीछे पीछे पहुंचा और क़बर के भीतर गया और कपड़े पड़े
७ देखे। और वह अंगोछा जो उस के सिर से बंधा हुआ था कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं पर अलग एक जगह
८ लपेटा हुआ देखा। तब दूसरा चेला भी जो क़बर पर पहिले पहुंचा था भीतर गया और देखकर विश्वास
९ किया। वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा।
१० सो ये चेले अपने घर लौट गए॥
११ पर मरयम रोती हुई क़बर के पास बाहर खड़ी
१२ रही और रोते रोते क़बर की ओर झुककर, दो स्वर्गदूतों को उजले कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा जहां यीशु की लोथ पड़ी थी।
१३ उन्हों ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है। उस ने उन से कहा वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और नहीं जानती
१४ कि उसे कहां रक्खा है। यह कह कर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु
१५ है। यीशु ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है किस को ढूंढ़ती है। उस ने माली समझ कर उस से कहा हे महाराज यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह
१६ कि उसे कहां रक्खा है और मैं उसे ले जाऊंगी। यीशु ने उस से कहा मरयम। उस ने पीछे फिर कर उस से इब्रानी
१७ में कहा रब्बूनी अर्थात् हे गुरु। यीशु ने उस से कहा मुझे मत छू[१] क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर *नहीं गया पर मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे* कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं।
१८ मरयम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया कि मैं ने प्रभु को देखा और उस ने मुझ से ये बातें कहीं॥
१९ उसी दिन जो अठवारे का पहिला दिन था सांझ होते हुए जब वहां के द्वार जहां चेले थे यहूदियों के डर के मारे बन्द थे यीशु आया और बीच में खड़ा होकर
२० उन से कहा तुम्हें शान्ति मिले। और यह कह कर उस ने अपना हाथ और अपना पंजर उन को दिखाए। तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए। यीशु ने फिर उन
२१ से कहा तुम्हें शान्ति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा
२२ है वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं। यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा पवित्र आत्मा लो।
२३ जिन के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किए गए हैं जिन के तुम रक्खो वे रक्खे हुए हैं॥
२४ पर बारहों में से एक जन अर्थात् तोमा जो दिदुमुस कहलाता है जब यीशु आया तो उन के साथ
२५ न था। सो और चेले उस से कहने लगे हम ने प्रभु को देखा है। उस ने उन से कहा जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेद न देख लूं और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं और उस के पंजर में अपना हाथ न डाल लूं तो मैं प्रतीति न करूंगा॥
२६ आठ दिन के पीछे उस के चेले फिर घर के भीतर थे और तोमा उन के साथ था और द्वार बन्द थे तो यीशु आया और उस ने बीच में खड़े होकर कहा तुम्हें शान्ति
२७ मिले। तब उस ने तोमा से कहा अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं पर विश्वासी हो।
२८ यह सुन तोमा ने उत्तर दिया हे मेरे प्रभु हे मेरे परमेश्वर।
२९ यीशु ने उस से कहा तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है धन्य हैं वे जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया॥

(१) या मत पकड़े रह।

३० यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने ३१ दिखाए जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। पर ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उस के नाम से जीवन पाओ॥

२१. इन बातों के पीछे यीशु ने फिर अपने आप को चेलों को तिबिरियास की झील के किनारे दिखाया और २ इस रीति से दिखाया। शमौन पतरस और तोमा जो दिदुमुस कहलाता है और गलील के काना नगर का नतनएल और ज़बदी के पुत्र और उस के चेलों ३ में से दो और जन इकट्ठे थे। शमौन पतरस ने उन से कहा मैं मछली पकड़ने को जाता हूं। उन्हों ने उस से कहा हम भी तेरे साथ चलते हैं सो वे निकल ४ कर नाव पर चढ़े पर उस रात कुछ नहीं पकड़ा। भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ तौभी चेलों ने न ५ पहचाना कि यह यीशु है। तब यीशु ने उन से कहा हे बालको क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है उन्हों ने ६ उत्तर दिया कि नहीं। उस ने उन से कहा नाव की दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे सो उन्हों ने डाला और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच ७ न सके। इसलिये उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा यह तो प्रभु है। शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है कमर में अंगरखा कस लिया ८ क्योंकि वह नंगा था और झील में कूद पड़ा। पर और चेले डोंगी पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए क्योंकि वे किनारे से दूर नहीं कोई दो सौ हाथ ९ पर थे। जब किनारे पर उतरे तो उन्हों ने कोएले की आग और उस पर मछली रक्खी हुई और रोटी देखी। १० यीशु ने उन से कहा जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी ११ हैं उन में से कुछ लाओ। शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर एक सौ तिर्पन बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा और इतनी मछलियां होने से भी १२ जाल न फटा। यीशु ने उन से कहा कि आओ भोजन करो और चेलों में से किसी को हियाव न हुआ कि उस से पूछे कि तू कौन है क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु १३ ही है। यीशु आया और रोटी लेकर उन्हें दी और १४ वैसे ही मछली भी। यह तीसरी बार है कि यीशु मरे हुओं में से जी उठने के पीछे चेलों को दिखाई दिया॥

१५ भोजन करने के पीछे यीशु ने शमौन पतरस से कहा हे शमौन यूहन्ना के पुत्र क्या तू मुझ से इन से बढ़कर प्रेम रखता है। उस ने उस से कहा हां प्रभु तू जानता १६ है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं। उस ने उस से कहा मेरे मेमनों को चरा। उस ने फिर दूसरी बार उस से कहा। हे शमौन यूहन्ना के पुत्र क्या तू मुझ से प्रेम रखता है। उस ने उस से कहा हां प्रभु तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं। उस ने उस से कहा १७ मेरी भेड़ों की रखवाली कर। उस ने तीसरी बार उस से कहा हे शमौन यूहन्ना के पुत्र क्या तू मुझ से प्रीति रखता है। पतरस उदास हुआ कि उस ने उस से तीसरी बार कहा क्या तू मुझ से प्रीति रखता है और उस से कहा हे प्रभु तू तो सब कुछ जानता है तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं। यीशु ने उस से १८ कहा मेरी भेड़ों को चरा। मैं तुझ से सच सच कहता हूं जब तू जवान था तो अपनी कमर बांध कर जहां चाहता था वहां फिरता था पर जब तू बूढ़ा होगा तो अपने हाथ लम्बे करेगा और दूसरा तेरी कमर बांधकर १९ जहां तू न चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा। उस ने इन बातों से पता दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा और यह कहकर उस से कहा मेरे पीछे २० हो ले। पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे से आते देखा जिस से यीशु प्रेम रखता था और जिस ने बियारी के समय उस की छाती की ओर झुक कर पूछा था हे २१ प्रभु तेरा पकड़वानेवाला कौन है। उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा हे प्रभु इस का क्या हाल होगा। २२ यीशु ने उस से कहा यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे तो तुझे क्या। तू मेरे पीछे हो ले। २३ इसलिये भाइयों में यह बात फैल गई कि वह चेला न मरेगा तौभी यीशु ने उस से यह नहीं कहा कि यह न मरेगा पर यह कि यदि मैं चाहूं कि यह मेरे आने तक ठहरा रहे तो तुझे क्या॥

२४ यह वही चेला है जो इन बातों की गवाही देता है और जिस ने इन बातों को लिखा और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है॥

२५ और भी बहुत से काम हैं जो यीशु ने किए। यदि वे एक एक करके लिखे जाते तो मैं समझता हूं कि पुस्तकें जो लिखी जातीं जगत में भी न समातीं॥

प्रेरितों के कामों का बखान।

---

१. हे थियुफिलुस मैं ने पहिला बखान उन सब बातों के विषय रचा जो यीशु ने आरम्भ २ किया और करता और सिखाता रहा, उस दिन तक कि वह उन प्रेरितों को जिन्हें उस ने चुना था पवित्र आत्मा के ३ द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया गया। और उस ने दुख उठाने के पीछे बहुतेरे पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवता दिखाया कि चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा और परमेश्वर के राज्य की बातें करता ४ रहा। और उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी कि यरूशलेम को न छोड़ो परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके ५ हो। *क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिसमा दिया पर* थोड़े दिनों के पीछे तुम पवित्रात्मा से[1] बपतिसमा पाओगे॥

६ सो उन्हों ने इकट्ठे होकर उस से पूछा कि हे प्रभु क्या तू इसी समय इस्राईल को राज्य फेर देता है। ७ उस ने उन से कहा उन समयों या कालों को जानना जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रक्खा है ८ तुम्हारा काम नहीं। पर जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथिवी के छोर ९ तक मेरे गवाह होगे। यह कहकर वह उन के देखते देखते ऊपर उठा लिया गया और बादल ने उसे उन की १० आंखों से छिपा लिया। और उस के जाते हुए जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे तो देखो दो पुरुष उजला ११ वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। और कहने लगे हे गलीली पुरुषो तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो। यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा उसी रीति से फिर आएगा॥

१२ तब वे जैतून नाम पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट एक विश्राम के दिन की बाट भर दूर है यरूशलेम को लौटे। और जब वहां पहुंचे तो वे उस अटारी १३ पर गये जहां पतरस और यूहन्ना और याकूब और अन्द्रियास और फिलिप्पुस और तोमा और बरतुलमाई और मत्ती और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन ज़ेलोतेस और याकूब का पुत्र[2] यहूदा रहते थे। ये सब १४ कई स्त्रियों और यीशु की माता मरयम और उस के भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे॥

१५ और उन्हीं दिनों पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस जन के अटकल इकट्ठे थे खड़ा होकर कहने लगा, हे भाइयो अवश्य था कि पवित्र शास्त्र की १६ वह बात पूरी हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से *यहूदा के विषय जो यीशु के पकड़नेवालों का अगुवा* था पहिले से कही थी। वह तो हम में गिना गया और १७ इस सेवकाई में भागी हुआ। उस ने अधर्म की कमाई से १८ एक खेत मोल लिया और सिर के बल गिरा और उस का पेट फट गया और उस की सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं। और इस को यरूशलेम के सब रहनेवाले जान गए १९ यहां तक कि उस खेत का नाम उन की भाषा में हकलदमा अर्थात् लोहू का खेत पड़ गया। भजन संहिता २० में लिखा है कि उस का घर उजड़ जाए और उस में कोई न बसे और उस का पद कोई दूसरा ले। इसलिये २१ जितने दिन प्रभु यीशु यूहन्ना के बपतिसमा से लेकर उस दिन तक कि वह हमारे पास से उठा लिया गया हमारे बीच में आता जाता रहा चाहिए कि जो मनुष्य हमारे साथ बराबर रहे, उन में से एक जन हमारे साथ २२ उस के जी उठने का गवाह हो जाए। तब उन्हों ने दो २३ को खड़ा किया एक यूसुफ को जो बर-सबा कहलाता है जिस का उपनाम यूसतुस है और मत्तिय्याह को। और यह कह कर प्रार्थना की कि हे प्रभु तू जो सब के २४ मन जानता है यह बता कि इन दोनों में से तू ने किस को चुना है। कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई की २५ जगह ले जिसे यहूदा छोड़ कर अपनी जगह गया।

---

(१) या में।

(२) या भाई।

२६ तब उन्हों ने चिट्ठियां डालीं और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली सो वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया ॥

२. जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। २ और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी का सा शब्द हुआ और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे गूंज गया। ३ और उन्हें आग की सी जीभें अलग अलग होती हुई दिखाई दीं ४ और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और जैसे आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी आन आन बोलियां बोलने लगे ॥

५ और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से ६ भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और वे घबरा गए क्योंकि हर एक को यह सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल ७ रहे हैं। और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे देखो ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली ८ नहीं। तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी ९ जन्म भूमि की भाषा सुनता है। हम जो पारथी और मेदी और एलामी लोग और मिसुपुतामिया और यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया १० और फ्रूगिया और पमफूलिया और मिसर और लिबूआ देश जो कुरेने के आस पास है इन सब देशों के रहने वाले और रोमी प्रवासी क्या यहूदी क्या यहूदी मत ११ धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं पर अपनी अपनी भाषा में उन से परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की १२ चर्चा सुनते हैं। सो वे सब चकित हुए और घबराकर १३ एक दूसरे से कहने लगे यह क्या बात है। पर औरों ने ठट्ठा करके कहा वे तो नई मदिरा से छकाछक हुए हैं ॥

१४ तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हो ऊंचे शब्द से कहने लगा कि हे यहूदियो और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो यह जानो और कान लगाकर मेरी १५ बातें सुनो। ये तो मतवाले नहीं जैसा तुम समझ रहे १६ हो क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। पर यह १७ वह बात है जो योएल नबी के द्वारा कही गई। कि परमेश्वर कहता है पिछले दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा[१] और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां नबूवत करेंगी और तुम्हारे जवान १८ दर्शन देखेंगे और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। बरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा[२] और वे नबूवत करेंगे। १९ और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम और नीचे धरती पर चिन्ह अर्थात् लोहू और आग और धूंए का बादल २० दिखाऊंगा। प्रभु के बड़े और प्रसिद्ध दिन के आने से पहिले सूरज अंधेरा और चांद लोहू हो जाएगा। २१ और जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा। २२ हे इस्राएलियो ये बातें सुनो। यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का प्रमाण परमेश्वर ने सामर्थ के कामों और अद्भुत कामों और चिन्हों से दिया जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उस के द्वारा दिखाए जैसा तुम आप ही २३ जानते हो। उसी को जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया तुम ने अधर्मियों के हाथ के द्वारा क्रूस पर २४ चढ़ाकर मार डाला। उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बंधनों[३] से छुड़ाकर जिलाया क्योंकि अनहोना था कि २५ वह उस के बश में रहे। क्योंकि दाऊद उस के विषय कहता है मैं प्रभु को सदा अपने सामने देखता रहा कि वह मेरी दहिनी ओर है कि मैं डिग न जाऊं। २६ इस कारण मेरा मन आनन्द हुआ और मेरी जीभ मगन हुई बरन मेरा शरीर भी आशा में बसा २७ रहेगा। क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न २८ छोड़ेगा और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा। तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है तू मुझे अपने दर्शन २९ के द्वारा आनन्द से भर देगा। हे भाइयो मैं उस कुलपति दाऊद के विषय तुम से खोलकर कहता हूं कि वह तो मरा और गाड़ा भी गया और उस की ३० क़बर आज तक हमारे यहां है। सो नबी होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से किरिया खाई है कि मैं तेरे बंश में से एक को तेरे सिंहासन पर बैठा- ३१ ऊंगा। उस ने होनहार को पहिले से देखकर मसीह के जी उठने के विषय कहा दिया कि न उस का प्राण अधोलोक में छोड़ा गया और न उस की देह सड़ी। ३२ इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया और इस बात के ३३ हम सब गवाह हैं। सो परमेश्वर के दहिने हाथ ऊंचा पद पाकर और पिता से वह पवित्र आत्मा जिस की प्रतिज्ञा की गई थी पाकर उस ने यह जो तुम ३४ देखते और सुनते हो उंडेल[४] दिया है। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा पर वह आप कहता है कि प्रभु ३५ ने मेरे प्रभु से कहा मेरे दहिने बैठ, जब तक मैं

(१) या बहाऊंगा। (२) या बहाऊंगा। (३) यू० की पीड़ाओं। (४) या बहा।

३६ तेरे बैरियों को तेरे पांवों की पीढ़ी न कर दूं, सो इस्राईल का सारा घराना सच जाने कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया प्रभु और मसीह भी ठहराया ॥

३७ तब सुननेवालों के मन छिद गए और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे हे भाइयो हम ३८ क्या करें। पतरस ने उन से कहा मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिसमा ले तो तुम ३९ पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारे सन्तानों और सब दूर दूर के लोगों के लिये है जितनों को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास ४० बुलाएगा। उस ने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति[१] से ४१ बचाओ। सो जिन्हों ने उस की बात मानी उन्हों ने बपतिसमा लिया और उस दिन कोई तीन हज़ार मनुष्य ४२ उन में मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने और रोटी तोड़ने[२] और प्रार्थना में लगे रहते थे ॥

४३ और सब लोगों पर भय छा गया और बहुतेरे अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा दिखाए जाते ४४ थे। और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे और ४५ उन की सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेचकर जैसी जिस को ४६ ज़रूरत होती थी सब में बांट लेते थे। और वे हर दिन मन्दिर में एक मन होकर इकट्ठे होते थे और घर घर रोटी तोड़ते[२] हुए आनन्द और मन की सीधाई से ४७ भोजन करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उन से प्रसन्न थे और प्रभु उद्धार पानेवालों को हर दिन उन में मिलाता था ॥

३. पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा

२ रहे थे। और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे जिस को वे हर दिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है बैठा देते थे कि वह मन्दिर में जानेवालों ३ से भीख मांगे। जब उस ने पतरस और यूहन्ना को ४ मन्दिर में जाते देखा तो उन से भीख मांगी। पतरस ने यूहन्ना के साथ उस की ओर ध्यान से देखकर कहा ५ हमारी ओर देख। सो वह उन से कुछ पाने की आशा

६ रखते हुए उन की ओर ताकने लगा। तब पतरस ने कहा चांदी और सोना तो मेरे पास है नहीं पर जो मेरे पास है वह तुझे देता हूं यीशु मसीह नासरी के ७ नाम से चल फिर। और उस ने उस का दहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया और तुरन्त उस के पांवों और ८ टखनों में बल आ गया। और वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा और चलता, और कूदता और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साथ ९ मन्दिर में गया। सब लोगों ने उसे चलते फिरते और १० परमेश्वर की स्तुति करते देखकर, उस को पहचान लिया कि यह वही है जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर बैठ कर भीख मांगा करता था और जो उस के साथ हुआ था उस से वे बहुत अचम्भित और चकित हुए ॥

११ जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है उन के पास दौड़े आये। १२ यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा हे इस्राईलियो तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो और हमारी ओर क्यों ऐसा ताक रहे हो कि मानो हम ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलता फिरता कर दिया। १३ इब्राहीम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर हमारे बाप दादों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की जिसे तुम ने पकड़वा दिया और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया तब तुम उस के आगे १४ उस से मुकर गए। पर तुम उस पवित्र और धर्मी से मुकर गए और चाहा कि एक खूनी तुम्हारे लिये छोड़ १५ दिया जाए। और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला और परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया और १६ इस बात के हम गवाह हैं। और उसी के नाम ने उस विश्वास के द्वारा जो उस के नाम पर है इस मनुष्य को जिसे तुम देखते और जानते हो सामर्थ दी है और उसी विश्वास ने जो उस के द्वारा है इस को तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है। १७ और अब हे भाइयो मैं जानता हूं कि यह काम तुम ने अज्ञानता से किया और वैसा ही तुम्हारे सरदारों ने भी १८ किया। पर जिन बातों को परमेश्वर ने सब नबियों के मुख से पहिले बताया था कि मसीह दुख उठाएगा उन्हें १९ उस ने इस रीति से पूरी किया। इसलिये मन फिराओ और लौटो कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं जिस से आत्मिक २० विश्रान्ति का समय प्रभु की ओर से आए, और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहिले से २१ ठहराया गया है। जिसे चाहिए कि स्वर्ग में उस समय

(१) यू० पीढ़ी।
(२. मत्ती २६ : २६, और इस पुस्तक के २० अ० ७ पद को देखो।

तक रहे[1] कि वह सब बातों को सुधारे जिस की चरचा परमेश्वर ने अपने पवित्र नबियों के मुख से की है जो
२१ जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं। जैसा कि मूसा ने कहा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक नबी उठाएगा जो कुछ वह तुम से कहे उस की
२३ सुनना। पर हर मनुष्य जो उस नबी की न सुने लोगों में
२४ से नाश किया जाएगा। और समवील से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने बातें कहीं उन सब ने इन दिनों
२५ का सन्देश दिया है। तुम नबियों के सन्तान और उस वाचा के भागी हो जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादों से बांधी जब उस ने इब्राहीम से कहा कि तेरे वंश के द्वारा पृथिवी के सारे घराने आशिष पाएंगे।
२६ परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहिले तुम्हारे पास भेजा कि तुम में से हर एक को उस की बुराइयों से फेरकर आशिष दे॥

४. जब वे लोगों से यह कह रहे थे तो याजक और मन्दिर के सरदार
२ और सदूकी उन पर चढ़ आए। क्योंकि वे बहुत रिसियाए कि वे लोगों को सिखाते थे और यीशु का उदाहरण दे देकर[2] मरे हुओं के जी उठने[3] का प्रचार
३ करते थे। और उन्हों ने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक
४ हवालात में रक्खा क्योंकि सांझ हो गई थी। पर वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया और उन की गिनती पांच हज़ार पुरुषों के अटकल हो गई॥

५ दूसरे दिन उन के सरदार और पुरनिये और
६ शास्त्री, और महायाजक हन्ना और काइफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के घराने के थे
७ सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए। और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे कि तुम ने यह काम किस सामर्थ
८ से और किस नाम से किया है। तब पतरस ने पवित्र आत्मा से भरपूर होकर उन से कहा हे लोगों के
९ सरदारो और पुरनियो, इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है यदि आज हम से पूछ पाछ की
१० जाती है कि वह क्योंकर अच्छा हुआ, तो तुम सब और सारे इस्राईली लोग जानें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला
११ चंगा खड़ा है। यह वही पत्थर है जिसे तुम राजों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया।
१२ और किसी दूसरे से उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिस से हम उद्धार पा सकें॥

१३ जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं तो अचम्भा किया फिर उन को पहचाना कि ये यीशु के
१४ साथ रहे हैं। और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था उन के साथ खड़े देखकर वे कुछ विरोध में न कह सके।
१५ पर उन्हें सभा के बाहर जाने की आज्ञा देकर वे आपस
१६ में विचार करने लगे, कि हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें क्योंकि यरूशलेम के सब रहनेवालों पर प्रगट है कि इन के द्वारा एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है और
१७ उस से हम मुकर नहीं सकते। पर इसलिये कि यह बात लोगों में और फैल न जाए हम उन्हें धमका दें कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न
१८ करें। तब उन्हें बुलाया और चिताकर यह कहा कि यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखाना।
१९ परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया कि तुम ही विचार करो कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है कि परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात
२० मानें। क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता कि जो
२१ हम ने देखा और सुना है वह न कहें। तब उन्हों ने उन्हें और धमकाकर छोड़ दिया क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई दांव नहीं मिला इसलिये कि जो हुआ था उस के लिये सब लोग परमेश्वर की बड़ाई
२२ करते थे। क्योंकि वह मनुष्य जिस पर यह चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया था चालीस बरस के ऊपर था॥

२३ वे छूटकर अपने साथियों के पास आए और जो कुछ महायाजकों और पुरनियों ने उन से कहा था सो
२४ सुना दिया। यह सुनकर उन्हों ने एक चित्त होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर से कहा, हे स्वामी तू वही है जिस ने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जो कुछ उन में है
२५ बनाया। तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा कि अन्य जातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया और देश देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ
२६ बातें सोचीं। प्रभु और उस के मसीह के विरोध में पृथिवी के राजा खड़े हुए और हाकिम एक साथ
२७ इकट्ठे हो गए। क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में जिसे तू ने अभिषेक किया हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस भी अन्य जातियों और इस्राईलियों
२८ के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए। कि जो कुछ पहिले से

(१) यू० स्वर्ग उसे उस समय तक लिये रहे।
(२) यू० में।
(३) या मृतकोत्थान।

तेरी सामर्थ[1] और मति से ठहरा था वही करें।
२९ और अब हे प्रभु उन की धमकियों को देख और अपने दासों को यह वर दे कि तेरा वचन बड़े हियाव से
३० सुनाएं। और चंगा करने के लिये अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम
३१ से किए जाएं। जब वे प्रार्थना कर चुके तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे॥

३२ विश्वास करनेवालों की मण्डली एक मन और एक जी हो रही थी यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति
३३ अपनी न कहता था पर सब कुछ साझे का था। और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही
३४ देते थे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। और न कोई उन में से दरिद्र था क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे वे उन को बेच बेच कर बिकी हुई वस्तुओं का
३५ दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी उस के अनुसार हर एक को बांट देते थे॥

३६ और यूसुफ नाम कुप्रुस का एक लेवी जिसे
३७ प्रेरितों ने बर-नबा अर्थात् शान्ति का पुत्र कहा, उस की कुछ भूमि थी जिसे उस ने बेचा और रुपये लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए॥

५. और हनन्याह नाम एक मनुष्य और उस की पत्नी सफीरा ने कुछ
२ भूमि बेची। और उस के दाम में से कुछ रख छोड़ा और यह बात उस की पत्नी भी जानती थी और उस का एक भाग लाकर प्रेरितों के पांवों के आगे रख
३ दिया। परन्तु पतरस ने कहा हे हनन्याह शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से
४ झूठ बोले और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े। जब तक वह तेरे पास रही क्या तेरी न थी और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी। तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी। तू मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर
५ से झूठ बोला। ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा और प्राण छोड़ दिया और सब सुननेवालों पर बड़ा भय
६ छा गया। और जवानों ने उठकर उसे कफनाया और बाहर ले जाकर गाड़ दिया॥

७ पहर एक के पीछे उस की पत्नी जो कुछ हुआ था न जानकर भीतर आई। इस पर पतरस ने उस से
८ कहा मुझे बता क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची।
९ उस ने कहा हां इतने ही में। पतरस ने उस से कहा यह क्या बात है कि तुम दोनों ने प्रभु के आत्मा की परीक्षा करने का एका बांधा। देख तेरे पति के गाड़नेवाले द्वार ही पर खड़े हैं और तुझे भी बाहर ले जाएंगे।
१० तब वह तुरन्त उस के पांवों पर गिर पड़ी और प्राण छोड़ दिया और जवानों ने भीतर आकर उसे मरी पाया और बाहर ले जाकर उस के पति के पास गाड़ दिया।
११ और सारी कलीसिया और इन बातों के सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया॥

१२ प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाये जाते थे और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।
१३ और औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उन में जा मिले तौभी लोग उन की बड़ाई करते थे।
१४ और विश्वास करनेवाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु
१५ में आ मिलते रहे। यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब पतरस आए तो उस की छाया ही उन में से
१६ किसी पर पड़ जाए। और यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर इकट्ठे होते थे और सब अच्छे कर दिए जाते थे॥

१७ तब महायाजक और उस के सब साथी जो सदू-
१८ कियों के पंथ के थे डाह से भर कर उठे। और प्रेरितों
१९ को पकड़कर जेलखाने में बन्द कर दिया। पर रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने जेलखाने के द्वार खोलकर उन्हें
२० बाहर लाकर कहा, जाओ मन्दिर में खड़े होकर इस
२१ जीवन की सारी बातें लोगों को सुनाओ। यह सुनकर वे भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगे। तब महायाजक और उस के साथियों ने आकर महासभा को और इस्राईलियों के सब पुरनियों को इकट्ठे किया और जेलखाने में कहला भेजा कि उन्हें लाए।
२२ परन्तु प्यादों ने वहां पहुंचकर उन्हें जेलखाने में न पाया
२३ और लौटकर सन्देश दिया, कि हम ने जेलखाने को बड़ी चौकसी से बन्द किया हुआ और पहरुओं को बाहर द्वारों पर खड़े हुए पाया पर जब खोला तो भीतर कोई
२४ न मिला। जब मन्दिर के सरदार और महायाजकों ने ये बातें सुनीं तो उन के विषय भारी चिन्ता में पड़े कि
२५ यह क्या हुआ चाहता है। इतने में किसी ने आकर उन्हें बताया कि देखो जिन्हें तुम ने जेलखाने में बन्द

(१) यू० तेरा हाथ।

रक्खा था वे मनुष्य मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उप- २६ देश दे रहे हैं। तब सरदार प्यादों को साथ लेकर उन्हें ले आया पर बरबस नहीं क्योंकि वे लोगों से डरते थे २७ कि हमें पत्थरवाह न करें। उन्हों ने उन्हें लाकर महा-सभा के सामने खड़ा किया और महायाजक ने उन से २८ पूछा। क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी कि इस नाम से उपदेश न करना तौभी देखो तुम ने सारा यरूशलेम अपने उपदेश से भर दिया है और इस २९ मनुष्य का लोहू हम पर लाना चाहते हो। तब पतरस और और प्रेरितों ने उत्तर दिया कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़ कर परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। ३० हमारे बाप दादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया जिसे ३१ तुम ने काठ पर लटकाकर मार डाला था। उसी को परमेश्वर ने कर्त्ता और उद्धारक ठहराकर अपने दहिने हाथ से ऊंचा कर दिया कि वह इस्राईलियों को मन-३२ फिराव और पापों की क्षमा दान करे। और हम इन बातों के गवाह हैं और पवित्र आत्मा भी जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उस को मानते हैं॥

३३ वे यह सुन कर जल गए[1] और उन्हें मार ३४ डालना चाहा। पर गमलीएल नाम एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था सभा में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने ३५ की आज्ञा दी। तब उस ने कहा हे इस्राईलियो जो कुछ इन मनुष्यों से किया चाहते हो सोच समझ के ३६ करना। क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास यह कहता हुआ उठा कि मैं भी कुछ हूं और कोई चार सौ मनुष्य उस के साथ हो लिए पर वह मारा गया और जितने लोग उसे मानते थे सब तित्तर बित्तर हुए और ३७ मिट गए। उस के पीछे नाम लिखाई के दिनों में यहूदा गलीली उठा और कुछ लोग बहका लिए। वह भी नाश हो गया और जितने लोग उसे मानते थे सब ३८ तित्तर बित्तर हो गए। सो अब मैं तुम से कहता हूं इन मनुष्यों से हाथ उठाओ और उन से कुछ काम न रक्खो क्योंकि यदि यह मत या काम मनुष्यों की ओर ३९ से हो तो मिट जाएगा। पर यदि परमेश्वर की ओर से है तो तुम उन्हें मिटा न सकोगे कहीं ऐसा न हो ४० कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो। तब उन्हों ने उस की बात मान ली और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया कि यीशु के ४१ नाम से बातें न करना। सो वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए कि हम उस के नाम के लिये निरादर होने के योग्य ठहरे। और दिन दिन ४२ मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है न रुके॥

६. उन

दिनों में जब चेले बहुत होते जाते थे तो यूनानी भाषा बोलने-वाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे कि दिन दिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुध नहीं ली २ जाती। तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का ३ वचन छोड़कर खिलाने पिलाने की सेवा में रहें। इस लिये हे भाइयो अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से भरपूर हों चुन लो कि हम ४ उन्हें इस काम पर ठहरा दें। पर हम तो प्रार्थना में ५ और वचन की सेवा में लगे रहेंगे। यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी सो उन्हों ने स्तिफनुस नाम एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से भरपूर था और फिलिप्पुस और प्रखुरुस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकीवाला नीकुलाउस ६ को जो यहूदी मत में आ गया था चुन लिया। और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रक्खे॥

७ और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूश-लेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई और बहुतेरे याजक इस मत को मानने लगे॥

८ स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से भरपूर होकर लोगों में बड़े बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया ९ करता था। तब उस सभा में से जो लिबिरतीनों की कहलाती थी और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलि-किया और आसिया के लोगों में से कई एक उठकर १० स्तिफनुस से विवाद करने लगे। पर उस ज्ञान और उस आत्मा का जिस से वह बातें करता था वे सामना ११ न कर सके। इस पर उन्हों ने कई लोगों को उभाड़ा जो कहने लगे कि हम ने इस को मूसा और परमेश्वर १२ के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है। और लोगों और प्राचीनों और शास्त्रियों को उसकाके चढ़ १३ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले आए। और झूठे गवाह खड़े किए जिन्हों ने कहा यह मनुष्य इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं १४ छोड़ता। क्योंकि हम ने उसे यह कहते सुना है कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा और उन

[1] यू० फट गए।

१५ रीतों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं। तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे उस की ओर ताककर उस का स्वर्गदूत का सा चिहरा देखा॥

७. तब महायाजक ने कहा क्या ये बातें यों ही हैं। उस ने कहा हे भाइयो २ और पितरो सुनो। हमारा पिता इब्राहीम हारान में बसने से पहले जब मिसुपुतामिया में था तो तेजो ३ मय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया। और उस से कहा कि तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस ४ देश में चला जा जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा। तब वह कसदियों के देश से निकल कर हारान में जा बसा और उस के पिता के मरने के पीछे परमेश्वर ने उस को वहां से इस देश में लाकर बसाया जिस में अब तुम बसते ५ हो और उस को कुछ मीरास बरन पैर रखने भर की भी उस में जगह न दी परन्तु प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश तेरे और तेरे पीछे तेरे वंश के हाथ कर दूंगा यद्यपि ६ उस समय उस के कोई पुत्र न था। और परमेश्वर ने यों कहा कि तेरे सन्तान पराये देश में परदेशी होंगे और वे उन्हें दास बनाएंगे और चार सौ बरस तक ७ दुख देंगे। फिर परमेश्वर ने कहा जिस जाति के वे दास होंगे उस को मैं दण्ड दूंगा और इस के पीछे वे ८ निकलकर इसी जगह मेरी सेवा करेंगे। और उस ने उस से ख़तने की वाचा बांधी और इसी दशा में इसहाक उस से उत्पन्न हुआ और आठवें दिन उस का ख़तना किया गया और इसहाक से याकूब और याकूब से ९ बारह कुलपति उत्पन्न हुए। और कुलपतियों ने यूसुफ़ से डाह करके उसे मिसर देश जानेवालों के हाथ बेचा १० परन्तु परमेश्वर उस के साथ था। और उसे उस के सब क्लेशों से छुड़ाकर मिसर के राजा फ़िरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी और उस ने उसे मिसर पर और ११ अपने सारे घर पर हाकिम ठहराया। तब मिसर और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा जिस से भारी क्लेश हुआ और हमारे बापदादों को अन्न न मिलता १२ था। पर याकूब ने यह सुनकर कि मिसर में अनाज है १३ हमारे बापदादों को पहिली बार भेजा। और दूसरी बार यूसुफ़ अपने भाइयों से पहचाना गया और यूसुफ़ १४ की जाति फ़िरौन को मालूम हो गई। तब यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को जो १५ पछत्तर जन थे बुला भेजा। सो याकूब मिसर में गया १६ और वहां वह और हमारे बापदादे मर गए। और वे शिकिम में पहुंचाए जाकर उस क़बर में रक्खे गए जिसे इब्राहीम ने चांदी देकर शिकिम में हमोर के सन्तान से मोल लिया था। पर जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने १७ का समय निकट आया जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी तो मिसर में वे लोग बढ़ गए और बहुत हो गए, जब तक कि मिसर में दूसरा राजा हुआ जो यूसुफ़ १८ को न जानता था। उस ने हमारी जाति से चतुराई १९ करके हमारे बापदादों के साथ यहां तक बुराई की कि उन्हें अपने बालकों को फेंकना पड़ा कि जीते न रहें। उस समय मूसा उत्पन्न हुआ जो बहुत ही सुन्दर था २० और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया। पर जब फेंक दिया गया तो फ़िरौन की बेटी ने २१ उसे उठा लिया और अपना पुत्र करके पाला। और २२ मूसा को मिसरियों की सारी विद्या पढ़ाई गई सो वह बातों और कामों में सामर्थी था। जब वह चालीस एक २३ बरस का हुआ तो उस के मन में आया कि मैं अपने इस्राइली भाइयों से भेंट करूं। और उस ने एक पर २४ अन्याय होते देखकर उसे बचाया और मिसरी को मार कर सताए हुए का पलटा लिया। उस ने सोचा कि २५ मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों से उन का उद्धार करेगा पर उन्हों ने न समझा। दूसरे दिन जब २६ वे आपस में लड़ रहे थे तो वह वहां आ निकला[१] और यह कहके उन्हें मेल करने को मनाया कि हे पुरुषो तुम तो भाई भाई हो एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो। पर जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था उस ने २७ उसे यह कहकर हटा दिया कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और न्याई ठहराया है। क्या जिस रीति से तू २८ ने कल मिसरी को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है। यह बात सुनकर मूसा भागा और मिद्यान २९ देश में परदेशी होकर रहने लगा और वहां उस के दो पुत्र उत्पन्न हुए। जब पूरे चालीस बरस बीत गए तो ३० एक स्वर्गदूत ने सीना पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी के ज्वाला में दर्शन दिया। मूसा ने उस ३१ दर्शन को देखकर अचम्भा किया और जब देखने के लिये पास गया तो प्रभु का शब्द हुआ, कि मैं तेरे बाप- ३२ दादों इब्राहीम इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं। तब मूसा इस से कांपने लगा यहां तक कि उसे देखने का हियाव न रहा। तब प्रभु ने उस से कहा अपने ३३ पांवों से जूती उतार ले क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है। मैं ने सचमुच अपने लोगों की ३४ दुर्दशा जो मिसर में है देखी है और उन की आह और रोना सुन लिया है इसलिये उन्हें छुड़ाने को उतरा हूं।

(१) यू० उन्हें दिखाई दिया.

३५ अब आ मैं तुझे मिसर में भेजूंगा। जिस मूसा को उन्हों ने यह कह कर नकारा था कि तुझे किस ने हाकिम और न्यायी ठहराया है उसी को परमेश्वर ने हाकिम और छुड़ानेवाला ठहराकर उस स्वर्गदूत के
३६ द्वारा जिस ने उसे झाड़ी में दर्शन दिया भेजा। यही मिसर और लाल समुद्र और जंगल में चालीस बरस तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखा दिखा कर उन्हें निकाल
३७ लाया। यह वही मूसा है जिस ने इस्राईलियों से कहा कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ
३८ सा एक नबी उठाएगा। यह वही है जिस ने जंगल में मण्डली के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीना पहाड़ पर उस से बातें कीं और हमारे बाप दादों के साथ था। उसी को जीवित बाणियां मिलीं कि हम तक पहुंचाए,
३९ पर हमारे बाप दादों ने उस की मानना न चाहा वरन
४० उसे हटाकर अपने मन मिसर की ओर फेरे। और हारून से कहा हमारे लिये ऐसे देवता बना जो हमारे आगे आगे चलें क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देश
४१ से निकाल लाया हम नहीं जानते वह क्या हुआ। उन दिनों में उन्हों ने एक बछड़ा बनाकर उस की मूरत के आगे बलि चढ़ाया और अपने हाथों के कामों में मगन
४२ होने लगे। सो परमेश्वर ने मुंह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया कि आकाशगण पूजें जैसा नबियों की पुस्तक में लिखा है कि हे इस्राईल के घराने क्या तुम जंगल में चालीस बरस तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को
४३ चढ़ाते रहे। और तुम मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को लिये फिरते थे अर्थात् उन आकारों को जिन्हें तुम ने दण्डवत् करने के लिये बनाया था।
४४ सो मैं तुम्हें बाबिल के परे ले जाकर बसाऊंगा। साक्षी का तम्बू जंगल में हमारे बाप दादों के बीच में था जैसा उस ने ठहराया जिस ने मूसा से कहा कि जो
४५ आकार तू ने देखा है उस के अनुसार इसे बना। उसी तम्बू को हमारे बाप दादे अगलों से पाकर यहोशू के साथ यहां ले आए जिस समय कि उन्हों ने उन अन्यजातियों का अधिकार पाया जिन्हें परमेश्वर ने हमारे बाप दादों के सामने से निकाल दिया और वह
४६ दाऊद के समय तक रहा। उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया सो उस ने बिनती की कि मैं याकूब के परमेश्वर
४७ के लिये निवास स्थान ठहराऊं। पर सुलैमान ने उस
४८ के लिये घर बनाया। परन्तु परम प्रधान हाथ के बनाये घरों में नहीं रहता जैसा कि नबी ने कहा कि,
४९ प्रभु कहता है स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे पांवों के लिये पीढ़ी है मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा।
५० क्या ये सब वस्तुएं मेरे हाथ की बनाई नहीं॥

हे हठीले और मन और कान के खतना रहित लोगो तुम सदा पवित्र आत्मा का सामना करते हो।
५१ जैसे तुम्हारे बाप दादे करते थे वैसे ही तुम भी करते
५२ हो। नबियों में से किस को तुम्हारे बाप दादों ने न सताया और उन्हों ने उस धर्मी के आने का आगे से सन्देश देनेवालों को मार डाला और अब तुम भी उस के पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले हुए।
५३ तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई पर मानी नहीं॥

५४ ये बातें सुनकर वे जल गये[1] और उस पर दांत
५५ पीसने लगे। पर उस ने पवित्र आत्मा से भरपूर हो स्वर्ग की ओर ताका और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दहिनी ओर खड़ा देखकर
५६ कहा, देखो मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र
५७ को परमेश्वर की दहिनी ओर खड़ा देखता हूं। तब उन्हों ने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए
५८ और एक चित्त होकर उस पर झपटे। और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्थरवाह करने लगे और गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नाम एक जवान के पांवों के
५९ पास उतार रक्खे। सो वे स्तिफनुस को पत्थरवाह करते रहे और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा कि हे प्रभु
६० यीशु मेरे आत्मा को ग्रहण कर। फिर घुटने टेक कर ऊंचे शब्द से पुकारा हे प्रभु यह पाप उन पर मत लगा और यह कह कर सो गया। और शाऊल उस के बध में सम्मत था॥

८. उसी दिन यरूशलेम में की मण्डली पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तित्तर
२ बित्तर हो गए। भक्तों ने स्तिफनुस को क़बर में रक्खा और उस के लिये बड़ा विलाप किया। शाऊल मण्डली
३ को उजाड़ रहा था कि घर घर घुस कर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट घसीट कर जेलख़ाने में डालता था॥

४ जो तित्तर बित्तर हुए थे वे सुसमाचार सुनाते
५ हुए फिरे। और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर
६ लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं लोगों ने सुन सुनके और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर एक चित्त
७ होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से जिन में अशुद्ध

(१) यू०। मन में कट गये।

आत्मा थे वे बड़े शब्द से चिल्लाते हुए निकल गये और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े अच्छे किये गए । ८ और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ ॥

९ इस से पहिले उस नगर में शमौन नाम एक मनुष्य था जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बनाता था । १० और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है जो महान कहलाती है । ११ उस ने बहुत दिनों से उन्हें अपने टोने के कामों से चकित कर रक्खा था इसी लिये वे उस को बहुत मानते थे । १२ पर जब उन्हों ने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग क्या पुरुष क्या स्त्री बपतिसमा लेने लगे । १३ तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिसमा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और चिन्ह और बड़े बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था ॥

१४ जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा । १५ और उन्हों ने जाकर उन के लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं । १६ क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था उन्हों ने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिसमा लिया था । १७ तब उन्हों ने उन पर हाथ रक्खे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया । १८ जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है तो उन के पास रुपये लाकर कहा कि, १९ यह अधिकार मुझे भी दो कि जिस किसी पर हाथ रक्खूं वह पवित्र आत्मा पाए । २० पतरस ने उस से कहा तेरे रुपये तेरे साथ नाश हों क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया । २१ इस बात में न तेरा हिस्सा है न बांटा २२ क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं । इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर क्या जाने तेरे मन का बिचार क्षमा किया जाए । २३ क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और २४ अधर्म के बन्धन में पड़ा है । शमौन ने उत्तर दिया कि तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं उन में से कोई मुझ पर न आ पड़े ॥

२५ सो वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुना कर यरूशलेम को लौट गए और सामरियों के बहुत गांवों में सुसमाचार सुनाते गए ॥

२६ फिर प्रभु के एक स्वर्ग दूत ने फिलिप्पुस से कहा उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा जो यरूशलेम से अज़्ज़ाह को जाता है और जंगल में है । २७ वह उठकर चल दिया और देखो कूश देश का एक मनुष्य जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मन्त्री और ख़ज़ांची था और भजन करने को यरूशलेम आया था । २८ और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था और यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ता हुआ लौट रहा था । २९ तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले । ३० फिलिप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ते हुए सुना और पूछा कि तू जो पढ़ रहा है उसे समझता भी है । ३१ उस ने कहा जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं और उस ने फिलिप्पुस से बिनती की कि चढ़कर मेरे पास बैठ । ३२ पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था वह यह था कि वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवाले के सामने चुपचाप रहता है वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला । ३३ उस की दीनता में उस का न्याय होने नहीं पाया और उस के समय के लोगों[१] का बखान कौन करेगा क्योंकि पृथिवी से उस का प्राण उठाया जाता है । ३४ इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा मैं तुझ से बिनती करता हूं नबी यह किस के विषय कहता है अपने या किसी दूसरे के विषय । ३५ तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया । ३६ मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे तब खोजे ने कहा देख जल है अब मुझे बपतिसमा लेने में क्या रोक है[२] । ३८ तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े और उस ने उसे बपतिसमा दिया । ३९ जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया सो खोजे ने उसे फिर न देखा और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया । ४० और फिलिप्पुस अशदोद में आ निकला और जब तक कैसरिया में न पहुंचा तब तक नगर नगर सुसमाचार सुनाता गया ॥

९. शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था महायाजक के पास गया । २ और उस से दमिश्क की सभाओं के नाम पर इस मतलब की

(१) या पीढ़ी । (२) थोड़े हुए लेखों में ३७ पद मिलता है अर्थात् । फिलिप्पुस ने कहा यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है । उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है ।

चिट्ठियां मांगीं कि क्या पुरुष क्या स्त्री जिन्हें वह इस पंथ
३ पर पाए उन्हें बांधकर यरूशलेम में ले आए। पर चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा तो एकाएक
४ आकाश से उस के चारों ओर ज्योति चमकी। और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना कि हे शाऊल हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है। उस ने पूछा हे प्रभु तू
५ कौन है। उस ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है।
६ पर उठकर नगर में जा और जो तुझे करना है वह तुझ
७ से कहा जाएगा। जो मनुष्य उस के साथ थे वे चुपचाप रह गए क्योंकि शब्द तो सुनते थे पर किसी को देखते न
८ थे, तब शाऊल भूमि पर से उठा पर जब आंखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उस का हाथ पक-
९ ड़के दमिश्क में ले गये। और वह तीन दिन तक न देख सका और न खाया न पिया॥

१० दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था उस से प्रभु ने दर्शन में कहा हे हनन्याह उस ने कहा हां प्रभु।
११ तब प्रभु ने उस से कहा उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले क्योंकि देख वह प्रार्थना कर रहा है।
१२ और उस ने हनन्याह नाम एक पुरुष को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा कि फिर देखने लगे।
१३ हनन्याह ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं ने इस मनुष्य के विषय बहुतों से सुना है कि इस ने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराइयां की हैं। और
१४ यहां भी इस को महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं उन सब को बांध ले।
१५ परन्तु प्रभु ने उस से कहा चला जा क्योंकि यह तो अन्य जातियों और राजाओं और इस्राईलियों के सामने मेरा
१६ नाम पहुंचाने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है। और मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख
१७ उठाना पड़ेगा। तब हनन्याह उठकर उस घर में गया और उस पर हाथ रखकर कहा हे भाई शाऊल प्रभु अर्थात् यीशु जो उस रास्ते में जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर देखने लगे और
१८ पवित्र आत्मा से भर जाए। और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिरे और वह देखने लगा और उठकर बपतिसमा लिया फिर भोजन करके बल पाया॥

१९ और वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो
२० दमिश्क में थे। और वह तुरन्त सभाओं में यीशु का
२१ प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है। और सब सुननेवाले चकित होकर कहने लगे क्या यह वही नहीं जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता था और यहां भी इसलिये आया था कि उन्हें
२२ बांधे हुए महायाजकों के पास ले जाए। पर शाऊल और भी सामर्थी होता गया और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है दमिश्क के रहनेवाले यहूदियों का मुंह बंद करता था॥

२३ जब बहुत दिन बीत गये तो यहूदियों ने मिल-
२४ कर उस के मार डालने की युक्ति निकाली। पर उन की युक्ति शाऊल को मालूम हो गई। वे तो उस के मार
२५ डालने के लिये रात दिन फाटकों पर लगे रहते थे। पर रात को उस के चेलों ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया और शहरपनाह पर से लटकाकर उतार दिया॥

२६ यरूशलेम में पहुंच कर उस ने चेलों के साथ मिल जाने का उपाय किया पर सब उस से डरते थे क्योंकि उन को प्रतीति न होती थी कि वह भी चेला है। पर
२७ बरनबा उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले गया और उन से कहा कि इस ने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा और उस ने इस से बातें कीं फिर दमिश्क में यह कैसा
२८ निधड़क होकर यीशु के नाम से बोला। सो वह उन के
२९ साथ यरूशलेम में आता जाता रहा, और निधड़क होकर प्रभु के नाम से बातें करता था और यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद विवाद करता
३० था पर वे उस के मार डालने का यतन करने लगे। यह जानकर भाई उसे कैसरिया में ले आए और तरसुस को ओर भेजा॥

३१ सो सारे यहूदिया और गलील और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला और वह उन्नति करती गई और प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती जाती थी॥

३२ और पतरस हर जगह फिरता हुआ उन पवित्र
३३ लोगों के पास भी पहुंचा जो लुद्दा में रहते थे। वहां उसे ऐनियास नाम झोले का मारा हुआ एक मनुष्य
३४ मिला जो आठ बरस से खाट पर पड़ा था। पतरस ने उस से कहा हे ऐनियास यीशु मसीह तुझे चंगा करता है उठ अपना बिछौना बिछा तब वह तुरन्त उठ खड़ा
३५ हुआ। और लुद्दा और शारोन के सब रहनेवाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे॥

३६ याफा में तबीता अर्थात् दोरकास नाम एक विश्वासिनी रहती थी वह बहुतेरे भले भले काम और
३७ दान किया करती थी। उन्हीं दिनों में वह बीमार हो कर मर गई और उन्हों ने उसे नहलाकर अटारी पर रख
३८ दिया। और इसलिये कि लुद्दा याफा के निकट था चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहां है दो मनुष्य भेज-

कर उस से बिनती की कि हमारे पास आने में देर न
३९ कर। तब पतरस उठकर उन के साथ हो लिया और जब पहुंच गया तो वे उसे उस अटारी पर ले गए और सब विधवाएं रोती हुई उस के पास आ खड़ी हुईं और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उन के साथ रहते हुए बनाए
४० थे दिखाने लगीं। तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया और घुटने टेक कर प्रार्थना की और लोथ की ओर देखकर कहा हे तबीता उठ। तब उस ने अपनी आंखे खोल
४१ दीं और पतरस को देखकर उठ बैठी। उस ने हाथ देकर उसे उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुला-
४२ कर उसे जीती जागती दिखा दिया। यह बात सारे याफा में फैल गई और बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया।
४३ और पतरस याफा में शमौन नाम किसी चमड़े के धन्धे करनेवाले के यहां बहुत दिन रहा॥

१०

कैसरिया में कुरनेलियुस नाम एक मनुष्य था जो इतालियानी
२ नाम पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता और यहूदी लोगों[१] को बहुत दान देता और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना
३ करता था। उस ने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में साफ साफ देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मेरे
४ पास भीतर आकर कहता है कि हे कुरनेलियुस। उस ने उसे ध्यान से देखा और डरकर कहा हे प्रभु क्या है। उस ने उस से कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण
५ के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं। और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है
६ बुलवा ले। वह शमौन चमड़े के धन्धा करनेवाले के
७ यहां पाहुन है जिस का घर समुद्र के किनारे है। जब वह स्वर्गदूत जिस ने उस से बातें की थीं चला गया तो उस ने दो सेवक और जो उस के पास हाज़िर रहा करते थे
८ उन में से एक भक्त सिपाही को बुलाया। और उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा॥

९ दूसरे दिन जब वे चलते चलते नगर के पास पहुंचे तो दो पहर के निकट पतरस कोठे पर प्रार्थना
१० करने चढ़ा। और उसे भूख लगी और कुछ खाना चाहता था पर जब वे तैयार कर रहे थे तो वह बेसुध
११ हो गया। और उस ने देखा कि आकाश खुल गया और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता
१२ हुआ पृथिवी की ओर उतर रहा है, जिस में पृथिवी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश
१३ के पक्षी थे। और उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया कि
१४ हे पतरस उठ मार और खा। पतरस ने कहा नहीं प्रभु नहीं क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध
१५ वस्तु नहीं खाई। फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है उसे तू
१६ अशुद्ध मत कह। तीन बार ऐसा ही हुआ तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया॥

१७ जब पतरस अपने मन में दुबधा में पड़ा था कि यह दर्शन जो मैं ने देखा क्या है तो देखो वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था शमौन के घर का पता
१८ लगाकर डेवढ़ी पर आ खड़े हुए। और पुकार कर पूछने लगे क्या शमौन जो पतरस कहलाता है यहीं पाहुन है।
१९ पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था कि आत्मा ने
२० उस से कहा देख तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। सो उठकर नीचे जा और बेखटके उन के साथ हो ले
२१ क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है। तब पतरस ने उतरकर उन मनुष्यों से कहा देखो जिस की खोज तुम कर रहे
२२ हो वह मैं ही हूं तुम्हारे आने का क्या कारण है। उन्हों ने कहा कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनामी मनुष्य है उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह चितावनी पाई है
२३ कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से बचन सुने। तब उस ने उन्हें भीतर बुलाकर उन की पहुनाई की॥

२४ और दूसरे दिन वह उन के साथ गया और याफा के भाइयों में से कई एक उस के साथ हो लिए। दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुंचे और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उन की बाट जोह
२५ रहा था। जब पतरस भीतर आ रहा था तो कुरनेलियुस ने उस से भेंट की और पांवों पड़के प्रणाम
२६ किया। परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा खड़ा हो मैं
२७ भी तो मनुष्य हूं। और उस के साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर,
२८ उन से कहा तुम जानते हो कि अन्यजाति की संगति करना या उस के यहां जाना यहूदी के लिये अधर्म्म है परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को
२९ अपवित्र या अशुद्ध न कहूं। इसी लिये मैं जब बुलाया गया तो बिना कुछ कहे चला आया सो मैं पूछता हूं
३० कि मुझे किस काम के लिये बुलाया है। कुरनेलियुस ने कहा कि इस घड़ी पूरे चार दिन हुए कि मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था कि देखो एक पुरुष चमकता वस्त्र पहिने हुए मेरे सामने आ खड़ा
३१ हुआ। और कहने लगा हे कुरनेलियुस तेरी प्रार्थना

(१) यू०। उम्मत या प्रजा।

सुन ली गई और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण
३२ किये गए हैं। इसलिये किसी को याफा भेज कर शमौन को जो पतरस कहलाता है बुला। वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े के धन्धा करनेवाले के घर में पाहुन है।
३३ तब मैं ने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे और तू ने भला किया जो आ गया। अब हम सब यहां परमेश्वर के सामने हैं इसलिये कि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे
३४ सुनें। तब पतरस ने मुंह खोल कर कहा,
३५ अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता बरन हर जाति में जो उस से डरता
३६ और धर्म के काम करता है वह उसे भाता है। जो वचन उस ने इस्राईलियों के पास भेजा जब कि उस ने यीशु मसीह के द्वारा जो सब का प्रभु है शान्ति का सुसमाचार
३७ सुनाया। वह बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिसमा के प्रचार के पीछे गलील से आरंभ कर सारे यहूदिया में
३८ फैल गई। कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता और सब को जो शैतान[१] के सताए हुए थे अच्छा
३९ करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उस के साथ था। और हम उन सब कामों के गवाह हैं जो उस ने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए और उन्हों ने उसे काठ
४० पर लटकाकर मार डाला। उस को परमेश्वर ने तीसरे
४१ दिन जिलाया और दिखा भी दिया, सब लोगों को नहीं बरन उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया था अर्थात् हम को जिन्हों ने उस के मरे हुओं में से
४२ जी उठने के पीछे उस के साथ खाया पिया। और उस ने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो और गवाही दो कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मरे
४३ हुओं का न्यायी ठहराया है। उस की सब नबी गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा उस को उस के नाम के द्वारा क्षमा मिलेगी॥
४४ पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा
४५ वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का
४६ दान उंडेला[२] गया है। क्योंकि उन्हों ने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।
४७ इस पर पतरस ने कहा क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिसमा न पाएं जिन्हों ने हमारी नाईं
४८ पवित्र आत्मा पाया है। और उस ने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिसमा दिया जाए। तब उन्हों ने उस से बिनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह॥

११. और प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना कि अन्य जातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया
२ है। और जब पतरस यरूशलेम में आया तो खतना किए
३ हुए लोग उस से विवाद करने लगे, कि तू ने खतना
४ रहित लोगों के यहां जाकर उन के साथ खाया। तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से सिलसिलेवार कह सुनाया
५ कि, मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था और बेसुध होकर एक दर्शन देखा कि एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ आकाश से उतरकर
६ मेरे पास आया। जब मैं ने उस पर ध्यान किया तो पृथिवी के चौपाए और बनपशु और रेंगनेवाले जन्तु और
७ आकाश के पक्षी देखे। और यह शब्द भी सुना कि हे
८ पतरस उठ मार और खा। मैं ने कहा नहीं प्रभु नहीं क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुंह में कभी
९ नहीं गई। इस के उत्तर में आकाश से दूसरी बार शब्द हुआ कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है उसे अशुद्ध
१० मत कह। तीन बार ऐसा ही हुआ तब सब कुछ फिर
११ आकाश पर खींचा गया। और देखो तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गये थे उस घर पर जिस
१२ में हम थे आ खड़े हुए। तब आत्मा ने मुझ से उन के साथ बेखटके हो लेने को कहा और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए और हम उस मनुष्य के घर में गए।
१३ और उस ने बताया कि मैं ने एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा जिस ने मुझ से कहा कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है बुलवा
१४ ले। वह तुम से ऐसी बातें कहेगा जिन के द्वारा तू और
१५ तेरा सारा घराना उद्धार पायगा। जब मैं बातें करने लगा तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस
१६ रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया जो उस ने कहा कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिसमा दिया पर तुम पवित्र आत्मा
१७ से बपतिसमा पाओगे। सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था तो मैं कौन था जो परमेश्वर को
१८ रोक सकता। यह सुनकर वे चुप रहे और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे तब तो परमेश्वर ने अन्य

(१) यू०। इबलीस (२) यू०। बहाया।

जातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है॥

१९ सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था तित्तर बित्तर हो गए थे वे फिरते फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुंचे पर यहू-
२० दियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे। पर उन में से कितने कुप्रुसी और कुरेनी थे जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार
२१ की बातें सुनाने लगे। और प्रभु का हाथ उन पर था और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।
२२ तब उन की चर्चा यरूशलेम की मण्डली के सुनने में आई और उन्हों ने बरनबा को अन्ताकिया भेजा।
२३ वह वहां पहुंच कर और परमेश्वर के अनुग्रह को देख-कर आनन्दित हुआ और सब को उपदेश दिया कि जी
२४ लगाकर प्रभु से लिपटे रहो। क्योंकि वह भला मनुष्य था और पवित्र आत्मा और विश्वास से भरपूर था और
२५ बहुत लोग प्रभु में आ मिले। तब वह शाऊल को ढूंढ़ने
२६ के लिये तरसुस को गया। और जब वह मिल गया तो उसे अन्ताकिया में लाया और वे बरस भर तक मण्डली के साथ मिलते रहे और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाये॥

२७ उन्हीं दिनों में कई नबी यरूशलेम से अन्ताकिया
२८ में आए। उन में से अगबुस नाम एक ने खड़े होकर आत्मा के सिखाने से बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा और वह अकाल क्लौदियुस के समय में
२९ पड़ा। तब चेलों ने ठहराया कि हर एक अपनी अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा
३० के लिये कुछ भेजे। और उन्हों ने ऐसा ही किया और बरनबा और शाऊल के हाथ प्राचीनों[१] के पास कुछ भेजा॥

१२. **उस** समय हेरोदेस राजा ने मण्डली के कई एक जनों को दुख देने के लिये
२ उन पर हाथ डाले। उस ने यूहन्ना के भाई याकूब को
३ तलवार से मरवा डाला। और जब उस ने देखा कि यहूदी लोग इस से आनन्दित होते हैं तो उस ने पतरस को भी पकड़ लिया। वे दिन अखमीरी रोटी के
४ दिन थे। और उस ने उसे पकड़ के जेलखाने में डाला और रखवाली के लिये चार चार सिपाहियों के चार पहरों में रक्खा इस मनसा से कि फ़सह के
५ पीछे उसे लोगों के सामने लाए। सो जेलखाने में पतरस की रखवाली हो रही थी, पर मण्डली उस के लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी।
६ और जब हेरोदेस उसे उन के सामने लाने को था तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था और पहरुए द्वार पर जेलखाने की
७ रखवाली कर रहे थे। तो देखो प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी और उस ने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया और कहा उठ फुरती कर और उस के हाथों से ज़ंजीरें
८ खुलकर गिर पड़ीं। तब स्वर्गदूत ने उस से कहा कमर बांध और अपने जूते पहिन ले। उस ने वैसा ही किया फिर उस ने उस से कहा अपना वस्त्र पहिन कर
९ मेरे पीछे हो ले। वह निकल कर उस के पीछे हो लिया पर यह न जानता था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है वह सच्चा है बरन यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा हूं।
१० तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकल कर उस लोहे के फाटक पर पहुंचे जो नगर की ओर है वह उन के लिये आप से आप खुल गया सो वे निकल कर एक ही गली होकर गए इतने में स्वर्गदूत उसे छोड़ कर चला
११ गया। तब पतरस ने सचेत होकर कहा अब मैं ने सच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया और यहूदियों
१२ की सारी आशा तोड़ दी। और यह सोचकर वह उस यूहन्ना की माता मरयम के घर आया जो मरकुस कहलाता है वहां बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर
१३ रहे थे। जब उस ने फाटक की खिड़की खटखटाई तो
१४ रुदे नाम एक दासी सुनने को आई। और पतरस का शब्द पहचानकर उस ने आनन्द के मारे फाटक न खोला पर दौड़कर भीतर गई और बताया कि पतरस
१५ द्वार पर खड़ा है। उन्हों ने उस से कहा तू पागल है पर वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है तब उन्हों ने
१६ कहा उस का स्वर्गदूत होगा। पर पतरस खटखटाता ही रहा सो उन्हों ने खिड़की खोली और उसे देखकर
१७ चकित हो गए। तब उस ने उन्हें हाथ से सैन किया कि चुप रहें और उन को बताया कि प्रभु किस रीति से मुझे जेलखाने से निकाल लाया। फिर कहा कि याकूब और भाइयों को यह बात कह देना तब निकल
१८ कर दूसरी जगह चला गया। बिहान हुए सिपाहियों
१९ में बड़ी हलचल होने लगी कि पतरस क्या हुआ। जब हेरोदेस ने उस की खोज की और न पाया तो पहरुओं की जांच करके आज्ञा की कि वे मार डाले जाएं और वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जा रहा॥

[१] या। प्रिसबुतिरों।

२० और वह सूर और सैदा के लोगों से बहुत रिसियाया हुआ था सो वे एक चित्त होकर उस के पास आए और बलास्तुस को जो राजा का एक कर्मचारी[1] था मनाकर मेल चाहा क्योंकि राजा के देश से उन के देश २१ का पालन होता था। और ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर बैठा और उन को २२ व्याख्यान देने लगा। और लोग पुकार उठे कि यह तो २३ मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है। तब प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा क्योंकि उस ने परमेश्वर की महिमा न की और वह कीड़े पड़के मर गया॥

२४ परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया॥

२५ जब बरनबा और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके तो यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साथ लेकर यरूशलेम से लौटे॥

१३. अन्ताकिया की मण्डली में कितने नबी और उपदेशक थे अर्थात् बरनबा और शमौन जो नीगर कहलाता है और लूकियुस कुरेनी और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस २ का दूधभाई मनाहेम और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा मेरे निमित्त बरनबा और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिस के लिये मैं ने उन्हें बुलाया है। ३ तब उन्हों ने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें बिदा किया॥

४ सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को ५ गए और वहां से जहाज़ पर कुप्रुस को चले। और सलमीस में पहुंच कर परमेश्वर का वचन यहूदियों की सभाओं में सुनाया और यूहन्ना उन का सेवक ६ था। और उस सारे टापू में होते हुए पाफुस तक पहुंचे वहां उन्हें बार-यीशु नाम एक यहूदी टोन्हा और ७ झूठा नबी मिला। वह सिरगियुस पौलुस सूबे[2] के साथ था जो बुद्धिमान् पुरुष था। उस ने बरनबा और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का ८ वचन सुनना चाहा। पर इलीमास टोन्हे ने क्योंकि यही उस के नाम का अर्थ है उन का सामना करके ९ सूबे[2] को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब शाऊल ने जिस का नाम पौलुस भी है पवित्र आत्मा से भरपूर हो उसी की ओर टकटकी लगाकर कहा, १० हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान[3] के सन्तान सकल धर्म के बैरी क्या तू प्रभु के सीधे ११ मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा। अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है और तू कुछ समय तक अंधा रहेगा और सूरज को न देखेगा। तुरन्त धुन्धलाई और अंधेरा उस पर छा गया और वह इधर उधर टटोलने लगा कि कोई उस का हाथ पकड़ के ले चले। १२ तब सूबे[4] ने जो हुआ था देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया॥

१३ पौलुस और उस के साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए और यूहन्ना १४ उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया। और पिरगा से आगे बढ़कर वे पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुंचे १५ और विश्राम के दिन सभा में जाकर बैठ गए। और व्यवस्था और नबियों की पुस्तक से पढ़ने के पीछे सभा के सरदारों ने उन के पास कहला भेजा कि हे भाइयो यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन १६ में कोई बात हो तो कहो। तब पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से सैन करके कहा॥

१७ हे इस्राईलियो और परमेश्वर से डरनेवालो सुनो। इन इस्राईली लोगों के परमेश्वर ने हमारे बापदादों को चुन लिया और जब ये लोग मिसर देश में परदेशी होकर रहते थे तो उन की उन्नति की और १८ बलवन्त भुजा से निकाल लाया। और वह कोई चालीस १९ बरस तक जंगल में उन की सहता रहा। और कनान देश में सात जातियों का नाश करके उन का देश कोई २० साढ़े चार सौ बरस में इन की मीरास में कर दिया। इस के पीछे उस ने समवील नबी तक उन में न्यायी २१ ठहराए। उस के पीछे उन्हों ने राजा चाहा तब परमेश्वर ने चालीस बरस के लिये बिनयामीन के गोत्र में से एक मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर ठहराया। २२ और उसे अलग करके दाऊद को उन का राजा बनाया जिस के विषय में उस ने गवाही दी कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद मेरे मन के अनुसार मिल गया २३ है वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा। इसी के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राईल के २४ पास एक उद्धारकर्त्ता अर्थात् यीशु को भेजा। जिस के आने से पहिले यूहन्ना ने सब इस्राईलियों को मन २५ फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया। और जब यूहन्ना अपना दौर पूरा करने पर था तो उस ने कहा

(१) या कंचुकी।
(२) यू० प्रतिनिधि।
(३) यू० इबलीस। (४) यू०। प्रतिनिधि।

तुम मुझे क्या समझते हो। मैं वह नहीं बरन देखो मेरे पीछे एक आनेवाला है जिस के पांवों की जूती मैं खोलने
२६ योग्य नहीं। हे भाइयो तुम जो इब्राहीम के बंश के सन्तान हो और तुम जो परमेश्वर से डरते हो तुम्हारे
२७ पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है। क्योंकि यरूशलेम के रहनेवालों और उन के सरदारों ने न उसे पहचाना और न नबियों की बातें समझीं जो हर विश्राम के दिन पढ़ी जाती हैं इसलिये उसे दोषी ठहराकर उन
२८ को पूरा किया। उन्हों ने मार डालने योग्य कोई दोष उस में न पाया तौभी पीलातुस से बिनती की कि वह
२९ मार डाला जाए। और जब उन्हों ने उस के विषय लिखी हुई सब बातें पूरी कीं तो उसे काठ पर से
३० उतारकर क़बर में रक्खा। परन्तु परमेश्वर ने उसे
३१ मरे हुओं में से जिलाया। और वह उन्हें जो उस के साथ गलील से यरूशलेम आए थे बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा लोगों के सामने अब वे ही उस के
३२ गवाह हैं। और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय जो बापदादों से की गई थी यह सुसमाचार सुनाते हैं
३३ कि, परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर वही प्रतिज्ञा हमारे सन्तान के लिये पूरी की जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।
३४ और उस के इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने के विषय कि वह कभी न सड़े उस ने यों कहा है कि मैं दाऊद पर की पवित्र और अचल कृपा तुम पर
३५ करूंगा। इसलिये उस ने एक और भजन में भी कहा है कि तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।
३६ क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया और अपने बापदादों में
३७ जा मिला और सड़ भी गया। पर जिस को परमेश्वर
३८ ने जिलाया वह सड़ने न पाया। इसलिये हे भाइयो तुम जानो कि इसी के द्वारा पापों की छमा का समा-
३९ चार तुम्हें दिया जाता है। और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष न ठहर सकते थे उन्हीं सब से हर एक विश्वास करनेवाला उस के द्वारा निर्दोष
४० ठहरता है। इसलिये चौकस रहो ऐसा न हो कि जो
४१ नबियों की पुस्तक में आया है तुम पर आ पड़े, कि हे निन्दा करनेवालो देखो और चकित हो और मिट जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुम से उस की चर्चा करे तो तुम कभी प्रतीति न करोगे॥

४२ उन के बाहर निकलते समय लोग उन से बिनती करने लगे कि अगले विश्राम के दिन हमें ये बातें सुनाई जाएं।
४३ और जब सभा उठ गई तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुतेरे पौलुस और बरनबा के पीछे हो लिये और उन्हों ने उन से बातें करके समझाया कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो॥

४४ अगले विश्राम के दिन नगर के प्रायः सब लोग पर-
४५ मेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए। पर यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर गए और निन्दा करते
४६ हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे। तब पौलुस और बरनबा ने निडर होकर कहा अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता पर जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते तो देखो हम अन्य जातियों की
४७ ओर फिरते हैं। क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है कि मैं ने तुझे अन्य जातियों के लिये ज्योति ठहराया है कि
४८ तू पृथिवी की छोर तक उद्धार का द्वार हो। यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे और जितने अनन्त जीवन के लिये
४९ ठहराए गए थे उन्हों ने विश्वास किया। तब प्रभु का
५० वचन उस सारे देश में फैलने लगा। पर यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को उसकाया और पौलुस और बरनबा पर उपद्रव करवाकर
५१ उन्हें अपने सिवानों से निकाल दिया। तब वे उन के सामने
५२ अपने पांवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को गए। और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से भरपूर होते रहे॥

१४

इकुनियुम में वे यहूदियों की सभा में साथ साथ गए और ऐसी बातें कीं कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों
२ ने विश्वास किया। पर न माननेवाले यहूदियों ने अन्य-जातियों के मन भाइयों के बिरोध में उसकाये और बुरे
३ कर दिए। सो वे बहुत दिन वहां रहे और प्रभु के भरोसे पर हियाव से बातें करते थे और वह उन के हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के
४ वचन पर गवाही देता था। और नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी इस से कितने तो यहूदियों की ओर और
५ कितने प्रेरितों की ओर हो गए। पर जब अन्यजाति और यहूदी उन का अपमान और उन्हें पत्थरवाह करने
६ को अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े। तो वे जान गए और लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में और
७ आसपास के देश में भाग गए। और वहां सुसमाचार सुनाने लगे॥

८ लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था जो पांवों का निर्बल था वह जन्म ही से लंगड़ा था और कभी न चला था।

९ वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और इस ने उस की ओर टकटकी लगाकर देखा कि इस को चंगे हो
१० जाने का विश्वास है। और ऊंचे शब्द से कहा अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो। तब वह उछलकर चलने
११ फिरने लगा। लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया की भाषा में ऊंचे शब्द से कहा देवता मनुष्यों
१२ के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं। और उन्हों ने बरनबा को ज्यूस और पौलुस को हिरमेस कहा क्योंकि
१३ यह बातें करने में मुख्य था। और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उन के नगर के सामने था बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान किया
१४ चाहता था। पर बरनबा और पौलुस प्रेरितों ने जब सुना तो अपने कपड़े फाड़े और भीड़ में लपक गए और
१५ पुकारकर, कहने लगे हे लोगो क्या करते हो हम भी तो तुम्हारे समान दुख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो जिस ने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया।
१६ उस ने बीते समयों में सब जातियों को अपने अपने
१७ मार्गों में चलने दिया। तौभी उस ने अपने आप को बिना गवाही नहीं छोड़ा कि वह भलाई करता रहा और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर तुम्हारे
१८ मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा। यह कहकर उन्हों ने लोगों को कठिनता से रोका कि उन के लिये बलिदान न करें॥

१९ पर कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया और पौलुस को पत्थरवाह किया और मरा समझकर उसे नगर के
२० बाहर घसीट ले गए। पर जब चेले उस के चारों ओर आ खड़े हुए तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे
२१ दिन बरनबा के साथ दिरबे को चला गया। और वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर और बहुत से चेले बनाकर लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया
२२ को लौट आए। और चेलों के मन को स्थिर करते और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो और यह कहते थे कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य
२३ में प्रवेश करना होगा। और उन्हों ने हर एक मण्डली में उन के लिये प्राचीन[१] ठहराए और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्हों ने
२४ विश्वास किया था। और पिसिदिया से होते हुए वे
२५ पंफूलिया में पहुंचे। और पिरगा में वचन सुनाकर अत्त-
२६ लिया में आए। और वहां से जहाज पर अन्ताकिया में आए जहां से वे उस काम के लिये जो उन्हों ने पूरा
२७ किया था परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपे गए थे। वहां पहुंचकर उन्हों ने मण्डली इकट्ठी की और बताया कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े बड़े काम किए और अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल
२८ दिया। और वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे॥

१५ कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम
२ उद्धार नहीं पा सकते। जब पौलुस और बरनबा का उन से बहुत झगड़ा और पूछपाछ हुई तो यह ठहराया गया कि पौलुस और बरनबा और हम में से कितने और जन इस बात के विषय यरूशलेम को प्रेरितों और
३ प्राचीनों[२] के पास जाएं। सो मण्डली ने उन्हें कुछ दूर पहुंचाया और वे फीनीके और सामरिया से होते हुए अन्यजातियों के मन फेरने[३] का समाचार सुनाते गए और
४ सब भाइयों को बहुत आनन्दित किया। जब यरूशलेम में पहुंचे तो मण्डली और प्रेरित और प्राचीन[४] उन से आनन्द के साथ मिले और उन्हों ने बताया कि परमेश्वर
५ ने उस के साथ होकर कैसे कैसे काम किये थे। पर फरीसियों के पंथ में से जिन्हों ने विश्वास किया था उन में से कितनों ने उठकर कहा कि उन्हें खतना कराना और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देना चाहिए॥
६ तब प्रेरित और प्राचीन[४] इस बात का विचार करने
७ को इकट्ठे हुए। जब बहुत पूछपाछ हुई तो पतरस ने खड़े होकर उन से कहा॥

हे भाइयो तुम जानते हो कि बहुत दिन हुए कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया कि मेरे मुंह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें।
८ और मन के जांचनेवाले परमेश्वर ने उन को भी हमारी
९ नाईं पवित्र आत्मा देकर उन की गवाही दी। और विश्वास के द्वारा उन के मन शुद्ध करके हम में और
१० उन में कुछ भेद न रक्खा। सो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो कि चेलों की गरदन पर ऐसा जूआ
११ रक्खो जिसे न हमारे बाप दादे न हम उठा सके। हां हमारा यह विश्वास तो है कि जिस रीति से वे उद्धार पाएंगे उसी रीति से हम भी प्रभु यीशु के अनुग्रह से पाएंगे॥

(१) या। प्रिसबुतिर।

(२) या। प्रिसबुतिरों। (३) अर्थात्। दीक्षित होने। (४) या। प्रिसबुतिर।

१२ तब सारी सभा चुपचाप होकर बरनबा और पौलुस की सुनने लगी कि परमेश्वर ने उन के द्वारा अन्यजातियों में कैसे कैसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम १३ दिखाए। जब वे चुप हुए तो याकूब कहने लगा कि ॥ १४ हे भाइयो मेरी सुनो। शमौन ने बताया कि परमेश्वर ने पहिले पहिल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की कि उन में से अपने नाम के लिये एक १५ लोग बना ले। और इस से नबियों की बातें मिलती १६ हैं जैसा लिखा है कि, इस के पीछे मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा और उस के खंडहरों को फिर बनाऊंगा और उसे खड़ा करूंगा। १७ इसलिये कि शेष मनुष्य अर्थात् सब अन्यजाति १८ जो मेरे नाम के कहलाते हैं प्रभु को ढूंढें। यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों को १९ जनाता आया। इसलिये मेरा विचार यह है कि अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते २० हैं हम उन्हें दुख न दें। पर उन्हें लिख भेजें कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे २१ हुओं के मांस से और लोहू से परे रहें। क्योंकि पुराने समय से नगर नगर मूसा की व्यवस्था के प्रचार करनेवाले होते चले आए हैं और वह हर विश्राम के दिन सभाओं में पढ़ी जाती है ॥

२२ तब सारी मण्डली सहित प्रेरितों और प्राचीनों[१] को अच्छा लगा कि अपने में से कई मनुष्यों को चुनें अर्थात् यहूदा जो बरसब्बा कहलाता है और सीलास को जो भाइयों में मुखिया थे और उन्हें पौलुस और २३ बरनबा के साथ अन्ताकिया को भेजें। और उन के हाथ यह लिख भेजा कि अन्ताकिया और सूरिया और किलिकिया के रहनेवाले भाइयों को जो अन्यजातियों में से हैं प्रेरितों और प्राचीन[१] भाइयों का नमस्कार। २४ हम ने सुना है कि कितनों ने हम में से वहां जाकर तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया और तुम्हारे मन उलट दिए पर हम ने उन को आज्ञा न दी थी। २५ इसलिये हम ने एक चित्त होकर ठीक समझा कि चुने हुए मनुष्यों को अपने प्यारे बरनबा और पौलुस के २६ साथ तुम्हारे पास भेजें। ये तो ऐसे मनुष्य हैं जिन्हों ने अपने प्राण हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये २७ जोखिम में डाले हैं। और हम ने यहूदा और सीलास को भेजा है जो अपने मुंह से भी ये बातें कह देंगे। २८ पवित्र आत्मा को और हम को ठीक जान पड़ा कि इन अवश्य बातों को छोड़ तुम पर और बोझ न डालें, २९ कि मूरतों के बलि किए हुओं से और लोहू से और गलाघोंटे हुओं के मांस से और व्यभिचार से परे रहो। इन से परे रहो तो तुम्हारा भला होगा। आगे शुभ ॥

३० सो वे बिदा होकर अन्ताकिया में पहुंचे और ३१ सभा को इकट्ठी करके वह पत्री दी। वे पढ़ के उस ३२ उपदेश की बात से आनन्दित हुए। और यहूदा और सीलास ने जो आप भी नबी थे बहुत बातों से भाइयों ३३ को उपदेश देकर स्थिर किया। वे कुछ दिन रहकर भाइयों से शान्ति के साथ बिदा हुए कि अपने भेजने- ३५ वालों के पास जाएं। और पौलुस और बरनबा अन्ताकिया में रह गए और बहुत औरों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते रहे।

३६ कुछ दिन पीछे पौलुस ने बरनबा से कहा कि जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था आओ फिर उन में चलकर अपने भाइयों को देखें ३७ कि कैसे हैं। तब बरनबा ने यूहन्ना को जो मरकुस ३८ कहलाता है साथ लेने का विचार किया॥ पर पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उन से अलग हो गया था और काम पर उन के साथ न गया साथ ले जाना ३९ अच्छा न समझा। सो ऐसा टंटा हुआ कि वे एक दूसरे से अलग हो गए और बरनबा मरकुस को लेकर जहाज़ ४० पर कुप्रुस को चला गया। पर पौलुस ने सीलास को चुन लिया और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह पर ४१ सौंपा जाकर वहां से चला गया। और मण्डलियों को स्थिर करता हुआ सूरिया और किलिकिया से होते हुए निकला ॥

१६.

फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया और देखो वहाँ तीमथियुस नाम एक चेला था जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था २ पर उस का पिता यूनानी था। वह लुस्त्रा और इकुनियुम ३ के भाइयों में सुनाम था। पौलुस ने चाहा कि यह मेरे साथ चले और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उन के कारण उसे लेकर उस का खतना किया क्योंकि वे सब ४ जानते थे कि उस का पिता यूनानी था। और नगर नगर जाते हुए वे उन बिधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों[२] ने ठहराई थीं मानने के लिये उन्हें ५ पहुंचाते थे। सो मण्डलियां विश्वास में स्थिर होतीं और गिनती में दिन दिन बढ़ती गईं ॥

(१) या। प्रिसबुतिरों।

(२) या। प्रिसबुतिरों।

६ और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों में होकर गए और पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने ७ से मना किया। और उन्हों ने मूसिया के निकट पहुंचकर बितूनिया में जाना चाहा पर यीशु के आत्मा ने उन्हें ८ जाने न दिया। सो मूसिया से होकर वे त्रोआस में ९ आए। और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ उस से बिनती करके कहता है कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ और १० हमारी सहायता कर। उस के यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा यह समझ कर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है॥

११ सो त्रोआस से जहाज़ खोलकर हम सीधे समुत्राके १२ और दूसरे दिन नियापुलिस में आए। वहां से हम फिलिप्पी में पहुंचे जो मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर और रोमियों की बस्ती है और हम उस नगर में कुछ १३ दिन रहे। विश्राम के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए कि वहां प्रार्थना करने की जगह होगी और बैठकर उन स्त्रियों से जो १४ इकट्ठी हुई थीं बातें करने लगे। और लुदिया नाम थूआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुनती थी और प्रभु ने उस का मन खोला कि पौलुस १५ की बातों पर चित्त लगाए। और जब उस ने अपने घराने समेत बपतिसमा लिया तो उस ने बिनती की कि यदि तुम मुझे प्रभु की बिश्वासिनी समझते हो तो चलकर मेरे घर में रहो और वह हमें मनाकर ले गई॥

१६ जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे तो हमें एक दासी मिली जिस में भावी कहनेवाला आत्मा था और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत १७ कुछ कमा लाती थी। वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी कि ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं। १८ वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही पर पौलुस दुखित हुआ और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गया॥

१९ जब उस के स्वामियों ने देखा कि हमारी कमाई की आशा जाती रही तो पौलुस और सीलास को २० पकड़ के चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए। और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले जाकर कहा ये लोग जो यहूदी हैं हमारे नगर में बड़ी खलबली २१ डाल रहे हैं। और ऐसे व्यवहार बता रहे हैं जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिये ठीक नहीं। २२ तब भीड़ के लोग उन के बिरोध में इकट्ठे चढ़ आए और हाकिमों ने उन के कपड़े फाड़कर उतार डाले और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दी। २३ और बहुत बेत लगवाकर उन्हें जेलखाने में डाला और दारोग़ा को आज्ञा दी कि उन्हें चौकसी से रक्खे। २४ उस ने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में डाला और उन के पांव काठ में ठोक दिये। २५ आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे और बन्धुए उन की सुन रहे थे, २६ कि इतने में एकाएक बड़ा भुईंडोल हुआ यहां तक कि जेलख़ाने की नेव हिल गई और तुरन्त सब द्वार खुल गए और सब के बन्धन खुल पड़े। २७ और दारोग़ा जाग उठा और जेलख़ाने के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग गए सो तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा। २८ पर पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा क्योंकि हम सब यहां हैं। २९ तब वह दिया मंगाकर भीतर लपक गया और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। ३० और उन्हें बाहर लाकर कहा हे साहिबो उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं। ३१ उन्हों ने कहा प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। ३२ और उन्हों ने उस को और उस के सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। ३३ और रात को उसी घड़ी उस ने उन्हें ले जाकर उन के घाव धोए और उस ने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिसमा लिया। ३४ और उस ने उन्हें अपने घर में ले जाकर उन के आगे भोजन रक्खा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर बिश्वास करके आनन्द किया॥

३५ बिहान हुए हाकिमों ने प्यादों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो। ३६ दारोग़ा ने ये बातें पौलुस से कह सुनाई कि हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है सो अब निकलकर कुशल से चले जाओ। ३७ पर पौलुस ने उन से कहा उन्हों ने हमें जो रोमी मनुष्य हैं दोषी ठहराए बिना लोगों के सामने मारा और जेलख़ाने में डाला और अब क्या हमें चुपके से निकाल देते हैं। सो नहीं पर आप आकर हमें बाहर ले जाएं। ३८ प्यादों ने ये बातें हाकिमों से कह दीं और वे यह सुनकर कि रोमी हैं डर गए। ३९ और आकर उन्हें मनाया और बाहर ले जाकर बिनती की कि नगर से चले जाएं। ४० वे जेलख़ाने से निकलकर लुदिया के यहां गए और भाइयों से भेंट करके उन्हें शांति दी[१] और चले गए॥

(१) या। उपदेश किया।

१७. फिर वे अंफिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए जहां यहूदियों की २ सभा थी। और पौलुस अपनी रीति पर उन के पास गया और तीन विश्राम के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के ३ साथ विवाद किया। और उन का अर्थ खोल खोलकर समझाता था कि मसीह को दुख उठाना और मरे हुओं में से जी उठना अवश्य था और यही यीशु जिस की मैं ४ तुम्हें कथा सुनाता हूं मसीह है। उन में से कितनों ने और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया और पौलुस और सीलास के साथ ५ मिल गए। पर यहूदियों ने डाह से भर कर बाज़ारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ लिया और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन को लोगों के सामने लाना ६ चाहा। और उन्हें न पाकर वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कितने और भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए कि ये लोग जिन्हों ने जगत को उलटा पुलटा ७ कर दिया है यहां भी आए हैं। और यासोन ने उन्हें अपने यहां उतारा है और ये सब के सब यह कहते हुए कि यीशु नाम दूसरा राजा है कैसर की आज्ञाओं का सामना ८ करते हैं। सो उन्हों ने लोगों को और नगर के हाकिमों ९ को यह सुनाकर घबरा दिया। और उन्हों ने यासोन और बाक़ी लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया॥

१० भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरिया में भेज दिया। और वे वहां पहुंच ११ कर यहूदियों की सभा में गए। ये लोग तो थिस्सलुनीके-वालों से उदार थे और उन्हों ने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया और दिन दिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे १२ कि ये बातें योंही हैं कि नहीं। सो उन में से बहुतों ने और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहु- १३ तेरों ने विश्वास किया। पर जब थिस्सलुनीके के यहूदी जान गए कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है तो वहां भी आकर लोगों को उसकाने और १४ खलबली डालने लगे। तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को बिदा किया कि समुद्र के किनारे चला जाए पर १५ सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गये। पौलुस के पहुं-चानेवाले उसे अथेने तक ले गए और सीलास और तीमुथियुस के लिये यह आज्ञा लेकर बिदा हुए कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ॥

१६ जब पौलुस अथेने में उन की बाट जोह रहा था तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उस का जी १७ जल गया। सो वह सभा में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे उन से हर दिन १८ विवाद किया करता था। तब इपिकूरी और स्तोईकी पण्डितों में से कितने उस से तर्क करने लगे और कितनों ने कहा यह बकवादी क्या कहना चाहता है पर औरों ने कहा वह ऊपरी देवताओं का प्रचारक देख पड़ता है क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान[१] का १९ सुसमाचार सुनाता था। तब वे उसे अपने साथ अरियु-पगुस पर ले गए और पूछा क्या हम जान सकते हैं कि २० यह नया मत जो तू सुनाता है क्या है। क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है सो हम जानना चाहते हैं २१ कि इन का अर्थ क्या है। (इसलिये कि सब अथेनवी और परदेशी जो वहां रहते थे नई नई बातें कहना सुनना छोड़ और किसी काम में समय न बिताते थे)। २२ तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा,

हे अथेने के लोगो मैं देखता हूं कि तुम हर बात २३ में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देखता था तब एक ऐसी वेदी भी पाई जिस पर लिखा था अनजाने ईश्वर के लिये। सो जिसे तुम बिन जाने पूजते हो मैं तुम्हें २४ उसी की कथा सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने जगत और उस की सब वस्तुओं को बनाया वह स्वर्ग और पृथिवी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं २५ रहता, न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है क्योंकि वह तो आप ही सब को २६ जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। उस ने एक ही से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं और उन के ठहराए हुए समय और निवास २७ के सिवानों को इसलिये बांधा है। कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें क्या जाने उसे टटोलकर पाएं तौभी वह हम में से २८ किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीते और चलते फिरते और बने रहते हैं जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने २९ भी कहा है कि हम तो उस के वंश हैं। सो परमेश्वर के वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है जो मनुष्य की ३० कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता ३१ है। क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब को निश्चय करा दी है॥

(१) या। मृतकोत्थान अर्थात जी उठने।

३२ मरे हुओं के पुनरुत्थान[१] की बात सुनकर कितने तो ठट्ठा करने लगे और कितनों ने कहा यह बात ३३ हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे। इस पर पौलुस ३४ उन के बीच में से निकल गया। पर कई मनुष्य उस से मिल गए और विश्वास किया जिन में दियुनुसियुस अरियुपगी था और दमरिस नाम एक स्त्री थी और उन के साथ और भी कितने लोग थे॥

१८. इस के पीछे पौलुस अथेने को छोड़कर कुरिन्थुस में आया। २ और वहां अक्विला नाम एक यहूदी मिला जिस का जन्म पुन्तुस का था और अपनी पत्नी प्रिसकिल्ला समेत इतालिया से नया आया था इसलिये कि क्लौदियुम ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी सो वह ३ उन के यहां गया। और उस का और उन का एक ही उद्यम था इसलिये वह उन के साथ रहा और वे काम ४ करने लगे और उन का उद्यम तम्बू बनाने का था। और वह हर एक विश्राम के दिन सभा में विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था॥

५ जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को ६ गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है। पर जब वे विरोध और निन्दा करने लगे तो उस ने अपने कपड़े झाड़कर उन से कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारे ही सिर पर रहे। मैं निर्दोष हूं। अब से मैं अन्य जातियों के पास ७ जाऊंगा। और वहां से चलकर वह तितुस युस्तुस नाम परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया जिस का घर ८ सभा के घर से लगा हुआ था। तब सभा के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास करते और ९ बपतिसमा लेते थे। और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा मत डर बरन कहे जा और चुप मत १० रह। क्योंकि मैं तेरे साथ हूं और कोई तुझ पर चढ़ाई करके हानि न करेगा क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से ११ लोग हैं। सो वह उन में परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा॥

१२ जब गल्लियो अखाया देश का हाकिम[२] था तो यहूदी लोग एका करके पौलुस पर चढ़ आये और उसे १३ न्याय के आसन के सामने लाकर कहने लगे कि, यह लोगों को समझाता है कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से करें जो व्यवस्था के विपरीत है। १४ जब पौलुस मुंह खोलने पर था तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा हे यहूदियो यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता की बात होती तो उचित था कि मैं तुम्हारी सहता। १५ पर यदि यह विवाद शब्दों और नामों और तुम्हारे यहां की व्यवस्था के विषय है तो तुम ही जानो क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी बनना नहीं चाहता। १६ और उस ने उन्हें न्याय के आसन के सामने से निकलवा दिया। १७ तब सब लोगों ने सभा के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ के न्याय के आसन के सामने मारा और गल्लियो ने इन बातों की कुछ चिन्ता न की॥

१८ पौलुस और भी बहुत दिन वहां रहा फिर भाइयों से बिदा होकर किंख्रिया में इसलिये सिर मुण्डा कर कि उस ने मन्नत मानी थी जहाज़ पर सूरिया को चल दिया और उस के साथ प्रिसकिल्ला और अक्विला थे। १९ और उस ने इफिसुस में पहुंचकर उन को वहां छोड़ा और आप ही सभा में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा। २० जब उन्हों ने उस से बिनती की कि हमारे साथ और कुछ दिन रह तो उस ने न माना। २१ पर यह कहकर उन से बिदा हुआ कि यदि परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा। २२ तब इफिसुस से जहाज़ खोलकर चल दिया और कैसरिया में उतर कर [यरूशलेम को] गया और मण्डली को नमस्कार करके अन्ताकिया में आया। २३ फिर कुछ दिन रहकर वहां से चला गया और एक ओर से गलतिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा॥

२४ अपुल्लोस नाम एक यहूदी जिस का जन्म सिकन्दरिया में हुआ था जो विद्वान् पुरुष और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से जानता था इफिसुस में आया। २५ उस ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और जी लगा कर यीशु के विषय में ठीक ठीक सुनाता और सिखाता था पर वह केवल यूहन्ना के बपतिसमा की बात जानता था। २६ वह सभा में निडर होकर बोलने लगा पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उस की बातें सुन कर उसे अपने यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक ठीक बताया। २७ और जब वह अखाया को पार उतरकर जाना चाहता था तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उस से अच्छी तरह मिलें और उस ने पहुंच कर उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्हों ने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था। २८ क्योंकि वह पवित्र शास्त्र से यह प्रमाण ला लाकर कि यीशु ही मसीह है बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के सामने निरुत्तर करता रहा॥

(१) या। मृतकोत्थान अर्थात् जी उठने।
(२) या। प्रतिनिधि।

१९. और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर २ इफिसुस में आया और कितने चेलों को पाकर, उन से कहा क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया। उन्हों ने उस से कहा हम ने तो पवित्र आत्मा की ३ चर्चा भी नहीं सुनी। उस ने उन से कहा तो तुम ने किस का बपतिसमा लिया। उन्हों ने कहा यूहन्ना का ४ बपतिसमा। पौलुस ने कहा यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिसमा दिया कि जो मेरे पीछे आनेवाला ५ है उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना। यह सुनकर ६ उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम का बपतिसमा लिया। और जब पौलुस ने उन पर हाथ रक्खे तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा और वे बोलियां बोलने और नबूवत करने ७ लगे। ये सब बारह एक पुरुष थे॥

८ और वह सभा में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा और परमेश्वर के राज्य के विषय ९ विवाद करता और समझाता रहा। पर जब कितनों ने कठोर होकर उस की नहीं मानी बरन लोगों के सामने इस मार्ग को बुरा कहने लगे तो उस ने उन को छोड़कर चेलों को अलग कर लिया और दिन दिन तुरन्नुस की १० पाठशाला में विवाद किया करता था। दो बरस तक यही होता रहा यहां तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया। ११ और परमेश्वर पौलुस के हाथों से अनोखे सामर्थ के १२ काम दिखाता था, यहां तक कि उस की देह से छुवा कर रूमाल और अंगोछे बीमारों पर डालते थे और उन की बीमारियां जाती रहती थीं और दुष्टात्मा उन में से १३ निकल जाते थे। पर कितने यहूदी जो झाड़ा फूंकी करते फिरते थे यह करने लगे कि जिन में दुष्टात्मा हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कह कर फूंकें कि जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है मैं तुम्हें उसी की किरिया देता १४ हूं। और स्किवा नाम एक यहूदी महायाजक के सात १५ पुत्र थे जो ऐसा ही करते थे। पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया कि यीशु को मैं जानता हूं और पौलुस को भी पहचानता १६ हूं पर तुम कौन हो। और उस मनुष्य ने जिस में दुष्ट आत्मा था उन पर लपक कर और उन्हें वश में लाकर उन पर ऐसा उपद्रव किया कि वे नंगे और घायल होकर १७ उस घर से निकल भागे। और यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए और उन सब पर भय छा गया और प्रभु यीशु के नाम की १८ बड़ाई हुई। और जिन्हों ने विश्वास किया था उन में से बहुतेरों ने आकर अपने अपने काम मान लिए और १९ बतलाए। और जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पोथियां इकट्ठी करके सब के सामने जला दीं और जब उन का दाम जोड़ा गया तो पचास हज़ार रुपये २० की निकलीं। यों प्रभु का वचन बल पाकर फैलता और प्रबल होता गया॥

२१ जब ये बातें हो चुकीं तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम को जाऊं और कहा कि वहां जाने के पीछे मुझे २२ रोमा को भी देखना चाहिए। सो उस की सेवा करनेवालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ दिन आसिया में रह गया॥

२३ उस समय उस पन्थ के विषय बड़ा हुल्लड़ २४ हुआ। क्योंकि देमेत्रियुस नाम एक सुनार अरतिमिस के मन्दिर की चांदी की मूरतें बनाने से कारीगरों को २५ बहुत काम दिलाता था। उस ने उन को और और ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठे करके कहा, हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस काम से हमारी कमाई होती २६ है। और तुम देखते और सुनते हो कि केवल इफिसुस ही में नहीं बरन प्रायः सारे आसिया में यह कह कह कर इस पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया २७ भी है कि जो हाथ से बनाये जाते हैं वे ईश्वर नहीं। और केवल यह डर नहीं कि हमारे उस धन्धे का मान जाता रहेगा बरन यह भी कि बड़ी देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा और जिसे सारा आसिया और जगत २८ पूजता है उस की प्रतिष्ठा जाती रहेगी। वे यह सुन कर क्रोध से भर गए और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे इफिसियों २९ की अरतिमिस महान् है। और सारे नगर में बड़ी हलचल मच गई और लोगों ने गयुस और अरिस्तरखुस मकिदुनियों को जो पौलुस के संगी यात्री थे पकड़ लिया ३० और एक चित्त होकर रंगशाला में दौड़ गए। जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे ३१ जाने न दिया। आसिया के हाकिमों में से भी उस के कई मित्रों ने उस के पास कहला भेजा और बिनती ३२ की कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना। सो कोई कुछ चिल्लाया और कोई कुछ क्योंकि सभा में गड़बड़ हो रही थी और बहुत लोग जानते भी न थे कि ३३ हम किस लिये इकट्ठे हुए हैं। तब उन्हों ने सिकन्दर को जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था भीड़ में से आगे बढ़ाया और सिकन्दर हाथ से सैन करके लोगों के ३४ सामने उत्तर दिया चाहता था। पर जब उन्हों ने जाना कि यह यहूदी है तो सब के सब एक शब्द से कोई दो घंटे तक चिल्लाते रहे कि इफिसियों की अरतिमिस

३५ महान् है। तब नगर के मन्त्री ने लोगों को शांत करके कहा हे इफिसियो कौन नहीं जानता कि इफिसियों का नगर बड़ी देवी अरतिमिस के मन्दिर और ज्यूस की ओर ३६ से गिरी हुई मूरत का टहलुआ है। सो जब कि इन बातों का खण्डन नहीं हो सकता तो उचित है कि तुम चुपके ३७ रहो और बिना सोचे कुछ न करो। क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो जो न मन्दिर के लूटनेवाले और न हमारी ३८ देवी के निन्दक हैं। यदि देमेत्रियुस और उस के साथी कारीगरों को किसी से विवाद हो तो कचहरी खुली है ३९ और हाकिम[१] भी हैं वे एक दूसरे पर नालिश करें। पर यदि तुम किसी और बात के विषय कुछ पूछना चाहते ४० हो तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा। क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है इसलिये कि इस का कोई कारण नहीं सो हम ४१ इस भीड़ होने का उत्तर न दे सकेंगे। और यह कह के उस ने सभा को विदा किया॥

२०. जब हुल्लड़ थम गया तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया और उन २ से विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया। उस सारे देश में होकर और उन्हें बहुत समझा कर वह ३ यूनान में आया। जब तीन महीने रह कर जहाज़ पर सूरिया जाने पर था तो यहूदी उस की घात में लगे इसलिये उस ने मकिदुनिया होकर लौट जाने को ४ ठाना। बिरीया के पुरुस का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का गयुस और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उस के साथ हो लिए। ५ वे आगे जाकर त्रोआस में हमारी बाट जोहते रहे। ६ और हम अखमीरी रोटी के दिनों के पीछे फिलिप्पी से जहाज़ पर चल कर पांच दिन में त्रोआस में उन के पास पहुंचे और सात दिन वहीं रहे॥

७ अठवारे के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने[२] के लिये इकट्ठे हुए तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था उन से बातें कीं और आधी रात तक बातें ८ करता रहा। जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे उस में ९ बहुत दिये जल रहे थे। और यूतुखुस नाम एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ भारी नींद से झुक रहा था और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा वह नींद के झोंके में तीसरी मंज़िल से गिर पड़ा और मरा हुआ उठाया गया। १० पर पौलुस उतर कर उस से लिपट गया और गले लगाकर कहा न घबराओ क्योंकि उस का प्राण उस में है। ११ और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा कि पौ फट गई फिर वह चला गया। १२ और वे उस लड़के को जीता ले लाए और बहुत शान्ति पाई॥

१३ हम पहले से जहाज़ पर चढ़ कर अस्सुस को गए जहां से हमें पौलुस को चढ़ा लेना था क्योंकि उस ने यह इसलिये ठहराया था कि आप ही पैदल जानेवाला था। १४ जब वह अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ा कर मितुलेने में आए। १५ और वहां से जहाज़ खोल कर हम दूसरे दिन खियुस के सामने पहुंचे और अगले दिन सामुस में लगान किया फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए। १६ क्योंकि पौलुस ने इफिसुस को एक ओर छोड़कर जाने को ठाना था ऐसा न हो कि उसे आसिया में देर लगे क्योंकि वह जल्दी करता था कि यदि हो सके तो उसे पिन्तेकुस्त का दिन यरूशलेम में हो॥

१७ और उस ने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा और मण्डली के प्राचीनों[३] को बुलवाया। १८ जब वे उस के पास आए तो उन से कहा,

तुम जानते हो कि पहिले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुंचा मैं हर समय तुम्हारे साथ कैसा रहा। १९ कि बड़ी दीनता से और आंसू बहा बहाकर और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों की घात में लगे रहने से मुझ पर आ पड़ीं मैं प्रभु की सेवा करता रहा। २० और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं उन को बताने और लोगों के सामने और घर घर सिखाने से कभी न झिझका। २१ बरन यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराना और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। २२ और अब देखो मैं आत्मा में बंधा हुआ यरूशलेम जाता हूं और नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा। २३ केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं। २४ पर मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि मानो वह मुझे प्रिय है कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवकाई को पूरा करूं जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने को प्रभु यीशु से पाई है। २५ और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब जिन में मैं परमेश्वर के

(१) या प्रतिनिधि।

(२) देखो २ अध्याय ४२ पद।

(३) या। प्रिसबुतिरों।

राज्य का प्रचार करता फिरा मेरा मुंह फिर न देखोगे । २६ इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर २७ कहता हूं कि मैं सब के लोहू से निर्दोष हूं । क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा तुम्हें पूरी रीति से बताने २८ से न झिझका, सो अपनी और सारे झुंड की चौकसी करो जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष[१] ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो २९ जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है । मैं जानता हूं कि मेरे जाने के पीछे फाड़नेवाले भेड़िए तुम में ३० आएंगे जो झुंड को न छोड़ेंगे । तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे मनुष्य उठेंगे जो चेलों को अपने पीछे खींच ३१ लेने को टेढ़ी बातें कहेंगे । इसलिये जागते रहो और स्मरण करो कि मैं ने तीन बरस तक रात दिन आंसू ३२ बहा बहाकर हर एक को चिताना न छोड़ा । और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को और उस के अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं जो तुम्हारी उन्नति कर सकता और ३३ सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है । मैं ने किसी की चांदी सोने या कपड़े का लालच नहीं किया । ३४ तुम आप जानते हो कि इन ही हाथों ने मेरी और मेरे ३५ साथियों की ज़रूरतें पूरी कीं । मैं ने तुम्हें सब करके दिखाया कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना और प्रभु यीशु की बातें स्मरण रखना चाहिए कि उस ने आप ही कहा है, लेने से देना धन्य है ॥

३६ यह कहकर उस ने घुटने टेके और उन सब के ३७ साथ प्रार्थना की । तब वे सब बहुत रोए और पौलुस ३८ के गले में लिपट कर उसे चूमने लगे । वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे जो उस ने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे और उन्हों ने उसे जहाज़ तक पहुंचाया ॥

२१.

जब हम ने उन से अलग होकर जहाज़ खोला तो सीधे सीधे कोस में आए और दूसरे दिन रुदुस में और वहां से २ पतरा में । और एक जहाज़ फीनीके जाता हुआ मिला ३ और उस पर चढ़कर उसे खोल दिया । जब कुप्रुस दिखाई दिया तो हम ने उसे बाएं हाथ छोड़ा और सुरिया को चलकर सूर में उतरे क्योंकि वहां जहाज़ का ४ बोझ उतारना था । और चेलों को पाकर हम वहां सात दिन रहे । उन्हों ने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा ५ यरूशलेम में पांव न रखना । जब वे दिन पूरे हो गए तो हम चल दिए और सब ने स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर तक पहुंचाया और हम ने किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की । ६ तब एक दूसरे से बिदा होकर हम तो जहाज़ पर चढ़े और वे अपने अपने घर लौट गए ॥

७ तब हम सूर से जलयात्रा पूरी करके पतुलिमयिस में पहुंचे और भाइयों को नमस्कार करके उन के साथ एक दिन रहे । ८ दूसरे दिन हम वहां से चलकर कैसरिया में आये और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में एक था जाकर उस के यहां रहे । ९ उस की चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो नबूवत करती थीं । १० जब हम वहां बहुत दिन रह चुके तो अगबुस नाम एक नबी यहूदिया से आया । ११ उस ने हमारे पास आकर पौलुस का पटका लिया और अपने हाथ पांव बांधकर कहा पवित्र आत्मा यह कहता है जिस मनुष्य का यह पटका है उस को यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बांधेंगे और अन्य जातियों के हाथ सौंपेंगे । १२ जब ये बातें सुनीं तो हम और वहां के लोगों ने उस से बिनती की कि यरूशलेम को न जाए । १३ पर पौलुस ने उत्तर दिया कि तुम क्या करते हो कि रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो । मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बांधे जाने ही के लिये बरन मरने के लिये भी तैयार हूं । १४ जब उस ने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए कि प्रभु की इच्छा पूरी हो ॥

१५ उन दिनों के पीछे हम बांध छांध कर यरूशलेम १६ को चल दिये । कैसरिया के भी कितने चेले हम से साथ हो लिए और मनासोन नाम कुप्रुस के एक पुराने चेले को साथ ले आए कि हम उस के यहां टिकें ॥

१७ जब हम यरूशलेम में पहुंचे तो भाई बड़े आनन्द १८ के साथ हम से मिले । दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर १९ याकूब के पास गया जहां सब प्राचीन[२] इकट्ठे थे । तब उस ने उन्हें नमस्कार करके जो जो काम परमेश्वर ने उस की सेवकाई के द्वारा अन्य जातियों में किए थे एक २० एक करके बताया । उन्हों ने यह सुन कर परमेश्वर की महिमा की फिर उस से कहा हे भाई तू देखता है कि यहूदियों में से कई हज़ार ने विश्वास किया है और २१ सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं । और उन को तेरे विषय सिखाया गया है कि तू अन्य जातियों में रहनेवाले यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है और कहता है कि न अपने बच्चों का ख़तना कराओ २२ न रीतियों पर चलो । सो क्या किया जाए । लोग २३ अवश्य सुनेंगे कि तू आया है । इसलिये जो हम तुझ

(१) या । बिशप ।

(२) या प्रिसबुतिर ।

से कहते हैं वह कर। हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्हों २४ ने मन्नत मानी है। उन्हें लेकर उन के साथ अपने आप को शुद्ध कर और उन के लिए खरचा दे कि वे सिर मुड़ाएं तो सब जान लेंगे कि जो बातें उन्हें तेरे विषय सिखाई गईं उन की कुछ जड़ नहीं, पर तू आप भी व्यवस्था को मान कर उस के अनुसार चलता २५ है। पर उन अन्य जातियों के विषय जिन्हों ने विश्वास किया है हम ने यह ठहरा कर लिख भेजा कि वे मूरतों के सामने बलि किए हुए से और लोहू से और गला २६ घोंटे हुओं के मांस से और व्यभिचार से बचे रहें। तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर और दूसरे दिन उन के साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया और बता दिया कि शुद्ध होने के दिन अर्थात् उन में से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब पूरे होंगे॥

२७ जब वे सात दिन पूरे होने पर थे तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में देख कर सब लोगों को २८ उसकाया और यों चिल्लाकर उस को पकड़ लिया कि, हे इस्राएलियो सहायता करो यह वही मनुष्य है जो लोगों के और व्यवस्था के और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है यहां तक कि यूनानियों को भी मन्दिर में लाकर उस ने इस पवित्र स्थान को २९ अपवित्र किया है। उन्हों ने तो इस से पहिले त्रुफिमुस इफिसी को उस के साथ नगर में देखा था और समझते ३० थे कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आया था। तब सारे नगर में हलचल पड़ गई और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए ३१ और तुरन्त द्वार बन्द किए गए। जब वे उसे मार डालना चाहते थे तो पलटन के सरदार को सन्देश ३२ पहुंचा कि सारे यरूशलेम में हुल्लड़ मच रहा है। तब वह तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेकर उन के पास नीचे दौड़ आया और उन्हों ने पलटन के सरदार को और सिपाहियों को देख कर पौलुस को पीटने से ३३ हाथ उठाया। तब पलटन के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया और दो ज़ंजीरों से बांधने की आज्ञा देकर पूछने लगा यह कौन है और इस ने क्या किया ३४ है। पर भीड़ में कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाते थे और जब हुल्लड़ के मारे ठीक न जान सका तो उसे ३५ गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी। जब वह सीढ़ी पर पहुंचा तो ऐसा हुआ कि भीड़ के दबाव के मारे सिपा- ३६ हियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। क्योंकि लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उस के पीछे पड़ी कि इस का काम तमाम कर॥

३७ जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने पर थे तो उस ने पलटन के सरदार से कहा क्या तुझ से कुछ कह सकता हूं। उस ने कहा क्या तू यूनानी जानता है। ३८ क्या तू वह मिसरी नहीं जो इन दिनों से पहिले बलवाई बनाकर चार हज़ार कटार बंद लोगों को जङ्गल में ले गया। ३९ पौलुस ने कहा मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूं। किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूं और मैं तुझ से बिनती करता हूं कि मुझे लोगों से बातें करने दे। ४० जब उस ने आज्ञा दी तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से सैन किया। जब वे चुप हो गए तो वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा कि,

२२.

हे भाइयो और पितरो मेरा उज़र जो मैं अब तुम्हारे सामने करता हूं सुनो॥

२ वे यह सुन कर कि वह हम से इब्रानी भाषा में बोलता है और भी चुप रहे। तब उस ने कहा,

३ मैं तो यहूदी मनुष्य हूं जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा पर इस नगर में गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया और बाप दादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया और परमेश्वर के लिये ऐसी धुन लगाए था जैसे तुम सब आज लगाए हो। ४ और मैं ने पुरुष और स्त्री दोनों को बांध बांध कर और जेलखानों में डाल डाल कर इस पथ को यहां तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला। ५ इस बात के महायाजक और सब पुरनिये गवाह हैं कि उन में से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियां लेकर दमिश्क को चला जा रहा था कि जो वहां हों उन्हें भी ताड़ना पाने को बांधे हुए यरूशलेम में लाऊं। ६ जब मैं चलते चलते दमिश्क के निकट पहुंचा तो दोपहर के लगभग एकाएक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी। ७ और मैं भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना कि[1] हे शाऊल हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है। मैं ने उत्तर दिया कि ८ हे प्रभु तू कौन है। उस ने मुझ से कहा मैं यीशु नासरी हूं जिसे तू सताता है। ९ और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी पर जो मुझ से बोलता था उस का शब्द न सुना। १० तब मैं ने कहा हे प्रभु मैं क्या करूं। प्रभु ने मुझ से कहा उठकर दमिश्क में जा और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कहा जायगा। ११ जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे न सूझता था तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया।

(१) यू० जो मुझ से कहता था।

१२ और हनन्याह नाम व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहां के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनामी था मेरे पास आया। १३ और खड़ा होकर मुझ से कहा हे भाई शाऊल देखने लग और उसी घड़ी मैं ने उसे देखा। १४ तब उस ने कहा हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये ठहराया है कि तू उस की इच्छा को जाने और उस धर्मी को देखे और उस के मुंह से बातें सुने। १५ क्योंकि तू उस की ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा जो तू ने देखी और सुनी हैं। १६ अब क्यों देर करता है। उठ बपतिसमा ले और उस का नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। १७ जब मैं फिर यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था तो बेसुध हो गया। १८ और उस को देखा कि मुझ से कहता है जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा क्योंकि वे मेरे विषय के तेरी गवाही न मानेंगे। १९ मैं ने कहा हे प्रभु वे तो आप जानते हैं कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को जेलखाने में डालता और जगह जगह सभा में पिटवाता था। २० और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लोहू बहाया जाता था तो मैं भी वहां खड़ा था और सम्मत था और उस के घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था। २१ और उस ने मुझ से कहा चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर दूर भेजूंगा॥

२२ वे इस बात तक उस की सुनते रहे तब ऊंचे शब्द से चिल्लाए कि ऐसे मनुष्य का काम तमाम कर उस का जीता रहना उचित नहीं। २३ जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे। २४ तो पलटन के सूबेदार ने कहा कि गढ़ में ले जाओ और कोड़े मार कर जांचो कि मैं जानूं कि लोग किस कारण उस के विरोध में ऐसा चिल्लाते हैं। २५ जब उन्हों ने उसे तसमों से बांधा तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो पास खड़ा था कहा, क्या यह उचित है कि तुम एक रोमी मनुष्य को और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोड़े मारो। २६ सूबेदार ने यह सुन कर पलटन के सरदार के पास जाकर कहा तू क्या किया चाहता है यह तो रोमी मनुष्य है। २७ तब पलटन के सरदार ने उस के पास आकर कहा मुझे बता क्या तू रोमी है। उस ने कहा हां। २८ यह सुन कर पलटन के सरदार ने कहा कि मैं ने रोमी होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है। पौलुस ने कहा मैं तो जन्म से हूं। २९ तब जो लोग उसे जांचने पर थे वे तुरन्त उस के पास से हट गए और पलटन का सरदार भी यह जान कर कि यह रोमी है और मैं ने उसे बांधा है डर गया॥

३० दूसरे दिन वह ठीक ठीक जानने की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों दोष लगाते हैं उस के बंधन खोल दिए और महायाजकों और सारी महासभा को इकट्ठे होने की आज्ञा दी और पौलुस को नीचे ले जाकर उन के सामने खड़ा किया॥

२३.

पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगा कर कहा हे भाइयो मैं ने इस दिन तक परमेश्वर के लिये बिलकुल सच्चे विवेक[1] से जीवन बिताया है। २ हनन्याह महायाजक ने उन को जो उस के पास खड़े थे उस के मुंह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी। ३ तब पौलुस ने उस से कहा हे चूना फेरी हुई भीत परमेश्वर तुझे मारेगा। तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है और क्या व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है। ४ जो पास खड़े थे उन्हों ने कहा क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा कहता है। ५ पौलुस ने कहा हे भाइयो मैं न जानता था कि यह महायाजक है क्योंकि लिखा है कि अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह। ६ तब पौलुस ने यह जान कर कि कितने सदूकी और कितने फरीसी हैं सभा में पुकार कर कहा हे भाइयो मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूं मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान[2] के विषय मेरा मुकद्दमा हो रहा है। ७ जब उस ने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा और सभा में फूट पड़ी। ८ सदूकी तो यह कहते हैं कि न पुनरुत्थान[2] न स्वर्गदूत और न आत्मा है पर फरीसी दोनों मानते हैं। ९ तब बड़ा हल्ला मचा और कितने शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे उठकर यों कह कर झगड़ने लगे कि हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उस से बोला है तो क्या। १० जब बहुत झगड़ा हुआ तो पलटन के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े टुकड़े न कर डालें पलटन को आज्ञा दी कि उतर कर उस को उन के बीच में से बरबस निकालो और गढ़ में लाओ॥

११ उसी रात प्रभु ने उस के पास आ खड़े होकर कहा हे पौलुस ढाढ़स बांध क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी॥

१२ जब दिन हुआ तो यहूदियों ने एका किया कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें तब तक खाएं या पीएं तो हम पर धिक्कार। १३ जिन्हों ने आपस में यह किरिया खाई थी वे चालीस जनों के ऊपर थे। १४ उन्हों ने महा-

(१) अर्थात मन। या कांशंस।
(२) या। मृतकोत्थान।

याजकों और पुरनियों के पास आकर कहा हम ने यह ठाना है कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें तब तक यदि कुछ चखें भी तो हम पर धिक्कार पर धिक्कार। १५ इसलिये अब महासभा समेत पलटन के सरदार को समझाओ कि उसे तुम्हारे पास ले आए मानो तुम उस के विषय और भी ठीक जांच करना चाहते हो और हम उस के पहुंचने से पहिले ही उसे मार डालने को तैयार १६ रहेंगे। और पौलुस के भांजे ने सुना कि वे उस की घात में हैं और गढ़ में जाकर पौलुस को सन्देश दिया। १७ पौलुस ने सूबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले जा यह उस १८ से कुछ कहना चाहता है। सो उस ने पलटन के सरदार के पास ले जाकर कहा पौलुस बंधुए ने मुझे बुला कर बिनती की कि यह जवान पलटन के सरदार से कुछ कहना १९ चाहता है उसे उन के पास ले जा। पलटन के सरदार ने उस का हाथ पकड़ कर और अलग ले जाकर पूछा २० मुझ से क्या कहना चाहता है। उस ने कहा यहूदियों ने एका किया है कि तुझ से बिनती करें कि कल पौलुस को महासभा में लाए मानो तू और ठीक जांच करना चाहता २१ है। पर उन की न मानना क्योंकि उन में से चालीस से ऊपर मनुष्य उस की घात में हैं जिन्हों ने यह ठाना है कि जब तक हम पौलुस को मार न लें तब तक खाएं पीएं तो हम पर धिक्कार और अब वे तैयार हैं और तेरे २२ वचन की आस देख रहे हैं। सो पलटन के सरदार ने जवान को यह आज्ञा देकर बिदा किया कि किसी से न २३ कहना कि तू ने मुझ को ये बातें बताईं। और दो सूबेदारों को बुलाकर कहा दो सौ सिपाही सत्तर सवार और दो सौ भालैत पहर रात बीते कैसरिया को जाने २४ के लिये तैयार कर रक्खो। और पौलुस की सवारी के लिये घोड़े तैयार रक्खो कि उसे फेलिक्स हाकिम २५ के पास कुशल से पहुंचा दें। उस ने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी,

२६ महाप्रतापी फेलिक्स हाकिम को क्लौदियुस २७ लूसियास का नमस्कार। इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़ कर मार डालना चाहा पर जब मैं ने जाना कि २८ रोमी है तो पलटन लेकर छुड़ा लाया। और मैं जानना चाहता था कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं इस २९ लिये उसे उन की महासभा में ले गया। तब मैं ने जान लिया कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय उस पर दोष लगाते हैं पर मार डाले जाने या बांधे जाने के योग्य ३० उस में कोई दोष नहीं। और जब मुझे बताया गया कि वे इस मनुष्य की घात में लगेंगे तो मैं ने तुरन्त उस को तेरे पास भेज दिया और मुद्दइयों को भी आज्ञा दी कि तेरे सामने उस पर नालिश करें॥

३१ सो जैसे सिपाहियों को आज्ञा दी गई थी वैसे ही ३२ पौलुस को लेकर रातों रात अन्तिपत्रिस में लाए। दूसरे दिन वे सवारों को उस के साथ जाने के लिये छोड़कर ३३ आप गढ़ को लौटे। उन्हों ने कैसरिया में पहुंच कर हाकिम को चिट्ठी दी और पौलुस को भी उस के ३४ सामने खड़ा किया। उस ने पढ़कर पूछा यह किस देश ३५ का है और जब जाना कि किलिकिया का है, तो उस से कहा जब तेरे मुद्दई भी आएंगे तो मैं तेरा मुकद्दमा करूंगा और उस ने उसे हेरोदेस के किले[१] में पहरे में रखने की आज्ञा दी॥

२४.

पांच दिन के पीछे हनन्याह महायाजक कितने पुरनियों और तिरतुल्लुस नाम किसी वकील को साथ लेकर आया और उन्हों ने हाकिम के सामने पौलुस पर नालिश की। २ जब वह बुलाया गया तो तिरतुल्लुस उस पर दोष लगाकर कहने लगा कि,

३ हे महाप्रतापी फेलिक्स तेरे द्वारा हमें जो बड़ा कुशल होता है और तेरे प्रबन्ध से इस जाति के लिये कितनी बुराइयां सुधरती जाती हैं। इस को हम हर जगह और हर प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते हैं। ४ पर इसलिये कि तुझे और दुःख नहीं देना चाहता मैं तुझ से बिनती करता हूं कि कृपा करके हमारी दो एक ५ बातें सुन ले। क्योंकि हम ने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे यहूदियों में बलवा करानेवाला और ६ नासरियों के कुपन्थ का मुखिया पाया। उस ने मन्दिर ८ को अशुद्ध करना चाहा और हम ने उसे पकड़ा। इन सब बातों को जिन के विषय हम उस पर दोष लगाते हैं तू आप ही उस को जांच कर जान सकेगा। ९ यहूदियों ने भी उस का साथ देकर कहा ये बातें यूंही हैं॥

१० जब हाकिम ने पौलुस को बोलने की सैन की तो उस ने उत्तर दिया,

मैं यह जान कर कि तू बहुत बरसों से इस जाति का न्याय करता है आनन्द से अपना उत्तर करता हूं। ११ तू आप जान सकता है कि जब से मैं यरूशलेम में भजन करने को आया मुझे बारह दिन से ऊपर नहीं १२ हुए। और उन्हों ने मुझे न मन्दिर में न सभा के घरों में न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ लगाते १३ पाया। और न वे उन बातों को जिन का वे अब मुझ

(१) यू० प्रैतोरियुन।

१४ पर दोष लगाते हैं तेरे सामने सच ठहरा सकते हैं। पर यह मैं तेरे सामने मान लेता हूं कि जिस पन्थ को वे कुपन्थ कहते हैं उसी की रीति पर मैं अपने बाप दादों के परमेश्वर की सेवा करता हूं और जो बातें व्यवस्था और नबियों की पुस्तक में लिखी हैं उन सब की प्रतीति १५ करता हूं। और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो आप भी रखते हैं कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना १६ होगा। इस से मैं आप भी यतन करता हूं कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक[1] सदा निर्दोष १७ रहे। बहुत बरसों के पीछे मैं अपने लोगों को दान पहुं- १८ चाने और भेंट चढ़ाने आया था। इस में उन्हों ने मुझे मन्दिर में शुद्ध किए हुए न भीड़ के साथ और न दंगा करते हुए पाया—हां आसिया के कई यहूदी थे—उन १९ को उचित था कि यदि मेरे विरोध में उन की कोई बात २० हो तो यहां तेरे सामने आकर मुझ पर दोष लगाते। या ये आप ही कहें कि जब मैं महासभा के सामने खड़ा २१ था तो उन्हों ने मुझ में कौन सा अपराध पाया, इस एक बात को छोड़ जो मैं ने उन के बीच में खड़े हो पुकार कर कहा था कि मरे हुओं के जी उठने के विषय आज मेरा तुम्हारे सामने मुकद्दमा हो रहा है॥

२२ फेलिक्स ने जो इस पन्थ की बातें ठीक ठीक जानता था उन्हें यह कह कर टाल दिया कि जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा तो तुम्हारी बात का २३ फैसला करूंगा। और सूबेदार को आज्ञा दी कि पौलुस को सुख से रख कर रखवाली करना और उस के मित्रों में से किसी को उस की सेवा करने से न रोकना॥

२४ कितने दिनों के पीछे फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को जो यहूदिनी थी साथ लेकर आया और पौलुस को बुलवा कर उस विश्वास[2] के विषय जो मसीह यीशु २५ पर है उस से सुना। और जब वह धर्म और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा करता था तो फेलिक्स ने भयमान होकर उत्तर दिया कि अभी तो जा अवसर पाकर २६ मैं तुझे फिर बुलाऊंगा। उसे पौलुस से कुछ रुपये मिलने की भी आस थी इसलिये और भी बुला बुलाकर उस २७ से बातें किया करता था। पर जब दो बरस बीत गए तो पुरकियुस फेस्तुस फेलिक्स की जगह पर आया और फेलिक्स यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को बन्धुआ छोड़ गया॥

(१) अर्थात मन। या कांशंस।
(२) या। धर्म्म।

२५.

फेस्तुस उस प्रान्त में पहुंच कर तीन दिन के पीछे कैसरिया से यरूशलेम को गया। २ तब महायाजकों ने और यहूदियों के बड़े लोगों ने उस के सामने पौलुस की ३ नालिश की। और उस से बिनती कर उस के विरोध में वर चाहा कि वह उसे यरूशलेम में बुलवाए क्योंकि वे उसे रास्ते ही में मार डालने की घात लगाए हुए थे। ४ फेस्तुस ने उत्तर दिया कि पौलुस कैसरिया में पहरे में है ५ और मैं आप जल्द वहां जाऊंगा। फिर कहा तुम में जो अधिकार रखते हैं वे साथ चलें और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित किया तो उस पर दोष लगाएं॥

६ और उन के बीच कोई आठ दस दिन रहकर वह कैसरिया गया और दूसरे दिन न्याय आसन पर बैठकर ७ पौलुस के लाने की आज्ञा दी। जब वह आया तो जो यहूदी यरूशलेम से आए थे उन्हों ने आस पास खड़े होकर उस पर बहुतेरे भारी दोष लगाए जिन का प्रमाण वे न ८ दे सकते थे। पर पौलुस ने उत्तर दिया कि मैं ने न तो यहूदियों की व्यवस्था का न मन्दिर का और न कैसर ९ का कुछ अपराध किया है। तब फेस्तुस ने यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर दिया क्या तू चाहता है कि यरूशलेम को जाए और वहां मेरे सामने १० तेरा यह मुकद्दमा फैसल हो। पौलुस ने कहा मैं कैसर के न्याय आसन के सामने खड़ा हूं मेरा मुकद्दमा यहीं फैसल होना चाहिए। जैसा तू अच्छी तरह जानता है ११ यहूदियों का मैं ने कुछ अपराध नहीं किया। यदि अपराधी हूं और मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है तो मरने से नहीं मुकरता पर जिन बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं यदि उन में से कोई बात सच न १२ ठहरे तो कोई मुझे उन के हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दोहाई देता हूं। तब फेस्तुस ने मन्त्रियों की सभा के साथ बातें करके उत्तर दिया तू ने कैसर की दोहाई दी है तू कैसर के पास जाएगा॥

१३ जब कितने दिन बीत गए तो अग्रिप्पा राजा और बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की। १४ और उन के बहुत दिन वहां रहने के पीछे फेस्तुस ने पौलुस की कथा राजा को बताई कि एक मनुष्य है १५ जिसे फेलिक्स बंधुआ छोड़ गया है। जब मैं यरूशलेम में था तो महायाजकों और यहूदियों के पुरनियों ने उस की नालिश की और चाहा कि उस पर दण्ड की आज्ञा दी १६ जाए। पर मैं ने उन को उत्तर दिया रोमियों की यह रीति नहीं कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिये सौंप दें जब तक

मुद्दाअलैह को अपने मुद्दइयों के आमने सामने होकर
१७ दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले। सो जब वे यहां इकट्ठे हुए तो मैं ने कुछ देर न की पर दूसरे ही दिन न्याय-आसन पर बैठकर उस मनुष्य को लाने की आज्ञा
१८ दी। जब उस के मुद्दई खड़े हुए तो ऐसी बुरी बातों
१९ का दोष नहीं लगाया जैसा मैं समझता था। पर अपने मत के और यीशु नाम किसी मनुष्य के विषय विवाद करते थे जो मर गया था और पौलुस उस को जीता
२० बताता था। और मैं उलझन में था कि इन बातों का पता कैसे लगाऊं इसलिये मैं ने उस से पूछा क्या तू यरूशलेम जाएगा कि वहां इन बातों का फैसला हो।
२१ पर जब पौलुस ने दुहाई दी कि मेरे मुकद्दमे का फैसला महाराजाधिराज के यहां हो तो मैं ने आज्ञा दी कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजूं उस की
२२ रखवाली की जाए। तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता हूं। उस ने कहा तू कल सुन लेगा॥

२३ सो दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर पलटन के सरदारों और नगर के बड़े लोगों के साथ दरबार में पहुंचे तो फेस्तुस ने आज्ञा
२४ दी कि वे पौलुस को ले आएं। फेस्तुस ने कहा हे राजा अग्रिप्पा और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे साथ हो तुम इस को देखते हो जिस के विषय सारे यहूदियों ने यरूशलेम में और यहां भी चिल्ला चिल्लाकर मुझ से
२५ बिनती की कि इस का जीता रहना उचित नहीं। पर मैं ने जान लिया कि उस ने ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए और जब कि उस ने आप ही महाराजाधिराज की दोहाई दी तो मैं ने उसे भेजने को ठाना।
२६ पर मैं ने उस के विषय कोई ठीक बात नहीं पाई कि अपने स्वामी के पास लिखूं इसलिये मैं उसे तुम्हारे सामने और निज करके हे राजा अग्रिप्पा तेरे सामने लाया हूं कि जांचने के पीछे मुझे कुछ लिखने को
२७ मिले। क्योंकि बंधुए को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए उन्हें न बताना मुझे व्यर्थ समझ पड़ता है॥

२६.

अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा तुझे अपने विषय बोलने की आज्ञा है। तब पौलुस हाथ बढ़ाकर उत्तर देने लगा कि,
२ हे राजा अग्रिप्पा जितनी बातों का यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं आज तेरे सामने उन का उत्तर देने में
३ अपने को धन्य समझता हूं। निज करके इसलिये कि तू यहूदियों के सब व्यवहारों और विवादों को जानता है सो मैं बिनती करता हूं धीरज से मेरी सुन ले।
४ जैसा मेरा चाल चलन आरम्भ से अपनी जाति के बीच
५ और यरूशलेम में था यह सब यहूदी जानते हैं। वे यदि गवाही देना चाहते हैं तो आदि से मुझे पहचानते हैं कि मैं फरीसी होकर अपने धर्म के सब से खरे पन्थ
६ के अनुसार चला। और अब उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे बाप दादों से की थी मुझ
७ पर मुकद्दमा चल रहा है। उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा लगाए हुए हमारे बारहों गोत्र अपने सारे मन से रात दिन परमेश्वर की सेवा करते आये हैं। हे राजा इसी आशा के विषय यहूदी मुझ पर दोष लगाते
८ हैं। जब कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं
९ समझी जाती। मैं ने भी समझा था कि यीशु नासरी के
१० नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए। और मैं ने यरूशलेम में ऐसा ही किया और महायाजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को जेलखानों में डाला और जब वे मार डाले जाते थे तो मैं भी उन के
११ विरोध में अपनी सम्मति देता था। और हर सभा में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था यहां तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया कि
१२ बाहर के नगरों में भी जा जाकर उन्हें सताता था। इसी बीच जब मैं महायाजकों से अधिकार और परवाना
१३ लेकर दमिश्क को जा रहा था। तो हे राजा मार्ग में दो पहर दिन के समय मैं ने आकाश से सूरज के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति अपने और अपने साथ चलने-
१४ वालों के चारों ओर चमकती हुई देखी। और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े तो मैं ने इब्रानी भाषा में मुझ से यह कहते हुए एक शब्द सुना कि हे शाऊल हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है, पैने पर लात मारना तेरे
१५ लिये कठिन है। मैं ने कहा हे प्रभु तू कौन है। प्रभु
१६ ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है। पर उठ अपने पांवों पर खड़ा हो क्योंकि मैं ने तुझे इसलिये दर्शन दिया है कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं जो तू ने देखी हैं और उन का भी जिन के लिये
१७ मैं तुझे दर्शन दूंगा। और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्य जातियों से बचाता रहूंगा जिन के पास मैं अब
१८ तुझे इसलिये भेजता हूं कि, तू उन की आंखें खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से
१९ पवित्र किए गए हैं मीरास पाएं। सो हे राजा अग्रिप्पा

२० मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली। पर पहिले दमिश्क के फिर यरूशलेम के रहनेवालों को तब यहूदिया के सारे देश में और अन्य जातियों को समझाता रहा कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिर कर २१ मन फिराव के योग्य काम करो। इन बातों के कारण यहूदी मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने का यतन २२ करते थे। सो परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं और छोटे बड़े के सामने गवाही देता हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता जो नबियों और २३ मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं, कि मसीह को दुख उठाना होगा और वही सब से पहिले मरे हुओं में से जी उठकर हमारे लोगों और अन्य जातियों में ज्योति का प्रचार करेगा॥

२४ जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा हे पौलुस तू पागल है बहुत विद्या २५ ने तुझे पागल कर दिया है। पर उस ने कहा हे महाप्रतापी फेस्तुस मैं पागल नहीं पर सच्चाई और बुद्धि की २६ बातें कहता हूं। राजा भी जिस के सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूं ये बातें जानता है और मुझे प्रतीति है कि इन बातों में से कोई उस से छिपी नहीं कि यह २७ तो कोने में नहीं हुआ। हे राजा अग्रिप्पा क्या तू नबियों की प्रतीति करता है। हां मैं जानता हूं कि तू २८ प्रतीति करता है। तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा तू थोड़े ही समझाने से[१] मुझे मसीही बनाना चाहता है। २९ पौलुस ने कहा परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में क्या बहुत में केवल तूही नहीं पर जितने लोग आज मेरी सुनते हैं इन बन्धनों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएं॥

३० तब राजा और हाकिम और बिरनीके और उन के ३१ साथ बैठनेवाले उठ खड़े हुए। और अलग जाकर आपस में कहने लगे यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता जो ३२ मृत्यु या बन्धन के योग्य हो। अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता तो छूट सकता॥

२७. जब यह ठहराया गया कि हम जहाज़ पर इतालिया को जाएं तो उन्हों ने पौलुस और कितने और बन्धुओं को भी यूलियुस नाम औगुस्तुस की पलटन के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया। २ और अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था चढ़कर हम ने उसे खोल दिया और अरिस्तर्खुस नाम थिस्सलुनीके का एक मकिदूनी हमारे साथ था। ३ दूसरे दिन हम ने सैदा में लगान किया और यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहां सत्कार पाने को जाने दिया। ४ वहां से जहाज़ खोलकर हवा सामने होने के कारण हम कुप्रुस की आड़ में होकर चले। ५ और किलिकिया और पंफूलिया के निकट के समुद्र में होकर लूसिया के मूरा में उतरे। ६ वहां सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज़ इतालिया जाता हुआ मिला और हमें उस पर चढ़ा दिया। ७ और जब हम बहुत दिनों तक धीरे धीरे चलकर कठिनता से कनिदुस के सामने पहुंचे तो इसलिये कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती थी सलमोने के सामने से होकर क्रेते की ८ आड़ में चले। और उस के किनारे किनारे कठिनता से चलकर शुभ-लंगरबारी नाम एक जगह पहुंचे जहां से लसया नगर निकट था॥

९ जब बहुत दिन बीत गए और जलयात्रा में जोखिम इसलिये होती थी कि उपवास के दिन अब बीत १० चुके थे तो पौलुस ने उन्हें यह कहकर समझाया, हे साहिबो मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस यात्रा में बिपत और बहुत हानि न केवल बोझाई और जहाज़ ११ की बरन हमारे प्राणों की भी होनेवाली है। पर सूबेदार ने पौलुस की बातों से मांझी और जहाज के स्वामी १२ की बढ़कर मानी। और वह बन्दर जाड़ा काटने के लिये अच्छा न था इसलिये बहुतों का विचार हुआ कि वहां से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो सके तो फीनिक्स में पहुंचकर जाड़ा काटें यह तो क्रेते का एक बन्दर है जो दक्खिन पच्छिम और उत्तर पच्छिम की १३ ओर खुलता है। जब कुछ कुछ दक्खिनी हवा बहने लगी तो यह समझकर कि हमारा मतलब पूरा हो गया लंगर उठाया और किनारा धरे हुए क्रेते के पास से जाने १४ लगे। पर थोड़ी देर में वहां से एक बड़ी आंधी उठी १५ जो यूरकुलोन कहलाती है। यह जब जहाज पर लगी और वह हवा के सामने ठहर न सका तो हम ने उसे १६ बहने दिया और इस तरह बहते हुए चले गए। तब कौदा नाम एक छोटे से टापू की आड़ में बहते १७ बहते हम कठिनता से डोंगी को धर सके। उसे उठाकर उन्हों ने अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बांधा और सुरतिस पर टिक जाने के भय से पाल वाल उतार कर १८ बहते हुए चले गए। और जब हम ने आंधी से बहुत हिचकोले खाए तो दूसरे दिन वे जहाज की बोझाई फेंकने १९ लगे। और तीसरे दिन उन्हों ने अपने हाथों से जहाज का २० सामान फेंक दिया। और जब बहुत दिनों तक न सूरज

(१) यू० थोड़े में।

न तारे दिखाई दिए और बड़ी आंधी चल रही थी
२१ अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही। जब वे बहुत उपवास कर चुके तो पौलुस ने उन के बीच में खड़ा होकर कहा हे लोगो चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर क्रेते से न जहाज़ खोलते और न यह विपत्ति
२२ और हानि उठाते। पर अब मैं तुम्हें समझाता हूं कि ढाढ़स बांधो क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि
२३ न होगी केवल जहाज़ की। क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूं और जिस की सेवा करता हूं उस के स्वर्गदूत ने
२४ इसी रात मेरे पास आकर कहा, हे पौलुस मत डर तुझे कैसर के सामने खड़ा होना ज़रूर है और देख परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं तुझे दिया है।
२५ इसलिये हे साहिबो ढाढ़स बांधो क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं कि जैसा मुझ से कहा गया है वैसा ही
२६ होगा। पर हमें किसी टापू पर पड़ना होगा॥
२७ जब चौदहवीं रात हुई और हम अद्रिया समुद्र में टकराते फिरते थे तो आधी रात के निकट मल्लाहों ने अटकल से जाना कि हम किसी देश के निकट पहुंच
२८ रहे हैं और थाह लेकर उन्हों ने बीस पुरसा पाया और थोड़ा आगे बढ़ कर फिर थाह ली तो पन्द्रह
२९ पुरसा पाया। तब पत्थरीली जगहों पर पड़ने के डर से उन्हों ने जहाज़ की पिछाड़ी चार लंगर डाले और भोर
३० का होना मनाते रहे। पर जब मल्लाह जहाज़ पर से भागना चाहते थे और गलही से लंगर डालने के बहाने
३१ से डोंगी समुद्र में उतार दी। तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा यदि ये जहाज़ पर न रहें तो
३२ तुम नहीं बच सकते। तब सिपाहियों ने रस्से काटकर
३३ डोंगी गिरा दी। जब भोर होने पर था तो पौलुस ने यह कहके सब को भोजन करने को समझाया कि आज चौदह दिन हुये कि तुम आस देखते उपवासी रहे और
३४ कुछ भोजन न किया। इसलिये तुम्हें समझाता हूं कि कुछ खा लो जिस से तुम्हारा बचाव हो क्योंकि तुम में
३५ से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा और यह कह उस ने रोटी लेकर सब के सामने परमेश्वर का
३६ धन्यवाद किया और तोड़कर खाने लगा। तब वे सब
३७ भी ढाढ़स बांधकर भोजन करने लगे। हम सब मिलकर
३८ जहाज़ पर दो सौ छिहत्तर जन थे। जब वे भोजन करके तृप्त हुए तो गेहूं को समुद्र में फेंक कर जहाज़
३९ हलका करने लगे। जब बिहान हुआ तो उन्हों ने उस देश को नहीं पहचाना पर एक खाड़ी देखी जिस का चौरस तीर था और विचार किया कि यदि हो सके तो
४० इसी पर जहाज़ को टिकाएं। तब उन्हों ने लंगरों को खोल कर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बन्धन खोल दिये और हवा के सामने अगला पाल चढ़ाकर किनारे की ओर चले। पर दो समुद्रों के संगम ४१ की जगह पड़के उन्हों ने जहाज़ को टिकाया और गलही तो गड़ गई और टल न सकी पर पिछाड़ी लहरों के बल से टूटने लगी। तब सिपाहियों का यह विचार ४२ हुआ कि बन्धुओं को मार डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागे। पर सूबेदार ने पौलुस को बचाने ४३ की इच्छा से उन्हें उस विचार से रोका और यह कहा कि जो पैर सकते हैं पहिले कूद कर किनारे पर निकल जाएं। और बाकी कोई पटरों पर और कोई जहाज़ की ४४ और वस्तुओं के सहारे निकल जाएं और इस रीति से सब कोई भूमि पर बच निकले॥

२८. जब हम बच निकले तो जाना कि यह टापू मिलिते कहलाता है। और २ उन जंगली लोगों ने हम पर अनोखी कृपा की क्योंकि मेंह के कारण जो पड़ता था और जाड़े के कारण उन्हों ने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया। जब पौलुस ने ३ लकड़ियों का गट्ठा बटोर कर आग पर रक्खा तो एक सांप आंच पाकर निकला और उस के हाथ से लिपट गया। जब उन जंगलियों ने कीड़े को उस के हाथ ४ से लटके हुए देखा तो आपस में कहा सचमुच यह मनुष्य खूनी है कि यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी न्याय ने जीता रहने न दिया। तब उस ने कीड़े को आग में ५ झटक दिया और कुछ हानि न पहुंची। पर वे बाट ६ जोहते थे कि वह सूज जाएगा या एकाएक गिरके मर जाएगा पर जब वे बहुत देर तक देखते रहे और देखा कि उस का कुछ भी न बिगड़ा तो और ही विचार कर कहा यह तो देवता है॥

उस जगह के आसपास पुबलियुस नाम उस टापू ७ के प्रधान की भूमि थी। उस ने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्रभाव से पहुनाई की। पुबलियुस का ८ पिता ज्वर और आंव लोहू से बीमार पड़ा था सो पौलुस ने उस के पास घर में जाकर प्रार्थना की और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया। जब ऐसा हुआ तो उस ९ टापू के बाकी बीमार आए और चंगे किए गए। और १० उन्हों ने हमारा बहुत आदर किया और जब हम चलने लगे तो जो कुछ हमें अवश्य था जहाज़ पर रख दिया॥

तीन महीने के पीछे हम सिकन्दरिया के एक ११ जहाज़ पर चल निकले जो उस टापू में जाड़े भर रहा था और जिस का चिन्ह दियुसकूरी था। सुरकूसा में १२ लगान करके हम तीन दिन रहे। वहां से हम घूमकर १३

रेगियुम में आए और एक दिन के पीछे दखिनी हवा
१४ चली तब दूसरे दिन पुतयुली में आए। वहां हम को
भाई मिले और उन के कहने से हम उन के यहां सात
१५ दिन रहे और इस रीति से रोम को चले। वहां से भाई
हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन-
सराए तक हमारी भेंट करने को निकल आए जिन्हें
देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया और
ढाढ़स बांधा॥

१६ जब हम रोमा में पहुंचे तो पौलुस को एक
सिपाही के साथ जो उस की रखवाली करता था अकेले
रहने की आज्ञा हुई॥

१७ तीन दिन के पीछे उस ने यहूदियों के बड़े लोगों
को बुलाया और जब वे इकट्ठे हुए तो उन से कहा हे
भाइयो मैं ने अपने लोगों के या बाप दादों के व्यवहारों
के विरोध में कुछ नहीं किया तौभी बन्धुआ होकर
१८ यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया। उन्हों ने
मुझे जांच कर छोड़ देना चाहा क्योंकि मुझ में मृत्यु के
१९ योग्य कोई दोष न था। पर जब यहूदी इस के विरोध
में बोलने लगे तो मुझे कैसर की दोहाई देनी पड़ी।
न यह कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था।
२० इसलिये मैं ने तुम को बुलाया है कि तुम से मिलूं
और बात चीत करूं क्योंकि इस्राईल की आशा के लिये
२१ मैं इस ज़ंजीर से जकड़ा हुआ हूं। उन्हों ने उस से कहा
न हम ने तेरे विषय यहूदियों से चिट्ठियां पाईं न
भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय कुछ बताया
२२ और न बुरा कहा। पर तेरे विचार क्या हैं वही हम
तुझ से सुनना चाहते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हर
जगह इस मत के विरोध में कहते हैं॥

सो उन्हों ने उस के लिये एक दिन ठहराया और २३
बहुत लोग उस के ठिकाने पर इकट्ठे हुए और वह पर-
मेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ और मूसा की
व्यवस्था और नबियों की पुस्तकों से यीशु के विषय
समझा समझाकर भोर से सांझ तक चर्चा करता रहा।
तब कितनों ने उन बातों को मान लिया और कितनों २४
ने प्रतीति न की। जब आपस में एक मत न हुए तो २५
पौलुस के इस एक बात कहने पर चले गए कि पवित्र
आत्मा ने यशायाह नबी के द्वारा तुम्हारे बाप दादों से
अच्छा कहा कि, जाकर इन लोगों से कह कि २६
सुनते तो रहोगे पर न समझोगे और देखते तो रहोगे
पर न बूझोगे। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा २७
और उन के कान भारी हो गए और उन्हों ने अपनी
आंखें बन्द की हैं ऐसा न हो कि वे कभी आंखों
से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और
फिरें और मैं उन्हें चंगा करूं। सो तुम जानो कि २८
परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास
भेजी गई है और वे सुनेंगे॥

और वह पूरे दो बरस अपने भाड़े के घर में रहा ३०
और जो उस के पास आते थे उन सब से मिलता रहा।
और बिना रोक टोक बहुत निडर हो कर परमेश्वर के ३१
राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें
सिखाता रहा॥

रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री।

१. पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है और प्रेरित होने के
लिये बुलाया गया और परमेश्वर के उस सुसमाचार के
२ लिये अलग किया गया है, जिस की उस ने पहिले से
३ अपने नबियों के द्वारा पवित्र शास्त्र में, अपने पुत्र हमारे
प्रभु यीशु मसीह के विषय प्रतिज्ञा की थी जो शरीर
४ के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ, और
पवित्रता के आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी
उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा,
जिस के द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उस ५
के नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके
उस की मानें, जिन में से तुम भी यीशु मसीह के होने ६
के लिए बुलाए गए हो, उन सब के नाम जो रोमा में ७
परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए
गए हैं॥

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की
ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले॥

पहिले मैं तुम सब के लिये यीशु मसीह के द्वारा ८

अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि तुम्हारे
९ विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है। परमेश्वर
जिस की सेवा मैं अपने आत्मा से उस के पुत्र के सुसमा-
चार के विषय करता हूं वही मेरा गवाह है कि मैं
१० तुम्हें कैसे लगातार स्मरण करता रहता हूं। और नित्य
अपनी प्रार्थनाओं में बिनती करता हूं कि किसी रीति से
अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की
११ इच्छा से सुफल हो। क्योंकि मैं तुम से मिलने की
लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं
१२ जिस से तुम स्थिर हो जाओ। अर्थात् यह कि मैं
तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के
१३ द्वारा जो मुझ में और तुम में है शान्ति पाऊं। और
हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुम इस से अनजान रहो
कि मैं ने बार बार तुम्हारे पास आना चाहा कि जैसा
मुझे और अन्यजातियों में फल मिला वैसा ही तुम में
१४ भी मिले पर अब तक रुका रहा। मैं यूनानियों और
अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का
१५ क़रज़दार हूं। सो मैं तुम्हें भी जो रोमा में रहते हो
१६ सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं। क्योंकि मैं
सुसमाचार से नहीं लजाता इसलिये कि वह हर एक
विश्वास करनेवाले के लिये पहिले यहूदी फिर यूनानी
के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।
१७ क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से
और विश्वास के लिये प्रगट होती है जैसा लिखा है कि
विश्वास से धर्मी जीता रहेगा॥

१८ परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सारी
अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है जो सत्य
१९ को अधर्म से दबाये रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर
के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रगट है क्योंकि पर-
२० मेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उस के अन-
देखे गुण अर्थात् उस की सनातन सामर्थ और परमे-
श्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उस के कामों के
द्वारा देखने में आते हैं यहां तक कि वे निरुत्तर हैं।
२१ इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने
परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया पर
व्यर्थ विचार करने लगे यहां तक कि उन का निर्बुद्धि
२२ मन अंधेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान् जता
२३ कर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा
को नाशमान मनुष्य और पक्षियों और चौपायों और रेंगने-
वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला॥

२४ इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन के
अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया
कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। इसलिये २५
कि उन्हों ने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना
डाला और सृष्टि की उपासना और सेवा की और न
कि सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन॥

इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के २६
वश में छोड़ दिया यहां तक कि उन की स्त्रियों ने भी
स्वाभाविक व्यवहार को उस से जो स्वभाव के
विरुद्ध है बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ २७
स्वाभाविक व्यवहार छोड़ कर आपस में कामातुर हो
जलने लगे और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम
करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया॥

और जब उन्हों ने परमेश्वर को पहचानना न २८
चाहा इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे
मन पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब २९
प्रकार के अधर्म और दुष्टता और लोभ और बैरभाव
से भर गए और डाह और खून और झगड़े और छल
और ईर्षा से भरपूर हो गए और चुगलखोर, बदनाम ३०
करनेवाले परमेश्वर के देखने में घिनौने औरों का अनादर
करनेवाले अभिमानी डींगमार बुरी बुरी बातों के
बनानेवाले माता पिता की आज्ञा न माननेवाले,
निर्बुद्धि विश्वासघाती मयारहित और निर्दय हो गए। ३१
वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे ३२
काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं तौभी न
केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन करनेवालों से
प्रसन्न भी होते हैं॥

२.

सो हे दोष लगानेवाले तू कोई क्यों न
हो तू निरुत्तर है क्योंकि जिस बात
में तू दूसरे पर दोष लगाता है उसी बात में अपने आप
को दोषी ठहराता है इसलिये कि तू जो दोष लगाता
है आप ही वेही काम करता है। और हम जानते हैं २
कि ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से
ठीक ठीक दण्ड की आज्ञा होती है। और हे मनुष्य तू ३
जो ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है और
आप वे ही काम करता है क्या यह समझता है कि तू
परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा। क्या तू ४
उस की कृपा और सहनशीलता और धीरजरूपी धन
को तुच्छ जानता है और यह नहीं समझता कि परमेश्वर
की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है। पर अपनी ५
कठोरता और हठीले मन के अनुसार उस क्रोध के दिन
के लिये जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा
अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है। वह हर एक को ६

७ उस के कामों के अनुसार बदला देगा। जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा और आदर और अमरता की ८ खोज में हैं उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। पर जो विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते वरन अधर्म ९ को मानते हैं उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। १० पर महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा जो भला करता है पहिले यहूदी को फिर यूनानी ११,१२ को। क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता। इस लिये कि जिन्हों ने बिना व्यवस्था पाए पाप किया वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे और जिन्हों ने व्यवस्था पाकर पाप किया उन का दण्ड व्यवस्था के अनुसार १३ होगा। (क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी १४ ठहराए जाएंगे। फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने १५ लिये आप ही व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उन के विवेक[1] भी गवाही देते हैं और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष १६ लगाती या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं।) जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा॥

१७ यदि तू यहूदी कहलाता है और व्यवस्था पर भरोसा रखता है और परमेश्वर के विषय घमण्ड करता है। १८ और उस की इच्छा जानता और व्यवस्था की शिक्षा पाकर १९ उत्तम उत्तम बातों को प्रिय जानता है। और अपने पर भरोसा रखता है कि मैं अंधों का अगुवा और अंधकार २० में पड़े हुओं की ज्योति, और बुद्धिहीनों का सिखानेवाला और बालकों का उपदेशक हूं और ज्ञान और सत्य २१ का नमूना जो व्यवस्था में है मुझे मिला है। सो क्या तू जो औरों को सिखाता है अपने आप को नहीं सिखाता। क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता २२ है आप ही चोरी करता है। तू जो व्यभिचार न करना कहता है क्या आप ही व्यभिचार करता है। तू जो मूरतों से घिन करता है क्या आप ही मन्दिरों को २३ लूटता है। तू जो व्यवस्था के विषय घमण्ड करता है क्या व्यवस्था न मानकर परमेश्वर का अनादर करता २४ है। क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निन्दा की जाती है जैसा लिखा भी है।

(१) मन, कांशंस।

२५ यदि तू व्यवस्था पर चले तो ख़तने से लाभ तो है पर यदि तू व्यवस्था को न माने तो तेरा ख़तना बिन २६ ख़तना की दशा ठहरा। सो यदि ख़तना रहित मनुष्य व्यवस्था की विधियों को माना करे तो क्या उस की बिन ख़तना की दशा ख़तने के बराबर न गिनी जाएगी। २७ और जो मनुष्य जाति के कारण बिना ख़तना रहा यदि वह व्यवस्था को पूरा करे तो क्या तुझे जो लेख पाने और ख़तना किए जाने पर भी व्यवस्था को माना नहीं २८ करता है दोषी न ठहराएगा। क्योंकि वह यहूदी नहीं जो प्रगट में यहूदी है और न वह ख़तना है जो प्रगट २९ में है और देह में है। पर यहूदी वही है जो मन में है और ख़तना वही है जो हृदय का और आत्मा में है न कि लेख का। ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है॥

३. सो यहूदी की क्या बड़ाई या ख़तने का २ क्या लाभ। हर प्रकार से बहुत कुछ। पहिले यह कि परमेश्वर के वचन उन को सौंपे ३ गए। यदि कितने विश्वासघाती निकले तो क्या हुआ। क्या उन के विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई ४ व्यर्थ ठहरेगी। ऐसा न हो वरन परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे जैसा लिखा है कि जिस से तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय ५ तू जय पाए। सो यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है तो हम क्या कहें। क्या यह कि परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है (यह तो ६ मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं)। ऐसा न हो नहीं ७ तो परमेश्वर क्योंकर जगत का न्याय करेगा। यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उस की महिमा के लिये अधिक करके प्रगट हुई तो फिर क्यों पापी की ८ नाईं मैं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूं। और हम क्यों बुराई न करें कि भलाई निकले जैसा हम पर यही दोष लगाया भी जाता है और कितने कहते हैं कि इन का यही कहना है। ऐसों का दोषी ठहरना ठीक है॥

९ सो क्या हुआ क्या हम उन से अच्छे हैं। कभी नहीं क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश १० में हैं। जैसा लिखा है कि कोई धर्मी नहीं एक भी ११ नहीं। कोई समझदार नहीं कोई परमेश्वर का १२ खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं सब के सब निकम्मे बन गए कोई भलाई करनेवाला नहीं एक भी १३ नहीं। उन का गला खुली हुई क़बर है उन्हों ने अपनी जीभों से छल किया है उन के होठों में सांपों का विष

१४ है। और उन का मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा
१५, १६ है। उन के पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। उन के
१७ मार्गों में नाश और क्लेश है। उन्हों ने कुशल का
१८ मार्ग नहीं जाना। उन की आंखों के सामने परमेश्वर
का भय नहीं॥

१९ हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है जो व्यवस्था के अधीन हैं इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाय और सारा संसार परमेश्वर के
२० दण्ड के योग्य ठहरे। क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उस के सामने धर्मी नहीं ठहरेगा इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।
२१ पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है जिस की गवाही व्यवस्था और नबी
२२ देते हैं। अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के
२३ लिये है क्योंकि कुछ भेद नहीं। इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।
२४ पर उस के अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह
२५ यीशु में है सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उस के लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया जो विश्वास करने से काम का हो कि जो पाप पहिले किए गए और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की उन के विषय
२६ वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। बरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे और जो यीशु पर विश्वास करे उस का भी
२७ धर्मी ठहरानेवाला हो। तो घमण्ड करना कहां रहा। उस की जगह ही नहीं। कौन सी व्यवस्था के कारण। क्या कर्म्मों की। नहीं बरन विश्वास की व्यवस्था के
२८ कारण। इसलिये हम समझें कि मनुष्य व्यवस्था के कामों बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।
२९ क्या परमेश्वर केवल यहूदियों ही का है क्या अन्यजातियों का नहीं हां अन्यजातियों का भी है।
३० क्योंकि एक ही परमेश्वर है जो ख़तनावालों को विश्वास से और ख़तनारहितों को भी विश्वास के द्वारा धर्मी
३१ ठहराएगा। तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं। ऐसा न हो बरन व्यवस्था को स्थिर करते हैं॥

४. सो हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को क्या मिला।
२ यदि इब्राहीम कामों से धर्मी ठहराया जाता तो उसे घमण्ड करने की जगह होती परन्तु परमेश्वर के निकट
३ नहीं। पवित्रशास्त्र क्या कहता है यह कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया[१] और यह उस के लिये
४ धार्म्मिकता गिना गया। काम करनेवाले की मज़दूरी
५ देना दान नहीं पर हक समझा जाता है। पर जो काम नहीं करता बरन भक्तहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है उस का विश्वास उस के लिये
६ धार्म्मिकता गिना जाता है। जिसे परमेश्वर बिना कर्म्मों के धर्म्मी ठहराता है उसे दाऊद भी धन्य कहता
७ है कि, धन्य वे हैं जिन के अधर्म क्षमा हुए और
८ जिन के पाप ढांपे गए, धन्य वह मनुष्य जिसे परमेश्वर
९ पापी न ठहराए। तो यह धन्य कहना क्या ख़तनावालों ही के लिये है या ख़तनारहितों के लिये भी। हम यह कहते हैं कि इब्राहीम के लिये उस का विश्वास धार्म्मिकता गिना गया।
१० तो वह क्योंकर गिना गया। ख़तने की दशा में या बिन ख़तने की दशा में। ख़तने की दशा में नहीं पर बिन ख़तने की दशा
११ में। और उस ने ख़तने का चिन्ह पाया कि उस विश्वास की धार्म्मिकता पर छाप हो जाए जो उस ने बिना ख़तने की दशा में रक्खा था, जिस से वह उन सब का पिता ठहरे जो बिना ख़तने की दशा में विश्वास
१२ करते हैं और वे भी धर्मी ठहरें, और उन ख़तना किए हुओं का पिता हो जो न केवल ख़तना किए हुए हैं पर हमारे पिता इब्राहीम के उस विश्वास की लीक पर भी चलते हैं जो उस ने बिन ख़तने की दशा में किया था।
१३ क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा न इब्राहीम को न उस के वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी पर विश्वास की धार्म्मिकता के द्वारा मिली।
१४ क्योंकि यदि व्यवस्थावाले वारिस हैं तो विश्वास व्यर्थ
१५ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी। व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है और जहां व्यवस्था नहीं वहां उस का टालना भी नहीं।
१६ इसी कारण वह विश्वास के द्वारा मिलती है कि अनुग्रह की रीति पर हो कि प्रतिज्ञा सारे वंश के लिये दृढ़ हो न केवल उस के लिये जो व्यवस्थावाला है बरन उन के लिये भी जो इब्राहीम के समान विश्वासवाले हैं। वही
१७ तो हम सब का पिता है। (जैसा लिखा है कि मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है) उस परमेश्वर के सामने जिस पर उस ने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है और जो बातें हैं ही नहीं
१८ उन का नाम ऐसा लेता कि मानो वे हैं। उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी

(१) यू० की प्रतीति की।

१९ जातियों का पिता हो। और वह जो सौ एक बरस का था अपने मरे हुए से शरीर और साराह के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जान कर भी विश्वास में निर्बल २० न हुआ। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की २१ महिमा की। और निश्चय जाना कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी २२ है। इस कारण यह उस के लिये धार्म्मिकता गिना गया। २३ और यह वचन कि उस के लिये गिना गया न केवल २४ उसी के लिये लिखा गया, बरन हमारे लिये भी जिन के लिये गिना जाएगा अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं २५ में से जिलाया। वह हमारे अपराधों के कारण पकड़वाया गया और हमारे धर्मी ठहरने के कारण जिलाया गया॥

५. सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो अपने प्रभु यीशु मसीह के २ द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रक्खें। जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिस में हम बने हैं हमारी पहुंच भी हुई और परमेश्वर की महिमा की ३ आशा पर घमण्ड करें। केवल यह नहीं बरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें यही जानकर कि क्लेश से ४ धीरज, और धीरज से खरा निकलना और खरे निक- ५ लने से आशा उत्पन्न होती है। और आशा से लज्जा नहीं होती क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया उस के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला ६ गया है। क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ७ ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे यह तो दुर्लभ है पर क्या जानें किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव ८ करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तो ९ मसीह हमारे लिये मरा। सो जब कि हम अब उस के लोहू के कारण धर्मी ठहरे तो उस के द्वारा क्रोध से क्यों १० न बचेंगे। क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उस के पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने से तो उस के जीवन के कारण ११ हम उद्धार क्यों न पाएंगे। और केवल यही नहीं पर हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है परमेश्वर के विषय घमण्ड भी करते हैं॥

१२ इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई इसलिये कि सब ने १३ पाप किया। क्योंकि व्यवस्था के लिए जाने तक पाप जगत में तो था पर जहां व्यवस्था नहीं वहां पाप गिना १४ नहीं जाता। तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया जिन्हों ने उस आदम के अपराध की नाईं जो उस आनेवाले का चिन्ह है पाप न १५ किया। पर जैसा अपराध है वैसा वह वरदान नहीं क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे तो परमेश्वर का अनुग्रह और उस का जो दान एक मनुष्य के अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुतेरे लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ। १६ और जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ वैसा दान की दशा नहीं क्योंकि एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ पर बहुतेरे अपराधों से ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी ठहरे। १७ क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया तो जो लोग अनु- ग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही १८ जीवन में राज्य करेंगे। इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दंड की आज्ञा का कारण हुआ वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। १९ क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से २० बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। और व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो पर जहां पाप बहुत हुआ २१ वहां अनुग्रह उस से कहीं अधिक हुआ। कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे॥

६. सो हम क्या कहें। क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो। ऐसा न २ हो। हम जो पाप के लिये मर गये आगे को उस में ३ क्योंकर जीवन काटें। क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिसमा लिया उस ४ की मृत्यु का बपतिसमा लिया। सो उस मृत्यु का बप- तिसमा पाने से हम उस के साथ गाड़े गये कि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल

५ चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उस के साथ जुट गए हैं तो निश्चय उस के जी उठने ६ की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उस के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया कि पाप का शरीर अकारथ हो जाए कि हम आगे ७ को पाप के दास न रहें। क्योंकि जो मर गया वह पाप ८ से छूट कर धर्मी ठहरा। सो यदि हम मसीह के साथ मर गए तो हमारा विश्वास यह है कि उस के साथ ९ जीएंगे भी। क्योंकि यह जानते हैं कि मसीह मरे हुओं में से जी उठ कर फिर मरने का नहीं उस पर फिर मृत्यु की १० प्रभुता नहीं होने की। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया पर जो जीविता है तो पर- ११ मेश्वर के लिये जीविता है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीविता समझो॥

१२ सो पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे कि १३ तुम उस की लालसाओं के अधीन रहो। और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठे जानकर पर- मेश्वर को सौंपो और अपने अंगों को धर्म के हथियार १४ होने के लिये परमेश्वर को सौंपो। क्योंकि तुम पर पाप की प्रभुता न होगी कि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं बरन अनुग्रह के अधीन हो॥

१५ सो क्या हुआ। क्या हम इसलिये पाप करें कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं बरन अनुग्रह के अधीन १६ हैं ऐसा न हो। क्या तुम नहीं जानते कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो उसी के दास हो जिस की मानते हो चाहे पाप के जिस का अन्त मृत्यु है चाहे आज्ञा १७ मानने के जिस का अंत धार्मिकता है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए जिस के सांचे १८ में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाये जाकर धर्म के १९ दास हो गए। मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं जैसे तुम ने अपने अंगों को अधर्म के लिये अशुद्धता और अधर्म के दास करके सौंपा था वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये २० धर्म के दास करके सौंप दो। जब तुम पाप के दास थे तो २१ धर्म की ओर से स्वतंत्र थे। सो जिन बातों से अब तुम लजाते हो उन से उस समय तुम क्या फल पाते थे क्योंकि उन २२ का अंत तो मृत्यु है। पर अब पाप से छुड़ाए जाकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को पवित्रता के लिये तुम्हारा फल मिलता है और उस का अंत अनन्त जीवन है। २३ क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥

७. हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते (मैं व्यवस्था के जाननेवालों से कहता हूं) कि जब तक मनुष्य जीता रहता है तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता २ रहती है। क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है पर यदि पति मर ३ जाए तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। इसलिये यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तो व्यभिचारिणी कहलाएगी पर यदि पति मर जाए तो वह उस व्यवस्था से छूट गई यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तो व्यभिचारिणी न ठहरेगी। ४ सो हे मेरे भाइयो तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए कि उस दूसरे के हो जाओ जो मरे हुओं में से जी उठा कि हम परमेश्वर के ५ लिये फल लाएं। क्योंकि जब हम शारीरिक थे तो पापों के अभिलाष जो व्यवस्था के द्वारा थे मृत्यु का फल ६ उपजाने के लिये हमारे अंगों में काम करते थे। पर जिस के बंध में थे उस के लिये मर कर अब हम व्यवस्था से ऐसे छूट गए कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं बरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं॥

७ सो हम क्या कहें। क्या व्यवस्था पाप है। ऐसा न हो बरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को न पहचानता। व्यवस्था जो न कहती कि लालच न कर तो मैं लालच ८ को न जानता। पर पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया क्योंकि ९ बिना व्यवस्था पाप मरा हुआ है। मैं तो व्यवस्था बिना पहिले जीवता था पर जब आज्ञा आई तो पाप जी गया १० और मैं मर गया। और वही आज्ञा जो जीवन के लिये ११ थी मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी। क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया और उसी १२ के द्वारा मुझे मार भी डाला। सो व्यवस्था पवित्र है और १३ आज्ञा भी ठीक और अच्छी है। तो क्या वह जो अच्छी थी मेरे लिये मृत्यु ठहरी। ऐसा न हो पर पाप इसी लिये कि उस का पाप होना प्रगट हो उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि १४ आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे। क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है पर मैं शारीरिक १५ और पाप के हाथ बिका हुआ हूं। और जो मैं करता हूं उस को नहीं जानता क्योंकि जो मैं चाहता हूं वही नहीं किया करता पर जिस से मुझे घिन आती है वही करता

१६ हूं। पर यदि जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं तो मैं
१७ मान लेता हूं कि व्यवस्था भली है। सो ऐसी दशा में उस का करनेवाला मैं नहीं बरन पाप है जो मुझ में बसा
१८ हुआ है। क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती इच्छा तो
१९ मुझ में है पर भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते। क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं वह तो नहीं करता पर जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही
२० किया करता हूं। पर यदि मैं वही करता हूं जिस की इच्छा नहीं करता तो उस का करनेवाला मैं न रहा पर
२१ पाप जो मुझ में बसा हुआ है। सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं तो
२२ बुराई मेरे पास आती है। क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व
२३ से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न हूं। पर मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था देख पड़ती है जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था की जो मेरे अंगों में है बन्धन में
२४ डालती है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं मुझे इस मृत्यु
२५ की देह से कौन छुड़ाएगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का पर शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं॥

८. सो अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की
२ आज्ञा नहीं। क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की
३ व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी उस को परमेश्वर ने किया अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर
४ शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की बिधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं पूरी की जाए।
५ शरीर के अनुसारी शरीर की बातों पर मन लगाते हैं पर आत्मा के अनुसारी आत्मा की बातों पर मन
६ लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है पर
७ आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। इस कारण कि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है
८ और न हो सकता है। और जो शारीरिक दशा में हैं वे
९ परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। पर जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है तो तुम शारीरिक दशा में नहीं पर आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उस का जन नहीं। और यदि १०
मसीह तुम में है तो देह पाप के कारण मरा हुआ है पर आत्मा धर्म के कारण जीवित है। और यदि उसी का ११
आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा॥

सो हे भाइयो हम शरीर के क़रज़दार नहीं कि १२
शरीर के अनुसार दिन काटें। क्योंकि यदि तुम शरीर १३
के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे और यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीते रहोगे। इस- १४
लिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम को १५
दासत्व का आत्मा नहीं मिला कि फिर भयमान हो पर लेपालकपन का आत्मा मिला है जिस से हम हे अब्बा हे पिता पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारे आत्मा के १६
साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर के सन्तान हैं। और यदि सन्तान हैं तो वारिस भी बरन परमेश्वर के १७
वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं जब कि हम उस के साथ दुख उठाएं कि उस के साथ महिमा भी पाएं॥

क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय के दुख उस १८
महिमा के सामने जो हम पर प्रगट होनेवाली है कुछ गिनने के योग्य नहीं। क्योंकि सृष्टि बड़े ही चाव से १९
परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोहती है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर अधीन करनेवाले २०
की ओर से व्यर्थता के अधीन इस आशा में की गई कि, सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा २१
पाकर परमेश्वर के सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब २२
तक मिल कर कहरती और पीड़ों में पड़ी तड़पती है। और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा २३
का पहिला फल है आप ही अपने में कहरते हैं और लेपालक होने की अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ २४
पर जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए तो फिर आशा कहां रही क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उस की आशा क्या करेगा। पर जिस २५
वस्तु को हम नहीं देखते यदि उस की आशा रखते हैं तो धीरज से उस की बाट जोहते हैं॥

इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहा- २६
यता करता है क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए पर आत्मा आप ही ऐसी आहें

भर भरकर जो कहने से बाहर हैं हमारे लिये
२७ बिनती करता है। और मनों का जांचनेवाला जानता है
कि आत्मा की मनसा क्या है कि वह पवित्र लोगों के
लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।
२८ और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते
हैं उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न
करती हैं अर्थात् उन्हीं के लिये जो उन की इच्छा के
२९ अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उस से पहिले से
जाना उन्हें पहिले से ठहराया भी कि उस के पुत्र के
सरीखे हों कि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।
३० फिर जिन्हें उस ने पहिले से ठहराया उन्हें बुलाया भी
और जिन्हें बुलाया उन्हें धर्मी भी ठहराया और जिन्हें
धर्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दी॥

३१ सो हम इन बातों के विषय क्या कहें। यदि
परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारे विरोध में कौन होगा।
३२ जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा पर उसे
हम सब के लिये दे दिया वह उस के साथ हमें और
३३ सब कुछ क्योंकर न देगा। परमेश्वर के चुने हुओं पर
दोष कौन लगाएगा। क्या परमेश्वर जो धर्मी ठहरा-
३४ नेवाला है। कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा। क्या
मसीह जो मरा बरन जी भी उठा और परमेश्वर की
दहिनी ओर है और हमारे लिये बिनती भी करता है।
३५ कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा। क्या
क्लेश या संकट या उपद्रव या अकाल या नंगाई या
३६ जोखिम या तलवार। जैसा लिखा है कि तेरे लिये हम
दिन भर घात किए जाते हैं हम बध होनेवाली भेड़ों की
३७ नाईं गिने गए हैं। पर इन सब बातों में हम उस के द्वारा
जिस ने हम से प्रेम किया है जयवन्त से भी बढ़कर
३८ हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु न जीवन
न स्वर्गदूत न प्रधानताएं न वर्त्तमान न भविष्य न
३९ सामर्थ, न ऊंचाई न गहिराई और न कोई और सृष्टि
हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में
है अलग कर सकेगा॥

९. मैं मसीह में सत्य कहता हूं झूठ नहीं
बोलता और मेरा विवेक[१] भी पवित्र
२ आत्मा में गवाही देता है कि। मुझे बड़ा शोक है और
३ मेरा मन सदा दुखता रहता है। क्योंकि मैं यहां तक
चाहता था कि अपने भाइयों के लिये जो शरीर के
भाव से मेरे कुटुम्बी हैं आपही मसीह से स्रापित हो
४ जाता। वे इस्राईली हैं और लेपालकपन का हक़ और
महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और
प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं। पुरखे भी उन्हीं के हैं और ५
मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ जो सब के
ऊपर परमेश्वर युगानुयुग धन्य है आमीन। पर यह ६
नहीं कि परमेश्वर का वचन टल गया इसलिये कि जो
इस्राईल के वंश हैं वे सब इस्राईली नहीं। और न ७
इब्राहीम के वंश होने के कारण सब उस के सन्तान
ठहरे पर (लिखा है) कि इसहाक ही से तेरा वंश
कहलाएगा। अर्थात् शरीर के सन्तान परमेश्वर के ८
सन्तान नहीं पर प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते
हैं। क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है कि मैं इस समय ९
के अनुसार आऊंगा और सारह के पुत्र होगा। और १०
केवल यही नहीं पर जब रिबकाह भी एक से अर्थात्
हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी। और अभी तक ११
न तो बालक जन्मे थे और न उन्हों ने कुछ भला या
बुरा किया था कि उस ने कहा कि जेठा छुटके का दास
होगा। इसलिये कि परमेश्वर की मनसा जो उस के १२
चुन लेने के अनुसार है कर्म्मों के कारण नहीं पर बुला-
नेवाले पर बनी रहे। जैसा लिखा है कि मैं ने याकूब से १३
प्रेम किया पर एसौ को अप्रिय जाना॥

सो हम क्या कहें। कि परमेश्वर के यहां अन्याय १४
है ऐसा न हो। क्योंकि वह मूसा से कहता है मैं १५
जिस किसी पर दया करना चाहूं उस पर दया करूंगा
और जिस किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा
करूंगा। सो यह न तो चाहनेवाले की न दौड़नेवाले १६
की पर दया करनेवाले परमेश्वर की बात है। क्योंकि १७
पवित्र शास्त्र में फ़िरौन से कहा गया कि मैं ने तुझे इसी
लिये खड़ा किया है कि तुझ में अपनी सामर्थ दिखाऊं
और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथिवी पर हो। सो वह १८
जिस पर चाहता है उस पर दया करता है और जिसे
चाहता है उसे कठोर कर देता है॥

सो तू मुझ से कहेगा वह फिर क्यों दोष लगाता १९
है कौन उस की इच्छा का सामना करता है। हे २०
मनुष्य भला तू कौन है जो परमेश्वर का सामना करता
है। क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है कि
तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है। क्या कुम्हार को मिट्टी २१
पर अधिकार नहीं कि एक ही लोंदे में से एक बरतन आदर
के लिये और दूसरे को अनादर के लिये बनाए। और २२
यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ
प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की जो विनाश
के लिये तैयार किये गये थे बड़े धीरज से सही। और २३
दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये पहिले

(१) मन। कांशस।

से तैयार किया अपनी महिमा के धन को प्रगट करने
२४ की इच्छा की। अर्थात् हम पर जिन्हें उस ने न केवल यहूदियों में से बरन अन्यजातियों में से
२५ भी बुलाया। जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है कि जो मेरी प्रजा न थी उन्हें मैं अपनी प्रजा
२६ कहूंगा और जो प्यारी न थी उसे प्यारी कहूंगा। और जिस जगह में उन से यह कहा गया था कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो उसी जगह वे जीवते परमेश्वर के सन्तान
२७ कहलाएंगे। और यशायाह इस्राईल के विषय पुकारकर कहता है कि चाहे इस्राईल के सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बराबर हो तौभी उन में से थोड़े ही
२८ बचेंगे। क्योंकि प्रभु अपना वचन पृथिवी पर पूरा करके
२९ और शीघ्र करके (सिद्ध) करेगा। जैसा यशायाह ने पहिले भी कहा था कि यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये कुछ वंश न छोड़ता तो हम सदोम की नाईं हो जाते और अमोराह सरीखे ठहरते॥

३० सो हम क्या कहें। यह कि अन्यजातियों ने जो धार्म्मिकता की खोज न करते थे धार्म्मिकता प्राप्त की
३१ अर्थात् उस धार्म्मिकता को जो विश्वास से है। पर इस्राईली धर्म की व्यवस्था की खोज करते हुए उस व्यवस्था
३२ तक नहीं पहुंचे। किस लिये इसलिये कि वे विश्वास से नहीं पर मानों कर्म्मों से उस की खोज करते थे। उन्हों ने
३३ उस ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई। जैसा लिखा है देखो मैं सियोन में एक ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चटान रखता हूं और जो उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा॥

१०.

हे भाइयो मेरे मन की इच्छा और उन के लिये परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वे
२ उद्धार पाएं। क्योंकि मैं उन की गवाही देता हूं कि उन को परमेश्वर के लिये धुन रहती है पर समझ के साथ
३ नहीं। क्योंकि वे परमेश्वर की धार्म्मिकता से अनजान होकर और अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यतन
४ करके परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए। क्योंकि हरएक विश्वास करनेवाले के लिये धार्म्मिकता के निमित्त
५ मसीह व्यवस्था का अन्त है। क्योंकि मूसा ने यह लिखा है कि जो मनुष्य उस धार्म्मिकता पर जो व्यवस्था से है
६ चलता है वह इसी कारण जीता रहेगा। पर जो धार्म्मिकता विश्वास से है वह यों कहता है कि अपने मन में यह न कहना स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा (यह तो मसीह को
७ उतार लाने के लिये होता) या गहिराव में कौन उतरेगा (यह तो मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने
८ के लिये होता) पर क्या कहता है यह कि वचन तेरे निकट है तेरे मुंह में और तेरे मन में है। यह वही
९ विश्वास का वचन है जो हम प्रचार करते हैं कि, यदि तू अपने मुंह से योशु को प्रभु जान कर मान ले और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में
१० से जिलाया तो तू उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्म्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के
११ लिये मुँह से मान लिया जाता है। क्योंकि पवित्र शास्त्र यह कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह
१२ लज्जित न होगा। यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब (नाम)
१३ लेनेवालों के लिये उदार है। क्योंकि जो कोई प्रभु का
१४ नाम लेगा वह उद्धार पाएगा। फिर जिस पर उन्हों ने विश्वास नहीं किया उस का (नाम) क्योंकर लें और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें और प्रचा-
१५ रक बिना क्योंकर सुनें। और यदि भेजे न जाएं तो क्योंकर प्रचार करें जैसा लिखा है कि उन के पांव क्या ही सोहते हैं जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं॥

१६ पर सब ने उस सुसमाचार पर कान न धरा। यशायाह कहता है कि हे प्रभु किस ने हमारे समाचार की
१७ प्रतीति की है। सो विश्वास सुनने[१] से और सुनना मसीह
१८ के वचन से होता है। पर मैं कहता हूं क्या उन्हों ने नहीं सुना। सुना तो सही (क्योंकि लिखा है कि) उन के स्वर सारी पृथिवी पर और उन के वचन जगत की छोर
१९ लों पहुंच गये हैं। फिर मैं कहता हूं क्या इस्राईली न जानते थे। पहिले तो मूसा कहता है मैं उन के द्वारा जो जाति नहीं तुम्हारे मन में जलन उपजाऊंगा मैं एक
२० मूढ़ जाति के द्वारा तुम्हें रिस दिलाऊंगा। फिर यशायाह बड़ा हियाव करके कहता है कि जो मुझे न ढूंढ़ते थे उन्हें मैं मिला जो मुझे पूछते न थे उन पर मैं प्रगट हो
२१ गया। पर इस्राईल के विषय वह यह कहता है मैं सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न मानने और विवाद करनेवाली प्रजा की ओर पसारे रहा॥

११.

सो मैं कहता हूं क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया। ऐसा न हो मैं भी तो इस्राईली हूं इब्राहीम के वंश और बिन्यामीन के
२ गोत्र में से हूं। परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा जिसे उस ने पहिले से जाना। क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र शास्त्र एलियाह की कथा में क्या कहता है कि वह इस्राईल के विरोध में परमेश्वर से बिनती
३ करता है। कि हे प्रभु उन्हों ने तेरे नबियों को घात

(१) यू०। समाचार।

किया और तेरी बेदियों को ढा दिया है और मैं ही अकेला ४ बच रहा हूं और वे मेरे प्राण की खोज में हैं। परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उत्तर मिला कि मैं ने अपने लिये सात हज़ार पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्हों ने बाअल के ५ आगे घुटने नहीं टेके। सो इस रीति से इस समय भी ६ अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बच रहे हैं। यदि यह अनुग्रह से है तो फिर कर्मों से नहीं नहीं तो अनुग्रह ७ अब अनुग्रह नहीं रहा। सो क्या हुआ यह कि इस्राईली जिस की खोज में हैं वह उन को न मिला पर चुने हुओं को मिला और बाकी लोग कठोर किये गए ८ हैं। जैसा लिखा है कि परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक भारी नींद में डाल रक्खा[1] है कि आंखों से न देखें ९ और कानों से न सुनें। और दाऊद कहता है उन का भोजन उन के लिये जाल और फन्दा और ठोकर और १० बदले का कारण हो जाए। उन की आंखों पर अंधेरा छा जाए कि न देखें और तू सदा उन की पीठ को ११ झुकाए रख। सो मैं कहता हूं क्या उन्हों ने इसलिये ठोकर खाई कि गिर पड़ें। ऐसा न हो पर उन के गिरने के कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला कि उन्हें हिसका १२ हो। पर यदि उन के गिरने से जगत का धन और उन की घटी अन्यजातियों का धन हुआ तो उन की भरपूरी से कितना न होगा॥

१३ मैं तुम अन्यजातियों से कहता हूं। जब कि मैं अन्यजातियों के लिये प्रेरित हूं तो मैं अपनी सेवा की १४ बड़ाई करता हूं। कि किसी रीति से मैं अपने कुटुम्बियों से हिसका करवाकर उन में से कई एक का भी उद्धार १५ कराऊं। क्योंकि जब कि उन का त्याग दिया जाना जगत के मिलाप का कारण हुआ तो क्या उन का ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा। १६ जब भेंट का पहिला पेड़ा पवित्र ठहरा तो सारा गुंधा हुआ आटा भी पवित्र है और जब कि जड़ पवित्र ठहरी १७ तो डालियां भी। और यदि कई एक डाली तोड़ दी गईं और तू जंगली जलपाई होकर उन में साटा गया और जलपाई की जड़ की चिकनाई का भागी १८ हुआ है तो डालियों पर घमण्ड न करना। और यदि तू घमण्ड करे तो जान रख कि तू जड़ को नहीं पर जड़ १९ तुझे सम्भालती है। फिर तू कहेगा डालियां इसलिये २० तोड़ी गईं कि मैं साटा जाऊं। भला वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गईं पर तू विश्वास से बना रहता है २१ सो अभिमानी न हो पर भय कर। क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियां न छोड़ीं तो तुझे भी न छोड़ेगा। सो परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख। २२ जो गिर गए उन पर कड़ाई पर तुझ पर यदि तू उस की कृपा में बना रहे तो परमेश्वर की कृपा नहीं तो तू भी काट डाला जाएगा। और वे भी यदि अविश्वास २३ में न रहें तो साटे जाएंगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर साट सकता है। क्योंकि यदि तू उस जलपाई से जो २४ स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के विरुद्ध अच्छी जलपाई में साटा गया तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं अपने ही जलपाई में साटे क्यों न जाएंगे॥

हे भाइयो कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने आप २५ को बुद्धिमान् समझ लो इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो कि जब तक अन्यजातियों की पूरी पूरी भरती न हो तब तक इस्राईल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। और इस रीति से २६ सारा इस्राईल उद्धार पाएगा जैसा लिखा है कि छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा। और उन के साथ मेरी यही २७ वाचा होगी जब कि मैं उन के पापों को दूर करूंगा। वे सुसमाचार के भाव से तुम्हारे लिये बैरी हैं पर चुन २८ लिये जाने के भाव से बाप दादों के लिये प्यारे हैं। क्योंकि २९ परमेश्वर अपने बरदानों से और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता। क्योंकि जैसे तुम ने पहिले परमेश्वर की ३० आज्ञा न मानी पर अभी उन के आज्ञा न मानने से तुम पर दया हुई। वैसे ही इन्हों ने भी अब आज्ञा ३१ न मानी कि तुम पर जो दया होती है इस से उन पर भी दया हो। क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा ३२ न मानने में बन्द कर रक्खा कि सब पर दया करे॥

आहा परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान ३३ क्या ही गंभीर है। उस के विचार कैसे अथाह और उस के मार्ग कैसे अगम हैं। प्रभु का मन किस ने जाना ३४ या उस का मंत्री कौन हुआ। या किस ने पहिले उसे ३५ दिया जिस का बदला उसे दिया जाय। क्योंकि उस की ३६ ओर से और उसी के द्वारा और उसी के लिये सब कुछ है। उस की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

१२. सो

हे भाइयो मैं तुम से परमेश्वर की दया के कारण बिनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भाता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यह तुम्हारी आत्मिक[1] सेवा है। और इस संसार के सदृश न २

(१) यू०। भारी नींद का आत्मा दिया।
(२) या। की जगह।

(१) या। मानसिक।

बनो पर तुम्हारे मन के नए होने से तुम्हारा चाल-चलन बदलता जाए जिस से तुम्हें मालूम हो कि परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा क्या है ॥

३ क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है तुम में से हर एक से कहता हूं कि जैसा समझना चाहिए उस से बढ़कर कोई अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बांट दिया है वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने ४ को समझे। क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत अंग ५ हैं और सब अंगों का एक सा काम नहीं। वैसे ही हम जो बहुत हैं मसीह में एक देह होकर आपस में एक ६ दूसरे के अंग हैं। और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है हमें भिन्न भिन्न बरदान मिले तो जिस को नबूवत का दान हो वह विश्वास के परिमाण ७ के अनुसार बोले। यदि सेवा का दान मिला हो तो सेवा में लगा रहे यदि कोई सिखानेवाला हो तो सिखाने ८ में लगा रहे। जो उपदेशक हो वह उपदेश देने में लगा रहे दान देनेवाला उदारता[१] से दे जो प्रधानता करे वह ९ यतन से करे जो दया करे वह हर्ष से करे। प्रेम निष्क-१० पट हो बुराई से घिन करो भलाई में लगे रहो। भाई-चारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रक्खो परस्पर आदर ११ करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। यतन करने में आलसी न हो आत्मिक जोश में भरे रहो प्रभु की सेवा करते १२ रहो। आशा में आनन्दित रहो क्लेश में स्थिर रहो प्रार्थना १३ में लगे रहो। पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो उस १४ में उन की सहायता करो पाहुनाई करने में लगे रहो। अपने सतानेवालों को आशिष दो आशिष दो स्राप न दो। १५ आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो और रोनेवालों १६ के साथ रोओ। आपस में एक सा मन रक्खो अभिमानी न हो पर दीनों के साथ संगति रक्खो अपने लेखे बुद्धि-१७ मान् न हो। बुराई के बदले किसी से बुराई न करो जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं उन की चिन्ता किया १८ करो। यदि हो सके तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के १९ साथ मेल रक्खो। हे प्यारो अपना पलटा न लो पर क्रोध[२] को जगह दो क्योंकि लिखा है पलटा लेना मेरा २० काम है प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। पर यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला क्योंकि ऐसा करने से तू उस के सिर पर २१ आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो पर भलाई से बुराई को जीत लो ॥

(१) या। सिधाई। (२) या। परमेश्वर का क्रोध।

१३. हर एक जन प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे क्योंकि कोई[१] अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो और जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। २ इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है और सामना करनेवाले दण्ड पाएंगे। ३ क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं पर बुरे काम के लिये डर का कारण है। यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है तो अच्छा काम कर और उस की ओर से तेरी सराहना होगी, ४ क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। पर यदि तू बुराई करे तो डर क्योंकि वह तलवार व्यर्थ बांधता नहीं और परमेश्वर का सेवक है कि उस के क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे। ५ इसलिये अधीन रहना न केवल उस क्रोध के कारण पर डर से बरन विवेक[२] के कारण अवश्य है। ६ इसलिये कर भी दो क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक हैं और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। ७ सो हर एक का हक़ चुकाया करो जिसे कर चाहिए उसे कर दो जिसे महसूल चाहिए उसे महसूल दो जिस से डरना चाहिए उस से डरो जिस का आदर करना चाहिए उस का आदर करो ॥

८ आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के क़र्ज़दार न हो क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है उसी ने व्यवस्था पूरी की है। ९ क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना खून न करना चोरी न करना लालच न करना और इन को छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सार इस बात में पाया जाता है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। १० प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है ॥

११ और यह भी कि समय को पहचान कर अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था उस समय के लेखे अब हमारा उद्धार निकट है। १२ रात बहुत बीत गई है और दिन निकलने पर है इसलिये हम अंधेरे के कामों को तज कर उजाले के हथियार बांध लें। १३ जैसा दिन को सोहता है वैसा ही हम सीधी चाल चलें न कि लीला क्रीड़ा और पियक्कड़पन न व्यभिचार और लुचपन में और न झगड़े और डाह में। १४ बरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो और शरीर के अभिलाषों को पूरा करने की चिन्ता न करो ॥

(१) मन या कॉशंस।

१४. जो विश्वास में निर्बल है उसे अपनी संगति में ले लो पर उस की शंकाओं पर २ विवाद करने के लिये नहीं। एक को विश्वास है कि सब कुछ खाना उचित है पर जो विश्वास में निर्बल है ३ वह साग पात ही खाता है। खानेवाला न खानेवाले को तुच्छ न जाने और न खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है। तू कौन ४ है जो दूसरे के टहलुए पर दोष लगाता है। वह अपने ही स्वामी के सामने खड़ा रहता है या गिरता है पर वह खड़ा कर दिया जायगा क्योंकि प्रभु उसे खड़ा रख सकता है। ५ कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है और कोई सब दिन एक से जानता है। हर एक अपने ६ ही मन में निश्चय कर ले। जो किसी दिन को मानता है वह प्रभु के लिये मानता है। जो खाता है वह प्रभु के लिये खाता है क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है और जो नहीं खाता वह प्रभु के लिये नहीं खाता ७ और परमेश्वर का धन्यवाद करता है। क्योंकि हम में से न कोई अपने लिये जीता और न कोई अपने लिये ८ मरता है। क्योंकि यदि हम जीते हैं तो प्रभु के लिये जीते हैं और यदि मरते हैं तो प्रभु के लिये मरते हैं सो ९ हम जीएं या मरें तो प्रभु ही के हैं। क्योंकि मसीह इसी लिये मरा और जी गया कि वह मरे हुओं और जीवितों १० दोनों का प्रभु हो। तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है। हम सब के सब परमेश्वर के न्यायसिंहासन के सामने खड़े ११ होंगे। क्योंकि लिखा है कि प्रभु कहता है मेरे जीवन की सौंह कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा और हर एक १२ जीभ परमेश्वर को मान लेगी। सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा॥

१३ सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस १४ या ठोकर खाने का कारण न रक्खे। मैं जानता हूं और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं पर जो उस को अशुद्ध समझता है १५ उस के लिये अशुद्ध है। यदि तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता। जिस के लिये मसीह मरा उस को तू अपने १६ भोजन के द्वारा नाश न कर। सो तुम्हारी भलाई की १७ निन्दा न होने पाए। क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं पर धर्म और मिलाप और वह आनन्द है जो १८ पवित्र आत्मा से[१] होता है। और जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है वह परमेश्वर को भाता और मनुष्यों में ग्रहण योग्य ठहरता है। इसलिये हम उन बातों १९ का यतन करें जिन से मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो। भोजन के लिये परमेश्वर का काम न बिगाड़। सब २० कुछ शुद्ध तो है पर उस मनुष्य के लिये बुरा है जिस को उस के भोजन करने से ठोकर लगती है। भला यह है कि २१ तू न मांस खाए न दाखरस पीए न और कुछ ऐसा करे जिस से तेरा भाई ठोकर खाए। तेरा जो विश्वास है उसे २२ परमेश्वर के सामने अपने ही मन में रख। धन्य वह है जो उस बात में जिसे वह ठीक समझता है अपने आप को दोषी नहीं ठहराता। पर जो सन्देह करके खाता है वह २३ दण्ड के योग्य ठहर चुका क्योंकि वह निश्चय के संग नहीं खाता और जो कुछ विश्वास[२] से नहीं वह पाप है॥

१५. निदान हम बलवानों को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें न कि अपने आप को प्रसन्न करें। हम में से हर एक २ अपने पड़ोसी को उस की भलाई के लिये सुधारने के निमित्त प्रसन्न करे। क्योंकि मसीह ने अपने आप को ३ प्रसन्न न किया पर जैसा लिखा है कि तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी। जितनी बातें पहिले लिखी ४ गईं वे हमारी शिक्षा के लिये लिखी गईं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रक्खें। और धीरज और शान्ति का दाता पर- ५ मेश्वर तुम्हें यह वर दे कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो। कि तुम एक मन और एक मुंह ६ होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की महिमा करो। इसलिये जैसे मसीह ने भी परमेश्वर ७ की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है वैसे ही तुम एक दूसरे को ग्रहण करो। मैं कहता हूं कि जो प्रतिज्ञाएं ८ बापदादों को दी गईं थीं उन्हें दृढ़ करने को मसीह परमेश्वर की सच्चाई के लिये खतना किये हुए लोगों का सेवक बना। और अन्यजाति भी दया के कारण परमे- ९ श्वर की महिमा करें जैसा लिखा है इसलिये मैं जाति जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा और तेरे नाम के भजन गाऊंगा। फिर कहा है हे जाति जाति के सब लोगो उस १० की प्रजा के साथ आनन्द करो। और फिर हे जाति ११ जाति के सब लोगो प्रभु की स्तुति करो और हे राज्य राज्य के सब लोगो उसे सराहो। और फिर यशायाह १२ कहता है यिशै की एक जड़ होगी और अन्य जातियों का हाकिम होने के लिये एक उठेगा उस पर अन्य जाति

(१) यू० । में।

(२) यू० । निश्चय।

१३ आशा रक्खेंगे । आशा का परमेश्वर तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से भरपूर करे कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए ॥

१४ हे मेरे भाइयो मैं आप भी तुम्हारे विषय निश्चय जानता हूं कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और सारे ज्ञान से भरपूर हो और एक दूसरे को चिता सकते
१५ हो । तौभी मैंने कहीं कहीं सुधि दिलाने के लिये तुम्हें जो बहुत हियाव करके लिखा यह उस अनुग्रह के कारण
१६ हुआ जो परमेश्वर ने मुझे दिया है । कि मैं अन्य जातियों के लिये मसीह यीशु का सेवक होकर परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा याजक की नाईं करूं जिस से अन्य जातियों का चढ़ाया जाना पवित्र आत्मा से पवित्र
१७ बनकर ग्रहण किया जाए । सो उन बातों के विषय जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं मैं मसीह यीशु में बड़ाई
१८ कर सकता हूं, क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय कहने का हियाव नहीं जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिये बचन और कर्म्म,
१९ और चिन्हों और अद्भुत कामों की सामर्थ से और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए । यहां तक कि मैं ने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया ।
२० पर मेरे मन की उमंग यह है कि जहां जहां मसीह का नाम न लिया गया वहीं सुसमाचार सुनाऊं ऐसा न
२१ हो कि दूसरे की नेव पर घर बनाऊं । पर जैसा लिखा है वैसाही हो कि जिन्हें उस का सुसमाचार नहीं पहुंचा वे ही देखेंगे और जिन्हों ने नहीं सुना वे ही समझेंगे ॥

२२ इसी लिये मैं तुम्हारे पास आने से बार बार रुका
२३ रहा । पर अब मुझे इन देशों में और जगह नहीं रही और बहुत बरसों से मुझे तुम्हारे पास आने की
२४ लालसा है । इसलिये जब इसपानिया को जाऊं तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊं क्योंकि मुझे आशा है कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूं और जब तुम्हारी संगति से कुछ मेरा जी भर जाए तो तुम मुझे कुछ दूर
२५ आगे पहुंचा दो । पर अभी तो पवित्र लोगों की सेवा
२६ करने के लिये यरूशलेम को जाता हूं । क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिये कुछ चन्दा
२७ करें । अच्छा तो लगा पर वे उन के क़रज़दार भी हैं क्योंकि यदि अन्य जाति उन की आत्मिक बातों में भागी हुए तो उन्हें भी उचित है कि शारीरिक बातों में
२८ उन की सेवा करें । सो यह काम पूरा करके और उन को यह चंदा सौंपकर मैं तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊंगा । और मैं जानता हूं कि जब २९ मैं तुम्हारे पास आऊंगा तो मसीह की पूरी आशिष के साथ आऊंगा ॥

और हे भाइयो मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह का ३० और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर तुम से बिनती करता हूं कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो, कि मैं ३१ यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूं और मेरी वह सेवा जो यरूशलेम के लिये है पवित्र लोगों को भाए । और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हरे पास आनन्द के ३२ साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं । शान्ति का ३३ परमेश्वर तुम सब के साथ रहे । आमीन ॥

१६. मैं तुम से फीबे की जो हमारी बहिन और किंखिया की मण्डली की सेविका है सिफारिश करता हूं । कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को २ चाहिए उसे प्रभु में ग्रहण करो और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन हो उस की सहायता करो क्योंकि वह भी बहुतों की बरन मेरी भी उपकारिणी हुई है ॥

प्रिसका और अक्विला को जो यीशु में मेरे ३ सहकर्मी हैं नमस्कार । उन्हों ने मेरे प्राण के लिये अपना ४ ही सिर दे रक्खा था और मैं ही नहीं बरन अन्यजातियों की सारी मण्डलियां भी उन का धन्यवाद करती हैं । और उस मण्डली को भी नमस्कार जो उन के घर ५ में है । मेरे प्यारे इपैनितुस को जो मसीह के लिये आसिया का पहिला फल है नमस्कार । मरयम को ६ जिस ने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया नमस्कार । अन्द्रुनिकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं और ७ मेरे साथ क़ैद हुए थे और प्रेरितों में नामी हैं और मुझ से पहिले मसीह में हुए थे नमस्कार । अम्पलियातुस ८ को जो प्रभु में मेरा प्यारा है नमस्कार । उरबानुस ९ को जो मसीह में हमारा सहकर्मी है और मेरे प्यारे इस्तखुस को नमस्कार । अपिल्लेस को जो मसीह में १० खरा निकला नमस्कार । अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार । मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार । नरकिस्सुस ११ के घराने के जो लोग प्रभु में हैं उन को नमस्कार । त्रूफैना और त्रूफोसा को जो प्रभु में परिश्रम करती १२ हैं नमस्कार । प्यारी पिरसिस को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया नमस्कार । रूफुस को जो प्रभु में चुना १३ है और उस की माता जो मेरी भी है दोनों को नमस्कार । असुंक्रितुस और फिलगोन और हिर्मेस और पत्रुबास १४

और हिर्मास और उन के साथ के भाइयों को नमस्कार ।
१५ फिलुलुगुस और यूलिया और नेर्युस और उस की बहिन और उलुम्पास और उन के साथ के सब पवित्र लोगों
१६ को नमस्कार । आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो । तुम को मसीह की सारी मण्डलियों की ओर से नमस्कार ॥

१७ अब हे भाइयो मैं तुम से बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं उन्हें ताड़
१८ लिया करो और उन से किनारा करो । क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं पर अपने पेट की सेवा करते हैं और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के
१९ लोगों को बहका देते हैं । तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है इसलिये मैं तुम्हारे विषय आनन्द करता हूं पर मैं यह चाहता हूं कि तुम भलाई के लिए बुद्धिमान् पर बुराई के लिये भोले बने
२० रहो । शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा ॥

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे[१] ॥

२१ तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का और लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का तुम को नमस्कार ।
२२ मुझ पत्री के लिखनेवाले तिरतियुस का प्रभु में तुम को नमस्कार ।
२३ गयुस का जो मेरी और सारी मण्डली का पहुनाई करनेवाला है उस का तुम्हें नमस्कार । इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है और भाई क्वारतुस का तुम को नमस्कार[२] ॥

२५ अब जो तुम को मेरे सुसमाचार और यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से
२६ छिपा रहा, पर अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से नबियों की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले
२७ हो जाएं, उसी अद्वैत बुद्धिमान् परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे । आमीन ॥

(१) यह वाक्य पहिले २४ पद गिना जाता था । सब में पुराने हस्तलेखों में इसी जगह लिखा हुआ है ।

(२) देखो २० पद भी ।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री ।

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस
२ की ओर से, परमेश्वर की उस मण्डली के नाम जो कुरिन्थुस में है अर्थात् उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं ॥

३ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे ॥

४ मैं तुम्हारे विषय अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूं इसलिये कि परमेश्वर का यह अनुग्रह
५ तुम पर मसीह यीशु में हुआ, कि उस में तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए
६,७ कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली । यहां तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो ।
८ वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो ।
९ परमेश्वर सच्चा[१] है जिस ने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है ॥

१० हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के द्वारा बिनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो और तुम में फूट न हो पर एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो ।
११ क्योंकि हे मेरे भाइयो खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय बताया है कि

(१) यू० विश्वासयोग्य ।

१२ तुम में झगड़े हो रहे हैं । मेरा कहना यह है कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का कोई अपुल्लोस का
१३ कोई केफा का कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बट गया क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया
१४ या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिसमा मिला। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़ मैं ने तुम में से किसी को बपतिसमा नहीं
१५ दिया। ऐसा न हो कि कोई कहे कि तुम्हें मेरे नाम पर
१६ बपतिसमा मिला। और मैं ने स्तिफनास के घराने को भी बपतिसमा दिया इन को छोड़ मैं नहीं जानता कि
१७ मैं ने और किसी को बपतिसमा दिया। क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिसमा देने को नहीं बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा और यह भी बातों के ज्ञान के अनुसार नहीं न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे॥

१८ क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है पर हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर
१९ की सामर्थ है। क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा और समझदारों की समझ को तुच्छ कर
२० दूंगा। कहां रहा ज्ञानवान् कहां रहा शास्त्री कहां इस संसार का विवादी। क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को
२१ मूर्खता नहीं ठहराया। क्योंकि जब कि परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता
२२ के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। यहूदी तो
२३ चिन्ह चाहते हैं और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं। पर हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण और अन्य-
२४ जातियों के निकट मूर्खता है। पर जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी क्या यूनानी उन के निकट मसीह परमेश्वर की
२५ सामर्थ और परमेश्वर का ज्ञान है । क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान् है और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान् है॥

२६ हे भाइयो अपने बुलाए जाने को तो सोचो कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान् न बहुत सामर्थी न
२७ बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि
२८ बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को बरन जो हैं भी नहीं चुन लिया
२९ कि उन्हें जो हैं व्यर्थ ठहराए। कि कोई प्राणी परमेश्वर
३० के सामने घमण्ड न करे। उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हुए हो जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान और[1] धर्म और पवित्रता और छुटकारा हुआ है।
३१ कि जैसा लिखा है जो घमण्ड करे वह प्रभु के विषय घमण्ड करे॥

२.

हे भाइयो जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया तो वचन या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया।
२ क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और
३ किसी बात को न जानूं। और मैं निर्बलता और भय के साथ और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा।
४ और मेरे वचन और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली
५ बातें नहीं पर आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था। इस लिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर हो॥

६ फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं पर इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का
७ ज्ञान नहीं। पर हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान भेद की रीति पर बताते हैं जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी
८ महिमा के लिये ठहराया। जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने न जाना क्योंकि यदि जानते तो तेजो-
९ मय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। पर जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखा और कान ने नहीं सुना और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं वे ही हैं जो परमेश्वर
१० ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया क्योंकि आत्मा सब बातें बरन परमेश्वर की
११ गूढ़ बातें भी जांचता है । मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है केवल मनुष्य का आत्मा जो उस में है वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई
१२ नहीं जानता केवल परमेश्वर का आत्मा। पर हम ने संसार का आत्मा नहीं पर वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो
१३ परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं पर आत्मा की सिखाई हुई बातों में आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला
१४ मिलाकर सुनाते हैं। परन्तु शारीरिक[2] मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे उस के लेखे मूर्खता की बातें हैं और न वह उन्हें जान सकता क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती
१५ है। आत्मिक जन सब कुछ जांचता है पर वह आप

(१) या अर्थात्। (२) यू० प्राणिक।

१६ किसी से जांचा नहीं जाता। क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है कि उसे सिखाए। पर हम में मसीह का मन है॥

३. हे भाइयो मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से पर जैसे शारीरिक लोगों से और उन से जो मसीह में २ बालक हैं। मैं ने तुम्हें दूध पिलाया अन्न न खिलाया क्योंकि तुम उस को न खा सकते थे बरन अब तक भी ३ न खा सकते हो। क्योंकि अब तक शारीरिक हो इस लिये कि जब कि तुम में डाह और झगड़ा है तो क्या तुम शारीरिक नहीं और मनुष्य की रीति पर नहीं ४ चलते। इसलिये कि जब एक कहता है मैं पौलुस का हूं और दूसरा कि मैं अपुल्लोस का हूं तो क्या तुम ५ मनुष्य नहीं। तो अपुल्लोस क्या है और पौलुस क्या केवल सेवक जिन के द्वारा तुम ने विश्वास किया जैसा ६ हर एक को प्रभु ने दिया। मैं ने लगाया अपुल्लोस ने ७ सींचा परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। सो न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला परन्तु परमेश्वर जो ८ बढ़ानेवाला है। लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं पर हर एक जन अपने ही परिश्रम के अनुसार ९ अपनी ही मज़दूरी पाएगा। क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्म्मी हैं तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो॥

१० परमेश्वर के अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया मैं ने बुद्धिमान् राज की नाईं नेव डाली और दूसरा उस पर रद्दा रखता है पर हर एक मनुष्य चौकस ११ रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है और वह यीशु मसीह है १२ कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता। और यदि कोई इस नेव पर सोना या चांदी या बहुमोल पत्थर या काठ १३ या घास या फूस का रद्दा रक्खे, तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा क्योंकि वह दिन उसे बताएगा इस लिये कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर १४ एक का काम परखेगी कि कैसा है। यदि किसी का काम जो उस ने बनाया है ठहरेगा तो वह मज़दूरी पाएगा। १५ यदि किसी का काम जल जाएगा तो वह हानि उठाएगा पर वह आप बचेगा पर ऐसे जैसे कोई आग के बीच से होकर बचे॥

१६ क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर[१] हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में बास करता है। यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर[१] को नाश १७ करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर[१] पवित्र है और वह तुम हो॥

कोई अपने आप को धोखा न दे। यदि तुम में १८ से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए। क्योंकि [लिखा है] १९ इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है जैसा लिखा है वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में फंसा देता है। और फिर प्रभु ज्ञानियों की चिन्ताओं को २० जानता है कि व्यर्थ हैं। सो मनुष्यों पर कोई घमण्ड २१ न करे क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। क्या पौलुस क्या २२ अपुल्लोस क्या केफा क्या जगत क्या जीवन क्या मरण क्या वर्त्तमान क्या भविष्य, सब तुम्हारा है और तुम २३ मसीह के हो और मसीह परमेश्वर का है॥

४. मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे। फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है २ कि विश्वास योग्य निकले। पर मेरे लेखे यह बहुत छोटी ३ बात है कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे बरन मैं आप ही अपने आप को नहीं परखता। क्योंकि ४ मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता। पर इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरता पर मेरा परखनेवाला प्रभु है। सो जब तक प्रभु न आए समय से पहिले ५ किसी बात का न्याय न करो। वही तो अंधकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा और मनों की मतियों को प्रगट करेगा तब परमेश्वर की ओर से हर एक की सराहना होगी॥

हे भाइयो मैं ने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी ६ और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना और एक के पक्ष में दूसरे के विरोध में न फूलना। क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता ७ है। और तेरे पास क्या है जो तू ने [दूसरे से] नहीं पाया। और जब कि तू ने [दूसरे से] पाया है तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया। तुम तो ८ तृप्त हो चुके तुम धनी हो चुके तुम ने हमारे बिना राज्य किया, पर मैं चाहता हूं कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते। मेरी समझ में परमेश्वर ने ९ हम प्रेरितों को सब के पीछे उन लोगों की नाईं ठहराया है जिन की मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो क्योंकि हम

(१) यू० पवित्रस्थान।

(१) यू० पवित्रस्थान।

जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिए एक तमाशा
१० ठहरे। हम मसीह के लिये मूर्ख हैं पर तुम मसीह में बुद्धिमान् हो। हम निर्बल हैं पर तुम बलवान् हो। तुम
११ आदर पाते हो पर हम निरादर होते हैं। हम इसी घड़ी तक भूखे प्यासे और नगे हैं और घूसे खाते और मारे मारे फिरते हैं और अपने ही हाथों से काम करके परि-
१२ श्रम करते हैं। लोग बुरा कहते हैं हम आशिष देते हैं
१३ वे सताते हैं हम सहते हैं। वे बदनाम करते हैं हम बिनती करते हैं। हम आज तक जगत के कूड़ और सब वस्तुओं की खुरचन की नाईं ठहरे॥

१४ मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये ये बातें नहीं लिखता पर अपने प्यारे बालक जानकर तुम्हें चिताता
१५ हूं। क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हज़ार भी होते तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं इस लिये कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा
१६ पिता हुआ। सो मैं तुम से बिनती करता हूं कि मेरी
१७ सी चाल चलो। इसलिये मैं ने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्यारा और विश्वासी पुत्र है तुम्हारे पास भेजा है और वह तुम्हें मसीह में मेरी चाल स्मरण कराएगा जैसे कि मैं हर जगह हर एक मण्डली में उपदेश
१८ करता हूं। कितने तो ऐसे फूल गए हैं मानो मैं
१९ तुम्हारे पास आने ही का नहीं। पर प्रभु चाहे तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र आऊंगा और उन फूले हुओं की बातों
२० को नहीं पर उन की सामर्थ को जान लूंगा। क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं पर सामर्थ में है।
२१ तुम क्या चाहते हो मैं छड़ी लेकर या प्रेम और नम्रता के आत्मा के साथ तुम्हारे पास आऊं॥

५. यहां तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है बरन ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता कि एक
२ मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। और तुम शोक तो नहीं करते जिस से ऐसा काम करनेवाला
३ तुम्हारे बीच में से निकाला जाता पर फूल गए हो। मैं तो शरीर के भाव से दूर था पर आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर मानो साथ होकर ऐसे काम करने-
४ वाले के विषय यह आज्ञा दे चुका हूं कि, जब तुम और मेरा आत्मा हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हों तो ऐसा मनुष्य हमारे प्रभु यीशु के नाम से,
५ शरीर के बिनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए कि उस का आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।
६ तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा ख़मीर सारे गूंधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है। पुराना ख़मीर निकाल कर अपने ७
आप को शुद्ध करो कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ कि तुम अख़मीरी हो क्योंकि हमारा फ़सह जो मसीह है बलिदान हुआ है। सो आओ हम उत्सव करें ८
न तो पुराने ख़मीर से और न बुराई और दुष्टता के ख़मीर से पर सीधाई और सच्चाई के अख़मीरी रोटी से॥

मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों ९
की संगति न करना। यह नहीं कि तुम बिलकुल इस १०
जगत के व्यभिचारियों या लोभियों या अंधेर करनेवालों या मूर्त्ति पूजकों की संगति न करो क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। मेरा ११
कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर व्यभिचारी या लोभी या मूर्त्त पूजक या गाली देनेवाला या पियक्कड़ या अंधेर करनेवाला हो तो उस की संगति न करना बरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।
क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या १२
काम। क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते।
पर बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है। सो उस १३
कुकर्म्मी को अपने बीच में से निकाल दो॥

६. क्या तुम में से किसी को यह हियाव है कि जब दूसरे के साथ झगड़ा हो तो फैसले के लिये अधर्मियों के पास जाए और पवित्र लोगों के पास न जाए। क्या तुम नहीं जानते कि २
पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे सो जब तुम्हें जगत का न्याय करना है तो क्या छोटे से छोटे झगड़ों का भी फैसला करने के योग्य नहीं। क्या तुम नहीं जानते कि ३
हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे तो क्या सांसारिक बातों का फैसला न करें। सो यदि तुम्हें सांसारिक बातों का ४
फैसला करना हो तो क्या उन्हीं को बैठाओगे जो मण्डली में कुछ नहीं समझे जाते हैं। मैं तुम्हें लजाने के लिये ५
कहता हूं। क्या ऐसा है कि तुम में एक भी बुद्धिमान् नहीं मिलता जो अपने भाइयों का फैसला कर सके।
बरन भाई भाई में मुक़द्दमा होता है और वह भी ६
अविश्वासियों के सामने। सो सचमुच तुम में बड़ा दोष ७
यह है कि आपस में मुक़द्दमा करते हो बरन अन्याय क्यों नहीं सहते ठगाई क्यों नहीं सहते। पर अन्याय ८
करते और ठगते हो और वह भी भाइयों को। क्या तुम ९
नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। धोखा न खाओ न वेश्यागामी न मूर्त्ति-
पूजक न परस्त्रीगामी न लुच्चे न पुरुषगामी, न चोर न १०
लोभी न पियक्कड़ न गाली देनेवाले न अंधेर करनेवाले

११ परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे पर तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे॥

१२ सब वस्तुएं मेरे लिये उचित तो हैं पर सब वस्तुएं लाभ की नहीं सब वस्तुएं मेरे लिये उचित हैं पर मैं

१३ किसी बात के अधीन न हूंगा। भोजन पेट के लिये और पेट भोजन के लिये है परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनों को नाश करेगा पर देह व्यभिचार के लिए

१४ नहीं बरन प्रभु के लिये और प्रभु देह के लिये है। और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से प्रभु को जिलाया और हमें

१५ भी जिलाएगा। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह मसीह के अंग हैं। सो क्या मैं मसीह के अंग लेकर

१६ उन्हें वेश्या के अंग बनाऊं ऐसा न हो। क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई वेश्या से संगति करता है वह उस के साथ एक तन हो जाता है क्योंकि वह कहता

१७ है कि वे दोनों एक तन होंगे। और जो प्रभु की संगति में रहता है वह उस के साथ एक आत्मा हो जाता है।

१८ व्यभिचार से बचे रहो जितने और पाप मनुष्य करता है वे देह के बाहर हैं पर व्यभिचार करनेवाला अपनी

१९ ही देह के विरुद्ध पाप करता है। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर[1] है जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है

२० और तुम अपने नहीं हो। क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो सो अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥

७. उन बातों के विषय जो तुम ने लिखीं यह अच्छा है कि पुरुष स्त्री को न

२ छुए। पर व्यभिचार के डर से हर एक पुरुष की पत्नी

३ और हर एक स्त्री का पति हो। पति अपनी पत्नी का हक़

४ पूरा करे और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का। पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उस के पति का अधिकार है वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार

५ नहीं पर पत्नी को। तुम एक दूसरे से अलग न रहो पर केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले और फिर एक साथ रहो ऐसा न

६ हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे। पर मैं जो यह कहता हूं तो अनुमति देता हूं आज्ञा नहीं

७ देता। मैं यह चाहता हूं कि जैसा मैं हूं वैसा ही सब मनुष्य हों पर हर एक को परमेश्वर की ओर से विशेष विशेष वरदान मिले हैं किसी को किसी प्रकार का और किसी को किसी प्रकार का॥

८ पर मैं बिन ब्याहों और विधवाओं के विषय कहता हूं कि उन के लिये ऐसा ही रहना अच्छा है जैसा

९ मैं हूं। पर यदि वे संयम न कर सकें तो ब्याह करें

१० क्योंकि ब्याह करना कामातुर रहने से भला है। जिन का ब्याह हो गया है उन को मैं नहीं बरन प्रभु आज्ञा देता है

११ कि पत्नी अपने पति से अलग न हो। (और यदि अलग भी हो जाए तो बिन दूसरा ब्याह किए रहे या अपने पति से फिर मेल कर ले) और न पति अपनी पत्नी को छोड़े।

१२ दूसरों से प्रभु नहीं पर मैं ही कहता हूं यदि किसी भाई की पत्नी विश्वास न रखती हो और उस के साथ रहने से

१३ प्रसन्न हो तो वह उसे न छोड़े। और जिस स्त्री का पति विश्वास न रखता हो और उस के साथ रहने में प्रसन्न

१४ हो वह पति को न छोड़े। क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती पति के कारण पवित्र ठहरती है नहीं तो तुम्हारे लड़के बाले अशुद्ध

१५ होते पर अब तो वे पवित्र हैं। पर जो विश्वास नहीं रखता यदि वह अलग हो तो अलग होने दो ऐसी दशा में कोई भाई या बहिन बन्धन में नहीं और परमेश्वर ने

१६ तो हमें मेल मिलाप के लिये बुलाया है। क्योंकि हे स्त्री तू क्या जानती है कि तू अपने पति का उद्धार करा ले और हे पुरुष तू क्या जानता है कि तू अपनी पत्नी

१७ का उद्धार करा ले। पर जैसा प्रभु ने हर एक को बांटा है और जैसा परमेश्वर ने हर एक को बुलाया है वैसा ही वह चले। और मैं सब मण्डलियों में ऐसा

१८ ठहराता हूं। कोई ख़तना किया हुआ बुलाया गया हो तो वह ख़तनारहित न बने। कोई ख़तनारहित बुलाया गया

१९ हो तो वह ख़तना न कराये। न ख़तना कुछ है और न बिन ख़तना परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना

२० ही सब कुछ है। हर एक जन जिस दशा में बुलाया

२१ गया हो उसी में रहे। क्या तू दास की दशा में बुलाया गया तो चिन्ता न कर पर यदि तू स्वतंत्र हो भी सके तो

२२ इसी को काम में ला। क्योंकि जो दास की दशा में प्रभु में बुलाया गया है वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ है और वैसे ही जो स्वतंत्रता की दशा में बुलाया गया है वह

२३ मसीह का दास है। तुम दाम देकर मोल लिये गये हो

२४ मनुष्यों के दास न बनो। हे भाइयो जो कोई जिस दशा में बुलाया गया हो वह उसी में परमेश्वर के साथ रहे॥

२५ कुंवारियों के विषय प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली पर विश्वासी होने के लिये जैसी प्रभु ने मुझ पर

(१) यू० पवित्रस्थान।

२६ दया की है उस के अनुसार मति देता हूं। सो मेरी समझ में यह अच्छा है कि आजकल के क्लेश के कारण
२७ मनुष्य जैसा है वैसा ही रहे। यदि तेरे पत्नी है तो उस से अलग होने का यतन न कर और यदि तेरे पत्नी नहीं[1]
२८ तो पत्नी की खाज न कर। पर यदि तू ब्याह भी करे तो पाप नहीं और यदि कुंवारी ब्याही जाय तो पाप नहीं पर ऐसों को शारीरिक दुख होगा और मैं तुम्हें
२९ बचाना चाहता हूं। हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि समय कम किया गया है इसलिये चाहिए कि जिन के पत्नी
३० हों वे ऐसे हों मानो उन के पत्नी नहीं। और रोनेवाले ऐसे हों मानों रोते नहीं और आनन्द करनेवाले ऐसे हों मानों आनन्द नहीं करते और मोल लेनेवाले
३१ ऐसे हों कि मानो उन के पास कुछ नहीं। और इस संसार के बरतनेवाले ऐसे हों कि संसार ही के न हो लें[2] क्योंकि इस संसार के रीति व्यवहार बदलते
३२ जाते हैं। मैं यह चाहता हूं कि तुम्हें चिन्ता न हो। बिन ब्याहा पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता में रहता
३३ है कि प्रभु को क्योंकर प्रसन्न रक्खे। पर ब्याहा हुआ मनुष्य संसार की बातों की चिन्ता में रहता है
३४ कि अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रक्खे। ब्याही और बिन ब्याही में भी भेद है। बिन ब्याही प्रभु की चिन्ता में रहती है कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो पर ब्याही संसार की चिन्ता में रहती है कि
३५ अपने पति को प्रसन्न रक्खे। यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूं और न कि तुम्हें फंसाने के लिये बरन इसलिये कि जैसा सोहता है वैसा ही किया जाए कि
३६ तुम एक चित्त होकर प्रभु की सेवा में लगे रहो। और यदि कोई यह समझे कि मैं अपनी उस कुंवारी का हक़ मार रहा हूं जिस की जवानी ढल चली है और प्रयोजन भी होए तो जैसा चाहे वैसा करे इस में पाप नहीं वह उस का
३७ ब्याह होने दे[3]। पर जो मन में दृढ़ रहता है और उस को प्रयोजन न हो बरन अपनी इच्छा पूरी करने में अधिकार रखता हो और अपने मन में यह बात ठान ली हो कि मैं अपनी कुंवारी लड़की को बिन ब्याही
३८ रक्खूंगा वह अच्छा करता है। सो जो अपनी कुंवारी का ब्याह कर देता है वह अच्छा करता है और जो ब्याह नहीं कर देता वह और भी अच्छा करता है।
३९ जब तक किसी स्त्री का पति जीता रहता है तब तक वह उस से बंधी हुई है पर जब उस का पति मर जाए तो जिस से चाहे ब्याह कर सकती है पर केवल प्रभु में।
४० पर यदि वैसी ही रहे तो मेरे विचार में और भी धन्य है और मैं समझता हूं कि परमेश्वर का आत्मा मुझ में भी है॥

८.

अब मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय—हम जानते हैं कि हम सब को ज्ञान है। ज्ञान फुलाता है पर प्रेम से उन्नति
२ होती है। यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूं तो जैसा
३ जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। पर यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है तो उसे परमेश्वर पह-
४ चानता है। सो मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय—हम जानते हैं कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर
५ नहीं। यद्यपि आकाश में और पृथिवी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं (जैसा कि बहुत से ईश्वर और
६ बहुत से प्रभु हैं,) तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है अर्थात् पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं और हम उसी के लिये हैं और एक ही प्रभु है अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुईं और हम भी
७ उसी के द्वारा हैं। पर सब को यह ज्ञान नहीं पर कितने तो अब तक मूरत को कुछ समझने के कारण मूरतों के सामने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझ कर खाते हैं और उन का विवेक[4] निर्बल होकर अशुद्ध होता
८ है। भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचाता यदि हम न खाएं तो हमारी कुछ हानि नहीं और यदि खाएं
९ तो कुछ लाभ नहीं। पर चौकस रहो ऐसा न हो कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का
१० कारण हो जाए। क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल जन हो तो क्या उस के विवेक[4] में मूरत के सामने बलि
११ की हुई वस्तु के खाने का हियाव न हो जाएगा। इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिस के
१२ लिये मसीह मरा नाश हो जाएगा। तो भाइयों का अपराध करने से और उन के निर्बल विवेक[4] को चोट
१३ देने से तुम मसीह का अपराध करते हो। इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा न हो कि मैं अपने भाई को ठोकर खिलाऊं॥

९.

क्या मैं स्वतंत्र नहीं। क्या मैं प्रेरित नहीं। क्या मैं ने यीशु को जो हमारा प्रभु है नहीं देखा। क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए

(१) या यदि तू पत्नी से छूट गया है। (२) यू० उसे अधिक न बरते। (३) यू० वे ब्याहे जाएं।

(४) मन या कांशंस।

२ नहीं। यदि मैं औरों के लिये प्रेरित नहीं तौभी तुम्हारे लिये तो हूं क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर ३ छाप हो। जो मुझे जांचते हैं उन के लिये यही मेरा उत्तर ४,५ है। क्या हमें खाने पीने का अधिकार नहीं। क्या हमें यह अधिकार नहीं कि किसी मसीही बहिन को ब्याह कर लिए फिरें जैसा और प्रेरित और प्रभु के भाई और केफा ६ करते हैं। या केवल मुझे और बरनबा को अधिकार नहीं ७ कि कमाई करना छोड़ें। कौन कभी अपनी गिरह से खाकर सिपाही का काम करता है। कौन दाख की बारी लगाकर उस का फल नहीं खाता। कौन भेड़ों की रख- ८ वाली करके उन का दूध नहीं पीता। क्या मैं ये बातें मनुष्य ही की रीति पर बोलता हूं। क्या व्यवस्था भी ९ यही नहीं कहती। क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है कि दाएं में चलते हुए बैल का मुंह न बांधना। क्या १० परमेश्वर बैलों ही की चिन्ता करता है। या विशेष करके हमारे लिये कहता है। हां हमारे लिये ही लिखा गया क्योंकि उचित है कि जोतनेवाला आशा से जोते और ११ दावनेवाला भागी होने की आशा से दावनी करे। सो जब कि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तुएं बोईं तो क्या यह १२ कोई बड़ी बात है कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुएं लवें। जब औरों का तुम पर यह अधिकार है तो क्या हमारा इस से अधिक न होगा। पर हम यह अधिकार काम में न लाए पर सब कुछ सहते हैं कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार १३ की कुछ रोक न हो। क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर की सेवा करते हैं वे मन्दिर में से खाते हैं और जो वेदी की सेवा करते हैं वे वेदी के साथ भागी होते हैं। १४ इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया कि जो लोग सुसमाचार १५ सुनाते हैं उन की जीविका सुसमाचार से हो। पर मैं इन में से कोई बात काम में न लाया और मैं ने तो ये बातें इसलिये नहीं लिखीं कि मेरे लिये ऐसा किया जाए क्योंकि इस से मेरा मरना भला है कि कोई मेरा १६ घमण्ड व्यर्थ ठहराए। और यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं तो मुझ पर १७ हाय। क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूं तो मज़दूरी मुझे मिलती है और यदि अपनी इच्छा से नहीं १८ करता तौभी भंडारीपन मुझे सौंपा गया है। सो मेरी कौन सी मज़दूरी है। यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत मेंत कर दूं यहां तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है उस को मैं पूरी रीति १९ से काम में लाऊं। क्योंकि सबसे स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है कि अधिक लोगों को खींच लाऊं। २० मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उन के लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं खींच लाऊं। २१ व्यवस्थाहीनों के लिये मैं जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं पर मसीह की व्यवस्था के अधीन हूं व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊं। २२ मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना कि निर्बलों को खींच लाऊं मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं। २३ और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं कि औरों के साथ उस का भागी हो जाऊं। २४ क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ते सब ही हैं पर इनाम एक ही ले जाता है। तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो। २५ और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट पाने के लिये यह करते हैं पर हम उस मुकुट के लिये करते हैं जो मुरझाने का नहीं। २६ सो मैं इसी रीति से दौड़ता हूं पर बेठिकाने नहीं मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं पर उस की नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। २७ पर मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं॥

१०. हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुम इस से अनजान रहो कि हमारे सब बाप दादे बादल के नीचे थे और सब के सब समुद्र के बीच से २ पार गये। और सब ने बादल में और समुद्र में मूसा ३ का बपतिसमा लिया। और सब ने एक ही आत्मिक ४ भोजन किया। और सब ने एक ही आत्मिक जल पिया क्योंकि वे उस आत्मिक चटान से पीते थे जो उन के साथ साथ चलती थी और वह चटान मसीह था। ५ परन्तु परमेश्वर उन में के बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ सो ६ वे जङ्गल में ढेर हो गये। ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं कि जैसे उन्हों ने लालच किया वैसे हम बुरी ७ वस्तुओं का लालच न करें। और न तुम मूरत पूजने- वाले बनो जैसे कि उन में कितने बन गए थे जैसा लिखा है कि लोग खाने पीने बैठे और खेलने कूदने उठे। ८ और न हम व्यभिचार करें जैसा उन में से कितनों ने ९ किया और एक दिन में तेईस हज़ार मर गए। और न हम प्रभु को परखें जैसा उन में से कितनों ने किया १० और सांपों के द्वारा नाश किए गए। और न तुम कुड़- कुड़ाओ जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए और

११ नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए। पर ये सब बातें जो उन पर पड़ीं दृष्टान्त की रीति पर थीं और वे हमारी चितावनी के लिये लिखी गईं जो जगत के अन्त १२ समय में रहते हैं। इसलिये जो समझता है कि मैं १३ स्थिर हूं वह चौकस रहे कि गिर न पड़े। तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है और परमेश्वर सच्चा[१] है, जो तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको ॥

१४ इस कारण हे मेरे प्यारो मूर्त्ति पूजा से बचे रहो। १५ मैं बुद्धिमान् जानकर तुम से कहता हूं। जो मैं कहता १६ हूं उसे तुम परखो। वह धन्यवाद का कटोरा जिस पर हम धन्यवाद करते हैं क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या मसीह १७ की देह की सहभागिता नहीं। इसलिये कि एक रोटी है सो हम जो बहुत हैं एक देह हैं क्योंकि हम सब उस १८ एक रोटी के भागी होते हैं। जो शरीर के भाव से ईस्राईली हैं उन को देखो। क्या बलिदानों के खानेवाले १९ बेदी के सहभागी नहीं। सो मैं क्या कहता हूं क्या यह २० कि मूरत का बलिदान कुछ है वा मूरत कुछ है। नहीं पर यह कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं वे परमेश्वर के लिये नहीं पर दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी २१ हो। तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते तुम प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं २२ की मेज़ दोनों के साझी नहीं हो सकते। क्या हम प्रभु को रिस दिलाते हैं। क्या हम उस से शक्तिमान हैं॥

२३ सब वस्तुएं उचित तो हैं पर सब लाभ की नहीं सब वस्तुएं मेरे लिये उचित तो हैं पर सब वस्तुओं से उन्नति २४ नहीं। कोई अपनी ही भलाई को न ढूंढ़े बरन औरों की। २५ जो कुछ क़स्साइयों के यहां बिकता है वह खाओ और विवेक[२] २६ के कारण कुछ न पूछो। क्योंकि पृथिवी और उस की २७ भरपूरी प्रभु की है। और यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे और तुम जाना चाहो तो जो कुछ तुम्हारे सामने रक्खा जाए वही खाओ और विवेक[२] के कारण कुछ न २८ पूछो। पर यदि कोई तुम से कहे यह तो मूरत को बलि की हुई वस्तु है तो उसी बतानेवाले के कारण और विवेक[२] २९ के कारण न खाओ। मेरा मतलब तेरा विवेक[२] नहीं पर उस दूसरे का। भला मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों ३० परखी जाए। यदि मैं धन्यवाद करके साझी होता हूं तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूं उस के कारण मेरी बद-३१ नामी क्यों होती है। सो तुम चाहे खाओ चाहे पिओ चाहे जो कुछ करो सब परमेश्वर की महिमा के लिये ३२ करो। तुम न यहूदियों न यूनानियों और न परमेश्वर ३३ की कलीसिया के ठोकर के कारण हो। जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूं और अपना नहीं पर बहुतों का लाभ खोजता हूं कि वे उद्धार पाएं॥

(१) यू० विश्वासयोग्य।
(२) या मन या कांशंस।

११. तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं॥

२ हे भाइयो मैं तुम्हें सराहता हूं कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो और जो व्यवहार मैं ने ३ तुम्हें सौंप दिए हैं उन्हें धारण करते हो। सो मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है और स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह ४ का सिर परमेश्वर है। जो पुरुष सिर ढांके हुए प्रार्थना या नबूवत करता है वह अपने सिर का अपमान करता ५ है। पर जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या नबूवत करती है वह अपने सिर का अपमान करती है क्योंकि वह ६ मुण्डी हुई के बराबर है। यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े तो बाल भी कटा ले यदि स्त्री के लिये बाल कटाना या ७ मुण्डाना लज्जा की बात है तो ओढ़नी ओढ़े। पुरुष को अपना सिर ढांकना उचित नहीं क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है पर स्त्री पुरुष की महिमा। ८ क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ पर स्त्री पुरुष से हुई ९ है। और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सिरजा गया पर स्त्री १० पुरुष के लिये सिरजी गई। इसी लिये स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार[१] अपने सिर पर ११ रक्खे। तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष और न १२ पुरुष बिना स्त्री है। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है वैसे पुरुष स्त्री के द्वारा है पर सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं। १३ तुम आप ही विचार करो क्या स्त्री को उघाड़े सिर १४ परमेश्वर से प्रार्थना करना सोहता है। क्या स्वाभाविक व्यवहार भी तुम्हें नहीं जनाता कि यदि पुरुष लम्बे १५ बाल रक्खे तो उस के लिये अपमान है। पर यदि स्त्री लम्बे बाल रक्खे तो उस के लिये शोभा है क्योंकि बाल १६ उस को ओढ़नी के लिये दिये गए हैं। पर यदि कोई विवाद करना चाहे तो यह जाने कि न हमारी और न परमेश्वर की मण्डलियों की ऐसी रीति है॥

(१) या अधीनता का चिन्ह।

१७ * पर यह आज्ञा देते हुए मैं तुम्हें नहीं सराहता इसलिये कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं पर
१८ हानि होती है। क्योंकि पहिले मैं यह सुनता हूं कि जब तुम मण्डली में इकट्ठे होते हो तो तुम में फूट होती है और मैं कुछ तो इस को प्रतीति भी करता हूं।
१९ क्योंकि विधर्म्म भी तुम में अवश्य होंगे इसलिए कि जो लोग तुम में खरे निकले हैं वे प्रगट हो जाएं।
२० सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह
२१ प्रभु भोज खाने के लिये नहीं। क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहिले अपना भोज खा लेता है सो कोई तो भूखा रहता है और कोई मतवाला हो
२२ जाता है। क्या खाने पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो और जिन के पास नहीं उन्हें लज्जित करते हो। मैं तुम से क्या कहूं। क्या इस बात में तुम्हें सराहूं।
२३ मैं नहीं सराहता। क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी कि प्रभु यीशु ने जिस
२४ रात वह पकड़वाया गया रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और कहा यह मेरी देह है जो तुम्हारे
२५ लिये है मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा लेकर कहा यह कटोरा मेरे लोहू पर नई वाचा है जब कभी पीओ
२६ तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए
२७ प्रचार करते हो। इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उस के कटोरे में से पीए वह
२८ प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। सो मनुष्य अपने आप को परखे और इसी रीति से इस
२९ रोटी में से खाए और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने वह इस
३० खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं और बहुत
३१ से सो भी गए। यदि हम अपने आप को जांचते तो
३२ दोषी न ठहरते। परन्तु प्रभु हमें दोषी ठहराकर हमारी ताड़ना करता है इसलिये कि संसार के
३३ साथ दण्ड के योग्य न ठहरें। इसलिये हे मेरे भाइयो जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते हो तो
३४ एक दूसरे के लिये ठहरो। यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में खाए कि तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो। और शेष बातों को मैं आकर ठीक कर दूंगा॥

१२.

हे भाइयो मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय अनजान रहो। तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजाति थे २ तो गूंगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। सो मैं तुम्हें बताता हूं कि जो कोई परमेश्वर ३ के आत्मा की अगुवाई से बोलता है वह यीशु को स्रापित नहीं कहता और न कोई पवित्र आत्मा के बिना यीशु को प्रभु कह सकता है॥

वरदान तो कई प्रकार के हैं पर आत्मा एक ही है। ४ और सेवा भी कई प्रकार की है परन्तु प्रभु एक ही है। ५ और कार्य्य कई प्रकार के हैं परन्तु परमेश्वर एक ही ६ है जो सब में ये सब कार्य्य करवाता है। पर सब के ७ लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि ८ की बातें और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें, और किसी को उसी आत्मा से विश्वास और ९ किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने १० की शक्ति और किसी को नबूवत और किसी को आत्माओं की पहचान और किसी को अनेक प्रकार की भाषा और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। पर ये ११ सब कार्य्य वही एक आत्मा करवाता है और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है॥

क्योंकि जैसे देह तो एक है और उस के अंग बहुत १२ हैं और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी एक ही देह हैं वैसे ही मसीह भी है। क्योंकि हम क्या १३ यहूदी क्या यूनानी क्या दास क्या स्वतंत्र सब ने एक देह होने के लिये एक आत्मा के द्वारा बपतिस्मा लिया और सब को एक आत्मा पिलाया गया। इसलिये कि १४ देह में एक ही अंग नहीं पर बहुत से हैं। यदि पांव १५ कहे कि मैं हाथ नहीं इसलिये देह का नहीं तो क्या वह इस कारण देह का नहीं। और यदि कान कहे कि १६ मैं आंख नहीं इसलिये देह का नहीं तो क्या वह इस कारण देह का नहीं। यदि सारी देह आंख ही होती १७ तो सुनना कहां होता। यदि सारी देह कान ही होती तो सूंघना कहां होता। पर अब तो परमेश्वर ने अंगों १८ को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रक्खा है। यदि वे सब एक ही अंग होते तो देह कहां १९ होती। पर अब अंग तो बहुत हैं पर देह एक ही है। २० आंख हाथ से नहीं कह सकती कि मुझे तेरा प्रयोजन २१ नहीं न सिर पांवों से कह सकता है कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं। पर देह के वे अंग जो औरों से निर्बल २२

२३ देख पड़ते हैं बहुत ही आवश्यक हैं। और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते उन्हें हम और आदर देते हैं और हमारे शोभाहीन अंग और
२४ भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं। पर हमारे शोभायमान अंगों का इस का प्रयोजन नहीं परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा मिला दिया है कि जिस अंग को घटी थी उस
२५ को और भी बहुत आदर दिया है। कि देह में फूट न
२६ पड़े पर अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। और यदि एक अंग दुख पाता है तो सब अंग उस के साथ दुख पाते हैं और यदि एक अंग की बड़ाई होती
२७ है तो उस के साथ सब अंग आनन्द करते हैं। सो तुम मसीह की देह हो और एक एक करके उस के अंग हो।
२८ और परमेश्वर ने कितनों को कलीसिया में ठहराया है पहिले प्रेरित दूसरे नबी तीसरे उपदेशक फिर सामर्थ के काम करनेवाले फिर चंगा करनेवाले और उपकार करनेवाले और प्रधान और नाना प्रकार की भाषा
२९ बोलनेवाले। क्या सब प्रेरित हैं। क्या सब नबी हैं। क्या सब उपदेशक हैं। क्या सब सामर्थ के काम करने-
३० वाले हैं। क्या सब को चंगा करने के वरदान मिले हैं। क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं। क्या सब अर्थ
३१ बताते हैं। तुम अच्छे से अच्छे वरदानों की धुन में रहो और मैं तुम्हें और भी सब से अच्छा मार्ग बताता हूं॥

१३. यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं और प्रेम न रक्खूं तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झंझनाती झांझ हूं।
२ और यदि मैं नबूवत कर सकूं और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं पर प्रेम न रक्खूं
३ तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपना सारा माल कंगालों को खिला दूं या अपनी देह जलाने के लिये दे
४ दूं और प्रेम न रक्खूं तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। प्रेम धीरजवन्त और कृपाल है प्रेम डाह नहीं करता प्रेम
५ अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अन-रीति नहीं चलता वह आपस्वार्थी नहीं झुंझलाता नहीं
६ बुरा नहीं मानता। अधर्म से आनन्द नहीं होता पर
७ सत्य से आनन्द होता है। वह सब बातें सह लेता है सब बातों की प्रतीति करता है सब बातों की आशा
८ रखता है सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं नबूवतें हों तो समाप्त हो जाएंगी भाषाएं
९ हों तो जाती रहेंगी ज्ञान हो तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारी नबूवत अधूरी है।
१०,११ पर जब पूरा आएगा तो अधूरा मिट जाएगा। जब मैं बालक था तो मैं बालकों की नाईं बोलता था बालकों का सा मन था बालकों की सी समझ थी पर जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं।
१२ अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है पर उस समय आमने सामने देखेंगे अब मेरा ज्ञान अधूरा है पर उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा जैसा पह-
१३ चाना गया हूं। पर अब विश्वास आशा प्रेम ये तीनों बने रहते हैं पर इन में सब से बड़ा प्रेम है॥

१४. प्रेम का पीछा करो तौभी आत्मिक वरदानों की धुन में रहो विशेष करके यह कि नबूवत करो।
२ क्योंकि जो आन भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है इसलिये कि उस की कोई नहीं समझता क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में बोलता है।
३ पर जो नबूवत करता है वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।
४ जो आन भाषा में बातें करता है वह अपनी ही उन्नति करता है पर जो नबूवत करता है वह मण्डली की उन्नति करता है।
५ मैं चाहता हूं कि तुम सब आन भाषाओं में बातें करो पर अधिक करके यह कि नबूवत करो क्योंकि यदि आन आन भाषा बोलनेवाला मण्डली की उन्नति के लिये अर्थ न बताए तो नबूवत करनेवाला उस से बढ़कर है।
६ सो हे भाइयो यदि मैं तुम्हारे पास आकर आन आन भाषा में बातें करूं और प्रकाश या ज्ञान या नबूवत या उपदेश की बातें तुम से न कहूं तो मुझ से तुम्हारा क्या लाभ होगा।
७ निर्जीव की वस्तुएं भी जिन से शब्द निकलते हैं जैसे कि बांसुरी या बीन यदि उन के स्वरों में भेद न हो तो जो बांसुरी या बीन पर बजाया जाता है वह क्योंकर पहचाना जाएगा।
८ और यदि तुरही का शब्द साफ न हो तो लड़ाई के लिये कौन तैयारी करेगा।
९ ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ साफ बातें न करो तो जो कहा जाता है वह क्योंकर समझा जाएगा। तुम तो
१० हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे। जगत में कितने ही प्रकार की भाषा क्यों न हों पर उन में से कोई भी
११ बिना अर्थ की न होगी। इसलिये यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझूं तो बोलनेवाले के लेखे परदेशी ठहरूंगा और बोलनेवाला मेरे लेखे परदेशी ठहरेगा।
१२ सो तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो तो ऐसा यत्न करो कि तुम्हारे वरदानों के बढ़ने से मण्डली की उन्नति हो।
१३ इस कारण जो आन भाषा बोले वह प्रार्थना
१४ करे कि अर्थ भी बता सके। इसलिये यदि मैं आन भाषा में प्रार्थना करूं तो मेरा आत्मा प्रार्थना करता है

१४ पर मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिए। मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी १५ गाऊंगा। नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा तो जो अनपढ़े की सी दशा में है वह तेरे धन्यवाद पर आमीन क्योंकर कहेगा वह तो नहीं जानता कि तू १७ क्या कहता है। तू तो भली भांति धन्यवाद करता है १८ पर दूसरे की उन्नति नहीं होती। मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से और भी आन १९ आन भाषा बोलता हूं। पर मण्डली में आन भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है कि औरों के सिखाने के लिये बुद्धि से पांच ही बातें कहूं॥

२० हे भाइयो तुम समझ में बालक न बनो तौ भी बुराई में बालक रहो पर समझ में सियाने बनो। २१ व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है मैं पराई भाषा बोलनेवालों के द्वारा और पराए मुख के द्वारा इन २२ लोगों से बातें करूंगा तौभी वे मेरी न सुनेंगे। सो आन आन भाषाएं विश्वासियों के लिये नहीं पर अविश्वासियों के लिए चिन्ह हैं और नबूवत अविश्वासियों के लिये नहीं २३ पर विश्वासियों के लिये चिन्ह हैं। सो यदि सारी मण्डली एक जगह इकट्ठी हो और सब के सब आन आन भाषा बोलें और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं २४ तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे। पर यदि सब नबूवत करने लगें और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और २५ परखेंगे। और उस के मन के भेद प्रगट हो जाएंगे और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को प्रणाम करेगा और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच है॥

२६ सो हे भाइयो क्या करना चाहिए। जब तुम इकट्ठे होते हो तो हर एक के पास भजन या उपदेश या आन भाषा या प्रकाश या आन भाषा का अर्थ बताना २७ है सब कुछ उन्नति के लिये किया जाए। यदि आन भाषा में बातें करनी हों तो दो दो या बहुत हों तो तीन २८ तीन जन बारी बारी बोलें और एक जन अर्थ बताए। पर यदि अर्थ बतानेवाला न हो तो आन भाषा बोलनेवाला मण्डली में चुपका रहे और अपने मन से और परमेश्वर २९ से बातें करे। नबियों में से दो या तीन बोलें और शेष ३० लोग उन के वचन को परखें। पर यदि दूसरे पर जो बैठा ३१ है कुछ प्रकाश हो तो पहिला चुप हो जाए। क्योंकि तुम सब एक एक करके नबूवत कर सकते हो कि सब ३२ सीखें और सब शांति पाएं। और नबियों के आत्मा नबियों के वश में हैं। ३३ क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ का नहीं पर शांति का कर्त्ता है जैसे पवित्र लोगों की सब मण्डलियों में है॥

३४ स्त्रियां मण्डलियों में चुप रहें क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं पर अधीन रहने की आज्ञा है ३५ जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने अपने पति से पूछें क्योंकि स्त्री का मण्डली में बातें करना लज्जा की बात है। ३६ क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला या तुम ही तक पहुंचा॥

३७ यदि कोई मनुष्य अपने आप को नबी या आत्मिक जन समझे तो यह जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं वे प्रभु की आज्ञाएं हैं। ३८ पर यदि कोई न जाने तो न जाने॥

३९ सो हे भाइयो नबूवत करने की धुन में रहो और ४० आन भाषा बोलने से मना न करो। पर सारी बातें सभ्यता और ठिकाने से की जाएं॥

१५.

हे भाइयो मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो सुना चुका हूं जिसे तुम ने अंगीकार भी किया और जिस में तुम बने भी २ हो। जिस के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है यदि जो सुसमाचार मैं ने तुम्हें सुनाया उस में बने रहो नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। ३ मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी जो मुझे पहुंची कि पवित्र शास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिये ४ मरा। और गाड़ा गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार ५ तीसरे दिन जी उठा, और केफा को तब बारहों को ६ दिखाई दिया। फिर पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया जिन में से बहुतेरे अब तक बने हैं पर कितने सो गए। ७ फिर याकूब को तब सब प्रेरितों ८ को दिखाई दिया। और सब से पीछे मुझ को भी ९ दिखाई दिया जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूं। क्योंकि मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूं बरन प्रेरित कहलाने के योग्य नहीं इस कारण कि मैं ने परमेश्वर की कलीसिया १० को सताया था। पर मैं जो कुछ हूं परमेश्वर के अनुग्रह से हूं और उस का अनुग्रह जो मुझ पर हुआ वह व्यर्थ नहीं हुआ पर मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम किया तौभी मैं ने नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह ने ११ जो मुझ पर था। सो चाहे मैं हूं चाहे वे हों हम यही प्रचार करते हैं और इसी पर तुम ने विश्वास किया॥

१२ सो जब कि मसीह का यह प्रचार किया जाता है कि वह मरे हुओं में से जी उठा तो तुम में से कितने

क्योंकर कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान[1] नहीं। १३ यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान[1] नहीं तो मसीह भी जी १४ नहीं उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा तो हमारा १५ प्रचार व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। बरन हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे क्योंकि हम ने परमेश्वर की गवाही दी कि उस ने मसीह को जिलाया पर यदि मरे हुए नहीं जी उठते तो उस ने उस को नहीं १६ जिलाया। और यदि मरे हुए नहीं जी उठते तो मसीह १७ भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है तुम अब तक अपने पापों १८ में हो। बरन जो मसीह में सो गये हैं वे भी नाश हुए। १९ यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह की आशा रखते हैं तो सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं॥

२० पर सचमुच मसीह मरे हुओं में से जी उठा है और २१ जो सो गये हैं उन में पहिला फल हुआ। क्योंकि जब कि मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई तो मनुष्य ही के द्वारा २२ मरे हुओं का पुनरुत्थान[1] भी होगा। और जैसे आदम में सब मरते हैं वैसा ही मसीह में सब जिलाए २३ जाएंगे। पर हर एक अपनी अपनी बारी से पहिला फल २४ मसीह फिर मसीह के आने पर उस के लोग। इस के पीछे अन्त होगा उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ का अन्त करके राज्य को २५ परमेश्वर पिता के हाथ सौंप देगा। क्योंकि जब तक कि वह सब बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए तब तक २६ उसे राज्य करना अवश्य है। सब से पिछला बैरी जिस २७ का अन्त होगा वह मृत्यु है। क्योंकि उस ने सब कुछ उस के पांवों तले कर दिया पर जब वह कहता है कि सब कुछ उस के अधीन कर दिया गया तो प्रगट है कि जिस ने सब कुछ उस के अधीन कर दिया वह आप २८ अलग रहा। और जब सब कुछ उस के अधीन हो जाएगा तो पुत्र आप भी उस के अधीन होगा जिस ने सब कुछ उस के अधीन कर दिया कि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो॥

२९ नहीं तो जो मरे हुओं के लिये बपतिसमा लेते हैं वे क्या करेंगे। यदि मरे हुए जी उठते ही नहीं तो फिर ३० क्यों उन के लिये बपतिसमा लेते हैं। हम भी क्यों हर ३१ घड़ी जोखिम में रहते हैं। हे भाइयो मुझे उस घमण्ड की सौंह जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय ३२ करता हूं मैं हर दिन मरता हूं। यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में बनपशुओं से लड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ यदि मरे हुए न जिलाए जाएंगे तो आओ खाएं पीएं क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे। धोखा न ३३ खाना बुरी संगति अच्छी चाल को बिगाड़ देती है। धर्म के लिये जाग उठो और पाप न करो क्योंकि कितने ३४ हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते मैं तुम्हारे लजाने के लिये यह कहता हूं॥

अब कोई यह कहेगा मरे हुए किस रीति से ३५ जी उठते हैं और कैसी देह के साथ आते हैं। हे ३६ निर्बुद्धि जो कुछ तू बोता है जब तक न मरे जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है यह वह देह नहीं जो ३७ उत्पन्न होनेवाली है पर निरा दाना है चाहे गेहूं का चाहे किसी और अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के ३८ अनुसार उस को देह देता है और हर एक बीज को उस की निज देह। सब शरीर एक सरीखे नहीं पर ३९ मनुष्यों का शरीर और पशुओं का शरीर और पक्षियों का शरीर और मछलियों का शरीर और है। स्वर्ग पर की ४० देह भी हैं और पृथिवी पर की भी हैं पर स्वर्ग पर की देहों का तेज और है पृथिवी पर की देहों का और। सूरज का तेज और है चांद का तेज और है और तारों ४१ का तेज और है क्योंकि एक तारा दूसरे तारे से तेज में भिन्न है। मरे हुओं का जी उठना भी ऐसा ही है। ४२ नाशमान बोया जाता है अविनाशी जी उठता है। वह ४३ अनादर के साथ बोया जाता है तेज के साथ जी उठता है निर्बलता के साथ बोया जाता है सामर्थ के साथ जी उठता है। प्राणिक देह बोया जाता है आत्मिक देह जी ४४ उठता है। जब कि प्राणिक देह है तो आत्मिक देह भी है। ऐसा ही लिखा भी है कि पहिला मनुष्य आदम ४५ जीता प्राणी और पिछला आदम जीवनदायक आत्मा बना। पर पहिले आत्मिक न था पर प्राणिक था इस ४६ के पीछे आत्मिक हुआ। पहिला मनुष्य पृथिवी से ४७ मिट्टी का था दूसरा मनुष्य स्वर्ग से है। जैसा वह ४८ मिट्टी का था वैसे वे भी हैं जो मिट्टी के हैं और जैसा वह स्वर्गीय है वैसे वे भी हैं जो स्वर्गीय हैं। और जैसे ४९ हम ने उस का रूप जो मिट्टी का था धरा वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धरेंगे॥

हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू ५० परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते और न विनाश अविनाश का अधिकारी हो सकता है। देखो मैं ५१ तुम से भेद की बात कहता हूं कि हम सब सोएंगे नहीं पर सब बदल जाएंगे। और यह पल भर में पलक मारते ५२ ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूंकी जायगी और मरे हुए अविनाशी दशा में उठाये जाएंगे

(१) या मृतकोत्थान।

५३ और हम बदल जाएंगे । क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले और यह मरनहार अम-
५४ रता को पहिन ले । और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा कि
५५ जय ने मृत्यु को निगल लिया । हे मृत्यु तेरी जय कहां
५६ हे मृत्यु तेरा डंक कहां । मृत्यु का डंक पाप है और
५७ पाप का बल व्यवस्था है । परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त
५८ करता है । सो हे मेरे प्यारे भाइयो दृढ़ और अचल रहो और प्रभु के काम में सदा बढ़ते जाओ क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है ॥

१६.

अब उस चन्दे के विषय जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है जैसा मैं ने गलातिया की मण्डलियों को आज्ञा दी वैसा ही तुम भी करो ।
२ अठवारे के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे कि मेरे आने
३ पर चन्दे न करने पड़ें । और जब मैं आऊंगा तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियां देकर भेज दूंगा कि
४ तुम्हारा दान यरूशलेम पहुंचा दें । और यदि मेरा भी
५ जाना उचित हुआ तो वे मेरे साथ जाएंगे । और मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊंगा क्योंकि मुझे
६ मकिदुनिया होकर तो जाना ही है । पर क्या जाने तुम्हारे यहां ठहरूं और जाड़ा भी तुम्हारे यहां काटूं कि जिस ओर मेरा जाना हो उस ओर तुम मुझे पहुंचा दो ।
७ क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट करना नहीं चाहता पर मुझे आशा है कि यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय
८ तुम्हारे साथ रहूंगा । पर मैं पेन्तिकुस्त तक इफिसुस
९ में रहूंगा । क्योंकि मेरे लिये एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है और विरोधी बहुत से हैं ॥

१० यदि तीमुथियुस आ जाए तो देखना कि वह तुम्हारे यहां निडर रहे क्योंकि वह मेरी नाईं प्रभु
११ का काम करता है । इसलिये कोई उसे तुच्छ न जाने पर उसे कुशल से इस ओर पहुंचा देना कि मेरे पास आ जाए क्योंकि मैं बाट जोह रहा हूं कि वह भाइयों के साथ
१२ आए । और भाई अपुल्लोस से मैं ने बहुत बिनती की कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए पर उस ने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की पर जब अवसर पाएगा तब जायगा ॥

१३ जागते रहो विश्वास में बने रहो पुरुषार्थ
१४ करो बलवन्त होओ । जो कुछ करते हो प्रेम से करो ॥

१५ हे भाइयो तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो कि वे अखया के पहिले फल हैं और पवित्र लोगों की
१६ सेवा के लिये तैयार रहते हैं । सो मैं तुम से बिनती करता हूं कि ऐसों के वश में हर एक के अधीन रहो जो
१७ इस काम में परिश्रमी और सहकर्मी हैं । और मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से आनन्दित हूं क्योंकि उन्हों ने तुम्हारी घटी पूरी की है ।
१८ और उन्हों ने मेरे और तुम्हारे आत्मा को चैन दिया इसलिये ऐसों को मानो ॥

१९ आसिया की मण्डलियों की ओर से तुम को नमस्कार अक्विला और प्रिसका का और उन के घर में की मण्डली का तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार ।
२० सब भाइयों का तुम को नमस्कार । पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो ॥

२१ मुझ पौलुस का अपने हाथ का लिखा हुआ
२२ नमस्कार । यदि कोई प्रभु से प्रेम न रक्खे तो स्रापित
२३ हो । हमारा प्रभु आनेवाला है । प्रभु यीशु मसीह का
२४ अनुग्रह तुम पर होता रहे । मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब से रहे । आमीन ॥

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री।

---

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है और भाई तीमुथियुस की ओर से परमेश्वर की उस मण्डली के नाम जो कुरिन्थुस में है और सारे अखया के सब पवित्र लोगों के नाम॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो जो दया का पिता और सब प्रकार की ४ शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है इसलिये कि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है उन्हें भी शान्ति दे सकें जो ५ किसी प्रकार के क्लेश में हों। क्योंकि जैसे मसीह के दुख हम को अधिक होते हैं वैसे ही हमारी शान्ति भी ६ मसीह के द्वारा अधिक होती है। यदि हम क्लेश पाते हैं तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिये है और यदि शान्ति पाते हैं तो यह तुम्हारी शान्ति के लिये है जिस के प्रभाव से तुम धीरज के साथ उन क्लेशों को ७ सह लेते हो जिन्हें हम भी सहते हैं। और हमारी आशा तुम्हारे विषय दृढ़ है क्योंकि जानते हैं कि तुम ८ जैसे दुखों के वैसे ही शान्ति के भी भागी हो। हे भाइयो हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो जो आसिया में हम पर पड़ा कि ऐसे भारी बोझ से दब गये थे जो सामर्थ से बाहर था यहां लों कि हम ९ जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। बरन हम ने अपने जी में समझ लिया था कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी कि हम अपना भरोसा न रक्खें बरन परमेश्वर का जो मरे १० हुओं को जिलाता है। उसी ने हमें ऐसी बड़ी मृत्यु से बचाया और बचाएगा और उस से हमारी यह आशा ११ है कि वह आगे को भी बचाता रहेगा। और तुम भी मिलकर प्रार्थना के द्वारा हमारी सहायता करोगे कि जो वरदान बहुतों के द्वारा हमें मिला उस के कारण बहुत लोग हमारी ओर से धन्यवाद करें॥

१२ क्योंकि हम अपने विवेक[१] की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच हमारा चालचलन परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था जो शारीरिक ज्ञान नहीं परन्तु १३ परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था। हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते केवल वह जो तुम पढ़ते या मानते भी हो और मुझे आशा है कि अन्त तक भी मानते रहोगे। १४ जैसा तुम में से कितनों ने[२] मान भी लिया है कि हम तुम्हारे घमण्ड का कारण हैं जैसे तुम भी प्रभु यीशु के दिन हमारे घमण्ड का कारण होगे॥

१५ और इस भरोसे से मैं चाहता था कि पहिले तुम्हारे १६ पास आऊं कि तुम्हें एक और दान मिले। और तुम्हारे पास से होकर मकिदुनिया को जाऊं और फिर मकिदुनिया से तुम्हारे पास आऊं और तुम मुझे यहूदिया की १७ ओर कुछ दूर पहुंचाओ। सो ऐसा चाहने में क्या मैं ने चंचलता दिखाई या जो करना चाहता हूं क्या शरीर के अनुसार करना चाहता हूं कि मैं बात में हां हां भी करूं १८ और नहीं नहीं भी करूं। परमेश्वर सच्चा[३] गवाह है कि हमारे उस वचन में जो तुम से कहा हां और नहीं दोनों १९ पाई नहीं जातीं। क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जिस का हमारे द्वारा अर्थात् मेरे और सिलवानुस और तीमुथियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ उस में हां और नहीं दोनों न थीं पर उस में हां ही हां हुई। २० क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं वे सब उसी में हां के साथ हैं इसलिये उस के द्वारा आमीन भी हुई कि २१ हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है और जिस ने हमें अभिषेक २२ किया वही परमेश्वर है। जिस ने हम पर छाप भी दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया॥

२३ पर मैं परमेश्वर को गवाह[४] करता हूं कि मैं अब तक कुरिन्थुस में नहीं आया कि मुझे तुम पर

(१) मन या कांशस। (२) या थोड़ा बहुत।
(३) या विश्वासी। (४ यू० अपने प्राण पर गवाह

२४ तरस आता था। यह नहीं कि हम विश्वास के विषय तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं पर तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।

२. मैं ने यही ठान लिया कि फिर तुम्हारे पास उदास हो कर न आऊं। २ क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूं तो मुझे आनन्द देनेवाला कौन होगा केवल वही जिस को मैं ने उदास ३ किया। और मैं ने यही बात तुम्हें इसलिये लिखी कि ऐसा न हो कि मेरे आने पर जिन से आनन्द मिलना चाहिए मैं उन से उदास होऊं क्योंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है कि जो मेरा आनन्द है वही ४ तुम सब का भी है। बड़े क्लेश और मन के कष्ट से मैं ने बहुत से आंसू बहा बहा कर तुम्हें लिखा इसलिये नहीं कि तुम उदास हो पर इसलिये कि तुम उस बड़े प्रेम को जान लो जो मुझे तुम से है॥

५ यदि किसी ने उदास किया है तो मुझे ही नहीं बरन (कि उस के साथ बहुत कड़ाई न करूं) कुछ कुछ ६ तुम सब को भी उदास किया है। ऐसे जन के लिये यह दंड ७ जो भाइयों में से बहुतों ने दिया बहुत है। इसलिये इससे यह भला है कि उस का अपराध क्षमा करो और शान्ति दो न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए। ८ इस कारण मैं तुम से बिनती करता हूं कि उस को अपने ९ प्रेम का प्रमाण दो। क्योंकि मैं ने इसलिये भी लिखा था कि तुम्हें परख लूं कि सब बातों के मानने के लिये १० तैयार हो कि नहीं। जिस का तुम कुछ क्षमा करते हो मैं भी क्षमा करता हूं क्योंकि मैं ने भी जो कुछ क्षमा किया है यदि किया हो तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में ११ होकर[१] क्षमा किया है। कि शैतान का हम पर दांव न चले क्योंकि हम उस की जुगतों से अनजान नहीं॥

१२ जब मैं मसीह का सुसमाचार सुनाने को त्रोआस में १३ आया और प्रभु ने मेरे लिये एक द्वार खोल दिया। तो मेरे मन में चैन न मिला इसलिये कि मैं ने अपने भाई तितुस को नहीं पाया सो उन से बिदा होकर मैं मकि- १४ दुनिया को चला गया। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है और अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह १५ फैलाता है। क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों और नाश होनेवालों दोनों के लिये मसीह के १६ सुगन्ध हैं, कितनों के लिये तो मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध और कितनों के लिये जीवन के निमित्त जीवन की १७ गन्ध और इन बातों के योग्य कौन है। क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं पर मन की सच्चाई से और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को हाजिर जानकर मसीह में बोलते हैं॥

३. क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने लगे या हमें कितनों की नाईं सिफारिश की पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुम से लेनी हैं। २ हमारी पत्री तुम ही हो जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है ३ और उसे सब मनुष्य पहचानते और पढ़ते हैं। यह प्रगट है कि तुम मसीह की पत्री हो जिस को हम ने सेवकों की नाईं लिखा और जो सियाही से नहीं पर जीविते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर नहीं पर हृदय की मांस रूपी पटियों पर लिखी है। ४ हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं। ५ यह नहीं कि हम अपने आप से इस योग्य हैं कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है। ६ जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया शब्द[२] के सेवक नहीं बरन आत्मा के क्योंकि शब्द[२] मारता है पर आत्मा जिलाता है। ७ और यदि मृत्यु की वाचा की वह सेवा जिस के अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे यहां तक तेजोमय हुई कि मूसा के मुंह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था इस्राईली उस के मुंह पर दृष्टि न कर सकते थे। ८ तो आत्मा की [वाचा की] सेवा और भी तेजोमय क्यों न होगी। ९ क्योंकि जब दोषी ठहरानेवाली [वाचा की] सेवा तेजोमय थी तो धर्मी ठहरानेवाली [वाचा की] सेवा और भी तेजोमय क्यों न होगी। १० और जो तेजोमय था वह भी उस तेज के कारण जो उस से बढ़कर तेजोमय था कुछ तेजोमय न ठहरा। ११ क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था तो वह जो बना रहेगा और भी तेजोमय क्यों न होगा॥

१२ सो ऐसी आशा रखकर हम हियाव के साथ बोलते हैं। १३ और मूसा की नाईं नहीं जिस ने अपने मुंह पर परदा[३] डाला था कि इस्राईली उस घटनेवाली वस्तु के अन्त को न देखें। १४ पर वे मतिमन्द हो गए क्योंकि आज तक पुराने नियम के पढ़ते समय वही परदा पड़ा रहता है पर वह मसीह में उठ जाता है। १५ और आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है तो उन के हृदय पर परदा[३] पड़ा रहता है। १६ पर जब कभी उन का हृदय प्रभु की ओर फिरेगा तब वह परदा[३] उठ जाएगा। १७ प्रभु तो आत्मा है और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतन्त्रता है। १८ और हम सब उघाड़े मुंह से दर्पण की नाईं प्रभु का तेज

(१) या मसीह को हाजिर जानकर। (२) यू० अक्षर। (३) या ओढ़ना।

दिखाकर उस प्रभु के द्वारा जो आत्मा है तेज पर तेज प्राप्त करते हुए उसी रूप में बदलते जाते हैं ॥

४. इस लिये जब हम पर ऐसी दया हुई कि हमें यह सेवा मिली है तो हम
१ हियाव नहीं छोड़ते। पर लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया और न चतुराई से चलते न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं वरन सत्य को प्रगट करके परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक[१] में अपनी भलाई बैठाते
३ हैं। पर यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा तो यह
४ नाश होनेवालों ही के लिये पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिये जिन की मति इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है कि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है उस के तेज के सुसमाचार का उजाला उन पर न पड़े।
५ क्योंकि हम अपने आप को नहीं पर मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है और अपने विषय यह
६ कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे दास हैं। इसलिये कि परमेश्वर ही है जिस ने कहा कि अंधकार में से ज्योति चमकेगी और वही हमारे मनों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के मुंह से प्रकाश हो ॥

७ पर हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रक्खा है कि यह बहुत ही भारी सामर्थ हमारी ओर से नहीं
८ वरन परमेश्वर ही का ठहरे। हम चारों ओर से क्लेश पाते हैं पर संकट में नहीं पड़ते। निरुपाय तो हैं पर निराश
९ नहीं होते, सताए तो जाते हैं पर त्यागे नहीं जाते गिराए
१० तो जाते हैं पर नाश नहीं होते। हम यीशु का वध किया जाना सदा अपनी देह में लिये फिरते हैं कि यीशु का
११ जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। क्योंकि हम जीते जी सदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ सौंपे जाते हैं कि यीशु
१२ का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। सो
१३ मृत्यु हम में और जीवन तुम में कार्य्य करता है। और इसलिये कि हम में वही विश्वास का आत्मा है (जिस के विषय लिखा है कि मैं ने विश्वास किया इसलिये मैं बोला) तो हम भी विश्वास करते हैं इसलिये बोलते
१४ हैं। क्योंकि जानते हैं कि जिस ने प्रभु यीशु को जिलाया वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा और तुम्हारे साथ अपने सामने हाज़िर करेगा। क्योंकि सब कुछ तुम्हारे
१५ लिये है इसलिये कि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये धन्यवाद बढ़ाए ॥

१६ इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते पर यदि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है तौ भी भीतरी मनुष्यत्व दिन पर दिन नया होता जाता है। क्योंकि
१७ हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही भारी और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और
१८ हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं पर अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े दिन की हैं पर अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं ॥

५. क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथिवी पर का डेरा सा घर गिराया जाए तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथ का बना हुआ घर नहीं पर
२ सदा काल के लिये होगा। इस में तो हम कहरते और बड़ी लालसा रखते हैं कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन
३ लें। कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं।
४ और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कहरते रहते हैं क्योंकि हम उतारना नहीं वरन और पहिनना चाहते
५ हैं कि जीवन से यह मरनहार निगला जाए। और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया वह परमेश्वर है
६ जिस ने हमें बयाने में आत्मा दिया। सो हम सदा ढाढ़स बांधे रहते हैं और यह जानते हैं कि जब तक देह में
७ रहते हैं तब तक प्रभु से अलग हैं। क्योंकि हम रूप देखे
८ नहीं पर विश्वास से चलते हैं। इसलिये हम ढाढ़स बांधे रहते हैं और देह से अलग होकर प्रभु के साथ
९ रहना और भी भला समझते हैं। इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें चाहे अलग रहें पर
१० हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए कि हर एक अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए ॥

११ सो प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं और परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है और मेरी आशा यह है कि तुम्हारे विवेक[२] पर भी प्रगट हुआ
१२ होगा। हम फिर अपनी बड़ाई तुम्हारे सामने नहीं जताते वरन हम अपने विषय तुम्हें घमण्ड करने का अवसर देते हैं कि तुम उन्हें उत्तर दे सको जो मन पर
१३ नहीं वरन दिखावे पर घमण्ड करते हैं। यदि हम बेसुध हैं तो परमेश्वर के लिये और यदि सुबुद्धि हैं तो
१४ तुम्हारे लिये हैं। क्योंकि मसीह का प्रेम हमें वश में कर लेता है इसलिये कि हम यह समझते हैं कि जब एक
१५ सब के लिये मरा तो वे सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिये मरा कि जो जीते हैं वे आगे को अपने लिये न जीएं पर उस के लिये जो उन के लिये

(१) मन कांशंस।

(२) या मन या कांशंस।

१६ मरा और जी उठा। सो अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे और यदि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था तौभी अब से उस को ऐसा
१७ भी न जानेंगे। सो यदि कोई मसीह में हो तो नई सृष्टि
१८ है पुरानी बातें बीत गई हैं देखो वे नई हो गई। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमें मिला लिया और मेल मिलाप
१९ करने की सेवा हमें दी। अर्थात् परमेश्वर मसीह में होकर जगत के लोगों को अपने साथ मिला लेता था और उन के अपराधों का लेखा न लिया और मेल मिलाप कराने का वचन हमें सोंप दिया॥

२० सो हम मसीह के दूत हैं मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है हम मसीह की ओर से बिनती करते
२१ हैं कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो। जो पाप से अनजान था उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया कि उस में हम परमेश्वर की धार्म्मिकता हो जाएं॥

६. सो हम जो उस के सहकर्म्मी हैं समझाते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह
२ जो तुम पर हुआ व्यर्थ न रहने दो²। वह तो कहता है अपनी प्रसन्नता समय में मैं ने तेरी सुन ली और उद्धार करने के दिन में मैं ने मेरी सहायता की। देखो अभी वह प्रसन्नता का समय है देखो अभी वह उद्धार का दिन है।
३ हम किसी बात में कुछ ठाकर नहीं खिलाते कि हमारी
४ सेवा पर दोष न लगे। पर हर बात से परमेश्वर के सेवकों की नाईं अपनी भलाई दिखाते हैं बहुत धीरता
५ से क्लेशों से दरिद्रता से सकटों से। कोड़े खाने से कैद होने से हुल्लड़ों से परिश्रम से जागते रहने से उपवास
६ करने से। शुद्धता से ज्ञान से धीरज से कृपालुता से पवित्र
७ आत्मा से सच्चे प्रेम से। सत्य के वचन से परमेश्वर की सामर्थ से धर्म के हथियारों से जो दाहिने बाएं हैं।
८ आदर और निरादर से दुरनाम और सुनाम से भरमाने-
९ वालों के ऐसे हैं तौभी सच्चे हैं। अनजानों के ऐसे हैं तौभी जाने जाते हैं मरते हुओं के ऐसे हैं और देखो जीते हैं ताड़ना किए हुओं के ऐसे हैं और घात नहीं
१० किए जाते हैं। उदासों के ऐसे हैं पर सदा आनन्द करते हैं कंगालों के ऐसे हैं पर बहुतों को धनी कर देते हैं ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं॥

११ हे कुरिन्थियो हम ने खुलकर तुम से बातें की हैं
१२ हमारा हृदय तुम्हारी ओर खुला हुआ है। तुम्हारे लिये हमारे मन में कुछ सकेती नहीं पर तुम्हारे ही मनों में
१३ सकेती है। पर अपने लड़के वाले जानकर तुम से कहता हूं कि तुम भी उस के बदले में अपना हृदय खोलो॥

१४ अविश्वासियों के साथ न जुटना³ क्योंकि धर्म और अधर्म का क्या साझा या अंधकार और ज्योति की क्या
१५ संगति है। और बलियाल के साथ मसीह की क्या सम्मति है और अविश्वासी के साथ विश्वासी का क्या भाग।
१६ और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या संबंध है क्योंकि हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं जैसा परमेश्वर ने कहा मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा और मैं उन का परमेश्वर हूंगा
१७ और वे मेरे लोग होंगे। इसलिये प्रभु कहता है उन के बीच में से निकलो और अलग रहो और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।
१८ और तुम्हारा पिता हूंगा और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे सर्वशक्तिमान् प्रभु कहता है॥

७. सो हे प्यारो जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं तो आओ हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें॥

२ हमें अपने हृदय में जगह दो हम ने न किसी से अन्याय किया न किसी को बिगाड़ा और न किसी को
३ ठगा। मैं तुम्हें दोषी ठहराने को नहीं कहता क्योंकि मैं पहिले ही कह चुका हूं कि तुम हमारे हृदय में ऐसे बस गए कि हम तुम्हारे साथ मरने जीने के लिये तैयार हैं।
४ तुम से बहुत हियाव के साथ बोलता हूं मुझे तुम्हारा बड़ा घमण्ड है मैं शान्ति से भर गया हूं अपने सारे क्लेश में मैं आनन्द से भरा रहता हूं॥

५ क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए तब भी हमारे शरीर को चैन नहीं मिला पर हम चारों ओर से क्लेश
६ पाते थे बाहर लड़ाइयां भीतर भय थे। तौभी दीनों को शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तितुस के आने से हम को
७ शान्ति दी। और केवल उस के आने से नहीं पर उस शान्ति से भी जो उस को तुम्हारी ओर से मिली थी और उस ने तुम्हारी लालसा और तुम्हारे बिलाप और मेरे लिये तुम्हारी धुन का समाचार हमें सुनाया जिस से
८ मुझे और भी आनन्द हुआ। क्योंकि यद्यपि मैं ने अपनी पत्री से तुम्हें उदास किया और इसलिये पछताता था पर अब नहीं पछताता क्योंकि मैं देखता हूं कि उस पत्री

(१) या बिनती करता।
(२) या व्यर्थ होने के लिये न ले लो।
(३) या असमान जूए में न जुटना।

से तुम्हें उदासी ते हुई पर वह थोड़ी देर के लिये थी।
९ अब मैं आनन्दित हूं और इसलिये नहीं कि तुम उदास हुए बरन इसलिये कि तुम ने उस उदासी के कारण मन फिराया क्योंकि तुम्हारी उदासी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार थी कि हमारी ओर से तुम्हें किसी बात में
१० हानि न हो। क्योंकि जो उदासी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है उस से वह मन फिराव उत्पन्न होता है जिस का अन्त उद्धार है और उस से पछताना नहीं पड़ता पर
११ संसारी उदासी से मृत्यु उत्पन्न होती है। सो देखो इसी बात से कि तुम्हें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उदासी हुई तुम में कितना यत्न और उज़र[१] और रिस और भय और लालसा और धुन और पलटा लेने का विचार उत्पन्न हुआ। तुम ने सब प्रकार से यह दिखाया कि इस बात
१२ में तुम निर्दोष हो। फिर मैं ने जो तुम्हारे पास लिखा सो न तो उस के कारण लिखा जिस ने अधर्म किया न उस के कारण जिस का अधर्म किया गया पर इसलिये कि तुम्हारा यत्न जो हमारे लिये है वह परमेश्वर के
१३ सामने तुम पर प्रगट हो जाए। इसलिये हमें शान्ति हुई और हमारी इस शान्ति के साथ तितुस के आनन्द के कारण और भी आनन्द हुआ क्योंकि उस का
१४ जी तुम सब के कारण हरा भरा हो गया है। क्योंकि यदि मैं ने उस के सामने तुम्हारे विषय कुछ घमण्ड दिखाया तो लज्जित नहीं हुआ पर जैसे हम ने तुम से सब बातें सच सच कह दी थीं वैसे ही हमारा घमण्ड दिखाना तितुस के सामने भी सच निकला।
१५ और जब उस को तुम सब के आज्ञाकारी होने का स्मरण आता है कि क्योंकर तुम ने डरते और कांपते हुए उस से भेंट की तो उस का प्यार तुम्हारी ओर और भी बढ़ता
१६ जाता है। मैं आनन्द करता हूं कि तुम्हारी ओर से मुझे हर बात में ढाढ़स होता है॥

८. हे भाइयो हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं जो
२ मकिदुनिया की मण्डलियों पर हुआ है। कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उन के बड़े आनन्द और भारी कंगालपन
३ के बढ़ जाने से उन की उदारता बहुत बढ़ गई। और उन के विषय मेरी यह गवाही है कि उन्हों ने अपनी सामर्थ
४ भर बरन सामर्थ से भी बाहर मन से दिया। और पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय
५ हम से बार बार बिनती की। और जैसी हम ने आशा की थी वैसी ही नहीं बरन उन्हों ने पहिले प्रभु को फिर परमेश्वर की इच्छा से हम को भी अपने तई दे दिया।
६ इसलिये हम ने तितुस को समझाया कि जैसा उस ने पहिले आरम्भ किया था वैसा ही तुम्हारे बीच इस दान
७ के काम को पूरा भी कर ले। सो जैसे हर बात में अर्थात् विश्वास बचन ज्ञान सब प्रकार के यत्न में और उस प्रेम में जो हम से रखते हो बढ़ते जाते हो वैसे ही इस दान
८ के काम में भी बढ़ते जाओ। मैं आज्ञा की रीति पर नहीं पर औरों के यत्न से तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने
९ के लिये कहता हूं। तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर तुम्हारे लिये कंगाल बना कि उस के कंगाल हो जाने से तुम धनी हो
१० जाओ। और इस बात में मेरा विचार यह है क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है जो बरस दिन से न केवल करने
११ में पर चाहने में भी पहिले हुए थे। सो अब यह काम पूरा करो कि जैसा चाहने में तुम तैयार थे वैसा ही अपनी
१२ अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो। क्योंकि यदि मन की तैयारी होती है तो जो जिस के पास है उस के अनुसार वह ग्रहण होता है न उस के अनुसार जो उस
१३ के पास नहीं। यह नहीं कि औरों को चैन और तुम को
१४ क्लेश मिले। पर बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उन की घटी में काम आये कि उन की बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए कि बराबरी हो
१५ जाए। जैसा लिखा है जिस ने बहुत बटोरा था उस का कुछ अधिक न निकला और जिस ने थोड़ा बटोरा उस का कुछ कम न निकला॥

१६ और परमेश्वर का धन्यवाद हो जिस ने तुम्हारे लिये वही उत्साह तितुस के हृदय में डाल दिया है।
१७ कि उस ने हमारा समझाना माना बरन बहुत उत्साही
१८ होकर वह अपनी इच्छा से तुम्हारे पास गया। और हम ने उस के साथ उस भाई को भेजा जिस का नाम सुसमाचार के विषय सब मंडलियों में फैला हुआ है।
१९ और इतना ही नहीं पर वह मंडलियों से ठहराया भी गया कि इस दान के काम के लिये हमारे साथ जाए और हम यह सेवा इसलिये करते हैं कि प्रभु की महिमा
२० और हमारे मन की तैयारी प्रगट हो जाए। हम इस बात में चौकस रहते हैं कि इस उदारता के काम के विषय जिस की सेवा हम करते हैं कोई हम पर दोष
२१ न लगाने पाए। क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं पर मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उन की
२२ चिन्ता करते हैं। और हम ने उस के साथ अपने भाई को भेजा है जिस को हम ने बार बार परख के बहुत बातों में उत्साही पाया है पर अब तुम पर जो बड़ा भरोसा है उस के कारण और भी बहुत उत्साही पाया

(१) वा बचाव के लिये उत्तर।

२३ है। यदि कोई तितुस के विषय पूछे तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्म्मी है और यदि हमारे भाइयों के विषय पूछे तो वे मण्डलियों के भेजे हुए २४ और मसीह की महिमा हैं। सो अपना प्रेम और हमारा घमण्ड जो तुम्हारे विषय करते हैं मण्डलियों के सामने उन्हें दिखाओ॥

९

अब इस सेवा के विषय जो पवित्र लोगों के लिये की जाती है मुझे २ तुम को लिखना अवश्य नहीं। क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूं जिस के कारण मैं तुम्हारे विषय मकिदुनियों के सामने घमण्ड दिखाता हूं कि अखया के लोग बरस दिन से तैयार हुए हैं और तुम्हारे उत्साह ३ ने बहुतों को उभारा। पर मैं ने भाइयों को इसलिये भेजा है कि हम ने जो घमण्ड तुम्हारे विषय दिखाया वह इस बात में व्यर्थ न ठहरे पर जैसा मैं ने कहा वैसे ही ४ तुम तैयार हो रहो। ऐसा न हो कि यदि कोई मकिदुनी मेरे साथ आए और तुम्हें तैयार न पाए तो क्या जानें इस भरोसे के कारण हम (यह नहीं कहते कि तुम) ५ लज्जित हों। इसलिये मैं ने भाइयों से यह बिनती करना अवश्य समझा कि वे पहिले से तुम्हारे पास जाएं और तुम्हारी उदारता का फल जिस के विषय पहिले से वचन दिया गया था तैयार कर रक्खें कि यह ज़बरदस्ती[१] के नहीं पर उदारता के फल की नाईं तैयार हो॥

६ पर बात यह है कि जो थोड़ा[२] बोता है वह थोड़ा[२] काटेगा भी और जो बहुत[३] बोता है वह बहुत[३] काटेगा। ७ हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा दान करे न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले ८ से प्रेम रखता है। और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय सब कुछ जो तुम्हें अवश्य हो तुम्हारे पास रहे और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ ९ हो। जैसा लिखा है उस ने बिथराया उस ने कंगालों को १० दान दिया उस का धर्म सदा बना रहेगा। जो बोनेवाले को बीज और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा और उसे फलवन्त करेगा और तुम्हारे धर्म के ११ फलों को बढ़ाएगा। कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद १२ करवाती है धनवान किए जाओ। क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती पर लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है। क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर परमेश्वर १३ की महिमा प्रगट करते हैं कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उस के अधीन होते हो और उन की और सब की सहायता करने में उदारता करते रहते हो। और १४ वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। परमेश्वर को उस के उस दान के लिये १५ जो वर्णन से बाहर है धन्यवाद हो॥

१०.

मैं वही पौलुस जो तुम्हारे सामने दीन हूं पर पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं तुम को मसीह की नम्रता और कोमलता के कारण समझाता हूं। मैं यह बिनती करता २ हूं कि तुम्हारे सामने मुझे निडर होकर[४] साहस करना न पड़े जिस से मैं कितनों पर जो हम को शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते हैं वीरता दिखाने का विचार करता हूं। क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं ३ तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी ४ लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा[५] सामर्थी हैं। हम कल्पनाओं ५ को और हर एक ऊंची बात को जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है खण्डन करते हैं और हर एक भावना को क़ैद कर लेते हैं कि मसीह की आज्ञा मानें। और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो ६ जाय तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें। तुम इन्हीं बातों को देखते हो जो आंखों के सामने हैं ७ यदि किसी का अपने पर यह भरोसा हो कि मैं मसीह का हूं तो वह यह भी जान ले कि जैसा वह मसीह का है वैसे ही हम भी हैं। क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के ८ विषय और भी घमण्ड दिखाऊं जो प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये हमें दिया है तो लज्जित न हूंगा। यह मैं इसलिये कहता हूं कि ९ पत्रियों के द्वारा तुम्हें डरानेवाला न ठहरूं। क्योंकि १० कहते हैं कि उस की पत्रियां तो गम्भीर और प्रबल हैं पर जब देखते हैं तो वह देह का निर्बल और वचन में लचर जान पड़ता है। सो जो ऐसा कहता है वह ११ समझ रक्खे कि जैसे पीठ पीछे पत्रियों में हमारे वचन हैं वैसे ही तुम्हारे सामने हमारे काम भी होंगे। क्योंकि १२ हमें यह हियाव नहीं कि हम अपने आप को उन में से कितनों के साथ गिनें या उन से मिलाएं जो अपनी प्रशंसा करते हैं और अपने आप को आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं।

(१) यू० लोभ। (२) या कंजूसी से। (३) या उदारता से।

(४) यू० भरोसे से। (५) या लिए।

१३ हम तो सीमा से बाहर घमण्ड न करेंगे पर उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिये ठहरा दी है और उस में तुम भी आ गए हो उसी के अनुसार घमण्ड करेंगे।
१४ क्योंकि हम अपनी सीमा से बाहर पांव बढ़ाना नहीं चाहते मानो तुम तक नहीं पहुंचते बरन मसीह का
१५ सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुंच चुके हैं। और हम सीमा से बाहर औरों के परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते पर हमें आशा है कि ज्यों ज्यों तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाए त्यों त्यों हम अपनी सीमा के अनुसार
१६ तुम्हारे कारण और भी बढ़ते जाएं। कि हम तुम्हारे देश से आगे बढ़कर सुसमाचार सुनाएं और यह नहीं कि हम औरों की सीमा के भीतर बने बनाए कामों पर
१७ घमण्ड करें। पर जो घमण्ड करे वह प्रभु पर घमण्ड
१८ करे। क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है वही नहीं पर जिस की बड़ाई प्रभु करता है वही ग्रहण किया जाता है॥

११. यदि तुम मेरी थोड़ी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता
२ हां मेरी सह भी लेते हो। क्योंकि मैं तुम्हारे विषय ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं इसलिये कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र
३ कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं। पर मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिये कहीं भ्रष्ट न किये जाएं।
४ यदि कोई तुम्हारे पास आकर किसी दूसरे यीशु को प्रचार करे जिस का प्रचार हम ने नहीं किया या कोई और आत्मा तुम्हें मिले जो पहिले न मिला था या और कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहिले न माना था
५ तो तुम्हारा सहना ठीक होता। मैं तो समझता हूं कि मैं किसी बात में बड़े से बड़े प्रेरितों से कम नहीं हूं।
६ यदि मैं वचन में अनाड़ी हूं तौभी ज्ञान में नहीं पर हम ने यह हर बात में सब पर तुम्हारे लिये प्रगट किया
७ है। क्या इस में मैं ने कुछ पाप किया कि मैं ने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सेंत मेंत सुनाया और अपने
८ आप को नीचा किया कि तुम ऊंचे हो जाओ। मैं ने और मण्डलियों को लूटा मैं ने उन से मज़दूरी ली कि
९ तुम्हारी सेवा करूं और जब मैं तुम्हारे साथ था और मुझे घटी हुई तो मैं ने किसी पर भार नहीं दिया क्योंकि भाइयों ने मकिदुनिया से आकर मेरी घटी पूरी की और मैं ने हर बात में अपने आप को तुम पर भार होने से
१० रोका और रोके रहूंगा। यदि मसीह की सच्चाई मुझ में है तो अखया देश में कोई मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा।
११ किसलिये क्या इसलिये कि मैं तुम से प्रेम नहीं रखता
१२ परमेश्वर जानता है। पर जो करता हूं वही करता रहूंगा कि जो लोग दांव ढूंढ़ते हैं उन्हें मैं दांव पाने न दूं कि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं उस में से वे हमारे ही
१३ समान ठहरें। क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित और छल से काम करनेवाले और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं।
१४ और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी
१५ ज्योतिमय स्वर्गदूत का रूप धरता है। सो यदि उस के सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें तो कुछ बड़ी बात नहीं पर उन का अन्त उन के कामों के अनुसार होगा॥
१६ मैं फिर कहता हूं कोई मुझे मूर्ख न समझे नहीं तो मूर्ख ही समझकर मेरी सह लो कि थोड़ा सा मैं भी
१७ घमण्ड करूं। इस बेधड़क घमण्ड से बोलने में जो कुछ मैं कहता हूं वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार[1]
१८ नहीं पर मानो मूर्खता से कहता हूं। जब कि बहुत लोग शरीर के अनुसार घमण्ड करते हैं तो मैं भी
१९ घमण्ड करूंगा। तुम तो समझदार होकर आनन्द
२० से मूर्खों की सह लेते हो। क्योंकि जब कोई तुम्हें दास बना लेता है या खा जाता है या फंसा लेता है या अपने आप को बड़ा बनाता है या तुम्हारे मुंह
२१ पर थप्पड़ मारता है तो तुम सह लेते हो। मेरा कहना अनादर की रीति पर है मानो कि हम निर्बल से थे। पर जिस किसी बात में कोई हियाव करता है (मैं मूर्खता से कहता हूं) मैं भी हियाव करता हूं।
२२ क्या वे ही इब्रानी हैं मैं भी हूं। क्या वे ही इस्राईली हैं मैं भी हूं। क्या वे ही इब्राहीम के वंश हैं, मैं भी
२३ हूं। क्या वे ही मसीह के सेवक हैं (मैं पागल की नाईं कहता हूं) उन से बढ़कर हूं; अधिक परिश्रम करने में बार बार क़ैद में कोड़े खाने में बार बार मृत्यु
२४ के जोखिमों में। पांच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से
२५ उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैं ने बेंतें खाई एक बार पत्थरवाह किया गया तीन बार जहाज़ जिन पर मैं चढ़ा था टूट गए एक रात दिन मैं ने समुद्र
२६ में काटा। मैं बार बार यात्राओं में नदियों के जोखिमों में डाकुओं के जोखिमों में अपने जातिवालों से जोखिमों में अन्यजातियों से जोखिमों में नगरों में के जोखिमों में जंगल के जोखिमों में समुद्र के जोखिमों में झूठे भाइयों
२७ के बीच जोखिमों में, परिश्रम और कष्ट में बार बार जागते रहने में भूख पियास में बार बार उपवास करने में
२८ जाड़े में उघाड़े रहने में, और और बातों को छोड़ कर

(१) यू० प्रभु की रीति पर।

सब मण्डलियों की चिन्ता हर दिन मुझे दबाती है ।
२९ कौन निर्बल है और मैं निर्बल नहीं कौन ठोकर खाता
३० है और मेरा जी नहीं जलता । यदि घमण्ड करना अवश्य
३१ है तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर करूंगा । प्रभु यीशु
का परमेश्वर और पिता जो सदा धन्य है जानता है कि
३२ मैं झूठ नहीं बोलता । दमिश्क में अरितास राजा की
ओर से जो हाकिम था उस ने मेरे पकड़ने को दमिश्कियों
३३ के नगर पर पहरा बैठा रक्खा था । और मैं टोकरे में
खिड़की से होकर भीत पर से उतारा गया और उस के
हाथ से बच निकला ॥

१२. यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे लिये ठीक नहीं तौभी करना पड़ता है सो मैं प्रभु के दिए हुए दर्शनों और प्रकाशों की चर्चा
२ करूंगा । मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूं चौदह
बरस हुए कि न जाने देह सहित न जाने देह रहित
परमेश्वर जानता है और ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक
३ उठा लिया गया । मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूं न जाने
देह सहित न जाने देह रहित परमेश्वर ही जानता है ।
४ कि स्वर्ग लोक पर उठा लिया गया और ऐसी बातें सुनीं
जो कहने की नहीं और जिन का मुंह पर लाना मनुष्य
५ को उचित नहीं । ऐसे मनुष्य पर तो मैं घमण्ड करूंगा
परन्तु अपने पर अपनी निर्बलताओं को छोड़ अपने
६ विषय घमण्ड न करूंगा । क्योंकि यदि मैं घमण्ड करना
चाहूं भी तो मूर्ख न हूंगा क्योंकि सच बोलूंगा तौभी रुक
जाता हूं ऐसा न हो कि जैसा कोई मुझे देखता है या
मुझ से सुनता है मुझे उस से बढ़कर न समझे ।
७ और इसलिये कि मैं प्रकाशों की बहुतायत से फूल न
जाऊं शरीर में एक कांटा मानो मुझे घूसे मारने को
शैतान का एक दूत मुझे चुभोया[१] गया कि मैं फूल न
८ जाऊं । इस के विषय मैं ने प्रभु से तीन बार बिनती की
९ कि मुझ से यह दूर हो जाए । और उस ने मुझ से कहा
मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है क्योंकि मेरी सामर्थ निर्ब-
लता में सिद्ध होती है । सो मैं आनन्द से अपनी निर्बल-
ताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ मुझ पर
१० छाया करती रहे । इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बल-
ताओं और निन्दाओं में और दरिद्रता में और उपद्रवों
में और संकटों में प्रसन्न हूं क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं
तब बलवन्त होता हूं ॥

११ मैं मूर्ख तो बना पर तुम ही ने मुझ से यह काम
करवाया । तुम ही को मेरी प्रशंसा करनी चाहिए थी
क्योंकि यद्यपि मैं कुछ भी नहीं तौभी उन बड़े से बड़े प्रेरितों
से किसी बात में घटकर नहीं था । प्रेरित के लक्षण भी १२
तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों और
अद्भुत कामों और सामर्थ के कामों से दिखाए गए ।
कौन सी बात में तुम और और मण्डलियों से घटकर थे १३
केवल इस में कि मैं ने तुम पर अपना भार न रक्खा ।
मेरा यह अन्याय क्षमा करो ॥

देखो मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूं १४
और मैं तुम पर कोई भार न रक्खूंगा क्योंकि मैं तुम्हारी
सम्पत्ति नहीं पर तुम ही को चाहता हूं क्योंकि लड़के
वालों को माता पिता के लिये धन बटोरना न चाहिए
पर माता पिता को लड़के वालों के लिये । मैं तुम्हारे १५
प्राणों के लिये बहुत आनन्द से खरच करूंगा बरन आप
भी खरच हो जाऊंगा । क्या जितना बढ़कर मैं तुम से
प्रेम रखता हूं उतना ही घटकर तुम मुझ से प्रेम रक्खोगे ।
सो ऐसा हो सकता है कि मैं ने तुम पर बोझ नहीं डाला १६
पर चतुराई से तुम्हें धोखा देकर फंसा लिया । भला १७
जिन्हें मैं ने तुम्हारे पास भेजा क्या उन में से किसी के
द्वारा मैं ने छल करके तुम से कुछ ले लिया । मैं ने १८
तितुस को समझाकर उस के साथ उस भाई को भेजा सो
क्या तितुस ने छल करके तुम से कुछ लिया । क्या हम
एक ही आत्मा के चलाए न चले । क्या एक ही लीक
पर न चले ॥

तुम अभी तक समझ रहे हो कि हम तुम्हारे सामने १९
उज़र कर रहे हैं हम तो परमेश्वर को हाज़िर जान-
कर मसीह में बोलते हैं और हे प्यारो सब बातें तुम्हारी
उन्नति के लिये कहते हैं । क्योंकि मुझे डर है कहीं ऐसा २०
न हो कि मैं आकर जैसे चाहता हूं वैसे तुम्हें न पाऊं
और मुझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ कि
तुम में झगड़ा डाह क्रोध विरोध ग़ीबत चुग़ली अभिमान
और बखेड़े हों । और मेरा परमेश्वर कहीं मुझे फिर आने २१
पर तुम्हारे यहां हेठा करे और मुझे बहुतों के लिये शोक
करना पड़े जिन्हों ने पहिले पाप किया था और उस गन्दे
काम और व्यभिचार और लुचपन से जो उन्हों ने किया
मन नहीं फिराया ॥

१३. अब तीसरी बार तुम्हारे पास आता हूं । दो या तीन गवाहों के मुंह से हर एक बात ठहराई जायगी । जैसे मैं जब दूसरी बार तुम्हारे २
साथ था तो[२] वैसे ही अब दूर रहते हुए उन लोगों से
जिन्हों ने पहिले पाप किया और और सब लोगों से अब
पहिले से कह देता हूं कि यदि मैं फिर आऊंगा तो नहीं

(१) यू० । दिया ।

(२) था० । मानो दूसरी बार हाज़िर होकर ।

३ छोड़ूंगा। तुम तो इस का प्रमाण चाहते हो कि मसीह मुझ में बोलता है जो तुम्हारे लिये निर्बल नहीं पर तुम ४ में सामर्थी है। वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया तौभी परमेश्वर की सामर्थ से जीता है हम भी तो उस में निर्बल हैं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से जो ५ तुम्हारे लिये है उस के साथ जीएंगे। अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं अपने आप को जांचो। क्या तुम अपने विषय नहीं जानते कि यीशु मसीह ६ तुम में है नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो। पर मेरी ७ आशा है कि तुम जान लोगे कि हम निकम्मे नहीं। और हम अपने परमेश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई बुराई न करो इसलिये नहीं कि हम खरे देख पड़ें पर इसलिये कि तुम भलाई करो चाहे हम निकम्मे ही ८ ठहरें। क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर ९ सकते पर सत्य के लिये कर सकते हैं। जब हम निर्बल हैं और तुम बलवन्त हो तो हम आनन्दित होते हैं और यह प्रार्थना भी करते हैं कि तुम सिद्ध हो जाओ। इस १० कारण मैं पीठ पीछे ये बातें लिखता हूं कि हाज़िर होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये मुझे दिया है कड़ाई से कुछ करना न पड़े॥

निदान हे भाइयो आनन्द रहो सिद्ध हो जाओ ११ शांत होओ एक ही मन रक्खो मेल से रहो और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा। एक १२ दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। सब पवित्र लोगों का तुम्हें नमस्कार। प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह १३ और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता[१] तुम सब के साथ रहे॥

(१) या। संगति।

गलतियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री।

---

१. पौलुस की जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्य के द्वारा बरन यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा जिस ने उस को २ मरे हुओं में से जिलाया प्रेरित है, और सारे भाइयों की ओर से जो मेरे साथ हैं गलतिया की मण्डलियों के नाम। ३ परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें ४ अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया कि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्त्तमान बुरे संसार से ५ छुड़ाए। उस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

६ मुझे अचरज होता है कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम और ही प्रकार के सुस- ७ माचार की ओर ऐसे जल्दी फिर जाते हो। और वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते और मसीह के सुसमाचार ८ को बदल डालना चाहते हैं। पर यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो स्रापित ९ हो। जैसा हम पहिले कह चुके वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है तो स्रापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर १० को। क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं। यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता॥

हे भाइयो मैं तुम्हें जताए देता हूं कि जो सुसमा- ११ चार मैं ने सुनाया वह मनुष्य का सा नहीं। क्योंकि १२ वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा और न मुझे सिखाया गया पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला। यहूदी १३ मत में जो पहिले मेरा चाल चलन था तुम सुन चुके हो कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था। और अपने बहुत जातिवालों से जो मेरी १४ उमर के थे यहूदी मत में बढ़ता जाता रहा और अपने बापदादों के व्यवहारों में बहुत ही धुन लगाए था। परन्तु १५ परमेश्वर की जिस ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठह- राया और अपने अनुग्रह से बुला लिया जब इच्छा हुई, कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों १६ में उस का सुसमाचार सुनाऊं तो न मैं ने मांस और

१७ लोहू से सलाह ली, और न यरूशलेम को उन के पास गया जो मुझ से पहिले प्रेरित थे पर तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहां से दमिश्क को लौट आया॥

१८ फिर तीन बरस के पीछे मैं केफा से भेंट करने को यरूशलेम गया और उस के यहां पन्द्रह दिन रहा।
१९ परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में
२० से किसी से न मिला। जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं देखो परमेश्वर को हाज़िर जानकर कहता हूं
२१ कि वे झूठी नहीं। इस के पीछे मैं सूरिया और
२२ किलकिया के देशों में आया। पर यहूदिया की मण्डलियों ने जो मसीह में थीं मेरा मुंह तो न
२३ देखा था। पर यह सुना करती थीं कि जो हमें पहिले सताता था वह अब उसी मत का सुसमाचार सुनाता है
२४ जिसे पहिले नाश करता था। और मेरे विषय परमेश्वर की महिमा करती थीं।

२. चौदह बरस के पीछे मैं बरनबा के साथ फिर यरूशलेम को गया
२ और तितुस को भी साथ ले गया। और मेरा जाना प्रकाश के अनुसार हुआ और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार करता हूं उस को मैं ने उन्हें बता दिया पर एकान्त में उन्हीं को जो बड़े समझे जाते थे ऐसा न हो कि मेरी इस समय की या अगली दौड़
३ धूप व्यर्थ ठहरे। परन्तु तितुस पर भी जो मेरे साथ था और यूनानी है ख़तना कराने का भार न रक्खा गया।
४ और यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से घुस आए थे कि उस स्वतन्त्रता का जो मसीह यीशु में
५ हमें मिली है भेद लेकर हमें दास बनाएं। उन के अधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना इसलिये कि
६ सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे। फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे (वे चाहे कैसे ही थे मुझे इस से कुछ काम नहीं परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता) उन से जो कुछ समझे जाते थे मुझे कुछ नहीं मिला।
७ ऐसा ही नहीं पर जब उन्हों ने देखा कि जैसा ख़तना किए हुए लोगों के लिये सुसमाचार पतरस को वैसा ही ख़तना रहितों के लिए मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा
८ गया। (क्योंकि जिस ने पतरस से ख़तना किए हुओं में की प्रेरिताई का कार्य्य करवाया उसी ने मुझ से भी
९ अन्यजातियों में कार्य्य करवाया)। और जब उन्हों ने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया तो याकूब और केफा और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे मुझ को और बरनबा को दहिना हाथ देकर संग कर लिया कि हम अन्यजातियों के पास जाएं
१० और वे ख़तना किए हुओं के पास। केवल यह कहा कि हम कंगालों की सुध लें और इसी काम के करने का मैं आप यत्न कर रहा था॥

११ पर जब केफा अन्ताकिया में आया तो मैं ने मुंहामुंह उस का सामना किया क्योंकि वह दोषी ठहरा
१२ था। इसलिये कि याकूब की ओर से कितने लोगों के आने से पहिले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था पर जब वे आए तो ख़तना किए हुए लोगों के डर
१३ के मारे हटा और किनारा करने लगा। और उस के साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया यहां तक कि
१४ बरनबा भी उन के कपट में पड़ गया। पर जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते तो मैं ने सब के सामने केफा से कहा कि जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों की नाईं चलता है और यहूदियों की नाईं नहीं तो तू अन्यजातियों को
१५ यहूदियों की नाईं क्यों चलने को कहता है। हम जो जन्म के यहूदी हैं और पापी अन्यजातियों में से नहीं,
१६ तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें इसलिये कि व्यवस्था के
१७ कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं यदि आपही पापी निकलें तो क्या मसीह पाप का सेवक है। ऐसा न हो।
१८ क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया यदि उसी को फिर बनाता हूं तो अपने आप को अपराधी ठहराता हूं।
१९ मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मरा कि
२० परमेश्वर के लिये जीऊं। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं और अब मैं जीता न रहा पर मसीह मुझ में जीता है और मैं शरीर में अब जो जीता हूं तो उस विश्वास में जीता हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये
२१ अपने आप को दे दिया। मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती तो मसीह का मरना व्यर्थ होता॥

३. हे निर्बुद्धि गलतियो किस ने तुम्हें मोह लिया है। तुम्हारी मानो आंखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया। मैं तुम से
२ केवल यह जानना चाहता हूं कि तुम ने आत्मा को क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से

३ पाया । क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति
पर आरंभ करके अब शरीर की रीति पर अन्त
४ करोगे । क्या तुम ने इतना दुख योंही उठाया
५ पर क्या जाने योंही नहीं । जो तुम्हें आत्मा
दान करता और तुम में सामर्थ के काम करवाता है वह
क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के सुसमाचार
६ से ऐसा करता है । इब्राहीम ने तो परमेश्वर पर विश्वास
किया[१] और यह उस के लिये धार्म्मिकता गिनी गई ।
७ सो यह जान लो कि जो विश्वास करनेवाले हैं वे ही
८ इब्राहीम के सन्तान हैं । और पवित्र शास्त्र ने पहिले ही
से यह जान कर कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास
से धर्म्मी ठहराएगा पहिले ही से इब्राहीम को यह
सुसमाचार सुना दिया कि तुझ में सब जातियां आशिष
९ पाएंगी । सो जो विश्वास करनेवाले हैं वे विश्वासी
१० इब्राहीम के साथ आशिष पाते हैं । सो जितने लोग
व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं वे सब स्राप के
अधीन हैं क्योंकि लिखा है जो कोई व्यवस्था की पुस्तक
में लिखी हुई सब बातों के करने को उन में बना नहीं
११ रहता वह स्रापित है । पर यह बात प्रगट है कि व्यवस्था
के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि
१२ धर्मी जन विश्वास से जीता रहेगा । पर व्यवस्था का
विश्वास से कुछ सम्बन्ध नहीं पर जो उन को मानेगा
१३ वह उन के कारण जीता रहेगा । मसीह ने जो हमारे
लिये स्रापित बना हम मोल लेकर व्यवस्था के स्राप से
छुड़ाया क्योंकि लिखा है जो कोई काठ पर लटकाया
१४ जाता है वह स्रापित है । यह इसलिये हुआ कि
इब्राहीम की आशिष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक
पहुंचे और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त
करें जिस की प्रतिज्ञा हुई है ॥

१५ हे भाइयो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि
मनुष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है तो न कोई
१६ उसे टालता और न उस में कुछ बढ़ाता है । फिर
प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को और उस के वंश को दी गईं ।
वह यह नहीं कहता कि वंशों को जैसे बहुतों
के विषय पर जैसे एक के विषय तेरे वंश को
१७ और वह मसीह है । पर मैं यह कहता हूं कि
जो वाचा परमेश्वर ने पहिले से पक्की की थी उस को
व्यवस्था चार सौ तीस बरस पीछे आकर नहीं टाल
१८ देती कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे । क्योंकि यदि मीरास
व्यवस्था से मिली है तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं परन्तु
१९ परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है । सो

(१) मू० । की प्रतीति की ।

व्यवस्था क्या रही वह अपराधों के कारण पीछे से दी
गई कि उस वंश के आने तक रहे जिस को प्रतिज्ञा दी
गई थी और वह स्वर्गदूतों के द्वारा एक बिचवई के
हाथ ठहराई गई । बिचवई तो एक का नहीं होता परन्तु २०
परमेश्वर एक ही है । सो क्या व्यवस्था परमेश्वर की २१
प्रतिज्ञाओं के विरोध में है । ऐसा न हो क्योंकि यदि
ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती तो सच-
मुच धार्म्मिकता व्यवस्था से होती । परन्तु पवित्र शास्त्र २२
ने सब को पाप के अधीन कर दिया कि वह प्रतिज्ञा
जिस का आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है
विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए ॥

पर विश्वास के आने से पहिले व्यवस्था की २३
अधीनता में हमारी रखवाली होती थी और उस
विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था हम
उसी के बन्धन में रहे । सो व्यवस्था मसीह तक २४
पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई है कि हम विश्वास
से धर्मी ठहरें । पर जब विश्वास आ चुका तो हम अब २५
शिक्षक के अधीन न रहे । क्योंकि तुम सब उस विश्वास २६
करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर के सन्तान
हो । और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिसमा २७
लिया उन्हों ने मसीह को पहिन लिया । अब न कोई २८
यहूदी रहा न यूनानी न कोई दास न स्वतंत्र न कोई
नर न नारी क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो ।
और यदि तुम मसीह के हो तो इब्राहीम के वंश और २९
प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस हो ॥

४. मैं यह कहता हूं कि वारिस जब तक
बालक है यद्यपि सब वस्तुओं का
स्वामी है पर उस में और दास में कुछ भेद नहीं । परन्तु
पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों
के वश में रहता है । वैसे ही हम भी जब बालक थे तो
संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए
थे । पर जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र
को भेजा जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न
हुआ, इसलिये कि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर
छुड़ा ले और हम को लेपालक होने का पद मिले । और
तुम जो पुत्र हो इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के
आत्मा को जो हे अब्बा हे पिता कहकर पुकारता है हमारे
हृदय में भेजा है । सो तू अब दास नहीं परन्तु पुत्र है और
जब पुत्र हुआ तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ ॥

भला तब तो तुम परमेश्वर को न जान कर उन के
दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं । पर अब जो तुम
ने परमेश्वर को पहचाना बरन परमेश्वर ने तुम को पह-

चाना तो उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बात की ओर क्यों फिरते हो जिन के तुम फिर दास होना १० चाहते हो। तुम दिनों और महीनों और नियत समयों ११ और बरसों को मानते हो। मैं तुम्हारे विषय डरता हूं कहीं ऐसा न हो कि जो परिश्रम मैं ने तुम्हारे लिये किया है वह व्यर्थ ठहरे॥

१२ हे भाइयो मैं तुम से बिनती करता हूं तुम मेरे समान हो जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं १३ तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। पर तुम जानते हो कि पहिले पहिल मैं ने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें १४ सुसमाचार सुनाया। और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी तुच्छ न जाना न उस से घिन की और परमेश्वर के दूत वरन मसीह के १५ समान मुझे ग्रहण किया। तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहां गया। मैं तुम्हारा गवाह हूं कि यदि हो सकता तो तुम अपनी आंखें भी निकालकर मुझे दे देते। १६ तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी १७ बन गया हूं। वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं पर भली मनसा से नहीं वरन तुम्हें अलग कराना चाहते हैं १८ कि तुम उन्हीं को मित्र बनाना चाहो। पर यह भी अच्छा है कि भली बात में हर समय मित्र बनाने का यत्न किया जाए न केवल उसी समय कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता १९ हूं। हे मेरे बालको जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जनने की सी २० पीड़ें सहता हूं, जी चाहता है कि अब तुम्हारे पास होकर और ही प्रकार से बोलूं क्योंकि तुम्हारे विषय मुझे सन्देह है॥

२१ तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो मुझ २२ से कहो क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते। यह लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए एक दासी से और एक २३ स्वतंत्र स्त्री से। पर जो दासी से हुआ वह शारीरिक रीति से जन्मा और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ वह प्रतिज्ञा के अनु- २४ सार जन्मा। इन बातों में दृष्टान्त है ये स्त्रियां मानो दो वाचा हैं एक तो सीना पहाड़ की जिस से दास ही २५ उत्पन्न होते हैं और वह हाजिरा है। और हाजिरा मानो अरब का सीना पहाड़ है और अब की यरूशलेम के तुल्य २६ है और अपने बालकों समेत दासत्व में है। पर ऊपर की २७ यरूशलेम स्वतंत्र है और वह हमारी माता है। क्योंकि लिखा है हे बांझ तू जो नहीं जनती आनन्द कर तू जिस को पीड़ें नहीं लगतीं गला खोलकर जय जयकार कर क्योंकि त्यागी हुई के सन्तान सुहागिन के सन्तान से भी २८ बहुत हैं। हे भाइयो हम इसहाक की नाईं प्रतिज्ञा के सन्तान हैं। और जैसा उस समय शरीर के अनुसार २९ जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था वैसा ही अब भी होता है। परन्तु पवित्र शास्त्र क्या ३० कहता है। दासी और उस के पुत्र को निकाल दे क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ वारिस न होगा। सो हे भाइयो हम दासी के नहीं पर स्वतंत्र स्त्री ३१ के सन्तान हैं। मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें

५. स्वतंत्र किया है सो इस में बने रहो और दासत्व के जुए में फिर न जुतो॥

देखो मैं पौलुस तुम से कहता हूं कि यदि खतना २ कराओगे तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। फिर ३ भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूं कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी। तुम जो व्यवस्था के ४ द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो। क्योंकि आत्मा के कारण हम ५ विश्वास से आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं। और मसीह यीशु में न खतना न खतना रहित होना ६ कुछ काम का है पर विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है। तुम तो भली भांति दौड़ रहे थे अब किस ने तुम्हें रोक ७ दिया कि सत्य को न मानो। ऐसी सीख तुम्हारे बुलाने- ८ वाले की ओर से नहीं। थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए ९ आटे को खमीर कर डालता है। मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय १० भरोसा रखता हूं कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा पर जो तुम्हें घबरा देता है वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा। पर हे भाइयो यदि मैं अब तक खतना ११ का प्रचार करता हूं तो क्यों अब तक सताया जाता हूं। फिर क्रूस की ठोकर जाती रही। भला होता कि जो तुम्हें १२ डांवाडोल करते हैं वे अपने ही को काट डालते॥

हे भाइयो तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए १३ पर ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती १४ है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। पर १५ यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो तो चौकस रहो कि एक दूसरे का सत्यानाश न करो॥

पर मैं कहता हूं आत्मा के अनुसार चलो तो तुम १६ शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि १७ शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है और ये एक दूसरे के विरोधी हैं इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाये चलते हो तो व्यवस्था के १८

१९ अधीन न रहे। शरीर के काम प्रगट हैं सो ये हैं व्यभि-
२० चार गन्दे काम लुचपन, मूर्त्ति पूजा टोना बैर झगड़ा
२१ ईर्षा क्रोध विरोध फूट विधर्म्म। डाह मतवालपन लीला क्रीड़ा और इन के ऐसे और और काम इन के विषय में तुम को पहले से कहे देता हूं जैसा पहिले कह चुका हूं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस
२२ न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम आनन्द मेल धीरज
२३ कृपा भलाई विश्वास, नम्रता और संयम है ऐसे ऐसे कामों
२४ के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं उन्हों ने शरीर को उस के लालसाओं और अभिलाषों समेत क्रूस पर चढ़ाया है॥

२५ यदि हम आत्मा से जीते हैं तो आत्मा के अनुसार
२६ चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें और न एक दूसरे से डाह करें॥

६. हे भाइयो यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में फंस जाए तो तुम जो आत्मिक हो नम्रता[१] के साथ ऐसे को संभालो और अपनी भी
२ चौकसी रक्खो कि तू भी परीक्षा में न पड़े। एक दूसरे के भार उठाओ और यों मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।
३ क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ
४ समझता है तो अपने आप को धोखा देता है। पर हर एक अपने ही काम को जांच ले और तब दूसरे के विषय नहीं पर अपने ही विषय उस को घमण्ड करने की
५ जगह होगी। क्योंकि हर एक जन अपना ही बोझ उठाएगा॥

६ जो वचन की शिक्षा पाता है वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे। धोखा न खाओ
७ परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के
८ लिये बोता है वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिये बोता है वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। हम भले काम
९ करने में हियाव न छोड़ें क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। इसलिये जहां तक अवसर
१० मिले हम सब के साथ भलाई करें विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ॥

११ देखो मैं ने कैसे बड़े बड़े अक्षरों में तुम को अपने हाथ से लिखा है। जितने लोग शारीरिक दिखाव चाहते
१२ हैं वे तुम्हारा खतना करवाने पर बल देते हैं केवल इस लिये कि वे मसीह के क्रूस के कारण सताए न जाएं।
१३ क्योंकि खतना करानेवाले आप तो व्यवस्था पर नहीं चलते पर तुम्हारा खतना कराना इसलिये चाहते हैं कि
१४ तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें। पर ऐसा न हो कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरे लेखे
१५ और मैं संसार के लेखे क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। क्योंकि न खतना और न खतना रहित होना कुछ है पर नई
१६ सृष्टि। और जितने इस नियम पर चलें उन पर और परमेश्वर के इस्राईल पर शान्ति और दया होती रहे॥

१७ आगे को कोई मुझे दुख न दे क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिये फिरता हूं॥

१८ हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के साथ रहे। आमीन॥

(१) यू०। नम्रता के आत्मा।

इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री।

१. पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशिष[१] दी। जैसा उस ने हमें
४ जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया कि हम उस के निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और
५ अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उस के

(१) यू०। आशीष से आशिष।

६ लेपालक पुत्र हों, कि उस के उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंतमेंत दिया। ७ हम को उस में उस के लोहू के द्वारा छुटकारा अर्थात् अपराधों की क्षमा उस के उस अनुग्रह के धन के अनु- ८ सार मिला है, जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित ९ हम पर बहुतायत से किया, कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने १० अपने आप में ठान लिया था, कि समय समय[1] के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथिवी पर है सब कुछ वह मसीह में एकत्र ११ करे। उसी में, जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है १२ पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने। कि हम जिन्हों ने पहिले से मसीह पर आशा रक्खी थी उस की महिमा की १३ स्तुति के कारण हों। और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुम ने विश्वास किया प्रतिज्ञा किए हुए १४ पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उस के मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है कि उस की महिमा की स्तुति हो॥

१५ इस कारण मैं भी उस विश्वास का समाचार सुन कर जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और[2] सब पवित्र १६ लोगों पर प्रगट है, तुम्हारे लिये धन्यवाद करना नहीं छोड़ता और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता १७ हूं। कि हमारे प्रभु यीशु का परमेश्वर जो महिमा का पिता है तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश का आत्मा १८ दे। और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिमय हों कि तुम जानो कि उस के बुलाने से कैसी आशा होती है और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा १९ है। और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं कि कितनी महान् है उस की शक्ति के प्रभाव के उस २० कार्य्य के अनुसार, जो उस ने मसीह के विषय किया कि उस को मरे हुओं में से जिला कर स्वर्गीय स्थानों में २१ अपनी दहिनी ओर, सब प्रकार की प्रधानता और अधिकार और सामर्थ और प्रभुता के और हर एक नाम के ऊपर जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में २२ भी लिया जाएगा बैठाया। और सब कुछ उस के पांवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर सिर ठहरा कर २३ कलीसिया को दे दिया। यह उस की देह है और उसी की भरपूरी है जो सब में सब कुछ भरता है॥

(१) यू०। समयों। (२) या। तुम्हारा प्रेम जो सब पवित्र लोगों से है।

२.

और उस ने तुम्हें भी जिलाया जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे २ हुए थे। इन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में ३ काय्य करता है। इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे और शरीर और मन की मनसाएं पूरी करते थे और और लोगों के समान ४ स्वभाव ही से क्रोध के सन्तान थे। परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस ५ से उस ने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही ६ से तुम्हारा उद्धार हुआ है), और मसीह यीशु में उस के साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में उस के साथ ७ बैठाया। कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का महा ८ धन दिखाए। क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं ९ परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण ऐसा न हो १० कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उस के बनाए हुए हैं और मसीह यीशु में भले कामों के लिये सिरजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से तैयार किया कि हम उन्हें किया करें॥

११ इस कारण स्मरण करो कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो (और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं वे तुम को खतना रहित कहते हैं) १२ तुम लोग उस समय में मसीह से अलग और इस्राईल की प्रजा के पद से नियारे किए हुए और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे और आशाहीन और जगत में ईश्वर रहित १३ थे। पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे १४ मसीह के लोहू के द्वारा निकट किए गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है जिस ने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया। १५ और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। १६ और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को १७ एक देह में परमेश्वर से मिलाए। और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे दोनों को मेल १८ का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है। १९ इसलिये तुम अब ऊपरी लोग और विदेशी नहीं रहे

परन्तु पवित्र लोगों के संगी पुरवासी और परमेश्वर के
२० घराने के हो गए। और प्रेरितों और नबियों की नेव पर
जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है बनाए
२१ गए हो। जिस में सारी रचना एक साथ जुटकर प्रभु में
२२ एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी
आत्मा के द्वारा परमेश्वर का वासा होने के लिये एक
साथ बनाए जाते हो॥

३. इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्य जातियों के लिये मसीह यीशु का
२ बन्धुआ हूं—यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध
का समाचार सुना हो जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया।
३ अर्थात् यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट
४ हुआ जैसा मैं पहिले संक्षेप में लिख चुका हूं। जिस से
तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद
५ कहां तक समझता हूं। जो और और समयों में मनुष्यों
के सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था जैसा कि
आत्मा के द्वारा अब उस के पवित्र प्रेरितों और नबियों
६ पर प्रगट किया गया है। अर्थात् यह कि मसीह यीशु में
सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी
७ और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। और मैं
परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार जो उस की
सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया उस सुस-
८ माचार का सेवक बना। मुझ पर जो सब पवित्र लोगों
में से छोटे से भी छोटा हूं यह अनुग्रह हुआ कि मैं
अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार
९ सुनाऊं। और सब पर यह बात प्रकाश करूं कि उस
भेद का प्रबन्ध क्या है जो सब के सृजनहार परमेश्वर
१० में आदि से गुप्त था। इसलिये कि अब कलीसिया के
द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों
और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट
११ किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार जो उस ने
१२ हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। जिस में हम को उस
पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने
१३ का अधिकार है। इसलिये मैं बिनती करता हूं कि जो
क्लेश तुम्हारे लिये मुझे हो रहे हैं उन के कारण हियाव
न छोड़ो क्योंकि उन में तुम्हारी महिमा है॥

१४ मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता
१५ हूं, जिससे क्या स्वर्ग में क्या पृथिवी पर हर एक[१] घराने
१६ का नाम रक्खा जाता है। कि वह अपनी महिमा के धन
के अनुसार तुम्हें यह दे कि तुम उस के आत्मा से अपने
भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त हो जाओ,
१७ और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि
१८ तुम प्रेम में जड़ बंधे हुए और नेव डाले हुए, सब पवित्र
लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ कि उस की
चौड़ाई और लम्बाई और ऊंचाई और गहराई कितनी
१९ है, और मसीह के प्रेम को जानो जो ज्ञान से परे है कि
तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी लों भरपूर हो जाओ॥

२० अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और
समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है उस सामर्थ के
२१ अनुसार जो हम में कार्य्य करती है, कलीसिया में और
मसीह यीशु में उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी लों युगा-
नुयुग होती रहे। आमीन॥

४. सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं कि जिस बुलाहट
२ से तुम बुलाए गए थे उस के योग्य चाल चलो। अर्थात्
सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम
३ से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा
४ की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है और एक
ही आत्मा जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए
५ जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु एक ही विश्वास
६ एक ही बपतिसमा। सब का एक ही परमेश्वर और पिता
जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।
७ पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से
८ अनुग्रह मिला है। इसलिये वह कहता है कि वह ऊंचे
पर चढ़ा और बन्धुवाई को बांध ले गया और मनुष्यों
९ को दान दिए। (उस के चढ़ने से और क्या पाया जाता
है केवल यह कि वह पृथिवी की निचली जगहों में उतरा
१० भी था। जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश से
११ ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ भरपूर करे) और
उस ने कितनों को प्रेरित करके और कितनों को नबी
करके और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले करके और
कितनों को रखवाले और उपदेशक करके दे दिया।
१२ जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम
१३ किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक
कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की
पहचान में एक न हो जाएं और एक पूरा मनुष्य न
१४ बनें और मसीह के पूरे डील तक न बढ़ें। इसलिये कि
हम बालक न रहें जो मनुष्यों की ठगविद्या और चतु-
राई से उन के भ्रम की जुगतों की और उपदेश की हर
एक बयार से उछाले और इधर उधर घुमाए जाते हों।
१५ प्रेम में सत्य से चलते हुए सब बातों में उस में जो
१६ सिर है अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं। जिस से सारी देह

(१) या। सारे।

हर एक जोड़ के द्वारा एक साथ जुटकर और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उस में होता है अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए ॥

१७ सो मैं यह कहता हूं और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर १८ चलते हैं तुम अब फिर ऐसे न चलो। कि उन की बुद्धि अंधेरी हुई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है उन के मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के १९ जीवन से अलग किए हुए हैं। और वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा २० से किया करें। पर तुम ने मसीह को ऐसा नहीं सीखा। २१ जब कि तुम ने सचमुच उसी की सुनी और जैसा यीशु २२ में सत्य है उसी में सिखाए गए कि अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषों के २३ अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार डालो। और अपने २४ मन के आत्मिक स्वभाव में नए बनते जाओ। और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्म्मिकता और पवित्रता में सिरजा गया है ॥

२५ इस कारण झूठ बोलना छोड़ कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले क्योंकि हम आपस में एक दूसरे २६ के अंग हैं। क्रोध तो करो पर पाप न करो सूरज के डूबने २७ तक तुम्हारा कोप न रहे। और न शैतान[1] को अवसर २८ दो। चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे बरन भला काम करने में हाथों से मिहनत करे इसलिये कि जिसे प्रयोजन २९ हो उसे देने को उस के पास कुछ हो। कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिये अच्छी हो कि उस से सुननेवालों ३० पर अनुग्रह हो। और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को उदास न करो जिस से[2] तुम पर छुटकारे के दिन के ३१ लिये छाप दी गई। सब प्रकार की कड़वाहट और कोप और क्रोध और कलह और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम ३२ से दूर की जाए। और एक दूसरे पर कृपाल और करुणामय हो और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो ॥

५.

सो प्यारे बालकों की नाईं परमेश्वर के समान बनो। २ और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिए परमेश्वर ३ के आगे भेंट और बलिदान करके सौंप दिया। और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है वैसा तुम में व्यभिचार और किसी प्रकार के अशुद्ध काम या लोभ की चर्चा तक न ४ हो। और न निर्लज्जता न मूढ़ता की बातचीत की न ठट्ठे की क्योंकि ये बातें सोहतीं नहीं बरन धन्यवाद ही ५ सुना जाय। क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्यभिचारी या अशुद्ध जन या लोभी मनुष्य की जो मूरत पूजनेवाले के बराबर है मसीह और परमेश्वर के राज्य में ६ मीरास नहीं। कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा ७ न माननेवालों पर पड़ता है। सो तुम उन के साझी न ८ हो। क्योंकि तुम पहले अंधकार थे पर अब प्रभु में ज्योति ९ हो सो ज्योति के सन्तान की नाईं चलो। क्योंकि उजाले का फल सब प्रकार की भलाई और धार्म्मिकता और सत्य १०,११ है। और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है। और अंधकार के निष्फल कामों में भागी न हो बरन उन पर १२ उलाहना दो। क्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा १३ भी लाज की बात है। पर जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं क्योंकि जो १४ कुछ प्रगट किया जाता है वह ज्योति होता है। इस कारण वह कहता है हे सोनेवाले जाग और मरे हुओं में से जी उठ और मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी ॥

१५ सो ध्यान से देखो कि कैसी चाल चलते हो। १६ निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और १७ अवसर को बहुमोल समझो क्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण से निर्बुद्धि न हो पर समझो कि प्रभु की इच्छा १८ क्या है। और दाखरस से मतवाले न बनो कि इस से १९ लुचपन होता है पर आत्मा से भरपूर होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गान २० और कीर्त्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का २१ धन्यवाद करते रहो। और मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन हो ॥

२२ हे पत्नियो अपने अपने पति के ऐसे अधीन रहो २३ जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता २४ है। पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है वैसे पत्नियां २५ भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें। हे पतियो अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रक्खो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उस के लिये २६ दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से २७ शुद्ध करके पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी

(१) यू॰। इबलीस। (२) यू॰। में।

कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे जिस में न कलंक न झुर्री न कोई और ऐसी वस्तु हो बरन पवित्र और २८ निर्दोष हो। यों ही उचित है कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रक्खे जो अपनी पत्नी से प्रेम २९ रखता है वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रक्खा बरन उस को ३० पालता पोसता है जैसा मसीह भी कलीसिया को। इस- ३१ लिये कि हम उस की देह के अंग हैं। इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और ३२ वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है पर मैं ३३ मसीह और कलीसिया के विषय कहता हूं। पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रक्खे और पत्नी भी अपने पुरुष का भय माने॥

६. हे बालको प्रभु में अपने माता पिता का कहा मानो क्योंकि यह ठीक है। २ अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली ३ आज्ञा है जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला ४ हो और तू धरती पर बहुत दिन जीता रहे। और हे बच्चेवालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा और चितावनी देते हुए उन का पालन करो॥

५ हे दासो जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं अपने मन की सीधाई से डरते और कांपते हुए जैसे ६ मसीह की वैसे ही उन की आज्ञा मानो। और मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिये सेवा न करो पर मसीह के दासों की नाईं मन से परमेश्वर की ७ इच्छा पर चलो। और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं ८ परन्तु प्रभु की जानकर सुमति से करो। क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा चाहे दास हो ९ चाहे स्वतंत्र प्रभु से वैसा ही पाएगा। और हे स्वामियो तुम भी धमकियां छोड़ कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो क्योंकि जानते हो कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है और वह किसी का पक्ष नहीं करता॥

१० निदान प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में ११ बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम शैतान[१] की जुगतों के सामने खड़े रह सको। १२ क्योंकि हमारा यह लड़ना लोहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से और आकाश में की दुष्टता की १३ आत्मिक सेना से है। इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब १४ कुछ पूरा करके खड़े रह सको। सो सत्य से अपनी कमर १५ कसकर और धार्म्मिकता की झिलम पहिन कर, और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर खड़े १६ रहो। और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा १७ सकोगे। और उद्धार का टोप और आत्मा की तलवार १८ जो परमेश्वर का वचन है ले लो। और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और बिनती करते रहो और इसी लिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये १९ लगातार बिनती किया करो। और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा वचन दिया जाए कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बताऊं जिस के लिये मैं २० जंजीर से जकड़ा हुआ दूत हूं। और यह भी कि मैं उस के विषय जैसा मुझे चाहिए हियाव से बोलूं॥

२१ और इसलिये कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं तुखिकुस जो प्यारा भाई और प्रभु में २२ विश्वास योग्य सेवक है तुम्हें सब बातें बताएगा। उसे मैं ने तुम्हारे पास इसी लिये भेजा है कि तुम हमारी दशा को जानो और वह तुम्हारे मन को शान्ति दे॥

२३ परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से २४ भाइयों को शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले। जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अटल प्रेम रखते हैं उन सब पर अनुग्रह होता रहे॥

(१) यू० । डबलास ।

फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री।

१. मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र लोगों के नाम जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं अध्यक्षों[1] २ और सेवकों समेत। हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं तब तब अपने ४ परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। और जब कभी तुम सब के लिये बिनती करता हूं तो सदा आनन्द के साथ ५ बिनती करता हूं। इसलिये कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में साझी रहे हो। ६ और मुझे इस बात का भरोसा है कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है वह उसे यीशु मसीह के ७ दिन तक पूरा करेगा। जैसा ठीक है कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही विचार करूं इस कारण कि तुम मेरे मन में आ बसे हो और मेरी क़ैद में और सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण देने में तुम सब मेरे साथ अनु- ८ ग्रह में भागी हो। इस में परमेश्वर मेरा गवाह है कि मसीह यीशु की सी करुणा से मैं कैसे तुम सब की लालसा ९ करता हूं। और मैं यह प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी १० बढ़ता जाए। यहां तक कि तुम उत्तम से उत्तम बातें प्रिय जानो और मसीह के दिन तक सच्चे रहो और ११ ठोकर न खाओ। और धार्म्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं भरपूर हो कि परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे॥

१२ हे भाइयो मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि जो मुझ पर बीता है उस से सुसमाचार की बढ़ती ही १३ हुई है। यहां तक कि सारी राज्यपलटन में और और सब को यह प्रगट हो गया कि मैं मसीह के लिये क़ैद १४ हूं। और प्रभु में जो भाई हैं उन में से बहुतेरे मेरे क़ैद होने के कारण हियाव बांध कर परमेश्वर का वचन बेध- १५ड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं। कितने तो डाह और झगड़े से भी और कितने भले मन से मसीह १६ का प्रचार करते हैं। कई एक तो यह जान कर कि मैं सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया हूं प्रेम से सुनाते हैं। और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध १७ से मसीह की कथा सुनाते हैं यह समझ कर कि क़ैद होने के सिवा मुझे और क्लेश दें। सो क्या हुआ। १८ केवल यह कि हर प्रकार से चाहे बहाने से चाहे सच्चाई से मसीह की कथा सुनाई जाती है और मैं इस से आनन्दित हूं और आनन्दित रहूंगा। क्योंकि मैं जानता १९ हूं कि तुम्हारी बिनती के द्वारा और यीशु मसीह के आत्मा के दान के द्वारा इस का फल मेरा उद्धार होगा। मैं तो यही आशा जी लगा कर रखता हूं कि मैं किसी २० बात में लज्जा न खाऊंगा पर जैसे सदा सब प्रकार से हियाव करता आया हूं वैसे ही आगे को भी करता रहूंगा और इस रीति से चाहे जीवन चाहे मृत्यु के द्वारा मेरी देह से मसीह की बड़ाई होगी। क्योंकि मेरे लिये २१ जीना मसीह है और मरना लाभ है। पर यदि शरीर में २२ जीता रहना है तो यह मेरे लिये काम का फल है और मैं नहीं जानता कि किस को चुनूं। क्योंकि मैं दोनों के २३ बीच अधर में लटका हूं जी तो चाहता है कि कूच कर के मसीह के पास जा रहूं क्योंकि यह और भी बहुत अच्छा है। पर शरीर में रहना तुम्हारे लिये और भी २४ अवश्य है। और इस भरोसे से मैं जानता हूं कि मैं २५ जीता रहूंगा और तुम सब के साथ बना रहूंगा कि तुम्हारे विश्वास की बढ़ती और आनन्द हो। इसलिये २६ कि जो घमण्ड तुम मेरे विषय करते हो वह मेरे तुम्हारे पास फिर आने से मसीह यीशु में बढ़ जाए। इतना हो कि तुम्हारा चालचलन मसीह के सुसमाचार २७ के योग्य हो कि मैं चाहे आकर तुम्हें देखूं चाहे न भी आऊं तुम्हारे विषय यह सुनूं कि तुम एक ही आत्मा में बने रहते हो और एक मन होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये यत्न करते रहते हो। और किसी बात २८ में विरोधियों से भय नहीं खाते। यह उन के लिए तो विनाश का चिन्ह है पर तुम्हारे लिये उद्धार का और यह परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि मसीह के २९ लिये तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उस के लिये दुख भी उठाओ। और ३० तुम्हें वैसी ही कुश्ती करनी है जैसी तुम ने मुझ में देखी और अब भी सुनते हो कि मैं वैसा ही करता हूं॥

(१) या। बिषपों। (२) या डाकनों।

२. सो यदि मसीह में कुछ शान्ति यदि प्रेम से कुछ दिलासा यदि कुछ आत्मा की सह- २ भागिता यदि कुछ करुणा और दया है, तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक ही मन हो और एक ही प्रेम ३ एक ही चित्त एक ही मनसा रक्खो। विरोध या झूठी बड़ाई से कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को ४ अपने से बड़ा समझना। हर एक अपने हित की नहीं ५ बरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करे। जैसा मसीह ६ यीशु का वैसा ही तुम्हारा भी मन हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर परमेश्वर के बराबर होना लूट ७ न समझा। बरन अपने आप को ऐसा खाली कर दिया कि दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता ८ में हो गया। और मनुष्य के से डौल पर दिखाई देकर अपने आप को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी ९ रहा कि मृत्यु बरन क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उस को बहुत महान भी किया और १० उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और जो पृथिवी पर और जो पृथिवी के नीचे ११ हैं वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ मान ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥

१२ सो हे मेरे प्यारो जैसे तुम सदा आज्ञा मानते आए हो वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते पर विशेष करके अब मेरे दूर रहते भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य्य पूरा करते जाओ। १३ क्योंकि परमेश्वर ही है जो अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों करने का प्रभाव १४ डालता है। सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना १५ विवाद के किया करो। कि तुम निर्दोष और भोले बनो और टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलङ्क १६ सन्तान बने रहो, जिन के बीच तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाईं दिखाई देते हो कि मसीह के दिन घमण्ड करने का कारण हो कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना अकारथ १७ गया। और यदि तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ मेरा लोहू भी बहाया जाए तौभी मैं आनन्दित हूं और तुम सब के साथ आनन्द करता हूं। १८ वैसे ही तुम भी आनन्दित हो और मेरे साथ आनन्द करो॥

१९ मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास जल्द भेजूंगा कि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे २० शान्ति मिले। क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं जो मन से तुम्हारी चिन्ता करे। २१ क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं न यीशु मसीह की। २२ पर उस को तो तुम ने परखा और जान भी लिया है कि जैसे पुत्र पिता के साथ करता है वैसे ही उस ने सुसमाचार फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया। २३ सो मुझे आशा है कि ज्यों ही मुझे जान पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी त्यों ही मैं उसे तुरन्त भेजूंगा। २४ और मुझे प्रभु में भरोसा है कि मैं आप भी शीघ्र आऊंगा। २५ पर मैं ने इपफ्रुदीतुस को जो मेरा भाई और सहकर्मी और संगी योद्धा और तुम्हारा दूत और ज़रूरी बातों में मेरी सेवा करनेवाला है तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा। २६ क्योंकि उस का जी तुम सब में लगा था और बहुत घबरा गया था क्योंकि तुम ने सुना था कि वह बीमार हो गया था। २७ और वह बीमार तो हो गया यहां तक कि मरने पर था परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की और केवल उस ही पर नहीं पर मुझ पर भी कि मुझे शोक पर शोक न हो। २८ सो मैं ने उसे भेजने का और भी यत्न किया कि तुम उस से भेंट कर के फिर आनन्दित हो और मेरा शोक घट जाए। २९ इसलिये तुम प्रभु में उस से बहुत आनन्द के साथ भेंट करना और ऐसों का आदर करना। ३० क्योंकि वह मसीह के काम के लिये अपने प्राण पर जोखिम उठाकर मरने के निकट हो गया था इसलिये कि मेरी सेवा करने में तुम्हारी घटी पूरी करे॥

३. निदान हे मेरे भाइयो प्रभु में आनन्दित रहो। वे ही बातें तुम को बार बार लिखने में मुझे तो कुछ कष्ट नहीं होता और इस में तुम्हारी कुशलता है। २ कुत्तों से चौकस रहो उन बुरे काम करनेवालों से चौकस रहो उन काट कूट करनेवालों से चौकस रहो। ३ क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा से उपासना करते हैं और मसीह यीशु के विषय घमण्ड करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते। ४ पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता यदि और किसी को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो तो मैं उस से भी बढ़ कर रख सकता हूं। ५ आठवें दिन मेरा खतना हुआ इस्राईल के वंश और बिन्यामीन के गोत्र का हूं इब्रानियों का इब्रानी हूं व्यवस्था के विषय कहो तो फरीसी। ६ उत्साह के विषय कहो तो कलीसिया का सतानेवाला और व्यवस्था की धार्म्मिकता के विषय कहो तो निर्दोष था। ७ पर जो जो बातें मेरे लाभ की थीं उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया। ८ बरन मैं अपने

प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं और उस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई और उन्हें कूड़ा सा सम-
९ झता हूं कि मैं मसीह को लाभ में पाऊं, और उस में पाया जाऊं न कि उस धार्म्मिकता के साथ जो व्यवस्था से है बरन उस धार्म्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने से है और परमेश्वर की ओर से विश्वास
१० करने पर मिलती है। और मैं उस को और उस के जी उठने की सामर्थ को और उस के साथ दुखों में भागी होने का मर्म जानूं और उस की मृत्यु की समानता
११ को पाऊं, कि मैं किसी रीति से मरे हुओं में से जी
१२ उठने के पद तक पहुंचूं। यह नहीं कि मैं पा चुका हूं या सिद्ध हो चुका हूं पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा जाता हूं जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा
१३ था। हे भाइयो मैं नहीं समझता कि मैं पकड़ चुका हूं पर यह एक काम करता हूं कि जो बातें पीछे रह गईं उन को भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ा हुआ,
१४ निशाने की ओर दौड़ा जाता हूं कि वह इनाम पाऊं जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर
१५ बुलाया है। सो हम में से जितने सिद्ध हैं यही मन रक्खें और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही मन
१६ होए तो परमेश्वर वह भी तुम पर प्रगट करेगा। तौभी जहां तक हम पहुंचे हैं उसी के अनुसार चलें॥

१७ हे भाइयो तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो और उन्हें देख रक्खो जो इस रीति पर चलते हैं जिस
१८ का नमूना तुम हम में देखते हो। क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं जिन की चर्चा मैं ने तुम से बार बार की और अब भी रो रोकर कहता हूं कि वे मसीह के
१९ क्रूस के वैरी हैं। उन का अन्त विनाश है उन का ईश्वर पेट है वे अपनी लज्जा पर बड़ाई करते हैं और पृथिवी
२० पर की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है और हम उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु
२१ मसीह के वहां से आने की बाट जोहते रहते हैं। वह उस प्रभाव के अनुसार जिस के द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है हमारी दीन हीन देह का रूप बदलकर अपनी महिमा की देह के समान बना देगा॥

४. सो हे मेरे प्यारे भाइयो जिन में मेरा जी लगा रहता है जो मेरे आनन्द और मुकुट हो हे प्यारो प्रभु में ऐसे ही बने रहो॥

२ मैं यूओदिया को समझाता हूं और सुन्तुखे को
३ भी कि वे प्रभु में एक मन होएं। और हे सच्चे जोड़ीदार मैं तुझ से भी बिनती करता हूं उन स्त्रियों की सहायता कर क्योंकि उन्हों ने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में क्लेमेंस और मेरे उन और सहकर्मियों समेत जिन के नाम जीवन की पुस्तक में हैं बहुत परिश्रम किया॥

४ प्रभु में सदा आनन्दित रहो मैं फिर कहता हूं
५ आनन्दित रहो। तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर
६ प्रगट हो प्रभु निकट है। किसी बात की चिन्ता न करो पर हर एक बात में तुम्हारे निवेदन धन्यवाद के साथ प्रर्थना और बिनती के द्वारा परमेश्वर के सामने
७ जनाए जाएं। और परमेश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है मसीह यीशु में तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों की रक्षा करेगी॥

८ निदान हे भाइयो जो जो बातें सत्य हैं जो जो बातें आदर के योग्य हैं जो जो बातें न्याय की हैं जो जो बातें शुद्ध हैं जो जो बातें सुहावनी हैं जो जो बातें मनभावनी[१] हैं यदि कोई सद्गुण और कोई प्रशंसा
९ की बातें हों तो इन ही का विचार किया करो। जो बातें तुम ने सीखीं और ग्रहण कीं और सुनीं और मुझ में देखीं वे ही बातें किया करना और शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा॥

१० मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ कि अब इतने दिन के पीछे तुम्हारी मेरे विषय चिन्ता फिर पनपी है। तुम ऐसी चिन्ता करते तो थे पर तुम्हें अव-
११ सर न मिला। यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूं क्योंकि मैं सीख चुका हूं कि जिस दशा में
१२ हूं उस में सन्तोष करूं। मैं दीन होना भी और बढ़ना भी जानता हूं मैं ने हर बात और हर दशा में तृप्त होना
१३ और भूखा रहना और बढ़ना घटना सीखा है। उस में जो मुझे सामर्थ देता है मैं सब कुछ कर सकता हूं।
१४ तौ भी तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश में मेरे साथी
१५ हुए। और हे फिलिप्पियो तुम यह भी जानते हो कि सुसमाचार के फैलाने के आरम्भ में जब मैं मकिदुनिया से निकला तो तुम्हें छोड़ और कोई मण्डली देने लेने
१६ के विषय मेरे साथ भागी न हुई। जैसे कि जब मैं थिस्सलुनीके में था तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या बरन दो बार कुछ भेजा था।
१७ यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं पर मैं वह फल चाहता
१८ हूं जो तुम्हारे लाभ के लिये बढ़ता जाए। मेरे पास सब कुछ है बरन बहुतायत से भी है। जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ भेजीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है

(१) या। सुख्यात।

१९ जो परमेश्वर को भाता है। और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है २० तुम्हारी हर एक घटी पूरी करेगा। हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन ॥

२१ मसीह यीशु में हर एक पवित्र जन को नमस्कार। जो भाई मेरे साथ हैं उन का तुम को नमस्कार। सब २२ पवित्र लोगों का निज करके उन का जो कैसर के घराने के हैं तुम को नमस्कार ॥

२३ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के साथ हो ॥

कुलुस्सियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री।

---

१. पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का २ प्रेरित है और भाई तीमुथियुस की ओर से, मसीह में उन पवित्र लोगों और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में हैं ॥

हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे ॥

३ हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर का धन्यवाद करते ४ हैं। क्योंकि हम ने सुना है कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो, ५ उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रक्खी हुई है जिस की कथा तुम सुसमाचार के सत्य ६ वचन में सुन चुके हो, जो तुम्हारे पास पहुंचा और जैसा सारे जगत में भी फल लाता और बढ़ता जाता है और जिस दिन से तुम ने उस को सुना और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहचाना तुम में भी ऐसा ही करता है। ७ उसी की शिक्षा तुम ने हमारे प्यारे संगी दास इपफ्रास से पाई जो हमारे लिये मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है। ८ उसी ने तुम्हारा प्रेम जो आत्मा में है हमें बताया ॥

९ इसी लिये जिस दिन से यह सुना है हम भी तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह मांगना नहीं छोड़ते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में भरपूर हो जाओ। १० जिस से कि तुम्हारा चालचलन प्रभु के योग्य हो कि वह सब प्रकार से प्रसन्न हो और तुम में हर प्रकार के अच्छे काम का फल लगे और परमेश्वर की पहचान में ११ बढ़ते जाओ। और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ यहां लों कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता १२ दिखा सको। और पिता का धन्यवाद करते रहो जिस ने हमें इस योग्य किया कि पवित्र लोगों की मीरास का जो ज्योति में है अंश पाएं। १३ वही हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने उस प्रिय पुत्र के राज्य में लाया। १४ जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा मिलती १५ है। वह तो अनदेखे परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी १६ सृष्टि का पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुएं सिरजी गईं स्वर्ग की और पृथिवी की देखी और अनदेखी क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं क्या प्रधानताएं क्या अधिकार सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के १७ लिये सिरजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं से पहिले १८ है और सब वस्तुएं उसी में बनी रहती हैं। और वही देह का अर्थात् कलीसिया का सिर है कि वह आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब १९ बातों में वही प्रधान हो। क्योंकि पिता को यह अच्छा २० लगा कि उस में सारी भरपूरी वास करे। और उस के क्रूस पर बहाए हुए लोहू के द्वारा मेल करके सब वस्तुओं को चाहे वे पृथिवी पर की हों चाहे स्वर्ग में की २१ अपने साथ उसी के द्वारा मिलाप कराए। और उस ने अब उस की शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हें जो पहिले अलग किए हुए थे और बुरे कामों के कारण २२ मन से बैरी थे मिला लिया। कि तुम्हें अपने सामने २३ पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष हाज़िर करे। यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना न छोड़ो जिस का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया और जिस का मैं पौलुस सेवक बना ॥

२४ अब मैं उन दुखों में होकर आनन्द करता हूं जो

तुम्हारे लिये उठाता हूं और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये अर्थात् कलीसिया के लिये अपने २५ शरीर में पूरी करता हूं। उस का मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना जो तुम्हारे लिये मुझे सौंप दिया गया कि परमेश्वर के वचन का पूरा पूरा प्रचार २६ करूं। अर्थात् उस भेद को जो समय समय और पीढ़ी पीढ़ी के लोगों से गुप्त तो रहा पर अब उस के पवित्र २७ लोगों पर प्रगट हुआ है। जिन्हें परमेश्वर ने बताना चाहा कि अन्यजातियों में इस भेद की महिमा का धन क्या है और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा २८ है तुम में रहता है। जिस का प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चिताते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं इसलिये कि हर एक मनुष्य को २९ मसीह में सिद्ध करके हाज़िर करें। और इसी के लिये मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ सहित गुणकारी होती है यत्न करके परिश्रम भी करता हूं।

२. मैं चाहता हूं कि तुम जान लो कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं और उन सब के लिये जिन्हों ने शरीर में मेरा मुंह नहीं देखा क्या ही २ यत्न करता हूं। कि उन के मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें कि वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह ३ को पहचानें। जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार[1] ४ छिपे हैं। यह मैं इसलिये कहता हूं कि कोई तुम्हें ५ लुभानेवाली बातों से धोखा न दे। क्योंकि मैं जो शरीर के भाव से तुम से दूर हूं तौ भी आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ हूं और तुम्हारा विधि-अनुसार चाल और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह पर है स्थिरता देखकर आनन्दित होता हूं॥

६ सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके मान ७ लिया है वैसे ही उसी में चलो। और उसी में तुम जड़ पकड़ते और बनते जाओ और जैसे तुम सिखाए गए विश्वास में पक्के होते जाओ और धन्यवाद पर धन्यवाद करते रहो॥

८ चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्त्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर[2] न कर ले जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार हैं ९ पर मसीह के अनुसार नहीं। क्योंकि उस में ईश्वरत्व १० की सारी भरपूरी सदेह वास करती है। और उस में तुम भरपूर हुए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार ११ का शिर है। उसी में तुम्हारा ऐसा ख़तना हुआ है जो हाथ से नहीं होता पर मसीह का ख़तना जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है। और बपतिस्मा लेने में १२ उसी के साथ गाड़े गए और उसी में परमेश्वर के कार्य्य पर विश्वास करके जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया उस के साथ जी भी उठे। और उस ने तुम्हें भी १३ जो अपराधों और अपने शरीर की ख़तना रहित दशा में मरे हुए थे उस के साथ जिलाया और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया। और विधियों का लेख जो १४ हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला और उस को क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। और प्रधानताओं और अधिकारों को हटा १५ कर[3] उन्हें खुल्लम खुल्ला तमाशा बना लिया और क्रूस के कारण उन पर जयजयकार किया॥

इसलिये खाने पीने या पर्व या नए चांद या १६ विश्रामवारों के विषय तुम्हारा कोई फ़ैसला न करे। कि १७ ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं पर मूल[4] मसीह का है। कोई जो अपनी इच्छा का दीनता और स्वर्गदूतों की १८ पूजा करनेवाला हो तुम्हें प्रतिफल से रहित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है। और सिर को धारण १९ नहीं करता जिस से सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पाली जाकर और एक साथ गठकर परमेश्वर की बढ़ती से बढ़ती जाती है॥

जब कि तुम मसीह के साथ संसार की आदि २० शिक्षा की ओर मर गए हो तो क्यों मानो संसार में जीते हुए ऐसी विधियों के वश में रहते हो, कि यह न २१ छूना न चखना और न हाथ लगाना। ये सारी वस्तु २२ काम में लाते लाते नाश हो जाएंगी यह तो मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार है। ऐसी विधियां २३ निज इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति और दीनता और देह को कष्ट देने के भाव से ज्ञान का नाम तो पाती हैं पर शारीरिक लालसाओं के रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता॥

३. इसलिये जब तुम मसीह के साथ जिलाए गये तो ऊपर की वस्तुओं की खोज में रहो जहां मसीह परमेश्वर के दहिने बैठा है। पृथिवी पर २ की नहीं पर ऊपर की वस्तुओं पर मन लगाओ। क्योंकि ३ तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह हमारा जीवन ४ प्रगट होगा तो तुम भी उस के साथ महिमा सहित प्रगट किये जाओगे॥

(१) वा। धन। (२) वा। लूट न लें।

(३) वा। लूटकर। (४) यू०। देह।

५ इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथिवी पर हैं अर्थात् व्यभिचार अशुद्धता कुकामना बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्त्ति पूजा के बराबर है[१]। ६ इन ही के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता है। ७ और तुम भी जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। ८ पर अब तुम भी क्रोध कोप बैरभाव निन्दा और मुंह से गालियां निकालना ये सब बातें छोड़ दो। ९ एक दूसरे से झूठ न बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उस के कामों समेत उतार डाला है। १० और नए को पहिन लिया जो अपने सृजनहार के रूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। ११ उस में न यूनानी न यहूदी न ख़तना किया हुआ न ख़तना रहित न जङ्गली न स्कूती न दास और न स्वतंत्र है पर मसीह सब कुछ और सब में है॥

१२ सो परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्यारे हैं बड़ी करुणा और भलाई और दीनता और नम्रता और सहनशीलता धारण करो। १३ और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करना जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया वैसे ही तुम भी करो। १४ और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का बंध है धारण करो। १५ और मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह हो कर बुलाए भी गए तुम्हारे हृदय में राज्य करे और तुम धन्यवाद करो। १६ मसीह का वचन अपनों में बहुतायत से बसने दो और सारे ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। १७ और वचन से या काम से जो कुछ करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उस के द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो॥

१८ हे पत्नियो जैसा प्रभु में सोहता है वैसा ही अपने अपने पति के अधीन रहो। १९ हे पतियो अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रक्खो और उन से कड़वे न हो। २० हे बालको सब बातों में अपने अपने माता पिता की आज्ञा माना करो क्योंकि यह प्रभु को भाता है। २१ हे बच्चेवालो अपने बालकों को न खिजाओ न हो कि ये उदास हो जाएं। २२ हे दासो जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिये नहीं पर मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से सब बातों में उन की आज्ञा मानो। २३ और जो कुछ तुम करो जी से करो यह समझ कर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो। २४ क्योंकि जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी। तुम प्रभु मसीह के दास हो। २५ और जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का फल पाएगा वहां किसी का पक्षपात नहीं॥

४. हे स्वामियो अपने अपने दासों के साथ न्याय और ठीक ठीक व्यवहार करो यह समझ कर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है॥

२ प्रार्थना में लगे रहो और धन्यवाद के साथ उस में जागते रहो। ३ और इस के साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करते रहो कि परमेश्वर हमारे लिये वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे कि हम मसीह के उस भेद के विषय बोल सकें जिस के कारण मैं क़ैद हुआ हूं। ४ और जैसा मुझे बोलना चाहिए वैसा ही उसे प्रगट करूं। ५ अवसर को बहुमोल समझ कर बाहरवालों के साथ बुद्धि से बरताव करो। ६ तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो कि तुम जानो कि हर एक को किस रीति से उत्तर देना चाहिए॥

७ प्यारा भाई और विश्वासयोग्य सेवक तुखिकुस जो प्रभु में मेरा संगी दास है मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा। ८ उसे मैं ने इसलिये तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो और वह तुम्हारे मन को शान्ति दे। ९ और उस के साथ उनेसिमुस को भी भेजा है जो विश्वास योग्य और प्यारा भाई और तुम ही में से है ये तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे॥

१० अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ क़ैद है और मरकुस जो बरनबा का भाई लगता है जिस के विषय तुम ने आज्ञा पाई यदि वह तुम्हारे पास आए तो उस से अच्छी तरह मिलना। ११ और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है इन तीनों का तुम्हें नमस्कार। ख़तना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे साथ काम करते हैं और उन से मुझे शान्ति मिली। १२ इपफ्रास जो तुम में से है और मसीह यीशु का दास है तुम से नमस्कार कहता और सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में यत्न करता है कि तुम सिद्ध होकर परमेश्वर की सारी इच्छा पर निश्चय के साथ स्थिर रहो। १३ मैं उस का गवाह हूं कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया और हियरापुलिसवालों के लिये बड़ा यत्न करता रहता है। १४ प्यारा वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार।

(१) वा। मूरतपूजा है।

१५ लौदीकिया के भाइयों को और नुमफास और उन के
१६ घर में की मण्डली को नमस्कार। और जब यह पत्री तुम्हारे यहां पढ़ ली जाए तो ऐसा करना कि लौदीकिया की मण्डली में भी पढ़ी जाए और वह पत्री जो
१७ लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना। फिर अर्खिप्पुस से कहना कि जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है उसे चौकसी के साथ पूरी करना॥

१८ मुझ पौलुस का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार। मेरे बन्धनों को स्मरण रखना। अनुग्रह तुम पर होता रहे॥

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री।

१. पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की मण्डली के नाम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है॥ अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे॥

२ हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय परमेश्वर का धन्यवाद करते
३ हैं। और अपने परमेश्वर और पिता के साम्हने तुम्हारे विश्वास के काम और प्रेम का परिश्रम और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण
४ करते हैं। और हे भाइयो परमेश्वर के प्यारो हम जानते
५ हैं कि तुम चुने हुए हो। क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही बरन सामर्थ और पवित्र आत्मा और बड़े निश्चय से पहुंचा है जैसा तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम में कैसे बन गए थे।
६ और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने
७ लगे। यहां तक कि मकिदुनिया और अखया में के सब
८ विश्वासियों के लिये तुम नमूना बने। क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है कि हमें कहने की
९ आवश्यकता नहीं। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ और तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे कि जीवते
१० और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। और उस के पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट देखो जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया अर्थात् यीशु की जो हमें आनेवाले क्रोध से बचाता है॥

२. हे भाइयो तुम आप जानते हो कि हमारा
२ तुम्हारे पास आना व्यर्थ न हुआ। पर तुम आप ही जानते हो कि पहिले पहिल फिलिप्पी में दुख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी
३ विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएं। क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम में और न अशुद्धता से और न छल के साथ
४ है। पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा हम वैसा ही बोलते हैं और इस में मनुष्यों को नहीं परन्तु परमेश्वर को जो हमारे मनों को जांचता है प्रसन्न
५ करते हैं। क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे और न लोभ के लिये
६ बहाना करते थे परमेश्वर गवाह है। और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे तौभी हम मनुष्यों से आदर न चाहते थे न तुम से न
७ और किसी से, पर जिस तरह माता अपने बालकों को पालती पोसती है वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच रह
८ कर कोमलता दिखाई। वैसे ही हम तुम पर मया करते हुए न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे इसलिये कि तुम हमारे
९ प्यारे हो गए थे। क्योंकि हे भाइयो तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो कि हम ने इसलिये रात दिन काम धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुम में से किसी पर भार न हों।
१० तुम आप ही गवाह हो और परमेश्वर भी कि तुम्हारे बीच जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और धर्म
११ और निर्दोषता से रहे। जैसे तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बरताव करता है वैसे ही हम

तुम में से हर एक को भी उपदेश करते और शान्ति देते
१२ और समझाते थे[१]। कि तुम्हारा चालचलन परमेश्वर के योग्य हो जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है॥

१३ इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद लगातार करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच वह ऐसा ही है) ग्रहण किया और वह तुम में जो विश्वास
१४ रखते हो गुणकारी है। इसलिये कि तुम हे भाइयो परमेश्वर की उन मण्डलियों की सी चाल चलने लगे जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया जैसा उन्हों ने यहूदियों से
१५ पाया था। जिन्हों ने प्रभु यीशु को और नबियों को भी मार डाला और हम को सताया और परमेश्वर उन से
१६ प्रसन्न नहीं और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं। और वे अन्यजातियों से उन के उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं कि सदा अपने पापों का नपुआ भरते रहें। पर उन पर क्रोध अन्त लों पहुंचा है॥

१७ हे भाइयो जब हम थोड़ी देर के लिये मन में नहीं पर प्रगट में तुम से अलग हो गए थे तो हम न बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुंह देखने के लिये और भी यत्न
१८ किया। इसलिये हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं बरन दो बार तुम्हारे पास आना चाहा और शैतान
१९ हमें रोके रहा। क्योंकि हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है। क्या हमारे प्रभु यीशु के सामने
२० उस के आने के समय तुम ही न होगे। हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो॥

३. इसलिये जब हम से और रहा न गया तो हम ने यह ठहराया कि अथेने में अकेले
२ रह जाएं। और हम ने तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई और परमेश्वर का सेवक है इसलिये भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे और तुम्हारे
३ विश्वास के विषय तुम्हें समझाए। कि कोई इन क्लेशों के कारण डगमगा न जाए क्योंकि तुम आप
४ जानते हो कि हम इन ही के लिये ठहराए गए हैं। क्योंकि पहिले भी जब हम तुम्हारे यहां थे तो तुम से कहा करते थे कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे और ऐसा ही हुआ है
५ और तुम जानते भी हो। इस कारण जब मुझ से और रहा न गया तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने को भेजा कि कहीं ऐसा न हो कि किसी रीति से परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो और हमारा परिश्रम
६ अकारथ गया हो। पर अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे पास से हमारे यहां आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार और इस बात को सुनाया कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो और हमारे देखने की
७ लालसा रखते हो जैसे हम भी तुम्हें देखने की। इसलिये हे भाइयो हम ने अपने सारे संकट और क्लेश में
८ तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय शान्ति पाई। क्योंकि
९ अब यदि तुम प्रभु में बने रहो तो हम जीते हैं। और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है उस के बदले तुम्हारे विषय हम किस रीति
१० परमेश्वर का धन्यवाद करें। हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं कि तुम्हारा मुंह देखें और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें॥

११ अब हमारा परमेश्वर और पिता आपही और हमारा प्रभु यीशु तुम्हारे यहां आने का हमारा मार्ग सीधा
१२ करे। और प्रभु ऐसा करे कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में और सब मनुष्यों के
१३ साथ बढ़े और उन्नति करता जाए। कि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें॥

४. निदान हे भाइयो हम तुम से बिनती करते हैं और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा और जैसा तुम
२ चलते भी हो वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन
३ कौन आज्ञा पहुंचाई। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है
४ कि तुम पवित्र बनो कि व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र
५ को प्राप्त करना जाने। और यह कामाभिलाषा से नहीं
६ उन जातियों की नाईं जो परमेश्वर को नहीं जानतीं। कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे और न उस पर दांव चलाए क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है जैसा कि हम ने पहिले तुम से कहा और
७ चिताया भी था। क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने
८ के लिये नहीं परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया। इस कारण जो तुच्छ जानता है वह मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है॥

(१) यू० । गवाही देते थे ।

९ भाईचारे की प्रीति के विषय यह अवश्य नहीं कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं क्योंकि आपस में प्रेम
१० रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है। और सारे मकिदुनिया के सब भाइयों के साथ ऐसा करते भी हो पर हे भाइयो हम तुम्हें समझाते हैं कि और भी बढ़ते
११ जाओ। और जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी वैसे ही चुप चाप रहने और अपना अपना काम काज करने और
१२ अपने अपने हाथों से कमाने का यत्न करो। कि बाहर-वालों के साथ सभ्यता से बरताव करो और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो॥

१३ हे भाइयो हम नहीं चाहते कि तुम उन के विषय जो सोते हैं अज्ञान रहो ऐसा न हो कि तुम औरों
१४ की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हमें प्रतीति है कि यीशु मरा और जी उठा तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं उस के साथ
१५ लाएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीते हैं और प्रभु के आने तक
१६ बचे रहेंगे सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी
१७ उठेंगे। तब हम जो जीते और बचे रहेंगे उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें
१८ और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो॥

५. पर हे भाइयो इस का प्रयोजन नहीं कि समयों और कालों के विषय
२ तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है वैसा ही प्रभु
३ का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे कि कुशल है और कुछ भय नहीं तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा जैसा गर्भवती पर पीड़ और वे किसी रीति से न
४ बचेंगे। पर हे भाइयो तुम तो अन्धकार में नहीं हो कि
५ वह दिन तुम पर चोर की नाईं आ पड़े। क्योंकि तुम सब ज्योति के सन्तान और दिन के सन्तान हो हम न
६ रात के न अंधकार के हैं। इसलिये हम औरों की नाईं
७ सो न रहें पर जागते और सचेत रहें। क्योंकि जो सोते हैं वे रात ही को सोते हैं और जो मतवाले होते हैं वे रात ही को मतवाले होते हैं। पर हम जो दिन के हैं
८ विश्वास और प्रेम की झिलम और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सचेत रहें। क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध
९ के लिये नहीं पर इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। वह हमारे लिये
१० इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते सब मिलकर उस के साथ जीएं। इस कारण एक दूसरे को
११ शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो जैसे तुम करते भी हो॥

१२ हे भाइयो हम तुम से बिनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं और प्रभु में तुम्हारे ऊपर हैं और
१३ तुम्हें चिताते हैं उन्हें मानो। और उन के काम के कारण प्रेम के साथ उन को बहुत ही आदर के योग्य समझो।
१४ आपस में मेल से रहो। और हे भाइयो हम तुम्हें समझाते हैं कि जो ठीक चाल नहीं चलते उन को चिताओ कायरों को दिलासा दो निबलों को संभालो सब की
१५ ओर सहनशीलता दिखाओ। देखो कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे पर सदा आपस में और सब से भी
१६,१७ भलाई की चेष्टा करो। सदा आनन्दित रहो। सदा प्रार्थना में लगे रहो। हर बात में धन्यवाद करो क्योंकि
१८ तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा
१९, २० है। आत्मा को न बुझाओ। नबूवतों को तुच्छ न
२१ जानो। सब बातों को जांचो जो अच्छी है उसे धरे रहो
२२ सब प्रकार की बुराई से बचे रहो॥

२३ शान्ति का परमेश्वर आपही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे और तुम्हारा आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने लों पूरे पूरे और निर्दोष
२४ बने रहें। तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है और वह ऐसा ही करेगा॥

२५ हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो॥

२६ सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।
२७ मैं तुम्हें प्रभु की किरिया देता हूं कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए॥

२८ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे॥

---

(१) यू०। को स्थापन करो। (२) यू०। विश्वास योग्य।

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री।

---

१. पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की मण्डली के नाम जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हे भाइयो तुम्हारे विषय हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और यह उचित भी है इसलिये कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है और तुम सब का प्रेम आपस में बहुत ही होता जाता है। ४ यहां लों कि हम आप परमेश्वर की मण्डलियों में तुम्हारे विषय घमण्ड करते हैं कि जितने उपद्रव और क्लेश जो तुम सहते हो उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास ५ प्रगट होता है। यह परमेश्वर के ठीक न्याय का प्रमाण है कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो जिस के ६ लिये तुम दुख भी उठाते हो। क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय के अनुसार है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें ७ बदले में क्लेश दे। और तुम्हें जो क्लेश पाते हो हमारे साथ चैन दे उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। ८ और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा ९ लेगा। वे प्रभु के सामने से और उस की शक्ति के तेज १० से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। यह उस दिन होगा जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करनेवालों में अचंभे का कारण होने को आएगा क्योंकि तुम ने हमारी गवाही की प्रतीति ११ की। इसी लिये हम सदा तुम्हारे निमित्त प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के १२ हर एक काम को सामर्थ सहित पूरा करे। कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु के नाम की महिमा तुम में हो और तुम्हारी उस में॥

२. हे भाइयो हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने और उस के पास अपने इकट्ठे होने के विषय तुम से बिनती करते हैं। २ कि किसी आत्मा या वचन या पत्री के द्वारा जो मानो हमारी ओर से हो यह समझ कर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ। ३ कोई तुम्हें किसी रीति से न छले क्योंकि वह दिन न आएगा जब तक धर्म त्याग न हो ले और वह पाप पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो। ४ जो विरोध करता और हर एक से जो परमेश्वर या पूज्य कहलाता है अपने आप को बड़ा ठहराता है यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर[१] में बैठकर अपने आप को परमेश्वर करके दिखलाता है। ५ क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहां था तो तुम से ये बातें कहा करता था। ६ और अब तुम उस वस्तु को जानते हो जो उसे रोक रही है कि वह अपने ही समय में प्रगट हो। ७ क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य्य करता जाता है पर अभी एक रोकनेवाला है और जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा। ८ तब वह अधर्मी प्रगट होगा जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा और अपने आने के प्रकाश से विनाश करेगा। ९ जिस अधर्मी का आना शैतान के कार्य्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ और चिन्ह और अद्भुत काम के साथ, १० और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा इस कारण कि उन्हों ने सत्य का प्रेम नहीं अपनाया कि उन का उद्धार होता। ११ और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटकानेवाली सामर्थ भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें। १२ और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते बरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं वे सब दोषी ठहरें॥

१३ पर हे भाइयो और प्रभु के प्यारो चाहिए कि हम तुम्हारे विषय सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें कि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर और सत्य की प्रतीति करके उद्धार

(१) यू०। पवित्रस्थान।

१४ पाओ। जिस के लिये उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा
१५ को प्राप्त करो। इसलिये हे भाइयो स्थिर रहो और जो जो बातें तुम ने क्या वचन क्या पत्री के द्वारा हम से सीखी उन्हें थामे रहो ॥

१६ हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही और हमारा पिता परमेश्वर जिस ने हम से प्रेम रक्खा और अनुग्रह
१७ से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है, तुम्हारे मनों में शान्ति दे और तुम्हें हर एक अच्छे काम और वचन में स्थिर करे ॥

३. निदान हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना किया करो कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए जैसा तुम्हारे यहां
२ होता है। और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं ॥
३ परन्तु प्रभु सच्चा[१] है जो तुम्हें स्थिर करेगा और दुष्ट[२]
४ से बचाए रहेगा। और हमें प्रभु में तुम्हारे विषय भरोसा है कि जो जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं उन्हें तुम मानते हो
५ और मानते भी रहोगे। परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुवाई करे ॥
६ हे भाइयो हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनरीति से चलता और जो शिक्षा उस ने हम से पाई उस के अनुसार नहीं करता।
७ क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए क्योंकि हम तुम्हारे बीच अनरीति से न चले।
८ और किसी की रोटी सेंत न खाई पर परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे कि तुम में से किसी
९ पर भार न हो। इसलिये नहीं कि हमें अधिकार नहीं पर इसलिये कि अपने आप को तुम्हारे लिये नमूना ठहराएं
१० कि तुम हमारी सी चाल चलो। और जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई काम करना
११ न चाहे तो खाने भी न पाए। हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हारे बीच अनरीति से चलते हैं और कुछ काम नहीं करते पर औरों के काम में हाथ डाला करते हैं।
१२ ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया
१३ करें। और तुम हे भाइयो भलाई करने में हियाव न
१४ छोड़ो। यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने तो उस पर आंख रक्खो और उस की संगति न करो
१५ जिस से वह लज्जित हो। तौभी उसे बैरी सा मत समझो पर भाई जान कर चिताओ ॥
१६ शांति का प्रभु आप ही नित्य तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे ॥
१७ मैं पौलुस अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूं हर पत्री में मेरा यही चिन्ह है मैं इसी प्रकार से लिखता हूं।
१८ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे ॥

(१) यू०। विश्वासयोग्य। (२) या। बुराई।

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री।

१. पौलुस की ओर से जो हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु की आज्ञा अनुसार मसीह यीशु का प्रेरित है तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है ॥
२ पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह यीशु से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिले ॥
३ जैसे मैं ने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था कि इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा देते
४ रहना कि और प्रकार का उपदेश न दें, और ऐसी कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न लगाएं जिन से विवाद होते हैं और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं जो विश्वास से सम्बन्ध रखता है वैसे ही फिर भी
५ कहता हूं। आज्ञा का सार यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक[१] और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न
६ हो। इन को तज कर कितने लोग फिरकर बकवाद की
७ ओर भटक गए हैं। और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं पर जो बातें कहते और जिन को दृढ़ता से बोलते हैं उन
८ को समझते भी नहीं। पर हम जानते हैं कि यदि कोई

(१) मन। या कांशंस।

व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए तो वह ९ भली है। यह जान कर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं पर अधर्मियों निरंकुशों भक्तिहीनों पापियों अपवित्रों १० और अशुद्धों मा बाप के घात करनेवालों खूनियों, व्यभिचारियों पुरुषगामियों मनुष्य के बेचनेवालों झूठों और झूठी किरिया खानेवालों और इन को छोड़ खरे उपदेश ११ के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है। यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है जो मुझे सौंपा गया ॥

१२ और मैं मसीह यीशु हमारे प्रभु का जिस ने मुझे सामर्थ दी है धन्यवाद करता हूं कि उस ने मुझे विश्वास १३ योग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया। मैं तो पहिले निन्दा करनेवाला और सतानेवाला और अंधेर करनेवाला था तौभी मुझ पर दया हुई क्योंकि मैं ने अविश्वास १४ की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किए थे। और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ १५ जो मसीह यीशु में है बहुतायत से हुआ। यह बात सच[१] और हर प्रकार से मानने योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया जिन १६ में सब से बड़ा मैं हूं। पर मुझ पर इसलिये दया हुई कि मुझ सब से बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाये कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे उन के लिये मैं एक १७ नमूना बनूं। अब सनातन राजा अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन ॥

१८ हे पुत्र तीमुथियुस उन नबूवतों के अनुसार जो पहिले तेरे विषय की गई थीं मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे। १९ और विश्वास और उस अच्छे विवेक[२] को थामे रहे जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वासरूपी जहाज़ डूब २० गया। उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया कि वे निन्दा न करना सीखें ॥

२.

सो मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं कि बिन्ती और प्रार्थना और निवेदन और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएं। २ राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और ३ गम्भीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता है। ४ वह यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भली भांति पहचानें। ५ क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच भी एक ही बिचवई है अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। ६ जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दिया कि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए। ७ मैं सच कहता हूं झूठ नहीं बोलता कि मैं इसी लिये प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया ॥

८ सो मैं चाहता हूं कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। ९ वैसे ही स्त्रियां संकोच और संयम के साथ सोहते हुए पहिरावन से अपने आप को संवारें न कि बाल गूंथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से, १० पर भले कामों से कि परमेश्वर की भक्ति का प्रण करनेवाली स्त्रियों को यही सोहता है। ११ स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए। १२ और मैं कहता हूं कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए परन्तु चुपचाप रहे। १३ क्योंकि आदम पहिले उस के पीछे हव्वा बनाई गई। १४ और आदम बहकाया गया नहीं पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई। १५ तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी यदि वे संयम सहित विश्वास प्रेम और पवित्रता में बने रहें ॥

३.

यह बात सत्य[३] है कि कोई अध्यक्ष[४] होना चाहता है तो भले काम की इच्छा करता है। २ सो चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष और एक ही पत्नी का पति सचेत संयमी सुशील पहुनाई करनेवाला और सिखाने में निपुण हो। ३ पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो बरन कोमल हो न झगड़ालू न लोभी, ४ अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो और लड़के बालों को सारी गंभीरता से अधीन रखता हो। ५ पर जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो तो परमेश्वर की मण्डली की रखवाली क्योंकर करेगा। ६ फिर नया चेला न हो ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान[५] से दण्ड पाए। ७ और बाहरवालों में भी उस का सुनाम हो न हो कि निन्दित होकर शैतान[५] के फंदे में पड़े। ८ वैसे ही सेवकों[६] को भी गंभीर होना चाहिए दोरंगी ९ पियक्कड़ और नीच कमाई के लोभी न हों। पर विश्वास

(१) य०। विश्वासयोग्य। (२) या। मन या। कांशंस।

(३) यू०। विश्वासयोग्य। (४) या। बिशप। (५) यू०। इबलीस। (६) या। डीकनों।

१० के भेद के शुद्ध विवेक[१] से रक्खें। और ये भी पहिले परखे जाएं तब यदि निर्दोष निकलें तो सेवक[२] का काम
११ करें। इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गंभीर होना चाहिए दोष लगानेवाली न हों पर सचेत और सब बातों में
१२ विश्वासी हों। सेवक[२] एक एक पत्नी के पति और लड़केवालों और अपने घरों का अच्छा प्रबन्ध करते हों।
१३ क्योंकि जो सेवक[२] का काम अच्छी तरह से करते हैं वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में जो मसीह यीशु पर है बड़ा हियाव पाते हैं॥

१४ मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी
१५ ये बातें तुझे इसलिये लिखता हूं कि यदि मेरे आने में देर हो तो तू जान ले कि परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और
१६ नेव है उस में कैसा बरताव करना चाहिए। और यह बात सब मानते हैं कि भक्ति का भेद भारी है अर्थात वह जो शरीर में प्रगट हुआ आत्मा में धर्मी ठहरा स्वर्गदूतों को दिखाई दिया अन्यजातियों में उस का प्रचार हुआ जगत में उस पर विश्वास किया गया और महिमा में ऊपर उठाया गया॥

४. पवित्र आत्मा साफ साफ कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाले आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे।
२ यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा जिन का
३ विवेक[१] मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है। जो ब्याह करने से रोकेंगे और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सिरजा की विश्वासी और सत्य के पहचाननेवाले उन्हें
४ धन्यवाद के साथ खाएं। क्योंकि परमेश्वर की सिरजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है और कोई वस्तु दूर करने के योग्य नहीं पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए।
५ इसलिये कि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है॥

६ यदि तू भाइयों को इन बातों की सुध दिलाता रहेगा तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से जो तू
७ मानता आया है तेरा पोषण होता रहेगा। पर अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह और भक्ति
८ के लिये अपना साधन कर। क्योंकि देह की साधना से थोड़ा ही लाभ तो होता है पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है कि अब के और आनेवाले जीवन की भी
९ प्रतिज्ञा इसी के लिये है। और यह बात सच[३] और हर प्रकार से मानने योग्य है।
१० क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है जो सब मनुष्यों का और निज कर के विश्वासियों का उद्धारकर्त्ता है।
११ इन बातों की आज्ञा कर और सिखाता रह।
१२ कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए पर वचन और चालचलन और प्रेम और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिये नमूना बन जा।
१३ जब तक मैं न आऊं तब तक पढ़ने और उपदेश देने और सिखाने में मन लगाता रह।
१४ उस वरदान से जो तुझ में है और नबूवत के द्वारा प्राचीनों[४] के हाथ रखते समय तुझे मिला था अचेत न रह।
१५ इन बातों को सोच और इन ही में लगा रह कि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।
१६ अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर बना रह क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के भी उद्धार का कारण होगा॥

५. किसी बूढ़े को न डपट पर उसे पिता जानकर समझा दे और जवानों
२ को भाई जानकर, बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन
३ जानकर समझा दे। उन विधवाओं का जो सचमुच
४ विधवा हैं आदर कर। और यदि किसी विधवा के लड़केवाले या नाती पोते हों तो वे पहिले अपने ही घराने के साथ भक्ति का बरताव करना और अपने माता पिता आदि को उन का हक़ देना सीखें क्योंकि यह परमेश्वर
५ को भाता है। जो सचमुच विधवा है जिस का कोई नहीं वह परमेश्वर पर आशा रखती है और रात दिन
६ बिनती और प्रार्थना में लगी रहती है। पर जो भोग
७ विलास में पड़ गई वह जीते जी मर गई है। इन बातों की भी आज्ञा दिया कर इसलिये कि वे निर्दोष रहें।
८ पर यदि कोई अपनों और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे तो वह विश्वास से मुकर गया है और
९ अविश्वासी से भी बुरा है। उसी विधवा का नाम लिखा जाए जो साठ बरस से कम की न हो और एक ही पति
१० की पत्नी रही हो। और भले काम में सुनाम रही हो जिस ने बच्चों को पाला पोसा हो पाहुनों की सेवा की हो पवित्र लोगों के पांव धोए हों दुखियों की सहायता की हो और हर एक भले काम में मन लगाया हो।
११ पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना क्योंकि जब वे

(१) मन। या कांशंस। (२) या डीकन।

(३) य०। विश्वासयोग्य। (४) या। प्रिसबुतिरों।

मसीह का विरोध करके सुख विलास में पड़ जाती हैं १२ तो ब्याह करना चाहती हैं। और दोषी ठहरती हैं क्योंकि उन्हों ने अपने पहिले विश्वास को छोड़ दिया १३ है। और इस के साथ ही साथ वे घर घर फिर कर आलसी होना सीखती हैं और केवल आलसी नहीं पर बकबक करती रहती और औरों के काम में हाथ भी डालती और अनुचित बातें बोलती १४ हैं। इसलिये मैं यह चाहता हूं कि जवान विधवाएं ब्याह करें और बच्चे जनें और घरबार संभालें और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें। १५ क्योंकि कई एक तो बहककर शैतान के पीछे हो चुकी १६ हैं। यदि किसी विश्वासिनी के यहां विधवाएं हों तो वही उन की सहायता करे कि मण्डली पर भार न हो कि वह उन की सहायता कर सके जो सचमुच विधवाएं हैं॥

१७ जो प्राचीन[१] अच्छा प्रबन्ध करते हैं विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं १८ दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं। क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है कि दावनेवाले बैल का मुंह न बांधना १९ और मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक्क़दार है। कोई दोष किसी प्राचीन[१] पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन २० गवाहों के उस को न सुन। पाप करनेवालों को सब के २१ सामने समझा दे कि और लोग भी डरें। परमेश्वर और मसीह यीशु और चुने हुए स्वर्गदूतों को हाज़िर जानकर मैं तुझे चिताता हूं कि तू मन खोलकर इन बातों को २२ माना कर और कोई काम पक्षपात से न कर। किसी पर शीघ्र हाथ न रख और दूसरों के पापों में भागी २३ न हो। अपने आप को पवित्र रख। आगे को केवल जल का पीनेवाला न रह पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा थोड़ा दाखरस भी २४ काम में लाया कर। कितने मनुष्यों के पाप प्रगट हो जाते और न्याय के लिये पहिले से पहुंच जाते पर कितनों २५ के पीछे से आते हैं। वैसे ही कितने भले काम भी प्रगट होते हैं और जो ऐसे नहीं होते वे भी छिप नहीं सकते॥

६. जितने दास जूए के नीचे हैं वे अपने अपने स्वामी को सारे आदर के योग्य जानें कि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा २ न हो। और जिन के स्वामी विश्वासी हैं इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें पर इसलिये उन की और भी सेवा करें कि इस के लाभ उठानेवाले विश्वासी और प्यारे हैं। इन बातों का उपदेश कर और समझाता रह॥

३ यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है और खरी बातों को अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों और उस उपदेश को नहीं मानता जो भक्ति के अनुसार ४ है। तो वह अभिमानी हो गया है और कुछ नहीं जानता बरन उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है जिन से डाह और झगड़े और निन्दा की बातें ५ और बुरे बुरे सन्देह, और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं जिन की बुद्धि बिगड़ी और जिन से सत्य छीन लिया गया है जो समझते हैं कि भक्ति ६ कमाई का द्वार है। पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई ७ है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए और न कुछ ८ ले जा सकते। और यदि हमारे पास खाने और पहिरने ९ को हो तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। पर जो धनी होना चाहते हैं वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारी लालसाओं में फंसते हैं जो मनुष्यों को बिगाड़ और विनाश के समुद्र में डुबा देती १० हैं। क्योंकि रुपये का लोभ सब बुराइयों की जड़ है जिसे प्राप्त करने का यत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को बहुत दुखों से वार पार छेदा है॥

११ पर हे परमेश्वर के जन तू इन बातों से भाग और धर्म भक्ति विश्वास प्रेम धीरज और नम्रता का १२ पीछा कर। विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ और उस अनन्त जीवन को धर ले जिस के लिये तू बुलाया गया और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया १३ था। मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीता रखता है और मसीह यीशु को गवाह करके जिस ने पुन्तियुस पीलातुस के सामने अच्छा अंगीकार किया यह आज्ञा १४ देता हूं कि, तू हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने तक १५ इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख। जिसे वह ठीक समयों में दिखाएगा जो परमधन्य और अद्वैत १६ अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। और अमरता केवल उसी की है और वह अगम्य ज्योति में रहता है और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है। इस की प्रतिष्ठा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन॥

१७ इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे कि वे अभिमानी न हों न कि चंचल धन पर आशा रक्खें परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत १८ से देता है। और भलाई करें और भले कामों में धनी

(१) या। प्रिसबुतिर।

१९ बनें और उदार और बांटने पर तैयार हों। और आगे के लिये एक अच्छी नेव डाल रक्खें कि सत्य जीवन को धर लें ॥
२० हे तीमुथियुस इस थाती की रखवाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है उस के अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह। कितने इस २१ ज्ञान का अंगीकार करके विश्वास से चूक गए हैं ॥
तुम पर अनुग्रह होता रहे ॥

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री।

---

१. पौलुस की ओर से जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है पर-
२ मेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, प्यारे पुत्र तीमुथियुस के नाम ॥
परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे ॥
३ जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने बाप दादों की रीति पर शुद्ध विवेक[1] से करता हूं उस का धन्यवाद हो कि अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूं।
४ और तेरे आंसुओं की सुध कर करके रात दिन तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूं कि आनन्द से भर जाऊं।
५ और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुध आती है जो पहिले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में था
६ और मुझे निश्चय हुआ है कि तुझ में भी है। इसी कारण मैं तुझे सुध दिलाता हूं कि तू परमेश्वर के उस बरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है चमका।
७ क्योंकि परमेश्वर ने हमें कदराई का नहीं पर सामर्थ और
८ प्रेम और संयम का आत्मा दिया है। इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से और मुझ से जो उस का क़ैदी हूं लज्जित न हो पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार
९ सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा। जिस ने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में सनातन से हम
१० पर हुआ। पर अब हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु के प्रकाश के द्वारा प्रगट हुआ जिस ने मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस समाचार के द्वारा
११ प्रकाश कर दिया। जिस के लिये मैं प्रचारक और प्रेरित
१२ और उपदेशक ठहरा। इस कारण मैं इन दुखों को भी उठाता हूं पर लजाता नहीं क्योंकि मैं उसे जिस की मैं ने प्रतीति की है जानता हूं और मुझे निश्चय है कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है। जो
१३ खरी बातें तू ने मुझ से सुनीं उन को उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है अपना नमूना बनाकर
१४ रख। और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है इस अच्छी थाती की रखवाली कर ॥
१५ तू जानता है कि आसियावाले सब मुझ से फिर
१६ गए हैं जिन में फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया और मेरी ज़ंजीरों से नहीं
१७ लजाया। पर जब वह रोमा में आया तो बड़े यत्न से
१८ ढूंढ़कर मेरी भेंट की। प्रभु करे कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो। और जो जो सेवा उस ने इफिसुस में की उन्हें भी तू भली भांति जानता है ॥

२. सो हे मेरे पुत्र तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है बलवन्त हो जा। और जो
२ बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे जो औरों को भी सिखाने के
३ योग्य हों। मसीह यीशु के अच्छे सिपाही की नाईं मेरे
४ साथ दुख उठा। जब कोई सिपाही लड़ाई पर जाता है तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे
५ अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसता। फिर अखाड़े में खेलनेवाला यदि विधि के अनुसार न खेले
६ तो मुकुट नहीं पाता। जो गृहस्थ परिश्रम करता है फल
७ का अंश पहिले उसे मिलना चाहिए। जो मैं कहता हूं उस पर ध्यान कर और प्रभु तुझे सब बातों की समझ
८ देगा। यीशु मसीह को स्मरण रख जो दाऊद के वंश से हुआ और मरे हुओं में से जी उठा और यह मेरे सुसमाचार
९ के अनुसार है। जिस के लिये मैं कुकर्मी की नाईं दुख

(१) या। मन। कांशंस।

उठाता हूं यहां तक कि क़ैद भी हूं परन्तु परमेश्वर का
१० वचन क़ैद नहीं। इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिये
सब कुछ सहता हूं कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह
११ यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएं। यह बात सच[1]
है कि यदि हम उस के साथ मर गए हैं तो उस के साथ
१२ जीएंगे भी। यदि हम धीरज से सहते रहेंगे तो उस के
साथ राज्य भी करेंगे। यदि हम उस से मुकरेंगे तो वह
१३ भी हम से मुकरेगा। यदि हम अविश्वासी भी हों तौभी
वह विश्वास योग्य बना रहता है क्योंकि वह अपने आप
को नकार नहीं सकता॥

१४ इन बातों की सुधि उन्हें दिला और प्रभु के सामने
चिता दे कि वे शब्दों पर तर्क वितर्क न किया करें जिन
से कुछ लाभ नहीं होता बरन सुननेवाले बिगड़ जाते
१५ हैं। अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा
काम करनेवाला ठहराने का यत्न कर जो लजाने न पाए
और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता
१६ हो। पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह क्योंकि ऐसे लोग
१७ और भी अभक्ति में बढ़ते जाएंगे। और उन का वचन
सड़े घाव की नाईं फैलता जाएगा। हुमिनयुस और
१८ फिलेतुस उन्हीं में से हैं, जो यह कहकर कि पुनरुत्थान[2]
हो चुका है सत्य से भटक गए हैं और कितनों के
१९ विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं। तौभी परमेश्वर की
पक्की नेव बनी रहती है और उस पर यह छाप लगी है
कि प्रभु अपनों को पहचानता है और जो कोई प्रभु का
२० नाम लेता है वह अधर्म से बचा रहे। बड़े घर में न
केवल सोने चांदी ही के पर काठ और मिट्टी के बरतन
भी होते हैं और कोई कोई आदर और कोई कोई अना-
२१ दर के लिये हैं। सो यदि कोई अपने आप को इन से
शुद्ध करेगा तो वह आदर का बरतन और पवित्र ठहरेगा
और स्वामी के काम आएगा और हर भले काम के लिये
२२ तैयार होगा। जवानी के अभिलाषों से भाग और जो
शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं उन के साथ धर्म और
२३ विश्वास और प्रेम और मेल मिलाप का पीछा कर। पर
मूर्खता और अविद्या के विवादों से अलग रह क्योंकि तू
२४ जानता है कि उन से झगड़े होते हैं। और प्रभु के दास
को झगड़ालू होना न चाहिए पर सब के साथ कोमल
२५ और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो। और
विरोधियों को नम्रता से समझाए क्या जाने परमेश्वर उन्हें
२६ मन फिराव का मन दे कि वे सत्य को पहचानें। और
इस के द्वारा उस की इच्छा पूरी करने के लिये सचेत
होकर शैतान[3] के फंदे से छूट जाएं॥

३.

पर यह जान रख कि पिछले दिनों में कठिन
२ समय आएंगे। क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी
लोभी डींगमार अभिमानी निन्दक माता पिता की आज्ञा
३ टालनेवाले कृतघ्न अपवित्र, मयारहित क्षमारहित दोष
४ लगानेवाले असंयमी कठोर भले के बैरी, विश्वासघाती
ढीठ घमंडी और परमेश्वर के नहीं बरन सुखविलास ही
५ के चाहनेवाले होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे पर उस
६ की शक्ति को न मानेंगे ऐसों से परे रह। इन्हीं में से वे
लोग हैं जो घरों में दब पांव से घुस आते और उन
छिछोरी स्त्रियों को बश कर लेते हैं जो पापों से दबी और
७ नाना प्रकार के अभिलाषों के चलाए चलती हैं। और
सदा सीखती रहतीं पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं
८ पहुंचती हैं। और जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का
सामना किया वैसे ही ये भी सत्य का सामना करते हैं ये
तो ऐसे मनुष्य हैं जिन की बुद्धि बिगड़ गई और वे
९ विश्वास के विषय निकम्मे हैं। पर वे इस से आगे
नहीं बढ़ सकते क्योंकि जैसे उन की अज्ञानता सब मनुष्यों
पर प्रगट हो गई थी वैसे ही इन की भी हो जाएगी।
१० पर तू ने उपदेश चालचलन मनसा विश्वास सहन-
शीलता प्रेम धीरज और सताए जाने और दुख उठाने में
११ मेरा साथ दिया। और ऐसे दुखों में जो अन्ताकिया
और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े और और
दुखों में भी जो मैं ने उठाए हैं परन्तु प्रभु ने मुझे उन
१२ सब से छुड़ा लिया। पर जितने मसीह यीशु में भक्ति
के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे।
१३ और दुष्ट और बहकानेवाले धोखा देते हुए और धोखा
१४ खाते हुए बिगड़ते चले जाएंगे। पर तू इन बातों पर जो
तू ने सीखीं और प्रतीति की थी यह जानकर बना रह
१५ कि तू ने उन्हें किन से सीखा था। और बालकपन से
पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है जो तुझे मसीह पर
विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान
१६ कर सकता है। हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा
से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने
१७ और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। कि परमेश्वर
का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तैयार
हो जाए॥

४.

परमेश्वर और मसीह यीशु को
गवाह करके जो जीवतों
और मरे हुओं का न्याय करेगा उसे और उस के प्रगट
२ होने और राज्य को सुध दिलाकर चिताता हूं। कि
तू वचन का प्रचार कर समय और असमय तैयार रह
सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ

(१) यू०। विश्वासयोग्य। (२) वा। मृतकोत्थान। (३) यू०। इबलीस।

३ उलाहना दे और डांट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा कि लोग खरा उपदेश न सहेंगे पर कानों के सुरसुराने के कारण अपने अभिलाषों के अनुसार अपने ४ लिये बहुतेरे उपदेशक बटोरेंगे। और अपने कान सत्य ५ से फेरकर कथा कहानियों पर लगाएंगे। पर तू सब बातों में सचेत रह दुख उठा सुसमाचार प्रचारक का ६ काम कर अपनी सेवा को पूरा कर। क्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूं और मेरे कूच का समय आ ७ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका मैं ने अपनी दौड़ ८ पूरी कर ली मैं ने विश्वास की रखवाली की। आगे को मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है जिसे प्रभु जो धर्मी न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं बरन उन सब को भी जो उस के प्रगट होने को प्रिय जानते हैं॥

९,१० मेरे पास शीघ्र आने का यत्न कर। क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके को चला गया और क्रेसकेंस गलतिया को ११ और तितुस दलमतिया को चला गया। केवल लूका मेरे साथ है मरकुस को लेकर चला आ क्योंकि सेवा के लिये १२ वह मेरे बहुत काम का है। तुखिकुस को मैं ने इफिसुस १३ को भेजा। जो चोगा मैं त्रोआस में कर्पुस के यहां छोड़ आया जब तू आए तो उसे और पुस्तकें निज करके चर्म्मपत्रों को लेते आना। सिकन्दर ठठेरे ने मुझ १४ से बहुत बुराइयां कीं प्रभु उसे उस के कामों के अनुसार बदला देगा। तू भी उस से चौकस रह क्योंकि उस ने १५ हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया। मेरे पहिले १६ उज्र करने के समय किसी ने मेरा साथ न दिया पर सब ने मुझे छोड़ दिया। भला हो कि इस का उन को लेखा देना न पड़े। परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा और १७ मुझे सामर्थ दी कि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो और सब अन्यजाति सुनें और मैं तो सिंह के मुंह से छुड़ाया गया। और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा और अपने १८ स्वर्गीय राज्य में उद्धार करके पहुंचाएगा। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

प्रिसका और अक्किला को और उनेसिफुरुस के १९ घराने को नमस्कार। इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया २० और त्रुफिमुस को मैं ने मीलेतुस में बीमार छोड़ा। जाड़े से पहिले चले आने का यत्न कर। यूबूलुस और २१ पूदेंस और लीनुस और क्लौदिया और सारे भाइयों का तुझे नमस्कार॥

प्रभु तेरे आत्मा के साथ रहे। तुम पर अनुग्रह २२ होता रहे॥

तितुस के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री।

---

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेरित है परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास और उस सत्य की पहचान के अनुसार जो भक्ति के अनुसार है। २ उस अनन्त जीवन की आशा पर जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की ३ है। पर ठीक समय पर अपने वचन को उस प्रचार के द्वारा प्रगट किया जो हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की ४ आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया। तितुस के नाम जो साधारण विश्वास के अनुसार मेरा सच्चा पुत्र है॥

परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु से अनुग्रह और शान्ति होती रहे॥

५ मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू रही हुई बातों को सुधारे और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों[१] को ठहराए। जो निर्दोष और ६ एक ही एक पत्नी के पति हों जिन के लड़केबाले विश्वासी हों और जिन्हें लुचपन और निरंकुशता का दोष नहीं। क्योंकि अध्यक्ष[२] को परमेश्वर का भण्डारी ७ होने के कारण निर्दोष होना चाहिए न हठी न क्रोधी न पियक्कड़ न मार पीट करनेवाला और न नीच कमाई का लोभी। पर पहुनाई करनेवाला भलाई का चाहनेवाला ८ संयमी न्यायी पवित्र और जितेन्द्रिय हो। और विश्वास ९ योग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है बना रहे कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके और विवादियों का मुंह भी बन्द कर सके॥

क्योंकि बहुत से लोग निरंकुश बकवादी और धोखा १० देनेवाले हैं विशेष कर खतनावालों में से। इन का मुंह ११

(१) या। प्रिसबुतिरों। (२) या। बिशप।

इब्रानियों के नाम पत्री।

१. परमेश्वर ने पुराने समय बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति २ भांति से नबियों के द्वारा बातें करके, इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने ३ सारे जगत बनाए हैं। वह उस की महिमा का प्रकाश और उस के तत्त्व की छाप है और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दहिने जा बैठा। ४ और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा जितना वह उन ५ से बड़े पद का वारिस हुआ। क्योंकि स्वर्गदूतों में से उस ने कब किसी से कहा कि तू मेरा पुत्र है आज मैं ही ने तुझे जन्माया है और फिर यह कि मैं उस का पिता ठह-६ रूंगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा। और जब पहलौठे को जगत में फिर लाता है तो कहता है कि परमेश्वर के सब ७ स्वर्गदूत उसे प्रणाम करें। और स्वर्गदूतों के विषय यह कहता है कि वह अपने दूतों को पवन और अपने सेवकों ८ को धधकती आग बनाता है। परन्तु पुत्र से कहता है कि हे परमेश्वर तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा तेरे राज्य ९ का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रक्खा इस कारण परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल १० से तुझे अभिषेक किया। और यह कि हे प्रभु आदि में तू ने पृथिवी की नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों ११ की कारीगरी हैं। वे तो नाश हो जाएंगे पर तू बना १२ रहेगा और वे सब वस्त्र की नाईं पुराने हो जाएंगे। और तू उन्हें चादर की नाईं लपेटेगा और वे वस्त्र की नाईं बदल जाएंगे पर तू वही है और तेरे बरसों का अन्त न १३ होगा। और स्वर्गदूतों में से उस ने किस से कब कहा कि तू मेरे दहिने बैठ जब तक मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के १४ नीचे की पीढ़ी न कर दूं। क्या वे सब सेवा टहल करने-वाले आत्मा नहीं जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजे जाते हैं॥

२. इस कारण चाहिए कि हम उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं और भी मन २ लगाएं ऐसा न हो कि बहकर दूर निकल जाएं। क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया जब वह पक्का रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला। ३ तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं जिस की चर्चा पहिले पहिल प्रभु के द्वारा हुई और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ। ४ और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों और अद्भुत कामों और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों और पवित्र आत्मा के बरदानों के बांटने के द्वारा इस की गवाही देता रहा॥

५ क्योंकि उस ने उस आनेवाले जगत को जिस की ६ चर्चा हम कर रहे हैं स्वर्गदूतों के अधीन न किया। पर किसी ने कहीं यह गवाही दी है कि मनुष्य क्या है कि तू उस की सुध लेता है या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उस ७ पर दृष्टि करता है। तू ने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया तू ने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रक्खा ८ और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया, तू ने सब कुछ उस के पांवों के नीचे कर दिया। सो जब कि उस ने सब कुछ उस के अधीन कर दिया तो उस ने कुछ भी रख न छोड़ा जो उस के अधीन न हो। पर अब हम ९ तक सब कुछ उस के अधीन नहीं देखते। पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं इसलिये कि परमेश्वर के अनुग्रह से हर १० एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चक्खे। क्योंकि जिस के लिये सब कुछ है और जिस के द्वारा सब कुछ है उसे यही फबा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुं-चाये तो उन के उद्धार के कर्त्ता को दुख उठाने के द्वारा ११ सिद्ध करे। क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किये जाते हैं सब एक ही मूल से हैं इसी कारण वह उन्हें १२ भाई कहने से नहीं लजाता। पर कहता है कि मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा सभा के बीच में मैं तेरा १३ भजन गाऊंगा। और फिर यह कि मैं उस पर भरोसा रखूंगा और फिर यह भी कि देख मैं और जो लड़के पर-१४ मेश्वर ने मुझे दिए। इसलिये जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं वह आप भी वैसे ही इन का भागी हो गया इसलिये कि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति १५ मिली थी अर्थात् शैतान[१] को निकम्मा कर दे। और जितने

(१) यू० । इबलीस।

मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे उन्हें
१६ छुड़ा ले। क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं बरन इब्रा-
१७ हीम के वंश को संभालता है। इस कारण उस को चाहिए था कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से संबंध रखती हैं दयाल और विश्वासयोग्य महायाजक हो कि लोगों के पापों के
१८ लिये प्रायश्चित्त करे। क्योंकि जब कि उस ने परीक्षा की दशा में दुख उठाया तो वह उन की भी सहायता कर सकता है जिन की परीक्षा की जाती है॥

३. सो हे पवित्र भाइयो जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो उस प्रेरित और
२ महायाजक यीशु पर जिसे हम मानते हैं ध्यान करो। जो अपने ठहरानेवाले के लिये विश्वासयोग्य रहा जैसा मूसा
३ भी उस के सारे घर में था। क्योंकि वह मूसा से इतना बढ़ कर महिमा के योग्य समझा गया है जितना कि घर
४ का बनानेवाला घर से बढ़कर आदर रखता है। क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है पर जिस
५ ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। मूसा तो उस के सारे घर में सेवक की नाईं विश्वासयोग्य रहा कि जिन
६ बातों की चर्चा होनेवाली थी उन की गवाही दे। पर मसीह पुत्र की नाईं उस के घर का अधिकारी है और उस का घर हम हैं जब कि हम हियाव पर और अपनी
७ आशा के घमण्ड पर अपने को अन्त लों थामे रहें। सो जैसा पवित्र आत्मा कहता है कि यदि आज तुम उस का शब्द
८ सुनो। तो अपने मन कठोर न करो जैसा कि रिस दिलाने
९ के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था। जहां तुम्हारे बापदादों ने जांच जांचकर मुझे परखा और चालीस
१० बरस तक मेरे काम देखे। इस कारण मैं उस समय के लोगों से रूठा रहा और कहा कि इन के मन सदा भटकते रहते हैं और इन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना।
११ सो मैं ने क्रोध में आकर किरिया खाई कि वे मेरे विश्राम
१२ में प्रवेश करने न पाएंगे। हे भाइयो चौकस रहो कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो जो जीविते परमे-
१३ श्वर से हट जाए। बरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो
१४ जाए। क्योंकि हम मसीह के भागी तो हुए हैं जब कि
१५ हम अपना पहिला निश्चय अन्त लों थामे रहें। जैसा कहा जाता है कि यदि आज तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मनों को कठोर न करो जैसा कि रिस दिलाने
१६ के समय किया था। भला किन लोगों ने सुन कर रिस दिलाया। क्या उन सब ने नहीं जो मूसा के द्वारा मिसर
१७ से निकले थे। और वह चालीस बरस लों किन लोगों से रूठा रहा। क्या उन्हीं से नहीं जिन्हों ने पाप किया और
१८ उन की लोथें जंगल में पड़ी रहीं। और उस ने किन से किरिया खाई कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न
१९ पाओगे केवल उन से जिन्हों ने आज्ञा न मानी। सो हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके॥

४. इसलिये जब कि उस के विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है तो हमें डरना चाहिए ऐसा न हो कि तुम में से कोई
२ जन उस से रहित जान पड़े। क्योंकि हमें उन्हीं की नाईं सुसमाचार सुनाया गया है पर सुने हुए[१] वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास
३ के साथ न बैठा। और हम जिन्हों ने विश्वास किया है उस विश्राम में प्रवेश करते हैं जैसा उस ने कहा कि मैं ने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे पर हां जगत की उत्पत्ति के समय से उस
४ के काम हो चुके थे। क्योंकि सातवें दिन के विषय उस ने कहीं यों कहा है कि परमेश्वर ने सातवें दिन
५ अपने सब काम पूरे करके[१] विश्राम किया। और इस जगह फिर यह कहता है कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न
६ करने पाएंगे। सो जब यह बात बाकी रही कि कितने ही उस में प्रवेश करें और जिन्हें उस का सुसमाचार पहिले सुनाया गया उन्हों ने आज्ञा न मानने के कारण
७ प्रवेश न किया, तो फिर वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के पीछे दाऊद की पुस्तक में उसे आज का दिन कहता है जैसे पहिले कहा गया कि यदि आज तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मनों को कठोर न
८ करो। और यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश कर लेता
९ तो उस के पीछे दूसरे दिन की चर्चा न होती। सो जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये विश्राम के दिन का
१० सा विश्राम बाकी है। क्योंकि जिस ने उस के विश्राम में प्रवेश किया है उस ने परमेश्वर की नाईं अपने कामों
११ के पूरा करके[१] विश्राम किया है। सो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का यत्न करें ऐसा न हो कि कोई जन
१२ उन की नाईं आज्ञा न मान कर[२] गिर पड़े। क्योंकि परमेश्वर का वचन जीविता और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है और जीव और आत्मा को और गांठ गांठ और गूदे गूदे को अलग करके वार पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों
१३ को जांचता है। और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी

(१) या। कामों से। (२) या। अविश्वासी होकर।

नहीं पर जिस से हमें काम है उस की आंखों के सामने सारी वस्तुएं उघड़ी और खुली हुई हैं ॥

१४ सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है जो स्वर्गों से होकर गया है अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु तो १५ आओ हम अपने अंगीकार को धरे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके बरन वह सब बातों में हमारी १६ नाईं परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाएं जो ज़रूरत के समय हमारी सहायता करे ॥

५. क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता और मनुष्यों ही के लिये उन बातों के विषय जो परमेश्वर से संबन्ध रखती हैं ठहराया जाता है कि भेंट और पाप २ बलि चढ़ाया करे। और वह अज्ञानों और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है इसलिये कि वह ३ आप भी निर्बलता से घिरा है। और इसी लिये उसे चाहिए कि जैसे लोगों के लिये वैसे अपने लिये भी पाप ४ बलि चढ़ाया करे। और यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता जब तक कि हारून की नाईं परमेश्वर ५ की ओर से ठहराया न जाए। वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की बड़ाई अपने आप से न ली पर उस को उसी ने दी जिस ने उस से कहा था कि तू मेरा पुत्र है ६ आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। वह दूसरी जगह में भी कहता है तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये ७ याजक है। उस ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर और आंसू बहा बहाकर उस से जो उस को मृत्यु से बचा[1] सकता था बिनती और निवेदन किए और भक्ति के कारण उस की सुनी गई। ८ और पुत्र होने पर भी उस ने दुख उठा उठाकर आज्ञा ९ माननी सीखी। और सिद्ध निकलकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण १० हुआ। और परमेश्वर ने उसे मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक करके कहा ॥

११ इस के विषय हमें बहुत सी बातें कहनी हैं जिन का समझाना भी कठिन है इसलिये कि तुम ऊंचा १२ सुनने लगे। समय के लेखे से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिये था तौभी अवश्य है कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए और ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। १३ क्योंकि दूध पीते बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान १४ नहीं होती क्योंकि बालक है। पर अन्न सयानों के लिये है जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते भले बुरे में भेद करने के लिये पक्के हो गए हैं ॥

६. सो आओ मसीह के वचन की आरम्भ की बातों को छोड़कर हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं और मरे हुए कामों से मन २ फिराने और परमेश्वर पर विश्वास करने, और बपतिसमों और हाथ रखने और मरे हुओं के जी उठने[2] और अन्तिम ३ न्याय की शिक्षारूपी नेव फिर से न डालें। और परमे- ४ श्वर चाहे तो हम यही करेंगे। क्योंकि जिन्हों ने एक बार ज्योति पाई और जो स्वर्गीय बरदान का स्वाद चख ५ चुके और पवित्र आत्मा के भागी हो गए, और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थों का ६ स्वाद चख चुके। और फिर गए तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अन्होना है क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते और प्रगट में ७ उस पर कलंक लगाते हैं। और जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है पी पीकर जिन लोगों के लिये वह जोती बोई जाती है उन के काम का साग- पात उपजाती है वह परमेश्वर से आशिष पाती है। ८ पर यदि वह झाड़ी और ऊटकटारे उगाती है तो निकम्मी और स्रापित होने पर है और उस का अन्त जलाया जाना है ॥

९ पर हे प्यारो ऐसी ऐसी बातें करने पर भी तुम्हारे विषय हम इस से अच्छी और उद्धारवाली बातों का १० भरोसा करते हैं। क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम और उस प्रेम को भूल जाए जो तुम ने उस के नाम के लिये इस रीति से दिखाया कि पवित्र लोगों ११ की सेवा की और कर रहे हो। पर हम बहुत चाहते हैं कि तुम में से हर एक जन अन्त लों पूरी आशा के लिये १२ ऐसा ही यत्न करता रहे, कि तुम आलसी न हो जाओ बरन उन का अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं ॥

१३ और परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा देते समय जब कि किरिया खाने के लिये किसी को अपने से बड़ा १४ न पाया तो अपनी ही किरिया खाकर कहा, कि मैं सच- मुच तुझे बहुत आशिष दूंगा और तेरे सन्तान बढ़ाता

(१) या। उद्धार कर।

(२) या। मृतकोत्थान।

१५ जाऊंगा। और इस रीति से उस ने धीरज धरकर प्रतिज्ञा
१६ की हुई बात प्राप्त की। मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की किरिया खाया करते हैं और उन के हर एक
१७ विवाद का फैसला किरिया से पक्का होता है। इस लिये जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों को और भी साफ़ दिखाना चाहा कि मेरी मनसा बदलने
१८ की नहीं तो किरिया को बीच में लाया। कि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिन में परमेश्वर का झूठ बोलना अन्होना है हम को जो ठहराई हुई आशा धर लेने के लिये शरण
१९ में दौड़े हैं पूरी शांति हो जाए। वह आशा हमारे प्राण के लिये मानो लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है और परदे
२० के भीतर तक पहुंचता है। जहां यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक ठहरकर और हमारे लिये अगुवा होकर प्रवेश किया है॥

७. यह मलिकिसिदक सालेम का राजा और परम प्रधान परमेश्वर का याजक सदा के लिये याजक बना रहता है। जब इब्राहीम राजाओं को मारकर लौटा जाता था तो इसी ने उस से भेंट करके आशिष
२ दी। इसी को इब्राहीम ने सब वस्तुओं का दसवां अंश दिया। यह पहिले अपने नाम के अर्थ के अनुसार धर्म का राजा और फिर शालेम अर्थात् शान्ति का राजा है।
३ जिस का न पिता न माता न वंशावली है जिस के न दिनों का आदि न जीवन का अन्त है परन्तु परमेश्वर के पुत्र के समान ठहरा॥

४ अब सोचो कि यह कैसा महान् था जिस को कुल-पति इब्राहीम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवां
५ अंश दिया। लेवी के सन्तान में से जो याजक का पद पाते हैं उन्हें आज्ञा मिली है कि लोगों अर्थात् अपने भाइयों से चाहे वे इब्राहीम ही की देह से क्यों न जन्मे
६ हों व्यवस्था के अनुसार दसवां अंश लें। पर इस ने जो उन की वंशावली में का नहीं इब्राहीम से दसवां अंश लिया है और जिसे प्रतिज्ञाएं मिलीं उसे आशिष दी।
७ और इस में संदेह नहीं कि छोटा बड़े से आशिष पाता
८ है। और यहां तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं पर वहां वही लेता है जिस की गवाही दी जाती है कि
९ वह जीता है। सो हम यह भी कह सकते हैं कि लेवी ने भी जो दसवां अंश लेता है इब्राहीम के द्वारा दसवां अंश
१० दिया। क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने उस के पिता से भेंट की उस समय यह अपने पिता की देह में था॥

११ सो यदि लेवीय याजक पद के द्वारा सिद्धि हो सकती जिस के सहारे से लोगों को व्यवस्था मिली थी तो फिर क्या आवश्यकता थी कि दूसरा याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा हो और हारून की रीति पर का न
१२ कहलाए। क्योंकि जब याजक पद बदला जाता है तो
१३ व्यवस्था का भी बदलना अवश्य है। जिस के विषय ये बातें कही जाती हैं वह दूसरे गोत्र का है जिस में से
१४ किसी ने बेदी की सेवा नहीं की। क्योंकि प्रगट है कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र से उदय हुआ और इस गोत्र के विषय मूसा ने याजक पद की कुछ चर्चा नहीं की।
१५ और इस से हमारी यह बात और भी प्रगट हो जाएगी कि मलिकिसिदक के समान एक और ऐसा याजक खड़ा होने-
१६ वाला था। जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं पर अविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार ठहरा।
१७ क्योंकि उस के विषय यह गवाही दी गई है कि तू
१८ मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है। सो पहिली आज्ञा निर्बल और निष्फल होने के कारण लोप
१९ हो गई, इसलिये कि व्यवस्था से किसी बात की सिद्धि नहीं हो सकती और उस की जगह एक ऐसी उत्तम आशा रक्खी गई जिस के द्वारा हम परमेश्वर के समीप
२० पहुंचते हैं। और इस लिये कि उस का ठहराया जाना
२१ बिना किरिया नहीं हुआ (क्योंकि वे तो बिना किरिया याजक ठहराए गए पर यह किरिया के साथ उस की ओर से ठहरा जिस ने उस से कहा प्रभु ने किरिया खाई और उस से न पछताएगा कि तू युगानुयुग याजक है)
२२ इसलिये यीशु एक उत्तम वाचा का ज़ामिन ठहरा।
२३ और वे तो बहुत से याजक बनते आए इस कारण कि मृत्यु
२४ उन्हें रहने न देती थी। पर यह युगानुयुग रहता है इस
२५ कारण उस का याजक पद अटल है। इसी लिये जो उस के द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं वह उन का पूरा पूरा उद्धार कर सकता है क्योंकि वह उन के लिये बिनती करने को सदा जीता है॥

२६ सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था जो पवित्र और सूधा और निर्मल और पापियों से अलग और स्वर्ग
२७ से भी ऊंचा किया हुआ हो। और उन महायाजकों की नाईं उसे अवश्य नहीं कि दिन दिन पहिले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिये बलि चढ़ाए क्योंकि अपने आप को चढ़ाकर वह उसे एक ही बार कर चुका।
२८ क्योंकि व्यवस्था तो निर्बल मनुष्यों को महायाजक ठहराती है पर जो वचन व्यवस्था के पीछे किरिया के साथ कहा गया वह पुत्र को ठहराता है जो युगानुयुग सिद्ध किया गया है॥

८. जो बातें हम कह रहे हैं उन में से सब से बड़ी बात यह है कि हमारा ऐसा महा-याजक है जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दहिने
२ जा बैठा। और पवित्र स्थान और उस सच्चे तंबू का सेवक

हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं बरन प्रभु ने खड़ा किया
३ था । क्योंकि हर एक महायाजक भेंट और बलिदान चढ़ाने के लिये ठहराया जाता है इस कारण अवश्य है कि
४ इस के पास भी कुछ चढ़ाने के लिये हो । और यदि वह पृथिवी पर होता तो कभी याजक न होता इसलिये कि
५ व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ानेवाले तो हैं । जो स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं जैसे जब मूसा तंबू बनाने पर था तो उसे यह चितावनी मिली कि देख जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया
६ था उस के अनुसार सब कुछ बनाना । पर उस को उन की सेवकाई से बढ़कर मिली क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का बिचवई ठहरा जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के
७ सहारे बांधी गई । क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष
८ होती तो दूसरी के लिये अवसर न ढूंढ़ा जाता । पर वह उन पर दोष लगाकर कहता है कि प्रभु कहता है देखो वे दिन आते हैं कि मैं इस्राईल के घराने के साथ और
९ यहूदा के घराने के साथ नई वाचा बांधूंगा । यह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उन के बापदादों के साथ उस समय बांधी थी जब मैं उन का हाथ पकड़कर उन्हें मिसर देश से निकाल लाया क्योंकि वे मेरी वाचा पर न रहे और मैं ने उन की सुध न ली, प्रभु यही कहता
१० है । फिर प्रभु कहता है कि जो वाचा मैं उन दिनों के पीछे इस्राईल के घराने के साथ बांधूंगा वह यह है कि मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनों में डालूंगा और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा और मैं उन का परमेश्वर
११ ठहरूंगा और वे मेरे लोग ठहरेंगे । और हर एक को अपने स्वदेशी और हर को अपने भाई को यह कहकर न सिखाना पड़ेगा कि तू प्रभु को पहचान क्योंकि
१२ छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे । क्योंकि मैं उन के अधर्म के विषय दयावान् हूंगा और उन के पापों को
१३ फिर स्मरण न करूंगा । नई वाचा कहने से उस ने पहिली वाचा पुरानी ठहराई और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है वह मिट जाने पर है ॥

९. निदान उस पहिली वाचा में भी सेवा के नियम थे और ऐसा पवित्र स्थान
२ जो इस जगत का था । अर्थात् तम्बू बनाया गया पहिले तम्बू में दीवट और मेज़ और भेंट की रोटियां थीं और
३ वह पवित्र स्थान कहलाता है । और दूसरे परदे के पीछे
४ वह तम्बू था जो परम पवित्र स्थान कहलाता है । उस में सोने की धूपदानी और चारों और सोने से मढ़ा हुआ वाचा का सन्दूक और इस में मान से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी जिस में फूल फल आ
गए थे और वाचा की पटियां थीं । और उस के
५ ऊपर दोनों तेजोमय करूब थे जो प्रायश्चित्त के ढकने पर छाया किए हुए थे । इन्हीं का एक एक करके
६ बखान करने का अभी अवसर नहीं है । जब ये वस्तुएं इस रीति से तैयार हो चुकीं तब पहिले तम्बू में तो याजक हर समय प्रवेश करके सेवा के काम निबाहते
७ आए हैं । पर दूसरे में केवल महायाजक बरस भर में एक बार जाता है और लोहू बिना नहीं जाता जिसे अपने लिये और लोगों की भूल चूक के लिये
८ चढ़ाता है । इस से पवित्र आत्मा यही दिखाता है कि जब तक पहिला तम्बू खड़ा है तब तक पवित्र स्थान का
९ मार्ग प्रगट नहीं हुआ । और यह तो वर्तमान समय के लिये दृष्टान्त है जिस में ऐसी भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं जिन से सेवा करनेवालों के विवेक[1] सिद्ध नहीं
१० हो सकते । इसलिये कि वे केवल खाने पीने की वस्तुओं और भांति भांति के बपतिसमों समेत शारीरिक नियम हैं जो सुधराव के समय तक ठहराए गए हैं ॥

११ पर मसीह जब आनेवाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया तो उस ने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं
१२ अर्थात् इस सृष्टि का नहीं । और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा
१३ प्राप्त किया । क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से
१४ शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है । तो मसीह का लोहू जिस ने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया तुम्हारे विवेक[1] को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा कि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो ।
१५ और इसी कारण वह नई वाचा का बिचवई है कि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त
१६ करें । क्योंकि जहां वाचा[2] बांधी गई वहां वाचा बांधने-
१७ वाले[4] की मृत्यु का समझ लेना अवश्य है । क्योंकि ऐसी वाचा[3] मरने पर पक्की होती है और जब तक वाचा बांधनेवाला[4] जीता रहता है तब तक वाचा[3] काम की
१८ नहीं होती । इसलिये पहिली वाचा भी लोहू बिना
१९ नहीं बांधी गई । क्योंकि जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका तो उस ने बछड़ों

(१) मन । या कांशस । (२) और पढ़ते हैं । आए हुए । (३) या । वसीयत या विल हुई । (४) या । वसीयत या विल लिखनेवाले ।

और बकरों का लोहू लेकर पानी और लाल ऊन और जूफा के साथ पुस्तक और सब लोगों पर छिड़क दिया। २० और कहा यह उस वाचा का लोहू है जिस की आज्ञा २१ परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है। और इसी रीति से उस ने तंबू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का। २२ और मैं यह कह सकता हूं कि व्यवस्था के अनुसार सब वस्तु लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं और बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती ॥

२३ सो अवश्य है कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन के द्वारा सिद्ध किए जाएं पर स्वर्ग में की वस्तुएं आप २४ इन से उत्तम बलिदानों के द्वारा। क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाये हुए पवित्रस्थान में जो सच्चे पवित्रस्थान का नमूना है प्रवेश नहीं किया पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया कि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई २५ दे। यह नहीं कि वह अपने आप को बार बार चढ़ाए जैसा कि महायाजक बरस बरस दूसरे का लोहू लिये हुए २६ पवित्र स्थान में प्रवेश किया करता है। नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उस को बार बार दुख उठाना पड़ता पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है कि २७ अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर करे। और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उस के पीछे न्याय २८ का होना ठहरा है। वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार चढ़ाया गया और जो लोग उस की बाट जोहते हैं उन के उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा ॥

१०. व्यवस्था में तो आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है पर इन का स्वरूप नहीं इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो बरस बरस चढ़ाए जाते हैं पास २ आनेवालों को कभी सिद्ध नहीं कर सकतीं। नहीं तो उन का चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता। इसलिये कि जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते तो फिर उन ३ का विवेक[१] उन्हें पापी न ठहराता। परन्तु उन के द्वारा ४ बरस बरस पापों का स्मरण हुआ करता। क्योंकि अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर ५ करे। इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही पर मेरे लिये एक देह ६ तैयार की। होम बलियों और पाप बलियों से तू प्रसन्न ७ न हुआ। तब मैं ने कहा हे परमेश्वर देख मैं आ गया हूं पवित्र शास्त्र मेरे विषय में लिखा है कि तेरी इच्छा

(१) मन। या। कांशंस।

पूरी करूं। ऊपर वह कहता है कि बलिदान और भेंट ८ और होम बलियों और पाप बलियों को तू ने न चाहा और न उन से प्रसन्न हुआ और ये तो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं। फिर यह भी कहता है कि देख मैं ९ आ गया हूं कि तेरी इच्छा पूरी करूं सो वह पहिले को उठा देता है कि दूसरे को ठहराए। उसी इच्छा से हम १० यीशु मसीह की देह के एक ही बार चढ़ाये जाने के द्वारा पवित्र किये गये हैं। और हर एक याजक तो खड़े होकर ११ हर दिन सेवा करता है और एक ही प्रकार के बलिदान जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकते बार बार चढ़ाता है। पर यह तो पापों के बदले एक ही बलिदान सदा के १२ लिये चढ़ा कर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। और वह १३ इस की बाट जोह रहा है कि उस के बैरी उस के पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें। क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के १४ द्वारा उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सदा के लिये सिद्ध कर दिया। और पवित्र आत्मा भी हमें यह गवाही देता १५ है क्योंकि उस ने पहिले कहा था कि, प्रभु कहता है कि १६ जो वाचा मैं उन दिनों के पीछे उन से बांधूंगा वह यह है मैं अपनी व्यवस्थाओं को उन के मन में डालूंगा और उन के हृदयों पर लिखूंगा। (फिर यह कहता है कि) १७ मैं उन के पापों को और उन के अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा। पर जब इन की क्षमा हो गई १८ तो फिर पाप बलि नहीं होने का ॥

सो हे भाइयो जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा १९ उस नए और जीविते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। जो उस ने परदे अर्थात् अपने २० शरीर में से होकर हमारे लिये स्थापन किया है। और २१ हमारा ऐसा महान् याजक है जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ हम सच्चे मन और पूरे २२ विश्वास के साथ और विवेक[१] का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध पानी से धुलवाकर समीप जाएं। और अपनी आशा के अंगीकार २३ को दृढ़ता से थामे रहें क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा[२] है। और प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिये २४ एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और इकट्ठे होना न २५ छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति है पर एक दूसरे को समझाते रहें और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी यह किया करो ॥

क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के पीछे यदि २६ हम जान बूझकर पाप करते रहें तो पापों के लिये फिर कोई

(१) मन। या। कांशंस।
(२) यू०। विश्वासयोग्य।

२७ बलिदान बाक़ी नहीं । पर दण्ड का भयानक बाट जोहना
और आग का ज्वलन रह गया जो विरोधियों को भस्म
२८ करेगा । जब कि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो
या तीन जनों की गवाही पर बिना दया के मार डाला
२९ जाता है, तो सोचो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के
योग्य ठहरेगा जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा
और वाचा के लोहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया
गया था अपवित्र जाना है और अनुग्रह के आत्मा का
३० अपमान किया । क्योंकि हम उसे जानते हैं जिस ने कहा
कि पलटा लेना मेरा काम है मैं ही बदला दूंगा और फिर
३१ यह कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा । जीवित परमे-
श्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है ॥

३२ पर उन पहिले दिनों का स्मरण करो जिन में तुम
३३ ज्योति पाकर दुखों के बड़े झमेले में स्थिर रहे । कुछ तो
यों कि तुम निन्दा और क्लेश सहते हुए तमाशा बने और
कुछ यों कि उन के साझी हुए जिन की वैसी ही दशा थी ।
३४ क्योंकि तुम क़ैदियों के दुख में भी दुखी हुए और अपनी
संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी यह जान कर कि हमारे
पास एक और भी उत्तम और सदा ठहरनेवाली संपत्ति है ।
३५ सो अपना हियाव न छोड़ो कि उस का बड़ा बदला है ।
३६ क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है कि परमेश्वर की
३७ इच्छा पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ । क्योंकि
बहुत ही थोड़ा समय रह गया है कि आनेवाला आएगा
३८ और देर न करेगा । और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीता
रहेगा और यदि वह पीछे हटे तो मेरा मन उस से प्रसन्न
३९ न होगा । पर हम हटनेवाले नहीं कि नाश हो जाएं पर
विश्वास करनेवाले हैं कि प्राण बचाएं ॥

११

विश्वास आशा की हुई बातों का निश्चय और अनदेखी बातों
२ का प्रमाण है । इसी के विषय प्राचीनों की अच्छी
३ गवाही दी गई । विश्वास से हम जान जाते हैं कि सारे
जगत परमेश्वर के वचन के द्वारा रचे गए यह नहीं कि
जो कुछ देखने में आता है वह देखी हुई वस्तुओं से बना
४ हो । विश्वास से हाबील ने कैन के से बढ़िया बलिदान
परमेश्वर के लिये चढ़ाया और उसी के द्वारा उस के
धर्मी होने की गवाही दी गई क्योंकि परमेश्वर ने उस
की भेंटों के विषय गवाही दी और उसी के द्वारा वह
५ मरने पर भी अब तक बातें करता है । विश्वास से हनोक
उठा लिया गया कि मृत्यु को न देखे और नहीं मिला
क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था क्योंकि उस के
उठाए जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई थी कि
६ उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया । और विश्वास बिना
उसे प्रसन्न करना अनहोना है क्योंकि परमेश्वर के पास
आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है और
अपने खोजनेवालों को बदला देता है । विश्वास से नूह ७
ने उन बातों के विषय जो उस समय देख न पड़ती
थीं चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव
के लिये जहाज़ बनाया और उस के द्वारा उसने संसार
को दोषी ठहराया और उस धर्म का वारिस हुआ जो
विश्वास से होता है । विश्वास से इब्राहीम जब बुलाया ८
गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे
मीरास में लेनेवाला था और यह न जानता था कि मैं
किधर जाता हूं तौभी निकल गया । विश्वास से उस ने ९
प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रह
कर इसहाक और याक़ूब समेत जो उस के साथ उसी
प्रतिज्ञा के वारिस थे तंबुओं में वास किया । क्योंकि वह १०
उस नेववाले[१] नगर की बाट जोहता था जिस का रचने-
वाला और बनानेवाला परमेश्वर है । विश्वास से साराह ११
ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ
पाई क्योंकि उस ने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा[२] जाना
था । इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था १२
आकाश के तारों और समुद्र के तीर की बालू की नाईं
अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ ॥

ये सब विश्वास की दशा में मरे और उन्हों ने १३
प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं न पाईं पर उन्हें दूर से देखकर
नमस्कार किया और मान लिया कि हम पृथिवी पर
परदेशी और ऊपरी हैं । जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं वे १४
प्रगट करते हैं कि स्वदेश की खोज में हैं । और जिस देश १५
से वे निकल आए थे यदि उस की सुध करते तो उन्हें
लौट जाने का अवसर था । पर वे एक उत्तम अर्थात् १६
स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं इसी लिये परमेश्वर उन का
परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता सो उस ने उन
के लिये एक नगर तैयार किया है ॥

विश्वास से इब्राहीम ने जब परखा जाता था तो १७
इसहाक को चढ़ाया और जिस ने प्रतिज्ञाओं को सच
माना था, और जिस से यह कहा गया था कि इसहाक १८
से तेरा वंश कहलाएगा वह अपने एकलौते को चढ़ाने
लगा । क्योंकि उस ने बिचार किया कि परमेश्वर सामर्थी १९
है कि मरे हुओं में से जिलाए सो उन्हीं में से दृष्टान्त की
रीति पर वह उसे फिर मिला । विश्वास से इसहाक ने २०
याक़ूब और एसौ को आनेवाली बातों के विषय आशिष

(१) या । स्थिर रहनेवाले ।
(२) यू० । विश्वासयोग्य

२१ दी। विश्वास से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनों पुत्रों में से एक एक को आशिष दी और अपनी लाठी के
२२ सिरे पर सहारा लेकर प्रणाम किया। विश्वास से यूसुफ ने जब वह मरने पर था इस्राईल के सन्तान के निकल जाने की चर्चा की और अपनी हड्डियों के विषय
२३ आज्ञा दी। विश्वास से मूसा के माता पिता ने उस को उत्पन्न होने के पीछे तीन महीने तक छिपा रखा क्योंकि उन्हों ने देखा कि बालक सुन्दर है और वे राजा की
२४ आज्ञा से न डरे। विश्वास से मूसा सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से मुकर गया।
२५ इसलिये कि उसे पाप के थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और अच्छा
२६ लगा। और मसीह के कारण निन्दित होना मिसर में भंडार से बड़ा धन समझा क्योंकि उस की आंखें
२७ फल पाने की ओर लगी थीं। विश्वास से राजा के क्रोध से न डर कर उस ने मिसर को छोड़ दिया क्योंकि वह
२८ अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा। विश्वास से उस ने फसह और लोहू छिड़कने की विधि मानी जिस से कि पहिलौठों का नाश करनेवाला इस्राईलियों[1] पर हाथ
२९ न डाले। विश्वास से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए जैसे सूखी भूमि पर से और जब मिस्रियों ने
३० वैसा ही करना चाहा तो डूब मरे। विश्वास से जब वे यरीहो की शहरपनाह के आस पास सात दिन तक
३१ घूम चुके तो वह गिर पड़ी। विश्वास से राहाब वेश्या *आज्ञा न माननेवालों*[2] के साथ *नाश न हुई* इसलिये कि
३२ उस ने भेदियों को कुशल से रक्खा। अब और क्या कहूं। क्योंकि समय नहीं रहा कि गिदोन का और बाराक और शिमशोन का और यिफतह का और दाऊद और समवील
३३ का और नबियों का वर्णन करूं। इन्हों ने विश्वास के द्वारा राज्य जीते धर्म के काम किए प्रतिज्ञा की हुई
३४ वस्तुएं पाईं सिंहों के मुंह बन्द किए। आग की जलन को ठंडा किया तलवार की धार से बच निकले निर्बलता में बलवन्त हुए लड़ाई में वीर निकले विदेशियों की
३५ फौजों को मार भगाया। स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर जीवित पाया। कितने तो मार खाते खाते मर गए और छुटकारा न चाहा इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान[3] के
३६ भागी हों। कई एक ठट्ठों में उड़ाए जाने फिर कोड़े खाने वरन बांधे जाने और क़ैद में पड़ने के द्वारा परखे गए।
३७ पत्थरवाह किए गए आरे से चीरे गए उन की परीक्षा की गई तलवार से मारे गए वे कंगाली और क्लेश और दुख उठाते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए इधर
३८ उधर मारे मारे फिरे। और जंगलों और पहाड़ों और गुफाओं में और पृथिवी की दरारों में भरमते फिरे। संसार उन के योग्य न था।
३९ और विश्वास के द्वारा इन सब के विषय अच्छी गवाही दी गई तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली।
४० क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये एक उत्तम बात ठहराई कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें॥

१२. इस कारण जब कि हम गवाहों की ऐसी भारी घटा से घिरे हुए हैं तो आओ हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है
२ धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें जिस ने उस आनन्द के लिये जो उस के आगे धरा था लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा और सिंहासन पर परमेश्वर
३ के दहिने जा बैठा। सो उस पर ध्यान करो जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना विवाद सह लिया ऐसा न हो कि मन ढीले पड़ जाने से हियाव
४ छोड़ दो। तुम ने पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़
५ नहीं की कि लोहू बहा हो। और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाईं दिया जाता है भूल गए हो कि हे मेरे पुत्र प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान
६ और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। क्योंकि प्रभु जिसे प्रेम करता है उस की ताड़ना भी करता है और
७ जिसे पुत्र बना लेता है उस को कोड़े भी लगाता है। तुम दुख को ताड़ना समझ कर सह लो। परमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर तुम्हारे साथ बरताव करता है वह कौन सा पुत्र
८ है जिस की ताड़ना पिता नहीं करता। यदि वह ताड़ना जिस के भागी सब होते हैं तुम्हारी नहीं हुई तो तो तुम पुत्र
९ नहीं पर व्यभिचार के सन्तान ठहरे। फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न होकर जीते रहें।
१० वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता
११ है कि हम भी उस की पवित्रता के भागी हो जाएं। और हर प्रकार की ताड़ना जब होती है तो आनन्द की नहीं पर शोक ही की बात देख पड़ती है तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का फल
१२ मिलता है। इसलिये ढीले हाथों और निबल घुटनों को
१३ सीधे करो। और अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा भटक न जाए[4] पर भला चंगा हो जाए॥

(१) यू०। उन। (२) या। अविश्वासियों।
(३) या। मृतकोत्थान।

(४) या। लंगड़े की हड्डी उखड़ न जाए।

१४ सब से मिलाप रखने और उस पवित्रता के खोजी
१५ हो जिस बिना कोई प्रभु को न देखेगा। और ध्यान से देखते रहो ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह बिना रह जाए या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे और उस के
१६ द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी या एसौ की नाईं अधर्मी हो जिस ने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का
१७ पद बेच डाला। तुम जानते तो हो कि इस के पीछे जब उस ने आशिष पानी चाही तो अयोग्य गिना गया सो उस के आंसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर न मिला ॥

१८ तुम तो उस पहाड़ के पास जो छूआ जाता और आग से जलता था और काली घटा और अंधेरा
१९ और आंधी के पास, और तुरही की ध्वनि और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए जिस के सुननेवालों ने बिनती की कि हम से और बातें न की
२० जाएं। क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सकते थे कि यदि पशु भी पहाड़ को छुए तो पत्थरवाह किया
२१ जाए। और वह दर्शन ऐसा डरावना था कि मूसा ने कहा मैं बहुत डरता और कांपता हूं। पर तुम सिय्योन
२२ के पहाड़ के पास और जीविते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय
२३ यरूशलेम के पास, और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं और सब के न्यायी परमेश्वर के पास और सिद्ध किये हुए धर्मियों के आत्माओं,
२४ और नई वाचा के बिचवई यीशु और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो जो हाबील के लोहू से अच्छी
२५ बातें बोलता है। चौकस रहो और उस कहनेवाले से मुंह न फेरो क्योंकि वे लोग जब पृथिवी पर के चितावनी करनेवाले से मुंह मोड़ कर न बच सके तो हम स्वर्ग पर के चितावनी करनेवाले से मुंह मोड़कर क्योंकर बच
२६ सकेंगे। उस समय तो उस के शब्द ने पृथिवी को डुलाया पर अब उस ने यह प्रतिज्ञा की है कि एक बार फिर मैं केवल पृथिवी को नहीं बरन आकाश को भी डुला दूंगा।
२७ इस बात से कि एक बार फिर यही प्रगट होता है कि जो वस्तु डुलाई जाती हैं वे सिरजी हुई वस्तुएं होने के कारण टल जाएंगी जिस से कि जो वस्तुएं डुलाई नहीं जातीं वे
२८ बनी रहें। इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो डोलने का नहीं उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें जिस के द्वारा हम भक्ति और भय सहित परमेश्वर की ऐसी सेवा करें
२९ जो उसे भाए। क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है ॥

१३.

भाईचारे की प्रीति बनी रहे।
२ पहुनई करना न भूलना क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने स्वर्गदूतों की पहुनई बिन
३ जाने की है। क़ैदियों की ऐसी सुध लो कि मानों उन के साथ तुम भी क़ैद हो और जिन के साथ बुरा बरताव किया जाता है उन की भी यह समझकर सुध लिया करो
४ कि हमारी भी देह है। विवाह सब में आदर की बात समझी जाए और बिछौना निष्कलंक रहे क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।
५ तुम्हारा स्वभाव लोभ रहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर सन्तोष करो क्योंकि उस ने आप ही कहा है मैं
६ तुझे कभी न छोड़ूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा। इसलिये हम बेधड़क होकर कहते हैं कि प्रभु मेरा सहायक है मैं न डरूंगा मनुष्य मेरा क्या करेगा ॥

७ जो तुम्हारे अगुवे थे और जिन्हों ने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है उन्हें स्मरण रक्खो और ध्यान से उन के चालचलन का अन्त देखकर उन के विश्वास का अनुकरण
८ करो। यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग
९ एकसा है। नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है और न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम
१० रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ। हमारी एक ऐसी बेदी है जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को
११ नहीं जो तंबू की सेवा करते हैं। क्योंकि जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप बलि के लिये पवित्र स्थान में ले जाता है उन की देह छावनी के बाहर जलाई जाती
१२ हैं। इसी कारण यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुख उठाया।
१३ सो आओ उस की निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी
१४ के बाहर उस के पास निकल चलें। क्योंकि यहां हमारा कोई बना रहनेवाला नगर नहीं बरन हम उस होनहारे
१५ नगर की खोज में हैं। इसलिये हम उस के द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान अर्थात् उन होंठों का फल जो उस के नाम का अंगीकार करते हैं परमेश्वर के लिये सदा चढ़ाया
१६ करें। पर भलाई करना और उदारता न भूलो क्योंकि
१७ परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है। अपने अगुवों की मानो और उन के आधीन रहो क्योंकि वे उन की नाईं तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते जिन्हें लेखा देना पड़ेगा कि वे यह काम आनन्द से करें न कि ठंडी सांस ले लेकर क्योंकि इस से तुम्हें कुछ लाभ नहीं ॥

१८ हमारे लिये प्रार्थना करते रहो क्योंकि हमें भरोसा

है कि हमारा विवेक[१] सीधा है और हम सब बातों में १९ अच्छी चाल चलना चाहते हैं। और इस के करने के लिये मैं तुम्हें और भी समझाता हूं कि मैं जल्द तुम से भेंट फिर कर सकूं॥

२० अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान् रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के २१ गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया, तुम्हें हरएक अच्छी बात में सिद्ध करे कि उस की इच्छा पूरी करो और जो कुछ उस को भाता है उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

२२ हे भाइयो मैं तुम से बिनती करता हूं कि इन उपदेश की बातों को सह लेओ क्योंकि मैं ने तुम्हें बहुत २३ थोड़े में लिखा है। यह जानो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया और यदि वह जल्द आ जाएगा तो मैं उस के साथ तुम से भेंट करूंगा॥

२४ अपने सब अगुवों और सब पवित्र लोगों से नमस्कार कहो। इतालियावालों का तुम्हें नमस्कार॥

२५ तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन॥

(१) मन। या। कांशंस।

याकूब की पत्री।

---

१. परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों गोत्रों को जो तित्तर बित्तर होकर रहते हैं नमस्कार॥

२ हे मेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं ३ में पड़ो, तो इस को पूरे आनन्द की बात समझो यह जान कर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से ४ धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम सिद्ध और पूरे हो और तुम में किसी बात की घटी न रहे॥

५ पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से मांगे जो उलाहने दिये बिना सब को ६ उदारता से देता है और उस को दी जाएगी। पर विश्वास से मांगे और कुछ संदेह न करे क्योंकि जो संदेह करता है वह समुद्र के हिलकोरे के समान है जो हवा ७ से बहता उछलता है। ऐसा मनुष्य न समझे कि मुझे ८ प्रभु से कुछ मिलेगा। वह दुचित्ता और अपने सारे चालचलन में चंचल है॥

९ दीन भाई अपने ऊंचे पद पर घमण्ड करे, १० और धनवान अपने नीचे पद पर क्योंकि घास के फूल ११ की नाईं वह जाता रहेगा। क्योंकि सूरज निकलते ही कड़ी धूप पड़ती और घास को सुखा देती और उस का फूल झड़ जाता है और उस की शोभा जाती रहती है वैसे ही धनवान भी अपने मार्ग पर मुरझाएगा॥

१२ धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है। १३ जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती और न वह १४ किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु हर कोई अपने ही अभिलाष से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में १५ पड़ता है। फिर अभिलाष गर्भवती होकर पाप को जनता है और पाप जब बढ़ चुका तो मृत्यु उत्पन्न १६ करता है। हे मेरे प्यारे भाइयो धोखा न खाओ। १७ हर एक अच्छा दान और हर एक उत्तम बर ऊपर से है और ज्योतियों के पिता की ओर से उतरता है जिस में न १८ अदल बदल न फेर फार की छाया है। उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया इसलिये कि हम उस की सिरजी हुई वस्तुओं के मानो पहिले फल हों॥

१९ हे मेरे प्यारे भाइयो यह बात तुम जानते हो इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तैयार पर बोलने में २० धीरा और क्रोध में धीमा हो। क्योंकि मनुष्य का क्रोध २१ परमेश्वर के धर्म को नहीं निबाहता है। इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके अपने मनों में उस लगाए हुए वचन को जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है नम्रता से ग्रहण करो। २२ वचन पर चलनेवाले बनो और केवल ऐसे सुननेवाले २३ नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। क्योंकि यदि कोई वचन का सुननेवाला हो और उस पर चलनेवाला न हो तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह २४ दर्पण में देखता है। क्योंकि वह अपने आप को देखता

और चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा २५ था। पर जो जन स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था को ध्यान से देखता रहता है वह अपने काम में इसलिये धन्य होता कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसाही काम करता है। २६ यदि कोई अपने आप को भक्त समझे और अपनी जीभ पर बाग न लगाए पर अपने मन को धोखा दे तो इस २७ की भक्ति व्यर्थ है। परमेश्वर पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुध लें और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें॥

२. हे मेरे भाइयो हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ २ न हो। क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आए और एक ३ कंगाल भी मैले कुचैले कपड़े पहिने हुए आए। और तुम उस सुन्दर वस्त्रवाले का मुंह देखकर कहो तू यहां अच्छी जगह बैठ और उस कंगाल से कहो तू वहां खड़ा ४ रह या मेरे पांवों की पीढ़ी के पास बैठ। तो क्या तुम ने अपने अपने मन में भेद न माना और कुविचार से ५ न्याय करनेवाले न ठहरे। हे मेरे प्यारे भाइयो सुनो क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के वारिस हों जिस की उस ने उन्हें जो उस से प्रेम रखते हैं प्रतिज्ञा की है। ६ पर तुम ने उस कंगाल का अपमान किया। क्या धनी लोग तुम पर अंधेर नहीं करते और क्या वे ही तुम्हें ७ कचहरियों में घसीट घसीट कर नहीं ले जाते। क्या वे उस उत्तम नाम की जिस से तुम कहलाए जाते हो ८ निन्दा नहीं करते। पर यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख सचमुच इस राज्य व्यवस्था को पूरी करते हो ९ तो अच्छा करते हो। पर यदि तुम पक्षपात करते हो तो पाप करते हो और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती १० है। क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था को मान ले पर एक ११ ही बात में चूके वह सब बातों में दोषी ठहरा। इस लिये कि जिस ने कहा व्यभिचार न करना उस ने यह भी कहा कि खून न करना सो यदि तू ने व्यभिचार न किया पर खून किया तौभी तू व्यवस्था का अपराधी हो १२ चुका। तुम उन लोगों की नाईं बोलो और काम भी करो जिन का न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार १३ होगा। क्योंकि जिस ने दया न की उस का न्याय बिना दया के होगा। दया न्याय पर जय जयकार[1] करती है॥

(१) यू०। घमण्ड।

१४ हे मेरे भाइयो यदि कोई कहे मुझे विश्वास है पर कर्म न करता हो तो क्या लाभ है। क्या ऐसा १५ विश्वास उस का उद्धार कर सकता है। यदि कोई भाई बहिन नंगे उघाड़े हों और उन्हें हर दिन के भोजन की १६ घटी हो। और तुम में से कोई उन से कहे कुशल से जाओ तुम्हें जाड़ा न लगे[2] तुम तृप्त रहो पर जो वस्तु १७ देह के लिये अवश्य हैं उन्हें न दे तो क्या लाभ। वैसे ही विश्वास भी यदि कर्म सहित न हो तो आप ही १८ मरा हुआ है। पर कोई कहेगा तुझे विश्वास है और मैं कर्म करता हूं तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना दिखा और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के १९ द्वारा तुझे दिखाऊंगा। तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है। तू अच्छा करता है। दुष्टात्मा भी २० विश्वास रखते और थरथराते हैं। पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता कि कर्म बिना २१ विश्वास अकारथ है। जब हमारे पिता इब्राहीम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया तो क्या वह २२ कर्मों से धर्मी न ठहरा था। सो तू देखता है कि विश्वास उस के कामों के साथ साथ कार्य्य करता था २३ और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ। और पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ कि इब्राहीम ने परमेश्वर की प्रतीति की और यह उस के लिये धर्म गिना गया और २४ वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। सो तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं बरन कर्मों से भी धर्मी २५ ठहरता है। वैसे ही राहाब वेश्या भी जब उस ने दूतों को अपने घर में उतारा और दूसरे मार्ग से बिदा किया २६ तो क्या कर्मों से धर्मी न ठहरी। निदान जैसे देह आत्मा बिना मरा हुआ है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है॥

३. हे मेरे भाइयो तुम में से बहुत उपदेशक न बनें क्योंकि जानते हो कि हम २ उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे। इसलिये कि हम सब बहुत बार चूकते हैं। यदि कोई वचन में नहीं चूकता तो वही सिद्ध मनुष्य है और सारी देह पर भी ३ लगाम लगा सकता है। जब हम घोड़ों के मुंह में इसलिये लगाम लगाते हैं कि वे हमारी मानें तो हम ४ उन की सारी देह फेर सकते हैं। देखो जहाज़ भी जो ऐसे बड़े होते हैं और तेज़ हवाओं से चलाए जाते हैं पर छोटी ही पतवार से जिधर मांझी का मन चाहता हो ५ घुमाए जाते हैं। वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग

(२) यू०। गरम रहो।

है और बड़ी गलफटाकी करती है । देखो थोड़ी सी आग
६ कैसे बड़े वन को फूंक देती है । जीभ भी एक आग है जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है और सारी देह पर कलंक लगाती है और भवचक्र में आग लगाती
७ है और नरक की आग से जलती रहती है । और वन-पशुओं पक्षियों और रेंगनेवाले जन्तुओं और जलचरों की भी हर एक जाति मनुष्य जाति के वश में हो जाती है
८ और हो गई है । पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता वह एक ऐसी बुराई है जो रुकती
९ नहीं वह मारू बिष से भरी हुई है । इसी से हम प्रभु और पिता का धन्यवाद करते हैं और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर की समानता में बने हैं स्राप देते हैं ।
१० एक ही मुंह से धन्यवाद और स्राप दोनों निकलते हैं ।
११ हे मेरे भाइयो ऐसा न होना चाहिए । क्या सोते के एक
१२ ही मुंह से मीठा और खारा दोनों बहते हैं । हे मेरे भाइयो क्या अंजीर के पेड़ में ज़ैतून या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं । वैसे ही खारे सोते से मीठा पानी नहीं निकल सकता ॥

१३ तुम में ज्ञानवान् और समझदार कौन है वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित
१४ प्रगट करे जो ज्ञान से होता है । पर यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो तो सत्य के
१५ विरोध में घमण्ड न करना और न झूठ बोलना । यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता है बरन सांसारिक
१६ और शारीरिक और शैतानी है । इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है वहां बखेड़ा और हर प्रकार का बुरा
१७ काम होता है । पर जो ज्ञान ऊपर से आता है पहिले तो वह पवित्र फिर मिलनसार कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और
१८ कपट रहित है । और मिलाप करनेवालों के लिये धर्म का फल मेल मिलाप के साथ बोया जाता है ॥

४. तुम में लड़ाई कहां से और झगड़े कहां से क्या उन सुख बिलासों से नहीं
२ जो तुम्हारे अंगों में लड़ते हैं । तुम लालसा रखते हो और तुम्हें मिलता नहीं तुम ख़ून और डाह करते हो और कुछ प्राप्त नहीं कर सकते तुम झगड़ा और लड़ाई करते हो तुम्हें इसलिये नहीं मिलता कि मांगते नहीं ।
३ तुम मांगते हो और पाते नहीं इसलिये कि बुरे मतलब
४ से मांगते हो कि अपने सुख बिलास में उड़ा दो । हे व्यभिचारिणियो क्या तुम नहीं जानतीं कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है । सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है वह परमेश्वर का बैरी
५ ठहरता है । क्या तुम यह समझते हो कि पवित्र शास्त्र व्यर्थ कहता है । जो आत्मा उस ने हम में बसाया है
६ क्या वह ऐसी लालसा करता है जिस से डाह हो । पर वह और भी अनुग्रह देता है इस कारण यह आया है कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है पर दीनों
७ पर अनुग्रह करता है । इसलिये परमेश्वर के अधीन होओ शैतान[1] का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से
८ भाग जाएगा । परमेश्वर के निकट आओ तो वह तुम्हारे निकट आएगा । हे पापियो अपने हाथ शुद्ध करो और
९ हे दुचित्ते लोगो अपने मन पवित्र करो । दुखी होओ और शोक करो और रोओ तुम्हारी हंसी शोक से और
१० तुम्हारा आनन्द उदासी से बदल जाए । प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें बढ़ाएगा ॥

११ हे भाइयो एक दूसरे की बदनामी न करो जो अपने भाई की बदनामी करता है या भाई पर दोष लगाता है वह व्यवस्था की बदनामी करता है और व्यवस्था पर दोष लगाता है और यदि तू व्यवस्था पर दोष लगाता है तो तू व्यवस्था पर चलनेवाला नहीं पर
१२ उस पर हाकिम ठहरा । व्यवस्था देनेवाला और हाकिम तो एक ही है जिसे बचाने और नाश करने की सामर्थ है तू कौन है जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है ॥

१३ अब आओ तुम जो कहते हो कि आज या कल हम उस नगर में जाकर वहां एक बरस बिताएंगे और
१४ लेन देन कर कमाएंगे । और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा । तुम्हारा जीवन है क्या । तुम तो मानो भाफ हो जो थोड़ी देर दिखाई देती है फिर जाती रहती है ।
१५ इस के बदले तुम्हें यह कहना चाहिये कि प्रभु चाहे तो
१६ हम जीते रहेंगे और यह या वह काम भी करेंगे । पर अब तुम अपनी गलफटाकियों पर घमण्ड करते हो ऐसा
१७ सारा घमण्ड बुरा है । सो जो कोई भलाई करना जानता और नहीं करता उस के लिये यह पाप है ॥

५. अब आओ हे धनवानो अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्लाकर रोओ ।
२ तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे कपड़े कीड़े खा
३ गए । तुम्हारे सोने चांदी में काई लग गई और वह काई तुम पर गवाही देगी और आग की नाईं तुम्हारा मांस खा जाएगी । तुम ने पिछले समय में धन बटोरा
४ है । देखो जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेत काटे उन की मज़दूरी जो तुम ने धोखा देके रख छोड़ी चिल्लाती है और

---

(१) यू० । इबलीस ।

लवनेवालों की दोहाई सेनाओं के प्रभु के कानों तक ५ पहुंच गई है। तुम पृथिवी पर सुख बिलास में रहे तुम ने जैसे वध के दिन ही में अपने मन को पाला पोसा ६ है। तुम ने धर्मी को दोषी ठहराकर मार डाला वह तुम्हारा सामना नहीं करता॥

७ सो हे भाइयो प्रभु के आने तक धीरज धरो देखो गृहस्थ पृथिवी के बहुमोल फल की आस रखता हुआ पहिली और पिछली वर्षा होने तक धीरज धरता ८ है। सो तुम भी धीरज धरो और अपने मन को स्थिर ९ करो क्योंकि प्रभु का आना निकट है। हे भाइयो एक दूसरे पर न कुड़कुड़ाओ कि तुम दोषी न ठहरो देखो १० हाकिम द्वार पर खड़ा है। हे भाइयो जिन नबियों ने प्रभु के नाम से बातें कीं उन्हें दुख उठाने और धीरज ११ धरने का नमूना समझो। देखो हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुम ने ऐयूब के धीरज के विषय तो सुना ही है और प्रभु की ओर से जो उस का फल हुआ उसे भी देखा है कि प्रभु बहुत तरस खाता और दया करता है॥

१२ पर हे मेरे भाइयो सब से बढ़कर बात यह है कि किरिया न खाना न स्वर्ग की न पृथिवी की न किसी और वस्तु की पर तुम्हारी हां की हां और नहीं की नहीं हो कि तुम दोषी न ठहरो॥

क्या तुम में कोई दुखी है तो वह प्रार्थना करे १३ क्या कोई आनन्दित है तो वह भजन गाए। क्या तुम १४ में कोई बीमार है तो मण्डली के प्राचीनों[१] को बुलाए और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उस के लिये प्रार्थना करें। और विश्वास की प्रार्थना बीमार को १५ बचाएगी और प्रभु उस को उठा खड़ा करेगा और यदि उस ने पाप भी किये हों तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। सो तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने १६ अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिस से चंगे हो जाओ धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। एलियाह भी तो १७ हमारे समान दुख सुख भोगी मनुष्य था और उस ने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे और साढ़े तीन बरस तक भूमि पर मेंह न बरसा। फिर उस ने १८ प्रार्थना की तो आकाश से वर्षा हुई और भूमि फल-वन्त हुई॥

हे मेरे भाइयो यदि तुम में कोई सत्य से भटक १९ जाए और कोई उस को फेर लाए। तो जान ले कि जो २० कोई किसी पापी को उस के भटकने से फेर लाएगा वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा और बहुतेरे पापों को ढांपेगा॥

(१) या। प्रिस्बुतिरों।

पतरस की पहिली पत्री।

१. पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस गलतिया कप्पदुकिया आसिया और २ बिथुनिया में तित्तर बित्तर होके रहते हैं, और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं॥

तुम्हें बहुतायत से अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो जिस ने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के ४ लिये नया जन्म दिया, अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल और अजर मीरास के लिये, जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में ५ रक्खी है जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है की जाती है। और इस से तुम मगन होते ६ हो यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण उदास हो। और यह इसलिये ७ है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी बहुत ही बहुमोल है यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे। उस से तुम बिन देखे प्रेम रखते हो ८ और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्द में मगन होते हो जो कहने से बाहर और महिमा से भरा है। और अपने विश्वास का फल अर्थात् आत्माओं ९

१० का उद्धार पाते हो। इस उद्धार के विषय उन नबियों ने बहुत पूछ पाछ और खोज खाज की जिन्हों ने उस अनुग्रह के विषय जो तुम पर होने को था नबूवत की।
११ वे यह खोज करते थे कि मसीह का आत्मा जो उन में था पहिले से मसीह के दुखों की और उन के पीछे होनेवाली महिमा की गवाही देता हुआ कौन और कैसा
१२ समय बताता था। उन पर प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं बरन तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे जो अब तुम्हें उन से जिन्हों ने स्वर्ग से भेजे हुए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया मिलीं और इन बातों को स्वर्गदूत ध्यान से देखने की इच्छा रखते हैं॥

१३ इस कारण अपने अपने मन की कमर बांधकर और सचेत रह कर उस अनुग्रह की पूरी आशा रक्खो जो यीशु मसीह के प्रगट होने पर तुम्हें मिलनेवाला है।
१४ आज्ञा माननेवाले बालकों की नाईं अपनी अज्ञानता के
१५ समय के पुराने अभिलाषों के सदृश न बनो। पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है वैसे ही तुम भी अपने सारे
१६ चालचलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है कि पवित्र
१७ बने रहो क्योंकि मैं पवित्र हूं। और जब कि तुम हे पिता पुकार कर उस से प्रार्थना करते हो जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है तो अपने पर-
१८ देशी होने का समय भय से बिताओ। क्योंकि जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता था उस से तुम्हारा छुटकारा चांदी सोने अर्थात्
१९ नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं, पर निर्दोष और निष्क-
२० लंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमोल लोहू के द्वारा हुआ। वह तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया था पर अब इस पिछले समय तुम्हारे लिये प्रगट
२१ हुआ। जो उस के द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो जिस ने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी
२२ कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो। सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है तो मन
२३ लगा कर एक दूसरे से बहुत ही प्रेम रक्खो। क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीविते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म
२४ पाया है। क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं और उस की सारी शोभा घास के फूल की नाईं है। घास सूख
२५ जाती है और फूल झड़ जाता है। परन्तु प्रभु का वचन सदा ठहरेगा और यह वही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था॥

२. इसलिये सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और ग़ीबत को दूर
२ करके, नये जन्मे बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो कि उस के द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते
३ जाओ। जब कि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख
४ लिया है, उस के पास आकर जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहु-
५ मोल जीविता पत्थर है। तुम भी आप जीविते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो कि याजकों का पवित्र समाज बनकर ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु
६ मसीह के द्वारा परमेश्वर को भाते हैं। इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है कि देखो मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमोल पत्थर रखता हूं और जो उस पर विश्वास करेगा वह किसी रीति से लज्जित न
७ होगा। सो तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो वह बहुमोल है पर जो विश्वास नहीं करते उन के लिये जिस[१] पत्थर को राजों ने निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया,
८ और ठेस[२] का पत्थर और ठोकर की चटान हुआ है। क्योंकि वे तो वचन को न मान कर ठोकर खाते हैं और
९ इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे। पर तुम चुना हुआ वंश और राज पदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग और [परमेश्वर की] निज प्रजा हो इसलिये कि जिस ने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में
१० बुलाया है उस के गुण प्रगट करो। तुम पहिले तो प्रजा न थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो तुम पर दया न हुई थी पर अब तुम पर दया हुई॥

११ हे प्यारो मैं तुम्हारी बिनती करता हूं कि परदेशियों और ऊपरियों की नाईं सांसारिक अभिलाषों से जो आत्मा
१२ से लड़ते हैं बचे रहो। अन्य जातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जान कर बदनाम करते हैं वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपादृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें॥

१३ प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबंध के अधीन रहो चाहे राजा के कि वह सब पर प्रधान है,
१४ चाहे हाकिमों के कि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और
१५ सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उस के भेजे हुए हैं। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने से
१६ निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द करो। स्वतंत्रों

(१) भजन संहिता। ११८:२२ को देखो। (२) यशायाह ८:१४ को देखो।

की नाईं चलो पर अपनी स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ परन्तु परमेश्वर के दासों की नाईं चलो।
१७ सब का आदर करो भाइयों से प्रेम रक्खो परमेश्वर से डरो राजा का आदर करो॥

१८ हे टहलुओ हर प्रकार के भय[1] के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो न केवल भलों और कोमलों के
१९ पर कुटिलों के भी। क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके[2] अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है तो
२० यह भाता है। क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा तो इस में क्या बड़ाई की बात है पर यदि भला काम करके दुख उठाते और धीरज धरते
२१ हो तो यह परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिये बुलाए गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर तुम्हें एक नमूना छोड़ गया है कि तुम उस की
२२ लीक पर चलो। न उस ने पाप किया और न उस के मुंह
२३ से छल की बात निकली। वह गाली खाकर गाली न देता था और दुख उठाकर किसी को धमकी न देता था पर अपने आपको धर्म से न्याय करनेवाले के हाथ सौंपता
२४ था। वह आप हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया[3] जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीएं और उसी के मार खाने से तुम
२५ चंगे हुए। क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष[4] के पास फिर आ गए हो॥

३. हे पत्नियो तुम भी अपने अपने पति के
२ अधीन रहो, इसलिये कि यदि इन में से कोई कोई वचन को न मानते हों तौभी तुम्हारा भय[5] सहित पवित्र चालचलन देखकर वचन बिना अपनी
३ अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खींचे जाएं। तुम्हारा सिंगार ऊपरी न हो जैसा बाल गूंथने और सोने के गहने
४ या भांति भांति के कपड़े पहिनना। पर हृदय के गुप्त मनुष्यत्व उस नम्र और शान्त आत्मा के अविनाशी शोभा सहित जो परमेश्वर के निकट बहुमोल है तुम्हारा सिंगार
५ हो। और बीते समय में पवित्र स्त्रियां भी जो परमेश्वर की आशा रखती थीं अपने आप को इसी रीति से संवारती और अपने अपने पति के अधीन रहती थीं।
६ जैसे साराह इब्राहीम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी सो तुम भी यदि भलाई करो और किसी प्रकार के डरावे से न डरो तो उस की बेटियां ठहरोगी॥

७ वैसे ही हे पतियो बुद्धिमानी से उन के साथ जीवन बिताओ और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उस का आदर करो यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान[6] के वारिस हैं जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रोकी न जाएं॥

८ निदान सब के सब एक मन और हमदर्द और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले और करुणामय और नम्र
९ बनो। बुराई के बदले बुराई न करो और न गाली के बदले गाली दो पर इस के पलटे आशिष ही दो क्योंकि तुम आशिष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो।
१० क्योंकि जो कोई जीवन को इच्छा रखता और अच्छे दिन देखना चाहता है वह अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे।
११ वह बुराई को छोड़े और भलाई करे वह मेल को ढूंढ़े
१२ और उस का पीछा न छोड़े। क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं और उस के कान उन की बिनती की ओर लगे हैं परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के बिमुख रहता है॥

१३ और यदि तुम भलाई करने में सरगर्म रहो तो
१४ तुम्हारी बुराई करनेवाला कौन है। और यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ तो धन्य हो पर उन के भय
१५ से भय न खाओ और न घबराओ। पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र मानो और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय कुछ पूछे तो उसे उत्तर देने के लिये सदा तैयार रहो पर नम्रता और भय के
१६ साथ। और सीधा विवेक[7] रक्खो इसलिये कि जिन बातों के विषय तुम्हारी बदनामी होती है उन के विषय वे लज्जित हों जो तुम्हारे मसीही अच्छे चालचलन का
१७ अपमान करते हैं। क्योंकि यदि परमेश्वर की यह इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दुख उठाओ तो यह
१८ बुराई करने के कारण दुख उठाने से अच्छा है। इसलिये की मसीह ने भी अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया कि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए। वह शरीर के भाव से तो घात किया गया पर
१९ आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उस ने जाकर
२० क़ैदी आत्माओं को भी प्रचार किया। जिन्हों ने उस बीते समय में न माना जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा और वह जहाज़ बन रहा था जिस में
२१ थोड़े अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। बपति-

(१) या। आदर। (२) यू०। के विवेक या कांशंस से।
(३) या। उस ने आप क्रूस पर हमारे पापों को अपनी देह पर उठा लिया। (४) या। बिशप। (५) या। आदर।
(६) यू०। अनुग्रह। (७) या। मन। या। कांशंस।

समा जो इस का दृष्टान्त है और शरीर के मैल का दूर करना नहीं परन्तु परमेश्वर के पास सीधे विवेक[१] का अंगीकार[२] है अब हमें भी यीशु मसीह के जी उठने के २१ द्वारा बचाता है। वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दहिने है और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उस के अधीन किए गए हैं॥

४. सो जब कि मसीह ने शरीर में होकर दुख उठाया और जब कि जिस ने शरीर में दुख उठाया वह पाप से छूट गया तो तुम भी २ उस ही मनसा का हथियार बांधो। जिस से आगे को अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों के अभिलाषों के नहीं बरन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिताओ। ३ क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने और लुचपन बुरे अभिलाषों मतवालपन लीला क्रीड़ा पियक्कड़पन और घिनित मूर्त्तिपूजा में जहां तक हम ने ४ पहिले समय बिताया वही बहुत हुआ। इस से वे अचंभा करते हैं कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उन का साथ नहीं ५ देते और इसलिये बुरा भला कहते हैं। पर वे उस को जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है ६ लेखा देंगे। क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसलिये सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का न्याय हो पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीते रहें॥

७ सब बातों का अन्त निकट है इसलिये संयमी ८ होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो। और सब से बढ़कर एक दूसरे से बहुत प्रेम रक्खो क्योंकि प्रेम बहुतेरे पापों को ९ ढांपता है। बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनई करो। १० जिस को जो बरदान मिला है वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक ११ दूसरे की सेवा में लगाए। यदि कोई बोले तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है यदि कोई सेवा करे तो जैसे उस शक्ति से जो परमेश्वर देता है जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और पराक्रम युगानुयुग उसी की है। आमीन॥

१२ हे प्यारो जो दुख रूपी आग तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है उस से यह समझ कर अचंभा न १३ करना कि कोई अनोखी बात तुम पर बीती है। पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो आनन्द करो जिस से उस की महिमा के प्रगट होते समय भी तुम १४ आनन्दित और मगन हो। फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है तो धन्य हो क्योंकि महिमा का आत्मा जो परमेश्वर का आत्मा है तुम पर १५ ठहरता है। तुम में से कोई जन खूनी या चोर या कुकर्मी होने या पराए काम में हाथ डालने के कारण १६ दुख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए तो लज्जित न हो पर इस नाम के लिये परमेश्वर १७ की महिमा करे। क्योंकि वह समय आ पहुंचा है कि पहिले परमेश्वर के लोगों[३] का न्याय किया जाए और जब कि पहिले हमारा हो तो उन का क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं १८ मानते। और यदि धर्मी जन कठिनता से उद्धार १९ पाएगा तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना। इस लिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं वे भलाई करते हुए अपने अपने प्राण को विश्वास योग्य सिरजनहार के हाथ सौंप दें॥

५. तुम में जो प्राचीन[४] हैं मैं उन की नाईं प्राचीन[४] और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह २ समझाता हूं, कि परमेश्वर के उस झुंड की जो तुम्हारे बीच है रखवाली करो और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से और नीच कमाई के ३ लिये नहीं पर मन लगा कर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं उन पर अधिकार न जताओ बरन झुंड के लिये ४ नमूना बनो। और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं। ५ हे जवानो तुम भी प्राचीनों[५] के अधीन रहो बरन तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बांधे रहो क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना ६ करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो जिस ७ से वह तुम्हें समय पर बढ़ाए। अपनी सारी चिन्ता उसी ८ पर डाल दो क्योंकि उस को तुम्हारा सोच है। सचेत हो जागते रहो तुम्हारा विरोधी शैतान[६] गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाये। ९ विश्वास में दृढ़ होकर और यह जान कर उस का सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख १० भुगत रहे हैं। अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के पीछे आप

(१) मन या। कांशंस। (२) या। निवेदन।

(३) यू०। घर। (४) या। प्रिसबुतिर। (५) या। प्रिसबुतिरों।
(६) यू०। इबलीस।

ही तुम्हें सुधारेगा और स्थिर करेगा और बलवन्त
११ करेगा। उसी का पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन॥
१२ मैं ने सिलवानुस के हाथ जिसे मैं विश्वासयोग्य भाई समझता हूं थोड़ी बातों में लिखकर समझाया और गवाही दी कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है इसी में बने रहो। बाबिल में तुम्हारी नाईं चुनी हुई १३ वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं। प्रेम से चुम्बन ले लेकर एक दूसरे को नमस्कार करो॥ १४ तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे॥

पतरस की दूसरी पत्री।

---

१. शमौन पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है उन लोगों के नाम जिन्हों ने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की धार्म्मिकता से हमारा सा बहुमोल विश्वास प्राप्त किया
२ है। परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा तुम्हारा अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से बढ़ती
३ जाए। यह जानकर कि उस के ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है जिस ने हमें अपनी
४ ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया। जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमोल और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं इसलिये कि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरे अभिलाष से है ईश्वरीय स्वभाव
५ के भागी हो जाओ। और इसी कारण भी तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विश्वास पर सद्गुण और सद्गुण
६ पर समझ। और समझ पर संयम और संयम पर धीरज
७ और धीरज पर भक्ति। और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति
८ और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। क्योंकि ये बातें जब तुम में रहें और बढ़ती जाएं तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न
९ होने देंगी। क्योंकि जिस में ये बातें नहीं वह अंधा है और धुन्धला देखता है और अपने पहिले पापों से शुद्ध
१० होना भूल गया है। इस कारण हे भाइयो अपने बुलाये जाने और चुन लिये जाने को पक्का करने का भली भांति यत्न करते जाओ क्योंकि यदि ऐसा करोगे तो कभी ठोकर
११ न खाओगे। पर इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे॥
१२ इसलिये यद्यपि तुम ये बातें जानते हो और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है उस में बने रहते हो तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुध दिलाने को सदा तैयार रहूंगा।
१३ और मैं यह अपने लिये उचित समझता हूं कि जब तक मैं इस डेरे में हूं तब तक तुम्हें सुध दिला दिलाकर
१४ उभारता रहूं। क्योंकि जानता हूं कि मसीह के बताने के अनुसार मेरे डेरे के गिराए जाने का समय जल्द आने-
१५ वाला है। सो मैं यत्न करूंगा कि मेरे कूच होने के पीछे
१६ तुम इन बातों का स्मरण सदा कर सको। क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का और आने का समाचार दिया तो चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुसरण नहीं किया पर हम ने उस के प्रताप
१७ को आप ही देखा। क्योंकि उसे परमेश्वर पिता से आदर और महिमा मिली कि प्रतापमय महिमा में से उस को यह शब्द पहुंचा कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न
१८ हूं। और जब हम उस के साथ पवित्र पहाड़ पर थे तो
१९ स्वर्ग से यही शब्द आते सुना। और हमारे पास जो नबियों का वचन है वह इस से दृढ़ होता है और तुम अच्छा करते हो जो यह समझ कर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दिया है जो अंधेरी जगह में तब तक चमकता रहेगा जब तक पौ न फटे और भोर का तारा
२० तुम्हारे हृदयों में न चमके। पर पहिले यह जानो कि पवित्र शास्त्र की कोई नबूवत किसी के अपने ही विचार
२१ से नहीं होती। क्योंकि कोई नबूवत मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं आई पर लोग परमेश्वर की ओर से पवित्र आत्मा के बुलाये बोलते थे॥

२. पर लोगों में झूठे नबी भी हुए जैसे कि तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे जो नाश करनेवाले विधर्म्म को छिप छिप के चलाएंगे और उस स्वामी से जिस ने उन्हें मोल लिया मुकरेंगे और अपना सत्यानाश शीघ्र कराएंगे। और २

बहुतेरे उन की नाईं लुचपन करेंगे जिन के कारण सत्य ३ के मार्ग की निन्दा की जाएगी। और वे लोभ के लिये बातें बनाकर तुम्हें बेच खाएंगे और जो दण्ड की आज्ञा उन पर पहिले से हो चुकी थी उस के आने में कुछ देर ४ नहीं और उन का विनाश ऊंघता नहीं। क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्हों ने पाप किया न छोड़ा पर नरक में भेजकर अंधेरे कुंडों में डाल दिया कि ५ न्याय के दिन तक रक्खे जाएं। और पहिले संसार को भी न छोड़ा बरन भक्तिहीन संसार पर जल प्रलय भेजकर धर्म के प्रचारक नूह समेत आठ जनों को बचा लिया। ६ और सदोम और अमोराह के नगरों को ऐसा दंड दिया कि उन्हें भस्म करके सत्यानाश किया कि वे आनेवाले ७ भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिये दृष्टान्त बनें। और धर्मी लूत को जो अधर्मियों के लुचपन के चलन से बहुत ८ दुखी होता था बचाया। क्योंकि वह धर्मी उन के बीच में रहते हुए और उन के अधर्म के कामों को देख देखकर और सुन सुनकर हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित ९ करता था। तो प्रभु भक्तों को परीक्षा से निकालना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दंड की दशा में रखना १० जानता है। निज करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषों के पीछे शरीर के अनुसार चलते और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं। वे ढीठ और हठी हैं और ऊंचे पदवालों को बुरा ११ भला कहने से नहीं डरते। तौभी स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ में उन से बड़े हैं प्रभु के सामने उन्हें बुरा भला १२ कहकर दोष नहीं लगाते। पर ये लोग निर्बुद्धि पशुओं ही के समान हैं जो पकड़े जाने और नाश होने के लिये उत्पन्न हुए हैं और जिन बातों को जानते ही नहीं उन के विषय औरों को बुरा भला कहते हैं और अपनी सड़ा-१३ हट से आप ही सड़ जाएंगे। औरों के बुरा करने के बदले उन्हीं का बुरा होगा। उन्हें दिन दोपहर सुख विलास करना अच्छा लगता है वे कलंक और दोष हैं जब वे तुम्हारे साथ खाते पीते हैं तो अपनी ओर से प्रेम भोज १४ करके सुख विलास करते हैं। उन की आंखों में व्यभि-चारिणी बसी हुई है और वे पाप किए बिना नहीं रुक सकते वे चंचल प्राणों को फुसला लेते हैं उन के मन को लोभ करने का अभ्यास हो गया है वे स्राप के सन्तान १५ हैं। वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक गए और बओर के पुत्र बिलाम के मार्ग पर हो लिये हैं जिस ने अधर्म की १६ मज़दूरी को प्रिय जाना। पर उस के अपराध के विषय उलाहना दिया गया यहां तक कि अबोल गदही ने मनुष्य १७ की बोली से उस नबी को उस के बावलेपन से रोका। ये लोग अंधे कूएं और आंधी के उड़ाए हुए मेघ हैं उन के लिये अनन्त अंधकार ठहराया गया है। वे व्यर्थ गल-१८ फटाकी की बातें कर करके लुचपन के कामों के द्वारा उन लोगों को शारीरिक अभिलाषों में फंसा लेते हैं जो भटके हुओं में से निकल ही रहे हैं। वे उन्हें स्वतन्त्र होने १९ की प्रतिज्ञा तो देते हैं पर आप ही सड़ाहट के दास हैं क्योंकि जो जिस से हार गया है वह उस का दास बन गया है। २० और जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले और फिर उन में फंसकर हार गए तो उन की पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग २१ का न जानना ही उन के लिये इस से भला होता कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह दृष्टान्त ठीक बैठता है कि कुत्ता २२ अपनी छांट की ओर और धोई हुई सूअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर गई॥

३. हे प्यारो अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूं और दोनों में सुध दिला-कर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूं। कि तुम उन बातों २ को जो पवित्र नबियों ने पहिले से कहीं और प्रभु और उद्धारकर्त्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी। और यह पहिले जान लो ३ कि पिछले दिनों में हंसी ठट्ठा करनेवाले आएंगे जो अपने ही अभिलाषों के अनुसार चलेंगे। और कहेंगे उस के ४ आने की प्रतिज्ञा कहां गई क्योंकि जब से बाप दादे सोए हैं सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरंभ से था। वे तो जान बूझकर यह भूल गए कि परमेश्वर के वचन ५ से आकाश पुराने समय से था और पृथिवी भी जल में से और जल के द्वारा बनी रहती है। इन्हीं के द्वारा उस ६ समय का जगत जल में डूबकर नाश हुआ। पर इस ७ समय के आकाश और पृथिवी उसी वचन के द्वारा इस-लिये रक्खे हैं कि जलाए जाएं और भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश के दिन तक रक्खे रहेंगे॥

हे प्यारो यह एक बात तुम से छिपी न रहे कि ८ प्रभु के यहां एक दिन हज़ार बरस के बराबर और हज़ार बरस एक दिन के बराबर हैं। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के ९ विषय देर नहीं करता जैसा कितने लोग देर समझते हैं पर तुम्हारे विषय धीरज धरता है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो बरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आएगा १० उस दिन आकाश हड़हड़ाहट से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही ताते होकर पिघल जाएंगे और पृथिवी और उस पर के काम जल जाएंगे। सो जब कि ये सब वस्तुएं इस ११

रीति से पिघलनेवाली हैं तो तुम्हें पवित्र चाल चलन
१२ और भक्ति में कैसे मनुष्य होना, और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना और उस के जल्द आने के लिये यत्न करना चाहिए जिस के कारण आकाश आग से गल जाएगा और तत्त्व बहुत ही ताते होकर
१३ पिघल जाएंगे। पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम नए आकाश और नई पृथिवी की आस देखते हैं जिन में धर्म बास करेगा॥

१४ इसलिये हे प्यारो जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उस के
१५ सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो। और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो जैसे हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला तुम्हें लिखा
१६ है। वैसे ही उस ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की जिन में कितनी बातें ऐसी हैं जिन का समझना कठिन है और अनपढ़ और चंचल लोग उन के मतलब को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं
१७ खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। सो हे प्यारो तुम लोग इस को पहिले से जानकर चौकस रहो ऐसा न हो कि अधर्मियों के भ्रम में फंसकर अपनी
१८ स्थिरता को हाथ से जाने दो। पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते
१९ जाओ। उसी की महिमा अब भी हो और युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

यूहन्ना की पहिली पत्री।

१. उस जीवन के वचन के विषय जो आदि से था जिसे हम ने सुना जिसे अपनी आंखों से देखा बरन जिसे हम ने ध्यान से देखा और हाथों से
२ छूआ (यह जीवन प्रगट हुआ और हम ने उसे देखा और उस की गवाही देते हैं और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं जो पिता के साथ था और हम पर
३ प्रगट हुआ) जो कुछ हम ने देखा और सुना है उस का समाचार तुम्हें भी देते हैं इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो और हमारी यह सहभागिता पिता के
४ साथ और उस के पुत्र यीशु मसीह के साथ है। और ये बातें हम इसलिये लिखते हैं कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए॥

५ जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उस में कुछ
६ भी अंधकार नहीं। यदि हम कहें कि उस के साथ हमारी सहभागिता है और फिर अंधकार में चलें तो हम झूठे हैं
७ और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि हम जैसा वह ज्योति में है वैसे ही ज्योति में चलें तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं और उस के पुत्र यीशु का लोहू हमें
८ सब पाप से शुद्ध करता है। यदि हम कहें कि हम में कुछ पाप नहीं तो अपने आप को धोखा देते हैं और हम
९ में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में सच्चा[१] और धर्मी है। यदि कहें कि हम ने पाप
१० नहीं किया तो उसे झूठा ठहराते हैं और उस का वचन हम में नहीं॥

२. हे मेरे बालको मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं कि तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों
२ का प्रायश्चित्त है और केवल हमारे नहीं बरन सारे जगत के पापों का भी। यदि हम उस की आज्ञाओं को मानेंगे
३ तो इस से जानेंगे कि हम उसे जान गए हैं। जो कोई
४ यह कहता है कि मैं उसे जान गया हूं और उस की आज्ञाओं को नहीं मानता वह झूठा है और उस में सत्य
५ नहीं। पर जो कोई उस के वचन पर चले उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है। हम इसी से जानते
६ हैं कि हम उस में हैं। जो कोई यह कहता है कि मैं उस में बना रहता हूं उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था॥

७ हे प्यारो मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता पर वही पुरानी आज्ञा जो आरंभ से तुम्हें मिली है यह
८ पुरानी आज्ञा वह वचन है जिसे तुम ने सुना है। फिर मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूं और यह तो उस में और

(१) यू०। विश्वासयोग्य।

तुम में सच्ची ठहरती है क्योंकि अंधकार मिटता जाता है ९ और सत्य ज्योति अभी चमकती है। जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूं और अपने भाई से बैर रखता है १० वह अब तक अंधकार ही में है। जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है वह ज्योति में रहता है और ठोकर ११ खाने का नहीं। पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है वह अंधकार में है और अंधकार में चलता है और नहीं जानता कि कहां जाता है क्योंकि अंधकार ने उस की आंखें अंधी कर दी हैं॥

१२ हे बालको मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं कि उस १३ के नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए। हे पितरो मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं कि जो आदि से है तुम उसे जानते हो। हे जवानो मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई। हे लड़को मैं ने तुम्हें इसलिये १४ लिखा है कि तुम पिता को जान गए हो। हे पितरो मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो। हे जवानो मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है कि तुम बलवन्त हो और परमेश्वर का वचन तुम में १५ बना रहता है और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है। न तो संसार से न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रक्खो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उस में पिता का १६ प्रेम नहीं। क्योंकि जो कुछ संसार में है अर्थात् शरीर का अभिलाष और आंखों का अभिलाष और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर १७ से है। और संसार और उस का अभिलाष दोनों मिटते जाते हैं पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सदा बना रहेगा॥

१८ हे लड़को यह पिछला समय है और जैसा तुम ने सुना है कि मसीह का विरोधी आनेवाला है उस के अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं इस से १९ हम जानते हैं कि यह पिछला समय है। वे निकले तो हम ही में से पर हम में के थे नहीं क्योंकि यदि हम में के होते तो हमारे साथ रहते पर निकले इसलिये गए २० कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं। और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है और तुम सब २१ कुछ[१] जानते हो। मैं ने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा कि तुम सत्य को नहीं जानते पर इसलिये कि उसे जानते हो और इसलिये कि कोई झूठ सत्य की ओर से नहीं। २२ झूठा कौन है केवल वह जो यीशु के मसीह होने से मुकरता है और मसीह का विरोधी वही है जो पिता से और पुत्र २३ से मुकरता है। जो कोई पुत्र से मुकरता है उस के पिता भी नहीं जो पुत्र को मान लेता है उस के पिता भी है। २४ जो कुछ तुम ने आरंभ से सुना है वही तुम में बना रहे। जो तुम ने आरंभ से सुना है यदि वह तुम में बना रहे तो तुम भी पुत्र में और पिता में बने रहोगे। २५ और जिस की उस ने हम से प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है। २६ मैं ने ये बातें तुम्हें उन के विषय लिखी हैं जो तुम्हें भरमाते हैं। २७ और तुम्हारा वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया वह तुम में बना रहता है और तुम्हें इस का प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए पर जैसे उस का वही अभिषेक तुम्हें सब बातें सिखाता है और सत्य है और झूठा नहीं और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया वैसे ही तुम उस में बने रहते हो। २८ निदान हे बालको उस में बने रहो कि जब वह प्रगट हो तो हमें हियाव हो और हम उस के आने पर उस के सामने लज्जित न हों। २९ यदि तुम जानते हो कि वह धार्म्मिक है तो यह भी जानते हो कि जो कोई धर्म का काम करता है वह उस से जन्मा है॥

३. देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर के सन्तान कहलाएं और हम हैं भी। इस कारण संसार हमें नहीं पहचानता २ क्योंकि उसे नहीं पहचाना। हे प्यारो अभी हम परमेश्वर के सन्तान हैं और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उस के समान होंगे क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। ३ और जो कोई उस पर यह आशा रखता वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा ४ वह पवित्र है। जो कोई पाप करता है वह व्यवस्था का विरोध करता है और पाप तो व्यवस्था का विरोध है। ५ और तुम जानते हो कि वह इसलिये प्रगट हुआ कि ६ पापों को हर ले जाए और उस में पाप नहीं। जो कोई उस में बना रहता है वह पाप नहीं करता। जो कोई पाप करता है उस ने न उसे देखा है और न उस को जाना है। ७ हे बालको किसी के भरमाने में न आना जो धर्म के काम ८ करता है वही उस की नाईं धर्मी है। जो कोई पाप करता है वह शैतान[२] से है क्योंकि शैतान[२] आरंभ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट ९ हुआ कि शैतान[२] के कामों को नाश करे। जो कोई परमेश्वर से जन्मा वह पाप नहीं करता क्योंकि उस का बीज उस में बना रहता है और वह पाप कर ही नहीं १० सकता क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है। इसी से परमेश्वर के सन्तान और शैतान[२] के सन्तान जाने जाते हैं जो कोई धर्म के काम नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं और

(१) या तुम सबके सब जानते हो।

(२) यू०। इबलीस।

११ न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता। क्योंकि जो समाचार तुम ने आरंभ से सुना वह यह है कि हम एक
१२ दूसरे से प्रेम रक्खें। और कैन के समान न बनें जो उस दुष्ट से था और जिस ने अपने भाई को घात किया। और उसे किस कारण घात किया। इस कारण कि उस के काम बुरे थे और उस के भाई के काम धर्म के थे॥
१३ हे भाइयो यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचंभा
१४ न करना। हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं क्योंकि भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो
१५ प्रेम नहीं रखता वह मृत्यु की दशा में रहता है। जो कोई अपने भाई से बैर रखता है वह खूनी है और तुम जानते हो कि किसी खूनी में अनन्त जीवन नहीं रहता।
१६ हम ने प्रेम इसी से जाना कि उस ने हमारे लिये अपना प्राण दे दिया और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना
१७ चाहिए। पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना
१८ रह सकता है। हे बालको हम वचन और जीभ ही से
१९ नहीं पर काम और सत्य से प्रेम करें। इसी से हम जानेंगे कि हम सत्य के हैं और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा उस के विषय हम उस के सामने अपने अपने
२० मन को ढाढ़स दे सकेंगे। क्योंकि परमेश्वर हमारे मन
२१ से बड़ा है और सब कुछ जानता है। हे प्यारो यदि हमारा मन हमें दोष न दे तो हमें परमेश्वर के सामने
२२ हियाव होता है। और जो कुछ हम मांगते हैं वह हमें उस से मिलता है क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते
२३ हैं और जो उसे भाता है वही करते हैं। और उस की आज्ञा यह है कि हम उस के पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी उस के
२४ अनुसार आपस में प्रेम रक्खें। और जो उस की आज्ञाओं को मानता है वह इस में और यह उस में बना रहता है और इसी से अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है हम जानते हैं कि वह हम में बना रहता है॥

४. हे प्यारो हर एक आत्मा की प्रतीति न करो बरन आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं क्योंकि बहुत से झूठे
२ नबी जगत में निकल खड़े हुए हैं। परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो कि जो कोई आत्मा मान लेता है कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया वह
३ परमेश्वर की ओर से है। और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानता वह परमेश्वर की ओर से नहीं और यही तो मसीह के विरोधी का आत्मा है जिस की चरचा तुम सुन चुके हो कि वह आनेवाला है और अब भी जगत में है।
४ हे बालको तुम परमेश्वर के हो और तुम ने उन पर जय पाई है क्योंकि जो तुम में है वह उस से जो संसार में है
५ बड़ा है। वे संसार के हैं इस कारण वे संसार की बातें
६ बोलते हैं और संसार उन की सुनता है। हम परमेश्वर के हैं जो परमेश्वर को जानता है वह हमारी सुनता है जो परमेश्वर का नहीं वह हमारी नहीं सुनता इसी से हम सत्य का आत्मा और भ्रम का आत्मा पहचान लेते हैं॥
७ हे प्यारो हम आपस में प्रेम रक्खें क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा
८ है और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता वह
९ परमेश्वर को नहीं जानता क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि
१० हम उस के द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया पर इस में है कि उस ने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने
११ पुत्र को भेजा। हे प्यारो जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
१२ परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा यदि हम आपस में प्रेम रक्खें तो परमेश्वर हम में बना रहता है और उस
१३ का प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। इसी से हम जानते हैं कि हम उस में बने रहते हैं और वह हम में क्योंकि उस
१४ ने अपने आत्मा में से हमें दिया है। और हम ने देख लिया और गवाही देते हैं कि पिता ने पुत्र को जगत का
१५ उद्धारकर्त्ता करके भेजा है। जो कोई मान लेता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है परमेश्वर उस में बना रहता है
१६ और वह परमेश्वर में। और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है उस को हम जान गए और हमें उस की प्रतीति है। परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उस में बना
१७ रहता है। इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो क्योंकि जैसा वह है वैसे ही संसार में
१८ हम भी हैं। प्रेम में भय नहीं होता परन्तु पूरा प्रेम भय को दूर कर देता है क्योंकि भय से कष्ट होता है और जो
१९ भय करता है यह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। हम इसलिये प्रेम करते हैं कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया।
२० यदि कोई कहे कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं और अपने भाई से बैर रक्खे तो वह झूठा है क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उस ने देखा है प्रेम नहीं रखता तो वह परमेश्वर से जिसे उस ने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता।
२१ और उस से हमें यह आज्ञा मिली है कि जो कोई

परमेश्वर से प्रेम रखता है वह अपने भाई से भी प्रेम रक्खे ॥

५. जिस का यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है वह उस से भी प्रेम रखता है जो उस से उत्पन्न हुआ है। २ जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उस की आज्ञाओं को मानते हैं तो इस से हम जानते हैं कि परमेश्वर के ३ सन्तानों से प्रेम रखते हैं। और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं को मानें और उस की आज्ञाएं ४ भारी नहीं। क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह संसार पर जय करता है और वह विजय जिस से ५ संसार पर जय होती है हमारा विश्वास है। संसार पर जय पानेवाला कौन है केवल वह जिस का यह विश्वास ६ है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यही है वह जो पानी और लोहू के द्वारा आया था अर्थात् यीशु मसीह, वह न केवल पानी के द्वारा बरन पानी और लोहू दोनों के ७ द्वारा[१] आया था। और जो गवाही देता है वह आत्मा है ८ क्योंकि आत्मा सत्य है। और गवाही देनेवाले तीन हैं आत्मा और पानी और लोहू और तीनों एक ही बात ९ पर सम्मत हैं। जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं तो परमेश्वर की गवाही उस से बढ़कर है और परमेश्वर की गवाही यह है कि उस ने अपने पुत्र के विषय १० गवाही दी है। जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है वह अपने ही में गवाही रखता है जिस ने परमेश्वर की प्रतीति नहीं की उस ने उसे झूठा ठहराया क्योंकि उस ने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय दी है। ११ और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उस के पुत्र में है। १२ जिस के पास पुत्र है उस के पास जीवन है और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उस के पास जीवन भी नहीं ॥

१३ मैं ने तुम्हें जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो इसलिये लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। १४ और हमें उस के सामने जो हियाव होता है वह यह है कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है। १५ और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उस से मांगा वह पाया है। १६ यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे जिस का फल मृत्यु न हो तो बिनती करेगा और परमेश्वर उसे उन के लिये जिन्हों ने ऐसा पाप किया जिस का फल मृत्यु न हो जीवन देगा। पाप ऐसा भी होता है जिस का फल मृत्यु है इस के विषय मैं बिनती करने को नहीं कहता। १७ सब प्रकार का अधर्म है तो पाप और ऐसा पाप भी है जिस का फल मृत्यु नहीं ॥

१८ हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसे वह बचाए रखता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता। १९ हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं २० और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। और यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया और उस ने हमें समझ दी है कि हम उस सच्चे को पहचानें और हम उस में जो सत्य है अर्थात् उस के पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं। २१ सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है। हे बालको अपने आप को मूरतों से बचाए रक्खो ॥

(१) यू०। में।

यूहन्ना की दूसरी पत्री।

१. मुझ प्राचीन[१] की ओर से उस चुनी हुई श्रीमती और उस के लड़केबालों के नाम जिन से मैं सत्य से प्रेम रखता हूं और मैं ही नहीं पर २ वे सब जो सत्य को जानते हैं। उस सत्य के कारण जो हम में बना रहता है और सदा हमारे साथ रहेगा ॥ ३ परमेश्वर पिता और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और दया और शान्ति सत्य और प्रेम सहित हमारे साथ रहेंगे ॥

४ मैं बहुत आनन्दित हुआ कि मैं ने तेरे कितने लड़केबालों को उस आज्ञा के अनुसार जो हमें पिता की ओर से मिली थी सत्य पर चलते हुए पाया। ५ और

(१) या। प्रिसबुतिर।

अब हे श्रीमती मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं पर वही जो आरंभ से हमारे पास है लिखता और तुझ से बिनती ६ करता हूं कि हम एक दूसरे से प्रेम रक्खें। और प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार चलें यह वही आज्ञा है जो तुम ने आरंभ से सुनी और तुम्हें इस ७ पर चलना चाहिए। क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया। भरमानेवाला और मसीह ८ का विरोधी यही है। अपने विषय चौकस रहो कि जो परिश्रम हम ने किया उस को तुम न बिगाड़ो बरन पूरा ९ प्रतिफल पाओ। जो कोई आगे बढ़ जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता परमेश्वर उस का नहीं। जो उस की शिक्षा में बना रहता है पिता और पुत्र दोनों उस के हैं। यदि कोई तुम्हारे पास आए और १० यही शिक्षा न दे उसे न तो घर में आने दो और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार ११ करता है वह उस के बुरे कामों में साझी होता है॥

मुझे तुम्हें बहुत सी बातें लिखनी हैं पर काग़ज़ १२ और सियाही से लिखना नहीं चाहता पर आशा है कि मैं तुम्हारे पास आऊंगा और सन्मुख होकर बातचीत करूंगा जिस से तुम्हारा[१] आनन्द पूरा हो। तेरी चुनी १३ हुई बहिन के लड़केवाले तुझे नमस्कार कहते हैं॥

(१) या। हमारा।

यूहन्ना की तीसरी पत्री।

१ मुझ प्राचीन[१] की ओर से उस प्यारे गयुस के नाम जिस से मैं सत्य से प्रेम रखता हूं।

२ हे प्यारे मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है वैसे ही तू सब बातों में उन्नति ३ करे और भला चंगा रहे। क्योंकि जब भाइयों ने आकर तेरे उस सत्य की गवाही दी जिस पर तू सचमुच ४ चलता है तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ। मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं कि मैं सुनूं कि मेरे लड़केवाले सत्य पर चलते हैं॥

५ हे प्यारे जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है जो परदेशी भी हैं तो विश्वासी की नाईं करता ६ है। उन्हों ने मण्डली के सामने तेरे प्रेम की गवाही दी थी। यदि तू उन्हें ऐसे आगे पहुंचाएगा जैसे परमेश्वर ७ के लोगों के योग्य है तो भला करेगा। क्योंकि वे उस नाम के हित निकले हैं और अन्यजातियों से कुछ नहीं ८ लेते। इसलिये ऐसों का स्वागत करना चाहिए जिस से हम भी सत्य के सहकर्मी हों॥

(१) या। प्रिसबुतिर।

९ मैं ने मण्डली को कुछ लिखा था पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है हमें ग्रहण नहीं १० करता। सो जब मैं आऊंगा तो उस के कामों की जो वह कर रहा है सुध दिलाऊंगा कि वह हमारे विषय बुरी बुरी बातें बकता है और इस पर भी सन्तोष न करके आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं मना करता है और मण्डली से निकाल देता है। ११ हे प्यारे बुराई का नहीं पर भलाई का पीछा कर जो भला करता है वह परमेश्वर से है पर जो बुरा करता है उस ने परमेश्वर १२ को नहीं देखा। देमेत्रियुस की सब ने बरन सत्य ने भी आप ही गवाही दी और हम भी गवाही देते हैं और तू जानता है कि हमारी गवाही सच्ची है।

१३ लिखना तो तुझ को बहुत कुछ था पर सियाही १४ और क़लम से लिखना नहीं चाहता। पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट करूंगा तब हम सन्मुख होकर बातचीत करेंगे। तुझे शान्ति होती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार कहते हैं। वहां के मित्रों से नाम ले ले नमस्कार कह॥

यहूदा की पत्री।

---

१. यहूदा की ओर से जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्यारे और यीशु मसीह के लिये रक्षित हैं॥

२ तुम्हें दया और शान्ति और प्रेम बहुतायत से मिलता रहे॥

३ हे प्यारो जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय लिखने में सब प्रकार का यत्न कर रहा था जिस में हम सब सहभागी हैं तो मैं ने तुम्हें यह समझाना अवश्य जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों ४ को एक ही बेर सौंपा गया था। क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ घुसे हैं जिन के इस दंड की चर्चा पुराने समय में पहिले से लिखी गई थी। ये भक्तिहीन हैं और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन से बदल डालते हैं और हमारे अद्वैत स्वामी और प्रभु यीशु मसीह से मुकरते हैं॥

५ पर यद्यपि तुम सब कुछ एक बार जान चुके हो तौभी मैं तुम्हें इस बात की सुध दिलाना चाहता हूं कि प्रभु ने लोगों को मिसर देश से छुड़ाकर जिन्हों ने विश्वास ६ न किया उन्हें पीछे नाश किया। फिर जो स्वर्गदूत अपने पद को न रक्खे रहे बरन अपने निज निवास को छोड़ दिया उस ने उन को भी उस बड़े दिन के न्याय के लिये ७ अंधेरे में सदा काल तक बंधनों में रक्खा है। जिस रीति से सदोम और अमोराह और उन के आस पास के नगर जो इन की नाईं व्यभिचारी हो गए और पराये शरीर के पीछे लग गए आग के अनन्त दंड में पड़कर दृष्टान्त ८ ठहरे हैं। फिर भी उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी अपने अपने शरीर को अशुद्ध करते और प्रभुता को तुच्छ जानते ९ हैं और ऊंचे पदवालों को बुरा भला कहते हैं। परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने जब शैतान[1] से मूसा की लोथ के विषय वादविवाद करता था तो उस को बुरा भला कह के दोष लगाने का साहस न किया पर यह १० कहा कि प्रभु तुझे डांटे। पर ये लोग जिन बातों को नहीं जानते उन को बुरा भला कहते हैं पर जिन बातों को अचेतन पशुओं की नाईं स्वभाव ही से जानते हैं ११ उन में अपने आप को नाश करते हैं। उन पर हाय कि वे कैन की सी चाल चले और मजदूरी के लिये बिलाम की नाईं भ्रष्ट हो गए हैं और कोरह की नाईं विरोध १२ करके नाश हुए हैं। ये तुम्हारी प्रेमसभाओं में तुम्हारे साथ खाते पीते समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं और बेधड़क अपना पेट भरनेवाले रखवाले हैं वे निर्जल बादल हैं जिन्हें हवा उड़ा ले जाती हैं पतझड़ के निष्फल १३ पेड़ जो दो बार मरे हैं और जड़ से उखड़े हैं। ये समुद्र के प्रचंड हिलकोरे हैं जो अपनी लज्जा का फेन उछालते हैं ये डांवाडोल तारे हैं जिन के लिये सदा काल तक घोर १४ अंधेरा रक्खा गया है। और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था इन के विषय यह नबूवत की कि १५ देखो प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया। कि सब का न्याय करे और सब भक्तिहीनों को उन के अभक्ति के सब कामों के विषय जो उन्हों ने भक्तिहीन होकर किए हैं और उन सब कठोर बातों के विषय जो भक्तिहीन पापियों ने उस के विरोध में कही हैं दोषी ठहराये। १६ ये तो असंतुष्ट कुड़कुड़ानेवाले और अपने अभिलाषों के अनुसार चलनेवाले हैं और अपने मुंह से गलफटाकी की बातें बोलते हैं और वे लाभ के लिये मुंह देखी बड़ाई किया करते हैं॥

१७ पर हे प्यारो तुम उन बातों का स्मरण रक्खो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहिले कह चुके हैं। १८ वे तुम से कहा करते थे कि पिछले समय ऐसे ठट्ठा करनेवाले होंगे जो अपने अभक्ति के अभिलाषों के १९ अनुसार चलेंगे। ये तो वे हैं जो फूट डालते हैं ये २० शारीरिक लोग हैं जिन्हें आत्मा नहीं। पर हे प्यारो तुम अपने बहुत ही पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते २१ हुए पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए, अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रक्खो और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते २२ रहो। और कितनों पर जो शंका में हैं दया करो। २३ और कितनों को आग में से झपटकर निकालो और कितनों पर भय के साथ दया करो बरन उस वस्त्र से भी घिन करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हुआ हो॥

---

(१) या। इबलीस।

२४ अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है और अपनी महिमा के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा
२५ कर सकता है। उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता की महिमा और गौरव और पराक्रम और अधिकार हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन से है अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन ॥

यूहन्ना का प्रकाशित वाक्य।

१. यीशु मसीह का प्रकाशित वाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया कि अपने दासों को वे बातें जिन का शीघ्र होना अवश्य है दिखाए और उस ने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उस
२ के द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया। जिस ने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही अर्थात् जो कुछ
३ उस ने देखा उस की गवाही दी। धन्य है वह जो इस नबूवत के वचन पढ़ता है और वे जो सुनते और इस में लिखी हुई बातों को मानते हैं क्योंकि समय निकट आया है ॥

४ यूहन्ना की ओर से आसिया की सात मण्डलियों के नाम। उस की ओर से जो है और जो था और जो आनेवाला है और उन सात आत्माओं की ओर से जो
५ उस के सिंहासन के सामने हैं। और यीशु मसीह की ओर से जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा और पृथिवी के राजाओं का हाकिम है तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। जो हम से प्रेम रखता है और जिस ने अपने लोहू के
६ द्वारा हमें पापों से छुड़ाया, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन।
७ देखो वह बादलों के साथ आनेवाला है और हर एक आंख उसे देखेगी बरन जिन्हों ने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे और पृथिवी के सारे कुल उस के कारण छाती पीटेंगे। हां। आमीन ॥

८ प्रभु परमेश्वर वह जो है और जो था और जो आनेवाला है जो सर्वशक्तिमान् है यह कहता है कि मैं ही अलफा और ओमिगा हूं ॥

९ मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई और यीशु के क्लेश और राज्य और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूं परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नाम
१० टापू में था। कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते
११ सुना कि। जो तू देखता है उसे पुस्तक में लिखकर सातों मण्डलियों के पास भेज दे अर्थात् इफिसुस और स्मुरना और पिरगमुन और थूआतीरा और सरदीस और फिलदिलफिया और लौदीकिया में।
१२ और मैं ने उसे[१] जो मुझ से बोल रहा था देखने के लिये मुंह फेरा और पीछे फिर के
१३ मैं ने सोने की सात दीवटें देखीं। और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरुष देखा जो पांवों तक का वस्त्र पहिने और छाती पर सुनहला पटुका बांधे
१४ हुए था। उस के सिर और बाल सफेद ऊन बरन पाले के से उजले थे और उस की आंखें आग की ज्वाला की
१५ नाईं थीं। और उस के पांव उत्तम पीतल के समान भट्ठी में दहकाए हुए से थे और उस का शब्द बहुत जल के
१६ शब्द की नाईं था। और वह अपने दहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था और उस के मुख में चोखी दोधारी तलवार निकलती थी और उस का मुंह ऐसा था जैसा सूरज कड़ी
१७ धूप के समय चमकता है। जब मैं ने उसे देखा तो मैं मरा हुआ सा उस के पैरों पर गिर पड़ा और उस ने मुझ पर अपना दहिना हाथ रखकर यह कहा कि मत डर मैं
१८ पहिला और पिछला और जीविता हूं। और मैं मर गया था और देख मैं युगानुयुग जीविता हूं और मृत्यु और
१९ अधोलोक की कुंजियां मेरे पास हैं। इसलिये जो बातें तू ने देखीं और जो हो रही हैं और जो इस के पीछे होने-
२० वाली हैं उन सब को लिख ले। अर्थात् उन सात तारों का जिन्हें तू ने मेरे दहिने हाथ देखा था और उन सात दीवटों का भेद। वे सात तारे सातों मण्डलियों के दूत हैं और वे सात दीवट सात मण्डली हैं ॥

२. इफिसुस में की मण्डली के दूत को यह लिख कि,

जो सातों तारे अपने दहिने हाथ में लिए हुए है और

(१) य०। उस शब्द को।

सोने की सातों दीवटों के बीच फिरता है वह यह कहता
२ है। मैं तेरे काम और परिश्रम और तेरा धीरज जानता
हूं और यह भी कि तू बुरे लोगों के देख नहीं सकता
और जो अपने आप के प्रेरित कहते हैं और हैं नहीं उन्हें
३ तू ने परख कर झूठे पाया। और तू धीरज धरता है और
४ मेरे नाम के लिये दुख उठाते उठाते थका नहीं। पर
मेरे मन में तेरी ओर यह है कि तू ने अपना पहिला सा
५ प्रेम छोड़ दिया है। सो चेत कर कि तू कहां से गिरा है
और मन फिरा और पहिले जैसे काम कर और यदि तू
मन न फिराएगा तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट के
६ उस की जगह से हटा दूंगा। पर हां तुझ में यह बात
तो है कि तू नीकुलइयों के कामों से घिन करता है जिन
७ से मैं भी घिन करता हूं। जिस के कान हों वह सुने कि
आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है। जो जय पाए
मैं उसे जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्ग लोक
में है फल खाने के दूंगा॥

८ और स्मुरना में की मण्डली के दूत के यह लिख
कि जो पहिला और पिछला है जो मर गया और
९ जी गया वह यह कहता है कि, मैं तेरे क्लेश और
कंगाली के जानता हूं। (तौभी तू धनी है) और जो
लोग अपने आप के यहूदी कहते हैं और हैं नहीं पर
शैतान की सभा हैं उन की निन्दा के भी जानता हूं।
१० जो दुख तुझे सहने होंगे उन से कुछ मत डर देखो
शैतान⁽¹⁾ तुम में से कितनों के जेलखाने में डालने पर है
कि तुम परखे जाओ और तुम्हें दस दिन तक क्लेश
होगा। प्राण देने तक विश्वासी रह और मैं तुझे जीवन
११ का मुकुट दूंगा। जिस के कान हों वह सुने कि आत्मा
मण्डलियों से क्या कहता है। जो जय पाए उस के
दूसरी मृत्यु से हानि न पहुंचेगी॥

१२ और पिरगमुन में की मण्डली के दूत के यह
लिख कि,

जिस के पास दोधारी और चोखी तलवार है वह
१३ यह कहता है कि, मैं यह तो जानता हूं कि तू वहां रहता
है जहां शैतान का सिंहासन है और मेरे नाम पर बना
रहता है और मुझ पर विश्वास करने से उन दिनों में भी
नहीं मुकर गया जिन में मेरा विश्वासयोग्य साक्षी
अन्तिपास तुम में जहां शैतान रहता है वहां घात किया
१४ गया था। पर मेरे मन में तेरी ओर कुछ है कि तेरे यहां
कितने हैं जो बिलाम की शिक्षा के मानते हैं जिस ने
बालाक के इस्राईलियों के आगे ठोकर का कारण रखना
सिखाया कि वे मूरतों के बलिदान खाएं और व्यभिचार
करें। वैसे ही तेरे यहां कितने हैं जो नीकुलइयों की १५
शिक्षा के मानते हैं। सो मन फिरा नहीं तो मैं तेरे १६
पास शीघ्र आकर अपने मुख की तलवार से उन के साथ
लड़ूंगा। जिस के कान हों वह सुने कि आत्मा मण्ड- १७
लियों से क्या कहता है जो जय पाए उस के मैं गुप्त
मान में से दूंगा और उसे एक सफेद पत्थर भी दूंगा
और उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा हुआ होगा
जिसे कोई नहीं जानता केवल वह जो उसे पाता है॥

और थूआतीरा में की मण्डली के दूत के यह १८
लिख कि,

परमेश्वर का पुत्र जिस की आंखें आग की ज्वाला
की नाईं और पांव उत्तम पीतल के समान हैं यह कहता
है कि, मैं तेरे कामों और प्रेम और विश्वास और सेवा १९
और धीरज के जानता हूं और यह भी कि तेरे पिछले
काम पहिलों से बढ़कर हैं। पर मेरे मन में तेरी ओर यह २०
है कि तू उस स्त्री इजेबेल के रहने देता है जो
अपने आप के नबिया कहती है और मेरे दासों के
व्यभिचार करने और मूरतों के आगे के बलिदान खाने
के सिखाकर भरमाती है। मैं ने उस के मन फिराने के २१
लिये अवसर दिया पर वह अपने व्यभिचार से मन
फिराना नहीं चाहती। देख मैं उसे खाट पर डालता हूं २२
और जो उस के साथ व्यभिचार करते हैं यदि वे उस के
से कामों से मन न फिराएं तो उन्हें बड़े क्लेश में
डालूंगा। और मैं उस के बच्चों के मार डालूंगा और २३
मण्डलियां जानेंगी कि हृदय और मन का जांचनेवाला
मैं ही हूं और मैं तुम में से हर एक के उस के कामों के
अनुसार बदला दूंगा। पर तुम थूआतीरा के बाकी २४
लोगों से जितने इस शिक्षा के नहीं मानते और उन
बातों के जिन्हें शैतान की गहिरी बातें कहते हैं नहीं
जानते यह कहता हूं कि मैं तुम पर और भार न
डालूंगा। पर हां जो तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक २५
धरे रहो। जो जय पाए और मेरे से कामों के अन्त तक २६
करता रहे मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार
दूंगा। और वह लोहे का दंड लिये हुए उन पर राज्य २७
करेगा जैसे मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते हैं जैसे कि
मैं ने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है। और २८
मैं उसे भोर का तारा दूंगा। जिस के कान हों वह सुने २९
कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है॥

३. और सरदीस की मण्डली के दूत के यह
लिख कि,

जिस के पास परमेश्वर के सात आत्मा और सात तारे
हैं वह यह कहता है कि मैं तेरे कामों के जानता हूं कि तू

(१) यू० । इबलीस ।

२ जीवित कहलाता है और है मरा। जागता रह और जो बाकी रह गए हैं और मिटने पर हैं उन्हें स्थिर कर क्योंकि मैं ने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा ३ नहीं पाया। सो चेत कर कि तू ने किस रीति से सीखा और सुना था और उस में बना रह कर मन फिरा। सो यदि तू जागता न रहेगा तो मैं चोर की नाई आऊंगा और तू न जानेगा कि मैं कौन सी घड़ी तुझ पर ४ आ पड़ूंगा। पर हां सरदीस में तेरे यहां थोड़े से ऐसे लोग हैं जिन्हों ने अपने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए और वे उजले वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ चलें फिरेंगे ५ क्योंकि वे इसी योग्य हैं। जो जय पाए उसे इसी तरह उजला वस्त्र पहिनाया जाएगा और मैं उस का नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा पर उस का नाम अपने पिता और उस के स्वर्गदूतों के सामने ६ मान लूंगा। जिस के कान हों वह सुने कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है॥

७ और फिलेदिलफिया में की मण्डली के दूत को यह लिख कि,

जो पवित्र और सत्य है और दाऊद की कुंजी रखता है जो खोलता है और कोई बन्द नहीं करता और बन्द करता है और कोई नहीं खोलता वह यह कहता है कि ८ मैं तेरे कामों को जानता हूं (देख मैं ने तेरे सामने द्वार खोल रक्खा है जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता) कि तेरी सामर्थ थोड़ी सी है और तू ने मेरे वचन को थाम रहा ९ है और मेरे नाम से नहीं मुकरा। देख मैं शैतान के सभावालों को जो यहूदी बन बैठे पर हैं नहीं बरन झूठ बोलते हैं—देख मैं ऐसा करूंगा कि वे आकर तेरे पैरों पर प्रणाम करेंगे और जान लेंगे कि मैं ने तुझ से १० प्रेम रक्खा है। तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रक्खूंगा जो पृथिवी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे ११ संसार पर आनेवाला है। मैं शीघ्र आनेवाला हूं जो कुछ तेरे पास है उसे थामे रह कि कोई तेरा मुकुट १२ न छीन ले। जो जय पाए उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊंगा और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा और मैं अपने परमेश्वर का नाम और अपने परमेश्वर के नगर अर्थात् नये यरूशलेम का नाम जो स्वर्ग पर से मेरे परमेश्वर के पास से उतरनेवाला है १३ और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा। जिस के कान हों वह सुने कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है॥

१४ और लौदीकिया में की मण्डली के दूत को यह लिख,

जो आमीन और विश्वास योग्य और सच्चा गवाह है और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है वह यह कहता है। मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू न १५ ठंडा है न गर्म भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। सो इसलिये कि तू गुनगुना है और न ठंडा न गर्म मैं १६ तुझे अपने मुंह से उगलने पर हूं। तू जो कहता है कि १७ मैं धनी हूं और धनवान् हो गया हूं और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं और यह नहीं जानता कि तू ही दीन हीन और अभागा और कंगाल और अंधा और नंगा है। इसी लिये मैं तुझे सलाह देता हूं कि आग में ताया हुआ १८ सोना मुझ से मोल ले कि धनी हो जाए और उजला वस्त्र ले कि पहिनकर तुझे नंगेपन की लज्जा न हो और अपनी आंखों में लगाने के लिये अंजन ले कि तुझे सूझने लगे। मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं उन सब को उलाहना १९ और ताड़ना देता हूं इसलिये सरगर्म हो और मन फिरा। देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं यदि २० कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उस के पास भीतर आकर उस के साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ। जो जय पाए मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन २१ पर बैठाऊंगा जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उस के सिंहासन पर बैठ गया। जिस के कान हों वह २२ सुने कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है॥

४. इस के पीछे मैं ने दृष्टि की और देखो स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है और जिस को मैं ने पहिले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था यह कहता है कि यहां ऊपर आ जा और मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा जिन का इस के पीछे पूरा होना अवश्य है। और तुरन्त मैं आत्मा में आ २ गया और क्या देखता हूं कि एक सिंहासन स्वर्ग में धरा है और उस सिंहासन पर कोई बैठा है। और जो ३ उस पर बैठा है वह यशब और मानिक सा देख पड़ता है और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघ-धनुष दिखाई देता है। और उस सिंहासन के चारों ओर ४ चौबीस सिंहासन हैं और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन उजला वस्त्र पहिने हुए बैठे हैं और उन के सिरों पर सोने के मुकुट हैं। और उस सिंहासन में से बिज- ५ लियां और गर्जन निकलते हैं और सिंहासन के सामने आग के सात दीपक जल रहे हैं ये परमेश्वर के सात आत्मा हैं। और उस सिंहासन के सामने मानो बिल्लौर ६ के समान कांच का सा समुद्र है और सिंहासन के बीच और सिंहासन के सामने चार प्राणी हैं जिन के आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। पहिला प्राणी सिंह के समान और दूसरा ७

प्राणी बछड़े के समान तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है । ८ और चारों प्राणियों के छः छः पंख हैं और चारों ओर और भीतर आंखें ही आंखें हैं और वे रात दिन बिना विश्राम लिये यह कहते रहते हैं पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान् जो था और जो है और जो आने- ९ वाला है । और जब जब वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर बैठा है जो युगानुयुग जीविता है महिमा और आदर १० और धन्यवाद करेंगे । तब तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के सामने गिर पड़ेंगे और उसे जो युगानुयुग जीविता है प्रणाम करेंगे और अपने अपने मुकुट ११ सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे कि, हे हमारे प्रभु और परमेश्वर तू ही महिमा और आदर और सामर्थ के योग्य है क्योंकि तू ही ने सारी वस्तुएं सिरजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं और सिरजी गईं ॥

५. और जो सिंहासन पर बैठा था मैं ने उस के दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी और वह सात २ छाप लगाकर बन्द की गई थी । और मैं ने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो ऊंचे शब्द से यह प्रचार करता था कि इस पुस्तक के खोलने और उस की छापें तोड़ने के ३ योग्य कौन है । और न स्वर्ग में न पृथिवी पर न पृथिवी के नीचे कोई उस पुस्तक को खोल सकता या उस पर ४ दृष्टि कर सकता था । और मैं फूट फूटकर रोने लगा इसलिये कि उस पुस्तक के खोलने या उस पर दृष्टि ५ करने के योग्य कोई न मिला । और उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा मत रो देख यहूदा के गोत्र का वह सिंह जो दाऊद का मूल है ऐसा जयवन्त हुआ कि इस पुस्तक को खोल और उस की सातों छाप तोड़ सकता ६ है । और मैं ने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में मानो एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा उस के सात सींग और सात आंखें थीं ये परमेश्वर के सातों आत्मा हैं जो सारी पृथिवी पर ७ भेजे गए हैं । उस ने आकर उस के दहिने हाथ से जो ८ सिंहासन पर बैठा था वह पुस्तक ले ली । और जब उस ने पुस्तक ले ली तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े और हर एक के हाथ में बीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे ये तो पवित्र ९ लोगों की प्रार्थनाएं हैं । और वे नया गीत गाने लगे कि तू इस पुस्तक के लेने और उस की छापें खोलने के योग्य है क्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया । १० और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया और वे पृथिवी पर राज्य करते हैं । ११ और जब मैं ने देखा तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी । १२ और वे ऊंचे शब्द से कहते थे कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है । १३ फिर मैं ने स्वर्ग में और पृथिवी पर और पृथिवी के नीचे और समुद्र की सब सिरजी हुई वस्तुओं को और सब कुछ जो उन में हैं यह कहते सुना कि जो सिंहासन पर बैठा है उस का और मेम्ने का धन्यवाद और आदर और महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे । १४ और चारों प्राणियों ने आमीन कहा और प्राचीनों ने गिरकर प्रणाम किया ॥

६. फिर मैं ने देखा कि मेम्ने ने उन सात छापों में से एक को खोला और उन चारों प्राणियों में से एक का गर्ज का सा शब्द सुना २ कि आ । और मैं ने दृष्टि की और देखो एक श्वेत घोड़ा है और उस का सवार धनुष लिये हुए है और उसे मुकुट दिया गया और वह जय करता हुआ और और भी जय करने को निकला ॥

३ और जब उस ने दूसरी छाप खोली तो मैं ने दूसरे ४ प्राणी को यह कहते सुना कि आ । फिर एक और घोड़ा निकला जो लाल रंग का था उस के सवार को यह अधिकार दिया गया कि पृथिवी पर से मेल उठा ले कि लोग एक दूसरे को वध करें और उसे एक बड़ी तलवार दी गई ॥

५ और जब उस ने तीसरी छाप खोली तो मैं ने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना कि आ । और मैं ने दृष्टि की और देखो एक काला घोड़ा है और उस के ६ सवार के हाथ में एक तराजू है । और मैं ने उन चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना कि दीनार[1] का सेर भर गेहूं और दीनार[1] का तीन सेर जव और तेल और दाख रस की हानि न करना ॥

७ और जब उस ने चौथी छाप खोली तो मैं ने ८ चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना कि आ । और मैं ने दृष्टि की और देखो एक पीला सा घोड़ा है और उस के सवार का नाम मृत्यु है और अधोलोक उस के साथ हो लेता है और उन्हें पृथिवी की एक चौथाई पर यह अधिकार दिया गया कि तलवार और अकाल और मरी

(१) देखो मती १८:२८ ।

और पृथिवी के बन पशुओं के द्वारा लोगों को मार डालें ॥

९ और जब उस ने पांचवीं छाप खोली तो मैं ने वेदी के नीचे उन के प्राणों को देखा जो परमेश्वर के वचन के कारण और उस गवाही के कारण जो उन्हों ने १० दी वध किए गए थे। और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा हे स्वामी हे पवित्र और सत्य तू कब तक न्याय न करेगा और पृथिवी के रहनेवालों से हमारे लोहू का ११ पलटा न लेगा। और उन में से हर एक को उजला वस्त्र दिया गया और उन से कहा गया कि और थोड़ी देर तक विश्राम करो जब तक कि तुम्हारे संगी दास और भाई जो तुम्हारी नाईं वध होनेवाले हैं उन की भी गिनती पूरी न हो ॥

१२ और जब उस ने छठवीं छाप खोली तो मैं ने देखा कि एक बड़ा भूईंडोल हुआ और सूरज कम्मल की नाईं १३ काला और पूरा चांद लोहू सा हो गया। और आकाश के तारे पृथिवी पर गिरे जैसे बड़ी आंधी से हिल कर १४ अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं। और आकाश ऐसा सरक गया जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है और हर एक पहाड़ और टापू अपनी अपनी जगह से टल १५ गया, और पृथिवी के राजा और प्रधान और सरदार और धनवान और सामर्थी लोग और हर एक दास और हर एक स्वतंत्र पहाड़ों की खोहों में और चटानों में जा १६ छिपे। और पहाड़ों और चटानों से कहने लगे कि हम पर गिर पड़ो और हमें उस के मुंह से जो सिंहासन पर बैठा १७ है और मेम्ने के क्रोध से छिपा लो। क्योंकि उन के क्रोध का बड़ा दिन आ पहुंचा है अब कौन ठहर सकता है ॥

७. इस के पीछे मैं ने पृथिवी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे वे पृथिवी की चारों हवाओं को थांभे हुए थे कि पृथिवी या २ समुद्र या किसी पेड़ पर हवा न चले। फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को जीवते परमेश्वर की छाप लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा उस ने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथिवी और समुद्र की हानि करने का ३ अधिकार दिया गया था ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर छाप न दें तब तक पृथिवी और समुद्र और पेड़ों को हानि न ४ पहुंचाना। और जिन पर छाप दी गई मैं ने उन की गिनती सुनी कि इस्राईल के सन्तानों के सारे गोत्रों में ५ से एक लाख चौआलीस हज़ार पर छाप दी गई। यहूदा के गोत्र में से बारह हज़ार पर छाप दी गई रूबेन के गोत्र में से बारह हज़ार पर गाद के गोत्र में से बारह ६ हज़ार पर। आशेर के गोत्र में से बारह हज़ार पर नफ्ताली के गोत्र में से बारह हज़ार पर मनश्शिह के गोत्र ७ में से बारह हज़ार पर। शमौन के गोत्र में से बारह हज़ार पर लेवी के गोत्र में से बारह हज़ार पर इस्साकार ८ के गोत्र में से बारह हज़ार पर। जबूलून के गोत्र में से बारह हज़ार पर यूसुफ के गोत्र में से बारह हज़ार पर बिनयामीन के गोत्र में से बारह हज़ार पर छाप दी गई।

९ इस के पीछे मैं ने दृष्टि की और देखो हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से ऐसी बड़ी भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता उजले वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन के सामने और १० मेम्ने के सामने खड़ी है। और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने का जयजयकार हो। ११ और सारे स्वर्गदूत उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं फिर वे सिंहासन के सामने मुंह के बल गिर पड़े और परमेश्वर को प्रणाम करके १२ कहा आमीन। हमारे परमेश्वर की स्तुति और महिमा और ज्ञान और धन्यवाद और आदर और सामर्थ और १३ शक्ति युगानुयुग बने रहें। आमीन। इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा ये उजले वस्त्र पहिने हुए कौन हैं १४ और कहां से आए हैं। मैं ने उस से कहा हे स्वामी तू ही जानता है। उस ने मुझ से कहा ये वे हैं जो उस बड़े क्लेश में से निकलकर आए हैं इन्हों ने अपने अपने १५ वस्त्र मेम्ने के लोहू में धोकर उजले किये हैं। इसी कारण ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं और उस के मन्दिर[१] में रात दिन उस की सेवा करते रहते हैं और जो सिंहासन पर बैठा है वह उन के ऊपर अपना तंबू १६ तानेगा। वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे और न उन १७ पर धूप न कोई तपन पड़ेगी। क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है उन की रखवाली करेगा और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा और परमेश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा ॥

८. और जब उस ने सातवीं छाप खोली तो स्वर्ग में आध घड़ी तक मौन २ छा गया। और मैं ने उन सातों स्वर्गदूतों को जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं देखा और उन्हें सात तुरही दी गईं ॥

३ फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए हुए आया और वेदी के निकट खड़ा हुआ और उस को बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं

(१) यू०। पवित्रस्थान।

के साथ उस सोनहली वेदी पर जो सिंहासन के सामने ४ है चढ़ाए। और उस धूप का धूआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने ५ पहुंच गया। और स्वर्गदूत ने वह धूपदान लेकर उस में वेदी की आग भरी और पृथिवी पर डाल दी और गर्जन और शब्द और बिजलियां और भुईंडोल हुए॥

६ और वे सातों स्वर्गदूत जिन के पास सात तुरहियां थीं फूंकने को तैयार हुए॥

७ पहिले स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी और लोहू से मिले हुए ओले और आग हुए और वे पृथिवी पर डाले गये और पृथिवी की एक तिहाई जल गई और पेड़ों की एक तिहाई जल गई और सब हरी घास जल गई॥

८ और दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी और आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ सा समुद्र में डाला गया ९ और समुद्र की एक तिहाई लोहू हो गई। और समुद्र में की सिरजी हुई वस्तुओं की एक तिहाई जो सजीव थीं मर गई और जहाज़ों की एक तिहाई नाश हो गई॥

१० और तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी और एक बड़ा तारा जो मशाल की नाईं जलता था स्वर्ग से टूटा और नदियों की एक तिहाई पर और पानी के सोतों पर आ ११ पड़ा। और उस तारे का नाम नागदौना कहलाता है और एक तिहाई पानी नागदौना सा कड़वा हो गया और बहुतेरे मनुष्य उस पानी के कड़वे हो जाने से मर गये॥

१२ और चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी और सूरज की एक तिहाई और चांद की एक तिहाई और तारों की एक तिहाई मारी गई यहां तक कि उन की एक तिहाई अंधेरा हो गई और दिन की एक तिहाई में उजाला न रहा और वैसे ही रात में भी॥

१३ और मैं ने देखा तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊंचे शब्द से यह कहते सुना कि उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण जिन का फूंकना अभी बाक़ी है पृथिवी के रहनेवालों पर हाय हाय हाय॥

९. और पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी और मैं ने स्वर्ग से पृथिवी पर एक तारा गिरता हुआ देखा और उसे अथाह कुंड की २ कुंजी दी गई। और उस ने अथाह कुंड को खोला और कुंड में से बड़ी भट्ठी का सा धूआं उठा और कुंड के धूएं ३ से सूरज और आकाश अंधेरे हो गए। और उस धूएं में से पृथिवी पर टिड्डियां निकलीं और उन्हें पृथिवी के ४ बिच्छुओं की सी शक्ति दी गई। और उन से कहा गया कि न पृथिवी की घास को न किसी हरियाली को न किसी पेड़ को हानि पहुंचाओ केवल उन मनुष्यों को जिन के माथे पर परमेश्वर की छाप नहीं। ५ और उन्हें मार डालने का तो नहीं पर पांच महीने तक लोगों को पीड़ा देने का अधिकार दिया गया और उन की पीड़ा ऐसी थी जैसे बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य को होती है। ६ उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूंढ़ेंगे और न पाएंगे और मरने की लालसा करेंगे और मृत्यु उन से भागेगी। ७ और उन टिड्डियों के आकार लड़ाई के लिये तैयार किए हुए घोड़ों के से थे और उन के सिरों पर मानों सोने के मुकुट थे और उन के मुंह मनुष्यों के से थे। ८ और उन के बाल स्त्रियों के से और दांत सिंहों के से थे। ९ और वे लोहे की सी झिलम पहिने थे और उन के पंखों का शब्द ऐसा था जैसा रथों और बहुत से घोड़ों का जो लड़ाई में दौड़ते हों। १० और उन की पूंछ बिच्छुओं की सी थीं और उन में डंक थे और उन्हें पांच महीने तक मनुष्यों को दुख पहुंचाने की जो सामर्थ थी वह उन की पूंछों में थी। ११ अथाह कुंड का दूत उन पर राजा था उस का नाम इब्रानी में अबद्दोन और यूनानी में अपुल्लयोन है॥

१२ पहिली विपत बीत चुकी देखो अब इस के पीछे दो विपतें होनेवाली हैं॥

१३ और छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी और जो सोने की वेदी परमेश्वर के सामने है उस के सींगों में से मैं ने १४ ऐसा शब्द सुना। जो छठवें स्वर्गदूत से जिस के पास तुरही थी कोई कह रहा है उन चार स्वर्गदूतों को जो १५ बड़ी नदी फिरात के पास बंधे हुए हैं खोल दे। और वे चारों दूत खोल दिए गए जो उस घड़ी और दिन और महीने और बरस के लिये मनुष्यों की एक तिहाई के मार १६ डालने को तैयार किए गए थे। और फ़ौजों के सवारों की १७ गिनती बीस करोड़ थी मैं ने उन की गिनती सुनी। और मुझे इस दर्शन में घोड़े और उन के ऐसे सवार दिखाई दिए जिन की झिलमें आग और धूम्रकान्त और गन्धक की सी थीं और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के से थे और उन के मुंह से आग और धूआं और गन्धक १८ निकलती थी। इन तीनों मरियों अर्थात् आग और धूएं और गन्धक से जो उस के मुंह से निकलती थीं मनुष्यों १९ की एक तिहाई मार डाली गई। क्योंकि उन घोड़ों की सामर्थ उन के मुंह और उन की पूंछों में थी इसलिये उन की पूंछें सांपों की सी थीं और उन पूंछों में सिर २० भी थे और इन्हीं से वे पीड़ा पहुंचाते थे। और बाकी मनुष्यों ने जो उन मरियों से न मरे थे अपने हाथों के कामों से मन न फिराया कि दुष्टात्माओं की और सोने और चांदी और पीतल और पत्थर और काठ की मूरतों

की पूजा न करें जो न देख न सुन न चल सकती हैं। २१ और जो खून और टोना और व्यभिचार और चोरियां उन्हों ने की थीं उन से मन न फिराया ॥

१०. फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा उस के सिर पर मेघ-धनुष था और उस का मुंह सूरज सा और उस के पांव आग के खंभे से थे। २ और उस के हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी उस ने अपना दहना पांव समुद्र पर और बायां पृथिवी ३ पर रक्खा। और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया जैसा सिंह गरजता है और जब वह चिल्लाया तो गर्ज के सात शब्द ४ सुनाई दिए। और जब सातों गर्ज के शब्द सुनाई दे चुके तो मैं लिखने पर था और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना कि जो बातें गर्ज के उन सात शब्दों से सुनी हैं ५ उन्हें गुप्त रख[1] और मत लिख। और जिस स्वर्गदूत को मैं ने समुद्र और पृथिवी पर खड़े देखा था उस ने अपना ६ दहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया। और जो युगानुयुग जीविता रहेगा और जिस ने स्वर्ग और जो कुछ उस में है और पृथिवी और जो कुछ उस पर है और समुद्र और जो कुछ उस में है सिरजा उसी की किरिया खाकर कहा ७ अब तो और देर न होगी[2]। पर सातवें स्वर्गदूत के शब्द देने के दिनों में जब वह तुरही फूकने पर होगा तो परमेश्वर का गुप्त मनोरथ[3] उस सुसमाचार के अनुसार जो ८ उस ने अपने दास नबियों को दिया पूरा होगा। और जिस शब्द करनेवाले को मैं ने स्वर्ग से बोलते सुना था वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा कि जा जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथिवी पर खड़ा है उस के हाथ में की खुली ९ हुई पुस्तक ले ले। और मैं ने स्वर्गदूत के पास जाकर कहा यह छोटी पुस्तक मुझे दे और उस ने मुझ से कहा ले इसे खा जा और यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी पर तेरे १० मुंह में मधु सी मीठी लगेगी। सो मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा गया वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी तो लगी पर जब मैं उसे खा गया तो ११ मेरा पेट कड़वा हो गया। तब मुझ से यह कहा गया कि तुझे बहुत से लोगों और जातियों और भाषाओं और राजाओं पर फिर नबूवत करनी होगी ॥

११. और मुझे लग्गी के समान एक सरकंडा दिया गया और किसी ने कहा उठ परमेश्वर के मन्दिर और वेदी और उस में २ के भजन करनेवालों को नाप। और मन्दिर के बाहर का आंगन छोड़ दे और उसे मत नाप क्योंकि वह अन्य

(१) य०। उन पर छाप दे। (२) या। समय न होगा। (३) यू०। भेद।

जातियों को दिया गया है और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगे। ३ और मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार दूंगा कि टाट ओढ़े हुए एक हज़ार दो सौ साठ दिन नबूवत करें। ४ ये वे ही जैतून के दो पेड़ और दो दीवट हैं जो पृथिवी के प्रभु के सामने खड़े रहते हैं। ५ और यदि कोई उन को हानि पहुंचाना चाहता है तो उन के मुंह से आग निकल कर उन के बैरियों को भस्म करती है और यदि कोई उन को हानि पहुंचाना चाहता है तो अवश्य इस रीति से मार डाला जाएगा। ६ इन्हें अधिकार है कि आकाश को बन्द करें कि उन की नबूवत के दिनों में मेंह न बरसे और उन्हें सब पानी पर अधिकार है कि उसे लोहू बनाएं और जब जब चाहें तब तब पृथिवी पर हर प्रकार की मरी लाएं। ७ और जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे तो वह पशु जो अथाह कुंड में से निकलेगा उन से लड़कर उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा। ८ और उन की लोथें उस बड़े नगर के चौक में पड़ी रहेंगी जो आत्मिक रीति से सदोम और मिसर कहलाता है जहां उन का प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। ९ और सब लोगों और कुलों और भाषाओं और जातियों में से लोग उन की लोथें साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे और उन की लोथें क़बर में रखने न देंगे। १० और पृथिवी के रहनेवाले उन के मरने से आनन्दित और मगन होंगे और एक दूसरे के पास भेंट भेजेंगे क्योंकि इन दोनों नबियों ने पृथिवी के रहनेवालों को पीड़ा दी थी। ११ और साढ़े तीन दिन के पीछे परमेश्वर की ओर से जीवन का आत्मा उन में पैठ गया और वे अपने पांवों के बल खड़े हो गए और उन के देखनेवालों पर बड़ा भय छा गया। १२ और उन्हें स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुनाई दिया कि यहां ऊपर आओ यह सुन वे बादल में होकर अपने बैरियों के देखते देखते स्वर्ग पर उठ गए। १३ और उसी घड़ी बड़ा भुईंडोल हुआ और नगर का दसवां अंश गिर पड़ा और उस भुईंडोल से सात हज़ार मनुष्य मरे और शेष डर गए और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की ॥

१४ दूसरी विपत बीत चुकी देखो तीसरी विपत जल्द आनेवाली है ॥

१५ और सातवें दूत ने तुरही फूंकी और स्वर्ग में बड़े बड़े शब्द हुए कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उस के मसीह का हो गया। १६ और वह युगानुयुग राज्य करेगा और चौबीसों प्राचीन जो परमेश्वर के सामने अपने अपने सिंहासन पर बैठे थे मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को प्रणाम करके, १७ यह कहने लगे कि हे सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर जो है और जो था हम तेरा धन्यवाद करते

है कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ काम में लाकर राज्य
१८ किया है। और अन्यजातियों ने क्रोध किया और तेरा क्रोध आ पड़ा और वह समय आ पहुंचा है कि मरे हुओं का न्याय किया जाए और तेरे दास नबियों और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं बदला दिया जाए और पृथिवी के बिगाड़नेवाले बिगाड़े जाएं॥

१९ और परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है वह खोला गया और उस के मन्दिर में उस की वाचा का सन्दूक दिखाई दिया और बिजलियां और शब्द और गर्जे और भूईंडोल हुए और बड़े ओले पड़े॥

१२.

फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया अर्थात् एक स्त्री जो सूरज ओढ़े हुए थी और चांद उस के पांवों तले था और उस
२ के सिर पर बारह तारों का मुकुट था। और वह गर्भवती हुई और चिल्लाती थी क्योंकि प्रसव की पीड़ उसे लगी
३ थी और वह जनने को पीड़ित थी। और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई दिया और देखो एक बड़ा लाल अजगर जिस के सात सिर और दस सींग थे और उस के सिरों
४ पर सात राजमुकुट थे। और उस की पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथिवी पर डाल दिया और वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जना चाहती थी खड़ा हुआ कि जब जने तो उस के बच्चे को निगल जाए।
५ और वह बेटा जनी जो लोहे का दंड लिये हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था और उस का बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उस के सिंहासन के पास
६ उठाकर पहुंचा दिया गया। और वह स्त्री उस जंगल को भाग गई जहां परमेश्वर की ओर से उस के लिये एक जगह तैयार की गई थी कि वहां वह एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए॥

७ फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई मीकाईल और उस के स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और
८ उस के दूत उस से लड़े। परन्तु प्रबल न हुए और स्वर्ग
९ में उन के लिये फिर जगह न रही। और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमानेवाला है पृथिवी पर गिरा दिया गया और उस के दूत उस के साथ गिरा
१० दिए गए। फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते सुना कि अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ और राज्य और उस के मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था
११ गिरा दिया गया। और वे मेम्ने के लोहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुए और उन्हों ने अपने प्राणों को प्रिय न जाना यहां तक कि
१२ मृत्यु भी सह ली। इस कारण हे स्वर्गों और उन में के रहनेवालो मगन हो हे पृथिवी और समुद्र तुम पर हाय क्योंकि शैतान[१] बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है क्योंकि जानता है कि मेरा थोड़ा ही समय और है॥

१३ और जब अजगर ने देखा कि मैं पृथिवी पर गिरा दिया गया हूं तो उस स्त्री को जो बेटा जनी थी सताया।
१४ और उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए कि सांप के सामने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुंच जाए जहां वह एक समय और समयों और आधे समय तक
१५ पाली जाए। और सांप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुंह से नदी की नाईं पानी बहाया कि उसे इस नदी से बहा दे।
१६ परन्तु पृथिवी ने उस स्त्री की सहायता की और अपना मुंह खोल कर उस नदी को जो अजगर ने अपने मुंह से
१७ बहाई थी पी लिया। और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उस के शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं लड़ने

१३.

को गया। और वह समुद्र की बालू पर जा खड़ा हुआ॥

और मैं ने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा जिस के दस सींग और सात सिर थे और उस के सींगों पर दस राजमुकुट और उस के सिरों पर निन्दा के
२ नाम लिखे हुए थे। और जो पशु मैं ने देखा वह चीते की नाईं था और उस के पांव भालू के से और मुंह सिंह का सा था और उस अजगर ने अपनी सामर्थ और
३ अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसे दे दिया। और मैं ने उस के सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा मानो वह मरने पर है फिर उस का प्राणहारक घाव अच्छा हो गया और सारी पृथिवी के लोग उस पशु के
४ पीछे पीछे अचंभा करते हुए चले। और उन्हों ने अजगर की पूजा की क्योंकि उस ने पशु को अपना अधिकार दिया और यह कहकर पशु की पूजा की कि इस पशु के समान
५ कौन है कौन उस से लड़ सकता है। और बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुंह दिया गया और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार
६ दिया गया। और उस ने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुंह खोला कि उस के नाम और उस के तंबू अर्थात्
७ स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे। और उसे यह

(१) मू०। इबलीस।

अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े और उन पर जय पाए और उसे हर एक कुल और लोग और भाषा ८ और जाति पर अधिकार दिया गया। और पृथिवी के वे सब रहनेवाले जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए जो जगत की उत्पत्ति के समय से ९ घात हुआ है उस पशु की पूजा करेंगे। जिस के कान हों १० वह सुने। जिस को क़ैद में पड़ना है वह क़ैद में पड़ेगा जो तलवार से मारेगा अवश्य है कि वह तलवार से मारा जाएगा पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है॥

११ फिर मैं ने एक और पशु को पृथिवी में से निकलते हुए देखा उस के मेम्ने के से दो सींग थे और अजगर की १२ नाईं बोलता था। और यह उस पहिले पशु का सारा अधिकार उस के सामने काम में लाता है और पृथिवी और उस के रहनेवालों से उस पहिले पशु की जिस का १३ प्राणहारक घाव अच्छा हो गया था पूजा कराता था। और वह बड़े बड़े चिन्ह दिखाता था यहां तक कि मनुष्यों के १४ सामने स्वर्ग से पृथिवी पर आग उतार देता था। और उन चिन्हों के कारण जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था वह पृथिवी के रहनेवालों को ऐसा भरमाता था कि पृथिवी के रहनेवालों से कहता था कि जिस पशु के तलवार लगी थी और वह जी गया १५ उस की मूरत बनाओ। और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया कि पशु की मूरत बोलने लगे और जितने लोग उस पशु की मूरत की १६ पूजा न करें उन्हें मरवा डालें। और उस ने छोटे बड़े धनी कंगाल स्वतन्त्र दास सब के दहिने हाथ या १७ उन के माथे पर एक एक छाप करा दी। कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम या उस के नाम का अंक हो और कोई लेन देन न १८ कर सके। ज्ञान इसी में है जिसे बुद्धि हो वह इस पशु का अंक जोड़ ले क्योंकि वह मनुष्य का सा अंक है और उस का अंक छः सौ छियासठ है॥

१४. फिर मैं ने दृष्टि की और देखो वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है और उस के साथ एक लाख चौआलीस हज़ार जन हैं जिन के माथे पर उस का और उस २ के पिता का नाम लिखा हुआ है। और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन के शब्द सा था और जो शब्द मैं ने सुना वह ऐसा था मानो वीणा बजानेवाले ३ वीणा बजाते हों। और वे सिंहासन के सामने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के सामने मानों एक नया गीत गा रहे थे और उन एक लाख चौआलीस हज़ार जनों को छोड़ जो पृथिवी पर से मोल लिए गए थे कोई वह गीत न सीख सकता था। ये वे हैं जो स्त्रियों के ४ साथ अशुद्ध नहीं हुए पर कुंवारे हैं। ये वे हैं कि जहाँ कहीं मेम्ना जाता है वे उस के पीछे हो लेते हैं। वे तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिये मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं। और उन के मुंह ५ से कभी झूठ न निकला था वे निर्दोष हैं॥

६ फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा जिस के पास पृथिवी पर के रहनेवालों की हर एक जाति और कुल और भाषा और लोग को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था। और उस ने ७ बड़े शब्द से कहा परमेश्वर से डरो और उस की महिमा करो क्योंकि उस का न्याय करने का समय आ पहुंचा है और उस का भजन करो जिस ने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जल के सोते बनाए॥

८ फिर इस के पीछे एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया कि गिर पड़ी वह बड़ी बाबिल गिर पड़ी जिस ने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है॥

९ फिर इन के पीछे एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया कि जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले। तो वह परमेश्वर के कोप की निरी १० मदिरा जो उस के क्रोध के कटोरे में ढाली गई है पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। और उन की पीड़ा ११ का धूआं युगानुयुग उठता रहेगा और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं और जो उस के नाम की छाप लेते हैं उन को रात दिन चैन न मिलेगा। पवित्र लोगों का धीरज इसी में है जो परमेश्वर की १२ आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥

और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना कि यह लिख १३ जो मुरदे प्रभु में मरते हैं वे अब से धन्य हैं आत्मा कहता है हां क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम करेंगे और उन के कार्य्य उन के साथ हो लेते हैं॥

और मैं ने दृष्टि की और देखो एक उजला १४ बादल है और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है जिस के सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है। फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर १५ में से निकलकर उस से जो बादल पर बैठा था बड़े शब्द से पुकार कर कहा कि अपना हंसुआ लगाकर लवनी

कर क्योंकि लवने का समय पहुंचा है इसलिये कि
१६ पृथिवी की खेती पक चुकी है। सो जो बादल पर बैठा था उस ने पृथिवी पर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवी की लवनी की गई॥

१७ फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर[१] में से निकला जो स्वर्ग में है और उस के पास भी चोखा
१८ हंसुआ था। फिर एक और स्वर्गदूत जिसे आग पर अधिकार था वेदी में से निकला और जिस के पास चोखा हंसुआ था उस से ऊंचे शब्द से कहा अपना चोखा हंसुआ लगाकर पृथिवी की दाखलता के गुच्छे काट
१९ ले क्योंकि उस की दाख पक चुकी हैं। और उस स्वर्गदूत ने पृथिवी पर अपना हंसुआ डाला और पृथिवी की दाखलता का फल काट कर अपने परमेश्वर के कोप
२० के बड़े रस के कुंड में डाल दिया। और नगर के बाहर उस रस के कुंड में दाख रौंदे गए और रस के कुंड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा और सौ कोस तक बह गया॥

१५.

फिर मैं ने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा अर्थात् सात स्वर्गदूत जिन के पास सातों पिछली बिपतें थीं क्योंकि उन के हो जाने पर परमेश्वर के कोप का अन्त है॥

२ और मैं ने एक आग से मिले हुए कांच का सा समुद्र देखा और जो उस पशु पर और उस की मूरत पर और उस के नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की बीणाओं
३ को लिए हुए खड़े देखा। और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे कि हे सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर तेरे कार्य्य बड़े और अद्भुत हैं हे युग युग के राजा तेरी चाल ठीक और
४ सच्ची है। हे प्रभु कौन तुझ से न डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा क्योंकि केवल तू ही पवित्र है और सारी जातियां आकर तेरे सामने प्रणाम करेंगी क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं॥

५ और इस के पीछे मैं ने देखा कि स्वर्ग में साक्षी
६ के तंबू का मन्दिर खोला गया। और वे सातों स्वर्गदूत जिन के पास सातों बिपतें थीं शुद्ध और चमकती हुई मणि पहिने हुए छाती पर सुनहले पटुके बांधे हुए मन्दिर[१] से
७ निकले। और उन चारों प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के जो युगानुयुग जीविता है कोप से
८ भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए। और परमेश्वर की महिमा और उस की सामर्थ के कारण मन्दिर[२] धुएं से भर गया और जब तक उन सातों स्वर्गदूतों की सातों बिपतें अन्त न हुईं तब तक कोई मन्दिर[२] में न जा सका॥

१६.

फिर मैं ने मन्दिर में किसी को ऊंचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना कि जाओ परमेश्वर के कोप के सातों कटोरों को पृथिवी पर उंडेल दो॥

२ सो पहिले ने जाकर अपना कटोरा पृथिवी पर उंडेल दिया। और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी और जो उस की मूरत की पूजा करते थे एक प्रकार का बुरा और दुखदाई फोड़ा निकला॥

३ और दूसरे ने अपना कटोरा समुद्र पर उंडेल दिया और वह मरे हुए का सा लोहू बन गया और समुद्र में का हर एक जीवधारी मर गया॥

४ और तीसरे ने अपना कटोरा नदियों और पानी
५ के सोतों पर उंडेल दिया और वे लोहू बन गए। और मैं ने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना कि हे पवित्र जो है और जो था तू न्यायी है और तू ने यह न्याय
६ किया। क्योंकि उन्हों ने पवित्र लोगों और नबियों का लोहू बहाया था और तू ने उन्हें लोहू पिलाया
७ क्योंकि वे इसी योग्य हैं। फिर मैं ने वेदी से यह शब्द सुना कि हां हे सर्व्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर तेरे फैसले सच्चे और ठीक हैं।

८ और चौथे ने अपना कटोरा सूरज पर उंडेल दिया और उसे मनुष्यों को आग से झुलसा देने का
९ अधिकार दिया गया। और मनुष्य बड़ी तपन से झुलस गए और परमेश्वर के नाम की जिसे इन बिपतों पर अधिकार है निन्दा की और उस की महिमा करने के लिये मन न फिराया॥

१० और पांचवें ने अपना कटोरा उस पशु के सिंहासन पर उंडेल दिया और उस के राज्य पर अंधेरा छा गया और लोग पीड़ा के मारे अपनी अपनी
११ जीभ चबाने लगे। और अपनी पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की और अपने अपने कामों से मन न फिराया॥

१२ और छठवें ने अपना कटोरा बड़ी नदी फिरात पर उंडेल दिया और उस का पानी सूख गया कि पूरब दिशा
१३ के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाए। और मैं ने उस अजगर के मुंह से और उस पशु के मुंह से और उस झूठे नबी के मुंह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों
१४ के रूप में निकलते देखा। ये चिन्ह दिखानेवाले दुष्टात्मा

(१) यू०। पवित्रस्थान।

(२) यू०। पवित्रस्थान।

हैं जो सारे संसार के राजाओं के पास निकलकर इसलिये जाते हैं कि उन्हें सर्व्वशक्तिमान् परमेश्वर के उस बड़े १५ दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठे करें। देख मैं चोर की नाई आता हूं धन्य वह है जो जागता रहता है और अपने वस्त्र की चौकसी करता है कि नंगा न फिरे और लोग १६ उस का नंगापन न देखें। और उन्हों ने उन्हें उस जगह इकट्ठे किया जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है॥

१७ और सातवें ने अपना कटोरा हवा पर उंडेल दिया और मन्दिर[1] के सिंहासन से यह ऊंचा शब्द हुआ कि १८ हो चुका। फिर बिजलियां और शब्द और गर्जन हुए और एक ऐसा बड़ा भूईंडोल आया कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथिवी पर हुई तब से ऐसा बड़ा भूईंडोल न १९ हुआ था। और उस बड़े नगर के तीन टुकड़े हो गए और जाति जाति के नगर गिर पड़े और बड़ी बाबिल का स्मरण परमेश्वर के यहां हुआ कि वह अपने क्रोध की २० जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए। और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया और पहाड़ों का पता न लगा। २१ और आकाश से मनुष्यों पर मन मन भर के बड़े ओले गिरे और इसलिये कि यह बिपत बहुत ही भारी थी लोगों ने ओलों की बिपत के कारण परमेश्वर की निन्दा की॥

१७. और जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे उन में से एक ने आकर मुझ से यह कहा कि इधर आ मैं तुझे उस बड़ी बेश्या का दंड दिखाऊं जो बहुत से पानियों पर २ बैठी है। जिस के साथ पृथिवी के राजाओं ने व्यभिचार किया और पृथिवी के रहनेवाले उस के व्यभिचार की ३ मदिरा से मतवाले हो गए थे। सो वह मुझे आत्मा में जंगल को ले गया और मैं ने क़िरिमिज़ी रंग के पशु पर जो निन्दा के नामों से छपा हुआ और जिस के सात सिर ४ और दस सींग थे एक स्त्री को बैठे हुए देखा। यह स्त्री बैंजनी और क़िरमिज़ी कपड़े पहिने थी और सोने और बहुमोल मणियों और मोतियों से सजी हुई थी और उस के हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घिनित वस्तुओं से और उस के व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ ५ था। और उस के माथे पर यह नाम लिखा था भेद बड़ी बाबिल पृथिवी की बेश्याओं और घिनित वस्तुओं की ६ माता। और मैं ने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लोहू और यीशु के गवाहों के लोहू पीने से मतवाली देखा ७ और उसे देखकर मैं चकित हो गया। उस स्वर्गदूत ने

(१) यू०। पवित्रस्थान।

मुझ से कहा तू क्यों चकित हुआ है। मैं इस स्त्री और उस पशु का जिस पर वह सवार है और जिस के सात ८ सिर और दस सींग हैं तुझे भेद बताता हूं। जो पशु तू ने देखा है यह पहिले तो था पर अब नहीं है और अथाह कुंड से निकलकर विनाश में पड़ेगा और पृथिवी के रहनेवाले जिन के नाम जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गये इस पशु की यह दशा देखकर कि पहिले था और अब नहीं और फिर आ जाएगा ९ अचंभा करेंगे। ज्ञानी की बुद्धि इसी में है वे सातों सिर १० सात पहाड़ हैं जिन पर वह स्त्री बैठी है। और वे सात राजा भी हैं पांच तो हो चुके हैं और एक अभी है और एक अब तक आया नहीं और जब आएगा तो कुछ समय ११ तक उस का रहना अवश्य है। और जो पशु पहिले था और अब नहीं वह आप आठवां है और उन सातों में से १२ उत्पन्न हुआ और विनाश में पड़ेगा। और जो दस सींग तू ने देखे वे दस राजा हैं जिन्हों ने अब तक राज्य नहीं पाया पर उस पशु के साथ घड़ी भर के लिये राजाओं १३ का सा अधिकार पाएंगे। ये सब एक मन होंगे और वे अपनी अपनी सामर्थ और अधिकार उस पशु को देंगे। १४ ये मेम्ने से लड़ेंगे और मेम्ना उन पर जय पाएगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है और जो बुलाए हुए और चुने हुए और बिश्वासी उस के साथ हैं १५ वे भी जय पाएंगे। फिर उस ने मुझ से कहा कि जो पानी तू ने देखे जिन पर बेश्या बैठी है वे लोग और १६ भीड़ और जातियां और भाषा हैं। और जो दस सींग तू ने देखे वे और पशु उस बेश्या से बैर रक्खेंगे और उसे लाचार और नंगी कर देंगे और उस का मांस खा जाएंगे १७ और उसे आग में जला देंगे। क्योंकि परमेश्वर उन के मन में यह डालेगा कि वे उस की मनसा पूरी करें और जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो लें तब तक एक १८ मन होकर अपना अपना राज्य पशु को दे दें। और वह स्त्री जो तू ने देखी वह बड़ा नगर है जो पृथिवी के राजाओं पर राज्य करता है॥

१८. इस के पीछे मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिस का बड़ा अधिकार था और पृथिवी उस के तेज से उजाली हो २ गई। उस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा कि गिर गई बड़ी बाबिल गिर गई है और दुष्टात्माओं का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा और हर एक अशुद्ध ३ और घिनित पक्षी का अड्डा हो गया। क्योंकि उस के व्यभिचार के कोप की मदिरा पीकर सब जातियां गिर गई हैं और पृथिवी के राजाओं ने उस के साथ व्यभिचार

किया है और पृथिवी के ब्योपारी उस के सुख बिलास की बहुतायत के कारण धनवान् हुए हैं ॥

४ फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना कि हे मेरे लोगो उस में से निकल आओ कि तुम उस के पापों में भागी न हो और उस की बिपतों में से कोई तुम पर न ५ आ पड़े। क्योंकि उस के पाप स्वर्ग तक पहुंच गए हैं ६ और उस के अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं। जैसा उस ने तुम्हें दिया है वैसा ही उस को भर दो और उस के कामों के अनुसार उसे दूना बदला दो जिस कटोरे में उस ने भर दिया उसी में उस के लिये दूना भर दो। ७ जितनी उस ने अपनी बड़ाई की और सुख बिलास किया उतनी उस को पीड़ा और शोक दो क्योंकि वह अपने मन में कहती है मैं रानी हो बैठी हूं विधवा नहीं और ८ शोक में कभी न पड़ूंगी। इस कारण एक ही दिन में उस की बिपतें आ पड़ेंगी अर्थात मृत्यु और शोक और अकाल और वह आग में भस्म कर दी जाएगी क्योंकि ९ उस का न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान् है। और पृथिवी के राजा जिन्हों ने उस के साथ व्यभिचार और सुख बिलास किया जब उस के जलने का धूआं देखेंगे तो उस १० के लिये रोएंगे और छाती पीटेंगे। और उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े हुए कहेंगे हे बड़े नगर बाबिल हे दृढ़ नगर हाय हाय घड़ी ही भर में तुझे दंड मिल गया ११ है। और पृथिवी के ब्योपारी उस के लिये रोएंगे और कलपेंगे क्योंकि अब कोई उन का माल मोल न लेगा। १२ अर्थात् सोना चांदी रत्न मोती और मलमल और बैंजनी और रेशमी और क़िरमिज़ी कपड़े और हर प्रकार का सुगन्धित काठ और हाथीदान्त की हर प्रकार की वस्तुएं और बहुमोल काठ और पीतल और लोहे और संगमरमर १३ के सब भांति के पात्र। और दारचीनी मसाले धूप सुगन्ध तेल लोबान मदिरा तेल मैदा गेहूं गाय बैल भेड़ बकरियां १४ घोड़े रथ और दास और मनुष्यों के प्राण। और तेरे चाहे हुए फल तेरे पास से जाते रहे और अब स्वादित और भड़कीली वस्तु तेरे पास से नाश हुई हैं और वे १५ फिर कभी न मिलेंगी। इन वस्तुओं के ब्योपारी जो उस द्वारा धनवान् हो गए थे उस की पीड़ा के डर के मारे १६ दूर खड़े होंगे और रोते और कलपते हुए कहेंगे। हाय हाय यह बड़ा नगर जो मलमल और बैंजनी और क़िरमिज़ी कपड़े पहिने था और सोने और रत्नों और १७ मोतियों से सजा था, घड़ी ही भर में उस का ऐसा भारी धन नाश हो गया। और हर एक मांझी और जलयात्री और मल्लाह और जितने समुद्र से कमाते हैं सब दूर १८ खड़े हुए। और उस के जलने का धूआं देखते हुए पुकार कर कहेंगे कौन सा नगर इस बड़े नगर के समान है। १९ और अपने अपने सिरों पर धूल डालेंगे और रोते हुए और कलपते हुए चिल्ला चिल्लाकर कहेंगे कि हाय हाय यह बड़ा नगर जिस की संपत के द्वारा समुद्र में के सब जहाज़वाले धनी हो गए घड़ी ही भर में उजड़ गया है। २० हे स्वर्ग और हे पवित्र लोगो और प्रेरितो और नबियो उस पर आनन्द करो क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उस से तुम्हारा पलटा लिया है ॥

२१ फिर एक शक्तिमान् स्वर्गदूत ने बड़ी चक्की के पाट सा एक पत्थर उठाया और यह कहकर समुद्र में फेंक दिया कि बड़ा नगर बाबिल ऐसे ही बड़े बल से गिराया जाएगा और फिर कभी न मिलेगा। २२ और बीणा बजानेवालों और बजनियों और बंसी बजानेवालों और तुरही फूंकनेवालों का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा और किसी उद्यम का कोई कारीगर फिर कभी तुझ में न मिलेगा और चक्की के चलने का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा। २३ और दिया का उजाला फिर कभी तुझ में न चमकेगा और दूल्हे और दुल्हिन का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा क्योंकि तेरे ब्योपारी पृथिवी के प्रधान थे इसलिये कि तेरे टोने से सब जातियां भरमाई गईं। २४ और नबियों और पवित्र लोगों और पृथिवी पर सब घात किये हुओं का लोहू उसी में पाया गया ॥

१९.

इस के पीछे मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ का बड़ा शब्द सुना कि हल्लिलूयाह उद्धार और महिमा और सामर्थ हमारे २ परमेश्वर ही की है। इसलिये कि उस के फैसले सच्चे और ठीक हैं क्योंकि उस ने उस बड़ी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से पृथिवी को भ्रष्ट करती थी फैसला किया और उस से अपने दासों के लोहू का पलटा लिया है। ३ और वे दूसरी बार हल्लिलूयाह बोले और उस के जलने ४ का धूआं युगानुयुग उठता रहेगा। और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को प्रणाम किया जो सिंहासन पर बैठा था और कहा आमीन हल्लिलूयाह। ५ और सिंहासन में से एक शब्द निकला कि हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासो क्या छोटे क्या बड़े तुम ६ सब उस की स्तुति करो। फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द और गर्जनों का सा महान् शब्द सुना कि हल्लिलूयाह इसलिये कि प्रभु हमारे ७ परमेश्वर सर्वशक्तिमान् ने राज्य लिया है। आओ हम आनन्दित और मगन हों और उस की महिमा करें क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा और उस की पत्नी ने अपने

८ आप को तैयार कर लिया। और उस को शुद्ध और उजली मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया क्योंकि उस मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है।
९ और उस ने मुझ से कहा यह लिख कि धन्य वे हैं जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं फिर उस ने मुझ
१० से कहा ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं। और मैं उस को प्रणाम करने के लिये उस के पांवों पर गिरा उस ने मुझ से कहा देख ऐसा मत कर मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूं जो यीशु की गवाही के लिये बने रहे हैं परमेश्वर ही को प्रणाम कर क्योंकि यीशु की गवाही नबुवत का आत्मा है॥

११ फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा और देखो एक श्वेत घोड़ा है और उस पर एक सवार है जो विश्वास योग्य और सत्य कहलाता है और वह धर्म के
१२ साथ न्याय और लड़ाई करता है। उस की आंखें आग की ज्वाला हैं और उस के सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं और उस का एक नाम लिखा है जिसे उस को छोड़
१३ और कोई नहीं जानता। और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है और उस का नाम परमेश्वर का वचन
१४ है। और स्वर्ग में की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और उजली और शुद्ध मलमल पहिने हुए उस के पीछे पीछे
१५ हैं। और जाति जाति के मारने के लिये उस के मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है और वह लोहे का दंड लिए उन पर राज्य करेगा और वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में
१६ रौंदन करता है। और उस के वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु॥

१७ फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को सूरज पर खड़े हुए देखा और उस ने बड़े शब्द से पुकारकर आकाश के बीच में से उड़नेवाले सब पक्षियों से कहा आओ परमेश्वर की बड़ी बियारी के लिये इकट्ठे हो जाओ।
१८ जिस से तुम राजाओं का मांस और सरदारों का मांस और शक्तिमान् पुरुषों का मांस और घोड़ों का और उन के सवारों का मांस और क्या स्वतंत्र क्या दास क्या छोटे क्या बड़े सब लोगों का मांस खाओ॥

१९ फिर मैं ने उस पशु और पृथिवी के राजाओं और उन की सेनाओं को उस घोड़े के सवार और उस की
२० सेना से लड़ने के लिये इकट्ठे देखा। और वह पशु और उस के साथ वह झूठा नबी पकड़ा गया जिस ने उस के सामने ऐसे चिन्ह दिखाए थे जिन के द्वारा उस ने उन को भरमाया जिन्हों ने उस पशु की छाप ली और जो उस की मूरत की पूजा करते थे ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गन्धक से जलती है डाले गए।
२१ और शेष लोग उस घोड़े के सवार की तलवार से जो उस के मुंह से निकलती थी मार डाले गए और सब पक्षी उन के मांस से तृप्त हो गये॥

२०.

फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिस के हाथ में अथाह कुंड की कुंजी और एक बड़ी ज़ंजीर थी।
२ और उस ने उस अजगर अर्थात् पुराने सांप को जो इबलीस और शैतान है पकड़ के हज़ार बरस के लिये बांधा।
३ और उसे अथाह कुंड में डालकर बन्द किया और उस पर छाप कर दी कि वह हज़ार बरस के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए फिर इस के पीछे अवश्य है कि थोड़ी देर के लिये खोला जाए॥

४ फिर मैं ने सिंहासन देखे और उन पर लोग बैठ गए और उन को न्याय करने का अधिकार दिया गया और उन के प्राणों को भी देखा जिन के सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गये थे और जिन्हों ने न उस पशु की और न उस की मूरत की पूजा की थी और न उस की छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी वे जीकर मसीह के साथ हज़ार बरस
५ राज्य करते रहे। और जब तक ये हज़ार बरस पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जीए यह तो पहिला जी
६ उठना है। धन्य और पवित्र वह है जो इस पहिले पुनरुत्थान[1] का भागी है ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ अधिकार नहीं पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उस के साथ हज़ार बरस तक राज्य करेंगे॥

७ और जब हज़ार बरस पूरे हो चुकेंगे तो शैतान
८ क़ैद से छोड़ दिया जाएगा। और उन जातियों को जो पृथिवी के चारों ओर होंगी अर्थात् याजूज और माजूज को जिन की गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी
९ भरमाकर लड़ाई के लिये इकट्ठे करने को निकलेगा। और वे सारी पृथिवी पर फैल जाएंगी और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी और आग स्वर्ग
१० से उतरकर उन्हें भस्म करेगी। और उन का भरमानेवाला शैतान[2] आग और गन्धक की उस झील में जिस में वह पशु और झूठा नबी भी होगा डाला जाएगा और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में रहेंगे॥

११ फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उस को जो उस पर बैठा हुआ है देखा जिस के सामने से पृथिवी और आकाश भाग गए और उन के लिये जगह न मिली।
१२ फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के

(१) या। मृतकोत्थान। (२) य०। इबलीस।

सामने खड़े देखा और पुस्तकें खोली गईं और फिर एक पुस्तक खोली गई अर्थात् जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था उन के कामों के अनुसार मरे १३ हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उस का न्याय किया गया। १४ और मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गये १५ यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया॥

२१. फिर मैं ने नए आकाश और नई पृथिवी को देखा क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथिवी जाती रही थी और समुद्र २ भी न रहा। फिर मैं ने पवित्र नगर नई यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा और वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिये सिंगार किए ३ हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना कि देख परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है वह उन के साथ डेरा करेगा और वे उस के लोग होंगे और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा ४ और उन का परमेश्वर होगा। और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और इस के पीछे मृत्यु न रहेगी और न शोक न बिलाप न पीड़ा रहेगी पहिली बातें ५ जाती रहीं। और जो सिंहासन पर बैठा था उस ने कहा कि देख मैं सब कुछ नया कर देता हूं। फिर उस ने कहा कि लिख ले क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और ६ सत्य हैं। फिर उस ने मुझ से कहा ये बातें पूरी हो गईं मैं अलफा और ओमिगा आदि और अन्त हूं मैं प्यासे को ७ जीवन के जल के सोते से सेंतमेंत पिलाऊंगा। जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा और मैं उस का ८ परमेश्वर होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा। पर डरपोकों और अविश्वासियों और घिनौनों और खूनियों और व्यभिचारियों और टोनहों और मूर्त्तिपूजकों और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती है। यह दूसरी मृत्यु है॥

९ फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात पिछली बिपतों से भरे हुए सात कटोरे थे उन में से एक मेरे पास आया और मेरे साथ बातें करके कहा इधर आ मैं तुझे १० दुल्हिन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊंगा। और वह मुझे आत्मा में एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। परमेश्वर की महिमा उस में थी और ११ उस की ज्योति[१] बहुत ही बहुमोल पत्थर अर्थात् बिल्लौर सरीखे यशब की नाईं स्वच्छ थी। और उस की शहर- १२ पनाह बड़ी ऊंची थी और उस के बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे और उन पर इस्राईलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। पूरब की ओर तीन फाटक १३ उत्तर की ओर तीन फाटक दक्खिन की ओर तीन फाटक और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे। और नगर की १४ शहरपनाह की बारह नेवें थीं और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे। और जो मेरे साथ बातें १५ कर रहा था उस के पास नगर और उस के फाटकों और उस की शहरपनाह के नापने के लिये एक सोने का गज़ था। और नगर चौखूंटा बसा था और उस की लम्बाई १६ चौड़ाई के बराबर थी और उस ने उस गज़ से नगर को नापा तो साढ़े सात सौ कोस का निकला उस की लम्बाई और चौड़ाई और ऊंचाई बराबर थी। और उस ने उस १७ की शहरपनाह को मनुष्य के अर्थात् स्वर्गदूत के नाप से नापा तो एक सौ चौआलीस हाथ निकली। और उस की १८ शहरपनाह की जुड़ाई यशब की थी और नगर ऐसे चोखे सोने का था जो स्वच्छ कांच के समान हो। और उस १९ नगर की शहरपनाह की नेवें हर प्रकार के बहुमोल पत्थरों से संवारी हुई थीं पहिली नेव यशब की थी दूसरी नील-मणि की तीसरी लालड़ी की चौथी मरकत की। पांचवीं २० गोमेदक की छठवीं माणिक्य की सातवीं पीतमणि की आठवीं पेरोज की नवीं पुखराज की दसवीं लहसनिए की एग्यारहवीं धूम्रकान्त की बारहवीं याकूत की। और बारहों २१ फाटक बारह मोतियों के थे एक एक फाटक एक एक मोती का बना था और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी। और मैं ने उस में कोई २२ मन्दिर[२] न देखा क्योंकि सर्वशक्तिमान् प्रभु परमेश्वर और मेम्ना उस का मन्दिर[२] हैं। और उस नगर में सूरज २३ और चांद के उजाले का प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है और मेम्ना उस का दीपक है। और जाति जाति के लोग उस की ज्योति में २४ चलें फिरेंगे और पृथिवी के राजा अपने अपने तेज का सामान उस में लाएंगे। और उस के फाटक दिन को २५ कभी बन्द न होंगे और रात वहां न होगी। और लोग २६ जाति जाति के तेज और विभव का सामान उस में लाएंगे। और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घिनित काम २७ करनेवाला या झूठ का गढ़नेवाला किसी रीति से प्रवेश

(१) या। ज्योति देनेवाला। (२) यू०। पवित्रस्थान।

न करेगा पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं ॥

२२.

फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की नदी दिखाई २ जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकल कर, उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। और नदी के इस पार और उस पार जीवन का पेड़ था उस में बारह प्रकार के फल लगते थे और वह हर महीने फलता था और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते ३ थे। और फिर स्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उस के दास उस ४ की सेवा करेंगे। और उस का मुंह देखेंगे और उस का ५ नाम उन के माथों पर लिखा हुआ होगा। और फिर रात न होगी और उन्हें दीपक और सूरज के उजाले का प्रयोजन न होगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजाला देगा और वे युगानुयुग राज्य करेंगे॥

६ फिर उस ने मुझ से कहा ये बातें विश्वास के योग्य और सत्य हैं और प्रभु ने जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि अपने दासों को वे बातें जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है ७ दिखाए। देख मैं शीघ्र आनेवाला हूं धन्य है वह जो इस पुस्तक की नबूवत की बातें मानता है॥

८ मैं वही यूहन्ना हूं जो ये बातें सुनता और देखता था और जब मैं ने सुना और देखा तो जो स्वर्गदूत मुझे ये बातें दिखाता था मैं उस के पांवों पर प्रणाम करने को ९ गिरा। और उस ने मुझ से कहा देख ऐसा मत कर क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाई नबियों और इस पुस्तक की बातों के माननेवालों का संगी दास हूं परमेश्वर ही को प्रणाम कर॥

१० फिर उस ने मुझ से कहा इस पुस्तक की नबूवत की बातों को बन्द मत कर[१] क्योंकि समय निकट है। ११ जो अन्याय करता है वह अन्याय करता रहे और जो मलिन है वह मलिन बना रहे और जो धर्म्मी है वह धर्म्मी बना रहे और जो पवित्र है वह पवित्र बना रहे। १२ देख मैं शीघ्र आनेवाला हूं और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। १३ मैं अलफा और ओमिगा पहिला और पिछला १४ आदि और अन्त हूं। धन्य वे हैं जो अपने वस्त्र धो लेते हैं क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। १५ पर कुत्ते और टोनहे और व्यभिचारी और खूनी और मूर्त्तिपूजक और हर एक झूठ चाहनेवाला और गढ़नेवाला बाहर रहेगा॥

१६ मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि तुम्हारे आगे मण्डलियों के लिये इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद का मूल और वंश और भोर का चमकता हुआ तारा हूं॥

१७ और आत्मा और दुल्हिन दोनों कहते हैं आ और सुननेवाला भी कहे आ और जो प्यासा हो वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले॥

१८ मैं हर एक को जो इस पुस्तक की नबूवत की बातें सुनता है गवाही देता हूं कि यदि कोई इन बातों पर कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन बिपतों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस पर बढ़ाएगा। १९ और यदि कोई इस नबूवत की पुस्तक की बातों में से घटाए तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिस की चर्चा इस पुस्तक में है उस का भाग घटा देगा॥

२० जो इन बातों की गवाही देता है वह यह कहता है हां मैं शीघ्र आनेवाला हूं। आमीन। हे प्रभु यीशु आ॥

२१ प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों पर रहे। आमीन॥

(१) या। पर छाप न दे।